Fatawa Razawiyya

With references and translation of Arabic passages

Imam Ahmed Raza Barelvi (May his secret be sanctified)

24

Raza Foundation

Jamia Nizamia Razawiyya

Inside Lohari Gate Lahore, 8

Pakistan (54000)

फ़तावा रज़विया

सटीक संदर्भ एवं अरबी इबारतों के अनुवाद के साथ

इमाम अहमद रज़ा बरेलवी कुद्दिस सिर्रहु

२४

रज़ा फ़ाउंडेशन

जामिया निज़ामिया रज़विया

अंदरून लोहारी दरवाज़ा लाहौर, ८

पाकिस्तान (५४०००)

فتاویٰ رضویہ

مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات

امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ

۲۴

رضا فاؤنڈیشن

جامعہ نظامیہ رضویہ

اندرون لوہاری دروازہ لاہور، ۸

پاکستان (۵۴۰۰۰)

Volume 24 Fatawa Razawiya

Contents 4 ..... Brief List
6 ..... Foreword
10 ..... Twenty-fourth Volume
12 ..... Detailed Table of Contents
54 ..... List of Supplementary Issues
76 ..... Amusement and Play 76 .....
Concerning games, shows, fairs, humor, dancing, singing, Qawwali, musical instruments, melody, spiritual audition, music, etc.
146 ..... Treatise
146 ..... Issues of Sama (Spiritual Audition)
1320 AH 146 ..... (Issues of Qawwali)
168 ..... Enjoining good and forbidding evil
178 ..... Sickness and Medical Treatment
178 ..... Concerning visiting the sick, nursing, medicine, treatment, incantations, medical practice, abortion, artificial teeth, etc.
216 ..... Al-Haqq al-Mujtala fi Hukm al-Mubtala 1322 AH 216 ..... (Clear and bright truth concerning the ruling for a person suffering from illness) 286 .....
Taysir al-Ma'un lil-Sukan fi al-Ta'un 1325 AH 286 ..... (Facilitating goodness for those staying at home during a plague)
312 ..... Companionship, alliance, love, and enmity 338 ..... Oppression, harming a Muslim, abandonment, and severing ties
352 ..... Lying, backbiting, breach of promise, etc. 360 ..... Lawsuit, adjudication, and testimony 366 ..... Good conduct and the rights of people 366 ..... Exchange of gifts and presents, etc.

Page 1 of 723

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

Contents (विषय-सूची) 4 ..... संक्षिप्त सूची
6 ..... प्रस्तावना
10 ..... चौबीसवीं जिल्द
12 ..... विस्तृत विषय सूची
54 ..... सहायक मुद्दों की सूची
76 ..... खेल और मनोरंजन 76 ..... खेल, तमाशा, मेला, हास्य, नृत्य, गायन, कव्वाली, वाद्य यंत्र, राग, समा, संगीत आदि से संबंधित।
146 ..... शोध प्रबंध (रिसाला)
146 ..... समा के मुद्दे 1320 हिजरी
146 ..... (कव्वाली के मुद्दे)
168 ..... नेक काम का हुक्म देना और बुराई से रोकना 178 ..... बीमारी और इलाज 178 ..... बीमारपुर्सी, तीमारदारी, दवा, इलाज, झाड़-फूंक, चिकित्सा, गर्भपात, कृत्रिम दांत आदि से संबंधित।
216 ..... अल-हक़ अल-मुजतला फ़ी हुक्म अल-मुब्तला 1322 हिजरी 216 ..... (बीमारी के शिकार व्यक्ति के हुक्म के संबंध में स्पष्ट और उज्ज्वल सत्य) 286 ..... तैसीर अल-माऊन लिस-सुकान फ़ी अल-ताऊन 1325 हिजरी 286 ..... (प्लेग के दौरान घर में रहने वालों के लिए भलाई को आसान बनाना) 312 .....
संगत, मित्रता, प्रेम और शत्रुता 338 .....
उत्पीड़न, मुसलमान को कष्ट पहुँचाना, बहिष्कार और संबंध विच्छेद
352 ..... झूठ, गीबत (चुगली), वादा खिलाफी आदि। 360 ..... दावा, न्याय और गवाही
366 ..... अच्छा व्यवहार और बंदों के अधिकार
366 ..... उपहारों और तोहफों आदि का लेनदेन

جلد ۲۴ فتاوی رضویہ

Contents 4 ..... اجمالی فہرست

6 ..... پیش لفظ

10 ..... چوبیسویں جلد

12 ..... فہرست مضامین مفصل

54 ..... فہرست ضمنی مسائل

76 ..... لہوولعب 76 ..... کھیل،

تماشہ، میلہ، مزاح، ناچ گانا، قوالی، مزامیر، راگ، سماع، موسیقی وغیرہ سے متعلق

146 ..... رسالہ

146 ..... مسائلِ سماع ۱۳۲۰ھ

146 ..... (قوالی کے مسئلے)

168 ..... امر بالمعروف ونہی عن المنکر

178 ..... بیماری اور علاج معالجہ

178 ..... بیمار پرسی، تیمار داری، دوا، علاج، جھاڑ پھونک، طبابت، اسقاط حمل، مصنوعی دانت

وغیرہ سے متعلق 216 ..... الحق المجتلی

في حکم المبتلی ۱۳۲۲ھ 216 ..... (بیماری کے شکار شخص کے حکم سے متعلق

واضح و روشن حق) 286 ..... تیسیر

الماعون للسکن في الطاعون ۱۳۲۵ھ 286 ..... (طاعون کے دوران گھر میں

ٹھہرنے والوں کے لئے بھلائی کو آسان کرنا)

312 ..... صحبت و موالات و محبت و
عداوت 338 ..... ظلم وایذائی مسلم وبجران
وقطع تعلق 352 ..... جھوٹ و غیبت و بد
عہدی وغیرہ 360 ..... دعوی و قضاء و
شہادۃ 366 ..... حسن سلوک و حقوق العباد
366 ..... ہدایا و تحائف وغیرہ کا لین دین

Volume 24 Fatawa Razawiya

384 ..... Epistle (Risala)
384 ..... Al-Huquq li-Tarh al-'Uquq 1307 AH
384 ..... (Detail of rights to eliminate disobedience)
452 ..... Epistle (Risala)
452 ..... Mish'alat al-Irshad fi Huquq al-Awlad
452 ..... (The lamp of guidance regarding the rights of children upon parents) 460 ..... Epistle (Risala)
460 ..... A'jab al-Imdad fi Mukaffirat Huquq al-'Ibad 1310 AH 460 ..... (Extraordinary assistance regarding matters that expiate the rights of servants [people])
478 ..... Mourning, wailing, and lamentation
490 ..... Ta'ziya and related innovations (bid'ah)
512 ..... Epistle (Risala)
512 ..... A'ali al-Ifada fi Ta'ziyat al-Hind wa-Bayan al-Shahada 1321 AH 512 ..... (High-level benefits regarding the rulings of Ta'ziya-dari and the narration of martyrdom in India)
530 ..... Imitating others (Tashabbuh bi'l-Ghayr)
530 ..... Symbols of disbelievers and others
554 ..... Hookah and betel leaf (paan)
560 ..... Picture/Photography
572 ..... Epistle (Risala)
572 ..... Al-'Ataya al-Qadir fi Hukm al-Taswir 1331 AH
572 ..... (The gifts of the Almighty regarding the ruling of photography) 644 ..... Keeping, fighting, and showing mercy or cruelty to animals 664 ..... Discourse on naming 678 ..... Al-Nur wa'l-Diya fi Ahkam Ba'd al-Asma 1320 AH 678 ..... (Gleam and light regarding the rulings of certain names)

जिल्द 24 फतावा रज़विया

384 ..... रिसाला (पुस्तक/लेख)
384 ..... अल-हुक़ूक़ लि-तर्ह अल-उक़ूक़ १३०७ हि.
384 ..... (नाफरमानी को खत्म करने के लिए अधिकारों का विवरण) 452 ..... रिसाला
452 ..... मश्अलतुल इरशाद फी हुक़ूक़िल औलाद
452 ..... (माता-पिता पर बच्चों के अधिकारों के संबंध में मार्गदर्शन की मशाल) 460 ..... रिसाला
460 ..... अअजबुल इमदाद फी मुकफ़्फ़िरात हुक़ूक़िल इबाद १३१० हि. 460 ..... (बन्दों के अधिकारों का प्रायश्चित करने वाले मामलों के बारे में अत्यंत आश्चर्यजनक सहायता)
478 ..... शोक, विलाप और बेचैनी
490 ..... ताज़िया और उससे संबंधित बिदअत (नवाचार)
512 ..... रिसाला
512 ..... अआलिल इफादा फी ताज़ियतुल हिन्द व बयान शहादत १३२१ हि. 512 ..... (हिंदुस्तान में ताज़ियादारी और बयान-ए-शहादत के अहकाम से संबंधित उच्च स्तरीय लाभ)
530 ..... दूसरों के सदृश होना (तशब्बुह बिल गैर)
530 ..... काफिरों के प्रतीक आदि
554 ..... हुक्का और पान
560 ..... तस्वीर (चित्र)
572 ..... रिसाला
572 ..... अल-अताया अल-क़दीर फी हुक्म अत्तस्वीर १३३१ हि. 572 ..... (तस्वीर के हुक्म के बारे में क़ुदरत वाले की अताएँ) 644 ..... जानवरों को पालना, लड़ाना और उन पर दया और क्रूरता 664 ..... नाम रखने का बयान
678 ..... अन-नूर वद-दिया फी अहकाम बाज़ अल-अस्मा

१३२० हि. 678 ..... (कुछ नामों के अहकाम के बारे में उजाला और रोशनी)

पृष्ठ 2 का 723

جلد ۲۴ فتاوی رضویہ

384 ..... رسالہ

384 ..... الحقوق لطرح العقوق ۱۳۰۷ھ

384 ..... (نافرمانی کو ختم کرنے کے لئے حقوق کی

تفصیل) 452 ..... رسالہ

452 ..... مشعلة الارشاد فی حقوق الاولاد

452 ..... (والدین پر) اولاد کے حقوق کے بارے میں

راہنمائی کی قندیل) 460 ..... رسالہ

460 ..... اعجب الامداد فی مکفرات حقوق العباد ۱۳۱۰ھ

460 ..... (بندوں کے حقوق کا کفارہ ادا کرنے والے

امور کے بارے میں انتہائی حیران کن امداد) 478 .....

سوگ و نوحہ و جزع و فزع 490 ..... تعزیہ اور اس

سے متعلقہ بدعات 512 ..... رسالہ

512 ..... اعالی الافادة فی تعزیة الهند وبیان شهادة

۱۳۲۱ھ 512 ..... (ہندوستان میں تعزیہ داری اور بیان

شہادت کے احکام سے متعلق بلند پایہ فوائد) 530 .....

تشبہ بالغیر 530 ..... شعار کفار و غیرہ

554 ..... حقہ و پان

560 ..... تصویر

572 ..... رسالہ

572 ..... العطایا القدیر فی حکم التصویر ۱۳۳۱ھ

572 ..... (تصویر کے حکم کے بارے میں قدرت والے

کی عطائیں) 644 ..... جانوروں کا پالنا ، لڑانا اور ان پر

رحم وظلم 664 ..... نام رکھنے کا بیان

678 ..... النور والضیاء فی احکام بعض الاسماء ۱۳۲۰ھ

678 ..... (بعض ناموں کے احکام کے بارے میں اجالا

اور روشنی)

Volume 24 Fatawa Rizvia

Letters and Correspondence ..... 710 Stopping, opening, and reading someone's letter without permission, etc. 710
Politics 716
Membership, voting, elections, and organization building, etc. 716

जिल्द २४ फ़तावा रज़विया

पत्र और पत्राचार 710
बिना अनुमति किसी का पत्र रोकना, खोलना, और पढ़ना
आदि 710
राजनीति 716
सदस्यता, वोट, चुनाव और संगठन बनाना
आदि 716

पृष्ठ ३ का ७२३

جلد ۲۴ فتاوی رضویہ

خط وکتاب ..... 710 بلا

اجازت کسی کا خط روکنا، کھولنا، اور پڑھنا وغیرہ 710

سیاسیات ..... 716 ممبری،

ووٹ، الیکشن اور تنظیم سازی وغیرہ 716

Page 3 of 723

Volume 24 Fatawa Razawiyya

Fatawa Razawiyya With citations and translation of Arabic passages

Imam Ahmad Raza Barelvi (May his secret be sanctified) Raza Foundation Jamia Nizamia Razavia

www.dawateislami.net

Inside Lohari Gate, Lahore No. 8 Pakistan (54000)

I.T. Majlis of Dawat-e-Islami

Page 1 of 720

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

फ़तावा रज़विया अरबी इबारतों की तख़रीज और अनुवाद के साथ

इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (क़ुद्दिस सिर्रहु) रज़ा फाउंडेशन जामिया निज़ामिया रज़विया

www.dawateislami.net

अंदरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर नंबर 8 पाकिस्तान (54000)

आई.टी. मज्लिस-ए-दावत-ए-इस्लामी

पृष्ठ 1 / 720

جلد ۲۴ فتاویٰ رضویہ

فتاویٰ رضویہ مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات

امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ

www.dawateislami.net

اندرون لوہاری دروازہ لاہور نمبر ۸ پاکستان (۵۴۰۰۰)

آئی ٹی مجلس دعوت اسلامی

صفحہ ۱ از ۷۲۰

Fatawa Razawiya Volume 24

"Whomsoever Allah intends to do good to, He grants him understanding of the Religion." (Hadith) AL-ATAYA AL-NABAVIYYA FIL-FATAWA AL-RAZAVIYYA (With referencing and translation of Arabic phrases)

Volume 24

The grand Fiqh encyclopedia of the 14th century, containing rare research.

Imam Ahmad Raza Barelvi (May Allah sanctify his secret) 1272 AH ——— 1340 AH 1856 AD ——— 1921 AD

Raza Foundation, Jamia Nizamia Razavia Inside Lohari Gate, Lahore 8, Pakistan (54000) Phone: 7657312

Page 2 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

"अल्लाह जिसके साथ भलाई का इरादा करता है, उसे धर्म की समझ प्रदान करता है।" (हदीस) अल-अताया अल-नबविय्यह फ़िल-फ़तावा अर-रज़विय्यह (अरबी वाक्यांशों के संदर्भ और अनुवाद के साथ)

जिल्द 24

चौदहवीं शताब्दी का महान फ़िक़्ही विश्वकोश, जिसमें दुर्लभ शोध शामिल हैं।

इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (अल्लाह उनकी कब्र को पवित्र करे) 1272 हिजरी ——— 1340 हिजरी 1856 ईस्वी ——— 1921 ईस्वी

रज़ा फाउंडेशन, जामिया निज़ामिया रज़विया अंदरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर 8, पाकिस्तान (54000) फ़ोन: 7657312

पेज 2 ऑफ़ 720

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۴

مَنْ یُرِدِ اللّٰہُ بِہٖ خَیْرًا یُفَقِّھْہُ فِي الدِّینِ (الحدیث) اَلْعَطَایَا النَّبَوِیَّۃُ فِي الْفَتَاوَی الرَّضَوِیَّۃِ مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات

جلد ۲۴

تحقیقاتِ نادرہ پر مشتمل چودہویں صدی کا عظیم الشان فقہی انسائیکلوپیڈیا

امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ العزیز ۱۲۷۲ھ ——— ۱۳۴۰ھ ۱۸۵۶ء ——— ۱۹۲۱ء

رضا فاؤنڈیشن، جامعہ نظامیہ رضویہ اندرون لوہاری دروازہ، لاہور ۸، پاکستان (۵۴۰۰۰) فون: ۷۶۵۷۳۱۲

جلد ۲۴ (Volume 24) Fatawa Razawiyya (All rights reserved by the publisher) Book Name: Fatawa Razawiyya Volume 24 Author: Shaykh-ul-Islam Imam Ahmad Raza Qadri Barelwi (may Allah have mercy on him) Translation of Arabic phrases: Hafiz Abdul Sattar Saeedi, Director of Education, Jamia Nizamia Razawiyya, Lahore Foreword: Hafiz Abdul Sattar Saeedi, Director of Education, Jamia Nizamia Razawiyya, Lahore Table of Contents: Hafiz Abdul Sattar Saeedi, Director of Education, Jamia Nizamia Razawiyya, Lahore Authentication and Correction: Maulana Nazir Ahmed Saeedi, Maulana Muhammad Akram Ullah Butt, Maulana Ghulam Hussain Under Management and Supervision: Maulana Mufti Muhammad Abdul Qayyum Hazarvi, Chief Administrator Tanzim-ul-Madaris Ahle Sunnat, Pakistan Calligraphy: Muhammad Sharif Gul, Karial Kalan (Gujranwala) Pasting: Maulana Muhammad Mansha Tabish Qasuri, Teacher of Persian Department, Jamia Nizamia Lahore Pages: 768 Publication: Dhul-Hijjah 1424 AH / February 2004 AD Press: __ **Publisher: Raza Foundation, Jamia Nizamia Razawiyya, Inside Lohari Gate, Lahore Price:** __

Addresses where available: * Raza Foundation, Jamia Nizamia Razawiyya, Inside Lohari Gate, Lahore 0300/ 9415300, 7665772 * Maktaba Ahle Sunnat, Jamia Nizamia Razawiyya, Inside Lohari Gate, Lahore * Zia-ul-Quran Publications, Ganj Bakhsh Road, Lahore * Shabbir Brothers, 40-B, Urdu Bazaar, Lahore

جلد ۲۴ (खंड 24) फ़तावा रज़विया (सभी अधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं) पुस्तक का नाम: फ़तावा रज़विया खंड 24 लेखक: शैख-उल-इस्लाम इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरेलवी (अल्लाह उन पर रहम करे) अरबी वाक्यांशों का अनुवाद: हाफ़िज़ अब्दुल सत्तार सईदी, शिक्षा निदेशक, जामिया निज़ामिया रज़विया, लाहौर प्रस्तावना: हाफ़िज़ अब्दुल सत्तार सईदी, शिक्षा निदेशक, जामिया निज़ामिया रज़विया, लाहौर अनुक्रमणिका व्यवस्था: हाफ़िज़ अब्दुल सत्तार सईदी, शिक्षा निदेशक, जामिया निज़ामिया रज़विया, लाहौर तख़रीज और संपादन: मौलाना नज़ीर अहमद सईदी, मौलाना मुहम्मद अकरम उल्लाह बट, मौलाना ग़ुलाम हुसैन प्रबंधन और पर्यवेक्षण के तहत: मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अब्दुल क़य्यूम हज़ारवी, मुख्य प्रशासक तंज़ीम-उल-मदारिस अहले सुन्नत, पाकिस्तान लिखाई (कलिग्राफी): मुहम्मद शरीफ़ गुल, करियाल कलां (गुजरांवाला) पेस्टिंग: मौलाना मुहम्मद मंशा ताबिश क़सूरी, फ़ारसी विभाग के शिक्षक, जामिया निज़ामिया लाहौर पृष्ठ: 768 प्रकाशन: ज़ुल्-हिज्जा 1424 हिजरी / फरवरी 2004 ईस्वी प्रेस: __ **प्रकाशक: रज़ा फाउंडेशन, जामिया निज़ामिया रज़विया, लोहारी गेट के अंदर, लाहौर मूल्य: __**

उपलब्ध पते: * रज़ा फाउंडेशन, जामिया निज़ामिया रज़विया, लोहारी गेट के अंदर, लाहौर 0300/ 9415300, 7665772 * मकतबा अहले सुन्नत, जामिया निज़ामिया रज़विया, लोहारी गेट के अंदर, लाहौर * ज़िया-उल-क़ुरान पब्लिकेशंस, गंज बख्श रोड, लाहौर * शब्बीर ब्रदर्स, 40-बी, उर्दू बाज़ार, लाहौर

पृष्ठ 3 का 720

جلد ۲۴ فتاویٰ رضویہ (جملہ حقوق بحق ناشر محفوظ ہیں) نام کتاب: فتاویٰ رضویہ جلد ۲۴ تصنیف: شیخ الاسلام امام احمد رضا قادری بریلوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ ترجمہ عربی عبارات: حافظ عبد الستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور پیش لفظ: حافظ عبد الستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور ترتیب فہرست: حافظ عبد الستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور تخریج و تصحیح: مولانا نظیر احمد سعیدی، مولانا محمد اکرم اللہ بٹ، مولانا غلام حسین باہتمام و سرپرستی: مولانا مفتی محمد عبدالقیوم ہزاروی ناظم اعلیٰ تنظیم المدارس اہلسنت، پاکستان کتابت: محمد شریف گل، کڑیال کلاں (گوجرانوالا) پیسٹنگ: مولانا محمد منشا تابش قصوری معلم شعبہ فارسی جامعہ نظامیہ لاہور صفحات: ۷۶۸ اشاعت: ذوالحجہ ۱۴۲۴ھ / فروری ۲۰۰۴ء مطبع: __ **ناشر: رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور قیمت:** __

ملنے کے پتے: * رضا فاؤنڈیشن، جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور ۰۳۰۰/ ۹۴۱۵۳۰۰ ۷۶۶۵۷۷۲ * مکتبہ اہلسنت جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور * ضیاء القرآن پبلیکیشنز، گنج بخش روڈ، لاہور * شبیر برادرز، ۴۰ بی، اردو بازار، لاہور

Fatawa Rizwia Volume 24

Summary Table of Contents

Foreword.....5 Play and Amusement.....75 Enjoining Good and Forbidding Evil.....167 Sickness and Medical Treatment.....177 Company, Friendship, Love, and Enmity.....311 Oppression, Hurting a Muslim, Abandonment, and Severing Ties.....337 Lying, Backbiting, Breach of Promise, etc.....351 Lawsuit, Judgment, and Testimony.....359 Good Conduct and Rights of People.....365 Mourning, Wailing, and Lamentation.....477 Ta'ziya and Related Innovations.....489 Imitating Others.....529 Hookah and Betel Leaf.....553 Image.....559 Keeping Animals, Animal Fighting, and Mercy & Oppression Towards Them.....633 Description of Naming.....663 Correspondence.....709 Politics.....715

List of Treatises Issues of Sama'.....125

Page 4 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

संक्षिप्त विषय-सूची

प्रस्तावना.....५ खेल-कूद और
मनोरंजन.....७५ भलाई का आदेश देना और बुराई से
रोकना.....१६७ बीमारी और
उपचार.....१७७ संगति, मित्रता, प्रेम और
शत्रुता.....३११ अत्याचार, मुस्लिम को कष्ट पहुँचाना, त्याग और
संबंध विच्छेद.....३३७ झूठ, चुगली, वादाखिलाफी,
आदि.....३५१ दावा, न्याय और
गवाही.....३५९ सदाचार और लोगों के
अधिकार.....३६५ शोक, विलाप और
अधीरता.....४७७ ताज़िया और उससे संबंधित
बिद'अतें.....४८९ दूसरों का
अनुकरण.....५२९ हुक्का और
पान.....५५३
चित्र.....५५९ पशुओं को पालना, लड़ाना, और
उन पर दया व क्रूरता.....६३३ नाम रखने का
वर्णन.....६६३ पत्र-
व्यवहार.....७०९
राजनीति.....७१५

पत्रिकाओं की सूची समा (आध्यात्मिक संगीत) के मसले.....१२५

पृष्ठ ७२० में से ४

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۴

اجمالی فہرست

پیش لفظ.....۵ لہو و

لعب.....۷۵ امر بالمعروف و نہی عن

المنکر.....۱۶۷ بیماری اور علاج

معالجہ.....۱۷۷ صحبت و موالات و محبت و

عداوت.....۳۱۱ ظلم و ایذائے مسلم و ہجران و قطع

تعلق.....۳۳۷ جھوٹ و غیبت و بد عہدی و

غیرہ.....۳۵۱ دعویٰ و قضاء و

شہادۃ.....۳۵۹ حسن سلوک و حقوق

العباد.....۳۶۵ سوگ و نوحہ و جزع و

فزع.....۴۷۷ تعزیہ اور اس سے متعلقہ

بدعات.....۴۸۹ تشبہ

بالغیر.....۵۲۹ حقہ و

پان.....۵۵۳

تصویر.....۵۵۹ جانوروں کا پالنا، لڑانا، اور ان

پر رحم و ظلم.....۶۳۳ نام رکھنے کا

بیان.....۶۶۳ خط و

کتابت.....۷۰۹

سیاسیات.....۷۱۵

فہرست رسائل مسائل سماع.....۱۲۵

Volume 22 Fatawa Razawiyya

O Al-Haqq al-Mujtala ---------- 215 O Taysir al-Ma'un ---------- 285 O Al-Huquq ---------- 383 O Mash'alat al-Irshad ---------- 451 O A'jab al-Imdad ---------- 459 O A'ali al-Ifadah ---------- 511 O Al-Ataya al-Qadir ---------- 571 O An-Nur wal-Diya ---------- 677

www.dawateislami.net I.T. Majlis of DawateIslami Page 5 of 720

जिल्द २२ फ़तावा रज़विया

O अल-हक़ अल-मुज्तला ---------- २१५ O तयसीर अल-माऊन ---------- २८५ O अल-हुक़ूक़ ---------- ३८३ O मशअ़लतुल इरशाद ---------- ४५१ O अअ़जबुल इमदाद ---------- ४५९ O अआ़ली अल-इफ़ादा ---------- ५११ O अल-अ़ताया अल-क़दीर ---------- ५७१ O अन-नूर वज़-ज़िया ---------- ६७७

جلد ۲۲ فتاوىٰ رضويہ

O الحق المجتلىٰ ---------- ۲۱۵ O تيسر الماعون ---------- ۲۸۵ O الحقوق ---------- ۳۸۳ O مشعلة الارشاد ---------- ۴۵۱ O اعجب الامداد ---------- ۴۵۹ O اعالى الافادة ---------- ۵۱۱ O العطايا القدير ---------- ۵۷۱ O النور والضياء ---------- ۶۷۷

www.dawateislami.net I.T. Majlis of DawateIslami Page 5 of 720

Volume 24 Fatawa Rizvia

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

Foreword

Praise be to Allah! The institution named Raza Foundation, which was established in March 1988 at Darul Uloom Jamia Nizamia Razvia Lahore to bring the scientific treasures and jurisprudential stores of Ala Hazrat Imam-ul-Muslimeen Maulana Shah Ahmad Raza Khan Barelvi (may Allah have mercy on him) to the public in a modern way exactly according to the requirements of the present era, is moving towards its goal by completing the evolutionary stages of the proposed plan with extreme success and lightning speed. So far, this institution has published several works of Imam Ahmad Raza, but the greatest achievement of this institution is the publication of 'Al-Ataya al-Nabawiyya fil Fatawa al-Radawiyya', known as Fatawa Rizvia, with research citations and translation in an excellent and beautiful manner. The publication of the said Fatawa began in Sha'ban al-Muazzam 1410 AH / March 1990 AD. And by the grace of Allah Almighty and the kindness of His Noble Messenger, the twenty-fourth (24th) volume is in your hands in a short period of about thirteen (13) years. Before this, twenty-three (23) volumes consisting of the Book of Purification, Book of Prayer, Book of Funerals, Book of Zakat, Book of Fasting, Book of Hajj, Book of Marriage, Book of Divorce, Book of Faith, Book of Punishments and Discretionary Punishment, Book of Expeditions, Book of Partnership, Book of Endowment, Book of Sales, Book of Transfer of Debt, Book of Testimony, Book of Judgment and Lawsuits, Book of Agency, Book of Acknowledgment, Book of Settlement, Book of Profit Sharing, Book of Trusts, Book of Loans, Book of Gifts, Book of Hiring, Book of Compulsion, Book of Interdiction, Book of Usurpation, Book of Pre-emption, Book of Partition, Book of Sharecropping, Book of Hunting, Book of Slaughters, Book of Sacrifice, and Book of Prohibition and Permission (Parts I, II, and III) have been published, the details of which, according to the years of publication, contents, total pages, and the number of treatises included in them, are as follows.

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

प्रस्तावना (पेश लफ्ज़)

अल्हम्दुलिल्लाह! आला हज़रत इमामुल मुस्लिमीन मौलाना शाह अहमद रज़ा खाँ बरेलवी रहमतुल्लाही तआला अलैह के इल्मी खज़ाने और फिक़्ही ज़ख़ीरे को आधुनिक अंदाज़ में वर्तमान युग की आवश्यकताओं के अनुसार सामने लाने के लिए दारुल उलूम जामिया निज़ामिया रज़विया लाहौर में रज़ा फाउंडेशन के नाम से जो संस्था मार्च 1988 में स्थापित हुई थी, वह अत्यंत सफलता और तीव्र गति से प्रस्तावित योजना के विकासात्मक चरणों को पूरा करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रही है। अब तक यह संस्था इमाम अहमद रज़ा की कई रचनाएँ प्रकाशित कर चुकी है, लेकिन इस संस्था का सबसे बड़ा कारनामा 'अल-अतया अन-नबविया फिल फतावा अर-रज़विया', जिसे फतावा रज़विया के नाम से जाना जाता है, का तख़रीज (शोध सन्दर्भ) और अनुवाद के साथ बेहतरीन और सुंदर अंदाज़ में प्रकाशन है। उक्त फतावा का प्रकाशन शाबानुल मुअज़्ज़म 1410 हिजरी / मार्च 1990 ईस्वी में शुरू हुआ था। और अल्लाह तआला के फ़ज़ल और उसके पाक रसूल की इनायत से लगभग तेरह (13) वर्षों की छोटी अवधि में चौबीसवीं (24) जिल्द आपके हाथों में है। इससे पहले किताबुल तहारत, किताबुस सलात, किताबुल जनाइज़, किताबुज़ ज़कात, किताबुस सौम, किताबुल हज, किताबुन निकाह, किताबुल तलाक़, किताबुल ईमान, किताबुल हुदूद वत तअज़ीर, किताबुस सियर, किताबुश शिरकत, किताबुल वक़्फ़, किताबुल बुयू, किताबुल हवालह, किताबुश शहादत, किताबुल क़ज़ा वद दावा, किताबुल वकालत, किताबुल इक़रार, किताबुस सुलह, किताबुल मुज़ारबह, किताबुल अमानत, किताबुल आरियह, किताबुल हिबा, किताबुल इजारा, किताबुल इकराह, किताबुल हजर, किताबुल ग़सब, किताबुश शुफ़ा, किताबुल क़िस्मत, किताबुल मुज़ारअह, किताबुस सैद, किताबुज़ ज़बाइह, किताबुल अज़हिया और किताबुल हज़र वल इबाहत के पहले, दूसरे और तीसरे भाग पर आधारित तेईस (23) जिल्दें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनका विवरण प्रकाशन वर्ष, सामग्री, कुल पृष्ठों और उनमें शामिल रिसालों (पत्रिकाओं) की संख्या के अनुसार निम्नानुसार है।

पेज 6 ऑफ 720

جلد ۲۴ فتاویٰ رضویہ

بسم اللہ الرحمن الرحیم

پیش لفظ

الحمد للہ! اعلیحضرت امام المسلمین مولانا شاہ احمد رضا خان بریلوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے خزائن علمیہ اور ذخائر فقہیہ کو جدید انداز میں عصر حاضر کے تقاضوں کے عین مطابق منظر عام پر لانے کے لئے دارالعلوم جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور میں رضا فاؤنڈیشن کے نام سے جو ادارہ مارچ ۱۹۸۸ء میں قائم ہوا تھا وہ انتہائی کامیابی اور برق رفتاری سے مجوزہ منصوبہ کے ارتقائی مراحل کو طے کرتے ہوئے اپنے ہدف کی طرف بڑھ رہا ہے۔ اب تک یہ ادارہ امام احمد رضا کی متعدد تصانیف شائع کر چکا ہے مگر اس ادارے کا عظیم ترین کارنامہ العطایا النبویۃ فی الفتاویٰ الرضویہ المعروف بہ فتاویٰ رضویہ کی تخریج و ترجمہ کے ساتھ عمدہ و خوبصورت انداز میں اشاعت ہے۔ فتاویٰ مذکورہ کی اشاعت کا آغاز شعبان المعظم ۱۴۱۰ھ / مارچ ۱۹۹۰ء میں ہوا تھا۔ اور بفضلہ تعالیٰ جل مجدہ و بعنایت رسولہ الکریم تقریباً تیرہ ۱۳ سال کے مختصر عرصہ میں چوبیسویں ۲۴ جلد آپ کے ہاتھوں میں ہے۔ اس سے قبل کتاب الطھارۃ، کتاب الصلوۃ، کتاب الجنائز، کتاب الزکوۃ، کتاب الصوم، کتاب الحج، کتاب النکاح، کتاب الطلاق، کتاب الایمان، کتاب الحدود والتعزیر، کتاب السیر، کتاب الشرکۃ، کتاب الوقف، کتاب البیوع، کتاب الحوالہ، کتاب الشھادۃ، کتاب القضاء والدعاوی، کتاب الوکالۃ، کتاب الاقرار، کتاب الصلح، کتاب المضاربہ، کتاب الامانات، کتاب العاریہ، کتاب الہبہ، کتاب الاجارہ، کتاب الاکراہ، کتاب الحجر، کتاب الغصب، کتاب الشفعۃ، کتاب القسمۃ، کتاب المزارعہ، کتاب الصید، کتاب الذبائح، کتاب الاضحیہ اور کتاب الحظر والاباحۃ کے

حصہ اول و دوم و سوم پر مشتمل تئیس ۲۳ جلدیں شائع ہو چکی ہیں جن کی تفصیل سنین اشاعت، مشمولات، مجموعی صفحات، اور ان میں شامل رسائل کی تعداد کے اعتبار سے حسب ذیل ہے۔

Page 6 of 720

Fatawa Razawiya, Volume 24

Vol	Title	Answers to Questions	Number of Treatises	Years of Publication	Pages
1	Kitab al-Taharah (Book of Purification)	22	11	Sha'ban al-Mu'azzam 1410 AH / March 1990 AD	848
2	Kitab al-Taharah (Book of Purification)	33	7	Rabi al-Thani 1412 AH / November 1991 AD	710
3	Kitab al-Taharah (Book of Purification)	59	6	Sha'ban al-Mu'azzam 1412 AH / February 1992	756
4	Kitab al-Taharah (Book of Purification)	132	5	Rajab al-Murajjab 1413 AH / January 1993	760
5	Kitab al-Salah (Book of Prayer)	140	6	Rabi al-Awwal 1414 AH / September 1993	692
6	Kitab al-Salah (Book of Prayer)	457	4	Rabi al-Awwal 1415 AH / August 1994	736
7	Kitab al-Salah (Book of Prayer)	269	7	Rajab al-Murajjab 1415 AH / December 1994	720
8	Kitab al-Salah (Book of Prayer)	337	6	Muharram al-Haram 1416 AH / June 1995	664
9	Kitab al-Jana'iz (Book of Funerals)	273	13	Dhu al-Qi'dah 1416 / April 1996	946
10	Kitab Zakat, Fasting, Hajj	316	16		832

Vol	Title	Answers to Questions	Number of Treatises	Years of Publication	Pages
				Rabi al-Awwal 1417 AH / August 1996	
11	Kitab al-Nikah (Book of Marriage)	459	6	Muharram al-Haram 1418 AH / May 1997	736
12	Kitab Nikah, Divorce	328	3	Rajab al-Murajjab 1418 AH / November 1997	688
13	Kitab Divorce, Faith and Penalties	293	2	Dhu al-Qi'dah 1418 AH / March 1998	688
14	Kitab al-Siyar (A) (Book of Biography/Expeditions)	339	7	Jumada al-Akhira 1419 AH / September 1998	712
15	Kitab al-Siyar (B) (Book of Biography/Expeditions)	81	15	Muharram al-Haram 1420 AH / April 1999	744
16	Kitab al-Shirkah, Kitab al-Waqf	432	3	Jumada al-Ula 1420 / September 1999	632
17	Kitab al-Buyu, Kitab al-Hawalah, Kitab al-Kafalah	153	2	Dhu al-Qi'dah 1420 / February 2000	726
18	Kitab al-Shahadah, Kitab al-Qada wa al-Da'wa	152	2	Rabi al-Thani 1421 / July 2000	740
19	Kitab al-Wakalah, al-Iqrar, al-Sulh, al-Mudarabah, al-Amanat, al-Ariyah, al-Hibah, al-Ijarah, al-Ikrah, al-Hajr, al-Ghasb	296	3	Dhu al-Qi'dah 1421 / February 2001	692

फ़तावा रज़विया, जिल्द २४

जिल्द	शीर्षक	प्रश्नों के उत्तर	पुस्तिकाओं की संख्या	प्रकाशन के वर्ष	पृष्ठ
१	किताब अत-तहारत (पवित्रता की पुस्तक)	२२	११	शाबान अल-मुअज़्ज़म १४१० हि. / मार्च १९९० ई.	८४८
२	किताब अत-तहारत (पवित्रता की पुस्तक)	३३	७	रबी' थानी १४१२ हि. / नवंबर १९९१ ई.	७१०
३	किताब अत-तहारत (पवित्रता की पुस्तक)	५९	६	शाबान अल-मुअज़्ज़म १४१२ हि. / फरवरी १९९२	७५६
४	किताब अत-तहारत (पवित्रता की पुस्तक)	१३२	५	रजब अल-मुरज्जब १४१३ हि. / जनवरी १९९३	७६०
५	किताब अस-सलात (नमाज़ की पुस्तक)	१४०	६	रबी' अल-अव्वल १४१४ हि. / सितंबर १९९३	६९२
६	किताब अस-सलात (नमाज़ की पुस्तक)	४५७	४	रबी' अल-अव्वल १४१५ हि. / अगस्त १९९४	७३६
७	किताब अस-सलात (नमाज़ की पुस्तक)	२६९	७		७२०

जिल्द	शीर्षक	प्रश्नों के उत्तर	पुस्तिकाओं की संख्या	प्रकाशन के वर्ष	पृष्ठ
				रजब अल-मुरज्जब १४१५ हि. / दिसंबर १९९४	
८	किताब अस-सलात (नमाज़ की पुस्तक)	३३७	६	मुहर्रम अल-हराम १४१६ हि. / जून १९९५	६६४
९	किताब अल-जनाइज़ (जनाज़े की पुस्तक)	२७३	१३	ज़िलक़ादा १४१६ / अप्रैल १९९६	९४६
१०	किताब ज़कात, रोज़ा, हज	३१६	१६	रबी' अल-अव्वल १४१७ हि. / अगस्त १९९६	८३२
११	किताब अन-निकाह (निकाह की पुस्तक)	४५९	६	मुहर्रम अल-हराम १४१८ हि. / मई १९९७	७३६
१२	किताब निकाह, तलाक़	३२८	३	रजब अल-मुरज्जब १४१८ हि. / नवंबर १९९७	६८८
१३	किताब तलाक़, ईमान और हुदूद-ओ-तज़ीर	२९३	२	ज़िलक़ादा १४१८ हि. / मार्च १९९८	६८८
१४	किताब अस-सियर (१) (जीवनी/अभियान की पुस्तक)	३३९	७	जमाद-उल-उखरा १४१९ हि. / सितंबर १९९८	७१२
१५	किताब अस-सियर (ब) (जीवनी/अभियान की पुस्तक)	८१	१५	मुहर्रम अल-हराम १४२० हि. / अप्रैल १९९९	७४४

जिल्द	शीर्षक	प्रश्नों के उत्तर	पुस्तिकाओं की संख्या	प्रकाशन के वर्ष	पृष्ठ
१६	किताब अ-शिरका, किताब अल-वक़्फ़	४३२	३	जमाद-उल-ऊला १४२० / सितंबर १९९९	६३२
१७	किताब अल-बियू, किताब अल-हवाला, किताब अल-कफ़ाला	१५३	२	ज़िलक़ादा १४२० / फरवरी २०००	७२६
१८	किताब अश-शहादत, किताब अल-क़ज़ा व अद-दावा	१५२	२	रबी' थानी १४२१ / जुलाई २०००	७४०
१९	किताब अल-वक़ाला, अल-इक़रार, अस-सुलह, अल-मुज़ारबा, अल-अमानात्, अल-आरियत, अल-हिबा, अल-इजारा, अल-इकरह, अल-हज्र, अल-ग़सब	२९६	३	ज़िलक़ादा १४२१ / फरवरी २००१	६९२

جلد	عنوان	جوابات اسئلہ	تعداد رسائل	سنین اشاعت	صفحات
۱	کتاب الطہارۃ	۲۲	۱۱	شعبان المعظم ۱۴۱۰ھ / مارچ ۱۹۹۰ء	۸۴۸
۲	کتاب الطہارۃ	۳۳	۷	ربیع الثانی ۱۴۱۲ھ / نومبر ۱۹۹۱ء	۷۱۰
۳	کتاب الطہارۃ	۵۹	۶	شعبان المعظم ۱۴۱۲ھ / فروری ۱۹۹۲	۷۵۶
۴	کتاب الطہارۃ	۱۳۲	۵	رجب المرجب ۱۴۱۳ھ / جنوری ۱۹۹۳	۷۶۰
۵	کتاب الصلوٰۃ	۱۴۰	۶	ربیع الاول ۱۴۱۴ھ / ستمبر ۱۹۹۳	۶۹۲

جلد	عنوان	جوابات اسئلہ	تعداد رسائل	سنین اشاعت	صفحات
				ربیع الاول	
۶	کتاب الصلوٰۃ	۴۵۷	۴	۱۴۱۵ھ / اگست ۱۹۹۴	۷۳۶
				رجب المرجب	
۷	کتاب الصلوٰۃ	۲۶۹	۷	۱۴۱۵ھ / دسمبر ۱۹۹۴	۷۲۰
				محرم الحرام	
۸	کتاب الصلوٰۃ	۳۳۷	۶	۱۴۱۶ھ / جون ۱۹۹۵	۶۶۴
۹	کتاب الجنائز	۲۷۳	۱۳	ذیقعدہ ۱۴۱۶ / اپریل ۱۹۹۶	۹۴۶
				ربیع الاول	
۱۰	کتاب زکوٰۃ، صوم، حج	۳۱۶	۱۶	۱۴۱۷ھ / اگست ۱۹۹۶	۸۳۲
				محرم الحرام	
۱۱	کتاب النکاح	۴۵۹	۶	۱۴۱۸ھ / مئی ۱۹۹۷	۷۳۶
۱۲	کتاب نکاح، طلاق	۳۲۸	۳		۶۸۸

جلد	عنوان	جوابات اسئلہ	تعداد رسائل	سنین اشاعت	صفحات
				رجب المرجب ۱۴۱۸ھ / نومبر ۱۹۹۷	
۱۳	کتاب طلاق، ایمان اور حدود و تعزیر	۲۹۳	۲	ذیقعدہ ۱۴۱۸ھ / مارچ ۱۹۹۸	۶۸۸
۱۴	کتاب السیر (۱)	۳۳۹	۷	جمادی الاخریٰ ۱۴۱۹ھ / ستمبر ۱۹۹۸	۷۱۲
۱۵	کتاب السیر (ب)	۸۱	۱۵	محرم الحرام ۱۴۲۰ھ / اپریل ۱۹۹۹	۷۴۴
۱۶	کتاب الشرکۃ، کتاب الوقف	۴۳۲	۳	جمادی الاولیٰ ۱۴۲۰	ستمبر ۱۹۹۹
۱۷	کتاب البیوع، کتاب الحوالہ، کتاب الکفالہ	۱۵۳	۲	ذیقعدہ ۱۴۲۰	فروری ۲۰۰۰
۱۸	کتاب الشہادۃ، کتاب القضاء و الدعوی	۱۵۲	۲	ربیع الثانی ۱۴۲۱	جولائی ۲۰۰۰
۱۹		۲۹۶	۳		۶۹۲

جلد	عنوان	جوابات تعداد اسئلہ رسائل	سنین اشاعت	صفحات
	کتاب الوکالة، کتاب الاقرار، کتاب الصلح، کتاب المضاربة، کتاب الامانات، کتاب العاریة، کتاب الهبه، کتاب الاجارة، کتاب الاکراه، کتاب الحجر، کتاب الغصب		ذیقعده ۱۴۲۱ فروری ۲۰۰۱	

Volume 24

No.	Chapters	Pages	Parts	Date	Total
20	Kitab al-Shuf'a, Kitab al-Qisma, Kitab al-Muzara'a, Kitab al-Said wal-Dhaba'ih, Kitab al-Adhiya	334	3	Safar al-Muzaffar 1422 AH May 2001	632
21	Kitab al-Hazr wal-Ibaha (Part 1)	291	9	Rabi' al-Awwal 1423 AH May 2002	676
22	Kitab al-Hazr wal-Ibaha (Part 2)	241	6	Jumada al-Akhira 1423 AH August 2002	692
23	Kitab al-Hazr wal-Ibaha (Part 3)			Dhul-Hijjah 1423 AH February 2003	768

The order of chapters in the first eight volumes of the old Fatawa-e-Razvia is the same as mentioned in the well-known and current books of jurisprudence (fiqh) and fatwas. This order was maintained in the twenty (20) volumes published by the Raza Foundation. However, the arrangement of chapters in the remaining four published volumes of the old Fatawa-e-Razvia (volumes 9, 10, 11, and 12) is questionable due to its non-conformity with the standard order of fiqh chapters. Therefore, after consultation and inquiry with the Chief Patron of this institution, Muhsin Ahl-e-Sunnat Mufti-e-Azam Pakistan Hazrat Allama Maulana Mufti Muhammad Abdul Qayyum Hazarvi (may his glory increase) and other senior scholars and elders, the institution's members decided that the base for the order in future volumes would be the well-known order of fiqh chapters instead of following the old arrangement. Generally, in books of fiqh and fatwas, the title 'Kitab al-Hazr wal-Ibaha' is mentioned after 'Kitab al-Adhiya'. Since the twentieth volume published by our institution ended with 'Kitab al-Adhiya', the publication of issues concerning 'Hazr and Ibaha' began from the twenty-first (21st) volume. In this regard, the meticulous research of Bahr-ul-Uloom Hazrat Maulana Mufti Abdul Mannan Sahab Azmi (may his blessings be perpetual) is highly valued, and full benefit and guidance are being derived from it.

It should be remembered that the volume containing the title 'Kitab al-Hazr wal-Ibaha' in the old Fatawa-e-Razvia, which was published by Maktaba Raza Aiwan-e-Irfan Bhibalpur as volume ten and by Raza Academy Mumbai as volume nine, is unorganized and not categorized into chapters. The beginning and end of some treatises included in it are not distinct; some untitled treatises are included, while the

contents of some treatises are mentioned disparately instead of being unified. Despite the titles and issues in both parts included in this volume being similar, their lists were not integrated. Therefore, its arrangement and categorization into chapters was a particularly difficult and time-consuming matter. When the writer began working on it, placing trust in Allah, by the grace and mercy of Allah Almighty, the kind gaze of the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him), and the spiritual influence and miracle of Aala Hazrat (may mercy be upon him), beyond expectation even...

खंड २४

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ	भाग	तिथि	कुल
२०	किताब अल-शुफ़ा, किताब अल-क़िस्मा, किताब अल-मुज़ारा'आ, किताब अल-सैद वल-ज़बाइह, किताब अल-अधिया	३३४	३	सफ़र अल-मुज़फ़्फ़र १४२२ हिजरी मई २००१	६३२
२१	किताब अल-हज़र वल-इबाहा (भाग १)	२९१	९	रबीउल अव्वल १४२३ हिजरी मई २००२	६७६
२२	किताब अल-हज़र वल-इबाहा (भाग २)	२४१	६	जमादिल अख़िरा १४२३ हिजरी अगस्त २००२	६९२
२३	किताब अल-हज़र वल-इबाहा (भाग ३)			ज़ुल-हिज्जा १४२३ हिजरी फ़रवरी २००३	७६८

पुरानी फ़तावा-ए-रज़विया के पहले आठ खंडों के अध्यायों का क्रम वही है जो न्यायशास्त्र (फ़िक़्ह) और फ़तवे की प्रसिद्ध और प्रचलित पुस्तकों में वर्णित है। रज़ा फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित बीस (२०) खंडों में इसी क्रम का पालन किया गया है। लेकिन पुरानी फ़तावा-ए-रज़विया के शेष चार प्रकाशित खंडों (खंड ९, १०, ११ और १२) में अध्यायों की व्यवस्था फ़िक़्ह के अध्यायों के मानक क्रम के साथ गैर-अनुरूपता के कारण विचारणीय है। इसलिए, इस संस्था के मुख्य संरक्षक, मोहसिन अहले सुन्नत मुफ़्ती-ए-आज़म पाकिस्तान हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अब्दुल क़य्यूम हज़ारवी (अल्लाह उनकी महिमा बढ़ाए) और अन्य वरिष्ठ विद्वानों और बुजुर्गों से परामर्श और पूछताछ के बाद, संस्था के सदस्यों ने निर्णय लिया कि भविष्य में प्रकाशित होने वाले खंडों में पुरानी व्यवस्था के बजाय फ़िक़्ह के अध्यायों के प्रसिद्ध क्रम को आधार बनाया जाए। सामान्य तौर पर, फ़िक़्ह और फ़तावा की पुस्तकों में 'किताब अल-अधिया' के बाद 'किताब अल-हज़र वल-इबाहा' शीर्षक का उल्लेख किया जाता है। चूंकि हमारी संस्था द्वारा प्रकाशित बीसवें खंड का अंत 'किताब अल-अधिया' पर हुआ था, इसलिए इक्कीसवें (२१वें) खंड से 'हज़र और इबाहा' के मुद्दों का प्रकाशन शुरू किया गया। इस संबंध में बहरुल-उलूम हज़रत मौलाना मुफ़्ती अब्दुल मन्नान साहब आज़मी (अल्लाह उनकी बरकतें कायम

रखे) के सूक्ष्म शोध को अत्यंत मूल्यवान माना जाता है, और उससे भरपूर लाभ और मार्गदर्शन प्राप्त किया जा रहा है।

यह याद रखा जाना चाहिए कि पुरानी फ़तावा-ए-रज़विया का वह खंड जिसमें 'किताब अल-हज़र वल-इबाहा' शीर्षक शामिल है, जिसे मकतबा रज़ा ऐवान-ए-इरफ़ान भिलपुर ने खंड दस के रूप में और रज़ा अकादमी मुंबई ने खंड नौ के रूप में प्रकाशित किया था, वह अव्यवस्थित और अध्यायों में वर्गीकृत नहीं है। इसमें शामिल कुछ शोध-पत्रों (रिसालों) की शुरुआत और अंत स्पष्ट नहीं है; कुछ अनाम शोध-पत्र शामिल हैं, जबकि कुछ शोध-पत्रों की सामग्री एक साथ होने के बजाय बिखरी हुई है। इस खंड में शामिल दोनों भागों के शीर्षक और मुद्दे समान होने के बावजूद, उनकी सूचियों को एकीकृत नहीं किया गया था। इसलिए, इसका आयोजन और अध्यायों में वर्गीकरण एक विशेष रूप से कठिन और समय लेने वाला मामला था। जब लेखक ने अल्लाह पर भरोसा करते हुए इस पर काम करना शुरू किया, तो सर्वशक्तिमान अल्लाह के अनुग्रह और दया, अल्लाह के रसूल (शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की दयालु दृष्टि, और आला हज़रत (उन पर दया हो) के आध्यात्मिक प्रभाव और चमत्कार के कारण, उम्मीद से भी अधिक...

पेज 8/720

جلد ۲۴

نمبر شمار	ابواب	صفحات	رسائل	تاریخ	کل
۲۰	کتاب الشفعہ، کتاب القسمہ، کتاب المزارعہ، کتاب الصید والذبائح، کتاب الاضحیہ	۳۳۴	۳	صفر المظفر ۱۴۲۲ھ مئی ۲۰۰۱ء	۶۳۲
۲۱	کتاب الحظر والاباحۃ (حصہ اول)	۲۹۱	۹	ربیع الاول ۱۴۲۳ھ مئی ۲۰۰۲ء	۶۷۶
۲۲	کتاب الحظر والاباحۃ (حصہ دوم)	۲۴۱	۶	جمادی الاخری ۱۴۲۳ھ اگست ۲۰۰۲ء	۶۹۲
۲۳	کتاب الحظر والاباحۃ (حصہ سوم)			ذوالحجہ ۱۴۲۳ھ فروری ۲۰۰۳ء	۷۶۸

فتاویٰ رضویہ قدیم کی پہلی آٹھ جلدوں کے ابواب کی ترتیب وہی ہے جو معروف و متداول کتب فقہ و فتاویٰ میں مذکور ہے۔ رضا فاؤنڈیشن کی طرف سے شائع ہونے والی بیس ۲۰ جلدوں میں اسی ترتیب کو ملحوظ رکھا گیا ہے۔ مگر فتاویٰ رضویہ قدیم کی بقیہ چار مطبوعہ (جلد نہم، دہم، یاز دہم، دواز دہم) کی ترتیب ابواب فقہ سے عدم مطابقت کی وجہ سے محل نظر ہے۔ چنانچہ ادارہ ہذا کے سر پرست اعلیٰ محسن اہلسنت مفتی اعظم پاکستان حضرت علامہ مولانا مفتی محمد عبدالقیوم ہزاروی صاحب زید مجدہ اور دیگر اکابر علماء و مشائخ سے استشارہ و استفسار کے بعد اراکین ادارہ نے فیصلہ کیا کہ آئندہ شائع ہونے والی جلدوں میں فتاویٰ رضویہ کی قدیم جلدوں کی ترتیب

کے بجائے ابواب فقہ کی معروف ترتیب کو بنیاد بنایا جائے، عام طور پر فقہ و فتاویٰ رضویہ کی کتب میں کتاب الاضحیہ کے بعد کتاب الحظر والاباحۃ کا عنوان ذکر کیا جاتا ہے اور ہمارے ادارے سے شائع شدہ بیسویں جلد کا اختتام چونکہ کتاب الاضحیہ پر ہوا لہذا اکیسویں ۲۱ جلد سے مسائل حظر و اباحت کی اشاعت کا آغاز کیا گیا۔ اس سلسلہ میں بحر العلوم حضرت مولانا مفتی عبدالمنان صاحب اعظمی دامت برکاتہم العالیہ کی تحقیق انیق کو انتہا قدر کی نگاہ سے دیکھتے ہوئے اس سے بھر پور استفادہ اور رہنمائی حاصل کر رہے ہیں۔

یادرہے کہ فتاویٰ رضویہ قدیم جلد میں کتاب الحظر والاباحۃ کے عنوان پر مشتمل جلد جس کی مکتبہ رضا ایوان عرفان بہیبلپور نے جلد دہم اور رضا اکیڈمی بمبئی نے جلد نہم کے نام سے شائع کیا ہے وہ غیر مرتب اور غیر مبوب ہے اس میں شامل بعض رسائل کی ابتداء و انتہا ممتاز نہیں، کچھ رسائل بے نام شامل ہیں جبکہ بعض رسالوں کے مندرجات یکجا ہونے کی بجائے متفرق منتشر طور پر مذکور ہیں اس جلد میں شامل دونوں حصوں کے عنوانات و مسائل ایک جیسے ہونے کے باوجود دونوں کی فہرست یکجا نہیں کی گئی۔ لہذا اس کی ترتیب و تبویب خاصا مشکل اور وقت طلب معاملہ تھا۔ راقم نے متوکلاً علی اللہ اس پر کام شروع کیا تو اللہ تعالیٰ کے فضل و کرم، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی نظر عنایت اور اعلیٰحضرت علیہ الرحمتہ کے روحانی تصرف و کرامت کے صدقے میں توقع سے بھی

Fatawa Razawiyyah, Volume 24

This work reached completion in a short time. Praise be to Allah for that. In the new arrangement of the "Book of Prohibition and Permissibility" (Kitab al-Hazr wa al-Ibahah), we have particularly kept the following matters in mind: (a) The issues from both printed parts of the old Fatawa Razawiyyah related to prohibition and permissibility have been categorized together based on the problems mentioned in the queries (istifta). (b) In cases where issues related to different chapters are mentioned in a single query, each issue has been listed under its relevant chapter along with the name of the questioner. (c) Issues included in the "Book of Prohibition and Permissibility" of the old Fatawa Razawiyyah have been placed under relevant chapters according to their titles. (d) The beginning and end of the treatises (rasail) have been distinguished. (e) Titles have been provided for untitled treatises. (f) Contents and components of treatises that were not gathered together have been consolidated. (g) Some of A'la Hazrat's treatises related to prohibition and permissibility, which could not be included in the old Fatawa Razawiyyah, have also been included at appropriate places. (h) After the new categorization, the present arrangement became different from the previous one. Therefore, a complete index of the entire book had to be prepared anew according to the present chapters. (i) A detailed list of contents of all treatises included in this volume has been compiled. (j) A'la Hazrat (may Allah have mercy on him), while discussing at certain points, brings under discussion such issues in view of his profound knowledge that could not be listed under any of the relevant chapters. For such issues, we have compiled a separate list after the detailed index under the title "Subsidiary Issues" (Zimni Masail).

Translator of the Book of Prohibition and Permissibility Except for those treatises which have been newly included in the Fatawa, the complete translation of Arabic and Persian passages of the entire "Book of Prohibition and Permissibility" has been done by the gatherer of the transmitted and rational sciences, the noble scholar, famous researcher, author of numerous books, pride of teachers, Hazrat Maulana Allama Mufti Qazi Muhammad Saif-ur-Rahman Sahib (may his blessings be perpetual), who is the student of the teacher of teachers, Hazrat Allama Maulana Muhammad Abdul Subhan bin Maulana Mazhar Jamil bin Maulana Mufti Muhammad Ghous (Khalabat, Hazara).

फ़तावा रज़विया, खंड 24

यह कार्य कम समय में पूर्णता तक पहुँच गया। इसके लिए अल्लाह का शुक्र है। "किताब अल-हज़्र वल-इबाहत" (निषेध और अनुमेयता की पुस्तक) की नई व्यवस्था में, हमने विशेष रूप से निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा है: (क) पुराने फ़तावा रज़विया के दोनों मुद्रित भागों से निषेध और अनुमेयता से संबंधित मुद्दों को प्रश्नों (इस्तिफ़ता) में उल्लिखित समस्याओं के आधार पर एक साथ वर्गीकृत किया गया है। (ख) एक ही प्रश्न में विभिन्न अध्यायों से संबंधित मुद्दों के उल्लेख की स्थिति में, प्रत्येक मुद्दे को प्रश्नकर्ता के नाम के साथ संबंधित अध्याय के तहत सूचीबद्ध किया गया है। (ग) पुराने फ़तावा रज़विया की "किताब अल-हज़्र वल-इबाहत" में शामिल मुद्दों को उनके शीर्षकों के अनुसार संबंधित अध्यायों में रखा गया है। (घ) ग्रंथों (रसाइल) की शुरुआत और अंत को स्पष्ट किया गया है। (ङ) बिना नाम वाले ग्रंथों के नाम प्रकट किए गए हैं। (च) जिन ग्रंथों की सामग्री और घटक एक साथ नहीं थे, उन्हें एकत्र कर दिया गया है। (छ) निषेध और अनुमेयता से संबंधित आला हज़रत के कुछ ग्रंथ जो पुराने फ़तावा रज़विया में शामिल नहीं हो सके थे, उन्हें भी उपयुक्त स्थानों पर शामिल कर दिया गया है। (ज) नई श्रेणीबद्धता के बाद, वर्तमान व्यवस्था पिछली व्यवस्था से भिन्न हो गई, इसलिए वर्तमान अध्यायों के अनुसार पूरी पुस्तक की एक नई विस्तृत सूची तैयार करनी पड़ी। (झ) इस खंड में शामिल सभी ग्रंथों की सामग्री की एक विस्तृत सूची संकलित की गई है। (ञ) आला हज़रत (रहमतुल्लाही अलैहि), कुछ स्थानों पर चर्चा करते हुए, अपने गहरे ज्ञान के आधार पर ऐसे मुद्दों को भी चर्चा में लाते हैं जो संबंधित अध्यायों में से किसी के तहत सूचीबद्ध नहीं किए जा सकते थे। ऐसे मुद्दों के लिए हमने विस्तृत सूची के बाद "सहायक मुद्दे" (ज़िम्मी मसाइल) के शीर्षक के तहत एक अलग सूची संकलित की है।

किताब अल-हज़्र वल-इबाहत के अनुवादक उन ग्रंथों को छोड़कर जिन्हें अब फ़तावा में नए सिरे से शामिल किया गया है, पूरी "किताब अल-हज़्र वल-इबाहत" के अरबी और फारसी अंशों का पूर्ण अनुवाद जामे मनकुल व माकुल, फाज़िल जलील, प्रसिद्ध शोधकर्ता, अनेक पुस्तकों के लेखक, शिक्षकों के गौरव, हज़रत मौलाना अल्लामा मुफ्ती काज़ी मोहम्मद सैफ-उर-रहमान साहब (दामत बरकातुहुमुल आलिया) ने किया है, जो उस्ताज़-उल-असातिज़ा हज़रत अल्लामा मौलाना मोहम्मद अब्दुल सुभान बिन मौलाना मज़हर जमील बिन मौलाना मुफ्ती मोहम्मद गौस (खलाबत, हज़ारा) के [शिष्य हैं]।

पृष्ठ 9/720

کم وقت میں یہ کام پایہ تکمیل کو پہنچ گیا۔ الحمد للہ علی ذلک۔ کتاب الحظر والاباحۃ کی ترتیب جدید میں ہم نے جن امور کو بطور خاص ملحوظ رکھا ہے وہ مندرجہ ذیل ہیں۔ (ا) حظر و اباحت سے متعلق فتاویٰ رضویہ قدیم کے دونوں مطبوعہ حصوں کی (استفتاء میں مذکور) مسائل کے اعتبار سے یکجا تبویب کردی ہے۔ (ب) ایک ہی استفتاء میں مختلف ابواب سے متعلق مسائل مذکور ہونے کی صورت میں ہر مسئلہ کو مستفتی کے نام سمیت متعلقہ باب کے تحت درج کیا ہے۔ (ج) فتاویٰ رضویہ قدیم کی کتاب الحظر والاباحۃ میں شامل مسائل کو ان کے عنوانات کے مطابق متعلقہ ابواب کے تحت داخل کردیا ہے۔ (د) رسائل کی ابتداء وانتہاء کو ممتاز کیا ہے۔ (ھ) بے نام رسائل کے ناموں کو ظاہر کیا ہے۔ (و) جن رسائل کے مندرجات و مشمولات یکجا نہ تھے ان کو اکٹھا کردیا ہے۔ (ز) حظر و اباحت سے متعلقہ بعض رسائل الحٰحضرت جو فتاویٰ رضویہ قدیم میں شامل نہ ہوسکے تھے ان کو بھی مناسب جگہ پر شامل اشاعت کردیا ہے۔ (ح) تبویب جدید کے بعد موجودہ ترتیب سابق ترتیب سے مختلف ہوگئی ، لہذا پوری کتاب کی مکمل فہرست موجودہ ابواب کے مطابق نئے سرے سے تیار کرنا پڑی۔ (ط) جلد ہذا میں شامل تمام رسائل کے مندرجات کی مفصل فہرست مرتب کی گئی۔ (ی) الحٰحضرت رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ بعض مقامات پر گفتگو کرتے ہوئے اپنے تبحر علمی کے پیش نظر ایسے مسائل بھی زیر بحث لے آتے ہیں جو متعلقہ ابواب میں سے کسی کے تحت مندرج نہیں ہوسکے ایسے مسائل کے لئے مفصل فہرست کے بعد ہم نے ضمنی مسائل کے عنوان سے الگ فہرست مرتب کی ہے۔ **کتاب الحظر والاباحۃ کے مترجم** سوائے ان رسائل کے جن کو اب فتاویٰ میں نئے سرے سے شامل کیا گیا ہے پوری "کتاب الحظر والاباحۃ" کی عربی اور فارسی عبارات کا مکمل ترجمہ جامع منقول و معقول، فاضل جلیل، محقق شہیر،

مصنف کتب کثیرہ، فخر المدرسین حضرت مولانا علامہ مفتی قاضی محمد سیف الرحمن صاحب دامت برکاتہم العالیہ نے کیا ہے جو استاذ الاساتذہ حضرت علامہ مولانا محمد عبدالسبحان بن مولانا مظہر جمیل بن مولانا مفتی محمد غوث (کھلا بٹ، ہزارہ) کے

Fatawa Razawiyyah Volume 24

He is the grandson of the son of the master of teachers, Sheikh al-Hadith and al-Tafsir Hazrat Maulana Muhammad Khalil Sahib Muhaddith Hazarwi. You studied all the academic courses from your respected father. Immediately after graduating, you became associated with teaching and for many years performed the duties of teaching as Sheikh al-Hadith in the famous institution of Ahl al-Sunnah, Jamia Rahmaniya Haripur. Your ancestors performed the duty of establishing truth and nullifying falsehood openly and courageously. Accordingly, many academic and non-academic compositions of your respected father Hazrat Maulana Qazi Muhammad Abdus Subhan Sahib and elder brother Hazrat Maulana Qazi Ghulam Mahmood Sahib (may Allah have mercy on them both) are well-known among the people of knowledge. The services of these elders in debate and refutation of bad innovations, especially the refutation of Wahhabism, are viewed with great respect among the Ahl al-Sunnah wal Jama'at.

Twenty-fourth Volume This volume is the fourth part of "Kitab al-Hazr wal-Ibaha" (The Book of Prohibition and Permission), which contains answers to 284 questions and consists of a total of 720 pages. The main chapters discussed in this volume are: Amusement and play, enjoining good and forbidding evil, illness and treatment, companionship and association, love and enmity, lying, backbiting and breach of promise, oppression and causing pain, separation and cutting of ties, claims, adjudication, testimony, good conduct, rights of people, mourning, wailing and lamentation, Tazia-dari (observing Muharram rituals), imitation of others, hookah and betel leaf, imagery, raising animals, naming, correspondence, and politics. Numerous issues related to many other chapters have been discussed incidentally. Therefore, for the convenience of readers, the author has prepared a separate list of incidental issues in addition to the detailed list of main issues and treatises. Furthermore, if issues related to independent chapters included in this volume were incidentally listed under each other, we have mentioned them at the end of the list of the relevant chapter as an appendix so that no difficulty or ambiguity arises in searching for those issues.

The following nine (9) treatises, consisting of extremely valuable and profound investigations and research, also grace this volume: (1) Al-Haq al-Mujtala fi Hukm al-Mubtala (1322 AH) A description of the reward for sitting with a leper and serving and caring for them. (2) Taysir al-Ma'un lil-Sukun fi al-Ta'un (1325 AH) The Sharia ruling regarding the residents of a place where the plague has broken out.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

वे उस्तादों के उस्ताद, शैखुल हदीस वत्तफ्सीर हज़रत मौलाना मुहम्मद खलील साहब मुहद्दिस हज़ारवी के नवासे हैं। आपने तमाम दरसियात अपने वालिद-ए-गिरामी से पढ़ीं। फ़ारिग-उत-तहसील (स्नातक) होते ही दरस-ओ-तदरीस (शिक्षण) से वाबस्ता हो गए और कई वर्षों तक आपने अहल-ए-सुन्नत के मशहूर इदारे जामिया रहमानिया हरिपुर में बतौर शैखुल हदीस तदरीसी फ़रायज़ अंजाम दिए। आपके आबा-ओ-अजदाद ने डंके की चोट पर अहक़ाक़-ए-हक़ (सत्य की स्थापना) और इब्ताल-ए-बातिल (असत्य का खंडन) का फ़रीज़ा अंजाम दिया। चुनाँचे आपके वालिद-ए-गिरामी हज़रत मौलाना क़ाज़ी मुहम्मद अब्दुस सुभान साहब और बड़े भाई हज़रत मौलाना क़ाज़ी गुलाम महमूद साहब (रहमतुल्लाह अलैहिमा) की कई दरसी और ग़ैर-दरसी तसानीफ़ (रचनाएँ) अर्बाब-ए-इल्म (विद्वानों) में प्रसिद्ध हैं। मुनाज़रा और रद-ए-बद-मज़हबिया ख़सूसन रद-ए-वहाबिया में इन बुज़ुर्गों की ख़िदमात को अहल-ए-सुन्नत व जमाअत में अत्यंत कद्र की निगाह से देखा जाता है।

चौबीसवीं जिल्द यह जिल्द "किताब अल-हज़र वल-इबाहत" का चौथा हिस्सा है जो 284 सवालों के जवाबों और कुल मिलाकर 720 पृष्ठों पर आधारित है। इस जिल्द में मुख्य रूप से जिन अध्यायों पर चर्चा की गई है वे ये हैं: खेल-कूद (लह्व-ओ-लाअब), अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर (नेकी का हुक्म और बुराई से रोकना), बीमारी और इलाज, सोहबत और मुवालात (साथ और मित्रता), मुहब्बत और अदावत, झूठ, ग़ीबत और वादे की खिलाफ़वर्ज़ी, ज़ुल्म और ईज़ा, हिजरान और क़त्-ए-ताल्लुक़ (अलगाव), दावा, कज़ा (न्याय), शहादत, हुस्न-ए-सुलूक (अच्छा व्यवहार), हुक़ूक़-उल-इबाद (मानवाधिकार), सोग और नोह-ओ-जज़-ओ-फ़ज़ (शोक और विलाप), ताज़िया दारी, गैरों की नक़ल (तशब्बुह बिल-गैर), हुक्का और पान, तस्वीर, जानवरों का पालन, नाम रखना, ख़त-ओ-किताबत और सियासत (राजनीति)। अन्य कई अध्यायों से संबंधित अनेक मसलों पर प्रसंगवश चर्चा हुई है, इसलिए लेखक ने पाठकों की सुविधा के लिए मसलों और रसाएल (पुस्तिकाओं) की विस्तृत सूची के अलावा प्रासंगिक मसलों की एक अलग सूची भी तैयार कर दी है। इसके अलावा इस जिल्द में शामिल स्वतंत्र अध्यायों से संबंधित मसले यदि कहीं एक-दूसरे के अंतर्गत प्रसंगवश दर्ज थे, तो उनकी सूची हमने संबंधित अध्याय की सूची के अंत में परिशिष्ट के रूप में दे दी है ताकि उन मसलों को खोजने में कठिनाई या भ्रम पैदा न हो।

अत्यंत महत्वपूर्ण और मूल्यवान शोध एवं अनुसंधान पर आधारित निम्नलिखित नौ (9) रसाएल (पुस्तिकाएं) भी इस जिल्द की शोभा हैं: (1) अल-हक़ अल-मुज्तला फ़ी हुक्म अल-मुब्तला (1322

हिजरी) कुष्ठ रोगी के पास उठने-बैठने और उसकी सेवा और देखभाल करने के कारण सवाब मिलने का वर्णन। (2) तयसीर अल-माऊन लिल-सुकून फ़ी अल-ताऊन (1325 हिजरी) जहाँ ताऊन (प्लेग) की बीमारी पैदा हो जाए वहाँ के निवासियों से संबंधित शरई हुक्म।

पृष्ठ 10/720

صاحبزادے اور استاذالاساتذہ شیخ الحدیث والتفسیر حضرت مولانا محمد خلیل صاحب محدث ہزاروی کے نواسے ہیں، آپ نے تمام درسیات اپنے والد گرامی سے پڑھیں فارغ التحصیل ہوتے ہی درس وتدریس سے وابستہ ہو گئے اور سالہا سال آپ نے اہلسنت کے معروف ادارے جامعہ رحمانیہ ہری پور میں بطور شیخ الحدیث تدریسی فرائض سرانجام دئے، آپ کے آباء واجداد نے ڈنکے کی چوٹ پر احقاقِ حق اور ابطالِ باطل کا فریضہ سرانجام دیا، چنانچہ آپ کے والد گرامی حضرت مولانا قاضی محمد عبد السبحان صاحب اور برادر اکبر حضرت مولانا قاضی غلام محمود صاحب رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہما کی متعدد درسی و غیر درسی تصانیف اربابِ علم میں معروف ہیں۔ مناظرہ و ردِ بد مذہبیہ بالخصوص ردِ وہابیہ میں ان بزرگوں کی خدمات کو اہل سنت و جماعت میں انتہائی قدر کی نگاہ سے دیکھا جاتا ہے۔

چوبیسویں جلد یہ جلد "کتاب الحظر والاباحۃ" کا چوتھا حصہ ہے جو ۲۸۴ سوالوں کے جوابات اور مجموعی طور پر ۷۲۰ صفحات پر مشتمل ہے، اس جلد میں بنیادی طور پر جن ابواب کو زیرِ بحث لایا گیا ہے وہ یہ ہیں: لہو ولعب، امر بالمعروف و نہی عن المنکر، بیماری وعلاج، صحبت وموالات، محبت وعداوت، جھوٹ وغیبت وبد عہدی، ظلم وایذا، ہجران و قطع تعلق، دعویٰ، قضاء، شہادت، حسن سلوک، حقوق العباد، سوگ و نوحہ وجزع وفزع، تعزیہ داری، تشبہ بالغیر، حقہ وپان، تصویر، جانوروں کی پرورش، نام رکھنا، خط وکتابت اور سیاسیات۔ دیگر کئی ایک ابواب سے متعلق مسائل کثیرہ پر ضمناً گفتگو واقع ہوئی لہٰذا راقم الحروف نے مسائل ورسائل کی مفصل فہرست کے علاوہ مسائل ضمنیہ کی الگ فہرست بھی قارئین کی سہولت کے لئے تیار کر دی ہے نیز اس جلد میں شامل مستقل ابواب سے متعلق مسائل اگر کہیں ایک دوسرے کے تحت ضمناً مندرج

تھے تو ان کی فہرست ہم نے متعلقہ باب کی فہرست کے آخر میں بطور ضمیمہ ذکر کر دی ہے تاکہ ان مسائل کی تلاش میں دقت وابہام پیدا نہ ہو۔

انتہائی وقیع اور گرانقدر تحقیقات وتدقیقات پر مشتمل مندرجہ ذیل نو ۹ رسائل بھی اس جلد کی زینت ہیں: (۱) الحق المجتلی فی حکم المبتلی (۱۳۲۲ھ) جذامی کے پاس اٹھنے بیٹھنے اور اس کی خدمت گزاری و تیمارداری کے باعث ثواب ہونے کا بیان۔ (۲) تیسیر الماعون للسکن فی الطاعون (۱۳۲۵ھ) جہاں طاعون کا مرض پیدا ہو جائے وہاں کے باشندوں سے متعلق حکم شرعی۔

Fatawa Razawiya Volume 24

(3) Mash'alatul Irshad ila Huquq al-Awlad (1310 AH) Description of the rights of children over parents.

(4) A'jabul Imdad fi Mukaffirat Huquq al-Ibad (1310 AH) Definition and importance of the rights of servants (human rights) and methods to obtain release from them.

(5) Al-Ataya al-Qadir fi Hukm at-Taswir (1331 AH) Shariah ruling on keeping pictures of elders in the house for blessings (Tabarruk).

(6) Masail-e-Sama (1320 AH) Shariah ruling on gatherings of music and delight among modern-day Sufis, featuring various kinds of melodies, dances, and musical instruments.

(7) Al-Huquq li Tarh al-Uquq (1307 AH) Details of the rights of parents, spouses, and teachers, and the methods for fulfilling them.

(8) A'la al-Ifada fi Ta'ziyat al-Hind wa Bayan al-Shahadah (1321 AH) Description of the prohibition of Ta'ziyah, the ban on distributing public meals (Langar) in markets, and the Shariah ruling on the mourning gatherings (Majalis-e-Marsiya) of the Shiites.

(9) An-Noor wad-Diya fi Ahkam Ba'd al-Asma (1320 AH) Description of the rulings regarding good and bad names.

Among these, the first five mentioned treatises were already included in the book 'Al-Hazr wal-Ibaha' of the old Fatawa Razawiya. The remaining treatises have been included now.

Dhu al-Hijjah 1423 AH February 2003 AD

Hafiz Muhammad Abdul Sattar Sa'idi Director of Education, Jamia Nizamia Razawiya, Lahore

Page 11 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

(3) मशअलतुल इरशाद इला हुकूक अल-औलाद (1310 हिजरी) माता-पिता पर बच्चों के अधिकारों का वर्णन।

(4) अजबुल इमदाद फी मुकफ्फिरात हुकूक अल-इबाद (1310 हिजरी) बंदों के अधिकारों (हुकूक अल-इबाद) की परिभाषा और उनके महत्व का वर्णन और उनसे छुटकारा पाने के तरीके।

(5) अल-अताया अल-कादिर फी हुक्म अत-तस्वीर (1331 हिजरी) बुजुर्गों की तस्वीरें बरकत (तबर्रुक) के तौर पर घर में रखने का शरीअत का हुक्म।

(6) मसाइल-ए-समाअ (1320 हिजरी) वर्तमान समय के सूफियों की समाअ और सुरूर (संगीत) की सभाओं का शरीअत का हुक्म, जिनमें राग, नृत्य और हर प्रकार के संगीत वाद्ययंत्र होते हैं।

(7) अल-हुकूक ली तरह अल-उकूक (1307 हिजरी) माता-पिता, पति-पत्नी और शिक्षकों के अधिकारों का विवरण और उनके भुगतान के तरीके।

(8) आला अल-इफादा फी ताजियत अल-हिंद व बयान अल-शहादत (1321 हिजरी) ताज़िया की हुरमत (निषेध), सरेआम लंगर लुटाने की मनाही और शियाओं की मरसिया मजलिसों के शरीअत के हुक्म का वर्णन।

(9) अन-नूर वद-दिया फी अहकाम बाद अल-अस्मा (1320 हिजरी) अच्छे और बुरे नामों के हुक्म का वर्णन।

इनमें से पहले पांच उल्लेखित रिसाले (लेख) पुराने फ़तावा रज़विया की किताब 'अल-हज़र वल-इबाहा' में पहले से शामिल थे। जबकि शेष रिसाले अब शामिल किए गए हैं।

ज़ुल-हज्जा 1423 हिजरी फ़रवरी 2003 ईस्वी

हाफ़िज़ मोहम्मद अब्दुल सत्तार सईदी नाज़िम-ए-तालीम (शिक्षा निदेशक) जामिया निज़ामिया रज़विया, लाहौर।

पेज 11 of 720

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۴

(۳) مشعلة الارشاد الی حقوق الاولاد (۱۳۱۰ھ) والدین پر اولاد کے حقوق کا بیان۔

(۴) اعجب الامداد فی مکفرات حقوق العباد (۱۳۱۰ھ) حقوق العباد کی تعریف اور ان کی اہمیت کا بیان اور ان سے چھٹکارا حاصل کرنے کے طریقے۔

(۵) العطایا القدیر فی حکم التصویر (۱۳۳۱ھ) بزرگوں کی تصاویر بطور تبرک گھر میں رکھنے کا حکم شرعی۔

(۶) مسائل سماع (۱۳۲۰ھ) متصوفہ زمانہ کی مجلس سماع و سرور کا شرعی حکم جس میں راگ و رقص و مزامیر اور معازف ہر قسم کے ہوتے ہیں۔

(۷) الحقوق لطرح العقوق (۱۳۰۷ھ) والدین، زوجین اور اساتذہ کے حقوق کی تفصیل اور ان کی ادائیگی کے طریقے۔

(۸) اعلی الافادة فی تعزیة الهند و بیان الشهادة (۱۳۲۱ھ) تعزیہ کی حرمت، سر بازار لنگر لٹانے کی ممانعت اور اہل تشیع کی مجالس مرثیہ کے حکم شرعی کا بیان۔

(۹) النور والضیاء فی احکام بعض الاسماء (۱۳۲۰ھ) اچھے اور برے ناموں کے احکام کا بیان۔

ان میں سے مقدم الذکر پانچ رسالے پہلے سے فتاویٰ رضویہ قدیم کی کتاب الحظر والاباحۃ میں شامل تھے۔ جبکہ باقی رسائل اب شامل کئے گئے ہیں۔

ذوالحجہ ۱۴۲۳ھ فروری ۲۰۰۳ء

حافظ محمد عبدالستار سعیدی ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ ، لاہور

Fatawa Ridawiyya, Volume 24 Detailed Table of Contents Amusement and Play (Games, shows, fairs, humor, dancing, singing, Qawwali, musical instruments, melody, music, etc.)

Page	Topic	Page
75	The drum of Jihad, the drum for Suhoor, the horn of the bathhouse, and the plain def (tambourine) without bells for the announcement of marriage is permissible.	80
75	How is playing Ganjifa, Chaupar, and Chess according to Sharia?	80
75	Justification for some servants of God taking steps towards musical instruments.	80
75	Noble Hadiths regarding the impermissibility of Chaupar.	81
75	Investigation and research by the author (I say).	81
76	Juristic rulings are based on dominant circumstances.	83
76	Some forms of pure listening (Sama) without musical instruments.	83
77	Statements of scholars regarding the prohibition of Chaupar and Chess.	84
77	Good singing is permissible for the people of Allah with some conditions.	84
78	Every game is disliked (Makruh) except for three.	84
78	Singing does not create anything new but stirs up hidden feelings.	84
78	Is making or listening to melodies and musical instruments a major or minor sin, and is the perpetrator a transgressor (Fasiq) or not?	84
78	Which listening (Sama) is permissible and in which is there a dispute?	84
79	Attributing musical instruments to the great elders of the noble Chishti order is purely false.	84
79	How is it to have poems of praise for Allah (Hamd) and Prophet (Na'at) recited by men and women? The author's refined research.	84
79	Sayings of Chishti elders regarding musical instruments.	85
79	Setting up a pulpit in the Sacred Mosque for Hassan bin Thabit (may Allah be pleased with him) and the listening of Na'at.	85

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 24 विस्तृत विषय सूची आमोद-प्रमोद (खेल, तमाशा, मेला, मज़ाक, नाच, गाना, कव्वाली, वाद्ययंत्र, राग, संगीत आदि)

पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
75	जिहाद का ढोल, सहरी का नगाड़ा, हमाम का बिगुल और निकाह के एलान के लिए बिना झांझ वाला डफ जायज़ है।	80
75	गन्जीफ़ा, चौपड़ और शतरंज खेलना शरिया के अनुसार कैसा है?	80
75	ईश्वर के कुछ बंदों द्वारा वाद्ययंत्रों की ओर कदम बढ़ाने का औचित्य।	80
75	चौपड़ की मनाही के बारे में पवित्र हदीसें।	81
75	लेखक (मैं कहता हूँ) द्वारा शोध और विश्लेषण।	81
76	न्यायशास्त्रीय (फ़िक़्ही) नियम प्रबल परिस्थितियों पर आधारित होते हैं।	83
76	बिना वाद्ययंत्रों के विशुद्ध सुनने (समा) के कुछ रूप।	83
77	चौपड़ और शतरंज की मनाही के संबंध में विद्वानों के कथन।	84
77	कुछ शर्तों के साथ अल्लाह वालों के लिए अच्छा गाना जायज़ है।	84
78	तीन के अलावा हर खेल मकरूह (नापसंद) है।	84
78	गाना कुछ नया पैदा नहीं करता बल्कि दबी हुई बात को उभारता है।	84
78	राग और वाद्ययंत्र बजवाना या सुनना गुनाह-ए-कबीरा है या सगीरा, इस कार्य को करने वाला फासिक है या नहीं?	84
78	कौन सा समा (सुनना) जायज़ है और किसमें विवाद है?	84
79	वाद्ययंत्रों का संबंध चिश्ती सिलसिले के बड़े बुज़ुर्गों से जोड़ना पूर्णतः निराधार है।	84
79	पुरुषों और महिलाओं से हम्द और नात के शेर पढ़वाना कैसा है? लेखक का सूक्ष्म शोध।	84
79	वाद्ययंत्रों के बारे में चिश्ती बुज़ुर्गों के कथन।	85
79	हज़रत हस्सान बिन साबित (रज़ियल्लाहु अन्हु) के लिए मस्जिद-ए-नबवी में मिम्बर बिछाना और नात सुनना।	85

पृष्ठ 720 का 12

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۴ فہرست مضامین مفصل لہو ولعب (کھیل، تماشہ، میلہ، مزاح، ناچ، گانا، قوالی، مزامیر، راگ، موسیقی وغیرہ)

صفحہ	مضمون	صفحہ
۷۵	جہاد کا طبل، سحری کا نقارہ، حمام کا بوق اور اعلانِ نکاح کا بے جلا جل دف جائز ہے۔	۸۰
۷۵	گنجفہ، چوسر اور شطرنج کھیلنا شرعاً کیسا ہے۔	۸۰
۷۵	بعض بندگانِ خدا کی طرف سے مزامیر پر اقدام کی توجیہ۔	۸۰
۷۵	چوسر کے عدمِ جواز کے بارے میں احادیثِ کریمہ۔	۸۱
۷۵	مصنف علیہ الرحمہ کی تحقیق وتدقیق (اقول)۔	۸۱
۷۶	فقہی احکام غالب حالات پر مبنی ہوتے ہیں۔	۸۳
۷۶	سماعِ مجرد بے مزامیر کی چند صورتیں۔	۸۳
۷۷	چوسر و شطرنج کی ممانعت سے متعلق عباراتِ علماء۔	۸۴
۷۷	اچھا گانا کچھ شرائط کے ساتھ اہلِ اللہ کے حق میں جائز ہے۔	۸۴
۷۸	ہر کھیل مکروہ ہے سوائے تین کے۔	۸۴
۷۸	گانا کوئی نئی چیز پیدا نہیں کرتا بلکہ دبی بات کو ابھارتا ہے۔	۸۴
۷۸	راگ اور مزامیر کرانا یا سننا گناہِ کبیرہ ہے یا صغیرہ، اس فعل کا مرتکب فاسق ہے یا نہیں۔	۸۴
۷۸	کونا سماع جائز ہے اور کس میں نزاع ہے۔	۸۴

صفحہ مضمون	صفحہ
۷۹ مزامیر کی نسبت کبرائے سلسلہ عالیہ چشت کی طرف کرنا محض باطل ہے۔	۸۴
۷۹ حمد و نعت کے اشعار مردوں اور عورتوں سے پڑھوانا کیسا ہے، مصنف کی نفیس تحقیق۔	۸۴
۷۹ چشتی بزرگوں کے ارشادات درباره مزامیر۔	۸۵
۷۹ حسان بن ثابت رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے لئے مسجدِ اقدس میں منبر کا بچھایا جانا اور نعت کا سنانا۔	۸۵

Fatawa Rizvia, Volume 24

Page No. | Sub-Topic / Details | Serial No. | Main Topic / Question 92 | Identification of true ecstasy and its conditions. | 85 | The Holy Prophet (peace and blessings be upon him) did not forbid the Hudi (camel-driving song) of Anjasha (may Allah be pleased with him). 92 | References from the books of Jurists. | 85 | It is permissible to play a drum or tambourine to gather people for sermons etc. 100 | What is meant by 'turning away from remembrance' in the noble verse "And whoever turns away from My remembrance"? | 86 | What is the ruling on someone who claps and chants "Allah Allah" in a circle of dancing and swaying, and who taunts those who dislike this style of remembrance for turning away, and who disparages Tafsir Jalalayn calling it merely an apparent commentary? 101 | Ibn Mas'ud (may Allah be pleased with him) expelled those who were chanting loudly from the mosque. | 87 | If a circle of remembrance is not for show or to be heard but purely for the sake of Allah, it is a beloved matter. 101 | The person who applies the noble verse "And whoever turns away from My remembrance" to those who leave a gathering of remembrance involving dancing, swaying, and clapping, has committed a major sin for several reasons. | 87 | Circles of remembrance are the gardens of Paradise. 101 | Severe warning for the one who fabricates lies against Allah Almighty and His Messenger ﷺ. | 88 | Dancing due to affectation and showing off is strictly forbidden and a grave crime. 102 | One who belittles the pure Shariah is unanimously and definitely an infidel. | 88 | Dancing is not permissible in Qawwali. 102 | Ruling on insulting or belittling Tafsir Jalalayn or any religious book. | 88 | One who performs evil spectacles/games is rejected in testimony. 102 | Texts are taken in their literal/ apparent meaning. | 89 | Excerpts from Tariqa Muhammadiyya and Shami regarding the dancing and ecstasy of Sufis etc. 105 | Having a bad opinion of a Muslim is forbidden. | 90 | Clapping is also illegitimate and prohibited for the reasons mentioned above. 106 | Summary of the lengthy and grand discourse of Allama Imam Abdul Ghani Nablusi (may Allah have mercy on him) regarding specifically labeling a person with the ruling of affectation and hypocrisy. | 91 | Clapping is among the habits of disbelievers. 106 | Not all Sufis are the same. | 91 | It is forbidden to participate in or watch any act that is prohibited. 111 | It is prohibited to throw seeds at each other after eating mangoes. | 92 | The ecstasy of the truly overwhelmed is a great wealth and a major blessing.

फ़तावा रज़विया, जिल्द २४

पृष्ठ संख्या | उप-विषय / विवरण | क्रम संख्या | मुख्य विषय / प्रश्न ९२ | सच्चे वज्द की पहचान और उसकी शर्तें। | ८५ | हज़रत अंजशा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की हदी (ऊँट हांकने का गीत) पर हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मना नहीं फ़रमाया। ९२ | फ़ुक़हा (विधिवेत्ताओं) की किताबों से संदर्भ। | ८५ | लोगों को वअज़ (उपदेश) आदि के लिए इकट्ठा करने के लिए नक़्क़ारा या दफ़ बजाना जायज़ है। १०० | आयत-ए-करीमा "और जिसने मेरे ज़िक्र से मुँह मोड़ा" में ज़िक्र से मुँह मोड़ने से क्या मुराद है। | ८६ | रक़्स (नृत्य) और झूमने के घेरे में तालियाँ बजाते हुए "अल्लाह अल्लाह" का ज़िक्र करना कैसा है, ज़िक्र के इस अंदाज़ को नापसंद करने वालों को ज़िक्र से मुँह मोड़ने का ताना देने और तफ़सीर-ए-जलालैन को केवल बाहरी तफ़सीर कहकर हिक़ारत से उसका ज़िक्र करने वाले का क्या हुक्म है। १०१ | ज़ोर से ज़िक्र करने वालों को इब्ने मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने मस्जिद से बाहर निकाल दिया। | ८७ | ज़िक्र का हलक़ा (घेरा) यदि दिखावे या सुनने के लिए न हो बल्कि विशुद्ध रूप से अल्लाह की प्रसन्नता के लिए हो, तो यह एक पसंदीदा बात है। १०१ | रक़्स, झूमने और तालियों के साथ ज़िक्र की महफ़िल से चले जाने वालों पर आयत-ए-करीमा "और जिसने मेरे ज़िक्र से मुँह मोड़ा" लागू करने वाले ने कई कारणों से गुनाह-ए-कबीरा (बड़ा पाप) किया। | ८७ | ज़िक्र के हलक़े जन्नत की क्यारियाँ हैं। १०१ | अल्लाह तआला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर झूठ बांधने वाले के लिए कड़ी चेतावनी। | ८८ | बनावट और दिखावे के कारण रक़्स करना निश्चित रूप से हराम और एक घिनौना अपराध है। १०२ | शरीयते मुतह्हरा (पवित्र शरीयत) का अपमान करने वाला सर्वसम्मति से निश्चित रूप से काफ़िर है। | ८८ | क़व्वाली में रक़्स करना जायज़ नहीं है। १०२ | तफ़सीर-ए-जलालैन शरीफ़ या किसी भी धार्मिक पुस्तक के अपमान और तिरस्कार का हुक्म। | ८८ | बुरा खेल-तमाशा करने वाला गवाही के लिए अस्वीकार्य (मरदूद-उश-शहादत) है। १०२ | नसूस (धार्मिक ग्रंथ) अपने स्पष्ट/शाब्दिक अर्थ पर ही आधारित होते हैं। | ८९ | सूफ़ी आदि के रक़्स और वज्द से संबंधित तरीक़ा-ए-मुहम्मदिया और शामी के उद्धरण। १०५ | मुसलमान पर बुरा गुमान (संदेह) करना हराम है। | ९० | तालियाँ बजाना भी उपरोक्त कारणों से नाजायज़ और निषिद्ध है। १०६ | किसी विशेष व्यक्ति पर बनावट और दिखावे का हुक्म लगाने के संबंध में अल्लामा इमाम अब्दुल ग़नी नाबुलसी (रहमतुल्लाहि अलैहि) के लंबे और महान कथन का सारांश। | ९१ | तालियाँ बजाना काफ़िरों की आदतों में से है। १०६ | सभी सूफ़ी एक जैसे नहीं होते। | ९१ | जो कार्य हराम हो, उसमें शामिल होना और उसका तमाशा देखना हराम है। १११ | आम खाकर गुठलियाँ एक-दूसरे

को मारना मना है। | ९२ | सच्चे रूप से प्रभावित लोगों का वज्द एक महान दौलत और बड़ी नेमत (आशीर्वाद) है।

पृष्ठ १३ का ७२०

فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۴

صفحہ نمبر | ذیلی عنوان / تفصیل | شمار | اصل عنوان / سوال ۹۲ | وجدِ صادق کی شناخت اور اس کی شرائط | ۸۵ | انجشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی حدی پر حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے انکار نہ فرمایا۔ ۹۲ | حوالہ جات از کتب فقہاء۔ | ۸۵ | لوگوں کو وعظ وغیرہ پر خیر کرنے کے لئے نقارہ یا دف بجانا جائز ہے۔ ۱۰۰ | آیت کریمہ "و من اعرض عن ذکری" میں اعراض عن الذکر سے کیا مراد ہے۔ | ۸۶ | رقص و تمایل کے حلقہ میں تالیاں بجاتے ہوئے "اللہ اللہ" کا ذکر کرنا کیسا ہے، اس اندازِ ذکر کو ناپسند جاننے والوں کو اعراض ذکر کا طعنہ دینے اور تفسیرِ جلالین کو ظاہری تفسیر کہہ کر حقارت سے اس کا ذکر کرنے والے کا کیا حکم ہے۔ ۱۰۱ | چلا کر ذکر کرنے والوں کو ابن مسعود رضی اللہ عنہ نے مسجد سے نکلوا دیا۔ | ۸۷ | حلقہ ذکر اگر بوجہ ریا وسمع نہ ہو بلکہ خالصاً لوجہ اللہ ہو تو امر محبوب ہے۔ ۱۰۱ | رقص و تمایل اور تالیوں کے ساتھ ذکر کی محفل سے چلے جانے والوں پر آیت کریمہ "و من اعرض عن ذکری" کو منطبق کرنے والے نے کئی وجوہ سے گناہِ کبیرہ کا ارتکاب کیا۔ | ۸۷ | ذکر کے حلقے جنت کی کیاریاں ہیں۔ ۱۰۱ | اللہ تعالیٰ ورسول اللہ جل جلالہ و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پر افتراء باندھنے والے کے لئے وعید شدید۔ | ۸۸ | رقص بوجہ تصنع و ریاء حرام قطعی و جریمہ فاحشہ ہے۔ ۱۰۲ | شرعِ مطہر کی تحقیر کرنے والا اجماعاً قطعاً کافر ہے۔ | ۸۸ | قوالی میں رقص جائز نہیں۔ ۱۰۲ | تفسیر جلالین شریف یا کسی بھی دینی کتاب کی توہین و تحقیر کا حکم۔ | ۸۸ | برا کھیل تماشہ کرنے والا مردود الشہادۃ ہے۔ ۱۰۲ | نصوص اپنے ظاہری معنی پر محمول ہوا کرتے ہیں۔ | ۸۹ | صوفیہ وغیرہ کے رقص و وجد سے متعلق طریقہ محمدیہ اور شامی کی عبارات۔ ۱۰۵ | مسلمان پر بد گمانی حرام ہے۔ | ۹۰ | تالیاں بجانا بھی وجوہِ مذکورہ پر ناجائز و ممنوع ہے۔ ۱۰۶

| بالتعیین کسی شخص کی نسبت حکمِ تصنع و ریاء لگا دینے سے متعلق علامہ امام عبد الغنی نابلسی علیہ الرحمہ کے طویل و جلیل کلام کا خلاصہ۔ | ۹۱ | تالیاں بجانا عاداتِ کفار میں سے ہے۔ ۱۰۶ | سب صوفیہ یکساں نہیں ہوتے۔ | ۹۱ | جو فعل حرام ہو اس میں شریک ہونا اور اس کا تماشہ دیکھنا حرام ہے۔ ۱۱۱ | آم کھا کر گٹھلیاں ایک دوسرے کو مارنا ممنوع ہے۔ | ۹۲ | مغلوبینِ صادقین کا وجد دولتِ عظمیٰ اور نعمتِ کبریٰ ہے۔

Fatawa Razawiyya | Volume 24

121 | Pure Sharia bases its ruling on probability; it does not look for the actual existence of the cause of the ruling thereafter. | 111 | Throwing peels as a joke is permissible (mubah). | 121 121 | In jurisprudential rulings, the predominant case is considered; no separate ruling is made for the rare exception. | 112 | What is the Sharia ruling on fireworks at night during the Urs (death anniversary) of elders and scattering cooked food intended for 'Isal-e-Thawab' (conveying reward) such that it is stepped upon? | 121 122 | While the basis for prohibition is being an inciter (to sin), and if every inciter is independent, then the prohibition of one cannot depend on the existence of another. | 112 | What is the ruling regarding playing cards, chess, etc.? | 122 123 | Indeed, man is greedy for what is forbidden. | 113 | Qawwali with drums and sarangi is forbidden (haram) and the listeners are sinners. | 123 123 | The soul is not drawn to what is freely given as much as it is drawn towards what is forbidden. | 113 | In Urs, the sin of performing Qawwali with drums etc. also falls upon the singers and the attendees. | 123 123 | Slaves of desire find more pleasure in looking at a stranger woman (ajnabiya) than in looking at their own wife (halila). | 115 | Numerous and reaching the degree of tawatur (mass-narrated) hadiths have been reported on the prohibition of musical instruments (mazamir). | 123 123 | Prohibition increases desire. | 115 | In contrast to authentic, elevated (marfu'), and definitive (muhkama) hadiths, some weak tales or probable events or ambiguous narrations cannot be presented. | 123 124 | The wisdom behind prayer being forbidden at three specific times. | 116 | Statements of the prominent elders of the exalted Chishti order regarding musical instruments. | 124 124 | The wisdom behind the temporary suspension of Revelation (Wahi). | 119 | It is not forbidden to fire guns for the purpose of announcing a wedding. | 124 124 | The reason for the prohibition of voices that lead to temptation (fitna). | 119 | Inquiry (Istifta) regarding a text from the treatise 'Al-Kashf al-Shafiya'. | 124 124 | Under what conditions is listening to music (Sama') permissible? A comprehensive fatwa. | 120 | Singing of domnis (female singers) with a cloth over their face is not proven from either Imam Ghazali or Shah Muhammad Kalpuri (may mercy be upon them), nor is there any trace of it in the pure Sharia, nor do the principles of Sharia support it. | 124 126 | Wasting time in learning the science of music is not the work of the righteous. | 120 | Just as temptation (fitna) is forbidden, that which incites temptation is also forbidden in Sharia. | 126 126 | Knowledge of anything, absolutely no matter what it is, is the essence of perfection. | 121 | It is not necessary for the precursors to a

forbidden act to themselves be inherently forbidden. | 126 | | 121 | The prohibition of precursors is not contingent upon the time of fulfillment. |

फ़तावा रज़विया | जिल्द २४

१२१ | शरीअत-ए-मुतह्हरा (पाक शरीअत) संभावना के आधार पर निर्णय देती है; इसके बाद वह निर्णय के मूल कारण के अस्तित्व पर ध्यान नहीं देती। | १११ | मज़ाक में छिलके फेंकना मुबाह (अनुमत) है। | १२१ १२१ | फ़िक़्ही (कानूनी) निर्णयों में बहुसंख्यक स्थिति का ध्यान रखा जाता है; दुर्लभ अपवाद के लिए कोई अलग निर्णय नहीं दिया जाता। | ११२ | बुज़ुर्गों के उर्स पर रात में आतिशबाज़ी करना और ईसाल-ए-सवाब के लिए पकाए हुए खाने को लुटाना, जिससे वह पैरों के नीचे आता है, शरीअत के अनुसार कैसा है? | १२१ १२२ | जबकि मनाही का आधार उकसावा (दाई) होना है और इसमें प्रत्येक उकसावा स्वतंत्र है, तो एक की मनाही दूसरे की उपस्थिति पर निर्भर नहीं हो सकती। | ११२ | ताश और शतरंज आदि खेलने के बारे में क्या हुक्म है? | १२२ १२३ | निश्चय ही मनुष्य उस चीज़ के प्रति लालायित रहता है जिससे उसे रोका गया हो। | ११३ | ढोल और सारंगी के साथ कव्वाली हराम है और सुनने वाले गुनहगार हैं। | १२३ १२३ | मन उपलब्ध वस्तु की ओर उतना नहीं खिंचता जितना प्रतिबंधित वस्तु की ओर। | ११३ | उर्स में ढोल आदि के साथ कव्वाली करने वालों पर, कव्वालों और उपस्थित लोगों को भी गुनाह होता है। | १२३ १२३ | वासना के दासों को अजनबी स्त्री (अजनबीया) को देखने में अपनी पत्नी (हलीला) को देखने से अधिक आनंद मिलता है। | ११५ | वाद्य यंत्रों (मज़ामीर) की मनाही पर अत्यधिक संख्या में 'तवातुर' (निरंतरता) की हद तक हदीसें आई हैं। | १२३ १२३ | मनाही चाहत को बढ़ाती है। | ११५ | प्रमाणिक, 'मरफ़ू' और 'मोहकम' हदीसों के सामने कुछ कमज़ोर कहानियाँ या संभावित घटनाएँ या संदिग्ध बातें पेश नहीं की जा सकतीं। | १२३ १२४ | तीन समयों पर नमाज़ पढ़ने की मनाही के पीछे का विवेक (हिकमत)। | ११६ | वाद्य यंत्रों के बारे में चिश्तिया सिलसिले के महान बुज़ुर्गों के कथन। | १२४ १२४ | 'वही' (ईश्वरीय संदेश) के कुछ समय रुकने के पीछे का विवेक। | ११९ | शादी के विज्ञापन के उद्देश्य से बंदूकें चलाना मना नहीं है। | १२४ १२४ | फ़ितना (प्रलोभन) पैदा करने वाली आवाज़ों की मनाही का कारण। | ११९ | 'अल-कश्फ़ अल-शाफ़िया' नामक शोध-पत्र के एक उद्धरण के संदर्भ में प्रश्न (इस्तिफ़्ता)। | १२४ १२४ | 'समा' (सुनना) किन शर्तों के साथ जायज़ है? एक विस्तृत फ़तवा। | १२० | न तो इमाम ग़ज़ाली और न ही शाह मोहम्मद कालपुरी (रहि.) से यह साबित है कि किसी ने मुँह पर कपड़ा डालकर डोमणियों से गाना सुना हो; न ही पाक शरीअत में इसका कोई निशान है और न ही शरीअत के उसूल इसके पक्ष में हैं। | १२४ १२६ | संगीत सीखने में समय नष्ट करना नेक (सालेहीन) लोगों का काम नहीं है। | १२० | शरीअत में फ़ितने की तरह, फ़ितने की ओर ले जाने वाली चीज़ें

(दाई-ए-फ़ितना) भी हराम हैं। | १२६ १२६ | किसी भी वस्तु का ज्ञान, चाहे वह कैसा भी हो, पूर्णता (ऐन-ए-कमाल) का ही रूप है। | १२१ | हराम की ओर ले जाने वाली चीज़ों का स्वयं अनिवार्य रूप से हराम होना आवश्यक नहीं है। | १२६ | | १२१ | उकसावे वाली चीज़ों की मनाही उनके परिणाम के समय पर निर्भर नहीं है। |

पृष्ठ ७२० में से १४

۱۲۱ | شرع مطہر مظنہ پر حکم دائر فرماتی ہے اس کے بعد وجود منشاء حکم پر نظر نہیں رکھتی۔ | ۱۱۱ | مزاح کے طور پر چھلکے مارنا مباح ہے۔ | ۱۲۱ ۱۲۱ | احکام فقہیہ میں غالب کا لحاظ ہوتا ہے، نادر کے لئے کوئی حکم جدا نہیں کیا جاتا۔ | ۱۱۲ | بزرگوں کے عرس پر شب کو آتش بازی کرنا اور ایصالِ ثواب کے لئے پکائے ہوئے کھانے کو لٹانا جس سے وہ پاؤں کے نیچے بھی آتا ہے شرعاً کیسا ہے۔ | ۱۲۱ ۱۲۲ | جبکہ منشاءِ تحریم داعی ہونا ہے اور اس میں ہر داعی مستقل تو ایک کی تحریم دوسرے کے وجود پر موقوف نہیں ہو سکتی۔ | ۱۱۲ | تاش اور شطرنج وغیرہ کھیلنے کے بارے میں کیا حکم ہے۔ | ۱۲۲ ۱۲۳ | ان الانسان حریص علی ما منع۔ | ۱۱۳ | ڈھول اور سارنگی کے ساتھ قوالی حرام اور سننے والے گنہگار ہیں۔ | ۱۲۳ ۱۲۳ | نفس شے مبذول کی طرف اتنا نہیں کھینچتا جتنا ممنوع کی طرف۔ | ۱۱۳ | عرس میں ڈھول وغیرہ کے ساتھ قوالی کرنے والوں پر قوالوں اور حاضرین کا بھی گناہ ہے۔ | ۱۲۳ ۱۲۳ | بندگانِ نفس کو نظر اجنبیہ میں نظرِ حلیلہ سے زیادہ لذت آتی ہے۔ | ۱۱۵ | مزامیر کی حرمت پر احادیثِ کثیرہ بالغہ بحد تواتر وارد ہیں۔ | ۱۲۳ ۱۲۳ | منع اجلب للشوق ہے۔ | ۱۱۵ | احادیثِ صحاح مرفوعہ محکمہ کے مقابل بعض ضعیف قصے یا محتمل واقعے یا متشابہ پیش نہیں ہو سکتے۔ | ۱۲۳ ۱۲۴ | تین وقتوں میں نماز حرام ہونے کی حکمت۔ | ۱۱۶ | اکابر سلسلہ عالیہ چشت کے اکابرین کرام کے ارشادات درباره مزامیر۔ | ۱۲۴ ۱۲۴ | کچھ عرصہ وحی کے رکنے میں حکمت۔ | ۱۱۹ | شادی میں بغرض اعلان بند وقیں چھوڑنا ممنوع نہیں۔ | ۱۲۴ ۱۲۴ | اصوات فتنہ کی حرمت کی وجہ۔ | ۱۱۹ | رسالہ الکشف شافیا کی ایک عبارت کے حوالے سے استفتاء۔ | ۱۲۴ ۱۲۴ | سماع کن شرائط کے ساتھ جائز ہے ایک جامع فتویٰ۔ | ۱۲۰ | حضرت امام غزالی

اور شاہ محمد کالپوری علیہ الرحمہ میں سے کسی سے بھی منہ پر کپڑا ڈال کر ڈو منیون کا گانا ثابت نہیں ، نہ ہر گز شرع مطہر میں اس کا پتا ، نہ اصول شرع اس کے مساعد۔ | ۱۲۴ ۱۲۶ | علمِ موسیقی کے تعلم میں وقت ضائع کرنا صالحین کا کام نہیں۔ | ۱۲۰ | شرع میں فتنہ کی طرح داعیِ فتنہ بھی حرام ہے۔ | ۱۲۶ ۱۲۶ | ہر شئی کا علم مطلقاً کیسی ہی ہو عین کمال ہے۔ | ۱۲۱ | دواعیِ حرام کے لئے مستلزمِ حرام ہونا ضروری نہیں۔ | ۱۲۶ | | ۱۲۱ | حرمتِ دواعی وقتِ افضاء پر مقود نہیں۔ |

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

Page	Topic
127	Music compliance is forbidden.
127	Compliance is a voluntary act.
127	Intent is necessary for a voluntary act.
127	Intent without knowledge is impossible.
127	Question regarding spiritual audition (Sama) based on a couplet by Sheikh Saadi (may Allah's mercy be upon him).
128	The distinction between the eligible and the ineligible lies in plain spiritual audition (Sama), not in musical instruments.
130	Is Qawwali food for the soul or food for the ego (nafs), and what is the difference between the two?
130	Identifying food for the soul.
137	Playing the 'daff' (tambourine) is permissible in times of joy, provided it doesn't have cymbals and is not played to musical beats; otherwise, it is forbidden.
137	Providing guidance and advice is obligatory for scholars and leaders.
137	The practice of the pious predecessors (Salaf Saliheen) has varied regarding cutting ties with sinners, and both ways are permissible considering religious interests.
138	If un-Islamic rituals are commonly practiced in a wedding ceremony, then making a point of not attending is religiously commendable.
138	Evidence for the prohibition of musical instruments (mazamir).
139	What is forbidden will remain forbidden in every circumstance.
139	Watching theatrical performances, plays, etc., is forbidden.
139	It is forbidden to take an open sinner (fasiq-e-mu'lan) as a spiritual guide (Pir).

Page	Topic
132	An ignorant Sufi is a puppet/ laughingstock of Satan.
132	Allah Almighty has not made any ignorant person His saint (Wali).
132	God cannot be recognized without knowledge.
133	It is not permissible to participate and eat in a gathering that is against Sharia.
133	Which type of spiritual audition (Sama) is permissible according to the Qadiriyya and Chishtiyya orders?
134	Fatwa regarding the harmonium, sitar, and gramophone.
134	Singing accompanied by musical instruments is absolutely impermissible.
134	Whether a marriage ceremony with excessive music, lighting, and horses is valid according to Sharia, and whether participating in such a ceremony is a sin.
140	What is the Sharia ruling regarding one who publicly declares musical instruments to be permissible?
140	What is the ruling on praying behind someone who declares musical instruments permissible?
140	The word 'ma'azif' mentioned in Hadith encompasses all types of musical instruments.
140	'Ma'azif' is a broader term than 'mazamir' (because mazamir refers to instruments played by mouth).
140	The flute (nai) is among the musical instruments (mazamir).
141	Three conditions for the permission of playing the 'daff' in a wedding.
141	The drum (dhol) is prohibited at weddings.

फतवा रज़विया, खंड २४

पृष्ठ	विषय
१२७	संगीत का पालन वर्जित है।
१२७	पालन एक स्वैच्छिक कार्य है।
१२७	स्वैच्छिक कार्य के लिए इरादा (क़सद) आवश्यक है।
१२७	बिना ज्ञान के इरादा असंभव है।
१२७	शेख सादी (अलैहिर्रहमा) के एक शेर के संदर्भ में 'समा' (अध्यात्मिक गायन) के बारे में प्रश्न।
१२८	पात्र और अपात्र का अंतर केवल साधारण 'समा' में है, वाद्ययंत्रों में नहीं।
१३०	क्या कव्वाली रूह की खुराक है या नफ्स (अहं) की, और दोनों में क्या अंतर है?
१३०	रूह की खुराक की पहचान।
१३२	बिना ज्ञान के सूफी शैतान का खिलौना है।
१३७	खुशी के समय डफ बजाना जायज़ है, बशर्ते कि उसमें झांझ न हों और उसे संगीत की लय पर न बजाया जाए, अन्यथा यह वर्जित होगा।
१३७	विद्वानों और नेताओं पर मार्गदर्शन और सलाह देना अनिवार्य है।
१३७	पापियों के साथ संबंध तोड़ने में नेक पूर्वजों (सलफ सालेहीन) का तरीका अलग-अलग रहा है, और धार्मिक हितों को देखते हुए दोनों ही तरीके जायज़ हैं।
१३८	यदि विवाह समारोह में शरीयत के विरुद्ध रस्में आम हों, तो उसमें न जाने का संकल्प शरीयत के अनुसार प्रशंसनीय है।
१३८	वाद्ययंत्रों (मज़ामीर) की वर्जना पर प्रमाण।
१३९	जो हराम (वर्जित) है, वह हर हाल में हराम ही रहेगा।
१३९	थिएटर और नाटक आदि का तमाशा देखना हराम है।
१३९	खुले तौर पर पाप करने वाले (फासिक़े मुअलिन) को पीर बनाना हराम है।
१४०	जो खुलेआम वाद्ययंत्रों को हलाल (जायज़) कहता है, उसके बारे में शरीयत का क्या हुक्म है?

पृष्ठ	विषय
१३२	अल्लाह तआला ने किसी अज्ञानी को अपना वली (संत) नहीं बनाया।
१३२	बिना ज्ञान के ईश्वर को नहीं पहचाना जा सकता।
१३३	शरीयत के विरुद्ध किसी सभा में शामिल होकर भोजन करना जायज़ नहीं है।
१३३	कादरिया और चिश्तिया सिलसिले के अनुसार कौन सा 'समा' जायज़ है?
१३४	हारमोनियम, सितार और ग्रामोफोन के बारे में फतवा।
१३४	वाद्ययंत्रों के साथ गाना पूर्णतः नाजायज़ है।
१३४	जिस बारात में बहुत अधिक बाजे, रोशनी और घोड़े हों, उसका निकाह शरीयत के अनुसार होता है या नहीं, और ऐसी बारात में शामिल होने से गुनाह होगा या नहीं।
१४०	वाद्ययंत्रों को हलाल कहने वाले के पीछे नमाज़ पढ़ने का क्या हुक्म है?
१४०	हदीस में वर्णित शब्द 'मआज़िफ़' सभी प्रकार के वाद्ययंत्रों को शामिल करता है।
१४०	'मआज़िफ़' 'मज़ामीर' से अधिक व्यापक है (क्योंकि मज़ामीर उन बाजों को कहते हैं जो मुँह से बजाए जाते हैं)।
१४०	नै (बांसुरी) मज़ामीर में से है।
१४१	विवाह में डफ की अनुमति के लिए तीन शर्तें।
१४१	विवाह में ढोल वर्जित है।

पृष्ठ १५ का ७२०

صفحہ	عنوان
۱۲۷	ممنوع رعایت موسیقی ہے۔
۱۲۷	رعایت فعل اختیاری ہے۔
۱۲۷	فعل اختیاری کو قصد لازم ہے۔
۱۲۷	قصد بے علم ناممکن ہے۔
۱۲۷	سماع کے بارے میں شیخ سعدی علیہ الرحمہ کے ایک شعر کے حوالے سے سوال۔
۱۳۷	اوقات سرور میں دف جائز ہے بشرطیکہ اس میں جھانجھ نہ ہوں اور نہ موسیقی کے تال سر پر بجایا جائے ورنہ ممنوع ہوگا۔
۱۳۷	علماء وسرداران پر ہدایت و نصیحت فرض ہے۔
۱۳۷	اہل معاصی کے ساتھ قطع تعلق میں سلف صالحین کے مسلک مختلف رہے ہیں اور مصالح دینیہ کی رعایت سے دونوں صورتیں جائز ہیں۔
۱۳۸	تقریب شادی میں خلاف شرع مراسم کا عام رواج ہو تو اس میں نہ جانے کا التزام شرعاً محمود ہے۔
۱۳۸	مزامیر کی حرمت پر دلائل۔

صفحہ	عنوان
۱۲۸	اهل و نا اہل کا تفرقہ سماع مجرد میں ہے نہ کہ مزامیر میں۔
۱۳۰	کیا قوالی غذائے روح ہے یا غذائے نفس، اور دونوں میں فرق۔
۱۳۰	غذائے روح کی پہچان۔
۱۳۲	صوفی بے علم شیطان کا مسخرہ ہے۔
۱۳۲	اللہ تعالیٰ نے کسی جاہل کو اپنا ولی نہیں کیا۔
۱۳۲	بغیر علم کے خدا کو نہیں پہچانا جا سکتا۔
۱۳۳	کسی خلاف شرع مجلس میں شریک ہو کر کھانا کھانا جائز نہیں۔
۱۳۳	کون سا سماع قادریہ و چشتیہ سب کے نزدیک جائز ہے۔
۱۳۴	ہارمونیم، ستار اور گراموفون کے بارے میں فتویٰ۔
۱۳۹	حرام ہر حال میں حرام رہے گا۔
۱۳۹	تھیٹر اور ناٹک وغیرہ کا تماشا دیکھنا حرام ہے۔
۱۳۹	فاسق معلن کو پیر بنانا حرام ہے۔
۱۴۰	جو مزامیر کو بالا علان حلال کہتا ہے اس کے بارے میں حکم شرعی کیا ہے۔
۱۴۰	مزامیر کو حلال کہنے والے کے پیچھے نماز کا کیا حکم ہے۔
۱۴۰	معازف کا لفظ جو حدیث میں مذکور ہے سب باجوں کو شامل ہے۔
۱۴۰	معازف مزامیر سے عام ہے (کیونکہ مزامیر ان باجوں کو کہتے ہیں جو منہ سے بجائے جاتے ہیں)۔
۱۴۰	نئے (بانسری) مزامیر میں سے ہے۔
۱۴۱	شادی میں دف کی اجازت کی تین شرطیں۔

صفحہ	عنوان	صفحہ	عنوان
۱۳۴	گانا مع مزامیر مطلقاً نا جائز ہے۔	۱۴۱	شادی میں ڈھول ممنوع ہے۔
۱۳۴	جس کی بارات میں کثرت سے باجے، روشنی اور گھوڑے ہوں اس کا نکاح شرعاً ہوتا ہے یا نہیں اور ایسی بارات میں شرکت سے گناہ ہوگا یا نہیں۔		

Fatawa Razawiyyah Volume 24

Page	Subject
141	Mourning rites (Ta'ziya) and chest-beating in Muharram are forbidden (Haram).
141	Games like Ganjifa, cards, and gambling are prohibited.
141	Chess is not permissible except under six conditions.
142	Going to Hindu festivals is forbidden, but the marriage does not break as long as one does not consider it good.
143	Praying behind a public sinner is strictly disliked (Makruh Tahrimi) and must be repeated.
143	How is it to collect donations for arranging music in a fortieth-day memorial service (Chehlum)?
144	Being under a Ta'ziya is itself impermissible; having music in it is forbidden upon forbidden.
145	Treatise on Matters of Sama' (Sharia ruling on contemporary Sufi gatherings of listening and ecstasy, which include melodies, dance, instruments, and all kinds of strings).
147	We are not commanded to split hearts, discover the unseen, or entertain ill suspicions.
147	If a gathering does not inherently consist of Sharia-forbidden acts, there is no harm in general permission and inclusion in the invitation.
147	Some matters differ in beauty or ugliness due to differences in objectives or variety of circumstances.
147	Bare listening (Sama') is beneficial for the deserving and harmful for the undeserving.
148	Some matters, due to their difficulty and obscurity, become a cause of discord for those with weak comprehension.
148	A gathering of sermon and advice will be of complete benefit to the extent it is general while adhering to Sharia limits.
148	Prohibited musical instruments are evil and forbidden.
148	Perfect saints have restricted bare listening only to the deserving.

Page	Subject
145	Inquiry consisting of five questions related to Sama'.
146	Answer to the first question.
146	Chandeliers and marquees, etc., are not forbidden in themselves as long as they are not combined with any Sharia-forbidden act.
147	A strange story.
147	Permitted decoration with a permitted intention is not at all extravagance.
147	Extravagance is forbidden.
147	Decoration is lawful if it is not in an ugly manner or with an evil intention.
147	Lawful and forbidden cannot be one.
148	Which kind of Sama' is lawful?
148	Sayings of Hazrat Khwaja Mahbub-e-Ilahi (may Allah's mercy be upon him) regarding Sama' with musical instruments.
149	Hadiths regarding the prohibition of musical instruments reach the level of tawatur (successive narration).
150	Attributing musical instruments (in Sama') to the elders of Chisht is a blatant lie.
150	A summary response to the false arguments of pseudo-Sufis.
150	The weak before the sound, the probable before the determined, and the ambiguous against the clear-cut must be abandoned.
150	There is no equality between a saying and the narration of an action.
150	Prohibited and permitted are not equal.

फ़तावा रज़विया खंड २४

पृष्ठ	विषय
१४१	मुहर्रम में ताज़ियादारी और सीनाज़नी हराम है।
१४१	गन्जीफ़ा, ताश, जुआ आदि निषिद्ध हैं।
१४१	शतरंज जायज़ नहीं, लेकिन छह शर्तों के साथ।
१४२	हिंदुओं के मेले में जाना हराम है, लेकिन यदि उसे अच्छा न समझे तो निकाह नहीं टूटता।
१४३	खुले तौर पर गुनाह करने वाले के पीछे नमाज़ मकरूह-ए-तहरीमी है और उसका दोहराना वाजिब है।
१४३	चेहलम में बाजे का प्रबंध करने के लिए चंदा लेना कैसा है?
१४४	ताज़िया के नीचे रहना स्वयं नाजायज़ है, इसमें बाजे हराम दर हराम हैं।
१४५	रिसाला मसाइल-ए-समाअ (वर्तमान काल के सूफ़ी सभाओं में समाअ और संगीत का शरीयत
१४७	हमें दिलों के चीरने, ग़ैब के जानने और बुरा गुमान करने का हुक्म नहीं।
१४७	यदि कोई सभा अपने आप में शरीयत के विरुद्ध कार्यों पर आधारित न हो, तो आम अनुमति और निमंत्रण में कोई हर्ज नहीं।
१४७	कुछ बातें उद्देश्यों के अंतर या स्थितियों की विविधता के कारण अच्छाई या बुराई में भिन्न हो जाती हैं।
१४७	केवल सुनना (समाअ) योग्य लोगों के लिए लाभदायक और अयोग्य लोगों के लिए हानिकारक है।
१४८	कुछ बातें कठिन और गूढ़ होने के कारण कमज़ोर समझ वालों के लिए फ़ितना (कलह) का कारण बनती हैं।
१४८	उपदेश और नसीहत की सभा जितनी सार्वजनिक होगी और शरीयत की सीमाओं का पालन करेगी, उतना ही पूर्ण लाभ होगा।
१४८	निषिद्ध वाद्ययंत्र (मज़ामीर) बुराई और हराम हैं।
१४८	पूर्ण संतों ने केवल सुनने को योग्य लोगों तक ही सीमित रखा है।

पृष्ठ विषय

का हुक्म जिसमें राग, नृत्य और हर प्रकार के वाद्ययंत्र होते हैं)।

१४५ समाअ से संबंधित पाँच प्रश्नों पर आधारित इस्तफ़्ता।

१४६ पहले प्रश्न का उत्तर।

१४६ झाड़-फ़ानूस और शामियाना आदि अपने आप में मना नहीं हैं, जब तक कि वे किसी शरीयत-विरोधी कार्य के साथ न जुड़ें।

१४७ एक अजीब कहानी।

१४७ जायज़ नियत के साथ जायज़ सजावट बिल्कुल भी फ़ुजूलखर्ची (इसराफ़) नहीं है।

१४७ फ़ुजूलखर्ची हराम है।

१४७ यदि सजावट बुरे तरीके से या बुरी नियत से न हो, तो हलाल है।

१४७ हलाल और हराम एक नहीं हो सकते।

पृष्ठ १६ का ७२०

पृष्ठ विषय

१४८ कौन सा समाअ हलाल है?

१४८ वाद्ययंत्रों के साथ समाअ के बारे में हज़रत ख्वाजा महबूब-ए-इलाही (रहमतुल्लाह अलैह) के फरमान।

१४९ वाद्ययंत्रों की मनाही के संबंध में हदीसें तवातुर (लगातार वर्णन) के स्तर पर हैं।

१५० वाद्ययंत्रों के साथ समाअ का संबंध चिश्त के बुजुर्गों से जोड़ना सरासर झूठ है।

१५० दिखावटी सूफ़ियों के झूठे तर्कों का संक्षिप्त उत्तर।

१५० सही के सामने कमज़ोर, निश्चित के सामने संभावित और स्पष्ट के सामने अस्पष्ट को छोड़ना वाजिब है।

१५० कथन और कार्य के वर्णन में बराबरी नहीं होती।

१५० हराम और मुबाह (अनुमेय) बराबर नहीं हैं।

صفحہ	مضمون
۱۴۱	محرم میں تعزیہ داری اور سینہ کوبی حرام ہے۔
۱۴۱	گنجفہ، تاش، بھگور ممنوع ہیں۔
۱۴۱	شطرنج جائز نہیں مگر چھ شرطوں سے۔
۱۴۲	ہنود کے میلے میں جانا حرام ہے مگر نکاح نہیں ٹوٹتا جب اسے اچھا نہ جانے۔
۱۴۳	فاسق معلن کے پیچھے نماز مکروہ تحریمی واجب الاعادہ ہے۔
۱۴۳	چہلم میں باجے کا اہتمام کرنے کے لئے چندہ لینا کیسا ہے۔
۱۴۴	
۱۴۷	ہمیں شق قلوب، طلع غیوب اور اساءت ظنون حکم نہیں۔
۱۴۷	کوئی مجلس اگر فی نفسہ منکرات شرعیہ پر مشتمل نہ ہو تو عموم اذن اور شمول دعوت میں حرج نہیں۔
۱۴۷	بعض باتیں اختلاف مقاصد یا تنوع احوال سے حسن و قبح میں مختلف ہو جاتی ہیں۔
۱۴۷	سماع مجرد اہل کو مفید اور نا اہل کو مضر ہے۔
۱۴۸	بعض باتیں بوجہ دقت و غموض افہام قاصرہ پر موجب فتنہ ہوتی ہیں۔
۱۴۸	مجلس وعظ و پند بلحاظ پابندی حدود شرعیہ جس قدر عام ہوگی نفع تام ہوگا۔
۱۴۸	مزامیر محرمہ منکر و حرام ہیں۔

صفحہ	مضمون
	تحت تعزیہ خود ناجائز ہے، اس میں باجے حرام در حرام ہیں۔
	رسالہ مسائل سماع (متصوفہ زمانہ کی مجلس سماع و سرور کا شرعی حکم جس میں راگ و رقص و مزامیر اور معازف ہر قسم کے ہوتے ہیں)
۱۴۵	پانچ سوالات متعلقہ سماع پر مشتمل استفتاء۔
۱۴۶	جواب سوال اول۔
	جھاڑ فانوس اور شامیانہ فروش وغیرہ فی انفسہا
۱۴۶	محظور نہیں جب تک کسی منکر شرعی کے ساتھ منضم نہ ہوں۔
۱۴۷	ایک عجیب حکایت
۱۴۷	زینت مباحہ بنیت مباحہ مطلقاً اسراف نہیں۔
۱۴۷	اسراف حرام ہے۔
۱۴۸	سماع مجرد کو اولیاء کاملین نے صرف اہل پر محدود فرمایا ہے۔
۱۴۸	کون سا سماع حلال ہے۔
	سماع با مزامیر کے بارے میں
۱۴۸	حضرت خواجہ محبوب الہی علیہ الرحمہ کے فرمودات۔
	حرمت مزامیر کے بارے میں
۱۴۹	احادیث حد تواتر پر ہیں۔
	سماع مزامیر کی نسبت اکابر چشت
۱۵۰	کی طرف کرنا دروغ بیفروغ ہے۔
	متصوفہ کے تمسکات باطلہ کا
۱۵۰	اجمالی جواب۔
۱۵۰	

صفحہ مضمون

زینت برو جہ قبیح یا بنیت قبیحہ نہ ہو تو حلال ہے۔ ۱۴۷

۱۴۷ حلال و حرام ایک نہیں ہو سکتے۔

صفحہ مضمون

صحیح کے سامنے ضعیف، متعین کے سامنے محتمل اور محکم کے مقابل متشابہ واجب الترک ہے۔

۱۵۰ قول و حکایت فعل میں برابری نہیں۔

۱۵۰ محرم و مباح مساوی نہیں۔

Fatawa Razawiyya Volume 24

- No one has a cure for lust. (150)
- The lowest level of music is futile and useless. (158)
- Those attending a gathering of musical instruments are sinners; the qawwals are greater sinners, and the one who invites them is the greatest sinner of all. (150)
- Wahdat-ul-Wujood (Unity of Being) and the truths and subtleties of Sufism, as believed by the sincere Sufis, are certainly the truth. (158)
- Dancing, in its common meaning, is absolutely impermissible. (151)
- Many truths of Sufism cannot even be understood by today's Maulvis (religious scholars) and Pirs (spiritual guides), let alone the common people. (158)
- The lowest degree of dancing is Makruh (disliked). (151)
- Speaking beyond the intellect of a people carries the risk of putting that people into fitna (tribulation/confusion). (159)
- Which type of 'Wajd' (ecstasy) is permissible and which is impermissible. (151)
- Answer to the fourth question. (160)
- Statements of the noble Imams and great jurists regarding the Sharia ruling on 'Wajd'. (152)
- Enjoining good and forbidding evil is surely among the important religious obligations based on definitive Quranic texts, and its abandoner is a sinner and disobedient in cases of obligation. (160)
- 'Wajd' in solitude and seclusion with a praiseworthy intention is a matter of difference among the noble Imams. (153)
- When is enjoining good and forbidding evil obligatory, when is it not, and when is its abandonment encouraged? (160)
- In short, the 'Wajd' of sincere Sufis and seekers is not a matter of criticism at all. (156)
- The difference between a Pir of misguidance and a Sheikh of guidance. (162)
- Answer to the second question. (157)
- Answer to the fifth question. (162)
- Attributing false prohibitions to the Prophet (peace and blessings be upon him) is bad manners. (157)
- Hindus are definitely idol-worshipping polytheists. (162)
- The states, sayings, actions, and deeds of those overcome by spiritual ecstasy are neither a basis for authority nor worthy of imitation. (158)

• Honoring idols, considering them intercessors in the court of Honor, and seeking intercession from them is Kufr (disbelief). (162)
• Some verses from Masnavi Manavi. (158)
• Appendix: Amusement and Play (162)
• Answer to the third question. (158)
• Watching an impermissible act as entertainment is also Haraam (forbidden). (177)
• It is among the obvious religious matters that learning and teaching the beliefs of Islam and Sunnah first, then the rules of purity, prayer, and other Sharia necessities is obligatory; wasting time on any recommended or preferred knowledge while neglecting these is Haraam. (158)
• A way of reconciliation for Muslims regarding Hindus' playing of musical instruments etc. (177)

फ़तवा रज़विया जिल्द 24

- हवस परस्ती का इलाज किसी के पास नहीं। (150)
- संगीत का निम्नतम स्तर निरर्थक और फ़ुज़ूल है। (158)
- संगीत की महफ़िल में उपस्थित होने वाले गुनेहगार हैं, कव्वाल उनसे बड़े गुनेहगार और बुलाने वाला सबसे बड़ा गुनेहगार होगा। (150)
- वहदत-उल-वजूद और तसव्वुफ़ की सच्चाइयाँ और बारीकियां जैसा कि सच्चे सूफ़ी मानते हैं, निश्चित रूप से सत्य हैं। (158)
- प्रचलित अर्थ में नाच बिल्कुल जायज़ नहीं है। (151)
- तसव्वुफ़ की बहुत सी सच्चाइयों को आज के मौलवी और पीर भी नहीं समझ सकते, आम जनता की तो बात ही क्या। (158)
- नाच का निम्नतम स्तर मकरूह (नापसंद) है। (151)
- किसी कौम की अक्ल से परे बात करने से उस कौम के फितने (भ्रम/उपद्रव) में पड़ने का डर होता है। (159)
- कौन सा 'वजद' (आध्यात्मिक उन्माद) जायज़ है और कौन सा नाजायज़। (151)
- चौथे सवाल का जवाब। (160)
- 'वजद' के शरीयत हुक्म के बारे में प्रतिष्ठित इमामों और महान फकीहों के बयान। (152)
- अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुनकर (भलाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना) कुरान के निश्चित ग्रंथों के आधार पर महत्वपूर्ण धार्मिक कर्तव्यों में से है और इसके वाजिब होने की स्थिति में इसे छोड़ने वाला गुनहगार और अवज्ञाकारी है। (160)
- अकेलेपन और एकांत में नेक नियत के साथ 'वजद' इमामों के बीच मतभेद का विषय है। (153)
- अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुनकर कब वाजिब है, कब वाजिब नहीं और इसे कब छोड़ने की सलाह दी गई है। (160)
- संक्षेप में, सच्चे सूफियों और जिज्ञासुओं का 'वजद' आलोचना का विषय नहीं है। (156)
- गुमराह करने वाले पीर और हिदायत देने वाले शेख में अंतर। (162)
- दूसरे सवाल का जवाब। (157)
- पाँचवें सवाल का जवाब। (162)

- हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर झूठी हराम चीजों का श्रेय देना बदतमीज़ी है। (157)
- हिंदू निश्चित रूप से मूर्तिपूजक मुशरिक (बहुदेववादी) हैं। (162)
- हालत-ए-ग़लबा (आध्यात्मिक उन्माद) वालों के हालात, बातें, और कार्य न तो प्रामाणिक हैं और न ही अनुकरण के योग्य। (158)
- मूर्तियों का सम्मान करना, उन्हें अल्लाह के दरबार में शफ़ी (सिफारिशी) मानना और उनसे शफ़ाअत (सिफारिश) चाहना कुफ्र है। (162)
- मसनवी मानवी के कुछ छंद। (158)
- परिशिष्ट: खेल-कूद और तमाशा (162)
- तीसरे सवाल का जवाब। (158)
- नाज़ायज़ काम को तमाशे के तौर पर देखना भी हराम है। (177)
- धार्मिक स्पष्टताओं में से है कि पहले इस्लाम और सुन्नत के अक़ायदे, फिर पाकी, नमाज़ और अन्य शरीयत की ज़रूरतों को सीखना-सिखाना फ़र्ज़ है; उन्हें छोड़कर किसी मुस्तहब (पसंदीदा) इल्म में समय बर्बाद करना हराम है। (158)
- हिंदुओं के बाजे आदि बजाने के संबंध में मुसलमानों के लिए उनके साथ सुलह की एक सूरत। (177)

- ہوس پرستی کا علاج کسی کے پاس نہیں۔ (۱۵۰)
- موسیقی کا ہلکا درجہ لغو و فضول ہے۔ (۱۵۸)
- سماع مزامیر کی مجلس میں حاضر ہونے والے گنہگار قوال ان سے بڑھ کر اور بلانے والا سب سے بڑھ کر گنہگار ہوگا۔ (۱۵۰)
- وحدۃ الوجود اور حقائق و دقائق تصوف جس طرح صوفیہ صادقہ مانتے ہیں ضرور حق ہیں۔ (۱۵۸)
- رقص بمعنی متعارف ناچ مطلقاً ناجائز ہے۔ (۱۵۱)
- بہت سے حقائق تصوف کو آج کل کے مولوی اور پیر بھی نہیں سمجھ سکتے چہ جائیکہ عوام۔ (۱۵۸)
- اقل درجہ رقص کا مکروہ ہے۔ (۱۵۱)
- قوم کی عقل سے ماورا بات کرنے سے اس قوم کے فتنہ میں پڑنے کا خدشہ ہوتا ہے۔ (۱۵۹)
- وجد کون سا جائز اور کون سا نا جائز ہے۔ (۱۵۱)
- جواب سوال چہارم۔ (۱۶۰)
- وجد کے حکم شرعی کے بارے میں ائمہ کرام و فقہائے عظام کے ارشادات۔ (۱۵۲)
- امر بالمعروف و نہی عن المنکر ضرور بنصوص قاطعہ قرآنیہ اہم فرائض دینیہ سے ہے اور بحال وجوب اس کا تارک آثم و عاصی ہے۔ (۱۶۰)
- تنہائی و خلوت میں بنیت محمودہ وجد ائمہ کرام میں مختلف فیہ ہے۔ (۱۵۳)

- امر بالمعروف و نہی عن المنکر کب واجب، کب غیر واجب اور کب اس کے ترک کی ترغیب ہے۔ (۱۶۰)
- بالجملہ وجد صوفیائے کرام طالبین صادق اصلاً محل طعن نہیں۔ (۱۵۶)
- پیر غوایت اور شیخ ہدایت میں فرق۔ (۱۶۲)
- جواب سوال دوم۔ (۱۵۷)
- جواب سوال پنجم۔ (۱۶۲)
- محرمات اباطیل کی نسبت حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کی طرف سوء ادب ہے۔ (۱۵۷)
- ہنود قطعاً بت پرست مشرک ہیں۔ (۱۶۲)
- مغلوبین حال کے احوال، اقوال، افعال اور اعمال نہ قابل استناد ہیں نہ لائق تقلید۔ (۱۵۸)
- بتوں کی تعظیم انہیں بارگاہِ عزت میں شفیع ماننا اور ان سے شفاعت چاہنا کفر ہے۔ (۱۶۲)
- مثنوی معنوی کے چند اشعار۔ (۱۵۸)
- ضمیمہ لہوولعب (۱۶۲)
- جواب سوال سوم۔ (۱۵۸)
- ناجائز کام کو بطور تماشا دیکھنا بھی حرام ہے۔ (۱۷۷)
- بدیہیات دینیہ سے ہے کہ اولاً عقائد اسلام و سنت پھر احکام طہارت و نماز و غیر ہا ضروریات شرعیہ سیکھنا سکھانا فرض ہے، انہیں چھوڑ کر کسی مستحب و پسندیدہ علم میں وقت ضائع کرنا حرام ہے۔ (۱۵۸)
- ہندوؤں کے باجا وغیرہ بجانے سے متعلق مسلمانوں کو ان سے مصالحت کی ایک صورت۔ (۱۷۷)

Fatawa Razawiyya Volume 24

Page	Subject / Ruling	Ref. No	Sub-Topic / Additional Rulings
170	How is it to go to Hindu wedding processions, invite them to one's own wedding, play drums etc. and dance?	325	Prohibited types of speech.
170	Listening to Qawwali with musical instruments is not permissible for anyone.	510	Interrupting someone without a Shari'a necessity is prohibited, especially when they are discussing Shari'a knowledge.
171	Listening to singing and musical instruments.	554	The pulpit for preaching is originally the pulpit of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him).
171			**Enjoining Good and Forbidding Evil** Meaning of preaching.
171	One who does not prevent the ringing of bells despite having the power is a sinner.	167	Scholars are the heirs of the Prophets.
172	Removing evil to the extent of one's ability is an obligation.	167	When a deputy is on the seat of representation, insulting that court is an insult to the original Sultan.
172	The curse of Allah is upon the one who provides refuge to a Shari'a criminal.	167	Thrones of knowledge, Tazia, etc., are all impermissible.
172	What is the ruling for Zaid who fulfills divine commands as much as possible but also commits prohibitions?	168	Watching an impermissible act as entertainment is also forbidden.
172	Using the Quranic verse "Indeed, good deeds remove evil deeds" as a justification in response to sin is the act of an ignorant, arrogant person.	168	Rejoicing over an act that is forbidden to perform is also forbidden.

Page	Subject / Ruling	Ref. No	Sub-Topic / Additional Rulings
172	For a religious scholar to enjoin good and forbid evil and give religious advice to the servants of God, which is called preaching, is certainly among the highest obligations of religion.	168	Allowing children and women to perform impermissible acts or watch them as entertainment is a sin.
173	Listening to the sermon with respect, silence, and presence of heart by the attendees is a religious obligation.	169	Entering into the chain of saints (Auliya) at the hand of a Sunni scholar with a connected lineage is a great blessing.
173	Interfering in a sermon, making noise, using abusive language is religious insult and a habit of disbelievers.	169	Good deeds increase sustenance and bring blessings in life.
173	Listening to every sermon is obligatory, and making noise during it is forbidden.	170	Becoming a beggar for the sake of begging is forbidden.
174	The marriage sermon (Khutba Nikah) is Sunnah.	170	Those who cut ties with and oppose a religious scholar who explains the prohibition of usury, alcohol consumption, sale of pork, and other Shari'a prohibitions are oppressors.
174	The sermon at the completion of the Quran is recommended (Mustahabb).	170	

फतावा रज़विया जिल्द २४

पृष्ठ	विषय / हुक्म	संदर्भ नं.	उप-विषय / अतिरिक्त हुक्म
१७०	हिंदुओं की बारात में जाना, उन्हें अपनी बारात में बुलाकर ढोल वगैरह बजाना और नाचना कैसा है।	३२५	निषिद्ध वाणी के प्रकार।
१७०	संगीत वाद्ययंत्रों के साथ कव्वाली सुनना किसी व्यक्ति के लिए जायज़ नहीं है।	५१०	बिना शरई ज़रूरत के दूसरे की बात काटना मना है, खासकर जब वह शरई ज्ञान की चर्चा कर रहा हो।
१७१	गाना और संगीत वाद्ययंत्र सुनना।	५५४	उपदेश का मंच मूल रूप से हुज़ूर नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का मंच है।
१७१			**भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना** उपदेश का अर्थ।
१७१	शक्ति होने के बावजूद घंटी (नाक़ूस) बजाने से न रोकने वाला गुनहगार है।	१६७	विद्वान नबियों के वारिस हैं।
१७२	शक्ति के अनुसार बुराई को मिटाना फर्ज़ है।	१६७	जब कोई प्रतिनिधि प्रतिनिधित्व के पद पर हो, तो उस दरबार का अपमान करना असल सुल्तान का अपमान है।
१७२	शरई अपराधी को पनाह देने वाले पर अल्लाह तआला की लानत।	१६७	तख्त-ए-इल्म, ताज़िया वगैरह सब नाजायज़ हैं।
१७२	ज़ैद यथासंभव ईश्वरीय आदेशों का पालन करता है लेकिन मनाही का भी अपराधी होता है, तो कैसा हुक्म है।	१६८	किसी नाजायज़ काम को तमाशे के तौर पर देखना भी हराम है।
१७२	पाप के जवाब में कुरानी आयत "बेशक नेकियाँ बुराइयों को मिटा देती हैं" को	१६८	जिस काम को करना हराम है उस पर खुशी मनाना भी हराम है।

पृष्ठ	विषय / हुक्म	संदर्भ नं.	उप-विषय / अतिरिक्त हुक्म
	बहाना बनाना अज्ञानी अभिमानी का काम है।		
१७२	आलिम-ए-दीन का भलाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना, अल्लाह के बंदों को धार्मिक नसीहतें देना जिसे वाज़ (उपदेश) कहते हैं, यकीनन दीन के सर्वोच्च फर्ज़ों में से है।	१६८	बच्चों और औरतों को नाजायज़ काम करने या उसका तमाशा देखने की अनुमति देना गुनाह है।
१७३	हाज़िरीन का अदब, खामोशी और दिल की उपस्थिति के साथ वाज़ सुनना दीनी फर्ज़ है।	१६९	औलिया-ए-कराम की कड़ी में किसी सुन्नी अक़ीदे वाले मुत्तसिल-उस-सनद शेख के हाथ पर दाखिल होना बड़ी बरकत है।
१७३	वाज़ में दखलंदाज़ी करना, शोर मचाना, गालियाँ देना, धार्मिक अपमान और काफिरों की आदत है।	१६९	नेकी से रिज़्क़ (रोज़ी) बढ़ता है और उम्र में बरकत होती है।
१७३	हर खुतबे को सुनना फर्ज़ है और उसमें शोर करना हराम है।	१७०	भीख माँगने के लिए फकीर बनना हराम है।
१७४	निकाह का खुतबा सुन्नत है।	१७०	सूदखोरी, शराब पीना, सूअर के मांस की बिक्री और अन्य शरई मनाही की हुरमत (निषेध) बयान करने वाले आलिम-ए-दीन से संबंध तोड़ना और विरोध करना ज़ालिमों का काम है।
१७४	कुरान खत्म होने पर खुतबा मुस्तहब है।	१७०	

صفحہ	مضمون / حکم	نمبر شمار	ذیلی عنوان / مزید احکام
۱۷۰	ہندوؤں کی بارات میں جانا، ان کو اپنی بارات میں بلا کر ڈھول وغیرہ بجانا اور ناچنا کیسا ہے۔	۳۲۵	انواع کلام ممنوع۔
۱۷۰	قوالی مع مزامیر سننا کسی شخص کو جائز نہیں۔	۵۱۰	بے ضرورت شرعیہ دوسرے کی بات کاٹنا ممنوع ہے جبکہ وہ علم شرعی کے ذکر میں ہو۔
۱۷۱	گانا اور مزامیر سننا ہے۔	۵۵۴	مسند وعظ اصل مسند حضور پر نور سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ہے۔
۱۷۱			**امر بالمعروف و نہی عن المنکر** معنی وعظ
۱۷۱	قدرت کے باوجود ناقوس بجانے سے منع نہ کرنے والا گنہگار ہے۔	۱۶۷	علماء انبیاء کے وارث ہیں۔
۱۷۲	ازالہ منکر بقدر قدرت فرض ہے۔	۱۶۷	نائب جب مسند نیابت پر ہو تو اس دربار کی توہین اصل سلطان کی توہین ہے۔
۱۷۲	شرعی مجرم کو پناہ دینے والے پر اللہ تعالیٰ کی لعنت۔	۱۶۷	تخت علم تعزیہ وغیرہ سب ناجائز ہیں۔

صفحہ	مضمون / حکم	نمبر شمار	ذیلی عنوان / مزید احکام
۱۷۲	زید حتی الامکان اور امر الہی بجالاتا ہے مگر نواہی کا مرتکب بھی ہوتا ہے تو کیسا حکم ہے۔	۱۶۸	ناجائز کام کو بطور تماشا دیکھنا بھی حرام ہے۔
۱۷۲	معصیت کے جواب میں آیت کریمہ "ان الحسنٰت یذھبن السیئات" کو دستاویذ بنانا جاہل مغرور کا کام ہے۔	۱۶۸	جس کام کا کرنا حرام اس پر خوشی منانا بھی حرام ہے۔
۱۷۲	عالم دین کا امر بالمعروف و نہی عن المنکر کرنا بندگان خدا کو دینی نصیحتیں دینا جسے وعظ کہتے ہیں ضرور اعلیٰ فرائض دین سے ہے۔	۱۶۸	بچوں اور عورتوں کو ناجائز کام کرنے یا اس کا تماشا دیکھنے کی اجازت دینا گناہ ہے۔
۱۷۳	حاضرین کا ادب و خاموشی ورجوع قلب کے ساتھ وعظ کو سننا دینی فرض ہے۔	۱۶۹	سلسلہ اولیاء کرام میں کسی عالم سنی العقیدہ متصل السند شیخ کے ہاتھ پر داخل ہونا برکت عظیمہ ہے
۱۷۳	وعظ میں دست اندازی کرنا، غل مچانا، گالیاں بکنا، مذہبی توہین اور عادت کفار ہے۔	۱۶۹	نیکی سے رزق بڑھتا ہے اور عمر میں برکت ہوتی ہے۔
۱۷۳	ہر خطبہ کو سننا فرض اور اس میں غل کرنا حرام ہے۔	۱۷۰	بھیک مانگنے کے لئے فقیر بنانا حرام ہے۔

صفحہ مضمون / حکم	نمبر شمار	ذیلی عنوان / مزید احکام
		سود خوری، شراب نوشی اور بیع لحم خنزیر وغیرہ منہیات شرعیہ کی حرمت بیان کرنے والے عالم دین سے قطع تعلق کرنے اور مخالفت کرنے والے ظالم ہیں۔
۱۷۴ خطبہ نکاح سنت ہے۔	۱۷۰	
۱۷۴ خطبہ ختم قرآن مستحب ہے۔	۱۷۰	

Fatawa Razawiyya, Volume 24

Page	Topic
176	A form of reconciliation for Muslims regarding Hindus playing music, etc.
175	How is it for women to wear a 'kurti' (tunic)?
175	How is it to be strict in stopping a mother from wearing a 'kurti'?
	Appendix: Enjoining Good and Forbidding Evil
167	Guidance and advice are obligatory upon scholars and leaders.
160	Enjoining good and forbidding evil is necessary, specifically based on definitive Quranic proofs, it is among the important religious obligations, and its abandoner is a sinner and disobedient in the state of its obligation.
160	When is enjoining good and forbidding evil obligatory, when is it not, and when is its abandonment encouraged?
323	A person whose household women get tattoos and he does not prevent them is blameworthy and deserves to be shunned.
179	There is no harm if a laborer works on the construction of a church.
180	A question about reciting a couplet regarding the Ahl al-Bayt (family of the Prophet) as a remedy and with understanding.
180	Seeking intercession (Tawassul) through the beloved ones of Allah is commendable.
180	The number eighty (80) is not an increase.
180	Knowledge and signs are meaningless, and seeking intercession through them is void.
180	Ash-hab Tawassul is a prayer, and the method of prayer is secrecy.
181	How is it to give the Adhan (call to prayer) in an open field to ward off cholera?
181	How is it to recite Surah Yasin and Surah Tabarak al-Ladhi (Al-Mulk) in a goat's ear, blow on it, make it circle the house, then slaughter it and feed everyone?
181	

Page	Topic
	Disease and Medical Treatment (Visiting the sick, nursing, medicine, treatment, spiritual healing, medical practice, abortion, artificial teeth, etc.)
177	What is the ruling if a patient did not take medicine and died; will they be a sinner or not?
177	If someone has the ability to eat but does not eat and dies of hunger, they will be a sinner.
178	In what case will treating a sick prostitute who comes to a clinic be a sin or assistance in sin, and in what case will it not be?
178	There is reward in benefiting every living being.
	Virtues of the Remembrance of Allah (Dhikr).
183	The number seven (7) has a special effect in warding off harm and calamity.
184	There is blessing in congregation.
184	The prayer of a gathering of Muslims is closer to acceptance.
184	Where there are forty righteous Muslims, there is a Wali of Allah (Friend of God) among them.

फतावा रज़विया, जिल्द 24

पृष्ठ	विषय
176	हिंदुओं के बाजा आदि बजाने के संबंध में मुसलमानों के लिए उनसे सुलह का एक तरीका।
175	औरतों का कुर्ती पहनना कैसा है।
175	माँ को कुर्ती पहनने से रोकने के लिए सख्ती करना कैसा है।
	परिशिष्ट: अमर बिल मारूफ़ व नहीं अनिल मुनकर (भलाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना)
167	विद्वानों और नेताओं पर मार्गदर्शन और सलाह अनिवार्य है।
160	भलाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना अनिवार्य है, विशेष रूप से स्पष्ट कुरानी दलीलों के आधार पर, यह महत्वपूर्ण धार्मिक कर्तव्यों में से है और इसके वाजिब होने की स्थिति में इसे छोड़ने वाला गुनहगार और अवज्ञाकारी है।
160	भलाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना कब वाजिब है, कब गैर-वाजिब है और इसे छोड़ने की सलाह कब है।
323	जिस व्यक्ति के घर की महिलाएं गोदना (टैटू) गुदवाती हों और वह न रोकता हो, वह निंदा के योग्य और त्यागने लायक है।
179	मजदूर चर्च के निर्माण के लिए काम करे तो इसमें कोई हर्ज नहीं।
180	अहल-ए-बैत से संबंधित एक शेर को बीमारी दूर करने वाला और समझकर पढ़ने के बारे में सवाल।
180	अल्लाह के प्रियजनों के माध्यम से तवस्सुल (मध्यस्थता) सराहनीय है।
180	संख्या अस्सी (80) अधिकता नहीं है।
180	ज्ञान और चिन्ह निरर्थक हैं और उनके माध्यम से तवस्सुल बातिल (अमान्य) है।
180	अशहब तवस्सुल एक दुआ है और दुआ का तरीका गुप्त रहना है।
181	हैजा की बीमारी दूर करने के लिए मैदान में अज़ान देना कैसा है।
181	बकरी के कान में सूरह यासीन और सूरह तबारक अल-लज़ी (अल-मुल्क) पढ़कर दम करना, उसे मकान के चारों

पृष्ठ	विषय
	बीमारी और इलाज (बीमार पुरसी, तीमारदारी, दवा, इलाज, झाड़-फूँक, डॉक्टरी, गर्भपात, कृत्रिम दांत आदि)
177	मरीज़ ने दवा नहीं की और मर गया तो क्या हुक्म है, गुनहगार होगा या नहीं।
177	खाना खाने की क्षमता होने के बावजूद न खाए और भूख से मर जाए तो गुनहगार होगा।
178	तवायफ़ मरीज़ा अगर क्लिनिक (मतब) आए तो उसका इलाज करना किस सूरत में गुनाह और गुनाह में मदद होगा और किस सूरत में नहीं होगा।
178	हर जानदार को लाभ पहुँचाने में सवाब है।
181	अल्लाह के ज़िक्र के फ़ज़ाइल (महत्व)।
183	सात की संख्या में नुकसान और आफत दूर करने का एक विशेष प्रभाव है।
184	जमाअत (समूह) में बरकत है।
184	मुसलमानों के समूह की दुआ स्वीकार होने के अधिक करीब होती है।
184	जहाँ चालीस नेक मुसलमान हों, उनमें एक अल्लाह का वली होता है।

صفحہ	عنوان صفحہ	عنوان
	ہندوؤں کے باجا وغیرہ بجانے سے	
۱۷۶	متعلق مسلمانوں کو ان سے مصالحت کی ایک صورت۔	۱۷۹ مزدور گرجے کی تعمیر کے لئے کام کرے تو اس میں کوئی حرج نہیں۔
۱۷۵	عورتوں کا کرتی پہننا کیسا ہے۔	۱۸۰ اہلبیت سے متعلق ایک شعر کو دافع و باسمجھ کر پڑھنے کے بارے میں سوال۔
۱۷۵	ماں کو کرتی پہننے سے روکنے کے لئے سختی کرنا کیسا ہے۔	۱۸۰ محبوبان خدا سے توسل محمود ہے۔
	ضمیمہ امر بالمعروف ونہی عن المنکر	۱۸۰ عدد ثانی زیادت نہیں۔
۱۶۷	علماء و سرداران پر ہدایت و نصیحت فرض ہے۔	۱۸۰ علم ونشان مہمل اور ان سے توسل باطل ہے۔
۱۶۰	امر بالمعروف ونہی عن المنکر ضرور، بخصوص قاطعہ قرآنیہ اہم فرائض دینیہ سے ہے اور بحال وجوب اس کا تارک آثم و عاصی ہے۔	۱۸۰ اشہب توسل دعا ہے اور دعا کا طریقہ اخفاء ہے۔
۱۶۰		۱۸۱ دفع مرض ہیضہ کے لئے میدان میں اذان دینا کیسا ہے۔

صفحہ	عنوان	صفحہ	عنوان
	امر بالمعروف ونہی عن المنکر کب واجب، کب غیر واجب اور کب اس کے ترک کی ترغیب ہے۔		
۳۲۳	جس شخص کے گھر کی عورتیں گودنا گودتی ہوں اور وہ منع نہ کرتا ہو وہ قابل ملامت ولائق ترک ہے۔	۱۸۱	بکری کے کان میں سورۃ یس اور سورۃ تبارک الذی پڑھ کر دم کرنا، اس کو مکان کے چاروں طرف چکر لگوانا پھر ذبح کر کے سب کو کھلانا کیسا ہے۔
	بیماری وعلاج معالجہ (بیار پرسی، تیمارداری، دوا، علاج، جھاڑ پھونک، طبابت، اسقاط حمل، مصنوعی دانت وغیرہ)	۱۸۱	ذکر الہی کے فضائل۔
۱۷۷	مریض نے دوا نہ کی اور مر گیا تو کیا حکم ہے، گنہگار ہو گا یا نہیں۔	۱۸۳	سات کے عدد کو دفع ضرر و آفت میں ایک تاثیر خاص ہے۔
۱۷۷	کھانا کھانے کی قدرت کے باوجود نہ کھائے اور بھوک سے مر جائے تو گنہگار ہو گا۔	۱۸۴	جماعت میں برکت ہے۔
۱۷۸	طوائف مریضہ اگر مطب آئے تو اس کا علاج کرنا کس صورت میں معصیت و	۱۸۴	دعائے مجمع مسلمین اقرب بقبول ہے۔

صفحہ	عنوان صفحہ	عنوان
	اعانت معصیت ہوگا اور کس صورت میں نہ ہوگا۔	
۱۷۸	ہر جاندار کی نفع رسانی میں اجر ہے۔ ۱۸۴	جہاں چالیس مسلمان صالح ہوں ان میں ایک ولی اللہ ہوتا ہے۔

Fatawa Razawiyya Volume 24

- Supererogatory (Nafal) prayers in a large congregation are disliked. (185) | Is the use of brandy permissible for a patient or not? (193)
- Virtues of charity, hospitality, and maintaining family ties. (185) | Alcohol is absolutely forbidden and is impure like urine. (193)
- What is the ruling on reciting Surah Yasin and Surah Mulk into the ear of an animal during an epidemic, circling it around the village, and also writing and hanging the poem "Li Khamsatun Utfee Biha..." etc.? (187) | Sharia ruling on opium, cannabis, etc. (193)
- Getting vaccinated against smallpox is beneficial by Allah's permission. (188) | Like quinine etc., dry medicine is not objectionable provided it contains no haram mixture. (194)
- What do the people of trust in God (Ashab-e-Tawakkul) do during illness? (188) | There is no harm in getting artificial teeth. (194)
- Question regarding moving from a plague-affected area to another location. (189) | A ruling of impurity cannot be given to something without knowing its reality. (194)
- One who calls the Hadith regarding fleeing from plague dubious and flawed, and its narrators unknown and unreliable, is ignorant or misguided. (190) | Gold palates are absolutely permissible for women; for men, the ruling on silver and aluminum palates out of necessity. (195)
- A strong refutation of a wrong interpretation of the Hadith of plague. (190) | An artificial nose made of gold can be attached. (195)
- The author of the treatise 'Sakan al-Shajun' is unknown. (191) | What is the ruling on using medicine from a hospital/clinic? (195)
- The meaning and application of the Quranic verse "And do not throw [yourselves] with your [own] hands into destruction." (191) | How is it to seek treatment for a disease from Hindus? (196)
- One who flees from the plague is like one who flees from Jihad. (191) | Is performing spiritual operations (Amaliyat), i.e., using amulets from books, true or false? (196)
- A person had a firm intention to move his family to another place, but then the plague started; is it now permitted to move or not? (192) | It is not permitted to use words with unknown meanings in amulets. (196)

- If a doctor prescribes a liquid medicine containing a portion of alcohol to a patient, is it permissible or not? Is it a sin for the physician? (193)

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

- बड़ी जमात के साथ नफ़्ल नमाज़ मकरूह है। (185) | मरीज़ के लिए ब्रांडी का इस्तेमाल जायज़ है या नहीं? (193)
- सदक़ा, ज़ियाफ़त और सिला-ए-रहमी की फ़ज़ीलत। (185) | शराब मुतलक़न हराम और पेशाब की तरह नजिस (अपवित्र) है। (193)
- वबा (महामारी) की सूरत में जानवर के कान में सूरह यासीन और सूरह मुल्क पढ़ कर फूँकना और उसे गाँव के चारों ओर घुमाना तथा कविता "ली ख़म्सतुन अतफ़ि बिहा..." आदि लिखकर लटकाना कैसा है? (187) | अफ़ीम और भाँग वगैरह का शरीअत का हुक्म। (193)
- चेचक की बीमारी में टीका लगवाना अल्लाह की अनुमति से लाभदायक है। (188) | कुनैन वगैरह की तरह सूखी दवा में कोई बुराई नहीं है जब तक कि उसमें कोई हराम मिश्रण न हो। (194)
- तवक्कुल (ईश्वर पर भरोसा) करने वाले लोग बीमारी में क्या करते हैं? (188) | नकली दांत लगवाने में कोई हर्ज नहीं। (194)
- ताऊन (प्लेग) वाली जगह से दूसरी जगह जाने के बारे में सवाल। (189) | किसी चीज़ की हक़ीक़त जाने बिना उसे नापाक होने का हुक्म नहीं दिया जा सकता। (194)
- ताऊन से भागने वाली हदीस को संदिग्ध और दोषपूर्ण कहने वाला और उसके राविओं (वर्णनकर्ताओं) को अज्ञात और अविश्वसनीय कहने वाला जाहिल या गुमराह है। (190) | महिलाओं के लिए सोने का तालू मुतलक़न जायज़ है और पुरुषों के लिए ज़रूरत पड़ने पर चांदी और एल्युमीनियम के तालू का हुक्म। (195)
- ताऊन की हदीस की एक गलत व्याख्या का ज़ोरदार खंडन। (190) | सोने की नकली नाक लगाई जा सकती है। (195)
- रिसाला 'सकन अल-शजून' का लेखक अज्ञात है। (191) | शफ़ाख़ाना (अस्पताल) की दवा इस्तेमाल करने का क्या हुक्म है। (195)
- आयत-ए-करीमा "और अपने हाथों हलाकत (विनाश) में न पड़ो" का अर्थ और संदर्भ। (191) | हिंदुओं से बीमारी का इलाज कराना कैसा है? (196)
- ताऊन से भागने वाला वैसा ही है जैसे जिहाद से भागने वाला। (191) | अमलियात यानी तावीज़ वगैरह किताबों से करना हक़ (सत्य) है या बातिल (मिथ्या)। (196)

- एक व्यक्ति का दृढ़ इरादा था कि अपने परिवार को दूसरी जगह ले जाए, इतने में ताऊन शुरू हो गया, अब जाने की अनुमति होगी या नहीं। (192) | तावीज़ में ऐसे शब्द इस्तेमाल करने की अनुमति नहीं जिनका अर्थ अज्ञात हो। (196)
- डॉक्टरी तरल दवा जिसमें शराब का हिस्सा हो, हकीम मरीज़ को इस्तेमाल कराए, तो यह जायज़ है या नहीं, हकीम पर गुनाह है या नहीं। (193)

نفل جماعتِ کثیرہ کے ساتھ مکروہ ہے۔ ۱۸۵ | برانڈی کا استعمال مریض کو جائز ہے یا نہیں۔ ۱۹۳ فضائل صدقہ وضیافت وصلہ رحمی۔ ۱۸۵ | شراب مطلقاً حرام اور پیشاب کی طرح نجس ہے۔ ۱۹۳ وباء کی صورت میں جانور کے کان میں سورۃ یس سورۃ ملک پڑھ کر پھونکنا اور اس کو گاؤں کے گرد گھمانا نیز شعر "لی خمسۃ اطفی بھا الخ" لکھ کر آویزاں کرنا کیسا ہے۔ ۱۸۷ | افیون اور بھنگ وغیرہ کا شرعی حکم۔ ۱۹۳ مرض چیچک میں ٹیکا لگوانا باذن اللہ نفع بخش ہے۔ ۱۸۸ | کونین وغیرہ کی طرح خشک دوا مضائقہ نہیں رکھتی جبکہ اس میں کسی حرام کا خلط نہ ہو۔ ۱۹۴ بیماری میں اصحابِ توکل کیا کرتے ہیں۔ ۱۸۸ | مصنوعی دانت لگانے میں حرج نہیں۔ ۱۹۴ طاعون والی جگہ سے دوسری جگہ منتقل ہونے سے متعلق سوال۔ ۱۸۹ | کسی چیز کی حقیقت جانے بغیر اس کی نجاست کا حکم نہیں لگایا جاسکتا۔ ۱۹۴ حدیث فرار عن الطاعون کو مخدوش و مجروح اور اس کے راویوں کو مجہول و غیر ثقہ کہنے والا جاہل یا گمراہ ہے۔ ۱۹۰ | سونے کا تالو عورتوں کو مطلقاً جائز ہے اور مردوں کو بضرورت چاندی اور ایلو مینیم کی تالو کا حکم۔ ۱۹۵ حدیث طاعون کی ایک غلط تاویل کا زور دار رد۔ ۱۹۰ | سونے کی مصنوعی ناک لگائی جاسکتی ہے۔ ۱۹۵ رسالہ سکن الشجون کا مصنف مجہول ہے۔ ۱۹۱ | شفا خانہ کی دوا استعمال کرنے کا کیا حکم ہے۔ ۱۹۵ آیت کریمہ "ولا تلقوا بأیدیکم الی التھلکۃ" کا مصداق و مطلب۔ ۱۹۱ | اہل ہنود سے بیماری کی دوا کرانا کیسا ہے۔ ۱۹۶ طاعون سے بھاگنے والا ایسا ہی ہے جیسا جہاد سے بھاگنے والا۔ ۱۹۱ | عملیات یعنی تعویذات وغیرہ کتابوں سے کرنا حق ہے یا باطل۔ ۱۹۶ ایک شخص کا مصمم ارادہ تھا کہ اہل و عیال کو کسی دوسری جگہ منتقل کرے اتنے میں طاعون شروع ہو گیا اب انتقال کی اجازت ہوگی یا نہیں ۔ ۱۹۲ | تعویذات میں غیر معلوم المعنی

الفاظ استعمال کرنے کی اجازت نہیں۔ ۱۹۶ ڈاکٹری دوا سیال جس میں شراب کا جزء ہو حکیم مریض کو استعمال کرائے، جائز ہے یا نہیں، حکیم پر گناہ ہے یا نہیں ۔ ۱۹۳

صفحہ 720 کا 20

Fatawa Razawiya, Volume 24

Rulings / Topics	Page	Rulings / Topics	Page
Ruling on amulets for love and subjugation.	196	Mention of warnings for those fleeing from the plague.	199
If the act itself or the amulet contains anything contrary to Sharia or the intent is wrong, it is impermissible; otherwise, it is permissible.	197	A man can carry his wife's funeral bier.	200
It is permissible to give a harmful amulet to a disbeliever, but a clear one should not be given.	197	Abortion is permissible in case of necessity before four months; after that, it is impermissible.	201
Alcohol is both forbidden and impure; applying it to the outside of the body is also impermissible.	198	It is permissible to recite Fatiha or any Quranic verse over food and blow on it.	201
Opium is forbidden but not impure; its external use on the body is permissible.	198	Is it permissible or not to drink medicine mixed with spirit?	201
Giving opium to make a child sleep or stop crying is forbidden.	198	Spirit is a type of alcohol which, due to being extremely potent, is not fit for drinking alone.	201
Some signs of plague have appeared in a settlement, but no death has occurred yet. Is it permissible to leave the place in such a situation?	198	Drops of spirit are mixed in alcohols imported from Britain.	201
How is it to say that relocation and change of climate is a form of treatment?	198	Spirit is impure besides being forbidden.	202
How many funeral processions can be held together?	198	Reward of a hundred martyrs for reviving a Sunnah.	202
	198		203

Rulings / Topics	Page
Can the funeral of a minor girl and boy be held with an adult? If so, how should the prayers be recited?	
A boy and girl were minors when they got married, then the girl became a widow. Will a waiting period (iddah) for a second marriage be required or not? If so, for how long?	198
Zaid has a formula for virility (potency), Amr is in dire need of it, but Zaid neither tells him the formula nor makes it for him. He thinks that if people commit haram (illicit acts) with it, he will be sinful. How is this thought of his?	
Can the inhabitants of a neighborhood or city where there is a plague go to another place with the thought of "fleeing from the decree of Allah to the decree of Allah" or not?	204

Rulings / Topics	Page
The incident of Hazrat Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with him) not going to Syria due to the plague.	204
Who is a competent physician and who is incompetent?	205
When can a competent physician quit the medical profession?	205
It is forbidden for an incompetent person to practice medicine.	206
What kind of sin is it to make a woman sterile, and is there forgiveness for this sin or not?	207
Eating crab is forbidden.	208
It is also forbidden to rub alcohol on the body.	208
Life can be saved by lawful medicines too, if Allah Almighty wishes to save it.	208

फतावा रज़विया, जिल्द 24

विषय / फतवा	पृष्ठ	विषय / फतवा	पृष्ठ
मोहब्बत और वशीकरण के लिए तावीज़ का हुक्म।	१९६	ताऊन से भागने वालों के लिए चेतावनियों का ज़िक्र।	१९९
अमल या तावीज़ में कोई बात शरीयत के खिलाफ हो या उद्देश्य गलत हो तो नाजायज़ है वरना जायज़ है।	१९७	मर्द अपनी पत्नी का जनाज़ा उठा सकता है।	२००
काफिर को हानिकारक तावीज़ देना जायज़ है, मज़हर न दिया जाए।	१९७	चार महीने से पहले मजबूरी की स्थिति में गर्भपात जायज़ है, उसके बाद नाजायज़।	२०१
शराब हराम भी है और नापाक भी, इसे शरीर के बाहर लगाना भी नाजायज़ है।	१९८	खाने पर फातिहा या कोई कुरानी आयत पढ़कर दम करना जायज़ है।	२०१
अफीम हराम है नापाक नहीं, शरीर के बाहर इसका इस्तेमाल जायज़ है।	१९८	ऐसी दवा पीना जिसमें स्पिरिट की मिलावट हो जायज़ है या नहीं।	२०१
बच्चे को सुलाने या रोने से रोकने के लिए अफीम देना हराम है।	१९८	स्पिरिट शराब की एक किस्म है जो अत्यधिक तेज़ होने के कारण अकेले पीने योग्य नहीं है।	२०१
बस्ती में ताऊन के कुछ लक्षण शुरू हो गए हैं, और अभी किसी की मौत नहीं हुई है। ऐसी स्थिति में वहां से निकलने की इजाज़त है या नहीं।	१९८	ब्रिटेन से मंगवाई जाने वाली शराबों में स्पिरिट की बूंदें मिलाई जाती हैं।	२०१
यह कहना कि जगह बदलना और जलवायु परिवर्तन एक तरह का इलाज है, कैसा है।	१९८	स्पिरिट हराम होने के साथ-साथ नापाक भी है।	२०२
कितने मृत शरीरों का जनाज़ा एक साथ हो सकता है।	१९८	सुन्नत को जीवित करने पर सौ शहीदों का सवाब।	२०२
	१९८		२०३

विषय / फतवा	पृष्ठ
क्या नाबालिग लड़की और लड़के का जनाज़ा बालिग के साथ हो सकता है या नहीं, अगर हो सकता है तो दुआएं कैसे पढ़ी जाएं।	
लड़का और लड़की नाबालिग थे उनकी शादी हो गई, फिर लड़की विधवा हो गई, तो क्या दूसरे निकाह के लिए इद्दत ली जाएगी या नहीं, अगर ली जाएगी तो कब तक।	१९८
ज़ैद के पास मर्दानगी (यौन शक्ति) का नुस्खा है, अम्र को उसकी सख्त ज़रूरत है, लेकिन ज़ैद न तो उसे नुस्खा बताता है और न ही बनाकर देता है, वह यह सोचता है कि अगर लोग इससे हराम करेंगे तो मुझे गुनाह होगा, उसकी यह सोच कैसी है।	
जिस मोहल्ले या शहर में ताऊन हो वहां के निवासी किसी दूसरे स्थान पर "अल्लाह की तक़दीर से अल्लाह की तक़दीर की तरफ भागने" के विचार से जा सकते हैं या नहीं।	२०४
हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) का ताऊन के कारण शाम न जाने का वाकया।	२०४
कौन हकीम योग्य है और कौन अयोग्य।	२०५
योग्य हकीम कब डॉक्टरी का पेशा छोड़ सकता है।	२०५
अयोग्य व्यक्ति के लिए डॉक्टरी करना हराम है।	२०६
औरत को बांझ करना कैसा गुनाह है, और इस गुनाह की माफी है या नहीं।	२०७
केकड़ा खाना हराम है।	२०८
शराब को शरीर पर मलना भी हराम है।	२०८
जान हलाल दवाओं से भी बच सकती है अगर अल्लाह तआला बचाना चाहे।	२०८

مسئلہ / عنوان صفحہ		مسئلہ / عنوان صفحہ	
محبت و تسخیر کے لئے تعویذات کا حکم۔	۱۹۶	طاعون سے بھاگنے والے کے لئے وعیدات کا ذکر۔	۱۹۹
نفس عمل یا تعویذ میں کوئی امر خلاف شرع ہو یا مقصود میں تو ناجائز ورنہ جائز ہے۔	۱۹۷	مرد اپنی زوجہ کا جنازہ اٹھا سکتا ہے۔	۲۰۰
کافر کو مضر تعویذ دینا جائز ہے مظہر نہ دیا جائے۔	۱۹۷	چار مہینے سے قبل مجبوری کی حالت میں اسقاط حمل جائز ، اس کے بعد ناجائز۔	۲۰۱
شراب حرام بھی ہے اور نجس بھی ، اس کا خارج بدن پر لگانا بھی ناجائز ہے۔	۱۹۸	کھانے پر فاتحہ یا کوئی آیت قرآنی پڑھ کر دم کرنا جائز ہے۔	۲۰۱
افیون حرام ہے نجس نہیں ، خارج بدن پر اس کا استعمال جائز ہے۔	۱۹۸	ایسی دوائی پینا جس میں اسپرٹ کی ملاوٹ ہو جائز ہے یا نہیں۔	۲۰۱
بچے کو سلانے یا رونے سے باز رکھنے کے لئے افیون دینا حرام ہے۔	۱۹۸	اسپرٹ شراب کی ایک قسم ہے جو انتہائی تیز ہونے کی وجہ سے تنہا پینے کے قابل نہیں۔	۲۰۱
	۱۹۸		۲۰۱

مسئلہ / عنوان صفحہ		مسئلہ / عنوان صفحہ	
بستی میں طاعون کی بعض علامات شروع ہوگئی ہیں ، اور ابھی کسی کی موت واقع نہیں ہوئی ہے۔ ایسی صورت میں وہاں سے نکل جانے کی اجازت ہے یا نہیں۔	۱۹۸	برطانیہ سے منگوائی جانے والی شرابوں میں اسپرٹ کے قطرات ملائے جاتے ہیں۔	
یہ کہنا کہ نقل مکانی اور تبدیل آب و ہوا ایک گونہ علاج ہے ، کیسا ہے۔	۱۹۸	اسپرٹ حرام ہونے کے علاوہ ناپاک بھی ہے۔	۲۰۲
کتنے میت کا جنازہ اکٹھا ہو سکتا ہے۔	۱۹۸	احیاء سنت پر سو شہیدوں کا ثواب۔	۲۰۲
نابالغ لڑکی اور لڑکے کا جنازہ بالغ کے ساتھ ہو سکتا ہے یا نہیں ، اگر ہو سکتا ہے تو دعائیں کیسے پڑھی جائیں۔	۱۹۸	زید کے پاس نسخہ مردانگی (قوت باہ) کا ہے ، عمرو کو اس کی سخت ضرورت ہے ، مگر زید نہ تو اس کو نسخہ بتاتا ہے اور نہ ہی بنا کر دیتا ہے ، وہ یہ خیال کرتا ہے کہ اس سے لوگ اگر حرام کریں گے تو مجھے گناہ ہوگا ، اس کا یہ خیال کیسا ہے۔	۲۰۳
لڑکا اور لڑکی نابالغ تھے ان کی شادی ہوگئی ، پھر لڑکی بیوہ	۱۹۸		۲۰۴

مسئلہ / عنوان صفحہ		مسئلہ / عنوان صفحہ	
ہوگئی ، تو کیا عقد ثانی کے بارے میں مدت لیا جائے گا یا نہیں ، اگر مدت لیا جائے گا تو کب تک۔		جس محلہ یا جس شہر میں طاعون ہو وہاں کے باشندے کسی دوسرے مقام پر نفر من قضاء اللہ الی قضاء اللہ کے خیال سے جا سکتے ہیں یا نہیں۔	
حضرت فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا طاعون کے سبب شام نہ جانے کا واقعہ۔	۲۰۴	عورت کو بانجھ کرنا کیسا گناہ ہے ، اور اس گناہ کی معافی ہے یا نہیں۔	۲۰۷
کون طبیب اہل ہے اور کون نا اہل۔	۲۰۵	سرطان کھانا حرام ہے۔	۲۰۸
اہل طبیب کب پیشہ طبابت ترک کر سکتا ہے۔	۲۰۵	شراب کو بدن پر ملنا بھی حرام ہے۔	۲۰۸
نا اہل کو طبابت میں ہاتھ ڈالنا حرام ہے۔	۲۰۶	جان حلال دواؤں سے بھی بچ سکتی ہے اگر اللہ تعالیٰ کو بچانا	۲۰۸

Volume 24 Fatawa Razawiya

Page	Subject	Subject/Details	Page
206	Occasional errors in diagnosis or treatment are not contrary to being part of the Ahl al-Bayt.	It is acceptable, otherwise, prohibited medicines will add nothing but sin. One who surreptitiously feeds a Muslim something prohibited is a severe sinner.	208
206	Prophets (peace be upon them) are infallible from error.	It is proven from continuous (mutawatir) noble Hadiths that the plague is a martyrdom and a mercy for a Muslim.	208
206	A question regarding the treatment of infertility.	Support from thirty-two Hadiths.	209
206	One who can defend against the stronger can certainly defend against the weaker.	Treatise: 'Al-Haqq al-Mujtala fi Hukm al-Mubtala' (Description of the reward for sitting with a leper and serving and caring for them).	215
206	What is 'Raj'at-e-Amal'?	Zaid's blood is boiling, in fact, one or two limbs have deteriorated. For such a person, doctors advise that eating, drinking, sitting, and standing with him is forbidden. The matter to be clarified is what the Sharia's ruling is regarding such a person.	215
207	Amulets are proven from Hadiths and ancient Imams.	Numerous Hadiths regarding leprosy patients.	216
207	Hazrat Shah Abu Saeed al-Khayr's reply to one who denies the effect of amulets.	Hazrat Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with him) ate with a companion named Mu'ayqib who had leprosy.	221
207	It is forbidden for an ignorant person to become a physician.	Hazrat Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with him) had Hazrat Mu'ayqib treated by two Yemeni physicians.	222
207			223

Page	Subject	Subject/Details	Page
	What is the ruling on abortion, and is the one who does it a murderer or not?	Hazrat Siddiq-e-Akbar (may Allah be pleased with him) seated a leper next to him and ate food with him.	

खंड २४ फ़तावा रज़विया

पृष्ठ	विषय	विषय/विवरण	पृष्ठ
२०६	कभी-कभी निदान या उपचार में त्रुटि होना अहले बैत के विपरीत नहीं है।	यह स्वीकार्य है, अन्यथा हराम दवाएं पाप के अलावा और कुछ नहीं बढ़ाएंगी। मुसलमान को गुप्त रूप से हराम खिलाने वाला गंभीर पापी है।	२०८
२०६	नबी (उन पर शांति हो) त्रुटि से मासूम (निर्दोष) हैं।	मुतवातिर शरीफ़ हदीसों से साबित है कि प्लेग मुसलमान के लिए शहादत और रहमत है।	२०८
२०६	बांझपन के इलाज के बारे में सवाल।	बत्तीस हदीसों से समर्थन।	२०९
२०६	जो अधिक शक्तिशाली का बचाव कर सकता है, वह कम शक्तिशाली का और भी आसानी से कर सकता है।	रिसाला: 'अल-हक़ अल-मुज्तला फ़ी हुक्म अल-मुब्तला' (कोढ़ी के साथ बैठने और उसकी सेवा और देखभाल के कारण सवाब मिलने का बयान)।	२१५
२०६	'रजअत-ए-अमल' क्या चीज़ है?	ज़ैद का खून उबल रहा है, बल्कि एक-दो अंग बिगड़ गए हैं। ऐसे व्यक्ति के बारे में डॉक्टर सलाह देते हैं कि उसके साथ खाना-पीना और उठना-बैठना मना है। पूछा जाने वाला विषय यह है कि शरीयत का ऐसे व्यक्ति के बारे में क्या हुक्म है।	२१५
२०७	तावीज़ हदीसों और प्राचीन इमामों से प्रमाणित हैं।	कुष्ठ रोगियों से संबंधित अनेक हदीसें।	२१६
२०७	तावीज़ के प्रभाव को नकारने वाले को हज़रत शाह अबू सईद अल-खैर का जवाब।	हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने मुअैकिब नाम के एक सहाबी के साथ खाना खाया जो कुष्ठ रोगी थे।	२२१
२०७	अज्ञानी व्यक्ति के लिए चिकित्सक बनना हराम है।	हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हज़रत मुअैकिब का दो यमनी हकीमों से इलाज करवाया।	२२२
२०७			२२३

पृष्ठ	विषय	विषय/विवरण	पृष्ठ
	गर्भपात का क्या नियम है और क्या इसे करने वाला कातिल होगा या नहीं?	हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने एक कोढ़ी को अपने पास बिठाया और उसके साथ खाना खाया।	

पृष्ठ २२ / ७२०

صفحہ	موضوع	موضوع/تفصیل	صفحہ
۲۰۶	بعض اوقات تشخیص یا علاج میں غلطی واقع ہونا منافی اہلبیت نہیں۔	منظور ہے، ورنہ حرام دوائیں سوائے گناہ کے کچھ اضافہ نہ کریں گی۔ پوشیدہ طور پر مسلمان کو حرام کھلانے والا سخت گناہگار ہے۔	۲۰۸
۲۰۶	انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام غلطی سے معصوم ہیں۔	احادیث کریمہ متواترہ سے ثابت ہے کہ طاعون مسلمان کے لئے شہادت و رحمت ہے۔	۲۰۸
۲۰۶	بانجھ کے علاج کے بارے میں سوال۔	بتیس حدیثوں سے تائید۔	۲۰۹
۲۰۶	جواقوی کی مدافعت کرے وہ اضعف کی بدرجہ اولیٰ کرے گا۔	رسالہ الحق المجتلی فی حکم المبتلی (جذامی کے پاس اٹھنے بیٹھنے اور اس کی خدمت گزاری و تیمارداری کے باعث ثواب ہونا کا بیان)	۲۱۵
۲۰۶	رجعت عمل کیا چیز ہے۔	زید کا خون جوش کھا رہا ہے بلکہ ایک دو اعضاء بگڑ گئے، ایسے شخص کے بارے میں اطباء حکم دیتے ہیں کہ اس کے ساتھ کھانا پینا اور اٹھنا بیٹھنا منع ہے۔ دریافت طلب امر یہ ہے کہ شرع شریف کا ایسے شخص کے بارے میں کیا حکم ہے۔	۲۱۵

صفحہ	موضوع	موضوع/تفصیل صفحہ	
	تعویذات احادیث اور		
۲۰۷	ائمہ قدیم و حدیث	جذام کے مریض سے متعلق متعدد احادیث۔	۲۱۶
	سے ثابت ہیں۔		
	اثر تعویذ کے منکر		
	کو حضرت شاہ	حضرت فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے معقیب نامی	
۲۰۷	ابوسعید الخیر کا	صحابی کو جو جذامی تھے اپنے ساتھ کھانا کھلایا۔	۲۲۱
	جواب۔		
	جاہل کو طبیب بننا	حضرت معقیب کا جناب فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے	
۲۰۷	حرام ہے۔	دو یمنی اطباء سے علاج کرایا۔	۲۲۲
	اسقاط حمل کیسا ہے		
		حضرت صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے جذامی کو اپنے	
۲۰۷	اور ایسا کرنے والا	پاس بٹھایا اور اس کے ساتھ آپ نے کھانا کھایا۔	۲۲۳
	قاتل ہوگا یا نہیں ۔		

Fatawa Razvia, Volume 24

Topic	Page	Topic	Page
Fourthly: The command to flee is so that they are not harmed by its foul smell etc.	250	A wife has no right to request dissolution of marriage from a husband afflicted with leprosy.	282
Fifthly: The opinion of the majority is that the command for distance and fleeing is to save one from the whispers of Satan and false beliefs.	250	The consensus of scholars is that sitting and socialising with a leper is permissible and serving them is a cause for reward.	282
Virtues of Imam Abu Ja'far al-Tahawi.	251	Treatise: Taysir al-Ma'un lil-Sukna fi al-Ta'un (The Shar'i ruling regarding the residents of a place where the plague has broken out).	285
Tattful 'ala al-Tahawi (Commentary on Tahawi).	251	What is the ruling on fleeing from a place of plague due to fear of the plague?	285
Reconciliation between the two Hadiths.	253	If fleeing is considered permissible, then what is the meaning of the Hadith regarding fleeing from plague narrated from Abdur Rahman bin Awf in Bukhari?	285
According to physicians, seven diseases are contagious.	255	In the case of impermissibility, what degree of sin is fleeing from the plague—major (kabira) or minor (saghira)?	285
According to the five mentioned views, contagion is pure falsehood, and this is the path of great companions and imams.	256	What is the Shariah's view on someone who persists in a minor or major sin?	285
Sixth and Seventh methods.	257	What is the ruling on praying behind someone who fled from the plague due to fear for their life?	285
Eighthly.	259		285

Topic	Page	Topic	Page
		Are the one who flees from the plague and the one who encourages it sinners of the same degree, or more or less?	
Reconciliation between two authentic Hadiths.	264	What is the Shari'i status of someone who considers fleeing from plague not just permissible but better, in opposition to the Hadith of its prohibition?	286
Arguments from our side against those who affirm contagion: Firstly, Secondly.	266	Is the saying or action of a Companion worth following when it contradicts an authentic Hadith?	286
In summary, the reliable, correct, preferred, and sound opinion is that leprosy, itchiness, smallpox, and plague etc. are not contagious diseases at all. The recommendation to stay away from them is for those with weak faith.	281	Can the action of a Companion be given preference over a verbal Hadith?	286
A woman cannot refuse her husband afflicted with leprosy from sexual intercourse.	282	Does a person who, out of fear of plague and for health reasons, flees a plague-stricken area and settles in its suburbs or outskirts fall under the warning of the Hadith prohibiting fleeing from the plague or not?	286

फ़तावा रज़विया, खंड २४

विषय	पृष्ठ
चौथा: भागने का आदेश इसलिए है ताकि उसकी बदबू आदि से उन्हें कष्ट न हो।	२५०
पाँचवाँ: विद्वानों के बहुमत का मत है कि दूरी और पलायन का आदेश शैतान के वसवसों और गलत मान्यताओं से बचाने के लिए है।	२५०
इमाम अबू जाफर अत-तहावी के गुण (मनाकिब)।	२५१
अत-तहावी पर टिप्पणी।	२५१
दो हदीसों के बीच सामंजस्य।	२५३
हकीमों (वैद्यों) के अनुसार, सात बीमारियाँ संक्रामक हैं।	२५५
उक्त पाँच कथनों के अनुसार, छुआछूत पूरी तरह गलत है और यही महान सहाबा और इमामों का मत है।	२५६
छठा और सातवाँ तरीका।	२५७
कुष्ठ रोगी पति से पत्नी को विवाह विच्छेद (तलाक) माँगने का अधिकार नहीं है।	२८२
विद्वानों का सर्वसम्मति से मानना है कि कुष्ठ रोगी के पास बैठना जायज़ है और उनकी सेवा करना सवाब का कारण है।	२८२
रिसाला: तईसीरुल माऊन लिस-सुकना फ़ित-ताऊन (जहाँ ताऊन (प्लेग) की बीमारी फैल जाए, वहाँ के निवासियों के लिए शरई हुक्म)।	२८५
ताऊन (प्लेग) के डर से ताऊन वाली जगह से भागना कैसा है?	२८५
यदि पलायन को जायज़ माना जाए, तो बुखारी में अब्दुर रहमान बिन औफ़ से वर्णित हदीस 'फ़िरार अनित-ताऊन' (ताऊन से भागना) का क्या अर्थ है?	२८५
यदि ताऊन से भागना जायज़ न हो, तो यह किस श्रेणी का पाप है—बड़ा (कबीरा) या छोटा (सग़ीरा)?	२८५
छोटे या बड़े पाप पर अड़े रहने वाले के लिए शरीयत का क्या हुक्म है?	२८५
जान के डर से ताऊन वाली जगह से भागने वाले के पीछे नमाज़ पढ़ने का क्या हुक्म है?	२८५

विषय	पृष्ठ
आठवाँ।	२५९
दो सही हदीसों में सामंजस्य।	२६४
छुआछूत मानने वालों के खिलाफ हमारी ओर से पहली और दूसरी दलील।	२६६
संक्षेप में, विश्वसनीय, सही और प्रबल मत यह है कि कुष्ठ, खुजली, चेचक और ताऊन आदि संक्रामक रोग नहीं हैं। कमजोर विश्वास वाले लोगों को उनसे दूर रहने का आदेश केवल मुस्तहब (पसंदीदा) है।	२८१
एक महिला अपने कुष्ठ रोगी पति को सहवास से मना नहीं कर सकती।	२८२

विषय	पृष्ठ
क्या ताऊन से भागने वाला और इसके लिए प्रेरित करने वाला एक ही स्तर के गुनहगार हैं या कम-ज़्यादा?	२८५
जो व्यक्ति ताऊन के खिलाफ हदीस के बावजूद भागने को न केवल जायज़ बल्कि बेहतर मानता हो, वह शरई तौर पर कैसा है?	२८६
क्या सही हदीस के मुकाबले किसी सहाबी का कथन या कार्य अनुकरणीय है?	२८६
क्या सहाबी के कार्य को हदीस के शाब्दिक वर्णन पर वरीयता दी जा सकती है?	२८६
क्या वह व्यक्ति जो प्लेग के डर से और स्वास्थ्य की रक्षा के लिए आबादी छोड़कर उसी आबादी के बाहरी इलाकों में बस जाता है, ताऊन से भागने की मनाही वाली हदीस की चेतावनी के घेरे में आता है या नहीं?	२८६

पृष्ठ ७२० का २४

فتاوی رضویہ، جلد ۲۴

عنوان صفحہ	
چہارم: امر فرار اس لئے ہے کہ اس کی بدبو وغیرہ سے ایذا نہ پائیں۔	۲۵۰
پنجم: مذہب جمہور کہ دوری و فرار کا حکم وسوسہ ابلیس اور اعتقاد باطل سے بچانے کے لئے ہے۔	۲۵۰
امام ابو جعفر طحاوی کے مناقب۔	۲۵۱
تطفل علی الطحاوی۔	۲۵۱
التوفیق بین الحدیثین۔	۲۵۳
بزعم اطباء سات بیماریاں متعدی ہیں۔	۲۵۵

عنوان صفحہ	
جزامی شوہر سے عورت کو فسخ نکاح کی درخواست کا حق نہیں۔	۲۸۲
علماء کا اتفاق ہے کہ مجذوم کے پاس اٹھنا بیٹھنا مباح اور اس کی خدمت گزاری موجب ثواب ہے۔	۲۸۲
رسالہ تیسیر الماعون للسکنی فی الطاعون (جہاں طاعون کی مرض پیدا ہو جائے وہاں کے باشندوں سے متعلق حکم شرعی)	۲۸۵
طاعون کے خوف سے مقام طاعون سے فرار کرنا کیسا ہے۔	۲۸۵
جواز فرار مانا جائے تو حدیث فرار عن الطاعون جو بخاری میں عبدالرحمن عوف سے مروی ہے کے کیا معنی ہیں۔	۲۸۵
در صورت عدم جواز فرار عن الطاعون کس درجہ کی معصیت ہے، کبیرہ یا صغیرہ۔	۲۸۵

عنوان	صفحہ
اقوال خمسہ مذکورہ کے مطابق عدوی باطل محض ہے اور جلیل القدر صحابہ و ائمہ کا یہی مذہب ہے۔	۲۵۶
طریق سادس و سابع۔	۲۵۷
ثامن۔	۲۵۹
دو صحیح حدیثوں میں تطبیق۔	۲۶۴
مثبتین عدوی پر ہماری طرف سے حجت اولاً، ثانیاً۔	۲۶۶
بالجملہ مذہب معتمد و صحیح و راجح و صیح یہ ہے کہ جذام، کھجلی، چیچک اور طاعون وغیرہ ہما اصلاً کوئی متعدی امراض نہیں ہیں۔ ضعیف الیقین لوگوں	۲۸۱
گناہ صغیرہ یا کبیرہ پر اصرار کرنے والا شرعاً کیسا ہے۔	۲۸۵
جان کے خوف کے سبب طاعون سے بھاگنے والے کے پیچھے نماز کا کیا حکم ہے۔	۲۸۵
طاعون سے بھاگنے والا اور اس کی ترغیب دینے والا کیا ایک درجہ کے گنہگار ہیں یا کم یا زیادہ۔	۲۸۵
جو طاعون سے فرار کو بمقابلہ حدیث حرمت فرار صرف جائز ہی نہیں بلکہ احسن سمجھتا ہو وہ شرعاً کیسا ہے	۲۸۶
کیا حدیث صحیح کے مقابلہ میں کسی صحابی کا قول یا فعل قابل تقلید ہے۔	۲۸۶
کیا قولی حدیث پر فعل صحابی کو ترجیح دی جا سکتی ہے۔	۲۸۶

عنوان	صفحہ
کو ان سے دور رہنے کا حکم استحبابی ہے۔	
عورت اپنے جذامی شوہر کو ہمبستری سے منع نہیں کر سکتی۔	۲۸۲
بخوف طاعون حفظ صحت کا خیال کرتے ہوئے طاعونی آبادی سے فرار کر کے اسی آبادی کے مضافات و فناء میں سکونت اختیار کرنے والا فرار عن الطاعون کی حرمت والی حدیث کی وعید میں آتا ہے یا نہیں۔	۲۸۶

Fatawa Razawiya Volume 24

- Fleeing from the plague is a major sin. | 287 | One who considers fleeing from the plague to be a good act, while being aware of the Hadiths of prohibition, is clearly misguided. | 291
- One who flees from the plague is like one who flees from the battlefield against disbelievers in Jihad. | 287 | In matters where opinion and independent reasoning (ijtihad) have no place, the saying of a Companion is evidence for the saying of the Messenger. | 292
- A severe warning for those who turn their backs and flee from disbelievers in Jihad. | 287 | Methods of reconciliation if a Companion's saying contradicts a Hadith. | 292
- People from outside should not enter a plague-stricken area, and residents of a plague-stricken area should not flee from there. | 288 | The Hadith of the plague is of the type that it being hidden from some or even most Companions was a cause for surprise. | 293
- Persistence in a minor sin makes it a major sin, and persistence in a major sin makes it an even more severe major sin. | 289 | Ameer al-Mu'mineen Farooq-e-Azam received news on the way to Syria that there was a plague there. He first consulted the Muhajireen, then the Ansar, then the elders of the Quraysh. Everyone gave their opinion. Then Abdur Rahman bin Auf (Allah be pleased with him) presented a Hadith of the Master of the Two Worlds (peace and blessings be upon him), and it was acted upon accordingly. | 293
- No sin remains minor after persistence. | 289 | Virtues (Manaqib) of Hazrat Mu'adh bin Jabal (Allah be pleased with him). | 294
- One who encourages fleeing from the plague is in greater trouble/sin than the one who actually flees. | 289 | Hazrat Farooq-e-Azam declared exoneration from the accusation of fleeing from the plague. | 297
- Opposition to divine commands in the sin itself does not have the same character as when it is contrary to the Shari'ah's command of forbidding evil and enjoining good. | 289 | The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) has declared fleeing from the plague as forbidden (haram); there is no distinction between being inside or outside a city. | 297
- The reward for one who calls to good and the sin and burden for one who calls to misguidance. | 290 | Research of the author (may mercy be upon him) that

despite different wordings, there is no conflict or contradiction in the Hadiths related to the plague. | 299

- Fleeing from the plague is a major sin and encouraging it is a more severe major sin, and both are transgressors (fasiq). | 290 | Firstly | 299
- Appointing an open transgressor (fasiq-e-mu'lin) as Imam is a sin, and praying behind him is prohibitively disliked (makruh tahrimi). | 290 | |

फतावा रज़विया जिल्द 24

- प्लेग (ताऊन) से भागना गुनाह-ए-कबीरा (बड़ा पाप) है। | २८७ | जो व्यक्ति प्लेग से भागने को अच्छा समझता है, यदि वह निषेध की हदीसों से अवगत है, तो वह स्पष्ट रूप से गुमराह है। | २९१
- प्लेग से भागने वाला वैसा ही है जैसे जिहाद में काफिरों के मुकाबले से भागने वाला। | २८७ | जिस मामले में राय और इजतिहाद (स्वतंत्र तर्क) का कोई स्थान न हो, उसमें सहाबी का कथन रसूल के कथन का प्रमाण है। | २९२
- जिहाद में काफिरों को पीठ दिखाकर भागने वालों के लिए कड़ी चेतावनी। | २८७ | यदि सहाबी का कथन हदीस के विरुद्ध हो तो सामंजस्य के तरीके। | २९२
- प्लेग वाली जगह पर बाहर वालों को नहीं जाना चाहिए और प्लेग प्रभावित आबादी वालों को वहां से नहीं भागना चाहिए। | २८८ | प्लेग की हदीस उस श्रेणी की है जिसे कुछ या अधिकांश सहाबा से छिपा रहना आश्चर्यजनक था। | २९३
- सगीरा (छोटे पाप) पर अड़े रहना उसे कबीरा बना देता है और कबीरा पर अड़े रहना उसे और भी गंभीर कबीरा बना देता है। | २८९ | अमीर-उल-मोमिनीन फारूक-ए-आजम को शाम (सीरिया) के रास्ते में खबर मिली कि वहां प्लेग है। आपने पहले मुहाजिरीन, फिर अंसार, फिर कुरैश के बुजुर्गों से सलाह ली। सभी ने अपनी-अपनी राय दी। फिर अब्दुर रहमान बिन औफ (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने सरकार-ए-दो आलम (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की हदीस पेश की, और उसी पर अमल हुआ। | २९३
- निरंतरता के बाद कोई गुनाह सगीरा नहीं रहता। | २८९ | हज़रत मुआज़ बिन जबल (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के गुण (मनाकिब)। | २९४
- प्लेग से भागने के लिए प्रोत्साहित करने वाला भागने वाले से अधिक संकट/पाप में है। | २८९ | हज़रत फारूक-ए-आजम ने प्लेग से भागने के आरोप से बरी होने की घोषणा की। | २९७
- स्वयं पाप में ईश्वरीय आदेशों का विरोध करना उस चरित्र का नहीं है जो शरीयत के बुराई से रोकने और भलाई का आदेश देने के विपरीत होता है। | २८९ | अल्लाह के रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने प्लेग से भागना हराम घोषित किया है; इसमें शहर के अंदर या बाहर होने का कोई भेद नहीं है। | २९७

- नेकी की दावत देने वाले का पुण्य और गुमराही की दावत देने वाले का पाप और बोझ। | २९० | लेखक (उन पर अल्लाह की रहमत हो) का शोध कि विभिन्न शब्दों के बावजूद प्लेग से संबंधित हदीसों में कोई विरोध या विरोधाभास नहीं है। | २९९
- प्लेग से भागना कबीरा है और इसके लिए उकसाना अधिक गंभीर कबीरा है, और दोनों फासिक (मर्यादा तोड़ने वाले) हैं। | २९० | प्रथमतः | २९९
- घोषित फासिक (फासिक-ए-मुअ्लिन) को इमाम बनाना गुनाह है और उसके पीछे नमाज़ पढ़ना मकरूह-ए-तहरीमी (सख्ती से नापसंद) है। | २९० | |

- طاعون سے فرار گناہ کبیرہ ہے۔ | ۲۸۷ | فرار عن الطاعون کو احسن سمجھنے والا اگر احادیث تحریم سے باخبر ہے تو صریح گمراہ ہے۔ | ۲۹۱
- طاعون سے بھاگنے والا ایسا ہی ہے جیسے جہاد میں کافروں کے مقابلے سے بھاگنے والا۔ | ۲۸۷ | جس امر میں رائے اور اجتہاد کو دخل نہ ہو اس میں قول صحابی دلیل قول رسول ہے۔ | ۲۹۲
- جہاد میں کفار کی پیٹھ دے کر بھاگنے والے کے لئے وعید شدید۔ | ۲۸۷ | صحابی کا قول مخالف حدیث ہو تو تطبیق کی صورتیں۔ | ۲۹۲
- طاعون والی جگہ باہر والوں کو جانا نہیں چاہئے اور طاعونی آبادی والوں کو وہاں سے بھاگنا نہیں چاہئے۔ | ۲۸۸ | حدیث طاعون اس قبیل سے جس کا بعض بلکہ اکثر صحابہ پر مخفی رہنا جائے تعجب تھا۔ | ۲۹۳
- صغیرہ پر اصرار اسے کبیرہ کر دیتا ہے اور کبیرہ پر اصرار اسے سخت تر کبیرہ کر دیتا ہے۔ | ۲۸۹ | امیر المومنین فاروق اعظم کو راہ شام میں خبر ملی کہ وہاں طاعون ہے، آپ نے پہلے مہاجرین پھر انصار پھر مشائخ قریش سے مشورہ کیا، سب نے اپنی اپنی رائے دی، پھر عبد الرحمن ابن عوف رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے سرکار دو عالم علیہ الصلوۃ والسلام کی حدیث پیش کی، چنانچہ اسی پر عمل ہوا۔ | ۲۹۳
- کوئی گناہ اصرار کے بعد صغیرہ نہیں رہتا۔ | ۲۸۹ | حضرت معاذ بن جبل رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے مناقب۔ | ۲۹۴

- طاعون سے فرار کی ترغیب دینے والا فرار کرنے والے سے اشد وبال میں ہے۔ | ۲۸۹ | حضرت فاروق اعظم نے طاعون سے بھاگنے کی تہمت سے براءت فرمائی۔ | ۲۹۷
- نفس گناہ میں احکام الٰہیہ سے معارضہ کی وہ شان نہیں جو بر عکس حکم شرع نہی عن المنکر و امر بالمنکر میں ہے۔ | ۲۸۹ | رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے طاعون سے بھاگنا حرام فرمایا ہے اس میں کوئی تخصیص شہر و بیرون شہر کی نہیں۔ | ۲۹۷
- نیکی کی دعوت دینے والے کا اجر اور گمراہی کی دعوت والے کا گناہ و وبال۔ | ۲۹۰ | تحقیق مصنف علیہ الرحمہ کہ الفاظ مختلفہ کے باوجود احادیث متعلقہ طاعون میں کوئی تعارض و تخالف نہیں۔ | ۲۹۹
- طاعون سے فرار کبیرہ ہے اور اس کی ترغیب دینا سخت تر کبیرہ، اور دونوں فاسق ہیں۔ | ۲۹۰ | اولاً | ۲۹۹
- فاسق معلن کو امام بنانا گناہ اور اس کے پیچھے نماز پڑھنا مکروہ تحریمی ہے۔ | ۲۹۰ | |

Fatawa Razawiyya Volume 24

| 299 | In all the words of the Hadiths, there is only a severe warning for fleeing from the plague, and an encouragement and emphasis on staying with patience; there is no restriction of city, neighborhood, or surroundings of the city. | Benefit of the word 'Yamkuth' in Hadith. | 302 | | 299 | Whatever movement is for fleeing from the plague, even if it is in the neighborhoods of the same city, it will surely be included in this severe warning. | In case of an outbreak of plague, stay in your city with three attributes/rows. | 302 | | 299 | Secondly | Fifthly | 302 | | 299 | Reasoning from the Hadith of Umm al-Mu'minin Siddiqah (may Allah Almighty be pleased with her). | Reasoning from the Hadith equating fleeing from the plague to fleeing from the battlefield of Jihad. | 302 | | 300 | Allah Almighty made the plague a mercy for this Ummah. | Sixthly | 303 | | 300 | One who stays in their home being patient during a plague gets a reward equal to that of a martyr. | A wisdom behind declaring fleeing from the plague as Haraam (forbidden). | 304 | | 300 | Thirdly | It is forbidden to flee not only from the plague but from every epidemic disease. | 304 | | 300 | There is fundamentally no contradiction between the Hadith of Musnad Ahmad and the Hadith of Bukhari. | Benefit | 305 | | 301 | 'Fi Baladihi' (in his city) in Hadith Bukhari and 'Fi Baytihi' (in his house) in Hadith Ahmad are related to both 'Yamkuth' (stays) and 'Yaqa'u' (happens) by way of dispute. | The command of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah Almighty be upon him) that Gabriel brought fever and plague to me; I let the fever stay in Madina and sent the plague to the land of Syria. Plague is martyrdom and mercy for my Ummah. | 305 | | 301 | The one in whose city a plague has occurred should not flee from that city, and the one in whose own home it has occurred should not flee from his home. | When Siddiq al-Akbar (may Allah Almighty be pleased with him) would send any army towards Syria, he would take a pledge on two things equally: first, not to flee from the spears of enemies, and second, not to flee from the plague. | 305 | | 301 | Fleeing from a city or home is not prohibited in itself; rather, fleeing because of the plague is prohibited. | One who encourages fleeing from the plague is their ill-wisher, not a well-wisher. | 306 | | 302 | Fourthly | The Prophet (peace and blessings be upon him) is more kind to the Ummah than parents. | 306 |

फतावा रज़विया जिल्द २४

| २९९ | हदीसों के तमाम शब्दों में केवल प्लेग (ताऊन) से भागने पर कड़ी चेतावनी है और धैर्य के साथ रुकने का प्रोत्साहन और ताकीद है; शहर, मोहल्ले या शहर के आसपास की कोई पाबंदी नहीं है। | हदीस में 'यमक़ुस' शब्द का लाभ। | ३०२ | | २९९ | जो भी हरकत प्लेग से भागने के लिए होगी, भले ही वह उसी शहर के मोहल्लों में हो, वह निश्चित रूप से इस कड़ी चेतावनी में शामिल होगी। | प्लेग होने की स्थिति में अपने शहर में तीन गुणों/पंक्तियों के साथ ठहरें। | ३०२ | | २९९ | दूसरे | पाँचवें | ३०२ | | २९९ | उम्मुल मोमिनीन सिद्दीका (रज़ियल्लाहु अन्हा) की हदीस से तर्क। | हदीस में प्लेग से भागने को जिहाद के मैदान से भागने के समान बताने से तर्क। | ३०२ | | ३०० | अल्लाह तआला ने इस उम्मत के लिए प्लेग को रहमत (दया) बना दिया। | छठे | ३०३ | | ३०० | प्लेग के दौरान धैर्य रखते हुए अपने घर में ठहरने वाले को शहीद के बराबर सवाब (पुण्य) मिलता है। | प्लेग से भागने को हराम करार देने की एक हिकमत (बुद्धिमानी)। | ३०४ | | ३०० | तीसरे | केवल प्लेग ही नहीं, बल्कि हर महामारी से भागना मना है। | ३०४ | | ३०० | मुसनद अहमद की हदीस और बुखारी की हदीस में मूल रूप से कोई मतभेद नहीं है। | लाभ | ३०५ | | ३०१ | बुखारी की हदीस में 'फ़ी बलदिही' और अहमद की हदीस में 'फ़ी बैतिही' दोनों 'यमक़ुस' और 'यक़'उ' से संबंधित हैं। | रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का फरमान कि मेरे पास जिब्रील बुखार और ताऊन (प्लेग) लाए, मैंने बुखार को मदीना में रहने दिया और ताऊन को मुल्क-ए-शाम भेज दिया, ताऊन मेरी उम्मत के लिए शहादत और रहमत है। | ३०५ | | ३०१ | जिसके शहर में ताऊन हुआ हो वह उस शहर से और जिसके अपने घर में हुआ हो वह अपने घर से न भागे। | सिद्दीक-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) जब भी कोई लश्कर शाम की तरफ भेजते तो दो बातों पर समान रूप से बैअत (प्रतिज्ञा) लेते: एक यह कि दुश्मनों के नेज़ों से न भागना और दूसरा यह कि ताऊन से न भागना। | ३०५ | | ३०१ | शहर या घर से भागना अपने आप में वर्जित नहीं है, बल्कि ताऊन की वजह से भागना वर्जित है। | ताऊन से भागने के लिए उकसाने वाला उनका बुरा चाहने वाला है, शुभचिंतक नहीं। | ३०६ | | ३०२ | चौथे | हुज़ूर (अलैहिस्सलातु वस्सलाम) माता-पिता से बढ़कर उम्मत पर मेहरबान हैं। | ३०६ |

पृष्ठ २६/७२०

| ۲۹۹ | تمام الفاظِ احادیث میں صرف طاعون سے بھاگنے پر وعیدِ شدید ہے اور صبر کر کے ٹھہرے رہنے کی ترغیب و تاکید ہے شہر، محلے یا حوالیِ شہر کی کوئی قید نہیں۔ | حدیث میں لفظِ یمکث کا فائدہ۔ | ۳۰۲ | | ۲۹۹ | جو نقل و حرکت طاعون سے بھاگنے کے لئے ہوگی اگرچہ اسی شہر کے محلوں میں ہو تو وہ ضرور اس وعید شدید میں داخل ہوگی۔ | طاعون واقع ہونے کی صورت میں اپنے شہر میں تین و صفوں کے ساتھ ٹھہرے۔ | ۳۰۲ | | ۲۹۹ | ثانیاً | خامساً | ۳۰۲ | | ۲۹۹ | حدیث ام المؤمنین صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے استدلال۔ | حدیث میں فرار عن الطاعون کو میدانِ جہاد کے مماثل قرار دینے سے استدلال۔ | ۳۰۲ | | ۳۰۰ | طاعون کو اللہ تعالیٰ نے اس امت کے لئے رحمت بنا دیا۔ | سادساً | ۳۰۳ | | ۳۰۰ | طاعون میں صابر ہو کر اپنے گھر میں ٹھہرنے والے کو شہید کے برابر ثواب ملتا ہے۔ | فرار عن الطاعون کو حرام قرار دینے کی ایک حکمت | ۳۰۴ | | ۳۰۰ | ثالثاً | صرف طاعون ہی نہیں ہر وبائی مرض سے بھاگنا منع ہے۔ | ۳۰۴ | | ۳۰۰ | حدیث مسند احمد اور حدیث بخاری میں اصلاً اختلاف نہیں۔ | فائدہ | ۳۰۵ | | ۳۰۱ | حدیث بخاری میں فی بلدہ اور حدیث احمد میں فی بیتہ برسبیلِ تنازع یمکث اور یقع دونوں سے متعلق ہیں۔ | فرمانِ رسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کہ میرے پاس جبرائیل بخار اور طاعون لائے میں نے بخار مدینہ میں رہنے دیا اور طاعون ملک شام کو بھیج دیا، طاعون میری امت کے لئے شہادت و رحمت ہے۔ | ۳۰۵ | | ۳۰۱ | جس کے شہر میں طاعون واقع ہوا وہ اس شہر سے اور جس کے خود گھر میں واقع ہو وہ اپنے گھر سے نہ بھاگے۔ | صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ جب کوئی لشکر شام کی طرف بھیجتے تو دو باتوں پر یکساں بیعت لیتے، ایک یہ کہ دشمنوں کے نیزوں سے نہ بھاگنا اور دوسرا یہ کہ طاعون سے نہ بھاگنا۔ | ۳۰۵ | |

۳۰۱ | شہر یا گھر سے بھاگنا لذاتہ ممنوع نہیں بلکہ طاعون کی وجہ سے بھاگنا منع ہے۔ | فرار عن الطاعون کی ترغیب دینے والا ان کا بد خواہ ہے خیر خواہ نہیں۔ | ۳۰۶ | | ۳۰۲ | رابعاً | حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام ماں باپ سے بڑھ کر امت پر مہربان ہیں۔ | ۳۰۶ |

Fatawa-e-Razvia Volume 24

- Siddiq-e-Akbar (may Allah be pleased with him) is the greatest well-wisher of the Ummah. | 306 | A disbeliever is an extreme oppressor. | 312
- Comparing plague to fire and earthquake is void. | 306 | One who unites with a polytheist and stays with them is like that polytheist. | 312
- Considering plague to fall under the Quranic verse "and do not throw [yourselves] with your [own] hands into destruction" is merely a misconception. | 306 | Example of good and bad companions. | 313
- Ali bin Zaid bin Jad'an was not among the reliable scholars; some have called him a Shiite and Rafidi. | 307 | A person suffers harm by sitting with evil people. | 314
- Important Warning: Just as fleeing from a plague is forbidden, going there is also prohibited and a sin. | 308 | Judge a person by their companions. | 314
- (Command is to sever ties with those who speak ill of the companions and family of the Prophet (peace and blessings be upon him).) | 308 | | 314
- Fleeing from Divine destiny and confronting Divine affliction are both forbidden. | 308 | Experience testifies that eating together fosters love and affection. | 315
- Trust in God (Tawakkul) is not the name for opposing means/causes. | 308 | Friendship/alliance with disbelievers is a deadly poison. | 315
- If the intention is not to flee or confront, how is visiting a plague-stricken city? | 308 | Company is definitely influential; natures are thieves and hearts are changeable. | 318
- The meaning of those Hadiths which consist of the prohibition of entering or fleeing from a plague-stricken city. | 309 | Verses of Maulana Rumi regarding the influence of company. | 318
- **Company, Friendship, Love, and Enmity** | | Whether dealing with Shiites is permissible or not. | 320
- What is the Shariah ruling for Muslims who eat and drink freely with disbelievers. | 311 | The love of an innovator (in religion) is fire, and their company is a snake. | 320
- Mixing with disbelievers and eating/drinking together should be avoided. | 311 | Is it permissible to make a Rafidi an Imam, eat/drink with him, and have children taught by him or not. | 321

• Fifteen proofs from the Quran and Hadith on the prohibition of mixing with disbelievers. | 311 | Is it permissible for the Ahl-us-Sunnah wa al-Jama'ah to accept offerings (Niaz etc.) from Shiite Sayyids? | 322

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 24

- सिद्दीक-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) उम्मत के सबसे बड़े खैरख्वाह (शुभचिंतक) हैं। | 306
- काफ़िर अत्यधिक ज़ालिम है। | 312
- ताऊन (प्लेग) की तुलना आग और भूकंप से करना बातिल (अमान्य) है। | 306 | जो मुशरिक के साथ एक हो जाए और उसके साथ रहे, वह उसी मुशरिक की तरह है। | 312
- ताऊन को कुरान की आयत "और अपने ही हाथों खुद को तबाही में न डालो" के अंतर्गत समझना मात्र एक वहम (वसवसा) है। | 306 | अच्छे और बुरे साथी का उदाहरण। | 313
- अली बिन ज़ैद बिन जदआन प्रामाणिक विद्वानों में से नहीं थे; कुछ ने उन्हें शिया और राफ़ज़ी कहा है। | 307 | बुरे लोगों के पास बैठने से मनुष्य का नुकसान होता है। | 314
- चेतावनी: जिस तरह प्लेग से भागना हराम है, वहां जाना भी नाजायज़ और गुनाह है। | 308 | व्यक्ति को उसके साथियों के आधार पर परखें। | 314
- (हुज़ूर अलैहिस्सलाम के सहाबा और अहले बैत को बुरा कहने वालों से संबंध तोड़ने का हुक्म है।) | 308 | | 314
- तक़दीर-ए-इलाही से भागना और बला-ए-इलाही का मुक़ाबला करना दोनों मना हैं। | 308 | अनुभव गवाह है कि साथ खाना खाने से प्रेम और स्नेह बढ़ता है। | 315
- तवक्कुल (ईश्वर पर भरोसा) साधनों के विरोध का नाम नहीं है। | 308 | काफ़िरों से दोस्ती/मेलजोल घातक विष (ज़हर) है। | 315
- यदि भागने या मुक़ाबला करने की नीयत न हो, तो प्लेग प्रभावित शहर में आने-जाने का क्या हुक्म है। | 308 | संगति निश्चित रूप से प्रभावशाली होती है; स्वभाव चोर होते हैं और हृदय परिवर्तनशील। | 318
- उन हदीसों का अर्थ जो प्लेग प्रभावित शहर में जाने या वहां से भागने की मनाही पर आधारित हैं। | 309 | संगति के प्रभाव के संबंध में मौलाना रूमी के शेर। | 318
- **संगति, मित्रता, प्रेम और शत्रुता** | | शियाओं के साथ व्यवहार करना जायज़ है या नहीं। | 320
- काफ़िरों के साथ बेझिझक खाने-पीने वाले मुसलमानों के लिए शरीयत का क्या हुक्म है। | 311 | बद-मज़हब (भटके हुए पंथ) का प्रेम आग है और उसकी संगत सांप है। | 320

- काफ़िरों के साथ घुलने-मिलने और उनके साथ खाने-पीने से बचना चाहिए। | 311 | राफ़ज़ी को इमाम बनाना, उसके साथ खाना-पीना और उससे बच्चों को शिक्षा दिलाना जायज़ है या नहीं। | 321
- काफ़िरों से मेलजोल की मनाही पर कुरान और हदीस से पंद्रह दलीलें (प्रमाण)। | 311 | शिया सादात (सैय्यदों) के यहाँ से नियाज़ (प्रसाद) आदि लेना अहले सुन्नत व जमात के लिए कैसा है। | 322

पृष्ठ 27/720

صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ امت کے سب سے بڑے خیر خواہ ہیں۔ | ۳۰۶ | کافر حد درجہ کا ظالم ہے۔ | ۳۱۲ طاعون کو آگ اور زلزلے پر قیاس کرنا باطل ہے۔ | ۳۰۶ | جو مشرک سے یک جا ہو اور اس کے ساتھ رہے وہ اسی مشرک کی مانند ہے۔ | ۳۱۲ طاعون کو آیت کریمہ "ولا تلقوا بایدیکم الی التھلکۃ" کے تحت داخل سمجھنا وسوسہ محض ہے۔ | ۳۰۶ | اچھے اور برے ہم نشین کی مثال۔ | ۳۱۳ علی بن زید بن جدعان مستند علماء میں سے نہ تھا بعض نے اس کو شیعی و رافضی کہا ہے۔ | ۳۰۷ | اشرار کے پاس بیٹھنے سے آدمی نقصان اٹھاتا ہے۔ | ۳۱۴ تنبیہ نبیہ: جس طرح طاعون سے بھاگنا حرام ہے اس کے لئے وہاں جانا بھی ناجائز و گناہ ہے۔ | ۳۰۸ | آدمی کو اس کے ہم نشین پر قیاس کرو۔ | ۳۱۴ حضور علیہ الصلوۃ والسلام کے اصحاب واہلبیت کو برا کہنے والوں سے قطع تعلق کا حکم ہے۔ | ۳۰۸ | | ۳۱۴ تقدیر الٰہی سے بھاگنا اور بلاء الٰہی کا مقابلہ کرنا دونوں ممنوع ہیں۔ | ۳۰۸ | تجربہ شاہد ہے کہ ساتھ کھانا مورت محبت و وداد ہوتا ہے۔ | ۳۱۵ توکل معارضہ اسباب کا نام نہیں۔ | ۳۰۸ | کفار کی موالات سم قاتل ہے۔ | ۳۱۵ اگر فرار و مقابلہ کی نیت نہ ہو تو طاعونی شہر میں آنا جانا کیسا ہے۔ | ۳۰۸ | صحبت قطعاً موثر ہے اور طبیعتیں سراقہ اور قلوب متقلب ہیں۔ | ۳۱۸ ان حدیثوں کا مطلب جو طاعونی شہر میں جانے یا وہاں سے بھاگنے کی ممانعت پر مشتمل ہیں۔ | ۳۰۹ | تاثیر صحبت سے متعلق مولانا رومی کے اشعار | ۳۱۸ صحبت و موالات و محبت و عداوت | | شیعہ کے ساتھ برتاؤ کرنا جائز ہے یا نہیں | ۳۲۰ کفار کے ساتھ بے تکلفانہ کھانے پینے والے مسلمانوں کا شرعاً کیا حکم ہے۔ | ۳۱۱ | بد مذہب کی محبت آگ ہے اور صحبت ناگ ہے۔ | ۳۲۰ کافروں سے مخالطت اور ان کے ساتھ ہم پیالہ و ہم نوالہ ہونے سے احتراز چاہئے۔ | ۳۱۱ | رافضی کو امام بنانا، اس کے ساتھ کھانا

پینا اور بچوں کو اس سے تعلیم دلوانا جائز ہے یا نہیں۔ | ۳۲۱ مخالطت کفار کی ممانعت پر قرآن و حدیث سے پندرہ دلائل۔ | ۳۱۱ | سادات اہل تشیع کے یہاں کی نیاز وغیرہ اہل سنت و جماعت کو لینا کیسا ہے۔ | ۳۲۲

Fatawa Razawiyya - Volume 24

Topic	Page	Topic	Page
The one who forbids by calling the Niaz of Shia forbidden is doing right.	323	Eating food at the homes of Qadianis is forbidden.	328
It is a pity for those Muslims who support Hindus in opposition to Muslims.	323	There is no harm in necessary conversation while having heart-felt hatred for Wahhabi and Shia.	329
Condemnation of those who increase the numbers of non-Muslims and support them from the noble Hadiths.	323	Taking the side of non-conformists (Ghair Muqallideen), alcoholics, and drug addicts is misguidance and sin.	329
What is the ruling on going to Hindu wedding processions, inviting them to one's own wedding procession and playing drums etc. and dancing.	325	What is the ruling on marrying at a Wahhabi non-conformist's house, praying with him and eating at his house.	329
It is permissible to hire a Hindu for labor and provide labor rations.	325	How is alliance (Mualat) and friendship (Tawalli) with infidels, inquiry from Maulana Hakim Ali Sahib.	330
Heart-felt intimacy with any infidel is forbidden, outward interaction should also be avoided.	325	There is a world of difference between alliance and simple dealing.	331
Initiating Salam to an infidel, apostate, innovator and bad-sectarian without necessity is forbidden, and mixing with them is also forbidden.	326	Worldly dealings are not prohibited with anyone except an apostate, a few examples of this.	331
Necessities make prohibited acts permissible.	327	References from books of predecessors.	331
What is the ruling on interacting with a person who commits major sins but also does good deeds.	327	Oppression and hurting a Muslim and boycott and cutting ties.	331
Love and hatred can coexist for two different reasons.	327	Amr quarreled with Zaid over slaughtering a cow and filed a	337

Topic	Page	Topic	Page
		complaint against him, how is this act of Amr according to Sharia.	
Hatred for a sinner is actually towards his action, not towards his person.	327	Boycotting by the community against those who do not donate for the Takht of Muharram is wrong and sinful.	338
Question related to the Chandel community who perform acts like Hindus.	328	The one who forcibly takes the orphan's property for his own use is an oppressor, sinner, committer of a major sin and deserving of hellfire.	339
Money should not be taken from a Qadiani for the mosque.	328	Acceptance of action and worship of every person is the choice of Allah the Almighty.	339
		Performing financial worship by usurping the orphan's property is not acceptable.	339

फ़तावा रज़विया - जिल्द 24

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
शिया की नियाज़ को हराम बताकर मना करने वाला सही कर रहा है।	323	कादियानियों के घर जाकर खाना खाना हराम है।	328
उन मुसलमानों पर अफ़सोस है जो मुसलमानों के विरोध में हिंदुओं का साथ देते हैं।	323	वहाबी और शिया से दिली नफरत रखते हुए ज़रूरी बातचीत में कोई हर्ज नहीं।	329
गैर-मुस्लिमों की संख्या बढ़ाने और उनका साथ देने वालों की निंदा हदीस-ए-करीमा से।	323	गैर-मुक़ल्लिदों, शराबियों और नशेड़ियों का पक्ष लेना कुधर्म और पाप है।	329
हिंदुओं की बारात में जाना, उन्हें अपनी बारात में बुलाकर ढोल वगैरह बजाना और नाचना कैसा है।	325	वहाबी गैर-मुक़ल्लिद के घर शादी करना, उसके साथ नमाज़ पढ़ना और उसके घर खाना कैसा है।	329
हिंदू को मज़दूरी पर रखना और मज़दूरी का राशन देना जायज़ है।	325	काफिरों से दोस्ती और लगाव कैसा है, मौलाना हाकिम अली साहब की ओर से सवाल।	330
किसी भी काफिर से दिली लगाव हराम है, बाहरी मेल-जोल से भी बचना चाहिए।	325	दोस्ती और केवल लेन-देन के मामले में ज़मीन-आसमान का फर्क है।	331
बिना ज़रूरत किसी काफिर, मुर्तद (धर्मत्यागी), बिदअती और विधर्मी को सलाम में पहल करना हराम है, और उनसे मेल-जोल भी हराम।	326	दुनियावी लेन-देन मुर्तद के सिवा किसी से वर्जित नहीं, इसके कुछ उदाहरण।	331
ज़रूरतें वर्जित कामों को जायज़ कर देती हैं।	327	पूर्वजों की किताबों से संदर्भ।	331
	327	मुसलमान पर ज़ुल्म और उसे तकलीफ पहुँचाना और बहिष्कार व संबंध विच्छेद।	331

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
एक व्यक्ति बड़े पाप करता है और नेक काम भी करता है, उसके साथ मेल-जोल का क्या हुक्म है।			
दो अलग-अलग कारणों से प्रेम और घृणा एक साथ हो सकते हैं।	327	गाय ज़बह करने पर अम्र ने ज़ैद से झगड़ा किया और उसके खिलाफ शिकायत कर दी, अम्र का यह कार्य शरीयत के अनुसार कैसा है।	337
पापी से घृणा वास्तव में उसके कार्य की ओर लौटती है न कि उसके व्यक्तित्व की ओर।	327	तख़्त-ए-मुहर्रम के लिए चंदा न देने वालों के खिलाफ बिरादरी का बहिष्कार गलत और पाप है।	338
चंदेल बिरादरी से संबंधित सवाल जो हिंदुओं जैसे कार्य करते हैं।	328	अनाथ के माल को ज़बरदस्ती अपने खर्च में लाने वाला ज़ालिम, पापी, बड़े पाप का कर्ता और नर्क की सज़ा का पात्र है।	339
कादियानी से मस्जिद के लिए पैसे न लिए जाएँ।	328	हर व्यक्ति के कर्म और इबादत की स्वीकृति अल्लाह सुब्हानहू व तआला का अधिकार है।	339
		अनाथ का माल छीनकर माली इबादत करना स्वीकार्य नहीं।	339

عنوان صفحہ	
اہل تشیع کی نیاز کو حرام بتا کر منع کرنے والا ٹھیک کرتا ہے۔	۳۲۳
ان مسلمانوں پر افسوس ہے جو مسلمانوں کی مخالفت میں ہندوؤں کا ساتھ دیں۔	۳۲۳
غیر مسلموں کی نفری بڑھانے اور ان کا ساتھ دینے والوں کی مذمت احادیث کریمہ سے۔	۳۲۳
ہندوؤں کی بارات میں جانا، ان کو اپنی بارات میں بلا کر ڈھول وغیرہ بجانا اور ناچنا کیسا ہے۔	۳۲۵
ہندو کو مزدوری پر لینا اور مزدوری کی خوراک دینا جائز ہے۔	۳۲۵
دلی انس کسی کافر سے حرام ہے، ظاہری میل جول سے بھی اجتناب کیا جائے۔	۳۲۵
	۳۲۶

عنوان صفحہ	
قادیانیوں کے گھر جا کر کھانا کھانا حرام ہے۔	۳۲۸
وہابی اور شیعہ سے دلی نفرت رکھتے ہوئے ضروری بات چیت میں حرج نہیں۔	۳۲۹
غیر مقلدوں، شراب خوروں اور چنڈو بازوں کی طرف داری کرنا بد مذہبی اور گناہ ہے۔	۳۲۹
وہابی غیر مقلد کے گھر شادی کرنا، اس کے ساتھ نماز پڑھنا اور اس کے گھر کھانا کیسا ہے۔	۳۲۹
کفار سے موالات و تولی کیسی، مولانا حاکم علی صاحب کی طرف سے استفتاء۔	۳۳۰
موالات و مجرد معاملہ میں زمین و آسمان کا فرق ہے۔	۳۳۱
	۳۳۱

عنوان	صفحہ
کافر مرتد مبتدع اور بد مذہب کو بے ضرورت ابتداء بسلام حرام، اور ان سے مخالطت بھی حرام۔	
ضرورتیں ممنوع کاموں کو مباح کر دیتی ہیں۔	۳۲۷
ایک شخص گناہ کبیرہ کا ارتکاب کرتا ہے اور نیک کام بھی کرتا ہے اس کے ساتھ میل جول کا کیا حکم ہے۔	۳۲۷
دو مختلف وجہوں سے محبت و بغض جمع ہو سکتے ہیں۔	۳۲۷
فاسق سے بغض حقیقتاً اس کے فعل کی طرف راجع ہے نہ کہ اس کی ذات کی طرف۔	۳۲۷
چنڈیل قوم سے متعلق سوال جو ہندوؤں جیسے افعال کرتے ہیں۔	۳۲۸
قادیانی سے مسجد کے لئے پیسے نہ لئے جائیں۔	۳۲۸
دنیوی معاملت سوا مرتد کے کسی سے ممنوع نہیں، اس کی چند مثالیں۔	
حوالہ جات از کتب اسلاف۔	۳۳۱
ظلم و ایذائے مسلم و ہجران و قطع تعلق	۳۳۱
گائے ذبح کرنے پر عمرو نے زید سے جھگڑا کیا اور اس کے خلاف نالش کر دی، عمرو کا یہ فعل شرعاً کیسا ہے۔	۳۳۷
تختِ محرم کے لئے چندہ نہ دینے والے کے خلاف برادری کا مقاطعہ غلط اور گناہ ہے۔	۳۳۸
مال یتیم زبردستی اپنے صرف و خرچ میں لانے والا ظالم، فاجر، مرتکبِ کبیرہ اور مستحقِ عذابِ نار ہے۔	۳۳۹
قبول عمل و عبادت ہر شخص کا حق سبحانہ و تعالیٰ کا اختیار ہے۔	۳۳۹

یتیم کا مال غصب کر کے مالی عبادت کرنا مقبول نہیں۔ ۳۳۹

Fatawa Razawiyya Volume 24

339 | Performing Hajj with haram (forbidden) money. | He who oppresses people and wrongfully consumes their wealth deserves the punishment of hellfire and the curse of the Lord. | 345 340 | He who takes possession of an orphan's property is a transgressor (fasiq), and it is impermissible to initiate greetings with him; Muslims should not socialize with him. | The helper of an oppressor is an oppressor himself. | 346 340 | How is it to say insultingly to someone that this person is a weaver of funds? | It is mandatory for the helpers of the oppressor to repent. | 347 341 | What is Teenat-al-Khabal? | If one is capable of helping an oppressed person but does not do so, there is a humiliating punishment for them. | 347 341 | Disrespecting a Sunni Sayyid (descendant of the Prophet) is strictly forbidden. | Stubbornly persisting in sin after hearing the Sharia ruling warrants the punishment of hellfire. | 348 341 | Hadiths regarding the veneration of the Sadat (descendants of the Prophet). | What is the ruling for a person who breaks ties with their own children? | 348 342 | He who belittles a Sayyid because of their Sayyid status is a disbeliever (kafir); praying behind them is invalid. | Leaving disobedient and heretical children is not considered breaking of kinship ties. | 348 342 | Saying to someone without Sharia evidence that they are not of legitimate lineage carries a punishment of eighty lashes. | Abdullah ibn Umar (may Allah be pleased with them both) did not speak to one of his sons for his entire life. | 349 342 | The testimony of one who has been punished for false accusation (Qazf) is forever rejected. | Hazrat Maulvi Ma'nawi (may his secret be sanctified) did not attend the funeral of one of his sons. | 349 342 | Harming a Muslim is forbidden. | A person has stopped his daughter from going to her husband and does not send her even when appealed to in the name of God and the Messenger; what is the ruling regarding this? | 349 343 | A person whose household women get tattoos and he does not forbid it is blameworthy and should be avoided. | To what extent does Sharia permit returning harm for harm? | 349 343 | Eating with an illegitimate child and, if known, praying behind them are both correct. | Lying, backbiting, breach of promise, etc. | 343 | Calling someone an illegitimate child in a way that causes them pain is not permissible. | A question regarding a form of breach of promise. | 351 344 | Sister and uncle are both close relatives (dhu rahm mahram); breaking ties with either is not permissible. | It is permissible to speak ambiguously (double entendre) to secure one's rights or to save a life; a few examples of this. | 352

फ़तावा रज़विया खंड 24

339 | हराम माल से हज करना। | लोगों पर ज़ुल्म करने वाला और नाहक उनका माल खा जाने वाला परवरदिगार की आग के अज़ाब और लानत का हक़दार है। | 345 340 | यतीम के माल पर कब्ज़ा करने वाला फासिक़ है जिससे सलाम की शुरुआत करना नाजायज़ है, मुसलमानों को उसके साथ मेलजोल नहीं रखना चाहिए। | ज़ालिम का मददगार ज़ालिम है। | 346 340 | किसी व्यक्ति को अपमान के साथ कहना कि यह व्यक्ति रुपयों का जुलाहा है, कैसा है। | ज़ालिम के मददगारों पर फ़र्ज़ है कि तौबा करें। | 347 341 | तीनात-अल-ख़बाल क्या है। | मज़लूम की मदद पर क़ादिर होने के बावजूद न करे तो उसके लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। | 347 341 | सुन्नी सैयद की बेतौक़ीरी सख़्त हराम है। | शरअ का हुक्म सुनकर गुनाह पर अड़े रहना आग के अज़ाब की हक़दारी है। | 348 341 | सादात (सैयदों) की ताज़ीम से मुताल्लिक़ अहादीस। | अपनी औलाद से कतअ-रहमी (रिश्ता तोड़ना) करने वाले शख़्स के वास्ते क्या हुक्म है। | 348 342 | सैयद की तहक़ीर बवजह-ए-सियादत करने वाला काफ़िर है, उसके पीछे नमाज़ बातिल है। | नाफरमान और बद-मज़हब औलाद को छोड़ देना कतअ-रहमी नहीं। | 348 342 | बिला-दलील-ए-शरई किसी को कहना कि यह सहीह-उल-नसब नहीं, इसकी सज़ा अस्सी कोड़े है। | अब्दुल्लाह इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने अपने एक बेटे से उम्र भर कलाम न फ़रमाया। | 349 342 | महदूद-फ़िल-क़ज़फ़ (जिस पर तोहमत की हद लगी हो) की शहादत हमेशा के लिए मरदूद है। | हज़रत मौलवी मानवी (क़ुद्दिस सिर्रहु) ने अपने एक बेटे के जनाज़ा में शिरकत न की। | 349 342 | ईज़ा-ए-मुस्लिम हराम है। | एक शख़्स ने अपनी बेटी को शौहर के पास जाने से रोक रखा है और ख़ुदा व रसूल का वास्ता देने पर भी रवाना नहीं करता, तो उसके बारे में क्या हुक्म है। | 349 343 | जिस शख़्स के घर की औरतें गोदना गोदती हों और वह मना न करता हो वह क़ाबिल-ए-मलामत व लायक़-ए-तर्क है। | ईज़ा रसानी के जवाब में ईज़ा रसानी का शरीअत कहाँ तक हुक्म देती है। | 349 343 | वल्द-उज़-ज़िना (अवैध संतान) के साथ खाना और बशर्ते-इल्म उसके पीछे नमाज़ दोनों दुरुस्त हैं। | झूठ व ग़ीबत व बद-अहदी वग़ैरा | 343 | इस तौर पर वल्द-उज़-ज़िना कहना जिसमें उसको ईज़ा (दुःख) हो जायज़ नहीं। | बद-अहदी की एक सूरत से मुताल्लिक़ सवाल। | 351 344 | बहन और चाचा दोनों ज़ी-रहम महरम हैं किसी से कतअ-ए-तअल्लुक़ जायज़ नहीं। | अपना हक़ पाने या जान बचाने के लिए पहेलीदार बात करना जायज़ है, इसकी चंद मिसालें। | 352

पृष्ठ 29/720

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۴

۳۳۹ | مال حرام سے حج کرنا۔ | لوگوں پر ظلم کرنے والا اور ناحق ان کا مال کھا جانے والا مستحق عذاب نار و لعنت پروردگار ہے۔ | ۳۴۵ ۳۴۰ | مالِ یتیم پر قبضہ جمانے والا فاسق ہے جس سے ابتداء بسلام ناجائز ہے مسلمانوں کو اس کے ساتھ میل جول نہیں رکھنا چاہئے۔ | ظلم کا مددگار ظالم ہے۔ | ۳۴۶ ۳۴۰ | کسی شخص کو توہین کے ساتھ کہنا کہ یہ شخص رقوم کا جولاہا ہے، کیسا ہے۔ | ظالم کے مددگاروں پر فرض ہے کہ توبہ کریں۔ | ۳۴۷ ۳۴۱ | طینۃ الخبال کیا ہے۔ | مظلوم کی داد رسی پر قادر ہونے کے باوجود نہ کرے تو اس کے لئے ذلت کا عذاب ہے۔ | ۳۴۷ ۳۴۱ | سنی سید کی بے توقیری سخت حرام ہے۔ | حکم شرع سن کر گناہ پر ڈٹ جانا استحقاق عذاب نار ہے۔ | ۳۴۸ ۳۴۱ | تعظیم سادات سے متعلق احادیث | اپنی اولاد سے قطع رحمی کرنے والے شخص کے واسطے کیا حکم ہے۔ | ۳۴۸ ۳۴۲ | سید کی تحقیر بوجہ سیادت کرنے والا کافر ہے، اس کے پیچھے نماز باطل ہے۔ | نافرمان اور بد مذہب اولاد کو چھوڑ دینا قطع رحم نہیں۔ | ۳۴۸ ۳۴۲ | بلادلیل شرعی کسی کو کہنا کہ یہ صحیح النسب نہیں، اس کی سزا اسی کوڑے ہے۔ | عبداللہ ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے اپنے ایک بیٹے سے عمر بھر کلام نہ فرمایا۔ | ۳۴۹ ۳۴۲ | محدود فی القذف کی شہادت ہمیشہ کو مردود ہے۔ | حضرت مولوی معنوی قدس سرہ نے اپنے ایک بیٹے کے جنازہ میں شرکت نہ کی۔ | ۳۴۹ ۳۴۲ | ایذائے مسلم حرام ہے۔ | ایک شخص نے اپنی بیٹی کو شوہر کے پاس جانے سے روک رکھا ہے اور خدا و رسول کا واسطہ دینے پر بھی روانہ نہیں کرتا، تو اس کے بارے میں کیا حکم ہے۔ | ۳۴۹ ۳۴۳ | جس شخص کے گھر کی عورتیں گودنا گودتی ہوں اور وہ منع نہ کرتا ہو وہ قابل ملامت و لائق ترک ہے۔ | ایذا رسانی کے جواب میں ایذا رسانی کا شریعت کہاں تک حکم دیتی ہے۔ | ۳۴۹ ۳۴۳ |

ولد الزنا کے ساتھ کھانا اور بشرطِ علم اس کے پیچھے نماز دونوں درست ہیں۔ | جھوٹ و غیبت و بدعہدی وغیرہ | ۳۴۳ | اس طور پر ولد زنا کہنا جس میں اس کو ایذا ہو جائز نہیں۔ | بدعہدی کی ایک صورت سے متعلق سوال۔ | ۳۵۱ ۳۴۴ | بہن اور چچا دونوں ذی رحم محرم ہیں کسی سے قطع تعلق جائز نہیں۔ | اپنا حق مردہ زندہ کرنے کے لئے پہلو دار بات کرنا جائز ہے، اس کی چند مثالیں۔ | ۳۵۲

Fatawa Razawiyya - Volume 24

Page 30 of 720

[Right Column] 353: Question regarding a profligate and wicked city judge (Qazi). 353: It is forbidden to decide a case against Shariah; three terms have been mentioned in the Holy Quran for this. 353: Staying single for twelve years and not marrying is not a cause for accountability. 355: Total disassociation from every disbeliever is absolutely obligatory. 356: One who abandons prayer and organizes dances of prostitutes is a profligate, wicked, and a committer of major sins; he is unfit to be a judge, and making him a judge is forbidden. 356: Supplement: Claim, Judicial Decision, and Testimony 358: One who performs bad entertainment/shows is rejected in testimony (Mardud-ush-Shahada). 358: The testimony of one who has been punished for false accusation (Mahdood fil Qazf) is always rejected. [-]: One who falsely accuses someone of adultery is rejected in testimony. 359: The testimony of one who makes and sells cloth with pictures is rejected.

361: Good Conduct and Human Rights (Exchanging gifts, etc.) 361: Fatwa request regarding accepting gifts from prostitutes. 361: Prostitutes' wealth is of five types; details and rulings for all five. 361: There is a vast difference between the rights of a biological mother and a stepmother. [-]: Hurting a biological mother, God forbid, is hurting Allah and His Messenger.

[Left Column] 361: Where a nuanced approach doesn't work, what is the ruling on telling a blunt lie to prevent oppression and revive truth? 362: A person caught between two calamities should choose the easier one. 362: References 362: If someone promises something with a firm oath in the Shariah of Muhammad, what is the ruling on going against it? 363: Telling a lie oneself and forcing another to lie - what kind of sin is it? [-]: What is the expiation for someone who insults and satirizes the Imam before the public with a contemptuous eye to harm him? 88: Backbiting is harsher than adultery. 442: Backbiting is forbidden except in specific cases of exception. 387: Claim, Judicial Decision, and Testimony 559: A fatwa request containing six questions regarding calling courts "justice and fairness" and judges "just and fair," and attesting claim and defense documents. 365: When is silence upon an evil (Munkar) forbidden and when not? 365: Shaving the beard is forbidden in Shariah. 365: What is meant by the attestation of claim and defense documents? 468: There is great scope in narration by meaning. 468: (Continuation or related entry)

फ़तावा रज़विया - खंड 24

पृष्ठ 720 में से 30

[दायां स्तंभ] 353: शहर के फासिक और फाजिर (पापी और दुष्ट) काजी के बारे में सवाल। 353: शरीयत के खिलाफ मुकदमे का फैसला करना हराम है, कुरान मजीद में इसके लिए तीन शब्द इरशाद हुए हैं। 353: बारह साल तक कुंवारा रहना और शादी न करना जवाबदेही का कोई कारण नहीं है। 355: हर काफिर से सामाजिक बहिष्कार (तर्कए-मुवालात) पूरी तरह से फर्ज है। 356: नमाज छोड़ने वाला और वेश्याओं का नाच कराने वाला फासिक, फाजिर और कबीरा गुनाहों का अपराधी है, वह काजी बनने के लायक नहीं, उसे काजी बनाना हराम है। 356: परिशिष्ट: दावा, न्यायिक निर्णय और गवाही 358: बुरा खेल तमाशा करने वाला गवाही में अस्वीकार्य (मरदूद-उश-शहादा) है। 358: जिस पर झूठे आरोप की सजा (महदूद फिल कज़्फ) लग चुकी हो, उसकी गवाही हमेशा अस्वीकार्य है। [-]: व्यभिचार का आरोप लगाने वाला गवाही में अस्वीकार्य होता है। 359: चित्र वाले कपड़े बनाकर बेचने वाले की गवाही अस्वीकार्य है।

361: नेक आचरण और मानवाधिकार (उपहार और तोहफे आदि का लेन-देन) 361: वेश्याओं के उपहार स्वीकार करने के बारे में इस्तफ़ता (फतवे की मांग)। 361: वेश्याओं के धन पांच प्रकार के होते हैं; पांचों का विवरण और हुक्म। 361: सगी माँ और सौतेली माँ के अधिकारों में ज़मीन-आसमान का फ़र्क है। [-]: सगी माँ को दुःख पहुँचाना, अल्लाह की पनाह, अल्लाह और उसके रसूल को दुःख पहुँचाना है।

[बायां स्तंभ] 361: जहां घुमावदार बात से काम न चले, वहां जुल्म को रोकने और हक को जिंदा करने के लिए स्पष्ट झूठ बोलना कैसा है। 362: जो व्यक्ति दो मुसीबतों में फंस जाए, उसे आसान वाली को चुनना चाहिए। 362: हवाला (संदर्भ) 362: अगर कोई व्यक्ति मुहम्मदी शरीयत की पक्की कसम खाकर किसी काम का वादा करे, तो उसके खिलाफ करना कैसा है। 363: खुद झूठ बोलना और दूसरे को मजबूर करके झूठ बुलवाना कैसा गुनाह है। [-]: इमाम को नुकसान पहुँचाने के लिए जो व्यक्ति जनता के बीच हिकारत की नज़रों से उसका अपमान और उपहास करे, उस पर क्या कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) है। 88: गीबत (पीठ पीछे बुराई करना) जिना (व्यभिचार) से भी अधिक सख्त है। 442: गीबत हराम है, सिवाय कुछ अपवाद वाली जगहों के। 387: दावा, न्यायिक निर्णय और गवाही 559: कचहरियों को न्याय और निष्पक्षता और न्यायाधीश को न्यायप्रिय और निष्पक्ष कहने और दावा

व जवाब-ए-दावा के दस्तावेजों के सत्यापन आदि से संबंधित छह सवालों पर आधारित इस्तफ़ता। 365: बुराई पर चुप्पी कब हराम है और कब नहीं। 365: दाढ़ी मुंडवाना शरीयत में हराम है। 365: दावा और जवाब-ए-दावा के दस्तावेजों के सत्यापन से क्या अभिप्राय है। 468: भावानुवाद (नकल बिल-मानी) में बहुत गुंजाइश है। 468: (निरंतरता या संबंधित प्रविष्टि)

فتاویٰ رضویہ - جلد ۲۴

صفحہ ۳۰ از ۷۲۰

[دایاں کالم] ۳۵۳: فاسق و فاجر قاضی شہر کے بارے میں سوال۔ ۳۵۳: خلاف شرع مقدمہ فیصلہ کرنا حرام ہے، قرآن مجید میں اس کے لئے تین لفظ ارشاد ہوئے ہیں۔ ۳۵۳: بارہ سال سے مجرد رہنا اور نکاح نہ کرنا کوئی وجہ مواخذہ نہیں۔ ۳۵۵: ترک موالات ہر کافر سے مطلقاً فرض ہے۔ ۳۵۶: تارک نماز اور رنڈیوں کا ناچ کرانے والا فاسق وفاجر اور مرتکب کبائر قاضی بنانے کے لائق نہیں، اسے قاضی بنانا حرام ہے۔ ۳۵۶: ضمیمہ دعوی وقضاء و شہادت ۳۵۸: برا کھیل تماشہ کرنے والا مردود الشھادۃ ہے۔ ۳۵۸: محدود فی القذف کی شہادت ہمیشہ مردود ہے۔ [-]: زنا کی تہمت لگانے والا مردود الشھادۃ ہوتا ہے۔ ۳۵۹: تصویر دار کپڑا بنا کر فروخت کرنے والے کی گواہی مردود ہے۔

۳۶۱: حسن سلوک وحقوق العباد (ہدایا و تحائف وغیرہ کا لین دین) ۳۶۱: طوائف کے تحائف قبول کرنے کے بارے میں استفتاء ۳۶۱: رنڈیوں کے مال پانچ قسم پر ہیں، پانچوں کی تفصیل اور احکام۔ ۳۶۱: حقیقی اور سوتیلی ماں کے حقوق میں زمین و آسمان کا فرق ہے۔ [-]: حقیقی ماں کو ایذا دینی معاذ اللہ اللہ ورسول کو ایذا دینی ہے۔

[بایاں کالم] ۳۶۱: جہاں پہلو دار بات سے کام نہ چلے وہاں دفع ظلم واحیاء حق کے لئے صریح کذب کیسا ہے۔ ۳۶۲: جو شخص دو بلاؤں میں گرفتار ہو وہ آسان کو اختیار کرے۔ ۳۶۲: حوالہ جات ۳۶۲: اگر کسی امر کا وعدہ مستحکم حلف شرع محمدیہ سے کرے تو اس کے خلاف کرنا کیسا ہے۔ ۳۶۳: خود جھوٹ بولنا اور دوسرے کو مجبور کر کے جھوٹ بلوانا کیسا گناہ ہے۔ [-]: امام کو گزند پہنچانے کے لئے جو شخص بچشم حقارت عوام میں اس کی توہین و ہجو کرے اس پر

کیا کفارہ ہے۔ ۸۸: غیبت زنا سے سخت تر ہے۔ ۴۴۲: غیبت حرام ہے مگر مواضع استثناء میں۔ ۳۸۷: دعویٰ وقضاء و شہادت ۵۵۹: کچہریوں کو عدالت و منصفی اور حاکم کو عادل و منصف کہنے اور کاغذ دعوی و جواب دعوی کی تصدیق وغیرہ سے متعلق چھ سوالات پر مشتمل استفتاء۔ ۳۶۵: سکوت علی المنکر کب حرام ہے اور کب نہیں ۔ ۳۶۵: داڑھی منڈانا شرعاً حرام ہے۔ ۳۶۵: کاغذ دعوی وجواب دعوی کی تصدیق سے مراد کیا ہوتی ہے۔ ۴۶۸: نقل بالمعنی میں وسعت عظیم ہے۔ ۴۶۸: (تسلسل یا متعلقہ اندراج)

Fatawa Rizvia, Volume 24

- What are the rights of a Peer (spiritual guide) over his Murid (disciple) and the rights of a Murid over his Peer? - 368
- Answer to a question regarding the details of Huquq-ullah (Rights of Allah) and Huquq-ul-Ibad (Rights of People). - 369
- Rights of parents over their children. - 370
- Rights of children over their parents. - 370
- If a father fails to fulfill his duty towards his son, the father's rights over the son will still not be nullified. - 371
- Rights of a wife over her husband. - 371
- Rights of a husband over his wife. - 371
- Adultery committed with someone's wife: how can forgiveness be obtained without informing the husband? - 372
- Rights of people will not be forgiven until the person whose right was violated forgives. - 372
- A person who committed adultery with another man's woman wants to seek forgiveness from her; what could be the way? - 372
- There are two ways for the Rights of Allah to be forgiven: first, repentance; second, Divine pardon. - 373
- There are two ways for the Rights of People to be forgiven: - 373
- First way: Fulfilling what is payable, otherwise seeking their forgiveness. - 373
- Second way: The right-holder forgives without taking any compensation. - 374
- When is it necessary to seek forgiveness from the guardians of an adulteress and when is it not? - 374
- In the phrase "Forgive me all my rights," which rights are forgiven? - 375
- Which words should be used to seek forgiveness for all rights? - 375
- How did the Holy Prophet (PBUH) treat a beggar and a person in distress? - 377
- Keep in mind the ranks and degrees of people (Hadith). - 377
- Ummul Momineen Siddiqa (RA) gave a piece of bread to one beggar and fed another with honor. - 378
- It is not forbidden for a religious scholar and leader to socialize with the community and participate in lawful ceremonies. - 378
- It is not permissible for a person who possesses Nisaab and is capable of earning to take obligatory charities. - 379

• Adopting lawful means of livelihood while keeping eyes on the Causer (Allah) is not at all contrary to trust in Allah (Tawakkul). - 379
• Tawakkul is not the name of abandoning means, but rather abandoning reliance on means. - 379
• If Zaid is responsible for rights of people, what is the form of expiation or discharge? - 379
• What are the rights of a man over a woman and a woman over a man? - 379
• A husband's right over his wife is even greater than that of her parents. - 380
• Narrations and accounts exist regarding the absolute questioning and settlement of the Rights of People on the Day of Judgment. - 381

फतावा रिज़विया, जिल्द 24

- पीर के मुरीद पर और मुरीद के पीर पर क्या-क्या हुक़ूक़ हैं? - 368
- हुक़ूक़-उल्लाह और हुक़ूक़-उल-इबाद के विवरण से संबंधित प्रश्न का उत्तर। - 369
- माता-पिता के संतान पर हुक़ूक़। - 370
- संतान के माता-पिता पर हुक़ूक़। - 370
- यदि पिता से पुत्र का हक़ अदा करने में कोताही हो जाए, तो भी पिता के हुक़ूक़ पुत्र पर से समाप्त नहीं होंगे। - 371
- पत्नी के पति पर हुक़ूक़। - 371
- पति के पत्नी पर हुक़ूक़। - 371
- किसी की पत्नी के साथ व्यभिचार किया, पति को बताए बिना कैसे माफ़ी मिल सकती है? - 372
- हुक़ूक़-उल-इबाद तब तक माफ़ नहीं होंगे जब तक हक़ का मालिक माफ़ न कर दे। - 372
- दूसरे की स्त्री के साथ व्यभिचार करने वाला उस स्त्री से माफ़ी मांगना चाहता है, इसकी क्या सूरत हो सकती है? - 372
- हुक़ूक़-उल्लाह माफ़ होने की दो सूरतें हैं: पहली तौबा, दूसरी ईश्वरीय क्षमा। - 373
- हुक़ूक़-उल-इबाद माफ़ होने की दो सूरतें हैं: - 373
- पहली सूरत: जो देय है उसे अदा करना, अन्यथा उनसे माफ़ी माँगना। - 373
- दूसरी सूरत: हक़ का मालिक बिना मुआवज़ा लिए माफ़ कर दे। - 374
- व्यभिचारिणी के संरक्षकों (औलिया) से माफ़ी माँगना कब ज़रूरी है और कब नहीं? - 374
- "मुझे अपने सब हक़ माफ़ कर दे" में कौन से हुक़ूक़ माफ़ हो जाते हैं? - 375
- तमाम हुक़ूक़ माफ़ कराने के लिए किन शब्दों के ज़रिए माफ़ी माँगी जाए? - 375
- हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) याचक और पीड़ित के साथ कैसा व्यवहार करते थे? - 377
- लोगों के पदों और दर्जों का ध्यान रखो (हदीस)। - 377
- उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने एक याचक को एक टुकड़ा दिया और दूसरे को ससम्मान खाना खिलाया। - 378

- आलिम-ए-दीन और पेशवा के लिए बिरादरी से मेल-जोल और जायज़ आयोजनों में शामिल होना वर्जित नहीं है। - 378
- साहिबे-निसाब और कमाने में सक्षम व्यक्ति के लिए वाजिब सदक़ा लेना जायज़ नहीं है। - 379
- कारणों के निर्माता (अल्लाह) पर नज़र रखते हुए जीविका के जायज़ साधनों को अपनाना हरगिज़ तवक्कुल (ईश्वर पर भरोसा) के विपरीत नहीं है। - 379
- तवक्कुल साधनों को छोड़ने का नाम नहीं है, बल्कि साधनों पर निर्भरता छोड़ने का नाम है। - 379
- यदि ज़ैद पर हुक़ूक़-उल-इबाद की ज़िम्मेदारी हो, तो कफ़ारा या मुक्ति की क्या सूरत है? - 379
- स्त्री पर पुरुष के और पुरुष पर स्त्री के क्या हुक़ूक़ हैं? - 379
- पति का हक़ स्त्री पर माता-पिता से भी ज़्यादा है। - 380
- क़यामत में मुतलक़ हुक़ूक़-उल-इबाद की पूछताछ और निपटान से संबंधित विवरण और हदीसें मौजूद हैं। - 381

- پیر کے مرید پر اور مرید کے پیر پر کیا کیا حقوق ہیں۔ - ۳۶۸
- تفصیل حقوق اللہ و حقوق العبد سے متعلق سوال کا جواب۔ - ۳۶۹
- والدین کے اولاد پر حقوق۔ - ۳۷۰
- اولاد کے والدین پر حقوق۔ - ۳۷۰
- اگر والد سے بیٹے کا حق ادا کرنے میں کوتاہی ہوگئی تو پھر بھی والد کے حقوق بیٹے پر سے ساقط نہ ہوں گے۔ - ۳۷۱
- بیوی کے شوہر پر حقوق۔ - ۳۷۱
- شوہر کے بیوی پر حقوق۔ - ۳۷۱
- کسی کی بیوی سے زنا کیا، شوہر کو بتائے بغیر کس طرح معاف کراسکتا ہے۔ - ۳۷۲
- حقوق العباد کو جب تک صاحب حق معاف نہ کرے معاف نہ ہوگی۔ - ۳۷۲
- غیر کی عورت سے زنا کرنے والا اس عورت سے معافی لینا چاہتا ہے اس کی کیا صورت ہو سکتی ہے۔ - ۳۷۲
- حقوق اللہ معاف ہونے کی دو صورتیں ہیں: اول توبہ، دوم عفو الٰہی - ۳۷۳
- حقوق العباد معاف ہونے کی دو صورتیں ہیں: - ۳۷۳
- پہلی صورت: جو قابل ادا ہے ادا کرنا ورنہ ان سے معافی چاہنا، - ۳۷۳
- دوسری صورت: صاحب حق معاوضہ لئے بغیر معاف کر دے۔ - ۳۷۴
- اولیائے مزنیہ سے معافی مانگنا کب ضروری ہے اور کب نہیں۔ - ۳۷۴
- "مجھے اپنے سب حق معاف کر دے" میں کون سے حقوق معاف ہو جاتے ہیں - ۳۷۵

- تمام حقوق معاف کرانے کے لئے کون سے الفاظ کے ذریعے معافی مانگی جائے۔ - ۳۷۵
- حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سائل اور ناشی کے ساتھ کیسے پیش آتے تھے۔ - ۳۷۷
- لوگوں کے مراتب و درجات کو ملحوظ رکھو (حدیث) - ۳۷۷
- ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے ایک سائل کو ٹکڑا عطا فرمایا اور ایک کو باعزاز کھانا کھلایا۔ - ۳۷۸
- عالم دین و پیشوا کو برادری سے میل جول اور جائز تقریبات میں شرکت ممنوع نہیں۔ - ۳۷۸
- صاحب نصاب و قادر علی الاکتساب کو صدقات واجبہ لینا جائز نہیں۔ - ۳۷۹
- نظر مسبب جل وعلا پر رکھ کر جائز اسباب رزق کا اختیار کرنا ہرگز منافی توکل نہیں۔ - ۳۷۹
- توکل ترک اسباب کا نام نہیں بلکہ اعتماد علی الاسباب کا ترک ہے۔ - ۳۷۹
- ذمہ زید حقوق العباد ہوں تو کفارہ یا سبکدوشی کی کیا صورت ہے۔ - ۳۷۹
- عورت پر مرد کے اور مرد پر عورت کے کیا حقوق ہیں۔ - ۳۷۹
- شوہر کا حق عورت پر ماں باپ سے بھی زیادہ ہے۔ - ۳۸۰
- قیامت میں مطلق حقوق العباد کے مواخذہ و تصفیہ سے متعلق احوال و آثار وارد ہیں۔ - ۳۸۱

Fatawa Razawiya - Volume 24

Page	Topic Description	Topic Description	Page
381	The hostility of animals is more severe than that of a Dhimmi (non-Muslim citizen), and the hostility of a Dhimmi is more severe than that of a Muslim.	Emphasis on being kind to father's relatives.	387
383	Treatise: Sharh al-Huquq al-Tarh al-Uquq (Details of the rights of parents, spouses, and teachers, and ways to fulfill them).	Third Issue	387
383	An inquiry consisting of four issues.	Is the right of the father greater over children, or the right of the mother?	387
383	First Issue	Emphasis on good treatment of parents.	388
383	To what extent is a disobedient son a sinner who took possession of his father's entire property and humiliated/insulted him?	Proof from blessed Hadiths that the mother's right is greater than the father's right.	388
383	One who insults the father is a transgressor (fasiq), wicked (fajir), committer of major sins, and disobedient (aq).	The mother is superior in service and the father is superior in respect.	389
382	Severe warnings for those disobedient to the father.	Fourth Issue	391
382	Twenty-one Hadiths containing severe warnings for those disrespectful to the father.	Between husband and wife, whose right is greater and to what extent?	391
382	Second Issue	The greatest right over a wife is that of the husband, meaning even more than that of her parents.	391
386			391

Page	Topic Description	Topic Description	Page
	What is the right of a stepmother, and it is absolutely forbidden (haram) to slander her, especially slandering adultery.	Detail of twelve rights applicable to children after the death of parents.	
387	One who slanders adultery is given eighty lashes.	Twenty-one Hadiths regarding the rights of deceased parents.	393
387	One who slanders adultery is one whose testimony is rejected (mardud al-shahada).	A companion's question about the mother's right and the reply of the Holy Prophet (peace be upon him).	402
387	Respect and honor for stepmother is mandatory.	Inquiry regarding the leadership (Imamat) of a person disobedient to parents, dealings with him, and Sharia punishment (Ta'zir) for him.	402
387	Like the real mother, the stepmother is also eternally forbidden (haram-e-abadi).		

फ़तावा रज़विया - जिल्द 24

पृष्ठ	विषय विवरण	विषय विवरण	पृष्ठ
381	जानवरों की शत्रुता धिम्मी (गैर-मुस्लिम नागरिक) की शत्रुता से अधिक कठोर है, और धिम्मी की शत्रुता मुस्लिम की शत्रुता से अधिक कठोर है।	पिता के रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद।	387
383	रिसाला: शरह अल-हुकूक अत-तरह अल-उकूक (माता-पिता, पति-पत्नी और शिक्षकों के अधिकारों का विवरण और उन्हें पूरा करने के तरीके)।	तीसरा मसला	387
383	चार मसलों पर आधारित एक इस्तिफ़ता।	बच्चों पर पिता का अधिकार अधिक है या माता का?	387
383	पहला मसला	माता-पिता के साथ अच्छे व्यवहार की ताकीद।	388
383	आज्ञा न मानने वाले बेटे ने पिता की पूरी संपत्ति पर कब्ज़ा कर लिया और पिता को अपमानित किया, वह किस हद तक पापी है?	अहादीस-ए-करीमा से प्रमाण कि माँ का हक़ पिता के हक़ से अधिक है।	388
383	पिता का अपमान करने वाला फासिक (पापी), फाजिर (दुराचारी), कबीरा गुनाहों का अपराधी और आज्ञा न मानने वाला (आक) है।	सेवा में माता श्रेष्ठ है और सम्मान में पिता।	389
382	पिता की आज्ञा न मानने वालों के लिए कठोर चेतावनी।	चौथा मसला	391
382	पिता के प्रति अपमानजनक व्यवहार करने वालों के लिए कठोर चेतावनियों वाली इक्कीस हदीसें।	पति-पत्नी के बीच किसका हक़ ज़्यादा है और किस सीमा तक?	391
382	दूसरा मसला		391

पृष्ठ	विषय विवरण
386	सौतेली माँ का क्या हक़ है और उस पर आरोप लगाना कतई हराम है, विशेष रूप से व्यभिचार (ज़िना) का आरोप।
387	व्यभिचार का आरोप लगाने वाले को अस्सी कोड़े मारे जाते हैं।
387	व्यभिचार का आरोप लगाने वाला ऐसा व्यक्ति है जिसकी गवाही अस्वीकार्य है (मरदूद अल-शहादत)।
387	सौतेली माँ का सम्मान और आदर अनिवार्य है।
387	सगी माँ की तरह सौतेली माँ भी सदैव के लिए वर्जित (हराम-ए-अबदी) है।

विषय विवरण	पृष्ठ
पत्नी पर सबसे बड़ा अधिकार पति का है, यानी माता-पिता से भी ज़्यादा।	
माता-पिता की मृत्यु के बाद बच्चों पर लागू होने वाले बारह अधिकारों का विवरण।	391
मृत माता-पिता के अधिकारों से संबंधित इक्कीस हदीसें।	393
माता के हक़ के बारे में एक सहाबी का सवाल और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का जवाब।	402
माता-पिता की आज्ञा न मानने वाले की इमामत, उसके साथ व्यवहार और उसके लिए शरीयत के अनुसार दंड (ताज़ीर) के संबंध में सवाल।	402

صفحہ	تفصیلِ عنوان
۳۸۱	جانوروں کی خصومت ذمی کی خصومت سے اور ذمی کی خصومت مسلمان کی خصومت سے زیادہ سخت ہے۔
۳۸۳	رسالہ شرح الحقوق الطرح العقوق۔ (والدین، زوجین اور اساتذہ کے حقوق کی تفصیل اور ان کی ادائیگی کے طریقے)
۳۸۳	چار مسائل پر مشتمل ایک استفتاء
۳۸۳	مسئلہ اولیٰ
۳۸۳	نافرمان بیٹے نے باپ کی کل جائداد پر قبضہ کر لیا اور باپ کی تذلیل و توہین کا مرتکب ہوا وہ کہاں تک گنہگار ہے۔
۳۸۳	باپ کی توہین کرنے والا فاسق، فاجر، مرتکبِ کبائر اور عاق ہے۔
۳۸۲	باپ کے نافرمان کے لئے وعیداتِ شدیدہ۔
۳۸۲	والد کے گستاخ کے لئے سخت وعید پر مشتمل اکیس حدیثیں۔
۳۸۷	باپ کے تعلق داروں کے ساتھ بھلائی کی تاکید۔
۳۸۷	مسئلہ ثالث
۳۸۷	اولاد پر حقِ پدر زیادہ ہے یا حقِ مادر۔
۳۸۸	ماں باپ کے ساتھ نیک برتاؤ کی تاکید۔
۳۸۸	احادیثِ کریمہ سے ثبوت کہ ماں کا حق باپ کے حق سے زیادہ ہے۔
۳۸۹	خدمت میں ماں اور تعظیم میں باپ زائد ہے۔
۳۹۱	مسئلہ رابعہ
۳۹۱	مابینِ زن و شوہر حق زیادہ کس کا ہے اور کہاں تک۔

صفحہ	تفصیلِ عنوان
۳۸۲	مسئلہ ثانیہ
۳۸۶	سوتیلی ماں کا کیا حق ہے اور اس پر تہمت لگانا حرام قطعی ہے خصوصاً تہمتِ زناء۔
۳۸۷	تہمتِ زناء لگانے والے کو اسی کوڑے لگتے ہیں۔
۳۸۷	زنا کی تہمت لگانے والا مردود الشہادت ہوتا ہے۔
۳۸۷	سوتیلی ماں کی تعظیم و حرمت لازمی ہے
۳۸۷	حقیقی ماں کی طرح سوتیلی ماں بھی حرام ابدی ہے۔
۳۹۱	زوجہ پر سب سے بڑا حق شوہر کا ہے یعنی ماں باپ سے بھی زیادہ۔
۳۹۱	والدین کے فوت ہو جانے کے بعد اولاد پر لاگو ہونے والے بارہ حقوق کی تفصیل۔
۳۹۳	فوت شدہ والدین کے حقوق سے متعلق اکیس حدیث۔
۴۰۲	ماں کے حق کے بارے میں صحابی کا سوال اور حضور علیہ الصلوۃ والسلام کا جواب۔
۴۰۲	عاق الوالدین کی امامت، اس کے ساتھ معاملات اور اس کے لئے تعزیر شرعی سے متعلق استفتاء۔

Fatawa-e-Razvia Volume 24

- Associating partners with Allah and distressing parents are among the greatest sins (Akbar al-Kaba'ir). (Page: 403)
- Severe warnings in Hadiths for those who distress their parents. (Page: 403)
- Three types of people will not enter Paradise. (Page: 403)
- Allah Almighty does not accept the obligatory and voluntary prayers of three types of people. (Page: 403)
- One who distresses and abuses parents is cursed. (Page: 404)
- The Kalima did not come to the tongue of one who made his mother angry at the time of death. (Page: 404)
- Awam bin Hawshab was among the Imams of the Tabi' al-Tabi'in; he passed away in 128 AH. (Page: 405)
- A lesson-learned incident of one who was disrespectful to his mother. (Page: 405)
- The imamate of a liar and a thief is Makruh Tahrimi (prohibitively disliked). (Page: 405)
- Prayer behind one who is disrespectful to his mother is severely disliked, Makruh Tahrimi close to Haraam, and must be repeated. (Page: 405)
- Eating, drinking, and sitting with one who is disobedient to parents is forbidden; rather, one should maintain resentment and hatred towards them. (Page: 406)
- One who distresses parents deserves the harshest punishment. (Page: 407)
- If theft is proven by Shariah testimony, the ruler shall cut off the thief's hand from the wrist. (Page: 407)
- Hindah, during her final illness, called her husband Zaid and forgave him all her rights, and Zaid also forgave all rights to Hindah. In this case, all rights of Zaid and the non-monetary rights of Hindah are forgiven, but the forgiveness of Hindah's monetary rights depends on the permission of her heirs. (Page: 407)
- Is it sufficient for a debtor to say to the creditor "forgive whatever debt I owe you," or is it necessary to specify the amount of the debt? (Page: 408)
- When does backbiting become a violation of human rights (Haq-ul-Abd) and what is the method for its forgiveness? (Page: 410)
- Description of the rights of teachers over students. (Page: 412)

- A question about a person who, after reading some books on philosophy, began to compete with his religious teacher and tried to become the Imam himself by getting the teacher dismissed from the imamate, even though his teacher is elderly, a jurist (faqih), pious, and also a Sayyid. (Page: 412)
- The mentioned person has fulfilled the right of unworthiness and has stepped outside the boundaries of Shariah for numerous reasons. (Page: 416)
- First (First reason). (Page: 416)
- Ungratefulness towards a teacher is a terrifying calamity, a destructive disease, and something that ends the blessings of knowledge. (Page: 416)

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द २४

- अल्लाह तआला के साथ शरीक ठहराना और माता-पिता को सताना अकबर अल-कबाइर (सबसे बड़े गुनाहों) में से है। (पृष्ठ: ४०३)
- माता-पिता को सताने वालों के लिए हदीसों में सख्त चेतावनियाँ। (पृष्ठ: ४०३)
- तीन प्रकार के लोग जन्नत में दाख़िल नहीं होंगे। (पृष्ठ: ४०३)
- अल्लाह तआला तीन व्यक्तियों के फ़र्ज़ और नफ़्ल (नमाज़ें) स्वीकार नहीं फ़रमाता। (पृष्ठ: ४०३)
- माता-पिता को सताने वाला और उन्हें गाली देने वाला शापित (मलऊन) है। (पृष्ठ: ४०४)
- माँ को नाराज़ करने वाले की जुबान पर मृत्यु के समय कलिमा जारी नहीं हुआ। (पृष्ठ: ४०४)
- अवाम बिन हौशब तब-ए-ताबीईन के इमामों में से हैं, उनका इंतक़ाल १२८ हिजरी में हुआ। (पृष्ठ: ४०५)
- माँ के गुस्ताख़ (अपमान करने वाले) का सबक़-आमोज़ वाक़िआ। (पृष्ठ: ४०५)
- झूठे और चोर की इमामत मकरूह-ए-تحरीमी (सख्त नापसंदीदा) है। (पृष्ठ: ४०५)
- माँ के गुस्ताख़ के पीछे नमाज़ सख्त मकरूह, मकरूह-ए-तहरीमी क़रीब-ए-हराम है और इसे दोबारा पढ़ना वाजिब है। (पृष्ठ: ४०५)
- माता-पिता के अवज्ञाकारी (आक़) के साथ खाना-पीना, उठना-बैठना मना है बल्कि उससे नफ़रत और द्वेष रखना चाहिए। (पृष्ठ: ४०६)
- माता-पिता को सताने वाला सख्त से सख्त सज़ा (तज़ीर) का हक़दार है। (पृष्ठ: ४०७)
- अगर चोरी शरीयत की गवाही से साबित हो जाए, तो शासक उस चोर का हाथ कलाई से काट देगा। (पृष्ठ: ४०७)
- हिन्दा ने मरज़-उल-मौत (अंतिम बीमारी) में अपने पति ज़ैद को बुलाकर अपने सभी अधिकार उसे माफ़ कर दिए और ज़ैद ने भी हिन्दा के सभी अधिकार माफ़ कर दिए, तो इस स्थिति में ज़ैद के सभी अधिकार और हिन्दा के गैर-वित्तीय अधिकार माफ़ हो गए, लेकिन हिन्दा के वित्तीय अधिकारों की माफ़ी उसके वारिसों की अनुमति पर निर्भर होगी। (पृष्ठ: ४०७)
- क्या ऋणी के लिए यह पर्याप्त है कि वह लेनदार से कहे कि "मुझ पर तुम्हारा जो ऋण है उसे माफ़ कर दो" या ऋण की राशि निर्धारित करना आवश्यक है? (पृष्ठ: ४०८)

- ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई) कब हक़-उल-अब्द (बंदे का हक़) बनती है और इसकी माफ़ी का क्या तरीक़ा है? (पृष्ठ: ४१०)
- छात्रों पर शिक्षकों (उस्तादों) के अधिकारों का वर्णन। (पृष्ठ: ४१२)
- एक ऐसे व्यक्ति के बारे में प्रश्न जिसने दर्शनशास्त्र की कुछ पुस्तकें पढ़कर अपने धार्मिक शिक्षा के शिक्षक का मुक़ाबला करना शुरू कर दिया और उन्हें इमामत से हटवाकर स्वयं उनकी जगह इमाम बनने का प्रयास करने लगा, जबकि उसके शिक्षक वृद्ध, धर्मशास्त्री, संयमी होने के साथ-साथ सैय्यद भी हैं। (पृष्ठ: ४१२)
- उक्त व्यक्ति ने अपनी अयोग्यता (नालायकी) का प्रमाण दे दिया है और अनगिनत कारणों से शरीयत के दायरे से बाहर क़दम रख चुका है। (पृष्ठ: ४१६)
- प्रथम (पहला कारण)। (पृष्ठ: ४१६)
- शिक्षक के प्रति कृतघ्नता (नाशुक्री) एक भयानक विपदा, विनाशकारी बीमारी और ज्ञान की बरकतों को समाप्त करने वाली है। (पृष्ठ: ४१६)

- اللہ تعالیٰ کے ساتھ شریک ٹھہرانا اور والدین کو ستانا اکبر الکبائر ہے۔ (صفحہ: ۴۰۳)
- والدین کو ستانے والے کے لئے احادیث میں سخت وعیدیں۔ (صفحہ: ۴۰۳)
- تین شخص جنت میں داخل نہ ہوں گے۔ (صفحہ: ۴۰۳)
- تین شخصوں کے فرض و نفل اللہ تعالیٰ قبول نہیں فرماتا۔ (صفحہ: ۴۰۳)
- والدین کو ستانے والا اور ان کو گالی دینے والا ملعون ہے۔ (صفحہ: ۴۰۴)
- ماں کو ناراض کرنے والے کی زبان پر وقت نزع کلمہ جاری نہ ہوا۔ (صفحہ: ۴۰۴)
- عوام بن حوشب ائمہ تبع تابعین میں سے ہیں ان کا انتقال ۱۲۸ھ میں ہوا۔ (صفحہ: ۴۰۵)
- ماں کے گستاخ کا سبق آموز واقعہ۔ (صفحہ: ۴۰۵)
- کاذب و سارق کی امامت مکروہ تحریمی ہے۔ (صفحہ: ۴۰۵)
- ماں کے گستاخ کے پیچھے نماز سخت مکروہ، مکروہ تحریمی قریب بحرام واجب الاعادہ ہے۔ (صفحہ: ۴۰۵)
- عاق والدین کے ساتھ کھانا پینا، اٹھنا بیٹھنا منع ہے بلکہ اس سے بغض و نفرت رکھنا چاہئے۔ (صفحہ: ۴۰۶)
- ماں باپ کو ستانے والا سخت سے سخت تعزیر کا مستحق ہے۔ (صفحہ: ۴۰۷)
- سرقہ اگر شہادت شرعیہ سے ثابت ہو جائے تو حاکم اس سارق کا ہاتھ کلائی سے کاٹ دے گا۔ (صفحہ: ۴۰۷)
- ہندہ نے مرض الموت میں اپنے شوہر زید کو بلا کر اپنے تمام حقوق اس کو معاف کر دیئے اور زید نے بھی جملہ حقوق ہندہ کو معاف کر دیئے، تو اس صورت میں زید کے تمام حقوق اور

ہندہ کے حقوق غیر مالیہ معاف ہو گئے مگر ہندہ کے حقوق مالیہ کی معافی اس کے ورثاء کی اجازت پر موقوف ہوگی۔ (صفحہ: ۴۰۷)

- کیا مقروض کے لئے یہ کافی ہے کہ قرض خواہ سے کہے کہ مجھ پر تمہارا جو قرض ہے مجھے معاف کر دو یا ضروری ہے کہ قرض کی مقدار معین کرے۔ (صفحہ: ۴۰۸)
- غیبت کب حق العبد ہوتی ہے اور اس کی معافی کی کیا صورت ہے۔ (صفحہ: ۴۱۰)
- تلامذہ پر اساتذہ کے حقوق کا بیان۔ (صفحہ: ۴۱۲)
- ایک ایسے شخص کے بارے میں سوال جو فلسفہ کی کچھ کتب پڑھ کر اپنے دینی علوم کے استاذ کا مقابلہ کرنے لگا اور انہیں امامت سے معزول کروا کر خود ان کی جگہ امام بننے کی کوشش کرنے لگا حالانکہ اس کے استاذ معمر، فقیہ، متقی ہونے کے ساتھ ساتھ سید بھی ہیں۔ (صفحہ: ۴۱۲)
- شخص مذکور نے نالائقی کا حق ادا کر دیا اور بے شمار وجوہ سے شریعت کے دائرے سے باہر قدم رکھ چکا ہے۔ (صفحہ: ۴۱۶)
- اول (پہلی وجہ) (صفحہ: ۴۱۶)
- استاذ کی ناشکری خوفناک بلا، تباہ کن بیماری اور علم کی برکات کو ختم کرنے والی ہے۔ (صفحہ: ۴۱۶)

Fatawa Razawiya | Volume 24

Page	Topic	Ref	Ref	Topic	Page
425	A student should not walk ahead of the teacher.	417	417	Second (Second Reason)	425
425	Tenth (Tenth Reason)	417	417	Denying the teacher's rights is against the consensus of Muslims, rather all wise people.	425
425	To cause distress to any Muslim without a religious reason is absolutely haraam.	418	418	Third (Third Reason)	425
425	Severe warning for those who cause suffering to Muslims.	418	418	Condemnation of considering a good deed insignificant.	425
426	Eleventh (Eleventh Reason)	419	419	Fourth (Fourth Reason)	426
426	Condemnation of one who insults a Muslim.	419	419	The burden of considering basic religious education from a teacher as insignificant.	426
427	Twelfth (Twelfth Reason)	419	419	Incident of a righteous person who presented four thousand dinars as gratitude to the teacher who taught his son Surah Al-Fatiha.	427
427	Condemnation of envy and severe warnings from Hadiths for the envious.	420	420	Fifth (Fifth Reason)	427
428	Thirteenth (Thirteenth Reason)	420	420	Competing with the teacher is more than just ungratefulness.	428
428	If a Muslim has sent a marriage proposal to a woman, another should not do so.	420	420	The teacher's right should be prioritized over the parents' right.	428
429	It is forbidden to outbid someone on a transaction.	422	422	Sixth (Sixth Reason)	429

Page	Topic	Ref	Ref	Topic	Page
430	Fourteenth (Fourteenth Reason)	422	422	The virtues of a teacher and their rank and status.	430
430	Condemnation of the person who is not kind to children and does not respect elders.	423	423	Seventh (Seventh Reason)	430
431	Fifteenth (Fifteenth Reason)	423	423	Declaring oneself superior to the teacher is against what is commanded.	431
431	The evil of one who mistreats scholars is beyond description.	423	423	Emphasis on the etiquette and respect for the teacher.	431
432	Only a hypocrite belittles the rights of three individuals.	424	424	Eighth (Eighth Reason)	432
432	Sixteenth (Sixteenth Reason)	424	424	A student should not sit on the teacher's bed even if the teacher is not present.	432
432	Severe condemnation for causing distress to the descendants and progeny of the Holy Prophet (PBUH).	425	425	Ninth (Ninth Reason)	432

पृष्ठ	विषय	सन्दर्भ	सन्दर्भ	विषय	पृष्ठ
425	शागिर्द को उस्ताज़ से आगे नहीं बढ़ना चाहिए।	417	417	सोम (दूसरी वजह)	425
425	दहम (दसवीं वजह)	417	417	हुक़ूक़े उस्ताज़ का इनकार मुसलमानों बल्कि तमाम अकल वालों के इत्तेफ़ाक़ के ख़िलाफ़ है।	425
425	बिलावजह शरई किसी मुसलमान को तकलीफ़ देना क़तई हराम है।	418	418	सोम (तीसरी वजह)	425
425	मुसलमानों को अज़ीयत देने वाले के लिए सख़्त वईद।	418	418	नेकी को हक़ीर जानने की मज़म्मत	425
426	याज़दहम (ग्यारहवीं वजह)	419	419	चहारम (चौथी वजह)	426
426	मुसलमान की बेइज़्ज़ती करने वाले की मज़म्मत	419	419	तालीमे दीन के उस्ताज़ की इब्तिदाई तालीम को हक़ीर जानने का वबाल।	426
427	दुआज़दहम (बारहवीं वजह)	419	419	एक नेक शख़्स का वाक़िया जिसने अपने बेटे को सूरह फ़ातिहा पढ़ाने वाले मुअल्लिम को चार हज़ार दीनार शुक्रिये के तौर पर पेश किए।	427
427	हसद की मज़म्मत और हासिद के लिए अहादीस से वईद-ए-शदीद।	420	420	पंजुम (पांचवीं वजह)	427
428	सीज़दहम (तेरहवीं वजह)	420	420	उस्ताज़ का मुक़ाबला करना उसकी नाशुक्री से ज़ायद है।	428
428	एक मुसलमान ने किसी औरत को पैग़ाम-ए-निकाह दे रखा हो तो दूसरा मत दे।	420	420	उस्ताज़ के हक़ को वालिदैन के हक़ पर मुक़द्दम रखना चाहिए।	428
429		422	422	शशुम (छठी वजह)	429

पृष्ठ	विषय	सन्दर्भ	सन्दर्भ	विषय	पृष्ठ
	किसी के सौदे पर सौदा करना मम्नू है।				
430	चहारदहम (चौदहवीं वजह)	422	422	उस्ताज़ के फ़ज़ाइल और उसका मक़ाम व मर्तबा	430
430	उस शख़्स की मज़म्मत जो छोटों पर मेहरबानी और बड़ों का एहतिराम न करे।	423	423	हफ़्तुम (सातवीं वजह)	430
431	पांज़दहम (पंद्रहवीं वजह)	423	423	अपने आप को उस्ताज़ से अफ़ज़ल क़रार देना ख़िलाफ़े मामूर है।	431
431	उलमा के साथ बुरा सुलूक करने वाले की बुराई बयान से बाहर है।	423	423	उस्ताज़ के अदब व एहतिराम की ताकीद।	431
432	तीन शख़्सों के हक़ को सिर्फ़ मुनाफ़िक़ ही कम समझता है।	424	424	हश्तुम (आठवीं वजह)	432
432	शानज़दहम (सोलहवीं वजह)	424	424	शागिर्द को उस्ताज़ के बिस्तर पर नहीं बैठना चाहिए अगरचे उस्ताज़ मौजूद न हो।	432
432	हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की आल व औलाद को अज़ीयत पहुँचाने की शदीद मज़म्मत।	425	425	नहुम (नवीं वजह)	432

صفحہ	عنوان	نمبر	نمبر	صفحہ
۴۲۵	شاگرد کو استاذ سے آگے نہیں بڑھنا چاہئے۔	۴۱۷	۴۱۷	دوم (دوسری وجہ) ۴۲۵
۴۲۵	دہم (دسویں وجہ)	۴۱۷	۴۱۷	حقوق استاذ کا انکار مسلمانوں بلکہ تمام عقل والوں کے اتفاق کے خلاف ہے۔ ۴۲۵
۴۲۵	بلاوجہ شرعی کسی مسلمان کو تکلیف دینا قطعی حرام ہے۔	۴۱۸	۴۱۸	سوم (تیسری وجہ) ۴۲۵
۴۲۵	مسلمانوں کو اذیت دینے والے کے لئے سخت وعید۔	۴۱۸	۴۱۸	نیکی کو حقیر جاننے کی مذمت ۴۲۵
۴۲۶	یازدہم (گیارہویں وجہ)	۴۱۹	۴۱۹	چہارم (چوتھی وجہ) ۴۲۶
۴۲۶	مسلمان کی بے عزتی کرنے والے کی مذمت	۴۱۹	۴۱۹	تعلیم دین کے استاذ کی ابتدائی تعلیم کو حقیر جاننے کا وبال۔ ۴۲۶
۴۲۷	دوازدہم (بارہویں وجہ)	۴۱۹	۴۱۹	ایک نیک شخص کا واقعہ جس نے اپنے بیٹے کو سورۃ فاتحہ پڑھانے والے معلم کو چار ہزار دینار شکریے کے طور پر پیش کئے۔ ۴۲۷
۴۲۷		۴۲۰	۴۲۰	پنجم (پانچویں وجہ) ۴۲۷

صفحہ	عنوان	نمبر	نمبر
	حسد کی مذمت اور حاسد کے لئے احادیث سے وعید شدید۔		
۴۲۸	سیزدہم (تیرہویں وجہ)	۴۲۰	۴۲۰
۴۲۸	ایک مسلمان نے کسی عورت کو پیغامِ نکاح دے رکھا ہو تو دوسرا مت دے۔	۴۲۰	۴۲۰
۴۲۹	کسی کے سودے پر سودا کرنا ممنوع ہے۔	۴۲۲	۴۲۲
۴۳۰	چہاردہم (چودھویں وجہ)	۴۲۲	۴۲۲
۴۳۰	اس شخص کی مذمت جو چھوٹوں پر مہربانی اور بڑوں کا احترام نہ کرے۔	۴۲۳	۴۲۳
۴۳۱	پانزدہم (پندرہویں وجہ)	۴۲۳	۴۲۳
۴۳۱	علماء کے ساتھ برا سلوک کرنے والے کی برائی بیان سے باہر ہے۔	۴۲۳	۴۲۳
۴۲۸	استاذ کا مقابلہ کرنا اس کی ناشکری سے زائد ہے۔		
۴۲۸	استاذ کے حق کو والدین کے حق پر مقدم رکھنا چاہئے۔		
۴۲۹	ششم (چھٹی وجہ)		
۴۳۰	استاذ کے فضائل اور اس کا مقام و مرتبہ		
۴۳۰	ہفتم (ساتویں وجہ)		
۴۳۱	اپنے آپ کو استاذ سے افضل قرار دینا خلافِ مامور ہے۔		
۴۳۱	استاذ کے ادب و احترام کی تاکید۔		

صفحہ	عنوان	نمبر	نمبر
	تین شخصوں کے حق کو		
۴۳۲	صرف منافق ہی کم سمجھتا	۴۲۴	۴۲۴
	ہے۔		
۴۳۲	شانزدہم (سولہویں وجہ)	۴۲۴	۴۲۴
	حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ		
۴۳۲	علیہ وسلم کی آل واولاد کو	۴۲۵	۴۲۵
	اذیت پہنچانے کی شدید مذمت۔		

عنوان	صفحہ
ہشتم (آٹھویں وجہ)	۴۳۲
شاگرد کو استاذ کے بستر پر نہیں بیٹھنا چاہئے اگرچہ استاذ موجود نہ ہو۔	۴۳۲
نہم (نویں وجہ)	۴۳۲

صفحہ 34 کا 720

Fatawa Rizvia, Volume 24

Topic (Left Side)	Page	Topic (Right Side)	Page
Seventeenth (17th reason)	434	The leadership (Imamat) of a transgressor (Fasiq) is severely disliked (Makruh Tahrimi).	443
Who is more deserving of leadership?	434	Those who appoint a transgressor as leader are involved in a great sin; account of the leadership of the theologians (Mutakallimin).	444
Eighteenth (18th reason)	434	Summary of the answer.	448
Hadiths condemning the one who makes knowledge a means of acquiring the world.	434	Treatise: Mash’ala-tul-Irshad ila Huquq-il-Awlad (The Torch of Guidance towards the Rights of Children). (Explanation of children's rights upon parents).	451
Nineteenth (19th reason)	435	To what extent is the right of a son upon his father, and what is the Sharia ruling if he does not fulfill it?	451
Evils of studying philosophy and logic.	435	Allah Almighty made the father's right over the child extremely great and mentioned it alongside His own right.	451
Which knowledge is obligatory, which is mandatory, and which is forbidden to study?	436	Allah Almighty kept the child's right upon the father great.	451
Account of Hazrat Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with him) reading the Torah in the presence of the Prophet and the displeasure of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him).	438	A child who combines general Islam, then specifically being a neighbor, then specifically kinship, then specifically family, holds the most exclusive speciality.	451
This rejected philosophy is full of disbelief and misguidance and is a collection of ignorances.	439	As specificity increases, the right becomes more severe and emphasized.	451

Topic (Left Side)	Page	Topic (Right Side)	Page
Whoever tells the perpetrator of a religiously foul act 'you did well', becomes a disbeliever.	442	List of the same rights of children prepared by the author from Marfu' (elevated) Hadiths, most of which are recommended acts (Mustahabbat), for whose omission there is no prosecution in principle, but some will be demanded in the hereafter.	452
Twentieth (20th reason)	442	A man should not marry into a lowly tribe but among religious people, and should not enter into kinship with Abyssinians.	452
Preferring the virtue of philosophy over the virtue of jurisprudence is an implicit insult to religious knowledge.	442	Start sexual intercourse with Bismillah, do not look at the woman's private parts, do not talk much, and man and woman should not be completely naked.	452
Explicit insult to religious knowledge is disbelief.	442	As soon as a child is born, the Adhan should be said in the right ear and the Iqamah in the left, and a sweet thing should be given as 'Ghutti'.	452

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

विषय (बाईं ओर)	पृष्ठ	विषय (दाईं ओर)	पृष्ठ
सत्रहवाँ (17वीं वजह)	434	फ़ासिक़ (पापी) की इमामत मकरूह-ए-तहरीमी है।	443
इमामत का ज़्यादा हक़दार कौन है?	434	फ़ासिक़ को इमाम बनाने वाले गुनाह-ए-अज़ीम में मुब्तला हैं, मुतकल्लिमीन की इमामत का बयान।	444
अठारहवाँ (18वीं वजह)	434	जवाब का सारांश।	448
इल्म को दुनिया हासिल करने का ज़रिया बनाने वाले शख़्स की मज़म्मत (निंदा) अहदीस में।	434	रिसाला: मशाअतुल इरशाद इला हुक़ूक़िल औलाद (बच्चों के अधिकारों के प्रति मार्गदर्शन की मशाल)। (माता-पिता पर बच्चों के अधिकारों का वर्णन)	451
उन्नीसवाँ (19वीं वजह)	435	बाप पर बेटे का हक़ कितना है, और अगर वह उसे अदा न करे तो उसके लिए शरीअत का हुक्म क्या है?	451
फ़लसफ़ा और मंतिक़ (तर्कशास्त्र) पढ़ने की बुराइयाँ।	435	अल्लाह तआला ने वालिद (पिता) के हक़ को वलद (संतान) पर बहुत बड़ा बनाया और अपने हक़ के बराबर उसका ज़िक्र फ़रमाया।	451
कौन सा इल्म पढ़ना फ़र्ज़, कौन सा वाजिब और कौन सा हराम है?	436	वलद का हक़ वालिद पर अल्लाह तआला ने अज़ीम (महान) रखा।	451
हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के बारगाह-ए-रिसालत में तौरात पढ़ने और उस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाराज़ होने का ज़िक्र।	438	संतान जो सामान्य इस्लाम, फिर पड़ोस, फिर रिश्तेदारी, फिर परिवार की विशेषताओं को समेटे हुए हो, वह सबसे अधिक विशिष्टता रखती है।	451
	439	जैसे-जैसे विशिष्टता बढ़ती जाती है, हक़ और भी कड़ा और पक्का होता जाता है।	451

विषय (बाईं ओर)	पृष्ठ	विषय (दाईं ओर)	पृष्ठ
यह मरदूद फ़लसफ़ा कुफ़्र और गुमराही से भरा हुआ और जहालतों का मजमुआ है।			
जिस शख़्स ने शरीअत की दृष्टि से घिनौने काम करने वाले से कहा कि तूने अच्छा किया है, तो वह काफ़िर हो गया।	442	बच्चों के उन्हीं अधिकारों की सूची जो लेखक ने मरफ़ू' हदीसों से तैयार की है, जिनमें से अधिकतर मुस्तहब्बात हैं जिनके छोड़ने पर असल में कोई पकड़ नहीं है और कुछ पर आख़िरत में मांग होगी।	452
बीसवाँ (20वीं वजह)	442	आदमी अपना निकाह नीच कौम में न करे बल्कि दीनदार लोगों में करे और हबशियों से रिश्तेदारी न करे।	452
फ़लसफ़े की फ़ज़ीलत को फ़िक़्ह की फ़ज़ीलत पर प्राथमिकता देना परोक्ष रूप से इल्म-ए-दीन की तौहीन है।	442	बिस्मिल्लाह से संभोग की शुरुआत करे, स्त्री के गुप्तांग पर नज़र न डाले, ज़्यादा बातें न करे, और स्त्री-पुरुष पूरी तरह नग्न न हों।	452
इल्म-ए-दीन की साफ़ तौर पर तौहीन कुफ़्र है।	442	बच्चे के पैदा होते ही दाएं कान में अज़ान और बाएं में इक़ामत कही जाए और मीठी चीज़ की घुट्टी दी जाए।	452

موضوع (بائیں جانب)	صفحہ
ہفتدہم (ستر ہویں وجہ)	۴۳۴
امامت کا زیادہ حقدار کون ہے۔	۴۳۴
ہشتدہم (اٹھار ہویں وجہ)	۴۳۴
علم کو حصولِ دنیا کا ذریعہ بنانے والے شخص کی مذمت احادیث۔	۴۳۴
نوزدہم (انیسویں وجہ)	۴۳۵
علومِ فلسفیہ اور منطق پڑھنے کی قباحتیں۔	۴۳۵
کونسا علم پڑھنا فرض، کونسا واجب اور کونسا حرام ہے۔	۴۳۶
حضرت فاروقِ اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے بارگاہِ رسالت میں توراہ پڑھنے اور اس پر حضور انور صلی	۴۳۸

موضوع (دائیں جانب)	صفحہ
فاسق کی امامت مکروہِ تحریمی ہے۔	۴۴۳
فاسق کو امام بنانے والے گناہِ عظیم میں مبتلا ہیں متکلمین کی امامت کا بیان۔	۴۴۴
خلاصہ جواب۔	۴۴۸
O رسالہ مشعلۃ الارشاد الی حقوق الاولاد۔ (والدین پر اولاد کے حقوق کا بیان)	۴۵۱
باپ پر بیٹے کا حق کس قدر ہے، اور اگر وہ ادا نہ کرے تو اس کے لئے حکم شرعی کیا ہے۔	۴۵۱
اللہ تعالیٰ نے والد کا حق ولد پر نہایت اعظم بنایا اور اپنے حق کے برابر اس کا ذکر فرمایا۔	۴۵۱
ولد کا حق والد پر اللہ تعالیٰ نے عظیم رکھا۔	۴۵۱
ولد مطلقِ اسلام پھر خصوص جوار پھر خصوصِ قرابت پھر خصوصِ عیال کا جامع ہو	۴۵۱

موضوع (بائیں جانب)	صفحہ	موضوع (دائیں جانب)	صفحہ
اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ناراض ہونے کا تذکرہ۔	۴۳۹	کر سب سے زیادہ خصوصیتِ خاصہ رکھتا ہے۔	۴۵۱
یہ مردود فلسفہ کفر و ضلالت سے بھرا ہوا اور جہالتوں کا مجموعہ ہے۔		جس قدر خصوص زیادہ ہوتا جاتا ہے حق اشد و اکد ہوتا جاتا ہے۔	
جس شخص نے شرعی قبیح کے مرتکب کو کہا تو نے اچھا کیا ہے، تو وہ کافر ہو گیا۔	۴۴۲	اسی حقوقِ اولاد کی فہرست جو احادیثِ مرفوعہ سے مصنف علیہ الرحمہ نے تیار فرمائی جن میں سے اکثر مستحبات ہیں جن کے ترک پر اصلاً مواخذہ نہیں اور بعض پر آخرت میں مطالبہ ہوگا۔	۴۵۲
بستم (بیسویں وجہ)	۴۴۲	آدمی اپنا نکاح رذیل قوم میں نہ کرے بلکہ دیندار لوگوں میں کرے اور حبشیوں میں قرابت نہ کرے۔	۴۵۲
فلسفے کی فضیلت کو فقہ کی فضیلت پر ترجیح دینا ضمناً علمِ دین کی توہین ہے۔	۴۴۲	بسم اللہ سے جماع کی ابتداء کرے، شرمگاہِ زن پر نگاہ نہ کرے، زیادہ باتیں نہ کرے، اور مرد و زن مکمل برہنہ نہ ہوں۔	۴۵۲
علمِ دین کی صراحتاً توہین کفر ہے۔	۴۴۲	بچے کے پیدا ہوتے ہی دائیں کان میں اذان اور بائیں میں اقامت کہی جائے اور میٹھی چیز کی گھٹی دی جائے	۴۵۲

Fatawa-e-Razawiyya Volume 24

Page Contents (Summarized Points on Child Upbringing):

- Perform Aqiqah on the 7th, 14th, or 21st day after birth.
- As soon as the child starts speaking, teach them to say "Allah, Allah," then teach the Kalimah Tayyibah, and upon reaching the age of discernment, teach them complete manners.
- Have the child's head shaved, give silver equal to the weight of the hair in charity, and apply saffron to the child's head.
- Instruct daughters to be obedient to their husbands, teach them the Quran, and emphasize regular recitation.
- Give the child a good name, even in the case of a miscarriage.
- Teach children the beliefs of Islam, the Sunnah of the Prophet Muhammad (peace be upon him), and love and reverence for his family and companions.
- If a child is named Muhammad, ensure that the name is respected.
- When a child reaches the age of seven, urge them to pray, provide religious education, and allow time for play while protecting them from bad company. At age ten, discipline them for missing prayers.
- Have the child breastfed by a prayerful, righteous woman from a noble background.
- Separate the beds of children at the age of ten; once they are grown, arrange their marriage with a woman of virtuous character.
- Include needy relatives when fulfilling personal needs; the primary right belongs to one's own family and children.
- Deal with adult children with gentleness, leave inheritance for them, and do not deprive them of their inheritance.
- Provide children with halal sustenance and avoid eating alone without them.
- There are five specific rights for a son.
- Show affection to children and keep their happiness in mind.
- There are fifteen specific rights for a daughter.
- Offer new seasonal fruits to children first and occasionally provide sweets according to one's means.
- In this world, a father is not held accountable for his son, nor is it permissible for a son to dispute or conflict with his father, except regarding certain rights: maintenance (nafaqah), breastfeeding (raza'at), custody (hazanat), taking the

child into protection after custody, leaving an inheritance, circumcision, and marriage.
- Do not make false promises to children to amuse them; whatever is given should be distributed equally among all children.
- Mention of the treatise: "Al-Ajab al-Imdad fi Mukaffirat Huquq al-'Ibad" (Description of the definition and importance of human rights and ways to fulfill them).
- Arrange for proper medical treatment when children fall ill.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

पृष्ठ सामग्री (बच्चों के पालन-पोषण पर संक्षिप्त बिंदु):

- जन्म के7वें, 14वें या 21वें दिन अकीका किया जाए।
- जैसे ही बच्चा बोलना शुरू करे, उसे "अल्लाह, अल्लाह" कहना सिखाएं, फिर कलमा तैयबा सिखाएं, और समझ आने की उम्र पर पहुँचने पर उसे पूर्ण शिष्टाचार (आदाब) सिखाएं।
- बच्चे के सिर के बाल कटवाएं, उनके वजन के बराबर चांदी दान करें, और बच्चे के सिर पर केसर (ज़ाफ़रान) लगाएं।
- बेटियों को उनके पति की आज्ञाकारी होने का निर्देश दें, उन्हें कुरान पढ़ाएं, और नियमित तिलावत पर जोर दें।
- बच्चे का एक अच्छा नाम रखें, भले ही गर्भपात हो गया हो।
- बच्चों को इस्लाम के अक़ायदे, पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सुन्नत और उनके परिवार और साथियों के प्रति प्रेम और सम्मान सिखाएं।
- यदि बच्चे का नाम मुहम्मद रखा जाता है, तो सुनिश्चित करें कि नाम का सम्मान किया जाए।
- जब बच्चा सात साल का हो जाए, तो उसे नमाज़ पढ़ने के लिए कहें, धार्मिक शिक्षा प्रदान करें, और बुरी संगत से बचाते हुए खेलने का समय दें। दस साल की उम्र में, नमाज़ न पढ़ने पर उन्हें अनुशासित करें।
- बच्चे को एक नमाज़ी, नेक और कुलीन पृष्ठभूमि वाली महिला से स्तनपान कराएं।
- दस साल की उम्र में बच्चों के बिस्तर अलग कर दें; बड़े होने पर उनका विवाह एक नेक चरित्र वाली महिला से कराएं।
- व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करते समय जरूरतमंद रिश्तेदारों को भी शामिल करें; प्राथमिक अधिकार स्वयं के परिवार और बच्चों का है।
- वयस्क बच्चों के साथ नरमी से पेश आएं, उनके लिए विरासत छोड़ें और उन्हें उनकी विरासत से वंचित न करें।
- बच्चों को हलाल जीविका प्रदान करें और उनके बिना अकेले खाने से बचें।
- बेटे के पांच विशिष्ट अधिकार हैं।
- बच्चों के प्रति स्नेह दिखाएं और उनकी खुशी का ध्यान रखें।
- बेटी के पंद्रह विशिष्ट अधिकार हैं।

- मौसम के नए फल सबसे पहले बच्चों को दें और अपनी क्षमता के अनुसार कभी-कभी मिठाई आदि प्रदान करें।
- इस दुनिया में, पिता अपने बेटे के लिए जवाबदेह नहीं है, और न ही एक बेटे के लिए अपने पिता के साथ विवाद या संघर्ष करना जायज़ है, सिवाय कुछ अधिकारों के: भरण-पोषण (नफ़क़ा), स्तनपान (रज़ात), परवरिश (हज़ानत), परवरिश के बाद बच्चे को अपनी सुरक्षा में लेना, विरासत छोड़ना, खतना और विवाह।
- बच्चों को बहलाने के लिए उनसे झूठे वादे न करें; जो कुछ भी दिया जाए, वह सभी बच्चों में समान रूप से वितरित किया जाना चाहिए।
- रिसाला का उल्लेख: "अल-अजब अल-इमदाद फ़ी मुकफ़्फ़िरात हुक़ूक़ अल-इबाद" (मानव अधिकारों की परिभाषा और महत्व का वर्णन और उन्हें पूरा करने के तरीके)।
- बच्चों के बीमार होने पर उनके उचित चिकित्सा उपचार की व्यवस्था करें।

पृष्ठ 36/720

- ساتویں، چودھویں یا اکیسویں دن عقیقہ کیا جائے۔
- بچے کو زبان کھلتے ہی اللہ اللہ پھر کلمہ طیبہ اور تمیز آنے پر مکمل آداب سکھائے۔
- سر کے بال اتروا کر ان کے برابر چاندی خیرات کی جائے اور بچے کے سر پر زعفران لگایا جائے۔
- دختر کو شوہر کی اطاعت کی تلقین کرے، قرآن پڑھائے اور تلاوت کی تاکید کرے۔
- بچہ اچھا نام رکھا جائے اگر چہ بچہ کچا ہو۔
- اولاد کو عقائدِ اسلام و سنت رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم اور آپ کے آل و اصحاب کی محبت و تعظیم سکھائے۔
- بچے کا نام محمد رکھا جائے تو اس کا احترام کیا جائے۔
- بچہ سات برس کا ہو تو اس کو نماز کی تلقین کرے، علم دین پڑھائے، کھیلنے کا وقت دے مگر بری صحبت سے بچائے اور دس سال کا ہو تو مار کر نماز پڑھائے۔
- بچہ کو نمازی صالحہ شریف القوم عورت سے دودھ پلوایا جائے۔
- دس برس کے بچوں کے بچھونے الگ کر دے، جوان ہونے پر نیک سیرت عورت سے شادی کرائے۔
- اپنے حوائج سے جو بچے اس میں محتاج اقرباء کو شامل کرے، پہلا حق عیال و اطفال کا ہے۔
- جوان اولاد سے نرمی کے ذریعے کام لے، ان کے لئے ترکہ چھوڑے، میراث سے اولاد کو محروم نہ کرے۔
- حلال روزی بچے کو دے اور اولاد کے ساتھ تنہا خوری نہ برتے۔

- خاص پسر کے پانچ حقوق۔
- بچوں سے پیار کرے اور ان کی دل جوئی کو ملحوظ رکھے۔
- خاص دختر کے پندرہ حقوق۔
- نیا پھل پہلے بچوں کو دے اور کبھی کبھار حسب مقدور انہیں شیرینی وغیرہ کھلائے۔
- دنیا میں بیٹے کے لئے باپ پر گرفت نہیں، نہ بیٹے کے لئے جائز کہ باپ سے جدال و نزاع کرے سوائے چند حقوق کے جو کہ یہ ہیں: نفقہ، رضاعت، حضانت، بعد از حضانت بچے کو اپنی حفظ و صیانت میں لینا، بچوں کے لئے ترکہ باقی رکھنا، ختنہ اور شادی و نکاح۔
- بہلانے کے لئے بچوں سے جھوٹا وعدہ نہ کرے، جو کچھ دے سب بچوں کو برابر دے۔
- O رسالہ اعجب الامداد فی مکفرات حقوق العباد۔ (حقوق العباد کی تعریف اور ان کی اہمیت کا بیان اور ان سے چھٹکارا حاصل کرنے کے طریقے)
- بیمار ہونے پر بچوں کا مناسب علاج کرائے۔

Fatawa Razawiya Volume 24

470 | "One who repents from sin is like one who has no sin." 470 | To completely sever ties with every disbeliever is an absolute obligation. | 362 470 | The good deeds of a person with a wrong creed are not accepted, nor do they yield reward. 470 | Mourning, wailing, and lamentation. 470 | Fourth group: Debtors. 470 | What is the reward for being patient upon the death of one's children? | 477 470 | Which debtor's right will Allah Almighty forgive on the Day of Resurrection? 470 | Does the deceased suffer any pain from loud crying over them or not? | 477 471 | Fifth group: Noble Saints (Awliya). 471 | Is crying loudly permissible or not? | 477 471 | Virtues of the Saints. 471 | How is the deduction for the permissibility of wailing from the Hadith "When the Prophet (PBUH) became heavy (ill)"? | 485 473 | Virtues of the Noble Companions. 473 | Recurrent (Mutawatir) Hadiths exist regarding the prohibition of wailing. | 486 473 | Virtues of the people of Badr. 473 | Is it permissible for the Ahl al-Sunnah wa al-Jama'ah to express grief and sorrow during the first ten days of Muharram or not? | 486 473 | Merits of Uthman Ghani (May Allah be pleased with him). 473 | The axis of faith is the love for the Messenger of Allah (Peace and blessings of Allah be upon him). | 486 474 | The beloveds of God do not commit sins initially, and if occasionally a lapse occurs, a divine admonisher and restrainer warns them and grants them the success of repentance. 474 | To a lover, every thing of the beloved is dear. | 486 475 | Without attaining Divine Gnosis, it is very difficult to emerge from obedience to the desires of the self. 475 | The Illustrious Prophet (Peace and blessings of Allah be upon him) is free from every flaw and defect and is matchless. | 487 475 | Meaning of "La Ilaha Illallah". 475 | Wailing and mourning are prohibited. | 488 Appendix: Good conduct and rights of people. 137 488 | بیان شہادت کو مجلس میلاد کے ساتھ ملانا حماقت ہے۔ | The paths of the righteous have varied regarding cutting off relations with sinners, and both ways are permissible considering religious interests. 137 | It is forbidden to observe mourning in Muharram. | 488 138 | If un-Islamic customs are common in a wedding ceremony, then adhering to not attending is praiseworthy in Sharia. 138 | It is ignorance not to offer 'Niyaz' (food offerings) for anyone in Muharram except for the Noble Hasnain (May Allah be pleased with them). | 488 175 | How is it to be strict in stopping a mother from wearing a 'Kurti' (shirt)? |

फतावा रज़विया, खंड 24

470 | "पाप से पश्चाताप करने वाला वैसा ही है जैसे उसका कोई पाप न हो।" 470 | प्रत्येक काफिर से संबंध तोड़ना पूरी तरह अनिवार्य (फर्ज) है। | 362 470 | विधर्मी की कोई भी नेकी स्वीकार नहीं की जाती, न ही उस पर कोई प्रतिफल या पुण्य मिलता है। 470 | शोक और विलाप (नुहा व मातम)। 470 | चौथा समूह: ऋणी (कर्जदार)। 470 | अपने बच्चों की मृत्यु पर धैर्य रखने का प्रतिफल क्या है? | 477 470 | कयामत के दिन अल्लाह तआला किस ऋणी का हक माफ करवाएगा? 470 | मृतक पर चिल्लाकर रोने से उसे कोई कष्ट होता है या नहीं? | 477 471 | पाँचवाँ समूह: औलिया किराम (संत)। 471 | चिल्लाकर रोना जायज़ है या नहीं? | 477 471 | औलिया के गुण (फज़ाइल)। 471 | हदीस "जब नबी (स.अ.व.) की तबियत भारी हुई" से विलाप की अनुमति पर तर्क कैसा है? | 485 473 | सहाबा किराम (पैगंबर के साथियों) के गुण। 473 | विलाप के निषेध में मुतवातिर (निरंतर) हदीसें मौजूद हैं। | 486 473 | बद्र वालों (अहले बद्र) के गुण। 473 | क्या अहले सुन्नत व जमात के लिए मुहर्रम के पहले दस दिनों में शोक और दुख प्रकट करना जायज़ है या नहीं? | 486 473 | उस्मान गनी (रज़ियल्लाहु अन्हु) की विशेषताएं। 473 | ईमान का आधार रसूल (स.अ.व.) की मोहब्बत है। | 486 474 | खुदा के महबूब (प्रिय) पहले तो गुनाह करते ही नहीं, और यदि कभी कोई कमी हो जाए तो ईश्वरीय उपदेशक उन्हें सचेत करता है और पश्चाताप का सौभाग्य देता है। 474 | प्रेमी को महबूब की हर चीज़ प्यारी होती है। | 486 475 | ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त किए बिना, नफ्स (इच्छाओं) की आज्ञाकारिता से बाहर आना बहुत कठिन है। 475 | हुज़ूर अनवर (स.अ.व.) हर दोष और कमी से मुक्त और बेमिसाल हैं। | 487 475 | "ला इलाहा इल्लल्लाह" का अर्थ। 475 | विलाप और मातम हराम (वर्जित) है। | 488 परिशिष्ट: सदव्यवहार और लोगों के अधिकार (हुकूक-उल-इबाद)। शहादत के वर्णन को मिलाद की महफिल के साथ मिलाना मूर्खता है। | 488 137 | पापियों के साथ संबंध तोड़ने में सज्जनों के तरीके अलग-अलग रहे हैं, और धार्मिक हितों को ध्यान में रखते हुए दोनों तरीके जायज़ हैं। 137 | मुहर्रम में शोक मनाना हराम है। | 488 138 | यदि विवाह समारोह में शरीयत के विरुद्ध रस्में आम हों, तो उनमें न जाने का पालन शरीयत में प्रशंसनीय है। 138 | मुहर्रम में हसनैन करीमैन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) के अलावा किसी और की नियाज़ (भोग) न दिलाना अज्ञानता है। | 488 175 | माँ को कुर्ती पहनने से रोकने के लिए सख्ती करना कैसा है? |

۴۷۰ | التائب من الذنب کمن لا ذنب لہ۔ ۴۷۰ | ترک موالات ہر کافر سے مطلقاً فرض ہے۔ | ۳۶۲ ۴۷۰ | بد مذہب کی کوئی نیکی قبول نہیں، نہ اس پر اجر و ثواب مرتب ہوتا ہے۔ ۴۷۰ | سوگ ونوحہ وجزع وفزع | ۴۷۰ | چوتھا فرقہ : مدیون ۴۷۰ | اپنے بچوں کے فوت ہونے پر صبر کرنے کی جزا کیا ہے۔ | ۴۷۷ ۴۷۰ | کون سے مدیون کا حق اللہ تعالٰی قیامت کو معاف کرائے گا۔ ۴۷۰ | میت پر چلا کر رونے سے میت کو کچھ تکلیف ہوتی ہے یا نہیں۔ | ۴۷۷ ۴۷۱ | پانچواں فرقہ : اولیاء کرام ۴۷۱ | چلا کر رونا جائز ہے یا نہیں۔ | ۴۷۷ ۴۷۱ | فضائل اولیاء۔ ۴۷۱ | حدیث لما ثقل النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے جواز نوحہ پر استدلال کیسا ہے۔ | ۴۸۵ ۴۷۳ | فضائل صحابہ کرام ۴۷۳ | تحریم نوحہ میں احادیث متواتر موجود ہیں۔ | ۴۸۶ ۴۷۳ | فضائل اہل بدر ۴۷۳ | اہل سنت و جماعت کو عشرہ محرم الحرام میں رنج و غم کرنا جائز ہے یا نہیں۔ | ۴۸۶ ۴۷۳ | مناقب عثمان غنی رضی اللہ تعالٰی عنہ ۴۷۳ | مدار ایمان محبت رسول ہے صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔ | ۴۸۶ ۴۷۴ | محبوبان خدا اول تو گناہ کرتے ہی نہیں اور احیاناً کوئی تقصیر واقع ہو تو واعظ وزاجر الٰہی انہیں متنبہ کرتا اور توفیق انابت دیتا ہے۔ ۴۷۴ | محب کو محبوب کی ہر شیئ عزیز ہوتی ہے۔ | ۴۸۶ ۴۷۵ | بے حصل معرفت الہی اطاعت ہوائے نفس سے باہر آنا بہت دشوار ہے۔ ۴۷۵ | حضور انور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ہر عیب و نقص سے منزہ و بے مثال ہیں۔ | ۴۸۷ ۴۷۵ | لا الہ الا اللہ کا معنی۔ ۴۷۵ | نوحہ و ماتم حرام ہے۔ | ۴۸۸ ضمیمہ حسن سلوک و حقوق العباد بیان شہادت کو مجلس میلاد کے ساتھ ملانا حماقت ہے۔ | ۴۸۸ ۱۳۷ | اہل معاصی کے ساتھ قطع تعلق میں صالحین کے مسلک مختلف رہے ہیں اور مصالح دینیہ کی رعایت سے دونوں صورتیں جائز ہیں۔ ۱۳۷ | محرم میں سوگ منانا حرام ہے۔ | ۴۸۸ ۱۳۸ | تقریب شادی میں

خلاف شرع مراسم کا عام رواج ہو تو اس میں نہ جانے کا التزام شرعاً محمود ہے۔ ۱۳۸ | سوائے حسنین کریمین رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے محرم میں کسی کی نیاز نہ دلانا جہالت ہے۔ | ۴۸۸ ۱۷۵ | ماں کو کُرتی پہننے سے روکنے کے لئے سختی کرنا کیسا ہے۔ |

Volume 22 Fatawa Razawiya

Ta'ziyah and Related Innovations

- Alams (banners), Ta'ziyah, Mehndi, vows (mannat) for them, processions, offerings, drums and music, dance performances, elegies (marsiya), mourning (matam), going to artificial Karbalas, and women going to see Ta'ziyah – all these things are forbidden (Haram). (498)
- What is the ruling on making, seeing, and believing in Ta'ziyah from the heart, and what is the ruling for one who does so? (489)
- The Niyaz (food offerings) for the martyrs of Karbala is a blessing (tabarruk). (498)
- Response to an inquiry regarding Muhammadi flags, making Ta'ziyah and making offerings to it, drumming in the 'Godly night', Mawlid at a prostitute's house, sweets for conveying reward (Isal-e-Thawab), and Giyarween Sharif. (490)
- Fasting during the first ten days of Muharram is highly rewarding and very excellent. (499)
- The story of the doe. (491)
- What is the Sharia ruling on making a Ta'ziyah, offering sweets etc. on it, and its veneration? (499)
- The marriage of Ghazi Miyan is purely an ignorant custom. (492)
- What is the ruling on calling one who believes in the impermissibility of Ta'ziyah an infidel (Kafir) or an apostate (Murtad)? (499)
- What is the Sharia ruling on the customs of Alam Ta'ziyah, drums and music, saying the holy names of Imam Hasan and Imam Husain (may Allah be pleased with them) with emphasis (tashdid), chest-beating, holding fairs in Muharram, etc.? (492)
- What is the ruling on praying behind someone who is extreme in Ta'ziyah-keeping? (499)
- Where is the proof for cooking Khichda and distributing it among the brotherhood? (494)
- Conveying reward (Isal-e-Thawab) to the soul of Imam Husain (may Allah be pleased with him) every day is recommended and commendable. (500)
- Items for Niyaz are respected; their disrespect is impermissible. (494)
- Ta'ziyah, Mehndi, and illumination (lighting) are innovations (bid'at) and impermissible. (500)

- Wahhabis have enmity with the names of the beloved of God. (494)
- Majlis (gathering) for the mention of martyrdom and narration of virtues and merits in it is permissible. (501)
- Begging without necessity by becoming a mendicant (faqir) is forbidden. (494)
- Nurturing grief and reciting elegies (marsiya) is impermissible. (501)
- Wearing green and black clothes in Muharram. (495)
- The marriage and Mehndi of Hazrat Qasim in the field of Karbala is not proven. (501)
- Inquiry about false stories attributed to the sayings (malfuzat) of Sayyid Abdur Razzaq Hanswi. (497)
- The Ashura fair is futile; burying Ta'ziyahs and reciting Fatiha over them is ignorance and folly. (501)
- A false story regarding the author (may mercy be upon him) participating in Ta'ziyah. (497)
- Making a vow (mannat) by going to a Ta'ziyah is baseless (batil). (501)
- Ta'ziyah-keeping is impermissible. (502)

जिल्द 22 फ़तावा रज़विया

ताज़िया और उससे संबंधित बिदअतें

- अलम, ताज़िया, मेहंदी, उनकी मन्नत, गश्त (जुलूस), चढ़ावे, ढोल-ताशे, मुजरे, मरसिये, मातम, नकली कर्बला जाना और औरतों का ताज़िया देखने जाना - ये सब बातें हराम हैं। (498)
- ताज़िया बनाना, देखना और दिल से उसे मानना कैसा है, और ऐसा करने वाले का क्या हुक्म है? (489)
- शोहदा-ए-कर्बला की नियाज़ तबर्रुक है। (498)
- मोहम्मदी झंडा, ताज़िया बनाना और उस पर चढ़ावा, खुदाई रात में ढोल, वेश्या के यहाँ मौलूद शरीफ, ईसाले सवाब में मिठाई और ग्यारहवीं शरीफ से संबंधित फतवे का जवाब। (490)
- मुहर्रम के दस दिनों के रोज़े बहुत सवाब और अत्यंत उत्तम हैं। (499)
- हिरनी का किस्सा। (491)
- ताज़िया बनाना, उस पर मिठाई वगैरह का चढ़ावा और उसकी ताज़ीम (सम्मान) का शरीयत में क्या हुक्म है? (499)
- गाज़ी मियां की शादी महज जाहिलाना रस्म है। (492)
- ताज़िया की ना-जवाज़ियत (अवैधता) के कायल को काफिर या मुर्तद कहना कैसा है? (499)
- अलम ताज़िया, ढोल ताशा, इमाम हसन और इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) के मुकद्दस नाम को तशदीद के साथ कहना, सीना पीटना, मुहर्रम में मेला लगाना आदि रस्मों का शरीई हुक्म क्या है? (492)
- ताज़ियादारी में गुलू (अति) करने वाले के पीछे नमाज़ पढ़ना कैसा है? (499)
- खिचड़ा पकाकर बिरादरी में बांटना कहाँ से साबित हुआ? (494)
- इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) की रूह को हर रोज़ ईसाले सवाब करना मुस्तहब और अच्छा है। (500)
- नियाज़ की चीज़ मुअज़्ज़म (सम्मानित) होती है, उसकी बे-तौकीरी (अनादर) नाजायज़ है। (494)
- ताज़िया, मेहंदी, रौशनी बिदअत और नाजायज़ है। (500)
- वहाबियों को खुदा के महबूबों के नाम से दुश्मनी है। (494)
- ज़िक्र-ए-शहादत की मजलिस और उसमें फज़ाइल व मनाकिब का बयान जायज़ है। (501)
- फकीर बनकर बिना ज़रूरत भीख मांगना हराम है। (494)

- गम परवरी (शोक मनाना) और मरसिया ख्वानी नाजायज़ है। (501)
- मुहर्रम में हरे और काले कपड़े पहनना। (495)
- मैदान-ए-कर्बला में हज़रत कासिम की शादी और मेहंदी साबित नहीं है। (501)
- मल्फ़ूज़ात सैयद अब्दुल रज़्ज़ाक हांसवी की तरफ मनसूब गलत हिकायात (कहानियों) के बारे में सवाल। (497)
- आशूरा का मेला फालतू है, ताज़ियों का दफन और उन पर फातिहा पढ़ना जहालत और बेवकूफी है। (501)
- मुसन्निफ (लेखक) अलैहिर्रहमा के बारे में ताज़िया में शिरकत से मुताल्लिक एक गलत किस्सा। (497)
- ताज़िया पर जाकर मन्नत मानना बातिल (व्यर्थ) है। (501)
- ताज़ियादारी नाजायज़ है। (502)

جلد ۲۲ فتاویٰ رضویہ

تعزیہ اور اس سے متعلق بدعات

- علم، تعزیہ، مہندی، ان کی منّت، گشت، چڑھاوے، ڈھول تاشے، مجرے، مرثیے، ماتم، مصنوعی کربلا کو جانا اور عورتوں کا تعزیہ دیکھنے جانا یہ سب باتیں حرام ہیں۔ (۴۹۸)
- تعزیہ بنانا، دیکھنا اور دل سے اس کا معتقد ہونا کیسا ہے، اور ایسا کرنے والے کا کیا حکم ہے۔ (۴۸۹)
- حضرات شہدائے کربلا کی نیاز تبرک ہے۔ (۴۹۸)
- محمدی جھنڈا، تعزیہ بنانا اور اس پر چڑھاو، خدائی رات میں ڈھول، رنڈی کے ہاں مولود شریف، ایصالِ ثواب میں شیرینی اور گیارہویں شریف سے متعلق استفتاء کا جواب۔ (۴۹۰)
- عشرہ محرم کے روزے بہت ثواب اور نہایت افضل ہیں۔ (۴۹۹)
- ہرنی کا قصہ۔ (۴۹۱)
- تعزیہ بنانا، اس پر شیرینی وغیرہ کا چڑھاو اور اس کی تعظیم کا عند الشرع کیا حکم ہے۔ (۴۹۹)
- غازی میاں کا بیاہ محض جاہلانہ رسم ہے۔ (۴۹۲)
- تعزیہ کی ناجوازی کے قائل کو کافر یا مرتد کہنا کیسا ہے۔ (۴۹۹)
- علم تعزیہ، ڈھول تاشہ، امام حسن و امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے اسمِ مقدس کو بتشدید کہنا، سینہ پیٹنا، محرم میں میلہ لگانا وغیرہ رسومات کا شرعی حکم کیا ہے۔ (۴۹۲)
- تعزیہ داری میں غلو کرنے والے کے پیچھے نماز پڑھنا کیسا ہے۔ (۴۹۹)
- کھچڑا پکا کر برادری میں تقسیم کرنا کہاں سے ثابت ہوا۔ (۴۹۴)

- امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے روح کو ایصالِ ثواب ہر روز مستحب و مستحسن ہے۔ (۵۰۰)
- نیاز کی چیز معظم ہوتی ہے اس کی بے توقیری ناجائز ہے۔ (۴۹۴)
- تعزیہ، مہندی، روشنی بدعت و ناجائز ہے۔ (۵۰۰)
- وہابیوں کو محبوبانِ خدا کے نام سے عداوت ہے۔ (۴۹۴)
- مجلسِ ذکرِ شہادت اور اس میں بیانِ فضائل و مناقب جائز ہے۔ (۵۰۱)
- فقیر بن کر بلا ضرورت بھیک مانگنا حرام ہے۔ (۴۹۴)
- غم پروری اور مرثیہ خوانی ناجائز ہے۔ (۵۰۱)
- محرم میں سبز اور سیاہ کپڑے پہننا۔ (۴۹۵)
- میدانِ کربلا میں حضرت قاسم کی شادی و مہندی ثابت نہیں۔ (۵۰۱)
- ملفوظات سید عبدالرزاق ہانسوی کی طرف منسوب غلط حکایات کے بارے میں استفسار۔ (۴۹۷)
- عاشورہ کا میلہ لغو، تعزیوں کا دفن اور ان پر فاتحہ جہل و حمق ہے۔ (۵۰۱)
- مصنف علیہ الرحمہ کے بارے میں تعزیہ میں شرکت سے متعلق ایک غلط حکایت۔ (۴۹۷)
- تعزیہ پر جا کر منّت ماننا باطل ہے۔ (۵۰۱)
- تعزیہ داری ناجائز ہے۔ (۵۰۲)

Volume 24 Fatawa Razawiyya

502 | Taking wages for Imamate is permissible. | Request for fatwa comprising thirteen questions. | 508 502 | It is not haram to eat at the place of someone who has both haram and halal income. | Did the marriage of Hazrat Qasim take place in the field of Karbala or not? | 508 503 | Making a Ta'ziyah is not Shirk (polytheism) but it is Bid'ah (innovation) and a sin. | Since when has Ta'ziyah-dari been practiced? | 508 503 | Distributing sweets, feeding people, performing Fatiha and Niyaz is permissible, even if fixed to specific dates. | Fatiha is permissible at all times. | 509 504 | The current prevalent method of Ta'ziyah is certainly a loathsome innovation (Bid'at-e-Shani'ah). | After the martyrdom of Imam Hussain (may Allah be pleased with him), Mai Shahr Bano went to Madinah Munawwarah. | 510 504 | What kind of image of the luminous shrine of Imam Hussain (may Allah be pleased with him) did Sultan Timur keep? | Listening to Qawwali with musical instruments is not permissible for anyone. | 510 504 | The elegies (Marsiyas) of Dabeer, Anees, and other Rawafid contain Tabarra (insults to companions). | Kissing thumbs upon hearing the Azan is permissible and recommended, but doing so upon hearing a Quranic verse is impermissible. | 510 504 | The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) forbade elegies. | Mehndi (ritual) is impermissible; it must have been started by some ignorant person. | 510 505 | Request for fatwa comprising seven questions regarding making Ta'ziyah. | Treatise: "A'ali al-Ifadah fi Ta'ziyat al-Hind wa Bayan al-Shahadah" (Description of the prohibition of Ta'ziyah, the ban on distributing Langar in public markets, and the Shari'ah ruling on the mourning sessions of the Shiites). | 511 507 | It is strictly forbidden to attend a gathering where the Ahl al-Bayt are insulted. | Question 1: What is the ruling on Ta'ziyah-dari? | 511 507 | Taking out a Ta'ziyah, playing drums and kettledrums with it, taking out a funeral-like procession in the form of a grave, and throwing flowers on it is impermissible. | Ta'ziyah was correct in its origin, but now ignorant people have destroyed that origin and added hundreds of superstitions contrary to Shari'ah into it. | 512 508 | To say that Hazrat Imamain (may Allah be pleased with them) or any non-prophet is superior to a prophet is Kufr (disbelief). | Some description of the superstitions carved into Ta'ziyah. | 512 508 | Speaking ill of Hazrat Amir Muawiya (may Allah be pleased with him) or any Companion is Rafd (Shi'ism). | Question 2: Is it permissible to read the "Shahadat-nama" (martyrdom account) in Milad gatherings or not? | 513

खंड 24 फ़तावा रज़विया

५०२ | इमामत पर उजरत (मज़दूरी) लेना हलाल है। | तेरह सवालों पर आधारित इस्तफ़ता (फ़तवे की अर्ज़ी)। | ५०८ ५०२ | जिसके यहाँ हराम और हलाल दोनों तरह की आमदनी हो, उसका खाना हराम नहीं। | मैदान-ए-कर्बला में हज़रत क़ासिम का निकाह हुआ या नहीं। | ५०८ ५०३ | ताज़िया बनाना शिर्क नहीं, बिदअत और गुनाह है। | ताज़िया-दारी किस समय से जारी है? | ५०८ ५०३ | मिठाई बाँटना, खाना खिलाना, फातिहा देना और नियाज़ दिलाना, चाहे वह तारीख़ों के निर्धारण के साथ हो, जायज़ है। | फातिहा हर समय जायज़ है। | ५०९ ५०४ | ताज़िया जिस तरह से प्रचलित है, वह यकीनन बिदअत-ए-शनीआ (बुरी नवीनता) है। | इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) की शहादत के बाद माई शहर बानो मदीना मुनव्वरा चली गईं। | ५१० ५०४ | सुल्तान तैमूर ने इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) के रौज़ा-ए-अनवर की कैसी तस्वीर रखी थी? | साज़-ओ-सामान (मज़ामीर) के साथ कव्वाली सुनना किसी के लिए जायज़ नहीं। | ५१० ५०४ | दबीर और अनीस वगैरह रवाफ़िज़ के मर्सिये तबर्रा (अपमानजनक बातों) पर आधारित होते हैं। | अज़ान सुनते समय अंगूठे चूमना जायज़ और मुस्तहब है, और आयत-ए-करीमा सुनते समय नाजायज़ है। | ५१० ५०४ | हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मर्सियों से मना फ़रमाया। | मेंहदी नाजायज़ है, इसकी शुरुआत किसी जाहिल सफ़ीना ने की होगी। | ५१० ५०५ | ताज़िया बनाने से संबंधित सात सवालों पर आधारित इस्तफ़ता। | रिसाला: "आअली अल-इफ़ादा फ़ी ताज़ियत अल-हिन्द व बयान अल-शहादा" (ताज़िया की हुरमत, बाज़ार में लंगर लुटाने की मनाही और अहल-ए-तशैया की मर्सिया सभाओं के शरीअत के हुक्म का बयान)। | ५११ ५०७ | जिस महफ़िल में अहल-ए-बैत की तौहीन (अपमान) हो, उसमें जाना कतई हराम है। | पहला सवाल: ताज़िया-दारी का क्या हुक्म है? | ५११ ५०७ | ताज़िया निकालना, उसके साथ ढोल नगाड़े बजाना, कब्र की शक्ल बना कर जनाज़ा निकालना और उस पर फूल डालना नाजायज़ है। | ताज़िया अपनी असल (मूल) के ऐतबार से सही था, मगर अब जाहिलों ने उस असल को ख़त्म करके उसमें शरीअत के खिलाफ सैकड़ों खुराफ़ात गढ़ ली हैं। | ५१२ ५०८ | हज़रात इमामैन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) या किसी भी गैर-नबी को नबी से अफ़ज़ल कहना कुफ्र है। | ताज़िया में गढ़ी गई खुराफ़ात का कुछ बयान। | ५१२ ५०८ | हज़रत अमीर मुआविया (रज़ियल्लाहु अन्हु) या किसी सहाबी को बुरा कहना रफ़्ज़ (शीयत) है। | दूसरा सवाल: मिलाद की महफ़िलों में शहादत-नामा पढ़ना जायज़ है या नहीं। | ५१३

पृष्ठ ४० का ७२०

۵۰۲ | امامت پر اجرت لینا حلال ہے۔ | تیرہ سوالات پر مشتمل استفتاء۔ | ۵۰۸ ۵۰۲ | جس کے یہاں حرام و حلال دونوں طرح کی آمدنی ہو اس کا کھانا حرام نہیں۔ | میدانِ کربلا میں حضرت قاسم کا نکاح ہوا یا نہیں۔ | ۵۰۸ ۵۰۳ | تعزیہ بنانا شرک نہیں بدعت و گناہ ہے۔ | تعزیہ داری کس وقت سے جاری ہے۔ | ۵۰۸ ۵۰۳ | شیرینی تقسیم کرنا، کھانا کھلانا، فاتحہ دینا اور نیاز دلانا اگرچہ تعین تاریخ کے ساتھ ہو جائز ہے۔ | فاتحہ ہر وقت جائز ہے۔ | ۵۰۹ ۵۰۴ | تعزیہ جس طرح رائج ہے ضرور بدعتِ شنیعہ ہے۔ | امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی شہادت کے بعد مائی شہر بانو مدینہ منورہ چلی گئیں۔ | ۵۱۰ ۵۰۴ | سلطان تیمور نے امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے روضہ انور کی کیسی تصویر رکھی تھی۔ | قوالی مع مزامیر سننا کسی شخص کو جائز نہیں۔ | ۵۱۰ ۵۰۴ | دبیر وانیس وغیرہ روافض کے مرثیے تبر اپر مشتمل ہوتے ہیں۔ | اذان سنتے وقت انگوٹھے چومنا جائز و مستحب اور آیت کریمہ سنتے وقت ناجائز ہے۔ | ۵۱۰ ۵۰۴ | حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے مرثیوں سے منع فرمایا۔ | مہندی ناجائز ہے اس کا آغاز کسی جاہل سفینہ نے کیا ہوگا۔ | ۵۱۰ ۵۰۵ | تعزیہ بنانے سے متعلق سات سوالات پر مشتمل استفتاء۔ | رسالہ اعالی الافادہ فی تعزیۃ الھند و بیان الشھادۃ۔ (تعزیہ کی حرمت سر بازار لنگر لٹانے کی ممانعت اور اہل تشیع کی مجالس مرثیہ کے حکم شرعی کا بیان) | ۵۱۱ ۵۰۷ | جس مجلس میں اہل بیت کی توہین ہو اس میں جانا قطعاً حرام ہے۔ | سوال اول: تعزیہ داری کا کیا حکم ہے۔ | ۵۱۱ ۵۰۷ | تعزیہ نکالنا، اس کے ساتھ ڈھول نقارے بجانا، قبر کی صورت بنا کر جنازہ نکالنا اور اس پر پھول ڈالنا ناجائز ہے۔ | تعزیہ اپنی اصل کے اعتبار سے درست تھا مگر اب جاہل نے اس اصل کو نیست و نابود کر کے صد ہا خرافات خلاف شریعت اس میں تراش لیں۔ | ۵۱۲ ۵۰۸ | حضرات

امامین رضی اللہ تعالیٰ عنہما خواہ کسی غیر نبی کو نبی سے افضل کہنا کفر ہے۔ | تعزیہ میں خرافات تراشیدہ کا کچھ بیان۔ | ۵۱۲ ۵۰۸ | حضرت امیر معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ یا کسی صحابی کو برا کہنا رفض ہے۔ | سوال دوم: مجالس میلاد میں شہادت نامہ پڑھنا جائز ہے یا نہیں۔ | ۵۱۳

Fatawa-e-Razvia, Volume 24

514: The Shahadat Namas (martyrdom accounts) popular today among the masses are mostly based on false reports; therefore, reading them is impermissible. | 514: Separation from the essential is impossible. 515: Why did the scholars of the Ummah designate Rabi-ul-Awwal as a season of celebrating birth instead of mourning death? | 515: It is impossible to ignore the essential components that are part of the core essence. 515: When is it permissible and when is it impermissible to read a Shahadat Nama containing authentic reports? | 515: In customary essence, being a component is dependent on custom. 516: Mourning Imam Hussain (may Allah be pleased with him) every year is religiously disliked (makruh). | 516: Prayer (Salah) in Sharia custom is the name for a collection of specific pillars in a known form. 516: Third Question: What is the ruling on reading Shahadat Nama and what is the difference between its rulings and those of Tazia Dari? | 516: Difference in rulings between the mention of martyrdom and Tazia. 517: Mention of martyrdom is pure bliss if it is free from fabricated narrations, prohibited words, and illegitimate intentions. | 518: The book "Sirr-ush-Shahadatayn" consists of reliable, authentic, and clean reports. 517: A preliminary introduction to the difference in rulings between Shahadat Nama and Tazia Dari. | 518: An inherently permissible or good thing does not become ugly due to ugly external factors; rather, it remains on its original ruling in its essence. 517: For a thing, there is one reality, and some additional matters are its essentials and accidents. | 518: Tazia Dari was initiated by Sultan Timur. 517: Sharia rulings apply to a thing based on its existence; mere intellectual consideration without actual existence is not a basis for Sharia rulings. | 519: The precedent for Tazia in previous nations is the origin of idols. 517: Jurisprudence deals with the actions of those legally accountable, so what cannot come into actuality is outside the subject. | 519: Wadd, Suwa', Nasr, Yaghuth, and Ya'uq are actually names of righteous people. 517: Difference in rulings due to difference in consideration can only occur where those considerations are real, separate, and sequential, such that a thing is sometimes found with one and sometimes with the other. | 520: Fourth Question: What is the ruling on setting up Sabils (water stalls), feeding people, distributing food (langar) on the Day of Ashura, and listening to accounts of martyrdom and elegies (Marsiya) in Muharram gatherings? 517: For those additional essentials of existence, there will be no ruling separate from their reality's ruling. | 523: Fifth Question: What is the ruling on participating in an elegy-reciting gathering where elegies by Sufi saints are read and the head of the gathering is of the Sunni school of thought?

फतावा-ए-रज़विया, जिल्द 24

514: आज कल जो शहादत नामे आम लोगों में प्रचलित हैं, वे अधिकतर झूठी कहानियों (बातिल रिवायतों) पर आधारित हैं, इसलिए उन्हें पढ़ना नाजायज़ है। | 514: अनिवार्य से पृथक्करण असंभव है। 515: उम्मत के विद्वानों ने रबी-उल-अव्वल शरीफ को वफात (निधन) के मातम के बजाय विलादत (जन्म) की खुशी का मौसम क्यों ठहराया? | 515: हकीकत के उन स्तंभों को अनदेखा करना असंभव है जो मूल स्वरूप (माहियत) में शामिल हों। 515: सही रिवायतों पर आधारित शहादत नामा पढ़ना कब जायज़ है और कब नाजायज़? | 515: प्रथागत स्वरूप (माहियत-ए-उर्फिया) में सदस्यता प्रथा (उर्फ) के अधीन है। 516: हर साल इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) का मातम करना शरीयत की दृष्टि से मकरूह (नापसंदीदा) है। | 516: शरई प्रथा में नमाज़ ज्ञात स्वरूप में विशिष्ट स्तंभों के समूह का नाम है। 516: तीसरा सवाल: शहादत नामा पढ़ना कैसा है और इसके और ताज़ियादारी के अहकाम (नियमों) में क्या फर्क है? | 516: शहादत के ज़िक्र और ताज़िया के अहकाम में अंतर। 517: शहादत का ज़िक्र यदि मनगढ़ंत कहानियों, वर्जित शब्दों और अवैध इरादों से मुक्त हो, तो यह परम सौभाग्य है। | 518: पुस्तक "सिर्र-उश-शहादतैन" विश्वसनीय, प्रामाणिक और स्वच्छ रिवायतों पर आधारित है। 517: शहादत नामा और ताज़ियादारी के नियमों में अंतर के लिए एक प्रस्तावना की भूमिका। | 518: बुरी बाहरी परिस्थितियों के कारण कोई मूल रूप से जायज़ या अच्छी चीज़ बुरी नहीं हो जाती, बल्कि वह अपने मूल स्वरूप में अपने मौलिक नियम पर ही रहती है। 517: किसी वस्तु की एक हकीकत होती है और कुछ अतिरिक्त चीजें उसके अनिवार्य अंग या बाहरी प्रभाव होते हैं। | 518: ताज़ियादारी की शुरुआत सुल्तान तैमूर ने की थी। 517: शरीयत के नियम किसी वस्तु के अस्तित्व पर आधारित होते हैं; केवल बौद्धिक विचार, बिना वास्तविक अस्तित्व के, शरई नियमों का आधार नहीं होता। | 519: पिछली जातियों में ताज़िया की मिसाल मूर्तियों की शुरुआत है। 517: फिक्ह (धर्मशास्त्र) जवाबदेह व्यक्तियों के कार्यों पर चर्चा करता है, इसलिए जो कार्य वास्तविकता में नहीं आ सकता वह विषय से बाहर है। | 519: वद, सुवा, नस्र, यगुस और यऊक वास्तव में नेक लोगों के नाम हैं। 517: दृष्टिकोण के अंतर से नियमों में अंतर वहीं हो सकता है जहाँ वे दृष्टिकोण वास्तविक, पृथक और क्रमिक हों, जैसे कि कोई वस्तु कभी एक के साथ पाई जाए और कभी दूसरे के साथ। | 520: चौथा सवाल: यौम-ए-आशूरा में सबील लगाना, खाना खिलाना, लंगर बाँटना और मुहर्रम की महफ़िल में शहादत और मर्सिया सुनना कैसा है? | 523: पांचवा सवाल: मर्सिया ख्वानी की जिस महफ़िल में सूफिया-ए-किराम के मर्सिये पढ़े जाएं और महफ़िल का अध्यक्ष

भी सुन्नी विचारधारा का हो, उसमें शामिल होना कैसा है? 517: अस्तित्व के जो अतिरिक्त अनिवार्य अंग हैं, उनके नियम से अलग हकीकत के लिए कोई नियम नहीं होगा।

पेज 41/720

۵۱۴: آج کل جو شہادت نامے عوام میں رائج ہیں وہ اکثر روایات باطلہ پر مشتمل ہیں لہٰذا ان کا پڑھنا نا جائز ہے۔ | ۵۱۴: لازم سے انفکاک محال ہے۔ ۵۱۵: ربیع الاول شریف کو علماء امت نے ماتم وفات کے بجائے موسم شادی ولادت کیوں ٹھہرایا۔ | ۵۱۵: ارکان حقیقت کہ ماہیت میں داخل ہوں ان سے قطع نظر نا ممکن ہے۔ ۵۱۵: روایات صحیحہ پر مشتمل شہادت نامہ پڑھنا کب جائز اور کب نا جائز ہے۔ | ۵۱۵: ماہیت عرفیہ میں رکنیت تابع عرف ہے۔ ۵۱۶: ہر سال امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا ماتم کرنا شرعاً مکروہ ہے۔ | ۵۱۶: نماز عرف شرع میں مجموع ارکان مخصوصہ بہیئت معلومہ کا نام ہے۔ ۵۱۶: سوال سوم: شہادت نامہ پڑھنا کیسا ہے اور اس کے اور تعزیہ داری کے احکام میں فرق کیا ہے۔ | ۵۱۶: ذکر شہادت میں اور تعزیہ میں فرق احکام۔ ۵۱۷: ذکر شہادت اگر روایات موضوعہ، کلمات ممنوعہ اور نیت نامشروع سے خالی ہو تو عین سعادت ہے۔ | ۵۱۸: کتاب "سر الشہادتین" روایات معتبرہ صحیحہ نظیفہ پر مشتمل ہے۔ ۵۱۷: شہادت نامہ اور تعزیہ داری میں فرق احکام کے لئے ایک مقدمہ کی تمہید۔ | ۵۱۸: عوارض قبیحہ سے نفس شیئ مباح یا حسن قبیح نہیں ہو جاتی بلکہ وہ اپنی حد ذات میں اپنے حکم اصلی پر رہتی ہے۔ ۵۱۷: شیئ کے لئے ایک حقیقت ہوتی ہے اور کچھ امور زائد کو لوازم و عوارض ہوتے ہیں۔ | ۵۱۸: تعزیہ داری کا آغاز سلطان تیمور نے کیا۔ ۵۱۷: احکام شرعیہ شیئی پر بحسب وجود ہوتے ہیں مجرد اعتبار عقلی ناصالح وجود مسطح احکام شرع نہیں ہوتا۔ | ۵۱۹: تعزیہ کی نظیر امم سابقہ میں آغاز اصنام ہے۔ ۵۱۷: فقہ افعال مکلفین سے باحث ہے تو جو فعلیت میں آ نہیں سکتا موضوع سے خارج ہے۔ | ۵۱۹: ود، سواع، نسر، یغوث اور یعوق دراصل صالحین کے نام ہیں۔ ۵۱۷: تغائر اعتبار سے تغائر احکام وہیں ہو سکتا ہے جہاں وہ اعتبارات واقعیہ مفارقہ متعاقبہ ہوں کہ شیئ کبھی

ایک کے ساتھ پائی جائے کبھی دوسرے کے ساتھ | ۵۲۰: سوال چہارم: یوم عاشورہ میں سبیل لگانا، کھانا کھلانا، لنگر لٹانا اور مجلس محرم میں شہادت و مرثیہ سننا کیسا ہے۔ ۵۱۷: جو زائد لوازم الوجود ہوں ان کے حکم سے جدا کوئی حکم حقیقت کے لئے نہ ہو گا۔ | ۵۲۳: سوال پنجم: مرثیہ خوانی کی جس مجلس میں صوفیاء کرام کے مرثیے پڑھے جائیں اور میر مجلس بھی سنی المذہب ہو اس میں شرکت کیسی ہے۔

Fatawa Rizwia, Volume 24

- Question 6: Inquiry comprising nine parts regarding Taziya and offerings, and its sequential answer. (Ref: 523, Page: 530)
- Meaning of the Hadith "He who imitates a people is one of them."
- Question 7: Whether it is permissible for Ahl as-Sunnat wal-Jama'at to participate in Shia gatherings for mourning poetry (Marsiya Khwani). (Ref: 526, Page: 530)
- Second Scenario.
- Question 8: What is the ruling on making Taziya, making vows and offerings on it, hanging requests for the fulfillment of needs for the deceased, and considering these acts as good deeds and in accordance with Sharia? (Ref: 527, Page: 530)
- The noble Companions worked by changing their dress to look like Romans.
- In the time of Sultan Salahuddin Ayyubi, two scholars toured disguised as priests.
- Appendix: Taziya and related innovations (Bida'at). (Page: 530)
- Muharram: Taziya-dari and chest-beating (Sina kobi) are forbidden (Haram). (Ref: 141, Page: 531)
- Sharia ruling on wearing the sacred thread (Zunnar).
- The Taziya platform itself is impermissible; the musical instruments played on it are doubly forbidden. (Ref: 144, Page: 532)
- Third Scenario.
- Platforms for flags (Alam), Taziyas, etc., are all impermissible. (Ref: 172, Page: 532)
- Wearing English caps, jackets, trousers, etc.
- Flags and symbols are meaningless, and seeking mediation through them is futile. (Ref: 180, Page: 532)
- The 'Taylasan' (a type of cloak) is the dress of the Jews.
- Taziya-dari is impermissible. (Ref: 557, Page: 533)
- Imitation of the People of the Book (Ahl al-Kitab) in everything is not disliked (Makruh).
- Which type of imitation is prohibited and disliked?
- Imitation of others (Tashabbuh), signs of non-believers (Sha'ar-e-Kuffar), etc. (Page: 534)
- Is the 'Dhoti' an Indian dress or specifically for Hindus? (Ref: 529, Page: 534)

- The 'Dhoti' is not a specific hallmark of non-believers.
- Going against habit and custom is disliked and causes notoriety. (Ref: 530, Page: 535)
- Imitation is of two types: Binding (Iltizami) and Consequential (Luzumi).
- Rulings on wearing coats, collars, neckties, Peshawari pajamas, Turkish caps and boots, and having English-style hair. (Ref: 530, Page: 535)
- There are three scenarios of intent in Binding Imitation.
- First Scenario. (Page: 530)

फतावा रज़विया, खंड 24

- प्रश्न 6: ताज़िया और चढ़ावे से संबंधित नौ भागों पर आधारित इस्तफ़ता और उसका क्रमानुसार उत्तर। (संदर्भ: 523, पृष्ठ: 530)
- हदीस "जिसने किसी कौम की समानता अपनाई, वह उन्हीं में से है" का अर्थ।
- प्रश्न 7: क्या शियाओं की मरसिया ख्वानी की मजलिस में अहले सुन्नत व जमाअत का शामिल होना जायज़ है या नहीं? (संदर्भ: 526, पृष्ठ: 530)
- दूसरी स्थिति।
- प्रश्न 8: ताज़िया बनाना, उस पर नज़र-नियाज़ करना, मय्यत की हाजत पूरी होने के लिए आरज़ लगाएँ लटकाना और इन कार्यों को नेकी और शरीअत के अनुकूल समझना कैसा है? (संदर्भ: 527, पृष्ठ: 530)
- सहाबा किराम ने रोमियों के वेश में कपड़े बदलकर काम किया।
- सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के समय में दो विद्वानों ने पादरियों का रूप बनाकर दौरा किया।
- परिशिष्ट: ताज़िया और उससे संबंधित नवाचार (बिदअत)। (पृष्ठ: 530)
- मुहर्रम में ताज़ियादारी और सीना कोबी (छाती पीटना) हराम है। (संदर्भ: 141, पृष्ठ: 531)
- ज़ुन्नार (जनेऊ) बाँधने का शरई हुक्म।
- ताज़िया का तख़्त (मंच) स्वयं नाजायज़ है, इसमें वाद्य यंत्र हराम दर हराम हैं। (संदर्भ: 144, पृष्ठ: 532)
- तीसरी स्थिति।
- आलम (झंडे), ताज़िया आदि के तख़्त सब नाजायज़ हैं। (संदर्भ: 172, पृष्ठ: 532)
- अंग्रेजी टोपी, जैकेट, पतलून आदि पहनना।
- झंडे और निशान व्यर्थ हैं और उनसे वसीला ढूँढना बातिल है। (संदर्भ: 180, पृष्ठ: 532)
- 'तैलसान' (एक प्रकार का चोगा) यहूदियों की पोशाक है।
- ताज़ियादारी नाजायज़ है। (संदर्भ: 557, पृष्ठ: 533)
- हर चीज़ में अहले किताब की समानता मकरूह (नापसंद) नहीं है।
- कौन सा तशब्बुह प्रतिबंधित और मकरूह है?
- दूसरों की समानता (तशब्बुह), काफिरों के प्रतीक (शआर-ए-कुफ्फार) आदि। (पृष्ठ: 534)
- धोती भारतीय पोशाक है या विशेष रूप से हिंदुओं की? (संदर्भ: 529, पृष्ठ: 534)

- धोती विशेष रूप से काफिरों का प्रतीक नहीं है।
- आदत और प्रथा के विरुद्ध जाना मकरूह है और बदनामी का कारण बनता है। (संदर्भ: 530, पृष्ठ: 535)
- तशब्बुह (समानता) दो प्रकार की है: इल्तिज़ामी और लुज़ूमी।
- कोट, कॉलर, नेक-टाई, पेशावरी पायजामा, तुर्की टोपी और बूट (जूते) पहनना और अंग्रेजी फैशन के बाल रखना कैसा है। (संदर्भ: 530, पृष्ठ: 535)
- इल्तिज़ामी तशब्बुह में इरादे की तीन स्थितियां हैं।
- पहली स्थिति। (पृष्ठ: 530)

۵۲۳ | حدیث من تشبہ بقوم فھومنھم کا مطلب۔ | ۵۳۰ ۵۲۶ | صورت دوم | ۵۳۰ ۵۲۷ | صحابہ کرام نے رومیوں کے بھیس میں لباس بدل کر کام فرمایا۔ | ۵۳۰ | سلطان صلاح الدین ایوبی کے زمانے میں دو عالموں نے پادریوں کی وضع بنا کر دورہ کیا۔ | ۵۳۰ ۱۴۱ | زنار باندھنے کا حکم شرعی۔ | ۵۳۱ ۱۴۴ | صورت سوم | ۵۳۲ ۱۷۲ | انگریزی ٹوپی، جاکٹ، پتلون وغیرہ پہننا۔ | ۵۳۲ ۱۸۰ | طیلسان پوششِ یہود ہے۔ | ۵۳۲ ۵۵۷ | ہر چیز میں اہل کتاب سے مشابہت مکروہ نہیں۔ | ۵۳۳ | کون سا تشبہ ممنوع و مکروہ ہے۔ | ۵۳۴ ۵۲۹ | دھوتی خاص شعارِ کفار نہیں ہے۔ | ۵۳۴ ۵۳۰ | عادت و عرف کی خلاف ورزی مکروہ و باعثِ شہرت ہے۔ | ۵۳۵ ۵۳۰ | کوٹ، کالر، ٹکٹائی، پیشوری پاجامہ، ترکی ٹوپی و بوٹ جوتا پہننا اور انگریزی فیشن کے بال رکھنا کیسا ہے۔ | ۵۳۵ ۵۳۰ | صورت اول | ۵۳۰

سوال ششم: تعزیہ اور چڑھاوے سے متعلق نو اجزا پر مشتمل استفتاء اور اس کا ترتیب وار جواب۔

سوال ہفتم: شیعہ کی مجلسِ مرثیہ خوانی میں اہل سنت و جماعت کو شریک ہونا جائز ہے یا نہیں۔

سوال ہشتم: تعزیہ بنانا، اس پر نذر نیاز کرنا، عراض میت حاجت برآری لٹکانا اور ان افعال کو داخلِ حسنات و موافقِ شریعت جاننا کیسا ہے۔ ضمیمہ تعزیہ اور اس سے متعلق بدعات محرم میں تعزیہ داری اور سینہ کوبی حرام ہے۔ تخت تعزیہ خود ناجائز ہے اس میں باجے حرام در حرام ہیں۔ تخت علم تعزیے وغیرہ سب ناجائز ہیں۔ علم و نشان مہمل اور ان سے توسل باطل ہے۔ تعزیہ داری نا جائز ہے۔ تشبہ بالغیر، شعارِ کفار وغیرہ دھوتی لباسِ ہند ہے یا خاص ہنود کا لباس۔ تشبہ دو وجہ پر ہے: التزامی ولزومی۔ تشبہ التزامی میں قصد کی تین صورتیں ہیں۔ صورت اول

Volume 24 Fatawa Razawiya

- Twenty-five issues related to the prohibition of imitation (Tashbeeh) from Hadith and Fiqh. 536
- What is the ruling on a man uncovering the middle of his head, or shaving and braiding the hair on his forehead and nape? 543
- Issue 1, 536
- Issues 14, 15, 544
- It is forbidden (Haraam) for a woman to imitate a man and for a man to imitate a woman. 536
- It is permissible for a man to wear a single-stone ring weighing less than four and a half Mashas; more than that is impermissible. 544
- Issue 2, 536
- A woman should not wear a man's silver ring, and if she does, she should color it with saffron etc. 544
- Issue 3, 538
- Issues 16, 17, 18, 545
- Women were ordered to apply henna to their hands so that they do not resemble men. 538
- It is disliked (Makruh) for a man to spin a wheel like a woman. 545
- Issue 4, 539
- A woman is forbidden to ride a horse without necessity. 545
- Issues 5, 6, 7, 540
- A man should not wear a ring on his right hand as it is a characteristic of the Rafidis. 545
- It is Makruh for the Imam to stand in the Mihrab and be higher than all the followers (Muqtadis). 540
- Issues 19, 20, 548
- Issues 8, 9, 10, 541
- Scholars have declared wearing a cap that was the dress of the Rafidis as a sin. 548
- Reciting the Holy Quran by looking at it during prayer (Salah) invalidates the prayer according to Imam Azam, and is Makruh according to the Sahibayn. 541
- Wearing a Magian (Majusi) cap without Shariah necessity is disbelief (Kufr). 548
- The reason for the prohibition of images. 541
- Issues 21, 22, 23, 549

- Praying in a place with images is Makruh. 541
- Applying a tilak on the forehead or placing a cross on the shoulder is Kufr. 549
- If there is a cross in the direction of the Qibla, the prayer is Makruh. 541
- Issue 24, 550
- Issue 11, 542
- Wearing a Zunnar (sacred thread) is Kufr. 550
- It is forbidden for a man to apply henna to his palms or soles. 542
- Issue 25, 551
- Issues 12, 13, 543
- Hookah and Betel Leaf (Paan)
- It is forbidden for a woman to cut her hair. 543
- Paan is permissible and has been prevalent among Muslims without restriction since the time of Sheikh Fariduddin Ganj Shakar and Sheikh Nizamuddin (may Allah have mercy on them). 553

जिल्द 24 फतावा-ए-रजविया

- तशबीह (नकल उतारने) की मनाही से संबंधित हदीस और फ़िक़ह से पच्चीस मसले। 536
- पुरुष को अपना बीच का सिर खुलवाना और माथे व गर्दन के बाल मुंडवाना और गुंदवाना कैसा है? 543
- मसला 1, 536
- मसला 14, 15, 544
- स्त्री का पुरुष से और पुरुष का स्त्री से तशबीह (नकल) करना हराम है। 536
- पुरुष को साढ़े चार माशे से कम वजन की एक नग वाली अंगूठी पहनना जायज़ है, इससे अधिक की नाजायज़ है। 544
- मसला 2, 536
- चांदी की मर्दानी अंगूठी औरत को नहीं पहननी चाहिए और अगर पहने तो उसे जाफरान आदि से रंग लेना चाहिए। 544
- मसला 3, 538
- मसला 16, 17, 18, 545
- स्त्रियों को हाथों पर मेंहदी लगाने का हुक्म दिया गया है ताकि वे पुरुषों के समान न लगें। 538
- पुरुष का स्त्री की तरह चरखा कातना मकरूह है। 545
- मसला 4, 539
- स्त्री का बिना आवश्यकता घोड़े पर चढ़ना मना है। 545
- मसला 5, 6, 7, 540
- पुरुष दाहिने हाथ में अंगूठी न पहने क्योंकि यह राफ़िज़ियों (एक विशेष संप्रदाय) का प्रतीक है। 545
- इमाम का मेहराब में खड़ा होना और सभी मुक्तदियों (नमाज़ियों) से ऊंचा होना मकरूह है। 540
- मसला 19, 20, 548
- मसला 8, 9, 10, 541
- जो टोपी राफ़िज़ियों का लिबास थी, विद्वानों ने उसे पहनना गुनाह करार दिया है। 548

- नमाज़ में कुरआन मजीद देखकर पढ़ना इमाम-ए-आज़म के अनुसार नमाज़ को तोड़ने वाला है और साहिबैन के अनुसार मकरूह है। 541
- बिना शरीयत की आवश्यकता के मजूसी टोपी पहनना कुफ्र है। 548
- चित्र की मनाही का कारण। 541
- मसला 21, 22, 23, 549
- चित्र वाली जगह पर नमाज़ पढ़ना मकरूह है। 541
- माथे पर तिलक लगाना या कंधे पर क्रॉस (सलीब) रखना कुफ्र है। 549
- क़िब्ला की दिशा में क्रॉस हो तो नमाज़ मकरूह है। 541
- मसला 24, 550
- मसला 11, 542
- ज़ुनार (जनेऊ जैसा धागा) बांधना कुफ्र है। 550
- पुरुष को हथेली या तलवों पर मेंहदी लगाना हराम है। 542
- मसला 25, 551
- मसला 12, 13, 543
- हुक्का और पान
- स्त्री को अपने सिर के बाल कटवाना हराम है। 543
- पान जायज़ है और शेख फरीदुद्दीन गंज शकर और शेख निज़ामुद्दीन रहमतुल्लाहि अलैहिमा के समय से मुसलमानों में बेरोक-टोक प्रचलित है। 553

جلد ۲۴ فتاوی رضویہ

- تشبہ کی ممانعت سے متعلق حدیث وفقہ سے پچیس مسائل۔ ۵۳۶
- مرد کو اپنا وسط سر کھلوانا اور پیشانی وقفا کے بال مونڈنا اور گوندھنا کیسا ہے۔ ۵۴۳
- مسئلہ ۱، ۵۳۶
- مسئلہ ۱۵، ۱۴، ۵۴۴
- عورت کو مرد اور مرد کو عورت سے تشبہ حرام ہے۔ ۵۳۶
- مرد کو ساڑھے چار ماشے سے کم وزن کی انگوٹھی ایک نگ کی جائز ہے زیادہ کی ناجائز ہے۔ ۵۴۴
- مسئلہ ۲، ۵۳۶
- چاندی کی مردانی انگوٹھی عورت کو نہ چاہئے اور پہنے تو زعفران وغیرہ سے رنگ لے۔ ۵۴۴
- مسئلہ ۳، ۵۳۸
- مسئلہ ۱۸، ۱۷، ۱۶، ۵۴۵
- عورتوں کو ہاتھوں پر مہندی لگانے کا حکم دیا گیا تاکہ مردوں سے مشابہت نہ ہو۔ ۵۳۸
- مرد کو عورت کی طرح چرخہ کاتنا مکروہ ہے۔ ۵۴۵
- مسئلہ ۴، ۵۳۹
- عورت کو بلا ضرورت گھوڑے پر چڑھنا منع ہے۔ ۵۴۵
- مسئلہ ۷، ۶، ۵، ۵۴۰
- مرد سیدھے ہاتھ میں انگوٹھی نہ پہنے کہ رافضیوں کا شعار ہے۔ ۵۴۵

- امام کا محراب میں کھڑا ہونا اور تمام مقتدیوں سے بلند ہونا مکروہ ہے۔ ۵۴۰
- مسئلہ ۲۰، ۱۹، ۵۴۸
- مسئلہ ۱۰، ۹، ۸، ۵۴۱
- جو ٹوپی لباسِ روافض تھی علماء نے اس کا پہننا گناہ قرار دیا۔ ۵۴۸
- نماز میں قرآن مجید دیکھ کر پڑھنا امام اعظم کے نزدیک مفسد نماز اور صاحبین کے نزدیک مکروہ ہے ۵۴۱
- بلا ضرورت شرعیہ مجوس کی ٹوپی پہننا کفر ہے۔ ۵۴۸
- تصویر کی حرمت کی وجہ۔ ۵۴۱
- مسئلہ ۲۳، ۲۲، ۲۱، ۵۴۹
- تصویر والی جگہ نماز پڑھنا مکروہ ہے۔ ۵۴۱
- ماتھے پر قشقہ تلک لگانا یا کندھے پر صلیب رکھنا کفر ہے۔ ۵۴۹
- جہت قبلہ میں صلیب ہو تو نماز مکروہ ہے۔ ۵۴۱
- مسئلہ ۲۴، ۵۵۰
- مسئلہ ۱۱، ۵۴۲
- زنار باندھنا کفر ہے۔ ۵۵۰
- مرد کو ہتھیلی یا تلوے پر مہندی لگانا حرام ہے۔ ۵۴۲
- مسئلہ ۲۵، ۵۵۱
- مسئلہ ۱۳، ۱۲، ۵۴۳
- حقہ و پان
- عورت کو اپنے سر کے بال کترنا حرام ہے۔ ۵۴۳

- پان جائز اور شیخ فرید الدین گنج شکر و شیخ نظام الدین رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہما کے زمانے سے مسلمانوں میں بلانگیر رائج ہے۔ ۵۵۳

Fatawa Razawiya | Volume 24

[Column 1] - Drinking hookah is forbidden in one case, disliked in another, and permissible in one. | 553 - It is permissible to apply betel leaf on the head while keeping the forehead hair. | 553 - There are three types of hookahs. | 554 - There is no condition of not drinking hookah in the provision (Tosha) of Ashab-e-Kahf. | 554 - The secrets of special spices are known only to the people of the inner self (Ahle Batin). | 555 - Ruling on Hookah, Hashish (Charas), and Bidi. | 555 - What is the ruling on not allowing hookah smokers and betel eaters to join the congregation? | 555 - Many Sufi saints (Awliya-e-Kiram) ate betel leaf. | 556 - Is hookah permissible or not? | 556 - What is the status of making a picture and the person who makes it according to Sharia? | 556 - What is the ruling on listening to singing and musical instruments? | 557 - Urinating while standing. | 557 - Observing Tazia is impermissible. | 557 - Hookah water is pure. | 557 - Keeping pictures is permissible in three cases. | 557

[Column 2] - Eating betel leaf is permissible, but due to some external factors, it sometimes becomes recommended (mustahabb), obligatory (wajib), disliked (makruh), or forbidden (haram). | 557 - Eating betel leaf, Chhuna (lime), tobacco, and Surti is permissible; Surti is a name for tobacco. | 558 - **Picture (Tasweer)** | 558 - Making pictures of living beings is absolutely forbidden (haram), and buying or selling them is also not permissible. | 559 - The testimony of a person who sells clothes with pictures is rejected. | 559 - Along with bad deeds, one should also avoid a bad reputation. | 560 - It is not correct to break pictures of religious personalities. | 560 - Pictures of living beings are forbidden without any exception, whether handmade or photographic, with or without a shadow. | 562 - Declaring pictures without a shadow as permissible is only the sect of some Rafidites (Shia). | 562 - The reason for the prohibition of pictures is their resemblance to Allah's creation. | 565 - A few conditions for the prohibition of keeping pictures. | 565 - What kind of pictured clothing is impermissible to wear, pray in, or sell, and in which case it is permissible. | 566 - Shariah ruling on pictures taken with a camera and those who take them or have them taken. | 567 - A thing is forbidden or permitted based on its purposes. | 567 - Whether it's a photo or a handmade picture, full-length or half-length, having it made is all haram, and keeping it with respect is also haram. | 568

फ़तावा रज़विया | खंड 24

[कॉलम 1] - हुक्का पीना एक स्थिति में हराम, एक में मकरूह और एक में मुबाह (जायज़) है। | 553 - सिर पर पान लगाना जायज़ है जबकि माथे के बाल रखे जाएँ। | 553 - हुक्के तीन प्रकार के होते हैं। | 554 - असहब-ए-कहफ़ के तोशा में हुक्का न पीने की कोई शर्त नहीं है। | 554 - विशेष मसालों के रहस्यों को केवल बातिनी (आंतरिक ज्ञान वाले) लोग ही जानते हैं। | 555 - हुक्का, चरस और बीड़ी का हुक्म। | 555 - हुक्का पीने वालों और पान खाने वालों को जमात में शामिल न करना कैसा है? | 555 - कई औलिया-ए-किराम ने पान खाया। | 556 - हुक्का जायज़ है या नहीं। | 556 - तस्वीर बनाना और बनाने वाला शरीयत के अनुसार कैसा है। | 556 - गाना और वाद्ययंत्र सुनना कैसा है। | 557 - खड़े होकर पेशाब करना। | 557 - ताज़ियादारी नाजायज़ है। | 557 - हुक्के का पानी पाक (शुद्ध) है। | 557 - तस्वीर रखना तीन स्थितियों में जायज़ है। | 557

[कॉलम 2] - पान खाना मुबाह है, लेकिन कुछ बाहरी कारणों से कभी-कभी मुस्तहब, वाजिब, मकरूह और हराम हो जाता है। | 557 - पान, चूना, तंबाकू और सुरती खाना जायज़ है; सुरती तंबाकू को ही कहते हैं। | 558 - **तस्वीर (चित्र)** | 558 - जीवित प्राणियों के चित्र बनाना बिल्कुल हराम है और उनकी खरीद-बिक्री भी जायज़ नहीं है। | 559 - तस्वीर वाले कपड़े बनाकर बेचने वाले की गवाही अस्वीकार्य है। | 559 - बुरे कामों के साथ-साथ बदनामी से भी बचना चाहिए। | 560 - धार्मिक महानुभावों की तस्वीरें तोड़ना सही नहीं है। | 560 - जीवित प्राणियों के चित्र बिना किसी शर्त के हराम हैं, चाहे वे हाथ से बनाए गए हों या कैमरे से, छायादार हों या बिना छाया के। | 562 - बिना छाया वाले चित्रों को जायज़ ठहराना केवल कुछ राफ़िज़ियों (शिया) का मत है। | 562 - चित्रों की मनाही का कारण अल्लाह की रचना के साथ समानता है। | 565 - तस्वीरों को सुरक्षित रखने की मनाही की कुछ शर्तें। | 565 - किस तरह के चित्रों वाले कपड़े पहनना, उनमें नमाज़ पढ़ना और बेचना नाजायज़ है और किस स्थिति में जायज़ है। | 566 - कैमरे से ली गई तस्वीर और बनाने/बनवाने वाले का शरई हुक्म। | 567 - कोई चीज़ अपने उद्देश्यों के आधार पर वर्जित या वैध होती है। | 567 - फोटो हो या हाथ से बना चित्र, पूरी हो या आधी, सब बनवाना हराम है और उसे सम्मान के साथ रखना भी हराम है। | 568

पृष्ठ 44 का 720

[کالم ۱] حقہ پینا ایک صورت میں حرام، ایک میں مکروہ اور ایک میں مباح ہے۔ | ۵۵۳ سر پر پان کھلونا جائز ہے جبکہ پیشانی کے بال باقی رکھے جائیں۔ | ۵۵۳ حقے تین قسم ہیں۔ | ۵۵۴ توشہ اصحاب کہف میں حقہ نہ پینے کی کوئی شرط نہیں۔ | ۵۵۴ مصالحہ خاصہ کے اسرار اہل باطن جانتے ہیں۔ | ۵۵۵ حقہ، چرس اور بیڑی کا حکم۔ | ۵۵۵ حقہ پینے والے اور پان کھانے والے کو جماعت میں شریک نہ کرنا کیسا ہے۔ | ۵۵۵ پان کئی اولیائے کرام نے کھایا۔ | ۵۵۶ حقہ جائز ہے یا نہیں۔ | ۵۵۶ تصویر بنانا، اور بنانے والا شرعاً کیسا ہے۔ | ۵۵۶ گانا اور مزامیر سننا کیسا ہے۔ | ۵۵۷ کھڑے ہو کر پیشاب کرنا۔ | ۵۵۷ تعزیہ داری نا جائز ہے۔ | ۵۵۷ حقہ کا پانی پاک ہے۔ | ۵۵۷ تصویر رکھنا تین صورتوں میں جائز ہے۔ | ۵۵۷

[کالم ۲] پان کھانا مباح ہے، مگر بعض عوارض خارجیہ کی وجہ سے کبھی مستحب، واجب، مکروہ اور حرام ہوتا ہے۔ | ۵۵۷ پان، چھونا، تمباکو اور سرتی کھانا جائز ہے سرتی تمباکو کو کہتے ہیں۔ | ۵۵۸ **تصویر** | ۵۵۸ جاندار کی تصویر بنانا مطلقاً حرام ہے اور اس کی خرید و فروخت بھی جائز نہیں۔ | ۵۵۹ تصویر دار کپڑا بنا کر فروخت کرنے والے کی گواہی مردود ہے۔ | ۵۵۹ برے کام کے ساتھ ساتھ بُرے نام سے بھی بچنا چاہئے۔ | ۵۶۰ معظم دینی کی تصویریں توڑنا درست نہیں۔ | ۵۶۰ جاندار کی تصویر بغیر کسی قید کے حرام ہے چاہے دستی ہو یا عکسی، سایہ دار ہو یا بے سایہ۔ | ۵۶۲ بے سایہ تصویر کو جائز قرار دینا صرف بعض روافض کا مذہب ہے۔ | ۵۶۲ تحریم تصویر کی علت تخلیق الٰہی سے مشابہت ہے۔ | ۵۶۵ تصویر کو محفوظ رکھنے کی حرمت کی چند شرائط | ۵۶۵ کیسی تصویر والے کپڑے کا پہننا، اس میں نماز پڑھنا اور بیچنا ناجائز اور کس صورت میں جائز ہے۔ | ۵۶۶ کیمرہ سے بنائی ہوئی تصویر اور بنانے

بنوانے والے کا شرعی حکم۔ | ۵۶۷ شے اپنے مقاصد کے اعتبار سے ممنوع یا مشروع ہوتی ہے۔ | ۵۶۷ فوٹو ہو یا دستی تصویر، پوری ہو یا نیم قد بنوانا سب حرام ہے اور اس کا عزت سے رکھنا بھی حرام ہے۔ | ۵۶۸

Fatawa Rizvia, Volume 24

- 'Image' refers only to the face. (568 | 577)
- At the time of the Conquest of Mecca, some images were erased by Hazrat Farooq-e-Azam on the order of the Holy Prophet, and some He Himself erased with His own blessed hands. (568 | 577)
- It is forbidden (haram) to draw images of living beings. (569 | 578)
- What is the ruling if the image is up to the chest? (569 | 578)
- Treatise 'Al-Ataya al-Qadeer fi Hukm it-Tasweer'. (571 | 578)
- The grand research of the Author (May Allah have mercy on him). (571 | 578)
- (The Shariah ruling on keeping pictures of elders/saints in the house for blessings).
- Idolatry started in the world because images of righteous people were made out of love and kept in houses and mosques, and it was thought that they supported the pleasure of worship, then gradually they became worshipped. (573 | 579)
- If the image is headless or its head is cut off, there is no dislike (karahat). (573 | 579)
- Wad, Suwa', Yaghuth, Ya'uq, and Nasr are the names of righteous people of the nation of Noah, whom people later started worshipping after the devil suggested making idols of them. (573 | 579)
- Other limbs are not in the meaning of face and head, even though they are similar in being vital organs. (573 | 579)
- The first non-God entity worshipped on earth was the idol named Wad. (574 | 579)
- The face is the essence in the image of a living being. (574 | 579)
- The Prophet (peace and blessings be upon him) declared those who make images of righteous people as the worst of creation. (575 | 579)
- There is no doubt that only the face is called a picture, and general purposes of a picture are achieved from the face. (575 | 579)
- It is in successive (mutawatir) Hadiths that angels of mercy do not enter a house that contains an image and a dog. (576 | 580)
- A headless image is not really an image at all. (576 | 580)
- There is no excuse for having an image of a religious dignitary; rather, it is more a cause of burden and punishment. (577 | 581)
- Tatufful ala al-Tahtawi (I say). (577 | 581)

- There is no religious dignitary greater than the Prophets (peace be upon them). (577 | 581)
- The converse (aks-e-mustawi) of a universal affirmative (mujiba kulliya) is not a universal affirmative. (577 | 581)
- After the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), the most excellent and superior in the whole world is Hazrat Ibrahim (peace be upon him). (577 | 582)
- Reconciliation and removal of conflict between two statements of the author of Al-Hidaya. (577 | 582)
- Which religious dignitaries' images had the disbelievers of Mecca carved on the wall of the Kaaba? (577 | 582)

फतावा रिज़विया, जिल्द 24

- 'तस्वीर' केवल चेहरे का नाम है। (568 | 577)
- मक्का विजय के अवसर पर नबी अक़दस के आदेश पर हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म ने और कुछ स्वयं आपने अपने मुबारक हाथों से कुछ तस्वीरें मिटा दी थीं। (568 | 577)
- जीवित वस्तु की तस्वीर बनाना हराम है। (569 | 578)
- यदि तस्वीर सीने तक हो तो उसका क्या हुक्म है? (569 | 578)
- रिसाला 'अल-अताया अल-क़दीर फ़ी हुक्म-ित-तस्वीर'। (571 | 578)
- लेखक (रहमतुल्लाह अलैहि) का महान शोध। (571 | 578)
- (बुज़ुर्गों की तस्वीरें बरकत के लिए घर में रखने का शरीअत का हुक्म)
- दुनिया में मूर्तिपूजा की शुरुआत इस तरह हुई कि नेक लोगों की मोहब्बत में उनकी तस्वीरें बनाकर घरों और मस्जिदों में रखी गईं और उनसे इबादत का आनंद मिलने में मदद समझी गई, फिर धीरे-धीरे वही पूज्य हो गईं। (573 | 579)
- यदि तस्वीर बिना सिर वाली हो या उसका सिर काट दिया जाए तो कोई आपत्ति (कराहत) नहीं है। (573 | 579)
- वद, सुवा, यग़ूस, यऊक़ और नस्र नूह की कौम के नेक लोगों के नाम हैं, जिनकी बाद में शैतान के उकसावे पर लोगों ने मूर्तियाँ बनाकर पूजा शुरू कर दी। (573 | 579)
- अन्य अंग चेहरे और सिर के अर्थ में नहीं हैं, भले ही वे जीवन का आधार होने में समान हों। (573 | 579)
- पृथ्वी पर सबसे पहले जिस गैर-अल्लाह की पूजा की गई, वह 'वद' नाम की मूर्ति थी। (574 | 579)
- जीवित वस्तु की तस्वीर में चेहरा ही असल (मुख्य) है। (574 | 579)
- नेक लोगों की तस्वीरें बनाने वालों को हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सबसे बुरी मखलूक़ (सृष्टि) करार दिया। (575 | 579)
- इसमें कोई संदेह नहीं कि केवल चेहरे को तस्वीर कहते हैं और तस्वीर के आम उद्देश्य चेहरे से ही प्राप्त होते हैं। (575 | 579)
- मुतवातिर हदीसों में है कि जिस घर में तस्वीर और कुत्ता हो, वहाँ रहमत के फ़रिश्ते नहीं आते। (576 | 580)

- सिर कटी तस्वीर वास्तव में तस्वीर है ही नहीं। (576 | 580)
- किसी धार्मिक महान हस्ती की तस्वीर के लिए कोई बहाना नहीं है, बल्कि यह और अधिक दंड और अज़ाब का कारण है। (577 | 581)
- ततफ़्फ़ुल अला अल-तहतावी (मैं कहता हूँ)। (577 | 581)
- अंबिया (अलैहिमुस्सलाम) से बढ़कर कोई धार्मिक महान हस्ती नहीं है। (577 | 581)
- 'मोजिबा-ए-कुल्लिया' का 'अक्स-ए-मुस्तवी' मोजिबा-ए-कुल्लिया नहीं आता। (577 | 581)
- हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद पूरी दुनिया में सबसे अफ़ज़ल और आला हज़रत इब्राहिम (अलैहिस्सलाम) हैं। (577 | 582)
- साहिबे हिदाया के दो कथनों के बीच सामंजस्य और विरोधाभास का निवारण। (577 | 582)
- मक्का के काफ़िरों ने काबा की दीवार पर किन धार्मिक हस्तियों की तस्वीरें उकेरी थीं? (577 | 582)

- تصویر فقط چہرہ کا نام ہے۔ (۵۶۸ | ۵۷۷)
- فتح مکہ کے موقع پر کچھ تصویریں نبی اقدس کے حکم پر حضرت فاروق اعظم نے اور کچھ آپ نے خود بنفس نفیس اپنے دست اقدس سے مٹا دیں۔ (۵۶۸ | ۵۷۷)
- جاندار کی تصویر کھینچنی حرام ہے۔ (۵۶۹ | ۵۷۸)
- سینے تک تصویر ہو تو اس کا کیا حکم ہے۔ (۵۶۹ | ۵۷۸)
- رسالہ العطایا القدیر فی حکم التصویر۔ (۵۷۱ | ۵۷۸)
- مصنف علیہ الرحمہ کی تحقیق جلیل۔ (۵۷۱ | ۵۷۸)
- (بزرگوں کی تصاویر بطور تبرک گھر میں رکھنے کا حکم شرعی)
- دنیا میں بت پرستی کی ابتداء یوں ہی ہوئی کہ صالحین کی محبت میں ان کی تصویریں بنا کر گھروں اور مسجدوں میں رکھی گئیں اور ان سے لذت عبادت کی تائید سمجھی گئی پھر شدہ شدہ وہی معبود ہو گئیں۔ (۵۷۳ | ۵۷۹)
- اگر تصویر بے سر کی ہو یا اس کا سر کاٹ دیا جائے تو کراہت نہیں۔ (۵۷۳ | ۵۷۹)
- ود، سواع، یغوث، یعوق اور نسر قوم نوح کے صلحاء کے نام ہیں جنہیں بعد میں بالقاء شیطان لوگوں نے بت بنا کر پوجنا شروع کر دیا۔ (۵۷۳ | ۵۷۹)
- دیگر اعضاء وجہ ورأس کے معنی میں نہیں اگر چہ مدار حیات ہونے میں مماثل ہوں۔ (۵۷۳ | ۵۷۹)
- سب سے پہلے جس غیر اللہ کی عبادت زمین میں کی گئی وہ ود نامی بت ہے۔ (۵۷۴ | ۵۷۹)
- چہرہ ہی تصویر ذی روح میں اصل ہے۔ (۵۷۴ | ۵۷۹)

- صلحاء کی تصویریں بنانے والوں کو حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے بد ترین مخلوق قرار دیا۔ (۵۷۵ | ۵۷۹)
- شک نہیں کہ فقط چہرہ کو تصویر کہتے ہیں اور عامہ مقاصد تصویر چہرہ سے حاصل ہوتے ہیں۔ (۵۷۵ | ۵۷۹)
- متواتر حدیثوں میں ہے کہ جس گھر میں تصویر اور کتا ہو وہاں رحمت کے فرشتے نہیں آتے۔ (۵۷۶ | ۵۸۰)
- مقطوع الراس تصویر در اصل تصویر ہے ہی نہیں۔ (۵۷۶ | ۵۸۰)
- کسی معظم دینی کی تصویر میں کوئی عذر نہیں بلکہ یہ زیادہ موجب وبال و نکال ہے۔ (۵۷۷ | ۵۸۱)
- تطفل علی الطحطاوی (اقول) (۵۷۷ | ۵۸۱)
- انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام سے بڑھ کر کوئی معظم دینی نہیں۔ (۵۷۷ | ۵۸۱)
- موجبہ کلیہ کا عکس مستوی موجبہ کلیہ نہیں آتا۔ (۵۷۷ | ۵۸۱)
- حضور اقدس صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کے بعد تمام جہان سے افضل و اعلیٰ حضرت ابراہیم علیہ السلام ہیں۔ (۵۷۷ | ۵۸۲)
- صاحب ہدایہ کے دو کلاموں میں تطبیق اور تدافع کا دفعیہ۔ (۵۷۷ | ۵۸۲)
- دیوار کعبہ پر کفار مکہ نے کن معظمین دینیہ کی تصویریں نقش کی تھیں۔ (۵۷۷ | ۵۸۲)

Page 46 of 720 Fatawa Razawiya - Volume 24

Page	Text	Page	Text	Page
585	Not everything that does not negate life negates dislike, just as not everything that negates life necessarily negates dislike.	585	Where a forbidden picture is kept, the angels of mercy do not enter that place.	590
585	Not everything that does not negate humanity negates animality.	585	A place where angels of mercy do not enter is worse than any other place.	590
585	It is not that everything which negates humanity negates animality.	585	Prayer is disliked (makruh) in a place where there is a picture.	593
585	Critique on the meticulous scholar Alai.	585	An indefinite noun in a negative context is general.	593
585	Reasoning and referencing of Imam Abu Ja'far Tahawi (Mercy be upon him).	585	The Hadith of Gabriel is specific to some cases.	594
586	Investigation by the author (I say).	586	Critique on the author of 'Hilya'.	595
587	A picture does not possess life in any way; it encompasses all organs that are central to life in any state.	587	Critique on Allama Quhistani.	598
587	Saying of Gabriel (Peace be upon him) regarding pictures.	587	There are apparently seven types of views in the reasoning for the dislike of prayer.	599
588	Wisdom in the command regarding Gabriel cutting off the heads of pictures.	588	Investigation by the author and reconciliation/harmonization between the sayings and benefits of the masters.	599
588	The basis of the ruling depends on the viewer's	588		599

Page	Text	Page	Text	Page
	account and understanding —whether they consider it a living picture or a dead one; the ruling is not based on actual life and death.		The only one truly worthy of glorification is the True, Majestic, and Great One (Allah), Exalted be His Glory.	
588	Meaning of the passage in 'Durr al-Mukhtar'.	588	The glorification of religious sanctities is based on their relation and connection to Allah Almighty.	599
589	Investigation by the author from which all causes, rulings, principles, and branches of the subject are clarified.	589	Honoring an elderly Muslim, a Sunni scholar, and a just king is indeed honoring Allah Almighty. (Hadith)	599
589	According to the masters, the cause of the dislike of prayer and the prohibition of pictures in forbidden images is its resemblance to idol worship.	589	Any reason that has no connection to that Truly Great One (Allah Almighty) is fundamentally not worthy of glorification.	600
589	The cause for the prohibition of pictures on the clothes of a person praying is its resemblance to carrying an idol.	589	What kind of picture in a house leads to the exclusion of the angels of mercy.	600
			All three causes are intertwined, and reasoning from all three is correct. One can also confine the ruling to each of them. The essence of the investigation is that the primary cause is the glorification of the picture; it is from glorification that resemblance arises, and due to glorification, the angels of mercy do not come.	604

पृष्ठ 46 का 720 फ़तावा रज़विया - जिल्द 24

पृष्ठ	विवरण	पृष्ठ	विवरण	पृष्ठ
585	हर वह चीज़ जो जीवन को नहीं नकारती, वह कराहियत को नहीं नकारती, ठीक वैसे ही जैसे हर वह चीज़ जो जीवन को नकारती है, उसका कराहियत को नकारना ज़रूरी नहीं है।	585	जहाँ चित्र निषिद्ध रखा गया हो, वहाँ रहमत के फ़रिश्ते उस स्थान पर नहीं आते।	590
585	हर वह चीज़ जो इंसानियत के खिलाफ नहीं है, वह हैवानियत (पशुता) के खिलाफ नहीं होती।	585	जिस स्थान पर रहमत के फ़रिश्ते न आएँ वह हर जगह से बदतर है।	590
585	ऐसा नहीं है कि जो कुछ इंसानियत के विपरीत है वह हैवानियत के भी विपरीत हो।	585	जिस स्थान पर चित्र हो, वहाँ नमाज़ मकरूह (नापसंद) है।	593
585	मुदक़्क़िक़ अलाई पर टिप्पणी।	585	नकारात्मक संदर्भ में अनिश्चित संज्ञा व्यापक होती है।	593
585	इमाम अबू जाफ़र तहावी (رحمہ اللہ) का तर्क और प्रमाण।	585	हदीस-ए-जिब्राईल कुछ मामलों के लिए विशिष्ट है।	594
586	मुसन्निफ़ (लेखक) की तहक़ीक़ (मैं कहता हूँ)।	586	साहिब-ए-हिल्या पर टिप्पणी।	595
587	चित्र में किसी भी रूप में जीवन नहीं होता; वह किसी भी स्थिति में जीवन के आधारभूत सभी अंगों को घेरे हुए होता है।	587	अल्लामा क़ुहिस्तानी पर टिप्पणी।	598
587	चित्रों के बारे में हज़रत जिब्राईल (علیہ السلام) का कथन।	587	नमाज़ की कराहियत के कारणों में स्पष्ट रूप से सात प्रकार के कथन हैं।	599

पृष्ठ	विवरण	पृष्ठ	विवरण	पृष्ठ
588	हज़रत जिब्राईल द्वारा चित्रों के सिर काटने से संबंधित आदेश में हिकमत।	588	लेखक की तहक़ीक़ और बुज़ुर्गों के कथनों व लाभों में तालमेल और सामंजस्य।	599
588	आदेश का आधार देखने वाले के वर्णन और समझ पर है कि वह उसे जीवित का चित्र मानता है या मृत का; वास्तविक जीवन और मृत्यु पर आदेश का आधार नहीं है।	588	वास्तव में महिमा का सच्चा पात्र वही परम प्रतापी और महान (अल्लाह) है।	599
588	'दुर्र-ए-मुख़्तार' की इबारत (पाठ) का अर्थ।	588	धार्मिक पवित्र चीज़ों का सम्मान अल्लाह तआला के साथ उनके संबंध और लगाव के कारण है।	599
589	लेखक की वह तहक़ीक़ जिससे बहस के सभी कारण, आदेश, सिद्धांत और शाखाएँ स्पष्ट हो जाती हैं।	589	एक बुज़ुर्ग मुसलमान, सुन्नी विद्वान और न्यायप्रिय राजा का सम्मान करना वास्तव में अल्लाह तआला का ही सम्मान है। (हदीस)	599
589	मशाइख़ के नज़दीक वर्जित चित्रों में नमाज़ की कराहियत और मनाही के आदेश का कारण मूर्ति पूजा के साथ समानता है।	589	जिस वजह का उस 'अज़ीम हक़ीक़ी' (अल्लाह तआला) से कोई संबंध नहीं है, वह मूल रूप से सम्मान के योग्य नहीं है।	600
589	नमाज़ी के कपड़ों में चित्र होने की मनाही का कारण मूर्ति धारण करने वाले के साथ समानता है।	589	घर में किस प्रकार का चित्र होने पर रहमत के फ़रिश्तों का आना रुक जाता है।	600
			ये तीनों कारण एक-दूसरे के पूरक हैं और तीनों से तर्क करना सही है, और इनमें से प्रत्येक पर भी सीमित किया जा सकता है। शोध का सार यह है कि मूल कारण चित्र का सम्मान है; सम्मान से	604

ही समानता उत्पन्न होती है और सम्मान के कारण ही रहमत के फ़रिश्ते नहीं आते।

صفحہ	متن صفحہ		متن صفحہ	صفحہ
۵۸۵	کل مالاینافی الحیاۃ لاینفی الکراھۃ کوکل ماینا فی الحیاۃ ینفی الکراھۃ لازم نہیں۔	۵۸۵	جہاں تصویر ممنوع رکھی گئی ہو ملائکہ رحمت اس مکان میں نہیں آتے۔	۵۹۰
۵۸۵	کل مالاینافی الانسانیۃ لاینفی الحیوانیۃ۔	۵۸۵	جس مکان میں ملائکہ رحمت نہ آئیں وہ ہر جگہ سے بد تر ہے۔	۵۹۰
۵۸۵	لیس ان کلما ینافی الانسانیۃ ینفی الحیوانیۃ۔	۵۸۵	جس مکان میں تصویر ہو اس میں نماز مکروہ ہے۔	۵۹۳
۵۸۵	مدقق علائی پر تطفل۔	۵۸۵	نکرہ سیاق نفی میں عام ہوتا ہے۔	۵۹۳
۵۸۵	امام ابو جعفر طحاوی علیہ الرحمہ کا استدلال واستناد۔	۵۸۵	حدیث جبرائیل مخصوص البعض ہے۔	۵۹۴
۵۸۶	مصنف علیہ الرحمہ کی تحقیق (اقول)	۵۸۶	صاحب حلیہ پر تطفل۔	۵۹۵
۵۸۷	تصویر میں حیات کسی صورت میں نہیں ہوتی وہ کسی حال میں جملہ اعضائے	۵۸۷	علامہ قوہستانی پر تطفل۔	۵۹۸

صفحہ	متن	صفحہ	متن	صفحہ
	مدار حیات کا استیعاب کرتی ہے۔			
۵۸۷	تصاویر کے بارے میں حضرت جبرائیل علیہ السلام کا قول۔	۵۸۷	کراہت نماز کی تعلیل میں بظاہر سات رنگ کے اقوال ہیں۔	۵۹۹
۵۸۸	حضرت جبرئیل کے تصاویر کے سرکاٹنے سے متعلق حکم میں حکمت۔	۵۸۸	مصنف علیہ الرحمہ کی تحقیق او راقوال وافادات مشائخ میں تطبیق و توفیق۔	۵۹۹
۵۸۸	مدار حکم حکایت وفہم ناظر پر ہے کہ وہ اس کو زندہ کی تصویر قرار دیتا ہے یا مردہ کی موت وحیات حقیقی پر مدار حکم نہیں۔	۵۸۸	حقیقی مستحقِ تعظیم وہی حقیقی جلیل عظیم عزوجلالہ ہے۔	۵۹۹
۵۸۸	عبارت در مختار کا مطلب۔	۵۸۸	معظمات دینی کی تعظیم اللہ تعالیٰ کی طرف نسبت وعلاقہ سے ہے۔	۵۹۹
۵۸۹	مصنف علیہ الرحمہ کی تحقیق جس سے مبحث کے تمام علل واحکام واصول وفروع متجلی ہوتے ہیں۔	۵۸۹	بوڑھے مسلمان ، سنی عالم اور عادل بادشاہ کی تعظیمیں اللہ تعالیٰ ہی کی تعظیم ہیں۔ (حدیث)	۵۹۹

صفحہ	متن صفحہ
	تصویر ممنوع میں کراہت
۵۸۹	نماز و حکم ممانعت کی علت عندالمشائخ مشابہت عبادت صنم ہے۔ نمازی کے کپڑوں میں تصویر ہونے کی ممانعت کی علت حامل صنم سے مشابہت ہے۔ ۵۸۹
	تینوں علتیں متلازم ہیں اور تینوں سے تعلیل صحیح ہے اور ان میں سے ہر ایک میں حصر بھی کر سکتے ہیں اور مغز تحقیق یہ ہے کہ اصل علت تعظیم تصویر ہے تعظیم ہی سے تشبہ پیدا ہوتا ہے اور تعظیم ہی سے ملائکہ رحمت نہیں آتے۔ ۶۰۴

صفحہ	متن صفحہ
۶۰۰	جس وجہ کو اس عظیم حقیقی (اللہ تعالیٰ) سے علاقہ نہیں وہ اصلاً لائقِ تعظیم نہیں۔
۶۰۰	کیسی تصویر گھر میں ہو تو امتناع ملائکہ رحمت ہوتا ہے۔

Fatawa Razawiya, Volume 24

Topic	Page	Topic	Page
Cases where insulting images are allowed.	604	First Issue	611
Every honoring of an image is like worshipping an image.	605	Second Issue	612
Every resemblance to worship is absolutely hateful to angels.	605	A major clarification from the author regarding the cause of dislike.	613
When an image behind a person praying is disliked.	607	Situations where there is no dislike in prayer.	613
Anything whose honoring the Shariah has made forbidden and whose insult it has made obligatory, then honoring it in one way and insulting it in another way is forbidden and illegal.	607	Prayer is not disliked if a candle, oil lamp, lantern, or chandelier is in front.	619
Where lawful and forbidden meet, forbidden prevails.	607	Meaning of Somnath.	627
Mixing good and bad deeds is forbidden, like kissing an idol and hitting it with shoes.	607	A strange amusement and a rare discussion.	628
Insulting religious sanctities is absolutely forbidden even if there are a thousand [reasons] with it.	608	Multiple questions on the clarification presented by the author.	632
Why did Imam Muhammad (may mercy be upon him) declare images on prayer mats to be absolutely disliked?	608	First Question	632
Resemblance is of two types: (1) General (2) Specific.	608	Second Question	633
Performing prayer actions while facing an image is most foul and severe, and in this case, the prayer will be Makruh Tahrimi (prohibitively disliked).	609	Third Question	633

Topic	Page
Keeping an image in a house in an honoring manner is absolutely forbidden and a sin, but prayer in that house will be Makruh Tanzihi (mildly disliked).	609
That which does not cause dislike in prayer, its keeping is not disliked.	610
Absence of the specific does not necessitate absence of the general.	610
Dislike in prayer is not limited to specific resemblance.	610
Harmonization and reconciliation between two issues.	611
Fourth Question	633
The author's answer to the four mentioned questions.	634
A wonderful point.	640
Four cases regarding the insult and lack of insult to an image.	640

फतवा रज़विया, खंड २४

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
अपमानित चित्र वाले रूप जायज़ रखे गए हैं।	६०४	पहला मसला	६११
हर चित्र का सम्मान, चित्र की पूजा के समान है।	६०५	दूसरा मसला	६१२
पूजा का हर सादृश्य फरिश्तों के लिए निश्चित रूप से घृणास्पद है।	६०५	नापसंदगी के कारण के बारे में लेखक की ओर से एक बड़ा स्पष्टीकरण।	६१३
नमाज़ी के पीछे वाला चित्र कब नापसंद (मक़रूह) होता है।	६०७	नमाज़ में नापसंदगी न होने की स्थितियाँ।	६१३
शरीयत ने जिस चीज़ का सम्मान हराम और अपमान अनिवार्य किया है, उसका एक तरह से सम्मान और दूसरी तरह से अपमान हराम और अवैध है।	६०७	यदि सामने मोमबत्ती, चिराग, कंदील, लैंप, लालटेन या झाड़-फानूस हो, तो नमाज़ मक़रूह नहीं है।	६१९
जहाँ हलाल और हराम मिलते हैं, वहाँ हराम भारी पड़ता है।	६०७	सोमनाथ का अर्थ।	६२७
अच्छे और बुरे कार्यों का मेल वर्जित है, जैसे मूर्ति को चूमना और उसे जूते मारना।	६०७	एक अद्भुत मनोरंजन और दुर्लभ चर्चा।	६२८
धार्मिक पूज्य चीज़ों का अपमान पूर्णतः हराम है, चाहे उसके साथ हज़ारों [कारण] ही क्यों न हों।	६०८	लेखक द्वारा प्रस्तुत स्पष्टीकरण पर कई प्रश्न।	६३२
इमाम मोहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) ने जाय-नमाज़ (नमाज़ की चटाई) पर चित्र होने को पूर्णतः मक़रूह क्यों घोषित किया?	६०८	पहला प्रश्न	६३२
सादृश्य दो प्रकार के होते हैं: (१) सामान्य (२) विशिष्ट।	६०८	दूसरा प्रश्न	६३३
	६०९	तीसरा प्रश्न	६३३

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
चित्र को सामने रखकर उसकी ओर नमाज़ के कार्य करना अत्यंत बुरा और कठोर है, और इस स्थिति में नमाज़ मक़रूह-ए-तहरीमी होगी।			
घर में सम्मानजनक तरीके से चित्र रखना तो निश्चित रूप से वर्जित और पाप है, लेकिन उस घर में नमाज़ मक़रूह-ए-तन्ज़ीही होगी।	६०९	चौथा प्रश्न	६३३
वह जो नमाज़ में नापसंदगी (कराहियत) पैदा नहीं करता, उसका रखना मक़रूह नहीं है।	६१०	चार उल्लेखित प्रश्नों पर लेखक का उत्तर।	६३४
विशिष्ट के अभाव से सामान्य का अभाव अनिवार्य नहीं होता।	६१०	एक अद्भुत बिंदु।	६४०
नमाज़ की नापसंदगी केवल विशिष्ट सादृश्य तक सीमित नहीं है।	६१०	चित्र के अपमान और अपमान न करने के बारे में चार स्थितियाँ।	६४०
दो मसलों (मुद्दों) के बीच सामंजस्य और समन्वय।	६११		

पृष्ठ ४७ का ७२०

عنوان	صفحہ
اہانت تصویر والی صورتیں جائز رکھی گئی ہیں۔	۶۰۴
ہر تعظیم صورت تشبہ عبادت صورت ہے۔	۶۰۵
ہر تشبہ عبادت ملائکہ کے لئے قطعاً موجب نفرت ہے۔	۶۰۵
جو تصویر نمازی کے پسِ پشت ہو وہ کب مکروہ ہے۔	۶۰۷
شرع مطہر نے جس شئی کی تعظیم حرام اور توہین واجب کی ہے اس کی من وجہ تعظیم اور من وجہ توہین حرام و ناجائز ہے۔	۶۰۷
جہاں حلال و حرام جمع ہوں وہاں حرام غالب ہوتا ہے۔	۶۰۷
اعمال صالحہ و سیئہ کا اختلاط ممنوع ہے جیسے بت کو چومنا اور جوتے مارنا۔	۶۰۷
معظماتِ دینی کی توہین مطلقاً حرام ہے اگرچہ اس کے ساتھ ہزار بھی ہوں۔	۶۰۸
مسئلہ اولی	۶۱۱
مسئلہ ثانیہ	۶۱۲
مصنف علیہ الرحمہ کی طرف سے علت کراہت کے بارے میں ایک تنقیح عظیم۔	۶۱۳
نماز میں عدم کراہت کی صورتیں۔	۶۱۳
شمع چراغ، قندیل، لیمپ، لالٹین یا فانوس سامنے ہو تو نماز مکروہ نہیں۔	۶۱۹
سومنات کا معنی۔	۶۲۷
ایک تفریح عجیب اور بحث غریب	۶۲۸
مصنف علیہ الرحمہ کی بیان کردہ تنقیح پر متعدد سوالات۔	۶۳۲

عنوان صفحہ		عنوان صفحہ	
امام محمد علیہ الرحمہ نے جانماز میں تصویر کا ہونا مطلقاً مکروہ کیوں قرار دیا۔	۶۰۸	سوال اول	۶۳۲
تشبہ دو قسم ہے: (۱) عام (۲) خاص	۶۰۸	سوال دوم	۶۳۳
تصویر کو سامنے رکھ کر اس کی طرف افعالِ نماز بجالانا اخبث و اشد ہے اور اس صورت میں نماز مکروہِ تحریمی ہوگی۔	۶۰۹	سوال سوم	۶۳۳
مکان میں تصویرِ بروجہِ تعظیم رکھنا تو قطعاً ممنوع و گناہ ہے مگر اس مکان میں نماز مکروہِ تنزیہی ہوگی۔	۶۰۹	سوال چہارم	۶۳۳
		مصنف علیہ الرحمہ کی طرف سے سوالات مذکورہ اربعہ کا جواب۔	۶۳۴
مالایؤثر کراھة فی الصلوة لا یکرہ ابقاؤہ۔	۶۱۰		
انتقاء اخص سے انتقاء اعم لازم نہیں آتا۔	۶۱۰	ایک نکتہ بدیعہ۔	۶۴۰
کراہتِ نماز تشبہِ خاص میں منحصر نہیں۔	۶۱۰	تصویر کی اہانت و ترکِ اہانت کے بارے میں چار صورتیں۔	۶۴۰
دو مسئلوں میں توفیق و تطبیق۔	۶۱۱		

Fatawa Razawiya Volume 24

Page	Description
651	First Case
653	Second Case
654	Third Case; 640 Third Case
656	Fourth Case
656	Some titles of Ghaus-e-Azam (may Allah be pleased with him).
657	Appendix: Images
658	Reason for the prohibition of images.
658	What is the Sharia ruling on making images and the image-maker?
658	Keeping images is permissible in three cases.
659	Keeping animals, making them fight, and mercy vs. cruelty towards them.
659	Is it permissible to keep animals for pastime and make them fight or not?
660	Severe emphasis in Hadith on looking after pets; cruelty to an animal is harsher than cruelty to a Dhimmi (protected non-Muslim citizen), and cruelty to a Dhimmi is harsher than cruelty to a Muslim.
660	There is a difference of opinion on keeping wild birds like parrots, mynas, and bulbuls.
660	It is recommended to kill a snake, to the extent that a pilgrim in Ihram can kill it even within the Sanctuary (Haram).
661	Which animals are permissible to kill while in the state of Ihram?

Page	Description
640	Different methods of warning and cautioning jinns.
640	It is permissible to castrate bulls and goats etc., but castrating a human is prohibited.
640	Whether it is permissible to keep dogs, pigeons, hawks, and falcons, to hunt with them, and to engage in quail fighting and cockfighting.
640	A woman went to hell because of a cat.
641	If you keep an animal, show it grain and water seventy times a day.
---	Keeping a dog is prohibited; angels of mercy do not enter a house where there is a dog, and it reduces one's good deeds.
541	Permission is given to keep two types of dogs.

Page	Description
556	Castrating animals is permissible in some cases and impermissible in others.
557	Castrating a human is absolutely prohibited.
---	What is the ruling on pigeon flying, betel leaf, cockfighting, quail fighting, and selling kites, string, manjha etc.?
643	If a cat or dog etc. bites humans, then it is correct to kill them.
644	Kite fighting is prohibited, flying is forbidden, and fighting is a sin.
645	What should be done if a cat causes trouble?
645	Explanation of a Hadith regarding not killing snakes.
646	Keeping a monkey in the house is disliked (Makruh).
651	A group of jinns became Muslims in the city of Medina Tayyiba.

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

पृष्ठ विवरण

६५१ प्रथम स्थिति

६५३ द्वितीय स्थिति

६५४ तृतीय स्थिति; ६४० तृतीय स्थिति

६५६ चतुर्थ स्थिति

६५६ ग़ौसे आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) की कुछ उपाधियाँ।

६५७ परिशिष्ट: चित्र

६५८ चित्रों की वर्जना (निषेध) का कारण।

६५८ चित्र बनाना और बनाने वाला शरीयत की दृष्टि में कैसा है।

६५८ चित्र रखना तीन स्थितियों में जायज़ है।

६५९ जानवरों का पालना, लड़ाना और उन पर दया व क्रूरता।

६५९ मनोरंजन के लिए जानवरों को पालना और उन्हें लड़ाना जायज़ है या नहीं।

६६० पालतू जानवरों की देखभाल की हदीस में कड़ी ताकीद; जानवर पर ज़ुल्म, ज़िम्मी (गैर-मुस्लिम नागरिक) पर ज़ुल्म से और ज़िम्मी पर ज़ुल्म, मुसलमान पर ज़ुल्म से अधिक सख्त है।

६६० तोता, मैना और बुलबुल आदि जंगली पक्षियों को पालने में मतभेद है।

६६० सांप को मारना मुस्तहब (प्रशंसनीय) है, यहाँ तक कि मोहरिम (एहराम बांधने वाला) हरम में भी उसे मार सकता है।

६६१ एहराम की स्थिति में किन जानवरों को मारना जायज़ है।

पृष्ठ विवरण

६४० जिन्नातों को चेतावनी और सचेत करने के विभिन्न तरीके।

६४० बैल और बकरे आदि को बधिया (castrate) करना जायज़ है, लेकिन इंसान को बधिया करना हराम है।

६४० कुत्ता, कबूतर, शिकरा और बाज़ पालना, उनसे शिकार कराना, बटेर बाज़ी और मुर्ग़ बाज़ी जायज़ है या नहीं।

पृष्ठ विवरण

६४० एक महिला एक बिल्ली के कारण नर्क में गई।

६४१ जो जानवर पालो, दिन में सत्तर बार उसे दाना-पानी दिखाओ।

--- कुत्ता पालना हराम है, जिस घर में कुत्ता हो उसमें रहमत के फ़रिश्ते नहीं आते, इससे नेकियाँ घटती हैं।

५४१ दो प्रकार के कुत्ते रखने की अनुमति है।

५५६ जानवरों को बधिया कराना कुछ स्थितियों में जायज़ और कुछ में नाजायज़ है।

५५७ मनुष्य को बधिया करना पूर्णतः हराम है।

--- कबूतर उड़ाना, पान, मुर्ग़ बाज़ी, बटेर बाज़ी, और कनकइया (पतंग), डोर, माँझा आदि बेचना कैसा है।

६४३ बिल्ली या कुत्ता आदि अगर आदमियों को काटते हों तो उन्हें मारना सही है।

६४४ पतंग (कनकइया) लड़ाना हराम, उड़ाना वर्जित और लड़ाना गुनाह है।

६४५ बिल्ली कष्ट देती हो तो क्या करना चाहिए?

६४५ सांप को न मारने से संबंधित एक हदीस की व्याख्या।

६४६ बंदर को घर में पालना मकरूह (नापसंद) है।

६५१ मदीना तैयबा में जिन्नातों का एक समूह मुसलमान हो गया।

पृष्ठ ७२० का ४८

صفحہ مضمون

۶۵۱ صورتِ اول

۶۵۳ صورتِ دوم

۶۵۴ صورتِ سوم ۶۴۰ صورتِ سوم

۶۵۶ صورتِ چہارم

۶۵۶ غوثِ اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے بعض القاب۔

۶۵۷ ضمیمہ تصویر

۶۵۸ تصویر کی حرمت کی وجہ

۶۵۸ تصویر بنانا اور بنانے والا شرعاً کیسا ہے۔

۶۵۸ تصویر رکھنا تین صورتوں میں جائز ہے۔

۶۵۹ جانوروں کا پالنا، لڑانا اور ان پر رحم و ظلم

۶۵۹ جی لگی کے لئے جانوروں کو پالنا اور انہیں لڑانا جائز ہے یا نہیں۔

۶۶۰ پالتو جانوروں کی خبر گیری کی تاکید شدید حدیث میں حیوان پر ظلم ذمی پر ظلم سے اور ذمی پر ظلم مسلمان پر ظلم سے زیادہ سخت ہے۔

۶۶۰ طوطا، مینا اور بلبل وغیرہ طیور وحشی پالنے میں اختلاف ہے۔

۶۶۰ سانپ کو قتل کرنا مستحب ہے حتیٰ کہ محرم حرم میں بھی اس کو مار سکتا ہے۔

۶۶۱ بحالت احرام کن جانوروں کو مارنا جائز ہے۔

صفحہ مضمون

۶۴۰ جنات کو انذار و تحذیر کے مختلف طریقے

۶۴۰ بیل اور بکرے وغیرہ کو خصی کرنا جائز ہے مگر آدمی کو خصی کرنا حرام ہے۔

۶۴۰ سگ، کبوتر، شکرہ اور باز پالنا، ان سے شکار کرانا، بٹیر بازی اور مرغ بازی جائز ہے یا نہیں۔

۶۴۰ ایک عورت ایک بلی کے سبب سے دوزخ میں گئی۔

۶۴۱ جو جانور پالو دن میں ستر بار اسے دانہ پانی دکھاؤ۔

--- کتا پالنا حرام ہے، جس گھر میں کتا ہو اس میں رحمت کے فرشتے نہیں آتے، اس سے نیکیاں گھٹتی ہیں۔

۵۴۱ دو قسم کے کتے رکھنے کی اجازت ہے۔

۵۵۶ جانوروں کو خصی کرانا بعض صورتوں میں جائز اور بعض میں ناجائز ہے۔

۵۵۷ آدمی کو خصی کرنا مطلقاً حرام ہے۔

--- کبوتر اڑانا، پان، مرغ بازی، بٹیر بازی، اور کنکیا، ڈور، مانجھا وغیرہ فروخت کرنا کیسا ہے۔

۶۴۳ بلی یا کتا وغیرہ اگر آدمیوں کو کاٹتے ہوں تو ان کا قتل درست ہے۔

۶۴۴ کنکیا لڑانا حرام، اڑانا منع اور لڑانا گناہ ہے۔

۶۴۵ بلی تکلیف دیتی ہو تو کیا کرنا چاہئے۔

۶۴۵ سانپ کو نہ مارنے سے متعلق ایک حدیث کی توجیہ۔

۶۴۶ بندر کو گھر میں پالنا مکروہ ہے۔

صفحہ مضمون

۶۵۱ مدینہ طیبہ میں جنات کا ایک گروہ مسلمان ہو گیا۔

صفحہ 48 از 720

Volume 24

- 661: If a calf of a cow or buffalo dies, it is permissible to dry its hide, shape it into the form of a calf, and place it before the cow or buffalo to milk it. (Page 670)
- 661: The scholars of the Haramain have declared the Deobandis as disbelievers and apostates by name. (Page 671)
- 661: Feeding ants grain is permissible and a rewarding act. (Page 671)
- 661: The meaning of Muin-ud-Din is 'one who gives shelter to the religion', and keeping this name is self-praise and is forbidden. (Page 671)

Statement on naming (Page 671)

- Why is it impermissible to keep the name Nabi Muhammad? (Page 671)
- 663: Naming one boy Muti-ul-Islam, the other Palis, and the daughter Kanwal Devi is a satanic act. (Page 672)
- 663: It is permissible to call oneself Abd-un-Nabi, but the name should be kept as Abdullah. (Page 672)
- 663: One type of name is specific to the disbelievers, which is not permissible for Muslims. (Page 672)
- 663: How is it to keep names like Ahmad Bakhsh, Peer Bakhsh, and Madar Bakhsh, etc.? (Page 672)
- 664: It is permissible to write Siddiqui, Razvi, etc., along with the name. (Page 672)
- 664: Whether a person who keeps their title, physical appearance, and dress, etc., like the Hindus is worthy of being called a scholar or not. (Page 672)
- 664: Whether it is permissible for a follower of the Hanafi school to write 'Israeli' to manifest their lineage or not. (Page 677)
- 664: Risala 'An-Noor wad-Diya fi Ahkam-i Ba'd al-Asma' (Treatise on the light and radiance concerning the rulings of some names). (Explanation of the rulings for good and bad names). (Page 677)
- 664: Israel is the blessed name of Sayyiduna Yaqub (peace be upon him). (Page 677)
- 664: How is it to keep names like Ali Jan, Nabi Jan, Muhammad Jan, Muhammad Nabi, Ahmad Nabi, Nabi Ahmad, Muhammad Yasin, Muhammad Talha, Ghafoor-ud-Din, Ghulam Ali, Ghulam Hussain, Ghulam Ghous, Ghulam Jilani, and Hidayat Ali? (Page 677)

- 666: Every Muslim, indeed the whole world, is the property of the Holy Prophet (peace and blessings be upon him). (Page 677)
- 666: An inquiry regarding a fatwa of Maulana Abdul Hai Lucknawi about keeping the name Hidayat Ali. (Page 677)
- 668: Is it permissible to keep names like Abdul Mustafa, Ghulam Ali, Peer Bakhsh, Nazr Hussain, Khadim Ghous, and Kaneez Fatima, etc., or not? (Page 677)
- 668: In keeping names like Muhammad Nabi and Nabi Ahmad, a claim to prophethood is in reality a Muslim, but there is certainly the form of a claim. Claiming prophethood in reality is pure disbelief, and the form of a claim is forbidden and prohibited. (Page 677)
- 669: Reference to three treatises of the author (mercy be upon him). (Page 678)
- 669: Are the primary meanings not considered in proper names? (Page 678)
- 669: To call a Sunni Muslim a 'Lehbar' is transgressive. (Page 678)
- 669: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) changed many names which had a bad original meaning. (Page 678)
- 670: Declaring the water of the mosque's ewers to be impure is false. (Page 678)

जिल्द २४

- ६६१: यदि गाय या भैंस का बच्चा मर जाए, तो उसकी खाल सुखाकर और उसे बच्चे के आकार में बनाकर गाय या भैंस के सामने रखकर दूध दुहना जायज़ है। (पृष्ठ ६७०)
- ६६१: हरमैन के विद्वानों ने देवबंदियों को नाम-ब-नाम काफ़िर और मुर्तद (धर्मत्यागी) बताया है। (पृष्ठ ६७१)
- ६६१: चींटियों को दाना डालना जायज़ और सवाब (पुण्य) का कार्य है। (पृष्ठ ६७१)
- ६६१: मुईनुद्दीन का अर्थ है 'दीन को पनाह देने वाला', और यह नाम रखना आत्म-प्रशंसा और हराम है। (पृष्ठ ६७१)

नाम रखने का बयान (पृष्ठ ६७१)

- नबी मुहम्मद नाम रखना क्यों नाजायज़ है? (पृष्ठ ६७१)
- ६६३: एक लड़के का नाम मुती-उल-इस्लाम, दूसरे का पालिस और बेटी का कँवल देवी रखना शैतानी हरकत है। (पृष्ठ ६७२)
- ६६३: अपने आप को अब्दुन्नबी कहना जायज़ है, मगर नाम अब्दुल्लाह रखा जाए। (पृष्ठ ६७२)
- ६६३: नामों की एक किस्म काफिरों के साथ विशिष्ट है जो मुसलमानों के लिए जायज़ नहीं है। (पृष्ठ ६७२)
- ६६३: अहमद बख्श, पीर बख्श और मदार बख्श आदि नाम रखना कैसा है? (पृष्ठ ६७२)
- ६६४: सिद्दीकी, रज़वी आदि नाम के साथ लिखना जायज़ है। (पृष्ठ ६७२)
- ६६४: जो अपना खिताब, शारीरिक बनावट और पहनावा आदि हिंदुओं जैसा रखे, वह आलिम कहलाने का पात्र है या नहीं। (पृष्ठ ६७२)
- ६६४: हनफी मज़हब के व्यक्ति को अपनी निस्बत (सम्बन्ध) ज़ाहिर करने के लिए 'इस्राइली' लिखना जायज़ है या नहीं। (पृष्ठ ६७७)
- ६६४: रिसाला 'अन-नूर वद-ज़िया फ़ी अहकाम-ए-बा'द अल-अस्मा'। (अच्छे और बुरे नामों के अहकाम का बयान)। (पृष्ठ ६७७)
- ६६४: इस्राइल सैय्यदुना याकूब अलैहिस्सलाम का मुबारक नाम है। (पृष्ठ ६७७)

• ६६४: अली जान, नबी जान, मुहम्मद जान, मुहम्मद नबी, अहमद नबी, नबी अहमद, मुहम्मद यासीन, मुहम्मद तल्हा, गफ़ूर-उद्दीन, गुलाम अली, गुलाम हुसैन, गुलाम ग़ौस, गुलाम जिलानी और हिदायत अली नाम रखना कैसा है? (पृष्ठ ६७७)
• ६६६: हर मुसलमान बल्कि सारा संसार हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की मिल्कियत (स्वामित्व) में है। (पृष्ठ ६७७)
• ६६६: हिदायत अली नाम रखने के बारे में मौलाना अब्दुल हई लखनवी के एक फ़तवे से सम्बंधित इस्तफ़्ता (पूछताछ)। (पृष्ठ ६७७)
• ६६८: अब्दुल मुस्तफा, गुलाम अली, पीर बख्श, नज़र हुसैन, खादिम ग़ौस और कनीज़ फातिमा आदि नाम रखना जायज़ है या नहीं? (पृष्ठ ६७७)
• ६६८: मुहम्मद नबी और नबी अहमद नाम रखने में नबूवत का दावा वास्तव में मुस्लिम है, मगर दावे का स्वरूप अवश्य है। वास्तव में नबूवत का दावा करना शुद्ध कुफ़्र है, और दावे का स्वरूप भी हराम और वर्जित है। (पृष्ठ ६७७)
• ६६९: मुसन्निफ़ (लेखक) अलैहिर्रहमा के तीन रिसालों का हवाला। (पृष्ठ ६७८)
• ६६९: क्या संज्ञाओं (नामों) में मूल अर्थ का ध्यान नहीं रखा जाता है? (पृष्ठ ६७८)
• ६६९: सुन्नी मुसलमान को 'लेहबर' कहना फासिक (पापी) होना है। (पृष्ठ ६७८)
• ६६९: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहुत से ऐसे नाम बदल दिए जिनके मूल अर्थ में कोई बुराई थी। (पृष्ठ ६७८)
• ६७०: मस्जिद के लोटों का पानी नापाक (अपवित्र) बताना बातिल (झूठा) है। (पृष्ठ ६७८)

جلد ۲۴

- ۶۶۱: گائے بھینس کا بچہ مر جائے تو اس کے چمڑے کو سکھا کر بصورت بچہ کے بنا کر گائے بھینس کے سامنے رکھ کر دودھ دوہنا جائز ہے۔ (صفحہ ۶۷۰)
- ۶۶۱: علمائے حرمین نے دیوبندیوں کو نام بنام کافر و مرتد بتایا۔ (صفحہ ۶۷۱)
- ۶۶۱: چیونٹیوں کو دانہ ڈالنا جائز و کار ثواب ہے۔ (صفحہ ۶۷۱)
- ۶۶۱: معین الدین کا معنی دین کو پناہ دینے والا، اور یہ نام رکھنا خود ستائی و حرام ہے۔ (صفحہ ۶۷۱)

نام رکھنے کا بیان (صفحہ ۶۷۱)

- نبی محمد نام رکھنا کیوں ناجائز ہے۔ (صفحہ ۶۷۱)
- ۶۶۳: ایک لڑکے کا نام مطیع الاسلام، دوسرے کا پالس اور بیٹی کا کنول دیوی رکھنا شیطانی حرکت ہے۔ (صفحہ ۶۷۲)
- ۶۶۳: اپنے آپ کو عبدالنبی کہنا جائز ہے مگر نام عبداللہ رکھا جائے۔ (صفحہ ۶۷۲)
- ۶۶۳: ناموں کی ایک قسم کفار کے ساتھ مختص ہے جو مسلمانوں کے لئے جائز نہیں۔ (صفحہ ۶۷۲)
- ۶۶۳: احمد بخش، پیر بخش اور مدار بخش وغیرہ نام رکھنا کیسا ہے۔ (صفحہ ۶۷۲)
- ۶۶۴: صدیقی، رضوی وغیرہ نام کے ساتھ لکھنا جائز ہے۔ (صفحہ ۶۷۲)
- ۶۶۴: جو اپنا خطاب، جسمانی وضع اور لباس وغیرہ ہندوؤں کی مثل رکھے وہ عالم کہلانے کا مستحق ہے یا نہیں۔ (صفحہ ۶۷۲)

- ۶۶۴: حنفی المذہب کو نسبت ظاہر کرنے کے لئے اسرائیلی لکھنا جائز ہے یا نہیں۔ (صفحہ ۶۷۷)
- ۶۶۴: رسالہ النور والضیاء فی احکام بعض الاسماء۔ (اچھے اور برے ناموں کے احکام کا بیان)۔ (صفحہ ۶۷۷)
- ۶۶۴: اسرائیل سید نا یعقوب علیہ السلام کا نام مبارک ہے۔ (صفحہ ۶۷۷)
- ۶۶۴: علی جان، نبی جان، محمد جان، محمد نبی، احمد نبی، نبی احمد، محمد یسین، محمد طلحہ، غفور الدین، غلام علی، غلام حسین، غلام غوث، غلام جیلانی اور ہدایت علی نام رکھنا کیسا ہے۔ (صفحہ ۶۷۷)
- ۶۶۶: ہر مسلمان بلکہ تمام عالم حضور علیہ الصلوۃ والسلام کی ملک ہے۔ (صفحہ ۶۷۷)
- ۶۶۶: ہدایت علی نام رکھنے کے بارے میں مولانا عبدالحئی لکھنوی کے ایک فتویٰ سے متعلق استفتاء۔ (صفحہ ۶۷۷)
- ۶۶۸: عبدالمصطفیٰ، غلام علی، پیر بخش، نذر حسین، خادم غوث اور کنیز فاطمہ وغیرہ نام رکھنا جائز ہے یا نہیں ۔ (صفحہ ۶۷۷)
- ۶۶۸: محمد نبی اور نبی احمد نام رکھنے میں ادعائے نبوت حقیقتاً ہو نا مسلم مگر صورت ادعاء ضرور ہے حقیقتاً ادعائے نبوت کفر خالص اور صورت ادعاء حرام و محظور ہے۔ (صفحہ ۶۷۷)
- ۶۶۹: مصنف علیہ الرحمہ کے تین رسالوں کا حوالہ۔ (صفحہ ۶۷۸)
- ۶۶۹: کیا اعلام میں معنی اول ملحوظ نہیں ہوتے ہیں۔ (صفحہ ۶۷۸)
- ۶۶۹: سنی مسلمان کو لہبر کہنا فاسق ہے۔ (صفحہ ۶۷۸)
- ۶۶۹: رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے بکثرت ایسے اسماء تبدیل فرمائے جن کے معنی اصلی کے لحاظ سے کوئی برائی تھی۔ (صفحہ ۶۷۸)

- ۶۷۰: مسجد کے لوٹوں کا پانی ناپاک بتانا باطل ہے۔ (صفحہ ۶۷۸)

Fatawa Rizvia, Volume 24

Page	Content	No.	Content	Page
292	Indeed, on the Day of Judgment, you will be called by your names and your fathers' names, so keep good names (Hadith).	679	In the corrupt religion of the Wahhabis, if the names of God's beloved ones are mentioned with a little honor and respect, Shirk (polytheism) spreads its mouth.	692
292	In 'A'lam', the original meaning is not entirely overlooked.	679	According to the Wahhabi leader, setting up a canopy over a grave or waving a peacock-feather fan is Shirk.	692
292	It is forbidden to name someone Yasin or Taha.	680	According to the Wahhabis, names like Ghulam Muhammad and Ghulam Ghaus are Shirk, and being named Ghulam Aftab is permissible and flawless.	692
292	Names with unknown meanings like mantras are not permissible.	680	Ghulam Aftab in Persian, Abd-ush-Shams in Arabic, and Suraj Das in Hindi all have the same meaning.	692
292	To name someone Ghafoor-ud-Din is extremely foul and hideous because its meaning is 'the one who effaces religion'.	681	The permissibility of the name 'Hidayat Ali' is clear and evident; there isn't even a scent of impermissibility in it.	692
293	Most likely, some correspondence between the name and the named is observed from the unseen.	682	Summary of the fatwa regarding Maulvi Abdul Hai Lucknawi's stance on the impermissibility of the name 'Hidayat Ali'.	695
295	Bad names have a negative impact on the named person.	682	A powerful refutation of Maulvi Abdul Hai's fatwa by the author (may mercy be upon him).	695
295	Joining the holy name Muhammad with a bad name is an insult to that noble name.	683	First refutation (Awwalan).	695
295		683		695

Page	Content	No.	Content	Page
	Which names is it not permissible to join the name Muhammad with?		It is the forbidden 'Iham' (ambiguity), not just a 'mere possibility'.	
295	Fifteen noble Hadiths regarding the virtues and blessings of naming someone Muhammad alone.	686	There is a world of difference between 'Iham' (ambiguity) and 'probability'.	695
295	In the terminology of the Quran, Hadith, and Companions, a believer is only one who is a Sunni with correct beliefs.	687	Definition of 'Iham', which is also called 'Takhyil' (imagination/fantasy).	695
295	Those of deviant sects are the dogs of Hell; none of their deeds are accepted.	687	If mere probability was a cause for prohibition, then few words in the world would be free from prohibition and reproach.	696
296	The creed of Sayyid Ahmad Khan.	690	A benefit worthy of memorization.	696
296	The permissibility of names where words are attributed to the names of God's beloved ones is absolutely self-evident.	691	Second refutation (Thaniyan).	696
296	Names like Ghulam Allah and similar ones are forbidden.	692	Third refutation (Thalithan).	696

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

पृष्ठ	विवरण	संख्या	विवरण	पृष्ठ
292	बेशक कयामत के दिन तुम्हें तुम्हारे और तुम्हारे पिताओं के नाम से पुकारा जाएगा, इसलिए अपने अच्छे नाम रखो (अल-हदीस)।	679	वहाबियों के भ्रष्ट दीन में, अगर खुदा के महबूबों का नाम ज़रा भी इज़्ज़त और सम्मान के साथ आता है, तो शिर्क अपना मुँह फैला लेता है।	692
292	'एलाम' में असल मायने पूरी तरह नज़रअंदाज़ नहीं किए जाते।	679	वहाबी पेशवा के नज़दीक क़ब्र पर शामियाना खड़ा करना या मोरछल झलना शिर्क है।	692
292	यासीन और ताहा नाम रखना मना है।	680	वहाबियों के नज़दीक गुलाम मोहम्मद और गुलाम गौस शिर्क है, और गुलाम आफ़ताब नाम होना जायज़ और बेदाग है।	692
292	अज्ञात अर्थ वाले मंत्र नाम के रूप में जायज़ नहीं हैं।	680	फारसी में गुलाम आफ़ताब, अरबी में अब्द-ुश-शम्स और हिंदी में सूरज दास का अर्थ एक ही है।	692
292	गफ़ूरुद्दीन नाम रखना बेहद घिनौना और बुरा है क्योंकि इसका अर्थ है 'दीन को मिटाने वाला'।	681	'हिदायत अली' नाम का जायज़ होना बिल्कुल साफ़ और ज़ाहिर है; इसमें नाजायज़ होने की ज़रा भी गंध नहीं है।	692
293	मुमकिन है कि नाम और नाम वाले के बीच कोई मुनासबत (संबंध) गैब (अदृश्य) से देखी जाती हो।	682	मौलवी अब्दुल हई लखनवी के'हिदायत अली' नाम के नाजायज़ होने से संबंधित फतवे का सारांश।	695
295	बुरे नामों का नाम वाले पर बुरा असर पड़ता है।	682	लेखक (रहमहुल्लाह) की ओर से मौलवी अब्दुल हई साहब के फतवे का ज़ोरदार खंडन।	695
295		683	पहला खंडन (अव्वलन्)।	695

पृष्ठ	विवरण	संख्या	विवरण	पृष्ठ
	पवित्र नाम 'मोहम्मद' को किसी बुरे नाम के साथ मिलाना उस अज़ीम नाम की गुस्ताखी है।			
295	किन-किन नामों के साथ नाम 'मोहम्मद' को मिलाना जायज़ नहीं है।	683	मना किया गया 'ईहाम' (भ्रम) है, न कि केवल 'एहतमाल' (संभावना)।	695
295	केवल 'मोहम्मद' नाम रखने की फज़ीलत और बरकतों पर आधारित पंद्रह हदीसें।	686	ईहाम और एहतमाल में ज़मीन-आसमान का फर्क है।	695
295	कुरान, हदीस और सहाबा की परिभाषा में मोमिन वही है जो सुन्नी सहीह-उल-अक़ीदा हो।	687	ईहाम की परिभाषा, जिसे 'तख़ईल' (कल्पना) भी कहा जाता है।	695
295	बद-मज़हब जहन्नम के कुत्ते हैं, उनका कोई भी अमल कबूल नहीं।	687	अगर मात्र संभावना ही मनाही का कारण होती, तो दुनिया में कोई भी कलाम मनाही और ताने से खाली नहीं रहता।	696
296	सैयद अहमद खान का मसलक।	690	याद रखने योग्य लाभ (फायदा वाज़िब-उल-हिफ़्ज़)।	696
296	उन नामों का जायज़ होना बिल्कुल ज़ाहिर है जहाँ खुदा के महबूबों के नामों के साथ कोई लफ्ज़ जोड़ा गया हो।	691	दूसरा खंडन (सानियन्)।	696
296	गुलाम अल्लाह और इसके जैसे नाम रखना मना है।	692	तीसरा खंडन (सालिसन्)।	696

صفحہ	مضمون
۲۹۲	بیشک تم روز قیامت اپنے اور اپنے والدوں کے نام سے پکارے جاؤ گے، تو اپنے نام اچھے رکھو (الحدیث)
۲۹۲	اعلام میں معنی اصلی بالکل ساقط النظر نہیں ۔
۲۹۲	یسین و طٰہٰ نام رکھنا منع ہے۔
۲۹۲	نام معلوم المعنی منتر جائز نہیں۔
۲۹۲	غفورالدین نام رکھنا سخت قبیح و شنیع ہے کیونکہ اس کا معنی ہے دین کو مٹانے والا۔

نمبر شمار	مضمون	صفحہ
۶۷۹	وہابیہ کے دین فاسد میں محبوبان خدا کا نام ذرا اعزاز و تکریم کی نگاہ سے آیا اور شرک نے منہ پھیلایا۔	۶۹۲
۶۷۹	پیشوائے وہابیہ کے نزدیک قبر پر شامیانہ کھڑا کرنا مور جھل جھلنا شرک ہے۔	۶۹۲
۶۸۰	وہابیہ کے نزدیک غلام محمد و غلام غوث شرک اور غلام آفتاب ہونا جائز و بے ملائم ہے۔	۶۹۲
۶۸۰	فارسی میں غلام آفتاب ، عربی میں عبد شمس اور ہندی میں سورج داس کا معنی ایک جیسا ہے۔	۶۹۲
۶۸۱	ہدایت علی نام کا جواز ظاہر وباہر ہے اس میں عدم جواز کی اصلاً بو نہیں۔	۶۹۲

صفحہ	مضمون
۲۹۳	غالباً اسم و مسمیٰ میں کوئی مناسبت غیب سے ملحوظ ہوتی ہے۔
۲۹۵	قبیح ناموں کا مسمیٰ پر برا اثر پڑتا ہے۔
۲۹۵	برے نام کے ساتھ نام پاک محمد کو ملانا اس نام کریم کی گستاخی ہے۔
۲۹۵	کن کن ناموں کے ساتھ نام محمد کو ملانا جائز نہیں۔
۲۹۵	محمد واحد نام رکھنے کے فضائل و برکات پر مشتمل پندرہ احادیث کریمہ۔
۲۹۵	عرف قرآن وحدیث و صحابہ میں مومن اسی کو کہتے ہیں جو سنی صحیح العقیدہ ہو۔

نمبر شمار	مضمون	صفحہ
۶۸۲	مولوی عبدالحی لکھنوی کے ہدایت علی کے عدم جواز سے متعلق فتویٰ کا خلاصہ۔	۶۹۵
۶۸۲	مصنف علیہ الرحمہ کی طرف سے مولوی عبدالحی صاحب کے فتویٰ کا رد بلیغ۔	۶۹۵
۶۸۳	پہلا رد (اولاً)	۶۹۵
۶۸۳	ممنوع ایہام ہے نہ مجرد احتمال۔	۶۹۵
۶۸۶	ایہام و احتمال میں زمین و آسمان کا فرق ہے۔	۶۹۵
۶۸۷	ایہام کی تعریف جس کو تخییل بھی کہا جاتا ہے۔	۶۹۵

صفحہ	مضمون	نمبر شمار	مضمون	صفحہ
۲۹۵	بد مذہب جہنم کے کتے ہیں ان کا کوئی عمل قبول نہیں۔	۶۸۷	مجرد احتمال اگر موجب منع ہو تو عالم میں کم کوئی کلام منع و طعن سے خالی رہے گا۔	۶۹۶
۲۹۶	سید احمد خان کا مسلک۔	۶۹۰	فائدہ واجب الحفظ	۶۹۶
۲۹۶	جن ناموں میں اسماء محبوبان خدا کی طرف لفظ کی اضافت ہو ان کا جواز قطعاً بدیہی ہے۔	۶۹۱	دوسرا رد (ثانیاً)	۶۹۶
۲۹۶	غلام اللہ اور اس جیسے نام رکھنا ممنوع ہیں۔	۶۹۲	تیسرا رد (ثالثاً)	۶۹۶

Fatawa Rizvia Volume 24

Page 700 696 - 11th Refutation (Hadi 'Ashar): The Lord of Honor (Allah) has bestowed upon some of the Noble Prophets (peace be upon them) one name and upon others another from His own Beautiful Names (Asma-ul-Husna). 696 - 12th Refutation (Thani 'Ashar): In the pure names of the Master of the World (Muhammad), may Allah's peace and blessings be upon him, more than sixty names of Allah have appeared. 697 - 4th Refutation (Rabi'an): A scholarly critique of Maulvi Abdul Hai Lucknowi's fatwa regarding names like 'Abdul Nabi'.

Page 701 697 - Seven reasons for the Lucknowi Sahib's fatwa being flawed: Based on his own fatwa, his own name also becomes prohibited and impermissible. 698 - First Reason (Awalan): A good mention of Maulana Abdul Haleem Sahib. 698 - 5th Refutation (Khamsan): There is no difference between 'Abd' (Arabic) and 'Bandah' (Persian/Urdu) except for the difference in language. 698 - 6th Refutation (Sadisan): 'Abd' and 'Bandah' are used in Arabic and non-Arabic languages respectively as opposites to 'Allah'/'Khuda' and 'Mawla'/'Aqa'. 698 - 7th Refutation (Sabi'an): Reasoning from a verse of the Masnavi Ma'navi. 698 - Second Reason (Thaniyan): Both 'Iysal ilal Matlub' (reaching the goal) and 'Ara'at-ut-Tariq' (showing the way) consist of two meanings: creation and causation. 698 - In the sense of creation, both are specific to the Divine presence, and in the sense of causation, both are attainable for others. 698 - The distinction that 'Abd' meaning servant is 'Shirk' (polytheism) while meaning 'owned property' is 'contrary to fact', is purely baseless. 699 - Just as guidance in the sense of creation cannot be attributed to anyone other than God, similarly, in the sense of cause, it cannot be attributed to the Presence of Glory. 699 - 8th Refutation (Thaminan): 'Mamluk' (property) includes both real personal ownership and gifted metaphorical ownership. 699 - 'Bandah' (servant) is used in relation to both God and a master. 699 - 9th Refutation (Tasi'an) - Third Reason (Thalithan): In the phrase 'The spring grew the vegetation' (anbat-ur-rabi-ul-baqla), the speaker being a monotheist is the healing evidence that the attribution is a rational metaphor. 699 - To consider oneself the property (mamluk) of the Messenger of Allah (peace be upon him) is complete faith in the view of the Imams of religion, trusted saints, and authorized scholars; and whoever is devoid of this belief is bereft of the sweetness of faith. 699 - 10th Refutation (Ashiran).

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

पृष्ठ ७०० ६९६ - ग्यारहवाँ रद्द (हादी अशर): रब-उल-इज़्ज़त ने अंबिया किराम (उन पर सलाम हो) में किसी को एक और किसी को दूसरा नाम अपने अस्मा-ए-हुस्ना (सुंदर नाम) में से अता फरमाया। ६९६ - बारहवाँ रद्द (सानी अशर): हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अस्मा-ए-तय्यिबा (पवित्र नाम) में साठ से अधिक अल्लाह के नाम आए हैं। ६९७ - चौथा रद्द (राबेअन): 'अब्दुन नबी' जैसे नाम रखने के बारे में मौलवी अब्दुल हई लखनवी साहब के फ़तवे पर शोधपूर्ण पकड़।

पृष्ठ ७०१ ६९७ - लखनवी साहब के फ़तवे के दोषपूर्ण होने के सात कारण: मौलवी अब्दुल हई साहब के फ़तवे के आधार पर उनका अपना नाम भी वर्जित और नाजायज़ है। ६९८ - पहला कारण (अव्वालन): मौलाना अब्दुल हलीम साहब का शुभ उल्लेख। ६९८ - पाँचवाँ रद्द (ख़ामिसन): 'अब्द' और 'बंदा' में भाषा के अंतर के अलावा कोई फर्क नहीं है। ६९८ - छठा रद्द (साडिसन): 'अब्द' और 'बंदा' अरबी और गैर-अरबी भाषा में अल्लाह/खुदा और मौला/आका के मुकाबले में बोले जाते हैं। ६९८ - सातवाँ रद्द (साबेअन): मसनवी मानवी के एक शेर से तर्क। ६९८ - दूसरा कारण (सानियन): 'ईसाल इलल मतलूब' (मंज़िल तक पहुँचाना) और 'अरा-अत-ुत-तरीक़' (रास्ता दिखाना) दोनों दो अर्थों 'सृजन' (खल्क) और 'कारणता' (तसबूब) पर आधारित हैं। ६९८ - सृजन के अर्थ में दोनों ईश्वर के लिए विशिष्ट हैं और कारणता के अर्थ में दोनों दूसरों के लिए प्राप्त हैं। ६९८ - 'अब्द' के अर्थ में 'सेवक' और 'संपत्ति' का यह अंतर कि पहला 'शिर्क है और दूसरा वास्तविकता के विरुद्ध है, पूरी तरह निराधार है। ६९९ - जिस तरह मार्गदर्शन सृजन के अर्थ में ईश्वर के अलावा किसी और की तरफ़ नहीं जोड़ा जा सकता, उसी तरह कारण के अर्थ में वह ईश्वर के लिए नहीं जोड़ा जा सकता। ६९९ - आठवाँ रद्द (सामिनन): 'ममलुक' (संपत्ति) में वास्तविक व्यक्तिगत स्वामित्व और उपहारस्वरूप रूपक स्वामित्व दोनों शामिल हैं। ६९९ - 'बंदा' शब्द खुदा और स्वामी दोनों के लिए इस्तेमाल होता है। ६९९ - नवाँ रद्द (तासेअन) - तीसरा कारण (सालिसन): 'वसंत ने वनस्पति उगाई' (अनबत-उर-रबी-उल-बक्ला) में वक्ता का एकेश्वरवादी होना ही वह प्रमाण है कि यह रूपक है। ६९९ - स्वयं को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का 'ममलुक' (स्वामित्व वाली संपत्ति) मानना धर्म के इमामों, प्रतिष्ठित सूफियों और प्रामाणिक विद्वानों की दृष्टि में पूर्ण ईमान है; और जो इस विश्वास से रहित है, वह ईमान की मिठास से वंचित है। ६९९ - दसवाँ रद्द (आशिरन)।

पृष्ठ ५१ / ७२०

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

صفحہ ۷۰۰ ۶۹۶ - گیارہواں رد (حادی عشر): رب العزت نے انبیاء کرام علیہم الصلوٰۃ والسلام میں کسی کو ایک کسی کو دوسرا نام اپنے اسماء حسنیٰ میں سے عطا فرمائے۔ ۶۹۶ - بارہواں رد (ثانی عشر): حضور پر نور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے اسماء طیبہ میں ساٹھ سے زائد اسماء الٰہیہ آئے ہیں۔ ۶۹۷ - چوتھا رد (رابعاً): عبد النبی جیسے نام رکھنے کے بارے میں مولوی عبد الحی لکھنوی صاحب کے فتوٰی پر محققانہ گرفت۔

صفحہ ۷۰۱ ۶۹۷ - لکھنوی صاحب کے فتوٰی کے مخدوش ہونے کی سات وجوہ: مولوی عبد الحی صاحب کے فتوٰی کی بنیاد پر خود ان کا اپنا نام بھی ممنوع و نا جائز ہے۔ ۶۹۸ - وجہ اول (اولاً): مولانا عبد الحلیم صاحب کا ذکر خیر۔ ۶۹۸ - پانچواں رد (خامساً): عبد و بندہ میں سوا اختلاف زبان کے کوئی فرق نہیں۔ ۶۹۸ - چھٹا رد (سادساً): عبد و بندہ عربی و عجمی زبان میں اللہ و خدا اور مولٰی و آقا کے مقابل بولے جاتے ہیں۔ ۶۹۸ - ساتواں رد (سابعاً): مثنوی معنوی کے ایک شعر سے استدلال۔ ۶۹۸ - وجہ دوم (ثانیاً): ایصال الی المطلوب اور اراءۃ الطریق دونوں دو معنی خلق و تسبب پر مشتمل ہیں۔ ۶۹۸ - بمعنی خلق دونوں مختص بحضرت احدیت ہیں اور بمعنی سببیت دونوں غیر کے لئے حاصل ہیں۔ ۶۹۸ - عبد بمعنی بندہ و بمعنی مملوک میں یہ تفرقہ کہ اول شرک اور ثانی خلاف واقع ہے محض بے اصل ہے۔ ۶۹۹ - جس طرح ہدایت بمعنی خلق غیر خدا کی طرف منسوب نہیں ہو سکتی اسی طرح بمعنی سبب حضرت عزت جلالہ کی طرف نسبت نہیں پا سکتی۔ ۶۹۹ - آٹھواں رد (ثامناً): مملوک ملک ذاتی حقیقی و ملک عطائی مجازی دونوں کو مشتمل ہے۔ ۶۹۹ - بندہ بمقابل خدا و خواجہ دونوں طرح مستعمل ہے۔ ۶۹۹ - نواں رد (تاسعاً) - وجہ سوم (ثالثاً): انبت الربیع البقل میں قائل کا موحد ہونا ہی قرینہ شافیہ ہے کہ اسناد مجاز عقلی ہے۔ ۶۹۹ - خود کو

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا مملوک ماننا ائمہ دین، اولیاء معتمدین اور علماء مستندین کی نظر میں مکمل ایمان ہے اور جو اس اعتقاد سے خالی ہے وہ حلاوت ایمان سے بے بہرہ ہے۔ ۶۹۹ - دسواں رد (عاشراً)۔

Volume 24 | Fatawa Razawiyya

702 | Fourth Reason (Fourthly) | 702 | Is the letter the property of the writer or the addressee? | 710 | Inference from a passage of the Zaboor (Psalms) regarding the Prophet ﷺ being the owner. | 702 | No one has the authority to stop or view someone else's letters; otherwise, they will be a sinner. | 713 702 | Fifth Reason (Fifthly) | 702 | Suspicion and spying are sins. | 713 | Evidence from Hadith that the Prophet ﷺ is the Master of the people and the Judge of the Arabs. | 703 | Replying to a greeting immediately is mandatory; delaying it is a sin. | 714 703 | Sixth Reason (Sixthly) | 703 | A Hadith with a weak chain of narration | 714 | The origin of Maulvi Abdul Hayy Sahab's error | 703 | One must reply to a letter as much as possible. | 714 | Investigation into the meaning of ownership | 704 | Politics (Membership, Vote, Election and Organizing, etc.) | 717 | True, truthful, comprehensive, all-encompassing, and complete ownership is possessed by the Prophet ﷺ over the entire world, unlike the Greatness of Allah (the Most High and Great). | 704 | Membership is not a Shari'a matter. | 717 704 | Seventh Reason (Seventhly) | 704 | Making a Khoja a member of an Islamic gathering is forbidden (Haraam). | 717 | The inference of the aforementioned Maulvi Sahab from a Hadith in Sahih Muslim is incorrect. | 704 | Confirmation of the issue from the Quran and Hadith | 717 | Correct interpretation of the said Hadith and its reconciliation with other ahadith and Quranic verses. | 705 | It is an ignorant thought that one person of a wrong sect will not affect 94 Sunnis. | 718 | Commander of the Faithful Syedna Farooq-e-Azam (RA) called himself the servant and slave of the Messenger of Allah ﷺ in a gathering of companions. | 706 | If you put one drop of urine in ninety-four drops of rose water, it will all become urine. | 718 | **Correspondence (Stopping, opening, and reading someone's letter without permission, etc.)** | 709 | Is the Great Sultan of the Ottoman Empire the Caliph of Muslims or not, and should Muslims sympathize with them in the current state or not? | 718 | One who opens and reads someone's letter without their permission is a sinner and deserves warning. | 710 | |

जिल्द 24 | फ़तावा रज़विया

702 | चौथा कारण (चौथा) | 702 | पत्र लेखक की संपत्ति है या प्राप्तकर्ता की? | 710 | हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मालिक होने पर ज़बूर की एक इबारत से प्रमाण। | 702 | किसी को दूसरे के पत्रों को रोकने और देखने का अधिकार नहीं है अन्यथा वह गुनहगार होगा। | 713 702 | पांचवां कारण (पांचवां) | 702 | बदगुमानी (बुरी धारणा) और जासूसी गुनाह है। | 713 | हदीस से गवाही कि हुज़ूर पुरनूर (अलैहिस्सलाम) लोगों के मालिक और अरबों के न्यायकर्ता हैं। | 703 | सलाम का जवाब तुरंत देना वाजिब है, देरी करने में गुनाह होगा। | 714 703 | छठा कारण (छठा) | 703 | एक कमज़ोर सनद वाली हदीस | 714 | मौलवी अब्दुल हई साहब की गलती का कारण | 703 | पत्र का उत्तर यथासंभव अवश्य देना चाहिए। | 714 | मालिकियत (स्वामित्व) के अर्थ की जांच | 704 | राजनीति (सदस्यता, वोट, चुनाव और संगठन बनाना आदि) | 717 | हुज़ूर पुरनूर (अलैहिस्सलाम) को पूरी दुनिया पर सच्ची, खरी, व्यापक और पूर्ण मालिकियत प्राप्त है, जो अल्लाह की बड़ाई के विपरीत है। | 704 | सदस्यता कोई शरीयत का मामला नहीं है। | 717 704 | सातवां कारण (सातवां) | 704 | खोजा को इस्लामी सभा का सदस्य बनाना हराम है। | 717 | सही मुस्लिम की हदीस से उक्त मौलवी साहब का प्रमाण देना सही नहीं है। | 704 | कुरान और हदीस से मसले की पुष्टि | 717 | उक्त हदीस की सही व्याख्या और अन्य हदीसों और कुरान की आयतों के साथ उसका मिलान। | 705 | यह विचार अज्ञानतापूर्ण है कि 94 सुन्नियों के बीच एक कुधर्मी क्या प्रभाव डालेगा। | 718 | अमीर-उल-मोमिनीन सैयदना फारूक-ए-आजम (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने सहाबा की सभा में स्वयं को अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का बंदा और सेवक कहा। | 706 | चौरानवे बूंद गुलाब जल में एक बूंद पेशाब डाल दो तो सब पेशाब हो जाएगा। | 718 | **पत्राचार (बिना अनुमति किसी का पत्र रोकना, खोलना और पढ़ना आदि)** | 709 | सुल्तान-ए-मुअज़्ज़म सल्तनत-ए-रूम मुसलमानों के खलीफा हैं या नहीं, और मौजूदा स्थिति में मुसलमानों को उनसे सहानुभूति रखनी चाहिए या नहीं? | 718 | किसी का पत्र उसकी अनुमति के बिना खोलने और पढ़ने वाला गुनहगार और चेतावनी का पात्र है। | 710 | |

पेज 52 ऑफ़ 720

۷۰۲ | وجہ چہارم (رابعاً) | ۷۰۲ | خط کاتب کی ملک ہے یا مکتوب الیہ کی۔ | ۷۱۰ | حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے مالک ہونے پر زبور کی ایک عبارت سے استدلال۔ | ۷۰۲ | کسی کے دوسرے کو خطوط روکنے اور دیکھنے کا اختیار نہیں ورنہ گنہگار ہوگا۔ | ۷۱۳ ۷۰۲ | وجہ پنجم (خامساً) | ۷۰۲ | بد گمانی اور تجسس گناہ ہے۔ | ۷۱۳ | حدیث سے شہادت کہ حضور پر نور علیہ الصلوٰۃ والسلام مالک الناس اور دیان العرب ہیں۔ | ۷۰۳ | جواب سلام علی الفور واجب ہے تاخیر میں اثم ہوگا۔ | ۷۱۴ ۷۰۳ | وجہ ششم (سادساً) | ۷۰۳ | ایک ضعیف السند حدیث | ۷۱۴ | مولوی عبد الحئی صاحب کی غلطی کا منشاء | ۷۰۳ | جواب کتاب حتی الوسع ضرور دینا چاہیے۔ | ۷۱۴ | معنی مالکیت کی تحقیق | ۷۰۴ | سیاسیات (ممبری، ووٹ، الیکشن اور تنظیم سازی وغیرہ) | ۷۱۷ | مالکیت حقہ صادقہ کلمہ محیط شاملہ تامہ حضور پر نور علیہ الصلوٰۃ والسلام کو بخلاف کبریٰ حضرت کبریا عزوجل تمام جہاں پر حاصل ہے۔ | ۷۰۴ | ممبری کوئی شرعی بات نہیں۔ | ۷۱۷ ۷۰۴ | وجہ ہفتم (سابعاً) | ۷۰۴ | خوجہ کو اسلامی جلسہ کارکن بنانا حرام ہے۔ | ۷۱۷ | حدیث صحیح مسلم سے مولوی صاحب مذکور کا استدلال درست نہیں۔ | ۷۰۴ | قرآن و حدیث سے مسئلہ کی تائید | ۷۱۷ | حدیث مذکور کی صحیح توجیہ اور دیگر احادیث و آیات قرآنیہ سے اس کی تطبیق و توفیق۔ | ۷۰۵ | یہ خیال جاہلانہ ہے کہ ۹۴ سنیوں میں ایک بد مذہب کیا اثر کرے گی۔ | ۷۱۸ | امیر المومنین سیدنا فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے برسر مجمع صحابہ میں اپنے آپ کو رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا عبد و خادم کہا۔ | ۷۰۶ | چورانوی قطر گلاب میں ایک بوند پیشاب ڈال دو تو سب پیشاب ہو جائے گا۔ | ۷۱۸ | **خط وکتابت (بلا اجازت کسی کا خط روکنا، کھولنا اور پڑھنا وغیرہ)** | ۷۰۹ | سلطان المعظم سلطنت

روم خلیفۃ المسلمین ہیں یا نہیں، موجودہ حالت میں مسلمانوں کو ان کی ہمدردی کرنی چاہئے یا نہیں؟ | ۷۱۸ | کسی کا خط اس کی اجازت کے بغیر کھولنے اور پڑھنے والا گنہگار و مستحق وعید ہے۔ | ۷۱۰ | |

Fatawa Razawiya Volume 24

- Wishing well for every individual of Islam is obligatory for every Muslim. (Page 718)
- Encouraging an impossible matter which causes harm to Muslims is not well-wishing for Muslims, but ill-wishing. (Page 719)
- Every obligation is according to power and every hardship is subject to capability. (Page 719)

Page 53 of 720

फतावा रज़विया जिल्द २४

- इस्लाम के हर व्यक्ति की शुभचिंतकता हर मुसलमान पर अनिवार्य है। (पृष्ठ ७१८)
- ऐसी असंभव बात के लिए उकसाना जिससे मुसलमानों को नुकसान पहुंचे, मुसलमानों की शुभचिंतकता नहीं बल्कि दुर्भावना है। (पृष्ठ ७१९)
- हर कर्तव्य शक्ति के अनुसार है और हर कठिनाई सामर्थ्य की शर्त पर है। (पृष्ठ ७१९)

पृष्ठ ५३ का ७२०

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۴

۷۱۸: ہر فردِ اسلام کی خیر خواہی ہر مسلمان پر لازم ہے۔ ۷۱۹: نامقدور بات پر ابھارنا جو موجبِ ضررِ مسلمین ہو خیر خواہیِ مسلمین نہیں بدخواہی ہے۔ ۷۱۹: ہر فرض بقدر قدرت ہے اور ہر تکلیف بشرط استطاعت۔

صفحہ 53 کا 720

Fatawa Razawiya Volume 24 Supplementary Index of Issues Beliefs and Biographies - One who insults the pure Shari'ah is certainly a disbeliever by consensus. | 104 - The ruling on insulting or demeaning Tafsir Jalalayn or any religious book. | 104 - Hindus are definitely idol-worshipping polytheists. | 162 - Venerating idols, believing them to be intercessors in the court of Allah, and seeking intercession from them is disbelief. | 162 - Seeking mediation/intercession through the beloveds of Allah is praiseworthy. | 180 - Where there are forty righteous (Salih) Muslims, there is one friend of Allah (Wali) among them. | 184 - Prophets (Peace be upon them) are infallible from errors. | 206 - Just as fleeing from a plague is forbidden, going there is also illegitimate and a sin. | 308 - Fleeing from divine destiny and contending with divine affliction are both prohibited. | 308 - Trust in God (Tawakkul) is not the name for opposing means/causes. | 308 - Alas for those Muslims who side with Hindus against fellow Muslims. | 323 - Acceptance of deeds and worship for every person is the prerogative of Allah, the Glorious and Most High. | 339 - Persisting in sin after hearing the ruling of Shari'ah makes one deserving of the punishment of fire. | 348 - Adopting permissible means of sustenance while keeping an eye on the Causer (Allah) is not at all contrary to Tawakkul. | 379 - Tawakkul is not the name for abandoning means, but rather for abandoning reliance upon those means. | 379 - Associating partners with Allah and distressing parents are among the greatest of major sins. | 403

फतावा रज़विया खंड 24 पूरक समस्याओं की सूची मान्यताएं और जीवनी - शुद्ध शरीअत का अपमान करने वाला सर्वसम्मति से निश्चित रूप से काफिर है। | 104 - तफसीर जलालैन शरीफ़ या किसी भी धार्मिक पुस्तक का अपमान या अनादर करने का नियम। | 104 - हिंदू निश्चित रूप से मूर्तिपूजक बहुदेववादी हैं। | 162 - मूर्तियों का सम्मान करना, उन्हें अल्लाह के दरबार में मध्यस्थ मानना और उनसे मध्यस्थता माँगना कुफ्र (अविश्वास) है। | 162 - अल्लाह के प्रिय लोगों के माध्यम से वसीला (मध्यस्थता) माँगना सराहनीय है। | 180 - जहाँ चालीस नेक मुसलमान हों, उनमें अल्लाह का एक वली होता है। | 184 - अंबिया अलैहिमुस्सलाम गलतियों से मासूम (पाक) होते हैं। | 206 - जिस तरह प्लेग से भागना हराम है, वहां जाना भी नाजायज और गुनाह है। | 308 - दैवीय भाग्य से भागना और दैवीय कष्टों का मुकाबला करना दोनों मना हैं। | 308 - तवक्कुल (ईश्वर पर भरोसा) का अर्थ साधनों का विरोध करना नहीं है। | 308 - उन मुसलमानों पर अफ़सोस है जो मुसलमानों के विरोध में हिंदुओं का साथ दें। | 323 - प्रत्येक व्यक्ति के कर्म और इबादत की स्वीकृति अल्लाह सुब्हानहु व तआला का अधिकार है। | 339 - शरीअत का फैसला सुनकर गुनाह पर अड़े रहना नरक की सजा का हकदार बनाता है। | 348 - मुसब्बब (अल्लाह) पर नज़र रखते हुए जीविका के जायज़ साधनों को अपनाना तवक्कुल के कतई खिलाफ नहीं है। | 379 - तवक्कुल साधनों को छोड़ने का नाम नहीं है बल्कि साधनों पर भरोसे को छोड़ने का नाम है। | 379 - अल्लाह तआला के साथ शरीक ठहराना और माता-पिता को सताना सबसे बड़े गुनाहों (अकबरुल कबायर) में से है। | 403

पृष्ठ 54 का 720

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۴ فہرست ضمنی مسائل عقائد و سیر - شرع مطہر کی تحقیر کرنے والا اجماعاً قطعاً کافر ہے۔ | ۱۰۴ - تفسیر جلالین شریف یا کسی بھی دینی کتاب کی توہین و تحقیر کا حکم۔ | ۱۰۴ - ہنود قطعاً بت پرست مشرک ہیں۔ | ۱۶۲ - بتوں کی تعظیم انہیں بارگاہِ عزت میں شفیع ماننا اور ان سے شفاعت چاہنا کفر ہے۔ | ۱۶۲ - محبوبانِ خدا سے توسل محمود ہے۔ | ۱۸۰ - جہاں چالیس مسلمان صالح ہوں ان میں ایک ولی اللہ ہوتا ہے۔ | ۱۸۴ - انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام غلطی سے معصوم ہیں۔ | ۲۰۶ - جس طرح طاعون سے بھاگنا حرام ہے اس کے لئے وہاں جانا بھی ناجائز و گناہ ہے۔ | ۳۰۸ - تقدیر الہی سے بھاگنا اور بلاء الہی کا مقابلہ کرنا دونوں ممنوع ہیں۔ | ۳۰۸ - توکل معارضہ اسباب کا نام نہیں۔ | ۳۰۸ - ان مسلمانوں پر افسوس ہے جو مسلمانوں کی مخالفت میں ہندوؤں کا ساتھ دیں۔ | ۳۲۳ - قبولِ عمل و عبادت ہر شخص کا حق سبحانہ و تعالیٰ کا اختیار ہے۔ | ۳۳۹ - حکمِ شرع سن کر گناہ پر ڈٹ جانا استحقاقِ عذابِ نار ہے۔ | ۳۴۸ - نظر مسبب جل وعلا پر رکھ کر جائز اسبابِ رزق کا اختیار کرنا ہرگز منافی توکل نہیں۔ | ۳۷۹ - توکل ترکِ اسباب کا نام نہیں بلکہ اعتماد علی الاسباب کا ترک ہے۔ | ۳۷۹ - اللہ تعالیٰ کے ساتھ شریک ٹھہرانا اور والدین کو ستانا اکبر الکبائر ہے۔ | ۴۰۳

Fatawa Rizwia Volume 24

- What kind of knowledge is obligatory (farz), what is necessary (wajib), and what is forbidden (haram)? (Page 432)
- This rejected philosophy is full of disbelief and misguidance and is a collection of ignorances. (Page 439)
- The person who says to someone committing a Shariah-prohibited act, "You did well," then he becomes a disbeliever. (Page 442)
- To prefer the excellence of philosophy over the excellence of jurisprudence (fiqh) is implicitly an insult to the knowledge of religion. (Page 444)
- Explicitly insulting the knowledge of religion is disbelief (kufr). (Page 444)
- No one except Allah Almighty can forgive the rights of Allah. (Page 460)
- Allah Almighty is the owner of us, our wealth, our lives, and all rights. (Page 460)
- There are three registers: in one, Allah Almighty will not forgive anything; for one, He will not care; and from one, He will not leave anything. (Page 460)
- On the Day of Judgment, everyone will have to give the rights of those who possess them. (Page 461)
- The method of paying the rights of those who possess rights on the Day of Judgment. (Page 461)
- Meaning of "La ilaha illa Allah" (There is no god but Allah). (Page 475)
- The basis of faith is the love of the Messenger, peace and blessings of Allah be upon him. (Page 486)
- Every thing of the beloved is dear to the lover. (Page 486)
- The Noble Presence (Prophet), peace and blessings of Allah be upon him, is pure and free from every defect and deficiency and is peerless. (Page 487)
- How is it to call someone a disbeliever (kafir) or an apostate (murtad) who believes in the impermissibility of Taziya? (Page 499)
- Making Taziya is not polytheism (shirk) but an innovation (bid'ah) and a sin. (Page 503)
- It is disbelief (kufr) to say that the esteemed Imams (Hasan and Husain) may Allah be pleased with them, or any non-prophet is superior to a prophet. (Page 508)
- Calling Hazrat Ameer Muawiyah, may Allah be pleased with him, or any companion (Sahabi) bad is Rafidism (Rafdh). (Page 508)

- Why did the scholars of the Ummah designate Rabi-ul-Awwal as a season of joyous birth instead of mourning the demise? (Page 515)
- Applying a sectarian mark (qashqa/tilak) on the forehead or carrying a cross on the shoulder is disbelief (kufr). (Page 549)
- Wearing a sacred thread (zunnar) is disbelief (kufr). (Page 550)
- The one truly deserving of veneration is only that truly Great and Magnificent One, Exalted is His Majesty. (Page 599)
- The veneration of sacred religious things is due to their connection and relationship with Allah Almighty. (Page 599)
- In the veneration of an elderly Muslim, a Sunni scholar, and a just king is the veneration of Allah Almighty Himself. (Hadith) (Page 599)
- That entity which has no connection with that truly Great One (Allah Almighty) is not worthy of veneration at all. (Page 600)
- Every imitation for the sake of angelic worship is absolutely a cause of hatred. (Page 605)
- The scholars of the Two Holy Sanctuaries (Haramain) declared Deobandis as disbelievers and apostates by name. (Page 670)

फतावा रिज़विया जिल्द 24

- कौन सा ज्ञान प्राप्त करना फ़र्ज़ है, कौन सा वाजिब है और कौन सा हराम है? (पृष्ठ 432)
- यह अस्वीकृत दर्शन कुफ़्र और गुमराहियों से भरा हुआ है और अज्ञानताओं का संग्रह है। (पृष्ठ 439)
- जिस व्यक्ति ने शरीयत द्वारा वर्जित कार्य करने वाले से कहा कि "तुमने अच्छा किया", तो वह काफ़िर हो गया। (पृष्ठ 442)
- दर्शन की श्रेष्ठता को न्यायशास्त्र (फ़िक़्ह) की श्रेष्ठता पर वरीयता देना परोक्ष रूप से दीन के ज्ञान का अपमान है। (पृष्ठ 444)
- दीन के ज्ञान का स्पष्ट रूप से अपमान करना कुफ़्र है। (पृष्ठ 444)
- अल्लाह के अधिकारों को अल्लाह के सिवा कोई माफ़ नहीं कर सकता। (पृष्ठ 460)
- अल्लाह तआला हमारा, हमारे धन और प्राण और सभी अधिकारों का स्वामी है। (पृष्ठ 460)
- तीन रजिस्टर हैं: एक में से अल्लाह तआला कुछ भी माफ़ नहीं करेगा, एक की परवाह नहीं करेगा, और एक से कुछ भी नहीं छोड़ेगा। (पृष्ठ 460)
- क़ियामत के दिन हर किसी को हक़दारों के हक़ उन्हें देने होंगे। (पृष्ठ 461)
- क़ियामत के दिन हक़दारों के हक़ अदा करने का तरीका। (पृष्ठ 461)
- 'ला इलाहा इल्लल्लाह' का अर्थ। (पृष्ठ 475)
- ईमान का आधार रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) का प्रेम है। (पृष्ठ 486)
- प्रेमी को महबूब की हर चीज़ अज़ीज़ होती है। (पृष्ठ 486)
- हुज़ूर अनवर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) हर दोष और कमी से पवित्र और बेमिसाल हैं। (पृष्ठ 487)
- ताज़िया को नाजायज़ मानने वाले को काफ़िर या मुर्तद (धर्मत्यागी) कहना कैसा है? (पृष्ठ 499)
- ताज़िया बनाना शिर्क नहीं बल्कि बिदअत और गुनाह है। (पृष्ठ 503)
- हज़रात इमामैन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) या किसी ग़ैर-नबी को नबी से श्रेष्ठ कहना कुफ़्र है। (पृष्ठ 508)
- हज़रत अमीर मुआविया (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) या किसी सहाबी को बुरा कहना राफ़िज़ियत है। (पृष्ठ 508)

- उम्मत के उलेमा ने रबी-उल-अव्वल शरीफ़ को वफ़ात के मातम के बजाय विलादत (जन्म) की खुशी का मौसम क्यों ठहराया? (पृष्ठ 515)
- माथे पर कशका तिलक लगाना या कंधे पर सलीब (क्रॉस) रखना कुफ्र है। (पृष्ठ 549)
- ज़ुनार (पवित्र धागा) बाँधना कुफ्र है। (पृष्ठ 550)
- वास्तव में सम्मान का पात्र केवल वही वास्तविक महान और गौरवशाली (अल्लाह) है। (पृष्ठ 599)
- दीनी मुक़द्दस चीज़ों का सम्मान अल्लाह तआला के साथ उनके जुड़ाव और संबंध के कारण है। (पृष्ठ 599)
- वृद्ध मुस्लिम, सुन्नी आलिम और न्यायप्रिय राजा का सम्मान वास्तव में अल्लाह तआला का ही सम्मान है। (हदीस) (पृष्ठ 599)
- जिस चीज़ का उस वास्तविक महान (अल्लाह तआला) से कोई संबंध नहीं है, वह वास्तव में सम्मान के योग्य नहीं है। (पृष्ठ 600)
- फ़रिश्तों की इबादत के लिए किया गया हर अनुकरण निश्चित रूप से घृणा का कारण है। (पृष्ठ 605)
- हरमैन (मक्का और मदीना) के उलेमा ने देवबंदियों को नाम-ब-नाम काफ़िर और मुर्तद बताया। (पृष्ठ 670)

- کونسا علم پڑھنا فرض، کونسا واجب اور کونسا حرام ہے۔ (صفحہ ۴۳۲)
- یہ مردود فلسفہ کفر وضلالت سے بھر اہوا اور جہالتوں کا مجموعہ ہے۔ (صفحہ ۴۳۹)
- جس شخص نے شرعی قبیح کے مرتکب کو کہا تو نے اچھا کیا ہے، تو وہ کافر ہو گیا۔ (صفحہ ۴۴۲)
- فلسفے کی فضیلت کو فقہ کی فضیلت پر ترجیح دینا ضمناً علم دین کی توہین ہے۔ (صفحہ ۴۴۴)
- علم دین کی صراحتاً توہین کفر ہے۔ (صفحہ ۴۴۴)
- حقوق اللہ کو اللہ تعالیٰ کے سوا کوئی معاف نہیں کر سکتا۔ (صفحہ ۴۶۰)
- اللہ تعالیٰ ہمارا اور ہمارے مال و جان اور حقوق سب کا مالک ہے۔ (صفحہ ۴۶۰)
- دفتر تین ہیں، ایک میں سے اللہ تعالیٰ کچھ نہ بخشے گا، ایک کی پروا نہیں کرے گا، اور ایک سے کچھ نہ چھوڑے گا۔ (صفحہ ۴۶۰)
- روزِ قیامت ہر کسی کو اہلِ حقوق کے حق ان کو دینا پڑیں گے۔ (صفحہ ۴۶۱)
- قیامت کے دن اہلِ حقوق کے حقوق کی ادائیگی کا طریقہ۔ (صفحہ ۴۶۱)
- لا الہ الا اللہ کا معنی۔ (صفحہ ۴۷۵)
- مدارِ ایمان محبت رسول ہے صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم۔ (صفحہ ۴۸۶)
- محب کو محبوب کی ہر شیئی عزیز ہوتی ہے۔ (صفحہ ۴۸۶)
- حضور انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ہر عیب و نقص سے منزہ و بے مثال ہیں۔ (صفحہ ۴۸۷)
- تعزیہ کی ناجوازی کے قائل کو کافر یا مرتد کہنا کیسا ہے۔ (صفحہ ۴۹۹)
- تعزیہ بنانا شرک نہیں بدعت و گناہ ہے۔ (صفحہ ۵۰۳)

- حضرات امامین رضی اللہ تعالیٰ عنہما خواہ کسی غیر نبی کو نبی سے افضل کہنا کفر ہے۔ (صفحہ ۵۰۸)
- حضرت امیر معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ یا کسی صحابی کو برا کہنا رفض ہے۔ (صفحہ ۵۰۸)
- ربیع الاول شریف کو علماءِ امت نے ماتم وفات کے بجائے موسمِ شادی ولادت کیوں ٹھہرایا۔ (صفحہ ۵۱۵)
- ماتھے پر قشقہ تلک لگانا یا کندھے پر صلیب رکھنا کفر ہے۔ (صفحہ ۵۴۹)
- زنار باندھنا کفر ہے۔ (صفحہ ۵۵۰)
- حقیقی مستحقِ تعظیم وہی حقیقی جلیلِ عظیم عز جلالہ ہے۔ (صفحہ ۵۹۹)
- معظماتِ دینی کی تعظیم اللہ تعالیٰ کی طرف نسبت و علاقہ سے ہے۔ (صفحہ ۵۹۹)
- بوڑھے مسلمان، سنی عالم اور عادل بادشاہ کی تعظیم میں اللہ تعالیٰ ہی کی تعظیم ہیں۔ (حدیث) (صفحہ ۵۹۹)
- جس وجہ کو اس عظیم حقیقی (اللہ تعالیٰ) سے علاقہ نہیں وہ اصلاً لائقِ تعظیم نہیں۔ (صفحہ ۶۰۰)
- ہر تشبہ عبادت ملائکہ کے لئے قطعاً موجبِ نفرت ہے۔ (صفحہ ۶۰۵)
- علمائے حرمین نے دیوبندیوں کو نام بنام کافر و مرتد بتایا۔ (صفحہ ۶۷۰)

Fatawa Rizwia, Vol. 24

Subject (Right Column)	Page	Subject (Left Column)	Page
In reality, claiming prophethood is pure disbelief, and the appearance of such a claim is forbidden and prohibited.	677	How the Noble Prophet (Peace and Blessings of Allah be upon Him) dealt with the questioner and the youth.	377
Probably, some correlation between name and the person named is observed from the unseen.	682	The Holy Prophet (Peace be upon Him) smiled upon seeing divine mercy on two of his followers.	662
Foul names have a bad effect on the person named.	682	Among the pure names of the Master of the World (Peace and Blessings of Allah be upon Him), more than sixty Divine Names are mentioned.	696
Combining the pure name 'Muhammad' with a bad name is an insult to that noble name.	683	Argument from a passage of the Psalms (Zabur) regarding the Holy Prophet (Peace and Blessings of Allah be upon Him) being the Owner.	702
With which names is it not permissible to combine the pure name 'Muhammad'?	683	The Radiant Prophet (Peace be upon Him) is the Master of Mankind and the Arbiter of the Arabs.	703
In the terminology of Quran, Hadith, and the Companions, a believer is only one who is a Sunni with correct beliefs.	687	**Prayer, Imamat, Azan, Purity, and Impurity**	
Heretics are the dogs of hell; no action of theirs is accepted.	687	The wisdom behind prayer being prohibited at three specific times.	122
	699		140

Subject (Right Column)	Page	Subject (Left Column)	Page
Just as guidance in the sense of 'creation' cannot be attributed to anyone other than God, similarly, in the sense of mere 'causation', it cannot be attributed to the Presence of Majesty and Glory (Allah).		What is the ruling on praying behind someone who calls musical instruments (mazamir) permissible?	
The distinction between 'Abd' meaning servant and 'Abd' meaning owned—that the first is polytheism and the second is contrary to fact—is purely baseless.	701	Praying behind an open sinner is prohibitively disliked (Makruh Tahrimi) and must be repeated.	143
Considering oneself a slave (mamluk) of the Messenger of Allah (Peace and Blessings of Allah be upon Him) is perfect faith in the eyes of religious leaders, trusted saints, and authenticated scholars; whoever lacks this belief is deprived of the sweetness of faith.	701	How is it to give the call to prayer (Azan) in an open field to ward off the disease of cholera?	181
True, truthful, perfect, encompassing, comprehensive, and complete ownership is possessed by the Radiant Prophet (Peace be upon Him) over the whole world, as opposed to the Grandeur of the Presence of Greatness (Allah), Mighty and Majestic.	704	Optional prayer (Nafl) in a large congregation is disliked (Makruh).	185
Biography and Virtues of the Leader of Messengers (Peace be upon Him)		Alcohol is absolutely forbidden and impure like urine.	193
The Holy Prophet (Peace be upon Him) did not object to the rhythmic chanting (hadi) of Anjashah (may Allah be pleased with him).	85	A ruling of impurity cannot be given to something without knowing its reality.	194
The Holy Prophet (Peace be upon Him) is more kind to his community than parents.	306		

फ़तावा रिज़विया, खंड २४

विषय (दायां कॉलम)	पृष्ठ	विषय (बायां कॉलम)	पृष्ठ
वास्तव में, नबूवत का दावा करना शुद्ध कुफ़्र है, और दावे का आभास भी हराम और वर्जित है।	६७७	हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) प्रश्नकर्ता और युवक के साथ कैसे पेश आते थे।	३७७
संभवत; नाम और नामित व्यक्ति के बीच कोई संबंध परोक्ष (ग़ैब) से देखा जाता है।	६८२	हुज़ूर अलैहिस सलातो वस्सलाम ने अपने दो उम्मतियों पर ईश्वर की कृपा देखकर मुस्कुराया।	६६२
बुरे नामों का नामित व्यक्ति पर बुरा प्रभाव पड़ता है।	६८२	सैय्यद ए आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पवित्र नामों में साठ से अधिक ईश्वरीय नाम आए हैं।	६९६
बुरे नाम के साथ पवित्र नाम 'मोहम्मद' को जोड़ना उस महान नाम का अपमान है।	६८३	हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के स्वामी होने पर ज़बूर की एक इबारत से तर्क।	७०२
किन नामों के साथ पवित्र नाम 'मोहम्मद' को जोड़ना जायज़ नहीं है?	६८३	हुज़ूर पुर नूर अलैहिस सलातो वस्सलाम 'मालिकुन नास' और 'दयानुल अरब' हैं।	७०३
कुरान, हदीस और सहाबा की परिभाषा में मोमिन वही है जो सुन्नी सहीहुल-अकीदा हो।	६८७	**नमाज़, इमामत, अज़ान, पवित्रता और अपवित्रता**	
विधर्मी (बद-मज़हब) जहन्नुम के कुत्ते हैं; उनका कोई कार्य स्वीकार्य नहीं है।	६८७	तीन समयों में नमाज़ हराम होने का हिक्मत (तर्क)।	१२२
जिस प्रकार 'सृष्टि' के अर्थ में मार्गदर्शन (हिदायत) ईश्वर के अलावा किसी और की ओर नहीं जोड़ा जा सकता, उसी प्रकार केवल 'कारण' के अर्थ में इसे	६९९	संगीत वाद्यों (मज़ामीर) को हलाल कहने वाले के पीछे नमाज़ का क्या हुक्म है?	१४०

विषय (दायां कॉलम)	पृष्ठ
महानता और महिमा के स्वामी (अल्लाह) की ओर नहीं जोड़ा जा सकता।	
'अब्द' का अर्थ सेवक और 'अब्द' का अर्थ गुलाम—कि पहला शिर्क है और दूसरा वास्तविकता के विपरीत है—यह भेदभाव पूर्णतः निराधार है।	७०१
स्वयं को अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का गुलाम (ममलूक) मानना इमामों, प्रतिष्ठित संतों और प्रमाणित विद्वानों की दृष्टि में पूर्ण ईमान है; और जो इस विश्वास से रहित है, वह ईमान की मिठास से वंचित है।	७०१
वास्तविक, सत्य, पूर्ण और व्यापक स्वामित्व हुज़ूर पुर नूर अलैहिस सलातो वस्सलाम को पूरे संसार पर प्राप्त है, जो अल्लाह की सर्वोच्च महानता के विपरीत है।	७०४
सैय्यदुल मुरसलीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सीरत और गुण	
अनजशा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की 'हदी' (ऊंट चालक गीत) पर हुज़ूर अलैहिस सलातो वस्सलाम ने आपत्ति नहीं की।	८५
हुज़ूर अलैहिस सलातो वस्सलाम माता-पिता से अधिक उम्मत पर दयालु हैं।	३०६

विषय (बायां कॉलम)	पृष्ठ
खुले तौर पर पाप करने वाले (फासिक ए मोलन) के पीछे नमाज़ मकरूह-ए-तहरीमी और दोहराना अनिवार्य (वाजिबुल इआदा) है।	१४३
हैजा की बीमारी दूर करने के लिए मैदान में अज़ान देना कैसा है?	१८१
बड़ी जमात के साथ नफ़्ल नमाज़ मकरूह है।	१८५
शराब बिल्कुल हराम है और पेशाब की तरह अपवित्र (नजिस) है।	१९३
किसी चीज़ की वास्तविकता जाने बिना उसकी अपवित्रता का निर्णय नहीं दिया जा सकता।	१९४

पृष्ठ ७२० में से ५६

موضوع (دایاں کالم)	صفحہ
حقیقتاً ادعائے نبوت کفر خالص اور صورتِ ادعاء حرام و محظور ہے۔	۶۷۷
غالباً اسم و مسمّٰی میں کوئی مناسبت غیب سے ملحوظ ہوتی ہے۔	۶۸۲
قبیح ناموں کا مسمّٰی پر برا اثر پڑتا ہے۔	۶۸۲
برے نام کے ساتھ نام پاک محمد کو ملانا اس نامِ کریم کی گستاخی ہے۔	۶۸۳
	۶۸۳

موضوع (بایاں کالم)	صفحہ
حضور اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سائل اور ناشی کے ساتھ کیسے پیش آتے تھے۔	۳۷۷
حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے اپنے دو امتیوں پر کرمِ خداوندی دیکھ کر مضحک فرمایا۔	۶۶۲
حضور پر نور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے اسماءِ طیبہ میں ساٹھ سے زائد اسماءِ الٰہیہ آئے ہیں۔	۶۹۶
حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے مالک ہونے پر زبور کی ایک عبارت سے استدلال۔	۷۰۲
	۷۰۳

موضوع (دایاں کالم)	صفحہ
کن کن ناموں کے ساتھ نام پاک محمد کو ملانا جائز نہیں۔	
عرفِ قرآن و حدیث و صحابہ میں مومن اسی کو کہتے ہیں جو سنی صحیح العقیدہ ہو۔	۶۸۷
بد مذہب جہنم کے کتے ہیں ان کا کوئی عمل قبول نہیں۔	۶۸۷
جس طرح ہدایت بمعنی خلقِ غیر خدا کی طرف منسوب نہیں ہو سکتی اسی طرح بمعنی محض تسبب حضرت عزت جلالہ کی طرف نسبت نہیں پا سکتی۔	۶۹۹
عبد بمعنی بندہ و بمعنی مملوک میں یہ تفرقہ کہ اول شرک اور ثانی خلافِ واقع ہے محض بے اصل ہے۔	۷۰۱
خود کو رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا مملوک ماننا ائمہ دین، اولیاء معتمدین اور علماء مستندین کی نظر میں مکمل ایمان ہے اور جو اس اعتقاد سے خالی ہے وہ حلاوتِ ایمان سے بے بہرہ ہے۔	۷۰۱
	۷۰۴

موضوع (بایاں کالم)	صفحہ
حضور پر نور علیہ الصلوٰۃ والسلام مالک الناس اور دیان العرب ہیں۔	
نماز و امامت و اذان و طہارت و نجاست	
تین وقتوں میں نماز حرام ہونے کی حکمت۔	۱۲۲
مزامیر کو حلال کہنے والے کے پیچھے نماز کا کیا حکم ہے۔	۱۴۰
فاسقِ معلن کے پیچھے نماز مکروہِ تحریمی واجب الاعادہ ہے۔	۱۴۳
دفعِ مرضِ ہیضہ کے لئے میدان میں اذان دینا کیسا ہے۔	۱۸۱
نفل جماعتِ کثیرہ کے ساتھ مکروہ ہے۔	۱۸۵

موضوع (دایاں کالم)	صفحہ	موضوع (بایاں کالم)	صفحہ
مالکیتِ حقہ صادقہ کاملہ محیطہ شاملہ تامہ حضور پر نور علیہ الصلوٰۃ والسلام کو بخلافِ کبریٰ حضرتِ کبریا عز و جل تمام جہاں پر حاصل ہے۔			
سیرت و فضائل سید المرسلین صلی اللہ علیہ وسلم		شراب مطلقاً حرام اور پیشاب کی طرح نجس ہے۔	۱۹۳
انجشہ رضی اللہ تعالٰی عنہ کی حدی پر حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے انکار نہ فرمایا۔	۸۵	کسی چیز کی حقیقت جانے بغیر اس کی نجاست کا حکم نہیں لگایا جا سکتا۔	۱۹۴
حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام ماں باپ سے بڑھ کر امت پر مہربان ہیں۔	۳۰۶		

Fatawa Rizvia Volume 24

198 | Alcohol is both forbidden (Haraam) and impure (Najis); applying it on the outside of the body is also impermissible. | It is disliked (Makrooh) for the Imam to stand in the mihrab and be higher than all the followers (muqtadis). | 540 198 | Opium is forbidden but not impure; its use on the exterior of the body is permissible. | According to Imam-e-Azam, reading from the Holy Quran during prayer invalidates it, while according to the Sahibain (two companions), it is disliked. | 541 202 | Spirit is not only forbidden but also impure. | It is disliked to pray in a place where there are images. | 541 208 | Rubbing alcohol on the body is also forbidden. | If there is a cross in the direction of the Qibla, the prayer is disliked. | 541 290 | Appointing an open sinner (Fasiq mo'allan) as an Imam is a sin, and praying behind him is prohibitively disliked (Makrooh-e-Tahrimi). | The water of a hookah is pure. | 557 322 | One who insults a Sayyid because of their Sayyid status is an infidel (Kafir). Prayer behind such a person is void. | Prayer is disliked in a house where there is an image. | 593 333 | Eating with a child of adultery and, with prior knowledge, praying behind them are both correct/permissible. | When is an image behind a worshipper considered disliked? | 607 405 | The leadership (Imamat) of a liar and a thief is prohibitively disliked. | To perform prayer actions facing an image placed in front is most evil and severe, and in this case, the prayer will be prohibitively disliked. | 609 405 | Prayer behind one who is disrespectful to their mother is severely disliked, prohibitively disliked near forbidden, and must be repeated. | Keeping an image in a house for the purpose of veneration is strictly forbidden and a sin, but prayer in such a house will be mildly disliked (Makrooh-e-Tanzihi). | 609 434 | Who is most entitled to lead the prayer (Imamat)? | Situations where there is no dislike (karahat) in prayer. | 613 443 | The leadership (Imamat) of an open sinner is prohibitively disliked. | Prayer is not disliked if a candle, lamp, lantern, or chandelier is in front. | 619 443 | Those who appoint an open sinner as an Imam are involved in a great sin. | Declaring the water of masjid lotas as impure is false. | 670 444 | Discourse on the leadership (Imamat) of theologians (Mutakallimeen). | If you put one drop of urine into ninety-four drops of rose water, it all becomes urine. | 718 499 | How is it to pray behind someone who goes to extremes in Tazia-dari? | Rulings of the Mosque | 510 | Kissing the thumbs upon hearing the Azan is permissible and recommended, but doing so while hearing the Ayat-e-Karima is impermissible. | Money should not be taken from a Qadiyani for the mosque. | 327

फ़तावा रिज़विया जिल्द २४

१९८ | शराब हराम भी है और नापाक (नजिस) भी, इसे शरीर के बाहरी हिस्से पर लगाना भी नाजायज़ है। | इमाम का मेहराब में खड़ा होना और तमाम मुक़्तदियों से ऊँचा होना मकरूह है। | ५४० १९८ | अफ़ीम हराम है लेकिन नापाक नहीं, शरीर के बाहरी हिस्से पर इसका इस्तेमाल जायज़ है। | नमाज़ में क़ुरआन मजीद देख कर पढ़ना इमाम-ए-आज़म के नज़दीक नमाज़ को तोड़ने वाला (मुफ़्सिद) है और साहिबैन के नज़दीक मकरूह है। | ५४१ २०२ | स्पिरिट हराम होने के अलावा नापाक भी है। | तस्वीर वाली जगह नमाज़ पढ़ना मकरूह है। | ५४१ २०८ | शराब को बदन पर मलना भी हराम है। | क़िबला की दिशा में सलीब (क्रॉस) हो तो नमाज़ मकरूह है। | ५४१ २९० | खुले गुनहगार (फ़ासिक़-ए-मोलन) को इमाम बनाना गुनाह है और उसके पीछे नमाज़ पढ़ना मकरूह-ए-तहरीमी है। | हुक्का का पानी पाक है। | ५५७ ३२२ | सैय्यद की सैय्यद होने की वजह से तौहीन करने वाला काफ़िर है। उसके पीछे नमाज़ बातिल (अमान्य) है। | जिस मकान में तस्वीर हो उसमें नमाज़ मकरूह है। | ५९३ ३३३ | वल्द-उज़-ज़िना के साथ खाना और इल्म होने पर उसके पीछे नमाज़ दोनों दुरुस्त हैं। | जो तस्वीर नमाज़ी की पीठ पीछे हो वह कब मकरूह है। | ६०७ ४०५ | झूठे और चोर की इमामत मकरूह-ए-तहरीमी है। | तस्वीर को सामने रख कर उसकी तरफ़ नमाज़ के अफ़आल (कार्य) करना बहुत बुरा और सख़्त है और इस सूरत में नमाज़ मकरूह-ए-तहरीमी होगी। | ६०९ ४०५ | माँ के गुस्ताख़ के पीछे नमाज़ सख़्त मकरूह, मकरूह-ए-तहरीमी क़रीब बा-हराम और दोहराना (वाजिब-उल-इआदा) है। | मकान में तस्वीर ताज़ीम (सम्मान) की वजह से रखना तो क़तअन मना और गुनाह है मगर उस मकान में नमाज़ मकरूह-ए-तन्ज़ीही होगी। | ६०९ ४३४ | इमामत का ज़्यादा हक़दार कौन है। | नमाज़ में मकरूह न होने की सूरतें। | ६१३ ४४३ | फ़ासिक़ की इमामत मकरूह-ए-तहरीमी है। | शमा, चिराग़, क़ंदील, लैंप, लालटेन या फ़ानूस सामने हो तो नमाज़ मकरूह नहीं। | ६१९ ४४३ | फ़ासिक़ को इमाम बनाने वाले गुनाह-ए-अज़ीम में मुब्तला हैं। | मस्जिद के लोटों का पानी नापाक बताना बातिल है। | ६७० ४४४ | मुतक़ल्लिमीन की इमामत का बयान। | चौरानवे क़तरे गुलाब में एक बूंद पेशाब डाल दो तो सब पेशाब हो जाएगा। | ७१८ ४९९ | ताज़ियादारी में ग़ुलू (अति) करने वाले के पीछे नमाज़ पढ़ना कैसा है। | अहकाम-ए-मस्जिद | ५१० | अज़ान सुनते वक़्त अँगूठे चूमना जायज़ और मुस्तहब है, और आयत-ए-करीमा सुनते वक़्त नाजायज़ है। | क़ादियानी से मस्जिद के लिए पैसे न लिए जाएँ। | ३२७

पृष्ठ ५७ / ७२०

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

۱۹۸ | شراب حرام بھی ہے اور نجس بھی، اس کا خارج بدن پر لگانا بھی ناجائز ہے۔ | امام کا محراب میں کھڑا ہونا اور تمام مقتدیوں سے بلند ہونا مکروہ ہے۔ | ۵۴۰ ۱۹۸ | افیون حرام ہے نجس نہیں، خارج بدن پر اس کا استعمال جائز ہے۔ | نماز میں قرآن مجید دیکھ کر پڑھنا امام اعظم کے نزدیک مفسد نماز اور صاحبین کے نزدیک مکروہ ہے۔ | ۵۴۱ ۲۰۲ | اسپرٹ حرام ہونے کے علاوہ ناپاک بھی ہے۔ | تصویر والی جگہ نماز پڑھنا مکروہ ہے۔ | ۵۴۱ ۲۰۸ | شراب کو بدن پر ملنا بھی حرام ہے۔ | جہت قبلہ میں صلیب ہو تو نماز مکروہ ہے۔ | ۵۴۱ ۲۹۰ | فاسق معلن کو امام بنانا گناہ اور اس کے پیچھے نماز پڑھنا مکروہ تحریمی ہے۔ | حقہ کا پانی پاک ہے۔ | ۵۵۷ ۳۲۲ | سید کی تحقیر بوجہ سیادت کرنے والا کافر ہے۔ اس کے پیچھے نماز باطل ہے۔ | جس مکان میں تصویر ہو اس میں نماز مکروہ ہے۔ | ۵۹۳ ۳۳۳ | ولد الزنا کے ساتھ کھانا اور بشرط علم اس کے پیچھے نماز دونوں درست ہیں۔ | جو تصویر نمازی کے پس پشت ہو وہ کب مکروہ ہے۔ | ۶۰۷ ۴۰۵ | کاذب و سارق کی امامت مکروہ تحریمی ہے۔ | تصویر کو سامنے رکھ کر اس کی طرف افعال نماز بجالانا اخبث و اشد ہے اور اس صورت میں نماز مکروہ تحریمی ہوگی۔ | ۶۰۹ ۴۰۵ | ماں کے گستاخ کے پیچھے نماز سخت مکروہ، مکروہ تحریمی قریب بحرام واجب الاعادہ ہے۔ | مکان میں تصویر بروجہ تعظیم رکھنا تو قطعاً ممنوع و گناہ ہے مگر اس مکان میں نماز مکروہ تنزیہی ہوگی۔ | ۶۰۹ ۴۳۴ | امامت کا زیادہ حقدار کون ہے۔ | نماز میں عدم کراہت کی صورتیں۔ | ۶۱۳ ۴۴۳ | فاسق کی امامت مکروہ تحریمی ہے۔ | شمع، چراغ، قندیل، لیمپ، لالٹین یا فانوس سامنے ہو تو نماز مکروہ نہیں۔ | ۶۱۹ ۴۴۳ | فاسق کو امام بنانے والے گناہ عظیم میں مبتلا ہیں۔ | مسجد کے لوٹوں کا پانی ناپاک بتانا باطل ہے۔ | ۶۷۰ ۴۴۴ | متکلمین کی

امامت کا بیان | چورانوے قطرے گلاب میں ایک بوند پیشاب ڈال دو تو سب پیشاب ہو جائے گا۔ | ۷۱۸ ۴۹۹ | تعزیہ داری میں غلو کرنے والے کے پیچھے نماز پڑھنا کیسا ہے۔ | احکام مسجد | ۵۱۰ | اذان سنتے وقت انگوٹھے چومنا جائز و مستحب، اور آیت کریمہ سنتے وقت ناجائز ہے۔ | قادیانی سے مسجد کے لئے پیسے نہ لئے جائیں۔ | ۳۲۷

Fatawa Razawiyya Volume 24

Page	Ref	Topic
86		What is the ruling on reciting "illallah" while clapping in a circle with dancing and swaying? What is the ruling on those who taunt those who dislike this style of dhikr as avoiding dhikr, and those who mention Tafsir Jalalayn with contempt, calling it a superficial commentary?
87	339	If a circle of dhikr is not for show and reputation but purely for the sake of Allah, then it is a beloved matter.
87	479	Circles of dhikr are the gardens of Paradise.
101	499	Ibn Masud (may Allah be pleased with him) turned out those who were doing dhikr loudly from the mosque.

Funerals 180 | | The most appropriate means is supplication (du'a), and the method of supplication is in secret (silently). 181 | 198 | Virtues of the remembrance (dhikr) of Allah. 182 | 198 | The prayer of a gathering of Muslims is closer to acceptance.

Marriage and Divorce 132 | | Whether a marriage ceremony with many musical instruments, lighting, and horses is valid according to Shariah or not, and whether participating in such a wedding procession will be a sin or not. 142 | 488 | Going to Hindu festivals is forbidden (Haram), but the marriage does not break if one does not consider it good. 170 | 500 | The marriage sermon (khutba-e-nikah) is Sunnah. 198 | 509 | A boy and a girl were minors when they got married, then the girl became a widow; so, will a waiting period (iddat) be observed regarding a second marriage or not? If observed, then until when?

Remembrance and Supplication

फ़तावा रजविया जिल्द २४

पृष्ठ सं. विषय

८६ नृत्य और झूमते हुए तालियाँ बजाते हुए "इल्लल्लाह" का ज़िक्र करना कैसा है? ज़िक्र के इस अंदाज़ को नापसंद करने वालों को ज़िक्र से मुंह मोड़ने का ताना देने और तफ़्सीर-ए-जलालैन को सतही तफ़्सीर कहकर हिकारत से उसका ज़िक्र करने वाले का क्या हुक्म है?

८७ ३३९ ज़िक्र का हलका (घेरा) अगर दिखावे और सुनावे के लिए न हो बल्कि खालिस अल्लाह के लिए हो तो यह पसंदीदा काम है।

८७ ४७९ ज़िक्र के हलके जन्नत की क्यारियाँ हैं।

१०१ ४९९ चिल्लाकर ज़िक्र करने वालों को इब्ने मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मस्जिद से निकलवा दिया।

जनाइज़ (जनाज़ा और कफ़न-दफ़न) १८० | | सबसे बेहतर वसीला दुआ है और दुआ का तरीका चुपके से (आहिस्ता) मांगना है। १८१ | १९८ | अल्लाह के ज़िक्र की फजीलतें। १८२ | १९८ | मुसलमानों की जमात (इकट्ठ) की दुआ कुबूलियत के ज़्यादा करीब है।

निकाह और तलाक १३२ | | जिस बारात में बहुत अधिक बाजे-गाजे, रौशनी और घोड़े हों, उसका निकाह शरई तौर पर होता है या नहीं? और ऐसी बारात में शामिल होने से गुनाह होगा या नहीं? १४२ | ४८८ | हिन्दुओं के मेले में जाना हराम है लेकिन निकाह नहीं टूटता जब तक उसे अच्छा न समझे। १७० | ५०० | निकाह का खुतबा सुन्नत है। १९८ | ५०९ | लड़का और लड़की नाबालिग थे जब उनकी शादी हुई, फिर लड़की विधवा हो गई; तो क्या दूसरी शादी के बारे में इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) ली जाएगी या नहीं? अगर ली जाएगी तो कब तक?

ज़िक्र और दुआ

पृष्ठ ५८ का ७२०

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۴

صفحہ نمبر موضوع

رقص و تمایل کے حلقہ میں تالیاں بجاتے ہوئے "الا اللہ" کا ذکر کرنا کیسا ہے، اس
۸۶ اندازِ ذکر کو ناپسند جاننے والوں کو اعراضِ ذکر کا طعنہ دینے اور تفسیرِ جلالین کو
ظاہری تفسیر کہہ کر حقارت سے اس کا ذکر کرنے والے کا کیا حکم ہے۔

۸۷ ۳۳۹ حلقہ ذکر اگر بوجہ ریاء وسمعہ نہ ہو بلکہ خالصاً لوجہ اللہ ہو تو امر محبوب ہے۔

۸۷ ۴۷۹ ذکر کے حلقے جنت کی کیاریاں ہیں۔

۱۰۱ ۴۹۹ چلا کر ذکر کرنے والوں کو ابن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے مسجد سے نکلوا دیا۔

جنائز ۱۸۰ | | اشبہ توسل دعا ہے اور دعا کا طریقہ اخفاء ہے۔ ۱۸۱ | ۱۹۸ | ذکر الٰہی کے فضائل ۱۸۲ | ۱۹۸ | دعائے مجمع مسلمین اقرب بقبول ہے۔

نکاح و طلاق ۱۳۲ | | جس کی بارات میں کثرت سے باجے، روشنی اور گھوڑے ہوں اس کا نکاح شرعاً ہوتا ہے یا نہیں اور ایسی بارات میں شرکت سے گناہ ہوگا یا نہیں۔ ۱۴۲ | ۴۸۸ | ہنود کے میلے میں جانا حرام ہے مگر نکاح نہیں ٹوٹتا جب اسے اچھا نہ جانے۔ ۱۷۰ | ۵۰۰ | خطبہ نکاح سنت ہے۔ ۱۹۸ | ۵۰۹ | لڑکا اور لڑکی نا بالغ تھے ان کی شادی ہو گئی، پھر لڑکی بیوہ ہو گئی، تو کیا عقدِ ثانی کے بارہ میں مدت لیا جائے گا یا نہیں، اگر مدت لیا جائے گا تو کب تک۔

ذکر و دعا

صفحہ ۵۸ از ۷۲۰

Fatawa-e-Razvia (Volume 24)

Page	Description (Left Column)	Page	Description (Right Column)	Page
	A woman cannot refuse intercourse to her leprous husband.	282	Emphasis on being kind to the father's relatives.	387
	A woman does not have the right to request the annulment of marriage from a leprous husband.	282	**Adornment and Decoration**	
	Remaining single and not marrying for twelve years is not a cause for accountability.	362	Women were commanded to apply henna to their hands so they do not resemble men.	538
	Like a biological mother, a stepmother is also eternally prohibited (for marriage).	387	It is forbidden for a man to apply henna to his palms or soles.	542
	If a Muslim has already sent a marriage proposal to a woman, another should not do so.	428	A single-stone ring weighing less than four and a half mashas is permissible for a man; anything more is impermissible.	542
	A man should not marry into a lowly lineage but among religious people, and should not form marital relations with Abyssinians.	452	A woman should not wear a man's silver ring; if she does, she should color it with saffron etc.	542
	Breastfeeding (Radha'at)		A man should not wear a ring on the right hand as it is a characteristic of the Rafidis.	545
	A child should be breastfed by a woman who is observant of prayers, righteous, and of noble lineage.	453	**Customs and Traditions**	
	Social Life / Marital Relations (Ishrat)		The 'marriage' of Ghazi Mian is merely an ignorant custom.	492
	Start intercourse with Bismillah, do not look at the wife's private parts,	452	The [customary] henna ceremony is impermissible; it	510

Page	Description (Left Column)	Page	Description (Right Column)	Page
	do not talk excessively, and the man and woman should not be completely naked.		must have been started by some ignorant 'Safina'.	
	Aqiqa (Sacrifice for a newborn)		**Interpretative Benefits (Tafsir)**	
	Aqiqa should be performed on the seventh, fourteenth, or twenty-first day.	452	What is meant by 'turning away from remembrance' in the noble verse "And whoever turns away from My remembrance"?	100
	Maintaining Family Ties (Silah Rahmi)		The application and meaning of the noble verse "And do not throw [yourselves] with your [own] hands into destruction."	191

फ़तावा-ए-रज़विया (जिल्द 24)

पृष्ठ	विवरण (बायाँ कॉलम)	पृष्ठ	विवरण (दायाँ कॉलम)	पृष्ठ
	औरत अपने कोढ़ी (जज़ामी) शौहर को संभोग (हम्बस्तरी) से मना नहीं कर सकती।	282	बाप के रिश्तेदारों के साथ भलाई करने की ताकीद।	387
	कोढ़ी शौहर से औरत को निकाह रद्द (फ़स्ख़) करने की दरख़्वास्त का हक़ नहीं।	282	**आभूषण और श्रृंगार**	
	बारह साल से कुँवारा रहना और निकाह न करना पूछताछ (मुआख़ज़ह) का कारण नहीं है।	362	औरतों को हाथों पर मेहँदी लगाने का हुक्म दिया गया ताकि वे मर्दों के समान न लगें।	538
	सगी माँ की तरह सौतेली माँ भी हमेशा के लिए हराम है।	387	मर्द को हथेली या तलवों पर मेहँदी लगाना हराम है।	542
	यदि किसी मुसलमान ने किसी औरत को निकाह का पैगाम दे रखा हो, तो दूसरा न दे।	428	मर्द को साढ़े चार माशे से कम वज़न की एक नग वाली अंगूठी पहनना जायज़ है, उससे ज़्यादा नाज़ायज़ है।	542
	आदमी अपना निकाह नीची कौम में न करे बल्कि दीनदार लोगों में करे और हबशियों के साथ रिश्तेदारी न करे।	452	चाँदी की मर्दानी अंगूठी औरत को नहीं पहननी चाहिए, और यदि पहने तो उसे ज़ाफ़रान आदि से रंग ले।	542
			मर्द को सीधे हाथ में अंगूठी नहीं पहननी चाहिए क्योंकि यह राफ़ज़ियों का प्रतीक है।	545
	स्तनपान (रज़ाअत)			
	बच्चे को नमाज़ी, नेक और कुलीन औरत से दूध पिलवाया जाए।	453	**रीति-रिवाज़**	
	वैवाहिक जीवन (इशरत)		गाजी मियाँ की शादी महज़ एक अज्ञानतापूर्ण रस्म है।	492
		452		510

पृष्ठ	विवरण (बायाँ कॉलम)	पृष्ठ	विवरण (दायाँ कॉलम)	पृष्ठ
	बिस्मिल्लाह से संभोग शुरू करे, पत्नी के गुप्त अंगों पर न देखे, ज़्यादा बातें न करे और स्त्री-पुरुष पूरी तरह नग्न न हों।		मेहँदी [की रस्म] नाज़ायज़ है, इसकी शुरुआत किसी अज्ञानी 'सफ़ीना' ने की होगी।	
	अकीका (नवजात के लिए बलिदान)		**व्याख्यात्मक लाभ (तफ़सीर)**	
	सातवें, चौदहवें या इक्कीसवें दिन अकीका किया जाए।	452	पवित्र आयत "और जो मेरे ज़िक्र से मुँह मोड़ेगा" में 'ज़िक्र से मुँह मोड़ने' का क्या अर्थ है?	100
	रिश्तेदारों से अच्छे संबंध (सिलह-रहमी)		पवित्र आयत "और अपने आप को अपने ही हाथों तबाही में न डालो" का अर्थ और प्रयोग।	191

عبارت (بایاں کالم)	صفحہ	عبارت (دایاں کالم)	صفحہ
عورت اپنے جذامی شوہر کو ہمبستری سے منع نہیں کر سکتی۔	۲۸۲	باپ کے تعلقداروں کے ساتھ بھلائی کی تاکید۔	۳۸۷
جذامی شوہر سے عورت کو فسخ نکاح کی درخواست کا حق نہیں۔	۲۸۲	**زیوروزینت**	
بارہ سال سے مجرد رہنا اور نکاح نہ کرنا کوئی وجہ مواخذہ نہیں۔	۳۶۲	عورتوں کو ہاتھوں پر مہندی لگانے کا حکم دیا گیا تاکہ مردوں سے مشابہت نہ ہو۔	۵۳۸
حقیقی ماں کی طرح سوتیلی ماں بھی حرام ابدی ہے۔	۳۸۷	مرد کو ہتھیلی یا تلوے پر مہندی لگانا حرام ہے۔	۵۴۲
ایک مسلمان نے کسی عورت کو پیغام نکاح دے رکھا ہو تو دوسرا مت دے۔	۴۲۸	مرد کو ساڑھے چار ماشے سے کم وزن کی انگوٹھی ایک نگ کی جائز ہے زیادہ کی ناجائز ہے۔	۵۴۲
آدمی اپنا نکاح رذیل قوم میں نہ کرے بلکہ دیندار لوگوں میں کرے اور حبشیوں میں قرابت نہ کرے۔	۴۵۲	چاندی کی مردانی انگوٹھی عورت کو نہ چاہئے اور پہنے تو زعفران وغیرہ سے رنگ لے۔	۵۴۲
رضاعت			۵۴۵

صفحہ	عبارت (بایاں کالم)	صفحہ	عبارت (دایاں کالم)	صفحہ
			مرد سیدھے ہاتھ میں انگوٹھی نہ پہنے کہ رافضیوں کا شعار ہے۔	
	بچہ کو نمازی صالحہ شریف القوم عورت سے دودھ پلوایا جائے۔	۴۵۳	**رسم ورواج**	
	عشرت		غازی میاں کا بیاہ محض جاہلانہ رسم ہے۔	۴۹۲
	بسم اللہ سے جماع کی ابتداء کرے، شرمگاہ زن پر نگاہ نہ کرے، زیادہ باتیں نہ کرے، اور مردوزن مکمل برہنہ نہ ہوں۔	۴۵۲	مہندی نا جائز ہے اس کا آغاز کسی جاہل سفینہ نے کیا ہوگا۔	۵۱۰
	عقیقہ		**فوائد تفسیریہ**	
	ساتویں، چودہویں یا اکیسویں دن عقیقہ کیا جائے۔	۴۵۲	آیت کریمہ "ومن اعرض عن ذکری" میں اعراض عن الذکر سے کیا مراد ہے۔	۱۰۰
	صلہ رحمی		آیت کریمہ "ولا تلقوا بایدیکم الی التہلکۃ" کا مصداق و مطلب۔	۱۹۱

Volume 24 Fatawa Razawiya

Hadith Benefits

Page	Topic
241	Meaning of the eighth Hadith
242	When probability arises, the argument is void
242	Four aspects in the ninth Hadith
242	Justification for the eleventh and twelfth Hadiths.
242	Refutation of contagion from the thirteenth Hadith and it being baseless is evident.
242	Justification for the thirty-first Hadith.
243	The second, third, fifth, and tenth Hadiths are not fit for argumentation.
243	Discussion and debate on the first Hadith in several ways
243	First path: Discussion on the proof of the first Hadith; this is the method of Umm al-Mu'minin Siddiqah (may Allah be pleased with her).
243	Reference to multiple Hadiths
140	The word 'Ma'azif' mentioned in Hadith includes all musical instruments.
190	One who calls the Hadith of fleeing from plague flawed and wounded, and calls its narrators unknown and untrustworthy, is ignorant or astray.
190	A strong rejection of a wrong interpretation of the plague Hadith.
212	Multiple Hadiths related to a leprosy patient.
225	Critical analysis (Jarh wa Ta'dil) of the narrators of the fifteenth Hadith.
229	Scholarly discussion on different chains of the 'La Adwa' (no contagion) Hadith.
233	Discussion on the thirty-first Hadith, which combines both subjects.
234	Scholarly discussion on the thirty-second Hadith
247	Reconciliation between different Hadiths
247	Hadiths affirming contagion are not at the same high level of authenticity as Hadiths denying it.

Page	Topic	Page	Topic
248	Second: Hadiths of fleeing from lepers etc. are abrogated; the Hadiths denying contagion abrogated them.	249	No Hadith is explicit (Nass) in proving contagion.
250	Third: The command to flee is because if they stay there, they will look at them, which will give rise to the evils of vanity, contempt, and harm.	249	Do not look at lepers with a sharp gaze; this is the context of the fourth Hadith.
250	Fourth: The command to flee is so that they are not harmed by its bad smell etc.	220	The sixth Hadith, where he said to that Thaqafi 'Return, your oath of allegiance is done', has multiple reasons.
250	Fifth: The majority view is that the command for distance and flight is to protect from the whispers of Iblis and false beliefs.	241	Justification for the seventh Hadith
253	Reconciliation between the two Hadiths	251	Reconciliation between the two Hadiths

खंड 24 फ़तावा रज़विया

फ़वाइद-ए-हदीसिया (हदीस के लाभ)

पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय
241	आठवीं हदीस का अर्थ	140	हदीस में वर्णित 'मआज़िफ़' (वाद्यों) शब्द में सभी वाद्य यंत्र शामिल हैं।
242	जब संभावना (संशय) उत्पन्न होती है, तो तर्क व्यर्थ हो जाता है	190	ताऊन (प्लेग) से भागने वाली हदीस को दोषपूर्ण और घायल कहने वाला और इसके वर्णनकर्ताओं को अज्ञात और अविश्वसनीय कहने वाला अज्ञानी या गुमराह है।
242	नौवीं हदीस में चार पहलू	190	ताऊन की हदीस की एक गलत व्याख्या का ज़ोरदार खंडन।
242	ग्यारहवीं और बारहवीं हदीस का औचित्य।	212	कोढ़ (कुष्ठ) के रोगी से संबंधित कई हदीसें।
242	तेरहवीं हदीस से 'अदवा' (संक्रमण) का खंडन और इसका निराधार होना स्पष्ट है।	225	पंद्रहवीं हदीस के वर्णनकर्ताओं का आलोचनात्मक विश्लेषण (जराह व तअदील)।
242	इकतीसवीं हदीस का औचित्य।	229	'ला अदवा' (कोई संक्रमण नहीं) हदीस की विभिन्न श्रृंखलाओं पर विद्वतापूर्ण चर्चा।
243	दूसरी, तीसरी, पाँचवीं और दसवीं हदीस तर्क के योग्य नहीं हैं।	233	इकतीसवीं हदीस पर चर्चा और यह हदीस दोनों विषयों का सार है।
243	पहली हदीस पर कई तरह से बहस और चर्चा	234	बत्तीसवीं हदीस पर विद्वतापूर्ण चर्चा
243	पहला मार्ग: पहली हदीस के प्रमाण पर चर्चा; यह उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) का तरीका है।	247	विभिन्न हदीसों के बीच सामंजस्य

पृष्ठ	विषय
243	कई हदीसों का संदर्भ
248	दूसरा: कोढ़ी आदि से भागने वाली हदीसें निरस्त (मन्सूख़) हैं; संक्रमण का निषेध करने वाली हदीसों ने उन्हें निरस्त कर दिया।
250	तीसरा: भागने का आदेश इसलिए है कि यदि वे वहाँ रुकेंगे तो उन पर नज़र पड़ेगी, जिससे अहंकार, अवमानना और हानि जैसी बुराइयाँ पैदा होंगी।
250	चौथा: भागने का आदेश इसलिए है ताकि वे उसकी दुर्गंध आदि से प्रभावित न हों।
250	पाँचवाँ: बहुसंख्यक विद्वानों (जम्हूर) का मत है कि दूरी और भागने का आदेश इब्लीस के वसवसों और गलत मान्यताओं से बचाने के लिए है।
253	दोनों हदीसों के बीच सामंजस्य
247	संक्रमण की पुष्टि करने वाली हदीसें प्रामाणिकता के उस उच्च स्तर पर नहीं हैं जिस पर निषेध वाली हदीसें हैं।
249	संक्रमण को सिद्ध करने में कोई भी हदीस स्पष्ट (नस्स) नहीं है।
249	कोढ़ियों को तीखी नज़रों से न देखो; चौथी हदीस का संदर्भ यही है।
220	छठी हदीस में कि उस सक़फ़ी से फ़रमाया 'लौट जाओ तुम्हारी बैअत हो गई', के कई कारण हैं।
241	सातवीं हदीस का औचित्य
251	दोनों हदीसों के बीच सामंजस्य

فوائدِ حدیثیہ

صفحہ	موضوع	صفحہ	موضوع
۲۴۱	حدیث ہشتم کا مطلب	۱۴۰	معازف کا لفظ جو حدیث میں مذکور ہے سب باجوں کو شامل ہے۔
۲۴۲	اذا جاء الاحتمال بطل الاستدلال	۱۹۰	حدیث فرار عن الطاعون کو مخذوش و مجروح اور اس کے راویوں کو مجہول و غیر ثقہ کہنے والا جاہل یا گمراہ ہے۔
۲۴۲	حدیث نہم میں چار وجوہ	۱۹۰	حدیث طاعون کی ایک غلط تاویل کا زوردار رد۔
۲۴۲	حدیث یازدہم و دوازدہم کی توجیہ۔	۲۱۲	جذام کے مریض سے متعلق متعدد احادیث۔
۲۴۲	تیرہویں حدیث سے عدویٰ کی نفی کئی اور اس کا بے اصل ہونا ظاہر ہے۔	۲۲۵	پندرھویں حدیث کے رواۃ کی جرح و تعدیل۔
۲۴۲	اکتیسویں حدیث کی توجیہ۔	۲۲۹	حدیث لا عدویٰ کے مختلف طرق پر محدثانہ گفتگو۔
۲۴۳	حدیث دوم، سوم، پنجم اور دہم قابل استدلال نہیں ہیں۔	۲۳۳	اکتیسویں حدیث پر گفتگو اور یہ حدیث دونوں مضمونوں کی جامع ہے۔

صفحہ	موضوع
۲۴۳	حدیث اول پر کئی طریقوں سے بحث اور گفتگو
	طرق اول: حدیث اول کے ثبوت میں کلام،
۲۴۳	یہ طریقہ ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا ہے۔
۲۴۳	متعدد احادیث کا حوالہ
	دوم: مجذوم وغیرہ سے بھاگنے کی حدیثیں
۲۴۸	منسوخ ہیں، احادیث نفی عدویٰ نے انہیں منسوخ کردیا۔
	سوم: بھاگنے کا حکم اس لئے کہ وہاں ٹھہریں گے تو ان پر نظر پڑے گی جس
۲۵۰	سے مفاسد عجب و تحقیر و ایذاء پیدا ہوں گے۔
	چہارم: امر فرار اس لئے ہے کہ اس کی
۲۵۰	بدبو وغیرہ سے ایذاء نہ پائیں۔
۲۵۰	

صفحہ	موضوع
۲۳۴	بتیسویں حدیث پر محدثانہ گفتگو
۲۴۷	مختلف احادیث میں تطبیق
۲۴۷	اثبات عدویٰ کی احادیث اس درجہ عالیہ صحت پر نہیں جس پر احادیث نفی ہیں۔
۲۴۹	کوئی حدیث ثبوت عدوی میں نص نہیں۔
۲۴۹	جذامیوں کو تیز نگاہ سے نہ دیکھو، حدیث چہارم کا محمل یہی ہے۔
۲۲۰	حدیث ششم میں کہ ان ثقفی سے فرمایا پلٹ جاؤ تمہاری بیعت ہوگئی، متعدد وجوہ رکھتی ہے۔
۲۴۱	حدیث ہفتم کی توجیہ

صفحہ	موضوع	صفحہ	موضوع
	پنجم: مذہب جمہور کہ دوری و فرار کا حکم وسوسہ ابلیس اور اعتقاد باطل سے بچانے کے لئے ہے۔		
۲۵۳	التوفیق بین الحدیثین	۲۵۱	التوفیق بین الحدیثین

Vol 24 Fatawa Razawiyya

Reconciliation between two authentic Hadiths | 264 | Correct interpretation of the mentioned Hadith and its reconciliation and harmony with other Hadiths and Quranic verses. | 705 If a Companion's statement contradicts a Hadith, the ways of reconciliation. | 292 | A Hadith with a weak chain of transmission. | 712 Research by the author (Mercy of Allah be upon him) that despite different wording, there is no conflict or contradiction in Hadiths related to plague. | 299 | **Fundamental Benefits** | In all the wordings of the Hadiths, there is a severe warning only for fleeing from plague, and there is encouragement and emphasis on staying with patience; there is no restriction of city, neighborhood or vicinity of a city. | 299 | Jurisprudential rulings are based on predominant circumstances. | 76 Inference from the Hadith of the Mother of the Believers, Siddiqa (may Allah be pleased with her). | 299 | Texts are always interpreted according to their apparent meanings. | 102 Essentially, there is no difference between the Hadith of Musnad Ahmad and the Hadith of Bukhari. | 300 | Some weak stories, possible incidents or ambiguous reports cannot be presented against established authentic Marfu' Hadiths. | 115 The benefit of the word 'packet' in the Hadith. | 302 | In Sharia, like strife, the one who calls to strife is also forbidden. | 120 The meaning of those Hadiths which include the prohibition of entering a plague-stricken city or fleeing from there. | 309 | It is not necessary for the prerequisites of a forbidden act to be inherently forbidden themselves. | 121 How is the inference for the permissibility of wailing from the Hadith 'When the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) became heavy'. | 485 | The prohibition of prerequisites is not lost at the time of the outcome. | 121 The meaning of the Hadith 'He who imitates a people is one of them'. | 530 | The pure Sharia issues a ruling based on the likelihood of a cause; after that, it does not look for the actual existence of the cause of the ruling. | 121 Interpretation of a Hadith regarding not killing a snake. | 660 | Jurisprudential rulings take the majority case into account; no separate ruling is made for the rare case. | 121 The inference of the aforementioned Molvi Sahib from Sahih Muslim is not correct. | 704 | While the basis for prohibition is being an instigator, and every instigator is independent, the prohibition of one cannot be dependent on the existence of another. | 122 - | - | Compliance is a voluntary act. | 127

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

दो सही हदीसों में मिलान (ततबीक़) | २६४ | उल्लेखित हदीस की सही व्याख्या और अन्य हदीसों व क़ुरानी आयतों से उसका मिलान व सामंजस्य। | ७०५ सहाबी का कथन हदीस के विरुद्ध हो तो मिलान के तरीके। | २९२ | एक कमज़ोर सनद वाली हदीस। | ७१२ लेखक (रहमहुल्लाह) का शोध कि शब्दों की भिन्नता के बावजूद प्लेग से संबंधित हदीसों में कोई विरोध या विरोधाभास नहीं है। | २९९ | **बुनियादी फ़ायदे** | हदीसों के तमाम शब्दों में केवल प्लेग से भागने पर सख्त चेतावनी है और धैर्य के साथ वहीं रुकने की प्रेरणा और जोर है; इसमें शहर, मुहल्ले या शहर के आस-पास की कोई शर्त नहीं है। | २९९ | फ़िक़्ही अहकाम (न्यायशास्त्रीय आदेश) अधिकांश स्थितियों पर आधारित होते हैं। | ७६ उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की हदीस से तर्क। | २९९ | पाठ (नसूस) अपने प्रत्यक्ष अर्थों पर लिए जाते हैं। | १०२ मुसनद अहमद और बुखारी की हदीस में मूल रूप से कोई अंतर नहीं है। | ३०० | प्रामाणिक मरफू हदीसों के मुकाबले कुछ कमज़ोर कहानियाँ या संभावित घटनाएँ या संदिग्ध बातें पेश नहीं की जा सकतीं। | ११५ हदीस में 'पैकेट' शब्द का लाभ। | ३०२ | शरीअत में फ़ितने (अशांति) की तरह फ़ितने की ओर बुलाने वाला भी हराम है। | १२० उन हदीसों का अर्थ जो प्लेग प्रभावित शहर में जाने या वहां से भागने की मनाही पर आधारित हैं। | ३०९ | हराम की ओर ले जाने वाली चीज़ों का अनिवार्य रूप से स्वयं हराम होना आवश्यक नहीं है। | १२१ हदीस 'जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) भारी हुए' से विलाप की वैधता पर तर्क कैसा है। | ४८५ | हराम की ओर ले जाने वाली चीज़ों की वर्जना उसके परिणाम के समय पर निर्भर नहीं है। | १२१ हदीस 'जिसने किसी कौम की नकल की वह उन्हीं में से है' का अर्थ। | ५३० | पाक शरीअत संभावना (मज़न्ना) पर आदेश लागू करती है, उसके बाद आदेश के मूल कारण के अस्तित्व पर नज़र नहीं रखती। | १२१ सांप को न मारने से संबंधित एक हदीस की व्याख्या। | ६६० | फ़िक़्ही अहकाम में अधिकांश (ग़ालिब) का ध्यान रखा जाता है, दुर्लभ (नादिर) के लिए कोई अलग आदेश नहीं बनाया जाता। | १२१ सहीह मुस्लिम से उक्त मौलवी साहब का तर्क सही नहीं है। | ७०४ | चूँकि वर्जना का कारण उत्प्रेरक (दाई) होना है और इसमें प्रत्येक उत्प्रेरक स्वतंत्र है, इसलिए एक की वर्जना दूसरे के अस्तित्व पर निर्भर नहीं हो सकती। | १२२ - | - | अनुपालन एक स्वैच्छिक कार्य है। | १२७

جلد ۲۴ فتاوی رضویہ

دو صحیح حدیثوں میں تطبیق | ۲۶۴ | حدیث مذکور کی صحیح توجیہ اور دیگر احادیث و آیات قرآنیہ سے اس کی تطبیق و توفیق۔ | ۷۰۵ صحابی کا قول مخالف حدیث ہو تو تطبیق کی صورتیں۔ | ۲۹۲ | ایک ضعیف السند حدیث | ۷۱۲ تحقیق مصنف علیہ الرحمہ کہ الفاظ مختلفہ کے باوجود احادیث متعلقہ طاعون میں کوئی تعارض و تخالف نہیں۔ | ۲۹۹ | فوائد اصولیہ | تمام الفاظ احادیث میں صرف طاعون سے بھاگنے پر وعید شدید ہے اور صبر کر کے ٹھہرے رہنے کی ترغیب و تاکید ہے شہر، محلے یا حوالی شہر کی کوئی قید نہیں۔ | ۲۹۹ | فقہی احکام غالب حالات پر مبنی ہوتے ہیں۔ | ۷۶ حدیث ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے استدلال۔ | ۲۹۹ | نصوص اپنے ظاہری معنی پر محمول ہوا کرتے ہیں۔ | ۱۰۲ حدیث مسند احمد اور حدیث بخاری میں اصلاً اختلاف نہیں۔ | ۳۰۰ | احادیث صحاح مرفوعہ محکمہ کے مقابل بعض ضعیف قصے یا محتمل واقعے یا متشابہ پیش نہیں ہو سکتے۔ | ۱۱۵ حدیث میں لفظ پیکٹ کا فائدہ۔ | ۳۰۲ | شرع میں فتنہ کی طرح داعی فتنہ بھی حرام ہے۔ | ۱۲۰ ان حدیثوں کا مطلب جو طاعونی شہر میں جانے یا وہاں سے بھاگنے کی ممانعت پر مشتمل ہیں۔ | ۳۰۹ | دواعی حرام کے لئے مستلزم حرام ہونا ضروری نہیں۔ | ۱۲۱ حدیث لما ثقل النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے جواز نوحہ پر استدلال کیسا ہے۔ | ۴۸۵ | حرمت دواعی وقت افضاء پر مقود نہیں۔ | ۱۲۱ حدیث من تشبہ بقوم فھو منھم کا مطلب۔ | ۵۳۰ | شرع مطہر مظنہ پر حکم دائر فرماتی ہے اس کے بعد وجود منشاء حکم پر نظر نہیں رکھتی۔ | ۱۲۱ سانپ کو نہ مارنے سے متعلق ایک حدیث کی توجیہ۔ | ۶۶۰ | احکام فقہیہ میں غالب کا لحاظ ہوتا ہے، نادر کے لئے کوئی حکم جدا نہیں کیا جاتا۔ | ۱۲۱ حدیث صحیح مسلم سے مولوی صاحب مذکور کا استدلال درست نہیں۔ | ۷۰۴ | جبکہ منشاء تحریم داعی ہونا ہے اور اس

میں ہر داعی مستقل تو ایک کی تحریم دوسرے کے وجود پر موقوف نہیں ہو سکتی۔ | ۱۲۲ - | - | رعایت فعل اختیاری ہے۔ | ۱۲۷

Volume 24 Fatawa Razawiyya

127: Intent is necessary for a voluntary action. Persistence in a minor sin makes it major, and persistence in a major sin makes it an even more severe major sin. 289 127: Intent without knowledge is impossible. No sin remains minor after persistence. 289 139: Haram will remain haram in all circumstances. The state of opposing divine commands in the sin itself is not like its opposite in Sharia's command of forbidding evil and commanding good. 289 147: Halal and Haram cannot be one. In matters where opinion and ijtihad have no place, the saying of a Companion is evidence of the Prophet's saying. 292 147: If a gathering does not inherently consist of Sharia-forbidden acts, there is no harm in general permission and inclusion in the invitation. Comparing plague to fire and earthquakes is invalid. 306 148: Some matters cause fitna for deficient understandings due to complexity and obscurity. Necessities make prohibited acts permissible. 327 150: Before the authentic, the weak; before the specific, the probable; and against the clear, the ambiguous must be abandoned. Enmity towards a transgressor is actually directed towards his action, not his essence. 327 150: Speech and the narration of an action are not equal. He who is caught between two trials should choose the easier one. 353 150: Forbidden and permissible are not equal. When is silence regarding evil forbidden and when not? 361 158: The states, sayings, deeds, and actions of those overwhelmed by spiritual states are neither reliable nor worthy of following. There is great breadth in conveying meaning. 361 172: When a deputy is on the seat of representation, insulting that court is an insult to the actual sovereign. To cause distress to any Muslim without a Sharia reason is strictly forbidden. 425 172: Celebrating an act that is forbidden is also forbidden. The universal rule of the rights of servants (people). 460 180: Number does not negate excess. As long as the rights-holder does not forgive, no kind of right is waived. 460 206: He who defends against the stronger will, with greater reason, defend against the weaker. A thing has one reality, and some additional matters are its essentials and accidents. 517 225: There is a big difference between 'Laisa bil-qawi' and 'Laisa bi-qawiyyin'. Sharia rulings apply to a thing according to its existence; mere intellectual consideration without valid existence is not the target of Sharia rulings. 517 239: Estimation is not like determination. Fiqh is a discussion regarding the actions of those legally bound; so what cannot come into actuality is outside the subject matter. 517 242: When probability arises, the reasoning fails.

जिल्द २४ फ़तावा रज़विया

१२७: ऐच्छिक कार्य के लिए इरादा (क़स्द) आवश्यक है। सगीरा (छोटे पाप) पर अड़ना उसे कबीरा (बड़ा पाप) बना देता है और कबीरा पर अड़ना उसे और भी कठोर कबीरा बना देता है। २८९ १२७: ज्ञान के बिना इरादा असंभव है। लगातार करने के बाद कोई पाप सगीरा नहीं रहता। २८९ १३९: हराम हर हाल में हराम ही रहेगा। स्वयं पाप में ईश्वरीय आदेशों का विरोध करना उस स्थिति के समान नहीं है जो इसके विपरीत शरीयत के आदेश 'बुराई से रोकना और भलाई का आदेश देना' में है। २८९ १४७: हलाल और हराम एक नहीं हो सकते। जिस मामले में राय और इज्तिहाद का कोई दखल न हो, उसमें सहाबी का कथन पैगंबर के कथन का प्रमाण है। २९२ १४७: यदि कोई सभा स्वयं में शरीयत के विरुद्ध कार्यों पर आधारित न हो, तो सामान्य अनुमति और निमंत्रण में शामिल होने में कोई हर्ज नहीं है। प्लेग को आग और भूकंप पर कयास (तुलना) करना बातिल (अमान्य) है। ३०६ १४८: कुछ बातें जटिलता और गूढ़ता के कारण कम समझ वालों के लिए फ़ितना (भ्रम) का कारण बनती हैं। ज़रूरतें वर्जित कार्यों को मुबाह (वैध) कर देती हैं। ३२७ १५०: सही के सामने ज़ईफ़ (कमज़ोर), मुतअय्यन (निश्चित) के सामने मुहतमल (संभावित) और मोहकम (स्पष्ट) के मुक़ाबले मुतशाबिह (संदिग्ध) त्यागने योग्य है। फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) से द्वेष वास्तव में उसके कार्य की ओर है न कि उसके व्यक्तित्व की ओर। ३२७ १५०: कथन और कार्य के वर्णन में समानता नहीं है। जो व्यक्ति दो मुसीबतों में घिर जाए, उसे आसान विकल्प चुनना चाहिए। ३५३ १५०: हराम और मुबाह समान नहीं हैं। बुराई पर मौन रहना कब हराम है और कब नहीं। ३६१ १५८: आध्यात्मिक अवस्थाओं में डूबे लोगों (मगलूबुल حال) के हालात, कथन, और कार्य न तो विश्वसनीय हैं और न ही अनुसरण योग्य। अर्थ के साथ वर्णन करने में बड़ी गुंजाइश है। ३६१ १७२: जब कोई नायब (प्रतिनिधि) प्रतिनिधित्व की गद्दी पर हो, तो उस दरबार का अपमान वास्तविक सुल्तान का अपमान है। बिना किसी शरई कारण के किसी मुसलमान को दुख देना क़तई हराम है। ४२۵ १७२: जिस कार्य को करना हराम है, उस पर खुशी मनाना भी हराम है। हुक़ूक़-उल-इबाद (मानव अधिकारों) का सार्वभौमिक सिद्धांत। ४६० १८०: संख्या अधिकता की उपेक्षा नहीं करती। जब तक हक़दार माफ़ न करे, तब तक किसी भी प्रकार का हक़ माफ़ नहीं होता। ४६० २०१: जो सबसे शक्तिशाली का बचाव करता है, वह कमज़ोर का बचाव और भी बेहतर तरीके से करेगा। वस्तु के लिए एक वास्तविकता होती है और कुछ अतिरिक्त बातें उसकी अनिवार्यताओं और आकस्मिकताओं में से होती हैं। ५१७ २२५: 'Laisa bil-qawi' और 'Laisa bi-qawi' में बड़ा अंतर है। शरई आदेश वस्तु पर उसके अस्तित्व के अनुसार होते हैं; केवल मानसिक विचार बिना वास्तविक

अस्तित्व के शरई आदेशों का केंद्र नहीं हो सकता। ५१७ २३९: अनुमान निर्धारण के समान नहीं है। फ़िक़्ह जवाबदेह व्यक्तियों के कार्यों से संबंधित चर्चा है; अतः जो वास्तविकता में नहीं आ सकता, वह विषय से बाहर है। ५१४ २४२: जब संभावना उत्पन्न होती है, तो दलील (तर्क) बातिल हो जाती है।

جلد ۲۴ فتاویٰ رضویہ

۱۲۷: فعل اختیاری کو قصد لازم ہے۔ صغیرہ پر اصرار اسے کبیرہ کر دیتا ہے اور کبیرہ پر اصرار اسے سخت تر کبیرہ کر دیتا ہے۔ ۲۸۹ ۱۲۷: قصد بے علم ناممکن ہے۔ کوئی گناہ اصرار کے بعد صغیرہ نہیں رہتا۔ ۲۸۹ ۱۳۹: حرام ہر حال میں حرام رہے گا۔ نفس گناہ میں احکام الہیہ سے معارضہ کی وہ شان نہیں جو برعکس حکم شرع نہی عن المنکر و امر بالمعروف میں ہے۔ ۲۸۹ ۱۴۷: حلال و حرام ایک نہیں ہو سکتے۔ جس امر میں رائے اور اجتہاد کو دخل نہ ہو اس میں قول صحابی دلیل قول رسول ہے۔ ۲۹۲ ۱۴۷: کوئی مجلس اگر فی نفسہ منکرات شرعیہ پر مشتمل نہ ہو تو عموم اذن اور شمول دعوت میں حرج نہیں۔ طاعون کو آگ اور زلزلے پر قیاس کرنا باطل ہے۔ ۳۰۶ ۱۴۸: بعض باتیں بوجہ دقت و غموض افہام قاصرہ پر موجب فتنہ ہوتی ہیں۔ ضرورتیں ممنوع کاموں کو مباح کر دیتی ہیں۔ ۳۲۷ ۱۵۰: صحیح کے سامنے ضعیف، متعین کے سامنے محتمل اور محکم کے مقابل متشابہ واجب الترک ہے۔ فاسق سے بغض حقیقتاً اس کے فعل کی طرف راجع ہے نہ کہ اس کی ذات کی طرف۔ ۳۲۷ ۱۵۰: قول و حکایت فعل میں برابری نہیں۔ جو شخص دو بلاؤں میں گرفتار ہو وہ آسان کو اختیار کرے۔ ۳۵۳ ۱۵۰: محرم و مباح مساوی نہیں۔ سکوت علی المنکر کب حرام ہے اور کب نہیں۔ ۳۶۱ ۱۵۸: مغلوبین حال کے احوال، اقوال، افعال اور اعمال نہ قابل استناد ہیں نہ لائق تقلید۔ نقل بالمعنی میں وسعت عظیم ہے۔ ۳۶۱ ۱۷۲: نائب جب مسند نیابت پر ہو تو اس دربار کی توہین اصل سلطان کی توہین ہے۔ بلاوجہ شرعی کسی مسلمان کو تکلیف دینا قطعی حرام ہے۔ ۴۲۵ ۱۷۲: جس کام کا کرنا حرام اس پر خوشی منانا بھی حرام ہے۔ حقوق العباد کا ضابطہ کلیہ ۴۶۰ ۱۸۰: عدد نفی زیادت نہیں۔ صاحب حق جب تک معاف نہ کرے اس وقت تک کسی قسم کا حق معاف نہیں ہوتا۔ ۴۶۰ ۲۰۶: جو اقویٰ کی مدافعت کرے وہ اضعف

کی بدرجہ اولیٰ کرے گا۔ شیئ کے لئے ایک حقیقت ہوتی ہے اور کچھ امور زائدہ کو لوازم و عوارض ہوتے ہیں۔ ۵۱۷ ۲۲۵: لیس بالقوی اور لیس بقوی میں بڑا فرق ہے۔ احکام شرعیہ شیئ پر بحسب وجود ہوتے ہیں مجرد اعتبار عقلی نا صالح وجود مطمح احکام شرع نہیں ہوتا۔ ۵۱۷ ۲۳۹: تخمین مثل تعیین نہیں۔ فقہ افعال مکلفین سے بحث ہے تو جو فعلیت میں نہیں آ سکتا موضوع سے خارج ہے۔ ۵۱۷ ۲۴۲: اذا جاء الاحتمال بطل الاستدلال

Fatawa Razawiya, Volume 24

517 | Distinction in legal rulings based on distinction in perspectives is only possible where those perspectives are real, separable, and sequential, such that a thing is found with one at one time and with another at another time. | 589 | According to the Shaikhs, the reason for the dislike (karahat) in prayer with a forbidden picture and the ruling of prohibition is resemblance to idol worship.

517 | For those appendages that are necessary for existence, there will be no separate ruling for the essence apart from their ruling. | 589 | The reason for the prohibition of having a picture on a worshiper's clothes is resemblance to one carrying an idol.

517 | Separation from a necessary concomitant is impossible. | 593 | An indefinite noun in a negative context denotes generality.

517 | It is impossible to ignore the pillars of reality that are part of the essence. | 594 | The Hadith of Jibreel is specific to some.

517 | In conventional essence, being a pillar is subject to convention. | 605 | Every form of veneration of a form is a form of resemblance to worship of the image.

518 | A permissible or good thing does not become foul due to accidental foulness; rather, in its own essence, it remains on its original ruling. | 607 | Regarding whatever the Pure Sharia has forbidden veneration of and made humiliation obligatory, any kind of veneration or avoidance of humiliation is forbidden and impermissible.

533 | Resemblance to the People of the Book is not disliked (makruh) in everything. | 607 | Where halal and haram combine, haram prevails.

535 | Violation of custom and convention is disliked and causes notoriety. | 607 | Mixing of good and evil deeds is forbidden, such as kissing an idol and striking it with shoes.

567 | A thing is prohibited or prescribed according to its purposes. | 608 | Insulting religious venerated objects is absolutely forbidden, even if accompanied by a thousand venerations.

585 | Not everything that is incompatible with life negates dislike, just as not everything that is incompatible with life necessarily negates dislike. | 610 | That which does not affect dislike in prayer, its continuation is not disliked.

585 | It is not the case that everything that negates humanity negates animality. | 719 | Every obligation is according to capability, and every duty is conditional upon ability.

587 | Life is not present in a picture in any form; it encompasses all organs essential for life in no state. | 587 | Jurisprudential Benefits (Fawaid Fiqhiyya)

588 | The basis of the ruling depends on the depiction and the viewer's understanding, whether they consider it a picture of a living being or a dead one; the ruling does not depend on actual life or death. | 747 | Lawful decoration with lawful intent is not absolutely wasteful.

फतावा रज़विया, खंड 24

517 | दृष्टिकोण में अंतर के आधार पर कानूनी निर्णयों में अंतर केवल वहां संभव है जहां वे दृष्टिकोण वास्तविक, पृथक्करण योग्य और क्रमिक हों, जैसे कि कोई वस्तु कभी एक के साथ पाई जाए कभी दूसरे के साथ। | 589 | शेखों के अनुसार, वर्जित चित्र के साथ नमाज़ में नापसंदगी (कराहत) और निषेध के हुक्म का कारण मूर्ति पूजा से समानता है।

517 | जो अतिरिक्त चीजें अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं, उनके हुक्म से अलग असलियत के लिए कोई हुक्म नहीं होगा। | 589 | नमाज़ी के कपड़ों पर चित्र होने के निषेध का कारण मूर्ति धारण करने वाले के समान होना है।

517 | किसी अनिवार्य सहवर्ती से अलगाव असंभव है। | 593 | नकारात्मक संदर्भ में एक अनिश्चित संज्ञा व्यापकता को दर्शाती है।

517 | वास्तविकता के उन स्तंभों की अनदेखी करना असंभव है जो सार का हिस्सा हैं। | 594 | हदीस-ए-जिब्राईल कुछ के लिए विशिष्ट है।

517 | प्रथागत सार में, स्तंभ होना प्रथा के अधीन है। | 605 | सम्मान का हर रूप छवि की पूजा के सदृश है।

518 | आकस्मिक अशुद्धियों के कारण कोई जायज़ या अच्छी चीज़ बुरी नहीं हो जाती, बल्कि वह अपने मूल स्वरूप में अपने मूल हुक्म पर बनी रहती है। | 607 | शरीअत-ए-मुतहरा ने जिस चीज़ के सम्मान को हराम और अपमान को वाजिब किया है, उसका किसी भी प्रकार से सम्मान और अपमान से बचना हराम और नाजायज़ है।

533 | हर चीज़ में अहले किताब की समानता मकरूह नहीं है। | 607 | जहाँ हलाल और हराम मिलते हैं, वहाँ हराम प्रबल होता है।

535 | रीति-रिवाजों और प्रथाओं का उल्लंघन मकरूह है और बदनामी का कारण बनता है। | 607 | अच्छे और बुरे कार्यों का मिश्रण वर्जित है जैसे मूर्ति को चूमना और जूते मारना।

567 | कोई वस्तु अपने उद्देश्यों के आधार पर वर्जित या अनुमेय होती है। | 608 | धार्मिक आदरणीय वस्तुओं का अपमान करना पूर्णतः हराम है, भले ही उसके साथ हज़ारों सम्मान क्यों न हों।

585 | जीवन के साथ जो कुछ भी असंगत है वह कराहत (नापसंदगी) की नफी (अस्वीकार) नहीं करता, जैसे जीवन के साथ हर असंगत चीज़ का कराहत की नफी करना लाज़िम नहीं। | 610 | जो चीज़ नमाज़ में कराहत को प्रभावित नहीं करती, उसका बने रहना मकरूह नहीं है।

585 | ऐसा नहीं है कि जो कुछ मानवता को नकारता है वह पशुता को भी नकार देता है। | 719 | हर फ़र्ज़ सामर्थ्य के अनुसार है और हर कर्त्तव्य शक्ति की शर्त पर है।

587 | चित्र में जीवन किसी भी रूप में नहीं होता, वह किसी भी स्थिति में जीवन के आधार वाले सभी अंगों को कवर नहीं करता। | 587 | फ़िक़्ही लाभ (Fawaid Fiqhiyya)

588 | हुक्म का आधार चित्रण और देखने वाले की समझ पर है कि वह इसे जीवित का चित्र मानता है या मृत का; वास्तविक जीवन और मृत्यु पर हुक्म का आधार नहीं है। | 747 | जायज़ इरादे से जायज़ सजावट बिल्कुल भी फिजूलखर्ची नहीं है।

فتاوی رضویہ، جلد ۲۴

۵۱۷ | تغائر اعتبار سے تغائر احکام وہیں ہو سکتا ہے جہاں وہ اعتبارات واقعیہ مفارقہ متعاقبہ ہوں کہ شیئ کبھی ایک کے ساتھ پائی جائے کبھی دوسرے کے ساتھ | ۵۸۹ | تصویر ممنوع میں کراہت نماز و حکم ممانعت کی علت عند المشائخ مشابہت عبادت صنم ہے۔

۵۱۷ | جوزوائد لوازم الوجود ہوں ان کے حکم سے جدا کوئی حکم حقیقت کے لئے نہ ہوگا۔ | ۵۸۹ | نمازی کے کپڑوں میں تصویر ہونے کی ممانعت کی علت حامل صنم سے مشابہت ہے۔

۵۱۷ | لازم سے انفکاک محال ہے۔ | ۵۹۳ | نکرہ سیاق نفی میں عام ہوتا ہے۔

۵۱۷ | ارکان حقیقت کہ ماہیت میں داخل ہوں ان سے قطع نظر نہ ممکن ہے۔ | ۵۹۴ | حدیث جبرائیل مخصوص البعض ہے۔

۵۱۷ | ماہیت عرفیہ میں رکنیت تابع عرف ہے۔ | ۶۰۵ | ہر تعظیم صورت تشبہ عبادت صورت ہے۔

۵۱۸ | عوارض قبیحہ سے نفس شیئ مباح یا حسن قبیح نہیں ہو جاتی بلکہ وہ اپنی حد ذات میں اپنے حکم اصلی پر رہتی ہے۔ | ۶۰۷ | شرع مطہر نے جس شیئ کی تعظیم حرام اور توہین واجب کی ہے اس کی من وجہ تعظیم اور من وجہ توہین حرام و ناجائز ہے۔

۵۳۳ | ہر چیز میں اہل کتاب سے مشابہت مکروہ نہیں۔ | ۶۰۷ | جہاں حلال و حرام جمع ہوں وہاں حرام غالب ہوتا ہے۔

۵۳۵ | عادت و عرف کی خلاف ورزی مکروہ و باعث شہرت ہے۔ | ۶۰۷ | اعمال صالحہ و سیئہ کا اختلاط ممنوع ہے جیسے بت کو چومنا اور جوتے مارنا۔

۵۶۷ | شے اپنے مقاصد کے اعتبار سے ممنوع یا مشروع ہوتی ہے۔ | ۶۰۸ | معظمات دینی کی توہین مطلقاً حرام ہے اگر چہ اس کے ساتھ ہزار تعظیمیں بھی ہوں۔

۵۸۵ | کل مالاینا فی الحیاۃ لاینفی الکراھۃ کوکل ماینافی الحیاۃ ینفی الکراھۃ لازم نہیں۔ | ۶۱۰ | مالایؤثر کراھۃ فی الصلوۃ لایکرہ بقاؤہ۔

۵۸۵ | لیس ان کل ماینافی الانسانیۃ ینفی الحیوانیۃ۔ | ۷۱۹ | ہر فرض بقدر قدرت ہے اور ہر تکلیف بشرط استطاعت۔

۵۸۷ | تصویر میں حیات کسی صورت میں نہیں ہوتی وہ کسی حال میں جملہ اعضائے مدار حیات کا استیعاب کرتی ہے۔ | ۵۸۷ | فوائد فقہیہ

۵۸۸ | مدار حکم حکایت و فہم ناظر پر ہے کہ وہ اس کو زندہ کی تصویر قرار دیتا ہے یا مردہ کی موت و حیات حقیقی پر مدار حکم نہیں۔ | ۷۴۷ | زینت مباحہ بنیت مباحہ مطلقاً اسراف نہیں۔

Fatawa Rizvia, Volume 24

[Column 1] - Extravagance (israf) is forbidden. (147) - Adornment is permissible if it is not in an ugly manner or with an ugly intention. (147) - Some matters differ in being good or bad due to different objectives or varying conditions. (147) - Which type of spiritual audition (sama') is permissible. (148) - Sayings of the noble Imams and great jurists regarding the Shari'ah ruling on ecstasy (wajd). (152) - Ecstasy in solitude and seclusion with a praiseworthy intent is a matter of disagreement among the noble Imams. (153) - Eradicating an evil act to the best of one's ability is obligatory. (167) - Listening to every sermon (khutbah) is obligatory and making noise during it is forbidden. (170) - A sermon at the completion of the Quran is recommended. (170) - Fleeing from a city or home is not forbidden in itself, rather fleeing because of plague is forbidden. (301) - Not only plague, but fleeing from any epidemic disease is forbidden. (304) - Backbiting is forbidden, but there are exceptional places. (358) - The wealth of prostitutes is of five types; details and rulings of all five. (365) - The more specific something becomes, the right becomes more severe and emphasized. (451) - Definition of the right of the servant (haqq-ul-abd). (459) - Two types of rights of servants: debts (duyun) and injustices (mazalim), and sometimes both are called consequences (taba'at). (459) - Definition of a Sea Martyr: a believer who drowns while performing Jihad in the sea solely for the pleasure of Allah Almighty. (468)

[Column 2] - Definition of the martyr of patience (shahid-e-sabr). (469) - Prayer (salah) in Shari'ah terminology is a collection of specific pillars with known forms. (517) - Resemblance (tashabbuh) is of two types: binding (altizami) and incidental (luzumi). (530) - There are three scenarios of intention in binding resemblance. (530) - Smoking hookah is forbidden in one case, disliked in another, and permissible in a third. (553) - There are three types of hookahs. (554) - A picture refers specifically to the face. (568) - If a picture is headless or its head is cut off, there is no dislike (karahat). (579) - Other organs are not in the meaning of face and head, even if they are similar in being vital for life. (579) - The face is the essence in a picture of a living soul. (579) - There is no doubt that only the face is called a picture, and general purposes of a picture are achieved through the face. (579) - A headless picture is not actually a picture at all. (580) - Reconciliation and removal of contradiction between two statements of the author of Hidaya. (582) - Forms of degrading a picture have been kept permissible. (604) - Why did Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) declare pictures on a prayer mat to be absolutely disliked? (608) - Resemblance is of two types: (1) General (2) Specific. (608)

फतावा रज़विया, जिल्द २४

[कॉलम १] - इसराफ़ (फ़ुज़ूलखर्ची) हराम है। (१४७) - ज़ीनत (सजावट), अगर भद्दे तरीक़े या बुरी नीयत से न हो तो हलाल है। (१४७) - कुछ बातें अलग-अलग उद्देश्यों या स्थितियों की विविधता के कारण अच्छाई या बुराई में भिन्न हो जाती हैं। (१४७) - कौन सा समाअ (अध्यात्मिक गायन) हलाल है। (१४८) - वज्द (समाधि) के शरीअत के हुक्म के बारे में नेक इमामों और महान फ़क़ीहों के कथन। (१५२) - तन्हाई और एकांत में अच्छी नीयत के साथ वज्द नेक इमामों के बीच मतभेद का विषय है। (१५३) - बुराई को अपनी शक्ति भर रोकना फ़र्ज़ है। (१६७) - हर खुतबा सुनना फ़र्ज़ है और उसमें शोर मचाना हराम है। (१७०) - क़ुरआन ख़त्म होने पर खुतबा पढ़ना मुस्तहब (पसंदीदा) है। (१७०) - शहर या घर से भागना अपने आप में प्रतिबंधित नहीं है, बल्कि प्लेग के कारण भागना मना है। (३०१) - न केवल प्लेग, बल्कि किसी भी महामारी से भागना मना है। (३०४) - गीबत (पीठ पीछे बुराई करना) हराम है लेकिन इसके अपवाद के स्थान भी हैं। (३५८) - वेश्याओं का धन पाँच प्रकार का होता है, पाँचों का विवरण और उनके हुक्म। (३६५) - जैसे-जैसे विशेषता बढ़ती जाती है, हक़ (अधिकार) अधिक गंभीर और दृढ़ होता जाता है। (४५१) - हक़-उल-अब्द (बन्दों के अधिकार) की परिभाषा। (४५९) - हुक़ूक़-उल-इबाद की दो किस्में: देय ऋण (दियून) और ज़ुल्म (मज़ालिम), और कभी-कभी दोनों को तबआत (परिणाम) कहा जाता है। (४५९) - शहीद-ए-बह्र (समुद्र का शहीद) की परिभाषा: वह मोमिन जो विशेष रूप से अल्लाह तआला की रज़ा के लिए समुद्र में जिहाद करते हुए डूब कर शहीद हो जाए। (४६८)

[कॉलम २] - शहीद-ए-सब्र की परिभाषा। (४६९) - नमाज़ शरीअत की शब्दावली में ज्ञात अवस्थाओं के साथ विशिष्ट अरकान (स्तम्भों) का एक संग्रह है। (५१७) - तशब्बुह (समानता/अनुकरण) दो प्रकार के होते हैं: इल्तिज़ामी और लुज़ूमी। (५३०) - इल्तिज़ामी तशब्बुह में नीयत की तीन स्थितियाँ हैं। (५३०) - हुक़्क़ा पीना एक स्थिति में हराम, एक में मकरूह (नापसंद) और एक में मुबाह (जायज़) है। (५५३) - हुक़्क़ा तीन प्रकार के होते हैं। (५५४) - तस्वीर सिर्फ़ चेहरे का नाम है। (५६८) - यदि तस्वीर बिना सिर की हो या उसका सिर काट दिया गया हो तो उसमें कोई कराहत (बुराई) नहीं है। (५७९) - अन्य अंग चेहरा और सिर के अर्थ में नहीं आते, भले ही वे जीवन का आधार होने में समान हों। (५७९) - जानदार की तस्वीर में चेहरा ही असल (मुख्य) है। (५७९) - इसमें कोई शक नहीं कि केवल चेहरे को ही तस्वीर कहते हैं और तस्वीर के सामान्य उद्देश्य चेहरे से ही प्राप्त होते हैं। (५७९) - बिना सिर वाली तस्वीर वास्तव में तस्वीर ही नहीं है। (५८०) - साहिब-ए-हिदाया के दो कथनों के बीच सामंजस्य और

विरोधाभास का समाधान। (५८२) - तस्वीर का अपमान करने वाली स्थितियों को जायज़ रखा गया है। (६०४) - इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) ने नमाज़ की चटाई (जानमाज़) पर तस्वीर होने को मुतलक़न (पूरी तरह) मकरूह क्यों क़रार दिया? (६०८) - तशब्बुह दो प्रकार के होते हैं: (१) आम (२) ख़ास। (६०८)

पेज ६४ का ७२०

[کالم ۱] - اسراف حرام ہے۔ (۱۴۷) - زینت، برو جہ قبح یا بنیت قبیحہ نہ ہو تو حلال ہے۔ (۱۴۷) - بعض باتیں اختلاف مقاصد یا تنوع احوال سے حسن و قبح میں مختلف ہو جاتی ہیں۔ (۱۴۷) - کون سا سماع حلال ہے۔ (۱۴۸) - وجد کے حکم شرعی کے بارے میں ائمہ کرام و فقہاء عظام کے ارشادات۔ (۱۵۲) - تنہائی و خلوت میں بنیت محمودہ وجد ائمہ کرام میں مختلف فیہ ہے۔ (۱۵۳) - ازالہ منکر بقدر قدرت فرض ہے۔ (۱۶۷) - ہر خطبہ کو سننا فرض اور اس میں غل کرنا حرام ہے۔ (۱۷۰) - خطبہ ختم قرآن مستحب ہے۔ (۱۷۰) - شہر یا گھر سے بھاگنا لذاتہ ممنوع نہیں بلکہ طاعون کی وجہ سے بھاگنا منع ہے۔ (۳۰۱) - صرف طاعون ہی نہیں ہر وبائی مرض سے بھاگنا منع ہے۔ (۳۰۴) - غیبت حرام ہے مگر مواضع استثناء ہیں۔ (۳۵۸) - رنڈیوں کے مال پانچ قسم پر ہیں، پانچوں کی تفصیل اور احکام۔ (۳۶۵) - جس قدر خصوص زیادہ ہوتا جاتا ہے حق اشد و اکد ہوتا جاتا ہے۔ (۴۵۱) - حق العبد کی تعریف۔ (۴۵۹) - حقوق العباد کی دو قسمیں دیون اور مظالم، اور کبھی دونوں کو تبعات کہا جاتا ہے۔ (۴۵۹) - شہید بحر کی تعریف، وہ مومن جو خاص اللہ تعالیٰ کی رضا کی خاطر سمند میں جہاد کرتے ہوئے ڈوب کر شہید ہو جائے۔ (۴۶۸)

[کالم ۲] - شہید صبر کی تعریف (۴۶۹) - نماز عرف شرع میں مجموع ارکان مخصوصہ بہیئات معلومہ کا نام ہے۔ (۵۱۷) - تشبہ دو ۲ وجہ پر ہے: التزامی و لزومی۔ (۵۳۰) - تشبہ التزامی میں قصد کی تین صورتیں ہیں۔ (۵۳۰) - حقہ پینا ایک صورت میں حرام، ایک میں مکروہ اور ایک میں مباح ہے۔ (۵۵۳) - حقہ تین قسم ہیں۔ (۵۵۴) - تصویر فقط چہرہ کا نام ہے۔ (۵۶۸) - اگر تصویر بے سر کی ہو یا اس کا سر کاٹ دیا جائے تو کراہت نہیں۔ (۵۷۹) - دیگر اعضاء وجہ ور اس کے معنی میں نہیں اگرچہ مدار حیات ہونے میں مماثل ہوں۔ (۵۷۹) - چہرہ ہی تصویر ذی روح میں

اصل ہے۔ (۵۷۹) - شک نہیں کہ فقط چہرہ کو تصویر کہتے ہیں اور عامہ مقاصد تصویر چہرہ سے حاصل ہوتے ہیں۔ (۵۷۹) - مقطوع الراس تصویر دراصل تصویر ہے ہی نہیں۔ (۵۸۰) - صاحب ہدایہ کے دو کلاموں میں تطبیق اور تدافع کا دفعیہ۔ (۵۸۲) - اہانت تصویر والی صورتیں جائز رکھی گئی ہیں۔ (۶۰۴) - امام محمد علیہ الرحمہ نے جانماز میں تصویر کو ہونا مطلقا مکروہ کیوں قرار دیا۔ (۶۰۸) - تشبہ دو ۲ قسم ہے: (۱) عام (۲) خاص (۶۰۸)

Fatawa Rizwia, Volume 24

Page	Topic (Right Column)	Page	Topic (Left Column)
610	The dislike of prayer is not limited to specific resemblance.	207	Hazrat Shah Abu Saeed Al-Khair's answer to the denier of the effect of amulets.
	Asma-ul-Rijal (Biographies of Narrators)	221	Hazrat Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with him) ate together with a companion named Muayqib who had leprosy.
222	Mufaddal bin Fadalah Basri is weak, and Mufaddal bin Fadalah Masri is more reliable and famous than him.	222	Hazrat Muayqib was treated by two Yemeni physicians on the orders of Hazrat Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with him).
239	Hushaym and Shareek are Mudallis (one who conceals defects in a chain of narration).	223	Hazrat Siddique Akbar (may Allah be pleased with him) seated a leper near him and ate with him.
307	Ali bin Zaid bin Jad'aan was not among the reliable scholars; some have called him Shii and Rafidhi.	223	The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) took the hand of a leper, placed it with his own in a bowl, and said, "Reliance on Allah and trust in Allah."
		293	Commander of the Faithful Farooq-e-Azam received news on the way to Syria that there was a plague there. He first consulted the Muhajireen, then the Ansar, then the elders of the Quraish. Everyone gave their opinion. Then Abdur Rahman ibn Auf (may Allah be pleased with him) presented a Hadith of the Prophet (peace and blessings be upon him), and accordingly, it was acted upon.
	History and Memoirs		
85	Placing the pulpit in the Prophet's Mosque for Hassan bin Thabit (may	297	Hazrat Farooq-e-Azam cleared himself from the accusation of fleeing from the plague.

Page	Topic (Right Column)	Page	Topic (Left Column)
	Allah be pleased with him) and his recitation of Na'at.		
147	A strange story.	305	When Siddique Akbar (may Allah be pleased with him) would send an army towards Syria, he would take a pledge on two things equally: first, not to flee from the spears of enemies, and second, not to flee from the plague.
148	The sayings of Hazrat Khawaja Mahboob-e-Ilahi (may Allah have mercy on him) regarding listening to music with instruments.	328	A question regarding the Chandail community who perform acts like Hindus.
191	The author of the treatise 'Sakan-ul-Shujoon' is unknown.	349	Abdullah ibn Umar (may Allah be pleased with both of them) did not speak to one of his sons for his whole life.
202	The incident of Hazrat Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with him) not going to Syria due to the plague.	349	Hazrat Molvi Ma'navi (may his secret be sanctified) did not attend the funeral of one of his sons.

फ़तावा रिज़विया, खंड 24

पृष्ठ	विषय (दायां कॉलम)	पृष्ठ	विषय (बायां कॉलम)
610	नमाज़ की नापसंदगी केवल विशेष समानता तक सीमित नहीं है।	207	ताबीज़ के प्रभाव के इनकार करने वाले को हज़रत शाह अबू सईद अल-खैर का उत्तर।
	अस्मा-उर-रिजाल (वर्णनकर्ताओं की जीवनी)	221	हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने मुअयकीब नाम के एक सहाबी को, जो कोढ़ी थे, अपने साथ खाना खिलाया।
222	मुफ़ज़्ज़ल बिन फ़ज़ाला बसरी कमज़ोर है, और मुफ़ज़्ज़ल बिन फ़ज़ाला मसरी उससे अधिक विश्वसनीय और प्रसिद्ध है।	222	हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हज़रत मुअयकीब का इलाज दो यमनी हकीमों से कराया।
239	हुशैम और शरीक मुदल्लिस हैं।	223	हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने एक कोढ़ी को अपने पास बिठाया और उसके साथ खाना खाया।
307	अली बिन ज़ैद बिन जदआन विश्वसनीय विद्वानों में से नहीं थे; कुछ लोगों ने उन्हें शिया और राफ़िज़ी कहा है।	223	नबी-ए-अक़्दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एक कोढ़ी का हाथ पकड़कर अपने साथ प्याले में रखा और फ़रमाया, "अल्लाह पर भरोसा और अल्लाह पर विश्वास है।"
	इतिहास और संस्मरण	293	अमीर-उल-मोमिनीन फ़ारूक़-ए-आज़म को सीरिया के रास्ते में खबर मिली कि वहां प्लेग है। आपने पहले मुहाजिरीन, फिर अंसार, फिर कुरैश के बुजुर्गों से सलाह ली। सबने अपनी-अपनी राय दी। फिर अब्दुर रहमान इब्न औफ़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की एक हदीस पेश की, जिसके अनुसार अमल किया गया।

पृष्ठ	विषय (दायां कॉलम)	पृष्ठ	विषय (बायां कॉलम)
85	हसन बिन साबित (रज़ियल्लाहु अन्हु) के लिए मस्जिद-ए-अक़्दस में मिम्बर का बिछाया जाना और नात सुनाना।	297	हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म ने प्लेग से भागने के आरोप से अपनी बेगुनाही ज़ाहिर की।
147	एक अजीब कहानी।	305	जब सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) सीरिया की ओर कोई सेना भेजते, तो वे दो बातों पर समान रूप से बैअत (शपथ) लेते: पहली, दुश्मनों के नेज़ों से न भागना, और दूसरी, प्लेग से न भागना।
148	वाद्ययंत्रों के साथ संगीत सुनने के संबंध में हज़रत ख्वाजा महबूब-ए-इलाही (रहमतुल्लाहि अलैहि) के कथन।	328	चंडैल जाति से संबंधित प्रश्न जो हिंदुओं जैसे कार्य करते हैं।
191	ग्रंथ 'सकन-उल-शुजुन' का लेखक अज्ञात है।	349	अब्दुल्लाह इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने अपने एक बेटे से जीवन भर बात नहीं की।
202	प्लेग के कारण हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) के सीरिया न जाने की घटना।	349	हज़रत मौलवी मानवी (क़ुद्दिस सिर्रहु) ने अपने एक बेटे के जनाज़े में शिरकत नहीं की।

صفحہ	عنوان (دایاں کالم)	صفحہ	عنوان (بایاں کالم)
۶۱۰	کراہتِ نماز تشبہِ خاص میں منحصر نہیں ۔	۲۰۷	اثر تعویذ کے منکر کو حضرت شاہ ابو سعید الخیر کا جواب۔
	اسماء الرجال	۲۲۱	حضرت فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے معیقیب نامی صحابی کو جو جذامی تھے اپنے ساتھ کھانا کھلایا۔
	مفضل بن فضالہ بصری		
۲۲۲	ضعیف ہے اور مفضل بن فضالہ مصری اس سے اوثق و اشہر ہے ۔	۲۲۲	حضرت معیقیب کا جناب فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے دو یمنی اطباء سے علاج کرایا۔
۲۳۹	ہشیم اور شریک مدلس ہیں۔	۲۲۳	حضرت صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے جذامی کو اپنے پاس بٹھایا اور اس کے ساتھ آپ نے کھانا کھایا۔
	علی بن زید بن جدعان		
۳۰۷	مستند علماء میں سے نہ تھا بعض نے اس کو شیعی و رافضی کہا ہے ۔	۲۲۳	نبی اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ایک جذامی کا ہاتھ پکڑ کر اپنے ساتھ پیالے میں رکھا اور فرمایا اللہ تعالیٰ پر تکیہ اور اللہ تعالیٰ پر بھروسہ ہے۔
	تاریخ و تذکرہ	۲۹۳	

صفحہ	عنوان (دایاں کالم)	صفحہ	عنوان (بایاں کالم)
			امیر المومنین فاروق اعظم کو راہِ شام میں خبر ملی کہ وہاں طاعون ہے، آپ نے پہلے مہاجرین پھر انصار پھر مشائخِ قریش سے مشورہ کیا، سب نے اپنی اپنی رائے دی، پھر عبدالرحمن ابن عوف رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے سرکار دو عالم علیہ الصلوٰۃ والسلام کی حدیث پیش کی، چنانچہ اسی پر عمل ہوا۔
۸۵	حسان بن ثابت رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے لئے مسجدِ اقدس میں منبر کا بچھایا جانا اور نعت کا سنانا۔	۲۹۷	حضرت فاروق اعظم نے طاعون سے بھاگنے کی تہمت سے براءت فرمائی۔
۱۴۷	ایک عجیب حکایت۔	۳۰۵	صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ جب کوئی لشکر شام کی طرف بھیجتے تو دو باتوں پر یکساں بیعت لیتے ، ایک یہ کہ دشمنوں کے نیزوں سے نہ بھاگنا اور دوسرا یہ کہ طاعون سے نہ بھاگنا۔
۱۴۸	سماعِ با مزامیر کے بارے میں حضرت خواجہ محبوبِ الٰہی علیہ الرحمہ کے فرمودات۔	۳۲۸	چنڈیل قوم سے متعلق سوال جو ہندوؤں جیسے افعال کرتے ہیں۔

صفحہ	عنوان (دایاں کالم)	صفحہ	عنوان (بایاں کالم)
۱۹۱	رسالہ سکن الشجون کا مصنف مجہول ہے۔	۳۴۹	عبداللہ ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے اپنے ایک بیٹے سے عمر بھر کلام نہ فرمایا۔
۲۰۲	حضرت فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا طاعون کے سبب شام نہ جانے کا واقعہ۔	۳۴۹	حضرت مولوی معنوی قدس سرہ نے اپنے ایک بیٹے کے جنازہ میں شرکت نہ کی۔

Fatawa Rizvia - Volume 24

Page Number	Topic
518	Mother of the Believers Siddiqah (may Allah be pleased with her) gave a piece [of food] to a beggar and fed another with honor.
378	Sultan Timur initiated the practice of Taziadari.
519	The tongue of the one who displeased their mother could not recite the Kalimah (testimony of faith) at the time of death.
404	The precedent for Tazia is the beginning of idol worship in previous nations.
519	Awam bin Haushab was among the Imams of the Tabi'un; he passed away in 128 AH.
405	Wadd, Suwa', Nasr, Yaghuth, and Ya'uq are actually the names of righteous people.
530	A lesson-oriented incident regarding someone disrespectful to their mother.
405	The noble Companions changed their attire to work in the guise of Romans.
530	An incident of a righteous person who presented four thousand dinars as a gesture of gratitude to the teacher who taught his son Surah Al-Fatihah.
419	During the reign of Sultan Salahuddin Ayyubi, two scholars toured disguised as priests.
553	Mention of Hazrat Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with him) reading the Torah in the presence of the Messenger of Allah and the displeasure of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him).
438	Eating betel leaf (Paan) is permissible and has been prevalent among Muslims without any objection since the time of Sheikh Fariduddin Ganj-e-Shakar and Sheikh Nizamuddin (may Allah have mercy on them).
556	The story of the deer.
491	Many Sufi saints (Auliya-e-Kiram) consumed betel leaf.
573	Inquiry regarding incorrect stories attributed to the discourses (Malfuzat) of Syed Abdul Razzaq Hanswi.
497	

Page Number	Topic
	Idol worship began in the world in this way: pictures of righteous people were made and kept in homes and mosques out of love for them, and they were considered an aid to the pleasure of worship; then gradually they became the objects of worship themselves.
573	An incorrect story about the author (mercy be upon him) participating in a Tazia procession.
497	Wadd, Suwa', Yaghuth, Ya'uq, and Nasr are the names of the righteous people from the nation of Noah, whom people later began to worship as idols after being misled by Satan.
574	The marriage and henna ceremony of Hazrat Qasim in the field of Karbala is not proven.
501	The first non-God entity to be worshipped on earth was the idol named Wadd.
577	What kind of picture Sultan Timur kept of the radiant shrine (Rauza-e-Anwar) of Imam Hussain (may Allah be pleased with him).
502	Which religious luminaries' pictures were inscribed on the walls of the Kaaba by the pagans of Makkah?
577	After the martyrdom of Imam Hussain (may Allah be pleased with him), Mai Shahr Bano went to Medina.
510	On the occasion of the Conquest of Makkah, some pictures were erased by Hazrat Farooq-e-Azam on the order of the Holy Prophet, and some the Prophet himself erased with his own blessed hands.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 24

पृष्ठ संख्या	विषय
518	उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने एक याचक को टुकड़ा दिया और एक को ससम्मान भोजन कराया।
378	ताज़ियादारी की शुरुआत सुल्तान तैमूर ने की।
519	माँ को नाराज़ करने वाले की ज़ुबान पर मौत के वक्त कलमा जारी नहीं हुआ।
404	ताज़िया का उदाहरण पिछली उम्मतों में बुत-परस्ती (मूर्ति पूजा) की शुरुआत है।
519	अवाम बिन हौशब तब-ए-ताबेईन के इमामों में से थे, उनका इंतकाल 128 हिजरी में हुआ।
405	वद, सुवाअ, नस्र, यगूस और यऊक़ वास्तव में नेक लोगों (सालेहीन) के नाम हैं।
530	माँ के गुस्ताख़ का सबक-आमोज़ वाकया।
405	सहाबा किराम ने रोमियों के वेश में कपड़े बदलकर काम किया।
530	एक नेक शख्स का वाकया जिसने अपने बेटे को सूरह फ़ातिहा सिखाने वाले शिक्षक को शुक्रिया के तौर पर चार हज़ार दीनार पेश किए।
419	सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के ज़माने में दो आलिमों ने पादरियों का रूप बनाकर दौरा किया।
553	हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) द्वारा दरबार-ए-रिसालत में तौरात पढ़ने और उस पर हुज़ूर अनवर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नाराज़गी का ज़िक्र।
438	पान जायज़ है और शेख फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर और शेख निज़ामुद्दीन (रहमतुल्लाह अलैहिमा) के ज़माने से मुसलमानों में बिना किसी ऐतराज़ के प्रचलित है।
556	हिरनी का किस्सा।
491	कई औलिया-ए-किराम ने पान खाया।
573	सैयद अब्दुल रज़्ज़ाक हांसवी की मल्फ़ूज़ात (कथनों) की ओर मनसूब (जुड़े) गलत किस्सों के बारे में पूछताछ।
497	

पृष्ठ संख्या	विषय
	दुनिया में मूर्ति पूजा की शुरुआत इस तरह हुई कि नेक लोगों की मोहब्बत में उनकी तस्वीरें बनाकर घरों और मस्जिदों में रखी गईं और उन्हें इबादत के आनंद में सहायक समझा गया, फिर धीरे-धीरे वे ही पूज्य बन गईं।
573	लेखक (अलैहिर्रहमा) के बारे में ताज़िया में शिरकत से संबंधित एक गलत रिवायत।
497	वद, सुवाअ, यगूस, यऊक़ और नस्र कौम-ए-नूह के नेक लोगों के नाम हैं, जिन्हें बाद में शैतान के बहऽवे में आकर लोगों ने बुت बनाकर पूजना शुरू कर दिया।
574	मैदान-ए-कर्बला में हज़रत क़ासिम की शादी और मेहंदी साबित नहीं है।
501	ज़मीन पर सबसे पहले जिस गैर-अल्लाह की इबादत की गई, वह 'वद' नाम का बुत है।
577	सुल्तान तैमूर ने इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) के रौज़ा-ए-अनवर की कैसी तस्वीर रखी थी?
502	दीवार-ए-काबा पर मक्का के काफ़िरों ने किन धार्मिक महापुरुषों की तस्वीरें बनाई थीं?
577	इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) की शहादत के बाद माई शहर बानो मदीना मुनव्वरा चली गईं।
510	फ़तह-ए-मक्का के मौके पर कुछ तस्वीरें नबी-ए-पाक के हुक्म पर हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म ने और कुछ आप ने खुद अपने मुबारक हाथों से मिटा दीं।

صفحہ نمبر	عنوان
۵۱۸	ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے ایک سائل کو ٹکڑا عطا فرمایا اور ایک کو اعزاز کھانا کھلایا۔
۳۷۸	تعزیہ داری کا آغاز سلطان تیمور نے کیا۔
۵۱۹	ماں کو ناراض کرنے والے کی زبان پر وقت نزع کلمہ جاری نہ ہوا۔
۴۰۴	تعزیہ کی نظیر امم سابقہ میں آغازِ اصنام ہے۔
۵۱۹	عوام بن حوشب ائمہ تبع تابعین میں سے ہیں ان کا انتقال ۱۲۸ھ میں ہوا۔
۴۰۵	ود، سواع، نسر، یغوث اور یعوق دراصل صالحین کے نام ہیں۔
۵۳۰	ماں کے گستاخ کا سبق آموز واقعہ۔
۴۰۵	صحابہ کرام نے رومیوں کے بھیس میں لباس بدل کر کام فرمایا۔
۵۳۰	ایک نیک شخص کا واقعہ جس نے اپنے بیٹے کو سورۃ فاتحہ پڑھانے والے معلم کو چار ہزار دینار شکریے کے طور پر پیش کئے۔
۴۱۹	سلطان صلاح الدین ایوبی کے زمانے میں دو عالموں نے پادریوں کی وضع بنا کر دورہ کیا۔
۵۵۳	حضرت فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے بارگاہ رسالت میں توراہ پڑھنے اور اس پر حضور انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ناراض ہونے کا تذکرہ۔

صفحہ نمبر	عنوان
۴۳۸	پان جائز اور شیخ فرید الدین گنج شکر و شیخ نظام الدین رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہما کے زمانے سے مسلمانوں میں بلا نکیر رائج ہے۔
۵۵۶	ہرنی کا قصہ
۴۹۱	پان کئی اولیائے کرام نے کھایا۔
۵۷۳	ملفوظات سید عبدالرزاق ہانسوی کی طرف منسوب غلط حکایات کے بارے میں استفسار۔
۴۹۷	دنیا میں بت پرستی کی ابتداء یوں ہی ہوئی کہ صالحین کی محبت میں ان کی تصویریں بنا کر گھروں اور مسجدوں میں رکھی گئیں اور ان سے لذت عبادت کی تائید سمجھی گئی پھر شدہ شدہ وہی معبود ہو گئیں۔
۵۷۳	مصنف علیہ الرحمہ کے بارے میں تعزیہ میں شرکت سے متعلق ایک غلط حکایت۔
۴۹۷	ود، سواع، یغوث، یعوق اور نسر قوم نوح کے صلحاء کے نام ہیں جنہیں بعد میں بالقاء شیطان لوگوں نے بت بنا کر پوجنا شروع کر دیا۔
۵۷۴	میدان کربلا میں حضرت قاسم کی شادی و مہندی ثابت نہیں۔
۵۰۱	سب سے پہلے جس غیر اللہ کی عبادت زمین میں کی گئی وہ ود نامی بت ہے۔
۵۷۷	سلطان تیمور نے امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے روضہ انور کی کیسی تصویر رکھی تھی۔
۵۰۲	دیوار کعبہ پر کفار مکہ نے کن معظمین دینیہ کی تصویریں نقش کی تھیں۔
۵۷۷	امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی شہادت کے بعد مائی شہر بانو مدینہ منورہ چلی گئیں۔

صفحہ نمبر	عنوان
۵۱۰	فتح مکہ کے موقع پر کچھ تصویریں نبی اقدس کے حکم پر حضرت فاروق اعظم نے اور کچھ آپ نے خود بنفسِ نفیس اپنے دستِ اقدس سے مٹا دیں۔

Fatawa Razawiyya Volume 24

651 | A group of jinn in Medina Tayyiba became Muslims. | 287 | 651 | One who flees from the plague is like one who flees from a battle against disbelievers in Jihad. | 287 652 | A woman went to hell because of a cat. | 287 | 652 | Severe warning for those who turn their backs and flee from disbelievers in Jihad. | 287 663 | Israel is the blessed name of Sayyiduna Yaqub (Alayhis Salam). | 290 | 664 | The reward for one who invites to goodness and the sin and burden for one who invites to misguidance. | 290 706 | Ameer-ul-Momineen Sayyiduna Farooq-e-Azam (Radi Allahu Anhu) called himself the servant and slave of the Messenger of Allah (Sallallahu Alayhi Wasallam) in a gathering of Sahaba. | 299 | 706 | Any movement made to flee from the plague, even if it is within the neighborhoods of the same city, will surely fall under this severe warning. | 299 - | Encouragement and Admonition | 300 | - | One who stays in their home patiently during a plague gets a reward equal to that of a martyr. | 300 101 | One who applies the blessed verse "And whoever turns away from My remembrance" to those who leave a gathering of Dhikr with dancing, resemblance, and clapping has committed a major sin for several reasons. | 312 | 101 | Whoever unites with a polytheist and stays with him is like that polytheist. | 312 101 | Severe warning for those who fabricate lies against Allah Almighty and the Messenger of Allah (Jalla Jalaluhu wa Sallallahu Alayhi Wasallam). | 323 | 101 | Condemnation from the blessed Hadiths of those who increase the numbers of non-Muslims and support them. | 323 150 | The sinners present in a gathering of music and musical instruments, the singers are even worse sinners, and the one who invites them is the greatest sinner of all. | 358 | 150 | Backbiting is more severe than adultery. | 358 167 | The curse of Allah Almighty on the one who provides refuge to a legal criminal. | 384 | 172 | Severe warnings for those disobedient to their father. | 384 178 | There is reward in benefiting every living creature. | 386 | 178 | Twenty-one Hadiths containing severe warnings for those disrespectful to their father. | 386 199 | Mention of warnings for those who flee from the plague. | 403 | 199 | Severe warnings in Hadiths for those who trouble their parents. | 403 202 | Reward of a hundred martyrs for reviving a Sunnah. | 403 | 202 | Three persons will not enter Paradise. | 403

फ़तावा रजविया जिल्द 24

651 | मदीना तय्यिबा में जिन्नात का एक समूह मुसलमान हो गया। | 287 | 651 | ताऊन (प्लेग) से भागने वाला वैसा ही है जैसे जिहाद में काफिरों के खिलाफ मुकाबले से भागने वाला। | 287 652 | एक औरत एक बिल्ली के कारण नर्क में गई। | 287 | 652 | जिहाद में काफ़िरों को पीठ दिखाकर भागने वालों के लिए कड़ी चेतावनी। | 287 663 | इसराइल सैय्यदुना याकूब अलैहिस्सलाम का मुबारक नाम है। | 290 | 664 | भलाई की दावत देने वाले का सवाब और गुमराही की दावत देने वाले का गुनाह और बोझ। | 290 706 | अमीर-उल-मोमिनीन सैय्यदुना फारूक-ए-आजम (रज़ी अल्लाहु अन्हु) ने सहाबा की मजलिस में खुद को रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का दास और सेवक कहा। | 299 | 706 | प्लेग से भागने के लिए की गई कोई भी हरकत, चाहे वह उसी शहर के मोहल्लों में ही क्यों न हो, निश्चित रूप से इस कड़ी चेतावनी में शामिल होगी। | 299 - | तरग़ीब व तरहीब (प्रोत्साहन और डराना) | 300 | - | ताऊन में सब्र के साथ अपने घर में रुकने वाले को शहीद के बराबर सवाब मिलता है। | 300 101 | जिसने उन लोगों पर मुबारका आयत "और जो मेरे ज़िक्र से मुँह मोड़ेगा" को लागू किया जो नाच, स्वांग और तालियों वाली ज़िक्र की महफ़िल छोड़कर चले गए, उसने कई कारणों से गुनाह-ए-कबीरा किया। | 312 | 101 | जो मुशरिक (बहुदेववादी) के साथ मिल जाए और उसके साथ रहे, वह उसी मुशरिक की तरह है। | 312 101 | अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह (जल्ला जलालाहु व सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर झूठ बांधने वालों के लिए कड़ी चेतावनी। | 323 | 101 | गैर-मुसलमानों की संख्या बढ़ाने और उनका साथ देने वालों की हदीस-ए-करीमा से निंदा। | 323 150 | वाद्ययंत्रों (मज़ामीर) की महफ़िल में मौजूद गुनहगार, कव्वाल उनसे भी बड़े गुनहगार और बुलाने वाला उन सबसे बड़ा गुनहगार होगा। | 358 | 150 | ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई) ज़िना (व्यभिचार) से भी बदतर है। | 358 167 | शरई मुजरिम को पनाह देने वाले पर अल्लाह तआला की लानत। | 384 | 172 | पिता की नाफरमानी करने वालों के लिए कड़ी चेतावनियाँ। | 384 178 | हर जानदार को फायदा पहुँचाने में सवाब है। | 386 | 178 | पिता के गुस्ताख के लिए सख्त चेतावनी वाली इक्कीस हदीसें। | 386 199 | ताऊन से भागने वालों के लिए चेतावनियों का ज़िक्र। | 403 | 199 | माता-पिता को सताने वालों के लिए हदीसों में कड़ी चेतावनियाँ। | 403 202 | सुन्नत को जीवित करने पर सौ शहीदों का सवाब। | 403 | 202 | तीन व्यक्ति जन्नत में प्रवेश नहीं करेंगे। | 403

पृष्ठ 67 का 720

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

۶۵۱ | مدینہ طیبہ میں جنات کا ایک گروہ مسلمان ہو گیا۔ | ۲۸۷ | ۶۵۱ | طاعون سے بھاگنے والا ایسا ہی ہے جیسے جہاد میں کافروں کے مقابلے سے بھاگنے والا۔ | ۲۸۷ ۶۵۲ | ایک عورت ایک بلی کے سبب سے دوزخ میں گئی۔ | ۲۸۷ | ۶۵۲ | جہاد میں کفار کی پیٹھ دے کر بھاگنے والے کے لئے وعید شدید۔ | ۲۸۷ ۶۶۳ | اسرائیل سیدنا یعقوب علیہ السلام کا نام مبارک ہے۔ | ۲۹۰ | ۶۶۴ | نیکی کی دعوت دینے والے کا اجر اور گمراہی کی دعوت والے کا گناہ و وبال۔ | ۲۹۰ ۷۰۶ | امیر المومنین سیدنا فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے برسر مجمع صحابہ میں اپنے آپ کو رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا عبد و خادم کہا۔ | ۲۹۹ | ۷۰۶ | جو نقل و حرکت طاعون سے بھاگنے کے لئے ہو گی اگرچہ اسی شہر کے محلوں میں ہو تو وہ ضرور اس وعید شدید میں داخل ہو گی۔ | ۲۹۹ - | ترغیب و ترھیب | ۳۰۰ | - | طاعون میں صابر ہو کر اپنے گھر میں ٹھہرنے والے کو شہید کے برابر ثواب ملتا ہے۔ | ۳۰۰ ۱۰۱ | رقص و تماثل اور تالیوں کے ساتھ ذکر کی محفل سے چلے جانے والوں پر آیت کریمہ "و من اعرض عن ذکری" کو منطبق کرنے والے نے کئی وجوہ سے گناہ کبیرہ کا ارتکاب کیا۔ | ۳۱۲ | ۱۰۱ | جو مشرک سے یکجا ہو اور اس کے ساتھ رہے وہ اسی مشرک کی مانند ہے۔ | ۳۱۲ ۱۰۱ | اللہ تعالیٰ و رسول اللہ جل جلالہ و صلی اللہ تعالیٰ علیہ و سلم پر افتراء باندھنے والے کے لئے وعید شدید۔ | ۳۲۳ | ۱۰۱ | غیر مسلموں کی نفری بڑھانے اور ان کا ساتھ دینے والوں کی مذمت احادیث کریمہ سے۔ | ۳۲۳ ۱۵۰ | سماع مزامیر کی مجلس میں حاضر ہونے والے گنہگار قوال ان سے بڑھ کر اور بلانے والا سب سے بڑھ کر گنہگار ہو گا۔ | ۳۵۸ | ۱۵۰ | غیبت زنا سے سخت تر ہے۔ | ۳۵۸ ۱۶۷ | شرعی مجرم کو پناہ دینے والے پر اللہ تعالیٰ کی لعنت۔ | ۳۸۴ | ۱۷۲ | باپ کے نافرمان کے لئے

وعیدات شدیدا۔ | ۳۸۴ ۱۷۸ | ہر جاندار کی نفع رسانی میں اجر ہے۔ | ۳۸۶ | ۱۷۸ | والد کے گستاخ کے لئے سخت و وعید پر مشتمل اکیس حدیثیں۔ | ۳۸۶ ۱۹۹ | طاعون سے بھاگنے والے کے لئے وعیدات کا ذکر۔ | ۴۰۳ | ۱۹۹ | والدین کو ستانے والے کے لئے احادیث میں سخت وعیدیں۔ | ۴۰۳ ۲۰۲ | احیاء سنت پر سو شہیدوں کا ثواب۔ | ۴۰۳ | ۲۰۲ | تین شخص جنت میں داخل نہ ہوں گے۔ | ۴۰۳

Fatawa Rizvia, Volume 24

403 - Allah the Almighty does not accept the obligatory (Fard) and voluntary (Nafl) acts of three people. | Allah Almighty has made the child's right over the father immense. - 451 404 - The one who torments parents and abuses them is cursed. | A child who combines general Islam, then specifically neighborhood, then specifically kinship, then specifically family, possesses the most distinguished status. - 451 416 - Ungratefulness to a teacher is a terrifying calamity, a devastating illness, and it eradicates the blessings of knowledge. | Who is bankrupt? - 462 418 - Condemnation of considering a good deed insignificant. | Backbiting is worse than adultery. - 462 419 - The burden of considering the elementary education of a religious teacher as insignificant. | It is easy to get rights forgiven by rights-holders in this world; the hope for this on the Day of Judgment is difficult. - 463 425 - Severe warning for those who cause pain to Muslims. | On the Day of Judgment, even parents will not forgive their children's rights. - 463 426 - Condemnation of one who insults a Muslim. | The Prophet (peace and blessings be upon him) declared those who make pictures of the righteous to be the worst of creatures. - 565 427 - Condemnation of envy and severe warnings from Hadiths for the envious. | It is in continuous Hadiths that angels of mercy do not enter a house where there is a picture and a dog. - 576 430 - Condemnation of the person who is not kind to the young and does not respect the elders. | A place where the angels of mercy do not enter is worse than anywhere else. - 590 431 - The evil of one who mistreats scholars is beyond description. | Oppression of an animal is more severe than oppression of a Dhimmi (protected non-Muslim), and oppression of a Dhimmi is more severe than oppression of a Muslim. - 644 432 - Severe condemnation of causing pain to the family and descendants of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). | Keeping a dog is forbidden (Haram); in a house where there is a dog, angels of mercy do not enter, and good deeds decrease. - 657 434 - Hadiths condemning a person who makes knowledge a means for worldly gain. | Sufism and the Spiritual Path 435 - The drawbacks of studying philosophical sciences and logic. | Justification for some servants of God taking action against musical instruments. - 80 451 - Allah the Almighty made the father's right over the child extremely great and mentioned it alongside His own right. | Good singing is permissible for the people of Allah under certain conditions. - 84

फ़तावा रज़विया, जिल्द २४

४०३ - अल्लाह तआला तीन व्यक्तियों के फ़र्ज़ और नफ़्ल स्वीकार नहीं फ़रमाता। | अल्लाह तआला ने पिता पर संतान का अधिकार बहुत बड़ा रखा है। - ४५१ ४०४ - माता-पिता को सताने वाला और उन्हें गाली देने वाला शापित है। | एक संतान जो सामान्य इस्लाम, फिर विशेष रूप से पड़ोस, फिर विशेष रूप से रिश्तेदारी, फिर विशेष रूप से परिवार को समाहित करती है, वह सबसे अधिक विशिष्टता रखती है। - ४५१ ४१६ - उस्ताद (शिक्षक) की नाशुक्रगुज़ारी एक भयानक आफ़त, विनाशकारी बीमारी और ज्ञान की बरकतों को समाप्त करने वाली है। | कंगाल (मुफ़्लिस) कौन है? - ४६२ ४१८ - नेकी को तुच्छ समझने की निंदा। | ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई) ज़िना (व्यभिचार) से भी बदतर है। - ४६२ ४१९ - दीन (धर्म) के उस्ताद की प्रारंभिक शिक्षा को तुच्छ समझने का वबाल (सज़ा)। | दुनिया में हक़दारों से हक़ माफ़ करा लेना आसान है, क़यामत के दिन इसकी उम्मीद मुश्किल है। - ४६३ ४२५ - मुसलमानों को कष्ट पहुँचाने वालों के लिए कड़ी चेतावनी। | क़यामत के दिन माता-पिता भी अपनी संतान के अधिकारों को माफ़ नहीं करेंगे। - ४६३ ४२६ - मुसलमान का अपमान करने वाले की निंदा। | हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने नेक लोगों की तस्वीरें बनाने वालों को सबसे बदतर मख़लूक़ (प्राणी) क़रार दिया। - ५६५ ४२७ - हसद (ईर्ष्या) की निंदा और हासिद (ईर्ष्यालु) के लिए हदीसों से कड़ी चेतावनी। | मुतवातिर (लगातार) हदीसों में है कि जिस घर में तस्वीर और कुत्ता हो वहाँ रहमत के फ़रिश्ते नहीं आते। - ५७६ ४३० - उस व्यक्ति की निंदा जो छोटों पर दया और बड़ों का सम्मान न करे। | जिस मकान में रहमत के फ़रिश्ते न आएँ वह हर जगह से बदतर है। - ५९० ४३१ - उलेमा (विद्वानों) के साथ बुरा व्यवहार करने वाले की बुराई बयान से बाहर है। | जानवर पर ज़ुल्म ज़िम्मी पर ज़ुल्म से और ज़िम्मी पर ज़ुल्म मुसलमान पर ज़ुल्म से अधिक सख़्त है। - ६४४ ४३२ - हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की आल व औलाद (वंशज) को कष्ट पहुँचाने की कड़ी निंदा। | कुत्ता पालना हराम है, जिस घर में कुत्ता हो उसमें रहमत के फ़रिश्ते नहीं आते, इससे नेकियाँ घटती हैं। - ६५७ ४३४ - ज्ञान (इल्म) को दुनिया प्राप्त करने का साधन बनाने वाले व्यक्ति की निंदा संबंधी हदीसें। | तसव्वुफ़ व तरीक़त (अध्यात्मवाद) ४३५ - दार्शनिक विज्ञान और तर्कशास्त्र पढ़ने की बुराइयाँ। | अल्लाह के कुछ बंदों द्वारा वाद्ययंत्रों (मज़ामीर) पर कार्रवाई का औचित्य। - ८० ४५१ - अल्लाह तआला ने संतान पर पिता का अधिकार बहुत महान बनाया और अपने हक़ के बराबर उसका ज़िक्र फ़रमाया। | अच्छा गाना कुछ शर्तों के साथ अल्लाह वालों के लिए जायज़ है। - ८४

पेज ६८ ऑफ़ ७२०

۴۰۳ - تین شخصوں کے فرض و نفل اللہ تعالی قبول نہیں فرماتا۔ | ولد کا حق والد پر اللہ تعالی نے عظیم رکھا۔ - ۴۵۱ ۴۰۴ - والدین کو ستانے والا اور ان کو گالی دینے والا ملعون ہے۔ | ولد مطلق اسلام پھر خصوص جوار پھر خصوص قرابت پھر خصوص عیال کا جامع ہو کر سب سے زیادہ خصوصیت خاصہ رکھتا ہے۔ - ۴۵۱ ۴۱۶ - استاذ کی ناشکری خوفناک بلا، تباہ کن بیماری اور علم کی برکات کو ختم کرنے والی ہے۔ | مفلس کون ہے۔ - ۴۶۲ ۴۱۸ - نیکی کو حقیر جاننے کی مذمت | غیبت زنا سے بدتر ہے۔ - ۴۶۲ ۴۱۹ - تعلیم دین کے استاذ کی ابتدائی تعلیم کو حقیر جاننے کا وبال۔ | دنیا میں اہل حقوق سے حقوق معاف کر لینا آسان قیامت کے دن اس کی امید مشکل ہے۔ - ۴۶۳ ۴۲۵ - مسلمانوں کو اذیت دینے والے کے لئے سخت وعید۔ | قیامت کے روز ماں باپ بھی اپنی اولاد کو حقوق معاف نہیں کریں گے۔ - ۴۶۳ ۴۲۶ - مسلمان کی بے عزتی کرنے والے کی مذمت۔ | صلحاء کی تصویریں بنانے والوں کو حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے بدترین مخلوق قرار دیا۔ - ۵۶۵ ۴۲۷ - حسد کی مذمت اور حاسد کے لئے احادیث سے وعید شدید۔ | متواتر حدیثوں میں ہے کہ جس گھر میں تصویر اور کتا ہو وہاں رحمت کے فرشتے نہیں آتے۔ - ۵۷۶ ۴۳۰ - اس شخص کی مذمت جو چھوٹوں پر مہربانی اور بڑوں کا احترام نہ کرے۔ | جس مکان میں ملائکہ رحمت نہ آئیں وہ ہر جگہ سے بدتر ہے۔ - ۵۹۰ ۴۳۱ - علماء کے ساتھ برا سلوک کرنے والے کی برائی بیان سے باہر ہے۔ | حیوان پر ظلم ذمی پر ظلم سے اور ذمی پر ظلم مسلمان پر ظلم سے زیادہ سخت ہے۔ - ۶۴۴ ۴۳۲ - حضور اقدس صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کی آل و اولاد کو اذیت پہنچانے کی شدید مذمت۔ | کتا پالنا حرام ہے، جس گھر میں کتا ہو اس میں رحمت کے فرشتے نہیں آتے، اس سے نیکیاں گھٹتی ہیں۔ - ۶۵۷ ۴۳۴ - علم کو حصول دنیا کا ذریعہ بنانے والے شخص کی

مذمت احادیث۔ | تصوف وطریقت ۴۳۵ - علوم فلسفیہ اور منطق پڑھنے کی قباحتیں۔ | بعض بندگان خدا کی طرف سے مزامیر پر اقدام کی توجیہ۔ - ۸۰ ۴۵۱ - اللہ تعالی نے والد کا حق ولد پر نہایت اعظم بنایا اور اپنے حق کے برابر اس کا ذکر فرمایا۔ | اچھا گانا کچھ شرائط کے ساتھ اہل اللہ کے حق میں جائز ہے۔ - ۸۴

Fatawa Rizvia - Volume 24

Page No.	Topic	Page No.	Topic
326	Initiating greetings (Salam) to an infidel, apostate, innovator, or person of bad belief without necessity is prohibited (Haram), and socializing with them is also prohibited.	92	The ecstasy (Wajd) of the conquered truthful ones is a great fortune and a supreme blessing.
340	One who seizes an orphan's property is a transgressor (Fasiq), to whom initiating Salam is impermissible; Muslims should not maintain social ties with him.	92	Recognition of truthful ecstasy and its conditions.
712	Responding to Salam immediately is obligatory (Wajib); delay will result in sin.	106	All Sufis are not alike.
	Gatherings and Assemblies	130	Is Qawwali nourishment for the soul or nourishment for the self, and the difference between the two.
501	A gathering for mentioning martyrdom and narrating virtues and merits in it is permissible.	130	Identification of soul's nourishment.
507	Attending a gathering where the People of the Household (Ahl al-Bayt) are insulted is strictly prohibited.	132	An unlearned Sufi is a puppet of Satan.
	Linguistics, Rhetoric, and Grammar	132	Allah Almighty has not made any ignorant person His friend (Wali).
171	Meaning of preaching (Wa'z).	132	God cannot be recognized without knowledge.
301	The Hadith of Bukhari "fi baladihi" and the Hadith of Ahmad "fi baytihi" regarding the dispute over stay and place relate to both.	139	It is prohibited to make a public transgressor (Fasiq-e-Mu'lin) a spiritual guide (Pir).

Page No.	Topic
558	Surqi refers to tobacco.
627	Meaning of Somnath.
678	Are the primary meanings not considered in proper names (A'lam)?
679	In proper names, the original meaning is not entirely disregarded.
681	Keeping the name Ghafoor-ud-Din is very foul and repulsive because its meaning is 'the one who erases the religion'.
692	In Persian "Ghulam-e-Aftab", in Arabic "Abd-ush-Shams", and in Hindi "Suraj Das" have the same meaning.
158	The Oneness of Being (Wahdat al-Wujud) and the realities and subtleties of Sufism, as believed by truthful Sufis, are certainly truth.
158	Even many of today's scholars and spiritual guides cannot understand many realities of Sufism, let alone the common people.
162	Difference between a guide of misguidance (Pir-e-Ghawayat) and a guide of guidance (Sheikh-e-Hidayat).
173	Entering into the chain of noble saints through an orthodox (Sunni) scholar with a connected chain (Muttasil al-Sanad Sheikh) is a great blessing.
368	What are the rights of a Pir over his disciple (Murid) and vice versa.
555	The secrets of special ingredients (Masalah-e-Khasa) are known by the people of the inner path.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 24

पृष्ठ संख्या	विषय
326	बिना ज़रूरत काफ़िर, मुर्तद, बिदअती और कुमार्गी को पहले सलाम करना हराम है, और उनके साथ मेल-जोल भी हराम है।
340	यतीम की संपत्ति पर कब्ज़ा करने वाला फ़ासिक़ है, जिसे पहले सलाम करना नाजायज़ है; मुसलमानों को उसके साथ मेल-जोल नहीं रखना चाहिए।
712	सलाम का जवाब तुरंत देना वाजिब है; देरी करने में गुनाह होगा।
	मजलिसें और महफ़िलें
501	शहादत के ज़िक्र की मजलिस और उसमें फ़ज़ाइल व मनाक़िब बयान करना जायज़ है।
507	जिस मजलिस में अहले बैत (नबी के घराने) की तौहीन हो, उसमें जाना कतई हराम है।
	भाषा विज्ञान, अलंकार और व्याकरण
171	वअज़ (उपदेश) का अर्थ।
301	

पृष्ठ संख्या	विषय
92	सच्चाई में लीन लोगों का वज्द (परमानंद) महान संपत्ति और महान वरदान है।
92	सच्चे वज्द की पहचान और उसकी शर्तें।
106	सभी सूफ़ी एक जैसे नहीं होते।
130	क्या कव्वाली रूह (आत्मा) की खुराक है या नफ़्स (मन) की, और दोनों में अंतर।
130	रूह की खुराक की पहचान।
132	ज्ञानहीन सूफ़ी शैतान का खिलौना है।
132	अल्लाह तआला ने किसी जाहिल (अज्ञानी) को अपना वली नहीं बनाया।
132	बिना इल्म (ज्ञान) के खुदा को नहीं पहचाना जा सकता।
139	

पृष्ठ संख्या	विषय
	बुखारी की हदीस "फ़ी बलदिही" और अहमद की हदीस "फ़ी बैतिही" में प्रवास और स्थान के विवाद से संबंधित दोनों बातें हैं।
558	सुरक़ी तम्बाकू को कहते हैं।
627	सोमनाथ का अर्थ।
678	क्या संज्ञाओं (आलाम) में प्राथमिक अर्थ का ध्यान नहीं रखा जाता?
679	संज्ञाओं में मूल अर्थ पूरी तरह से नज़रअंदाज़ नहीं किया जाता।
681	ग़फ़ूर-उद-दीन नाम रखना बहुत ही बुरा और घिनौना है क्योंकि इसका अर्थ है 'दीन (धर्म) को मिटाने वाला'।
692	फ़ारसी में "ग़ुलाम-ए-आफ़ताब", अरबी में "अब्दुश-शम्स" और हिंदी में "सूरज दास" का अर्थ एक ही है।

पृष्ठ संख्या	विषय
	खुल्लम-खुल्ला गुनाह करने वाले (फ़ासिक़-ए-मुअलिन) को पीर बनाना हराम है।
158	वहदतुल वजूद और तसव्वुफ़ की हक़ीक़तें व दक़ीक़तें जिस तरह सच्चे सूफ़ी मानते हैं, वे निश्चित रूप से सत्य हैं।
158	तसव्वुफ़ की बहुत सी हकीक़तों को आज कल के मौलवी और पीर भी नहीं समझ सकते, आम जनता की तो बात ही क्या।
162	भटकाने वाले पीर (पीर-ए-ग़वायत) और मार्गदर्शक शेख (शेख-ए-हिदायत) में अंतर।
173	औलिया किराम के सिलसिले में किसी सहीह अक़ीदा सुन्नी आलिम और मुत्तसिलुस-सनद शेख के हाथ पर दाख़िल होना बहुत बड़ी बरकत है।
368	पीर के मुरीद पर और मुरीद के पीर पर क्या-क्या हक़ (अधिकार) हैं।
555	खास मसालों के रहस्यों को रूहानी लोग (अहले बातिन) जानते हैं।
	सलाम और तहियत

पृष्ठ संख्या	विषय
पृष्ठ संख्या	विषय
पृष्ठ 69 / 720	

صفحہ نمبر	موضوع
۳۲۶	کافر مرتد مبتدع اور بد مذہب کو بے ضرورت ابتداء بسلام حرام، اور ان سے مخالطت بھی حرام۔
۳۴۰	مال یتیم پر قبضہ جمانے والا فاسق ہے جس سے ابتداء بسلام ناجائز ہے مسلمانوں کو اس کے ساتھ میل جول نہیں رکھنا چاہئے۔
۷۱۲	جواب سلام علی الفور واجب ہے تاخیر میں اثم ہوگا۔
	مجالس و محافل
۵۰۱	مجلس ذکر شہادت اور اس میں بیان فضائل و مناقب جائز ہے۔
۵۰۷	جس مجلس میں اہل بیت کی توہین ہو اس میں جانا قطعاً حرام ہے۔
	لغت و بلاغت و نحو

صفحہ نمبر	موضوع
۹۲	مغلوبین صادقین کا وجد دولت عظمیٰ اور نعمت کبریٰ ہے۔
۹۲	وجد صادق کی شناخت اور اس کی شرائط۔
۱۰۶	سب صوفیہ یکساں نہیں ہوتے۔
۱۳۰	کیا قوالی غذائے روح ہے یا غذائے نفس، اور دونوں میں فرق۔
۱۳۰	غذائے روح کی پہچان۔
۱۳۲	صوفی بے علم شیطان کا مسخرہ ہے۔
۱۳۲	

صفحہ نمبر	موضوع
۱۷۱	معنی وعظ
۳۰۱	حدیث بخاری میں فی بلدہ اور حدیث احمد میں فی بیتہ بر سبیل تنازع مکث اور بقع دونوں سے متعلق ہیں۔
۵۵۸	سرقی تمباکو کو کہتے ہیں۔
۶۲۷	سومنات کا معنی۔
۶۷۸	کیا اعلام میں معنی اول ملحوظ نہیں ہوتے ہیں۔
۶۷۹	اعلام میں معنی اصلی بالکل ساقط النظر نہیں۔

صفحہ نمبر	موضوع
۱۳۲	اللہ تعالیٰ نے کسی جاہل کو اپنا ولی نہیں کیا۔
۱۳۹	بغیر علم کے خدا کو نہیں پہچانا جاسکتا۔
۱۵۸	فاسق معلن کو پیر بنانا حرام ہے۔
۱۵۸	وحدۃ الوجود اور حقائق و دقائق تصوف جس طرح صوفیہ صادقہ مانتے ہیں ضرور حق ہیں۔
۱۶۲	بہت سے حقائق تصوف کو آج کل کے مولوی اور پیر بھی نہیں سمجھ سکتے چہ جائیکہ عوام۔
۱۷۳	پیر غوایت اور شیخ ہدایت میں فرق۔
	سلسلہ اولیاء کرام میں کسی عالم سنی العقیدہ متصل السند شیخ کے ہاتھ پر داخل ہونا برکت عظیمہ ہے۔

صفحہ نمبر	موضوع
۶۸۱	غفور الدین نام رکھنا سخت قبیح و شنیع ہے کیونکہ اس کا معنی ہے دین کو مٹانے والا۔
۶۹۲	فارسی میں غلام آفتاب، عربی میں عبدشمس اور ہندی میں سورج داس کا معنی ایک جیسا ہے۔

صفحہ نمبر	موضوع
۳۶۸	پیر کے مرید پر اور مرید کے پیر پر کیا کیا حقوق ہیں۔
۵۵۵	مصالحہ خاصہ کے اسرار اہل باطن جانتے ہیں۔

سلام و تحیت

Fatawa Razawiya Volume 24

- There is a vast difference between ambiguity (ibham) and probability (ihtimal). (Page 695)
- Joining and eating in a gathering that goes against Shari'ah is not permissible. (Page 123)
- Definition of ambiguity, which is also called imagination (takhyeel). (Page 695)
- Feeding sweets or food to the poor is charity (Sadaqah), to relatives is kindness to kin (Sila-e-Rahm), and to friends is hospitality (Ziafat). All three are permissible and attract mercy while warding off calamities and distress. (Page 185)
- 'Iisal ilal Matlub' (reaching the goal) and 'Ira'atut Tariq' (showing the path) both consist of the two meanings: creation (Khalq) and causation (Tasabbub). (Page 698)
- Is it permissible for a physician to prescribe a liquid medicine containing alcohol to a patient? Is it a sin for the physician or not? (Page 193)
- In the phrase 'The spring grew the herbs', the speaker's monotheism is a sufficient clue that the attribution is a rational metaphor. (Page 699)
- Is the use of brandy permissible for a patient or not? (Page 193)
- There is no difference between 'Abd' and 'Banda' except for the language difference. (Page 701)
- Eating crab (saratan) is forbidden (Haram). (Page 208)
- 'Abd' and 'Banda' are used in Arabic and non-Arabic languages respectively, in contrast to Ilah/God and Mawla/Master. (Page 701)
- It is forbidden (Haram) to eat at the houses of Qadianis. (Page 328)
- Ownership (Milk) includes both essential-real ownership and bestowed-metaphorical ownership. (Page 701)
- It is not forbidden to eat at the house of someone who has both lawful (Halal) and unlawful (Haram) sources of income. (Page 502)
- The word 'Banda' is used in relation to both God and a master. (Page 701)

Medicine (Tibb) - Investigation into the meaning of ownership. (Page 702) - According to the assembly of physicians, seven diseases are contagious. (Page 255)

Physics / Natural Sciences (Tabiyaat)

Logic (Mantiq) - The relationship between debt (Deen) and injustice (Mazlama) is general and specific in some respects. (Page 459) - Indeed, man is greedy for what is

forbidden. (Page 123) - Explanation of common and differing aspects in both. (Page 459) - The soul is not drawn to something offered as much as it is to something forbidden. (Page 123) - The simple conversion of a universal affirmative proposition is not a universal affirmative proposition. (Page 581) - Those enslaved by their desires find more pleasure in looking at a stranger than at their lawful spouse. (Page 123) - The negation of the more specific does not necessarily imply the negation of the more general. (Page 610) - Prohibition increases desire. (Page 123)

Food and Drink (Shurb o Ta'am)

फतवा रज़विया खंड २४

- अस्पष्टता (इबहाम) और संभावना (एहतमाल) में जमीन-आसमान का अंतर है। (पृष्ठ ६९५)
- किसी शरीअत के विरुद्ध सभा में सम्मिलित होकर भोजन करना जायज़ नहीं है। (पृष्ठ १२३)
- अस्पष्टता की परिभाषा जिसे कल्पना (तख़ईल) भी कहा जाता है। (पृष्ठ ६९५)
- गरीबों को मिठाई या भोजन खिलाना सदका है, रिश्तेदारों को खिलाना सिला-ए-रहम है और दोस्तों को खिलाना आतिथ्य (ज़ियाफ़त) है। ये तीनों जायज़ हैं, रहमत के अवतरण का कारण हैं और विपत्तियों व कष्टों को दूर करने वाले हैं। (पृष्ठ १८५)
- लक्ष्य तक पहुँचना (ईसाल इलल मतलूब) और मार्ग दिखाना (इराअत-उत-तरीक) दोनों सृजन (खल्क) और कारणता (तसब्बुब) के दो अर्थों पर आधारित हैं। (पृष्ठ ६९८)
- क्या हकीम (वैद्य) के लिए रोगी को ऐसी तरल दवा देना जायज़ है जिसमें शराब का अंश हो? हकीम पर पाप होगा या नहीं? (पृष्ठ १९३)
- 'वसंत ने जड़ी-बूटियाँ उगाईं' वाक्यांश में बोलने वाले का एकेश्वरवादी होना ही पर्याप्त संकेत है कि यह एक तार्किक रूपक (मजाज़-ए-अकली) है। (पृष्ठ ६९९)
- रोगी के लिए ब्रांडी का उपयोग जायज़ है या नहीं? (पृष्ठ १९३)
- भाषा के अंतर के अलावा 'अब्द' और 'बंदा' में कोई अंतर नहीं है। (पृष्ठ ७०१)
- केकड़ा (सरतान) खाना हराम है। (पृष्ठ २०८)
- 'अब्द' और 'बंदा' अरबी और गैर-अरबी भाषाओं में क्रमशः'इलाह' और 'ईश्वर', और 'मौला' और 'स्वामी' के विपरीत उपयोग किए जाते हैं। (पृष्ठ ७०१)
- कादियानियों के घर जाकर भोजन करना हराम है। (पृष्ठ ३२८)
- स्वामित्व (मिल्क) में व्यक्तिगत वास्तविक स्वामित्व और प्रदान किया गया प्रतीकात्मक स्वामित्व दोनों शामिल हैं। (पृष्ठ ७०१)
- जिसके पास हराम और हलाल दोनों तरह की आय हो, उसका भोजन हराम नहीं है। (पृष्ठ ५०२)
- 'बंदा' शब्द ईश्वर और स्वामी दोनों के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है। (पृष्ठ ७०१)

चिकित्सा (तिब्ब) - स्वामित्व के अर्थ की जाँच। (पृष्ठ ७०२) - वैद्यों के समूह के अनुसार, सात बीमारियाँ संक्रामक हैं। (पृष्ठ २५५)

भौतिकी / प्राकृतिक विज्ञान (तबिआयत)

तर्कशास्त्र (मन्तिक़) - ऋण (दीन) और अन्याय (मज़लमा) के बीच का संबंध कुछ मायनों में सामान्य और विशिष्ट है। (पृष्ठ ४५९) - वास्तव में, मनुष्य उसी चीज़ के लिए लालची होता है जिससे उसे रोका गया हो। (पृष्ठ १२३) - दोनों के साझा और अलग पहलुओं का विवरण। (पृष्ठ ४५९) - मन किसी दी गई वस्तु की ओर उतना नहीं खिंचता जितना कि प्रतिबंधित वस्तु की ओर। (पृष्ठ १२३) - एक सार्वभौमिक सकारात्मक प्रस्ताव का सरल रूपांतरण एक सार्वभौमिक सकारात्मक प्रस्ताव नहीं होता है। (पृष्ठ ५८१) - वासना के दासों को अपनी वैध पत्नी की तुलना में पराई स्त्री को देखने में अधिक आनंद मिलता है। (पृष्ठ १२३) - अधिक विशिष्ट के अभाव से अधिक सामान्य का अभाव आवश्यक नहीं है। (पृष्ठ ६१०) - निषेध इच्छा को बढ़ाता है। (पृष्ठ १२३)

भोजन और पेय (शर्ब ओ तआम)

पृष्ठ ७० / ७२०

- ابہام و احتمال میں زمین و آسمان کا فرق ہے۔ (صفحہ ۶۹۵)
- کسی خلاف شرع مجلس میں شریک ہو کر کھانا کھانا جائز نہیں۔ (صفحہ ۱۲۳)
- ابہام کی تعریف جس کو تخییل بھی کہا جاتا ہے۔ (صفحہ ۶۹۵)
- شیرینی یا کھانا فقراء کو کھلانا صدقہ، اقارب کو کھلانا صلہ رحم اور احباب کو کھلانا ضیافت ہے اور یہ تینوں جائز، موجب نزولِ رحمت و دفع بلا و مصیبت ہیں۔ (صفحہ ۱۸۵)
- ایصال الی المطلوب اور اراءۃ الطریق دونوں دو معنی خلق و تسبب پر مشتمل ہیں۔ (صفحہ ۶۹۸)
- ڈاکٹری دواسیال جس میں شراب کا جز ہو حکیم مریض کو استعمال کرائے، جائز ہے یا نہیں، حکیم پر گناہ ہے یا نہیں۔ (صفحہ ۱۹۳)
- انبت الربیع البقل میں قائل کا موحد ہونا ہی قرینہ شافیہ ہے کہ اسناد مجاز عقلی ہے۔ (صفحہ ۶۹۹)
- برانڈی کا استعمال مریض کو جائز ہے یا نہیں (صفحہ ۱۹۳)
- عبد و بندہ میں سوا اختلاف زبان کے کوئی فرق نہیں۔ (صفحہ ۷۰۱)
- سرطان کھانا حرام ہے۔ (صفحہ ۲۰۸)
- عبد و بندہ عربی و عجمی زبان میں الہ و خدا اور مولیٰ و آقا کے مقابل بولے جاتے ہیں۔ (صفحہ ۷۰۱)
- قادیانیوں کے گھر جا کر کھانا کھانا حرام ہے۔ (صفحہ ۳۲۸)
- مملوک ملک ذاتی حقیقی و ملک عطائی مجازی دونوں کو مشتمل ہے۔ (صفحہ ۷۰۱)

- جس کے یہاں حرام و حلال دونوں طرح کی آمدنی ہو اس کا کھانا حرام نہیں۔ (صفحہ ۵۰۲)
- بندہ بمقابلہ خدا و خواجہ دونوں طرح مستعمل ہے۔ (صفحہ ۷۰۱)

طب - معنی مالکیت کی تحقیق (صفحہ ۷۰۲) - بزم غم اطباء سات بیماریاں متعدی ہیں۔ (صفحہ ۲۵۵)

طبعیات

منطق - دین و مظلمہ میں نسبت عموم و خصوص من وجہ کی ہے۔ (صفحہ ۴۵۹) - ان الانسان حریص علی ما منع۔ (صفحہ ۱۲۳) - دونوں میں اجتماعی اور افتراقی مادوں کا بیان۔ (صفحہ ۴۵۹) - نفس شے مبذول کی طرف اتنا نہیں کھینچتا جتنا ممنوع کی طرف۔ (صفحہ ۱۲۳) - موجبہ کلیہ کا عکس مستوی موجبہ کلیہ نہیں آتا۔ (صفحہ ۵۸۱) - بندگان نفس کو نظر اجنبیہ میں نظر حلیلہ سے زیادہ لذت آتی ہے۔ (صفحہ ۱۲۳) - انتقاء اخص سے انتقاء اعم لازم نہیں آتا۔ (صفحہ ۶۱۰) - منع اجلب للشوق ہے۔ (صفحہ ۱۲۳)

شرب و طعام

Fatawa Rizvia - Volume 24

- Company is definitely influential, and natures are thieves, and hearts are changeable. (318)
- Virtues and Merits
- Scholars are the heirs of the Prophets. (171)
- Righteousness increases sustenance and brings blessings to life. (173)
- There is blessing in the congregation (Jama'at). (184)
- Virtues of charity, hospitality, and maintaining family ties. (185)
- Merits of Imam Abu Ja'far al-Tahawi. (251)
- Merits of Hazrat Mu'adh ibn Jabal (Allah be pleased with him). (293)
- Siddiq al-Akbar (Allah be pleased with him) is the greatest well-wisher of the Ummah. (306)
- Proof from Noble Hadiths that the mother's right is greater than the father's. (388)
- In service, the mother, and in respect, the father is greater. (389)
- A Companion's question about the mother's right and the reply of the Holy Prophet (Peace and Blessings be upon him). (402)
- The right of the teacher should be prioritized over the right of the parents. (420)
- Virtues of the teacher and his rank and status. (422)
- Considering oneself superior to the teacher is against instructions. (423)
- Emphasis on the etiquette and respect for the teacher. (424)
- A student should not sit on the teacher's bed, even if the teacher is not present. (424)
- A student should not step ahead of the teacher. (425)
- If a child is named Muhammad, he should be respected. (453)
- The promise of forgiveness of rights from the Lord Almighty for five groups. (466)
- Virtues of the Pilgrim (Haji) and forgiveness of rights. (466)
- Virtues and merits of the martyr of the sea. (468)
- Virtues of the martyr of patience. (469)
- "The one who repents from sin is like one who has no sin." (470)
- Virtues of the Saints (Awliya). (388)
- Virtues of the Noble Companions. (389)
- Virtues of the People of Badr. (402)
- Merits of Uthman al-Ghani (Allah be pleased with him). (420)

- The beloved ones of Allah primarily do not commit sins, and if occasionally a shortcoming occurs, the divine warner and admonisher alerts them and gives them the success of repentance. (422)
- An offering item is venerable; its disrespect is impermissible. (423)
- The mention of martyrdom is a source of happiness if it is free from fabricated narrations, forbidden words, and unlawful intentions. (517)

फ़तावा रज़विया - खण्ड २४

- संगत निश्चित रूप से प्रभावशाली होती है और प्रकृतियाँ चोर और दिल परिवर्तनशील होते हैं। (३१८)
- फज़ाइल और मनाकिब (गुण और विशेषताएँ)
- विद्वान नबियों के वारिस हैं। (१७१)
- नेकी से रिज़्क़ बढ़ता है और उम्र में बरकत होती है। (१७३)
- जमाअत (समूह) में बरकत है। (१८४)
- सदक़ा, ज़ियाफ़त और सिला-ए-रहमी के फ़ज़ाइल। (१८५)
- इमाम अबू जाफ़र तह़ावी के मनाक़िब। (२५१)
- हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु के मनाक़िब। (२९३)
- सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु उम्मत के सबसे बड़े खैरख्वाह हैं। (३०६)
- अहादीस-ए-करीमा से प्रमाण कि माँ का ह़क़ बाप के ह़क़ से ज़्यादा है। (३८८)
- ख़िदमत (सेवा) में माँ और ताज़ीम (सम्मान) में बाप अधिक है। (३८९)
- माँ के ह़क़ के बारे में सहाबी का सवाल और हुज़ूर अलैहिस्सलाम का जवाब। (४०२)
- उस्ताद के ह़क़ को वालिदैन के ह़क़ पर प्राथमिकता देनी चाहिए। (४२०)
- उस्ताद के फ़ज़ाइल और उसका मक़ाम व मर्तबा। (४२२)
- अपने आप को उस्ताद से अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) मानना आदेश के विरुद्ध है। (४२३)
- उस्ताद के अदब व एह़तिराम की ताकीद। (४२४)
- शागिर्द को उस्ताद के बिस्तर पर नहीं बैठना चाहिए चाहे उस्ताद मौजूद न हो। (४२४)
- शागिर्द को उस्ताद से आगे नहीं बढ़ना चाहिए। (४२५)
- बच्चे का नाम मुह़म्मद रखा जाए तो उसका एह़तिराम किया जाए। (४५३)
- रब तआला की तरफ़ से हुक़ूक़ की माफ़ी का वादा पाँच समूहों से। (४६६)
- हाजी के फ़ज़ाइल और हुक़ूक़ की माफ़ी। (४६६)
- शहीद-ए-बह़र (समुद्र के शहीद) के फ़ज़ाइल व मनाक़िब। (४६८)
- शहीद-ए-सब्र के फ़ज़ाइल। (४६९)
- "गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उसने गुनाह किया ही न हो।" (४७०)
- औलिया के फ़ज़ाइल। (३८८)

- सहाबा किराम के फ़ज़ाइल। (३८९)
- अह़्ल-ए-बद्र के फ़ज़ाइल। (४०२)
- उस्मान-ए-ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के मनाक़िब। (४२०)
- अल्लाह के मह़बूब तो पहले गुनाह करते ही नहीं और अगर कभी कोई कोताही हो जाए तो अल्लाह का वाज़-ओ-ज़ाजिर उन्हें सचेत करता है और तौबा की तौफ़ीक़ देता है। (४२२)
- नियाज़ की चीज़ मुअज़्ज़म (सम्मानित) होती है, उसकी बे-तौक़ीरी (अपमान) नाजायज़ है। (४२३)
- शहादत का ज़िक्र अगर गढ़ी हुई हदीसों, मना किए गए शब्दों और गलत नीयत से पाक हो तो ऐन सआदत (पुण्य) है। (५१७)

- صحبت قطعاً مؤثر ہے اور طبیعتیں سراقہ اور قلوب منقلب ہیں۔ ۳۱۸
- فضائل و مناقب
- علماء انبیاء کے وارث ہیں۔ ۱۷۱
- نیکی سے رزق بڑھتا ہے اور عمر میں برکت ہوتی ہے۔ ۱۷۳
- جماعت میں برکت ہے۔ ۱۸۴
- فضائل صدقہ وضیافت وصلہ رحمی۔ ۱۸۵
- امام ابو جعفر طحاوی کے مناقب ۲۵۱
- حضرت معاذ بن جبل رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے مناقب۔ ۲۹۳
- صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ امت کے سب سے بڑے خیر خواہ ہیں۔ ۳۰۶
- احادیث کریمہ سے ثبوت کہ ماں کا حق باپ کے حق سے زیادہ ہے۔ ۳۸۸
- خدمت میں ماں اور تعظیم میں باپ زائد ہے۔ ۳۸۹
- ماں کے حق کے بارے میں صحابی کا سوال اور حضور علیہ الصلوۃ والسلام کا جواب۔ ۴۰۲
- استاذ کے حق کو والدین کے حق پر مقدم رکھنا چاہئے۔ ۴۲۰
- استاذ کے فضائل اور اس کا مقام و مرتبہ۔ ۴۲۲
- اپنے آپ کو استاذ سے افضل قرار دینا خلافِ مامور ہے۔ ۴۲۳
- استاذ کے ادب و احترام کی تاکید۔ ۴۲۴
- شاگرد کو استاذ کے بستر پر نہیں بیٹھنا چاہئے اگر چہ استاذ موجود نہ ہو۔ ۴۲۴
- شاگرد کو استاذ سے آگے نہیں بڑھنا چاہئے۔ ۴۲۵

- بچے کا نام محمد رکھا جائے تو اس کا احترام کیا جائے۔ ۴۵۳
- رب تعالیٰ کی طرف سے حقوق کی معافی کا وعدہ پانچ فرقوں سے۔ ۴۶۶
- حاجی کے فضائل اور حقوق کی معافی۔ ۴۶۶
- شہیدِ بحر کے فضائل و مناقب۔ ۴۶۸
- شہیدِ صبر کے فضائل۔ ۴۶۹
- التائب من الذنب کمن لا ذنب لہ۔ ۴۷۰
- فضائل اولیاء۔ ۳۸۸
- فضائل صحابہ کرام۔ ۳۸۹
- فضائل اہل بدر۔ ۴۰۲
- مناقب عثمان غنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔ ۴۲۰
- محبوبانِ خدا اول تو گناہ کرتے ہی نہیں اور احیاناً کوئی تقصیر واقع ہو تو واعظ وزاجر الٰہی انہیں متنبہ کرتا اور توفیق انابت دیتا ہے۔ ۴۲۲
- نیاز کی چیز معظم ہوتی ہے اس کی بے توقیری ناجائز ہے۔ ۴۲۳
- ذکر شہادت اگر روایات موضوعہ، کلمات ممنوعہ اور نیت نامشروعہ سے خالی ہو تو عین سعادت ہے۔ ۵۱۷

- The book "Sirr-ul-Shahadatayn" consists of reliable, authentic, and subtle narrations. (518)
- Wearing an English cap, jacket, trousers, etc. (532)
- There is no one more religiously respected than the Prophets (peace be upon them). (777)
- Tailasan (a type of headgear) is the attire of Jews. (532)
- After the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), Hazrat Ibrahim (peace be upon him) is the most superior in all the world. (777)
- Dhoti is not a specific emblem of disbelievers. (534)
- Some titles of Ghaus-e-Azam (may Allah be pleased with him). (631)
- How is it to wear a coat, collar, tie, Peshawari pajama, Turkish cap and boots/ shoes, and to keep hair in English fashion? (535)
- Fifteen noble Hadiths regarding the virtues and blessings of naming 'Muhammad' and 'Ahmad'. (686)
- The cap which was the attire of the Rafidis, scholars declared its wearing to be a sin. (548)
- The Lord of Honor (Allah) bestowed one or two of His Beautiful Names upon certain Prophets (peace be upon them). (696)
- Wearing the cap of Majus (fire-worshippers) without Shari'i necessity is disbelief (kufr). (548)
- Good mention of Maulana Abdul Halim Sahib. (698)

Halaq wa Qasr (Shaving and Trimming of Hair) - Eating, drinking, and sitting with disobedient children is forbidden; rather, one should harbor resentment and hatred towards them. (406) - Shaving the beard is forbidden (haram) according to Shariah. (361) - One who distresses parents is deserving of the harshest punishment. (407) - It is forbidden (haram) for a woman to cut the hair on her head. (543)

Hudood wa Ta'zirat (Islamic Punishments) - How is it for a man to have the middle of his head shaved, and to shave or braid the hair on the forehead and nape of the neck? (543) - One who falsely accuses of adultery is given eighty lashes. (387) - It is permissible to have a patch of the head shaved (Paan style), provided the forehead hair remains. (553) - If theft is proven by Shari'i evidence, the ruler shall cut off the hand of that thief from the wrist. (407)

Ashriba (Drinks) Libas (Clothing) - Spirit is a type of alcohol which, due to being extremely strong, is not drinkable on its own. (201) - Wearing green and black clothes in Muharram. (495) - Drops of spirit are added to wines imported from Britain. (201)

- किताब "सिर्र-उल-शहादतैन" विश्वसनीय, प्रामाणिक और सूक्ष्म रिवायतों पर आधारित है। (५१८)
- अंग्रेजी टोपी, जैकेट, पतलून आदि पहनना। (५३२)
- नबियों (अलैहिमस्सलाम) से बढ़कर कोई दीनी तौर पर मुअज़्ज़म (सम्मानित) नहीं। (७७७)
- तैलसान यहूदियों का पहनावा है। (५३२)
- हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद तमाम जहान में अफ़ज़ल और आला हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं। (७७७)
- धोती खास काफिरों का शिआर (प्रतीक) नहीं है। (५३४)
- गौस-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) के बाज़ अलक़ाब (कुछ उपाधियाँ)। (६३१)
- कोट, कॉलर, टाई, पेशावरी पाजामा, तुर्की टोपी और बूट (जूता) पहनना और अंग्रेजी फैशन के बाल रखना कैसा है? (५३५)
- 'मुहम्मद' और 'अहमद' नाम रखने के फ़ज़ाइल और बरकात पर मुश्तमिल पंद्रह अहादीस-ए-करीमा। (६८६)
- जो टोपी राफ़ज़ियों का लिबास थी, उलमा ने उसका पहनना गुनाह करार दिया। (५४८)
- रब-उल-इज़्ज़त ने अंबिया-ए-किराम (अलैहिमस्सलाम) में से किसी को एक, किसी को दो नाम अपने अस्मा-ए-हुस्ना में से अता फरमाए। (६९६)
- बिला ज़रूरत-ए-शरई मजूस की टोपी पहनना कुफ्र है। (५४८)
- मौलाना अब्दुल हलीम साहब का ज़िक्र-ए-खैर। (६९८)

हलक़ व क़स्र (बाल मुंडवाना और कतरवाना) - आक़ (नाफरमान) वालिदैन के साथ खाना-पीना, उठना-बैठना मना है बल्कि उनसे बुग़ज़ और नफरत रखनी चाहिए। (४०६) - दाढ़ी मुंडवाना शरअन हराम है। (३६१) - माँ-बाप को सताने वाला सख्त से सख्त ताज़ीर (सजा) का मुस्तहिक़ है। (४०७) - औरत को अपने सर के बाल कतरना हराम है। (५४३)

हुद्दूद व ताज़ीरात - मर्द को अपना वसत (बीच का) सर खुलवाना और पेशानी व क़फ़ा (माथा और गर्दन के पिछले हिस्से) के बाल मुंडना और गूँधना कैसा है? (५४३) - तोहमत-ए-ज़िना लगाने वाले को अस्सी कोड़े लगते हैं। (३८७) - सर पर पान (एक विशेष प्रकार का हलक़) खुलवाना जायज़ है जबकि

पेशानी के बाल बाकी रखे जाएं। (५५३) - सरक़ा (चोरी) अगर शहादत-ए-शरई से साबित हो जाए तो हाकिम उस सारिक़ (चोर) का हाथ कलाई से काट देगा। (४०७)

अशरबा (पेय पदार्थ) लिबास (वस्त्र) - स्पिरिट शराब की एक क़िस्म है जो निहायत तेज़ होने की वजह से तन्हा पीने के क़ाबिल नहीं। (२०१) - मुहर्रम में सब्ज़ (हरा) और सियाह (काला) कपड़े पहनना। (४९५) - बर्तानिया से मंगवाई जाने वाली शराबों में स्पिरिट के क़तरात मिलाए जाते हैं। (२०१)

- کتاب "سرالشہادتین" روایات معتبرہ صحیحہ لطیفہ پر مشتمل ہے۔ ۵۱۸
- انگریزی ٹوپی، جاکٹ، پتلون وغیرہ پہننا۔ ۵۳۲
- انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام سے بڑھ کر کوئی معظم دینی نہیں۔ ۷۷۷
- طیلسان پوشش یہود ہے۔ ۵۳۲
- حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے بعد تمام جہان سے افضل واعلٰی حضرت ابراہیم علیہ السلام ہیں۔ ۷۷۷
- دھوتی خاص شعار کفار نہیں ہے۔ ۵۳۴
- غوث اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کے بعض القاب۔ ۶۳۱
- کوٹ، کالر، ٹائی، پیشوری پاجامہ، ترکی ٹوپی وبوٹ جوتا پہننا اور انگریزی فیشن کے بال رکھنا کیسا ہے۔ ۵۳۵
- محمد واحمد نام رکھنے کے فضائل وبرکات پر مشتمل پندرہ احادیث کریمہ۔ ۶۸۶
- جو ٹوپی لباس روافض تھی علماء نے اس کا پہننا گناہ قرار دیا۔ ۵۴۸
- رب العزت نے انبیاء کرام علیہم الصلوٰۃ والسلام میں کسی کو ایک کسی کو دو نام اپنے اسماء حسنٰی میں سے عطافرمائے۔ ۶۹۶
- بلا ضرورت شرعیہ مجوس کی ٹوپی پہننا کفر ہے۔ ۵۴۸
- مولانا عبدالحلیم صاحب کا ذکر خیر۔ ۶۹۸

حلق وقصر - عاق والدین کے ساتھ کھانا پینا، اٹھنا بیٹھنا منع ہے بلکہ اس سے بغض و نفرت رکھنا چاہئے۔ ۴۰۶ - داڑھی منڈانا شرعاً حرام ہے۔ ۳۶۱ - ماں باپ کو ستانے والا سخت سے سخت تعزیر کا مستحق ہے۔ ۴۰۷ - عورت کو اپنے سر کے بال کترنا حرام ہے۔ ۵۴۳

حدود و تعزیرات - مرد کو اپنا وسط سر کھلوانا اور پیشانی وقفاکے بال مونڈنا اور گوندھنا کیسا ہے۔ ۵۴۳ - تہمت زناء لگانے والے کو اسی کوڑے لگتے ہیں۔ ۳۸۷ - سر پر پان کھلوانا جائز ہے جبکہ پیشانی کے بال باقی رکھے جائیں۔ ۵۵۳ - سرقہ اگر شہادت شرعیہ سے ثابت ہو جائے تو حاکم اس سارق کا ہاتھ کلائی سے کاٹ دے گا۔ ۴۰۷

اشربہ - اسپرٹ شراب کی ایک قسم ہے جو انتہائی تیز ہونے کی وجہ سے تنہا پینے کے قابل نہیں۔ ۲۰۱

لباس - محرم میں سبز اور سیاہ کپڑے پہننا۔ ۴۹۵ - برطانیہ سے منگوائی جانے والی شرابوں میں اسپرٹ کے قطرات ملائے جاتے ہیں۔ ۲۰۱

Oaths (Yameen)	Vows and Offerings (Nazr-o-Niyaz)	Page No.
498	What is the ruling on going against a promise made with a firm oath according to Muhammadi Shariah?	355
501		
	Debt (Qarz)	
503	Is it sufficient for a debtor to ask the creditor to forgive the debt owed, or is it necessary for the creditor to specify the amount?	408
	Earnings, Employment, and Sales	
407	There is no harm in a laborer working for the construction of a church.	179
455	Taking a Hindu on wages and providing food for the labor is permissible.	325
	Undercutting someone else's business deal is prohibited.	429
266	Begging while posing as a pauper without necessity is prohibited (Haram).	494
320	Accepting payment for leading prayers (Imamat) is lawful (Halal).	502
	Reverence for Sayyids	
320	Disrespecting a Sunni Sayyid is strictly prohibited.	341
321	Hadiths regarding reverence for Sayyids	341

शपथ (यमीन)	मन्नत और चढ़ावा (नज़्र-ओ-नियाज़)	पेज नं.
४९८	यदि कोई मुहम्मदी शरीयत के अनुसार दृढ़ शपथ लेकर किसी कार्य का वचन दे, तो उसके विरुद्ध करना कैसा है?	३५५
५०१		
	कर्ज़	
५०३	क्या कर्ज़दार के लिए यह काफी है कि वह लेनदार से कहे कि मुझ पर तुम्हारा जो कर्ज़ है उसे माफ़ कर दो, या कर्ज़ की राशि निर्धारित करना आवश्यक है?	४०८
	अर्जन, मज़दूरी और क्रय-विक्रय	
४०७	मज़दूर का गिरजाघर के निर्माण के लिए काम करने में कोई हर्ज नहीं है।	१७९
४५५	हिन्दू को मज़दूरी पर रखना और मज़दूरी का भोजन देना जायज़ है।	३२५
	किसी के सौदे पर सौदा करना मना है।	४२९
२६६	फ़कीर बनकर बिना आवश्यकता के भीख माँगना हराम है।	४९४
३२०	इमामत (नमाज़ पढ़ाने) के लिए पारिश्रमिक लेना हलाल है।	५०२
	सैय्यदों का सम्मान	
३२०	सुन्नी सैय्यद का अनादर करना सख्त हराम है।	३४१
३२१	सैय्यदों के सम्मान से संबंधित हदीसें	३४१

یمین	نذر و نیاز	صفحہ نمبر
۴۹۸	اگر کسی امر کا وعدہ مستحکم حلف شرع محمدیہ سے کرے تو اس کے خلاف کرنا کیسا ہے۔	۳۵۵
۵۰۱		
	قرض	
۵۰۳	کیا مقروض کے لئے یہ کافی ہے کہ قرض خواہ سے کہے کہ مجھ پر تمہارا جو قرض ہے مجھے معاف کر دو یا ضروری ہے کہ قرض کی مقدار معین کرے۔	۴۰۸
	کسب واجارہ وبیوع	
۴۰۷	مزدور گرجے کی تعمیر کے لئے کام کرے تو اس میں کوئی حرج نہیں۔	۱۷۹
۴۵۵	ہندو کو مزدوری پر لینا اور مزدوری کی خوراک دینا جائز ہے۔	۳۲۵
	کسی کے سودے پر سودا کرنا ممنوع ہے۔	۴۲۹
۲۶۶	فقیر بن کر بلا ضرورت بھیک مانگنا حرام ہے۔	۴۹۴
۳۲۰	امامت پر اجرت لینا حلال ہے۔	۵۰۲
	تعظیم سادات	
۳۲۰	سنی سید کی بے توقیری سخت حرام ہے۔	۳۴۱
۳۲۱	تعظیم سادات سے متعلق احادیث	۳۴۱

Volume 24

Page	Subject
703	How is it for the Ahl-us-Sunnah wal-Jama'ah to accept offerings (Niyaz) etc. from the Sayyids of the Shia sect?
	The one who forbids Shia offerings by calling them Haram is doing the right thing.
124	There is no harm in necessary conversation with Wahhabis and Shias while maintaining heartfelt hatred for them.
124	Siding with non-conformists (Ghair Muqallid), alcoholics, and drug addicts is misguidance and a sin.
126	How is it to marry into the house of a Wahhabi non-conformist, pray with them, and eat at their home?
140	No good deed of a deviant is accepted, nor is any reward or merit earned for it.
140	Wahhabis have enmity towards the names of the beloved of Allah.
147	The creed (Maslak) of Syed Ahmad Khan.
150	In the corrupt religion of the Wahhabis, if the names of Allah's beloved are mentioned with even a little respect and honor, polytheism (Shirk) spreads its mouth.
151	
422	The origin of Maulana Abdul Hai's error.
423	Miscellaneous.
429	The wisdom behind the temporary cessation of revelation (Wahi) for some time.
429	The reason for the prohibition of discordant sounds (fitna).
429	Absolute knowledge of everything, whatever it may be, is pure perfection.
470	'Ma'azif' is broader than 'Mazamir' (because 'Mazamir' refers to those instruments which are played with the mouth).
494	The flute (Nai) is among the 'Mazamir'.
690	We are not commanded to split hearts, investigate the unseen, or harbor ill thoughts.
692	No one has a cure for lust-worship.
692	

Page	Subject
	According to the leader of the Wahhabis, erecting a canopy over a grave or waving a fly-whisk is polytheism (Shirk).
158	According to the Wahhabis, names like Ghulam Muhammad and Ghulam Ghaus are polytheism, while Ghulam Aftab is permissible and blameless.
170	A forceful rebuttal by the author to the fatwa of Maulana Abdul Hai.
183	If mere possibility were a cause for prohibition, then few words in the world would be free from prohibition and criticism.
206	Based on Maulana Abdul Hai's fatwa, even his own name becomes forbidden and impermissible.
251	A scholarly critique of Maulana Abdul Hai Lakhnawi's fatwa regarding names like 'Abdun Nabi'.
302	Seven reasons for the fatwa of Lakhnawi Sahib being questionable.

Page	Subject
	Which type of ecstasy (Wajd) is permissible and which is impermissible?
692	A few verses from the Masnavi Manavi.
695	Forbidden types of speech.
695	The number seven has a special effect in warding off harm and calamity.
697	What is 'Raj'at-e-Amal'?
700	'Tatfil alal Tahawi' (An addendum to Tahawi).
701	Staying in one's city with three specific qualities in the event of a plague outbreak.

जिल्द 24

पृष्ठ	विषय
७०३	शिया संप्रदाय के सादातों के यहाँ की नियाज़ आदि लेना सुन्नत वल-जमाअत के लिए कैसा है?
	शियाओं की नियाज़ को हराम बताकर मना करने वाला सही कर रहा है।
१२४	वहाबियों और शियाओं से दिली नफरत रखते हुए ज़रूरी बातचीत करने में कोई हर्ज नहीं।
१२४	गैर-मुक़ल्लिदों, शराबियों और नशेड़ियों का पक्ष लेना कुधर्म (बद-मज़हबी) और गुनाह है।
१२६	वहाबी गैर-मुक़ल्लिद के घर शादी करना, उनके साथ नमाज़ पढ़ना और उनके घर खाना कैसा है?
१४०	कुधर्मी (बद-मज़हब) की कोई नेकी कुबूल नहीं होती, न ही उस पर कोई अज्र (पुण्य) मिलता है।
१४०	वहाबियों को अल्लाह के प्रियजनों (महमूबान-ए-खुदा) के नामों से शत्रुता है।
१४७	सैयद अहमद खान का मसलक (विचारधारा)।
१५०	वहाबियों के भ्रष्ट धर्म में यदि अल्लाह के प्रियजनों के नाम को थोड़े भी सम्मान से लिया जाए, तो शिर्क(बहुदेववाद) अपना मुँह खोल देता है।
१५१	
४२२	मौलवी अब्दुल हई साहब की गलती का कारण।
४२३	विविध (मतफरकात)।
४२९	कुछ समय के लिए वह्य (ईश्वरीय संदेश) के रुकने में निहित हिकमत।
४२९	फिल्ने वाली आवाज़ों (संगीत आदि) की हुरमत (निषेध) का कारण।
४२९	हर चीज़ का पूर्ण ज्ञान (इल्मे मुतलक़) जैसा भी हो, पूर्णता की पराकाष्ठा है।
४७०	'मआज़िफ़' 'मज़ामीर' से व्यापक है (क्योंकि 'मज़ामीर' उन वाद्ययंत्रों को कहते हैं जो मुँह से बजाए जाते हैं)।
४९४	नै (बांसुरी) 'मज़ामीर' में से है।
६९०	हमें दिलों को चीरने, परोक्ष की टोह लेने और बुरे गुमान पालने का आदेश नहीं है।
६९२	वासना-पूजा का इलाज किसी के पास नहीं।
६९२	

पृष्ठ	विषय
१५८	वहाबियों के पेशवा (नेता) के अनुसार कब्र पर शामियाना खड़ा करना या मोर-छल झलना शिर्क है। वहाबियों के अनुसार गुलाम मुहम्मद और गुलाम गौस जैसे नाम शिर्क हैं, जबकि गुलाम आफताब जायज़ और निर्दोष है।
१७०	लेखक द्वारा मौलवी अब्दुल हई साहब के फतवे का जोरदार खंडन।
१८३	यदि केवल संभावना ही निषेध का कारण बन जाए, तो दुनिया में कोई भी शब्द निषेध और आलोचना से मुक्त नहीं रहेगा।
२०६	मौलवी अब्दुल हई साहब के फतवे के आधार पर उनका अपना नाम भी निषिद्ध और नाजायज़ हो जाता है।
२५१	'अब्दुन नबी' जैसे नाम रखने के बारे में मौलवी अब्दुल हई लखनवी साहब के फतवे पर शोधपरक पकड़।
३०२	लखनवी साहब के फतवे के संदेहास्पद होने के सात कारण।
६९२	मसनवी मानवी के कुछ शेर।
६९५	निषिद्ध प्रकार की बातचीत।
६९५	सात की संख्या में हानि और विपत्ति को दूर करने का एक विशेष प्रभाव है।
६९७	'रजअत-ए-अमल' क्या चीज़ है।
७००	'ततफ़्फ़ुल अलत तहावी'।
७०१	प्लेग (ताऊन) फैलने की स्थिति में अपने शहर में तीन गुणों के साथ रुकना।
	कौन सा वज्द (समाधि/उल्लास) जायज़ है और कौन सा नाजायज़।

جلد ۲۴

صفحہ	مضمون
۷۰۳	سادات اہل تشیع کے یہاں کی نیاز وغیرہ اہل سنت وجماعت کو لینا کیسا ہے۔
۱۲۴	اہل تشیع کی نیاز کو حرام بتا کر منع کرنے والا ٹھیک کرتا ہے۔
۱۲۴	وہابی اور شیعہ سے دلی نفرت رکھتے ہوئے ضروری بات چیت میں حرج نہیں۔
۱۲۶	غیر مقلدوں، شراب خوروں اور چنڈو بازوں کی طرف داری کرنا بد مذہبی اور گناہ ہے۔
۱۴۰	وہابی غیر مقلد کے گھر شادی کرنا ، اس کے ساتھ نماز پڑھنا اور اس کے گھر کھانا کیسا ہے۔
۱۴۰	بد مذہب کی کوئی نیکی قبول نہیں، نہ اس پر اجر و ثواب مرتب ہوتا ہے۔

صفحہ	مضمون
۴۲۲	مولوی عبدالحئی صاحب کی غلطی کا منشاء
۴۲۳	متفرقات
۴۲۹	کچھ عرصہ وحی کے رکنے میں حکمت۔
۴۲۹	اصوات فتنہ کی حرمت کی وجہ۔
۴۲۹	ہر شیئ کا علم مطلقاً کیسی ہی ہو عین کمال ہے۔
۴۷۰	معازف مزامیر سے عام ہے (کیونکہ مزامیر ان باجوں کو کہتے ہیں جو منہ سے بجائے جاتے ہیں)
۴۹۴	نے (بانسری) مزامیر میں سے ہے۔

صفحہ	مضمون	صفحہ	مضمون
	وہابیوں کو محبوبانِ خدا کے نام سے عداوت ہے۔		
۱۴۷	سید احمد خان کا مسلک۔	۶۹۰	ہمیں شق قلوب، تطلع غیوب اور اسائت ظنون حکم نہیں۔
	وہابیہ کے دین فاسد میں محبوبان خدا کا نام		
۱۵۰	ذرا اعزاز و تکریم کی نگاہ سے آیا اور شرک نے منہ پھیلایا۔	۶۹۲	ہوس پرستی کا علاج کسی کے پاس نہیں۔
۱۵۱	پیشوائے وہابیہ کے نزدیک قبر پر شامیانہ کھڑا کرنا مور چھل جھلنا شرک ہے۔	۶۹۲	وجد کون سا جائز اور کون سا ناجائز ہے۔
	وہابیہ کے نزدیک غلام محمد و غلام غوث		
۱۵۸	شرک اور غلام آفتاب ہو ناجائز و بے ملا م ہے۔	۶۹۲	مثنوی معنوی کے چند اشعار۔
۱۷۰	مصنف علیہ الرحمہ کی طرف سے مولوی عبدالحئی صاحب کے فتوٰی کا ردِ بلیغ۔	۶۹۵	انواع کلام ممنوع۔
۱۸۳	مجرد احتمال اگر موجب منع ہو تو عالم میں کم کوئی کلام منع و طعن سے خالی رہے گا۔	۶۹۵	سات کے عدد کو دفع ضرر و آفت میں ایک تاثیر خاص ہے۔
۲۰۶		۶۹۷	رجعت عمل کیا چیز ہے۔

صفحہ	مضمون	صفحہ	مضمون
	مولوی عبدالحئی صاحب کے فتوٰی کی بنیاد پر خود ان کا اپنا نام بھی ممنوع و ناجائز ہے۔		
	عبدالنبی جیسے نام رکھنے کے بارے میں		
۲۵۱	مولوی عبدالحئی لکھنوی صاحب کے فتوی پر محققانہ گرفت۔	۷۰۰	تطفل علی الطحاوی۔
۳۰۲	لکھنوی صاحب کے فتوی کے مخدوش ہونے کی سات وجوہ۔	۷۰۱	طاعون واقع ہونے کی صورت میں اپنے شہر میں تین وصفوں کے ساتھ ٹھہرے ۔

Volume 24 Fatawa Rizwia 318 - Maulana Rumi's verses regarding the influence of company. | 581 - Tatafful (Following/Dependence) on Al-Tahawi (I say). 327 - Love and hatred can coexist for two different reasons. | 585 - Tatafful on the investigator Al-Ala'i. 441 - What is Teenat-ul-Khabal? | 588 - Meaning of the text of Durr-e-Mukhtar. 460 - Counting the rights of fellow beings is difficult. | 595 - Tatafful on the author of Hulya. 492 - From where is it proven to cook and distribute 'Khichda' in the community? | 598 - Tatafful on Allama Qawam Kaki. 517 - Difference in rulings between the mention of martyrdom and Ta'ziya. | 611 - Harmony and reconciliation in two issues. 560 - One should avoid a bad reputation along with bad deeds. | 651 - Different methods of warning and cautioning jinns. www.dawateislami.net I.T. Majlis of Dawateislami Page 75 of 720

जिल्द 24 फतावा रज़विया 318 - सोहबत के असर से मुताल्लिक मौलाना रूमी के अशआर। | 581 - ततफ़्फ़ुल अल-तहावी (अक़ौल)। 327 - दो मुख़्तलिफ़ वजहों से मोहब्बत व बुग़्ज़ जमा हो सकते हैं। | 585 - मुदक़्क़िक़ अलाई पर ततफ़्फ़ुल। 441 - तीतुल ख़बाल क्या है? | 588 - इबारत दर-मुख़्तार का मतलब। 460 - हुक़ूक़-उल-इबाद की गिनती दुश्वार है। | 595 - साहिब-ए-हिलया पर ततफ़्फ़ुल। 492 - खिचड़ा पका कर बिरादरी में तक्सीम करना कहाँ से साबित हुआ? | 598 - अल्लामा क़वाम काकी पर ततफ़्फ़ुल। 517 - ज़िक्र-ए-शहादत में और ताज़िया में फ़र्क़ए-अहकाम। | 611 - दो मसलों में तौफ़ीक़ व ततबीक़। 560 - बुरे काम के साथ-साथ बुरे नाम से भी बचना चाहिए। | 651 - जिन्नात को अंदाज़ व तहज़ीर के मुख़्तलिफ़ तरीक़े। www.dawateislami.net I.T. Majlis of Dawateislami पेज 75/720

جلد ۲۴ فتاویٰ رضویہ ۳۱۸ - تاثیر صحبت سے متعلق مولانا رومی کے اشعار۔ | ۵۸۱ - تطفل علی الطحاوی (اقول)۔ ۳۲۷ - دو مختلف وجہوں سے محبت و بغض جمع ہو سکتے ہیں۔ | ۵۸۵ - مدقق علائی پر تطفل۔ ۴۴۱ - طینۃ الخبال کیا ہے۔ | ۵۸۸ - عبارت در مختار کا مطلب۔ ۴۶۰ - حقوق العباد کی گنتی دشوار ہے۔ | ۵۹۵ - صاحب حلیہ پر تطفل۔ ۴۹۲ - کھچڑا پکا کر برادری میں تقسیم کرنا کہاں سے ثابت ہوا۔ | ۵۹۸ - علامہ قوام کاکی پر تطفل۔ ۵۱۷ - ذکر شہادت میں اور تعزیہ میں فرق احکام۔ | ۶۱۱ - دو مسئلوں میں توفیق و تطبیق۔ ۵۶۰ - برے کام کے ساتھ ساتھ برے نام سے بھی بچنا چاہئے۔ | ۶۵۱ - جنات کو انداز و تحذیر کے مختلف طریقے۔

Fatawa Razawiyya, Volume 24

Amusements and Play Regarding games, spectacles, fairs, humor, dancing, singing, Qawwali, musical instruments, melodies, Sama (spiritual audition), music, etc.

Problem 1: From Ferozepur, Rabi' al-Awwal 1310 AH.

Question: What do the scholars of religion say regarding the issue of playing Ganjifa, Chausar (backgammon), and Chess? Is there any difference between them or are they all the same? Are they minor sins or major sins? Or are they futile acts (Abas)? And what is the ruling on a futile act? State the ruling and be rewarded. (T: State the explanation and receive the reward.)

The Answer: All these games are forbidden and impermissible. Among them, Chausar and Ganjifa are worse. Ganjifa contains pictures, and they keep them with greatness and look upon them with respect and honor; this matter is a cause for severe sin. And regarding Chausar, the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him and his family) said:

[Arabic]: "Whoever plays with Nardashir (Chausar), it is as if he dipped his hand in the flesh and blood of a pig." 1 - Narrated by Muslim - [Urdu Translation]: He who played Chausar, it is as if he colored his hand in the meat and blood of a pig. (T: Muslim narrated it.)

---

1 Sahih Muslim, Book of Poetry, Chapter on the Prohibition of Playing with Nardashir, Qadeemi Kutub Khana Karachi, 2/240.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 24

लहवो-लब (खेल और मनोरंजन) खेल, तमाशा, मेला, मज़ाक़, नाच, गाना, क़व्वाली, साज़, राग, समा, संगीत आदि से संबंधित।

मस्अला 1: फ़िरोज़पुर से, रबी-उल-अव्वल 1310 हिजरी।

सवाल: उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि गंजीफ़ा, चौसर और शतरंज खेलना कैसा है? क्या इनमें कोई फ़र्क़ है या सब एक जैसे हैं? और क्या ये गुनाह-ए-सग़ीरा (छोटा गुनाह) हैं या कबीरा (बड़ा गुनाह)? या फ़िज़ूल काम (अबस)? और फ़िज़ूल काम का क्या हुक्म है? बयान कीजिए और सवाब पाइए। (त: बयान फ़रमाएँ और अज्र पाएँ।)

जवाब: ये सब खेल वर्जित (ममनू) और नाजायज़ हैं। इनमें चौसर और गंजीफ़ा और भी बुरे हैं। गंजीफ़ा में तस्वीरें होती हैं जिन्हें वे सम्मान के साथ रखते हैं और आदर व सम्मान की दृष्टि से देखते हैं; यह बात इसके कड़े गुनाह का कारण है। और चौसर के बारे में हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

[अरबी]: "जिसने नरदशीर (चौसर) खेला, मानो उसने अपना हाथ सुअर के मांस और खून में रंग लिया।" 1 - मुस्लिम द्वारा रिवायत - [उर्दू अनुवाद]: जिसने चौसर खेली उसने मानो अपना हाथ सुअर के मांस और खून में रंगा। (त: इसे मुस्लिम ने रिवायत किया।)

---

1 सहीह मुस्लिम, किताबुश-शेयर, बाब: नरदशीर खेलने की हुरमत का बयान, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 2/240।

पेज 76 ऑफ़ 720

فتاوٰی رضویہ ، جلد ۲۴

لہو ولعب کھیل ، تماشہ ، میلہ ، مزاح ، ناچ ، گانا ، قوالی ، مزامیر ، راگ ، سماع ، موسیقی وغیرہ سے متعلق

مسئلہ ۱: از فیروز پور ربیع الاول ۱۳۱۰ ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ گنجفہ، چوسر، شطرنج کھیلنا کیسا ہے اور ان میں کچھ فرق ہے یا سب ایک سے ہیں، اور گناہ صغیرہ ہیں یا کبیرہ؟ یا عبث؟ اور فعل عبث کا کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا (بیان فرمایئے اجر پائیے۔ت)

الجواب: یہ سب کھیل ممنوع اور ناجائز ہیں اور ان میں چوسر اور گنجفہ بدتر ہیں، گنجفہ میں تصاویر ہیں اور انھیں عظمت کے ساتھ رکھتے اور وقعت و عزت کی نگاہ سے دیکھتے ہیں یہ امر اس کے سخت گناہ کا موجب ہے۔ اور چوسر کی نسبت حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم نے فرمایا:

من لعب بالنردشیر فکانما صبغ یدہ فی لحم خنزیر و دمہ ۱- رواہ مسلم- جس نے چوسر کھیلی اس نے گویا اپنا ہاتھ سور کے گوشت خون میں رنگا۔ (اسے مسلم نے روایت کیا۔ ت)

---

۱ صحیح مسلم کتاب الشعر باب تحریم اللعب بالنردشیر قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۲۴۰

Volume 24 Fatawa-e-Razawiyya

Second Sahih Hadith, [the Prophet ﷺ] stated: | Whoever plays Chausar (backgammon/dice) has disobeyed Allah and His Messenger. Reported by Ahmad, | Whoever plays Chausar has disobeyed God and His Messenger (Narrated from Abu Musa Ash'ari [may Allah be pleased with him] by Ahmad, | | :--- | :--- | | Abu Dawood, Ibn Majah, and Al-Hakim, from Abu Musa Al-Ash'ari, may Allah be pleased with him. | Abu Dawood, Ibn Majah, and Hakim. - Translator) |

Playing Chausar is unanimously (bil-ijma') forbidden, a cause of transgression (fisq), and leads to the rejection of one's testimony. It is stated in Radd al-Muhtar from Al-Quhistani: "Chausar is forbidden and unanimously invalidates a person's uprightness (adalah)." (It is cited in Fatawa Shami from Quhistani that playing Chausar is haram; it unanimously results in the loss of one's legal standing as a just person. - Translator). The same should be understood for Ganjifa (a card game) for the reason we have mentioned. (- Translator). Although some scholars have mentioned the permissibility of chess (shatranj) in certain reports under several conditions: (1) No gambling should be involved. (2) It should be occasional; one should not make a habit of it. (3) It should not cause any interference with congregational prayer or any other Sharia obligation. (4) One should not take oaths over it. (5) One should not use foul language. However, research shows it is absolutely prohibited, and the truth is that these conditions are never maintained, especially the second and third conditions. Once someone gets addicted to it, they inevitably persist in it, and at the very least, it causes narrowness in prayer times or absence from the congregation, as experience testifies. And even if, hypothetically, one person in a thousand turns out to strictly observe these conditions, a rare case does not determine the ruling.

Legal rulings (ahkam) are built upon the prevailing situations, so the rare instance is not considered. Therefore, the decision of prohibition will be made, as stated by the researcher	**Jurisprudential rulings are based on prevailing conditions, hence rare occurrences are not considered. Therefore, the ruling of prohibition will be given, as indicated by the researcher**
Al-Muhaqqiq (Researcher) Ibn al-Humam.	Ibn al-Humam

^1 Musnad Imam Ahmad bin Hanbal from Abu Musa Ash'ari (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami Beirut 4 / 394 ^2 Radd al-Muhtar, Kitab al-Hazr wal-Ibahah, Chapter on Sale, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 5 / 253

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

दूसरी सहीह हदीस, [नबी ﷺ ने] फ़रमाया: | जिसने चौसर खेली, उसने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी की। अहमद, | जिसने चौसर खेली उसने खुदा और रसूल की नाफ़रमानी की (अहमद, | | :--- | :--- | | अबू दाऊद, इब्न माजह और हाकिम ने इसे अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया। | अबू दाऊद, इब्न माजह और हाकिम ने इसे अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया। - त) |

चौसर खेलना बिल-इज्मा (सर्वसम्मति से) हराम है और यह फ़िस्क (अवज्ञा) का कारण है और गवाही के खारिज होने का कारण है। रद अल-मुह्तार में कहिस्तानी से उद्धृत है: "चौसर हराम है और सर्वसम्मति से अदालत (विश्वसनीयता) को खत्म कर देता है।" (फ़तावा शामी में कहिस्तानी से उद्धृत किया गया है कि चौसर खेलना हराम है, इससे बिल-इज्मा अदालत साकित हो जाती है। - त)। यही हाल गंजीफ़ा (ताश के खेल) का समझना चाहिए, उस वजह से जिसका हमने ज़िक्र किया है। (- त)। और शतरंज को हालांकि कुछ उलेमा ने कुछ रिवायतों में चंद शर्तों के साथ जायज़ बताया है: (१) जुआ न हो। (२) कभी-कभी हो, आदत न डालें। (३) उसके कारण नमाज़ बा-जमात या किसी शरीई वाजिब में खलल न आए। (४) उस पर कसमें न खाया करें। (५) फ़हश (गाली-गलौज) न बकें। मगर तहकीक यह है कि मुतलकन मना है और हक़ यह है कि इन शर्तों का निर्वाह हरगिज़ नहीं होता, ख़सूसन दूसरी और तीसरी शर्त, कि जब इसका चसका पड़ जाता है तो ज़रूर निरन्तरता करते हैं और कम से कम नमाज़ के वक़्त में तंगी या जमात में गैर-हाज़िरी बेशक होती है जैसा कि तजुर्बा इस पर गवाह है। और फर्ज़ करें हज़ार में एक आधा आदमी ऐसा निकले जो इन शर्तों का पूरा लिहाज़ रखे, तो नादिर (दुर्लभ मामले) पर हुक्म नहीं होता।

फ़िक़्ही अहकाम गालिब (सामान्य) हालातों पर आधारित होते हैं, लिहाज़ा नादिर (दुर्लभ) वाकये पर नज़र नहीं की जाती, इसलिए ममानत (पाबंदी) का फ़ैसला ही किया जाएगा जैसा कि मुहक्किक़ ने फ़रमाया

मुहक्किक़ इब्न हुमाम।

फ़िक़्ही अहकाम अक्सरियत के हालात पर मबनी होते हैं लिहाज़ा नादिर उल-वकूअ पर निगाह नहीं की जाती इसलिए ममानत का फ़ैसला ही किया जाएगा जैसा कि

मुहक्किक़ इब्न हुमाम

^1 मुसनद इमाम अहमद बिन हनबल, अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरूत 4 / 394 ^2 रद अल-मुह्तार, किताब अल-हज़र वल-इबाहह, फ़स्ल फ़िल-बय, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी बेरूत 5 / 253

पेज 77 of 720

دوسری حدیث صحیح فرمایا: | من لعب بالنرد فقد عصی اللہ ورسولہ اخرجہ احمد | جس نے چوسر کھیلی اس نے خدا اور رسول کی نافرمانی کی (احمد، | | :--- | :--- | | وابوداؤد وابن ماجہ والحاکم عن ابي موسی الاشعری رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ | ابو داؤد، ابن ماجہ اور حاکم نے اسے ابو موسٰی اشعری رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا۔ت) |

چوسر بالا جُماع حرام و موجب فسق وردّ شہادت ہے فی ردالمحتار عن القہستانی النرد حرام مسقط للعدالۃ بالا جُماع (فتاوٰی شامی میں قہستانی سے نقل کیا گیا ہے کہ چوسر کھیلنا حرام ہے اس سے بالاجماع عدالت ساقط ہو جاتی ہے۔ ت) یہی حال گنجفہ کا سمجھنا چاہئے لماذ کرنا (اس وجہ سے جس کو ہم نے ذکر کیا ہے۔ ت) اور شطرنج کو اگر چہ بعض علما نے بعض روایات میں چند شرطوں کے ساتھ جائز بتایا ہے: (۱) بد نہ ہو۔ (۲) نادرا کبھی کبھی ہو عادت نہ ڈالیں۔ (۳) اُس کے سبب نماز با جماعت خواہ کسی واجبِ شرعی میں خلل نہ آئے۔ (۴) اُس پر قسمیں نہ کھایا کریں۔ (۵) فُحش نہ بکیں۔ مگر تحقیق یہ کہ مطلقاً منع ہے اور حق یہ ہے کہ ان شرطوں کا نباہ ہر گز نہیں ہوتا خصوصاً شرط دوم و سوم کہ جب اس کا چسکا پڑ جاتا ہے ضرور مداومت کرتے ہیں اور لا اقل وقتِ نماز میں تنگی یا جماعت میں غیر حاضری بیشک ہوتی ہے جیسا کہ تجربہ اس پر شاہد، اور بالفرض ہزار میں ایک آدھ آدمی ایسا نکلے کہ ان شرائط کا پورا لحاظ رکھے تو نادر پر حکم نہیں ہوتا۔

وانما تبتنی الاحکام الفقهیة علی الغالب فلا ینظر الی النادر ولا یحکم الا بالمنع کما افاده المحقق فی

فقہی احکام غالب حالات پر مبنی ہوتے ہیں لہذا نادر الوقوع پر نگاہ نہیں کی جاتی اس لئے ممانعت کا فیصلہ ہی کیا جائے گا جیسا کہ محقق ابن ہمام

محقق ابن ہمام

1۸ مسند امام احمد بن حنبل عن ابی موسیٰ اشعری رضی اللہ تعالیٰ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۴ / ۳۹۴ 2۸ ردالمحتار کتاب الحظر والاباحة فصل فی البیع دار احیاء التراث العربی بیروت ۵ / ۲۵۳

Fatawa-e-Razvia Volume 24

[Box 1] Arabic: Al-Fath concerning the issue of proximity to the Haram, and in al-Durr concerning the issue of the bathhouse. Urdu: Benefit was provided in 'Fath al-Qadir' regarding the issue of proximity to the Haram. And the same was stated in 'Durr al-Mukhtar' regarding the issue of the bathhouse. (T)

So it is correct that it should be absolutely prohibited. It is mentioned in 'Durr al-Mukhtar':

[Box 2] Arabic: Playing backgammon (nard) and chess (shatranj) is prohibitively disliked (makruh tahriman)... and al-Shafi'i and Abu Yusuf, in one narration, permitted it provided there is no gambling and it does not neglect a mandatory duty; otherwise, it is forbidden (haram). Urdu: Playing backgammon (Chausar) is prohibitively disliked, and so is chess. In one narration, Imam Shafi'i and Qadi Abu Yusuf have declared chess as permissible, and this applies only when there is no gambling and no disruption in fulfilling mandatory duties occurs; otherwise, it will be forbidden. (T)

In 'Radd al-Muhtar' it is stated:

[Box 3] Arabic: It is forbidden (haram) and a major sin according to us, and in its permissibility is aid to Satan against Islam and Muslims, as in al-Kafi [by] Qahistani... its ruling in the narration etc., and likewise if frequent swearing does not occur over it; and without these meanings, his credibility [as a witness] is not dropped due to the difference of opinion regarding its prohibition, [as cited by] Abd al-Barr from Adab al-Qadi. Urdu: According to us, playing chess is forbidden and a major sin, and declaring it permissible is providing assistance to Satan against Islam and Muslims, as mentioned in 'al-Kafi' by Qahistani. Regarding the phrase 'in the narration etc.', it means similarly when excessive swearing does not take place during the game, and without these factors, a person's credibility as a witness is not nullified because there is a difference of opinion among scholars regarding its prohibition. [Cited from] Abd al-Barr with reference to 'Adab al-Qadi'. (T)

In 'Alamgiri' it is stated:

[Box 4] Arabic: Playing chess, backgammon, thirteen, and fourteen is disliked, and every idle play besides... Urdu: Playing chess, backgammon, and the games of 'thirteen' and 'fourteen' is disliked, and besides chess, every other game of idle play is unanimously forbidden.

1. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Hazr wal-Ibaha, Chapter on Sales, Mujtabai Press, Delhi, 2/284-72
2. Radd al-Muhtar, Kitab al-Hazr wal-Ibaha, Chapter on Sales, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/253

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द २४

[बॉक्स 1] अरबी: अल-फ़तह हरम की निकटता के मसले में और अद-दुर्र हम्माम के मसले में। उर्दू: 'फ़तह अल-क़दीर' में हरम की पड़ोसियत के मसले पर उपयोगी जानकारी दी गई है। और 'दुर्रे मुख्तार' में हम्माम के मसले में यही कहा गया है। (त)

तो सही यही है कि इससे पूर्णतः मना किया जाए। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

[बॉक्स 2] अरबी: नर्द (चौसर) और शतरंज खेलना मकरूहे तहरीमी है... और एक रिवायत में इमाम शाफ़ई और क़ाज़ी अबू यूसुफ़ ने इसे मुबाह (अनुमेय) माना है, बशर्ते कि इसमें जुआ न हो और किसी वाजिब (अनिवार्य कर्तव्य) की अदायगी में बाधा न आए; अन्यथा यह हराम है। उर्दू: चौसर खेलना मकरूहे तहरीमी है और शतरंज भी। और एक रिवायत में इमाम शाफ़ई और क़ाज़ी अबू यूसुफ़ ने शतरंज को मुबाह क़रार दिया है, और यह उस समय होगा जब जुआ न हो और किसी वाजिब की अदायगी में खलल भी न पड़े, वर्ना हराम होगा। (त)

'रद अल-मुहतार' में है:

[बॉक्स 3] अरबी: हमारे यहाँ यह हराम और गुनाहे कबीरा है, और इसकी अनुमति देना इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ शैतान की मदद करना है जैसा कि 'अल-काफ़ी' कुहिस्तानी में है... इसकी रिवायत आदि, और इसी तरह जब खेल के दौरान अधिक कसमें न खाई जाएँ और इन चीज़ों के बिना व्यक्ति की गवाही (अदालत) साक़ित नहीं होती क्योंकि इसकी हुरमत (निषेध) पर विद्वानों के बीच मतभेद पाया जाता है, अब्दुल बर्र बा-हवाला अदब अल-क़ाज़ी। उर्दू: हमारे नज़दीक शतरंज खेलना हराम और गुनाहे कबीरा है और इसको मुबाह क़रार देने में इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ शैतान को मदद मुहैया करना है जैसा कि 'काफ़ी' में है, कुहिस्तानी। क़ौलुहू फ़ी रिवायतिही आदि और इसी तरह जबकि खेल के दौरान ज़्यादा क़समें न खाई जाएँ और इन चीज़ों के बिना आदमी की अदालत साक़ित नहीं होती क्योंकि इसकी हुरमत में अहल-ए-इल्म के दरमियान इख़्तिलाफ़ पाया जाता है, अब्दुल बर्र बा-हवाला अदब अल-क़ाज़ी। (त)

'आलमगीरी' में है:

[बॉक्स 4] अरबी: शतरंज, नर्द, तेरह और चौदह का खेल मकरूह है, और शतरंज के अलावा हर बेकार खेल... उर्दू: शतरंज और चौसर और 'तेरह' और 'चौदह' का खेल मकरूह है, और शतरंज के अलावा हर खेल सर्वसम्मति से हराम है।

---

1. दुर्रे मुख्तार, किताब अल-हज़र वल-इबाहह, फ़स्ल फ़िल बै, मतबा मुजतबाई देहली, २/ २८४-७२
2. रद अल-मुहतार, किताब अल-हज़र वल-इबाहह, फ़स्ल फ़िल बै, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बैरुत, ५ / २५३

पृष्ठ ७८ / ७२०

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

الفتح فی مسئلۃ مجاورۃ الحرم وفی الدر فی مسئلۃ الحمام۔ نے فتح القدیر میں ہمسائیگی حرم کے مسئلہ میں افادہ بخشا۔ اور در مختار میں مسئلہ حمام میں یہی فرمایا ہے۔ (ت)

تو ٹھیک یہی ہے کہ اس سے مطلقاً ممانعت کی جائے۔ در مختار میں ہے:

کرہ تحریماً اللعب بالنرد والشطرنج بکسر اولہ ویہمل ولا یفتح الا نادرا واباحہ الشافعی وابو یوسف فی روایۃ وہذا اذا لم یقامر ولم یخل بواجب والا فحرام -۱ چوسر کھیلنا مکروہِ تحریمی ہے اور شطرنج بھی۔ اور ایک روایت میں امام شافعی اور قاضی ابو یوسف نے شطرنج کو مباح قرار دیا ہے، اور یہ اس وقت ہوگا جبکہ جوا نہ ہو اور کسی واجب کی ادائیگی میں خلل بھی واقع نہ ہو ورنہ حرام ہوگا۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے:

ہو حرام وکبیرۃ عندنا وفی اباحتہ اعانۃ الشیطان علی الاسلام والمسلمین کما فی الکافی قہستانی قولہ فی روایتہ الخ وکذا اذالم یکثر الخلف علیہ وبدون ہذہ المعانی لاتسقط عدالتہ للاختلاف فی حرمتہ عبد البرعن ادب القاضی۔۲ ہمارے نزدیک شطرنج کھیلنا حرام اور گناہِ کبیرہ ہے اور اس کو مباح قرار دینے میں اسلام اور مسلمانوں کے خلاف شیطان کو امداد فراہم کرنا ہے جیسا کہ کافی میں ہے، قہستانی۔ قولہ فی روایتہ الخ اور اسی طرح جبکہ دورانِ کھیل زیادہ قسمیں نہ کھائی جائیں، اور بغیر ان چیزوں کے آدمی کی عدالت ساقط نہیں ہوتی کیونکہ اس کی حرمت میں اہل علم کے درمیان اختلاف پایا جاتا ہے، عبدالبر بحوالہ ادب القاضی۔ (ت)

عالمگیری میں ہے:

یکرہ اللعب بالشطرنج والنرد و ثلثۃ عشر واربعۃ عشر وکل لھو ماسوی شطرنج اور چوسر اور تیرہ اور چودہ کا کھیل مکروہ ہے اور شطرنج کے علاوہ ہر کھیل بالاتفاق حرام ہے

---

۱ درمختار کتاب الحظر والا باحۃ فصل فی البیع مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۲۸۴-۷۲ ۲ رد المحتار کتاب الحظر والا باحۃ فصل فی البیع داراحیاء التراث العربی بیروت ۵ / ۲۵۳

Volume 24

Fatawa Razvia

Chess is prohibited by consensus. As for chess, playing it is forbidden according to us. The person who plays it, if he wagers on it, his integrity is forfeited and his testimony will not be accepted. [Summary] [1] And playing chess is also forbidden according to us. And that person who plays, if he makes it a bet for gambling, then his legal credibility will be lost, hence his testimony will not be accepted. [Summary] (T)

Yes, it is such that if there is no gambling involved, then playing once or twice is a minor sin. But if there is gambling, or it becomes a habit, or because of it prayers are missed or congregations are lost, then it will automatically become a major sin. Similarly, every game and vain act in which there is neither any religious purpose nor any permissible worldly benefit, all are disliked and improper, some less, some more. It is mentioned in 'Durr-e-Mukhtar':

And every distraction is disliked because of the Prophet’s (peace and blessings be upon him) saying: "Every distraction (game) of a Muslim is forbidden except for three: playing with his wife, training his horse, and practicing archery with his bow." [2] Every game is disliked because the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) said that every game of a Muslim is forbidden except for three: a husband playing with his wife, playing with his horse while training it, and practicing archery with his bow. (T)

It is in 'Radd-ul-Muhtar': "Every distraction" means every play and vanity; so these three terms have the same meaning as mentioned in 'Sharh-ul-Ta'wilat' [3] etc., and Allah knows best. Every 'lahw' (distraction), meaning play and useless work. So all three are synonymous, as mentioned in 'Sharh-ul-Ta'wilat' etc. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 2: From Jalandhar, Mohalla Rasta Phagwara Darwaza, sent by Sheikh Muhammad Shams-ud-Din. 22 Rajab 1310 AH. Is having music performed or listening to it a major sin or a minor sin? Is the perpetrator of this act a 'Fasiq' (sinner/ transgressor) or not?

The Answer: Musical instruments, meaning tools of play and distraction for the purpose of play and distraction, are undoubtedly forbidden, the prohibition of which both saints and scholars [recognize].

[1] Fatawa-e-Hindiyya, Kitab-al-Karahiya, Chapter 17, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 5/352. [2] Durr-e-Mukhtar, Kitab-al-Hazr wa-al-Ibaha, Section on Sale, Matba Mujtabai, Delhi, 2/248. [3] Durr-e-Mukhtar, Kitab-al-Hazr wa-al-Ibaha, Section on Sale, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/253.

जिल्द 24

फ़तावा रज़विया

शतरंज सर्वसम्मति से हराम है। जहाँ तक शतरंज की बात है, इसे खेलना हमारे नज़दीक हराम है। जो व्यक्ति इसे खेलता है, यदि वह इसमें जुआ लगाता है, तो उसकी विश्वसनीयता समाप्त हो जाती है और उसकी गवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। [संक्षेप] [1] और शतरंज खेलना भी हमारे नज़दीक हराम है। और वह व्यक्ति जो खेलता है, अगर वह जुआ लगाए तो उसकी अदालत (कानूनी विश्वसनीयता) साक़ित हो जाएगी, लिहाज़ा उसकी गवाही स्वीकार नहीं होगी। [संक्षेप] (त)

हाँ, इतना है कि अगर जुआ न हो तो एकाध बार खेल लेना गुनाह-ए-सगीरा (छोटा पाप) है। और अगर जुआ हो या आदत बना ली जाए या इसकी वजह से नमाज़ें छूटें या जमातें कज़ा हों, तो यह गुनाह-ए-कबीरा (बड़ा पाप) हो जाएगा। इसी तरह हर खेल और व्यर्थ कार्य जिसमें न कोई धार्मिक उद्देश्य हो और न कोई जायज़ दुनियावी लाभ, सब मकरूह (नापसंद) और अनुचित हैं, कुछ कम और कुछ ज़्यादा। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

और हर खेल-तमाशा मकरूह है क्योंकि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "मुसलमान का हर खेल हराम है सिवाय तीन के अपनी पत्नी के साथ खेलना, अपने घोड़े को प्रशिक्षित करना और अपने धनुष से तीरंदाज़ी करना।" [2] हर खेल मकरूह है क्योंकि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया कि मुसलमान का हर खेल हराम है सिवाय तीन के पति का अपनी पत्नी से खेलना, अपने घोड़े को शिस्तगी (शालीनता) सिखाते हुए उसके साथ खेलना और अपनी कमान के साथ तीरंदाज़ी करना। (त)

'रद्दुल मुहतार' में है: "कुल लहू" यानी हर खेल और व्यर्थ काम; तो ये तीनों शब्द एक ही अर्थ में हैं जैसा कि 'शरह-उत-तावीलात' [3] आदि में है, और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। हर लहू यानी खेल और बेफ़ायदा काम। तो तीनों हम-मानी (समानार्थक) हैं, जैसा कि शरह तावीलात में है आदि, वल्लाह तआला आलम। (त)

मसला 2: जालंधर, मोहल्ला रास्ता फगवाड़ा दरवाज़ा से प्रेषित, शेख मुहम्मद शम्सुद्दीन साहब। 22 रजब 1310 हिजरी। राग या संगीत बजवाना या सुनना गुनाह-ए-कबीरा है या सगीरा? इस कार्य को करने वाला फ़ासिक (पापी) है या नहीं?

अल-जवाब: मज़ामीर यानी खेल-तमाशे के वाद्य यंत्र खेल-कूद के उद्देश्य से निस्संदेह हराम हैं, जिनकी हुरमत (प्रतिबंध) को औलिया और उलेमा दोनों [मानते हैं]।

[1] फतावा हिंदिया, किताबुल कराहिया, अध्याय 17, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 5/352। [2] दुर्रे मुख्तार, किताबुल हज़्र वल इबाहा, बिक्री का अध्याय, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 2/248। [3] दुर्रे मुख्तार, किताबुल हज़्र वल इबाहा, बिक्री का अध्याय, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 5/253।

جلد ۲۴

فتاویٰ رضویہ

الشطرنج حرام بالاجماع و اما الشطرنج فاللعب به حرام عندنا والذی یلعب ان قامر سقطت عدالته لم تقبل شهادته اه ملخصاً [۱] اور شطرنج کھیلنا بھی ہمارے نزدیک حرام ہے۔ اور وہ شخص جو کھیلے اگر جوئے کی بازی لگائے تو اس کی عدالت ساقط ہو جائے گی لہذا اس کی گواہی قبول نہ ہوگی اھ ملخصاً (ت)

ہاں اتنا ہے کہ اگر بد کر نہ ہو تو ایک آدھ بار کھیل لینا گناہِ صغیرہ ہے اور بد کر ہو یا عادت کی جائے یا اس کے سبب نماز کھوئیں یا جماعتیں فوت کریں تو آپ ہی گناہِ کبیرہ ہو جائے گی۔ اسی طرح ہر کھیل اور عبث فعل جس میں نہ کوئی غرضِ دین نہ کوئی منفعتِ جائزہِ دنیوی ہو سب مکروہ و بیجا ہیں کوئی کم کوئی زیادہ۔ در مختار میں ہے:

و کرہ کل لھو لقولہ علیہ الصلوٰۃ والسلام کل لھو المسلم حرام الا الثلثۃ ملاعبتہ باھلہ و تادیبہ للفرسہ و مناضلتہ بقوسہ [۲] ہر کھیل مکروہ ہے اس لئے کہ حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے ارشاد فرمایا مسلمان کا ہر کھیل حرام ہے سوائے تین کے، خاوند کا اپنی اہلیہ سے کھیلنا، اپنے گھوڑے کو شائستگی سکھاتے ہوئے اس سے کھیلنا، اپنی کمان کے ساتھ تیر اندازی کرنا۔ (ت)

رد المحتار میں ہے: کل لھو ای کل لعب و عبث فالثلثۃ بمعنی واحد کما فی شرح التاویلات [۳] الخ، واللہ تعالیٰ اعلم۔ ہر لہو یعنی کھیل اور بے فائدہ کام۔ پس تینوں ہم معنی ہیں، جیسا کہ شرح تاویلات میں ہے الخ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۲: از جالندھر محلہ راستہ پھگواڑہ دروازہ مرسلہ شیخ محمد شمس الدین صاحب ۲۲ رجب ۱۳۱۰ھ راگ یا مزامیر کرانا یا سننا گناہِ کبیرہ ہے یا صغیرہ؟ اس فعل کا مرتکب فاسق ہے یا نہیں؟

الجواب: مزامیر یعنی آلاتِ لہو و لعب بروجہِ لہو و لعب بلا شبہ حرام ہیں جن کی حرمت اولیاء و علماء دونوں [مانتے ہیں]۔

[۱] فتاویٰ ہندیہ کتاب الکراھیۃ الباب السابع عشر نورانی کتب خانہ پشاور ۵/ ۳۵۲ [۲] درمختار کتاب الحظر و الاباحۃ فصل في البیع مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۲۴۸ [۳] درمختار کتاب الحظر و الاباحۃ فصل في البیع دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/ ۲۵۳

It is clearly stated in the noble words of the leading group; there is no doubt that listening to them is a sin, which becomes a major sin after persistence. Attributing this to the high masters, the elders of the noble Chisht order (may Allah be pleased with them and benefit us through them), is sheer falsehood and fabrication. Hazrat Sayyidi Fakhruddin Zaradi (may his secret be sanctified), who is among the eminent deputies of our master, the Beloved of God, Sultan of the Saints, Nizam al-Haqq wa al-Dunya wa al-Din Muhammad Ahmad (may Allah be pleased with both of them), and who wrote the treatise 'Kashf al-Qina' 'an Usul al-Sama' during the very era of the grace of the aforementioned master, indeed by his very command regarding the issue of Sama (spiritual listening), says in that very treatise:

Arabic	Urdu
Some who were overcome by ecstasy heard Sama with musical instruments in the overwhelms of longing. As for the hearing of our masters (may Allah be pleased with them), it is free from this accusation, which indicates the perfection of the craftsmanship of Allah the Almighty[1].	That is, some people overcome by their state and longing heard Sama with musical instruments, but the listening of our spiritual masters (may Allah be pleased with them) is free from this accusation; it is only the voice of the singer along with those verses that inform of the perfection of the craftsmanship of Allah (the Exalted and Glorious). End. (T)

Rather, the aforementioned master (may Allah be pleased with him) himself has clearly stated the prohibition of musical instruments in many places in his noble discourses (Malfoozat), such as 'Fawa'id al-Fu'ad' and others. In fact, his eminence used to forbid even clapping, as it resembles idle play. Furthermore, he did not even approve of the excuse of being 'overcome by ecstasy' in such actions, so that the proponents of falsehood would not find a way.

Arabic	Urdu
And Allah knows the corruptor from the reformer. May Allah be pleased with the Imams, how sincere they were to the Ummah.	Allah Almighty knows both the corruptor and the reformer, i.e., those who create corruption and those who reform. So, may Allah be pleased with the noble Imams for the great amount of well-wishing they showed for the Ummah. (T)

All these matters are mentioned and narrated in the sacred discourses. It is clearly stated in the noble 'Fawa'id al-Fu'ad' that 'Muzameer is haram'[2] (i.e., the use of musical instruments is prohibited. T).

Arabic	Urdu
As was narrated from him (may Allah be pleased with him) by my master, the investigating scholar, Maulana Abdul Haq al-Muhaddith ad-Dihlawi (may Allah have mercy on him).	As has been narrated from them—may Allah be pleased with them—by my master, the investigating scholar, Maulana Abdul Haq Muhaddith Dehlawi (may Allah Almighty's mercy be upon him).

[1] Kashf al-Qina' 'an Usul al-Sama' [2] Fawa'id al-Fu'ad

फ़तावा रज़विया - जिल्द 24

अग्रणी समूह के महान शब्दों में यह स्पष्ट है; उनके सुनने और सुनाने के पाप होने में कोई संदेह नहीं है, जो निरंतरता के बाद कबीरा (बड़ा पाप) हो जाता है। चिश्ती सिलसिले के महान बुजुर्गों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो और हमें उनसे लाभ पहुँचाए) की ओर इसे जोड़ना सरासर असत्य और गढ़ा हुआ है। हज़रत सय्यिदी फखरुद्दीन ज़रदी (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र करे), जो हमारे आका महबूब-ए-इलाही सुल्तानुल औलिया निज़ामुल हक़ वद-दुनिया वद-दीन मुहम्मद अहमद (अल्लाह उन दोनों पर प्रसन्न हो) के प्रमुख खलीफाओं में से हैं और जिन्होंने विशेष रूप से उक्त आका के कृपा काल में, बल्कि स्वयं आका के आदेश पर समा (आध्यात्मिक श्रवण) के मसले पर 'कश्फ अल-किना अन उसूल अस-समा' नामक रिसाला (ग्रंथ) लिखा, वे अपने इसी रिसाले में फरमाते हैं:

अरबी	उर्दू/हिंदी
कुछ लोगों ने, जो वज्द (परमानंद) की स्थिति में अभिभूत थे, शौक की प्रबलता में संगीत वाद्ययंत्रों के साथ समा सुना। जहाँ तक हमारे बुजुर्गों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के समा का प्रश्न है, वह इस आरोप से मुक्त है, जो अल्लाह तआला की कला की पूर्णता को दर्शाता है[1]।	यानी कुछ अभिभूत हाल लोगों ने अपनी स्थिति और शौक की प्रबलता में संगीत वाद्ययंत्रों के साथ समा सुना, और हमारे पीरान-ए-तरीक़त (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) का सुनना इस आरोप से मुक्त है। वह तो केवल कव्वाल की आवाज़ है उन शेरों के साथ जो अल्लाह (अज़ व जल्ल) की कला की पूर्णता की सूचना देते हैं। इति। (त)

बल्कि स्वयं उक्त आका (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) ने अपने पवित्र कथनों (मलफूज़ात), जैसे 'फ़वाइद अल-फ़ुवाद' आदि में कई स्थानों पर संगीत वाद्ययंत्रों की मनाही स्पष्ट रूप से फरमायी है। यहाँ तक कि आप केवल ताली बजाने से भी मना फरमाते थे क्योंकि यह खेल-कूद (लहव) के समान है। इसके अलावा, आप ऐसे कार्यों में 'हाल के अभिभूत होने' के बहाने को भी पसंद नहीं फरमाते थे, ताकि असत्य का दावा करने वालों को कोई रास्ता न मिले।

अरबी	उर्दू/हिंदी
और अल्लाह बिगाड़ने वाले को सुधारने	अल्लाह तआला मफसिद और मुसलिह यानी फसाद करने

वाले से अलग जानता है। अल्लाह इमामों वाले और सुधार करने वाले दोनों को जानता है, अतः

अरबी	उर्दू/हिंदी
से प्रसन्न हो कि उन्होंने उम्मत के लिए कितनी शुभचिंतन दिखाई।	अल्लाह तआला अइम्मा-ए-किराम से प्रसन्न हो कि उन्होंने उम्मत के लिए कितनी खैरख्वाही (भलाई) फरमाई। (त)

ये सब बातें पवित्र कथनों में वर्णित और उद्धृत हैं। 'फ़वाइद अल-फ़ुवाद' शरीफ में साफ तौर पर स्पष्ट किया गया है कि 'मज़ामीर हराम अस्त'[2] (यानी गाने के वाद्ययंत्रों का उपयोग हराम है। त)।

अरबी	उर्दू/हिंदी
जैसा कि उनसे (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) मेरे आका, शेख मुहक़्क़िक़ मौलाना अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी (अल्लाह उन पर दया करे) ने उद्धृत किया है।	जैसा कि उनसे नकल किया गया है - अल्लाह तआला उन पर प्रसन्न हो - मेरे आका शेख मुहक़्क़िक़ मौलाना अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी (रहमतुल्लाह तआला अलैह) ने।

[1] कश्फ अल-किना अन उसूल अस-समा [2] फ़वाइद अल-फ़ुवाद

فریقِ مقتداء کے کلمات عالیہ میں مصرح، ان کے سننے سنانے کے گناہ ہونے میں شک نہیں کہ بعد اصرار کبیرہ ہے، اور حضراتِ علیہ سادات بہشت کبرائے سلسلہ عالیہ چشت رضی اللہ تعالٰی عنہم وعنا بھم کی طرف اس کی نسبت محض باطل وافتراء ہے، حضرت سیدی فخرالدین زرادی قدس سرہ کہ حضور سیدنا محبوب الٰہی سلطان الاولیاء نظام الحق والدنیا والدین محمد احمد رضی اللہ تعالٰی عنہما کے اجلہ خلفاء سے ہیں جنھوں نے خاص عہدِ کرامت مہدِ حضور ممدوح میں بلکہ خود بحکم حضور والا مسئلہ سماع میں رسالہ "کشف القناع عن اصول السماع" تالیف فرمایا، اپنے اسی رسالہ میں فرماتے ہیں:

عربی	اردو
سمع بعض المغلوبين السماع مع المزامير في غلبات الشوق و اما سماع مشائخنا رضی اللہ تعالی عنهم فبرئ عن هذه التهمة المشعرة من كمال صنعة الله تعالی[1]۔	یعنی بعض مغلوب الحال لوگوں نے اپنے غلبہ حال و شوق میں سماع مع مزامیر سنا اور ہمارے پیرانِ طریقت رضی اللہ تعالٰی عنہم کا سننا اس تہمت سے بری ہے وہ تو صرف قوال کی آواز ہے ان اشعار کے ساتھ جو کمالِ صنعت الٰہی جل وعلا سے خبر دیتے ہیں انتی۔(ت)

بلکہ خود حضور ممدوح رضی اللہ تعالٰی نے اپنے ملفوظات شریفہ فوائد الفواد وغیرہ میں جابجا حرمتِ مزامیر کی تصریح فرمائی، بلکہ حضور والا صرف تالی کو بھی منع فرماتے کہ مشابہ لہو ہے، بلکہ ایسے افعال میں عذرِ غلبہ حال کو بھی پسند نہ فرماتے کہ مدعیانِ باطل کو راہ نہ ملے،

عربی	اردو
واللہ یعلم المفسد من المصلح فرضی اللہ عن الائمۃ ما انصحھم للامۃ۔	اللہ تعالیٰ مفسد اور مصلح یعنی فساد کرنے والے اور اصلاح کرنے والے دونوں کو جانتا ہے، پس اللہ تعالیٰ ائمہ کرام سے راضی ہو کہ انھوں نے امت کے لیے کتنی خیر خواہی فرمائی۔(ت)

یہ سب امور ملفوظاتِ اقدس میں مذکور ومأثور فوائد الفواد شریف میں صاف تصریح فرمائی ہے کہ مزامیر حرام است[2] (مزامیر یعنی گانے کے آلات کا استعمال حرام ہے۔ت)

عربی	اردو
کما نقل عنہ رضی اللہ تعالی عنہ سیدی الشیخ المحقق مولانا عبد الحق المحدث الدھلوی رحمۃ اللہ	جیسا کہ ان سے نقل کیا ہے اللہ تعالیٰ ان سے راضی ہو میرے آقا شیخ محقق مولانا عبد الحق محدث دہلوی رحمتہ اللہ تعالیٰ علیہ نے

1 کشف القناع عن اصول السماع 2 فوائد الفواد

Fatawa Razawiya, Volume 24

May Allah have mercy on them and on us for their sake. Ameen. Oh Allah! Bestow the honor of acceptance upon this prayer. (T)

These noble sayings of the praised personage are a sufficient authority for us and a sufficient proof against those people of passion and greed who claim the Chishti path. Yes, the drum of Jihad, the drum of dawn (Sahar), the trumpet of the bathhouse, and the drum without bells (daff) for the announcement of marriage are permissible because these are not instruments of idle amusement. Similarly, it is also possible that some servants of Allah who have become completely free and pure from the darkness of the self and the impurities of desires, becoming annihilated in Allah (Fani Fillah) and abiding in Allah (Baqi Billah), such that:

They say nothing but 'Allah', they hear nothing but 'Allah', rather they know nothing without Allah, rather there is nothing there but Allah.	**They say nothing except Allah Ta'ala, they hear nothing except Allah Ta'ala, rather they know nothing without Allah Ta'ala, rather only Allah Ta'ala is manifest there. (T)**

In some of them, in a state of spiritual overwhelming (ghalbah-e-haal), whether reaching the essence of the Great Shariah, since their prohibition is not inherent (in themselves),

Actions are judged by intentions, and every person will get what he intended. 1	**Actions depend on intentions and for every person is only that which he intended. (T)**

After full confidence and complete satisfaction that the Fitna (mischief) is non-existent both now and in the future, occasionally they might have taken such a step. Therefore, the virtuous researcher Afandi Shami (may Allah sanctify his noble secret) in Radd al-Muhtar, commenting on the words of Durr al-Mukhtar:

And among those (i.e., idle amusements) is beating the 'Nawbah' (kettle drum) for boasting. But if it is for alerting, then there is no harm in it, as when it is beaten at three times to remind of the three soundings of the Trumpet (of Israfil). 2 - etc.	**Among these, i.e., instruments of amusement, is also beating the 'Nawbah' (kettle drum) boastfully. But if it is beaten to alert people, then there is no harm. As it is beaten at three times or three times so that the memory of the three blowings of the Trumpet of Israfil is refreshed, etc. (T)**

1 Sahih al-Bukhari, Chapter 'How Revelation Began' etc., Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/2. 2 Durr al-Mukhtar, Book of Prohibition and Permission, Mujtabai Press Delhi, 2/238.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

अल्लाह उन पर और उनके कारण हम पर भी अपनी कृपा करे। आमीन। हे अल्लाह! इस दुआ को स्वीकार्यता का सम्मान प्रदान कर। (त)

प्रशंसित व्यक्ति के ये श्रेष्ठ वचन हमारे लिए पर्याप्त प्रमाण हैं, और चिश्ती मार्ग का दावा करने वाले वासना और लोभ के लोगों के विरुद्ध पर्याप्त तर्क हैं। हाँ, जिहाद का ढोल, सहर (भोर) का नगाड़ा, स्नानागार की तुरही, और निकाह की घोषणा के लिए बिना घुंघरू वाला डफ जायज़ है क्योंकि ये आमोद-प्रमोद के साधन नहीं हैं। इसी प्रकार, यह भी संभव है कि अल्लाह के कुछ बंदे जो स्वयं (नफ़्स) के अंधकार और वासनाओं की अशुद्धियों से पूरी तरह मुक्त और पवित्र होकर अल्लाह में विलीन (फ़ानी फ़िल्लाह) और अल्लाह के साथ रहने वाले (बाक़ी बिल्लाह) हो गए हों कि:

वे अल्लाह के सिवा कुछ नहीं कहते और अल्लाह के सिवा कुछ नहीं सुनते, बल्कि वे अल्लाह के बिना कुछ नहीं जानते, बल्कि वहाँ अल्लाह के सिवा कुछ नहीं है।

वे अल्लाह तआला के सिवा कुछ नहीं कहते, अल्लाह तआला के सिवा कुछ नहीं सुनते, बल्कि अल्लाह तआला के बिना कुछ नहीं जानते बल्कि वहाँ केवल अल्लाह तआला ही विराजमान होता है। (त)

उनमें से किसी ने अवस्था की प्रबलता (ग़लबह-ए-हाल) में, चाहे महान शरिया (शरीअते कुबरा) के सार तक पहुँचकर, चूँकि उनकी मनाही स्वयं उनमें नहीं है,

कार्यों का दारोमदार नीयत (इरादे) पर है और हर व्यक्ति को वही मिलता है जिसका उसने इरादा किया। 1

कार्यों का दारोमदार नीयत पर होता है और हर व्यक्ति के लिए वही कुछ है जिसका उसने इरादा किया। (त)

पूर्ण विश्वास और संतोष के बाद कि वर्तमान और भविष्य में फ़ितना (बुराई) समाप्त हो गया है, कभी-कभी उन्होंने ऐसा कदम उठाया हो। इसलिए, विद्वान शोधकर्ता अफ़ंदी शामी (अल्लाह उनके पवित्र रहस्य को पवित्र रखे) ने रद्दुल मुहतार में दुर्रे मुख़्तार के कथन के तहत लिखा है:

और उसी में से (यानी आमोद-प्रमोद के साधनों में से) अहंकार के लिए 'नौबत' (नगाड़ा) बजाना भी है। लेकिन अगर सचेत करने के लिए बजाया जाए तो कोई हर्ज नहीं है, जैसा कि तीन समय में या तीन बार बजाया जाए ताकि इसराफ़ील के सूर (तुरही) के तीन बार फूँकने की याद ताज़ा हो जाए आदि। 2 - इत्यादि

इसी से यानी आमोद-प्रमोद के साधनों में से गर्व के तौर पर नौबत बजाना भी है, लेकिन अगर होशियार करने के लिए बजाई जाए तो कोई हर्ज नहीं। जैसा कि तीन समयों में या तीन बार नौबत बजाई जाए ताकि सूर-ए-इसराफ़ील के तीन बार फूँकने की याद ताज़ा हो आदि। (त)

1 सहीह अल-बुख़ारी, अध्याय 'कैसे वह्य (प्रकाशना) शुरू हुई' आदि, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 1/2 2 दुर्रे मुख़्तार, किताबुल हज़र वल इबाहत, मतबअ मुजतबाई दिल्ली 2/238

تعالٰی علیہم وعلینا بھم۔ آمین۔ اور ان کی وجہ سے ہم پر بھی اس کی رحمتیں ہوں، اے اللہ! اس دعا کو شرف قبولیت سے نواز دے۔ (ت)

حضور ممدوح کے یہ ارشادات عالیہ ہمارے لیے سند کافی، اور ان اہلِ ہوا و ہوس مدعیانِ چشت پنت پر حجت کافی۔ ہاں جہاد کا طبل، سحر کا نقارہ، حمام کا بوق، اعلانِ نکاح کا بے جلاجل دف جائز ہیں کہ یہ آلات لہو و لعب نہیں، یو نہیں یہ بھی ممکن کہ بعض بندگانِ خدا جو ظلمات نفس و کدوراتِ شہوات سے یک لخت بری و منزہ ہو کر فانی فی اللہ وباقی باللہ ہو گئے کہ :

لا یقولون الا اللہ و لا یسمعون الا اللہ بل لا یعلمون الا اللہ بل لیس ھناك الا اللہ۔

وہ اللہ تعالٰی کے سوا کچھ نہیں کہتے، اللہ تعالٰی کے سوا کچھ نہیں سنتے، بلکہ اللہ تعالٰی کے بغیر کچھ نہیں جانتے بلکہ وہاں صرف اللہ تعالٰی ہی جلوہ گر ہوتا ہے۔ (ت)

ان میں کسی نے بحالتِ غلبہ حال خواہ عین الشریعۃ الکبرٰی تک پہنچ کر از انجا کہ ان کی حرمت بعینہا نہیں،

وانما الاعمال بالنیات وانما لکل امرئ مانوٰی 1۔

اعمال کا دارومدار ارادوں پر ہوتا ہے اور ہر شخص کے لیے وہی کچھ ہے جس کا اس نے ارادہ کیا۔ (ت)

بعد وثوقِ تام و اطمینانِ کامل کہ حالاً و مالاً فتنہ منعدم احیاناً اس پر اقدام فرمایا ہو، و لہذا فاضل محقق آفندی شامی قدس اللہ تعالٰی سرہ السامی ردالمحتار میں زیرِ قول درِ مختار:

و من ذلک (ای من الملاھی) ضرب النوبۃ للتفاخر فلو للتنبیه فلا باس به کما اذا ضرب فی ثلثہ اوقات لتذکیر ثلث نفخات الصور 2- الخ

اسی سے یعنی آلات لہو میں سے فخریہ طور پر نوبت بجانا بھی ہے، لیکن اگر ہوشیار کرنے کے لیے بجائی جائے تو کوئی حرج نہیں ۔ جیسا کہ تین اوقات میں یا تین دفعہ نوبت بجائی جائے تاکہ صورِ اسرافیل کے تین دفعہ پھونکنے کی یاد تازہ ہو الخ (ت)

1 صحیح البخاری باب کیف کان بدء الوحی الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۲ 2 در مختار کتاب الحظر والاباحۃ مطبع مجتبائی دہلی ۲ / ۲۳۸

Fatawa Razawiya Volume 24

They state:

[Table Content] Arabic Text: This indicates that instruments of leisure are not forbidden in themselves, but rather due to the intent of leisure derived from them, whether by the listener or the one engaged with them. This is suggested by the attribution. Do you not see that playing the exact same instrument is sometimes lawful and at other times forbidden, depending on the intention behind hearing it? Matters are judged by their intentions. In this lies proof for our Sufi masters who intend things by listening to them which they know best. Therefore, the objector should not hasten to deny, lest they be deprived of their blessings. For they are the chosen masters; may Allah Almighty support us with their aid and return to us the benefit of their righteous prayers and blessings. -1

Urdu Text: This point provides the benefit [of knowing] that an instrument of leisure is not prohibited in itself (intrinsically), but is prohibited because of the intent and act of idle play, whether it is from the listener's side or from the one occupied with it. This is exactly what is understood from the "attribution". Don't you see that sometimes playing and using this same instrument of leisure is permissible and sometimes prohibited, and the reason for this is the difference in intention. Thus, the lawfulness or unlawfulness of deeds is based on their objectives. In this, there is proof for our Sufi masters that they intend such secrets through spiritual listening (Sama) which they themselves know very well. Therefore, the one raising objections should not hurry in denial, lest it happen that he is deprived of their blessings, because they are the beloved masters. Thus, may Allah Almighty help us through their assistance, and repeat upon us their good prayers and blessings, i.e., return them to us. (T)

I say: (T) Rather, here there is a stage and a reason even more subtle and profound. It is narrated in Sahih Bukhari from Sayyiduna Abu Hurayrah (may Allah be pleased with him) that the Light-Filled Presence, Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) states that the Lord of Honor, Blessed and Exalted, says:

"My servant continues to draw near to Me with voluntary acts until I love him. When I love him, I become his hearing with which he hears, his sight with which he sees, and his hand..."

Meaning: My servant continues to seek proximity to Me through voluntary acts until he becomes My beloved. Then, when I hold him dear, I Myself become that ear of his through which he hears.

1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Hazr wa al-Ibaha, Fasl al-Bay', Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5 / 223.

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

वे फ़रमाते हैं:

[तालिका सामग्री] अरबी पाठ: यह सूचित करता है कि मनोरंजन के साधन स्वयं में निषिद्ध नहीं हैं, बल्कि उनसे मनोरंजन के उद्देश्य के कारण हैं, चाहे वह सुनने वाले की ओर से हो या उसमें व्यस्त रहने वाले की ओर से। यह संबंध (इज़ाफ़त) से पता चलता है। क्या आप नहीं देखते कि उसी उपकरण को बजाना कभी वैध होता है और कभी निषिद्ध, सुनने के पीछे की नीयत (इरादे) के अंतर के कारण? कार्यों का निर्णय उनके उद्देश्यों से होता है। इसमें हमारे सूफी आकाओं के लिए प्रमाण है जो उन्हें सुनने से उन बातों का इरादा रखते हैं जिन्हें वे बेहतर जानते हैं। इसलिए, आपत्ति करने वाले को इनकार करने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि वे उनके आशीर्वाद (बरकत) से वंचित रह जाएँ। क्योंकि वे चुने हुए आका हैं; अल्लाह सर्वशक्तिमान उनकी सहायता से हमारी मदद करे और उनकी नेक दुआओं और बरकतों का हम पर पुनरावृत्ति करे। -१

उर्दू पाठ: यह बात लाभ देती है कि मनोरंजन का साधन स्वयं (स्वभावतः) हराम नहीं है बल्कि मनोरंजन के इरादे और कार्य के कारण हराम है चाहे वह सुनने वाले की ओर से हो या उसमें व्यस्त होने वाले की ओर से, "इज़ाफ़त" से यही ज्ञात होता है, क्या तुम नहीं देखते कि कभी उसी मनोरंजन के साधन को बजाना और उपयोग करना हलाल होता है और कभी हराम, और इसका कारण नीयत का अंतर है, अतः कार्यों के जायज़ और नाजायज़ होने का आधार उनके उद्देश्यों पर निर्भर होता है, इसमें हमारे सूफी आकाओं का प्रमाण मौजूद है कि वे समा (आध्यात्मिक श्रवण) से ऐसे रहस्यों का इरादा रखते हैं जिन्हें वे स्वयं भी अच्छी तरह जानते हैं इसलिए आपत्ति करने वाला इनकार करने में जल्दी न करे कहीं ऐसा न हो कि वह उनकी बरकत से वंचित हो जाए, क्योंकि वे पसंदीदा आका हैं अतः उनकी सहायता से अल्लाह तआला हमारी मदद फ़रमाए, और उनकी नेक दुआओं और बरकतों का हम पर इआदा फ़रमाए यानी उन्हें हम पर लौटा दे। (त)

मैं कहता हूँ: (त) बल्कि यहाँ एक स्तर और कारण और भी सूक्ष्म और गहरा है। सहीह बुखारी शरीफ़ में सैयदना अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि हुज़ूर पुर नूर सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं कि रब्बे इज़्ज़त तबारक व तआला फ़रमाता है:

"मेरा बंदा नफ़्ल इबादतों के ज़रिए मेरे करीब आता रहता है यहाँ तक कि मैं उससे मुहब्बत करने लगता हूँ। फिर जब मैं उसे दोस्त रखता हूँ तो मैं खुद उसका वह कान हो जाता हूँ जिससे वह सुनता है, उसकी वह आँख जिससे वह देखता है और उसका हाथ..."

यानी मेरा बंदा नफ़्लों के ज़रिए मेरी नज़दीकी चाहता रहता है यहाँ तक कि मेरा महबूब हो जाता है फिर जब मैं उसे दोस्त रखता हूँ तो मैं खुद उसका वह कान हो जाता हूँ जिससे वह सुनता है।

1. रद्द अल-मुह्तार, किताब अल-हज़्र वल-इबाहा, फ़स्ल अल-बैअ, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, ५ / २२३।

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

فرماتے ہیں:

[جدول کا متن] عربی: هذا يفيد ان ألة اللهو ليست محرمة لعينها بل لقصد اللهو منها اما من سامعها او من المشتغل بها و به تشعر الاضافة الا ترى ان ضرب تلك الالة بعينها حل تارة وحرم اخرى باختلاف النية بسماعها والامور بمقاصدها وفيه دليل لسادتنا الصوفية الذين يقصدون بسماعها امورا هم اعلم بها فلا يبادر المعترض بالانكار كى لا يحرم بركتهم فانهم السادة الاخيار امدنا الله تعالى بامدادهم واعاد علينا من صالح دعواتهم وبركاتهم -1

اردو: یہ بات فائدہ دیتی ہے کہ آلہ لہو بعینہ (بالذات) حرام نہیں بلکہ ارادہ و عمل لہو کی وجہ سے حرام ہے خواہ یہ سامع کی طرف سے ہو یا اس سے مشغول ہونے والے کی طرف سے ہو، "اضافت" سے یہی معلوم ہوتا ہے، کیا تم دیکھتے نہیں کہ کبھی اس آلہ لہو کو بعینہ بجانا اور استعمال کرنا حلال ہوتا ہے اور کبھی حرام، اور اس کی وجہ اختلاف نیت ہے، پس کاموں کے جائز اور ناجائز ہونے کا دارومدار ان کے مقاصد پر مبنی ہوتا ہے، اس میں ہمارے سادات صوفیہ کی دلیل موجود ہے کہ وہ سماع سے ایسے رموز کا ارادہ رکھتے ہیں کہ جن کو وہ خود بھی اچھی طرح جانتے ہیں لہذا اعتراض کرنے والا انکار کرنے میں جلدی نہ کرے کہیں ایسا نہ ہو کہ ان کی برکت سے محروم ہو جائے، کیونکہ وہ پسندیدہ سادات ہیں پس ان کی امداد سے اللہ تعالیٰ ہماری مدد فرمائے، اور ان کی نیک دعاؤں اور برکات کا ہم پر اعادہ فرمائے یعنی انھیں ہم پر لوٹا دے۔ (ت)

اقول: (میں کہتا ہوں۔ت) بلکہ یہاں ایک درجہ اور وجہ ادق واعمق ہے صحیح بخاری شریف میں سیدنا ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی حضور پر نور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں رب العزت تبارک و تعالیٰ فرماتا ہے :

لا یزال عبدي یتقرب الی بالنوافل حتی احبه فاذا احببته کنت سمعه الذی یسمع به وبصره الذی یبصر به ویده

یعنی میرا بندہ بذریعہ نوافل میری نزدیکی چاہتا رہتا ہے یہاں تک کہ میرا محبوب ہو جاتا ہے پھر جب میں اسے دوست رکھتا ہوں تو میں خود اس کا وہ کان ہو جاتا ہوں جس سے وہ سنتا ہے

1 رد المحتار کتاب الحظر والاباحة فصل البیع دار احیاء التراث العربی بیروت ۵ / ۲۲۳

Fatawa Razawiyya Volume 24

[...with which he strikes and his leg with which he walks. [1]] And I become that eye of his with which he sees, and that hand of his with which he holds something, and that foot of his with which he walks. (End).

Now say, who speaks and who listens? The voice comes from the tree of Mount Tur, but by Allah, the tree did not say: "Verily, I am Allah, Lord of the worlds." [2] (Indeed, I am Allah, the Lord of all the worlds. - T) "His speech was the speech of Allah, though it emerged from the throat of a servant of Allah." (His statement is in reality the statement of Allah Almighty, even though apparently it came out of the mouth of a servant of Allah. - T)

The same applies to hearing. "And for Allah is the conclusive argument." (And for God alone is the perfect proof. - T). However, Allah! Allah! These servants of Allah are 'Red Sulphur' (rare/precious) and mountains of ruby, and since they are not the basis for rare Shariah rulings, their state cannot be confined within the utility of permission or the ruling of prohibition.

[As clarified by al-Mawla al-Muhaqqiq, where my master Kamal ad-Din Muhammad ibn al-Humam (may Allah have mercy on him) stated it unconditionally at the end of the Hajj [chapter] in 'Fath al-Qadir' regarding the issue of permission.] As Mulla al-Muhaqqiq has explained this benefit, so my master and guide Kamal ad-Din Muhammad bin Humam (may Allah Almighty have mercy on him) stated it absolutely at the end of the Hajj discussion in Fath al-Qadir regarding the issue of permission. (T)

Neither are these claimants like raw apprentices, nor is trust in the self-preservation of a status that has not reached maturity permissible. [For it is the greatest lie when you swear, so how [will it be] when you promise?] When you swear it is a lie, then what will be the state of your promise? (T)

Judging by unseen conjecture to fix someone as such is correct [as a possibility]; yes, this possibility will only serve to the extent that where its negation is not known, do not let go of having a good opinion, and do not debate about the person of the doer without a Shariah necessity. [This is the justice in similar matters, and Allah is the Guide to what is right.] In similar chapters, this is the justice, and Allah is the Guide to what is right. (T)

[1] Sahih al-Bukhari, Chapter: How revelation began... Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/963 [2] The Holy Quran, 28/30

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[...जिससे वह पकड़ता है और वह पैर जिससे वह चलता है। [1]] और मैं उसकी वह आँख बन जाता हूँ जिससे वह देखता है और उसका वह हाथ जिससे वह कोई चीज़ पकड़ता है और उसका वह पाँव जिससे वह चलता है। (इति)।

अब कहिए कौन कहता है और कौन सुनता है? आवाज़ तो तूर के पेड़ से आती है मगर ख़ुदा की क़सम पेड़ ने नहीं कहा "बेशक मैं ही अल्लाह हूँ, तमाम जहानों का रब।" [2] (निश्चित रूप से मैं ही तमाम जहानों का पालनहार अल्लाह तआला हूँ। - त) "उनका बोलना अल्लाह का बोलना था, हालांकि वह अल्लाह के एक बंदे के गले से निकला था।" (उनका कथन वास्तव में अल्लाह तआला का कथन है, हालांकि स्पष्ट रूप से वह अल्लाह तआला के एक बंदे के मुँह से निकला। - त)

सुनने का भी यही हाल है। "अल्लाह ही के पास पूर्ण तर्क है।" (और अल्लाह ही के लिए मुकम्मल दलील है। - त)। लेकिन अल्लाह! अल्लाह! अल्लाह के ये बंदे 'किबरीत-ए-अहमर' (अत्यंत दुर्लभ) और याकूत के पहाड़ हैं, और चूंकि वे दुर्लभ शरीयत के अहकाम की बुनियाद नहीं हैं, इसलिए उनका हाल अनुज्ञेयता या निषेध के हुक्म में क़ैद नहीं हो सकता।

[जैसा कि अल-मौला अल-मुहक़्क़िक़ ने स्पष्ट किया है, जहाँ मेरे आका कमालुद्दीन मुहम्मद बिन अल-हुमाम (अल्लाह उन पर रहम करे) ने फ़तह अल-क़दीर में हज के अध्याय के अंत में अनुमति के मसले पर इसे बिना शर्त बयान किया है।] जैसा कि मौला अल-मुहक़्क़िक़ ने इसका लाभ बयान किया है, चुनाँचे मेरे आका और रहनुमा कमालुद्दीन मुहम्मद बिन हुमाम (अल्लाह तआला उन पर रहम फ़रमाए) ने फ़तह अल-क़दीर में हज की बहस के अंत में जवाज़ (अनुमति) के मसले में इसे मुतलक़ (बिना शर्त) बयान फ़रमाया। (त)

न तो ये दावेदार नौसिखियों के समान हैं, और न ही परिपक्वता प्राप्त न करने वाले दर्जे पर आत्म-संरक्षण का भरोसा जायज़ है। [क्योंकि जब तुम शपथ लेते हो तो वह सबसे बड़ा झूठ होता है, तो फिर वादे का क्या हाल होगा?] जब तुम क़सम खाओ तो झूठ होता है, तो तुम्हारे वादे का क्या हाल होगा। (त)

ग़ैब के अनुमान से किसी को ऐसा मान लेना सही है [एक संभावना के रूप में]; हाँ, यह संभावना केवल इतना काम करेगी कि जहाँ इसका अभाव ज्ञात न हो, वहाँ नेक गुमान (अच्छी धारणा) को हाथ से न जाने दें, और शरीयत की ज़रूरत के बिना कर्ता की ज़ात पर बहस न करें। [ऐसी ही बातों में यही

इंसाफ़ है, और अल्लाह ही सही रास्ते की हिदायत देने वाला है।] इसी तरह के अध्यायों में यही इंसाफ़ है, और अल्लाह ही सही राह दिखाने वाला है। (त)

[1] सहीह अल-बुख़ारी, अध्याय: वह्य (प्रकाशना) की शुरुआत कैसे हुई... क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 2/963 [2] अल-क़ुरआन अल-करीम 28/30

التی یبطش بھا ورجلہ التی یمشی بھا ۱۔ اور اس کی وہ آنکھ ہو جاتا ہوں جس سے دیکھتا ہے اور اس کا وہ ہاتھ جس سے کوئی چیز پکڑتا ہے اور اس کا وہ پاؤں جس سے وہ چلتا ہے انتہیٰ۔

اب کہئے کون کہتا اور کون سنتا ہے، آواز تو شجرہ طور سے آتی ہے مگر لاواللہ پیڑ نے نہ کہا "اِنِّیَ اَنَا اللہُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ" ۲ (یقیناً میں ہی تمام جہانوں کا پروردگار اللہ تعالیٰ ہوں۔ت) گفتہ او گفتہ اللہ بود گرچہ از حلقوم عبد اللہ بود (اس کا ارشاد در حقیقت اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے اگرچہ بظاہر اللہ تعالیٰ کے بندے کے منہ سے نکلے۔ت)

یہی حال سننے کا ہے وللہ الحجۃ البالغۃ (اور خدا ہی کے لیے کامل دلیل ہے۔ت) مگر اللہ اللہ یہ عباد اللہ کبریت احمر و کوہِ یاقوت ہیں اور نادر احکام شرعیہ کی بنا نہیں تو ان کا حال مفید جواز یا حکم تحریم میں قید نہیں ہو سکتا،

کما افادہ المولٰی المحقق حیث اطلق سیدی کمال الدین محمد بن الہمام رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ فی اخر الحج من فتح القدیر فی مسئلۃ الجواز۔ جیسا کہ مولیٰ المحقق نے اس کا افادہ بیان کیا چنانچہ میرے آقا و رہنما کمال الدین محمد بن ہمام رحمۃ اللہ علیہ نے فتح القدیر بحث حج کے آخر پر مسئلہ جواز میں اس کو مطلق بیان فرمایا (ت)

نہ یہ مدعیانِ خامکاران کے مثل ہیں نہ بے بلوغ مرتبہ محفوظیت نفس پر اعتماد جائز، فانھا کذب مایگون اذا حلفت فکیف اذا وعدت۔ جب تو قسم کھائے تو جھوٹ ہوتا ہے تو تیرے وعدے کا کیا حال ہو گا۔ (ت)

رجماً بالغیب کسی کو ایسا ٹھہر الینا صحیح، ہاں یہ احتمال صرف اتنا کام دے گا کہ جہاں اسکا انتفا معلوم نہ ہو تحسین ظن کو ہاتھ سے نہ دیجئے اور بے ضرورت شرعی ذاتِ فاعل سے بحث نہ کیجئے، ھذا ھو الانصاف فی امثال الباب واللہ الھادی بالصواب۔ امثال باب میں یہی انصاف ہے، واللہ الہادی بالصواب۔ (ت)

۱ صحیح البخاری باب کیف کان بدء الوحی الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۹۶۳ ۲ القرآن الکریم ۲۸/ ۳۰

Fatawa Razawiya - Volume 22

Listening to singing without musical instruments has several forms: First: Singing by prostitutes, female singers, or young boys who are subjects of temptation. Second: When the content of the song is based on sin, such as obscenity, lies, satire of a Muslim or a non-Muslim protected citizen (Dhimmi), or encouraging transgression like alcohol and adultery. Or praising the beauty of a living woman or a young boy with certainty, or mentioning a specific woman even if she is deceased, in a way that brings shame and embarrassment to her relatives and friends. Third: Listening for the sake of idle play and amusement, even if it contains no blameworthy mention. All three forms are prohibited; the last two are inherently forbidden, and the first is a means to forbidden acts (Translation: the last two in their essence and the first in reality as a means). Such singing is "Lahw al-Hadith" (idle talk). Regarding its prohibition, if nothing else, the Hadith "Every play of the son of Adam is Haraam (forbidden) except three plays" (Translation: Every amusement of the son of Adam is forbidden except for three) is sufficient. Apart from these, songs without instruments, where the singers are not subjects of temptation, where amusement is not the goal, and where there is no unlawful speech—instead, simple romantic songs, ghazals mentioning gardens, spring, beauty, features, love, separation, union, the loyalty of lovers, or the cruelty of the beloved, etc., related to love and lyricism—even then, the profligate, wicked, and worldly lustful people will be stopped from it.

[Table/Columns Content] Arabic Text: And that is from the chapter of definitive precaution, sincere advice, and blocking the means, which is characteristic of this matchless and superior Sharia and beautiful religion. Urdu Translation: This prevention is from the door of certain precaution; it contains the well-wishing of a well-wisher and the blocking of means which is specific to this unique and superior Sharia and beautiful religion. (T)

Similarly, the Hadith: Arabic Text: "Singing sows hypocrisy in the heart just as water grows greens (vegetables)." Observe. Narrated by Ibn Abi al-Dunya in 'Dhamm al-Malahi' from Ibn Mas'ud, and Al-Bayhaqi in 'Shu'ab al-Iman' from Jabir. Urdu Translation: Singing and playing music grows hypocrisy in the heart just as water grows leafy greens. Observe: it is narrated by the scholar of Hadith Ibn Abi al-Dunya from the authority of Hazrat Abdullah ibn Mas'ud (may Allah be pleased with him) and by Imam Bayhaqi from...

1 Jami' al-Tirmidhi, Chapters of Jihad, Chapter on the excellence of shooting for the sake of Allah, Amin Company Delhi 1/19. Sunan ibn Majah, Chapters of Jihad, Chapter on shooting for the sake of Allah, p. 207. 2 Shu'ab al-Iman, Hadith 5100, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut 4/279. Kanz al-Ummal with reference to Ibn Abi al-Dunya, Hadith 40658, Mu'assasat al-Risalah Beirut 15/218.

फतावा रजविया - जिल्द २२

बिना वाद्ययंत्रों के गायन (स़माअ) सुनने के कई रूप हैं: पहला: वेश्याओं, गायिका औरतों, या उन लड़कों का गाना जो फितने (विपथन) का कारण हों। दूसरा: जो चीज गाई जाए वह पाप पर आधारित हो, जैसे अश्लीलता, झूठ, किसी मुसलमान या धिम्मी (संरक्षित गैर-मुस्लिम) का अपमान, या शराब और व्यभिचार जैसे पापों के लिए उकसाना। या किसी जीवित महिला या लड़के के सौंदर्य की निश्चित प्रशंसा करना, या किसी विशिष्ट महिला का ज़िक्र करना, भले ही वह मर चुकी हो, जिससे उसके रिश्तेदारों और मित्रों को शर्मिंदगी और अपमान महसूस हो। तीसरा: मनोरंजन और खेल-तमाशे के तौर पर सुना जाए, भले ही उसमें कोई निंदनीय बात न हो। ये तीनों रूप प्रतिबंधित हैं; अंतिम दो अपनी प्रकृति में और पहला वास्तव में (पाप का) माध्यम होने के कारण। (अनुवाद: अंतिम दो अपनी ज़ात के लिहाज़ से और पहला हक़ीक़त में ज़रिया होने की वजह से)। ऐसा गाना 'लह्वुल हदीस' (व्यर्थ की बातें) है। इसकी मनाही के लिए, अगर और कुछ न भी हो, तो केवल यह हदीस पर्याप्त है: "आदम की संतान का हर खेल हराम है सिवाय तीन खेलों के।" (अनुवाद: आदम के बेटे का हर खेल हराम है सिवाय तीन खेलों के। त)। इनके अलावा वह गायन जिसमें न वाद्ययंत्र हों, न गाने वाले फितने का स्थान हों, न खेल-तमाशा उद्देश्य हो और न ही कोई अवैध कलाम (वाणी) हो, बल्कि सरल प्रेम गीत, ग़ज़लें, बाग-ओ-बहार, चेहरे-मोहरे, सौंदर्य, प्रेम, विरह, मिलन, प्रेमियों की वफा और माशूक (प्रिय) की बेवफाई आदि प्रेम और कविता संबंधी विषयों पर आधारित हों, तो भी व्यभिचारियों, दुष्टों और दुनियावी इच्छाओं वाले लोगों को इससे रोका जाएगा।

[तालिका विवरण] अरबी पाठ: यह निश्चित सावधानी, नेक सलाह और बुराई के रास्ते बंद करने के अध्याय से है, जो इस बेजोड़ और श्रेष्ठ शरीयत और सुंदर धर्म की विशेषता है। उर्दू अनुवाद: यह रुकावट निश्चित सावधानी के अध्याय से है, इसमें शुभचिंतक की शुभचिंतकता और साधनों की रोकथाम मौजूद है जो इस अद्वितीय और श्रेष्ठ शरीयत और सुंदर धर्म के लिए विशिष्ट है। (त)

इसी प्रकार हदीस: अरबी पाठ: "गाना दिल में पाखंड (निफाक) उसी तरह पैदा करता है जैसे पानी साग-सब्जी उगाता है।" द्रष्टव्य। इसे इब्न अबी अद्-दुनिया ने 'ज़म्मुल मलाही' में इब्न मसूद से और बैहक़ी ने 'शुअबुल ईमान' में जाबिर से रिवायत किया है। उर्दू अनुवाद: गाना-बजाना दिल में इस तरह पाखंड उगाता है जिस तरह पानी साग-पात उगाता है, द्रष्टव्य है कि हदीस विशेषज्ञ इब्न अबी अद्-दुनिया ने इसे हज़रत अब्दुल्लाह इब्न मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु की सनद से और इमाम बैहक़ी ने...

1 जामि अल-तिर्मिज़ी, अबवाब अल-जिहाद, अल्लाह की राह में तीरंदाजी की फजीलत का अध्याय, अमीन कंपनी दिल्ली 1/19, सुनन इब्न माजाह, अबवाब अल-जिहाद, अल्लाह की राह में तीरंदाजी का अध्याय, पृष्ठ 207। 2 शुअब अल-ईमान, हदीस 5100, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत 4/279, केंज़ अल-उम्माल इब्न अबी अद्दुनिया के हवाले से हदीस 40658, मुअस्ससत अल-रिसाला बेरूत 15/218।

१५ / २१८ पृष्ठ 84 का 720

سماع مجرد بے مزامیر ، اس کی چند صورتیں ہیں : اوّل: رنڈیوں، ڈومنیوں، محل فتنہ امر دوں کا گانا۔ دوم: جو چیز گائی جائے معصیت پر مشتمل ہو ، مثلاً فحش یا کذب یا کسی مسلمان یا ذمی کی ہجو یا شراب و زنا وغیرہ فسقیات کی ترغیب یا کسی زندہ عورت خواہ امرد کی بالیقین تعریف حسن یا کسی معین عورت کا اگرچہ مردہ ہو ایسا ذکر جس سے اس کے اقارب احبا کو حیا و عار آئے۔ سوم: بطور لہو ولعب سنا جائے اگرچہ اس میں کوئی ذکر مذموم نہ ہو۔ تینوں صورتیں ممنوع ہیں الاخیر تان ذاتا والاولی ذریعۃ حقیقۃً (آخری دو بلحاظ ذات اور پہلی در حقیقت ذریعہ ہے۔ ت) ایسا ہی گانا لہو الحدیث ہے اس کی تحریم میں اور کچھ نہ ہو تو صرف حدیث کل لعب ابن آدم حرام الا ثلاثۃ (ابن آدم کا ہر کھیل حرام ہے سوائے تین کھیلوں کے۔ ت) کافی ہے، ان کے علاوہ وہ گانا جس میں نہ مزامیر ہوں نہ گانے والے محل فتنہ ، نہ لہو ولعب مقصود نہ کوئی ناجائز کلام بلکہ سادہ عاشقانہ گیت، غزلیں، ذکر باغ و بہار و خط و خال و رخ و زلف و حسن و عشق و ہجر و وصل و وفائے عشاق و جفائے معشوق و غیر ہا امور عشق و تغزل پر مشتمل سنے جائیں تو فساق و فجار و اہل شہوات دنیا کو اس سے بھی روکا جائے گا،

وذلك من باب الاحتياط القاطع ونصح الناصح وسد الذرائع المخصوص به هذا الشرع البارع والدين الفارغ- | یہ رکاوٹ یقینی احتیاط کے باب سے ہے اس میں خیر خواہ کی خیر خواہی اور ذرائع کی روک تھام موجود ہے جو اس یکتا و فائق شریعت اور خوبصورت دین سے مخصوص ہے۔ (ت)

اسی طرح حدیث: الغناء ينبت النفاق في القلب كما ينبت الماء البقل۔ ناظر۔ رواہ ابن ابی الدنیا فی ذم الملاھی عن ابن مسعود و البیھقی فی شعب الایمان عن جابر | گانا بجانا دل میں اس طرح نفاق اگاتا

ہے جس طرح پانی ساگ پات اگاتا ہے، ناظر ہے محدث ابن ابی الدنیا نے اس کو حضرت عبداللہ ابن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی سند سے اور امام بیہقی نے

1 جامع الترمذی ابواب الجہاد باب ماجاء فی فضل الرمی فی سبیل اللہ امین کمپنی دہلی ۱/ ۱۹، سنن ابن ماجہ ابواب الجہاد باب فی الرمی فی سبیل اللہ ص ۲۰۷ 2 شعب الایمان حدیث ۵۱۰۰ دارالکتب العلمیۃ بیروت ۴/ ۲۷۹، کنز العمال بحوالہ ابن ابی الدنیا حدیث ۴۰۶۵۸ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۵/ ۲۱۸

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

...from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him). In 'Shu'ab al-Iman', it is narrated from Hazrat Jabir (may Allah be pleased with him) from the Noble Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him). (T)

And for the people of Allah, it is certainly permissible, or rather, it is not far to call it recommended (mustahabb). Singing does not create something new, but rather stirs up what is suppressed. When the heart has evil desires and nonsensical impurities, it will increase them; and for those pure, blessed, and clean hearts that are empty of lusts and filled with the love of Allah and His Messenger, it will increase their praised longing and auspicious love. 'The ruling of the means is the same as the ruling of the end for which it was established' (fairly speaking). To consider it a great religious task for these servants of Allah is not misplaced. It is stated in 'Fatawa Khayriyya':

Arabic Original

There is nothing in the mentioned amount of spiritual listening (sama') that is prohibited by text or consensus. Disagreement only exists in what is not specified, and dispute exists in other than what has been explained. Indeed, a large number of Companions (may Allah be pleased with them) have stated the permissibility of sama'. (Until he said) As for the sama' of the Sufi masters (may Allah be pleased with them), it is separate from this disagreement; rather, it rises from the level of permissibility to the rank of recommendation, as has been explicitly stated by more than one researcher.

Urdu Translation

Regarding the mentioned amount of sama', there is nothing that text or consensus deems forbidden. Yes, disagreement exists outside of what has been specified, and dispute is regarding what has not been described. A vast majority of scholars from among the noble Companions and the great Successors (Tabi'un) have narrated the permissibility of sama'. (Up to this point he said) As for the sama' of the Sufi masters, it is far from this disagreement; rather, it has reached the rank of recommendation from the level of permissibility, as many researchers have clarified. (T)

This was the description of what is commonly called 'singing'. And if poems of praise for Allah (Hamd), praise for the Prophet (Na'at), virtues of saints (Manqabat), sermons, advice, and remembrance of the hereafter are recited melodiously by old or young men and listened to with good intention—which in common usage is not called singing but 'reciting'—then there is absolutely no evidence from Shari'ah for its

prohibition. The radiant Presence, the Master of the World (peace and blessings be upon him)...

1 Fatawa Khayriyya, Book of Dislike and Approval, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 2/182-183.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

...अल्लाह तआला उन दोनों से राज़ी हो, नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से। 'शोअबुल ईमान' में हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सनद से हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से रिवायत की गई। (त)

और अल्लाह वालों के हक़ में यक़ीनन जायज़ बल्कि मुस्तहब कहें तो दूर नहीं, गाना कोई नई चीज़ पैदा नहीं करता बल्कि दबी बात को उभारता है। जब दिल में बुरी ख़्वाहिश और बेहूदा गलाज़तें हों तो उन्हें तरक़्क़ी देगा, और जो पाक मुबारक सुथरे दिल शहवात से खाली और अल्लाह व रसूल की मोहब्बत से मामूर (भरे हुए) हैं, उनके इस शौक़े महमूद और इश्क़े मसूद को बढ़ाएगा। 'मुक़द्दमा का हुक्म वही है जो उस चीज़ का हुक्म है जिसके लिए मुक़द्दमा वज़अ किया गया (इंसाफ़न)'। इन अल्लाह के बंदों के हक़ में इसे एक अज़ीम दीनी काम समझना कुछ बेजा नहीं। फ़तावा ख़ैरिया में है:

अरबी मूल

ज़िक्र किए गए समाअ (आध्यात्मिक श्रवण) में ऐसा कुछ नहीं है जो नस (स्पष्ट आदेश) या इज्मा (आम सहमति) से हराम हो। मतभेद केवल उसमें है जो निर्दिष्ट नहीं है, और विवाद उसके अलावा है जो स्पष्ट किया गया है। वाक़ई, सहाबा किराम की एक बड़ी जमात ने समाअ के जायज़ होने की बात कही है। (यहाँ तक कि कहा) जहाँ तक सूफ़ी बुज़ुर्गों के समाअ का सवाल है, वह इस मतभेद से परे है; बल्कि वह मुबाह (जायज़) के दर्जे से बढ़कर मुस्तहब (पसंदीदा) के मर्तबे तक पहुँचा हुआ है, जैसा कि कई शोधकर्ताओं ने स्पष्ट किया है।

उर्दू अनुवाद

समाअ के बारे में ज़िक्र किए गए हिस्से में कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे नस और इज्मा हराम ठहराए। हाँ, अलबत्ता मतभेद इसके बिना है जिसे मुअय्यन (निर्दिष्ट) किया गया और विवाद इसके अलावा है जिसे बयान किया गया। और सहाबा किराम और ताबेईन अज़ाम में से अहल-ए-इल्म के एक बड़े समूह ने समाअ के जवाज़ (जायज़ होने) का क़ौल नक़्ल किया है। (यहाँ तक फ़रमाया) रहा सादात-ए-सूफ़िया किराम का समाअ, तो वह इस इख़्तिलाफ़ से दूर है बल्कि वह दर्जा-ए-इबाहत (जायज़ होने) से रुतबा-ए-इस्तिहबाब (पसंदीदा होने) तक पहुँचा हुआ है जैसा कि बहुत से अहल-ए-तहक़ीक़ ने तसरीह (स्पष्ट) फ़रमाई है। (त)

यह उस चीज़ का बयान था जिसे आम तौर पर 'गाना' कहते हैं। और अगर हम्द, नात, मन्क़बत, वाज़ व नसीहत और ज़िक्रे आख़िरत के अशआर बूढ़े या जवान मर्द सुरीली आवाज़ में पढ़ें और नेक नीयत

से सुने जाएँ—जिसे आम बोलचाल में गाना नहीं बल्कि पढ़ना कहते हैं—तो इसके मना होने पर शरीअत से कोई दलील नहीं है। हुज़ूर पुरनूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम...

1 फ़तावा ख़ैरिया, किताबुल कराहिया वल इस्तिहसान, दारुल मारिफ़ा बेरूत 2/182-183.

رضی اللہ تعالٰی عنھما عن النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم۔ (رضی اللہ تعالٰی عنھما نے نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے روایت کی)۔ شعب الایمان میں حضرت جابر رضی اللہ تعالٰی عنہ کی سند سے حضور اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے روایت کی۔ت)

اور اہلِ اللہ کے حق میں یقیناً جائز بلکہ مستحب کہئے تو دور نہیں، گانا کوئی نئی چیز پیدا نہیں کرتا بلکہ دبی بات کو ابھارتا ہے جب دل میں بری خواہش بیہودہ آلائشیں ہوں تو انھیں کو ترقی دے گا اور جو پاک مبارک ستھرے دل شہوات سے خالی اور محبت خدا و رسول سے مملو ہیں ان کے اس شوق محمود و عشق مسعود کو افزائش دے گا و حکم المقدمۃ حکم ما ہی مقدمۃ لہ انصافا (مقدمہ کا حکم وہی ہے جو اس چیز کا حکم کہ جس کے لیے مقدمہ وضع کیا گیا۔ت) ان بندگانِ خدا کے حق میں اسے ایک عظیم دینی کام ٹھہرانا کچھ بے جا نہیں۔ فتاویٰ خیر یہ میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
لیس في القدر المذکور من السماع ما یحرم بنص ولا اجماع وانما الخلاف في غیر ماعین والنزاع في سوی ما بین وقد قال بجواز السماع من الصحابۃ جم غفیر (الی ان قال) اما سماع السادۃ الصوفیۃ رضی اللہ تعالی عنھم فبمعزل عن ھذا الخلاف بل و مرتفع عن درجۃ الاباحۃ	سماع کے متعلق قدر مذکور میں کوئی ایسی چیز نہیں کہ جس کو نص اور اجماع سے حرام ٹھہرائے ہاں البتہ اختلاف اس کے بغیر ہے کہ جس کو معین کیا گیا اور نزاع اس کے علاوہ ہے کہ جس کو بیان کیا گیا اور صحابہ کرام اور تابعین عظام سے اہلِ علم کے جمِ غفیر نے سماع کے جواز کا قول نقل کیا ہے (یہاں تک فرمایا) رہا سادات صوفیائے کرام کا سماع تو وہ اس اختلاف سے

عربی عبارت	اردو ترجمہ
الی رتبة المستحب کما صرح به غیر واحد من المحققین۔ 1	دور ہے بلکہ وہ درجہ اباحت سے رتبہ استحباب تک پہنچا ہوا ہے جیسا کہ بہت سے اہلِ تحقیق نے تصریح فرمائی ہے۔ (ت)

یہ اس چیز کا بیان تھا جسے عرف میں گانا کہتے ہیں اور اگر اشعارِ حمد و نعت و منقبت و وعظ و پند و ذکر آخرت بوڑھے یا جوان مرد خوش الحانی سے پڑھیں اور بہ نیت نیک سنے جائیں کہ اسے عرف میں گانا نہیں بلکہ پڑھنا کہتے ہیں تو اس کے منع پر شرع سے اصلا دلیل نہیں، حضور پر نور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔

1 فتاوٰی خیریہ کتاب الکراھیة والاستحسان دارالمعرفة بیروت ۲/ ۸۲-۱۸۳

Fatawa Razvia Volume 24

...the placing of a pulpit specifically for Hassan bin Thabit Ansari (may Allah be pleased with him) in the sacred mosque for him to stand upon and recite praises (Naat) of the Holy Prophet, and the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) and his companions listening to it, is clearly established from the authentic Hadith of Sahih Bukhari. Furthermore, the prevalence of the tradition of 'Hadi' (camel-songs) during the era of the companions and successors, and even during the sacred prophetic era, serves as a clear evidence for the permissibility of melodious recitation by men. Regarding the 'Hadi' of Anjasha (may Allah be pleased with him), the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) did not forbid it but said, out of consideration for women: "O Anjasha, proceed slowly, for you are carrying glass vessels." [1] This was because his voice was captivating and heart-touching, and women are like delicate glass vessels who are easily affected. In short, the basis of the ruling depends on the realization and expectation of mischief (fitna). Where mischief is certain, the ruling is prohibition; where there is a possibility or fear, the ruling is forbidden as a preventive measure; and where neither exists, it is not only permissible but, if done with a good intention, it is commendable (mustahabb). By the grace of Allah, this fine research in these few lines is such that, if Allah wills, the truth does not exceed it.

[Boxed Text] We ask Allah for the straight path, away from both excess and negligence. And Allah knows best what is correct. We ask Allah for the straight path which is safe from excess and negligence; Allah the Almighty knows the path of righteousness best. (T)

Question 3: From the country of Bengal, city of Nasirabad, town of Lamapara, sent by Muhammad Aleem-ud-Din Sahib, 5 Jumada al-Ula 1314 AH. Is it permissible to announce a good deed like a sermon etc. using a drum? That is, if it's a place where common people are very ignorant of religious matters and a scholar goes there and has it announced by drumbeat that "I will deliver a sermon on such and such day" with the intention of general benefit, would it be permissible in this case or not? Give a ruling and be rewarded. (T)

Answer: Outwardly it is permissible, but announcing through advertisements is more appropriate. It is stated in Durr-ul-Mukhtar:

[Boxed Text] "From this is the beating of a drum for showing pride; if it is for alerting (to a gathering), then there is no harm in it." [2] Among these idle pursuits is also the

beating of a drum (daf) in turns to boast among one another; but if it is to inform and alert, then there is no harm. (T)

---

1. Sahih Muslim, Book of Destiny, Chapter on the Mercy of Allah, etc., Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/255.
2. Durr-ul-Mukhtar, Book of Prohibition and Permission, Matba Mujtabai Delhi, 2/238.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

...हसन बिन साबित अंसारी (रज़ियल्लाहु अन्हु) के लिए विशेष रूप से पवित्र मस्जिद में मिम्बर रखना और उनका उस पर खड़े होकर हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शान में नात सुनाना और हुज़ूर और सहाबा किराम का उसे सुनना स्वयं सहीह बुखारी शरीफ़ से स्पष्ट है। और अरब की 'हद्दी' (ऊँट हांकते समय गाना) की प्रथा सहाबा और ताबेईन के युग में, बल्कि पवित्र रिसालत काल में भी प्रचलित रहना, पुरुषों द्वारा सुरीली आवाज़ में पढ़ने के ज़वाज़ (वैधता) पर एक स्पष्ट प्रमाण है। अंजशा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की 'हद्दी' पर हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मना नहीं किया बल्कि महिलाओं का लिहाज़ करते हुए फ़रमाया: "ऐ अंजशा! कांच के बर्तनों (महिलाओं) के साथ नरमी बरत।" [1] ऐसा इसलिए फ़रमाया क्योंकि उनकी आवाज़ आकर्षक और दिल को छू लेने वाली थी और महिलाएँ कोमल और नाजुक कांच के बर्तनों की तरह होती हैं जिन्हें ज़रा सी ठेस भी बहुत पहुँचती है। संक्षेप में, हुक्म की बुनियाद फ़ितना (बुराई) के होने या उसकी आशंका पर है। जहाँ फ़ितना निश्चित हो, वहाँ हुर्मत (निषेध) का हुक्म है; जहाँ आशंका और डर हो, वहाँ 'सद-ए-ज़रिया' (बुराई को रोकने का उपाय) के रूप में मनाही का हुक्म है; और जहाँ न ये हो न वो, वहाँ न केवल मनाही नहीं है बल्कि नेक नीयत के साथ मुस्तहब (पसंदीदा) है। अल्लाह के फ़ज़ल से इन चंद पंक्तियों में यह बेहतरीन शोध है कि इंशाअल्लाह हक़ इससे आगे नहीं है।

[बॉक्स किया हुआ पाठ] हम अल्लाह से सीधे रास्ते का सवाल करते हैं जो अतिवाद और कोताही से सुरक्षित हो। और अल्लाह बेहतर जानता है कि सही क्या है। हम अल्लाह तआला से सीधी राह का सवाल करते हैं जो इफ़रात और तफ़रीत (अतिवाद और कोताही) से महफ़ूज़ हो, अल्लाह तआला सवाब की राह को खूब जानने वाला है। (त)

प्रश्न 3: मुल्क बंगाल, शहर नसीराबाद, कस्बा लामापाड़ा से प्रेषक मुहम्मद अलीम-उद-दीन साहब, 5 जमादी अल-उला 1314 हिजरी। नेक काम जैसे वाज़ (उपदेश) आदि के लिए ढोल से सूचना देना जायज़ है या नहीं? यानी ऐसी जगह हो जहाँ आम लोग दीन के मसलों से बहुत अनजान हों और वहाँ कोई आलिम जाकर ढिंढोरा पिटवाए कि "मैं फ़लां दिन वाज़ करूँगा" आम फायदे की नियत से, तो क्या इस सूरत में जायज़ होगा या नहीं? जवाब दें और सवाब पायें। (त)

उत्तर: ज़ाहिर तौर पर जायज़ है और विज्ञापन के ज़रिए एलान करना अधिक उपयुक्त है। दुर-ए-मुख्तार में है:

[बॉक्स किया हुआ पाठ] "उसी (मनोरंजन) में से यह भी है कि बारी-बारी से डफ़ बजाना आपस में फ़ख्र जताने के लिए; और अगर आगाह और होशियार करने के लिए हो तो कोई हर्ज नहीं है।" [2] इन्हीं बेकार कामों में से यह भी है कि एक-दूसरे पर फ़ख्र करने के लिए बारी-बारी ढोल बजाना; लेकिन अगर यह सूचना देने और सचेत करने के लिए हो, तो इसमें कोई हर्ज नहीं है। (त)

---

1. सहीह मुस्लिम, किताबुल कदर, बाब रहमतुल्लाही तआला अलैहि आदि, कदीमी कुतुब खाना कराची, 2/255.
2. दुर-ए-मुख्तार, किताबुल हज़र वल इबाहत, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 2/238.

کا حسان بن ثابت انصاری رضی اللہ تعالٰی عنہ کے لیے خاص مسجد اقدس میں منبر رکھنا اور ان کا اس پر کھڑے ہو کر نعتِ اقدس سنانا اور حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم وصحابہ کرام کا استماع فرمانا خود حدیث صحیح بخاری شریف سے واضح اور عرب کے رسم حدی زمانہ صحابہ و تابعین بلکہ عہد اقدس رسالت میں رائج رہنا خوش الحانی رجال کے جواز پر دلیل لائح، انجشہ رضی اللہ تعالٰی عنہ کے حدی پر حضور والا صلوات اللہ تعالٰی وسلامہ علیہ نے انکار فرمایا بلکہ بلحاظ عورات یا انجشہ رویدك رفقا بالقواریر [1] ارشاد ہوا کہ ان کی آواز دلکش و دل نواز تھی عورتیں نرم و نازک شیشیاں ہیں جنہیں تھوڑی ٹھیس بہت ہوتی ہے، غرض مدار کار تحقق وتوقع فتنہ ہے، جہاں فتنہ ثابت وہاں حکم حرمت، جہاں توقع و اندیشہ وہاں بنظر سد ذریعہ حکم ممانعت، جہاں نہ یہ نہ وہ، نہ یہ نہ وہ بلکہ بہ نیت محمود استحباب موجود۔ بحد اللہ تعالٰی یہ چند سطروں میں تحقیق نفیس ہے کہ ان شاء اللہ العزیز حق اس سے متجاوز نہیں۔

[Boxed Text] نسأل اللہ سوی الصراط من دون تفریط والافراط، واللہ اعلم بالصواب۔ ہم اللہ تعالٰی سے سیدھی راہ کا سوال کرتے ہیں جو افراط و تفریط سے محفوظ ہو، اللہ تعالٰی راہ صواب کو خوب جاننے والا ہے۔ (ت)

مسئلہ ۳: از ملک بنگالہ شہر نصیر آباد قصبہ لاما پڑ امرسلہ محمد علیم الدین صاحب ۵ جمادی الاولٰی ۱۳۱۴ھ کارِ خیر مثل وعظ وغیرہ کے واسطے ڈھول سے خبر کرنا جائز ہے یا نہ؟ یعنی ایسا مقام ہو کہ وہاں عوام الناس بہت ہی دین کے مسئلہ سے ناواقف اور وہاں کوئی علیم جا کر ڈھنڈورہ پٹوائے کہ فلاں روز میں وعظ کروں گا بقصد فائدہ عام اس صورت میں جائز ہوگا یا نہیں؟ بینواتوجروا (بیان فرمائیے اجر پائیے، ت)

الجواب: ظاہر جواز ہے اور بذریعہ اشتہار اعلان انسب، در مختار میں ہے:

[Boxed Text] من ذالك ضرب النوبة للتفاخر للتنبیه فلا بأس به [2]- اسی لہو میں سے یہ بھی ہے کہ باری پر دف بجانا آپس میں فخر جتانے کے لیے، اور اگر آگاہ اور ہوشیار کرنے کے لیے ہو تو کوئی حرج نہیں۔ (ت)

---

1. صحیح مسلم کتاب القدر باب رحمته صلی اللہ تعالی علیہ وسلم الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۲۵۵
2. در مختار کتاب الحظر والاباحۃ مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۲۳۸

Fatawa Razawiyya Volume 24

It is stated in Durr-e-Muntaqi:

[Table/Box 1] Left (Arabic): It is appropriate that the horn of the bathhouse be [used], it is permissible like the beating of the drum (1). Right (Urdu): It is appropriate that the horn of the bathhouse be sounded in the bathhouse because it is permissible like the drum for an appointed time (T).

It is stated in Radd-ul-Muhtar:

[Table/Box 2] Left (Arabic): And it is appropriate that there be a drum for Sahur (pre-dawn meal) in Ramadan to wake those sleeping for Sahur, like the horn of the bathhouse. Reflect (2). And Allah the Almighty knows best. Right (Urdu): It is also appropriate to beat a drum at the time of Sahur for those who keep the fast, to wake the sleepers, just like the horn of the bathhouse is permissible. Reflect. And Allah the Almighty knows best (T).

Problem 4 to 12: From Alfi Mulk Madras, sent by Haji Abdul Rahman, son of Haji Muhammad Hashim. 16 Rabi' al-Akhir 1316 AH. What do the scholars of the religion and the jurists of the firm Shariah say about this matter: On the 3rd of Shawwal 1315 AH, a Mawlid Sharif took place here in a mosque. Many specific and general Muslims attended with the intention of listening to the Mawlid Sharif. When the recitation of Milad was finished, some of those present stood up and formed a circle by holding each other's hands. In the middle of this circle, a man stood up and the people in the circle started dhikr (remembrance of God) with dancing and swaying, shouting 'Ha Hu' loudly in the manner of 'Illa-Allah'. There was intense dancing and swaying, and there was the noise of 'tasfiq' (clapping) - that is, the person standing in the middle was clapping with great rhythm according to the movements of the dancing and swaying people in the circle. When this noise began, many people left the assembly and went away. Based on this, a person in that circle [said]:

[Table/Box 3] Left (Arabic): "And whoever turns away from My remembrance - indeed, he will have a depressed life, and We will gather him on the Day of Resurrection blind." (3) etc. Right (Urdu): "Whoever turned his face away from My remembrance, for him is a narrow livelihood, and We will raise him on the Day of Resurrection in the form of being blind, etc." (T)

After reading this verse, he explained the meaning that whoever leaves such a gathering of dhikr, for him Allah Almighty...

1 Ad-Durr al-Muntaqa fi Sharh al-Multaqa, on the margin of Majma' al-Anhur, Book of Disliked Matters, Chapter on Miscellaneous issues, Beirut, 2/553 2 Radd al-Muhtar, Book of Prohibition and Permission, Dar Ihya at-Turath al-Arabi, Beirut, 5/223 3 The Holy Quran 20/124

फ़तावा रज़विया खंड 24

दुर्रे मुन्तकी में है:

[टेबल/बॉक्स 1] बायां (अरबी): हमाम (स्नानागार) के बिगुल का होना उचित है, यह पारी के ढोल (नारा) की तरह जायज़ है (1)। दायां (उर्दू): उचित है कि हमाम में हमाम का बिगुल बजाया जाए क्योंकि यह जायज़ बारी के डफ़ की तरह है (त)।

रद्दुल मुहतार में है:

[टेबल/बॉक्स 2] बायां (अरबी): उचित है कि रमज़ान में सहरी के समय सोने वालों को सहरी के लिए जगाने के लिए ढोल बजाया जाए, जैसे हमाम का बिगुल। विचार करें (2)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। दायां (उर्दू): यह भी उचित है कि सहरी करने वालों के लिए सहरी के समय ढोल बजाना, सोने वालों को जगाने के लिए, हमाम के बिगुल बजाने की तरह जायज़ है, गौर कीजिए। वल्लाहू तआला आलम (त)।

मसला 4 से 12: अल्फ़ी मुल्क मद्रास से, प्रेषक हाजी अब्दुल रहमान वल्द हाजी मुहम्मद हाशिम। 16 रबी अल-आख़िर 1316 हिजरी। दीन के उलेमा और मज़बूत शरीयत के मुफ्ती इस बारे में क्या फरमाते हैं कि: पिछले 3 शव्वाल 1315 हिजरी को यहाँ एक मस्जिद में मौलूद शरीफ हुआ, अक्सर खास और आम मुसलमान मौलूद शरीफ सुनने के इरादे से हाज़िर हुए। जब मिलाद ख्वानी से फारिग हुए, तो हाज़िरीन में से कुछ लोग उठ खड़े हुए और एक-दूसरे के हाथ पकड़कर घेरा (हल्का) बना लिया। इस घेरे के बीच में एक व्यक्ति खड़ा हो गया और घेरे वाले लोगों ने रक्स (नाच) और तमायुल (झूमने) के साथ हा-हू मचाकर ज़ोर से 'इल्ला-अल्लाह' के तौर पर ज़िक्र करना शुरू कर दिया। यहाँ रक्स और तमायुल का ज़ोर था और वहाँ तस्फ़ीक (ताली) का शोर, यानी बीच में जो व्यक्ति खड़ा था वह घेरे वालों के रक्स और तमायुल की लय पर बहुत तालमेल के साथ तालियाँ बजा रहा था। जब यह शोर शुरू हुआ तो अक्सर लोग उस सभा से निकलकर चले गए। इसके आधार पर उस घेरे में एक व्यक्ति ने [कहा]:

[टेबल/बॉक्स 3] बायां (अरबी): "और जो मेरे ज़िक्र से मुँह फेरेगा, तो उसके लिए तंग ज़िंदगी होगी और हम उसे कयामत के दिन अंधा करके उठाएंगे।" (3) आदि। दायां (उर्दू): "जिस किसी ने मेरे ज़िक्र से मुँह फेरा उसके लिए तंग गुज़रान है और हम कयामत के रोज़ उसे अंधा होने की सूरत में उठाएंगे आदि।" (त)

इस आयत को पढ़कर मतलब बयान किया कि जो व्यक्ति ज़िक्र की ऐसी मजलिस से उठ जाता है, उसके हक में अल्लाह तआला...

1 अद-दुर्र अल-मुन्तका फ़ी शरह अल-मुल्तका, मजमा अल-अनहुर के हाशिये पर, किताबुल कराहियत, बाबु फ़िल मुतफर्रकात, बेरूत, 2/553 2 रद्द अल-मुहतार, किताबुल हज्र वल इबाहत, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 5/223 3 अल-कुरान अल-करीम 20/124

पृष्ठ 87/720

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

در منتقی میں ہے:

[ٹیبل/باکس ۱] بایاں (عربی): ینبغی ان یکون بوق الحمام یجوز کضرب النوبۃ ۱ دایاں (اردو): مناسب ہے کہ حمام میں حمام کا بگل بجایا جائے کیونکہ یہ جائز باری کے دف کی طرح (ت)

ردالمحتار میں ہے:

[ٹیبل/باکس ۲] بایاں (عربی): وینبغی ان یکون طبل السحر في رمضان لایقاظ النائمین للسحور کبوق الحمام تامل ۲ واللہ تعالٰی اعلم۔ دایاں (اردو): یہ بھی مناسب ہے کہ سحری کرنے والوں کے لیے سحری کے وقت طبل بجانا، سونے والوں کو جگانے کے لیے، حمام کے بگل بجانے کی طرح جائز ہے غور کیجئے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۴ تا ۱۲: از الفی ملک مدراس مرسلہ حاجی عبدالرحمن خلف حاجی محمد ہاشم ۱۶ ربیع الآخر ۱۳۱۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرعِ متین اس بارے میں کہ گزشتہ ۳ ماہ شوال ۱۳۱۵ھ کو یہاں ایک مسجد میں مولود شریف ہوا، اکثر خاص اور عام اہلِ اسلام بقصدِ سماعت مولودِ شریف حاضر ہوئے، جب میلاد خوانی سے فراغت ہوئی تھوڑے لوگ ان حاضرین سے اٹھ کھڑے ہوئے اور باہم دیگر ہاتھوں کو پکڑ کے حلقہ باندھ گئے اور اس حلقہ کے بیچ میں ایک شخص آ کھڑا ہوا اور حلقہ والے لوگ رقص اور تمایل کے ساتھ ہاہو مچاکے بڑے زور سے الا اللہ کے طور سے ذکر کرنے کو شروع کئے یہاں رقص اور تمایل کا زور اور وہاں تصفیق کا شور یعنی بیچ میں جو شخص کہ کھڑا تھا اس نے حلقے والوں کے رقص اور تمایل کے وزن پر تصفیق

نہایت موزونیت کے ساتھ کرتا تھا جب یہ غل شروع ہوا تو اکثر لوگ اس مجلس کے نکل کر چلے گئے بناء علیہ اس حلقہ میں ایک شخص:

[ٹیبل/باکس ۳] بایاں (عربی): "وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِیْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِیْشَةً ضَنْكًا وَّ نَحْشُرُهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ اَعْمٰی" ۳ الخ دایاں (اردو): جس کسی نے میرے ذکر سے منہ پھیرا اس کے لیے تنگ گزر ان ہے اور ہم قیامت کے روز اسے اندھا ہونے کی صورت میں اٹھائیں گے الخ (ت)

اس آیت کو پڑھ کے معنی بیان کیا کہ جو شخص ایسے ذکر کے مجلس سے اٹھ جاتا ہے اس کے حق میں اللہ تعالیٰ

1 الدر المنتقی فی شرح الملتقی علی ہامش مجمع الانہر کتاب الکراہیة باب فی المتفرقات بیروت ۲/ ۵۵۳ 2 رد المحتار کتاب الحظر والاباحة دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/ ۲۲۳ 3 القرآن الکریم ۲۰/ ۱۲۴

Fatawa Razawiya, Volume 24

He says that He will raise him blind on the Day of Resurrection. He explained this subject with great emphasis. The next day, some learned people told this person that the manner you mentioned for "Zikr" is completely wrong and against the authorities of Tafsir; see Tafsir Jalalayn. Hearing this, the person said that Tafsir Jalalayn is an outward interpretation, for the people of the inward (mystics), there is another rule. In the end, he accused Tafsir Jalalayn of being contemptible. Based on this, it is asked: (1) Will the Muslims who left that gathering be raised blind on the Day of Resurrection? Is this statement correct or not? (2) Is it correct for the aforementioned person to interpret "Zikr" in that particular manner? (3) What is meant here by "And whoever turns away from My remembrance" [1] and what is the occasion of revelation of this verse? (4) What is the punishment in Shariah for one who holds Tafsir Jalalayn in contempt? (5) If it is not true that Muslims who left the gathering will be raised blind, then who is such a person according to Islam who casts such slanders upon Muslims? (6) Does holding Tafsir Jalalayn in contempt prove disbelief (kufr) or not? (7) Is prayer (salah) valid behind such a person or not? (8) Is it mandatory to renew one's faith or repent? (9) Is the "Zikr" of those in that circle, the manner of which was mentioned above, such as dancing and clapping (tasfeeq), permissible in Shariah or not? What should be said according to Shariah to those visitors who take Shariah lightly and claim to have divine knowledge (Ma'rifat)? Explain and may Allah reward you in both worlds.

The Answer: A circle of Zikr (remembrance), when it is not for show or fame but purely for the sake of Allah, is in itself a beloved and recommended act. And in it, the presence is religiously commanded and desired. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "When you pass by the gardens of Paradise, graze." When you pass by the flowerbeds of Paradise, then from their fruits and flowers...

[1] The Holy Quran 20/124 Page 88 of 720

फ़तावा रज़विया, जिल्द २४

वह कहता है कि उसे क़यामत के दिन अंधा करके उठाऊंगा। उसने इस विषय को बड़े ज़ोर-शोर से बयान किया। अगले दिन, कुछ विद्वानों ने उस व्यक्ति से कहा कि आपने 'ज़िक्र' के लिए जो रूप वर्णित किया है, वह पूरी तरह से ग़लत है और तफ़सीर के विद्वानों के ख़िलाफ़ है; तफ़सीर जलालेन देखें। यह सुनते ही उस व्यक्ति ने कहा कि तफ़सीर जलालेन बाहरी व्याख्या है, आंतरिक (आध्यात्मिक) लोगों के लिए नियम दूसरा है। अंत में उसने तफ़सीर जलालेन को अपमानित करने का आरोप लगाया। इसी आधार पर पूछा जाता है: (१) क्या वे मुसलमान जो उस सभा से चले गए, क़यामत के दिन अंधे होकर उठेंगे? यह बात सही है या नहीं? (२) क्या उक्त व्यक्ति का 'ज़िक्र' से वह विशेष रूप मुराद लेना सही है या नहीं? (३) यहाँ "और जो मेरे ज़िक्र से मुँह मोड़ेगा" [१] से क्या मुराद है और इस आयत के उतरने का कारण (शान-ए-नुज़ूल) क्या है? (४) तफ़सीर जलालेन का अपमान करने वाले के लिए शरीयत में क्या सज़ा है? (५) अगर यह सच नहीं है कि सभा छोड़ने वाले मुसलमान अंधे होकर उठेंगे, तो इस्लाम के अनुसार वह व्यक्ति कौन है जो मुसलमानों पर ऐसा लांछन लगाता है? (६) क्या तफ़सीर जलालेन का अपमान करने वाले पर कुफ़्र (अधर्म) साबित होता है या नहीं? (७) क्या ऐसे व्यक्ति के पीछे नमाज़ पढ़ना सही है या नहीं? (८) क्या इस्लाम का नवीनीकरण या तौबा लाज़िम है या नहीं? (९) उन घेरे वालों का ज़िक्र, जिसका रूप ऊपर बताया गया है, क्या ऐसा ज़िक्र और नृत्य और ताली बजाना (तस्फ़ीक़) शरीयत में सही है या नहीं? उन ज़ायरीन (दर्शनार्थियों) को, जो शरीयत को हल्का समझते हैं और मारिफ़त (ईश्वरीय ज्ञान) का दावा करते हैं, शरीयत के अनुसार क्या कहना चाहिए? बयान फ़रमाएं अल्लाह आपको दुनिया और आख़िरत में बेहतरीन बदला अता फ़रमाए।

अल-जवाब (उत्तर): ज़िक्र का हलक़ा (घेरा) जब दिखावे या शोहरत के लिए न हो बल्कि शुद्ध रूप से अल्लाह की प्रसन्नता के लिए हो, तो वह स्वयं में एक प्रिय और सराहनीय कार्य है। और इसमें शरीयत के अनुसार उपस्थिति का आदेश है और यह वांछित है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "जब तुम जन्नत की क्यारियों से गुज़रो तो चर लिया करो।" जब तुम जन्नत की क्यारियों से गुज़रो तो उनके फल और फूलों से...

[१] अल-क़ुरान अल-करीम १२४/२० पृष्ठ ८८/७२०

فرماتا ہے کہ اس کو قیامت کے روز اندھا کرکے اٹھاؤں گا۔ اس مضمون کو بڑے زور شور سے بیان کیا، دوسرے روز بعض اصحاب علم نے اس شخص سے کہا کہ تو نے جو ذکر سے ہیئت کذائی مذکورہ مراد لیا سراسر غلط اور خلاف اصحاب تفسیر ہے دیکھ تفسیر جلالین۔ یہ سنتے ہی اس شخص نے کہا کہ تفسیر جلالین ظاہری تفسیر ہے اہل باطن کے لیے قاعدہ دوسرا ہے، انجام اس نے تفسیر جلالین کو حقارت کا الزام دیا، بنابر اس کے دریافت کیا جاتا ہے: (۱) جو مسلمان اس محفل سے نکل گئے وہ قیامت کے روز اندھے ہو کر اٹھیں گے۔ یہ بات صحیح ہے یا نہیں؟ (۲) مذکورہ شخص ذکر سے یہ ہیئت کذائی مراد لیا سو درست ہے یا نہیں؟ (۳) "وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِکْرِی" ۱ سے یہاں کیا مراد اور شان نزول اس آیت کا کیا ہے؟ (۴) تفسیر جلالین کی جو حقارت کرے اس کے لئے شرع شریف میں کیا سزا ہے؟ (۵) جو مسلمان اس مجلس سے نکل گئے وہ قیامت کے روز اندھے ہو کر اٹھیں گے، یہ بات صحیح نہیں تو ایسے الفاظ سے مسلمانوں پر تہمت ڈالنے والا شخص از روئے اسلام کون ہے؟ (۶) تفسیر جلالین کی حقارت کرنے والے پر کفر ثابت ہوتا ہے یا نہیں؟ (۷) ایسے شخص کے پیچھے نماز درست ہے یا نہیں؟ (۸) تجدید اسلام یا توبہ لازم ہوتا ہے یا نہیں؟ (۹) ان حلقے والوں کا ذکر جس کی ہیئت اوپر ذکر کی گئی ہے ایسا ذکر اور رقص اور تصفیق (تالی بجانا) شرع شریف میں درست ہے یا نہیں؟ زوار جو شرع کو ایسا ویسا سمجھے اور معرفت کا دعوٰی کرے لوگوں کو بموجب شرع شریف کیا کہنا چاہئے؟ بینوا توجروا اللہ فی الدارین (بیان فرماؤ کہ اللہ تعالٰی دنیا و آخرت میں تمہیں بہترین عطا فرمائے۔ ت)

الجواب: حلقہ ذکر جبکہ نہ بموجب ریا و سمعہ بلکہ خالصاً لوجہ اللہ ہو فی نفسہ امر محبوب و مندوب ہے اور اس میں حضور شرعاً مامور و مطلوب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں : اذا مررتم بریاض الجنۃ فارتعوا۔ جب تم جنت کی کیاریوں پر گزرو تو ان کے پھل پھول سے

۱ القرآن الکریم ۱۲۴/۲۰ صفحہ ۸۸ از ۷۲۰

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

Take benefit [from them]. They [the Sahaba] asked, "O Messenger of Allah! What are the meadows (flowerbeds) of Paradise?" He replied, "The circles of Dhikr (remembrance of Allah)."

[Table 1] Left (Arabic): Narrated by Ahmad, at-Tirmidhi, and al-Bayhaqi in Shu'ab al-Iman from Anas (may Allah be pleased with him) with a good chain of narrators. Right (Urdu): Musnad Imam Ahmad, Imam Tirmidhi, and Imam Bayhaqi have narrated this in Shu'ab al-Iman from Hazrat Anas (may Allah be pleased with him) with an excellent chain of narrators. (T)

And this dance, God forbid, if it is for the sake of affectation and showing off, it is strictly forbidden (haram) and a grave sin. Even as amusement and play, it is impermissible and disqualifies one from being a witness (discredits justice). Dancing accompanied by cross-dressing (imitation of women) is even more strictly forbidden like the dances of the lewd. It is stated in Nisab al-Ihtisab, Chapter 6, then in Tatar Khaniya, then in Fatawa Khayriyya:

[Table 2] Left (Arabic): Issue: Is dancing permissible in Sama' (spiritual music)? Answer: It is not permissible. It is mentioned in 'Ad-Dhakhira' that it is a major sin. As for the Mashaykh (spiritual masters) who allowed it, it refers to those whose movements are involuntary, like those of a person with tremors, etc. Right (Urdu): Question: Is dancing permissible in Sama' (Qawwali)? Answer: It is not permissible. And it is mentioned in 'Ad-Dhakhira' that dancing is a major sin. Whichever of the Mashaykh allowed it, it is for someone whose movements are involuntary like someone with tremors, etc. (T)

In Durr al-Mukhtar, it is stated:

[Table 3] Left (Arabic): Testimony is not accepted from one who engages in detestable play among people, such as [using] lutes (tanbur) and flutes (mazamir). If it is not excessively bad, like 'huda' (camel-driver's song), then it is not [rejected], unless it becomes obscene, such as if they dance to it. [As stated in] Al-Khaniya, because it falls under the category of major sins. [As stated in] Al-Bahr. Condensed. Right (Urdu): A person who engages in bad entertainment among people, such as using the tanbur (sitar) and flutes (bansuri) etc., using instruments for singing, etc., then he will be 'mardud ash-shahada' (rejected witness), meaning his testimony will not be acceptable. If the singing is not extremely bad, such as Arabic songs like 'Huda-

khwani' (camel-driving songs), then it is not prohibited. But if it includes obscene speech and dancing, etc., then it is prohibited, [as per] Al-Khaniya, because it has entered the category of major sins. [As per] Al-Bahr, condensed. (T)

---

1. Musnad Imam Ahmad ibn Hanbal, Musnad Anas ibn Malik (RA), Dar al-Fikr, Beirut, 3/150.
2. Fatawa Khayriyya, Book of Disliked Acts, Chapter on Dancing in Sama', Dar al-Ma'rifa, Beirut, 2/179.
3. Durr al-Mukhtar, Book of Testimonies, Chapter on Acceptance, Mujtabai Press, Delhi, 2/95.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

आनंद लें। उन्होंने (सहाबा ने) पूछा, "ऐ अल्लाह के रसूल! जन्नत की क्यारियाँ क्या हैं?" उन्होंने फ़रमाया, "ज़िक्र के हलक़े(मंडली)।"

[तालिका 1] बाएँ(अरबी): अहमद, तिर्मिज़ी और बैहक़ी ने शुअब अल-ईमान में अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से एक अच्छी सनद (श्रृंखला) के साथ रिवायत किया है। दाएँ(उर्दू): मुसनद इमाम अहमद, इमाम तिर्मिज़ी और इमाम बैहक़ी ने शुअब अल-ईमान में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की बेहतरीन सनद से इसे रिवायत किया है। (त)

और यह रक़्स (नाच), अगर अल्लाह न करे, बनावट और दिखावे के लिए है तो क़तई हराम और घिनौना गुनाह है, और खेल-कूद के तौर पर भी नाजायज़ और अदालती गवाही के लिए अयोग्य बनाने वाला है। और तमाथील (महिलाओं की नकल) के साथ रक़्स फ़वाहिश (अश्लील नाच) की तरह और भी क़तई हराम है। निसाब अल-एहतिसाब बाब छठा, फिर तातार खानिया, फिर फ़तावा खैरिय्या में है:

[तालिका 2] बाएँ(अरबी): मसला: क्या समा (क़व्वाली) में रक़्स जायज़ है? जवाब: जायज़ नहीं है। और अल-ज़ख़ीरा में ज़िक्र किया गया है कि यह कबीरा (बड़ा) गुनाह है। और जिन मशाईख़ ने इसकी अनुमति दी है, वह उनके लिए है जिनकी हरकतें (गतिविधियाँ) कँपकँपी वाले व्यक्ति की तरह अनैच्छिक हों, इत्यादि। दाएँ(उर्दू): मसला: क्या समा (क़व्वाली) में नाचना जायज़ है? जवाब: जायज़ नहीं है। और ज़ख़ीरा में ज़िक्र किया गया है कि नाचना कबीरा गुनाह है। और मशाईख़ में से जिसने इसे मुबाह (जायज़) करार दिया, वह उसके हक़ में है जिसकी हरकतें रअशा (कंपन) वाले व्यक्ति की तरह बे-इख्तियार (अनैच्छिक) हों, इत्यादि। (त)

दुर्रे मुख़्तार में है:

[तालिका 3] बाएँ(अरबी): उन लोगों की गवाही स्वीकार नहीं की जाएगी जो लोगों के बीच घिनौने खेल खेलते हैं, जैसे तम्बूर (सितार) और मज़ामीर (बाँसुरी)। अगर वह बहुत बुरा न हो जैसे हुदा (ऊँट हांकने वालों का गीत), तो नहीं, जब तक कि वह अश्लील न हो जाए जैसे कि वे उसके साथ नाचें। [जैसा कि] खानिया में है, क्योंकि यह कबीरा गुनाहों की श्रेणी में आता है। [जैसा कि] अल-बह्र में है। संक्षेप में। दाएँ(उर्दू): जो व्यक्ति लोगों में बुरा खेल तमाशा करे जैसे तम्बूर (सितार) का इस्तेमाल और मज़ामीर (बाँसुरी) वगैरह, राग के उपकरणों का इस्तेमाल, तो वह मरदूद-उश-शहादत होगा यानी

उसकी गवाही स्वीकार्य नहीं होगी। अगर राग बहुत बुरा न हो जैसे अरबी गीत मसलन हुदा-ख्वानी, तो वह वर्जित नहीं है। लेकिन अगर उसमें अश्लील शब्द और नाच वगैरह शामिल हों तो वर्जित है, खानिया, इसलिए कि वह कबीरा गुनाहों में शामिल हो गया, बह्र, संक्षेप में। (त)

---

1. मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल, मुसनद अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु, दारुल फ़िक्र बेरुत, 3/150
2. फ़तावा खैरिय्या, किताबुल कराहिय्या, मतलब फ़ी रक़्स फ़ी समा, दारुल मआरिफ़ा बेरुत, 2/179
3. दुर्रे मुख़्तार, किताबुश शहादात, बाबतुल क़ुबूल, मत्तबा मुज्तबाई दिल्ली, 2/95

فتاوٰی رضویہ، جلد ۲۴

تمتع کرو قالوا ومارياض الجنّة صحابہ نے عرض کی یا رسول اللہ! وہ جنت کی کیاریاں کیا ہیں؟ فرمایا، ذکر کے حلقے۔

[جدول ۱] بائیں (عربی): رواه احمد والترمذی والبیهقي فی شعب الایمان عن انس رضی اللہ تعالٰی عنہ بسند جید۔ دائیں (اردو): مسند امام احمد، امام ترمذی اور امام بیہقی نے شعب الایمان میں حضرت انس رضی اللہ تعالٰی عنہ کی بہترین سند سے اس کو روایت کیا۔ (ت)

اور یہ رقص اگر معاذ اللہ بروجہ تصنّع ورياء ہے حرام قطعی و جریمہ فاحشہ ہے اور بطور لہو ولعب بھی ناجائز و مسقط عدالت ، اور تماثیل کے ساتھ مثل رقص فواحش اشد حرام، نصاب الاحتساب باب سادس پھر تاتار خانیہ پھر فتاوی خیریہ میں ہے :

[جدول ۲] بائیں (عربی): مسئلة هل يجوز الرقص فی السماع الجواب لا يجوز وذكر في الذخيرة انه كبيرة ومن اباحه من المشائخ فذلك الذي صارت حركاته كحركات المرتعش الخ دائیں (اردو): مسئلہ کیا سماع (قوالی) میں ناچ جائز ہے؟ جواب جائز نہیں، اور ذخیرہ میں ذکر کیا گیا کہ ناچنا کبیرہ گناہ ہے اور مشائخ میں سے جس نے اسے مباح قرار دیا وہ اس کے حق میں ہے جس کی حرکات مثل رعشہ والے کے بے اختیار ہوں الخ (ت)

در مختار میں ہے:

[جدول ۳] بائیں (عربی): لا تقبل ممن يلعب بلهو شنيع بين الناس كالطنابير والمزامير وان لم يكن شفيعا نحو الحداء فلا الا اذا فحش بان يرقصوا به خانية لدخوله في حد الكبائر بحر اهـ ملتقطاً دائیں (اردو): جو شخص لوگوں میں برا کھیل تماشا کرے جیسے طنبور (ستار) کا استعمال اور مزامیر

(بانسری) وغیرہ، آلات راگ وغیرہ کا استعمال تو وہ مردود الشہادۃ ہوگا یعنی اس کی گواہی قابل قبول نہ ہوگی اگر راگ بے حد برانہ ہو جیسے عربی گیت مثلاً حدی خوانی تو وہ ممنوع نہیں لیکن اگر اس میں فحش کلام اور ناچ وغیرہ شامل ہوں تو ممنوع ہے ، خانیہ، اس لئے کہ وہ کبیرہ گناہوں میں داخل ہو گیا، بحر اھ ملتقطا ۔ (ت)

---

۱ مسند امام احمد بن حنبل مسند انس بن مالک رضی اللہ عنہ دارالفکر بیروت ۳/ ۱۵۰ ۲ فتاوی خیریہ کتاب الکراہۃ مطلب فی الرقص فی السماع دارالمعرفۃ بیروت ۲/ ۱۷۹ ۳ درمختار کتاب الشہادات باب القبول مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۹۵

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

Allama Birgivi says in Al-Tariqa al-Muhammadiyya:

"What some Sufis do is included in this, rather it is a more severe crime because they do it with the belief that it is an act of worship. Imam Abu al-Wafa ibn Aqil (may Allah have mercy on him) said that the Qur'an clearly states the prohibition of dancing. Allah Almighty says: 'And do not walk upon the earth exultantly.' By this statement, Allah Almighty has condemned those who are arrogant. Indeed, Allah does not like anyone who is arrogant and boastful. Dancing, exulting, and boasting are similar acts; in fact, dancing is a greater crime than exulting and boasting. Abu Bakr al-Turtushi (may Allah have mercy on him) said that the first ones to innovate this heresy were the followers of Samiri when they made a frame of a calf that produced a sound like a cow's lowing; they stood up before it, began to dance, and experienced ecstasy (i.e., swaying). Imam al-Bazzazi said in his Fatawa al-Bazzaziyya that dancing is prohibited by consensus (ijma'). Sayyid al-Ta'ifa Ahmad al-Sanusi explicitly stated its prohibition. I saw a fatwa by Shaykh al-Islam Jalal al-Din al-Kilani which stated that whoever considers this dancing permissible—that is, declares it lawful—is a disbeliever (kaafir). Allama Zamakhshari in his Tafsir al-Kashshaf wrote such words regarding them [that bring calamities upon them, and for Imam al-Mahbubi, it is even more severe]."

फ़तावा रज़विय्या, खंड 24

अल्लामा बिरगिवी 'अल-तरीका अल-मुहम्मदिया' में फ़रमाते हैं:

"कुछ सूफ़ी जो करते हैं वह इसमें शामिल है, बल्कि यह और भी गंभीर अपराध है क्योंकि वे इसे इबादत की नियत से करते हैं। इमाम अबू अल-वफ़ा इब्न अकील (रहमतुल्लाह अलैहि) ने फ़रमाया कि कुरआन मजीद में नाचने की मनाही का स्पष्ट उल्लेख है। अल्लाह तआला का फ़रमान है: 'और ज़मीन पर अकड़ कर मत चलो।' अल्लाह तआला ने अपने इस इरशाद से अकड़ने वाले की निंदा की है, बेशक अल्लाह किसी भी अकड़ने वाले और शेखी बघारने वाले को पसंद नहीं करता। नाचना, अकड़ना और फ़ख्र करना एक जैसे कार्य हैं, बल्कि नाचना अकड़ने और फ़ख्र करने से भी बड़ा अपराध है। अबू बकर अल-तुरतुशी (रहमतुल्लाह अलैहि) ने फ़रमाया कि सबसे पहले जिस व्यक्ति ने इस बिदअत (नवाचार) को शुरू किया, वे सामरी के साथी थे, जब उन्होंने बछड़े का एक ढांचा तैयार किया जिससे गाय जैसी आवाज़ निकलती थी, तो वे उसके सामने खड़े होकर नाचने और वज्द करने (झूमने) लगे। इमाम बज़ाज़ी ने अपनी 'फ़तावा बज़ाज़िया' में फ़रमाया कि नाचना सर्वसम्मति (इज्मा) से हराम है। सैयद अल-ताइफ़ा अहमद अल-सनुसी ने इसकी हुरमत (वर्जना) को स्पष्ट किया है। मैंने शैख़ुल इस्लाम जलालुद्दीन अल-कीलानी का फ़तवा देखा जिसमें कहा गया था कि नाच को हलाल समझने वाला, यानी इसे जायज़ करार देने वाला काफ़िर है। अल्लामा ज़मख़्शरी ने अपनी तफ़सीर 'कश्शाफ़' में उनके बारे में ऐसे शब्द लिखे हैं [जो उन पर आफ़तें लाते हैं, और इमाम महबूबी के लिए यह और भी गंभीर है]।"

علامہ برکوی طریقہ محمدیہ میں فرماتے ہیں:

جو کچھ صوفیہ کرتے ہیں وہ اس میں داخل ہے بلکہ زیادہ سخت جرم ہے کیونکہ یہ کام اعتقادِ عبادت کی بنا پر کرتے ہیں، چنانچہ امام ابو الوفا ابن عقیل رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا ناچنے سے منع کرنے پر قرآن مجید کی تصریح موجود ہے۔ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے زمین پر اترا کر نہ چلو۔ اللہ تعالیٰ نے اپنے اس ارشاد سے اترانے والے کی مذمت فرمائی بے شک اللہ تعالیٰ کسی اترانے والے، فخر کرنے والے کو پسند نہیں کرتا اور ناچنا، اترانا، فخر کرنا ایک جیسے اعمال ہیں بلکہ ناچنا اترانے اور فخر کرنے سے بھی بڑا جرم ہے۔ ابوبکر طرطوسی رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا سب سے پہلے جس نے اس بدعت کو ایجاد کیا وہ اصحابِ سامری ہیں جب انہوں نے بچھڑے کا ایک ڈھانچہ تیار کیا جو گائے جیسی آواز نکالتا تھا یا جس سے گائے کی آواز کی طرح آواز نکلتی تھی تو وہ کھڑے ہو کر اس کے سامنے ناچنے لگے اور وجد کرنے لگے یعنی جھومنے لگے۔ امام بزازی نے اپنے فتاویٰ بزازیہ میں فرمایا ناچ بالاجماع حرام ہے۔ سید الطائفہ احمد سنوی نے اس کی حرمت کی صراحت فرمائی ہے، میں نے شیخ الاسلام جلال الدین گیلانی کا فتویٰ دیکھا جس میں کہا گیا کہ ناچ کو حلال کرنے والا یعنی جائز قرار دینے والا کافر ہے۔ علامہ زمخشری نے اپنی تفسیر کشاف میں ان کے متعلق ایسے کلمات [لکھے ہیں جن سے ان پر آفتیں آتی ہیں اور امام محبوبی کیلئے یہ اور بھی سخت ہے]۔

Fatawa Razawiyya, Volume 24

...from that [it was concluded]. I say: Anyone who has fairness, if he sees the dancing of the Sufis of our time in mosques and gatherings, mixed with beardless youths, people of carnal desires, and ignorant commoners from villages, and vile innovators who know nothing of purity, the Quran, or the lawful (halal) and prohibited (haram); rather, they do not even know faith and Islam. They have shrieks and roars like 'Haa-ee', 'Hu-way-ee', 'Hee-bee-ee', and 'Hay-yaa'. He [the author] would certainly say: "These people have taken their religion as a sport and a play." End of summary.

It is written that great calamities can arise from these [actions], and Imam Mahbubi's words are even harsher than these. End of quote. I say: whoever has fairness in their nature, let them just look at the dancing, jumping, and noise-making of the Sufis of our time in mosques. Beardless youths who are obsessed with carnal desires, ignorant villagers, and foolish innovators are mixed among them. They are unfamiliar with purity, ignorant of the etiquette of the Holy Quran, and devoid of the recognition of lawful and prohibited. They know nothing except shouting and screaming, and are unaware of the gnosis of faith and Islam. It was said: These people have made their religion a sport and a play. End of summary. (T)

In 'Radd al-Muhtar', it is stated from 'al-Mukhtar':

It is narrated from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that he disliked raising the voice during the recitation of the Quran, funeral processions, battle, and admonition. So what do you think about the singing which they call 'ecstasy' (Wajd) and 'love'? For it is disliked (Makruh) and has no basis in religion. (2)

It is narrated from the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny) that he disliked a loud voice during the recitation of the Quran, funeral prayer, war, and sermon. Then what is your opinion about this shouting and screaming during the music which these people call 'ecstasy' and 'love'? Without a doubt, this is Makruh (disliked); it has no basis in religion. (T)

Similarly, clapping is also impermissible and prohibited for the reasons mentioned above. In 'al-Shami', under the statement of the commentator:

Every amusement is disliked (Makruh) because of the saying of the Prophet (peace and blessings be upon him): "Every amusement of a Muslim [is falsehood except three things...]"

Every sport/play is disliked because of this saying of the Prophet (peace and blessings be upon him), for every play of a Muslim [is void].

1. Al-Tariqah al-Muhammadiyya, Ninth Section: On the Afflictions of the Body, etc., Maktaba Hanfiyya, Kansi Road, Quetta, 2/67, 264.
2. Radd al-Muhtar, Kitab al-Hazr wa al-Ibahah, Chapter on Sale, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/255.

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 24

...उससे जो समाप्त हो गया। मैं कहता हूँ: जिसके पास भी निष्पक्षता है, यदि वह हमारे समय के सूफियों का मस्जिदों और सभाओं में नृत्य देखता है, जिसमें उनके साथ दाढ़ी-विहीन युवक, मनमौजी लोग, और गाँवों के अज्ञानी आम लोग, और नीच नवाचारी (बिद'अती) शामिल हैं, जो न पवित्रता के बारे में जानते हैं, न कुरान के बारे में, और न ही हलाल और हराम के बारे में; बल्कि, वे तो ईमान और इस्लाम को भी नहीं जानते। उनकी चीखें और दहाड़ें 'हाय', 'हुवैयी', 'हीबीयी' और 'हैया' जैसी होती हैं। वह (लेखक) निश्चित रूप से कहेगा: "इन लोगों ने अपने धर्म को खेल और मनोरंजन बना लिया है।" (सारांश समाप्त)

लिखा गया है कि जिनसे उन पर बड़ी मुसीबतें आ सकती हैं और इमाम महबूब के शब्द उनसे भी अधिक कठोर हैं। मैं कहता हूँ कि जिसके स्वभाव में न्याय हो वह ज़रा हमारे समय के सूफ़ियों का मस्जिदों में नाचना कूदना शोर मचाना देखे कि बिना दाढ़ी वाले लड़के कामुक इच्छाओं के मतवाले, जाहिल देहाती और मूर्ख बिदअती उनमें घुले-मिले होते हैं जो पवित्रता से अनभिज्ञ, कुरआन मजीद के अदब से नावाकिफ और हलाल व हराम की पहचान से रहित होते हैं जो सिवाय चीखने-चिल्लाने के और कुछ नहीं जानते, ईमान और इस्लाम की मारिफत से अनभिज्ञ होते हैं, फ़रमाया इन लोगों ने अपने दीन को खेल-तमाशा बना रखा है। (संक्षेप में) (टी)

'रद्दुल मुहतार' में 'मुख्तार' से उद्धृत है:

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत है कि आप कुरान पढ़ने, जनाज़े, युद्ध और उपदेश के समय आवाज़ ऊँची करने को नापसंद करते थे। तो उस गायन के बारे में आपका क्या विचार है जिसे वे 'वज्द' और 'प्रेम' कहते हैं? क्योंकि यह नापसंद (मकरूह) है और धर्म में इसका कोई आधार नहीं है। (2)

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत है कि आपने तिलावत-ए-कुरआन, नमाज़-ए-जनाज़ा, जंग और वाज़ के दौरान बुलंद आवाज़ को नापसंद फरमाया। फिर तुम्हारा क्या ख्याल है इस चीख़ व पुकार के बारे में जो उस राग के वक़्त हो जिसको ये लोग वज्द और मोहब्बत का नाम देते हैं। बिलाशुबा ये मकरूह है, दीन में इसकी कोई असल नहीं। (टी)

इसी तरह तालियाँ बजाना भी उपरोक्त कारणों से नाजायज़ और निषिद्ध है। 'शामी' में टीकाकार के कथन के तहत:

हर मनोरंजन मकरूह है क्योंकि नबी (अलैहिस्सलातो वस्सलाम) का कथन है: "मुसलमान का हर मनोरंजन..."

हर खेल मकरूह है हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम के इस इरशाद की वजह से कि मुसलमान का हर खेल...

1. अत्तरीक़ह अल-मुहम्मदिया, नौवां खंड: शरीर की बुराइयों पर, आदि, मकतबा हनफ़िया, कांसी रोड, क्वेटा, 2/67, 264।
2. रद्दुल मुहतार, किताबुल हज़्र वल इबाहह, फस्लुल बै, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 5/255।

من ذلك انتهى قلت من له انصاف اذا رأى رقص صوفية زماننا في المساجد والدعوات مختلطا بهم المرد واهل الاهواء والقرى من جهال العوام و المبتدعة الطغام لايعرفون الطهارة والقرآن و الحلال والحرام بل لايعرفون الايمان والاسلام لهم زعيق وزئير مثل هأى وهويئ وهيبئ وهياً يقول لامحالة هؤلاء اتخذوا دينهم لهوا ولعبا اه ملخصا.

لکھے ہیں کہ جن سے ان پر بڑے مصائب قائم ہو سکتے ہیں اور امام محبوبی کے کلمات ان سے بھی زیادہ سخت ہیں اھ، میں کہتا ہوں کہ جس کی طبیعت میں انصاف ہو وہ ذرا ہمارے زمانے کے صوفیا کا مساجد میں ناچنا کودنا شور مچانا دیکھے کہ بے ریش لونڈے خواہشات نفسانی کے متوالے، جاہل دیہاتی اور بیوقوف بدعتی ان میں ملے جلے ہوتے ہیں جو طہارت سے ناآشنا، قرآن مجید کے ادب سے ناواقف اور حلال وحرام کی پہچان سے بے بہرہ ہوتے ہیں جو سوائے چیخنے چلانے کے اور کچھ نہیں جانتے ایمان اور اسلام کی معرفت سے لاعلم ہوتے ہیں، فرمایا ان لوگوں نے اپنے دین کو کھیل تماشا بنارکھا ہے اھ ملخصا۔ (ت)

ردالمختار میں مختار سے ہے:

عن النبي صلى الله تعالى عليه وسلم انه كره رفع الصوت عند قراءة القرآن والجنازة والزحف و التذكير فباظنك عند الغناء الذى يسمونه وجدا و محبة فانه مكروه لا اصل له في الدين 2۔

حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم سے مروی ہے کہ آپ نے تلاوت قرآن، نماز جنازہ، جنگ اور وعظ کے دوران بلند آواز کو ناپسند فرمایا۔ پھر تمہارا کیا خیال ہے اس چیخ و پکار کے

بارے میں جو اس راگ کے وقت ہو جس کو یہ لوگ وجد اور محبت کا نام دیتے ہیں۔ بلاشبہ یہ مکروہ ہے، دین میں اس کی کوئی اصل نہیں۔ (ت)

یو ہیں تالیاں بجانا بھی وجوہ مذکور پر ناجائز وممنوع ہے۔ شامی میں زیر قول شارح:

کرہ کل لھو بقولہ علیہ الصلوۃ والسلام کل لھو المسلم

ہر کھیل مکروہ ہے حضور علیہ الصلوۃ السلام کے اس ارشاد کی وجہ سے کہ مسلمان کا ہر کھیل

1 طریقہ محمدیہ الصنف التاسع فی آفات بدن الخ مکتبہ حنفیہ کانسی روڈ کوئٹہ ۲/ ۶۷۔ ۲۶۴ 2 ردالمحتار کتاب الحظر والاباحۃ فصل البیع داراحیاء التراث العربی بیروت ۵/ ۲۵۵

...except for three things, it is forbidden. (T)

It is stated by Allama Quhistani: [Arabic]: The absolute term includes the act itself and listening to it, such as dancing, mockery, and clapping, for all of these are disliked (Makruh) because they are the ways of the disbelievers. (Summarized) [Urdu]: The absolute term (i.e., mentioning without restriction) includes the act itself and its listening, such as dancing, making fun, and clapping. Because all of these are disliked as they are the customs of the disbelievers. (Summarized) (T)

I say: Confirmation that clapping is among the acts of the disbelievers is found in the Great Quran itself; Allah Almighty says: [Arabic]: "And their prayer at the House was nothing but whistling and clapping of hands." (8:35) [Urdu]: And their prayer at the Kaaba was nothing but whistling and clapping.

It is stated in 'Ma'alim': [Arabic]: Ibn Abbas and Al-Hasan said: 'Al-Muka' is whistling and 'Al-Tasdiya' is clapping. Ibn Abbas said: The Quraysh used to circumambulate the House while naked, whistling and clapping. [Urdu]: Abdullah ibn Abbas and Hasan Basri stated that the word "Al-Muka" that appears in the Holy Quran means whistling, and the meaning of "Tasdiya" is clapping. Ibn Abbas (may Allah be pleased with him) said that the Quraysh performed Tawaf around the Holy Kaaba while naked and they used to whistle and clap. (T)

And for an act that is forbidden, participating in it or watching it as a spectacle is also forbidden. [Arabic]: As has been stated in other issues, and you have just heard that listening is like the act itself. [Urdu]: As has been benefited from in many issues, and just now you heard (read) that listening is like the act itself. (T)

---

1. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Hazr wa al-Ibaha, Chapter on Sales, Mujtabai Press, Delhi, 2/248.
2. Radd al-Muhtar, Kitab al-Hazr wa al-Ibaha, Chapter on Sales, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/253.
3. Al-Quran al-Karim, 8/35.
4. Ma'alim al-Tanzil on the margins of Al-Khazin, under the verse "And their prayer...", Mustafa al-Babi al-Halabi, Egypt, 3/30.

फ़तावा रज़विया - खंड 24

...तीन चीजों के अलावा, यह हराम (वर्जित) है। (त)

अल्लामा कुहिस्तानी से रिवायत है: [अरबी]: बिना शर्त उल्लेख (इतलाक) स्वयं कार्य और उसे सुनने को शामिल करता है, जैसे नाचना, उपहास करना और ताली बजाना; क्योंकि ये सभी मकरूह (नापसंद) हैं क्योंकि ये काफिरों के तौर-तरीके हैं। (संक्षेप में)।

मैं कहता हूँ: इस बात की पुष्टि कि ताली बजाना काफ़िरों के कार्यों में से है, स्वयं महान कुरान में मौजूद है; अल्लाह अज्ज़वजल फ़रमाता है: [अरबी]: "और काबा के पास उनकी नमाज़ सीटी और ताली बजाने के अलावा कुछ नहीं थी।" (8:35) उर्दू: और काबा के पास उनकी नमाज़ सीटी और ताली के सिवा कुछ न थी।

'मआलिम' में है: [अरबी]: इब्न अब्बास और अल-हसन ने कहा: 'अल-मुका' सीटी बजाना है और 'अत-तस्दिया' ताली बजाना है। इब्न अब्बास ने कहा: कुरैश नग्न होकर काबा का तवाफ़ करते थे और सीटियाँ व तालियाँ बजाते थे। उर्दू: अब्दुल्लाह इब्न अब्बास और हसन बसरी ने फ़रमाया कि कुरान मजीद में जो शब्द "अल-मुका" आया है उसका अर्थ सीटी बजाना है और 'तस्दिया' का अर्थ ताली बजाना है। इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया कि कुरैश काबा शरीफ़ का नग्न होकर तवाफ़ करते थे और सीटियाँ व तालियाँ बजाया करते थे। (त)

और जो कार्य हराम है, उसमें शामिल होना या उसका तमाशा देखना भी हराम है। [अरबी]: जैसा कि अन्य मुद्दों में भी बताया गया है, और आपने अभी सुना कि सुनना स्वयं कार्य करने के समान है। उर्दू: जैसा कि कई मसलों में इसका फायदा बताया गया है और अभी आपने सुना (पढ़ा) कि सुनना कार्य करने की तरह ही है। (त)

---

1. दुर्र-ए-मुख्तार, किताब अल-हज़र वल-इबाह, फ़स्ल फ़िल-बैअ, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 2/248
2. रद अल-मुह्तार, किताब अल-हज़र वल-इबाह, फ़स्ल फ़िल-बैअ, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बैरूत, 5/253
3. अल-कुरान अल-करीम, 8/35
4. मआलिम अल-तन्ज़ील, अल-खाज़िन के हाशिये पर, आयत "वमा काना सलातुहुम" के नीचे, मुस्तफ़ा अल-बाबी अल-हलबी मिस्र, 3/30

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

حرام الاثلاثۃ[1] - | سوائے تین کے حرام ہے۔ (ت)

علامہ قہستانی سے ہے: الاطلاق شامل لنفس الفعل واستماعه کالرقص و السخریة والتصفیق فانها کلها مکروهة لانها زی الکفار[2] اه مختصرًا | اطلاق (یعنی بلا قید ذکر کرنا) نفس فعل اور اس کی سماعت کو شامل ہے جیسے ناچنا، مذاق کرنا اور تالیاں بجانا۔ اس لئے کہ یہ سب مکروہ ہیں کیونکہ یہ عادات کفار ہیں۔ اھ مختصراً (ت)

اقول: تصدیق اس کی کہ تالی بجانا افعال کفار سے ہے، خود قرآن عظیم میں موجود اللہ عزوجل فرماتا ہے: "وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً وَتَصْدِيَةً" 3- | نہ تھی ان کی نماز کعبے کے پاس مگر سیٹی اور تالی۔

معالم میں ہے: قال ابن عباس والحسن، المکاء الصفیر والتصدیة التصفیق قال ابن عباس کانت قریش تطوف بالبیت وهم عراة یصفرون ویصفقون۔ 4 | عبداللہ ابن عباس اور حسن بصری نے فرمایا قرآن مجید میں جو لفظ "المکاء" آیا ہے اس کے معنی سیٹی بجانا ہے اور تصدیہ کے معنی ہیں تالی بجانا۔ ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہ نے فرمایا کہ قریش کعبہ شریف کا ننگے ہو کر طواف کرتے اور سیٹیاں اور تالیاں بجایا کرتے تھے (ت)

اور جو فعل حرام ہے اس میں شریک ہونا اس کا تماشا دیکھنا بھی حرام ہے۔ کما افادہ فی غیرما مسئلة وقد سمعت الآن ان الاستماع کالفعل۔ | جیسا کہ بہت سے مسائل میں اس کا افادہ کیا اور ابھی آپ نے سنا (پڑھا) کہ سننا فعل کی طرح ہے۔ (ت)

---

[1] درمختار کتاب الحظر والاباحة فصل فی البیع مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۲۴۸ [2] ردالمحتار کتاب الحظر والاباحة فصل فی البیع داراحیاء التراث العربی بیروت ۵/ ۲۵۳ [3] القرآن الکریم ۸/ ۳۵ [4] معالم التنزیل علی ہامش الخازن تحت وما کان صلاتهم مصطفی البابی حلبی مصر ۳/ ۳۰

Fatwa Razawiyya, Volume 24

It is stated in Jawhara al-Nayyirah, then Durr al-Muntaqa, then Radd al-Muhtar:

(Arabic) What the pseudo-Sufis of our time do is forbidden; it is not permissible to intend [to go to them] or sit with them. And those before them did not do so. [1]

(Urdu) What the showy Sufis of our time do is forbidden. Therefore, intending to go or sitting in such a gathering is not permissible, and such a thing was never done before them. (T)

Yes, if true overwhelmed lovers (sadiqeen) fall into ecstasy (wajd) without affectation or choice upon the remembrance of the Beloved, and if these passionate intoxications of the cup of love make those who are unaware of everything besides Allah, even their own lives, into wandering enamored ones, then this is the greatest wealth and the grandest blessing, bestowed upon whom He wills. This state is neither under the pen nor subject to action; there is no room for denial of it at all. Although those of steadfastness and lofty mountains, the guiding mentors and exemplars in religion, whom even mountains might move but they would not budge, are more elevated and superior. They are the special heirs of the exalted Prophets, upon whom be the best of prayers and praise.

(Arabic) I say: and below these is the rank of the sincere middle-path seekers who follow the way of the lovers with manifest sincerity like the bright dawn. They seek a model to find the spiritual path, for habituation often leads to reality, as the Imam, Hujjat al-Islam, pointed out in Ihya' 'Ulum al-Din, on the basis that 'whoever resembles a people is of them.' [2] This is a rugged path and a difficult barrier, which no one is capable of unless they have abandoned passion and are able to hold their soul's reins from transgression. Is not

(Urdu) I say that the rank of the al-Awsat (intermediaries), i.e., the middle-ranking people, is lower than those who are truly sincere, with apparent sincerity, like the light of dawn. They follow the lovers, walking on their path. They intend leadership to find the Way because sometimes habit leads to reality, as Hujjat-ul-Islam Imam Ghazali pointed out in Ihya al-Ulum. Furthermore, whoever imitates a people is of them. This path is difficult and is a "barzakh" (isthmus), meaning a challenging middle stage; only one who is free from carnal desires and is capable of reigning in the horse of their ego and moving forward can manage it.

[1] Radd al-Muhtar, Kitab al-Hazr wa al-Ibaha, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/222 [2] Sunan Abi Dawud, Kitab al-Libas, Bab fi Labs al-Shuhrah, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 3/203

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

जौहर-ए-नैय्यरह, फिर दुर्र-ए-मुन्तक़ा, फिर रद्द-उल-मुहतार में उल्लेख है:

(अरबी) हमारे समय के छद्म-सूफी जो कुछ करते हैं वह हराम है; उनके पास जाने का इरादा करना या उनके साथ बैठना जायज़ नहीं है। उनसे पहले वालों ने ऐसा कभी नहीं किया। [1]

(उर्दू) हमारे समय के दिखावटी सूफी जो कुछ करते हैं वह हराम है। इसलिए इसका इरादा करना और ऐसी मजलिस में बैठना जायज़ नहीं है और उनसे पहले कभी ऐसा नहीं किया गया। (त)

हाँ, यदि सच्चे अभिभूत प्रेमी (सादिक़ीन) बिना बनावट या चुनाव के महबूब की याद में वज्द (समाधि) में आ जाएं और यदि इश्क के प्याले की ये जोशीली मस्तियां उन लोगों को जो अल्लाह के अलावा सब कुछ, यहाँ तक कि अपनी जान से भी बेखबर हैं, दीवाना बना दें, तो यह महानतम धन और सबसे बड़ी नेमत है, जिसे वे चाहें प्रदान करें। यह अवस्था न तो कलम के अधीन है और न ही कार्य के अधीन; इस पर इनकार की कोई गुंजाइश नहीं है। हालाँकि दृढ़ता और ऊँचे पर्वतों के स्वामी, मार्गदर्शक मुर्शिद और धर्म के आदर्श, जिन्हें देखकर पहाड़ अपनी जगह से हिल जाएं पर वे न हिलें, सबसे ऊँचे और श्रेष्ठ हैं। वे महान नबियों के विशेष उत्तराधिकारी हैं, जिन पर श्रेष्ठ प्रार्थनाएं और प्रशंसा हो।

(अरबी) मैं कहता हूँ: इनके नीचे उन सच्चे मध्यमार्गी साधकों का दर्जा है जो स्पष्ट निष्ठा के साथ प्रेमियों के मार्ग का अनुसरण करते हैं, जैसे प्रकट होने वाली भोर। वे रास्ता खोजने के लिए एक आदर्श चाहते हैं, क्योंकि आदत अक्सर वास्तविकता की ओर ले जाती है, जैसा कि इमाम हुज्जत अल-इस्लाम ने एहया उल-उलूम में संकेत दिया है, इस तथ्य के आधार पर कि 'जो किसी समुदाय का अनुकरण करता है वह उन्हीं में से है।' [2] यह एक कठिन और संकीर्ण पुल है, जिसे वही पार कर सकता है जो वासना को त्याग देता है और अपनी आत्मा की लगाम को सरकशी से रोकने में सक्षम होता है। नहीं है

(उर्दू) मैं कहता हूँ कि 'अल-औसत' यानी मध्यम दर्जे के लोगों का दर्जा उन लोगों से कम है जो ज़ाहिरी इख्लास (निष्ठा) के साथ सच्चे हैं, जैसे भोर का उजाला। वे प्रेमियों का अनुसरण करते हैं, उनके रास्ते पर चलते हैं। वे रास्ता पाने के लिए अगुआई का इरादा रखते हैं क्योंकि कभी-कभी आदत हक़ीक़त की ओर ले जाती है, जैसा कि हुज्जतुल इस्लाम इमाम ग़ज़ाली ने एहया-उल-उलूम में संकेत किया है। इसके अलावा, जो किसी का रूप अपनाता है, वह उन्हीं में से है। यह रास्ता कठिन है और एक 'बरज़ख़' (मध्यम स्थिति) है, यानी मुश्किल मध्यम दर्जा है; इसकी क्षमता वही व्यक्ति रख सकता है जो कामुक इच्छाओं से मुक्त हो और अपने नफ़्स (अहंकार) के घोड़े की लगाम थामकर आगे बढ़ सके।

[1] रद्द-उल-मुहतार, किताब अल-हज़र वल-इबाहा, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 5/222

[2] सुनन अबी दाऊद, किताब अल-लिबास, बाब फ़ी लुब्स अश-शुहरा, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, 3/203

جو ہر ہ نیرہ پھر در منتقٰی پھر ردالمحتار میں ہے:

مایفعلہ متصوفۃ زماننا حرام ہمارے زمانے کے نمائشی صوفی جو کچھ کرتے ہیں وہ حرام لایجوز القصد و الجلوس الیہ و من ہے لہٰذا اس کا ارادہ کرنا اور ایسی مجلس میں بیٹھنا جائز قبلھم لم یفعل کذلک ۱۔ نہیں اور ان سے پہلے کبھی ایسا نہ کیا گیا۔ (ت)

ہاں اگر مغلوبین صادقین بے تصنع وبے اختیار یادِ محبوب پر وجد میں آئیں اور ان ماسوی اللہ حتٰی کہ اپنی جان سے بے خبروں کو جامِ عشق کی پرجوش مستیاں والہ سرگشتہ بنائیں تو یہ دولتِ عظمٰی و نعمتِ کبرٰی ہے جسے بخشیں جسے عطا فرمائیں، یہ حالت نہ زیرِ قلم نہ ختمِ عمل نہ اس پر انکار کا اصلاً محل اگرچہ اصحابِ تمکین و جبالِ شامخین ہداۃِ مرشدین وقدوہ فی الدین کہ پہاڑ ٹل جائیں اور جنبش میں نہ آئیں ارفع واعلٰی ہیں خاص وارثانِ حضراتِ عالیہ انبیاء علیہم افضل الصلوۃ والثناء ہیں۔

قلت ودون هؤلاء مرتبة الاوساط الصادقين السالكين مسلک الاقتداء بالعاشقين مع الاخلاص المبين كالفجر المبين يريدون القدوة لوجدان الطريقة لان التعود ربما جر الى الحقيقة كما اشار اليه الامام حجة الاسلام فى احياء العلوم على ان من تشبه بقوم فهو منهم ۲ وهذا وعر وبرزخ صعب لا يقدر عليه الامن تخلى عن الهوى وقدر على نفسه ان يمسك عنانها عن الطغوى ليس

میں کہتا ہوں کہ مرتبہ الاوسط یعنی اوسط درجہ کے لوگوں کا درجہ جو سچے ہیں ان سے کم ہے ظاہر اخلاص کے ساتھ ، جیسے فجر کا اجالا۔ وہ عشاق کی اقتداء کرتے ہیں ان کے مسلک پر چلتے ہیں حصولِ طریقہ کے لئے وہ پیشوائی کا ارادہ رکھتے ہیں کیونکہ بعض اوقات عادت حقیقت کی طرف کھینچ لے جاتی ہے جیسا کہ حجتہ الاسلام امام غزالی نے احیاء العلوم میں اس کی طرف اشارہ کیا ہے علاوہ ازیں جو کسی کی مشابہت اختیار کرے وہ انہی میں سے ہے، یہ مسلک مشکل اور برزخ یعنی متوسط درجہ دشوار ہے اس کی قدرت وہی شخص رکھ سکتا ہے جو نفسانی خواہش سے مبراہو۔ اور اپنے نفس کے گھوڑے کو لگام دے کر آگے بڑھے

۱ ردالمحتار کتاب الحظر والاباحة داراحیاء التراث العربی بیروت ۵ / ۲۲۲ ۲ سنن ابی داؤد کتاب اللباس باب فی لبس الشهرة آفتاب عالم پریس لاہور ۳ / ۲۰۳

Volume 24 Fatawa Razawiyya

[Arabic Box Text]: Between him and reprehensible affectation, there is only as much distance as between the black and white of the eye, or between a person's lips and tongue. And whoever grazes around the borders of a sanctuary is likely to fall into it. We ask Allah for forgiveness and well-being. [Urdu Box Text]: There is only as much distance between him and blameworthy affectation as between the iris and the white of the eye, or as between a man's lips and tongue. And anyone who grazes around the edges of a pasture is highly likely to wander into it. We ask Allah Almighty for pardon and well-being. (T)

It is stated in Nisab al-Ihtisab, Tatar Khaniyah, Fatawa Khayriyah, Radd al-Muhtar, etc.: [Arabic Box Text]: There are conditions for it: that they do not stand up except when overcome, and they do not display ecstasy (wajd) unless they are sincere. [Urdu Box Text]: There are conditions for this; one is that they should not stand up unless overcome by emotion, and should not manifest ecstasy except out of true sincerity. (T)

In Muntaqa Sharh Multaqa and then in Shamiyah it is stated: [Arabic Box Text]: The condition for the one in ecstasy (wajd) during his state of absence is that it reaches such a point that if his face were struck with a sword, he would not feel any pain. [Urdu Box Text]: The condition for the state of being lost in spiritual ecstasy is that it should be so overpowering that even if the person in ecstasy were struck in the face with a sword, they would not feel any pain or have any awareness of it. (T)

In Khayriyah it is stated: [Arabic Box Text]: In Tatar Khaniyah, there is evidence for its permissibility for the one who is overcome, whose movements are like those of a person with tremors. Allamah Bulqini and Burhanuddin al-Abnasi have given fatwas on this, and some imams have replied similarly. [Urdu Box Text]: It is stated in Fatawa Tatar Khaniyah that what points to the permissibility of ecstasy for one in an overcome state is that their movements should be like the movements of someone with tremors (i.e., spontaneous and involuntary). Allamah Bulqini and Allamah Burhanuddin al-Abnasi.

1. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Buyu' (Book of Sales), Chapter: The Halal is clear and the Haram is clear, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/275.
2. Radd al-Muhtar, Kitab al-Hazr wa al-Ibahah (Book of Prohibition and Permissibility), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/222.

3. Radd al-Muhtar, Sharh Tanwir al-Absar, Kitab al-Hazr wa al-Ibahah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/222.

जिल्द 24 फतावा रज़विया

[अरबी बॉक्स पाठ]: उसके और निंदनीय दिखावे के बीच केवल उतनी ही दूरी है जितनी आँख की पुतली और सफेदी के बीच, या किसी व्यक्ति के होठों और जीभ के बीच। और जो कोई किसी सुरक्षित क्षेत्र की सीमाओं के आसपास चराई करता है, उसके उसमें गिर जाने की संभावना है। हम अल्लाह से माफ़ी और सलामती मांगते हैं। [उर्दू बॉक्स पाठ]: उसके और निंदनीय बनावट (तसन्नु') के बीच उतनी ही दूरी है जितनी आँख की स्याही और सफेदी के बीच है या जितनी आदमी के होंठ और ज़बान के बीच है, और जो कोई चरागाह के चारों ओर चरे तो उसके उस चरागाह में चले जाने की प्रबल संभावना है। हम अल्लाह तआला से दरगुज़र और आफ़ियत का सवाल करते हैं। (त)

निसाब अल-इहतिसाब, तातार खानिया, फतावा खैरिया, रद अल-मुह्तार आदि में है: [अरबी बॉक्स पाठ]: इसके लिए शर्तें हैं: कि वे तब तक न उठें जब तक कि वे अभिभूत (मगलूब) न हो जाएं और वे वज्द (परमानंद) तब तक प्रकट न करें जब तक कि वे सच्चे न हों। [उर्दू बॉक्स पाठ]: इसके लिए शर्तें हैं; एक यह कि वे न उठें मगर मगलूब होकर और वज्द का इज़हार न करें सिवाय सच्चा होने की हैसियत के। (त)

मुंतक़ा शरह मुल्तक़ा और फिर शामिया में है: [अरबी बॉक्स पाठ]: अपनी बेखुदी की स्थिति में वज्द करने वाले के लिए शर्त यह है कि वह इस हद तक पहुँच जाए कि अगर उसके चेहरे पर तलवार से वार किया जाए तो उसे दर्द का अहसास न हो। [उर्दू बॉक्स पाठ]: वज्द करने वाले की वज्दानी कैफियत गुम हो जाने की हालत के लिए शर्त यह है कि वह इस हद तक हावी हो कि अगर वज्द वाले के चेहरे पर तलवार की ज़र्ब (चोट) लगाई जाए तो तब भी उसे दर्द का एहसास और शऊर न होने पाए। (त)

खैरिया में है: [अरबी बॉक्स पाठ]: तातार खानिया में ऐसी चीज़ें हैं जो उस मगलूब-उल-हाल के लिए इसके जायज़ होने पर दलालत करती हैं जिसकी हरकतें कपकपी वाले व्यक्ति की हरकतों की तरह हों। अल्लामा बुल्कीनी और बुरहानुद्दीन अल-अब्नासी ने इस पर फतवा दिया है, और कुछ इमामों ने इसी तरह का जवाब दिया है। [उर्दू बॉक्स पाठ]: फतावा तातार खानिया में है कि मगलूब-उल-हाल के वज्द के जवाज़ पर जो चीज़ दलालत करती है वह यह है कि उसकी हरकतें रअशा (कंपकंपी) वाले

की हरकतों की मानिंद हों। (यानी बेसाख्ता और बे-अख्तियार हों) अल्लामा बुल्कीनी और अल्लामा बुरहानुद्दीन अब्नासी।

1. सहीह अल-बुखारी, किताब अल-बुयू', बाब अल-हलाल बैन वल-हराम बैन, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/275.
2. रद अल-मुह्तार, किताब अल-हज़र वल-इबाहा, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 5/222.
3. रद अल-मुह्तार, शरह तनवीर अल-अबसार, किताब अल-हज़र वल-इबाहा, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 5/222.

पृष्ठ 94/720

[عربی متن]: بینہ وبین التصنع المذموم الاکما بین سواد العین وبیاضہ او شفۃ المرء وفیہ من رتع حول الحمی اوشک ان یقع فیہ، نسأل اللہ العفو و العافیہ۔ [اردو متن]: اس کے اور تصنع مذموم کے درمیان اتنی ہی مسافت ہے جتنی آنکھ کی سیاہی اور سفیدی کے درمیان ہے یا جتنی آدمی کے ہونٹ اور زبان کے درمیان ہے، اور جو کوئی چراگاہ کے چاروں اطراف کے ساتھ چرے تو اس چراگاہ میں چلے جانے کا قوی امکان ہے۔ ہم اللہ تعالٰی سے در گزر اور عافیت کا سوال کرتے ہیں۔ (ت)

نصاب الاحتساب و تاتار خانیہ و فتاوٰی خیریہ وردالمحتار وغیرہ میں ہے: [عربی متن]: لہ شرائط ان لا یقوموا الا مغلوبین ولا یظہروا وجدا الا صادقین۔ [اردو متن]: اس کے لئے شرائط ہیں، ایک یہ کہ وہ نہ اٹھیں مگر مغلوب ہو کر اور وجد کا اظہار نہ کریں سوائے سچا ہونے کی حیثیت کے۔ (ت)

منتقی شرح ملتقٰی پھر شامیہ میں ہے: [عربی متن]: شرط الواجد فی غیبتہ ان یبلغ الی حد لو ضرب وجہہ بالسیف لا یشعر فیہ بوجع۔ [اردو متن]: وجد کرنے والے کی وجدانی کیفیت گم ہو جانے کی حالت کے لئے شرط یہ ہے کہ وہ اس حد تک حاوی ہو کہ اگر وجد والے کے چہرے پر تلوار کی ضرب (چوٹ) لگائی جائے تو تب بھی اسے درد کا احساس اور شعور نہ ہونے پائے۔ (ت)

خیریہ میں ہے: [عربی متن]: فی التتارخانیۃ ما یدل علی جوازہ للمغلوب الذی حرکاتہ کحرکات المرتعش وبہذا افتی البلقینی و برہان الدین الابناسی وبمثلہ اجاب بعض ائمۃ [اردو متن]: فتاوٰی تتار خانیہ میں ہے کہ مغلوب الحال کے وجد کے جواز پر جو چیز دلالت کرتی ہے وہ یہ ہے کہ اس کی حرکات رعشہ والے کی حرکات کی مانند ہوں۔ (یعنی بے ساختہ اور بے اختیار ہوں) علامہ بلقینی اور علامہ برہان الدین ابناسی

۱۔ صحیح البخاری کتاب البیوع باب الحلال بین والحرام بین قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۷۵ ۲۔ رد المحتار کتاب الحظر والاباحة داراحیاء التراث العربی بیروت ۵ / ۲۲۲ ۳۔ رد المحتار شرح تنویر الابصار کتاب الحظر والاباحة دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/ ۲۲۲

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Arabic]: The Hanafis and Malikis [gave fatwa on this], and all of that is when the intention is pure, and they are sincere in ecstasy, overwhelmed in standing and moving at the intensity of deep love. [Urdu]: ...has given a fatwa on this, and some Imams of the Hanafi and Maliki schools have also given a reply in accordance with it. And all of this is at a time when the intention is pure, and those in ecstasy are truthful in their ecstasy, and are overwhelmed in their rising, sitting, and movement by the intensity of the madness of love. (T)

In Majma' al-Anhur, under the aforementioned quote from Multaqa al-Abhur, it is written:

[Arabic]: In At-Tashil: There are levels in ecstasy, and some of them take away volition, so there is no reason for denial without detail. [Urdu]: In At-Tashil it is stated that 'ecstasy' has some levels, and some are such that volition is seized, meaning the power of choice absolutely does not remain. Then, without knowing the details, the possibility of the patient's recovery becomes difficult. (T)

In Shifa al-Alil of Allama Shami, it is mentioned:

[Arabic]: We have no dispute with the truthfulness of our masters, the Sufis, who are cleared of every vile trait. For indeed, the Imam of the two groups, our master al-Junayd, was asked about people who experience ecstasy and sway, so he said: 'Leave them with Allah the Almighty, for they are rejoicing. And if you had tasted what they taste, you would have excused them for their shouting and the tearing of their clothes.' Ends. And we also have no dispute with those who follow them, taste from their source, and find yearning within themselves... [Urdu]: Our discourse is based on truth; our master Sufis are pure from vile habits, so they are not among the showy Sufis. Accordingly, the Imam of the two groups, our master Junayd al-Baghdadi (may Allah Almighty be pleased with him), was asked that some people experience ecstasy and stagger (meaning they sway here and there); what do you say about this? He replied: 'Leave them be; they find joy from Allah Almighty. If you also possessed a taste like theirs, you would consider them excused in this shouting and tearing of collars.' And our discourse is also not with those who (the aforementioned...)

1. Fatawa Khayriyya, Book of Dislike and Preference, Dar al-Ma'rifa, Beirut, 2/182.
2. Majma' al-Anhur Sharh Multaqa al-Abhur, Book of Dislike, Section on Miscellaneous, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/552.

फतावा रज़विया जिल्द 24

[अरबी]: हनफ़ियों और मालिकियों ने [इस पर फ़तवा दिया है], और यह सब तब है जब नीयत शुद्ध हो और वे वज्द (परमानंद) में सच्चे हों, और उठने-बैठने और गति में प्रेम की तीव्रता से अभिभूत हों। [उर्दू]: ...ने इस पर फ़तवा दिया है और हनफ़ी और मालिकी विचारधारा के कुछ इमामों ने भी इसी के अनुसार उत्तर दिया है। और यह सब कुछ उस समय है जबकि नीयत शुद्ध हो और वज्द वाले अपने वज्द में सच्चे हों और उठने-बैठने और गति में प्रेम के पागलपन की तीव्रता से अभिभूत हों। (त)

मजमा अल-अन्हुर में मुल्तक़ा अल-अभर के उपरोक्त कथन के तहत है:

[अरबी]: अत-तस्हील में है: वज्द के कुछ स्तर होते हैं और उनमें से कुछ नियंत्रण छीन लेते हैं, इसलिए बिना विस्तार के इनकार करने का कोई कारण नहीं है। [उर्दू]: तस्हील में है कि 'वज्द' के कुछ स्तर होते हैं और कुछ ऐसे हैं कि जिनमें नियंत्रण छिन जाता है यानी इख़्तियार बिल्कुल नहीं रहता। फिर बिना विस्तार जाने रोगी की सेहतयाबी की सूरत पैदा होना मुश्किल है। (त)

अल्लामा शामी की शिफ़ा अल-अलील में है:

[अरबी]: हमें अपने सादात सूफ़ियों की सच्चाई से कोई विवाद नहीं है जो हर बुरी आदत से पाक हैं। वास्तव में, दो समूहों के इमाम हमारे आका अल-जुनैद से उन लोगों के बारे में पूछा गया जो वज्द करते हैं और झूमते हैं, तो उन्होंने फरमाया: 'उन्हें अल्लाह तआला के साथ छोड़ दो, वे खुश हो रहे हैं। और यदि तुमने वह चखा होता जो उन्होंने चखा है, तो तुम उन्हें उनके चिल्लाने और उनके कपड़े फाड़ने के लिए माज़ूर (विवश) समझते।' इति। और हमें उन लोगों से भी कोई विवाद नहीं है जिन्होंने उनका अनुसरण किया, उनके स्रोत से चखा और अपने भीतर तड़प पाई... [उर्दू]: हमारा कलाम सच्चाई पर आधारित है, हमारे सादात सूफ़िया घटिया आदतों से पाक हैं अतः वे नुमाइशी सूफ़ियों में से नहीं हैं, चुनाँचे दो गिरोहों के इमाम सैय्यदना जुनैद बगदादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा गया कि कुछ लोग वज्द करते और लड़खड़ाते हैं (यानी इधर-उधर झूमते हैं) इस बारे में आप क्या फरमाते हैं? इरशाद फरमाया कि उनको छोड़ दो ये अल्लाह तआला से खुशी पाते हैं अगर तुझे भी उन जैसा ज़ौक़ हासिल होता तो उनको इस चिल्लाने और गिरेबान फाड़ने में माज़ूर जानता और हमारा कलाम उन से भी नहीं कि जिन्होंने (मजकूरा...

1. फतावा खैरिया, किताब अल-कराहिया वल-इस्तिहसान, दार अल-मआरिफा बेरूत, 2/182।

2. मजमा अल-अन्हुर शरह मुल्तक़ा अल-अभर, किताब अल-कराहिया, मुतफ़र्रक़ात का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 2/552।

पेज 95/720

الحنفیة والمالکیة وکل ذلك اذا خلصت النیة وکانوا صادقین فی الوجد مغلوبین فی القیام والحرکة عند شدة الھیام[1]۔ نے اس پر فتوٰی دیا ہے اور بعض ائمہ حنفیہ اور مالکیہ نے بھی اسی کے مطابق جواب دیا ہے۔ اور یہ سب کچھ اس وقت ہے جبکہ نیت خالص ہو اور وجد والے وجد میں سچے ہوں اور اٹھنے بیٹھنے اور حرکت میں جنونِ عشق کی شدت سے مغلوب ہوں۔ (ت)

مجمع الانہر میں زیرِ قول مذکور ملتقٰی الا بحر ہے:

فی التسھیل فی الوجد مراتب وبعضہ یسلب الاختیار فلا وجہ للانکار بلا تفصیل[2]۔ تسہیل میں ہے کہ "وجد" کے کچھ مراتب ہوتے ہیں اور بعض ایسے ہیں کہ جن میں اختیار سلب ہو جاتا ہے یعنی اختیار بالکل نہیں رہتا۔ پھر بغیر تفصیل جاننے کے بیمار کی صحت یابی کی صورت پیدا ہونا مشکل ہے۔ (ت)

شفاء العلیل علامہ شامی میں ہے:

لاکلام لنا مع الصدق من ساداتنا الصوفیة المبرئین عن کل خصلة ردیة فقد سئل امام الطائفتین سیدنا الجنید ان اقواماً یتواجدون ویتمایلون فقال دعوھم مع اللہ تعالی یفرحون ولوذقت مذاقھم عذرتھم فی صیاحھم وشق ثیابھم اھ۔ ولاکلام لنا ایضاً مع من اقتدی بھم وذاق من مشربھم ووجد من نفسہ الشوق ہمارا کلام سچائی پر مبنی ہے، ہمارے سادات صوفیہ گھٹیا عادات سے پاک ہیں پس وہ نمائشی صوفیا سے نہیں، چنانچہ دو گروہوں کے امام سیدنا جنید بغدادی رضی اللہ تعالٰی عنہ سے پوچھا گیا کہ کچھ لوگ وجد کرتے اور لڑکھڑاتے ہیں (یعنی ادھر ادھر جھومتے ہیں) اس بارے میں آپ کیا فرماتے ہیں؟ ارشاد فرمایا کہ ان کو چھوڑ دو یہ اللہ تعالٰی سے خوشی پاتے ہیں اگر تجھے بھی ان

جیسا ذوق حاصل ہوتا تو ان کو اس چلانے اور گریبان پھاڑنے میں معذور جانتا اور ہمارا کلام ان سے بھی نہیں کہ جنہوں نے (مذکورہ

[1] فتاویٰ خیریہ کتاب الکراھة والاستحسان دار المعرفة بیروت ۲ / ۱۸۲ [2] مجمع الانھر شرح ملتقی الابحر کتاب الکراھیة فصل في المتفرقات دار احیاء التراث العربي بیروت ۲ / ۵۵۲

(Arabic)	(English Translation)
والهيام في ذات الملك العلام۔ بل كلامنا مع هؤلاء العوام الفسقة اللئام الذين اتخذوا مجلس الذكر شبكة لصيد الدنيا الدنية وقضاء لشهواتهم الشنيعة الردية ولسنا نقصد منهم تعيين احد فالله مطلع على احوالهم اه مختصراً۔	...and followed the elders and tasted their spiritual drink and found within themselves yearning and the madness of love in the Essence of the All-Knowing King (i.e., Allah Almighty's praiseworthy Essence). Rather, our discourse is with those common, profligate, and mean people who have made the gathering of remembrance (dhikr) a net to hunt the low and petty world and have made the gathering of dhikr a pretext for the satisfaction of their worst base desires. We do not intend to specify any one individual among them, for Allah alone is fully aware and knowledgeable of their conditions. (Summary)

It is from its 'Manhiya' (marginal notes) in 'Noorul Ain fi Islah Jami-ul-Fusoolain'. Allama Ibn Kamal Pasha, in response to this question, said:

(Arabic)	(English Translation)
مافي التواجد ان حققت من حرج ولا في التمايل ان اخلصت من باس فقمت تسعى على رجل و حق لمن دعاه مولاه ان يسعى على الراس الرخصة فيما ذكر من الاوضاع عند الذكر والسماع للعارفين الصارفين اوقاتهم الى احسن الاعمال السالكين المالكين لضبط انفسهم من قبائح الاحوال فهم لا يستمعون الا من الاله ولا يشتاقون الاله ان ذكروه ناحوا وان وجدوه	There is no harm in feigned ecstasy (tawajud) if it is based on reality. There is no problem in swaying if it is with sincerity. Then he stood up and began running on one foot; he who is called by his Master, it is incumbent upon him to run on his head. Permission for the aforementioned postures during remembrance and audition (sama) is for those Gnostics (Arifeen) who spend their time performing the best of deeds, following the path of Allah Almighty, and are capable of restraining their souls from foul actions. Then they listen only from Allah and remain longing for Him; if they are busy in His remembrance, they begin to wail.

[1] Shifa-ul-Aleel, a treatise from the treatises of Ibn Abidin, Suhail Academy Lahore, 1/172-173.

(अरबी)

والهيام في ذات الملك العلام۔ بل كلامنا مع هؤلاء العوام الفسقة اللئام الذين اتخذوا مجلس الذكر شبكة لصيد الدنيا الدنية وقضاء لشهواتهم الشنيعة الردية ولسنا نقصد منهم تعيين احد فالله مطلع على احوالهم اھ مختصراً۔

(हिंदी अनुवाद)

...और बुज़ुर्गों का अनुसरण किया और उनके मशरब (आध्यात्मिक मार्ग) का स्वाद चखा और अपने भीतर शौक और इश्क का जुनून, मलिक-ए-अल्लाम (अर्थात अल्लाह तआला की प्रशंसा योग्य जात) में पाया। बल्कि हमारी बातचीत उन आम लोगों के साथ है जो फ़ासिक़ (पापी) और नीच हैं, जिन्होंने ज़िक्र की महफिल को तुच्छ और मामूली दुनिया के शिकार के लिए जाल बना रखा है और अपनी बदतर नीच भावनाओं की संतुष्टि के लिए ज़िक्र की महफिल को एक आड़ बनाया है। हम इसमें किसी एक व्यक्ति को निर्दिष्ट करने का इरादा नहीं रखते क्योंकि अल्लाह ही उनके हालातों से पूरी तरह वाकिफ और जानकार है। (संक्षिप्त)

इसी की मन्हिया (हाशिये) में 'नूरुल ऐन फी इस्लाह जामिउल फुसूलैन' से है। अल्लामा इब्न कमाल पाशा ने इस सवाल के जवाब में फरमाया:

(अरबी)

مافي التواجد ان حققت من حرج ولا في التمايل ان اخلصت من باس فقمت تسعى على رجل و حق لمن دعاه مولاه ان يسعى على الراس الرخصة فيما ذكر من الاوضاع عند الذكر والسماع للعارفين الصارفين اوقاتهم الى احسن الاعمال السالكين المالكين لضبط انفسهم من قبائح الاحوال فهم لا يستمعون الا من الاله ولا يشتاقون الاله ان ذكروه ناحوا وان وجدوه

(हिंदी अनुवाद)

यदि वज्द (समाधि) वास्तविकता पर आधारित हो, और यदि झूमना ईमानदारी के साथ हो, तो इसमें कोई बुराई नहीं है। फिर वह खड़ा होकर एक पैर पर दौड़ने लगा; जिसे उसका मौला (मालिक) पुकारे, उस पर वाजिब है कि सिर के बल दौड़ पड़े। ज़िक्र और समाअ (श्रवण) के समय उक्त मुद्राओं की अनुमति उन आरिफ़ीन (ज्ञानियों) के लिए है जो अपना समय बेहतरीन कर्म करने में बिताते हैं, अल्लाह तआला का रास्ता चुनते हैं, अपने नफ्स (इच्छाओं) को बुरे कामों से रोकने में सक्षम होते हैं। फिर वे केवल अल्लाह तआला से ही सुनते हैं और उसी के शौकीन रहते हैं, यदि उसकी याद में मशगूल हों तो विलाप करने लगते हैं।

[1] शिफा-उल-अलील, इब्न आबिदीन के रिसालों में से एक रिसाला, सुहैल अकादमी लाहौर, 1/172-173.

पृष्ठ 96 / 720

(عربی) **(اردو ترجمہ)**

والهيام في ذات الملك العلام۔ بل كلامنا مع هؤلاء العوام الفسقة اللئام الذين اتخذوا مجلس الذكر شبكة لصيد الدنيا الدنية وقضاء لشهواتهم الشنيعة الردية ولسنا نقصد منهم تعيين احد فالله مطلع على احوالهم اھ مختصراً۔

بزرگوں کی اقتداء کی اور ان کے مشرب کا ذائقہ چکھا اور اپنے اندر شوق اور جنون عشق، ملکِ علام (یعنی اللہ تعالیٰ کی ذات ستودہ صفات) میں پایا، بلکہ ہماری گفتگو ان عام لوگوں کے ساتھ ہے جو فاسق اور کمینے ہیں جنہوں نے محفلِ ذکر کا جال حقیر اور معمولی دنیا کے شکار کے لئے لگا رکھا ہے اور اپنے بدترین سفلی جذبات کی تسکین کے لئے محفلِ ذکر کو آڑ بنایا اور ہم اس میں کسی ایک کے تعین کا ارادہ نہیں رکھتے کیونکہ اللہ تعالیٰ ہی ان کے حالات سے پوری طرح آگاہ اور واقف ہے اھ مختصراً (ت)

اسی کی منہیہ میں نور العین فی اصلاح جامع الفصولین سے ہے۔ علامہ ابن کمال پاشا نے اس سوال کے جواب میں فرمایا:

(عربی) **(اردو ترجمہ)**

مافي التواجد ان حققت من حرج ولا في التمايل ان اخلصت من باس فقمت تسعى على رجل و حق لمن دعاه مولاه ان يسعى على الراس الرخصة فيما ذكر من

جو وجد حقیقت پر مبنی ہو اگر جھومنا اخلاص سے ہو تو اس میں کوئی مضائقہ نہیں، پھر تو کھڑے ہو کر ایک پاؤں پر دوڑنے لگا جسے اس کا مولا بلائے اس پر واجب ہے کہ سر کے بل دوڑ پڑے۔ ذکر اور سماع کے وقت اوضاع

(عربی)	(اردو ترجمہ)
الاوضاع عند الذکر والسماع للعارفین الصارفین اوقاتھم الی احسن الاعمال السالکین المالکین لضبط انفسھم من قبائح الاحوال فھم لا یستمعون الا من الالہ ولا یشتاقون الالہ ان ذکروہ ناحوا وان وجدوہ	مذکورہ کی اجازت ہے ان عارفین کے لئے ہے جو اپنے اوقات بہترین اعمال بجالانے میں صرف کرتے ہیں اللہ تعالیٰ کی راہ اختیار کرتے ہیں، اپنے نفس کو قبیح اعمال سے روکنے پر قادر ہوتے ہیں پھر وہ صرف اللہ تعالیٰ ہی سے سنتے اور اسی کے مشتاق رہتے ہیں، اگر اس کی یاد میں مصروف ہوں تو نوحہ کرنے لگتے ہیں

[1] شفاء العلیل رسالہ من رسائل ابن عابدین سہیل اکیڈمی لاہور ۱/ ۱۷۲-۱۷۳

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

[Section 1] [Arabic]: They cry out when ecstasy (wajd) overcomes them; some are struck by the awe of divine majesty and they collapse and melt, while for others, the flashes of divine kindness shine forth, and they move and find delight. This is what appeared to me as the answer, and Allah knows best what is correct[1]. [Urdu]: If they experience it, they start shouting and crying, provided they are overwhelmed by ecstasy. Then among them are those whom divine trials have shaken, so they fell down and melted; and among them are those upon whom grace and kindness descended, so they became happy and moved. This answer became clear to me. And Allah Almighty knows the right path well. (T)

[Heading] My master, the gnostic of Allah, Allama Abdul Ghani Nablusi, in 'Hadiqa Nadiyya', a commentary on 'Tariqa Muhammadiya', states regarding the aforementioned text:

[Section 2] [Arabic]: Know that all that was previously mentioned in the text from the statements of the jurists (fuqaha) is concerning those whom we have mentioned from the group of Sufis—Allah knows their true states best. Otherwise, the ecstasy (wajd) and simulated ecstasy (tawajud) known by the truthful paupers (fuqara) in this time and after it, just as they knew it before in past times, is a light, guidance, an effect of success from Allah Almighty, and care. Al-Munawi said in 'Tabaqat al-Awliya': It was said to Junayd (may his secret be sanctified) that a group of people practice tawajud. He said: Leave them with Allah so they may rejoice. And Najm al-Ghazzi said in 'Husn al-Tanabbuh', when mentioning the state of those enamored with Allah in the chapter 'The Sane Resembling the Insane', and to this point he indicated by his (the Prophet's, sallallahu alayhi wa sallam) saying... [Urdu]: All the statements of the venerable jurists mentioned earlier in the text are in favor of those Sufis who were mentioned; Allah Almighty is well aware of their individual selves. Otherwise, the 'wajd' (ecstasy) and 'tawajud' (simulated ecstasy) that truthful 'fuqara' (spiritual paupers) of this era know, and those of the past knew, is indeed a light of guidance and an effect of Allah Almighty's success and grace. Allama Munawi stated in 'Tabaqat al-Awliya': It was submitted to Hazrat Junayd Baghdadi (may his secret be sanctified) that some people practice 'wajd', so he said: Leave them with Allah Almighty so that they may be happy. Najm al-Ghazzi stated in 'Husn al-Tanabbuh' while mentioning the state of people regarding the matter of Allah Almighty, in the chapter "The Sane Resembling the Insane", that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) pointed towards this in his saying...

[Footnote] [1] Annotation on this phrase (Shifa al-Alil), Suhail Academy Lahore, p. 172.

फ़तावा रज़विया, खंड 24

[पहला खंड] [अरबी]: वे चिल्लाते हैं जब वज्द (परमानंद) उन पर हावी हो जाता है; उनमें से कुछ दिव्य महिमा के भय से प्रभावित होते हैं और गिर जाते हैं और पिघल जाते हैं, जबकि अन्य के लिए दिव्य दया की चमक चमकती है, और वे गति करते हैं और प्रसन्न होते हैं। यही मुझे उत्तर के रूप में प्रतीत हुआ, और अल्लाह ही सही बात को बेहतर जानता है[1]। [उर्दू]: अगर वे इसे पा लें तो चीखने-चिल्लाने लगते हैं, बशर्ते कि वे वज्द से अभिभूत हों। फिर उनमें कुछ वे हैं जिन्हें दैवीय आपदाओं ने झकझोरा तो वे गिर पड़े और पिघल गए; और उनमें कुछ वे हैं जिन पर कृपा और करुणा का अवतरण हुआ तो वे खुश होकर गतिशील हो गए। मेरे लिए यही उत्तर स्पष्ट हुआ। और अल्लाह तआला सही राह को खूब जानने वाला है। (त)

[हेडिंग] मेरे स्वामी, आरिफ बिल्लाह अल्लामा अब्दुल गनी नाबलुसी, 'हदीका नदिया' (तरीका मुहम्मदिया की व्याख्या) में उपरोक्त पाठ के बारे में फरमाते हैं:

[दूसरा खंड] [अरबी]: जान लो कि पाठ में फ़ुक़हा (न्यायविदों) के कथनों से जो पहले उल्लेख किया गया है, वह उन सूफियों के बारे में है जिनका हमने उल्लेख किया है—अल्लाह उनके वास्तविक हाल को बेहतर जानता है। अन्यथा, वज्द और तवाजद जिसे इस समय और इसके बाद के सच्चे फ़ुक़रा जानते हैं, जैसा कि वे अतीत में इसे जानते थे, वह मार्गदर्शन का नूर, हिदायत और अल्लाह तआला की ओर से तौफीक और इनायत का एक प्रभाव है। अल-मुनावी ने 'तबाकात अल-औलिया' में कहा: हजरत जुनैद (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र करे) से कहा गया कि कुछ लोग तवाजद करते हैं। उन्होंने कहा: उन्हें अल्लाह के साथ छोड़ दो ताकि वे खुश हों। और नज्म अल-ग़ज़ी ने 'हुस्न अत-तनब्बुह' में अल्लाह तआला के मामले में लोगों की स्थिति का उल्लेख करते हुए 'समझदार का पागलों जैसा दिखना' अध्याय में कहा, और इसी ओर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने अपने इस कथन से इशारा फरमाया... [उर्दू]: पाठ में तमाम फुक़हा किराम के जिन बयानों का पहले ज़िक्र हुआ, यह उन सूफ़ियों के हक़ में है जिनका ज़िक्र हुआ; अल्लाह तआला उनकी ज़ातों से बखूबी वाकिफ़ है। वर्ना वज्द और तवाजद जिसे इस ज़माने में सच्चे फुक़रा ही जानते हैं और पिछले दौर के फुक़रा जानते थे, वह तो एक नूर-ए-हिदायत और अल्लाह तआला की तौफीक व इनायत का एक असर है। अल्लामा मुनावी ने 'तबाकात अल-औलिया' में फरमाया: हज़रत जुनैद बग़दादी (कुद्दिसा सिर्रहु) से अर्ज़ की गई कि कुछ लोग वज्द करते हैं, तो फ़रमाया उन्हें अल्लाह तआला के साथ छोड़ दो कि खुश रहें। नज्म अल-ग़ज़ी ने 'हुस्न अत-तनब्बुह' में अल्लाह तआला के मामले में लोगों का हाल

ज़िक्र करते हुए "तशब्बुल आकिल बिल-मजनून" (समझदार का पागल के सदृश होना) के बाब में फरमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपने इस इर्शाद से इसी तरफ इशारा फरमाया।

[फुटनोट] [1] इस इबारत पर हाशिये (शिफा अल-अलील), सुहेल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 172.

[باکس ۱] صاحوا اذا غلب علیھم الوجد فمنھم من طرقتہ طوارق الھیبۃ فخر وذاب ومنھم من برقت لہ بوارق اللطف فتحرك وطاب ھذا ما عن لی فی الجواب واللہ اعلم بالصواب[1]۔ اگر اسے پالیں تو چیخنے چلانے لگتے ہیں بشر طیکہ وہ وجد سے مغلوب ہوں، پھر ان میں کوئی وہ ہیں جنہیں مصائب الہی نے جھنجھوڑا تو گر پڑے اور پگھل گئے اور ان میں کوئی وہ ہیں جن پر لطف و کرم کا نزول ہوا تو خوش ہو کر متحرک ہو گئے۔ میرے لئے یہی جواب ظاہر ہوا۔ اور اللہ تعالیٰ راہِ صواب کو خوب جاننے والا ہے۔ (ت)

سیدی عارف باللہ علامہ عبدالغنی نابلسی حدیقہ ندیہ شرح طریقہ محمدیہ میں زیر کلام مذکور متن فرماتے ہیں:

[باکس ۲] اعلم ان ھذا الذي سبق ذکرہ فی المتن من عبارات الفقھاء جمیعہ فی حق من ذکرناھم من طائفۃ متصوفۃ اللہ اعلم بعیانھم، والافالوجدوالتواجد الذی تعلمہ الفقراء الصادقون فی ھذا الزمان وبعدہ کما کانوا یعلمونہ من قبل فی الزمان الماضی نور و ھدایۃ واثر توفیق من اللہ تعالی وعنایۃ قال المناوی فی طبقات الاولیاء قیل للجنید قدس سرہ ان قوما یتواجدون قال دعوھم مع اللہ یفرحون وقال النجم الغزی فی حسن التنبہ عند ذکرہ حال المولھین فی اللہ فی باب تشبہ العاقل بالمجنون والیہ الاشارۃ بقولہ صلی اللہ تعالی متن میں تمام فقہاء کرام کی جن عبارات کا پہلے ذکر ہوا یہ ان صوفیا کے حق میں ہے جو مذکور ہوئے اللہ تعالیٰ ان کی ذوات سے بخوبی واقف ہے، ورنہ وجد اور تواجد جسے اس زمانے میں سچے فقراء ہی جانتے ہیں اور گزشتہ دور کے فقراء جانتے تھے وہ تو ایک نور ہدایت اور اللہ تعالیٰ کی توفیق و عنایت کا ایک اثر ہے۔ علامہ مناوی نے طبقات الاولیاء میں فرمایا: حضرت جنید بغدادی قدس سرہ سے عرض کی گئی کہ کچھ لوگ وجد کرتے ہیں تو فرمایا انہیں اللہ تعالیٰ کے

ساتھ چھوڑ دو کہ خوش رہیں۔ فرمایا نجم الغزی نے حسن التنبہ میں اللہ تعالیٰ کے معاملہ میں لوگوں کا حال ذکر کرتے ہوئے "تشبہ عاقل بالمجنون" کے باب میں کہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اپنے اس ارشاد سے اسی طرف اشارہ فرمایا

[حاشیہ] [1] منهية على هذه العبارة (شفاء العليل) سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۷۲

Fatawa Rizvia, Volume 24

[The Prophet] peace and blessings be upon him [said]: "Remember Allah so much until they say [you are] insane." It was narrated by Imam Ahmad, Abu Ya'la, Ibn Hibban, and Al-Hakim, and the latter two declared it authentic, on the authority of Abu Sa'id al-Khudri (may Allah be pleased with him). Sometimes, intense devotion (walah) and ecstasy (wajd) overcome the people of Allah Almighty until they become absent from their own existence. Then, states and actions appear from them which, if they had proceeded from a conscious observer, would have led people to judge that they had exceeded the limits of reason, such as dancing, whirling, and tearing clothes. This is a noble state. The sign of its authenticity is that the times of prayers and all other obligations are preserved for the person in that state; their intellects return to them during those times. This is the state of a group of the friends (awliya) of Allah Almighty, among them Al-Shibli, Abu al-Hasan al-Nuri, Samnun al-Muhibb, Sadun al-Majnun, and others like them.

Abu Nu'aym narrated in 'Al-Hilya' on the authority of Yahya ibn Mu'adh al-Razi that he was asked about dancing, and he recited, saying: "We have pounded the earth with dancing, upon the subtlety of Your meanings."

[Translation of the Urdu column:] Remember Allah Almighty in such abundance that people start calling you insane. Imam Ahmad, Abu Ya'la, Ibn Hibban, and Al-Hakim narrated this, and the latter two declared it authentic. And it was narrated on the authority of Hadrat Abu Sa'id al-Khudri (may Allah Almighty be pleased with him). And sometimes the state of wonder and ecstasy overcomes the 'People of Allah' to the extent that they disappear from their own existence or lose their presence, and such conditions appear from them that if they were observed coming from an actor, people would judge that it is outside the limits of reason, such as dancing, whirling, and tearing clothes. And this is a noble state, and the sign of its correctness is that for the person in this state, the times of prayer and other obligations remain preserved; then in that state, their intellects are returned. And this is the state of a group of Allah's friends (Awliya); among them are Khwaja Shibli, Abu al-Hasan al-Nuri, Samnun al-Muhibb, Sa'dun al-Majnun, and other such elders of the Ummah. Accordingly, the Hadith scholar Abu Nu'aym narrated in 'Al-Hilya' from Yahya bin Mu'adh al-Razi that when he was asked about dancing, he began to say: 'We trampled and crushed the earth with dancing, (all this) to enjoy Your meanings.'

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 24

[नबी] उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो [ने फ़रमाया]: "अल्लाह का ज़िक्र इतना करो कि लोग तुम्हें दीवाना कहने लगें।" इसे इमाम अहमद, अबू याला, इब्न हिब्बान और हाकिम ने रिवायत किया है, और अंतिम दो ने इसे हज़रत अबू सईद खुद़री (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के हवाले से सही करार दिया है। कभी-कभी 'अल्लाह वालों' पर गहन भक्ति और परमानंद की स्थिति हावी हो जाती है यहाँ तक कि वे अपने अस्तित्व से बेखबर हो जाते हैं। तब उनसे ऐसी अवस्थाएं और कार्य प्रकट होते हैं जो यदि किसी सचेत व्यक्ति से होते तो लोग यह निर्णय लेते कि वह मानसिक संतुलन खो चुका है, जैसे नाचना, घूमना और कपड़े फाड़ डालना। यह एक श्रेष्ठ आध्यात्मिक अवस्था है। इसकी सत्यता का प्रमाण यह है कि उस अवस्था वाले व्यक्ति के लिए नमाज़ के समय और अन्य अनिवार्य कर्तव्य सुरक्षित रहते हैं; उन समयों के दौरान उनकी बुद्धि उन्हें वापस मिल जाती है। यह अल्लाह के वलियों (मित्रों) के एक समूह की स्थिति रही है, जिनमें ख़्वाजा शिबली, अबू अल-हसन अल-नूरी, समनूँ अल-मुहिब, सादूँ अल-मजनूँ और उम्मत के महान लोगों में उनके जैसे अन्य शामिल हैं।

अबू नुएम ने 'अल-हिलिया' में यह्या बिन मुआज़ अल-राज़ी से रिवायत किया है कि जब उनसे नाचने के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने यह कहते हुए पढ़ा: "हमने नाच के साथ ज़मीन को रौंदा है, तुम्हारे अर्थों की कोमलता पर।"

[उर्दू कॉलम का अनुवाद:] अल्लाह तआला का ज़िक्र इतनी कसरत से करो कि लोग तुम्हें दीवाना कहने लगें। इमाम अहमद, अबू याला, इब्न हिब्बान और हाकिम ने इसे रिवायत किया और आख़िरी दो ने इसे सही करार दिया। और हज़रत अबू सईद खुद़री रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हवाले से इसे रिवायत किया गया। और बाज़ औक़ात 'अहलुल्लाह' पर हैरत और वज्द की कैफ़ियत ग़ालिब होती है यहाँ तक कि वे अपने वजूद से ग़ायब हो जाते हैं या अपना वजूद खो बैठते हैं तो उनसे ऐसे हालात ज़ाहिर होते हैं अगर शाहिद-ए-फ़ेल से सादिर होते तो उस पर हुक्म लगाते कि यह हद-ए-अक़्ल से ख़ारिज है जैसे नाचना, घूमना और कपड़े फाड़ डालना। और यह एक शरीफ़ (श्रेष्ठ) हालत है और इसकी सेहत की अलामत (निशानी) यह है कि साहब-ए-हाल पर औक़ात-ए-नमाज़ और दीगर फ़राइज़ महफ़ूज़ होते हैं फिर उस हालत में उनकी अक़्लें लौटा दी जाती हैं और यह हाल औलिया-ए-अल्लाह की एक जमाअत का है उनमें से ख़्वाजा शिबली, अबुल हसन नूरी, समनूँ मुहिब, सादूँ मजनूँ और उन जैसे दीगर अकाबरीन-ए-उम्मत हैं। चुनांचे मुहद्दिस अबू नुएम ने अल-हिलिया में यह्या बिन

मुआज़ राज़ी से रिवायत की है कि उनसे नाच के बारे में पूछा गया तो वह यह कहने लगे: हमने नाच से ज़मीन को रौंदा और पामाल किया (यह सब कुछ) तेरे मानी से लुत्फ़अंदोज़ होने के लिए किया।

पेज 98 ऑफ़ 720

علیہ وسلم اکثروا ذکر اللہ حتی یقولوا مجنون رواہ الامام احمد وابو یعلی وابن حبان والحاکم وصححاہ عن ابي سعید الخدری رضی اللہ تعالٰی عنہ ، وربما غلب الولہ علی اھل اللہ تعالٰی والوجد حتی یغیبوا من وجودھم فتبدو منھم احوال وافعال لو صدرت عن مشاھد الفعل لحکموا علیہ انہ خرج عن حد العقل کالرقص والدوران وتخریق الاثواب وھي حالۃ شریفۃ علامۃ صحتھا ان تحفظ علی صاحبھا اوقات الصلوات وسائر الفرائض فترد علیھم فیھا عقولھم وھذا حال جماعۃ من اولیاء اللہ تعالٰی منھم الشبلي وابو الحسن النوری وسمنون المحب وسعدون المجنون وامثالھم ، روی ابونعیم في الحلیۃ عن یحیی بن معاذ الرازی انہ سئل عن الرقص فانشد یقول ۔ دققنا الارض بالرقص علی لطف معانیکا

[اردو ترجمہ کالم:] کثرت سے اللہ تعالٰی کا ذکر کیا کرو یہاں تک کہ لوگ تمہیں دیوانہ کہنے لگیں۔ امام احمد ، ابو یعلٰی، ابن حبان اور حاکم نے اس کو روایت کیا اور آخری دو نے اس کو صحیح قرار دیا۔ اور حضرت ابوسعید خدری رضی اللہ تعالٰی عنہ کے حوالہ سے اس کو روایت کیا گیا۔ اور بعض اوقات "اہل اللہ" پر حیرت اور وجد کی کیفیت غالب ہوتی ہے یہاں تک کہ وہ اپنے وجود سے غائب ہو جاتے ہیں یا اپنا وجود کھو بیٹھتے ہیں تو ان سے ایسے حالات ظاہر ہوتے ہیں اگر شاہد فعل سے صادر ہوتے تو اس پر حکم لگاتے کہ یہ حد عقل سے خارج ہے جیسے ناچنا ، گھومنا اور کپڑے پھاڑ ڈالنا۔ اور یہ ایک شریف حالت ہے اور اس کی صحت کی علامت یہ ہے کہ صاحب حالت پر اوقاتِ نماز اور دیگر فرائض محفوظ ہوتے ہیں پھر اس حالت میں ان کی عقلیں لوٹا دی جاتی ہیں اور یہ حال اولیاء اللہ کی ایک جماعت کا ہے ان میں سے خواجہ شبلی ، ابوالحسن نوری، سمنون محب ، سعدون مجنون اور ان جیسے دیگر اکابرین امت ہیں، چنانچہ محدث ابونعیم نے الحلیہ میں یحییٰ بن معاذ رازی سے روایت کی ہے کہ ان سے ناچ کے بارے میں پوچھا گیا تو وہ یہ کہنے

لگے : ہم نے ناچ سے زمین کو روندا اور پامال کیا (یہ سب کچھ) تیرے معانی سے لطف اندوز ہونے کے لئے کیا۔

Fatawa Razawiya, Volume 24

There is no flaw in dancing for that servant who is wandered, lost, and absorbed in Your essence. And our treading and trampling upon the earth through dance is because we are seekers and intend Your presence. However, for one who displays these states intentionally to reach worldly goals or so that people become his devotees and seek blessings from him, then this act is more heinous than destructive and ruinous sins. End of quote. Accordingly, Imam Ghazali stated in "Ihya al-Ulum" that Abu al-Hasan al-Nuri (may Allah's mercy be upon him) was with a group at an invitation when suddenly a scholarly discussion broke out among them. The situation was such that Abu al-Hasan al-Nuri sat completely silent. Then, he suddenly raised his head and began reciting these verses: Many cooing pigeons at mid-morning, possessed of grief, cooed upon the branches. I remembered a beloved and a worthy sorrow, so I wept from grief, and my grief was stirred. My weeping perhaps kept them awake, and their weeping perhaps kept me awake. They certainly complain, but I do not understand them, and I certainly complain, but they do not understand me. Except that I am known by [my] passion, and they too are known by passion. He said: No one remained among the people who did not stand up.

Page 99 of 720

फ़तावा रज़विया, खंड 24

नाचने में उस बंदे के लिए कोई दोष नहीं है जो तेरी ज़ात (अस्तित्व) में मदहोश, खोया हुआ और लीन हो गया हो। और हमारा नाच के ज़रिए ज़मीन को रौंदना और पामाल करना इसलिए है क्योंकि हम तेरा इरादा और क़सद करने वाले हैं। लेकिन जिस किसी ने इन हालतों को जानबूझकर दुनियावी फ़ायदे के लिए ज़ाहिर किया या इसलिए कि लोग उसके अक़ीदतमंद (श्रद्धालु) हो जाएं और उससे बरकत हासिल करें, तो यह कार्रवाई जानलेवा और तबाहकुन गुनाहों से भी ज़्यादा क़बीह (घृणित) है। समाप्त। चुनांचे इमाम ग़ज़ाली ने 'एहया उल-उलूम' में फ़रमाया कि अबुल हसन नूरी (रहमतुल्लाहि अलैहि) किसी दावत में एक जमात के साथ मौजूद थे कि अचानक उनके बीच एक इल्मी बहस छिड़ गई। हालत यह थी कि अबुल हसन नूरी बिल्कुल ख़ामोश बैठे थे, फिर अचानक सिर उठाया और ये अशआर (छंद) पढ़ने लगे: चाश्त (पूर्वाह्न) के समय बहुत सी कबूतरियाँ लंबी-लंबी आवाज़ें निकालकर पेड़ों की टहनियों पर बोलने लगीं। मैंने अपनी मोहब्बत और क़ाबिले-क़दर ग़म को याद किया, फिर मैं ग़म की वजह से रो पड़ा और मेरा ग़म भड़क उठा। शायद मेरे रोने ने उन्हें बेचैन कर दिया, और उनके रोने ने मुझे बेचैन कर दिया। बेशक वे शिकवा व शिकायत करती हैं मगर मैं उन्हें नहीं समझता, और मैं शिकायत करता हूँ तो वे मुझे नहीं समझतीं। सिवाय इसके कि मैं अपने अंदरूनी सोज़-ए-इश्क़ (प्रेम की तड़प) से पहचाना जाता हूँ, और वह भी अपने इश्क़ से पहचानी जाती है। इमाम ग़ज़ाली ने फ़रमाया कि अब क़ौम (जमात) में कोई ऐसा न रहा जो खड़ा न हुआ हो।

पृष्ठ 99 का 720

ولا عیب علی الرقص لعبد ھائم فیکا وھذا دقنا الارض اذاکنا بنادیکا ناچ کرنے میں کوئی عیب نہیں اس بندہ کے لئے جو تیری ذات میں سرگشتہ اور گم ہوا اور محو ہوا، اور یہ ہمارا زمین کو ناچ کے ذریعے روندنا اور پامال کرنا اس لئے ہے کہ ہم تیرا ارادہ اور قصد کرنے والے ہیں، واما من اظھر ھذہ الاحوال تعمدا للتوصل الی الدنیا او لیعتقدہ الناس ویتبرکوابہ فھذا من اقبح الذنوب المھلکات انتھی، لیکن جس نے ان حالات کو دانستہ طور پر دنیا تک رسائی کے لئے ظاہر کیا یا اس لئے کہ لوگ اس کے عقیدت مند ہو جائیں اور اس سے تبرک حاصل کریں تو یہ کارروائی مہلک اور تباہ کن گناہوں سے بھی زیادہ قبیح ہے۔ اھ وقال الغزالی فی الاحیاء ان ابا الحسن النوری رحمہ اللہ تعالی کان مع جماعۃ في دعوۃ فجرت بینھم مسألۃ في العلم وابوالحسن ساکت ثم رفع راسہ وانشدھم یقول: چنانچہ امام غزالی نے احیاء العلوم میں فرمایا ابوالحسن نوری رحمۃ اللہ علیہ کسی دعوت میں ایک جماعت کے ساتھ تشریف فرما تھے کہ اچانک ان کے درمیان ایک علمی بحث چھڑ گئی اور حالت یہ تھی کہ ابوالحسن نوری بالکل خاموش بیٹھے تھے پھر اچانک سر اٹھایا اور یہ اشعار پڑھنے لگے، رب ورقآء ھتوف فی الضحی ذات شجو ھتفت فی فنن بہت سی کبوتریاں چاشت کے وقت لمبی لمبی آوازیں نکال کر درختوں کی شاخوں پر بولنے لگیں۔ ذکرت الفاً وحزنا صالحاً فبکیت حزناً فھاجت حزنی میں نے محبت اور قابل قدر غم کو یاد کیا پھر میں غم کی وجہ سے رو پڑا اور میرے غم میں ابال اور جوش آ گیا۔ فبکائی ربما ارقھا وبکاھا ربما ارقنی بسا اوقات میری گریہ وزاری نے انہیں نرم کر دیا اور بسا اوقات ان کی آہ و بکا نے مجھے نرم کر ڈالا۔ ولقد تشکو فما افھمھا ولقد اشکو فما یفھمنی بیشک وہ شکوہ و شکایت کرتی ہیں مگر میں تو انہیں نہیں سمجھتا۔ اور میں شکایت کرتا ہوں تو وہ مجھے نہیں سمجھاتی غیر انی بالجوی اعرفھا وھی ایضاً بالجوی تعرفنی مگر میں اپنے

اندرونی سوزِ عشق سے پہچانا جاتا ہوں اور وہ بھی اپنے عشق سے پہچانی جاتی ہے، قال فما بقی احد من القوم الاقام امام غزالی نے فرمایا کہ اب قوم کے درمیان کوئی ایسا نہ رہا جو کھڑا نہ ہوا ہو۔

Fatawa Ridawiyya --- Volume 24

[Arabic Column Text]: The people performed tawajud (seeking to enter spiritual ecstasy), but they did not attain that wajd (ecstasy) through the knowledge they were immersed in, even though that knowledge was truth. (End of quote). There is no doubt that tawajud involves imitating people of true wajd, and it is permissible, rather sought after in Sharia. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'Whoever imitates a people is among them.' It was narrated by al-Tabarani in 'al-Awsat' from Hudhayfah ibn al-Yaman (may Allah be pleased with him). This applies when the intention is merely to resemble them and seek blessings from their way of life out of love for them and a desire to increase one's inclination towards them. However, if the intention is for people to believe in him and seek blessings through him, then he is like one who wears two garments of falsehood; he is censured and detested before Allah Almighty, while people interpret his actions in a positive manner. As for tawajud in the correct manner, Sheikh al-Qushayri pointed it out in his treatise, where he said: 'Some people said that tawajud is not accepted from its practitioner because of the affectation it involves and its distance from true realization, while others said it is accepted.'

[Urdu Column Text]: ...because of which I recognize it, and it also recognizes me due to the burning love surging within it. Then, according to the narrator, all of them began to perform wajd, and this wajd was not due to the knowledge in which they were entangled, although it is true knowledge. (End of quote). Undoubtedly, this tawajud bears a resemblance to those who experience true wajd, and it is permissible; indeed, it is desired by Sharia. Accordingly, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'Whoever imitates a people is one of them.' Imam al-Tabarani has narrated this in 'al-Awsat' with reference to Hazrat Hudhayfah bin Yaman (may Allah be pleased with him). This is the case when the intention behind it is purely to resemble them and obtain blessings from their habits, while having love for them and being more inclined towards them. But if his purpose is that people should become his followers through this (method) and obtain blessings from him, then he is a wearer of false garments who is censured and under the wrath of Allah Almighty. (Despite this), people interpret and judge it on a positive basis. However, as for performing wajd correctly, Sheikh Qushayri hinted at it in his treatise, saying: 'Some people say that performing tawajud together is not appropriate for a person of wajd because it is based on affectation and is far from true realization. And some people say...'

फतावा रज़विया --- जिल्द 24

[अरबी कॉलम का पाठ]: उन लोगों ने तवाजद (वज्द की स्थिति प्राप्त करने का प्रयास) किया, लेकिन उन्हें उस इल्म (ज्ञान) से वह वज्द (परमानंद) प्राप्त नहीं हुआ जिसमें वे मग्न थे, भले ही वह इल्म हक़ (सत्य) था। (समाप्त)। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसमें तवाजद वास्तविक वज्द वालों की नकल है, और यह जायज़ है, बल्कि शरीयत के अनुसार वांछनीय है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: 'जो किसी कौम की नकल करता है, वह उन्हीं में से है।' इसे इमाम तबरानी ने 'अल-औसत' में हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमन (रज़ियल्लाहु अन्हु) के हवाले से रिवायत किया है। यह तब है जब इसके पीछे उसका उद्देश्य केवल उनकी नकल करना और उनके प्रति प्रेम के कारण उनकी जीवनशैली से बरकत (आशीर्वाद) प्राप्त करना और उनके प्रति अपने झुकाव को बढ़ाने की इच्छा हो। लेकिन, यदि उसका उद्देश्य यह है कि लोग उस पर विश्वास करें और उसके माध्यम से बरकत प्राप्त करें, तो वह झूठ के दो वस्त्र पहनने वाले के समान है; वह अल्लाह तआला के निकट निंदनीय और क्रोध का पात्र है, जबकि लोग उसके कार्यों की अच्छी व्याख्या करते हैं। जहाँ तक सही तरीके से तवाजद का सवाल है, शेख अल-कुशैरी ने अपने रिसाले (ग्रंथ) में इसकी ओर इशारा किया है, जहाँ उन्होंने कहा: 'कुछ लोगों ने कहा कि तवाजद इसके करने वाले के लिए स्वीकार्य नहीं है क्योंकि इसमें दिखावा शामिल है और यह वास्तविकता से दूर है, जबकि कुछ अन्य ने कहा कि यह स्वीकार्य है।'

[उर्दू कॉलम का पाठ]: ...जिसकी वजह से मैं उसे पहचानता हूँ और वह भी अपने अंदर हिलोरे मारती हुई प्रेम की तपन (सोज़-ए-इश्क़) की वजह से मुझे पहचानती है। फिर रावी (वर्णनकर्ता) के अनुसार सब के सब वज्द करने लगे और यह वज्द उस इल्म की वजह से न था जिसमें वे उलझे हुए थे, हालाँकि वह इल्म-ए-हक़ है। (समाप्त)। निस्संदेह, इस तवाजद में वास्तविक वज्द करने वालों से समानता है और यह जायज़ है, बल्कि शरीयत की दृष्टि से वांछनीय है। जैसा कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इरशाद फरमाया: 'जो व्यक्ति किसी कौम से मुशाबहत (समानता) अख्तियार करे, वह उन्हीं में से है।' इमाम तबरानी ने 'अल-औसत' में हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ियल्लाहु अन्हु) के हवाले से इसे रिवायत किया है। यह उस समय है जब इससे उसका इरादा मात्र उनका अनुकरण और उनकी आदतों से बरकत हासिल करना हो, उनसे प्रेम रखते हुए और उनकी तरफ अधिक आकर्षित होते हुए। लेकिन अगर उसका मकसद यह हो कि लोग इस (तरीके) से उसके अनुयायी हो जाएँ और उससे बरकत हासिल करें, तो वह झूठा लिबास पहनने वाला है जो अल्लाह तआला के नज़दीक बुरा और प्रकोप का पात्र है। (इसके बावजूद) लोग इसे सकारात्मक

आधार पर लेते और आंकते हैं। लेकिन सही मायने में वज्द करने के बारे में शेख कुशैरी ने अपने रिसाले में संकेत दिया, फरमाया: 'कुछ लोग कहते हैं कि आपस में तवाजद करना वज्द वाले व्यक्ति के लिए उचित नहीं है क्योंकि यह दिखावे पर आधारित और वास्तविकता से दूर है। और कुछ लोग कहते हैं...'

पेज 100/720

[عربی کالم]: الاقوام وتواجدوا ولم یحصل لھم ھذا الوجد من العلم الذی خاضوا فیه وان کان العلم حقا انتھی و لاشك ان التواجد فیه تشبه بأھل الوجد الحقیقي وھو جائز بل مطلوب شرعاً قال رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم من تشبه بقوم فھو منھم رواه الطبراني في الاوسط عن حذیفة بن الیمان رضي الله تعالی عنه. ھذا اذاکان قصده بذلك مجرد التشبه بھم والتبرك بسیرتھم محبة لھم ورغبة في زیادة المیل الیھم و اما اذا کان مقصده ان یعتقده الناس و یتبرکون به فھو اللابس ثوبي زور فھو مذموم ممقوت عند الله تعالی والناس یحملونه علی المحامل الحسنة و اما التواجد علی الوجه الصحیح فقد اشار الیه الشیخ القشیری فی رسالته حیث قال قوم قالوا التواجد غیر مسلم لصاحبه لما یتضمن من التکلف ویبعد عن التحقیق وقوم قالوا انه مسلم

[اردو کالم]: کی وجہ سے اسے پہچانتا ہوں اور وہ بھی اپنے اندر موجزن سوزِ عشق کی وجہ سے مجھے پہچانتی ہے۔ پھر بقول راوی سب کے سب وجد کرنے لگے اور یہ وجد اس علم کی وجہ سے نہ تھا جس میں وہ الجھے ہوئے تھے اگرچہ علمِ حق ہے انتہیٰ، بلا شبہ اس تواجد میں حقیقی وجد کرنے والوں سے مشابہت ہے اور یہ جائز ہے بلکہ شرعاً مطلوب ہے چنانچہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا جو شخص کسی قوم سے مشابہت اختیار کرے وہ انہی میں سے ہے۔ امام طبرانی نے "الاوسط" میں حضرت حذیفہ بن یمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حوالے سے اس کو روایت کیا ہے، یہ تب ہے کہ جب اس سے اس کا ارادہ محض ان سے تشبہ اور ان کی عادات سے برکت حاصل کرنا ہو، ان سے محبت رکھتے ہوئے اور ان کی طرف زیادہ راغب و مائل ہوتے ہوئے۔ لیکن اگر اس کا مقصد یہ ہو کہ لوگ اس (طریقہ) سے اس کے معتقد ہو جائیں اور اس سے برکت حاصل کریں تو پھر وہ جھوٹا لباس پہننے والا ہے جو اللہ تعالیٰ کے نزدیک

مذموم و مغضوب ہے (اس کے باوجود) لوگ اچھے محمل پر محمول اور قیاس کرتے ہیں لیکن صحیح طور پر وجد کرنا تو شیخ قشیری نے اپنے رسالہ میں اس کی طرف اشارہ فرمایا، فرمایا کچھ لوگ کہتے ہیں کہ باہم وجد کرنا صاحبِ وجد کے لئے ٹھیک نہیں اس لئے کہ وہ تکلف پر مبنی اور تحقیق سے بعید ہے۔ اور کچھ لوگ کہتے

Volume 24 Fatawa Rizvia

[Arabic Quote]: For the solitary ascetics who look forward to finding these meanings, and their origin is the news of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "Weep, and if you cannot weep, then make a weeping face" [End quote]. And in 'Shira'at al-Islam', it is from the Sunnah to recite the Quran with sadness and ecstasy, for the Quran was revealed with sadness. If one does not feel sadness, let him make himself appear sad [End quote]. In summary, feigning perfection is part of perfection, and imitating the saints for one who is not among them is a desirable and commendable matter in every circumstance. (Summary) [Reference 1]

They are correct for those solitary poor (faqirs) who are waiting to attain those meanings. Its origin and foundation is the Hadith of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). (Accordingly, he said), "O people! Weep, and if you cannot weep, then adopt a weeping countenance" [End quote]. In 'Shira'at al-Islam', it states that it is Sunnah to recite the Holy Quran with a swaying motion in grief, because the Holy Quran was revealed in grief. If someone does not feel the impact of grief, they should adopt a sorrowful appearance [End quote]. In short, feigning a virtue (artificiality) is included in that virtue, and someone who is not from the friends of Allah (awliya) but adopts their likeness, this is also a desired and commendable act in every situation. (Summary - T)

But it is clear that common people have nothing to do with this. In the questioned situation, when this state began, the shouting of the people was not at all subject to criticism. Rather, they should have done this: they are not free from two states; either those engaged in dancing, swaying, and clapping were on the truth (haqq) or falsehood (batil). If they were on the truth, then for the common people who have not reached these high stations, joining in was merely meaningless. And if they were on falsehood, then watching the spectacle of their blameworthy actions was itself forbidden and illegitimate. And when a matter is between forbidden and frivolous, avoiding it is the correct path. How is the application of the Quranic verse "And whoever turns away from My remembrance" [Reference 2] possible on this, where leaving by the command of the Shari'ah itself is desired? In the Quranic verse, "turning away from remembrance" means not believing. The Quranic verse itself is a witness to this intention. Allah Almighty says: "Then if there comes to you guidance from Me, then whoever follows My guidance will neither go astray nor suffer" [Reference 3]. "And whoever turns away from My remembrance..." [Reference 4]. This

verse was revealed after the event of the cursed Iblis and the eating from the tree, when Hazrat Adam, Eve, and their enemy were being sent down from Paradise.

1. Al-Hadiqa al-Nadiyya Sharh al-Tariqa al-Muhammadiyya, Section 9, Maktaba Nooriya Rizvia Faisalabad, 2 / 534 to 537.
2. Al-Quran Al-Karim 20/124
3. Al-Quran Al-Karim 20/123
4. Al-Quran Al-Karim 20/124

खंड 24 फ़तावा-ए-रिज़विया

[अरबी उद्धरण]: उन एकांतवासी फ़कीरों के लिए जो इन अर्थों को पाने की प्रतीक्षा में रहते हैं, और उनका मूल पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की खबर है: "रोओ, और यदि तुम रो न सको, तो रोने जैसी सूरत बनाओ" [समाप्त]। और 'शिरअतुल इस्लाम' में है कि सुन्नत यह है कि कुरआन को दुख और उत्साह के साथ पढ़ा जाए, क्योंकि कुरआन दुख के साथ अवतरित हुआ है। यदि किसी को दुख महसूस न हो, तो वह खुद को दुखी दिखाए [समाप्त]। निष्कर्ष यह है कि पूर्णता का ढोंग करना पूर्णता का ही हिस्सा है, और जो औलिया (ईश्वर के मित्रों) में से नहीं है, उसका उनके जैसा रूप बनाना हर हाल में एक वांछनीय और प्रशंसनीय मामला है। (संक्षिप्त) [संदर्भ 1]

वे उन एकांतवासी निर्धनों (फ़कीरों) के लिए सही हैं जो उन अर्थों के प्राप्त होने की प्रतीक्षा में रहते हैं। इसका मूल और आधार पवित्र पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हदीस है। (तदनुसार, आपने फरमाया), "ओ लोगो! रोया करो और अगर रो न सको तो रोनी सूरत बनाया करो" [समाप्त]। 'शिरअतुल इस्लाम' में है कि सुन्नत यह है कि दुख के साथ झूमते हुए पवित्र कुरआन का पाठ किया जाए, क्योंकि पवित्र कुरआन दुख के साथ उतरा है। और अगर किसी में दुख का प्रभाव न हो, तो वह दुखी सूरत बना ले [समाप्त]। संक्षेप में, किसी पूर्णता में बनावट (तकलुफ़) पूर्णता में शामिल है, और जो व्यक्ति अल्लाह के वलियों में से नहीं है लेकिन उनकी समानता अपनाता है, यह भी एक वांछित और हर हाल में सराहनीय बात है। (संक्षिप्त - त)

लेकिन स्पष्ट है कि आम लोगों का इसमें कोई सरोकार नहीं है। प्रश्नगत स्थिति में, जब यह अवस्था शुरू हुई, तो लोगों का चिल्लाना बिल्कुल भी आलोचना का पात्र नहीं था। बल्कि उन्हें यही करना चाहिए था; वे दो स्थितियों से खाली नहीं हैं: ये नृत्य, झूमने और तालियाँ बजाने वाले या तो सत्य (हक) पर थे या असत्य (बातिल) पर। यदि वे सत्य पर थे, तो आम जनता जो इन उच्च पदों तक नहीं पहुँची, उनका इसमें शामिल होना केवल अर्थहीन था। और यदि वे असत्य पर थे, तो उनकी निंदनीय हरकतों का तमाशा देखना स्वयं हराम और नाजायज था। और जो मामला हराम और व्यर्थ के बीच हो, उससे बचना ही सही रास्ता है। इस पर आयते करीमा "और जो मेरे ज़िक्र से मुँह फेरेगा" [संदर्भ 2] का लागू होना कैसे संभव है, जहाँ शरीयत के हुक्म से ही चला जाना वांछित हो? आयते करीमा में ज़िक्र से मुँह फेरने का अर्थ ईमान न लाना है। कुरआन की आयत स्वयं इस इरादे पर गवाह है। अल्लाह तआला फरमाता है: "फिर यदि मेरी ओर से तुम्हारे पास कोई मार्गदर्शन आए, तो जो कोई मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण करेगा, वह न तो भटकेगा और न ही कष्ट पाएगा" [संदर्भ 3]। "और जो मेरे ज़िक्र से मुँह

फेरेगा..." [संदर्भ 4]। यह आयत शापित इब्लीस और हज़रत आदम और हव्वा के वृक्ष के खाने की घटना के बाद, उन्हें और उनके दुश्मन को स्वर्ग से उतारते समय कही गई थी।

1. अल-हदीका अन-नदिया शरह अल-तरीका अल-मुहम्मदिया, भाग 9, मकतबा नूरिया रिज़विया फैसलाबाद, 2 / 534 से 537।
2. अल-कुरआन अल-करीम 20/124
3. अल-कुरआन अल-करीम 20/123
4. अल-कुरआन अल-करीम 20/124

للفقراء المجردين الذين ترصدوا لوجدان هذه المعاني واصلهم خبر الرسول صلی اللہ تعالی علیه وسلم ابکوافان لم تبکوا فتباکوا انتہیٰ وفی شرعة الاسلام من السنة ان یقرأ القرآن بحزن ووجد فان القرآن نزل بحزن فان لم یکن له حزن فلیتحازن انتہیٰ والحاصل ان تکلف الکمال من جملة الکمال والتشبه بالا ولیاء لمن لم یکن منهم امر مطلوب مرغوب فیه علی کل حال ۱۲ اه ملتقطاً۔

ہیں کہ وہ مجرد فقراء کے لئے ٹھیک ہے جو ان کے معانی کے پانے کے منتظر رہتے ہیں اور اس کی اصل اور بنیاد آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی حدیث ہے (چنانچہ آپ نے فرمایا) لوگو ! رویا کرو اور اگر رو نہ سکو تو رونی صورت بنایا کرو انتہی۔ شرعۃ الاسلام میں ہے سنت یہ ہے کہ غم کے ساتھ جھوم کر قرآن مجید کی تلاوت کی جائے کیونکہ قرآن مجید غم کے ساتھ نازل ہوا ہے اور اگر کسی میں غم کا تاثر نہ ہو تو غمگین صورت بنالیا کرے انتہی۔ خلاصہ یہ کہ کسی کمال میں تکلف (بناوٹ) کمال میں شامل ہوتا ہے اور جو شخص اولیاء اللہ میں سے نہیں مگر ان کی مشابہت اختیار کرتا ہے یہ بھی امر مطلوب اور ہر حال مستحسن ہے اہ ملتقطاً۔ (ت)

مگر ظاہر ہے کہ عامہ ناس کا اس میں کچھ نہیں تو صورت مسئولہ میں اس حالت کے شروع ہونے پر لوگوں کا چلانا اصلاً کسی طرح محل طعن نہ تھا بلکہ انہیں یہی چاہئے تھا دو حال سے خالی نہیں یہ رقص و تمایل وتصفیق والے محق تھے یا مبطل، اگر محق تھے تو عوام جو ان مناصب عالیہ تک بالغ نہیں ان میں شریک ہونا محض بے معنی تھا، اور مبطل تھے تو ان کی حرکات ذمیمہ کا تماشا دیکھنا خود حرام و ناروا تھا، اور جو امر حرام و لغو میں دائر ہو اس سے احتراز ہی طریق صواب ہے آیہ کریمہ وَ مَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِکْرِی ۲۰ کا اس پر ورود کیونکر ممکن، جہاں خود

بحکم شرع ہی چلا جانا مطلوب ہو، آیہ کریمہ میں اعراض عن الذکر سے ایمان نہ لانا مقصود، خود آیت قرآنیہ اس ارادے پر شاہد عدل موجود، قال اللہ تعالی : "فَاِمَّا یَاتِیَنَّکُم مِّنِیْ ھُدًی فَمَنِ اتَّبَعَ ھُدَایَ فَلَا یَضِلُّ وَ لَا یَشْقٰی ۳ـہ " وَ مَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِکْرِی الآیۃ بعد واقعہ ابلیس لعین و تناول شجرہ حضرت آدم و حوا اور ان کے دشمن کو جنت سے اتارتے وقت ارشاد ہوا

۱ـہ الحدیقۃ الندیہ شرح الطریقۃ المحمدیۃ الصنف التاسع مکتبہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲ / ۵۳۴ تا ۵۳۷ ۲ـہ القرآن الکریم ۲۰/ ۱۲۴ ۳ـہ القرآن الکریم ۲۰/ ۱۲۳ ۴ـہ القرآن الکریم ۲۰/ ۱۲۴

...that if guidance comes to you from Me, then whoever follows My guidance will not go astray nor suffer hardship, and whoever turns away from My reminder, for him is a narrow life and We will raise him blind on the Day of Resurrection. This subject has been expressed in Surah Al-Baqarah like this:

"Then if there comes to you guidance from Me, then whoever follows My guidance, there shall be no fear upon them, nor shall they grieve. And those who disbelieve and deny Our signs, those are the companions of the Fire; they will abide therein eternally."[1]	**If guidance comes to you from Me, then those who follow My guidance, they shall have no fear, nor shall they grieve. And those who disbelieve and belie My signs, they are the dwellers of Hell, remaining in Hell forever.**

It is the same story, the same command, so the Great Quran itself has explained that 'turning away from the remembrance' (A’raadh 'an al-Dhikr) means disbelief. Now there is no need to quote the sayings of commentators (mufassirin). It is mentioned in the Hadith that some people started reciting dhikr loudly in the mosque. Sayyiduna Abdullah bin Mas'ood (may Allah be pleased with him) had them removed. Now, whether this removal was because according to him audible dhikr was prohibited, or because their shouting disturbed the worshippers, or for whatever reason; in any case, when it was not considered improper to remove the performers of dhikr themselves in such situations, then how can your getting up and leaving be a point of criticism? In short, neither is this interpretation of the verse correct, nor is it right to apply this ruling to those Muslims. That person in the gathering who held this view, if he is ignorant, has committed two severe major sins: Firstly: To interpret the Great Quran without knowledge. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"Whoever speaks about the Quran without knowledge, let him take his seat in the Fire." Narrated by al-Tirmidhi[2] from Ibn Abbas (may Allah be pleased with both of them), and he said it is Sahih (authentic).	**Whoever speaks about the Quran without knowledge should make his abode in Hell. (Imam Tirmidhi narrated this with reference to Hazrat Abdullah Ibn Abbas (may Allah be pleased with both of them) and stated that this Hadith is Sahih. - Transl.)**

[1] Al-Quran al-Karim 2/38 and 39 [2] Jami` at-Tirmidhi, Chapters on Interpretation (Tafsir), Chapter on what has been narrated regarding one who interprets the Quran by his own opinion, Amin Company, Delhi, 2/119

फतावा-ए-रजविया, जिल्द 24

...कि अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ से हिदायत आए, तो जो मेरी हिदायत की पैरवी करेगा वह न गुमराह होगा न सख्ती झेलेगा, और जो मेरे इरशाद से मुँह फेरेगा उसके लिए तंग ज़िन्दगानी और उसे हम क़यामत के दिन अंधा उठाएंगे। इस मज़मून को सूरह बक़रह में यूँ बयान फ़रमाया गया है:

"फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ से हिदायत आए, तो जिसने मेरी हिदायत की पैरवी की, उन पर न कोई डर होगा और न वे दुखी होंगे। और जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही लोग आग वाले (दोजख़ी) हैं; वे उसमें हमेशा रहेंगे।"[1]	**अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ से हिदायत आए, तो जो मेरी हिदायत की पैरवी करेंगे उन्हें कुछ ख़ौफ़ नहीं होगा और न ही वे ग़मगीन होंगे, और जो कुफ़्र करेंगे और मेरी आयतों को झुठलाएंगे, वे दोज़ख़ी हैं और हमेशा दोज़ख़ में रहने वाले हैं।**

एक ही किस्सा है, एक ही इरशाद है, तो खुद कुरआन अज़ीम ने इसकी व्याख्या कर दी है कि 'अराज़ अन-ज़िक्र' (ज़िक्र से मुँह मोड़ना) से मुराद कुफ़्र है। अब मुफ़स्सिरीन (टीकाकारों) के कथनों को उद्धृत करने की ज़रूरत नहीं रही। हदीस में है कि कुछ लोगों ने मस्जिद में चिल्ला-चिल्ला कर ज़िक्र करना शुरू किया, तो सैयदुना अब्दुल्लाह बिन मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उन्हें बाहर निकलवा दिया। अब चाहे ये निकलवाना इस आधार पर हो कि उनके नज़दीक ज़िक्र-ए-जहर (ज़ोर से ज़िक्र करना) मना था, या इस वजह से कि उनके चिल्लाने से नमाज़ियों को परेशानी हो रही थी, या किसी भी वजह से हो; बहरहाल जब ऐसी स्थितियों में खुद ज़ाकिरीन (ज़िक्र करने वालों) को निकलवाना अनुचित नहीं माना गया, तो आपका उठकर चले जाना कैसे आलोचना का पात्र हो सकता है? संक्षेप में, न तो आयत का यह अर्थ सही है और न ही इन मुसलमानों पर यह हुक्म लगाना दुरुस्त है। महफ़िल में वह व्यक्ति जो इसका कायल हुआ (इसे मानने वाला हुआ), अगर जाहिल है तो वह दो सख्त कबीरा गुनाहों का अपराधी हुआ: पहला: बिना इल्म (ज्ञान) के कुरआन अज़ीम की तफ़सीर (व्याख्या) करना। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

"जिसने कुरआन के बारे में बिना ज्ञान के कुछ कहा, तो वह अपना ठिकाना आग (जहन्नम) में बना ले।" इसे इमाम तिरमिज़ी[2] ने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) के हवाले से रिवायत किया और फ़रमाया कि यह हदीस सही है।

जो बिना इल्म के कुरआन में कुछ बोले, वह अपना ठिकाना दोज़ख़ में बना ले। (इमाम तिरमिज़ी ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के हवाले से इसे रिवायत किया और फ़रमाया कि यह हदीस सही है। - त)

[1] अल-कुरआन अल-करीम 2/38 और 39 [2] जामे तिरमिज़ी, अबवाबुत तफ़सीर, बाब मा जा-आ फिल लज़ी युफ़स्सिरुल कुरआना बे-रायेही, अमीन कंपनी, दिल्ली 2/119

کہ اگر تمہارے پاس میری طرف سے ہدایت آئے تو جو میری ہدایت کی پیروی کرے گا وہ گمراہ نہ ہوگا سختی جھیلے اور جو میرے ارشاد سے منہ پھیرے اس کے لئے تنگ زندگانی اور اسے ہم روز قیامت اندھا اٹھائیں گے۔ اس مضمون کو سورہ بقر میں یوں ادا فرمایا ہے:

"فَاِمَّا یَاْتِیَنَّكُمْ مِّنِّیْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَایَ	**اگر تمہارے پاس میری طرف سے ہدایت آئے تو جو**
فَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ©	**میری ہدایت کی پیروی کریں انہیں کچھ خوف نہیں نہ وہ**
وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَاۤ اُولٰٓىٕكَ	**غمگین ہوں اور جو کفر کریں اور میری آیتیں جھٹلائیں**
اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ©"[1]	**وہ دوزخی ہیں ہمیشہ دوزخ میں رہنے والے۔**

ایک ہی قصہ ہے ایک ہی ارشاد ہے تو خود قرآن عظیم نے شرح فرمادی ہے کہ اعراض عن الذکر سے کفر مراد ہے، اب نقل اقوال مفسرین کی حاجت نہ رہی، حدیث میں ہے کچھ لوگوں نے چلا چلا کر مسجد میں ذکر کرنا شروع کیا سیدنا عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے انہیں نکلوا دیا اب خواہ یہ نکلوانا اس بنا پر ہو کہ ان کے نزدیک ذکرِ جہر ممنوع تھا خواہ اس لئے کہ ان کے چلانے سے نمازیوں پر تشویش تھی خواہ کسی وجہ سے ہو بہر حال جب ایسی حالتوں میں خود ذاکرین کو نکلوا دینا معیوب نہ ہوا تو آپ اٹھ کر چلا جانا کیونکر محلِ طعن ہوسکتا ہے، غرض آیت سے نہ یہ ارادہ صحیح نہ ان مسلمانوں پر یہ حکم لگانا درست، حلقے میں کا وہ شخص جو اس کا قائل ہوا اگر جاہل ہے تو دو سخت کبیرہ گناہوں کا مرتکب ہوا: اولا: بے علم قرآن عظیم کی تفسیر کرنا، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

من قال فی القراٰن بغیر علم فلیتبوّا مقعده من النار۔ رواه الترمذی[2] عن ابن عباس رضی الله تعالٰی عنهما وقال صحیح۔

جو بے علم قرآن میں کچھ بولے وہ اپنا ٹھکانا دوزخ میں بنالے (امام ترمذی نے حضرت عبداللہ ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے حوالہ سے اسے روایت کیا اور فرمایا یہ حدیث صحیح ہے۔ ت)

[1] القرآن الکریم ۳۸/۲ و ۳۹ [2] جامع الترمذی ابواب التفسیر باب ما جاء فی الذی یفسر القرآن برأیه امین کمپنی دہلی ۲/ ۱۱۹

Fatawa Rizvia Volume 24

Thirdly: Giving a fatwa or issuing a ruling without knowledge. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "They gave fatwas without knowledge, so they went astray and led others astray." - Narrated by Imams Ahmad, Al-Bukhari, Muslim, At-Tirmidhi, and Ibn Majah from Abdullah bin Amr (may Allah be pleased with both of them). [Urdu Translation in text]: If one gives a fatwa without knowledge, they themselves go astray and mislead others. (Imams Ahmad, Bukhari, Muslim, Tirmidhi, and Ibn Majah narrated this from Abdullah bin Amr (may Allah be pleased with both of them). -T)

And if a person is knowledgeable but deliberately provides a wrong interpretation or issues a wrong ruling, they have committed one of the most severe and greatest major sins, for they have raised a slander against Allah Almighty and forged a lie against the pure Sharia. Allah Almighty says: "And who is more unjust than one who invents a lie about Allah?" [Urdu Translation in text]: Who is more unjust than one who forges a lie against Allah Almighty?

Repentance is obligatory for this person in every case. Until he repents, praying behind him is severely disliked (makruh), and making him an Imam is a sin. "Because he is a transgressor (fasiq), and in Al-Ghunyah Sharh al-Munyah, citing Fatawa al-Hujjah, it is stated that if people put forward a transgressor for leadership (Imamat), they will be sinning." [Urdu Translation in text]: Because he is a transgressor (i.e., one who exceeds Sharia limits), and in Ghunyah Sharh Munyah, citing evidence from Fatawa Hujjah, it is said: "If people forward a transgressor for Imamat, they will be sinners." (T)

And assuming knowledge, if he deliberately committed this act, the ruling of renewal of Islam and marriage (Tajdid-e-Islam and Nikah) also applies, as most scholars have declared deliberately forging a lie against the Lord of Honor, glorified be His majesty, as disbelief (Kufr). Allah Almighty says: "Only they invent falsehood who do not believe in the verses of Allah." [Urdu Translation in text]: Lies are forged by those who [believe not] in the verses of Allah...

Footnotes: 1. Jamia Tirmidhi, Chapters on Knowledge, Chapter on the Disappearance of Knowledge, Amin Company 2/90; Sahih Muslim, Book of Knowledge 2/340; Sahih Bukhari, Book of Knowledge 1/20; Sunan Ibn Majah, Chapter on Avoiding Opinion and Analogy, p. 6; Musnad Imam Ahmad bin Hanbal 2/162. 2. Al-Quran Al-Karim 21/6

3. Ghunyat al-Mustamli Sharh Munyat al-Musalli, Chapter on Imamat, Sohail Academy Lahore, p. 513

Page 103 of 720

फतावा रज़विया जिल्द 24

तीसरी बात: बिना ज्ञान के फतवा देना या हुक्म लगाना। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "उन्होंने बिना ज्ञान के फतवा दिया, जिससे वे स्वयं गुमराह हुए और दूसरों को भी गुमराह किया।" - इसे इमाम अहमद, बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी और इब्न माजा ने हज़रत अब्दुल्ला बिन अम्र (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया है। [उर्दू अनुवाद का हिंदी]: बिना ज्ञान के फतवा दिया तो स्वयं गुमराह हुए और दूसरों को गुमराह किया। (इमाम अहमद, बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी और इब्न माजा ने अब्दुल्ला बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से इसे रिवायत किया। -त)

और यदि वह विद्वान है और जानबूझकर गलत व्याख्या की या गलत हुक्म लगाया, तो उसने सबसे गंभीर और बड़े कबायरा (बड़े गुनाह) का अपराध किया है, क्योंकि उसने अल्लाह अज्ज़वजल पर तोहमत लगाई और शरीअत-ए-मुतहहरा पर झूठ गढ़ा। अल्लाह अज्ज़वजल फरमाता है: "और उस व्यक्ति से बड़ा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े?" [उर्दू अनुवाद का हिंदी]: उससे बड़ा ज़ालिम कौन है जो अल्लाह अज्ज़वजल पर झूठ का इफ्तिरा (गढ़ना) करे।

इस व्यक्ति पर तौबा करना हर हाल में फ़र्ज़ है। जब तक वह तौबा न करे, उसके पीछे नमाज़ पढ़ना सख़्त मकरूह है और उसे इमाम बनाना गुनाह है। "क्योंकि वह फासिक है, और 'ग़ुनिया शरह मुनिया' में 'फतावा हुज्जह' से दलील देते हुए फरमाया गया है कि अगर लोग किसी फासिक को इमामत के लिए आगे करेंगे तो वे गुनहगार होंगे।" [उर्दू अनुवाद का हिंदी]: इसलिए कि वह फासिक है (यानी शरीयत की सीमाओं को लांघने वाला है) और 'ग़ुनिया शरह मुनिया' में 'फतावा हुज्जह' से दलील लाते हुए फरमाया: अगर लोग फासिक को इमामत के लिए आगे करेंगे तो गुनहगार होंगे। (त)

और इस मान्यता पर कि उसने जानबूझकर यह काम किया है, इस्लाम और निकाह के नवीनीकरण (तजदीद-ए-इस्लाम व निकाह) का भी हुक्म है, क्योंकि अधिकांश उलेमा ने जानबूझकर रब-उल-इज़्ज़त अज्ज़-जलालुहू पर झूठ गढ़ने को कुफ्र करार दिया है। अल्लाह अज्ज़वजल फरमाता है: "झूठ वही गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते।" [उर्दू अनुवाद का हिंदी]: झूठ वे गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर...

फुटनोट्स: 1. जामे तिर्मिज़ी, अबवाबुल इल्म, बाब माजा फी दहाबिल इल्म, अमीन कंपनी 2/90; सहीह मुस्लिम, किताबुल इल्म 2/340; सहीह बुखारी, किताबुल इल्म 1/20; सुनन इब्न माजा, बाब इज्तिनाबुल राय वल कयास, पृ. 6; मसनद इमाम अहमद बिन हंबल 2/162। 2. अल-कुरान अल-

करीम 21/6 3. गुनियातुल मुस्तमली शरह मुनियतुल मुसल्ली, इमामत का अध्याय, सुहैल अकादमी लाहौर, पृ. 513

पेज 103/720

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

ثالثاً: بے علم فتوٰی دینا حکم لگانا، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: افتوا بغیر علم فضلوا واضلوا - رواہ الائمۃ احمد[1] و البخاری و مسلم والترمذی و ابن ماجہ عن عبد اللہ بن عمرو رضی اللہ تعالٰی عنہما۔ بے علم فتوٰی دیا تو آپ گمراہ ہوئے اوروں کو گمراہ کیا (ائمہ کرام احمد، بخاری، مسلم، ترمذی اور ابن ماجہ نے عبداللہ بن عمرو رضی اللہ تعالٰی عنہما سے اس کو روایت کیا۔ ت)

اور اگر ذی علم ہے اور دانستہ تفسیر غلط کی غلط حکم لگایا تو اشد و اعظم کبائر کا ارتکاب کیا کہ اللہ عزوجل پر بہتان اٹھایا شریعت مطہرہ پر افترا باندھا، اللہ عزوجل فرماتا ہے: "وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللہِ کَذِبًا" [2] اس سے بڑھ کر ظالم کون جو اللہ عزوجل پر جھوٹ افترا کرے۔

اس شخص پر توبہ تو ہر صورت میں فرض ہے، جب تک توبہ نہ کرے اس کے پیچھے نماز سخت مکروہ ہے اور اسے امام بنانا گناہ، لانہ فاسق وفی الغنیۃ شرح المنیۃ محتجاً بفتاوی الحجۃ انھم لوقدموا فاسقاً یاثمون۔ [3] اس لئے کہ وہ فاسق ہے (یعنی حدود شرعیہ سے تجاوز کرنے والا ہے) اور غنیہ شرح منیہ میں فتاوٰی حجہ سے دلیل لاتے ہوئے فرمایا اگر لوگ فاسق کو امامت کے لئے آگے کریں تو گنہگار ہوں گے۔ (ت)

اور بر تقدیرِ علم کہ دانستہ اس کام کا مرتکب ہوا تجدیدِ اسلام و نکاح کا بھی حکم ہے کہ جان بوجھ کر رب العزۃ عز جلالہ پر افترا کرنے کو اکثر علماء نے کفر ٹھہرایا۔ اللہ عزوجل فرماتا ہے: "اِنَّمَا یَفْتَرِی الْکَذِبَ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ" جھوٹ وہ گھڑتے ہیں جو آیات الہی پر

حواشی: [1] جامع الترمذی ابواب العلم باب ماجاء فی ذهاب العلم امین کمپنی ۲/ ۹۰، صحیح مسلم کتاب العلم ۲/ ۳۴۰ و صحیح البخاری کتاب العلم ۱/ ۲۰ ، سنن ابن ماجہ باب اجتناب الرای والقیاس ص ۶ و مسند امام احمد بن حنبل ۲/ ۱۶۲ [2] القرآن الکریم ۲۱/ ۶ [3] غنیہ المستملی شرح منیۃ المصلی فصل فی الامامة سہیل اکیڈمی لاہور ص ۵۱۳

Volume 24 Fatawa Rizvia

...[they] do not believe in the signs of Allah (1). (T)

In Mawdu'at al-Kabir, it is stated:

"That is, lying against Allah and His Messenger, peace and blessings of Allah Almighty be upon him. Indeed, lying against anyone other than them does not exclude one from faith, by the consensus of the People of the Sunnah and the Community (2)."

Lying about anyone other than Allah Almighty and His Noble Messenger, peace and blessings of Allah Almighty be upon him, does not exclude a person from faith; the People of the Sunnah are in agreement on this. (T)

In Sharh Fiqh al-Akbar, it is stated:

"In al-Fatawa al-Sughra: Whoever says, 'Allah knows that I did this,' while he did not do it, commits disbelief, meaning because he lied against Allah Almighty (3)."

In Fatawa al-Sughra, it is mentioned that whoever says, "Allah Almighty knows that I did this work," while he had not done it, he becomes a disbeliever. Why? Because he fabricated a lie against Allah Almighty. (T)

In Durr al-Mukhtar, it is stated:

"Does he commit disbelief by his saying 'Allah knows' or 'Allah knows that he did such-and-such' while lying? Al-Zahidi said, 'The majority say yes,' and Al-Shumni said, 'The most correct is no (4).'"

Will a man become a disbeliever by saying this? "Allah Almighty knows" or "Allah knows". If he says while lying that he has done such-and-such work, Al-Zahidi said most scholars said yes, he will become a disbeliever. Allama Shumni said the more correct view is that he will not become a disbeliever. (T)

In Radd al-Muhtar, it is stated:

"And it is quoted in Noor al-Ayn from al-Fatawa."

In Noor al-Ayn, the first opinion from the fatwas is corrected.

---

1. The Holy Quran 16/105
2. Al-Asrar al-Mawdu'ah, under Hadith 97, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, p. 49

3. Minah al-Rawd al-Azhar Sharh al-Fiqh al-Akbar, chapter on explicit and implicit disbelief, Mustafa al-Babi, Egypt, p. 191
4. Durr al-Mukhtar, Book of Faith, Mujtabai Press, Delhi, 1/292

जिल्द 24 फतावा रज़विया

...अल्लाह की आयतों पर विश्वास नहीं रखते (1)। (त)

मोज़ूआत-ए-कबीर में है:

"अर्थात् अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर झूठ बोलना। क्योंकि इन दोनों के अलावा किसी और पर झूठ बोलना आदमी को ईमान से बाहर नहीं करता, इस पर अहले सुन्नत व जमात का इज्मा (सहमति) है (2)।"

अल्लाह तआला और उसके रसूल मुकर्रम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अलावा किसी और के बारे में झूठ कहना आदमी को ईमान से खारिज नहीं करता, अहले सुन्नत का इस पर इत्तेफाक है। (त)

शरह फिक़्ह-ए-अकबर में है:

"'फतावा अल-सुगरा' में है: जिसने कहा कि 'अल्लाह जानता है कि मैंने यह किया' और उसने वह काम न किया हो, तो उसने कुफ्र किया, अर्थात् इसलिए कि उसने अल्लाह तआला पर झूठ बोला (3)।"

'फतावी सुगरा' में है कि जो शख्स यह कहे कि अल्लाह तआला जानता है कि मैंने यह काम किया है हालांकि उसने वह काम न किया हो तो वह काफिर हो जाता है, क्यों? इसलिए कि उसने अल्लाह तआला पर झूठ बांधा। (त)

दुर्रे मुख्तार में है:

"क्या वह अपने इस कहने से काफिर हो जाएगा कि 'अल्लाह जानता है' या 'अल्लाह जानता है कि उसने ऐसा किया' जबकि वह झूठ बोल रहा हो? ज़ाहिदी ने कहा, 'अकसर (बहुमत) ने कहा हाँ,' और शुमन्नी ने कहा, 'सही यह है कि नहीं (4)।'"

क्या अपने इस कहने से आदमी काफिर हो जाएगा? "अल्लाह तआला जानता है" या "जानता है अल्लाह तआला"। झूठा होने की हालत में कहे कि उसने फलां काम किया है, ज़ाहिदी ने कहा अक्सर अहले इल्म ने फरमाया कि हाँ काफिर हो जाएगा। अल्लामा शुमन्नी ने कहा यही ज़्यादा सही है कि काफिर न होगा। (त)

रद्दुल मुहतार में है:

"और 'नूरुल ऐन' में 'फतावा' से नकल किया गया है।"

'नूरुल ऐन' में फतावी से पहले कौल (कथन) की तसहीह (सुधार)।

---

1. अल-क़ुरान अल-करीम 16/105
2. अल-असरार अल-मौज़ूआ, हदीस 97 के तहत, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरुत, पृ. 49
3. मिनह अल-रौद अल-अज़हर शरह अल-फिक़्ह अल-अकबर, स्पष्ट और सांकेतिक कुफ्र का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, पृ. 191
4. दुर्रे मुख्तार, किताब अल-ईमान, मुज्तबाई प्रेस दिल्ली, 1/292

جلد ۲۴ فتاوٰی رضویہ

بآیات اللہ ج1 ایما ن نہیں رکھتے ۔ (ت)

موضوعاتِ کبیر میں ہے:

ای الکذب علی اللہ ورسولہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فان الکذب علی غیرہما لایخرجہ عن الایمان باجماع اھل السنۃ والجماعۃ 2

اللہ تعالٰی اور اس کے رسولِ مکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے علاوہ کسی اور کے متعلق جھوٹ کہنا آدمی کو ایمان سے خارج نہیں کرتا، اہل سنت کا اس پر اتفاق ہے ۔ (ت)

شرح فقہِ اکبر میں ہے:

فی الفتاوی الصغری من قال یعلم اللہ انی فعلت ھذا وکان لم یفعل کفر ای لانہ کذب علی اللہ تعالٰی 3

فتاوٰی صغرٰی میں ہے کہ جو شخص یہ کہے کہ اللہ تعالٰی جانتا ہے کہ میں نے یہ کام کیا ہے حالانکہ اس نے وہ کام نہ کیا ہو تو وہ کافر ہوجاتا ہے، کیوں؟ اس لئے کہ اس نے اللہ تعالٰی پر جھوٹ باندھا۔ (ت)

در مختار میں ہے:

ھل یکفر بقولہ اللہ یعلم او یعلم اللہ انہ فعل کذا کاذباً قال الزاھدی الاکثر نعم، وقال الشمنی الاصح لا 4

کیا اپنے اس کہنے سے آدمی کافر ہو جائے گا ؟ اللہ تعالٰی جانتا ہے یا جانتا ہے اللہ تعالٰی ۔ جھوٹا ہونے کی حالت میں کہے کہ اس نے فلاں کام کیا ہے، زاہدی نے کہا اکثر اہل علم نے فرمایا کہ ہاں کافر ہو جائے گا۔ علامہ شمنی نے کہا یہی زیادہ صحیح ہے کہ کافر نہ ہو گا۔ (ت)

رد المحتار میں ہے:

ونقل فی نور العین عن الفتاوٰی

نور العین میں فتاوٰی سے پہلے قول کی تصحیح۔

---

1 القرآن الکریم ۱۶ / ۱۰۵ 2 الاسرار الموضوعۃ تحت حدیث ۹۷ دار الکتب العلمیہ بیروت ص ۴۹

3 منح الروض الازھر شرح الفقہ الاکبر فصل فی الکفر صریحاً و کنایۃً مصطفی البابی مصر ص

۱۹۱ 4 در مختار کتاب الایمان مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۹۲

Fatawa Ridawiyya Volume 24

Transcribed. (T)

Correction One -

And one who considers the pure Shariah as such and such, i.e., insignificant, is certainly, by consensus, an infidel (kafir), apostate (murtad), heretic (zindiq), and atheist (mulhid). It is such that "whoever doubts his disbelief and punishment has himself disbelieved." Similarly, one who undoubtedly and without interpretation disparages the Jalalayn commentary or any religious book, not because of some external accidental matter but in itself, is an infidel. However, the speech mentioned in the question is neither explicit in disparaging the pure Shariah nor a clear disparagement of the Jalalayn commentary. The meanings of the aforementioned noble verse that this speaker stated are not contrary to the aforementioned meanings of the commentaries, requiring their nullification for their correction. Instead, they are a separate meaning. Thus, his statement does not imply that the apparent meanings are, God forbid, false. The truth is what the people of inward knowledge (ahl al-batin) know against them; rather, it is sufficient for its meaning that whatever is in these commentaries are apparent meanings, and the benefits of the Great Quran are not confined to them. Instead, besides them, there are also elegant points and subtle subtleties that the people of inward knowledge know. There is neither any insult nor disparagement in this; rather, it is true. Even if the citing of the noble verse at this place and this claim of intended meaning is false, then there is, God forbid, no ground here for the proof of disbelief. It is stated in Sharh al-Aqa'id:

(Arabic Text)	**(Urdu Translation)**
The texts are to be taken according to their apparent meanings. Turning away from them towards meanings claimed by the Batiniyya—because of their claim that the texts are not according to their apparent meanings but have hidden meanings known only to the teacher, and their intention by that is the complete denial of the Shariah—is atheism (ilhad), as it is a	Texts are construed according to their apparent meanings. But turning them away from the apparent meanings towards such meanings as claimed by the Batiniyya sect—because their claim is that texts are not construed according to their appearances but have internal and hidden meanings known only to the teacher—to intend by this the complete denial of the Shariah is open atheism (irreligion). This is because it is a

(Arabic Text)

denial of the Prophet, may Allah the Exalted bless him and grant him peace, in what is known by necessity that he brought. As for what some...

(Urdu Translation)

denial of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) in those rulings whose bringing by him is known with certainty. As for this matter...

1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Iman, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/56
2. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Jihad, Bab al-Murtad, Mujtabai Press, Delhi, 1/356

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

नकल की गई। (त)

तसहीह अल-अव्वल 1-

और शरीयत-ए-मुतह्हरा को ऐसा-वैसा यानी हकीर (तुच्छ) समझने वाला तो कतई इज्माई तौर पर काफ़िर, मुर्तद, ज़िंदीक और मुलहिद है। ऐसा कि "जिसने उसके कुफ्र और अज़ाब में शक किया, उसने खुद कुफ्र किया।" इसी तरह जो तफ़्सीर जलालेन शरीफ या किसी भी दीनी किताब को खुद में (फी नफ़्सिही), न कि किसी बाहरी कारण से, बिना किसी शक और तावील के हकीर समझे, वह काफ़िर है। मगर सवाल में ज़िक्र किया गया कलाम न तो शरीयत-ए-मुतह्हरा की तौहीन में साफ़ है और न ही तफ़्सीर जलालेन शरीफ की तहकीर (तुच्छता) में। ज़िक्र की गई आयते करीमा के जो मानी इस कहने वाले ने बताए हैं, वे तफ़्सीरों के ज़िक्र किए गए मानी के खिलाफ नहीं हैं कि उनकी सच्चाई के लिए उनका रद्द करना ज़रूरी हो, बल्कि वे एक अलग मानी हैं। तो उसके कौल का यही मतलब नहीं है कि ज़ाहिरी मानी (ख़ुदा न खास्ता) बातिल हैं। हक वह है जिसे अहल-ए-बातिन (आंतरिक ज्ञान वाले) उनके खिलाफ जानते हैं, बल्कि इसका मतलब बनने के लिए इतना काफी है कि जो कुछ इन तफ़्सीरों में है, ये ज़ाहिरी मानी हैं और अज़ीम कुरआन के फायदे इन्हीं में महदूद (सीमित) नहीं हैं, बल्कि उनके अलावा और भी शानदार नुक्ते और बारीक बातें हैं जिन्हें अहल-ए-बातिन जानते हैं। इसमें न तो कोई तौहीन हुई और न ही तहकीर, बल्कि यह हक है। अगरचे इस जगह पर आयते करीमा का ज़िक्र करना और यह दावा करना गलत है, तो यहाँ (ख़ुदा न खास्ता) कुफ्र के सबूत की कोई जगह नहीं है। शरह अक़ायद में है:

(अरबी पाठ)

नुसूस (धार्मिक ग्रंथ) अपने ज़ाहिरी मानी पर महमूल होते हैं। उनसे हटकर उन मानी की तरफ जाना जिनका दावा बातिनिया करते हैं— इस दावे के साथ कि नुसूस अपने ज़ाहिरी मानी पर नहीं हैं बल्कि उनके बातिनी (छिपे हुए) मानी हैं जिन्हें सिर्फ मुअल्लिम ही जानता है, और इससे उनका मकसद शरीयत की पूरी तरह से

(उर्दू अनुवाद)

नुसूस अपने ज़ाहिरी मानी पर महमूल हुआ करते हैं लेकिन ज़ाहिरी मानी से उन्हें ऐसे मानी की तरफ फेर देना कि जिनका फिरका बातिनिया वाले दावा करते हैं इसलिए कि उनका दावा यह है कि नुसूस अपने ज़वाहिर पर नहीं महमूल होते बल्कि उनके लिए बातिनی और पोशीदा मानी होते हैं और उन्हें सिर्फ मुअल्लिम जानता है इससे उनका पूरी

(अरबी पाठ)

नफी (मनाही) करना है—इलहाद (नास्तिकता) है, क्योंकि यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उन बातों में तकज़ीब (झूठलाना) है जो यकीनी तौर पर उनके लाए जाने के बारे में मालूम हैं। रही बात...

(उर्दू अनुवाद)

शरीयत की नफी का इरादा करना खुला इलहाद (बेदीनी) है इसलिए कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इन अहकाम में तकज़ीब है जिनका लाना आप से बिलबदाहत (साफ़ तौर पर) मालूम हो गया है। रही यह बात...

1- रद्द अल-मुह्तार, किताब अल-ईमान, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 3/56 2- दुर्रे मुख्तार, किताब अल-जिहाद, बाब अल-मुर्तˀ, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/356

نقل کی گئی۔ (ت)

تصحیح الاول ۱-

اور شرع مطہر کو ایسا ویسا یعنی حقیر جاننے والا تو قطعاً اجماعاً کافر مرتد زندیق ملحد ہے ایسا کہ من شك فی کفرہ و عذابہ فقد کفر ۲ جو اس کے کفر و مستحقِ نار ہونے میں شک کرے وہ خود کافر ہے، اسی طرح جو تفسیر جلالین شریف خواہ کسی کتاب دینی کی فی نفسہ نہ کسی امرِ خارجِ عارض کے باعث بلاشبہ و تاویل تحقیر کرے کافر ہے مگر کلامِ مذکور فی السوال نہ تنقیصِ شرع مطہر میں صریح ہے نہ تحقیرِ جلالین شریف میں نص کریمہ مذکورہ کے وہ معنی کہ اس قائل نے بتائے معانی مذکورہ تفاسیر کے منافی نہیں کہ ان کی تصحیح کو ان کا ابطال ضرور ہے بلکہ ایک معنی جداگانہ ہیں تو اس کے قول کا یہی محمل نہیں کہ معانی ظاہرہ معاذاللہ باطل ہیں حق وہ ہے جو اہلِ باطن ان کے خلاف جانتے ہیں بلکہ اس کا مطلب بننے کو اس قدر کافی کہ جو کچھ ان تفاسیر میں ہے یہ معانی ظاہرہ ہیں اور افاداتِ قرآن عظیم انہیں میں محصور نہیں بلکہ ان کے سوا اور نکاتِ انیقہ و لطائفِ دقیقہ بھی ہیں جنہیں اہلِ باطن جانتے ہیں اس میں نہ کوئی توہین ہوئی نہ تحقیر بلکہ یہ حق ہے اگر چہ اس محل پر آیہ کریمہ کا ایراد اور یہ ادعائے مراد باطل ہے تو یہاں معاذ اللہ ثبوتِ کفر کا کوئی محل نہیں، شرح عقائد میں ہے:

| النصوص تحمل علی ظواھرھا والعدول عنھا الی معان یدعیھا الباطنیة لادعائھم ان النصوص لیست علی ظواھرھا بل لھا معان باطنیة لایعرفھا الا المعلم وقصدھم بذاك نفي الشریعة بالکلیة الحاد لکونہ تکذیب للنبي صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فیما علم مجیئہ بہ بالضرورة واما ماذھب الیہ بعض | نصوص

اپنے ظاہری معانی پر محمول ہوا کرتے ہیں لیکن ظاہری معانی سے انہیں ایسے معانی کی طرف پھیر دینا کہ جن کا فرقہ باطنیہ والے دعویٰ کرتے ہیں اس لئے کہ ان کا دعویٰ یہ ہے کہ نصوص اپنے ظواہر پر نہیں محمول ہوتے بلکہ ان کے لئے باطنی اور پوشیدہ معانی ہوتے ہیں اور انہیں صرف معلم جانتا ہے اس سے ان کا پوری شریعت کی نفی کا ارادہ کرنا کھلا الحاد (بے دینی) ہے اس لئے کہ حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی ان احکام میں تکذیب ہے جن کا لانا آپ سے بالبداہت معلوم ہو گیا ہے۔ رہی یہ بات |

۱- ردالمحتار کتاب الایمان دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/ ۵۶ ۲- درمختار کتاب الجہاد باب المرتد مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۳۵۶

Volume 24 Fatawa Razawiyya

[Arabic Box 1]: Investigation shows that while the scriptures (Nusus) are based on their apparent meanings, they nonetheless contain subtle indications of intricacies revealed to those on the spiritual path. Harmonizing these with the intended apparent meanings is a sign of perfect faith and pure gnosis. (Summarized) [Urdu Box 1]: This is the path taken by some researchers, meaning they have adopted the view that scriptures hold their apparent meanings, but despite this, they contain subtle and hidden indications that are revealed to the people of spiritual practice. Since harmonizing these with the apparent intent is possible, this is perfect faith and pure gnosis. (Summarized - T)

From this explanation, answers to all aspects of the question have been provided. As for the matter of whether the ecstasy (wajd) of a particular person or persons is true or false, alas, the path to discerning their intention is extremely difficult. There is a vast difference in heart states between an intoxicated soul and a pretentious hypocrite. The difference between the moderately truthful who resemble lovers, and the lowest of sinful hypocrites, is even more subtle and intricate, because here it is only a difference of intention, and both intention and the heart are unseen (Ghayb), and harboring bad suspicion about a Muslim is forbidden.

[Arabic Box 2]: Allah Almighty says: "And do not pursue that of which you have no knowledge. Indeed, the hearing, the sight and the heart - about all those [one] will be questioned." [Urdu Box 2]: (Allah Almighty has said) Do not pursue that of which you have no knowledge; surely the ear, the eye, and the heart, all these will be questioned.

And He says: [Arabic Box 3]: "O you who have believed, avoid much [negative] assumption. Indeed, some assumption is sin." [Urdu Box 3]: O you who believe! Avoid much suspicion; indeed some suspicions are sins.

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: [Arabic Box 4]: Beware of suspicion, for suspicion... [Urdu Box 4]: Stay away from suspicion, for suspicion is the falsest of...

---

1. Sharh al-Aqa'id al-Nasafiyya, Shaukat-e-Islam Press, Kandahar, Afghanistan, pp. 119 & 120.
2. Al-Quran al-Karim 17/36
3. Al-Quran al-Karim 49/12

खंड 24 फ़तावा रज़विय्या

[अरबी बॉक्स 1]: कुछ शोधकर्ताओं का मानना है कि यद्यपि धार्मिक ग्रंथ (नुसूस) अपने स्पष्ट अर्थों पर आधारित होते हैं, फिर भी उनमें सूक्ष्म और गुप्त संकेत होते हैं जो आध्यात्मिक पथ के पथिकों पर प्रकट होते हैं। इनके और स्पष्ट अर्थों के बीच सामंजस्य स्थापित करना पूर्ण विश्वास (ईमान) और शुद्ध ज्ञान (अरफ़ान) की निशानी है। (संक्षेप में) [उर्दू बॉक्स 1]: जैसा कि कुछ शोधकर्ताओं ने कहा है, अर्थात् उन्होंने इसे अपनाया है कि ग्रंथ अपने स्पष्ट अर्थ रखते हैं, लेकिन इसके बावजूद उनमें सूक्ष्म और छिपे हुए संकेत भी पाए जाते हैं जो आध्यात्मिक पथ के लोगों पर प्रकट होते हैं। चूंकि इनके और स्पष्ट इरादे के बीच सामंजस्य संभव है, इसलिए यह पूर्ण विश्वास और शुद्ध ज्ञान है। (संक्षेप में - त)

इस स्पष्टीकरण से प्रश्न के सभी स्तरों का उत्तर मिल गया। रही बात यह कि किसी विशिष्ट व्यक्ति या व्यक्तियों का 'वज्द' (दिव्य आनंद की अवस्था) सच्चा है या झूठा, तो अफ़सोस, उनके इरादे को जानने का रास्ता बहुत कठिन है। एक ईश्वरीय प्रेम में डूबी हुई आत्मा और एक दिखावटी पाखंडी के हृदय की स्थिति में बहुत अंतर होता है। मध्यम दर्जे के सच्चे लोगों, प्रेमियों जैसा रूप धारण करने वालों और नीच पापी ढोंगियों के बीच का अंतर और भी सूक्ष्म और जटिल है, क्योंकि यहाँ केवल नियत (इरादे) का अंतर है, और नियत व हृदय दोनों ही परोक्ष (ग़ैब) हैं। और किसी मुसलमान के प्रति बुरा गुमान (संदेह) करना हराम है।

[अरबी बॉक्स 2]: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "उस बात के पीछे न पड़ जिसका तुझे ज्ञान नहीं, बेशक कान, आँख और दिल, इन सब के बारे में सवाल किया जाना है।" [उर्दू बॉक्स 2]: (अल्लाह तआला ने फ़रमाया) उस बात के पीछे न पड़ जिसका तुझे ज्ञान नहीं, बेशक कान आँख दिल सब से सवाल होना है।

और वह फ़रमाता है: [अरबी बॉक्स 3]: "ऐ ईमान वालो! बहुत से गुमानों (संदेह) से बचो, बेशक कुछ गुमान गुनाह हैं।" [उर्दू बॉक्स 3]: ऐ ईमान वालो! बहुत गुमानों से बचो बेशक कुछ गुमान गुनाह हैं।

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: [अरबी बॉक्स 4]: गुमान से बचो, क्योंकि गुमान... [उर्दू बॉक्स 4]: गुमान से दूर रहो कि गुमान सबसे बढ़कर झूठी...

---

1. शरह अल-अक़ायद लिन-नसफ़ी, मतबा शौकत-ए-इस्लाम, कंधार, अफ़ग़ानिस्तान, पृष्ठ 119 और 120।

2. अल-क़ुरआन अल-करीम 17/36
3. अल-क़ुरआन अल-करीम 49/12

पृष्ठ 106/720

[عربی باکس 1]: المحققین من ان النصوص علی ظواھرھا ومع ذلك فیھا اشارات خفیة الی دقائق تنکشف علی ارباب السلوك یمکن التطبیق بینھا وبین الظواھر المرادة فھو من کمال الایمان و محض العرفان اھ باختصار۔ [اردو باکس 1]: کہ جس کی طرف بعض محققین گئے ہیں یعنی انہوں نے اسے اختیار کیا ہے کہ نصوص اپنے ظاہر معانی رکھتے ہیں لیکن اس کے باوجود ان میں باریک اور مخفی اشارات بھی پائے جاتے ہیں جو اربابِ سلوک پر منکشف ہوتے ہیں کہ ان میں اور ظاہری مراد میں تطبیق ہو سکتی ہے تو یہ کمالِ ایمان اور خالص عرفان ہے اھ باختصار (ت)

اس بیان سے تمام مراتبِ سوال کا جواب ہو گیا۔ باقی رہا یہ امر کہ فلاں شخص یا اشخاص خاص کا وجد حق ہے یا باطل ، ہیہات اس کے ارادہ کی طرف راہ سخت دشوار والہ سرشار و متصنع ریا کار میں حالتِ قلب کا تفاوت ہے اور اوسط صادقین متشبہین بالعاشقین واراذل فاسقین مرائین میں فرق اس سے بھی سخت باریک و دقیق تر کہ یہاں صرف نیت کا تغایر ہے اور نیت و قلب دونوں غیب ہیں اور مسلمان پر بد گمانی حرام،

[عربی باکس 2]: قال اللہ تعالیٰ "وَلَا تَقْفُ مَا لَیْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا" [اردو باکس 2]: (اللہ تعالیٰ نے فرمایا) اس بات کے پیچھے نہ پڑ جس کا تجھے علم نہیں بیشک کان آنکھ دل سب سے سوال ہونا ہے۔

اور فرماتا ہے : [عربی باکس 3]: "یٰٓاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِیْرًا مِّنَ الظَّنِّ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ" [اردو باکس 3]: اے ایمان والو! بہت گمانوں سے بچو بیشک کچھ گمان گناہ ہیں۔

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: [عربی باکس 4]: ایاکم والظن فان الظن [اردو باکس 4]: گمان سے دور رہو کہ گمان سب سے بڑھ کر جھوٹی

---

1 شرح عقائد للنسفی مطبع شوکت اسلام قندھار افغانستان ص ۱۱۹ و ۱۲۰ 2 القرآن الکریم ۱۷/ ۳۶

3 القرآن الکریم ۴۹/ ۱۲

Fatawa Rizvia Volume 24

Arabic: The falsest of reports, narrated by the Imams: Malik, the two Sheikhs (Bukhari and Muslim), Abu Dawood, and Tirmidhi from Abu Huraira (may Allah be pleased with him).

Urdu Text: The matter is (The great Imams like Imam Malik, Bukhari, Muslim, Abu Dawood, and Tirmidhi have narrated this from Hazrat Abu Huraira, may Allah be pleased with him. - T)

Imam, the Gnostic of Allah, the Advisor in Allah, Sayyidi Abdul Ghani Nablusi (may his secret be sanctified) has, in this discussion, given a long and magnificent discourse regarding declaring judgment of affectation and hypocrisy against a specific person, a summary of which is that not all Sufis are alike, just as all scholars, jurists, and teachers are not the same, just as all judges, commanders, ministers, and sultans are not equal; rather, among them are the righteous, the most pious, the corrupt, and the most corrupt. The deficient, the inadequate, and the ignorant seek out the faults of Muslims, while the perfect ones see only perfection and practice the concealment of faults and favorable interpretation; then he said:

Arabic: All this is about a group of Sufis whose characteristics are like this and whose conditions are even viler than that. Even then, it is not permissible to specify any group from among them by their identities, nor any single individual by name, until the matter is clearly revealed through observation and direct witnessing, such that its description leaves no room for interpretation. And it is not permissible for people to follow each other in reporting such things until the matter is proven before a judge of Sharia through a just witness.

Urdu Text: All this pertains to that group of Sufis whose characteristics are like this or even more vile than this, although it is not permissible to specify any group among them in terms of individuals, nor any particular person, until the matter becomes clear through observation and is manifest in such a way that there is no room for any doubt or interpretation in its description. And in reporting, it is not permissible for people to follow one another until some matter is proven before the Sharia judge through a just witness. Furthermore,

1 Musnad of Imam Ahmad bin Hanbal, Musnad of Abu Huraira (RA), Dar al-Fikr, Beirut, 2/502; Sahih al-Bukhari, Kitab al-Faraid, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/995; Sahih Muslim, Kitab al-Bir, Chapter: Prohibition of Ill-suspicion, Qadimi Kutub Khana,

Karachi, 2/312; Sunan Abi Dawood, Kitab al-Adab, 2/317 and Jami’ al-Tirmidhi, Chapters on Kindness, 2/20.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

अरबी: सबसे झूठी बात, इसे इमामों: मालिक, अल-शैख़ैन (बुखारी और मुस्लिम), अबू दाऊद और तिरमिज़ी ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है।

उर्दू पाठ: बात यह है (महान इमामों जैसे इमाम मालिक, बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद और तिरमिज़ी ने इसे हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है। - त)

इमाम, अल्लामा, आरिफ़ बिल्लाह, नासिह फी अल्लाह, सैयदी अब्दुल ग़नी नाबुलसी (क़ुद्दसा सिर्रहु) ने इस बहस में किसी विशेष व्यक्ति पर दिखावे और पाखंड का हुक्म लगाने के बारे में एक लंबा और शानदार व्याख्यान दिया, जिसका संक्षिप्त विवरण यह है कि सभी सूफ़ी एक जैसे नहीं होते, जैसे सभी विद्वान, फ़क़ीह और शिक्षक एक जैसे नहीं होते, जैसे सभी न्यायाधीश, सेनापति, मंत्री और सुल्तान समान नहीं होते; बल्कि उनमें नेक, सबसे नेक, भ्रष्ट और सबसे भ्रष्ट हर तरह के लोग होते हैं। अधूरे, अक्षम और अज्ञानी लोग मुसलमानों के दोष ढूँढते हैं, जबकि पूर्णता प्राप्त लोगों को केवल पूर्णता ही दिखाई देती है और वे दोषों को छिपाते हैं और उनकी अच्छी व्याख्या करते हैं; फिर उन्होंने फ़रमाया:

अरबी: यह सब सूफ़ियों के उस समूह के बारे में है जिनके गुण ऐसे हैं और जिनकी स्थिति इससे भी बदतर है। फिर भी, उनमें से किसी भी समूह को उनकी पहचान के आधार पर निर्दिष्ट करना जायज़ नहीं है, और न ही किसी विशेष व्यक्ति को नाम से, जब तक कि मामला अवलोकन और प्रत्यक्ष गवाही के माध्यम से स्पष्ट रूप से प्रकट न हो जाए, जिससे इसके वर्णन में व्याख्या की कोई गुंजाइश न रहे। और लोगों के लिए इस तरह की रिपोर्टिंग में एक-दूसरे का अनुसरण करना जायज़ नहीं है जब तक कि मामला शरीयत के न्यायाधीश के समक्ष एक न्यायप्रिय गवाह के माध्यम से साबित न हो जाए।

उर्दू पाठ: यह सब सूफ़ियों के उस समूह से संबंधित है जिनके गुण इस तरह या इससे भी अधिक घृणित हैं, हालाँकि व्यक्तियों के आधार पर उनमें से किसी भी समूह को निर्दिष्ट करना जायज़ नहीं है और न ही किसी विशेष व्यक्ति को, जब तक कि अवलोकन से मामला स्पष्ट न हो जाए और इस तरह प्रकट न हो जाए कि उसके वर्णन में किसी संदेह या व्याख्या की गुंजाइश न रहे। और खबर में लोगों का एक-दूसरे का अनुसरण करना जायज़ नहीं है जब तक कि शरीयत के न्यायाधीश के सामने किसी न्यायप्रिय गवाह के माध्यम से कोई बात साबित न हो जाए। इसके अतिरिक्त,

1 मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल, मुसनद अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु), दारुल फ़िक्र, बेरूत, 2/502; सहीह अल-बुखारी, किताबुल फ़राइज़, पुरानी कुतुब खाना, कराची, 2/995; सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर, अध्याय: बुरे संदेह की मनाही, पुरानी कुतुब खाना, कराची, 2/312; सुनन अबी दाऊद, किताबुल अदब, 2/317 और जामी' अत-तिरमिज़ी, अबवाबुल बिर, 2/20।

اکذب الحدیث، رواہ الائمۃ مالك والشّیخان و ابوداؤد والترمذی عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالی عنہ۔

بات ہے (ائمہ کرام مثلاً امام مالک، بخاری، مسلم، ابوداؤد اور ترمذی نے اس کو حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ہے۔ ت)

امام علامہ عارف باللہ ناصح فی اللہ سیدی عبدالغنی نابلسی قدس سرہ القدسی نے اس بحث میں بالتعیین کسی شخص کی نسبت حکم تصنّع ورياء لگا دینے پر ایک طویل وجلیل کلام میں اقامتِ قیامت فرمائی جس میں سے چند حرف کا خلاصہ یہ کہ سب صوفیہ یکساں نہیں، جیسے سب علماء وفقہاء ومدرسین ایک سے نہیں، جیسے سب قضاۃ وأمراء و وزراء وسلاطین برابر نہیں بلکہ ان میں صالح اصلح فاسد افسد سب طرح کے ہیں، ناقص قاصر جاہل، مسلمانوں کی عیب جوئی کرتے اور کاملوں کو کمال ہی نظر آتا اور عیب پوشی وتاویل فرماتے ہیں؛ پھر فرمایا:

ھذا کلہ في طائفۃ من المتصوفۃ اوصافھم کذلك و احوالھم اخبث من ذلك وان لم یجز تعیین طائفۃ منھم باعیانھم ولا شخص واحد بعینہ مالم ینکشف فیھم جلیلۃ الامر بالمشاھدۃ والعیان الذی لایحتمل التأویل في البیان ولایجوز تقلید الناس بعضھم بعضاً في الاخبار عن ذلك مالم یثبت بالبینۃ العادلۃ عند الحاکم

یہ سب کچھ صوفیاء کے اس گروہ سے متعلق ہے جن کے اوصاف اس طرح یا اس سے بھی خبیث تر ہیں اگر چہ ان میں سے کسی گروہ کی بلحاظِ اشخاص تعیین جائز نہیں اور نہ کسی شخص معین کی، جب تک مشاہدے سے امر واضح نہ ہو اور عیاں بھی ایسا ہو کہ جس کے بیان میں کسی شک اور تاویل کی گنجائش نہ ہو۔ اور خبر میں لوگوں کا ایک دوسرے کی تقلید کرنا جائز نہیں جب تک حاکم شرع کے روبرو کسی عادل گواہ کے ذریعے کوئی امر ثابت نہ ہو۔ علاوہ ازیں

1 مسند امام احمد بن حنبل مسند ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ دارالفکر بیروت ۲/ ۵۰۲، صحیح البخاری کتاب الفرائض قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۹۹۵، صحیح مسلم کتاب البر باب تحریم الظن قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۳۱۲، سنن ابی داؤد کتاب الادب ۲/ ۳۱۷ و جامع الترمذی ابواب البر ۲/ ۲۰

Fatwa Razawiyya Volume 24

The legal principle is that a judge also rules based on what is apparent, while the internal matters are known only to Allah Almighty. Thus, certainty is only reached through the apparent, and Allah knows the secrets best. As for the mass-transmitted news (tawatur) among people regarding this, it is disallowed because everyone's reliance in such cases is based on conjecture and estimation. The way people derive news from one another is such that if you asked each of them if they saw it, they would say, "I didn't see it, I only heard it." And regarding the one who claims, "I saw it," if you investigate their condition—meaning you probe—you would find them relying on guesses and illusory indications. Often, if you reflect, you will find that the source of such mass-transmitted news originates from one or two people, and even their statement is based on suspicion and accusation. Therefore, it is not permissible for anyone to say, "The sin of so-and-so is established for me by mass-transmission because many people told me so." This is because lying is prevalent among people, especially in our times, and there is a surplus of envy and enmity. Sometimes, someone fabricates a lie against a man about something he has no knowledge of and then informs the people about it.

फतावा रज़विया जिल्द 24

न्यायिक नियम यह है कि न्यायाधीश भी प्रत्यक्ष (ज़ाहिर) के आधार पर निर्णय करता है, और मामलों की आंतरिक वास्तविकता तो केवल अल्लाह सर्वशक्तिमान को ही ज्ञात है; इसलिए प्रत्यक्ष ही निश्चय का आधार हो सकता है और गुप्त रहस्यों को तो अल्लाह ही बेहतर जानता है। जहाँ तक इस विषय में लोगों के बीच एक-दूसरे से प्राप्त होने वाली लगातार सूचनाओं (तवातुर) की बात है, तो वह निषिद्ध है क्योंकि इसमें सभी का आधार अनुमान और अटकलबाज़ी है। लोगों का एक-दूसरे से सूचना प्राप्त करना इस प्रकार है कि यदि आप उनमें से प्रत्येक से उसके प्रत्यक्ष दर्शन (मुशाहिदे) के बारे में पूछें, तो वह कहेगा, "मैंने देखा नहीं, मैंने केवल सुना है।" और जो यह कहे कि "मैंने देखा है," यदि आप उसके दावे की छानबीन करें, तो आप पाएंगे कि उसका आधार भी अनुमान और कुछ काल्पनिक संकेतों पर है। विशेष रूप से जब आप विचार करेंगे, तो आप पाएंगे कि उस लगातार सूचना का स्रोत मूल रूप से एक या दो व्यक्ति हैं, और एक व्यक्ति का कथन भी संदेह और आरोप पर आधारित होता है। इसलिए, किसी व्यक्ति के लिए यह कहना जायज़ नहीं है कि "मेरे निकट फलां व्यक्ति का पाप तवातुर (लगातार सूचना) से सिद्ध है क्योंकि बहुत से लोगों ने मुझे ऐसा बताया है।" इसका कारण यह है कि लोगों में झूठ की अधिकता होती है, विशेष रूप से हमारे युग में ईर्ष्या और शत्रुता बहुत पाई जाती है। कभी-कभी कोई व्यक्ति किसी पर ऐसा झूठा आरोप लगाता है जिसके बारे में उसे स्वयं भी जानकारी नहीं होती और वह लोगों को इसकी सूचना दे देता है।

الشرعی علی ان الحاکم ایضاً یحکم بالظاھر، و بواطن الامور معلومۃ عند اللہ تعالٰی فلاتقطع الاظاھرا واللہ اعلم بالسرائر، واما خبر التواتر من الناس لبعضھم بعضا بذلک فھو ممنوع۔ لاستناد الکل فیہ الی الظن والتخمین واستفادۃ الخبر من بعضھم لبعض بحیث لوسألت کل واحد منھم من رؤیتہ ذلک لقال لم اعاینہ انما سمعت ومن قال عاینتہ تستکشف من حالہ فتراہ مستندا الی ظنون و امارات وھمیۃ وربما اذا تأملت وجدت خبر ذلک التواتر مستندا فی الاصل الی خبر واحد او اثنین والواحد ایضا قولہ مبنی علی الظن والتھمۃ فلا یجوز لاحد ان یقول ثبت عندی بالتواتر معصیۃ فلان لان الناس اخبرونی بذلک وھم کثیرون، وانما ذلک لغلبۃ الکذب فی الناس خصوصا فی زماننا، وکثرۃ الحسد و العداوۃ وربما یفتری احدھم علی رجل بمالا علم لہ بہ ویخبر الناس بذلک

حاکم بھی ظاہر پر حکم لگاتا ہے اور پوشیدہ و مخفی امور تو اللہ تعالیٰ ہی کو معلوم ہیں لہٰذا ظاہری محلِ یقین ہو سکتا ہے اور پوشیدہ بھیدوں کو تو اللہ تعالیٰ ہی خوب جانتا ہے۔ رہا یہ کہ اس باب میں لوگوں کا ایک دوسرے سے خبرِ تواتر کا وصول ، تو وہ ممنوع ہے کیونکہ اس میں سب کا استناد گمان اور اندازہ ہے۔ لوگوں کا ایک دوسرے سے استفادہ خبر، اس طریقے سے ہر ایک نے دوسرے سے اس کی رؤیت (مشاہدے) کا سوال کیا تو اس نے کہا میں نے نہیں دیکھا میں نے صرف سنا ہے اور جو یہ کہے میں نے دیکھا ہے اگر تم اس کے حال کا انکشاف کرو یعنی چھان بین کرو تو تمہیں معلوم ہو جائے گا کہ اس کی سند بھی گمان اور چند وہمی علامات پر ہے خصوصاً جب آپ غور وفکر کریں گے تو اس خبرِ متواتر کو ایک یا دو کی طرف منسوب پائیں گے ، اور ایک کا قول بھی ظن اور الزام و تہمت پر مبنی ہوگا لہٰذا کسی شخص کے لئے یہ کہنا جائز نہیں کہ میرے نزدیک فلاں آدمی کا گناہ تواتر سے ثابت ہے اس لئے کہ زیادہ تر لوگوں نے

مجھے یہی بتایا۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ لوگوں میں زیادہ تر جھوٹ ہوتا ہے خصوصاً ہمارے دور میں زیادہ حسد اور دشمنی پائی جاتی ہے۔ بسا اوقات کوئی شخص کسی پر ایسا افترا باندھتا ہے جس کا اسے خود بھی علم نہیں ہوتا اور وہ لوگوں کو اطلاع دیتا ہے

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Left Column - Arabic Text] And people report it, conveying the news to some who are deluded by their knowledge and expelled from the gates of Allah Almighty's grace. He says, "This reached me from so-and-so through recurrent transmission (tawatur)," yet the poor man does not realize that those who transmit the lie to him also transmit lies from him to others. After all this, even if a sinful act is proven against someone through tawatur or narration, it does not benefit anything because mentioning a sin among people in a disparaging manner is forbidden, for backbiting (Ghibah) is a forbidden truth. As for the intention to warn people when the news is already widespread among them, it is not considered valid. Yes, they said this is in cases where people have no prior knowledge of it, and he only gained knowledge of it from the news that was mutawatir to him. In any case, covering the faults of Muslims is what is required of one who is steadfast in religion. Al-Najm al-Ghazzi, may Allah Almighty have mercy on him, mentioned in "Husn al-Tanabbuh fi al-Tashabbuh" that it is among the character traits of the Jews and Christians to level accusations and attack the honor of one against whom [nothing] is proven.

[Right Column - Urdu Translation] Then people recount that matter with reference to him, and then this news reaches some such people who are arrogant in their knowledge and deluded, and are rejected from divine grace. Then he says, "I have received this matter continuously (bi-tawatur) from such and such a person," whereas the poor soul does not know that those who convey lies to him can also convey lies from him to others. After all these things, when a sin is proven against someone through tawatur or observation, then even then its mention should be stopped, because recounting someone's sin among people as backbiting is forbidden, as backbiting is forbidden even if true. But if he did this to warn and alert people while the news was already widespread and famous among the people, then his statement is unreliable. Yes, if they say something that people have no knowledge of, that is a different matter. This is applicable when he gains the benefit of knowledge from the report while the news of the people is mutawatir to him. In any case, covering the faults of Muslims is mandatory for those who possess steadfastness in religion. Thus, Imam Najm Ghazzi, may Allah Almighty have mercy on him, mentioned in "Husn al-Tanabbuh fi al-Tashabbuh" that it is among the morals of the Jews and the Christians that they accuse others...

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] और लोग उसे रिपोर्ट करते हैं, खबर उन कुछ लोगों तक पहुँचाते हैं जो अपने ज्ञान से भ्रमित हैं और अल्लाह सर्वशक्तिमान की कृपा के द्वारों से निष्कासित हैं। वह कहता है, "यह मुझ तक फलां-फलां से निरंतरता (तवातुर) के माध्यम से पहुँचा है," फिर भी बेचारे को यह एहसास नहीं होता कि जो उसे झूठ पहुँचाते हैं, वे उससे भी दूसरों तक झूठ पहुँचाते हैं। इस सब के बाद, यदि किसी के खिलाफ तवातुर या वर्णन के माध्यम से कोई पापपूर्ण कार्य सिद्ध हो जाता है, तो यह किसी काम का नहीं है क्योंकि लोगों के बीच अपमानजनक तरीके से पाप का उल्लेख करना वर्जित है, क्योंकि पीठ पीछे बुराई करना (गीबत) एक वर्जित सत्य है। जहाँ तक लोगों को चेतावनी देने का इरादा है जब खबर पहले से ही उनके बीच व्यापक हो, तो इसे मान्य नहीं माना जाता है। हाँ, उन्होंने कहा कि यह उन मामलों में है जहाँ लोगों को इसका कोई पूर्व ज्ञान नहीं है, और उसने केवल उस समाचार से इसके बारे में ज्ञान प्राप्त किया जो उसके लिए मुतवातिर था। किसी भी मामले में, मुसलमानों के दोषों को छिपाना ही उस व्यक्ति के लिए आवश्यक है जो धर्म में अडिग है। अन-नज्म अल-ग़ज़ी, अल्लाह सर्वशक्तिमान उन पर दया करे, ने "हुस्न अल-तनब्बुह फ़ी अल-तशब्बुह" में उल्लेख किया है कि यह यहूदियों और ईसाइयों के चरित्र लक्षणों में से है कि वे आरोप लगाते हैं और उसके सम्मान पर हमला करते हैं जिसके खिलाफ [कुछ भी] सिद्ध नहीं हुआ है।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद] फिर लोग उस बात को उसके हवाले से बयान करते हैं, फिर यह खबर कुछ ऐसे लोगों तक पहुँच जाती है जो अपने ज्ञान पर घमंड करने वाले और फरेब खाए हुए होते हैं और फ़ज़्ल-ए-इलाही से ठुकराए हुए होते हैं। फिर वह कहता है कि मुझे फलां व्यक्ति की तरफ से लगातार (बतवातुर) यह बात पहुँची है, हालांकि उस बेचारे को यह मालूम नहीं होता कि जो उसकी तरफ झूठ पहुँचाते हैं, वे उससे भी दूसरों तक झूठ पहुँचा सकते हैं। इन तमाम बातों के बाद जब किसी व्यक्ति से तवातुर या देखने के तरीके से गुनाह साबित हो जाए, तो फिर भी उसका ज़िक्र बंद कर दे क्योंकि लोगों में गीबत के तौर पर किसी के गुनाह का ज़िक्र करना हराम है क्योंकि गीबत सच होने पर भी हराम है। लेकिन अगर उसने लोगों को डराने और सचेत करने के लिए ऐसा किया जबकि खबर लोगों में फैली हुई और मशहूर है, तो उसकी बात गैर-मान्य है। हाँ, अगर वे ऐसी बात कहें जिसका लोगों को कोई ज्ञान नहीं होता, तो यह अलग बात है। यह उस समय है जब वह इस खबर से ज्ञान का लाभ प्राप्त करे जबकि लोगों की खबर उसके पास मुतवातिर हो। बहरहाल, मुसलमानों के ऐबों की पर्दापोशी उन लोगों पर लाज़िमी है जो दीन में अडिग रहते हैं, चुनांचे इमाम नज्म गज़ी

रहमतुल्लाह अलैहि ने "हुस्न अल-तनब्बुह फ़ी अल-तशब्बुह" में ज़िक्र किया कि यहूदियों और ईसाइयों के अखलाक में से यह है कि दूसरों को इल्ज़ाम...

पृष्ठ 109 का 720

[بایاں کالم - عربی متن] ویخبر الناس ینقلونه فیصل الخبر الی بعض المغرورین بعلمهم المطرودین عن ابواب فضل الله تعالی فیقول وصلنی هذا عن فلان بالتواتر ولا یعلم المسکین ان الذی ینقلون الیه الکذب ینقلون عنه ایضا الکذب لغیره وبعد هذا کله اذا ثبت فعل المعصیة من احد بطریق التواتر او الروایة لم یفد شیئا لان ذکره بمعصیة بین الناس علی وجه الذم حرام لان الغیبة صدق محرم اما قصد ان یحذر الناس والخبر شائع في الناس فغیر معتبر نعم قالوا ذلك فیما اذا لم یکن للناس علم به وهذا انما استفاد العلم به من خبر الناس المتواتر عنده وعلی کل حال فالستر لعورات المسلمین هو المتعین علی صاحب الاستقامة في الدین . ذکر النجم الغزی رحمه الله تعالی فی حسن التنبه في التشبه ان من اخلاق الیهود والنصاری الاتهام والوقوع فی عرض من لم یثبت

[دایاں کالم - اردو ترجمہ] پھر لوگ وہ بات اس کے حوالے سے بیان کرتے ہیں پھر یہ خبر بعض ایسے لوگوں تک پہنچ جاتی ہے جو اپنے علم پر مغرور اور فریب خوردہ ہوتے ہیں اور فضل خداوندی سے دھتکارے ہوئے ہوتے ہیں۔ پھر وہ کہتا ہے کہ مجھے فلاں شخص کی طرف سے بتواتر یہ بات پہنچی ہے حالانکہ اس بیچارے کو معلوم نہیں ہوتا کہ جو اس کی طرف جھوٹ نقل کرتے ہیں وہ اس سے بھی دوسروں تک جھوٹ نقل کر سکتے ہیں۔ ان تمام باتوں کے بعد جب کسی شخص سے بطریق تواتر یا مشاہدہ گناہ ثابت ہو جائے تو پھر بھی اس کا تذکرہ بند کر دے کیونکہ لوگوں میں بطور غیبت کسی کے گناہ کا تذکرہ حرام ہے اس لئے کہ غیبت سچی بھی حرام ہے لیکن اگر اس نے لوگوں کو ڈرانے اور چو کنا کرنے کے لئے ایسے کیا جبکہ خبر لوگوں میں پھیلی ہوئی اور مشہور ہے تو اس کی بات غیر معتبر ہے، ہاں اگر وہ ایسی बात کہیں جس کا لوگوں کو کوئی علم نہیں ہوتا یہ الگ بات ہے، یہ اس وقت ہے جب یہ خبر سے علم کا فائدہ حاصل کرے جب

کہ لوگوں کی خبر اس کے نزدیک متواتر ہو، بہر حال مسلمانوں کے عیوب کی پردہ پوشی ان لوگوں پر لازمی ہے جو دین میں استقامت رکھتے ہیں، چنانچہ امام نجم غزی رحمۃ اللہ علیہ تعالیٰ علیہ نے "حسن التنبه في التشبه" میں ذکر کیا کہ یہودیوں اور عیسائیوں کے اخلاق میں سے یہ ہے کہ دوسروں کو الزام

Fatawa Rizvia, Volume 24

... from him, and this is from delving into what does not concern him. Al-Tirmidhi and Ibn Majah narrated from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) that he said: The Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him and his family) said, "Among the excellences of a person's Islam is his leaving aside that which does not concern him." And Al-Tabarani narrated with a sound chain of narrators from Ibn Mas'ud (may Allah be pleased with him) that he said, "The person with the greatest sins on the Day of Resurrection will be the one who delved most into falsehood." Ibn Abi al-Dunya narrated it in "Al-Samt" (Silence) with a chain whose narrators are trustworthy from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) as a Mursal Hadith (without a continuous chain back to a companion). It is mentioned in "Al-Ihya," and reference is made to it by the words of Allah the Almighty: "And we used to indulge in vain talk with those who indulged in it." Al-Bayhaqi narrated in "Ash-Shu'ab" from Aisha (may Allah be pleased with her) that she said: The Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him) said, "The victim of a theft does not cease to accuse until he becomes a greater sinner than the thief." Narrated by Imam Ahmad, the two Sheikhs (Bukhari and Muslim), and Al-Nasa'i.

... be placed on them and their honor be attacked and delving into meaningless and pointless talk be done. Accordingly, Imam Tirmidhi and Ibn Majah narrated from Hazrat Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) that he said that the presence of the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him and his family) is that one of the Islamic virtues of a person is that he should abandon meaningless and pointless works. Imam Tabarani narrated with a sound chain of narrators from Hazrat Abdullah bin Mas'ud (may Allah be pleased with him) that he said that on the Day of Judgment, the greatest sinner among all people will be the one who most enters into falsehood. Ibn Abi al-Dunya narrated this as a Mursal (i.e., without a chain) from the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) in the chapter of Silence. With such chains that the narrators are authentic and reliable. And in this command of Allah the Almighty, there is a reference to the fact that we stayed with those who stayed. Imam Bayhaqi narrated in 'Shu'ab al-Iman' from Sayyidah Aisha Siddiqa (may Allah be pleased with her) that the Mother of the Believers said that the Holy Messenger (may Allah's peace and blessings be upon him) said that the one stolen from (the person whose property was stolen) will always remain under suspicion until he becomes a greater criminal than the thief.

फ़तवा रिज़विया, खंड 24

... उससे, और यह उन बातों में पड़ना है जो उससे संबंधित नहीं हैं। अल-तिर्मिज़ी और इब्न माजा ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है कि उन्होंने कहा: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "एक व्यक्ति के इस्लाम की खूबियों में से एक यह है कि वह उन चीज़ों को छोड़ दे जो उससे संबंधित नहीं हैं।" और अल-तबरानी ने एक सही सनद के साथ इब्न मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है कि उन्होंने कहा, "कयामत के दिन सबसे बड़ा गुनहगार वह व्यक्ति होगा जो सबसे ज़्यादा झूठ और बेतुकी बातों में पड़ा रहता था।" इब्न अबी अल-दुनिया ने इसे 'अल-साम्त' (खामोशी) में भरोसेमंद रावियों की सनद के साथ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से मुरसल हदीस के रूप में रिवायत किया है। 'अल-इह्या' में इसका उल्लेख है, और अल्लाह तआला के इस फरमान में इसी ओर इशारा है: "और हम बेकार की बातें करने वालों के साथ बेकार की बातें किया करते थे।" अल-बैहकी ने 'अश-शुअब' में हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रिवायत की है कि उन्होंने कहा: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "जिसका माल चोरी हो गया हो, वह तब तक इल्ज़ाम लगाता रहता है जब तक कि वह चोर से भी बड़ा अपराधी नहीं बन जाता।" इसे इमाम अहमद, दोनों शेखों (बुखारी और मुस्लिम) और अल-नसाई ने रिवायत किया है।

...लगाए जाएं और उनकी इज्जत में हाथ डाला जाए और लायती व बेमकसद बातों में गोता ज़नी की जाए। चुनांचे इमाम तिर्मिज़ी और इब्न माजा ने हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की है कि उन्होंने फरमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम का इरशाद है कि आदमी की इस्लामी खूबियों में से एक यह है कि लायती और बेमकसद कामों को तर्क कर दे। इमाम तबरानी ने बसंदे सही हज़रत अब्दुल्ला इब्न मसूद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की है उन्होंने फरमाया कि कयामत के दिन सब लोगों से बड़ा गुनहगार वह शख्स होगा जो सबसे ज़्यादा बातिल में घुसता रहता है। इब्न अबी दुनिया ने खामोशी के बाब में आँहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से इसको मुरसल (यानी बगैर सनद) रिवायत किया। ऐसी असनाद से कि रुवाते मुस्तनद और मोतबर हैं। और अल्लाह तआला के इस इरशाद में इसी तरफ इशारा है कि हम घुसे रहने वालों के साथ घुसे रहे हैं। इमाम बैहकी ने शोबुल ईमान में सैयदा आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत फरमाई कि माई साहिबा ने फरमाया कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि हमेशा मसरूक अनहु (वह शख्स जिसका माल चोरी हुआ) तोहमत में रहेगा यहाँ तक कि वह चोर से बड़ा मुजरिम।

عنہ وھذا من الخوض فیما لا یعنیه روی الترمذی وابن ماجة عن ابی هریرة رضی الله تعالی عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم من حسن اسلام المرء ترکه مالا یعنیه، وروی الطبرانی بسند صحیح عن ابن مسعود رضی الله تعالی عنه قال اعظم الناس خطایا یوم القیمة اکثرهم خوضاً في الباطل ورواه ابن ابی الدنیا فی الصمت بأسناد رجاله ثقات عن النبی صلی تعالی علیه وسلم مرسلاً قال فی الاحیاء و الیه الاشارة بقوله تعالی "وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَائِضِينَ" وروی البیهقی فی الشعب عن عائشة رضی الله تعالی عنها قالت قال رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم لا یزول المسروق منه فی تهمة حتی یکون اعظم جرماً من السارق وروی الامام احمد والشیخان والنسائی۔

لگائے جائیں اور ان کی عزت میں ہاتھ ڈالا جائے اور لایعنی وبے مقصد باتوں میں غوطہ زنی کی جائے۔ چنانچہ امام ترمذی اور ابن ماجہ نے حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی ہے کہ انہوں نے فرمایا کہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا ارشاد ہے کہ آدمی کی اسلامی خوبیوں میں سے ایک یہ ہے کہ لایعنی اور بے مقصد کاموں کو ترک کر دے۔ امام طبرانی نے بسند صحیح حضرت عبداللہ ابن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی ہے انہوں نے فرمایا کہ قیامت کے دن سب لوگوں سے بڑا گنہگار وہ شخص ہوگا جو سب سے زیادہ باطل میں گھستا رہتا ہے۔ ابن ابی الدنیا نے خاموشی کے باب میں آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے اس کو مرسل (یعنی بغیر سند) روایت کیا۔ ایسی اسناد سے کہ رواۃ مستند اور معتبر ہیں۔ اور اللہ تعالیٰ کے اس ارشاد میں اسی طرف اشارہ ہے کہ ہم گھسے رہنے والوں کے ساتھ گھسے رہے ہیں۔ امام بیہقی نے شعب الایمان میں سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت فرمائی کہ مائی صاحبہ نے

فرمایا کہ حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ ہمیشہ مسروق عنہ (وہ شخص جس کا مال چوری ہوا) تہمت میں رہے گا یہاں تک کہ وہ چور سے بڑا مجرم۔

Fatawa Razawiya, Volume 24

[Top Section - Right Column (Urdu Translation and Advice)]: ...will become. Imam Ahmad, Bukhari, Muslim, Nasai, and Ibn Majah have narrated from the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) via Abu Huraira that Prophet Isa, son of Maryam (peace be upon them both), saw a person stealing and asked, "Did you steal?" He immediately said, "Never so, by that God besides Whom there is no true deity." Prophet Isa said, "I believed in Allah and I belied my eyes." [End] Oh, beware of suspecting anyone's right, even if it is with a single word. And be careful not to start joining those who engage in falsehood, especially concerning the poor Sufis. [End of selection] Seeking blessings from the words of the guided well-wishers, these few words are a kind of promise for my soul and for the Muslims. Allah Almighty, Pure and Exalted, is the Greatest Knower. (T)

[Top Section - Left Column (Arabic Original Text)]: And Ibn Majah from Abu Huraira (may Allah be pleased with him) from the Prophet (may Allah Almighty send peace and blessings upon him) who said: Isa son of Maryam (peace be upon them both) saw a man stealing and said: "Did you steal?" He said: "No, by Allah, besides Whom there is no god but Him." Isa said: "I believe in Allah and I have belied my eyes." And this character is very rare. End. So beware of falling into [wronging] someone's right, even with a word, and beware of engaging with those who engage in idle talk, especially regarding the poor Sufis. End of the selection to obtain blessing by the words of the advising guides and a preparation for myself and for the Muslims. And Allah, Glorified and Exalted, knows best.

Mas'ala 13: Questioned by Maulvi Nosha Ali Sahib, Rabi' al-Awwal 1317 AH What do the scholars of religion say regarding this issue: that many people, when the mango season arrives, go to orchards to eat mangoes and throw mango pits at each other, engaging in play and amusement. How is this act of theirs? Is it permissible or impermissible? And in case of non-permissibility, is it forbidden (haram), an innovation (bid'ah), or disliked (makruh)? And in case of being an innovation, is it a good innovation (bid'ah hasanah) or an evil one (bid'ah sayyi'ah)? Clarify the answer with references to books and you shall be rewarded on the Day of Reckoning. (State the answer with book references and gain reward on the day of judgment. T)

[1] Al-Hadiqa al-Nadiyya Sharh al-Tariqa al-Muhammadiyya, Category Nine, Maktaba Nooria Razavia, Faisalabad 2/521 to 523

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

[शीर्ष खंड - दायां कॉलम (उर्दू अनुवाद और सलाह)]: ...हो जाएगा। इमाम अहमद, बुख़ारी, मुस्लिम, नसाई और इब्न माजा ने हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से हज़रत अबू हुरैरा के माध्यम से रिवायत की है कि हज़रत ईसा इब्न मरियम (अलैहिमुस्सलाम) ने एक व्यक्ति को चोरी करते देखा और पूछा, "क्या तुमने चोरी की?" उसने तुरंत कहा, "बिल्कुल नहीं, उस खुदा की कसम जिसके सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं है।" हज़रत ईसा ने फरमाया, "मैं अल्लाह पर ईमान लाया और मैंने अपनी आँखों को झुठलाया।" [समाप्त] ओह, किसी के हक में शक करने से बचें, चाहे वह एक ही शब्द से हो। और इस बात से होशियार रहें कि आप बेकार की बातों में पड़ने वालों के साथ न मिल जाएं खासकर गरीब सूफियों के हक में। [संग्रह का अंत] नेक सलाहकारों के शब्दों से बरकत हासिल करने के लिए, ये चंद गिने-चुने शब्द मेरे नफ़्स और मुसलमानों के लिए एक तरह का वादा हैं। अल्लाह तआला पाक और बरतर सबसे बड़ा जानने वाला है। (त)

[शीर्ष खंड - बायां कॉलम (अरबी मूल पाठ)]: और इब्न माजा ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से और उन्होंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत किया कि: ईसा इब्न मरियम (अलैहिमुस्सलाम) ने एक आदमी को चोरी करते देखा और कहा: "क्या तुमने चोरी की?" उसने कहा: "नहीं, खुदा की कसम, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं है।" ईसा ने कहा: "मैं खुदा पर ईमान लाया और मैंने अपनी आंखों को झुठलाया।" और यह स्वभाव बहुत दुर्लभ है। समाप्त। इसलिए किसी के हक के बारे में गलत बोलने से बचें, चाहे वह एक शब्द ही क्यों न हो, और बेकार की बातों में हिस्सा लेने वालों से सावधान रहें, खासकर गरीब सूफियों के बारे में। मार्गदर्शक सलाहकारों के शब्दों से बरकत प्राप्त करने के लिए और अपने और मुसलमानों के लिए एक तैयारी के रूप में यह संग्रह है। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 13: प्रेषक मौलवी नोशा अली साहब, रबी-उल-अव्वल 1317 हिजरी दीन के उलेमा इस मसले में क्या फरमाते हैं कि अक्सर लोग जब आम का मौसम आता है तो बागों में जाकर आम खाते हैं और आपस में एक-दूसरे को आम की गुठलियां मारते हैं और खेल-कूद में मग्न हो जाते हैं, उनका यह कार्य कैसा है, जायज़ है या नाजायज़? और जायज़ न होने की सूरत में क्या यह हराम है, बिदअत है या मकरूह? और बिदअत होने की सूरत में क्या यह बिदअते हसना (अच्छी बिदअत) है या सय्यिआ (बुरी बिदअत)? किताबों के हवाले से उत्तर स्पष्ट करें और हिसाब के दिन सवाब पायें। (किताबों के हवाले से जवाब बयान फ़रमाएं और रोज़-ए-हिसाब अज्र पायें। त)

[1] अल-हदीक़तुल नदिया शरह अत-तरीक़तुल मुहम्मदिया, श्रेणी नौ, मकतबा नूरिया रज़विया फ़ैसलाबाद 2/521 से 523

पेज 111 का 720

وابن ماجة عن ابی هریرة رضی الله تعالی عنه عن النبی صلی الله تعالی علیه وسلم قال رأی عیسی ابن مریم علیهما الصلوة والسلام رجلا یسرق فقال اسرقت قال کلا والله الذی لا اله الا هو فقال عیسی آمنت بالله وکذبت عینی، وهذا الخلق عزیز جدا انتهی فایاك ان تقع في حق احد ولو بکلمة واحذر ان تخوض مع الخائضین خصوصاً في حق فقراء الصوفیة اه بالالتقاط تحصیلا للبرکة بکلمات الهداة الناصحین وعدة لنفسی وللمسلمین، والله سبحنه وتعالی اعلم۔ | بن جائے گا۔ امام احمد، بخاری، مسلم، نسائی اور ابنِ ماجہ نے حضورِ اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے بواسطہ ابوہریرہ روایت فرمائی ہے کہ حضرت عیسٰی ابنِ مریم علیہما الصلوٰۃ والسلام نے ایک شخص کو چوری کرتے ہوئے دیکھا تو فرمایا کیا تو نے چوری کی؟ اس نے جھٹ کہا ہر گز ایسا نہیں، اس خدا تعالی کی قسم جس کے سوا کوئی سچا معبود نہیں۔ حضرت عیسٰی نے فرمایا میں اللہ تعالی پر ایمان لایا اور میں نے اپنی آنکھوں کو جھٹلایا یہ لوگ یقینا پیارے ہیں اھ کسی کے حق میں شبہ کرنے سے بچو اگرچہ کسی ایک ہی کلمہ سے ہو۔ اور اس بات سے ہوشیار رہو کہ باطل میں شروع ہونے والوں کے ساتھ شروع ہونے لگو خصوصاً فقراء صوفیہ کے حق میں، اھ بالالتقاط ہدایت یافتہ خیر خواہ ہوں کے کلمات سے حصولِ برکت کرتے ہوئے اور گنتی کے چند کلمات میرے نفس اور مسلمانوں کے لئے ایک گونہ وعدہ ہیں۔ اللہ تعالٰی پاک اور برتر سب سے بڑا عالم ہے۔ (ت)

مسئلہ ۱۳: مسئولہ مولوی نوشہ علی صاحب ربیع الاول ۱۳۱۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اکثر لوگ جب فصلِ آم آتی ہے تو باغوں کو جا کر آم کھاتے ہیں اور آپس میں ایک دوسرے کے آموں کی گٹھلیاں مارتے ہیں اور لہو و لعب میں مشغول ہوتے ہیں، آیا یہ فعل ان کا کیسا ہے، جائز یا ناجائز؟ اور بر تقدیر عدم جواز کے حرام ہے یا بدعت ہے یا مکروہ؟ اور بر تقدیر

بدعت کے بدعتِ حسنہ ہے یا سیئہ؟ بینوا الجواب بحوالۃ الکتب وتوجروا یوم الحساب (بحوالہ کتب جواب بیان فرمائیے اور روزِ حساب اجر پائیے۔ ت)

[1] الحدیقۃ الندیۃ شرح الطریقۃ المحمدیۃ الصنف التاسع مکتبہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲/ ۵۲۱ تا ۵۲۳

The Answer:

Throwing seeds or pebbles is impermissible and forbidden. It is narrated in Musnad Imam Ahmad, Sahih Bukhari, Sahih Muslim, Sunan Abi Dawood, Sunan Nasa'i, and Sunan Ibn Majah from Hazrat Abdullah bin Mughaffal Mazni (may Allah be pleased with him):

Arabic	Urdu Translation
The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forbade 'al-khadhf' (flicking pebbles/ seeds) and said: "It neither kills game nor injures an enemy, but it gouges out an eye and breaks a tooth."	That is, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forbade flicking pebbles or seeds and said that it can neither be used to attack an enemy nor to hunt an animal; its only result is that it pokes out an eye or breaks a tooth.
In *At-Taysir*: 'Al-khadhf' with two dotted letters (kh and dh) and ending with 'f' (which is also dotted) means throwing pebbles or seeds because it gouges out the eye and does not kill game.	It is mentioned in *Taysir* that in the word "al-khadhf," the letters 'Kh' and 'Dh' are both dotted, and the final letter 'F' also has a dot. Its meaning is to throw seeds etc.

And if peers and friends occasionally engage in friendly play with peels merely for lightheartedness, in which there is absolutely no harm to any religious sanctity or dignity, neither currently nor in the future, then it is permissible. It is mentioned in *Al-Alamgiriyya*:

Arabic	Urdu Translation
Judge Imam Malik al-Muluk said: The game played by youth in summer days with watermelons, where they hit each other, is permissible and not reprehensible. Thus it is in *Jawahir al-Fatawa* in the sixth chapter.	Qazi Imam Malik al-Muluk said that the game played by youth in the summer season with melons, where they throw melons at each other, is permissible and not a sin. It is mentioned similarly in the sixth chapter of *Jawahir al-Fatawa*. (T)

Footnotes: 1. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Adab, Chapter on Al-Khadhf, Qadimi Kutub Khana 2/919; Sahih Muslim, Kitab al-Sayd, Chapter on Al-Khadhf, Qadimi Kutub Khana 2/152; Sunan Abi Dawood, Kitab al-Adab, Chapter on Al-Khadhf, Aftab-e-Alam Press Lahore 2/358. 2. At-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir, under the Hadith prohibiting

al-khadhf, Maktaba al-Imam al-Shafi'i Riyadh 2/466. 3. Fatawa Hindiyya, Kitab al-Karahiya, Chapter 17, Noorani Kutub Khana Peshawar 5/352.

उत्तर:

गुठलियां मारना नाजायज़ और मना है। मुसनद इमाम अहमद, सही बुखारी, सही मुस्लिम, सुनन अबी दाऊद, सुनन नसाई और सुनन इब्न माजा में हजरत अब्दुल्ला बिन मुग़फ़्फ़ल मज़नी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है:

अरबी

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने 'अल-खज़फ़' (कंकड़ या गुठली फेंकना) से मना किया और फ़रमाया: "यह न तो शिकार मारता है और न ही दुश्मन को चोट पहुँचाता है, बल्कि यह आँख फोड़ देता है और दाँत तोड़ देता है।"

'अत-तयसीर' में है: 'अल-खज़फ़' (दो नुक्ते वाले अक्षरों 'ख़' और 'ज़' के साथ और अंत में अक्षर 'फ़' है, उस पर भी नुक्ता है) का अर्थ कंकड़ या गुठली फेंकना है क्योंकि यह आँख फोड़ देता है और शिकार नहीं मारता।

उर्दू अनुवाद

यानी अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कंकड़ या गुठली फेंक कर मारने से मना किया और फ़रमाया कि इससे न दुश्मन पर वार हो सके और न जानवर का शिकार, इसका परिणाम यही है कि आँख फोड़ दे या दाँत तोड़ दे।

'तयसीर' में है कि "अल-खज़फ़" में दो अक्षर "ख़" और "ज़" दोनों नुक्ते वाले हैं और आखिर में अक्षर "फ़" है उस पर भी नुक्ता है, इसके अर्थ हैं गुठली वगैरह फेंकना।

और अगर कभी-कभार हम-उम्र और हम-मर्तबा लोग महज़ दिल बहलाने के लिए आपस में छिलकों से दोस्ताना मज़ाक करें, जिसमें वास्तव में किसी धार्मिक मर्यादा या गरिमा को न वर्तमान में और न ही भविष्य में कोई नुकसान हो, तो वह जायज़ है। 'आलमगीरी' में है:

अरबी

क़ाज़ी इमाम मलिक अल-मुलूक ने फ़रमाया: गर्मियों के दिनों में नौजवानों का तरबूज़ों के साथ खेला जाने वाला खेल, जिसमें वे एक-दूसरे को

उर्दू अनुवाद

क़ाज़ी इमाम मलिक अल-मुलूक ने फ़रमाया कि वह खेल जो गर्मियों के मौसम में नौजवान खरबूज़ों के साथ खेलते हैं, एक-दूसरे को खरबूज़े मारते हैं,

अरबी	उर्दू अनुवाद
मारते हैं, जायज़ है और निंदनीय नहीं है। इसी तरह 'जवाहरुल फ़तावा' के छठे अध्याय में है।	यह खेल जायज़ है, गुनाह नहीं। 'जवाहरुल फ़तावा' के छठे अध्याय में इसी तरह उल्लेखित है। (त)

पाद-टिप्पणियाँ: 1. सही अल-बुखारी, किताबुल अदब, बाब अल-खज़फ़, कदीमी कुतुब खाना 2/919; सही मुस्लिम, किताबुस सैद, बाब अल-खज़फ़, कदीमी कुतुब खाना 2/152; सुनन अबी दाऊद, किताबुल अदब, बाब अल-खज़फ़, आफताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 2/358। 2. अत-तयसीर शरह अल-जामि' अस-सगीर, अल-खज़फ़ की मनाही वाली हदीस के तहत, मकतबा अल-इमाम अल-शाफ़ई रियाद 2/466। 3. फ़तावा हिंदिया, किताबुल कराहिया, अध्याय 17, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 5/352।

पृष्ठ 112/720

الجواب:

گٹھلیاں مارنا نا جائز و ممنوع ہے مسند امام احمد و صحیح بخاری و مسلم و سنن ابی داؤد و سنن نسائی و سنن ابن ماجہ میں حضرت عبداللہ بن مغفل مزنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی:

عربی متن	اردو ترجمہ و تشریح
قال نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم عن الخذف وقال انه لا يقتل الصيد ولا ينكاء العدو وانه يفقأ العين ويكسر السن-	یعنی رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے غلایا گٹھلی کنکری پھینک کر مارنے سے منع کیا اور فرمایا اس سے نہ دشمن پر وار ہو سکے نہ جانور کا شکار، اس کا نتیجہ یہی ہے کہ آنکھ پھوڑ دے یا دانت توڑ دے۔
في التيسير الخذف ببعجبتين وفاء الرمى بحصاة اونواة لانه يفقأ العين ولا يقتل الصيد-	تیسیر میں ہے "الخذف" میں دو حروف "خ" اور "ذ" دونوں نقطے والے ہیں اور آخر میں حرف "ف" ہے اس پر بھی نقطہ ہے اس کے معنی ہیں گٹھلی وغیرہ پھینکنا۔

اور صرف چھلکوں سے ہم عمر ہم مرتبہ لوگ نادراً محض تطیب قلب کی طور پر باہم مزاح دوستانہ کریں جس میں اصلاً کسی حرمت یا حشمت دینی کا ضرر حالاً یا مالاً نہ ہو تو مباح ہے۔

عالمگیری میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
قال القاضى الامام ملك الملوك، اللعب الذى يلعب الشبان ايام الصيف بالبطيخ بان	قاضی امام ملک الملوک نے فرمایا وہ کھیل جو موسم گرما میں نوجوان خربوزوں کے ساتھ کھیلتے ہیں ایک

عربی متن	اردو ترجمہ
يضرب بعضهم بعضا مباح غير مستنكر كذا في جواهر الفتاوى في الباب السادس-	دوسرے کو خربوزے مارتے ہیں یہ کھیل مباح ہے گناہ نہیں۔ جواہر الفتاویٰ کے چھٹے باب میں اسی طرح مذکور ہے۔ (ت)

حواشی: 1. صحیح البخاری کتاب الادب باب الخذف قدیمی کتب خانہ ۲/ ۹۱۹، صحیح مسلم کتاب الصید باب الخذف قدیمی کتب خانہ ۲/ ۱۵۲، سنن ابی داؤد کتاب الادب باب الخذف آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۳۵۸ 2. التیسیر شرح الجامع الصغیر تحت حدیث نہی عن الخذف مکتبۃ الامام الشافعی ریاض ۲/ ۴۶۶ 3. فتاویٰ ہندیہ کتاب الکراہیۃ الباب السابع عشر نورانی کتب خانہ پشاور ۵/ ۳۵۲

Fatawa Razawiyya Volume 24

In the noble Awarif al-Ma'arif, it is mentioned:

It is narrated by Bakr bin Abdullah that the companions of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) used to throw melons at each other (as a form of recreation and play). When these are the facts, then in reality, they are the perfect men. When something is thrown, it is said 'Badaha Yabdahu', meaning the noble companions used to throw melons at each other. This was mentioned by the author of Awarif al-Ma'arif in the thirtieth chapter. And Allah the Exalted is the purest, most high, and the greatest Knower. (T)

It is narrated by Bakr bin Abdullah that the companions of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) used to throw melons at each other (for recreation and play). When these are the facts, then in reality, they are the perfect men. When something is thrown, it is said 'Badaha Yabdahu', meaning the noble companions used to throw melons at each other. This was mentioned by the author of Awarif al-Ma'arif in the thirtieth chapter. Allah the Exalted is Pure, Sublime, and the greatest Knower. (T)

Problem 14: From Pilibhit, Bazar Damandganj, shop of Khalil-ur-Rahman Perfumer, sent by Muhammad Mazhar al-Islam Sahib, 22 Rajab 1318 AH. What do the scholars of religion and the jurists of the clear Shari'ah say regarding the following matter: In the 'Urs' (commemoration) of the elders of religion, lighting fireworks at night and excessive illumination without necessity, and distributing the food cooked for the purpose of 'Isal-e-Thawab' (conveying reward) by scattering it so that several mounds (units of weight) of it are ruined under the feet of those grabbing it and mixed with the dust; the organizers of the 'Urs' consider this act a source of pride and a cause of blessing. What is its ruling in the lofty Shari'ah? Explain and be rewarded.

Answer: Fireworks are extravagance (israf), and extravagance is forbidden (haram). Scattering food in such a way is disrespect, and disrespect leads to deprivation. It is a waste of wealth, and waste is forbidden. Illumination, if it is devoid of Shari'ah benefits, is also extravagance. And Allah the Exalted knows best.

Problem 15: From Bengal, District Kamrulla, Village Harimangal, sent by Maulvi Abdul Hamid Sahib, 2 Rabi-ul-Awwal Sharif. What do the scholars of religion say in this matter whether playing cards and chess is permissible or not? Explain so you may be rewarded by Allah (State the matter and receive reward from Allah - T).

1. Awarif al-Ma'arif, Chapter Thirty, Maktabah al-Mashhad al-Husayni, Cairo, p. 142.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

'अवारिफ़ अल-मआरिफ़' शरीफ़ में उल्लेख है:

बक्र बिन अब्दुल्ला से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सहाबा (मनोरंजन और खेल के रूप में) एक-दूसरे पर खरबूज़े फेंका करते थे। जब हकीकत यह है तो वास्तव में वे ही पूर्ण पुरुष हैं। जब कोई चीज़ फेंकी जाती है तो उसे 'बदहा यबदहु' कहा जाता है, जिसका अर्थ है कि महान सहाबा एक-दूसरे पर खरबूज़े फेंका करते थे। इसका उल्लेख 'अवारिफ़ अल-मआरिफ़' के लेखक ने तीसवें अध्याय में किया है। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला सबसे बेहतर जानने वाला है। (त)

बक्र बिन अब्दुल्ला से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सहाबा (बतौर तफ़रीह व खेल कूद) एक दूसरे पर खरबूज़े फेंका करते थे जब हक़ाइक़ ये हैं तो फिर दर हक़ीक़त वही कामिल मर्द हैं। जब कोई चीज़ फेंकी जाए तो कहा जाता है 'बदहा यबदहु' यानी सहाबा किराम एक दूसरे पर खरबूज़े फेंका करते थे। इसे साहब-ए-अवारिफ़ अल-मआरिफ़ ने तीसवें बाब में ज़िक्र फ़रमाया। अल्लाह तआला पाक, बुलंद-ओ-बाला और सब से बड़ा आलिम है। (त)

मसला 14: पीलीभीत बाज़ार डमनडगंज, खलील-उर-रहमान इत्र विक्रेता की दुकान से, प्रेषक मुहम्मद मज़हर अल-इस्लाम साहिब, 22 रजब 1318 हिजरी। दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या कहते हैं: बुज़ुर्गों के उर्स में रात को आतिशबाज़ी जलाना और बिना ज़रूरत अत्यधिक रोशनी करना, और जो खाना ईसाल-ए-सवाब की नियत से पकाया गया हो उसे इस तरह लुटाना कि वह लूटने वालों के पैरों तले कई मन खराब होकर मिट्टी में मिल जाए, उर्स के आयोजक इस कार्य को गर्व और बरकत का कारण समझते हैं। आली शरीयत में इसका क्या हुक्म है? बयान फरमाएं ताकि आप अज्र पाएं।

जवाब: आतिशबाज़ी इसराफ़ (फ़िज़ूलखर्ची) है और इसराफ़ हराम है। खाने को इस तरह लुटाना बे-अदबी है और बे-अदबी महरूमी है। यह माल का ज़ियाँ (बर्बादी) है और ज़ियाँ हराम है। रोशनी, अगर शरई फायदों से खाली हो, तो वह भी इसराफ़ है। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला सबसे बेहतर जानने वाला है।

मसला 15: बंगाल, ज़िला कमरल्ला, गाँव हरीमंगल से, प्रेषक मौलवी अब्दुल हमीद साहिब, 2 रबी-उल-अव्वल शरीफ़। दीन के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि ताश और शतरंज खेलना जायज़ है या नहीं? बयान फरमाएं ताकि अल्लाह के यहाँ से अज्र पाएं(बयान फरमाएं और अल्लाह के यहाँ से अज्र व सवाब पाएं- त)।

---

1. अवारिफ़ अल-मआरिफ़, तीसवाँ अध्याय, मकतबा अल-मशहद अल-हुसैनी, काहिरा, पृष्ठ 142।

عوارف المعارف شریف میں ہے:

روی بکر بن عبداللہ قال کان اصحاب رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم یتبادحون بالبطیخ فإذا کانت الحقائق کانواھم الرجال یقال بدح یبدح اذا رمی ای یترامون بالبطیخ۱ اھ ذکرہ قدس سرہ فی الباب الثلثین۔واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم۔

بکر بن عبد اللہ سے روایت ہے کہ حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے صحابہ (بطور تفریح و کھیل کود) ایک دوسرے پر خربوزے پھینکا کرتے تھے جب حقائق یہ ہیں تو پھر در حقیقت وہی کامل مرد ہیں۔ جب کوئی چیز پھینکی جائے تو کہا جاتا ہے بَدَحَ یَبْدَحُ یعنی صحابہ کرام ایک دوسرے پر خربوزے پھینکا کرتے تھے اھ اس کو صاحب عوارف المعارف نے تیسویں باب میں ذکر فرمایا۔ اللہ تعالیٰ پاک، بلند و بالا اور سب سے بڑا عالم ہے۔ (ت)

مسئلہ ۱۴: از پیلی بھیت بازار ڈمنڈ گنج دکان خلیل الرحمن عطر فروش مرسلہ محمد مظہر الاسلام صاحب ۲۲ رجب ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین مسئلہ مندرجہ ذیل میں: بزرگان دین کے عرس میں شب کو آتشبازی جلانا اور روشنی بکثرت کرنا بلا حاجت اور جو کھانا بغرض ایصال ثواب پکایا گیا ہو اس کو لٹانا کہ جو لوٹنے والوں کے پیروں میں کئی من خراب ہو کر مٹی میں مل گیا ہو اس فعل کو بانیان عرس موجب فخر اور باعث برکت قیاس کرتے ہیں، شریعت عالی میں اس کا کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: آتشبازی اسراف ہے اور اسراف حرام، کھانے کا ایسا لٹانا بے ادبی ہے اور بے ادبی محرومی ہے، تضیع مال ہے، اور تضیع حرام، روشنی اگر مصالح شرعیہ سے خالی ہو تو وہ بھی اسراف ہے، واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۵: از بنگالہ ضلع کمرلہ موضع حریمنگل مرسلہ مولوی عبدالحمید صاحب ۲ ربیع الاول شریف کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ تاش و شطرنج کھیلنا جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا عند اللہ (بیان فرماؤ اللہ کے ہاں سے اجر وثواب پاؤ۔ ت)

---

۱ عوارف المعارف الباب الثلاثون مکتبۃ المشہد الحسینی القاہرہ ص ۱۴۲

Fatawa Razawiyya Volume 24

Answer: Both (playing cards and chess) are impermissible, and cards are a greater sin and forbidden because they contain pictures. 'The issue of chess is explained in detail in al-Durr 1 and others, under the chapters of Prohibition and Testimonies, and the correct view is the absolute prohibition as clarified in Radd al-Muhtar 2.' And Allah Almighty knows best, and His knowledge is most complete and most firm. (T)

Problem 16: 28 Rabi al-Akhir Sharif 1320 AH. Questioner: Sheikh Shaukat Ali Sahib. What do the scholars of religion and the muftis of the clear Sharia say in this matter: A friend of mine came and said to me, 'Let's go, there is an Urs somewhere.' I went there and saw many people, and qawwali was being performed in such a way that one drum and two sarangis were being played. A few qawwals were reciting poetry in the honor of Piran-e-Pir Dastagir and singing verses of praise (naat) for the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) and verses in honor of the saints (Awliya Allah), while drums and sarangis were being played. These aforementioned instruments are forbidden in Sharia. Will the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) and the saints of Allah be pleased with this act, and did these aforementioned people attending the gathering become sinners or not? And is such qawwali permissible or not? And if it is permissible, in what way? Clarify and you shall be rewarded. Only.

Answer: Such qawwali is haram (forbidden). All those present are sinners, and the sin of all of them is upon those who do so and upon the qawwals. Also, the sin of the qawwals is upon the one organizing the Urs, without the qawwals' sin being reduced by its burden going to the organizer, nor the burden of the attendees falling upon the qawwals.

1 Al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Hazr wa al-Ibahah, Mujtabai Press, Delhi, 2/27. 2 Al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Hazr wa al-Ibahah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/253.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

उत्तर: दोनों (ताश और शतरंज) नाजायज़ हैं और ताश अधिक गुनाह और हराम है क्योंकि उसमें चित्र भी हैं। 'शतरंज का मामला दुर्रे मुख्तार 1 आदि में निषेध और गवाही के अध्यायों में विस्तार से है, और सही बात यह है कि इसकी पूर्णतः मनाही है जैसा कि रद्दे मुहतार 2 में स्पष्ट किया गया है।' और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे अधिक जानता है और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और दृढ़ है। (त)

मसला 16: 28 रबी अल-आख़िर शरीफ़ 1320 हिजरी। प्रेषक: शेख शौकत अली साहब। दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि मेरा एक दोस्त आया और उसने मुझसे कहा कि चलो एक जगह उर्स है, मैं वहाँ गया और देखा कि बहुत से लोग हैं और क़व्वाली इस तरीके से हो रही है कि एक ढोल और दो सारंगियां बज रही हैं। कुछ क़व्वाल पीराने पीर दस्तगीर की शान में शेर पढ़ रहे हैं और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नात के अशआर और अल्लाह के वलियों की शान में अशआर गा रहे हैं और ढोल-सारंगियां बज रही हैं। ये ज़िक्र किए गए वाद्ययंत्र शरीयत में हराम हैं। क्या इस कार्य से अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और अल्लाह के वली खुश होंगे, और ये ज़िक्र किए गए सभा में उपस्थित लोग गुनहगार हुए या नहीं? और ऐसी क़व्वाली जायज़ है या नहीं? और अगर जायज़ है, तो किस तरह? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें। केवल।

उत्तर: ऐसी क़व्वाली हराम है। उपस्थित सभी लोग गुनहगार हैं, और उन सबका गुनाह ऐसा करने वालों और क़व्वालों पर है। और क़व्वालों का गुनाह भी उस उर्स कराने वाले पर है, बिना इसके कि उर्स कराने वाले के खाते में क़व्वालों का गुनाह जाने से क़व्वालों के गुनाह में कोई कमी आए, और न ही उपस्थित लोगों का बोझ क़व्वालों पर पड़ेगा।

1 दुर्रे मुख्तार, किताबुल हज़्र वल इबाहत, मतबअ मुज्तबाई, दिल्ली, 2/27। 2 दुर्रे मुख्तार, किताबुल हज़्र वल इबाहत, दारुल इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 5/253।

पेज 114 ऑफ़ 720

الجواب: دونوں (تاش و شطرنج) ناجائز ہیں اور تاش زیادہ گناہ وحرام کہ اس میں تصاویر بھی ہیں، ومسألة الشطرنج مبسوطة في الدر ۱ وغیرھا من | شطرنج کا مسئلہ بڑی تفصیل کے ساتھ در مختار وغیرہ میں موجود الحظر والشھادات، والصواب اطلاق المنع کما اوضحہ | ہے اور صواب (درست اور حقیقت) یہ ہے کہ اس کی مطلقاً في ردالمحتار ۲ واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ اتم واحکم۔ | ممانعت ہے جیسا کہ فتاوٰی شامی میں اس کی وضاحت فرمائی گئی۔ اور اللہ تعالٰی سب سے بڑا عالم ہے اور اس کا علم نہایت درجہ تام اور پختہ ہے۔ (ت)

مسئلہ ۱۶: ۲۸ ربیع الآخر شریف ۱۳۲۰ھ مسئولہ شیخ شوکت علی صاحب کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص میرا دوست آیا اور اس نے مجھ سے کہا چلو ایک جگہ عرس ہے، میں چلا گیا وہاں جاکر دیکھا کہ بہت اشخاص ہیں اور قوالی اس طریقہ سے ہو رہی ہے کہ ایک ڈھول اور دو سارنگیاں بج رہی ہے اور چند قوال پیران پیر دستگیر کی شان میں شعر پڑھ رہے ہیں اور رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی نعت کے اشعار اور اولیاء اللہ کی شان میں اشعار گا رہے ہیں اور ڈھول سارنگیاں بج رہی ہیں، یہ باجے مذکورہ تو شریعت میں حرام ہیں کیا اس فعل سے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم اور اولیاء اللہ خوش ہوں گے اور یہ اشخاص مذکورہ حاضرین جلسہ گناہ گار ہوئے یا نہیں؟ اور ایسی قوالی جائز ہے یا نہیں؟ اور اگر جائز ہے تو کس طرح پر؟ بینوا توجروا فقط

الجواب: ایسی قوالی حرام ہے، حاضرین سب گنہگار ہیں، اور ان سب کا گناہ ایسا کرنے والوں اور قوالوں پر ہے اور قوالوں کا بھی گناہ اس عرس کرنے والے پر بغیر اس کے کہ عرس کرنے والے

کے ماتھے قوالوں کا گناہ جانے سے قوالوں پر سے گناہ کی کچھ کمی آئے یا اس کے قوالوں کے ذمہ حاضرین کا وبال پڑنے۔

1 در مختار کتاب الحظر والاباحہ مطبع مجتبائی دہلی ۲ / ۲۷ 2 در مختار کتاب الحظر والاباحہ داراحیاء التراث العربی بیروت ۵ / ۲۵۳

Fatawa Ridawiyya Volume 24

...there be any reduction in the sin of the attendees; rather, each of the attendees bears their own full sin, and the singers bear their own separate sin, equal to all the attendees individually and separately. The reason is that the organizer of the Urs invited the attendees and laid out the means for this sin for them, and the singers performed for them. Had he not made those arrangements and had they not played the drums and Sarangi, why would the attendees have fallen into this sin? Therefore, the sin of all of them fell upon both of them. Then, the cause of the singers' sin was the one who organized the Urs; had he not organized it or invited them, how would they have come and played? Thus, the sin of the singers also fell upon this inviter.

Arabic Text

As they said regarding a strong, powerful, and healthy beggar, both the taker and the giver are sinners, because if the givers did not give, the beggars would not make begging their profession. Therefore, this giving and charity became the reason for them abandoning hard work and for their begging. All of this is clear and obvious to one who knows the noble rules of Sharia. And through the grace and kindness of Allah Almighty alone is success granted.

Urdu Translation

جیسا کہ طاقتور، توانا اور صحت مند سائل کے بارے میں کہتے ہیں کہ لینے اور دینے والا دونوں گناہگار ہیں اس لئے کہ اگر دینے والے نہ دیتے تو مانگنے والے گداگری کو پیشہ نہ بناتے لہذا یہ عطاء بخشش ہی ان کے ترک مشقت کا اور مانگنے کا باعث ہوئی اور یہ سب کچھ اس شخص پر ظاہر اور واضح ہے جو قواعد شرعیہ کریمہ کا عارف ہے۔ اور اللہ تعالیٰ کے فضل و کرم سے ہی توفیق ملتی ہے۔ (ت)

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic Hadith

"Whoever calls to guidance will have a reward equal to the rewards of those who follow him, without that detracting from their rewards in the slightest. And whoever calls to misguidance will bear a burden of sin equal to the sins of those who follow him, without that detracting from their sins in the slightest." Narrated by the Imams Ahmad, Muslim, and the four.

Urdu Translation

جو کسی امر ہدایت کی طرف بلائے جتنے اس کا اتباع کریں ان سب کے برابر ثواب پائے اور اس سے ان کے ثوابوں میں کچھ کمی نہ آئے اور جو کسی امر ضلالت کی طرف بلائے جتنے اس کے بلانے پر چلیں ان سب کے برابر اس پر گناہ ہو اور اس سے ان کے گناہوں میں کچھ تخفیف نہ ہو۔ (ائمہ کرام مثلاً امام احمد، مسلم اور دیگر چار ائمہ ترمذی،)

1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Hazr wa al-Ibaha, Chapter on Sales, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/273.
2. Sahih Muslim, Kitab al-Ilm, Chapter on 'Whoever sets a precedent', 2/341; and Musnad Ahmad bin Hanbal on the authority of Abu Hurairah, Beirut, 2/397; Sunan Abi Dawud, Kitab al-Sunnah, 2/269; and Sunan Ibn Majah, Muqaddimah al-Kitab, p. 18.

फतावा रज़विया जिल्द २४

...उपस्थित लोगों के पाप में कोई कमी हो, बल्कि उपस्थित लोगों में से प्रत्येक पर अपना पूरा पाप और कव्वालों पर अपना पाप अलग है, और सभी उपस्थित लोगों के बराबर अलग-अलग है। इसका कारण यह है कि उर्स करने वाले ने उपस्थित लोगों को बुलाया, उनके लिए इस पाप का साधन फैलाया और कव्वालों ने उन्हें सुनाया। यदि वह व्यवस्था न करता और वे ढोल-सारंगी न बजाते, तो उपस्थित लोग इस पाप में क्यों पड़ते? इसलिए इन सब का पाप इन दोनों पर हुआ। फिर कव्वालों के इस पाप का कारण वह उर्स करने वाला हुआ; यदि वह न करता और न बुलाता, तो वे कैसे आते और बजाते? इसलिए कव्वालों का पाप भी इस बुलाने वाले पर हुआ।

अरबी पाठ

जैसा कि उन्होंने एक शक्तिशाली, बलवान और स्वस्थ भिखारी के बारे में कहा है कि लेने वाला और देने वाला दोनों पापी हैं, क्योंकि यदि देने वाले न देते तो मांगने वाले भीख माँगने को अपना पेशा नहीं बनाते। इसलिए यह दान और उदारता ही उनके परिश्रम छोड़ने और माँगने का कारण बनी। और यह सब उस व्यक्ति पर स्पष्ट और प्रकट है जो शरीयत के श्रेष्ठ नियमों का ज्ञाता है। और अल्लाह तआला के अनुग्रह और कृपा से ही सफलता मिलती है।

उर्दू अनुवाद

जैसा कि ताकतवर, तोआना और सेहतमंद साइल के बारे में कहते हैं कि लेने और देने वाला दोनों गुनहगार हैं इसलिए कि अगर देने वाले न देते तो मांगने वाले गदागरी को पेशा न बनाते लिहाज़ा ये अता-ओ-बख्शिश ही उनके तर्कए-मशक़्क़त का और मांगने का बाइस हुई और ये सब कुछ उस शख़्स पर ज़ाहिर और वाज़ेह है जो क़वाइद-ए-शरईया करीमा का आरिफ़ है। और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल-ओ-करम से ही तौफ़ीक़ मिलती है। (त)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं:

अरबी हदीस

"जो किसी मार्गदर्शन के कार्य की ओर बुलाए, उसे उन सभी के बराबर पुण्य मिलेगा जो उसका अनुसरण करेंगे, और इससे उनके पुण्यों में कोई कमी नहीं आएगी। और जो किसी पथभ्रष्टता के कार्य की ओर बुलाए, उस पर उन सभी के बराबर

उर्दू अनुवाद

जो किसी अम्र-ए-हिदायत की तरफ बुलाए जितने उसका इत्तेबा करें उन सब के बराबर सवाब पाए और उससे उनके सवाबों में कुछ कमी न आए और जो किसी अम्र-ए-ज़लालत की तरफ बुलाए जितने उसके बुलाने पर चलें उन सब के बराबर

अरबी हदीस	उर्दू अनुवाद
पाप होगा जो उसके बुलावे पर चलेंगे, और इससे उनके पापों में कोई कमी नहीं होगी।" इसे इमामों अहमद, मुस्लिम और चार अन्य ने रिवायत किया है।	उस पर गुनाह हो और उससे उनके गुनाहों में कुछ तख़्फ़ीफ़ न हो। (अइम्मा-ए-किराम मसलन इमाम अहमद, मुस्लिम और दीगर चार अइम्मा (तिर्मिज़ी,

1. रद अल-मुह्तार, किताब अल-हज़्र व अल-इबाहह, फ़स्ल फ़ी अल-बय', दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 5/273।
2. सहीह मुस्लिम, किताब अल-इल्म, बाब 'मन सन्ना सुन्नतन', 2/341; और मुसनद अहमद बिन हंबल, अबू हुरैरा के अधिकार से, बेरुत, 2/397; सुनन अबी दाऊद, किताब अल-सुन्नत, 2/269; और सुनन इब्न माजह, मुक़द्दमा अल-किताब, पृष्ठ 18।

سے حاضرین کے گناہ میں کچھ تخفیف ہو، نہیں بلکہ حاضرین میں ہر ایک پر اپنا پورا گناہ اور قوالوں پر اپنا گناہ الگ اور سب حاضرین کے برابر جدا اور سب حاضرین کے برابر علیحدہ وجہ یہ کہ حاضرین کو عرس کرنے والے نے بلایا اُن کے لئے اس گناہ کا سامان پھیلایا اور قوالوں نے انہیں سنایا اگر وہ سامان نہ کرتا یہ ڈھول سارنگی نہ سناتے تو حاضرین اس گناہ میں کیوں پڑتے اس لئے ان سب کا گناہ ان دونوں پر ہوا پھر قوالوں کے اس گناہ کا باعث وہ عرس کرنے والا ہوا وہ نہ کرتا نہ بلاتا تو یہ کیونکر آتے بجاتے لہذا قوالوں کا بھی گناہ اس بلانے والے پر ہوا،

عربی متن	**اردو ترجمہ**
کما قالوا فی سائل قوی ذی مرة سوی	جیسا کہ طاقتور، توانا اور صحت مند سائل کے بارے میں
ان الأخذ والمعطی اثما لانهما لولم	کہتے ہیں کہ لینے اور دینے والا دونوں گناہگار ہیں اس لئے
یعطوا لمافعلوا فکان العطاء هو	کہ اگر دینے والے نہ دیتے تو مانگنے والے گداگری کو پیشہ
الباعث لهم علی الاسترسال في التکدی	نہ بناتے لہذا یہ عطاء بخشش ہی ان کے ترک مشقت کا اور
والسوال وهذا کله ظاہر علی من	مانگنے کا باعث ہوئی اور یہ سب کچھ اس شخص پر ظاہر
عرف القواعد الکریمة الشرعیة وباللہ	اور واضح ہے جو قواعد شرعیہ کریمہ کا عارف ہے۔ اور اللہ
التوفیق۔	تعالٰی کے فضل و کرم سے ہی توفیق ملتی ہے۔ (ت)

رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

عربی حدیث	اردو ترجمہ
من دعا الی هدی کان له من الاجر مثل اجور من تبعه لا ینقص ذلك من اجورهم شیئا ومن دعا الی ضلالة کان علیه من الاثم مثل اثام من تبعه لا ینقص ذلك من اثامهم شیئا رواه الائمة احمد ومسلم والاربعة	جو کسی امر ہدایت کی طرف بلائے جتنے اس کا اتباع کریں ان سب کے برابر ثواب پائے اور اس سے ان کے ثوابوں میں کچھ کمی نہ آئے اور جو کسی امر ضلالت کی طرف بلائے جتنے اس کے بلانے پر چلیں ان سب کے برابر اس پر گناہ ہو اور اس سے ان کے گناہوں میں کچھ تخفیف نہ ہو۔ (ائمہ کرام مثلاً امام احمد، مسلم اور دیگر چار ائمہ (ترمذی،

1 رد المحتار کتاب الحظر و الاباحة فصل فی البیع دار احیاء التراث العربی بیروت ۵ / ۲۷۳ 2 صحیح مسلم کتاب العلم باب من سن سنة ۲ / ۳۴۱ و مسند احمد بن حنبل عن ابی هریرة بیروت ۲ / ۳۹۷ سنن ابی داؤد کتاب السنة ۲ / ۲۶۹ و سنن ابن ماجه مقدمة الکتاب ص ۱۸

Narrated by Abu Hurairah (may Allah be pleased with them both). Reported by Abu Dawood, Nasai, and Ibn Majah from Abu Hurairah (may Allah be pleased with them both). (T)

The issue will be derived from the explicit text (Nass) of the Lawgiver (peace and blessings be upon him) or from the jurisprudence (Fiqh) of the Mujtahid Imam (may Allah be pleased with him). If the Nass of the Lawgiver (peace and blessings be upon him) is required, numerous hadiths reaching the level of mass-transmission (tawatur) have been reported regarding the prohibition of musical instruments (mazamir). Among them, the most prominent and sublime hadith is from Sahih Bukhari, in which the Master of the Universe (peace and blessings be upon him) says:

"There will surely be groups among my Ummah who will consider permissible illegal sexual intercourse (adultery), silk garments, intoxicants, and musical instruments."[1] Surely there will be people in my Ummah who will declare lawful the private parts of women i.e., adultery, silk clothes, wine, and musical instruments.

A majestic, authentic, and connected (muttasil) hadith.

It was also recorded by Ahmad[2], Abu Dawood, Ibn Majah, al-Isma'ili, and Abu Nu'aym with authentic chains of narration that cannot be criticized. A group of other Imams also authenticated it, as some of the hadith masters (Huffaz) have stated. This was mentioned by Imam Ibn Hajar in 'Kaff al-Ra'a'[3]. Furthermore, Imam Ahmad, Abu Dawood, Ibn Majah, Hadith scholar Isma'il, and Abu Nu'aym extracted it with authentic chains of narration in which there is no criticism, and another group of Imams declared it authentic as some memorizers (Huffaz) have said; so Imam Ibn Hajar said in "Kaff al-Ra'a". (T)

In the face of authentic, elevated (marfu'), and decisive (muhkam) hadiths, some weak stories, ambiguous incidents, or obscure (mutashabih) matters cannot be presented. Every rational person knows that in the presence of the authentic, the weak must be abandoned; before the determined, the ambiguous; and in the presence of the decisive, the obscure. Furthermore, how can a mere report of an action compare to a direct statement? How can the permissible compare to the prohibited? In every way, this (the prohibition) is mandatory to act upon and is preferred. And if jurisprudence is sought, then the decree of the Imam of the school

himself, Imam al-A'zam, Imam of the Imams (may Allah be pleased with him), and the decree of a highly reliable book like Al-Hidayah are sufficient and complete:

[1] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Ashribah, Chapter on those who declare wine permissible, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 3/837. [2] Musnad Imam Ahmad bin Hanbal, on the authority of Abu Umamah, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 5/257 & 268. [3] Kaff al-Ra'a, Section Thirteen, Second Admonition, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, pp. 132-133.

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है। अबू दाऊद, नसाई और इब्न माजा ने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया है। (त)

मसला शरीयत के विधाता (नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के स्पष्ट पाठ (नस्स) से लिया जाएगा या मुजतहिद इमाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) के न्यायशास्त्र (फिक्ह) से। यदि शरीयत के विधाता (नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का स्पष्ट पाठ आवश्यक है, तो वाद्ययंत्रों (मज़ामीर) की वर्जना के बारे में अनेक हदीसें तवातुर (निरंतरता) की सीमा तक आई हैं। उनमें से सबसे प्रमुख और उच्च हदीस सहीह बुखारी की है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

"निश्चित रूप से मेरी उम्मत में ऐसे लोग होंगे जो व्यभिचार (ज़िना), रेशमी कपड़े, शराब और बाजों (वाद्ययंत्रों) को हलाल (वैध) ठहराएंगे।"[1] ज़रूर मेरी उम्मत में वो लोग होने वाले हैं जो हलाल ठहराएंगे औरतों की शर्मगाह यानी ज़िना और रेशमी कपड़ों और शराब और बाजों को।

यह एक महान, सहीह और मुत्तसिल (निरंतर) हदीस है।

इसे इमाम अहमद[2], अबू दाऊद, इब्न माजा, मुहद्दिस इस्माइल और अबू नुऐम ने भी सहीह सनद के साथ रिवायत किया है, जिनमें कोई दोष नहीं है। और अन्य इमामों के एक समूह ने भी इसे सहीह करार दिया है, जैसा कि कुछ हाफिज़ों ने कहा है। यह बात इमाम इब्न हजर ने 'कफ़ अल-रआअ'[3] में कही है। नीज़ इमाम अहमद, अबू दाऊद, इब्न माजा, मुहद्दिस इस्माइल और अबू नुऐम ने इसे सहीह इस्नाद के साथ कि जिनमें कोई तअन (दोष) नहीं इसकी तख़रीज फरमाई, और अइम्मा की एक दूसरी जमाअत ने इसको सहीह करार दिया जैसा कि बाज़ हुफ़्फ़ाज़ ने कहा है, चुनांचे इमाम इब्न हजर ने "कफ़ अल-रआअ" में फरमाया है (त)

सहीह, मरफू और मुहकम हदीसों के मुकाबले कुछ कमज़ोर किस्से, संदिग्ध घटनाएं या मुतशाबिह (अस्पष्ट बातें) पेश नहीं किए जा सकते। हर बुद्धिमान व्यक्ति जानता है कि सहीह के सामने ज़ईफ़ (कमज़ोर), निश्चित के सामने संदिग्ध, और मुहकम के सामने मुतशाबिह त्यागने योग्य है। फिर कहाँ कोई कथन और कहाँ किसी कर्म की कहानी, फिर कहाँ हराम और कहाँ मुबाह। हर तरह से यही (मनाही) अमल के लायक है और इसी को प्राथमिकता प्राप्त है। और अगर फिक्ह की ज़रूरत है, तो स्वयं इमाम-ए-मज़हब इमाम-ए-आज़म इमाम-उल-आइम्मा (रज़ियल्लाहु अन्हु) का कथन और 'हिदाया' जैसी उच्च स्तरीय प्रामाणिक पुस्तक का कथन पर्याप्त और पूर्ण है:

[1] सहीह अल-बुखारी, किताब अल-अशरबा, बाब मा जा'अ फीमन यस्तहिल्लु अल-खम्र, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 3/837। [2] मसनद इमाम अहमद बिन हनबल, अबू उमामा से, अल-मक्तब अल-इस्लामी, बेरूत, 5/257 और 268। [3] कफ़ अल-रआअ, भाग 13, दूसरी चेतावनी, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, पृष्ठ 132-133।

पृष्ठ 116/720

عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالی عنھما۔ ابوداؤد، نسائی، ابن ماجہ نے حضرات ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کیا۔ (ت)

مسئلہ نص شارع علیہ الصلوۃ والسلام سے لیا جائے گا یا فقہ امام مجتہد رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اگر نص شارع صلی اللہ تعالیٰ علیہ و سلم درکار ہے تو مزامیر کی حرمت میں احادیث کثیرہ بالغ بحد تواتر وارد ہیں ازانجلہ اجل واعلیٰ حدیث صحیح بخاری شریف ہے کہ حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ و سلم فرماتے ہیں:

لیکونن من امتی اقوام یستحلون الحر والحریر و الخمر والمعازف-1 ضرور میری امت میں وہ لوگ ہونے والے ہیں جو حلال ٹھہرائیں گے عورتوں کی شرمگاہ یعنی زنا اور ریشمی کپڑوں اور شراب اور باجوں کو۔

حدیث صحیح جلیل متصل،

وقد اخرجه ایضا احمد[2] وابوداؤد وابن ماجة و الاسمعیلی وابونعیم بأسانید صحیحة لا مطعن فیها وصححه جماعة اخرون من الائمة کما قال بعض الحفاظ قاله الامام ابن حجر فی کف الرعاع 3۔ نیز امام احمد، ابو داؤد، ابن ماجہ، محدث اسمعیل اور ابو نعیم نے اسے صحیح اسناد کے ساتھ کہ جن میں کوئی طعن نہیں اس کی تخریج فرمائی، اور ائمہ کی ایک دوسری جماعت نے اس کو صحیح قرار دیا جیسا کہ بعض حفاظ نے کہا ہے، چنانچہ امام ابن حجر نے "کف الرعاع" میں فرمایا ہے (ت)

احادیث صحاح مرفوعہ محکمہ کے مقابل بعض ضعیف قصے یا محتمل واقعے یا متشابہ پیش نہیں ہو سکتے ہر عاقل جانتا ہے کہ صحیح کے سامنے ضعیف، متعین کے آگے محتمل، محکم کے حضور متشابہ واجب الترک ہے، پھر کہاں قول کہاں حکایت فعل، پھر کجا محرم کجا مباح، ہر طرح یہی واجب العمل، اسی کو ترجیح، اور اگر فقہ مطلوب ہے تو خود امام مذہب امام اعظم امام الائمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا ارشاد اور ہدایہ جیسی اعلیٰ درجہ معتمد کتاب کا ارشاد کافی و وافی:

1 صحیح البخاری کتاب الاشر بہ باب ما جاء فیمن یستحل الخمر قدیمی کتب خانہ کراچی ۳/ ۸۳۷ 2 مسند امام احمد بن حنبل عن ابی امامہ المکتب الاسلامی بیروت ۵/ ۲۵۷ و ۲۶۸ 3 کف الرعاع القسم الثالث عشر تنبیہ ثانی دار الکتب العلمیہ بیروت ص ۱۳۲ و ۱۳۳

Fatawa Razawiyya, Volume 24

| Arabic: The issue indicates that all forms of amusement are forbidden, even singing by striking a rod [on something]. Similarly, the statement of Imam-e-Azam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him), "I have been afflicted [tested with this]," is because affliction occurs in forbidden things.[1] | | Urdu: The issue indicates that all apparatus of amusement and play are forbidden, even singing by striking a rod [on something] (this too is included in the category of prohibition). Similarly, the statement of Imam-e-Azam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him), that "I have been afflicted in this," is because affliction/testing occurs in forbidden things. (T) |

In short, the ruling of Hadith and Fiqh is this. Yes, if someone intentionally chooses to follow their whims and desires, who has the cure for that? Would that a person commits a sin and recognizes it as a sin, admits it, and refrains from persistence. But it is even more severe to nurture whims and also try to evade blame by making one's forbidden act lawful. Furthermore, not only this, but God forbid, they place the blame for this on the beloveds of Allah in the exalted Chishtiya order (may their secrets be sanctified). They neither fear God nor feel shame before people. Even though the Beloved of Allah, my master and master Nizam al-Haq wa al-Din, Sultan of Saints (may Allah be pleased with him, them, and us through them), states in Fawa'id Shareef: "Musical instruments are forbidden."[2] (Using musical instruments for singing and playing is forbidden. T) Maulana Fakhruddin Zarrawi, the caliph of our master Mahboob-e-Ilahi (may Allah be pleased with them both), wrote the treatise "Kashf al-Qina' 'an Usul al-Sama'" on the issue of Sama' (spiritual listening) during the blessed era by the order of the Holy Prophet (PBUH) himself. It is clearly stated therein:

| Arabic: As for the Sama' of our masters (may Allah be pleased with them), it is free from this accusation. It is merely the voice of the singer (qawwal) along with verses that signify the perfection of Allah Almighty's creation.[3] | | Urdu: The Sama' of our noble masters (may Allah be pleased with them) is free from the accusation of musical instruments. It is merely the voice of the singer (qawwal) along with those verses which inform of the perfection of Divine creation. |

For the sake of God, justice! Will this decree of the noble leader of the exalted Chishti family be accepted, or the baseless, patently corrupt accusation of today's unskilled claimants? "And there is no power nor strength except with Allah, the Great" (whose corruption is obvious. From sins...)

---

[1] Al-Hidayah, Book of Disliked Matters, Chapter on Eating and Drinking, Yusufi Press, Lucknow, 4/454. [2] Fawa'id al-Fu'ad. [3] Kashf al-Qina' 'an Usul al-Sama'.

फ़तवा रज़विया, खंड 24

| अरबी: यह मसला इंगित करता है कि खेल-कूद के सभी साधन हराम हैं, यहाँ तक कि (किसी चीज़ पर) डंडे की मार से गाना। इसी तरह इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) का यह कथन कि "मैं इसमें मुब्तला (परीक्षित) किया गया," क्योंकि मुब्तला होना हराम चीज़ों में ही होता है।[1] | | उर्दू: मसला इस पर दलालत करता है कि खेल-कूद के तमाम सामान हराम हैं हत्ता कि (किसी चीज़ पर) क़ज़िब (डंडे) की ज़रब लगाना गाना (ये भी ज़ुमरा-ए-हुरमत में दाख़िल है) और इसी तरह इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ये इरशाद कि मैं इसमें मुब्तला किया गया इसलिए कि इब्तिला हराम में हुआ करती है। (त) |

ग़रज़ हदीस व फ़िक़्ह का हुक्म तो ये है। हाँ, अगर किसी को क़स्दन हवस-परस्ती मन्ज़ूर हो तो उसका इलाज किसके पास है? काश आदमी गुनाह करे और गुनाह जाने, इक़रार लाए और इसरार से बाज़ आए। लेकिन ये तो और भी सख़्त है कि हवस भी पाले और इल्ज़ाम भी टाले, अपने हराम को हलाल बना ले। फिर इसी पर बस नहीं बल्कि मआज़अल्लाह इसकी तोहमत महबूबान-ए-ख़ुदा बर सिलसिला-ए-आलिया चिश्त (क़ुद्दसत असरारुहुम) के सर धरते हैं। न ख़ुदा से ख़ौफ़, न बंदों से शर्म करते हैं। हालाँकि ख़ुद हुज़ूर महबूब-ए-इलाही सय्यदी व मौलाई निज़ामुल हक़ वद्दीन सुल्तानुल औलिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व अन्हुम व अन्ना बिहिम 'फ़वाइद शरीफ़' में फ़रमाते हैं: "मज़ामीर हराम स्त"[2] (गाने बजाने के आलात का इस्तेमाल करना हराम है। त) मौलाना फ़ख़रुद्दीन ज़र्रावी, जो हमारे आक़ा महबूब-ए-इलाही रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के ख़लीफ़ा थे, ने मुबारक ज़माने में ख़ुद हुज़ूर के हुक्म से मसला-ए-समा में रिसाला 'कश्फ़ुल क़िना अन उसूलुस समा' तहरीर फ़रमाया। उसमें साफ़ इरशाद है कि:

| अरबी: जहाँ तक हमारे माशायख़ (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के समा का सवाल है, वह इस तोहमत से बरी है। वह सिर्फ़ क़व्वाल की आवाज़ है उन अशआर के साथ जो अल्लाह तआला की बेमिसाल कारीगरी की सूचना देते हैं।[3] | | उर्दू: हमारे माशायख़-ए-किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम का समा इस मज़ामीर के बुहतान से बरी है। वो सिर्फ़ क़व्वाल की आवाज़ है उन अशआर के साथ जो कमाल-ए-सनअत-ए-इलाही से ख़बर देते हैं। |

लिल्लाह इंसाफ़! इस इमाम-ए-जलील ख़ानदान-ए-आली चिश्त का ये इरशाद मक़बूल होगा या आज कल के मुद्दइयान-ए-ख़ामकार की तोहमत बे-बुनियाद ज़ाहिरुल फ़साद? व ला हौला व ला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अज़ीम (जिसका फ़साद वाज़ेह है। गुनाहों से...)

---

[1] अल-हिदाया, किताबुल कराहिया, खाने और पीने का अध्याय, यूसुफ़ी प्रेस, लखनऊ, 4/454. [2] फ़वाइद अल-फ़ुआद। [3] कश्फ़ुल क़िना अन उसूलुस समा।

| عربی: دلت المسئلة علی ان الملاھی کلھا حرام حتی التغنی لضرب القضیب وکذا قول ابی حنیفة رضی اللہ تعالی عنه ابتلیت لان الابتلاء بالمحرم یکون۔[1] | | اردو: مسئلہ اس پر دلالت کرتا ہے کہ کھیل کود کے تمام سامان حرام ہیں حتی کہ (کسی چیز پر) قضیب کی ضرب لگانا گانا (یہ بھی زمرہ حرمت میں داخل ہے) اور اسی طرح امام اعظم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالٰی عنہ کا یہ ارشاد کہ میں اس میں مبتلا کیا گیا اس لئے کہ ابتلا حرام میں ہوا کرتی ہے۔(ت) |

غرض حدیث و فقہ کا حکم تو یہ ہے ہاں اگر کسی کو قصداً ہوس پرستی منظور ہو تو اس کا علاج کس کے پاس ہے کاش آدمی گناہ کرے اور گناہ جانے اقرار لائے اصرار سے باز آئے لیکن یہ تو اور بھی سخت ہے کہ ہوس بھی پالے اور الزام بھی ٹالے اپنے حرام کو حلال بنالے۔ پھر اسی پر بس نہیں بلکہ معاذ اللہ اس کی تہمت محبوبانِ خدا بر سلسلہ عالیہ چشت قدست اسرارہم کے سر دھرتے ہیں نہ خدا سے خوف نہ بندوں سے شرم کرتے ہیں حالانکہ خود حضور محبوبِ الٰہی سیدی ومولائی نظام الحق والدین سلطان الاولیاء رضی اللہ تعالٰی عنہ وعنہم وعنا بہم فوائد شریف میں فرماتے ہیں: مزامیر حرام ست[2] (گانے بجانے کے آلات کا استعمال کرنا حرام ہے۔ ت) مولانا فخر الدین زراوی خلیفہ حضور سید نا محبوب الٰہی رضی اللہ تعالٰی عنہمانے زمانہ مبارک میں خود حضور کے حکم سے مسئلہ سماع میں رسالہ کشف القناع عن اصول السماع تحریر فرمایا اس میں صاف ارشاد ہے کہ :

| عربی: اما سماع مشائخنا رضی اللہ تعالٰی عنھم فبریء عن ھذہ التھمة وھو مجرد صوت القوال مع الاشعار المشعرة من کمال صنعة اللہ تعالی - [3] | | اردو: ہمارے مشائخ کرام رضی اللہ تعالٰی عنہم کا

سماع اس مزامیر کے بہتان سے بری ہے وہ صرف قوال کی آواز ہے ان اشعار کے ساتھ جو کمال صنعت الہی سے خبر دیتے ہیں۔ |

لله انصاف اس امام جلیل خاندان عالی چشت کا یہ ارشاد مقبول ہوگا یا آج کل مدعیان خامکار کی تہمت بے بنیاد ظاهرة الفساد ولا حول ولا قوة الا بالله العظیم (جس کا فساد واضح ہے۔ گناہوں سے

---

[1] الهداية كتاب الكراهية فصل فی الاكل والشرب مطبع يوسفی لكهنؤ ۴/ ۴۵۴ [2] فوائد الفواد [3] كشف القناع عن اصول السماع

Fatawa Razawiyya, Volume 24

...no one has the power to avoid evil and do good except through the guidance of Allah, the Exalted, the Magnificent. (T) My master, Maulana Muhammad bin Mubarak bin Muhammad Alavi Kirmani, a disciple of the radiant Presence, Shaykh al-Alam Farid al-Haq wa al-Din Ganj Shakar, and successor to the Presence, our master Mahbub-e-Ilahi (may Allah be pleased with them), states in the esteemed book 'Siyar al-Awliya':

Persian Text	Urdu Translation
Hazrat Sultan al-Mashaykh (may his secret be sanctified) said that several things are necessary for Sama (listening to spiritual music) to be permissible and allowed: Musmi', Mustami', Masmu', and instruments of Sama. Musmi' means the singer should be a mature male, not a child or a woman. Mustami' means the one who listens should not be devoid of the remembrance of God in whatever they hear. Masmu' means whatever is said should not contain obscenity or mockery. And the instruments of Sama are musical instruments like the Chang, Rubab, etc., which should not be present. Such Sama is lawful.	Sultan al-Mashaykh (may his secret be sanctified) said that if several things are present, Sama is permissible and allowed: (1) Musmi' (the singer), (2) Mustami' (the listener), (3) Masmu' (the content listened to), (4) instruments of Sama. Detail: Musmi' means the singer should be a mature male, not a child or a woman. Mustami' means the listener should not be devoid of the remembrance of God in whatever they hear. Masmu' means whatever they hear should not contain obscenity or mockery. And instruments of Sama are musical instruments like the Sarangi, Rubab, etc. It is necessary that these should not be present. Thus, this type of Qawwali (Sama) is permissible and lawful. (T)

Muslims! This is the decree (fatwa) of the leader and chief of the exalted Chishti order, Hadrat Sultan al-Awliya (may Allah be pleased with him). Is there any room left for slanderers after this? Furthermore, it is stated in Siyar al-Awliya Sharif:

Persian Text	Urdu Translation
Someone submitted to the presence of Hazrat Sultan al-Mashaykh that in these days some dervishes of the shrine danced in a gathering where Chang, Rubab, and musical	A servant submitted to the presence of Sultan al-Mashaykh that these days some dervishes of the shrine have danced in a gathering where instruments of Sama like the Chang, Rubab, Sarangi, and musical instruments etc.

Persian Text	Urdu Translation
instruments were present. He said: They did not do well; what is illegitimate is disliked. After that, someone said: When this group came out from that place, people said to them...	were present. He stated: They did not do well because what is illegitimate cannot be commendable. After that, someone said: When these people were free from this state, people asked them...

1 Siyar al-Awliya, Chapter 9, regarding the explanation of Sama and Wajd, Mu'assasa-e-Intisharat-e-Islami, Lahore, pp. 501-502. Page 118 of 720

फतावा रज़विया, खंड 24

...किसी में बुराई से बचने और भलाई करने की शक्ति नहीं है सिवाय अल्लाह तआला की तौफीक के जो बुलंद मर्तबा और अज़ीम है। (त) मेरे आका मौलाना मुहम्मद बिन मुबारक बिन मुहम्मद अलवी किरमानी, जो शेख़ अल-आलम फ़रीद अल-हक़ वद-दीन गंज शकर के मुरीद और हज़रत सय्यदना महबूब-ए-इलाही (रज़ियल्लाहु अन्हुमु) के खलीफा हैं, अपनी किताब 'सियारुल औलिया' में फ़रमाते हैं:

फ़ारसी पाठ

हज़रत सुल्तान अल-मशायख़ (क़ुद्दिस सिर्रहु अल-अज़ीज़) फ़रमाते थे कि समाअ के जायज़ होने के लिए कई चीज़ें ज़रूरी हैं: मुस्मी, मुस्तमी और मसमू और आलात-ए-समाअ। मुस्मी का मतलब है कि सुनाने वाला पूर्ण पुरुष हो, बच्चा न हो और औरत न हो। मुस्तमी वह है जो जो कुछ सुने वह ईश्वर के स्मरण से खाली न हो। मसमू वह है जो कुछ कहा जाए उसमें अश्लीलता और मज़ाक न हो। और आलात-ए-समाअ संगीत वाद्ययंत्र हैं जैसे चंग और रबाब और इनके जैसे, जो बीच में नहीं होने चाहिए। ऐसा समाअ हलाल है।

उर्दू अनुवाद

सुल्तान अल-मशायख़ (क़ुद्दिस सिर्रहु अल-अज़ीज़) ने इरशाद फ़रमाया कि कुछ चीज़ें हों तो समाअ जायज़ और मुबाह है: (1) मुस्मी (सुनाने वाला), (2) मुस्तमी (सुनने वाला), (3) मसमू (जो कुछ सुना जाए), (4) आलात-ए-समाअ। विवरण: मुस्मी यानी सुनाने वाला बालिग मर्द हो, बच्चा और औरत न हो। मुस्तमी यानी सुनने वाला जो कुछ सुने याद-ए-हक़ से खाली न हो, मसमू, जो कुछ सुनें उसमें अश्लीलता और मज़ाक न हो, और आलात-ए-समाअ संगीत वाद्ययंत्र हैं जैसे सारंगी और रबाब वग़ैरह। चाहिए यह कि वे बीच में न हों। पस, इस तरह की क़व्वाली (समाअ) जायज़ और हलाल है। (त)

मुसलमानों! यह फ़तवा है सिलसिला-ए-आलिया चश्त के सरवर और सरदार हज़रत सुल्तानुल औलिया (रज़ियल्लाहु अन्हु) का। क्या इसके बाद भी झूठ गढ़ने वालों को मुँह दिखाने की गुंजाइश है? साथ ही सियारुल औलिया शरीफ़ में है:

फ़ारसी पाठ

एक ने हज़रत सुल्तान अल-मशायख़ की सेवा में अर्ज़ किया कि इन दिनों आस्ताने के कुछ

उर्दू अनुवाद

एक खादिम ने सुल्तान अल-मशायख़ की बारगाह में अर्ज़ किया कि इन दिनों आस्ताने के कुछ

फ़ारसी पाठ

दरवेशों ने ऐसी सभा में नाच किया जहाँ चंग और रबाब और संगीत वाद्ययंत्र थे। फ़रमाया: उन्होंने अच्छा नहीं किया, जो कुछ नाजायज़ है वह नापसंद है। इसके बाद एक ने कहा जब यह समूह उस स्थान से बाहर आया तो उनसे कहा गया कि आप उस सभा में क्या हो गए जहाँ संगीत वाद्ययंत्र थे...

उर्दू अनुवाद

दरवेशों ने उस मजलिस और महफ़िल में नाच किया है जहाँ आलात-ए-समाअ चंग और रबाब और सारंगी और वाद्ययंत्र वग़ैरह थे, तो इरशाद फ़रमाया: उन्होंने अच्छा नहीं किया क्योंकि जो काम नाजायज़ है वह पसंदीदा नहीं हो सकता। इसके बाद एक कहने लगा कि जब ये लोग इस हालत से फ़ारिग हुए तो लोगों ने उनसे...

1 सियारुल औलिया, अध्याय 9, समाअ और वज्द के बयान में, मुअस्सस-ए-इंतिशारात-ए-इस्लामी, लाहौर, पृष्ठ 501-502। पृष्ठ 118 का 720

بچنے اور بھلائی کرنے کی طاقت کسی میں نہیں مگر اللہ تعالٰی بلند مرتبہ بزرگ قدر کی توفیق عطا کرنے سے۔ت) سیدی مولانا محمد بن مبارک بن محمد علوی کرمانی مرید حضور پرنور شیخ العالم فرید الحق والدین گنج شکر و خلیفہ حضور سیدنا محبوب الٰہی رضی اللہ تعالٰی عنہم کتاب مستطاب سیر الاولیاء میں فرماتے ہیں :

فارسی متن

حضرت سلطان المشائخ قدس سرہ العزیز می فرمود کہ چندیں چیزے باید تا سماع مباح شود مسمع و مستمع و مسموع والہ سماع مسمع یعنی گوینده مرد تمام باشد کودک نباشد و عورت نباشد و مستمع آنکہ می شنود از یاد حق خالی نباشد و مسموع آنچہ بگویند فحش و مسخرگی نباشد والہ سماع مزامیرست چوں چنگ و رباب و مثل آں مے باید کہ در میان نباشد ایں چنیں سماع حلال ست ۱۔

اردو ترجمہ

سلطان المشائخ قدس سرہ العزیز نے ارشاد فرمایا چند اشیاء ہوں تو سماع جائز اور مباح ہوں (۱) مسمع (سنانے والا)، (۲) مستمع (سننے والا)، (۳) مسموع (جو کچھ سنا جائے)، (۴) آلات سماع۔ تفصیل: مسمع یعنی سنانے والا بالغ مرد ہو بچہ اور عورت نہ ہو۔ مستمع یعنی سننے والا جو کچھ سنے یادِ حق سے خالی نہ ہو، مسموع، جو کچھ سنیں اس میں فحش گوئی اور مسخرہ پن نہ ہو، اور آلات سماع مزامیر ہیں جیسے سارنگی اور رباب وغیرہ۔ چاہئے یہ کہ وہ درمیان میں نہ ہوں۔ پس اس طرح کی قوالی (سماع) جائز اور حلال ہے۔ (ت)

مسلمانو! یہ فتویٰ ہے سرور و سردار سلسلہ عالیہ چشت حضرت سلطان الاولیاء رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا۔ کیا اس کے بعد بھی مفتریوں کو منہ دکھانے کی گنجائش ہے۔ نیز سیر الاولیاء شریف میں ہے :

فارسی متن	اردو ترجمہ
یکے بخدمت حضرت سلطان المشائخ عرضداشت کہ دریں روزہا بعضے از درویشاں آستانہ دار در مجمعے کہ چنگ و رباب و مزامیر بود رقص کردند فرمود نیکونہ کردہ اند انچہ نامشروع است ناپسندیدہ است بعد ازاں یکے گفت چوں ایں طائفہ ازاں مقام بیرون آمدند با ایشاں گفتند کہ شماچہ گردید دراں جمع مزامیر بود سماع	ایک خادم نے سلطان المشائخ کی بارگاہ میں عرض کیا کہ ان دنوں آستانے کے بعض درویشوں نے اس مجلس اور محفل میں ناچ کیا ہے جہاں آلات سماع چنگ و رباب اور سارنگی ومزامیر وغیرہ تھے تو ارشاد فرمایا انہوں نے اچھا نہیں کیا کیونکہ جو کام ناجائز ہے وہ پسندیدہ نہیں ہو سکتا۔ اس کے بعد ایک کہنے لگا کہ جب یہ لوگ اس حالت سے فارغ ہوئے تو لوگوں نے ان سے

۱ سیرالاولیاء باب نہم در بیان سماع و وجد مؤسسۃ انتشارات اسلامی لاہور ص ۵۰۱۔۵۰۲ Page 118 of 720

Vol 24 Fatawa Rizwiya

[Table Content] (Original Persian Text: How did you listen and dance? They replied that we were so engrossed in Sama' [listening to spiritual songs] that we did not know if there were musical instruments [mazamir] or not. Sultan-ul-Mashaikh [Nizamuddin Auliya] said: This answer is nothing. This argument can be applied to all sins. 1)

(Urdu Translation: They were asked: What have you done? In this gathering, there were musical instruments, yet you listened to Qawwali and even danced. They answered that they were so lost [immersed] in the Sama' that they didn't even notice if instruments were being played. To this, Sultan-ul-Mashaikh replied that this is not a reasonable excuse because such a pretext can be used by anyone involved in any sin. (T))

O Muslims! How clear is the ruling that musical instruments are impermissible, and what a silencing response was given to the excuse that "we didn't notice the instruments due to our state of absorption." Such a ruse could work for every sin. One could drink wine and say that due to intense absorption, I didn't know if it was wine or water. One could commit adultery and say that due to an overwhelming state, I couldn't distinguish between a wife or a stranger. In the same book, it is stated:

(Original Persian Text: Sultan-ul-Mashaikh said: I have forbidden musical instruments and forbidden acts from being present. In this matter, he emphasized so strictly that he said: If the Imam makes a mistake in prayer, a man can notify him by saying 'Subhanallah', but a woman should not say it because her voice should not be heard. For her, the instruction is to strike the back of one hand against the palm of the other, but not palm-to-palm, as that resembles amusement [clapping]. If such caution is advised against playfulness and similar things, then in Sama', the prohibition of handclapping is even more prior [bi-tariq-ul-awla]. Therefore, the prohibition of musical instruments in Sama' is even more certain. 2 (Ends abridged))

(Urdu Translation: Sultan-ul-Mashaikh stated: I have forbidden that prohibited musical instruments be present, and in this regard, he was so strict that he said: If the Imam forgets in prayer, a man can alert him by saying 'Subhanallah,' but it is not permissible for a woman to say so because her voice must not be heard. For her, the instruction and command is that she should strike the palm of one hand on the back of the other hand, but she should not strike palm against palm because this act is

considered 'lahw' [vain amusement], i.e., clapping. Thus, one can estimate to what extent guidance has been issued to avoid play and idle talk; therefore, in Sama', it is forbidden by priority, meaning even from clapping hands.)

---

1. Siyar al-Auliya, Chapter 9, On Sama' and Wajd, Muassasa Intisharat-e-Islami Lahore, p. 530-531
2. Siyar al-Auliya, Chapter 9, On Sama' and Wajd, Muassasa Intisharat-e-Islami Lahore, p. 532

खंड 24 फतावा रज़विया

[तालिका की सामग्री] (मूल फ़ारसी पाठ: तुमने कैसे सुना और नृत्य किया? उन्होंने उत्तर दिया कि हम समा [आध्यात्मिक श्रवण] में इतने मग्न थे कि हमें पता ही नहीं चला कि संगीत वाद्ययंत्र [मज़ामीर] थे या नहीं। सुल्तान-उल-मशायख ने फरमाया: यह उत्तर कुछ भी नहीं है। यह तर्क सभी पापों के लिए दिया जा सकता है। 1)

(उर्दू अनुवाद: उनसे पूछा गया: तुमने यह क्या किया है? इस महफ़िल में तो वाद्ययंत्र भी थे, फिर भी तुमने कव्वाली सुनी और नाचते भी रहे। उन्होंने जवाब दिया कि हम समा में इस कदर डूबे हुए [मग्न] थे कि हमें पता ही नहीं चला कि वाद्ययंत्र हैं या नहीं। इस पर सुल्तान-उल-मशायख ने फरमाया कि यह कोई तर्कसंगत जवाब नहीं है क्योंकि यह बहाना तो हर गुनाह में शामिल होने वाले लोग बना सकते हैं। (त))

मुसलमानों! यह कितना स्पष्ट फरमान है कि वाद्ययंत्र नाजायज़ हैं और इस बहाने का कि 'हमें मग्नता के कारण वाद्ययंत्रों की खबर नहीं हुई', कैसा चुप करा देने वाला जवाब दिया गया है। ऐसा बहाना तो हर गुनाह में चल सकता है। कोई शराब पिए और कह दे कि मग्नता की तीव्रता के कारण हमें पता ही नहीं चला कि शराब है या पानी। कोई व्यभिचार [ज़िना] करे और कह दे कि हाल की अधिकता के कारण पहचान नहीं हुई कि अपनी है या पराई। उसी में है:

(मूल फ़ारसी पाठ: सुल्तान-उल-मशायख ने फरमाया: मैंने मना किया है कि वाद्ययंत्र और वर्जित चीजें बीच में न हों। इस बारे में उन्होंने इतनी सख्ती दिखाई कि फरमाया: यदि इमाम नमाज़ में भूल जाए, तो पुरुष 'सुभान अल्लाह' कहकर सूचित कर सकता है, लेकिन महिला 'सुभान अल्लाह' न कहे क्योंकि उसकी आवाज़ नहीं सुनी जानी चाहिए। उसके लिए यह निर्देश है कि वह अपने एक हाथ की हथेली दूसरे हाथ की पीठ पर मारे, लेकिन हथेली को हथेली पर न मारे क्योंकि यह कार्य खेल-तमाशे के समान है। यदि खेल-कूद और ऐसी चीजों से बचने का इतना निर्देश है, तो समा में ताली बजाने की मनाही और भी अधिक प्राथमिकता [ब-तरीक-ए-औला] के साथ है। अतः समा में वाद्ययंत्रों की मनाही तो और भी निश्चित है। 2 (संक्षेप में समाप्त))

(उर्दू अनुवाद: सुल्तान-उल-मशायख ने फरमाया कि मैंने मना किया है कि वर्जित वाद्ययंत्र बीच में न हों और इस सिलसिले में इस कदर सख्ती दिखाई कि फरमाया कि अगर इमाम नमाज़ में भूल जाए तो पुरुष 'सुभान अल्लाह' कह कर सचेत कर सकता है मगर औरत को इस तरह कहना जायज़ नहीं

क्योंकि उसकी आवाज़ नहीं सुनी जानी चाहिए। उसके लिए यह हिदायत और हुक्म है कि वह अपने एक हाथ की पुश्त [पीठ] पर दूसरे हाथ की हथेली मारे लेकिन हथेली को हथेली पर न मारे क्योंकि यह अमल 'लहू' में शुमार होता है यानी ताली बजाना। बस अंदाज़ा कर लिया जाए कि किस हद तक खेल-कूद और फ़ुज़ूल बातों से बचने की हिदायत आई है; लिहाज़ा समा में ताली बजाने की भी सख़्त मनाही है।)

---

1. सियरुल औलिया, अध्याय 9, समा और वज्द के वर्णन में, मुअस्ससतु इल्मिय्या इन्तेशारात-ए-इस्लामी लाहौर, पृष्ठ 530-531
2. सियरुल औलिया, अध्याय 9, समा और वज्द के वर्णन में, मुअस्ससतु इल्मिय्या इन्तेशारात-ए-इस्लामी लाहौर, पृष्ठ 532

چگونہ شنید و رقص کردید ایشاں جواب دادند کہ ماچناں مستغرق سماع بودیم کہ ندانستیم کہ این جامزامیر ست یا نہ، حضرت سلطان المشائخ فرمود ایں جواب ہم چیزے نیست ایں سخن در ہمہ معصیت ہا بیاید ۱۔ پوچھا کہ یہ تم نے کیا کیا ہے ، اس محفل میں تو مزامیر بھی تھے پھر تم نے قوالی بھی سنی اور ناچتے بھی رہے۔ انہوں نے جواب بتایا کہ ہم سماع میں اس قدر مستغرق (ڈوبے ہوئے) تھے کہ ہمیں پتہ ہی نہیں چلا کہ مزامیر بھی ہیں یا نہیں۔ اس پر سلطان المشائخ نے فرمایا کہ یہ کوئی معقول جواب نہیں اس لئے کہ یہ بہانہ تو تمام گناہوں میں ملوث ہونے والے کر سکتے ہیں۔ (ت)

مسلمانو! کیسا صاف ارشاد ہے کہ مزامیر ناجائز ہے اور اس عذر کا کہ "ہمیں استغراق کے باعث مزامیر کی خبر نہ ہوئی" کیسا مسکت جواب عطا فرمایا کہ ایسا حیلہ ہر گناہ میں چل سکتا ہے۔ شراب پیئے اور کہہ دے شدتِ استغراق کے باعث ہمیں خبر نہ ہوئی کہ شراب ہے یا پانی۔ زنا کرے اور کہہ دے غلبہ حال کے سبب تمیز نہ ہوئی کہ جرو ہے یا بیگانی۔ اُسی میں ہے:

حضرت سلطان المشائخ فرمود من منع کردہ ام کہ مزامیر و محرمات درمیان نباشد و دریں باب بسیار غلو کرد نا بحدیکہ گفت اگر امام را سہو افتد مرد بتسبیح اعلام دہد و زن سبحان اللہ نگوید زیرا کہ نشاید آواز آں شنودن پس چگونہ پشت دست بر کف دست زند و کف دست بر کف دست نزند کہ آں بلہو میماند تا ایں غایت از ملا ہی و امثال آں پرہیز آمدہ است پس در سماع طریق اولیٰ کہ ازیں بابت نباشد یعنی در منع دستک چندیں احتیاط آمدہ است پس در سماع مزامیر بطریق اولیٰ منع است ۲ اھ باختصار حضرت سلطان المشائخ نے ارشاد فرمایا کہ میں نے منع کیا ہے کہ مزامیر حرمت درمیان میں نہ ہوں اور اس سلسلے میں اس قدر تعدی (شدت) فرمائی کہ ارشاد فرمایا امام اگر نماز

میں بھول جائے تو مرد سبحان اللہ کہہ کر آگاہ کر سکتا ہے مگر عورت کو اس طرح کہنا جائز نہیں کیونکہ اس کی آواز نہیں سنی جانی چاہئے اس کے لئے یہ ہدایت اور حکم ہے کہ وہ اپنے ایک ہاتھ کی پشت پر دوسرے ہاتھ کی ہتھیلی مارے لیکن ہتھیلی کو ہتھیلی پر نہ مارے کیونکہ یہ عمل لہو میں شمار ہوتا ہے یعنی تالی بجانا، پس اندازہ کر لیا جائے کہ کس حد تک کھیل کود اور لغو کلام سے پرہیز کی ہدایت وارد ہوئی ہے پس سماع میں بطریق اولیٰ منع ہے یعنی تالی بجانے سے بھی۔

۱۔ سیر الاولیاء باب نہم در بیان سماع و وجد مؤسسۃ انتشارات اسلامی لاہور ص ۵۳۰-۵۳۱ ۲۔ سیر الاولیاء باب نہم در بیان سماع و وجد مؤسسۃ انتشارات اسلامی لاہور ص ۵۳۲

Fatawa Razawiyya Volume 24

...it is prohibited, therefore performing Qawwali with musical instruments is even more severe and forbidden. (End of summary - T)

O Muslims! Those leaders of the spiritual path (Awliya) who exercised such caution that they declared even the act of clapping prohibited; how can they be accused of allowing musical instruments, God forbid? What an injustice and lack of reason. May Allah Almighty protect us from following Satan and grant us the true following of those true beloveds of God. Ameen, O God of Truth, Ameen. For the sake of their high station in Your presence, Ameen. And all praise is due to Allah, the Lord of all worlds (Ameen, O True Deity! By virtue of the rank and position they hold in Your presence, accept this prayer. And all praise is for that God who is the Sustainer of all the worlds. - T). The discussion here is lengthy, but for a seeker of justice, this much is sufficient. Allah is the Guide, and Allah Almighty knows best.

Issue 17: Bengal state, District Cachar, Lakhipur post office, Sangrain. Sent by Jalaluddin. What do the scholars of religion say regarding this matter: Is it permissible or not to fire guns at weddings for the purpose of announcement? And what is the Sharia ruling regarding a person who declared it absolutely forbidden, and even declared eating food at such a place as absolutely forbidden?

The Answer: In reality, the prohibition of firing guns for the purpose of announcement at weddings is not established anywhere in Sharia. For hundreds of years, cannons have been fired for the sighting of the Ramadan moon and the Eid moon; the intention there too is announcement. The jurisprudential detail of acting upon such announcements is mentioned in 'Radd al-Muhtar'. An intention of show-off and pride makes not just wedding guns but even prayer forbidden. A custom remains under the ruling of its origin as long as it does not involve any corruption of belief. If the custom is good, it is good; if it is bad, it is bad; if it is permissible, it is permissible. And Allah Almighty knows best.

Issue 18: From Arrah, District Shahabad, Mohalla Tarai, Madrasa Hanfia. Sent by Molvi Zafaruddin Sahib, Teacher. 7 Jumada al-Ula 1330 AH. Humbly presented for the consideration of the Master of Blessings, Sea of Mercy, his luminous presence, may Allah benefit the Muslims by your long life. Peace be upon you and the mercy of Allah and His blessings. Staying with your exalted prayers and welfare, wishing for the wellbeing of the government along with all servants. In the blessed treatise 'Al-Kashf al-Shafiya', what was stated summarily after detail is that there are three things here:

prohibited, venerated, and permissible. The ruling for the first category was stated to be exactly like the original. Listening to a phonograph is not as if listening to a recording, but is exactly like listening to the singing of that songstress. Because it is not the sound of the plate and glass [record and stylus/horn], even though the sound being exactly the same sound is not immediately intuitive to the intellect, yet after all the detail that was at the beginning of the noble treatise...

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

...निषेध है, इसलिए साज़ों (वाद्य यंत्रों) के साथ कव्वाली करना इससे भी अधिक गंभीर और वर्जित है। (संक्षेप में - त)

ऐ मुसलमानों! जो तरीक़त के इमाम (सूफी संत) इतनी सावधानी बरतते थे कि उन्होंने ताली बजाने तक को वर्जित बताया; वे और माज़ अल्लाह (ईश्वर न करे) साज़ों की तोहमत, अल्लाह इंसाफ़! कैसा बेतुका दावा है। अल्लाह तआला हमें शैतान के अनुसरण से बचाए और उन अल्लाह के सच्चे प्यारों का सच्चा अनुसरण प्रदान करे। आमीन इलाह-उल-हक़ आमीन। उनके आपके यहाँ ऊंचे दर्जे के वसीले से आमीन। और सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का पालनहार है। (आमीन, ऐ सच्चे माबूद! तेरी बारगाह में जो उनका मकाम व मर्तबा है उसके तुफ़ैल (सदके) में दुआ क़बूल फ़रमा। और सब तारीफ़ उस खुदा के लिए है जो तमाम जहानों का परवरदिगार है। - त)। यहाँ चर्चा लंबी है और इंसाफ़ पसंद के लिए इतना ही काफ़ी है, अल्लाह ही हिदायत देने वाला है, और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 17: मुल्क बंगाल, जिला कछार, डाकखाना लखीपुर, स्थान संग्रेन। प्रेषक: जलालुद्दीन। विद्वान इस मामले में क्या फ़रमाते हैं कि क्या शादी में घोषणा (ऐलान) के उद्देश्य से बंदूकें चलाना जायज़ है या नहीं? और उस व्यक्ति के बारे में शरीयत का क्या हुक्म है जिसने इसे हराम साबित किया बल्कि यहाँ तक कि उसके यहाँ का खाना भी कतई तौर पर हराम बताया?

अल-जवाब (उत्तर): वास्तव में, निकाह में घोषणा के उद्देश्य से बंदूकें चलाने की मनाही शरीयत में कहीं साबित नहीं है। रमजान और ईद के चाँद के लिए सैकड़ों वर्षों से तोपें चलाई जाती रही हैं, उसका उद्देश्य भी घोषणा ही होता है। इस घोषणा पर शरीयत के अनुसार अमल करने का विवरण 'रद्द-उल-मुहतार' में उल्लेखित है। दिखावे और गर्व की नीयत न केवल शादी की बंदूकों बल्कि नमाज़ को भी हराम कर देती है। किसी प्रथा (रस्म) का हुक्म उसकी असलियत पर रहता है जब तक कि उसमें किसी अक़ीदे (विश्वास) की खराबी शामिल न हो। अगर रस्म अच्छी है तो अच्छी है, अगर बुरी है तो बुरी है, अगर मुबाह (अनुमत) है तो मुबाह है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 18: आरा जिला शाहाबाद, मोहल्ला तरई, मदरसा हनफ़िया। प्रेषक: मौलवी ज़फ़रउद्दीन साहब, शिक्षक। 7 जमादि-उल-उला 1330 हिजरी। नेमतों के स्वामी, रहमत के दरिया, हुज़ूर पुरनूर के अवलोकन हेतु सादर प्रस्तुत, अल्लाह मुसलमानों को आपके अस्तित्व से लाभान्वित करे।

अस्सलाम अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातहु। आपकी दुआओं के साथ खैरियत से रहकर हुज़ूर और तमाम खादिमों की सलामती चाहता हूँ। मुबारक रिसाला (पुस्तिका) 'अल-कश्फ़ अल-शाफ़िया' में विस्तार के बाद जो सारांश में फ़रमाया गया है कि यहाँ तीन चीज़ें हैं: ममनुआत (वर्जित), मोअज़्ज़मात (सम्मानित), मुबाहत (अनुमत)। पहली श्रेणी का हुक्म फ़रमाया कि यह बिल्कुल असल जैसा ही है। फोनोग्राफ से सुनना मानो सुनने जैसा नहीं बल्कि वास्तव में उसी गायिका का गाना सुनना है। क्योंकि यह प्लेट और ग्लास (रिकॉर्ड और स्पीकर) की आवाज़ नहीं होती, हालांकि उस आवाज़ का हूबहू वही आवाज़ होना अक्ल को तुरंत समझ में नहीं आता, फिर भी उस तमाम विवरण के बाद जो रिसाला शरीफ़ की शुरुआत में है...

पेज 120 का 720

ممانعت ہے لہذا مزامیر کے ساتھ قوالی کرنا اس سے زیادہ اشد اور ممنوع ہے اہ باختصار (ت)

مسلمانو! جو ائمہ طریقت اس درجہ احتیاط فرمائیں کہ تالی کی صورت کو ممنوع بتائیں وہ اور معاذ اللہ مزامیر کی تہمت اللہ انصاف کیسا ضبط بے ربط ہے۔ اللہ تعالٰی اتباع شیطان سے بچائے اور ان سچے محبوبان خدا کا سچا اتباع عطا فرمائے آمین الہ الحق آمین بجاههم عندك آمین والحمد للہ رب العلمین (آمین ، اے سچے معبود! تیری بارگاہ میں جو ان کا مقام و مرتبہ ہے اس کے طفیل دعا قبول فرما۔ اور سب تعریف اس خدا کے لئے ہے جو تمام جہانوں کا پروردگار ہے۔ت) کلام یہاں طویل ہے اور انصاف دوست کو اسی قدر کافی ، واللہ الھادی ، واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۷: ملک بنگالہ ضلع کچھار ڈاک خانہ لکھی پور بمقام سنگرین مرسلہ جلال الدین کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ شادی میں بندوقیں بغرض اعلان چھوڑنا جائز ہے یا نہیں؟ اور جس شخص نے حرام ثابت کیا بلکہ اس کے یہاں کا کھانا تک حرام قطعی ثابت کیا اس کے حق میں شرع سے کیا حکم ہے؟

الجواب: فی الواقع نکاح میں بغرض اعلان بندوقیں چھوڑنے کی ممانعت شرع میں کہیں ثابت نہیں۔ ہلال رمضان اور ہلال عید میں صدہا سال سے توپوں کے فائر کئے جاتے ہیں اس سے بھی اعلان ہی مقصود ہوتا ہے اس اعلان پر شرعاً عمل کا جزئیہ ردالمختار میں مذکور ہے۔ نیت ریا و تفاخر نہ فقط شادی کی بندوقوں بلکہ نماز کو حرام کر دیتی ہے ، رسم کا اعتبار جب تک کسی فسادِ عقیدہ پر مشتمل نہ ہو اصلِ رسم کے حکم میں رہتا ہے اگر رسم محمود ہے محمود ہے ، مذموم ہے مذموم ہے ، مباح ہے مباح ہے ، واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۸: از آرہ ضلع شاہ آباد محلہ ترئی مدرسہ حنفیہ مرسلہ مولوی ظفر الدین صاحب مدرس ۷ جمادی الاولی ۱۳۳۰ھ بشرفِ ملاحظہ آقائے نعمت دریائے رحمت حضور پر نور متع اللہ المسلمین بقائکم السلام علیکم و رحمۃ اللہ و برکاتہ بدعائے والا مع الخیر رہ کر خواہانِ عافیت سرکار مع جملہ خدام ہوں رسالہ مبارک الکشف شافیا میں جو بعد تفصیل اجمال فرمایا گیا ہے کہ یہاں تین چیزیں ہیں ممنوعات، معظمات، مباحات۔ قسم اول کا حکم ارشاد فرمایا کہ بعینہ اصل جیسا ہے۔ فونو گراف سے سننا گویا نہیں بلکہ بعینہ اس مغنیہ کا گانا سننا ہے اس لئے کہ پلیٹ اور گلاس کی آواز نہیں ہوتی اگرچہ اس آواز کا بعینہ وہی آواز ہونا متبادر عبد العقل نہیں مگر اس تمام تفصیل کے بعد جو ابتدائے رسالہ شریفہ میں

Fatawa Razawiya Volume 24

It is documented that no one has the capacity to deny it, and indeed the sound emanating from a phonograph is precisely the same sound as that woman's singing. However, since the eminent scholars and great Sufis have distinguished between listening to a song face-to-face and from behind a curtain, then here it ought to be prioritized even more. Hadrat Imam Ghazali (may his secret be sanctified) and the radiant, blessed Master, Sayyidi Shah Muhammad Kalpuri (may Allah sanctify their noble secrets), have noted somewhere that if a person listens to a female singer's voice by placing a cloth over their face so they cannot see her image, there is no objection to it. Although I myself have not seen this content in any book of either of these two figures (may Allah sanctify their secrets), regarding Imam Ghazali (mercy be upon him), Maulvi Hakim Abdul Wahab mentioned it, and regarding Hadrat Kalpuri (may his secret be honored), Maulvi Muhammad Fakhr Sahib mentioned it in Marehra Sharif in Rajab 1327 AH. Although the thought of investigating this occurred many times since then, it did not happen by chance. Anyway, even if neither of these eminent gentlemen nor anyone else wrote this content, then there is no issue at all. And if it was written, it was likely due to the low suspicion of temptation (fitna). In this case, it is even more minimal, especially when the person whose record was made has passed away; then how can the ruling for both be the same? Clarify it and you shall be rewarded. (State the answer and gain the reward. - T)

The Answer: This premise—that listening to the singing of prostitutes or female performers by putting a cloth over one's face is permissible—is not established by either of the aforementioned figures (may Allah sanctify their secrets). There is no trace of this in the pure Sharia, nor do the principles of Sharia support it, nor can such narrations be decisive for the religion. (1) Just as the Sharia of Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), prohibited temptation (fitna), it also prohibited the precursors to temptation. Allah the Almighty said: "These are the limits of Allah, so do not go near them" (1). And the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whoever grazes around a sanctuary is likely to enter it" (2). Allah the Almighty has commanded: "These are the limits of Allah, so do not go near them." The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whoever grazes [animals] around any pasture, it is likely that they will enter into the pasture." (T)

1 Al-Qur'an 2/187 2 Sahih al-Bukhari, Book of Sales 1/275 and Sahih Muslim, Book of Sharecropping 2/28

दर्ज है कि किसी को इनकार की गुंजाइश नहीं है, और बेशक वह आवाज़ जो फोनोग्राफ से निकलती है, हूबहू वही आवाज़ है जो उस औरत के गाने की है। लेकिन जब उलेमा-ए-किराम और सूफ़ीया-ए-इज़ाम ने आमने-सामने बैठकर किसी का गाना सुनने और पर्दे के पीछे से सुनने में फर्क किया है, तो यहाँ यह और भी अधिक होना चाहिए। हज़रत इमाम ग़ज़ाली (कुद्दिसा सिर्रहु) और नूरानी व बरकत वाले हुज़ूर सैय्यदी शाह मुहम्मद कालपुरी (क़द्दसना अल्लाह बि-अस्रारिहिम) ने कहीं लिखा है कि अगर कोई शख्स किसी गाने वाली की आवाज़ सुनते समय चेहरे पर कपड़ा डाल ले ताकि उसकी सूरत न देख सके तो इसमें कोई हर्ज नहीं है। हालाँकि मैंने स्वयं इन दोनों हज़रात (क़द्दसना अल्लाह बि-अस्रारिहिम) की किसी किताब में यह विषय नहीं देखा, लेकिन इमाम ग़ज़ाली (रहमहुल्लाह) के बारे में मौलवी हकीम अब्दुल वहाब ने कहा था, और हज़रत कालपुरी (कुद्दिसा सिर्रहु) के बारे में रजब १३२७ हिजरी में मारहरा शरीफ में मौलवी मुहम्मद फाखिर साहब ने कहा था। हालाँकि तब से कई बार इसकी तहकीकात का खयाल आया लेकिन इत्तेफाक नहीं हुआ। खैर, अगर इन हज़रात या किसी और साहब ने यह विषय नहीं लिखा है, तो कोई बात ही नहीं। और अगर लिखा है, तो शायद इसलिए कि तब फ़ितना (बुराई) की आशंका कम थी, यहाँ तो और भी कम है, खासकर उस सूरत में जब रिकॉर्ड वाली औरत मर चुकी हो। फिर दोनों का हुक्म एक जैसा कैसे हो सकता है? बयान फरमाएं, आपको अज्र मिलेगा। (स्पष्ट करें, आप पुण्य पाएंगे। - त)

जवाब: यह विषय कि चेहरा ढककर वेश्याओं या गानेवालियों का गाना सुनना जायज़ है, इन दोनों आदरणीय हज़रात (क़द्दसना अल्लाह बि-अस्रारिहिम) में से किसी से साबित नहीं है। शरीअत-ए-मुतह्हरा (पवित्र शरीयत) में इसका कोई नामो-निशान नहीं है, न ही शरीयत के उसूल इसकी इजाज़त देते हैं, और न ही ऐसी बातें मज़हब में प्रमाण बन सकती हैं। (१) मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शरीयत ने जिस तरह फ़ितना (बुराई) को हराम करार दिया, उसी तरह फ़ितने के कारणों को भी हराम कर दिया। अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया: "तुलका हुद्दुदुल्लाहि फला तक्रबुहा" (१)। और नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "मन रता हौलाल हिमा औशकु अं यक़अ फीही" (२)। अल्लाह तआला ने फरमाया: "ये अल्लाह की हदें हैं, इसलिए उनके करीब न जाओ।" हुज़ूर-ए-अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इरशाद फरमाया: "जो कोई किसी चरागाह के आसपास जानवर चराए, तो करीब है कि वह चरागाह में घुस जाए।" (त)

१ अल-क़ुरआन २/१८७ २ सहीह अल-बुखारी, किताब अल-बुयू १/२७५ और सहीह मुस्लिम, किताब अल-मुसाक़ात २/२८

पेज १२१/७२०

درج ہے کسی کو مجالِ انکار نہیں، اور بیشک وہ آواز جو فونو گراف سے نکلتی ہے بعینہ وہی آواز ہے جو اس عورت کے گانے کی ہے مگر علمائے کرام و صوفیائے عظام نے جب بالمواجہہ کسی کا گانا سننے اور پسِ پردہ میں فرق فرمایا ہے تو یہاں بدرجہ اولیٰ ہونا چاہیے۔ حضرت امام غزالی قدس سرہ حضورِ پر نور والابرکت سیدی شاہ محمد کالپوری قدسنا اللہ باسراراہ الشریف نے کسی جگہ تحریر فرمایا ہے کہ اگر کوئی شخص مغنیہ کی آواز منہ پر کپڑا ڈال کرنے کہ اس کی صورت نہ دیکھ سکے تو اس میں مضائقہ نہیں، اگر چہ یہ مضمون میں نے خود ان دونوں حضرات قدسنا اللہ باسرارہما کی کسی کتاب میں نہیں دیکھا مگر امام غزالی رحمۃ اللہ کی نسبت مولوی حکیم عبدالوھاب نے کہا تھا اور حضرت کالپوری قدس سرہ العزیز کی نسبت رجب ۱۳۲۷ھ میں مولوی محمد فاخر صاحب نے مارہرہ شریف میں، اگرچہ اسی وقت سے بارہا خیال اس کے دریافت کا ہوا مگر اتفاق نہ پڑا، خیر پس اگرچہ دونوں مضمون ان حضراتِ کرام یا اور کسی صاحب نے نہیں تحریر فرمایا جب تو کوئی بات ہی نہیں، اور اگر تحریر فرمایا ہے تو غالباً اس کی وجہ قلتِ مظنہ فتنہ ہے تو یہاں تو اور اقل قلیل ہے خصوصاً اس صورت میں کہ جس کا ریکارڈ بھرا ہوا ہو وہ مر چکی ہو پھر دونوں کا حکم ایک کس طرح ہو سکتا ہے۔ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائیے۔ت)

الجواب: یہ مضمون کہ منہ پر کپڑا ڈال کر رنڈیوں ڈومنیوں کا گانا سننا جائز ہے دونوں حضرات ممدوح قدسنا اللہ باسرارہما میں کسی سے ثابت نہیں، نہ ہر گز شرعِ مطہر میں اس کا پتا، نہ اصولِ شرع اس کی مساعد، نہ ایسی نقول مذہب پر قاضی ہو سکیں۔ (1) شریعتِ محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے جس طرح فتنہ کو حرام فرمایا دواعی فتنہ کو بھی حرام فرما دیا۔ قال اللہ تعالیٰ

"تِلْکَ حُدُوْدُ اللهِ فَلَا تَقْرَبُوْہَا" 1 وقال صلی اللہ تعالیٰ علیہ من رتع حول الحمٰی اوشك ان یقع فیه 2۔ اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا یہ اللہ تعالیٰ کی حدیں ہیں لہذا ان کے پاس نہ جاؤ۔ حضورِ اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا جو کوئی کسی چراگاہ کے آس پاس جانور چرائے تو قریب ہے کہ چراگاہ میں گھس جائے۔ (ت)

1 القرآن الکریم ۲/ ۱۸۷ 2 صحیح البخاری کتاب البیوع ۱/ ۲۷۵ و صحیح مسلم کتاب المساقات ۲/ ۲۸

Fatawa Razawiyya Volume 24

Seclusion (Khalwat), looking, touching, embracing, and kissing a non-mahram (stranger) woman have been forbidden because they are precursors (to forbidden acts). (2) It is not necessary for these precursors to inevitably lead to the ultimate act (adultery). Thousands of instances of seclusion, looking, and even kissing and embracing occur without the actual target, i.e., adultery, taking place.

[Arabic Box 1]: The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "...and the private part confirms that or denies it." Narrated by the two Sheikhs (Bukhari and Muslim), Abu Dawud, and An-Nasa'i from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him). [Urdu Translation]: The Noble Prophet (peace and blessings be upon him) stated that the private part either confirms or denies it. This has been narrated by Bukhari, Muslim, Nasa'i, and Abu Dawud on the authority of Abu Hurairah (may Allah be pleased with him). (T)

(3) Nor is the prohibition of these precursors intended only at the moment of the actual act (intercourse), otherwise all the aforementioned matters with a non-mahram woman would be permissible as long as adultery is avoided.

[Arabic Box 2]: And no one among the Muslims says this. Rather, these precursors were forbidden because they are the means of invitation to the desired end, i.e., they are the instruments and means to reach that act, and it is not mandatory for a precursor to reach that end. [Urdu Translation]: And no Muslim is a proponent of this. The precursors were forbidden because they are causes of invitation to the desired goal, i.e., they are instruments and means for reaching that work, and for a precursor, access to it is not necessary. (T)

(4) The Pure Sharia bases its rulings on the likelihood (presumption); thereafter, it does not look for the existence of the root cause of the ruling, as is known from the concessions of travel, etc. (As is known from the concessions of travel, etc. - T) (5) In jurisprudential rulings, the majority (prevalent case) is considered; no separate ruling is made for the rare case.

[Arabic Box 3]: They [the jurists] have stated this explicitly in many places, and we have quoted the texts regarding this in 'Al-Kashf Shafi'an' from Fath al-Qadir, Ad-Durr al-Mukhtar, and Ad-Durr al-Muntaqa, and it is widespread in numerous books such that one cannot hope to encompass them all. [Urdu Translation]: The eminent Imams have explicitly stated this in numerous and frequent places, and we have mentioned

the textual proofs for this in "Al-Kashf Shafi'an," which consist of passages from Fath al-Qadir, Durr Mukhtar, and Ad-Durr al-Muntaqa, etc., and they are prevalent in numerous books, so there is no expectation that they can be fully enumerated. (T)

---

1 Sahih al-Bukhari, Kitab al-Qadar, Bab Qaul Allah wa Haramun 'Ala Qaryatin, Kutub Khana Karachi, 2/978; Sahih Muslim, Kitab al-Qadar, Bab Qaddara 'ala Ibni Adam Hazzahu min al-Zina etc., Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/336.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

एक अजनबी महिला (ग़ैर-महरम) के साथ एकांत (खलवत), नज़र, स्पर्श, आलिंगन और चुंबन इसलिए हराम हैं क्योंकि वे (ज़िना के) मार्ग प्रशस्त करने वाले कारक (दावी) हैं। (2) यह ज़रूरी नहीं है कि ये कारक अनिवार्य रूप से अंतिम कृत्य तक ले जाएँ; एकांत, दृष्टि, यहाँ तक कि चुंबन और आलिंगन के हज़ारों उदाहरण होते हैं और अंतिम लक्ष्य यानी ज़िना घटित नहीं होता।

[अरबी बॉक्स 1]: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "...और गुप्तांग इसकी पुष्टि करता है या इसे झुठलाता है।" इसे बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद और अन-नसाई ने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। [उर्दू अनुवाद]: हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि गुप्तांग उसकी तस्दीक (पुष्टि) या तक़ज़ीब (खंडन) करता है। इसे बुखारी, मुस्लिम, नसाई और अबू दाऊद ने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की रिवायत से बयान फ़रमाया है। (त)

(3) न ही इन कारकों की हुरमत (निषेध) केवल उस समय के लिए है जब कृत्य घटित हो, अन्यथा एक अजनबी महिला के साथ उपर्युक्त सभी मामले तब तक हलाल होंगे जब तक कि ज़िना से बचा जाए।

[अरबी बॉक्स 2]: और मुसलमानों में से कोई भी ऐसा नहीं कहता। बल्कि, ये कारक इसलिए हराम किए गए क्योंकि वे वांछित लक्ष्य के लिए निमंत्रण के कारण हैं, यानी वे उस काम तक पहुँचने के साधन और वसीले हैं, और एक कारक के लिए वहाँ तक पहुँचना अनिवार्य नहीं है। [उर्दू अनुवाद]: और कोई मुसलमान इसका क़ायल (समर्थक) नहीं। दावी (कारक) इसलिए हराम किया गया कि वे वांछित लक्ष्य के लिए दावत के अस्बाब (कारण) हैं यानी उस काम तक पहुँचाने के ज़रिए और वसीले हैं, और दावी के लिए उस तक रसाई (पहुँच) लाज़िम नहीं। (त)

(4) शरीयत-ए-मुतह्हरा (पवित्र शरीयत) किसी कृत्य की प्रबल संभावना (मज़िन्ना) पर हुक्म जारी करती है; उसके बाद वह हुक्म के मूल कारण (मन्शा) के अस्तित्व पर नज़र नहीं रखती, जैसा कि सफ़र आदि की रियायतों (रख़्सतों) से ज्ञात होता है। (जैसा कि सफ़र आदि की रख़्सतों से मालूम हुआ। त) (5) फ़िक़्ही (न्यायशास्त्र) के फैसलों में बहुमत (अक्सरियत) का ध्यान रखा जाता है; दुर्लभ मामलों के लिए कोई अलग नियम नहीं बनाया जाता।

[अरबी बॉक्स 3]: उन्होंने (फ़ुक़हा ने) कई स्थानों पर इसे स्पष्ट किया है और हमने 'अल-कश्फ़ शफ़ियन' में 'फ़तह अल-क़दीर', 'अल-दुर्र अल-मुख़्तार' और 'अल-दुर्र अल-मुंतक़ा' से इस पर प्रमाण उद्धृत किए हैं, और यह कई किताबों में मौजूद है जिससे उनके पूर्ण विवरण की उम्मीद नहीं की जा

सकती। [उर्दू अनुवाद]: आइम्मा-ए-किराम ने कई और बहुतायत स्थानों पर इसकी स्पष्टता फ़रमाई है, और हमने "अल-कश्फ़ शफ़ियन" में इस पर नुसूस (प्रमाण) ज़िक्र किए हैं जो फ़तह अल-क़दीर, दुर्रे मुख़्तार और अद-दुर्र अल-मुंतक़ा आदि की इबारतों पर मुश्तमिल हैं, और वे अनेक किताबों में मौजूद हैं इसलिए उनसे यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि उनका पूरी तरह से विवरण दिया जा सके। (त)

---

1 सहीह अल-बुखारी, किताब अल-क़दर, बाब क़ौल अल्लाह व हरामुन 'अला क़र्यातिन, कुतुब ख़ाना कराची, 2/978; सहीह मुस्लिम, किताब अल-क़दर, बाब क़द्दरा 'अला इब्नी आदम हज़्ज़ाहू मिन अल-ज़िना आदि, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 2/336।

اجنبیہ سے خلوت، نظر، مس، معانقہ، تقبیل اس لئے حرام ہوئے کہ داعی ہیں۔ (۲) دواعی کے لئے مستلزم ہونا ضرور نہیں ہزارہا خلوت و نظر بلکہ بوس و کنار واقع ہوتے ہیں اور مد عوالیہ یعنی زنا واقع نہیں ہوتا۔

[Arabic Box 1]: قال صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم والفرج یصدق ذلک او یکذب بہ رواہ الشیخان و ابوداود والنسائی عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ [Urdu Translation]: حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے ارشاد فرمایا شرمگاہ اس کی تصدیق یا تکذیب کرتی ہے۔ اس کو بخاری، مسلم، نسائی اور ابوداؤدؒ نے حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی روایت سے بیان فرمایا۔ (ت)

(۳) نہ حرمت دواعی وقت افضا پر مقصود ورنہ اجنبیہ سے جملہ امور مذکورہ حلال ہوں جبکہ زنا سے اجتناب کریں۔

[Arabic Box 2]: ولا یقول بہ احد من المسلمین و انما حرمت الدواعی لکونھا دواعی و الدعاء لایستلزم الافضاء۔ [Urdu Translation]: اور کوئی مسلمان اس کا قائل نہیں۔ دواعی اس لئے حرام کیا گیا کہ وہ مطلوب کے لئے اسباب دعوت ہیں یعنی اس کام تک پہنچانے کے ذرائع اور وسائل ہیں، اور داعی کے لئے اس تک رسائی لازم نہیں۔ (ت)

(۴) شرع مطہر مظنہ پر حکم دائر فرماتی ہے اس کے بعد وجود منشاء حکم پر نظر نہیں رکھتی کما عرف فی رخص السفر وغیرہا (جیسا کہ سفر وغیرہ کی رخصتوں سے معلوم ہوا۔ ت) (۵) احکام فقہیہ میں غالب کا لحاظ ہوتا ہے نادر کے لئے کوئی حکم جدا نہیں کیا جاتا،

[Arabic Box 3]: صرحوا بہ فی مواضع کثیرۃ وقد نقلنا النصوص علیہ فی الکشف شافیا عن فتح القدیر وعن الدر المختار وعن الدر المنتقی وھو دوار فی الکتب لا مطمع فیہ ان یستقصیٰ۔ [Urdu Translation]: ائمہ کرام نے متعدد اور بکثرت مقامات پر اس کی صراحت فرمائی ہے، اور ہم نے "الکشف شافیا" میں اس پر نصوص ذکر کئے ہیں جو فتح القدیر، درمختار اور الدر المنتقی وغیرہ کی عبارات پر مشتمل ہیں، اور وہ کتب متعددہ میں دائر ہیں پس ان کے لئے یہ توقع نہیں کہ اس کا استقصا کیا جاسکے (ت)

---

۱ صحیح البخاری کتاب القدر باب قول اللہ وحرام علی قریۃ کتب خانہ کراچی ۲ / ۹۷۸، صحیح مسلم کتاب القدر باب قدر علی ابن آدم حظہ من الزنا الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۳۳۶

Taking these benefits into account, there can be no doubt about the prohibition of listening to the singing of a foreign female singer. Indeed, it is an invitation (to sin), and what invites to something forbidden is itself forbidden, even if it does not necessarily lead to it at that moment. This is true even if it is not an invitation in a specific instance, such as for certain peaceful souls who are completely devoid of desires. It is impossible to make an exception in the ruling based on them; rather, the same general ruling will continue. Otherwise, one would have to avoid giving an absolute ruling even for seclusion, touching, kissing, and the like, and details would be necessary, saying they are forbidden for a lustful heart and permissible for peaceful souls, whereas this is absolutely and consensually false.

(6) Since the reason for prohibition is being an invitation (to sin), and in this, every invitation is independent, the prohibition of one cannot depend on the existence of another.

Otherwise, none of them would be an invitation, but rather the collective, or it wouldn't be an invitation except on the condition of its existence, and the other would be redundant and dropped from the middle. (T)	**Otherwise, none of these things would be an invitation, but rather the collective, or not an invitation but with the condition of its presence. And the second would be uselessly dropped from the middle. (T)**

The pure Shari'ah has ruled here on the sound of the temptation itself:

Allah the Almighty said: "And incite whomever you can among them with your voice" 1	**Allah the Almighty said: "So mislead whomever among them you can with your voice" (This is addressed to Satan).**
On the authority of Anas and on the authority of Aisha (may Allah be pleased with them both) from the Prophet (may Allah the Almighty bless him and grant him peace): "Two sounds are cursed in this world and the hereafter: a musical instrument at the time of a blessing, and wailing at the time of a calamity" 2.	And in the Hadith, Hazrat Anas and Hazrat Aisha (may Allah be pleased with them both) narrate from the Prophet (peace and blessings be upon him): Two sounds are cursed in this world and the hereafter: (1) Singing and playing music at the time of comfort, (2) Wailing at the time of calamity. (T)

It is in the third Hadith:

On the authority of Anas, that the Messenger of Allah (may Allah the Almighty bless him and grant him peace) said: Whoever sits...	**Hazrat Anas narrates that the Prophet (peace and blessings be upon him) said: Whoever [listens to] a singing woman...**

1 Al-Quran Al-Karim 17/64 2 Kanz al-Ummal with reference to al-Bazzar and al-Diya' from Anas, Hadith 40661, Mu'assasat al-Risala, Beirut 15/219

फतवा रज़विय्या - जिल्द 24

इन फायदों को ध्यान में रखते हुए, एक अजनबी महिला गायिका के गाने सुनने की मनाही में कोई संदेह नहीं हो सकता। वास्तव में, यह एक आमंत्रण (पाप की ओर) है, और जो चीज हराम (वर्जित) की ओर आमंत्रित करती है वह स्वयं हराम है, भले ही वह उस समय अनिवार्य रूप से उस तक न ले जाए। यह तब भी सच है जब वह किसी विशेष मामले में आमंत्रण न हो, जैसे कि कुछ शांत आत्माओं के लिए जो इच्छाओं से पूरी तरह मुक्त हैं। उनके आधार पर निर्णय में अपवाद बनाना असंभव है; बल्कि वही सामान्य नियम जारी रहेगा। अन्यथा, एकांत, स्पर्श, चुंबन और इसी तरह के अन्य कार्यों के लिए भी पूर्ण नियम नहीं दिया जा सकेगा और विवरण आवश्यक होगा कि वे कामुक हृदय के लिए हराम हैं और शांत आत्माओं के लिए जायज़ हैं, जबकि यह पूरी तरह से और सर्वसम्मति से गलत है।

(6) चूंकि मनाही का कारण 'आमंत्रण होना' है, और इसमें प्रत्येक आमंत्रण स्वतंत्र है, इसलिए एक की मनाही दूसरे के अस्तित्व पर निर्भर नहीं हो सकती।

अन्यथा उनमें से कोई भी चीज़ आमंत्रण नहीं होगी, बल्कि समूह होगा, या वह आमंत्रण नहीं होगा सिवाय इसके अस्तित्व की शर्त के और दूसरा व्यर्थ ही बीच से हट जाएगा। (त)

वरना इन में से कोई चीज़ दाई (आमंत्रण) न हो बल्कि मजमूआ (समूह) या दाई न हो मगर इस के पाए जाने की शर्त से। और दूसरा बे-फ़ायदा दरम्यान से साक़ित हो। (त)

शुद्ध शरीयत ने यहाँ स्वयं उस फितने (प्रलोभन) की आवाज़ पर फैसला दिया है:

अल्लाह ताला ने फरमाया: "और उनमें से जिसे तू अपनी आवाज़ से बहला सकता है बहला ले" 1

हज़रत अनस और हज़रत आयशा (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत करते हैं कि दो आवाज़ें दुनिया और आख़िरत में शापित हैं: सुख के समय संगीत वाद्ययंत्र और मुसीबत के समय विलाप। 2

अल्लाह ताला ने इरशाद फरमाया: "तो फुसला दे उनमें से जिसको तू अपनी आवाज़ से फुसला सकता है" (यह शैतान से संबोधन है)।

और हदीस में हज़रत अनस और हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) हुज़ूर अलैहिस सलात वस सलाम से रिवायत करते हैं कि दो आवाज़ दुनिया और आख़िरत में मलऊन (शापित) हैं: (1) आसाइश के वक्त गाना बजाना, (2) मुसीबत के वक्त बैन करना (विलाप)। (त)

तीसरी हदीस में है:

अनस से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: जो कोई बैठा...

हज़रत अनस से रिवायत है कि हुज़ूर अलैहिस सलात वस सलाम ने इरशाद फरमाया: जो कोई गाने वाली...

1 अल-कुरान अल-करीम 17/64 2 कंज़ुल उम्माल, अल-बज्ज़ार और अल-ज़िया के हवाले से, हज़रत अनस से रिवायत, हदीस 40661, मुअस्ससतुर रिसाला, बेरूत 15/219

ان فوائد کو ملحوظ رکھ کر مغنیہ اجنبیہ کا گانا سننے کی حرمت میں شبہ نہیں ہوسکتا بیشک وہ داعی ہے اور داعی حرام حرام اگرچہ مستلزم بلکہ اس وقت مفضی بھی نہ ہو اگرچہ خصوص محل میں داعی بھی نہ ہو اور بعض نفوس مطمئنہ کہ شہوات سے یکسر خالی ہوگئے ان کے لحاظ سے حکم میں تفصیل ناممکن بلکہ وہی حکم عام جاری رہے گا ورنہ خلوت ومس وتقبیل وامثالہا میں بھی حکم مطلق نہ رکھیں تفصیل لازم ہو کہ قلب شہوانی کے لئے حرام ہیں اور نفوس مطمئنہ کے لئے جائز حالانکہ یہ قطعاً اجماعاً باطل ہے۔

(۶) جبکہ منشاء تحریم داعی ہونا ہے اور اس میں ہر داعی مستقل تو ایک کی تحریم دوسرے کے وجود پر موقوف نہیں ہوسکتی۔

والا لم یکن شیئ منھا داعیاً بل المجموع او لم یکن داعیاً الاشرط وجودہ وکان الآخر لغوا ساقطاً من البین۔

ورنہ ان میں سے کوئی چیز داعی نہ ہو بلکہ مجموعہ یا داعی نہ ہو مگر اس کے پائے جانے کی شرط سے۔ اور دوسرا بے فائدہ درمیان سے ساقط ہو۔ (ت)

شرع مطہر نے یہاں نفس صوت فتنہ پر حکم فرمایا ہے :

قال اللہ تعالی "وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ" 1

اللہ تعالٰی نے ارشاد فرمایا تو پھسلا دے ان میں سے جس کو تو اپنی آواز سے پھسلا سکتا ہے (یہ شیطان سے خطاب فرمایا)

عن انس وعن عائشۃ رضی اللہ تعالی عنھما عن النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم

اور حدیث میں حضرت انس اور حضرت عائشہ رضی اللہ تعالٰی عنہما حضور علیہ الصلوۃ والسلام سے روایت

قال الله تعالى "وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ" 1

اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا تو پھسلا دے ان میں سے جس کو تو اپنی آواز سے پھسلا سکتا ہے (یہ شیطان سے خطاب فرمایا)

صوتان ملعونان فی الدنیا والأخرة مزمار عند نعمة ورنة عند مصیبة 2۔

کرتے ہیں دو آواز دنیا اور آخرت میں ملعون ہیں (۱) آسائش کے وقت گانا بجانا (۲) مصیبت کے وقت بین کرنا (ت)

تیسری حدیث میں ہے:

عن انس ان رسول الله صلى الله تعالى حضرت انس سے روایت ہے کہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام

علیه وسلم قال من قعد نے ارشاد فرمایا: جو کوئی گانے والی

1 القرآن الکریم ۱۷/ ۶۴ 2 کنز العمال بحوالہ البزار والضیاء عن انس حدیث ۴۰۶۶۱ مؤسسة الرساله بیروت ۱۵/ ۲۱۹

Fatawa Razawiyya Volume 24

| Whoever sits with a singing girl to listen to her, Allah will pour | If one sits by a female singer to listen to her singing, Allah | | molten lead into his ears on the Day of Resurrection[1]. | Almighty will pour molten lead into both his ears on the Day of | | | Judgement. (T) |

It is mentioned in the fourth and fifth Hadiths:

| Narrated by Jabir and Abdur Rahman bin Auf (may Allah be | Hazrat Jabir and Hazrat Abdur Rahman bin Auf (may Allah be | | pleased with them both), from the Prophet (peace and blessings | pleased with both) narrate from the Holy Prophet (peace and | | of Allah be upon him) who said, "I have been forbidden from | blessings be upon him) that he said, "I have been forbidden from | | two foolish, sinful sounds."[2] We have thoroughly investigated | two foolish and sinful sounds." We have made an extreme effort | | its sources in more than fifty Hadiths and presented them in | in extracting more than fifty Hadiths which we have included in | | our treatise 'Atamm al-Ma'arif fi Haqq al-Ma'azif'. And | our treatise "Atamm al-Ma'arif fi Haqq al-Ma'azif" (The | | success is from Allah. | completion of matters of Gnosis in eliminating musical | | | instruments), and Allah Almighty alone is the best disposer of | | | affairs. (T) |

How then can the prohibition of gaze make the forbidden of the ear permissible? Its example could only be like saying it is permissible to hug a strange woman as long as one does not kiss her, or hides the place of the kiss with a handkerchief, or that kissing her is permissible as long as one does not hug her. If the prohibition of the voice of temptation were dependent on the temptation of gaze, then listening to the flute would become absolutely permissible in itself, as looking towards them is not forbidden according to anyone. Rather, in fairness, listening along with the prohibition of gaze would be more effective in corrupting one's state and disturbing one's thoughts, for "man is greedy for what is forbidden" (Man has a desire to do the things from which he is forbidden. T). The soul is not drawn to something freely available as much as it is to the forbidden. Therefore, the slaves of desire find more pleasure in looking at a strange woman than looking at their lawful wife, even if the wife is more beautiful and graceful. This is why immoral adulterous women, although they themselves strive to incline and attract, pretend to resist and show self-restraint

after attraction, because "denial brings more longing." Hazrat Sheikh Sa'adi (may his secret be sanctified) says:

[1] Kanz al-Ummal with reference to Ibn Sughri in his Amali, Hadith 40669, Mu’assasat ar-Risalah Beirut, 15/ 220, 221. [2] Jami' at-Tirmidhi, Chapters of Funerals, Chapter on what has been narrated regarding the allowance of weeping over the dead, Amin Company Delhi, 1/ 120.

| जो कोई किसी गाने वाली के पास उसका गाना सुनने के लिए बैठता | गोया (गायिका) के पास बैठकर उसका गाना सुने तो अल्लाह तआला | | है, अल्लाह क़यामत के दिन उसके कानों में पिघला हुआ सीसा डाल | क़यामत के दिन उसके दोनों कानों में पिघला हुआ सीसा डाल देगा। | | देगा।[1] | (त) |

चौथी और पांचवीं हदीस में है:

| हज़रत जाबिर और हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ (अल्लाह उन दोनों | हज़रत जाबिर और हज़रत अब्दुर रहमान इब्ने औफ़ हुज़ूर | | से राज़ी हो) से रिवायत है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने | अलैहिस्सलाम से रिवायत करते हैं (अल्लाह तआला इन दोनों से | | फ़रमाया: "मुझे दो नादान पापी आवाज़ों से मना किया गया है।"[2] और | राज़ी हो) कि आपने इरशाद फ़रमाया कि "मुझे दो नादान बदकार | | हमने पचास से अधिक हदीसों में इसकी तहक़ीक़ की है और उन्हें अपने | आवाज़ों से रोक दिया गया। पचास से ज़ायद हदीसों की तख़रीज करने | | रिसाले "अतमुल मआरिफ़ फ़ी हक़्क़िल मआज़िफ़" में पेश किया है। | में हमने इन्तहाई कोशिश की जिन्हें हम अपने रिसाला 'अतमुल | | और कामयाबी अल्लाह की ओर से है। | मआरिफ़ फ़ी हक़्क़िल मआज़िफ़' (मअरफ़त की बातों का पूरा होना | | | आलात-ए-साज़ के मिटाने में) लाए हैं, और अल्लाह तआला ही बेहतर | | | कारसाज़ है। (त) |

तो नज़र की रोक, कान के हराम को क्योंकर हलाल कर देगी, इसकी नज़ीर यही हो सकती है कि कहा जाए अजनबी महिला को गले लगाना हलाल है जबकि बोसा न ले या महल-ए-बोसा को रुमाल से छुपा ले या उसका बोसा लेना जायज़ है जबकि गले न लगाए। सौत-ए-फ़ितना की तहरीम (आवाज़ की पाबंदी) फ़ितना-ए-नज़र पर मौक़ूफ़ हो तो मज़मार का सुनना मुतलक़न फ़ि नफ़्सिहि हलाल हो जाए कि उनकी तरफ़ नज़र किसी के नज़दीक मना नहीं बल्कि इन्साफ़न मना-ए-नज़र के साथ समाअ, अफ़्साद-ए-हाल व तशवीश-ए-ख़याल में अब्लग होगा 'फ़इनल इनसाना हरीसून अला मा मुनिअ' (इंसान को जिन कामों से रोका जाए उनके करने की वह हिरस रखता है। त) नफ़्स किसी मुफ़्त चीज़ की तरफ़ इतना नहीं खिंचता जितना ममनूअ (प्रतिबंधित) की जानिब, लिहाज़ा बंदगान-ए-नफ़्स को नज़र-ए-अजनबिया में नज़र-ए-ह़लीला से ज़्यादा लज़्ज़त आती है अगरचे ह़लीला अहसन व

अजमल हो, लिहाज़ा ज़ानान-ए-फ़वाहिश बावजूद इसके कि खुद झुकाव और खिंचाव में कोशिश करती हैं, खिंचाव के बाद इनकार और खुददारी का बनावट दिखाती हैं क्योंकि 'मना करना शौक़ को और बढ़ाता है'। हज़रत शैख़ सा'दी (क़ुद्दिसा सिर्रहु) फ़रमाते हैं:

[1] कन्ज़ुल उम्माल, इब्ने सुग़री के हवाले से आमाली में, हदीस 40669, मुअस्ससतुल रिसाला बेरूत, 15/ 220, 221। [2] जामिअ तिर्मिज़ी, जनाज़े के अध्याय, मुर्दे पर रोने की इजाज़त के बारे में, अमीन कंपनी दिल्ली, 1/ 120।

| الی قینة لیستمع منها صب اللہ فی اذنیہ الآنك یوم القیمة[1]۔ | گویا کے پاس بیٹھ کر اس کا گانا سنے تو اللہ تعالٰی قیامت کے دن | | | اس کے دونوں کانوں میں پگھلا ہوا سیسہ ڈال دے گا۔ (ت) |

چوتھی اور پانچویں حدیث میں ہے :

| عن جابر وعبد الرحمن بن عوف رضی اللہ تعالی عنهما عن النبی | حضرت جابر اور حضرت عبد الرحمن ابن عوف حضور علیہ | | صلی اللہ تعالی علیہ وسلم قال نهیت عن صوتین احمقین فاجرین[2] | الصلوٰۃ والسلام سے روایت کرتے ہیں (اللہ تعالٰی ان دونوں سے | | وقد استقصینا علی تخاریجها فی اکثر من خمسین حدیثا، اور دناها فی | راضی ہو) کہ آپ نے ارشاد فرمایا کہ "مجھے دو نادان بدکار | | رسالتنا اتم المعارف فی حق المعازف وباللہ التوفیق۔ | آوازوں سے روک دیا گیا۔ پچاس سے زائد حدیثوں کی تخریج کرنے | | | میں ہم نے انتہائی کوشش کی جنہیں ہم اپنے رسالہ "اتم المعارف فی | | | حق المعازف" (معرفت کی باتوں کا پورا ہونا آلات ساز کے مٹانے | | | میں) لائے ہیں، اور اللہ تعالٰی ہی بہتر کار ساز ہے۔ (ت) |

تو نظر کی روک، کان کے حرام کو کیونکر حلال کردے گی، اس کی نظیر یہی ہو سکتی ہے کہ کہا جائے اجنبیہ کو گلے لگانا حلال ہے جبکہ بوسہ نہ لے یا محل بوسہ کو رومال سے چھپالے یا اس کا بوسہ لینا جائز ہے جبکہ گلے نہ لگائے۔ صوتِ فتنہ کی تحریم فتنہ نظر پر موقوف ہو تو مزمار کا سننا مطلقاً فی نفسہ حلال ہو جائے کہ ان کی طرف نظر کسی کے نزدیک منع نہیں بلکہ انصافاً منع نظر کے ساتھ سماع، افسادِ حال و تشویش خیال میں ابلغ ہو گا فان الانسان حریص علی ما

منع (انسان کو جن کاموں سے روکا جائے ان کے کرنے کی وہ حرص رکھتا ہے۔ ت) نفس شیئ مبذول کی طرف اتنا نہیں کھینچتا جتنا ممنوع کی جانب، ولذا بندگانِ نفس کو نظر اجنبیہ میں نظر حلیلہ سے زیادہ لذت آتی ہے اگرچہ حلیلہ احسن واجمل ہو ولذا زانانِ فواحش با آنکہ خود امالہ و جذب میں سعی کرتی ہیں بعد انجذاب تمنع و خود داری کا تصنع دکھاتی ہیں کہ منع اجلب للشوق ہے۔

حضرت شیخ سعدی قدس سرہ فرماتے ہیں:

[1] کنز العمال بحوالہ ابن صغری فی امالیہ حدیث ۴۰۶۶۹ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۵/ ۲۲۰، ۲۲۱ [2] جامع الترمذی ابواب الجنائز باب ماجاء فی الرخصۃ فی البکاء علی المیت امین کمپنی دہلی ۱/ ۱۲۰

You show your face and then you hide it; you brighten your market and intensify our fire. 1 (You show your presence but also practice abstinence, thus making your market thrive and our longing grow intense. - T) The pure Shariah has taken this wisdom into account even in praiseworthy matters. Therefore, prayer was made forbidden at three times of the day so that the yearning of the lovers remains fresh. For this reason, divine manifestation is not perpetual. Thus, in the beginning, revelation was withheld for a period, upon which the disbelievers said "He has forsaken and is displeased," and Surah Ad-Duha was revealed to silence them. Listening while covered with a cloth will bring the same effect as what Hazrat Arif Jami (may his secret be sanctified) says: When one catches the scent of a flower, they wish to see it; when they see the flower, they wish to pluck it. 2 (When someone finds the fragrance of a flower, they want to see it, and when they see the face of the flower, they want to pick it. - T) In short, one who knows the benefits of the Ahmadi Shariah and the majestic rulings of the Muhammadi laws (upon whose author be the best blessings and greetings) will surely believe that its permissibility is a severe misfortune for the Ummah and an aid for the cursed Iblis. (7) The prohibition of provocative sounds is not because they invite towards sin only with a specific singer, which would make the song of a dead female singer lawful. Otherwise, listening to musical instruments would be absolutely lawful where sinful singers are not imaginable. Rather, it is because they corrupt the heart, stir up lust, sow hypocrisy, and establish negligence, as explained by the great Imams, and we have mentioned a portion of it convincingly in 'Al-Kashf al-Shafiya'. (As the famous Imams have provided this benefit, and we have explained some part of it in our treatise Al-Kashf al-Shafiya. - T). And Allah, the Pure and Exalted, knows best. Problem 19: From Moradabad, Mughalpura Ward Part 2, near the house of Janab Hakim Syed Amir Hasan Sahib, queried by Syed Hamid Hussain Sahib, 11th Rabi al-Awwal 1332 AH. In the court of solid scholars and muftis of the clear Shariah, it is requested: what is your ruling on the matter of listening to beautiful poetry or prose in melodic tunes, whether in Arabic, Egyptian, or Indian accents, or others, with the exception of the Holy Quran? While observing the rules and laws of music without instruments, by a righteous old or young man, or even a beardless youth, as long as there is no fear of temptation or chaos, is it permissible or not? As scholars and others read Maulana Rumi's Masnavi, Naats, Hamds, etc.

1 Gulistan-e-Saadi, Chapter 2, Islamiya Steam Press, Lahore, p. 115. 2 Yusuf Zulaikha, Chapter of Zulaikha taking Yusuf etc., Matba Tajiran Kutubkhana, Lahore, p. 189.

दीदार मी नुमाई ओ परहेज़ मी कुनी, बाज़ार-ए-ख्वेश ओ आतिश-ए-मा तेज़ मी कुनी। 1 (तू दीदार दिखाता है लेकिन परहेज़ भी करता है, लिहाज़ा अपने बाज़ार और हमारी आग को तेज़ करता है। - त) शरीअत-ए-मुतह्हरा ने नेक कामों में भी इस हिकमत का लिहाज़ फ़रमाया है। इसीलिये दिन में तीन वक्त नमाज़ हराम फ़रमाई ताकि चाहने वालों का शौक ताज़ा रहे। इसीलिये तजल्ली मुस्तकिल नहीं होती। लिहाज़ा शुरुआत में एक मुद्दत तक वह्य (ईश्वरीय संदेश) रोक ली गई, जिस पर काफ़िरों ने कहा "छोड़ दिया और नाराज़ हो गया" और सूरह अद्दुहा नाज़िल हुई और उनका मुँह काला किया। तो कपड़ा डालकर सुनना वही रंग लाएगा जो हज़रत आरिफ जामी (कुद्दिस सिर्रहुस्सामी) फरमाते हैं: चु याबद बू-ए-गुल ख्वाहद कि बीनद, चु बीनद रू-ए-गुल ख्वाहद कि चीनद। 2 (जब कोई फूल की खुशबू पाता है तो चाहता है कि उसे देखे, और जब फूल को देख लेता है तो चाहता है कि उसे चुन ले। - त) अल-ग़र्ज़, अहमदिया शरीअत के मफ़ाद और मुहम्मदिया अहकाम के बुलंद मर्तबों को जानने वाला (जिसके साहिब पर बेहतरीन दुरूद ओ सलाम हो) यकीनन यह मानेगा कि इसकी इबाहत (अनुमति) उम्मत के लिए सख़्त बदख़्वाही और मरदूद इब्लीस के लिए इमदाद है। (7) फ़िल्ला अंगेज़ आवाज़ों की हुरमत इसलिए नहीं कि वह किसी खास गाने वाले के साथ ही गुनाह की तरफ बुलाते हैं, जिससे किसी मरहूमा मुग़न्निया (गायिका) का रिकॉर्ड किया हुआ गाना हलाल हो जाए। वरना साज़ों का सुनना मुतलकन हलाल होता जहाँ गुनाहगारों का तसव्वुर न हो। बल्कि इसलिए कि वह दिल को बिगाड़ने वाली, शहवत को उभारने वाली, निफ़ाक की जड़ और ग़फ़लत पैदा करने वाली हैं, जैसा कि अइम्मा-ए-एलाम ने बयान किया है और हमने इसका एक हिस्सा अपने रिसाले 'अल-कश्फ़ शाफ़िया' में तफ़सील से ज़िक्र किया है। (जैसा कि मशहूर इमामों ने फायदा पहुँचाया, और हमने उसका कुछ हिस्सा अपने रिसाले अल-कश्फ़ शाफ़िया में बयान किया है। - त)। वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम। मसला 19: मुरादाबाद, मोहल्ला मुग़लपुरा, हिस्सा दोम, मुत्तसिल मकान जनाब हकीम सैयद अमीर हसन साहब, सायल सैयद हामिद हुसैन साहब, 11 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1332 हिजरी। उलेमा-ए-मतीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मुबीन की बारगाह में अर्ज़ है कि इस मसले में आप हज़रात का क्या हुक्म है कि हुस्न-ए-मंज़ूम या मन्सूर कलाम का सुनना, चाहे अरबी, मिस्री या हिन्दि लहजे में हो, या इनके अलावा हो, सिवाए क़ुरान मजीद और फ़ुरक़ान-ए-हमीद के मौसीकी के क़वायद ओ क़वानीन की रियायत करते हुए बिना साज़ों के किसी नेक बूढ़े या जवान या यहाँ तक

कि अमर्द (बिना दाढ़ी मूँछ वाले लड़के) से, जबकि फ़ित्ना ओ फ़साद का ख़ौफ़ न हो, जायज़ है या नहीं? जैसा कि उलेमा और दीगर लोग मौलाना रूम की मसनवी, नात और हम्द वगैरह पढ़ते हैं।

---

1 गुलिस्तां सादी, बाब दोम, मतबा इस्लामिया स्टीम प्रेस, लाहौर, पृ. 115। 2 यूसुफ़ ज़ुलैख़ा, बाब गिरफ्तन ज़ुलैख़ा यूसुफ़ रा इल्ख, मतबा ताजिरान कुतुबख़ाना, लाहौर, पृ. 189।

دیدار می نمائی و پرہیز می کنی بازار خویش و آتش ما تیز می کنی 1 (تو دیدار دکھاتا ہے لیکن پرہیز بھی کرتا ہے، لہذا اپنے بازار اور ہماری آگ کو تیز کرتا ہے۔ت) شرع مطہر نے امور محمودہ میں بھی اس حکمت پر لحاظ فرمایا ہے ولہٰذا دن میں تین وقت نماز حرام فرمائی کہ شوق مشتاقان تازہ ہوتا رہے ولہٰذا تجلی کو دوام نہیں ہوتا ولہٰذا ابتداء میں ایک مدت تک وحی روک لی گئی جس پر کفار نے ودع و قلی کہا اور سورہ والضحٰی نے نزول فرما کر ان کا منہ سیاہ کیا تو کپڑا ڈال کر سننا وہی رنگ لائے گا جو حضرت عارف جامی قدس سرہ السامی فرماتے ہیں:۔ چو یابد بوئے گل خوابد کہ بیند چو بیند روئے گل خوابد کہ چیند 2 (جب کوئی پھول کی خوشبو پائے تو چاہتا ہے کہ اس کو دیکھے اور جب پھول کو دیکھ پائے تو چاہتا ہے کہ اسے چنے۔ت) غرض عارف مصالح شریعت احمدیہ و حکم جلیلہ احکام محمدیہ علی صاحبہا افضل الصلوۃ والتحیۃ یقین کرے گا کہ اس کی اباحت سخت بدخواہی امت اور ابلیس لعین کو ان پر بڑی اعانت ہے۔ (۷) اصوات فتنہ کی حرمت اس لئے نہیں کہ وہ خاص مصوت کے ساتھ فجور کی طرف داعی ہیں جس سے مغنیہ مردہ کا بھرا ہوا گانا حلال ہوجائے ورنہ سماع مزامیر مطلقاً حلال ہوتا کہ وہاں مصوت فجور نامتصور، بلکہ اس لئے کہ وہ مفسد قلب و محرک شہوت و منبت نفاق و مثبت غفلت ہیں کما افادہ الائمۃ الاعلام و ذکر نا طرفاً منہ فی الکشف شافیا (جیسا کہ مشہور ائمہ نے اس کا افادہ بخشا، اور ہم نے اس کا کچھ حصہ اپنے رسالے الکشف شافیا میں بیان کیا ہے۔ت) واللہ سبحنہ و تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۹: از مراد آباد محلہ مغلپورہ حصہ دوم متصل مکان جناب حکیم سید امیر حسن صاحب مسئولہ سید حامد حسین صاحب ۱۱ ربیع الاول شریف ۱۳۳۲ھ علماء متین و مفتیان شرع مبین کی بارگاہ میں عرض ہے کہ اس مسئلہ میں آپ حضرات کا کیا ارشاد ہے کہ سماع کلام حسن منظوم

خواہ منثور بالحان بہ لہجہ عربی ہو یا مصری یا ہندی خواہ سوا ان کے ہو باستثناء قرآن مجید و فرقان حمید برعایت قواعد و قوانین موسیقی بلا مزامیر مرد صالح معمر یا غیر معمر بلکہ امرد سے جبکہ خوف فتنہ و فساد نہ ہو جائز ہے یا نہیں، چنانچہ علماء و غیر ہم مثنوی مولانا روم و نعت و حمد وغیرہ ہم پڑھتے ہیں

---

1 گلستان سعدی باب دوم مطبع اسلامیہ سٹیم پریس لاہور ص ۱۱۵ 2 یوسف زلیخا باب گرفتن زلیخا یوسف را الخ مطبع تاجران کتب خانہ لاہور ص ۱۸۹

If it is impermissible, then is the knowledge of the rules of music impermissible, or is it disliked and abhorred to follow them after acquiring the knowledge of music? Whereas knowledge of any matter is not ugly, because the radiant Presence, the Master of the Day of Resurrection (may Allah the Exalted bless him and grant him peace), had detailed knowledge of all matters through Divine gift. Then, if following it is impermissible, it is necessary for all scholars to differentiate between music and non-music in their speech (verse or prose) which they recite during sermons etc., and in which music is found, so that they may separate truth from falsehood. This is because it is a universal principle: 'Things are known by their opposites' (T). So long as the opposite of non-music, i.e., music, is not acquired, distinction remains inconceivable; otherwise, mixing would not be permissible despite having the power to avoid it. Otherwise, every discourse, whether verse or prose, with the exception of the Holy Quran, would be declared permissible by following music. Explain, and may you be rewarded. (T)

Answer: When the listener (saami'), the heard material (masmu'), the reciter (musmi'), the instrument (misma'), the place (masma'), the act of listening (sama'), and the act of making someone listen (isma') are all free from corruption, then listening and reciting are all permissible, even if done intentionally following the rules of music, whether in Persian, Urdu, or Hindi—anything except the Great Quran. The relation of music to sound is like the relation of prosody (poetic meter) to speech. When speech is good, it does not become ugly by being composed in poetic meters. Similarly, melodies that are permissible do not become impermissible by following the rules of music. It is stated in the Hadith: 'Poetry is speech; what is good in it is good, and what is bad in it is bad.' (T)

The listener should be one whose heart is not dominated by base desires, because listening (sama') does not create anything new but rather arouses what is already buried in the heart. In the heard material, it is necessary that it should not be obscene, nor should it contain any word against the pure Sharia, nor should there be mention of any living beardless youth, nor praise of any living woman, nor should the name of someone recently deceased be mentioned whose relatives are alive and would feel shame from it. There is no harm in using names like Laila, Salma, or Su'ad (traditional poetic figures). The reciter (musmi' with damma) i.e., the one reciting or singing, should be a man, old or young, not a beardless youth or a woman. The instrument (misma' with kasra) i.e., the tools for listening, should not be musical

instruments (mazamir); if it is, it should only be a simple tambourine (duff) without bells, not played in intoxicating styles. The place (masma' with fatha) i.e., the venue for listening, should not be a gathering of transgressors.

Footnote 1: Al-Sunan al-Kubra by al-Bayhaqi, Kitab al-Hajj, Chapter: It is not restricted for anyone among them, etc. Dar al-Fikr, Beirut, 5/68.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 24

अगर यह नाजायज़ है, तो क्या संगीत के नियमों का ज्ञान नाजायज़ है, या संगीत का ज्ञान प्राप्त करने के बाद उन नियमों का पालन करना दोषपूर्ण और निंदनीय है? जबकि किसी भी चीज़ का ज्ञान बुरा नहीं होता, क्योंकि कयामत के दिन के स्वामी, हुज़ूर-ए-पुरनूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अल्लाह के दिए हुए वरदान से सभी मामलों का विस्तृत ज्ञान प्राप्त था और है। फिर, अगर उन नियमों का पालन नाजायज़ है, तो सभी विद्वानों के लिए अपने कलाम (पद्य या गद्य) में, जिसे वे उपदेश आदि के समय पढ़ते हैं और जिसमें संगीत पाया जाता है, संगीत से गैर-संगीत के बीच अंतर करना आवश्यक है, ताकि वे सत्य को असत्य से अलग कर सकें। क्योंकि यह एक सार्वभौमिक सिद्धांत है: 'चीज़ें अपने विरोधियों से पहचानी जाती हैं' (त)। जब तक कि गैर-संगीत के विपरीत, यानी संगीत का ज्ञान न हो, तब तक अंतर करना अकल्पनीय है; अन्यथा, शक्ति होने के बावजूद मिश्रण करना जायज़ नहीं होगा। वरना संगीत के पालन के साथ हर कलाम, चाहे वह पद्य हो या गद्य, पवित्र कुरान को छोड़कर जायज़ घोषित किया जाएगा। स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें। (त)

उत्तर: जब श्रोता (सामे), सुना गया विषय (मस्मू), सुनाने वाला (मुस्मी), वाद्ययंत्र (मिस्मा), स्थान (मस्मा), सुनना (समा) और सुनाना (इस्मा) सभी बुराइयों से मुक्त हों, तो सुनना और सुनाना सब जायज़ है, भले ही जानबूझकर संगीत के नियमों का पालन किया जाए, चाहे वह फ़ारसी, उर्दू या हिंदी में हो—पवित्र कुरान को छोड़कर। संगीत का स्वर से वही संबंध है जो छन्दशास्त्र (अरूज़) का वाणी से है। जब वाणी अच्छी हो, तो छन्द के अनुसार पद्यबद्ध होने से वह बुरी नहीं हो जाती। उसी प्रकार, जो धुनें जायज़ हैं, वे संगीत के नियमों के पालन से नाजायज़ नहीं हो जातीं। हदीस में कहा गया है: 'कविता एक वाणी है; जो अच्छी है वह अच्छी है, और जो बुरी है वह बुरी है।' (त)

श्रोता ऐसा होना चाहिए जिसके हृदय पर नीच इच्छाओं का प्रभुत्व न हो, क्योंकि सुनना (समा) कोई नई चीज़ पैदा नहीं करता, बल्कि उसी को उभारता है जो दिल में दबा होता है। सुनाए जाने वाले विषय में यह आवश्यक है कि वह अश्लील न हो, न ही उसमें पवित्र शरीयत के विरुद्ध कोई शब्द हो, न ही किसी जीवित सुंदर किशोर (अमुरद) का ज़िक्र हो, न ही किसी जीवित महिला की प्रशंसा हो, और न ही किसी ऐसे हाल ही में मरे हुए व्यक्ति का नाम हो जिसके संबंधी जीवित हों और उन्हें इससे अपमान महसूस हो। लैला, सलमा, सुआद जैसे प्रतीकात्मक नामों में कोई हर्ज नहीं है। सुनाने वाला (मुस्मी - पेश के साथ) यानी पढ़ने या गाने वाला पुरुष हो, चाहे वह बूढ़ा हो या जवान, किशोर या महिला न हो। वाद्ययंत्र (मिस्मा - ज़ेर के साथ) यानी सुनने के साधन, संगीत वाद्ययंत्र (मज़ामीर) न हों;

यदि हों तो केवल बिना घुँघरू वाली ढप (दफ़) हो जिसे नशीली शैलियों में न बजाया जाए। सुनने का स्थान (मस्मा - ज़बर के साथ) पापियों की महफ़िल न हो।

पाद-टिप्पणी 1: अल-सुनन अल-कुबरा, अल-बैहकी, किताब अल-हज्ज, अध्याय: उनमें से किसी एक पर तंगी नहीं है, आदि, दारुल फिक्र, बेरूत, 5/68.

اگر ناجائز ہے تو کیا علم قوانین موسیقی ناجائز ہے یا بعد حصول علم موسیقی رعایت اس کی معیوب و مقبوح ہے حالانکہ علم کسی امر کا قبیح نہیں کیونکہ حضور پر نور سید یوم النشور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو جمیع امور کا علم بالتفصیل بعطاء الٰہی حاصل تھا اور ہے۔ پھر اگر رعایت اس کی ناجائز ہے تو جمیع علماء کو اپنے کلام (منظوم یا منثور) کو جو بوقت وعظ وغیرہ پڑھتے ہیں اور اس میں موسیقی پائی جاتی ہے امتیاز حاصل کرنے کے لئے موسیقی سے غیر موسیقی کو فن موسیقی معلوم کرنا ضرور ہے تاکہ حق کو باطل سے جدا کرلیں، کیونکہ یہ قاعدہ کلیہ ہے یعرف الاشیاء باضدادھا (اشیاء اپنی ضدوں سے پہچانی جاتی ہیں۔ ت) تو جب تک کہ غیر موسیقی کی ضد کو یعنی موسیقی حاصل نہ ہو اس وقت تک امتیاز بایں ہمہ غیر متصور، ورنہ اختلاط باوجود قدرت جائز نہ ہوگا والا برعایت موسیقی ہر کلام خواہ نظم ہو یا نثر باستثناء قرآن شریف جائز قرار پائے گا۔ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر و ثواب پائیے۔ ت) الجواب: جب سامع و مسموع و مسمع و مسمع و مسمع و سماع واسماع سب مفاسد سے پاک ہوں تو سننا سنانا سب جائز ہے اگرچہ بالقصد برعایت قوانین موسیقی ہو، خواہ فارسی یا اردو یا ہندی جو کچھ بھی ہو باستثناء قرآن عظیم موسیقی کی نسبت آواز کی طرف وہ ہے جو عروض کی نسبت کلام کی طرف، کلام جب حسن ہو اوزان عروضیہ پر منظوم کر دینے سے قبیح نہ ہو جائے گا۔ یو ہیں الحان کہ مباح ہو قوانین موسیقی کی رعایت سے نا جائز نہ ہو جائے گا۔ حدیث میں فرمایا: الشعر کلام فحسنہ حسن و قبیحہ قبیح۔ شعر ایک کلام ہے، جو اچھا ہے وہ اچھا ہے، اور جو برا ہے وہ برا ہے۔ (ت) سامع تو وہ چاہئے جس کے قلب پر شہوات ردیہ کا استیلا نہ ہو کہ سماع کوئی نئی بات پیدا نہیں کرتا بلکہ اسی کو اُبھارتا ہے جو دل میں دبی ہو، مسموع میں ضرور ہے کہ نہ فحش ہو نہ کوئی کلمہ خلاف شرع

مطہر ، نہ کسی زندہ امر د کا ذکر ہو نہ کسی زندہ عورت کی تعریف، نہ ایسی قریب مردہ کا نام ہو جس کے اعزہ زندہ ہوں اور انہیں اس سے عار لاحق ہو ، امثال لیلیٰ سلمیٰ سعاد میں حرج نہیں۔ مسمع بالضم یعنی پڑھنے یا گانے والا مرد بوڑھا یا جوان ہو، امر د یا عورت نہ ہو۔ مسمع بالکسر یعنی آلہ سماع مزامیر نہ ہوں اگر ہو تو صرف دف بے جلاجل جو ہئیات تطرب پر نہ بجایا جائے۔ مسمع بالفتح جائے سماع مجلس فساق نہ ہو

۱السنن الکبریٰ للبیہقی کتاب الحج باب لا یضیق علی واحد منھا الخ دارالفکر بیروت ۵/ ۶۸

Fatawa Ridawiyya Volume 24

And if it is an amorous ghazal, song, Thumri, etc., besides praise (Hamd), eulogy (Naat), and panegyric (Manqabat), then it is not appropriate in a mosque. Sama' (listening) should not be at such a time that it disrupts congregational prayers or any other obligatory, necessary, or important Sharia matter. Isma' (reciting or singing) should not be with such a voice that it disturbs a worshiper's prayer, a sleeper's rest, or a patient's comfort. And if it involves the mention of beauty, love, union, separation, wine, and kababs, then the sound should not reach women; in fact, if the singer's voice is charming, absolute caution is appropriate against it reaching women.

"O Anjashah! Go easy with the glass vessels." - 1 O Anjashah! Be careful of the glass vessels and lower your voice. (T)

Hemistich: Beauty is a calamity for the eye, and melody is a burden for the ear.

Regarding the science of music, wasting time in its learning is not the work of the righteous; rather, it is at least futile (abath), and wasting time in any futile activity is forbidden.

The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Part of the excellence of a person's Islam is his leaving that which does not concern him." - 2 The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: It is from the beauty of a person's Islam that he abandons that which is useless and unprofitable. (T)

And it is not correct to compare it with the sacred knowledge of the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him), as that was without formal learning, without spending time, and without specific intent, by a predetermined grace. The problem lies in [spending time on learning it], not in the knowledge itself, for knowledge is a perfection. That is why Allah, the Exalted in Majesty, for whom every perfection is necessary and every deficiency—in fact, every thing devoid of both perfection and deficiency—is impossible, is Omniscient of everything from eternity to eternity. To deny His knowledge of anything is disbelief. Thus it is proven that the knowledge of anything, absolutely, whatever it may be, is pure perfection. Similarly, after learning its laws, observing them in one's melodies is a flaw for people of honor and reform, as it is an art of the lowly and despicable and is specifically famous among the transgressors (fasiqeen and fasiqat). Such specialization makes it forbidden in Sharia, even if there is no inherent harm in it. For example, for a young

or old man to put four fingers' width or less of lace, embroidery, or border on a cap, tunic, or pajamas is undoubtedly improper and defective because it is the style of the transgressors and the indecent, although inherently up to four fingers' width is permitted and...

1. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Adab, Chapter: What is Permissible in Poetry, etc., Qawmi Kutub Khana Karachi, 4/908
2. Jami' at-Tirmidhi, Kitab az-Zuhd, Amin Company Delhi, 2/55

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

और अगर हम्द, नात और मन्क़बत के अलावा आशिक़ाना ग़ज़ल, गीत, ठुमरी वग़ैरा हो तो मस्जिद में मुनासिब नहीं। समाअ यानी सुनना ऐसे वक़्त में न हो कि उस से नमाज़-ए-बा-जमाअत वग़ैरा किसी फ़र्ज़ या वाजिब या अम्र-ए-अहम शरई में ख़लल आए। इस्माअ यानी पढ़ना या गाना ऐसी आवाज़ से न हो जिस से किसी नमाज़ी की नमाज़ या सोते की नींद या मरीज़ के आराम में ख़लल आए। और हुस्न व इश्क़ व वस्ल व हिज्र व शराब व कबाब का ज़िक्र हो तो औरतों तक आवाज़ न पहुँचे बल्कि अगर गाने वाले की आवाज़ दिलकश है तो औरतों तक पहुँचने की मुतलक़न एहतियात मुनासिब है।

"या अन्जशा रुवैदका बिल-क़वारीर" - 1 ऐ अन्जशा! कांच की शीशियों (औरतों) का लिहाज़ करके अपनी आवाज़ आहिस्ता कीजिए। (त)

मिश्रा: हुस्न बला-ए-चश्म है नग़मा वबाल-ए-गोश है।

रहा इल्म-ए-मौसीक़ी, इसके तअल्लुम (सीखने) में वक़्त ज़ाया करना सालेहीन का काम नहीं बल्कि कम अज़ कम अबस (बेकार) है और हर अबस में तज़ई-ए-वक़्त (वक़्त की बर्बादी) ममनूअ (वर्जित) है।

"क़ाला सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मिन हुस्नि इस्लामिल मर-इ तरकुहू मा ला यअनीहि" - 2 हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया किसी आदमी के हुस्न-ए-इस्लाम में से यह है कि जो बे-फ़ायदा और बे-सूद काम हो उसे छोड़ दे। (त)

और इल्म-ए-अक़दस-ए-हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर क़ियास सही नहीं कि वह बिला तअल्लुम व बे-सर्फ़ए-वक़्त व बे-क़स्द-ए-ख़ास ब-फ़ैज़-ए-मुईन था, हर्ज इसमें है नफ़्स-ए-इल्म में कोई हर्ज नहीं कि वह कमाल है, व लिहाज़ा हज़रत-ए-इज़्ज़त जलालहू जिसके लिये हर कमाल वाजिब और हर नुक़सान बल्कि हर वह शै जो कमाल व नुक़सान दोनों से ख़ाली हो मुहाल, बिकुल्लि शय-इन अलीम है अज़लन अबदन जो हुआ और किसी शै के इल्म की उससे नफ़ी कुफ़्र है तो साबित हुआ कि हर शै का इल्म मुतलक़न कैसी ही हो ऐन-ए-कमाल है, यूँ ही बा'द-ए-तअल्लुम इसके क़वानीन की अपने अलहान में रियायत अहल-ए-शरफ़ व इसलाह के लिये ऐब है कि वह ज़लीलों रज़ीलों का फ़न है और बिल-ख़ुसूस फ़ासिक़ीन व फ़ासिक़ात के साथ मशहूर है, ऐसी तख़्सीस शरअन उसे ममनूअ कर देती है अगरचे फ़ी नफ़्सिही इसमें कोई हर्ज न हो जैसे जवान या बूढ़े मर्द को टोपी अंगरखे या पाजामे में चार उंगल या उससे कम लचका गोटा पट्टा लगाना बिला शुब्हा बद-

वज़ई व मअयूब है कि फ़ासिक़ों और फ़ुह्शों की वज़अ है अगरचे फ़ी नफ़्सिही चार उंगल तक की इजाज़त है और...

1. सहीह अल-बुख़ारी किताब अल-अदब बाब मा यजूज़ु मिनल शिअरि इलख़ क़ौमी कुतुब ख़ाना कराची 4/908
2. जामिअत तिर्मिज़ी किताब अज़-ज़ुहद अमीन कंपनी दिल्ली 2/55

पृष्ठ 127/720

اور اگر حمد ونعت ومنقبت کے سوا عاشقانہ غزل، گیت، ٹھمری وغیرہ ہو تو مسجد میں مناسب نہیں۔ سماع یعنی سننا ایسے وقت نہ ہو کہ اس سے نمازِ باجماعت وغیرہ کسی فرض یا واجب یا امرِ اہم شرعی میں خلل آئے۔ اسماع یعنی پڑھنا یا گانا ایسی آواز سے نہ ہو جس سے کسی نمازی کی نماز یا سوتے کی نیند یا مریض کے آرام میں خلل آئے۔ اور حُسن وعشق ووصل وہجر وشراب وکباب کا ذکر ہو تو عورتوں تک آواز نہ پہنچے بلکہ اگر گانے والے کی آواز دلکش ہے تو عورتوں تک پہنچنے کی مطلقاً احتیاط مناسب ہے۔

یا انجشة رویدك بالقوارير - ۱ اے انجشہ! کانچ کی شیشیوں کا لحاظ کرکے اپنی آواز آہستہ کیجئے ۔ (ت)

ع حُسنِ بلائے چشم ہے نغمہ وبالِ گوش ہے۔ رہا علمِ موسیقی، اس کے تعلم میں وقت ضائع کرنا صالحین کا کام نہیں بلکہ کم از کم عبث ہے اور ہر عبث میں تضییعِ وقت ممنوع۔

قال صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم من حسن اسلام المرء ترکہ مالا یعنیہ - ۲ حضور اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا کسی آدمی کے حسنِ اسلام میں سے یہ ہے کہ جو بے فائدہ اور بے سود کام ہو اسے چھوڑ دے (ت)

اور علمِ اقدسِ حضور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم پر قیاس صحیح نہیں کہ وہ بلاتعلم وبے صرفِ وقت وبے قصدِ خاص بفیضِ معین تھا حرج اس میں ہے نفسِ علم میں کوئی حرج نہیں کہ وہ کمال ہے، وللہذا حضرتِ عزت جلالہ جس کے لئے ہر کمال واجب اور ہر نقصان بلکہ ہر وہ شے جو کمال ونقصان دونوں سے خالی ہو محال بکل شیء علیم ہے ازلاً ابداً جو ہوا اور کسی شے کے

علم کی اس سے نفی کفر ہے تو ثابت ہوا کہ ہر شے کا علم مطلقاً کیسی ہی ہو عینِ کمال ہے، یو ہیں بعدِ تعلم اس کے قوانین کی اپنے الحان میں رعایت اہلِ شرف واصلاح کے لئے عیب ہے کہ وہ ذلیلوں رذیلوں کا فن ہے اور بالخصوص فاسقین وفاسقات کے ساتھ مشہور ہے، ایسی تخصیص شرعاً اسے ممنوع کردیتی ہے اگرچہ فی نفسہ اس میں کوئی حرج نہ ہو جیسے جوان یا بوڑھے مرد کو ٹوپی انگرکھے یا پاجامے میں چار انگُل یا اس سے کم لچکا گوٹا پٹھا لگانا بلا شبہ بد وضعی ومعیوب ہے کہ فاسقوں اور فحشوں کی وضع ہے اگرچہ فی نفسہ چار انگُل تک کی اجازت ہے اور

۱ صحیح البخاری کتاب الادب باب مایجوز من الشعر الخ قومی کتب خانہ کراچی ۴/ ۹۰۸ ۲ جامع الترمذی کتاب الزہد امین کمپنی دہلی ۲/ ۵۵

Fatawa-e-Razawiyya Volume 24

The questioner's doubt regarding the prohibition of observing musical rules—that by this logic, learning music would become obligatory for everyone—is completely groundless and meaningless. It is at least accepted that observing it in the Glorious Quran is forbidden. So, if avoiding it without learning music were impossible, then learning it would necessarily have become an individual obligation (Farz-e-Ain) for every Muslim. Then this would be such an obligation that the Companions, Successors, Imams, and Scholars were all deprived of it. The truth is quite the opposite: what is prohibited and flawed is the intentional observation [of musical rules], and observation is a voluntary act. A voluntary act requires intent, and intent is impossible without knowledge. Thus, one can only 'observe' rules if one knows them. A person who does not know them is neither aware of them nor intends to follow them. If, by chance, their recitation aligns with some branch of music, there is no blame on them, nor is it Shariah-prohibited, as explicitly stated in 'Al-Fatawa al-Khayriyya' and others (as clarified in Fatawa Khayriyya etc. — T). In fact, the Holy Prophet (may Allah Almighty send peace and blessings upon him) says: "He who does not recite the Quran with a melodious voice is not one of us." [1] (He who does not read the Quran with a beautiful voice is not from our group.) Accidental alignment with some branch of music while reciting beautifully is not rare; rather, it is prevalent. According to experts in this art, even if there are no complex trills or variations, it cannot be devoid of rhythm (Taal-Sam). Thus, the ignorant person, in their simplicity, remains safe from the intent of causing corruption. The knowledgeable person, if they try to be cautious, will intentionally ruin the melody, and if they try to beautify it, they will lean towards observing musical rules. Therefore, it is even more necessary to remain ignorant of this art. And success is through Allah, and Allah Almighty knows best.

Problem 20: Sent by members of some Gaza Association, Rajab 1332 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter? Since it is established about 'Sama' (listening to spiritual music/recitation) that it is permissible for the worthy and impermissible for the unworthy. As Sheikh Saadi (may Allah's mercy be upon him) says: "I do not say, O brother, what 'Sama' is, unless I know who the listener is." [2] (O brother! I do not say how 'Sama' is until I know who the listener is. — T)

[1] Sunan ibn Majah, Chapters on Establishing Prayer and Sunnah, etc., Chapter on the beauty of voice with the Quran, p. 96. [2] Bostan-e-Saadi, Chapter Three, Danish-e-Saadi, Tehran, Iran, p. 184. Page 128 of 720

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 24

संगीत के नियमों के पालन की मनाही पर प्रश्नकर्ता का यह संदेह कि इस तर्क से तो संगीत सीखना सब पर अनिवार्य हो जाएगा, बिल्कुल निराधार और अर्थहीन है। कम से कम इतना तो स्वीकार्य है कि क़ुरआन अज़ीम में इसका पालन हराम है। तो यदि संगीत सीखे बिना इससे बचना असंभव होता, तो इसे सीखना हर मुसलमान पर व्यक्तिगत रूप से अनिवार्य (फ़र्ज़-ए-ऐन) होता। फिर तो यह ऐसा फ़र्ज़ होता जिससे सहाबा, ताबिईन, इमाम और विद्वान सभी वंचित रह जाते। बात यह नहीं है, बल्कि इसके विपरीत है: जो प्रतिबंधित और दोषपूर्ण है वह जानबूझकर नियमों का पालन करना है, और पालन करना एक स्वैच्छिक कार्य है। स्वैच्छिक कार्य के लिए इरादा आवश्यक है, और ज्ञान के बिना इरादा असंभव है। अतः पालन तभी किया जा सकता है जब वह जानता हो। न जानने वाला न तो उससे अवगत है और न ही उसका इरादा करता है। यदि संयोग से उसका पाठ संगीत की किसी शाखा के अनुकूल हो जाए, तो न उस पर कोई दोष है और न ही यह शरीयत की दृष्टि से वर्जित है, जैसा कि 'अल-फ़तावा अल-खैरिया' आदि में स्पष्ट किया गया है (जैसा कि फ़तावा खैरिया आदि में स्पष्ट कर दिया गया है। — त)। बल्कि पवित्र पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "वह हममें से नहीं है जो कुरान को मधुर स्वर में नहीं पढ़ता।" [1] (जो अच्छी आवाज़ के साथ कुरान नहीं पढ़ता वह हमारे समूह से नहीं है।) और मधुर पाठ में किसी संगीत शाखा के साथ आकस्मिक समानता दुर्लभ नहीं है, बल्कि प्रबल है। बल्कि इस कला के जानकारों के अनुसार, भले ही उसमें जटिल तान न हो, लेकिन वह लय (ताल-सम) से रहित नहीं हो सकता। अतः अनभिज्ञ व्यक्ति अपनी सादगी में बिगाड़ के इरादे से बचा रहेगा, और जानकार व्यक्ति यदि सावधानी बरतेगा तो वह जानबूझकर धुन बिगाड़ेगा और यदि बनाना चाहेगा तो वह नियमों के पालन की ओर झुक जाएगा। इसलिए यह और भी आवश्यक हुआ कि इस कला से अनभिज्ञ रहें। और अल्लाह ही सफलता देने वाला है, और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 20: ग़ज़ा की कुछ अंजुमनों के सदस्यों द्वारा प्रेषित, रजब 1332 हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं? जबकि 'समा' (अध्यात्मिक संगीत/पाठ सुनना) के बारे में यह तय है कि यह पात्र के लिए जायज़ और अपात्र के लिए नाजायज़ है। जैसा कि शेख सादी (अल्लाह उन पर रहम करे) फरमाते हैं: "हे भाई! मैं नहीं कहता कि समा क्या है, जब तक कि मैं यह न जान लूँ कि सुनने वाला कौन है।" [2] (हे भाई! मैं नहीं कहता कि समा कैसा है, जब तक कि मैं यह न जान लूँ कि सुनने वाला कौन है। — त)

[1] सुनन इब्न माजह, नमाज़ कायम करने और सुन्नत आदि के अध्याय, क़ुरआन के साथ स्वर की सुंदरता का अध्याय, पृ. 96। [2] बोस्तान-ए-सादी, अध्याय तीन, दानिश-ए-सादी, तेहरान, ईरान, पृ. 184। पृष्ठ 128/720

منع رعایت موسیقی پر سائل کا وہ شبہ کہ اس تقدیر پر تعلم موسیقی سب پر واجب ہوگا محض بے اصل و بے معنی ہے آخر اتنا تو مسلم ہے کہ قرآن عظیم میں اس کی رعایت حرام ہے تو بے تعلم موسیقی اگر اس سے بچنا نا ممکن تھا تو خواہی نخواہی اس کا سیکھنا ہر مسلمان پر فرض عین ہوتا تو یہ وہ فرض ہے کہ صحابہ و تابعین و ائمہ و علماء سب اس سے محروم رہے، بات یہ نہیں بلکہ اس کا عکس ہے ممنوع و معیوب رعایت ہے اور رعایت فعل اختیاری ہے اور فعل اختیاری کو قصد لازم اور قصد بے علم نا ممکن تو رعایت جبھی کر سکے گا کہ جانتا ہو نہ جاننے والا کہ نہ اس سے آگاہ نہ اس کا قصد کرتا ہے اگر اتفاقاً اس کا پڑھنا کسی شعبہ موسیقی سے موافق ہو جائے تو نہ اس پر الزام نہ یہ شرعاً ممنوع حتی کہ خود قرآن عظیم میں کما نص علیہ فی الفتاوی الخیریہ وغیرھا (جیسا کہ فتاوٰی خیریہ وغیرہ میں اس کی تصریح کر دی گئی ہے۔ ت) بلکہ حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں : من لم یتغن بالقرآن فلیس منّا۔ ۱ جو خوش الحانی سے قرآن نہ پڑھے وہ ہمارے گروہ سے نہیں۔ اور خوش الحانی میں کسی شعبہ سے اتفاقیہ موافقت نادر نہیں بلکہ غالب بلکہ اس فن والوں کے نزدیک لازم ہے الحان میں اگر چہ تان گٹکری نہ ہو مگر تال سم سے خالی نہیں ہو سکتا تو ناواقف اپنی سادگی کے ساتھ قصد مفسدہ سے بچا ہوا نکل جائے گا اور واقف احتیاط کرے گا تو قصد ابگاڑے گا اور بنانا چاہے گا تو رعایت کی طرف جائے گا لٰہذا اور بھی ضرور ہوا کہ اس فن سے ناواقف رہیں، و باللہ التوفیق، واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۲۰: مرسلہ اراکین بعض انجمن غزہ رجب ۱۳۳۲ھ کیا فرماتے ہیں علماء دین اس مسئلہ میں کہ جبکہ سماع میں یہ بات مقرر ہے کہ اہل کے لئے جائز نااہل کے لئے ناجائز، چنانچہ شیخ سعدی رحمۃ اللہ علیہ

فرماتے ہیں:۔ نگویم سماع ای برادر کہ چیست مگر مستمع رابدانم کہ کیست ۲ (اے بھائی! میں نہیں کہتا کہ سماع کیسا ہے، جب تک یہ نہ جان لوں کہ سننے والا کون ہے۔ ت)

۱ سنن ابن ماجہ ابواب اقامۃ الصلوات والسنۃ الخ باب فی حسن الصوت بالقرآن ص ۹۶ ۲ بوستان سعدی باب سوم دانش سعدی تہران ایران ص ۱۸۴

Fatawa Ridawiyya Volume 24

Question: So nowadays, why has it become impermissible for the Mashaikh (Sufi elders) who listen to musical instruments? For they are eligible (ahl) for it. Objection should be raised if the ineligible (na-ahl) listen to it; they consider it nourishment for the soul and deem it an act of worship for themselves. Explain and be rewarded. (T)

Answer: O Allah, guide to the truth and correctness (O Allah! show the right and correct path. T). The distinction between 'eligible' (ahl) and 'ineligible' (na-ahl) exists in pure audition (sama' mujarrad - listening to poetry without instruments). The couplet of Hazrat Sheikh Saadi (may his secret be sanctified) mentions exactly this. In the matter of musical instruments, there is no eligibility for the 'eligible'; neither are any people eligible for them, nor are they permissible for anyone. However, for those in a state of spiritual intoxication (majazib) and self-forgetfulness who do not possess legal accountability of the intellect, there is no accountability for musical instruments or anything else, for:

Couplet: The Sultan does not take taxes from ruins.

(Because a king does not collect taxes from barren and desolate land. T)

In such a context, to distinguish between 'eligible' and 'ineligible' among rational people is to embolden every commoner toward sin and to open the door for the trickery of the accursed Satan upon the blessed Ummah. Every transgressor (fasiq) would claim, "We are eligible, it is lawful for us," and would openly commit acts of disobedience and declare what God has forbidden as lawful, misleading common ignorant people like themselves. Does the Shari'ah of Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) bring such a ruling? Heaven forbid! The pure Shari'ah closes the door to mischief (fitna), whereas this ruling turns the vent of mischief into a massive gateway. So how starkly opposed it is to the illustrious Shari'ah! Now just observe how many unidentifiable, undiscerning, and unrefined people today—who do not even have the discernment to perform ritual purification (istinja), nor know what is obligatory (fard), necessary (wajib), Sunnah, disliked (makruh), or forbidden (haram) therein—dye their clothes ochre or grow long hair like women and remain engrossed day and night in this 'Satanic voice'. It does not matter if prayers are missed, but the beating of the drum must not stop; and furthermore, they are spiritual guides (Pir-o-Murshid) at whose feet prostrations are performed. They openly say that it is permissible for us, it is pure nourishment for our souls. This impure result is due to ignorance regarding the distinction between 'eligible' and

'ineligible'. And their blatant lie is exposed thus: that even in audition without musical instruments, where there is a distinction between 'eligible' and 'ineligible', its proponents set a condition for its permissibility that no 'ineligible' person should be in the gathering, to the extent that even the singers (qawwal) must be spiritually enlightened (ahl-e-batin), as was the case in the court of Hazrat Syedna Mahbub-e-Ilahi Sultan al-Awliya Nizam al-Haq wal-Din Muhammad (may Allah be pleased with him) with Hazrat Syedna Amir Khusrau and Hazrat Sidi Mir Hasan Ali Sijzi (may their secrets be sanctified). Even assuming for the sake of argument that if there were a distinction of 'eligible' and 'ineligible' for musical instruments, the 'eligible' would be the one who never listened to it in front of any 'ineligible' person. These 'eligible' ones of ignorance hold public gatherings in which transgressors...

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द २४

प्रश्न: तो आज कल जो मशाईख (सूफी बुजुर्ग) मज़ा़मीर (वाद्य यंत्र) सुनते हैं, उनके लिए यह नाजायज़ क्यों हुआ? क्योंकि वे इसके अहल (योग्य) हैं। आपत्ति तब होनी चाहिए जब ना-अहल (अयोग्य) इसे सुनें; वे इसे रूह की गज़ा (भोजन) समझते हैं और अपने लिए इबादत (उपासना) मानते हैं। बयान फरमाएं और सवाब (पुण्य) पाएं। (त)

जवाब: ऐ अल्लाह! हक और सही रास्ता दिखा (ऐ अल्लाह! सही और दुरुस्त रास्ता दिखा। त)। अहल और ना-अहल का फर्क'मुजर्रद समा' (बिना वाद्य यंत्र के गायन सुनना) में है। हज़रत शेख सादी (उनके रहस्य पवित्र हों) के शेर में इसी का ज़िक्र है। मज़ा़मीर (वाद्य यंत्रों) के मामले में अहल की अहलियत नहीं है, न उनका कोई अहल है और न वह किसी के लिए जायज़ हैं। मगर जो लोग मजज़ूब (ईश्वरीय प्रेम में उन्मत्त) और आपे से बाहर हैं और जिनमें अक्ल की जवाबदेही नहीं है, उन पर मज़ा़मीर तो क्या, किसी भी बात की पकड़ नहीं है, क्योंकि:

शेर: सुल्तान खण्डहरों से टैक्स नहीं लेता।

(क्योंकि बंजर और वीरान ज़मीन से कोई बादशाह (लोगों से) टैक्स वसूल नहीं करता। त)

ऐसी जगह अक्ल वालों में अहल और ना-अहल का फर्क करना हर किसी को गुनाह के लिए बेबाक करना और उम्मत-ए-मरहूमा पर शैतान-ए-लईन के धोखे का दरवाज़ा खोलना है। हर फासिक (पापी) इसी का दावेदार होगा कि हम अहल हैं, हमारे लिए यह हलाल (वैध) है; वह खुलेआम गुनाह करेगा और खुदा के हराम किए हुए को हलाल बताएगा, और अपने जैसे जाहिल आम लोगों को गुमराह करेगा। क्या मुहम्मद साहब (उन पर अल्लाह की रहमत और सलाम हो) की शरीयत ऐसा हुक्म लाती है? अल्लाह की पनाह! शरीयत-ए-मुतह्हरा (पवित्र शरीयत) फितने (बुराई) का दरवाज़ा बंद करती है, और यह हुक्म फितने के सुराख को एक विशाल फाटक बना देता है। तो यह शरीयत-ए-ग़र्रा के कितने खिलाफ है। अब देख लीजिए कि आज कल कितने अनाम, कितने बेतमीज़, कितने गंदे और असभ्य लोग, जिन्हें इस्तिन्जा (शौच के बाद सफाई) करने तक की तमीज़ नहीं है, यह भी नहीं जानते कि इस्तिन्जा करने में क्या फर्ज़, वाजिब, सुन्नत, मकरूह और हराम है। वे गेरुआ कपड़े पहनकर या औरतों की तरह ज़ुल्फें बढ़ाकर रात-दिन इसी शैतानी आवाज़ (संगीत) में डूबे रहते हैं। नमाज़ें कज़ा (छूट) हो जाएं तो कोई बात नहीं, मगर ढोलक की थाप नहीं रुकनी चाहिए; और फिर वे पीर-ओ-मुर्शिद हैं, उनके पैरों पर सजदे किए जाते हैं। और वे खुलेआम कहते हैं कि हमें यह जायज़ है, हमारी

रूह की पाकीज़ा (शुद्ध) खुराक है। यह नापाक नतीजा अहल और ना-अहल के फर्क पर इसी जहालत (अज्ञानता) का है। और उनका झूठ इस तरह साफ ज़ाहिर है कि बिना मज़ा़मीर के समा में, जिसमें अहल और ना-अहल का फर्क है, उसके जायज़ होने के लिए अहल ने यह शर्त रखी है कि समा की मजलिस में कोई ना-अहल न हो, यहाँ तक कि कव्वाल भी अहल-ए-बातिन (आध्यात्मिक) हो, जैसे हज़रत सैयदना महबूब-ए-इलाही सुल्तानुल औलिया निजामुल हक वद्दीन मोहम्मद (अल्लाह उनसे राज़ी हो) के दरबार में हज़रत सैयदना अमीर खुसरो और हज़रत सय्यदी मीर हसन अली सिजजी (अल्लाह उनके रहस्यों को पवित्र करे) थे। अगर फर्ज़-ए-बातिल के तौर पर मान भी लिया जाए कि मज़ा़मीर में भी अहल और ना-अहल का फर्क होता, तो अहल वह होता जो किसी ना-अहल के सामने इसे न सुनता। ये जहालत के अहल आम सभाएं करते हैं जिसमें फासिक...

पृष्ठ १२९/७२०

تو آج کل جو مشائخ مزامیر سنتے ہیں ان کے لئے کیوں ناجائز ہوا کیونکہ وہ اس کے اہل ہیں نااہل سنے تو اس پر اعتراض چاہئے یہ تو اسے غذائے روح سمجھتے اور اپنے لئے عبادت جانتے ہیں۔ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پاہئیے۔ ت)

الجواب: اللھم ہدایۃ الحق والصواب (اے اللہ! حق اور ٹھیک راستہ دکھادے۔ت) اہل نااہل کا تفرقہ سماع مجرد میں ہے۔ شعر حضرت شیخ سعدی قدس سرہ میں اسی کا ذکر ہے۔ مزامیر میں اہل کی اہلیت نہیں، نہ ان کا کوئی اہل نہ وہ کسی کے لئے جائز، مگر مجاذیب اور خود رفتہ کہ عقل تکلیفی نہ رکھتے ہوں ان پر ایک مزامیر کیا کسی بات کا مواخذہ نہیں کہ ع

سلطان نگیرد خراج از خراب

(کیونکہ بنجر اور ویران زمین سے کوئی بادشاہ (لوگوں سے) ٹیکس وصول نہیں کرتا۔ ت)

ایسی جگہ اہل عقل میں اہل و نااہل کا فرق کرنا ہر کس و ناکس کو گناہ پر جری کرنا اور امت مرحومہ پر مکر شیطان لعین کا دروازہ کھولنا ہے، ہر فاسق اسی کا مدعی ہوگا کہ ہم اہل ہیں ہم کو حلال ہے علانیہ ارتکاب معصیت کرے گا اور حرام خدا کو حلال بتائے گا اور اپنے امثال عوام جہال کو گمراہ بنائے گا، کیا شریعت محمدیہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ایسا حکم لاتی ہے، حاش للہ۔ شریعت مطہرہ فتنہ کا دروازہ بند فرماتی ہے اور یہ حکم فتنہ کے روزن کو عظیم پھاٹک کرتا ہے، تو کس قدر مباین شریعت غرا ہے، اب دیکھ نہ لیجئے کہ آج کل کتنے نا مشخص، کتنے بے تمیز، کتنے گندہ ناتراشیدہ، جن کو استنجا کرنے کی تمیز نہیں یہ بھی نہیں جانتے کہ استنجا کرنے میں کیا فرض، واجب، سنت، مکروہ، حرام ہیں۔ وہ گیروا کپڑے رنگ کر یا عورتوں سے کا کل بڑھا کر

رات دن اسی آواز شیطانی میں منہمک ہیں۔ نمازیں قضا ہوں بلا سے، مگر ڈھولک کھٹکنا ناغہ نہ ہو، اور پھر وہ پیر و مرشد ہیں ان کے پاؤں پر سجدے ہوتے ہیں۔ اور علانیہ کہتے ہیں کہ ہم کو روا ہے، ہماری روح کی پاکیزہ غذا ہے۔ یہ ناپاک نتیجہ اسی اہل و نااہل کے فرق پر جہل کا ہے۔ اور ان کا کذب صریح یوں آشکار کہ سماع بے مزامیر جس میں اہل و نااہل کا فرق ہے اس کے جواز میں اس کے اہل نے یہ شرط رکھی ہے کہ جلسہ سماع میں کوئی نااہل نہ ہو، یہاں تک کہ قوال بھی اہل باطن ہو، جیسے بارگاہ حضور سیدنا محبوب الہی سلطان الاولیاء نظام الحق والدین محمد رضی اللہ تعالیٰ عنہ میں حضرت سیدنا امیر خسرو حضرت سیدی میر حسن علی سجزی قدس سرہما۔ بفرض باطل اگر مزامیر میں بھی اہل و نااہل کا فرق ہوتا تو اہل وہ تھا کہ کسی نااہل کے سامنے نہ سنتا، یہ جہل کے اہل عام مجمع کرتے ہیں جس میں فساق

Fatawa Razawiyya Volume 24

A devilish market of profligates, drunkards, and adulterers is established, and musical instruments are played; this is the form of 'capacity'. "And there is no power nor might except with Allah, the Most High, the Most Supreme" (No individual has the power to avoid sins and do good except with the success granted by Allah, the Exalted in rank and Great in power. - Translator). The burden of all their misguidance and the ruin of the masses lies on those 'Maulvis' who claim to distinguish between the 'capable' and 'incapable', yet strive to make God's prohibitions permissible. They hand over the sheep of the community into the claws of the wolf-like Iblis (Satan). Furthermore, the nature of musical instruments is exactly like wine: 'a little of it leads to a desire for much'. 'One sin draws towards another'.

Poetic verse: "A corrupt seed yields corrupt fruit." (A defective and useless seed brings forth useless fruit. - Translator)

Gradually, things reach the point of a prostitute's performance; then modesty shrinks away. A harlot dances in a full gathering, while the 'Pir Sahab'—styled as Sheikh-ul-Mashaikh (Leader of Scholars), Master of the Magians, and Pole of the Age—sits there, and his disciples are chanting 'Hu Haq' (He is the Truth). Shame on such 'capacity'! All these cursed consequences result from this compromise and making the forbidden permissible under the guise of 'capable and incapable'. And refuge is sought with Allah, Lord of the worlds. Regarding chess, there are various narrations and reasons, but the well-wishers of the community have seen with insight that its permissibility would be aiding Satan against the blessed community and the religion of Islam itself. Therefore, it is absolutely forbidden and a major sin. As for musical instruments, the inclination of the carnal soul (nafs-e-ammara) towards them is thousands of times greater than towards chess; how then can they not be absolutely forbidden and a severe major sin? Out of a hundred, ninety-five would be those who do not even glance at chess, and not even five in a hundred would be found whose carnal soul is not pleased by the devilish sound of musical instruments. Even the pious keep their souls away from it by force.

Verse: "Beauty is an affliction for the eye, music is a burden for the ear." In 'Kafi' (commentary of 'Wafi') by Imam Hafiz-ud-Din Nasafi, then in 'Jami-ur-Rumuz', then in 'Radd-ul-Muhtar', it is stated:

[Arabic text]: "It is forbidden and a major sin according to us, and in its permissibility is aiding Satan against Islam and the Muslims. 1" [Urdu translation]: "According to us,

it is forbidden and a major sin, and to declare it permissible is to help the accursed Satan against Islam and the people of Islam. (T)"

---

1 Radd-ul-Muhtar, Kitab al-Hazr wa al-Ibahah, Chapter on Sale, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/253; Jami-ur-Rumuz, Kitab al-Karahiyah, Maktaba Islamia, Gunbad-e-Qamoos, Iran, 3/319.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

व्यभिचारियों, शराबीयों और ज़िनाकारों का एक शैतानी बाज़ार लगता है और संगीत के वाद्ययंत्र बजते हैं; यह 'क्षमता' का रूप है। "और अल्लाह के सिवा कोई शक्ति और सामर्थ्य नहीं है, जो सबसे ऊँचा और सबसे महान है।" (गुनाहों से बचने और भलाई करने की शक्ति अल्लाह तआला की तौफीक के बिना किसी व्यक्ति में नहीं है। - अनुवादक)। इन सब की गुमराह और जनता की बर्बादी का बोझ उन मौलवियों पर है जो योग्य और अयोग्य के बीच का अंतर बताते हैं और ईश्वर के हराम को हलाल करने की कोशिश करते हैं और उम्मत की भेड़ों को इब्लिस रूपी भेड़िए के पंजों में सौंप देते हैं। फिर वाद्ययंत्रों की स्थिति बिल्कुल शराब की तरह है: 'इसका थोड़ा सा बहुत की चाह पैदा करता है'। 'पाप पाप की ओर खींचता है'।

पद्य: "भ्रष्ट बीज भ्रष्ट फल देता है।" (दोषपूर्ण और बेकार बीज बेकार फल लाता है। - अनुवादक)

धीरे-धीरे बात वेश्या के मुजरे तक पहुँचती है; फिर हया (लज्जा) किनारा कर लेती है। भरी महफ़िल में एक वेश्या नाच रही है, और 'पीर साहब'—जो 'शैखुल मशाइख', 'पीरे मगां' और 'कुतबे दौरां' बने बैठे हैं—वहाँ बैठे हैं और उनके मुरीद 'हक़ हक़' का नारा लगा रहे हैं। धिक्कार है ऐसी 'क्षमता' पर! ये सभी शापित परिणाम इसी समझौते और 'योग्य व अयोग्य' के नाम पर हराम को जायज़ ठहराने का नतीजा हैं। और हम अल्लाह, जहानों के रब की पनाह माँगते हैं। शतरंज के बारे में तो कई तरह की रिवायतें और कारण हैं, लेकिन उम्मत के शुभचिंतकों ने अपनी अंतर्दृष्टि से यही कहा है कि इसकी अनुमति देना उम्मत और स्वयं इस्लाम धर्म के विरुद्ध शैतान की सहायता करना है। इसलिए यह पूरी तरह हराम और गुनाह-ए-कबीरा (बड़ा पाप) है। तो वाद्ययंत्र, जिनके प्रति नफ़्से-अम्मारा (बुराई पर उकसाने वाला मन) का रुझान शतरंज की तुलना में हज़ारों गुना अधिक है, वे भला पूरी तरह हराम और गंभीर पाप क्यों न होंगे? सौ में से निन्यानवे ऐसे होंगे जिनका शतरंज की तरफ़ ध्यान भी नहीं जाता होगा, और सौ में पाँच भी ऐसे नहीं निकलेंगे जिनके नफ़्से-अम्मारा को वाद्ययंत्रों की शैतानी आवाज़ पसंद न आती हो। यहाँ तक कि परहेज़गार लोग भी अपने मन को ज़बरदस्ती इससे दूर रखते हैं।

पद्य: "सुंदरता आँखों के लिए आफ़त है, संगीत कानों के लिए बोझ है।" इमाम हाफ़िज़ुद्दीन नसफ़ी की 'काफ़ी' (व़ाफ़ी की व्याख्या), फिर 'जामे-उर-रुमुज़', फिर 'रद-उल-मुहतार' में लिखा है:

[अरबी पाठ]: "यह हमारे निकट हराम और बड़ा पाप है, और इसकी अनुमति देना इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ शैतान की मदद करना है। 1" [उर्दू अनुवाद]: "हमारे नज़दीक वह हराम और गुनाह-ए-कबीरा है, और उसे मुबाह (अनुमेय) ठहराने में इस्लाम और अहल-ए-इस्लाम के ख़िलाफ़ मरदूद शैतान की मदद करना है। (त)"

---

1 रद-उल-मुहतार, किताब अल-हज़र व अल-इबाहत, बिक्री का अध्याय, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत 5/253; जामे-उर-रुमुज़, किताब अल-कराहिया, मकतबा इस्लामिया, गुम्बद-ए-कामूस, ईरान 3/319.

पृष्ठ 130/720

فجار شرابی زنا کار سب کا شیطانی بازار لگتا ہے اور مزامیر کھڑکتے ہیں، یہ اہلیت کی شکل ہے، ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم (گناہوں سے بچنے اور بھلائی کرنے کی قوت بجز اللہ تعالی بلند مرتبہ اور بزرگ قدر کے توفیق دینے کے کسی فرد میں نہیں۔ت) ان سب کی گمراہی اور عوام کی بربادی تباہی کا وبال انہیں مولویوں کے سر ہے جو اہل و نااہل کا فرق بتاتے اور حرام خدا کو حلال کرنے کی کوشش کرتے اور امت کی بھیڑوں کو ابلیس بھیڑیے کے پنجے میں دیتے ہیں پھر مزامیر کی حالت بالکل شراب کی مثل ہے قلیلھا یدعوالی کثیر ھا تھوڑی سے بہت کی خواہش پیدا ہوتی ہے الذنب یجری الی الذنب گناہ گناہ کی طرف کھینچتا ہے ع

تخم فاسد بار فاسد آورد (ناقص اور ناکارہ بیج بیکار پھل لاتا ہے۔ت)

شدہ شدہ رنڈی کے مجرے تک نوبت پہنچتی ہے پھر حیا پیکر کنارہ کرتی ہے، بھری مجلس میں فاحشہ ناچ رہی ہے اور پیر جی صاحب شیخ المشائخ و پیر مغاں و قطب دوراں بنے ہوئے بیٹھے ہیں اور مریدین 'ھو حق' مچا رہے ہیں، تف بریں اہلیت، یہ سب نتائج ملعونہ اسی مداہنت و تحلیل حرام کے فرق اہل و نااہل کے ہیں، والعیاذ باللہ رب العالمین۔ درباره شطرنج تو خود روایات وجوہ عدیدہ پر ہیں مگر ناصحان امت نے نظر بصیر یہی فرمایا کہ اس کی اباحت میں امت مرحومہ اور خود دین اسلام پر شیطان کو مدد دینا ہے لہٰذا مطلقاً حرام و گناہ کبیرہ ہے تو مزامیر کہ نفس امارہ کو شیطان لعین کی ان کی طرف رغبت بہ نسبت شطرنج ہزار ہا درجہ زائد ہے کیونکر مطلقاً حرام و سخت کبیرہ نہ ہوں گے۔ سو میں پچانوے وہ ہوں گے جنہیں شطرنج کی طرف التفات بھی نہیں اور سو میں پانچ بھی نہ نکلیں گے جن کے نفس امارہ کو مزامیر کی شیطانی آواز خوش نہ آتی ہو، اہل تقوٰی بھی اپنے نفس کو بالجبر اس سے باز رکھتے ہیں ع

حُسن بلائے چشم ہے نغمہ وبالِ گوش ہے۔ کافی شرح وافی للامام حافظ الدین النسفی پھر جامع الرموز پھر ردالمختار میں ہے:

هو حرام وكبيرة عندنا وفي اباحته اعانة الشيطان على الاسلام والمسلمين 1۔ | ہمارے نزدیک وہ حرام اور گناہ کبیرہ ہے اور اسے مباح قرار دینے میں اسلام اور اہل اسلام کے خلاف شیطانِ لعین کی مدد کرنا ہے۔ (ت)

---

1 ردالمحتار کتاب الحظر والاباحة فصل فی البیع داراحیاء التراث العربی بیروت ۵ / ۲۵۳، جامع الرموز کتاب الکراهیة مکتبہ اسلامیہ گنبد قاموس ایران ۳ / ۳۱۹

O Muslims! Within the choice of tongue, in false poetry, one has the power to say 'Honey is bitter and wine is rubylike' (meaning, saying this is completely against the established reality - Tr.). Every person has the choice to call wine 'the food of the soul,' 'life-enhancing,' and 'life-nourishing.' What happens by just saying? Listen to the distinction made by Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), with justice and faith, and it will become clear to you itself.

With whom did you play the game of love in the pitch-dark night? (In the dark night, with whom did you carry on a love affair - Tr.)

Yes, listen, and listen with the ears of faith, what is established from the sacred saying of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): The food of the soul is that towards which the Shari'ah of Muhammad (upon its owner and his progeny be the best of prayers and greetings) invites, and that towards which the pure Shari'ah invites has the promise of Paradise upon it. And Paradise is promised for those things which are disliked by the self (nafs). And the food of the self is that which the Shari'ah of Muhammad (blessings and peace of Allah be upon him and his progeny) forbids, and that which the noble Shari'ah forbids has the threat of fire upon it. And the threat of fire is for those things which are desirable to the self. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Table Content] Arabic Text: حفت الجنة بالمکارہ وحفت النار بالشھوات۔ رواہ البخاری ۱ فی کتاب الرقاق بلفظ حجبت وتقدیم الجملة الاخیرة ومسلم باللفظ عن ابی ھریرة و احمد ۲ ومسلم والترمذی عن انس رضی اللہ تعالٰی عنھما فی صحیحہ۔

Urdu/English Translation side: Paradise is surrounded by things that are unpleasant to the self, and Hell is covered with things that the self likes. (Imam Bukhari narrated this in Kitab al-Riqaq with the word 'hujibat' [veiled] and mentioned it by placing the last sentence first. And Muslim narrated from the words of Hazrat Abu Huraira. And Ahmad, Muslim, and Jami' Tirmidhi mentioned it from Hazrat Anas (may Allah be pleased with both of them) in their Sahih - Tr.)

[Footnotes] 1 Sahih al-Bukhari, Kitab al-Riqaq, Chapter: The Fire is Veiled by Desires, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/940; Sahih Muslim, Kitab al-Jannah wa Sifat Na'imiha etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/378. 2 Sahih Muslim, Kitab al-Jannah, 2/378 and Jami' al-Tirmidhi, Chapters on the Description of Paradise, 2/80; Musnad Ahmad bin

Hanbal on the authority of Anas (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami, Beirut, 3/153, 252, 282.

मुसलमानों! ज़बान के इख़्तियार में है, बातिल शायरी में 'शहद कड़वा है और शराब याक़ूती है' (यानी ऐसा कहना साबित शुदा हक़ीक़त के सरासर ख़िलाफ़ है- अनु.) कह देने का हर शख़्स को इख़्तियार है। शराबी शराब को भी 'ग़ज़ा-ए-रूह' (आत्मा का भोजन), 'जाँ-फ़ज़ा' (जीवन देने वाली) और 'जाँ-परवर' (जीवन पालने वाली) कहा करते हैं। कहने से क्या होता है? मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने जो फ़र्क़ बताया है, ज़रा इंसाफ़ और ईमान के साथ उसे सुनिए तो ख़ुद खुल जाएगा।

कि बा कि बाख़्तः इश्क़ दर शब-ए-दीजूर (अंधेरी रात में तूने किसके साथ इश्क़ लड़ाया। - अनु.)

हाँ सुनिए और ईमान के कानों से सुनिए कि इरशाद-ए-अक़दस (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से क्या साबित है। ग़ज़ा-ए-रूह वह है जिसकी तरफ़ शरीयत-ए-मुहम्मदिया (उन पर और उनकी आल पर अफ़ज़ल-उस-सलात वत-तहीय्या हो) बुलाती है। और जिसकी तरफ़ शरीयत-ए-मुतह्हरा बुलाती है, उस पर जन्नत का वादा है। और जन्नत उन चीज़ों पर मौऊद (वादित) है जो नफ़्स (मन) को नापसंद हैं। और ग़ज़ा-ए-नफ़्स वह है जिससे शरीयत-ए-मुहम्मदिया (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व-आलिही वसल्लम) मना फ़रमाती है। और जिससे शरीयत-ए-करीमा मना फ़रमाती है, उस पर आग की वईद (चेतावनी) है। और आग की वईद उन चीज़ों पर है जो नफ़्स को पसंद हैं। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[तालिका सामग्री] अरबी पाठ: حفت الجنة بالمكاره وحفت النار بالشهوات۔ رواہ البخاری ١ فی كتاب الرقاق بلفظ حجبت وتقديم الجملة الاخيرة ومسلم باللفظ عن ابی هريرة و احمد ٢ ومسلم والترمذی عن انس رضی اللہ تعالٰی عنهما فی صحيحہ۔

अनुवाद अनुभाग: जन्नत उन चीज़ों से घिरी हुई है जो नफ़्स को नागवार (नापसंद) हैं और दोज़ख़ उन चीज़ों से ढकी हुई है जो नफ़्स को पसंद हैं। (इमाम बुख़ारी ने किताबु-र-रिकाक़ में लफ़्ज़ 'हुजिबत' के साथ इसे रिवायत किया है और आख़िरी जुमले को पहले लाकर ज़िक्र फ़रमाया है। और मुस्लिम ने हज़रत अबू हुरैरा के अल्फाज़ से। और अहमद, मुस्लिम और जामेअ तिरमिज़ी ने हज़रत अनस से (अल्लाह तआला उन दोनों से राज़ी हो) अपनी 'सहीह' में ज़िक्र फ़रमाया है। - अनु.)

[पाद टिप्पणियाँ] 1 सहीह अल-बुखारी, किताब अल-रिकाक, अध्याय: आग इच्छाओं से ढकी हुई है, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/940; सहीह मुस्लिम, किताब अल-जन्नाह वा सिफत नइमिहा आदि, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/378। 2 सहीह मुस्लिम, किताब अल-जन्नाह, 2/378 और जामि अल-तिर्मिज़ी, जन्नत के वर्णन के अध्याय, 2/80; मुसनद अहमद बिन हनबल अनस (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के अधिकार पर, अल-मकतब अल-इस्लामी, बेरूत, 3/153, 252, 282।

مسلمانو! زبانِ اختیار میں ہے شعریاتِ باطلہ میں العسل مرۃ والخمر یاقوتیۃ (شہد کڑوا ہے اور شراب یاقوتی ہے، یعنی یوں کہنا حقیقت ثابتہ کے سراسر خلاف ہے۔ ت) کہہ دینے کا ہر شخص کو اختیار ہے شرابی شراب کو بھی غذائے روح و جانفزا وجان پرور کہا کرتے ہیں کہنے سے کیا ہوتا ہے محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے جو فرق بتایا ہے ذرا انصاف وایمان کے ساتھ اسے سنئے تو خود کھل جائے گا ع

کہ با کہ باختہ عشق در شب دیجور (اندھیری رات میں تُونے کس کے ساتھ عشق لڑایا۔ت)

ہاں سنئے اور گوشِ ایمان سے سنئے کہ ارشادِ اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے کیا ثابت ہے، غذائے روح وہ ہے جس کی طرف شریعتِ محمدیہ علی صاحبہا والہ افضل الصلوٰۃ والتحیۃ بلاتی ہے اور جس کی طرف شریعتِ مطہرہ بلاتی ہے اس پر وعدۂ جنت ہے اور جنت اُن چیزوں پر موعود ہے جو نفس کو مکروہ ہیں، اور غذائے نفس وہ ہے جس سے شریعتِ محمدیہ صلوات اللہ تعالیٰ وسلامہ علیہ وعلی آلہ منع فرماتی ہے اور جس سے شریعتِ کریمہ منع فرماتی ہے اس پر وعیدِ نار ہے اور نار کی وعید ان چیزوں پر ہے جو نفس کو مرغوب ہیں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

[خانہ مواد] عربی متن: حفت الجنۃ بالمکارہ وحفت النار بالشھوات۔ رواہ البخاری ۱ فی کتاب الرقاق بلفظ حجبت وتقدیم الجملۃ الاخیرۃ ومسلم باللفظ عن ابی ھریرۃ و احمد ۲ ومسلم والترمذی عن انس رضی اللہ تعالٰی عنھما فی صحیحہ۔

اردو ترجمہ: جنت ان چیزوں سے گھیر دی گئی ہے جو نفس کو ناگوار ہیں اور دوزخ ان چیزوں سے ڈھانپ دی ہے جو نفس کو پسند ہیں (امام بخاری نے کتاب الرقاق میں ساتھ لفظ حجبت کے اس کو روایت کیا ہے اور آخری جملہ کی تقدیم سے اس کو ذکر فرمایا اور مسلم نے حضرت ابوہریرہ کے الفاظ سے۔ اور احمد، مسلم اور جامع ترمذی نے حضرت انس سے (اللہ تعالیٰ ان دونوں سے راضی ہو) اپنی صحیح میں ذکر فرمایا۔ت)

[حواشی] 1 صحیح البخاری کتاب الرقاق باب حجبت النار بالشھوات قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۹۴۰، صحیح مسلم کتاب الجنۃ وصفۃ نعیمھا الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۳۷۸ 2 صحیح مسلم کتاب الجنۃ ۲ / ۳۷۸ و جامع الترمذی ابواب صفۃ الجنۃ ۲ / ۸۰، مسند احمد بن حنبل عن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۳ / ۱۵۳، ۲۵۲، ۲۸۲

This Hadith was from the Sahihayn (Bukhari & Muslim), and its detail is in this majestic Hadith that Abu Dawood and Nasa'i narrated from Abu Huraira (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Arabic Column:] When Allah the Almighty created Paradise, He said to Gabriel: 'Go and look at it.' So he went and looked at it, and at what Allah has prepared in it for its inhabitants. Then he came back and said: 'O my Lord, by Your Might, no one will hear of it but will enter it.' Then He surrounded it with hardships (unpleasant things). Then He said: 'O Gabriel, go and look at it.' So he went and looked at it, then he came back and said: 'O my Lord, by Your Might, I fear that no one will enter it.' He said: 'When Allah created the Fire, He said: "O Gabriel, go and look at it."' So he went and looked at it, then he came back and said: 'O my Lord, by Your Might, no one will hear of it and enter it.' Then He surrounded it with desires. Then He said: 'O Gabriel, go and look at it.' So he went and looked at it, and said: 'O my Lord, by Your Might, I fear that no one will be left but will enter it.'[1]

[Urdu Column:] When Allah Almighty created Paradise, He commanded Gabriel the Faithful (peace be upon him) to go and see it. Gabriel saw it and everything that the Lord Almighty had prepared in it for the people of Paradise. Then he came and submitted, 'O my Lord! By Your honor, whoever hears about it will not remain without entering it.' Then the Lord Almighty surrounded it with things that are unpleasant to the soul. Then He commanded Gabriel, 'Now go and see it.' Gabriel saw it, then he came and submitted, 'O my Lord! By Your honor, I fear that now perhaps no one will be able to go into it.' Then when the Lord, Blessed and Most High, created Hell, He said to Gabriel, 'Go and see it.' Gabriel saw it and then came and submitted, 'O my Lord! By Your honor, after hearing about its condition, no one will go into it.' The Lord Almighty covered it with the desires of the soul. Then He commanded Gabriel to see it. Gabriel the Faithful (peace and blessings be upon him) saw it and submitted, 'O my Lord! By Your honor, I fear that now hardly anyone will be saved from going into it.'

[1] Jami` at-Tirmidhi, Chapters on Paradise, Chapter on 'The Fire is surrounded by desires', Amin Company, Delhi, 2/80; Sunan Abi Dawud, Book of the Sunnah, Chapter on 'The Creation of Paradise and Hell', Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/296; Sunan an-Nasa'i, Book of Oaths and Vows, Chapter on 'Swearing by the Might of Allah Almighty', Noor Muhammad Factory, Karachi, 2/32, 141.

यह हदीस तो सहीहैन (बुखारी और मुस्लिम) की थी और इसका विवरण इस भव्य हदीस में है जिसे अबू दाऊद और नसाई ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

[अरबी कॉलम:] जब अल्लाह तआला ने जन्नत बनाई तो जिब्रईल से फ़रमाया: 'जाओ और इसे देखो।' तो वह गए और उन्होंने इसे और अल्लाह ने इसमें इसके रहने वालों के लिए जो कुछ तैयार किया है उसे देखा। फिर वह लौटे और कहा: 'ऐ मेरे रब, तेरी इज़्ज़त की क़सम, कोई भी इसके बारे में सुनेगा तो वह इसमें ज़रूर दाख़िल होगा।' फिर अल्लाह ने उसे कठिनाइयों (अप्रिय चीज़ों) से घेर दिया। फिर फ़रमाया: 'ऐ जिब्रईल, जाओ और इसे देखो।' तो वह गए और इसे देखा, फिर वापस आए और कहा: 'ऐ मेरे रब, तेरी इज़्ज़त की क़सम, मुझे डर है कि अब इसमें कोई दाख़िल नहीं हो पाएगा।' फिर जब अल्लाह ने आग (दोज़ख़) बनाई, तो फ़रमाया: 'ऐ जिब्रईल, जाओ और उसे देखो।' वह गए और उसे देखा, फिर वापस आए और कहा: 'ऐ मेरे रब, तेरी इज़्ज़त की क़सम, कोई भी इसके बारे में सुनकर इसमें दाख़िल नहीं होगा।' फिर अल्लाह ने उसे इच्छाओं (शहवात) से घेर दिया। फिर फ़रमाया: 'ऐ जिब्रईल, जाओ और उसे देखो।' वह गए और उसे देखा, और कहा: 'ऐ मेरे रब, तेरी इज़्ज़त की क़सम, मुझे डर है कि अब कोई भी नहीं बचेगा बल्कि सब इसमें दाख़िल हो जाएंगे।'[1]

[उर्दू कॉलम:] जब अल्लाह अज़्ज़वजल ने जन्नत बनाई तो जिब्रईल-ए-अमीन (अलैहिस्सलाम) को हुक्म फ़रमाया कि उसे जाकर देखो, जिब्रईल ने उसे और जो कुछ मौला तआला ने उसमें जन्नत वालों के लिए तैयार फ़रमाया है देखा, फिर हाज़िर होकर अर्ज़ की, 'ऐ मेरे रब! तेरी इज़्ज़त की क़सम, जो कोई इसके बारे में सुनेगा, वह इसमें दाख़िल हुए बिना नहीं रहेगा।' फिर रब अज़्ज़वजल ने उसे उन चीज़ों से घेर दिया जो नफ़्स (मन) को नागवार (अप्रिय) लगती हैं। फिर जिब्रईल को हुक्म फ़रमाया कि अब जाकर देखो। जिब्रईल ने देखा, फिर हाज़िर होकर अर्ज़ की, 'ऐ मेरे रब! तेरी इज़्ज़त की क़सम, मुझे डर है कि अब शायद इसमें कोई भी न जा सके।' फिर जब मौला तबारक व तआला ने दोज़ख़ (नरक) पैदा की तो जिब्रईल से फ़रमाया कि इसे जाकर देखो, जिब्रईल ने देखा और फिर आकर अर्ज़ की, 'ऐ मेरे रब! तेरी इज़्ज़त की क़सम, इसका हाल सुनकर कोई भी इसमें नहीं जाएगा।' मौला तआला ने उसे नफ़्स की ख़्वाहिशों (इच्छाओं) से ढांप दिया, फिर जिब्रईल को उसे देखने का हुक्म फ़रमाया। जिब्रईल-ए-अमीन (अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम) ने उसे देखा और अर्ज़ की, 'ऐ मेरे रब! तेरी इज़्ज़त की क़सम, मुझे डर है कि अब तो शायद ही कोई इसमें जाने से बचे।'

[1] जामेअ अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुल जन्नत, बाब 'हफ्फ़तिन नारु बिश-शहवात', अमीन कंपनी दिल्ली, 2/80; सुनन अबी दाऊद, किताबुस सुन्नह, बाब 'फ़ी ख़ल्क़िल जन्नते वन्नार', आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 2/296; सुनन नसाई, किताबुल ईमान वन्नुज़ूर, बाब 'अल-हलफु लि-इज़्ज़तिल्लाहे तआला', नूर मोहम्मद कारखाना कराची, 2/32, 141.

یہ حدیث تو صحیحین کی تھی اور اس کی تفصیل اس حدیثِ جلیل میں ہے کہ ابوداؤد و نسائی نے ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

لما خلق اللہ تعالیٰ الجنۃ قال لجبرئیل اذھب فانظر الیھا فذھب فنظر الیھا والّٰی ما اعد اللہ لاھلھا فیھا ثم جاء فقال ای رب وعزتک لا یسمع بھا احد الا دخلھا ثم حفھا بالمکارہ ثم قال یا جبرئیل اذھب فانظر الیھا فذھب فنظر الیھا ثم جاء فقال ای رب وعزتک لقد خشیت ان لا یدخلھا احد قال فلما خلق اللہ النار قال یا جبرئیل اذھب فانظر الیھا فذھب فنظر الیھا ثم جاء فقال ای رب وعزتک لا یسمع بھا احد فیدخلھا فحفھا بالشھوات ثم قال یا جبرئیل اذھب فانظر الیھا فذھب فنظر الیھا فقال ای رب و عزتک لقد خشیت ان لا یبقی احد الا دخلھا [1]۔

جب اللہ عزوجل نے جنت بنائی جبریلِ امین علیہ الصلوۃ والسلام کو حکم فرمایا کہ اسے جا کر دیکھ، جبریل نے اسے اور جو کچھ مولیٰ تعالیٰ نے اس میں اہل جنت کے لئے تیار فرمایا ہے دیکھا، پھر حاضر ہو کر عرض کی اے میرے رب! تیری عزت کی قسم اسے تو جو کوئی سنے گا بے اس میں جائے نہ رہے گا۔ پھر رب عزوجل نے اسے ان باتوں سے گھیر دیا جو نفس کو ناگوار ہیں۔ پھر جبریل کو حکم فرمایا کہ اب جا کر دیکھ جبریل نے دیکھا، پھر حاضر ہو کر عرض کی اے میرے رب! تیری عزت کی قسم مجھے ڈر ہے کہ اب تو شاید اس میں کوئی بھی نہ جاسکے۔ پھر جب مولیٰ تبارک وتعالیٰ نے دوزخ پیدا کی جبرئیل سے فرمایا اسے جا کر دیکھ، جبرئیل نے دیکھا پھر آکر عرض کی اے میرے رب! تیری عزت کی قسم اس کا حال سن کر کوئی بھی اس میں نہ جائے گا۔ مولیٰ تعالیٰ نے اسے نفس کی خواہشوں سے ڈھانپ دیا، پھر جبرئیل کو اس کے

دیکھنے کا حکم فرمایا، جبریلِ امین علیہ الصلوۃ والتسلیم نے اسے دیکھ کر عرض کی اے میرے رب! تیری عزت کی قسم مجھے ڈر ہے کہ اب تو شاید ہی کوئی اس میں جانے سے بچے۔

[1] جامع الترمذی ابواب الجنة باب ماجاء حفت النار بالشهوات امین کمپنی دہلی ۸۰/۲، سنن ابی داؤد کتاب السنة باب فی خلق الجنة والنار آفتاب عالم پریس لاہور ۲۹۶/۲، سنن نسائی کتاب الایمان والنذور باب الحلف لعزة الله تعالٰی نور محمد کار خانہ کراچی ۱۴۱.۳۲/۲

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

This is the difference that Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him) explained, and the Lord of Honor Himself (Exalted be His Majesty) says about prayer in the Great Quran:

"And indeed, it is difficult except for the humbly submissive [to Allah], Who are certain that they will meet their Lord and that they will return to Him." [Quran 2:45-46]

(Translation: Indeed, prayer is heavy, except for those who possess humility, who are certain that they will meet their Lord and to Him they are to return.)

This is the hallmark of the food for the soul. Now look at musical instruments (mazamir); disbelievers, transgressors, and evildoers are immersed in them day and night. So it is clear that they are desires of the self (nafs). Since the slaves of the commanding self are obsessed with them, had they been food for the soul, they would not have even mentioned its name, for the slaves of the self tremble at the name of food for the soul. Yes, they are indeed worship, but where? In temples and churches, because their worship is performed with musical instruments. But God forbid, it is not the worship of the people of the mosque. The Lord of the mosque is pure from being worshipped through satanic pleasures, in which the portion of disbelievers is dominant. It is a strange form of worship that exists in temples and churches while mosques are deprived of it; it is prevalent among Hindus and Christians, while the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), his companions, and the Imams were protected from it. 'La hawla wala quwwata illa billahil aliyyil azim' (There is no power to avoid sins or strength to do good deeds except with the grace of Allah, the Exalted and Magnificent. - Translator). If this were worship, then low-class entertainers and prostitutes would be greater worshippers than the 'Pir ji' (spiritual guide), for if he is honored with this worship for an hour, they are engaged in it for twenty-four hours. 'La hawla wala quwwata illa billahil aliyyil azim'. There is no complaint against the ignorant, even if they pretend to be Sheikhs, although the eminent saints have said:

An ignorant Sufi is a laughingstock of Satan. | An unlearned Sufi is a jester for Satan. (Translator)

Allah never took an ignorant person as a friend (saint). | Allah never made an ignorant person His saint.

Without knowledge, one cannot recognize God. | (God the Almighty cannot be recognized without knowledge. - Translator)

The real outrage has been caused by those who call themselves 'Maulvi' Sheikhs, for they have made themselves and the common people bold and reckless towards the Shariah. They verbally claim a false distinction between the deserving and the undeserving, yet they fill their gatherings with all sorts of undeserving people from all over the world. The Imams of the religion say...

1. The Holy Quran 2/45

फतावा रिज़विया, खंड 24

यह वह अंतर है जिसे मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने बताया और स्वयं रब्बुल इज़्ज़त (महिमा और गौरव वाले प्रभु) ने कुरान अज़ीम में नमाज़ के बारे में फरमाया है:

"और बेशक यह (नमाज़) भारी है, मगर उन लोगों पर नहीं जो विनम्रता और भय रखने वाले हैं, जिन्हें विश्वास है कि वे अपने रब से मिलने वाले हैं और वे उसी की ओर लौटने वाले हैं।"

(अनुवाद: बेशक नमाज़ भारी है, सिवाय उन लोगों के जो विनम्रता रखने वाले हैं, जिन्हें यकीन है कि वे अपने रब से मिलेंगे और उन्हें उसकी ओर लौट कर जाना है।)

यह आत्मा के भोजन की पहचान है। अब संगीत वाद्ययंत्रों (मज़ामीर) को देखें; काफ़िर, गुनहगार और दुराचारी दिन-रात उनमें डूबे रहते हैं। तो यह स्पष्ट हो गया कि वे नफ़्स (इंद्रियों) की वासनाएँ हैं। चूँकि नफ़्स-ए-अम्मारा (बुराई की प्रेरणा देने वाला नफ़्स) के गुलाम उन पर फिदा हैं, अगर वे आत्मा का भोजन होते, तो वे उनका नाम भी न लेते, क्योंकि नफ़्स के गुलाम आत्मा के भोजन का नाम सुनकर कांपते हैं। हाँ, वे इबादत (पूजा) ज़रूर हैं, लेकिन कहाँ? मंदिरों और गिरजाघरों में, क्योंकि उनकी इबादत संगीत के साथ ही होती है। लेकिन तौबा! वह मस्जिद वालों की इबादत नहीं है। मस्जिद का रब इससे पाक है कि उसकी इबादत उन शैतानी आनंदों से की जाए, जिनमें काफ़िरों का हिस्सा प्रबल है। यह कैसी अजीब इबादत है जो मंदिरों और गिरजाघरों में तो होती है और मस्जिदें इससे वंचित हैं; हिंदुओं और ईसाइयों में धड़ल्ले से प्रचलित है, जबकि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), उनके साथियों और इमामों को इससे सुरक्षित रखा गया। 'ला हौला व ला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम' (गुनाहों से बचने और नेकी करने की शक्ति किसी में नहीं है, सिवाय अल्लाह तआला के जो बुलंद और अज़ीमुल शान है। - अनुवादक)। अगर यह इबादत है, तो डूम-डूमनी और वेश्याएं पीर जी से बढ़कर इबादतगुज़ार हैं, क्योंकि अगर वे एक घंटे इस इबादत से सम्मानित हों, तो ये तो चौबीस घंटे इसी में डूबी रहती हैं। 'ला हौला व ला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम'। जाहिलों से कोई शिकायत नहीं है, चाहे वे मशायख (धर्मगुरु) बन बैठें, हालांकि औलिया-ए-किराम (महान संतों) का फरमान है कि:

बिना इल्म (ज्ञान) वाला सूफी शैतान का खिलौना है। | बे-इल्म सूफी शैतान का मसखरा है। (अनुवादक)

अल्लाह ने कभी किसी जाहिल को अपना वली (संत) नहीं बनाया। | अल्लाह ने कभी किसी जाहिल को अपना वली नहीं चुना।

बिना इल्म के खुदा की पहचान नहीं हो सकती। | (बगैर इल्म के खुदा तआला की पहचान नहीं हो सकती। - अनुवादक)

गज़ब तो उन मौलवी कहलाने वाले मशायख ने ढाया है कि उन्होंने अपने साथ आम जनता को भी शरीयत के प्रति निडर और बेबाक कर दिया है। वे जुबानी तौर पर योग्य और अयोग्य के बीच झूठा भेदभाव करते हैं, लेकिन अपनी सभाओं में दुनिया भर के अयोग्य लोगों को भर लेते हैं। दीन के इमाम फरमाते हैं...

1. अल-कुरान अल-करीम 2/45

یہ ہے وہ فرق کہ مصطفٰی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے بتایا اور خود رب العزت جل جلالہ قرآن عظیم میں نماز کو فرماتا ہے:

"وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ ﴿٤٥﴾ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَاقُوا رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿٤٦﴾" بیشک نماز گراں ہے مگر ان خشوع والوں پر جن کو یقین ہے کہ وہ اپنے رب سے ملیں گے اور انہیں اس کی طرف پھر کر جانا ہے۔

غذائے روح کی یہ پہچان ہے، اب مزامیر کو دیکھئے کفار، فساق، فجار رات دن ان میں منہمک ہیں تو واضح ہوا کہ وہ شہواتِ نفس ہیں جب تو بندگانِ نفس اماره ان پر مٹے ہوئے ہیں غذائے روح ہوتے تو وہ ان کا نام نہ لیتے کہ بندگانِ نفس غذائے روح کا نام لئے تھراتے ہیں، ہاں وہ عبادت ضرور ہیں مگر کہاں مندروں اور گرجاؤں میں کہ ان کی عبادت مزامیر ہی کے ساتھ ہوتی ہے مگر حاشاوہ مسجد والوں کی عبادت نہیں، مسجد کا رب اس سے پاک ہے کہ شیطانی لذتوں سے جن میں کافروں کا حصہ غالب ہو اس کی عبادت کی جائے۔ یہ عجب عبادت ہے کہ مندروں گرجاؤں میں ہوتی ہے اور مسجدیں اس سے محروم، ہندوؤں نصرانیوں میں دھڑلے سے رائج، اور رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم وصحابہ وائمہ اس سے محفوظ ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم (گناہوں سے بچنے اور نیکی کرنے کی طاقت کسی میں نہیں مگر اللہ تعالٰی بلند اور عظیم الشان کی توفیق دینے سے۔ ت) یہ اگر عبادت ہے تو ڈوم ڈومنیاں، رنڈیاں پیر جی سے بڑھ کر عابد ہیں کہ یہ گھنٹہ بھر اس عبادت سے مشرف ہوں تو وہ چوبیس گھنٹے اسی میں ہیں ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم جاہلوں کی شکایت نہیں اگرچہ وہ مشائخ بن بیٹھیں اگر چہ اولیاء کرام کا ارشاد ہے کہ:

صوفی بے علم مسخرہ شیطان ست۔ | بے علم صوفی شیطان کا مسخرہ ہے۔ (ت)

ما اتخذ اللہ جاہلا ولیا قط اللہ نے کبھی کسی جاہل کو اپنا ولی نہ کیا ع

بے علم نتواں خدا را شناخت | (بغیر علم کے خدا تعالیٰ کی شناخت نہیں ہو سکتی۔ ت)

غضب تو ان مولوی کہلانے والے مشائخ نے ڈھایا ہے کہ اپنے ساتھ عوام کو بھی شریعت پر جری ویباک کردیا اہل نا اہل کا جھوٹا تفرقہ زبانی کہیں اور جلسے میں دنیا بھر کے نا اہل بھریں، ائمہ دین فرماتے ہیں اے

1 القرآن الکریم ۴۵/۲

Fatawa Razawiyya Volume 24

O group of scholars! If you abandon the recommended acts (Mustahabbat) and lean towards permissible acts (Mubahat), the common people will fall into disliked acts (Makruhat). If you commit disliked acts, they will fall into forbidden acts (Haram). If you commit forbidden acts, they will be involved in disbelief (Kufr).

Brothers! Have mercy on yourselves, and if not on yourselves, then have mercy on the Ummah of Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him). You are called shepherds; do not become wolves. May Allah grant guidance, Amen. And may Allah's blessings be upon our master and leader Muhammad, and his family, companions, children, and his entire party, Amen. And Allah knows best.

Problem 21: From the city of Bareilly, Tuesday, 25th Shaban 1334 AH. If a gathering is contrary to Sharia, i.e., involves dancing or music, etc., should one eat food there and participate in it or not? And if one should eat there, what is the form that would be permissible according to Sharia? Only.

The Answer: Participation in any gathering contrary to Sharia is not permissible. And eating at the same place where those activities contrary to Sharia are taking place is also not permissible. However, if the meal is in another house where no activity contrary to Sharia is happening, there is no harm for common people to go and eat. But a scholar or a leader should not go there either, unless their going would cause those activities contrary to Sharia to stop, then they must go. And Allah knows best.

Problem 22: Imam Bakhsh Faridi from Jam Pur, District Dera Ghazi Khan, Monday, 3rd Muharram 1335 AH. Regardless of 'Sama' (listening to spiritual singing) in itself, what is the ruling on listening to it in the Qadiriyya and Naqshbandiyya orders? Inform us and be rewarded.

The Answer: Sama that is without musical instruments (mazamir), where the performer is neither a woman nor an unbearded youth (amrad), and the content is neither obscene nor false, and the listener is neither a sinner nor driven by lust, then there is no doubt in its permissibility. It is permissible according to all, including the Qadiriyya and Chishtiyya; otherwise, it is impermissible according to all. Detail is in our treatise 'Ajal al-Tahbir fi Hukm al-Sama wa al-Mazamir' (The detail is in our booklet titled 'Ajal al-Tahbir regarding the ruling of Sama and musical instruments'). And Allah knows best.

फतावा रज़विया जिल्द २४

विद्वानों का समूह! यदि आप अनुशंसित कार्यों (मुस्तहब्बत) को छोड़ कर अनुमेय कार्यों (मुबाहात) की ओर झुकेंगे, तो आम लोग नापसंद कार्यों (मकरूहात) की ओर झुकेंगे। यदि आप नापसंद कार्य करेंगे, तो वे निषिद्ध कार्यों (हराम) में पड़ेंगे। यदि आप निषिद्ध कार्य करेंगे, तो वे कुफ़्र (अधर्म) में शामिल हो जाएंगे।

भाइयों! अपने आप पर दया करो, और यदि अपने आप पर नहीं, तो मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की उम्मत पर दया करो। आप चरवाहे कहलाते हैं; भेड़िये न बनें। अल्लाह हिदायत दे, आमीन। और अल्लाह की सलामती हो हमारे आका और मौला मुहम्मद और उनकी आल, उनके सहाबा, उनकी औलाद और उनके पूरे गिरोह पर, आमीन। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसाला २१: बरेली शहर से, मंगलवार, २५ शाबान १३३४ हिजरी। यदि कोई सभा शरीयत के विरुद्ध हो, यानी उसमें नाच या बाजा आदि हो, तो क्या उसमें खाना खाना चाहिए और उसमें शामिल होना चाहिए या नहीं? और अगर उसमें खाना खाना चाहिए, तो वह कौन सी सूरत है जो शरीयत के मुताबिक जायज़ हो जाए? केवल।

जवाब: शरीयत के खिलाफ किसी भी सभा में शामिल होना जायज़ नहीं है। और जहाँ शरीयत के खिलाफ काम हो रहे हों, उसी जगह खाना खाना भी जायज़ नहीं है। हाँ, अगर खाना किसी दूसरे मकान में है जहाँ कोई शरीयत के खिलाफ काम नहीं हो रहा, तो आम लोगों के जाने और खाने में कोई हर्ज नहीं। लेकिन एक आलिम (विद्वान) या नेता वहाँ भी न जाए, सिवाय उस स्थिति के कि उसके जाने से वे शरीयत के खिलाफ काम बंद हो जाएं तो उसे ज़रूर जाना चाहिए। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसाला २२: इमाम बख्श फरीदी, जाम पुर, जिला डेरा गाजी खान से, सोमवार, ३ मुहर्रम १३३५ हिजरी। समा (आध्यात्मिक गायन सुनना) अपने आप में, इससे परे कि कादिरिया और नक्शबंदिया सिलसिलों में इसके सुनने का क्या हुक्म है। हमें बताएं और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: समा जो बिना वाद्ययंत्रों (मज़ामीर) के हो, जिसमें गायक न औरत हो और न ही कोई सुकुमार लड़का (अमरद), और जो सुना जा रहा है वह न तो अश्लील हो और न ही असत्य, और सुनने वाला न तो फासिक (पापी) हो और न ही वासना से प्रेरित, तो इसके जायज़ होने में कोई संदेह नहीं है। कादिरिया और चिश्तिया सभी के नज़दीक यह जायज़ है; अन्यथा सभी के नज़दीक नाजायज़ है।

इसका विवरण हमारे रिसाले 'अजल अल-तहबीर फी हुक्म अल-समा व अल-मज़ामीर' में है। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

पृष्ठ १३४ का ७२०

گروہ علماء! اگر تم مستحبات چھوڑ کر مباحات کی طرف جھکو گے عوام مکروہات پر گریں گے، اگر تم مکروہ کرو گے عوام حرام میں پڑیں گے، اگر تم حرام کے مرتکب ہوگئے عوام کفر میں مبتلا ہوں گے۔

بھائیو! اللہ اپنے اوپر رحم کرو، اپنے اوپر رحم نہ کرو امتِ مصطفیٰ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم پر رحم کرو۔ چرواہے کہلاتے ہو بھیڑیئے نہ بنو۔ اللہ تعالٰی ہدایت دے، آمین وصلی اللہ تعالٰی علی سیدنا ومولینا محمد وآلہ وصحبہ وابنہ وحزبہ اجمعین، آمین واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۱: از شہر بریلی روز سہ شنبہ تاریخ ۲۵ شعبان ۱۳۳۴ھ اگر کوئی مجلس خلافِ شرع ہو یعنی ناچ یا باجا وغیرہ ہو تو اس میں کھانا کھانا چاہئے اور اس میں شرکت کرنا چاہئے یا نہیں؟ اور اگر اس میں کھانا کھانا چاہئے تو وہ کون سی شکل ہے جو شرع کے موافق جائز ہو جائے؟ فقط

الجواب: کسی خلافِ شرع مجلس میں شرکت جائز نہیں اور کھانا بھی اسی جگہ جہاں وہ خلافِ شرع کام ہو رہے ہیں تو اس کھانے میں بھی شرکت جائز نہیں، اور اگر وہ کھانا دوسرے مکان میں ہے وہاں کوئی امرِ خلافِ شرع نہیں تو عام لوگوں کو جانے اور کھانے میں حرج نہیں مگر عالم یا مقتدا وہاں بھی نہ جائے مگر اس صورت میں کہ اس کے جانے سے وہ امور خلافِ شرع بند ہو جائیں گے تو ضرور جائے۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۲: امام بخش فریدی از جام پور ضلع ڈیرہ غازی خان دوشنبہ ۳ محرم ۱۳۳۵ھ سماع فی نفسہ کا قطع نظر اس سے کہ سلسلہ قادریہ اور نقشبندیہ میں نہیں سننے کا کیا حکم ہے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: سماع کہ بے مزامیر ہو اور مسمع نہ عورت ہو نہ امرود، اور مسموع نہ فحش نہ باطل، اور سامع نہ فاسق ہو نہ شہوت پر، تو اس کے جواز میں شبہ نہیں۔ قادریہ و چشتیہ سب کے نزدیک جائز ہے، ورنہ سب کے نزدیک ناجائز، والتفصیل فی رسالتنا اجل التحبیر فی حکم السماع والمزامیر (اس کی تفصیل ہمارے رسالے 'اجل التحبیر فی حکم السماع والمزامیر' میں ہے۔ت) واللہ تعالٰی اعلم

صفحہ 134 کا 720

Fatawa Razawiyya, Volume 24

Issue 23: Sent by Muhammad Manzoor Alam, 2 Safar-ul-Muzaffar 1335 AH.

Question: What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say about this matter? The Maulvis of this country say that playing and listening to the harmonium and playing or listening to the gramophone is strictly forbidden (Haram). If it is truly forbidden, then in many cities, several Indian scholars have permitted it and are knowingly committing sin. What is the reason for this? Are they not acquainted with religious knowledge? That is, in Ajmer Sharif, Phulwari Sharif, Baghdad Sharif, etc., during the days of Urs, they listen to Qawwali, and in front of it, the harmonium and sitar are definitely present. What is the reason for this? Please inform us about the ruling on this, according to which method it is permissible and according to which it is impermissible. Only.

Answer: The harmonium is certainly forbidden (Haram). There is no sign of it in Baghdad Sharif, nor has it been seen in Ajmer Sharif. The actions of the transgressors cannot be a proof, nor has any scholar called it permissible (Halal). If someone has called it permissible, they would not be a scholar but a wrongdoer. Listening to the Holy Quran from a gramophone is prohibited because bringing it into amusement and play is disrespectful. It is also prohibited to listen to the sound of dancing, musical instruments, or unlawful singing. If the voice is permissible, meaning there is nothing prohibited by Sharia in it nor is it a place for respect, then there is no inherent harm in listening to it. Yes, if it is a gathering of amusement, then participation in it is prohibited. A complete detail is in our treatise 'Al-Kashf al-Shafiya'. And Allah Almighty knows best.

Issue 24: From Faizabad, Masjid Mughal Pura, sent by Sheikh Akbar Ali Muazzin and Maulvi Abdul Ali, 19 Rabi' al-Akhir 1336 AH.

Question: Is it permissible or impermissible to have Qawwali singing with musical instruments and a gathering of ineligible people who do not adhere to fasting and prayer, especially the gathering of women?

Answer: Singing with musical instruments is absolutely impermissible, let alone with these prohibited acts. And Allah Almighty knows best.

Issue 25 to 27: From Kamal Pura, Jait Pura area, Banaras, sent by Khuda Bakhsh Zardoz, owner of Islamiya Flour Mill, 20 Rabi' al-Akhir 1336 AH.

Question: What do the scholars of religion say about these issues: (1) A wedding procession (Barat) that has many musical instruments, lighting, and horses, and has been taken around in various places. Does their marriage legally take place according to Sharia or not? And will it be a sin to participate in such a wedding procession or not?

फ़तावा रजविया, जिल्द 24

मसला 23: मुरसला मुहम्मद मंजूर आलम, 2 सफ़र-उल-मुज़फ़्फ़र 1335 हिजरी।

प्रश्न: क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ मतीन इस मसले में? इस मुल्क के मौलवी साहबान कहते हैं कि हारमोनियम बजाना और सुनना और ग्रामोफ़ोन बजाना या सुनना क़तई हराम है। अगर दर हक़ीक़त हराम है तो अक्सर बिलाद (शहरों) में बहुत से उलेमा-ए-हिंद ने इसे जायज़ रखा है और दीदह दानिस्ता (जानबूझकर) गुनाह के मुर्तकिब होते हैं, इसकी क्या वजह है? क्या वो लोग इल्म-ए-दीन से वाक़िफ़ नहीं हैं? यानी अजमेर शरीफ़, फुलवारी शरीफ़, बग़दाद शरीफ़ वग़ैरह में ज़माना-ए-उर्स में क़व्वाली सुनते हैं, उसके सामने हारमोनियम और सितार ज़रूर होता है, इसकी क्या वजह है? अज़राहे मेहरबानी इसके बारे में जैसा हुक्म हो किस-किस तरीक़े वाले के नज़दीक जायज़ है और किस-किस के नज़दीक नाजायज़ है? जवाब से मुत्तला फ़रमाएं। फ़क़त।

अल-जवाब (उत्तर): हारमोनियम ज़रूर हराम है, बग़दाद शरीफ़ में तो इसका निशान भी नहीं, न अजमेर शरीफ़ में देखने में आया। न फ़ासिक़ों (गुनाहगारों) का फ़ेल (काम) हुज्जत (दलील) हो सकता है, न किसी आलिम ने इसे हलाल कहा। अगर किसी ने हलाल कहा हो तो वो आलिम न होगा ज़ालिम होगा। ग्रामोफ़ोन से क़ुरआन मजीद का सुनना ममनूअ (वर्जित) है कि इसे लह्व-ओ-लब (खेल-तमाशे) में लाना बे-अदबी है। और नाच या बाजे या नाजायज़ गाने की आवाज़ भी सुनना ममनूअ है। और अगर जायज़ आवाज़ हो कि न इसमें कोई मुनकर-ए-शरई (शरीयत में नापसंद चीज़) हो न वो कुछ महल-ए-अदब हो, तो इसके सुनने में फ़ी-नफ़्सिही (अपने आप में) हरज नहीं। हाँ, लह्व (खेल-तमाशे) का जलसा हो तो इसमें शिरकत की मुमानअत (मनाही) है। और तफ़सील-ए-कामिल हमारे रिसाला 'अल-कश्फ़ु शाफ़िया' में है। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 24: अज़ फैज़ाबाद मस्जिद मुग़ल पुरा, मुरसला शैख़ अकबर अली मोअज़्ज़िन व मौलवी अब्दुल अली, 19 रबी-उल-आख़िर 1336 हिजरी।

प्रश्न: गाना क़व्वाली मअ (साथ) साज़ और नाअहल लोगों का जमा होना जो सौम-ओ-सलात (रोज़ा और नमाज़) के पाबंद न हों, ख़ुसूसन मस्तूरात (पर्दा नशीं औरतों) का जमा होना जायज़ है या नाजायज़?

अल-जवाब (उत्तर): गाना मअ मज़ा़मीर (वाद्य यंत्रों के साथ) मुतलक़न (बिल्कुल) नाजायज़ है, न कि इन मुनकिरात (बुराइयों) के साथ। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 25 ता 27: अज़ कमाल पुरा अलाक़ा जैत पुरा बनारस, मुरसला ख़ुदा बख़्श ज़रदोज़ मालिक फ़्लोर मिल इस्लामिया, 20 रबी-उल-आख़िर 1336 हिजरी।

प्रश्न: क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इन मसाइल के बारे में: (1) जिसकी बारात में कसरत से बाजे, रोशनी, घोड़े हों और जा-बजा बारात की गश्ती (चक्कर) की गई हो। उनका निकाह शरअन होता है या नहीं? और ऐसी बारात में शरीक होने से गुनाह होगा या नहीं?

पेज 135 का 720

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

مسئلہ ۲۳: مرسلہ محمد منظور عالم ۲ صفر المظفر ۱۳۳۵ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں، اس ملک کے مولوی صاحبان کہتے ہیں کہ ہارمونیم بجانا اور سننا اور گراموفون بجانا یا سننا قطعی حرام ہے، اگر در حقیقت حرام ہے تو اکثر بلاد میں بہت سے علماء ہند نے اس کو جائز رکھا ہے اور دیدہ دانستہ گناہ کے مرتکب ہوتے ہیں اس کی کیا وجہ، کیا وہ لوگ علم دین سے واقف نہیں ہیں یعنی اجمیر شریف، پھلواری شریف، بغداد شریف وغیرہ میں زمانہ عرس میں قوالی سنتے ہیں اس کے سامنے ہارمونیم و ستار ضرور ہوتا ہے اس کی کیا وجہ ہے، ازراہِ مہربانی اس کے بارہ میں جیسا حکم ہو کس کس طریقہ والے کے نزدیک جائز ہے اور کس کس کے نزدیک نا جائز ہے؟ جواب سے مطلع فرمائیں۔ فقط

الجواب: ہارمونیم ضرور حرام ہے، بغداد شریف میں تو اس کا نشان بھی نہیں، نہ اجمیر شریف میں دیکھنے میں آیا، نہ فاسقوں کا فعل حجت ہو سکتا ہے، نہ کسی عالم نے اسے حلال کہا، اگر کسی نے حلال کہا ہو تو وہ عالم نہ ہوگا ظالم ہوگا۔ گراموفون سے قرآن مجید کا سننا ممنوع ہے کہ اسے لہو و لعب میں لانا بے ادبی ہے، اور ناچ یا باجے یا ناجائز گانے کی آواز بھی سننا ممنوع ہے، اور اگر جائز آواز ہو کہ نہ اس میں کوئی منکر شرعی نہ وہ کچھ محلِ ادب، تو اس کے سننے میں فی نفسہ حرج نہیں، ہاں لہو کا جلسہ ہو تو اس میں شرکت کی ممانعت ہے، اور تفصیلِ کامل ہمارے رسالہ الکشف شافیا میں ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۲۴: از فیض آباد مسجد مغل پورہ مرسلہ شیخ اکبر علی مؤذن و مولوی عبد العلی ۱۹ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ

گانا قوالی مع ساز اور نااہل لوگوں کا جمع ہونا جو صوم صلوۃ کے پابند نہ ہوں خصوصاً مستورات کا جمع ہونا جائز ہے یا ناجائز؟

الجواب: گانا مع مزامیر مطلقاً ناجائز ہے نہ کہ ان منکرات کے ساتھ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۲۵ تا ۲۷: از کمال پورہ علاقہ جیت پورہ بنارس مرسلہ خدا بخش زردوز مالک فلور مل اسلامیہ ۲۰ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل کے بارے میں: (۱) جس کی بارات میں کثرت سے باجے، روشنی، گھوڑے ہوں اور جابجا بارات کی گشتی کی گئی ہو۔ ان کا نکاح شرعاً ہوتا ہے یا نہیں؟ اور ایسی بارات میں شریک ہونے سے گناہ ہوگا یا نہیں؟

Fatawa Rizvia, Volume 24

And clarify the rulings separately for both types of people joining [the procession]. (2) Some do not see any harm or sin in participation. (3) Some consider it a sin, but join the procession of their specific neighborhood or relative out of compulsion, thinking that if they don't join, it will cause grief and sorrow and lead to unpleasantness among them. Is this compulsion valid?

The Answer: Lights and horses are not forbidden; however, musical instruments (baajay) as they are prevalent are certainly forbidden. Participation is of two types: one is going along with the wedding procession (baraat), and second is going to the house where the procession is held. Firstly, it is not at all permissible for any scholar or leader to go with the baraat if it includes music or any other forbidden thing.

[Table Header] Arabic: Because a leader should not mingle with people of falsehood, as mentioned in Al-Alamgiriyah 1 and elsewhere, and because this diminishes their respect in the eyes of people and wipes out the sanctity of those forbidden acts from hearts. Urdu: This is because the religious leader of any people should not have social interaction with the people of falsehood, as mentioned in Fatawa Alamgiri etc., and also because (if social interaction is maintained with common people) this behavior destroys respect and honor in the eyes of common people and erases the sanctity of those forbidden acts from hearts. (T)

And one who joins while approving these forbidden things, it is absolutely forbidden, even if he is completely ignorant. If someone is from the common people and does not pay attention to these forbidden things and stays away from them while being with the baraat for the sake of maintaining family ties, friendship, or due to a subordinate position, then there is no harm.

[Table Header] Arabic: And Allah knows the corrupter from the reformer, as they stated regarding following a funeral procession that has wailing women, rather visiting graves where forbidden acts are happening, as in Radd al-Muhtar etc. Urdu: Allah knows well the one who causes mischief from the one who reforms, as the noble Imams have clarified that if there are wailing women with a funeral (mayyit), one should definitely go with the funeral; rather, one should not leave visiting the people of graves even though sinful and un-Islamic acts are happening there.

1 Fatawa Hindiyyah, Kitab al-Karahiya, Chapter 14, Noorani Kutub Khana Peshawar, 5/346 Page 136 of 720

फतावा रज़विया, जिल्द 24

और शरीक होने वालों की दो किस्में हैं, दोनों का हुक्म अलग-अलग बयान फरमाएं। (2) कुछ तो शिरकत में कोई हर्ज या गुनाह नहीं समझते। (3) कुछ गुनाह तो समझते हैं मगर अपने खास मोहल्ले या रिश्तेदार की बारात में इस मजबूरी से शरीक होते हैं कि न शरीक होंगे तो रंज व मलाल का सबब होगा और आपस में बे-लतफी होगी, क्या यह मजबूरी आड़े आती है?

जवाब: रोशनी और घोड़े वर्जित नहीं हैं, हाँ बाजे जैसे कि प्रचलित हैं, ज़रूर वर्जित हैं। शिरकत दो तरह की है: एक बारात के साथ जाना और दूसरी उस मकान में जाना जहाँ बारात है। पहले तो किसी आलिम (विद्वान) या मुक्तादा (नेता) को कतई नहीं चाहिए जबकि उसके साथ बाजे या और कोई वर्जित चीज़ हो।

[सारणी अनुभाग] अरबी: क्योंकि एक नेता को बातिल (झूठ) के लोगों के साथ मेल-जोल नहीं रखना चाहिए जैसा कि अलमगीरिया 1 आदि में है और इसलिए भी कि यह लोगों की नज़रों में उनकी इज़्ज़त गिरा देता है और उन हराम कामों की हुरमत (पवित्रता) को दिलों से मिटा देता है। उर्दू: इसलिए कि किसी कौम के दीनी पेशवा (धार्मिक नेता) को अहल-ए-बातिल (झूठ के लोगों) के साथ मेल-मिलाप नहीं रखना चाहिए जैसा कि फतावा आलमगीरी वगैरह में ज़िक्र है और इसलिए भी कि (आम लोगों से अगर मेल-जोल रखा जाए) तो यह रवैया आम लोगों की निगाहों से इज़्ज़त व हुरमत को खत्म कर देता है और उन हराम कामों की हुरमत को दिलों से मिटा देता है। (त)

और जो इन ममनूआत (वर्जित चीज़ों) की पसंदगी के साथ शरीक हो तो मुतलकन (निश्चित रूप से) हराम है चाहे वह निरा जाहिल ही क्यों न हो। और अगर अवाम (आम जनता) में से कोई व्यक्ति है और वह इन ममनूआत की तरफ तवज्जो न करे और सिला रहमी (रिश्तेदारी निभाना) या दोस्ती के लिहाज़ या मातहती की वजह से उन ममनूआत से बचते हुए बारात के साथ हो तो हर्ज नहीं।

[सारणी अनुभाग] अरबी: और अल्लाह फसाद करने वाले को सुधार करने वाले से खूब जानता है जैसा कि उन्होंने उस जनाजे के पीछे चलने के बारे में स्पष्ट किया है जिसके साथ रोने-पीटने वाली औरतें हों, बल्कि उन कब्रों की ज़ियारत करना जहाँ मुनकरात (बुरे काम) हो रहे हों जैसा कि रद्दुल मुहतार वगैरह में है। उर्दू: अल्लाह तआला फसाद (बदअमनी) करने वाले को इस्लाह (सुधार) करने वाले से खूब जानता है जैसा कि अइम्मा-ए-कराम (महान इमामों) ने इसकी तशरीह (व्याख्या) फरमाई कि अगर जनाज़ा (मैयत) के साथ रोने-पीटने वाली औरतें हों तो यह जनाज़ा के साथ ज़रूर जाए

बल्कि अहल-ए-कुबूर (कब्र वालों) की ज़ियारत न छोड़े बावजूद इसके कि वहाँ गुनाह और गैर-शराई काम हो रहे हों।

1 फतावा हिन्दिया, किताबुल कराहिया, बाब 14, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 5/346 पेज 136 of 720

اور شریک ہونے والوں کی دو قسم ہے دونوں کا حکم علیحدہ علیحدہ بیان فرمائیں۔ (۲) بعض تو شرکت میں کوئی حرج یا گناہ نہیں سمجھتے۔ (۳) بعض گناہ تو سمجھتے ہیں مگر اپنے خاص محلہ یا قرابت دار کی بارات میں اس مجبوری سے شریک ہوتے ہیں کہ نہ شریک ہوں گے تو باعث رنج و ملال ہو گا اور آپس میں بے لطفی ہو گی، کیا یہ مجبوری حائل ہوتی ہے؟

الجواب: روشنی اور گھوڑے ممنوع نہیں، ہاں باجے جیسے رائج ہیں ضرور ممنوع ہیں۔ شرکت دو طرح ایک بارات کے ساتھ جانا اور دوسرے اس مکان میں جانا جہاں بارات ہے اول کسی عالم یا مقتداء کو مطلقاً نہ چاہئے جبکہ اس کے ساتھ باجے یا اور کوئی ممنوع شے ہو،

[ٹیبل کا حصہ] عربی: لان المقتدی لاینبغي له الاختلاط مع اهل الباطل کما في العلمگیریة ۱ وغیرها ولان ذلک یسقط حرمته من الاعین وحرمة تلک المحرمات من القلوب۔ اردو: اس لئے کہ کسی قوم کے دینی پیشوا کو اہل باطل کے ساتھ میل ملاپ نہیں رکھنا چاہئے جیسا کہ فتاوٰی عالمگیری وغیرہ میں مذکور ہے اور اس لئے بھی کہ (عام لوگوں سے اگر میل جول رکھا جائے) تو یہ رویہ عام لوگوں کی نگاہوں سے عزت و حرمت کو ختم کر دیتا ہے اور ان حرام کاموں کی حرمت کو دلوں سے محو کر دیتا ہے۔(ت)

اور جو ان ممنوعات کے استحسان کے ساتھ شریک تو مطلقاً حرام ہے اگرچہ جاہل محض ہو اور عوام میں سے کوئی شخص ہے اور وہ ان ممنوعات کی طرف توجہ نہ کرے اور صلہ رحم یا مراعات دوستی یا محکومی کے سبب ان ممنوعات سے بچا ہوا، برات کے ساتھ ہو تو حرج نہیں،

[ٹیبل کا حصہ] عربی: والله يعلم المفسد من المصلح كما نصوا عليه في اتباع جنازة معها نائحات بل زيارة قبور عندها منكرات كما فی ردالمحتار وغیرہ۔ اردو: اللہ تعالیٰ فساد کرنے والے کو اصلاح کرنے والے سے خوب جانتا ہے جیسا کہ ائمہ کرام نے اس کی تصریح فرمائی کہ اگر جنازہ (میت) کے ساتھ رونے پیٹنے والی عورتیں ہوں تو یہ جنازہ کے ساتھ ضرور جائے بلکہ اہل قبور کی زیارت نہ چھوڑے باوجودیکہ وہاں گناہ اور غیر شرعی کام ہو رہے ہوں۔

۱ فتاویٰ ہندیۃ کتاب الکراہیۃ الباب الرابع عشر نورانی کتب خانہ پشاور ۵ / ۳۴۶ صفحہ 136 of 720

Fatawa Razawiyya, Volume 24

As mentioned in Fatawa Shami, etc. (T). In the second scenario, i.e., going to the groom's house, if musical instruments and other forbidden acts (Munkarat) are in a different place, there is no harm. For a leader (Muqtada), there are three situations: If by going, forbidden acts will stop because of my presence and they won't be able to do them in front of me, then going is necessary, because it is for removing evil (Izalat-ul-Munkar). If he knows that if he refuses to go, they value him so much that they will abstain from forbidden acts to take him, then refusal is necessary. Then, if they abstain upon his refusal, going is necessary; otherwise, they will naturally be inclined towards those actions again. If they don't listen, then not going is necessary. If forbidden acts are in the same house, he should never go, and if they start after he has gone, he should leave immediately. It is even more severely prohibited for a scholar (Aalim) to go there, unless he knows that his going will stop the forbidden acts. In cases where we have ruled permission, the consideration of mutual resentment and unpleasantness is necessary. But in cases where participation is forbidden by Shariah, considering someone's resentment is also not permissible.

"They do not fear the blame of a critic."[1] There is no obedience to anyone in disobedience to Allah Almighty.[2] | (Good people) are not afraid of the blame of any critic while doing good deeds. There is no obedience to anyone in disobeying Allah Almighty. (T)

As for these sins, they do not cause any defect in the marriage. And Allah Almighty knows best.

Issue 28: From Kamalpur, Jaitpura area, Banaras, sent by Khuda Bakhsh Zardoz, owner of Islamia Flour Mill, 20 Rabi al-Akhir 1336 AH. If there is no drum, tasha, or English band in the wedding procession, but only one or two pairs of 'Daff' (tambourine) without a flute, is it permissible or not? It should be clear that the 'Daff' players play with skill, which includes highs and lows in voice and rhythm. Provide a ruling, you will be rewarded.

[1] The Holy Quran, 5/54 (Written as 52/5 in text) [2] Kanz al-Ummal, with references Q, D, N, from Ali (RA), Hadith 14874, Muassasat-ur-Risalah, Beirut, 6/77; Musnad Ahmad bin Hanbal, remainder of the Hadith of Al-Hakam bin Amr al-Ghafari, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 5/226 and 77.

फ़तावा रज़विया, खंड 24

जैसा कि फ़तावा शामी आदि में है (त)। दूसरी स्थिति में, यानी बारात के घर जाने में, यदि वाद्य यंत्र और अन्य निषिद्ध कार्य (मुनकारात) दूसरे स्थान पर हों, तो कोई हर्ज नहीं है। एक नेता (मुक़्तदा) के लिए तीन स्थितियाँ हैं: यदि जाने से, मेरे जाने के कारण निषिद्ध कार्य बंद हो जाएंगे और वे मेरे सामने नहीं कर सकेंगे, तो जाना ज़रूरी है क्योंकि यह बुराई को मिटाने (इज़ालत-उल-मुनकर) के लिए है। और यदि वह जानता है कि यदि वह जाने से इनकार करेगा, तो वे उसे इतना महत्व देते हैं कि उसे ले जाने के लिए वे निषिद्ध कार्यों से दूर रहेंगे, तो इनकार करना ज़रूरी है। फिर, यदि वे उसके इनकार पर मान जाते हैं, तो जाना ज़रूरी है; अन्यथा वे स्वाभाविक रूप से फिर से उन कार्यों को करेंगे। और यदि वे नहीं मानते, तो न जाना ज़रूरी है। और यदि वे उसी घर में हों, तो कदापि न जाए, और यदि जाने के बाद शुरू हों, तो तुरंत उठ आए। और एक विद्वान (आलिम) के लिए वहां जाना और भी सख्त रूप से नाजायज़ है, सिवाय उस स्थिति के जब वह जानता हो कि उसका जाना निषिद्ध कार्यों को बंद कर देगा। जिन स्थितियों में हमने अनुमति का आदेश दिया है, उनमें आपसी नाराजगी और अप्रसन्नता का ध्यान रखना आवश्यक है। और जिन स्थितियों में भागीदारी शरीयत के अनुसार नाजायज़ है, उनमें किसी की नाराजगी का ध्यान रखना भी जायज़ नहीं है।

"वे किसी निंदा करने वाले की निंदा से नहीं डरते।"[1] अल्लाह सर्वशक्तिमान की अवज्ञा में किसी की आज्ञाकारिता नहीं है।[2] | (अच्छे लोग) नेक काम करने में किसी निंदा करने वाले की निंदा से नहीं डरते। अल्लाह तआला की नाफ़रमानी में किसी की इताअत (आज्ञापालन) नहीं। (त)

बाकी इन गुनाहों की वजह से निकाह में कोई खराबी नहीं आती। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला (समस्या) 28: कमालपुर, जैतपुरा क्षेत्र, बनारस से खुदा बख्श जरदोज, मालिक इस्लामिया फ्लोर मिल द्वारा भेजा गया, 20 रबी अल-आखिर 1336 हिजरी। यदि बारात में ढोल, ताशा या अंग्रेजी बैंड न हो, केवल एक या दो जोड़ी 'दफ़' (एक प्रकार का वाद्य यंत्र) बिना बांसुरी के हो, तो क्या यह जायज़ है या नहीं? यह स्पष्ट रहे कि दफ़ बजाने वाले कारीगरी से बजाते हैं जिसमें आवाज़ का उतार-चढ़ाव और लय-ताल होती है। जवाब दें, आपको सवाब मिलेगा।

[1] अल-क़ुरान अल-करीम 5/54 (मूल लेख में 52/5 लिखा है) [2] कंज़ुल उम्माल, संदर्भ क़, द, न, अली (रजि.) से, हदीस 14874, मुअस्ससतुर रिसाला, बेरूत 6/77; मुस्नद अहमद बिन हंबल, अल-हकम बिन अम्र अल-ग़फ़ारी की हदीस का शेष भाग, अल-मक्तब अल-इस्लामी, बेरूत 5/226 और 77।

جیسا کہ فتاوٰی شامی وغیرہ میں ہے (ت) اور دوسری صورت یعنی برات کے مکان میں جانا ، اگر باجے وغیرہ منکرات دوسرے مکان میں ہوں تو حرج نہیں ، اور مقتدا کے لئے تین صورتیں ہیں، اگر جانے سے میرے جانے سے منکرات بند ہوجائیں گے میرے سامنے نہ کرسکیں گے تو جانا ضرور ہے لانہ ازالۃ المنکر (کیونکہ اس طرح کرنے سے گناہ کا ازالہ ہے۔ ت) اور اگر جانے کہ میں جانے سے انکار کروں گا تو میری خاطر ان لوگوں کو اتنی عزیز ہے کہ مجھے لے جانے کے لئے منکرات سے باز رہیں گے تو انکار ضرور ہے، پھر اگر وہ اس کے انکار پر باز رہیں تو جانا ضرور ہے اگر نہ جائے گا تو وہ محلی بالطبع ہوکر پھر انہیں افعال کو کریں گے اور اگر نہ مانیں تو نہ جانا ضرور ہے ، اور اگر اسی مکان میں ہوں تو ہرگز نہ جائے اور اگر جانے کے بعد شروع ہوں تو فوراً اٹھ آئے ، اور عالم کو وہاں جانا اور بھی سخت تر ناجائز ہے مگر اس صورت میں کہ جانے کہ میرا جانا منکرات کو بند کردے گا۔ جن صورتوں میں ہم نے جواز کا حکم دیا ان میں آپس کی رنجش اور بے لطفی کا لحاظ ضرور چاہئے اور جن صورتوں میں شرکت شرعاً ناجائز ہے ان میں کسی کی رنجش کا لحاظ بھی جائز نہیں۔

"لَا یَخَافُونَ لَوْمَۃَ لَائِمٍ"[1]. لا طاعۃ لاحد فی معصیۃ اللہ تعالٰی[2]۔ | (اچھے لوگ) کارِ خیر کرنے میں کسی ملامت گر کی ملامت سے خائف نہیں ہوتے ۔ اللہ تعالٰی کی نافرمانی کرنے میں کسی کی اطاعت نہیں۔ (ت)

باقی ان معاصی کی وجہ سے نکاح میں کوئی خلل نہیں آتا۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۸ : از کمال پورہ علاقہ جیت پورہ بنارس مرسلہ خدا بخش زردوز مالک فلور مل اسلامیہ ۲۰ ربیع الآخر ۱۳۳۶ ھ اگر بارات میں ڈھول تاشہ انگریزی باجانہ ہو صرف دو ایک جوڑ دف بلا بانسری کا ہو تو یہ جائز ہے یا نہیں ؟ یہ واضح رہے کہ دف بجانے والے کاریگری سے بجاتے ہیں جس میں آواز کا نشیب وفراز سر وتال ہوتا ہے۔ بینوا توجروا۔

[1] القرآن الکریم ۵۲/۵ [2] کنز العمال برمز ق۔ د۔ ن عن علی رضی اللہ عنہ حدیث ۱۴۸۷۴ موسسۃ الرسالہ بیروت ۶ / ۷۷، مسند احمد بن حنبل بقیہ حدیث الحکم بن عمرو الغفاری المکتب الاسلامی بیروت ۵ / ۲۲۶ و ۷۷

الجواب: (The Answer:) Playing the 'daf' (tambourine) is permissible during times of joy, provided it does not have 'jhalajhal' (cymbals/bells) and is not played to musical tunes; otherwise, it is also prohibited. As stated in Radd al-Muhtar etc. And Allah Almighty knows best.

مسئلہ ۲۹: (Problem 29:) From Kamal Pura, Jeet Pura area, Banaras, sent by Khuda Bakhsh Zardoz, owner of Islamia Flour Mill, 20 Rabi-ul-Akhir 1346 AH. Is it obligatory for the leaders of the community and scholars to strive to eliminate these customs? If people do not listen, should they boycott the community (tark-e-biradari)? The drawbacks that exist in boycotting the community should also be kept in view: (1) In fraternal bonding, the oppressed receive justice and oppression is countered. (2) Decisions between right and wrong are easily made. (3) If someone in the neighborhood has an illicit relationship with a woman, the 'Panch' (community council) excludes him from the community, and they do not participate in his weddings or funerals, out of respect for the elders and leaders. Eventually, he repents and feels remorseful, and people re-admit him into the community. By boycotting the community, these benefits will be lost, and everyone will become independent and unbridled. Yes, it should be clear that if someone drinks toddy/ alcohol, commits adultery with market women, gambles, or hosts dances at their place, yet there is no accountability from the community side, nor do the leaders or 'Panch' stop him in a fraternal manner, should such a community be maintained?

الجواب: (The Answer:) It is obligatory for scholars and leaders to provide guidance and advice. Regarding severing ties with those who commit sins, the paths of the righteous predecessors (salaf-e-salihin) have varied. Keeping religious interests in view, both options are permissible depending on what is deemed more beneficial. A community that does not forbid alcohol and adultery but punishes even a slight violation of its own man-made laws is a very absurd community. If they can stop people, then it is obligatory to stop them from sins. And Allah Almighty knows best.

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

अल-जवाब (उत्तर): ख़ुशी के समय में दफ़ बजाना जायज़ है, बशर्ते कि उसमें 'जलाजल' यानी झांझ न हों, और न ही उसे संगीत की धुन पर बजाया जाए, अन्यथा वह भी वर्जित है। जैसा कि 'रद-उल-मुहतार' आदि में वर्णित है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 29: कमालपुरा, जीतपुरा क्षेत्र, बनारस से, प्रेषक खुदा बख्श जरदोज़, मालिक इस्लामिया फ्लोर मिल, 20 रबी-उल-आखिर 1346 हिजरी। क्या कौम (समुदाय) के सरदारों और विद्वानों पर इन रस्मों को मिटाने की कोशिश करना फ़र्ज़ है? अगर लोग न मानें तो क्या बिरादरी छोड़ देनी चाहिए (तर्कए-बिरादरी)? बिरादरी छोड़ने में जो बुराइयाँ हैं उन्हें भी ध्यान में रखा जाना चाहिए: (1) बिरादराना पाबंदी में मजलूम (पीड़ित) की सुनवाई होती है और ज़ुल्म का निवारण होता है। (2) हक और नाहक (सही और गलत) का फैसला आसानी से हो जाता है। (3) मोहल्ले में अगर कोई व्यक्ति किसी महिला के साथ अवैध संबंध रखता है, तो 'पंच' उसे बिरादरी से बाहर कर देते हैं और उसकी शादी या गम में शरीक नहीं होते, पंचों और सरदारों के डर से। अंततः वह तौबा करता है और शर्मिंदा होता है, और लोग उसे बिरादरी में वापस शामिल कर लेते हैं। बिरादरी छोड़ने से ये लाभ खत्म हो जाएंगे, हर व्यक्ति स्वतंत्र और मनमाना हो जाएगा। हाँ, यह स्पष्ट रहे कि अगर कोई व्यक्ति ताड़ी-शराब पिए, बाज़ारी औरतों से ज़िना (व्यभिचार) करे, जुआ खेले, अपने यहाँ नाच कराए, मगर बिरादरी की तरफ से उसकी कोई पूछताछ नहीं होती और न ही सरदार या पंच उसे बिरादराना तरीके से रोकते हैं, तो क्या ऐसी बिरादरी करनी चाहिए?

अल-जवाब (उत्तर): विद्वानों और सरदारों पर हिदायत और नसीहत करना फ़र्ज़ है। गुनाह करने वालों के साथ संबंध तोड़ने के मामले में पूर्वजों (सलफ-ए-सालेहीन) के तरीके अलग-अलग रहे हैं। धार्मिक हितों को ध्यान में रखते हुए दोनों ही सूरतें जायज़ हैं, जिसमें वे भलाई देखें। और ऐसी बिरादरी जो शराब और ज़िना से न रोके, लेकिन अपने बनाए कानून के ज़रा से उल्लंघन पर सज़ा दे, वह बहुत ही बेहूदा बिरादरी है। अगर वे रोक सकते हैं, तो गुनाहों पर रोकना फ़र्ज़ है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

पेज 138/720

الجواب: اوقات سرور میں دف جائز ہے بشر طیکہ اس میں جلاجل یعنی جھانجھ نہ ہوں ، نہ وہ موسیقی کے تال سُر پر بجایا جائے ورنہ وہ بھی ممنوع۔ کمافی ردالمحتار وغیرہ (جیسا کہ ردالمحتار وغیرہ میں ہے۔ت) واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۲۹: از کمال پورہ علاقہ جیت پورہ بنارس مرسلہ خدا بخش زردوز مالک فلور مل اسلامیہ ۲۰ ربیع الآخر ۱۳۴۶ھ کیا قوم کے سردار اور علماء فرض ہے کہ ان مراسم کے مٹانے میں کوشش کریں۔ اگر لوگ نہ مانیں تو برادری ترک کردیں ترک برادری میں جو خرابیاں ہیں وہ بھی ملحوظ رہیں: (۱)برادرانہ پابندی میں مظلوم کی دادرسی اور ظلم کا تدارک ہوتا ہے۔ (۲) حق ناحق کا فیصلہ آسانی کے ساتھ ہو جاتا ہے۔ (۳) محلہ میں اگر کوئی شخص عورت سے ناجائز تعلق رکھتا ہے تو پنچ اُسے برادری سے خارج کردیتے ہیں اور اس کی شادی غمی میں شریک نہیں ہوتے، پنچوں اور سرداروں کی عبرت سے۔ بالآخر وہ تائب اور نادم ہوتا ہے اور لوگ اس کو برادری میں شامل کرلیتے ہیں، ترک برادری سے یہ فوائد جاتے رہیں گے، ہر شخص آزاد و مختار ہوجائے گا، ہاں یہ واضح رہے اگر کوئی شخص تاڑی شراب پیئے، بازاری عورتوں سے زنا کرے، جوا کھیلے، اپنے یہاں ناچ کرائے، مگر برادرانہ طرف سے اس کی باز پرس نہیں ہوتی اور نہ سردار یا پنچ اس کو برادرانہ طریق سے بند کرتے ہیں، آیا ایسی برادری کرنا چاہئے؟

الجواب: علماء اور سرداران پر ہدایت و نصیحت فرض ہے اور اہل معاصی کے ساتھ قطع تعلق میں سلف صالحین کے مسلک مختلف رہے ہیں اور مصالح دینیہ کی رعایت سے دونوں صورتیں جائز ہیں جس میں مصلحت دیکھیں اور ایسی برادری کہ شراب و زنا سے منع نہ کرے اور اپنے ساختہ

قانون کی ذرا خلاف ورزی پر سزادے بہت بیہودہ برادری ہے وہ اگر روک سکتے ہیں تو معاصی پر روکنا فرض ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

Fatawa Razawiyya Volume 24

Issue 30: From Kamal Pura, Jaitpura area, Benares, sent by Khuda Bakhsh Zardoz, owner of Islamia Flour Mill, 20 Rabi-ul-Akhir 1336 AH. In a place where it has become a common custom to have ceremonies against Sharia at weddings, such that even educated people are involved, despite having heard about its condemnation, evils, and warnings from scholars; if a common Muslim, out of pure Islamic zeal and support for religion, makes it a point not to participate in weddings or other events where anti-Sharia ceremonies take place, even if it is a close relative, is such a person praiseworthy according to Sharia?

The Answer: It is praiseworthy in Sharia to commit to not attending such processions. And Allah Almighty knows best.

Issue 31: From Calcutta, A Ice Factory Lane, Entally Post Office, Khanqah-e-Chishtiya, sent by Sayyid Shah al-Mubeen Ahmad Chishti Nizami Bihari, 21 Rabi-ul-Akhir 1336 AH. The permissibility of listening to musical instruments, i.e., current Qawwali, with investigation into how much was issued by the Lawgiver (Peace and Blessings be upon him), and how much people of later centuries increased it? Now, what method should those who perform Sama (listening to music) and Qawwali adopt?

The Answer: Musical instruments are prohibited. In an authentic Hadith of Sahih Bukhari Sharif, the Holy Prophet (Peace and blessings of Allah be upon him) mentioned a people: "They will consider adultery, silk garments, wine, and musical instruments [Ma'azif][1] to be lawful." And he said: "They will be turned into monkeys and pigs." It is clearly stated in Hidayah and other reliable books that musical instruments are prohibited. Hazrat Sultan al-Awliya, the beloved of God, Nizam al-Haq wal-Din (may Allah be pleased with him) says in Fawa'id-ul-Fu'ad Sharif: "Musical instruments are prohibited."[2] (Musical instruments for singing are prohibited. - Translator)

Hazrat Sharafuddin Yahya Munairi (may his secret be sanctified) has counted musical instruments along with adultery in his noble letters. Only listening to the 'Duff' (tambourine) on the day of Eid is reported from the Lawgiver (Peace and blessings of Allah be upon him), and that too without intentional attention. And during times of joy, a 'Duff' without bells, which is not played in a musical/entertaining style, is permissible according to Sharia.

1. Sahih al-Bukhari, Book of Drinks, Chapter on those who consider wine lawful etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/837.
2. Fawa'id-ul-Fu'ad.

फतवा रज़विया जिल्द 24

मसला 30: कमालपुरा, जैतपुरा इलाका, बनारस से खुदा बख्श ज़रदोज़, मालिक इस्लामिया फ्लोर मिल द्वारा भेजा गया, 20 रबी-उल-आखिर 1336 हिजरी। जिस स्थान पर शादियों में शरीयत के विरुद्ध रीति-रिवाजों का आम प्रचलन हो गया हो, यहाँ तक कि शिक्षित लोग भी इसमें शामिल हों, बावजूद इसके कि लोगों ने उलेमाओं से इसकी निंदा, बुराई और उपदेशों में सुना हो; ऐसी जगह पर यदि कोई सामान्य मुसलमान केवल इस्लामी जोश और धर्म के समर्थन में यह नियम बना ले कि वह उन शादियों आदि में शामिल नहीं होगा जहाँ शरीयत के विरुद्ध रस्में होंगी, चाहे वह उसका कितना ही करीबी रिश्तेदार क्यों न हो, क्या ऐसा व्यक्ति शरीयत के अनुसार प्रशंसा के योग्य है?

अल-जवाब: जो ऐसे जुलूसों में न जाने का नियम बना ले, वह शरीयत के अनुसार सराहनीय है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 31: कलकत्ता, ए आइस फैक्ट्री लेन, पोस्ट ऑफिस एंटाली, खानकाह-ए-चिश्तिया से सैयद शाह अल-मुबीन अहमद चिश्ती निज़ामी बिहारी द्वारा भेजा गया, 21 रबी-उल-आखिर 1336 हिजरी। वाद्यों को सुनने, यानी वर्तमान कव्वाली की वैधता, इस बात की तहकीकात के साथ कि शरीअत देने वाले (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) से यह किस हद तक जारी हुआ था, और बाद की सदियों के लोगों ने इसे कितना बढ़ाया? अब समा और कव्वाली करने वालों को कौन सा तरीका अपनाना चाहिए?

अल-जवाब: वाद्य यंत्र (मज़ामीर) हराम हैं। सहीह बुखारी शरीफ की एक सही हदीस में हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने एक कौम का ज़िक्र फ़रमाया: "वे ज़िना, रेशमी कपड़ों, शराब और बाजों (मआज़िफ) को हलाल समझेंगे।" और फ़रमाया: "वे बंदर और सुअर हो जाएंगे।" हिदाया और अन्य विश्वसनीय पुस्तकों में यह स्पष्ट है कि वाद्य यंत्र हराम हैं। हज़रत सुल्तानुल औलिया महबूब-ए-इलाही निज़ामुद्दीन औलिया (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़वाइद-उल-फ़ुआद शरीफ़ में फ़रमाते हैं: "मज़ामीर हराम अस्त" (गाने-बजाने के यंत्र हराम हैं। - अनुवादक)।

हज़रत शरफुद्दीन यहया मुनैरी (कुद्दिस सिर्रहु) ने अपने पवित्र पत्रों (मक्तुबात) में वाद्य यंत्रों को ज़िना के साथ गिना है। शरीअत देने वाले (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से केवल ईद के दिन दफ़ (एक प्रकार का वाद्य) सुनने का उल्लेख मिलता है, वह भी बिना इरादतन ध्यान दिए। और खुशी के समय में बिना घुंघरू वाला दफ़, जिसे नाच-गाने के तरीके पर न बजाया जाए, शरीयत में जायज़ है।

1. सहीह अल-बुखारी, किताबुल अशरिबा, बाब मा जा फ़ि मन यस्तहिल्लुल खम्र अलख, कदीमी कुतुब खाना कराची 2/837
2. फ़वाइद-उल-फ़ुआद

पृष्ठ 720 का 139

مسئلہ ۳۰: از کمال پورہ علاقہ جیت پورہ بنارس مرسلہ خدا بخش زردوز مالک فلور مل اسلامیہ ۲۰ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ جس جگہ تقریب شادی میں خلاف شرع مراسم کا عام رواج ہو گیا ہو حتی کہ لکھے پڑھے لوگ اس میں مبتلا ہوں با وجودیکہ لوگ علماء سے اس کی مذمت و خرابی و وعظ میں سن چکے ہوں ایسی جگہ اگر کوئی عامی مسلمان محض بجوش اسلام و حمایت دین یہ التزام کرے کہ جہاں شادی وغیرہ میں خلاف شرع مراسم ہوں گے وہاں نہ شریک ہو گا گو اپنا عزیز قریب کیوں نہ ہو کیا ایسا شخص شرعاً قابلِ مدح ہے؟

الجواب: جو ایسے جلوسوں میں نہ جانے کا التزام کرے شرعاً محمود ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۳۱: از کلکتہ اے آئس فیکٹری لین ڈاکخانہ انتالی خانقاہ چشتیہ مرسلہ سید شاہ المبین احمد چشتی نظامی بہاری ۲۱ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ سماع مزامیر یعنی مروجہ قوالی کا جواز بتحقیق اس امر کے کہ صاحب شرع علیہ التحیات والتسلیمات سے کس قدر صادر ہوا تھا بعد اس کے پچھلے قرنوں کے لوگوں نے کس قدر بڑھایا اب سماع و قوالی کرنے والے کو کون سا طریقہ اختیار کرنا چاہئے؟

الجواب: مزامیر حرام ہیں، صحیح بخاری شریف کی حدیث صحیح میں حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ایک قوم کا ذکر فرمایا: یستحلون الحر و الحریر و الخمر و المعازف۱ زنا اور ریشمی کپڑوں اور باجوں کو حلال سمجھیں گے۔ اور فرمایا: وہ بندر اور سور ہو جائیں گے۔ ہدایہ و غیرہ کتب معتمدہ میں تصریح ہے کہ مزامیر حرام ہیں۔ حضرت سلطان الاولیاء محبوب الہی نظام الحق

والدین رضی اللہ تعالیٰ عنہ فوائد الفواد شریف میں فرماتے ہیں: مزامیر حرام است۲(گانے بجانے کے آلات حرام ہیں۔ ت)

حضرت شرف الدین یحییٰ منیری قدس سرہ نے اپنے مکتوبات شریفہ میں مزامیر کو زنا کے ساتھ شمار فرمایا۔ شارع صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے صرف روز عید دف کا سننا منقول ہے وہ بھی نہ بالقصد متوجہ ہو کر، اور اوقات سرور میں بے جلاجل کا دف کہ ہیأت مطرب پر نہ بجایا جائے شرعاً جائز ہے۔

---

۱ صحیح البخاری کتاب الاشربہ باب ما جاء فی من یستحل الخمر الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۸۳۷ ۲ فوائد الفواد

Volume 24 Fatawa Razawiyya

It is obligatory for those who perform Qawwali to absolutely abandon musical instruments and listen to clean and pure ghazals from old or young men. Allah Almighty knows best.

Issue 32: From Sitapur district, Qaziara neighborhood, sent by Ilyas Hussain, 23 Rabi al-Akhir 1336 AH. When the observance of obligatory, necessary, and emphasized Sunnah acts is fading away among people, is it permissible to listen to musical gatherings (Sama) with instruments in such a state or not? Explain and be rewarded.

The Answer: Musical instruments are forbidden (haram), and haram will remain haram in every situation. If a sin becomes permissible because people are involved in it, then the revocation of Sharia would remain in the hands of the transgressors (fasiqs). Allah Almighty knows best.

Issue 33: From Lasbi Kotla post office, Bijnor district, Satha Shaheed neighborhood, sent by Muhammad Abdullah Khan, 20 Ramadan-ul-Mubarak 1337 AH. What is your opinion, may Allah have mercy on you (Allah's mercy be upon you, what is your instruction), on this matter of watching spectacles, theaters, plays, etc., in which young beardless boys sing and wear women's clothing to engage in romantic dialogue, and women also attend these spectacles, and romantic words are used in front of them? At the time of taking payment, music is played, and the harmonium, which is a type of instrument, is played with hands, as well as the tabla. Is watching such a spectacle permissible or impermissible? If it is impermissible, what degree of sinner is the viewer? And one who watches such spectacles also makes disciples (becomes a Pir); is it permissible to become his disciple or not?

The Answer: Forbidden, forbidden, forbidden, for multiple reasons, forbidden.

[Arabic text]: "As it is not hidden from the common people of Islam, let alone the scholars, rather its prohibition in Islam is known by those disbelievers who have interaction with Muslims."

[Urdu translation]: Just as it is not hidden from the common people of Islam, let alone the noble scholars, rather its prohibition in Islam is so clear that even those distant disbelievers who interact with Muslims know it. (T)

One who watches such spectacles is an open transgressor (fasiq-e-mulin), and making him a spiritual guide (Pir) is forbidden. This is mentioned in "Tabyin al-Haqa'iq Sharh Kanz al-Daqaiq" by Imam al-Zaylai and other authoritative books.

जिल्द 24 फतावा रज़विया

कव्वाली करने वालों के लिए यह अनिवार्य है कि वे संगीत वाद्ययंत्रों को पूरी तरह से छोड़ दें और वृद्ध या युवा पुरुषों से साफ और स्वच्छ गज़लें सुनें। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 32: सीतापुर जिले से, मोहल्ला कज़ियारा, इलियास हुसैन द्वारा भेजा गया, 23 रबी-उल-आखिर 1336 हिजरी। जब लोगों के बीच फ़राएज़ (अनिवार्य), वाजिबात और सुन्नत-ए-मुअक्कदा का पालन कम होता जा रहा हो, तो ऐसी स्थिति में वाद्ययंत्रों के साथ समाअ (धार्मिक संगीत सभा) सुनना जायज़ है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: वाद्ययंत्र हराम हैं और हराम हर हाल में हराम ही रहेगा। अगर लोगों के पापों में लिप्त होने के कारण पाप जायज़ हो जाए, तो शरीयत को मंसूख (रद्द) करना फासिकों (पापियों) के हाथ में रह जाएगा। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 33: लसबी कोटला डाकखाना, जिला बिजनौर, मोहल्ला सठा शहीद, मोहम्मद अब्दुल्ला खान द्वारा भेजा गया, 20 रमजान-उल-मुबारक 1337 हिजरी। आपका क्या कहना है, अल्लाह तआला आप पर रहम फरमाए (अल्लाह की रहमत आप पर हो, आपका क्या इरशाद है), इस मसले में कि तमाशा, थिएटर, नाटक आदि देखना जिनमें अम्रद (बिना दाढ़ी वाले लड़के) गाते हैं और औरतों के कपड़े पहनकर आशिकाना सवाल-जवाब करते हैं, और इसमें तमाशा देखने वाली औरतें भी होती हैं और उनके सामने आशिकाना शब्द इस्तेमाल किए जाते हैं, और उजरत (पैसे) लेते समय बाजा बजाया जाता है और हारमोनियम जो एक बाजे की किस्म है, हाथों से बजाया जाता है, और तबला भी बजता है। क्या ऐसा तमाशा देखना जायज़ है या नाजायज़? और अगर नाजायज़ है तो ऐसा तमाशा देखने वाला किस हद तक गुनहगार है? और ऐसा तमाशा देखने वाला मुरीद भी बनाता है, उससे मुरीद होना जायज़ है या नहीं?

उत्तर: हराम हराम हराम, कई कारणों से हराम।

[अरबी पाठ]: "जैसा कि इस्लाम के आम लोगों से छिपा नहीं है, उलमा-ए-किराम की तो बात ही क्या, बल्कि इस्लाम में इसकी हुरमत (मनाही) इतनी स्पष्ट है कि इसे वे दूर के काफिर भी जानते हैं जो मुसलमानों से मेल-जोल रखते हैं।"

[उर्दू अनुवाद]: जैसा कि आम इस्लाम वालों पर छिपा नहीं है, उलमा-ए-किराम से क्या छिपा होगा, बल्कि इस्लाम में इसकी हुरमत इतनी साफ़ है कि उसे वे दूर के काफिर भी जानते हैं जो मुसलमानों से मेल-जोल रखते हैं। (त)

ऐसा तमाशा देखने वाला फासिक-ए-मुअल्लन (खुला पापी) है और उसे पीर बनाना हराम है। यह 'तबीनुल हकाइक शरह कंजुद दकाइक' इमाम जैलई और अन्य विश्वसनीय पुस्तकों में है।

पेज 140 / 720

قوالی والوں پر لازم ہے کہ مزامیر قطعاً ترک کریں اور بوڑھے یا جوان مردوں سے صاف وپاک غزلیں سنیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۳۲: از ضلع سیتاپور محلہ قضیارہ مرسلہ الیاس حسین ۲۳ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ جب فرائض وواجبات وسنن مؤکدہ کی پابندی لوگوں سے اٹھتی جاتی ہو تو ایسی حالت میں مزامیر کے ساتھ سماع جائز ہے کہ نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: مزامیر حرام ہیں اور حرام ہر حال میں حرام رہے گا، لوگ گناہوں میں مبتلا ہیں اس کے سبب گناہ جائز ہوجائے تو شریعت کا منسوخ کردینا فاسقوں کے ہاتھ میں رہ جائے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۳۳: از لسبی کوٹلہ ڈاک خانہ خاص ضلع بجنور محلہ سٹھا شہید مرسلہ محمد عبد اللہ خاں ۲۰ رمضان المبارک ۱۳۳۷ھ ماقولکم رحمکم اللہ تعالیٰ (اللہ تعالیٰ آپ پر رحم فرمائے آپ کا کیا ارشاد ہے) اس مسئلہ میں کہ دیکھنا تماشا ٹھیٹر وناٹک وغیرہ کا کہ جن میں امرد گاتے ہیں اور عورتوں کا لباس پہن کر سوال وجواب عاشقانہ کرتے ہیں اور اس میں تماشا دیکھنے والی عورتیں بھی ہوتی ہیں اور انہیں کے سامنے الفاظ عاشقانہ مستعمل ہوتے ہیں اور اجرت لیتے وقت باجا بجایا جاتا ہے اور ہارمونیم جو ایک باجے کی قسم ہے ہاتھوں سے بجایا جاتا ہے وہ بھی بجتا ہے اور طبلہ بھی بجتا ہے، آیا اس تماشے کا دیکھنا جائز ہے یا ناجائز؟ اور اگر ناجائز ہے تو اس تماشے کا دیکھنے والا کس درجہ گناہگار ہے؟ اور اس تماشے کا دیکھنے والا مرید بھی کرتا ہے اس سے مرید ہونا جائز ہے یا نہیں؟

الجواب: حرام حرام حرام بوجوہ حرام،

كما لا يخفى على العوام من اهل الاسلام فضلا عن العلماء بل يعرف حرمته فى الاسلام من له مخالطة بالمسلمين من الكفرة البعداء۔

جیسا کہ عوام اہل اسلام پر پوشیدہ نہیں چہ جائیکہ علمائے کرام سے مخفی ہو، بلکہ اسلام میں اس کی حرمت اتنی واضح ہے کہ اس کو وہ دور کے کفار بھی جانتے ہیں جو مسلمانوں سے میل جول رکھتے ہیں۔ (ت)

اس تماشے کا دیکھنے والا فاسق معلن ہے اور اسے پیر بنانا حرام۔ تبیین الحقائق شرح کنز الدقائق للامام الزیلعی وغیرہ کتب معتبرہ میں ہے۔

Fatawa Razawiyyah Volume 24

In giving him precedence is his exaltation, whereas according to Shari'ah, it is obligatory for people to humiliate and degrade him. And Allah knows best. (T)

Problem 34: From Jaipur, via Haji Abdul Jabbar Sahib, 19 Rabi' al-Awwal 1338 AH. What is the ruling of the pure Shari'ah in the following matter: Zaid says that Qawwali with musical instruments (mazamir) is permissible and many noble Sufi masters (mashaykh) have listened to it in this way. He says that 'mazamir' refers to instruments played with the mouth; dholak, sitar, tabla, manjira, harmonium, and sarangi are not included in 'mazamir', but they have the same ruling as the 'daf' (tambourine). If these things were present in the sacred time (of the Prophet), their ruling would have been like that of the daf. He further says, 'You people are unqualified and unaware of the secrets of the masters of the path (Sufism); if it is forbidden, it is for you, but for us, it is permissible.' And he says that Imam Ghazali (may Allah have mercy on him) has clearly stated it to be permissible. Therefore, the question is: is it permissible or forbidden to listen to Qawwali with the aforementioned instruments? If it is forbidden, then what is the ruling for Zaid, who publicly declares the forbidden as permissible, in fact, listens to it with great care and commitment, and generally participates in such gatherings? How will the obligatory prayer (Salah) behind him be? What is the definition of 'mazamir'? And are the aforementioned instruments 'mazamir' or not? Please state the ruling of Allah and His Messenger (Exalted and Almighty be He, and Peace and Blessings of Allah be upon him) with clarification. May Allah reward you with the best reward in both worlds. (Amen).

The Answer: Zaid's statement is false and rejected. The word used in the authentic Hadith of Sahih Bukhari is not 'mazamir' but 'ma'azif', which includes all musical instruments. "They will consider adultery, silk, and musical instruments (ma'azif) as permissible." It is also a slander against Imam Ghazali; he has clearly stated these vile things to be impermissible. Paradoxically, some have inclined towards the permissibility of new things that fall under 'mazamir'. It is a slander against the noble masters (mashaykh). Hazrat Sayyidi Fakhruddin Zarawi, the caliph of Hazrat Sayyiduna Mahbub-e-Ilahi (may Allah be pleased with them both), in "Kashf al-Qina' 'an Usul al-Sama'" says...

[1] Tabyin al-Haqa'iq, Kitab al-Salah, Bab al-Imamah, al-Matba'ah al-Kubra, Egypt, 1/134.
[2] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Ashribah, Bab ma ja'a min yastahillu al-khamr, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/83.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

उसे वरीयता देना उसका सम्मान करना है, जबकि शरीयत के अनुसार लोगों के लिए उसे अपमानित और तिरस्कृत करना अनिवार्य है। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 34: जयपुर से, हाजी अब्दुल जब्बार साहब के माध्यम से, 19 रबी-उल-अव्वल 1338 हिजरी। शरीयत-ए-मुतहरा का इस मामले में क्या हुक्म है कि ज़ैद कहता है कि वाद्य यंत्रों (मज़ामीर) के साथ कव्वाली जायज़ है और बहुत से महान सूफी संतों (मशाइख) ने इसे इसी तरह सुना है। वह कहता है कि 'मज़ामीर' उन बाजों को कहते हैं जो मुँह से बजाए जाते हैं; ढोलक, सितार, तबला, मंजीरा, हारमोनियम, सारंगी मज़ामीर में शामिल नहीं हैं, बल्कि उनका और 'दफ़' (खंजरी) का एक ही हुक्म है। अगर ये चीजें पवित्र युग में मौजूद होतीं, तो दफ़ की तरह इनका भी हुक्म दिया जाता। वह यह भी कहता है कि 'तुम लोग अयोग्य हो और सूफी संतों के रहस्यों से अनभिज्ञ हो; अगर यह हराम है तो तुम्हारे लिए, लेकिन हमारे लिए जायज़ है।' और वह कहता है कि इमाम गज़ाली (रहमतुल्लाह अलैहि) ने इसे स्पष्ट रूप से जायज़ बताया है। अतः सवाल यह है कि उपर्युक्त बाजों के साथ कव्वाली सुनना जायज़ है या हराम? यदि हराम है, तो ज़ैद के लिए क्या हुक्म है जो हराम को खुलेआम हलाल कहता है, बल्कि स्वयं बड़े प्रबंध और नियम के साथ सुनता है और सामान्यतः ऐसी सभाओं में भाग लेता है? उसके पीछे फ़र्ज़ नमाज़ कैसी होगी? 'मज़ामीर' की परिभाषा क्या है? और क्या उपर्युक्त बाजे 'मज़ामीर' हैं या नहीं? अल्लाह और उसके रसूल (जल्ल जलालाहु व सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का जो हुक्म हो, उसे स्पष्ट रूप से बयान फरमाएँ। अल्लाह आपको दोनों जहाँ में बेहतरीन बदला अता फरमाए। (त)

जवाब: ज़ैद का कथन बातिल और अस्वीकार्य है। सहीह बुखारी शरीफ की हदीस में 'मज़ामीर' शब्द नहीं है, बल्कि 'मआज़िफ़' (معازف) है, जिसमें सभी वाद्य यंत्र शामिल हैं। "वे व्यभिचार, रेशम और वाद्य यंत्रों को हलाल समझेंगे।" यह इमाम गज़ाली पर भी एक मिथ्या आरोप है; उन्होंने इन घिनौनी चीजों को स्पष्ट रूप से नाजायज़ बताया है। विडंबना यह है कि कुछ लोग उन नई चीज़ों की वैधता की ओर झुक गए हैं जो मज़ामीर में से हैं। यह महान सूफी संतों पर मिथ्या आरोप है। हज़रत सय्यदी फ़ख़रुद्दीन ज़रवी, हज़रत सय्यदुना महबूब-ए-इलाही (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) के ख़लीफ़ा ने "कश्फ़ अल-क़िना अन उसूल अल-समा" में...

[1] तबयीन अल-हक़ाएक़, किताब अस-सलात, बाब अल-इमामह, अल-मतबा अल-कुबरा, मिस्र, 1/134। [2] सहीह अल-बुखारी, किताब अल-अशरबा, बाब मा जा'आ मिन यस्तहिल्लु अल-ख़म्र, आदि, क़दीमी कुतुब ख़ाना, कराची, 2/83।

في تقدیمه تعظیمه وقد وجب علیهم اهانته شرعاً - اس کے آگے کرنے میں اس کی تعظیم ہے حالانکہ شرعی طور پر لوگوں کے لئے اس کی توہین و تذلیل واجب ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۳۴: از جے پور بمعرفت حاجی عبدالجبار صاحب ۱۹ ربیع الاول ۱۳۳۸ھ کیا حکم ہے شریعتِ مطہرہ کا مسئلہ ذیل میں کہ زید کہتا ہے کہ قوالی مع آلاتِ مزامیر کے جائز ہے اور بکثرت مشائخِ کرام نے اسی طرح سنا ہے اور کہتا ہے کہ مزامیر ان باجوں کو کہتے ہیں جو منہ سے بجائے جاتے ہیں، ڈھلک، ستار، طبلہ، مجھیرے، ہارمونیم، سارنگی مزامیر میں داخل نہیں بلکہ اُن کا اور دف کا ایک حکم ہے۔ اگر زمانۂ اقدس میں یہ چیزیں موجود ہوتیں تو مثلِ دف کے اس کا بھی حکم فرماتے۔ اور کہتا ہے کہ تم لوگ نااہل ہو رموزِ مشائخِ طریقت سے ناواقف ہو اگر حرام ہو تو تمہارے لئے مگر ہمارے لئے جائز ہے۔ اور کہتا ہے کہ امام غزالی علیہ الرحمۃ نے اس کو صاف جائز بتایا ہے۔ پس سوال یہ ہے کہ باجے مذکورالصدر کے ساتھ قوالی سننا کیا جائز ہے یا حرام؟ اگر حرام ہے تو زید کے لئے کہ وہ حرام کو بالاعلان حلال کہتا ہے بلکہ خود اہتمام و التزام کے ساتھ سننا اور بالعموم ایسی مجالس میں شرکت کرتا ہے کیا حکم ہے اور اس کے پیچھے نمازِ فریضہ کیسی ہوگی؟ اور مزامیر کی تعریف کیا ہے؟ اور باجے مذکور مزامیر ہیں یا نہیں؟ جو حکمِ خدا اور رسول جل و علا و صلی اللہ تعالٰی علیہ و سلم ہو وضاحت سے ارشاد ہو، جزاکم اللہ فی الدارین خیر الجزاء (اللہ تعالٰی تمہیں دنیا و آخرت میں سب سے بہتر بدلہ عطا فرمائے۔ ت)

الجواب: زید کا قول باطل و مردود ہے، حدیثِ صحیح بخاری شریف میں مزامیر کا لفظ نہیں بلکہ معازف کہ سب باجوں کو شامل ہے یستحلون الحر و الحریر و المعازف (زنا اور ریشمی کپڑوں اور باجوں کو حلال سمجھیں گے۔ ت) امام غزالی پر بھی افتراء ہے کہ انہوں نے ان مذکوراتِ خبیثہ کو

صاف ناجائز بتایا ہے طرفہ یہ کہ انہوں نے نئے نئے کے جواز کی طرف میل کیا جو مزامیر سے ہے مشائخِ کرام پر افتراء ہے، حضرت سیدی فخرالدین زراوی خلیفہ حضرت سیدنا محبوبِ الٰہی رضی اللہ عنہما نے "کشف القناع عن اصول السماع" میں

[1] تبیین الحقائق کتاب الصلوٰۃ باب الامامۃ المطبعۃ الکبریٰ مصر ۱/ ۱۳۴ [2] صحیح البخاری کتاب الاشربہ باب ما جاء من یستحل الخمر الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۸۳

Fatawa Razvia, Volume 24

...clarified that listening to Qawwali with musical instruments is a fabrication against our noble masters (may Allah be pleased with them). Saying that if tabla and sarangi had existed in that sacred era, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) would have commanded them, is extreme audacity. Such a person is highly incompetent and yet calls others incompetent. He is not fit to be an Imam; no obligatory or voluntary prayers should be offered behind him, although there is no room for a ruling of disbelief (Kufr) here. And Allah Almighty knows best.

Problem 35: From Benares, asked by Mr. Maulvi Ibrahim Sahib, 27 Sha'ban 1338 AH. Question: What do the scholars of religion say regarding the issue of playing several 'daffs' (tambourines) while accompanying a wedding procession as is common nowadays? Is it permissible or not? Answer: The Answer: Playing 'daff' in a wedding is allowed but with three conditions: (1) It should not be played in a way that induces ecstasy, i.e., musical rules should not be followed; this single condition is sufficient to prohibit the current practice because they certainly play on specific beats and rhythms. (2) The players should not be men, as it is absolutely disliked (Makruh) for them. (3) Honorable women should not be involved. This entire issue is clarified in 'Radd al-Muhtar'. (Clarification of this entire issue has been made in Radd al-Muhtar. T) And Allah Almighty knows best.

Problem 36: From Allahabad, Madrasa Subhania, sent by Maulvi Ibrahim Sahib, 17 Ramadan 1338 AH. Question: How is it to play drums etc. at a wedding and to do 'Ta'ziya' (making replicas of shrines) and chest-beating in Muharram? Answer: The Answer: Playing drums is prohibited, and 'Ta'ziya' and chest-beating are forbidden (Haram). And Allah Almighty knows best.

Problem 37: From Maulvi Abdullah Sahib Bihari, Teacher at Madrasa Manzar-ul-Islam, Mahalla Saudagaran, Bareilly, 9 Safar 1339 AH. Question: What do the scholars of religion say regarding the ruling for those who play Ganjifa (a card game), Chess, Cards, or Bhagor? State it and be rewarded. Answer: The Answer: Ganjifa and cards are absolutely forbidden (Haram) because, besides being mere pastime and play, they involve the glorification of pictures. Bhagor or Jeewan is a game of the low-born and is prohibited. The correct view is that Chess is also not permissible, but with some conditions: Firstly, it should not lead to evil...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

...स्पष्ट किया गया कि वाद्यों के साथ कव्वाली सुनना हमारे बुजुर्ग मशायख (रज़ियल्लाहु अन्हुम) पर एक तोहमत है। यह कहना कि यदि उस पवित्र युग में तबला और सारंगी होते, तो अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उनका भी आदेश देते, अल्लाह के रसूल पर अत्यंत गंभीर धृष्टता है। ऐसा व्यक्ति अत्यंत अयोग्य है और दूसरों को अयोग्य कहता है। वह इमाम बनने के योग्य नहीं है; उसके पीछे कोई भी अनिवार्य या स्वैच्छिक नमाज़ नहीं पढ़ी जानी चाहिए, यद्यपि यहाँ कुफ़्र (अविश्वास) के हुक्म की कोई गुंजाइश नहीं है। वल्लाहु तआला आलम।

मसअला 35: बनारस से, जनाब मौलवी इब्राहीम साहब द्वारा प्रस्तुत, 27 शाबान 1338 हिजरी। सवाल: क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मसले में कि बारात के साथ कुछ दफ़ बजाते हुए चलना जैसा कि आजकल प्रचलित है, यह जायज़ है या नहीं? जवाब: अल-जवाब: शादी में दफ़ बजाने की अनुमति है लेकिन तीन शर्तों के साथ: (1) इसे ऐसे ढंग से न बजाया जाए जिससे मस्ती पैदा हो, यानी संगीत के नियमों का पालन न हो; वर्तमान प्रथा को रोकने के लिए केवल यही एक शर्त पर्याप्त है क्योंकि वे निश्चित रूप से ताल और लय पर बजाते हैं। (2) बजाने वाले पुरुष न हों क्योंकि उनके लिए यह बिल्कुल मकरूह (नापसंद) है। (3) सम्मानित महिलाएँ शामिल न हों। इस पूरे मसले की स्पष्ट व्याख्या 'रद्द अल-मुह्तार' में कर दी गई है। (इस संपूर्ण विषय का विवरण रद्द अल-मुह्तार में दे दिया गया है। त) वल्लाहु तआला आलम।

मसअला 36: इलाहाबाद, मदरसा सुभानिया से मौलवी इब्राहीम साहब द्वारा प्रेषित, 17 रमज़ान 1338 हिजरी। सवाल: शादी में ढोल आदि बजाना और मुहर्रम में ताज़ियादारी करना और सीना पीटना कैसा है? जवाब: अल-जवाब: ढोल बजाना मना है और ताज़ियादारी तथा सीना-कोबी हराम है। वल्लाहु तआला आलम।

मसअला 37: बरेली, मुहल्ला सौदागरान, मदरसा मंज़रे इस्लाम के शिक्षक मौलवी अब्दुल्लाह साहब बिहारी से, 9 सफ़र 1339 हिजरी। सवाल: क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मसले में कि गंजफ़ा, शतरंज, ताश, भगोर खेलने वालों के लिए क्या हुक्म है? बयान करें सवाब पाएँ। जवाब: अल-जवाब: गंजफ़ा और ताश बिल्कुल हराम हैं क्योंकि इनमें खेल-कूद के अलावा चित्रों का सम्मान शामिल है, और भगोर या जीवन नीच लोगों का खेल है और मना है। सही बात यह है कि शतरंज भी जायज़ नहीं है, लेकिन कुछ शर्तों के साथ: पहला: यह बुरा न हो...

کہ بحکم حضور لکھا اس کی تصریح فرمائی کہ باجوں کے ساتھ قوالی سننا ہمارے مشائخ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم پر افتراء ہے، اس کا کہنا کہ زمانہ اقدس میں طبلہ سارنگی خاک بلا ہوتے تو حضور ان کا بھی حکم فرماتے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پر سخت شدید جرات ہے ایسا شخص سخت نااہل ہے اوروں کو نااہل کہتا ہے وہ امام بنانے کے قابل نہیں اس کے پیچھے فرض نفل کچھ نہ پڑھا جائے مگر یہاں حکم کفر کی گنجائش نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۳۵: از بنارس مسئولہ جناب مولوی ابراہیم صاحب ۲۷ شعبان ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ بارات کے ساتھ چند دف بجاتے ہوئے لے چلنا جیسا آج کل مروج ہے یہ جائز ہے یا نہیں؟ الجواب: شادی میں دف کی اجازت ہے مگر تین شرط سے: (۱) ہیئات تطرب پر نہ بجایا جائے یعنی رعایت قواعد موسیقی نہ ہو ایک یہی شرط اس مروج کے منع کو بس ہے کہ ضرور تال سم پر بجاتے ہیں۔ (۲) بجانے والے مرد نہ ہوں کہ ان کو مطلقاً مکروہ ہے۔ (۳) عزت دار بیبیاں نہ ہوں، نص علیٰ کل ذلک فی ردالمحتار (ردالمحتار میں اس سارے مسئلہ کی تصریح کردی گئی ہے۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۳۶: از الہ آباد مدرسہ سبحانیہ مرسلہ مولوی ابراہیم صاحب ۱۷ رمضان ۱۳۳۸ھ شادی میں ڈھول وغیرہ بجانا اور محرم میں تعزیہ داری کرنا سینہ پیٹنا کیسا ہے؟ الجواب: ڈھول بجانا ممنوع ہے اور تعزیہ داری و سینہ کوبی حرام، واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۳۷: مولوی عبداللہ صاحب بہاری مدرس مدرسہ منظر الاسلام محلہ سوداگراں بریلی ۹ صفر ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ گنجفہ، شطرنج ، تاش، بھگور کھیلنے والے

کے واسطے کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا۔ الجواب: گنجفہ تاش حرام مطلق ہیں کہ ان میں علاوہ لہو و لعب کے تصویروں کی تعظیم ہے اور بھگور یا جیون کمینوں کا کھیل ہے اور منع اور صحیح یہ ہے کہ شطرنج بھی جائز نہیں مگر کچھ شرطوں سے: اولاً: بد نہ ہو۔

Volume 24 Fatawa Rizvia

Secondly: No oath should be taken upon it. Thirdly: No obscenity should be uttered. Fourthly: It should not cause delay in prayers or congregation. Fifthly: It should not be on the roadside, but in a corner. Sixthly: It should be rare, once in a while. The first three conditions are easy, but acting upon the latter three is rare; in fact, acting upon the sixth one is extremely difficult. Being rare after having a passion for it holds no meaning. Therefore, the safe path is that it is absolutely forbidden. And Allah Almighty knows best.

Issue 38: From village Rahpura, Tehsil and District Bareilly, Post Office Izatnagar, asked by Abdul Hamid Khan Sahib, 12 Safar 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A Ramleela fair takes place one mile away from the servant's village, in which large idols of Ravana etc. are made. Many people from the village go to this fair of Hindus for the purpose of seeing it. I heard from a student here named Maulana Abdullah that it is your fatwa that whoever goes to a Hindu fair for the sake of hobby, adornment, and seeing, his marriage (nikah) is broken. However, I have never heard this directly from you. One person, who often leads the congregational prayer, said that there is no harm in going to the fair; we go there to hear lectures by Aryas etc., and the dancers in the dances are Muslim, so it is only a sin and there is no harm, the marriage does not break at all. We even buy a thing or two for a penny or half, so there is an excuse for buying and selling, hence it is not even a sin. He also says that if the followers are certain that their prayer will be valid behind him, then no matter how sinful the Imam is, the prayer behind him will be valid. This person always goes to see Tazias etc. out of hobby as well. All the people of the village follow him and will do as you command. Therefore, they asked this humble servant to inquire from their spiritual guide, Qutb al-Alam, Imam of the time, regarding this fair and the aforementioned Imam. This humble servant does not have the courage to narrate such a detailed story verbally before you, so please grant a correct answer in writing.

The Answer: Going to the fairs of Hindus is forbidden (haram), but the marriage does not break unless one considers it good; if one considers it good...

दूसरा: उस पर कसम न खाई जाए। तीसरा: अश्लीलता न बकी जाए। चौथा: उसके कारण नमाज़ या जमात में देरी न की जाए। पांचवां: सरेराह न हो, किसी कोने में हो। छठा: विरले (नदिरन), कभी-कभार हो। पहली तीन शर्तें तो आसान हैं लेकिन पिछली तीन पर अमल विरल है बल्कि छठे पर अमल करना बहुत कठिन है। शौक के बाद 'कभी-कभार' होने का कोई मतलब ही नहीं रहता, इसलिए सलामती की राह यही है कि यह पूर्णतः वर्जित है। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला ३८: मौजा रहपुरा, तहसील व जिला बरेली, डाकखाना इज्ज़तनगर से अब्दुल हमीद खान साहब द्वारा पूछा गया, १२ सफ़र १३३९ हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: खादिम के गाँव से एक मील की दूरी पर रामलीला का मेला होता है जिसमें रावण आदि के बड़े-बड़े बुत (पुतले) बनाए जाते हैं, गाँव के बहुत से आदमी हिन्दुओं के इस मेले में उसे देखने की गरज से जाते हैं। हुज़ूर के यहाँ के एक तालिब-ए-इल्म (छात्र) जिनका नाम मौलाना अब्दुल्लाह है, उनकी ज़बानी मैंने सुना था कि हुज़ूर का यह फ़तवा है कि जो कोई हिन्दुओं के मेले में शौक, सजावट और देखने की गरज से जाता है उसका निकाह टूट जाता है, लेकिन कभी हुज़ूर के सामने से नहीं सुना। एक शख्स जो अक्सर जमात की नमाज़ पढ़ाता है उसने यह कहा कि मेले में जाने से कुछ हर्ज नहीं, वहां हम आर्य आदि के व्याख्यान सुनने जाते हैं और जो नाच होते हैं उनमें नाचने वालियाँ मुसलमान हैं, इसलिए केवल गुनाह होता है और कोई हर्ज नहीं है, निकाह वगैरह कुछ नहीं जाता। हम तो एकाध पैसे की चीज़ भी खरीद लेते हैं इसलिए खरीद-फरोख्त का भी बहाना हो जाता है, इसलिए वह गुनाह भी नहीं होता। और यह भी कहता है कि अगर मुक़्तदियों को यह यकीन है कि उनके पीछे हमारी नमाज़ हो जाएगी तो वह इमाम चाहे कैसा ही गुनहगार क्यों न हो, उसके पीछे नमाज़ हो जाएगी। यह शख्स शौक में हमेशा ताज़िया वगैरह भी देखने जाता है। गाँव के तमाम लोग उसके अनुयायी हैं और जैसा हुज़ूर हुक्म फ़रमायेंगे वैसा करेंगे। इसलिए उन्होंने फ़कीर से कहा कि अपने मुर्शिद कुतबे आलम इमाम-ए-ज़मां से इस मेले और उपर्युक्त इमाम के बारे में दरयाफ़्त करो। फ़कीर में इतनी जुर्रत कहाँ कि हुज़ूर के सामने इतना विस्तारपूर्वक किस्सा ज़बानी बयां कर सके इसलिए सही जवाब लिख कर इनायत फ़रमायें।

उत्तर: हिन्दुओं के मेले में जाना हराम है लेकिन निकाह नहीं टूटता जब तक उसे अच्छा न जाने, अच्छा जानेगा तो... [वाक्य अगले पृष्ठ पर जारी है]

পৃষ্ঠ ১৪৩/৭২০

ثانیاً: اس پر قسم نہ کھائی جائے۔ ثالثاً: فحش نہ بکا جائے۔ رابعاً: اس کے سبب نماز یا جماعت میں تاخیر نہ کی جائے۔ خامساً: سر راہ نہ ہو گوشے میں ہو۔ سادساً: نادراً کبھی کبھی ہو۔ پہلی تین شرطیں تو آسان ہیں مگر پچھلی تین پر عمل نادر ہے بلکہ ششم پر عمل سخت دشوار ہے شوق کے بعد نادراً ہونا کوئی معنی ہی نہیں لہٰذا راہِ سلامت یہ ہے کہ مطلقاً منع ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۳۸: از موضع رہپورہ تحصیل و ضلع بریلی ڈاک خانہ ایزٹ نگر مسئولہ عبدالحمید خاں صاحب ۱۲ صفر ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ خادم کے موضع سے ایک میل کے فاصلہ پر رام لیلا کا میلہ ہوتا ہے جس میں راون وغیرہ کے بڑے بڑے بت بنائے جاتے ہیں، موضع کے بہت سے آدمی اس ہندوؤں کے میلہ میں اس کو دیکھنے کی غرض سے جاتے ہیں حضور کے یہاں کے ایک طالب علم مسمیٰ مولانا عبداللہ کی زبانی میں نے سنا تھا کہ حضور کا یہ فتویٰ ہے کہ جو کوئی ہندوؤں کے میلہ میں شوقیہ زیبائش اور دیکھنے کی غرض سے جاتا ہے اس کا نکاح ٹوٹ جاتا ہے لیکن کبھی حضور سے روبرو نہیں سنا ایک شخص نے جو اکثر جماعت کی نماز پڑھاتا ہے یہ کہا کہ میلے میں جانے سے کچھ حرج نہیں وہاں ہم آریہ وغیرہ کے لکچر سننے جاتے ہیں اور جو ناچ ہوتے ہیں ان میں ناچنے والیاں مسلمان ہیں لہٰذا صرف گناہ ہوتا ہے اور کوئی حرج نہیں ہے نکاح و نکاح کچھ نہیں جاتا، ہم تو ایک آدھ پیسہ کی چیز بھی تو خرید لیتے ہیں لہٰذا خرید و فروخت کا بھی بہانہ ہو جاتا ہے اس لئے وہ گناہ بھی نہیں ہوتا اور یہ بھی کہتا ہے کہ اگر مقتدیوں کو یہ یقین ہے کہ اس کے پیچھے ہماری نماز ہو جائے گی تو وہ امام چاہے جیسا ہی گنہگار کیوں نہ ہو اس کے پیچھے نماز ہو جائے گی یہ شخص شوقیہ ہمیشہ تعزیہ وغیرہ بھی دیکھنے جاتا ہے موضع کے تمام لوگ اس کے تابعدار ہیں اور جیسا حضور حکم فرمائیں گے ویسا

کریں گے لہٰذا انہوں نے فقیر سے کہا کہ اپنے مرشد قطب العالم امامِ زمان سے اس میلے اور مذکورہ بالا امام کی بابت دریافت کرو۔ فقیر میں یہ جرات کہاں کہ حضور کے سامنے اتنا مفصل قصہ زبانی بیان کر سکے لہٰذا جواب باصواب ارقام فرمایا جائے۔

الجواب: ہنود کے میلے میں جانا حرام ہے مگر نکاح نہیں ٹوٹتا جب تک اسے اچھا نہ جانے، اچھا جانے گا

Volume 24 Fatawa Razawiyya

...then indeed he will become an infidel and the marriage will break. Watching dancing is forbidden, even if the dancer is a Muslim; in fact, if she is a Muslim, it is even more severely forbidden for two reasons. Firstly, the unveiling of a non-mahram Muslim woman is a thousand times more severe than the unveiling of a non-believing woman. Secondly, the indecency of a Muslim woman is [more severe] than the indecency of a non-believing woman. The pretext of buying and selling to watch the performance is purely a lie; buying and selling cannot happen in a marketplace. Also, watching Taziya is not permissible. And when the Imam is an open sinner (fasiq mu'lin), praying behind him is Makruh Tahrimi (prohibitively disliked), meaning it is a sin to pray and mandatory to repeat. The followers' perception of no harm in it will not change the Sharia ruling. Going to listen to an Arya's lecture is even more severely forbidden; they speak blasphemy and people go to listen to it. Regarding participating in such gatherings, the Great Quran has stated: "Indeed, you would then be like them."[1] (when then you also are like them), and stated: "Indeed Allah will gather the hypocrites and the disbelievers all together in Hell."[2] Indeed, Allah the Almighty will gather those infidels and those nominal Muslims, those who participate in their gatherings, all together in Hell. And Allah the Almighty knows best. (T)

Problem 39 to 41: From the town of Khudaganj Shahjahanpur, sent by Mr. Abdul Razzaq Sahib, Organizer of Ashra Muharram, dated 1339 AH. (1) What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid is trying to collect donations forcibly from both the rich and the poor to bring a musical band from Bareilly for Chehlum, the cost of which will be around one hundred and twenty-five rupees, whether the Fatiha of Imam Hussain (may Allah be pleased with him) is performed or not. And he considers this ostentation and boasting as reward-worthy, even though English bands etc. are already available here. (2) Bakr is trying to argue that it is inappropriate to incite the Hindus because a settlement has been reached by the government administration for Ashra Muharram. Besides, a minaret of the Eidgah is lying incomplete, and there is absolutely no boundary wall for the mosque; dogs etc. enter. Therefore, if donations are collected, first of all, a water distribution (Sabeel) should be arranged in the name of Imam Hussain (may Allah be pleased with him), and from that, payment should be given to the local band players, and the remaining amount should be used to repair the minaret and the mosque. (3) Zaid is ignorant and powerful; he has announced that Bakr's hookah and water should be stopped because he...

[1] Al-Quran Al-Kareem 4/140 [2] Al-Quran Al-Kareem 4/140

जिल्द २४ फतावा रज़विया

...तो निश्चित रूप से वह काफ़िर हो जाएगा और निकाह टूट जाएगा। नाच देखना हराम है, भले ही नाचने वाली मुस्लिम हो, बल्कि अगर वह मुस्लिम है तो दो कारणों से और भी अधिक हराम है। पहला, एक गैर-महरम मुस्लिम महिला की बेपर्दगी एक गैर-मुस्लिम महिला की बेपर्दगी से हज़ार गुना अधिक गंभीर है। दूसरा, एक मुस्लिम महिला की निर्लज्जता एक गैर-मुस्लिम महिला की निर्लज्जता से [अधिक गंभीर] है। तमाशा देखने के लिए खरीद-फरोख्त का बहाना सरासर झूठ है; खरीद-फरोख्त बाज़ार में नहीं हो सकती। और ताज़िया देखना भी जायज़ नहीं है। और जब इमाम एक खुला गुनेहगार (फासिक मु'लिन) हो, तो उसके पीछे नमाज़ पढ़ना 'मक़रूहे तहरीमी' है, यानी पढ़ना गुनाह है और दोहराना वाजिब है। मुकतदियों (पीछे नमाज़ पढ़ने वालों) का इसमें कोई हर्ज़ न समझना शरीअत के हुक्म को नहीं बदलेगा। आर्य (समाज) का लेक्चर सुनने जाना और भी ज़्यादा हराम है; वे कुफ्र (ईश-निंदा) बकते हैं और लोग यह कुफ्र सुनने जाते हैं। ऐसी सभाओं में शामिल होने के बारे में कुरान-ए-अज़ीम ने फरमाया है: "निश्चित रूप से, तब तुम भी उन्हीं के समान होगे।"[1] जब तो तुम भी उन्हीं जैसे हो, और फरमाया: "बेशक अल्लाह मुशरिकों और काफ़िरों को जहन्नुम में एक साथ इकट्ठा करेगा।"[2] निश्चित रूप से अल्लाह तआला उन काफ़िरों और उन नाम के मुसलमानों को, जो उनकी सभाओं में शामिल होते हैं, सभी को जहन्नुम में इकट्ठा करेगा। वल्लाहु तआला आलम (त)।

मसला ३९ से ४१: कस्बा खुदागंज शाहजहांपुर से, प्रेषक जनाब अब्दुल रज्जाक साहब, प्रबंधक अशरा मुहर्रम, दिनांक १३३९ हिजरी। (१) धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: ज़ैद इस बात की कोशिश कर रहा है कि अमीर और गरीब सभी से ज़बरदस्ती चंदा वसूल करके बरेली से चेहलुम में बाजा मंगवाया जाए, जिसका खर्च लगभग सवा सौ रुपये होगा, चाहे इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) का फ़ातिहा हो या न हो। और वह इस दिखावे और घमंड को पुण्य का काम समझता है, बावजूद इसके कि यहाँ अंग्रेज़ी बाजे आदि मौजूद हैं। (२) बक्र इस बात की कोशिश कर रहा है कि हिंदुओं को उकसाना अनुचित है क्योंकि अशरा मुहर्रम के लिए सरकारी प्रशासन की ओर से समझौता हो चुका है। इसके अलावा ईदगाह का एक मीनार अधूरा पड़ा है और मस्जिद की चहारदीवारी बिल्कुल नहीं है; कुत्ते आदि घुस जाते हैं। इसलिए यदि चंदा जमा किया जाए, तो सबसे पहले इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के नाम पर पानी की सबील लगाई जाए, और उसमें से यहाँ के बाजे वालों को भुगतान किया जाए, और शेष से मीनार और मस्जिद ठीक करा दी जाए। (३)

ज़ैद अज्ञानी और शक्तिशाली है; उसने घोषणा कर दी है कि बक्र का हुक्का-पानी बंद कर दिया जाए क्योंकि उसने हमारे...

[1] अल-कुरान अल-करीम ४/१४० [2] अल-कुरान अल-करीम ४/१४०

تو بیشک کافر ہوجائے گا اور نکاح ٹوٹ جائے گا ناچ دیکھنا حرام ہے اگرچہ ناچنے والی مسلمان ہو بلکہ اگر مسلمان ہو تو اور سخت تر حرام ہے دو وجہ سے، اول اجنبیہ عورت مسلمان کی بے پردگی کافرہ کی بے پردگی سے ہزار درجے سخت تر ہے۔ دوم مسلمان عورت کی بے حیائی کافرہ کی بے حیائی سے اور تماشا دیکھنے کے لئے خرید و فروخت کا حیلہ محض جھوٹا ہے خرید وفروخت بازار میں نہیں ہوسکتی اور تعزیہ دیکھنا بھی جائز نہیں اور امام جبکہ فاسق معلن ہو اس کے پیچھے نماز مکروہ تحریمی ہے کہ پڑھنی گناہ اور پھیرنی واجب مقتدیوں کا اس میں حرج نہ سمجھنا حکم شرعی کو نہ بدل دے گا۔ آریہ کا لکچر سننے جانا اور بھی سخت تر حرام ہے وہ کفر بکتے ہیں اور یہ کفر سننے جاتے ہیں ایسے جلسے میں شریک ہونے کو قرآن عظیم نے فرمایا ہے: "اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ" 1 جب تو تم بھی انہیں جیسے ہو، اور فرمایا: "اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ الْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعًا" 2 بیشک اللہ تعالیٰ اُن کافروں اور ان نام کے مسلمانوں ان کے جلسے میں شریک ہونے والوں سب کو جہنم میں اکٹھا کرے گا۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۳۹ تا ۴۱: از قصبہ خدا گنج شاہجہانپوری مرسلہ جناب عبد الرزاق صاحب منتظم عشرہ محرم مورخہ ۱۳۳۹ھ (۱) کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید اس امر کی کوشش کرتا ہے کہ امیر وغریب سب سے چندہ جبراً وصول کرکے بریلی سے چہلم میں باجا منگوایا جائے جس کا صرفہ سوا سو روپیہ کے قریب ہوگا خواہ فاتحہ امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہو یا نہ ہو اور اسی نمود اور شیخی کو ثواب جانتا ہے با وجودیکہ یہاں باجا انگریزی وغیرہ کا موجود ہے۔

(۲) بکر اسی امر کی کوشش کرتا ہے کہ اہل ہنود کو اشتعال دینا نا مناسب ہے اس واسطے کہ عشرہ محرم میں منجانب انتظام گورنمنٹ مصالحت ہو چکی ہے علاوہ اس کے ایک مینار عیدگاہ نا

تمام پڑا ہوا ہے اور ایک چہار دیواری مسجد قطعی نہیں ہے کتے وغیرہ گھستے ہیں پس اگر چندہ فراہم کیا جائے تو اول سبیل شربت بنام امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہو اور اس میں سے یہاں کے باجے والوں کو دیا جائے جو بچے مینار اور مسجد درست کرادیا جائے۔ (۳) زید اجہل اور زبردست ہے اعلان کر دیا ہے کہ بکر کا حقہ پانی بند کر دیا جائے اس لئے کہ ہمارے...

1 القرآن الکریم ۱۴۰/۴ 2 القرآن الکریم ۱۴۰/۴

صفحہ ۱۴۴ از ۷۲۰

Volume 24 Fatawa Rizvia

...acts against [the rules]. Therefore, which of these two actions is necessary and permissible, and what charge of Sharia can be imposed on Zaid, and whose side should the Sharia judge take? Explain and you will be rewarded.

The Answer: Musical instruments, whether English or Indian, and whether the musicians are from there or here, are all forbidden (haram) and works of the devil. Collecting or giving donations for them is forbidden. Taziya floats themselves are impermissible, and musical instruments with them are doubly forbidden. The collected donation should be spent on the Fatiha and offerings (Niyaz) for the noble martyrs, provided the donors give permission, as this is an important matter. The minaret of the Eidgah is also not an essential thing. If the donors' permission is not obtained, then whatever remains should be returned to them. This is the ruling of Sharia. Whoever desires to go against it will be an opponent of Sharia and deserving of divine punishment. He is the one who deserves a social boycott. Bakr's boycott for this reason is an injustice to him, and the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Injustice will be manifold darkness on the Day of Resurrection." (1) The one who commits injustice will be in darkness on the Day of Judgment. And Allah Almighty knows best.

(1) Sahih al-Bukhari, Book of Injustices (Kitab al-Mazalim), Chapter: Injustice is darkness on the Day of Resurrection, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/331.

जिल्द 24 फतावा रज़विया

...खिलाफ करता है, अतः इन दोनों कार्यों में से कौन सा कार्य आवश्यक और जायज़ है और ज़ैद पर शरीयत का क्या इल्ज़ाम लगाया जा सकता है और शरीयत के काजी (न्यायाधीश) को किसका पक्ष लेना चाहिए? स्पष्ट करें, आपको पुण्य प्राप्त होगा।

उत्तर: बाजा चाहे अंग्रेजी हो या हिंदुस्तानी, और बजाने वाले वहां के हों या यहां के, सभी हराम और शैतान के कार्य हैं। उनके लिए चंदा लेना और देना हराम है। ताज़िया के तख़्त स्वयं नाजायज़ हैं और उनमें बाजे बजाना दुगना हराम है। जो चंदा दिया जाए उसे महान शहीदों की फातिहा और नियाज़ (भोग) में खर्च किया जाए, बशर्ते चंदा देने वालों की अनुमति हो क्योंकि यह एक महत्वपूर्ण विषय है। ईदगाह का मीनार भी कोई बहुत महत्वपूर्ण चीज़ नहीं है। और यदि चंदा देने वालों की अनुमति न हो, तो जो राशि शेष रहे वह उन्हें वापस कर दी जाए। यह शरीयत का आदेश है। जो इसके विरुद्ध जाना चाहेगा वह शरीयत का विरोधी और ईश्वरीय दंड का पात्र होगा। वह स्वयं सामाजिक बहिष्कार के योग्य है। बक्र पर इस कारण से लगाया गया सामाजिक प्रतिबंध उस पर ज़ुल्म (अन्याय) है और पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "अज़-ज़ुल्मु ज़ुलुमातुन यौमल कियामाह" (1) अर्थात ज़ुल्म करने वाला कयामत के दिन अंधेरों में होगा। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

(1) सहीह अल-बुखारी, किताब अल-मज़ालिम, अध्याय: ज़ुल्म कयामत के दिन अंधेरा है, कदीमी कुतुब खाना कराची 1/331।

पेज 145 का 720

خلاف کرتا ہے پس دونوں کاموں میں سے کون سا کام ضروری اور جائز ہے اور زید کے ذمہ شریعت کا کیا الزام عائد ہوسکتا ہے اور قاضی شرع کو کس طرف شامل ہونا چاہئے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: باجا انگریزی ہو خواہ ہندوستانی، باجے والے وہاں کے ہوں یا یہاں کے سب حرام اور کار شیطان ہیں، ان کے لئے چندہ لینا اور دینا حرام، تخت تعزیہ خود ناجائز ہیں اور ان میں باجے حرام در حرام، جو چندہ دیا جائے فاتحہ و نیاز شہدائے کرام میں صرف کیا جائے جبکہ چندہ دہندوں کی اجازت ہو کہ یہ ضروری چیز ہے، عید گاہ کا مینار بھی کوئی اہم چیز نہیں، اور اگر چندہ دہندوں کی اجازت نہ ہو تو جو بچے ان کو واپس کیا جائے۔ یہ حکم شرع کا ہے اس کے خلاف جو چاہے گا شریعت کا مخالف اور عذاب الہی کا مستحق ہو گا وہی حقہ میں بند کرنے کے لائق ہیں بکر کی اس وجہ سے بندش اس پر ظلم ہے اور نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: الظلم ظلمات یوم القیامۃ (۱) ظلم کرنے والا قیامت کے دن اندھیروں میں ہوگا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

(۱) صحیح البخاری کتاب المظالم باب الظلم ظلمات یوم القیمۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۳۳۱

Volume 24 Fatawa-e-Razvia

Treatise Issues of Sama 1320 AH (Issues of Qawwali)

Problem 42 to 46: From Lakina State, District Rangpur, Country of Bengal, sent by Maulana Abdul Latif Hazari, 3 Ramadan 1320 AH.

What do the scholars of religion say regarding the following detailed issues:

(1) The pseudo-Sufis of this era who organize gatherings of Sama (listening to music) and song in which all kinds of melodies, dances, flutes, and musical instruments are present. Apart from chandeliers, lamps, canopies, floorings, and other Chishtia formalisms and undue extravagances, there is no restriction for the worthy or unworthy, pious or sinful, scholar or ignorant, Hindu or Muslim, etc. Everyone has general permission, and people are invited from all around through letters and advertisements. Does this activity have any basis found in the Quran, Hadith, or Sufism? Is there any verbal or practical report proven from the Holy Lawgiver (Prophet), Companions, Mujtahidin (jurists), or the Imams of Shariah and Tariqah? And on the second possibility, if a person, considering it permissible, rather desirable, a Sunnah, and a means of seeking proximity to Allah, always commits it himself and also encourages others to do so, to the extent that due to his motivation, this practice becomes prevalent and continues in some places, will such a person be considered strayed and misguiding or not?

जिल्द २४ फ़तावा रज़विया

रिसाला मसाइल-ए-समाअ १३२० हि. (क़व्वाली के मसले)

मसला ४२ ता ४६: रियासत लकीना, जिला रंगपुर, मुल्क बंगाल से, प्रेषक मौलवी अब्दुल लतीफ हज़ारी, ३ रमज़ान १३२० हि.

दीन के विद्वान (उलेमा-ए-दीन) निम्नलिखित विस्तृत समस्याओं के बारे में क्या फरमाते हैं:

(१) वर्तमान समय के वे सूफी जो समाअ और गान की महफ़िलें आयोजित करते हैं जिनमें हर प्रकार के राग, नृत्य, बांसुरी और वाद्ययंत्र मौजूद रहते हैं। झाड़-फानूस, शामियाना, फ़र्श और अन्य चिश्तिया औपचारिकताओं और अनावश्यक फ़िज़ूलखर्ची के अलावा, योग्य या अयोग्य, नेक या पापी, विद्वान या अज्ञानी, हिंदू या मुसलमान आदि पर कोई प्रतिबंध नहीं होता; सभी को सामान्य अनुमति होती है और पत्रों तथा विज्ञापनों के माध्यम से दूर-दराज से लोगों को बुलाया जाता है। क्या इस गतिविधि का कुरान, हदीस या तसव्वुफ (सूफीवाद) में कोई आधार मिलता है और क्या हज़रत शारे (पैग़ंबर), सहाबा, मुजतहिदीन या शरीयत और तरीक़त के इमामों से कोई मौखिक या व्यावहारिक प्रमाण सिद्ध है या नहीं? और दूसरी संभावना पर, यदि कोई व्यक्ति इसे जायज़ बल्कि मुस्तहब (पसंदीदा) और सुन्नत तथा अल्लाह की निकटता का साधन समझकर हमेशा स्वयं भी इसमें लिप्त रहे और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करे, यहाँ तक कि उसकी प्रेरणा से कुछ स्थानों पर इस कार्य का चलन शुरू हो जाए और बढ़ता जाए, तो क्या ऐसा व्यक्ति गुमराह और दूसरों को गुमराह करने वाला (ज़ाल-ओ-मुज़िल्ल) माना जाएगा या नहीं?

جلد ۲۴ فتاویٰ رضویہ

رسالہ مسائلِ سماع ۱۳۲۰ھ (قوالی کے مسئلے)

مسئلہ ۴۲ تا ۴۶: از ریاست لکینہ ضلع رنگ پور ملک بنگالہ مرسلہ مولوی عبداللطیف ہزاری ۳ رمضان ۱۳۲۰ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین مسائلِ مفصلہ ذیل میں:

(۱) متصوفہ زمانہ جو مجلس سماع و سرود مرتب کرتے ہیں جس میں راگ و رقص و مزامیر و معازف ہر قسم کے موجود رہتے ہیں اور جھاڑ و فانوس و شامیانہ و فرش و دیگر تکلفات چشتیہ و اسرافاتِ بے جا کے علاوہ اہلِ و نااہل و صالح و فاسق و عالم و جاہل و ہندو اور مسلمان وغیرہ کا کچھ تقید نہیں ہوتا سب کو اذنِ عام رہتا ہے اور اطراف و اکناف سے بذریعہ خطوط و اشتہارات لوگوں کو بلایا جاتا ہے آیا اس کاروائی کی قرآن و حدیث یافتہ و تصوف سے کوئی اصل اور حضرت شارع یا صحابہ یا مجتہدین و ائمہ شریعت و طریقت سے کوئی نقلِ قولی خواہ فعلی ثابت ہے یا نہ، و بر تقدیرِ ثانی اگر کوئی شخص اس کو مباح بلکہ مستحب اور مسنون و موجبِ تقرب الی اللہ سمجھ کر ہمیشہ خود بھی مرتکب رہے اور دوسروں کو بھی راغب کرے حتی کہ اس کی تحریک سے بعض مقامات میں اس فعل کا چرچا شروع ہو جائے اور ہوتا جائے تو ایسا شخص ضال و مضل ٹھہرے گا یا نہیں؟

Fatawa Razawiyya Volume 24

(2) Is attributing this act to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and all the great Companions, the Successors, the Mujtahid Imams, and the spiritual masters of the path a sign of the utmost insolence and lying against the Messenger, against the upright Companions, and against the great, prominent figures after them, or not?

(3) In a country where the people are purely new Muslims and completely unaware of the rulings and pillars of Islam, as if their very 'Bismillah' in Shari'ah is not yet correct, and because of the proximity of the era of ignorance, being new to Islam, and living alongside Hindu people, they often cannot distinguish between truth and falsehood and are caught in various types of polytheism and innovation both in belief and practice—is it more necessary for such people to be taught Islamic beliefs and Shari'ah rulings first, or is it appropriate to first teach the art of music and the truths and subtleties of Sufism and the issue of Wahdat al-Wujud?

(4) Since it is obligatory on every Muslim, to the best of their ability, to enjoin what is right and forbid what is wrong in general, and especially for a Pir and leader of the people, then what about a Pir whose disciples are mostly unrestrained, hedonistic, drug-using, with long mustaches and no beards, and extremely lazy in matters of prayer, fasting, ghusl, and purification, yet energetic in the service of dancing, music, and singing? He has no concern for anyone's actions, keeps everyone pleased, and is pleased with everyone. Is such a Pir a forsaker of obligations and a sinner, or not? And what kind of Pir will he be called: one of guidance and instruction, or of misguidance and heresy?

(5) Saying that there is no polytheism in the Hindu Vedas, that it is not correct to call Hindus absolutely polytheists, that prostrating to idols cannot be a cause of disbelief because it is a prostration of respect just as the angels did to Adam, and that hoping for intercession from idols is like the people of Islam hoping for intercession from the Prophets, and that Sufi masters have taken many litanies, thoughts, and meditations from Hindu Gyan (knowledge)—are such absurdities from the door of guidance and instruction, or are they means for the uprooting of Islam?

The Answer:

Answer to the first question:

Chandeliers, lanterns, awnings, floor coverings, etc., are permissible (mubahat) in themselves and are not forbidden as long as they are not combined, either in intention or in practice, with a religiously prohibited act; rather, it is possible that with a praiseworthy intention in a praiseworthy place, they become praiseworthy.

| Indeed, that is the nature of the permissible; it follows the intention. | Because it is a characteristic of the permissible that it [follows] good or bad [intention]. |

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

(२) इस कृत्य को हुज़ूर अनवर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और सभी महान सहाबा, ताबिईन, मुजतहिद इमामों और तरीक़त के मशायख़ की ओर मंसूब करना अत्यधिक गुस्ताखी और रसूल, न्यायप्रिय सहाबा और उनके बाद के महान विद्वानों पर झूठ बोलने में शामिल है या नहीं?

(३) जिस देश के लोग केवल नए मुसलमान हैं और इस्लाम के नियमों और स्तंभों से पूरी तरह अनभिज्ञ हैं, मानो शरीयत में उनकी अभी 'बिस्मिल्लाह' भी सही नहीं हुई है, और जाहिलियत के दौर की निकटता, इस्लाम में नए होने और हिंदू समुदायों के पड़ोस के कारण वे अक्सर हक़ और बातिल में अंतर नहीं कर पाते और अकीदे व अमल में कई प्रकार के शिर्क और बिदअत में फंसे हुए हैं—क्या ऐसे लोगों को पहले इस्लामी अकीदों और शरीयत के आदेशों की शिक्षा देना ज़रूरी है, या सबसे पहले संगीत की कला और तसव्वुफ़ की हकीकतों व बारीकियों और वहदत-उल-वजूद के मसले की तालीम मुनासिब है?

(४) चूँकि हर मुसलमान पर अपनी सामर्थ्य के अनुसार अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुनकर (भलाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना) आम तौर पर और कौम के पीर व रहनुमा पर विशेष रूप से फ़र्ज़ है, तो जिस पीर के अधिकांश मुरीद अनियंत्रित, विलासी, नशाखोर, लंबी मूंछों वाले, बिना दाढ़ी वाले और नमाज़, रोज़ा, ग़ुस्ल और पाकीज़गी के मामलों में बेहद सुस्त हों, लेकिन नाच-गाने और कव्वाली की सेवा में चुस्त हों, और वह किसी की करनी-भरनी से कोई मतलब न रखे, सबको खुश रखे और सबसे खुश रहे, तो क्या ऐसा पीर फ़र्ज़ का त्याग करने वाला और गुनहगार है या नहीं? और वह पीर किस श्रेणी का कहलाएगा: हिदायत व इरशाद का या गुमराही व इल्हाद का?

(५) यह कहना कि हिंदू वेदों में शिर्क नहीं है, हिंदुओं को पूरी तरह मुशरिक कहना सही नहीं है, मूर्तियों को सजदा करना उनके कुफ़्र का कारण नहीं हो सकता क्योंकि यह सजदा-ए-ताज़ीमी (सम्मान का सजदा) है जैसा कि फरिश्तों ने आदम को किया था, और मूर्तियों से शफ़ाअत (सिफारिश) की उम्मीद रखना वैसा ही है जैसे मुसलमानों का नबियों से शफ़ाअत की उम्मीद रखना, और यह कि मशायख़ ने अधिकांश वज़ीफ़े, विचार और ध्यान हिंदू ज्ञान से लिए हैं—क्या इस प्रकार की बेहूदा बातें हिदायत व इरशाद के अध्याय से हैं या इस्लाम की जड़ें काटने के कारण हैं?

अल-जवाब (उत्तर):

पहले सवाल का जवाब:

झाड़, फानूस, शामियाना, फर्श आदि अपने आप में मुबाह (जायज़) हैं और तब तक मना नहीं हैं जब तक कि वे नियत या अमल के लिहाज़ से किसी शरई बुराई से न जुड़े हों; बल्कि संभव है कि नेक नियत के साथ नेक जगह पर वे नेक हो जाएँ।

| वास्तव में, यही मुबाह (जायज़) का स्वभाव है कि वह नियत का अनुसरण करता है। | इसलिए कि यह मुबाह की विशेषता है कि वह अच्छी या बुरी [नियत के अधीन है]। |

पृष्ठ १४७ / ७२०

(۲) اس فعل کا منسوب کرنا طرف آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اور جمیع اکابر صحابہ و تابعین وائمہ مجتہدین و مشائخ طریقت کے نہایت درجہ کی گستاخی اور کذب علی الرسول و علی الصحابہ العدول و علی من بعدہم من الاکابر الفحول میں داخل ہے یا نہ؟

(۳) جس ملک کے لوگ محض نو مسلم اور احکام وارکان اسلام سے نہایت بے خبر ہوں گویا ابھی تک شریعت میں ان کی بسم اللہ بھی درست نہیں ہوئی اور بسبب قربِ زمانہ جاہلیت وحدیث العہد بالاسلام ہونے اور مجاورت اقوامِ ہنود کے اکثر حق و باطل کی تمیز نہ رکھتے ہوں اور اعتقاداً و عملاً انواع شرک و بدعت میں گرفتار ہوں تو ایسوں کو اولاً عقائد اسلامیہ و احکامات شرعیہ کی تلقین ضرور تر ہے یا سب سے پیشتر فنِ موسیقی اور حقائق و دقایق تصوف و مسئلہ وحدۃ الوجود کی تعلیم مناسب ہے؟

(۴) ہر گاہ کہ ہر مسلمان پر بقدر استطاعت امر معروف و نہی منکر عموماً اور پیر و پیشوائے قوم پر خصوصاً فرض ہے تو جس پیر کے اکثر مرید نامقید، عیاش طبع، نشہ خوار، مونچھیں دراز، ریش ندارد، اور صوم و صلاۃ و غسل وطہارت کے مقدمے میں غایت درجہ کے سست، ہاں ناچ رنگ و سماع و سرود کی خدمت میں چست ہوں اور وہ کسی کی کن مکن سے غرض نہ رکھے سب کو راضی رکھے اور سب سے راضی رہے، پس ایسا پیر تارک فرض اور عاصی ہے یا نہ؟ اور وہ پیر کس قسم کا پیر کہلائے گا ہدایت وارشاد کا یا ضلالت و الحاد کا؟

(۵) یہ کہنا کہ وید ہنود میں شرک نہیں ہنود کو بالقطع مشرک کہنا صحیح نہیں، بتوں کو سجدہ کرنا ان کا باعث کفر نہیں ہو سکتا کہ یہ سجدہ تعظیمی ہے جیسے فرشتوں نے آدم کو کیا تھا اور بتوں

سے شفاعت کا امیدوار رہنا ایسا ہے جیسے اہلِ اسلام کا انبیاء سے امیدوار شفاعت رہنا اور مشائخ نے اکثر اذکار وافکار و مراقبات جو گیانِ ہنود سے لئے ہیں، اس قسم کے ہفوات ہدایت و ارشاد کے باب سے ہیں یا درجہ بیخ کنی اسلام کے اسباب ہیں؟

الجواب:

جواب سوال اول:

جھاڑ، فانوس، شامیانہ، فروش وغیرہا مباحات فی انفسہا محظور نہیں جب تک نیۃً یا عملاً منکر شرعی سے منضم نہ ہوں بلکہ ممکن کہ نیت محمودہ سے محل محمود میں محمود ہو جائیں،

| فان ذلک شان المباح یتبع النیۃ | اس لئے کہ وہ مباح کی صفت ہے کہ وہ اچھی بری |

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Arabic text alongside Urdu translation] Whether something is good, bad, or purely permissible depends on the intention behind it, so that the permissibility becomes absolute. This has been clearly stated in 'Al-Bahr al-Raiq' and other books. We have explained this numerous times in our Fatawas. Reference should be made to the incident mentioned by Imam Hujjat-ul-Islam [Ghazali] in 'Ihya-ul-Ulum' regarding a story of a pious person who lit a thousand lamps in a gathering of Dhikr (remembrance of Allah). Some people objected to this (i.e., they protested that it was wastefulness/extravagance). He said to the objectors, 'Come and extinguish whichever lamp among these is for other than Allah Almighty.' Consequently, they could not extinguish even a single lamp. (T)

Permissible adornment with a permissible intention is not wastefulness (israf) at all; wastefulness is forbidden. Allah Almighty says: "And do not waste; indeed, He does not like those who commit excess." [Quran 7:31] Do not spend excessively, for Allah Almighty does not like those who indulge in extravagance. (T)

And adornment, as long as it is not done in a detestable manner or with a detestable intention, is permissible. Allah Almighty says: "Say, 'Who has forbidden the adornment of Allah which He has produced for His servants?'" [Quran 7:32] Say: Who has forbidden the beauty and adornment which He has brought forth for His servants? (T)

And the lawful and unlawful cannot be treated as the same. We are not commanded to split open hearts, search for hidden matters, or harbor ill suspicions. Rather, we should maintain good assumptions as much as possible. Allah Subhanuhu knows the inner thoughts and is aware of secrets. (Rather, we hold good opinions as far as possible, and Allah Almighty is pure, He knows the hidden things of the hearts and is acquainted with good secrets. T) If any gathering does not itself contain things forbidden by Sharia, nor does it contain matters where 'good' or 'bad' varies according to different objectives or varying circumstances—such as pure listening (Sama) which is beneficial for the deserving and harmful for the undeserving—not because...

---

1. Ihya-ul-Ulum, Book: Adab-ul-Akl (Etiquettes of Eating), Section: Collection of Adab etc., Al-Mashhad Al-Husayni Press, Cairo, 2/20.
2. The Holy Quran 7/31

3. The Holy Quran 7/32

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[अरबी पाठ और उसका उर्दू अनुवाद] किसी चीज़ का अच्छा, बुरा या विशुद्ध रूप से जायज़ होना उसकी नीयत (इरादे) पर निर्भर करता है, ताकि उसकी जायज़ियत पुख्ता हो जाए। जैसा कि 'अल-बहर अल-राइक़' आदि में स्पष्ट किया गया है। हमने अपने फतवों में इसे कई बार बयान किया है। उस घटना का संदर्भ लिया जाए जिसका उल्लेख इमाम हुज्जत-उल-इस्लाम [ग़ज़ाली] ने 'इह्या-उल-उलूम' में किया है कि एक नेक व्यक्ति ने ज़िक्र की महफ़िल में एक हज़ार चिराग जलाए। इस पर कुछ लोगों ने आपत्ति की (यानी उन्होंने विरोध किया कि यह फ़ुज़ूलखर्ची है)। उन्होंने आपत्ति करने वालों से कहा, 'आओ और इनमें से जो चिराग अल्लाह तआला के अलावा किसी और के लिए है, उसे बुझा दो।' परिणामस्वरूप, वे उनमें से एक भी चिराग नहीं बुझा सके। (त)

जायज़ नीयत के साथ की गई जायज़ ज़ीनत (सजावट) कतई फ़ुज़ूलखर्ची (इसराफ़) नहीं है; केवल फ़ुज़ूलखर्ची हराम है। अल्लाह तआला फरमाता है: "और फिजूलखर्ची मत करो; निस्संदेह वह फिजूलखर्ची करने वालों को पसंद नहीं करता।" [क़ुरान 7:31] बेजा खर्च न किया करो क्योंकि अल्लाह तआला फिजूलखर्ची करने वालों को पसंद नहीं करता। (त)

और ज़ीनत जब तक किसी बुरे तरीके से या बुरी नीयत से न हो, हलाल है। अल्लाह तआला फरमाता है: "कहो, 'किसने अल्लाह की उस ज़ीनत को हराम किया है जो उसने अपने बंदों के लिए निकाली है?'" [क़ुरान 7:32] फरमा दीजिये, इस ज़ेब-ओ-ज़ीनत को किसने हराम किया है जो उसने अपने बंदों के लिए निकाली है। (त)

और हलाल व हराम एक समान नहीं हो सकते। हमें दिलों को चीरने, छिपी हुई बातों को खोजने या बुरा गुमान (संदेह) करने का आदेश नहीं दिया गया है। बल्कि, हमें जहाँ तक संभव हो, अच्छा गुमान रखना चाहिए। अल्लाह सुब्हानहु दिलों के भेदों को जानता है और गुप्त रहस्यों से वाकिफ है। (बल्कि हम जहाँ तक मुमकिन हो अच्छा गुमान करते हैं, और अल्लाह तआला पाक है, दिलों की छिपी बातों को जानता है और अच्छे राज़ों से वाकिफ है। त) कोई महफ़िल यदि अपने आप में शरीयत के निषिद्ध कार्यों पर आधारित न हो, और न ही उसमें वे बातें हों जो उद्देश्यों के अंतर या स्थितियों की विविधता के कारण अच्छाई या बुराई में भिन्न हो जाएँ—जैसे कि केवल सुनना (समा) जो पात्र के लिए लाभदायक और अपात्र के लिए हानिकारक हो—न कि इस वजह से...

1. इह्या-उल-उलूम, किताब: आदाब-उल-अक्ल (भोजन के शिष्टाचार), फ़स्ल: मजमूआ आदाब आदि, मक्तबा अल-मशहद अल-हुसैनी, काहिरा, 2/20.
2. अल-कुरान अल-करीम 7/31
3. अल-कुरान अल-करीम 7/32

पृष्ठ 148 / 720

حسناً وقبحاً وتمحضاً للاباحة كما نص عليه في البحر وغيره وقدبيناه غيرمرة في فتاونا وراجع ماذكر الامام حجة الاسلام في احياء العلوم من حكاية ايقاد بعض الصالحين الف سرج في مجلس الذكر فانكره بعضهم فقال تعال واطفي ماكان منها لغير الله تعالی فلم يستطع اطفاء شيئ منها نیت میں اس کے تابع ہوتا ہے اور اس لئے تاکہ اباحت خالص ہو جائے جیسا کہ بحر الرائق وغیرہ میں اس کی تصریح کی گئی ہے اور ہم نے متعدد بار اسے اپنے فتاوی میں بیان کیا ہے اور اس واقع کی طرف رجوع کیا جائے جو حجۃ الاسلام حضرت امام غزالی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ نے احیاء العلوم میں ذکر فرمایا کہ ایک بزرگ نے مجلس ذکر میں ایک ہزار چراغ جلائے اس پر بعض لوگوں نے اعتراض کیا (یعنی معترض ہوئے کہ یہ اسراف کیا گیا ہے) انہوں نے معترضین سے فرمایا کہ آؤ اور جو چراغ ان میں سے غیر خدا کے لئے ہے اسے بجھادو، چنانچہ وہ ان میں سے کوئی ایک چراغ بھی نہ بجھا سکے۔ (ت)

زینت مباحہ بہ نیت مباحہ مطلقاً اسراف نہیں، اسراف حرام ہے۔ قال تعالٰی: "وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ" بے جا خرچ نہ کیا کرو کیونکہ اللہ تعالٰی فضول خرچی سے کام لینے والوں کو پسند نہیں کرتا۔ (ت)

اور زینت جب تک بروجہ قبیح یا بہ نیت قبیح نہ ہو حلال ہے، قال تعالٰی: "قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللَّهِ الَّتِي أَخْرَجَ لِعِبَادِهِ" فرما دیجئے اس زیب و زینت کو کس نے حرام کیا ہے جو اس نے اپنے بندوں کے لئے نکالی ہے۔ (ت)

اور حلال وحرام ایک نہیں ہو سکتے ہمیں شق قلوب و تطلع غیوب واساءت ظنون کا حکم نہیں بل نحسن الظن مهما امکن والله سبحانه یعلم الضمائر ویتولی السرائر (بلکہ ہم اچھا گمان کرتے ہیں جب تک ممکن ہو، اور اللہ تعالیٰ پاک ہے، دلوں کی پوشیدہ باتیں جانتا ہے اور اچھے رازوں سے آشنا ہے۔ت) کوئی مجلس اگر فی نفسہ منکرات شرعیہ پر مشتمل نہ ہو نہ اس میں وہ باتیں ہوں جو اختلاف مقاصد یا تنوع احوال سے حسن و قبح میں مختلف ہو جائیں جیسے سماع مجرد کہ اہل کو مفید اور نا اہل کو مضر، نہ بوجہ

---

۱ احیاء العلوم کتاب آداب الاکل فصل یجمع آداباً الخ مطبعة المشهد الحسینی القاهره ۲ / ۲۰ ۲ القرآن الکریم ۷ / ۳۱ ۳ القرآن الکریم ۷ / ۳۲

Fatawa Rizvia Volume 24

Subtle and complex matters that cause confusion for limited understandings, such as the realities and intricacies of the Oneness of Existence (Wahdat al-Wujud), the levels of gathering and separation, manifestation and hiddenness, emanation and stillness, and other difficulties of Sufism, should not be generalized. Permission should not be granted if it leads to the glorification of sinners or honoring of disbelievers and such ill-mannered actions and states resulting in denial. In short, if it is completely free from all forbidden things and trials, both currently and in the future, then there is no harm in general permission and inclusive invitations. In fact, an assembly of preaching and counsel, regarding the adherence to Shariah limits, the more public it is, the more complete the benefit. However, a gathering of dance and music, even if for a false assumption it were not inherently forbidden, this generalization would make it forbidden and undesirable. Pure 'Sama' (listening) has been restricted by research scholars, practicing scholars, and perfect saints only to those who are capable and absolutely prohibited for those who are incapable, let alone the forbidden musical instruments which are themselves reprehensible and haram. Sayyid Maulana Muhammad bin Mubarak bin Muhammad Alawi Kirmani, a disciple of the enlightened presence of Sheikh-ul-Alam Farid-ul-Haq wa ad-Din Ganj-e-Shakar and caliph of our master Mahbub-e-Ilahi Nizam-ul-Haq wa ad-Din Sultan-ul-Auliya (may Allah Almighty be pleased with them all), states in the venerable book 'Siyar al-Auliya':

Persian Text

Hazrat Sultan-ul-Mashaikh (may Allah hallow his secret) used to say that several things are necessary for Sama to be permissible: the singer, the listener, the heard content, and the instrument of Sama. The singer (Musmi) means the one who tells should be a complete man, not a child and not a woman. The listener (Mustami) is the one who hears and should not be void of remembrance of the Truth. The heard content (Masmu) should not be obscene or mockery. And the instruments of Sama are musical instruments like the

Urdu Translation

Hazrat Sultan-ul-Mashaikh (may Allah hallow his secret) says that if several things are present, Sama will be permissible: (1) Musmi, meaning the one who recites, must be an adult male, not a child or a woman. (2) Mustami, meaning the listener, whatever he hears should be based on the remembrance of the Truth. (3) Masmu (what is heard), whatever they say should be free from absurdity, mockery, and futility. (4) Instruments of Sama: Musical instruments such as sarangi, rebec, etc.,

Persian Text	Urdu Translation
harp (chang) and rebec (rubab); it is necessary that such instruments should not be present in the middle. Such a Sama is lawful. - 1	should not be in the assembly. If all these conditions are met, then Sama (i.e., Qawwali) is lawful and permissible. (T)

In the same book:

Persian Text	Urdu Translation
Someone submitted to Hazrat Sultan-ul-Mashaikh (may Allah be pleased with him) a complaint that these days some dervishes of the shrine danced in a gathering where the harp, rebec, and musical instruments were present. He said they did not do well; what is unlawful is undesirable. - 2	Someone presented a complaint in the service of Hazrat Sultan-ul-Mashaikh that some dervishes of the shrine danced in a gathering in which the harp, rebec, and musical instruments were used. You said they did not do well because what is an unlawful act cannot be declared desirable. (T)

1. Siyar al-Auliya, Chapter 9 on Sama, Ecstasy, and Dance, Mu'assasah Intisharat-e-Islami Lahore, pp. 501-502.
2. Siyar al-Auliya, Chapter 9 on Sama, Ecstasy, and Dance, Mu'assasah Intisharat-e-Islami Lahore, p. 530.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

सक्षम बुद्धि के लिए सूक्ष्म और जटिल विषय जो भ्रम पैदा करते हैं, जैसे अस्तित्व की एकता (वह्दत-उल-वजूद) की वास्तविकताएं और बारीकियाँ, जमा और फ़र्क के दर्जे, ज़ुहूर और बुतून, बुरूज़ और सुकून, और सूफीवाद की अन्य कठिनाइयाँ, उन्हें सामान्य नहीं किया जाना चाहिए। अनुमति इसलिए नहीं दी जानी चाहिए क्योंकि इससे पापियों का महिमामंडन या काफिरों का सम्मान और ऐसे अन्य अनुचित कार्य और स्थितियां पैदा हों जो इनकार की ओर ले जाएं। संक्षेप में, यदि वर्तमान और भविष्य में सभी निषिद्ध चीजों और परीक्षणों से पूरी तरह मुक्त हो, तो सामान्य अनुमति और समावेशी आमंत्रण में कोई हर्ज नहीं है। वास्तव में, उपदेश और परामर्श की एक सभा, शरीयत की सीमाओं के पालन के संबंध में, जितनी अधिक सार्वजनिक होगी, उतना ही पूर्ण लाभ होगा। लेकिन नृत्य और संगीत की महफ़िल, भले ही एक गलत धारणा के लिए स्वयं निषिद्ध न भी हो, यह सामान्यीकरण उसे निषिद्ध और अनुचित बना देगा। शुद्ध 'समा' (सुनना) को शोधकर्ताओं, अभ्यास करने वाले विद्वानों और पूर्ण संतों ने केवल पात्र लोगों तक ही सीमित रखा है और अपात्रों के लिए बिल्कुल प्रतिबंधित किया है, उन निषिद्ध वाद्ययंत्रों की तो बात ही क्या जो स्वयं निंदनीय और हराम हैं। सैयद मौलाना मुहम्मद बिन मुबारक बिन मुहम्मद अलवी किरमानी, जो शेख-उल-आलम फरीद-उल-हक व अद-दीन गंज-ए-शकर के मुरीद और हमारे आका महबूब-ए-इलाही निज़ाम-उल-हक व अद-दीन सुल्तान-उल-औलिया (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के खलीफा हैं, प्रतिष्ठित पुस्तक 'सियर अल-औलिया' में फरमाते हैं:

फारसी पाठ

हजरत सुल्तान-उल-मशायख (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र रखे) फरमाते थे कि समा को जायज़ होने के लिए कई चीजों की आवश्यकता होती है: मुसमी (सुनाने वाला), मुस्तमी (सुनने वाला), मसमू (जो सुना जाए) और आला-ए-समा (वाद्ययंत्र)। मुसमी यानी सुनाने वाला पूरा पुरुष होना चाहिए, बच्चा और औरत नहीं होना चाहिए। मुस्तमी वह है जो सुनता है और हक (अल्लाह) की याद से खाली नहीं होना चाहिए। मसमू जो कुछ वे कहें वह अश्लीलता और मजाक से

उर्दू अनुवाद

हजरत सुल्तान-उल-मशायख फरमाते हैं कि यदि कई चीजें हों तो समा जायज़ होगा (1) मुसमी यानी सुनाने वाला वयस्क पुरुष हो, बच्चा और औरत न हो (2) मुस्तमी यानी सुनने वाला जो कुछ सुने वह याद-ए-हक पर आधारित हो (3) मसमू (जो कुछ सुना गया) जो कुछ वे कहें वह बेहुदगी और मजाक व लग्व (व्यर्थ) से पाक हो (4) अस्बाब-ए-समा: गाने बजाने के आलात सारंगी, रबाब वगैरह,

फारसी पाठ	उर्दू अनुवाद
रहित होना चाहिए। और आला-ए-समा वाद्ययंत्र जैसे चंग और रबाब हैं; यह आवश्यक है कि ऐसे वाद्ययंत्र महफ़िल के बीच में न हों। ऐसा समा हलाल है। - 1	चाहिए कि वे मज्लिस के दरमियान न हों। अगर ये तमाम शराइत (शर्तें) पाई जाएं तो समा (यानी कव्वाली) हलाल और जायज़ है। (त)

इसी में है:

फारसी पाठ	उर्दू अनुवाद
किसी ने हजरत सुल्तान-उल-मशायख (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) की सेवा में निवेदन किया कि इन दिनों आस्ताना (दरगाह) के कुछ दरवेशों ने उस महफ़िल में रक्स (नृत्य) किया जिसमें चंग और रबाब और मज़ामीर (वाद्ययंत्र) थे। आपने फरमाया उन्होंने अच्छा नहीं किया; जो गैर-शरिया (ना-मशरूअ) है वह नापसंद है। - 2	किसी शख्स ने हजरत सुल्तान-उल-मशायख की खिदमत में यह शिकायत पेश की कि आस्ताना के बाज़ दरवेशों ने इस महफ़िल में रक्स किया है जिसमें चंग व रबाब और मज़ामीर इस्तेमाल हुए। आपने फरमाया उन्होंने अच्छा नहीं किया क्योंकि जो काम ना-जायज़ है उसे पसंदीदा करार नहीं दिया जा सकता। (त)

1. सियर अल-औलिया, अध्याय 9 समा, वज्द और रक्स के बारे में, मुअस्सस-ए-इंतिशारात-ए-इस्लामी लाहौर, पृष्ठ 501-502।
2. सियर अल-औलिया, अध्याय 9 समा, वज्द और रक्स के बारे में, मुअस्सस-ए-इंतिशारात-ए-इस्लामी लाहौर, पृष्ठ 530।

دقت و غموض افہام قاصرہ پر موجب فتنہ ہوں جیسے حقائق و دقائق وحدۃ الوجود و مراتب جمع و فرق و ظہور و بطون و بروز و سکون و غیر ہا مشکلات تصوف، نہ تعمیم اذن بوجہ تعظیم فجار و تکریم کفار و غیر ذلک افعال و احوال ناہنجار منجریہ انکار ہو، بالجملہ حالاً و مالاً جملہ منکرات و فتن سے خالی ہو تو عموم اذن و شمول دعوت میں حرج نہیں بلکہ مجلس وعظ و پند بلحاظ پابندی حدود شرعیہ جس قدر عام ہو نفع تام ہو مگر محفل رقص و سرود اگر بفرضِ باطل فی نفسہ منکر نہ بھی ہوتی تو یہ تعمیم اسے منکر و ناروا کر دیتی سماع مجرد کو ائمہ محققین علمائے عاملین و اولیائے کاملین نے صرف اہل پر محدود اور نااہل پر قطعاً مسدود فرمایا ہے، نہ کہ مزامیرِ محرمہ کہ خود منکر و حرام ہیں، سید مولانا محمد بن مبارک بن محمد علوی کرمانی مرید حضور پر نور شیخ العالم فرید الحق والدین گنج شکر و خلیفہ حضور سیدنا محبوب الہی نظام الحق والدین سلطان الاولیاء رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین کتاب مستطاب سیر الاولیاء میں فرماتے ہیں:

متن فارسی	**ترجمہ اردو**
حضرت سلطان المشائخ قدس اللہ سرہ العزیز می فرمود کہ چندیں چیزی می باید تا سماع مباح شود مسمع و مستمع و مسموع و آلہ سماع، مسمع یعنی گوینده مرد تمام باشد کودک نباشد و عورت نباشد و مستمع آنکہ می شنود و از یادِ حق خالی نباشد و مسموع انچہ گویند فحش و مسخرگی نباشد، و آلہ سماع	حضرت سلطان المشائخ قدس سرہ فرماتے ہیں چند چیزیں ہوں تو سماع مباح ہوگا (1) مسمع یعنی سنانے والا بالغ مرد ہو بچہ اور عورت نہ ہو (2) مستمع یعنی سننے والا جو کچھ سنے وہ یادِ حق پر مبنی ہو (3) مسموع (جو کچھ سنا گیا) جو کچھ وہ کہیں وہ بیہودگی اور مذاق و لغو سے پاک ہو (4) اسباب سماع: گانے بجانے کے آلات سارنگی، رباب

متن فارسی	ترجمہ اردو
مزامیر است چوں چنگ و رباب و مثل آن می باید کہ در میان نباشد اینچنین سماع حلال است- 1	وغیرہ، چاہئے کہ وہ مجلس کے درمیان نہ ہوں۔ اگر یہ تمام شرائط پائی جائیں تو سماع (یعنی قوالی) حلال اور جائز ہے۔ (ت)

اُسی میں ہے:

متن فارسی	ترجمہ اردو
یکے بخدمت حضرت سلطان المشائخ رضی اللہ تعالیٰ عنہ عرض داشت کہ دریں روز ہا بعضے از درویشاں آستانہ دار در مجمع کہ چنگ و رباب و مزامیر بود رقص کردند فرمود نیکو نکردہ اند انچہ نامشروع ست ناپسندیدہ است- 2	کسی شخص نے حضرت سلطان المشائخ کی خدمت میں یہ شکایت پیش کی کہ آستانہ کے بعض درویشوں نے اس محفل میں رقص کیا ہے جس میں چنگ و رباب اور مزامیر استعمال ہوئے ہوئے آپ نے فرمایا انہوں نے اچھا نہیں کیا کیونکہ جو کام ناجائز ہے اسے پسندیدہ قرار نہیں دیا جاسکتا۔ (ت)

1 سیر الاولیاء باب نہم در سماع و وجد و رقص مؤسسہ انتشارات اسلامی لاہور ص ۵۰۲-۵۰۱ 2 سیر الاولیاء باب نہم در سماع و وجد و رقص مؤسسہ انتشارات اسلامی لاہور ص ۵۳۰

Fatawa Razawiyya, Volume 24

It is stated therein: Hadrat Sultan al-Mashayikh said: "I have forbidden that musical instruments and prohibited things should be present." [1] Hadrat Sultan al-Mashayikh directed: I have forbidden that musical instruments and prohibited tools be present. (T) In the blessed sayings of Sultan al-Mashayikh Mahbub-e-Ilahi (may Allah be pleased with him) himself in 'Fawa'id al-Fu'ad Sharif', it is recorded: "Musical instruments are forbidden." [2] (Muzamir are haraam. -T). Hadiths on this matter are numerous to the point of being widely continuous (tawatur), and even if there were nothing else, the glorious, preferred, and authentic hadith of Sahih Bukhari Sharif is sufficient and ample, in which the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"There will certainly be people in my Ummah who will consider adultery (illicit sex), silk, wine, and musical instruments to be lawful." [3]

This is a magnificent, authentic hadith with a continuous chain of narration, which cannot be criticized in terms of its chain or text except by someone who has fallen into the deep pit of personal whims and gone astray, like Ibn Hazm and others like him. Furthermore, the great Imams such as Imam Ahmad, Abu Dawood, Ibn Majah, Isma'il, and Abu Nu'aym have narrated it with authentic chains of narration that are free from any doubts. Besides them, several other Imams and Hadith masters (Huffaz) have also acknowledged its authenticity, as Imam Ibn Hajar al-Makki stated in 'Kaff al-Rua'a'. (T)

---

[1] Siyar al-Auliya, Chapter 9 regarding Sama, Ecstasy and Dance, Mu'assasah Intisharat-e-Islami, Lahore, p. 532. [2] Fawa'id al-Fu'ad. [3] Sahih al-Bukhari, Book of Drinks, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/83. [4] Kaff al-Rua'a 'an Muharramat al-Lahw wa al-Sama, Maktabat al-Haqiqah, Istanbul, Turkey, p. 470.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

इसी में है: हज़रत सुल्तान अल-मशायिख ने फ़रमाया: "मैंने मना किया है कि मज़ामीर (संगीत वाद्ययंत्र) और वर्जित चीज़ें बीच में न हों।" [1] हज़रत सुल्तान अल-मशायिख ने निर्देश दिया: मैंने मना किया है कि संगीत के साज़ और हराम उपकरण बीच में न हों। (त) स्वयं हज़रत सुल्तान अल-मशायिख महबूब-ए-इलाही (रज़ियल्लाहु अन्हु) के पावन वचनों 'फ़वाइद अल-फ़ुआद शरीफ़' में है: "संगीत वाद्ययंत्र हराम हैं।" [2] (मज़ामीर हराम हैं। -त)। इस बारे में हदीसें तवातुर (निरंतरता) की सीमा पर हैं, और यदि कुछ और न भी होता, तो सहीह बुखारी शरीफ़ की महान, अधिमान्य और प्रामाणिक हदीस पर्याप्त और पूर्ण है, जिसमें ब्रह्मांड के स्वामी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

"मेरी उम्मत में ज़रूर कुछ ऐसे लोग होने वाले हैं जो ज़िना (अवैध यौन संबंध), रेशम, शराब और बाजों (संगीत वाद्ययंत्रों) को हलाल (वैध) ठहराएंगे।" [3]

यह एक गरिमामयी, सहीह हदीस है जिसकी सनद (वर्णन श्रृंखला) निरंतर है। इसकी सनद और पाठ (मतन) पर कोई आपत्ति नहीं कर सकता सिवाय उस व्यक्ति के जो अपनी इच्छाओं के गहरे गड्ढे में गिर गया हो और गुमराह हो गया हो, जैसे इब्ने हज़्म और उनके जैसे अन्य लोग। इसके अलावा, इमाम अहमद, अबू दाऊद, इब्न माजा, इस्माइल और अबू नुऐम जैसे महान इमामों ने इसे ऐसी सहीह सनदों के साथ वर्णित किया है जो संदेहों से मुक्त हैं। इनके अतिरिक्त कई अन्य इमामों और हदीस विशेषज्ञों (हुफ़्फ़ाज़) ने भी इसकी प्रामाणिकता को स्वीकार किया है, जैसा कि इमाम इब्न हजर मक्की ने 'कफ़ अल-रुआअ' में फ़रमाया है। (त)

---

1. सियरुल औलिया, अध्याय 9: समा, वज्द और रक़्स के विषय में, मुअस्ससह इंतिशारात-ए-इस्लामी, लाहौर, पृष्ठ 532।
2. फ़वाइद अल-फ़ुआद।
3. सहीह अल-बुखारी, किताबुल अशरिबाह, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 2/83।
4. कफ़ अल-रुआअ अन मुहर्रमात अल-लह्व व-स-समा, मकतबतुल हक़ीक़ह, इस्तांबुल, तुर्की, पृष्ठ 470।

पृष्ठ 150/720

اسی میں ہے: حضرت سلطان المشائخ فرمود من منع کردہ ام کہ مزامیر و محرمات در میان نباشد ۱؎ حضرت سلطان المشائخ نے ارشاد فرمایا میں نے منع کیا ہے کہ مزامیر اور حرام آلات درمیان میں نہ ہوں۔ (ت) خود حضور پر نور سلطان المشائخ محبوب الٰہی رضی اللہ تعالٰی عنہ کے ملفوظات طیبات فوائد الفواد شریف میں ہے: مزامیر حرام ست ۲؎ (مزامیر حرام ہیں۔ت) احادیث اس بارے میں حد تواتر پر ہیں، اور کچھ نہ ہو تو حدیث جلیل رجیح صحیح بخاری شریف کافی و وافی ہے کہ حضور سید عالم صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

لیکونن من امتی اقوام یستحلون الحر والحریر والخمر والمعازف ۳؎ ضرور میری امت میں کچھ لوگ ایسے ہونے والے ہیں کہ حلال ٹھہرائیں گے عورتوں کی شرمگاہ یعنی زنا اور ریشمی کپڑوں اور شراب اور باجوں کو۔ (ت)

حدیث صحیح جلیل متصل لامطعن فیہ سندا و لامتنا الاعند من ھوی فی ھوۃ الھوی کابن حزم و من مثلہ غوی وقد اخرجہ ایضاً الائمۃ احمد وابو داؤد و ابن ماجۃ واسمعیل وابونعیم بأسانید صحاح لا غبار علیھا وصححہ جماعۃ اخرون من الائمۃ کما قالہ بعض الحفاظ قالہ الامام ابن حجر المکی فی کف الرعاع ۴؎ حدیث صحیح جلیل القدر اور متصل سند والی ہے اس کی سند اور متن پر کوئی معترض نہیں سوائے اس کے جو خواہش نفس کے گہرے گڑھے میں گر گیا ہو اور بے راہ ہو گیا ہو جیسے ابن حزم اور اس جیسے دیگر لوگ، نیز اسے ائمہ کرام مثلاً امام احمد ، ابو داؤد، ابن ماجہ، اسمعیل اور ابو نعیم نے ایسی صحیح سندوں کے ساتھ روایت کیا ہے جو شکوک و شبہات سے مبرا ہیں۔ ان کے علاوہ بعض دیگر ائمہ اور حفاظ نے بھی اس کی صحت کو تسلیم کیا ہے، چنانچہ امام ابن حجر مکی نے کف الرعاع میں ارشاد فرمایا۔ (ت)

۱ـہ سیر الاولیاء باب نہم در سماع و وجد و رقص مؤسسہ انتشارات اسلامی لاہور ص ۵۳۲ ۲ـہ فوائد الفواد ۳ـہ صحیح البخاری کتاب الاشربہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۸۳ ۴ـہ کف الرعاع عن محرمات اللھو والسماع مکتبۃ الحقیقۃ استنبول ترکی ص ۴۷۰

Fatawa Razawiya, Volume 24

The humble servant, may the Almighty Lord forgive him, has proven in his fatwas that the attribution of musical listening (sama' mazamir) by these followers of carnal desires to the great masters of Chisht (may their secrets be sanctified) is a pure, baseless lie. Their greatest and most eminent scholars clearly state that this is a fabrication against our noble masters (may Allah be pleased with them). Furthermore, a brief summary clarifying the truth regarding all their weak arguments has been presented in these words: some intoxicated ignoramuses, or half-learned lust-worshippers, or lying, boastful Sufis, present weak stories or ambiguous events or metaphorical words against authentic, Marfu', and definitive Hadiths. They lack the sense—or intentionally act senseless—to realize that before the authentic, the weak must be abandoned; before the specific, the ambiguous must be abandoned; and before the definitive, the metaphorical must be abandoned. Then where does a story of an action stand? And where is the forbidden, where is nothingness? In every way, this (the definitive) is what must be acted upon, this is given preference. But who has the cure for lust-worship? If only they would commit the sin but acknowledge it as a sin and confess. This audacity is even harsher: that they indulge their lusts and also deflect the blame, making forbidden things lawful for themselves. I have also clarified that however many people gather in such assemblies, that much sin and burden will fall upon the host and the inviter. All attendees are sinners, and the sin of all of them falls upon the musicians and the one who invited them all, without any reduction in their own sins. For example, if there is a gathering of ten thousand people, there is one sin on each person. And suppose there are three statements [of misguidance], then each has their own sin plus ten thousand sins of the attendees. This totals forty thousand and four plus their own; a total of forty thousand and five sins on the inviter and founder. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"Whoever calls to a misguidance will have upon him a sin similar to the sins of those who follow him, without that detracting from their sins in the least."

[In the box:] Whoever calls towards a matter of misguidance, he will bear a burden of sin equal to all those who follow his call, without their own sins being reduced in any way. (Narrated by the Imams Ahmad and the [other] five [of the Six Books] except Al-Bukhari, from Abu Hurayrah, may Allah be pleased with him. - T)

To consider such forbidden things as a means of closeness to Allah (God forbid) is ignorance and misguidance, and persisting in them is a major sin with severe consequences for oneself and others...

---

1 Sunan Abi Dawud, Kitab al-Sunnah 4/279; Jami' at-Tirmidhi, Abwab al-'Ilm 2/92; Sunan Ibn Majah, Bab Man Sanna Sunnatan Hasanatan p. 19; Sahih Muslim, Kitab al-'Ilm, Bab Man Sanna Sunnatan Hasanatan or Sayyi'atan, Qadimi Kutub Khana Karachi 2/321; Musnad Ahmad ibn Hanbal from Abu Hurayrah (Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami Beirut 2/397

फ़तावा रज़विया, जिल्द २४

फकीर (अल्लाह उस पर रहम करे) ने अपने फतवों में यह साबित किया है कि इन नफ्स के बंदों द्वारा चिश्तिया खानदान के महान बुजुर्गों की तरफ वाद्ययंत्रों के साथ संगीत (समा-ए-मज़ामीर) को जोड़ना सरासर झूठ है। उनके सबसे बड़े और महान विद्वान साफ कहते हैं कि यह हमारे महान बुजुर्गों (अल्लाह उनसे राज़ी हो) पर एक आरोप है। इसके अलावा, उनके सभी कमजोर दलीलों का एक संक्षिप्त जवाब सच्चाई को स्पष्ट करते हुए इन शब्दों में दिया गया है कि कुछ नशे में धुत जाहिल, या आधे-अधूरे मुल्ला, या वासना के पुजारी, या झूठे सूफी, सही, मरफू और स्पष्ट हदीसों के सामने कुछ कमजोर किस्से या संदिग्ध घटनाएं या रूपक शब्द पेश करते हैं। उनमें इतनी अक्ल नहीं है—या वे जानबूझकर बेवकूफ बनते हैं—कि सही के सामने कमजोर को, निश्चित के सामने संदिग्ध को, और स्पष्ट हदीस के सामने रूपक को छोड़ दिया जाना चाहिए। फिर किसी कार्य की कहानी की क्या बिसात? और कहाँ हराम और कहाँ कुछ नहीं? हर तरह से यही (स्पष्ट हदीस) पालन करने योग्य है, इसी को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। लेकिन वासना-पूजा का इलाज किसके पास है? काश वे गुनाह करते और उसे गुनाह जानकर स्वीकार करते। यह ढिठाई और भी सख्त है कि वासना भी पालें और इल्जाम भी टालें, अपने लिए हराम को हलाल बना लें। मैंने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि ऐसी महफिलों में जितने अधिक लोग इकट्ठा होंगे, उतना ही गुनाह और बोझ महफिल के मालिक और बुलाने वाले पर पड़ेगा। सभी उपस्थित लोग गुनहगार हैं और उन सबका गुनाह गाना बजाने वालों पर और उन सबको बुलाने वालों पर होगा, बिना इसके कि उनमें से किसी के अपने गुनाह में कोई कमी हो। उदाहरण के लिए, यदि दस हजार लोगों की भीड़ है, तो उनमें से प्रत्येक पर एक-एक गुनाह है। और मान लीजिए कि तीन बातें (गुमराही के कथन) हैं, तो उनमें से प्रत्येक पर अपना गुनाह और दस-दस हजार उपस्थित लोगों के गुनाह होंगे। यह कुल मिलाकर चालीस हजार चार और एक अपना, यानी कुल चालीस हजार पांच गुनाह बुलाने वाले और संस्थापक पर होंगे। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

"जो कोई किसी गुमराही की तरफ बुलाता है, उसे उन सभी लोगों के बराबर गुनाह मिलेगा जो उसके पीछे चलते हैं, बिना इसके कि उनके अपने गुनाहों में कोई कमी आए।"

[बॉक्स में:] जो किसी गुमराह करने वाली बात की ओर बुलाए, जितने लोग उसके बुलाने पर चलें, उन सबके बराबर उस पर गुनाह हो और इससे उनके गुनाहों में कुछ कमी न हो। (इमाम अहमद और

बुखारी के अलावा अन्य पांच प्रमुख इमामों ने हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से इसे रिवायत किया है। - त)

ऐसी हराम चीज़ों को (अल्लाह न करे) अल्लाह के करीब होने का जरिया समझना अज्ञानता और गुमराही है, और उन पर अड़े रहना एक बड़ा गुनाह है जिसके खुद पर और दूसरों पर गंभीर परिणाम होंगे...

---

1 सुनन अबी दाऊद, किताब अल-सुन्ना 4/279; जामिअ अत-तिरमिज़ी, अबवाब अल-इल्म 2/92; सुनन इब्न माजाह, बाब मन सन्ना सुन्नतन् हसनतन् पृष्ठ 19; सही मुस्लिम, किताब अल-इल्म, बाब मन सन्ना सुन्नतन् हसनतन् औ सय्यिअतन्, कदीमी कुतुब खाना कराची 2/321; मुसनद अहमद इब्न हंबल, हज़रत अबू हुरैरा से, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरूत 2/397

पृष्ठ 151/720

فقیر غفر لہ المولی القدیر نے اپنے فتاویٰ میں ثابت کیا ہے کہ ان پیروان ہوائے نفس کا حضرات اکابر چشت قدست اسرار ہم کی طرف سماع مزامیر نسبت کرنا محض دروغ بیفروغ ہے ان کے اعاظم اجلہ تصریح فرماتے ہیں کہ یہ ہمارے مشائخ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہ پر افتراء ہے، نیز ان کے تمام تمسکات واہیہ کا ایک اجمالی جواب موضح صواب ان لفظوں میں گزارش کر دیا ہے کہ بعض جہال بدمست یا نیم ملا ہوس پرست یا جھوٹے صوفی بادبدست کہ احادیث صحیحہ مرفوعہ محکمہ کے مقابل بعض ضعیف قصے یا محتمل واقعے یا متشابہ کلمے پیش کرتے ہیں انہیں اتنی عقل نہیں یا قصداً بے عقل بنتے ہیں کہ صحیح کے سامنے ضعیف، متعین کے آگے محتمل، محکم کے حضور متشابہ واجب الترک ہے پھر کہاں حکایت فعل پھر کجا محرم کجاہیچ، ہر طرح یہی واجب العمل، اسی کو ترجیح، مگر ہوس پرستی کا علاج کس کے پاس ہے، کاش گناہ کرتے اور گناہ جانتے اقرار لاتے، یہ ڈھٹائی اور بھی سخت ہے کہ ہوس بھی پالیں اور الزام بھی ٹالیں، اپنے لئے حرام کو حلال بنالیں میں نے یہ بھی واضح کردیا ہے کہ ایسی محافل میں جتنے لوگ کثرت سے جمع کئے جائیں گے اسی قدر گناہ و وبال صاحب محفل و داعی پر پڑے گا۔ حضار سب گنہگار اور ان سب کا گناہ گانے بجانے والوں پر اور ان سب کا بلانے والوں پر۔ بغیر اس کے کہ ان میں کسی کے اپنے گناہ میں کچھ کمی ہو مثلاً دس ہزار حضار کا مجمع ہے تو ان میں ہر ایک پر ایک ایک گناہ، اور فرض کیجئے تین اقوال تو ان میں ہر ایک پر اپنا گناہ اور دس دس ہزار گناہ حاضرین کے، یہ مجموعہ چالیس ہزار چار اور ایک اپنا، کل چالیس ہزار پانچ گناہ داعی و بانی پر۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

مَنْ دَعَا إِلَى ضَلَالَةٍ كَانَ عَلَيْهِ مِنَ الْإِثْمِ مِثْلُ آثَامِ مَنْ تَبِعَهُ لَا يَنْقُصُ ذَلِكَ مِنْ آثَامِهِمْ شَيْئًا۔

[ڈبے میں:] جو کسی امر ضلالت کی طرف بلائے جتنے اس کے بلانے پر چلیں ان سب کے برابر اس پر گناہ ہو اور اس سے ان کے گناہوں میں کچھ کمی نہ ہو۔ (امام بخاری کے علاوہ امام احمد اور دیگر پانچ ائمہ کرام نے حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی سند کے ساتھ اس کو روایت کیا ہے۔ت)

ایسے محرمات کو معاذ اللہ موجب قربت جاننا جہل و ضلال اور ان پر اصرار کبیرہ شدید الوبال اور دوسروں---

---

1 سنن ابی داؤد کتاب السنة ۴/ ۲۷۹، جامع الترمذی ابواب العلم ۲/ ۹۲، سنن ابن ماجہ باب من سن سنة حسنة ص ۱۹، صحیح مسلم کتاب العلم باب من سن سنة حسنة اوسینہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۳۲۱، مسند احمد بن حنبل عن ابی ھریرہ رضی اللہ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۲/ ۳۹۷

...to encourage the spread of indecency and misguidance; and refuge is sought with Allah from an evil state. (T) As for dancing, if it refers to the customary dance, it is absolutely impermissible. It is the dance of promiscuous women and is not foreign even to some of the modern-day pseudo-Sufis; rather, it is well-known and recognized as such. When it is forbidden by definitive Quranic texts—and we have mentioned this in our Fatawa (T)—then considering it a recommended act or a means of proximity to God is out of the question; even considering it merely permissible carries an explicit charge of disbelief (Kufr). And if the dance of 'Kathaks' involves twisting and contorting the body (Lachke Tode), it is also forbidden and a cause for curse, as stated in the Hadiths and explained by the commentators of Hadith. If it is not so, but merely irregular movements that are neither rhythmic in themselves, nor contain forbidden elements, nor lead to immediate or eventual fitna (turmoil), nor are performed by people of dignity and gravity but by common, frivolous people, then even with these conditions, its minimum status is that it is a form of 'Lahw-o-La'ab' (idle play), and every 'Lahw-o-La'ab' is rejected and false, and the lowest degree of falsehood is 'Makruh' (disliked) and impermissible. It is mentioned in 'Al-Tariqa al-Muhammadiyya' and its commentary 'Al-Hadiqa al-Nadiyya':

Arabic Text

Dancing (Al-Raqs) is a rhythmic movement based on a specific melody. (And Al-Idtirab is irregular movement). Every one of these is among the (unexcepted games). Every game of the son of Adam is forbidden except three: a man playing with his wife, training his horse, and archery with his bow. Reported by Al-Hakim in Al-Mustadrak on the authority of Abu Huraira (Allah be pleased with him), and he said it is authentic according to the criteria of Muslim.

Urdu Translation

Dancing is the name for a rhythmic movement on the scale of a specific melody. 'Idtirab' refers to irregular movement. Then each of these is among the games that the Sharia has not exempted. Hence, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: Every game of man is forbidden except for three games. The three prescribed games are: (1) A husband playing with his wife. (2) Playing with his horse while training and preparing it. (3) Archery with his bow. Imam Hakim has extracted this in Al-Mustadrak on the authority of Hazrat Abu Huraira (Allah be pleased with him) and stated that this Hadith is authentic according to the criteria of Muslim. (T)

And if 'Wajd' (ecstasy) is intended, then if it is involuntary, it is not subject to a legal ruling, like: "The Sultan does not collect tax from ruins (barren land)." (Because a king does not collect tax from barren and unpopulated land. T)

---

[1] Al-Hadiqa al-Nadiyya Sharh Al-Tariqa al-Muhammadiyya, Al-Sinf al-Tasi', Maktaba Nuriya Razvia, Faisalabad, 2/518

...को तरग़ीब इशाअत-ए-फ़ाहशा व इलाल, वल्-अयाज़ु बिल्लाहि मिन सू-इल हाल (अल्लाह तआला की पनाह बुरे हाल से। त)। रहा रक़्स, अगर इससे यह मुताआरफ़ नाच मुराद हो तो मुतलक़न नाजाइज़ है। ज़नान-ए-फ़वाहिश का नाच है और मुतसव्वफ़ा-ए-ज़माना से भी बईद नहीं बल्कि माबूद-ओ-मालूम-ओ-मशहूर है, जब तो बनसूस-ए-क़तईया क़ुरानिया हराम है व क़द तलौनाहा फ़ी फ़तावाना (इसे हमने अपने फ़तावा में ज़िक्र किया है। त)। अब इसे मुस्तहब-ओ-क़ुर्बत जानना दरकिनार मुबाह ही समझने पर सराहतन कुफ़्र का इल्ज़ाम है। और अगर कत्थकों का नाच तस्नी-ओ-तक्सुर यानी लचकेतोड़े के साथ है, जब भी हराम व मूजिब-ए-लअन है कमा नतक़त बिहिल अहादीसु व सर्रह बिही शुर्राहुल हदीस (जैसा कि अहादीस इस पर नातिक़ हैं और शारिहीन-ए-हदीस ने इसकी सराहत फ़रमाई है)। और अगर ऐसा नहीं बल्कि सिर्फ़ हरकात-ए-मुज़्तरिबा हैं कि न ख़ुद मौज़ूँ, न मुन्किरात पर मुश्तमिल, न हालां या मआलन फ़िल्ले की तरफ़ मुन्जर, न इसके फ़ाएलीन अहल-ए-हैअत-ओ-वक़ार बल्कि बाज़ारी ख़फ़ीफ़ुल-हरकात बे-वक़ार, तो बाईन-ए-क़ुयूद भी इसका अक़ल्ल मर्तबा यह है कि एक क़िस्म लह्व-ओ-लग़्व है और हर लह्व-ओ-लग़्व रद-ओ-बातिल और हर बातिल का अदना दर्जा मकरूह व नाजाइज़। तरीक़ा-ए-मुहम्मदिया और इसकी शरह हदीक़ा-ए-नदिया में है:

अरबी इबारत

रक़्स, वह मख़्सूस नग़मे के तराज़ू पर एक मौज़ूँ हरकत का नाम है। (और इज़तिराब ग़ैर-मौज़ूँ हरकत है)। पस इन में से हर एक (उन खेलों में से है जो मुस्तस्ना नहीं)। आदम के बेटे का हर खेल हराम है सिवाय तीन के आदमी का अपनी अहलिया के साथ खेलना, अपने घोड़े को तरबियत देना और अपनी कमान से तीरंदाज़ी करना। इसे हाकिम ने अल-मुस्तदरक में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है

उर्दू तर्जुमा

रक़्स, वह नग़मा-ए-मख़्सूस के तराज़ू पर एक मौज़ूँ हरकत का नाम है। इज़तिराब, ग़ैर-मौज़ूँ हरकत को कहा जाता है। फिर उन में से हर एक उन खेलों में से है जिनको शरीअत ने मुस्तस्ना क़रार नहीं दिया, चुनांचे हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का इर्शाद-ओ-फ़रमान है कि सिवाय तीन खेलों के आदमी का हर खेल हराम है, मशरूअ तीन खेल ये हैं: (१) शौहर का अपनी बीवी के साथ खेलना (२) अपने घोड़े के साथ उसकी सिखलाई करते और तैयारी करते हुए खेलना (३) अपनी कमान के साथ तीरंदाज़ी करना। चुनांचे इमाम हाकिम ने मुस्तदरक में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

अरबी इबारत	उर्दू तर्जुमा
और कहा कि यह मुस्लिम की शर्त पर सही है।	के हवाले से इसकी तख़रीज फ़रमाई और फ़रमाया यह हदीस शर्त-ए-मुस्लिम के मुताबिक़ सही है। (त)

और अगर वज्द मुराद हो तो अगर बे-इख़्तियार है ज़ेर-ए-हुक्म नहीं कमअ सुलतान नगीर-ओ-ख़िराज अज़ ख़राब (क्योंकि बादशाह बंजर और ग़ैर आबाद ज़मीन से टैक्स वसूल नहीं करते। त)

---

[1] अल-हदीक़तुल नदिया शरह अत-तरीक़तुल मुहम्मदिया, अस्-सिन्फ़ अत्-तासिअ, मकतबा नूरिया रिज़विया फ़ैसलाबाद, 2/518

کو ترغیب اشاعتِ فاحشہ واضلال، والعیاذ باللہ من سوء الحال (اللہ تعالٰی کی پناہ بُرے حال سے۔ت) رہا رقص اگر اس سے یہ متعارف ناچ مراد ہو تو مطلقاً ناجائز ہے زنانِ فواحش کا ناچ ہے اور متصوفہ زمانہ سے بھی بعید نہیں بلکہ معبود ومعلوم ومشہور ہے ، جب تو بنصوص قطعیہ قرآنیہ حرام ہے وقد تلوناہا فی فتاؤنا (اسے ہم نے اپنے فتاوٰی میں ذکر کیا ہے۔ت) اب اسے مستحب وقربت جاننا درکنار مباح ہی سمجھنے پر صراحۃً کفر کا الزام ہے اور اگر کتھکوں کا ناچ تثنی وتکسر یعنی لچکے توڑے کے ساتھ ہے جب بھی حرام وموجب لعن ہے کما نطقت بہ الاحادیث وصرح بہ شراح الحدیث (جیسا کہ احادیث اس پر ناطق ہیں اور شارحینِ حدیث نے اس کی صراحت فرمائی ہے) اور اگر ایسا نہیں بلکہ صرف حرکاتِ مضطر بہ ہیں کہ نہ خود موزوں، نہ منکرات پر مشتمل، نہ حالاً یا مآلاً فتنے کی طرف منجر، نہ اس کے فاعلین اہلِ ہیأت ووقار بلکہ بازاری خفیف الحرکات بے وقر، تو بائینہ قیود بھی اس کا اقل مرتبہ یہ ہے کہ ایک قسم لہو ولغو ہے اور ہر لہو ولغو ردو باطل اور ہر باطل کا ادنٰی درجہ مکروہ وناجائز۔ طریقہ محمدیہ اور اس کی شرح حدیقہ ندیہ میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
الرقص وھو الحرکۃ الموزونۃ علی میزان نغمۃ مخصوصۃ(والاضطراب وھو الحرکۃ غیر الموزونۃ فکل واحد منھما(من) جملۃ (لعب غیر مستثنی) کل لعب ابن آدم حرام الا ثلثۃ ملاعبۃ الرجل اھلہ وتأدیبہ لفرسہ	رقص، وہ نغمہ مخصوصہ کے ترازو پر ایک موزوں حرکت کا نام ہے۔ اضطراب، غیر موزوں حرکت کو کہا جاتا ہے۔ پھر ان میں سے ہر ایک ان کھیلوں میں سے ہے جن کو شریعت نے مستثنٰی قرار نہیں دیا، چنانچہ حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا ارشاد

عربی عبارت	اردو ترجمہ
ومناصلة لقوسه اخرجہ الحاکم فی المستدرک عن ابی ہریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ وقال صحیح علی شرط مسلم۔	وفرمان ہے کہ سوائے تین کھیلوں کے آدمی کا ہر کھیل حرام ہے، مشروع تین کھیل یہ ہیں: (۱) شوہر کا اپنی بیوی کے ساتھ کھیلنا (۲) اپنے گھوڑے کے ساتھ اس کی سکھلائی کرتے اور تیاری کرتے ہوئے کھیلنا (۳) اپنی کمان کے ساتھ تیر اندازی کرنا۔ چنانچہ امام حاکم نے مستدرک میں حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حوالہ سے اس کی تخریج فرمائی اور فرمایا یہ حدیث شرط مسلم کے مطابق صحیح ہے۔ (ت)

اور اگر وجد مراد ہو تو اگر بے اختیار ہے زیرِ حکم نہیں کمع سلطان نگیر و خراج از خراب (کیونکہ بادشاہ بنجر اور غیر آباد زمین سے ٹیکس وصول نہیں کرتے۔ت)

---

[1] الحدیقۃ الندیۃ شرح الطریقۃ المحمدیۃ الصنف التاسع مکتبہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲ / ۵۱۸

Rather, if it is out of longing for the Presence of the Mighty, the Loving (Al-Aziz al-Wadud, Exalted and Glorious), then it is a supreme blessing and great fortune, so that it may be seen upon whom He bestows forgiveness and to whom He grants it cheaply (i.e., easily). (To see who He forgives and to whom He makes it accessible - T). And if it is by choice and artificiality, then it depends on the intention. If it is in a gathering or in the sight of observers to display spiritual mastery and to captivate hearts, then it is strictly ostentation (riya), seeking fame (sum'a), hypocrisy (nifaq), a major sin (haram kabir), and minor polytheism (shirk saghir). Now, its prohibition is also certainly by consensus. The jurists have emphasized its gravity and written that one who considers it an act of worship is an infidel (kafir). It is stated in 'at-Tariqa' and 'al-Hadiqa':

Arabic Text

And included in both, i.e., in dancing and agitation, is (what some Sufis do) who attribute themselves to the path of Sufism while they persist in types of immorality and wickedness. Rather, it is more severe because they do it with the belief that it is an act of worship, so a great matter is feared for them, which is disbelief (kufr) by deeming the forbidden to be permissible. (Allama Abu Bakr al-Turtushi, may Allah Almighty have mercy on him, said: As for dancing and ecstasy) which causes distraction from the remembrance of Allah Almighty, (the first to initiate it were the companions of the Samiri when he took for them a calf, a body that had a lowing sound. They stood up dancing around it and feigning ecstasy), i.e., they manifest ecstasy

Urdu Translation

And in this dancing and agitation, those actions are also included which some Sufis perform, who consider themselves connected with the path of Sufism, whereas they persist in many kinds of immorality and even more severe types of crimes, because they perform these actions with the belief that they are worship. Therefore, (because of this belief) there is a danger of a great matter for them, and there is fear, and because of calling the forbidden 'permissible', it is disbelief. Accordingly, Allama Abu Bakr al-Turtushi (may Allah Almighty have mercy on him) said that dancing and manifestation of ecstasy that makes one unaware and heedless of the remembrance of Allah was first invented by the companions of the Samiri. When the Samiri prepared a calf for them, i.e., prepared the skeleton of a calf, then a voice

Arabic Text

through a forbidden act, and it is the worship of other than Allah. Just as these people do: they consume hashish and dance from the exuberance of their souls through definitely forbidden acts, pride, and self-conceit, and they feign ecstasy through satanic ecstasy.

Urdu Translation

started coming from it. Hearing that voice, the companions of the Samiri stood up and began to dance and sway in front of it and began to manifest ecstasy, i.e., they continued to manifest ecstasy from a forbidden act, which is the worship of other than God and is absolutely forbidden, a way of pride and self-conceit, just as these people do, they drink bhang (cannabis) and dance to keep themselves happy.

पृष्ठ 153/720

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

बल्कि अगर यह अज़ीज़ वदूद (अल्लाह) की बारगाह में शौक की वजह से है, तो यह एक बहुत बड़ी नेमत और उच्च दौलत है, ताकि देखा जाए कि वह किस पर अपनी बख्शिश फरमाते हैं और किसे सस्ता (आसानी से) देते हैं। (ताकि देखा जाए कि वह किसे क्षमा करते हैं और किसे सरलता से प्रदान करते हैं। -त) और अगर यह अपनी मर्ज़ी और दिखावे के लिए हो, तो इसका दारोमदार नीयत पर है। अगर यह किसी मजमे में या लोगों के सामने अपनी मशियखत (बुजुर्गी) दिखाने और दिलों को लुभाने के लिए है, तो यह निश्चित रूप से रिया (दिखावा), शोहरत की चाह, निफाक (मुनाफ़िक़ी), हराम-ए-कबीर (बड़ा गुनाह) और शिर्कए-सगीर (छोटा शिर्क) है। अब इसकी हुरमत (मनाही) भी यकीनी तौर पर इजमाई है। फकीहों (धर्मशास्त्रियों) ने इस पर कयामत बरपा की है (यानी इसकी गंभीरता पर जोर दिया है) और इसे इबादत समझने वाले को काफ़िर लिखा है। 'तरीका' और 'हदीका' में लिखा है:

अरबी पाठ

और इन दोनों में यानी रक्स (नाच) और इजतिराब (बेचैनी/तड़प) में वह शामिल है (जो कुछ सूफी करते हैं) जो खुद को तसव्वुफ के तरीके से जुड़ा हुआ बताते हैं, हालांकि वे कई तरह के फालू-फजूर (बुराइयों) पर अड़े रहते हैं। बल्कि यह और भी बुरा है क्योंकि वे इन कामों को इबादत (पूजा) समझकर करते हैं, इसलिए उनके लिए एक बहुत बड़े मामले का डर है, और वह है हराम को हलाल समझने की वजह से कुफ्र (अधर्म)। (अल्लामा अबू बकर तरतूशी रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया: जहाँ तक रक्स और इजहार-ए-वजद का सवाल है) जो अल्लाह की याद से गाफ़िल (बेखबर) कर दे, (उसे सबसे पहले शुरू करने वाले सामरी के साथी थे जब

उर्दू अनुवाद

और इस रक्स और इजतिराब में वे काम भी शामिल हैं जो कुछ सूफी करते हैं जो खुद को तसव्वुफ के तरीके से जुड़ा हुआ बताते हैं, हालांकि वे कई तरह के फालू-फजूर (बुराइयों) और उससे भी सख्त किस्म के अपराधों पर अड़े रहते हैं। क्योंकि वे इन कामों को इबादत (पूजा) समझकर करते हैं, इसलिए (इस विश्वास के कारण) उनके लिए एक बहुत बड़े मामले का डर है और हराम को हलाल कहने की वजह से यह कुफ्र है। चुनांचे अल्लामा अबू बकर तरतूशी (रहमतुल्लाह अलैह) ने फरमाया कि रक्स और इजहार-ए-वजद जो अल्लाह की याद से गाफ़िल (बेखबर) कर दे, उसे सबसे पहले ईजाद करने वाले सामरी के दोस्त थे। जब सामरी ने उनके लिए

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
उसने उनके लिए एक बछड़ा बनाया, जो कि एक बेजान शरीर था जिससे आवाज़ आती थी। वे उसके पास खड़े होकर नाचने और वजद दिखाने लगे), यानी वे हराम काम के जरिए वजद का इज़हार करते हैं, और यह गैर-अल्लाह की इबादत है। जैसा कि ये लोग करते हैं: वे भांग (हशीश) खाते हैं और अपनी आत्मा की उमंग में हराम कामों, अहंकार और आत्ममुग्धता के साथ नाचते हैं, और शैतानी वजद के जरिए वजद का दिखावा करते हैं।	बछड़ा तैयार किया, यानी बछड़े का ढांचा बनाया, तो उसमें से बछड़े की आवाज़ आने लगी। वह आवाज़ सुनकर सामरी के साथी उठ खड़े हुए और उसके आगे नाचने और झूमने लगे और वजद का इज़हार करने लगे। यानी हराम काम से वजद का इज़हार करते रहे जो कि गैर-खुदा की इबादत है और यकीनी तौर पर हराम, तक़ब्बुर (घमंड) और खुद-पसंदी का तरीका है, जैसा कि ये लोग करते हैं; भांग पीते हैं और खुद को खुश रखने के लिए नाचते हैं।

جلد ۲۴

فتاوی رضویہ

بلکہ اگر شوقاً الی حضرۃ العزیز الودود جل وعلا ہے تو نعمت کبری و دولت اعلیٰ ہے تاکہ بخشند و کرا ارزانی دارند (تاکہ دیکھا جائے کہ وہ کس پر بخشش فرماتے ہیں اور کس کو ارزاں (سستا) دیتے ہیں۔ت) اور اگر باختیار و تصنع ہو تو مدار نیت پر ہے اگر مجمع یا مرائی العین میں اظہار مشیخت و جلب قلوب کے لئے ہے قطعاً ریا وسمعہ و نفاق وحرام کبیر و شرک صغیر ہے، اب اس کی حرمت بھی ضرور اجماعیہ ہے فقہاء نے اس پر قیامتِ کبریٰ قائم کی اور عبادت سمجھنے والے کو کافر لکھا، طریقہ و حدیقہ میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
ویدخل فیھما ای فی الرقص و الاضطراب (ما یفعلہ بعض الصوفیۃ) الذین ینسبون انفسھم الی مذھب التصوف وھم مصرون علی انواع الفسوق والفجور بل ھو اشد لانھم یفعلونہ علی اعتقاد العبادۃ فیخاف علیھم امر عظیم، وھو الکفر باستحلال الحرام (قال العلامۃ ابوبکر الطرطوسی رحمہ اللہ تعالیٰ اما الرقص والتواجد) الذی	اور اس رقص و اضطراب میں وہ کام بھی داخل اور شامل ہے جو بعض صوفیاء کیا کرتے ہیں جو اپنے آپ کو طریقہ تصوّف کے ساتھ منسلک گردانتے ہیں حالانکہ وہ کئی قسم کے فسق و فجور اور زیادہ سخت قسم کے جرائم پر اصرار کرتے ہیں اس لئے کہ وہ یہ کام عبادت کے اعتقاد کے ساتھ کرتے ہیں لہذا (اس عقیدہ کے باعث) ان پر امر عظیم کا خطرہ ہے اور خوف ہے اور حرام کو حلال کہنے کی وجہ سے یہ کفر ہے۔ چنانچہ علامہ ابوبکر طرطوسی رحمۃ اللہ تعالیٰ نے فرمایا کہ رقص اور اظہار وجد جو یاد

عربی متن	اردو ترجمہ
	الٰہی سے بے خبر اور غافل کر ڈالے اسے سب سے پہلے
یوجب اللھو عن ذکر اللہ تعالی (فاول ما	ایجاد کرنے والے سامری کے احباب تھے۔ جب سامری
احدثہ اصحاب السامری لما اتخذ لھم	نے ان کے لئے بچھڑا تیار کیا یعنی بچھڑے کا ڈھانچہ تیار
عجلا جسداله خوار قاموا یرقصون علیه	کیا تو اس میں سے بچھڑے کی آواز آنے لگی، وہ آواز سن
ویتواجدون) ای یظھرون الوجد بالفعل	کر سامری کے ساتھی اٹھ کھڑے ہوئے اور اس کے آگے
المحرم و ھو عبادة غیر اللہ کما یفعل	ناچنے اور جھومنے لگے اور وجد کا اظہار کرنے لگے
ھؤلاء یأکلون الحشیش و یرقصون من	یعنی حرام فعل سے اظہار وجد کرتے رہے جو کہ غیر خدا
نشاط نفوسھم بالمحرم القطعی والکبر	کی عبادت ہے اور قطعی حرام، تکبر و خود پسندی کا
والاعجاب ویتواجدون بالوجد الشیطانی	طریقہ ہے جیسے یہ لوگ کرتے ہیں، بھنگ پیتے ہیں اور
	اپنے آپ کو خوش رکھنے کے لئے ناچتے ہیں،

Fatawa Rizvia, Volume 24

[Arabic Section]: And carnal desires among transgressors mixed with handsome beardless youths listening to tanburs (lutes) and flutes; this is the way of the disbelievers. It is stated in Al-Tatarkhaniyya that dancing during a musical session with the mentioned instruments in the described state is not permissible to perform or attend. In Al-Dhakhira, it is stated as a major sin. Al-Bazzazi quoted Al-Qurtubi saying it is prohibited by consensus (ijma'). I saw a fatwa by Shaykh al-Islam Jalal al-Millah wa al-Din al-Kilani stating that whoever deems this dance (described with the mentioned absolute prohibitions) as permissible is a disbeliever, as its prohibition is known by consensus. [The summary of the compilers is complete] and the full discussion is in it. (T)

[Urdu Section]: They listen to music from instruments like the sitar, and among transgressors, they express ecstasy with satanic and carnal desires, mixing and socializing with handsome beardless youths. Indeed, this is the way of the disbelievers. Thus, it is in Tatarkhaniyya that due to musical instruments under the stated conditions, dancing at the occasion of listening to music is not permissible, nor is it correct to be present there. And in Al-Dhakhira, it is mentioned that this is a major sin. Al-Bazzazi, citing Al-Qurtubi, mentioned that this is absolutely and unanimously prohibited; similarly, I saw the fatwa of Shaykh al-Islam Jalal al-Millah wa al-Din Kilani, who says that one who calls this dance lawful is a disbeliever because it consists of the prohibitions we mentioned, as it is known that its prohibition is by consensus. (The summary of the compilers is complete) and the full discussion is in it. (T)

And if it is in pure solitude and isolation where there is no one else, with a commendable intention such as imitating the passionate lovers or to attract righteous states, then the leading scholars have differed regarding it. Some dislike it, saying it is far from truth and reality, but the preferred view is that with these intentions, it is permissible, rather good, for "Whoever imitates a people is one of them" (Hadith). (When a person adopts a resemblance to a people, he is counted among them. - T)

"If you are not like them, then imitate them; indeed, imitating the noble is success." (If you are not like them, then adopt a form like theirs, i.e., imitate them, because adopting a resemblance to the noble is a means of success. - T)

---

1 Al-Hadiqa al-Nadiyya Sharh al-Tariqa al-Muhammadiyya, Part Nine, Maktaba Nooria Razvia, Faisalabad, 2/518-519. 2 Musnad Imam Ahmad bin Hanbal, Hadith of Ibn Umar (may Allah be pleased with them), Al-Maktab al-Islami, Beirut, 2/50. 3 Al-Hadiqa al-Nadiyya, Part Nine, Maktaba Nooria Razvia, Faisalabad, 2/526.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

[अरबी खंड]: और पापियों के बीच शारीरिक इच्छाएं जो सुंदर दाढ़ी रहित युवकों के साथ मिलकर तंबूरा और बांसुरी सुनते हैं; यह काफिरों का तरीका है। 'तातारख़ानिया' में है कि बताए गए हालात में वाद्य यंत्रों के साथ समाअ (संगीत गोष्ठी) के दौरान नृत्य करना न तो स्वयं करना जायज़ है और न ही वहाँ उपस्थित होना। 'ज़ख़ीरा' में है कि यह कबीरा (बड़ा) गुनाह है। बज़्ज़ाज़ी ने क़ुरतबी के हवाले से ज़िक्र किया कि यह सर्वसम्मति (इजमा) से हराम है। मैंने शैखुल इस्लाम जलालुल मिल्लत वद-दीन अल-कीलानी का फ़तवा देखा कि जो इस नृत्य को (जो हराम चीज़ों पर आधारित है) जायज़ समझे, वह काफिर है क्योंकि इसकी हरामियत इजमा से साबित है। (टी)

[उर्दू खंड]: वे सितार आदि से राग सुनते हैं, पापियों के बीच शैतानी और कामुक भावनाओं के साथ वज्द (समाधि) का इज़हार करते हैं, बिना दाढ़ी वाले सुंदर लड़कों के साथ घुलते-मिलते हैं। बस यह काफिरों का तरीका है। चुनाँचे 'तातारख़ानिया' में है कि बताए गए हालात के अनुसार संगीत के उपकरणों के कारण समाअ के मौके पर नाचना जायज़ नहीं है और न ही वहाँ हाज़िर होना सही है, और 'ज़ख़ीरा' में है कि यह कबीरा गुनाह है। बज़्ज़ाज़ी ने क़ुरतबी के हवाले से ज़िक्र किया कि यह निश्चित और सर्वसम्मति से हराम है, चुनाँचे शैखुल इस्लाम जलालुल मिल्लत वद-दीन कीलानी का मैंने फ़तवा देखा, वे फ़रमाते हैं कि इस रक़्स (नृत्य) को हलाल कहने वाला काफिर है क्योंकि यह हमारे बताए गए हराम कामों पर आधारित है, क्योंकि यह मालूम है कि इसकी हरामियत सर्वसम्मति (इजमा) से है। (सारांश करने वालों की इबारत पूरी हो गई) और पूरी बात इसी में है। (टी)

और अगर बिल्कुल एकांत और तन्हाई में हो जहाँ कोई दूसरा न हो, और नेक नियत से हो जैसे आशिक़ों और दीवानों की नकल करना या नेक हालात को अपने अंदर पैदा करने के लिए हो, तो इमामों की शान में इस पर मतभेद है। कुछ इसे नापसंद करते हैं कि यह सच्चाई और हकीकत से दूर है, और बेहतर बात यह है कि इन नियतों के साथ यह जायज़ बल्कि अच्छा है क्योंकि "जो किसी कौम की समानता अपनाता है, वह उन्हीं में से है।" (हदीस) (जब कोई व्यक्ति किसी कौम से समानता अख्तियार करता है तो वह उसी में गिना जाता है। - टी)

"अगर तुम उनके जैसे नहीं हो तो उनकी तरह बनो; वास्तव में नेक लोगों की समानता अपनाना ही सफलता है।" (अगर तुम उनके जैसे नहीं हो तो उनके जैसी सूरत बनाओ यानी उनसे समानता अपनाओ क्योंकि शरीफ लोगों से समानता अपनाना सफलता का ज़रिया है। - टी)

1 अल-हदीक़तुल नदिय्या शरह अल-तरीक़तुल मुहम्मदिया, भाग नौ, मकतबा नूरिया रज़विया, फ़ैसलाबाद, 2/518-519। 2 मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल, हदीस इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा), अल-मक्ताब अल-इस्लामी, बेरूत, 2/50। 3 अल-हदीक़तुल नदिय्या, भाग नौ, मकतबा नूरिया रज़विया, फ़ैसलाबाद, 2/526।

पृष्ठ 154/720

والشهوات النفسانية بين الفسقة المختلطين بالمردان الحسان الوجوه على سماع الطنابير والزمور فهودين الكفار وفي التاتارخانية الرقص في السماع للآلات المذكورة بالحالة المزبورة (لايجوز) فعله و لاحضوره(وفی الذخیرة انه کبیرة وقال البزازي قال القرطبی حرام بالاجماع ورأیت فتوی شیخ الاسلام جلال الملة والدین الکیلانی ان مستحل هذا الرقص)الموصوف بما ذکرنا من المحرمات القطعیة (کافر لما علم ان حرمتہ بالاجماع 1 اھ ملخصین و تمام الکلام فیهما۔

ستار وغیرہ سے راگ سنتے ہیں، فاسقوں کے درمیان شیطانی اور شہوانی جذبات کے ساتھ اظہارِ وجد کرتے ہیں، بے ریش خوبصورت لونڈوں سے اختلاط اور میل جول رکھتے ہیں۔ بس یہ کفار کا طریقہ کار ہے۔ چنانچہ تتارخانیہ میں ہے کہ بیان کردہ حالات کے مطابق آلات راگ کی وجہ سے سماع کے موقع پر ناچ کرنا جائز نہیں اور نہ وہاں حاضر ہونا درست ہے، اور ذخیرہ میں ہے کہ یہ کبیرہ گناہ ہے۔ بزازی نے قرطبی کے حوالے سے ذکر کیا کہ یہ قطعی اور بالاتفاق حرام ہے، چنانچہ شیخ الاسلام جلال الملة والدین کیلانی کا میں نے فتوی دیکھا وہ فرماتے ہیں اس رقص کو حلال کہنے والا کافر ہے اس لئے کہ یہ ہمارے ذکر کردہ محرمات سے موصوف (اور ان پر مشتمل ہے) کیونکہ یہ معلوم شدہ ہے کہ اس کی حرمت بالاجماع ہے (خلاصہ کرنے والوں کی عبارت پوری ہو گئی) اور پورا کلام اس میں ہے (ت)

اور اگر خلوت و تنہائی محض میں جہاں کوئی دوسرا نہ ہو بہ نیت محمودہ مثل تشبہ بہ عشاق والہین یا جلبِ حالات صالحین ہو تو ائمہ شان میں مختلف فیہ بعض ناپسند فرماتے ہیں کہ صدق و حقیقت سے بعید ہے اور ارجح یہ ہے کہ ان نیتوں کے ساتھ جائز بلکہ حسن ہے کہ من تشبہ بقوم فھو منھم 2 (جب کوئی شخص کسی قوم سے مشابہت اختیار کرے تو وہ اسی میں شمار ہوتا ہے۔

ت) ان لم تکونوا مثلھم فتشبھوا ان التشبہ بالکرام فلاح 3 (اگر تم ان جیسے نہیں ہو پھر ان جیسی صورت بناؤ یعنی ان سے مشابہت اختیار کرو کیونکہ شرفاء سے مشابہت اختیار کرنا ذریعہ کامیابی ہے۔ ت)

---

1 الحدیقۃ الندیۃ شرح الطریقۃ المحمدیۃ الصنف التاسع مکتبہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲/ ۵۱۸-۵۱۹

2 مسند امام احمد بن حنبل حدیث ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما المکتب الاسلامي بیروت ۲/ ۵۰ 3 الحدیقۃ الندیۃ الصنف التاسع مکتبہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲/ ۵۲۶

Fatawa Razawiyya Volume 24

...is imitation, i.e., resemblance with [people of spiritual ecstasy], and this is permissible, rather it is required by Sharia. Accordingly, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whoever resembles a people is one of them." Imam Tabarani narrated it in 'al-Awsat' on the authority of Hudhayfah ibn al-Yaman (may Allah be pleased with them both). The reason why one who resembles a group is counted among them is that their imitation of them indicates their love for them and their satisfaction with their states and actions. The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "If a man is pleased with another's guidance and deeds, he is like him in his deeds." Imam Tabarani narrated this from the Hadith of Uqbah ibn Amir (may Allah be pleased with him). (Then he said, after a lengthy and refined discourse as is his custom, may his secret be sanctified): As for affecting ecstasy (wajd) in a correct manner for the sake of resembling the righteous and for other good purposes, the scholar Sheikh Al-Qushayri pointed it out at the beginning of his famous treatise, where he said: "Tawajud is summoning ecstasy through choice, and its possessor does not have the perfection of ecstasy."

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

...के साथ तशब्बुह यानी समानता है और यह जायज़ बल्कि शरीयत के अनुसार वांछित है। चुनांचे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का इरशाद है कि जो कोई किसी कौम से मुशाबहत (समानता) अख्तियार करे वह उन्हीं में से है। इमाम तबरानी ने 'अल-औसत' में हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) के हवाले से इसे रिवायत फ़रमाया: किसी कौम से मुशाबहत अख्तियार करने वाला क्यों उसी कौम में शुमार किया जाता है, इसकी वजह यह है कि किसी शख्स का किसी कौम से मुशाबहत अख्तियार करना इस बात पर दलालत (संकेत) करता है कि उस शख्स की उन लोगों से दिली मोहब्बत है और वह उनके हालात व आमाल (और तौर-तरीकों) पर राजी है। और हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया: जब कोई मर्द किसी शख्स की सीरत और उसके अमल से खुश और राजी हो तो वह ऐसे है जैसे उसने भी वही अमल किया। इमाम तबरानी ने हज़रत उक़्बा बिन आमिर (रज़ियल्लाहु अन्हु) की हदीस के हवाले से इसे रिवायत किया है। यहाँ तक कि अपनी लंबी पाक गुफ्तगू के बाद जैसा कि अल्लामा मौसूफ़ की आदत है, फ़रमाया कि जहाँ तक सही वजह के मुताबिक़ सालेहीन (नेक लोगों) से मुशाबहत के लिए और दीगर नेक मक़ासिद के लिए नुमाइशी वज्द (दिखावटी परमानंद) की बात है, तो यह ठीक और दुरुस्त है जैसा कि अल्लामा शैख कुशैरी ने अपने मशहूर रिसाले की इब्तिदा में इसकी तरफ़ इशारा फ़रमाया है। चुनांचे इरशाद फ़रमाया: "तवाजुद" किसी भी तरह के इख्तियार (अपनी इच्छा) से अपने आप पर वज्द (परमानंद) की हालत तारी करना है...

पृष्ठ 156 / 720

(عربی متن) یکون له وجد حقیقة فیه تشبه بأهل الوجد الحقیقی وهو جائز بل مطلوب شرعاً قال رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم من تشبه بقوم فهو منهم رواه الطبراني في الاوسط عن حذیفة بن الیمان رضی الله تعالی عنهما وانما کان المتشبه بالقوم منهم لان تشبهه بهم یدل علی حبه ایاهم ورضاه بأحوالهم و افعالهم وقد قال رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم ان الرجل اذا رضی هدی الرجل وعمله فهو مثل عمله رواه الطبراني من حدیث عقبة بن عامر رضی الله تعالی عنه (الی ان قال بعد ما اطال واطاب کما هو دابه قدس سره) اما تکلف الوجد علی الوجه الصحیح لاجل التشبه بالصالحین ولغیر ذلك من المقاصد الحسنة فقد اشار الیه العلامة الشیخ القشیري في اوائل رسالته المشهورة حیث قال التواجد استدعاء الوجد بضرب اختیار ولیس لصاحبه کمال الوجد

(اردو ترجمہ) کے ساتھ تشبہ یعنی مشابہت ہے اور یہ جائز بلکہ شرعاً مطلوب ہے، چنانچہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا ارشاد ہے کہ جو کوئی کسی قوم سے مشابہت اختیار کرے وہ انہی میں سے ہے۔ امام طبرانی نے الاوسط میں حضرت حذیفہ بن یمان رضی اللہ تعالٰی عنہما کے حوالے سے اسے روایت فرمایا: کسی قوم سے مشابہت اختیار کرنے والا کیوں اسی قوم میں شمار کیا جاتا ہے، اس کی وجہ یہ ہے کہ کسی شخص کا کسی قوم سے مشابہت اختیار کرنا اس بات پر دلالت کرتا ہے کہ اس شخص کی ان لوگوں سے دلی محبت ہے اور یہ ان کے حالات وافعال (اور روش) پر راضی ہے اور حضور اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا: جب کوئی مرد کسی شخص کی سیرت اور اس کے عمل سے خوش اور راضی ہو تو وہ ایسے ہے جیسے اس نے بھی وہی عمل کیا۔ امام طبرانی نے حضرت عقبہ بن عامر رضی اللہ تعالٰی عنہ کی حدیث کے حوالے سے اسے روایت کیا ہے یہاں تک کہ اپنی طویل پاکیزہ گفتگو کے بعد جیسا کہ علامہ موصوف کی

عادت ہے ارشاد فرمایا رہا یہ کہ وجہ صحیح کے مطابق نمائشی وجد برائے مشابہت صلحاء وبرائے دیگر مقاصد نیک تو یہ ٹھیک اور درست ہے جیسا کہ علامہ شیخ قشیری نے اپنے رسالہ مشہورہ کی ابتداء میں اس کی طرف اشارہ فرمایا ہے چنانچہ ارشاد فرمایا "تواجد" کسی نوع کے اختیار سے اپنے آپ پر حالت وجد طاری کرنے کا

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

[Arabic text]: Since if he were a 'wajid' (finder of ecstasy), [the word would be different], and the pattern 'tafa'ul' is mostly used to show a quality that is not truly present. Thus, a group of people said that 'tawajud' (affected ecstasy) is not acceptable for its practitioner because it involves pretension and is far from reality. Another group said it is acceptable for the detached poor (ascetics) who are awaiting these spiritual states. Their basis is the report of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him): "Weep, and if you do not weep, then affect weeping." And in 'Shir'at al-Islam' it is said: "It is from the Sunnah to recite the Quran with sadness and finding (ecstasy), for the Quran was revealed with sadness. If one does not have sadness, let him affect it." The summary is that affecting perfection is part of perfection, and imitating the saints for one who is not among them is a desirable and sought-after matter in every case. [End of excerpt].

[Urdu translation of above]: It is the name given when the person in ecstasy does not have complete ecstasy (i.e., not as it should be). This is because if there were real ecstasy in him, he would be called 'wajid' (one who finds ecstasy). Because 'tawajud' is on the pattern of 'tafa'ul', and this mostly comes not based on reality but for the artificial and showy expression of a quality. For this reason, some scholars say that 'tawajud' is not acceptable or correct from the practitioner of 'tawajud'. Why? Because it is based on pretension and is far from reality. While some people said it is correct for those ascetics who are detached and are waiting for and desiring to obtain these meanings which are sought and intended. Their proof is the honorable saying of the Presence (Prophet, peace be upon him): "O people! Laugh little and weep much, and if weeping does not come, then at least make a weeping face." In 'Shir'at al-Islam' it is said that the Sunnah is to read the Holy Quran with grief and ecstasy, because the Holy Quran was revealed with grief, and if the state of grief does not prevail, a sad face should be made. In short, affecting perfection is also among perfection. That is, adopting artificiality and show in some perfection is also included in perfection. And for the person who is not from the friends of Allah (saints), adopting a resemblance to the friends of Allah is such a desirable matter that is worthy of attention in any case. The passage has been completed in summary. (T)

In short, the ecstasy of the pure and truthful Sufis is not essentially a place of criticism. Regarding the matter of the heart and intention, it is difficult to distinguish between the truthful and the liar in the internal state, and thinking ill (of others) is

forbidden and false. "And Allah knows the corrupter from the reformer." (The Holy Quran 2:220)

1. Al-Hadiqa al-Nadiyya, Part 9, Maktaba Nooriya Ridawiyya, Faisalabad, 2/525 to 527.
2. The Holy Quran, 2/220.

फतावा रजविया, जिल्द २४

[अरबी पाठ]: क्योंकि यदि वह 'वाजिद' (दिव्य आनंद पाने वाला) होता [तो शब्द अलग होता], और 'तफ़ाउल' व्याकरणिक रूप अक्सर उस गुण को प्रदर्शित करने के लिए होता है जो वास्तव में मौजूद नहीं होता है। इसलिए, कुछ लोगों ने कहा कि 'तवाजुल' (दिव्य आनंद का ढोंग करना) इसके अभ्यास करने वाले के लिए स्वीकार्य नहीं है क्योंकि इसमें दिखावा शामिल है और यह वास्तविकता से दूर है। दूसरे समूह ने कहा कि यह उन विरक्त 'फकीरों' (आध्यात्मिक साधकों) के लिए स्वीकार्य है जो इन आध्यात्मिक अवस्थाओं का अनुभव करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। उनका आधार अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) का कथन है: "रोओ, और यदि तुम रो नहीं सकते, तो रोने का ढोंग करो।" 'शिरअत अल-इस्लाम' में कहा गया है: "सुन्नत से है कि कुरान को दुख और वज्द (दिव्य आनंद) के साथ पढ़ा जाए, क्योंकि कुरान दुख के साथ अवतरित हुआ था। यदि किसी को दुख महसूस न हो, तो उसे दुख का ढोंग करना चाहिए।" सारांश यह है कि पूर्णता का ढोंग करना भी पूर्णता का एक हिस्सा है, और जो लोग संतों में से नहीं हैं, उनके लिए संतों के समान व्यवहार करना हर स्थिति में एक वांछनीय और मांग की जाने वाली बात है। [संक्षिप्त विवरण समाप्त]।

[उपरोक्त का उर्दू अनुवाद]: यह नाम तब दिया जाता है जब वज्द (समाधि) की स्थिति में व्यक्ति को पूर्ण वज्द न हो (अर्थात जैसा होना चाहिए वैसा न हो)। ऐसा इसलिए है क्योंकि यदि उसमें वास्तविक वज्द होता, तो वह 'वाजिद' (वज्द पाने वाला) कहलाता। क्योंकि 'तवाजुल' तफ़ाउल के व्याकरणिक रूप पर है, और यह ज्यादातर वास्तविकता के बजाय किसी गुण के बनावटी और दिखावटी प्रदर्शन के लिए आता है। इसी कारण कुछ विद्वान कहते हैं कि 'तवाजुल' अभ्यासकर्ता की ओर से स्वीकार्य या सही नहीं है। क्यों? क्योंकि यह दिखावे पर आधारित है और वास्तविकता से कोसों दूर है। जबकि कुछ लोगों ने कहा कि यह उन फकीरों के लिए सही है जो विरक्त हैं और उन अर्थों को प्राप्त करने की प्रतीक्षा और इच्छा कर रहे हैं जो वांछित और लक्षित हैं। उनका प्रमाण हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का पवित्र कथन है: "ऐ लोगो! कम हंसो और ज्यादा रोया करो, और अगर रोना न आए तो कम से कम रोने जैसी सूरत ही बना लिया करो।" 'शिरअत अल-इस्लाम' में कहा गया है कि सुन्नत यह है कि पवित्र कुरान को गम और वज्द के साथ पढ़ा जाए, क्योंकि पवित्र कुरान गम के साथ नाजिल हुआ है, और यदि गम की कैफियत पैदा न हो तो गमगीन सूरत ही बना ली जाए। संक्षेप में यह कि पूर्णता का ढोंग करना भी पूर्णता में शामिल है। यानी किसी पूर्णता में बनावट और नुमाइश अख्तियार करना भी पूर्णता में शामिल है। और जो व्यक्ति अल्लाह के वलियों (मित्रों) में से नहीं है, उसका

अल्लाह के वलियों के साथ मुशबाहत (समानता) अख्तियार करना ऐसा वांछनीय कार्य है जो हर हाल में ध्यान देने योग्य है। सारांश में इबारत पूरी हो गई। (त)

कुल मिलाकर, पवित्र और सच्चे सूफियों का वज्द मूल रूप से आलोचना का स्थान नहीं है। दिल और नियत के मामले में, आंतरिक रूप से सच्चे और झूठे के बीच अंतर करना कठिन है, और बुरा सोचना हराम और बातिल (गलत) है। "और अल्लाह बिगाड़ने वाले को संवारने वाले से अलग जानता है।" (पवित्र कुरान 2:220)

1. अल-हदीका अन-नदिय्या, भाग ९, मकतबा नूरिया रजविया, फैसलाबाद, २/५२५ से ५२७।
2. पवित्र कुरान, २/२२०।

पृष्ठ १५७/७२०

اذ لو کان واجدا وباب التفاعل اکثرہ علی اظہار الصفۃ ولیست کذلک، فقوم قالوا التواجد غیر مسلم لصاحبہ لما یتضمن من التکلف ویبعد عن التحقیق و قوم قالوا انہ مسلم للفقراء المجردین الذین ترصدوا الوجود ان ہذہ المعانی واصلہم خبر الرسول صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ابکوا فأن لم تبکو فتباکوا اہ وفی شرعۃ الاسلام قال ومن السنۃ ان یقراء القرآن بحزن ووجد فان القرآن نزل بحزن فأن لم یکن لہ حزن فلیتحازن اہ والحاصل ان تکلف الکمال من جملۃ الکمال والتشبہ بالا ولیاء لمن لم یکن منہم امر مطلوب مرغوب فیہ علی کل حال ۱ اہ بالاختصار۔

نام ہے جبکہ صاحب وجد میں کمال وجد نہ ہو (یعنی کما حقہ وجد نہ ہو) اس لئے کہ اگر اس میں حقیقی وجد ہوتا تو وہ واجد (وجد کرنے والا) کہلاتا کیونکہ تواجد باب تفاعل ہے اور یہ زیادہ تر حقیقت کی بنا پر نہیں بلکہ بناوٹی و نمائشی اظہار صفت کے لئے آتا ہے اسی لئے بعض علم والے کہتے ہیں کہ "تواجد" صاحب تواجد کی طرف سے مسلم یعنی تسلیم شدہ اور ٹھیک نہیں، کیوں؟ اس لئے کہ یہ تکلف پر مبنی ہوتا ہے اور حقیقت سے بعید ہوتا ہے جبکہ کچھ لوگوں نے فرمایا کہ ان فقراء کے لئے درست ہے جو مجرد ہوں اور ان معانی کے پالنے کے منتظر اور خواہاں ہوں جو مطلوب و مقصود ہیں اور ان کی دلیل حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا ارشادِ گرامی ہے کہ لوگو! کم ہنسو اور زیادہ رویا کرو اور اگر رونا نہ آئے تو کم از کم رونی صورت ہی بنالیا کرو۔ شرعۃ الاسلام میں فرمایا سنت یہ ہے کہ قرآن مجید غم کے ساتھ وجد سے پڑھے اس لئے کہ قرآن مجید غم کے ساتھ نازل ہوا ہے اور اگر غم کی کیفیت طاری نہ ہو تو غمگین صورت ہی بنا لی جائے اھ مختصر یہ کہ تکلفِ کمال بھی منجملہ کمال ہے یعنی کسی کمال میں بناوٹ اور نمائش اختیار کرنا بھی کمال میں شامل ہے اور جو شخص اولیاء اللہ میں سے نہ ہو اس کا اولیاء اللہ سے

مشابہت اختیار کرنا ایسا امر مطلوب ہے جو بہر حال لائق توجہ ہے، اختصار سے عبارت مکمل ہو گئی ہے۔ (ت)

بالجملہ وجد صوفیہ کرام طاہرین صادق اصلا محل طعن نہیں اور درباره امر قلب ونیت باطن صادق و کاذب میں تمیز مشکل اور اساعت ظن حرام و باطل "وَاللّٰہُ یَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ" 2 (اللہ تعالی)

1 الحدیقۃ الندیۃ الصنف التاسع مکتبہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲/ ۵۲۵ تا ۵۲۷ 2 القرآن الکریم ۲/ ۲۲۰

He knows both the mischief-maker and the sincere person. (Note: In Rad al-Muhtar, from Nur al-'Ayn fi Islah Jami' al-Fasulayn, and in it from Allama Tahrir Ibn Kamal Pasha Wazir, it is stated:)

There is no harm in swaying (Tawajud) if you achieve truthfulness, And no problem in staggering if you are sincere. So you stood up running on your feet, and it is right for the one Whose Master calls him to run on his head. (1)

(Translation: If the swaying is true and real, there is no harm, and there is no objection in staggering provided it is done with sincerity; then standing on one's feet and running is expected, and for the one whom his Master calls, it is justified for him to go running on his head, etc. - Note)

And Allah, glorified and exalted be He, knows best.

Answer to the Second Question: To attribute those false prohibitions, God forbid, to the illustrious presence of the Master of the Universe, peace and blessings of Allah be upon him, is certainly a lack of etiquette and a fabrication and lie against the Master of the Universe, peace and blessings of Allah be upon him.

"And that is sufficient as a manifest sin." (2) "Only they fabricate lies who do not believe." (3)

This is an obvious sin, and only those who do not have faith forge lies. (Note)

Furthermore, to mention the names of all the Companions, Successors, and Jurist Imams - what kind of etiquette is that? Among the Masters of the Path (Sufi Masters), may Allah be pleased with them, there is greater kindness towards the Chishti masters; their sayings have been mentioned above. And Hazrat Maulana Fakhruddin Zarawi, the successor (Khalifa) of our Master Mahbub-e-Ilahi (may Allah be pleased with them both), himself wrote the treatise 'Kashf al-Qina' 'an Usul al-Sama' by the command of the Master during his time, in which he states:

"As for the Sama' of our Masters, may Allah be pleased with them, it is free from this accusation; it is merely the voice of the singer along with verses indicating the perfection of the artistry of Allah Almighty." (4)

That is, the Sama' of our noble masters, may Allah be pleased with them, is free from the accusation of musical instruments; it is only the voice of the qawwal (singer)

along with those verses that make one aware of the perfection of Divine craftsmanship, Glorified and Exalted is He. (Note)

1. Rad al-Muhtar, Chapter on the Apostate, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/308
2. The Holy Quran 4/50
3. The Holy Quran 16/105
4. Kashf al-Qina' 'an Usul al-Sama' Page 158 of 720

वह शरारती और निष्ठावान दोनों को जानता है। (त: रद अल-मुह्तार में नूर अल-ऐन फ़ी इस्लाह जामी अल-फ़सुलैन और उसी में अल्लामा तहरीर इब्न कमाल पाशा वज़ीर से उद्धृत है:)

यदि तुम सच्चाई प्राप्त कर लो तो झूमने (तवाजुद) में कोई हर्ज नहीं है, और यदि तुम निष्ठावान हो तो डगमगाने में कोई दोष नहीं है। अतः तुम अपने पैरों पर खड़े होकर दौड़ने लगे, और उसके लिए यह उचित है जिसे उसका स्वामी बुलाए कि वह अपने सिर के बल दौड़ता हुआ जाए। (1)

(अनुवाद: यदि झूमना (तवाजुद) सच्चा और वास्तविक हो तो कोई हर्ज नहीं है, और डगमगाने (अस्थिरता) में कोई आपत्ति नहीं है बशर्ते कि वह निष्ठा के साथ हो; फिर तो अपने पैरों पर खड़ा रहकर दौड़ लगाना है, और उसके लिए यह हक है जिसे उसका मौला (स्वामी) बुलाए तो वह अपने सिर के बल दौड़ता हुआ जाए आदि। - त)

और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

दूसरे प्रश्न का उत्तर: उन झूठी वर्जनाओं (मुहर्रमते अबातील) को, अल्लाह न करे, सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ओर मन्सूब करना (जोड़ना) निश्चित रूप से अदब की कमी है और सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर इफ़्तरा (आरोप) और झूठ है।

"और यह एक स्पष्ट पाप के रूप में पर्याप्त है।" (2) "झूठ केवल वही गढ़ते हैं जो ईमान नहीं रखते।" (3)

यही स्पष्ट पाप है और झूठ वही गढ़ते हैं जो ईमान नहीं रखते। (त)

फिर समस्त सहाबा, ताबेईन और मुजतहिद इमामों का नाम ले देना - यह कैसा अदब है? तरीक़त (सूफीवाद) के मशायख (गुरुओं), अल्लाह उन पर प्रसन्न हो, में चिश्ती हज़रात पर अधिक दया है; उनके कथन ऊपर बीत चुके हैं। और हज़रत मौलाना फ़खरुद्दीन ज़रवी, हमारे आका महबूब-ए-इलाही (अल्लाह उन दोनों पर प्रसन्न हो) के उत्तराधिकारी, ने स्वयं आका के समय में उनके आदेश से ग्रंथ 'कश्फ अल-क़िना अन उसूल अल-समा' लिखा, जिसमें वे फरमाते हैं:

"जहाँ तक हमारे मशायख के समा (आध्यात्मिक श्रवण), अल्लाह उन पर प्रसन्न हो, का प्रश्न है, तो वह इस आरोप से मुक्त है; यह केवल क़व्वाल की आवाज़ है उन छंदों के साथ जो अल्लाह तआला की कारीगरी की पूर्णता का संकेत देते हैं।" (4)

अर्थात, हमारे महान मशायख, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो, का समा संगीत वाद्ययंत्रों (मज़ामीर) के इस आरोप से मुक्त है; वह तो केवल क़व्वाल की आवाज़ है उन अशआर (छंदों) के साथ जो अल्लाह जल्ल व आला की दिव्य कारीगरी की पूर्णता से अवगत कराते हैं। (त)

1. रद अल-मुह्तार, धर्मत्यागी का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 3/308
2. पवित्र क़ुरआन 4/50
3. पवित्र क़ुरआन 16/105
4. कश्फ़ अल-क़िना अन उसूल अल-समा पृष्ठ 158 का 720

فسادی اور مخلص دونوں کو جانتا ہے۔ ت) ردالمحتار میں نور العین فی اصلاح جامع الفصولین اور اسی میں علامہ تحریر ابن کمال پاشا وزیر سے ہے

مَا فِی التَّوَاجُدِ اِن حَقَّقْتَ مِن حَرَجٍ وَلَا التَّمَایُلِ اِن اَخلَصتَ مِن بَاسِ فَقُمَت تَسعیٰ عَلیٰ رِجلٍ وَحقّ لِمَن دَعاہُ مولاہُ اَن یَسعٰی عَلیٰ الرَّاسِ (۱)

(اگر تواجد سچا اور حقیقی ہو تو کوئی حرج نہیں اور اضطراب (لڑکھڑانے) میں کوئی مضائقہ نہیں بشرطیکہ اخلاص کے ساتھ ہو پھر تو پاؤں پر کھڑا رہ کر دوڑ لگانا ہے، اور اس کے لئے حق ہے جس کو اس کا مولا بلائے تو وہ اپنے سر کے بل دوڑتا ہوا جائے الخ۔ ت)

واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم۔

جواب سوال دوم: اُن محرماتِ اباطیل کو معاذ اللہ حضور پر نور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی طرف نسبت ضرور سوئے ادب اور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پر افتراء و کذب ہے،

"وَ کَفٰی بِہٖۤ اِثْمًا مُّبِیْنًا" (۲) "اِنَّمَا یَفْتَرِی الْکَذِبَ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ" (۳)

یہی کھلا گناہ ہے اور جھوٹ وہی گھڑتے ہیں جو ایمان نہیں رکھتے۔ (ت)

پھر جمیع صحابہ و تابعین و ائمہ مجتہدین کا نام لے دینا کیا جائے ادب۔ مشائخ طریقت رضی اللہ تعالیٰ عنہم میں زیادہ مہربانی حضرات چشت پر ہے، ان کے ارشادات اوپر گزرے، اور حضرت مولانا فخر الدین زراوی خلیفہ حضور سیدنا محبوب الٰہی رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے زمانہ حضور میں خود حکم حضور سے رسالہ کشف القناع عن اصول السماع تحریر فرمایا جس میں ارشاد فرماتے ہیں:

اَمَّا سَمَاعُ مَشَائخنا رضی اللہ تعالی عنھم فبریءٌ عن ھٰذِہ التُّھمۃ وھو مجرد صوت القوال مع الاشعار المشعرۃ من کمال صنعۃ اللہ تعالی (۴)

یعنی ہمارے مشائخ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم کا سماع اس تہمت مزامیر سے مبرا ہے وہ تو صرف قوال کی آواز ہے ان اشعار کے ساتھ کہ کمالِ صنعِ خداوندی جل وعلا پر آگاہ کریں۔ (ت)

1. ردالمحتار باب المرتد دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/ ۳۰۸
2. القرآن الکریم ۴/ ۵۰
3. القرآن الکریم ۱۶/ ۱۰۵
4. کشف القناع عن اصول السماع Page 158 of 720

Fatawa Razawiya, Volume 24

In short, the leading gnostics, the heirs of the Prophets and Messengers (peace and blessings be upon them all), are surely free from these slanders. Baseless, irrational, and unauthentic stories are not acceptable, nor do they have any effect contrary to some views of the majority, especially the grand explications in the books of religion. Yes, every person has the choice to follow carnal desires and take and combine opinions without investigation, but the actions, states, sayings, and deeds of those overcome by spiritual ecstasy are neither authoritative nor worthy of imitation. Hazrat Maulana Rumi (may his powerful secret be sanctified) says in the Masnavi Sharif: In his favor it is honey, and in your favor it is poison; in his favor it is praise, and in your favor it is blame. In his favor it is a rose, and in your favor it is a thorn; in his favor it is light, and in your favor it is fire.[1] (Translation: In his favor it is honey while for you it is poison; in his favor it is praise while for you it is blame; for him it is a flower and for you it is a thorn; in his favor it is light while for you it is fire (hellfire). T) Hypothetically, even if Zaid claims to be overcome by a spiritual state and it is accepted, let one Zaid be distraught and self-lost. But what about the crowd and throng of hundreds and thousands of commoners that are brought together? Have they all come having reached God and being overcome by spiritual states, or have madmen been handpicked from all over the world, for whom the pen of Sharia obligation does not apply? And when this is not the case, then there is absolutely no doubt about the prohibition of this gathering and the sinfulness of its founder. "So upon you is the sin of your subjects" (T: Therefore its sin is upon your head). And Allah the Exalted and Sublime knows best.

Answer to the Third Question: It is among the religious self-evident truths that firstly, the beliefs of Islam and Sunnah, and then the rulings of prayer, purification, etc., which are Sharia necessities, it is obligatory to learn and teach. Leaving them to waste time even in another recommended and desirable knowledge is forbidden, let alone music, whose lower degree is vain and useless, and whose higher level is a treasure trove of sins. Unity of Existence (Wahdat-ul-Wajood) and the realities and subtleties of Sufism, as the true Sufis believe in them (not as the pseudo-Sufis and heretics do), are certainly truth and reality. However, much of it is a matter of spiritual taste (dhauq) which is revealed after reaching those high stations; it does not pertain to verbal teaching and learning. And much of it is such that not only the commoners, but many of those who are called scholars (Maulvis) today cannot understand it either.

[1] Masnavi Sharif, Revelation came from Allah the Exalted to the reprimand of Moses, etc. Book Two, Noorani Kutub Khana Peshawar, p. 44 Page 159 of 720

फतावा रजविया, जिल्द 24

संक्षेप में, ज्ञानी इमाम, नबियों और रसूलों के वारिस (उन सब पर शांति और आशीर्वाद हो), निश्चित रूप से इन आरोपों से मुक्त हैं। आधारहीन, निरर्थक और बिना प्रमाण वाली कहानियाँ स्वीकार्य नहीं हैं, न ही वे बहुमत के कुछ मतों के विरुद्ध, विशेष रूप से धर्म की पुस्तकों की महान व्याख्याओं पर कोई प्रभाव डालती हैं। हाँ, अपनी इच्छाओं का पालन करने और बिना शोध के मतों को लेने और मिलाने का विकल्प हर किसी के पास है, लेकिन आध्यात्मिक अवस्था से अभिभूत लोगों के कार्य, स्थितियाँ, वचन और कर्म न तो आधिकारिक हैं और न ही अनुकरण के योग्य। हज़रत मौलाना रूमी (उनकी शक्तिशाली आत्मा पवित्र हो) मसनवी शरीफ में फ़रमाते हैं: उसकी खातिर शहद है और तुम्हारी खातिर ज़हर; उसकी खातिर प्रशंसा है और तुम्हारी खातिर निंदा। उसकी खातिर गुलाब है और तुम्हारी खातिर कांटा; उसकी खातिर नूर है और तुम्हारी खातिर आग।[1] (अनुवाद: उसके हक में शहद है जबकि तुम्हारे लिए ज़हर है, उसके हक में प्रशंसा है जबकि तुम्हारे हक में बुराई है, उसके लिए फूल है और तुम्हारे लिए कांटा है, उसके हक में नूर है जबकि तुम्हारे हक में आग है। त) माना कि यदि ज़ैद भी आध्यात्मिक रूप से अभिभूत होने का दावा करे और मान भी लिया जाए, तो एक ज़ैद सुध-बुध खोया हुआ और बेखुद सही, लेकिन यह जो सैकड़ों-हज़ारों आम लोगों की भीड़ और जमावड़ा किया जाता है, क्या ये भी सब ईश्वर को प्राप्त और अभिभूत होकर आए हैं या दुनिया भर से चुन-चुनकर पागल बुलाए गए हैं जिन पर शरीयत का दंड लागू नहीं होता? और जब ऐसा नहीं है, तो इस सभा की वर्जना और इसके संस्थापक के पाप होने में रत्ती भर भी संदेह नहीं है। 'तो तुम पर तुम्हारी प्रजा का पाप होगा' (त: इसलिए इसका पाप तुम्हारे सिर है)। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है।

तीसरे प्रश्न का उत्तर: धार्मिक स्वतःस्पष्ट सत्यों में से है कि सबसे पहले इस्लाम और सुन्नत के अकीदे, फिर नमाज़, पवित्रता आदि के हुक्म जो शरई ज़रूरतें हैं, उन्हें सीखना और सिखाना फ़र्ज़ है। उन्हें छोड़कर किसी अन्य मुस्तहब और पसंदीदा ज्ञान में भी समय बर्बाद करना हराम है, संगीत की तो बात ही क्या जिसके निम्न स्तर पर व्यर्थ और फालतू बातें हैं और उच्च स्तर पापों का खजाना है। वहदत-उल-वजूद और तसव्वुफ़ की सच्चाइयाँ और सूक्ष्मताएँ जैसा कि सच्चे सूफ़ी मानते हैं (न कि वे जिन्हें पाखंडी सूफ़ी मानते हैं), निश्चित रूप से सत्य और वास्तविकता हैं। लेकिन इसमें से अधिकांश 'ज़ौक' (आध्यात्मिक स्वाद) का विषय है जो उन उच्च स्थानों पर पहुँचने के बाद प्रकट होता है; इसका

मौखिक शिक्षण और अधिगम से संबंध नहीं है। और इसका बहुत सा हिस्सा ऐसा है जिसे आम लोग तो क्या, आजकल के कई मौलवी कहलाने वाले भी नहीं समझ सकते।

---

[1] मसनवी शरीफ, वह्य आई अल्लाह तआला की ओर से मूसा (अ.) के प्रति उपालंभ आदि, दफ्तर दोयम, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, पृ. 44 पृष्ठ 159 का 720

بالجملہ ائمہ عارفین وارثان انبیاء ومرسلین علیہم الصلوٰۃ والسلام اجمعین ضرور ان بہتانوں سے منزہ ہیں، حکایت بے سرو پا رطب و یابس بے سند معتمد قابل قبول نہیں نہ خلاف بعض مذہب جمہور خصوصاً تحریحات جلیلہ کتب مذہب پر کچھ اثر ڈالے ہاں خواہش نفسانی کی پیروی کو اخذ و تلفیق بے تحقیق کا ہر شخص کو اختیار ہے مغلوبین حال کے افعال، احوال، اقوال، اعمال نہ قابل استناد ہیں نہ لائق تقلید۔ حضرت مولوی معنوی قدس سرہ القوی مثنوی شریف میں فرماتے ہیں: در حق او شہد ودر حق تو سم در حق او مدح و در حق تو ذم در حق او ورد و در حق تو خار در حق او نور و در حق تو نار ۱۸ (اس کے حق میں شہد ہے جبکہ تیرے لئے زہر ہے، اس کے حق میں تعریف ہے جبکہ تیرے حق میں برائی ہے، اس کے لئے تو پھول اور تیرے لئے کانٹا ہے، اس کے حق میں نور ہے جبکہ تیرے حق میں نار (آگ) ہے۔ ت) بالفرض اگر زید بھی اپنے مغلوب الحال ہونے کا دعوٰی کرے اور مان بھی لیا جائے تو ایک زید و ارفتہ و بیخود سہی یہ جو سیکڑوں ہزاروں عوام کا ہجوم واژدحام کرایا جاتا ہے کیا یہ بھی سب خدارسیدہ مغلوب الحال ہو کر آئے ہیں یا دنیا بھر سے چھانٹ چھانٹ کر پاگل بوہرے بلائے ہیں جن پر شرع کا قلم تکلیف نہیں، اور جب یہ کچھ نہیں تو اس مجمع کی تحریم اور بانی کی تاشیم میں اصلاً شک نہیں فأنما علیك اثم الاریسیین (لہٰذا اس کا گناہ تمہارے سر ہے۔ ت) واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم۔

جواب سوال سوم: بدیہیات دینیہ سے ہے کہ اولاً عقائد اسلام وسنت پھر احکام صلوٰۃ وطہارت وغیرہ ہا ضروریات شرعیہ سیکھنا سیکھانا فرض ہے اور انہیں چھوڑ کر دوسرے کسی مستحب و پسندیدہ علم میں بھی وقت ضائع کرنا حرام نہ کہ موسیقی کہ اس کا ہلکا درجہ لغو وفضول اور بھاری پایہ مخزن آثام۔ وحدۃ الوجود وحقائق ودقائق تصوف جس طرح صوفیہ صادقہ مانتے ہیں (نہ وہ جسے

متصوفہ زنادقہ جانتے ہیں) ضرور حق و حقیقت ہے مگر اس میں اکثر ذوق ہے کہ ان مقامات عالیہ پر وصول کے بعد منکشف ہوتا ہے زبانی تعلیم و تعلم سے تعلق نہیں رکھتا اور بہت وہ ہے جسے عوام تو عوام آج کل کے بہت مولوی کہلانے والے بھی نہیں سمجھ سکتے

---

[18] مثنوی شریف وحی آمد از حق تعالیٰ بعتاب موسیٰ الخ دفتر دوم نورانی کتب خانہ پشاور ص ۴۴

Fatawa Rizvia, Volume 24

And most of those who become spiritual guides and sheikhs themselves, except for memorizing a few words like a parrot, do not have the slightest sense of the meanings. Then who will teach and who will learn? Yes, this will surely happen: first, the misunderstanding of these unrefined explainers, meaning one thing while understanding another; second, the scarcity of words for these meanings, as they are often about spiritual states (haal) rather than speech (qaal). Third, to top it off, the misarticulation of these gentlemen, as those explaining do not even possess the power to express as much as the two aspects of truth and reality could be balanced in a statement. And even if they did have the power, who cares about protecting religion and faith? Fourth, above all, the dullness of these ignorant and undiscerning people to whom these realities and intricacies will be taught; they are already struggling to understand straightforward commands, so who will understand these complexities (mutashabihat)? In short, its effect will surely be their corruption, falling into trials, and becoming heretics (zindiq), apostates (murtad), or at the very least, misguided and irreligious. That's all. It is mentioned in the Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

"You shall not narrate a Hadith to a people whose intellects cannot grasp it, except that it will be a trial (fitnah) for some of them." - Narrated by Ibn Asakir from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both).	Meaning, when you speak to a people about something that their intellects cannot reach, it will certainly be a trial for some among them. (Imam Ibn Asakir narrated this from Hazrat Abdullah ibn Abbas, may Allah be pleased with them both).

Imam Hujjat al-Islam Muhammad al-Ghazali, then Allama Munawi, the commentator of Jami' al-Saghir, then Sayyidi Abdul Ghani al-Nabulsi in 'Al-Hadiqah' say:

"Indeed, it is better for a commoner to commit adultery or theft than to speak about the knowledge of Allah without mastery, for he might fall into disbelief without realizing it, like someone who ventures into the depths of the sea without being a proficient swimmer. And the deceptions of Satan concerning	If a common man commits immorality and theft, then despite these being sins, this act is not as deadly and destructive for him as speaking about the knowledge of Divinity without investigation is deadly; because without investigation and without firmness in knowledge, he might commit disbelief (kufr) somewhere and he wouldn't even know. His example is like riding the waves and surges of

beliefs and sects are not hidden. And Allah Almighty knows best."

a river without knowing how to swim, and the deceptions of Satan regarding beliefs and religions [continued...]

1 Kanz al-Ummal with reference to Ibn Asakir from Ibn Abbas, Hadith 29011, Mu'assasat al-Risala Beirut 10/192. 2 Al-Hadiqah al-Nadiyyah, type twenty-one, Questioning and Investigating the Common People about the Essence of Allah's Being and His Attributes, Al-Maktabah al-Nuriyyah al-Radawiyyah Faisalabad 2/470.

और खुद अक्सर ये जो पीर और मशाइख बनते हैं, तोते की तरह चंद लफ्ज़ याद कर लेने के सिवा मानी की हवा से भी कोई ताल्लुक नहीं रखते, फिर कौन सिखाएगा और कौन सीखेगा। हाँ, ये ज़रूर होगा कि एक तो इन अनाड़ी बताने वालों की गलतफहमी कि मतलब कुछ है और समझे कुछ, दूसरे इन मानी के लिए अल्फाज़ की कमी कि वे अक्सर 'हाल' हैं न कि 'काल'। तीसरे इस पर तुर्रा यह कि इन साहबों की गलत बयानी कि जिस कदर दोनों पहलू हक और हकीकत के संभाले हुए बयान में ला सकते थे, ये बताने वाले हजरात उतने पर भी कुदरत नहीं रखते। और अगर कुदरत हो भी, तो दीन और ईमान की हिफाज़त की परवाह किसे है? चौथे इन सब पर ऊपर से इन जाहिल और नासमझ लोगों की ज़हनी पस्ती जिन्हें ये हकीकतें और बारीकियां सिखाई जाएंगी; उन्हें अभी सीधे-सीधे अहकाम समझने के लाले पड़े हैं, इन मुतशाबिहात (पेचीदा बातों) को कौन समझेगा। गरज यह कि इसका असर यकीनन उनका बिगड़ना, फितने में पड़ना, ज़ंदीक, मुर्तद या कम से कम गुमराह और बेदीन हो जाना होगा और बस। हदीस में है, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

"तुम किसी कौम को ऐसी बात न बताओ जिसे उनकी अक्ल न समझ सके वरना वह उनमें से कुछ के लिए फितना (गुमराही का सबब) बन जाएगी।" - इब्ने असाकिर ने इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया।

यानी जब तुम किसी कौम के सामने वो बात बयान करोगे जिस तक उनकी अक्लें न पहुंचें, तो ज़रूर वो उनमें किसी पर फितना होगी। (इमाम इब्ने असाकिर ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से इसे रिवायत किया)।

इमाम हुज्जतुल इस्लाम मुहम्मद ग़ज़ाली, फिर अल्लामा मुनावी (शारेह जामे सगीर), फिर सय्यिदी अब्दुल गनी नाबलुसी 'हदीका' में फरमाते हैं:

"बेशक एक आम आदमी के लिए ज़िना या चोरी करना इससे बेहतर है कि वो बिना महारत के अल्लाह के इल्म के बारे में बात करे, क्योंकि वो ऐसी जगह से कुफ्र में गिर सकता है जहाँ उसे पता भी न चले, जैसे वो शख्स जो तैरना जाने बिना समंदर की लहरों पर सवार हो जाए। और अकाइद और

कोई आम आदमी बदकारी और चोरी करे तो बावजूद गुनाह होने के उसके लिए ये अमल इतना मोहलिक और तबाहकुन नहीं जितना बिना तहकीक इल्म-ए-इलाही के बारे में कलाम करना मोहलिक है; क्योंकि बिना तहकीक और बिना पुख्तगी-ए-इल्म के कहीं वो कुफ्र का मुर्तकिब हो जाएगा और उसे इल्म भी नहीं होगा। इसकी मिसाल ऐसी ही है जैसे तैरना जाने बगैर

मज़ाहिब के बारे में शैतान की चालें छुपी नहीं हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।"

दरिया की मौजों और लहरों पर सवार होने के और शैतान की फरेब कारियाँ जो अकाइद और मज़ाहिब से...

1 कन्ज़ुल उम्माल बहवाला इब्ने असाकिर अन इब्ने अब्बास हदीस 29011 मुअस्ससतुर् रसाला बेरुत 10/192 2 अल-हदीकतुल नदिय्याह, किस्म इक्कीस, अवाम का खुदा की ज़ात और सिफात की हकीकत के बारे में सवाल और तफ्तीश करना, अल-मकतबतुल नूरिया रज़विया फैसलाबाद 2/470

اور خود اکثر یہ جو پیر و مشائخ بنتے ہیں طوطے کی طرح چند لفظ یاد کرلینے کے سوا معانی کی ہوا سے بھی مس نہیں رکھتے پھر کون سکھائے گا اور کون سیکھے گا۔ ہاں یہ ضرور ہوگا کہ ایک تو ان ان گھڑ بتانے والوں کی کج فہمی کہ مطلب کچھ ہے اور سمجھے کچھ ، دوسرے ان معانی کے لئے الفاظ کی نایابی کہ وہ اکثر حال ہے نہ قال۔ تیسرے اس پر طرہ کہ ان صاحبوں کی کج بیانی کہ جس قدر دونوں پہلو حق و حقیقت کے سنبھالے ہوئے بیان میں لاسکتے تھے یہ بتانے والے حضرات اتنے پر بھی قدرت نہیں رکھتے اور اگر قدرت ہو بھی تو حفظ دین و ایمان کی پروا کسے ، چوتھے ان سب پر بالا ان جاہلوں بے تمیزوں کی کودنی جنہیں یہ حقائق و دقائق سکھائے جائیں گے انہیں ابھی سیدھے سیدھے احکام سمجھنے کے لالے ہیں ان متشابہات کو کون سمجھے گا۔ غرض اس کا اثر ضرور ان کا بگڑنا فتنے میں پڑنا زندیق مرتد یا ادنیٰ درجہ گمراہ بد دین ہو جانا ہو گا و بس۔ حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں :

ماأنت محدث قوماً حدیثاً لا تبلغه یعنی جب تو کسی قوم کے آگے وہ بات بیان کرے گا جس تک عقولهم الاکان علی بعضهم فتنة. - ان کی عقلیں نہ پہنچیں تو ضرور وہ ان میں کسی پر فتنہ ہوگی رواه ابن عساکر عن ابن عباس (امام ابن عساکر نے حضرت عبداللہ ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ رضي الله تعالی عنهما۔ عنہما سے اسے روایت کیا ت)

امام حجتہ الاسلام محمد غزالی پھر علامہ منادی شارح جامع صغیر پھر سیدی عبدالغنی نابلسی حدیقہ میں فرماتے ہیں :

ان العامي اذا زنى او سرق خيراله من ان يتكلم في العلم بالله من غير اتقان فيقع في الكفر من حيث لا يدري كمن يركب لجة البحر ولا يوف السباحة و مكائد الشيطان فيما يتعلق بالعقائد والمذاهب لا تخفى - والله تعالى اعلم۔

کوئی عام آدمی بدکاری اور چوری کرے تو باوجود گناہ ہونے کے اس کے لئے یہ عمل اتنا مہلک اور تباہ کن نہیں جتنا بلا تحقیق علم الہی کے بارے میں کلام کرنا مہلک ہے کیونکہ بلا تحقیق اور بغیر پختگی علم کے کہیں وہ کفر کا مرتکب ہو جائے گا اور اسے علم بھی نہیں ہوگا اس کی مثال ایسے ہی ہے جیسے تیرنا جانے بغیر دریا کی موجوں اور لہروں پر سوار ہونے کے ، اور شیطان کی فریب کاریاں جو عقائد اور مذاہب سے

1 کنز العمال بحوالہ ابن عساکر عن ابن عباس حدیث ۲۹۰۱۱ مؤسسة الرساله بیروت ۱۰ / ۱۹۲ 2 الحديقة الندية النوع الحادى والعشرون سؤال و تفتيش العوام عن كنه ذات الله وصفاته المكتبة النورية الرضوية فيصل آباد ۲ / ۴۷۰

Fatawa Razawiyya, Volume 24

They are related; nothing is hidden, and Allah Almighty knows everything well. (T)

Answer to the fourth question: Enjoining what is good and forbidding what is evil is certainly among the most important religious duties according to definitive Quranic texts. While it is obligatory, its abandoner is a sinner and disobedient, and like those disobedient ones, they are also deserving of worldly and otherworldly punishment. Numerous hadiths speak to this meaning, and the story of the Sabbath-breakers and others is mentioned in the Great Quran itself. Allah Almighty said:

Arabic	English Translation
"لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَى لِسَانِ دَاوُودَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ[1] كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُنْكَرٍ فَعَلُوهُ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ[2]"	"Those who disbelieved from among the Children of Israel were cursed by the tongue of David and Jesus, son of Mary. That was because they disobeyed and [habitually] transgressed. They used not to prevent one another from wrongdoing they did. How wretched was that which they were doing."

David (peace be upon him) prayed against the Sabbath-breakers: "O Allah! Curse them and make them a sign for people." They became monkeys. Jesus (peace be upon him) made the same prayer for the people of the Table (Ahl-e-Ma'idah), and they became pigs. We seek refuge in Allah, the Lord of the worlds. It is in the Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic	English Translation
"كلا والله لتأمرن بالمعروف ولتنهون عن المنكر أو ليضربن الله بقلوب بعضكم على بعض ثم ليلعننكم كما لعنهم۔ رواه أبو داؤد عن عبدالله بن مسعود رضي الله تعالى عنه هذا مختصر۔"	"No, by Allah, you must enjoin what is good and forbid what is evil, or else Allah will strike the hearts of some of you against others, and then He will curse you as He cursed them. (Narrated by Abu Dawood from Abdullah bin Masood, may Allah be pleased with him. This is an abridgement.)"

However, this enjoining and forbidding is neither obligatory for every individual nor in every circumstance. So, in the state of its non-obligatory nature, these rulings do not apply to its abandonment, but rather some...

---

[1] Al-Quran Al-Kareem 5/78 [2] Al-Quran Al-Kareem 5/79 [3] Sunan Abi Dawood, Kitab al-Malahim, Chapter of Enjoining and Forbidding, Aftab-e-Alam Press Lahore, 2/240

फ़तावा रज़विया, जिल्द २४

वे संबंधित हैं; कुछ भी छिपा नहीं है, और अल्लाह तआला सब कुछ अच्छी तरह जानता है। (त)

चौथे प्रश्न का उत्तर: नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना निश्चित रूप से निर्णायक कुरानी ग्रंथों के अनुसार महत्वपूर्ण धार्मिक कर्तव्यों में से एक है। जब यह अनिवार्य हो, तो इसे छोड़ने वाला पापी और अवज्ञाकारी है, और उन अवज्ञाकारियों की तरह वे भी सांसारिक और पारलौकिक दंड के पात्र हैं। कई हदीसें इस अर्थ पर बोलती हैं, और सब्त तोड़ने वालों (असहाब-ए-सब्त) और अन्य लोगों की घटना का उल्लेख स्वयं महान कुरान में है। अल्लाह तआला ने फरमाया:

अरबी	हिन्दी अनुवाद
"لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَى لِسَانِ دَاوُودَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ[1] كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُنْكَرٍ فَعَلُوهُ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ[2]"	"बनी इसराइल के काफिरों पर दाऊद और ईसा इब्न मरियम की जुबान से लानत की गई; यह उनकी नाफरमानियों और हद से आगे बढ़ने का बदला था। वे एक-दूसरे को किए गए बुरे कामों से रोकते नहीं थे, निश्चित रूप से उनका यह कार्य बहुत बुरा था।"

सब्त वालों (Ashab-e-Sabt) पर दाऊद अलैहिस्सलाम ने दुआ की: ऐ अल्लाह! उन पर लानत कर और उन्हें लोगों के लिए एक निशानी बना दे। वे बंदर बन गए। ईसा अलैहिस्सलाम ने दस्तरखान (Ahl-e-Maidah) वालों के लिए यही दुआ की, और वे सुअर बन गए। हम आलमीन के रब अल्लाह की पनाह माँगते हैं। हदीस में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

अरबी	हिन्दी अनुवाद
"كلا والله لتأمرن بالمعروف ولتنهون عن المنكر أو ليضربن الله بقلوب بعضكم على بعض ثم ليلعننكم كما لعنهم۔ رواه أبو داؤد عن عبدالله بن مسعود رضي الله تعالى عنه هذا مختصر۔"	"नहीं, खुदा की कसम, या तो तुम जरूर नेकी का हुक्म दोगे और जरूर बुराई से रोकोगे, या अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों को एक-दूसरे के खिलाफ मार देगा, फिर तुम सब पर अपनी लानत उतारेगा जैसे उन बनी इसराइल पर। (इमाम अबू दाऊद ने हजरत अब्दुल्ला इब्न मसूद रजी अल्लाह तआला अन्हु के हवाले से इसे रिवायत किया है, यह संक्षिप्त है)। (त)"

मगर यह हुक्म देना और रोकना न हर व्यक्ति पर फर्ज है न हर स्थिति में वाजिब, तो वाजिब न होने की स्थिति में इसके छोड़ने पर ये हुक्म नहीं बल्कि कुछ...

---

[1] अल-कुरान अल-करीम 5/78 [2] अल-कुरान अल-करीम 5/79 [3] सुनन अबी दाऊद, किताब अल-मलाहिम, नेकी का हुक्म देने और बुराई से रोकने का अध्याय, आफताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 2/240

पृष्ठ १६१/७२०

تعلق رکھتی ہیں کوئی ڈھکی چھپی نہیں ہیں، اور اللہ تعالٰی سب کچھ خوب جانتا ہے۔ (ت)

جواب سوال چہارم: امر بالمعروف و نہی عن المنکر ضرور بنصوصِ قاطعہ قرآنیہ اہم فرائض دینیہ سے ہے اور بحال وجوب اس کا تارک آثم و عاصی، اور ان نافرمانوں کی طرح خود بھی مستحق عذابِ دنیوی و اخروی۔ احادیثِ کثیرہ اس معنی پر ناطق ہیں اور اہل سبت و غیر ہم کا واقعہ خود قرآن عظیم میں مذکور۔ قال اللہ تعالٰی:

عربی متن	اردو ترجمہ
"لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَى لِسَانِ دَاوُودَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ[1] كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُنْكَرٍ فَعَلُوهُ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ[2]"	بنی اسرائیل کے کافروں پر لعنت پڑی داؤد و عیسٰی بن مریم کی زبان سے، یہ بدلہ تھا ان کی نافرمانیوں اور حد سے بڑھنے کا برے کام سے، ایک دوسرے کو منع نہ کرتے تھے ضرور ان کا یہ فعل سخت برا تھا۔

اصحابِ سبت پر داؤد علیہ الصلوٰۃ والسلام نے دعا کی: الٰہی! انہیں لعنت کر اور لوگوں کے لئے نشانی بنا دے۔ بندر ہو گئے۔ اہل مائدہ پر عیسٰی علیہ الصلوٰۃ والسلام نے یہی دعا کی، سور ہو گئے، والعیاذ باللہ رب العالمین۔ حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

عربی متن	اردو ترجمہ
"كلا والله لتأمرن بالمعروف ولتنهون عن المنكر او ليضربن الله بقلوب بعضكم على بعض ثم ليلعننكم كما	یوں نہیں، خدا کی قسم یا تو تم ضرور امر بالمعروف کرو گے اور ضرور نہی عن المنکر کرو گے یا ضرور اللہ تعالٰی تمہارے دل آپس میں ایک دوسرے پر مارے گا پھر تم سب پر

عربی متن **اردو ترجمہ**

لعنھم۔ رواہ ابوداؤد عن عبداللہ بن اپنی لعنت اتارے گا جیسی ان بنی اسرائیل پر۔ (امام ابوداؤد نے

مسعود رضی اللہ تعالی عنہ ہذا حضرت عبداللہ ابن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حوالہ سے

مختصر۔" اسے روایت کیا ہے، یہ مختصر ہے۔ (ت)

مگر یہ امر و نہی نہ ہر شخص پر فرض نہ ہر حال میں واجب، تو بحالِ عدم وجوب اس کے ترک

پر یہ احکام نہیں بلکہ بعض

---

[1] القرآن الکریم ۵/ ۷۸ [2] القرآن الکریم ۵/ ۷۹ [3] سنن ابی داؤد کتاب الملاحم باب الامر والنہی آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۲۴۰

In such cases, Shariah itself will encourage abandoning it, as when a greater fitna (mischief) would arise from it. Similarly, if one knows that it will be useless and ineffective, then it is not necessary to interfere unnecessarily, especially when an important matter is being reformed. For example, some people accustomed to wearing silk are leaning towards prayer or coming to learn Sunni beliefs, and they are so engrossed in wearing silk and following fashion that if you insist on it, they will never agree; at most, they will stop coming. Their desire for prayer and learning beliefs will also disappear. In such a state, they should be guided as much as possible, and for the rest, one should wait for the right time and situation. This is not abandoning commanding good and forbidding evil, but rather a strategy and effort for it.

"And Allah knows the corrupter from the reformer." [1] Allah Almighty is aware of both the mischief-maker and the reformer. "And Allah is Knowing of that within the breasts." [2] And He knows the secrets hidden in the chests. (T)

It is stated in Bustan al-Fuqaha of Imam Samarqandi, then in al-Muhit, then in al-Hindiyyah:

[Arabic Text]: Commanding good has several aspects. If one knows by his prevailing opinion that if he commands good, they will accept it from him and abstain from evil, then commanding is obligatory for him, and he cannot abandon it. If he knows by his prevailing opinion that if he commands them, they will slander and insult him, then abandoning it is better. Likewise, if he knows that they will beat him and he will not be patient with that, and enmity will occur between them and fighting will break out, then abandoning it is better. If he knows that if they beat him, he will be patient and not complain to...

[Urdu Text]: There are several types of commanding good. If someone, based on their strong suspicion, understands that if they command good, people will accept their word and refrain from sin, then in such a case, commanding good becomes obligatory on them, meaning there is no room to abandon it. And if the strong suspicion is that their commanding good will have the opposite effect—people will resort to accusations and verbal abuse—then in this case, it is better not to command good. Similarly, if one knows that in the case of commanding good, people will beat them up and they won't be able to bear it, and a situation of mutual enmity and civil war will arise, then such...

[Footnotes]: 1. The Holy Quran 2/220 2. The Holy Quran 3/154

फतवा-ए-रज़विया खंड २४

ऐसी स्थितियों में शरीयत ही इसे छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करेगी, जैसे कि यदि इससे कोई बड़ा फितना पैदा होता हो। इसी तरह, अगर कोई जानता है कि यह व्यर्थ और निष्प्रभावी होगा, तो व्यर्थ में दखल देना ज़रूरी नहीं है, विशेष रूप से जब कोई महत्वपूर्ण सुधार हो रहा हो। उदाहरण के लिए, रेशम पहनने के आदी कुछ लोग नमाज़ की ओर झुके हैं या सुन्नी अकीदे सीखने आए हैं, और वे रेशम पहनने और फैशन की पाबंदी में इतने लीन हैं कि यदि आप उन पर ज़ोर देंगे, तो वे कभी नहीं मानेंगे; ज़्यादा से ज़्यादा यह होगा कि वे आना छोड़ देंगे। नमाज़ की इच्छा और अकीदों को सीखने का शौक भी ख़त्म हो जाएगा। ऐसी स्थिति में, उन्हें यथासंभव मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए, और बाकी के लिए समय और स्थिति का इंतज़ार करना चाहिए। यह भलाई का आदेश देने और बुराई से रोकने का परित्याग नहीं है, बल्कि उसी के लिए एक रणनीति और प्रयास है।

"और अल्लाह बिगाड़ने वाले को सुधारने वाले से अलग पहचानता है।" [१] अल्लाह तआला फसादी और सुधारक दोनों से वाकिफ है। "और अल्लाह दिलों की बातों को खूब जानने वाला है।" [२] और वह सीने में छिपे राज को जानने वाला है। (त)

इमाम फकीह समरकंदी के बुस्तान, फिर मुहीत, फिर हिन्दिया में है:

[अरबी पाठ का अनुवाद]: भलाई का हुक्म देने के कई पहलू हैं। यदि कोई अपने प्रबल मत से जानता है कि यदि वह भलाई का हुक्म देता है, तो वे इसे स्वीकार करेंगे और बुराई से दूर रहेंगे, तो उसके लिए हुक्म देना अनिवार्य है, और वह इसे नहीं छोड़ सकता। यदि वह अपने प्रबल मत से जानता है कि यदि वह उन्हें हुक्म देता है, तो वे उसे बदनाम करेंगे और अपमानित करेंगे, तो इसे छोड़ना बेहतर है। इसी तरह, यदि वह जानता है कि वे उसे पीटेंगे और वह उस पर धैर्य नहीं रख पाएगा, और उनके बीच शत्रुता होगी और लड़ाई भड़क उठेगी, तो इसे छोड़ना बेहतर है। यदि वह जानता है कि यदि वे उसे पीटेंगे, तो वह धैर्य रखेगा और इसकी शिकायत नहीं करेगा...

[उर्दू पाठ का अनुवाद]: भलाई का हुक्म देने की कई किस्में हैं। अगर कोई अपने प्रबल अनुमान (ग़ालिब गुमान) के आधार पर समझता है कि यदि उसने भलाई का हुक्म दिया तो लोग उसकी बात मान लेंगे और गुनाह से बाज़ आ जाएंगे, तो ऐसी स्थिति में उस पर भलाई का हुक्म देना वाजिब होता है, यानी उसे छोड़ने की गुंजाइश नहीं होती। और अगर प्रबल अनुमान यह हो कि उसके भलाई के हुक्म का उल्टा असर होगा, लोग आरोप लगाने और गाली-गलौज करने लगेंगे, तो इस स्थिति में

भलाई का हुक्म न देना ही बेहतर है। इसी तरह अगर वह जानता है कि भलाई का हुक्म देने की स्थिति में लोग मारपीट करेंगे और वह इसे बर्दाश्त नहीं कर पाएगा और आपसी शत्रुता और गृहयुद्ध की स्थिति पैदा हो जाएगी, तो ऐसी...

[पाद टिप्पणियाँ]: १. अल-क़ुरआन अल-करीम २/२२० २. अल-क़ुरआन अल-करीम ३/१५४

पृष्ठ १६२ / ७२०

صور میں شرع ہی اسے ترک کی ترغیب دے گی جیسے جبکہ اس سے کوئی فتنہ اشد پیدا ہوتا ہو، یونہی اگر جانے کہ بے سود ہے کار گر نہ ہو گا تو خواہ مخواہ چھیڑنا ضرور نہیں خصوصاً جبکہ کوئی امر اہم اصلاح پذیر ہا ہو، مثلاً کچھ لوگ حریر کے عادی نماز کی طرف جھکے یا عقائد سنت سیکھنے آتے ہیں اور جب حریر و پابندی وضع میں ایسے منہمک ہیں کہ ان پر اصرار کیجئے تو ہر گز نہ مانیں گے غایت یہ کہ آنا چھوڑ دیں گے وہ رغبت نماز و تعلم عقائد بھی جائے گی تو ایسی حالت میں بقدر میسر انہیں ہدایت اور باقی کے لئے انتظار وقت و حالت، ترک امر و نہی نہیں بلکہ اسی کی تدبیر وسعی ہے۔

"وَاللّٰہُ یَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ط" 1 اللہ تعالٰی فسادی اور مصلح دونوں سے واقف ہے اور وہ سینے "وَاللّٰہُ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ" 2 میں پوشیدہ راز جاننے والا ہے۔ (ت)

بستان امام فقیہ سمرقند پھر محیط پھر ہندیہ میں ہے:

[Arabic]: ان الامر بالمعروف علی وجوہ ان کان یعلم با کبر رایہ لوامر بالمعروف یقبلون ذلك منہ ویمتنعون عن المنکر فالامر واجب علیہ ولا یسعہ ترکہ ولو علم باکبر رایہ انہ لو امرھم بذلك قذفوہ وشتموہ فترکہ افضل وکذلك لو علم انھم یضربونہ ولا یصبر علی ذلك ویقع بینھم عداوۃ ویھیج منہ القتال فترکہ افضل، ولو علم انھم لو ضربوہ وصبر علی ذلك ولا یشکو الی...

[Urdu]: امر بالمعروف کی متعدد قسمیں ہیں، اگر کوئی اپنے غالب گمان کی بنا پر سمجھتا ہے کہ اگر اس نے امر بالمعروف کیا تو لوگ اس کی بات تسلیم کریں گے اور گناہ سے باز آجائیں گے تو ایسی صورت میں اس پر امر بالمعروف واجب ہوتا ہے یعنی اسے ترک کرنے کی گنجائش نہیں

ہوتی اور اگر غالب گمان یہ ہو کہ اس کے امر بالمعروف کا الٹا اثر ہوگا لوگ الزام تراشی اور گالی گلوچ سے کام لیں گے تو اس صورت میں امر بالمعروف نہ کرنا افضل ہے۔ اسی طرح اگر جانتا ہے کہ امر بالمعروف کرنے کی صورت میں لوگ زد و کوب کریں گے اور یہ اسے برداشت نہیں کر سکے گا اور باہمی عداوت و خانہ جنگی کی صورت پیدا ہو جائے گی تو ایسی...

[حواشی]: 1 القرآن الکریم ۲/۲۲۰ 2 القرآن الکریم ۳/ ۱۵۴

Fatawa Rizvia Volume 24

[Arabic Quote]: "...one, then there is no harm in forbidding it, and he is a mujahid (struggler). And if he knows that they will not accept from him, and he does not fear being beaten or insulted, then he has a choice, but commanding [good] is better."[1]

In such a situation, it is better to abandon 'Amr bil Ma'roof' (commanding the good). And if he knows that people will become agitated and cause him pain, yet he will remain patient, endure the hardship, and will not complain to anyone, then there is no harm in practicing 'Amr bil Ma'roof' and 'Nahi anil Munkar' (forbidding the evil). Rather, in such a situation, his action will be considered like that of a Mujahid. And if he thinks that people will not listen to him, but there will also be no harsh reaction (meaning despite not listening, they won't resort to beating or verbal abuse), then in this case, he has the choice whether to enjoin the good or not. However, enjoining the good is better here. (T)

But if discipleship (peer-mureedi) is from the heart, then it is rare for a situation to arise where commanding and forbidding lead to harm. It is absolutely necessary for such leaders and guides to establish this important duty according to their ability. This is the fulfillment of the minimum right of following. Those who, despite having power and no fear of harm, have no concern for the actions (black and white) of their followers, but rather seek to keep them happy in all circumstances—whether because they themselves do not care for Sharia rulings, like many of today's free-spirited Sufis, or they don't enjoin Sharia adherence due to some worldly consideration, such as fearing for their meals (pulao and qorma) or hospitality—then such a person is certainly a 'pir' of misguidance (ghawayat) and not a guide (shaikh-e-hidayat). And Allah Almighty knows best.

Answer to the Fifth Question: Hindus are definitely idol-worshipping polytheists. They certainly prostrate to idols in worship. Even if, for the sake of argument, they don't, such veneration of idols still necessitates a decree of disbelief (kufr). Regarding them as intercessors in the Presence of Might is also kufr. Seeking intercession from them is also kufr, as such acts and words certainly do not emanate from a Muslim by consensus. No Muslim, nor any person of faith, holds such a belief regarding an idol. This is a clear denial of the Quran and opposition to the Most Merciful. It is stated in Sharh Fiqh al-Akbar:

[Arabic]: "Ibn al-Humam said: 'In short, it is joined to...'" | The researcher Ibn al-Humam stated: "The result is that the existence of faith..."

[1] Fatawa Hindiyyah, Book of Disliked Matters, Chapter 17, Noorani Kutub Khana Peshawar, 5/352-353.

फ़तावा रिज़विया जिल्द 24

[अरबी]: "...एक, तो इसे रोकने में कोई बुराई नहीं है और वह एक मुजाहिद है। और अगर उसे पता है कि वे उसकी बात नहीं मानेंगे, और उसे पीटे जाने या गाली दिए जाने का डर नहीं है, तो उसके पास विकल्प है, लेकिन आदेश देना (भलाई का) बेहतर है।"[1]

ऐसी स्थिति में भी 'अम्र बिल मारूफ' (भलाई का आदेश देना) को छोड़ देना ही बेहतर है। और अगर उसे मालूम है कि लोग उत्तेजित होकर उसे कष्ट पहुँचाएँगे, लेकिन वह धैर्य रखेगा, कठिनाई सहन करेगा और किसी से शिकायत नहीं करेगा, तो फिर 'अम्र बिल मारूफ' और 'नही अनिल मुनکر' (बुराई से रोकना) पर अमल करने में कोई हर्ज नहीं है। बल्कि ऐसी स्थिति में उसका कार्य एक मुजाहिद के कार्य की तरह माना जाएगा। और अगर वह समझता है कि लोग उसकी बात तो नहीं मानेंगे, लेकिन कोई कड़ी प्रतिक्रिया भी नहीं होगी (अर्थात न मानने के बावजूद वे मार-पीट या गाली-गलौज नहीं करेंगे), तो इस स्थिति में उसे अधिकार है कि वह 'अम्र बिल मारूफ' करे या न करे। हालाँकि, यहाँ 'अम्र बिल मारूफ' करना ही बेहतर है। (त)

लेकिन अगर पीरी-मुरीदी दिल से है, तो वहाँ ऐसी स्थिति का पैदा होना जहाँ आदेश देने और रोकने से नुकसान हो, स्पष्ट रूप से दुर्लभ है। ऐसे नेताओं और मार्गदर्शकों के लिए अपनी क्षमता के अनुसार इस महत्वपूर्ण कर्तव्य को निभाना अनिवार्य है। यही अनुसरण (इत्तेबा) के न्यूनतम अधिकार को पूरा करना है। जो लोग शक्ति होने और नुकसान का डर न होने के बावजूद अपने अनुयायियों के कार्यों (सही-गलत) से कोई सरोकार नहीं रखते, बल्कि हर हाल में उन्हें खुश रखना चाहते हैं—चाहे इसलिए कि वे खुद शरीयत के आदेशों की परवाह नहीं करते, जैसे आज के बहुत से स्वतंत्र सूफी, या किसी दुनियावी वजह से शरीयत की पाबंदी का नहीं कहते, जैसे आदेश देने या रोकने की स्थिति में अपने पुलाव-कोरमे या खातिरदारी के खो जाने का डर हो—तो वह निश्चित रूप से गुमराह करने वाला पीर है, न कि हिदायत देने वाला शेख। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

पाँचवें प्रश्न का उत्तर: हिन्दू निश्चित रूप से मूर्तिपूजक और मुशरिक हैं। वे निश्चित रूप से मूर्तियों को पूजनीय मानकर सजदा करते हैं। और मान लीजिए कि अगर वे ऐसा नहीं भी करते, तो मूर्तियों के प्रति इस तरह का सम्मान भी निश्चित रूप से कुफ्र (अविश्वास) का हुक्म लाता है। उन्हें अल्लाह की बारगाह में शफी (सिफारिशी) समझना भी कुफ्र है। उनसे शफाअत (सिफारिश) मांगना भी कुफ्र है, क्योंकि सर्वसम्मति से ऐसे कार्य और शब्द किसी मुस्लिम से प्रकट नहीं होते। न तो कोई मुसलमान

और न ही कोई धर्म को मानने वाला मूर्ति के प्रति ऐसा विश्वास रखता है। यह स्पष्ट रूप से कुरान को झुठलाना और रहमान (अल्लाह) का विरोध करना है। 'शरह फिकह अकबर' में लिखा है:

[अरबी]: "इब्न अल-हुमाम ने कहा: 'संक्षेप में, यह इससे जुड़ा है...'" | शोधकर्ता इब्न अल-हुमाम ने फ़रमाया: "नतीजा यह है कि ईमान का अस्तित्व..."

[1] फ़तावा हिन्दिया, किताबुल कराहियाह, अध्याय 17, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 5/352-353.

احد فلا بأس بأن ینھی عن ذلك وھو مجاھد ولو علم انھم لا یقبلون منه ولا یخاف منه ضربا ولا شتما فھو بالخیار والامر افضل ۱۔

صورت حال میں بھی امر بالمعروف کا ترک کر دینا افضل ہے۔ اور اگر اسے معلوم ہے کہ لوگ مشتعل ہو کر اسے اذیت پہنچائیں گے مگر وہ صبر کرلے گا اور سختی برداشت کرلے گا اور کسی سے شکوہ شکایت نہیں کرے گا تو پھر امر بالمعروف اور نہی عن المنکر پر عمل کرنے میں کوئی مضائقہ نہیں بلکہ ایسی صورت حال میں اس کا عمل ایک مجاہد کا سا عمل متصور ہوگا، اور اگر وہ یہ سمجھتا ہے کہ لوگ اس کی بات تو نہیں مانیں گے البتہ کسی سخت رَدِّ عمل کا اظہار بھی نہیں ہوگا (یعنی نہ ماننے کے باوجود مار پیٹائی اور گالی گلوچ سے کام نہیں لیں گے) تو اس صورت میں اسے اختیار ہے کہ امر بالمعروف سے کام لے یا نہ لے البتہ یہاں امر بالمعروف افضل ہے۔ (ت)

لیکن پیری مریدی اگر دل سے ہے تو وہاں ایسی صورت کا پیدا ہونا جس میں امر و نہی منجر بضرر ہوں ظاہراً نادر ہے ایسے متبوعوں مقتداؤں پر اس فرض اہم کی اقامت بقدر قدرت ضرور لازم ، اور اسی میں ادنیٰ اتباع کے حق سے ادا ہونا ہے جو باوصف قدرت وعدم مضرت ان کے سیاہ و سفید سے کچھ مطلب نہ رکھے بلکہ ہر حال میں خوش گزر ان کی ٹھہرائی خواہ یوں کہ خود ہی احکام شرعیہ کی پروانہ رکھتا ہو جیسے آج کل کے بہت آزاد متصوف یا کسی دنیوی لحاظ سے پابندی شرع کو نہ کہتا ہو جیسے در صورت امر و نہی اپنے پلاؤ و قورمے یا آؤ بھگت پر خائف تو یہ ضرور پیر غوایت ہے نہ کہ شیخ ہدایت۔ واللہ تعالی اعلم۔

جواب سوال پنجم : ہنود قطعاً بت پرست مشرک ہیں وہ یقیناً بتوں کو سجدہ عبادت کرتے ہیں اور بالفرض نہ بھی ہو تو بتوں کی ایسی تعظیم پر بھی ضرور حکم کفر ہے اور انہیں بارگاہ عزت میں شفیع جاننا بھی کفر، ان سے شفاعت چاہنا بھی کفر کہ قطعاً اجماعاً یہ افعال و اقوال کسی مسلم سے صادر نہیں ہوتے ، نہ کوئی مسلمان بلکہ کوئی اہل ملت بت کی نسبت ایسا اعتقاد رکھے اور اس میں صراحتًا تکذیب قرآن و مضادت رحمن ہے۔ شرح فقہ اکبر میں ہے :

قال ابن الهمام وبالجملة فقد ضم الی | محقق ابن الهمام نے فرمایا حاصل یہ ہے کہ وجود ایمان

۱ فتاوىٰ هندية كتاب الكراهة الباب السابع عشر نورانی کتب خانہ پشاور ۵ / ۳۵۲-۳۵۳

Fatawa Razawiyya Volume 24

Investigation of faith: Affirming matters where their violation is unanimously a violation of faith, such as abandoning prostration to an idol, killing a prophet, or showing disrespect towards a prophet, or towards the Holy Quran, or the Kaaba, etc. [Urdu text]: ...for this, the affirmation of a few matters will be appended, and any interference in them will be synonymous with an agreed-upon interference in faith, such as not prostrating to an idol, not killing any prophet, and not insulting a prophet, the Holy Quran, or the Kaaba etc. (T)

In 'Al-I'lam bi-Qawāti' al-Islam', from the principles of Imam al-Qarafi, it is stated: "This category [of prostration] has been established for a parent, even if at some time or in some law, so it constitutes a doubt that wards off takfir (charge of disbelief) from its performer. This is in contrast to prostrating to something like an idol or the sun, for neither it nor anything resembling it in veneration has been reported in any law. Therefore, there is no doubt, neither weak nor strong, for the perpetrator of such an act; he is a disbeliever. No consideration is given to the intention of seeking proximity in what the Sharia has not prescribed for its veneration, unlike that which the Sharia has prescribed for its veneration." (T) [Urdu text]: This category is established for a parent, even if it were in some time or some law, so this doubt will be a deterrent against the disbelief of the performer. In contrast, prostrating to something like an idol or the sun, because it and whatever resembles it in veneration has not been reported in any law, therefore, there is no weak or strong doubt for the performer of this act; the performer is simply a disbeliever. And that for whose veneration nothing has been reported in Sharia, the intention for proximity will not be considered, unlike that for whose veneration Sharia has been reported. (T)

In 'Shifa Sharif' it is stated: "Likewise, we declare as disbelieving every act concerning which the Muslims have reached a consensus that it only proceeds from a disbeliever, even if the person doing it professes Islam while performing that act, such as prostrating to an idol or the sun." [Urdu text]: Similarly, all such acts that are characteristic of disbelievers, if someone performs them despite claiming to be a Muslim, then Muslims are unanimous in declaring them a disbeliever, and we also declare them a disbeliever, such as [prostrating to] the moon,

Footnotes: 1. Manh al-Rawd al-Azhar Sharh Fiqh al-Akbar, Istihlal al-Ma'siyah wa law Saghira Kufr, Mustafa al-Babi Press, Egypt, p. 152. 2. Al-I'lam bi-Qawāti' al-Islam by Ibn Hajar Makki al-Haytami, Maktabat al-Haqiqah, Istanbul, Turkey, p. 348.

फतावा रज़विया, खंड 24

ईमान की तहकीक: उन बातों का इसबात (पुष्टि) करना जिनमें कमी होना सर्वसम्मति से ईमान में कमी के बराबर है, जैसे मूर्ति को सजदा न करना, नबी की हत्या न करना, या नबी, पवित्र कुरान या काबा का अपमान न करना आदि। [उर्दू पाठ]: ...के लिए कुछ बातों की पुष्टि को शामिल किया जाएगा और उनमें खलल डालना सर्वसम्मति से ईमान में खलल डालने के समान होगा, जैसे मूर्ति को सजदा न करना, किसी नबी की हत्या न करना, नबी या पवित्र कुरान या बैतुल्लाह शरीफ का अपमान न करना आदि। (त)

'एलाम बि-क़वाती' अल-इस्लाम' में इमाम क़राफ़ी के सिद्धांतों से वर्णित है: "यह श्रेणी (सजदा), माता-पिता के लिए प्रमाणित है, चाहे वह किसी भी काल या किसी शरीयत में हो, इसलिए यह कर्ता के लिए कुफ्र (अधर्म) को टालने का एक संदेह होगा। इसके विपरीत मूर्ति या सूर्य को सजदा करना है, क्योंकि न तो यह और न ही इसके जैसा कुछ सम्मान के तौर पर किसी भी शरीयत में आया है। इसलिए, ऐसा काम करने वाले के लिए कोई संदेह नहीं है, न कमज़ोर और न ही प्रबल, बस करने वाला काफ़िर है। और जिसकी महानता के लिए शरीयत में कुछ भी नहीं आया है, उसमें निकटता प्राप्त करने की मंशा पर ध्यान नहीं दिया जाएगा, उसके विपरीत जिसकी महानता के लिए शरीयत में वर्णन आया है।" (त) [उर्दू पाठ]: यह श्रेणी, माता-पिता के लिए प्रमाणित है भले ही किसी समय या किसी शरीयत में हो, अतः यह संदेह कर्ता के लिए कुफ्र को टालने वाला होगा। इसके विपरीत मूर्ति या सूर्य को सजदा करना है क्योंकि वह और जो भी सम्मान में उसके समान हो, किसी शरीयत में वर्णित नहीं हुआ, इसलिए इस कार्य को करने वाले के लिए कोई कमज़ोर या प्रबल संदेह नहीं है, बस करने वाला काफ़िर है और जिसके सम्मान के लिए शरीयत में कुछ वर्णित नहीं हुआ, उसे निकटता प्राप्त करने के उद्देश्य के लिए नहीं देखा जाएगा, उसके विपरीत जिसके सम्मान के लिए शरीयत आई है। (त)

'शिफा शरीफ' में उल्लेख है: "इसी तरह हम हर उस कार्य के लिए काफ़िर करार देते हैं जिस पर मुसलमानों की आम सहमति है कि वह केवल काफ़िर से ही होता है, भले ही उसे करने वाला इस्लाम का दावा करता हो, जैसे मूर्ति और सूर्य को सजदा करना।" [उर्दू पाठ]: इसी तरह वे सभी कार्य जो काफ़िरों से होते हैं, यदि कोई इस्लाम का दावा करने के बावजूद वे कार्य करे, तो उसके काफ़िर होने पर मुसलमानों की आम सहमति है और हम भी उसे काफ़िर करार देते हैं जैसे चाँद,

फुटनोट्स: 1. मन्ह अल-रौद अल-अज़हर शरह फ़िक़्ह अल-अकबर, इस्तिहलाल अल-म'सिया व लौ सग़ीरा कुफ़्र, मतबा मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, पृ. 152 2. अल-इलाम बि-क़वाती अल-इस्लाम, इब्न हजर मक्की अल-हेतमी, मकतबतुल हक़ीक़ा इस्तांबुल तुर्की, पृ. 348

720 में से पृष्ठ 164

تحقیق الایمان اثبات امور الاخلال بھا اخلال بالایمان اتفاقا، کترک السجود لصنم و قتل نبی او الاستخفاف بہ او بالمصحف او الکعبۃ الخ۔ کے لئے چند امور کے اثبات کا انضمام کیا جائے گا اور ان میں خلل اندازی بالاتفاق ایمان میں خلل اندازی کے مترادف ہوگی جیسے بت کو سجدہ نہ کرنا، کسی نبی کو قتل نہ کرنا، نبی یا مصحف یا بیت اللہ شریف کی توہین نہ کرنا الخ۔ (ت)

اعلام بقواطع الاسلام میں قواعد امام قرافی سے ہے: ھذا الجنس قد ثبت للوالد ولو فی زمن من الازمان وشریعۃ من الشرائع فکان شبھۃ دارئۃ لکفر فاعلہ بخلاف السجود لنحو الصنم او الشمس فانہ لم یرد ھو ولا ما یشا بھہ فی التعظیم فی شریعۃ من الشرائع فلم یکن لفاعل ذلک شبھۃ لا ضعیفۃ ولا قویۃ فکان کافرا ولا نظر لقصد التقرب فیما لم ترد الشریعۃ بتعظیمہ بخلاف من وردت بتعظیمہ۔ یہ جنس، والد کے لئے ثابت ہے اگرچہ کسی زمانے یا کسی شریعت میں ہو پس یہ شبہ کفر فاعل کے لئے دافع ہوگا۔ بخلاف اس کے کہ مثل بت یا سورج کو سجدہ کیا جائے کیونکہ وہ اور جو بھی اس کے مشابہ ہو تعظیم میں، کسی شریعت میں وارد نہیں ہوا لہٰذا اس کام کے کرنے والے کے لئے کوئی ضعیف اور قوی شبہ نہیں بس کرنے والا کافر ہے اور جس کی تعظیم کے لئے شریعت میں کچھ وارد نہیں ہوا ارادہ تقرب کے لئے اسے نہیں دیکھا جائے گا، بخلاف اس کے جس کی تعظیم کے لئے شریعت وارد ہوئی۔ (ت)

شفا شریف میں ہے: کذلک نکفر بکل فعل اجمع المسلمون انہ لا یصدر الامن کافر وان کان صاحبہ مصرحا بالاسلام مع فعلہ ذلک الفعل السجود للصنم وللشمس۔ اسی طرح سب ایسے کام جن کا صدور کفار سے ہوتا ہے اگر وہ دعوی اسلام کے باوجود وہ کام کرے تو اس کی تکفیر پر مسلمانوں کا اتفاق ہے اور ہم بھی اس کی تکفیر کرتے ہیں جیسے چاند،

حواشى: 1 منح الروض الازهر شرح فقه الاكبر استخلال المعصية و لوصغيرة كفر مطبع مصطفى البابي مصر ص ١٥٢ 2 الاعلام بقواطع الاسلام لابن حجر مكى الهيتمى مكتبة الحقيقة استنبول تركى ص ٣٤٨

Fatawa-e-Razvia, Volume 24

...and the moon, and the cross, and fire, etc. Prostrating before the sun, or any idol, or the cross, and fire, etc. (T)

In it is stated: Every statement that clearly expresses the denial of Rububiyah (Lordship) or Wahdaniyah (Unity), or expresses the worship of someone other than Allah, or worship along with Allah, is disbelief (kufr). Such as the statements of the materialists (Dahriya) and those among the polytheists of Arabia who became polytheists due to idol worship, and the statements of the people of India and China. (Summarized) (T)

The claim that remembrances (Azkar), thoughts (Afkar), and meditations (Muraqabat) are taken from yogis is a nonsensical fabrication. No divine book can be established based on 'maybe' and 'possibly'. No explicitly polytheistic and idol-worshipping nation can be considered 'People of the Book' based on 'ifs' and 'buts'. Anyone who denies the polytheism (shirk) and disbelief (kufr) of the Hindu polytheists, and follows these forsaken statements that manifest the veneration and intercession of idols, is surely a deviant, misguided, heretic, and disbeliever. We seek refuge in Allah Almighty. In Ash-Shifa Sharif, it is mentioned:

Therefore, we declare takfir (disbelief) upon those who follow religions other than that of the Muslims, or hesitate or doubt regarding them, or validate their religion. Even if, despite this behavior, they profess Islam, hold it as their belief, and consider every religion other than their own to be false—they are disbelievers because they have expressed something that is contrary to what was manifest from them. (T)

1. Ash-Shifa bi Ta'rif Huquq al-Mustafa, Section explaining what constitutes such statements, Al-Matba'at ash-Sharikat an-Nu'maniya, 2/272.
2. Ash-Shifa bi Ta'rif Huquq al-Mustafa, Section explaining what constitutes such statements, Al-Matba'at ash-Sharikat an-Nu'maniya, 2/268.
3. Ash-Shifa bi Ta'rif Huquq al-Mustafa, Section explaining what constitutes such statements, Al-Matba'at ash-Sharikat an-Nu'maniya, 2/271.

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 24

...और चाँद, और सलीब (क्रॉस), और आग इत्यादि। सूरज या किसी मूर्ति या सलीब और आग आदि के सामने सजदा करना इत्यादि (त)

उसी में है: हर वो कथन जिससे रबूबियत (प्रभुता) या वहदानियत (एकेश्वरवाद) के इनकार की स्पष्ट व्याख्या और प्रकटीकरण हो, या अल्लाह तआला के अलावा किसी की इबादत या अल्लाह तआला की इबादत के साथ किसी और की इबादत करना कुफ्र है। जैसे दहरियों (नास्तिकों) की बातें और अरब के मुशरिकों में से उन लोगों की बातें जो मूर्ति पूजा के कारण मुशरिक हुए और भारत और चीन के लोगों की बातें। (संक्षेप में) (त)

अज़कार, अफ़कार और मुराक़बात (ध्यान-साधना) का योगियों से लिया जाना एक बेतुका आरोप है। 'संभवतः और 'शायद' से कोई आसमानी किताब साबित नहीं हो सकती। 'अगर-मगर' से कोई स्पष्ट मुशरिक और मूर्तिपूजक कौम 'अहल-ए-किताब' नहीं हो सकती। जो हिंदू मुशरिकों के शिर्क और कुफ्र का इनकार करे और मूर्तियों के सम्मान और शफ़ाअत (सिफारिश) के इन ठुकराए हुए कथनों का समर्थक हो, वह निश्चित रूप से धर्मभ्रष्ट, गुमराह, मुलहिद (नास्तिक) और काफ़िर है। अल्लाह तआला की पनाह। शिफ़ा शरीफ़ में है:

इसलिए हम उन लोगों की तकफ़ीर करते हैं (उन्हें काफ़िर घोषित करते हैं) जो इस्लाम के अलावा दूसरे धर्मों का तरीका अपनाते हैं, या उनके मामले में हिचकिचाते या संदेह करते हैं, या उनके धर्म को सही मानते हैं। भले ही वे इस व्यवहार के बावजूद इस्लाम प्रकट करें और उस पर विश्वास रखें, और अपने धर्म के अलावा हर दूसरे धर्म को गलत समझें—वे लोग काफ़िर हैं क्योंकि उन्होंने उस चीज़ का इज़हार किया जो उनके ज़ाहिर के खिलाफ था। (त)

1. अश्-शिफ़ा बि-तारीफ़ हुक़ूक़ अल-मुस्तफ़ा, उन लेखों के विवरण पर अध्याय जो इसके अंतर्गत आते हैं, अल-मत्ब'अत अश्-शरिकत अन-नु'मानिया, 2/272।
2. अश्-शिफ़ा बि-तारीफ़ हुक़ूक़ अल-मुस्तफ़ा, उन लेखों के विवरण पर अध्याय जो इसके अंतर्गत आते हैं, अल-मत्ब'अत अश्-शरिकत अन-नु'मानिया, 2/268।
3. अश्-शिफ़ा बि-तारीफ़ हुक़ूक़ अल-मुस्तफ़ा, उन लेखों के विवरण पर अध्याय जो इसके अंतर्गत आते हैं, अल-मत्ब'अत अश्-शरिकत अन-नु'मानिया, 2/271।

والقمر والصلیب والنار الخ۔ سورج یا کسی بت یا صلیب اور آگ وغیرہ کے آگے سجدہ کرنا الخ (ت)

اسی میں ہے: کل مقالة صرحت بنفی الربوبیة او الوحدانیة او عبادة احد غیر الله او مع الله فہی کفر کمقالة الدھریة والذین اشر کوا بعبادة الاوثان من مشرکی العرب واھل الھند والصین اھ مختصرًا۔ ہر ایسی گفتگو جس سے نفی ربوبیت یا نفی الوہیت کی تصریح اور اظہار ہوتا ہو یا اللہ تعالٰی کے سوا کسی کی عبادت یا اللہ تعالٰی کی عبادت کے ساتھ کسی اور کی عبادت کرنا کفر ہے جیسے دہریوں کی گفتگو اور مشرکین عرب میں سے ان لوگوں کی گفتگو جو بت پرستی کی وجہ سے مشرک ہوئے اور اہل ہند اور اہل چین کی گفتگو اھ مختصراً (ت)

اذکار افکار مراقبات کا جوگیوں سے لیا جانا افترائے بیہودہ ہے اور ممکن و شاید سے کوئی کتاب آسمانی نہیں ٹھہر سکتی نہ لیت ولعل سے کوئی صریح مشرک بت پرست قوم کتابی مشرکین ہنود کے شرک و کفر کا منکر ان اقوال مخذولہ تعظیم و شفاعت اصنام کا مظہر ضرور بددین گمراہ ملحد کافر ہے، والعیاذ باللہ تعالٰی۔ شفا شریف میں ہے:

ولھذا نکفر من دان بغیر ملة المسلمین من الملل او وقف فیھم او شك او صحح مذھبھم وان اظھر مع ذلك الاسلام واعتقدہ واعتقد ابطال کل مذھب سواہ فھو کافر باظھارہ من خلاف ذلک۔ لہذا ہم ان لوگوں کی تکفیر فرماتے ہیں جو ملت اسلامیہ نہ رکھنے والوں کا طریقہ اختیار کرتے ہیں یا ان کے معاملہ میں توقف یا شک کرتے ہیں یا ان کے مذہب کو صحیح قرار دیتے ہیں اگرچہ باوجود اس روش کے اسلام کا اظہار کریں اور اس پر عقیدہ رکھیں اور اپنے بغیر ہر مذہب کو باطل یقین کریں یہ لوگ کافر ہیں اس لئے کہ انہوں نے اس چیز کا اظہار کیا جس کے خلاف ان سے ظاہر ہوا۔ (ت)

1 الشفاء بتعريف حقوق المصطفٰى فصل فى بيان ما هو من المقالات المطبعة الشركة النعمانية ٢/ ٢٧٢

2 الشفاء بتعريف حقوق المصطفٰى فصل فى بيان ما هو من المقالات المطبعة الشركة النعمانية ٢/ ٢٦٨

3 الشفاء بتعريف حقوق المصطفٰى فصل فى بيان ما هو من المقالات المطبعة الشركة النعمانية ٢/ ٢٧١

How strange is the Glory of Allah! This impure and audacious statement, i.e., equating the Prophets (peace and blessings be upon them) with idols, God forbid, was first written by a wicked person to declare Muslims as polytheists (Mushrik). He argued that idolaters also sought intercession and became polytheists by performing similar acts with idols; since these people (Muslims) do the same with Prophets and Saints, they and Abu Jahl are equal in polytheism. Now, this same rejected and accursed saying has been used by another to declare polytheists as Muslims, saying that seeking intercession from idols and honoring them, even to the extent of prostration, is not disbelief (kufr), because Muslims also honor the Prophets (peace and blessings be upon them) and seek intercession from them. "There is no power or strength except with Allah, the Most High, the Most Great. We ask Allah for forgiveness and well-being." (There is no power to avoid sins and no strength to adopt virtue except with the guidance of Allah the Most High, the Exalted in status and Great in Power. We ask Allah the Most High for forgiveness and well-being. - Translator). And Allah the Most High knows best.

The treatise on the issues of Sama' has ended.

अल्लाह की कैसी अजब शान है! यह नापाक और बेबाक बात, यानी नबियों (अलैहिमुस्सलाम) को बुतों के बराबर ठहराना, अल्लाह की पनाह, पहले एक खबीस (दुष्ट) ने मुसलमानों को मुशरिक (बहुदेववादी) ठहराने के लिए लिखी थी। उसने कहा कि बुतपरस्त भी शफ़ाअत (सिफारिश) चाहते थे और बुतों के साथ ऐसे ही कार्य करके मुशरिक हुए; ये लोग (मुसलमान) यही बातें नबियों और वलियों के साथ करते हैं, तो ये और अबू जहल शिर्क(बहुदेववाद) में बराबर हैं। अब इसी मर्बूद (तिरस्कृत) और मलऊन (शापित) बात को दूसरे ने मुशरिकों को मुसलमान ठहराने के लिए कहा कि बुतों से शफ़ाअत चाहना और उनकी ताज़ीम (सम्मान) यहाँ तक कि उन्हें सजदा करना कुफ्र नहीं है, क्योंकि मुसलमान भी तो नबियों (अलैहिमुस्सलाम) की ताज़ीम करते हैं और उनसे शफ़ाअत माँगते हैं। 'ला हौल वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम' (अल्लाह के सिवा कोई शक्ति और सामर्थ्य नहीं है जो महान और श्रेष्ठ है)। 'नसअलुल्लाह अल-अफ्वा वल-आफिया' (हम अल्लाह से माफी और भलाई माँगते हैं)। (गुनाहों से बचने और नेकी अपनाने की ताकत सिवाय अल्लाह तआला की तौफीक के किसी में नहीं है जो ऊँचे मर्तबे और अज़ीम कुदरत वाला है। हम अल्लाह तआला से अफ़्व (माफ़ी) और आफ़ियत माँगते हैं। - टी)। वल्लाहु तआला आलम (अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

समाअ के मसाइल का रिसाला समाप्त हुआ।

पेज 166 ऑफ़ 720

عجب شانِ الٰہی ہے یہی ناپاک و بیباک بات یعنی اصنام سے انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام کو معاذ اللہ ملانا پہلے ایک خبیث نے مسلمانوں کو مشرک بنانے کے لئے لکھی تھی کہ بت پرست بھی شفاعت خواہ ہی اور اس کے مثل افعال ہی بتوں سے کر کے مشرک ہوئے، یہی باتیں یہ لوگ انبیاء اولیاء کے ساتھ کرتے ہیں تو یہ اور ابو جہل شرک میں برابر ہیں، اب یہی مردود و ملعون قول دوسرے نے مشرکوں کو مسلمان ٹھہرانے کے لئے کہا کہ بتوں سے شفاعت خواہ ہی ان کی تعظیم حتی کہ انہیں سجدہ کفر نہیں کہ مسلمان بھی تو انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام کی تعظیم کرتے ان سے شفاعت مانگتے ہیں ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم نسأل اللہ العفو والعافیۃ (گناہوں سے بچنے اور نیکی اپنانے کی طاقت بجز اللہ تعالٰی بلند مرتبہ عظیم القدر کی توفیق کے کسی میں نہیں ہم اللہ تعالٰی سے عفو و عافیت مانگتے ہیں۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

رسالہ مسائل سماع ختم ہوا۔

Fatawa Razawiya Volume 24

Enjoining Good and Forbidding Evil

Issue 74: From Katra Post Office, Obra District, Gaya; sent by Maulvi Syed Karim Khan Sahib, 1st Jamadi-ul-Ukhra 1317 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: In the courtyard of a Muslim landlord, a Kayastha resides due to being employed by the same landlord. He frequently sounds a conch (Naquos) there, and the landlord does not stop him from doing so. Will that landlord be considered a sinner due to his 'contentment with disbelief' (Raza bil-Kufr) or not? Explain and be rewarded. (T)

The Answer:

Undoubtedly, he is a sinner and a severe one, for removing an evil (munkar) is obligatory according to one's power. Especially such an evil as the shirk (polytheism) of disbelievers, the worship of idols, and misconduct—we seek refuge in Allah, the Almighty, the Oft-Forgiving. Even if, hypothetically, having employed him, the landlord is unable to forbid him, he is certainly capable of terminating his employment. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

"May Allah's curse be upon the one who provides shelter to a criminal (one who innovates in religion or commits a crime)." (Narrated by Imam Ahmad, Muslim in his Sahih, and An-Nasa'i on the authority of Ali, may Allah honor his face.)

May Allah's curse be upon the one who provides shelter to a religious criminal. (Imam Ahmad and Muslim narrated it in their Sahih, and An-Nasa'i narrated it from Hazrat Ali (Karam Allahu Wajhahu). T). And Allah knows best.

---

[1] Musnad Imam Ahmad bin Hanbal on the authority of Ali ibn Abi Talib (Radi Allahu Anhu), Al-Maktab al-Islami, Beirut, 1/108; Sahih Muslim, Book of Sacrifices, Chapter on the Prohibition of Slaughtering for other than Allah, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 2/160-161.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना

मसला 74: कटरा डाकखाना ओबरा जिला गया से मौलवी सैयद करीम खान साहब द्वारा प्रेषित, 1 जमादी-उल-उखरा 1317 हिजरी।

धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: एक मुस्लिम जमींदार की कचहरी में एक कायस्थ उसी जमींदार के यहाँ नौकरी के माध्यम से निवास कर रहा है। वह वहाँ शंख (नाकूस) बजाता है, और जमींदार उसे शंख बजाने से नहीं रोकता है। क्या वह जमींदार 'कुफ़्र पर रज़ामंदी' (रज़ा बिल-कुफ़्र) के कारण पापी होगा या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें। (त)

उत्तर:

निस्संदेह पापी और गंभीर पापी, क्योंकि अपनी शक्ति के अनुसार बुराई (मुनकर) को दूर करना अनिवार्य (फ़र्ज़) है। विशेष रूप से ऐसी बुराई जो काफ़िरों का शिर्क(बहुदेववाद), मूर्तियों की पूजा और कदाचार है—हम अल्लाह की शरण मांगते हैं जो शक्तिशाली और क्षमाशील है। यदि, गलत धारणा के अनुसार, उसे नौकरी पर रखकर वह रोकने में सक्षम नहीं है, तो वह उसे नौकरी से निकालने में तो सक्षम है ही। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:

"अल्लाह की लानत (अभिशाप) उस पर हो जो किसी अपराधी (धार्मिक अपराधी या नवाचारी) को शरण दे।" (इसे इमाम अहमद, मुस्लिम ने अपनी सहीह में और नसाई ने हज़रत अली (कर्रमल्लाहु वज्हुल करीम) से रिवायत किया है।)

अल्लाह की लानत उस पर जो किसी शरई मुजरिम (धार्मिक अपराधी) को पनाह दे। (इमाम अहमद और मुस्लिम ने अपनी सहीह में और नसाई ने हज़रत अली (कर्रमल्लाहु वज्हहु) से इसे रिवायत किया। त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

---

[1] मसनद इमाम अहमद बिन हंबल, अली इब्न अबी तालिब (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत 1/108; सहीह मुस्लिम, किताब अल-अदाही, बाब अल्लाह के अलावा किसी और के लिए ज़बह करने की मनाही, क़दीमी कुतुब खाना कराची 2/160-161।

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

امر بالمعروف و نہی عن المنکر

مسئلہ ۷۴: از کٹرہ ڈاکخانہ اوبرہ ضلع گیا مرسلہ مولوی سید کریم خاں صاحب غرہ جمادی الاخرٰی ۱۳۱۷ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک زمیندار مسلمان کی کچہری میں ایک کائستھ بذریعہ نوکری اسی زمیندار کے ہاں سکونت گزیں ہے اور اس میں ناقوس بجایا کرتا ہے اور وہ زمیندار ناقوس بجانے سے اس کو نہیں روکتا ہے تو وہ زمیندار رضا بالکفر کے باعث گنہگار ہوگا یا نہیں؟ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائے ت)

الجواب:

بیشک گنہگار اور سخت گنہگار کہ ازالہ منکر بقد ر قدرت فرض ہے خصوصاً منکر بھی کیسا کہ شرک کفار و عبادت بتان و ناہنجار، والعیاذ باللہ العزیز الغفار۔ یہ اگر بفرض غلط اسے نوکر رکھ کر منع پر قادر نہ ہو تو موقوف کرنے پر تو قادر ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

لعن اللہ من آوی محدثاً ۔ رواہ الامام احمد ۱ و مسلم فی صحیحہ والنسائی عن علی کرم اللہ تعالٰی وجہہ۔

اللہ کی لعنت اس پر جو کسی شرعی مجرم کو پناہ دے۔ (امام احمد اور مسلم نے اپنی صحیح میں اور نسائی نے حضرت علی کرم اللہ وجہہ سے اسے روایت کیا۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

---

۱ مسند امام احمد بن حنبل عن علی ابن ابی طالب رضی اللہ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۱ / ۱۰۸ ،

صحیح مسلم کتاب الاضاحی باب تحریم الذبح لغیر اللہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۶۱-۱۶۰

Fatawa Razawiya, Volume 24

Issue 48: From Calcutta, Dharmatala 122, sent by Mr. Muhammad Yunus, 8 Rajab 1327 AH.

Scholars of religion are asked: what is the state of a person like Zaid, who fulfills divine commands as much as possible but also commits forbidden acts? When questioned, he says: "Indeed, good deeds do away with misdeeds." (Al-Quran 11:114). Provide a ruling and be rewarded.

Answer: To use this noble verse as a justification for sin is the act of an arrogant and ignorant person.

| Allah Almighty said: "Satan made their deeds attractive to them."[2] and Allah Almighty said: "And let not the Deceiver deceive you about Allah."[3] | Allah Almighty said: Satan has made their (evil) deeds appear beautiful to them. And Allah Almighty said: O people! Let not the great deceiver, i.e., Satan, deceive you regarding Allah. (T) And Allah Almighty knows best. |

Issue 49: From Mumbai, Attar Gali corner, sent by Maulvi Hidayat Rasool Sahib, 21 Jamadi-ul-Akhra.

What do the scholars of religion and jurists of the clear Shariah say regarding this matter: Is enjoining good and forbidding evil—that is, preaching—and the audience listening to it with silence, presence of heart, and respect a recommended form of worship or not? And does someone who interrupts, creates a disturbance, or uses abusive language commit religious sacrilege or not? Please write based on the Quran, Hadith, and the sayings of scholars and earn the reward of both worlds.

Answer: For a religious scholar to enjoin good and forbid evil, providing religious counsel to God's servants—known as preaching—is indeed among the paramount duties of religion. Allah, the Mighty and Sublime, states:

| "You are the best nation produced [as an example] for mankind. You enjoin what is right and forbid what is wrong and believe in Allah."[4] | You are the best of all nations that have appeared among people, you command what is good and forbid what is evil, and you believe in Allah. |

---

[1] The Holy Quran 11/114 [2] The Holy Quran 8/48 and 27/24 [3] The Holy Quran 35/5 [4] The Holy Quran 3/110

फतावा रज़विया, जिल्द 24

मसला 48: कलकत्ता धरमतला 122 से, प्रेषक जनाब मोहम्मद यूनुस साहब, 8 रजब 1327 हिजरी।

दीन के उलेमा से सवाल है कि उस व्यक्ति का क्या हाल है, ज़ैद जहाँ तक हो सके ईश्वरीय आदेशों का पालन करता है लेकिन मना किए गए कार्यों का भी अपराधी है, और जब उससे कहा जाता है तो कहता है: "बेशक नेकियाँ बुराइयों को मिटा देती हैं।" (अल-कुरान 11:114)। उत्तर दें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: पाप के बचाव में इस पवित्र आयत को प्रमाण बनाना एक अहंकारी अज्ञानी का काम है।

| अल्लाह तआला ने फरमाया: "शैतान ने उनके लिए उनके कर्मों को आकर्षक बना दिया"[2] और अल्लाह तआला ने फरमाया: "और धोखेबाज़ (शैतान) तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखे में न डाले"[3] | अल्लाह तआला ने फरमाया: शैतान ने उनके लिए उनके करतूत (बुरे काम) खुशनुमा बना दिए हैं और अल्लाह तआला ने फरमाया: लोगो! तुम्हें खुदा तआला के मामले में वह बड़ा फरेबी यानी शैतान धोखे में न डाल दे। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। |

मसला 49: मुंबई अत्तार गली का नाका से, प्रेषक मौलवी हिदायत रसूल साहब, 21 जमादी-उल-उखरा।

दीन के उलेमा और शरई मुफ्ती इस मामले में क्या फरमाते हैं कि 'अम्र बिल मारूफ़ व नहीं अनिल मुनकर' यानी उपदेश देना और सभा के उपस्थित लोगों का उसे खामोशी और हृदय की एकाग्रता के साथ अदब से सुनना एक वांछित इबादत है या नहीं? और जो इसमें बाधा डाले, शोर मचाए, गालियां बके उसने धार्मिक अपमान किया या नहीं? कुरान व हदीस और उलेमा के कथनों से लिखें और दोनों जहानों का पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: एक दीन के विद्वान (आलिम) के लिए 'अम्र बिल मारूफ़ व नहीं अनिल मुनकर' करना, खुदा के बंदों को धार्मिक नसीहतें देना जिसे 'वाअज़' (उपदेश) कहते हैं, निश्चित रूप से दीन के सर्वोच्च कर्तव्यों में से है। अल्लाह अज़्ज़वजल फरमाता है:

| "तुम बेहतरीन उम्मत हो जिसे इंसानों के लिए निकाला गया है, तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो।"[4] | तुम उन सब उम्मतों से बेहतर हो जो लोगों में ज़ाहिर हुईं, भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मना करते हो और अल्लाह पर ईमान लाते हो। |

[1] अल-कुरान अल-करीम 11/114 [2] अल-कुरान अल-करीम 8/48 और 27/24 [3] अल-कुरान अल-करीम 35/5 [4] अल-कुरान अल-करीम 3/110

पृष्ठ 169 का 720

فتاوٰی رضویہ، جلد ۲۴

مسئلہ ۴۸: از کلکتہ دھرم تلا ۱۲۲ مرسلہ جناب محمد یونس صاحب ۸ رجب ۱۳۲۷ھ

علمائے دین سے سوال ہے کہ اس شخص کا کیا حال ہے، زید حتی الامکان اوامر الٰہی بجا لاتا ہے مگر نواہی کا بھی مرتکب ہوتا ہے اور جو اس سے کہا جاتا ہے تو کہتا ہے: "اِنَّ الْحَسَنٰتِ یُذْهِبْنَ السَّیِّاٰتِ" (بیشک نیکیاں برائیوں کو مٹا دیتی ہیں۔ ت) بینوا توجروا۔

الجواب: معصیت کے جواب میں اس آیت کریمہ کو دستاویز بنانا جاہل مغرور کا کام ہے۔

| قال اللہ تعالی "زَیَّنَ لَهُمُ الشَّیْطَانُ اَعْمَالَهُمْ"[2] وقال اللہ تعالی "وَلَا یَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ"[3] | اللہ تعالٰی نے فرمایا: شیطان نے ان کے لئے ان کے کرتوت (برے اعمال) خوشنما بنا ڈالے ہیں اور اللہ تعالٰی نے فرمایا: لوگو! تمہیں خدا تعالٰی کے معاملہ میں وہ بڑا فریبی یعنی شیطان دھوکے میں نہ ڈال دے۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔ |

مسئلہ ۴۹: از بمبئی عطار گلی کا نا کہ مرسلہ مولوی ہدایت رسول صاحب ۲۱ جمادی الاخرٰی

کیا فرماتے ہیں حضرات علمائے دین ومفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ امر بالمعروف و نہی عن المنکر کرنا یعنی وعظ کہنا اور حاضرین جلسہ کا اس کو خاموشی اور رجوع قلب کے ساتھ ادب سے سننا مندہب ہی عبادت ہے یا نہیں؟ اور جو اس میں دست اندازی کرے غل مچائے گالیاں بکے اس نے مذہبی توہین کی یا نہیں؟ قرآن و حدیث واقوال علماء سے لکھیں اور اجر دارین حاصل کریں۔

الجواب: عالم دین کا امر بالمعروف و نہی عن المنکر کرنا بندگان خدا کو دینی نصیحتیں کرنا جسے وعظ کہتے ہیں ضرور اعلٰی فرائض دین سے ہے۔ اللہ عزوجل فرماتا ہے:

| "كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللهِ"[4] | تم سب امتوں سے بہتر ہو جو لوگوں میں ظاہر ہوئیں حکم دیتے ہو بھلائی کا اور منع کرتے ہو برائی سے اور ایمان لاتے ہو اللہ پر۔ |

---

1 القرآن الکریم ۱۱/ ۱۱۴ 2 القرآن الکریم ۸/ ۴۸ و ۲۷/ ۲۴ 3 القرآن الکریم ۳۵/ ۵ 4 القرآن الکریم ۳/ ۱۱۰

Fatawa Razawiyya Volume 24

And He says: "And let there be [arising] from you a nation inviting to [all that is] good, enjoining what is right and forbidding what is wrong, and those will be the successful."[1] Translation: It is necessary that there should be a group among you who invite towards goodness, command what is right, and forbid from evil; and these are the ones who attain success.

And He says: "And remind, for indeed, the reminder benefits the believers."[2] Translation: Keep preaching, for preaching benefits the Muslims.

And for the audience, to continue listening with etiquette, silence, and presence of heart is also a religious worship and a divine duty. Allah Almighty says: "So give good tidings to My servants who listen to speech and follow the best of it."[3] Translation: Give glad tidings to My those servants who listen to the word attentively and then act upon the best of it.

Interfering in this, making a noise, or using foul language is certainly reprehensible and is specifically a habit of the irreligious disbelievers. Allah Almighty says: "And those who disbelieve say, 'Do not listen to this Quran and make noise therein that you may overcome.'"[4] Translation: The disbelievers said, 'Do not listen to this Quran and make a noise during its recitation; perhaps you will overcome.'

Shah Abdul Qadir Dehlawi, brother of Maulana Shah Abdul Aziz, writes under this verse in 'Maudih-ul-Quran': This is the tactic of the ignorant, to prevent others from listening by making noise[5].

"Then what is [the matter] with them that they are, from the reminder, turning away? As if they were..." Translation: What has happened to them that they turn away from the sermon, as if they were...

[1] Al-Quran Al-Karim 3/104 [2] Al-Quran Al-Karim 51/55 [3] Al-Quran Al-Karim 39/17-18 [4] Al-Quran Al-Karim 41/26 [5] Tafsir Maudih-ul-Quran on the translation of Shah Rafi-ud-Din, under the verse 'Wa qala alladhina kafaru la tasma'u...', Mumtaz Company, Lahore, 526.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

और वह फ़रमाता है: "और तुम में एक समूह ऐसा होना चाहिए जो नेकी की दावत दे, भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोके और यही लोग कामयाब होने वाले हैं।"[1] अनुवाद: लाज़िम है कि तुम में एक गिरोह ऐसा रहे जो नेकी की तरफ बुलाए और भलाई का हुक्म दे और बुराई से मना करे और यही लोग फ़लाह (सफलता) पाने वाले हैं।

और वह फ़रमाता है: "और नसीहत करते रहो, क्योंकि नसीहत ईमान वालों को फ़ायदा पहुँचाती है।"[2] अनुवाद: वअज़ (उपदेश) कहता रह कि वअज़ मुसलमानों को फ़ायदा देता है।

और सुनने वालों के लिए अदब, ख़ामोशी और दिल की तवज्जो के साथ उसे सुनते रहना भी धार्मिक इबादत और दीनी फ़र्ज़ है। अल्लाह अज़्ज़ा-व-जल्ल फ़रमाता है: "तो मेरे उन बन्दों को खुशखबरी दे दो, जो बात को ध्यान से सुनते हैं, फिर उसके सबसे अच्छे पहलू पर अमल करते हैं।"[3] अनुवाद: खुशखबरी दे मेरे उन बन्दों को जो मुतवज्जेह (एकाग्र) होकर बात सुनते हैं फिर उसके बेहतर पर अमल करते हैं।

इसमें दखलअंदाज़ी करना, शोर मचाना और गालियाँ देना यकीनन बुरा ही है और खास तौर पर बे-दीन काफ़िरों की आदत है। अल्लाह अज़्ज़ा-व-जल्ल फ़रमाता है: "और काफ़िरों ने कहा: इस क़ुरआन को न सुनो और इसके पढ़े जाने के दौरान शोर मचाओ, शायद तुम ग़ालिब आ जाओ।"[4] अनुवाद: काफ़िर बोले इस क़ुरआन को न सुनो और इसके पढ़े जाने में शोर-ओ-गुल करो शायद इसी तरह तुम ग़ालिब (प्रभावी) हो जाओ।

शाह अब्दुल क़ादिर देहलवी, जो मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब के भाई हैं, 'मौज़ेह-उल-क़ुरआन' में इस आयत के नीचे लिखते हैं: यह जाहिलों का ज़ोर है कि शोर मचाकर सुनने न देना[5]।

"तो उन्हें क्या हुआ कि वह नसीहत से मुँह फेरे हुए हैं? जैसे कि वे..." अनुवाद: उन्हें क्या हुआ, वअज़ से मुँह फेरे हुए हैं जैसे कि वे...

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 3/104 [2] अल-क़ुरआन अल-करीम 51/55 [3] अल-क़ुरआन अल-करीम 39/17-18 [4] अल-क़ुरआन अल-करीम 41/26 [5] तफ़सीर मौज़ेह-उल-क़ुरआन, शाह रफ़ी-उद-दीन के अनुवाद पर, आयत 'व काला अल्लाज़ीना कफ़रू ला तस्मऊ...' के तहत, मुमताज़ कंपनी, लाहौर, 526।

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۴

اور فرماتا ہے: "وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ" 1 لازم ہے کہ تم میں ایک گروہ ایسا رہے کہ نیکی کی طرف بلائے اور بھلائی کا حکم دے اور برائی سے منع کرے اور یہی لوگ فلاح پانے والے ہیں۔

اور فرماتا ہے: "وَ ذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ" 2 وعظ کہتا رہ کہ وعظ مسلمانوں کو فائدہ دیتا ہے۔

اور حاضرین کا ادب و خاموشی و رجوع قلب کے ساتھ اسے سنتے رہنا بھی مذہبی عبادت اور دینی فرض ہے، اللہ عزوجل فرماتا ہے: "فَبَشِّرْ عِبَادِ الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ اَحْسَنَهُ" 3 خوشخبری دے میرے ان بندوں کو جو متوجہ ہو کر بات سنتے پھر اس کے بہتر پر عمل کرتے ہیں۔

اس میں دست اندازی کرنا غل مچانا گالیاں بکنا ضرور مذموم ہی تو ہیں اور خاص عادت کفار بے دین ہے۔ اللہ عزوجل فرماتا ہے: "وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ" 4 کافر بولے اس قرآن کو نہ سنو اور اس کے پڑھے جانے میں غل شور کرو شاید یونہی تم غالب آؤ۔

شاہ عبد القادر صاحب دہلوی برادر مولانا شاہ عبدالعزیز صاحب موضح القرآن میں اس آیت کے نیچے لکھتے ہیں: یہ جاہلوں کا زور ہے شور مچا کر سننے نہ دینا 5۔

"فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِينَ كَأَنَّهُمْ" انہیں کیا ہوا وعظ سے منہ پھیرے ہیں گویا وہ

1 القرآن الکریم ۳/۱۰۴ 2 القرآن الکریم ۵۱/۵۵ 3 القرآن الکریم ۳۹/ ۱۸-۱۷ 4 القرآن الکریم ۴۱/۲۶ 5 تفسیر موضح القرآن بر ترجمہ شاہ رفیع الدین تحت آیۃ وقال الذین کفروا لاتسمعوا الخ ممتاز کمپنی لاہور ۵۲۶

Fatawa Razawiyya, Volume 24

"[They are] like startled donkeys, fleeing from a lion." 1 | They are like startled donkeys that have fled from a lion. Turning away from a sermon is like a donkey being startled by a lion; on top of that, making a commotion and hurling abuses – would that not be like dogs barking at the moon? A sermon is a sermon, for it is a religious obligation (fard) by the explicit text of the Holy Qur'an. It is clearly stated in religious books that listening to every sermon, including the marriage (nikah) sermon and the sermon for the completion (khatm) of the Qur'an, is also obligatory (fard), and making a disturbance during them is forbidden (haram), even though the nikah sermon is only a Sunnah and the khatm sermon is merely recommended (mustahabb). It is stated in Durr al-Mukhtar:

Similarly, listening to all sermons is obligatory according to the relied-upon opinion, such as the Friday sermon, the two Eids, marriage, completion of the Qur'an, etc. (Translator's Note)

In Radd al-Muhtar, it is said: The words of the author of Durr al-Mukhtar, "and completion" (wa khatmin), refer to the completion of the Qur'an, as is their practice to say at such occasions: "All praise is for Allah, Lord of the worlds, the praise of the patient ones." 3 etc. Meaning, praise is for that God who is the Sustainer of all the worlds, such a praise as is the praise of those who are patient. (Translator's Note)

In Tariqah Muhammadiyyah and its commentary Hadiqah Nadiyyah, under the types of prohibited speech, it is stated: The fifty-second type [of prohibited speech] is interrupting another's speech without Sharia necessity, especially when it concerns the discourse of religious knowledge. (It has already been mentioned that offering Salām to him), i.e., to the one sitting for the discourse of knowledge, (is a sin) because it involves interrupting a good discourse and causing distress to the Muslim speaker and the listeners. Similarly, for one sitting in a sermon assembly, speaking is also a sin, even if it is in a low voice. In the same way...

1. The Holy Qur'an 74/49, 50, and 51.
2. Durr al-Mukhtar, Kitab as-Salat, Chapter on Friday Prayer, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/113.
3. Radd al-Muhtar, Kitab as-Salat, Chapter on Friday Prayer, Dar Ihya at-Turath al-Arabi, Beirut, 1/551.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

"हुमुरुन मुस्तनफ़िरह, फ़ुर्रत मिन क़सवराह" 1 | भड़के हुए गधे हैं कि शेर से भागे हैं। वाज़ (उपदेश) से मुँह मोड़ना तो शेर से गधे का भड़कना ठहरा, इस पर शोर मचाना और गालियाँ बकना क्या चाँद पर कुत्तों का भौंकना न होगा। वाज़ तो वाज़ है कि वह क़ुरआन मजीद की स्पष्ट आयत से दीनी फ़र्ज़ है। दीनी किताबों में स्पष्ट उल्लेख है कि हर खुतबे (प्रवचन), निकाह के खुतबे और क़ुरआन खत्म होने के खुतबे को सुनना भी फ़र्ज़ है और उनमें शोर करना हराम है, जबकि निकाह का खुतबा सिर्फ सुन्नत है और खत्म का खुतबा केवल मुस्तहब (पसंदीदा) है। 'दुर्रे मुख्तार' में आया है:

इसी तरह विश्वसनीय मत के अनुसार सभी खुतबात का सुनना वाजिब है, जैसे जुमा का खुतबा, ईदैन, निकाह और खत्म-ए-क़ुरआन वगैरह। (त)

'रद्दुल मुहतार' में है: साहिबे दुर्रे मुख्तार का कथन 'व ख़त्मिन' से मुराद खत्म-ए-क़ुरआन है, जैसे इस अवसर पर उनका कहना है 'अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन हम्द-उस-साबरीन' 3। इत्यादि। यानी प्रशंसा उस खुदा के लिए है जो तमाम जहानों का पालनहार है, ऐसी प्रशंसा जो सब्र करने वालों की प्रशंसा जैसी हो। (त)

तारीक़ा-ए-मुहमदिया और उसकी शरह (व्याख्या) हदीक़ा-ए-नदिया में निषिद्ध बातचीत के प्रकारों में उल्लेख है: बातचीत का बावनवाँ (52वाँ) प्रकार बिना शरई ज़रूरत के दूसरे की बात काटना है, विशेषकर जब वह शरई इल्म (धार्मिक ज्ञान) की चर्चा में हो, और ऊपर गुज़र चुका कि उस पर उस समय सलाम करना भी गुनाह है क्योंकि इसमें उसी नेक बातचीत को काटना और बोलने वाले तथा सुनने वाले मुसलमानों को तकलीफ पहुँचाना है। इसी तरह जो वाज़ की मजलिस (सभा) में बैठा हो, उसके लिए भी बात करना गुनाह है चाहे वह धीरे ही हो। इसी तरह...

1. अल-क़ुरआन अल-करीम 74/49, 50 और 51
2. दुर्रे मुख्तार, किताबुस सलात, बाबुल जुमुआ, मतबा मुजतबाई, दिल्ली 1/113
3. रद्दुल मुहतार, किताबुस सलात, बाबुल जुमुआ, दार इह्याउत तुरासुल अरबी, बेरूत 1/551

पृष्ठ 171/720

"حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۵۰ فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ۵۱" 1 | بھڑکے ہوئے گدھے ہیں کہ شیر سے بھاگے ہیں۔ وعظ سے روگردانی تو شیر سے گدھے کا بھڑکنا ٹھہرے اس پر غل مچانا گالیاں بکنا کیا چاند پر کتوں کا بھونکنا نہ ہوگا ۔ وعظ تو وعظ کہ وہ بنصِ صریح قرآن مجید فرضِ مذہبی ہے کتبِ دینیہ میں تصریح ہے کہ ہر خطبے نکاح و خطبہ ختمِ قرآن کا سننا بھی فرض ہے اور ان میں غل کرنا حرام حالانکہ خطبہ نکاح صرف سنت ہے اور خطبہ ختم نرا مستحب۔ درمختار میں آیا ہے :

کذا یجب الاستماع لسائر الخطب کخطبۃ نکاح و خطبۃ عید وختم علی المعتمد 2۔ | اسی طرح معتمد قول کے مطابق تمام خطبات کا سننا واجب ہے مثلاً خطبہ جمعہ ، عیدین ، نکاح اور ختم قرآن وغیرہ۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے: قولہ وختم ای ختم القرآن کقولھم الحمدللہ رب العلمین حمد الصابرین 3۔ الخ | صاحبِ درمختار کا قول و خَتْمٍ سے مراد ختمِ قرآن ہے جیسے اس موقع پر ان کا کہنا ہے الحمد للہ رب العالمین حمد الصابرین یعنی تعریف اس خدا کے لئے جو تمام جہانوں کا پروردگار ہے ایسی تعریف جو صبر کرنے والوں کی تعریف جیسی ہو۔ (ت)

طریقہ محمدیہ اور اس کی شرح حدیقہ ندیہ میں انواع کلام ممنوع میں ہے: النوع الثانی والخمسون قطع کلام الغیر من غیر ضرورۃ خصوصاً اذا کان فی مذاکرۃ العلم الشرعی (وقد مر ان السلام علیہ) ای علی الجالس لمذاکرۃ العلم (اثم) لما فیہ من قطع الخیر وایذاء المسلم المتکلم والسامع (و کذا تکلم | یعنی کلام کا نوع پنجاہ و دوم بے ضرورت شرعیہ دوسرے کی بات کاٹنا ہے جبکہ وہ علم شرعی کے ذکر میں ہو، اور اوپر گزر چکا کہ اس پر اس وقت سلام کرنا بھی گناہ ہے کہ اس میں اسی

نیک کلام کا قطع کرنا اور قائل اور سامعین مسلمانوں کو ایذا دینا ہے یو ہیں جو مجلس وعظ میں بیٹھا ہو اسے بھی بات کرنا گناہ ہے اگر چہ آہستہ ہی ہو اسی طرح

1 القرآن الکریم ۷۴ / ۴۹، ۵۰ و ۵۱ 2 درمختار کتاب الصلوٰۃ باب الجمعہ مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۱۳ 3 ردالمحتار کتاب الصلوٰۃ باب الجمعہ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱ / ۵۵۱

Volume 24 Fatawa Razawiyya

(One who is sitting in a session of exhortation), i.e., sermon and reminder (even if done quietly. Likewise, merely turning away, moving, standing, or leaning without necessity - all of this is bad manners, frivolity, haste, and foolishness. Rather, it is mandatory to focus on him, remain silent, and listen until his speech concludes, without turning away, moving, or talking. Extracted in brief.)

Merely looking around without necessity, or making any movement or gesture, standing up, or leaning - all of these are insolence, discourtesy, frivolity (lightness of character), hastiness, and foolishness. Instead, it is mandatory to stay focused on him, listening silently and attentively until his speech is finished. Until then, do not look here or there, nor make any movement, nor speak at all.

When any movement or soft speaking without necessity during a sermon is considered insolence, discourtesy, and a sin, then how severe an insult would making a noise or swearing be? This would not just be an insult to the religious scholar who is preaching at that time, but rather it would be an insult to the religion of Islam itself and to our Holy Prophet (upon whom be the best of blessings and peace), because the pulpit of the sermon is in reality the pulpit of the Radiant Prophet, the Master of Messengers (may Allah the Exalted bless him and grant him peace). Allah Almighty says:

"O Prophet! We have sent you as a witness, a bearer of glad tidings, a warner, and as one who invites to Allah by His permission, and as a lamp-spreading light."

Giving glad tidings of good deeds, warning about evils, calling towards Allah according to the Sharia - this is the meaning of a sermon. And in the noble verse "And remind, for indeed the reminder benefits the believers" (Remind the people because reminding benefits the people of faith), the primary addressee is also the Holy Prophet (may Allah the Exalted bless him and grant him peace). The religious scholars perform this work as an inheritance from the Prophet, as the Prophet (peace be upon him) says:

"Verily, the scholars are the heirs of the Prophets." - Narrated. Indeed, scholars are the heirs of the Prophets, peace be upon them.

1. Al-Hadiqat al-Nadiyyah Sharh al-Tariqat al-Muhammadiyyah, Part 52: Interrupting the speech of another. Maktaba Nooria Razawiyya Faisalabad

2/350; Al-Tariqat al-Muhammadiyyah Sharh al-Tariqat al-Muhammadiyyah, Islamic Steam Press Lahore 2/92-93.

2. The Holy Quran 33/45 & 46.
3. The Holy Quran 51/55.

(जो उपदेश की सभा में बैठा हो), यानी नसीहत और याददिहानी (चाहे वह खामोशी के साथ ही क्यों न हो। इसी तरह बिना किसी ज़रूरत के इधर-उधर देखना, हिलना-डुलना, खड़ा होना या सहारा लेना - यह सब बदतमीज़ी, हल्कापन, जल्दबाज़ी और मूर्खता है। बल्कि यह अनिवार्य है कि उसकी ओर ध्यान दिया जाए, चुप रहकर सुना जाए जब तक कि उसका भाषण समाप्त न हो जाए, बिना इधर-उधर देखे, हिले-डुले या बात किए। संक्षेप में उद्धृत।)

बिना ज़रूरत केवल इधर-उधर देखना या कोई हरकत व जुम्बिश करना, खड़ा हो जाना या तकिया लगा लेना और ये सब गुस्ताख़ी, बदअदबी, ओछापन (हल्कापन), जल्दबाज़ी और बेवकूफ़ी है। बल्कि लाज़िम यही है कि उसी की तरफ़ तवज्जो किए खामोश कान लगाए सुनते रहें यहाँ तक कि उसका कलाम ख़त्म हो, उस वक़्त तक न इधर-उधर देखें न कोई जुम्बिश न असल में कुछ बात करें।

जब वअज़ (उपदेश) में बिना ज़रूरत मामूली हरकत और धीरे बात करना भी गुस्ताख़ी, बदअदबी और गुनाह ठहरे, तो शोर मचाना, गालियाँ बकना किस क़दर सख़्त तौहीन होगी? यह तौहीन उस आलिमे दीन (धार्मिक विद्वान) की तौहीन न होगी जो उस वक़्त वअज़ कर रहा है, बल्कि असल दीने इस्लाम और ख़ुद हमारे नबी-ए-अकरम (जिन पर बेहतरीन दुरूद व सलाम हो) की तौहीन ठहरेगी, क्योंकि वअज़ की मसनद (पीठ) वास्तव में हुज़ूर पुरनूर सैयद-उल-मुरसलीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मसनद है। अल्लाह अज़्ज़वजल फ़रमाता है:

"ऐ नबी! हमने तुझे भेजा गवाह बनाकर और ख़ुशख़बरी देता और डर सुनाता और अल्लाह की तरफ़ उसके हुक्म से बुलाता और रौशन आफ़ताब (सूरज)।"

नेकियों पर ख़ुशख़बरी देता, बुराइयों पर डर सुनाता, अल्लाह की तरफ़ शरीअत के मुताबिक़ बुलाता। यही वअज़ का अर्थ है। और आयते करीमा "और नसीहत कीजिए कि नसीहत ईमान वालों को फ़ायदा पहुँचाती है" में भी असल मुख़ातिब हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैं। आलिमे दीन यह काम हुज़ूर की विरासत से करते हैं, क्योंकि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

"बेशक विद्वान नबियों के वारिस हैं।" - रिवायत। बेशक विद्वान नबियों के वारिस हैं, उन पर सलाम हो।

1. अल-हदीक़त-उन-नदिय्या शरह-अत-तरीक़त-उल-मुहम्मदिया, भाग 52: दूसरे की बात काटना। मकतबा नूरिया रज़विया फ़ैसलाबाद 2/350; अत-तरीक़त-उल-मुहम्मदिया शरह-अत-तरीक़त-उल-मुहम्मदिया, मतबा इस्लामिया स्टीम प्रेस लाहौर 2/92-93।
2. अल-क़ुरआन अल-करीम 33/45 व 46।
3. अल-क़ुरआन अल-करीम 51/55।

पेज 172/720

من هو جالس في مجلس عظة) أي وعظ وتذكير (ولو مع الأخفاء وكذا مجرد التفاته وتحركه وقيامه واتكائه من غير حاجة وكل هذا سوء ادب وخفة وعجلة وسفه بل يتعين التوجه اليه والانصات والاستماع الى ان ينتهى كلامه بلا التفات ولا تحرك ولا تكلم ' اه مختصرا۔

صرف بے ضرورت ادھر ادھر دیکھنا یا کوئی حرکت و جنبش کرنا کھڑا ہو جانا یا تکیہ لگا لینا اور یہ سب گستاخی و بے ادبی اور ہلکا پن خفیف الحرکاتی اور جلد بازی اور حماقت ہے بلکہ لازم یہی ہے کہ اسی کی طرف توجہ کئے خاموش کان لگائے سنتے رہیں یہاں تک کہ اس کا کلام ختم ہو اس وقت تک نہ ادھر ادھر دیکھیں نہ کوئی جنبش نہ اصلاً کچھ بات کریں۔

جب وعظ میں مطلق حرکت اور آہستہ بات بے ضرورت بھی گستاخی وبے ادبی و گناہ ٹھہرے تو غل مچانا گالیاں بکنا کس قدر سخت توہین ہوگا یہ توہین اس عالم دین کی توہین نہ ہوگی جو اس وقت وعظ کرتا ہے بلکہ اصل دین اسلام اور خود ہمارے نبی اکرم علیہ افضل الصلوۃ والسلام کی توہین ٹھہرے گی کہ مسندِ وعظ اصل مسندِ حضور پر نور سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ہے۔ اللہ عزوجل فرماتا ہے:

"یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِیْرًا وَّ دَاعِیًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَ سِرَاجًا مُّنِیْرًا" اے نبی ! ہم نے تجھے بھیجا خوشخبری دیتا اور ڈر سناتا اور اللہ کی طرف اس کے حکم سے بلاتا اور آفتابِ روشنی پہنچاتا۔

نیکیوں پر مژدہ دیتا ، برائیوں پر ڈر سناتا ، اللہ کی طرف مطابق شریعت بلاتا۔ یہی معنی وعظ ہے اور آیہ کریمہ "وَ ذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِیْنَ" (لوگوں کو نصیحت کیجئے کیونکہ نصیحت کرنا

ایمان والوں کو فائدہ پہنچاتا ہے۔ ت) میں بھی اصل مخاطب حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ہیں یہ کام علمائے دین حضور کی وراثت سے کرتے ہیں کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

اِنَّ الْعُلَمَاءَ وَرَثَةُ الْاَنْبِیَاءِ - رواہ بے شک علماء انبیاء کے وارث ہیں علیہم الصلوۃ

1 الحدیقة الندیة شرح الطریقة المحمدیة النوع الثانی والخمسون قطع کلام الغیر مکتبہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲ / ۳۵۰، الطریقة المحمدیة شرح الطریقة المحمدیة مطبعہ اسلامیہ سٹیم پریس لاہور ۲ / ۹۲-۹۳ 2 القرآن الکریم ۳۳ / ۴۵ و ۴۶ 3 القرآن الکریم ۵۱ / ۵۵

Fatawa Razawiyya Volume 24

Abu Dawud and At-Tirmidhi narrated from Abu Darda (may Allah be pleased with him). Peace be upon you. (Imam Abu Dawud and Imam At-Tirmidhi narrated this from Abu Darda (may Allah be pleased with him). - T)

And when a deputy is seated on the chair of deputyship, then disrespecting that court is disrespecting the actual Sultan. Every sane person knows that if someone creates a disturbance or uses foul language in even the lowest level session, it is not just disrespect to that low-level office, but to the actual King himself. We seek refuge in Allah, the Lord of the worlds. There is no power or strength except with Allah, the Most High, the Supreme. (I seek refuge in Allah, Who is the Lord of all the worlds; there is no power to avoid sins and no strength to do good deeds in anyone except by the granting of success from Allah, the Most High, the Exalted, and the Possessor of great majesty. - T) And Allah knows best.

Mas'ala 50: From the city neighborhood, questioner Mr. Muhammad Fazl-ul-Haq, dated 8 Muharram 1330 AH.

Question: What do the scholars of religion and the muftis of the firm Shariah say regarding this matter: Zaid himself considers it permissible to watch the 'Takht Alam', Tazia, etc., and does not prevent women from attending such commotions. Rather, he takes children with him to show them, whether with the intention of reward or for amusement. What fatwa do the scholars of the firm religion and the defenders of the Sunnah of the Noble Messenger (peace and blessings be upon him) give concerning such people who believe that by becoming a 'faqir' (mendicant) and joining the procession, this ensures the protection of offspring and acts as a life insurance? What should happen? What is the ruling on giving alms or money to the mentioned 'faqir'? And how should the aforementioned belief and practice be regarded? Explain and be rewarded.

Answer: Takht, Alam, Tazias, etc., are all impermissible. Watching an impermissible act as entertainment is also forbidden, because "whatever is forbidden to do is forbidden to take pleasure in" (since doing a forbidden act is haram, celebrating it is also haram. - T). The sin of showing it to children also lies on him, as stated in 'al-Ashbah', etc. (as is in al-Ashbah, etc. - T). Giving permission to women to attend such gatherings is not only haram but also a severe loss of dignity and extreme shamelessness. As mentioned in 'al-Khulasa', 'ad-Dur', etc., "if he gave permission, both would be sinners" (It is written in al-Khulasa, Durr-e-Mukhtar, and other books

of jurisprudence besides these two: if the husband gave his wife permission for an impermissible act, then both husband and wife [are sinners]).

---

1. Sunan Abi Dawud, Book of Knowledge, Chapter: Merit of Knowledge, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/157.
2. Khulasat al-Fatawa, Book of Marriage, Chapter Fifteen, Maktaba Habibiya, Quetta, 2/53.

फ़तावा रज़विया खंड 24

अबू दाऊद और तिरमिज़ी ने अबू दरदा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत की है। सलाम। (इमाम अबू दाऊद और इमाम तिरमिज़ी ने इसे हज़रत अबू दरदा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत किया है। - त)

और जब कोई नायब (उप) नायब की गद्दी पर हो, तो उस दरबार का अपमान वास्तविक सुल्तान का अपमान है। हर बुद्धिमान व्यक्ति जानता है कि यदि कोई व्यक्ति किसी निचले स्तर के सत्र में शोर मचाता है या गालियाँ देता है, तो वह न केवल उस निचले कार्यालय का अपमान होगा बल्कि वास्तविक राजा का भी अपमान होगा। हम अल्लाह, दुनिया के रब की शरण लेते हैं। अल्लाह के अलावा कोई शक्ति या बल नहीं है जो महान और सर्वोच्च है। (अल्लाह की शरण, जो सभी दुनिया का पालने वाला है; पापों से बचने की शक्ति और अच्छे कार्य करने की शक्ति अल्लाह के सिवा किसी में नहीं है, जो सबसे ऊँचा और महान शान वाला है। - त) और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला 50: शहर के मोहल्ले से, प्रश्नकर्ता जनाब मोहम्मद फ़ज़ल-उल-हक़ साहब, दिनांक 8 मुहर्रम 1330 हिजरी।

प्रश्न: दीन के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के मुफ़्ती इस मसले के बारे में क्या कहते हैं: ज़ैद खुद भी तख्त-ए-अलम, ताज़िया आदि देखना जायज़ समझता है और औरतों को इस तरह के हंगामों में जाने से नहीं रोकता है। बल्कि बच्चों को भी चाहे सवाब की नीयत से या मनोरंजन के लिए अपने साथ ले जाकर दिखाता है। दीन के विद्वान और रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सुन्नत के रक्षक ऐसे लोगों के बारे में क्या फ़तवा देते हैं जिनका यह मानना है कि फ़क़ीर बनकर जुलूस में शामिल हो जाना और यह विश्वास रखना कि इससे संतान की सुरक्षा और जीवन का बीमा हो जाता है? क्या होना चाहिए? उल्लेखित 'फ़क़ीर' को भीख देने और पैसा देने का क्या हुक्म है? और उपरोक्त विश्वास और अमल को कैसा माना जाना चाहिए? बयान करें और पुण्य कमाएं।

जवाब: तख्त, अलम, ताज़िया आदि सब नाजायज़ हैं। और एक नाजायज़ काम को मनोरंजन के तौर पर देखना भी हराम है, क्योंकि "जो काम करना हराम है, उस पर खुशी मनाना भी हराम है।" (इसलिए कि जिस काम का करना हराम है उस पर खुशी मनाना भी हराम है। - त) और बच्चों को दिखाने का गुनाह भी उसी पर है, जैसा कि 'अल-अशबाह' आदि में है। (जैसा कि अशबाह आदि में है। - त) और महिलाओं को ऐसे समारोहों में जाने की अनुमति देना हराम होने के अलावा घोर

अपमानजनक और अत्यंत निर्लज्जता भी है। जैसा कि 'अल-ख़ुलासा', 'अद-दुर' आदि में उल्लेख है, "यदि उसने अनुमति दी, तो दोनों गुनहगार होंगे।" (खुलासा, दुर्र-ए-मुख्तार और इन दोनों के अलावा फ़िक़्ह की अन्य किताबों में दर्ज है: यदि पति ने अपनी पत्नी को नाजायज़ काम की अनुमति दी, तो पति और पत्नी दोनों [गुनहगार होंगे])।

---

1. सुनन अबी दाऊद, किताब अल-इल्म, बाब: इल्म की फ़ज़ीलत, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, 2/157.
2. खुलासा अल-फ़तावा, किताब अन-निकाह, पंद्रहवाँ अध्याय, मकतबा हबीबिया, क्वेटा, 2/53.

ابوداؤد ۱ والترمذی عن ابی الدرداء رضی اللہ تعالٰی عنہ- والسلام (امام ابوداؤد اور امام ترمذی نے اسے حضرت ابودرداء رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ہے۔ ت)

اور نائب جب مسند نیابت پر ہو تو اس دربار کی توہین اصل سلطان کی توہین ہے، ہر عاقل جانتا ہے کہ اگر کوئی شخص کسی ادنٰی درجے کے اجلاس میں غل کرے گالیاں بکے تو وہ اس ادنٰی ہی کی توہین نہ ہوگی بلکہ اصل بادشاہ کی، والعیاذ باللہ رب العلمین ولاحول ولاقوۃ الا باللہ العلی العظیم (اللہ تعالٰی کی پناہ جو تمام جہانوں کا پروردگار ہے، گناہوں سے بچنے اور نیکی کرنے کی طاقت کسی میں نہیں بجز اللہ تعالٰی بلند و برتر اور بڑی شان رکھنے والے کی توفیق عطا کے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۵۰: از شہر محلہ مسئولہ جناب محمد فضل حق صاحب بتاریخ ۸ محرم ۱۳۳۰ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید خود بھی تخت الم تعزیہ وغیرہ دیکھنا جائز رکھتا ہے اور مستورات کو اس قسم کے ہنگاموں میں جانے سے منع نہیں کرتا بلکہ بچوں کو بھی خواہ بنظر ثواب خواہ بخیال تماشہ اپنے ساتھ لے جاکر دکھاتا ہے علمائے دین متین اور حامیان سنت رسول کریم علیہ الصلوۃ والتسلیم کیا فتوٰی دیتے ہیں ایسے لوگوں سے جن کا یہ خیال ہے کہ فقیر بن کر سلسلہ میں شامل ہو جائے اور یہ عقیدہ ہے کہ اس طرح اولاد کا تحفظ اور بیمہ جان کا ہو جاتا ہے، کیا ہونا چاہئے، فقیر مذکور کو بھیک دینے اور پیسہ دینے کا کیا حکم ہے اور عقیدہ اور عمل بالا کو کیسا جاننا چاہئے؟ بینوا توجروا

الجواب: تخت علم تعزیے وغیرہ سب ناجائز ہیں اور ناجائز کام کو بطور تماشہ دیکھنا بھی حرام لان ما حرم فعلہ حرم التفرج علیہ (اس لئے کہ جس کام کا کرنا حرام ہے اس پر خوشی منانا بھی حرام ہے۔ ت) اور بچوں کو دکھانے کا گناہ بھی اسی پر ہے کما فی الاشباہ وغیرہ (جیسا کہ اشباہ وغیرہ میں ہے۔ ت) اور عورتوں کو ایسے جلسوں میں جانے کی اجازت دینی حرمت کے سوا سخت بے حرمتی اور نہایت بے غیرتی بھی ہے و فی الخلاصۃ والدر وغیرہما ان اذن کانا عاصیین ۲

(خلاصہ، در مختار اور ان دو کے علاوہ دوسری کتب فقہ میں مرقوم ہے، اگر مرد نے اپنی اہلیہ کو ناجائز کام کی اجازت دی تو میاں بیوی دونوں [گنہگار ہوں گے])

---

1 سنن ابی داؤد کتاب العلم باب فضل العلم آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۱۵۷ 2 خلاصۃ الفتاوی کتاب النکاح الفصل الخامس عشر مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۲/ ۵۳

Fatawa Razawiya, Volume 24

...will be sinners. (T) And considering it a reward is not only a sin but also a corruption of faith, and refuge is sought with Allah the Almighty. In the chain of noble saints, being under the hand of such a Sheikh who is connected to the chain but is a non-Sunni or a blatant sinner, there is certainly no great blessing in it, nor is there any benefit for the world or the hereafter. To hope for an increase in life beyond its fixed term is also not misplaced as it means goodness, and goodness leads to an increase in sustenance. Blessing occurs, and anyone from the ignorant who doesn't understand this will find it difficult to die now. Yes, begging for a beggar is forbidden, and without Sharia-compliant necessity and compulsion, just begging is forbidden. And whoever gives to such a person without need is also sinning, as it is helping in sin. As mentioned in 'Dur-al-Mukhtar' (because this is helping in the work of another sinner). And Allah knows best.

Problem 51: A scholar, in his various sermons, explained the prohibition of usury, selling wine, drinking wine, selling pork, eating unslaughtered chicken, adultery, sodomy, and pederasty from the Quran and Hadith. He also declared adopting Hindu law instead of the inheritance laws of Muhammadan Law (Sharia of Muhammad) as clear disbelief. The group to whom these things were addressed, instead of abandoning these acts and repenting, acted out of stubbornness and ego. They gathered their group and agreed that no member of the group would host a sermon session for this scholar. If anyone did, they would be expelled from the group. What is the Sharia ruling for such a group, and should other Muslims break ties with them according to Sharia or not? Please provide a reply with Sharia evidence and be rewarded by Allah.

Answer: In this case, the group is extremely oppressive and deserving of severe punishment, fitting the description of this noble verse:

وَإِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ" اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ"[1]

And when it is said to him, "Fear Allah," pride in the sin takes hold of him. Sufficient for him is Hell.

And when he is told to fear Allah, sin prepares and incites him to further stubbornness (and rage). So, for the (unfortunate one), Hell is enough. (T)

If those people do not repent, then Muslims should break ties with them, otherwise, according to many Hadiths, they too...

[1] Al-Quran Al-Karim 2/206 Page 174 of 720

फ़तावा रज़विया, खंड २४

...गुनाहगार होंगे। (त) और इसे सवाब समझना गुनाह के अलावा अक़ीदे का बिगाड़ भी है, और अल्लाह तआला की पनाह। औलिया-ए-किराम के सिलसिले में ऐसे शेख़ के हाथ पर बैत होना जो सिलसिले से मुत्तसिल (जुड़ा हुआ) तो हो मगर सुन्नी न हो या फ़ासिक (बड़ा पापी) हो, इसमें कोई बड़ी बरकत होना तो दूर, दुनिया और आख़िरत में कोई फ़ायदा होने की भी उम्मीद रखना बेजा नहीं, क्योंकि वह बुराई यानी नेकी ही है और नेकी से रिज़्क और उम्र बढ़ती है। बरकत होती है और यह कोई जाहिल से जाहिल भी न समझेगा कि अब मौत मुहाल (असंभव) हो गई, हाँ भीख माँगना फ़क़ीर के लिए हराम है और ब-ग़ैर शरई ज़रूरत और मजबूरी के महज़ भीख माँगना हराम है। और जो बिला ज़रूरत माँगने वाले को दे, उसे देना भी हराम है क्योंकि यह गुनाह पर मदद करना है, जैसा कि 'दुर्र-अल-मुख़्तार' में है (इसलिए कि यह गुनाह के काम में दूसरे की मदद करना है)। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ५१: एक आलिम ने अपने कई बयानों में सूदख़ोरी, शराब की बिक्री, शराब पीना, सुअर के मांस की बिक्री, बिना ज़बह किए हुए मुर्गे का मांस खाना, ज़िनाकारी, लौतत और ग़ुलामबाज़ी की हुरमत (मनाही) क़ुरआन और हदीस से बयान की। और विरासत के मसले में मुहम्मडन लॉ (शरीअते मुहम्मदी) को छोड़कर हिन्दू लॉ (हिन्दू धर्म) को अपनाने को स्पष्ट कुफ़्र बताया। जिस जमात में ये बातें थीं, उन्होंने इन बातों को छोड़ने और तौबा-इस्तग़फ़ार करने और अल्लाह और रसूल के हुक्म के आगे सिर झुकाने के बजाय ज़िद और नफ़सानियत में आकर अपनी जमात को इकट्ठा किया और इत्तेफ़ाक़ कर लिया कि जमात का कोई भी व्यक्ति उस आलिम के वाज़ (उपदेश) की महफ़िल अपने यहाँ आयोजित नहीं करेगा, और अगर कोई करेगा तो उसे जमात से बाहर निकाल दिया जाएगा। क्या इस सूरत में शरई तौर पर इस जमात का क्या हुक्म है और क्या दूसरे मुसलमानों को शरई तौर पर इस जमात से संबंध तोड़ लेना चाहिए या नहीं? शरई दलीलों के साथ जवाब लिखकर अल्लाह के यहाँ सवाब के हक़दार बनें।

अल-जवाब: इस सूरत में जमात सख़्त ज़ालिम और अज़ाबे शदीद की और इस आयते करीमा की मिस्दाक़ (उदाहरण) है:

"وَإِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ"[1]	**और जब उससे कहा जाए कि अल्लाह तआला से डरो, तो उसे गुनाह, और अधिक ज़िद (और तैश) पर आमादा करे और उकसाए, तो ऐसे (बदनसीब) के लिए जहन्नम ही काफ़ी है।**

और जब उससे कहा जाए कि अल्लाह तआला से डरो, तो उसे गुनाह, और अधिक ज़िद (और तैश) पर आमादा करे और उकसाए, तो ऐसे (बदनसीब) के लिए जहन्नम ही काफ़ी है। (त)

अगर वे लोग तौबा न करें तो मुसलमानों को उनसे ताल्लुक़ ख़त्म कर लेना चाहिए, वरना बहुत सी हदीसों के हुक्म के मुताबिक़ वे भी...

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम २/२०६ पृष्ठ १७४/७२०

گنہگار ہوں گے۔ت) اور اس کو ثواب سمجھنا گناہ کے علاوہ فسادِ عقیدہ بھی ہے، والعیاذ باللہ تعالیٰ، سلسلہ اولیائے کرام میں کسی ایسے شیخ کے ہاتھ پر داخل ہونا کہ عالم سنی متصل السند غیر فاسق ہو ضرور برکت عظیمہ ہے دنیا وآخرت میں اس کے منافع بے شمار ہیں اور اس سے زیادہ عمر کی امید رکھنا بھی بیجا نہیں کہ وہ بر یعنی نیکی ہے اور نیکی سے رزق بڑھتا ہے عمر میں برکت ہوتی ہے اور یہ کوئی جاہل سے جاہل بھی نہ سمجھے گا کہ اب موت محال ہو گئی، ہاں بھیک مانگنے کے لئے فقیر بنانا حرام ہے اور بے ضرورت شرعیہ و مجبوری محض بھیک مانگنا حرام، اور جو بلا ضرورت مانگے اسے دینا بھی حرام لکونہ اعانۃ علی المعصیۃ کما فی الدر المختار (اس لئے کہ یہ بھیک دینا (اس لئے حرام ہے کہ) یہ گناہ کے کام پر دوسرے کی مدد کرنا ہے۔ت) واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۵۱: ایک عالم نے اپنے متعدد وعظوں میں سود خوری، شراب فروشی، شراب نوشی، بیع لحم خنزیر، اکل غیر مذبوح مرغ، زنا کاری، لواطت واغلام کی حرمت قرآن وحدیث سے بیان کی اور میراث کے مسئلے محمدن لاء (شریعت محمدی) کو چھوڑ کر ہندو لاء (ہندو دھرم) قبول کرنے کو کفر صریح بتلایا جس جماعت میں یہ باتیں تھیں بجائے اس کے کہ ان باتوں کو ترک کر دیتے اور توبہ واستغفار کرتے اور خدا اور رسول کے حکم کے آگے سر جھکا دیتے خلاف اس کے ضد اور نفسانیت میں آن کر اپنی جماعت کو اکٹھا کر کے اتفاق کر لیا کہ جماعت کا کوئی فرد اپنے ہاں اس عالم کے وعظ کی مجلس منعقد نہ کرے اور اگر کیا تو جماعت سے خارج کر دیا جائے گا، آیا اس صورت میں شرعاً اس جماعت کا کیا حکم ہے اور دوسرے مسلمانوں کو شرعاً اس جماعت سے قطع تعلق کرنا چاہئے یا نہیں؟ بدلائل شرعیہ جواب لکھ کر عند اللہ ماجور ہوں۔

الجواب: اس صورت میں جماعت سخت ظالم اور عذابِ شدید کی اور اس آیت کریمہ کی مصداق ہے:

"وَإِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللهَ اَخَذَتْهُ اور جب اس سے کہا جائے کہ اللہ تعالیٰ سے ڈریئے تو اسے گناہ، الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ مزید ضد (اور طیش) پر آمادہ کرے اور ابھارے، پس (بد نصیب) کے جَهَنَّمُ"[1] لئے دوزخ ہی کافی ہے۔

اور جب اس سے کہا جائے کہ اللہ تعالیٰ سے ڈریئے تو اسے گناہ، مزید ضد (اور طیش) پر آمادہ کرے اور ابھارے، پس (بد نصیب) کے لئے دوزخ ہی کافی ہے۔ (ت)

اگر وہ لوگ توبہ نہ کریں تو مسلمانوں کو ان سے قطع تعلق چاہئے ورنہ بحکم احادیث کثیرہ وہ بھی ...

[1] القرآن الکریم ۲/ ۲۰۶ صفحہ ۱۷۴ از ۷۲۰

Fatawa Razawiyya, Volume 24

...shall be partners with them in punishment. "It is near that Allah includes them in His punishment" (t). And Allah Almighty knows best.

Problem 52: Jabalpur, near Kotwali Basati Bazaar, sent by Abdus Subhan, Merchant, dated 14 Dhu al-Hijjah 1335 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Shari'ah say about this issue: if Hindu people pass in front of mosques playing musical instruments, should they be stopped or not? And if stopping them is a government crime, what should Muslims do in such a situation? Officially, Hindus have been ordered not to play music in front of mosques only during congregational prayer times, and they can play regularly at other times; and if anyone stops them at other times, they will be deserving of punishment. Accordingly, a few people have already been sentenced to six months of imprisonment. This is the government order. Now, the Hindus want a reconciliation on the condition that they will play music for only five or seven days throughout the year, i.e., during their festivals, but leaving out prayer times, and will not play music at any time for the rest of the year. In such a situation, what should we Muslims do? Please explain and be rewarded.

The Answer: In such a situation, it is obligatory to immediately accept this reconciliation because it has great benefit for Islam. Apart from the exception of five or seven days, they promise complete avoidance for the rest of the year. This is hundreds of times more beneficial for Islam than the government decision. The words from the Muslims' side in the settlement should be: "Hindus will never play music during congregational prayer times, and apart from those five or seven specific days, they will always avoid playing music near mosques." These words should not be used: "We agree or permit playing on those specific days outside of congregational times." Although the outcome is the same, this wording constitutes permission for sin, and permitting sin is a sin greater than the sin itself. In the first wording, due to the exception, the excepted case is under the ruling of silence. And Allah Almighty knows best.

Problem 53: From Faizabad, Mughal Pura Mosque, sent by Sheikh Akbar Ali, Muezzin, and Maulvi Abdul Ali, 19 Rabi' al-Awwal 1336 AH. If a person is a Muslim, regular in fasts and prayers, and files a complaint with some Pir or Maulvi to settle a matter which is within their power, but they do not settle it nor listen to it, because of which things are being ruined.

The Answer: This also requires detail: what the matter is, how much authority there is over the Pir/Maulvi, and why he did not do it. And Allah Almighty knows best.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

...उनके साथ अज़ाब (दंड) में साझी होंगे। "करीब है कि अल्लाह उन्हें अपने अज़ाब में शामिल कर दे।" (त) वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला 52: जबलपुर, निकट कोतवाली बसाती बाज़ार, प्रेषक: अब्दुल सुभान सौदागर, दिनांक 14 ज़ुल-हिज्जा 1335 हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरा-ए-मतीन इस मसले में कि अगर हिन्दू लोग मस्जिदों के सामने से बाजा बजाते हुए गुज़रें तो उनको रोकना चाहिए या नहीं? और अगर रोकने में सरकारी जुर्म हो तो ऐसी हालत में मुसलमानों को क्या करना चाहिए? सरकारी तौर से हिन्दुओं को यह हुक्म दिया गया है कि सिर्फ जमाअत (सामूहित नमाज़) के वक़्तों में मस्जिदों के सामने बाजा न बजे और दीगर औक़ात (अन्य समयों) में बराबर बज सकता है; और दीगर औक़ात में अगर कोई उनको रोके तो वह सज़ा का मुस्तहिक (हक़दार) होगा, चुनांचे चंद आदमियों को छह-छह माह की सज़ा-ए-कैद भी हो चुकी है। यह तो गवर्नमेंट का हुक्म हो गया और अब हिन्दू यह चाहते हैं कि मुसालहत (समझौता) हो जाना चाहिए इस शर्त पर कि हम साल भर में सिर्फ पाँच या सात दिन के लिए, यानी जो हमारे त्यौहार हैं, उनमें बाजा बजाएंगे मगर औक़ात-ए-नमाज़ छोड़कर और साल भर तक किसी वक़्त बाजा न बजाएंगे। अब ऐसी हालत में हम मुसलमानों को क्या करना चाहिए? बयान कीजिए, सवाब मिलेगा।

अल-जवाब: ऐसी हालत में फ़ौरन इस मुसालहत (समझौते) को क़ुबूल करना वाजिब है क्योंकि इसमें इस्लाम का नफ़ा-ए-कसीर (बड़ा लाभ) है। वे पाँच-सात दिन के इस्तस्ना (अपवाद) के साथ तमाम साल के लिए एहतराज़-ए-ताम (पूर्ण परहेज) का वादा करते हैं, यह गवर्नमेंट के फ़ैसले से सौ गुना दर्जा इस्लाम के लिए ज़्यादा नफ़ा-बख़्श है। फ़ैसले में मुसलमानों की तरफ़ से ये अल्फाज़ (शब्द) हों कि "औक़ात-ए-जमाअत में हिन्दू कभी बाजा न बजाएंगे और ग़ैर औक़ात-ए-जमाअत में भी पाँच-सात दिन मुअय्यन (निश्चित) के सिवा मस्जिदों के क़रीब बाजा बजाने से हमेशा एहतराज़ (परहेज) रखेंगे।" ये अल्फाज़ न हों कि "इन मुअय्यन दिनों में ग़ैर औक़ात-ए-जमाअत में बजाने पर हम राज़ी हैं या इजाज़त देते हैं।" अगरचे नतीजा एक ही है, मगर इस इबारत (वाक्य) में मअसियत (गुनाह) की इजाज़त है, और मअसियत की इजाज़त देना मअसियत से बढ़ कर मअसियत है। और उस (पहली) इबारत में इस्तस्ना की वजह से मुस्तस्ना (अपवादित मामला) सुकूत (चुप्पी/मौन) के हुक्म में है। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 53: फ़ैज़ाबाद से, मस्जिद मुग़ल पुरा, प्रेषक: शेख़ अकबर अली मोअज़िन व मौलवी अब्दुल अली, 19 रबी-उल-अव्वल 1336 हिजरी। अगर कोई मुसलमान हो, रोज़े और नमाज़ का पाबंद हो, किसी पीर या मौलवी के यहाँ इस आशय की शिकायत करे कि हमारा मामला तय कर दो जो उनके बस में हो, और वह तय न करें और न सुनें जिसकी वजह से सब बर्बाद हो रहा हो।

अल-जवाब: यह भी तफ़्सील (विवरण) का मोहताज है कि क्या मामला है, और पीर व मौलवी पर कितना इख्तियार (अधिकार) है, और उन्होंने क्यों नहीं किया। वल्लाहु तआला आलम।

पृष्ठ 175/720

ان کے ساتھ شریک عذاب ہوں گے اوشك ان یعمہم اللہ بعقاب منہ (قریب ہے کہ اللہ تعالی انہیں اس کے عذاب میں شامل اور شریک فرمائے۔ت) واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۵۲: جبلپور متصل کوتوالی بساطی بازار مرسلہ عبد سبحان سوداگر مورخہ ۱۴ ذی الحجہ ۱۳۳۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ اگر ہندو لوگ مساجد کے سامنے سے باجا بجاتے ہوئے گزرے تو ان کو روکنا چاہئے یا نہیں؟ اور اگر روکنے میں سرکاری جرم ہو تو ایسی حالت میں مسلمانوں کو کیا کرنا چاہئے؟ سرکاری طور سے ہندوؤں کو یہ حکم دیا گیا ہے کہ صرف جماعت کے وقتوں میں مساجد کے سامنے باجا نہ بجے اور دیگر اوقات میں برابر بج سکتا ہے اور دیگر اوقات میں اگر کوئی ان کو روکے تو سزا کا مستحق ہوگا، چنانچہ چند آدمیوں کو چھ چھ ماہ کے سزائے قید بھی ہوچکی ہے۔ یہ تو گورنمنٹ کا حکم ہو گیا اور اب ہندو یہ چاہتے ہیں کہ مصالحت ہو جانا چاہئے اس شرط پر کہ ہم سال بھر میں صرف پانچ یا سات دن کے لئے یعنی جو ہمارے تہوار ہیں اس میں باجا بجائیں گے مگر اوقاتِ نماز چھوڑ کر اور سال بھر تک کسی وقت باجا نہ بجائیں گے، اب ایسی حالت میں ہم مسلمانوں کو کیا کرنا چاہئے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: ایسی حالت میں فوراً اس مصالحت کو قبول کرنا واجب ہے کہ اس میں اسلام کا نفع کثیر ہے وہ پانچ سات دن کے استثناء سے تمام سال کے لئے احترازِ تام کا وعدہ کرتے ہیں یہ گورنمنٹ کے فیصلے سے صدہا درجہ اسلام کے لئے نافع تر ہے۔ فیصلہ میں مسلمانوں کی طرف سے یہ الفاظ ہوں کہ اوقاتِ جماعت میں ہندو کبھی باجا نہ بجائیں گے اور غیر اوقاتِ جماعت میں بھی پانچ سات دن معین کے سوا مساجد کے قریب باجا بجانے سے ہمیشہ احتراز رکھیں گے، یہ الفاظ نہ ہوں کہ ان معین دنوں میں غیر اوقاتِ جماعت میں بجانے پر ہم راضی ہیں یا اجازت دیتے ہیں اگرچہ

حاصل ایک ہی ہے مگر اس عبارت میں معصیت کی اجازت ہے اور معصیت کی اجازت معصیت سے بڑھ کر معصیت ہے اور اس عبارت میں بوجہ استثناء مستثنیٰ حکم سکوت میں ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۵۳: از فیض آباد مسجد مغل پورہ مرسلہ شیخ اکبر علی مؤذن و مولوی عبدالعلی ۱۹ ربیع الاول ۱۳۳۶ھ اگر مسلمان ہو، پابند صوم و صلوٰۃ کا ہو، کسی پیر مولوی کے یہاں نالشی ہو کہ ہمارا معاملہ طے کردو جو ان کے امکان میں ہے اور وہ طے نہ کریں اور نہ سنیں جس کی وجہ سے برباد ہورہا ہو۔

الجواب: یہ بھی محتاج تفصیل ہے کیا معاملہ، اور پیر مولوی پر کتنا اختیار، اور کیوں نہ کیا۔ واللہ تعالیٰ اعلم

Fatawa-e-Razvia Volume 24

Issue 54: From Mau Khurd village, Post Office Zaid-o-Sarai, District Barabanki, sent by Syed Safdar Ali Sahab, 12 Ramadan 1338 AH.

Question: What do the scholars of religion and muftis of the clear Sharia say regarding this: Hindah has two sons, Zaid and Amr. Zaid, following the noble Sharia, encouraged his mother to wear a kurta with full sleeves and a length reaching halfway down the thighs, instead of wearing a 'kurti' (short vest) whose sleeves are only up to the shoulders, leaving the arms and armpits exposed, and whose length is barely above or below the navel. He used explanation and reasoning along with some verbal strictness, towards which Hindah was inclined. However, Amr explicitly and implicitly encouraged Hindah, saying, "Do not care about what he says, I am with you." Hindah then turned away from her inclination. What was Zaid's statement like? How was Amr's encouragement and partisanship? How was Hindah's action, and what is the punishment for it in the hereafter? And can prayer be performed in such a 'kurti' as described, or not?

Answer: If a woman is only in front of mahrams (unmarriageable kin) and wears such a kurti in which her arms are exposed but her abdomen is covered, whether by that kurti or another garment, and during prayer her arms, wrists, etc. (the required satr) remain fully covered, then it is permissible for her to wear that kurti. There was no need to urge her to change it, and being harsh towards the mother was forbidden (haram). Therefore, the other brother turning her away from that inclination and the woman's change of mind was not a sin. However, if the woman also appears before non-mahrams (marriageable men) wearing the same kurti and does not hide her body with clothes, or if part of her abdomen remains exposed before mahrams, or any part of the arms or wrists (required to be covered) is exposed during prayer, then undoubtedly the woman is a severe sinner. The person who encouraged her to change it did a very good thing, though being harsh towards the mother was still not permissible. In this case, the other brother turning her away from that encouragement and the woman's change of mind are severe sins, and repentance (tauba) is mandatory for them. And Allah Almighty knows best.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 24

मसला 54: मऊ खुर्द गाँव, डाकखाना जैद-ओ-सराय, जिला बाराबंकी से, प्रेषक सैय्यद सफदर अली साहब, 12 रमज़ान 1338 हिजरी।

सवाल: दीन के उलेमा और स्पष्ट शरीयत के मुफ़्ती क्या कहते हैं: हिंदा के दो बेटे जैद और अम्र हैं। जैद ने शरीयत के हुक्म के मुताबिक अपनी माँ को ऐसी 'कुर्ती' (छोटी चोली) पहनने के बजाय, जिसकी आस्तीन केवल कंधे तक होती है और पूरा हाथ बगल तक खुला रहता है और लंबाई नाफ़ (नाभि) के ऊपर या नीचे नाममात्र की होती है, पूरी आस्तीन वाला और आधी जांघ तक लंबा कुर्ता पहनने की तरजीह (प्रोत्साहन) दी। उसने समझाने-बुझाने के साथ-साथ कुछ ज़बानी सख्ती भी की, जिस पर हिंदा राज़ी हो गई थी। लेकिन अम्र ने हिंदा को साफ़ तौर पर और इशारों में उकसाया कि तुम उसके कहने की परवाह न करो, मैं तुम्हारे साथ हूँ। हिंदा अपने इरादे से पीछे हट गई। ज़ैद का कहना कैसा था? अम्र का उकसाना और तरफ़दारी कैसी थी? हिंदा का अमल कैसा है और आख़िरत में इसकी क्या सज़ा है? और क्या ऐसी कुर्ती में, जिसका ज़िक्र किया गया है, नमाज़ हो सकती है या नहीं?

जवाब: अगर औरत सिर्फ महरमों (जिनसे निकाह हराम है) के सामने होती है और ऐसी कुर्ती पहनती है जिसमें हाथ खुले रहते हैं लेकिन पेट ढका हो, चाहे उस कुर्ती से या किसी दूसरे कपड़े से, और नमाज़ के समय बाजू, कलाइयां वगैरह (सत्र) पूरी तरह ढके रहते हों, तो ऐसी औरत के लिए वह कुर्ती पहनना जायज़ है। उसे बदलने की तरजीह देने की ज़रूरत नहीं थी और माँ पर सख्ती करना हराम था। इसलिए दूसरे भाई का उसे उस इरादे से फेर देना और औरत का पलट जाना कोई गुनाह नहीं हुआ। और अगर औरत किसी ना-महरम के सामने भी वैसी ही कुर्ती पहनकर आती है और बदन को कपड़ों से नहीं छुपाती, या महरमों के सामने पेट का कुछ हिस्सा खुला रहता है, या नमाज़ में बाजू या कलाई का कोई हिस्सा खुला रहता है, तो बिला-शुबा औरत सख्त गुनहगार है। जिसने उसे बदलने की तरजीह दी थी, उसने बहुत अच्छा किया था, मगर माँ पर सख्ती तब भी जायज़ न थी। इस सूरत में दूसरे भाई का उसे उस नेक काम से रोकना और औरत का वापस पलट जाना सख्त गुनाह है और उन पर तौबा वाजिब है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

पृष्ठ 176 / 720

مسئلہ ۵۴: از موضوع خورد مئو ڈاکخانہ زید وسرائے ضلع بارہ بنکی مرسلہ سید صفدر علی صاحب ۱۲ رمضان ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع مبین ہندہ کے دو لڑکے زید و عمرو ہیں زید نے اپنی ماں کو بحکم شرع شریف بجائے کُرتی پہننے کے جس کی آستین صرف شانے تک ہوتی ہے پورا ہاتھ بغل تک کھلا رہتا ہے اور لمبائی بالائے یا زیرِ ناف برائے نام ہوتی ہے کرتا پوری آستین کا اور نیچا نصف ران تک پہننے کی ترغیب دی اور افہام و تفہیم کے ساتھ کچھ زبانی سختی بھی کی جس پر ہندہ راغب ہو چکی تھی کہ عمرو نے ہندہ کو صراحتاً، کنایۃً شہ دی کہ تم اس کے کہنے کی کچھ پرواہ نہ کرو میں تمہارے ساتھ ہوں ہندہ اپنی رغبت سے منحرف ہوگئی۔ زید کا قول کیسا تھا اور عمرو کی شہ اور جنبہ داری کیسی ہوئی ہندہ کا عمل کیسا ہے اور آخرت میں اس کی پاداش کیا ہے اور ایسی کرتی سے جس کی صراحت کی گئی نماز ہو سکتی ہے یا نہیں؟ الجواب: عورت اگر صرف محارم کے سامنے ہوتی اور ایسی کُرتی پہنے جس میں ہاتھ سب کھلے رہتے ہیں مگر پیٹ ڈھکا ہو خواہ اس کُرتی یا دوسرے کپڑے سے، اور نماز کے وقت بازو کلائیاں وغیرہ ستر پورا چھپا رہتا ہو تو ایسی عورت کو وہ کُرتی پہننا جائز ہے اور اسے ترغیب تبدیل کی حاجت نہ تھی اور ماں پر سختی کرنا حرام تھا اور دوسرے بھائی کا اس رغبت سے پھیر دینا اور عورت کا پھر جانا کچھ گناہ نہ ہوا، اور اگر عورت کسی نامحرم کے سامنے بھی ہوتی ہے اور وہی کُرتی پہنتی ہے اور بدن اور کپڑے سے نہیں چھپاتی یا محارم کے سامنے پیٹ کا کچھ حصہ کھلا رہتا ہے یا نماز میں بازو یا کلائی کا کوئی حصہ تو بلا شبہ عورت سخت گنہگار ہے اور جس نے اسے تبدیل کی ترغیب دی تھی بہت اچھا کیا تھا مگر ماں پر سختی جب بھی جائز

نہ تھی، اور دوسرے بھائی کا اس ترغیب سے پھیر دینا اور عورت کا پھر جانا سخت گناہ ہوا اُن پر توبہ واجب ہے، واللہ تعالیٰ اعلم۔

صفحہ 176 از 720

Fatawa Ridawiyya Volume 24

Sickness and Medical Treatment Concerning visiting the sick, nursing, medicine, treatment, incantations, medical practice, abortion, artificial teeth, etc.

Problem 55: From Kanpur, Buchar Khana locality, Mosque of Rangian, sent by Maulvi Abdul Rahman Habshani, a student of Madrasa Faiz-e-Aam, 22nd Rabi' al-Awwal Sharif 1312 AH. What is your answer, O noble scholars, may Allah Almighty have mercy on you? If a patient did not take medicine and died, would he be a sinner or not?

The Answer:

Arabic

In this regard, there is the practice (as evidence) of the Greatest Truthful One (Abu Bakr as-Siddiq) and other Imams who placed their trust in Allah (may Allah be pleased with them). In Radd al-Muhtar, it is stated: One commits a sin by abstaining from food despite having the capacity to eat until death occurs, unlike seeking medical treatment, even if it is without a prohibited substance; for if one abandons it until they die...

Urdu Translation

This matter reflects the conduct (and evidence) of Siddique-e-Akbar and other trust-reposing Imams (may Allah be pleased with them). It is mentioned in Fatawa Shami: If a person, despite having the power to eat food, does not eat food and perishes due to hunger, he will be a sinner. As the noble Imams have clarified this, because life from treatment...

फ़तावा रिज़विया जिल्द 24

बीमारी और इलाज-ओ-मुआलजा बीमारपुरसी, तीमारदारी, दवा, इलाज, झाड़-फूंक, तिबाबत, गर्भपात (इस्क़ाते हमल), मसनूई दांत वग़ैरह के मुताल्लिक़

मसअला 55: कानपुर मोहल्ला बूचड़ खाना मस्जिद रंगियान से, प्रेषक मौलवी अब्दुल रहमान हबशानी छात्र मदरसा फैज़-ए-आम, 22 रबी-उल-अव्वल शरीफ 1312 हिजरी। ऐ उलेमा-ए-किराम! अल्लाह तआला आप पर रहम फरमाए, आपका क्या जवाब है कि: यदि कोई मरीज़ दवा न करे और मर जाए, तो क्या वह गुनहगार होगा या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर):

अरबी

इस विषय में सिद्दीक़-ए-अकबर और अल्लाह पर भरोसा करने वाले अन्य इमामों (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) का अमल (प्रमाण) मौजूद है। रद्दुल मुहतार में है: भोजन करने की क्षमता होने के बावजूद यदि कोई व्यक्ति भोजन न करे यहाँ तक कि उसकी मृत्यु हो जाए तो वह पापी होगा, चिकित्सा उपचार के विपरीत, भले ही वह किसी हराम चीज़ के बिना ही क्यों न हो; क्योंकि यदि उसने इसे छोड़ दिया यहाँ तक कि वह मर गया...

उर्दू अनुवाद

इस बात में सिद्दीक़-ए-अकबर और अन्य मुतवक्किलीन (अल्लाह पर भरोसा करने वाले) अइम्मा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम का तर्ज़े अमल (प्रमाण) है। फ़तावा शामी में है: खाना खाने की शक्ति होने के बावजूद कोई व्यक्ति यदि खाना न खाए और भूख के कारण मृत्यु को प्राप्त हो जाए, तो वह गुनहगार होगा। जैसा कि अइम्मा-ए-किराम ने इसकी व्याख्या की है, क्योंकि इलाज से जीवन...

पृष्ठ संख्या 178 / 720

بیماری اور علاج معالجہ بیمار پرسی، تیمارداری، دوا، علاج، جھاڑ پھونک، طبابت، اسقاط حمل، مصنوعی دانت وغیرہ سے متعلق

مسئلہ ۵۵: از کانپور محلہ بوچڑ خانہ مسجد رنگیان مرسلہ مولوی عبدالرحمن حبشانی طالب علم مدرسہ فیض عام ۲۲ ربیع الاول شریف ۱۳۱۲ھ ما جوابکم ایھا العلماء رحمکم اللہ تعالی (اے علمائے کرام! اللہ تعالیٰ آپ پر رحم فرمائے، آپ کا کیا جواب ہے کہ) مریض نے دوا نہ کی اور مر گیا گنہگار ہو گا یا نہ؟

الجواب:

عربی متن	اردو ترجمہ
وفی الباب عن الصدیق الاکبر وغیرہ من الائمۃ المتوکلین رضی اللہ تعالیٰ عنھم. فی ردالمحتار یاثم بترک الاکل مع القدرۃ علیہ حتی یموت بخلاف التداوی و لو بغیر محرم فانہ لو ترکہ حتی مات	اس بات میں صدیق اکبر اور دیگر ائمہ متوکلین رضی اللہ تعالیٰ عنہم کا طرز عمل (دلیل) ہے۔ فتاوٰی شامی میں ہے۔ کھانا کھانے پر قدرت رکھنے کے باوجود کوئی شخص اگر کھانا نہ کھائے اور بوجہ بھوک ہلاک ہو جائے تو گنہگار ہوگا۔ جیسا کہ ائمہ کرام نے اس کی تصریح فرمائی ہے کیونکہ علاج سے حیات

[Box 1] Arabic: He is not sinful as they have stipulated because it is a matter of conjecture. Allah (Glorified and Exalted is He) knows best, and His knowledge (may His majesty be glorified) is most complete and most decisive. Urdu: It is not certain but rather a conjectural matter. Allah the Exalted, the Holy and Exalted, knows best, and the knowledge of that Possessor of greatness and glory is perfect and enduring. (T)

Issue 56: From Etawah, sent by Mawlawi Wasi Ali Sahib, Deputy Inspector of Collectorate Etawah, 2 Dhu al-Qi'dah 1312 AH. What is your opinion—may Allah have mercy on you—in response to this question? (May Allah have mercy on you, what is your answer regarding this question? T). If a sick prostitute comes to the clinic, is treating her a sin or not? In the second case, is there any doubt about it being an assistance in sin? Explain and be rewarded. (State [the ruling] and receive reward. T)

The Answer: If, in treating a profligate woman, the physician himself intends that she becomes capable of committing sins, so that the indisposition of nature which was a barrier to sin is removed, then there is no dispute about him being a sinner.

[Box 2] Arabic: Actions are but by intentions, and for every person is what he intended. Urdu: Because actions depend on intentions, and every person gets what he intended. (T)

[Box 3] And if his intention is not this, but rather his purpose here is the same as in general treatment based on a commendable or permissible intention, then if the disease is painful, as most diseases are, there is no harm at all. It has no relation to "assistance in sin"; rather, the intention is to benefit a Muslim, or to remove human suffering, so he will be rewarded.

[Box 4] Arabic: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "In [the service of] every moist liver [living creature] there is a reward." Narrated by the two Sheikhs. Urdu: (The Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, said:) In benefiting every warm [creature], meaning every living being, there is a reward.

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Hazr wa al-Ibaha, Chapter on Sales, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/249 2. Sahih al-Bukhari, Chapter on How Revelation Began to the Messenger of Allah (PBUH), Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/2 3. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Musaqat, 8/318 and Kitab al-Mazalim 1/333 and Kitab al-Adab

3/889; Sahih Muslim, Kitab al-Salam, Chapter on the Merit of Watering Animals, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/73; Musnad Imam Ahmad bin Hanbal from Ibn Amr, al-Maktab al-Islami, Beirut, 2/222

फ़तावा रज़विया | खंड 24

[बॉक्स 1] अरबी: वह पापी नहीं है जैसा कि उन्होंने स्पष्ट किया है क्योंकि यह अनुमान पर आधारित है। अल्लाह (सुब्हानहु व ताला) बेहतर जानता है और उसकी महिमा महान है, उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और निर्णायक है। उर्दू: यह निश्चित नहीं है बल्कि एक ज़न्नी (अनुमानित) चीज़ है। अल्लाह ताला पाक और बरतर खूब जानता है और उस अज़मत और शान वाले का इल्म मुकम्मल और पायदार है। (त)

मसला 56: इटावा से, प्रेषक मौलवी वसी अली साहब, नायब नाज़िर कलेक्टरी इटावा, 2 ज़ीक़ादा 1312 हिजरी। इस सवाल के जवाब में आपका क्या कहना है—अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए? (अल्लाह ताला आप पर रहम फ़रमाए, इस सवाल के बारे में आपका क्या जवाब है। त)। तवायफ़ मरीज़ा अगर मतब (दवाखाने) में आए तो उसका इलाज करना गुनाह है या नहीं? दूसरी सूरत में गुनाह में मदद होने में कोई शक है? बयान फरमाएं और सवाब पाएं। (बयान फरमाएं सवाब पाएं। त)

जवाब: अगर ज़ना करने वाली औरत (फाहशा) के इलाज से तबीब (हकीम) खुद यही नीयत करे कि यह गुनाह करने के काबिल हो जाए और तबीयत की नासाज़ी जो गुनाह से रोकने वाली है दूर हो जाए, तो उसके गुनहगार होने में कोई शक नहीं,

[बॉक्स 2] अरबी: बेशक आमाल का दारोमदार नीयतों पर है और हर आदमी के लिए वही है जिसकी उसने नीयत की। उर्दू: क्योंकि कर्मों का दारोमदार नीयतों पर है और हर शख्स के लिए वही कुछ है जिसकी उसने नीयत की। (त)

[बॉक्स 3] और अगर उसकी यह नीयत नहीं बल्कि आम इलाज जैसी किसी अच्छी या मुबाह (जायज़) नीयत से करता है, वही मकसद यहाँ भी है, तो अगर बीमारी तकलीफदेह है जैसा कि अक्सर बीमारियां होती हैं, तो असल में कोई हर्ज नहीं। न ही इसका गुनाह में मदद से कोई ताल्लुक है, बल्कि मुसलमान को फायदा पहुँचाने या इंसान की तकलीफ दूर करने की नीयत है तो सवाब पाएगा।

[बॉक्स 4] अरबी: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "हर जानदार की सेवा में सवाब है।" इसे दोनों शेखों (बुखारी और मुस्लिम) ने रिवायत किया है। उर्दू: (हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:) हर गर्म यानी हर जानदार को फायदा पहुँचाने में सवाब है।

पादलेख (फुटनोट्स): 1. रद-उल-मुहतार, किताब अल-हज़र व अल-इबाह, खंड: अल-बय, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत 5/249 2. सहीह अल-बुखारी, अध्याय: अल्लाह के रसूल (सल्ल.) पर वह्य की शुरुआत कैसे हुई, पुरानी कुतुब खाना, कराची 1/2 3. सहीह अल-बुखारी, किताब अल-मुसाकात 8/318 और किताब अल-मज़ालिम 1/333 और किताब अल-अदब 3/889; सहीह मुस्लिम, किताब अस-सलाम, अध्याय: पशुओं को पानी पिलाने का पुण्य, पुरानी कुतुब खाना, कराची 2/73; मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल, इब्न अम्र से, अल-मकतब अल-इस्लामी, बेरूत 2/222

पृष्ठ 179/720

[Box 1] لا یآثم کما نصوا علیہ لانہ مظنون اھ واللہ سبحنہ و تعالیٰ اعلم و علمہ جل مجدہ اتم و احکم۔ یقینی نہیں بلکہ ایک ظنّی چیز ہے اھ اللہ تعالیٰ پاک و بر تر خوب جانتا ہے اور اس عظمت و شان والے کا علم مکمل اور پائیدار ہے۔ (ت)

مسئلہ ۵۶: از اٹا وہ مرسلہ مولوی وصی علی صاحب نائب ناظر کلکٹری اٹا وہ ۲ ذیقعدہ ۱۳۱۲ھ ماقولکم رحمکم اللہ تعالیٰ فی جواب ہذا السوال (اللہ تعالیٰ آپ پر رحم فرمائے، اس سوال کے بارے میں آپ کا کیا جواب ہے۔ ت) طوائف مریضہ اگر مطب میں آئے تو اس کا علاج کرنا معصیت ہے یا نہیں؟ دوسری صورت میں اعانت بر معصیت ہونے میں کوئی شبہ ہے؟ بینوا توجروا (بیان فرمایئے اجر پایئے ۔ت)

الجواب: اگر معالجہ زنِ فاحشہ سے طبیب خود یہی نیت کرے کہ یہ ارتکابِ معاصی کے قابل ہو جائے ناسازی طبیعت کہ مانع گناہ ہے زائل ہو جائے جب تو اس کے عاصی ہونے میں کلام نہیں،

[Box 2] فانما الاعمال بالنیات وانما لکل امرئ ما نوی ۲۔ کیونکہ اعمال کا دار ومدار نیتوں پر ہے اور ہر شخص کے لئے وہی کچھ ہے جس کی اس نے نیت کی (ت)

[Box 3] اور اگر اس کی یہ نیت نہیں بلکہ عام معالجے جس نیت محمودہ یا مباحہ سے کرتا ہے وہی غرض یہاں بھی ہے تو اگر مرض ایذا دہندہ ہے جیسے کہ اکثر امراض یونہی ہوتے ہیں جب تو اصلاً حرج نہیں، نہ اسے اعانت معصیت سے علاقہ بلکہ نفع رسانیِ مسلمہ، یا دفع ایذائے انسان کی نیت ہے تو اجر پائے گا۔

[Box 4] قال رسول الله صلی الله تعالیٰ علیہ وسلم فی کل کبد حرآء اجر۔ رواہ الشیخان ۳ (حضور اکرم صلی الله تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا:) ہر جگہ گرم یعنی ہر جاندار کی نفع رسانی میں (اجر ہے)۔

حواشی: 1. ردالمحتار کتاب الحظر والاباحة فصل فی البیع داراحیاء التراث العربی بیروت ۵ / ۲۴۹ 2. صحیح البخاری باب کیف بدء الوحی الی رسول الله صلی الله علیہ وسلم قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۲ 3. صحیح البخاری کتاب المساقات ۸ / ۳۱۸ و کتاب المظالم ۱ / ۳۳۳ و کتاب الادب ۳ / ۸۸۹ ، صحیح مسلم کتاب السلام باب فضل سقی البهائم قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۷۳ ، مسند امام احمد بن حنبل عن ابن عمرو المکتب الاسلامی بیروت ۲ / ۲۲۲

Fatawa Razawiyya, Volume 24

Reported by Abu Huraira, and Ahmad from Ibn Amr ibn al-Aas, and Ibn Majah from Suraqa bin Malik (may Allah be pleased with them).	**There is a reward (Bukhari and Muslim narrated this from Hazrat Abu Huraira, Imam Ahmad from Ibn Amr ibn al-Aas, and Ibn Majah from Suraqa bin Malik. - T)**

And if there is no pain from the illness, only obstacles to adultery, due to which its treatment would not bring any benefit to an adulterous woman but rather clear the path for adultery, such as a condition of vaginal closure (ratq) or extreme widening (not due to discharge) which is not inherently harmful, but its desire causes a decline in the market of adulterous women; for such treatment, even if the physician is aware of the aforementioned matters, although according to the analogy of the opinion of the two companions (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad) it could be termed as assistance in one aspect, according to the school of the Imam (Abu Hanifa) RA, it is not included in the prohibition. This is because he treats it with a pure intention only for the sake of cure; committing a sin is the person's own act, just as a mason building a church or a temple or renting out a house to a prostitute.

In Al-Khaniya: "If he hires himself to work in a church and constructs it, there is no harm in it because there is no sin in the essence of the work."[1]	**In Fatawa Qazikhan it is stated: If a laborer works for the construction and habitation of a church, there is no harm in it because there is no sin in the act itself. (T)**

In Hidayah it is written: | Whoever rents out a house to be used as a fire temple, a church, or a synagogue, or for wine to be sold there in rural areas, there is no harm in it. And this is according to Abu Hanifa (may Allah have mercy on him).[2] And Allah Almighty knows best. | If a person rents out a house and it is turned into a fire temple, church, or synagogue there, or wine starts being sold to people from there, then according to Hazrat Imam Abu Hanifa (may Allah have mercy on him), there is no harm for the person renting out the house. And Allah Almighty knows best. (T) |

:---	:---

Issue 75: From Calcutta via Qazi Abdul Wahid Sahib Azimabadi, manager of Tuhfa Hanfiyya, 12 Rajab 1316 AH What do the scholars of religion and protectors of the firm Sharia say on this issue that in current times in the city of Calcutta...

[1] Fatawa Qazikhan, Kitab al-Hazr wa al-Ibahah, Chapter on At-Tasbih, Nawal Kishore Lucknow, 4/494 [2] Al-Hidayah, Kitab al-Karahiyah, Chapter on Al-Istibra, Matba' Yusufi Lucknow, 4/470

हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है, और अहमद ने इब्न अम्र बिन अल-आस से, और इब्न माजा ने सुराक़ा बिन मालिक (अल्लाह उन सब पर प्रसन्न हो) से।

सवाब है (बुखारी और मुस्लिम ने इसे हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से और इमाम अहमद ने इब्न अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु से और इब्न माजा ने सुराक़ा बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। - त)

और अगर बीमारी से कोई तकलीफ नहीं है, केवल ज़िना (व्यभिचार) की रुकावट है, जिसके कारण उसका इलाज एक व्यभिचारिणी स्त्री के लिए कोई लाभ पहुँचाने वाला नहीं होगा बल्कि ज़िना का रास्ता साफ़ करेगा, जैसे योनि का बंद होना (रक़्) या अत्यधिक विस्तार (न कि स्राव की वजह से) कि वह अपने आप में हानिकारक नहीं है लेकिन इसकी इच्छा व्यभिचारी स्त्रियों के बाज़ार में मंदी का कारण बनती है; ऐसे इलाज के बारे में जब हकीम (वैद्य) उपरोक्त मामलों से अवगत हो, हालांकि साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ और इमाम मोहम्मद) के कथन के आधार पर इसे एक तरह से सहायता कहा जा सकता है, लेकिन इमाम (अबू हनीफ़ा) रज़ियल्लाहु अन्हु के मज़हब पर यह भी मनाही में शामिल नहीं है, क्योंकि वह तो नेक नीयत से सिर्फ उसका इलाज कर रहा है; गुनाह करना उसका अपना काम है जैसे राजमिस्त्री का गिरजाघर या मंदिर बनाना या किसी वेश्या को मकान किराए पर देना।

ख़ानिया में है: 'यदि कोई स्वयं को गिरजाघर में काम करने और उसे बनाने के लिए किराए पर देता है तो इसमें कोई हर्ज नहीं है क्योंकि कार्य के मूल में कोई पाप नहीं है।' १

फ़तावा क़ाज़ीख़ान में है कि अगर कोई मज़दूर गिरजाघर के निर्माण और आबादी के लिए काम करे तो इसमें कोई हर्ज नहीं क्योंकि स्वयं कार्य में कोई गुनाह नहीं है। (त)

हिदाया में है: | जिस किसी ने भी घर किराए पर दिया ताकि उसे अग्नि-मंदिर, गिरजाघर या यहूदी इबादतगाह बनाया जा सके या जहाँ देहात में शराब बेची जाए, तो इसमें कोई हर्ज नहीं है। और यह इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि के निकट है। २ और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। | अगर कोई व्यक्ति किराए पर मकान दे और वहाँ आतशक़दा, गिरजाघर या चर्च बना दिया जाए या वहाँ से आम लोगों को शराब बेची जाने लगे, तो हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि के

नज़दीक इसमें किराए पर मकान देने वाले के लिए कोई हर्ज नहीं। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त) | | :--- | :--- |

मसला ७५: कलकत्ता से, काज़ी अब्दुल वहीद साहब अज़ीमाबादी, प्रबंधक 'तोहफ़ा-ए-हनफ़िया' के माध्यम से, १२ रजब १३१६ हिजरी। धर्म के विद्वान और मज़बूत शरीअत के रक्षक इस मसले में क्या कहते हैं कि वर्तमान समय में कलकत्ता शहर में...

---

१ फ़तावा क़ाज़ीख़ान, किताबुल हज़र वल इबाहत, तस्बीह का अध्याय, नवल किशोर लखनऊ, ४/४९४ २ अल-हिदाया, किताबुल कराहियत, इस्तिबरा का अध्याय, मतबा यूसुफ़ी लखनऊ, ४/४७०

पृष्ठ १८०/७२०

عن ابی هریرة واحمد عن ابن عمرو بن العاص وکابن ماجۃ عن سراقة بن مالک رضی اللہ تعالٰی عنهم۔

ثواب ہے (بخاری ومسلم نے اس کو حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے اور امام احمد نے ابن عمرو بن عاص رضی اللہ عنہ سے اور ابن ماجہ نے سراقہ بن مالک رضی اللہ عنہ سے روایت کیا ہے۔ ت)

اور اگر مرض سے کوئی ایذا نہیں صرف موانع زنا سے ہے جس کے سبب اس کا معالجہ ایک زانیہ عورت کے لئے کوئی نفع رسانی نہ ہوگا بلکہ زنا کا راستہ صاف کرے گا مثلاً عارضہ رتق یا شدت وسعت (نہ بوجہ سیلان رطوبت) کہ فی نفسہ موذی نہیں مگر اس کا اشتہاء باعث سردی بازار زنان زناکار ہے ایسے معالجہ کو جب کہ امور مذکورہ پر طبیب مطلع ہوا اگر چہ بر قیاس قول صاحبین من وجہ اعانت کہہ سکیں مگر مذہب امام رضی اللہ عنہ پر یہ بھی داخل ممانعت نہیں کہ یہ تو پاک نیت سے صرف اس کا علاج کرتا ہے گناہ کرنا اس کا اپنا فعل ہے جیسے راج کا گرجا یا شوالہ بنانا یا مکان رنڈی زانیہ کو کرایہ پر دینا،

فی الخانیۃ لو اٰجر نفسہ یعمل فی الکنیسۃ ویعمر ها لابأس به لانه لامعصیۃ فی عین العمل۔۱

فتاوٰی قاضیخان میں ہے کہ اگر کوئی مزدور گرجے کی تعمیر اور آبادی کے لئے کام کرے تو اس میں کوئی حرج نہیں کیونکہ نفس عمل میں کوئی گناہ نہیں۔ (ت)

ہدایہ میں ہے: | من اٰجر بیتا لیتخذ فیہ بیت نار او کنیسۃ او بیعۃ او یباع فیہ الخمر بالسواد فلابأس بہ وھذا عند ابی حنیفۃ رحمہ اللہ تعالٰی۲ ، واللہ تعالٰی اعلم۔ | اگر کوئی شخص کرائے پر مکان دے اور وہاں آتشکدہ، گرجا یا کلیسا بنا دیا جائے یا وہاں سے عام لوگوں پر شراب فروخت ہونے لگے تو

حضرت امام ابوحنیفہ رحمۃ اللہ علیہ کے نزدیک اس میں کرائے پر مکان دینے والے کے لئے کوئی حرج نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت) | | :--- | :--- |

مسئلہ ۷۵: از کلکتہ بتوسط قاضی عبدالوحید صاحب عظیم آبادی منتظم تحفہ حنفیہ ۱۲رجب ۱۳۱۶ھ کیا فرماتے ہیں حضرات علماء دین وحامیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ فی زمانہ شہر کلکتہ میں

---

۱ فتاوی قاضی خان کتاب الحظر والاباحۃ فصل فی التسبیح نولکشور لکھنؤ ۴/ ۴۹۴ ۲ الھدایۃ کتاب الکراھیۃ فصل فی الاستبراء مطبع یوسفی لکھنؤ ۴/ ۴۷۰

Fatawa Rizvia Volume 24

For a few days, a practice has become common that for the prevention of plague, several people in many neighborhoods form groups and go out at night with flags, symbols, lights, etc. In every street, alley, and public thoroughfare, they raise their voices together and loudly recite the poem:

'I have five (beings) with whom I extinguish the heat of the devastating plague: Al-Mustafa, Al-Murtada, their two sons, and Al-Fatima.'

(Translation: I have five [beings] through whom I extinguish the heat of the breaking and losing plague, and those five [beings] are (1) Prophet Muhammad Mustafa ﷺ, (2) Hazrat Ali Murtaza (RA), (3 & 4) his two sons, (5) Syeda Fatima-tuz-Zahra (RA)).

Leaving aside the Shias, some scholars of Ahl-e-Sunnat wa Jama'at consider this act permissible, while many consider it impermissible. So, is it permissible according to the glorious Shariah of Ahl-e-Sunnat wa Jama'at to go around reciting the aforementioned poem with the belief that it repels plague in the manner described?

The Answer:

The content of the poem is good in itself. Seeking mediation (Tawassul) through the beloveds of Allah is praiseworthy, and any doubt about mentioning these five is rejected. Limiting the number to four after the Holy Prophet ﷺ is not the intention; numbering doesn't negate the existence of more. The Messenger of Allah ﷺ says:

- "Verily, I have five names." Narrated by Bukhari from Jubayr ibn Mut'im (RA). | My names are five. Jubayr ibn Mut'im (RA) narrated it from Bukhari. (T)

And he ﷺ says:

- "I have been given five (things) which were not given to any prophet before me." Narrated by the two Sheikhs (Bukhari and Muslim) from Jabir ibn Abdullah (RA). | I have been granted five qualities that were not given to any prophet before me. Bukhari and Muslim narrated this from Jabir ibn Abdullah (RA). (T)

However, flags and symbols are useless, and seeking mediation through them is invalid. The aforementioned manners resemble idle play. Seeking mediation is a prayer, and the method of prayer...

---

1 Sahih al-Bukhari, Book of Tafsir, Surah As-Saff, Qadimi Kutub Khana Karachi, 12/727. 2 Sahih al-Bukhari, Book of Tayammum, Qadimi Kutub Khana Karachi, 8/48; Sahih Muslim, Book of Masajid and Places of Prayer, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/199.

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

कुछ दिनों से यह बात प्रचलित हो गई है कि महामारी को दूर करने के लिए, कई मोहल्लों में कुछ लोग समूह बनाकर रात के समय झंडों, निशानों और रोशनी आदि के साथ निकलते हैं। वे हर गली-कूचे और मुख्य सड़कों पर अपनी आवाज़ें मिलाकर ऊंचे स्वर में यह कविता पढ़ते हैं:

'ली ख़मसातुन अतफ़ी बिहा हर्रा अल-वबाई अल-हातिमा, अल-मुस्तफ़ा वल-मुर्तज़ा वबनाहुमा वल-फ़ातिमा।'

(अनुवाद: मेरे पास पाँच [हस्तियां] हैं जिनके माध्यम से मैं नष्ट कर देने वाली महामारी की गर्मी को बुझाता हूँ और वे पाँच [हस्तियां] ये हैं: (१) हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ, (२) हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ि.), (३ और ४) उनके दोनों पुत्र, (५) सैयदा फ़ातिमा-तुज़-ज़हरा (रज़ि.))

शियाओं को छोड़कर, सुन्नत वल जमाअत के कुछ विद्वान इस कृत्य को जायज़ (उचित) बताते हैं और अधिकांश विद्वान इसे नाजायज़ (अनुचित) बताते हैं। अत; वर्णित तरीके से महामारी को दूर करने के विश्वास के साथ उक्त कविता को पढ़ते हुए घूमना सुन्नत वल जमाअत की शरीयत के अनुसार कैसा है?

उत्तर:

कविता की विषयवस्तु अपने आप में अच्छी है। अल्लाह के प्यारों के माध्यम से वसीला (मध्यस्थता) चाहना प्रशंसनीय है और इन पाँचों के ज़िक्र पर कोई भी संदेह गलत है। हुज़ूर ﷺ के बाद चार तक सीमित करना उद्देश्य नहीं है, गिनती किसी और की उपस्थिति से इनकार नहीं करती। अल्लाह के रसूल ﷺ फ़रमाते हैं:

- "बेशक मेरे पाँच नाम हैं।" जुबैर बिन मुतइम (रज़ि.) से बुखारी ने रिवायत की है। | मेरे पाँच नाम हैं। जुबैर बिन मुतइम (रज़ि.) ने इसे बुखारी से रिवायत किया है। (त)

और आप ﷺ फ़रमाते हैं:

- "मुझे पाँच (चीज़ें) ऐसी दी गई हैं जो मुझसे पहले किसी नबी को नहीं दी गईं।" शेख़ैन (बुखारी और मुस्लिम) ने इसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत किया है। | मुझे पाँच विशेषताएँ

दी गई हैं जो मुझसे पहले किसी नबी को नहीं मिलीं। बुखारी और मुस्लिम ने इसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत किया है। (त)

लेकिन झंडे और निशान व्यर्थ हैं और उनके माध्यम से वसीला चाहना बातिल (अमान्य) है, और उक्त तौर-तरीके खेल-तमाशे के समान हैं। वसीला चाहना एक दुआ है और दुआ का तरीका...

---

1 सही अल-बुखारी, किताब-उत-तफ़सीर, सूरह अस-सफ़, कदीमी कुतुब खाना कराची, १२ / ७२७।
2 सही अल-बुखारी, किताब-उत-तयममुम, कदीमी कुतुब खाना कराची, ८ / ४८; सही मुस्लिम, किताब-उल-मसाजिद व मवाज़े-उत-सलाह, कदीमी कुतुब खाना कराची, १ / १९९।

पृष्ठ १८१ का ७२०

چند دنوں سے یہ امر مروج ہوا ہے کہ برائے دفعِ وبا اکثر محلوں میں چند چند لوگ ایک ایک فرقہ ہو کر راتوں کو مع علم و نشان و روشنی وغیرہ نکلتے ہیں اور ہر گلی کوچہ و شارعِ عام میں آوازیں ملا ملا کر بآوازِ بلند شعر

لی خمسۃٌ اطفی بھا حرَّ الوباء الحاطمہ، المصطفیٰ والمرتضیٰ وابناہما والفاظمہ

(میرے لئے پانچ (ہستیاں) ہیں ان کے ذریعے توڑ کر کھو دینے والی وبا کی گرمی بجھاتا ہوں اور وہ پانچ (ہستیاں) یہ ہیں (۱) حضرت محمد مصطفیٰ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم (۲) حضرت علی مرتضیٰ رضی اللہ تعالٰی عنہ (۳ و ۴) ان کے دونوں صاحبزادے (۵) سیدہ فاطمۃ الزہرا رضی اللہ تعالٰی عنہا)

کو پڑھتے پھرتے ہیں اس فعل کو قطع نظر اہلِ تشیع کے حضراتِ علماءِ اہلسنت و جماعت سے بھی بعض صاحب جائز بتاتے اور اکثر حضرات ناجائز بتاتے ہیں پس شعرِ مذکور کو دافعِ وبا اعتقاد کر کے بہ ہیئتِ مذکورہ پڑھتے پھرنا روئے شریعتِ غرا عند اہل السنۃ والجماعۃ کیسا ہے؟

الجواب:

مضمونِ شعر فی نفسہ حسن ہے اور محبوبانِ خدا سے توسل محمود اور ذکرِ خمسہ پر شبہ مردود کہ بعد حضورِ اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم چار میں حصر غیر مقصود، عددِ نانی زیادتی نہیں۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

- ان لی خمسۃ اسماء- رواہ البخاری عن جبیر بن مطعم رضی اللہ تعالٰی عنہ- | میرے پانچ نام ہیں۔ جبیر بن مطعم رضی اللہ تعالٰی عنہ نے اسے بخاری سے روایت کیا ہے۔ (ت)

اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم:

- اعطیت خمسا لم یعطھا احد من الانبیاء قبلی رواہ الشیخان عن جابر بن عبد اللہ رضی اللہ تعالٰی عنہما- | مجھے پانچ اوصاف عطا ہوئے جو مجھ سے پہلے کسی نبی کو عطا نہیں ہوئے۔ بخاری و مسلم نے اس کو جابر بن عبد اللہ رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا ہے۔ (ت)

مگر علم و نشان مہمل اور ان سے توسل باطل اور ہیئاتِ مذکورہ لہو و اشبہ، توسل دعا ہے اور دعا کا طریقہ

---

1 صحیح البخاری کتاب التفسیر سورۃ الصف قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۲ / ۷۲۷ 2 صحیح البخاری کتاب التیمم قدیمی کتب خانہ کراچی ۸ / ۴۸، صحیح مسلم کتاب المساجد و مواضع الصلوۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۱۹۹

Fatawa Ridawiyya Volume 24

Concealment, and Allah the Exalted knows best.

Problem 58: From Noakhali District, Dalal Bazar Post Office, Lakhipur village, sent by Abdul Wadud Sahib, 15 Shawwal 1317 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: if cholera breaks out in a village, to repel the disease, people gather in a field today and another tomorrow to call the Adhan (call to prayer) seven times every day and offer prayers with the intention of repelling calamity. Many people gather and cook sweets or Kheer (rice pudding) for the sake of Allah, take it to the field and eat it. They also recite Surah Ya-Sin and Surah Al-Mulk into the ear of a goat, blow on it, lead it around the house in four directions, and then slaughter the goat and feed everyone. Are these practices permissible or not?

The Answer: Calling the Adhan is the remembrance of Allah, and there is nothing more effective than the remembrance of Allah for salvation from the wrath and punishment of Allah, or for repelling calamity, sorrow, and distress. Allah the Exalted says: "Beware! In the remembrance of Allah do hearts find rest." (Quran 13:28) Listen, it is only in the remembrance of Allah that hearts find peace. (T)

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "No deed of a son of Adam is more effective in saving him from the punishment of Allah than the remembrance of Allah." It was asked: "Not even Jihad in the way of Allah?" He replied: "Not even Jihad in the way of Allah, unless one strikes with his sword (at the enemies of God) until it breaks." (Reported by Al-Tabarani in Al-Awsat and Al-Saghir with an authentic chain from Jabir ibn Abd Allah, and by Ibn Abi al-Dunya and Al-Bayhaqi).

Translation of the Arabic text in the table: No person's deed is more beneficial or provides more salvation from Allah's punishment than the remembrance of Allah. It was asked: Is even Jihad in the way of God not [as beneficial]? He said: Even Jihad in the way of Allah is not more beneficial or a greater cause of salvation compared to remembrance, except that one strikes with his sword (at God's enemies) to such an extent that the sword breaks. This was narrated by Imam Al-Tabarani in "Al-Awsat" and in "Al-Mu'jam al-Saghir" with a sahih chain from Hazrat Jabir bin Abdullah (may Allah be pleased with them both).

Footnotes: 1. Al-Quran Al-Karim 13/28 2. Al-Mu'jam Al-Awsat Hadith 2317, Maktaba al-Ma'arif Riyadh 3/156, Al-Targhib wal-Tarhib citing Al-Mu'jam Al-Awsat and Al-Zubn Kitab al-Dhikr wad-Du'a Hadith 13, Mustafa al-Babi Egypt 2/396

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

इख़फ़ा, और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है।

मसाला ५८: जिला नोआखाली, डाकखाना दलाल बाज़ार, मौज़ा लखीपुर से अब्दुल वदूद साहब द्वारा प्रेषित, १५ शव्वाल १३१७ हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि अगर किसी गाँव में हैज़ा की बीमारी फ़ैल जाए, तो बीमारी को दूर करने के लिए आज इस मैदान में, कल दूसरे मैदान में सात बार अज़ान कहकर हर रोज़ इस तरह नमाज़ पढ़ना कि बला टल जाए, बहुत से लोग जमा होकर और शीरीनी या खीर पकाकर अल्लाह के वास्ते मैदान में ले जाकर खाते हैं, और बकरी के कान में सूरह यासीन और सूरह तबारक अल्लज़ी पढ़कर दम करके मकान के चारों तरफ़ चक्कर दिलाते हैं, फिर उस बकरी को ज़िब्ह करके सबको खिलाते हैं, क्या ये बातें जाइज़ हैं या नहीं?

अल-जवाब: अज़ान अल्लाह का ज़िक्र है और अल्लाह के ज़िक्र के बराबर अल्लाह के ग़ज़ब और अज़ाब से नजात देने वाली बला, ग़म और परेशानी को दूर करने वाली कोई चीज़ नहीं। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "सुन लो अल्लाह तआला की याद ही से दिलों को चैन मिलता है।" (कुरान १३/२८)

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: अरबी इबारत का अनुवाद: "आदम के बेटे का कोई भी अमल अल्लाह के ज़िक्र से बढ़कर अल्लाह के अज़ाब से निजात दिलाने वाला नहीं है।" अर्ज़ किया गया: क्या अल्लाह की राह में जिहाद भी नहीं? फ़रमाया: अल्लाह की राह में जिहाद भी ज़िक्र के मुक़ाबले में ज़्यादा मुफ़ीद और नजात का बाइस नहीं, सिवाय इसके कि अपनी तलवार से (खुदा के दुश्मनों पर) इस क़दर वार करे कि तलवार टूट जाए।

तालिका में उर्दू अनुवाद: किसी शख्स का कोई अमल ऐसा नहीं जो अल्लाह तआला के ज़िक्र से ज़्यादा मुफ़ीद और अज़ाब-ए-इलाही से ज़्यादा नजात दिलाने वाला हो। अर्ज़ की गई कि क्या खुदा की राह में जिहाद भी नहीं। फ़रमाया: अल्लाह तआला की राह में जिहाद भी बमुकाबला ज़िक्र के ज़्यादा मुफ़ीद और नजात का बाइस नहीं मगर ये कि अपनी तलवार से (खुदा के दुश्मनों पर) इस क़दर वार करे कि तलवार टूट जाए। इसको इमाम तबरानी ने "अल-औसत" में और मुअजम सगीर में सही सनद के साथ हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से (रिवायत किया)।

पादलेख (Footnotes): १. अल-कुरान अल-करीम १३/२८ २. अल-मुअजम अल-औसत हदीस २३१७ मकतबा अल-मआरिफ रियाज़ ३/१५६, अल-तरगीब वत-तरहीब बहवाला अल-मुअजम अल-औसत वल-ज़ुबन किताब अद-ज़िक्र वद-दुआ हदीस १३ मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र २/३९६

पेज १८२ ऑफ़ ७२०

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

اخفاء واللہ سبحنہ وتعالٰی اعلم

مسئلہ ۵۸: از ضلع نواکھالی ڈاکخانہ دلال بازار موضع لکھی پور مرسلہ عبد الودود صاحب ۱۵ شوال ۱۳۱۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اگر کسی گاؤں میں مرضِ ہیضہ جاری ہو تو برائے دفع مرض ہیضہ آج اس میدان، کل دوسرے میدان میں سات بار اذان کہہ کر ہر روز اس طور پر نماز پڑھنا بہ نیت دفع البلا بہت لوگ جمع ہو کر کے اور شیرینی یا کھیر پکا کر کے اللہ کے واسطے میدان میں لے جا کر کھاتے ہیں اور بکری کے کان میں سورہ یٰسین اور سورہ تبارک الذی پڑھ کر دم کر کے مکان کے چاروں طرف چکر دلاتے ہیں پھر اس بکری کو ذبح کر کے سب کو کھلاتے ہیں، آیا یہ باتیں جائز ہیں یا نہیں؟

الجواب: اذان ذکرِ الٰہی ہے اور ذکرِ الٰہی کے برابر غضب و عذابِ الٰہی سے نجات دینے والی بلا، غم و پریشانی کی دفع کرنے والی کوئی چیز نہیں۔ اللہ تعالٰی فرماتا ہے: "اَلَا بِذِکْرِ اللہِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ" ۱ سن لو اللہ تعالٰی کی یاد ہی سے دلوں کو چین ملتا ہے۔ (ت)

رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: مَا عَمِلَ آدَمِیٌّ عَمَلًا اَنْجٰی لَہٗ مِنْ عَذَابِ اللہِ مِنْ ذِکْرِ اللہِ قِیْلَ وَلَا الْجِھَادُ فِیْ سَبِیْلِ اللہِ، قَالَ وَلَا الْجِھَادُ فِیْ سَبِیْلِ اللہِ اِلَّا اَنْ یَّضْرِبَ بِسَیْفِہٖ حَتّٰی یَنْقَطِعَ۔ رواہ الطبرانی فی الاوسط والصغیر بسند صحیح عن جابر بن عبد اللہ رضی اللہ عنہما ولا بن ابی الدنیا والبیہقی ۲

جدول میں اردو ترجمہ: کسی شخص کا کوئی عمل ایسا نہیں جو اللہ تعالٰی کے ذکر سے زیادہ مفید اور عذابِ الٰہی سے زیادہ نجات دلانے والا ہو۔ عرض کی گئی کہ کیا خدا کی راہ میں جہاد بھی

نہیں۔ فرمایا: اللہ تعالیٰ کی راہ میں جہاد بھی بمقابلہ ذکر کے زیادہ مفید اور نجات کا باعث نہیں مگر یہ کہ اپنی تلوار سے (خدا کے دشمنوں پر) اس قدر وار کرے کہ تلوار ٹوٹ جائے۔ اس کو امام طبرانی نے "الاوسط" میں اور معجم صغیر میں صحیح سند کے ساتھ حضرت جابر بن عبد اللہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے (روایت کیا)۔

حواشی: ۱۔ القرآن الکریم ۱۳/ ۲۸ ۲۔ المعجم الاوسط حدیث ۲۳۱۷ مکتبۃ المعارف ریاض ۳ / ۱۵۶ ، الترغیب والترہیب بحوالہ المعجم الاوسط والزبن کتاب الذکر والدعاء حدیث ۱۳ مصطفی البابی مصر ۲/ ۳۹۶

Fatawa Razawiyya - Volume 24

[Arabic Text Transcription]: On the authority of Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them), from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), who said: "Indeed, for everything there is a polish, and the polish of hearts is the remembrance of Allah. And nothing is more saving from the punishment of Allah than the remembrance of Allah." It was asked: "Not even Jihad in the path of Allah?" He said: "Not even if one strikes with his sword until it breaks." [1] It is also narrated by Ahmad, Abu Bakr ibn Abi Shaybah, and al-Tabarani in 'al-Mu'jam al-Kabir' with a sound chain on the authority of Mu'adh bin Jabal (may Allah be pleased with him), from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "No human has ever performed a deed more saving from the punishment of Allah than the remembrance of Allah." They asked: "Not even Jihad in the path of Allah?" He said: "Not even Jihad, unless you strike with your sword until it breaks, then strike with it until it breaks, then strike with it until it breaks." [2]

[Urdu Text Translation]: It is narrated on the authority of [the aforementioned sources], and Ibn Abi al-Dunya and Imam al-Bayhaqi have narrated with a chain from Hazrat Abdullah ibn Umar (may Allah be pleased with them) that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "There is a cleaning agent for every thing, and the cleaning for hearts is the remembrance of Allah Almighty. Nothing is more beneficial in terms of salvation from the punishment of God than the remembrance of God, even to the extent," he said, "that even Jihad in the way of Allah is not [as beneficial], even if one continues to strike with his sword until it breaks." And in Musnad Ahmad, Abu Bakr ibn Abi Shaybah, and Tabarani in Mu'jam Kabir, it is narrated with a sound chain from Hazrat Mu'adh bin Jabal (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "No act of man is more beneficial and profitable in terms of delivering and saving from the punishment of God than His remembrance." People asked, "Is not even Jihad in the path of Allah [as beneficial]?" He replied, "Even Jihad is not greater than remembrance, unless you strike the disbelievers with your sword to such an extent that the sword breaks, then strike again and it breaks, and strike again and it breaks." (T)

And the original reason for going to the wilderness for supplication, seeking relief from calamity, and for the remembrance of God is the Prayer for Rain (Salat al-Istisqa), and the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "If you knew what I know..." till the saying of the Holy Prophet (peace and blessings

of Allah be upon him), "I wish you also knew what I know," this noble saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him)...

[Footnotes]: 1. Al-Targhib wa'l-Tarhib, citing Ibn Abi al-Dunya and al-Bayhaqi, Book of Remembrance and Supplication, Hadith 10, Mustafa al-Babi, Egypt 2/396; Shu'ab al-Iman, Hadith 522, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut 1/392. 2. Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 352, Al-Maktaba al-Faysaliyya, Beirut 20/167.

फतावा रज़विया - जिल्द 24

[अरबी पाठ का अनुवाद]: हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "बेशक हर चीज़ के लिए एक माँजने वाली चीज़ (पॉलिश) है और दिलों को माँजने वाली चीज़ अल्लाह का ज़िक्र है। अल्लाह के अज़ाब से बचाने वाली अल्लाह के ज़िक्र से बढ़कर कोई चीज़ नहीं है।" कहा गया: "क्या अल्लाह की राह में जिहाद भी नहीं?" आपने फरमाया: "यहाँ तक कि वह अपनी तलवार से वार करे और वह टूट जाए।" [1] और इमाम अहमद, अबू बक्र इब्न अबी शैबा और तबरानी ने 'अल-मुअजम अल-कबीर' में सही सनद के साथ हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ियल्लाहु अन्हु) से और उन्होंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत की: "किसी आदमी ने अल्लाह के ज़िक्र से बढ़कर कोई ऐसा अमल नहीं किया जो उसे अल्लाह के अज़ाब से ज़्यादा निजात दिलाने वाला हो।" उन्होंने अर्ज़ किया: "और न ही अल्लाह की राह में जिहाद?" फरमाया: "और न ही जिहाद, सिवाय इसके कि तुम अपनी तलवार से वार करो यहाँ तक कि वह टूट जाए, फिर उससे वार करो यहाँ तक कि वह टूट जाए, फिर उससे वार करो यहाँ तक कि वह टूट जाए।" [2]

[उर्दू पाठ का अनुवाद]: हवाले से रिवायत किया है और इब्न अबी अद्दुनिया और इमाम अल-बैहकी ने हज़रत अब्दुल्ला इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की सनद के साथ हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत फरमाई: "हर चीज़ की सफाई के लिए कोई न कोई चीज़ है और दिलों की सफाई अल्लाह तआला के ज़िक्र से होती है। अल्लाह तआला के अज़ाब से नजात के सिलसिले में ज़िक्र-ए-इलाही से बढ़कर कोई चीज़ मुफीद नहीं, यहाँ तक कि फरमाया: 'अल्लाह तआला की राह में जिहाद भी नहीं, अगरचे वह अपनी तलवार से उसके टूटने तक वार करता रहे।'" और मुसनद अहमद, अबू बक्र इब्न अबी शैबा और तबरानी ने मुअजम कबीर में सनद-ए-सही के साथ हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ियल्लाहु अन्हु) के हवाले से हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत फरमाई कि इंसान का कोई अमल खुदा के अज़ाब से छुड़ाने और नजात दिलाने के सिलसिले में उसके ज़िक्र से बढ़कर मुफीद और नफा बख्श नहीं, लोगों ने अर्ज़ की: "क्या जिहाद फी सबीलिल्लाह भी नहीं?" फरमाया: "जिहाद भी ज़िक्र से बढ़कर नहीं सिवाय इसके कि तू अपनी तलवार से काफिरों पर इस हद तक वार करे कि तलवार टूट जाए फिर वार करे और वह टूट जाए फिर वार करे और वह टूट जाए।" (त)

और दुआ व तलब, दफा-ए-बला और ज़िक्र-ए-खुदा के लिए जंगल को जाने की असल नमाज़-ए-इस्तिसका है, और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "काश तुम भी वह कुछ जानते जो कुछ मैं जानता हूँ," हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के इस इरशाद-ए-गिरामी...

[पाद टिप्पणियाँ]: 1. अत-तरग़ीब वत-तरहीब, इब्न अबी अद्दुनिया और अल-बैहकी के हवाले से, किताबुज़-ज़िक्र वद-दुआ, हदीस 10, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र 2/396; शुआबुल ईमान, हदीस 522, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या, बेरुत 1/392। 2. अल-मुअजमुल कबीर, हदीस 352, अल-मकतबातुल फैसलिया, बेरुत 20/167।

عن عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما عن النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ان لکل شیئ صقالۃ و ان صقالۃ القلوب ذکر اللہ و ما من شیئی انجی من عذاب اللہ من ذکر اللہ قال ولا الجھاد فی سبیل اللہ قال ولو ان یضرب بسیفہ حتی ینقطع 1 ولا حمد وابی بکر بن ابی شیبۃ و الطبرانی فی الکبیر بسند صحیح عن معاذ بن جبل رضی اللہ تعالیٰ عنہ عن النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ما عمل آدمی عملا انجی لہ من عذاب اللہ من ذکر اللہ قالوا ولا الجھاد فی سبیل اللہ قال ولا الجھاد الا ان تضرب بسیفک حتی ینقطع ثم تضرب بہ حتی ینقطع ثم تضرب بہ حتی ینقطع 2۔

حوالہ سے روایت کیا ہے اور ابن ابی الدنیا اور امام بیہقی نے حضرت عبد اللہ ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کی سند کے ساتھ حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے روایت فرمائی: ہر شے کی صفائی کے لئے کوئی نہ کوئی چیز ہے اور دلوں کی صفائی اللہ تعالیٰ کے ذکر سے ہوتی ہے کوئی چیز خدا کے عذاب سے نجات کے سلسلے میں ذکر الہی سے بڑھ کر مفید نہیں، حتی کہ فرمایا اللہ تعالیٰ کی راہ میں جہاد بھی نہیں اگرچہ وہ اپنی تلوار سے اس کے ٹوٹنے تک وار کرتا رہے۔ اور مسند احمد، ابو بکر ابن ابی شیبہ اور طبرانی نے معجم کبیر میں بسند صحیح حضرت معاذ بن جبل رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حوالے سے حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے روایت فرمائی کہ انسان کا کوئی عمل خدا کے عذاب سے چھڑانے اور نجات دلانے کے سلسلے میں اس کے ذکر سے بڑھ کر مفید اور نافع نہیں، لوگوں نے عرض کی کیا جہاد فی سبیل اللہ بھی نہیں، فرمایا جہاد بھی ذکر سے بڑھ کر نہیں الا یہ کہ تو اپنی تلوار سے کافروں پر اس حد تک وار کرے کہ تلوار ٹوٹ جائے پھر وار کرے اور وہ ٹوٹ جائے پھر وار کرے اور وہ ٹوٹ جائے۔ (ت)

اور نظر و طلب دفع بلا و ذکر خدا کے لئے جنگل کو جانے کی اصل نماز استسقاء ہے، اور رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: لو تعلمون ما اعلم الی قولہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم | کاش تم بھی وہ کچھ جانتے جو کچھ میں جانتا ہوں، حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے اس ارشاد گرامی

1 الترغیب والترہیب بحوالہ ابن ابی الدنیا والبیہقی کتاب الذکر والدعاء حدیث ۱۰ مصطفی البابی مصر ۲/ ۳۹۶، شعب الایمان حدیث ۵۲۲ دار الکتب العلمیہ بیروت ۱/ ۳۹۲ 2 المعجم الکبیر حدیث ۳۵۲ المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۲۰/ ۱۶۷

"You would have gone out to the open roads crying out to Allah."[1] Narrated by al-Tabarani in al-Kabir, and al-Hakim and al-Bayhaqi in al-Shu'ab with a sound chain from Abu al-Darda', and al-Hakim with a sound chain from Abu Dharr (may Allah be pleased with them both). | [Translation]: That you people would have gone out towards the heights, shouting and crying out towards Allah Almighty. Imam al-Tabarani in Mu'jam al-Kabir, and al-Hakim and al-Bayhaqi in Shu'ab al-Iman have narrated this with a sound chain from Hadrat Abu al-Darda' (may Allah be pleased with him), and al-Hakim with a sound chain from Hadrat Abu Dharr al-Ghifari (may Allah be pleased with both). (T)

And the number seven has a special effect in warding off harm and calamity. The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) said during his illness of passing away: "Pour over me from seven water skins whose seals have not been opened." It is recorded in Sahih al-Bukhari from Aisha (may Allah be pleased with her):

"When he (peace and blessings be upon him) entered my house and his pain intensified, he said: 'Pour over me from seven water skins whose ties have not been untied,[2] so that I may address the people.'" | [Translation]: When the Noble Prophet (peace and blessings be upon him) came to my house, his illness intensified. He said: "Pour water over me from seven such water skins whose bonds have not been opened (sealed water skins), perhaps I may take a pledge from the people." (T)

It is mentioned in Mawahib Sharif:

"And it has been said regarding the wisdom of this number that it has a special property in repelling the harm of poison and magic."[3] | [Translation]: It has been said that the wisdom and secret in this number seven is that it has a special effect in neutralizing the harmful effects of poison and magic. (T)

In Sharh Zarqani from Fath al-Bari, it is stated:

[1] Majma' al-Zawa'id citing al-Tabarani from Abu al-Darda', Kitab al-Zuhd, Dar al-Kutub Beirut 10/330; al-Mustadrak lil-Hakim, Kitab al-Riqaq 4/320; Shu'ab al-Iman, Hadith 937, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut 1/287. [2] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Maghazi, Chapter: The illness of the Prophet (peace and blessings be upon him), Qadimi Kutub Khana Karachi 2/639. [3] Al-Mawahib al-Ladunniyah, Tenth Objective, First Chapter, Al-Maktab al-Islami Beirut 4/520.

फ़तावा रज़विया | जिल्द २४

"तुम लोग रास्तों की ओर निकल जाते, अल्लाह की ओर चीखते-चिल्लाते।"[1] इसे तब्रानी ने अल-कबीर में, और हाकिम और बैहक़ी ने शुअ़ब में हज़रत अबू दर्दा से सही सनद के साथ, और हाकिम ने हज़रत अबू ज़र (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो) से सही सनद के साथ रिवायत किया है। | [अनुवाद]: कि तुम लोग ऊंचाइयों की ओर निकल जाते, अल्लाह तआला की ओर गिड़गिड़ाते हुए। इमाम तब्रानी ने मुअजम कबीर में और हाकिम ने और बैहक़ी ने शुअ़बुल ईमान में सही सनद के साथ हज़रत अबू दर्दा रदियल्लाहु तआला अ़न्हु से और हाकिम ने सही सनद के साथ हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रदियल्लाहु तआला अ़न्हुमा से इसे रिवायत किया है। (त)

और सात की संख्या में हानि और विपत्ति को दूर करने का एक विशेष प्रभाव है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने अपने विसाल (स्वर्गवास) की बीमारी के दौरान फ़रमाया: "मुझ पर सात मशकों से पानी डालो जिनके मुँह बंद हों।" सही बुखारी में हज़रत आयशा (रदियल्लाहु तआला अ़न्हा) से वर्णित है:

"जब वह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) मेरे घर में दाखिल हुए और उनकी पीड़ा बढ़ गई, तो उन्होंने फ़रमाया: 'मुझ पर सात ऐसी मशकों से पानी डालो जिनके बंधन न खोले गए हों,[2] ताकि मैं लोगों को उपदेश दे सकूँ।'" | [अनुवाद]: जब हुज़ूर अलैहिस सलातु वस्सलाम मेरे घर तशरीफ़ लाए तो आपकी बीमारी बढ़ गई। फ़रमाया: "मुझ पर ऐसे सात मश्कीज़ों का पानी बहाओ जिनके बंधन न खोले गए हों (बंद मश्कीज़े हों), शायद मैं लोगों से कोई अहद (प्रतिज्ञा) ले सकूँ।" (त)

मवाहिब शरीफ़ में है:

"और इस संख्या की हिकमत (बुद्धिमत्ता) के बारे में कहा गया है कि इसमें ज़हर और जादू के नुकसान को दूर करने का विशेष गुण है।"[3] | [अनुवाद]: कहा गया है कि इस सात की संख्या में हिकमत और राज़ यह है कि इसमें ज़हर और जादू के नुकसान को खत्म करने का विशेष प्रभाव है। (त)

शरह ज़रक़ानी में फ़त्ह अल-बारी के हवाले से है:

[1] मज्मअ अल-ज़वाइद, तब्रानी के हवाले से अबू दर्दा से, किताबुज़ ज़ुहद, दारुल कुतुब बेरूत 10/330; अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताबुर रिक़ाक़ 4/320; शुअ़बुल ईमान, हदीस 937,

दारुल कुतुब अल-इल्मिया बेरूत 1/287। [2] सही अल-बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, अध्याय: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बीमारी, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 2/639। [3] अल-मवाहिब अल-लदुनिय्या, दसवां उद्देश्य, पहला अध्याय, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत 4/520।

لخرجتم الی الصعدات تجأرون الی اللہ ۱، رواہ الطبرانی فی الکبیر والحاکم والبیھقی فی الشعب بسند صحیح عن ابی الدرداء والحاکم بسند صحیح عن ابی ذر رضی اللہ تعالٰی عنھما۔ | کہ تم لوگ بلندیوں کی طرف نکل جاتے اللہ تعالٰی کی طرف چیختے چلاتے ہوئے، امام طبرانی نے معجم کبیر میں اور حاکم نے اور بیہقی نے شعب الایمان میں صحیح سند کے ساتھ حضرت ابو درداء رضی اللہ تعالٰی عنہ سے حاکم نے صحیح سند کے ساتھ حضرت ابوذر غفاری رضی اللہ تعالٰی عنہما سے اس کو روایت کیا ہے۔ (ت)

اور سات کے عدد کو دفع ضرر و آفت میں ایک تاثیر خاص ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے اپنے مرض وصال شریف میں فرمایا مجھ پر سات مشکوں پر سربستہ کا پانی ڈالو۔ صحیح بخاری شریف میں ہے عائشہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے ہے :

انہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم لما دخل بیتی واشتد وجعہ قال اھریقوا علی من سبع قرب لم تحلل او کیتھن ۲ لعلی اعھد الی الناس۔ | حضور علیہ الصلوۃ والسلام جب میرے گھر تشریف لائے تو آپ کے مرض میں اضافہ ہو گیا۔ فرمایا مجھ پر ایسے سات مشکیزوں کا پانی بہاؤ کہ جن کے بندھن نہ کھولے گئے ہوں (سربستہ مشکیزے ہوں) شاید میں لوگوں سے کوئی عہد لوں۔ (ت)

مواہب شریف میں ہے :

وقد قیل فی الحکمۃ فی ھذا العدد ان لہ خاصیۃ فی دفع ضرر السم والسحر ۳۔ | کہا گیا کہ اس سات کے عدد میں حکمت اور راز یہ ہے کہ اس کو زہر اور جادو کا نقصان زائل کرنے میں خاص تاثیر ہے۔ (ت)

شرح زرقانی میں فتح الباری سے ہے :

۱ مجمع الزوائد بحوالہ الطبرانی عن ابی الدرداء کتاب الزھد دار الکتب بیروت ۱۰ / ۳۳۰، المستدرک للحاکم کتاب الرقاق ۴ / ۳۲۰، شعب الایمان حدیث ۹۳۷ دار الکتب العلمیہ بیروت ۱ / ۲۸۷ ۲ صحیح البخاری کتاب المغازی باب مرض النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۶۳۹ ۳ المواہب اللدنیہ المقصد العاشر الفصل الاول المکتب الاسلامی بیروت ۴ / ۵۲۰

It has been established in the Hadith that whoever eats seven Ajwa dates in the morning, neither poison nor magic will harm him that day. In Nasai Sharif, it is mentioned that Surah Al-Fatihah should be recited seven times over a person in distress; its chain of narration is authentic. In Muslim Sharif, it is mentioned that for one suffering from pain, these words should be recited seven times: "I seek refuge in the glory and power of Allah from the evil of what I find and of what I fear." Meaning, I seek refuge in the honor and power of Allah Almighty from the evil of what I experience and what I am cautious of. In Sunan Nasai, it is mentioned that whoever prays for a sick person whose death is not predestined, using these words seven times, they will recover. The words are: "I ask Allah the Almighty, Lord of the Mighty Throne, to heal you." Meaning, I ask Allah the Glorious, the Lord of the Great Throne, to grant you health (T).

There is blessing in congregation, and the prayer of a gathering of Muslims is closer to acceptance. Scholars say that where forty righteous Muslims gather, there is certainly a Friend of Allah (Wali Allah) among them. It is stated in the Hadith:

When a group from any nation, forty or more, bears witness, Allah Almighty accepts their testimony. Imam Al-Tabarani reported it in Al-Mu'jam Al-Kabir and Al-Diya Al-Maqdisi from the father of Abu Al-Malih. (T)

It is stated in Tayseer Sharh Jami' al-Saghir: It was said that the wisdom in the number forty is that it has not gathered...

---

1. Sharh al-Zarqani 'ala al-Mawahib al-Laduniyya, Al-Maqsad Al-'Ashir, Chapter One, Dar al-Ma'rifa Beirut, 8/258.
2. Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 503, Al-Maktaba al-Faysaliyya Beirut, 11/190.

हदीस पाक से साबित है कि जो कोई सुबह सवेरे सात अजवा खजूरें खा ले, तो उसे उस दिन ज़हर और जादू से नुक़सान नहीं पहुँचेगा। नसाई शरीफ़ में है कि मुसीबत ज़दा पर सात मर्तबा फ़ातिहा पढ़ी जाए, इसकी सनद सही है। मुस्लिम शरीफ़ में है कि जिसे दर्द की शिकायत हो उस पर ये कलमात सात मर्तबा पढ़े जाएँ "मैं अल्लाह की इज़्ज़त और उसकी कुदरत की पनाह माँगता हूँ उस बुराई से जो मैं महसूस करता हूँ और जिससे डरता हूँ।" यानी अल्लाह तआला की इज़्ज़त और उसकी कुदरत से पनाह लेता हूँ इसके शर (बुराई) से जिसे मैं पाता हूँ और जिससे डरता हूँ (चौकन्ना रहता हूँ)। सुनन नसाई शरीफ़ में है कि जो कोई ऐसे मरीज़ के पास, जिसकी मौत मुक़द्दर न हो, इन अलफ़ाज़ से सात दफ़ा दुआ करे तो वो सेहतयाब हो जाएगा, कलमात ये हैं: "मैं अल्लाह अज़मत वाले से सवाल करता हूँ जो बड़े अर्श का मालिक है कि वो तुझे शिफ़ा अता फ़रमाए।" (त)

जमाअत में बरकत है और मुसलमानों के मजमे की दुआ क़बूलियत के ज़्यादा क़रीब है, उलेमा फ़रमाते हैं जहाँ चालीस नेक मुसलमान जमा होते हैं उनमें एक वली अल्लाह ज़रूर होता है। हदीस में है:

जब कोई जमाअत हाज़िर हो और चालीस अफ़राद या उससे ज़्यादा हों तो अल्लाह तआला उनकी शहादत को जाइज़ क़रार देता है। इमाम तबरानी ने मजमे कबीर में और ज़िया मक़दसी ने अबू अल-मलीह के वालिद के हवाले से इसे रिवायत किया है। (त)

तयसीर शरह जामे सगीर में फ़रमाया: कहा गया है कि चालीस के अदद में हिकमत ये है कि...

---

1. शरह अज़-ज़रक़ानी अलल मवाहिब अल-लदुन्निया, अल-मक़सद अल-आशिर, अल-फ़सल अल-अव्वल, दारुल मारिफ़ा बेरुत 8/258.
2. अल-मुअजम अल-कबीर हदीस 503, अल-मक्तबा अल-फ़ैसलिया बेरुत 11/190.

पृष्ठ 185/720

وقد ثبت حدیث من تصبح بسبع تمرات عجوۃ لم یضرہ ذلك الیوم سم ولاسحر وللنسائی فی قرآۃ الفاتحۃ علی المصاب سبع مرات وسندہ صحیح ولمسلم القول لمن بہ وجع اعوذ بعزۃ اللہ وقدرتہ من شر ما اجد واحاذر سبع مرات وفی النسائی من قال عند مریض لم یحضر اجلہ اسأل اللہ العظیم رب العرش العظیم ان یشفیك سبع مرات۔

حدیث پاک سے ثابت ہے کہ جو کوئی صبح سویرے سات عجوہ کھجوریں کھالے تو اسے اس دن زہر اور جادو سے نقصان نہیں پہنچے گا۔ نسائی شریف میں ہے کہ مصیبت زدہ پر سات مرتبہ فاتحہ پڑھی جائے ، اس کی سند صحیح ہے۔ مسلم شریف میں ہے کہ جس کو درد کا عارضہ ہو اس پر یہ کلمات سات مرتبہ پڑھے جائیں : اَعُوْذُ بِعِزَّۃِ اللہِ وَقُدْرَتِہٖ مِنْ شَرِّ مَا اَجِدُ وَ اُحَاذِرُ یعنی اللہ تعالٰی کی عزت اور اس کی قدرت سے پناہ لیتا ہوں اس کے شر سے جس کو میں پاتا ہوں اور اس سے ڈرتا ہوں (چوکنا رہتا ہوں) سنن نسائی شریف میں ہے کہ جو کوئی ایسے مریض کے پاس ، جس کی موت مقدر نہ ہو، ان الفاظ سے سات دفعہ دعا کرے تو وہ صحت یاب ہو جائے گا، کلمات یہ ہیں: اَسْأَلُ اللہَ الْعَظِیْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ اَنْ یَّشْفِیَكَ یعنی میں اللہ عظمت والے سے سوال کرتا ہوں جو بڑے عرش کا مالک ہے کہ وہ تجھے شفا عطا فرمائے (ت)

جماعت میں برکت ہے اور دعائے مجمع مسلمین اقرب بقبول ، علما فرماتے ہیں جہاں چالیس مسلمان صالح جمع ہوتے ہیں ان میں ایک ولی اللہ ضرور ہوتا ہے۔ حدیث میں ہے :

اذا شہدت امۃ من الامم وہم اربعون فصاعدا اجاز اللہ تعالٰی شہادتہم۔ رواہ الطبرانی فی الکبیر والضیاء المقدسی عن والدا ابی الملیح۔

جب کوئی جماعت حاضر ہو اور چالیس افراد یا اس سے زیادہ ہوں تو اللہ تعالیٰ ان کی شہادت کو جائز قرار دیتا ہے۔ امام طبرانی نے معجم کبیر میں اور ضیاء مقدسی نے ابو المليح کے والد کے حوالے سے اس کو روایت کیا ہے۔ (ت)

تیسیر شرح جامع صغیر میں فرمایا : قیل وحکمة الاربعین انه لم یجتمع | کہا گیا ہے کہ چالیس کے عدد میں حکمت یہ ہے کہ

---

1 شرح الزرقانی علی المواہب اللدنیۃ المقصد العاشر الفصل الاول دارالمعرفۃ بیروت ۸ / ۲۵۸ 2 المعجم الکبیر حدیث ۵۰۳ المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۱۱ / ۱۹۰

Fatawa Razawiyya Volume 24

“This number is never complete except that there is definitely a Wali (Friend of Allah) among them.” (T)

But this prayer should be obligatory (fard); if performing voluntary (nafl) prayers, then perform them separately, otherwise voluntary prayer with a large congregation is disliked (Makruh). If there are four followers, it is by consensus, and if three, then according to the preferred view. It is stated in Durr al-Mukhtar:

“Voluntary prayer in congregation is disliked if it is by way of public invitation (tada’i), in such a way that four people follow one person, as mentioned in Durr.” (T)

It is stated in Radd al-Muhtar:

“As for one person following one, or two following one, it is not disliked. But for three following one, there is a disagreement. Al-Bahr al-Ra’iq has quoted this from Al-Kafi.” (T)

In Tahtawi ala Maraqi al-Falah, under the commentator's statement 'If three followed one, there is a difference of opinion' (if three people follow one, it is disputed - T), he said: 'And the most correct view is the lack of dislike' (4) (the more correct view is that there is no dislike in this either - T). Feeding sweets or food to the poor is charity (sadaqah), to relatives it is maintaining ties (silah rahm), and to friends it is hospitality (diyafat); and these three things are causes for the descent of mercy and the removal of calamities and troubles. Abu Ya’la narrates from Anas (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

“Verily, charity and maintaining family ties, Allah increases lifespan through both of them, and fends off an evil death through them.” Indeed, charity and maintaining family ties increase one's age and ward off an evil death.

[Footnotes] 1. Al-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir, Letter Hamza, Maktabah al-Imam al-Shafi'i, Riyadh, 1/110. 2. Durr-e-Mukhtar, Kitab al-Salah, Bab al-Witr wa al-Nawafil, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/99. 3. Radd al-Muhtar, Kitab al-Salah, Bab al-Witr wa al-Nawafil, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/476. 4. Maraqi al-Falah with Sharh al-Tahtawi on Maraqi al-Falah, Chapter explaining voluntary prayers, Nur Muhammad Kutub Khana, Karachi, p. 211.

फतावा रज़विया जिल्द २४

“यह संख्या कभी पूरी नहीं होती सिवाय इसके कि उनमें कोई न कोई वली (अल्लाह का मित्र) ज़रूर होता है।” (त)

मगर यह नमाज़ फर्ज़ होनी चाहिए; नफ्ल पढ़ें तो अलग-अलग, वरना नफ्ल जमाअत-ए-कसीरा (बड़ी जमात) के साथ मकरूह है, चार मुक्तदी हों तो सर्वसम्मति से और तीन हों तो तरजीह दिए गए विचार के अनुसार। दुर्रे मुख्तार में है:

“नवाफिल बा-जमाअत पढ़ना मकरूह है बशर्ते कि वह तदाई (सार्वजनिक आमंत्रण) के तौर पर हो इस तरह कि चार आदमी एक की इक्तिदा (अनुसरण) करें, जैसा कि दुर्र में है।” (त)

रद अल-मुहतार में है:

“लेकिन एक का एक की इक्तिदा करना या दो का एक की इक्तिदा करना मकरूह नहीं और तीन के एक की इक्तिदा करने में मतभेद है। अल-बहररर्राइक ने अल-काफी से नक़ल किया है।” (त)

तहतावी अला मराकिल फलाह में शारेह के इस कौल के तहत कि 'अगर तीन शख्स एक की इक्तिदा करें तो इसमें इख्तिलाफ किया गया है' (त) फरमाया: 'और ज्यादा सही यह है कि इसमें भी कराहत (नापसंदगी) नहीं है' (४) (त)। शीरीनी या खाना फुकरा (गरीबों) को खिलाएं तो सदका है और अकारिब (रिश्तेदारों) को तो सिला-ए-रहम और अहबाब (दोस्तों) को तो जियाफत; और ये तीनों बातें रहमत के नुज़ूल और बला व मुसीबत टालने का जरिया हैं। अबू याला अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रावी, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

“बेशक सदका और सिला-ए-रहम, इन दोनों से अल्लाह तआला उम्र बढ़ाता है और बुरी मौत को टालता है।”

[फुटनोट्स] १. अत-तयसीर शरह अल-जामि’ अस-सगीर, हर्फ अल-हमज़ा, मकतबा अल-इमाम अल-शाफई, रियाद १/११० २. दुर्रे मुख्तार किताब अस-सलाह, बाब अल-वित्र व अल-नवाफिल, मतबा मुजतबाई दिल्ली १/९९ ३. रद अल-मुहतार किताब अस-सलाह, बाब अल-वित्र व अल-नवाफिल, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी बेरूत १/४७६ ४. मराकिल फलाह मअ शरह अत-तहतावी अला मराकिल फलाह, फसल बयान अन-नवाफिल, नूर मुहम्मद कुतुब खाना कराची पृ. २११

पेज १८६ / ७२०

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

ہذا العدد الا وفیھم ولی ۱- یہ تعداد کبھی پوری نہیں ہوتی بجز اس کے کہ ان میں کوئی نہ کوئی ولی ضرور ہوتا ہے (ت)

مگر یہ نماز فرض ہونا چاہئے، نفل پڑھیں تو الگ الگ، ورنہ نفل جماعت کثیرہ کے ساتھ مکروہ ہے، چار مقتدی ہوں تو بالاتفاق اور تین ہوں تو علی المرجوع۔ در مختار میں ہے:

التطوع بجماعۃ یکرہ لو علی سبیل التداعی بان یقتدی اربعۃ بواحد کما فی الدرر ۲- نوافل باجماعت پڑھنا مکروہ ہے بشرطیکہ بطور تداعی ہو بایں طریقہ کہ چار آدمی ایک کی اقتداء کریں، جیسا کہ درر میں ہے (ت)

ردالمحتار میں ہے:

اما اقتداء واحد بواحد اواثنین بواحد فلا یکرہ و ثلثۃ بواحد فیہ خلاف بحر ۳ عن الکافی۔ لیکن ایک کا ایک کی اقتداء کرنا یا دو کا ایک کی اقتداء کرنا مکروہ نہیں اور تین کے ایک کی اقتداء کرنے میں اختلاف ہے۔ البحر الرائق نے الکافی سے نقل کیا (ت)

طحطاوی علی مراقی الفلاح میں زیر قول شارح لو اقتدی ثلثۃ بواحد اختلف فیہ (اگر تین شخص ایک کی اقتداء کریں تو اس میں اختلاف کیا گیا ہے۔ ت) فرمایا: والاصح عدم الکراھۃ ۴ (زیادہ صحیح یہ ہے کہ اس میں بھی کراہت نہیں۔ ت) شیرینی یا کھانا فقراء کو کھلائیں تو صدقہ ہے اور اقارب کو تو صلہ رحم اور احباب کو تو ضیافت، اور یہ تینوں باتیں موجب نزول رحمت و دفع بلا و مصیبت ہیں۔ ابو یعلیٰ انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

ان الصدقة وصلة الرحم يزيد الله بهما فى العمر و يدفع بهما ميتة السوء- بیشک صدقہ اور صلہ رحم ان دونوں سے اللہ تعالیٰ عمر بڑھاتا ہے اور بری موت کو دفع فرماتا ہے اور

١- التيسير شرح الجامع الصغير حرف الهمزه مكتبة الامام الشافعي الرياض ١/ ١١٠ ٢- درمختار كتاب الصلوٰة باب الوتر والنوافل مطبع مجتبائی دہلی ١/ ٩٩ ٣- ردالمحتار كتاب الصلوٰة باب الوتر والنوافل دار احياء التراث العربي بيروت ١/ ٤٧٦ ٤- مراقى الفلاح مع شرح الطحطاوى على مراقى الفلاح فصل بيان النوافل نور محمد كتب خانہ كراچى ص ٢١١

Fatawa Razawiya, Volume 24

[Arabic]: السوء ويدفع بهما المكروه والمحذور - [Translation]: ...it removes evil, and by these two, the disliked and the feared are repelled.

Abu al-Shaykh narrates from Abu al-Darda (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: [Arabic]: الضيف يأتى برزقه ويرتحل بذنوب القوم يمحص عنهم ذنوبهم - [Translation]: The guest brings his own sustenance and departs with the sins of the people, wiping away their sins.

It is also narrated from the Commander of the Faithful, Mawla Ali (may Allah honor him), that he said: [Arabic]: لان اجمع نفرا من اخواني على صاع او صاعين من طعام احب الى من ان ادخل سوقكم فاشترى رقبة فاعتقها - [Translation]: Indeed, gathering a group of my brothers for a Sa' or two of food is more beloved to me than entering your market to buy a slave and free him.

The same applies to sacrificing a goat and feeding people, but experience has shown that giving alms (Sadaqah) for one's life is more beneficial. The recitation of the Quran being a source of healing, blessings, and a repellent of calamities is proven from the Quran itself, especially Surah Yasin, which is a proven remedy for the fulfillment of needs and the acceptance of prayers. As for blowing into the goat's ear and taking it around the house, if it is proven by the statement of a righteous, reliable person, then it would be considered among the practices of the Mashaykh (spiritual mentors); otherwise, it is futile. The research on calling the Adhan to repel an epidemic is in our treatise 'Naseem al-Saba fi an al-Adhan yahul al-Waba' (The morning breeze regarding the fact that Adhan wards off epidemics). For the same purpose, the benefits of gathering Muslims for food, charity, maintaining ties, and hospitality are detailed in sixty Hadiths in our treatise 'Murad al-Qaht wa al-Waba bi-Da'wat al-Jiran wa Muwasat al-Fuqara' (Inviting neighbors and sympathizing with the poor are acts that avert famine and epidemics). The details along with the permissibility of the practices of Mashaykh are in our treatise 'Muneer al-Ain fi Hukm Taqbeel al-Abhamain' (Kissing the thumbs is a spiritual cure for eyesight), etc. And Allah (Glorified and Exalted) knows best.

---

1 Musnad Abi Ya'la, Hadith 4090, Mu'assisat 'Ulum al-Quran, 4/466-472. 2 Kashf al-Khafa, referencing Ibn Abi Shaybah, Hadith 1251, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut, 2/33. 3 Al-Adab al-Mufrad, Chapter 255, Hadith 566, Al-Maktabat al-Athariyah Sangla Hill, p. 128.

फ़तावा रज़विया, जिल्द २४

[अरबी]: السوء ويدفع بهما المكروه والمحذور - [अनुवाद]: ...बुराई, और इन दोनों के ज़रिए नापसंद और डरावनी चीज़ें दूर हो जाती हैं।

अबु अल-शेख़ अबु अल-दरदा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: [अरबी]: الضيف يأتى برزقه ويرتحل بذنوب القوم يمحص عنهم ذنوبهم - [अनुवाद]: मेहमान अपना रिज़्क़ लेकर आता है और लोगों के गुनाह लेकर चला जाता है, उनके गुनाह मिटा देता है।

अमीरुल मोमिनीन मौला अली (कर्रमल्लाहु वज्हहुल करीम) से भी रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया: [अरबी]: لان اجمع نفرا من اخواني على صاع او صاعين من طعام احب الى من ان ادخل سوقكم فاشترى رقبة فاعتقها - [अनुवाद]: बेशक यह बात कि मैं अपने भाइयों में से एक गिरोह को जमा करके एक या दो साअ' खाना खिलाऊं मुझे इससे ज़्यादा पसंद है कि तुम्हारे बाज़ार में जाऊं और एक गुलाम खरीद कर आज़ाद कर दूँ।

यही हाल बकरी ज़बह करके खिलाने का है, मगर तजुर्बे से साबित हुआ है कि जान का सदक़ा देना ज़्यादा फ़ायदेमंद है। क़ुरआन की तिलावत का शिफ़ा, बरकत और बलाओं को टालने का कारण होना खुद क़ुरआन मजीद से साबित है, ख़ासकर सूरह यासीन जो ज़रूरतों की पूर्ति और दुआओं की मक़बूलियत के लिए एक आज़माया हुआ इलाज है। रही बात बकरी के कान में फूंकने और उसे घर के चक्कर लगाने की, अगर किसी नेक और भरोसेमंद व्यक्ति के कहने से साबित हो तो वह मशायख़ के आमाल में से होगा वरना बेकार है। वबा (महामारी) को टालने के लिए अज़ान की तहक़ीक़ हमारे रिसाले 'नसीम अल-सबा' में है। इसी मक़सद के लिए मुसलमानों को जमा करके खाना खिलाने, सदक़ा और मेहमान-नवाज़ी के फ़ायदों का बयान साठ हदीसों के साथ हमारे रिसाले 'मुराद अल-क़हत वल-वबा' (पड़ोसियों को दावत देना और ग़रीबों के साथ हमदर्दी करना अकाल और महामारी को टालने वाले कार्य हैं) में है। मशायख़ के आमाल के जवाज़ के साथ तफ़्सील हमारे रिसाले 'मुनीरुल ऐन' (अँगूठे चूमना आँखों की रौशनी का रूहानी इलाज है) वगैरह में है। सुब्हानहु व तआला आलम।

---

1 मसनद अबी यअला, हदीस 4090, मुअस्ससतु उलूम अल-क़ुरआन, 4/466-472. 2 कश्फ़ुल ख़फ़ा, बहवाला इब्ने अबी शैबा, हदीस 1251, दारुल कुतुब अल-इल्मिया बेरुत, 2/33. 3 अल-अदब अल-मुफ़रद, बाब 255, हदीस 566, अल-मकतबतुल असरिया सांगला हिल, पृ. 128.

السوء ویدفع بھما المکروہ والمحذور - مکروہ و اندیشہ کو دور کرتا ہے۔

ابوالشیخ ابوالدرداء رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں : الضیف یأتی برزقہ ویرتحل بذنوب القوم یمحص عنھم ذنوبھم - مہمان اپنا رزق لے کر آتا ہے اور کھلانے والے کے گناہ لے کر جاتا ہے اور ان کے گناہ مٹا دیتا ہے۔

نیز امیر المومنین مولی علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ سے راوی کہ وہ فرماتے ہیں : لان اجمع نفرا من اخواني علی صاع او صاعین من طعام احب الی من ان ادخل سوقکم فاشتری رقبۃ فاعتقھا - بیشک یہ بات کہ میں اپنے بھائی سے ایک گروہ کو جمع کر کے دو ایک صاع کھانا کھلاؤں مجھے اس سے زیادہ پسند ہے کہ تمہارے بازار میں جاؤں اور ایک غلام خرید کر آزاد کردوں۔

یہی حال بکری ذبح کرکے کھلانے کا ہے مگر تجربہ سے ثابت ہوا ہے کہ جان کا صدقہ دینا زیادہ نفع رکھتا ہے اور قرأت قرآن کا موجب شفا وبرکت ودافع بلا ونعمت ہونا خود قرآن مجید سے ثابت خصوصاً یسین شریف کہ قضاء حاجات واجابت دعوات کے لئے تریاق مجرب ہے، رہا بکری کے کان میں پھونکنا اور اسے مکان کے گرد پھرانا اگر کسی صالح معتمد کے قول سے ثابت ہو تو از قبیل اعمال مشائخ ہوگا ورنہ عبث ہے۔ دفع وبا کے لئے اذان کی تحقیق ہمارے رسالہ نسیم الصبا ان فی الاذان یحول الوبا (صبح کی ہوا اس بارے میں کہ اذان وبا کو ٹال دیتی ہے۔ ت) اور اسی غرض سے مسلمانوں کو جمع کرکے کھانا کھلانے اور صدقہ وصلہ و ضیافت کے فوائد کا بیان ساٹھ حدیثوں سے ہمارے رسالہ مراد القحط والوباء بدعوۃ الجیران و مواساۃ الفقراء (ہمسایوں کی دعوت اور فقراء سے اظہار ہمدردی قحط اور وباء کو پھیر دینے والے اعمال ہیں۔ ت) اور اعمال مشائخ

کے جواز کے ساتھ تفصیل ہمارے رسالہ منیر العین فی حکم تقبیل الابہامین (انگوٹھے چومنا آنکھوں کی روشنی کا روحانی علاج ہے۔ت) وغیرہ میں ہے۔ سبحنہ وتعالی اعلم۔

---

1 مسند ابی یعلی حدیث ۴۰۹۰ مؤسسۃ علوم القرآن ۴/ ۷۲- ۴۶۶ 2 کشف الخفاء بحوالہ ابن ابی شیبہ حدیث ۱۲۵۱ دارالکتب العلمیہ بیروت ۲/ ۳۳ 3 الادب المفرد باب ۲۵۵ حدیث ۵۶۶ المکتبۃ الاثریہ سانگلہ ہل ص ۱۲۸

Fatawa Ridawiyyah | Volume 24

Problem 20:59 | Shawwal 1319 AH

What do the scholars of religion and the jurists of the clear Sharia say about this issue? When an epidemic breaks out in a neighborhood of a village, people from other neighborhoods buy a black goat. They recite Surah Yasin and Surah Mulk and blow into its ears, then lead it around the village and bring it back to the original place and slaughter it. They bury its skin and bones in the ground there and distribute the meat in small portions among the people of the village. And they write this poem on four separate papers and hang one piece at each of the four corners of the village:

Li khamsatun utfī bihā harra al-wabā'i al-hātimah Al-Mustafa wal-Murtada wa ibnāhumā wal-Fatimah

(I have five holy personages who are my means and support; through their intercession, I extinguish and cool the heat and intensity of the bone-breaking epidemic. Those five personalities are: Prophet Muhammad Mustafa ﷺ, Hazrat Ali al-Murtada (may Allah be pleased with him), their two sons Hazrat Hasan and Hazrat Husayn (peace be upon them), and Hazrat Sayyidah Fatimah az-Zahra (may Allah be pleased with her).)

Similarly, to eradicate smallpox, as a treatment, the British injure people's arms and inject drops of impure pus into their bodies. Now the question is, is all this permissible and correct according to Sharia? Please clarify in the light of the Book of Allah so that you may receive a reward from Allah at the time of reckoning. (t)

Answer: Slaughtering an animal for the sake of Allah the Almighty and distributing its meat among Muslims for Allah's pleasure and satisfaction...

Page 188 of 720

फ़तावा रिज़विया | खंड २४

मसला २०:५९ | शव्वाल १३१९ हिजरी

दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मामले में क्या फरमाते हैं कि जब गांव के किसी मोहल्ले में महामारी फैल जाती है, तो दूसरे मोहल्लों के लोग एक काले रंग का बकरा खरीद कर लाते हैं। वे सूरह यासीन और सूरह मुल्क पढ़कर उसके दोनों कानों में फूंकते हैं, फिर उसे गांव के चारों ओर घुमाते हैं और वापस उसी जगह लाकर ज़बह कर देते हैं। वे उसकी खाल और हड्डियां वहीं ज़मीन में दफना देते हैं और मांस के छोटे-छोटे टुकड़े गांव के लोगों में बांट देते हैं। और वे इन पंक्तियों को चार अलग-अलग कागजों पर लिखकर गांव के चारों कोनों में एक-एक कागज लटका देते हैं:

ली खम्सतुन उत्फ़ी बिहा हर्र अल-वबाई अल-हातिमाह अल-मुस्तफ़ा वल-मुर्तज़ा व इबनाहुमा वल-फ़ातिमाह

(मेरे लिए ये पाँच पवित्र हस्तियाँ वसीला और सहारा हैं; उनके माध्यम से मैं हड्डी तोड़ने वाली महामारी की गर्मी और तीव्रता को बुझाता और ठंडा करता हूँ। वे पाँच हस्तियाँ हैं: हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ, हज़रत अली अल-मुर्तज़ा रदियल्लाहु अन्हु, उनके दो बेटे हज़रत हसन और हज़रत हुसैन अलैहिमुस्सलाम, और हज़रत सैयदा फातिमा अज़-ज़हरा रदियल्लाहु अन्हा।)

इसी तरह चेचक को खत्म करने के लिए, इलाज के तौर पर, अंग्रेज लोगों के बाजुओं को ज़ख्मी करके उनके शरीर में नापाक मवाद की बूंदें डालते हैं। अब सवाल यह है कि क्या यह सब शरीयत के अनुसार जायज़ और सही है? अल्लाह की किताब की रोशनी में स्पष्टीकरण देकर मेहरबानी फरमाएं ताकि कयामत के दिन अल्लाह के पास इसका सवाब पाएं। (त)

जवाब: अल्लाह तआला की रज़ा और खुशी के लिए किसी जानवर को ज़बह करना और उसका मांस मुसलमानों में बांटना...

पृष्ठ ७२० का १८८

فتاویٰ رضویہ | جلد ۲۴

مسئلہ ۲۰:۵۹ | شوال ۱۳۱۹ھ

چہ می فرمایند علمائے دین و مفتیان شرع متین اندریں مسئلہ کہ چوں در محلہ از محلات دہ مرض و با واقع شود مردمان محلمائے دیگر گوسفندی سیاہ گرفتہ سورہ یسین و تبارک خواندہ در ہر دو گوش آں بزدوم کردہ با طراف ایں موضعہا بر گردانیدہ باجائے اول آوردہ ذبح کنند و استخوان و پوست را دراں زمین دفن کردہ گوشتہا ریز انیدہ پارہ پارہ ازاں بہر یک مردم آں دہ تقسیم کنند وایں نظم۔

لی خمسۃ اطفی بھا حر الوباء الحاطمہ المصطفیٰ والمرتضیٰ وابناھما والفاطمہ

رابر پرچہ نوشتہ بر ہر چہار گوشہ آں محلہ آویز ند و ہمنچنیں بخوف مرض چیچک انگریزاں قطرہ ریم بر بازوے مردماں زخم کردہ آں نجس ر داخل کنند پس ایں ہمہ موافق شرع جائز است یانہ ؟ بینوا بالکتاب وتوجروا عند الحساب۔

علماء دین اور مفتیان شرع متین اس مسئلہ کے بارے میں کیا فرماتے ہیں کہ جب گاؤں کے کسی محلہ میں مرض بصورت و با پھوٹ پڑے تو دوسرے محلوں والے لوگ ایک سیاہ رنگ کا بکرا خرید کر لاتے ہیں اور سورہ یسین و سورہ ملک پڑھ کر اس کے دونوں کانوں میں پھونکتے ہیں ازاں بعد اسے گاؤں کے گرد گھماتے پھراتے ہیں اور پھر پہلے مقام پر لا کر ذبح کر دیتے ہیں، اس کی کھال اور ہڈیاں وہیں دفن کر دیتے ہیں اور گوشت پکا کر گاؤں کے مردوں میں تھوڑا تھوڑا تقسیم کیا جاتا ہے اور یہ شعر چار الگ الگ کاغذوں پر لکھ کر گاؤں کے چاروں کونوں میں ایک ایک کا غذ لٹکا دیتے ہیں۔

لی خمسۃ اطفی بھا حر الوباء الحاطمہ المصطفیٰ والمرتضیٰ وابناھما والفاطمہ

(میرے لئے پانچ نفوس قدسیہ وسیلہ اور سہارا ہیں میں ان کے توسل سے کر توڑ و با کی حرارت اور گرمی کو بجھاتا اور ٹھنڈا کرتا ہوں وہ پانچ ہستیاں یہ ہیں : حضرت محمد مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم، حضرت علی مرتضیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ، ان دونوں کے صاحبزادے حضرت حسن اور حضرت حسین علیہما السلام، حضرت سیدہ فاطمۃ الزہرا رضی اللہ تعالیٰ عنہا)

اسی طرح مرض چیچک کے ازالہ کے لئے بطور علاج انگریز لوگوں کے بازوؤں کو زخمی کر کے ناپاک پیپ کے قطرات ان کے جسم میں داخل کرتے ہیں۔ اب سوال یہ ہے کہ کیا یہ سب کچھ از روئے شرع جائز اور درست ہے؟ کتاب اللہ کی روشنی میں وضاحت فرما کر مہربانی فرمائیں تاکہ بوقت حساب عند اللہ اجر وثواب پائیں۔ (ت)

الجواب: ذبح جانور لوجہ اللہ تعالیٰ و تقسیم لحم اوبہ مسلمین | کسی جانور کو اللہ تعالیٰ کی رضا و خوشنودی کے لئے

Fatawa-e-Razvia Volume 24

Reciting Surah Tabarak and Surah Yasin are all good and beloved acts, and by the permission of Allah, the Exalted, they have a complete effect in repelling calamities. Similarly, reciting Surah Yasin and Surah Mulk is among the best and most recommended acts. These are effective means for warding off afflictions and calamities by the command of Allah. As far as the practice of reciting Surahs into a goat's ears, blowing on it, and taking it around the village is concerned, this is among the specific spiritual practices of the elders of the faith. Many such examples have been cited by Hazrat Shah Waliullah Dehlvi in his book "Al-Qawl al-Jamil". Regarding the matter of burying the skin, it is equivalent to wasting wealth, which is not permissible. This is because of the noble saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "Verily, Allah has disliked three things for you: (1) wasting wealth, (2) excessive questioning, and (3) idle talk (he said and it was said)." Therefore, it is appropriate that the goat's skin be given to the needy and poor as assistance and aid. Hanging the aforementioned hair of the goat in the four corners of the village is permissible and correct, and it falls under the category of taking the beloved servants of Allah as a means (Tawassul) (may Allah's mercy and peace be upon them all). Furthermore, getting an injection for the prevention and elimination of smallpox is beneficial by the command of Allah Almighty. Similarly, using a medicine or adopting a method that may appear painful is not forbidden by Sharia, such as cauterization etc. However, for those who have reached the station of perfect trust in Allah (Ashab-e-Tawakkul), doing so is not appropriate. As mentioned in the Sahih Hadith regarding some beloved servants of Allah who "do not seek incantations, do not use cauterization, do not take omens, and put their trust in their Lord." May Allah make us among them, and Allah, the Exalted, knows best.

1. Musnad Imam Ahmad bin Hanbal from Mughira bin Shu'ba, Dar al-Fikr Beirut 4/294, Sahih al-Bukhari Kitab al-Riqaq Chapter on what is disliked of 'it was said and he said', Qadeemi Kutub Khana Karachi 2/958.

फतावा-ए-रज़विया जिल्द 24

सूरा तबारक और सूरा यासीन का पाठ करना सब अच्छा और प्रिय है, और अल्लाह तआला की अनुमति से आपदाओं को दूर करने में इसका पूर्ण प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार सूरा यासीन और सूरा मुल्क का पाठ करना सर्वोत्तम और सराहनीय कार्यों में से है। ये अल्लाह तआला की आज्ञा से बला और मुसीबत को टालने के प्रभावी साधन हैं। जहाँ तक बकरी के कानों में सूरा पढ़कर फूँकने और गाँव के चारों ओर घुमाने की क्रिया का संबंध है, तो यह बुजुर्गों के विशेष कार्यों (खुसूसियात-ए-आमाल) में से है। इस तरह के कई उदाहरण हज़रत शाह वलीउल्लाह देहलवी ने अपनी पुस्तक "अल-क़ौल अल-जमील" में दिए हैं। जहाँ तक खाल को दफनाने का सवाल है, तो यह धन को नष्ट करने के समान है जो जायज़ नहीं है। हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के इस पाक इरशाद की वजह से कि: "बेशक अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए तीन चीज़ों को नापसंद फ़रमाया: (1) माल ज़ाया करना (2) ज़्यादा सवाल करना (3) इधर-उधर की बेहुदा और लग़्व बातें (क़ील व काल) करना।" इसलिए उचित यह है कि बकरी की खाल मोहताजों और ग़रीबों को मदद के तौर पर दे दी जाए। और ज़िक्र किए गए बकरी के बालों को गाँव के चारों कोनों में लटकाना जायज़ और सही है, और यह अल्लाह के प्यारों को वसीला बनाने के अध्याय से है (उन सब पर अल्लाह की रहमत और सलामती हो)। इसके अलावा, चेचक की रोकथाम और उन्मूलन के लिए अल्लाह तआला के हुक्म से इंजेक्शन लगवाना लाभदायक है। इसी तरह ऐसी दवा का उपयोग करना या ऐसा तरीका अपनाना जो प्रत्यक्ष रूप से कष्टदायक हो, शरीयत में वर्जित नहीं है, जैसे शरीर पर दाग़ (दागना) लगवाना आदि। हाँ, अलबत्ता जो लोग अल्लाह पर पूर्ण भरोसा (असहाब-ए-तवक्कुल) रखते हैं, उनके लिए ऐसा करना उचित नहीं है। जैसा कि हदीस-ए-पाक में अल्लाह के कुछ प्रिय बंदों के बारे में है कि "वे न झाड़-फूँक करवाते हैं, न दागते हैं, न शगुन लेते हैं और अपने रब पर भरोसा रखते हैं।" अल्लाह हमें उनमें से बनाए। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है।

1. मसनद इमाम अहमद बिन हंबल, मुग़ीरा बिन शुबा से, दारुल फ़िक्र बेरूत 4/294, सहीह अल-बुखारी किताबु-र्रिकाक़ बाब मा युकराहु मिन क़ील व काल, क़दीमी कुतुब खाना कराची 2/958।

पृष्ठ 189 का 720

وقرات تبارک ویسین ہمہ امر خوب و محبوب ست و در دفع ذبح کرکے اس کا گوشت مسلمانوں میں تقسیم کرنا اور اسی بلا باذن اللہ جل وعلا اثرے تمام دارد و در گوش بز دمیدن و بہ طرح سورۃ یسین اور سورۃ ملک کی تلاوت کرنا بہترین اور اطراف موضوع گردانیدن از قبیل خصوصیات اعمال مشائخ مستحسن اعمال ہیں اللہ تعالیٰ کے اذن سے بلا و مصیبت کو ٹالنے ست بسیاری از امثال اینہا شاہ ولی اللہ صاحب دہلوی در قول کا موثر ذریعہ ہیں، جہاں تک بکرے کے کانوں میں سورتیں پڑھ الجمیل آوردہ اند فاما دفن پوست در زمین تضیع مال است و او کر پھونکنے گاؤں کے گرد گھمانے والے عمل کا تعلق ہے تو یہ روانیست لقولہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ان اللہ کرہ از قبیل خصوصیات اعمالِ بزرگان دین ہے، چنانچہ اس نوع کی لکم اضاعۃ المال وکثرۃ السوال وقیل وقال، رواہ بہت سی مثالیں حضرت شاہ ولی اللہ صاحب دہلوی نے اپنی آنست کہ پوست بمساکین بخشند و تعلیق آن شعر بز وائے محلہ کتاب "القول الجمیل" میں بیان کی ہیں۔ رہا کھال کو دفن کر نیز جائز و روا از باب توسل بمحبوبان خدا است جل وعلا و عمل دینے کا معاملہ، تو یہ مال کو ضائع کر دینے کے مترادف ہے جو ٹیکا در دفع چیچک باذن اللہ تعالیٰ نفع میدہد و بیچوں تداوی اگرچہ جائز نہیں۔

حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے اس ارشاد گرامی کی وجہ سے کہ "بیشک اللہ تعالیٰ نے تمہارے لئے ان تین مشتمل بر چیزے از الم بود ممنوع نیست مثل داغ نہادن آری کاموں کو ناپسند فرمایا (۱) مال ضائع کرنا (۲) زیادہ سوال کرنا (۳) متوکلان رانباید الذین لا یسترقون ولا یکتوون ولا ادھر ادھر کی بیہودہ اور لغو باتیں کرنا۔ لہٰذا مناسب یہ ہے کہ یتطیرون وعلی ربھم یتوکلون جعلنا اللہ منہم واللہ بکرے کی کھال محتاجوں، ناداروں کو بطور اعانت و امداد دے دی جائے اور شعر مذکور کا گاؤں کے چاروں اطراف میں لٹکانا روا اور سبحنہ وتعالی اعلم۔ درست ہے اور

محبوبان خدا کو وسیلہ بنانے کے باب سے ہے (ان سب پر اللہ تعالیٰ کی رحمت اور سلام ہو) نیز مرض چیچک کے دفاع اور ازالے کے لئے انجکشن لگوانا باذن اللہ تعالیٰ نفع بخش ہے، اسی طرح ایسی دوا استعمال کرنا یا طریقہ اپنانا جو بظاہر تکلیف دہ بھی ہو شرعاً منع نہیں جیسا کہ جسم پر گل یعنی داغ لگوانا وغیرہ، ہاں البتہ اصحابِ توکل کے لئے ایسا کرنا مناسب نہیں، چنانچہ حدیث پاک میں کچھ محبوب بندوں کے بارے میں ہے "الذین لا یسترقون ولا یکتوون ولا یتطیرون وعلی ربہم یتوکلون"۔ جعلنا اللہ منہم، واللہ سبحنہ وتعالیٰ اعلم۔

1. مسند امام احمد بن حنبل عن مغیرۃ بن شعبہ دار الفکر بیروت ۴ / ۲۹۴ ، صحیح البخاری کتاب الرقاق باب مایکرہ من قیل و قال قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۹۵۸

Fatawa Rizvia Volume 24

[Top Box] It has been narrated about them that they are such close intimates of the Divine Court that they do not use incantations or charms, nor do they resort to cauterization, nor do they take ill omens; rather, they place their full trust in their Lord. May Allah Almighty, by His grace and mercy, include us among these pure people. Allah Almighty is Pure, Most Exalted, and the All-Knowing. (T)

Problem 60: Asked by Hafiz Amirullah Sahib, 20 Shawwal 1322 AH This letter from a person named Sadiq, with the pen name Sitapuri, has come to me; please note its final passage. The text is as follows:

[Left Column - Persian Text] If they leave that place and protect the remainder from this calamity (i.e., plague), then according to reason it is correct and far from the danger mentioned in 'and do not throw [yourselves] with your [own] hands into destruction'. Because the author of 'Sakan al-Shujun fi Hukm al-Firar 'an Waba al-Ta'un' has proven with rational and narrative evidence regarding the Hadith that has arrived about not fleeing, that firstly, the chains of narrators for the mentioned Hadith are very questionable, meaning two individuals among them are unknown and unreliable. Secondly, the Hadith itself pertains to a specific situation because when the Islamic army was stationed to guard the borders, a plague broke out and they were fleeing; the Prophet (peace be upon him) said they should not flee. In summary, in my view, residing there in this condition is synonymous with ignorance and throwing oneself into calamity. Only.

[Right Column - Urdu Translation] If one leaves that place and protects the remaining area from the calamity of the plague, then it is close to reason and far from the prohibition of the aforementioned verse. In the Holy Quran, the Divine command is: 'O people! Do not throw [yourselves] into destruction with your own hands.' (T) This is because the author of 'Sakan al-Shujun fi Hukm al-Firar 'an Waba al-Ta'un' has proven with rational and narrative proofs regarding the Hadith that has arrived about not fleeing from the plague, that firstly, the chain of narrators for the mentioned Hadith is very questionable, meaning two people in it are unknown and unreliable. Secondly, the mentioned Hadith pertains to a specific situation where the Islamic army was stationed to guard the Islamic borders, then suddenly a plague broke out there and people began to flee hither and thither, so the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'They should not flee.' (Summary of the discourse) In my

opinion, staying in that place under these circumstances is equivalent to ignorance and throwing oneself into calamity. Only. (T)

1 The Holy Quran 2/195 Page 190 of 720

फतावा रिज़विया जिल्द 24

[ऊपर का बॉक्स] उनके बारे में आया है कि वे दरबार के ऐसे करीबी (मुक़र्रब) हैं कि वे झाड़-फूँक नहीं करवाते, न ही दाग लगवाते हैं और न ही अपशकुन लेते हैं, बल्कि अपने पालनहार पर पूर्ण भरोसा रखते हैं। अल्लाह तआला अपनी कृपा और दया से हमें इन पवित्र लोगों में शामिल करे। अल्लाह तआला पवित्र, सर्वोच्च और सबसे अधिक ज्ञान रखने वाला है। (त)

मसला 60: प्रश्ता हाफ़िज़ अमीर अल्लाह साहब, 20 शव्वाल 1322 हिजरी सादिक़ तख़ल्लुस सीतापुरी नामक व्यक्ति का यह पत्र मेरे नाम आया है, इसकी अंतिम इबारत (अनुच्छेद) देखें, इबारत यह है:

[बायाँ कॉलम - फ़ारसी पाठ] यदि वे उस स्थान को छोड़ दें और शेष को इस आपदा (अर्थात प्लेग) से बचाएँ, तो तर्क के अनुसार यह सही है और 'अपने हाथों स्वयं को विनाश में न डालो' में उल्लिखित खतरे से दूर है। क्योंकि 'सकन अल-शुजुन फी हुक्म अल-फ़िरार अन वबा अल-ताऊन' के लेखक ने प्लेग से न भागने के संबंध में आई हदीस के बारे में तार्किक और पारंपरिक प्रमाणों से सिद्ध किया है कि प्रथम, उक्त हदीस के रावी (वर्णनकर्ता) बहुत संदिग्ध हैं, यानी उनमें से दो व्यक्ति अज्ञात और अविश्वसनीय हैं। द्वितीय, हदीस स्वयं एक विशिष्ट स्थिति से संबंधित है क्योंकि जब इस्लामी सेना सीमाओं की रक्षा के लिए तैनात थी, तब वहां प्लेग फैल गया और वे भाग रहे थे; पैगंबर (सल्ल.) ने फरमाया कि उन्हें नहीं भागना चाहिए। सारांश यह है कि मेरे विचार में इस स्थिति में वहां रहना अज्ञानता और स्वयं को मुसीबत में डालने के समान है। केवल।

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद] अगर उस स्थान को छोड़ दिया जाए और शेष जगह को प्लेग की मुसीबत से बचाया जाए, तो यह बुद्धि के निकट है और उक्त आयत की मनाही से दूर है। कुरान मजीद में ईश्वरीय आदेश है: 'हे लोगो! अपने हाथों स्वयं को विनाश में न डालो।' (त) इसलिए कि प्लेग से न भागने के बारे में जो हदीस आई है, उसके बारे में 'सकन अल-शुजुन फी हुक्म अल-फ़िरार अन वबा अल-ताऊन' के लेखक ने तार्किक और पारंपरिक प्रमाणों से सिद्ध किया है कि: प्रथम, उक्त हदीस के रावी बहुत संदिग्ध हैं, यानी उनमें से दो व्यक्ति अज्ञात और अविश्वसनीय हैं। द्वितीय, उक्त हदीस उस स्थिति से संबंधित है जब इस्लामी सेना इस्लामी सीमाओं की रक्षा के लिए तैनात थी, फिर वहां अचानक प्लेग फैल गया और लोग इधर-उध्र भागने लगे, तो हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम) ने फरमाया: 'वे न भागें।' (सारांश) मेरे विचार में इस स्थिति में उस स्थान पर रुकना अज्ञानता और स्वयं को मुसीबत में डालने के समान है। केवल। (त)

1 अल-कुरान अल-करीम 2/195 पृष्ठ 190/720

[اوپر کا باکس] بارے میں آیا ہے کہ وہ ایسے مقربان بارگاہ ہیں کہ دم اور جھاڑ پھونک نہیں کرواتے نہ داغ لگواتے ہیں اور نہ بدشگونی لیتے ہیں بلکہ اپنے پروردگار پر مکمل بھروسہ رکھتے ہیں، اللہ تعالیٰ اپنے فضل و کرم سے ہمیں ان پاک لوگوں میں شامل فرمائے۔ اللہ تعالیٰ پاک برتر اور سب سے زیادہ علم رکھنے والا ہے۔ (ت)

مسئلہ ۶۰: مسئولہ حافظ امیر اللہ صاحب ۲۰ شوال ۱۳۲۲ھ یہ خط ایک شخص صادق تخلص سیتاپوری کا میرے نام آیا ہے اس کی آخری عبارت ملاحظہ فرمائیں، عبارت یہ ہے:

[بائیں جانب کی فارسی عبارت] اگر آں جا را ترک کردہ مابقی را ازیں بلا (یعنی طاعون) حفاظت کنند بعقل نزدیک واز مخاطرہ "وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ"۱ درست۔ زیرا کہ حدیثے کہ در عدم فرار وارد شدہ مصنف "سکن الشجون فی حکم الفرار عن وباء الطاعون" بدلائل وبراہین ثابت کردہ کہ اوّلاً طرق روایان حدیث بسیار مخدوش ست یعنی دو نفرازانہا مجہول و غیر ثقہ است وثانیاً نفس حدیث مقامی ست زیرا کہ در وقتے کہ عسکر اسلامی از برائے حفاظت ثغور مقرر بودند طاعون آمد وآنہامی گریختند حضرت فرمودند کہ نگریزند۔ خلاصہ بخیال من باینحالت آنجا سکونت جاہلانہ خود را بلا انداختن ست فقط۔

[دائیں جانب کی اردو عبارت] اگر اس جگہ کو چھوڑ دے اور باقیماندہ جگہ کی طاعون کی مصیبت سے حفاظت کی جائے تو یہ عقل کے قریب، اور آیہ مذکورہ کی ممانعت سے بعید ہے۔ قرآن مجید میں ارشادِ خداوندی ہے : لوگو ! اپنے ہاتھوں ہلاکت میں نہ پڑو۔ (ت) اس لئے کہ جو حدیث طاعون سے نہ بھاگنے کے بارے میں وارد ہوئی ہے مصنف "سکن الشجون فی حکم الفرار عن وباء

الطاعون" نے عقلی و نقلی دلائل سے ثابت کیا ہے کہ اوّلاً تو حدیث مذکور کی سند بلحاظ رواۃ حدیث بہت مخدوش ہے یعنی دو آدمی اس میں مجہول اور غیر ثقہ ہیں، ثانیاً حدیث مذکور اس مقام سے تعلق رکھتی ہے کہ اس وقت اسلامی فوج اسلامی سرحدوں کی حفاظت کے لئے مقرر کی گئی پھر وہاں اچانک طاعون پھیل گیا اور لوگ ادھر اُدھر بھاگنے لگے تو حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: وہ نہ بھاگیں۔ (خلاصہ کلام) میرے خیال میں اس حالت میں اس جگہ ٹھہرنا جہالت اور اپنے آپ کو مصیبت میں ڈالنے کے مترادف ہے۔ فقط ۔ (ت)

۱ القرآن الکریم ۲/ ۱۹۵ Page 190 of 720

Volume 24 Fatawa Razawiyya

The Answer: No one but an ignorant or misguided person would label the Hadith about fleeing from the plague (ta'un) as flawed or its narrators as unknown or unreliable. It is an authentic (Sahih), pure, and refined Hadith narrated in the Two Sahihs (Bukhari and Muslim), Muwatta Malik, Musnad Imam Ahmad, Sunan Abi Dawud, Sunan Nasa’i, and others through numerous authentic chains and paths, reaching the level of widespread fame (shuhrat) and abundance (istifada). No one would give it a localized meaning except those who wish to reject the sayings of Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him), under the guise of false and weak interpretations. The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) said:

"If you hear of a plague in a land, do not enter it; and if it breaks out in a land while you are in it, do not leave it to flee from it." (Reported by the two Sheikhs, Abu Dawud, al-Nasa'i, Malik, and Ahmad on the authority of 'Abd al-Rahman bin 'Awf, and reported by Bukhari and Muslim on the authority of Usama bin Zaid, may Allah be pleased with them.)

And if its meaning is established as being said against fleeing from Jihad when a plague occurred—'Inna lillahi wa inna ilayhi raji'un' (Surely we belong to Allah and to Him we shall return)—this is not an interpretation but a clear distortion and alteration. It is not just an alteration, but a fabrication against Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him), by claiming he said it for this reason, whereas even in weak narrations, this reason or purpose is not mentioned; it is merely invention and fabrication.

1. Sahih al-Bukhari, Book 1/494, and Kitab al-Tibb 2/852, Qadimi Kutub Khana Karachi; Sahih Muslim, Kitab al-Salam, Chapter on Plague and Omen, Qadimi Kutub Khana Karachi 2/228; Sunan Abi Dawud, Kitab al-Jana'iz, Chapter on Leaving the Plague, Aftab Alam Press Lahore 2/86; Muwatta Imam Malik, Chapter on Plague, Mir Muhammad Kutub Khana Karachi p. 700; Musnad Imam Ahmad on the authority of 'Abd al-Rahman bin 'Awf, Al-Maktab al-Islami Beirut 1/182, 193 & 194.

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

उत्तर: सिवाय किसी जाहिल या गुमराह के कोई भी ताऊन (प्लेग) से भागने वाली हदीस को संदिग्ध या इसके रावियों को अज्ञात या अविश्वसनीय नहीं कहेगा। यह एक सहीह (प्रामाणिक), शुद्ध और परिष्कृत हदीस है जो सहीहैन (बुखारी और मुस्लिम), मुअत्ता मालिक, मुस्नद इमाम अहमद, सुनन अबी दाऊद, सुनन नसाई आदि में अनेक प्रामाणिक श्रृंखलाओं और मार्गों से शोहरत और इस्तिफ़ाज़ा (प्रसिद्धि) की हद तक रिवायत की गई है। कोई भी इसके अर्थ को तब तक सीमित नहीं करेगा जब तक कि वह झूठी और कमज़ोर व्याख्याओं की आड़ में मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के कथनों को रद्द न करना चाहता हो। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इस प्रकार फ़रमाया:

अरबी: "اذا سمعتم بالطاعون بأرض فلا تدخلوا عليه واذا وقع وانتم بأرض فلا تخرجوا منها فرارا منه." अनुवाद: "जब तुम सुनो कि किसी ज़मीन में ताऊन है, तो उसमें प्रवेश न करो; और यदि वह उस भूमि में फूट पड़े जहाँ तुम हो, तो उससे भागने के लिए वहाँ से न निकलो।" (बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, नसाई, इमाम मालिक और इमाम अहमद ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ के माध्यम से इसे रिवायत किया है, और बुखारी और मुस्लिम ने इसे उसामा बिन जैद रज़ियल्लाहु अन्हु के सनद के साथ भी रिवायत किया है।)

और यदि इसका अर्थ यह निकाला जाए कि यह किसी जिहाद के समय ताऊन होने पर उस जिहाद से भागने के विरोध में कहा गया था—'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' (बेशक हम अल्लाह के लिए हैं और हम उसी की ओर लौटने वाले हैं)—तो यह व्याख्या नहीं बल्कि स्पष्ट विकृति और बदलाव है। यह न केवल बदलाव है बल्कि मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर एक मनगढ़ंत आरोप है कि हुज़ूर ने इस उद्देश्य से फ़रमाया था, जबकि किसी कमज़ोर रिवायत में भी यह कारण या उद्देश्य उल्लेखित नहीं है; यह महज एक आविष्कार और मनगढ़ंत बात है।

1. सहीह अल-बुखारी, किताब 1/494 और किताब अल-तिब्ब 2/852 कदीमी कुतुब खाना कराची; सहीह मुस्लिम, किताब अल-सलाम, ताऊन और बदफ़ाली का अध्याय, कदीमी कुतुब खाना कराची 2/228; सुनन अबी दाऊद, किताब अल-जनाइज़, ताऊन से बाहर निकलने का अध्याय, आफ़ताब आलम प्रेस लाहौर 2/86; मुअत्ता इमाम मालिक, ताऊन के बारे में अध्याय,

मीर मुहम्मद कुतुब खाना कराची पृ. 700; मुस्नद इमाम अहमद हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ से, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरूत 1/182, 193 और 194।

पृष्ठ 191/720

الجواب: حدیث فرار عن الطاعون کو مخدوش ومجروح اور اس کے راویوں کو مجہول و غیر ثقہ نہ کہے گا مگر جاہل یا گمراہ۔ حدیث صحیح نقی منقی مصفیٰ، صحیحین بخاری ومسلم وموطاء مالک ومسند امام احمد وسنن ابی داود و سنن نسائی و غیرہا میں بطریقِ عدیدہ واسانیدِ جیدہ صحیحہ حدِ شہرت واستفاضہ پر مروی ہوئی اور اسے مقامی بمعنی مذکور بھی نہ کہے گا مگر وہ کہ ارشاداتِ محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو پردہ تاویل باطل و علیل میں رَد کرنا چاہتا ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم تو یوں ارشاد فرمائیں:

اذا سمعتم بالطاعون بأرض فلا تدخلوا علیه واذا وقع وانتم بأرض فلا تخرجوا منها فرارا منه۔ رواه الشیخان وابو داود والنسائی ومالك واحمد عن عبد الرحمن بن عوف والبخاری ومسلم عن اسامة بن زید رضی اللہ تعالی عنهم۔ جب تم کسی زمین میں طاعون ہو ناسنو تو اس پر داخل نہ ہو اور جب وہاں طاعون آئے جہاں تم ہو تو طاعون سے بھاگنے کے لئے وہاں سے نہ نکلو(بخاری، مسلم، ابوداؤد، نسائی، امام مالک اور امام احمد نے حضرت عبدالرحمن بن عوف کے حوالے سے اسے روایت کیا ہے اور بخاری و مسلم نے اسے اسامہ بن زید رضی اللہ تعالٰی عنہ کے سند کے ساتھ بھی روایت کیا ہے۔ت)

اور اس کے معنی یہ قرار دیئے جائیں کہ کسی جہاد کے وقت طاعون ہوا تھا تو اس جہاد سے بھاگنے کی مخالفت میں فرمائی گئی اناللہ وانا الیہ راجعون (یقینا ہم اللہ تعالیٰ کے لئے ہیں اور ہم اسی کی طرف لوٹ کر جانے والے ہیں۔ت) یہ تاویل نہیں صریح تحریف و تبدیل ہے اور نہ صرف تبدیل بلکہ محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم پر افتراء کہ حضور نے اس غرض سے

فرمایا، حالانکہ کسی روایت ضعیفہ میں بھی یہ سبب وغرض ارشاد مذکور نہیں محض اختراع وافتراء ہے۔

1 صحیح البخاری کتاب ۱/ ۴۹۴، وکتاب الطب ۲/ ۸۵۲ قدیمی کتب خانہ کراچی، صحیح مسلم کتاب السلام باب الطاعون والطیرۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۲۲۸، سنن ابی داؤد کتاب الجنائز باب الخروج من الطاعون آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۸۶، موطا الامام مالک باب ماجاء فی الطاعون میر محمد کتب خانہ کراچی ص ۷۰۰، مسند امام احمد عن عبدالرحمن بن عوف المکتب الاسلامی بیروت ۱/ ۱۸۲ و ۱۹۳ و ۱۹۴

And indeed the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whoever tells a lie against me intentionally, let him take his seat in the Fire." — (t)

What is 'Sukan al-Shujun'? Who is its author? There is no trace of it even in 'Kashf al-Zunun'. If there is some ignorant and unknown person of modern times, so be it. What is "throwing oneself into destruction with one's own hands"? (t) It is not following the commands of Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). Otherwise, this verse would become an excellent document for the prohibition of Jihad. The peril that exists in front of shining swords, showering arrows, and continuous cannonballs is not even a hundredth part of what is in the plague. Then [fleeing the plague] would be more forbidden than even the greatest Jihad, and fleeing from Jihad would be obligatory. However, the Quran has stated the opposite. The Great Quran calls the abandonment of Jihad and fleeing from Jihad as 'destruction' (Tahlukah). What these worshippers of desires consider destruction is salvation, and what they consider salvation is destruction. Abu Ayyub al-Ansari (may Allah be pleased with him) says: "The noble verse 'do not throw [yourselves into destruction]' was revealed regarding us, the Ansar. When Allah Almighty gave honor to the firm religion and Islam spread, we said, 'What is the need for Jihad now? Let us set right our domestic affairs which have been neglected for so many days.' On this, it was revealed:

"And spend in the way of Allah and do not throw [yourselves] with your [own] hands into destruction." Spend your life and wealth in Jihad and do not fall into destruction by your own hands by abandoning Jihad. — (t)

It is in 'Ma'alim-ul-Sharif': "Destruction is staying with family and wealth and abandoning Jihad." — (t)

The great Imam Ahmad bin Hanbal narrates from Jabir (may Allah be pleased with him) in the Musnad that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "The one who flees from the plague is like the one who flees from the [battle] field [in Jihad]."

---

1 Sahih al-Bukhari, Kitab al-Ilm, Chapter on the sin of one who tells a lie against the Prophet (pbuh), Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/21. 2 Ma'alim al-Tanzil on the margins of al-Khazin under verse 2/195, Mustafa al-Babi Egypt 1/171 and 172. 3

Ma'alim al-Tanzil on the margins of al-Khazin under the verse "and do not throw yourselves...", Mustafa al-Babi Egypt 1/172.

Page 192 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

और बेशक अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इरशाद फरमाया: "जिसने जानबूझकर मुझ पर झूठ बोला, उसे अपना ठिकाना जहन्नम में समझ लेना चाहिए।" — (त)

'सुकन अल-शुजुन' क्या चीज़ है? इसका लेखक कौन है? 'कश्फ अल-ज़ुनून' तक में तो इसका कोई पता नहीं। यदि आज का कोई अज्ञानी और अज्ञात व्यक्ति हो, तो हो। 'अपने हाथों को हलाकत (विनाश) में डालना' (त) क्या है? यह मुहम्मद, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आदेशों को न मानना है। अन्यथा, यह आयत जिहाद की मनाही के लिए एक उत्तम दस्तावेज़ बन जाएगी। वह विनाश जो चमकती तलवारों, बरसते तीरों और निरंतर तोप के गोलों के सामने है, प्लेग (ताऊन) में उसका सौवां हिस्सा भी नहीं है। तो फिर [ताऊन से भागना] जिहादे अकबर से भी अधिक हराम होगा और जिहाद से भागना फर्ज़ होगा। जबकि कुरान ने इसके विपरीत कहा है। कुरान अज़ीम जिहाद छोड़ने और जिहाद से भागने को ही 'हलाकत' (विनाश) कहता है। जिसे ये हवस के पुजारी हलाकत समझते हैं वह निजात (मुक्ति) है और जिसे वे निजात समझ रहे हैं वह हलाकत है। अबू अय्यूब अंसारी (रज़ियल्लाहु अन्हु) फरमाते हैं: "करीमा 'लातुलक़ू (मत डालो) हम अंसार के बारे में उतरी जब अल्लाह अज़्ज़वजल ने मज़बूत दीन को इज़्ज़त बख्शी और इस्लाम फैल गया। हमने कहा, अब जिहाद की क्या ज़रूरत है? अब उन घरेलू मामलों को संवार लें जो इतने दिनों से खराब पड़े हैं। इस पर इरशाद हुआ:

"और अल्लाह की राह में खर्च करो और अपने हाथों स्वयं को विनाश में न डालो।" अपनी जान और माल जिहाद में खर्च करो और जिहाद छोड़कर अपने हाथों हलाकत में न पड़ो। — (त)

'मआलिम शरीफ़' में है: "'अत-तहलुकह' (विनाश) परिवार और धन से जुड़े रहना और जिहाद के लिए न निकलना है।" — (त)

इमाम अजल अहमद बिन हंबल 'मुसनद' में जाबिर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "ताऊन (प्लेग) से भागने वाला वैसा ही है जैसे जिहाद में [मैदान-ए-जंग] से भागने वाला।"

---

1 सहीह अल-बुखारी, किताबुल इल्म, नबी (स.) पर झूठ बोलने वाले के गुनाह का अध्याय, पुरानी कुतुब खाना कराची 1/21. 2 मआलिम अल-तन्ज़ील हाशियह अल-खाज़िन पर, आयत 2/195 के

तहत, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/171 और 172. 3 मआलिम अल-तन्ज़ील हाशियह अल-खाज़िन पर, आयत 'व ला तुलक़ू बि-ऐदीकुम' के तहत, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/172.

पेज 192/720

وقد قال رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم من کذب علی متعمدا فلیتبوأ مقعدہ من النار۔ بیشک رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا: جس نے عمداً مجھ پر جھوٹ کہا اسے اپنا ٹھکانا دوزخ میں سمجھ لینا چاہئے۔ (ت)

سکن الشجون کیا چیز ہے اس کا مصنف کون ہے، کشف الظنون تک تو اس کا پتا نہیں کوئی حال کا جاہل مجہول ہو تو ہوا کرے، القاء بالیدی الی التھلکۃ (ہاتھوں کو ہلاکت میں ڈالنا۔ ت) کیا ہے محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کے احکام کو نہ ماننا، ورنہ یہ آیت تحریمِ جہاد کے لئے عمدہ دستاویز ہو جائے گی، جو تہلکہ چمکتی تلواروں اور برستے تیروں اور توپ کے متواتر گولوں کے سامنے ہے طاعون میں اس کا عشر عشیر بھی نہیں تو جہاد اکبر سے زائد حرام ہوگا اور جہاد سے بھاگنا فرض حالانکہ قرآن نے اس کا عکس فرمایا ہے قرآن عظیم ترکِ جہاد و فرار عن الجہاد ہی کو تہلکہ فرماتا ہے جسے یہ عبدۃ الہوی ہلاک سمجھیں وہ نجات ہے اور جسے نجات سمجھ رہے ہیں وہ ہلاک ہے۔ ابوایوب انصاری رضی اللہ تعالی عنہ فرماتے ہیں: " کریمہ لاتلقوا" ہم انصار میں اتری کہ جب دین متین کو اللہ عزوجل نے عزت بخشی اور اسلام پھیل گیا ہم نے کہا اب جہاد کی کیا ضرورت ہے اب خانگی امور جو اتنے روزوں سے خراب پڑے ہیں بنا لیں اس پر ارشاد ہوا:

وانفقوا فی سبیل اللہ ولا تلقوا بأیدیکم الی التھلکۃ اپنی جان اور مال جہاد میں خرچ کرو اور ترکِ جہاد کر کے اپنے ہاتھوں ہلاکت میں نہ پڑو۔ (ت)

معالم شریف میں ہے: فالتھلکۃ الاقامۃ فی الاھل والمال وترک الجھاد۔ "التھلکۃ" اہل ومال سے وابستہ رہنا اور جہاد کے لئے نہ نکلنا ہے۔ (ت)

امام اجل احمد بن حنبل مسند میں جابر رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کرتے ہیں رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں: الفار من الطاعون کالفار من الزحف طاعون سے بھاگنے والا ایسا ہے جیسے جہاد میں [میدانِ جنگ سے بھاگنے والا]۔

---

1 صحیح البخاری کتاب العلم باب اثم من کذب علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۱ 2 معالم التنزیل علی ہامش الخازن تحت آیۃ ۲/ ۱۹۵ مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۷۱ و ۱۷۲ 3 معالم التنزیل علی ہامش الخازن تحت آیۃ ولا تلقوا بائدیکم الی التھلکۃ مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۷۲

Fatawa-e-Razawiya, Volume 24

| "And whoever remains patient in it will have the reward of a martyr." - 1 | One who flees from the disbelievers by turning his back, and the one who stays in it patiently, for him is the reward of a martyr. |

And regarding the one who flees from Jihad, Allah Almighty says:

| "Then he has incurred the wrath of Allah, and his abode is Hell; and what an evil destination it is."[2] | He has indeed fallen into the wrath of Allah, and his abode is Hell; and what an evil return it is. |

Thus it is proven that the one who flees from a plague incurs the wrath of Allah and Hell is his abode. About this, He said:

| "And do not throw yourselves with your own hands into destruction."[3] | Do not cast yourselves into destruction, the wrath of God, and the deservingness of Hell with your own hands. |

Now tell me, is fleeing from the plague "destruction", or staying patiently and remaining firm while trusting in your Lord Almighty? May Allah Almighty grant the guidance that the commands of Muhammad, the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, are not rejected based on one's own desires. And there is no power or strength except with Allah, the Most High, the Most Great (the power to avoid sin and the strength for virtue is in no one except with the guidance of Allah, the Exalted and Magnificent). And Allah Almighty knows best.

Problem 61: 7 Muharram-ul-Haram 1323 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid is a resident of Badaun and is an English employee in Bareilly. He had firmly intended to bring his family and children from Badaun, but during this time, the plague started in Badaun, so he could not bring them. If Sharia permits, Zaid should bring his relatives to save them from worldly worries and double expenses.

The Answer: Allah Almighty knows the dangers of the heart. If indeed their transfer from there is out of fear of the plague...

---

[1] Musnad Imam Ahmad bin Hanbal, Marwiyat Abdullah bin Jabir Ansari (may Allah be pleased with him), Dar al-Fikr Beirut 3/360; Kanz al-Ummal Hadith 28443, Mu'assasat al-Risala Beirut 9/76. [2] Al-Quran Al-Karim 8/16. [3] Al-Quran Al-Karim 2/195.

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 24

| "और जो कोई इसमें धैर्य रखेगा, उसे शहीद का सवाब मिलेगा।" - 1 | काफ़िरों को पीठ दिखाकर भागने वाला, और जो इसमें धैर्य के साथ बैठा रहे, उसके लिए शहीद का सवाब है। |

और जिहाद से भागने वाले के बारे में अल्लाह अज़्वजल फरमाता है:

| "तो वह अल्लाह के क्रोध में पड़ा और उसका ठिकाना जहन्नुम है, और वह क्या ही बुरा ठिकाना है।" ² | वह निश्चित रूप से अल्लाह के क्रोध में गिर गया है और उसका ठिकाना जहन्नुम है; और वह क्या ही बुरा प्रत्यवर्तन है। |

तो सिद्ध हुआ कि प्लेग (ताऊन) से भागने वाला अल्लाह के क्रोध में जाता है और जहन्नुम उसका ठिकाना है। इसी के बारे में फरमाया:

| "और अपने ही हाथों विनाश में न पड़ो।" ³ | अपने हाथों विनाश, ईश्वर के क्रोध और नरक की पात्रता में न पड़ें। |

अब बताइए कि ताऊन से भागना "तहलका" (विनाश) है या अपने रब अज़्वजल पर भरोसा करके धैर्यवान और स्थिर रहना। अल्लाह तआला तौफीक दे कि मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आदेशों को अपनी इच्छाओं के कारण अस्वीकार न किया जाए। "ला हौला वला.कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम" (पाप से बचने और नेकी की शक्ति किसी में नहीं है सिवाय अल्लाह तआला की तौफीक के जो महान और आलीशान है)। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 61: 7 मुहर्रम-उल-हराम 1323 हिजरी धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद बदायूँ का निवासी है और बरेली में अंग्रेजी कर्मचारी है, उसने बदायूँ से अपने परिवार और बच्चों को लाने का पक्का इरादा कर लिया था, लेकिन इसी बीच बदायूँ में प्लेग शुरू हो गया, इसलिए वह उन्हें नहीं ला सका। यदि शरीयत अनुमति दे, तो ज़ैद अपने परिजनों को लाकर दुनियावी चिंताओं और दोहरे खर्च से निजात पा सके।

जवाब: अल्लाह अज़्वजल दिल के खतरों को जानता है। अगर वास्तव में वहां से उनका स्थानांतरण प्लेग के डर से है...

[1] मुस्नद इमाम अहमद बिन हंबल, मरवियात अब्दुल्ला बिन जाबिर अंसारी (रज़ियल्लाहु अन्हु), दार अल-फ़िक्र बेरुत 3/360; कँज़ अल-उम्माल हदीस 28443, मुअस्ससतु अल-रिसाला बेरुत 9/76। [2] अल-क़ुरआन अल-करीम 8/16। [3] अल-क़ुरआन अल-करीम 2/195।

पृष्ठ 193 of 720

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

| ومن صبر فیہ کان لہ اجر شہید - 1 | کفار کو پیٹھ دے کر بھاگنے والا، اور جو اس میں صبر کر کے بیٹھا رہے اس کے لئے شہید کا ثواب ہے۔ |

اور جہاد سے بھاگنے والے کو اللہ عزوجل فرماتا ہے :

| "فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللهِ وَمَاْوٰہُ جَھَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِیْرُ" 2 | وہ بیشک اللہ کے غضب میں پڑا اور اس کا ٹھکانا جہنم ہے اور کیا بری بازگشت ہے۔ |

تو ثابت ہوا کہ طاعون سے بھاگنے والا اللہ کے غضب میں جاتا ہے اور جہنم اس کا ٹھکانا ہے اسی کو فرمایا کہ:

| "وَلَا تُلْقُوْا بِاَیْدِیْکُمْ اِلَی التَّھْلُکَۃِ" 3 | اپنے ہاتھوں ہلاکت و غضب خدا اور استحقاق جہنم میں نہ پڑو۔ |

اب بتائیے کہ طاعون سے بھاگنا "تہلکہ" ہے یا اپنے رب عزوجل پر توکل کر کے صابر و مقیم رہنا۔ اللہ تعالیٰ توفیق دے کہ احکام محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو اپنے ہوائے نفس سے رد نہ کیا جائے ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم (گناہ سے بچنے اور نیکی کی قوت وطاکت کسی میں نہیں ہے بجز اللہ تعالی بلند مرتبہ اور عظیم الشان کی توفیق کےت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۶۱: ۷ محرم الحرام ۱۳۲۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید رہنے والا بدایوں کا ہے اور بریلی میں انگریزی ملازم ہے، بدایوں سے اپنے عیال و اطفال کو لانے کا مصمم

ارادہ کر لیا تھا کہ اس عرصہ میں بدایوں میں طاعون شروع ہو گیا، اس وجہ سے نہ لاسکا، اگر شریعت اجازت دے تو زید اپنے متعلقین کو لاکر دنیوی تفکرات اور دوہرے خرچ سے نجات پائے۔

الجواب: اللہ عزوجل دل کے خطروں کو جانتا ہے اگر واقعی بخوف طاعون وہاں سے ان کا منتقل کرنا

---

1 مسند امام احمد بن حنبل مرویات عبداللہ بن جابر انصاری رضی اللہ عنہ دارالفکر بیروت ۳/ ۳۶۰، کنز العمال حدیث ۲۸۴۴۳ مؤسسة الرسالة بیروت ۹/ ۷۶ 2 القرآن الکریم ۸/ ۱۶ 3 القرآن الکریم ۲/ ۱۹۵

Fatawa Razawiyya Volume 24

...not the purpose, but rather simply for your comfort and togetherness, there is undoubtedly permission, provided you explain well to your wife and adult children that this move is not to escape the plague. Nor can you escape death by running anywhere. My definitive intention was to call you earlier, but because of the plague, it was delayed thinking that taking you might be impermissible. Now it is known that there is no Shar'i objection in taking you with a pure intention. I am taking you just as I would have taken you if there were no plague. It is also obligatory upon you to correct your intention; do not let the thought of the plague enter your heart at all, which would make it appear that you consider this relocation as a boon due to the fear of the plague. If so, I will leave you here until Allah Almighty, whose command is enforced everywhere, enforces whatever command He wills. When he imparts this teaching and instruction, and it becomes apparent that this true belief has taken root in their hearts and no satanic thought remains, then he may come from there without hesitation. In this teaching, include sensible children as well, even if they are not adults, for they too are in need of the teaching of Truth. May Allah Subhanu grant well-being to Muslims everywhere and keep them in His protection and safety. Ameen, for the sake of the Master of Messengers, peace and blessings of Allah be upon him and upon them all. And Allah Almighty knows best.

Problem 62: From Amroha, district Moradabad, sent by Hakim Zahoor Ahmad Sahab.

What do the scholars of religion and muftis of the firm Shariah say about this matter: is it permissible or impermissible for a Hakim (doctor/physician) to have a patient use a liquid medical medicine containing an alcohol component? Is there a sin on the Hakim or not? Or such a medical medicine that does not contain an alcohol component but is prepared in such a way, like perfume cannot be prepared without sandalwood oil. Is the use of brandy permissible or impermissible for a patient? Is the use of dry bottled medicine or anaesthetics/intoxicants (muhazzir) permissible for a patient or not? Deobandi scholars forbid the use of medical medicines. If a reply card is not enough, please kindly provide the answer on an unstamped (bearing) envelope. May Allah Almighty grant you a good reward for this. Please explain and you shall be rewarded.

The Answer:

Alcohol of any kind is absolutely haram (forbidden) and impure like urine. Whether it is brandy or spirit or any other evil, any medicine containing its component, no

matter how it is mixed, its consumption (eating or drinking) is haram, its application is haram, its buying and selling is also haram. The physician who prescribes its use is a teller of sins and transgressions. This is the correct and reliable school of thought of our noble Imams. Yes, opium, cannabis (bhang), etc., which are dry things that cause intoxication or induce numbness and lethargy; the intoxication from them is haram, but they themselves are not impure, so their application is absolutely...

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

...मक़सूद नहीं बल्कि महज़ अपने आराम व यकजाई (साथ रहने) के लिये बिला शुब्हा इजाज़त है बशर्तेकि ज़ौजा (पत्नी) और बालिग बच्चों को खूब समझा दे कि यह इंतक़ाल (स्थान परिवर्तन) ताऊन (प्लेग) से बचने के लिये नहीं, न तुम कहीं भाग कर मौत से बच सकते हो। मेरा इरादा क़तई पहले से तुम्हें बुलाने का था बल्कि ताऊन की वजह से इतनी देर की शायद तुम्हारा ले जाना नाजायज़ हो, अब के मालूम हुआ कि खालिस नियत से ले जाने में शरअन हर्ज नहीं, तुम्हें इसी तरह ले जाता हूँ जैसा कि ताऊन न होने की हालत में ले जाता। तुम पर भी फ़र्ज़ है कि अपनी नियत सही करो, ताऊन का ख्याल दिल में हरगिज़ न लाओ जिससे यह ज़ाहिर होगा कि बवजह खौफ़े ताऊन इस मुंतक़िल (स्थानांतरण) होने को ग़नीमत जानेगा, मैं इसे यहीं छोड़ दूँगा यहाँ तक कि अल्लाह अज़्ज़वजल जिसका हर जगह हुक्म नाफ़िज़ है अपना जो हुक्म चाहे नाफ़िज़ फ़रमाए। जब यह तालीम व तलक़ीन करे और ज़ाहिर हो कि यह सच्चा अक़ीदा उनके दिलों में जम गया और शैतानी ख्याल न रहा उस वक़्त बे-तकल्लुफ़ वहाँ से आए, इस तालीम में समझ वाले बच्चों को भी शरीक करे अगरचे बालिग न हों कि तालीमे हक़ के वह भी मोहताज हैं। हक़ सुब्हानहू हर जगह मुसलमानों को आफ़ियत बख्शे और अपने हिफ़्ज़ ओ अमान में रखे आमीन बजाहे सैय्यदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम व अलैहिम अजमईन वल्लाहु तआला आलम।

मसला 62: अज़ अमरोहा जिला मुरादाबाद मुरसला हकीम ज़हूर अहमद साहब

क्या फ़रमाते हैं उलमये दीन व मुफ़्तियाने शरअ मतीन इस मसले में कि डॉक्टरी दवा सयाल (तरल) जिसमें शराब का जुज़ (अंश) हो हकीम मरीज़ को इस्तेमाल कराए जायज़ है या नाजायज़? हकीम पर गुनाह है या नहीं? या ऐसी डॉक्टरी दवा कि जिसमें शराब का जुज़ तो नहीं मगर वह ऐसी तैयार की गई है कि जैसे इत्र बग़ैर रोग़ने संदल के तैयार नहीं होता। ब्रांडी का इस्तेमाल मरीज़ को जायज़ या नाजायज़? खुश्क दवा शीशी या मुहज़्ज़िर (नशा लाने वाली दवा) का इस्तेमाल मरीज़ को जायज़ है या नहीं? उलमये देवबंद अदविया डॉक्टरी (अंग्रेजी दवाओं) का इस्तेमाल ममनूअ (प्रतिबंधित) फ़रमाते हैं। अगर जवाबी कार्ड काफ़ी न हो बराहे इनायत बेरंग लिफ़ाफ़े पर जवाब इनायत फ़रमाइए अल्लाह तआला आपको इसका अजरे खैर अता फ़रमाएगा बैनू तूजिरू (बयान फ़रमाएं सवाब पायें)।

अल-जवाब:

शराब किसी क़िस्म की हो मुतलक़न हराम है और पेशाब की तरह नजिस (अपवित्र) भी। ब्रांडी हो ख़्वाह स्पिरिट ख़्वाह कोई बला, जिस दवा में इसका जुज़ हो ख़्वाह किसी तरह इसकी आमेज़िश (मिलावट) हो उसका खाना पीना भी हराम, उसका लगाना भी हराम, उसका बेचना खरीदना भी हराम। तबीब (डॉक्टर) कि इसका इस्तेमाल बताए, गुनाह व आषाम (पापों) का बताने वाला है। यही हमारे अइम्मये किराम का मज़हब सही व मोअतमिद है। हाँ अफ़ीम भंग वग़ैरा खुश्क चीजें कि नशा लाती या तहज़ीर व तफ़्तीर (सुस्ती व शिथिलता) करती हैं उनका नशा हराम है और वह खुद नापाक नहीं तो उनका लगाना मुतलक़न...

पेज 194 / 720

مقصود نہیں بلکہ محض اپنے آرام و یکجائی کے لئے بلاشبہ اجازت ہے بشرطیکہ زوجہ اور بالغ بچوں کو خوب سمجھا دے کہ یہ انتقال طاعون سے بچنے کے لئے نہیں نہ تم کہیں بھاگ کر موت سے بچ سکتے ہو میرا ارادہ قطعی پہلے سے تمہیں بلانے کا تھا بلکہ طاعون کی وجہ سے اتنی دیر کی شاید تمہارا لے جانا ناجائز ہو اب کے معلوم ہوا کہ خالص نیت سے لے جانے میں شرعاً حرج نہیں تمہیں اسی طرح لے جاتا ہوں جیسا کہ طاعون نہ ہونے کی حالت میں لیجاتا ، تم پر بھی فرض ہے کہ اپنی نیت صحیح کرو طاعون کا خیال دل میں ہرگز نہ لاؤ جس سے یہ ظاہر ہو گا کہ بوجہ خوف طاعون اس منتقل ہونے کو غنیمت جانے گا میں اسے یہیں چھوڑ دوں گا یہاں تک کہ اللہ عزوجل جس کا ہر جگہ حکم نافذ ہے اپنا جو حکم چاہے نافذ فرمائے ، جب یہ تعلیم و تلقین کرے اور ظاہر ہو کہ یہ سچا عقیدہ ان کے دلوں میں جم گیا اور شیطانی خیال نہ رہا اس وقت بے تکلف وہاں سے آئے ، اس تعلیم میں سمجھ والے بچوں کو بھی شریک کرے اگرچہ بالغ نہ ہوں کہ تعلیم حق کے وہ بھی محتاج ہیں ، حق سبحانہ ہر جگہ مسلمانوں کو عافیت بخشے اور اپنے حفظ وامان میں رکھے آمین بجاہ سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم وعلیہم اجمعین واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۶۲: از امروہہ ضلع مراد آباد مرسلہ حکیم ظہور احمد صاحب

کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ ڈاکٹری دوا سیال جس میں شراب کا جز ہو حکیم مریض کو استعمال کرائے جائز ہے یا ناجائز ؟ حکیم پر گناہ ہے یا نہیں ؟ یا ایسی ڈاکٹری دوا کہ جس میں شراب کا جز تو نہیں مگر وہ ایسی تیار کی گئی ہے کہ جیسے عطر بغیر روغن صندل کے تیار نہیں ہوتا۔ برانڈی کا استعمال مریض کو جائز یا ناجائز ؟ خشک دوا شیشی یا

محذر کا استعمال مریض کو جائز ہے یا نہیں ؟ علمائے دیوبند ادویہ ڈاکٹری کا استعمال ممنوع فرماتے ہیں۔ اگر جوابی کارڈ کافی نہ ہو براہ عنایت بیرنگ لفافہ پر جواب عنایت فرمائیے اللہ تعالیٰ آپ کو اس کا اجرِ خیر عطا فرمائے گا بینوا توجروا۔

الجواب :

شراب کسی قسم کی ہو مطلقاً حرام ہے اور پیشاب کی طرح نجس بھی۔ برانڈی ہو خواہ اسپرٹ خواہ کوئی بلا ، جس دوا میں اس کا جز ہو خواہ کسی طرح اس کی آمیزش ہو اس کا کھانا پینا بھی حرام ، اس کا لگانا بھی حرام ، اس کا بیچنا خریدنا بھی حرام ، طبیب کہ اس کا استعمال بتائے بتلائے گناہ و آثام۔ یہی ہمارے ائمہ کرام کا مذہب صحیح و معتمد ہے۔ ہاں افیون بھنگ وغیرہ خشک چیزیں کہ نشہ لاتی یا تحذیر و تفتیر کرتی ہیں ان کا نشہ حرام ہے اور وہ خود ناپاک نہیں تو ان کا لگانا مطلقاً

Volume 24 Fatawa Razawiyya

...is permissible, and if a medicine contains such a component that it does not cause intoxication or numbness, there is no harm in consuming it. Generally, doctors' tinctures and other liquid medicines containing spirits are not devoid of such components; they are all pure and not impure. Yes, like quinine, etc., there is no problem in dry medicine. As long as there is no mixture of any impurity in them, the research of these issues in 'Durr al-Mukhtar', 'Radd al-Muhtar' and 'Fatawa Faqir' is sufficient. And Allah Almighty knows best.

Problem 63: From Varanasi, sent by Maulvi Mamnoon Hasan Khan Sahib, Deputy Collector, 16 Shaban-ul-Muazzam 1330 AH. Guide of Sharia, Honorable Maulvi Ahmad Raza Khan Sahib, may your blessings continue. After greetings and respects, it is requested that for some time, no inquiry has been sent to your holy presence. At this time, there is a necessity; a problem is sought to be resolved, for which I am bothered by a doubt. Please favor me with a prompt reply. Is the use of artificial teeth permissible or not? These artificial teeth are made in such a way that they come from other non-Islamic countries, but I do not know what components they are made of. However, until now, in my knowledge, no such thing has come into their composition due to which I should consider them forbidden or impermissible. These teeth are given to Indian craftsmen who make them resemble real teeth and palate and fix them in the mouth, and this is the reality of artificial teeth. The inquiry is that if the upper palate is of gold, i.e., of 'zarkah', or some mineral like aluminum, then to what extent is it permissible for men? Aluminum is a mineral from which nowadays light pots and pans, etc., are made for men and women. If the ruling of Sharia is different for men and women regarding gold and aluminum, please inform me in detail because the need is intense. Therefore, favor me with a quick reply.

The Answer: Honored and respectable Maulvi Muhammad Mamnoon Hasan Khan Sahib, Bahadur, may your honor increase. After offering the Sunnah greeting, there is no harm in using manufactured teeth. The Pure Lord, may His Glory be exalted, has originally created everything pure. Until the mixture of any impurity in something is proven, it will be considered pure. It is in 'Radd al-Muhtar': 'La yukhamu binajasatiha qablal 'ilm' (Impurity cannot be ruled before knowledge). A ruling of impurity cannot be given for anything as long as there is no knowledge regarding it.

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

...जायज़ है, और यदि किसी दवा में उनका इतना अंश हो कि वह नशा या सुस्ती न लाए, तो उसे खाने में भी कोई हर्ज नहीं। आम तौर पर डॉक्टरों के टिंचर और स्पिरिट युक्त अन्य तरल दवाओं में ऐसे घटक होते हैं; वे सभी पाक हैं और नापाक नहीं हैं। हाँ, कुनैन आदि जैसी सूखी दवाओं में कोई समस्या नहीं है। जब तक उनमें किसी नजासत (अशुद्धि) का मेल न हो, 'दुर्रे मुख्तार', 'रद्दुल मुहतार' और 'फ़तावा फ़क़ीर' में इन मसलों की तहकीकात काफी है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 63: बनारस से, प्रेषक मौलवी ममनून हसन खान साहब, डिप्टी कलेक्टर, 16 शाबान-उल-मुअज्जम 1330 हिजरी। शरीयत के मार्गदर्शक, आदरणीय मौलवी अहमद रज़ा खान साहब, आपका साया सलामत रहे। सलाम और आदाब के बाद अर्ज़ है कि काफी समय से आपकी सेवा में कोई प्रश्न नहीं भेजा गया है। इस समय एक ज़रूरत है; एक मसला दरयाफ़्त (पूछना) करना है जिसके लिए मैं एक दुविधा में हूँ। कृपया शीघ्र उत्तर देकर कृतार्थ करें। क्या नकली दांतों का उपयोग जायज़ है या नहीं? ये नकली दांत इस तरह बनते हैं और अन्य गैर-इस्लामी देशों से आते हैं, लेकिन मुझे नहीं पता कि वे किन चीज़ों से बने हैं। हालांकि, अब तक मेरी जानकारी में उनकी संरचना में ऐसी कोई चीज़ नहीं आई है जिसकी वजह से मैं उन्हें हराम या नाजायज़ समझूं। ये दांत भारतीय कारीगरों को दिए जाते हैं जो उन्हें मुंह और तालू के समान बना देते हैं और उन्हें मुंह में लगा देते हैं, और यही नकली दांतों की असलियत है। सवाल यह है कि यदि ऊपर का तालू सोने का हो, यानी 'ज़रका' का, या एल्युमीनियम जैसी किसी खनिज धातु का, तो पुरुषों के लिए यह किस हद तक जायज़ है? एल्युमीनियम एक ऐसी खनिज धातु है जिससे आजकल पुरुषों और महिलाओं के लिए हल्के बर्तन आदि बनाए जाते हैं। यदि सोने और एल्युमीनियम के लिए पुरुषों और महिलाओं के लिए शरीयत का हुक्म अलग-अलग है, तो कृपया विस्तार से बताएं क्योंकि ज़रूरत बहुत ज़्यादा है। इसलिए जल्दी जवाब दें।

जवाब: आदरणीय मौलवी मोहम्मद ममनून हसन खान साहब, बहादुर, आपका सम्मान बढ़े। सुन्नत सलाम के बाद, बने हुए (नकली) दांत लगाने में कोई हर्ज नहीं है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हर चीज़ को असल में पाक बनाया है। जब तक किसी चीज़ में नजासत का मिलना साबित न हो जाए, उसे पाक ही माना जाएगा। 'रद्दुल मुहतार' में है: 'ला युख्क्मु बिनजासतिहा क़ब्लल इल्म' (जानकारी से

पहले नजासत का हुक्म नहीं दिया जाएगा)। किसी चीज़ की नजासत का हुक्म तब तक नहीं दिया जा सकता जब तक उसके बारे में ज्ञान न हो।

पृष्ठ 195 का 720

...جائز اور اگر کسی دوا میں ان کا اتنا جز ہو کہ نشہ یا تعذیر نہ لائے تو اس کے کھانے میں بھی حرج نہیں ڈاکٹر ٹنچر وغیرہ رقیق دوائیں عموماً اسپرٹ کی آمیزش سے خالی نہیں ہوتیں وہ سب حرام و نجس ہیں ، ہاں کونین وغیرہ کی طرح خشک دوا مضائقہ نہیں رکھتی جبکہ اس میں کسی حرام کا خلط نہ ہو، ان مسائل کی تحقیق در مختار و ردالمحتار و فتاویٰ فقیر میں بروجہ کافی ہے۔ واللہ سبحنہ و تعالی اعلم۔

مسئلہ ۶۳: از بنارس مرسلہ مولوی ممنون حسن خاں صاحب ڈپٹی کلکٹر ۱۶ شعبان معظم ۱۳۳۰ھ ہادی راہ شریعت جناب مولوی احمد رضا خاں صاحب دامت برکاتکم بعد سلام علیک و آداب عرض ہے کہ عرصہ سے خیریت جناب مقدس کی دریافت نہیں، اس وقت ضرورت التماس یہ ہے کہ ایک مسئلہ دریافت طلب ہے جس کو کئی شق میں کرکے گزارش کرتا ہوں امید کہ جواب سے جلد سرفراز فرمایا جائے۔ مصنوعی دانت کا استعمال جائز ہے یا نہیں؟ یہ مصنوعی دانت اس طرح بنتے ہیں کہ دانت دیگر ممالک غیر اسلام سے بن کر آتے ہیں مگر ان کی ترکیب کہ کن کن اجزا سے بنتے ہیں مجھ کو معلوم نہیں ہے مگر تاہم اب تک میرے علم میں کوئی ایسی چیز ان کی ترکیب میں نہیں آئی ہے جس کے داخل ترکیب ہونے کی وجہ سے ان کو میں حرام یا ناجائز خیال کروں۔ ان دانتوں کو ہندوستانی کاریگر ہر شخص کے منہ اور تالو کی صورت کے مشابہ تالو بنا کر اس میں لگا دیتے ہیں جو منہ میں لگالیا جاتا ہے اور یہ حقیقت مصنوعی دانتوں کی ہے۔ دریافت طلب یہ امر ہے کہ مندرجہ بالا تالو اگر سونے کا یعنی زر کا ہو یا کسی اور معدنیات کا مثل ایلومینیم کے تو مردوں کے لگانے کے واسطے کہاں تک جائز ہے، ایلومینیم وہ معدنیات میں سے ہے جس کے زمانہ حال میں ہلکی ہلکی دیگچیاں اور ظروف وغیرہ بنتے ہیں۔ مردوں اور عورتوں

کے واسطے اور زر اور ایلومینیم کے واسطے اگر شریعت کا حکم جدا جدا ہے تو مفصل جواب سے مطلع فرمائیے چونکہ ضرورت اشد ہے اس لئے جواب سے جلد مطلع فرمایا جائے۔

الجواب: بوالا ملاحظہ جناب گرامی القاب فضائل نصاب جناب مولوی محمد ممنون حسن خاں صاحب بہادر بالقابہ دام مجدہ السامی، بعد اہدائے ہدیہ سنہ سنیہ ملتمس ، بنے ہوئے دانت لگانے میں حرج نہیں۔ طاہر قدوس عز جلالہ نے ہر چیز اصل میں پاک بنائی ہے جب تک کسی شے میں کسی نجاست کا خلط ثابت نہ ہو پاک ہی مانی جائے گی۔ ردالمحتار میں ہے: لا یحکم بنجاستھا قبل العلم ۔ کسی چیز کی نجاست کا حکم نہیں دیا جاسکتا جب تک اس کے متعلق علم نہ ہو۔

Volume 24 Fatawa Ridawiyyah

...its reality. [1] | ...unless its reality is known. (t)

A golden palate is absolutely permissible for women, and for men in case of necessity, i.e., when there is a specific need for gold that cannot be fulfilled by silver etc., otherwise another metal should be chosen. If silver is needed, use it, otherwise aluminum or whatever is suitable. It is stated in Durr al-Mukhtar:

Lā yushaddu sinnahu al-mutaharrik bi-dhahab bal bi-fiḍḍah wa yuttakhadhu anfan minhu li-anna al-fiḍḍata tuntinu. [2] | A loose tooth should not be fastened with gold wires, but silver should be used. However, an artificial nose made of gold can be used because silver develops a bad smell. (t)

In Hidayah it is stated:

Al-aṣlu fīhi al-taḥrīmu wa al-ibāḥatu li al-ḍarūrati wa qad indafa‘at bi al-fiḍḍati wa hiya al-adnā fa-baqiya al-dhahabu ‘alā al-taḥrīmi wa al-ḍarūratu lam tandafi‘ fī al-anfi dūnahu ḥaythu antana. [3] Ah Wallāhu Ta‘ālā A‘lam. | The original rule for using gold is prohibition, and its permissibility is due to necessity. Since this necessity can be fulfilled with silver, which is lesser [in value/status], gold remains prohibited. However, the necessity in making an artificial nose is not fulfilled without it (gold), as other metals develop a foul odor. Ah, and Allah the Almighty knows best. (t)

Problem 64: | From Sarniyan, District Bareilly, sent by Amir Ali Sahab Qadri | 4 Rajab 1331 AH What is the ruling on using medicines from a dispensary? The Answer: English medicine that contains alcohol, such as tinctures, is absolutely impermissible. As for medicines in which no impure or forbidden thing is known to be present, it is better to avoid them. And Allah the Almighty knows best.

1 Radd al-Muhtar, Kitab al-Taharah, Bab al-Anjas, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/220 2 Durr al-Mukhtar, Kitab al-Hazr wa al-Ibahah, Fasl fi al-Labs, Matba' Mujtabai, Delhi, 2/240 3 Al-Hidayah, Kitab al-Hazr wa al-Ibahah, Fasl fi al-Labs, Matba' Yusufi, Lucknow, 4/455 Page 196 of 720

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

...उसकी हकीकत। [1] | ...जब तक कि उसकी वास्तविकता ज्ञात न हो जाए। (त)

सोने का तालु महिलाओं के लिए बिल्कुल जायज़ है, और पुरुषों के लिए ज़रूरत के समय, यानी जब सोने की कोई ऐसी विशेष ज़रूरत हो जो चाँदी आदि से पूरी न हो सके, अन्यथा दूसरी धातु चुनें। यदि चाँदी की आवश्यकता हो तो वह, अन्यथा एल्युमिनियम या जो भी उचित हो। दुर्र-ए-मुख्तार में है:

ला युशद्दु सिन्नहु अल-मुतहर्रिक बि-ज़हब बल बि-फ़िज़्ज़ह व युत्तख़ज़ु अन्फ़न मिन्हु लि-अन्ना अल-फ़िज़्ज़ता तुंतिनु। [2] | हिलते हुए दाँत को सोने के तारों से मज़बूत नहीं किया जाना चाहिए बल्कि चाँदी का उपयोग किया जाना चाहिए। हाँ, अलबत्ता सोने की कृत्रिम नाक बनाकर लगाई जा सकती है क्योंकि चाँदी में बदबू पैदा हो जाती है। (त)

हिदाया में है:

अल-अस्लु फ़ीहि अल-तहरीमु व अल-इबाहतु लि अल-ज़रूरति व क़द इंदफ़अत बिल-फ़िज़्ज़ति व हिया अल-अदना फ़-बक़िया अल-ज़हबु अला अल-तहरीमी व अल-ज़रूरतु लम तंदफ़ि' फ़िल-अन्फ़ि दूनहु हैसु अंतना। [3] अह वल्लाहु तआला आलम। | सोने के उपयोग में मूल नियम वर्जना (हराम) है, और इसकी अनुमति केवल ज़रूरत के कारण है। चूँकि यह ज़रूरत चाँदी से पूरी हो जाती है जो कि कमतर है, इसलिए सोना हराम ही रहेगा। लेकिन नाक लगाने में यह ज़रूरत इसके(सोने) बिना पूरी नहीं होती क्योंकि अन्य धातुओं में दुर्गंध पैदा हो जाती है। अह, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 64: | सरनियान जिला बरेली से प्रेषित, अमीर अली साहब कादरी | 4 रजब 1331 हिजरी डिस्पेंसरी की दवा इस्तेमाल करने का क्या हुक्म है? जवाब: अंग्रेज़ी दवा जिसमें शराब होती है जैसे टिंचर, वह बिल्कुल नाजायज़ है। और जिस दवा में किसी अपवित्र या हराम चीज़ का पता न हो, उससे बचना बेहतर है। वल्लाहु तआला आलम।

1 रद अल-मुह्तार, किताब अत-तहारत, बाब अल-अंजस, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 1/220 2 दुर्र-ए-मुख्तार, किताब अल-हज़्र व अल-इबाहह, फ़स्ल फ़ी अल-लब्ज़, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 2/240 3 अल-हिदाया, किताब अल-हज़्र व अल-इबाहह, फ़स्ल फ़ी अल-लब्ज़, मतबा यूसुफ़ी, लखनऊ, 4/455 पेज 196/720

بحقیقتھا 1 ۔ | جب تک کہ اس کی حقیقت معلوم نہ ہو۔ (ت) سونے کا تالو عورتوں کو مطلقاً جائز ہے اور مردوں کو بضرورت یعنی جبکہ سونے میں کوئی خصوصیت محتاج الیہا ایسی ہو کہ چاندی وغیرہ سے حاصل نہ ہو سکتی ہو ورنہ دوسری دھات اختیار کریں چاندی کی حاجت ہو تو وہ ورنہ ایلومینیم یا جو مناسب ہو۔ درمختار میں ہے:

لایشد سنه المتحرك بذهب بل بفضة ویتخذ انفاً | ہلنے والے دانت کو سونے کے تاروں سے مضبوط نہ کیا جائے بلکہ چاندی استعمال کی جائے، ہاں البتہ سونے کی مصنوعی ناک بنا کر لگائی جاسکتی ہے کیونکہ چاندی میں بدبو پیدا ہو جاتی ہے۔ (ت) منه لان الفضة تنتنه 2 ۔

ہدایہ میں ہے:

الاصل فیه التحریم والاباحة للضرورة وقد اندفعت | سونے کے استعمال میں اصل حرمت ہے اور اس کا مباح ہونا ضرورت کی وجہ سے ہے کیونکہ چاندی سے یہ ضرورت پوری ہو جاتی ہے اور اس کا استعمال بنسبت سونے کے قریب ہے، لہذا سونا اپنی حرمت پر باقی رہے گا، اور یہ ضرورت ناک لگانے میں بغیر سونے کے پوری نہیں ہو سکتی (لہذا سونے کی مصنوعی ناک لگانا جائز ہے) کیونکہ سونے کے علاوہ باقی دھاتوں میں بدبو پیدا ہو جاتی ہے اھ واللہ تعالٰی اعلم (ت) بالفضة وھی الادنی فبقی الذھب علی التحریم والضرورة لم تندفع فی الانف دونه حیث انتن 3 اھ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۶۴: | از سرنیان ضلع بریلی مرسلہ امیر علی صاحب قادری | ۴ رجب ۱۳۳۱ھ شفاخانہ کی دوا استعمال کرنے کا کیا حکم ہے؟ الجواب: انگریزی دوا جس میں شراب پڑتی ہے جیسے ٹنکچر،

وہ مطلقاً ناجائز ہے، اور جس دوا میں کوئی ناپاک یا حرام چیز معلوم نہ ہو اس سے بچنا بہتر ہے۔

واللہ تعالیٰ اعلم

1 ردالمختار کتاب الطھارت باب الانجاس داراحیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۲۲۰ 2 درمختار کتاب الحظر والاباحۃ فصل فی اللبس مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۲۴۰ 3 الہدایۃ کتاب الحظر والاباحۃ فصل فی اللبس مطبع یوسفی لکھنو ۴/ ۴۵۵ Page 196 of 720

Fatawa Ridawiyya Volume 24

Issue 65: What is the ruling on obtaining medicine for an illness from Hindus? The Answer: If a physician prescribes an impermissible thing in medicine, then it is not permissible even if the physician is a Muslim. There is no harm in using a permissible thing even if the physician is a non-believer. However, the medical practices of Hindus are often against rational principles and are frequently harmful; therefore, one should avoid them. And Allah Almighty knows best.

Issue 66: From Basharat Ganj town, Bareilly district, near the Grand Mosque, sent by Najoo Khan Faujdar (Baqi Wala), 25th Muharram al-Haram 1332 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Is performing spiritual operations (Amaliyat), such as using amulets (Ta’wiz) etc. from books, true or false? In what way is it permissible and in what way is it impermissible? Please elaborate. The Answer: Spiritual operations and amulets using the Names of Allah and the Speech of Allah are certainly permissible as long as there is no method within them that contravenes Shariah. For example, words of unknown meaning like 'Hafizi', 'Ramadan', 'Kahlamun', or in the prayer for plague 'Tasusa', 'Masusa', 'Masusa'—such words are not permitted unless established by Hadith, narrations, or the sayings of reliable masters. Similarly, amulets for warding off epilepsy etc. that are written with rooster's blood are also impermissible; one should use musk instead (which is also derived from blood). Likewise, for matters of love and subjugation, some amulets are buried under the doorframe so that people step on them while entering or leaving; this is also prohibited and against proper etiquette. Similarly, if the purpose for which the amulet or operation is performed is contrary to Shariah, it will be impermissible. For instance, women who use amulets to subjugate their husbands; this is the opposite of Shariah's command. Allah Almighty has made the husband the authority; for a woman to attempt to make him the subject is forbidden. Similarly, spiritual operations and amulets for separation and enmity used among close relatives (Mahram), such as separating brother from brother, constitute severing of kinship ties (Qat’a al-Rahm), and severing kinship is forbidden. Likewise, creating discord between husband and wife is forbidden. It is stated in the Hadith: "He is not from us who turns a woman against her husband." One who ruins a woman’s relationship with her husband is not of our group.

---

[1] Sunan Abi Dawud, Kitab al-Talaq, Bab fi man khabbaba imra'atan alkh, Aftab-e-Alam Press Lahore 1/296.

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

मसला ६५: हिंदुओं से बीमारी का इलाज कराना कैसा है? जवाब: यदि हकीम (वैद्य) दवा में कोई हराम (नाजायज़) चीज़ बताए, तो वह जायज़ नहीं है, भले ही हकीम मुसलमान हो। और जायज़ चीज़ों के इस्तेमाल में कोई हर्ज़ नहीं है, भले ही हकीम काफ़िर हो। लेकिन हिंदुओं की चिकित्सा पद्धति अक़्ली (तार्किक) उसूलों के खिलाफ और अक्सर हानिकारक होती है, इसलिए इससे बचना चाहिए। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला ६६: क़स्बा बशारत गंज, ज़िला बरेली, बड़ी मस्जिद के पास से, प्रेषक नज्जू ख़ान फौजदार यानी बाक़ी वाला, २५ मुहर्रमुल हराम १३३२ हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि अमलियात यानी तावीज़ वगैरह किताबों से करना हक़ है या बातिल (ग़लत)? किस तरह से जायज़ है और किस तरह से नाजायज़? कृपया लिखें। जवाब: अल्लाह के नामों और अल्लाह के कलाम (क़ुरआन) से अमलियात और तावीज़ यक़ीनन जायज़ हैं, बशर्ते कि उनमें कोई तरीका शरीअत के ख़िलाफ़ न हो। मिसाल के तौर पर, कोई ऐसा शब्द जिसका अर्थ मालूम न हो जैसे 'हफ़ीज़ी', 'रमज़ान', 'कहलमून', या ताऊन (प्लेग) की दुआ में 'तासूसा', 'मासूसा', 'मासूसा'—ऐसे शब्दों की इजाज़त तब तक नहीं है जब तक कि वे हदीस, आसार या विश्वसनीय बुजुर्गों के अक़वाल (कथनों) से साबित न हों। इसी तरह मिर्गी वगैरह को दूर करने के लिए जो तावीज़ मुर्गे के खून से लिखे जाते हैं, वे भी नाजायज़ हैं; उनके बजाय मुश्क (कस्तूरी) से लिखें, जो असल में खून ही है। इसी तरह मुहब्बत और वशीकरण (तसख़ीर) के लिए कुछ तावीज़ दरवाज़े की चौखट में दफन किए जाते हैं ताकि आते-जाते उन पर पैर पड़ें; यह भी वर्जित और अदब के ख़िलाफ़ है। इसी तरह, यदि वह उद्देश्य जिसके लिए तावीज़ या अमल किया जा रहा है शरीअत के ख़िलाफ़ हो, तो वह नाजायज़ हो जाएगा। जैसे औरतें शौहर को वश में करने के लिए तावीज़ कराती हैं; यह शरीअत के हुक्म के उलट है। अल्लाह अज़्वजल ने शौहर को हाकिम (शासक) बनाया है, उसे महकूम (अधीन) बनाना औरत पर हराम है। इसी तरह नफ़रत और जुदाई के अमल और तावीज़ जो रिश्तेदारों में किए जाएं जैसे भाई को भाई से अलग करना, यह 'क़ता-ए-रहम' (रिश्ते तोड़ना) है और रिश्ता तोड़ना हराम है। इसी तरह पति-पत्नी में फूट डालना भी हराम है। हदीस में फ़रमाया गया: "लीस मिन्ना मन ख़ब्बबा इम्रअतन अला ज़ौजिहा" (वह हम में से नहीं है जो किसी औरत को उसके शौहर के खिलाफ भड़का दे)। जो किसी औरत का रिश्ता उसके शौहर से बिगाड़ दे, वह हमारे गिरोह से नहीं है।

[1] सुनन अबी दाऊद, किताबुल तलाक़, बाब फ़ी मन ख़ब्बबा इम्रअतन अलख। आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर १/ २९६।

पृष्ठ ७२० का १९७

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۴

مسئلہ ۶۵: اہل ہنود سے بیماری کی دوا کرانا کیسا ہے؟ الجواب: طبیب اگر کوئی ناجائز چیز دوا میں بتائے جب تو جائز نہیں اگرچہ طبیب مسلمان ہو اور جائز چیز میں حرج نہیں اگرچہ کافر ہو مگر ہندوؤں کی طب عقلی اصول کے خلاف اور اکثر مضر ہوتی ہے لہذا بچنا چاہئے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۶۶: از قصبہ بشارت گنج ضلع بریلی متصل بڑی مسجد مرسلہ نجو خاں فوجدار یعنی باقی والہ ۲۵ محرم الحرام ۱۳۳۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ عملیات یعنی تعویذ وغیرہ کتابوں سے کرنا حق ہے یا باطل؟ کس طور سے جواز اور کس طریق سے ناجائز؟ رقم فرمائیں۔ الجواب: عملیات و تعویذ اسمائے الٰہی و کلام الٰہی سے ضرور جائز ہیں جبکہ ان میں کوئی طریقہ خلاف شرع نہ ہو مثلاً کوئی لفظ غیر معلوم المعنی جیسے حفیظی، رمضان، کہلمون اور اور دعائے طاعون میں طاسوسا، ماسوسا، ماسوسا، ایسے الفاظ کی اجازت نہیں جب تک حدیث یا آثار یا اقوال مشائخ معتمدین سے ثابت نہ ہو، یونہی دفع صرع وغیرہ کے تعویذ کہ مرغ کے خون سے لکھتے ہیں یہ بھی ناجائز ہے اس کے عوض مشک سے لکھیں کہ وہ بھی اصل میں خون ہے، یونہی حب و تسخیر کے لئے بعض تعویذات دروازہ کی چوکھٹ میں دفن کرتے ہیں کہ آتے جاتے اس پر پاؤں پڑیں یہ بھی ممنوع و خلاف ادب ہے، اسی طرح وہ مقصود جس کے لئے وہ تعویذ یا عمل کیا جائے اگر خلاف شرع ہو ناجائز ہو جائے گا جیسے عورتیں تسخیر شوہر کے لئے تعویذ کراتی ہیں، یہ حکم شرع کا عکس ہے۔ اللہ عزوجل نے شوہر کو حاکم بنایا ہے اسے محکوم بنانا عورت پر حرام ہے۔ یونہی تفریق و عداوت کے عمل و تعویذ کہ محارم میں کئے جائیں مثلاً بھائی کو بھائی سے جدا کرنا یہ قطع رحم ہے اور قطع رحم حرام ، یونہی زن و شو میں نفاق ڈلوانا۔ حدیث

میں فرمایا: لیس منّا من خبب امرأة علی زوجہا۔ جو کسی عورت کو اس کے شوہر سے بگاڑ دے وہ ہمارے گروہ سے نہیں۔

---

[1] سنن ابی داؤد کتاب الطلاق باب فی من خبب امرأة الخ آفتاب عالم پریس لاہور ۱/ ۲۹۶

Fatawa Razawiyya Volume 24

Rather, creating a divide between two Muslims without a Shari'a necessity is absolutely prohibited. It is mentioned in the Hadith:

[Arabic Box 1] Do not harbor mutual hatred and do not turn away from each other. [Up to the saying of the Prophet (PBUH)] O servants of Allah, become brothers to one another. (T)

In short, if there is anything in the act itself or in the amulet (ta'wiz) that goes against Shari'a, or if the objective is wrong, then it is prohibited. Otherwise, it is permissible and even commendable and rewarding for the purpose of benefiting a Muslim.

[Arabic Box 2] The Prophet (PBUH) said: "Whichever of you is able to benefit his brother should do so." (Reported by Imam Muslim on the authority of Jabir (RA)). And Allah knows best.

Issue 67: Question from the Muslims of Jam Jodhpur, Kathiawar, via Sheikh Abdul Sattar Sahab, Porbandar, Kathiawar, near Qandil, 15 Jumada al-Ula 1334 AH. Is it permissible to give a ta'wiz to a Hindu for healing from illness? If it is permissible, what is the method for it? Explain and you will be rewarded. Answer: If a ta'wiz is given to a non-believer (Kafir), it should be one that contains numerical figures (Muzmar), not one that contains manifest words of God or the names of God (Mazhar). And Allah Almighty knows best.

Issue 68: Sent by Abdul Sattar bin Ismail Sahab from Gondal, Kathiawar, 1st Safar 1335 AH. (1) What do the scholars of the Ahl-e-Sunnat say regarding this issue: How is it to use alcohol, opium, or anything that is Shari'a prohibited or impure as an external ointment/poultice (dhamad) for an illness? (2) Similarly, feeding a small amount of opium in medicine to children for the purpose of putting them to sleep or stopping them from crying.

1. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Adab, Chapter on Prohibition of Envy and Turning Away, etc. Qadimi Kutub Khana, Karachi, 4/896
2. Sahih Muslim, Kitab al-Salam, Chapter on the Recommendation of Ruqyah from the Evil Eye, etc. Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/224 Page 198 of 720

फ़तावा रज़विया खंड २४

बल्कि, बिना किसी शरीयत की आवश्यकता के दो मुसलमानों के बीच फूट डालना बिल्कुल मना है। हदीस में फ़रमाया गया है:

[अरबी बॉक्स १] (लोगों) एक-दूसरे से शत्रुता न रखें और न ही एक-दूसरे से मुँह मोड़ें। हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के इस इरशाद-ए-गिरामी तक "ऐ अल्लाह के बंदों! आपस में भाई-भाई बन जाओ"। (त)

संक्षेप में, यदि स्वयं कार्य या तावीज़ में शरीयत के विरुद्ध कोई बात हो, या उद्देश्य ग़लत हो, तो यह मना है। अन्यथा, यह जायज़ है, बल्कि किसी मुसलमान को लाभ पहुँचाने के उद्देश्य से यह प्रशंसनीय और पुण्य का कार्य है।

[अरबी बॉक्स २] नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "तुममें से जो कोई अपने भाई को लाभ पहुँचाने की क्षमता रखता हो, उसे ऐसा करना चाहिए।" (इमाम मुस्लिम ने हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया)। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला ६७: जाम जोधपुर, काठियावाड़ के मुसलमानों द्वारा प्रश्न, शेख अब्दुल सत्तार साहब के माध्यम से, पोरबंदर, काठियावाड़, कंदील के पास, १५ जमादी अल-उला १३३४ हिजरी। क्या हिंदू को बीमारी से शिफा (इलाज) के लिए तावीज़ देना जायज़ है या नहीं? यदि जायज़ है, तो इसका तरीका क्या है? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा। उत्तर: यदि किसी काफ़िर को तावीज़ दिया जाए, तो वह 'मुज़मिर' (संख्याओं वाला) होना चाहिए, न कि 'मज़हर' जिसमें अल्लाह के कलाम या अल्लाह के नामों के अक्षर हों। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला ६८: अब्दुल सत्तार बिन इस्माइल साहब द्वारा प्रेषित, गोंडल काठियावाड़ से, १ सफ़र १३३५ हिजरी। (१) अहले सुन्नत के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि शराब, अफीम या हर वो चीज़ जो शरई तौर पर हराम या नापाक हो, उसका किसी बीमारी में बाहरी तौर पर लेप (धमाद) के रूप में इस्तेमाल करना कैसा है? (२) इसी तरह बच्चों को सुलाने या रोने से रोकने के लिए दवा में थोड़ी मात्रा में अफीम खिलाना।

1. सहीह अल-बुखारी, किताब अल-अदब, हसद और मुँह मोड़ने की मनाही का अध्याय, आदि। कदीमी कुतुब खाना कराची ४/८९६

2. सहीह मुस्लिम, किताब अस-सलाम, नज़र-ए-बद के लिए दम (रुक़्या) की सिफारिश का अध्याय, आदि। कदीमी कुतुब खाना कराची २/२२४ पृष्ठ ७२० का १९८

بلکہ مطلقاً دو مسلمانوں میں تفریق بلا ضرورت شرعی ناجائز ہے۔ حدیث میں فرمایا:

[عربی باکس ۱] (لوگو) ایک دوسرے سے عداوت نہ رکھو اور نہ ایک دوسرے سے پیٹھ پھیرو۔ حضور علیہ الصلوۃ والسلام کے اس ارشاد گرامی تک "اے اللہ کے بندو! آپس میں بھائی بھائی ہو جاؤ"۔ (ت)

غرض نفس عمل یا تعویذ میں کوئی امر خلاف شرع ہو یا مقصود میں تو ناجائز ہے ورنہ جائز بلکہ نفع رسانی مسلم کی غرض سے محمود و موجب اجر۔

[عربی باکس ۲] قال صلی اللہ تعالی علیہ وسلم من استطاع منکم ان ینفع اخاہ فلینفعہ۔ رواہ مسلم عن جابر رضی اللہ تعالی عنہ واللہ تعالی اعلم۔ تم میں جس سے ہوسکے کہ اپنے بھائی مسلمان کو کوئی نفع پہنچائے تو پہنچائے۔ (امام مسلم نے حضرت جابر رضی اللہ تعالی عنہ سے اسے روایت کیا۔ ت) واللہ تعالی اعلم۔

مسئلہ ۶۷: مسئولہ مسلمانان جام جودھپور کا ٹھیا واڑ معرفت شیخ عبد الستار صاحب پور بند کاٹھیا واڑ متصل قندیل ۱۵ جمادی الاولیٰ ۱۳۳۴ھ ہندو کو شفاء بیماری کے واسطے تعویذ دینا جائز ہے یا نہیں؟ اگر جائز ہے تو اس کا طریقہ کیا ہے؟ بینوا توجروا۔ الجواب: کافر کو اگر تعویذ دیا جائے تو مضمر جس میں ہندسے ہوتے ہیں نہ کہ مظہر جس میں کلام الہی واسمائے الہی کے حروف ہوتے ہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۶۸: مرسلہ عبد الستار بن اسمعیل صاحب از گونڈل کاٹھیا واڑ یکم صفر ۱۳۳۵ھ (۱) کیا فرماتے ہیں علمائے اہلسنت اس مسئلہ میں ، شراب افیون یا ہر وہ چیز جو شرعاً حرام یا ناپاک ہو

اس کا کسی مرض میں خارجاً ضماداً استعمال کرنا کیسا ہے؟ (۲) اسی طرح بچوں کو نیند لانے یا رونے سے روکنے کی غرض سے دوا میں قدرے افیون کا کھلانا

1 صحیح البخاری کتاب الادب باب ماینہٰی عن التحاسد والتدابر الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۴/ ۸۹۶

2 صحیح مسلم کتاب السلام باب استحباب الرقیة من العین الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۲۲۴

Fatawa Razawiyyah Volume 24

Is it permissible or not? Please explain, may you be rewarded.

The Answer: (1) Alcohol is both forbidden (haram) and impure (najis); it is not permissible to apply it even to the exterior of the body. Opium is forbidden (haram) but not impure (najis); its use on the exterior of the body is permissible. (2) Giving opium to a child to put them to sleep or to stop them from crying is forbidden (haram), and the sin for it lies with the one who gives it, not the child. "What is forbidden to take is forbidden to give."[1] (What is prohibited to receive is also prohibited to give. - Translator's note) And Allah Almighty knows best.

Issue 70: Sent by Syed Waliullah from the village of Lora Sira Post Office Bhadur District Ghazipur 25th Rabi al-Akhir 1335 AH (1) What do the scholars of religion and muftis of the firm Shariah say regarding this matter: In those villages where there is a complaint of the plague, before people start dying, i.e., at the onset of epidemic signs like the death of soil insects etc., and the occurrence of filth and stench which is a precursor to this loathsome affliction - God forbid - or at the start of deaths, should the residents of the village leave their respective houses or not? What permission does the noble Shariah give in this matter? If it is permissible, at what time and under what condition should one leave? And if the Shariah does not permit it, what sin will those who leave be committing? Please inform us with proof from Hadith and Quranic text. (2) The Western doctors (Hakims) who generally issue announcements about leaving houses and themselves go out, and also a large portion of the Muslims follow them and present this argument that just as seeking medical treatment is Sunnah during illness, similarly, moving from a place during bad weather/climate is also a form of treatment. Changing climate is also included in Sunnah, so is it appropriate for all of us to follow their opinion or not? And some people have this idea that people die in it even without death [pre-ordained]. Since people die and fall ill in large numbers, the objection arises whether the death of so many people was simultaneously destined at once. Anyway, please provide a reasonable and satisfactory answer for each question. (3) Up to how many deceased can a joint funeral prayer (Janaza) be held? And can the funeral of an underage girl and boy be held with an adult? If so, should the prayer (Dua) for the adult be recited first or for the underage? Or can the prayer for the adult alone suffice for the underage? I would be grateful and thankful for a healing (complete) answer, with reference to Hadith. (4) A boy and girl are underage and they got married. After marriage, the girl became a

widow. Regarding the second marriage contract, will 'Iddah' (waiting period) be observed or not? If 'Iddah' is to be observed, then for how long?

[1] Al-Ashbah wa al-Nazair, Al-Fann al-Awwal, Al-Qa'idah al-Rabi'ah 'Asharah, Idara al-Quran Karachi, 1/189 Page 199 of 720

फतावा रज़विया जिल्द 24

जायज़ है या नहीं? बयान फरमाएं ताकि अज्र पाएं।

जवाब: (1) शराब हराम भी है और नापाक (नजिस) भी, इसे बदन के बाहरी हिस्से पर लगाना भी जायज़ नहीं है। और अफीम हराम है मगर नापाक नहीं, बदन के बाहरी हिस्से पर इसका इस्तेमाल जायज़ है। (2) बच्चे को सुलाने या रोने से रोकने के लिए अफीम देना हराम है और इसका गुनाह देने वाले पर है, बच्चे पर नहीं। "जिस चीज़ का लेना हराम है, उसका देना भी हराम है।"[1] (अनुवादक की टिप्पणी) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 70: मुर्सला सैय्यद वलीउल्लाह अज़ मौज़ा लोड़ सिरा डाकखाना भदौर जिला गाज़ीपुर 25 रबीउल आखिर 1335 हिजरी (1) दीन के उलमा और शरीयत-ए-मतीन के मुफ्ती इस बारे में क्या फरमाते हैं कि जिन बस्तियों में ताऊन (प्लेग) की शिकायत हो, इससे पहले कि लोग मरने लगें, यानी वबा (महामारी) की अलामतों की इब्तिदा होते ही जैसे मिट्टी के कीड़ों वगैरह का मरना और गंदगी व सड़न का होना जो इस घिनौनी बीमारी का पेशखेमा है - खुदा की पनाह - या मौतों की तादाद शुरू होने के वक्त, देहात वाले अपने-अपने घरों से बाहर निकल जाएं या न निकलें? शरीयत इस मामले में क्या इजाज़त देती है? अगर इजाज़त है तो किस वक्त और किस शर्त के साथ बाहर निकलना चाहिए? और अगर शरीयत इजाज़त नहीं देती तो बाहर निकलने वाले लोग किस गुनाह के मुर्तकिब होंगे? हदीस और कुरानी नस के सुबूत के साथ मुत्तला किया जाए। (2) अहल-ए-फिरंग (पश्चिमी) हकीम जो आम तौर पर घर छोड़ने के बारे में एलान करते हैं और खुद बाहर निकल जाते हैं, और मुसलमानों का भी एक बड़ा हिस्सा उनकी पैरवी करता है और यह दलील पेश करते हैं कि जिस तरह बीमारी की हालत में दवा करना सुन्नत है, उसी तरह आब-ओ-हवा खराब होने की सूरत में जगह बदल लेना भी एक तरह का इलाज है। आब-ओ-हवा तब्दील करना भी सुन्नत में दाखिल है, तो उन लोगों की राय की पैरवी करना हम सबके लिए मुनासिब है या नहीं? और कुछ लोगों का यह ख्याल है कि इसमें बिना मौत भी लोग मर जाते हैं। चूंकि बड़ी तादाद में लोग मरते हैं और बीमार पड़ते हैं, तो यह एतराज होता है कि क्या इतने लोगों की मौत एक ही बार मुकद्दर थी? खैर, हर एक सवाल का माकूल और तसल्लीबख्श जवाब दिया जाए। (3) कितनी मय्यतों का जनाज़ा एक साथ पढ़ा जा सकता है और क्या नाबालिग लड़की और लड़के का जनाज़ा बालिग के साथ हो सकता है या नहीं? अगर हो सकता है तो दुआ पहले बालिग की पढ़ी जाए या नाबालिग की? या महज़ बालिग की दुआ नाबालिग के लिए काफी हो सकती है? हदीस के हवाले के साथ तफ्सीली जवाब देकर ममनून व मशकूर फरमाएं। (4)

लड़का और लड़की नाबालिग हैं और उनकी शादी हो गई। शादी के बाद लड़की बेवा हो गई, तो दूसरे निकाह के बारे में इद्दत ली जाएगी या नहीं? अगर इद्दत ली जाए तो कब तक?

[1] अल-अशबाह वल-नज़ायर, अल-फन्न अल-अव्वल, अल-काइदा अर-राबिया अशर, इदारातुल कुरान कराची 1/189 पेज 199 ऑफ 720

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: (۱) شراب بھی حرام ہے اور نجس بھی، اس کا خارجِ بدن پر بھی لگانا جائز نہیں۔ اور افیون حرام ہے نجس نہیں، خارج بدن پر اس کا استعمال جائز ہے۔ (۲) بچے کو سلانا یا رونے سے باز رکھنے کے لئے افیون دینا حرام ہے اور اس کا گناہ اس دینے والے پر ہے بچے پر نہیں، ما حرام اخذہ حرام اعطاؤہ ۱ (جس چیز کا لینا حرام ہے اس کا دینا بھی حرام ہے۔ت) واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۷۰: مرسلہ سید ولی اللہ از موضوع لوڑ سراڈاکخانہ بھدور ضلع غازی پور ۲۵ ربیع الآخر ۱۳۳۵ھ (۱) کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرعِ متین دریں باب کہ جن مواضعات میں کہ عارضہ طاعون کی شکایت ہو قبل اس کے کہ لوگ مرنے لگیں یعنی معاً ابتداءِ علامات وبا مثل مرنا حشرات الارض وغیرہ کا و گندگی و تعفن کا ہونا کہ مقدمہ اس عارضہ مکروہہ کا ہے، خدا کی پناہ یا بوقت ابتداءِ تعدادِ اموات صاحبانِ دیہہ اپنے اپنے مکانوں سے باہر ہو جائیں یا نہ ہو جائیں، شرع شریف اس امر میں کیا اجازت دیتی ہے اگر اجازت ہے تو کس وقت اور کس شرط کے ساتھ باہر ہونا چاہئے اور اگر شریعت اجازت نہیں دیتی تو باہر کے نکلنے والے لوگ کس گناہ کے مرتکب ہوں گے مع ثبوت حدیث و نص قرآنی کے مطلع کیا جائے۔ (۲) حکمائے اہلِ فرنگ جو عام طور سے اعلامِ درباره چھوڑنے مکانوں کے کرتے ہیں اور خود باہر نکل جاتے ہیں اور نیز اہلِ اسلام کا بہت سا حصہ ان کے تبعیت کرتے ہیں اور یہ دلیل پیش کرتے ہیں کہ جس طرح دوا کرنا بحالت مرض سنت ہے اسی طرح بحالت خرابی آب و ہوا جگہ کا نقل کرنا بھی ایک گونہ علاج ہے تبدیل آب و ہوا بھی داخل سنت ہے تو ان لوگوں کی رائے کی تابعداری کرنا ہم سب کو مناسب ہے یا نہیں، اور بعض اشخاص کا یہ خیال ہے کہ اس میں بلا موت بھی لوگ مرجاتے ہیں چونکہ کثرت

سے لوگ مرتے ہیں اور بیمار پڑتے ہیں تو یہ اعتراض ہوتا ہے کہ کیا ایکبارگی اتنے لوگوں کی موت ایک ہی بار تھی خیر ہر ایک سوال کی طرف سے معقول تسلی بخش جواب سے اطلاع دیں۔ (۳) کتنے میت تک کا جنازہ اکٹھا ہو سکتا ہے اور نابالغ لڑکی اور لڑکے کا جنازہ بالغ کے ساتھ ہو سکتا ہے یا نہیں؟ اگر ہو سکتا ہے تو دعا پہلے بالغ کی پڑھی جائے یا نابالغ کی؟ یا محض بالغ کی دعا نابالغ کے لئے کافی ہو سکتی ہے؟ جواب شافی سے ممنون و مشکور کیا جاؤں، مع حوالہ حدیث۔ (۴) لڑکا اور لڑکی نا بالغ ہے اس کی شادی ہو گئی ہے بعد شادی کے لڑکی بیوہ ہو گئی تو عقد ثانی کے بارے میں عدّت لیا جائے گا کہ نہیں؟ اگر عدّت لیا جائے تو کب تک؟

1 الاشباہ والنظائر الفن الاول القاعدۃ الرابعۃ عشر ادارۃ القرآن کراچی ۱/ ۱۸۹ Page 199 of 720

Fatawa Razawiya, Volume 24

(5) Can a husband carry his deceased wife's funeral bier or not? Please provide a satisfactory answer. State and be rewarded. (t)

The Answer:

(1) Fleeing from a plague is forbidden (Haram). The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "The one who flees from a plague is like the one who flees from the battlefield (against enemies)." [1] Explanation: One who flees from a plague is like the one who turns his back on disbelievers during Jihad.

As Allah Almighty says: "...he has indeed incurred the wrath of Allah, and his abode is Hell - and an evil destination it is." [2] Explanation: He has surely incurred the wrath of Allah, and his destination is Hell, a very bad place to return to.

(2) Can such a thing be categorized as medicine, let alone being a Sunnah (God forbid), upon which Allah's wrath descends and whose destination is Hell? All those who flee from it and go elsewhere are committing a major sin (Gunah-e-Kabira). The details of this are in our treatise 'Taysir al-Ma'un'. Those who say that people die 'prematurely' in it are astray; this is a denial of the Great Quran. Repentance is obligatory for them, and they must renew their Islam and their marriage. Allah Almighty says: "And it is not [possible] for one to die except by permission of Allah at a decree determined." [3] Explanation: No soul can die without Allah's command; it is a written decree, a fixed time.

Just as one or two fruits keep falling from a tree—their falling was ordained—and then a storm comes, causing thousands of fruits to fall at once—it was ordained for them to fall together. Allah Almighty says: "And every small and great thing is inscribed." [4] Explanation: Every small and big thing is already written.

(3) One funeral prayer (Janaza) can be offered collectively for any number of funerals gathered together, whether it's a hundred or two hundred.

---

1. Musnad Imam Ahmad bin Hanbal, narrated from Aisha Siddiqa (may Allah be pleased with her), Al-Maktab al-Islami, Beirut, 2/155, 125, 82.
2. Al-Quran al-Karim, 8:16.
3. Al-Quran al-Karim, 3:145.
4. Al-Quran al-Karim, 54:53.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

(5) क्या पति अपनी मृत पत्नी का जनाज़ा ले जा सकता है या नहीं? संतोषजनक उत्तर से अनुग्रहित करें। वर्णन करें और पुण्य पायें। (त)

अल-जवाब (उत्तर):

(1) प्लेग (ताऊन) से भागना हराम है, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं: "ताऊन से भागने वाला वैसा ही है जैसे मैदान-ए-जंग से भागने वाला।" [1] व्याख्या: प्लेग से भागने वाला वैसा ही है जैसे जिहाद में काफ़िरों को पीठ दिखाकर भागने वाला।

जैसा कि अल्लाह अज़्ज़वजल फ़रमाता है: "...वह निश्चय ही अल्लाह के क्रोध का पात्र बना, और उसका ठिकाना जहन्नुम है - और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।" [2] व्याख्या: वह निश्चित रूप से अल्लाह के प्रकोप में पड़ा और उसका ठिकाना नर्क है, जो लौटने की बहुत बुरी जगह है।

(2) क्या ऐसी चीज़ दवा के हुक्म में आ सकती है, सुन्नत होना तो दूर की बात (अल्लाह की पनाह), जिस पर अल्लाह का ग़ज़ब हो और ठिकाना जहन्नुम हो। जो लोग इससे भाग कर कहीं भी जाते हैं वे सब गुनाह-ए-कबीरा (बड़ा पाप) के अपराधी होते हैं, इसका विवरण हमारे रिसाले 'तयसीर अल-माऊन' में है। जो लोग कहते हैं कि लोग इसमें 'असामयिक' (बिना मौत) मर जाते हैं वे गुमराह हैं; यह महान क़ुरआन का खंडन है। उन पर तौबा फ़र्ज़ है, और उन्हें अपने इस्लाम और निकाह का नवीनीकरण (तजदीद) करना चाहिए। अल्लाह अज़्ज़वजल फ़रमाता है: "और किसी जान के लिए यह मुमकिन नहीं कि वह अल्लाह की आज्ञा के बिना मर जाए, यह एक लिखा हुआ हुक्म है जिसका समय निर्धारित है।" [3] व्याख्या: कोई भी जान अल्लाह के हुक्म के बिना नहीं मर सकती, यह एक लिखा हुआ आदेश है, समय तय है।

जैसे पेड़ से एक-आध फल गिरता रहता है, उसका गिरना लिखा था और फिर एक आंधी आती है जिससे हज़ारों फल एक साथ गिर पड़ते हैं, उनका एक साथ गिरना ही लिखा था। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "और हर छोटी और बड़ी बात लिखी हुई है।" [4] व्याख्या: हर छोटी-बड़ी बात सब लिखी हुई है।

(3) सौ-दो सौ जितने भी जनाज़े जमा हों, उन सब पर एक साथ एक ही नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ी जा सकती है।

1. मुसनद इमाम अहमद बिन हनबल, आयशा सिद्दीका (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रिवायत, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरुत, 2/155, 125, 82.
2. अल-क़ुरआन अल-करीम, 8:16.
3. अल-क़ुरआन अल-करीम, 3:145.
4. अल-क़ुरआन अल-करीम, 54:53.

पृष्ठ 200/720

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

(۵) اپنی بیوی میت کا جنازہ شوہر لیجا سکتا ہے کہ نہیں؟ جواب شافی سے ممنون فرمایا جائے۔ بینواتوجروا (بیان فرمائیے اجر پاہئیے۔ت)

الجواب:

(۱) طاعون سے بھاگنا حرام ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: الفارمِن الطاعون کالفار من الزحف ۔ (۱) طاعون سے بھاگنے والا ایسا ہی ہے جیسے کہ جہاد میں کافروں کو پیٹھ دے کر بھاگنے والا۔

جیسے اللہ عزوجل فرماتا ہے: " فَقَدْ بَاءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ " (۲) وہ بیشک اللہ کے غضب میں پڑا اور اس کا ٹھکانا جہنم ہے اور بہت ہی بری جگہ پھرنے کی۔

(۲) کیا ایسی چیز دوا کے حکم میں آسکتی ہے نہ کہ معاذ اللہ سنت ہونا جس پر اللہ کا غضب ہو اور جہنم ٹھکانا۔ جولوگ اس سے بھاگ کر کہیں بھی جاتے ہیں سب گناہ کبیرہ کے مرتکب ہوتے ہیں، اس کی تفصیل ہمارے رسالہ تیسیر الماعون میں ہے۔ جو لوگ کہتے ہیں کہ لوگ اس میں بے موت مر جاتے ہیں وہ گمراہ ہیں، اس میں قرآن عظیم کا انکار ہے ان پر توبہ فرض ہے اور تجدید اسلام و تجدید نکاح چاہئے ، اللہ عزوجل فرماتا ہے: " وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَن تَمُوتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ كِتَابًا مُّؤَجَّلًا ۗ " (۳) کون جان بے حکم خدا نہیں مر سکتی لکھا ہوا حکم ہے وقت باندھا ہوا۔

پیڑ سے ایک آدھ پھل ٹپکتا رہتا ہے اسی کا ٹپکنا لکھا تھا اور ایک آندھی آتی ہے کہ ہزاروں پھل ایک ساتھ جھڑ پڑتے ہیں ان کا ساتھ ہونا ہی لکھا تھا۔ اللہ تعالٰی فرماتا ہے: " وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُّسْتَطَرٌ " (۴) ہر چھوٹی بڑی بات سب لکھی ہوئی ہے۔

(۳) سو دو سو جتنے جنازے جمع ہوں سب پر ایک ساتھ ایک نماز ہو سکتی ہے۔

---

1 مسند امام احمد بن حنبل عن عائشه صدیقه رضی الله عنها المکتب الاسلامی بیروت ۲/ ۱۵۵، ۱۲۵، ۸۲ 2 القرآن الکریم ۸/ ۱۶ 3 القرآن الکریم ۳/ ۱۴۵ 4 القرآن الکریم ۵۴/ ۵۳

Fatawa Razawiyya, Volume 24

(4) The funeral prayer for minors can also be performed along with adults. Both supplications should be recited; first for the adults, then for the minors. In any case, if there is no difficulty, separate prayers for each funeral are better. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

Arabic Text	Urdu Translation
If several funerals are gathered, it is better to perform the prayer individually for each. If they are performed together, it is permissible, while observing the established order behind him: the men, then those who follow them: the boys, then the adult females, then the adolescent girls. (Summarized)	When multiple funerals (deceased) are gathered, meaning they are brought together, it is better to pray over each one separately. If one prays over all of them together, it is also permissible. However, one must observe the prescribed and customary order in the rows (which is that) immediately behind the Imam should be adult men, then minor boys, then adult women, and after that, girls near the age of puberty. For a widow, the waiting period (Iddah) for her husband's death is mandatory, even if she herself is a one-day-old infant and her husband who died was also a one-day-old infant.

It is stated in Durr-e-Mukhtar:

Arabic Text	Urdu Translation
The waiting period for death is four months and ten days unconditionally, whether intercourse occurred or not, even if she is a minor. Regarding a pregnant woman, it is unconditionally the delivery of her pregnancy, even if her husband who died was a small child.[2]	The waiting period for death is four months and ten days absolutely without any condition, whether intercourse happened or not, even if she is a small child. For a pregnant woman, the waiting period is absolutely until delivery, even if her deceased husband was a child. (T)

She will observe the waiting period for four months and ten days. (5) A man can carry his wife's funeral bier. And Allah the Almighty knows best.

Issue 71: From Gondal, Kathiawar. Sent by Abdul Sattar bin Ismail Sunni Hanafi Qadri. 22 Sha'ban 1335 AH. What do the scholars of Ahl-e-Sunnat say, especially the Imam of Ahl-e-Sunnat, the Mujaddid of the present century, the possessor of overwhelming

proof, the reviver of Islam and Muslims, Maulana Mufti Qari Shah Muhammad Ahmad Raza Khan Sahib (may his shadow be prolonged), regarding this issue: A person came to a Muslim or non-Muslim Hakim (physician) because a female relative of his had become pregnant by some means. The visibility of the pregnancy would cause severe disgrace to that woman as well as her kith and kin...

---

[1] Durr-e-Mukhtar, Book of Prayer, Chapter on Funeral Prayer, Mujtabai Press Delhi, 1/122 [2] Durr-e-Mukhtar, Book of Divorce, Chapter on Iddah, Mujtabai Press Delhi, 1/256

फ़तावा रज़विया, जिल्द २४

(४) वयस्कों के साथ नाबालिगों की नमाज़ भी हो सकती है। दोनों दुआएँ पढ़ी जाएँगी, पहले वयस्कों की फिर नाबालिगों की। और किसी भी स्थिति में, यदि कोई कठिनाई न हो, तो प्रत्येक जनाज़े पर अलग-अलग नमाज़ पढ़ना बेहतर है। दुर्रे-मुख़्तार में है:

अरबी पाठ

यदि कई जनाज़े जमा हो जाएँ तो प्रत्येक पर अलग-अलग नमाज़ पढ़ना बेहतर है। यदि सब पर एक साथ नमाज़ पढ़ ली जाए, तो यह भी जायज़ है, और इमाम के पीछे निर्धारित क्रम का पालन किया जाना चाहिए: पहले पुरुष, फिर उनके बाद वाले: बच्चे, फिर वयस्क महिलाएँ फिर किशोर लड़कियाँ। (संक्षिप्त)

उर्दू अनुवाद

जब कई जनाज़े (मृतक) एक साथ लाए जाएँ तो हर एक पर अलग-अलग नमाज़ पढ़ना बेहतर है। और अगर सभी पर एक साथ नमाज़ पढ़ ली जाए तो यह भी जायज़ है। लेकिन सफ़ों (पंक्तियों) की व्यवस्था में निर्धारित और प्रचलित क्रम का पालन करना चाहिए (और वह यह है कि) इमाम के ठीक पीछे वयस्क पुरुष हों, फिर नाबालिग लड़के, फिर वयस्क महिलाएँ और उसके बाद किशोरावस्था के करीब की लड़कियाँ। विधवा के लिए पति की मृत्यु की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) अनिवार्य है, चाहे वह स्वयं एक दिन की बच्ची हो और उसका पति जो मर गया वह भी एक दिन का बच्चा हो।

दुर्रे-मुख़्तार में है:

अरबी पाठ

मृत्यु की इद्दत बिना किसी शर्त के चार महीने और दस दिन है, चाहे संभोग हुआ हो या नहीं, भले ही वह नाबालिग हो। और गर्भवती महिला के लिए यह बिना किसी शर्त के प्रसव होने तक है, भले ही उसका मृत पति छोटा बच्चा हो।[2]

उर्दू अनुवाद

वफ़ात (मृत्यु) की इद्दत बिना किसी शर्त के बिल्कुल चार महीने और दस दिन है, चाहे हमबिस्तरी (संभोग) हुई हो या न हुई हो, भले ही वह छोटी बच्ची हो। गर्भवती की इद्दत बिना किसी शर्त के प्रसव (बच्चे का जन्म) है, चाहे मरने वाला उसका पति छोटा हो। (त)

वह चार महीने दस दिन इद्दत करेगी। (५) पुरुष अपनी पत्नी का जनाज़ा उठा सकता है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला ७१: गोंडल, काठियावाड़ से। प्रेषक: अब्दुल सत्तार बिन इस्माइल सुन्नी हनफी कादरी। २२ शाबान १३३५ हिजरी। अहले सुन्नत के उलेमा, विशेष रूप से अहले सुन्नत के इमाम, वर्तमान सदी के मुजद्दिद, हुज्जत-ए-क़ाहिरा के स्वामी, इस्लाम और मुसलमानों के पुनरुद्धारक, मौलाना मुफ़्ती कारी शाह मुहम्मद अहमद रज़ा खान साहब (मद ज़िल्लहु) इस मसले में क्या फ़रमाते हैं: एक व्यक्ति किसी मुस्लिम या गैर-मुस्लिम हकीम के पास इसलिए आया कि उसकी किसी रिश्तेदार महिला को किसी तरह से गर्भ रह गया था। गर्भ के प्रकट होने से उस महिला और उसके रिश्तेदारों की भारी बदनामी...

---

[1] दुर्रे-मुख़्तार, किताबुस-सलात, बाबू सलातुल जनाइज़, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, १/१२२ [2] दुर्रे-मुख़्तार, किताबुत-तलाक, बाबुल इद्दत, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, १/२५६

(۴) بالغوں کے ساتھ نا بالغوں کی نماز بھی ہوسکتی ہے۔ دونوں دعائیں پڑھی جائیں ، پہلے بالغوں کی پھر نابالغوں کی۔ اور بہرحال اگر دقت نہ ہو تو ہر جنازے پر جدا نماز بہتر ہے۔ درمختار میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
اذا اجتمعت الجنائز فافراد الصلوة على كل واحدة اولى وان جمع جاز وراعى الترتيب المعهود خلفه الرجل مما يليه فالصبي فالبالغة فالمراهقة۱ ملتقطاً۔	جب متعدد جنازے (میت) جمع ہوجائیں یعنی وہ لائے جائیں تو ہر ایک پر الگ الگ نماز پڑھنی بہتر ہے۔ اور اگر سب پر اکٹھی نماز پڑھ لے تو یہ بھی جائز ہے۔ لیکن صفوف کی ترتیب میں مقرر متعارف کی رعایت کرے (اور وہ یہ ہے کہ) امام کے متصل اس کے پیچھے بالغ مرد ہوں پھر نابالغ بچے پھر بالغہ عورتیں اور ازیں بعد قریب البلوغ لڑکیاں ہوں بیوہ پر موت شوہر کی عدت ضروری ہے اگرچہ وہ خود ایک دن کی بچی اور اس کا شوہر بھی کہ مر گیا ایک دن کا بچہ ہو۔

درمختار میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
العدة للموت اربعة اشهر وعشر مطلقاً وطئت اولاً ولو صغيرة وفى حق الحامل مطلقاً وضع حملها ولو كان زوجها الميت صغيراً۔۲	عدت وفات چار مہینے اور دس دن علی الاطلاق بغیر کسی قید کے، خواہ ہمبستری ہوئی ہو یا نہ ، اگرچہ چھوٹی بچی ہو۔ حاملہ کی عدت علی الاطلاق وضع حمل ہے اگرچہ مرنے والا اس کا زوج چھوٹا ہو (ت)

چار مہینے دس دن عدت کرے گی۔ (۵) مرد اپنی زوجہ کا جنازہ اٹھا سکتا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۷۱: از گونڈل کاٹھیاواڑ ۔ مرسلہ عبدالستار بن اسمعیل سنی حنفی قادری ۲۲ شعبان ۱۳۳۵ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے اہلسنت خصوصاً امام اہلسنت مجدد مائتہ حاضرہ صاحب حجت قاہرہ محی الاسلام والمسلمین مولانا مفتی قاری شاہ محمد احمد رضا خان صاحب مدظلہ، اس مسئلہ میں ایک شخص مسلمان یا غیر مسلمان ایک حکیم یا غیر حکیم کے پاس اس لئے آیا کہ اس کے کسی رشتہ دار عورت کے کسی طور سے حمل رہ گیا حمل کے ظاہر ہونے سے اس عورت نیز خویش واقارب کی سخت بے عزتی

---

۱ درمختار کتاب الصلوۃ باب صلوۃ الجنائز مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۲۲ ۲ درمختار کتاب الطلاق باب العدۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۵۶

Volume 24 Fatawa Rizvia

...is about to happen, therefore seeking such a prayer by which the pregnancy is terminated. Also, the aforementioned person wants to offer some money in exchange for this medicine. Now, the request is whether giving this type of medicine and taking compensation for it is permissible for the Ahl-e-Sunnat-o-Jama'at or not, especially in a situation where a Sunni Muslim is about to be dishonoured. Explain and you will be rewarded.

The Answer: If the child has not formed yet, it is permissible; otherwise, it is impermissible as it is the murder of an innocent, and the child forms in four months. And Allah Almighty knows best.

Question 72: From Chopra village post office, Balsa district Purnia, sent by Kaleemuddin Sahab, 14 Rabi al-Akhir 1336 AH. Is it correct to recite Surah Fatiha or any verse of the Quran over food and blow on it? If correct, how should it be recited?

The Answer: If Surah Fatiha or any other verse is recited and blown with the intention of healing, there is no harm, but the caution regarding this food will be doubled so that no grain or drop of it falls. And Allah Almighty knows best.

Question 73: From Ghorni village post office, Krishnagarh district Naya, sent by Nazir Ahmad Sahab, 6 Jumada al-Ula 1336 AH.

[Table Content] Drinking English medicine in which spirit remains, and I do not know the reality of this spirit. Is it permissible or not? And in these regions, everyone is afflicted with this pain, except those whom Allah wills, because the practice of Unani medicine is very little and its price is also high, such that everyone cannot afford that treatment. (T)

The Answer: "Spirit" is a type of alcohol which, due to being extremely strong, is not drinkable alone. Therefore, all the alcohols imported from Britain are mixed with it.

जिल्द २४ फ़तावा रज़विया

...होने वाली है इसलिए ऐसी दुआ का तलबगार है जिससे गर्भपात हो जाए। साथ ही उक्त व्यक्ति इस दवा के बदले में कुछ राशि भी देना चाहता है। अब निवेदन यह है कि इस प्रकार की दवा देना और उसका मुआवजा लेना सुन्नत-ओ-जमात के लोगों के लिए जायज़ है या नहीं, विशेष रूप से ऐसी स्थिति में जब किसी सुन्नी मुसलमान की बदनामी होने वाली हो। स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: यदि अभी बच्चा नहीं बना है तो जायज़ है, अन्यथा नाजायज़ है क्योंकि यह एक मासूम की हत्या है, और चार महीने में बच्चा बन जाता है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

प्रश्न ७२: चोपड़ा गांव डाकखाना बलसी, जिला पूर्णिया से, प्रेषक कलीमुद्दीन साहब, १४ रबी अल-आख़िर १३३६ हिजरी। क्या भोजन पर फातिहा शरीफ या कुरान की कोई आयत पढ़कर दम करना सही है या नहीं? यदि सही है तो इसे किस तरह पढ़ना चाहिए?

उत्तर: यदि शिफा (स्वास्थ्य) की नियत से सूरह फातिहा या कोई और आयत पढ़कर दम किया जाए तो कोई हर्ज नहीं है, लेकिन इस भोजन के संबंध में सावधानी दोगुनी हो जाएगी कि इसका कोई दाना या बूंद नीचे न गिरने पाए। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

प्रश्न ७३: घोरनी गांव डाकखाना कृष्णगढ़, जिला नया से, प्रेषक नज़ीर अहमद साहब, ६ जमादि उल-उला १३३६ हिजरी।

[तालिका सामग्री] अंग्रेजी दवा पीना जिसमें स्पिरिट मिली होती है, और मैं स्पिरिट की वास्तविकता से वाकिफ नहीं हूँ। क्या इसका उपयोग करना जायज़ है या नहीं? लेकिन हमारे इन शहरों में सिवाय कुछ लोगों के सभी इस बीमारी में मुब्तिला हैं, क्योंकि यूनानी चिकित्सा का चलन बहुत कम है और वह अधिक कीमती भी है कि हर कोई उस इलाज की ताकत नहीं रखता। (त)

उत्तर: "स्पिरिट" शराब की एक किस्म है जो अत्यंत तीव्र होने के कारण अकेले पीने योग्य नहीं होती। अतः जो शराबें ब्रिटेन से मंगवाई जाती हैं, उनमें...

ہونے والی ہے اس لئے خواستگار ہے ایسی دعا کا جس سے حمل ساقط ہو جائے نیز شخص مذکور اس دوا کے عوض میں کچھ رقم بھی پیش کرنا چاہتا ہے ، اب عرض یہ ہے کہ اس قسم کا دوا دینا اور اس کا معاوضہ لینا اہل سنت و جماعت کے لئے جائز ہے یا نہیں خصوصاً ایسی حالت میں جبکہ کسی سنی مسلمان کی بے عزتی ہونے والی ہے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: اگر ابھی بچہ نہیں بنا جائز ہے ورنہ ناجائز کہ بے گناہ کا قتل ہے اور چار مہینے میں بچہ بن جاتا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۷۲: از موضع چوپرا ڈاکخانہ بالسی ضلع پورنیہ مرسلہ کلیم الدین صاحب ۱۴ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ کھانے پر فاتحہ شریف یا کوئی آیت قرآن کی پڑھ کر دم کرنا درست ہے یا نہیں ؟ اگر درست ہے تو کس طرح سے پڑھنا چاہئے ؟

الجواب: بہ نیت شفاء سورہ فاتحہ یا اور کوئی آیت پڑھ کر دم کی جائے تو حرج نہیں مگر اس کھانے کی احتیاط اور دو چند ہو جائے گی کہ اس کا کوئی دانہ یا قطرہ گرنے نہ پائے۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۷۳: از موضع گھورنی ڈاکخانہ کرشنگڑھ ضلع نیامرسلہ نذیر احمد صاحب ۶ جمادی الاولی ۱۳۳۶ھ

[جدول کا مواد] انگریزی دوائی پینا کہ اس میں اسپرٹ کی ملاوٹ ہوتی ہے، اور میں اسپرٹ کی حقیقت سے واقف نہیں۔ کیا اس کا استعمال کرنا جائز ہے یا نہیں؟ لیکن ہمارے ان شہروں میں سب

اس مرض میں مبتلا ہیں الا ماشاء اللہ، اس لئے کہ طب یونانی کا رواج بہت کم ہے اور وہ زیادہ قیمتی بھی ہے کہ ہر ایک اس علاج کی طاقت نہیں رکھتا۔ (ت)

الجواب: "اسپرٹ" شراب کی ایک قسم ہے جو انتہائی تیز ہونے کی وجہ سے تنہا پینے کے قابل نہیں۔ پس جو شرابیں برطانیہ سے منگوائی جاتی ہیں اُن

صفحہ 202 کا 720

Fatawa Razawiya, Volume 24

[Left Column - Persian] Its drops are used to sharpen it, such that in a certain alcohol, there is one drop of spirit in ninety drops, and in another, there is one drop in a hundred drops. All alcohols cause intoxication when consumed, and this [spirit] causes intoxication just by smelling it because its smell is intoxicating. Therefore, like all intoxicants, it is both haram (forbidden) and impure (najis). Any medicine mixed with it—applying it to the body is one haram act, and drinking it is another haram, rather it's three harams. Collecting it is haram, buying it is haram, carrying it is haram, and polluting the body with it is haram. Here, the fourth haram is consuming it. The Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) cursed ten categories of people regarding alcohol: the seller, the buyer, the carrier, and the one to whom it is carried. In short, anyone involved with it in any way is defiled by a haram and impure substance. Whoever protects a Muslim from this calamity has the reward of a hundred martyrs. The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whoever holds fast to my Sunnah at the time of corruption in my Ummah, for him is the reward of a hundred martyrs." And Allah knows best.

[Right Column - Urdu] Its drops are mixed in all of them to make them stronger, such that in ninety drops of a certain alcohol there is one drop of spirit, and in a hundred drops of another alcohol, there is one drop of spirit mixed. All alcohols cause intoxication upon drinking, and this causes intoxication just by smelling it because its "smell" is intoxicating. Undoubtedly, besides being haram like all alcohols, it is also impure. Therefore, in whatever medicine it is mixed, applying it to the body is the first haram, and drinking it is the second haram, rather the third haram. Acquiring it is haram. Buying it, carrying it, and polluting the body with it are all haram acts. And here, the fourth haram is drinking it. The Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) cursed ten individuals regarding alcohol; among them are: (1) the one who sells it, (2) the one who buys it, (3) the one who carries it, (4) the one to whom it is carried. The point is that anyone associated with it in any way has an impurity from a haram and impure thing. And whoever rescues a Muslim from this calamity and stops him, for him is the reward and merit of a hundred martyrs. Accordingly, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) stated: "The fortunate person who held onto my Sunnah at the time when corruption spread

in my Ummah, he will be granted the reward of a hundred martyrs." And Allah Almighty knows best (T).

1. Mishkat al-Masabih, Book of Faith, Chapter on Holding Fast to the Book and the Sunnah, Mujtabai Press, Delhi, p. 30; At-Targhib wat-Tarhib, Chapter on Following the Book and the Sunnah, Hadith 5, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/80.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

[बायाँ कॉलम - फारसी] इसके बूंदों की मिलावट इसे तेज़ करने के लिए की जाती है कि फलां शराब के नब्बे बूंदों में एक बूंद स्पिरिट है और फलां के सौ में एक बूंद, तमाम शराबें पीने से नशा लाती हैं और ये महज़ सूंघने से कि इसकी गंध नशा लाने वाली है। इसलिए तमाम शराबों की तरह यह हराम भी है और नापाक भी। जिस दवा में इसकी मिलावट हो, उसका बदन पर लगाना एक हराम है और पीना दो हराम बल्कि तीन हराम। इसे जमा करना हराम, खरीदना हराम, उठाना हराम और बदन को इससे दूषित करना हराम है। यहाँ चौथा हराम इसे खाना (पीना) है। सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने शराब के संबंध में दस लोगों पर लानत भेजी है: बेचने वाला, खरीदने वाला, ले जाने वाला और जिसके पास ले जाया जाए। सारांश यह कि जो कोई भी किसी तरह इससे जुड़ा है, वह एक हराम और नापाक चीज़ से गंदगी रखता है। जो किसी मुसलमान को इस बला से बचाए, उसके लिए सौ शहीदों का अज्र है। हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "जिसने मेरी सुन्नत को मेरी उम्मत के बिगाड़ के समय थामा, उसके लिए सौ शहीदों का सवाब है।" वल्लाहु तआला आलम।

[दायाँ कॉलम - उर्दू] सब में इसके बूंदों की मिलावट उन्हें तेज़ करने के लिए की जाती है कि फलां शराब के नब्बे बूंदों में एक बूंद स्पिरिट है, और फलां शराब की सौ बूंदों में एक बूंद स्पिरिट की मिलावट है। और सब शराबें पीने से नशा लाती हैं, और ये सिर्फ सूंघने से नशा लाती है इस लिये कि इस की "बू" नशा लाने वाली है। निस्संदेह तमाम शराबों की तरह ये हराम होने के अलावा नापाक भी है, लिहाज़ा जिस दवाई में इस की मिलावट हो इस का जिस्म पर मलना पहला हराम है और पीना दूसरा हराम बल्कि तीसरा हराम है। इस का हासिल करना हराम। इस का ख़रीदना, उठाना और जिस्म को इस से आलूदा करना ये सब काम हराम हैं। और यहाँ चौथा हराम इसे पीना है। सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने शराब के दस अफ़राद पर लानत फ़रमाई उन में से ये लोग हैं (१) फ़रोख़्त करने वाला (२) ख़रीदने वाला (३) उठाने वाला (४) वह जिस तक उठा कर ले जाए। हासिल ये है कि जो कोई किसी तरह भी इस से वाबस्ता हो वह एक हराम और नापाक चीज़ से आलूदगी रखता है। और जो कोई किसी मुसलमान को इस मुसीबत से छुड़ाए और उसे रोके उसे सौ शहीदों का अज्र व सवाब है। चुनांचे हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद

फ़रमाया: जिस खुश नसीब ने मेरी सुन्नत को उस वक़्त थामा कि जब मेरी उम्मत में फ़साद फैल गया तो उसे सौ शहीदों का सवाब अता होगा। वल्लाहु तआला आलम(त)

1. मिश्कातुल मसाबीह, किताबुल ईमान, बाबुल एतेसाम बिल किताब व सुन्नत, मतब' मुजतबाई दिल्ली, पृ. 30; अत-तर्गीब वत-तर्हीब, किताबुल एतेसाम बिल किताब व सुन्नत, हदीस 5, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/80.

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

[بایاں کالم - فارسی] قطرات او تیز می کنند کہ در فلاں شراب در نود قطرہ یک قطرہ اسپرت است و در فلاں در صد قطرہ یک قطرہ، ہمہ شرابہا باشامیدن نشہ آرد و ایں بمجرد شمیدن کہ بوئے او مسکرست لا جرم ہمچو جملہ خمر ہم حرام ست و ہم نجس ہر دوائیکہ درو آمیزش او باشد۔ بریدن طلائے او کردن یک حرام ست ونو شیدن دو حرام بلکہ اوسہ حرام فراہم کردن حرام خرید نش حرام بر داشتنش حرام وبدن باو آلودنش حرام و اینجا حرام چہارم خوردن ، سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم در شراب ، دہ کس را لعنت فرمودہ است از انان فروشندہ و خریدہ وبردہ اند و آنکہ بہ سوئے او بر داشتہ شود بالجملہ ہر کہ بہیچ گونہ باو تلبس دارد بحرام و خبیث تلوث دہ وبر کہ مسلمان را از من بلا باز دارد برائے اواجر صد شہید ست قال صلی اللہ تعالیٰ علیہ و سلم من تمسك بسنتی عند فساد امتی فلہ اجر مائة شہید ۔واللہ تعالیٰ اعلم۔

[دایاں کالم - اردو] سب میں اس کے قطروں کی ملاوٹ انہیں تیز کرنے کے لئے کی جاتی ہے کہ فلاں شراب کے نودس قطروں میں ایک قطرہ اسپرٹ ہے، اور فلاں شراب کے سو قطروں میں ایک قطرہ اسپرٹ کی ملاوٹ ہے۔ اور سب شرابیں پینے سے نشہ لاتی ہیں، اور یہ صرف سونگھنے سے نشہ لاتی ہے اس لئے کہ اس کی "بو" نشہ آور ہے۔ بلا شبہ تمام شرابوں کی طرح یہ حرام ہونے کے علاوہ ناپاک بھی ہے لہذا جس دوائی میں اس کی ملاوٹ ہو اس کا جسم پر ملنا پہلا حرام ہے اور پینا دوسرا حرام بلکہ تیسرا حرام ہے۔ اس کا حاصل کرنا حرام۔ اس کا خریدنا، اٹھانا اور جسم کو اس سے آلودہ کرنا یہ سب کام حرام ہیں۔ اور یہاں چوتھا حرام اسے پینا ہے۔ سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے شراب کے دس افراد پر لعنت فرمائی ان میں سے یہ لوگ ہیں (۱) فروخت کرنے والا (۲) خریدنے والا (۳) اٹھانے والا (۴) وہ جس تک اٹھا کر لے جائے۔

حاصل یہ ہے کہ جو کوئی کسی طرح بھی اس سے وابستہ ہو وہ ایک حرام اور ناپاک چیز سے آلودگی رکھتا ہے۔ اور جو کوئی کسی مسلمان کو اس مصیبت سے چھڑائے اور اسے روکے اسے سو شہیدوں کا اجر و ثواب ہے۔ چنانچہ حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا: جس خوش نصیب نے میری سنت کو اس وقت تھاما کہ جب میری امت میں فساد پھیل گیا تو اسے سو شہیدوں کا ثواب عطا ہوگا ۔ واللہ تعالیٰ اعلم(ت)

1 مشکوۃ المصابیح کتاب الایمان باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ مطبع مجتبائی دہلی ص ۳۰ ، الترغیب والترھیب الترغیب فی اتباع الکتاب والسنۃ حدیث ۵ مصطفی البابی مصر ۱/ ۸۰

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

Problem 72: From Chhera Mohalla Dhianwan, sent by Muhammad Nabi Jan drug seller, 5 Rajab al-Murajjab 1336 AH.

Zaid has a formula for virility given by a Hindu mendicant. Zaid refuses to make the medicine or share the formula. His reasoning is that people might use it for forbidden acts (adultery), and he fears he will be held accountable for those sins. Amr asked him for the formula, offering any legal oath, saying he is severely distressed due to piles which has led him to the point of impotence, and his marriage is imminent. He says if Zaid doesn't give the formula or the medicine, he will be disgraced and has no choice but to die of shame. Is Zaid's thinking correct according to Sharia, considering Amr is a practicing Muslim?

Answer: If he doesn't share the formula, he should at least provide the medicine, provided it contains no prohibited substances. The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) said: "Whoever among you is able to benefit his brother, let him do so." (1)

And the notion that people will commit sins and he will be blamed is completely wrong. Having bad suspicions about a Muslim is forbidden.

Allah Almighty says: "O you who have believed, avoid much [negative] assumption. Indeed, some assumption is sin." (2)

When his intention is to benefit a Muslim, even if the other person commits a sin, he will not be held accountable. Allah Almighty says: "And no bearer of burdens will bear the burden of another." (3)

Footnotes: 1 Sahih Muslim, Kitab al-Salam, Chapter: Desirability of Ruqyah from the Evil Eye, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 4/224. 2 Al-Quran al-Karim, 49/12. 3 Al-Quran al-Karim, 6/164.

फतवा रिज़विया, खंड 24

मसला 72: छेड़ा मोहल्ला धियानवान से, मोहम्मद नबी जान दवा विक्रेता द्वारा प्रेषित, 5 रजब अल-मुरज्जब 1336 हिजरी।

जैद के पास पुरुषत्व के लिए एक हिंदू फकीर द्वारा दिया गया एक नुस्खा (फार्मूला) है। जैद इसे बना कर देने या नुस्खा बताने से मना करता है। उसका सोचना यह है कि लोग इसका उपयोग हराम कामों (व्यभिचार) के लिए करेंगे, और इसके कारण उसे भी गुनाहगार माना जाएगा। अम्र ने उससे नुस्खा मांगा और कहा कि वह कोई भी शरीयत के अनुसार शपथ लेने को तैयार है, क्योंकि वह बवासीर की बीमारी के कारण बहुत परेशान है और नपुंसकता की स्थिति तक पहुँच गया है, और उसकी शादी जल्द होने वाली है। वह कहता है कि अगर जैद उसे नुस्खा या दवा नहीं देता है, तो वह समाज में अपमानित होगा और उसके पास शर्म से मर जाने के अलावा कोई चारा नहीं होगा। क्या जैद का यह विचार शरीयत के अनुसार सही है या गलत, जबकि अम्र एक नमाजी मुसलमान है?

उत्तर: यदि वह नुस्खा नहीं बताता है, तो उसे कम से कम दवा बनाकर दे देनी चाहिए, बशर्ते उसमें कोई वर्जित वस्तु न हो। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "तुम में से जो कोई अपने भाई को लाभ पहुँचाने में सक्षम हो, उसे ऐसा करना चाहिए।" (1)

और उसका यह सोचना कि लोग हराम काम करेंगे और इसका बोझ उस पर होगा, पूरी तरह से गलत है। एक मुसलमान के बारे में बुरा गुमान (संदेह) करना हराम है।

अल्लाह तआला ने फरमाया: "ऐ ईमान वालों! बहुत से गुमानों से बचो क्योंकि कुछ गुमान गुनाह होते हैं।" (2)

और जब उसकी नीयत एक मुसलमान को फायदा पहुँचाने की है, तो अगर दूसरा व्यक्ति गुनाह करता भी है, तो उस पर इसकी कोई पकड़ नहीं होगी। अल्लाह अज़्ज़वजल फरमाता है: "और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा।" (3)

पादलेख: 1 सहीह मुस्लिम, किताब अल-सलाम, बाब: नजर से बचने के लिए झाड़-फूंक की मुस्तहबियत, कदीमी कुतुब खाना कराची, 4/224। 2 अल-कुरान अल-करीम, 49/12। 3 अल-कुरान अल-करीम, 6/164।

فتاوی رضویہ، جلد ۲۴

مسئلہ ۷۲: از چھیڑہ محلہ دھیانوان مرسلہ محمد نبی جان دوا فروش ۵ رجب المرجب ۱۳۳۶ھ

زید کے پاس ایک نسخہ مردانگی کا ایک ہندو فقیر کا دیا ہوا ہے زید اسے بنا کر دینے سے بھی عذر کرتا ہے نسخہ بتانے سے بھی خیال اس کا ایسا ہے کہ لوگ حرام کرنے پر تیار ہو جاتے ہیں اس وجہ سے کسی کو نہیں دیتا ہوں کہ اگر وہ حرام کریں گے تو میرے نامہ اعمال میں درج ہوں گے اور عمرو نے یہ سوال کیا کہ مجھے نسخہ بتا دو اور جو قسم شرعی لینا چاہو لے لو کیونکہ میں بسبب مرض بواسیر کے سخت پریشان ہوں کہ نامردی کے درجہ پر پہنچا ہوں میری شادی عنقریب ہونے والی ہے اگر آپ نسخہ نہیں دیتے ہیں تو مجھے بنا کر دے دو اگر نہ دو گے تو میں اپنا دلی راز کہہ کر تمہاری آنکھ میں ذلیل ہوا ڈوب مرنے کے سوا اور مجھے کچھ بن نہیں آتا ہے تو یہ خیال زید کا موجبِ شرع شریف غلط یا صحیح ہے اور عمرو ایک مرد مسلمان نمازی بھی ہے۔

الجواب: اگر وہ نسخہ نہ بتائے اسے دوا بنا کر دے جبکہ اس میں کوئی ناجائز چیز نہ ہو، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: من استطاع منکم ان ینفع اخاہ فلیفعلہ ۱- جو کوئی تم میں سے اپنے بھائی کو نفع پہنچا سکتا ہو تو اسے نفع پہنچانا چاہئے۔ (ت) اور اس کا یہ خیال کہ لوگ حرام کریں گے اور اس پر وبال محض غلط ہے مسلمان پر بد گمانی حرام ہے۔ قال اللہ تعالی "یا اَیُّہَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوا کَثِیْرًا مِّنَ الظَّنِّ اللہ تعالٰی نے ارشاد فرمایا: اے ایمان والو! بہت سے گمانوں سے بچتے رہو کیونکہ بعض گمان گناہ ہیں۔ (ت) اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ" ۲- اور جب اس کی نیت نفع رسانی مسلم ہے تو دوسرا گناہ کرے بھی تو اس کا مواخذہ اس پر نہیں ہو سکتا۔ اللہ عزوجل فرماتا ہے: "وَلَا تَزِرُ وَازِرَۃٌ وِّزْرَ اُخْرٰی" ۳ (کوئی جان کسی دوسری جان کا بوجھ (نہ اٹھائے گی۔ (ت))

حواشی: ۱ صحیح مسلم کتاب السلام باب استحباب الرقیہ من العین الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۴ / ۲۲۴ ۲ القرآن الکریم ۴۹ / ۱۲ ۳ القرآن الکریم ۶ / ۱۶۴

Fatawa Razawiyya Volume 24

...will not lift it. (T) And Allah Almighty knows best. Problem 75: From Ardah Nangla, Post Office Achnera, District Agra, sent by Sadiq Ali Khan Sahib, 25 Shawwal 1337 AH. Can the residents of a neighborhood or city where there is a plague go to another place with the thought of "fleeing from Allah's decree to Allah's decree" or not? What is the saying of Hazrat Umar (may Allah be pleased with him) regarding plague etc.? Are those who leave their homes with this intention from among the people of innovation (Ahl-e-Bid'at) or not? And should they be treated like innovators or not? The Answer: Fleeing from a city, neighborhood, or house out of fear of the plague is haraam and a major sin (Gunah-e-Kabira). A sufficient explanation of this is in our treatise "Taisir al-Ma'un lil-Sukun fil-Ta'un". The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"The one who flees from the plague is like the one who flees from the battlefield (fleeing from the enemy in battle)."

One who flees from the plague is just like one who flees from the disbelievers by turning his back.

For whom the Great Quran has stated that his abode is Hell. Such a "fleeing from Allah's decree to Allah's decree" could also be said by someone fleeing from Jihad; he too, by fleeing, will only go towards destiny, but the end of this fleeing is Hell. The plague of Amwas occurred in Syria. The Leader of the Believers (Hazrat Umar, may Allah be pleased with him) had already set out with the intention of going there. When he reached the place called Sargh on the border of Syria and Hejaz, he received news that there was a severe plague in Syria. The Leader of the Believers consulted with the noble Muhajireen (may Allah be pleased with them). Some said, "Hazrat, you have set out for a task, you should not return." Others said, "The remaining Companions of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) are with Hazrat, it is not our opinion to lead them into an epidemic." Then he called the noble Ansar (may Allah be pleased with them), and they too were divided in the same way. Then he called the prominent believers among the conquerors of Mecca, and they unanimously advised against going. The Leader of the Believers announced the return. Upon this, Hazrat Abu Ubaydah (may Allah be pleased with him) said: "Afrar-un-min-qadr-illah? Is it fleeing from the decree of Allah?" The Leader of the Believers said: "I wish someone else had said this! Yes, we flee from the decree of Allah to the decree of Allah, yes we..."

1 Musnad Imam Ahmad bin Hanbal on the authority of Aisha Siddiqa (may Allah be pleased with her), Al-Maktab al-Islami, Beirut, 6/255, 125, 82; Az-Zawajir al-Kabirah, ninety-ninth [entry] after three hundred, Dar al-Fikr, Beirut, 2/87-88. Page 205 of 720

...नहीं उठाएगा। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। मसला 75: अरदह नगला, डाकखाना अछनेरा, जिला आगरा से प्रेषित, सादिक अली खान साहब, 25 शव्वाल 1337 हिजरी। जिस मुहल्ले या जिस शहर में ताऊन (प्लेग) हो, वहाँ के निवासी किसी दूसरे स्थान पर "अल्लाह के फैसले से अल्लाह के फैसले की ओर भागने" के विचार से जा सकते हैं या नहीं? ताऊन आदि के बारे में हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) का क्या फरमान है? जो लोग इस विचार से अपने घरों को छोड़कर चले जाते हैं, वे अहले-बिदअत (नवाचारी) हैं या नहीं? और उनके साथ बिदअतियों जैसा व्यवहार करना चाहिए या नहीं? उत्तर: ताऊन के डर से शहर या मुहल्ला या घर छोड़कर भागना हराम और गुनाह-ए-कबीरा (महापाप) है। इसका पर्याप्त विवरण हमारे रिसाले "तयसीरुल माऊन लिस-सुकून फिल ताऊन" में है। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

"अल-फ़ारु मिनत-ताऊनि कल-फ़ारि मिनज़-ज़हफ़"

ताऊन से भागने वाला ऐसा है जैसे काफ़िरों को पीठ दिखाकर भागने वाला।

जिसके लिए कुरआन-ए-अजीम में फरमाया गया कि उसका ठिकाना जहन्नुम है। ऐसा "अल्लाह की तकदीर से अल्लाह की तकदीर की ओर भागना" तो जिहाद से भागने वाला भी कह सकता है; वह भी भाग कर तकदीर ही की ओर जाएगा, लेकिन इस भागने का अंत जहन्नुम है। शाम (सीरिया) में अम्वास का ताऊन फैला था। अमीरुल मोमिनीन (हज़रत उमर, रज़ियल्लाहु अन्हु) वहाँ जाने के इरादे से निकल चुके थे। जब वे शाम और हिजाज की सीमा पर सरग़ नामक स्थान पर पहुँचे, तो उन्हें खबर मिली कि शाम में ताऊन की तीव्रता है। अमीरुल मोमिनीन ने मुहाजिरीन-ए-किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से मशविरा किया। कुछ ने कहा, "हज़रत, आप एक काम के लिए निकले हैं, वापस नहीं लौटना चाहिए।" कुछ ने कहा, "हज़रत के साथ रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाकी सहाबा हैं, हमारी राय यह नहीं है कि उन्हें वबा (महामारी) के सामने पेश किया जाए।" फिर उन्होंने अंसार-ए-किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) को बुलाया, वे भी इसी तरह अलग-अलग राय रखते थे। फिर उन्होंने मक्का फतह करने वाले प्रमुख मोमिनों को बुलाया, उन्होंने सर्वसम्मति से न जाने की राय दी। अमीरुल मोमिनीन ने वापसी की घोषणा कर दी। इस पर हज़रत अबू उबैदा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: "अफ़रारुन मिन कद्र-इल्लाह? क्या अल्लाह की तकदीर से भाग रहे हैं?" अमीरुल मोमिनीन ने फरमाया: "काश कोई और यह कहता! हाँ, हम अल्लाह की तकदीर से अल्लाह की तकदीर की ओर भाग रहे हैं, हाँ हम..."

1 मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल, हज़रत आयशा सिद्दीका (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रिवायत, अल-मक्तब अल-इस्लामी, बेरूत 6/ 255, 125, 82; अज़-ज़वाज़िर अल-कबीरा, तीन सौ के बाद निन्यानवेवाँ, दारुल फिक्र, बेरूत 2/ 87-88. पेज 205 का 720

نہ اٹھائے گی۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم مسئلہ ۷۵: ازاردہ ننگلہ ڈاکخانہ اچنیرا ضلع آگرہ مرسلہ صادق علی خان صاحب ۲۵ شوال ۱۳۳۷ھ جس محلہ یا جس شہر میں طاعون ہو وہاں کے باشندے کسی دوسرے مقام پر نفر من قضاء اللہ الیٰ قضاء اللہ کے خیال سے جاسکتے ہیں یا نہیں، طاعون وغیرہ میں حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا کیا ارشاد ہے؟ جو لوگ اس خیال سے اپنے مکانات چھوڑ کر چلے جاتے ہیں وہ اہل بدعت ہیں یا نہیں؟ اور ان کے ساتھ بدعتیوں کا سا برتاؤ کرنا چاہئے یا نہیں؟ الجواب: طاعون کے خوف سے شہر یا محلہ یا گھر چھوڑ کر بھاگنا حرام و گناہ کبیرہ ہے، اس کا کافی بیان ہمارے رسالہ تیسیر الماعون للسکن فی الطاعون میں ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

الفار من الطاعون کالفار من الزحف۱۔

طاعون سے بھاگنے والا ایسا ہے جیسا کفار کو پیٹھ دے کر بھاگنے والا۔

جس کے لئے قرآن عظیم میں فرمایا کہ اس کا ٹھکانا جہنم ہے، ایسا نفر من قدر اللہ الیٰ قدر اللہ جہاد سے بھاگنے والا بھی کہہ سکتا ہے وہ بھی بھاگ کر تقدیر ہی میں جائے گا مگر اس بھاگنے کا منتہی جہنم ہے، طاعون عمواس شام میں تھا امیر المومنین رضی اللہ تعالیٰ عنہ وہاں کے عزم سے روانہ ہو چکے تھے جب سرحد شام و حجاز موضع سرغ پر پہنچے ہیں خبر پائی کہ شام میں شدت طاعون ہے امیر المومنین نے مہاجرین کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے مشورہ کیا بعض نے کہا حضرت کام کے لئے چلے ہیں رجوع نہ چاہئے بعض نے کہا حضرت کے ساتھ بقیہ اصحاب رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم میں ہماری رائے نہیں کہ انہیں وبا پر پیش کریں، پھر انصار کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم کو بلایا وہ بھی یو ہیں مختلف ہوئے پھر اکابر مومنین فتح کو بلایا انہوں نے بالاتفاق نہ جانے کی رائے دی امیر

المومنین نے واپسی کی ندا کردی، اس پر حضرت ابو عبیدہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے کہا: افرار من قدر اللہ کیا تقدیر الٰہی سے بھاگنا، امیر المومنین نے فرمایا: کاش کوئی اور ایسا کہتا نعم نفر من قدر اللہ الی قدر اللہ ہاں ہم

۱ مسند امام احمد بن حنبل عن عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہا المکتب الاسلامی بیروت ۶/ ۲۵۵، ۱۲۵، ۸۲ الزواجر الکبیرۃ التاسعۃ والتسعون بعد الثلاثمائۃ دار الفکر بیروت ۲/ ۸۸- ۲۸۷ Page of 720 205

They flee from Allah's decree towards Allah's decree. Hazrat Abdur Rahman bin Auf (may Allah be pleased with him) had gone away for some work. When he returned, he said, "I have knowledge of the ruling on this matter. I heard the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) say:

[Box Content] Arabic: اذا سمعتم به بارض فلا تقدموا عليه واذا وقع بارض وانتم بها فلا تخرجوا فرارا منه۔ Urdu Translation: جب تم کسی زمین میں طاعون ہو ناسنو تو وہاں طاعون کے سامنے نہ جاؤ اور جب تمہاری جگہ واقع ہو تو اس سے بھاگنے کو نہ نکلو۔ (If you hear of an outbreak of plague in a land, do not enter it; and if the plague breaks out in a place while you are in it, do not leave that place to escape from it.)

Upon this, the Commander of the Faithful (Hazrat Umar) praised Allah that his ijtihad (legal reasoning) was in accordance with the Prophet's instruction, and he returned. In such a situation, it is correct to say 'fleeing from Allah's decree to Allah's decree' as it conforms to the command. Fleeing from the plague is a transgression (fisq); those who flee should be treated like transgressors. This is not innovation (bid'ah) in the sense of religious deviation. However, if the sacred instructions of the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) are known through famous authentic Hadiths, and someone rejects them, preferring their own failure and cowardice over them, then they are certainly a deviant. And Allah Almighty knows best.

Issue 76: From Jabalpur City, Kotwali neighborhood, asked by Hakim Abdul Rahim Sahib, 9 Rajab-ul-Murajab 1337 AH.

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful. Praising Him, invoking blessings upon the Prophet, and submitting to Him. A physician who has formally studied the science of medicine and fully completed both the prevailing theoretical and practical methods, yet due to certain reasons remains constantly disheartened with his profession, anxious, and fearful of accountability in the Hereafter. He finds it difficult, even impossible, for all the subtleties and details of the art to remain entirely present in his mind at all times. And without this, the inaccuracy of diagnosis is certain. Furthermore, since this art is based on conjecture, and treatment is based on predominant suspicion and prevailing opinion, although with the support of the Absolute Healer (May His glory be exalted), diagnosis often corresponds to the reality, the fear of error persists. For experienced experts have said: "Treatment is like shooting an arrow in the dark." (T). Moreover, intellect, memory, recall, intelligence,

and even the mental tools for diagnosing illness differ according to mental faculties. For this reason, multiple physicians are very rarely seen to agree in diagnosing the same patient, even though all consider their own diagnosis to be correct. However, in reality, only one person's opinion will be right. Sometimes a physician, seeing the treatment fail, realizes his error in diagnosis, regains his composure, and immediately amends the treatment. But sometimes, even then, he persists with the same treatment, thinking both diagnosis and treatment are correct but the time for recovery from God has not yet arrived. Besides these, there are many other reasons why he is fed up with his profession of medicine. In this case...

---

1 Sahih al-Bukhari, Kitab al-Tibb, Chapter on what is mentioned about plague, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 2/853.

अल्लाह की तक़दीर से अल्लाह की तक़दीर की तरफ़ भागते हैं। हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) किसी काम से बाहर गए हुए थे, जब वे वापस आए तो उन्होंने कहा, "मुझे इस मसले के हुक्म का इल्म है। मैंने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को यह फ़रमाते हुए सुना है:

[बॉक्स] अरबी: اذا سمعتم به بارض فلا تقدموا عليه واذا وقع بارض وانتم بها فلا تخرجوا فرارا منه۔ उर्दू अनुवाद: जब तुम किसी ज़मीन में طاعون (प्लेग) होने के बारे में सुनो, तो वहाँ न जाओ। और अगर तुम्हारी जगह पर यह वाक़े हो जाए, तो उससे भागने के लिए वहाँ से मत निकलो। (यदि आप किसी भूमि में प्लेग के फैलने की खबर सुनें, तो वहां न जाएं और यदि वह उस स्थान पर फैल जाए जहां आप हैं, तो उससे बचने के लिए वहां से न निकलें।)

इस पर अमीरुल मोमिनीन ने अल्लाह की प्रशंसा की कि उनका इज्तिहाद (निर्णय) अल्लाह के रसूल के इर्शाद के मुताबिक़ निकला और वे वापस लौट आए। ऐसी स्थिति में यह कहना कि "अल्लाह की तक़दीर से अल्लाह की तक़दीर की तरफ़ भागना" बिल्कुल सही है क्योंकि यह हुक्म के मुताबिक़ है। ताऊन से भागना फ़िस्क़ (गुनाह) है और भागने वालों के साथ फ़ासिक़ों जैसा व्यवहार किया जाना चाहिए। यह बिदअत (धर्म में नयापन) यानी बद-मज़हबी नहीं है। हाँ, यदि मशहूर और सही हदीसों में हुज़ूर सय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का इर्शाद मालूम हो और कोई उसे नकारते हुए अपनी नाकामी और बुज़दिली को उस पर तरजीह दे, तो वह निश्चित रूप से बद-मज़हब है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 76: शहर जबलपुर, मोहल्ला कोतवाली, प्रार्थी हकीम अब्दुर रहीम साहब, 9 रजब-उल-मुरज्जब 1337 हिजरी।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम। हम्द-ओ-सलात और सलामती के बाद। एक हकीम जिसने बाक़ायदा चिकित्सा विज्ञान (तिब्ब) की शिक्षा प्राप्त की है और प्रचलित सैद्धांतिक और व्यावहारिक विधियों से उसे पूरी तरह पूर्ण किया है, लेकिन कुछ कारणों से वह हमेशा अपने पेशे से हतोत्साहित, चिंतित और परलोक (आख़िरत) के दंड से भयभीत रहता है। उसका मानना है कि इस विधा की बारीकियों और सूक्ष्मताओं का हर समय मस्तिष्क में पूरी तरह उपस्थित रहना कठिन ही नहीं बल्कि असंभव है। और जब ऐसा नहीं होता, तो रोग की पहचान (तशख़ीस) में त्रुटि होना निश्चित है। इसके अतिरिक्त, चूँकि

यह विधा अनुमान पर आधारित है और उपचार प्रबल अनुमान और प्रमुख राय पर किया जाता है, यद्यपि परम चिकित्सक (अल्लाह) की सहायता से अक्सर रोग की पहचान वास्तविकता के अनुकूल होती है, फिर भी त्रुटि की आशंका बनी रहती है। क्योंकि अनुभवी विशेषज्ञों का कहना है: "उपचार अंधेरे में तीर चलाने के समान है।" (त)। इसके साथ ही, बुद्धि, स्मरण शक्ति, प्रखरता और रोग पहचानने के मानसिक उपकरण दिमागी शक्ति के अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं। इसी कारण एक ही रोगी की पहचान में कई चिकित्सकों का एकमत होना बहुत कम देखा जाता है, जबकि सभी अपनी पहचान को सही मानते हैं। परंतु वास्तव में किसी एक ही व्यक्ति की राय सही होगी। कभी चिकित्सक उपचार के निष्फल होने से अपनी निदान की त्रुटि को समझकर संभल जाता है और तुरंत उपचार में संशोधन कर देता है। लेकिन कभी-कभी वह इसके बावजूद इसी उपचार को जारी रखता है कि निदान और उपचार दोनों सही हैं लेकिन ईश्वर की ओर से अभी स्वस्थ होने का समय नहीं आया है। इनके अलावा और भी कई कारण हैं जिनसे वह अपने चिकित्सा पेशे से तंग आ चुका है। इस स्थिति में...

---

1 सहीह अल-बुख़ारी, किताबुत्त तिब्ब, बाबू मा युज़करु फ़ित्ताऊन, क़दीमी कुतुब ख़ाना, कराची, 2/853।

تقدیر الہی سے تقدیر الہی کی طرف بھاگتے ہیں۔ حضرت عبد الرحمن بن عوف رضی اللہ تعالٰی عنہ کسی کام کو گئے ہوئے تھے جب واپس آئے انہوں نے کہا مجھے اس مسئلہ کے حکم کا علم ہے میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو فرماتے سنا :

اذا سمعتم بہ بارض فلا تقدموا علیہ واذا وقع بارض وانتم بھا فلا تخرجوا فرارا منہ۔ جب تم کسی زمین میں طاعون ہو ناسنو تو وہاں طاعون کے سامنے نہ جاؤ اور جب تمہاری جگہ واقع ہو تو اس سے بھاگنے کو نہ نکلو۔

1- اس پر امیر المومنین حمد الہی بجالائے کہ ان کا اجتہاد موافق ارشاد واقع ہوا اور واپس ہوگئے ایسی جگہ نفرمن قدر اللہ الی قدر اللہ کہنا ٹھیک ہے کہ موافق حکم ہے، طاعون سے بھاگنا فسق ہے بھاگنے والوں سے فاسقوں کاسا برتاؤ چاہئے، بدعت بمعنی بد مذہبی نہیں، ہاں اگر احادیث صحیحہ مشہورہ میں ارشاد اقدس حضور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم معلوم ہے اور انہیں رد کرتا اور اپنی نامرادی وبزدلی کے حکم کو ان پر ترجیح دیتا ہے تو ضر ور بد مذہب ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۷۶ : از شہر جبلپور محلہ کو توالی مسئولہ حکیم عبد الرحیم صاحب ۹ رجب المرجب ۱۳۳۷ھ

بسم اللہ الرحمن الرحیم ۔ حامداومصلیا و مسلما، ایک طبیب جس نے علم طب با قاعدہ حاصل کیا ہے اور نظری و عملی طریقہ مروجہ سے پوری تکمیل کر چکا ہے مگر ان وجوہات سے اپنے پیشہ سے ہمیشہ دل برداشتہ اور متفکر اور وبال اُخروی سے خائف رہتا ہے کہ دقائق و جزئیات فن کا ہمیشہ بالکلیہ مستحضر فی الذہن رہنا مشکل بلکہ غیر ممکن ہے اور جب یہ نہیں تو تشخیص کا

صحیح نہ ہونا معلوم۔ نیز چونکہ یہ فن ظنی ہے اور ظن غالب و گمان راجح پر علاج ہوتا ہے اگر چہ بتائید حکیم مطلق جل وعلا اکثر تشخیص مطابق واقع ہوتی ہے تاہم غلطی کا اندیشہ لگا رہتا ہے کیونکہ مجربین کا مقولہ ہے العلاج رمی السهم في الظلمات (علاج اندھیروں میں تیر اندازی ہے۔ ت) نیز عقل، حافظہ، استحضار ذہانت طباعی بلکہ جو آلات تشخیص مرض ہیں حسب قوائے دماغی مختلف ہیں اسی وجہ سے مریض واحد کی تشخیص میں اطبائے متعدد متحد الرائے بہت کم دیکھے جاتے ہیں اگر چہ سب اپنی تشخیص کو صحیح سمجھے ہوئے ہیں مگر فی الواقع کسی ایک ہی کی رائے صحیح ہوگی اور کبھی طبیب علاج کے غیر مفید پڑنے سے اپنی خطا فی التشخیص سے واقف ہو کر سنبھل جاتا ہے اور علاج میں فوراً ترمیم کر دیتا ہے مگر کبھی اتنے پر بھی اس کو یہ معالجہ اسی علاج پر برقرار رکھتا ہے کہ تیری تشخیص اور علاج دونوں صحیح ہیں مگر خدا کی طرف سے ابھی صحت کا وقت نہیں آیا ہے، اس کے علاوہ بھی اور بہت سے وجوہات ہیں جن کے سبب سے وہ اپنے پیشہ طبابت سے تنگ ہے، اس صورت

---

1 صحیح البخاری کتاب الطب باب مایذکر فی الطاعون قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۸۵۳

Volume 24 Fatawa-e-Razviya

If this profession is practiced, what is the legal consequence according to Islamic law (Sharia)? Is he qualified for it or not? And even if he is qualified and then gives it up, is there any religious shortcoming? Please state the ruling without arguments. The Answer: For a qualified person, giving it up is permissible without any objection, provided other qualified physicians are present. For an unqualified person, engaging in it is forbidden (haram) and giving it up is obligatory (fard). Someone who has acquired formal theoretical and practical knowledge of this art, worked for a sufficient period under a skilled physician's clinic, gained experience, where most patients are cured by him, failure is rare, and he does not make egregious errors in diagnosis and treatment like an unlearned inexperienced person, is qualified. He should not withdraw from it for the benefit of the creation and Muslims, especially if there is no other such person there. Occasional errors in diagnosis or treatment do not negate qualification, as only the Prophets (peace and blessings be upon them) are immune from error. And Allah Almighty knows best. Question 77: From Meerut, sent by Maulvi Muhammad Habibullah Sahib Qadri Razvi, Khatib of Jamia Masjid Khair Nagar, teacher at Madrasa Qaumiya. A barren woman is one who has never had a child. For some, after having one or two children, it stops. Should their treatment be the same as for barrenness or different? The Answer: Yes, those same treatments are sufficient; for if they defend against the stronger cause, they would more certainly defend against the weaker one. And Allah Almighty knows best. Question 78: From Meerut, sent by Maulvi Muhammad Habibullah Sahib Qadri Razvi, Khatib of Jamia Masjid Khair Nagar, teacher at Madrasa Qaumiya. What is 'Rujat-e-Amal' (reversal of an act/spiritual practice)? Is it possible for an 'amal' to recoil due to some negligence etc.? The Answer: Yes, it is possible and has happened many times. And Allah Almighty knows best. Question 79: From Lucknow, Carlton Hotel, via Abdul Majeed Khan Sahib, sent by Nanhe Motor Driver, 15 Safar 1348 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: most scholars or Maulvis provide an amulet (taweez) or inscription (naqsh) to someone in need purely for the sake of Allah, and by the grace of Allah Almighty, benefit is achieved. Is it mandatory to believe in it or not? One gentleman says that proof for amulets etc. is nowhere found in the Quran or Hadith. Page 207 of 720

यदि यह पेशा अपनाया जाए, तो शरीयत (इस्लामी कानून) के अनुसार इसके लिए क्या जिम्मेदारी है? क्या वह इसके योग्य है या नहीं? और यदि वह योग्य है और फिर इसे छोड़ देता है, तो क्या कोई धार्मिक आपत्ति अनिवार्य नहीं होती? बिना किसी दलील के केवल आदेश लिख दिया जाए। उत्तर: योग्य व्यक्ति के लिए इसे छोड़ना बिना किसी आपत्ति के जायज़ है, जबकि वहाँ अन्य योग्य चिकित्सक मौजूद हों। अयोग्य व्यक्ति के लिए इसमें हाथ डालना हराम (वर्जित) है और इसे छोड़ना फर्ज़ (अनिवार्य) है। जिसने इस कला के विधिवत सिद्धांत और अभ्यास प्राप्त किए हों, और पर्याप्त समय तक किसी कुशल चिकित्सक के क्लिनिक में रहकर काम किया हो और अनुभव प्राप्त किया हो, जहाँ अधिकांश रोगी उसके हाथों स्वस्थ होते हों, विफलता का हिस्सा कम हो, और वह निदान और उपचार में वैसी गंभीर गलतियाँ न करता हो जैसी अनपढ़ और अनुभवहीन लोग करते हैं, तो वह योग्य है। उसे लोगों और मुसलमानों के लाभ के उद्देश्य से इससे पीछे नहीं हटना चाहिए, विशेष रूप से तब जब वहाँ कोई अन्य ऐसा न हो। निदान या उपचार में कभी-कभी गलती होना योग्यता के विपरीत नहीं है, क्योंकि गलती से केवल नबी (पैगंबर) ही सुरक्षित हैं। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। मसला ७७: मेरठ से, प्रेषक मौलवी मुहम्मद हबीबुल्लाह साहब कादरी रज़वी, खतीब जामा मस्जिद खैर नगर, शिक्षक मदरसा कौमिया। बांझ वह होती है जिसके कभी बच्चा न हुआ हो। कुछ लोगों के एक या दो बच्चे होने के बाद बंद हो जाते हैं, क्या उनका उपचार बांझ की तरह ही किया जाना चाहिए या किसी और तरह से? उत्तर: हाँ, वही कार्य पर्याप्त हैं जो शक्तिशाली के विरुद्ध रक्षा करते हैं, वे कमजोर के विरुद्ध तो और भी अधिक प्रभावी होंगे। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। मसला ७८: मेरठ से, प्रेषक मौलवी मुहम्मद हबीबुल्लाह साहब कादरी रज़वी, खतीब जामा मस्जिद खैर नगर, शिक्षक मदरसा कौमिया। 'रजअत-ए-अमल' (अमल का उलटना) क्या है, क्या किसी लापरवाही आदि के कारण अमल का पलट जाना संभव है? उत्तर: हाँ संभव है और कई बार ऐसा हुआ है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। मसला ७९: लखनऊ से, कार्लटन होटल, अब्दुल मजीद खान साहब के माध्यम से, प्रेषक नन्हें मोटर ड्राइवर, १५ सफर १३४८ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि अक्सर विद्वान या मौलवी साहब किसी जरूरतमंद को विशुद्ध रूप से अल्लाह के लिए कोई तावीज़ या नक्श दे देते हैं और अल्लाह तआला के अनुग्रह से लाभ होता है, तो क्या इस पर विश्वास करना अनिवार्य है या नहीं? एक सज्जन कहते हैं कि तावीज़ आदि का प्रमाण कुरान शरीफ या हदीस शरीफ से कहीं नहीं मिलता। पृष्ठ 207 का 720

میں یہ پیشہ اگر کیا جائے تو از روئے شرع شریف اس کے ذمے کیا وبال ہے اور وہ اس کا اہل ہے یا نہیں اور اگر اہل ہے بھی اور پھر ترک کردے تو کوئی شرعی قباحت تو لازم نہیں آتی؟ بلا دلیل صرف حکم تحریر فرمادیا جائے۔ الجواب: اہل کو اس کا ترک بلا مضائقہ جائز ہے جبکہ وہاں اور طبیب اہل موجود ہو اور نا اہل کو اس میں ہاتھ ڈالنا حرام ہے اور اس کا ترک فرض۔ جس نے اس فن کے باقاعدہ نظریات و عملیات حاصل کئے اور ایک کافی مدت تک کسی طبیب حاذق کے مطلب میں رہ کر کام کیا اور تجربہ حاصل ہوا اکثر مرضی اس کے ہاتھ پر شفا پاتے ہوں کم حصہ ناکامیاب رہتا ہو فاحش غلطیاں جیسے بے علم ناتجربہ کار کیا کرتے ہیں تشخیص و علاج میں نہ کیا کرتا ہو وہ اہل ہے اور اسے بنظر نفع رسانی خلائق و مسلمین اس سے دست کش ہونا نہ چاہئے خصوصاً جبکہ دوسرا ایسا وہاں نہ ہو۔ بعض اوقات تشخیص یا علاج میں غلطی واقع ہونا منافی اہلیت نہیں کہ غلطی سے انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام معصوم ہیں وبس۔ واللہ تعالیٰ اعلم مسئلہ ۷۷: از میرٹھ مرسلہ مولوی محمد حبیب اللہ صاحب قادری رضوی خطیب جامع مسجد خیر نگر مدرس مدرسہ قومی۔ بانجھ وہ ہوتی ہے جس کے کبھی بچہ نہ ہوا ہو بعضوں کے ایک یا دو بچہ ہو کر بند ہو جاتے ہیں ان کا علاج بانجھ کا سا ہی کیا جائے یا اور طرح۔ الجواب: ہاں وہی اعمال کافی ہیں کہ جو اقویٰ کی مدافعت کریں اضعف کی بدرجہ اولیٰ۔ واللہ تعالیٰ اعلم مسئلہ ۷۸: از میرٹھ مرسلہ مولوی محمد حبیب اللہ صاحب قادری رضوی خطیب جامع مسجد خیر نگر مدرس مدرسہ قومی رجعت عمل کیا چیز ہے، کیا عمل کا لوٹ جانا کسی بے احتیاطی وغیرہ سے ممکن ہے؟ الجواب: ہاں ممکن ہے اور بارہا واقع ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم مسئلہ ۷۹: از لکھنو کارلٹن ہوٹل بتوسط عبدالمجید خانصاحب مرسلہ ننھے موٹر ڈریور ۱۵ صفر ۱۳۴۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں

کہ اکثر علماء یا مولوی صاحب کسی حاجتمند کو خالصاً للہ کوئی تعویذ یا نقش دے دیتے ہیں اور اس سے بفضلہ تعالیٰ نفع ہو جاتا ہے تو اس پر اعتقاد واجب ہے یا نہیں؟ ایک صاحب فرماتے ہیں کہ تعویذات وغیرہ کا ثبوت کہیں قرآن شریف یا حدیث شریف سے Page 207 of 720

...is not. And Allah Almighty knows best to what extent this is correct? Therefore, the Presence (Your Eminence) has been troubled to write whether one should act according to this person or not?

The Answer:

Amulets (Ta'weez) are indeed proven from the Hadiths and the ancient and modern Imams, and their details are in our Fatawa Africa. Amulets consist of the names of Allah, the Word of Allah, and the remembrance of Allah. The best answer for those who do not believe in their effect is the one given by Hazrat Sheikh Abu Saeed Al-Khair (may Allah sanctify his secret) to an atheist who spoke against the effect of amulets. Hazrat (may Allah sanctify his secret) said: "You are a strange donkey." He was a worldly proud man; upon hearing this word, his face turned red, his neck veins swelled, and his thick body began to tremble. He complained to Hazrat about this statement. Hazrat replied: "I have given the answer to your question. You witnessed the effect of the name 'donkey', how it changed the state of your large body, yet you deny the effect in the holy names of the Lord Almighty. And Allah Almighty knows best."

Issue 80: From Mauza Haripur, sent by Shaukat Ali Khan, dated 19 Rajab-ul-Murajab 1338 AH.

What do the scholars of religion say in this matter that Zaid, an uneducated person in some village, publicizes himself as a wise physician (hakim)? He knows such medicines that cause miscarriage, and he performs an abortion on a pregnant woman through medicines, whether at her request or not. If a miscarriage occurs, is that person a murderer, and what is the ruling for him? Explain and be rewarded.

The Answer:

It is forbidden (haram) for an ignorant person to become a physician. After the soul has entered (the fetus), miscarriage is prohibited, and the one who does so is like a murderer. Before the soul enters, if there is a necessity, then there is no harm. And Allah Almighty knows best.

Issue 81: From Newria, district Pilibhit, questioned by Akbar Hussain, 12 Ramadan 1339 AH.

What do the scholars of religion say about how great a sin it is to make a woman barren, and is there forgiveness for this sin or not? Please state the Shariah ruling. That is all. Peace.

The Answer:

Making one barren or not is in the power of Allah Almighty; it is not in human power. "He makes whom He wills barren" 1 (Allah...

---

1 Al-Quran Al-Karim 42 / 50

...नहीं है, और अल्लाह बेहतर जानता है कि यह किस हद तक सही है? इसलिए हुज़ूर को तकलीफ दी गई कि हुज़ूर तहरीर फरमाएँ कि क्या इस शख्स के मुताबिक अमल किया जाए या नहीं?

उत्तर:

ताबीज (तावीज़) बेशक हदीसों और पुराने व नए इमामों से साबित हैं, और उनका विवरण हमारे 'फ़तावा अफ्रीका' में है। ताबीज अल्लाह के नामों, अल्लाह के कलाम और अल्लाह के ज़िक्र से होते हैं। उनके प्रभाव को न मानने वालों के लिए सबसे अच्छा जवाब वही है जो हज़रत शेख अबू सईद अल-खैर (अल्लाह उनकी कब्र को पाक करे) ने एक नास्तिक को दिया था जिसने ताबीज़ के असर के खिलाफ बात की थी। हज़रत ने फरमाया: "तुम एक अजीब गधे हो।" वह एक दुनियावी मगरूर आदमी था; यह शब्द सुनते ही उसका चेहरा लाल हो गया, उसकी गर्दन की नसें फूल गईं और उसका भारी शरीर कांपने लगा। उसने हज़रत से इस कथन की शिकायत की। हज़रत ने जवाब दिया: "मैंने तुम्हारे सवाल का जवाब दे दिया है। तुमने 'गधे' के नाम का असर देख लिया कि उसने तुम्हारे इतने बड़े शरीर की क्या हालत कर दी, फिर भी तुम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के पाक नामों के असर का इनकार करते हो। और अल्लाह बेहतर जानता है।"

मसला 80: मौज़ा हरिपुर से, प्रेषक शौकत अली खान, दिनांक 19 रजब-उल-मुरज्जब 1338 हिजरी।

धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद, जो एक अनपढ़ व्यक्ति है, किसी गाँव में खुद को हकीम (वैद्य) के रूप में मशहूर करता है? वह ऐसी दवाएं जानता है जिनसे गर्भपात हो जाता है, और वह किसी गर्भवती महिला का उसकी इच्छा या बिना इच्छा के दवाओं के माध्यम से गर्भपात कराता है। यदि गर्भपात हो जाता है, तो क्या वह व्यक्ति कातिल (हत्यारा) है और उसके लिए क्या हुक्म है? बयान करें और पुण्य कमाएं।

उत्तर:

जाहिल (अज्ञानी) का हकीम बनना हराम (निषिद्ध) है। जान पड़ जाने के बाद गर्भपात हराम है, और ऐसा करने वाला मानों कातिल है। जान पड़ने से पहले अगर कोई ज़रूरत है, तो कोई हर्ज नहीं। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 81: न्यूरिया, जिला पीलीभीत से, प्रेषक अकबर हुसैन, 12 रमज़ान 1339 हिजरी।

धर्म के विद्वान क्या कहते हैं कि किसी औरत को बांझ बनाना कितना बड़ा गुनाह है, और क्या इस गुनाह की माफ़ी है या नहीं? शरीयत का हुक्म बयान फरमाएं। बस, सलाम।

उत्तर:

बांझ बनाना या न बनाना अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल के अधिकार में है, यह मनुष्य की शक्ति में नहीं है। "वह जिसे चाहता है बांझ कर देता है" 1 (अल्लाह...

---

1 अल-कुरान अल-करीम 42 / 50

نہیں ہے واللہ تعالیٰ اعلم یہ کہاں تک صحیح ہے؟ اس لئے حضور کو تکلیف دی گئی کہ حضور تحریر فرمائیں کہ آیا اس شخص کے مطابق عمل کیا جائے یا نہیں؟

الجواب:

تعویذات بیشک احادیث اور ائمہ قدیم و حدیث سے ثابت، اور اس کی تفصیل ہمارے فتاویٰ افریقہ میں ہے، تعویذات اسماء الٰہی و کلام الٰہی و ذکرا الہی سے ہوتے ہیں ان میں اثر نہ ماننے کا جواب وہی بہتر ہے جو حضرت شیخ ابوسعید الخیر قدس سرہ العزیز نے ایک ملحد کو دیا جس نے تعویذات کے اثر میں کلام کیا حضرت قدس سرہ نے فرمایا : تو عجیب گدھا ہے۔ وہ دنیوی بڑا مغرور تھا یہ لفظ سنتے ہی اس کا چہرہ سرخ ہو گیا اور گردن کی رگیں پھول گئیں اور بدن غلیظ سے کانپنے لگا اور حضرت سے اس فرمانے کا شاکی ہوا، فرمایا میں نے تمہارے سوال کا جواب دیا ہے گدھے کے نام کا اثر تم نے مشاہدہ کر لیا کہ تمہارے اتنے بڑے جسم کی کیا حالت کردی لیکن مولیٰ عزوجل کے نام پاک میں اثر سے منکر ہو۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۸۰: از موضع ہری پور مرسلہ شوکت علی خاں بتاریخ ۱۹ رجب المرجب ۱۳۳۸ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید غیر تعلیم یافتہ کسی قریہ میں اپنے آپ کو حکیم مشہور کرے اور وہ اس قسم کی ادویات جانتا ہے کہ اسقاط حمل ہو جائے اور وہ کسی عورت حاملہ کو عورت کی خواہش پر یا غیر خواہش پر ذریعہ ادویات اسقاط حمل کرائے اور اسقاط عمل میں آئے تو کیا وہ شخص قاتل ہے اور اس کے لئے کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب:

جاہل کو طبیب بننا حرام ہے، جان پڑ جانے کے بعد اسقاط حمل حرام ہے، اور ایسا کرنے والا گویا قاتل ہے، اور جان پڑنے سے پہلے اگر کوئی ضرورت ہے تو حرج نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۸۱: از نیوریا ضلع پیلی بھیت مسئولہ اکبر حسین ۱۲ رمضان ۱۳۳۹ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ عورت کو بانجھ کرنا کس قدر گناہ ہے اور اس گناہ کی معافی ہے یا نہیں؟ حکم شرع بیان فرمائیے۔ فقط والسلام

الجواب:

بانجھ کرنا نہ کر نا اللہ عزوجل کے اختیار میں ہے بشر کی طاقت نہیں 'یَجْعَلُ مَنْ یَّشَاءُ عَقِیْمًا' 1 (اللہ

---

1 القرآن الکریم ۴۲ / ۵۰

Fatawa Razawiyya Volume 24

...may make barren whom He wills. (T) Yes, using such medicine which prevents pregnancy is not objectionable if there is an extreme necessity acceptable by Sharia; otherwise, it is severely abominable and reprehensible, and such an intention is Sharia-wise illegitimate and forbidden.

[Arabic Box Text] And He (Allah's blessings and peace be upon him) forbade castration, celibacy, and monasticism, and this [contraception] is within the same meaning - And Allah knows best. [Urdu Translation in Box] The Prophet (peace and blessings be upon him) forbade castration and living in isolation and adopting monasticism, and the use of contraceptive medicine is in the same sense as these. And Allah knows best. (T)

Problem 82: From city Mahalla Mulukpur, asked by Siraj Ali Khan Sahab Razvi, 12 Sha'ban 1339 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say about whether a patient can use crab [saratan] or any kind of alcohol in any condition? If someone feeds or gives it to him secretly, what is the ruling for such a person? And is the patient free from liability? If there is a mix of the above-mentioned things in medicines and the thought is to save life, is its use permissible in any way?

Answer: Eating crab is forbidden and applying alcohol to the body is also forbidden. Life can be saved even with lawful medicines if saving it is intended; otherwise, forbidden medicines will add nothing except sin. He who secretly feeds or gives a Muslim a forbidden thing is a perpetrator of a severely forbidden act and deserves severe punishment; there is no blame on the patient if he was unaware. And Allah Almighty knows best.

Problem 83: (Full question not available) ...that he who dies of plague is a disbeliever, and as evidence, he presents the event of the time of Moses (peace be upon him). By this saying, has Bakr become a disbeliever by contradicting an authentic hadith? Has his wife gone out of the marriage contract? And in case of repentance, is renewal of marriage necessary?

Answer: It is proven from successive [mutawatir] hadiths that plague is martyrdom and mercy for a Muslim, and a Muslim who dies in a plague is a martyr.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

...जिसे चाहे बांझ कर दे। (त) हाँ, ऐसी दवा का इस्तेमाल जिससे गर्भ न ठहरे, अगर शरीयत में स्वीकार्य किसी अत्यंत आवश्यकता के कारण हो तो कोई हर्ज नहीं, अन्यथा यह अत्यंत घृणित और निंदनीय है, और शरीयत के अनुसार ऐसा इरादा नाजायज और हराम है।

[अरबी बॉक्स पाठ] और उन्होंने (अल्लाह की उन पर कृपा और शांति हो) बधिया करने, ब्रह्मचर्य और वैराग्य से मना किया, और यह [गर्भनिरोधक] उसी अर्थ में है - और अल्लाह बेहतर जानता है। [बॉक्स में उर्दू अनुवाद] हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने खसी (बधिया) करने और अलग-थलग कटकर रहने और वैराग्य अपनाने से मना फ़रमाया, और गर्भनिरोधक दवा का उपयोग इन्हीं के अर्थ में है। और अल्लाह बेहतर जानता है। (त)

मसला 82: शहर मोहल्ला मलूकपुर से, सायल सिराज अली खां साहब रज़वी, 12 शाबान 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस बारे में क्या कहते हैं कि क्या कोई रोगी किसी भी स्थिति में केकड़ा (सरतान) या किसी भी प्रकार की शराब का उपयोग कर सकता है या नहीं? यदि कोई व्यक्ति उसे गुप्त रूप से खिलाता या पिलाता है, तो ऐसे व्यक्ति के लिए क्या हुक्म है? और क्या रोगी इससे दोषमुक्त है? यदि ऐसी दवाओं में ऊपर बताई गई चीजों का मिश्रण हो और जान बचाने का विचार हो, तो क्या उसका उपयोग किसी भी तरह से जायज़ है या नहीं?

जवाब: केकड़ा खाना हराम है और शराब को शरीर पर लगाना भी हराम है। जान हलाल दवाओं से भी बच सकती है यदि उसे बचाना उद्देश्य हो, अन्यथा हराम दवाएं गुनाह के अलावा कुछ नहीं बढ़ाएंगी। जो गुप्त रूप से किसी मुसलमान को हराम चीज़ खिलाता या पिलाता है वह अत्यंत हराम काम का दोषी और कड़ी सज़ा का पात्र है, यदि रोगी को पता नहीं था तो उस पर कोई आरोप नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 83: (पूरा प्रश्न उपलब्ध नहीं हो सका) ...कि जो प्लेग (طاعون) से मरता है वह काफ़िर है और प्रमाण के तौर पर मूसा (अलैहिस्सलाम) के समय की घटना पेश करता है। इस कथन से, क्या बक्र सही हदीस के विरुद्ध होकर काफ़िर हो गया या नहीं? और क्या उसकी पत्नी निकाह से बाहर हो गई? और तौबा की स्थिति में क्या निकाह का नवीनीकरण (تجدیدِ نکاح) आवश्यक है या नहीं?

जवाब: मुतवातिर हदीसों से साबित है कि प्लेग मुसलमान के लिए शहादत और रहमत है और जो मुसलमान प्लेग में मरे वह शहीद है।

تعالیٰ جس کو چاہے بانجھ کردے۔ ت) ہاں ایسی دوا کا استعمال جس سے حمل نہ ہونے پائے اگر کسی ضرورت شدید ہ قابل قبول شرع کے سبب ہے حرج نہیں ورنہ سخت شنیع و معیوب ہے اور شرعاً ایسا قصد ناجائز و حرام۔

[Arabic Box Left] وقد نهى صلى الله تعالى عليه وسلم عن الخصاء وعن التبتل والرهبانية وهذا بمعناها- والله تعالیٰ اعلم- [Urdu Box Right] حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے خصی کرنے اور الگ تھلگ کٹ کر رہنے اور رہبانیت اختیار کرنے سے منع فرمایا، اور مانع حمل دوا کا استعمال انہی کے معنی میں ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۸۲: از شہر محلہ ملوکپور مسئولہ سراج علی خاں صاحب رضوی ۱۲ شعبان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیان شرع متین اس بارے میں کہ سرطان یا کسی قسم کی شراب کوئی مریض کسی حالت میں استعمال کرسکتا ہے یا نہیں؟ اگر کوئی شخص اس کو پوشیدہ طور پر کھلائے یا پلائے تو ایسے شخص کے لئے کیا حکم ہے؟ اور مریض اس سے بری الذمہ ہے یا نہیں؟ اگر ایسی ادویات سے جن میں مذکورہ بالا اشیاء کا میل ہو، جان بچنے کا خیال ہو تو اس کا استعمال کسی طرح جائز ہے یا نہیں؟

الجواب: سرطان کھانا حرام ہے اور شراب بدن پر لگانا بھی حرام ہے۔ جان حلال دواؤں سے بھی بچ سکتی ہے اگر اسے بچانا منظور ہے ورنہ حرام دوائیں سوائے گناہ کچھ اضافہ نہ کریں گی۔ جو پوشیدہ طور پر مسلمان کو حرام چیز کھلائے یا پلائے سخت حرام کام کا مرتکب اور شدید سزا کا مستوجب ہے مریض پر الزام نہیں اگر اسے خبر نہ تھی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۸۳: (پورا سوال دستیاب نہیں ہوسکا) ----- کہ جو طاعون سے مرتا ہے وہ کافر ہے اور دلیل میں زمانہ موسیٰ علیہ السلام کا واقعہ پیش کرتا ہے اس قول سے بکر مخالف حدیث صحیح ہو کر کافر ہوا یا نہیں اور اس کی زوجہ نکاح سے باہر ہوئی یا نہیں؟ اور بصورت توبہ تجدیدِ نکاح لازم ہے یا نہیں؟

الجواب: متواتر حدیثوں سے ثابت ہے کہ طاعون مسلمان کے لئے شہادت ورحمت ہے اور جو مسلمان طاعون میں مرے شہید ہے۔

Fatawa Ridawiyya | Volume 24

Hadith 1: In Sahih Bukhari, Sahih Muslim, and Musnad Imam Ahmad bin Hanbal, it is narrated from Anas (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "The plague (Tahoon) is martyrdom for every Muslim."

Hadith 2: In Sahih Muslim, it is narrated from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) states: "Whoever dies in the plague is a martyr."

Hadith 3: In Musnad Imam Ahmad, Mu'jam al-Kabir of Tabarani, and Sahih al-Mukhtarah, it is narrated from Safwan bin Umayyah (may Allah be pleased with him).

Hadith 4: Tabarani in Mu'jam al-Awsat and Abu Nu'aym in Fawa'id Abu Bakr bin Khallad narrated from the Mother of the Believers, Siddiqah (Aisha, may Allah be pleased with her), that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) states: "The plague is martyrdom for my Ummah (community)."

Hadith 5: From Imam Ahmad with an authentic chain from Rashid bin Jaysh.

Hadith 6: From Tabarani and Ibn Qani' from Rabi' bin Iyas al-Ansari.

Hadith 7: From Ahmad, Abu Dawood al-Tayalisi, Samwayh, and Diya' from 'Ubada bin al-Samit.

Hadith 8: In Tabarani al-Kabir from Salman al-Farsi.

Footnotes: 1. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Jihad, Bab al-Shahadah, Sab' Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/397. 2. Sahih Muslim, Kitab al-Imarah, Bab Bayan al-Shuhada, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/124. 3. Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 3307, Al-Maktabah al-Faysaliyyah Beirut, 8/56; Kanz al-Ummal, Hadith 11188, Mu'assasatu al-Risalah Beirut, 4/418. 4. Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 5527, Maktabah al-Ma'arif Riyadh, 6/249. 5. Musnad Ahmad bin Hanbal from Rashid bin Jaysh, Al-Maktab al-Islami Beirut, 3/289. 6. Al-Mu'jam al-Kabir from Rabi' al-Ansari, Hadith 7660, Al-Maktabah al-Faysaliyyah Beirut, 5/28. 7. Musnad Ahmad bin Hanbal from 'Ubada bin Samit, Al-Maktab al-Islami Beirut, 5/312 & 323; Musnad Abi Dawud al-Tayalisi, Hadiths of 'Ubada bin Samit, Hadith 582, Dar al-Ma'rifah Beirut, p. 79; Kanz al-Ummal with reference to Samwayh from 'Ubada bin Samit, Hadith 11220, Mu'assasatu al-Risalah Beirut, 4/423. 8. Al-Mu'jam al-Kabir from Salman (may Allah be pleased with him), Hadith 6112, Al-Maktabah al-Faysaliyyah Beirut, 6/247.

[Watermark: I.T. Majlis-e-Tarajum (Dawat-e-Islami) www.dawateislami.net]

फ़तावा रज़विया | जिल्द २४

हदीस १: सहीह बुखारी, सहीह मुस्लिम और मसनद इमाम अहमद बिन हंबल में अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "ताऊन (प्लेग) हर मुसलमान के लिए शहादत है।"

हदीस २: सहीह मुस्लिम में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "जो ताऊन में मर गया वह शहीद है।"

हदीस ३: मसनद इमाम अहमद, मुअजम कबीर तबरानी और सहीह मुख्तारा में सफवान बिन उमैया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है।

हदीस ४: तबरानी ने मुअजम औसत में और अबू नुएम ने फवाइद अबू बकर बिन खल्लाद में उम्मुल मोमिनीन सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "ताऊन मेरी उम्मत के लिए शहादत है।"

हदीस ५: इमाम अहमद ब-सनद सहीह राशिद बिन जैश से।

हदीस ६: तबरानी और इब्ने काने रबीअ बिन इयास अंसारी से।

हदीस ७: अहमद, अबू दाऊद तयालिसी, समविया और ज़िया उबादा बिन सामित से।

हदीस ८: तबरानी कबीर में सलमान फारसी से।

पाद-टिप्पणी: १. सहीह अल-बुखारी किताब अल-जिहाद बाब अश-शहादत सबअ क़दीमी कुतुब खाना कराची १/ ३९७ २. सहीह मुस्लिम किताब अल-इमारा बाब बयान अश-शुहदा क़दीमी कुतुब खाना कराची २/ १२४ ३. अल-मुअजम अल-कबीर हदीस ३३०७ अल-मकतबा अल-फैसलिया बेरुत ८/ ५६, कंज़ अल-उम्माल हदीस १११८८ मुअस्ससा अल-रिसाला बेरुत ४/ ४१८ ४. अल-मुअजम अल-औसत हदीस ५५२७ मकतबा अल-मआरिफ रियाद ६/ २४९ ५. मसनद अहमद बिन हंबल अन राशिद बिन जैश अल-मकतब अल-इस्लामी बेरुत ३/ २८९ ६. अल-मुअजम अल-कबीर अन रबीअ अल-अंसारी हदीस ७६६० अल-मकतबा अल-फैसलिया बेरुत ५/ २८ ७. मसनद अहमद बिन हंबल अन उबादा बिन सामित अल-मकतब अल-इस्लामी बेरुत ५/ ३१२ व ३२३, मसनद अबी दाऊद अत-तयालिसी अहादीस उबादा बिन सामित हदीस ५८२ दार अल-मअरिफा बेरुत पृष्ठ ७९, कंज़ अल-उम्माल बहवाला समवैह अन उबादा बिन सामित हदीस ११२२० मुअस्ससा अल-रिसाला बेरुत ४/

४२३ ८. अल-मुअजम अल-कबीर अन सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु हदीस ६११२ अल-मकतबा अल-फैसलिया बेरुत ६/ २४७

[वाटरमार्क I.T. Majlis-e-Tarajum (Dawat-e-Islami) www.dawateislami.net] पृष्ठ २१० का ७२०

حدیث ۱: صحیح بخاری و صحیح مسلم و مسند امام احمد بن حنبل میں انس رضی اللہ تعالٰی عنہ سے ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: الطاعون شهادة لكل مسلم (1) | طاعون ہر مسلمان کے لئے شہادت ہے۔

حدیث ۲: صحیح مسلم میں ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: من مات في الطاعون فهو شهيد (2) | طاعون میں مرنے والا شہید ہے۔

حدیث ۳: مسند امام احمد و معجم کبیر طبرانی و صحیح مختارہ میں صفوان بن امیہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے ہے (3)۔

حدیث ۴: طبرانی نے معجم اوسط اور ابو نعیم نے فوائد ابو بکر بن خلاد میں ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے روایت کی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: الطاعون شهادة لامتي (4) طاعون میری امت کے لئے شہادت ہے۔

حدیث ۵: امام احمد بسند صحیح راشد بن جیش سے (5)۔

حدیث ۶: طبرانی وابن قانع ربیع بن ایاس انصاری سے (6)۔

حدیث ۷: احمد و ابوداؤد طیالسی و سمویہ وضیا عبادہ بن صامت سے (7)۔

حدیث ۸: طبرانی کبیر میں سلمان فارسی سے (8)۔

1 صحیح البخاری کتاب الجہاد باب الشہادۃ سبع قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۳۹۷ 2 صحیح مسلم کتاب الامارۃ باب بیان الشہداء قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۱۲۴ 3 المعجم الکبیر حدیث ۳۳۰۷

المکتبة الفیصلیة بیروت ۸/ ۵۶، کنز العمال حدیث ۱۱۱۸۸ مؤسسة الرسالة بیروت ۴/ ۴۱۸ 4 المعجم الاوسط حدیث ۵۵۲۷ مکتبة المعارف ریاض ۶/ ۲۴۹ 5 مسند احمد بن حنبل عن راشد بن جیش المکتب الاسلامی بیروت ۳/ ۲۸۹ 6 لمعجم الکبیر عن ربیع الانصاری حدیث ۷۶۶۰ المکتبة الفیصلیة بیروت ۵/ ۲۸ 7 مسند احمد بن حنبل عن عبادة بن صامت المکتب الاسلامی بیروت ۵/ ۳۱۲ و ۳۲۳، مسند ابی داؤد الطیالسی احادیث عبادة بن صامت حدیث ۵۸۲ دار المعرفة بیروت ص ۷۹، کنز العمال بحوالہ سمویہ عن عبادة بن صامت حدیث ۱۱۲۲۰ موسسة الرسالة بیروت ۴/ ۴۲۳ 8 المعجم الکبیر عن سلمان رضی اللہ عنہ حدیث ۶۱۱۲ المکتبة الفیصلیة بیروت ۶/ ۲۴۷

Watermark: I.T. Majlis-e-Tarajum (Dawat-e-Islami)]

www.dawateislami.net] Page 210 of 720

Hadith 9: Ahmad, Darimi, Sa'id bin Mansur, Baghavi, and Ibn Qani' from Safwan bin Umayyah [1]. Hadith 10: Ahmad from Abu Hurairah (may Allah be pleased with them). In these six Hadiths, it is stated that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Plague is martyrdom" [2]. Plague is martyrdom. Hadith 11: Imam Malik, Imam Ahmad, Abu Dawood, Imam Nasai, Ibn Hibban, and Hakim from Jabir bin Atik [3]. Hadith 12: Ibn Majah from Abu Hurairah [4]. Hadith 13: Tabarani in Kabir from Abdullah bin Busr [5]. Hadith 14: Abdur Razzaq in Musannaf from Ubadah bin Samit [6]. Hadith 15: Ibn Sa'd in Tabaqat from Abu Ubaidah bin al-Jarrah [7]. Hadith 16: Ibn Shahin from Ali bin Arqam, who relates from his father (may Allah be pleased with them). In these six Hadiths, it is stated that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "The one who dies of plague is a martyr" [8]. The Muslim who was afflicted with the plague died as a martyr. Hadith 17: Ahmad and Ibn Sa'd relate from Aseeb (may Allah be pleased with him), the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Plague is martyrdom for my Ummah and a mercy for them." | Plague is martyrdom and mercy for my Ummah.

[1] Kanz al-Ummal, Hadith 11222, Mu'assasatur Risalah, Beirut, 4/423. [2] Musnad Ahmad bin Hanbal, from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami, Beirut, 2/310. [3] Kanz al-Ummal, with reference to Malik, Ahmad, Abu Dawood, Nasai, Hibban, Hakim from Jabir bin Atik, Hadith 11183, Mu'assasatur Risalah, Beirut, 4/417. [4] Sunan Ibn Majah, Chapters on Jihad, Chapter on what is hoped for martyrdom, H.M. Said Company, Karachi, p. 206. [5] Kanz al-Ummal, with reference to Tabarani, Hadith 11191, Mu'assasatur Risalah, Beirut, 4/418. [6] Al-Musannaf by Abdur Razzaq, Hadith 6695, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 3/562; Kanz al-Ummal with reference to Ubadah bin Samit, Hadith 11219, Mu'assasatur Risalah, Beirut, 4/423. [7] At-Tabaqat al-Kubra by Ibn Sa'd, Biography of Abu Ubaidah bin al-Jarrah, Dar Sadir, Beirut, 3/414. [8] Kanz al-Ummal, with reference to Ibn Shahin from Ali bin al-Arqam, Hadith 11228, Mu'assasatur Risalah, Beirut, 4/424.

हदीस ९: अहमद, दारिमी, सईद बिन मंसूर, बग़वी और इब्न क़ानिअ सफ़वान बिन उमैया से १। हदीस १०: अहमद अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हुम से। इन छह हदीसों में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: 'अत-ताऊन शहादतुन' २। ताऊन शहादत है। हदीस ११: इमाम मालिक, इमाम अहमद, अबू दाऊद, इमाम नसाई, इब्न हिब्बान और हाकिम जाबिर बिन अतीक से ३। हदीस १२: इब्न माजह अबू हुरैरा से ४। हदीस १३: तबरानी कबीर में अब्दुल्लाह बिन बुस्र से ५। हदीस १४: अब्दुर रज़्ज़ाक मुसन्निफ़ में उबादा बिन सामित से ६। हदीस १५: इब्न साद तबक़ात में अबू उबैदा बिन अल-जर्राह से ७। हदीस १६: इब्न शाहीन अली बिन अरक़म, वह अपने वालिद से रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम। इन छह हदीसों में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: 'अल-मत्ऊन शहीद' ८। जिस मुसलमान को ताऊन हुआ, वह शहीद मरा। हदीस १७: अहमद और इब्न साद असीब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रावी हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: 'अत-ताऊन शहादतुन लि-उम्मती व रहमतुन लहुम' | ताऊन मेरी उम्मत के लिए शहादत और रहमत है।

1. कन्ज़ुल उम्माल हदीस ११२२२, मुअस्ससतुर् रिसाला, बैरूत, ४/४२३
2. मुसनद अहमद बिन हंबल, अन अबी हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु, अल-मक्तबुल इस्लामी, बैरूत, २/३१०
3. कन्ज़ुल उम्माल बहवाला मालिक, अहमद, अबू दाऊद, नसाई, हब्बान, हाकिम, अन जाबिर बिन अतीक हदीस १११८३, मुअस्ससतुर् रिसाला, बैरूत, ४/४१७
4. सुनन इब्न माजह, अबवाबुल जिहाद, बाब मा युरजा फ़ीहि अश-शहादा, एच.एम. सईद कम्पनी, कराची, पृ. २०६
5. कन्ज़ुल उम्माल बहवाला तब हदीस १११९१, मुअस्ससतुर् रिसाला, बैरूत, ४/४१८
6. अल-मुसन्निफ़ ले अब्दुर रज़्ज़ाक हदीस ६६९५, अल-मक्तबुल इस्लामी, बैरूत, ३/५६२; कन्ज़ुल उम्माल बहवाला उबादा बिन सामित हदीस ११२१९, मुअस्ससतुर् रिसाला, बैरूत, ४/४२३
7. अत-तबाक़ातुल कुबरा ले इब्न साद, तर्जुमा अबी उबैदा बिन अल-जर्राह, दार सादिर, बैरूत, ३/४१४
8. कन्ज़ुल उम्ﷺ बहवाला इब्न शाहीन अन अली इब्न अल-अरक़म हदीस ११२२८, मुअस्ससतुर् रिसाला, बैरूत, ४/४२४

حدیث ۹: احمد ودارمی و سعید بن منصور وبغوی وابن قانع صفوان بن امیہ سے ۱۔ حدیث ۱۰: احمد ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے۔ ان چھ حدیثوں میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: الطاعون شهادة ۲۔ طاعون شہادت ہے۔ حدیث ۱۱: امام مالک وامام احمد وابوداؤد وامام نسائی وابن حبان وحاکم جابر بن عتیک سے ۳۔ حدیث ۱۲: ابن ماجہ ابوہریرہ سے ۴۔ حدیث ۱۳: طبرانی کبیر میں عبداللہ بن بسر سے ۵۔ حدیث ۱۴: عبدالرزاق مصنف میں عبادہ بن صامت سے ۶۔ حدیث ۱۵: ابن سعد طبقات میں ابوعبیدہ بن الجراح سے ۷۔ حدیث ۱۶: ابن شاہین علی بن ارقم وہ اپنے والد سے رضی اللہ تعالیٰ عنہم۔ ان چھ حدیثوں میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: المطعون شہید ۸۔ جس مسلمان کو طاعون ہوا وہ شہید مرا۔ حدیث ۱۷: احمد وابن سعد عسیب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: الطاعون شهادة لأمتي ورحمة لهم | طاعون میری اُمّت کے لئے شہادت اور رحمت

۱ کنز العمال حدیث ۱۱۲۲۲ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۴/ ۴۲۳ ۲ مسند احمد بن حنبل عن ابی ہریرہ رضی اللہ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۲/ ۳۱۰ ۳ کنز العمال بحوالہ مالک، حم، د، ن حب، ك عن جابر بن عتيك حدیث ۱۱۱۸۳ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۴/ ۴۱۷ ۴ سنن ابن ماجہ ابواب الجہاد باب مایرجی فیہ الشہادۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۲۰۶ ۵ کنز العمال بحوالہ طب حدیث ۱۱۱۹۱ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۴/ ۴۱۸ ۶ المصنف لعبد الرزاق حدیث ۶۶۹۵ المکتب الاسلامی بیروت ۳/ ۵۶۲، کنز العمال بحوالہ عب عبادہ بن صامت حدیث ۱۱۲۱۹ موسسۃ الرسالہ بیروت ۴/ ۴۲۳ ۷ الطبقات الکبری لابن سعد ترجمہ ابی عبیدہ بن الجراح دار صادر بیروت ۳/ ۴۱۴ ۸ کنز العمال بحوالہ ابن شاہین عن علی ابن الارقم حدیث ۱۱۲۲۸ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۴/ ۴۲۴

Fatawa Razawiyyah Volume 24

[Arabic segment]: ...and it is a punishment upon the disbelievers. Hadith 18: It is narrated in Sahih Bukhari, Musnad Ahmad, and Abu Dawood Tayalisi from Umm al-Mu'minin Siddiqah [Ayesha] (may Allah be pleased with her). The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) says: [Arabic]: The plague (At-Ta'un) was a punishment that Allah Almighty would send upon whom He willed, and indeed Allah Almighty has made it a mercy for the believers. [Urdu Translation]: The plague was a punishment that Allah Almighty would send upon those He willed, and indeed Allah Almighty has made it a mercy for the Muslims.

Hadith 19: Narrated by Imam Ahmad and Hakim in 'Kuna', and Baghawi and Hakim in 'Mustadrak', and Tabarani in 'Al-Mu'jam al-Kabir' from Abu Burdah al-Ash'ari (may Allah be pleased with him) that the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) prayed: [Arabic]: O Allah, make the death of my Ummah a martyrdom in Your path through piercing [wounds of weapons] and the plague. [Urdu Translation]: O Lord, grant my Ummah martyrdom in Your path through the spears of enemies and the plague.

Hadith 20: Bawardi narrates from Abu Musa al-Ash'ari (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) prayed: [Arabic]: O Allah, make the end of my Ummah through piercing and the plague. [Urdu Translation]: O Lord, grant my Ummah death through the spears of the enemy and the plague.

Hadith 21: In Tabarani Al-Awsat, narrated from Umm al-Mu'minin Siddiqah (may Allah be pleased with her) that the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) said: [Arabic]: My Ummah will not perish except by piercing and the plague. [Urdu Translation]: The end of my Ummah will be through the spears of the enemy and the plague.

Footnotes: 1. Kanz al-Ummal, with reference to Ahmed and Ibn Sa'd, Hadith 28431, Muassasat al-Risala Beirut 10/76. 2. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Tibb, Bab Ajr al-Sabir fi al-Ta'un, Qadimi Kutub Khana Karachi 2/853; Kanz al-Ummal, with reference to Tabarani, Ahmad, Bukhari from Ayesha (may Allah be pleased with her), Hadith 28432, Muassasat al-Risala Beirut 10/77. 3. Musnad Ahmad bin Hanbal, Hadith of Abu Burda al-Ash'ari, Al-Maktab al-Islami Beirut 4/438; Al-Mustadrak lil-Hakim, Kitab al-Jihad, Dar al-Fikr Beirut 2/93; Kanz al-Ummal, with reference to Ahmad and Hakim in Al-Kuna, Hadith 28429, Muassasat al-Risala Beirut 10/80. 4. Kanz al-Ummal, with

reference to Al-Bawardi from Abu Musa al-Ash'ari, Hadith 28428, Muassasat al-Risala Beirut 10/80.

फ़तवा रज़विया खंड 24

[अरबी अंश]: ...और यह काफिरों पर अज़ाब है। हदीस 18: सहीह बुखारी, मुसनद अहमद और अबू दाऊद तयालिसी में उम्मुल मुमिनीन सिद्दीका (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) से वर्णित है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: [अरबी]: ताऊन (प्लेग) एक अज़ाब था जिसे अल्लाह तआला जिस पर चाहता भेजता था, और बेशक अल्लाह तआला ने इसे मोमिनों के लिए रहमत बना दिया। [उर्दू अनुवाद]: ताऊन एक अज़ाब था जिसे अल्लाह अज़्ज़वजल जिन पर चाहता भेजता था और बेशक अल्लाह तआला ने इसे मुसलमानों के लिए रहमत कर दिया।

हदीस 19: इमाम अहमद और हाकिम 'कुनय' में, और बग़वी और हाकिम 'मुस्तदरक' में, और तबरानी 'कबीर' में अबू बुर्दा अशअरी (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने दुआ की: [अरबी]: ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत की मौत को अपनी राह में ज़ख्मों (नेज़ों) और ताऊन के ज़रिये शहादत बना दे। [उर्दू अनुवाद]: इलाही मेरी उम्मत को अपनी राह में शहादत नसीब कर दुश्मनों के नेज़ों और ताऊन से।

हदीस 20: बावर्दी से रिवायत है कि अबू मूसा अशअरी (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने दुआ की: [अरबी]: ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत का खात्मा नेज़ों और ताऊन से कर। [उर्दू अनुवाद]: इलाही मेरी उम्मत को दुश्मन के नेज़ों और ताऊन से वफ़ात नसीब कर।

हदीस 21: तबरानी 'औसत' में उम्मुल मुमिनीन सिद्दीका (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) से रावी हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: [अरबी]: मेरी उम्मत का खात्मा केवल नेज़ों और ताऊन से ही होगा। [उर्दू अनुवाद]: मेरी उम्मत का खात्मा दुश्मन के नेज़ों और ताऊन [से होगा]।

फुटनोट: 1. कंज़ अल-उम्माल, अहमद और इब्न साद के संदर्भ में, हदीस 28431, मुअस्ससत अल-रिसाला बेरूत 10/76। 2. सहीह अल-बुखारी, किताब अत-तिब्ब, बाब अज्र अस-साबिर फ़ी अत-ताऊन, कदीमी कुतुब खाना कराची 2/853; कंज़ अल-उम्माल, तबरानी, अहमद, बुखारी के संदर्भ में आयशा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) से, हदीस 28432, मुअस्ससत अल-रिसाला बेरूत 10/77। 3. मुसनद अहमद बिन हनबल, अबू बुर्दा अल-अशअरी की हदीस, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरूत 4/438; अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताब अल-जिहाद, दार अल-फ़िक्र बेरूत 2/93; कंज़ अल-

उम्माल, अहमद और हाकिम अल-कुना के संदर्भ में, हदीस 28429, मुअस्ससत अल-रिसाला बेरूत 10/80। 4. कंज़ अल-उम्माल, अल-बावर्दी के संदर्भ में अबू मूसा अल-अशअरी से, हदीस 28428, मुअस्ससत अल-रिसाला बेरूत 10/80।

ورجس علی الکافرین- ہے اور کافروں پر عذاب ہے۔ حدیث ۱۸: صحیح بخاری و مسند احمد و ابوداؤد طیالسی میں ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: الطاعون کان عذاباً یبعثہ اللہ تعالیٰ علی من یشاء وان اللہ تعالیٰ جعلہ رحمۃ للمؤمنین۔ طاعون ایک عذاب تھا کہ اللہ عزوجل جن پر چاہتا بھیجتا اور بیشک اللہ تعالیٰ نے اسے مسلمانوں کے لئے رحمت کر دیا۔ حدیث ۱۹: امام احمد و حاکم کنئے میں اور بغوی اور حاکم مستدرک اور طبرانی کبیر میں ابو بردہ اشعری رضی اللہ تعالٰی عنہ سے کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے دعا کی: اللھم اجعل فناء امتی قتلاً فی سبیلک بالطعن والطاعون الہی میری امت کو اپنی راہ میں شہادت نصیب کر دشمنوں کے نیزوں اور طاعون سے۔ حدیث ۲۰: باور دی ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ تعالٰی عنہ سے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے دعا کی: اللھم اجعل فناء امتی بالطعن والطاعون الہی میری امت کو دشمن کے نیزوں اور طاعون سے وفات نصیب کر۔ حدیث ۲۱: طبرانی اوسط میں ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے راوی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: لا تفنی امتی الا بالطعن والطاعون میری امت کا خاتمہ دشمن کے نیزوں اور طاعون۔

۱ کنزالعمال بحوالہ حم وابن سعد حدیث ۲۸۴۳۱ موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰ / ۷۶ ۲ صحیح البخاری کتاب الطب باب اجر الصابر فی الطاعون قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۸۵۳ ، کنز العمال بحوالہ ط ، حم ، خ عن عائشہ رضی اللہ عنہا حدیث ۲۸۴۳۲ موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰ / ۷۷ ۳ مسند احمد بن حنبل حدیث ابی بردہ الاشعری المکتب الاسلامی بیروت ۴ / ۴۳۸ ، المستدرک للحاکم کتاب الجہاد دارالفکر بیروت ۲ / ۹۳ ، کنز العمال بحوالہ حم والحاکم فی الکنی حدیث ۲۸۴۲۹ موسسۃ الرسالہ

بیروت ۱۰ / ۸۰ ۴ کنزالعمال بحوالہ الباور دی عن ابی موسیٰ الاشعری حدیث ۲۸۴۲۸ موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰ / ۸۰

Fatawa Ridawiyya Volume 24

[Arabic]: غدة كغدة الابل، المقيم فيها كالشهيد والفار منها كالفار من الزحف۔ [Urdu Translation]: It will be like a camel's gland; one who stays in it is like a martyr, and one who flees from it is like one who flees from the battlefield, turning his back on the disbelievers.

Hadith 22: In Sahih Mustadrak, it is narrated from Abu Musa (may Allah be pleased with him). The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: [Arabic]: الطاعون وخز اعدائكم من الجن وهو لكم شهادة۔ [Urdu Translation]: Plague is the prick of your enemies among the jinn, and for you, it is martyrdom.

Hadith 23: In Musnad Ahmad and Mu'jam Kabir, it is narrated from Abu Musa, and in Al-Awsat from Anas (may Allah be pleased with him). The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: [Arabic]: فناء امتی بالطعن والطاعون وخز اعدائکم من الجن وفی کل شهادة۔ [Urdu Translation]: The end of my Ummah will be by stabbing [in battle] and plague, which is the prick of your enemies among the jinn, and in both there is martyrdom.

Hadith 24: From Sharhabil Hasana (may Allah be pleased with him) in Ibn Khuzaymah and Ibn Asakir. Hadith 25: From Mu'adh (may Allah be pleased with him) in Ibn Asakir, both are consistent. Hadith 26: In Shirazi Al-Alqab, narrated by companions of Mu'adh that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: [Arabic]: ان الطاعون رحمة ربکم ودعوة نبیکم وموت الصالحین قبلکم وهو شهادة۔ [Urdu Translation]: Indeed, the plague is a mercy from your Lord, a prayer from your Prophet, and the death of the righteous people before you, and it is martyrdom.

---

1. Kanz al-Ummal, with reference to Tabarani from Aisha (may Allah be pleased with her), Hadith 28450, Muassasah al-Risalah, Beirut 10/80.
2. Al-Mustadrak lil-Hakim, Kitab al-Iman, Chapter: Plague is Martyrdom, Dar al-Fikr, Beirut 1/50.
3. Musnad Imam Ahmad bin Hanbal, Hadith of Abu Musa al-Ash'ari (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami, Beirut 2/395, Mu'jam al-Awsat of Tabarani, Hadith 8507, Maktabat al-Ma'arif, Riyadh 9/233.
4. Tahdhib Tarikh Dimashq Ibn Asakir, biography of Sharhabil bin Abdullah, Hadith regarding the Plague of Amwas, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut 6/303.
5. Tahdhib Tarikh Dimashq Ibn Asakir, biography of Sharhabil bin Abdullah, Hadith regarding the Plague of Amwas, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut 6/303.

6. Kanz al-Ummal, with reference to Al-Shirazi in Al-Alqab, Hadith 28445, Muassasah al-Risalah, Beirut 10/79.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[अरबी]: غدة كغدة الابل، المقيم فيها كالشهيد والفار منها كالفار من الزحف۔ [उर्दू अनुवाद]: यह ऊंट की गांठ की तरह होगा; जो इसमें ठहरा रहे वह शहीद के समान है और जो इससे भाग जाए वह ऐसा है जैसे काफिरों को पीठ दिखाकर जिहाद से भागने वाला।

हदीस 22: सहीह मुस्तदरक में अबू मूसा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से है। अल्लाह के रसूल (अल्लाह की उन पर कृपा और शांति हो) फरमाते हैं: [अरबी]: الطاعون وخز اعدائكم من الجن وهو لكم شهادة۔ [उर्दू अनुवाद]: ताऊन (प्लेग) तुम्हारे दुश्मन जिन्न का प्रहार है और वह तुम्हारे लिए शहादत है।

हदीस 23: मुसनद अहमद और मुअजम कबीर में अबू मूसा से और अल-औसत में अनस (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से है, अल्लाह के रसूल (अल्लाह की उन पर कृपा और शांति हो) फरमाते हैं: [अरबी]: فناء امتی بالطعن والطاعون وخز اعدائكم من الجن وفی کل شهادة۔ [उर्दू अनुवाद]: मेरी उम्मत का अंत जिहाद और ताऊन से है कि तुम्हारे दुश्मन जिन्नों का प्रहार है और दोनों में शहादत है।

हदीस 24: इब्न खुज़ैमा और इब्न असाकिर में शरहबील हसना (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से। हदीस 25: इब्न असाकिर में मुआज़ (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से, दोनों सुसंगत हैं। हदीस 26: शिराज़ी अल-अल्काब में मुआज़ के साथियों से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल (अल्लाह की उन पर कृपा और शांति हो) फरमाते हैं: [अरबी]: ان الطاعون رحمة ربكم ودعوة نبيكم وموت الصالحين قبلكم وهو شهادة۔ [उर्दू अनुवाद]: निस्संदेह ताऊन तुम्हारे रब की रहमत और तुम्हारे नबी की दुआ और तुमसे पहले के नेक लोगों की मौत है और वह शहादत है।

---

1. कंज़ुल उम्माल, तबानी के हवाले से आयशा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से, हदीस 28450, मुअस्ससतुर् रिसाला, बेरूत 10/80.
2. अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताबुल ईमान, अध्याय: ताऊन शहादत है, दारुल फिक्र, बेरूत 1/50.

3. मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल, हदीस अबू मूसा अल-अशअरी (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो), अल-मकतब अल-इस्लामी, बेरूत 2/395, मुअजम अल-औसत लित-तबरानी, हदीस 8507, मकतबतुल मआरिफ, रियाद 9/233.
4. तहज़ीब तारीख़ दमिश्क इब्न असाकिर, शरहबील बिन अब्दुल्लाह की जीवनी, ताऊन-ए-अमवास के बारे में हदीस, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत 6/303.
5. तहज़ीब तारीख़ दमिश्क इब्न असाकिर, शरहबील बिन अब्दुल्लाह की जीवनी, ताऊन-ए-अमवास के बारे में हदीस, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत 6/303.
6. कंज़ुल उम्माल, अल-शिराज़ी फिल अल-अल्काब के हवाले से, हदीस 28445, मुअस्ससतुर् रिसाला, बेरूत 10/79.

غدة کغدة الابل، المقیم فیھا کالشھید والفار منھا کالفار من الزحف۔ سے ہی ہوگا اونٹ کی سی گلٹی ہے جو اس میں ٹھہرا رہے وہ شہید کے مانند ہے اور جو اس سے بھاگ جائے وہ ایسا ہو جیسا کفار کو پیٹھ دے کر جہاد سے بھاگنے والا۔

حدیث ۲۲: صحیح مستدرک میں ابو موسٰی رضی اللہ تعالٰی عنہ سے ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: الطاعون وخز اعدائکم من الجن وھو لکم شھادۃ۔ طاعون تمہارے دشمن جنوں کا چونکا ہے اور وہ تمہارے لئے شہادت ہے۔

حدیث ۲۳: مسند احمد و معجم کبیر میں ابو موسٰی اور اوسط میں انس رضی اللہ تعالٰی عنہ سے ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: فناء امتی بالطعن والطاعون وخز اعدائکم من الجن وفی کل شھادۃ۔ میری امت کا خاتمہ جہاد و طاعون سے ہے کہ تمہارے دشمن جنوں کا چوکا ہے اور دونوں میں شہادت ہے۔

حدیث ۲۴: ابن خزیمہ و ابن عساکر شرحبیل حسنہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے۔ حدیث ۲۵: ابن عساکر معاذ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے دونوں وفقہ۔ حدیث ۲۶: شیرازی القاب میں معاذ سے رفقا راوی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: ان الطاعون رحمۃ ربکم ودعوۃ نبیکم وموت الصالحین قبلکم وھو شھادۃ۔ بیشک طاعون تمہارے رب کی رحمت اور تمہارے نبی کی دعا اور اگلے نیکوں کی موت ہے اور وہ شہادت ہے۔

---

1 کنزالعمال بحوالہ طس عن عائشہ رضی اللہ تعالٰی عنہا حدیث ۲۸۴۵۰ موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰ / ۸۰ 2 المستدرک للحاکم کتاب الایمان الطاعون شھادۃ دارالفکر بیروت ۱ / ۵۰ 3 مسند امام

احمد بن حنبل حدیث ابوموسیٰ اشعری رضی اللہ عنہ المکتب اسلامی بیروت ۲ / ۳۹۵، معجم الاوسط للطبرانی حدیث ۸۵۰۷ مکتبہ المعارف ریاض ۹ / ۲۳۳ 4 تہذیب تاریخ دمشق ابن عساکر ترجمہ شرحبیل بن عبداللہ حدیث فی طاعون عمواس داراحیاء التراث العربی بیروت ۶ / ۳۰۳ 5 تہذیب تاریخ دمشق ابن عساکر ترجمہ شرحبیل بن عبداللہ حدیث فی طاعون عمواس داراحیاء التراث العربی بیروت ۶ / ۳۰۳ 6 کنز العمال بحوالہ الشیرازی فی الالقاب حدیث ۲۸۴۴۵ موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰ / ۷۹

Fatawa Razawiyyah Volume 24

Hadith 27: Ahmed, Tabarani, and Ibn Asakir narrate from them that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

يشهد الله به انفسكم و ذراريكم و يزكى به اعمالكم - 1	**Allah will grant martyrdom to you and your children through the plague and will purify your deeds because of it.**

Hadith 28: Imam Malik and Darqutni from Abu Hurairah. 2

Hadith 29: Nasai narrates from Uqbah bin Aamir (may Allah be pleased with them) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

الشهداء خمسة المطعون والمبطون والغريق و صاحب الهدم والشهيد فى سبيل الله - 3	**The martyrs are five: the one who dies of plague, the one who dies of stomach disease, the one who drowns, the one who is crushed by a falling building or wall, and the one who is martyred in the path of Allah.**

Hadith 30: Abu Bakr Siddique (may Allah be pleased with him) narrates that while I was in the cave with the Holy Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), the Messenger prayed: "O Allah, grant us piercing wounds and the plague." O Allah, the spears of enemies and the plague. I realized that the Messenger was asking for death through these means for his Ummah.

Hadith 31: Ahmed and Tabarani narrate from Uqbah bin Abd al-Sulami (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "On the Day of Resurrection, the martyrs and those who died of plague will come. The plague victims will say, 'We are martyrs.' It will be commanded:

انظروافان كانت جراحتهم كجراحة الشهداء تسيل دماً كريح المسک فهم شهداء۔	**Look, if their wounds are like the wounds of the martyrs, with flowing blood having the fragrance of musk, then they too are martyrs.**

1. Musnad Imam Ahmad bin Hanbal from Mu'adh bin Jabal, Al-Maktab Al-Islami Beirut 5/221; Tahdhib Tarikh Dimashq al-Kabir, Chapter: Glad Tidings of al-Mustafa (PBUH), Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 1/90, 2/303.
2. Kanz al-Ummal referencing Malik, Qut, Hadith 11184, Muassasat ar-Risalah Beirut 4/417.

3. Sunan an-Nasa'i, Book of Jihad, Chapter: The Question of Martyrdom, Nur Muhammad Karkhana Karachi 2/62.
4. Kanz al-Ummal from Abu Bakr as-Siddiq, Hadith 11746, Muassasat ar-Risalah Beirut 4/598.

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

हदीस २७: अहमद, तबरानी और इब्न असाकिर ने उनसे रिवायत किया कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:

يشهد الله به انفسكم و ذراريكم و يزكى به اعمالكم - 1	**अल्लाह तआला ताऊन (प्लेग) से तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को शहादत अता करेगा और इसके सबब तुम्हारे आमाल सुथरे (पाक) करेगा।**

हदीस २८: इमाम मालिक और दारकुतनी अबू हुरैरा से। 2

हदीस २९: नसाई उक़बा बिन आमिर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:

الشهداء خمسة المطعون والمبطون والغريق و صاحب الهدم والشهيد فى سبيل الله - 3	**शहीद पांच हैं: ताऊन (प्लेग) ज़दा और जो पेट की बीमारी से मरा हो और जो डूबे और जिस पर मकान या दीवार गिरे और वो जो जिहाद में शहीद हो।**

हदीस ३०: अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि मैं ग़ार में हुज़ूर अक़दस रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथ था, हुज़ूर ने दुआ की: "ऐ अल्लाह! हमें ज़ख़्म (नेज़ों के) और ताऊन अता फ़रमा।" ऐ अल्लाह! दुश्मनों के नेज़े और ताऊन। मैंने जाना कि हुज़ूर उन (साधनों) के ज़रिए अपनी उम्मत की मौत माँग रहे हैं।

हदीस ३१: अहमद और तबरानी उक़बा बिन अब्द सुलमी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "क़यामत के दिन शहीद और ताऊन ज़दा हाज़िर होंगे। ताऊन वाले कहेंगे कि हम शहीद हैं, हुक्म होगा:

انظروافان كانت جراحتهم كجراحة الشهداء تسيل دماً كريح المسک فهم شهداء۔	**देखो अगर उनके ज़ख़्म शहीदों की मिस्ल (तरह) हैं, खून रवां (बहता हुआ) और मुश्क (कस्तूरी) की खुशबू, तो ये भी शहीद हैं।**

1. मुस्नद इमाम अहमद बिन हंबल मा'ज़ बिन जबल से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत 5/221; तहज़ीब तारीख़ दमिश्क़ अल-कबीर, बाब: तब्दीश अल-मुस्तफ़ा (स.), दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत 1/90, 2/303।
2. कंज़ुल उम्माल मालिक के हवाले से, क़त हदीस 11184 मुअस्ससत अल-रिसाला बेरूत 4/417।
3. सुनन नसाई, किताबुल जिहाद, बाब: मस्अला अल-शहादा, नूर मुहम्मद कारखाना कराची 2/62।
4. कंज़ुल उम्माल अबू बक्र अल-सिद्दीक़ से हदीस 11746 मुअस्ससत अल-रिसाला बेरूत 4/598।

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

حدیث ۲۷: احمد و طبرانی و ابن عساکر انہیں سے راوی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

یشھد اللہ بہ انفسکم و ذراریکم و یزکی بہ اعمالکم - 1 **اللہ تعالٰی طاعون سے تمہیں اور تمہارے بچوں کو شہادت دے گا اور اس کے سبب تمہارے اعمال ستھرے کرے گا۔**

حدیث ۲۸: امام مالک و دار قطنی ابو ہریرہ سے۔ 2

حدیث ۲۹: نسائی عقبہ بن عامر رضی اللہ تعالٰی عنہما رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے فرماتے ہیں :

الشھداء خمسۃ المطعون والمبطون والغریق و صاحب الھدم والشھید فی سبیل اللہ - 3 **شہید پانچ ہیں طاعون زدہ اور جو پیٹ کی بیماری سے مرا ہو اور جو ڈوبے اور جس پر مکان یا دیوار گرے اور وہ کہ جہاد میں شہید ہو۔**

حدیث ۳۰: ابو بکر صدیق رضی اللہ تعالٰی عنہ سے کہ میں غار میں حضور اقدس رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے ساتھ تھا حضور نے دعا کی: اللھم طعناً و طاعوناً الہی دشمنوں کے نیزے اور طاعون۔ میں نے جانا کہ حضور ان سے اپنی امت کی موت مانگتے ہیں۔

حدیث ۳۱: احمد و طبرانی عقبہ بن عبد سلمی رضی اللہ تعالٰی عنہ سے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: قیامت میں شہید اور طاعون زدہ حاضر آئیں گے طاعون والے کہیں گے ہم شہید ہیں، حکم ہوگا:

انظروافان کانت جراحتہم کجراحۃ الشھداء دیکھو اگر ان کا زخم شہیدوں کی مثل ہے خون رواں تسیل دماً کریح المسک فھم شھداء۔ اور مشک کی خوشبو تو یہ بھی شہید ہیں۔

1 مسند امام احمد بن حنبل عن معاذ بن جبل المکتب اسلامی بیروت ۵ / ۲۲۱، تہذیب تاریخ دمشق کبیر باب تبشیر المصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم دار احیاء التراث العربی بیروت ۱ / ۹۰، ۲ / ۳۰۳ 2 کنز العمال بحوالہ مالک قط حدیث ۱۱۱۸۴ موسسۃ الرسالہ بیروت ۴ / ۴۱۷ 3 سنن نسائی کتاب الجہاد باب مسئلۃ الشھادۃ نور محمد کارخانہ کراچی ۲ / ۶۲ 4 کنز العمال عن ابی بکر الصدیق حدیث ۱۱۷۴۶ موسسۃ الرسالہ بیروت ۴ / ۵۹۸

Fatawa Razawiyya Volume 24

...so they will find them as such.[1]

Hadith 32: Ahmad and Nasa'i reported from Irbadh bin Sariyah (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (may peace and blessings of Allah be upon him) said: On the Day of Resurrection, the martyrs and those who died on their beds will argue about those who died of the plague. The martyrs will say, 'These are our brothers, they were killed just like us.' Those who died on their beds will say, 'They are our brothers.' The Lord, Mighty and Majestic, will decree for the decision:

[Table/Box] Arabic: Look at their wounds; if their wounds resemble the wounds of those slain [in battle], then they are of them and with them. Urdu Translation: Look at their wounds; if they are like those of the martyrs, then they are from among them and are with them.

They will look and find their wounds to be like theirs, so they will be joined with them.[2] To reject a mutawatir (mass-transmitted) command of the Messenger of Allah (may peace and blessings of Allah be upon him) is disbelief (kufr), and if done intentionally, it is explicit disbelief. The Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him) declares them martyrs, while this person calls them disbelievers; what greater rejection could there be? It is mandatory for this person to repent, recite the Kalima, and renew his marriage with his wife. And Allah Almighty knows best.

---

[1] Musnad Ahmad bin Hanbal from Utbah bin Abd, 4/185, and Al-Mu'jam al-Kabir from Utbah, Hadith 292 / 119 [2] Sunan an-Nasa'i, Book of Jihad, Chapter on the Issue of Martyrdom, Nur Muhammad Factory for Book Trade Karachi, 2/62; Musnad Ahmad bin Hanbal from al-Irbadh bin Sariyah, Al-Maktab al-Islami Beirut, 4/128-129

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

...तो वे उन्हें वैसा ही पाएंगे।[1]

हदीस ३२: अहमद और नसाई ने इरबाज़ बिन सारिया रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क़यामत के दिन शहीद और वे जो अपनी चारपाई पर मरे, ताऊन (प्लेग) वालों के बारे में झगड़ेंगे। शहीद कहेंगे कि ये हमारे भाई हैं, हमारी तरह कत्ल हुए; बिस्तर पर मरने वाले कहेंगे कि ये हमारे भाई हैं। रब्ब अज़्ज़ व जल्ल फ़ैसले के लिए फ़रमाएगा:

[तालिका/बॉक्स] अरबी: उनके ज़ख्मों को देखो; अगर उनके ज़ख्म मक्तूलों (युद्ध में मारे गए लोगों) के ज़ख्मों जैसे हैं, तो वे उन्हीं में से हैं और उन्हीं के साथ हैं। उर्दू अनुवाद: उनके ज़ख्म देखो अगर शहीदों के से हैं तो वह उन्हें में से हैं और उनके साथ हैं।

वे देखेंगे तो उनके ज़ख्म उन्हीं के जैसे होंगे, तो वे शहीदों में मिला दिए जाएंगे।[2] रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुतवातिर (प्रमाणित) इरशाद को ठुकराना कुफ़्र है, और अगर जानबूझकर हो तो साफ़ कुफ़्र है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो उन्हें शहीद फ़रमाएं और यह शख़्स काफ़िर कहे, इससे बढ़ कर और क्या रद्द होगा? इस शख़्स पर लाज़िम है कि तौबा करे, कलमा पढ़े और अपनी औरत से नया निकाह करे। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

---

[1] मुसनद अहमद बिन हंबल, उत्बा बिन अब्द से, ४/१८५ और अल-मुअजम अल-कबीर, उत्बा से, हदीस २९२/११९ [2] सुनन अन-नसाई, किताब अल-जिहाद, शहादत के मसले का बाब, नूर मुहम्मद कारख़ाना तिजारत कुतुब कराची, २/६२; मुसनद अहमद बिन हंबल, अल-इरबाज़ बिन सारिया से, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरूत, ४/१२८-१२९

पेज २१५ ऑफ़ ७२०

فیجد ونھم کذلک ۱ تو انہیں ایسا ہی پائیں گے۔

حدیث ۳۲: احمد و نسائی عرباض بن ساریہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا : روز قیامت شہداء اور وہ جو بچھونے پر مرے طاعون والوں کے بارے میں جھگڑیں گے شہداء کہیں گے کہ یہ ہمارے بھائی ہیں ہماری طرح مقتول ہوئے، بچھونے والے کہیں گے کہ ہمارے بھائی ہیں۔ رب عز و جل فیصلہ کے لئے فرمائے گا:

[باکس] انظروا الی جراحھم فان اشبہ جراحھم جراح المقتولین فانھم منھم ومعھم۔ | ان کے زخم دیکھو اگر شہیدوں کے سے ہیں تو وہ انہیں میں سے ہیں اور ان کے ساتھ ہیں۔

دیکھیں گے تو ان کے زخم انہیں کے سے ہوں گے فیلحقون بھم ۲ یہ شہیدوں میں ملا دیئے جائیں گے، متواتر ارشاد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کارڈ کفر ہے، اور دانستہ ہو تو صریح کفر، نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم تو ان کو شہید فرمائیں اور یہ شخص کافر کہے، اس سے بڑھ کر اور کیا رد ہوگا، اس شخص پر لازم ہے کہ تائب ہو کلمہ پڑھے اپنی عورت سے نکاح جدید کرے۔ واللہ تعالٰی اعلم

---

1 مسند احمد بن حنبل عن عتبہ بن عبد ۴/ ۱۸۵ والمعجم الکبیر عن عتبہ حدیث ۲۹۲ / ۱۱۹ 2 سنن النسائی کتاب الجھاد باب مسألۃ الشھادۃ نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ۲/ ۶۲، مسند احمد بن حنبل عن العرباض بن ساریہ المکتب الاسلامی بیروت ۴/ ۱۲۸-۱۲۹

Vol. 24 Fatawa Razawiyya

Al-Haqq al-Mujtala fi Hukm al-Mubtala 1324 AH (A clear and bright truth regarding the ruling for a person afflicted with illness)

Problem 84: From Gonda, Oudh, sent by the Muslims of Gonda in general, and Hafiz Abdul Aziz, teacher at Madrasa Anjuman Islamia, Gonda, Dhu al-Hijjah 1324 AH. Zaid's blood is boiling; rather, one or two parts of his body have deteriorated, and there is a possibility that more will deteriorate in the future. Regarding such a person, doctors rule that eating, drinking, sitting, and interacting with him is strictly forbidden. In fact, doctors also give similar references from the Noble Sharia. The question to be inquired is, what is the ruling of the Noble Sharia? Is it mandatory to avoid such a person or what? Please write a reasoned and detailed response.

Answer: In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

[Arabic side of table]: Praise be to Allah for the religion of Islam, and blessings and peace be upon the best guide to the path of peace, and upon his family and companions until the Day of Resurrection. Through him, we ask for peace and safety from... [Urdu side of table]: We praise Allah Almighty for (the gift and bestowal of) the religion of Islam and send blessings and peace upon that being who is the best and the one who shows the way of safety, and may blessings and peace be upon his progeny and his... [to be continued]

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

अल-हक़ अल-मुज्तला फ़ी हुक्म अल-मुब्तला 1324 हि. (बीमारी के शिकार व्यक्ति के हुक्म के संबंध में स्पष्ट और उज्ज्वल सत्य)

मसाला 84: गोंडा मुल्क अवध से, गोंडा के मुसलमानों द्वारा सामान्य रूप से भेजा गया, और हाफ़िज़ अब्दुल अज़ीज़, शिक्षक मदरसा अंजुमन इस्लामिया, गोंडा, ज़ुल-हिज्जा 1324 हि.। ज़ैद का खून उबल रहा है, बल्कि शरीर के एक या दो अंग बिगड़ गए हैं और संभावना है कि भविष्य में भी बिगड़ जाएंगे। ऐसे व्यक्ति के संबंध में डॉक्टर यह हुक्म देते हैं कि उसके साथ खाना-पीना और उठना-बैठना भी कतई मना है, बल्कि डॉक्टर शरीयत का भी ऐसा ही हवाला देते हैं। पूछने वाली बात यह है कि शरीयत-ए-मुतह्हरा का क्या हुक्म है और ऐसे व्यक्ति से दूर रहना अनिवार्य है या क्या? दलील और विस्तार के साथ लिखें।

जवाब: बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम

[अरबी भाग]: अल्लाह के लिए प्रशंसा है इस्लाम के धर्म पर, और दरूद और सलाम हो सबसे उत्तम मार्गदर्शक पर शांति के मार्ग की ओर, और उनके परिवार और साथियों पर कयामत के दिन तक। उनके माध्यम से हम शांति और सुरक्षा मांगते हैं... [उर्दू भाग]: दीन-ए-इस्लाम (की अता और बख्शिश) पर अल्लाह तआला की प्रशंसा करते हैं और दरूद और सलाम भेजते हैं उस हस्ती पर जो सबसे बेहतर और सलामती की राह दिखाने वाली है, और दरूद व सलाम हो कयामत तक उनकी आल और उनके.. [जारी रहेगा]

पेज 216/720 मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी

الحق المجتلی فی حکم المبتلی ۱۳۲۴ھ (بیماری کے شکار شخص کے حکم سے متعلق واضح و روشن حق)

مسئلہ ۸۴: از گونڈاملک اودھ مرسلہ مسلمانان گونڈا عموماً و حافظ عبدالعزیز صاحب مدرس مدرسہ انجمن اسلامیہ گونڈا ذوالحجہ ۱۳۲۴ھ زید کا خون جوش کھا رہا ہے بلکہ ایک دو اعضاء جسم کے بگڑ گئے اور احتمال ہوتا ہے کہ آئندہ بھی بگڑ جائیں گے، ایسے شخص کی نسبت اطبا حکم دیتے ہیں کہ اس کے ساتھ کھانا پینا اور نشست و برخاست بھی قطعی منع ہے بلکہ اطباء شرع شریف کا بھی ایسا ہی حوالہ دیتے ہیں، دریافت طلب یہ امر ہے کہ شرع شریف کا کیا حکم ہے اور ایسے شخص سے اجتناب لازم ہے یا کیا؟ مدلل و مفصل زیب قلم ہو۔

الجواب: بسم اللہ الرحمن الرحیم

[عربی حصہ]: الحمد للہ علی دین الاسلام والصلوۃ والسلام علی افضل ھاد الی سبیل السلام وعلی آلہ وصحبہ الی یوم القیام بہ نسأل السلام والسلامۃ عن [اردو حصہ]: دین اسلام (کی عطاء وبخشش) پر اللہ تعالیٰ کی تعریف کرتے ہیں اور درود و سلام بھیجتے ہیں اس ہستی پر جو سب سے بہتر اور راہ سلامتی دکھانے والی ہے اور درود و سلام ہو قیامت تک ان کی آل اور ان کے (جاری ہے)

Volume 24 Fatawa Razawiya

Sapi'ul Asqam

Upon the Companions, and we seek safety and protection from evil diseases from Him (Allah). (T)

Ahadith in this chapter appear different outwardly; we will mention them first and then turn towards their Shari'i meanings so that, by the grace of Allah Almighty, the right of investigation in this matter may be fulfilled.

Hadith One: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Beware of the leper as you beware of a lion - narrated by Bukhari in al-Tarikh from Abu Huraira (may Allah be pleased with him). Avoid the leper just as you avoid a lion. (Imam Bukhari narrated it in al-Tarikh from Hazrat Abu Huraira, may Allah be pleased with him. T)

The wording of Ibn Jarir's narration is as follows:

"Flee from the leper as you flee from a lion." - The great Imam Suyuti (may Allah's mercy be upon him) categorized it as 'Hasan' (fair) as per al-Taysir, or 'Sahih' (authentic) as per Fayd al-Qadir. He mentioned it with the first wording in al-Jami' al-Saghir and with the latter wording in al-Jami' al-Kabir.

I say: (I say that) apparently in both, the narrator is Abu Huraira. The hadith (narration) from him in Sahih Bukhari is with the words 'Flee from the leper as you flee from a lion,' and it will follow. The answer is that Izz (Al-Izz bin Abd al-Salam) follows the wording, especially since it is in Bukhari.

Run from the leper just as one runs from a lion. The great Imam Suyuti (may Allah's mercy be upon him), as mentioned in al-Taysir, has praised its status and in Fayd al-Qadir, he explained its authenticity. With the first wording, it was mentioned in al-Jami' al-Saghir, while with the latter wording, it was mentioned in al-Jami' al-Kabir. I say: (I say that) apparently in both, the narrator is Abu Huraira; in Sahih Bukhari, his hadith (narration) is with the words "Farra minal majdhoomi kama tafirra minal asadi" (i.e., flee from the leper in this way).

1. Al-Jami' al-Saghir with reference to Tarikh al-Bukhari from Abu Huraira, Hadith 141, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 1/15; Al-Tarikh al-Kabir, Hadith 460, Dar al-Baz, Makkah al-Mukarramah, 1/155.

2. Al-Jami' al-Kabir by Suyuti with reference to Ibn Jarir, Hadith 13756, Dar al-Fikr, Beirut, 2/265.
3. Al-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir, letter Hamza, under the mentioned Hadith, Maktabah al-Imam al-Shafi'i, Riyadh, 1/30.
4. Fayd al-Qadir Sharh al-Jami' al-Saghir, under Hadith 141, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 2/138.
5. Sahih al-Bukhari, Book of Medicine, Chapter on Leprosy, H.M. Saeed Company, Karachi, 2/850.

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

सपीउल असक़ाम।

सहाबा पर, और हम बुरी बीमारियों से सलामती और हिफ़ाज़त के लिए उसी से दरख्वास्त करते हैं। (त)

इस बाब (अध्याय) में अहादीस ज़ाहिरी तौर पर मुतफ़र्रिक (अलग-अलग) आई हैं, हम पहले उन्हें ज़िक्र करेंगे फिर उनके शरई मायनी (अर्थों) की तरफ़ मुतवज्जे होंगे ताकि तौफीक-ए-इलाही से इस मसले में तहकीक का हक़ अदा हो।

हदीस अव्वल: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

"कोढ़ी से बचो जैसे शेर से बचते हो" - इमाम बुखारी ने तारीख़ में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है। जुज़ामी (कोढ़ी) से बचो जैसे शेर से बचते हैं (इमाम बुखारी ने तारीख़ में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इसे रिवायत किया है। त)

इब्ने जरीर की रिवायत के लफ़्ज़ ये हैं:

"कोढ़ी से भाग जैसे तू शेर से भागता है।" - जलीलुल कद्र इमाम सुयूती (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने जैसा कि 'तयसीर' में है इसकी तहसीन फ़रमाई और 'फ़ैज़ुल क़दीर' में इसकी सेहत (प्रामाणिकता) बयान फ़रमाई। पहले लफ़्ज़ से 'जामे सगीर' में इसका ज़िक्र किया जबकि आख़िरी लफ़्ज़ से 'जामे कबीर' में इसे ज़िक्र किया।

अकुल: (मैं कहता हूँ कि) ज़ाहिरी तौर पर दोनों में रावी अबू हुरैरा हैं, सहीह बुखारी में उनकी हदीस (रिवायत) 'फर्रा मिनल मजज़ूमि कमा तफ़िर्रा मिनल असदि' के लफ़्ज़ों से है। और जवाब ये है कि इज़ (इज़ बिन अब्द अल-सलाम) लफ़्ज़ों की पैरवी करते हैं, बिल-खुसूस जबकि वो बुखारी में हो।

जुज़ामी से भाग जैसे शेर से भागता है। जलीलुल कद्र इमाम सुयूती (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने जैसा कि 'तयसीर' में है इसकी तहसीन फ़रमाई और 'फ़ैज़ुल क़दीर' में इसकी सेहत बयान फ़रमाई। पहले लफ़्ज़ से 'जामे सगीर' में इसका ज़िक्र किया जबकि आख़िरी लफ़्ज़ से 'जामे कबीर' में इसे ज़िक्र किया। अकुल: (मैं कहता हूँ कि) ज़ाहिरी तौर पर दोनों में अबू हुरैरा है, सहीह बुखारी में उसकी

हदीस (रिवायत) "फर्रा मिनल मजज़ूमि कमा तफ़िर्रा मिनल असदि" के अलफ़ाज़ से है (यानी जुज़ामी से इस तरह भाग)।

1. अल-जामे अस-सगीर बहवाला तारीख़-ए-बुखारी अन अबी हुरैरा हदीस 141 दारुल कुतुब अल-इल्मिया बेरुत 1/15, अत-तारीख़ अल-कबीर हदीस 460 दारुल बाज़ मक्का मुकर्रमा 1/155
2. अल-जामे अल-कबीर लिल-सुयूती बहवाला इब्ने जरीर हदीस 13756 दारुल फ़िक्र बेरुत 2/265
3. अत-तयसीर शरह अल-जामे अस-सगीर हर्फ़ुल हमज़ा तहत हदीस मजकूर मकतबा अल-इमाम अल-शाफ़ई रियाज़ 1/30
4. फ़ैज़ुल क़दीर शरह अल-जामे अस-सगीर तहत हदीस 141 दारुल मारिफ़ा बेरुत 2/138
5. सहीह अल-बुखारी किताबुत्तैब बाबूल्जज़ाम एच.एम. सईद कम्पनी कराची 2/850

سپیع الاسقام۔

صحابہ پر، اور ہم بری بیماریوں سے سلامتی اور حفاظت کے لئے اسی سے درخواست کرتے ہیں۔ (ت)

احادیث اس باب میں بظاہر مختلف آئیں، ہم اولاً انہیں ذکر کریں پھر ان کے شرعی معنی کی طرف متوجہ ہوں کہ بتوفیقہ تعالٰی اس مسئلہ میں حق تحقیق ادا ہو۔

حدیث اول: رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

اتقوا المجذوم کما یتقی الاسد-رواہ البخاری فی التاریخ عن ابی ھریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ جذامی سے بچو جیسا شیر سے بچتے ہیں (امام بخاری نے تاریخ میں حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے اسے روایت کیا ہے۔ ت)

روایت ابن جریر کے لفظ یہ ہیں:

فر من المجذوم کفرارك من الاسد - رمز الامام الجلیل السیوطی حسنہ علی ما فی التیسیر او صحتہ علی ما فی فیض القدیر وذکرہ باللفظ الاول فی الجامع الصغیر وباللفظ الاخیر فی الکبیر۔

اقول: وفی کلیھما ظاھراً ابوھریرۃ فَالحدیث عنہ فی صحیح البخاری بلفظ فر من المجذوم کما تفر من الاسد وسیأتی والجواب ان العز ویتتبع اللفظ لاسیما وھو فی البخاری

جذامی سے بھاگ جیسا شیر سے بھاگتا ہے۔ جلیل القدر امام سیوطی (رحمتہ اللہ علیہ) نے جیسا کہ تیسیر میں ہے اس کی تحسین فرمائی اور فیض القدیر میں اس کی صحت بیان فرمائی۔ پہلے لفظ

سے جامع صغیر میں اس کا ذکر کیا جبکہ آخری لفظ سے جامع کبیر میں اسے ذکر کیا۔ اقول: (میں کہتا ہوں کہ) بظاہر دونوں میں ابوہریرہ ہے، صحیح بخاری میں اس کی حدیث (روایت) فر من المجذوم کما تفر من الاسد کے الفاظ سے ہے (یعنی جذامی سے اس طرح بھاگ)

1 الجامع الصغیر بحوالہ تاریخ بخاری عن ابی ہریرہ حدیث ۱۴۱ دار الکتب العلمیہ بیروت ۱/ ۱۵، التاریخ الکبیر حدیث ۴۶۰ دار الباز مکہ المکرمہ ۱/ ۱۵۵ 2 الجامع الکبیر للسیوطی بحوالہ ابن جریر حدیث ۱۳۷۵۶ دار الفکر بیروت ۲/ ۲۶۵ 3 التیسیر شرح الجامع الصغیر حرف الھمزہ تحت حدیث المذکور مکتبہ الامام الشافعی الریاض ۱/ ۳۰ 4 فیض القدیر شرح الجامع الصغیر تحت حدیث ۱۴۱ دار المعرفہ بیروت ۲/ ۱۳۸ 5 صحیح البخاری کتاب الطب باب الجذام ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۸۵۰

Fatawa Rizvia Volume 24

...with additions to the meaning. [Urdu text]: (as you flee from a lion) will come soon, and the answer is that the attribution follows the word, especially since it is narrated in Bukhari with a conceptual addition. (T)

Second Hadith: It is mentioned that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Beware of the leper as one avoids a wild beast; if he descends into one valley, you descend into another." - Narrated by Ibn Sa'd in 'Al-Tabaqat' from 'Abdullah bin Ja'far al-Tayyar (may Allah be pleased with them both) with a weak chain. (T)

Third Hadith: It is mentioned that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Speak to the leper while there is a distance of one or two spears between you and him." - Narrated by Ibn al-Sunni and Abu Nu'aym in 'At-Tibb' from 'Abdullah bin Abi Awfa (may Allah be pleased with him) with a weak chain. I say, however, it has a corroborating narration (shahid) that will follow. (T)

Fourth Hadith: It is mentioned that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Do not stare continuously at lepers." - Narrated by Ibn Majah and Ibn Jarir. I say its chain is sound (salih). (T)

Footnotes: 1. Al-Tabaqat al-Kubra, biography of Mu'ayqib bin Abi Fatimah, Dar Sader Beirut 4/117; Kanz al-Ummal with reference to Ibn Sa'd from Abdullah bin Ja'far, Hadith 28332, Mu'assasat al-Risalah Beirut 10/52. 2. Kanz al-Ummal with reference to Ibn al-Sunni and Abu Nu'aym in At-Tibb, Hadith 28329, Mu'assasat al-Risalah Beirut 10/52. 3. Sunan Ibn Majah, Book of Medicine, Chapter on Leprosy, H.M. Saeed Company Karachi, p. 261.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

...अर्थ के विस्तार के साथ। [उर्दू पाठ]: (जैसे तुम शेर से भागते हो) जल्द ही आएगा, और उत्तर यह है कि संदर्भ शब्द का अनुसरण करता है, विशेष रूप से जब यह बुखारी में वैचारिक विस्तार के साथ वर्णित है। (त)

दूसरी हदीस: इसमें है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "कोढ़ी से बचो जैसे जंगली जानवर से बचा जाता है; यदि वह एक घाटी में उतरे, तो तुम दूसरी में उतरो।" - इब्न साद ने 'तबाकात' में हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र तय्यार (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से कमज़ोर सनद के साथ इसे रिवायत किया है। (त)

तीसरी हदीस: इसमें है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "कोढ़ी से इस तरह बात करो कि तुम्हारे और उसके बीच एक या दो नेज़ों (भालों) की दूरी हो।" - इब्न सुन्नी और अबू नुऐम ने 'अत-तिब्ब' में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से कमज़ोर सनद के साथ इसे रिवायत किया है। मैं कहता हूँ कि इसके लिए एक शाहिद (पुष्टि करने वाली रिवायत) आगे आएगी। (त)

चौथी हदीस: इसमें है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "कोढ़ियों की ओर टकटकी लगाकर न देखो।" - इब्न माजा और इब्न जरीर ने इसे रिवायत किया है। मैं कहता हूँ कि इसकी सनद सालेह (अच्छी) है। (त)

पादलेख: 1. अल-तबाकात अल-कुबरा, मुअयकिब बिन अबी फ़ातिमा की जीवनी, दार सादिर बेरूत 4/117; कंज़ुल उम्माल इब्न साद के हवाले से अब्दुल्लाह बिन जाफ़र से, हदीस 28332, मुअस्ससतुल रिसाला बेरूत 10/52। 2. कंज़ुल उम्माल इब्न सुन्नी और अबू नुऐम के हवाले से 'अत-तिब्ब' में, हदीस 28329, मुअस्ससतुल रिसाला बेरूत 10/52। 3. सुनन इब्न माजा, किताबुत्त तिब्ब, बाबूज जुज़ाम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृष्ठ 261।

مع زیادات معنی۔ جس طرح تم شیر سے بھاگتے ہو) عنقریب آئے گی اور جواب یہ ہے کہ نسبت کرنا لفظ کے تابع ہوتا ہے خصوصاً جبکہ وہ بخاری میں معنوی اضافہ کے ساتھ مروی ہے۔ (ت)

دوسری حدیث: میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں : اتقوا صاحب الجذام کما یتقی السبع اذا ھبط وادیا فاھبطوا غیرہ-رواہ ابن سعد في الطبقات 1 عن عبد اللہ بن جعفر الطیار رضی اللہ تعالی عنھما بسند ضعیف۔ جذامی سے بچو جیسا درندے سے بچتے ہیں، وہ ایک نالے میں اترے تو تم دوسرے میں اترو۔ (ابن سعد نے "طبقات" میں حضرت عبداللہ بن جعفر طیار رضی اللہ تعالٰی عنہما سے سند ضعیف کے ساتھ اسے روایت کیا ہے۔ ت)

تیسری حدیث: میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں : کَلِّمِ المجذوم وبینك وبینہ قدر رمح او رمحین-رواہ ابن السنی 2 وابونعیم في الطب بن عبد اللہ بن ابی اوفی رضی اللہ تعالی عنھما بسند واہ قلت لکن لہ شاھد یاتی۔ مجذوم سے اس طور پر بات کر کہ تجھ میں اس میں ایک دو نیزے کا فاصلہ ہو (ابن سنی اور ابو نعیم نے باب طب میں حضرت عبداللہ بن ابی اوفی رضی اللہ تعالٰی عنہما سے اسے کمزور سند کے ساتھ روایت کیا ہے۔ میں کہتا ہوں کہ اس کے لئے شاہد (تائید کنندہ) آگے آئے گا۔ ت)

چوتھی حدیث: میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں : لاتدیموا النظر الی المجذومین-رواہ ابن ماجۃ 3 و ابن جریر قلت وسندہ حسن صالح۔ مجذوموں کی طرف نگاہ جما کر نہ دیکھو (ابن ماجہ اور ابن جریر نے اسے روایت کیا ہے۔ میں کہتا ہوں کہ اس کی سند صالح ہے۔ ت)

1 الطبقات الکبری ترجمہ معقیب بن ابی فاطمہ دار صادر بیروت ۴/ ۱۱۷، کنزالعمال بحوالہ ابن سعد عن عبد اللہ بن جعفر حدیث ۲۸۳۳۲ مؤسسة الرساله بیروت ۱۰/ ۵۲ 2 کنزالعمال بحوالہ ابن السنی وابونعیم فی الطب حدیث ۲۸۳۲۹ مؤسسة الرساله بیروت ۱۰/ ۵۲ 3 سنن ابن ماجہ کتاب الطب باب الجذام ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۲۶۱

Volume 24 | Fatawa Razvia

In the second narration:

Do not gaze intently at lepers - Narrated by Abu Dawood al-Tayalisi and al-Bayhaqi in al-Sunan with a good chain of narration, all on the authority of Abdullah ibn Abbas (may Allah be pleased with them both). | Do not look intently at lepers (Abu Dawood Tayalisi and al-Bayhaqi have narrated this in al-Sunan with a good chain, and they all narrated it on the authority of Hazrat Abdullah ibn Abbas (may Allah be pleased with them both). - T)

In the fifth Hadith: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

Do not keep staring at lepers; when you speak to them, let there be a distance of a spear's length between you and them. (Narrated by Ahmad, Abu Ya'la, and al-Tabarani in 'al-Kabir', and Ibn Jarir from Fatima al-Sughra from her father, the noble martyr, the younger Rehana, and Ibn Asakir from her from him and from Ibn Abbas, may Allah be pleased with them all.) | Do not keep your gaze fixed on lepers; when you talk to them, there should be a distance of one spear's length between you and them. (Imam Ahmad, Abu Ya'la, and al-Tabarani in 'al-Kabir', and Ibn Jarir from Syeda Fatima al-Sughra, who narrated it from her venerable father, the martyr Syed Rehana al-Asghar, and Ibn Asakir narrated from her, from her father and from Ibn Abbas as well. May Allah be pleased with them all. - T)

In the sixth Hadith: When the delegation of Thaqif presented themselves in the noble presence and pledged allegiance on his blessed hand, one of them had this affliction (leprosy). The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) sent word to him:

Go back, for we have already accepted your pledge. - Narrated by Ibn Majah | Go back, your pledge is done, meaning oral is sufficient.

---

1 Al-Sunan al-Kubra by al-Bayhaqi, Book of Marriage, Chapter: A sick person should not be brought to a healthy one, etc., Dar al-Ma'rifah, Beirut 7/218; Musnad Abi Dawud al-Tayalisi, Hadith 2601, Dar al-Ma'rifah, Beirut p. 339. 2 Musnad Imam Ahmad bin Hanbal from Ali (may Allah honor his face), Dar al-Fikr, Beirut 1/87; Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 2897, Al-Maktabah al-Faysaliyyah, Beirut 3/131-132; Kanz al-Ummal with reference to Jam' al-Tibb and Ibn Jarir from Fatima, etc., Hadith 28339, Mu'assasat al-

Risalah, Beirut 10/55-56. 3 Sunan Ibn Majah, Book of Medicine, Chapter on Leprosy, H.M. Saeed Company, Karachi p. 261.

जिल्द २४ | फ़तावा रज़विया

दूसरी रिवायत में है:

कोढ़ियों (जज़ामियों) की तरफ पूरी निगाह न डालो - अबू दाऊद तयालिसी और बैहक़ी ने 'अस-सुनन' में सनद हसन के साथ इसे रिवायत किया है, और इन सब ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) के हवाले से इसे रिवायत किया है। | कोढ़ियों की तरफ पूरी निगाह न डालो (अबू दाऊद तयालिसी और बैहक़ी ने 'अस-सुनन' में सनद हसन के साथ इसे रिवायत किया है और इन सब ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के हवाले से इसे रिवायत किया है। - त)

पाँचवीं हदीस: में है रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

कोढ़ियों की तरफ नज़र न जमाओ; जब उनसे बात करो तो तुम्हारे और उनके बीच एक नेज़े (भाले) का फ़ासला हो। (इमाम अहमद, अबू यअला और तबरानी ने 'अल-कबीर' में और इब्न जरीर ने फ़ातिमा सुग़रा से, उन्होंने अपने वालिद बुज़ुर्गवार सैयदे शहीद रैहाना असग़र से इसे रिवायत किया है, और इब्न असाकिर ने उनसे, उन्होंने अपने वालिद और इब्न अब्बास से भी इसे रिवायत किया है। अल्लाह तआला उन सब से राज़ी हो।) | कोढ़ियों की तरफ नज़र न जमाओ, उनसे बात करो तो तुम में और उनमें एक-एक नेज़े का फ़ासला हो। (इमाम अहमद, अबू यअला और तबरानी ने 'अल-कबीर' में और इब्न जरीर ने सैयदा फ़ातिमा सुग़रा से, उन्होंने अपने वालिद बुज़ुर्गवार सैयदे शहीद रैहाना असग़र से इसे रिवायत किया है, और इब्न असाकिर ने उनसे, उन्होंने अपने वालिद और इब्न अब्बास से भी इसे रिवायत किया है। अल्लाह तआला उन सब से राज़ी हो। - त)

छठी हदीस: में है जब वफ़्दे सक़ीफ़ दरबारे अक़दस में हाज़िर हुए और दस्त-ए-अनवर पर बैअतें कीं, तो उनमें एक साहब को यह आरज़ा (कोढ़ की बीमारी) थी। हुज़ूरे अक़दस (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने उन्हें कहला भेजा:

वापस जाओ, तुम्हारी बैअत हो गई। - इब्न माजा ने रिवायत किया | वापस जाओ तुम्हारी बैअत हो गई यानी ज़ुबानी काफ़ी है।

---

1 अल-सुनन अल-कुब्रा लिल-बैहक़ी, किताबुन निकाह, बाब: ला युवरदु मुमर्रिज़ुन अला मुसिहिन, अलख़, दारुल मारिफ़ा, बैरूत, ७/२१८; मुसनद अबी दाऊद अल-तयालिसी, हदीस २६०१, दारुल

मारिफ़ा, बैरूत, पृ. ३३९। 2 मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल, अली कर्रमल्लाहु वज्हहु से, दारुल फ़िक्र, बैरूत, १/८७; अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस २८९७, अल-मकतबा अल-फ़ैसलिया, बैरूत, ३/१३१-१३२; कंज़ुल उम्माल, जमअ् तिब और इब्न जरीर के हवाले से फ़ातिमा अलख़ से, हदीस २८३३९, मुअस्ससा अर-रिसाला, बैरूत, १०/५५-५६। 3 सुनन इब्न माजा, किताबुत् तिब, बाबुल् जुज़ाम, एच. एम. सईद कंपनी, कराची, पृ. २६१।

पेज २१९ ऑफ़ ७२०

دوسری روایت میں ہے:

لا تحدوا النظر الی المجذومین-رواہ ابوداؤد الطیالسی والبیھقی فی السنن بسند حسن ایضا کلھم عن عبد اللہ بن عباس رضی اللہ تعالٰی عنھما۔ | جذامیوں کی طرف پوری نگاہ نہ کرو (ابوداؤد طیالسی اور بیہقی نے السنن میں سند حسن کے ساتھ اسے روایت کیا ہے اور ان سب نے حضرت عبداللہ ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما کے حوالہ سے اسے روایت کیا ہے۔ ت)

پانچویں حدیث: میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

لا تدیموا النظر الی المجذومین اذا کلمتموھم فلیکن بینکم وبینھم قدر رمح-رواہ احمد وابویعلٰی و الطبرانی فی الکبیر وابن جریر عن فاطمۃ الصغری عن ابیھا السید الشھید الریحانۃ الاصغر وابن عساکر عنھا عنہ وعن ابن عباس معارضاً اللہ تعالٰی عنھم جمیعاً۔ | جذامیوں کی طرف نظر نہ جماؤ ان سے بات کرو تو تم میں ان میں ایک ایک نیزے کا فاصلہ ہو۔ (امام احمد، ابویعلی اور طبرانی نے "الکبیر" میں اور ابن جریر نے سیدہ فاطمہ صغری سے، انہوں نے اپنے والد بزرگوار سید شہید ریحانہ اصغر سے اسے روایت کیا ہے، اور ابن عساکر نے ان سے انہوں نے اپنے والد اور ابن عباس سے بھی اسے روایت کیا ہے۔ اللہ تعالٰی ان سب سے راضی ہو۔ ت)

چھٹی حدیث: میں ہے جب وفد ثقیف حاضرِ بارگاہِ اقدس ہوئے اور دستِ انور پر بیعتیں کیں ان میں ایک صاحب کو یہ عارضہ تھا حضورِ اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ان سے فرما بھیجا:

ارجع فقد بایعناک-رواہ ابن ماجۃ | واپس جاؤ تمہاری بیعت ہوگئی یعنی زبانی کافی ہے

1 السنن الکبرٰی للبیهقی کتاب النکاح باب لایورد ممرض علی مصح الخ دار المعرفة بیروت ۷ / ۲۱۸ ، مسند ابی داؤد الطیالسی حدیث ۲۶۰۱ دار المعرفة بیروت ص ۳۳۹ 2 مسند امام احمد بن حنبل عن علی کرم الله وجهہ دار الفکر بیروت ۱ / ۸۷ ، المعجم الکبیر حدیث ۲۸۹۷ المکتبة الفیصلیة بیروت ۳ / ۱۳۱-۱۳۲، کنز العمال بحوالہ جمع طب و ابن جریر عن فاطمہ الخ حدیث ۲۸۳۳۹ مؤسسة الرسالہ بیروت ۱۰ / ۵۶-۵۵ 3 سنن ابن ماجہ کتاب الطب باب الجذام ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۲۶۱

Fatawa Rizvia, Volume 24

I say: With a good chain of narration on the authority of a man from the family of Al-Sharid, named Amr, from his father (may Allah be pleased with him). Ibn Jarir narrated it and named his father Al-Sharid, who is Al-Sharid bin Suwaid Al-Thaqafi. The great Imam Al-Suyuti mentioned it in the first citation at the beginning of 'Al-Jami' al-Kabir', and in the latter citation in the 'Masanid' of 'Jam' al-Jawami'. I say: Rather, the Hadith is in 'Sahih Muslim' with the wording: 'We have accepted your pledge of allegiance, so return,' exactly as Ibn Jarir's wording is. I have experienced many similar instances with this Imam in many of his noble works, such as the three 'Jami's', 'Al-Khasa'is al-Kubra', and others. His intention (may Allah have mercy on him) was to collect for people like us, whose reach is limited, what we could rarely find. If we restrict ourselves only to what they provided and forget about the commonly circulated reports, then the shortcoming is ours, not his (may Allah have mercy on him).

Not shaking hands does not invalidate the pledge of allegiance (bay'at). (Narrated by Muhaddith Ibn Majah. I say that it is narrated with a good chain from a person of the family of Sharid, and he is called Amr; he narrated from his father (may Allah be pleased with him). Ibn Jarir narrated it and mentioned the name of Sharid's father, i.e., Sharid bin Suwaid Al-Thaqafi. The high-ranking Imam, Imam Al-Suyuti, mentioned it in the first citation at the beginning of 'Al-Jami' al-Kabir' and in the second citation in the 'Masanid' of 'Jam' al-Jawami'. I say: rather, in the Hadith of 'Sahih Muslim', these words appear: 'Go back, indeed we have accepted your pledge of allegiance,' just as are the words of Ibn Jarir; the words of both are identical (no significant difference is found). We have seen many such examples from this Imam in many of his noble works and have experienced it, such as his three 'Jami's', 'Khasa'is al-Kubra', and other works. Thus, the purpose of the mentioned Imam (may Allah's mercy be upon him) was to gather all those things (unify them) to which people of limited vision like us have very little access. Then, if we were content only with what he provided and forgot the commonly available texts, it would be our fault, not the fault of the esteemed scholar; may Allah have mercy on them. -T)

Seventh Hadith: In it, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) saw a leper coming and said to Anas (may Allah be pleased with him):

"O Anas! Flip the bedding, lest he steps on it."

"O Anas! Flip the bedding, lest he (places) his (foot) on this."

1 Sahih Muslim, Book of Peace, Chapter on Avoiding Lepers, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2 / 233

फतावा रिज़विया, जिल्द 24

मैं कहता हूँ: अल-शरीद के परिवार के एक व्यक्ति, जिसे अम्र कहा जाता है, से एक अच्छी सनद (प्रमाण) के साथ, उनके पिता (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के अधिकार पर। इब्न जरीर ने भी इसे वर्णित किया और उनके पिता का नाम शरीद बताया, जो शरीद बिन सुवैद अल-थकफी हैं। महान इमाम अल-सुयुति ने 'अल-जामी अल-कबीर' की शुरुआत में पहली निकासी में और बाद में 'जम अल-जवामी' के मसानिद में इसका उल्लेख किया है। मैं कहता हूँ: बल्कि हदीस 'सहीह मुस्लिम' में इन शब्दों के साथ है: 'हमने आपका बैत (प्रतिज्ञा) स्वीकार कर लिया है, इसलिए वापस चले जाओ', जैसा कि इब्न जरीर के शब्द बिल्कुल समान हैं। मैंने इस इमाम के साथ उनकी कई महान रचनाओं में कई बार ऐसी ही चीजों का अनुभव किया है, जैसे कि तीनों 'जामी', 'अल-खसाइस अल-कुबरा' और अन्य। उनका उद्देश्य (अल्लाह उन पर दया करे) हमारे जैसे कम दृष्टि वाले लोगों के लिए उन चीजों को इकट्ठा करना था जिन तक हमारी पहुंच कम होती है। यदि हम उनके द्वारा प्रदान की गई सामग्री तक ही सीमित रहे और प्रचलित रिपोर्टों को भूल गए, तो यह हमारी कमी होगी, उनकी नहीं (अल्लाह उन पर दया करे)।

हाथ न मिलाना बैत (प्रतिज्ञा) के लिए बाधा नहीं है। (मुहद्दिस इब्न माजाह ने इसे रिवायत किया है। मैं कहता हूँ कि सनद हसन के साथ शरीद के खानदान के एक व्यक्ति से इसे रिवायत किया गया है और उसे अम्र कहा जाता है, उसने अपने पिता से रिवायत की (अल्लाह उनसे खुश हो) और इब्न जरीर ने इसे रिवायत किया और शरीद के पिता का नाम भी ज़िक्र किया, यानी शरीद बिन सुवैद थकफी। जलील-उश-शान इमाम, इमाम सुयुति ने पहली तखरीज में जामे कबीर की इब्तिदा में और दूसरी तखरीज में जम-उल-जवामे के मसानिद में इसका ज़िक्र फरमाया है। मैं कहता हूँ बल्कि सहीह मुस्लिम की हदीस में ये अल्फाज़ आए हैं कि 'वापस हो जाओ बेशक हमने तुम्हें बैत कर लिया', जैसा कि इब्न जरीर के अल्फाज़ हैं, दोनों के अल्फाज़ यकसां हैं (कोई खास फर्क नहीं पाया जाता)। हमने इस इमाम पर उनकी बहुत सी तसानीफ शरीफा में इस तरह की बहुत सी मिसालें देखी हैं और तजुर्बा किया है जैसा कि उनकी तीनों जवामे, खसाइस कुबरा और उनके अलावा दूसरी तसानीफ, पस इससे इमाम मौसूफ रहमतुल्लाह तआला का मकसद इन सब चीज़ों को जमा कर देना है (यकजा करना) कि जिन तक हम जैसे कोताह नज़र लोगों के हाथों की बहुत कम रसाई होती है। फिर अगर हमने उनके इफादा पर इक्तिफा किया, और हम मुतदावलात को भूल गए तो ये हमारा कुसूर होगा न कि अल्लामा मौसूफ का, अल्लाह तआला इन पर रहम फरमाए। त)

सातवीं हदीस: इसमें है कि हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एक कोढ़ी (कुष्ठ रोगी) को आते देखा और अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से फरमाया:

"ऐ अनस! बिछौना पलट दो, ताकि वह उस पर पैर न रखे।"

"ऐ अनस! बिछौना पलट दो कहीं यह इस पर अपना (कदम न रख दे)"

---

1 सहीह मुस्लिम, किताबुस सलाम, बाब: कोढ़ी से बचना, कदीमी कुतुब खाना कराची २ / २३३

فتاوی رضویہ، جلد ۲۴

قلت بسند حسن عن رجل من ال الشرید یقال لہ عمرو عن ابیہ رضی اللہ تعالی عنہ ورواہ ابن جریر فسمی اباہ الشرید وھو الشرید بن سوید الثقفی ذکر الامام الجلیل السیوطی بالتخریج الاول فی اول الجامع الکبیر وبالآخر فی مسانید جمع الجوامع اقول: بل الحدیث في صحیح مسلم بلفظ انا قد بایعناك فارجع کما ھو لفظ ابن جریر سواء بسواء وقد جربت مثلہ کثیرا علی ھذا الامام في کثیر من تصانیفہ الشریفۃ کالجوامع الثلثہ والخصائص الکبری وغیرھا وکان مقصودہ رحمہ اللہ تعالی ان یجمع لامثالنا القاصرین ما قلما تصل الیہ ایدینا فان اقتصرنا علی ما افادوذھلنا عن المتداولات فالقصور منا لا منہ رحمہ اللہ تعالی۔

مصافحہ نہ ہونا مانع بیعت نہیں۔ (محدث ابن ماجہ نے اسے روایت کیا ہے۔ میں کہتا ہوں کہ سند حسن کے ساتھ آلِ شرید کے ایک شخص سے اسے روایت کیا ہے اور اس کو عمرو کہا جاتا ہے اس نے اپنے باپ سے روایت کی (اللہ تعالیٰ اس سے راضی ہو) اور ابن جریر نے اسے روایت کیا اور شرید کے باپ کا نام بھی ذکر کیا یعنی شرید بن سوید ثقفی، جلیل الشان امام، امام سیوطی نے پہلی تخریج میں جامع کبیر کی ابتداء میں اور دوسری تخریج میں جمع الجوامع کے مسانید میں اس کو ذکر فرمایا ہے۔ میں کہتا ہوں بلکہ صحیح مسلم کی حدیث میں یہ الفاظ آئے ہیں کہ واپس ہو جاؤ بیشک ہم نے تمہیں بیعت کرلیا، جیسا کہ ابن جریر کے الفاظ ہیں، دونوں کے الفاظ یکساں ہیں (کوئی خاص فرق نہیں پایا جاتا) ہم نے اس امام پر ان کی بہت سی تصانیف شریفہ میں اس طرح کی بہت سی مثالیں دیکھی ہیں اور تجربہ کیا ہے جیسا کہ ان کی تینوں جوامع، خصائص کبری اور ان کے علاوہ دوسری تصانیف، پس اس سے امام موصوف رحمۃ اللہ تعالیٰ کا مقصد ان سب چیزوں کو جمع کر دینا ہے (یکجا کرنا) کہ جن تک ہم جیسے کوتاہ نظر لوگوں کے ہاتھوں کی بہت کم رسائی

ہوتی ہے۔ پھر اگر ہم نے ان کے افادہ پر اکتفاء کیا، اور ہم متداولات کو بھول گئے تو یہ ہمارا قصور ہوگا نہ کہ علامہ موصوف کا، اللہ تعالیٰ ان پر رحم فرمائے۔ ت)

ساتویں حدیث: میں ہے حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ایک مجذوم کو آتے دیکھا انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے فرمایا:

یا انس ائن البساط لا یطأ علیه

اے انس! بچھونا الٹ دو کہیں یہ اس پر اپنا

---

1 صحیح مسلم کتاب السلام باب اجتناب المجذوم قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۲۳۳

Fatawa Ridawiyya Volume 24

...with his foot. (Khatib Baghdadi narrated it from him, i.e., Hazrat Anas, may Allah be pleased with him. And there is something in the heart regarding it about turning over the bedding. And Allah Almighty knows best (all matters). (T))

Eighth Hadith: It is mentioned that the Messenger of Allah (may peace and blessings of Allah be upon him) passed through the valley of 'Usfan between Makkah the Great and Madinah the Radiant. He found some people afflicted with leprosy there; he accelerated his mount and left that place, saying:

"If any disease were contagious, it would be this." Narrated by Ibn an-Najjar[2] from Ibn Umar (may Allah be pleased with them both). According to Ibn Adi in 'al-Kamil'[2], it is Marfu' (attributed to the Prophet) without mentioning the story, and it is weak. (T) If any disease spreads by contagion, then it is this. (Ibn Najjar has narrated it on the authority of Hazrat Abdullah bin Umar, may Allah be pleased with them both. According to Ibn Adi in 'al-Kamil', this is Marfu' without mentioning the incident, and it is weak. (T))

Ninth Hadith: It is mentioned that a woman with leprosy was performing circumambulation (Tawaf) of the Great Ka'bah. The Commander of the Faithful, Farooq al-A'zam (may Allah be pleased with him), said to her:

"O handmaiden of Allah! Do not harm people. It would be better if you stayed in your house." Narrated by Malik and al-Khara'iti in 'I'tilal[3] al-Qulub' from Ibn Abi Mulaykah. O handmaiden of Allah! Do not cause pain to people. It would be good if you remained sitting in your house. Then she did not come out of the house. (Imam Malik and al-Khara'iti have narrated it in 'I'tilal al-Qulub' from Hazrat Ibn Abi Mulaykah. T)

Tenth Hadith: It is mentioned that:

"Indeed, Umar bin al-Khattab said to Mu'ayqib (may Allah be pleased with them both): 'Sit away from me at the distance of a spear's length,' and he was..." Mu'ayqib (may Allah be pleased with him) was among the people of Badr (and the early Migrants, may Allah be pleased with them). He had this disease. The Commander of the Faithful, Umar Farooq...

[1] Tarikh Baghdad by al-Khatib, Biography of Abdul Rahman bin al-Abbas, 5332, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 10/296. [2] Kanz al-Ummal, with reference to Ibn Adi, Hadith

28333, Mu'assasat ar-Risalah, Beirut, 10/52. [3] Kanz al-Ummal, with reference to Malik and al-Khara'iti in 'I'tilal al-Qulub', Hadith 28504, Mu'assasat ar-Risalah, Beirut, 10/96.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

...अपना पैर न रखे (खतीब बगदादी ने उनसे यानी हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इसे रिवायत किया है और इसके बारे में बिस्तरा पलटने के मुताल्लिक कुछ बात है। और अल्लाह तआला ही (तमाम मामलों को) बेहतर जानता है। (त))

आठवीं हदीस: इसमें है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा के दरमियान वादी-ए-असफ़ान से गुज़रे। वहाँ कुछ लोग कोढ़ (जुज़ाम) के मरीज़ पाए गए, आपने अपनी सवारी को तेज़ किया और वहाँ से तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया:

"अगर कोई बीमारी लग जाने वाली होती तो वह यही है।" इब्ने नज्जार[2] ने इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से इसे रिवायत किया है। इब्ने अदी के नज़दीक 'अल-कामिल'[2] में वाक़िया ज़िक्र किए बिना यह 'मरफ़ूअ' है और वह ज़ईफ़ (कमज़ोर) है। (त) अगर कोई बीमारी उड़कर लगती है तो वह यही है। (इब्ने नज्जार ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के हवाले से इसे रिवायत किया है और इब्ने अदी के नज़दीक 'अल-कामिल' में वाक़िया ज़िक्र किए बिना यह मरफ़ूअ है और वह ज़ईफ़ है। (त))

नौवीं हदीस: इसमें है कि एक कोढ़ी औरत काबा मुअज़्ज़मा का तवाफ़ कर रही थी, अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़-ए-आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उससे फ़रमाया:

"ऐ अल्लाह की बंदी! लोगों को तकलीफ़ न दो। बेहतर हो कि तुम अपने घर में बैठी रहो।" इमाम मालिक और ख़रायती ने 'इतिलाल[3] उल क़ुलूब' में इब्ने अबी मुलैका से इसे रिवायत किया है। ऐ अल्लाह की बंदी! लोगों को ईज़ा (दुख) न दे, अच्छा हो कि तुम अपने घर में बैठी रहो। फिर वह घर से नहीं निकलीं। (इमाम मालिक और अल-ख़रायती ने इतिलालुल क़ुलूब में हज़रत इब्ने अबी मुलैका से इसे रिवायत किया है। त)

दसवीं हदीस: इसमें है कि:

"बेशक उमर बिन अल-ख़त्ताब ने मुअय़क़ीब (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) से फ़रमाया: मुझसे एक नेज़े की दूरी पर बैठो।" और वह... मुअय़क़ीब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो कि अहले बदर (और मुहाजिरीन-ए-साबिक़ीन-ए-अव्वलीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) में से थे, उन्हें यह मर्ज़ था। अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक़...

[1] तारीख़ बग़दाद लिल-ख़तीब, तर्जमा अब्दुर्रहमान बिन अल-अब्बास 5332, दारुल कुतुब अल-अरबी, बेरूत 10/296. [2] कन्ज़ुल उम्माल, बहवाला इब्ने अदी, हदीस 28333, मुअस्ससतुर्-रिसालाह, बेरूत 10/52. [3] कन्ज़ुल उम्माल, बहवाला मालिक वल-ख़रायती फ़ी इतिलालुल क़ुलूब, हदीस 28504, मुअस्ससतुर्-रिसालाह, बेरूत 10/96.

بقدمہ۔رواہ الخطیب[1] عنہ رضی اللہ تعالٰی عنہ وفی القلب منہ شیئی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ پاؤں نہ رکھ دے (خطیب بغدادی نے ان سے یعنی حضرت انس رضی اللہ تعالٰی عنہ سے اسے روایت کیا ہے اور اس سے بچھونا الٹ دینے کے متعلق کچھ بات ہے اور اللہ تعالٰی ہی (تمام معاملات کو) بہتر جانتا ہے۔ (ت)

آٹھویں حدیث: میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم مکہ معظمہ ومدینہ منورہ کے درمیان وادی عسفان پر گزرے وہاں کچھ لوگ مجذوم پائے مرکب کو تیز چلا کر وہاں سے تشریف لے گئے اور فرمایا :

ان کان شیئ من الداء یعدی فھو ھذا۔رواہ ابن النجار[2] عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنھما والمرفوع منھ عنہ ابن عدی فی الکامل[2] من دون ذکر القصۃ وھو ضعیف۔ اگر کوئی بیماری اڑ کر لگتی ہے تو وہ یہی ہے(ابن نجار نے حضرت عبد اللہ ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما کے حوالے سے اسے روایت کیا ہے اور ابن عدی کے نزدیک "الکامل" میں واقعہ ذکر کئے بغیر یہ مرفوع ہے اور وہ ضعیف ہے۔ (ت)

نویں حدیث: میں ہے ایک جذامی عورت کعبہ معظمہ کا طواف کررہی تھی امیر المومنین فاروق اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ نے اس سے فرمایا:

یآمۃ اللہ لاتؤذی الناس لوجلست فی بیتک۔رواہ مالك والخراطئی فی اعتلال[3] القلوب عن ابن ابی ملیکۃ۔ اے اللہ کی لونڈی ! لوگوں کو ایذا نہ دے اچھا ہو کہ تم اپنے گھر میں بیٹھی رہو، پھر وہ گھر سے نہ

نکلیں (امام مالک اور الخرائطی نے اعتلال القلوب میں حضرت ابن ابی ملیکہ سے اسے روایت کیا ہے۔ ت)

دسویں حدیث میں ہے:

ان عمر بن الخطاب قال للمعیقیب رضی اللہ تعالیٰ عنہما اجلس منی قید رمح وکان معیقیب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہ اہل بدر (و مہاجرین سابقین اولین رضی اللہ تعالیٰ عنہم) سے ہیں انہیں یہ مرض تھا امیر المومنین عمر فاروق

1 تاریخ بغداد للخطیب ترجمہ عبدالرحمن بن العباس ۵۳۳۲ دار الکتب العربی بیروت ۱۰/ ۲۹۶ 2 کنز العمال بحوالہ ابن عدی حدیث ۲۸۳۳۳ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰/ ۵۲ 3 کنز العمال بحوالہ مالک والخرائطی فی اعتلال القلوب حدیث ۲۸۵۰۴ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰/ ۹۶

Fatawa Razawiyya - Vol 24

[Box 1] Left Column (Arabic): "Because of that disease, he was a spear's length away. Narrated by Ibn Jarir[1] from Al-Zuhri. I say it is 'Mursal' (disconnected chain) and not authentic. - Translator" Right Column (Urdu Translation): "The Great (Umar) (Allah be pleased with him) said to him: Sit at the distance of one spear from me. (Imam Ibn Jarir has narrated this from Al-Zuhri; I say that this is 'Mursal' and not authentic. - Translator)"

Upcoming Hadiths are contrary to this.

Eleventh Hadith: It is mentioned that the Leader of the Believers, Umar Farooq the Great (Allah be pleased with him), invited some people for breakfast. Among them was Mu'ayqib (Allah be pleased with him). They were all included in the meal, and the Leader of the Believers said to him:

[Box 2] Left Column (Arabic): "Take from what is near you and from your side. If it were someone other than you who had what you have, he would not have eaten from one bowl with me, and there would have been a spear's length between me and him. - Narrated by Ibn Sa'd[2] and Ibn Jarir from the jurist of Medina, Kharijah bin Zaid (Allah be pleased with them both)." Right Column (Urdu Translation): "Take from what is near you from your side. If someone other than you had this disease, he would not have eaten from the same plate with me, and there would have been a distance of one spear between me and him. (Ibn Sa'd and Ibn Jarir have narrated this from the jurist of Medina, Kharijah bin Zaid (Allah be pleased with them both). - Translator)"

Twelfth Hadith: It is mentioned that dinner was served at the table of the Leader of the Believers, Farooq the Great (Allah be pleased with him). People were present. The Leader of the Believers came out to partake in the meal with them and said to Mu'ayqib bin Abi Fatima al-Dusi, a companion who migrated to Abyssinia (Allah be pleased with him):

[Box 3] Left Column (Arabic): "Come close and sit. By Allah, if someone other than you had what you have, he would not have sat closer to me than a spear's length.[3] - Narrated..." Right Column (Urdu Translation): "Come close and sit. By God, if it were someone else, he would not have sat near me at a distance less than a spear. (Ibn Sa'd and Ibn Jarir have [narrated] it from the jurist of Medina, Kharijah bin..."

---

[1] Kanz al-Ummal, with reference to Ibn Jarir, Hadith 28299, Mu’assasat al-Risalah, Beirut, 10/92. [2] Kanz al-Ummal, with reference to Ibn Sa'd and Ibn Jarir, Hadith 28501, Mu’assasat al-Risalah, Beirut, 10/95; Al-Tabaqat al-Kubra, biography of Mu'ayqib bin Abi Fatima al-Dusi, Dar Sadir, Beirut, 4/118. [3] Al-Tabaqat al-Kubra, biography of Mu'ayqib bin Abi Fatima al-Dusi, Dar Sadir, Beirut, 4/118; Kanz al-Ummal, with reference to Ibn Sa'd and Ibn Jarir, Hadith 28502, Mu’assasat al-Risalah, Beirut, 10/92.

फतावा रज़विया - जिल्द 24

[बॉक्स 1] बायां कॉलम (अरबी): "उस बीमारी के कारण, वह एक भाले की दूरी पर था। इब्न जरीर[1] ने अल-ज़ुहरी से इसे रिवायत किया है। मैं कहता हूँ कि यह 'मुरसल' (कटा हुआ सिलसिला) है और सही नहीं है। - अनुवादक" दायां कॉलम (उर्दू अनुवाद): "अज़म (उमर) रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे फ़रमाया: मुझसे एक नेज़े (भाले) के फ़ासले पर बैठो। (इमाम इब्न जरीर ने ज़ुहरी से इसे रिवायत किया है; मैं कहता हूँ कि यह मुरसल है और सही नहीं है। - अनुवादक)"

आगे आने वाली हदीसें इसके विपरीत हैं।

ग्यारहवीं हदीस: इसमें उल्लेख है कि अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक़ अज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने सुबह कुछ लोगों की दावत की। उनमें मुईक़ीब रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। वे सब भोजन में शामिल हुए, और अमीरुल मोमिनीन ने उनसे फ़रमाया:

[बॉक्स 2] बायां कॉलम (अरबी): "अपने पास से और अपनी तरफ़ से लो। अगर तुम्हारे अलावा कोई और होता जिसे वह बीमारी होती जो तुम्हें है, तो वह मेरे साथ एक बर्तन में न खाता, और मेरे और उसके बीच एक भाले की दूरी होती। - इब्न साद[2] और इब्न जरीर ने मदीना के फ़क़ीह ख़ारिजा बिन ज़ैद (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो) से रिवायत किया है।" दायां कॉलम (उर्दू अनुवाद): "अपने करीब से अपनी तरफ़ से लीजिये। अगर आपके सिवा कोई और इस मर्ज़ (बीमारी) का होता तो मेरे साथ एक रकाबी (बर्तन) में न खाता और मुझमें और उसमें एक नेज़े का फ़ासला होता। (इब्न साद और इब्न जरीर ने मदीना के फ़क़ीह ख़ारिजा बिन ज़ैद (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो) से इसे रिवायत किया है। - अनुवादक)"

बारहवीं हदीस: इसमें उल्लेख है कि अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़ अज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के दस्तरख़्वान पर शाम का भोजन किया गया। लोग उपस्थित थे। अमीरुल मोमिनीन उनके साथ भोजन करने के लिए बाहर आए और मुहाजिर-ए-हबशा सहाबी, मुईक़ीब बिन अबी फ़ातिमा अल-दूसी रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया:

[बॉक्स 3] बायां कॉलम (अरबी): "निकट आओ और बैठो। अल्लाह की कसम, अगर तुम्हारे अलावा किसी और को वह बीमारी होती जो तुम्हें है, तो वह मुझसे एक भाले की दूरी से कम पर न बैठता।[3] - रिवायत..." दायां कॉलम (उर्दू अनुवाद): "करीब आइए और बैठिये। खुदा की कसम, दूसरा होता तो

एक नेज़े से कम फासले पर मेरे पास न बैठता। (इब्न साद और इब्न जरीर ने इसे मदीना के फकीह खारिजा बिन..."

---

[1] कंज़ुल उम्माल, इब्न जरीर के हवाले से, हदीस 28299, मुअस्ससतुल रिसाला, बेरूत, 10/92। [2] कंज़ुल उम्माल, इब्न साद और इब्न जरीर के हवाले से, हदीस 28501, मुअस्ससतुल रिसाला, बेरूत, 10/95; अत-तबाकात अल-कुबरा, मुईकीब बिन अबी फातिमा अल-दूसी की जीवनी, दार सादिर, बेरूत, 4/118। [3] अत-तबाकात अल-कुबरा, मुईकीब बिन अबी फातिमा अल-दूसी की जीवनी, दार सादिर, बेरूत, 4/118; कंज़ुल उम्माल, इब्न साद और इब्न जरीर के हवाले से, हदीस 28502, मुअस्ससतुल रिसाला, बेरूत, 10/92।

[پہلا خانہ] به ذلك الداء وكان بدرياً۔ رواه ابن جرير' عن الزهرى قلت مرسل ولا يصح۔ | اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ نے ان سے فرمایا: مجھ سے ایک نیزے کے فاصلے پر بیٹھے (امام ابن جریر نے زہری سے اسے روایت کیا ہے، میں کہتا ہوں کہ یہ مرسل ہے اور صحیح نہیں۔ت)

آئندہ حدیثیں اس کے خلاف ہیں۔

گیارہویں حدیث : میں ہے امیر المومنین عمر فاروق اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ نے صبح کو کچھ لوگوں کی دعوت کی ان میں معیقیب رضی اللہ تعالٰی عنہ بھی تھے وہ سب کے ساتھ کھانے میں شریک کئے گئے اور امیر المومنین نے اُن سے فرمایا :

[دوسرا خانہ] خذ مما يليلك ومن شقك فلوكان غيرك ما اكلنى فى صحفة ولكان بينى وبينہ قيد رمح ۔ رواه ابن سعد[2] و ابن جرير عن فقيه المدينة خارجة بن زيد رضى الله تعالٰى عنهما۔ | اپنے قریب سے اپنی طرف سے لیجئے اگر آپ کے سوا کوئی اور اس مرض کا ہوتا تو میرے ساتھ ایک رکابی میں نہ کھاتا اور مجھ میں اور اس میں ایک نیزے کا فاصلہ ہوتا (ابن سعد اور ابن جریر نے فقیہ مدینہ خارجہ بن زید رضی اللہ تعالٰی عنہما سے اسے روایت کیا ہے۔ت)

بارہویں حدیث : میں ہے امیر المومنین فاروق اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کے دستر خوان پر شام کو کھانا کھایا گیا لوگ حاضر تھے امیر المومنین برآمد ہوئے کہ ان کے ساتھ کھانا تناول فرمائیں ، معیقیب بن ابی فاطمہ دوسی صحابی مہاجر حبشہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے فرمایا:

[تیسرا خانہ] ادن فاجلس وایم اللہ لوکان غیرك بہ الذی بك لما جلس منی ادنی من قید رمح 3- رواہ | قریب آئیے بیٹھئے خدا کی قسم دوسرا ہوتا تو ایک نیزے سے کم فاصلے پر میرے پاس نہ بیٹھتا۔ (ابن سعد اور ابن جریر نے اسے فقیہ مدینہ خارجہ بن

'کنز العمال بحوالہ ابن جریر حدیث ۲۸۲۹۹ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰ / ۹۲ 2کنز العمال بحوالہ ابن سعد و ابن جریر حدیث ۲۸۵۰۱ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰ / ۹۵ ، الطبقات الکبری ترجمہ معیقیب بن ابی فاطمہ الدوسی دار صادر بیروت ۴ / ۱۱۸ 3 الطبقات الکبری ترجمہ معیقیب بن ابی فاطمہ الدوسی دار صادر بیروت ۴ / ۱۱۸، کنز العمال بحوالہ ابن سعد و ابن جریر حدیث ۲۸۵۰۲ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰ / ۹۲

Fatawa-e-Razvia, Volume 24

[Arabic Box] Left: ‘Anhu dhaalika fil-ghadaa-i wa haadha fil-'ishaa. Right: It was narrated from Zaid regarding lunch, whereas this Hadith is narrated regarding dinner. (T)

Thirteenth Hadith: It is mentioned that some residents of Jarash narrated from Mahmoud bin Labeed Ansari (may Allah be pleased with him) that Abdullah bin Ja'far Tayyar (may Allah be pleased with them both) narrated a Hadith that the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Protect yourselves from a leper as you protect yourselves from a beast of prey; if he descends into one valley, you descend into another." I said, By Allah! If Abdullah bin Ja'far narrated this Hadith, he did not say it incorrectly. When I came to Medina, I met him and asked about the state of this Hadith, as the people of Jarash were quoting you like this. He said:

[Arabic Box] Left: Kadhaboo wallahi maa hadath-tuhum haadha wa laqad ra-aytu 'Umar bin al-Khattab yu'taa bil-inaa-i feehi al-maau fa yu'teehi Mu'aiqeeba fa yashrabu minhu thumma yatanawaluhu 'Umaru min yadihi fa yada'u feehi mawdi'a famihi hattaa yashrabu minhu fa 'araftu innamaa yasna'u 'Umaru dhaalika firaaram min ay yadkhulahu shay-um minal-'adwaa - Rawaahu 'an Mahmood RadiyAllahu Ta'ala 'Anhu. Right: By Allah, they have misquoted; I did not narrate this Hadith from him. I have seen the Leader of the Believers, Umar, that water would be brought to him, he would give it to Mu'aiqeeb (may Allah be pleased with him), Mu'aiqeeb would drink and then hand it to the Leader of the Believers with his own hand. The Leader of the Believers would place his mouth at the same spot where Mu'aiqeeb had placed his mouth and drink water. I understood that the Leader of the Believers did this so that the fear of a disease being contagious should not enter his heart. (Both Ibn Sa'd and Ibn Jarir have narrated this from Mahmoud bin Labeed Ansari (may Allah be pleased with him). (T))

In Ibn Sa'd's narration, there is a useful additional detail that Abdullah bin Ja'far (may Allah be pleased with them both) said: Whenever the Leader of the Believers Farooq-e-Azam heard of a physician, he would seek treatment for Mu'aiqeeb (may Allah be pleased with him) from him. Two physicians came from Yemen, he spoke to them as well. They said, it cannot be completely eliminated by us, however, we will provide such medicine that the disease stops and does not increase further. The Leader of the Believers said: "Aafiyatun 'azeematun ay yaqifa falaa yazeed" (It is a great well-

being if it stops and does not increase). They ordered two large baskets to be filled with fresh Citrullus colocynthis (Indrayan) fruit which...

---

1. At-Tabaqat al-Kubra, Biography of Mu'aiqeeb bin Abi Fatima al-Dawsi, Dar Sader Beirut, 3/711. Kanz al-Ummal with reference to Ibn Sa'd and Ibn Jarir, Hadith 28500, Muassasat ar-Risalah Beirut, 10/92.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

[अरबी बॉक्स] बायां: 'अन्हु ज़ालिका फ़िल-ग़दा-इ व हाज़ा फ़िल-'इशा। दायां: ज़ैद से सुबह के खाने के बारे में रिवायत किया गया है। जबकि यह हदीस रात के खाने के बारे में मरुवी है। (त)

तेरहवीं हदीस: इसमें है कि महमुद बिन लबीद अंसारी (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से जरश के कुछ निवासियों ने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन जाफ़र तय्यार (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) ने हदीस बयान की कि हुज़ूर सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "कोढ़ी (जज़ामी) से ऐसे बचो जैसे दरिंदे से बचते हो; अगर वह एक नाले में उतरे तो तुम दूसरे में उतरो।" मैंने कहा, वल्लाह! अगर अब्दुल्लाह बिन जाफ़र ने यह हदीस बयान की है, तो उन्होंने गलत नहीं कहा। जब मैं मदीना तय्यबा आया, उनसे मिला और इस हदीस का हाल पूछा कि अहले जरश आपसे यूं नकल कर रहे थे, तो फ़रमाया:

[अरबी बॉक्स] बायां: कज़बू वल्लाहि मा हदस्सतुहुम हाज़ा व लक़द रयैतु 'उमर बिन अल-खत्ताब युअ्ता बिल-इना-इ फ़ीहि अल-माउ फ़ा युअ्तीहि मुअैक़ीबा फ़ा यशरबु मिन्हु सुम्मा यतनावुलाहु 'उमरु मिन यदिही फ़ा यद'उ फ़ीहि मौदि'अ फ़मीहि हत्ता यशरबु मिन्हु फ़ा अरफ़्तु इन्नमा यसना-उ 'उमरु ज़ालिका फ़िरारम मिन अय यदखुलाहु शय-उम मिनल-'अदवा - रवाहू 'अन महमूद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। दायां: वल्लाह, उन्होंने गलत नकल की; मैंने यह हदीस उनसे बयान नहीं की। मैंने तो अमीरुल मोमिनीन उमर को यह देखा है कि पानी उनके पास लाया जाता, वे मुअैक़ीब (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) को देते, मुअैक़ीब पीकर अपने हाथ से अमीरुल मोमिनीन को देते। अमीरुल मोमिनीन उनके मुँह रखने की जगह अपना मुँह रखकर पानी पीते। मैं समझता था कि अमीरुल मोमिनीन यह इसलिए करते हैं ताकि बीमारी उड़कर लगने का ख़तरा उनके दिल में न आने पाए। (इब्ने साद और इब्ने जरीर दोनों ने महमूद बिन लबीद अंसारी (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से इसे रिवायत किया है। (त))

इब्ने साद की रिवायत में एक मुफ़ीद बात ज़ायद है कि अब्दुल्लाह बिन जाफ़र (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) ने फ़रमाया कि अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़-ए-आज़म जिसे तबीब सुनते मुअैक़ीब (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के लिए उससे इलाज चाहते। दो हकीम यमन से आए उनसे भी फ़रमाया, वे बोले यह पूरी तरह खत्म हो जाए यह तो हमसे हो नहीं सकता, हाँ ऐसी दवा कर देंगे कि बीमारी ठहर जाए, बढ़ने न पाए। अमीरुल मोमिनीन ने फ़रमाया: "आफ़ियतुन 'अज़ीमतुन अय यक़िफ़ा फ़ला

यज़ीद" (बड़ी तंदुरुस्ती है कि मर्ज़ ठहर जाए, बढ़ने न पाए)। उन्होंने दो बड़ी ज़ंबीलें भरवाकर इंद्रायन के ताज़ा फल मंगवाए जो...

---

1. अल-तबक़ात अल-कुबरा, मुअैक़ीब बिन अबी फ़ातिमा अद-दौसी की जीवनी, दार सादिर बेरुत, 3/711। कंज़ुल उम्माल इब्ने साद और इब्ने जरीर के हवाले से, हदीस 28500, मुअस्ससतुर् रिसाला बेरुत, 10/92।

عنه ذلك في الغداء وهذا في العشاء۔ زید سے صبح کے کھانے کے بارے میں روایت کیا ہے۔ جبکہ یہ حدیث رات کے کھانے کے بارے میں مروی ہے۔ت

تیرہویں حدیث : میں ہے محمود بن لبید انصاری رضی اللہ تعالٰی عنہ سے بعض ساکنان موضع جرش نے بیان کیا کہ عبداللہ بن جعفر طیار رضی اللہ تعالٰی عنہما نے حدیث بیان کی کہ حضور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: "جذامی سے بچو جیسا درندے سے بچتے ہیں وہ ایک نالے میں اترے تو تم دوسرے میں اترو"۔ میں نے کہا واللہ ! اگر عبداللہ بن جعفر نے یہ حدیث بیان کی تو غلط نہ کہا جب میں مدینہ طیبہ آیا ان سے ملا اور اس حدیث کا حال پوچھا کہ اہل جرش آپ سے یوں ناقل تھے، فرمایا:

کذبوا واللہ ماحدثتهم هذا ولقد رأیت عمر بن الخطاب یؤتی بالاناء فیه الماء فیعطیه معیقیبا فیشرب منه ثم یتناوله عمر من یده فیضع فیه موضع فمه حتی یشرب منه فعرفت انما یصنع عمر ذلك فرارا من ان یدخله شیئ من العدوی - رواه عن محمود رضي اللہ تعالی عنه۔

واللہ انہوں نے غلط نقل کی میں نے یہ حدیث ان سے نہ بیان کی میں نے تو امیر المومنین عمر کو یہ دیکھا ہے کہ پانی ان کے پاس لایا جاتا وہ معقیب رضی اللہ تعالٰی عنہ کو دیتے معقیب پی کر اپنے ہاتھ سے امیر المومنین کو دیتے امیر المومنین ان کے منہ رکھنے کی جگہ اپنا منہ رکھ کر پانی پیتے میں سمجھتا کہ امیر المومنین یہ اس لئے کرتے ہیں کہ بیماری اڑ کر لگنے کا خطرہ ان کے دل میں نہ آنے پائے (ابن سعد اور ابن جریر دونوں نے محمود بن لبید انصاری رضی اللہ تعالٰی عنہ سے اسے روایت کیا ہے۔ت)

ابن سعد کی روایت میں ایک مفید بات زائد ہے کہ عبداللہ بن جعفر رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے فرمایا امیر المومنین فاروق اعظم جسے طبیب سنتے معقیب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے لئے اس سے علاج چاہتے، دو حکیم یمن سے آئے ان سے بھی فرمایا، وہ بولے جاتا رہے یہ تو ہم سے ہو نہیں سکتا ہاں ایسی دوا کر دیں گے کہ بیماری ٹھہر جائے بڑھنے نہ پائے۔ امیر المومنین نے فرمایا: عافیة عظیمة ان یقف فلا یزید بڑی تندرستی ہے کہ مرض ٹھہر جائے بڑھنے نہ پائے۔ انہوں نے دو بڑی زنبیلیں بھروا کر اند رائن کے تازہ پھل منگوائے جو

---

1 الطبقات الکبری ترجمہ معقیب بن ابی فاطمہ الدوسی دار صادر بیروت ۳/ ۷۱۱، کنزالعمال بحوالہ ابن سعد و ابن جریر حدیث ۲۸۵۰۰ موسسة الرساله بیروت ۱۰/ ۹۲

Fatawa Razawiya Volume 24

[Description of a treatment involving bitter melon pieces rubbed on feet soles until a green bitter fluid came out of the mouth and nose of Mu'ayqib (RA). Physicians then said the disease would not progress.] Abdullah bin Ja'far (RA) says:

Arabic	Urdu Translation
By Allah! Mu'ayqib remained in a stable condition after that; there was no increase in the disease until his death.	By Allah! After that, Mu'ayqib always remained in a settled state, and there was no increase in the disease until death.

Fourteenth Hadith: In the court of the Commander of the Faithful, Siddiq-e-Akbar (RA), the ambassadors of the Thaqif tribe arrived. Food was brought, and they approached, but one person who was afflicted with this disease (leprosy) stayed apart. Siddiq-e-Akbar (RA) said: "Come closer, come closer." He said: "Eat." Hazrat Qasim bin Muhammad bin Abi Bakr Siddiq (RA) narrates:

Arabic	Urdu Translation
And Abu Bakr began to put his hand and eat from what the leper was eating from - Narrated by Abu Bakr bin Abi Shaybah and Ibn Jarir from Al-Qasim.	Siddiq-e-Akbar (RA) started eating from the exact same spot where the leper was taking morsels from. (Abu Bakr bin Abi Shaybah and Ibn Jarir narrated this from Hazrat Qasim bin Muhammad.)

Perhaps this is the same patient for whom verbal allegiance was considered sufficient.

Fifteenth Hadith: It is in Jalil:

Arabic	Urdu Translation
Indeed, the Messenger of Allah (SAW) took the hand of a leper and placed it with him in the bowl, then said: "Eat with trust in Allah and reliance on Allah." - Narrated by Abu Dawud, At-Tirmidhi, and Ibn Majah.	The Messenger of Allah (SAW) held the hand of a person with leprosy, placed it with his own in the bowl, and said: "Rely on Allah and trust in Allah." (Abu Dawud, Tirmidhi, Ibn Majah, Abd bin Humaid, Ibn Khuzaymah, Ibn Abi Asim)

---

1. At-Tabaqat al-Kubra, Biography of Mu'ayqib bin Abi Fatima ad-Dawsi, Dar Sader Beirut, 3/18-117

2. Al-Musannaf Ibn Abi Shaybah, Kitab al-Aqiqa, Hadith 2587, Idara al-Quran Karachi, 8/129; Kanz al-Ummal with reference to Ibn Abi Shaybah and Ibn Jarir, Hadith 28298, Muassasat ar-Risalah Beirut, 10/92
3. Jami` at-Tirmidhi, Chapters on Food, Chapter on Eating with a Leper, Amin Company Delhi, 2/4; Sunan Ibn Majah, Book of Medicine, Chapter on Leprosy, HM Saeed Company Karachi, p. 261

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[खरबूजे की तरह फल का वर्णन जिसे हज़रत मुऐक़ीब (रज़ियल्लाहु अन्हु) के दोनों तलवों पर हकीमों ने रगड़ा। जब कड़वा हरा तरल उनके मुँह और नाक से निकलने लगा, तो हकीमों ने कहा कि अब यह बीमारी नहीं बढ़ेगी।] हज़रत अब्दुल्ला बिन जाफ़र (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) फ़रमाते हैं:

अरबी	उर्दू अनुवाद
अल्लाह की क़सम! मुऐक़ीब इसके बाद हमेशा एक स्थिर स्थिति में रहे, मृत्यु तक बीमारी में कोई वृद्धि नहीं हुई।	अल्लाह की क़सम! इसके बाद मुऐक़ीब हमेशा एक ठहरी हुई स्थिति में रहे, तदम-ए-मर्ग (मृत्यु तक) बीमारी की ज्यादती नहीं हुई।

चौदहवीं हदीस: अमीर-उल-मोमिनीन सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के दरबार में क़ौम-ए-सक़ीफ़ के दूत उपस्थित हुए। भोजन लाया गया, वे करीब आए लेकिन एक साहब जो इस बीमारी (कोढ़) में ग्रस्त थे, अलग हट गए। सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया: "करीब आओ, करीब आओ।" फ़रमाया: "खाना खाओ।" हज़रत क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबी बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अन्हुम) फ़रमाते हैं:

अरबी	उर्दू अनुवाद
और अबु बक्र अपना हाथ रखकर वहीं से खाने लगे जहाँ से कोढ़ी खा रहे थे - अबु बक्र बिन अबी शैबा और इब्न जरीर ने इसे कासिम से रिवायत किया है।	सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने यह शुरू किया कि जहाँ से वह कोढ़ी (मज़दूम) निवाला लेते, वहीं से सिद्दीक़ निवाला लेकर खाते। (अबु बक्र बिन अबी शैबा और इब्न जरीर ने हज़रत क़ासिम बिन मुहम्मद से इसे रिवायत किया है।)

शायद ये वही मरीज़ हैं जिनसे ज़ुबानी बैअत (शपथ) पर ही इक्तिफ़ा (संतोष) किया गया था।

पन्द्रहवीं हदीस: जलील में है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
बेशक अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एक कोढ़ी व्यक्ति का हाथ पकड़ा और उसे अपने साथ प्याले में रखा, फिर	अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एक कोढ़ी (जज़ामी) साहब का हाथ पकड़कर अपने साथ प्याले में रखा और फ़रमाया: 'अल्लाह

अरबी	उर्दू अनुवाद
फ़रमाया: 'अल्लाह पर भरोसे और उस पर यक़ीन के साथ खाओ।' - अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्न माजा द्वारा रिवायत किया गया।	पर भरोसा है और अल्लाह पर तवक्कुल (यकीन) है।' (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, इब्न माजा, अब्द बिन हुमैद, इब्न खुज़ैमा, इब्न अबी आसिम)

---

1. अत-तबाक़ात अल-कुबरा, मुऐक़ीब बिन अबी फ़ातिमा अद-दौसी का अनुवाद, दार सादर बेरूत, 3/18-117
2. अल-मुसन्नफ़ इब्न अबी शैबा, किताब अल-अक़ीक़ा, हदीस 2587, इदारा अल-क़ुरान कराची, 8/129; कंज़ुल उम्मल हदीस संख्या 28298 इब्न अबी शैबा और इब्न ज़रीर के हवाले से, मुअस्ससतुर रिसाला बेरूत, 10/92
3. जामि' अत-तिर्मिज़ी, भोजन के अध्याय, कोढ़ी के साथ खाने का अध्याय, अमीन कंपनी दिल्ली, 2/4; सुनन इब्न माजा, चिकित्सा की किताब, कोढ़ का अध्याय, एच एम सईद कंपनी कराची, पृ. 261

خربوزے کی شکل اور نہایت تلخ ہوتے ہیں، پھر ہر پھل کے دودو ٹکڑے اور معیقیب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو لٹا کر دونوں طبیبوں نے ایک ایک تلوے پر ایک ایک ٹکڑا ملنا شروع کیا، جب وہ ختم ہو گیا، دوسرا ٹکڑا لیا، یہاں تک کہ معیقیب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے منہ اور ناک سے سبز رنگ کی کڑوی رطوبت نکلنے لگی، اس وقت چھوڑ کر دونوں حکیموں نے کہا اب یہ بیماری کبھی ترقی نہ کرے گی۔ عبداللہ بن جعفر رضی اللہ تعالیٰ عنہما فرماتے ہیں:

فواللہ مازال معیقیب متمسکا لایزید وجعہ حتی مات[1]

واللہ! معیقیب اس کے بعد ہمیشہ ایک ٹھہری حالت میں رہے تادم مرگ مرض کی زیادتی نہ ہوئی۔

چودھویں حدیث: میں ہے امیر المومنین صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے دربار میں قوم ثقیف کی سفیر حاضر ہوئے، کھانا حاضر لایا گیا، وہ نزدیک آئے مگر ایک صاحب کہ اس مرض میں مبتلا تھے الگ ہو گئے صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا: قریب آؤ، قریب آئے۔ فرمایا: کھانا کھاؤ۔ حضرت قاسم بن محمد بن ابی بکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہم فرماتے ہیں:

وجعل ابوبکر یضع یدہ فیاکل مماکل منہ المجذوم-رواہ[2] ابوبکر بن ابی شیبۃ وابن جریر عن القاسم۔

صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے یہ شروع کیا کہ جہاں سے وہ مجذوم نوالہ لیتے، وہیں سے صدیق نوالہ لے کر نوش فرماتے رضی اللہ تعالیٰ عنہ (ابوبکر بن ابی شیبہ اور ابن جریر نے حضرت قاسم بن محمد سے اسے روایت کیا۔ت)

غالباً یہ وہی مریض ہیں جن سے زبانی بیعت پر اکتفا فرمائی گئی تھی۔

پندرھویں حدیث: جلیل میں ہے:

ان رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم اخذ بيد رجل مجذوم فادخلها معه في القصعة ثم قال كل ثقة بالله وتوكلا على الله- رواه ابوداؤد والترمذى[3] وابن ماجة

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ایک جذامی صاحب کا ہاتھ پکڑ کر اپنے ساتھ پیالے میں رکھا اور فرمایا اللہ پر تکیہ ہے اور اللہ پر بھروسا۔ (ابوداؤد، ترمذی، ابن ماجہ، عبد بن حمید، ابن خزیمہ، ابن ابی عاصم)

---

1 الطبقات الکبریٰ ترجمہ معیقیب بن ابی فاطمہ الدوسی دار صادر بیروت ۳/ ۱۸-۱۱۷ 2 المصنّف لابن ابی شیبہ کتاب العقیقہ حدیث ۲۵۸۷ ادارۃ القرآن کراچی ۸/ ۱۲۹، کنزالعمال بحوالہ ابن ابی شیبہ و ابن جریر حدیث ۲۸۲۹۸ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰/ ۹۲ 3 جامع الترمذی ابواب الاطعمہ باب ماجاء فی الاکل مع المجذوم امین کمپنی دہلی ۲/ ۴، سنن ابن ماجہ کتاب الطب باب الجذام ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۲۶۱

Fatawa Razawiyya, Volume 24

Main Text: ...and Abd bin Humaid, Ibn Khuzaymah, Ibn Abi Asim, and Ibn al-Sunni in 'Amal al-Yawm wa al-Laylah', Abu Ya'la, Ibn Hibban, and al-Hakim in 'al-Mustadrak', al-Bayhaqi in 'al-Sunan', and al-Diya' in 'al-Mukhtarah', Ibn Jarir, and Imam al-Tahawi, all narrated it from Hazrat Jabir bin Abdullah (may Allah be pleased with them both). Thus, the great Imam Jalal al-Din al-Suyuti mentioned it in the first part of his 'Jami' al-Kabir', and I added Ibn Jarir and al-Tahawi. I say (Qultu): From this, it is understood that the author of 'Mishkat' limiting it only to Ibn Majah is misplaced. Then, silence was observed regarding the mentioned Hadith, but Ibn Khuzaymah, Ibn Hibban, al-Hakim, and al-Diya' declared it authentic (Sahih). Al-Munawi in 'al-Taysir' mentioned its narration as 'Hasan' (good) and cited the authentication of Ibn Hibban and al-Hakim. Ibn Hajar said: 'There is a point of concern in it.' I say: But it contains Mufaddal bin Fadalah al-Basri (beginning with the letter 'Ba'), the brother of Mubarak; it is stated in 'al-Taqrib' that he is weak (Da'if). Imam al-Tirmidhi said: 'This is a rare (Gharib) Hadith; we only recognize it through Yunus bin Muhammad from Mufaddal bin Fadalah.' This Mufaddal bin Fadalah is a Basran Sheikh, whereas there is another Mufaddal bin Fadalah who is an Egyptian Sheikh, who is more reliable (Thiqah) and more famous than this one.

Footnotes: 1. Al-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir, under the Hadith: "Every matter with me starts with 'Bismillah', trust in Allah," Maktaba Imam Shafi'i, Riyadh, 2/220. 2. Taqrib al-Tahdhib by Ibn Hajar al-Asqalani, entry 2881, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 2/209.

फ़तावा रज़विया, खंड 24

मुख्य पाठ: ...और अब्द बिन हमैद, इब्न खुज़ैमा, इब्न अबी आसिम और इब्न अल-सुन्नी ने 'अमल अल-यौम वल-लैला' में, अबू याला, इब्न हिब्बान और हाकिम ने 'अल-मुस्तदरक' में, इमाम बैहक़ी ने 'अल-सुनन' में, ज़िया ने 'अल-मुख्तारा' में, इब्न जरीर और इमाम तहावी इन सब ने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) से इसे रिवायत किया है। चुनांचे जलील-उल-क़द्र इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने अपनी 'जामे कबीर' की पहली क़िस्म में इसका ज़िक्र फ़रमाया और इब्न जरीर और इमाम तहावी का मैंने इज़ाफ़ा किया है। मैं कहता हूँ (क़ुल्तु) कि इससे मालूम हुआ कि साहिब-ए-मिश्कात का सिर्फ़ इब्न माजा पर इक्तिफ़ा (निर्भरता) करना बे-महल (अनुचित) है। फिर ज़िक्र की गई हदीस पर ख़ामोशी अख्तियार की गई लेकिन इब्न खुज़ैमा, इब्न हिब्बान, हाकिम और ज़िया ने इसे सही क़रार दिया है। अल्लामा मुनावी ने 'अत-तयसीर' में हसन सनद के साथ इसका ज़िक्र किया और इब्न हिब्बान व हाकिम की तस्दीक (सही कहने) का क़ौल ज़िक्र किया। अल्लामा इब्न हजर ने फ़रमाया कि इस पर एतराज़ है। मैं कहता हूँ: लेकिन इसमें मुफ़द्दल बिन फ़ज़ाला अल-बसरी (हर्फ़'बा' के साथ) है जो मुबारक का भाई है; चुनांचे 'अत-तक़रीब' में कहा गया कि वह ज़ईफ़ (कमज़ोर) है। इमाम तिर्मिज़ी ने कहा कि यह हदीस ग़रीब है; हम इसे सिर्फ़ यूनुस बिन मुहम्मद के ज़रिए मुफ़द्दल बिन फ़ज़ाला से जानते हैं। और यह मुफ़द्दल बिन फ़ज़ाला बसरी शेख़ है, जबकि इसी नाम का एक दूसरा मुफ़द्दल बिन फ़ज़ाला मिस्री शेख़ है जो इस पहले वाले से ज़्यादा मोतबर (सिक़ह) और ज़्यादा मशहूर है।

पाद-लेख: 1. अत-तयसीर शरह अल-जामे अस-सग़ीर, हदीस के तहत: "हर काम जो मेरे साथ हो बिस्मिल्लाह से शुरू हो, अल्लाह पर भरोसा", मकतबा इमाम शाफ़ई, रियाद, 2/220। 2. तक़रीब अत-तहदीब अज़ इब्न हजर अल-अस्क़लानी, तर्जुमा 2881, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 2/209।

पृष्ठ 225 का 720

متن: وعبد بن حمید وابن خزیمة وابن ابی عاصم و ابن السنی فی عمل الیوم واللیلة وابو یعلی وابن حبان و الحاکم فی المستدرك والبیهقی فی السنن والضیاء فی المختارة وابن جریر والامام الطحاوی کلهم من جابر بن عبدالله رضی الله تعالی عنهما کذا ذکر الامام الجلیل الجلال السیوطی فی اول قسمی جامعه الکبیر و زدنا انا ابن جریر والطحاوی قلت و به علم ان قصر المشکوة علی ابن ماجة لیس فی موضعه ثم الحدیث سکت علیه وصححه ابن خزیمة وابن حبان والحاکم والضیاء وقال المناوی فی التیسیر باسناد حسن وتصحیح ابن حبان والحاکم قال ابن حجر فیه نظر اه اقول: لکن فیه مفضل بن فضالة البصری بالباء اخومبارك قال فی التقریب ضعیف وقال الترمذی هذا حدیث غریب لا نعرفه الا من حدیث یونس بن محمد عن المفضل بن فضالة والمفضل بن فضالة هذا شیخ بصری والمفضل بن فضالة شیخ آخر مصری اوثق من هذا واشهر۔

اور ابن السنی نے عمل اللیل والیوم میں ابو یعلی، ابن حبان اور حاکم نے المستدرک میں، امام بیہقی نے السنن میں، ضیاء نے المختارہ میں ابن جریر اور امام طحاوی ان سب نے حضرت جابر بن عبداللہ رضی اللہ تعالی عنہما سے اسے روایت کیا ہے چنانچہ جلیل القدر امام جلال الدین سیوطی نے اپنی جامع کبیر کی پہلی قسم میں اسے ذکر فرمایا اور ابن جریر اور امام طحاوی کا میں نے اضافہ کیا ہے قلت (میں کہتا ہوں کہ) اس سے معلوم ہوا کہ صاحب مشکوۃ کا صرف ابن ماجہ پر اکتفاء کرنا بے محل ہے پھر حدیث مذکور پر سکوت کیا گیا لیکن ابن خزیمہ، ابن حبان، حاکم اور ضیاء نے اس کو صحیح قرار دیا ہے۔ علامہ مناوی نے التیسیر میں اسناد حسن اور ابن حبان اور حاکم کی تصحیح کا قول ذکر کیا ہے۔ علامہ ابن حجر نے فرمایا کہ اس پر اعتراض ہے اہ، اقول : (میں کہتا ہوں) لیکن اس میں مفضل بن فضالہ بصری (حرف باء کے ساتھ) مبارک کا بھائی ہے چنانچہ

التقریب میں کہا کہ وہ ضعیف ہے امام ترمذی نے کہا یہ حدیث غریب ہے ہم اس کو صرف یونس بن محمد بواسطہ مفضل بن فضالہ پہچانتے ہیں اور یہ مفضل بن فضالہ شیخ بصری ہے جبکہ اسی نام کا ایک دوسرا مفضل بن فضالہ شیخ مصری ہے جو اس پہلے سے زیادہ ثقہ اور زیادہ مشہور ہے۔

حواشی: 1 التیسیر شرح الجامع الصغیر تحت حدیث کل معی بسم اللہ ثقہ باللہ مکتبہ امام شافعی الریاض ۲ / ۲۲۰ 2 تقریب التہذیب لابن حجر عسقلانی ترجمہ ۲۸۸۱ دار الکتب العلمیہ بیروت ۲ / ۲۰۹

Fatawa Razawiyya - Volume 24

[Arabic Column:] Shu'ba related this hadith from Habib bin al-Shahid from Ibn Burayda who said: Ibn Umar took the hand of a leper... And Shu'ba's hadith is more similar to me and more correct [End]. Ibn Adi extracted this hadith for the aforementioned Mufaddal in Al-Kamil and said: I have not seen anything more rejected in his hadith than this one. He said: And Shu'ba related it from Habib from Ibn Burayda that Umar took the hand of a leper [Al-Hadith End]. And Al-Dhahabi did not mention any explicit or non-explicit criticism in Al-Mizan regarding Mufaddal that would reach the level of absolute weakness at all. It was only narrated from Yahya that he said: "He is not like that" and from At-Tirmidhi as we presented earlier that the Egyptian is more reliable than him. And from An-Nasa'i that he said: "He is not strong" - I say: The clear difference between "he is not by strength" (laysa bil-quwwa) and "he is not strong" (laysa bi-qawi) is not hidden from you, and indeed that disciplined, reliable, and firm narrator related from him.

[Urdu Column:] Shu'ba the narrator has narrated this hadith from Habib bin Shahid through Ibn Buraydah and said that Hazrat Umar Farooq (may Allah be pleased with him) held the hand of a leper; according to me, the narration of Shu'ba is more established and more correct. Ibn Adi extracted this hadith in 'Al-Kamil' with reference to the mentioned Mufaddal and said: I have not seen any hadith more rejected than this. Then he said Shu'ba narrated from Habib through Ibn Buraydah this hadith that Hazrat Umar held the hand of a leper (the Hadith). Allama Dhahabi in 'Al-Mizan' has not mentioned any detailed or non-detailed criticism regarding Mufaddal which reaches the level of weakness. Of course, it is narrated from Yahya that he said it is not a hadith of that level. With reference to Imam Tirmidhi, we have already stated that the Egyptian Sheikh is more reliable (authentic and credible) than the Basri Sheikh. It is narrated from Imam Nasa'i that he said he is not strong. I say: (I say that) it is not hidden from you that there is a clear and distinct difference between 'not by strength' and 'not strong'. Without doubt, that disciplined, reliable, and firm narrator related from him.

Footnotes: 1. Jami' at-Tirmidhi, Book of Foods, Chapter on eating with a leper, Amin Company Delhi, 2/4. 2. Al-Kamil by Ibn Adi, biography of Mufaddal bin Fudalah al-Misri, Dar al-Fikr Beirut, 6/4202. 3. Mizan al-I'tidal by al-Dhahabi, Hadith 8732, Dar al-Ma'rifa Beirut, 4/129. 4. Mizan al-I'tidal by al-Dhahabi, Hadith 8732, Dar al-Ma'rifa Beirut, 4/129. 5. Mizan al-I'tidal by al-Dhahabi, Hadith 8732, Dar al-Ma'rifa Beirut, 4/129. 6. Mizan al-I'tidal by al-Dhahabi, Hadith 8732, Dar al-Ma'rifa Beirut, 4/129.

फ़तावा रज़विया - खंड 24

[अरबी कॉलम:] शुअबा ने इस हदीस को हबीब बिन अल-शाहिद से इब्न बुरैदा के माध्यम से रिवायत किया, जिन्होंने कहा: इब्न उमर ने एक कोढ़ी का हाथ पकड़ा... और शुअबा की हदीस मेरे नज़दीक अधिक मिलती-जुलती और अधिक सही है। इब्न अदी ने 'अल-कामिल' में उक्त मुफ़ज्जल के लिए इस हदीस को निकाला और कहा: मैंने उनकी हदीसों में इससे अधिक अस्वीकार्य (मुनकर) कुछ नहीं देखा। उन्होंने कहा: और शुअबा ने इसे हबीब से इब्न बुरैदा के माध्यम से रिवायत किया कि उमर ने एक कोढ़ी का हाथ पकड़ा। और अल्लामा ज़हबी ने 'अल-मीज़ान' में मुफ़ज्जल के बारे में कोई ऐसी आलोचना ज़िक्र नहीं की जो कमज़ोरी के स्तर तक पहुँचती हो। केवल याह्या से उद्धृत है कि उन्होंने कहा: "वह वैसा नहीं है" और तिर्मिज़ी से जैसा कि हमने पहले प्रस्तुत किया है कि मिस्र का वर्णनकर्ता उससे अधिक विश्वसनीय है। और नसाई से कि उन्होंने कहा: "वह मज़बूत नहीं है" - मैं कहता हूँ: 'लिस बिल-कुव्वह' (वह शक्ति से नहीं है) और 'लिस बि-क़वी' (वह मज़बूत नहीं है) के बीच का स्पष्ट अंतर आपसे छिपा नहीं है, और वास्तव में उस अनुशासित और विश्वसनीय वर्णनकर्ता ने उनसे रिवायत की है।

[उर्दू कॉलम:] मुहद्दिस शुअबा ने इस हदीस को हबीब बिन शहीद के माध्यम से इब्न बुरैदा से रिवायत किया है और कहा है कि हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक कोढ़ी (जज़ामी) का हाथ पकड़ा, मेरे नज़दीक मुहद्दिस शुअबा की रिवायत अधिक प्रमाणित और अधिक सही है। मुहद्दिस इब्न अदी ने 'अल-कामिल' में इस हदीस को मुफ़ज्जल के हवाले से उद्घृत किया है और कहा है कि मैंने इससे अधिक 'मुनकर' कोई हदीस नहीं देखी, फिर उन्होंने कहा कि शुअबा ने हबीब से इब्न बुरैदा के माध्यम से इस हदीस को रिवायत किया है कि हज़रत उमर फ़ारूक़ ने एक कोढ़ी का हाथ पकड़ा (अल-हदीस)। अल्लामा ज़हबी ने 'अल-मीज़ान' में इस मुफ़ज्जल के बारे में कोई विस्तृत या संक्षिप्त आलोचना का ज़िक्र नहीं किया जो कमज़ोरी के स्तर तक पहुँचती हो, और याह्या से उद्धृत है कि उन्होंने कहा कि यह उस स्तर की हदीस नहीं है। इमाम तिर्मिज़ी के हवाले से हम पहले बयान कर आए हैं कि मिस्र के शेख़, बसरा के शेख़ से अधिक विश्वसनीय (मुस्तनद व मोतबर) हैं। इमाम नसाई से मरुवी है कि वह मज़बूत नहीं है। मैं कहता हूँ कि 'लिस बिल-कुव्वह' और 'लिस बि-क़वी' दोनों में स्पष्ट और खुला अंतर है। निस्संदेह उस अनुशासित और विश्वसनीय वर्णनकर्ता ने उससे रिवायत की है।

फुटनोट: 1. जामे' अत-तिर्मिज़ी, किताबुल अत्इमह, कोढ़ी के साथ खाने का अध्याय, अमीन कंपनी दिल्ली, 2/4। 2. अल-कामिल लि-इब्न अदी, मुफ़ज्जल बिन फ़ज़ाला अल-मिस्री की जीवनी, दारुल फ़िक्र बेरूत, 6/4202। 3. मीज़ानुल एतदाल लिज़-ज़हबी, हदीस 8732, दारुल मारिफ़ा बेरूत, 4/129। 4. मीज़ानुल एतदाल लिज़-ज़हबी, हदीस 8732, दारुल मारिफ़ा बेरूत, 4/129। 5. मीज़ानुल एतदाल लिज़-ज़हबी, हदीस 8732, दारुल मारिफ़ा बेरूत, 4/129। 6. मीज़ानुल एतदाल लिज़-ज़हबी, हदीस 8732, दारुल मारिफ़ा बेरूत, 4/129।

पृष्ठ 226 का 720

[عربی عبارت:] وروی شعبة هذا الحديث عن حبيب بن الشهيد عن ابن بريدة قال ابن عمر اخذ بيد مجذوم" وحديث شعبة اشبه عندی واصح اھ واخرج ابن عدی في الكامل لهذا الحديث للمفضل المذكور وقال لم ار في حديثه انكر من الحديث قال ورواه شعبة عن حبيب عن ابن بريدة ان عمر اخذ بيد مجذوم الحديث اھ ولم يذكر الذهبي في الميزان في المفضل هذا جرحا مفسرا بل ولا غير مفسر مما يبلغ درجة التضعيف البتة انما نقل عن يحيی انه قال ليس هو بذاك وعن الترمذی ما قدمنا ان المصری اوثق منه وعن النسائی انه قال ليس بالقوی- اقول: ولا يخفی عليك البون البين بين ليس بالقوی و ليس بقوی و قد روی عنه ذاك المؤدب الثقة الثبت

[اردو عبارت:] محدث شعبہ نے اس حدیث کو حبیب بن شہید بواسطہ ابن بریدہ روایت کیا ہے اور کہا ہے کہ حضرت عمر فاروق رضی اللہ تعالٰی عنہ نے ایک جذامی کا ہاتھ پکڑا، میرے نزدیک محدث شعبہ کی روایت زیادہ ثابت اور زیادہ صحیح ہے اھ محدث ابن عدی نے الکامل میں اس حدیث کو مفضل مذکور کے حوالہ سے اس کی تخریج کی اور کہا ہے کہ میں نے اس سے زیادہ منکر کوئی حدیث نہیں دیکھی، پھر اس نے کہا شعبہ نے حبیب سے بواسطہ ابن بریدہ اس حدیث کو روایت کیا ہے کہ حضرت عمر فاروق نے ایک جذامی کا ہاتھ پکڑا (الحدیث) اھ، علامہ ذہبی نے المیزان میں اس مفضل کے بارے میں کوئی مفصل یا غیر مفصل جرح ذکر نہیں کی بلاشبہ جو درجہ تضعیف تک پہنچتی ہے، اور یحیٰی سے نقل کیا گیا کہ اس نے کہا کہ یہ اس درجہ کی حدیث نہیں، امام ترمذی کے حوالے سے ہم پہلے بیان کر آئے ہیں کہ شیخ مصری، شیخ بصری سے زیادہ ثقہ (مستند و معتبر) ہے۔ امام نسائی سے مروی ہے کہ وہ قوی نہیں۔ اقول: (میں کہتا ہوں کہ) تم پر

یہ بات پوشیدہ نہیں کہ لیس بالقوی اور لیس بقوی دونوں میں واضح اور کھلا فرق ہے بلاشبہ اس مؤدب ثقہ مثبت نے اس سے روایت

حواشی: 1 جامع الترمذی کتاب الاطعمہ باب ماجاء في الاكل مع المجذوم امین کمپنی دہلی ۲/ ۴ 2 الکامل لابن عدی ترجمہ مفضل بن فضالہ مصری دار الفکر بیروت ۶/ ۴۲۰۲ 3 میزان الاعتدال للذہبی حدیث ۸۷۳۲ دار المعرفة بیروت ۴/ ۱۲۹ 4 میزان الاعتدال للذہبی حدیث ۸۷۳۲ دار المعرفة بیروت ۴/ ۱۲۹ 5 میزان الاعتدال للذہبی حدیث ۸۷۳۲ دار المعرفة بیروت ۴/ ۱۲۹ 6 میزان الاعتدال للذہبی حدیث ۸۷۳۲ دار المعرفة بیروت ۴/ ۱۲۹

Volume 24 Fatawa Rizwia

...has done. Abdul Rahman ibn Mahdi, who is a towering mountain in the science of Hadith, an Imam, and a Hafiz. Imam Bukhari said regarding Ali ibn Abdullah, known as Ibn al-Madini, "I only felt small before him." Thus, Ibn al-Madini said about Abdul Rahman, "I have not seen anyone more knowledgeable than him," and similarly Musa ibn Isma'il, the trustworthy and firm one, and a group. Undoubtedly, the Hafiz praised it, and applying the term 'Sahih' to 'Hasan' is not unknown. The Imam of Imams, Ibn Khuzaymah, and the Imams who followed him authenticated it. And undoubtedly, I have found a follower for it because the grand Imam Abu Ja'far al-Tahawi first extracted it via the mentioned path. Thus, he said: "Fahd (i.e., ibn Sulayman ibn Yahya) narrated to us, he said: Abu Bakr ibn Abi Shaybah narrated to us, he said: Yunus ibn Muhammad narrated to us, [the Hadith]." Then he said: "Ibn Marzuq narrated to us from Muhammad ibn Abdullah al-Ansari from Isma'il ibn Muslim from Abu al-Zubayr from Jabir from the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) a similar [report]." I say: By this, the status of Imam al-Tirmidhi's speech can be known, and in reality, Allah Almighty knows everything best. Then know that...

[1] Sharh Ma'ani al-Athar by al-Tahawi, Book of Disliking, Chapter on Avoiding One with the Disease of Plague etc., H.M. Saeed Company, Karachi, 2/417.

Page 227 of 720

...की है। अब्दुर रहमान इब्न महदी, जो हदीस के विज्ञान में एक विशाल पर्वत हैं, एक इमाम और एक हाफिज हैं। इमाम बुखारी ने अली इब्न अब्दुल्ला के बारे में, जिन्हें इब्न अल-मदीनी के नाम से जाना जाता है, कहा कि "मैंने केवल उनके सामने खुद को छोटा महसूस किया।" इस प्रकार इब्न अल-मदीनी ने अब्दुर रहमान के बारे में कहा, "मैंने उनसे बड़ा विद्वान नहीं देखा," और इसी तरह मूसा इब्न इस्माइल, जो विश्वसनीय और दृढ़ हैं, और एक समूह। निस्संदेह, हाफिज ने इसकी प्रशंसा की है, और 'हसन' पर 'सहीह' शब्द का प्रयोग करना अपरिचित नहीं है। इमामों के इमाम इब्न खुज़ैमा और उनके अनुयायी इमामों ने इसकी पुष्टि (तसहीह) की है। और निस्संदेह मैंने इसका एक अनुयायी पाया है क्योंकि महान इमाम अबू जाफर अल-तहावी ने पहले उल्लेखित मार्ग से इसे निकाला है। चुनांचे उन्होंने कहा: "फहद (अर्थात इब्न सुलेमान इब्न यह्या) ने हमें बताया, उन्होंने कहा: अबू बक्र इब्न अबी शैबा ने हमें बताया, उन्होंने कहा: यूनुस इब्न मोहम्मद ने हमें बताया, [हदीस]।" फिर उन्होंने कहा: "इब्न मरज़ूक ने हमें बताया, उनसे मुहम्मद इब्न अब्दुल्ला अल-अंसारी ने, उनसे इस्माइल इब्न मुस्लिम ने, उन्होंने अबू अल-जुबैर से, उन्होंने जाबिर से, उन्होंने अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) से इसी तरह की हदीस रिवायत की।" मैं कहता हूँ कि इससे इमाम अल-तिर्मिज़ी के कथन की स्थिति का पता लगाया जा सकता है, और वास्तव में अल्लाह तआला ही सब कुछ बेहतर जानता है। फिर जान लें कि...

[1] शरह मा'नी अल-आसार अल-तहावी, किताब अल-कराहह, बाब अल-इस्तिनाब मिन जी दा अल-ताऊन वगैरा, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 2/417।

وعبدالرحمٰن بن مهدی ذاك الجبل الشامخ الامام | کی ہے۔ عبدالرحمٰن ابن مہدی جو فن حدیث میں کوہِ گراں الحافظ قال البخاری فی علی بن عبدالله المعروف | ہے امام اور حافظ ہے امام بخاری نے علی بن عبدالله جو ابن بابن المدینی ما استصغرت نفسی الاعنده وقال ابن | المدینی کے نام سے مشہور ہے کے متعلق فرمایا کہ میں نے المدینی فی عبدالرحمٰن هذا مارأیت اعلم منه و | صرف اس کے سامنے اپنے آپ کو چھوٹا سمجھا۔ چنانچہ ابن کذلك موسیٰ بن اسمعیل ذاك الثقة الثبت وجماعة | المدینی نے عبدالرحمٰن کے بارے میں فرمایا میں نے اس سے لا جرم حسنه الحافظ واطلاق الصحیح علی الحسن | بڑا عالم کوئی نہیں دیکھا اور اسی طرح موسیٰ بن اسمعیل ثقہ، غیر مستنکر وقد صححه امام الائمة ابن خزیمة و | ثبت ہے۔ اور ایک جماعت بلاشبہ حافظ نے اس کی تحسین من تبعه وقد وجدت له متابعا فان الامام الاجل | فرمائی اور حسن پر صحیح کا اطلاق غیر معروف نہیں۔ امام الائمہ اباجعفر الطحاوی اخرجه اولا بالطریق المذکور | ابن خزیمہ اور ان کے ہمنوا ائمہ نے اس کی تصحیح فرمائی اور فقال حدثنا فهد(یعنی ابن سلیمان بن یحییٰ) ثنا | بلاشبہ میں نے اس کا متابع پایا ہے کیونکہ جلیل الشان امام ابوبکر بن ابی شیبة ثنا یونس بن محمد الحدیث | ابو جعفر طحاوی نے اوّلاً طریق مذکور سے اس کی تخریج فرمائی ثم قال حدثنا ابن مرزوق ثنا محمد بن عبدالله | چنانچہ فرمایا ہم سے فہد یعنی ابن سلیمان بن یحییٰ نے بیان الانصاری ثنا اسمعیل بن مسلم عن ابی الزبیر عن | کیا، اس نے کہا ہم سے ابوبکر بن ابی شیبہ نے بیان کیا اس نے جابر عن رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم مثله[1] | کہا ہم سے یونس بن محمد نے بیان کیا، الحدیث۔ پھر فرمایا ہم اه قلت و به یعلم مافی کلام الامام الترمذی والله | سے ابن مرزوق نے بیان کیا اس سے محمد بن عبد الله تعالیٰ اعلم ، ثم اعلم انه | انصاری نے اس سے اسمعیل بن مسلم نے بیان کیا، اس

نے ابوالزبیر سے اس نے جابر سے، انہوں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے اسی حدیث مذکور کی مثل روایت فرمائی اہ قلت (میں کہتا ہوں کہ) اس سے امام ترمذی کے کلام کا حال معلوم کیا جاسکتا ہے اور در حقیقت اللہ تعالیٰ ہی سب کچھ اچھی طرح

[1] شرح معانی الآثار للطحاوی کتاب الکراھۃ باب الاجتناب من ذی داء الطاعون وغیرہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۴۱۷

Fatawa Rizvia, Volume 24

[Left Column - Arabic Content] In Al-Jami' al-Saghir, the symbol assigned to this hadith is 'Hub, Ka' (حب، ک). I say: I did not find it in Al-Mujtaba; in fact, it is not there because its basis, as Al-Tirmidhi mentioned, depends on Al-Mufaddal, as you are aware. This Al-Mufaddal is not among the narrators of Al-Nasa'i at all. The hadith was missing from the manuscript of my master Ali al-Muttaqi (may his soul be sanctified). Consequently, Imam Al-Suyuti included it in the first section of Al-Jami' al-Kabir and used the symbols 'Da, Ta, Ha' (د، ت، ہ) etc., for it, which is correct. Unless Al-Nasa'i narrated it in Al-Kubra; from that perspective, it would be labeled 'Ain' (ع), though that is unlikely. What appears in Al-Mishkat, attributed to Ibn Majah, is what we mentioned—meaning the phrase "every trust is in Allah." In Jami' al-Tirmidhi, it then states: "Eat in the name of Allah, trusting in Allah and relying upon Him." Allamah Ali al-Qari noted: Regarding the author's omission of the 'Basmalah' despite its presence in the original sources, it might be due to a unique, rare narration by Ibn Majah or an oversight by the author of Al-Mishkat.

[Right Column - Urdu Content] Further, know that in Jami' al-Saghir, the symbol for this hadith is (Hub, Ka). I say: (meaning, I state) I did not see it in Mujtaba; rather, it is not found in it at all because the pivot of the said hadith, as Imam Tirmidhi mentioned, is Mufaddal, as you know, and this Mufaddal is not listed among the narrators of Nasa'i. From the manuscript of my master Ali Muttaqi (may his secret be sanctified), the mentioned hadith was omitted, which is why Imam Suyuti included it in the first section of Jami' Kabir and provided symbols like (Da, Ta, Ha) etc. This is correct. Yes, however, if Imam Nasa'i had narrated it in Al-Kubra, then in that light (Ain/ع) would be used, but that is a remote possibility. Then in Mishkat, while attributing it to Ibn Majah, the same words appeared as we mentioned, specifically the words "Trusting in Allah for everything." And the words in Jami' Tirmidhi are: Then the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Eat in the name of Allah, trusting in Allah and relying upon Him." (Eat by taking Allah's name, maintaining faith and trust in Allah Almighty). Allamah Ali Qari stated that the author's (mercy of Allah be upon him) exclusion of 'Bismillah' despite its inclusion in the primary sources is either because this was from Ibn Majah...

[Footnotes] 1. Mishkat al-Masabih, Book of Medicine, Chapter on Omens and Bird Divination, Mujtabai Press Delhi, p. 392. 2. Jami' al-Tirmidhi, Chapters of Food, Chapter on eating with a leper, Amin Company Delhi, 2/4.

फ़तावा रज़विया, खंड 24

[बायाँ कॉलम - अरबी सामग्री] अल-जामे अल-सगीर में इस हदीस के लिए प्रतीक 'हब, क' (حب، ک) दिया गया है। मैं कहता हूँ: मैंने इसे अल-मुजतबा में नहीं देखा; वास्तव में, यह उसमें नहीं है क्योंकि इसका आधार, जैसा कि अल-तिर्मिज़ी ने उल्लेख किया है, अल-मुफ़ज़्ज़ल पर निर्भर है, जैसा कि आप जानते हैं। यह अल-मुफ़ज़्ज़ल बिल्कुल भी नसाई के रावियों में से नहीं है। यह हदीस मेरे आका अली अल-मुत्तकी (उनका रहस्य पवित्र हो) की पांडुलिपि से छूट गई थी। नतीजतन, इमाम अल-सुयूती ने इसे अल-जामे अल-कबीर के पहले भाग में शामिल किया और इसके लिए 'द, त, ह' (د، ت، ه) आदि प्रतीकों का उपयोग किया, जो सही है। जब तक कि नसाई ने इसे अल-कुबरा में वर्णित न किया हो; उस दृष्टि से इसे 'ऐन' (ع) कहा जाएगा, हालांकि इसकी संभावना कम है। अल-मिश्कात में इब्ने माजह के हवाले से जो उल्लेख है, वही हमने बताया—यानी "अल्लाह पर पूर्ण भरोसा" वाक्यांश। जामे अल-तिर्मिज़ी में इसके बाद लिखा है: "अल्लाह के नाम पर खाएं, अल्लाह पर भरोसा और एतमाद करते हुए।" अल्लामा अली अल-कारी ने उल्लेख किया: मूल स्रोतों में मौजूदगी के बावजूद लेखक द्वारा 'बिस्मिल्लाह' को छोड़ना या तो इब्ने माजह की किसी एकल, दुर्लभ रिवायत के कारण हो सकता है या अल-मिश्कात के लेखक की चूक के कारण।

[दायाँ कॉलम - उर्दू सामग्री] आगे जान लें कि जामे अल-सगीर में इस हदीस का प्रतीक (हब, क) है। मैं कहता हूँ: (अर्थात, मैं कहता हूँ कि) मैंने इसे मुजतबा में नहीं देखा; बल्कि यह उसमें है ही नहीं क्योंकि उक्त हदीस का दारोमदार, जैसा कि इमाम तिर्मिज़ी ने ज़िक्र किया है, मुफ़ज़्ज़ल पर है जैसा कि आप जानते हैं, और यह मुफ़ज़्ज़ल नसाई के रावियों में से नहीं है। मेरे आका अली मुत्तकी (उनका रहस्य पवित्र हो) के नुस्खे से उक्त हदीस गिर गई है, इसलिए इमाम सुयूती ने इसे जामे कबीर के पहले भाग में शामिल किया और इसके लिए (द, त, ह) आदि प्रतीक पेश किए। और वह सही है। हाँ, अलबत्ता अगर इमाम नसाई ने अल-कुबरा में इसे रिवायत किया होता, तो उस लिहाज़ से (ऐन/ع) कहा जाता, लेकिन वह दूर की बात है। फिर मिश्कात में इब्ने माजह की ओर निस्बत करते हुए वही शब्द आए हैं जो हमने ज़िक्र किए, मेरा मतलब "कुल थिकतुन बिल्लाह" के शब्दों से है। और जामे तिर्मिज़ी के शब्द ये हैं: फिर हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "कुल बिस्मिल्लाह थिकतुन बिल्लाह तवक्कलन अलैहि" (अल्लाह का नाम लेकर खाएं, अल्लाह तआला पर एतमाद और भरोसा करते हुए)। अल्लामा अली कारी ने फ़रमाया कि मुसन्निफ़ (अल्लाह की उन पर रहमत हो) का

'बिस्मिल्लाह' छोड़ देना, जबकि वह असल स्रोतों में मौजूद है, या तो इसलिए है कि यह इब्ने माजह से...

[पाद टिप्पणियाँ] 1. मिश्कात अल-मसाबीह, किताब अल-तिब, बाब अल-फ़ाल वत-तिराह, मतबा मुजतबाई दिल्ली, पृ. 392। 2. जामे अल-तिर्मिज़ी, अबवाब अल-अतइमा, बाब मा जा'अ फ़िल अकल मा अल-मज़ूम, अमीन कंपनी दिल्ली, 2/4।

[بایاں کالم - عربی] وقع في الجامع الصغیر لهذا الحدیث رمز حب، ك اقول: ولم اره في المجتبی بل لیس فیه لان مداره علی ماذکر الترمذی علی المفضل کما علمت والمفضل هذا لیس من رواة النسائی اصلا وقد سقط الحدیث من نسخة سیدی علی المتقی قدس سره ولذا اورده من القسم الاول للجامع الکبیر وقد رمز له فیه د، ت، ه الخ وهو الصحیح الا ان یکون النسائی رواه في الکبری فبالنظر الیه یقال ع وهو بعید ثم الواقع في المشکوة۱ معزیاً لابن ماجة ماذکرنا اعنی کل ثقة بالله وفی جامع الترمذی ثم قال کل بسم الله ثقة بالله وتوکلا علیه۲، قال العلامة علی القاری اما ترك المؤلف البسملة مع وجودها فی الاصول فاما محمولة علی روایة منفردة غریبة لابن ماجة او علی غفلة من صاحب المشکوة

[دایاں کالم - اردو] پھر جان لیجئے کہ جامع الصغیر میں اس حدیث کے لئے یہ رمز (حب، ک) ہے اقول : (میں کہتا ہوں کہ) میں نے اس کو مجتبٰی میں نہیں دیکھا بلکہ اس میں موجود ہی نہیں اس لئے کہ حدیث مذکور کا مدار جیسا کہ امام ترمذی نے ذکر کیا مفضل پر ہے جیسا کہ آپ جانتے ہیں اور یہ مفضل بالکل رواۃ نسائی میں سے نہیں۔ میرے آقا علی متقی قدس سرہ کے نسخہ سے حدیث مذکور ساقط ہو گئی ہے اس لئے امام سیوطی جامع کبیر کی پہلی قسم میں اسے لائے ہیں اور اس کے لئے یہ رمز (د، ت، ہ) پیش فرمائی الخ۔ اور وہ صحیح ہے ہاں البتہ امام نسائی نے الکبریٰ میں اسے روایت فرمایا تو پھر اس کے پیش نظر (ع) کہا جائے گا لیکن وہ بعید ہے پھر مشکوٰۃ میں ابن ماجہ کی طرف نسبت کرتے ہوئے وہی الفاظ واقع ہوئے جو ہم نے ذکر کئے ہیں ، میری مراد "کل ثقة بالله" کے الفاظ سے ہے۔ اور جامع ترمذی کے الفاظ یہ ہیں ، پھر حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کل بسم اللہ ثقة باللہ توکلا علیہ (اللہ کا نام لے کر کھائیں اللہ تعالیٰ پر اعتماد و

بھروسا کرتے ہوئے۔) علامہ علی قاری نے فرمایا مصنف علیہ الرحمہ کا بسم اللہ چھوڑ دینا با وجودیکہ وہ اصول میں مذکور ہے یا تو اس لئے ہے کہ یہ ابن ماجہ

[حواشی] ۱ مشکوٰۃ المصابیح کتاب الطب باب الفال والطیرۃ مطبع مجتبائی دہلی ص ۳۹۲ ۲ جامع الترمذی ابواب الاطعمه باب ماجاء في الاكل مع المجذوم امین کمپنی دہلی ۲/ ۴

صفحہ ۲۲۸ از ۷۲۰

Or Al-Masabih. I say: Glory be to Allah! He only narrated it from Ibn Majah. If he had added the Basmala, it would have been attributed to redundancy. Furthermore, Ibn Majah is not alone in omitting the Basmala; it is also omitted in the version of Abu Dawood. He narrated it from 'Uthman bin Abi Shaybah from Yunus bin Muhammad. Ibn Majah narrated it from Abu Bakr bin Abi Shaybah, Mujahid bin Musa, and Muhammad bin Khalaf al-Asqalani, all of them from Yunus without the Basmala. Al-Tirmidhi narrated it from Ahmad bin Sa'id al-Ashqar and Ibrahim bin Ya'qub, both from Yunus with the Basmala. So understand this. [I say:] (I say) Allah Almighty is pure (from defects and shortcomings) (meaning it is very surprising) because the author of Mishkat narrated it from Ibn Majah. If he had added "Bismillah Sharif," he would have been accused of making an addition. Regarding the omission of "Bismillah," Ibn Majah is not alone; in the copy of Abu Dawood as well, "Bismillah" is omitted. Thus, Imam Abu Dawood narrated it from Uthman ibn Abi Shaybah via Yunus bin Muhammad, and Ibn Majah narrated it on the authority of Abu Bakr bin Abi Shaybah, Mujahid bin Musa, and Muhammad bin Khalaf al-Asqalani; all of them narrated it via Yunus without Bismillah. And Imam Tirmidhi narrated it via Ahmad bin Sa'id al-Ashqar and Ibrahim bin Ya'qub with reference to Yunus including "Bismillah." Understand this point. (T)

Sixteenth Hadith: In it, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Eat with the afflicted person out of humility to your Lord and faith." Narrated by the eminent Imam al-Tahawi from Abu Dharr (may Allah be pleased with him). I say: This is how it is mentioned in Al-Jami' as "Kul" (with the letter lam), but what I saw in Imam al-Tahawi's manuscript is "Kun" (with the letter nun). And Allah Almighty knows best. Eat with the one in affliction for the sake of humility towards your Lord and with true faith. (The great Imam Tahawi has narrated this on the authority of Hazrat Abu Dharr, may Allah be pleased with him. I say, similarly in 'Al-Jami', the word is 'Kul' (with the letter Lam), but I have seen 'Kun' (with the letter Noon) in the manuscript of Imam Tahawi. And Allah knows best.) (T)

1 Mirqat al-Mafatih, Kitab al-Tibb wa al-Ruqa, Section Two, Maktaba Habibiya, Quetta, 8/351. 2 Sharh Ma'ani al-Athar, Kitab al-Karahah, Chapter on Avoiding One with a Disease Like Plague, etc., H.M. Saeed Company, Karachi, 2/417.

या अल-मसाबीह। मैं कहता हूँ: सुब्हान अल्लाह! उन्होंने इसे केवल इब्न माजह से उद्धृत किया है। यदि वे बिस्मिल्लाह जोड़ देते, तो इसे अतिरिक्तता माना जाता। इसके अलावा, बिस्मिल्लाह छोड़ने में केवल इब्न माजह ही अकेले नहीं हैं; अबू दाऊद के संस्करण में भी इसे छोड़ दिया गया है। उन्होंने इसे उस्मान बिन अबी शायबा से यूनुस बिन मुहम्मद के माध्यम से उद्धृत किया है। इब्न माजह ने इसे अबू बक्र बिन अबी शायबा, मुजाहिद बिन मूसा और मुहम्मद बिन खलफ अल-असकलानी से उद्धृत किया है, इन सभी ने यूनुस से बिस्मिल्लाह के बिना उद्धृत किया है। अल-तिर्मिज़ी ने इसे अहमद बिन सईद अल-अश्क़र और इब्राहिम बिन याकूब से उद्धृत किया है, दोनों ने यूनुस से बिस्मिल्लाह के साथ उद्धृत किया है। तो इसे समझें। अक़ूल: (मैं कहता हूँ) अल्लाह तआला (दोषों और कमियों से) पाक है (यानी यह बहुत आश्चर्यजनक है) क्योंकि मिश्कात के लेखक ने इसे इब्न माजह से उद्धृत किया है। अगर वे "बिस्मिल्लाह शरीफ" जोड़ते तो उन पर बढ़ोतरी का आरोप लगता। बिस्मिल्लाह छोड़ने के मामले में इब्न माजह ही अकेले नहीं हैं, बल्कि अबू दाऊद की प्रति में भी इसी तरह बिस्मिल्लाह छोड़ दी गई है। चुनांचे इमाम अबू दाऊद ने उस्मान इब्न अबी शायबा से यूनुस बिन मुहम्मद के माध्यम से इसे रिवायत किया है, और इब्न माजह ने अबू बक्र बिन अबी शायबा, मुजाहिद बिन मूसा और मुहम्मद बिन खलफ अल-असकलानी के हवाले से इसे रिवायत किया है; इन सबने यूनुस के माध्यम से बिस्मिल्लाह के बिना रिवायत की। और इमाम तिर्मिज़ी ने अहमद बिन सईद अल-अश्क़र और इब्राहिम बिन याकूब के माध्यम से यूनुस के हवाले से "बिस्मिल्लाह" सहित इसे रिवायत किया है। इस बात को समझ लीजिए। (त)

सोलहवीं हदीस: इसमें है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "अपने रब के प्रति विनम्रता और विश्वास के कारण विपत्तिग्रस्त व्यक्ति के साथ खाओ।" इसे महान इमाम अल-तहावी ने अबू ज़र (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत किया है। मैं कहता हूँ: अल-जामी में यह इसी तरह 'कुल' (लाम अक्षर के साथ) के रूप में दिया गया है, लेकिन मैंने इमाम अल-तहावी की पांडुलिपि में 'कुन' (नूँ अक्षर के साथ) देखा है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। मुसीबत वाले के साथ खाना खा अपने रब के लिए आजिज़ी (विनम्रता) और उस पर सच्चे यक़ीन की राह से। (जलील-उल-क़द्र इमाम तहावी ने हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हवाले से इसे रिवायत किया है। मैं कहता हूँ कि इसी तरह 'अल-जामी' में शब्द 'कुल' (हर्फ़ लाम के साथ) है

लेकिन मैंने इमाम तहावी के नुस्खे में 'कुन' (हर्फ़ नून के साथ) देखा है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।) (त)

1 मिरक़ात अल-मफ़ातीह, किताब अल-तिब्ब वल-रुक़ा, दूसरा भाग, मकतबा हबीबिया, क्वेटा, 8/351। 2 शरह मआनी अल-आसार, किताब अल-कराहह, ताऊन आदि बीमारी वाले से बचने का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 2/417।

पृष्ठ २२९ / ७२०

او المصابیح اه اقول: سبحن اللہ ھو انما نقلہ عن ابن ماجۃ فلوزاد البسملۃ نسب الی الفضلۃ ثم لم یتفرد ابن ماجۃ بترك البسملۃ بل ھو کذلك عند ابی داؤد ایضا رواہ عن عثمن بن ابی شیبۃ عن یونس بن محمد وابن ماجۃ عن ابی بکر بن ابی شیبہ ومجاھد ابن موسی ومحمد بن خلف العسقلاني کلھم عن یونس بترك البسملۃ والترمذی عن احمد بن سعید الاشقر وابراھیم بن یعقوب کلاھما عن یونس مع البسملۃ فافھم۔ جانتا ہے، کی منفرد غریب روایت پر محمول ہے یا صاحب مشکوٰۃ یا صاحب مصابیح کی غفلت کا نتیجہ ہے اہ اقول: (میں کہتا ہوں) اللہ تعالٰی (عیوب ونقائص سے) پاک ہے (یعنی بڑا تعجب ہے) اس لئے کہ صاحب مشکوٰۃ نے اسے ابن ماجہ سے نقل فرمایا ہے اگر بسم اللہ شریف کا اضافہ کرتے تو زیادتی کی طرف منسوب ہوتے اور ترک بسم اللہ کے معاملہ میں ابن ماجہ ہی منفرد نہیں بلکہ ابو داؤد کے نسخہ میں بھی یونہی بسم اللہ متروک ہے چنانچہ امام ابو داؤد نے عثمان ابن ابی شیبہ سے بواسطہ یونس بن محمد اس کو روایت کیا ہے اور ابن ماجہ نے ابوبکر بن ابی شیبہ، مجاہد بن موسیٰ اور محمد بن خلف عسقلانی کے حوالہ سے اسے روایت کیا ہے، سب نے بواسطہ یونس بسم اللہ کے بغیر روایت کی اور امام ترمذی نے بواسطہ احمد بن سعید اشقر اور ابراہیم بن یعقوب بحوالہ یونس "بسم اللہ" سمیت اس کو روایت کیا ہے۔ اس مقام کو سمجھ لیجئے۔ (ت)

سولہویں حدیث: میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: کل مع صاحب البلاء تواضعا لربك وایمانا۔ رواہ الامام الاجل الطحاوی ۲ عن ابی ذر رضی اللہ تعالی عنہ قلت ھکذا اوردہ فی الجامع کل باللام والذی رایتہ الامام الطحاوی کن بالنون۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ بلاء والے کے ساتھ کھانا کھا اپنے رب کے لئے تواضع اور اس پر سچے یقین کی راہ سے۔ (جلیل القدر امام طحاوی نے حضرت ابوذر رضی اللہ تعالٰی عنہ کے حوالے سے اسے روایت کیا ہے۔ میں کہتا ہوں اسی طرح

الجامع میں لفظ کل (حرف لام کے ساتھ) ہے لیکن میں نے امام طحاوی کے نسخہ میں کن (حرف نون کے ساتھ) دیکھا ہے۔ اور اللہ تعالیٰ سب سے بہتر جانتا ہے۔ (ت)

۱ مرقات المفاتیح کتاب الطب والرقی الفصل الثانی مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۸/۳۵۱ ۲ شرح معانی الآثار کتاب الکراھۃ باب الاجتناب من ذی داء الطاعون الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۴۱۷

Fatawa Rizvia, Volume 24

Seventeenth Hadith: It is mentioned that a lady asked the Mother of the Believers, Siddiqah (may Allah be pleased with her): What did the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) say regarding those with leprosy?

| Arabic: فروا منهم كفراركم من الاسد۔ | English: Flee from them just as you would flee from a lion. |

The Mother of the Believers (may Allah be pleased with her) said:

| Arabic: كلا و لكنہ لا عدوى فمن عادى الاول - رواہ ابن جرير عن نافع بن القاسم عن جدتہ فطيمۃ۔ | English: Not at all, rather he used to say that a disease is not contagious; who did the first one catch it from? (Ibn Jarir narrated this from Hazrat Nafi' bin Qasim on the authority of his grandmother Futaymah. - T) |

Aqool: (I say - T) This denial by the Mother of the Believers is based on her knowledge, meaning it was not said like that in front of me, rather it was said this way. And the fact is that both sayings are proven from the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) with sufficient authenticity.

Eighteenth to Thirtieth Hadiths: A grand, great, authentic, famous, rather mutawatir (consecutive) Hadith from which the Mother of the Believers, Siddiqah (may Allah be pleased with her) drew evidence, that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

| Arabic: لا عدوى - رواہ الائمۃ احمد و الشيخان وابوداؤد وابن ماجة عن ابى هريرة عہ | English: Disease is not contagious. (The Great Imams such as Imam Ahmad, Bukhari and Muslim, Abu Dawud and Ibn Majah narrated it from Hazrat Abu Hurairah). |

(Ayn-Ha): It was narrated from him through many various paths by them and Imam al-Tahawi and al-Daraqutni in al-Muttafiq, and al-Khatib, al-Bayhaqi, Ibn Jarir and others. Even if Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) later forgot it, as narrated by Bukhari, al-Tahawi, Ibn Jarir, etc. 12 [of the author] (T).

1. Kanz al-Ummal with reference to Ibn Jarir, Hadith 28507, Mu'assasah al-Risalah, Beirut, 10/97.
2. Sahih al-Bukhari, Book of Medicine, Chapter on Leprosy, 2/859; Sahih Muslim, Book of Peace, Chapter 'No Contagion', 2/230; Sunan Abi Dawud, Book of Divination and Omens, 2/190; Musnad Ahmad bin Hanbal on the authority of Abu Hurairah, 2/267 & 327.

फ़तावा रजविया, जिल्द २४

१७वीं हदीस: इसमें है कि एक महिला ने उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से पूछा: रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कोढ़ियों के बारे में क्या फ़रमाते थे:

| अरबी: فروا منهم كفراركم من الاسد۔ | हिन्दी: उनसे ऐसे भागो जैसे शेर से भागते हो। |

उम्मुल मोमिनीन (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने फ़रमाया:

| अरबी: كلا و لكنہ لا عدوى فمن عادى الاول - رواہ ابن جرير عن نافع بن القاسم عن جدتہ فطيمۃ۔ | हिन्दी: हरगिज़ नहीं, बल्कि वह यह फ़रमाते थे कि बीमारी उड़कर नहीं लगती, जिसे पहले हुई उसे किसकी उड़कर लगी। (इब्ने जरीर ने हज़रत नाफ़ेअ़ बिन क़ासिम से उनकी दादी फ़ुतैमा के हवाले से इसे रिवायत किया है। - त) |

अक़ूल: (मैं कहता हूँ - त) उम्मुल मोमिनीन का यह इनकार अपने इल्म की बिना पर है यानी मेरे सामने ऐसा नहीं फ़रमाया बल्कि यों फ़रमाया, और तथ्य यह है कि दोनों इरशाद हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूरी प्रामाणिकता के साथ साबित हैं।

१८वीं से ३०वीं हदीस: एक महान, श्रेष्ठ, सही, प्रसिद्ध बल्कि मुतवातिर (लगातार) हदीस जिससे उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने दलील पेश की कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

| अरबी: لا عدوى - رواہ الائمۃ احمد و الشيخان وابوداؤد وابن ماجۃ عن ابی ہريرۃ عہ | हिन्दी: बीमारी उड़कर नहीं लगती। (महान इमामों जैसे इमाम अहमद, बुखारी और मुस्लिम, अबू दाऊद और इब्ने माजह ने इसे हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत किया)। |

(ऐ़न-हा): इसे उनसे कई अलग-अलग तरीक़ों से उन मज़कूर इमामों, इमाम तहावी और इमाम दारक़ुतनी ने मुत्तफ़िक़ में, ख़तीब, बैहक़ी, इब्ने जरीर और कुछ दूसरों ने रिवायत किया है। हालाँकि बाद में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) इसे भूल गए थे, जैसा कि बुखारी, तहावी और इब्ने जरीर वग़ैरह ने इसे रिवायत किया है। १२ मिन्हु (त)

1. कंज़ुल उम्माल ब-हवाला इब्ने जरीर, हदीस २८५०७, मुअ़स्ससा अर-रिसाला, बेरुत, १०/९७।

2. सहीह अल-बुखारी, किताबुल तिब्ब, बाबल जुज़ाम, २/८५९; सहीह मुस्लिम, किताबुस सलाम, बाब ला अ़दवा, २/२३०; सुनन अबी दाऊद, किताबुल कहाना वत-ततीर, २/१९०; मुसनद अहमद बिन हंबल अ़न अबी हुरैरा, २/२६७ व ३२७।

पृष्ठ २३०/७२०

ستر ہویں حدیث: میں ہے کہ ایک بی بی نے ام المؤمنین صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے پوچھا: کیا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مجذوموں کے حق میں فرماتے:

| فروا منھم کفرارکم من الاسد۔ | ان سے ایسا بھاگو جیسا شیر سے بھاگتے ہو۔ |

ام المؤمنین (رضی اللہ عنہا) نے فرمایا:

| کلا و لکنہ لا عدوی فمن عادی الاول - رواہ ابن جریر عن نافع بن القاسم عن جدتہ فطیمۃ۔ | ہرگز نہیں، بلکہ یہ فرماتے تھے کہ بیماری اڑ کر نہیں لگتی جسے پہلے ہوئی اسے کس کی اڑ کر لگی۔ (ابن جریر نے حضرت نافع بن قاسم سے بحوالہ اس کی دادی فطیمہ کے اسے روایت کیا ہے ۔ت) |

اقول: (میں کہتا ہوں ۔ت) ام المؤمنین کا یہ انکار اپنے علم کی بناء پر ہے یعنی میرے سامنے ایسا نہ فرمایا بلکہ یوں فرمایا اور ہے یہ کہ دونوں ارشاد حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے بصحت کافیہ ثابت ہیں۔

اٹھارہویں سے تیس: تک حدیث جلیل عظیم صحیح مشہور بلکہ متواتر جس سے ام المؤمنین صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے استدلال کیا کہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

| لا عدوی - رواہ الائمۃ احمد والشیخان وابوداؤد وابن ماجۃ عن ابی ھریرۃ عہ | بیماری اڑ کر نہیں لگتی (ائمہ کرام مثلاً امام احمد، بخاری و مسلم، ابو داؤد اور ابن ماجہ اس کو حضرت ابوہریرہ |

عہ: رواہ عنہ بطریق کثیرۃ شتی ھم والامام الطحاوی والدارقطنی فی المتفق والخطیب والبیھقی وابن جریر واخرون وان نسیہ ابوھریرۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ من بعد کما رواہ البخاری و الطحاوی وابن

جریر وغیرھم ۱۲ منہ۔ متعدد و مختلف طریقوں کے ساتھ حضرت ابوہریرہ سے حدیث مذکور کو ان ائمہ مذکورین امام طحاوی اور امام دارقطنی نے متفق میں، خطیب، بیہقی، ابن جریر اور کچھ دوسروں نے اسے روایت کیا ہے اگرچہ بعد میں حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اسے بھول گئے تھے جیسا کہ بخاری، طحاوی اور ابن جریر وغیرہ نے اسے روایت کیا ہے ۱۲ منہ (ت)

1 کنزالعمال بحوالہ ابن جریر حدیث ۲۸۵۰۷ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰ / ۹۷ 2 صحیح البخاری کتاب الطب باب الجذام ۲/ ۸۵۹ و صحیح مسلم کتاب السلام باب لا عدوی ۲/ ۲۳۰، سنن ابی داؤد کتاب الکھانۃ والتطیر ۲/ ۱۹۰ و مسند احمد بن حنبل عن ابی ھریرۃ ۲/ ۲۶۷ و ۳۲۷

Fatawa Rizvia Volume 24

[Arabic Column]: One and the [authors of the] Sunan except al-Nasa'i[1] from Anas, and one and the two Sheikhs, Ibn Majah[2] and al-Tahawi from Ibn 'Umar, and Ahmad, Muslim, and al-Tahawi from al-Sa'ib[3] bin Yazid, and they and Ibn Jarir all from Jabir[4], and Ahmad, al-Tirmidhi, and al-Tahawi[5] from Ibn Mas'ud, and Ahmad, Ibn Majah, al-Tahawi, al-Tabarani, and Ibn Jarir from Ibn 'Abbas[6], and the last three from...

[Urdu Column]: ...narrated from him (may Allah be pleased with him). Furthermore, Imam Ahmad and six other imams, all except Imam al-Nasa'i, have narrated it, and these five imams narrated it from Hazrat Anas. Imam Ahmad, al-Bukhari, al-Muslim, Ibn Majah, and Imam al-Tahawi narrated from Hazrat Abdullah ibn 'Umar (may Allah be pleased with them both). Also, Imam Ahmad, Muslim, and al-Tahawi narrated from Hazrat al-Sa'ib bin Yazid. Ibn Jarir and all of them narrated from Hazrat Jabir. Imam Ahmad, al-Tirmidhi, and al-Tahawi narrated from Hazrat Abdullah ibn Mas'ud (may Allah be pleased with them both). Imam Ahmad, Ibn Majah, al-Tahawi, al-Tabarani...

Footnotes: 1. Sahih al-Bukhari, Book of Medicine, Chapter 'No contagion', 2/859; Sahih Muslim, Chapter 'Omens and Augury', 2/231; Sunan Abi Dawud, Book of Divination and Augury, 3/190; Sunan Ibn Majah, Chapters on Medicine, p. 261; Musnad Ahmad ibn Hanbal, narrated by Anas (may Allah be pleased with him), 3/130 and 154. 2. Sahih al-Bukhari, Book of Medicine, 2/859; Kanz al-Ummal, citing Ahmad and Ibn Majah, 10/118; Sunan Ibn Majah, Chapters on Medicine, 261. 3. Sahih Muslim, Book of Greetings, Chapter 'No contagion', 2/230; Musnad Ahmad ibn Hanbal, narrated by al-Sa'ib bin Yazid, 3/450; Sharh Ma'ani al-Athar, 2/416. 4. Sahih Muslim, Book of Greetings, Chapter 'No contagion', 2/231; Musnad Ahmad ibn Hanbal, narrated by Jabir, 3/293; Sharh Ma'ani al-Athar, 2/417. 5. Jami' al-Tirmidhi, Chapters on Divine Decree, 2/37; Musnad Ahmad ibn Hanbal, narrated by Ibn Mas'ud, 1/440; Sharh Ma'ani al-Athar, 2/416. 6. Musnad Ahmad ibn Hanbal, narrated by Ibn 'Abbas, 1/269; Sunan Ibn Majah, Chapters on Medicine, p. 261; Sharh Ma'ani al-Athar, 2/416.

फ़तावा रिज़विया खंड 24

[अरबी कॉलम]: एक और नसाई[1] के अलावा सुनन के लेखकों ने अनस से, और एक और दोनों शेखों, इब्न माजा[2] और अल-तहावी ने इब्न उमर से, और अहमद, मुस्लिम और अल-तहावी ने अल-साइब[3] बिन यज़ीद से, और उन्होंने और इब्न जरीर सभी ने जाबिर[4] से, और अहमद, अल-तिर्मिज़ी और अल-तहावी[5] ने इब्न मसूद से, और अहमद, इब्न माजा, अल-तहावी, अल-तबरानी और इब्न जरीर ने इब्न अब्बास[6] से रिवायत की, और पिछले तीन...

[उर्दू कॉलम]: ...उनसे (रज़ियल्लाहु अन्हु) रिवायत किया। साथ ही, इमाम अहमद और छह अन्य इमामों ने, इमाम नसाई को छोड़कर, सभी ने इसे रिवायत किया है, और इन पांच इमामों ने हज़रत अनस से रिवायत की है। इमाम अहमद, बुखारी, मुस्लिम, इब्न माजा और इमाम तहावी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत की है। इसके अतिरिक्त, इमाम अहमद, मुस्लिम और तहावी ने हज़रत साइब बिन यज़ीद से रिवायत की। इब्न जरीर और उन सभी ने हज़रत जाबिर से रिवायत की। इमाम अहमद, तिर्मिज़ी और तहावी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत की। इमाम अहमद, इब्न माजा, तहावी, तबरानी...

पादलेख (Footnotes): 1. सहीह अल-बुखारी, किताब अल-तिब्ब, बाब ला अदुवा 2/859; सहीह मुस्लिम, बाब अल-तियराह व अल-फ़ाल 2/231; सुनन अबी दाऊद, किताब अल-किहाना व अल-ततय्युर 3/190; सुनन इब्न माजा, अबवाब अल-तिब्ब, पृ. 261; मुसनद अहमद इब्न हनबल, हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत, 3/130 और 154। 2. सहीह अल-बुखारी, किताब अल-तिब्ब 2/859; कंजुल उम्माल, अहमद और इब्न माजा के हवाले से 10/118; सुनन इब्न माजा, अबवाब अल-तिब्ब 261। 3. सहीह मुस्लिम, किताब अल-सलाम, बाब ला अदुवा 2/230; मुसनद अहमद इब्न हनबल, अल-साइब बिन यज़ीद से रिवायत, 3/450; शरह मानी अल-असार 2/416। 4. सहीह मुस्लिम, किताब अल-सलाम, बाब ला अदुवा 2/231; मुसनद अहमद इब्न हनबल, जाबिर से रिवायत, 3/293; शरह मानी अल-असार 2/417। 5. जामे अल-तिर्मिज़ी, अबवाब अल-क़दर 2/37; मुसनद अहमद इब्न हनबल, इब्न मसूद से रिवायत, 1/440; शरह मानी अल-असार 2/416। 6. मुसनद अहमद इब्न हनबल, इब्न अब्बास से रिवायत, 1/269; सुनन इब्न माजा, अबवाब अल-तिब्ब, पृ. 261; शरह मानी अल-असार 2/416।

पृष्ठ 231/720

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

[عربی کالم]: واحد و السنة الاالنسائی[1] عن انس واحد و الشیخان وابن ماجة[2] والطحاوی عن ابن عمر و احمد ومسلم والطحاوی عن السائب[3] بن یزید و ھم وابن جریر جمیعاً عن جابر[4] واحمد والترمذی و الطحاوی[5] عن ابن مسعود واحمد وابن ماجة و الطحاوی والطبرانی و ابن جریر عن ابن عباس[6] و الثلاثة الاخیرة عن

[اردو کالم]: رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا، نیز امام احمد اور دیگر چھ ائمہ نے سوائے امام نسائی کے سب نے اس کو روایت کیا ہے اور ان پانچ ائمہ نے حضرت انس سے روایت کی ہے۔ امام احمد، بخاری، مسلم، ابن ماجہ اور امام طحاوی نے حضرت عبد اللہ ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت فرمائی نیز امام احمد، مسلم اور طحاوی نے حضرت سائب بن یزید سے روایت کی۔ ابن جریر اور ان سب نے حضرت جابر سے روایت کی۔ امام احمد، ترمذی اور طحاوی نے حضرت عبداللہ ابن مسعود رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کی۔ امام احمد، ابن ماجہ، طحاوی، طبرانی

حواشی: 1 صحیح البخاری کتاب الطب باب لا عدوی ۲/ ۸۵۹ و صحیح مسلم باب الطیرة والفال ۲/ ۲۳۱، سنن ابی داؤد کتاب الکھانة والتطیر ۳/ ۱۹۰ و سنن ابن ماجہ ابواب الطب ص ۲۶۱، مسند احمد بن حنبل عن انس رضی اللہ تعالٰی عنہ ۳/ ۱۳۰ و ۱۵۴ 2 صحیح البخاری کتاب الطب ۲/ ۸۵۹ و کنز العمال بحوالہ حم وابن ماجه ۱۰/ ۱۱۸ سنن ابن ماجه ابواب الطب ۲۶۱ 3 صحیح مسلم کتاب السلام باب لا عدوی ۲/ ۲۳۰ و مسند احمد بن حنبل عن السائب بن یزید ۳/ ۴۵۰ شرح معانی الآثار ۲/ ۴۱۶ 4 صحیح مسلم کتاب السلام باب لا عدوی ۲/ ۲۳۱ و مسند احمد بن حنبل عن جابر ۳/ ۲۹۳ شرح معانی الآثار ۲/ ۴۱۷ 5 جامع الترمذی ابواب القدر ۲/ ۳۷ و مسند احمد بن حنبل عن ابن مسعود

۱/ ۴۴۰ شرح معانی الآثار ۲/ ۴۱۶ 6 مسند احمد بن حنبل عن ابن عباس ۱/ ۲۶۹ و سنن ابن ماجہ ابواب الطب ص ۲۶۱ شرح معانی الآثار ۲/ ۴۱۶

Fatawa Razawiyya Volume 24

In multiple paths of this same Hadith, that decisive answer, removing all doubt and suspicion, was stated which the Mother of the Believers (Aisha, RA) narrated in her reasoning. It is in Sahihayn (Bukhari & Muslim), Sunan Abi Dawud, Sharh Ma'ani al-Athar of Imam Tahawi, and others, from the Hadith of Abu Huraira (RA) that when the Holy Prophet (PBUH) stated that disease is not contagious, a desert dweller submitted: "O Messenger of Allah! Then what is the state of camels that are in the sand like deer (i.e., with clean, clear bodies), then a scabby camel enters among them and they become scabby?" The Prophet of Light (PBUH) said: "Who infected the first one?" In Ahmad, Muslim, Abu Dawud, and Ibn Majah, there is a Hadith from Ibn Umar (RA) where it is stated: "That is predestination (Qadr), so who infected the first one?"[2] These are matters of destiny; well, who gave the first one the itch? The same was narrated in the aforementioned Hadiths of Abdullah bin Mas'ud, Abdullah bin Abbas, Abu Umama, and Umair bin Sa'd (RA). In the last Hadith, it is mentioned with this explanation:

Did you not see the camel in the desert?	**Don't you see that a camel is in the desert, i.e., isolated,**
That in its chest or the soft parts of its belly a spot of scabies appears which was not there before?	No sick camel is near it, yet in the morning you see a scabies sore on its chest or the soft part of its belly.
So who infected the first one?[3]	Well, who infected this first one?

I say: (Translator's note) The essence of the guidance is that to break the chain, one must accept that the disease started in it without being transmitted from another. Thus, it is proven by decisive proof that disease can also occur spontaneously. And when this is accepted, then the claim of it arising due to transmission to another remains a mere weak delusion and an unproven claim. When it can arise spontaneously in one, it can similarly do so in a thousand:

| Let not the rejected enemy (Satan) whisper into the heart of the sick person. | Lest the rejected enemy (Satan) whisper into the heart of the sick. |

---

1 Sahih al-Bukhari, Chapter: No Contagion, 2/859; Sahih Muslim, Chapter: No Contagion, 2/230; Sunan Abi Dawud, Book of Divination, 2/190; and Sharh Ma'ani al-Athar, 2/216. 2 Kanz al-Ummal, citing Ahmad and Ibn Majah, Hadith 28599, Mu’assasah al-Risalah Beirut 10/118; Sunan Ibn Majah, Chapters on Medicine, p. 261.

3 Kanz al-Ummal, citing Tabarani, Hilya, Kanz, from Umair bin Sa'd, Hadith 28612, Mu’assasah al-Risalah Beirut 10/121.

इसी हदीस के कई मार्गों में वह निर्णायक उत्तर दिया गया है, जो हर संदेह और संशय को दूर करने वाला है, जिसे उम्मुल मोमिनीन ने अपने तर्क में उद्धृत किया है। सहीहैन (बुखारी और मुस्लिम), सुनन अबी दाऊद, इमाम तहावी की शरह मा'अनी अल-आसार आदि में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की हदीस से है कि जब हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यह फरमाया कि बीमारी उड़कर नहीं लगती, तो एक देहाती ने अर्ज़ किया: "या रसूल अल्लाह! फिर ऊंटों का यह क्या हाल है कि वे रेत में हिरणों की तरह (यानी साफ-सुथरे बदन वाले) होते हैं, फिर एक खुजली वाला ऊंट उनमें आकर शामिल हो जाता है जिससे वे सब खुजली वाले हो जाते हैं।" हुज़ूर पुर नूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "तो पहले वाले को किसने छुआ (संक्रमित किया)?" अहमद, मुस्लिम, अबू दाऊद और इब्न माजह के यहाँ हज़रत इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से हदीस है, जिसमें इरशाद हुआ: "वह तक़दीर है, तो पहले वाले को खुजली किसने लगाई?"[2] यह तक़दीर की बातें हैं; भला पहले वाले को किसने खुजली लगा दी, यही बात अब्दुल्ला बिन मसऊद, अब्दुल्ला बिन अब्बास, अबू उमामा और उमैर बिन साद (रज़ियल्लाहु अन्हुम) की ऊपर ज़िक्र की गई हदीसों में वर्णित है, आखिरी हदीस में इस स्पष्टीकरण के साथ है कि फरमाया:

क्या तुमने ऊंट को जंगल में नहीं देखा?	**क्या देखते नहीं कि ऊंट जंगल में होता है यानी अलग-थलग कि**
उसके सीने या पेट के नरम हिस्से में खुजली का एक दाना निकल आता है जो पहले नहीं था।	उसके पास कोई बीमार ऊंट नहीं होता, सुबह देखो तो उसके सीने
तो पहले वाले को किसने संक्रमित किया?[3]	या पेट की नरम जगह में खुजली का दाना मौजूद है, भला इस पहले वाले को किसकी छूत लग गई।

अकूल: (मैं कहता हूँ - अनुवादक) इरशाद का सार यह है कि सिलसिला तोड़ने के लिए, दूसरे से स्थानांतरित हुए बिना बीमारी की शुरुआत को स्वयं उसी में मानना आवश्यक है। तो निर्णायक प्रमाण से सिद्ध हुआ कि बीमारी अपने आप भी उत्पन्न हो जाती है और जब यह स्वीकार्य है, तो दूसरे में संक्रमण के कारण उत्पन्न होना केवल एक कमज़ोर वहम और बिना प्रमाण का दावा रहा। जब एक में स्वयं उत्पन्न हो सकती है, तो वैसे ही हज़ारों में हो सकती है:

| तो धिक्कृत शत्रु (शैतान) बीमार के दिल में वसवसा न डाले। | कहीं मरदूद दुश्मन (शैतान) मरीज़ के दिल में वसवसा (संदेह) न डाले। |

---

1 सहीह अल-बुखारी, बाब: ला अदवा, 2/859 और सहीह मुस्लिम, बाब: ला अदवा, 2/230, सुनन अबी दाऊद, किताब अल-कहाना, 2/190 और शरह मा'अनी अल-आसार, 2/216। 2 कंजुल उम्माल, बहवाला अहमद और इब्न माजह, हदीस 28599, मुअस्ससतुर् रसाला बेरूत 10/118, सुनन इब्न माजह, अबवाबुत् तिब, पृ. 261। 3 कंजुल उम्माल, बहवाला तिब, हल, क, अन उमैर बिन साद, हदीस 28612, मुअस्ससतुर् रसाला बेरूत 10/121।

اسی حدیث کے متعدد طرق میں وہ جواب قاطع ہر شک وارتیاب ارشاد ہوا جسے ام المومنین نے اپنے استدلال میں روایت فرمایا صحیحین وسنن ابی داؤد وشرح معانی الآثار امام طحاوی و غیر ہا میں حدیث ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے ہے جب حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے یہ فرمایا کہ بیماری اڑ کر نہیں لگتی، ایک بادیہ نشین نے عرض کی : یارسول اللہ ! پھر اونٹوں کا یہ کیا حال ہے کہ وہ ریتی میں ہوتے ہیں جیسے ہرن یعنی صاف شفاف بدن ایک اونٹ خارش والا آکر ان میں داخل ہوتا ہے جس سے خارش ہو جاتی ہے۔ حضور پر نور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: فمن اعدی الاول اس پہلے کو کس کی اڑ کر لگی، احمد و مسلم وابوداؤد وابن ماجہ کے یہاں حدیث ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے ہے ارشاد فرمایا: ذلکم القدر فمن اجرب الاول[2] یہ تقدیر ہی باتیں ہیں بھلا پہلے کو کس نے کھجلی لگادی، یہی ارشاد احادیث مذکورہ عبداللہ بن مسعود وعبداللہ بن عباس وابو امامہ و عمیر بن سعد رضی اللہ تعالٰی عنہم میں مروی ہوا، حدیث اخیر میں اس توضیح کے ساتھ ہے کہ فرمایا:

الم تروا الی البعیر یکون في الصحراء فیصبح وفی کرکرتہ اوفی مراق بطنہ نکتۃ من جرب لم تکن قبل ذلک فمن اعدی الاول[3]۔

کیا دیکھتے نہیں کہ اونٹ جنگل میں ہوتا ہے یعنی الگ تھلک کہ اس کے پاس کوئی بیمار اونٹ نہیں صبح کو دیکھو تو اس کے پیچ سینے یا پیٹ کے نرم جگہ میں کھجلی کادانہ موجود ہے بھلا اس پہلے کو کس کی اڑ کر لگ گئی۔

اقول: (میں کہتا ہوں۔ت) حاصل ارشاد یہ ہے کہ قطع تسلسل کے لئے ابتداء بغیر دوسرے سے منتقل ہوئے خود اس میں بیماری پیدا ہونے کا ماننا لازم ہے تو حجت قاطعہ سے ثابت ہوا کہ بیماری خود بخود بھی حادث ہو جاتی ہے اور جب یہ مسلم ہے تو دوسرے میں انتقال کے سبب پیدا ہونا محض وہم علیل وادعائے بے دلیل رہا، جب ایک میں خود پیدا ہوسکتی ہے تو یو ہیں ہزار میں:

| فلا یوسوسن العدو الرجیم فی قلب مریض | مردود دشمن (شیطان) کہیں مریض کے دل میں |

---

1 صحیح البخاری باب لا عدوی ۲ / ۸۵۹ و صحیح مسلم باب لا عدوی ۲ / ۲۳۰، سنن ابی داؤد کتاب الکھانۃ ۲ / ۱۹۰ و شرح معانی الآثار ۲ / ۲۱۶ 2 کنز العمال بحوالہ حم وابن ماجہ حدیث ۲۸۵۹۹ موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰/ ۱۱۸ سنن ابن ماجہ ابواب الطب ص ۲۶۱ 3 کنز العمال بحوالہ طب، حل، ك عن عمیر بن سعد حدیث ۲۸۶۱۲ موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰/ ۱۲۱

Volume 24 Fatawa Razawiyya

“Indeed, those who say [disease is] contagious do not restrict the disease to it [contagion] such that they would be compelled to [account for] the contagion of the first [case]; so understand and remain firm.” (T) (Meaning: Let not this doubt occur that those who believe in the transmission of disease restrict the disease to this contagion, such that an accusation could be leveled against them: how did the first patient get the disease? So understand and be steadfast.)

Thirty-first Hadith: Imam Ahmad, Bukhari, Muslim, Abu Dawud, and Ibn Majah narrated from Abu Huraira (may Allah be pleased with him) to the extent that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said:

“A diseased [animal owner] should not bring [his animals] to the healthy [ones].” Diseased animals should never be brought to drink water alongside healthy animals.

Bayhaqi has recorded a more detailed version in Sunan, stating that it was said:

“There is no contagion [inherent in the disease itself], and a diseased animal owner should not bring his animals to a healthy one, but a healthy animal owner may take them wherever he wishes.” It was asked, “O Messenger of Allah, why is that?” He said, “Because it causes harm (annoyance).” And Allah knows best. Disease does not spread by itself, and diseased animals should not be brought near healthy ones, and the owner of healthy animals can take them wherever he wants. It was asked, “Why is this?” He said, “Because there is discomfort in it, meaning people will mind it and it will cause them distress.” And Allah knows best.

I say: And Malik has narrated it in his Muwatta that it reached him from Bukayr bin 'Abdullah bin al-Ashajj from Ibn 'Atiyyah that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)... I say (I say): Imam Malik has narrated this in his Muwatta that the mentioned Hadith reached him from Bukayr bin Abdullah bin Ashajj through Ibn Atiyyah, stating that the Messenger of Allah (peace be upon him)...

1. Sahih Muslim, Kitab al-Salam, Bab la 'adwa, Qadimi Kutub Khana Karachi 2/230, Sunan Abi Dawud, Kitab al-Kahanah, Bab fi al-Tiyarah etc., Aftab-e-Alam Press Lahore 2/190, Sunan Ibn Majah, Abwab al-Tibb, Bab al-Judham, HM Saeed Company Karachi p. 261, Sahih al-Bukhari, Kitab al-Tibb, Qadimi Kutub Khana 2/859, Musnad Ahmad bin Hanbal from Abu Huraira, Dar al-Fikr Beirut 2/464 & 434.

2. Al-Sunan al-Kubra of Bayhaqi, Kitab al-Nikah, Bab la yurad mumrid 'ala musah, Dar Sadir Beirut 7/217.

खंड 24 फ़तावा रज़विया

"वास्तव में, जो लोग [बीमारी को] संक्रामक कहते हैं, वे बीमारी को उसमें [संक्रमण में] सीमित नहीं करते हैं कि उन्हें पहले [मामले] के संक्रमण के लिए उत्तरदायी होना पड़े; इसलिए समझें और अडिग रहें।" (त) (अर्थात: यह संदेह मन में न आने दें कि जो बीमारी के संक्रमण के कायल हैं, वे बीमारी को केवल इसी छूत में बंद नहीं करते कि उन पर यह आरोप लगे कि पहले मरीज़ को बीमारी कैसे लगी? तो समझ लीजिए और स्थिर रहिए।)

इकतीसवीं हदीस: इमाम अहमद, बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद और इब्न माजा ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से इतनी ही रिवायत की है कि हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:

"एक बीमार [जानवर का मालिक] अपने जानवरों को स्वस्थ [जानवरों] के पास न लाए।" बीमार जानवरों को स्वस्थ जानवरों के पास पानी पिलाने के लिए हरगिज़ न लाया जाए।

बैहक़ी ने सुनन में विस्तार से इस प्रकार उल्लेख किया है कि इरशाद फरमाया:

"कोई छूत (स्वयं बीमारी में) नहीं है, और बीमार जानवर का मालिक अपने जानवर स्वस्थ जानवर के पास न लाए, लेकिन स्वस्थ जानवर वाला जहाँ चाहे ले जाए।" पूछा गया, "ऐ अल्लाह के रसूल! ऐसा क्यों है?" फरमाया, "क्योंकि इसमें तकलीफ (परेशानी) है।" और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। बीमारी खुद से उड़कर नहीं लगती, और स्वस्थ जानवरों के पास बीमार जानवर न लाएं और स्वस्थ जानवर वाला जहाँ चाहे ले जाए। अर्ज़ किया गया कि यह किस लिए है? फरमाया: इसलिए कि इसमें अज़ीयत (कष्ट) है, यानी लोग बुरा मानेंगे, उन्हें परेशानी होगी। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

कहा गया: और मलिक ने अपनी मुवत्ता में रिवायत किया है कि उन्हें बुकैर बिन अब्दुल्ला बिन अशज से इब्न अतिय्या के माध्यम से पहुँचा कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने... क़ुल्तु (मैं कहता हूँ): इमाम मलिक ने अपनी मुवत्ता में इसे इस तरह रिवायत किया है कि उपर्युक्त हदीस उन्हें बुकैर बिन अब्दुल्ला बिन अशज के माध्यम से इब्न अतिय्या के ज़रिए पहुँची कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने...

1. सहीह मुस्लिम, किताब अल-सलाम, बाब ला 'अदवा, कदीमी कुतुब खाना कराची 2/230, सुनन अबू दाऊद, किताब अल-कहाना, बाब फी अल-तियराह आदि, आफताब-ए-आलम प्रेस

लाहौर 2/190, सुनन इब्न माजा, अबवाब अल-तिब्ब, बाब अल-जुज़ाम, एचएम सईद कंपनी कराची पृ. 261, सहीह बुखारी, किताब अल-तिब्ब, कदीमी कुतुब खाना 2/859, मुसनद अहमद बिन हंबल अबू हुरैरा से, दार अल-फ़िक्र बेरूत 2/464 और 434।

2. अल-सुनन अल-कुबरा बैहक़ी, किताब अल-निकाह, बाब ला युराद मुमरिद 'अला मुसाह, दार सादिर बेरूत 7/217।

ان القائلین بالاعداء لا یحصرون المرض فیہ حتی یلزمھم اعداء الاول فافھم وتثبت۔ یہ وسوسہ نہ ڈال دے کہ تجاوزِ مرض کے قائل مرض کو اس تعدیہ میں بند تو نہیں کرتے کہ ان پر یہ الزام ہو کہ پہلے مریض کو مرض کیسے لگ گیا، پس سمجھ لیجئے اور ثابت رہئے۔ (ت) اکتیسویں حدیث: کہ امام احمد و بخاری و مسلم وابوداؤد وابن ماجہ نے ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اسی قدر روایت کی کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

لا یوردن ممرض علی مصح۔ ہرگز بیمار جانور تندرست جانوروں کے پاس پانی پلانے کو نہ لائے جائیں۔

بیہقی نے سنن میں یوں مطولاً تخریج کی کہ ارشاد فرمایا:

لا عدوی ولا یحل الممرض علی المصح ولیحل المصح حیث شاء فقیل یارسول اللہ ولم ذلک قال لانہ اذی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ بیماری اڑ کر نہیں لگتی اور تندرست جانوروں کے پاس بیمار جانور نہ لائیں اور تندرست جانور والا جہاں چاہے لے جائے، عرض کی گئی یہ کس لئے؟ فرمایا: اس لئے کہ اس میں اذیت ہے یعنی لوگ برا مانیں گے انہیں ایذا ہوگی۔ واللہ تعالیٰ اعلم

قلت وقد رواہ مالک فی مؤطاہ انہ بلغہ عن بکیر بن عبداللہ بن الاشج عن ابن عطیہ ان رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم قلت (میں کہتا ہوں) امام مالک نے اپنی مؤطا میں اسے یوں روایت کیا کہ حدیث مذکور انہیں بکیر بن عبداللہ بن اشج سے بواسطہ ابن عطیہ اس طرح پہنچی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے

۱ صحیح مسلم کتاب السلام باب لا عدوی قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۲۳۰، سنن ابی داؤد کتاب الکھانة باب فی الطیرة الخ آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۱۹۰ سنن ابن ماجہ ابواب الطب باب الجذام ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۲۶۱، صحیح البخاری کتاب الطب قدیمی کتب خانہ ۲ / ۸۵۹، مسند احمد بن حنبل عن ابی ہریرہ دار الفکر بیروت ۲ / ۴۶۴ و ۴۳۴ ۲ السنن الکبری للبیہقی کتاب النکاح باب لایورد ممرض علی مصح دار صادر بیروت ۷ / ۲۱۷

Fatawa Rizvia, Volume 24

(Arabic Text): He said: There is no contagion (infection spreading on its own), no evil omen from an owl, and no ill-luck in the month of Safar. A diseased animal should not be brought to a healthy one; rather, take the healthy animal wherever you wish. They said: "O Messenger of Allah, what is the reason for that?" The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) replied: "It causes harm," meaning it will cause distress to people. This was narrated by Yahya as a mursal report (missing the final link in the chain), and a group of narrators of Al-Muwatta followed him. However, al-Qa'nabi, Abdullah bin Yusuf, Abu Mus'ab, and Yahya bin Bukair differed with them, and narrated it as a mawsul report (with a continuous chain) from Abu Atiyyah from Abu Hurairah. Ibn Bukair mentioned it from Abu Atiyyah, and there is no contradiction because he is Abdullah bin Atiyyah al-Ashja'i, and his kunya is Abu Atiyyah. Some narrators of Al-Muwatta were mistaken in narrating it from Abu Atiyyah from Abu Barzah; in fact, it is narrated from Abu Hurairah (may Allah be pleased with them both). This was noted by Al-Zarqani.

(Urdu Translation): He (Prophet Muhammad) said: There is no contagion in any disease (such that the disease flies and affects another healthy person), and there is no bad omen in owls, etc., nor is there bad luck in the arrival of the month of Safar. Do not bring a sick animal to a healthy animal; instead, take the healthy animal wherever you wish. People asked: "O Messenger of Allah (peace and blessings be upon you), why is that?" He replied: "There is harm in it," meaning people will be distressed. Yahya narrated it as a mursal report (without mentioning the chain), and a group of Muwatta narrators followed him. Qa'nabi, Abdullah bin Yusuf, Abu Mus'ab, and Yahya bin Bukair opposed them. Therefore, it was established as a mawsul report through Ibn Atiyyah from Abu Hurairah. However, Ibn Bukair narrated it from Ibn Atiyyah, and there is no contradiction because he is Abdullah bin Atiyyah al-Ashja'i, though his kunya is Abu Atiyyah. Some narrators of Muwatta had the misconception that they narrated this hadith from Abu Atiyyah through Abu Barzah's chain, whereas it is narrated from the chain of Abu Hurairah (may Allah be pleased with them both). Allama Zarqani explained this. (T)

This hadith combines both subjects. Thirty-second Hadith: A magnificent Sahih hadith that possesses a similar comprehensive nature is in Sahih al-Bukhari from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him). The Master of the Universe (peace and blessings be upon him) says:

(Arabic Text): There is no contagion, and flee from the leper as you would flee from a lion. Narrated by the great Imam Jalaluddin al-Suyuti.

(Urdu Translation): Disease does not spread by flying, and flee from a person with leprosy as you would flee from a lion. Great Imam Jalaluddin al-Suyuti.

1. Muwatta Imam Malik, Kitab al-Jami', Chapter on Visiting the Sick and Omens, Mir Muhammad Book House Karachi, p. 721.
2. Sharh al-Zarqani on Muwatta al-Imam Malik, Kitab al-Jami', Chapter on Visiting the Sick and Omens, Dar al-Ma'rifah Beirut, 2/333.
3. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Tibb, Chapter on Leprosy, Qadeemi Kutub Khana Karachi, 2/850.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 24

(अरबी पाठ): उन्होंने फ़रमाया: छूत (संक्रमण) नहीं है, न उल्लू में अपशकुन है, न सफ़र के महीने में बदक़िस्मती है। बीमार पशु को स्वस्थ पशु के पास न लाया जाए; बल्कि स्वस्थ पशु को जहाँ चाहो ले जाओ। उन्होंने पूछा: "ऐ अल्लाह के रसूल, यह किस लिए?" अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उत्तर दिया: "यह कष्टदायक है," अर्थात् यह लोगों को परेशानी देगा। इसे याह्या ने 'मुर्सल' (अधूरी श्रृंखला) के रूप में वर्णित किया, और मुवत्ता के कई वर्णकत्ताओं ने उनका अनुसरण किया। हालाँकि, अल-क़नबी, अब्दुल्लाह बिन युसूफ, अबू मुसाब और याह्या बिन बुकैर ने उनसे असहमति जताई और इसे अबू अतिया के माध्यम से अबू हुरैरा से 'मूसूल' (निरंतर श्रृंखला के साथ) के रूप में वर्णित किया। इब्न बुकैर ने इसे अबू अतिया से वर्णित किया, और इसमें कोई विरोधाभास नहीं है क्योंकि वह अब्दुल्लाह बिन अतिया अल-अशजई हैं, और उनकी कुनियत अबू अतिया है। मुवत्ता के कुछ वर्णकत्ताओं को भ्रम हुआ कि उन्होंने इसे 'अबू अतिया-अबू बरज़ह' के माध्यम से वर्णित किया है, जबकि यह वास्तव में अबू हुरैरा से वर्णित है (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो)। अल्लामा ज़रक़ानी ने यह स्पष्ट किया।

(उर्दू अनुवाद): इरशाद फ़रमाया: किसी रोग में छूत नहीं है (कि रोग उड़कर दूसरे स्वस्थ व्यक्ति को लग जाए) और न ही उल्लू आदि में अपशकुन है, न सफ़र के महीने के आगमन में कोई मनहूसियत है। बीमार जानवर को स्वस्थ जानवर के पास न लाएँ बल्कि स्वस्थ जानवर को जहाँ चाहें ले जाएँ। लोगों ने अर्ज़ किया: "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), यह क्यों?" आपने फ़रमाया: "इसमें कष्ट है," यानी लोगों को तकलीफ़ होगी। याह्या ने इसे मुर्सल के तौर पर (बिना सनद के ज़िक्र के) बयान किया और मुवत्ता के रावियों (वर्णनकर्ताओं) की जमात ने उनकी पैरवी की। क़नबी, अब्दुल्लाह बिन युसूफ, अबू मुसाब और याह्या बिन बुकैर ने उनका विरोध किया। लिहाज़ा इब्न अतिया के माध्यम से हज़रत अबू हुरैरा के हवाले से इसे मूसूल (सम्बद्ध) क़रार दिया गया। मगर यह कि इब्न बुकैर ने इब्न अतिया से कहा और इसमें कोई विरोध नहीं है क्योंकि वह अब्दुल्लाह बिन अतिया अशजई हैं, अलबत्ता उनकी कुनियत अबू अतिया है। मुवत्ता के कुछ रावियों को यह भ्रम हुआ कि उन्होंने इस हदीस को अबू अतिया से अबू बरज़ह की सनद के साथ ज़िक्र किया, जबकि यह हज़रत अबू हुरैरा की सनद से वर्णित है (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो)। अल्लामा ज़रक़ानी ने इसे स्पष्ट किया। (त)

यह हदीस दोनों विषयों का संगम है। बत्तीसवीं हदीस: एक महान सहीह हदीस जिसमें इसी तरह की व्यापकता है, सहीह बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से है। हुज़ूर सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

(अरबी पाठ): छूत नहीं है, और कोढ़ी से ऐसे भागो जैसे शेर से भागते हो। इसे महान इमाम जलालुद्दीन अल-सुयूती ने उल्लेख किया है।

(उर्दू अनुवाद): बीमारी उड़कर नहीं लगती और कोढ़ी से ऐसे भागो जैसे शेर से भागते हो। जलील-उल-क़द्र इमाम जलालुद्दीन सुयूती।

1. मुवत्ता इमाम मालिक, किताब अल-जामि, अध्याय: रोगी की देखभाल और अपशकुन, मीर मोहम्मद कुतुब खाना कराची, पृष्ठ 721।
2. शरह अल-ज़रक़ानी अल मुवत्ता अल-इमाम मालिक, किताब अल-जामि, अध्याय: रोगी की देखभाल और अपशकुन, दार अल-मआरिफा बेरूत, 2/333।
3. सहीह अल-बुख़ारी, किताब अत-तिब्ब, अध्याय: कोढ़ (जज़ाम), क़दीमी कुतुब खाना कराची, 2/850।

पृष्ठ 235 का 720

قال لا عدوی ولا ھام ولا صفر ولا یحل الممرض علی المصح ولیحلل المصح حیث شاء فقالوا یا رسول اللہ وما ذاك فقال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم انہ اذی ۱. ھکذا رواہ یحیی مرسلا و تابعہ جماعۃ من رواۃ الموطا وخالفھم القعنبی وعبداللہ بن یوسف وابومصعب ویحیی بن بکیر فجعلوہ عن ابی عطیۃ عن ابی ھریرۃ موصولا غیر ان ابن بکیر قال عن ابی عطیۃ ولا خلف فھو عبداللہ بن عطیۃ الاشجعی ویکنی ابا عطیۃ ووھم بعض رواۃ الموطا فی جعلہ عن ابی عطیۃ عن ابی برزۃ وانما ھو عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالیٰ عنھما افادہ الزرقانی ۲. ارشاد فرمایا: کسی مرض میں تعدیہ نہیں (کہ مرض اڑ کر دوسرے تندرست آدمی کو لگ جائے) اور الو وغیرہ میں نحوست نہیں ، ماہ صفر کی آمد میں نحوست نہیں۔ بیمار جانور کو تندرست جانور کے پاس نہ لائیں بلکہ تندرست جانور کو جہاں چاہیں لے جائیں۔ لوگوں نے عرض کیا یہ کیوں یا رسول اللہ صلی اللہ علیک وسلم۔ آپ نے ارشاد فرمایا اس میں اذیت ہے یعنی لوگوں کو ایذا ہوگی۔ یحییٰ نے بطور ارسال (ذکر سند کے بغیر) اس کو روایت کیا اور موطا کے راویوں کی جماعت نے اس کی متابعت کی۔ قعنبی، عبد اللہ بن یوسف، ابو مصعب اور یحییٰ بن بکیر نے ان کی مخالفت کی۔ لہٰذا بواسطہ ابن عطیہ حضرت ابوہریرہ کے حوالے سے اسے موصول قرار دیا مگر یہ کہ ابن بکیر نے ابن عطیہ سے کہا اور اس میں کوئی خلاف نہیں اس لئے کہ وہ عبداللہ بن عطیہ اشجعی ہے البتہ اس کی کنیت ابو عطیہ ہے، بعض رواۃ موطا کو یہ وہم ہوا کہ انہوں نے اس حدیث کو عن ابی عطیہ عن ابی برزہ کی سند سے ذکر کیا حالانکہ یہ حضرت ابوہریرہ کی سند سے مروی ہے (اللہ تعالیٰ ان دونوں سے راضی ہو) علامہ زرقانی نے اس کا افادہ کیا۔ (ت)

یہ حدیث دونوں مضمون کی جامع ہے۔ بتیسویں حدیث: صحیح جلیل کہ ایسا ہی رنگ جامعیت رکھتی ہے صحیح بخاری شریف میں ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ہے حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں :

لاعدوی وفر من المجذوم کما تفر من الاسد ۳. اورده الامام الجلیل الجلال السیوطی بیماری اڑ کر نہیں لگتی اور جذامی سے بھاگ جیسا شیر سے بھاگتا ہے۔ جلیل القدر امام جلال الدین سیوطی

۱ مؤطا امام مالک کتاب الجامع باب عیادة المریض والطیرة میر محمد کتب خانہ کراچی ص ۷۲۱ ۲ شرح الزرقانی علی مؤطا الامام مالك کتاب الجامع باب عیادة المریض والطیرة دارالمعرفة بیروت ۲/ ۳۳۳ ۳ صحیح البخاری کتاب الطب باب الجذام قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۸۵۰

Fatawa Razawiya, Volume 24

In his Jami' al-Kabir, he cited it with this wording, attributing it to Ibn Jarir on the authority of Abu Qilaba (1). In its first part, he cited it with the wording: "There is no infection, no omen, no owl [omen], and no Safar [omen]. Flee from the leper as you flee from a lion," attributing it (2) to Sunan al-Bayhaqi on the authority of Abu Hurayra. He also mentioned it at the beginning of the Jami' with the wording: "There is no infection, no omen, no owl [omen], and no Safar [omen]. And flee from the leper as you would flee from a lion," attributing it to Ahmad (3) and al-Bukhari on the authority of Abu Hurayra. It is likewise in the Jami' al-Sahih. From this, it becomes clear what we previously mentioned: that attribution follows the wording. Thus, considering the hadith of Abu Qilaba, we counted it separately. Therefore, we cited it with its wording, which is exactly the wording of al-Bukhari, even if it contains additions that do not affect this meaning. I say: And this Abu Qilaba is Abdullah bin Zaid al-Jarmi.

[Urdu Commentary Translation]: In his Jami' al-Kabir, he has brought it from Imam Ibn Jarir with reference to Abu Qilaba using these words. In its first part, he brought it with these words: "La 'adwa," meaning no disease is contagious [by itself], "wa la hamah," there is no bad omen in the owl, "wa la safar," there is no bad omen in the arrival of the month of Safar. Stay away from a leper just as you stay away from (i.e., run away from) lions, attributing it to Sunan al-Bayhaqi via Abu Hurayra. Furthermore, at the beginning of the Jami', Imam Suyuti brought these words: there is no transmission in any disease, no bad luck in the owl, nor in the month of Safar; run from a leper like you run from a lion. Referring to Musnad Ahmad and Bukhari on the authority of Hazrat Abu Hurayra (may Allah be pleased with him). And it is exactly like that in the Jami' Sahih. From this, it has become clear that what we have stated before—that attribution follows the wording—then in view of the hadith of Abu Qilaba, we have counted it separately from its counterpart. Therefore, we have brought it with the same wording, and those are exactly the words of Bukhari, although it includes some additions, so in this meaning, on them...

(1) Jami' al-Ahadith by al-Suyuti, Musnad Abi Qilaba, Hadith 10146, Dar al-Fikr Beirut, 7/312 (2) Jami' al-Ahadith by al-Suyuti, Hadith 26191, Dar al-Fikr Beirut, 8/300 (3) Jami' al-Ahadith by al-Suyuti, Hadith 26168, Dar al-Fikr Beirut, 8/297

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

अपनी 'जामे कबीर' में इमाम इब्न जरीर के हवाले से अबू किलाबा से रिवायत करते हुए इन शब्दों के साथ लाए हैं। और इसके पहले भाग में इन शब्दों के साथ लाए हैं: "ला अ़दवा" यानी कोई बीमारी छूत की नहीं होती, "व ला हामा" न उल्लू में कोई अपशकुन है, "व ला सफर" न सफर के महीने के आने में कोई अपशकुन है। कोढ़ी से इस तरह बचो जैसे शेरों से बचते हो (यानी भागते हो), सुनन अल-बैहकी की ओर निस्बत करते हुए हज़रत अबू हुरैरा के माध्यम से। इसके अलावा 'जामे' की शुरुआत में इमाम सुयूती ने इन शब्दों के साथ ज़िक्र किया है: किसी बीमारी में संक्रमण नहीं होता, न उल्लू में अपशकुन है, न ही सफर के महीने में; कोढ़ी से वैसे ही भागो जैसे शेर से भागते हो। मुसनद अहमद और बुखारी के हवाले से हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अ़नहु) के माध्यम से। और वह 'जामे सही' में इसी तरह है। इससे स्पष्ट हो गया कि जो कुछ हम पहले बयान कर आए हैं कि निस्बत करना शब्दों के अधीन होता है, फिर अबू किलाबा की हदीस को ध्यान में रखते हुए हमने इसे इसके समकक्ष से अलग गिना है, इसलिए हम इसे उसी शब्द के साथ लाए हैं और वह वास्तव में बुखारी के शब्द हैं, भले ही इसमें कुछ अतिरिक्त बातें शामिल हों, तो इस अर्थ में उन पर...

(1) जामे अल-अहादीस लिस-सुयूती, मुसनद अबी किलाबा, हदीस 10146, दारुल फिक्र बेरूत, 7/312 (2) जामे अल-अहादीस लिस-सुयूती, हदीस 26191, दारुल फिक्र बेरूत, 8/300 (3) जामे अल-अहादीस लिस-सुयूती, हदीस 26168, दारुल फिक्र बेरूत, 8/297

पृष्ठ 236/720 मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी

فی جامعہ الکبیر بھذا اللفظ عازیاً لابن جریر عن ابی قلابۃ ۱ وفی قسمہ الاول بلفظ لاعدوی ولاطیرۃ ولاہامۃ ولاصفر واتقوا المجذوم کما تتقوا الاسد عازیاً ۲ لسنن البیھقی عن ابی ھریرۃ، واوردہ فی اول الجامع ایضاً بلفظ لاعدوی ولاطیرۃ ولاھامۃ ولا صفر وفرمن المجذوم کما تفر من الاسد عازیاً لاحمد ۳ والبخاری عن ابی ھریرۃ، وھو کذلک فی الجامع الصحیح وبہ ظھر ما قدمنا ان العزو یتبع اللفظ فبالنظر الی حدیث ابی قلابۃ عددناہ بحیالہ ولذا اوردناہ بلفظہ وھو بعینہ لفظ البخاری وان اشتمل علی زیادات لاتوقف لھذا المعنی علیھا، اقول: وابو قلابۃ ھذا ھو عبد اللہ بن زید الجرمی

اپنی جامع کبیر میں ابو قلابہ کے حوالہ سے امام ابن جریر کی طرف سے نسبت کرتے ہوئے اس لفظ سے لائے ہیں اور اس کی پہلی قسم میں ان الفاظ سے لائے ہیں "لا عدوی" یعنی کوئی مرض اڑ کر نہیں لگتا، "ولا ہامۃ" نہ الو میں نحوست ہے، "ولا صفر" نہ ماہِ صفر کی آمد میں کوئی نحوست ہے۔ جذامی سے اس طرح بچو جس طرح شیروں سے بچتے ہو (یعنی بھاگتے ہو) بواسطہ ابوہریرہ سنن بیہقی کی طرف نسبت کرتے ہوئے۔ نیز جامع کی ابتداء میں امام سیوطی ان الفاظ سے لائے ہیں کسی مرض میں تجاوز نہیں نہ الو میں نحوست ہے نہ ماہِ صفر میں، جذامی سے بھاگو جیسے شیر سے بھاگتے ہو۔ مسند احمد اور بخاری کی طرف نسبت کرتے ہوئے حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ کے حوالے سے۔ اور وہ جامع صحیح میں اسی طرح ہے۔ اس سے ظاہر ہو گیا کہ جو کچھ ہم پہلے بیان کر آئے ہیں کہ نسبت کرنی لفظ کے تابع ہوتی ہے پھر ابو قلابہ کی حدیث کے پیشِ نظر ہم نے اس کے مقابل سے اس کا شمار کیا ہے اس لئے ہم اسے اسی لفظ سے لائے ہیں اور وہ بعینہ بخاری کے الفاظ ہیں اگرچہ وہ کچھ اضافوں پر مشتمل ہے پس اس معنی کا ان پر

۱ جامع الاحادیث للسیوطی مسند ابی قلابہ حدیث ۱۰۱٤٦ دارالفکر بیروت ۷/ ۳۱۲ ۲ جامع الاحادیث للسیوطی حدیث ۲٦۱۹۱ دارالفکر بیروت ۸ / ۳۰۰ ۳ جامع الاحادیث للسیوطی حدیث ۲٦۱٦۸ دارالفکر بیروت ۸ / ۲۹۷

Fatawa Rizvia, Volume 24

Main Body Text: [Arabic Column]: From among the reliable Tabi'un and their scholars, many narrations are 'Mursal' (with missing links). It would have been better to point this out. Then, Al-Allamah ash-Shams as-Sakhawi said regarding the Hadith 'Fear those with defects': the meaning is 'Flee from the leper as you flee from a lion', as reported in some wordings of the Hadith. It is 'Muttafaqun Alayh' (unanimously agreed upon) from Abu Hurairah, elevated in its meaning. I saw myself writing a note on it, saying: I have not seen it in Sahih Muslim; rather, it contains the statement of the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) to a leper: 'We have accepted your pledge, so return.' Yes, it is in the Hadith of Bukhari with the wording: 'Flee from the leper as you flee from a lion.' It was solely attributed to Bukhari in Mishkat. Similarly, Imam Nawawi in the commentary of Muslim under the mentioned Hadith, and Imam Suyuti in the beginning of his 'Jami' al-Kabir'. And Allah (Exalted) knows best.

[Urdu Column]: No pause (this meaning is not restricted to them). I say: (I say that) this is Abu Qilaba Abdullah bin Zaid al-Jarmi, who is among the reliable Tabi'un and their scholars. He narrates many 'Mursal' reports; it would have been better if he had alerted (warned) about this. Al-Allamah Shams-ud-Din as-Sakhawi said that the meaning of the Hadith 'Fear those with defects' is 'Flee from the leper as you flee from a lion' (meaning flee from a person with leprosy just as you flee from a lion), as it has appeared in some wordings of the Hadith. It is a 'Muttafaqun Alayh' narration through Abu Hurairah (may Allah be pleased with him), reported with the same meaning. I remember I wrote a footnote on this; the text is as follows. I say: (I say) I have not seen this in Sahih Muslim. In it, regarding the person with leprosy, only this statement of the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) is mentioned: 'We have accepted your (verbal) pledge, so go back.' Yes, however, in the narration of Bukhari Sharif, these words appear: 'Flee from a person with leprosy just as you [flee from a lion].'

Footnotes: 1. Al-Maqasid al-Hasanah, Letter Hamza, Hadith 21, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, p. 18. 2. Sahih Muslim, Kitab as-Salam, Chapter: Avoiding the Leper, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/233. 3. Sahih Bukhari, Kitab at-Tibb, Chapter: Leprosy, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/850. 4. Mishkat al-Masabih, Kitab at-Tibb wal-Ruqa, Chapter: Omens and Omen-taking, Mujtabai, Delhi, India, p. 391. 5. Sharh Sahih Muslim by Nawawi, Kitab as-Salam, Chapter: Avoiding the Leper, Qadimi Kutub

Khana, Karachi, 2/233. 6. Jami' al-Ahadith by Suyuti, Hadith 26168, Dar al-Fikr, Beirut, 8/297.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

मुख्य पाठ: [अरबी कॉलम]: विश्वसनीय ताबईन और उनके विद्वानों में से, कई रिवायतें 'मुर्सल' (टूटी हुई कड़ियों वाली) हैं। बेहतर होता अगर इस ओर ध्यान दिलाया जाता। फिर, अल-अल्लामा अश-शम्स अस-सखावी ने हदीस 'दोषों वालों से डरो' के बारे में कहा: इसका अर्थ है 'कोढ़ी से ऐसे भागो जैसे शेर से भागते हो', जैसा कि हदीस के कुछ शब्दों में आया है। यह अबू हुरैरा से 'मुत्तफ़कुन अलैहि' (सर्वसम्मति से स्वीकृत) है, जो अपने अर्थ में मरफ़ू (पैगंबर तक पहुँचा हुआ) है। मैंने खुद को इस पर एक नोट लिखते हुए देखा: मैंने इसे सहीह मुस्लिम में नहीं देखा है; बल्कि इसमें अल्लाह के रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) का एक कोढ़ी के प्रति यह कथन है: 'हमने तुम्हारी प्रतिज्ञा स्वीकार कर ली है, अतः वापस लौट जाओ।' हाँ, यह बुखारी की हदीस में इन शब्दों के साथ है: 'कोढ़ी से ऐसे भागो जैसे तुम शेर से भागते हो।' मिश्कात में इसे केवल बुखारी की ओर ही संदर्भित किया गया है। इसी तरह, इमाम नववी ने मुस्लिम की व्याख्या में उल्लिखित हदीस के तहत, और इमाम सुयुति ने अपनी 'जामि अल-कबीर' की शुरुआत में। और अल्लाह (सर्वोच्च) सबसे बेहतर जानता है।

[उर्दू कॉलम]: कोई रोक नहीं (यह अर्थ उन पर निर्भर नहीं है)। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ कि) यह अबू किलाबा अब्दुल्ला बिन ज़ैद अल-जर्मी है, जो विश्वसनीय ताबईन और उनके विद्वानों में से है। वह कई 'मुर्सल' रिपोर्टें बयान करता है; बेहतर होता अगर उसने इस बारे में सचेत (चेतावनी) किया होता। अल्लामा शम्स-उद-दीन अस-सखावी ने फरमाया कि हदीस 'दोषों वालों से डरो' का अर्थ 'कोढ़ी से ऐसे भागो जैसे शेर से भागते हो' (यानी कोढ़ वाले व्यक्ति से इस तरह भागो जैसे शेर से भागते हो) है, जैसा कि हदीस के कुछ शब्दों में आया है। यह हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के माध्यम से एक 'मुत्तफ़कुन अलैहि' रिवायत है, जो अर्थ के आधार पर मरफ़ू है। मुझे याद है मैंने इस पर एक हाशिया (नोट) लिखा था; इबारत इस प्रकार है। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) मैंने इसे सहीह मुस्लिम में नहीं देखा। इसमें, कोढ़ वाले व्यक्ति के बारे में अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का केवल यही इरशाद ज़िक्र है कि: 'हमने तुम्हारी (ज़बानी) बैत (प्रतिज्ञा) कर ली है, लिहाज़ा वापस चले जाओ।' हाँ, अलबत्ता बुखारी शरीफ की रिवायत में ये शब्द आए हैं: 'कोढ़ी व्यक्ति से इस तरह भागो जिस तरह तुम...'

पादलेख: 1. अल-मकासिद अल-हसनाह, हर्फ़ अल-हमज़ा, हदीस 21, दार अल-कुतुब अल-इलमिया, बेरूत, पृ. 18। 2. सहीह मुस्लिम, किताब अस-सलाम, अध्याय: कोढ़ी से बचना, कदीमी

कुतुब खाना, कराची, 2/233। 3. सहीह बुखारी, किताब अत-तिब्ब, अध्याय: कोढ़, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/850। 4. मिश्कात अल-मसाबीह, किताब अत-तिब्ब वल-रुक़ा, अध्याय: शुभ-अशुभ शगुन, मुजतबाई, दिल्ली, भारत, पृ. 391। 5. इमाम नववी द्वारा शरह सहीह मुस्लिम, किताब अस-सलाम, अध्याय: कोढ़ी से बचना, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/233। 6. सुयुति द्वारा जामि अल-अहादीस, हदीस 26168, दार अल-फिक्र, बेरूत, 8/297।

عبارت: [عربی کالم]: من ثقات التابعین وعلمائهم کثیر الارسال وکان الاولی ان ینبه علیه ثم ان العلامة الشمس السخاوی قال فی حدیث اتقوا ذوی العاهات المعنی فر من المجذوم فرارك من الاسد کما ورد فی بعض الفاظ الحدیث وهو متفق علیه عن ابي هریرة مرفوعا بمعناه اه ورأیتنی کتبت علیه مانصه اقول : لم اره لمسلم انما فیه قوله صلی الله تعالی علیه وسلم لمجذوم انا قد بایعناك فارجع نعم هو فی حدیث البخاری بلفظ فر من المجذوم کما تفر من الاسد والیه وحده عزاه فی المشکوة وکذا الامام النووی فی شرح مسلم تحت حدیثه المذکور وکذا الامام السیوطی فی اول جامعه الکبیر ، فالله تعالی اعلم۔

[اردو کالم]: توقف نہیں (یہ معنی ان پر موقوف نہیں) اقول: (میں کہتا ہوں کہ) یہ ابوقلابہ عبداللہ ابن زید جرمی ہے جو ثقات تابعین اور ان کے علماء میں سے ہے یہ کثیر الارسال ہے، بہتر تو یہ تھا کہ وہ اس پر آگاہ (تنبیہ) کرتا۔ علامہ شمس الدین سخاوی نے فرمایا کہ حدیث اتقوا ذوی العاهات کا معنی فر من المجذوم فرارک من الاسد (یعنی جذامی آدمی سے اس طرح بھاگو جیسے شیر سے بھاگتے ہو) جیسا کہ حدیث کے بعض الفاظ میں وارد ہوا ہے اور وہ بواسطہ حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ متفق علیہ مرفوع بالمعنی روایت ہے اہ مجھے یاد ہے میں نے اسی پر حاشیہ لکھا ہے عبارت یہ ہے اقول : (میں کہتا ہوں) میں نے اسے صحیح مسلم میں نہیں دیکھا، اس میں حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا جذامی شخص کے بارے میں صرف یہی ارشاد مذکور ہے کہ ہم نے تمہیں (زبانی) بیعت کرلیا لہذا واپس چلے جاؤ، ہاں البتہ بخاری شریف کی روایت میں یہ الفاظ آئے ہیں "جذامی شخص سے اس طرح بھاگو جس طرح تو"

حواشی: ۱۔ المقاصد الحسنہ حرف الہمزہ حدیث ۲۱ دار الکتب العلمیہ بیروت ص ۱۸ ۲۔ صحیح مسلم کتاب السلام باب اجتناب المجذوم قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۲۳۳ ۳۔ صحیح البخاری کتاب

الطب باب الجذام قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۸۵۰ ۴۔ مشکوۃ المصابیح کتاب الطب والرقی باب الفال والطیرۃ مجتبائی دہلی بھارت ص ۳۹۱ ۵۔ شرح صحیح مسلم للنووی کتاب السلام باب اجتناب المجذوم قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۲۳۳ ۶۔ جامع الاحادیث للسیوطی حدیث ۲۶۱۶۸ دارالفکر بیروت ۸/ ۲۹۷

"runs away from a lion" - in Mishkat, its attribution has been made solely to Bukhari. Similarly, Imam Nawawi has written in the commentary of Sahih Muslim under the mentioned Hadith, and similarly, at the beginning of his Jami' al-Kabir, Imam Suyuti said: In reality, Allah Almighty knows everything. (T)

Now, with the grace of Allah Almighty, hear the research of the ruling. I say: And with Allah is success (I say with the guidance of Allah Almighty. T). The Hadiths of the second category are clear and explicit in their message that disease does not spread by jumping (contagion); no disease migrates from one to another; a healthy person does not become sick by proximity and interaction with a sick person. To the one whom it started first, from whom did it jump to him? After hearing these consecutive, bright, and evident lofty instructions, there is no room for the thought that in reality, disease does jump, but the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) absolutely denied it to remove the superstition of the Pre-Islamic Era (Jahiliyyah). Furthermore, the practical actions of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and the great companions (may Allah be pleased with them), such as eating with lepers, drinking their leftover water, holding their hands with their own hands and putting them into the vessel, specifically lifting and eating morsels from the place they ate from, intentionally placing their mouth where they drank from and drinking themselves—this further clarifies that 'adwa (contagion), meaning one person's disease catching another, is a mere false notion; otherwise, presenting oneself for destruction is never permissible in Shariah.

Allah Almighty said: "And do not throw yourselves with your own hands into destruction." 1- (Allah Almighty said) Do not fall into destruction by your own hands.

As for the Hadiths of the first category, they are not of the same high degree of authenticity as the Hadiths of negation; most of them are weak, as we have explained and indicated, and some are at most 'hasan' (fair). Only the first Hadith could be deemed 'sahih' (authentic), but that very Hadith, in a superior form that appears in Sahih Bukhari, contains the invalidation of contagion itself, stating to run from a leper AND that disease does not jump. So, this Hadith itself clarifies that the command to run is not based on that superstition or fear; moreover, in terms of health (authenticity), its status is lower than other Hadiths of negation because Imam Bukhari did not narrate it as a 'musnad' (supported chain) but rather as a 'ta'liq' (suspended narration).

Where it is said, "Affan said," and this Affan | Thus, Imam Bukhari said, "Affan said," this is Affan.

1 The Holy Qur'an 2/195 Page 238 of 720

फतावा रज़विया जिल्द 24

"शेर से भागता है" - मिश्कात में इसका श्रेय केवल बुखारी को दिया गया है। इसी तरह इमाम नववी ने सहीह मुस्लिम की व्याख्या में उक्त हदीस के तहत लिखा है और इसी तरह अपनी जामी अल-कबीर के आरंभ में इमाम सुयुति ने कहा: वास्तव में अल्लाह सर्वशक्तिमान ही सब कुछ जानता है। (त)

अब अल्लाह तआला की तौफीक से हुक्म का शोध सुनें। मैं कहता हूँ: और अल्लाह की मदद से ही सफलता है (मैं अल्लाह तआला के मार्गदर्शन से कहता हूँ। त)। दूसरी श्रेणी की हदीसें अपने संदेश में स्पष्ट और साफ हैं कि बीमारी उड़कर नहीं लगती, कोई रोग एक से दूसरे में संचारित नहीं होता, कोई स्वस्थ व्यक्ति बीमार के पास रहने और मिलने-जुलने से बीमार नहीं हो जाता। जिसे पहले शुरू हुई, उसे किससे उड़कर लगी? इन लगातार, उज्ज्वल और स्पष्ट महान निर्देशों को सुनने के बाद इस विचार की कोई गुंजाइश नहीं रहती कि वास्तव में बीमारी तो उड़कर लगती है लेकिन रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने जाहिलियत के ज़माने के वहम को दूर करने के लिए इसका पूरी तरह से खंडन किया। फिर हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और महान सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) की व्यावहारिक कार्रवाई, जैसे कोढ़ियों के साथ खाना खाना, उनका बचा हुआ पानी पीना, उनका हाथ अपने हाथ से पकड़कर बर्तन में रखना, विशेष रूप से उनके खाने की जगह से निवाला उठाकर खाना, जहाँ उन्होंने मुँह लगाकर पिया था जानबूझकर उसी जगह मुँह रखकर खुद पीना—यह और भी स्पष्ट कर रहा है कि 'अदवा' यानी एक की बीमारी दूसरे को लग जाना मात्र एक गलत ख्याल है, अन्यथा अपने आप को हलाकत के लिए पेश करना शरीयत में हरगिज़ जायज़ नहीं है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और अपने हाथों खुद को बर्बादी में न डालो।" 1- (अल्लाह तआला ने फ़रमाया) आप अपने हाथों हलाकत में न पड़ो।

रही पहली श्रेणी की हदीसें, तो वे सेहत (प्रमाणिकता) के उस ऊंचे दर्जे पर नहीं हैं जिस पर निषेध की हदीसें हैं, उनमें से अधिकांश ज़ईफ़ (कमज़ोर) हैं जैसा कि हम बयान और इशारा कर चुके हैं और कुछ अत्यंत 'हसन' (उत्तम) हैं। केवल पहली हदीस को 'सहीह' माना जा सकता है, लेकिन वही हदीस जो सहीह बुखारी में बेहतर रूप में आई है, उसमें स्वयं 'अदवा' का खंडन मौजूद है कि कोढ़ी से भागो और बीमारी उड़कर नहीं लगती। तो यह हदीस स्वयं स्पष्ट कर रही है कि भागने का आदेश उस

वहम और अंदेशे के कारण नहीं है; इसके अलावा प्रमाणिकता में इसका स्तर अन्य निषेधात्मक हदीसों से गिरा हुआ है क्योंकि इमाम बुखारी ने इसे 'मुसनद' के रूप में नहीं बल्कि 'ता'लीक़' के तौर पर रिवायत किया है।

जहाँ कहा गया "अफ्फान ने कहा" और यह अफ्फान | चुनाँचे इमाम बुखारी ने फ़रमाया अफ्फान ने कहा, यह अफ्फान है।

1 अल-कुरान अल-करीम 2/195 पृष्ठ 238/720

"شیر سے بھاگتا ہے" صرف اکیلے بخاری ہی کی طرف مشکوٰۃ میں اس کی نسبت کی گئی ہے۔ اسی طرح امام نووی نے شرح صحیح مسلم میں حدیث مذکور کے ذیل میں لکھا ہے اور اسی طرح اپنی جامع کبیر میں ابتداءً امام سیوطی نے فرمایا: در حقیقت اللہ تعالی ہی سب کچھ جانتا ہے۔ (ت)

اب بتوفیق اللہ تعالی تحقیق حکم سنئے اقول: وباللہ التوفیق (میں اللہ تعالٰی کی توفیق سے کہتا ہوں۔ت) احادیث قسم ثانی تو اپنے افادہ میں صاف صریح ہیں کہ بیماری اڑ کر نہیں لگتی، کوئی مرض ایک سے دوسرے کی طرف سرایت نہیں کرتا، کوئی تندرست بیمار کے قریب واختلاط سے بیمار نہیں ہو جاتا، جسے پہلے شروع ہوئی اسے کس کی اُڑ کر لگی۔ ان متواتر و روشن وظاہر ارشادات عالیہ کو سن کر یہ خیال کسی طرح گنجائش نہیں پاتا کہ واقع میں تو بیماری اڑ کر لگتی ہے مگر رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے زمانہ جاہلیت کا وسوسہ اٹھانے کے لئے مطلقا اس کی نفی فرمائی، پھر حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم واجلہ صحابہ کرام رضی اللہ تعالٰی عنہم کی عملی کارروائی مجذوموں کو اپنے ساتھ کھلانا، ان کا جھوٹا پانی پینا، ان کا ہاتھ اپنے ہاتھ سے پکڑ کر برتن میں رکھنا، خاص ان کے کھانے کی جگہ سے نوالہ اٹھا کر کھانا جہاں منہ لگا کر انہوں نے پیا بالقصدا سی جگہ منہ رکھ کر خود نوش کرنا یہ اور بھی واضح کر رہی ہے کہ عدوی یعنی ایک کی بیماری دوسرے کو لگ جانا محض خیال باطل ہے ورنہ اپنے آپ کو ہلاک کے لئے پیش کرنا شرع ہر گز روا نہیں رکھتی،

قال اللہ تعالٰی "وَلَا تُلْقُوا بِاَیْدِیْکُمْ اِلَی التَّهْلُکَةِ" 1- (اللہ تعالٰی نے فرمایا) آپ اپنے ہاتھوں ہلاکت میں نہ پڑو۔

رہیں قسم اول کی حدیثیں، وہ اس درجہ عالیہ صحت پر نہیں جس پر احادیث نفی ہیں ان میں اکثر ضعیف ہیں جیسا کہ ہم بیان و اشارہ کر آئے اور بعض غایت درجہ حسن ہیں، صرف حدیث اول کی تصحیح ہو سکتی ہے مگر وہی حدیث اس سے اعلیٰ وجہ پر جو صحیح بخاری میں آئی خود اسی میں ابطالِ عدوی موجود کہ مجذوم سے بھاگو اور بیماری اڑ کر نہیں لگتی، تو یہ حدیث خود واضح فرما رہی ہے کہ بھاگنے کا حکم اس وسوسہ و اندیشہ کی بناء پر نہیں، معہٰذا صحت میں اس کا پایہ بھی دیگر احادیث نفی سے گرا ہوا ہے کہ اسے امام بخاری نے مسنداً روایت نہ کیا بلکہ بطور تعلیق،

حیث قال قال عفان وعفان هذا | چنانچہ امام بخاری نے فرمایا عفان نے کہا یہ عفان

1 القرآن الکریم ۲/ ۱۹۵ Page 238 of 720

Even if he is among the Sheikhs of Bukhari (the teachers of Bukhari), sometimes he narrates from him through an intermediary, as mentioned in Fath al-Bari, the commentary on Sahih Bukhari. Imam Bukhari's departure from his usual 'Haddathana' (he narrated to us) - which is customary across all books - to 'Qala' (he said) cannot be without a reason. Although this form is considered 'wasl' (connected) according to the method of Ibn al-Salah, it is disputed and not like the unanimously agreed-upon forms. The Absolute Researcher (Ibn al-Humam) in 'Fath al-Qadir', chapter on impotence (al-inin), has asserted with certainty and confidence that Imam Bukhari narrated it as a 'mu'allaq' (suspended) narration. Then, perhaps you might say: what has happened to you that you have restricted authenticity to the first Hadith? Is there not in what you mentioned the Hadith: 'Verily, we have pledged allegiance to you, so return'? I say: It is narrated by Muslim. Thus, Yahya bin Yahya narrated to us, Hashim informed us. (H) And Abu Bakr bin Abi Shaybah narrated to us, he said Shariq bin Abdullah and Hashim bin Bashir narrated to us, he (Hashim) from Ya'la bin Ata, from Amr bin al-Sharid, from his father, may Allah be pleased with him.

Footnotes: 1. Fath al-Bari Sharh al-Bukhari, Book of Medicine, Chapter on Leprosy, Mustafa al-Babi Egypt, 12/264. 2. Fath al-Qadir, Book of Divorce, Chapter on Impotence, Maktaba Nooria Rizvia Sukkur, 4/133. 3. Sahih Muslim, Book of Peace, Chapter on Avoiding the Leper, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/233. 4. Sahih Muslim, Book of Peace, Chapter on Avoiding the Leper, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/233.

यद्यपि वह बुखारी के शेखों (बुखारी के शिक्षकों) में से हैं, फिर भी कभी-कभी वे उनसे एक मध्यस्थ के माध्यम से वर्णन करते हैं, जैसा कि सहीह बुखारी की व्याख्या 'फतह अल-बारी' में है। इमाम बुखारी का अपनी सामान्य पद्धति 'हद्दसना' (उन्होंने हमें बताया) - जो सभी पुस्तकों में प्रथागत है - को छोड़कर 'काला' (उन्होंने कहा) शब्द चुनना बिना किसी कारण के नहीं हो सकता। हालाँकि इब्न अल-सलाह की पद्धति के अनुसार यह रूप 'वस्ल' (जुड़ा हुआ) माना जाता है, लेकिन यह विवादित है और सर्वसम्मति से स्वीकृत रूपों जैसा नहीं है। 'फतह अल-कदीर' के नपुंसकता (अल-इनीन) अध्याय में मुहाक्किल अल-इतलाक (इब्न अल-हुमाम) ने निश्चितता और विश्वास के साथ जोर दिया है कि इमाम बुखारी ने इसे 'मुअल्लाक' (निलंबित) वर्णन के रूप में वर्णित किया है। फिर, शायद आप कहें: आपको क्या हो गया है कि आपने प्रामाणिकता को पहली हदीस तक ही सीमित कर दिया है? क्या आपके द्वारा उल्लेखित बातों में यह हदीस नहीं है: 'निश्चित रूप से, हमने आपसे निष्ठा की शपथ ली है, इसलिए वापस लौटें'? मैं कहता हूँ: इसे मुस्लिम ने वर्णित किया है। इस प्रकार, याह्या बिन याह्या ने हमें बताया, हशम ने हमें सूचित किया। (ह) और अबू बक्र बिन अबी शायबा ने हमें बताया, उन्होंने कहा कि शरीक बिन अब्दुल्ला और हशीम बिन बशीर ने हमें बताया, उन्होंने याला बिन अता से, उन्होंने अम्र बिन अल-शरीद से, उन्होंने अपने पिता (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से वर्णन किया।

पाद-टिप्पणियाँ: 1. फतह अल-बारी शरह अल-बुखारी, चिकित्सा की पुस्तक, कुष्ठ रोग पर अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 12/264। 2. फतह अल-कदीर, तलाक की पुस्तक, नपुंसकता पर अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, 4/133। 3. सहीह मुस्लिम, शांति की पुस्तक, कुष्ठ रोगी से बचने पर अध्याय, कदीमी कुतुब खाना कराची, 2/233। 4. सहीह मुस्लिम, शांति की पुस्तक, कुष्ठ रोगी से बचने पर अध्याय, कदीमी कुतुब खाना कराची, 2/233।

اگرچہ شیوخ بخاری (اساتذہ بخاری) میں سے ہے تاہم اس سے بسا اوقات بالواسطہ روایت کرتے ہیں جیسا کہ فتح الباری شرح صحیح بخاری میں ہے، امام بخاری کا حد ثنا (جو تمام کتب میں حسب معمول وحسب عادت ہے) چھوڑ کر لفظ قال اختیار کرنا بغیر کسی وجہ کے نہیں ہو سکتا، اگرچہ علامہ ابن الصلاح کے طریقے پر یہ صورت وصل ہے تاہم مختلف فیہ، متفق علیہ کی طرح نہیں۔ محقق علی الاطلاق (ابن ہمام) نے فتح القدیر باب عنین میں اس پر یقین اور وثوق کیا کہ امام بخاری نے اسے معلق روایت کیا ہے پھر شاید آپ کہیں کہ تمہیں کیا ہو گیا ہے کہ تم نے پہلی حدیث میں صحت کو منحصر (بند) کردیا حالانکہ جو کچھ آپ نے ذکر کیا اس میں یہ حدیث ہے انا قد بایعناك فارجع واپس ہو جاؤ ہم نے تمہیں زبانی بیعت کرلیا۔ اقول: (میں کہتا ہوں) امام مسلم اسے اس سند کے ساتھ روایت کرتے ہیں ہم سے یحیی بن یحیی نے بیان کیا اسے ہشیم نے بتایا، "ح" ہم سے ابوبکر بن شیبہ نے بیان کیا اس نے کہا ہم سے شریک بن عبداللہ اور ہشیم بن بشیر نے بیان کیا اس نے یعلی بن عطاء اس نے عمرو بن شرید اس نے اپنے باپ سے روایت کیا

حواشی: ۱ فتح الباري شرح البخاري كتاب الطب باب الجذام مصطفی البابی مصر ۱۲ / ۲۶۴ ۲ فتح القدیر کتاب الطلاق باب العنین مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۴ / ۱۳۳ ۳ صحیح مسلم کتاب السلام باب اجتناب المجذوم قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۲۳۳ ٤ صحیح مسلم کتاب السلام باب اجتناب المجذوم قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۲۳۳

Fatawa Razawiyya Volume 24

Arabic Text

Ibn Majah said: Amr ibn Rafi narrated to us, Hashim narrated to us from Ya'la ibn Ata etc. Hashim and Sharik are both 'Mudallis' (those who practice Tadhlees - concealing a defect in the chain), and both have narrated with the words 'an 'an' (from so-and-so). It is said in Al-Taqrib: Hashim ibn Bashir is trustworthy (Thiqah), reliable (Thabt), but he practices 'Tadhlees' and 'Irsal al-Khafi' excessively. Regarding Sharik, it was said: He is truthful but prone to many errors; his memory changed since he was appointed a judge in Kufa. In Tahdhib al-Tahdhib, it is mentioned that Abdul Haqq al-Ishbili said: He used to practice 'Tadhlees'. Ibn al-Qattan said: He was famous for 'Tadhlees'. (End of quote). It is said: Muslim narrates from him in 'mutaba'at' (supporting narrations). (End of quote). As seen here, his narration is extracted as a support for Hashim. As for the statement that the 'an 'an' of 'Mudalliseen' in Sahihayn (Bukhari and Muslim) is considered as having been heard directly (samaa'), I say: This is blind imitation. We do not deny thinking well of others, but conjecture (guesswork) can never be the same as clear clarification.

Urdu Translation

May Allah be pleased with him. Muhaddith Ibn Majah said: Amr bin Rafi narrated to us, he said Hashim narrated to us through Ya'la bin Ata, etc. Hashim and Sharik are both Mudallis and both narrated with the words 'an 'an'. Accordingly, it was stated in Al-Taqrib: Hashim bin Bashir is trustworthy and reliable, but he practices excessive Tadhlees and Irsal al-Khafi. And regarding Sharik, it was said: He is truthful but makes many mistakes; his memory underwent changes ever since he was appointed as a judge in Kufa. In Tahdhib al-Tahdhib, it was said that Abdul Haqq Ishbili stated: He used to perform Tadhlees. And Ibn al-Qattan said: He was famous for Tadhlees. (End). It was further stated: Imam Muslim used to narrate from him in supporting narrations (mutaba'at). (End). As here, extraction was made from him in support of Hashim. However, for those who say that the 'an 'an' narrations of those who practice Tadhlees in Sahih Bukhari and Muslim are presumed to be based on direct hearing (samaa'), I say: This is mere blind imitation. Although we do not deny having good expectations, conjecture (speaking based on guesswork) cannot at all be like a clear statement. (T)

There is no hadith that is explicit (Nass) in proving the transmission of diseases (Adwa). Rather, it has been stated in mutawatir (widely transmitted) hadiths that disease does not spread by jumping from one person to another. It has not appeared

in even a single hadith that diseases normally spread by jumping. Regarding the fourth hadith "Do not look intently at them, do not cast sharp glances at them," it clearly carries the meaning that looking too much at them will cause you disgust and hatred for them.

Footnotes: 1. Sunan Ibn Majah, Book of Medicine, Chapter on Leprosy, H.M. Saeed Company Karachi, p. 261. 2. Taqrib al-Tahdhib by Ibn Hajar al-Asqalani, under the letter 'H', Biography 3387, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut 2/269. 3. Taqrib al-Tahdhib by Ibn Hajar al-Asqalani, under the letter 'Shin' (with dots), Biography 2795, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut 1/417. 4. Tahdhib al-Tahdhib, concerning those named Sharik, Biography of Sharik bin Abdullah 775, Dairat al-Ma'arif al-Nizamiyyah Hyderabad Deccan India 4/337. 5. Tahdhib al-Tahdhib, concerning those named Sharik, Biography of Sharik bin Abdullah 775, Dairat al-Ma'arif al-Nizamiyyah Hyderabad Deccan India 4/337.

अरबी पाठ

इब्न माजा ने कहा: हमसे अम्र बिन राफ़े ने बयान किया, हमसे हशीम ने य'ला बिन अता आदि से बयान किया। हशीम और शरीक दोनों 'मुदल्लिस' (दोष छिपाने वाले) हैं और दोनों ने 'अन अन' शब्दों के साथ रिवायत की है। 'अत-तक़रीब' में कहा गया है: हशीम बिन बशीर भरोसेमंद (सिक़ह) और मज़बूत है, लेकिन वह बहुत अधिक 'तदलीस' और 'इरसाल-ए-ख़फ़ी' करता है। शरीक के बारे में कहा गया: वह सच्चा है लेकिन बहुत गलतियाँ करता है; जब से वह कूफ़ा में काज़ी नियुक्त हुआ, उसकी याददाश्त बदल गई। 'तहज़ीब अत-तहज़ीब' में कहा गया है कि अब्दुल हक़ अल-इशबीली ने कहा: वह 'तदलीस' किया करता था। इब्न अल-क़त्तान ने कहा: वह 'तदलीस' के लिए प्रसिद्ध था। कहा गया: मुस्लिम उनसे 'मुताबा'आत' (समर्थक हदीसों) में रिवायत करते हैं। जैसा कि यहाँ हशीम के समर्थन में उनसे तख़रीज की गई। जहाँ तक उन लोगों की बात है जो कहते हैं कि 'सहीहैन' (बुखारी और मुस्लिम) में मुदल्लिसों की 'अन अन' वाली हदीसें सुनने (समा'अ) पर आधारित मानी जाएँगी, तो मैं कहता हूँ: यह अंधानुकरण (तक़लीद-ए-जामिद) है। हम नेक गुमान (हुस्न-ए-ज़न्न) से इनकार नहीं करते, लेकिन अटकलपच्चू (तख़मीन) स्पष्ट बयान (तब्ईन) के समान बिल्कुल नहीं हो सकता।

उर्दू अनुवाद

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। मुहद्दिस इब्न माजा ने फ़रमाया: हमसे अम्र बिन राफ़े ने बयान किया, उसने कहा: हमसे हशीम ने बा-वास्ता य'ला बिन अता बयान किया आदि। हशीम और शरीक दोनों मुदल्लिस हैं और दोनों ने 'अन अन' के शब्दों से रिवायत की है, चुनाँचे 'अत-तक़रीब' में फ़रमाया: हशीम बिन बशीर सिक़ह, सब्त है मगर बहुत ज़्यादा तदलीस और इरसाल-ए-ख़फ़ी करने वाला है। और शरीक के मुतअल्लिक़ फ़रमाया: सच्चा है लेकिन कसीरुल खता (बहुत गलती करने वाला) है, उसके हाफ़िज़े में तब्दीली आ गई थी जब से वह कूफ़ा में काज़ी मुक़र्रर हुआ। 'तहज़ीब अत-तहज़ीब' में कहा कि अब्दुल हक़ इशबीली ने फ़रमाया: वह तदलीस किया करता था। और इब्न अल-क़त्तान ने फ़रमाया: वह तदलीस में मशहूर था। (अह)। फ़रमाया: इमाम मुस्लिम उससे मुताबा'आत में रिवायत करते थे। (अह)। जैसा कि यहाँ हशीम की मुताबअत में उससे तख़रीज फ़रमाई। लेकिन जिस ने यह कहा कि तदलीस करने वालों का बुखारी व मुस्लिम में 'अन अन' कहना समा'अ पर महमूल है, तो मैं कहता हूँ कि: यह महज़ अंधी तक़लीद है, अगरचे हम हुस्न-ए-ज़न्न के मुन्किर नहीं ताहम तख़मीन (अटकलपच्चू से कुछ कहना) बिल्कुल साफ़ बयान करने की तरह नहीं हो सकता। (त)

छूत-छात (अदवी) को साबित करने में कोई हदीस नस (स्पष्ट प्रमाण) नहीं है, बल्कि मुतवातिर हदीसों में यह फ़रमाया गया कि बीमारी उड़कर नहीं लगती, और यह एक हदीस में भी नहीं आया कि आम तौर पर उड़कर लग जाती है। चौथी हदीस "उन्हें टकटकी लगा कर न देखो, उनकी तरफ़ तेज़ निगाह न करो" साफ़ यह मतलब रखती है कि उधर ज़्यादा देखने से तुम्हें घृणा आएगी और उनसे नफ़रत पैदा होगी।

पाद टिप्पणियाँ: 1. सुनन इब्न माजा, अबवाब अल-तिब्ब, बाब अल-जुज़ाम, एच. एम. सईद कंपनी कराची, पृ. २६१। 2. तक़रीब अत-तहज़ीब, इब्न हजर असक़लानी, हर्फ़'हा' के नीचे, जीवनी ३३८७, दार अल-कुतुब अल-इलमिया बेरूत २/ २६९। 3. तक़रीब अत-तहज़ीब, इब्न हजर असक़लानी, हर्फ़ 'शिन' (नुक्ते वाली) के नीचे, जीवनी २७९५, दार अल-कुतुब अल-इलमिया बेरूत १/ ४१७। 4. तहज़ीब अत-तहज़ीब, जिनका नाम शरीक है, जीवनी शरीक बिन अब्दुल्लाह ७७५, दायरातुल मआरिफ़ अन-निज़ामिया हैदराबाद दकन भारत ४/ ३३७। 5. तहज़ीब अत-तहज़ीब, जिनका नाम शरीक है, जीवनी शरीक बिन अब्दुल्लाह ७७०, दायरातुल मआरिफ़ अन-निज़ामिया हैदराबाद दकन भारत ४/ ३३७।

पृष्ठ २४०/७२०

عربی متن

وقال ابن ماجة حدثنا عمرو بن رافع ثنا هشيم عن يعلى بن عطاء الخ وهشيم بن شريك كلاهما مدلس وقد عنعنا قال في التقريب هشيم بن بشير ثقة ثبت كثير التدليس والارسال الخفي وقال في شريك صدوق يخطئ كثيرا تغير حفظه منذ ولى القضاء بالكوفة وقال في تهذيب التهذيب قال عبدالحق الاشبيلى كان يدلس وقال ابن القطان كان مشهورا بالتدليس اه قال و يروى له مسلم في المتابعات اه كما ههنا اخرج له بمتابعة هشيم اما قول من قال ان عنعنة المدلسين في الصحيحين محمول على السماع فاقول: تقليد جامد ولاننكر تحسين الظن فليس التخمين كالتبيين اصلا۔

اردو ترجمہ

رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔ محدث ابن ماجہ نے فرمایا ہم سے عمرو بن رافع نے بیان کیا اس نے کہا ہم سے ہشیم نے بواسطہ یعلی بن عطاء بیان کیا الخ ہشیم اور شریک دونوں مدلس ہیں اور دونوں نے عن عن کے الفاظ سے روایت کی ہے، چنانچہ التقریب میں فرمایا: ہشیم بن بشیر ثقة، ثبت ہے مگر بہت زیادہ تدلیس اور ارسالِ خفی کرنے والا ہے۔ اور شریک کے متعلق فرمایا: سچا ہے لیکن کثیر الخطاء ہے اس کے حافظے میں تبدیلی آگئی تھی جب سے وہ کوفہ میں قاضی مقرر ہوا۔ تہذیب التہذیب میں کہا کہ عبدالحق اشبیلی نے فرمایا: وہ تدلیس کیا کرتا تھا۔ اور ابن القطان نے فرمایا: وہ تدلیس میں مشہور تھا۔ اھ فرمایا: امام مسلم اس سے متابعات میں روایت کرتے تھے اھ جیسا کہ یہاں ہشیم کی متابعت میں اس سے تخریج فرمائی۔ لیکن جس نے یہ کہا کہ تدلیس کرنے والوں کا بخاری و مسلم میں عن عن کہنا سماع پر محمول ہے فاقول: (تو میں کہتا ہوں کہ) یہ محض اندھی تقلید ہے اگر چہ ہم حسن ظن کے منکر نہیں تاہم تخمین

عربی متن **اردو ترجمہ**

(اٹکل پچو سے کچھ کہنا) بالکل صاف بیان کرنے کی طرح

نہیں ہو سکتا۔ (ت)

کوئی حدیث ثبوتِ عدوی میں نص نہیں، یہ تو متواتر حدیثوں میں فرمایا کہ بیماری اڑ کر نہیں لگتی، اور یہ ایک حدیث میں بھی نہیں آیا کہ عادی طور پر اڑ کر لگ جاتی ہے۔ حدیثِ چہارم کو نظر جما کر نہ دیکھو ان کی طرف تیز نگاہ نہ کرو "صاف یہ محمل رکھتی ہے کہ ادھر زیادہ دیکھنے سے تمہیں گھن آئے گی نفرت پیدا ہوگی ان۔

حواشی: 1 سنن ابن ماجہ ابواب الطب باب الجذام ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۲۶۱ 2 تقریب التھذیب لابن حجر عسقلانی تحت حرف الھاء ترجمہ ۳۳۸۷ دار الکتب العلمیہ بیروت ۲/ ۲۶۹ 3 تقریب التہذیب لابن حجر عسقلانی تحت حرف الشین المعجمہ ترجمہ ۲۷۹۵ دار الکتب العلمیہ بیروت ۱/ ۴۱۷ 4 تھذیب التھذیب من اسمہ شریك ترجمہ شریك بن عبداللہ ۷۷۵ دائرۃ المعارف النظامیہ حیدرآباد دکن بھارت ۴/ ۳۳۷ 5 تھذیب التھذیب من اسمہ شریك ترجمہ شریك بن عبداللہ ۷۷۵ دائرۃ المعارف النظامیہ حیدرآباد دکن بھارت ۴/ ۳۳۷

Fatawa-e-Razvia Volume 24

If you consider those afflicted by calamities as inferior, first of all, it is disliked by God Himself, and secondly, it causes undue harm to those trapped in trouble, which is not permissible. Allama Munawi states in 'Taysir Sharh Jami' Saghir':

(Do not stare fixedly) because it causes distress, lest you begin to loathe them or start belittling them by considering them flawed. (T)

Allama Fitni states in 'Majma' Bihar al-Anwar':

Do not prolong your gaze at lepers because if one stares continuously, he might despise them, and the leper will be pained by it. Do not look fixedly at lepers because it is harmful; when someone stares at them, they feel belittled, and this causes distress to the lepers. (T)

In the sixth Hadith, where it was said to that person from Thaqif: "Go back, your oath of allegiance (Bay'ah) is accepted," there are several reasons: (1) They were not called to the sacred assembly so that those present would not look upon them with contempt. (2) So that no one among the attendees would think "we are better than them," as self-conceit is a disease more severe than this physical illness. (3) So that the patient would not feel saddened by seeing the gathering, thinking they are all at ease while he is in distress, which might lead to complaints about destiny in his heart. (4) Consideration for the feelings of the attendees, as people of Arabia and non-Arabia alike naturally feel aversion and dislike towards the proximity of such patients. (5) I say: (Author's note) It is possible the patient's feelings were considered, as such a patient, especially a newcomer or a person of dignity, feels ashamed to enter a gathering. (6) I say: It is possible that moisture was oozing from the hands of the patient (may Allah be pleased with him), so he did not wish to shake hands. In short, situational occurrences are subject to a hundred different interpretations and cannot serve as a general proof. It is stated in 'Majma' al-Bihar':

"Go back, for we have accepted your oath of allegiance." He was sent back... Go back, surely I have (verbally) accepted from you.

1. At-Taysir Sharh al-Jami' as-Saghir under the Hadith 'Do not stare fixedly at lepers', Maktabah Imam Shafi'i, Riyadh, 2/491.
2. Majma' Bihar al-Anwar under the letter 'Jeem', under the word 'Judham', Maktabah Dar al-Iman, Medina, 1/336.

फतावा-ए-रजविया जिल्द 24

मुसीबत के शिकार लोगों को तुच्छ समझोगे, तो एक तो यह स्वयं ईश्वर को पसंद नहीं है, फिर इससे उन मुसीबत के शिकार लोगों को अनुचित कष्ट पहुँचेगा, और यह उचित नहीं है। अल्लामा मुनावी 'तयसीर शरह जामे सगीर' में फरमाते हैं:

(नज़रें जमाकर न देखो) क्योंकि यह पीड़ादायक है, कहीं ऐसा न हो कि तुम उनसे घृणा करने लगो और उन्हें दोषपूर्ण समझते हुए तुच्छ समझने लगो। (त)

अल्लामा फितनी 'मजमा बिहारुल अनवार' में फरमाते हैं:

कोढ़ी लोगों को नज़रें टिकाकर न देखो क्योंकि यदि कोई उन्हें निरंतर देखता रहेगा, तो वह उन्हें तुच्छ समझ सकता है, और इससे कोढ़ी को कष्ट होगा। कोढ़ी लोगों को टकटकी लगाकर न देखें क्योंकि यह कष्टदायक है; जब कोई उन्हें टकटकी लगाकर देखता है, तो वह उन्हें नीचा समझेगा और कोढ़ियों को इस तरह से पीड़ा होगी। (त)

छठी हदीस में, जहाँ उस सक़फी (Thaqafi) व्यक्ति से कहा गया: "वापस चले जाओ, तुम्हारी बैअत (शपथ) हो गई है," इसके कई कारण हैं: (१) उन्हें पवित्र सभा में नहीं बुलाया गया ताकि उपस्थित लोग उन्हें देखकर तुच्छ न समझें। (२) ताकि उपस्थित लोगों में से किसी के मन में यह विचार न आए कि "हम उनसे बेहतर हैं," क्योंकि आत्म-अहंकार इस बीमारी से भी अधिक गंभीर बीमारी है। (३) ताकि रोगी सभा के लोगों को देखकर दुखी न हो कि ये सब बहुत आराम में हैं और वह संकट में है, तो उसके हृदय में भाग्य के प्रति शिकायत पैदा होगी। (४) उपस्थित लोगों की भावनाओं का ध्यान रखा गया क्योंकि अरब और गैर-अरब दोनों ही प्रकार के अधिकांश लोग स्वभावतः ऐसे रोगियों की निकटता को बुरा मानते हैं और उनसे घृणा करते हैं। (५) मैं कहता हूँ: (लेखक का कथन) संभव है कि रोगी की भावनाओं का ध्यान रखा गया हो क्योंकि ऐसा रोगी, विशेष रूप से नया रोगी या प्रतिष्ठित व्यक्ति, सभा में आने में शर्म महसूस करता है। (६) मैं कहता हूँ: संभव है कि रोगी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के हाथों से नमी निकल रही हो, इसलिए उन्होंने हाथ मिलाना नहीं चाहा। संक्षेप में, वास्तविक घटनाएं सौ प्रकार की संभावनाओं के अधीन होती हैं, वे सामान्य प्रमाण नहीं हो सकतीं। 'मजमा अल-बिहार' में है:

"वापस चले जाओ, हमने तुम्हारी बैअत ले ली है।" उन्हें वापस भेज दिया... वापस चले जाओ निश्चित रूप से मैंने तुम्हें (जुबानी) स्वीकार कर लिया है।

1. अत-तयसीर शरह अल-जामे अस-सगीर, हदीस 'कोढ़ियों को नज़रें जमाकर न देखो' के अंतर्गत, मकतबा इमाम शाफई, रियाद, 2/491।
2. मजमा बिहार अल-अनवार, अक्षर 'जीम' के अंतर्गत, शब्द 'जुज़ाम' के अंतर्गत, मकतबा दार अल-ईमान, मदीना मुनव्वरा, 1/336।

पृष्ठ 720 का 241

مصیبت زدوں کو حقیر سمجھو گے، ایک تو یہ خود حضرت عزت کو پسند نہیں پھر اس سے ان گرفتار ان بلا کو ناحق ایذا پہنچے گی ، اور یہ روا نہیں۔ علامہ منادی تیسر شرح جامع صغیر میں فرماتے ہیں:

(لا تحدوا النظر) لانه اذی ان لا تعافوهم فتزدروهم او تحتفروهم - 1 (نظریں جما کر جذامیوں کو نہ دیکھو) اس لئے کہ یہ ایذا ہے کہیں تم ان سے گھن نہ کرنے لگو اور ان کو عیب دار سمجھتے ہوئے تحقیر نہ کرنے لگو۔ (ت)

علامہ فتنی مجمع بحار الانوار میں فرماتے ہیں:

لا تدیموا النظر الی المجذومین لانه اذا ادامه حقره و تاذی به المجذوم - 2 نگاہ جما کر جذامیوں کو نہ دیکھو اس لئے کہ یہ ایذا ہے جب کوئی نگاہ جما کر انہیں دیکھے تو انہیں حقیر سمجھے گا اور جذامیوں کو اس طرح تکلیف ہوگی۔ (ت)

حدیث ششم میں کہ ان ثقفی سے فرمایا: "پلٹ جاؤ تمہاری بیعت ہوگئی " متعدد وجوہ ہیں: (۱) انہیں مجلس اقدس میں نہ بلایا کہ حاضرین دیکھ کر حقیر نہ سمجھیں۔ (۲) حضار میں کسی کو دیکھ کر یہ خیال نہ پیدا ہو کہ ہم ان سے بہتر ہیں، خودبینی اس مرض سے بھی سخت تر بیماری ہے۔ (۳) مریض اہل مجمع کو دیکھ کر غمگین نہ ہو کہ یہ سب ایسے چین میں ہیں اور وہ بلا میں، تو اس کے قلب میں تقدیر کی شکایت پیدا ہوگی۔ (۴) حاضرین کا لحاظ خاطر فرمایا کہ عرب بلکہ عرب و عجم جمہور بنی آدم بالطبع ایسے مریض کی قربت سے برا مانتے ہیں نفرت لاتے ہیں۔ (۵) اقول: (میں کہتا ہوں۔ت) ممکن کہ خاطر مریض کا لحاظ فرمایا کہ ایسا مریض خصوصاً نو مبتلا خصوصاً

ذی وجاہت مجمع میں آتے ہوئے شرماتا ہے۔ (۶) اقول: ممکن کہ مریض رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ہاتھوں سے رطوبت نکلتی تھی تو نہ چاہا کہ مصافحہ فرمائیں، غرض واقعہ حال محل صد گونہ احتمال ہوتا ہے حجت عام نہیں ہو سکتا۔ مجمع البحار میں ہے:

ارجع فقد بایعناك انما ردہ واپس چلے جاؤ بے شک میں نے تمہیں (زبانی) بیعت کر لیا۔

1 التیسیر شرح الجامع الصغیر تحت حدیث لا تحدوا النظر الی مجذومین مکتبہ امام شافعی الریاض ۲/ ۴۹۱ 2 مجمع بحار الانوار تحت حرف الجیم تحت لفظ " جذام " مکتبہ دارالایمان مدینہ منورہ ۱/ ۳۳۶

Fatawa Ridawiyya Volume 24

...so that the companions of the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) do not look at him and despise him, thinking themselves superior to him, which would lead them into self-conceit; or lest the leper becomes grieved upon seeing the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) and his noble companions and the virtues they possess, thus diminishing his gratitude for the trial ordained by Allah the Almighty. 1. (T)

He has taken the oath of allegiance. The Holy Prophet (peace and blessings be upon him) sent that leper back so that the noble companions of the Holy Prophet (peace be upon him) would not see him and consider him inferior and lowly, and not begin to prefer themselves over him. In this way, self-conceit would be created in them. And seeing the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) and his magnificent companions and their grace and nobility, the leper might become grieved, and then his feelings of gratitude toward Allah the Almighty's trial and calamity might not decrease. (T)

Seventh Hadith: Regarding the instruction to fold the bedding, I say: (I say - T) It is possible that it was said so that fluids from the patient's feet do not drip. Eighth Hadith: 'If any disease is contagious, it is leprosy.' The word 'if' itself indicates that being contagious is not proven. It is stated in Taysir:

Regarding his saying 'If it is', it is evidence that this matter was not certain to him. I say: Interpreting it as doubt is not appropriate at all; rather, the truth is that we should say the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) said: (O people!) if there is good in any of your medicines and treatments, it is in cupping and drinking honey. (Al-Hadith) Imam Ahmad, Bukhari, Muslim, and Nasa'i (narrated) from Hazrat Jabir.

1 Majma' Bihar al-Anwar, Letter Jim, under the word "Judham", Maktabah Dar al-Iman, Medina Munawwarah, 1/336 2 Taysir Sharh Jami' al-Saghir, under the Hadith "In kana shay'un min ad-da'i" etc., Maktabah Imam Shafi'i, Riyadh, 1/373 3 Sahih Bukhari, Book of Medicine, Chapter on Medicine with Honey, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/848; Sahih Muslim, Book of Peace, Chapter: For every disease there is a medicine, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/225

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

...ताकि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सहाबा उसे न देखें और उसे हिकारत से न देखें, खुद को उससे श्रेष्ठ न समझें, जिससे उनमें आत्म-मुग्धता पैदा हो जाए; या कहीं कोढ़ी नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उनके महान सहाबा और उनके गुणों को देखकर दुखी न हो जाए, जिससे अल्लाह सर्वशक्तिमान की परीक्षा पर उसके शुक्र (कृतज्ञता) की भावनाओं में कमी न आ जाए। १. (त)

बैअत (शपथ) ले ली है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने उस कोढ़ी व्यक्ति को वापस भेज दिया ताकि हुज़ूर अलैहिस्सलाम के सहाबा-ए-किराम उसे देखकर कहीं हकीर और घटिया न समझने लगें और अपने आप को उस पर तरजीह न देने लगें। इस तरह उनमें खुद-बीनी (अहंकार) पैदा हो जाएगी। और हुज़ूर अलैहिस्सलाम और आपके सहाबा-ए-ज़ी शान और उनके फ़ज़ल व शरफ़ को देखने से कहीं कोढ़ी ग़मगीन न हो, फिर अल्लाह तआला की मुसीबत और बला पर उसके जज़्बात-ए-शुक्र में कमी न आ जाए। (त)

सातवीं हदीस: बिछावन लपेटने के आदेश के बारे में, मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ - त) मुमकिन है कि इसलिए फ़रमाया हो कि मरीज़ के पाँव से नमी न टपके। आठवीं हदीस: 'अगर कोई बीमारी उड़कर लगती हो तो वह कोढ़ है।' 'अगर' शब्द स्वयं बता रहा है कि उड़कर लगना साबित नहीं है। तईसीर में है:

उनका कहना 'अगर है', इस बात की दलील है कि यह मामला उनके नज़दीक निश्चित नहीं था। मैं कहता हूँ: इसे शक पर महमूल (आधारित) करना हरगिज़ मुनासिब नहीं, बल्कि हक़ यह है कि हम यूँ कहें कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: (लोगो!) अगर तुम्हारी किसी दवा और इलाज में खैर हो तो पछने लगवाने और शहद पीने में है। (अल-हदीस) इमाम अहमद, बुख़ारी, मुस्लिम और नसाई ने हज़रत जाबिर से (रिवायत किया)।

१ मजमा बिहार अल-अनवार, हर्फ अल-जीम, शब्द "जुज़ाम" के तहत, मकतबा दार अल-ईमान, मदीना मुनव्वरा, १/३३६ २ तईसीर शरह जामिअ अस-सग़ीर, हदीस "इन काना शयउन मिन अद-दाइ" आदि के तहत, मकतबा इमाम शाफ़ई, रियाद, १/३७३ ३ सहीह बुख़ारी, किताब अल-तिब्ब, शहद से इलाज का अध्याय, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, २/८४८; सहीह मुस्लिम, किताब अस-सलाम, अध्याय: हर बीमारी की दवा है, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, २/२२५

لئلا ینظر الیہ اصحابہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فیزدرونہ ویرون لانفسھم علیہ فضلا فیدخلھم العجب اولئلا یحزن المجذوم برؤیۃ النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم واصحابہ ومافضلوا بہ فیقل شکرہ علی بلاء اللہ تعالٰی ۱۔ بیعت کرلیا ہے۔ حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے اس جذامی شخص کو لوٹا دیا تاکہ حضور علیہ السلام کے صحابہ کرام اسے دیکھ کر کہیں حقیر اور گھٹیا نہ سمجھنے لگیں اور اپنے آپ کو اس پر ترجیح نہ دینے لگیں۔ اس طرح ان میں خود بینی پیدا ہوجائے گی۔ حضور علیہ الصلوۃ والسلام اور آپ کے صحابہ ذی شان کو اور ان کے فضل و شرف کو دیکھنے سے کہیں جذامی غمگین نہ ہو، پھر اللہ تعالٰی کی مصیبت اور بلا پر اس کے جذبات شکر میں کمی نہ آجائے۔ (ت)

حدیث ہفتم کہ بچھونا لپٹنے کو فرمایا اقول : (میں کہتا ہوں ۔ ت) ممکن کہ اس لئے فرمایا ہو کہ مریض کے پاؤں سے رطوبت نہ ٹپکے۔ حدیث ہشتم کہ اگر کوئی بیماری اڑ کر لگتی ہو تو جذام ہے۔ "اگر" کا لفظ خود بتارہا ہے کہ اڑ کر لگنا ثابت نہیں۔ تیسیر میں ہے :

قولہ ان کان، دلیل علی ان ھذا الامر غیر محقق عندہ اھ اقول: حملہ علی الشک وما کان ینبغی وانما حقہ ان نقول قال رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ان کان فی شئ من ادویتکم خیر ففی شرطۃ محجم او شربۃ من عسل الحدیث رواہ احمد ۳ والشیخان والنسائی عن جابر گزشتہ حدیث میں حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا ارشاد حرف "ان" اس بات کی دلیل ہے کہ یہ امر آپ کے نزدیک ثابت اور محقق نہیں اھ اقول: (میں کہتا ہوں ۔ ت) اس کو شک پر محمول کرنا ہرگز مناسب نہیں بلکہ حق یہ ہے کہ ہم یوں کہیں کہ حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: (لوگو!) اگر تمہاری کسی دوا اور علاج میں خیر ہو تو پچھنے لگوانے اور شہد پینے میں ہے (الحدیث) امام احمد، بخاری، مسلم اور نسائی نے حضرت جابر سے (روایت کیا)۔

1 مجمع بحار الانوار حرف الجيم تحت لفظ "جذام" مکتبہ دارالایمان مدینہ منورہ ۱/ ۳۳۶ 2 تیسیر شرح جامع صغیر تحت حدیث ان کان شیئ من الداء الخ مکتبہ امام شافعی ریاض ۱/ ۳۷۳ 3 صحیح بخاری کتاب الطب باب الدواء بالعسل قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۸۴۸ ، صحیح مسلم کتاب السلام باب لکل دواء دواء قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۲۲۵

Volume 24 Fatawa Rizvia

[Left Column (Arabic)]: May Allah be pleased with him. There is no doubt that there is goodness in honey, as the Noble Quran speaks of it. Similarly, in cupping (hijama) there is goodness, as indicated by numerous sayings and actions (hadiths). The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "If anything could surpass the divine decree (Qadr), it would be the evil eye." This was narrated by Ahmad, Muslim, and Tirmidhi from Ibn Abbas; and by Ahmad, Tirmidhi, and Ibn Majah with a sound chain from Asma bint Umays (may Allah be pleased with them all). There is no doubt that nothing surpasses destiny. Thus, when both perspectives are established in such discourse, probability arises, and the deduction becomes invalid.

[Right Column (Urdu Translation)]: He has narrated it from [Allah be pleased with him]. Undoubtedly, there is goodness in the use of honey, as the Noble Quran testifies to it. Similarly, there is goodness in cupping, as indicated by well-known verbal and practical hadiths. The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) stated: "If anything were to precede fate and destiny, the evil eye would precede it." Imam Ahmad, Muslim, and Tirmidhi narrated this from Hazrat Abdullah bin Abbas. Also, Imam Ahmad, Tirmidhi, and Ibn Majah narrated it with a sound chain from Asma, the daughter of Umays (may Allah be pleased with them all). There is no doubt that nothing can precede destiny. Then, when these reasons were established in such a discussion, a possibility arose in the discourse (therefore, given the possibility), the deduction became invalid. (T)

As for passing through that valley quickly, I say: (I say. -T) The five reasons mentioned regarding the sixth hadith apply here as well, so understand this well. (-T) Regarding the ninth hadith, where Faruq al-Azam (may Allah be pleased with him) forbade that lady, I say: The same initial remedies apply there as well, as is not hidden upon minimal reflection. (-T) Regarding the phrase in the eleventh and twelfth hadiths where the Commander of the Faithful said to Mu'ayqib (may Allah be pleased with both): "If it were anyone else, he would sit a spear's length away from me," I say: In those same hadiths, it is mentioned that he ate with them. Had this been a common cause of contagion, it would not be permissible for the people of virtue to put themselves in harm's way. And the thirteenth hadith has beautifully...

1 Musnad Imam Ahmad bin Hanbal from Asma bint Umays, Al-Maktab al-Islami Beirut 6/438; Sahih Muslim, Book of Peace, Chapter on Medicine and Sickness, etc.,

Qadimi Kutub Khana Karachi 2/220; Sunan Ibn Majah, Chapters on Medicine, Chapter on Seeking Ruqyah, page 259.

खंड 24 फतावा रज़विया

[बायां स्तंभ (अरबी)]: अल्लाह उनसे प्रसन्न हो। इसमें कोई संदेह नहीं है कि शहद में खैर (भलाई) है जैसा कि अज़ीज़ कुरआन कहता है। और पछने (हिजामा) में भी खैर है जैसा कि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध क़ौली और फ़ेली हदीसें इस पर संकेत करती हैं। और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "यदि कोई चीज़ तक़दीर से आगे बढ़ सकती, तो वह बुरी नज़र होती।" इसे अहमद, मुस्लिम और तिर्मिज़ी ने इब्न अब्बास से रिवायत किया है; और अहमद, तिर्मिज़ी और इब्न माजाह ने सही सनद के साथ अस्मा बिन्त उमैस (अल्लाह उन सब से राज़ी हो) से रिवायत किया है। इसमें कोई शक नहीं कि तक़दीर से कोई चीज़ आगे नहीं निकल सकती। फिर जब इस प्रकार के संवाद में दो पहलू सिद्ध हो जाते हैं, तो संभावना उत्पन्न हो जाती है और दलील अमान्य हो जाती है।

[दायां स्तंभ (उर्दू अनुवाद)]: अल्लाह तआला उनसे राज़ी हो, उनसे इसे रिवायत किया गया है। निःसंदेह शहद के इस्तेमाल में भलाई है जैसा कि कुरआन-ए-अज़ीज़ इस पर गवाह है। और पछने (हिजामा) लगाने में भी भलाई है जैसा कि प्रसिद्ध क़ौली और फ़ेली हदीसें इस पर संकेत करती हैं और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया: "अगर कोई चीज़ क़ज़ा-ओ-क़द्र से आगे बढ़ जाती तो नज़र-ए-बद आगे बढ़ जाती।" इमाम अहमद, मुस्लिम, तिर्मिज़ी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से इसे रिवायत किया है, और इमाम अहमद, तिर्मिज़ी और इब्न माजाह ने सही सनद के साथ अस्मा बिन्त उमैस से इसे रिवायत किया है (अल्लाह उन सब से राज़ी हो)। इसमें कोई संदेह नहीं कि तक़दीर से आगे कोई चीज़ नहीं हो सकती। फिर जब इस तरह की बातचीत में ये कारण सिद्ध हो गए तो कलाम में संभावना पैदा हो गई (अतः संभावना होने पर) दलील अमान्य हो गई। (त)

रहा उस वादी से जल्दी गुज़र जाना, अक़ूल (मैं कहता हूँ): इसमें वे पाँच कारण शामिल हैं जो छठी हदीस के बारे में गुज़रे, इसे अच्छी तरह समझ लें। नवीं हदीस जिसमें फ़ारूक़-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उन बीवी को मना फ़रमाया, अक़ूल: वहां भी वही शुरुआती उपाय जारी हैं जैसा कि ज़रा से विचार से स्पष्ट है। ग्यारहवीं और बारहवीं हदीस का वह अंश जिसमें अमीरुल मोमिनीन ने मुअयकीब (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से फ़रमाया, "अगर कोई और होता तो मुझसे एक नेज़े (भाले) की दूरी पर बैठता," अक़ूल: उन्हीं हदीसों में यह भी है कि उन्होंने उनके साथ खाना खिलाया। अगर यह छुआछूत का सामान्य कारण होता, तो गुणी लोगों के लिए स्वयं को संकट में डालना उचित न होता। और तेरहवीं हदीस ने तो खूब...

1 मुसनद इमाम अहमद बिन हनबल, अस्मा बिन्त उमैस के हवाले से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत 6/438; सही मुस्लिम, किताब-अस-सलाम, चिकित्सा और रोग का अध्याय आदि, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 2/220; सुनन इब्न माजाह, चिकित्सा के अध्याय, अध्याय: जो झाड़-फूँक मांगे, पृष्ठ 259।

[بایاں کالم (عربی)]: رضی اللہ تعالیٰ عنہ ولاشک ان فی العسل خیرا کما نطق بہ القرآن العزیز وفي الحجامۃ ایضا کما دل علیہ المستفیض من الاحادیث القولیۃ و الفعلیۃ وقال صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم لوکان شیئ سابق القدر لسبقتہ العین رواہ احمد ۱ ومسلم و الترمذی عن ابن عباس واحمدوالترمذی وابن ماجۃ بسند صحیح عن اسماء بنت عمیس رضی اللہ تعالی عنھم لاشك ان القدر لا یسبقہ شیئ فاذا ثبت الوجھان فی امثال المقال جاء الاحتمال فبطل الاستدلال۔

[دایاں کالم (اردو ترجمہ)]: رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اسے روایت کیا ہے۔ بلاشبہ شہد کے استعمال کرنے میں خیر ہے جیسا کہ قرآن عزیز اس پر ناطق ہے اور پچھنے لگانے میں بھی خیر ہے جیسا کہ مشہور قولی اور فعلی حدیثیں اس پر دلالت کرتی ہیں اور حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا: اگر کوئی چیز قضا وقدر سے آگے بڑھ جاتی تو نظر بد آگے بڑھ جاتی۔ امام احمد، مسلم، ترمذی نے حضرت عبداللہ بن عباس سے اس کو روایت کیا، نیز امام احمد، ترمذی اور ابن ماجہ نے بسند صحیح اسماء دختر عمیس، سے اسے روایت کیا ہے (اللہ تعالیٰ ان سب سے راضی ہو) اس میں کوئی شک وشبہ نہیں کہ تقدیر سے کوئی چیز آگے نہیں ہو سکتی، پھر جب وہ وجوہات اس قسم کی گفتگو میں ثابت ہوگئیں تو کلام میں احتمال پیدا ہو گیا (لہٰذا احتمال کے ہوتے ہوئے) استدلال باطل ہوگیا۔ (ت)

رہا اس وادی سے جلد گزر جانا اقول: (میں کہتا ہوں۔ ت) اس میں وہ پانچ وجوہ پیشین جاگزیں جو حدیث ششم کے بارہ میں گزریں فافھم (لہٰذا اس کو اچھی طرح سمجھ لیجئے۔ ت) حدیث نہم کہ فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ان بی بی کو منع فرمایا اقول: وہاں بھی چارہ جو اولیں جاری کما لا یخفی بادنی تأمل (جیسا کہ معمولی غور وفکر کرنے سے یہ بات پوشیدہ نہیں رہتی۔ ت)

حدیث یازدہم و دوازدہم کا فقرہ کہ امیر المومنین نے معیقیب رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے فرمایا دوسرا ہوتا تو مجھ سے ایک نیزے کے فاصلہ پر بیٹھتا اقول: انہیں حدیثوں میں ہے کہ ان کو اپنے ساتھ کھلایا، اگر یہ امر عدوی کا سبب عادی ہوتا تو اہل فضل کی خاطر سے اپنے آپ کو معرض بلا میں ڈالنا روانہ ہوتا۔ اور تیر ہویں حدیث نے تو خوب

۱ مسند امام احمد بن حنبل عن اسماء بنت عمیس المکتب الاسلامی بیروت ۶/ ۴۳۸، صحیح مسلم کتاب السلام باب الطب والمرض الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۲۲۰، سنن ابن ماجہ ابواب الطب باب من استرقی الھین ص ۲۵۹

Fatawa Razawiyya, Volume 24

It was made clear that the Commander of the Faithful (Ameer-ul-Momineen) was eradicating the idea of contagion. If it were merely for the sake of kindness, what would be the need for such intense exaggeration that he would take the water from their hands, place his mouth exactly where they had placed theirs, and drink it himself? It became known that contagion is baseless. The intent of this statement, for example, could be that aversion towards such patients is a natural human tendency; your excellence is based on the fact that this aversion has become weak and vanished; had there been another way, it would not have been so. Regarding the thirty-first hadith, "Diseased animals should not be brought near healthy ones," I say (T): Imam Malik's Muwatta and Sunan al-Bayhaqi have themselves clarified the reason for this, stating it's solely out of consideration for people's feelings; otherwise, the disease does not spread through contact. Therefore, we did not even include this hadith among the first category of ahadith. Now there remain only five ahadith: first, second, third, fifth, and tenth. I say: Aside from the fact that the chain of narration (isnad) of the second is weak, and for the third, Hazrat Abdullah bin Ja'far (may Allah be pleased with both of them), to whom it was attributed, himself denied it. As for the tenth, its occurrence from the Commander of the Faithful, coming from a companion of high stature among the people of Badr and the foremost early Migrants (may Allah be pleased with all of them), was highly improbable. Numerous ahadith have proven the opposite of what was suspected from the Commander of the Faithful, as has been previously mentioned. "Kama sabaqa dhalika kulluhu fahuwa munqati'un batinan wa ma'loolun ghayru maqbool" (This has all been mentioned before, therefore it is internally disconnected, flawed, and unacceptable. -T). None of them yield anything more than what the first hadith yields, and whatever is authentic (sahih) or fair (hasan) among them, focusing on that is sufficient. For scholars, there are several methods here:

First: The discourse regarding its proof follows the method of Umm-ul-Momineen Siddiqah (may Allah be pleased with her), as mentioned in the seventeenth hadith.

[Arabic Text]: I say: Her method (may Allah be pleased with her) is well-known regarding such ahadith which are rejected for being contrary to the definitive knowledge she possessed, based on the Great Quran or direct hearing from the Noble Beloved (peace and blessings of Allah be upon him). She attributes the error or illusion in hearing and understanding to the narrator, as she said regarding the hadith of the Commander of the Faithful, Umar.

[Urdu Explanation]: I say: (I say) The method of Sayyida Aisha Siddiqah (may Allah be pleased with her) in rejecting such types of ahadith, which contradict the definitive knowledge established with her, based on the Great Quran or direct hearing (mushafahah) from the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family), is well-known. She attributes the error or illusion in hearing and understanding to the narrator, as she said regarding the hadith of the Commander of the Faithful, Hazrat Umar Farooq (may Allah be pleased with him)...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

यह स्पष्ट कर दिया गया कि अमीर-उल-मोमिनीन छूत (छुआछूत) के विचार को जड़ से खत्म कर रहे थे। यदि यह केवल सौहार्द के लिए होता, तो इस तीव्रता और अतिशयोक्ति की क्या आवश्यकता थी कि वे उनके हाथ से पानी लेते, अपना मुँह ठीक उसी जगह लगाते जहाँ उन्होंने मुँह लगाया था, और स्वयं पीते? इससे यह पता चला कि छूत निराधार है। इस कथन का उद्देश्य, उदाहरण के लिए, यह हो सकता है कि ऐसे रोगियों से घृणा करना एक स्वाभाविक मानवीय प्रवृत्ति है; आपकी विशेषता इस बात पर आधारित है कि वह घृणा क्षीण और लुप्त हो गई; यदि कोई दूसरा तरीका होता, तो ऐसा नहीं होता। इकतीसवीं हदीस के बारे में कि "बीमार जानवरों को स्वस्थ जानवरों के पास न लाया जाए," मैं कहता हूँ (त): स्वयं इमाम मालिक की मुवत्ता और सुनन अल-बैहकी ने इसका कारण स्पष्ट कर दिया है कि यह केवल लोगों की भावनाओं का ख्याल रखने के लिए है, अन्यथा बीमारी स्पर्श से नहीं लगती। इसीलिए हमने इस हदीस को प्रथम श्रेणी की हदीसों में भी नहीं गिना। अब केवल पाँच हदीसें बची हैं: पहली, दूसरी, तीसरी, पाँचवीं और दसवीं। मैं कहता हूँ: इसके अलावा कि दूसरी की सनद (प्रमाण-श्रृंखला) कमज़ोर है, और तीसरी का स्वयं हज़रत अब्दुल्ला बिन जाफ़र (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने खंडन किया है, जिनसे इसे जोड़ा गया था। और दसवीं हदीस का अमीर-उल-मोमिनीन से जारी होना, जो बद्री सहाबा और शुरुआती मुहाजिरों में से एक महान सहाबी थे, अत्यंत असंभव था। कई हदीसों ने अमीर-उल-मोमिनीन से जो संदेह किया गया था, उसके विपरीत सिद्ध कर दिया है, जैसा कि पहले बताया जा चुका है। "कमा सबक़ा ज़ालिका कुल्लुहु फ़हुवा मुनक़ति-उन बातिनन व मा-लूलुन ग़ैरू मक़बूल" (यह सब पहले गुज़र चुका है, इसलिए यह आंतरिक रूप से विच्छिन्न, दोषपूर्ण और अस्वीकार्य है। -त)। उनमें से किसी का सार पहली हदीस के सार से अधिक नहीं है, और उनमें जो सही या हसन है, उसकी ओर ध्यान देना ही पर्याप्त है। विद्वानों के लिए यहाँ कई तरीके हैं:

पहला: इसके प्रमाण में बातचीत उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के तरीके पर है, जैसा कि सत्रहवीं हदीस में गुज़रा।

[अरबी पाठ]: मैं कहता हूँ: उनका तरीका (रज़ियल्लाहु अन्हा) ऐसी हदीसों के बारे में प्रसिद्ध है जो उनके पास मौजूद निश्चित ज्ञान के विपरीत होने के कारण अस्वीकार कर दी जाती हैं, जो कुरान-ए-अज़ीम या महबूब-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सीधे सुनने पर आधारित हैं। वह सुनने और समझने में रावी की ओर भूल या भ्रम का श्रेय देती हैं, जैसा कि उन्होंने अमीर-उल-मोमिनीन उमर की हदीस के बारे में कहा।

[उर्दू स्पष्टीकरण]: मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) सैयदा आइशा सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की कार्यप्रणाली इस प्रकार की हदीसों को रद्द करने में, जो उनके निकट कुरान-ए-अज़ीम या हुज़ूर करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सीधे सुनने (मुशाफ़हा) के आधार पर स्थापित निश्चित ज्ञान के विरुद्ध हों, यह है कि वह सुनने और समझने में रावी (वर्णनकर्ता) की ओर भूल या भ्रम की बात करती हैं, जैसा कि उन्होंने अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) की हदीस के बारे में कहा...

ظاہر کر دیا کہ امیر المومنین خیال عدوٰی کی بیخ کنی فرماتے تھے، نری خاطر منظور تھی تو اس شدت مبالغہ کی کیا حاجت ہوتی کہ پانی انہیں پلا کر ان کے ہاتھ سے لے کر خاص ان کے منہ رکھنے کی جگہ پر منہ لگا کر خود پیتے، معلوم ہوا کہ عدوٰی بے اصل ہے تو اس فرمانے کا منشا مثلاً یہ ہو کہ ایسے مریض سے تنفر انسان کا ایک طبعی امر ہے آپ کا فضل اس پر حامل ہے کہ وہ تنفر مضمحل و زائل ہو گیا دوسرا ہو سکتا تو ایسا نہ ہوتا۔ حدیث سی و یکم کہ تندرست جانوروں کے پاس بیمار نہ لائے جائیں اقول: (میں کہتا ہوں- ت) اس کی وجہ خود حدیث موطا امام مالک وسنن بیہقی نے ظاہر کردی کہ یہ صرف لوگوں کے بُرا ماننے کے لحاظ سے ہے ورنہ بیماری اثر کر نہیں لگتی، ولہذا ہم نے اس حدیث کو احادیث قسم اول میں شمار بھی نہ کیا۔ اب نہ رہیں مگر پانچ حدیثیں اول دوم سوم پنجم دہم اقول: قطع نظر اس سے کہ ان میں دوم کی سند واہی اور سوم کی خود حضرت عبد اللہ بن جعفر رضی اللہ تعالٰی عنہما نے جن کی طرف وہ نسبت کی جاتی تھی تکذیب فرمائی، اور دہم کہ امیر المومنین سے ایک صحابی جلیل القدر منجملہ اصحاب بدر و مہاجرین سابقین اولین رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین کی نسبت اس کا صدور سخت مستبعد تھا، متعدد حدیثوں نے اس کا خلاف ثابت کردیا جیسا کہ امیر المومنین سے مظنون تھا کما سبق ذلک کلہ فھذا منقطع باطنا و معلول غیر مقبول (یہ سب کچھ پہلے گزر چکا ہے لہٰذا یہ اندرونی طور پر منقطع، معلول غیر مقبول ہے۔ت) اُن میں کسی کا حاصل حدیث اول کے حاصل سے کچھ زائد نہیں اور اُن میں وہی صحیح یا حسن ہے تو اسی کی طرف توجہ کافی۔ علماء کے لئے یہاں متعدد طریقے ہیں:

اول: اس کے ثبوت میں کلام بہ طریقہ ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا ہے جیسا کہ حدیث ہفدہم میں گزرا۔

[Arabic Box Column]: اقول: طریقتها رضی الله تعالیٰ عنها معروفة فی امثال الاحادیث التی ترد علی خلاف ماعندها من العلم القطعی المستند الی القرآن العظیم اوالسماع الشفاهی من حبیب الکریم صلی الله تعالیٰ علیہ وسلم ان تنسب راویها الی السهو والوهم فی السماع والفهم کما قالت فی حدیث امیر المؤمنین عمر

[Urdu Box Column]: اقول: (میں کہتا ہوں) سیدہ عائشہ صدیقہ رضی الله تعالیٰ عنہا کا طریقہ کار اس قسم کی حدیثوں کے رَد میں جو اس علمِ قطعی کی بناء پر جو ان کے نزدیک ثابت شدہ ہے یہ ہے کہ جس کی سند قرآن عظیم یا حضور کریم صلی الله تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے بالمشافہ سماع پر ہے مشہور و معروف ہے کہ سماع و فہم میں راوی کی طرف سہو و وہم کی نسبت کرتی ہیں جیسا کہ امیر المومنین حضرت عمر فاروق رضی الله تعالیٰ عنہ نے

Fatawa Rizvia Volume 24

[Right Column - Urdu Translation/Explanation]: It was narrated from the Holy Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him and his progeny) that he said: "Sometimes the deceased is punished due to the weeping of his family members over him." The respected lady (Hazrat Aisha) said: "May Allah have mercy on Umar (may Allah be pleased with him). By Allah, it is not like that at all. This statement is not from the Messenger of Allah (may peace and blessings of Allah be upon him) that the deceased is punished because of the weeping of the family members; rather, the hadith is that Allah increases the punishment of a disbeliever when his family members weep over him." Then she said: "The Holy Quran is sufficient for you in this matter (as per the Divine commandment): 'And no bearer of burdens will bear the burden of another.'" Bukhari and Muslim have narrated this. And the Mother of the Believers (Hazrat Aisha) said: "May Allah forgive Abu Abdul Rahman, meaning Abdullah ibn Umar, for he too narrated the hadith just like his respected father. Listen! He did not tell a lie, but he forgot. The actual event was that the Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him) passed by a deceased Jewish woman over whom people were weeping. He said: 'These people are mourning and weeping over her, while she is being punished in her grave.'" Both Bukhari and Muslim have narrated this.

[Left Column - Source Text (Arabic/Urdu mix)]: From (Ibn Umar) may Allah be pleased with him, from the Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him and his progeny): "The deceased is punished because of some of the weeping of his family for him." [Hazrat Aisha said] "May Allah have mercy on Umar, by Allah, the Messenger of Allah (may peace and blessings of Allah be upon him) did not say that Allah punishes a believer for the weeping of his family, but Allah increases the punishment of a disbeliever because of his family's weeping for him." She said: "The Quran is sufficient for you: 'And no bearer of burdens will bear the burden of another.'" Narrated by the two Shaikhs (Bukhari and Muslim). (1) She also said: "May Allah forgive Abu Abdul Rahman," referring to Ibn Umar, may Allah be pleased with them, "for he also narrated the hadith like his father. Behold! He did not lie, but he forgot. The reality was that the Messenger of Allah (may peace and blessings of Allah be upon him) passed by a Jewish woman who was being wept over. He said: 'They are weeping over her while she is being punished in her grave.'" (2) Narrated by both as well. In another wording: "By Allah, you do not narrate this hadith from liars, but hearing can err, and for you..."

[Footnotes]: 1. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Jana'iz, Bab Qawl al-Nabi (PBUH) Yu'adhdhab al-Mayyit... Qadimi Kutub Khana Karachi 1/172; Sahih Muslim, Kitab al-Jana'iz, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/303. 2. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Jana'iz, 1/172; Sahih Muslim, Kitab al-Jana'iz, 1/303.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनकी आल से यह रिवायत की गई कि आप ने इरशाद फ़रमाया: "कभी-कभी मैयत को उसके घरवालों के रोने की वजह से अज़ाब दिया जाता है।" माई साहिबा (हज़रत आयशा) ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) पर रहम फ़रमाए। खुदा की क़सम! ऐसा हरगिज़ नहीं है। यह इरशाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नहीं है कि घरवालों के रोने की वजह से मैयत को अज़ाब होता है; बल्कि हदीस यूँ है कि अल्लाह तआला काफ़िर के अज़ाब में इज़ाफ़ा फ़रमा देता है जब उसके घरवाले उस पर रोते हैं।" चुनाँचे माई साहिबा ने फ़रमाया: "इस बारे में तुम्हें क़ुरआन मजीद काफ़ी है (जैसा कि इरशादे रब्बानी है): 'और कोई बोझ उठाने वाली जान किसी दूसरी जान का बोझ नहीं उठाएगी।'" बुख़ारी और मुस्लिम ने इसे रिवायत किया है। और उम्मुल मोमिनीन ने इरशाद फ़रमाया: "अल्लाह तआला अबू अब्दुर्रहमान यानी अब्दुल्ला इब्ने उमर को माफ़ करे कि उन्होंने भी अपने वालिद-ए-गिरामी की तरह हदीस रिवायत कर दी। सुन लो! उन्होंने झूठ नहीं बोला अलबत्ता वे भूल गए। (असल वाकया) यह था कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक मुर्दा यहूदी औरत के पास से गुज़रे जिस पर रोया जा रहा था। आप ने इरशाद फ़रमाया कि ये लोग उस पर गिर्या-ओ-बका कर रहे हैं मगर उसे कब्र में अज़ाब दिया जा रहा है।" बुख़ारी और मुस्लिम दोनों ने इसे रिवायत किया है।

[बायाँ कॉलम - मूल पाठ (अरबी/उर्दू मिश्रण)]: (इब्ने उमर) रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और उनकी आल से रिवायत है कि बेशक मैयत को उसके घरवालों के कुछ रोने की वजह से अज़ाब दिया जाता है। अल्लाह उमर पर रहम फ़रमाए, खुदा की क़सम! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह नहीं फ़रमाया कि अल्लाह मोमिन को उसके घरवालों के रोने से अज़ाब देता है, लेकिन अल्लाह तआला काफ़िर का अज़ाब उसके घरवालों के उस पर रोने से बढ़ा देता है। और उन्होंने फ़रमाया: "तुम्हारे लिए क़ुरआन काफ़ी है: 'और कोई बोझ उठाने वाली जान किसी दूसरी जान का बोझ नहीं उठाएगी।'" इसे दो शैख़ों (बुख़ारी व मुस्लिम) ने रिवायत किया है। (1) और उन्होंने फ़रमाया: "अल्लाह अबू अब्दुर्रहमान को माफ़ करे," उनका मतलब इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुम था, "क्योंकि उन्होंने भी अपने बाप की तरह हदीस रिवायत की। सुन लो! उन्होंने झूठ नहीं बोला लेकिन वे भूल गए। असल में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक यहूदी औरत के पास से गुज़रे जिस पर रोया जा रहा था, तो फ़रमाया: 'वे उस पर रो रहे हैं और

उसे कब्र में अज़ाब दिया जा रहा है।'" (2) इसे भी दोनों ने रिवायत किया। और एक शब्द में है: "अल्लाह की क़सम! तुम यह हदीस झूटों से रिवायत नहीं करते लेकिन कान सुनने में गलती कर सकता है, और तुम्हारे लिए..."

[पादटिप्पणी]: 1. सही अल-बुख़ारी, किताब अल-जनाइज़, बाब क़ौल अन-नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) युअज़्ज़ब अल-मय्यित... क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 1/172; सही मुस्लिम, किताब अल-जनाइज़, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 1/303। 2. सही अल-बुख़ारी, किताब अल-जनाइज़ 1/172 और सही मुस्लिम, किताब अल-जनाइज़ 1/303।

पृष्ठ 720 में से 245

[دایاں کالم]: حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم سے یہ روایت فرمائی کہ آپ نے ارشاد فرمایا بعض دفعہ میت پر گھر والوں کے رونے سے اسے عذاب دیا جاتا ہے۔ مائی صاحبہ نے فرمایا اللہ تعالیٰ عمر (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) پر رحم فرمائے خدا کی قسم ایسا ہر گز نہیں یہ ارشاد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا نہیں کہ گھر والوں کے رونے کی وجہ سے میت کو عذاب ہوتا ہے بلکہ حدیث یوں ہے کہ اللہ تعالیٰ کافر کے عذاب میں اضافہ فرما دیتا ہے جبکہ اس کے گھر والے اس پر روئیں۔ چنانچہ مائی صاحبہ نے فرمایا اس بارے میں تمہیں قرآن مجید کافی ہے (چنانچہ ارشاد ربانی ہے) کوئی بوجھ اٹھانے والی جان کسی دوسری جان کا بوجھ نہ اٹھائے گی۔ بخاری و مسلم نے اسے روایت کیا ہے، اور ام المؤمنین نے ارشاد فرمایا اللہ تعالیٰ ابوعبدالرحمن یعنی عبداللہ ابن عمر کو معاف کرے کہ انہوں نے بھی اپنے والد گرامی کی طرح حدیث روایت کردی۔ سن لو انہوں نے جھوٹ نہیں کیا البتہ وہ بھول گئے (اصل واقعہ) یہ تھا کہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ایک مردہ یہودیہ کے پاس سے گزرے کہ جس پر رویا جا رہا تھا آپ نے ارشاد فرمایا کہ یہ لوگ اس پر گریہ و بکا کررہے ہیں مگر اس کو قبر میں عذاب دیا جارہا ہے۔ بخاری و مسلم دونوں نے اس کو روایت کیا ہے۔

[بایاں کالم]: رضی اللہ تعالیٰ عنہ عن النبی صلّی اللہ تعالیٰ علیہ و سلّم ان المیت لیعذب ببعض بکاء اھلہ علیہ، یرحم اللہ عمر لاواللہ ماحدث رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ان اللہ یعذب المؤمن ببکاء اھلہ ولکن اللہ تعالیٰ یزید الکافر عذابا ببکاء اھلہ علیہ وقالت حسبکم القرآن "وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخرى" رواہ الشیخان ۱ وقالت یغفر اللہ لابی عبدالرحمن ترید ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنھم فانہ ایضاً روی الحدیث کابیہ اما انہ لم یکذب و لکنہ نسی انما مر رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم علی

يهودية يبكى عليها فقال انهم ليبكون عليها وانها لتعذب في قبرها ٢ روياه ايضاـ وفي لفظ اَمَر والله ماتحدثون هذا الحديث عن الكاذبين و لكن السمع يخطئ وان لكم

[حواشى]: ١ صحيح البخارى كتاب الجنائز باب قول النبى صلى الله عليہ وسلم يعذب الميت الخ قديمى كتب خانہ كراچى ١ / ١٧٢، صحيح مسلم كتاب الجنائز قديمى كتب خانہ كراچى ١ / ٣٠٣ ٢ صحيح البخارى كتاب الجنائز ١ / ١٧٢ و صحيح مسلم كتاب الجنائز ١ / ٣٠٣

Vol. 24 Fatawa Razawiyya

[Left Column - Arabic Text] The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Evil omens are in the woman, the house, and the horse." She (Aisha) became very angry and said: "By Him Who revealed the Qur'an to Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him), the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) never said this. He only said that the people of the Age of Ignorance (Jahiliyyah) used to take evil omens from these things." This was narrated by al-Tahawi (1) and Ibn Jarir from Qatadah from Abu Hassan, and also narrated by al-Hakim and al-Bayhaqi. This was only because she had knowledge from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) contrary to that. She said: "The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) used to hate evil omens and dislike them." Narrated by Imam al-Tahawi (2). It is also narrated that it was said to Aisha that Abu Hurairah says: "It is better for one of your bellies to be filled with pus than to be filled with poetry." She said: "May Allah have mercy on Abu Hurairah, he remembered the beginning of the Hadith..."

[Right Column - Urdu Text] ...cannot make (them) hear. Imam Bukhari has narrated it. (Similarly) when the Mother of the Believers (Aisha) received this Hadith from Hazrat Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "There is ill-omen in woman, house, and horse," she became extremely angry and said: "I swear by the Great and Exalted God Who revealed the Holy Qur'an to Muhammad the Generous (peace and blessings of Allah be upon him) that the Holy Prophet did not say it like this; rather, he said that the people of the Age of Ignorance used to take ill-omens and bad portents from these things." Imam Tahawi and Ibn Jarir narrated this via Qatadah via Abu Hassan; also, Hakim and Bayhaqi narrated it. As for why the Mother of the Believers did so, the reason was that she had certain knowledge from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) which was contrary to those mentioned traditional words. Undoubtedly, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) considered the concept of bad portents and ill-omens detestable and disliked it. Imam Tahawi narrated this, and also narrated that when Hazrat Aisha Siddiqa was told that Hazrat Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) says: "For one of your bellies to be filled with pus is better than being filled with poetry,"

---

1. Sharh Ma'ani al-Athar by al-Tahawi, Book of Dislike, Chapter on Avoiding One with a Plague, HM Saeed Company Karachi 2/419.

2. Sharh Ma'ani al-Athar by al-Tahawi, Book of Dislike, Chapter on Avoiding One with a Plague, HM Saeed Company Karachi 2/418.

जिल्द 24 फतावा रज़विया

[बायाँ कॉलम - अरबी पाठ] नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "बदशगुनी औरत, घर और घोड़े में होती है।" तो वह (आयशा) बहुत क्रोधित हुईं और फ़रमाया: "उसकी कसम जिसने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर क़ुरआन नाज़िल किया, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने ऐसा नहीं कहा। उन्होंने तो बस यह फ़रमाया था कि जाहिलियत (अज्ञानता) के युग के लोग इन चीज़ों से बदशगुनी लिया करते थे।" इसे अल-तहावी (1) और इब्न जरीर ने कतादा से, उन्होंने अबू हसन से रिवायत किया है, और हाकिम व बैहक़ी ने भी इसे रिवायत किया है। ऐसा इसलिए था क्योंकि उन्हें नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से इसके विपरीत ज्ञान प्राप्त था। उन्होंने कहा: "नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बदशगुनी से नफरत करते थे और इसे नापसंद फरमाते थे।" इसे इमाम अल-तहावी (2) ने रिवायत किया है। यह भी रिवायत है कि हज़रत आयशा से कहा गया कि अबू हुरैरा कहते हैं: "तुम में से किसी के पेट का मवाद (पस) से भर जाना शेरों-शायरी से भर जाने से बेहतर है।" उन्होंने कहा: "अल्लाह अबू हुरैरा पर रहम करे, उन्होंने हदीस का शुरुआती हिस्सा याद रखा..."

[दायाँ कॉलम - उर्दू पाठ] ...सुना नहीं सकते। इमाम बुखारी ने इसे रिवायत किया है। (इसी तरह) जब उम्मुल मोमिनीन को हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की यह हदीस पहुँची कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया कि औरत, घर और घोड़े में नहूसत (अशुभता) है। तो आप बहुत ज़्यादा ग़ज़बनाक (क्रोधित) हुईं और फ़रमाया: "उस खुदा-ए-बुज़ुर्ग-ओ-बतर की क़सम जिसने मुहम्मद करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर मुक़द्दस क़ुरआन नाज़िल फ़रमाया कि हुज़ूर पाक ने इस तरह नहीं इरशाद फ़रमाया बल्कि यूँ इरशाद फ़रमाया कि दौर-ए-जाहिलियत वाले इन चीज़ों से नहूसत और बदशगुनी लेते थे।" इमाम तहावी और इब्न-ए-जरीर ने ब-वास्ता कतादा ब-वास्ता अबू हस्सान इसे रिवायत किया है तथा हाकिम और बैहक़ी ने इसे रिवायत किया है। रहा यह कि उम्मुल मोमिनीन ऐसा क्यों करती थीं, इसकी वजह यह थी कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से उन्हें यक़ीनी इल्म हासिल था वह मज़कूरा रिवायती अल्फाज़ के खिलाफ था। बला-शुबा हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बदशगुनी और नहूसत के तसव्वुर को मबग़ूज़ (घृणित) ख्याल फ़रमाते और नापसंद करते थे। इमाम तहावी ने इसे रिवायत फ़रमाया और यह भी रिवायत फ़रमाया कि जब हज़रत आयशा सिद्दीक़ा से कहा गया कि हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं तुम में से किसी के पेट का पीप से भर जाना ब-निस्बत अशआर से भर जाने के बेहतर है,

1. शरह मानी अल-आसार लिल-तहावी, किताबुल कराहा, बाबुल इज्तिनाब मिन ज़ी दाइत ताऊन, एच एम सईद कंपनी कराची 2/419
2. शरह मानी अल-आसार लिल-तहावी, किताबुल कराहा, बाबुल इज्तिनाब मिन ज़ी दाइत ताऊन, एच एम सईद कंपनी कराची 2/418

पेज 247/720

[بایاں کالم - عربی عبارت] النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم قال ان الطیرۃ في المرأۃ والدار والفرس فغضبت غضبا شدیدا وقالت والذي نزل القرآن علی محمد صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ماقالھا رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم انما قال اھل الجاھلیۃ کانوا یتطیرون من ذلك رواہ الطحاوی ۱ وابن جریر عن قتادۃ عن ابی حسان ورواہ ایضا الحاکم والبیھقی وما ذلك الالان العلم عندھا من النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم علی خلاف ذلك فقد قالت کان النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم یبغض الطیرۃ ویکرھھا رواہ الامام الطحاوی ۲ وروی ایضا انہ قیل لعائشۃ ان ابا ھریرۃ یقول لان یمتلئ جوف احدکم قیحا خیرلہ من ان یمتلئ شعرا فقالت یرحم اللہ ابا ھریرۃ حفظ اول الحدیث

[دایاں کالم - اردو عبارت] نہیں سنا سکتے۔ امام بخاری نے اس کو روایت کیا ہے۔ (یونہی) جب ام المومنین کو حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی یہ حدیث پہنچی کہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ عورت، گھر اور گھوڑے میں نحوست ہے۔ تو آپ بہت زیادہ غضبناک ہوئیں اور فرمایا: اس خدا بزرگ و برتر کی قسم جس نے محمد کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پر مقدس قرآن نازل فرمایا کہ حضور پاک نے اس طرح نہیں ارشاد فرمایا بلکہ یوں ارشاد فرمایا کہ دورِ جاہلیت والے ان چیزوں سے نحوست اور بدشگونی لیتے تھے۔ امام طحاوی وابنِ جریر نے بواسطہ قتادہ بواسطہ ابوحسان اسے روایت کیا ہے نیز حاکم اور بیہقی نے اسے روایت کیا ہے۔ رہا یہ کہ ام المومنین ایسا کیوں کرتی تھیں، اس کی وجہ یہ تھی کہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے انہیں یقینی علم حاصل تھا وہ مذکورہ روایتی الفاظ کے خلاف تھا۔ بلاشبہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بدشگونی اور نحوست کے تصور کو مبغوض خیال فرماتے اور ناپسند کرتے تھے۔ امام طحاوی نے اسے روایت فرمایا اور یہ بھی روایت فرمایا کہ جب حضرت عائشہ

صدیقہ سے کہا گیا کہ حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں تم میں سے کسی کے پیٹ کا پیپ سے بھر جانا بنسبت اشعار سے بھر جانے کے بہتر ہے،

---

۱ شرح معانی الآثار للطحاوی کتاب الکراھۃ باب الاجتناب من ذی داء الطاعون ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲ / ۴۱۹ ۲ شرح معانی الآثار للطحاوی کتاب الکراھۃ باب الاجتناب من ذی داء الطاعون ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲ / ۴۱۸

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Right Column - Urdu Explanation]: Then the Mother of the Believers (Umm al-Mu'minin) also said here, "May Allah the Almighty have mercy on Abu Hurairah, for he remembered the first part of the Hadith, but the last part was not preserved by him. (The actual event was that) the polytheists used to satirize the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) and engage in speaking ill against him. Regarding this, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) had stated that it would be better for one of you to have his stomach filled with pus than to have it filled with verses of satire and condemnation against the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). She said this because the Mother of the Believers had herself heard from the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) that he said: 'Indeed, some poetry is based on wisdom' or 'is full of wisdom.' She had also heard that he used to recite the verses of Ibn Rawahah (may Allah be pleased with him), and sometimes he recited this verse: 'And there will come to you with news one whom you did not provide for,' meaning a person will bring you news for whom you did not provide any sustenance. All of this has been narrated by Imam Tahawi. Here too, the Mother (Aisha) said so because she had heard directly from the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that there is no contagion or transmission in any disease (independently), otherwise, who infected the first patient?"

[Left Column - Arabic Text]: And he did not remember its end: that the polytheists used to satirize the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). So he said: "For the stomach of one of you to be filled with pus is better for him than to be filled with poetry of satire against the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)." This is because she heard the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) say: "Indeed, from poetry there is wisdom." And she heard him (peace and blessings of Allah be upon him) reciting the poetry of Ibn Rawahah (may Allah be pleased with him), and perhaps the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) would say this verse: "And one whom you did not provide for will bring you news." All of this was narrated by Al-Tahawi. Similarly, she said here because of her hearing it from him (peace and blessings of Allah be upon him): "There is no contagion (Adwa). So who infected the first one?" And the reason for this is what we have indicated.

[Footnotes]: 1. Sharh Ma'ani al-Athar by al-Tahawi, Book of Disliked Matters, Chapter on Narrating Poetry, etc., H.M. Saeed Company Karachi 4 / 208 2. Sharh Ma'ani al-

Athar by al-Tahawi, Book of Disliked Matters, Chapter on Narrating Poetry, etc., H.M. Saeed Company Karachi 4 / 209 3. Sharh Ma'ani al-Athar by al-Tahawi, Book of Disliked Matters, Chapter on Narrating Poetry, etc., H.M. Saeed Company Karachi 4 / 209

फ़तावा रज़विया खंड २४

[दायाँ कॉलम - उर्दू व्याख्या]: फिर उम्मुल मुमिनीन ने यहाँ भी फ़रमाया कि अल्लाह तआला अबू हुरैरा पर रहम फ़रमाए कि उन्हें हदीस का पहला हिस्सा याद रहा और आख़िरी हिस्सा सुरक्षित न रहा (असल वाक़या यह था) मुशरिकन रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की मज़म्मत किया करते और आप के ख़िलाफ़ बदगोई से काम लेते थे, तो इस बारे में हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया था कि तुम में से किसी का पेट पीप से भर जाता तो उसके लिए बेहतर था बनिस्बत हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम) की हिजो (व्यंग्य) और मज़म्मत वाले अशआर से भरने के और यह इसलिए फ़रमाया कि उम्मुल मुमिनीन ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से खुद सुना था कि आप ने फ़रमाया कि कुछ अशआर हिकमत पर मबनी होते हैं या हिकमत वाले होते हैं, और यह भी सुना था कि आप इब्न रवाहा के अशआर पढ़ा करते थे (अल्लाह तआला उनसे राज़ी हो) और कभी आप ने यह शेर भी पढ़ा: 'वयातीका मल्लाम तज़व्वुद' यानी तेरे पास वह शख़्स ख़बरें लाएगा जिसको तूने तोशा (पाथेय) न दिया, इन सब को इमाम तहावी ने रिवायत किया है। यहाँ भी इसी तरह माई साहिबा ने इरशाद फ़रमाया क्योंकि खुद हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से यह सुना था कि किसी मर्ज़ में ताअद्दी (छूत) और तजावुज़ नहीं वरना पहले मरीज़ को (किसने संक्रमित किया)।

[बायाँ कॉलम - अरबी पाठ]: और उसे इसका अंत याद नहीं रहा: कि मुशरिकन रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की हिजो किया करते थे। तो आप ने फ़रमाया: "तुम में से किसी का पेट पीप से भर जाना उसके लिए रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की हिजो वाले काव्य से भरने से बेहतर है।" यह इसलिए है क्योंकि उन्होंने नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) को कहते सुना: "निश्चित रूप से कविता में बुद्धिमत्ता है।" और उन्होंने आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) को इब्न रवाहा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के काव्य का उदाहरण देते हुए सुना, और शायद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने यह शेर कहा हो: "और वह व्यक्ति जिसे आपने पाथेय नहीं दिया, आपके पास समाचार लेकर आएगा।" यह सब अल-तहावी द्वारा वर्णित है। इसी तरह, उन्होंने यहाँ कहा क्योंकि उन्होंने आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से सुना था: "कोई छूत (अद्वा) नहीं है। तो पहले वाले को किसने संक्रमित किया?" और इसका कारण वही है जिसकी हमने ओर संकेत किया है।

[पादलेख]: 1. शरह मआनी अल-आसार लिल्तहावी, किताब अल-कराहह, बाब रिवायत अल-शेर आदि, एच.एम. सईद कंपनी कराची 4/208 2. शरह मआनी अल-आसार लिल्तहावी, किताब अल-कराहह, बाब रिवायत अल-शेर आदि, एच.एम. सईद कंपनी कराची 4/209 3. शरह मआनी अल-आसार लिल्तहावी, किताब अल-कराहह, बाब रिवायत अल-शेर आदि, एच.एम. सईद कंपनी कराची 4/209

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

[دایاں کالم - اردو تشریح]: تو ام المومنین نے یہاں بھی فرمایا اللہ تعالیٰ ابوہریرہ پر رحم فرمائے کہ انہیں حدیث کا پہلا حصہ یاد رہا اور آخری حصہ محفوظ نہ رہا (اصل واقعہ یہ تھا) مشرکین رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی مذمت کیا کرتے اور آپ کے خلاف بد گوئی سے کام لیتے تھے تو اس بارے میں حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا تھا کہ تم میں سے کسی کا پیٹ پیپ سے بھر جاتا تو اس کے لئے بہتر تھا بنسبت حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی ہجو اور مذمت والے اشعار سے بھرنے کے اھ، اور یہ اس لئے فرمایا کہ ام المومنین نے حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے خود سنا تھا کہ آپ نے فرمایا بعض اشعار حکمت پر مبنی ہوتے ہیں یا حکمت والے ہوتے ہیں، اور یہ بھی سنا تھا کہ آپ ابن رواحہ کے اشعار پڑھا کرتے تھے (اللہ تعالیٰ ان سے راضی ہو) اور کبھی آپ نے یہ شعر بھی پڑھا ویأتیك من لم تزود یعنی تیرے پاس وہ شخص خبریں لائے گا جس کو تو نے توشہ نہ دیا، سب کو امام طحاوی نے روایت کیا ہے، یہاں بھی اسی طرح مائی صاحبہ نے ارشاد فرمایا اس لئے کہ خود حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے یہ سنا تھا کسی مرض میں تعدیہ اور تجاوز نہیں ورنہ پہلے مریض کو (کس نے بیمار کیا)۔

[بایاں کالم - عربی متن]: ولم یحفظ آخرہ ان المشرکین کانوا یھاجون رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فقال لان یمتلیئ جوف احدکم قیحاً خیر لہ من ان یمتلیئ شعراً من مھاجاۃ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم اھ ذلک لانھا سمعت النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم یقول ان من الشعر لحکمۃ وسعمتہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم یتمثل بشعر ابن رواحۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ وربما قال صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ھذا البیت ویأتیك بالاخبار من لم تزود روی الکل الطحاوی کذلک قالت ھھنا لسماعھا منہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم لا عدوی فمن اعدی الاول والسبب فی ذلک ما اشرنا

[حواشی]: [1] شرح معانی الآثار للطحاوی کتاب الکراهة باب روایة الشعر الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۴ / ۲۰۸ [2] شرح معانی الآثار للطحاوی کتاب الکراهة باب روایة الشعر الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۴ / ۲۰۹ [3] شرح معانی الآثار للطحاوی کتاب الکراهة باب روایة الشعر الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۴ / ۲۰۹

Fatawa-e-Razawiyyah, Volume 24

[Main Column - Left (Arabic)] ...towards it, that individual reports (Akhbar al-Ahad) cannot contradict the definitive knowledge (al-Qat'i) she possessed. Thus, what occurred from Allama Abu al-Faraj ibn al-Jawzi, when he mentioned regarding the hadith of ill-omen in three things, that Aisha (may Allah be pleased with her) erred against the one who narrated this hadith, and she said, 'Verily, it was only the people of the Age of Ignorance (Jahiliyyah) who used to say ill-omen is in woman, house, and animal.' Then he said, 'And this is a rejection of the explicit report of its narrators who are trustworthy...' etc., as Imam al-Ayni quoted in Umdat al-Qari. Its origin is neglect of the subtle point I mentioned. Then his statement 'And she said, "Verily, it was only the people of Jahiliyyah who used to say..."' I say: What she said, rather its narrators reported from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), as is the explicit text of the narration of al-Tahawi and all those we mentioned. And which trustworthy person is more reliable than her (may Allah be pleased with her)?

[Main Column - Right (Urdu)] How it spread, and its cause is the same as we have indicated: that solitary reports (Akhbar-e-Ahad) cannot contradict the definitive knowledge that the Mother (Aisha) possessed. Whatever occurred from Allama Abu al-Faraj ibn al-Jawzi (concerning the Mother), its origin is neglect of the point mentioned by the Mother (the detail of which is this): Accordingly, Allama ibn al-Jawzi mentioned that in the hadith, the ill-omen of three things is mentioned: woman, house, and animal. And Sayyidah Aisha Siddiqah (may Allah be pleased with her) was firm against the one who narrated this hadith and said that the people of the pre-Islamic era used to say that there is an ill-omen in women, houses, and animals. Then Ibn al-Jawzi said, 'But this is a direct rejection of the hadith which has been narrated by reliable and authentic narrators,' as Imam al-Ayni has quoted it. Then Allama Ibn al-Jawzi's saying that the Mother said 'the people of ignorance used to say' etc. I say: (I say) the Mother herself did not say this, but narrated it from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) himself, as it is the explicit text of the narration of Tahawi and all those mentioned by us. And who is more trustworthy than the Mother (may Allah be pleased with her)? (T)

Second, the hadiths about fleeing from a leper, etc., are abrogated; the hadiths negating contagion have abrogated them. It is quoted from Imam Qadi 'Iyad in 'Umdat al-Qari, the commentary of Sahih al-Bukhari:

[Arabic]: Umar (may Allah be pleased with him) and a group went... [Urdu]: Hazrat Umar Farooq and a group of the predecessors (salaf) were of this opinion.

---

1. 'Umdat al-Qari Sharh Sahih al-Bukhari with reference to Ibn al-Jawzi, Kitab al-Tibb, Bab al-Tayarah, Idarat al-Tiba'ah al-Muniriyyah, Beirut, 21/273.

फतवा-ए-रजविया, जिल्द २४

[मुख्य स्तंभ - बायां (अरबी)] ...उसकी ओर, कि एकाकी रिपोर्ट (अखबार-ए-अहद) उस निश्चित ज्ञान (क़तई) का विरोध नहीं कर सकतीं जो अम्मा (आयशा) के पास था। अल्लामा अबू अल-फ़रज इब्न अल-जौज़ी से (अम्मा के बारे में) जो कुछ हुआ, उसका कारण उस सूक्ष्म बिंदु की अनदेखी है जिसे अम्मा ने बताया था। उन्होंने हदीस में तीन चीज़ों की मनहूसियत के बारे में ज़िक्र किया, कि आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने उस व्यक्ति पर गलती पकड़ी जिसने यह हदीस सुनाई, और कहा, 'बेशक, केवल जाहिलियत के लोग कहा करते थे कि मनहूसियत औरत, घर और जानवर में होती है।' फिर उन्होंने कहा, 'और यह विश्वसनीय रावीयों की स्पष्ट रिपोर्ट का खंडन है...' इत्यादि, जैसा कि इमाम ऐनी ने उम्दतुल क़ारी में उद्धृत किया है। इसका मूल कारण उस बिंदु की उपेक्षा है जिसे मैंने बताया। फिर उनका यह कहना कि 'और अम्मा ने कहा, "बेशक केवल जाहिलियत के लोग कहा करते थे..."' मैं कहता हूँ: उन्होंने जो कहा, बल्कि उसके रावीयों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत की जैसा कि तहावी की रिवायत और उन सभी लोगों का स्पष्ट पाठ है जिनका हमने ज़िक्र किया। और अम्मा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से ज़्यादा विश्वसनीय कौन हो सकता है?

[मुख्य स्तंभ - दायां (उर्दू)] कैसे उड़ कर लग गया और इसका कारण वही है जिसकी ओर हम इशारा कर चुके हैं कि एकाकी रिपोर्ट (अखबार-ए-आहाद) उस निश्चित ज्ञान का विरोध नहीं कर सकतीं जो अम्मा साहिबा के पास था। अल्लामा अबू अल-फ़रज इब्न अल-जौज़ी से (अम्मा साहिबा के बारे में) जो कुछ हुआ, उसका कारण उस सूक्ष्म बिंदु से अनभिज्ञता है जिसे अम्मा साहिबा ने बताया था (इसका विवरण यह है): तदनुसार, अल्लामा इब्न अल-जौज़ी ने उल्लेख किया कि हदीस में तीन चीज़ों की मनहूसियत का ज़िक्र है: औरत, घर, और जानवर। और सैयदा आयशा सिद्दीका (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने उस पर सख़्ती की जिसने यह हदीस सुनाई, और कहा कि जाहिलियत के लोग कहा करते थे कि औरत, घर और जानवर में मनहूसियत होती है। फिर इब्न अल-जौज़ी ने कहा कि लेकिन यह तो उस हदीस का सीधा खंडन है जिसे विश्वसनीय और प्रामाणिक रावीयों ने रिवायत किया है, जैसा कि इमाम ऐनी ने इसे उद्धृत किया है। फिर अल्लामा इब्न अल-जौज़ी का यह कहना कि अम्मा साहिबा ने कहा 'जाहिलियत के लोग कहा करते थे' इत्यादि। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) अम्मा साहिबा ने स्वयं यह नहीं कहा, बल्कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत की जैसा कि वह तहावी की रिवायत और हमारे द्वारा ज़िक्र किए गए उन सभी लोगों का स्पष्ट पाठ है। और कौन सा विश्वसनीय व्यक्ति अम्मा साहिबा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से ज़्यादा विश्वसनीय है? (त)

दूसरा, कोढ़ी आदि से भागने वाली हदीसें मनसूख़ (निरस्त) हैं; संक्रामकता को नकारने वाली हदीसों ने उन्हें निरस्त कर दिया है। उम्दतुल क़ारी शरह सहीह बुख़ारी में इमाम क़ाज़ी अयाज़ से उद्धृत है:

[अरबी]: उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) और एक समूह गए... [उर्दू]: हज़रत उमर फ़ारूक़ और पूर्ववर्तियों (सलफ़) का एक समूह इसी ओर गया है।

---

1. उम्दतुल क़ारी शरह सहीह बुख़ारी, इब्न अल-जौज़ी के हवाले से, किताब अल-तिब्ब, बाब अत-तयाराह, इदारत अल-तिबातुल मुनीरिय्या, बेरूत, २१/२७३।

[بایاں کالم - عربی] الیہ من ان اخبار الاحاد لا تعارض ما عندھا من القطعی فما وقع من العلامۃ ابی الفرج ابن الجوزی حیث ذکر فی حدیث الشؤم فی ثلث ، ان عائشۃ رضی اللہ تعالٰی عنھا قد غلطت علی من روی ھذا الحدیث وقالت انما کان اھل الجاھلیۃ یقولون الطیرۃ فی المرأۃ والدار والدابۃ ثم قال وھذا رد لصریح خبر رواتہ ثقات الخ کما نقلہ الامام العینی فی عمدۃ القاری[1] منشؤہ الغفلۃ عن النکتۃ التی ذکرتھا ثم قولہ وقالت انما کان اھل الجاھلیۃ یقولون الخ اقول : ما قالتہ بل رواتہ عن النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کما ھو صریح نص روایۃ الطحاوی ومن ذکرنا جمیعا وای ثقۃ اوثق منھا رضی اللہ تعالٰی عنھا ۔

[دایاں کالم - اردو] کیسے اڑ کر لگ گیا اور اس کا سبب وہی ہے جس کی طرف ہم اشارہ کر آئے ہیں کہ اخبار احاد اس علم قطعی کا تعارض نہیں کر سکتیں جو مائی صاحبہ کے پاس تھا علامہ ابو الفرج ابن جوزی سے (مائی صاحبہ کے متعلق) جو کچھ واقع ہوا اس کا منشاء اس نکتہ سے غفلت ہے جو مائی صاحبہ نے ذکر فرمایا (اس کی تفصیل یہ ہے) چنانچہ علامہ ابن جوزی نے ذکر فرمایا کہ حدیث میں تین چیزوں کی نحوست کا ذکر آیا ہے : عورت، گھر، چوپایہ۔ اور سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہا نے اس پر شدت اختیار کی جس نے یہ روایت حدیث بیان کی، اور فرمایا کہ اہل جاہلیت یہ کہا کرتے تھے کہ عورت، گھر اور چوپائے میں نحوست ہوا کرتی ہے۔ پھر ابن جوزی نے کہا لیکن یہ تو اس حدیث کا صراحتاً رد ہے کہ جس کو ثقہ اور مستند راویوں نے روایت کیا ہے، جیسا کہ امام عینی نے اس کو نقل فرمایا ہے، پھر علامہ ابن جوزی کا یہ کہنا کہ مائی صاحبہ نے فرمایا اہل جاہلیت کہا کرتے تھے الخ اقول : (میں کہتا ہوں) مائی صاحبہ نے خود تو یہ نہیں فرمایا خود حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم سے روایت فرمائی جیسا کہ وہ روایت

طحاوی اور ہمارے ذکر کردہ ان سب لوگوں کی صریح نص ہے۔ اور کون سا ثقہ مائی صاحبہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے زیادہ ثقاہت رکھتا ہے۔ (ت)

دوم مجذوم وغیرہ سے بھاگنے کی حدیثیں منسوخ ہیں، احادیث نفی عدوی نے انہیں نسخ کر دیا، عمدۃ القاری شرح صحیح بخاری میں امام قاضی عیاض سے منقول :

ذھب عمر رضی اللہ تعالٰی عنہ وجماعۃ من حضرت عمر فاروق اور سلف کا ایک گروہ اس طرف

---

[1] عمدۃ القاری شرح صحیح البخاری بحوالہ ابن الجوزی کتاب الطب باب الطیرۃ ادارۃ الطباعۃ المنیریۃ بیروت ۲۱/ ۲۷۳

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

(The predecessors have leaned) towards eating with the leper, and that the command to avoid him is abrogated. Among those who expressed this view is Isa bin Dinar from the Maliki school. However, Imam al-Nawawi rejected this for two reasons: First, a condition for abrogation (naskh) is that reconciling the two hadiths must be impossible, whereas here it is not; in fact, we have already reconciled them. Second, abrogation requires knowledge of the chronology (dates of revelation/statement), which is not available here.

I say: Al-Qadi stated that the Commander of the Faithful [Umar] regarded it as abrogated. If this was based on a transmitted report, as the wording suggests, then neither of the two objections applies to him. This is because the Commander of the Faithful would not make such a statement except based on knowledge, and once abrogation is established, there is no scope for reconciliation, even if it were possible by the easiest means. Yes, if Al-Qadi mentioned this (claim of abrogation) merely as his own conjecture, then both objections are valid.

I say: A third reason, in addition to these two, is what we have narrated in the thirty-second hadith, where the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) combined both statements in a single sequence (a single context). Therefore, where can abrogation exist? Especially since...

Footnotes: 1. 'Umdat al-Qari, Commentary on Sahih al-Bukhari, citing Ibn al-Jawzi, Book of Medicine, Chapter on Leprosy, Al-Muniriyya Printing Press, Beirut, 21/274. 2. Commentary on Sahih Muslim by Al-Nawawi, Book of Peace, Chapter 'No Contagion', etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/230.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

(पूर्वज इस राय की ओर) गए हैं कि कोढ़ी व्यक्ति के साथ खाना जायज़ है और उससे बचने का आदेश मंसूख (निरस्त) है। ऐसा कहने वालों में मालिकी संप्रदाय के ईसा बिन दीनार भी शामिल हैं। हालांकि, इमाम नववी ने इसे दो कारणों से खारिज किया है: पहला, नुस्ख (निरस्त करने) के लिए शर्त यह है कि दो हदीसों के बीच सामंजस्य बिठाना असंभव हो, जबकि यहाँ ऐसा नहीं है; बल्कि हमने दोनों हदीसों के बीच सामंजस्य स्थापित कर दिया है। दूसरा, इसके लिए इतिहास (तिथियों) का ज्ञान होना आवश्यक है, जो यहाँ उपलब्ध नहीं है।

मैं कहता हूँ: अल-काज़ी ने स्पष्ट किया है कि अमीरुल मोमिनीन [हज़रत उमर] इसे मंसूख समझते थे। यदि यह बात किसी रिवायत (कथन) पर आधारित है जैसा कि शब्दों से ज़ाहिर होता है, तो दोनों में से कोई भी तर्क उन पर लागू नहीं होता। इसका कारण यह है कि अमीरुल मोमिनीन बिना ज्ञान के ऐसा नहीं कह सकते थे, और नुस्ख के बाद सामंजस्य की कोई गुंजाइश नहीं रहती, भले ही वह किसी आसान तरीके से संभव हो। हाँ, यदि काज़ी अयाज़ ने यह (नुस्ख का दावा) अपने अनुमान से ज़िक्र किया हो, तो फिर दोनों वजहें वाजिब हैं।

मैं कहता हूँ: इन दोनों के अलावा तीसरा कारण वह है जिसे हमने बत्तीसवीं हदीस में रिवायत किया है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने दोनों बातों को एक ही क्रम (एक ही संदर्भ) में जमा फ़रमाया है। तो फिर नुस्ख कहाँ रहा, ख़ासकर...

पाद-टिप्पणियाँ: 1. उम्दतुल क़ारी शरह सहीह अल-बुखारी, इब्न अल-जौज़ी के हवाले से, किताब अल-तिब्ब, बाब अल-जुज़ाम, इदारातुल तिबाअतुल मुनीरिया, बेरूत, 21/274। 2. शरह सहीह मुस्लिम लिन-नववी, किताब अस-सलाम, बाब 'ला अदवा' आदि, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 2/230।

पृष्ठ 250/720

السلف الی الاکل معه وان الامر باجتنابه منسوخ | گئے ہیں کہ جذامی شخص کے ساتھ کھانا جائز ہے اور اس سے بچنے کا حکم منسوخ ہے۔ وممن قال بذلك عیسی بن دینار من المالکیة1 اھ | اور جن لوگوں نے یہ کہا ان میں عیسٰی ابن دینار مالکی ہیں اھ ورده الامام النووی بوجهین احدهما ان النسخ | لیکن امام نووی نے اسے دو وجہوں سے رد کیا ہے، یشترط فیه تعذر الجمع بین الحدیثین ولم یتعذر | ایک وجہ یہ ہے کہ نسخ کے لئے شرط یہ ہے کہ دو حدیثیں جمع نہ ہوسکیں اور یہاں جمع میں کوئی دشواری نہیں بل قد جمعنا بینهما والثانی انه یشترط فیه معرفة | بلکہ ہم نے دونوں حدیثوں کو جمع کردیا ہے، دوسری وجہ یہ کہ التاریخ و لیس ذلك موجوداً 2ههنا اقول: نص القاضی | نسخ میں شرط ہے کہ تاریخ معلوم ہو اور یہاں یہ موجود نہیں اقول: ان امیرالمومنین کان یراه منسوخاً فانکان هذا عن | (میں کہتا ہوں) امام قاضی عیاض نے یہ تصریح فرمائی ہے کہ روایة کما هو ظاهر اللفظ لم یرد علیه شیئ من | امیر المومنین حدیث مذکور کو منسوخ سمجھتے تھے۔ اگر یہ بات روایت ہے جیسا کہ الفاظ سے ظاہر ہوتا ہے تو پھر الوجهین لان الامیر المومنین لا یقول به الا عن علم | دونوں وجہیں اس پر وارد نہیں ہوسکتیں اس لئے کہ امیر المومنین بغیر علم کے ایسا نہیں فرما سکتے۔ و بعده لا مساغ للجمع وان امکن باسهل وجه نعم ان | اور نسخ کے بعد جمع کی گنجائش نہیں اگرچہ کسی زیادہ آسان وجہ سے ممکن ہو۔ ہاں اگر ذکره القاضی ظناً منه فالوجهان وجیهان اقول: | قاضی عیاض نے یہ (دعوٰی نسخ) اپنے گمان سے ذکر کیا ہو تو پھر دونوں وجہیں وجیہہ ہیں، اقول: وثالثهما ما روینا فی الحدیث الثانی والثلثین حیث | اور ان دونوں کے علاوہ تیسری وجہ وہ جس کو ہم نے بتیسویں حدیث میں روایت کیا ہے کہ جمع صلی اللہ تعالی علیه وسلم کلا الکلامین

فی نسق | حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے دونوں کلاموں کو ایک ترتیب واحد فاین النسخ لاسیما | (نسق واحد) میں جمع فرمایا پھر نسخ کہاں ہے، چنانچہ

حواشی: 1 عمدة القاری شرح صحیح البخاری بحواله ابن الجوزی کتاب الطب باب الجذام ادارة الطباعة المنیریة بیروت ۲۱/ ۲۷۴ 2 شرح صحیح مسلم للنووی کتاب السلام باب لا عدویٰ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۲۳۰

صفحہ 250 از 720

Fatawa Rizvia Volume 24

And his saying, peace and blessings of Allah be upon him, "No contagion" takes precedence over "and flee from the leper," and the beginning of a sentence cannot abrogate its end. Especially, the Prophet's (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny) statement "No contagion" is prior to "and flee from the leper," and there is no room for the start of the speech to abrogate its end. (T)

Third: The command to flee is because if one stays there, eyes will fall upon them, leading to the evils of vanity, contempt, and harm as previously mentioned. In Umdat al-Qari, it states:

[Arabic Box Content]: Some say the report is authentic and he commanded fleeing from it because he forbade looking at it. (1) Ends what is in al-'Ayni. I say: The fifth Hadith and its likes do not allow for this, because both matters are in them, that they should be separated by one or two spears. [Urdu Box Content]: Some scholars have said the Hadith is authentic and the command to flee from a leper was given because looking towards him is prohibited. Whatever is in 'Ayni has been completed. I say: (I say) the fifth Hadith and its likes do not bear this possibility because they contain the command to stay one or two spears away from those lepers. (T)

Fourth: The command to flee is so that they are not harmed by their odor etc. In the commentary of Sahih Muslim by al-Nawawi, it states:

[Arabic Box Content]: It was said the prohibition is not for contagion but for harm from the foul odor and its like. (2) Ends. I say: This is obviously far-fetched, so understand. [Urdu Box Content]: It was said that the prohibition is not for the transmission of the disease but so that one is not harmed by their odor etc. (Ah) I say: (I say that) this is apparently far-fetched, so it should be understood well. (T)

Fifth: The famous saying and the school of the majority and the victorious path is that the command for distance and flight is because if there is closeness and mixing and, God forbid, by divine decree some illness also happens to him, then the accursed Satan will put a whisper in his heart that 'look, the illness was caught by contagion.' This would first be the belief in a false matter; was that much corruption not enough? Then, after hearing in consecutive (mutawatir) Hadiths that the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, clearly stated that disease is not caught by

contagion, this whisper taking root in the heart will be severely dangerous and terrifying. Therefore, for those of weak certainty, to save their religion, distance...

1. 'Umdat al-Qari, Kitab al-Tibb, Bab al-Judham, Idara al-Tiba'ah al-Muniriyyah, Beirut, 21/27
2. Sharh Sahih Muslim lil-Nawawi, Kitab al-Salam, Bab La 'Adwa etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/230

और उनका (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कहना "कोई छूत नहीं" (ला अद्वा) "कोढ़ी से भागो" पर प्राथमिकता रखता है, और किसी वाक्य का प्रारंभ उसके अंत को निरस्त (मनसूख़) नहीं कर सकता। विशेष रूप से, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन "कोई छूत नहीं" "कोढ़ी से भागो" से पहले है और कलाम के शुरुआती हिस्से के लिए यह गुंजाइश नहीं है कि वह कलाम के आखिरी हिस्से को निरस्त कर दे। (त)

तीसरा: भागने का आदेश इसलिए है कि यदि वहां ठहरेंगे तो उन पर नज़र पड़ेगी और उससे अहंकार, तिरस्कार और पीड़ा जैसी बुराइयाँ पैदा होंगी जिनका उल्लेख किया जा चुका है। 'उमदतुल क़ारी' में है:

[अरबी बॉक्स सामग्री]: कुछ विद्वानों ने कहा कि हदीस सही है और कोढ़ी से दूर भागने का आदेश इसलिए दिया गया है क्योंकि उसकी ओर देखने की मनाही है। (1) 'ऐनी' में जो कुछ है वह पूरा हुआ। मैं कहता हूँ: पाँचवीं हदीस और उसकी मिसालें इस संभावना को नहीं मानतीं क्योंकि उनमें दोनों बातें हैं कि उनके बीच एक या दो भालों की दूरी हो। [उर्दू बॉक्स सामग्री]: कुछ अहले इल्म ने फ़रमाया हदीस सही है और जुज़ामी (कोढ़ी) आदमी से दूर भागने का हुक्म इसलिए दिया गया कि उसकी तरफ देखने की मनाही है। जो कुछ ऐनी में है वह पूरा हो गया है। अक़ूल: (मैं कहता हूँ) पाँचवीं हदीस और इसकी मिसालें इसका एहतेमाल (संभावना) नहीं रखतीं इसलिए कि उनमें यह अम्र (आदेश) है कि उन जुज़ामियों से एक या दो नेज़े दूर रहें। (त)

चौथा: भागने का आदेश इसलिए है कि उनकी दुर्गंध आदि से कष्ट न हो। 'शरह सहीह मुस्लिम लिन-नववी' में है:

[अरबी बॉक्स सामग्री]: कहा गया कि मनाही छूत के लिए नहीं है बल्कि गंदी बदबू और इसी तरह की चीज़ों से होने वाली तकलीफ़ के कारण है। (2) समाप्त। मैं कहता हूँ: यह ज़ाहिर तौर पर दूर की बात है, इसे समझो। [उर्दू बॉक्स सामग्री]: कहा गया कि नहीं (मनाही) त'अदिया-ए-मर्ज़ (छूत) के लिए नहीं बल्कि इसलिए है कि उनकी बदबू वग़ैरह से ईज़ा (कष्ट) न हो। अक़ूल: (मैं कहता हूँ कि) यह बज़ाहिर बईद (असंभव) है लिहाज़ा इसे अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। (त)

पाँचवाँ: मशहूर क़ौल और जमहूर का मज़हब और कामियाब रास्ता यह है कि दूरी और भागने का हुक्म इसलिए है कि अगर क़ुर्ब (निकटता) और मेल-जोल रहा और ख़ुदा न करे तक़दीर से उसे भी

कुछ मर्ज़ (बीमारी) लाहिक़ हो गया तो मरदूद शैतान उसके दिल में वसवसा डालेगा कि देखो बीमारी उड़कर लग गई। अव्वल तो यह एक बातिल (झूठी) बात का अक़ीदा होगा; क्या इतना बिगाड़ काफ़ी नहीं था? फिर मुतवातिर हदीसों में सुनकर कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने साफ़ फ़रमाया है कि बीमारी उड़कर नहीं लगती, यह वसवसा दिल में जमना सख़्त ख़तरनाक और डरावना होगा, लिहाज़ा कमज़ोर यक़ीन वालों को अपना दीन बचाने के लिए दूरी...

1. उमदतुल क़ारी किताबुत्तब्ब बाबुल जुज़ाम इदारा अल-तिबा'ह अल-मुनीरिया बेरुत 21/27
2. शरह सहीह मुस्लिम लिन-नववी किताबुस्सलाम बाबू ला अद्वा इल्ख़ क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 2/230

وقوله صلی اللہ تعالٰی علیه وسلم لا عدوی مقدم فیه علی وفر من المجذوم وما کان لصدر الکلام ان ینسخ اخرہ۔ خصوصاً حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کا ارشاد "لاعدوی" "وفرمن المجذوم" سے مقدم ہے اور صدر کلام کے لئے یہ گنجائش نہیں کہ وہ آخر کلام کو منسوخ کردے۔ (ت)

سوم بھاگنے کا حکم اس لئے ہے کہ وہاں ٹھہریں گے تو ان پر نظر پڑے گی اور اس سے وہ مفاسد عجب و تحقیر و ایذا پیدا ہوں گے جن کا ذکر گزرا۔ عمدۃ القاری میں ہے:

قال بعضهم الخبر صحیح وامرہ بالفرار منه لنهیه | بعض اہل علم نے فرمایا حدیث صحیح ہے اور جذامی آدمی سے عن النظر الیه ۱ اھ۔ ما فی العینی اقول: ولا یحتمله | دور بھاگنے کا حکم اس لئے دیا گیا کہ اس کی طرف دیکھنے کی الحدیث الخامس ونظراؤہ مما فیه الامران یکونوا | ممانعت ہے۔ جو کچھ عینی میں ہے وہ پورا ہو گیا ہے اقول: فیهم بفصل رمح او رمحین۔ | (میں کہتا ہوں) پانچویں حدیث اور اس کی امثال اس کا احتمال | نہیں رکھتیں اس لئے کہ ان میں یہ امر ہے کہ ان جذامیوں | سے ایک یا دو نیزے دور رہیں۔ (ت)

چہارم: امر فرار اس لئے ہے کہ اس کی بد بو وغیرہ سے ایذا نہ پائیں۔ شرح صحیح مسلم للنوی میں ہے:

قیل النهي لیس للعدوی بل للتأذی بالرائحة | کہا گیا کہ نہی تعدیہ مرض کے لئے نہیں بلکہ اس لئے ہے کہ ان الکریهة ونحوها ۲ اھ اقول: وهذا ظاهر البعد فافهم۔ | کی بدبو وغیرہ سے ایذا نہ ہو اھ اقول: (میں کہتا ہوں کہ) یہ | بظاہر بعید ہے لہٰذا اس کو اچھی طرح سمجھ لینا چاہئے۔ (ت)

پنجم: قول مشہور و مذہب جمہور و مشرب منصور کہ دوری و فرار کا حکم اس لئے ہے کہ اگر قرب و اختلاط رہا اور معاذ اللہ قضا و قدر سے کچھ مرض اسے بھی حادث ہو گیا تو ابلیس لعین اس کے دل میں وسوسہ ڈالے گا کہ دیکھ بیماری اڑ کر لگ گئی۔ یہ اول تو ایک امر باطل کا اعتقاد ہوگا اسی قدر فساد کے لئے کیا کم تھا پھر متواتر حدیثوں میں سن کر کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے صاف فرمایا ہے بیماری اڑ کر نہیں لگتی، یہ وسوسہ دل میں جمنا سخت خطرناک و ہائل ہوگا، لہٰذا ضعیف الیقین لوگوں کو اپنا دین بچانے کے لئے دوری

1 عمدۃ القاری کتاب الطب باب الجذام ادارۃ الطباعۃ المنیریۃ بیروت ۲۱ / ۲۷ 2 شرح صحیح مسلم للنوی کتاب السلام باب لا عدوی الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۲۳۰

Vol 24 Fatawa-e-Razvia

It is better, yes, the one with complete faith should do what Siddiq al-Akbar and Farooq al-A'zam (may Allah be pleased with them both) did and with how much emphasis they did it. If, God forbid, something had happened, it wouldn't have even occurred to them in their dreams that it arose from a false contagion. Their hearts were more firmly settled than a heavy mountain on the verse, "Nothing will ever befall us except what Allah has ordained for us" 1 (Quran 9:51). Nothing can happen without the decree of Allah. Towards this, the words and actions of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) guided, as he ate with [a leper] and said, "Eat with confidence in Allah and reliance upon Him." The great trustworthy Imam, the leader of jurists and scholars of Hadith, the leader of the people of criticism and praise, the leader of the people of authentication and defect detection, encompassing both Hadith and Jurisprudence, our Master Imam Abu Jafar Tahawi, in Sharh Ma'ani al-Athar, after narrating the hadiths regarding the negation of contagion from Sa'd bin Malik, Ali al-Murtaza, Abdullah bin Abbas, Abu Hurairah, Abdullah bin Mas'ud, Abdullah bin Umar, Jabir bin Abdullah, Anas bin Malik, Sa'ib bin Yazid, and Abu Dharr (may Allah be pleased with them all), states:

[Table Content] Arabic Text: فقد نفی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم العدوٰی وفی ھذہ الاثار وقد قال فمن اعدی الاول ای لما کان ما اصاب الاول انما کان بقدر اللہ عزوجل کان ما اصاب الثانی کذلک، فان قال قائل فنجعل ھذا مضادا لما روی عن النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم لا یورد ممرض علی مصح کما جعلہ ابوہریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ قلت لا ولکن یجعل قولہ لا عدوی کما قال النبی صلی اللہ

Translation of Arabic text: Indeed, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) negated contagion in these traditions (hadiths). As he said, 'Who infected the first one?' Meaning, just as what befell the first one was only by the decree of Allah, the Mighty and Sublime, so also was what befell the second one. If someone says, 'We make this contradictory to what was narrated from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that a sick person should not be brought to a healthy one,' as Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) mentioned, I say, 'No, but rather we take his statement "there is no contagion" just as the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said...'

Urdu Text (Right side): بیشک حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ان آثار میں (احادیث) تعدیہ مرض کی نفی فرمائی، چنانچہ آپ کا ارشاد ہے کہ پہلے مریض کو کیسے تعدیہ مرض ہوا بلکہ اللہ تعالیٰ عزوجل کی تقدیر سے لاحق ہوا۔ اس لئے دوسرے کو بھی جو کچھ پہنچا اسی طرح پہنچا،

اگر کوئی قائل یوں کہے کہ ہم اس کو اس حدیث کے متضاد قرار دیتے ہیں جو حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے مروی ہے کہ کوئی مریض کسی تندرست آدمی کے پاس نہ جائے جیسا کہ حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے یہی کہا ہے۔ قلت (میں کہتا ہوں کہ) ہم ایسا نہیں کرتے بلکہ ان کے ارشاد لا عدوی کو لیتے ہیں جیسا کہ

Translation of Urdu text: Undoubtedly, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) negated the transmission of disease in these reports (Hadiths). Thus, your saying is: How did the first patient get the transmission of the disease? Rather, it was contracted by the decree of Allah the Almighty and Majestic. Therefore, whatever reached the second person reached him in the same way. If a speaker says that we consider this contradictory to the Hadith narrated from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that no sick person should go near a healthy person, just as Hazrat Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) said the same. Qultu (I say) we do not do that, but rather we take their saying 'La Adwa' (no contagion) as...

1 Al-Quran al-Karim 9/51 Page 252 of 720

जिल्द २४ फतावा रज़विया

बेहतर है, हाँ कामिल अल-ईमान वह करे जो सिद्दीक-ए-अकबर और फ़ारूक़-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) ने किया और किस कदर मुबालगा (अतिशयोक्ति) के साथ किया। अगर अयाज़ु बिल्लाह कुछ वाकया होता तो उनके ख़्वाब में भी ख्याल न गुज़रता कि यह झूठे छूत से पैदा हुआ है। उनके दिलों में भारी पहाड़ से ज़्यादा यह बात जमी हुई थी कि "हमें हरगिज़ कुछ न पहुँचता (या पहुँच सकता) सिवाय उसके जो अल्लाह तआला ने हमारे मुकद्दर में लिख दिया है" १ (कुरान ९:५१)। अल्लाह की तकदीर के बिना कुछ नहीं हो सकता। इसी तरफ़ हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के इस कौल (कथन) और.फेल (कार्य) ने हिदायत फरमाई कि आपने (एक कोढ़ी के साथ) साथ खाया और फरमाया, "अल्लाह तआला पर एतमाद और भरोसा करते हुए (हमारे साथ) खाइये।" इमाम-ए-अजल अमीन, इमामुल फुकाहा व इमामुल मुहद्दिसीन, व इमाम-ए-अहलुल जिरह व तअदील, व इमाम-ए-अहलुत तसहीह वत तालील, हदीस व फिक्ह दोनों के माहिर सैयदना इमाम अबू जाफर तहावी 'शरह मानी अल-आसार' में छूत के इनकार के बारे में साद बिन मालिक, अली मुर्तज़ा, अब्दुल्लाह बिन अब्बास, अबू हुरैरा, अब्दुल्लाह बिन मसूद, अब्दुल्लाह बिन उमर, जाबिर बिन अब्दुल्लाह, अनस बिन मालिक, साइब बिन यज़ीद और अबू ज़र (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) से रिवायत करके फरमाते हैं:

[सारणी की सामग्री] अरबी पाठ: فقد نفى رسول اللہ صلى اللہ تعالٰى عليہ وسلم العدوٰى وفى هذه الاثار وقد قال فمن اعدى الاول اى لما كان ما اصاب الاول انما كان بقدر اللہ عزوجل كان ما اصاب الثانى كذلک، فان قال قائل فنجعل هذا مضادا لما روى عن النبى صلى اللہ تعالٰى عليہ وسلم لا يورد ممرض على مصح كما جعلہ ابوہريرة رضى اللہ تعالٰى عنہ قلت لا ولكن يجعل قولہ لا عدوى كما قال النبى صلى اللہ

अरबी पाठ का अनुवाद: "बेशक अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने इन आसार (हदीसों) में छूत (संक्रमण) की नफी (इनकार) फरमाई। जैसा कि आपने फरमाया, 'पहले को किसने संक्रमित किया?' यानी, जिस तरह पहले को जो पहुँचा वह अल्लाह अज़ व जल्ल की तकदीर से था, वैसे ही दूसरे को जो पहुँचा वह भी उसी तरह था। अगर कोई कहने वाला कहे कि हम इसे हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से मरुवी उस हदीस के विपरीत मानते हैं कि 'बीमार को तंदुरुस्त के पास न लाया जाए' जैसा कि हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने कहा है। मैं

कहता हूँ (कहा जाता है) कि नहीं, बल्कि हम उनके कौल 'ला अदवा' (कोई छूत नहीं) को उसी तरह लेते हैं जैसे हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फरमाया..."

उर्दू पाठ (दाहिनी ओर): (احادیث) ان آثار میں نے وسلم علیہ صلی اللہ تعالٰی بیشک حضور تعدیہ مرض کی نفی فرمائی، چنانچہ آپ کا ارشاد ہے کہ پہلے مریض کو کیسے تعدیہ مرض ہوا بلکہ اللہ تعالیٰ عزوجل کی تقدیر سے لاحق ہوا۔ اس لئے دوسرے کو بھی جو کچھ پہنچا اسی طرح پہنچا، اگر کوئی قائل یوں کہے کہ ہم اس کو اس حدیث کے متضاد قرار دیتے ہیں جو حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے مروی ہے کہ کوئی مریض کسی تندرست آدمی کے پاس نہ جائے جیسا کہ حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے یہی کہا ہے۔ قلت (میں کہتا ہوں کہ) ہم ایسا نہیں کرتے بلکہ ان کے ارشاد لا عدوی کو لیتے ہیں جیسا کہ

उर्दू पाठ का अनुवाद: "बेशक हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने इन आसार (हदीसों) में बीमारी के फैलने का इनकार फरमाया, चुनांचे आपका फरमान है कि पहले मरीज़ को बीमारी कैसे लगी, बल्कि अल्लाह तआला अज़ व जल्ल की तकदीर से हुई। इसलिए दूसरे को भी जो कुछ पहुँचा उसी तरह पहुँचा, अगर कोई कहने वाला यह कहे कि हम इसे उस हदीस के विपरीत करार देते हैं जो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से मरुवी है कि कोई मरीज़ किसी तंदुरुस्त आदमी के पास न जाए जैसा कि हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने यही कहा है। कुलतु (मैं कहता हूँ कि) हम ऐसा नहीं करते बल्कि उनके इरशाद 'ला अदवा' को लेते हैं जैसा कि"

१ अल-कुरान अल-करीम ९/५१ पेज २५२ / ७२०

بہتر ہے، ہاں کامل الایمان وہ کرے جو صدیق اکبر وفاروق اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہمانے کیا اور کس قدر مبالغہ کے ساتھ کیا اگر عیاذ باللہ کچھ حادث ہوتا ان کے خواب میں بھی خیال نہ گزرتا کہ یہ عدوائے باطلہ سے پیدا ہوا ان کے دلوں میں کوہ گراں شکوہ سے زیادہ مستقر تھا کہ "لَّنْ یُّصِیْبَنَا اِلَّا مَا کَتَبَ اللّٰہُ لَنَا" 1 (ہمیں ہرگز کچھ نہ پہنچتا (یا پہنچ سکتا) سوائے اس کے جو اللہ تعالٰی نے ہمارے مقدر میں لکھ دیا ہے۔ت) بے تقدیر الہی کچھ نہ ہوسکے گا، اسی طرف اس قول و فعل حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ہدایت فرمائی کہ اپنے ساتھ کھلایا اور کل ثقہ باللہ وتوکلا علیہ (ایک جذامی سے آپ نے فرمایا) اللہ تعالٰی پر اعتماد اور بھروسا کرتے ہوئے (हमारे ساتھ) کھائیے۔ت) فرمایا۔امام اجل امین، امام الفقہاء وامام المحدثین، وامام اہل الجرح والتعدیل، وامام اہل التصحیح والتعلیل، حدیث و فقہ دونوں کے حاوی سیدنا امام ابوجعفر طحاوی شرح معانی الآثار شریف میں درباره نفی عدوی احادیث سعد بن مالک و علی مرتضیٰ و عبداللہ بن عباس و ابی ہریرہ و عبداللہ بن مسعود و عبداللہ بن عمر و جابر بن عبداللہ و انس بن مالک و سائب بن یزید و ابی ذر رضی اللہ تعالٰی عنہم روایت کرکے فرماتے ہیں:

[جدول کا مواد] عربی عبارت: فقد نفی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم العدوٰی وفی ھذہ الاثار وقد قال فمن اعدی الاول ای لما کان ما اصاب الاول انما کان بقدر اللہ عزوجل کان ما اصاب الثانی کذلک، فان قال قائل فنجعل ھذا مضادا لما روی عن النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم لا یورد ممرض علی مصح کما جعلہ ابوہریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ قلت لا ولکن یجعل قولہ لا عدوی کما قال النبی صلی اللہ

اردو عبارت (دائیں جانب): بیشک حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ان آثار میں (احادیث) تعدیہ مرض کی نفی فرمائی، چنانچہ آپ کا ارشاد ہے کہ پہلے مریض کو کیسے تعدیہ مرض ہوا بلکہ اللہ تعالیٰ عزوجل کی تقدیر سے لاحق ہوا۔ اس لئے دوسرے کو بھی جو کچھ پہنچا اسی طرح پہنچا، اگر کوئی قائل یوں کہے کہ ہم اس کو اس حدیث کے متضاد قرار دیتے ہیں جو حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے مروی ہے کہ کوئی مریض کسی تندرست آدمی کے پاس نہ جائے جیسا کہ حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے یہی کہا ہے۔ قلت (میں کہتا ہوں کہ) ہم ایسا نہیں کرتے بلکہ ان کے ارشاد لا عدوی کو لیتے ہیں جیسا کہ

Volume 24, Fatawa Rizvia

(Arabic Text - Left Column): ...[Prophet, may peace and blessings be upon him] negated that contagion exists perpetually. He interpreted the Prophet's saying (may peace and blessings of Allah be upon him), "Let not the sick person enter upon the healthy," as being based on the fear that it might result in him being afflicted by the decree of Allah the Almighty with what afflicted the first person, and then people would say the first person infected him. Thus, bringing the healthy to the sick was disliked for fear of this statement. It has also been narrated from the Messenger of Allah (may peace and blessings of Allah be upon him) in these reports that he placed the hand of a leper in the bowl. This action of the Messenger of Allah (may peace and blessings of Allah be upon him) also indicates the negation of contagion, because if contagion were something possible, the Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him) would not have done what is feared from it, as that would bring destruction upon oneself. Allah the Almighty and Majestic has forbidden that, saying, "And do not kill yourselves." And the Messenger of Allah (may peace and blessings of Allah be upon him) passed by a leaning wall/target and hastened. If he hastened from a leaning target for fear of death, how could it be permissible for him to do what is feared from contagion? This is the meaning of these traditions according to us, and Allah the Almighty knows best. (Summarized/Excerpted).

(Urdu Text - Right Column): The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) said, so the transmission of disease will always be negated. And we base the Prophet's (peace and blessings of Allah be upon him and his family) saying, "Let not the sick person enter upon the healthy," on the concern that if a sick person occasionally goes near a healthy and sound person and then the healthy person contracts the same disease by the decree of Allah, which the sick person is suffering from, people will say that the disease of the first person has spread to him (as contagion). Therefore, due to the concern of such talk, it was disliked for a healthy person to go to a sick person or vice-versa. And we have narrated from the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) in these traditions that he himself took the hand of a leper and placed it in the food bowl. In this way, the blessed action of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) himself is evidence for the negation of the transmission of disease. If the transmission of disease were possible in any way, the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) would never have done such a dangerous thing (eating together with a leper), because that would

be like inviting harm upon oneself, whereas Allah the Almighty and Most High has forbidden it. Thus, the Divine Word states: "(O people!) Do not kill yourselves." The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) passed by a leaning (collapsing) mound and hurried through it. When he hurried past the falling mound due to this...

(Footnote): 1 Sharh Ma'ani al-Athar by al-Tahawi, Book of Disliked Acts, Chapter on Avoiding One with Plague, etc., H.M. Saeed Company, Karachi 12 / 271. Page 253 of 720

जिल्द 24, फ़तावा रज़विया

(अरबी पाठ - बायाँ कॉलम): ...[नबी, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम] ने नफ़ी की कि छूत (संक्रमण) हमेशा होती है। और आपने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इस क़ौल कि "बीमार को तंदुरुस्त के पास न लाया जाए" को इस डर पर महमूल किया कि शायद अल्लाह तआला की तक़दीर से उसे वही बीमारी लग जाए जो पहले को थी, तो लोग कहेंगे कि उसे पहले वाले ने बीमार किया। इसलिए इस बात के डर से तंदुरुस्त को बीमार के पास लाना नापसंद किया गया। और हमने इन रिवायतों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से यह भी रिवायत किया है कि आपने जज़ामी (कोढ़ी) का हाथ प्याले में रखा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का यह फ़ेल भी छूत के इनकार की दलील है, क्योंकि अगर छूत मुमकिन चीज़ होती तो नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम वह काम न करते जिससे उसका ख़तरा हो, क्योंकि यह अपनी हलाकत की तरफ़ कदम बढ़ाना है। और अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने इससे मना फ़रमाया है: "अपने आप को क़त्ल न करो"। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम एक झुकी हुई दीवार के पास से तेज़ी से गुज़रे। जब आप मौत के डर से झुकी हुई चीज़ के पास से तेज़ी से गुज़रे, तो यह कैसे मुमकिन है कि वह काम करें जिससे छूत का ख़तरा हो? हमारे नज़दीक इन आसार का यही मानी है और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (अंशत:)।

(उर्दू पाठ - दायाँ कॉलम): हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया तो बीमारी के संक्रमण (छूत) की हमेशा नफ़ी होगी और हम हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इस इरशाद "कोई मरीज़ किसी तंदुरुस्त पर वारिद न हो" की बुनियाद इस अंदेशे पर रखते हैं कि मरीज़ कभी-कभार सेहतमंद और तंदुरुस्त के पास जाए और फिर तंदुरुस्त को तक़दीर-ए-इलाही से वही मर्ज़ लाहिक़ हो जाए जिसमें मरीज़ मुब्तला हो चुका हो, तो लोग कहेंगे कि पहले का मर्ज़ (बतौर-ए-तजावुज़) इसमें सरायत कर गया है। तो फिर इस कहने के अंदेशे से किसी तंदुरुस्त का मरीज़ के पास जाना या इसका उलट नापसंद किया गया। और हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से इन आसार में रिवायत की कि आपने खुद जज़ामी का हाथ पकड़ कर खाने के प्याले में रखा, इस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का अपना मुबारक अमल भी मर्ज़ के संक्रमण की नफ़ी की दलील है। अगर मर्ज़ का संक्रमण किसी तरह मुमकिन होता तो नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कभी ऐसा ख़तरनाक काम (जज़ामी को अपने साथ खाना खिलाने वाला) न करते क्योंकि इसमें ईज़ा (तकलीफ़) को अपनी

तरफ़ खींच कर लाना है हालाँकि अल्लाह तआला बुज़ुर्ग-ओ-बरतर ने इससे मना फ़रमाया है, चुनाँचे इरशाद-ए-रब्बानी है: (लोगो!) अपने आप को क़त्ल न करो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम एक झुके हुए (गिरने वाले) टीले के पास से गुज़रे तो गुज़रने में जल्दी से काम लिया, जब आपने गिरने वाले टीले से गुज़रते हुए इस...

(पाद-टिप्पणी): 1 शरह मानी अल-आसार लि-तहावी, किताबुल कराहिय्यह, बाबुल इज्तिनाब मिन ज़ी दाअ इत-ताऊन, एच. एम. सईद कंपनी, कराची 12 / 271। पृष्ठ 720 में से 253

(دائیں کالم کا متن) حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا تو تعدیہ مرض کی ہمیشہ نفی ہو گی اور ہم حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے ارشاد "کوئی مریض کسی تندرست پر نہ وارد ہو" کی بنیاد اس اندیشہ پر رکھتے ہیں کہ مریض کبھی کبھار صحت مند اور تندرست کے پاس جائے اور پھر تندرست کو تقدیر الٰہی سے وہی مرض لاحق ہو جائے جس میں مریض مبتلا ہو چکا ہو تو لوگ کہیں گے کہ پہلے کا مرض (بطور تجاوز) اس میں سرایت کر گیا ہے تو پھر اس کہنے کے اندیشہ سے کسی تندرست کا مریض کے پاس جانا یا اس کا الٹ ناپسند کیا گیا اور ہم نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم سے ان آثار میں روایت کی کہ آپ نے خود جذامی کا ہاتھ پکڑ کر کھانے کے پیالے میں رکھا، اس طرح رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا اپنا مبارک عمل بھی تعدیہ مرض کی نفی کی دلیل ہے۔ اگر تعدیہ مرض کسی طرح امکان رکھتا تو نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کبھی ایسا خطرناک کام (جذامی کو اپنے ساتھ کھانا کھلانے والا) نہ کرتے کیونکہ اس میں ایذا کو اپنی طرف کھینچ کر لانا ہے حالانکہ اللہ تعالیٰ بزرگ و برتر نے اس سے منع فرمایا ہے چنانچہ ارشاد ربانی ہے: (لوگو!) اپنے آپ کو قتل نہ کرو، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ایک جھکے ہوئے (گرنے والے) ٹیلے کے پاس سے گزرے تو گزرنے میں جلدی سے کام لیا، جب آپ نے گرنے والے ٹیلے سے گزرتے ہوئے اس

(بائیں کالم کا متن) تعالیٰ علیہ وسلم نفی العدوی ان یکون ابدا ویجعل قولہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم لایورد ممرض علی مصح علی الخوف منہ ان یورد علیہ فیصیبہ بقدر اللہ تعالی ما اصاب الاول فیقول الناس اعداہ الاول فکرہ ایراد المصح علی الممرض خوف ھذا القول ، وقد روینا عن رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم في ھذہ الآثار ایضاً وضعہ ید المجذوم في القصعۃ فدل فعل رسول اللہ صلی اللہ

تعالى عليه وسلم ايضاً على نفي الاعداء لانه لو كان الاعداء مما يجوز ان يكون اذا لما فعل النبي صلى الله تعالى عليه وسلم ما يخاف ذلك منه لان في ذلك جر التلف اليه وقد نهى الله عزوجل عن ذلك فقال ولا تقتلوا انفسكم ومررسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم بهدف مائل فاسرع فاذا كان يسرع من الهدف المائل مخافة الموت فكيف يجوز عليه ان يفعل مايخاف منه الاعداء، فهذا معنى هذه الآثار عندنا والله تعالى اعلم ملتقطاً۔

(فٹ نوٹ) 1 شرح معانى الآثار للطحاوى كتاب الكراهة باب الاجتناب من ذى داء الطاعون الخ ايچ ايم سعيد كمپنى كراچى ١٢ / ٢٧١ Page 253 of 720

Considering the danger that he might perish by falling, you hastened. So how can it be permissible for you to do something where there is a concern and danger of disease transmission? Then, in our view, this is the meaning of these reports. And Allah Almighty knows best. (Summarized) (T)

In Umdat al-Qari, it is stated: The reconciliation between the two Hadiths, according to what Ibn Battal said, is that 'No contagion (La 'Adwa)' is an announcement that there is no reality to it in any disease. As for the prohibition, it is so that a healthy person does not imagine that their illness is because of coming into contact with the sick, and thus, through their imagination, they fall into affirming what the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) invalidated regarding contagion.

In Ma Thabata bi al-Sunnah, from Jami' al-Usul, it is stated: It is said 'a'da al-marad' when a similar illness affects someone due to their close proximity, neighboring, eating together, or direct contact. And Islam has invalidated this. That is, it is said that the disease of a sick person 'flew' and afflicted such-and-such a healthy person, whereas Islam has invalidated the idea of contagion. (T)

In the same source, from Mashariq al-Anwar by Imam Qadi Iyad: Contagion (al-'Adwa) is what the people of Jahiliyyah (pre-Islamic ignorance) believed: that the ailment of a sick person would pass to someone near them.

---

1. Umdat al-Qari Sharh al-Bukhari, Kitab al-Tibb, Bab La Hamah, Idara al-Tiba'ah al-Muniriyyah, Beirut, 21/288.
2. Ma Thabata bi al-Sunnah translated, mention of the month of Safar, Idara Na'imiyya Rizwiyya Sawad-e-A'zam, Lahore, p. 52.

खतरे को देखते हुए कि कहीं गिरने से उसकी मृत्यु न हो जाए, आपने जल्दी की। तो फिर आपके लिए वह काम करना कैसे उचित है जिसमें बीमारी फैलने की आशंका और खतरा हो? फिर हमारे अनुसार इन रिवायतों का यही अर्थ है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (त)

उमदत अल-क़ारी में है: इब्न बत्ताल के कथन के अनुसार दोनों हदीसों के बीच सामंजस्य यह है कि 'ला अदवा' (कोई छूत नहीं) का अर्थ यह है कि किसी बीमारी में संक्रमण की कोई वास्तविकता नहीं है। जहाँ तक उन रोगियों के साथ मिलने-जुलने से रोकने की बात है, तो इसका कारण यह है कि यदि एक स्वस्थ व्यक्ति रोगी के पास आने-जाने के दौरान उसी बीमारी की चपेट में आ जाता है, तो उसके मन में यह भ्रम पैदा हो जाएगा कि उसे यह बीमारी उसी रोगी से लगी है, और फिर वह इस भ्रम के कारण छूत की बीमारी के सच होने का कायल हो जाएगा, जिसका खंडन स्वयं नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया है। (त)

मा सबता बिस-सुन्ना में जामि अल-उसूल से है: कहा जाता है 'अअदी अल-मरज़' यानी बीमारी एक से दूसरे में चली गई, जब किसी रोगी के साथ मेल-जोल, साथ खाने-पीने और संपर्क से किसी स्वस्थ व्यक्ति को वैसी ही बीमारी लग जाए (तो उस समय यह कहा जाता है कि रोगी की बीमारी उड़कर फलां स्वस्थ व्यक्ति को लग गई है), जबकि इस्लाम ने बीमारी के छूत होने (संक्रमण) का खंडन किया है। (त)

इसी में मशारिक़ अल-अनवार इमाम क़ाज़ी अयाज़ से है: छूत (अदवा) वह विश्वास है जो अज्ञानता के काल (जाहिलियत) के लोग रखते थे कि किसी बीमार व्यक्ति की बीमारी उसके पास रहने वाले व्यक्ति तक पहुँच जाती है।

---

1. उमदत अल-क़ारी शरह अल-बुखारी, किताब अल-तिब्ब, बाब ला हामा, इदारा अल-तिबाअह अल-मुनीरिय्याह, बेरूत, २१/२८८।
2. मा सबता बिस-सुन्ना अनूदित, माह-ए-सफ़र का उल्लेख, इदारा नईमिया रज़विया सवाद-ए-आज़म, लाहौर, पृष्ठ ५२।

خطرے کے پیش نظر کہ کہیں اس کے گر پڑنے سے ہلاکت نہ ہو جائے آپ نے جلدی فرمائی، تو پھر آپ کے لئے کیسے روا ہے کہ آپ وہ کام کریں کہ جس سے تعدیہ مرض کا اندیشہ اور خطرہ رہے۔ پھر ہمارے نزدیک ان آثار کا یہ مفہوم ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم ملتقطاً۔ (ت)

عمدۃ القاری میں ہے: التوفیق بین الحدیثین بما قالہ ابن بطال وھو ان لا عدوی اعلام بأنھا لا حقیقۃ لھا واما النھي فلئلا یتوھم المصح ان مرضھا من اجل ورود المرضی علیھا فیکون داخلا بتوھمہ ذلك في تصحیح ما ابطلہ النبي صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم من العدوی[1]۔ دونوں حدیثوں میں موافقت ابن بطال کے قول کے مطابق یہ ہے کہ لا عدوٰی کسی مرض میں تجاوز کے لئے نہیں بلکہ اس بات کا اعلان ہے کہ تعدیہ مرض کی کوئی حقیقت نہیں، رہا یہ کہ پھر ایسے مریضوں کے ساتھ میل جول سے کیوں روکا گیا؟ تو اس کی وجہ یہ ہے کہ تندرست آدمی کو اگر مریض کے پاس آمد و رفت کے دوران وہی مرض لگ گیا تو اس کے دل میں وہم پیدا ہو جائے گا کہ اسے یہ مرض مریض ہی سے لگا ہے اور پھر وہ اس وہم سے تعدیہ مرض کی صحت کا قائل ہو جائے گا کہ جس کا خود حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ابطال فرمایا(ت)

ماثبت بالسنۃ میں جامع الاصول سے ہے: یقال اعدی المرض اذا اصابہ مثلہ لمقارنتہ و مجاورتہ او مؤاکلتہ و مباشرتہ وقد ابطلہ الاسلام[2] کہا جاتا ہے اعدی المرض یعنی مرض تجاوز کر گیا جبکہ کسی مریض کے ساتھ میل جول اور اس کے ساتھ کھانے پینے اور مباشرت سے کسی تندرست آدمی کو اسی جیسا مرض لگ جائے (تو اس وقت یہ کہا جاتا ہے کہ مریض کا مرض اُڑ کر فلاں تندرست آدمی کو لاحق ہو گیا ہے) حالانکہ اسلام نے تعدیہ مرض کا ابطال کیا ہے۔ (ت)

اسی میں مشارق الانوار امام قاضی عیاض سے ہے: العدوی ما کانت تعتقده الجاهلية من تعدی داء ذی الداء الی من یجاوره تعدیہ مرض جس کا اعتقاد اہل جاہلیت رکھتے تھے کہ کسی مریض کا مرض اس شخص تک تجاوز کر جاتا

---

[1] عمدة القاری شرح البخاری کتاب الطب باب لاهامة ادارة الطباعة المنيرية بيروت ۲۱/ ۲۸۸ [2] ماثبت بالسنۃ مترجم ذکر شہر صفر ادارہ نعیمیہ رضویہ سواد اعظم لاہور ص ۵۲

Fatawa Rizvia, Volume 24

[Section 1] (Arabic): And it reaches one who does not have the disease [due to] proximity and contact with the patient, even though he had no disease before. Thus, the Sharia has negated this belief. The saying of the Prophet (blessings and peace of Allah be upon him), "There is no infection," carries the possibility of being a prohibition against saying and believing that, as well as a negation of its reality. As the luminous Prophet (blessings and peace of Allah and his family be upon him) said: "Nothing passes over to another thing," and his noble saying: "Who then infected the first one?" Both points are understood from the Sharia. (Urdu): And it reaches someone who maintains closeness and contact with this patient, even though he had no disease before. Therefore, the Sharia has negated this belief. The command of the Holy Prophet (may the peace and blessings of Allah be upon him), "No contagion," holds the possibility that there is a prohibition against saying this and believing in it, and it is a negation of its reality. Just as the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) said that nothing transcends to another thing, and his noble saying is: then how did the contagion of the disease occur in the first patient. And both these points have been understood from the Sharia. (T)

In the same, it is mentioned from 'Nuzhat al-Nazar' by Hafiz Ibn Hajar:

[Section 2] (Arabic): The best way to reconcile [the two hadiths] is to say that his (blessings and peace of Allah be upon him) negation of contagion remains in its generality. His saying (blessings and peace of Allah be upon him) is indeed authentic: "Nothing infects anything," and his saying: "Who then infected the first?" means that Allah, Glory be to Him and Most High, initiated that in the second just as He initiated it in the first. As for the command to flee from the leper, it is from the category of "blocking the means" (Sadd al-Dhara'i') so that it does not happen to the person who mixes with him that something of that [disease] occurs by the decree of Allah Almighty initially—not by the negated contagion—leading him to think it's due to the mixing and thus believe in the validity of contagion, falling into hardship. Therefore, he was commanded to avoid him to cut off the root [of the misconception]. And Allah Almighty knows best. (Urdu): In reconciling both the hadiths, it is better to say that the negation of the transmission of disease by the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) remains in its generality. And undoubtedly, this noble saying of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) is correct that nothing transcends towards another thing, and his blessed saying that how did the disease occur in the first one? Allah the Pure and Exalted himself afflicted the second patient

with the disease in the same way He afflicted the first patient. As far as the command to flee from and stay away from a leper is concerned, it belongs to the category of blocking means and resources, i.e., a person who, while healthy, mixes and socializes with a leper and coincidentally happens to be afflicted with the disease by Allah Almighty, would then fall into the thought that this happened due to contagion, and thus he would fall into sin. Therefore, to eliminate the root cause of the problem, the command was given to avoid socializing with him. And Allah Almighty knows best. (T)

---

1. Ma Thabata bis-Sunnah (Translated), Mention of the month of Safar, Idara Na'eemia Sawad-e-Azam, Lahore, p. 52.
2. Ma Thabata bis-Sunnah (Translated), Mention of the month of Safar, Idara Na'eemia Sawad-e-Azam, Lahore, p. 84.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

[खंड 1] (अरबी): और वह उस तक पहुँच जाता है जो रोगी के पास या संपर्क में रहता है, भले ही उसे पहले कोई बीमारी न हो। इस प्रकार, शरीयत ने इस धारणा का खंडन किया है। पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का यह कथन कि "कोई संक्रमण नहीं है," इसमें यह संभावना है कि ऐसा कहने और मानने की मनाही हो, और इसकी वास्तविकता का भी खंडन हो। जैसा कि हुज़ूर अनवर (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "कोई भी चीज़ दूसरी चीज़ की ओर नहीं जाती," और उनका नेक कथन है: "फिर पहले वाले को किसने संक्रमित किया?" ये दोनों बातें शरीयत से समझी गई हैं। (उर्दू): और वह उस व्यक्ति तक पहुँच जाता है जो इस रोगी से निकटता और संपर्क रखता है, बावजूद इसके कि उसे पहले कोई बीमारी नहीं थी। अतः शरीयत ने इस विश्वास का खंडन किया है। हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का यह कथन कि "कोई छूत की बीमारी नहीं है," इसमें यह संभावना है कि ऐसा कहने और मानने से मनाही हो, और इसकी वास्तविकता का भी खंडन हो। जैसा कि हुज़ूर अनवर (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम) का इरशाद है कि कोई चीज़ दूसरी चीज़ की ओर नहीं जाती, और आप का मुबारक फरमान है कि फिर पहले मरीज़ में बीमारी कैसे पैदा हुई। और ये दोनों बातें शरीयत से समझी गई हैं। (त)

उसी में हाफ़िज़ इब्न हजर की 'नुज़हतुल नज़र' से वर्णित है:

[खंड 2] (अरबी): दोनों हदीसों को जोड़ने में बेहतर यह है कि यह कहा जाए कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का संक्रमण का खंडन अपनी व्यापकता पर कायम है। हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का यह कथन वास्तव में प्रामाणिक है: "कोई भी चीज़ किसी को संक्रमित नहीं करती," और उनका कहना: "फिर पहले वाले को किसने संक्रमित किया?" का अर्थ है कि अल्लाह, जो पवित्र और सर्वोच्च है, ने दूसरे में बीमारी उसी प्रकार शुरू की जैसे उसने पहले में शुरू की थी। जहाँ तक कोढ़ी से भागने के आदेश का सवाल है, तो यह 'सद्द-ए-ज़राई' (बुराई के रास्तों को बंद करने) के अध्याय से है, ताकि जो व्यक्ति कोढ़ी के साथ घुलता-मिलता है, उसके साथ अल्लाह सर्वशक्तिमान की मर्जी से संयोगवश वह बीमारी न लग जाए—न कि उस संक्रमण से जिसका खंडन किया गया है—जिससे वह यह सोचने लगे कि यह मेल-जोल के कारण हुआ है और संक्रमण की वैधता में विश्वास करने लगे, जिससे वह मुश्किल में पड़ जाए। इसलिए, भ्रम को जड़ से खत्म करने के लिए उसे उससे बचने का आदेश दिया गया था। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है। (उर्दू): दोनों हदीसों को जोड़ने में बेहतर यह है कि यूँ कहा जाए कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का बीमारी के छूत

होने का खंडन करना अपनी व्यापकता पर बना हुआ है, और निस्संदेह हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का यह इरशाद सही है कि कोई चीज़ दूसरी चीज़ की ओर नहीं बढ़ती, और आप का यह मुबारक फरमान कि पहले में कैसे बीमारी हुई? अल्लाह पाक और बुलंद ने ही दूसरे मरीज़ को भी बीमारी दी जैसे उसने पहले मरीज़ को दी थी। जहाँ तक कोढ़ी से दूर भागने और दूर रहने के हुक्म का सवाल है, तो यह 'सद्द-ए-ज़राइ' (बुराई के रास्तों को बंद करने) के अध्याय से है, यानी जो व्यक्ति स्वस्थ अवस्था में कोढ़ी आदमी के साथ मेल-जोल रखे और संयोगवश उसे अल्लाह की ओर से बीमारी लग जाए, तो वह इस ख्याल में पड़ जाएगा कि यह तो छूत की वजह से हुआ है, और वह गुनाह में पड़ जाएगा। इसलिए भ्रम को जड़ से खत्म करने के लिए उसके साथ मेल-जोल से बचने का हुक्म फरमाया। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

---

1. मा सबता बिस-सुन्नह (अनुवादित), सफ़र महीने का ज़िक्र, इदारा नईमिया सवाद-ए-आज़म, लाहौर, पृष्ठ 52.
2. मा सबता बिस-सुन्नह (अनुवादित), सफ़र महीने का ज़िक्र, इदारा नईमिया सवाद-ए-आज़म, लाहौर, पृष्ठ 84.

فتاوی رضویہ، جلد ۲۴

[حصہ اول] (عربی): ویلاصقه ممن لیس به داء فنفاه الشرع وقوله صلی اللہ تعالی علیه وسلم لا عدوی یحتمل النهی عن قول ذلك واعتقاده والنفی لحقیقة ذلك کما قال صلی اللہ تعالی علیه وسلم لا یعدی شیئاً شیئاً وقوله فمن اعدی الاول وکلاهما مفهوم من الشرع -1 (اردو): اور پہنچ جاتا ہے جو اس مریض سے قرب اور اتصال رکھے باوجودیکہ اس میں پہلے کوئی مرض نہ تھا پس شریعت نے اس اعتقاد کی نفی فرمائی ہے، حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا ارشاد لاعدوی یہ احتمال رکھتا ہے کہ اس کہنے اور اعتقاد رکھنے سے نہی ہو اور اس کی حقیقت کی نفی ہو۔ جیسا کہ حضور انور صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کا ارشاد ہے کہ کوئی چیز کسی دوسری چیز کی طرف تجاوز نہیں کرتی، اور آپ کا ارشاد گرامی ہے پھر پہلے مریض میں کیسے تعدیہ مرض پیدا ہوا۔ اور یہ دونوں باتیں شریعت سے سمجھی گئیں۔ (ت)

اُسی میں نزہۃ النظر للحافظ ابن حجر سے ہے:

[حصہ دوم] (عربی): الاولی فی الجمع ان یقال ان نفیه صلی اللہ تعالی علیه وسلم للعدوی باق علی عمومه وقد صح قوله صلی اللہ تعالی علیه وسلم لا یعدی شیئاً شیئاً وقوله فمن اعدی الاول یعنی ان اللہ سبحنه وتعالی ابتدأ ذالك في الثاني کما ابتدأه فی الاول واما الامر بالفرار من المجذوم فمن باب سد الذرائع لئلا یتفق للشخص الذی یخالطه شیئ من ذلك بقدر اللہ تعالی ابتداء لابالعدوی المنفیة فیظن ان ذلك بسبب مخالطة فیعتقد صحة العدوی فیقع فی الحرج فأمر بتجنبه حسم للمادة ، واللہ تعالی اعلم۔ (اردو): دونوں حدیثوں کو جمع کرنے میں بہتر یہ ہے کہ یوں کہا جائے کہ حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا تعدیہ مرض کی نفی کرنا اپنے عموم پر باقی ہے اور بلاشبہ حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا یہ ارشاد گرامی صحیح ہے کہ کوئی چیز کسی دوسری چیز کی طرف تجاوز نہیں

کرتی، اور آپ کا یہ ارشاد مبارک کہ پہلے میں کیسے مرض ہوا۔ اللہ تعالیٰ پاک وبرتر نے ہی دوسرے مریض کو بھی مرض لاحق کیا جس طرح اس نے پہلے مریض کو لاحق کیا تھا۔ جہاں تک جذامی سے دور بھاگنے اور دور رہنے کے حکم کا تعلق ہے تو یہ ذرائع اور وسائل کو بند کرنے کے باب سے ہے، یعنی جو شخص تندرست حالت میں جذامی آدمی کے ساتھ اختلاط اور میل جول رکھے اور اتفاقاً اسے اللہ تعالٰی کی طرف سے مرض لاحق ہو جائے تو وہ اس خیال میں پڑ جائے گا کہ یہ تو تعدیہ کی وجہ سے ہوا ہے، تو وہ گناہ میں پڑ جائے گا، لہٰذا مادہ فساد کو ختم کرنے کے لیے اس کے ساتھ میل جول سے بچنے کا حکم فرمایا، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

---

1. مآثبت بالسنۃ مترجم ذکر شہر صفر ادارہ نعیمیہ سوادِ اعظم لاہور ص ۵۲
2. مآثبت بالسنۃ مترجم ذکر شہر صفر ادارہ نعیمیہ سوادِ اعظم لاہور ص ۸۴

[Box 1] ...by divine decree (Qada and Qadr), if that same illness afflicts him, he will start saying that this illness arose due to interaction and mixing with that patient. Then he will begin to believe in the reality of contagion (Ta'diya) and fall into hardship. For this reason, he was ordered to stay away from and avoid the leper, so that doubts and suspicions do not arise at all and the root cause is cut off. And Allah Almighty knows best. (T)

In Sharh Masabih by Imam Turpishti, Sharh Mishkat by Allama Tibi, Mirqat by Allama Qari, and Sharh al-Muwatta by Allama Muhammad al-Zarqani, etc., it is stated:

"And the wording is from al-Zarqani: The majority [view] is that the intention is to negate and invalidate that [belief], as is indicated by the apparent meaning of the Hadith."[1]

The words of Allama Zarqani are: The opinion of the majority is that by this negation, its invalidation is intended, as the apparent meaning of the Hadith points to it. (T)

In Ashi'at al-Lam'at by Shaykh al-Muhaqqiq, it is stated:

"Most are of the view that the intention is the negation of contagion and its absolute invalidation, just as the apparent meanings of the Ahadith are regarding it."[2]

Most people of knowledge hold the view that by the negation of contagion, its absolute invalidation is intended, as the apparent meanings of the Ahadith indicate it. (T)

In the same [book] it is stated:

"The belief of the Age of Ignorance (Jahiliyyah) was that if a sick person sits beside another sick person [or healthy person], or eats with them, their disease will spread to them. It is said that according to the physicians, this contagion occurs in seven diseases: leprosy, scabies, smallpox, measles, bad breath (ozostomia), ophthalmia (eye disease), and epidemic diseases. Thus, the Lawgiver (the Prophet) negated and invalidated it, meaning that contagion does not happen [on its own], rather the Absolute Powerful (Allah) who made that person ill [can also make] this person..."

The belief of the people of Jahiliyyah was that if a healthy person sits beside a sick person or shares food and drink with them, then that patient's disease spreads into the healthy person. They say that in the view of physicians, contagious diseases are

seven, and they are: (1) Leprosy, (2) Scabies/Itch, (3) Smallpox, (4) Measles, (5) Rotten breath (fetid mouth), (6) Eye disease, (7) Epidemic diseases (i.e.,...)

---

[1] Sharh al-Zarqani 'ala Muwatta Imam Malik, Chapter of Visiting the Sick and Omen, Dar al-Ma'rifah Beirut, 4/333. [2] Ashi'at al-Lam'at Sharh al-Mishkat, Chapter of Medicine and Incantations, Section on Omens and Augury, Maktabah Nuriyyah Razawiyyah Sukkur, 3/622.

[बॉक्स 1] ...ईश्वरीय विधान (क़ज़ा और क़द्र) से वही बीमारी उसे लग जाए, तो वह यह कहने लगेगा कि यह बीमारी उस मरीज़ से मेल-जोल और मेल-मिलाप के कारण पैदा हुई है। फिर वह छुआछूत (संक्रामकता) की सच्चाई में विश्वास करने लगेगा और कठिनाई में पड़ जाएगा। इसी कारण उसे कोढ़ी व्यक्ति से दूर रहने और बचने का आदेश दिया गया ताकि संदेह और शंकाएं पैदा ही न हों और जड़ ही कट जाए। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

इमाम तुरपिश्ती की 'शरह मसाबीह', अल्लामा तीबी की 'शरह मिश्कात', अल्लामा क़ारी की 'मिरक़ात' और अल्लामा मुहम्मद अज़-ज़रक़ानी की 'शरह अल-मुवत्ता' आदि में है:

"ज़रक़ानी के शब्द इस प्रकार हैं: बहुमत की राय है कि इस निषेध का अर्थ उसका खंडन करना है, जैसा कि हदीस का प्रत्यक्ष अर्थ इस पर संकेत करता है।"[1]

अल्लामा ज़रक़ानी के शब्द ये हैं कि अधिकांश की राय यह है कि इस नफ़ी (निषेध) से उसका इबताल (खंडन) मुराद है जैसा कि हदीस का ज़ाहिर (प्रत्यक्ष अर्थ) इस पर दलालत करता है। (त)

शेख़ मोहक़्क़िक़ की 'अशअतुल लम्आत' में है:

"अधिकांश इस विचार पर हैं कि संक्रामकता का निषेध और उसका पूर्ण खंडन ही उद्देश्य है, जैसा कि इस विषय में हदीसों का प्रत्यक्ष भाव है।"[2]

अधिकांश विद्वान इस सिद्धांत पर अडिग हैं कि संक्रामकता के निषेध से उसका पूर्ण रूप से खंडन करना ही उद्देश्य है जैसा कि हदीसों के प्रत्यक्ष भाव इस पर संकेत करते हैं। (त)

उसी में है:

"जाहिलियत (अज्ञानता के युग) का विश्वास यह था कि यदि कोई बीमार व्यक्ति किसी दूसरे के बगल में बैठे या उसके साथ खाए-पिए, तो उसकी बीमारी उसमें फैल जाती है। कहा जाता है कि चिकित्सकों के विचार में ये छूत की बीमारियाँ सात हैं: कुष्ठ, खुजली, चेचक, खसरा, मुँह की दुर्गंध, आँखों की बीमारी और महामारी वाली बीमारियाँ। अतः शरीयत देने वाले (पैग़ंबर) ने इसका निषेध और खंडन किया, अर्थात संक्रमण (स्वयं) नहीं होता, बल्कि सर्वशक्तिमान जिसने उसे बीमार किया, वही इसे..."

अज्ञानता के युग के लोगों का विश्वास यह था कि यदि कोई स्वस्थ व्यक्ति किसी बीमार के बगल में बैठे या उसके साथ खाने-पीने में शामिल हो, तो उस मरीज़ की बीमारी स्वस्थ व्यक्ति में फैल जाती है। वे कहते हैं कि चिकित्सकों के विचार में संक्रामक बीमारियाँ सात हैं, और वे ये हैं: (1) कोढ़ (2) खुजली (3) चेचक (4) खसरा (5) मुँह की दुर्गंध (6) आँखों की बीमारी (7) महामारी वाली बीमारियाँ (अर्थात...)

---

[1] शरह अल-ज़रक़ानी अला मुवत्ता इमाम मालिक, बीमार की देखरेख और अपशकुन का अध्याय, दार अल-मआरिफ़ बेरुत, 4/333. [2] अशअतुल लम्आत शरह अल-मिश्कात, चिकित्सा और झाड़-फूंक का अध्याय, शगुन और अपशकुन का अनुभाग, मकतबा नूरिय्या रज़विय्या सुक्कुर, 3/622.

पेज 256/720

کی قضا و قدر سے وہی مرض لاحق ہو جائے تو وہ یہ کہنے لگے گا کہ یہ مرض اس مریض سے میل جول اور اختلاط کی وجہ سے پیدا ہو گیا ہے پھر وہ صحت تعدیہ کا اعتقاد رکھنے لگے گا اور حرج میں پڑ جائے گا بایں وجہ اسے جذامی آدمی سے دور رہنے اور بچنے کا حکم دیا گیا تاکہ شکوک و شبہات پیدا ہی نہ ہونے پائیں اور مادہ ہی کٹ جائے، واللہ تعالٰی اعلم (ت)

شرح مصابیح امام تورپشتی و شرح مشکوٰۃ علامہ طیبی و مرقاۃ علامہ قاری و شرح الموطا لعلامہ محمد الزرقانی وغیرہم میں ہے:

واللفظ للزرقانی الاکثر ان المراد نفی ذلك وابطاله كما دل علیه ظاہر الحدیث۱۔

علامہ زرقانی کے الفاظ یہ ہیں اکثر کی رائے یہ ہے کہ اس نفی سے اس کا ابطال مراد ہے جیسا کہ اس پر ظاہر حدیث دلالت کرتی ہے(ت)

اشعۃ اللمعات شیخ محقق میں ہے:

اکثر بر آنند کہ مراد نفی عدوی و ابطال اوست مطلقاً چنانچہ ظاہر احادیث در آنست ۲۔

اکثر اہل علم اس نظریہ پر قائم ہیں کہ نفی تعدیہ سے اس کا مطلقاً ابطال مراد ہے جیسا کہ ظاہر احادیث اس پر دال ہیں (ت)

اسی میں ہے:

اعتقاد جاہلیت آں بود کہ بیمارے کہ در پہلوئے بیمارے نشیند یا ہمراہ وے بخورد سرایت کند بیماری او بوئے گفتہ اند کہ بزعم اطبا ایں سرایت در ہفت مرض است جذام وجرب وجدری وحصبہ وبخر و

رمد وامراض وبائیہ پس شارع آنرا نفی کرد و ابطال نمود یعنی سرایت نمی باشد بلکہ قادر مطلق ہمچناں کہ اور ا بیمار کر د ایں را

اہل جاہلیت کا اعتقاد یہ تھا کہ اگر کوئی تندرست آدمی کسی بیمار کے پہلو میں بیٹھے یا اس کے ساتھ کھانے پینے میں شریک ہو تو اس مریض کا مرض تندرست آدمی میں سرایت کر جاتا ہے۔ کہتے ہیں کہ اطباء کے خیال میں متعدی امراض سات ہیں اور وہ یہ ہیں: (۱) کوڑھ (۲) خارش (۳) چیچک (۴) خسرہ (۵) گندہ دہن ہونا (۶) آنکھوں کی بیماری (۷) وبائی امراض (یعنی)

---

۱ شرح الزرقانی علی موطا امام مالك باب عیادة المریض والطیرة دارالمعرفة بیروت ۴ / ۳۳۳ ۲ اشعة اللمعات شرح المشکوة باب الطب والرقی باب الفأل والطیرة مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۳ / ۶۲۲

Fatawa Razawiyya, Volume 24

Also stated 1. — Cholera, plague, etc. (the Lawgiver has negated and invalidated the contagion of all these; thus, the intention of the Lawgiver is that there is no transmission or crossing in any disease (such that the disease of one person is caught by another due to mingling), but rather the Absolute Powerful (Allah) has caused the illness to reach the second person just as He caused the first person to be ill.) (T)

In short, on these five statements, (the belief in) contagion is purely false. This is the school of thought of the best of the saints of the former and latter generations, Master of us Siddiq-e-Akbar, and Master of us Farooq-e-Azam, and Master Salman Farsi, and Mother of the Believers Siddiqa, and Master Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them all), the noble companions. And the same was chosen by the most magnificent Imam Tahawi, the Master of the Hanafis, and Imam Yahya bin Yahya Maliki, and Imam Isa bin Dinar Maliki, and Imam Ibn Battal Abul Hasan Ali bin Khalaf Maghribi Maliki, and Imam Ibn Hajar Asqalani Shafi'i, and Allama Tahir Hanafi, and Shaykh Muhaqqiq Abdul Haq Muhaddith Hanafi, and others among the majority of the learned scholars (may Allah have mercy on them). It is mentioned in 'Umdat al-Qari' from Tahawi:

[Arabic Box] "Ibn Umar and Salman (may Allah be pleased with them) used to prepare food for lepers and eat with them. And from Aisha (may Allah be pleased with her), she said: 'A freed slave of ours had that disease, and he used to eat in my plates, drink from my cups, and sleep on my bed.'" [Urdu Translation] That is, Abdullah bin Umar and Salman (may Allah be pleased with them) used to prepare food for lepers and eat with them, and it is narrated from the Mother of the Believers (may Allah be pleased with her) that one of our freed slaves contracted this disease; he used to eat in my vessels, drink in my bowls, and sleep on my beds. 2

Zarqani 'ala al-Muwatta states under the Hadith "Indeed it is an annoyance" (Certainly it is a harm. T):

[Arabic Box] "Yahya bin Yahya said: 'I heard that its interpretation is regarding a man who has leprosy; it is not appropriate for him to come upon a healthy person to annoy him, because even if it is not contagious, souls dislike it, and he has already said...'" [Urdu Translation] Yahya bin Yahya said: "I heard that its interpretation is about the person who has the disease of leprosy; it is not appropriate for him to

come to any healthy person as it will cause him annoyance, because even if the belief in contagion of disease..."

1. Ashi'at al-Lam'at Sharh al-Mishkat, Book of Medicine and Ruqyah, Chapter on Omens and Bird Omens, Maktaba Nooria Razavia Sukkur, 3/620.
2. 'Umdat al-Qari Sharh Bukhari, Book of Medicine, Chapter on Leprosy, Idarat al-Tiba'at al-Muniriyya Beirut, 21/727.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

और कहा 1. — हैज़ा, प्लेग आदि (शरीयत देने वाले ने इन सभी के संक्रामक होने का खंडन किया है और इसे अमान्य कर दिया है; अतः शरीयत देने वाले का उद्देश्य यह है कि किसी भी बीमारी में कोई संक्रमण या फैलाव नहीं है (कि एक की बीमारी घुलने-मिलने के कारण दूसरे को लग जाए), बल्कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने जिस तरह एक को बीमार किया, उसी तरह दूसरे को भी बीमारी पहुँचा दी।) (त)

संक्षेप में, इन पाँचों कथनों पर 'अदवी' (संक्रमण) पूरी तरह से निराधार है। यही मार्ग है औलियाओं में सर्वश्रेष्ठ, पूर्वजों और उत्तराधिकारियों के सरदार सिद्दीक़-ए-अकबर, और हमारे सरदार फ़ारूक़-ए-आज़म, और हज़रत सलमान फ़ारसी, और मोमिनों की माँ सिद्दीक़ा, और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (अल्लाह उन सभी से प्रसन्न हो) जैसे महान सहाबा-ए-किराम का। और इसी को इमाम तहावी (हनफ़ियों के सरदार), इमाम यह्या बिन यह्या मालिकी, इमाम ईसा बिन दीनार मालिकी, इमाम इब्न बट्टाल अबुल हसन अली बिन खलफ़ मग़रिबी मालिकी, इमाम इब्न हजर अस्क़लानी शाफ़ई, अल्लामा ताहिर हनफ़ी, और शैख़ मुहक़्क़िक़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस हनफ़ी और अन्य अधिकांश उलेमा-ए-किराम (अल्लाह उन पर दया करे) ने अपनाया है। 'उम्दतुल क़ारी' में तहावी से उद्धृत है:

[अरबी बॉक्स] "इब्न उमर और सलमान (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) कोढ़ियों के लिए खाना तैयार करते और उनके साथ खाते थे। और आयशा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया: हमारे एक आज़ाद किए हुए गुलाम को वह बीमारी हो गई थी, तो वह मेरे बर्तनों में खाता, मेरे प्यालों में पीता और मेरे बिस्तर पर सोता था।" [उर्दू अनुवाद] यानी अब्दुल्लाह बिन उमर और सलमान (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) कोढ़ियों के लिए खाना तैयार करते और उनके साथ खाते थे। और उम्मुल मोमिनीन (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रिवायत है कि हमारे एक आज़ाद किए हुए गुलाम को यह बीमारी हो गई थी, वह मेरे बर्तनों में खाता, मेरे प्यालों में पीता और बिस्तरों पर सोता था। 2

ज़र्क़ानी अलल मुवत्तअ में इस हदीस के तहत "इन्नहू अज़ा" (बेशक वह तकलीफ़देह है। त) फ़रमाया:

[अरबी बॉक्स] "यह्या बिन यह्या ने फ़रमाया: मैंने सुना कि इसकी तफ़सीर उस व्यक्ति के बारे में है जिसे कोढ़ की बीमारी हो जाए, तो उसके लिए उचित नहीं कि वह किसी स्वस्थ व्यक्ति के पास आए क्योंकि इससे उसे तकलीफ़ होगी, क्योंकि भले ही वह संक्रामक न हो, फिर भी मन उससे घृणा करता है और उसने कहा है..." [उर्दू अनुवाद] यह्या बिन यह्या ने फ़रमाया कि मैंने सुना कि इसकी

तफ़सीर उस व्यक्ति के बारे में है जिसे कोढ़ की बीमारी हो जाए, तो उसके लिए उचित नहीं कि वह किसी स्वस्थ व्यक्ति के पास आए कि उसे ईज़ा (तकलीफ़) होगी, इसलिए कि भले ही बीमारी के संक्रमण का विश्वास...

1. अशिअतुल लम्आत शरह अल-मिशकात, किताबुल तिब वल रुक़्या, बाब अल-फाल वत तियरा, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, 3/620
2. उम्दतुल क़ारी शरह बुखारी, किताबुल तिब, बाबुल जुज़ाम, इदारातुल तिबाअतुल मुनीरिया बेरूत, 21/727

पेज 257 का 720

نیز کرد ۱۔ حیضہ، طاعون وغیرہ (شارع نے ان سب کے تعدیہ کی نفی فرمائی اور اس کا ابطال کیا، پس شارع کی مراد یہ ہے کہ کسی مرض میں سرایت اور تجاوز نہیں (کہ ایک کا مرض بوجہ اختلاط دوسرے کو لگ جائے) بلکہ قادرِ مطلق نے جس طرح ایک کو بیمار کیا اسی طرح دوسرے کو بھی بیماری لاحق کردی۔ (ت)

بالجملہ ان پانچوں اقوال پر عدوٰی باطل محض ہے یہی مذہب ہے حضرت افضل الاولیاء الاولین والآخرین سید ناصدیق اکبر و حضرت سیدنا فاروق اعظم وحضرت سلمان فارسی و حضرت ام المومنین صدیقہ وحضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہم اجلہ صحابہ کرام کا، اور اسی کو اختیار فرمایا امام اجل طحاوی سید الحنفیہ وامام یحیٰی بن یحیٰی مالکی وامام عیسٰی بن دینار مالکی و امام ابن بطال ابوالحسن علی بن خلف مغربی مالکی و امام ابن حجر عسقلانی شافعی وعلامہ طاہر حنفی و شیخ محقق عبدالحق محدث حنفی و غیر ہم جمہور علمائے کرام رحمہم اللہ تعالٰی نے عمدۃ القاری میں طحری سے ہے:

[Arabic Box] كان ابن عمر وسلمان رضى الله تعالى عنهم يصنعان الطعام للمجذومين ويأكلان معهم وعن عائشة رضى الله تعالى عنها قالت كان مولى لنا اصحابه ذلك الداء فكان يأكل في صحانى ويشرب في اقداحى وينام على فراشي ۲۔ [Urdu Translation] یعنی عبداللہ بن عمر و سلمان رضی اللہ تعالٰی عنہم مجذومین کے لئے کھانا تیار فرماتے اور ان کے ساتھ کھاتے اور ام المومنین رضی اللہ تعالٰی عنہا سے مروی ہوا کہ ہمارے ایک غلام آزاد شدہ کو یہ مرض ہو گیا تھا وہ میرے برتنوں میں کھاتا میرے پیالوں میں پیتا بچھونوں پر سوتا۔

زرقانی علی الموطأ میں زیر حدیث انہ اذی (بیشک وہ ایذا ہےت) فرمایا:

[Arabic Box] قال یحیی بن یحیی سمعت ان تفسیرہ فی رجل یکون بہ الجذام فلا ینبغی لہ ان ینزل علی الصحیح یؤذیہ لانہ وان کان لایعدی فالانفس تکرھہ وقد قال [Urdu Translation] یحیٰی بن یحیٰی نے فرمایا کہ میں نے سنا کہ اس کی تفسیر اس شخص کے بارے میں ہے جس کو مرض جذام ہو جائے تو اسے مناسب نہیں کہ کسی تندرست آدمی کے پاس آئے کہ اسے ایذا ہو گی اس لئے کہ اگر چہ تعدیہ مرض کا اعتقاد

۱ اشعة اللمعات شرح المشکوة کتاب الطب والرقی باب الفال والطیرة مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۳/ ۶۲۰ ۲ عمدة القاری شرح بخاری کتاب الطب باب الجذام ادارة الطباعة المنیریة بیروت ۲۱/ ۷۲۷

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

May peace and blessings of Allah Almighty be upon him. Verily, it is an annoyance, meaning not due to contagion. Even if it is not present, seeing such a painful state on souls is hard to bear. And indeed, the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah Almighty be upon him and his family, said that this is an annoyance, meaning its cause is not the transmission of disease. (T)

In short, this is the school of thought, and among the reasons for interpretation, the fifth reason is the most correct and comprehensive.

[Left Column - Arabic/Urdu] Here are three more views for some scholars. The sixth is that leprosy (Judham) is excluded from the statement of the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, "There is no contagion" (La 'Adwa), meaning nothing infects another except this. This view is attributed in "Ash'at al-Lam'at" to Al-Kirmani al-Shafi'i, the author of "Al-Kawkab al-Durari fi Sharh Sahih al-Bukhari". I say: He did not say it, but rather narrated it, and he was not pleased with it, but rather considered it weak, for he only narrated it with the term "it was said" (qila), as narrated from him in "Majma' al-Bihar". In fact, the Sheikh himself in "Ma Thabata bi al-Sunnah" mentioned that what is here was a slip of the pen. Furthermore, the author of this "it was said" is unknown, no one inclined towards it has been found, and no evidence supports it. The seventh reason, Imam al-Baghawi said: It was said that leprosy is a malodorous disease, and anyone who maintains long companionship, shared meals, or shared bed with such a sick person becomes ill, and it is not from contagion, but...

[Right Column - Urdu] According to some scholars, there are three more reasons here. The sixth reason is that the disease of leprosy is an exception to the noble statement of the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, "No contagion" (La 'Adwa). That is, except for this disease, nothing else passes from one thing to another. Accordingly, in "Ash'at al-Lam'at", Sheikh Muhaqqiq attributed this to Allama Kirmani Shafi'i, the author of "Al-Kawkab al-Durari Sharh Sahih Bukhari". I say: (I say) he did not say this, but rather narrated it, but he was not satisfied with it. Instead, he mentioned it with a "Sigha al-Tamrid" (form of illness), meaning a form of weakness, and related it using the word "Qila" (it was said), as it has been narrated from him in "Majma' al-Bihar". In fact, Sheikh Muhaqqiq himself narrated it in "Ma Thabata bis Sunnah", but here he had a slip of the pen (oversight). Then, the proponent of this "it was said" could not be known, and no one with any inclination turned towards it, nor

did any evidence support it. The seventh reason, Imam Baghawi said: It has been said that leprosy is a foul-smelling disease; whoever keeps long company with such a patient...

---

1. Sharh al-Zurqani 'ala al-Muwatta' li Imam Malik, Chapter on Visiting the Sick and Omens, Dar al-Ma'rifah Beirut, 4/334. Page 258 of 720

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 24

अल्लाह तआला उन पर दरूद और सलाम भेजे। वास्तव में यह कष्ट है, अर्थात छूत की बीमारी के कारण नहीं। भले ही यह मौजूद न हो, फिर भी आत्माओं पर ऐसी कष्टदायक स्थिति देखना भारी पड़ता है। और वास्तव में अल्लाह के रसूल, सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह कष्ट है, यानी इसका कारण रोग का संक्रमण नहीं है। (त)

संक्षेप में, यही पंथ है और व्याख्या के कारणों में पाँचवाँ कारण सबसे सही और व्यापक है।

[बायां कॉलम - अरबी/उर्दू] यहाँ कुछ विद्वानों के लिए तीन और विचार हैं। छठा यह है कि कुष्ठ रोग (जुज़ाम) अल्लाह के रसूल, सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस कथन "कोई छूत नहीं है" (ला अद्वा) से बाहर है, जिसका अर्थ है कि इसके अलावा कोई भी चीज़ दूसरी चीज़ को संक्रमित नहीं करती है। इस विचार को "अशअत अल-लमात" में अल-किरमानी अल-शाफ़ई, "अल-कौकब अल-दुरारी फ़ी शरह सहीह अल-बुखारी" के लेखक, की ओर जिम्मेदार ठहराया गया है। मैं कहता हूँ: उन्होंने यह नहीं कहा, बल्कि इसे बयान किया, और वे इससे संतुष्ट नहीं थे, बल्कि उन्होंने इसे कमज़ोर माना, क्योंकि उन्होंने इसे केवल "कहा गया" (क़ील) शब्द के साथ बयान किया, जैसा कि "मजमा अल-बिहार" में उनसे बयान किया गया है। वास्तव में, शेख ने स्वयं "मा सबता बिस सुन्नत" में उल्लेख किया है कि यहाँ जो है वह कलम की फिसलन (भूल) थी। इसके अलावा, इस "कहा गया" के कहने वाले का पता नहीं चल सका है और इसकी ओर कोई भी झुकाव रखने वाला नहीं पाया गया है, और न ही किसी साक्ष्य ने इसका समर्थन किया है। सातवाँ कारण, इमाम अल-बग़वी ने कहा: यह कहा गया है कि कुष्ठ एक दुर्गंधयुक्त बीमारी है, और जो कोई ऐसे बीमार व्यक्ति के साथ लंबी सोहबत रखता है, साथ खाता है या सोता है, वह बीमार हो जाता है, और यह छूत से नहीं है, बल्कि...

[दायां कॉलम - उर्दू] कुछ विद्वानों के अनुसार यहाँ तीन और वजूह (कारण) हैं। छठी वजह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इरशाद-ए-आली "ला अद्वा" से मरज़-ए-जुज़ाम (कुष्ठ रोग) मुस्तस्ना (अपवाद) है यानी इस बीमारी के अलावा कोई चीज़ किसी दूसरी चीज़ की तरफ़ तजावुज़ (संक्रमण) नहीं करती, चुनाँचे 'अशअतुल लमात' में शेख मोहक्क़िक ने अल्लामा किरमानी शाफ़ई मुसन्निफ़ 'अल-कौकबुद दुरारी शरह सहीह बुखारी' की तरफ़ इसको मंसूब किया है। 'अक़ूलु': (मैं कहता हूँ) उन्होंने यह नहीं कहा बल्कि इसको नक़्ल किया है लेकिन वह इस पर राज़ी नहीं हुए बल्कि उन्होंने तो 'सीग़ा-ए-तमरीज़' यानी सीग़ा-ए-ज़ोफ़ से इसे ज़िक्र किया और लफ़्ज़ 'क़ील' से इसकी हिकायत की है

जैसा कि इससे 'मजमाउल बिहार' में नक़्ल किया गया है बल्कि ख़ुद शेख मोहक्क़िक ने 'मा सबता बिस सुन्नह' में इसे नक़्ल किया है लेकिन यहाँ उनसे 'सबक़त-ए-कलम' (भूल) हो गई फिर इस 'क़ील' का क़ायल मालूम न हो सका और कोई मिलान रखने वाला इसकी तरफ़ माइल न हुआ और न किसी दलील से इसकी ताईद की। सातवीं वजह इमाम बग़वी ने कही: कहा गया है कि जुज़ाम बदबूदार बीमारी है जो कोई ऐसे बीमार से तवील (लंबी) सोहबत रखे उसके साथ...

---

1. शरह अल-ज़रक़ानी अला अल-मुवत्त' लि इमाम मालिक, बाब इयादतुल मरीज़ वल तयराह, दारुल मारिफ़ह बेरुत 4/334। पृष्ठ 258/720

صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم انہ اذی یعنی لا للعدوی ۱۔ نہ ہوتے ہوئے بھی نفوس پر ایسی تکلیف دہ حالت کو دیکھنا گراں گزرتا ہے اور بیشک حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ یہ ایذا ہے یعنی اس کا سبب تعدیہ مرض نہیں۔ (ت)

غرض مذہب یہ ہے اور وہ وجوہ تاویل میں اصح وانجمع وجہ پنجم،

[بایاں کالم - عربی/اردو] وھھنا ثلثۃ وجوہ آخر لبعض العلماء فالسادس ان الجذام مستثنی من قولہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم لا عدوی ان لا یعدی شیئ شیئا الا ھذا وعزاہ في اشعۃ اللمعات الی الکرماني الشافعي صاحب الکوکب الدراری فی شرح صحیح البخاری اقول: لم یقلہ بل نقلہ وما رضیہ بل مرضہ فانما حکاہ بقیل کما نقل عنہ فی مجمع البحار بل والشیخ نفسہ في ماثبت بالسنۃ فما ھھنا سبق قلم ثم ھذا القیل لم یعرف لہ قائل ولم یمل الیہ مائل ولا یؤیدہ شیئ من الدلائل والسابع قال البغوی قیل ان الجذام ذورائحۃ تسقم من اطال صحبتہ ومؤاکلتہ او مضاجعتہ ولیس من العدوی بل

[دایاں کالم - اردو] بعض علماء کے نزدیک یہاں تین اور وجوہ ہیں چھٹی وجہ حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کے ارشاد عالی لا عدوی سے مرضِ جذام مستثنٰی ہے یعنی اس مرض کے ماسوا کوئی شے کسی دوسری شے کی طرف تجاوز نہیں کرتی، چنانچہ اشعۃ اللمعات میں شیخ محقق نے علامہ کرمانی شافعی مصنف الکوکب الدراری شرح صحیح بخاری کی طرف اس کو منسوب کیا ہے اقول: (میں کہتا ہوں) اس نے یہ نہیں کہا بلکہ اس کو نقل کیا ہے لیکن وہ اس پر راضی نہیں ہوا بلکہ اس نے تو صیغہ تمریض یعنی صیغہ ضعف سے اسے ذکر کیا اور لفظ قیل سے اس کی حکایت کی ہے جیسا کہ اس سے مجمع البحار میں نقل کیا گیا ہے بلکہ خود شیخ محقق

نے ماثبت بالسنۃ میں اسے نقل کیا ہے لیکن یہاں ان سے سبقت قلم (بھول) ہوگئی پھر اس قیل کا قائل معلوم نہ ہوسکا اور کوئی میلان رکھنے والا اس کی طرف مائل نہ ہوا اور نہ کسی دلیل سے اس کی تائید کی۔ ساتویں وجہ امام بغوی نے کہا : کہا گیا ہے کہ جذام بدبودار بیماری ہے جو کوئی ایسے بیمار سے طویل صحبت رکھے اس کے ساتھ

---

۱ شرح الزرقانی علی الموطأ لامام مالک باب عیادۃ المریض والطیرۃ دارالمعرفۃ بیروت ۴ / ۳۳۴

Fatawa Razawiyya, Volume 22

(Arabic Text/Right Column) It is from the chapter of medicine, just as one is harmed by eating what they dislike and smelling what they loathe, and staying in a place whose air does not suit them. All of this is by the permission of Allah. "And they cannot harm anyone with it except by the permission of Allah." This was quoted in Al-Majma', and in Al-Ash'iah, it is attributed to Imam al-Nawawi. I say: Perhaps this also is for that reason, because what I saw in his Minhaj is the correction of the eighth aspect that follows, and he did not turn to mention this. And Allah knows best. My opinion is that what is in my copy of Al-Ash'iah is a corruption from al-Baghawi, because what he quoted is a literal translation of al-Baghawi's words, except that al-Baghawi also did not say it definitively; rather, he quoted it with a weak form (tamreed). Then I say: I do not know what the contradiction is between the chapters of contagion (aduwwa) and medicine, for medicine asserts contagion in this disease, as...

(Urdu Translation/Left Column) ...if one eats, drinks, or lies down with them, they also contract this disease. This is not from contagion but from the chapter of medicine, like the harm caused by eating something undesirable that causes rot, and similarly from smelling something unpleasant, or staying in a place with unsuitable air (i.e., a polluted atmosphere). Here too, the same is meant. In reality, all of this happens by the permission of Allah. (So) they cannot harm anyone through it except by the permission and will of Allah Almighty. Accordingly, it has been quoted in Majma' al-Bihar, and the researching Shaykh in Ash'at al-Lam'at has attributed it to Imam al-Nawawi. I say: (I say) perhaps this is also like that because what I have seen in Imam al-Nawawi's Minhaj is the authentication of the upcoming eighth reason, and he did not give 'urooj' i.e., agreement to its mention, and Allah Almighty knows the reality of the situation best. The copy of Ash'at al-Lam'at that I have, my opinion is that there has been an alteration in al-Baghawi's text because the Shaykh has quoted an exact translation of al-Baghawi's words; despite this, al-Baghawi also did not say this, but rather he quoted it with a word of 'tamreed' (expressing doubt/weakness). Then I say: (Then I say) I do not know that contagion and medicine...

(Footnote) 1 Majma' Bihar al-Anwar, under the word 'Ada', Maktaba Dar al-Iman, Madina Munawwarah, 3/544.

Page 259 of 720

फतावा रज़विय्या, जिल्द २२

(अरबी पाठ/दायां कॉलम) यह चिकित्सा के अध्याय से है, जैसे कि कोई उस चीज़ को खाने से नुकसान उठाता है जिसे वह नापसंद करता है और उसे सूंघने से जिसे वह घृणा करता है, और ऐसी जगह रहने से जिसकी हवा उसके अनुकूल नहीं है। यह सब अल्लाह की अनुमति से है। "और वे इसके साथ किसी को नुकसान नहीं पहुँचा सकते सिवाय अल्लाह की अनुमति के।" इसे 'अल-मजमा' में उद्धृत किया गया है, और 'अल-अशिअह' में इसे इमाम अल-नवावी के नाम से दर्ज किया गया है। मैं कहता हूँ: शायद यह भी उसी कारण से है, क्योंकि मैंने उनकी 'मिन्हाज' में जो देखा है वह आने वाले आठवें पहलू का सुधार है, और उन्होंने इसका उल्लेख करने पर ध्यान नहीं दिया। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। मेरा विचार है कि 'अल-अशिअह' की मेरी प्रति में जो है वह अल-बगवी से एक अशुद्धि (तहरीफ) है, क्योंकि उन्होंने जो उद्धृत किया है वह अल-बगवी के शब्दों का शब्दशः अनुवाद है, सिवाय इसके कि अल-बगवी ने भी इसे निश्चित रूप से नहीं कहा; बल्कि उन्होंने इसे कमज़ोर रूप (तमरीद) के साथ उद्धृत किया है। फिर मैं कहता हूँ: मुझे नहीं पता कि छूत (अदुवा) और चिकित्सा के अध्यायों के बीच क्या विरोधाभास है, क्योंकि चिकित्सा इस बीमारी में छूत की बात कहती है, जैसा कि...

(उर्दू अनुवाद/बायां कॉलम) ...खाने, पीने और लेटने से यह बीमारी उसे भी लग जाती है और यह छूत (अदुवा) में से नहीं है बल्कि चिकित्सा के अध्याय से है जैसे घिनौनी और नापसंद चीज़ खाने से नुकसान और क्षति होती है और इसी तरह अप्रिय चीज़ सूंघने से और अनुपयुक्त हवा वाली जगह (यानी प्रदूषित वातावरण) में ठहरने से नुकसान होता है (बस यहाँ भी यही मुराद है) और वास्तव में यह सब कुछ अल्लाह की अनुमति से होता है (लिहाज़ा) वे इसके माध्यम से किसी को नुकसान नहीं पहुँचा सकते सिवाय अल्लाह तआला की अनुमति और इच्छा के। तदनुसार मजमा अल-बिहार में इसे उद्धृत किया गया है और शेख मुहक्किक ने अशिअत अल-लम्आत में इसे इमाम नवावी की ओर मंसूब किया है। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) शायद यह भी इसी तरह है क्योंकि मैंने इमाम नवावी की मिन्हाज में जो कुछ देखा है वह आने वाली आठवीं वजह की तस्दीक है और इसके ज़िक्र पर उन्होंने उरूज यानी सहमति नहीं दी और वास्तविकता को अल्लाह तआला बेहतर जानता है। अशिअत अल-लम्आत का जो नुस्खा मेरे पास है मेरा ख्याल है कि उसमें बगवी की इबारत में तब्दीली हो गई है क्योंकि शेख ने बगवी के कलाम का हू-ब-हू तर्जुमा नकल किया है, इसके बावजूद बगवी ने भी यह

नहीं कहा बल्कि उन्होंने कलमा-ए-तमरीद के साथ इसे नकल किया है। फिर मैं कहता हूँ: (फिर मैं कहता हूँ) मैं यह नहीं जानता कि अदुवा और तिब (चिकित्सा) के..

(पाद-टिप्पणी) 1 मजमा बहार अल-अनवार, शब्द 'अदा' के तहत, मकतबा दार अल-ईमान, मदीना मुनव्वरा, 3/544।

(عربی متن/دایاں کالم) من باب الطب کما یتضرر باکل ما یعاف وشم مایکرہ والمقام فی مقام لا یوافق ھواہ کلہ باذن اللہ وما ھم بضارین بہ من احد الا باذن اللہ نقلہ فی المجمع و عزاہ فی الاشعۃ للامام النووی اقول: لعل ھذا ایضا لذاك فان الذي رأیت في منھاجہ تصویب الوجہ الثامن الاتی ولم یعرج علی ذکر ھذا فاللہ تعالی اعلم وظني ان الذی في نسختی الاشعۃ تصحیف من البغوی فان الذی نقلہ ترجمۃ کلام البغوی سواء بسواء غیر ان البغوی ایضا لم یقل بہ وانما نقلہ بقیل ممرضا ثم اقول: لا ادری ما التنافی بین بابی العدوی والطب فالطب قائل فی ھذا المرض بالعدوی کما

(اردو ترجمہ/بایاں کالم) کھائے پیئے اور لیٹے تو یہ بیماری اس کو بھی لاحق ہوجاتی ہے اور یہ عدوی میں سے نہیں بلکہ باب طب سے ہے جیسے گھن والی ناپسندیدہ چیز کھانے سے نقصان اور ضرر ہوتا ہے اور اسی طرح ناگوار چیز سونگھنے سے اور ناموافق ہوا والی جگہ (یعنی آلودگی والی فضا) میں ٹھہرنے سے ضرر ہوتا ہے (بس یہاں بھی یہی مراد ہے) اور درحقیقت یہ سب کچھ باذن الٰہی ہوتا ہے (چنانچہ) وہ اس سے کسی کو نقصان نہیں پہنچا سکتے مگر اللہ تعالٰی کے اذن و مشیت سے۔ چنانچہ مجمع البحار میں اس کو نقل کیا ہے اور شیخ محقق نے اشعۃ اللمعات میں اس کو امام نووی کی طرف منسوب کیا ہے اقول: (میں کہتا ہوں) شاید یہ بھی اسی طرح ہے کیونکہ میں نے جو کچھ امام نووی کی منہاج میں دیکھا ہے وہ آنے والی آٹھویں وجہ کی تصویب ہے اور اس کے ذکر پر اس نے عروج یعنی موافقت نہیں کی اور حقیقت حال کو اللہ تعالٰی خوب جانتا ہے۔ اشعۃ اللمعات کا جو نسخہ میرے پاس ہے میرا خیال ہے کہ اس میں بغوی کی عبارت میں تبدیلی ہوگئی ہے کیونکہ شیخ نے بغوی کے کلام کا ہو بہو ترجمہ نقل کیا ہے، اس کے باوجود بغوی نے

بھی یہ نہیں کہا بلکہ اس نے کلمہ تمریض کے ساتھ اسے نقل کیا ہے۔ ثم اقول: (پھر میں کہتا ہوں) میں یہ نہیں جانتا کہ عدوی اور طب کے

(حاشیہ) 1 مجمع بحار الانوار تحت لفظ عدا مکتبہ دار الایمان مدینہ منورہ ۳/ ۵۴۴

Fatawa Razawiyya Volume 24

Al-Turpushti, Al-Tibi, Al-Qari, Al-Zurqani, the Investigating Sheikh, and others narrated that contagion, according to medical claims, exists in seven diseases, as previously mentioned from the Sheikh. In this regard, it is the same whether it is due to a quality or a property, for both chapters are matters of medicine. It is not that they believe contagion only occurs when it is without a rational cause. Those who advocate contagion do not consider whether it is by quality or property; thus, whoever advocates for contagion even if it is due to smell, has indeed advocated for contagion.

The eighth reason is that the negation of the contagion of a disease is in the sense of accepting it without the permission and will of Allah Almighty, as was the belief and claim of the people of the era of ignorance. However, if it is accepted as a regular occurrence by the permission and will of Allah Almighty (then, because it is not contrary to Sharia), it is proven. This is why one was ordered to flee from it and the sick person with such a disease was forbidden from going to a healthy person. And I do not know if habitual contagion is proven from the noble Sahaba (may Allah be pleased with them). However, the previous words of Imam al-Tahawi (may Allah have mercy on him) strengthen the point that...

Page 260 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

अत-तुरपुश्ती, अत-तीबी, अल-क़ारी, अज़-ज़ुरक़ानी, शेख मुक़क़िक़ और अन्य लोगों ने बयान किया है कि चिकित्सा (तिब्ब) के दावे के अनुसार सात प्रकार के रोगों में संक्रामकता (तअदिया) होती है, जैसा कि शेख के हवाले से पहले उल्लेख किया गया है। इस संबंध में, यह समान है चाहे वह किसी गुणवत्ता (कैफ़ियत) के कारण हो या किसी गुण (खासियत) के कारण, क्योंकि दोनों अध्याय चिकित्सा के विषयों में से हैं। ऐसा नहीं है कि वे मानते हैं कि संक्रामकता केवल तभी होती है जब वह बिना किसी तर्कसंगत कारण के हो। जो लोग संक्रमण का दावा करते हैं, वे इस बात पर ध्यान नहीं देते कि वह गुणवत्ता से हुआ है या गुण से। इसलिए, जो व्यक्ति रोग के प्रसार का दावा करता है, चाहे वह केवल गंध के कारण ही क्यों न हो, वह वास्तव में रोग के संक्रमण का ही कायल है।

आठवाँ कारण यह है कि रोग के संक्रमण का खंडन उस स्थिति में है जब इसे अल्लाह तआला की अनुमति और इच्छा के बिना स्वीकार किया जाए, जैसा कि अज्ञानता के युग (जाहिलियत) के लोगों का विचार और दावा था। लेकिन अगर अल्लाह तआला की अनुमति और इच्छा से इसे आदत (नियम) के रूप में माना जाए (तो फिर शरीयत के खिलाफ न होने के कारण) यह सिद्ध है। यही कारण है कि इससे भागने का आदेश दिया गया और इस रोग के रोगी को स्वस्थ व्यक्ति के पास जाने से मना किया गया। और मैं नहीं जानता कि सामान्य संक्रामकता (अदवी आदिया) सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से प्रमाणित है। हाँ, मगर इमाम तहावी (रहमतुल्लाह अलैहि) का पिछला कथन इस बात को पुख्ता करता है कि...

पृष्ठ 260/720

نقل التورپشتي والطيبي والقاري والزرقاني والشيخ المحقق وغيرهم ان العدوي بزعم الطب في سبع كما تقدم عن الشيخ ويستوي في ذلك كونها الكيفية فيه او الخاصية فان كلا الفصلين من مسائل الطب وليس بها انما يعتقدون ان العدوي انما تكون اذا كانت لا بسبب يعقل والقائلون الاعداء ولا نظر لهم الى انه بالكيفية او بالخاصية فمن قال بالاعداء ولولرائحة فقد قال بالعدوي- والثامن ان النفي اعداء المرض من دون اذن الله تعالى كما زعمه اهل الجاهلية اما الاعداء عادة باذن الله تعالى فثابت ولذا امر بالفرار ونهى عن ايراد الممرض ولا اعلمه اعني اثبات العدوى العادية ثابتا عن الصحابة رضي الله تعالى عنهم الا ما يفيده كلام الامام الطحاوي رحمه الله تعالى فيما تقدم من انكار ابي هريرة

باب میں کیا منافات اور تضاد ہے کیونکہ طب اس مرض میں تعدیہ کی قائل ہے جیسا کہ تورپشتی، طیبی، ملا علی قاری، زرقانی اور شیخ محقق اور ان کے علاوہ دوسروں نے کہا ہے کہ اطبا کے خیال میں تعدیہ مرض سات قسم کی امراض میں ہوتا ہے جیسا کہ شیخ کے حوالہ سے پہلے مذکور ہوا۔ تعدیہ مرض خواہ کسی کیفیت سے ہو یا کسی خاصیت سے، اس میں دونوں برابر اور مساوی ہیں کیونکہ دونوں فصلیں طب کے مسائل میں سے ہیں، اور یوں نہیں کہ عدوی بغیر کسی معقول سبب کے ہوجائے اس لئے کہ جو لوگ تعدیہ امراض کے قائل ہیں وہ تعدیہ پر اعتقاد رکھتے ہیں با وجودیکہ وہ اس پر نگاہ نہیں رکھتے کہ وہ کس کیفیت سے ہوا ہے یا کس خاصیت سے، لہٰذا جو شخص تجاوز مرض کا قائل ہو خواہ بدبو ہی کے سبب سے کیوں نہ ہو وہ درحقیقت تعدیہ مرض کا قائل ہے۔ آٹھویں وجہ تعدیہ مرض کی نفی اس صورت میں ہے کہ اسے اللہ تعالٰی کے اذن اور ارادہ کے بغیر تسلیم کیا جائے جیسا کہ دور جاہلیت والوں کا خیال اور زعم تھا، لیکن اگر اللہ تعالٰی کے اذن اور ارادہ سے عادتاً مانا جائے (تو پھر خلاف شریعت نہ ہونے کی وجہ سے) ثابت ہے۔ یہی

وجہ ہے کہ اس سے بھاگنے کا حکم دیا گیا اور اس مرض کے مریض کو تندرست آدمی کے پاس جانے سے منع کیا گیا ہے۔ اور میں نہیں جانتا کہ عدوی عادیہ صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ثابت ہے۔ ہاں مگر امام طحاوی رحمۃ اللہ علیہ کا گزشتہ کلام اس بات کو تقویت پہنچاتا ہے کہ

[Left Column - Arabic] ...may Allah be pleased with him, regarding the hadith "no contagion" (la 'adwa) and his reliance on the narration "let not a sick animal be brought to a healthy one," that this was because he perceived a contradiction between them. I say: It is not appropriate for someone like me to speak with someone like the Imam [Bukhari], may Allah have mercy on him. However, what someone deficient like me understands is that the denial of a narration is not restricted to the perception of contradiction; rather, he forgot having heard it from the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him. So, he had no choice but to deny it, even if we assume the meaning of both hadiths is the same in every aspect, but the wordings are different and he forgot hearing one of them. And when it was said to him, "You narrated this hadith in such a manner," he had no choice but to refuse. Yes, this is the position of Imam al-Matlabi, Muhammad ibn Idris al-Shafi'i, may Allah be pleased with him. Al-Munawi said in Fayd al-Qadir: "(Fear the leper)" i.e., avoid mingling with him, for it infects the associate, as Imam al-Shafi'i asserted in one place and quoted from physicians.

[Right Column - Urdu] Hadrat Abu Huraira, may Allah be pleased with him, had denied this hadith "no contagion" and presented the hadith of "let not a sick animal be brought to a healthy one" in comparison to it. In reality, according to his perception, he considered there to be a contradiction between the two. I say: (I say that) it does not befit a deficient person like me to converse with a personality of such high stature as the Imam, may Allah Almighty have mercy on him, except for the one who recognizes him; people like me are incapable of truly knowing him. However, denying a narration is not solely dependent on the perception of contradiction; rather, Hadrat Abu Huraira, may Allah be pleased with him, forgot hearing this hadith from the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him. Therefore, there was no room for him except denial. But if it were assumed that the concept (meaning) of both is the same from every aspect, yet the words of both are different and separate, and while he forgot hearing one, consequently, when he was told "you have narrated this hadith in this way," he had no other option but to deny it. Yes, that is the school of thought of Imam Muttalibi Muhammad ibn Idris Shafi'i, may Allah have mercy on him. Accordingly, Allama Munawi stated in Fayd al-Qadir (Commentary of Jami' Saghir), regarding the hadith "Avoid and beware of the leper," meaning abstain from meeting and mixing with him,

because the disease spreads to the one who mingles, as Imam Shafi'i expressed certainty about this in one place.

[बायां कॉलम - अरबी पाठ का हिंदी अनुवाद] ...अल्लाह उन पर प्रसन्न हो, हदीस "कोई छूत की बीमारी नहीं" (ला अद्वा) के बारे में और उनका "बीमार जानवर को स्वस्थ के पास न लाया जाए" वाली रिवायत पर भरोसा करना, यह इसलिए था क्योंकि उन्होंने उनके बीच विरोधाभास समझा था। मैं कहता हूँ: मुझ जैसे व्यक्ति के लिए इमाम [बुखारी], अल्लाह उन पर दया करे, जैसे व्यक्ति के साथ बातचीत करना शोभा नहीं देता। हालाँकि, मुझ जैसे कमतर व्यक्ति जो समझते हैं वह यह है कि किसी रिवायत का इनकार केवल विरोधाभास के गुमान तक ही सीमित नहीं है; बल्कि वह इसे अल्लाह के रसूल, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुनना भूल गए थे। इसलिए उनके पास इनकार करने के अलावा कोई चारा नहीं था, भले ही हम यह मान लें कि दोनों हदीसों का अर्थ हर पहलू से एक ही है, लेकिन शब्द अलग-अलग हैं और वह उनमें से एक को सुनना भूल गए। और जब उनसे कहा गया, "आपने इस हदीस को इस तरह से बयान किया है," तो उनके पास इनकार के अलावा कोई विकल्प नहीं था। हाँ, यह इमाम अल-मतलाबी, मुहम्मद इब्न इदरीस अल-शाफई, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो, का रुख है। अल-मुनावी ने फ़ैज़ अल-क़दीर में कहा है: "(कोढ़ी से डरो)" यानी उसके साथ मेलजोल से बचें, क्योंकि यह साथ रहने वाले को संक्रमित करता है, जैसा कि इमाम अल-शाफई ने एक स्थान पर दावे के साथ कहा और चिकित्सकों से उद्धृत किया।

[दायां कॉलम - उर्दू पाठ का हिंदी अनुवाद] हज़रत अबू हुरैरा, रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस हदीस "ला अद्वा" (छूत का कोई वजूद नहीं) का इनकार किया था और "ला यूरिदन" वाली हदीस को इसके मुकाबले में पेश किया था। हकीकत में वह अपने गुमान के मुताबिक उन दोनों के बीच विरोधाभास समझते थे। अकुल: (मैं कहता हूँ कि) मुझ जैसे नाक़िस (अधूरे) शख्स के लिए इमाम रहमतुल्लाह अलैह जैसी बुलंद पाया शख़्सियत के साथ हमकलाम होना ज़ेब नहीं देता सिवाए उसके जो उसे पहचानता है, मुझ जैसे तो उनकी मारिफ़त (पहचान) से कासिर (अक्षम) हैं। अलबत्ता किसी रिवायत से इनकार करना विरोधाभास के गुमान पर मुनहसिर (आधारित) नहीं है बल्कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु इस हदीस का समाअ (सुनना) रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भूल गए, इसलिए उनके लिए सिवाए इनकार के कोई गुंजाइश न रही। लेकिन अगर यह फर्ज़ कर लिया जाता कि हर जहत (पहलू) से दोनों का मफहूम (अर्थ) एक है अलबत्ता दोनों के अल्फाज़ मुगायिर (अलग) और अलग-अलग हैं और जबकि वह एक का समाअ भूल गए, चुनांचे उनसे कहा गया आपने इस हदीस को इस तरह रिवायत किया है तो उन्हें सिवाए इनकार के कोई और गुंजाइश न रही। हाँ

वह इमाम मतलबी मुहम्मद बिन इदरीस शाफई रहमतुल्लाह अलैह का मज़हब है, चुनांचे अल्लामा मुनावी ने फ़ैज़ अल-क़दीर (शरह जामे सगीर) में फर्माया हदीस "जुज़ामी से बचो और परहेज करो" यानी उसके मेल-जोल और इख्तिलात से इज्तिनाब (परहेज) करो, इसलिए मेल-मिलाप करने वाले में मर्ज़ सरायत (फैलना) करता है, जैसा कि इमाम शाफई ने एक जगह इस पर इज़हारे यक़ीन किया।

رضی اللہ تعالیٰ عنہ حدیث لا عدوی واقامتہ علی روایۃ لا یوردن ان ذلک کان ظنہ التضاد بینھما، اقول: لیس لمثلی الکلام مع مثل الامام رحمہ اللہ لکن الذي یعرفہ قاصر مثلی ان انکار الروایۃ لا ینحصر في ظن التضاد بل نسی عنہ سمعہ من رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فما وسعہ الا انکارہ حتی لو فرض مودی الحدیثین واحدا من کل جھۃ وانما الالفاظ غیر الالفاظ ونسی سماع احدھما وقیل لہ رویت ھذا الحدیث ھکذا لم یسعہ الا الاباء۔ نعم ھو مذھب الامام المطلی محمد بن ادریس الشافعي رضي اللہ تعالی عنہ قال المناوی فی فیض القدیر (اتقوا المجذوم) ای اجتنبوا مخالطتہ فانہ یعدی المعاشر کما جزم بہ الشافعی فی موضع و حکاہ عن الاطباء

حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اس حدیث لاعدوی کا انکار کیا تھا اور لایوردن والی حدیث کو اس کے مقابل پیش کیا تھا در حقیقت وہ اپنے گمان کے مطابق ان دونوں کے درمیان تضاد سمجھتے تھے، اقول: (میں کہتا ہوں کہ) مجھ جیسے ناقص شخص کے لئے امام رحمہ اللہ تعالیٰ جیسی بلند پایہ شخصیت کے ساتھ ہمکلام ہونا زیب نہیں دیتا سوائے اس کے جو اسے پہچانتا ہے، مجھ جیسے تو اس کی معرفت سے قاصر ہیں البتہ کسی روایت سے انکار کرنا تضاد کے گمان پر منحصر نہیں بلکہ حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اس حدیث کا سماع رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے بھول گئے، اس لئے ان کے لئے سوائے انکار کے کوئی گنجائش نہ رہی لیکن اگر یہ فرض کر لیا جاتا کہ ہر جہت سے دونوں کا مفہوم (مودٰی) ایک ہے البتہ دونوں کے الفاظ مغایر اور الگ الگ ہیں اور جبکہ وہ ایک کا سماع بھول گئے، چنانچہ ان سے کہا گیا آپ نے اس حدیث کو اس طرح روایت کیا ہے تو انہیں سوائے انکار کے کوئی اور گنجائش نہ رہی۔ ہاں وہ امام مطلبی محمد بن ادریس شافعی رحمۃ اللہ علیہ کا مذہب ہے، چنانچہ علامہ مناوی نے فیض القدیر

(شرح جامع صغیر) میں فرمایا حدیث "جزامی سے بچو اور پرہیز کرو" یعنی اس کے میل جول اور اختلاط سے اجتناب کرو، اس لئے میل ملاپ کرنے والے میں مرض سرایت کرتا ہے، جیسا کہ امام شافعی نے ایک جگہ اس پر اظہار یقین کیا

Fatawa Razawiya, Volume 24

...and [experienced people] in its conclusion, and others among the prominent physicians narrated it from them. I say: The method of [Imam Shafi'i], may Allah be pleased with him, in similar matters is well-known, which is reliance on experiences, to the extent that he held the validity of physiognomy (qiyafah) and considered it a proof in Sharia rulings. His stories and accounts in this regard are famous in "Al-Maqasid" by Al-Sakhawi and others. One of the masters of his school, Imam Abu Zakariya al-Nawawi, followed him in this, and before him Imam Abu 'Amr bin al-Salah, and after them Al-Kirmani and Al-Tibi, and likewise Ibn al-Athir as mentioned by Al-Qari. Similarly, Al-Sakhawi mentioned it, though there is some ambiguity in the phrasing present in my copy of "Al-Maqasid". Among our scholars, Al-Turpushti and Al-Qari agreed with them, just as from their imams, Al-Asqalani agreed with us. However, the apparent words of Al-Munawi are inconsistent (unreliable), as he said under the hadith "Avoid the leper"...

---

1. Faid al-Qadir Sharh al-Jami' al-Saghir, Hadith 161, Dar al-Ma'rifa Beirut, 1/73.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

...और [अनुभवी लोगों] के अंत में, दूसरों ने इसे चिकित्सकों के दिग्गजों से उद्धृत किया है। मैं कहता हूँ: इस प्रकार के मामलों में [इमाम शाफ़ई], अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, का तरीका प्रसिद्ध और सर्वविदित है कि वे विभिन्न अनुभवों पर भरोसा करते थे, यहाँ तक कि उन्होंने फिजियोग्नोमी (अनुमान लगाने की विद्या) के बारे में कहा और उसे शरीयत के आदेशों में एक प्रमाण माना। इस संबंध में उनके किस्से और कहानियाँ अल-सखावी की 'अल-मकासिद' और अन्य पुस्तकों में प्रसिद्ध हैं। उनके मज़हब के विद्वानों में से एक शेख अबू ज़कारिया अल-नवावी ने इस सिलसिले में उनका अनुसरण किया, और उनसे पहले इमाम अबू अम्र बिन अल-सलाह, और उन दोनों के बाद अल-किरमानी और अल-तिबी, और इसी तरह इब्न अल-असीर ने भी, जैसा कि मुल्ला अली क़ारी ने उल्लेख किया है। इसी तरह अल-सखावी ने भी उल्लेख किया है, हालांकि 'अल-मकासिद' के मेरे संस्करण में मौजूद इबारत में कुछ संशय है। हमारे विद्वानों में से अल-तुरपुश्ती और मुल्ला अली क़ारी ने उनसे सहमति जताई, जैसे उनके इमामों में से अल-असक़लानी ने हमसे सहमति जताई। ज़ाहिर तौर पर अल-मुनावी के शब्द असंगत (अविश्वसनीय) हैं, जैसा कि उन्होंने हदीस "कोढ़ी से बचो" के तहत कहा है...

---

1. फ़ैज़ अल-क़दीर शरह अल-जामी अल-सगीर, हदीस 161, दार अल-मआरिफ़ा बेरूत, 1/73.

والتجربین فی اخرونقلہ غیرہ من افاضل الاطباء ۱ | اور ایک دوسری جگہ اطباء اور تجربہ کار لوگوں سے اس کی اہ۔اقول: وطریقتہ رضی اللہ تعالٰی عنہ فی امثال | حکایت بیان فرمائی، اور دیگر اہل علم نے طب کے فاضلوں سے المقام معروفۃ من الاعتماد علی التجارب حتی قال | اسے نقل کیا ہے اھ اقول: (میں کہتا ہوں) امام شافعی رضی بالقیافۃ وجعلھا حجۃ فی الاحکام الشرعیۃ و | اللہ تعالیٰ عنہ کا طریقہ کار اور دستور اس نوع کے مقامات میں حکایاتہ رضی اللہ تعالٰی عنہ فیھا مشھورۃ فی مقاصد | مشہور و معروف ہے کہ مختلف تجربوں پر اعتماد ہے یہاں تک السخاوی وغیرہا ماثورۃ وتبعہ علیہ احد شیخی | کہ موصوف نے قیافہ شناسی اور اسے احکامِ شریعت میں مذھبہ الامام ابوزکریا النووی ومن قبلہ الامام ابو | حجت قرار دینے کا قول پیش کیا ہے اور اس سلسلے میں موصوف عمرو بن الصلاح ومن بعدھما الکرمانی والطیبی و | رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے واقعات وحکایات مشہور ہیں چنانچہ کذا ابن الاثیر فیما ذکر القاری وکذا السخاوی علی | مقاصدِ حسنہ میں امام سخاوی اور ان کے علاوہ دوسرے لوگوں شبھتہ فی عبارۃ الموجودۃ فی نسختی المقاصد و | کی کتابوں میں منقول ہیں ان کے مذہب والوں میں سے ایک وافقھم من علمائنا التورپشتی والقاری کما وافقنا | شیخ ابو زکریا نووی نے اس سلسلے میں ان کا اتباع کیا ہے اور ان من ائمتھم العسقلانی واضطرب ظاھر کلام المناوی | سے پہلے امام ابو عمرو بن صلاح اور ان دونوں کے بعد کرمانی، فقال تحت حدیث اتقوا المجذوم | طیبی اور اسی طرح ابن اثیر جیسا کہ ملا علی قاری نے ذکر فرمایا ہے اور اسی طرح امام سخاوی نے ذکر کیا مگر میرے پاس مقاصدِ حسنہ کا جو نسخہ ہے اس کی موجودہ عبارت میں کچھ اشتباہ پایا جاتا ہے اور ہمارے علماء میں سے ان کی موافقت تور پِشتی اور ملا علی قاری نے کی جیسا کہ ان کے ائمہ میں سے ہماری موافقت علامہ

ابن حجر عسقلانی نے فرمائی، بظاہر علامہ مناوی کا کلام مضطرب (نا قابل اعتماد) ہے چنانچہ اس حدیث "جذامی سے بچو" کے ذیل میں کہا

---

۱ فیض القدیر شرح الجامع الصغیر حدیث ۱۶۱ دارالمعرفة بیروت ۱ / ۷۳ Page 262 of 720

Fatawa Rizvia Volume 24

[Left Column: Arabic Text with Context] What was said, he then stated that this narration does not contradict the hadith 'la 'adwa' (no contagion), because it negates the belief of the pre-Islamic era of ignorance (Jahiliyyah) which attributes actions to other than Allah Almighty [1] etc. and he said under the hadith 'Talk to the leper' so that leprosy does not happen to you, leading you to think that he infected you, whereas that does not occur except by the decree of Allah Almighty. This is addressed to those whose conviction is weak and whose gaze stops at apparent causes [2]. In this, there is a kind of inclination towards what the majority (of scholars) hold. Something similar occurred to Imam al-Zarqani in the commentary of Al-Muwatta in one place, where he said under the saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): 'Let not a sick person go to a healthy one.' For perhaps he might be afflicted by it, then he would say, 'If only I hadn't gone to him, he wouldn't have been afflicted,' whereas the reality is that even if he hadn't gone to him, he would have been afflicted because Allah Almighty decreed it. So he was prohibited from it due to this reason which is usually not safe from occurring in human nature. And it is the saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): 'Flee from the leper as you flee from...'

[Right Column: Urdu Translation and Explanation] Whatever was said, he then explained that this hadith is not contradictory to 'la 'adwa' (the concept that diseases spread on their own). This is because it negates the superstitious belief of the era of ignorance, as in that era, events were attributed to someone other than Allah, etc. And under the hadith 'Kallim al-majdhuma,' which means 'speak to the leper from a distance,' he said: Lest it happens that you contract leprosy and you begin to think that the patient's disease flew and reached you, whereas it cannot happen like this without the divine decree. And this is addressed to the one whose faith is weak and whose vision remains focused only on external causes. In this, a kind of inclination towards the majority's opinion is found, and a similar instance from Imam al-Zarqani occurred in the commentary of Muwatta in one place. Accordingly, the said Imam, regarding the command of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family), 'No sick person should go to a healthy person,' stated that if he contracts the disease, then that patient starts saying, 'I wish I had not gone to him or had not met him, then I would not have contracted this disease.' Although, in reality, even if he had not gone to the patient, he would have still contracted this disease because Allah Almighty had written it in his destiny. Therefore, he was restrained

because of this reason, because human nature is usually not indifferent and unconcerned about such occurrences.

[Footnotes] 1. Fayd al-Qadir Sharh al-Jami' al-Saghir, under hadith 121, Dar al-Ma'rifah, Beirut 1/37. 2. Fayd al-Qadir Sharh al-Jami' al-Saghir, under hadith 6380, Dar al-Ma'rifah, Beirut 5/41.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[बायाँ कॉलम: अरबी पाठ संदर्भ के साथ] जो कहा गया, उन्होंने फिर कहा कि यह 'ला अदवा' (कोई छूत नहीं) वाली हदीस के विरोधाभासी नहीं है, क्योंकि यह जाहिलियत (अज्ञानता के युग) के उस विश्वास को नकारता है जो कार्यों को अल्लाह तआला के अलावा किसी और के साथ जोड़ता है [1] आदि। और उन्होंने हदीस 'कोढ़ी से बात करो' के तहत कहा कि कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें कोढ़ हो जाए और तुम यह सोचने लगो कि उसने तुम्हें संक्रमित कर दिया, जबकि ऐसा अल्लाह तआला की मर्जी के बिना नहीं होता। यह उन लोगों के लिए है जिनका विश्वास कमजोर है और जिनकी दृष्टि केवल बाहरी कारणों तक सीमित है [2]। इसमें बहुसंख्यक विद्वानों के मत की ओर एक प्रकार का झुकाव पाया जाता है। इसी तरह की बात इमाम अल-ज़रकानी ने 'अल-मुवत्ता' की व्याख्या में एक स्थान पर कही है, जहाँ उन्होंने पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस कथन के तहत कहा: 'एक बीमार व्यक्ति को स्वस्थ व्यक्ति के पास नहीं जाना चाहिए।' क्योंकि शायद वह उससे पीड़ित हो जाए, फिर वह कहेगा, 'अगर मैं उसके पास नहीं जाता, तो वह पीड़ित नहीं होता,' जबकि हकीकत यह है कि अगर वह उसके पास नहीं जाता, तब भी वह पीड़ित होता क्योंकि अल्लाह तआला ने ऐसा तय कर रखा था। इसलिए उन्हें इस कारण से इससे मना किया गया था जो आमतौर पर मानव स्वभाव में होने से सुरक्षित नहीं है। और यह पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है: 'कोढ़ी से ऐसे भागो जैसे तुम भागते हो...'

[दायाँ कॉलम: उर्दू अनुवाद और स्पष्टीकरण] जो कुछ कहा, फिर फ़रमाया कि यह हदीस 'ला अदवा' के विरोधाभासी नहीं है। इसलिए कि इसमें जाहिलियत के विश्वास की नफी (अस्वीकृति) है क्योंकि इसमें अल्लाह के अलावा किसी और की तरफ काम की निस्बत (संबंध) है आदि। और हदीस 'कल्लिम अल-मजधूमा' यानी 'कोढ़ी के साथ दूर से कलाम करो' के ज़ैल में फ़रमाया कि ऐसा न हो कि कहीं तुझे मर्ज़-ए-जुज़ाम (कोढ़) लग जाए और तू यह समझने लगे कि मरीज़ की बीमारी उड़ कर तुम्हें लग गई जबकि तक़दीर-ए-इलाही के बिना इस तरह नहीं हो सकता। और यह उस व्यक्ति को संबोधन है जिसका यक़ीन कमज़ोर हो और जिसकी नज़र सिर्फ़ ज़ाहिरी अस्बाब (कारणों) पर ही ठहरती हो। इसमें जमहूर (बहुमत) के मज़हब की तरफ एक तरह का मेलान (झुकाव) पाया जाता है, और इसी तरह का वाक़या अल्लामा ज़रकानी से शरह मुवत्ता में एक जगह हुआ है। चुनांचे अल्लामा मौसूफ़ ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के इस इरशाद 'कोई मरीज़ किसी तन्दुरुस्त आदमी के पास न जाए' के बारे में कहा कि इसलिए कि अगर उसे मर्ज़ लग जाता है तो फिर वह

मरीज़ यूँ कहने लगता है कि काश मैं उसके यहाँ न जाता या उससे न मिलता तो मुझे यह मर्ज़ न लगता, हालांकि हक़ीक़त में अगर यह मरीज़ के पास न जाता तब भी उसको यह मर्ज़ लग जाता क्योंकि अल्लाह तआला ने उसके मुक़द्दर में ऐसा लिख दिया था। पस इस इल्लत (कारण) की वजह से उसे रोक दिया गया क्योंकि तबीअत-ए-इन्सानी ग़ालिबन इसके वुक़ू(होने) से लापरवाह और बेफ़िक्र नहीं है।

[पाद टिप्पणियाँ] 1. फ़ैज़ अल-क़दीर शरह अल-जामि अल-सगीर, हदीस 121 के तहत, दार अल-मअरिफ़ा बेरूत 1/37। 2. फ़ैज़ अल-क़दीर शरह अल-जामि अल-सगीर, हदीस 6380 के तहत, दार अल-मअरिफ़ा बेरूत 5/41।

पृष्ठ 263/720

[بایاں کالم] ما قال قال ولا یناقضه خبر لا عدوی لانه نفی لاعتقاد الجاهلیة نسبة الفعل لغیر الله تعالی ۱ الخ و قال تحت حدیث کلم المجذوم لئلا یعرض لك جذام فتظن انه اعداك مع ان ذلك لا یکون الا بتقدیر الله تعالی وهذا خطاب لمن ضعف یقینه ووقف نظره عند الاسباب ۲ اه ففی هذا نوع میل الی ما علیه الجمهور و وقع نحوه لعلامة الزرقانی فی شرح الموطأ فی موضع واحد فقال تحت قولہ صلی الله تعالٰی علیہ وسلم لا یحل المریض علی المصح. فربما یصاب بذلك فیقول لوانی مااحللته لم یصبه والواقع انه لو لم یحله لا صابه لان الله تعالی قدره فنهی عنہ لهذه العلة التی لا یؤمن غالبا من وقوعها في طبع الانسان و هو قوله صلی الله تعالٰی علیه وسلم فر من المجذوم فرارك من

[دایاں کالم] جو کچھ کہا، پھر فرمایا کہ یہ حدیث لا عدوی کے مناقض نہیں اس لئے کہ اس میں اعتقاد جاہلیت کی نفی ہے کیونکہ اس میں غیر اللہ کی طرف فعل کی نسبت ہے الخ اور حدیث 'کلم المجذوم یعنی مجذوم کے ساتھ دور سے کلام کرو' کے ذیل میں فرمایا ایسا نہ ہو کہ کہیں تجھے مرض جذام لگ جائے اور تو یہ سمجھنے لگے کہ مریض کی بیماری اُڑ کر تمہیں لگ گئی حالانکہ تقدیر الہی کے بغیر اس طرح نہیں ہوسکتا۔ اور یہ اس کو خطاب ہے جو یقین میں کمزور ہو، اور اس کی نظر صرف ظاہری اسباب پر ہی ٹھہرتی ہو اھ، اس میں جمہور کے مذہب کی طرف ایک طرح میلان پایا جاتا ہے، اور اسی نوع کا وقوع علامہ زرقانی سے شرح موطا میں ایک جگہ ہوا ہے چنانچہ علامہ موصوف نے حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے اس ارشاد 'کوئی مریض کسی تندرست آدمی کے پاس نہ جائے' اس لئے کہ اگر اسے مرض لگ جاتا ہے تو پھر وہ مریض یوں کہنے لگتا ہے کہ کاش میں اس کے ہاں نہ جاتا یا اس سے نہ ملتا تو مجھے یہ مرض نہ لگتا، حالانکہ فی الواقع اگر یہ مریض کے پاس نہ جاتا تب بھی اس کو یہ مرض لگ جاتا کیونکہ اللہ

تعالیٰ نے اس کے مقدر میں ایسا لکھ دیا تھا پس اس علت کی وجہ سے اسے روک دیا گیا کیونکہ طبیعت انسانی غالباً اس کے وقوع سے لاپروا اور بے فکر نہیں۔

۱ فیض القدیر شرح الجامع الصغیر تحت حدیث ۱۲۱ دارالمعرفہ بیروت ۱/ ۳۷ ۲ فیض القدیر شرح الجامع الصغیر تحت حدیث ۶۳۸۰ دارالمعرفہ بیروت ۵/ ۴۱

Vol. 24 Fatawa Rizvia

[Arabic Text]: ...the lion. And even though we believe that leprosy is not contagious, we find within ourselves an aversion and dislike for interacting with it. [1] This is clearly in agreement with the majority (of scholars). Then he said: As for the prohibition of bringing the sick (to the healthy), it is under the category of avoiding causes that Allah has created and made as causes for destruction or harm. And a servant is commanded to avoid causes of calamity when he is in a state of well-being. In a Mursal Hadith (with a broken chain) narrated by Abu Dawud, the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) passed by a leaning wall and said: "I fear sudden death." [2] So, in this, there is some inclination towards the second view, rather, it is an expression of certainty, provided that the phrase "or harm" (aw al-adha) is not attached. Then, returning to the previous discussion, regarding the saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), "It is harm" (innahu adha), he said: meaning there will be distress (for both the sick and the healthy). [3]

[Urdu Translation]: ...can be. And the saying of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny), "Run from a leper as you would run from a lion in fear," has this same meaning. Although we hold the belief that leprosy is not a contagious disease, we find a sense of aversion and dislike in our hearts regarding social interaction with lepers. This is an explicit agreement with the stance of the majority (Jamhoor). Furthermore, it is stated that the prohibition from going near a sick person falls under the category of avoiding those causes which Allah Almighty has created and designated as causes of destruction and ruin; or the prohibition is due to the potential for causing distress. A person is commanded to avoid the causes of calamity while he has the means to do so. Accordingly, in a Mursal (unsanctioned chain) narration of Abu Dawud, it is stated that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) passed near a dilapidated (leaning) wall and said, "I fear sudden death." Thus, there is a slight inclination towards the second opinion in this, rather, it is an expression of certainty, provided that the phrase "or harm" is not connected. Then, referring back to the previous discourse under the saying of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), "Innahu Adha" (it is a harm), he said: meaning there will be pain/distress (for the patient and the healthy person).

1. Sharh al-Zarqani 'ala Muwatta Imam Malik, Chapter of Visiting the Sick and Omens, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 4/333

2. Sharh al-Zarqani 'ala Muwatta Imam Malik, Chapter of Visiting the Sick and Omens, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 4/332-333
3. Sharh al-Zarqani 'ala Muwatta Imam Malik, Chapter of Visiting the Sick and Omens, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 4/334

जिल्द २४ फ़तावा रिज़विया

[अरबी पाठ]: ...शेर। और भले ही हम यह विश्वास रखते हैं कि कोढ़ (जज़ाम) संक्रामक नहीं है, फिर भी हम अपने भीतर उनके साथ मेल-जोल के प्रति घृणा और अरुचि पाते हैं। [१] यह स्पष्ट रूप से बहुसंख्यक (जमहूर) विद्वानों के साथ सहमति में है। फिर उन्होंने कहा: जहाँ तक बीमार को (स्वस्थ लोगों के पास) लाने की मनाही का सवाल है, यह उन कारणों से बचने की श्रेणी में आता है जिन्हें अल्लाह ने बनाया है और विनाश या नुकसान के कारण के रूप में निर्धारित किया है। और एक बंदे को बला (मुसीबत) के कारणों से बचने का आदेश दिया गया है जब वह स्वस्थ हो। अबू दाऊद द्वारा वर्णित एक मुरसल हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) एक झुकी हुई दीवार के पास से गुज़रे और फरमाया: "मुझे अचानक मृत्यु का डर है।" [२] अतः, इसमें दूसरे विचार की ओर कुछ झुकाव है, बल्कि यह निश्चितता की अभिव्यक्ति है, बशर्ते कि "या नुकसान" (औ अल-अज़ा) शब्द साथ में न जुड़ा हो। फिर, पिछले प्रवचन पर लौटते हुए, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस कथन के तहत कि "वह नुकसान है" (इन्नहु अज़ा), उन्होंने कहा: यानी परेशानी होगी (बीमार और स्वस्थ दोनों के लिए)। [३]

[उर्दू अनुवाद]: ...हो सकती है। और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इरशाद "जज़ामी से तुम इस तरह भागो जैसे खौफ-ए-शेर के वक्त भागते हो" का यही मफहूम है, अगरचे हम यह एतकाद (विश्वास) रखते हैं कि मर्ज़-ए-जज़ाम मुतअद्दी (संक्रामक) नहीं होता लेकिन अपने दिलों में जज़ामी से मेल-जोल रखने से नफ़रत और कराहत पाते हैं, और यह सराहतन (स्पष्ट रूप से) मज़हब-ए-जमहूर से इत्तेफाक (सहमति) है। फिर फरमाया लेकिन मरीज़ के पास जाने से मुमानिअत (मनाही) करना उन अस्बाब (कारणों) से बचने के बाब से है जिन्हें अल्लाह तआला ने पैदा फरमाया और उन्हें हलाकत और तबाही के अस्बाब बनाया या मुमानिअत ईज़ा-रसानी (दुख पहुँचाने) के बाइस है और बंदे को अस्बाब-ए-बला से बचने का हुक्म दिया गया है जबकि वह उनसे बच सके चुनाँचे अबू दाऊद की एक मुरसल (बिना सनद) रिवायत में है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम एक माइल ब-इन्हेदाम (झुकी हुई) दीवार के करीब से गुज़रे तो इरशाद फरमाया मैं मौत-ए-फ़वात (अचानक मौत) से डरता हूँ। पस इसमें दूसरे कौल की तरफ थोड़ा सा मिलान है बल्कि इस पर इज़हार-ए-यकीन है बशर्ते कि "औ अल-अज़ा" का कौल मुत्तसिल (जुड़ा हुआ) न होता, फिर साबिक

कलाम की तरफ रुजू करते हुए हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के इरशाद "इन्नहु अज़ा" (वह ईज़ा है) के ज़ैल में फरमाया यानी अज़ियत (कष्ट) होगी (मरीज़ और तंदुरुस्त के लिए)।

1. शरह अल-ज़रकानी अला मुअत्ता इमाम मालिक, बाब इयादतुल मरीज़ वत्तयराह, दारुल मारिफ़ा, बेरूत, ४/३३३
2. शरह अल-ज़रकानी अला मुअत्ता इमाम मालिक, बाब इयादतुल मरीज़ वत्तयराह, दारुल मारिफ़ा, बेरूत, ४/३३२-३३३
3. शरह अल-ज़रकानी अला मुअत्ता इमाम मालिक, बाब इयादतुल मरीज़ वत्तयराह, दारुल मारिफ़ा, बेरूत, ४/३३४

الاسد، وان کنا نعتقد وان الجذام لا یعدی لکنا نجد فی انفسنا نفرۃ و کراہیتہ لمخالطتہ ۱ اہ فھذا صریح فی وفاق الجمھور، ثم قال اما النھی عن ایراد المرض فی باب اجتناب الاسباب التی خلقھا اللہ وجعلھا اسبابا للھلاك اوالاذی والعبد مأمور اتقاء اسباب البلاء اذا کان فی عافیۃ منھا وفی حدیث مرسل عند ابی داؤد انہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم مر بحائط مائل فقال اخاف موت الفوات ۲ اہ ففیہ میل ما الی القول الآخر بل کان جزما بہ لولا قولہ "او الاذی" ثم عاد فقال تحت قولہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم انہ اذی ای یتأذی بہ لانہ یعدی ۳

ہو سکتی۔ اور حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے ارشاد "جذامی سے تم اس طرح بھاگو جیسے بوقتِ خوفِ شیر سے بھاگتے ہو" کا یہی مفہوم ہے، اگر چہ ہم یہ اعتقاد رکھتے ہیں کہ مرضِ جذام متعدی نہیں ہوتا لیکن اپنے دلوں میں جذامی سے میل جول رکھنے سے نفرت اور کراہت پاتے ہیں اھ، اور یہ صراحۃً مذہبِ جمہور سے اتفاق ہے۔ پھر فرمایا لیکن مریض کے پاس جانے سے ممانعت کرنا ان اسباب سے بچنے کے باب سے ہے جنہیں اللہ تعالیٰ نے پیدا فرمایا اور انہیں ہلاکت اور تباہی کے اسباب بنایا یا ممانعت ایذا رسانی کے باعث ہے اور بندہ کو اسبابِ بلا سے بچنے کا حکم دیا گیا ہے جبکہ وہ ان سے بچ سکے، چنانچہ ابوداؤد کی ایک مرسل (بلا سند) روایت میں ہے کہ حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ایک مائل بانہدام (جھکی ہوئی) دیوار کے قریب سے گزرے تو ارشاد فرمایا میں موتِ فوات سے ڈرتا ہوں اھ پس اس میں دوسرے قول کی طرف تھوڑا سا میلان ہے بلکہ اس پر اظہارِ یقین ہے بشرطیکہ او الاذی کا قول متصل نہ ہوتا، پھر سابق کلام کی طرف رجوع کرتے ہوئے حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ارشاد انہ اذی (وہ ایذا ہے) کے۔ ذیل میں فرمایا یعنی اذیت ہوگی (مریض اور تندرست کے لئے)

١ شرح الزرقانى على موطا امام مالک باب عيادة المريض والطيرة دار المعرفة بيروت ۴/ ۳۳۳ ۲ شرح الزرقانى على موطا امام مالک باب عيادة المريض والطيرة دار المعرفة بيروت ۴/ ۳۳۳-۳۳۲ ۳ شرح الزرقانى على موطا امام مالک باب عيادة المريض والطيرة دار المعرفة بيروت ۴/ ۳۳۴

Then he narrated from Yahya bin Yahya what we have already presented, and we have informed you that those inclined towards this opinion, such as Al-Turpashti, Al-Tibi, and Al-Qari, have all admitted—as stated by the Investigating Sheikh and Al-Zarqani—that the total negation of contagion is the stance held by the majority. I say: I hope that what Imam Al-Nawawi stated in the commentary on Sahih Muslim will not be denied. He said: "The majority of scholars stated that it is necessary to reconcile these two hadiths, and they are both authentic. They said the way to reconcile them is that the hadith 'There is no contagion' means to negate what people of the pre-Islamic era (Jahiliyya) used to claim and believe—that disease and ailment spread by their very nature, and not by the action of Allah Almighty. As for the hadith 'The sick should not be brought to the healthy,' he guided therein towards avoiding what normally causes harm by the action and decree of Allah Almighty. He said: This which we have mentioned regarding the authentication of the two hadiths and reconciling them is the correct view held by the majority of scholars, and it is necessary to refer to it." End quote. Thus, what is attributed to the majority...

1. Sharh Sahih Muslim by Al-Nawawi, Book of Peace, Chapter: There is No Contagion, etc. Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/230. Page 265 of 720

फिर उन्होंने याह्या बिन याह्या से वही बात उद्धृत की जो हमने पहले पेश की है, और हमने आपको सूचित कर दिया है कि जो लोग इस राय की ओर झुके हुए हैं, जैसे अल-तूरपश्ती, अल-तिबी और अल-कारी, उन सभी ने स्वीकार किया है—जैसा कि अल-शेख अल-मुहक़्क़िक़ और अल-ज़रक़ानी ने स्पष्ट किया है—कि छूत (संक्रमण) का पूर्ण खंडन ही वह मत है जिस पर बहुसंख्यक (उलेमा) टिके हुए हैं। मैं कहता हूँ: मुझे आशा है कि इमाम अल-नवावी ने 'सहीह मुस्लिम' की व्याख्या में जो कुछ कहा है, उसे नकारा नहीं जाएगा। उन्होंने कहा: "बहुसंख्यक विद्वानों ने कहा कि इन दो हदीसों के बीच सामंजस्य बिठाना आवश्यक है, और वे दोनों प्रामाणिक हैं। उन्होंने कहा कि उनके बीच सामंजस्य बिठाने का तरीका यह है कि हदीस 'कोई छूत नहीं है' से मुराद उस चीज़ का खंडन करना है जिस पर जाहिलियत (इस्लाम पूर्व काल) के लोग क़ायम थे। वे यह दावा और विश्वास करते थे कि रोग और बीमारी अपने प्राकृतिक स्वभाव से फैलते हैं, न कि अल्लाह तआला के कार्य से। रही बात हदीस की कि 'बीमार को स्वस्थ के पास न लाया जाए', तो इसमें उस चीज़ से बचने का मार्गदर्शन दिया गया है जिससे सामान्यतः अल्लाह तआला की कृपा और भाग्य (क़ज़ा व क़द्र) से नुकसान पहुँचता है। उन्होंने कहा: यह जो हमने दोनों हदीसों को प्रमाणित करने और उनके बीच सामंजस्य बिठाने के बारे में उल्लेख किया है, यही सही रास्ता है जिस पर बहुसंख्यक विद्वान क़ायम हैं और इसी की ओर लौटना अनिवार्य है।" समाप्त। अतः बहुसंख्यकों की ओर जो बात मनसूब है...

1. शरह सहीह मुस्लिम लिल-नवावी, किताबुस सलाम, बाब: ला अदवा इलख़, क़दीमी कुतुब ख़ाना, कराची, 2/230। पृष्ठ 720 में से 265

ثم نقل عن یحیی بن یحیی ماقدمناہ وقد أذناك ان المائلین الی ھذا القول کالتورپشتی والطیبی والقاری قدا عترفوا جمیعا کنص الشیخ المحقق والزرقاني ان ابطال العدوی راسا ھو الذي علیه الاکثرون، اقول: و ارجوان لا ینکر علیه بما قال الامام النووي في شرح مسلم قال جمھور العلماء یجب الجمع بین ھذین الحدیثین وھما صحیحان قالوا وطریق الجمع ان حدیث لاعدوی المراد به نفی ماکانت علیه الجاھلیة تزعمه وتعتقدہ ان المرض والعاھة تعدی بطبعھا لا بفعل اللہ تعالی واما حدیث لا یورد ممرض علی مصح ، فارشد فیه الی مجانبة ما یحصل الضرر عندہ في العادة بفعل اللہ تعالی وقدرہ قال فھذا الذی ذکرناہ من تصحیح الحدیثین والجمع بینھما ھو الصواب الذی علیه جمھور العلماء ویتعین المصیر الیه اہ فقد یکون المعزو الی جمھور

نہ کہ مرض میں تجاوز ہے۔ پھر انہوں نے یحییٰ بن یحییٰ سے وہی نقل کیا جو ہم پہلے بیان کر آئے ہیں اور بلا شبہ ہم نے تمہیں آگاہ کر دیا ہے کہ جو لوگ اس قول کی طرف مائل ہیں جیسے تورپشتی، طیبی اور ملا علی قاری شیخ محقق اور زرقانی کی تصریح کی طرح وہ سب اس بات کے معترف ہیں کہ بالکلیہ تعدیہ مرض کے ابطال کا موقف زیادہ تر اہلِ علم رکھتے ہیں۔ اقول: (میں کہتا ہوں) میں اُمید رکھتا ہوں کہ جو کچھ امام نووی نے شرح صحیح مسلم میں فرمایا اس کا انکار نہیں کیا جائے گا (اور وہ یہ ہے) جمہور علماء نے فرمایا ان دو حدیثوں کو جمع کرنا ضروری ہے اور وہ دونوں صحیح ہیں، جمہور فرماتے ہیں دونوں کو جمع کرنے کا طریقہ یہ ہے کہ حدیث "لاعدوی" سے اس چیز کی نفی مراد ہے کہ جس پر اہلِ جاہلیت قائم تھے چنانچہ وہ گمان اور اعتقاد رکھتے تھے کہ مرض اور آفت اپنی طبعی حالت سے تجاوز کرتے ہیں نہ کہ اللہ تعالیٰ کی کار کردگی سے۔ (رہی حدیث کہ) "مریض تندرست کے پاس نہ جائے" اس میں اس چیز سے بچنے

کی راہنمائی فرمائی ہے کہ جس سے بطورِ عادت اللہ تعالیٰ کے فضل اور قضاء و قدر سے ضرر حاصل ہوتا ہے۔ امام نووی نے فرمایا یہ وہی ہے جس کو ہم نے بیان کیا ہے (یعنی) دو حدیثوں کی تصیح اور ان دونوں کو جمع کرنا یہی وہ راہِ صواب ہے کہ جس پر جمہور علماء قائم ہیں اور اس کی طرف رجوع کرنا متعین ہے اھ لہٰذا جمہور علماء کی

1 شرح صحیح مسلم للنووی کتاب السلام باب لا عدوی الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۲۳۰ Page of 720 265

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Arabic Column Text] Scholars have attributed two things: the obligation of reconciling (the hadiths) and the validation of both hadiths, rather than the specifics of this particular reconciliation. What points towards this is that after mentioning this reconciliation, he did not say that what we have mentioned is the correct view held by the majority. Instead, he explained the mentioned view with his statement "validating the two hadiths and reconciling between them." Had he intended the specific reconciliation, there would have been no need for this explanation at all, as the reference was directly connected to that reconciliation without any separation, let alone explaining it with something more general. In that case, his statement "this" would be an exclusion of the first two scenarios we previously mentioned: that one of the two hadiths is either unauthentic or abrogated. This would then be similar to what he mentions later from Imam Qadi Iyad, who said that Hazrat Umar (may Allah be pleased with him) and other predecessors favored eating with [the leper], considering the command to avoid him as abrogated. However, the correct view, as stated by the majority and which must be followed, is that there is no abrogation. Rather, it is obligatory to reconcile the two hadiths and to interpret the command to avoid and flee from him as being recommended (mustahabb) and for precaution, not as an obligation. As for eating...

[Urdu Column Text] Two things are attributed to this side: first, the obligation of reconciling (hadiths), and second, the validation of two hadiths, not the specificity of this reconciliation. This is indicated by the fact that after mentioning this reconciliation, it was not said that what we have mentioned is the same correct view on which the majority of scholars stand. Rather, the mentioned was explained by his statement "validating two hadiths and reconciling them." Therefore, if the intention was for the specific reconciliation, then there was absolutely no need or requirement for this explanation because the reference was attached and linked to that reconciliation, not separate and distinct, much less explaining it with this more general term. Then in this case, the author's statement "this" is an exclusion from the first two reasons which we have already stated, one being that one of the two hadiths is not proven or it is abrogated (mansukh). Then this discourse will be like what has been quoted after this from Imam Qadi Iyad, that he said Hazrat Umar Farooq (may Allah be pleased with him) and other predecessors have gone towards the permissibility of eating with a sick person, and it means that the "command to avoid" (the command to stay away from them) is abrogated. So, the correct view is

what most scholars have said, therefore recourse to it is determined, that there is no abrogation here but rather it is obligatory (necessary) to reconcile two hadiths. Therefore, the command to stay away and keep distance from them, and the command to flee from them, is recommended (mustahabb) and precautionary.

फतावा रजविया जिल्द २४

[अरबी कॉलम पाठ] विद्वानों ने दो बातें बताई हैं: (हदीसों का) समन्वय करना अनिवार्य है और दोनों हदीसों का प्रमाणीकरण, न कि इस विशेष समन्वय की विशिष्टता। इस ओर इशारा इस बात से मिलता है कि इस समन्वय का उल्लेख करने के बाद उन्होंने यह नहीं कहा कि हमने जो उल्लेख किया है वही सही मत है जिस पर अधिकांश विद्वान सहमत हैं। बल्कि, उन्होंने अपने कथन "दो हदीसों को प्रमाणित करना और उनके बीच समन्वय करना" के साथ इसका स्पष्टीकरण दिया। यदि उनका इरादा विशेष समन्वय का होता, तो इस स्पष्टीकरण की बिल्कुल आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि संदर्भ बिना किसी अंतराल के सीधे उसी समन्वय से जुड़ा था, न कि इसे किसी अधिक सामान्य बात से स्पष्ट करने की। ऐसी स्थिति में, उनका "यह" कहना उन पहले दो परिदृश्यों को बाहर करने के लिए होगा जिनका हमने पहले उल्लेख किया है: कि दोनों हदीसों में से एक या तो प्रमाणित नहीं है या निरस्त (मन्सूख) है। तब यह बात वैसी ही होगी जैसा कि उन्होंने बाद में इमाम काजी अयाज़ के हवाले से उद्धृत किया है, जिन्होंने कहा था कि हज़रत उमर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) और अन्य पूर्वज (मरीज़ के साथ) भोजन करने की ओर गए हैं और उनका मानना था कि उनसे बचने का आदेश निरस्त हो गया है। लेकिन सही मत वह है जो अधिकांश विद्वानों ने कहा है और जिसका पालन किया जाना चाहिए, वह यह है कि कोई निरस्तीकरण नहीं है। बल्कि दोनों हदीसों के बीच समन्वय करना अनिवार्य है और उनसे बचने तथा भागने के आदेश को ऐच्छिक (मुस्तहब) और सावधानी के तौर पर माना जाना चाहिए, न कि अनिवार्यता के रूप में। जहाँ तक भोजन करने का प्रश्न है...

[उर्दू कॉलम पाठ] इस तरफ दो चीज़ें मंसूब (जुड़ी) हैं: पहली, समन्वय की अनिवार्यता और दूसरी, दो हदीसों का प्रमाणीकरण, न कि इस समन्वय की विशिष्टता। कभी इसकी ओर इशारा यह बात करती है कि इस समन्वय के उल्लेख के बाद यह नहीं फ़रमाया गया कि जो हमने उल्लेख किया है वही सही मत है जिस पर अधिकांश विद्वान कायम हैं, बल्कि उल्लेखित की अपने इस कथन से व्याख्या की: "दो हदीसों को प्रमाणित करना और उन्हें जमा करना (समन्वय)"। अतः यदि समन्वय की विशिष्टता का इरादा होता तो इस व्याख्या की बिल्कुल आवश्यकता और ज़रूरत न थी क्योंकि इशारा उस समन्वय से जुड़ा और वाबस्ता (सम्बन्धित) था न कि अलग और जुदा, तो फिर इस अधिक सामान्य शब्द से उसकी व्याख्या क्यों की जाती। फिर इस सूरत में लेखक का कथन "यह" उन पहले दो कारणों से बचाव (अपवाद) है जिनका हम पहले उल्लेख कर चुके हैं, एक यह कि दोनों हदीसों में से

एक प्रमाणित नहीं है या वह निरस्त है। फिर यह कलाम वैसा ही होगा जैसा इसके बाद इमाम काज़ी अयाज़ से नकल किया गया है कि उन्होंने फ़रमाया हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और अन्य पूर्वजों ने बीमार के साथ खाना खाने की अनुमति की ओर संकेत किया है और इसका अर्थ यह है कि "बचने का आदेश" (उनसे अलग रहने का हुक्म) निरस्त है। पस (तो) सही वही है जो अधिकतर विद्वानों ने फ़रमाया, अतः उसकी ओर लौटना निर्धारित है कि यहाँ कोई निरस्तीकरण (नस्ख) नहीं है बल्कि दो हदीसों का समन्वय करना अनिवार्य (ज़रूरी) है। अतः उनसे अलग और किनारा-कश रहने का आदेश और उनसे भागने का हुक्म ऐच्छिक (मुस्तहब) और एहतियाती (सावधानी के तौर पर) है।

पृष्ठ २६६ का ७२०

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

[عربی عبارت] العلماء وجوب الجمع وتصحیح الحدیثین لا خصوص هذا الجمع وربما یشیر الیه انه بعد ذکر هذا الجمع لم یقل ان هذا الذي ذکرناه هو الصواب الذي علیه الجمهور بل فسر المذکور بقوله من تصحیح الحدیثین والجمع بینهما ولو اراد خصوص الجمع لم تکن حاجة الی التفسیر اصلا لکون الاشارة متصلة بذلك الجمع من دون فصل فضلا عن یفسره بالاعم وحینئذ یکون قوله هذا احترازا عن الوجهین الاولین الذین قدمناهما ان احد الحدیثین غیر ثابت او منسوخ فیکون مثل ما نقل هو فیما بعد عن الامام القاضي عیاض انه قال وقد ذهب عمر رضي الله تعالی عنه وغیره من السلف الی الاکل معه ورأوا ان الامر باجتنابه منسوخ والصحیح الذي قاله الاکثرون ویتعین المصیر الیه انه لانسخ بل یجب الجمع بین الحدیثین وحمل الامر باجتنابه والفرار منه علی الاستحباب والاحتیاط لا للوجوب واما الاکل

[اردو عبارت] طرف دو چیزیں منسوب ہیں ایک وجوب جمع اور دوسری چیز دو حدیثوں کی تصحیح نہ کہ اس جمع کا خصوص کبھی اس کی طرف اشارہ یہ چیز کرتی ہے کہ اس جمع کے ذکر کرنے کے بعد یہ نہیں فرمایا کہ جس کو ہم نے ذکر کیا ہے وہی صواب ہے کہ جس پر جمہور اہل علم قائم ہیں بلکہ مذکور کی اپنے قول "دو حدیثوں کی تصحیح اور انہیں جمع کرنے" سے تفسیر فرمائی۔ لہٰذا اگر خصوص جمع کا ارادہ کرتے تو اس تفسیر کی بالکل ضرورت اور حاجت نہ تھی اس لئے کہ اشارہ اس جمع سے پیوستہ و وابستہ تھا نہ کہ الگ وجدا ، چہ جائیکہ اس اعم سے اس کی تفسیر کرتے پھر اس صورت میں موصوف کا قول "ہذا" پہلی دو وجوہات سے جن کو ہم پہلے بیان کر چکے ہیں، احتراز ہے، ایک یہ کہ دونوں حدیثوں میں سے ایک ثابت نہیں یا وہ منسوخ ہے پھر یہ کلام اسی جیسا ہو گا کہ جس کو اس کے بعد امام قاضی عیاض سے نقل کیا ہے کہ انہوں نے فرمایا حضرت عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہ اور دوسرے اسلاف مریض کے ساتھ

کھانا کھانے کے جواز کی طرف گئے ہیں اور اس سے مراد یہ ہے کہ "امر بالاجتناب" (ان سے الگ رہنے کا حکم) منسوخ ہے پس صحیح وہی ہے جو اکثر اہل علم نے فرمایا لہٰذا اس کی طرف رجوع متعین ہے کہ یہاں کوئی نسخ نہیں بلکہ دو حدیثوں کو جمع کرنا واجب (ضروری) ہے، لہٰذا ان سے الگ اور کنارہ کش رہنے کا امر اور ان سے بھاگنے کا حکم استحبابی اور احتیاطی ہے۔

Fatawa Razawiya, Volume 24

(Arabic Text/Left Column): ...with him, so he did it to demonstrate permissibility. Then the statement 'they said' and the method of reconciliation, etc., is according to what is customary among scholars of quoting the sayings of a group with the word 'they said'. However, the reference is to the majority of scholars so that the report of the majority does not contradict the majority. Among them are al-Turpishiti and al-Qari themselves. And Allah knows best. Then, among our proofs against them: firstly, the apparent meaning of the mutawatir (continuously narrated) hadiths, as they themselves admitted. One cannot deviate from the apparent meaning except with a proof, and where is the proof? Secondly, what we previously quoted from Imam al-Tahawi: if this were among the ordinary causes of destruction, the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and the Rightly Guided Caliphs would not have done it, nor would they have commanded eating with them out of humility and faith. For in that case, avoiding it would be religiously mandated due to Allah's saying: "And do not kill yourselves" and His saying: "And do not throw [yourselves] with your [own] hands into destruction." It would be like a leaning wall.

(Urdu Translation/Right Column): ...is not obligatory. As for eating and drinking with them, doing so is for the demonstration of permissibility. Then the author's statement "they said" and the method of reconciliation, etc., is based on what is customary among scholars, that they quote the sayings of a group with the word "they said". Yes, but its reference is the majority of scholars so that the report of the majority is not contrary to the majority. Among them themselves are Turpishiti and Mulla Ali Qari, and Allah Almighty knows the manifest and the hidden well. Then, our proof against them is from several aspects: first, the indication of the manifest meaning of mutawatir hadiths, as the opponents themselves admit. And it is obvious that one cannot deviate without a proof, and where is the proof here? Second, we have already quoted on the authority of Imam al-Tahawi: if "mingling with disease" were among the ordinary causes of destruction, then the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and the Rightly Guided Caliphs would never have done so (act of mingling), nor would they have commanded eating and drinking with them (i.e., the sick) on the basis of humility and faith. Because then, separation and avoidance from them would be religiously mandated due to this command of Allah Almighty: "Do not put yourselves in destruction" or "yourself..."

Footnotes: 1. Sharh Muslim li al-Nawawi, citing Qadi Iyad, Chapter of Salam, Chapter on "No Contagion", etc. Qadimi Kutub Khana, Karachi 2/342-343. 2. Al-Quran al-Karim 4/29. 3. Al-Quran al-Karim 2/195.

फतावा रज़विया, जिल्द 24

(अरबी पाठ / बायां कॉलम): ...उनके साथ, तो उन्होंने इसे जायज़ होने के बयान के लिए किया। फिर 'उन्होंने कहा' वाला बयान और सुलह का तरीका आदि उस पर आधारित है जो विद्वानों के बीच प्रचलित है कि वे एक समूह के कथनों को 'उन्होंने कहा' शब्द के साथ उद्धृत करते हैं। हालांकि, संदर्भ विद्वानों का बहुमत है ताकि बहुमत की रिपोर्ट बहुमत के विरुद्ध न हो। उनमें स्वयं अल-तुरपिशिती और अल-क़ारी शामिल हैं। और अल्लाह बेहतर जानता है। फिर, उनके खिलाफ हमारे प्रमाणों में से: पहला, मुतवातिर (लगातार वर्णित) हदीसों का स्पष्ट अर्थ, जैसा कि उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है। बिना किसी प्रमाण के स्पष्ट अर्थ से विचलन नहीं किया जा सकता, और प्रमाण कहाँ है? दूसरा, जो हमने पहले इमाम अल-तहावी के हवाले से उद्धृत किया था: यदि यह विनाश के सामान्य कारणों में से होता, तो पैगंबर (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) और खुल्फ-ए-राशदीन (सही मार्गदर्शन वाले खलीफा) ऐसा नहीं करते, और न ही वे विनम्रता और विश्वास के साथ उनके साथ खाने का आदेश देते। क्योंकि उस स्थिति में, इससे बचना धार्मिक रूप से अनिवार्य होता क्योंकि अल्लाह का कथन है: "और अपने आप को मत मारो" और उसका कथन: "और अपने हाथों से अपने आप को विनाश में मत डालो।" यह एक झुकी हुई दीवार की तरह होता।

(उर्दू अनुवाद / दायां कॉलम): ...अनिवार्य नहीं है। जहाँ तक उनके साथ खाने-पीने का सवाल है, तो ऐसा करना जायज़ होने के प्रदर्शन के लिए है। फिर लेखक का कथन "उन्होंने कहा" और मेल-मिलाप का तरीका आदि विद्वानों के बीच प्रचलित बात पर आधारित है कि वे एक समूह के कथनों को "उन्होंने कहा" शब्द के साथ उद्धृत करते हैं। हाँ, लेकिन इसका संदर्भ विद्वानों का बहुमत है ताकि बहुमत की रिपोर्ट बहुमत के विपरीत न हो। उनमें खुद तुरपिशिती और मुल्ला अली क़ारी शामिल हैं, और अल्लाह सर्वशक्तिमान प्रकट और गुप्त को अच्छी तरह जानता है। फिर, उनके खिलाफ हमारा प्रमाण कई पहलुओं से है: पहला, मुतवातिर हदीसों के प्रकट अर्थ का संकेत, जैसा कि विरोधियों ने खुद स्वीकार किया है। और यह स्पष्ट है कि बिना सबूत के विचलन नहीं हो सकता, और यहाँ सबूत कहाँ है? दूसरा, हम इमाम तहावी के हवाले से पहले ही उद्धृत कर चुके हैं: यदि "बीमारी के साथ घुलना-मिलना" विनाश के सामान्य कारणों में से होता, तो पैगंबर (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) और खुल्फ-ए-राशदीन कभी ऐसा नहीं करते (घुलने-मिलने का कार्य), और न ही वे विनम्रता और विश्वास के आधार पर उनके साथ (अर्थात बीमारों के साथ) खाने-पीने का आदेश देते।

क्योंकि तब तो उनसे अलगाव और दूरी बनाना शरीयत के अनुसार अनिवार्य होता, अल्लाह सर्वशक्तिमान के इस आदेश के कारण: "अपने आप को विनाश में मत डालो" या "अपने आप को..."

पादलेख: 1. शरह मुस्लिम लिन-नववी, क़ाज़ी अयाज़ के हवाले से, बाब अस-सलाम, बाब ला अदवा आदि, क़दीमी कुतुब खाना, कराची 2/342-343। 2. अल-क़ुरान अल-करीम 4/29। 3. अल-क़ुरान अल-करीम 2/195।

(عربی کالم - بائیں جانب): معه ففعله لبیان الجواز اھ واذن یکون قولہ قالوا وطریق الجمع الخ علی ماھو المتعارف بین العلماء من نقل اقوال جمع بلفظة قالوا الا ان مرجع جمھور العلماء کیلا یخالف نقل الاکثرین عن الاکثرین منھم التورپشتی والقاری انفسھما واللہ تعالیٰ اعلم، ثم من الحجة لنا علیھم اولاً ظاھر الاحادیث المتواترة کما اعترفوا بہ ولا معدل عن ظاھر الابدیلیل واین الدلیل وثانیاً ماقدمنا عن الامام الطحاوی ان لو کان ذلک من اسباب الھلاک العادیة لم یفعله النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ولا الخلفاء الراشدون ولا امر بالا کل معھم تواضعاً و ایماناً فان مجانبتہ حینئذ مامور بہ شرعاً لقولہ تعالیٰ "وَلَا تَقْتُلُوٓا اَنْفُسَكُمْ ط" 2 وقولہ تعالیٰ "وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ" 3 وکان کالجدار المائل

(اردو کالم - دائیں جانب): وجوبی نہیں۔ رہا یہ کہ ان کے ساتھ کھانا پینا، تو ایسا کرنا بیانِ جواز کے لئے ہے اھ پھر تو موصوف کا قول قالوا وطریق الجمع الخ اس پر مبنی ہے کہ جو علماء کے درمیان متعارف ہے کہ وہ ایک جماعت کے اقوال کو لفظ قالوا سے نقل کرتے ہیں ہاں مگر اس کا مرجع جمہور علماء ہیں تاکہ اکثر کی نقل اکثر کے مخالف نہ ہو، ان میں خود تور پشتی اور ملا علی قاری شامل ہیں اور اللہ تعالیٰ ظاہر و باطن کو خوب جانتا ہے۔ پھر ہماری دلیل ان کے خلاف متعدد وجوہ سے ہے اوّل متواتر حدیثوں کے ظاہر کی دلالت، جیسا کہ خود مخالفین کو اس بات کا اعتراف ہے، اور ظاہر ہے بغیر دلیل عدول نہیں ہوسکتا اور یہاں دلیل کہاں، دوم ہم امام طحاوی کے حوالہ سے پہلے نقل کرچکے ہیں اگر وہ "اختلاطِ مرض" ہلاکت عادیہ کے اسباب میں سے ہوتا تو حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اور خلفاء راشدین ہرگز ایسا نہ کرتے (اقدامِ اختلاط) اور نہ ان کے ساتھ (یعنی مریضوں کے ساتھ) بر بنائے تواضع اور ایمان کھانے پینے کا حکم فرماتے کیونکہ

پھر تو ان سے علیحدگی اور کنارہ کشی شرعاً مامور بہ ہے اللہ تعالیٰ کے اس ارشاد کی وجہ سے "اپنے آپ کو ہلاکت میں مت ڈالو" یا " اپنے آپ کو

حواشی: 1 شرح مسلم للنووی بحوالہ قاضی عیاض باب السلام باب لاعدوی الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۲۴۲- ۲۴۳ 2 القرآن الکریم ۴/ ۲۹ 3 القرآن الکریم ۲/ ۱۹۵

Fatawa Razawiya, Volume 24

...do not kill," and this is like a falling wall or a broken ship. Those who affirm the transmission of diseases also acknowledge and admit this, as you will soon become aware and familiar with. I say: It is not trust (tawakkul) to oppose the means (asbab). And it is absolutely not permissible to blindly plunge into something that leads to destruction and ruin. Furthermore, it is not permissible for anyone to throw themselves from the top of a mountain, invoking trust in Allah Almighty and with the belief and confidence that if Allah Almighty does not wish it, nothing can cause harm; doing so is not permissible. Accordingly, it is narrated that Satan asked this very question to our master Jesus, the Word of Allah, peace be upon him and upon our Prophet. He replied in response: "I do not put my Lord to the test, and I do not try Him." The people of knowledge have explicitly stated that sea travel should not be undertaken during storms and turbulence. This also makes it clear that those who believe in contagion interpret the Hadith "Every trust is in Allah" and other similar Hadiths as applying to the practice of trust and the abandonment of means. It has been stated from the actions of Hazrat Siddiq-e-Akbar (may Allah be pleased with him) and Hazrat Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with him), and their emphasis in this chapter provides such guidance for you.

Page 268 of 720

फ़तावा रज़विया, खंड 24

"...मत मारो," और यह गिरने वाली दीवार और टूटी हुई नाव की तरह होगा। बीमारी के संचरण को स्वीकार करने वाले महानुभाव भी इसे मानते और स्वीकार करते हैं, जैसा कि आप जल्द ही जान जाएँगे और परिचित हो जाएँगे। मैं कहता हूँ: यह तवक्कुल (ईश्वर पर भरोसा) नहीं है कि साधनों (अस्बाब) का विरोध किया जाए। और जो चीज़ तबाही और बर्बादी की ओर ले जाए, उसमें बिना सोचे-समझे पड़ जाना हरगिज़ जायज़ नहीं है। इसके अलावा, किसी के लिए यह जायज़ नहीं है कि वह अल्लाह तआला पर तवक्कुल का नाम लेते हुए और इस यकीन और भरोसे के साथ कि अगर अल्लाह तआला न चाहे तो कोई चीज़ नुकसान नहीं पहुँचा सकती, खुद को पहाड़ की चोटी से नीचे गिरा दे; ऐसा करना जायज़ नहीं है। तदनुसार, यह कथा वर्णित है कि हमारे आका हज़रत ईसा कलिमतुल्लाह (अल्लाह के शब्द), उन पर और हमारे नबी पर सलातो-सलाम हो, से शैतान ने यही सवाल किया था। तो आपने जवाब में फरमाया कि मैं अपने पालनहार की परीक्षा नहीं लेता और उसे नहीं आज़माता। विद्वानों ने स्पष्ट किया है कि समुद्र में उफान और तूफान के समय समुद्री यात्रा नहीं करनी चाहिए। इससे यह भी स्पष्ट हो गया कि बीमारी के फैलने के समर्थक हदीस 'कुल सिक़तुन बिल्लाह' (अल्लाह पर पूरा भरोसा) और इसी तरह की अन्य हदीसों को तवक्कुल पर अमल करने और साधनों को छोड़ने पर लागू करते हैं। हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) और हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) के कार्यों से यह बयान किया गया है, और इस अध्याय में उन दोनों के जोर देने में आपके लिए ऐसा मार्गदर्शन है।

पृष्ठ 268 of 720

مت قتل کرو" اور یہ گرنے والی دیوار اور ٹوٹی ہوئی کشتی کی طرح ہوگا، اور اثبات تعدیہ کرنے والے حضرات بھی اس کے قائل اور معترف ہیں جیسا کہ عنقریب آپ آگاہ اور واقف ہو جائیں گے،

اقول: (میں کہتا ہوں) یہ توکل نہیں کہ اسباب کے ساتھ معارضہ (مقابلہ) کیا جائے۔ اور جو چیز تباہی و ہلاکت تک لے جائے بے سوچے اس میں پڑ جانا ہرگز جائز نہیں، نیز کسی کے لئے یہ جائز نہیں کہ اپنے آپ کو پہاڑ کے اوپر سے گرائے، اللہ تعالیٰ پر توکل کا نام لیتے ہوئے اور اس یقین و بھروسے کے ساتھ کہ اگر اللہ تعالیٰ نہ چاہے تو کوئی چیز نقصان نہیں دے سکتی ایسا کرنا جائز نہیں۔ چنانچہ حکایت بیان کی گئی ہے کہ سیدنا حضرت عیسیٰ کلمۃ اللہ علیہ و علی نبینا الصلوۃ والسلام سے یہی سوال شیطان نے کیا تھا تو آپ نے جواب میں فرمایا کہ میں اپنے پروردگار کا امتحان نہیں کرتا اور اسے نہیں آزماتا۔ اہل علم نے صراحت فرمائی کہ سمندر میں جوش اور طوفان آنے کے وقت بحری سفر نہ کیا جائے ، اس سے یہ بھی واضح ہو گیا کہ قائلین بالتعدیہ حدیث کل ثقۃ باللہ اور اس جیسی دوسری حدیثوں کو عمل توکل اور ترک اسباب پر محمول کرتے ہیں۔

حضرت صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ اور حضرت فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے فعل سے یہ بیان کیا گیا اور اس باب میں ان دونوں کے مبالغہ کرنے میں تمہارے لئے ایسی راہنمائی ہے

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Arabic Text] The words of Allama Ali al-Qari (may the mercy of the Creator be upon him) serve as a clear text to refute the school of thought of those people. He has gathered everything brought forward by the proponents of affirmation along with additions. We shall mention here what Allah Almighty has revealed to us regarding the flaws in those arguments. He (may Allah have mercy on him) said: The scholars have differed in the interpretation. Among them are those who say that negation and its nullification are intended, as indicated by the apparent meaning of the Hadith, and they are the majority. Others believe that its nullification was not intended, as the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'Flee from a leper as you flee from a lion.' I (the author) say: The intention of nullification is apparent, as he himself acknowledged, and what has been mentioned does not serve to divert from it, as you have learned from the aspects of interpretation. He said, and the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said...

[Urdu Commentary] ...which is a (clear) text to refute the school of thought of those people. We should mention the discourse of Mulla Ali al-Qari (may Allah Almighty have mercy on him) here because he has gathered everything brought forward by the proponents of affirmation along with additions, and during this, we will also mention the faulty reasons regarding them which Allah Almighty has revealed to us. Accordingly, Mulla Ali Qari (may Allah's mercy be upon him) stated: The scholars have differed in the interpretation of this matter. Among them are some who say that by this, negation and its nullification are intended, based on the fact that the literal meaning of the Hadith indicates this, and they are the majority of the scholars (i.e., in large numbers). Others believe that nullification (of contagion) is not intended because the Holy Prophet (may Allah Almighty bless him and grant him peace) said: "Flee from a leper as you flee from a lion." I (the author) say: The intention of nullification is apparent, as the author himself has acknowledged, and whatever has been mentioned (against it) is not a refutation for it, as you have learned from the aspects of interpretation. The aforementioned Allama...

[Footnote] Note: All of this is the discourse of al-Turpushti, except for what has been added from Sharh al-Minhah. (12 منه - t)

1. Mirqat al-Mafatih Sharh al-Mishkat, Kitab al-Tibb wa al-Ruqa, Bab al-Fa'l wa al-Tirah, Maktaba Habibiyah Quetta, 8 / 343. Page 269 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[अरबी पाठ] अल्लामा अली अल-क़ारी (रहमतुल्लाहि अलैहि) के शब्द उन लोगों के मज़हब का खंडन करने के लिए एक स्पष्ट प्रमाण हैं। उन्होंने उन सभी बातों को संकलित किया है जो पुष्टि करने वालों ने पेश की हैं, और साथ ही कुछ अतिरिक्त बातें भी। हम यहाँ उन दोषपूर्ण कारणों का उल्लेख करेंगे जो अल्लाह तआला ने हम पर प्रकट किए हैं। उन्होंने (अल्लाह उन पर दया करे) फरमाया: विद्वानों ने व्याख्या में मतभेद किया है। उनमें से कुछ वे हैं जो कहते हैं कि इससे निषेध और उसका खंडन अभिप्रेत है, जैसा कि हदीस के प्रत्यक्ष अर्थ से पता चलता है, और वे बहुसंख्यक हैं। अन्य लोग मानते हैं कि इसका खंडन अभिप्रेत नहीं था, जैसा कि पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: 'कोढ़ी से ऐसे भागो जैसे शेर से भागते हो।' मैं (लेखक) कहता हूँ: खंडन का इरादा ही प्रत्यक्ष है जैसा कि उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है, और जो कुछ उल्लेख किया गया है वह इसे मोड़ने के लिए पर्याप्त नहीं है, जैसा कि आप व्याख्या के पहलुओं से जान चुके हैं। उन्होंने कहा, और पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया...

[उर्दू व्याख्या का अनुवाद] ...जो उन लोगों के मज़हब का खंडन करने के लिए (स्पष्ट) प्रमाण है। हमें यहाँ मुल्ला अली क़ारी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि) का कलाम ज़िक्र करना चाहिए क्योंकि उन्होंने उन सब बातों को संकलित किया है जो पुष्टि करने वालों ने पेश की हैं, और साथ ही कुछ अतिरिक्त बातें भी। इस दौरान हम उन दोषपूर्ण कारणों का भी ज़िक्र करेंगे जो अल्लाह तआला ने हम पर प्रकट किए हैं। तदनुसार, मुल्ला अली क़ारी (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने फरमाया: विद्वानों ने इस मसले की व्याख्या में मतभेद किया है। उनमें से कुछ वे हैं जो कहते हैं कि इससे निषेध और उसका खंडन अभिप्रेत है, इस आधार पर कि हदीस का प्रत्यक्ष अर्थ इसी पर संकेत करता है, और वे अधिकांश विद्वान हैं (यानी बड़ी संख्या में हैं)। दूसरे वे हैं जो समझते हैं कि खंडन (छुआछूत का) अभिप्रेत नहीं है क्योंकि पवित्र पैगंबर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "कोढ़ी से ऐसे भागो जैसे शेर से भागते हो।" मैं (लेखक) कहता हूँ: खंडन का इरादा ही प्रत्यक्ष है जैसा कि स्वयं लेखक ने स्वीकार किया है, और जो कुछ (इसके विरुद्ध) ज़िक्र किया गया है वह इसका खंडन नहीं है जैसा कि आप व्याख्या के पहलुओं से जान चुके हैं। अल्लामा...

[पाद लेख] नोट: यह सब तोरपुश्ती का कलाम है, सिवाय उस चीज़ के जो शरह अल-मिन्हा से अधिक है। (12 मिन्हु - त)

1. मिरक़ात अल-मफ़ातीह शरह अल-मिश्क़ात, किताब अल-तिब्ब वल-रुक़ा, बाब अल-फ़ाल वत-तीरा, मकतबा हबीबिया क्वेटा, 8 / 343। पृष्ठ 269/720

کلام العلامۃ علی القاری علیہ رحمۃ الباری فانہ جمع ماتی بہ المثبتون وزاد ونذکر فی خلالہ مافتح اللہ تعالٰی علینا من وجوہ اختلالہ قال رحمہ اللہ تعالٰی قد اختلف العلماء فی التأویل فمنہم من یقول المراد منہ نفی ذلک وابطالہ علی مایدل علیہ ظاھر الحدیث وھم الاکثرون ومنہم من یری انہ لم یرد ابطالھا فقد قال صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فر من المجذوم فرارک من الاسد ۱ اقول: ارادۃ الابطال ہو الظاھر کما اقر بہ وماذکر لایصلح صارفاً لہ لما علمت من وجوہ التأویل۔ قال وقال صلی اللہ تعالٰی

جو ان لوگوں کے مذہب کے رد کرنے کے لئے (واضح) نص ہے۔ ہمیں یہاں ملا علی قاری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ کا کلام ذکر کرنا چاہئے کیونکہ اہل اثبات جو کچھ لائے ہیں اس سب کو بمع اضافہ انہوں نے یکجا کیا ہے اور ان کی خلل پذیر وجوہات کے بارے میں جو اللہ تعالٰی نے ہم پر منکشف فرمائیں اس دوران ہم ان کا بھی ذکر کریں گے۔ چنانچہ ملا علی قاری رحمۃ اللہ علیہ نے ارشاد فرمایا اہل علم کا اس مسئلہ کی تاویل میں اختلاف ہے ان میں بعض وہ ہیں جو فرماتے ہیں اس سے نفی اور اس کا ابطال مراد ہے اس بنا پر کہ ظاہر حدیث اس پر دلالت کرتی ہے، اور وہ اہل علم اکثر یعنی (کثیر تعداد میں ہیں اور کچھ دوسرے وہ ہیں جو یہ سمجھتے ہیں کہ بطلان (تعدیہ) مراد نہیں کیونکہ حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا "جذامی سے ایسے بھاگو جیسے شیر سے بھاگتے ہو۔" اقول: (میں کہتا ہوں) ارادہ ابطال ہی ظاہر ہے جیسا کہ خود موصوف نے اس کا اقرار کیا اور جو کچھ (اس کے خلاف) ذکر کیا گیا وہ اس کے لئے دافع نہیں جیسا کہ وجوہ تاویل سے تمہیں معلوم ہو گیا، علامہ موصوف

عہ: ھذا کل کلام التورپشتی سوی مازاد من شرح المنحۃ ۲ امنہ یہ سب تورپشتی کا کلام ہے ماسوائے اس چیز کے جو شرح المنحہ سے زائد کیا ہے ۱۲منہ (ت)

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Left Column - Arabic text with commentary] ...peace be upon him: "The owner of diseased camels should not bring them to the healthy ones."[1] I say: This is weaker and more remote, after what we have narrated from Al-Muwatta that he (peace and blessings of Allah be upon him) when he negated contagion and forbade bringing the sick to the healthy, they asked "Why is that?". He said that he only intended to negate what the naturalists (Ahl-e-Tabiyat) believed, for they used to see contagious diseases as inevitably effective. So he informed them that the matter is not as they imagined, but rather it is suspended upon the [Divine] Will; if He wills it happens, and if He does not will it does not happen.[2] I say: Everything is like that, and all causes are equal in this regard. Sharia did not come to negate causes, but rather established them and guided towards negating their [inherent] effect. The belief of naturalists regarding the evil eye is no less than their belief regarding contagion. Then Sharia did not come to negate it, but rather said: "The evil eye is true." He [the author] says, and this meaning is pointed to by the saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "Who then infected the first one?"

[Right Column - Urdu translation/explanation] The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: Let not those with affliction and calamity go to anyone healthy. Aqul: (I say) This is more weak and more remote after we have narrated this tradition with reference to Muwatta that when the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) negated the contagion of disease and forbade people from going to the sick, people inquired why this was so... He said that his intention was to negate that which the naturalists believe, because they undoubtedly considered contagious causes to be effective [by themselves]. Therefore, he informed those people that the matter which they have a doubt about is contingent upon the will of Allah Almighty; if He wills, the disease will occur, and if He does not will, it will not. Aqul: (I say) Every thing is like this, and all causes are equal steps in this, and Sharia has not negated causes, but rather established them and guided towards negating their [independent] effect. And the belief of naturalists in the evil eye is no less than it is in the contagion of disease. And Sharia has not negated it either, but said: The evil eye is truth. The aforementioned scholar said, and towards this same meaning is the saying of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "Who then infected the first one?"

[1] Mirqat al-Mafatih Sharh al-Mishkat, Kitab al-Tibb wa al-Ruqa, Bab al-Fa'l wa al-Tiyara, First Section, Maktaba Habibiyya Quetta, 8/343 [2] Mirqat al-Mafatih Sharh al-Mishkat, Kitab al-Tibb wa al-Ruqa, Bab al-Fa'l wa al-Tiyara, First Section, Maktaba Habibiyya Quetta, 8/343

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[बायां कॉलम - अरबी पाठ और व्याख्या] ...सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम: "बीमार ऊंटों के मालिक उन्हें स्वस्थ ऊंटों के पास न लाएं।"[1] अक़ूल: यह बात और अधिक कमज़ोर और दूर की है, उसके बाद जो हमने मोअत्ता से रिवायत किया है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने छूत की बीमारी का खंडन किया और बीमार को स्वस्थ के पास लाने से मना किया, तो लोगों ने पूछा, "ऐसा क्यों है?" आपने फ़रमाया कि आपका इरादा केवल उस चीज़ का खंडन करना था जिसे प्रकृतिवादी (अहल-ए-तबीयत) मानते थे, क्योंकि वे संक्रामक रोगों को अनिवार्य रूप से प्रभावी मानते थे। अतः आपने उन्हें सूचित किया कि मामला वैसा नहीं है जैसा वे कल्पना करते हैं, बल्कि यह ईश्वरीय इच्छा पर निर्भर है; यदि वह चाहता है तो होता है, और यदि वह नहीं चाहता तो नहीं होता।[2] अक़ूल: हर चीज़ वैसी ही है, और इस संबंध में सभी कारण समान हैं। शरीयत कारणों को नकारने के लिए नहीं आई, बल्कि उन्हें स्थापित किया और उनके[निहित] प्रभाव को नकारने की दिशा में मार्गदर्शन किया। बुरी नज़र के बारे में प्रकृतिवादियों का विश्वास छूत के बारे में उनके विश्वास से कम नहीं है। फिर शरीयत इसे नकारने के लिए नहीं आई, बल्कि कहा: "बुरी नज़र सच है।" वह [लेखक] कहते हैं, और इसी अर्थ की ओर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के इस कथन द्वारा संकेत किया गया है: "तो फिर पहले वाले को किसने संक्रमित किया?"

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: आफ़त और मुसीबत वाले किसी तंदुरुस्त के पास न जाएं। अक़ूल: (मैं कहता हूँ) यह ज़्यादा कमज़ोर और ज़्यादा दूर की बात है, इसके बाद कि हमने मोअत्ता के हवाले से यह रिवायत बयान की है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बीमारी के छूत (संक्रमण) का खंडन किया और लोगों को मरीज़ के पास जाने से मना फ़रमाया, तो लोगों ने पूछा कि यह क्यों है... आपने फ़रमाया कि इससे आपका इरादा उस चीज़ का खंडन करना था जिसका प्रकृतिवादी (naturalists) विश्वास रखते हैं, क्योंकि वे निस्संदेह संक्रामक कारणों को स्वयं प्रभावशाली समझते थे। इसलिए आपने उन लोगों को इस बात से अवगत कराया कि वह मामला जिसका उन्हें भ्रम है, वह अल्लाह तआला की इच्छा (मशियत) पर निर्भर है; अगर वह चाहे तो बीमारी होगी, और अगर न चाहे तो नहीं होगी। अक़ूल: (मैं कहता हूँ) हर चीज़ इसी तरह है और तमाम कारण इसमें समान पायदान पर हैं और शरीयत ने कारणों का खंडन नहीं किया बल्कि उन्हें साबित किया है और उनके(स्वतंत्र) प्रभाव के खंडन की दिशा में मार्गदर्शन किया है। और नज़र-ए-बद (बुरी नज़र) में प्रकृतिवादियों का विश्वास उससे कम

नहीं है जितना बीमारी के संक्रमण में है। और शरीयत ने इसका भी खंडन नहीं किया बल्कि फ़रमाया: नज़र सत्य (हक़) है। उक्त विद्वान ने फ़रमाया और इसी अर्थ की ओर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशाद का इशारा है: "तो पहले को किसने संक्रमित किया?"

---

[1] मिरक़ात अल-मफ़ातीह शरह अल-मिशकात, किताब अल-तिब्ब व अल-रुक़ा, बाब अल-फ़ाल व अल-तियारा, पहला खंड, मकतबा हबीबिया क्वेटा, 8/343 [2] मिरक़ात अल-मफ़ातीह शरह अल-मिशकात, किताब अल-तिब्ब व अल-रुक़ा, बाब अल-फ़ाल व अल-तियारा, पहला खंड, मकतबा हबीबिया क्वेटा, 8/343

[بائیں کالم کا متن] علیه وسلم لایوردن ذوعاهة علی مصح۱ اقول: هذا اضعف وابعد بعد ماروینا عن المؤطا انه صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم لما نفی العدوی و نهی عن ایراد الممرض قالوا وما ذاك قال وانما اراد بذلك نفي ما كان یعتقده اصحاب الطبعیة فانهم كانوا یرون العلل المعدیة موثرة لامحالة، فاعلمهم ان لیس الامر علی مایتوهمون بل هو معلق بالمشیئة ان شاء كان وان لم یشاء لم یكن۲ - اقول: كل شیئ كذٰلك و جمیع الاسباب متساویة الاقدام فی ذلك ولم یأت الشرع بنفی الاسباب بل اثبتها وارشد الی نفی تاثیرها واعتقاد اصحاب الطبعیة فی العین لیس بادون من اعتقادهم فی العدوی ثم لم یأت الشرع بنفیها بل قال العین حق، قال ویشیر الی هذا المعنی قوله صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم "فمن اعدی الاول"

[دائیں کالم کا متن] نے فرمایا حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا آفت ومصیبت والے کسی تندرست کے پاس نہ جائیں۔ اقول: (میں کہتا ہوں) یہ زیادہ ضعف اور زیادہ بعید ہے بعد اس کے کہ ہم نے مؤطا کے حوالے سے یہ روایت بیان کی ہے کہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے جب تعدیہ مرض کی نفی فرمائی اور لوگوں کو مریض کے پاس جانے سے منع فرمایا تو لوگوں نے استفسار کیا کہ یہ کیوں----- موصوف نے فرمایا کہ اس سے آپ کا ارادہ نفی کرنے کا تھا جس کا ارباب طبیعت اعتقاد رکھتے ہیں کیونکہ وہ بلاشبہ علل متعدیہ کو مؤثر سمجھتے تھے اس لئے آپ نے ان لوگوں کو اس بات پر آگاہ فرمایا کہ وہ معاملہ جس کا انہیں وہم ہے وہ اللہ تعالیٰ کی مشیت سے معلق ہے اگر وہ چاہے تو مرض لاحق ہو گا نہ چاہے تو نہیں ہوگا اقول: (میں کہتا ہوں) ہر شے اسی طرح ہے اور تمام اسباب اس میں متساوی اقدام ہیں اور شریعت نے اسباب کی نفی نہیں کی بلکہ انہیں ثابت کیا ہے اور ان کی نفی تاثیر کی راہنمائی فرمائی ہے اور نظر بد میں اصحاب طبیعت کا اعتقاد اس سے کم نہیں جتنا تعدیہ مرض میں ہے۔ اور شریعت نے اس کی نفی بھی نہیں

فرمائی بلکہ فرمایا: نظر حق ہے۔ علامہ موصوف نے فرمایا اور اسی معنی کی طرف حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ارشاد فمن اعدی الاول

---

1 مرقاۃ المفاتیح شرح المشکوۃ کتاب الطب والرقی باب الفال والطیرۃ الفصل الاول مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۸ / ۳۴۳ 2 مرقاۃ المفاتیح شرح المشکوۃ کتاب الطب والرقی باب الفال والطیرۃ الفصل الاول مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۸ / ۳۴۳

Fatawa Razawiyya - Volume 24

[Right Column - Urdu Text] That is, through whom did the disease reach the first person? Meaning, if you believe that the cause of illness is contagion, then how did contagion occur in the first patient? I say: Firstly (I say firstly), the difference between the two is clear and obvious, which is that in contagion, they hold the belief that causes are effective, and they consider only contagion itself to be effective. Thus, the first case is proven from them, not the second. A similar point was mentioned by Allama Manawi in 'At-Taysir', where he stated that this is among the silencing answers, because if diseases were drawn from one another, then the disease of the first patient would necessarily be absent, as there was no attractor (cause) for it. You know that this does not necessarily follow as long as they do not assert a cause besides the absence of an attractor, whereas this is not their claim (presumption) nor does it necessarily follow from their presumption. Therefore, the correct and preferred view is what I have previously explained, and Imam Tahawi inclines towards this as you know. Imam Ayni mentioned it in the language of a theologian in his commentary on Bukhari, stating: That is, how did the first camel get mange? If you say from another camel, then infinite regress follows. If you say it was transferred from some other cause, then its explanation rests on you...

[Left Column - Arabic Text] That is, if you believe that the cause for this is contagion and nothing else, then who infected the first one? I say: Firstly, there is a vast difference between believing that causes are effective in contagion and believing that contagion itself is the sole cause. What is proven from them is the latter, not the former. A similar point was made by al-Manawi in 'At-Taysir', where he said: This is among the silencing answers, for if diseases drew one another, the first disease would have to be absent for lack of an attractor. You know that this is not necessary at all as long as they do not posit a cause in the absence of attraction, and this is not their claim nor a necessity of their claim. The correct and eloquent interpretation of the Hadith is what I have presented, and Imam al-Tahawi leaned towards it as you know. It was mentioned in the words of a theologian by Imam al-Ayni in the commentary of al-Bukhari, where he said: i.e., who gave mange to the first camel? meaning from whom did the mange spread to it? If you say from another camel, it leads to infinite regress.

[Footnotes] 1. Mirqat al-Mafatih Sharh al-Mishkat, Book of Medicine and Ruqya, Chapter of Omens and Bird Divination, First Section, Habibia Library, Quetta, 8/333. 2.

At-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir, under the Hadith "Who infected the first one?", Imam Shafi'i Library, Riyadh, 2/173.

Page 271 of 720

फ़तवा-ए-रज़विया - खंड 24

[दायां कॉलम - उर्दू पाठ] अर्थात्, पहले व्यक्ति तक बीमारी किसके माध्यम से पहुँची? यानी, यदि आप यह मानते हैं कि इसमें बीमारी का कारण संक्रामकता (contagion) है, तो पहले रोगी तक संक्रामकता कैसे हुई? मैं कहता हूँ: पहली बात तो यह है कि दोनों में अंतर स्पष्ट और ज़ाहिर है, वह यह कि संक्रामकता में वे कारणों के प्रभावी होने का विश्वास रखते हैं और केवल संक्रामकता को ही प्रभावी मानते हैं। अत; उनसे पहला विकल्प सिद्ध होता है, दूसरा नहीं। अल्लामा मनावी द्वारा 'अत-तयसीर' में भी इसी तरह का उल्लेख किया गया है, जहाँ उन्होंने कहा कि यह निरुत्तर कर देने वाले उत्तरों में से एक है, क्योंकि यदि बीमारियाँ एक-दूसरे से आतीं, तो पहले रोगी की बीमारी अनुपस्थित होनी चाहिए थी क्योंकि उसके लिए कोई लाने वाला (कारण) नहीं था। आप जानते हैं कि यह तब तक अनिवार्य रूप से लागू नहीं होता जब तक वे लाने वाले के अभाव के अलावा किसी अन्य कारण की बात न करें, जबकि यह न तो उनका विचार है और न ही उनके विचार की अनिवार्यता है। इसलिए, सही और मान्य मत वही है जो मैंने पहले स्पष्ट किया है, और इमाम तहवी इसी ओर झुके हैं जैसा कि आप जानते हैं। इमाम ऐनी ने बुखारी की अपनी व्याख्या में एक विद्वान की भाषा में इसका उल्लेख किया है, जहाँ उन्होंने कहा: अर्थात् पहले ऊँट को खुजली कैसे हुई? यदि आप कहें कि किसी दूसरे ऊँट से, तो यह सिलसिला (अनंत प्रतिगमन) चलता रहेगा। यदि आप कहें कि किसी अन्य कारण से बीमारी स्थानांतरित हुई, तो उसका वर्णन आपके ज़िम्मे है...

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] अर्थात्, यदि आप यह मानते हैं कि इसका कारण केवल संक्रामकता है, तो पहले को किसने संक्रमित किया? मैं कहता हूँ: सबसे पहले, कारणों के संक्रामकता में प्रभावी होने का विश्वास रखने और स्वयं संक्रामकता को ही एकमात्र प्रभावी कारण मानने में बहुत बड़ा अंतर है। उनके बारे में जो सिद्ध है वह बाद वाला है, न कि पूर्व वाला। और इसी तरह का उल्लेख मनावी ने 'अत-तयसीर' में किया है, जहाँ उन्होंने कहा: यह उन उत्तरों में से है जो खामोश कर देते हैं, क्योंकि यदि बीमारियाँ एक-दूसरे को खींचतीं, तो पहले रोग का अभाव होता क्योंकि उसे लाने वाला कोई नहीं था। और आप जानते हैं कि यह बिल्कुल भी आवश्यक नहीं है जब तक कि वे आकर्षण के अभाव में किसी कारण की बात न करें, और यह न तो उनका दावा है और न ही उनके दावे की आवश्यकता है। हदीस की सही और स्पष्ट व्याख्या वही है जो मैंने पहले प्रस्तुत की है और इमाम तहवी ने भी इसी का समर्थन किया है जैसा कि आप जानते हैं। इमाम ऐनी ने बुखारी की व्याख्या में एक वक्ता की भाषा

में इसका उल्लेख किया है: अर्थात् पहले ऊँट को खुजली किसने दी? यानी खुजली उसमें कहाँ से फैली? यदि आप कहें कि दूसरे ऊँट से, तो यह सिलसिला (अनंत प्रतिगमन) बन जाएगा।

[पाद लेख (Footnotes)] 1. मिरक़ात अल-मफ़ातीह शरह अल-मिश्क़ात, चिकित्सा और झाड़-फूँक की पुस्तक, शगुन और पक्षी शगुन का अध्याय, खंड एक, हबीबिया लाइब्रेरी, क्वेटा, 8/333। 2. अत-तयसीर शरह अल-जामि' अस-सगीर, हदीस "पहले को किसने संक्रमित किया?" के तहत, इमाम शाफ़ई लाइब्रेरी, रियाद, 2/173।

[دایاں کالم - اردو متن] یعنی پہلے آدمی تک کس سے مرض پہنچا یعنی اگر تم یہ سمجھتے ہو کہ اس میں سبب مرض تعدیہ ہے تو پہلے مریض تک کیسے تعدیہ ہوا، اقول: اولاً (میں اولاً کہتا ہوں) دونوں میں فرق ظاہر اور واضح ہے وہ یہ کہ تعدیہ میں علل کے موثر ہونے کا اعتقاد رکھیں اور صرف تعدیہ ہی کو موثر سمجھیں، پس ان سے پہلی شق ثابت ہے نہ کہ دوسری۔ اسی کی مثل علامہ مناوی سے تیسیر میں مذکور ہوا ہے، چنانچہ انہوں نے فرمایا کہ یہ مسکت جوابات میں سے ہے اس لئے کہ اگر امراض میں ایک دوسرے سے کشید ہو تو پھر پہلے مریض کا مرض مفقود ہو جانا چاہئے اس لئے کہ اس کے لئے کوئی جالب نہیں اھ تم جانتے ہو کہ یہ قطعاً لازم نہیں آتا جب تک وہ سلب جلب کے علاوہ کسی سبب کا قول نہ کریں حالانکہ ان کا یہ خیال (زعم) نہیں اور نہ ان کے زعم سے یہ لازم آتا ہے لہذا صحیح، راجح قول وہی ہے جو میں نے پہلے بیان کردیا ہے اور امام طحاوی اسی طرف مائل ہیں جیسا کہ آپ جانتے ہیں، امام عینی نے شرح بخاری میں متکلم کی زبان میں ذکر کیا ہے، چنانچہ فرمایا یعنی پہلے اونٹ کو کس طرح خارش ہوئی، اگر تم کہو کہ دوسرے اونٹ سے، تو تسلسل لازم آئے گا، اگر تم کہو کہ کسی دوسرے سبب سے مرض منتقل ہوا تو اس کا بیان تمہارے

[بایاں کالم - عربی متن] ای ان کنتم ترون ان السبب فی ذلک العدوی لا غیر فمن اعدی الاول، اقول: اولاً بون بین ان یعتقدوا العلل مؤثرۃ فی العدوی وان یعتقدوا العدوی ھی المؤثرۃ وحدھا والثابت عنھم ذلک لاھذا وقد وقع مثل ھذا للمناوی فی التیسیر فقال ھو من الاجوبۃ المسکتۃ اذ لو جلبت الادواء بعضھا بعضاً لزم فقد الدواء الاول لفقد الجالب[1] اھ وانت تعلم انہ غیر لازم اصلا مالم یقولوا بالسبب عند سلب الجلب ولیس ھذا زعمھم ولا لازم زعمھم و الراجح الفصیح فی تفسیر الحدیث ما قدمت والیہ جنح

الامام الطحاوی کما علمت ذکرہ بلسان المتکلم الامام العینی فی شرح البخاری[2] فقال ای من اجرب البعیر الاول یعنی ممن سری الیہ الجرب فان قلت من بعیر اخر یلزم التسلسل

[حواشی] ۱۔ مرقاۃ المفاتیح شرح المشکوۃ کتاب الطب والرقی باب الفال الطیرۃ الفصل الاول مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۸ / ۳۳۳ ۲۔ التیسیر شرح الجامع الصغیر تحت حدیث فمن اعدی الاول مکتبہ الامام الشافعی الریاض ۲ / ۱۷۳

Fatawa Razawiyya, Volume 24

[Arabic Text:] "And if you say it is due to another cause, then you must explain it. And if you say that the one who caused it in the first is the same one who caused it in the second, then the claim is proven—which is that the one who did all this is Allah, the Creator, Who has power over all things. This was the response from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) in the highest state of eloquence and grace. 1 End."

[Urdu Explanation:] "...gives; if you say that the one who afflicted the first with the disease also afflicted the second with the disease, then in this case, our claim will be proven. And that is that He who does all this in everyone is Allah Almighty, who is the Creator and has power over everything. This answer was heard from the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) in an extremely eloquent and beautiful manner. I say: (I say) every word of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) is similarly eloquent, concise, and comprehensive, and why shouldn't it be so when you were blessed with 'Jawami' al-Kalim' i.e., comprehensive words. And there is no necessity or need for the second part mentioned by you in the interpretation because when it is admitted that this effect is not from contagion but due to some other cause, then the matter ends there. Because of this proof that there is another cause for the disease, it is possible that the second patient also contracted the disease due to the same cause. The result is that in this case, the transmission of disease (leprosy) was not proven because there is no evidence present for this claim. And I say: Secondly (and I say secondly) what indication is there in the text 'who infected the first' under every estimation that transmission as an effect is not proven, yes however as a..."

[Arabic Text continued:] "I say: All of his speech (may Allah's peace and blessings be upon him) is like that; how could it not be, when he was given 'Jawami' al-Kalim'? There is no need in the interpretation for the second part you mentioned, because if it is admitted that it is not by contagion but by another cause, then the connection is severed because it is proven that the disease has another cause. So, let the second also be due to that cause, thus contagion is not proven due to the lack of evidence for the claim. And I say: Secondly, on every 'fa' (in the text) there is an indication in 'who infected the first' towards proving contagion habitually, not effectively. He said and explained with his words 'Run from the leper' and with his words 'a sick person should not be brought to a healthy one' that..."

1 'Umdat al-Qari, Book of Medicine, Chapter on Labamah, Idarat al-Tiba'ah al-Muniriyyah, Beirut 21/288. Page 272 of 720

फ़तावा रज़विया, खंड 24

[अरबी पाठ:] "और यदि आप कहें कि यह किसी अन्य कारण से है, तो आपको उसे स्पष्ट करना होगा। और यदि आप कहें कि जिसने पहले में इसे किया, उसी ने दूसरे में भी किया, तो दावा सिद्ध हो गया—और वह यह है कि जो सब में यह सब करता है, वह अल्लाह तआला है जो रचयिता है और हर चीज़ पर समर्थ है। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ओर से यह उत्तर अत्यंत प्रभावशाली और सुंदर शैली में सुना गया है। 1 समाप्त।"

[उर्दू अनुवाद/व्याख्या:] "...देता है; यदि आप यह कहें कि जिसने पहले को रोग लगाया, उसी ने दूसरे को भी रोग में ग्रस्त किया, तो फिर इस स्थिति में हमारा दावा सिद्ध हो जाएगा। और वह यह है कि जो सब में यह सब करता है, वही अल्लाह तआला है जो रचयिता है और हर चीज़ पर समर्थ है। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से यह उत्तर अत्यंत प्रभावशाली और सुंदर ढंग से सुना गया। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलेही वसल्लम का हर शब्द इसी प्रकार सुस्पष्ट, प्रभावशाली और व्यापक है, और ऐसा क्यों न हो जबकि आपको 'जवामे-अल-कलिम' यानी व्यापक शब्दों से नवाज़ा गया। और व्याख्या में आपके द्वारा बताई गई दूसरी बात की कोई आवश्यकता या ज़रूरत नहीं है क्योंकि जब यह स्वीकार कर लिया गया कि यह प्रभाव छूत (संक्रमण) से नहीं बल्कि किसी अन्य कारण से है, तो बात वहीं समाप्त हो गई। इस प्रमाण के कारण कि रोग का कोई दूसरा कारण है, यह संभव है कि दूसरे रोगी को भी उसी कारण से रोग हुआ हो। परिणाम यह कि इस स्थिति में रोग का संक्रमण (कोढ़ का) सिद्ध नहीं हुआ क्योंकि इस दावे पर कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। और मैं दूसरा कहता हूँ कि हर स्थिति में मूल पाठ 'अदी अल-अव्वल' (जिसने पहले को संक्रमित किया) में क्या संकेत है कि संक्रमण एक प्रभाव के रूप में तो सिद्ध नहीं है, हाँ अलबत्ता एक माध्यम के तौर पर..."

[अरबी पाठ जारी:] "मैं कहता हूँ: हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का हर कथन इसी प्रकार है, और क्यों न हो जबकि उन्हें व्यापक वचन दिए गए हैं। और जो दूसरी बात आपने उल्लेख की है उसकी व्याख्या की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यदि यह मान लिया जाए कि यह संक्रमण से नहीं बल्कि किसी अन्य कारण से है, तो संबंध टूट जाता है क्योंकि यह सिद्ध हो गया कि रोग का कोई अन्य कारण है। अतः दूसरे को भी उसी कारण से होना चाहिए, इस प्रकार दावे के साक्ष्य के अभाव में संक्रमण सिद्ध नहीं होता। और मैं कहता हूँ: दूसरा, प्रत्येक 'फ़ा' (पाठ में) पर 'जिसने पहले को संक्रमित किया' में आदतन संक्रमण सिद्ध करने की ओर संकेत है, न कि प्रभाव के रूप में। उन्होंने

अपने शब्दों 'कोढ़ी से भागो' और 'बीमार को स्वस्थ के पास न लाया जाए' के साथ कहा और स्पष्ट किया कि..."

1 उम्दतुल क़ारी, किताबुत्तब, बाब ला बामाह, इदारातुल तिबाअतुल मुनीरिया, बेरूत 21/288। पृष्ठ 272/720

وان قلت بسبب اخر فعليك بيانه وان قلت ان الذی فعله فی الاول هو الذی فعله فی الثانی ثبت المدعی وهو ان الذی فعل فی الجمیع ذلك هو الله الخالق القادر علی کل شیئ وهذا جواب من النبی صلی الله تعالی علیه وسلم فی غایة البلاغة والرشاقة ۱ اه

دیتے ہے، اگر تم یہ کہو کہ جس نے پہلے کو مرض لگایا اسی نے دوسرے کو بھی مرض میں مبتلا کیا، تو پھر اس صورت میں ہمارا دعوی ثابت ہوگا۔ اور وہ یہ ہے کہ جو سب میں یہ کچھ کرتا ہے وہی اللہ تعالیٰ ہے جو خالق ہے ہر چیز پر قادر ہے۔ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے یہ جواب انتہائی درجہ بلیغ اور خوب صورت انداز میں سنا گیا اھ اقول: (میں کہتا ہوں) حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا ہر کلام اسی طرح فصیح و بلیغ اور جامع ہے، اور یہ کیوں کر نہ ہو جبکہ آپ کو جوامع الکلم یعنی جامع کلمات سے نوازا گیا۔ اور تفسیر میں تمہاری بیان کردہ دوسری شق کی کوئی ضرورت اور حاجت نہیں کیونکہ جب اعتراف ہو گیا کہ یہ اثر عدوی سے نہیں بلکہ کسی دوسرے سبب سے ہے تو پھر بات ہی ختم ہوگئی اس ثبوت کی وجہ سے کہ مرض کا کوئی دوسرا سبب ہے تو پھر ہوسکتا ہے کہ دوسرے مریض کو بھی اسی سبب سے مرض لاحق ہوگیا ہو، نتیجہ یہ کہ اس صورت میں تعدیہ مرض (مجذومی) ثابت نہ ہوا کیونکہ اس دعوی پر کوئی دلیل موجود نہیں۔ واقول: ثانیا (اور میں ثانیا کہتا ہوں کہ ہر تقدیر پر متن اعدی الاول میں کونسا اشارہ ہے کہ تعدیہ بطور تاثیر تو ثابت نہیں ہاں البتہ بطور

اقول: کل کلامه صلی الله تعالی علیه وسلم کذلك کیف وقد اوتی جوامع الکلم ولاحاجة فی تفسیر الی ماذکرتم من الشق الثانی فانه اذا اعترف انه لیس بالعدوی بل بسبب اخر فقد انقطع لثبوت ان للمرض سببا اخر فلیکن الثانی ایضا بذلك السبب فلم تثبت العدوی لعدم الدلیل علی الدعوی و اقول: ثانیا علی کل

ففى اشارة فى مَن أعدى الأول الى اثبات العدوى عادة لا تأثيرا، قال وبين بقوله فر من المجذوم وبقوله لا يوردن ذو عاهة على مصح ان

١ عمدة القارى كتاب الطب باب لا بامة ادارة الطباعة المنيرية بيروت ٢١/ ٢٨٨ Page 272 of 720

Vol. 24 Fatawa-e-Razvia

[Arabic Text Section] "Proximity to it is the cause of illness, so one should avoid it as one avoids a leaning wall or a defective ship." 1 I say: Therefore, it was necessary for both the elite and the common people to distance themselves from it. This contradicts what is established from the actions of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and the actions of the Rashidun Caliphs, as well as the Hadith: "Eat with the afflicted." He said: The first group refuted the second group's reasoning from the two Hadiths, stating that the prohibition in them was merely out of compassion for someone engaging in either of the two matters, lest he himself be afflicted with an illness or his camels with a disease, and then he would believe that contagion is a reality. End. I say: Ibn Hajar al-Asqalani chose this view in "Sharh al-Nukhba," and we have discussed it in detail in "Sharh al-Sharh." Its summary is that his avoidance (peace and blessings be upon him) of the leper is attributed to this.

[Urdu Text Section] The habit is established. The aforementioned scholar said: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) stated in his command, "Flee from the leper," and in his command, "Do not bring a sick person to a healthy person," explaining that proximity to it is a cause of illness. Therefore, avoid it as one avoids a falling wall or a broken ship. I say: (I say that) then everyone, common and elite, should stay away from it, whereas this is contrary to the actions of the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and the Rashidun Caliphs, and contrary to the Hadith: "Eat with the afflicted." The aforementioned scholar said: The first group refuted the second group's reasoning regarding the two Hadiths, stating that the prohibition in both is based on compassion, lest one of the two things happen through contact: either he becomes ill himself or some calamity befalls his camels, and then his belief becomes that the transmission of disease is a reality. End. Accordingly, Ibn Hajar al-Asqalani adopted this in "Sharh al-Nukhba," and we have spoken about this in full detail in "Sharh al-Sharh." Its explanation is that this objection arises against them, that the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him)...

1 Mirqat al-Mafatih, Sharh al-Mishkat, Book of Medicine and Ruqyah, Chapter on Omens and Augury, Section One, Maktaba Habibiyah, Quetta, 8/343.

जिल्द 24 फ़तावा-ए-रज़विया

[अरबी पाठ अनुभाग] "उसके पास जाना बीमारी का कारण है, इसलिए उससे वैसे ही बचें जैसे झुकती हुई दीवार और दोषपूर्ण जहाज़ से बचा जाता है।" 1 मैं कहता हूँ: इसलिए विशिष्ट और सामान्य सभी लोगों को उससे दूर रहना अनिवार्य था। यह बात पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और खुलफ़ा-ए-राशिदीन के कार्यों से साबित बातों के विपरीत है, और उस हदीस के भी खिलाफ है: "मुसीबतज़दा के साथ खाओ।" उन्होंने कहा: पहले समूह ने दूसरे समूह की दो हदीसों से दी गई दलीलों को यह कह कर खारिज कर दिया कि उनमें मनाही केवल करुणा के कारण थी कि कहीं इन दो मामलों में से किसी एक के संपर्क में आने से वह स्वयं बीमार न हो जाए या उसके ऊँटों पर कोई बीमारी न आ जाए, और फिर वह यह विश्वास करने लगे कि छुआछूत सत्य है। समाप्त। मैं कहता हूँ: इब्न हज़र अल-असकलानी ने इसे "शरह अल-नुखबा" में चुना है, और हमने "शरह अल-शरह" में इसके बारे में विस्तार से चर्चा की है। इसका सारांश यह है कि कोढ़ी से उनका (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बचना इसी पर आधारित है।

[उर्दू पाठ अनुभाग] आदत स्थापित है। उल्लेखित विद्वान ने कहा: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने आदेश "कोढ़ी से भागो" और अपने आदेश "बीमार व्यक्ति को स्वस्थ व्यक्ति के पास न ले जाओ" में फरमाया कि उसकी निकटता बीमारी का कारण है। इसलिए उससे वैसे ही बचें जैसे गिरती हुई दीवार और टूटी हुई नाव से बचा जाता है। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ कि) फिर तो आम और खास सभी को उससे दूर रहना चाहिए, जबकि यह नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और खुलफ़ा-ए-राशिदीन के कार्यों के विपरीत है, और हदीस "मुसीबतज़दा के साथ खाओ" के भी खिलाफ है। उल्लेखित विद्वान ने कहा: पहले समूह ने दूसरे समूह की दो हदीसों के संदर्भ में दी गई दलीलों का खंडन किया है कि दोनों में मनाही इस करुणा पर आधारित है कि कहीं संपर्क से दो बातों में से एक न हो जाए: कि वह स्वयं बीमार हो जाए या उसके ऊँटों पर कोई आपदा आ जाए, फिर उसका यह विश्वास हो जाए कि बीमारी का फैलना सत्य है। अंतत; इब्न हज़र असकलानी ने इसे "शरह अल-नुखबा" में अपनाया है और हमने "शरह अल-शरह" में इस बारे में पूरी विस्तार से बात की है। इसका स्पष्टीकरण यह है कि उन पर यह आपत्ति आती है कि नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)...

1 मिर्कात अल-मफ़ातीह शरह अल-मिश्कात, किताबुद-तिब्ब वर-रुक़्या, बाबुल-फ़ाल वत-तियरा, फ़स्ल अव्वल, मकतबा हबीबिया क्वेटा, 8/343।

[عربی متن] مداناة ذلك سبب العلة فليتقه اتقائه من الجدار المائل والسفينة المعيوبة ۱ اقول: فاذن كان يجب التباعد عنه على الخواص والعوام وينافيه ماثبت من فعله صلى الله تعالى عليه وسلم وفعل الخلفاء الراشدين وحديث كل مع صاحب البلاء، قال وقد رد الفرقة الاولى على الثانية فى استدلالهم بالحديثين ان النهي فيهما انما جاء شفقاً على مباشرة احد الامرين فتصيبه علة فى نفسه اوعاهة فى ابله فيعتقد ان العدوى حق اهـ قلت وقد اختاره العسقلانى فى شرح النخبة وبسطنا الكلام معه فى شرح الشرح ومجمله انه يرد عليه اجتنابه عليه الصلوة والسلام عن المجذوم

[اردو متن] عادت ثابت ہے۔ علامہ موصوف نے فرمایا حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اپنے ارشاد "جذامی سے دور بھاگو" اور اپنے ارشاد "مصیبت بیماری والے کسی صحتمند تندرست آدمی کے پاس نہ جائیں" میں بیان فرمایا کہ اس کا قرب سبب مرض ہے لہٰذا اس سے اس طرح بچنے جیسے گرنے والی دیوار اور ٹوٹ پھوٹی کشتی سے بچتا ہے اقول: (میں کہتا ہوں کہ) پھر تو اس سے عوام و خواص سب کو دور رہنا چاہئے حالانکہ یہ حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اور خلفائے راشدین کے فعل کے منافی اور خلاف ہے اور حدیث کل مع صاحب البلاء (صاحب مصیبت کے ساتھ کھانا کھاؤ) کے خلاف ہے۔ علامہ موصوف نے فرمایا پہلے فرقہ نے دوسرے فرقہ پر دو حدیثوں کے حوالے سے ان کے استدلال کرنے پر رد کیا ہے کہ دونوں میں نہی اس شفقت پر مبنی ہے کہ کہیں دو باتوں میں سے ایک سے مباشرت ہوجائے کہ وہ خود بیمار ہوجائے یا اس کے اونٹوں پر کوئی آفت آجائے پھر اس کا یہ اعتقاد ہوجائے کہ تعدیہ مرض حق ہے اھ چنانچہ ابن حجر عسقلانی نے اسے شرح النخبة میں اختیار کیا ہے اور ہم نے شرح الشرح میں پوری تفصیل سے اس

بارے میں کلام کیا ہے۔ اس کا محمل بیان یہ ہے کہ ان پر یہ اشکال وارد ہوتا ہے کہ حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ تعالیٰ

۱ مرقاۃ المفاتیح شرح المشکوٰۃ کتاب الطب والرقی باب الفأل والطیرۃ الفصل الاول مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۳۴۳ / ۸

Fatawa Razawiyya - Volume 24

[Arabic Text Section] At the time of intending to take the oath of allegiance (bay'ah), I say: Sufficient and curative reasons have been stated herein, such that in their presence, his (peace and blessings of Allah be upon him) avoidance of him [the leper] is not established in the sense that was recorded. Furthermore, he (peace and blessings of Allah be upon him) would sometimes descend from his high station so that his way could be taken as a precedent (Sunnah). It was said: despite this, it is far from the office of Prophethood to utter words intended to sever the root of the belief in contagion, yet which themselves become a source for that belief. For indeed, commanding avoidance more clearly opens the way for the belief that contagion has a natural effect. I say: Firstly, indeed, what we have stated in the discourse of the prominent scholars who negate [contagion] provides guidance for the answer. Do you not see that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) publicly negated contagion and announced it several times, and cut off its root by his saying: "Then who infected the first one?", and his saying: "Then who gave mange to the first one?", and his saying: "That is destiny."

[Urdu Commentary Section] ...[The Prophet] peace and blessings be upon him avoided that leper at the time of intending the oath of allegiance. I say: (I say that) in this regard, so many reasons have been described that are sufficient and healing; therefore, in their presence, the Holy Prophet's (peace and blessings of Allah be upon him) avoidance of this leper is not established in the sense that was written. Moreover, it should be kept in mind that the Prophet (peace and blessings be upon him) sometimes used to descend from his high station and adopt a certain behavior so that his Sunnah could be established and followed. The mentioned scholar said: Despite this, it is far from the status of Prophethood that he would utter such words to cut off the root of the belief in contagion which itself becomes a root for the belief in contagion. Because commanding to avoid contagion itself increases the exposure of the root of the belief that there is a natural effect for contagion. I say: (I say) firstly, indeed, whatever we have explained in the discourse of the great leading scholars who negate [contagion], it guides and points you towards the answer. Do you not see that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) openly (publicly) negated contagion and announced it several times, and through these statements: "Who infected the first one?", "Who gave mange to the first one?", "That is destiny" (meaning the first...)

1. Mirqat al-Mafatih, Sharh al-Mishkat, Book of Medicine and Ruqyah, Chapter of Omens and Augury, Section 1, Maktabah Habibiyah Quetta, 8/343.
2. Mirqat al-Mafatih, Sharh al-Mishkat, Book of Medicine and Ruqyah, Chapter of Omens and Augury, Section 1, Maktabah Habibiyah Quetta, 8/343.

फ़तावा रज़विया - खंड 24

[अरबी पाठ अनुभाग] बैअत (शपथ) लेने के इरादे के समय, मैं कहता हूँ: इसमें पर्याप्त और उपचारात्मक कारण बताए गए हैं, जिससे उनके रहते हुए हुज़ूर (अल्लाह की उन पर शांति और आशीर्वाद हो) का उनसे परहेज़ उस अर्थ में सिद्ध नहीं होता जो लिखा गया है। इसके अलावा, हुज़ूर (अल्लाह की उन पर शांति और आशीर्वाद हो) कभी-कभी अपने उच्च पद से नीचे उतरते थे ताकि उनकी सुन्नत (परंपरा) स्थापित हो सके। कहा गया: इसके बावजूद, यह नबी के पद से दूर है कि वे छूत के विश्वास की जड़ को काटने के इरादे से ऐसे शब्द कहें, जो स्वयं उस विश्वास के लिए जड़ बन जाएं। वास्तव में, बचने का आदेश देना छूत के प्राकृतिक प्रभाव होने के विश्वास के द्वार को और अधिक स्पष्ट रूप से खोलता है। मैं कहता हूँ: सबसे पहले, वास्तव में हमने छूत का खंडन करने वाले महान विद्वानों के भाषण में जो कुछ बयान किया है, वह आपको उत्तर के लिए मार्गदर्शन देता है। क्या आप नहीं देखते कि नबी (अल्लाह की उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने सार्वजनिक रूप से छूत का खंडन किया और कई बार इसकी घोषणा की, और अपने इन शब्दों से इसकी जड़ काट दी: "तो पहले वाले को किसने संक्रमित किया?", और उनका कहना: "तो पहले वाले को खुजली किसने दी?", और उनका कहना: "वह तक़दीर है।"

[उर्दू व्याख्या अनुभाग] ...[नबी] अलैहिस्सलाम ने उस कोढ़ी से बैअत के इरादे के वक्त परहेज़ फरमाया। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ कि) इसमें इतनी वजहें बयान हुईं जो काफी और शाफी (संतोषजनक) हैं, लिहाजा उनकी मौजूदगी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उस कोढ़ी से परहेज़ उस मायने में साबित नहीं जो तहरीर किया गया। इसके अलावा यह बात ज़हन में रहे कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम कभी-कभी अपने मकाम-ए-रफीअ (उच्च पद) से तन्ज़ुल फरमाकर (नीचे आकर) कोई ऐसा रवैया भी इख्तियार फरमाते हैं कि उससे आपकी सुन्नत कायम हो और उसकी इत्तेबा (अनुसरण) की जाए। अल्लामा मौसूफ़ ने फरमाया इसके बावजूद मन्सब-ए-नुबुव्वत से बईद (दूर) है कि वो ज़न-ए-अदवी (छूत के वहम) के माद्दे को कता करने के लिए ऐसा कलाम फरमाएं जो खुद ज़न-ए-अदवी के लिए माद्दा बन जाए। क्योंकि अदवी से बचने का हुक्म देना खुद माद्दा-ए-ज़न के इंकशाफ़ को ज़्यादा करता है कि अदवी के लिए तबीई तासीर (प्राकृतिक प्रभाव) है। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) अव्वलन बेशक हमने नफी करने वाले बुज़ुर्गों की तक़रीर-ओ-कलाम में जो कुछ बयान किया है वो तुम्हारे लिए जवाब की रहनुमाई और निशानदेही करता है। क्या तुम नहीं देखते कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नफी-ए-अदवी बरसरेआम (खुल्लम-खुल्ला) फरमाई और

मुतअद्दिद (कई) बार इसका ऐलान फरमाया और अपने इन इरशादात से अदी अल-अव्वल, फमन अजरब अल-अव्वल, ज़ालिकुम अल-कद्र (यानी पहले...)

---

1. मिर्कात अल-मफ़ातिह, शरह अल-मिश्कात, किताब अल-तिब्ब वल-रुक़्या, बाबू अल-फाल वल-तियराह, फ़सल अव्वल, मकतबा हबीबिया क्वेटा, 8/343।
2. मिर्कात अल-मफ़ातिह, शरह अल-मिश्कात, किताब अल-तिब्ब वल-रुक़्या, बाबू अल-फाल वल-तियराह, फ़सल अव्वल, मकतबा हबीबिया क्वेटा, 8/343।

[عربی متن] عند ارادة المبایعة ۱ اقول: قدمرفیه من الوجوه ما یکفی و یشفی و لا یثبت معها اجتنابه صلی الله تعالی علیه وسلم عنه بالمعنی الذی رقم، علی انه صلی الله تعالی علیه وسلم ربما کان یتنزل من مرتبته لیستن به، قال مع ان منصب النبوة بعید من ان یورد لحسم مادة ظن العدوی کلاما یکون مادة لظنها ایضاً، فان الامر بالتجنب اظهر فی فتح مادة ظن ان العدوی لها تاثیر بالطبع ۲ اقول: اولا قد قدمنا فی تقریر کلام النفاة السراة ما یرشدك الی الجواب الم تر ان النبی صلی الله تعالی علیه وسلم قد نفی العدوی جهاراً واعلن به مراراً و قطع عرقه بقوله فمن اعدی الاول و قوله فمن اجرب الاول و قوله ذلکم القدر

[اردو شرح] علیہ وآلہ وسلم نے اس جذامی سے ارادہ بیعت کے وقت اجتناب فرمایا اقول: (میں کہتا ہوں کہ) اس میں اتنی وجوہات بیان ہوئیں کہ جو کافی وشافی ہیں لہٰذا ان کی موجودگی میں حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا اس جذامی سے اجتناب اس معنی میں ثابت نہیں جو تحریر کیا گیا، علاوہ ازیں یہ بات ملحوظ رہے کہ حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کبھی کبھی اپنے مقام رفیع سے تنزل فرما کر کوئی ایسا رویہ بھی اختیار فرماتے ہیں کہ اس سے آپ کی سنت قائم ہو اور اس کی اقتداء کی جائے۔ علامہ موصوف نے فرمایا اس کے باوجود منصب نبوت سے بعید ہے کہ وہ ظن عدوی کے مادہ کو قطع کرنے کے لئے ایسا کلام فرمائیں جو خود ظن عدوی کے لئے مادہ بن جائے کیونکہ عدوی سے بچنے کا حکم دینا خود مادہ ظن کے انکشاف کو زیادہ کرتا ہے کہ عدوی کے لئے طبعی تاثیر ہے اقول: (میں کہتا ہوں) اوّلاً بیشک ہم نے نفی کرنے والے افتخار کرنے والے اکابرین کی تقریر کلام میں جو کچھ بیان کیا ہے وہ تمہارے لئے جواب کی رہنمائی اور نشان دہی کرتا ہے کیا تم نہیں دیکھتے کہ حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے نفی عدوی برسرا

عام (کھلم کھلا) فرمائی اور متعدد بار اس کا اعلان فرمایا اور اپنے ان ارشادات سے اعدی الاول، فمن اجرب الاول، ذلکم القدر (یعنی پہلے

---

۱ مرقاۃ المفاتیح شرح المشکوۃ کتاب الطب والرقی باب الفال والطیرۃ الفصل الاول مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۸ / ۳۴۳ ۲ مرقاۃ المفاتیح شرح المشکوۃ کتاب الطب والرقی باب الفال والطیرۃ الفصل الاول مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۸ / ۳۴۳

Fatawa Razawiya - Volume 24

[Arabic Text Portion]: And he propagated it in a clear and well-known manner to everyone until it became transmitted via multiple chains (tawatur) from him, peace and blessings of Allah be upon him, and it spread far and wide, filling the ears and lands. So, what grounds remain for this suspicion after all this intense emphasis? However, since this whisper was removed from the hearts of the believers, the fear remained that due to the absence of this illusion, they would intermingle with those afflicted and not avoid them, while among them are many with weak certainty—rather, they are the majority. Satan circulates within man as blood does, and Allah's command is a decree ordained. Thus, if a calamity strikes someone, the enemy (Satan) casts into his heart that 'this is due to contagion,' and so he flees from his religion even more intensely than he would have fled had he not known that the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, had negated it. His mercy, peace and blessings of Allah be upon him, being kind and merciful to the believers, led him to forbid them from intermingling, because without it, if something happened...

[Urdu Text Portion]: ...how did the transmission of disease occur, who gave the first one scabies? These are matters of destiny.) He eradicated its root and propagated it in such a way that it is famous and well-known among everyone, until this matter reached the level of tawatur (succession) from the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and spread and was published among the people. It was heard well and repeatedly. After such rigorous prohibition, what scope remains for this suspicion? Except that when this whisper was removed from the hearts of the people of faith, the concern remained that they, due to the negation of this suspicion, would start intermingling (mixing) with the afflicted people and would not avoid them, even though many among them are weak in faith. (And the situation is) Satan moves in the human body like blood. Allah's command is certain, so if someone is hit by a calamity, this enemy (Satan) will put this whisper in his heart that all this is the result of contagious effects, i.e., transmission of the disease was its cause. Thus, this person would go further away from his religion than he would have from the afflicted one. If he did not know that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) had negated this contagion, therefore, the mercy of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) who is kind and merciful for the believers, was for this reason that people to patients...

फ़तावा रज़विया - जिल्द 24

[अरबी पाठ अंश]: और उन्होंने इसे सभी के लिए एक स्पष्ट और प्रसिद्ध तरीके से प्रसारित किया, यहाँ तक कि यह उनसे, अल्लाह उन पर कृपा करे और शांति प्रदान करे, तवातुर (निरंतरता) के माध्यम से प्रसारित हुआ और यह दूर-दूर तक फैल गया, कानों और भूमियों को भर दिया। तो, इस गहन स्पष्टीकरण के बाद इस संदेह का क्या आधार रह जाता है? हालांकि, चूंकि मोमिनों के दिलों से यह वसवसा हटा दिया गया था, इसलिए यह अंदेशा बना रहा कि इस भ्रम की अनुपस्थिति के कारण, वे पीड़ित लोगों के साथ मेलजोल करेंगे और उनसे बचेंगे नहीं, जबकि उनमें से कई कमजोर विश्वास वाले हैं—बल्कि, वे बहुसंख्यक हैं। शैतान मनुष्य के भीतर रक्त की तरह दौड़ता है, और अल्लाह का आदेश एक निर्धारित डिक्री है। इस प्रकार, यदि किसी पर कोई विपत्ति आती है, तो दुश्मन (शैतान) उसके दिल में यह डालता है कि 'यह छूत के कारण है,' और इसलिए वह अपने धर्म से और भी अधिक तीव्रता से भागता है, जितना कि वह तब भागता यदि उसे यह ज्ञात नहीं होता कि पैगंबर, अल्लाह उन पर कृपा करे और शांति प्रदान करे, ने इसका खंडन किया था। उनकी दया, अल्लाह उन पर कृपा करे और शांति प्रदान करे, मोमिनों के प्रति दयालु और कृपालु होने के नाते, उन्हें मेलजोल से मना करने के लिए प्रेरित किया, क्योंकि इसके बिना, यदि कुछ हुआ...

[उर्दू पाठ अंश]: ...कैसे रोग का संचार हुआ, पहले वाले को खुजली किसने लगाई? ये तक़दीर की बातें हैं।) इसकी जड़ काट दी और इसका ऐसा प्रचार किया जो सबके यहाँ प्रसिद्ध और ज्ञात है, यहाँ तक कि यह मसला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तवातुर (निरंतरता) की सीमा तक पहुँच गया और लोगों में फैल गया और प्रकाशित हुआ। इसे बार-बार अच्छी तरह सुना गया, फिर इतनी सख़्त पाबंदी के बाद इस गुमान (संदेह) के लिए क्या गुंजाइश बाकी रह जाती है? सिवाय इसके कि जब ईमान वालों के दिलों से इस वसवसे का निवारण कर दिया गया, तो यह अंदेशा बाकी रह गया कि वे इस वहम के अभाव के कारण मुसीबतज़दा लोगों से मेल-जोल रखने लगेंगे और उनसे बचेंगे नहीं, जबकि उनमें कमज़ोर विश्वास वाले लोग अधिक संख्या में हैं। (और स्थिति यह है कि) शैतान मानव शरीर में रक्त की तरह दौड़ता है। अल्लाह का आदेश होकर रहता है, इसलिए यदि किसी पर कोई विपदा आ जाए, तो यह दुश्मन (शैतान) उसके दिल में यह वसवसा डालेगा कि यह सब कुछ संक्रामक प्रभावों का परिणाम है, यानी रोग का संचार इसका कारण बना। तो यह व्यक्ति अपने दीन (धर्म) से उतना ही दूर हो जाएगा जितना वह मुसीबतज़दा व्यक्ति से दूर होने की तुलना में। यदि उसे यह ज्ञात न होता कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस 'अदवा' (छूत) का खंडन किया

है, तो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, जो मोमिनों के लिए रऊफ़ और रहीम हैं, उनकी रहमत का कारण यह हुआ कि लोगों को मरीज़ों...

पेज 275 का 720

فتاوی رضویہ - جلد ۲۴

[عربی عبارت]: وقد بلغه تبليغا واضحا معروفا عند الكل حتى تواتر عنه صلى الله تعالى عليه وسلم وشاع وذاع ملأ الاسماع والبقاع فأي مثار لهذا الظن بعد كل هذا الشدد الشن بيد انه اذ قد ازيدت هذه الوسوسة من قلوب المؤمنين بقيت خشية انهم لانتفاء هذا التوهم يخالطون المبتلين ولايتحامونهم وفيهم ضعفاء اليقين بل هم الاكثرون والشيطان يجرى من الانسان مجرى الدم وكان امر الله قدرا مقدورا فان اصاب احدا شيئ يلقى العدو فى قلبه ان هذا للعدوى فيفر هذا بدينه اشد مما كان يفر لو لم يعلم ان النبي صلى الله تعالى عليه وسلم قد نفاها، فحملته رحمته صلى الله تعالى عليه وسلم من رؤف بالمؤمنين رحيم ان نهاهم عن المخالطة اذ بدونها ان حدث

[اردو عبارت]: میں کیسے تعدیہ مرض ہوا، پہلے کو کس نے خارش لگائی، یہ تقدیر کی باتیں ہیں) اس کی جڑ کاٹ دی اور اس کی ایسی تبلیغ فرمائی جو سب کے ہاں مشہور و معروف ہے یہاں تک کہ یہ مسئلہ حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم سے تواتر (تسلسل) کی حد تک پہنچ گیا ہے اور لوگوں میں پھیلا اور شائع ہوا، اس کی خوب اور بار بار سماعت ہوئی پھر اس شدت بندش کے بعد اس گمان کے لئے کون سی گنجائش باقی رہ جاتی ہے بغیر اس کے کہ جب اہل ایمان کے دلوں سے اس وسوسے کا ازالہ کر دیا گیا تو یہ خدشہ باقی رہ گیا کہ وہ اس انتفائے وہم کے باعث مصیبت زدہ لوگوں سے اختلاط (میل جول) رکھنے لگیں گے اور ان سے احتراز نہ کریں گے حالانکہ ان میں ضعیف الاعتقاد لوگ کثرت سے ہیں (اور حال یہ ہے) شیطان انسانی جسم میں خون کی طرح چلتا ہے۔ اللہ تعالیٰ کا حکم ہو کر رہتا ہے لہذا اگر کسی کو کوئی مصیبت پہنچ گئی تو یہ دشمن (شیطان) اس کے دل میں یہ وسوسہ ڈالے گا کہ یہ سب کچھ متعدی اثرات کا نتیجہ ہے یعنی تعدیہ مرض اس کا سبب بنا تو یہ شخص اپنے دین سے زیادہ دور ہو جائے گا بنسبت مصیبت زدہ سے دور ہونے

کے۔ اگر اسے یہ علم نہ ہوا کہ حضور اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے اس عدوی کی نفی فرمائی ہے، اس لئے حضور اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم جو مومنوں کے لئے رؤوف اور رحیم ہیں کی رحمت اس سبب سے ہوئی کہ لوگوں کو مریضوں

Fatawa Razawiya Volume 24

[Left Column - Arabic Original] ...thing, and refuge is sought with Allah Almighty, so that it does not cause corruption of belief. When the matter in this chapter is as we have described to you, was there any way to close this door other than this elegant way which the Wise and Merciful (peace and blessings of Allah Almighty be upon him) followed? If the command for avoidance according to you is out of compassion for their bodies, then what is the matter with you that you do not permit it out of compassion for their faith? It is for you to be just. Secondly, glory be to Allah, from where did the suspicion of natural influence arise? Has the Lawgiver not forbidden plunging into the causes of destruction? And he (peace and blessings of Allah Almighty be upon him) hurried when he passed by a leaning wall; so is there in this the opening of the door to the suspicion that it acts by its own essence? He said: On every estimation, there is no evidence at all for the negation of contagion based on this, and Allah Almighty knows best. I say: Firstly, if the negation of the genus and the indefinite noun falling within the scope of negation do not denote a general negation, then what denotes it? Rather, there is no evidence for specifying the negation to it being natural. And Allah Almighty knows best. Secondly, it did not appear to me the saying...

[Right Column - Urdu Translation/Explanation] ...forbidden from mixing with them because if an incident were to occur, it should not lead to corruption of belief. And since the matter in this chapter is as we have described for you, is there any other preferred and beautiful way to close this door than the one the Wise and Merciful [Prophet] established and presented to the people? When, according to you, the command to stay separate is due to compassion for physical bodies, then what has happened to you that you do not declare it permissible out of compassion for people's faith? Thus, justice is in your hands. Secondly, O Pure Allah, where did the suspicion of natural influence come from? Did the Lawgiver not forbid entering the causes of destruction? The Prophet (peace and blessings of Allah Almighty be upon him and his family) himself passed quickly by a leaning wall; so does that open the door to the suspicion that the contagion of disease is effective in itself? I say: Firstly, if the negation of the genus and the indefinite noun which is included in the place of negation do not denote a general negation, then what else will denote general negation? Rather, there is no evidence for the specification of the negation of natural contagion. And Allah Almighty knows best. Secondly, for the aforementioned scholar's statement...

[1] Mirqat al-Mafatih Sharh Mishkat, Book of Medicine and Ruqya, Chapter of Omens and Bird Divination, Section One, Maktaba Habibiya Quetta 8/343

फतवा रज़विया खंड 24

[बायां कॉलम - अरबी मूल] ...चीज़, और अल्लाह तआला की पनाह मांगी जाती है, ताकि यह विश्वास के भ्रष्टाचार का कारण न बने। जब इस अध्याय का मामला वैसा ही है जैसा हमने आपको बताया है, तो क्या इस द्वार को बंद करने का इस सुंदर तरीके के अलावा कोई और रास्ता था जिसे हकीम और रहीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने अपनाया? यदि आपके अनुसार बचाव का आदेश उनके शरीरों के प्रति दया के कारण है, तो आपको क्या हो गया है कि आप उनके ईमान पर दया करते हुए इसे अनुमति नहीं देते? आपको न्याय करना चाहिए। दूसरी बात, सुभान अल्लाह, प्राकृतिक प्रभाव का संदेह कहाँ से आया? क्या शरीयत देने वाले (पैगंबर) ने विनाश के कारणों में पड़ने से मना नहीं किया? और उन्होंने (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) जल्दबाजी की जब वे एक झुकती हुई दीवार के पास से गुज़रे; तो क्या इसमें इस धारणा का द्वार खुलना है कि वह अपने आप में प्रभावी है? उन्होंने कहा: हर अनुमान पर, इसके आधार पर संक्रमण के निषेध का कोई प्रमाण नहीं है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। मैं कहता हूँ: पहली बात, यदि जाति का निषेध और निषेध के दायरे में आने वाली अनिश्चित संज्ञा सामान्य निषेध का संकेत नहीं देती है, तो फिर क्या संकेत देगा? बल्कि, निषेध को प्राकृतिक होने तक सीमित करने का कोई प्रमाण नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। दूसरी बात, मुझे उक्त विद्वान का यह कथन प्रतीत नहीं हुआ...

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] ...उनके साथ मेलजोल से मना फ़रमाया क्योंकि यदि कोई दुर्घटना हो गई तो विश्वास का भ्रष्टाचार (फ़साद-ए-इतिकाद) न हो। और जब इस अध्याय में मामला वैसा ही है जैसा हमने आपके लिए वर्णन कर दिया है, तो इस द्वार को बंद करने के लिए क्या कोई और पसंदीदा और सुंदर तरीका है जो हकीम और रहीम ने स्थापित करके लोगों के सामने पेश किया हो? जब आपके पास अलग रहने का आदेश शरीरों पर दया (शफ़क़त अलल अजसाम) की बदौलत है, तो फिर आपको क्या हो गया है कि लोगों के ईमान पर दया करते हुए इसे क्यों जायज़ नहीं ठहराते, अतः न्याय आपके हाथ में है। दूसरी बात, ऐ पाक अल्लाह, प्राकृतिक प्रभाव (तासीर-ए-तबई) का गुमान कहाँ से आया? क्या शरीयत देने वाले ने विनाश के कारणों में घुसने से मना नहीं फ़रमाया? स्वयं हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम) एक गिरने वाली दीवार के पास से तेज़ी से गुज़रे; तो क्या इसमें गुमान का द्वार खुलता है कि बीमारी का संक्रमण (तादिया-ए-मर्ज़) स्वयं प्रभावी होता है। मैं कहता हूँ (अक़ुल): पहली बात, अगर जाति का निषेध (नफ़ी-ए-जिन्स) और अनिश्चित संज्ञा (नकरा) जो निषेध के स्थान में शामिल है (अगर ये दोनों) सामान्य निषेध पर संकेत न करें तो फिर

सामान्य निषेध पर कौन सी चीज़ संकेत करेगी? बल्कि, प्राकृतिक संक्रमण के निषेध के विशिष्टीकरण पर कोई संकेत नहीं है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। दूसरी बात, उक्त विद्वान के इस कथन के बारे में...

---

[1] मिरक़ातुल मफ़ातीह शरह मिश्क़ात, किताबुत तिब वर रुक़्या, बाबुल फ़ाल वत तिरह, अल-फ़सलुल अव्वल, मकतबा हबीबिया क्वेटा 8/343

[بایاں کالم - عربی متن] شیئ والعیاذ باللہ تعالیٰ لا یحدث فساد اعتقاد و اذا کان الامر فی ھذا الباب کما وصفنا لك فھل کان لسد ھذا الباب طریق غیر ھذا الطریق الانیق الذی سلکه الحکیم الرحیم صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم و اذا کان الامر بالتجنب عندکم شفقا علی ابدانھم فما لکم لا تجیزونه شفقا علی ایمانھم علیك بالانصاف، ثانیاً فیا سبحان اللہ من این جاء ظن التأثیر بالطبع الیس قد نھی الشارع عن اقتحام اسباب الھلاك واسرع صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم حین مربجدار مائل فھل فیه فتح باب ظن انھا تؤثر بذاتھا، قال وعلی کل تقدیر فلادلالة اصلا علی نفی العدوی مبنیّا واللہ تعالیٰ اعلم ا قول: اولا ان لم یدل نفی الجنس والنکرة الداخلة فی حیز النفی علی عموم النفی فماذا یدل بل لا دلالة علی تخصیص النفی بکونھا بالطبع واللہ تعالیٰ اعلم وثانیا لم یظھر لی قول

[دایاں کالم - اردو ترجمہ و تشریح] کے ساتھ اختلاط سے منع فرمایا کیونکہ اگر کوئی حادثہ ہو گیا تو فساد اعتقاد نہ ہو اور جب اس باب میں معاملہ یہ ہے جیسا کہ ہم نے تمہارے لئے بیان کر دیا تو اس باب کو بند کرنے کے لئے کوئی اور پسندیدہ اور خوبصورت طریقہ ہے جو حکیم و رحیم نے وضع فرما کر لوگوں کے لئے پیش کیا ہو۔ جب تمہارے نزدیک الگ رہنے کا حکم شفقت علی الاجسام کی بدولت ہے تو پھر تمہیں کیا ہو گیا ہے کہ لوگوں کے ایمان پر رحم کھاتے ہوئے اسے کیوں جائز نہیں قرار دیتے ہو، پس انصاف تمہارے ہاتھ ہے۔ ثانیاً اے اللہ پاک تاثیر طبعی کا گمان کہاں سے آگیا۔ کیا شارع نے اسباب ہلاکت میں گھسنے سے منع نہیں فرمایا، خود حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم ایک گرنے والی دیوار کے پاس سے جلدی گزرے تو کیا اس میں باب ظن کھلتا ہے کہ تعدیہ مرض بالذات موثر ہوتا ہے۔ اقول: (میں کہتا ہوں) اولاً اگر نفی جنس اور نکرہ جو محل نفی میں داخل ہے (اگر یہ دونوں) عموم نفی پر دلالت نہ کریں تو پھر عموم نفی پر کون

سی چیز دلالت کرے گی، بلکہ عدویٰ طبعی کی نفی کی تخصیص پر کوئی دلالت نہیں، واللہ تعالیٰ اعلم۔ وثانیاً علامہ موصوف کے اس قول

---

1 مرقاۃ المفاتیح شرح مشکوۃ کتاب الطب والرقی باب الفال والطیرۃ الفصل الاول مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۳۴۳ / ۸

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Arabic side column] The meaning of his saying 'in every estimation', for under the estimation of the generalization of negation, the indication of it is in the utmost clarity, so reflect. He said: Sheikh al-Turpushti said: 'I see the second saying as the foremost of the two interpretations because of what it contains of reconciliation between the Hadiths reported therein.' I say: Firstly, reconciliation is achieved according to the first saying also as we have clarified, and perhaps for this reason al-Tibi turned away from this reasoning to his saying: 'I see the second saying as foremost because of what it contains of reconciliation between the Hadiths and the medical principles which the Law (Sharia) has presented as considered in a way that does not contradict the principles of Tawhid (Monotheism).' End. I say: We have no need for the application of the Sharia to the principles of philosophical medicine, rather we believe in the Sharia and we run its texts according to their apparent meanings; so if medicine and others agree with it then that is that, otherwise we strike the wall with the contradictory, whatever it may be. And praise be to Allah, Lord of the worlds.

[Urdu main column] The aforementioned scholar said: 'In any case, there is no evidence at all for denying the cause of contagion, and Allah Almighty knows everything best. The meaning of 'in any case' (ala kulli taqdeer) was not clear and manifest to me, because under the assumption of generalizing the negation, there is a very clear and manifest indication of this meaning, so reflect.' The scholar said: 'Sheikh Turpushti said: I consider the second opinion to be the better of the two interpretations because by adopting it, harmony and conformity are achieved among the traditions (Hadiths) reported on this subject.' I say: First, (I say first that) harmony also exists in the first opinion as we have explained. Perhaps for this reason, Allama Tibi turned away from this reasoning towards the statement: 'I consider the second opinion to be better because in it, harmony and conformity are achieved between the reported traditions and the medical principles, because the Sharia has considered the principles and rules of medical science in a way that they do not contradict the principles of monotheism (Tawhid).' I say: (I say) we have no need to make the Sharia and the principles and rules of philosophical medicine conform; rather, we believe in the Sharia and we apply its texts according to their apparent meanings. So, if medicine etc. conforms to the Sharia principles, then it is fine.

1. Mirqat al-Mafatih Sharh Mishkat al-Masabih, Kitab al-Tibb wa al-Ruqya, Bab al-Fal wa al-Tiyara, First Section, Habibia Library Quetta, 8 / 323.
2. Sharh al-Tibi li-Mishkat al-Masabih, Kitab al-Tibb wa al-Ruqya, Bab al-Fal wa al-Tiyara, First Section, Idara-tul-Quran Karachi, 8 / 312.

[अरबी पार्श्व स्तंभ] उसके कथन 'प्रत्येक अनुमान पर' (अला कुल्ली तकदीर) का अर्थ, क्योंकि निषेध के सामान्यीकरण के अनुमान पर, उस पर प्रमाण अत्यंत स्पष्टता में है, अतः विचार करें। उसने कहा: शेख अल-तुरपुश्ती ने कहा: 'मैं दूसरे कथन को दो व्याख्याओं में श्रेष्ठ देखता हूँ क्योंकि इसमें वर्णित हदीसों के बीच सामंजस्य है।' मैं कहता हूँ: सर्वप्रथम, सामंजस्य पहले कथन के अनुसार भी प्राप्त है जैसा कि हमने स्पष्ट किया है, और शायद इसी कारण अल-तीबी इस तर्क से हटकर अपने इस कथन की ओर मुड़े: 'मैं दूसरे कथन को श्रेष्ठ देखता हूँ क्योंकि इसमें हदीसों और उन चिकित्सा सिद्धांतों के बीच सामंजस्य है जिन्हें शरीयत ने इस तरह से विचारणीय माना है कि वे तौहीद (एकेश्वरवाद) के सिद्धांतों के विरोधाभासी न हों।' समाप्त। मैं कहता हूँ: हमें शरीयत को दार्शनिक चिकित्सा के सिद्धांतों पर लागू करने की कोई आवश्यकता नहीं है, बल्कि हम शरीयत पर विश्वास करते हैं और उसके ग्रंथों (नसूस) को उनके प्रत्यक्ष अर्थों पर लागू करते हैं; अतः यदि चिकित्सा और अन्य इसके अनुरूप हों तो ठीक है, अन्यथा जो भी विरोधाभासी हो उसे दीवार पर दे मारेंगे। और प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो जगतों का पालनहार है।

[उर्दू मुख्य स्तंभ] उक्त विद्वान ने कहा: 'किसी भी स्थिति में संक्रमण के कारण होने के निषेध पर कोई प्रमाण नहीं है, और अल्लाह सब कुछ भली-भांति जानता है। 'हर स्थिति में' (अला कुल्ली तकदीर) का अर्थ मुझ पर स्पष्ट और ज़ाहिर नहीं हुआ, क्योंकि निषेध के सामान्यीकरण की स्थिति में इस अर्थ पर बहुत ही स्पष्ट और प्रत्यक्ष संकेत मौजूद है, अतः विचार करें।' विद्वान ने कहा: 'शेख तुरपुश्ती ने कहा: मैं दो व्याख्याओं में से दूसरी राय को बेहतर समझता हूँ क्योंकि इसे अपनाने से इस विषय में वर्णित हदीसों में तालमेल और सामंजस्य हो जाता है।' मैं कहता हूँ: पहली बात (मैं पहले कहता हूँ कि) पहली राय पर भी दोनों में तालमेल मौजूद है जैसा कि हमने वर्णन किया है। शायद इसी कारण से अल्लामा तीबी ने इस तर्क से हटकर यह कहा कि 'मैं दूसरी राय को बेहतर समझता हूँ क्योंकि इसमें वर्णित हदीसों और चिकित्सा के नियमों के बीच तालमेल और सामंजस्य हो जाता है क्योंकि चिकित्सा विज्ञान के सिद्धांतों और नियमों को शरीयत ने इस आधार पर स्वीकार किया है कि वे एकेश्वरवाद (तौहीद) के सिद्धांतों के विरुद्ध न हों।' मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) हमें शरीयत और दार्शनिक चिकित्सा के सिद्धांतों और नियमों में तालमेल बिठाने की कोई आवश्यकता नहीं है, बल्कि हम शरीयत पर विश्वास रखते हैं और उसके ग्रंथों (नसूस) को उनके प्रत्यक्ष अर्थों पर लागू करते हैं। अतः यदि चिकित्सा आदि शरीयत के सिद्धांतों के अनुरूप हो तो ठीक है।

1. मिरक़ातुल मफ़ातीह शरह मिश्कात, किताबुत्तब वरुक़्या, बाबुल फ़ाल वत्तियराह, अल-फ़स्लुल अव्वल, मकतबा हबीबिया क्वेटा, 8 / 323।
2. शरहुत्तीबी लि-मिश्कातुल मसाबीह, किताबुत्तब वरुक़्या, बाबुल फ़ाल वत्तियराह, अल-फ़स्लुल अव्वल, इदारातुल क़ुरआन कराची, 8 / 312।

पृष्ठ २७७ / ७२०

[عربی ضمنی کالم] معنی قوله علی کل تقدیر فان علی تقدیر تعمیم النفی الدلالة علیه في غایة الظهور فلیتأمل. قال قال الشیخ التورپشتی واری القول الثاني اولی التاویلین لمافیه من التوفیق بین الاحادیث الواردة فیه ا اقول: اولا التوفیق حاصل علی القول الاول ایضا کما بینا ولعله لهذا عدل الطیبی عن هذا التعلیل الی قوله اری القول الثاني اولی لما فیه من التوفیق بین الاحادیث و الاصول الطبیة التی ورد الشرع باعتبارها علی وجه لا یناقض اصول التوحید اهـ. اقول: لا حاجة بنا الی تطبیق الشرع بأصول الطب الفلسی بل نؤمن بالشرع و نجری نصوصه علی ظواهرها فان وافقها الطب وغیره فذاك والارمِینا المخالف بالجدار کائناً ما کان والحمد للہ رب العلمین

[اردو مرکزی کالم] علامہ موصوف نے فرمایا بہر تقدیر عدوی کے سبب ہونے کی نفی پر اصلاً کوئی دلالت نہیں اور اللہ تعالیٰ بخوبی سب کچھ جانتا ہے۔ "علی کل تقدیر" کے معنی مجھ پر ظاہر اور واضح نہیں ہوئے، کیونکہ تعمیم نفی کی تقدیر پر تو اس معنی میں بہت واضح اور جلی دلالت موجود ہے پس غور کرو، موصوف نے فرمایا شیخ تورپشتی نے کہا میں دوسرے قول کو دو تاویلوں میں سے زیادہ بہتر خیال کرتا ہوں کیونکہ اس کو اختیار کرنے سے احادیث وارده فی الباب میں موافقت اور مطابقت ہو جاتی ہے اقول: اولاً (میں اولاً کہتا ہوں کہ) قول اول پر بھی دونوں میں موافقت موجود ہے جیسا کہ ہم نے بیان کیا ہے اور شاید اسی وجہ سے علامہ طیبی نے اس تعلیل سے اس قول کی طرف عدول فرمایا کہ میں دوسرے قول کو زیادہ بہتر خیال کرتا ہوں کیونکہ اس میں احادیث وارده اور قواعد طبیہ میں موافقت اور مطابقت ہو جاتی ہے کیونکہ علم طب کے اصول و قواعد کا شریعت نے ایسی وجہ پر اعتبار کیا ہے کہ وہ اصول توحید کے مناقض اور خلاف نہ ہوں اھ اقول: (میں کہتا ہوں) شریعت اور طب فلسفی کے اصول و قواعد میں ہمیں مطابقت کرنے

کی کوئی ضرورت نہیں بلکہ ہم شریعت پر ایمان رکھتے ہیں اور اس کے نصوص کو ظاہر پر جاری کرتے ہیں پس اگر طب وغیرہ شرعی اصولوں کی موافقت کرے تو ٹھیک ہے

---

1 مرقاۃ المفاتیح شرح مشکوۃ کتاب الطب والرقی باب الفال والطیرۃ الفصل الاول مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۸ / ۳۲۳ 2 شرح الطیبی لمشکوۃ المصابیح کتاب الطب والرقی باب الفال والطیرۃ الفصل الاول ادارۃ القرآن کراچی ۸ / ۳۱۲

Fatawa Razawiyya - Volume 24

(Arabic Column Content) And I say: Secondly, rather reconciliation based on the first opinion is more manifest and luminous. For the station of Prophethood is too sublime to use such intense exaggeration in denying a true matter, while guidance towards its affirmation is only through an unclear possibility. Thirdly, rather the truth of reconciliation is confined to what the majority [of scholars] have chosen, because it does not involve turning any of the Hadiths away from their literal meaning or resorting to specific interpretation without an obvious necessity. He [the aforementioned scholar] then said: Because the first opinion leads to the suspension of medical principles, whereas the Shari'ah does not prescribe their suspension but rather confirms them, and consideration is given to them in the manner we have mentioned[1]. I say: We do not concede that the Shari'ah has accepted medicine in all its details. The three eminent scholars—al-Turpishti, al-Tayyibi, and al-Qari—are mere narrators like others, stating that doctors believe in contagion in plague and epidemics. If the Shari'ah had confirmed them...

(Urdu Column Content) ...otherwise they will discard the opposing thing, no matter what it is. And all praise is for God, the Lord of all worlds. I say: Secondly (I say again), agreement and consistency with the first opinion are more manifest and clear. This is because the station of Prophethood is far more magnificent and glorious than to use such exaggeration in denying a true matter, whereas its affirmation could only be guided by something potentially unclear. Thirdly (the third point), rather the correct reconciliation is confined to what the majority of scholars have chosen. This is because it does not involve turning the Prophetic traditions away from their literal meaning or resorting to specific interpretation without an obvious necessity. The aforementioned scholar said: Because the first opinion leads to the invalidation of medical principles, whereas the Shari'ah does not prescribe their invalidation but rather confirms them. Their consideration can be in the manner we have explained. I say: (I say), we do not accept that the Shari'ah has accepted all the details of the science of medicine. Three prominent scholars—Turpishti, Tayyibi, and Mulla Ali Qari—are merely narrators like others, stating that doctors believe in contagion (tad'iyah) in cases of plague and epidemics. If the Shari'ah had confirmed them in this regard, then where...

[1] Mirqat al-Mafatih Sharh Mishkat, Book of Medicine and Incantations, Chapter on Omen and Augury, First Section, Maktaba Habibiyah, Quetta, 8/343. Page 278 of 720

(अरबी कॉलम सामग्री) और मैं कहता हूँ: दूसरा, पहले मत के आधार पर सामंजस्य अधिक प्रकट और स्पष्ट है। क्योंकि नबुवत (पैगंबर का पद) का स्थान इतना महान है कि वह किसी सत्य मामले को नकारने में इतनी तीव्रता से अतिशयोक्ति करे, जबकि इसकी पुष्टि के प्रति मार्गदर्शन केवल उस चीज़ के माध्यम से हो जो संभावित रूप से अस्पष्ट हो। तीसरा, सामंजस्य की वास्तविकता उसी में सीमित है जिसे विद्वानों के बहुमत ने चुना है, क्योंकि इसमें हदीसों को उनके स्पष्ट अर्थ से हटाना नहीं पड़ता और बिना किसी स्पष्ट आवश्यकता के विशिष्ट व्याख्या का सहारा नहीं लेना पड़ता। उन्होंने [उल्लेखित विद्वान ने] फिर कहा: क्योंकि पहला मत चिकित्सा सिद्धांतों के निलंबन की ओर ले जाता है, जबकि शरीयत उनके निलंबन का आदेश नहीं देती है, बल्कि उनकी पुष्टि करती है, और उन पर उस तरीके से विचार किया जाता है जैसा हमने उल्लेख किया है[1]। मैं कहता हूँ: हम यह स्वीकार नहीं करते कि शरीयत ने चिकित्सा को उसके सभी विवरणों में स्वीकार किया है। तीन प्रमुख विद्वान—अल-तोरपुश्ती, अल-तैयबी और अल-कारी—दूसरों की तरह केवल वर्णनकर्ता हैं कि डॉक्टर प्लेग और महामारी में संक्रमण में विश्वास करते हैं। यदि शरीयत ने उनकी पुष्टि की होती...

(उर्दू कॉलम सामग्री) ...वरना वे विरोधी वस्तु को त्याग देंगे, चाहे वह कुछ भी हो। और समस्त प्रशंसा ईश्वर के लिए है, जो सभी लोकों का पालनहार है। मैं कहता हूँ: दूसरा (मैं फिर से कहता हूँ), पहले मत के साथ सहमति और सामंजस्य अधिक प्रकट और स्पष्ट है। ऐसा इसलिए है क्योंकि नबुवत का स्थान इससे कहीं अधिक महान और गौरवशाली है कि वह किसी सत्य मामले को नकारने में इतनी अतिशयोक्ति का उपयोग करे, जबकि इसकी पुष्टि केवल किसी संभावित अस्पष्ट बात से निर्देशित हो सकती हो। तीसरा (तीसरी बात), सही सामंजस्य उसी में सीमित है जिसे विद्वानों के बहुमत ने चुना है। इसका कारण यह है कि इसमें हदीसों को उनके स्पष्ट अर्थ से नहीं हटाना पड़ता और बिना किसी स्पष्ट आवश्यकता के विशेष व्याख्या का सहारा नहीं लेना पड़ता। उपरोक्त विद्वान ने कहा: क्योंकि पहला मत चिकित्सा सिद्धांतों को अमान्य करने की ओर ले जाता है, जबकि शरीयत में उनका अमान्य होना दर्ज नहीं है बल्कि उनकी पुष्टि दर्ज है। उन पर उस तरह से विचार किया जा सकता है जैसा हमने स्पष्ट किया है। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ), हम यह नहीं मानते कि शरीयत ने चिकित्सा विज्ञान के सभी विवरणों को स्वीकार किया है। तीन प्रमुख विद्वान—तोरपुश्ती, तैयबी और मुल्ला अली कारी—दूसरों की तरह केवल वर्णनकर्ता हैं कि डॉक्टर प्लेग और महामारी में संक्रमण का विश्वास रखते हैं। यदि शरीयत इस बारे में उनकी पुष्टि करती, तो फिर जहाँ...

[1] मिरक़ात अल-मफ़ातीह शरह मिशकात, चिकित्सा और झाड़-फूँक की पुस्तक, शगुन और अपशकुन का अध्याय, पहला खंड, मकतबा हबीबिया, क्वेटा, 8/343. पृष्ठ 278 का 720

و اقول: ثانیاً بل التوفیق علی القول الاول اظھر وازھر فان منصب النبوۃ اجل من ان یبالغ في نفی امر حق ھذہ المبالغۃ ولایرشد الی اثباتہ الابامر محتمل غیر بین وثالثاً بل حق التوفیق منحصر فیما اختارہ الجمھور لانہ لیس فیہ صرف شیئ من الاحادیث عن الظاھر و ارتکاب تخصیص من دون ملجئ ظاھر ، قال ثم لان القول الاول یفضی الی تعطیل الاصول الطبیۃ ولم یرد الشرع بتعطیلھا بل ورد باثباتھا والعبرۃ بھا علی الوجہ الذي ذکرناہ[1] اقول: لا نسلم ان الشرع سلم الطب بتفاصیلھا و الافاضل الثلثۃ التورپشتی والطیبی والقاری ھم الناقلون کغیرھم ان الاطباء یعتقدون العدوی في الطاعون والوباء فلو صدقھم الشرع

ورنہ مخالف چیز خواہ کوئی بھی ہواسے پھینک دیں گے، اور تمام خوبیاں خدا کے لئے ہیں جو تمام جہانوں کا پروردگار ہے اقول: ثانیاً (میں دوبارہ کہتا ہوں) بلکہ قول اوّل پر موافقت و مطابقت زیادہ ظاہر اور روشن ہے اس لئے کہ مقامِ نبوت اس سے کہیں زیادہ عظیم و جلیل ہے کہ کسی امرِ حق کی نفی میں وہ اس قدر مبالغہ آمیزی کرے جبکہ اس کے اثبات میں صرف ایسے امر سے راہنمائی ہو سکتی ہو جو محتمل غیر واضح ہے۔ وثالثاً (تیسری بات) بلکہ حق توفیق اس میں منحصر ہے کہ جس کو جمہور اہلِ علم نے اختیار فرمایا کیونکہ اس میں احادیث کو اپنے ظاہری مفہوم سے پھیرنا نہیں پڑتا اور اضطرارِ ظاہری کے بغیر ارتکابِ تخصیص نہیں کرنا پڑتا۔ علامہ موصوف نے فرمایا اس لئے کہ قولِ اول اصولِ طبیہ کے معطل کر دینے تک پہنچا دیتا ہے حالانکہ شریعت میں ان کا تعطل وارد نہیں بلکہ ان کا اثبات وارد ہے ان کا اعتبار اس طریقے پر ہو سکتا ہے جس کو ہم نے بیان کر دیا ہے اقول: (میں کہتا ہوں) ہم یہ نہیں مانتے کہ شریعت نے علمِ طب کی تمام تفصیلات کو تسلیم کیا ہے تین فضلاء تور پشتی طیبی اور ملا علی قاری تو دوسروں کی طرح ناقل

ہیں کہ اطباء طاعون اور وبا میں تعدیہ کا اعتقاد رکھتے ہیں اگر شریعت اس بارے میں ان کی تصدیق کرتی تو پھر جہاں

[1] مرقاۃ المفاتیح شرح مشکوۃ کتاب الطب والرق باب الفال والطیرۃ الفصل الاول مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ

[Arabic Column Text Translation] In that regard, he did not command staying and not leaving from where it occurred because doing so at that time would be like throwing oneself into destruction. He did not consider the one fleeing from it like the one fleeing from the battlefield; rather, he was like one fleeing from a wall about to collapse. Despite this, this matter is narrated from him (peace and blessings of Allah be upon him) through continuous (Mutawatir) reports, and a great reward has been promised for it. Thus, it is known that their claim is false according to Sharia. He only forbade entering it just as he commanded fleeing from a leper, because perhaps one might enter and be afflicted by destiny and then say, "I was infected," or say, "Had I not entered, I would not have been afflicted." Such "if" (law) opens the door for the devil's work—we seek refuge in Allah Almighty. He said, "What supports the validity of what we mentioned is his saying (peace and blessings of Allah be upon him): 'We have taken your oath of allegiance, so return,' and his saying (peace and blessings of Allah be upon him): 'Every trust is in Allah.' There is no way to reconcile these two hadiths except through this perspective: the first explains taking precautions against the causes of destruction, and the second explains reliance (Tawakkul) on Allah, the Exalted."

[Urdu Column Text Translation] When a plague occurs, it would not command people to stay there and not go anywhere else, because that would mean throwing oneself into destruction with one's own hands. Nor would it consider the person fleeing from a plague like someone fleeing from a battle; rather, it is like someone passing quickly by a wall about to collapse. Even though this command is narrated from the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) through continuous reports and a great reward is promised for it, it is known that their view is false in Sharia. Therefore, just as it is forbidden to go near a leper, it is forbidden to go where a plague has broken out, and there is a command to flee from it. This is because if someone goes there and is afflicted by calamity through divine decree and destiny, they might say, "The disease was transmitted to me," or say, "If I hadn't gone there, I wouldn't have been afflicted by the disease." This word "if" (lo) opens the door to Satanic actions; refuge is sought with Allah Almighty. The aforementioned scholar said that what we have stated regarding its validity is supported by the Prophet's (peace and blessings of Allah be upon him) statement: "Go back, we have taken your (verbal) oath of allegiance," and his statement: "Eat (with me) while trusting in Allah."

Thus, there is no way to reconcile these two hadiths except in this manner (and that is that in the first hadith, there is an instruction to avoid the causes of destruction...)

[अरबी कॉलम का अनुवाद] इस संबंध में, उन्होंने वहां ठहरने और बाहर न निकलने का आदेश नहीं दिया जहां यह (प्लेग) हुआ हो, क्योंकि ऐसा करना उस समय अपने आप को विनाश में डालना होगा। उन्होंने इससे भागने वाले को युद्ध से भागने वाले की तरह नहीं माना; बल्कि, वह उस व्यक्ति की तरह था जो गिरने वाली दीवार के पास से भाग रहा हो। इसके बावजूद, यह बात उनसे (अल्लाह के रसूल, उन पर शांति और आशीर्वाद हो) मुतवातिर (निरंतर) रिवायतों के माध्यम से वर्णित है, और इसके लिए महान प्रतिफल का वादा किया गया है। अत; यह ज्ञात हुआ कि शरीयत के अनुसार उनका यह दावा गलत है। उन्होंने वहां प्रवेश करने से केवल उसी तरह मना किया जैसे कोढ़ी से भागने का आदेश दिया गया है, क्योंकि हो सकता है कि कोई वहां प्रवेश करे और तकदीर से मुसीबत में फंस जाए और फिर कहे, "मुझ पर बीमारी का असर हो गया," या कहे, "अगर मैं वहां न जाता, तो बीमार न होता।" और यह शब्द "अगर" (लो) शैतानी काम का दरवाजा खोलता है, अल्लाह की पनाह। उन्होंने कहा, "जो हमने बयान किया उसकी पुष्टि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के इस इरशाद से होती है: 'हमने तुम्हारी बैअत कर ली है, अतः लौट जाओ,' और आपका यह इरशाद: 'अल्लाह पर पूरा भरोसा है।' इन दो हदीसों में सामंजस्य बिठाने का इस तरीके के अलावा और कोई रास्ता नहीं है: पहली हदीस में विनाश के कारणों से बचने की शिक्षा दी गई है, और दूसरी में अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) करने की।"

[उर्दू कॉलम का अनुवाद] जब प्लेग हो जाए, तो वहां लोगों को ठहरने और कहीं बाहर न जाने का आदेश नहीं दिया जाता क्योंकि फिर तो अपने हाथों विनाश में पड़ना होता, और प्लेग से भागने वाले को युद्ध से भागने वाले की तरह करार नहीं दिया जाता बल्कि वह गिरने वाली दीवार के पास से तेज़ी से गुज़रने की तरह होता, बावजूद इसके कि यह हुक्म हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुतवातिर (निरंतर) रिवायत किया गया है और इस पर बड़े इनाम का वादा किया गया है, तो मालूम हुआ कि शरीयत में उनका यह ख़याल बातिल (ग़लत) है। लिहाज़ा जहाँ प्लेग फैल जाए वहाँ जाना वैसे ही मना है जैसे कोढ़ी के पास जाना मना है और उससे भागने का हुक्म है। क्योंकि अगर वहाँ जाने की सूरत में तक़दीर से मुसीबत में पड़ गया तो कहने लगेगा कि मुझ पर बीमारी फैल गई या यूँ कहने लगेगा कि अगर मैं वहाँ न जाता तो बीमार न होता, और यह शब्द "अगर" (लो) शैतानी काम का दरवाज़ा खोलता है, अल्लाह तआला की पनाह। अल्लामा मौसूफ़ ने फ़रमाया कि इसकी हकीकत पर जो कुछ हमने बयान किया है उस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह फ़रमान दलालत करता है कि

"वापस लौट जाओ, हमने तुम्हारी (ज़बानी) बैअत कर ली है", और आपका यह फ़रमान कि "अल्लाह तआला पर भरोसा करते हुए (मेरे साथ) खाओ"। पस इन दो हदीसों में मेल बिठाने का इस तरीके के सिवा और कोई रास्ता नहीं है (और वह यह है कि पहली हदीस में विनाश के कारणों से बचने की ताकीद...)

पेज 279 of 720

[Arabic Column Text] فی ذلك لم یأمر بالثبات وعدم الخروج من حیث وقع لكونه اذ ذاك القاء بالایدی الی التهلكة ولم یجعل الفار منه كالفار من الزحف بل كان كالفار من جدار یرید ان ینقض مع ان هذا الامر متواتر عنه صلی الله تعالی علیه وسلم وقد وعد علیه الاجر العظیم فعلم ان مزعومهم هذا باطل عند الشرع وانما نهی عن الدخول علیه كما امر بالفرار من المجذوم لانه عسی ان یدخل فیبتلی بالقدر فیقول أعدیت او یقول لو لا الدخول لما ابتلیت ومثل "لو" هذه تفتح عمل الشیطان والعیاذ بالله تعالی، قال ویدل علی صحة ما ذكرنا قوله صلی الله تعالی علیه وسلم قد بایعناك فارجع وقوله صلی الله تعالی علیه وسلم كل ثقة بالله ولا سبیل الی التوفیق بین هذین الحدیثین الامن هذا الوجه، بین بالاول التوقی من اسباب التلف، وبالثانی التوكل علی الله جل جلاله

[Urdu Column Text] طاعون واقع ہو جائے، وہاں لوگوں کو ٹھہرنے اور کہیں باہر نہ جانے کا حکم نہ دیتی کیونکہ پھر تو اپنے ہاتھوں ہلاکت میں پڑنا ہوتا، اور طاعون سے بھاگنے والے کو جنگ سے بھاگنے والے کی طرح قرار نہ دیتی بلکہ وہ گرنے والی دیوار کے پاس سے بجلت گزرنے کی طرح ہوتا باوجودیکہ یہ حکم آنحضرت صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے متواتر منقول ہے اور اس پر اجر عظیم کا وعدہ فرمایا گیا ہے، پس معلوم ہوا کہ شریعت میں ان کا یہ خیال باطل ہے لہٰذا جہاں طاعون پھوٹ پڑے وہاں اسی طرح جانا منع ہے جس طرح جذامی کے پاس جانا ممنوع ہے اور اس سے بھاگنے کا حکم ہے اس لئے کہ اگر وہاں جانے کی صورت میں بقضاء وقدر مبتلائے مصیبت ہوگیا تو کہنے لگے گا کہ مجھ پر تعدیہ مرض ہو گیا یا یوں کہنے لگے گا کہ اگر وہاں نہ جاتا تو مبتلائے مرض نہ ہوتا، اور یہ حرف "لو" شیطانی عمل کا دروازہ کھولتا ہے، اللہ تعالٰی کی پناہ۔ علامہ موصوف نے فرمایا اس کی صحت پر جو کچھ ہم نے بیان کیا حضور اکرم

صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا یہ ارشاد دلالت کرتا ہے کہ لوٹ جاؤ ہم نے تمہیں (زبانی) بیعت کر لیا ہے، اور آپ کا یہ ارشاد "اللہ تعالیٰ پر بھروسہ کرتے ہوئے (میرے ساتھ) کھاؤ" پس ان دو حدیثوں میں موافقت کی اس طریقہ کے سوا اور کوئی صورت نہیں (اور وہ یہ ہے کہ پہلی حدیث میں

اسباب ہلاکت سے بچنے کی تلقین

Fatawa Razawiyya, Volume 24

[Main Body - Right Column Translation]: ...was taught, and in the second part, the method of leaving worldly means and relying solely on Allah the Almighty was taught. He is Allah, Whose greatness is immense and besides Whom there is no true deity. And that was a special state of the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him. End [of Turpushti's words]. Mulla Ali Qari said: This is a beautiful, highly investigative collection, and only Allah is the Bestower of Success. I say: (I say) May Allah have mercy on you, you have narrowed down what was expansive and placed an obstacle in it. Undoubtedly, such a collection is apparent and clear, being pure, transparent, bright, and shining, and we have already explained the reasons for its preference...

[Main Body - Left Column Arabic]: ...for Allah, and none other, in abandoning worldly means, and that was his state. End. Meaning the words of al-Turpushti. Al-Qari said: It is a good collection in the ultimate degree of investigation, and Allah is the Grantor of success. (1) I say: May Allah have mercy on you, you have narrowed down what was expansive. For it has become clear and manifest, a collection that is pure, healing, shining, and blooming. We have previously presented the reasons for its preference, and as for what was mentioned regarding the collection, it contains what it contains, as we have mentioned before. For indeed, success is from...

[Footnote section - Left Column Arabic]: Note: This is how it is in my copy of 'al-Mirqat', and accordingly, the pronoun refers to the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him. As for the words of al-Turpushti, they are as follows after his statement regarding 'abandoning means': The first proves the engagement with means, and it is a Sunnah, while the second proves the abandonment of means, and it is a state. End. So, the word 'Halah' (state) ends with the feminine 'ta' (ۃ), not with the pronoun 'ha' (ہ). 12. From the author.

[Footnote section - Right Column Urdu]: In the copy of Mirqat that I have, the text is recorded in this way; therefore, based on this, the pronoun of 'Halah' refers to the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him. As for Turpushti's words, they are like this after his statement 'abandoning means' ..... Thus, from the first Hadith, the use of means is established and it is a Sunnah, while from the second Hadith, proof of abandoning means is found and it is a state. End. So, the word 'Halah' is only with the 'ta' of femininity, not with the 'ha' pronoun. 12. From the author. (T)

[Bottom Reference]: (1) Mirqat al-Mafatih, Sharh Mishkat, Book of Medicine and Ruqya, Chapter on Omens and Augury, First Section, Maktaba Habibiyah, Quetta, 8/343.

फ़तावा रज़विया, खंड 24

[मुख्य भाग - दायां कॉलम अनुवाद]: ...सिखाया गया, और दूसरे में सांसारिक साधनों (अस्बाब) को छोड़कर केवल अल्लाह तआला पर भरोसा और तवक्कुल करने का तरीका सिखाया गया है। वह अल्लाह तआला है जिसकी महिमा बहुत बड़ी है और जिसके बिना कोई और सच्चा पूज्य नहीं है। और वह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की एक विशेष स्थिति (हाल) है। इति (अर्थात तुरपुश्ती की बात पूरी हुई)। मुल्ला अली क़ारी ने कहा: यह एक सुंदर और अत्यंत शोधपूर्ण कार्य का संग्रह है, और अल्लाह तआला ही सफलता देने वाला है। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) अल्लाह तआला आप पर रहम फरमाए, आपने विस्तृत चीज़ को संकुचित कर दिया और उसमें बाधा डाल दी। निःसंदेह ऐसा संग्रह स्पष्ट और ज़ाहिर है जो साफ़, पारदर्शी, उज्ज्वल और चमकता हुआ है, और हम पहले ही इसकी श्रेष्ठता के कारणों का वर्णन कर चुके हैं।

[मुख्य भाग - बायां कॉलम अरबी]: ...अल्लाह के लिए, और उसके अलावा किसी और के लिए नहीं, साधनों को छोड़ने में, और वह उसकी स्थिति थी। इति। यानी अल-तुरपुश्ती की बात। अल-क़ारी ने कहा: यह शोध की पराकाष्ठा में एक अच्छा संग्रह है, और अल्लाह ही सफलता का स्वामी है। (१) मैं कहता हूँ: अल्लाह आप पर रहम फरमाए, आपने विस्तृत को संकुचित कर दिया। क्योंकि यह स्पष्ट और ज़ाहिर हो गया है, एक ऐसा संग्रह जो शुद्ध, आरोग्यकारी, चमकता हुआ और खिला हुआ है। हमने पहले ही इसकी श्रेष्ठता के कारणों को प्रस्तुत किया है, और संग्रह के बारे में जो कुछ उल्लेख किया गया है, उसमें वही है जो उसमें है, जैसा कि हमने पहले बताया है। वास्तव में सफलता अल्लाह की ओर से है...

[पादलेख अनुभाग - बायां कॉलम अरबी]: नोट: मेरी 'अल-मिर्क़ात' की प्रति में ऐसा ही है, और इसके अनुसार सर्वनाम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ओर लौटता है। जहाँ तक अल-तुरपुश्ती की बात है, तो वह 'साधनों के परित्याग' के बारे में उनके कथन के बाद इस प्रकार है: पहला साधनों के उपयोग को सिद्ध करता है, और वह सुन्नत है, जबकि दूसरा साधनों के परित्याग को सिद्ध करता है, और वह एक 'हालत' (स्थिति) है। इति। अतः शब्द 'हालत' केवल स्त्रीलिंग 'ता' (ة) के साथ है, न कि 'हा' (ه) सर्वनाम के साथ। १२। लेखक की ओर से।

[पादलेख अनुभाग - दायां कॉलम उर्दू]: मेरे पास जो मरक़ाह का नुस्खा है उसमें इबारत इसी तरह दर्ज है; पस इस बिना पर 'हालह' की ज़मीर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तरफ़

रहा तो रहा पेशती का कलाम، तो وہ اس کے قول 'متارکۃ الاسباب' کے بعد اس طرح اتی ہے लौट आती है..... पस हदीस-ए-अव्वल से अस्बाब का इस्तेमाल साबित हुआ और वो सुन्नत है जबकि दूसरी हदीस से तर्कए-अस्बाब का सुबूत मिला और वो एक हालत है। इति। पस लफ़्ज़ 'हालत' सिर्फ़'ता' तानीस के साथ है न कि 'हा' ज़मीर के साथ। १२। लेखक की ओर से। (त)

[नीचे का संदर्भ]: (१) मिर्क़ुतुल मफ़ातीह, शरह मिश्कात, चिकित्सा और झाड़-फूंक की किताब, शगुन और अपशकुन का अध्याय, पहला खंड, मकतबा हबीबिया, क्वेटा, ८/३४३।

[دائیں کالم کا متن]: فرمائی گئی اور دوسری میں اسباب کو چھوڑ کر محض اللہ تعالیٰ پر بھروسہ اور توکل کرنے کا طریقہ سکھایا گیا ہے وہ اللہ تعالیٰ کہ جس کی بزرگی بہت بڑی ہے اور اس کے بغیر کوئی اور معبود برحق نہیں ، اور وہ حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا ایک خصوصی حال ہے اھ یعنی تورپشتی کا کلام مکمل ہو گیا۔ ملا علی قاری نے فرمایا وہ ایک خوبصورت انتہائی تحقیقی کام جمع ہے اور اللہ تعالیٰ ہی توفیق کا مالک ہے اقول : (میں کہتا ہوں) اللہ تعالیٰ تم پر رحم فرمائے تم نے تو کشادہ کو تنگ کر ڈالا اور اس میں رکاوٹ ڈال دی بلاشبہ ایسی جمع ظاہر اور واضح ہے جو صاف، شفاف، روشن اور چمکدار ہے اور ہم نے پہلے ہی اس کی وجوہ ترجیح بیان کر دی ہیں،

[بائیں کالم کا عربی متن]: ولاللہ غیرہ في متارکة الاسباب وھو حالہ عھ اھ ای کلام التورپشتی قال القاری ھو جمع حسن في غایة التحقیق واللہ ولی التوفیق ۱ اقول : رحمك اللہ لقد حجرت واسعاً فقد بان وظھر جمع صاف شاف لمع وزھر وقدمنا وجوہ ترجیحہ وما ذکر من الجمع ففیہ ما فیہ کما اسلفنا، فان التوفی من

[بائیں کالم کا حاشیہ - عربی]: عھ : کذا فی نسختی المرقاة وعلیہ فالضمیر لرسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اما کلام التورپشتی فھکذا بعد قولہ متارکة الاسباب یثبت بالا ول التعرض للاسباب وھو سنة وبالثانی ترك الاسباب وھو حالة اھ فالحالة بتاء التانیث لابھاء الضمیر ۱۲ منہ۔

[دائیں کالم کا حاشیہ - اردو]: میرے پاس جو مرقاہ کا نسخہ ہے اس میں عبارت اسی طرح درج ہے پس اس کی بنا پر حالہ کی ضمیر حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی طرف لوٹتی ہے ، رہا

تورپشتی کا کلام تو وہ اس کے قول متارکۃ الاسباب کے بعد اس طرح ہے----- پس حدیث اول سے اسباب کا استعمال ثابت ہوا اور وہ سنت ہے جبکہ دوسری حدیث سے ترک اسباب کا ثبوت ملا اور وہ ایک حالت ہے اھ ، پس لفظ حالۃ صرف "تا" تانیث کے ساتھ ہے نہ کہ "ہ" ضمیر کے ساتھ ۱۲منہ۔ (ت)

[نیچے کا حوالہ]: ۱ مرقاۃ المفاتیح شرح مشکوۃ کتاب الطب والرقی باب الفال والطیرۃ الفصل الاول مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۸/ ۳۴۳

Fatawa Razawiya, Volume 24

(Arabic Text Column) Avoiding the causes of destruction is mandatory for all people; the elite are not exempt from it. Trust in Allah (Tawakkul) does not mean abandoning the causes, nor is it contrary to wisdom, nor is it boldness against them. Rather, it is removing the reliance on causes from the heart while utilizing what is beneficial and avoiding what is harmful, and limiting the gaze to the Creator of causes (the Causer), may He be exalted. "Tether it (the camel) and trust in Allah." Then Al-Qari said regarding the saying of the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, "And flee from the leper": It has already been mentioned that this is a concession for the weak, while leaving it (not fleeing) is permissible for the strong, based on leprosy being among the infectious diseases... etc. I say: I see the statements of both those who negate and those who affirm are unanimously agreed that the command for precaution is for those with weak certainty, whereas the hadith "Every one who trusts in Allah" and "Everyone who is with the person in affliction" and similar ones are for the perfect ones. This has also been explicitly mentioned in Al-Maqasid al-Hasana, At-Taysir, and others. And this is also among the primary evidence for the correctness...

(Urdu Text Column) As for the combination mentioned here, it contains what it contains, as we have explained. Because avoiding the causes of destruction is mandatory for all people, therefore the elite are not exempt from it. Neither is trust (Tawakkul) the abandonment of causes or daring against them, nor is it against wisdom. Instead, taking the causes out of the heart, adopting beneficial things, and avoiding harmful matters, while keeping the gaze fixed only on Allah Almighty (who is the Causer of causes) and observing His constraints is trust in Allah. Then Mulla Ali Qari said under the noble saying of the Holy Prophet (may Allah bless him and his family and grant them peace) "Flee from the leper": Undoubtedly it has been mentioned before that this is a concession for the weak, while for strong persons leaving it is permissible, on the basis that leprosy is among the infectious diseases... etc. I say: (I say) the words of those who negate and affirm are agreed on this, that the command to avoid and refrain is for people of weak faith. And the hadith "Eat while having trust and reliance on Allah" and "Eat and drink with the person in affliction", the description of these two hadiths and other similar ones is for the

perfect ones. Accordingly, in Maqasid-e-Hasana, Taysir and besides these two, other books have explicitly stated this matter and this too is of negation...

1. Mirqat al-Mafatih Sharh Mishkat, Book of Medicine and Ruqya, Chapter on Omens and Augury, First Section, Maktaba Habibiya Quetta 8/345.

फ़तावा रज़विया, खंड 24

(अरबी पाठ स्तंभ) विनाश के कारणों से बचना सभी लोगों के लिए अनिवार्य है; विशिष्ट जन इससे मुक्त नहीं हैं। अल्लाह पर भरोसा (तवक्कुल) का अर्थ कारणों को त्यागना नहीं है, न ही यह बुद्धिमत्ता के विरुद्ध है, और न ही उनके प्रति ढिठाई है। बल्कि, यह हृदय से कारणों पर निर्भरता को निकाल देना है जबकि लाभदायक वस्तुओं का उपयोग करना और हानिकारक चीजों से बचना है, और अपनी दृष्टि को केवल कारणों के रचयिता (मुसब्बिक़), जो महान और उच्च है, पर सीमित रखना है। "उसे (ऊंट को) बांधो और अल्लाह पर भरोसा करो।" फिर अल-क़ारी ने पैगंबर (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) के कथन "और कोढ़ी से भागो" के संदर्भ में कहा: यह पहले ही उल्लेख किया जा चुका है कि यह कमज़ोरों के लिए एक रियायत है, जबकि मज़बूत लोगों के लिए इसे छोड़ना (न भागना) जायज़ है, इस आधार पर कि कुष्ठ रोग संक्रामक रोगों में से है... इत्यादि। मैं कहता हूँ: मैं देखता हूँ कि नकारने वालों और पुष्टि करने वालों दोनों के शब्द सर्वसम्मति से इस बात पर सहमत हैं कि सावधानी बरतने का आदेश उन लोगों के लिए है जिनका विश्वास कमज़ोर है, जबकि हदीस "प्रत्येक जो अल्लाह पर भरोसा करता है" और "प्रत्येक जो विपत्ति में घिरे व्यक्ति के साथ है" और इसी तरह की अन्य हदीसें पूर्णता प्राप्त (कामिलीन) लोगों के लिए हैं। इसका स्पष्ट उल्लेख अल-मक़ासिद अल-हसना, अत-तयसीर और अन्य में भी किया गया है। और यह भी शुद्धता के प्राथमिक साक्ष्यों में से एक है...

(उर्दू पाठ स्तंभ) जहाँ तक यहाँ वर्णित मिलाप का प्रश्न है, तो उसमें वही है जो है, जैसा कि हमने स्पष्ट किया है। क्योंकि विनाश के कारणों से बचना सभी लोगों पर अनिवार्य है, इसलिए विशिष्ट जन इससे मुक्त नहीं हैं। और न ही तवक्कुल कारणों का परित्याग है और उन पर साहस करना है, और न ही वह हिकमत (बुद्धिमत्ता) के विरुद्ध है। बल्कि कारणों को दिल से निकाल देना और लाभ पहुँचाने वाली चीज़ को अपनाना और नुकसान पहुँचाने वाले मामलों से बचना और निगाह को केवल अल्लाह तआला (जो कारणों का कारण है) पर केन्द्रित रखना और उसकी पाबंदियों को ध्यान में रखना अल्लाह पर तवक्कुल है। फिर मुल्ला अली क़ारी ने हुज़ूर अकरम (उन पर अल्लाह तआला की शांति और उनकी संतान पर सलाम हो) के पवित्र कथन "कोढ़ी से भागो" के अंतर्गत कहा: निस्संदेह यह पहले गुज़र चुका है कि यह कमज़ोरों के लिए छूट है, जबकि मज़बूत व्यक्तियों के लिए इसे छोड़ना जायज़ है, इस आधार पर कि कोढ़ की बीमारी संक्रामक रोगों में से है... इत्यादि। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) नकारने और पुष्टि करने वालों के शब्द इस पर सहमत हैं कि बचने और परहेज़ करने का

आदेश कमज़ोर विश्वास वाले लोगों के लिए है। और हदीस "अल्लाह तआला पर भरोसा और विश्वास रखते हुए खाओ" और "मुसीबत वाले के साथ खाओ पियो", इन दो हदीसों और इनके जैसी अन्य हदीसों का वर्णन कामिलीन (पूर्णता प्राप्त लोगों) के लिए है। चुनाँचे मक़ासिद-ए-हसना, तयसीर और इन दो के अलावा अन्य किताबों में इस बात की स्पष्ट व्याख्या कर दी गई है और यह भी नकारने...

1. मिरक़ात अल-मफ़ातीह शरह मिश्क़ात, चिकित्सा और रुक़्या की किताब, शगुन और अपशकुन का अध्याय, पहला खंड, मकतबा हबीबिया क्वेटा 8/345।

पृष्ठ 281 का 720

(عربی متن کا کالم) اسباب التلف واجب علی الناس جمیعا لا یستثنی من الخواص ولیس التوکل ترک الاسباب ولا مضادۃ الحکمۃ ولا الاجتراء علیھا بل اخراج الاسباب عن القلب مع تعاطی النافع وتحامی الضار وقصر النظر علی المسبب جل وعلا قیدھا وتوکل علی اللہ، ثم قال القاری تحت قولہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم وفر من المجذوم وقد تقدم ان ھذا رخصۃ للضعفاء وترکہ جائز للا قویاء بناء علی ان الجذام من الامراض المعدیۃ الخ اقول: اری کلمات النافین والمثبتین جمیعا مطبقۃ علی ان الامر بالتقی لضعفاء الیقین وحدیث کل ثقۃ باللہ وکل مع صاحب البلاء وامثالھا للکاملین صرح بہ ایضا فی المقاصد الحسنۃ والتیسیر وغیرھما وھذا ایضا من اول دلیل علی صحۃ

(اردو متن کا کالم) رہی وہ جمع جس کا یہاں ذکر کیا گیا تو اس میں وہ کچھ ہے جو ہے جیسا کہ ہم نے بیان کردیا کیونکہ اسباب ہلاکت سے بچنا سب لوگوں پر واجب ہے لہٰذا اس سے خواص مستثنٰی نہیں اور نہ تو کل ترک اسباب اور ان پر جرات کرنا نہیں اور نہ وہ حکمت کے خلاف ہے بلکہ اسباب کو دل سے نکال دینا اور فائدہ بخش چیز کو لینا اور ضرر رساں امور سے بچنا اور نگاہ کو صرف اللہ تعالٰی جل وعلا (جو مسبب الاسباب ہے) پر روک رکھنا اس کی قیود کو ملحوظ رکھنا توکل علی اللہ ہے پھر ملا علی قاری نے حضور اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کے ارشاد گرامی "مجذوم سے بھاگو" کے ذیل میں فرمایا بلا شبہ پہلے گزر چکا ہے کہ یہ کمزوروں کے لئے رخصت ہے جبکہ قوی حضرات کے لئے اس کا چھوڑنا جائز ہے اس بنا پر کہ مرض جذام متعدی امراض میں سے ہے الخ اقول: (میں کہتا ہوں) نفی اور اثبات کرنے والوں کے کلمات اس پر متفق ہیں کہ بچنے اور پر ہیز کرنے کا حکم ضعیف الاعتقاد لوگوں کے لئے ہے اور حدیث "اللہ تعالٰی پر اعتماد وبھروسہ رکھتے ہوئے کھاؤ" اور "صاحب مصیبت کے ساتھ کھاؤ پیو" ان دو

حدیثوں اور ان جیسی دیگر حدیثوں کا بیان کاملین کے لئے ہے۔ چنانچہ مقاصد حسنہ، تیسیر اور ان دو کے علاوہ دیگر کتب میں اس بات کی تصریح کردی گئی ہے اور یہ بھی نفی کرنے

۱ مرقاۃ المفاتیح شرح مشکوۃ کتاب الطب والرقی باب الفال والطیرۃ الفصل الاول مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۸/ ۳۴۵

Fatawa Rizvia Volume 24

| (Arabic Text): The statement of those who negate [contagion] is the first evidence for the correctness of their view because, in customary causes, the strong and the weak are equal and similar. Thus, this agreement and correspondence with the view of those who affirm [it] is clear because, according to them, in reality, there is no transmission in any disease. However, there is a risk and concern that if someone becomes afflicted with a disease by Divine decree, they might fall into the delusion of contagion. (As for those) who are true believers and have complete faith and trust in their Lord, there is no such fear or concern for them. May Allah Almighty, through His grace and mercy which is upon them, also bless us and include us among those people, Ameen! | This is the first argument for the correctness of the statement of those who deny [contagion], because in customary causes, the strong and weak are equal. Therefore, the alignment and agreement with the statement of those who affirm [contagion] is clear because, according to them, there is no actual transmission in any disease. Yes, however, they maintain a fear and concern that if a person becomes afflicted with a disease due to Divine destiny, they might fall into the delusion of contagion. (As for those personages) who are true believers and have complete certainty and trust in their Lord, they have no such fear or concern. May Allah Almighty, with His grace and mercy that is upon them, also bestow upon us and include us among those people, Ameen! (T) |

In short, the reliable, correct, predominant, and sound doctrine is that leprosy, itch, smallpox, plague, etc., do not actually spread from one person to another at all. These are merely groundless delusions. If someone nurtures a delusion, it sometimes becomes a reality, as it has been stated: "I am as My servant thinks of Me." It wasn't that the other person's disease spread to him, but rather his own internal disease, bred of delusion, took shape and manifested. It is stated in Fayd al-Qadir:

| Rather, delusion alone is one of the greatest causes of affliction. -2 | Rather, delusion alone is the greatest cause among the causes of affliction. (T) |

For this reason, and also to avoid dislike, harm, self-conceit, and contempt for the leper, and also with the foresight that something might occur to him and the accursed Iblis (Satan) might cast a whisper that "look, the disease has spread to me," and now, God forbid, the truth of this matter which Mustafa (may Allah Almighty send peace and blessings upon him) has already invalidated would be in jeopardy;

this would be a disease worse than the disease itself. For these reasons, the Wise and Merciful Shari'ah has given a recommended command to people of weak faith to stay away from it.

---

1 Musnad Imam Ahmad bin Hanbal from Abu Hurayra (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami Beirut 2/315 2 Fayd al-Qadir Sharh al-Jami' al-Saghir under Hadith 121, Dar al-Ma'rifah Beirut 1/713

फतवा रज़विया जिल्द 24

| (अरबी पाठ): नकारने वालों (तअदिया का इनकार करने वालों) का कथन उनके कथन की सत्यता का पहला प्रमाण है क्योंकि सामान्य कारणों में शक्तिशाली और कमजोर बराबर और समान होते हैं। इसलिए, पुष्टि करने वालों के कथन के साथ यह सहमति और सामंजस्य स्पष्ट है क्योंकि उनके अनुसार वास्तव में किसी भी बीमारी में छूत (तअदिया) है ही नहीं। हाँ, अलबत्ता इस बात का खतरा और अंदेशा रहता है कि यदि कोई व्यक्ति ईश्वरीय नियति (तक़दीर) के आधार पर बीमारी में ग्रस्त हो जाए, तो उसे छूत का भ्रम (वहम) हो जाएगा। (रहा उन महानुभावों का मामला) जो सच्चे मोमिन हैं और अपने पालनहार पर पूर्ण विश्वास और भरोसा रखते हैं, तो उन्हें इस प्रकार का कोई डर या चिंता नहीं है। अल्लाह तआला अपने अनुग्रह और दया से जो उन पर है, हमें भी नवाज़े और उन लोगों में शामिल करे, आमीन! | नकारने वालों के कथन की सत्यता पर यह पहला प्रमाण है क्योंकि सामान्य कारणों में शक्तिशाली और कमजोर बराबर और समान होते हैं। इसलिए, पुष्टि करने वालों के कथन से यह सहमति और सामंजस्य स्पष्ट है क्योंकि उनके अनुसार वास्तव में किसी भी बीमारी में छूत (तअदिया) है ही नहीं। हाँ, अलबत्ता इस बात का खतरा और अंदेशा रखते हैं कि यदि कोई व्यक्ति ईश्वरीय नियति (तक़दीर) के आधार पर बीमारी में ग्रस्त हो जाए, तो उसे छूत का भ्रम हो जाएगा। (रहा उन महानुभावों का मामला) जो सच्चे मोमिन हैं और अपने पालनहार पर पूर्ण विश्वास और भरोसा रखते हैं, तो उन्हें इस प्रकार का कोई डर या अंदेशा नहीं है। अल्लाह तआला अपने अनुग्रह और दया से जो उन पर है, हमें भी नवाज़े और उन लोगों में शामिल करे, आमीन! (त) |

संक्षेप में, विश्वसनीय, सही, प्रबल और ठोस मत यही है कि कोढ़ (जुज़ाम), खुजली, चेचक, प्लेग आदि मूलतः कोई भी बीमारी एक से दूसरे को कतई नहीं लगती। ये मात्र निराधार भ्रम (वहम) हैं। यदि कोई भ्रम पाले रखे तो कभी-कभी वह वास्तविकता बन जाता है, जैसा कि कहा गया है: "मैं अपने बंदे के गुमान (सोच) के अनुसार उसके साथ होता हूँ।" (त) उस दूसरे व्यक्ति की बीमारी उसे नहीं लगी, बल्कि उसकी अपनी ही आंतरिक बीमारी, जो भ्रम की पाली हुई थी, एक रूप लेकर प्रकट हो गई। 'फ़ैज़ अल-क़दीर' में है:

| बल्कि अकेला भ्रम ही रोग लगने के सबसे बड़े कारणों में से एक है। -2 | बल्कि अकेला भ्रम ही, रोग पहुँचने के कारणों में सबसे बड़ा कारण है। (त) |

इसलिए और साथ ही घृणा, कष्ट, अहंकार और कोढ़ी को तुच्छ समझने से बचने के लिए, और इस दूरदर्शिता से भी कि कहीं ऐसा न हो कि उसके मन में कुछ पैदा हो जाए और शापित इब्लीस (शैतान) वसवसा (कुविचार) डाल दे कि "देखो, बीमारी उड़कर लग गई" और अब, अल्लाह न करे, उस बात की सच्चाई खतरे में पड़ जाए जिसे मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) पहले ही असत्य घोषित कर चुके हैं; यह उस बीमारी से भी बदतर बीमारी होगी। इन कारणों से, हकीम और रहीम शरीयत ने कमज़ोर यक़ीन वाले लोगों को एक मुस्तहब (सिफारिशी) आदेश दिया है कि वे इससे दूर रहें।

---

1 मसनद इमाम अहमद बिन हंबल, अबू हुरैरा (रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु) से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत 2/315 2 फ़ैज़ अल-क़दीर शरह अल-जामी अल-सगीर, हदीस 121 के तहत, दार अल-मआरिफ़ा बेरूत 1/713

| قول النفاة فان الاسباب العادیة یستوی فیها الاقویاء والضعفاء فلا یلتئم هذا علی قول المثبتین اما علی قول النفاة واضح انه لاعدوی حقیقة وانما الخشیة ان یتوهمها من ابتلی بقدر وهذا لایخشی منه علی الذین امنوا وعلی ربهم یتوکلون جعلنا اللہ تعالی منهم بفضل رحمته بهم آمین! | والوں کے قول کی صحت پر پہلی دلیل ہے کیونکہ عادی اسباب میں قوی اور ضعیف برابر اور مساوی ہوتے ہیں لہٰذا اثبات کرنے والوں کے قول سے یہ موافقت اور مطابقت واضح ہے کیونکہ ان کے نزدیک تو در حقیقت کسی مرض میں تعدیہ ہے ہی نہیں، ہاں البتہ اس بات کا خطرہ و اندیشہ رکھتے ہیں کہ اگر کوئی شخص تقدیر الہی کی بنا پر مرض میں مبتلا ہو جائے تو اسے تعدیہ کا وہم ہو جائے گا۔ (رہا ان حضرات کا معاملہ) جو سچے مومن اور اپنے پروردگار پر کامل یقین و بھروسہ رکھتے ہیں تو ان سے اس قسم کا خوف اور خدشہ نہیں۔ اللہ تعالٰی اپنے فضل و رحمت سے جوان پر ہے، ہمیں بھی نوازے اور ان لوگوں میں شامل فرمائے، آمین! (ت) |

بالجملہ مذہب معتمد و صحیح و راجح و صیح یہ ہے کہ جذام، کھجلی، چیچک، طاعون وغیرہ اصلاً کوئی بیماری ایک کی دوسرے کو ہر گز ہر گز اڑ کر نہیں لگتی، یہ محض اوہام بے اصل ہیں کوئی وہم پکائے جائے تو کبھی اصل بھی ہو جاتا ہے کہ ارشاد ہوا ہے: "انا عند ظن عبدی بی" (میں اپنے بندے کے گمان کے مطابق اس کے پاس ہوتا ہوں۔ت) وہ اس دوسرے کی بیماری اسے نہ لگی بلکہ خود اسی کی باطنی بیماری کہ وہم پرورده تھی صورت پکڑ کر ظاہر ہو گئی۔ فیض القدیر میں ہے:

| بل الوهم وحده من اکبر اسباب الاصابة ۲- | بلکہ اکیلا وہم ، اسباب رسائی میں سے سب سے بڑا سبب ہے۔ (ت) |

اس لئے اور نیز کراہت واذیت وخود بینی و تحقیر مجذوم سے بچنے کے واسطے اور نیز اس دوراندیشی سے کہ مبادا اسے کچھ پیدا ہو اور ابلیس لعین وسوسہ ڈالے کہ دیکھ بیماری اڑ کر لگ گئی اور اب معاذ اللہ اس امر کی حقانیت اس کے خطرہ میں گزرے گی جسے مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم باطل فرما چکے یہ اس مرض سے بھی بدتر مرض ہوگا ان وجوہ سے شرع حکیم ورحیم نے ضعیف الیقین لوگوں کو حکم استحبابی دیا ہے کہ اس سے دور رہیں۔

---

1 مسند امام احمد بن حنبل عن ابی ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۲/ ۳۱۵ 2 فیض القدیر شرح الجامع الصغیر تحت حدیث ۱۲۱ دار المعرفة بیروت ۱/ ۷۱۳

Fatawa-e-Razvia Volume 24

And for the servants of God with perfect faith, there is no harm, as they are pure from all these evils. Let it be well understood that the command to stay away is due to these wisdoms, and not that, God forbid, the disease will spread by touch; for Allah and His Gracious Messenger, may Allah the Almighty's peace and blessings be upon him, have already stated this. I say: (furthermore) since this command is a precautionary and recommended one, it is not obligatory, as we have already presented from Nawawi on the authority of Qazi from the majority of scholars. (As we have previously mentioned the opinion of the majority of scholars through Imam Nawawi via Qazi Iyad. T) It will never conflict with any Shar'i obligation. For example, God forbid, if someone is afflicted with this, and their children, relatives, and wife all run away from them due to this precaution and leave them alone and neglected, this is absolutely not permissible. In fact, a wife cannot even refuse him intimacy. Therefore, according to our two Shaykhs [Imam Abu Hanifa and Imam Abu Yusuf], may Allah be pleased with them, a woman does not have the right to request the annulment of marriage from a leper husband. And God-fearing people consider it their duty to help every helpless and friendless person. It is in the Hadith that the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, said:

Allah! Allah! (Fear Allah) concerning him who has no one but Allah. (Narrated by Ibn Adi[1] from Abu Hurairah, may Allah be pleased with him. T)	Allah, Allah (fear Allah) concerning one who has no one but Allah - Narrated by Ibn Adi from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him).

Surely, Imam Muhaqqiq says in 'Fath al-Qadeer' on an absolute basis:

(But the second Hadith, i.e., the saying of the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, 'flee from the leper') its literal meaning is not intended, meaning there is a consensus among scholars that sitting and standing near a leper is permissible, and serving and nursing him is a cause of reward. And Allah Almighty knows best.	As for the second [Hadith] (i.e., his saying, peace and blessings of Allah be upon him, 'Flee from the leper'), its literal meaning is not intended because of the consensus on the permissibility of being close to him, and one is rewarded for serving and nursing him and for fulfilling his interests.[2] And Allah knows best.

Since the article appeared in the form of a treatise, it was appropriate for us to name it 'Al-Haqq al-Mujtala'.

[1] Kashf al-Khafa' citing Ibn Adi from Abu Hurairah, Letter Hamza, Hadith 581, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut, 1/173. [2] Fath al-Qadir, Chapter of the Impotent etc., Maktaba Nooria Razvia Sukkur, 4/133.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 24

और पूर्ण विश्वास वाले ईश्वर के सेवकों के लिए कोई हर्ज नहीं है क्योंकि वे इन सभी बुराइयों से पाक हैं। यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि दूर रहने का आदेश इन हिकमतों (बुद्धिमत्ता) के कारण है, न कि इसलिए कि, ईश्वर न करे, बीमारी उड़कर लग जाएगी; इसे तो अल्लाह और उसके दयालु रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं। मैं कहता हूँ: (इसके अलावा) चूँकि यह आदेश एक एहतियाती (सावधानीपूर्ण) और मुस्तहब (पसंदीदा) है, यह अनिवार्य नहीं है, जैसा कि हमने पहले नववी से काज़ी के माध्यम से अधिकांश विद्वानों के हवाले से प्रस्तुत किया है। (जैसा कि हमने इमाम नववी के माध्यम से काज़ी अयाज़ द्वारा बहुमत विद्वानों का मत पहले बयान किया है। टी) यह कभी भी किसी शरई वाज़िब (अनिवार्य कर्तव्य) के साथ नहीं टकराएगा। उदाहरण के तौर पर, ईश्वर न करे, जिसे यह बीमारी हुई हो, उसके बच्चे, रिश्तेदार और पत्नी सभी इस सावधानी के कारण उससे दूर भागें और उसे अकेला और उपेक्षित छोड़ दें, तो यह बिल्कुल भी हलाल (वैध) नहीं है। बल्कि पत्नी उसे सहवास से भी नहीं रोक सकती। इसलिए, हमारे दो शेखों (इमाम-ए-आज़म और इमाम अबू यूसुफ, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के अनुसार, एक महिला को कोढ़ी पति से निकाह रद्द करने का अनुरोध करने का अधिकार नहीं है। और ईश्वर से डरने वाले लोग हर बेसहारा और मित्रहीन व्यक्ति की सहायता करना अपना कर्तव्य समझते हैं। हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:

अल्लाह से डरो उस व्यक्ति के बारे में जिसका अल्लाह के सिवा कोई नहीं है। (मुहद्दिस इब्न अदी[1] ने इसे हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। टी)	अल्लाहु अल्लाहु फ़ी मन लैसा लहू इल्लल्लाह - इब्न अदी ने इसे अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है।

निश्चित रूप से इमाम मुहक़्क़िक 'फ़तह अल-क़दीर' में निरपेक्ष रूप से फ़रमाते हैं:

(लेकिन दूसरी हदीस यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद 'मज़दूम (कोढ़ी) से भागो') तो इसका ज़ाहिर (शाब्दिक अर्थ) मुराद नहीं है, यानी विद्वानों का इत्तेफ़ाक़ (सहमति) है कि मज़दूम के पास उठना बैठना मुबाह (वैध) है और उसकी खिदमत गुज़ारी व तीमारदारी	जहाँ तक दूसरी (हदीस) का सवाल है (यानी उनका फरमान, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, 'कोढ़ी से भागो'), इसका शाब्दिक अर्थ अभीष्ट नहीं है क्योंकि उसके निकट रहने की अनुमति पर आम सहमति है, और उसकी सेवा और तीमारदारी करने और उसके हितों की देखभाल

मोजिब-ए-सवाब (पुण्य का कारण) है। वल्लाहु तआला आलम।	करने के लिए पुरस्कार दिया जाता है।[2] और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

चूंकि लेख एक शोध प्रबंध (रिसाला) के रूप में सामने आया है, इसलिए हमारे लिए इसका नाम 'अल-हक़ अल-मुज्तला' रखना उचित था।

[1] कशफ़ अल-खफ़ा' इब्न अदी के हवाले से अबू हुरैरा से, अक्षर हमज़ा, हदीस 581, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत, 1/173। [2] फ़तह अल-क़दीर, नपुंसक आदि का अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, 4/133।

اور کامل ایمان بندگان خدا کے لئے کچھ حرج نہیں کہ وہ ان سب مفاسد سے پاک ہیں۔ خوب سمجھ لیا جائے کہ دور ہونے کا حکم ان حکمتوں کی وجہ سے ہے نہ یہ کہ معاذ اللہ بیماری اُڑ کر لگ جائے گی، اسے تو اللہ و رسول رَؤوف فرما چکے جل جلالہ وصلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔ اقول: (میں کہتا ہوں) پھر ازانجا کہ یہ حکم ایک احتیاطی استحبابی ہے واجب نہیں، کما قدمنا عن النووی عن القاضی عن جمہور العلماء (جیسا کہ امام نووی بواسطہ قاضی عیاض ہم جمہور علماء کا قول پہلے بیان کر آئے ہیں۔ ت) ہرگز کسی واجب شرعی کا معارضہ نہ کرے گا مثلاً معاذ اللہ جسے یہ عارضہ ہوا اس کے اولاد و اقارب و زوجہ سب اس احتیاط کے باعث اس سے دور بھاگیں اور اسے تنہا وضائع چھوڑ دیں یہ ہرگز حلال نہیں بلکہ زوجہ ہرگز اسے ہمبستری سے بھی منع نہیں کر سکتی، ولہذا ہمارے شیخین مذہب امام اعظم و امام ابو یوسف رضی اللہ تعالٰی عنہما کے نزدیک جذام شوہر سے عورت کو درخواستِ فسخِ نکاح کا اختیار نہیں، اور خدا ترس بندے تو ہر بیکس بے یار کی اعانت اپنے ذمہ لازم سمجھتے ہیں۔ حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

اللہ سے ڈرو اس کے بارے میں جس کا کوئی نہیں سوا اللہ کے۔ اَللہ اَللہ فی مَنْ لَیسَ لَہ اِلَّا اللہ۔ رواہ (محدث ابن عدی[1] نے حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ ابن عدی عن ابی ھریرۃ رضی اللہ سے اسے روایت کیا ہے۔ ت) تعالٰی عنہ۔

لاجرم امام محقق علی الاطلاق فتح القدیر میں فرماتے ہیں:

(لیکن دوسری حدیث یعنی حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا ارشاد "مجذوم سے بھاگو") تو اس کا ظاہر مراد نہیں، یعنی علماء کا اتفاق ہے کہ مجذوم کے پاس اٹھنا بیٹھنا مباح ہے اور اس کی خدمت گزاری و تیمارداری موجبِ ثواب۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

اما الثانی (ای قولہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرَّ مِنَ المَجذُومِ) فظاھرہ غیر مراد للاتفاق علی اباحۃ القرب منہ ویثاب بخدمتہ وتمریضہ وعلی القیام بمصالحہ ۲ ۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

واذ خرجت المقالۃ فی صورۃ رسالۃ ناسب ان نسمیھا الحق المجتلی۔ اچانک مقالہ رسالہ کی شکل میں ظاہر ہوا لہٰذا مناسب ہے کہ ہم اس کا نام الحق المجتلی رکھیں۔

[1] کشف الخفاء بحوالہ ابن عدی عن ابی ہریرہ حرف الہمزہ رشدین حدیث ۵۸۱ دارالکتب العلمیہ بیروت ۱ / ۱۷۳ [2] فتح القدیر باب العنین وغیرہ مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۴ / ۱۳۳

Volume 24 Fatawa Rizvia

[Arabic]: Regarding the ruling of the afflicted, and praise be to Allah for what He has bestowed and taught, and may Allah's blessings be upon our master and leader Muhammad, and upon his family and companions, and peace be upon them.

[Urdu Explanation]: Keep 'Fi Hukm al-Mubtala' (i.e., the completely clear and radiant truth in explaining the ruling of the afflicted person). All praise is for Allah Almighty who granted favors and taught knowledge. May blessings and peace be upon our Lord and Master, Hazrat Muhammad Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him), and upon his family and companions. (T)

Treatise: Al-Haqq al-Mujtala fi Hukm al-Mubtala (The Manifest Truth regarding the Ruling of the Afflicted) Has concluded.

Page 284 of 720

जिल्द 24 फ़तावा रिज़विया

[अरबी]: पीड़ित के हुक्म के बारे में, और अल्लाह की प्रशंसा है उस पर जो उसने प्रदान किया और सिखाया, और अल्लाह की रहमतें हों हमारे आका और मौला मुहम्मद पर, और उनके परिवार और साथियों पर, और उन पर शांति हो।

[उर्दू स्पष्टीकरण]: 'फ़ी हुक्म अल-मुब्तला' रखें (यानी पीड़ित व्यक्ति के हुक्म को स्पष्ट करने में बिल्कुल साफ़ और उज्ज्वल सत्य)। सभी प्रशंसा उस अल्लाह सर्वशक्तिमान के लिए है जिसने इनाम दिया और ज्ञान सिखाया। हमारे आका और मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और उनके परिवार और साथियों पर आशीर्वाद और शांति हो। (त)

रिसाला (पुस्तिका): अल-हक़ अल-मुज्तला फ़ी हुक्म अल-मुब्तला (पीड़ित के हुक्म में स्पष्ट सत्य) समाप्त हुआ।

पेज 284/720

فی حکم المبتلی، والحمد للہ علی ما انعم وعلم وصلی اللہ تعالٰی علی سیدنا ومولانا محمد والہ وصحبہ وسلم۔

فی حکم المبتلی رکھیں (یعنی مصیبت زدہ کا حکم بیان کرنے میں بالکل واضح اور روشن حق) سب تعریف اس اللہ تعالٰی کے لئے ہے جس نے انعام فرمایا اور علم سکھایا، درود و سلام ہو ہمارے آقا و مولٰی حضرت محمد مصطفٰی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم پر اور ان کی آل اور اصحاب پر۔ (ت)

رسالہ الحق المجتلی فی حکم المبتلی ختم ہوا

صفحہ ۲۸۴ از ۷۲۰

Fatawa Rizvia Volume 24

Taysir al-Ma'un lil-Sukun fi al-Ta'un 1325 AH (Making goodness easy for those who stay at home during the plague)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

Problem 85 to 93: From the town of Nigram, District Lucknow, sent by Maulvi Muhammad Nafees Sahib, son of Mr. Muhammad Idris Sahib, 6th Safar 1325 AH. What is the ruling of the scholars of the Sharia of Muhammad on the following issues: (1) How is it to flee from a place of fear due to fear of the plague? (2) In the case of the permissibility of fleeing, what will be the meaning of the Hadith 'fleeing from the plague' (which is narrated from Abdul Rahman bin Auf in Bukhari)? (3) In the case of impermissibility, what level of disobedience is fleeing from the plague: major (kabira) or minor (saghira)? (4) How is a person who persists in a major or minor sin according to Sharia? (5) How is it to pray behind someone who flees for fear of their life from the plague or someone who encourages fleeing? (6) In the case of the impermissibility of fleeing from the plague, will the one who flees and the one who encourages it be guilty of disobedience to the same degree, or more or less?

Page 286 of 720 I.T. Majlis of DawateIslami

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

तयसीरुल माऊन लिलसुकून फ़ित ताऊन 1325 हिजरी (प्लेग के दौरान घर में रहने वालों के लिए भलाई को आसान करना)

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान और निहायत रहम वाला है।

मसला 85 से 93: क़स्बा निग्राम जिला लखनऊ से, प्रेषक मौलवी मुहम्मद नफीस साहब पुत्र जनाब मुहम्मद इदरीस साहब, 6 सफ़र 1325 हिजरी। उलमा-ए-शरीयत-ए-मुहम्मदिया का निम्नलिखित मसलों में क्या हुक्म है: (1) प्लेग के डर से डर की जगह से भागना कैसा है? (2) भागने की अनुमति की स्थिति में, हदीस 'फ़िरार अनित ताऊन' (जो बुखारी में अब्दुल रहमान बिन औफ़ से वर्णित है) का क्या अर्थ होगा? (3) अनुमति न होने की स्थिति में, प्लेग से भागना किस स्तर की अवज्ञा (गुनाह) है, कबीरा (बड़ा) या सगीरा (छोटा)? (4) गुनाह-ए-कबीरा या सगीरा पर अड़ने वाला शरीयत की दृष्टि में कैसा है? (5) प्लेग से जान के डर से भागने वाले या भागने के लिए उकसाने वाले के पीछे नमाज़ पढ़ना कैसा है? (6) प्लेग से भागने की अनुमति न होने की स्थिति में, भागने वाला और उकसाने वाला एक ही दर्जे में गुनाहगार होंगे या कम-ज़्यादा?

पेज 286 का 720 आई.टी. मजलिस दावत-ए-इस्लामी

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

تیسر الماعون للسکن فی الطاعون ۱۳۲۵ھ (طاعون کے دوران گھر میں ٹھہرنے والوں کے لئے بھلائی کو آسان کرنا)

بسم اللہ الرحمن الرحیم ط

مسئلہ ۸۵ تا ۹۳: از قصبہ نگام ضلع لکھنؤ مرسلہ مولوی محمد نفیس صاحب ولد جناب محمد ادریس صاحب ۶ صفر ۱۳۲۵ھ علمائے شریعت محمدیہ کا مسائل ذیل میں کیا حکم ہے: (۱) طاعون کے خوف سے مقام خوف سے فرار کرنا کیسا ہے؟ (۲) در صورت جواز فرار ، حدیث فرار عن الطاعون (جو بخاری میں عبدالرحمن بن عوف سے مروی ہے) کے کیا معنی ہوں گے؟ (۳) در صورت عدم جواز، فرار عن الطاعون کس درجے کی معصیت ہے، کبیرہ یا صغیرہ؟ (۴) گناہ کبیرہ یا صغیرہ پر اصرار کرنے والا شرعاً کیسا ہے؟ (۵) طاعون سے جان کے خوف سے فرار کرنے والے یا فرار کی ترغیب دینے والے کے پیچھے نماز پڑھنا کیسا ہے؟ (۶) در صورت عدم جواز فرار عن الطاعون ، سے فرار کرنے والا اور ترغیب دینے والا ایک درجہ میں معصیت کے مرتکب ہوں گے یا کم زیادہ؟

(7) A person named Naqil, despite the Prophetic tradition (Hadith) prohibiting fleeing from a plague, considers such flight not only permissible but, without any Islamic legal evidence, even better. What is the ruling regarding such a person in Islamic Law?

(8) According to the principles of Islamic rulings, would the statement or action of a Companion (Sahabi) that contradicts a sound (Sahih) Hadith be worthy of following or practicing? In a conflict between a verbal Hadith and the action of a Sahabi, would the Sahabi's action be prioritized?

(9) With the intention of protecting one's health due to fear of a plague, if one leaves a plague-stricken settlement for its outskirts (known as 'Fina')—which is approximately a mile away and provides for most of the population's needs—would this be considered 'fleeing from a plague'? Such an act is forbidden and declared unlawful in the Hadith of Abdur Rahman bin Awf, as recorded in Sahih al-Bukhari, Volume IV, 'Chapter on what is mentioned regarding the plague.' If this movement is classified as fleeing, why is it so? On the other hand, in Sahih al-Bukhari, Volume IV, 'Chapter on the reward of the patient in a plague,' it is narrated from Lady Aisha (may Allah be pleased with her) that if a plague occurs in someone's locality and they remain steadfast in their city, they will receive the reward of a martyr. This Hadith suggests that the prohibition in Abdur Rahman bin Awf's Hadith refers to fleeing from the plague-stricken city itself, not moving within its boundaries. If movement within the city were also prohibited, the reward mentioned in Lady Aisha's Hadith would be tied to staying 'at home' rather than 'in the city.' Furthermore, the permission for Friday prayers in the 'Fina' (outskirts) indicates that these outskirts are part of the city. Therefore, how would moving to the outskirts be considered fleeing, given that the validity of Friday prayers there is established? Moreover, the implication of Lady Aisha's Hadith does not suggest a prohibition on movement within the city. Conversely, if this is not considered exiting the city, why is that so? For a traveler, shortening the prayer (Qasr) becomes mandatory as soon as they leave the residential buildings, as proven in books of Islamic Jurisprudence (Fiqh), implying that the term 'city' refers only to buildings and not the outskirts. In this case, the meaning of Lady Aisha's Hadith would be to not leave the city's buildings. By adopting one of these interpretations, what would be the response to the other? What is the correct meaning of Lady Aisha's Hadith: the first scenario or the last?

Please provide a numbered, reasoned, and detailed answer to each question with references from scholarly texts. "Bayanu Tujiru" (Explain and be rewarded).

Answer:

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. | Starting with the blessed name of Allah, Who is most merciful and exceedingly kind.

Praise be to Allah, Whose praise is for salvation. | All excellences belong to Allah...

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

(७) मुसम्मा नाक़िल, ताऊन (प्लेग) से फ़रार (भागने) को, हदीस 'हुर्मत-ए-फ़रार अनित-ताऊन' (ताऊन से भागने की मनाही की हदीस) के मुक़ाबले में, न केवल जायज़ बल्कि बिना किसी शरई दलील के बेहतर समझता है। शरई तौर पर वह कैसा है?

(८) एक सही हदीस के मुक़ाबले में किसी सहाबी का वह क़ौल (कथन) या फ़ेल (कार्य) जो सही हदीस के ख़िलाफ़ हो, क्या शरीअत के उसूलों के एतबार से क़ाबिल-ए-तक़लीद या अमल करने योग्य होगा? क्या क़ौली हदीस के मुक़ाबले में सहाबी के फ़ेल को प्राथमिकता दी जाएगी?

(९) स्वास्थ्य की रक्षा के लिए और ताऊन के डर से, ताऊन ग्रस्त आबादी से भागकर उसी के मुज़ाफ़ात (उपनगरों) में, यानी आबादी से लगभग एक मील की दूरी पर चले जाना जो आबादी की अधिकांश ज़रूरतों को पूरा करता हो और जिसे 'फ़ना' कहा जाता है, क्या यह 'ताऊन से फ़रार' में शामिल होगा? जिसकी मनाही और हुरमत हज़रत अब्दुल रहमान बिन औफ़ की हदीस से साबित है, जैसा कि बुख़ारी जिल्द ४, बाब 'ताऊन के बारे में जो ज़िक्र किया गया' में वर्णित है। अगर यह बाहर निकलना 'ताऊन से फ़रार' में शामिल है, तो क्यों? जबकि बुख़ारी जिल्द ४, बाब 'ताऊन में सब्र करने वाले का अज्र' में हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) से वर्णित है कि अगर किसी की बस्ती में ताऊन हो और वह अपने शहर में इस्तक़लाल (दृढ़ता) से ठहरा रहे, तो उसे शहीद का अज्र मिलेगा। इस हदीस से पता चलता है कि अब्दुल रहमान बिन औफ़ की हदीस में ताऊन वाले शहर से भागने की मनाही है, न कि शहर के भीतर ही कहीं जाने की। क्योंकि अगर शहर के अंदर भी जाने की मनाही होती, तो हज़रत आयशा की हदीस में शहादत का अज्र केवल 'इस्तक़लाल फ़िल बलद' (शहर में ठहरने) से नहीं होता, बल्कि 'इस्तक़लाल फ़िल बैत' (घर में ठहरने) से होता। और 'फ़ना' (उपनगर) में जुमे की नमाज़ की इजाज़त से पता चलता है कि शहर का 'फ़ना' भी शहर ही है। फिर शहर के भीतर बाहर निकलना फ़रार में कैसे शामिल होगा, क्योंकि 'फ़ना' में जुमे की इजाज़त की दलील से यह साबित हो चुका है। और हज़रत आयशा की हदीस के अर्थ से शहर के भीतर बाहर निकलने की मनाही साबित नहीं होती। और अगर यह शहर से निकलने में शामिल नहीं होगा, तो क्यों? जबकि मुसाफ़िर को रहने की इमारतों से निकलने पर तुरंत 'क़स्र' (नमाज़ छोटी करना) वाजिब हो जाता है, जैसा कि फ़िक़्ह की किताबों से साबित है, जिसका अर्थ यह है कि 'शहर' शब्द केवल इमारतों पर लागू होता है, न कि इमारतों के'फ़ना' पर। और इस स्थिति में हज़रत आयशा की हदीस का अर्थ यह होगा कि शहर की इमारतों से बाहर न निकला जाए। अतः इन दोनों में से एक को चुनने पर दूसरे का

क्या जवाब होगा? हज़रत आयशा की हदीस का सही अर्थ क्या होगा, पहली सूरत या आख़िरी? हर एक सवाल का नंबरवार, दलीलों के साथ और किताबों के हवाले सहित विस्तार से जवाब दें। "बयान फरमाइए और अज्र पाइए।"

अल-जवाब:

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम | अल्लाहु तआला के बरकत वाले नाम से शुरू जो निहायत रहम करने वाला

अलहम्दुलिल्लाहिल्लज़ी हमदहु लिन-नजात | और बेहद मेहरबान है, तमाम खूबियां अल्लाहु तआला के लिए हैं...

पेज ७२० में से २८७

(۷) مسمّٰی ناقل، طاعون سے فرار کو بمقابلہ حدیث حرمت فرار عن الطاعون، جائز ہی نہیں بلکہ بلا دلیل شرعی احسن سمجھتا ہے شرعاً وہ کیسا ہے؟

(۸) بمقابلہ حدیث صحیح کے کسی صحابی کا قول یا فعل جو مخالف حدیث صحیح کے ہو کیا اصول احکام شریعت کے اعتبار سے قابل تقلید یا عمل ہوگا، قولی حدیث کے مقابلہ میں کیا صحابی کے فعل کو ترجیح دی جائے گی؟

(۹) بخیال حفظ صحت بخوف طاعون طاعونی آبادی سے فرار کر کے اسی کے مضافات میں یعنی آبادی سے کم وبیش ایک میل کے ایسے فاصلے پر چلا جانا جو آبادی کے اکثر ضروریات کو پوری کرتا ہو جس کو فنا کہتے ہیں کیا داخل فرار عن الطاعون ہوگا جس کی ممانعت و حرمت حدیث عبدالرحمن بن عوف سے جو بخاری جلد رابع باب مایذکر فی الطاعون میں مروی ثابت ہے، اگر یہ خروج داخل فرار عن الطاعون ہوگا تو کیوں، جبکہ بخاری جلد رابع باب اجر الصابر فی الطاعون میں حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی ہے کہ اگر کسی کے گاؤں میں طاعون ہو اور وہ اپنے شہر میں استقلال سے ٹھہرا رہے تو اس کو اجر شہید کا ہوگا، اس حدیث سے معلوم ہوا کہ عبدالرحمن بن عوف کی حدیث میں شہر طاعون سے فرار کی ممانعت ہے نہ یہ کہ شہر طاعون کے اندر خروج نہ کیا جائے کیونکہ اگر شہر کے اندر بھی خروج کی ممانعت ہوتی تو حدیث عائشہ میں صرف استقلال فی البلد سے اجر شہادت نہ ہوتا بلکہ استقلال فی البیت سے ہوتا، اور فنا میں نماز جمعہ کی اجازت سے معلوم ہوتا ہے کہ فنائے شہر بھی شہر ہے پس شہر میں خروج کرنا کیونکر داخل فرار ہوگا کیونکہ بدلیل اجازت جمعہ در فنائے شہر ثابت ہوچکا ہے

اور فحوائے حدیث عائشہ سے شہر کے اندر خروج کی ممانعت ثابت نہیں ہوتی اور اگر یہ خروج میں داخل نہ ہوگا تو کیوں؟ جبکہ مسافر کو موضع اقامت کی عمارات سے نکلنے پر فوراً قصر واجب ہو جاتا ہے جیسا کہ کتب فقہ سے ثابت ہے جس کا مفہوم یہ ہے کہ شہر کا اطلاق محض عمارات پر ہوتا ہے نہ کہ فنائے عمارات پر، اور اس صورت میں حدیث عائشہ کا یہ مفہوم ہوگا کہ شہر کی عمارات سے خروج نہ کیا جائے۔ پس احد الامرین کے اختیار کرنے سے دوسرے کا کیا جواب ہوگا، حدیث عائشہ کا صحیح مفہوم کیا ہوگا، صورت اول یا آخر، ہر ایک سوال کا جواب نمبروار مدلل و مفصل مع حوالہ کتب عنایت فرمائیے۔ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائیے۔ ت)

الجواب:

بسم اللہ الرحمن الرحیم | اللہ تعالیٰ کے بابرکت نام سے شروع جو نہایت رحم کرنے والا اور بے حد مہربان ہے

الحمد للہ الذی حمدہ للنّجاۃ | تمام خوبیاں اللہ تعالیٰ...

[Arabic Section]: ...from afflictions, [He is] the best protector, and the most excellent blessings and peace be upon him who made the martyrdom of his Ummah through stabbing and plague. And upon his family and his companions, who are keepers of their trusts and their covenants. So they do not flee when they meet [the enemy], and they are striving to elevate the word of Allah. And they are obedient to Allah and His Messenger, callers to what is right, and forbid what is wrong. [Urdu Section]: ...is for him whose praise is most beneficial for deliverance from calamities. The most excellent blessings and peace be upon that personality in whose Ummah's testimony (as a proof) was placed in stabbing and plague, and on all his family and all his companions who are observers of their trusts and covenants, and they do not run away when they face the enemy, and they remain striving to raise the Word of Allah. They are very obedient to Allah Almighty and His Messenger and are those who invite to goodness and prevent from evil. (T)

Fleeing from the plague is a major sin. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: [Arabic Section]: "The one who flees from the plague is like the one who flees from the battlefield." Reported by Imam Ahmad (1) with a good (hasan) chain, and by Al-Tirmidhi who said it is a hasan gharib (good but rare) hadith. Ibn Khuzaymah and Ibn Hibban reported it in their respective Sahihs, and Al-Bazzar, Al-Tabarani, and 'Abd ibn Humayd reported it from Jabir ibn 'Abdullah. Also, Ahmad with a sahih chain, Ibn Sa'd, Abu Ya'la, Al-Tabarani in Al-Kabir and Al-Awsat, and Abu Nu'aym in Fawa'id Abi Bakr bin Khallad from the Mother of the Believers, Aisha al-Siddiqah (may Allah be pleased with them). [Urdu Section]: One who runs away from the plague is like one who runs away from fighting against disbelievers in Jihad. (Imam Ahmad narrated it with a good chain and Imam Tirmidhi narrated it and said it is a Hasan Gharib Hadith. Ibn Khuzaimah and Ibn Hibban narrated it in their respective Sahih books. Bazzar, Tabarani and Abd bin Humaid narrated it with reference to Hazrat Jabir bin Abdullah, also Imam Ahmad with a good chain, Ibn Saad, Abu Ya'la and Tabarani in Al-Kabeer and Al-Awsat and Abu Nuaim in Fawaid Abi Bakr bin Khallad narrated it with reference to Mother of Believers Hazrat Aisha Siddiqa (may Allah be pleased with her). T)

And Allah, the Mighty and Majestic, says regarding the one who turns his back and flees from the disbelievers in Jihad: [Arabic Section]: "He has indeed returned with

wrath from Allah, and his abode is Hell." [Urdu Section]: Indeed, he fell into the wrath of Allah and his abode is (Hell).

1. Musnad of Imam Ahmad bin Hanbal, on the authority of Aisha (may Allah be pleased with her), Al-Maktab al-Islami, Beirut, 2/255, 145, 82; Al-Zawajir 'an Iqtiraf al-Kaba'ir, 399th Major Sin, Dar al-Fikr, Beirut, 2/88-287. Page 288 of 720

[अरबी खंड]: ...आपदाओं से बचाने के लिए वह बेहतरीन मददगार है, और सबसे उत्कृष्ट दुरूद और सलाम उस हस्ती पर हो जिसकी उम्मत की शहादत ज़ख्मों और प्लेग में रखी गई। और उनके परिवार और साथियों पर, जो अपनी अमानतों और वचनों के रक्षक हैं। वे दुश्मन से मिलते समय भागते नहीं हैं, और वे अल्लाह के वचन को बुलंद करने में प्रयासरत रहते हैं। वे अल्लाह और उसके रसूल के आज्ञाकारी हैं, भलाई की ओर बुलाने वाले और बुराई से रोकने वाले हैं। [उर्दू खंड]: ...उस के लिए हैं जिसकी प्रशंसा मुसीबतों से छुटकारा पाने के लिए अत्यधिक लाभकारी है। सबसे उत्कृष्ट दुरूद व सलाम उस हस्ती पर जिसकी उम्मत की शहादत (प्रमाण के रूप में) ज़ख्म और प्लेग में रखी गई और उनकी तमाम आल और तमाम सहाबा पर जो अपनी अमानतों और प्रतिज्ञाओं का पालन करने वाले हैं और वे भागते नहीं जब दुश्मन से उनका सामना हो और वे अल्लाह के कलमे को बुलंद करने में प्रयासरत रहते हैं, अल्लाह तआला और उसके रसूल के बहुत आज्ञाकारी हैं और भलाई की दावत देने वाले और बुराई से रोकने वाले हैं। (त)

प्लेग से भागना गुनाहे कबीरा है, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: [अरबी खंड]: "प्लेग से भागने वाला वैसा ही है जैसे मैदान-ए-जंग से भागने वाला।" इसे इमाम अहमद (1) ने हसन सनद के साथ रिवायत किया, और तिर्मिज़ी ने कहा कि यह हदीस हसन ग़रीब है। इब्न खुज़ैमा और इब्न हिब्बान ने अपनी सहीह में इसे रिवायत किया, और बज़्ज़ार, तबरानी और अब्द बिन हुमैद ने जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत किया। साथ ही अहमद ने सहीह सनद के साथ, इब्न साद, अबू यअ्ला, अल-कबीर और अल-औसत में तबरानी, और अबू नुअ़ैम ने 'फ़वाइद अबी बक्र बिन खल्लाद' में उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से इसे रिवायत किया है। [उर्दू खंड]: प्लेग से भागने वाला ऐसा है जैसे जिहाद में काफ़िरों के मुकाबले से भाग जाने वाला। (इमाम अहमद ने हसन सनद से और इमाम तिर्मिज़ी ने इसको रिवायत किया और फ़रमाया कि हदीस हसन ग़रीब है। इब्न खुज़ैमा और इब्न हिब्बान ने अपनी अपनी सहाह में इसको रिवायत किया है। बज़्ज़ार, तबरानी और अब्द बिन हुमैद ने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह के हवाले से, साथ ही इमाम अहमद ने हसन सनद से, इब्न साद, अबू यअ्ला और तबरानी ने अल-कबीर और अल-औसत में और अबू नुअ़ैम ने अबूबक्र बिन खल्लाद के फ़वाइद में उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा के हवाले से इसे रिवायत किया है। त)

और अल्लाह अज़्ज़वजल जिहाद में काफ़िरों को पीठ दिखाकर भागने वाले के बारे में फ़रमाता है: [अरबी खंड]: "तो वह अल्लाह के ग़ज़ब के साथ लौटा और उसका ठिकाना जहन्नम है।" [उर्दू खंड]: वह बेशक अल्लाह के ग़ज़ब में पड़ा और उसका ठिकाना (दोज़ख़ है)।

1. मुसनद इमाम अहमद bin हंबल, हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत 2/255, 145, 82, अज़-ज़वाज़िर अन इक़्तिराफ़ अल-कबाईर, 399वाँ बड़ा गुनाह, दारुल फ़िक्र बेरूत 2/88-287। पृष्ठ 288/720

من البلایا خیر مأعون * وافضل الصلوۃ والسلام علی من جعلت شہادۃ امتہ في الطعن والطاعون * وعلی اٰلہ وصحبہ الذین ھم لاماناتھم وعھدھم راعون * فلا یفرون اذا لاقوا وھم في اعلاء کلمۃ اللہ ساعون * وللہ ورسولہ طوعون، الی المعروف داعون * وعن المنکر مناعونط | کے لئے ہیں کہ جس کی تعریف مصائب سے چھڑانے کے لئے زیادہ مفید ہے۔ افضل درود و سلام اس ہستی پر کہ جس کی امت کی گواہی (بطور سند) طعن اور طاعون میں رکھی گئی اور اس کی تمام آل اور تمام صحابہ پر جو اپنی امانتوں اور عہد کی رعایت کرنے والے ہیں اور وہ بھاگتے نہیں جبکہ دشمن سے ان کا آمنا سامنا ہو اور وہ اللہ کے کلمے کو بلند کرنے میں کوشاں رہتے ہیں اللہ تعالٰی اور اس کے رسول کے بہت فرمانبردار ہیں اور بھلائی کی دعوت دینے والے اور برائی سے روکنے والے ہیں۔ (ت)

طاعون سے فرار گناہ کبیرہ ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: الفار من الطاعون کالفار من الزحف۔ رواہ الامام احمد ۱ بسند حسن والترمذی وقال حسن غریب و ابن خزیمۃ وابن حبان في صحیحھما والبزار والطبراني وعبد بن حمید عن جابر بن عبد اللہ واحمد بسند صحیح وابن سعد وابویعلی والطبراني في الکبیر وفي الاوسط وابونعیم في فوائد ابی بکر بن خلاد عن ام المؤمنین الصدیقۃ رضی اللہ تعالٰی عنھم۔ | طاعون سے بھاگنے والا ایسا ہے جیسے جہاد میں کافروں کے مقابلے سے بھاگ جانے والا۔ (امام احمد نے سند حسن سے اور امام ترمذی نے اس کو روایت کیا اور فرمایا حدیث حسن غریب ہے۔ ابن خزیمہ اور ابن حبان نے اپنی اپنی صحاح میں اس کو روایت کیا ہے۔ بزار، طبرانی اور عبد بن حمید نے حضرت جابر بن عبداللہ کے حوالے سے، نیز امام احمد نے سند حسن سے، ابن سعد، ابویعلی اور طبرانی نے الکبیر اور الاوسط میں اور ابونعیم نے ابوبکر

بن خلاد کے فوائد میں ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے حوالہ سے اسے روایت کیا ہے۔ ت)

اور اللہ عزوجل جہاد میں کفار کو پیٹھ دے کر بھاگنے والے کی نسبت فرماتا ہے: "فَقَدْ بَاءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللهِ وَ مَأْوٰىهُ جَهَنَّمُ ط" | وہ بیشک اللہ کے غضب میں پڑا اور اس کا ٹھکانا (دوزخ ہے)

١ مسند امام احمد بن حنبل عن عائشه رضی اللہ تعالیٰ عنها المکتب الاسلامی بیروت ٢/ ٢٥٥، ١٤٥، ٨٢، الزواجر عن اقتراف الکبائر الکبیره التاسعة والتسعون بعد الثلاثمائه دار الفکر بیروت ٢/ ٢٨٧-٨٨

Fatawa Razawiyya Volume 24

“And it is an evil destination.” (1)

Imam Ibn Hajar al-Makki states in 'Al-Zawajir 'an Iqtiraf al-Kaba'ir': “The three hundred and ninety-ninth major sin is fleeing from a plague (2). After three hundred major sins, the ninety-ninth one is that fleeing from a plague is a major sin. (T)”

In the same work, after mentioning the aforementioned Hadith cited by Tirmidhi, Ibn Hibban, and others, it is stated: “The purpose of this comparison is to reprimand and be stern with those who flee from a plague so that they may desist. This cannot be achieved unless it is considered a major sin, just like fleeing from the battlefield (3). The intention of this comparison is to censure those fleeing from a plague and to be harsh with them so that they refrain, and this objective cannot be fulfilled unless it is treated as a major sin, similar to fleeing from battle. (T)”

Maulana Shaikh Muhaqqiq Abdul Haq Muhaddith Dehlvi (may Allah have mercy on him) states in the commentary of Mishkat: “The general rule regarding a plague is that one should not go to a place where it exists, and if one is already there when an epidemic breaks out, one should not flee from it. Although in some situations, such as a house undergoing an earthquake, or catching fire, or standing under a leaning wall, fleeing is permitted due to the strong possibility of death. However, regarding the plague, nothing but patience is prescribed, hence fleeing is not sanctioned. Thus, comparing it to those situations is rejected and invalid, for those are matters of natural causes, whereas this is based on conjecture. In any case, fleeing from there is not permissible, and it has not been mentioned anywhere. Whoever flees is a sinner, a committer of a major sin, and is rejected. We ask Allah for safety. (4)” “The universal rule regarding an epidemic is that one should not go to where it is (i.e., where the outbreak has occurred), and where a person is present and an epidemic situation arises there, they should not flee from it. Although in some places, for example, a house that is suffering from an earthquake or has caught fire or standing under a wall that is about to fall, permission is given to flee in view of the overwhelming suspicion and possibility of destruction. But in the chapter of plague, nothing should be done except patience, therefore, the recommendation to flee from there was not given. Thus, comparing it to those situations is rejected and invalid as those belong to the category of normal causes and these are from the causes of delusion.”

---

1. Al-Quran al-Karim 8/12

2. Al-Zawajir li-Ibn Hajar al-Makki, al-Kaba'ir al-Tasi'ah wal-Tis'un ba'd al-Thalathama'ih, Dar al-Fikr Beirut, 2/285
3. Al-Zawajir li-Ibn Hajar al-Makki, al-Kaba'ir al-Tasi'ah wal-Tis'un ba'd al-Thalathama'ih, Dar al-Fikr Beirut, 2/288
4. Ash'at al-Lam'at Sharh al-Mishkat, Kitab al-Jana'iz, Bab 'Iyadat al-Marid, Maktabah Nuriyya Razawiyya Sukkur, 1/639

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

“और वह क्या ही बुरा ठिकाना है।” (1)

इमाम इब्न हजर मक्की 'अज़-ज़वाज़िर अन इक़्तिराफ़ अल-कबायिर' में फ़रमाते हैं: “तीन सौ निन्यानबेवाँ बड़ा गुनाह (कबीरा गुनाह) प्लेग से भागना है (2)। तीन सौ कबीरा गुनाहों के बाद निन्यानबेवें नंबर पर प्लेग से भागना कबीरा गुनाह है। (त)”

उसी में उपर्युक्त हदीस के उल्लेख के बाद, जिसे तिर्मिज़ी और इब्न हिब्बान आदि ने उद्धृत किया है, फ़रमाया गया: “इस उपमा का उद्देश्य प्लेग से भागने वाले को डाँटना और उस पर सख़्ती करना है ताकि वह बाज़ आ जाए, और यह बात उसके कबीरा गुनाह हुए बिना पूरी नहीं हो सकती, जैसे युद्ध से भागना (3)। इस तशबीह (उपमा) से मक़सद प्लेग से भागने वाले की सरज़निश (डाँट-डपट) और उस पर सख़्ती करना है ताकि वह इससे बाज़ आ जाए, और यह बात उसके कबीरा गुनाह होने के बग़ैर पूरी नहीं हो सकती जैसे जंग से भागना। (त)”

मौलाना शेख़ मुहक़्क़िक अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी (रहमहुल्लाह) शरह मिश्क़ात में फ़रमाते हैं: “वबा (महामारी) के बारे में बुनियादी नियम यह है कि जहाँ वह हो, वहाँ न जाए और जिस जगह बंदा मौजूद हो और वहाँ वबा फूट पड़े, तो वहाँ से न भागे। हालाँकि कुछ स्थितियों में, जैसे वह घर जहाँ भूकंप आ रहा हो या जिसमें आग लग गई हो या गिरने वाली दीवार के नीचे खड़ा हो, तो इन सभी जगहों से मौत के प्रबल भय और संभावना के कारण भाग जाने की अनुमति है। लेकिन प्लेग के मामले में सिवाय सब्र के कुछ नहीं करना चाहिए, इसलिए वहाँ से भागने का परामर्श नहीं दिया गया। अतः इसकी तुलना उन स्थितियों से करना ग़लत और अमान्य है, क्योंकि वे स्वाभाविक कारणों की श्रेणी से हैं और ये वहमी (भ्रामक) कारणों से हैं। किसी भी स्थिति में वहाँ से भागना जायज़ नहीं है और ऐसा कहीं भी उल्लेख नहीं है। जो कोई भागता है वह पापी है, कबीरा गुनाह का अपराधी है और तिरस्कृत है। हम अल्लाह से सुरक्षा माँगते हैं। (4)” “वबा में क़ायदा-ए-कुल्लिया (सार्वभौमिक नियम) यह है कि जहाँ हो (यानी जहाँ वबा फूट पड़े) वहाँ न जाए और जिस जगह बंदा मौजूद हो और वहाँ वबा की सूरत बन जाए तो वहाँ से न भागे। हालाँकि बाज़ मक़ामात (कुछ स्थितियों) मसलन वह घर जो ज़लज़ले का शिकार हो रहा हो या जिसमें आग लग गई हो या गिरने वाली दीवार के नीचे खड़ा हो तो इन तमाम मक़ामात से हलाकत के ग़ालिब गुमान व इमक़ान के पेश-ए-नज़र भाग जाने की इजाज़त है। लेकिन ताऊन (प्लेग) के बाब में सिवाय सब्र के कुछ नहीं करना चाहिए, लिहाज़ा वहाँ से

भागने की तजवीज़ नहीं दी गई। पस इसको इस पर क़ियास (तुलना) करना मरदूद और फ़ासिद है कि वह असबाब-ए-आदिया (सामान्य कारणों) के क़बील से है और यह असबाब-ए-तवहहुम (भ्रम के कारणों) से है।”

---

1. अल-कुरान अल-करीम 8/12
2. अज़-ज़वाज़िर लि-इब्न हजर मक्की, अल-कबायिर अत-तासिआ वत-तिसऊन बाद अत-थलाथमाइह, दार अल-फ़िक्र बेरुत, 2/285
3. अज़-ज़वाज़िर लि-इब्न हजर मक्की, अल-कबायिर अत-तासिआ वत-तिसऊन बाद अत-थलाथमाइह, दार अल-फ़िक्र बेरुत, 2/288
4. अशिअत अल-लमआत शरह अल-मिश्क़ात, किताब अल-जनाइज़, बाब इयादत अल-मरीद, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, 1/639

وَبِئْسَ الْمَصِیرُ (1) دوزخ ہے اور کیا بری جائے بازگشت ہے۔

امام ابن حجر مکی زواجر عن اقتراف الکبائر میں فرماتے ہیں: الکبیرۃ التاسعۃ والتسعون بعد الثلاثمائۃ الفرار من الطاعون (2)۔ تین سو کبیرہ گناہوں کے بعد ننانوے نمبر پر طاعون سے بھاگنا کبیرہ گناہ ہے۔ (ت)

اسی میں بعدِ ذکرِ حدیثِ مذکور بتخریج ترمذی وابنِ حبان وغیرہما فرمایا: القصد بھذا التشبیہ انما ھو زجر الفارین والتغلیظ علیہ حتی ینزجر ولا یتم ذلك الا ان کان کبیرۃ کالفرار من الزحف (3)۔ اس تشبیہ سے مقصود طاعون سے بھاگنے والے کی سرزنش اور اس پر سختی کرنا ہے تاکہ وہ اس سے باز آجائے، اور یہ بات اس کے کبیرہ گناہ ہونے کے بغیر پوری نہیں ہوسکتی جیسے جنگ سے بھاگنا۔ (ت)

مولانا شیخ محقق عبدالحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالٰی شرح مشکوٰۃ میں فرماتے ہیں: ضابطہ در وباء ہمیں ست کہ درانجا کہ ہست نباید رفت و ازانجا کہ باشد نباید گریخت اگرچہ گریختن در بعض مواضع مثل خانہ کہ دروے زلزلہ شدہ یا آتش گرفتہ یا نشستن در زیر دیوارے کم خم شدہ نزد غلبہ ظن ہلاک آمدہ است اما در باب طاعون جز صبر نیامدہ مگر گریختن تجویز نیافتہ وقیاس ایں براں مردود وفاسد است کہ آنہا از قبیل اسباب عادیہ اند وایں از اسباب وہمی وبر ہر تقدیر گریختن ازانجا جائز نیست و بیچ جا وارد نشدہ وبر کہ بگریزد وعاصی ومرتکب کبیرہ ومردودست نسأل اللہ العافیۃ (4)۔ وباء میں قاعدہ کلیہ یہ ہے کہ جہاں ہو (یعنی جہاں وباء پھوٹ پڑے) وہاں نہ جائے اور جس جگہ بندہ موجود ہو اور وہاں وباء کی صورت بن جائے تو وہاں سے نہ بھاگے اگرچہ بعض مقامات

مثلاً وہ گھر جو زلزلے کا شکار ہو رہا ہو یا جس میں آگ لگ گئی ہو یا گرنے والی دیوار کے نیچے کھڑا ہو تو ان تمام مقامات سے ہلاکت کے غالب گمان و امکان کے پیش نظر بھاگ جانے کی اجازت ہے۔ لیکن طاعون کے باب میں سوائے صبر کے کچھ نہیں کرنا چاہئے، لہذا وہاں سے بھاگنے کی تجویز نہیں دی گئی۔ پس اس کو اس پر قیاس کرنا مردود اور فاسد ہے کہ وہ اسباب عادیہ کے قبیل سے ہے اور یہ اسبابِ توہم سے ہے۔

---

1. القرآن الکریم ۸ / ۱۲
2. الزواجر لابن حجر مکی الکبیرہ التاسعہ والتسعون بعد الثلاثمائۃ دارالفکر بیروت ۲ / ۲۸۵
3. الزواجر لابن حجر مکی الکبیرہ التاسعہ والتسعون بعد الثلاثمائۃ دارالفکر بیروت ۲ / ۲۸۸
4. اشعۃ اللمعات شرح المشکوٰۃ کتاب الجنائز باب عیادۃ المریض مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱ / ۶۳۹

Fatawa Razawiyya Volume 24

In any case, fleeing from this place is not permissible, and this (permission) has not been mentioned anywhere. Therefore, whoever flees from it will be a sinner, a committer of a major sin, and rejected. We ask Allah Almighty for safety. (T)

In Sharh Mishkat by Allama Tayyibi, it is mentioned under the said Hadith: "Shubbiha bihi ay bil-firari minaz-zahfi fi irtikabil kabirah" - 1. Fleeing from the plague has been likened to fleeing from the battlefield because both are major sins. (T)

In Sharh Muwatta, it says: "Qala Ibnu Khuzaymah innahu minal kabairillati yu’aqibullahu Ta'ala alaiha illam ya’fu" - 2. Muhaddith Ibn Khuzaymah stated: Fleeing from the plague is among those major sins for which Allah Almighty punishes, unless He forgives. (T)

Persistence in a minor sin makes it a major sin, and persistence in a major sin makes it even more severe. It is mentioned in the Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "La saghirata ma'al israr" - Narrated in Musnad al-Firdous from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them). 3. No minor sin remains minor after persistence (Muhaddith Daylami narrated this in Musnad al-Firdous on the authority of Hazrat Abdullah Ibn Abbas, may Allah be pleased with them. T).

The one who encourages fleeing is in greater affliction than the one who flees. In the essence of the sin, there isn't the same level of opposition and contradiction to divine commands as there is in the reversal of Shariah rulings, i.e., forbidding the good and commanding the evil. Allah Almighty says: "The hypocrite men and hypocrite women are of one another. They enjoin what is wrong and forbid what is right" until the words of Allah Almighty "And the believing men and believing women are allies of one another." 4. Hypocrite men and hypocrite women are similar to each other. They command evil and forbid good, while Muslim men and Muslim women are religious allies to each other.

---

1. Sharh al-Tayyibi 'ala Mishkat al-Masabih, Kitab al-Jana'iz, 'Iyadat al-Marid, Idarat al-Qur'an Karachi 3/322
2. Sharh al-Zurqani Muwatta al-Imam Malik, Bab Ma Ja'a fil Ta'un under Hadith 727, Dar al-Ma'rifah Beirut 2/242
3. Al-Firdous bi-Ma'thur al-Khitab, Hadith 947 from Ibn Abbas, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut 5/199

4. Al-Qur'an al-Karim 9/67-71

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

बहरहाल इस जगह से भागना जायज़ नहीं है और यह किसी जगह वर्णित नहीं हुआ है, लिहाज़ा जो कोई (इससे) भागेगा गुनहगार होगा और कबीरा (बड़ा गुनाह) का मुर्तकिब और मरदूद होगा। हम अल्लाह तआला से आफियत (कुशलता) चाहते हैं। (त)

शराह मिश्कात अल्लामा तैयबी में ज़िक्र किए गए हदीस के तहत उल्लेख है: "शुबबिहा बिही अय बिल-फ़िरारि मिनज़-ज़हफ़ि फ़ि इर्तिकाबिल कबीरा" - 1. जंग के मैदान से भागने के साथ ताऊन (प्लेग) से भागने की उपमा (तुलना) कबीरा गुनाह होने की वजह से दी गई। (त)

शराह मोअत्ता में है: "क़ाला इब्नु खुज़ैमह इन्नहु मिनल कबा-इरिल्लती युआक़िबुल्लाहु तआला अलैहा इल्लम या'फ़ु" - 2. मुहद्दिस इब्न खुज़ैमह ने फरमाया: ताऊन से भाग जाना उन कबीरा गुनाहों में से है जिन पर अल्लाह तआला अज़ाब देता है बशर्ते कि वह माफ़ न फरमाए। (त)

सगीरा (छोटे गुनाह) पर इसरार (अड़े रहना) उसे कबीरा बना देता है और कबीरा पर इसरार उसे और भी सख़्त कबीरा। हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते हैं: "ला सगीरता मअल इसरार" - मुस्नद अल-फ़िरदौस में इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है। 3. कोई गुनाह सगीरा इसरार के बाद सगीरा नहीं रहता (मुहद्दिस दैलामी ने मुस्नद अल-फ़िरदौस में हज़रत अब्दुल्लाह इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के हवाले से इसे रिवायत किया है। त)

फ़रार (भागने) की तरगीब (प्रोत्साहन) देने वाला, फ़रार करने वाले से ज़्यादा गंभीर संकट में है। गुनाह की प्रकृति में ईश्वरीय आदेशों का विरोध और मुखालफत का वह स्तर नहीं है जो शरीयत के हुक्म के विपरीत 'बुराई का हुक्म देना और भलाई से रोकना' में है। अल्लाह अज़्ज़वजल फरमाता है: "मुनाफिक मर्द और मुनाफिक औरतें एक दूसरे से हैं, वे बुराई का हुक्म देते हैं और भलाई से रोकते हैं" अल्लाह तआला के इस कलाम तक "और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें एक-दूसरे के वली (मित्र/मददगार) हैं।" 4. मुनाफिक मर्द और मुनाफिक औरतें आपस में एक हैं। बुराई का हुक्म देते और भलाई से मना करते हैं और मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें आपस में दीनी (मददगार हैं)।

---

1. शराह अल-तैयबी अला मिश्कात अल-मसाबीह, किताब अल-जनाइज़, अयादत अल-मरीज़, इदारत अल-क़ुरान कराची 3/322

2. शराह अल-ज़रक़ानी मोअत्ता अल-इमाम मालिक, बाब मा जा-अ फ़िल ताऊन हदीस 727 के तहत, दार अल-मआरिफ़ा बेरूत 2/242
3. अल-फ़िरदौस बि-मअसूर अल-खिताब, हदीस 947 इब्न अब्बास से, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत 5/199
4. अल-क़ुरान अल-करीम 9/67-71

بہر حال اس جگہ سے بھاگنا جائز نہیں اور یہ کسی جگہ وارد نہیں ہوا، لہذا جو کوئی (اس سے) بھاگے گا گناہگار ہوگا اور مرتکب کبیرہ اور مردود ہوگا۔ ہم اللہ تعالی سے عافیت چاہتے ہیں۔ (ت)

شرح مشکوۃ علامہ طیبی میں زیرِ حدیث مذکور ہے: شبه به ای بالفرار من الزحف فی ارتکاب الکبیرۃ - ۱۔ جنگ سے بھاگ جانے کے ساتھ طاعون سے بھاگ جانے کو تشبیہ ارتکابِ کبیرہ کی وجہ دی گئی۔ (ت)

شرح مؤطا میں ہے: قال ابن خزیمة انه من الکبائر التی یعاقب الله تعالی علیها ان لم یعف - ۲۔ محدث ابن خزیمہ نے فرمایا: طاعون سے بھاگ جانا ان کبیرہ گناہوں میں سے ہے کہ جن پر اللہ تعالی عذاب دیتا ہے جبکہ وہ معاف نہ فرمائے۔ (ت)

صغیرہ پر اصرار اسے کبیرہ کر دیتا ہے اور کبیرہ پر اصرار اور سخت تر کبیرہ۔ حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں: لا صغیرة مع الاصرار - رواه في مسند الفردوس عن ابن عباس رضی اللہ تعالی عنہما۔ ۳۔ کوئی گناہ صغیرہ اصرار کے بعد صغیرہ نہیں رہتا (محدث دیلمی نے مسند الفردوس میں حضرت عبداللہ ابن عباس رضی اللہ تعالی عنہما کے حوالے سے اسے روایت کیا ہے۔ ت)

فرار کی ترغیب دینے والا فرار کرنے والے سے اشد وبال میں ہے نفس گناہ میں احکام الہیہ سے معارضہ و مخالفت کی وہ شان نہیں جو بر عکس حکم شرع نہی عن المعروف و امر بالمنکر میں ہے۔ اللہ عز و جل فرماتا ہے: "اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْ بَعْضٍ یَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَیَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ" الی قولہ عزوجل "وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِیَآءُ بَعْضٍ" ۴۔ منافق مرد اور منافق

عورتیں آپس میں ایک ہیں۔ برائی کا حکم دیتے اور بھلائی سے منع کرتے ہیں اور مسلمان مرد اور مسلمان عورتیں آپس میں دینی (مددگار ہیں)۔

---

1. شرح الطيبي على مشكوة المصابيح كتاب الجنائز عيادة المريض ادارة القرآن كراچی ۳/ ۳۲۲
2. شرح الزرقانی مؤطا الامام مالك باب ماجاء في الطاعون تحت حديث ۷۲۷ دار المعرفة بيروت ۲/ ۲۴۲
3. الفردوس بمأثور الخطاب حديث ۹۴۷ عن ابن عباس دار الكتب العلمية بيروت ۵/ ۱۹۹
4. القرآن الكريم ۹/ ۷۶

“The believing men and believing women are allies of one another. They enjoin what is right and forbid what is wrong.”[1] (Al-Quran 9:71) ...they are helpers of one another in [good] matters, enjoining righteousness and forbidding evil.

A sinner brings punishment upon himself. One who incites towards sin falls into punishment himself and also intends to lead others into punishment. The burden of sin of all those who follow his word falls upon them all, and an equal amount falls upon him alone. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

“Whoever calls to guidance will have a reward like the rewards of those who follow him, without that detracting from their rewards in the slightest. And whoever calls to misguidance will have a burden of sin like the sins of those who follow him, without that detracting from their sins in the slightest.”[2] (Narrated by Imams such as Imam Ahmad, and the six books of Hadith except Bukhari (Muslim, Abu Dawood, Tirmidhi, Ibn Majah, and Nasa'i) on the authority of Abu Hurayrah (may Allah be pleased with him)).

And when fleeing from a plague is a major sin, then inciting people to do so is a much more severe major sin. Both are transgressors (fasiq), and most likely, the public announcement of it at that time is also a sin. Appointing an open transgressor (fasiq mu'lin) as an Imam is a sin, and praying behind him is Makruh Tahrimi (prohibitively disliked). It is stated in Ghunyah:

“If people put forward a transgressor (for leadership/Imamate), they will all be sinners.”[3]

---

[1] Al-Quran Al-Karim 9/71 [2] Musnad Ahmad bin Hanbal on the authority of Abu Hurayrah (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami Beirut 2/297; Sahih Muslim, Book of Knowledge, Chapter on "Whoever starts a good practice", Qadimi Kutub Khana Karachi 341/2; Sunan Abi Dawud, Book of Sunnah 2/297; Jami' at-Tirmidhi, Chapters of Knowledge 92/2; Sunan Ibn Majah, Chapter on "Whoever starts a practice etc." p. 91 [3] Ghunyatul Mustamli Sharh Munyatul Musalli, Chapter on Imamate, Suhail Academy Lahore p. 513

फतावा रज़विया | जिल्द 24

“ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें एक दूसरे के मददगार हैं। वे भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं।”[1] (अल-कुरान 9:71) बात पर एक दूसरे के मददगार हैं भलाई का हुक्म देते और बुराई से रोकते हैं।

गुनहगार अपनी जान को अज़ाब में गिरफ़्तार करता है और गुनाह की तरग़ीब (उकसाना) देने वाला खुद अज़ाब में पड़ा और दूसरे को भी अज़ाब में डालना चाहता है, जितने उसकी बात पर चलते हैं उन सब का वबाल (गुनाह का बोझ) उन सब पर और उन के बराबर उस अकेले पर होता है, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

“जो सीधे रास्ते (हिदायत) की तरफ बुलाए, जितने उसकी पैरवी करें सब के बराबर सवाब पाए और उनके सवाबों में कुछ कमी न हो, और जो गुमराही की तरफ बुलाए जितने उसके कहे पर चलें सब के बराबर उस पर गुनाह हो और उनके गुनाहों में कुछ कमी न हो।”[2] (अइम्मा किराम मसलन इमाम अहमद ने और बुखारी के अलावा अइम्मा सित्ता (मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, इब्न माजा और नसाई) ने इसे हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हवाले से रिवायत किया है।)

और जब ताऊन (महामारी) से फरार (भागना) कबीरा गुनाह है तो लोगों को उसकी तरग़ीब देनी सख्त तर कबीरा, और दोनों फ़ासिक़ हैं, और ग़ालिबन (शायद) उस वक्त इसका ऐलान करना भी गुनाह हो। और फ़ासिक़-ए-मुअलन (खुल्लम-खुल्ला गुनाह करने वाले) को इमाम बनाना गुनाह और उसके पीछे नमाज़ मकरूह-ए-तहरीमी है। ग़ुनया में है:

“अगर लोग फ़ासिक़ को (इमामत के लिए) आगे करें तो सब गुनहगार होंगे।”[3]

---

[1] अल-कुरान अल-करीम 9/71 [2] मुसनद अहमद बिन हंबल, हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरुत 2/297; सहीह मुस्लिम, किताबुल इल्म, बाब "जिसने अच्छी सुन्नत शुरू की", क़दीमी कुतुब खाना कराची 341/2; सुनन अबी दाऊद, किताबुस सुन्नह 2/297; जामी तिर्मिज़ी, अबवाबुल इल्म 92/2; सुनन इब्न माजा, बाब "जिसने कोई सुन्नत शुरू की..." पृ. 91 [3] ग़ुनयतुल मुस्तमली शरह मुनयतुल मुसल्ली, बाबुल इमामह, सुहैल एकेडमी लाहौर पृ. 513

पृष्ठ 291/720

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِیَاءُ بَعْضٍ یَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَیَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ[1] بات پر ایک دوسرے کے مددگار ہیں بھلائی کا حکم دیتے اور برائی سے روکتے ہیں۔

گنہگار اپنی جان کو گرفتارِ عذاب کرتا ہے اور گناہ کی ترغیب دینے والا خود عذاب میں پڑا اور دوسرے کو بھی عذاب میں ڈالنا چاہتا ہے جتنے اس کی بات پر چلتے ہیں سب کا وبال ان سب پر اور ان کے برابر اس اکیلے پر ہوتا ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

من دعا الی ھدی کان لہ من الاجر مثل اجور من اتبعہ لاینقص ذلک من اجورھم شیئا ومن دعا الی ضلالۃ کان علیہ من الاثم مثل اثام من اتبعہ لاینقص ذلک من اثامھم شیئا-رواہ الائمہ احمد [2] والستۃ الاالبخاری عن ابي ھریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ جو سیدھے راستے کی طرف بلائے جتنے اس کی پیروی کریں سب کے برابر ثواب پائے اور ان کے ثوابوں میں کچھ کمی نہ ہو، اور جو گمراہی کی طرف بلائے جتنے اس کے کہے پر چلیں سب کے برابر اس پر گناہ ہو اور ان کے گناہوں میں کچھ کمی نہ ہو (ائمہ کرام مثلاً امام احمد نے اور بخاری کے علاوہ ائمہ ستہ (مسلم، ابوداؤد، ترمذی، ابنِ ماجہ اور نسائی) نے اسے حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ کے حوالہ سے روایت کیا ہے۔ت)

اور جب طاعون سے فرار کبیرہ ہے تو لوگوں کو اس کی ترغیب دینی سخت تر کبیرہ، اور دونوں فاسق ہیں، اور غالباً اعلان بھی نقد وقت اور فاسقِ معلن کو امام بنانا گناہ اور اس کے پیچھے نماز مکروہ تحریمی۔ غنیہ میں ہے :

لو قدموا فاسقا یأثمون [3]۔ اگر لوگ فاسق کو (امامت کے لئے) آگے کریں تو سب گناہگار ہوں گے۔ (ت)

[1] القرآن الکریم ۹/ ۷۱ [2] مسند احمد بن حنبل عن ابی هریرة رضی الله تعالیٰ عنه المکتب الاسلامی بیروت ۲/ ۲۹۷ ، صحیح مسلم کتاب العلم باب من سن سنة حسنة قدیمی کتب خانه کراچی ۳۴۱/۲ ، سنن ابی داؤد کتاب السنة ۲/ ۲۹۷ و جامع الترمذی ابواب العلم ۹۲/۲ ، سنن ابن ماجه باب من سن سنة الخ ص ۹۱ [3] غنیة المستملی شرح منیة المصلی فصل فی الامامة وفیها مباحث سہیل اکیڈمی لاہور ص ۵۱۳

Fatawa Razawiyya Volume 24

It is stated in Radd al-Muhtar:

[Table] Arabic Text: Presenting him for leadership (Imamat) is to honor him, whereas it has become obligatory upon them to disgrace him according to Sharia. Thus, he is like an innovator; his leading prayer is disliked in any case. Rather, it has been stated in Sharh al-Munyah that the dislike of presenting him is prohibited dislike (makruh tahrimi) because of what we mentioned (1). Urdu Translation: Because in putting him forward for Imamat, there is his honor, whereas it is obligatory upon people to disgrace and humiliate him according to Sharia. Therefore, he is like an innovator; his leading prayer is disliked in every situation. Rather, in Sharh al-Munyah, it has been stated that the dislike in putting him forward is 'karahat tahrimi' (prohibited dislike) due to the reason we have stated. (T)

Whoever considers fleeing from a plague to be good, if he is ignorant and does not know that authentic hadiths have been narrated regarding its prohibition, he should be enlightened. If he knowingly denies the hadiths, he is clearly astray. In Sharh al-Muwatta by Al-Allamah al-Zurqani, under the hadith of Abdur-Rahman bin Auf (may Allah be pleased with him) regarding the plague, it is mentioned:

[Table] Arabic Text: In this, there is a strong evidence for the obligation of acting upon 'Khabar al-Wahid' (a single report), because it was in the presence of a large gathering of Sahaba, and they did not say to Abdur-Rahman: 'You are one person, and indeed it is mandatory to accept only the report of the majority.' Whoever says this has gone astray, while Allah the Almighty says: 'If an evildoer brings you any news, verify it' (Surah Al-Hujurat: 6). And it is also recited as 'fatathabbatu' (be firm/ verify). So if a just person brought news and verification was required in his report and it was not implemented, he would be equal to the evildoer. This is contrary to the Quran: 'Shall We treat the righteous like the wicked?' (Surah Sad: 28). This was stated by Ibn Abdul-Barr (2). Urdu Translation: In this, there is a strong evidence that it is mandatory to act upon a single report (because Abdur-Rahman ibn Auf's narration of the hadith of the plague) was in the presence of a great gathering of the Sahaba, and then no one said to Hazrat Abdur-Rahman that you are narrating this alone (therefore, your word cannot be relied upon due to your being alone). Hence, it is mandatory and necessary to accept the report of the entire group. Thus, whoever said this has strayed so much, while Allah the Almighty states: 'If an evildoer brings you any news, then investigate it well,' and it has also been recited as 'fatathabbatu'

meaning be firm and strong (meaning, delay in his report so that it becomes known). Then if a just person brings news, one should remain firm on that news, but if his news is not implemented, then he will be like the evildoer (unreliable).

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Book of Prayer, Chapter of Imamat, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/376. 2. Sharh al-Zurqani on Muwatta Imam Malik, Chapter of what has been narrated regarding the plague, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 4/238.

फतावा रज़विया जिल्द २४

रद अल-मुह्तार में है:

[तालिका] अरबी पाठ: इमामत (नमाज़ का नेतृत्व) के लिए उसे आगे बढ़ाना उसका सम्मान करना है, जबकि शरीअत के अनुसार उन पर उसे अपमानित करना अनिवार्य हो गया है। इसलिए वह एक नवाचारी (बिदअती) की तरह है; उसकी इमामत हर हाल में मकरूह (नापसंद) है। बल्कि शरह अल-मुनिया में यह बयान किया गया है कि उसे आगे बढ़ाने की कराहत (नापसंदगी) कराहत-ए-तहरीमी (सख्त नापसंदगी/वर्जित) है, उस वजह से जो हमने बयान कर दी।(१) उर्दू अनुवाद: क्योंकि उसे इमामत के लिए आगे करने में उसका सम्मान है, हालाँकि लोगों पर शरीयत के अनुसार उसका अपमान और तिरस्कार अनिवार्य है, इसलिए वह बिदअती की तरह है। हर हाल में उसकी इमामत मकरूह है, बल्कि शरह मुनिया में यह बयान किया गया है कि उसे आगे करने में जो नापसंदगी है वह कराहत-ए-तहरीमी है, उस वजह से जो हमने बयान कर दी। (त)

जो व्यक्ति प्लेग (ताऊन) से भागने को अच्छा समझता है, यदि वह अज्ञानी है और उसे पता नहीं है कि इसके निषेध में सही हदीसें आई हैं, तो उसे समझाया जाना चाहिए। और यदि वह जानबूझकर हदीसों का खंडन करता है, तो वह स्पष्ट रूप से गुमराह है। अल्लामा अल-ज़रकानी की शरह मुअत्ता में ताऊन के बारे में हज़रत अब्दुर-रहमान बिन औफ़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) की हदीस के तहत उल्लेख है:

[तालिका] अरबी पाठ: इसमें 'ख़बर-ए-वाहिद' (एक व्यक्ति की रिपोर्ट) पर अमल करने की अनिवार्यता का कड़ा प्रमाण है, क्योंकि यह सहाबा किराम की एक विशाल सभा की उपस्थिति में था, और उन्होंने अब्दुर-रहमान से यह नहीं कहा: 'तुम अकेले हो, और वास्तव में केवल बहुमत की रिपोर्ट को स्वीकार करना अनिवार्य है।' जिस किसी ने यह कहा वह भटक गया, जबकि अल्लाह तआला फरमाता है: 'यदि कोई फासिक (दुराचारी) तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो उसकी जाँच-पड़ताल करो' (सूरह अल-हुजुरात: ६)। और इसे 'फतथब्बतू' (सत्यापित करो/दृढ़ रहो) भी पढ़ा गया है। अतः यदि कोई न्यायप्रिय व्यक्ति ख़बर लाए और उसकी ख़बर में सत्यापन की आवश्यकता हो और वह लागू न हो, तो वह दुराचारी के बराबर हो जाएगा। यह कुरान के विरुद्ध है: 'क्या हम परहेज़गारों (धार्मिकों) को बदकारों (दुष्टों) जैसा बना दें?' (सूरह साद: २८)। यह इब्न अब्दुल-बर्र ने कहा है।(२) उर्दू अनुवाद: इसमें पुख्ता दलील है कि खबर-ए-वाहिद पर अमल करना वाजिब है (क्योंकि अब्दुर रहमान इब्न औफ़ का हदीस-ए-ताऊन बयान करना) सहाबा किराम की एक बड़ी जमात की मौजूदगी

में था, फिर किसी ने हज़रत अब्दुर रहमान से यह नहीं कहा कि तुम अकेले बयान कर रहे हो (लिहाज़ा तुम्हारे अकेलेपन के कारण तुम्हारी बात पर भरोसा नहीं किया जा सकता)। अतः पूरी जमात की खबर स्वीकार करना वाजिब और ज़रूरी है। तो जिसने यह कहा वह कितना भटक गया, और अल्लाह तआला फरमाता है कि अगर तुम्हारे पास कोई फासिक कोई खबर लाए तो खूब जांच-पड़ताल कर लिया करो, और यों भी पढ़ा गया 'फतथब्बतू' यानी साबित कदम और मज़बूत हो जाया करो (यानी उसकी खबर में रुको ताकि पता चल जाए)। फिर अगर कोई आदिल खबर लाए तो उस खबर पर साबित कदम रहे लेकिन उसकी खबर लागू न हो तो वह फासिक (अविश्वसनीय) के बराबर होगा।

पाद-टिप्पणियाँ: १. रद अल-मुह्तार, किताबुस-सलात, बाबू इमामत, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, १/३७६। २. शरह अल-ज़रकानी अलल मुअत्ता इमाम मालिक, बाबु मा जाआ फित-ताऊन, दार अल-मआरिफ़ा, बेरुत, ४/२३८।

पृष्ठ २९२ / ७२०

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

ردالمختار میں ہے:

[جدول] عربی متن: فی تقدیمه للامامة تعظیمه وقد وجب علیهم اهانته شرعا فهو کالمبتدع تکره امامته بکل حال بل مشی فی شرح المنیة علی ان کراهة تقدیمه کراهة تحریم لماذکرنا۱۔ اردو ترجمہ: اس لئے کہ اس کو امامت کے لئے آگے کرنے میں اس کی تعظیم ہے حالانکہ لوگوں پر شرعاً اس کی توہین و تذلیل واجب ہے لہذا وہ بدعتی کی طرح ہے ہر حال میں اس کی امامت مکروہ ہے بلکہ شرح منیہ میں یہ بیان کیا گیا کہ اس کے آگے کرنے میں جو کراہت ہے وہ کراہت تحریمی ہے اس وجہ سے جو ہم نے بیان کردی۔ (ت)

طاعون سے فرار کو جو احسن سمجھتا ہے اگر جاہل ہے اور اسے معلوم نہیں کہ احادیث صحیحہ اس کی تحریم میں وارد ہیں اسے تفہیم کی جائے اور اگر دانستہ حدیثوں کا انکار کرتا ہے تو صریح گمراہ ہے۔ شرح موطا للعلامۃ الزرقانی میں زیر حدیث عبدالرحمن بن عوف رضی اللہ تعالٰی عنہ درباره طاعون ہے:

[جدول] عربی متن: فیه دلیل قوی علی وجوب العمل بخبر الواحد لانه کان بمحضر جمع عظیم من الصحابة فلم یقولوا لعبد الرحمن انت واحد وانما یجب قبول خبر الکافة ، ماضل من قال بهذا واللہ تعالی یقول ان جاء کم فاسق بنبأ فتبینوا وقرئ فتثبتوا فلوکان العدل اذا جاء بنبأ تثبت فی خبره ولم ینفذ لاستوی مع الفاسق وهذا خلاف القرآن ام نجعل المتقین کالفجار قاله ابن عبدالبر۲۔ اردو ترجمہ: اس میں قوی دلیل ہے کہ خبر واحد پر عمل کرنا واجب ہے (کیونکہ عبدالرحمن ابن عوف کا حدیث طاعون بیان فرمانا) صحابہ کرام کی ایک عظیم جماعت کی موجودگی میں تھا، پھر کسی نے حضرت

عبدالرحمن سے یہ نہیں کہا کہ تم ایک اکیلے بیان کر رہے ہو (لہٰذا تمہارے اکیلے پن کے باعث تمہاری بات پر اعتماد نہیں کیا جاسکتا) لہٰذا پوری جماعت کی خبر قبول کرنا واجب اور ضروری ہے، پس جس کسی نے یہ کہا وہ کس قدر بھٹک گیا، اور اللہ تعالیٰ ارشاد فرماتا ہے کہ اگر تمہارے پاس کوئی فاسق کوئی خبر لائے تو خوب تحقیق کرلیا کرو، اور یوں بھی پڑھا گیا فتثبتوا یعنی ثابت قدم اور مضبوط ہو جایا کرو (یعنی اس کی خبر میں توقف کیا کرو تاکہ پتہ چل جائے) پھر اگر کوئی عادل خبر لائے تو تو اس خبر میں ثابت قدم رہے لیکن اس کی خبر نافذ نہ ہو تو وہ فاسق (غیر معتبر) کے برابر ہوجائے گا اور یہ قرآن کے خلاف ہے (کیا ہم پرہیزگاروں کو بدکاروں جیسا کردیں گے؟) یہ ابن عبدالبر نے فرمایا۔

حواشی: ۱ ردالمحتار کتاب الصلوۃ باب الامامۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۳۷۶ ۲ شرح الزرقانی علی موطا الامام مالك باب ماجاء فی الطاعون دارالمعرفۃ بیروت ۴/ ۲۳۸

Fatawa Razawiyyah, Volume 24

...will become equal to it, even though this is against the explicit text (nass) of the Quran. As Allah Almighty says: "Shall We treat those who fear Allah like the wicked?" Hence, Allama Ibn Abd al-Barr has stated the same. (T)

In matters where opinion and ijtihad have no role, the saying of a companion (Sahabi) serves as evidence for the saying of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). Otherwise, if the Sahabi themselves are the narrator of the hadith they are contradicting, and the contradiction is only in the apparent meaning of the text—for example, specifying a general rule (takhsis al-amm) or restricting an absolute one (taqyid al-mutlaq)—then this report (athar) from the companion will be considered an interpretation of that marfu' hadith and will be understood as such despite appearing contradictory. If the contradiction is against an explicit, clarified text (mufassar), it is a clear proof that the hadith has been abrogated (mansukh) and the Sahabi knew its abrogator (nasikh). If the Sahabi is not the narrator, and the matter was such that it could not remain hidden from them, then their contradiction will cast doubt on the acceptance of that marfu' report; otherwise, the hadith itself takes precedence, just as it does over the words and actions of non-companions absolutely, until it reaches the level of consensus (ijma'). It is stated in Musallam al-Thubut:

Arabic Text	Urdu Explanation
If a Companion narrates and interprets the apparent meaning as something else, such as specifying the general, then the Hanafis follow his interpretation. This is because abandoning the apparent meaning without a cause is prohibited; therefore, he would not abandon it without definitive proof. If he abandons a clarified text (nass mufassar), it is determined that he knew of its abrogation, so following him becomes mandatory. If someone else acts contrary to his report: if he is a	If the Sahabi himself narrated and interpreted the apparent meaning of the hadith to something else, like specifying the general, then the opinion of the Hanafis is the same as what he interpreted the hadith to be. This is because abandoning the apparent meaning without any reason is prohibited, so he does not leave it without a definitive proof. If he leaves an explicit, clarified text (nass mufassar), its meaning would be that the hadith is abrogated in his view and the abrogator is determined in his knowledge, so following him is necessary. And if he acted against someone else's

Arabic Text	Urdu Explanation
Companion, and the matter is prone to obscurity, it does not harm; otherwise, it impairs the report. If he is not a Companion, even if they are the majority of the Ummah, then action is based only on the report. (End of summary).	narration: If these are the Sahabah themselves, then if the matter has a possibility of obscurity, the first thing is not harmful at all to create a critique. And if they are not Sahabah, even if they are the majority of the Ummah, then the action will be only on the hadith. (End of summary). (T)

It is stated in the same: | Among us are Al-Razi, Al-Bardai, Al-Bazdawi, and Al-Sarakhsi. | Among us are Al-Razi, Al-Bardai, Al-Bazdawi, and Al-Sarakhsi. |

1. Musallam al-Thubut, Al-Asl al-Thani, As-Sunnah, Mas'alah: Wa Yulhaq al-Sahabi al-Mujmal, Matba' Ansari Delhi, pp. 196-7.

फ़तावा रज़विया, जिल्द २४

...साथ बराबर हो जाएगा हालाँकि यह बात कुरान के स्पष्ट पाठ (नस) के विरुद्ध है, जैसा कि अल्लाह का फरमान है: "क्या हम परहेजगारों को फाजरों (पापियों) के बराबर कर देंगे?" इसलिए अल्लामा इब्न अब्द अल-बर्र ने यही कहा है। (त)

जिस मामले में राय और इज्तिहाद का कोई दखल न हो, उसमें सहाबी का कथन अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के कथन के लिए प्रमाण है। अन्यथा, यदि वे सहाबी स्वयं उस हदीस के रावी (वर्णनकर्ता) हैं जिसका वे विरोध कर रहे हैं, और विरोध केवल पाठ के स्पष्ट अर्थ (जाहिर) में है—जैसे कि सामान्य को विशिष्ट करना (तखसीस-ए-आम) या निरपेक्ष को प्रतिबंधित करना (तकीद-ए-मुतलक)—तो सहाबी का यह प्रभाव (असर) उस मरफू हदीस की व्याख्या माना जाएगा और उसे इसी प्रत्यक्ष विरोध पर आधारित समझा जाएगा। और यदि विरोध एक स्पष्ट, व्याख्यायित पाठ (मुफस्सर) के विरुद्ध है, तो यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि वह हदीस निरस्त (मनसूख) हो चुकी है और सहाबी को उसके निरस्त करने वाले (नासिख़) का ज्ञान था। और यदि वे स्वयं इसके रावी नहीं हैं, तो यह मामला यदि ऐसा नहीं था कि उन सहाबी पर गुप्त रहता, तो उनका विरोध उस मरफू रिवायत की स्वीकार्यता में संदेह पैदा करेगा, अन्यथा हदीस ही को प्राथमिकता दी जाएगी, जैसा कि गैर-सहाबा के कथन और कार्य पर पूर्णतः दी जाती है जब तक कि वह इज्मा (आम सहमति) की सीमा तक न पहुँच जाए। 'मुसल्लम अल-थुबूत' में है:

अरबी पाठ	उर्दू व्याख्या
यदि सहाबी ने स्वयं हदीस का वर्णन किया और उसके स्पष्ट अर्थ को किसी अन्य अर्थ में लिया, जैसे सामान्य को विशिष्ट करना, तो हनफियों की राय वही है जिस पर उन्होंने हदीस को लागू किया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि बिना किसी कारण के स्पष्ट अर्थ को छोड़ना वर्जित है, इसलिए वे बिना किसी निश्चित प्रमाण के उसे नहीं छोड़ते। यदि वे किसी व्याख्यायित पाठ (नस मुफस्सर) को छोड़ते हैं, तो इसका अर्थ यह होगा कि उनके निकट वह	यदि सहाबी ने स्वयं हदीस का वर्णन किया और हदीस के स्पष्ट अर्थ को अस्पष्ट पर लागू किया जैसे सामान्य की विशिष्टता, तो इस स्थिति में हनफियों की राय वही है जिस पर उन्होंने हदीस को लागू किया है क्योंकि स्पष्ट को बिना किसी कारण के छोड़ देना वर्जित है, इसलिए वे बिना किसी निश्चित प्रमाण के इसे नहीं छोड़ते। यदि वे किसी स्पष्ट व्याख्यायित पाठ (नस मुफस्सर) को छोड़ देते हैं, तो इसका अर्थ यह होगा कि उनके

अरबी पाठ

हदीस निरस्त है और उनके ज्ञान में उसका निरस्त करने वाला (नासिख़) निर्धारित है, इसलिए उनका अनुसरण आवश्यक है। यदि कोई और उसकी रिवायत के खिलाफ अमल करे: अगर वह सहाबी है और बात छिपे होने की संभावना रखती है, तो यह नुकसानदेह नहीं है, वरना यह रिवायत में दोष पैदा करता है। अगर वह सहाबी नहीं है, चाहे वे उम्मत के बहुसंख्यक ही क्यों न हों, तो अमल केवल हदीस पर होगा। (संक्षेप में)

उर्दू व्याख्या

निकट हदीस निरस्त है और उनके ज्ञान में उसका निरस्त करने वाला (नासिख़) निर्धारित है, इसलिए उनका अनुसरण आवश्यक है। और यदि उन्होंने किसी दूसरे की रिवायत के विरुद्ध कार्य किया। यदि वे स्वयं सहाबी हैं और मामला गुप्त रहने की संभावना रखता है, तो पहले वाला कुछ हानिकारक नहीं है कि वह दोष पैदा करे। और यदि वे सहाबी नहीं हैं, चाहे वे उम्मत के अधिकांश लोग ही हों, तो फिर अमल केवल हदीस पर ही होगा। (संक्षेप में) (त)

उसी में है: | अल-राज़ी मिन्ना वल-बरदई वल-बज़दवी वल-सरखसी | हम में से राजी, बरदई, बजदवी, सुर्खसी और |

1. मुसल्लम अल-थुबूत, अल-असल अल-थानी, अस-सुन्नत, मसला: व युल्हाक अल-सहाबी अल-मुजमल, मतबा अंसारी दिल्ली, पृ. १९६-७।

पृष्ठ २९३/७२०

ساتھ برابر ہوجائے گا حالانکہ یہ بات نصِ قرآن کے خلاف ہے، چنانچہ ارشاد باری ہے: "کیا ہم پرہیز گاروں کو فاجروں کے برابر کردیں گے؟" چنانچہ علامہ ابن عبدالبر نے یہی فرمایا ہے۔ (ت)

جس امر میں رائے واجتہاد کو دخل نہ ہو اس میں قولِ صحابی دلیلِ قولِ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ہے ورنہ جس حدیث کی مخالفت کی اگر اس کے راوی خود یہ صحابی ہیں اور مخالفت صرف ظاہرِ نص کی ہے مثلاً عام کی تخصیص یا مطلق کی تقیید تو یہ اثرِ صحابی اس حدیثِ مرفوع کی تفسیر ٹھہرے گا اور اسے اسی خلافِ ظاہر پر محمول سمجھا جائے گا اور مخالفت مفسر کی ہے تو صریح دلیل ہے کہ وہ حدیث منسوخ ہوچکی صحابی کو اس کا ناسخ معلوم تھا، اور اگر یہ خود اس کے راوی نہیں تو یہ معاملہ اگر اس قابل نہ تھا کہ ان صحابی پر مخفی رہتا تو ان کی مخالفت اس روایتِ مرفوع کے قبول میں شبہ ڈالے گی ورنہ حدیث ہی مرجح ہے جیسا کہ غیر صحابہ کے قول و فعل پر مطلقاً جب تک حدِ اجماع تک نہ پہنچے۔ مسلم الثبوت میں ہے:

متنِ عربی	**ترجمہ و تشریح**
روی الصحابي وحمل ظاهراً على غيره كتخصيص العام فالحنفية على ما حمل لأن ترك الظاهر بلا موجب حرام فلا يتركه إلا بدليل قطعاً ولو ترك نصاً مفسراً تعين علمه بالناسخ فيجب اتباعه وان عمل بخلاف خبره	اگر خود صحابی نے روایت کی اور حدیث کے ظاہر کو غیر ظاہر پر حمل کیا جیسے عام کی تخصیص، تو اس صورت میں حنفیہ کی رائے وہی ہے جس پر اس نے حدیث کو حمل کیا ہے کیونکہ ظاہر کو بغیر کسی سبب چھوڑ دینا حرام ہے لہذا بغیر کسی قطعی دلیل کے وہ اسے نہیں چھوڑتا۔ اگر کسی نصِ مفسر کو چھوڑ دے تو اس کا مفہوم یہ ہوگا کہ حدیث اس کے نزدیک

متنِ عربی	ترجمہ و تشریح
غیرہ فإن کان صحابیاً فالحنفیة إن کان مما یحتمل الخفاء لا یضر وإلا فیقدح وإن کان غیر صحابي ولو أکثر الأمة فالعمل بالخبر ۱ھ مختصراً۔	منسوخ ہے اور اس کے علم میں اس کا ناسخ متعین ہے تو اس کی اتباع ضروری ہے اور اگر اس نے کسی دوسرے کی روایت کے خلاف عمل کیا۔ اگر یہ خود صحابی ہیں تو اگر معاملہ خفاء کا احتمال رکھتا ہے تو اول کچھ مضر ہی نہیں کہ قدح پیدا کرے گا اور اگر یہ صحابی نہیں اگر چہ اکثر افرادِ امت ہوں، تو پھر عمل صرف حدیث پر ہوگا اھ مختصراً۔ (ت)

اُسی میں ہے: | الرازي منا والبردعي والبزدوي والسرخسي | ہم میں سے رازی، بردعی، بزدوی، سرخسی اور |

۱ مسلم الثبوت الاصل الثانی السنة مسئلہ وی الصحابی المجمل مطبع انصاری دہلی ص ۷-۱۹۶

Fatawa Razawiya, Volume 24

Arabic: واتباعهم قول الصحابى فيما يكن فيه الرأى ملحق بالسنة لغيره لايمثله ونفاه الكرخى وجماعة وفيما لا يدرک بالرأى فعند اصحابنا اتفاق فله حكم الرفع ١اهـ ملتقطا۔

Urdu: Their followers (supporters) say that the statement of a Companion in a matter where personal opinion is possible is adjoined to the Sunnah for others, though not for the Companion himself. However, Imam al-Karkhi and a group have denied this. And if the matter is such that it cannot be perceived through personal opinion, then there is consensus among our scholars that it holds the ruling of a Marfu' (elevated) hadith. [Summarized]

This is a general discourse intended for the insight of a Mujtahid (jurist). The hadith regarding the plague is of this nature, and it is not surprising that it remained hidden from some, or rather most, of the Companions. As proven by the hadith in Sahihayn (Bukhari and Muslim), when the Commander of the Faithful, Farooq al-A'zam (may Allah be pleased with him), received news on the way to Syria that there was a plague there, he called for consultation, first the great Muhajirin, then the noble Ansar, and then the elders of the Quraysh Muhajirin from the conquest of Makkah. Everyone expressed their own opinion, but no one knew the noble command of the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) regarding this matter, nor was it known to the Commander of the Faithful himself. This continued until Hazrat Abdur Rahman bin 'Awf (may Allah be pleased with him), who had gone to attend to some work at that time, came and narrated the noble command, which was then acted upon. Similarly, it is proven by the hadith in Sahihayn that Sa'd bin Abi Waqqas (may Allah be pleased with him), one of the ten promised Paradise, did not know this noble command: "When you hear of a plague in another place, do not go there, and if it occurs where you are, do not flee from there." This remained so until Hazrat Usama bin Zaid (may Allah be pleased with both of them), who was the beloved son of the beloved of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), and a youth before Hazrat Sa'd (may Allah be pleased with him), narrated this hadith to him. In fact, it is also proven from Sahihayn that Sa'd (may Allah be pleased with him) himself asked him and gained knowledge of it.

Arabic: فقد اخرجاعن عامر بن سعد بن ابى وقاص عن ابيه انه سبعه يسأل اسامة بن زيد ماذا سمعت

Urdu: Bukhari and Muslim have narrated from 'Amir bin Sa'd from his father that he personally heard from his venerable father, Hazrat Sa'd bin Abi Waqqas (may Allah be pleased with him), that...

Footnotes: 1. Musallam al-Thubut, Al-Asl al-Thani, As-Sunnah, the issue of the Companion's statement in matters where opinion is not possible, Ansari Delhi, pp. 207-208. 2. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Tibb, Chapter on what is mentioned about the plague, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/853; Sahih Muslim, Kitab al-Salam, Chapter on plague and omens etc., Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/228.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

अरबी: واتباعهم قول الصحابى فيما يكن فيه الرأى ملحق بالسنة لغيره لايمثله ونفاه الكرخى وجماعة وفيما لا يدرک أى فعند اصحابنا اتفاقرحبال فله حكم الرفع ١اهـ ملتقطا۔	**उर्दू: उनके अनुयायियों (समर्थकों) का कहना है कि किसी सहाबी का कथन यदि ऐसे मामले में हो जिसमें राय (तर्क) संभव हो, तो वह दूसरों के लिए सुन्नत से जुड़ा माना जाता है, न कि स्वयं उनके लिए। लेकिन इमाम कर्खी और एक समूह ने इसे नकार दिया है। और यदि कोई मामला राय के माध्यम से नहीं समझा जा सकता है, तो हमारे विद्वानों के बीच इस पर सहमति है कि उसे 'मरफ़ू' हदीस का दर्जा प्राप्त है। (संक्षिप्त)**

यह एक संक्षिप्त चर्चा है और मुजतहिद (धर्मशास्त्री) की अंतर्दृष्टि के लिए है। प्लेग (ताऊन) की हदीस इसी श्रेणी में आती है, और यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि यह कुछ, बल्कि अधिकांश सहाबा से भी गुप्त रही। जैसा कि सहीहैन (बुखारी और मुस्लिम) की हदीस से सिद्ध है कि जब अमीरुल मोमिनीन फारूक-ए-आजम (रज़ियल्लाहु अन्हु) को सीरिया के रास्ते में खबर मिली कि वहां प्लेग है, तो उन्होंने परामर्श के लिए पहले महान मुहाजिरीन, फिर सम्मानित अंसार और फिर मक्का विजय के कुरैश मुहाजिरीन के बुजुर्गों को बुलाया। सभी ने अपनी-अपनी राय व्यक्त की, लेकिन इस बारे में किसी को भी सैय्यद आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का पवित्र आदेश ज्ञात नहीं था, और न ही स्वयं अमीरुल मोमिनीन को इसकी जानकारी थी। यह तब तक जारी रहा जब तक हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ियल्लाहु अन्हु), जो उस समय अपने किसी काम से गए हुए थे, वापस नहीं आए और उन्होंने पवित्र आदेश सुनाया, जिस पर फिर अमल किया गया। इसी तरह, सहीहैन की हदीस से सिद्ध है कि 'अशरा मुबश्शरा' (स्वर्ग की खुशखबरी पाने वाले दस सहाबी) में से एक, साद बिन अबी वक्कास (रज़ियल्लाहु अन्हु) को यह पवित्र आदेश ज्ञात नहीं था कि जब तुम किसी दूसरी जगह प्लेग के बारे में सुनो तो वहां मत जाओ, और जब तुम्हारे यहां प्लेग फैल जाए तो वहां से मत भागो। यह तब तक था जब तक हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ियल्लाहु अन्हुमा), जो अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के प्रिय के प्रिय पुत्र थे और साद (रज़ियल्लाहु अन्हु) के सामने एक बच्चे के समान थे, ने उन्हें यह हदीस सुनाई। वास्तव में, सहीहैन से यह भी सिद्ध है कि साद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने स्वयं उनसे प्रश्न करके इसका ज्ञान प्राप्त किया था।

अरबी: فقد اخرجاعن عامر بن سعد بن ابی وقاص عن ابیه انه سبعه یسأل اسامة بن زید ماذا سمعت	**उर्दू: बुखारी और मुस्लिम ने आमिर बिन साद बिन अबी वक्कास के माध्यम से उनके पिता से उल्लेख किया है कि उन्होंने अपने सम्मानीय पिता हज़रत साद बिन अबी वक्कास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से स्वयं सुना कि...**

पादलेख: 1. मुस्लिम अस-सुबूत, अल-अस्ल अस-सानी, अस-सुन्नत, सहाबी के कथन का मामला जिसमें राय संभव न हो, अंसारी दिल्ली, पृष्ठ 207-208। 2. सहीह अल-बुखारी, किताब अत-तिब्ब, ताऊन के उल्लेख का अध्याय, कदीमी कुतुब खाना कराची, 2/853; सहीह मुस्लिम, किताब अस-सलाम, ताऊन और अपशकुन आदि का अध्याय, कदीमी कुतुब खाना कराची, 2/228।

واتباعهم قول الصحابی فیما یکن فیہ الرأی ملحق بالسنة لغیرہ لایمثلہ ونفاہ الکرخی وجماعة وفیما لا یدرک بالرأی فعند اصحابنا اتفاق فلہ حکم الرفع ۱۱ھ ملتقطا.

ان کے تابعین (موافقین) فرماتے ہیں کسی صحابی کا قول اگر ایسے معاملہ میں ہو جس میں رائے ممکن ہو تو وہ دوسروں کے لئے سنت سے ملحق ہے نہ کہ خود اس کے لئے، لیکن امام کرخی اور ایک گروہ نے اس کی نفی کی، اور اگر کسی معاملہ کا ادراک رائے کے ساتھ نہ ہو سکے تو اس پر ہمارے اصحاب کا اتفاق ہے یہ کہ وہ حدیث مرفوع کے حکم میں ہے ۱۱ھ ملتقطا (ت)

یہ اجمالی کلام ہے اور نظر مجتہد کے لئے ہے اور حدیثِ طاعون اسی قبیل سے ہے جس کا بعض بلکہ اکثر صحابہ پر بھی مخفی رہنا جائے عجب نہ تھا جیسا کہ حدیثِ صحیحین سے ثابت ہے کہ جب امیرالمومنین فاروقِ اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کو راہِ شام میں خبر ملی کہ وہاں طاعون ہے صحابہ کرام میں پہلے مہاجرین عظام پھر انصارِ کرام پھر مشائخ قریش مہاجرینِ فتح مکہ کو بلا کر مشورے لئے سب نے اپنی اپنی رائے ظاہر کی مگر کسی کو اس بارے میں ارشادِ اقدس سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم معلوم نہ تھا، نہ خود امیر المومنین کے علم میں تھا یہاں تک کہ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف رضی اللہ تعالٰی عنہ کہ اس وقت اپنے کسی کام کو تشریف لے گئے تھے انہوں نے آکر ارشادِ والا بیان کیا اور اسی پر عمل کیا گیا ۲۔ یونہی صحیحین کی حدیث سے ثابت کہ سعد بن ابی وقاص رضی اللہ تعالٰی عنہ احد العشرة المبشرہ کو یہ ارشادِ اقدس کہ جب دوسری جگہ طاعون ہو ناسنو وہاں نہ جاؤ اور جب تمہارے یہاں پیدا ہو تو وہاں سے نہ بھاگو، معلوم نہ تھا، یہاں تک کہ حضرت اسامہ بن زید رضی اللہ تعالٰی عنہما نے کہ رسول اللہ صلی اللہ

تعالیٰ علیہ وسلم کے محبوب ابن المحبوب اور سعد رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے سامنے کے بچے ہیں انہیں یہ حدیث سنائی بلکہ صحیحین سے یہ بھی ثابت کہ سعد رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ان سے سوال کرکے اس کا علم حاصل فرمایا۔

فقد اخرجاعن عامر بن سعد بن ابی وقاص عن ابیہ انہ سبعہ یسأل اسامۃ بن زید ماذا سمعت

بخاری و مسلم نے عامر بن سعد عن ابیہ سے تخریج فرمائی ہے کہ انہوں نے اپنے والد بزرگوار حضرت سعد بن ابی وقاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے خود سنا کہ

حواشی: 1 مسلم الثبوت الاصل الثانی السنۃ مسئلہ قول الصحابی فیما یکن فیہ الرأی انصاری دہلی ص ۲۰۷۔ ۲۰۸ 2 صحیح البخاری کتاب الطب باب ما یذکر فی الطاعون قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۸۵۳، صحیح مسلم کتاب السلام باب الطاعون والطیرۃ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۲۲۸

Fatawa Razawiya Volume 24

[Arabic Box 1] From the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him): "The plague is a punishment sent upon the Children of Israel or upon those who were before you. So, when you hear it is in a land, do not enter it; and if it breaks out in a land while you are in it, do not depart fleeing from it[1]."

[Urdu Translation of Box 1] They were asking Hazrat Usama bin Zaid what he heard from the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) regarding the plague. He said: "The plague is a punishment that was sent upon the Children of Israel or those before them. Therefore, when you hear that it has spread in a certain land, do not go there; and if the plague occurs in the place where you are residing, then do not go out from there fleeing from it and do not leave (your place of stay). (T)"

[Middle Box] And after that, he himself narrates it from the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him): [Arabic]: "Meaning, he transmits it reliably through the narration of Usama (may Allah be pleased with him)." [Urdu]: Meaning, while transmitting, he relies on the narration of Hazrat Usama (may Allah be pleased with him). (T)

[Bottom Box] In Sahih Muslim Sharif, after mentioning the Hadith of Usama (may Allah be pleased with him), it is stated: [Arabic]: "And Wahb bin Baqiyyah narrated it to me, then he mentioned with his chain from Ibrahim bin Sa'd bin Malik from his father from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) similar to their Hadith[2]." [Urdu]: Wahb bin Baqiyyah narrated to me, then he narrated the Hadith through his chain similar to their Hadith (and the chain is this): via Ibrahim bin Sa'd bin Malik, from his respected father Sa'd bin Malik, he himself narrated from the presence of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family). (T)

[Main Body Text] So, the reports from one or two companions that go against this were prior to them receiving information about the Hadith. For instance, Amr bin al-Aas (may Allah be pleased with him), who was very fearful of the plague, advised the people to disperse. Mu'adh bin Jabal (may Allah be pleased with him), who is 'A'lam al-Nas bi al-Halal wa al-Haram wa Imam al-'Ulama Yawm al-Qiyamah' (the most knowledgeable of people regarding Halal and Haram and the leader of the scholars on the Day of Judgment. T), strongly refuted him and narrated the Hadith of the Master of the World (peace be upon him). Also, Shurahbil bin Hasana (may Allah be

pleased with him), the scribe of revelation, strictly prohibited it and narrated the Prophet's (peace be upon him) prohibition of fleeing from the plague. Amr bin al-Aas (may Allah be pleased with him)...

---

[1] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Anbiya, Bab minhu, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/494; Sahih Muslim, Kitab al-Salam, Bab al-Ta'un wa al-Tiyarah, Qadimi Kutub Khana Karachi 2/228. [2] Sahih Muslim, Kitab al-Salam, Bab al-Ta'un wa al-Tiyarah, Qadimi Kutub Khana Karachi 2/228.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[अरबी बॉक्स 1] अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से: "ताऊन (प्लेग) एक अज़ाब है जो बनी इस्राइल या आपसे पहले के लोगों पर भेजा गया था। इसलिए, जब तुम इसके बारे में सुनो कि यह किसी ज़मीन में है, तो वहाँ मत जाओ; और यदि वह उस ज़मीन में फैल जाए जहाँ तुम हो, तो उससे भागते हुए वहाँ से न निकलो।[1]"

[बॉक्स 1 का उर्दू अनुवाद] वे हज़रत उसामा बिन ज़ैद से पूछ रहे थे कि आपने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से प्लेग के बारे में क्या सुना। उन्होंने कहा: "प्लेग एक अज़ाब है जो बनी इस्राइल या उनसे पहले के लोगों पर भेजा गया था। इसलिए जब तुम इसके बारे में सुनो कि फलां ज़मीन में फैल गया है, तो वहाँ मत जाओ और जिस जगह तुम ठहरे हुए हो, वहाँ प्लेग पैदा हो जाए, तो उससे भागते हुए वहाँ से बाहर न निकलो और (ठहरने की जगह) न छोड़ो। (त)"

[मध्य बॉक्स] और उसके बाद वे स्वयं इसे सैयदुल आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत करते हैं: [अरबी]: "यानी वे इसे उसामा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) की रिवायत पर भरोसा करते हुए विश्वसनीय रूप से प्रेषित करते हैं।" [उर्दू]: यानी रिवायत करते हुए हज़रत उसामा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) की रिवायत पर भरोसा करते हुए। (त)

[नीचे का बॉक्स] सहीह मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत उसामा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) की हदीस के ज़िक्र के बाद है: [अरबी]: "और वहब बिन बक़िया ने मुझसे इसे बयान किया, फिर उन्होंने अपनी सनद के साथ इब्राहिम बिन साद बिन मालिक से, उनके पिता से, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से उनकी हदीस के समान ही बयान किया।[2]" [उर्दू]: मुझसे वहब बिन बक़िया ने बयान किया, फिर उन्होंने अपनी सनद से उनकी हदीस की तरह हदीस बयान की (और सनद यह है) इब्राहिम बिन साद बिन मालिक के हवाले से, उन्होंने अपने सम्मानित पिता साद बिन मालिक के हवाले से रिवायत की, जिन्होंने स्वयं हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत की। (त)

[मुख्य पाठ] तो एक या दो सहाबा से जो इसके विरुद्ध रिवायत है, वह हदीस की जानकारी मिलने से पहले की थी। जैसे अम्र बिन आस (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु), जो प्लेग से बहुत डरते थे, उन्होंने लोगों को बिखर जाने की सलाह दी। मुआज़ बिन जबल (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु), जो 'अअलम अन-नास बिल-हलाल वल-हराम व इमामुल उलमा यौम अल-क़ियामा' (जो सब लोगों से ज़्यादा हलाल और हराम को जानने वाले हैं और क़यामत के दिन उलेमा के इमाम होंगे। त) हैं, उन्होंने उनकी कड़ी निंदा

की और सैयदुल आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हदीस बयान की। और वही लिखने वाले शुरहबील बिन हसना (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने भी सख़्ती से रोका और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) द्वारा ताऊन से भागने की मनाही को रिवायत किया, अम्र बिन आस (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु)...

---

[1] सहीह अल-बुखारी, किताब अल-अंबिया, बाब मिन्हु, क़दीमी कुतुब खाना कराची 1/494; सहीह मुस्लिम, किताब अल-सलाम, बाब अत-ताऊन व अत-तियरह, क़दीमी कुतुब खाना कराची 2/228। [2] सहीह मुस्लिम, किताब अल-सलाम, बाब अत-ताऊन व अत-तियरह, क़दीमी कुतुब खाना कराची 2/228।

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

[Arabic Box 1] من رسول الله صلی الله تعالی علیہ وسلم الطاعون رجز ارسل علی بن اسرائیل او علی من کان قبلکم فاذا سمعتم به بارض فلاتقدموا علیه واذ وقع بارض وانتم بها فلا تخرجوا فرار منه[1]۔

[Urdu Translation of Box 1] وہ حضرات اسامہ بن زید سے پوچھ رہے تھے کہ آپ نے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے طاعون کے متعلق کیا سنا، یہ کہ طاعون ایک عذاب ہے جو بنی اسرائیل یا ان سے پہلے لوگوں پر بھیجا گیا لہٰذا جب تم اس کے بارے میں سنو کہ فلاں زمین میں پھیل گیا ہے تو وہاں نہ جاؤ اور جس جگہ تم مقیم ہو وہاں طاعون پیدا ہو جائے تو اس سے بھاگتے ہوئے وہاں سے باہر نہ جاؤ اور (جگہ قیام) نہ چھوڑو۔ (ت)

[Middle Box] اور اس کے بعد خود اسے حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے روایت کرتے ہیں: ای یرسل ارسالا ثقة برواية اسامة رضی الله تعالی عنہ۔ یعنی ارسال فرماتے ہوئے حضرت اسامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی روایت پر اعتماد کرتے ہوئے۔ (ت)

[Bottom Box] صحیح مسلم شریف میں بعد ذکر حدیث اسامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہے: وحدثنیہ وهب بن بقية فذكر بسنده عن ابراهيم بن سعد بن مالك عن ابيہ عن النبی صلی الله تعالی علیہ وسلم بنحو حديثهم[2]۔ مجھ سے وہب بن بقیہ نے بیان کیا پھر اس نے اپنی سند سے ان کی حدیث کی طرح حدیث بیان کی (اور سند یہ ہے) ابراہیم بن سعد بن مالک کے حوالہ سے اس نے اپنے والد گرامی سعد بن مالک کے حوالہ سے انہوں نے خود حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم سے روایت فرمائی۔ (ت)

[Main Body Text] تو دو ایک صحابہ سے جو اس کا خلاف مروی ہو اطلاع حدیث سے پہلے تھا جیسے عمرو بن عاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہ طاعون سے بہت خوف کرتے لوگوں کو متفرق ہو جانے کی رائے دی معاذ بن جبل رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے کہ اعلم الناس بالحلال والحرام وامام العلماء یوم القیامہ (جو سب لوگوں سے زیادہ حلال و حرام کو جاننے والے ہیں اور قیامت کے دن علمائے کرام کے امام ہوں گے۔ت) ہیں ان کا رد شدید کیا اور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ و سلم کی حدیث بیان کی اور شرجیل بن حسنہ رضی اللہ تعالی عنہ کاتب وحی نے نہایت شدت سے روکا اور فرار عن الطاعون سے نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ و سلم کا منع فرمانا روایت کیا، عمرو بن عاص رضی اللہ تعالی عنہ۔۔۔

---

[1] صحیح البخاری کتاب الانبیاء باب منھ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۴۹۴، صحیح مسلم کتاب السلام باب الطاعون والطیرۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۲۲۸ [2] صحیح مسلم کتاب السلام باب الطاعون والطیرۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۲۲۸

Fatawa Razawiya, Volume 24

...immediately referred back and verified them.

| Ibn Khuzaymah narrated in his Sahih from 'Abd al-Rahman bin Ghanm who said: A plague occurred in Syria. So 'Amr bin al-'Aas (may Allah be pleased with him) said: "Indeed, this plague is a filth (punishment), so flee from it into the valleys and mountain passes." News of this reached Shurahbil bin Hasanah (may Allah be pleased with him), so he became angry and said: "'Amr bin al-'Aas has lied. I was in the company of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) and 'Amr is more astray than the camel of his family. Verily, this plague is the invitation of your Prophet, the mercy of your Lord, and the death of the righteous before you."(1) [Hadith] And the wording of Ibn 'Asakir from 'Abd al-Rahman bin Ghanm: He said: 'Amr bin al-'Aas (may Allah be pleased with him), when he felt the plague, became very fearful and said: "O people! Disperse into these mountain passes and scatter, for a command from Allah Almighty has descended upon you; I see it only as a punishment or a flood." Shurahbil bin Hasanah (may Allah be pleased with him) said: "We accompanied the Messenger of Allah..." | Ibn Khuzaymah has recorded in his Sahih on the authority of Hazrat Abdul Rahman ibn Ghanm, who said that when the disease of plague broke out in the land of Syria, Hazrat 'Amr ibn al-'Aas (may Allah be pleased with him) said, "(O people!) This plague is a torment from Allah Almighty, so run away from it and go into the valleys and mountain passes." Then when Shurahbil bin Hasanah (may Allah be pleased with him) received this information, he became enraged and said, "'Amr ibn al-'Aas has spoken wrongly because I have stayed with the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family), but 'Amr is more lost than the camel of his household. Undoubtedly, this plague is the invitation of your Prophet, the mercy of your Lord, and the death of the righteous before you." (Hadith) Ibn 'Asakir, through Hazrat Abdul Rahman ibn Ghanm, says that he said: When Hazrat 'Amr ibn al-'Aas (may Allah be pleased with him) felt the plague, he was extremely terrified and said, "(O people!) Disperse and scatter into these mountain passes because the command (torment) of Allah Almighty has descended upon you, and I consider it nothing but a torment or a flood." Hazrat Shurahbil bin Hasanah (may Allah be pleased with him) said: "We have been companions of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family)..." |

1 Kanz al-Ummal with reference to Ibn Khuzaymah, Hadith 11675, Mu’assasat ar-Risalah Beirut 4/203

फ़तावा रज़विया, खंड २४

...ने तुरंत रुजू (संदर्भ) किया और उनकी पुष्टि की।

| इब्न खुज़ैमा ने अपनी 'सहीह' में अब्दुर रहमान बिन ग़नम से रिवायत की है कि उन्होंने कहा: शाम के मुल्क में ताऊन (प्लेग) फैल गया। तो अम्र बिन अल-आस (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "बेशक, यह ताऊन एक अज़ाब है, इसलिए इससे भागकर घाटियों और पहाड़ी रास्तों में चले जाओ।" यह बात शरहबील बिन हसना (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) तक पहुँची, तो वे क्रोधित हुए और कहा: "अम्र बिन अल-आस ने झूठ कहा है। मैं अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सोहबत में रहा हूँ और अम्र अपने घर के ऊँट से भी ज़्यादा गुमराह है। वास्तव में, यह ताऊन तुम्हारे नबी की पुकार, तुम्हारे रब की रहमत और तुमसे पहले के नेक लोगों की मृत्यु है।"(1) [हदीस] और इब्न असाकिर के शब्द अब्दुर रहमान बिन ग़नम से हैं: उन्होंने कहा: अम्र बिन अल-आस (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) जब ताऊन को महसूस किया, तो वे बहुत डर गए और कहा: "हे लोगो! इन घाटियों में अलग-अलग हो जाओ और तितर-बितर हो जाओ, क्योंकि तुम पर अल्लाह तआला का एक हुक्म (अज़ाब) उतरा है; मैं इसे सिर्फ अज़ाब या तूफ़ान के रूप में देखता हूँ।" शरहबील बिन हसना (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "हमने अल्लाह के रसूल की सोहबत पाई है..." | इब्न खुज़ैमा ने अपनी 'सहीह' में हज़रत अब्दुर रहमान इब्न ग़नम के हवाले से तख़रीज फरमाई, फरमाया मुल्क-ए-शाम में ताऊन का मर्ज़ फूट पड़ा तो हज़रत अम्र बिन आस (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने फरमाया (लोगो!) यह ताऊन अल्लाह तआला का अज़ाब है लिहाज़ा इससे भागकर वादियों और पहाड़ी घाटियों में चले जाओ, फिर शरहबील बिन हसना (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) को यह इत्तला मिली तो ग़ज़बनाक हुए और फरमाया अम्र बिन आस ने गलत कहा है क्योंकि मैं हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के साथ रहा हूँ लेकिन अम्र तो ज़्यादा भटका हुआ है अपने घर के ऊँट से, बिला शुबहा यह ताऊन तुम्हारे नबी की दावत है और तुम्हारे परवरदिगार की रहमत और तुमसे पहले नेक लोगों की वफ़ात है (अल-हदीस)। इब्न असाकिर हज़रत अब्दुर रहमान बिन ग़नम के हवाले से यूँ कहते हैं उन्होंने फरमाया हज़रत अम्र बिन आस (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) को जब ताऊन महसूस हुआ तो वे इंतिहाई ख़ौफ़ज़दा हुए और फरमाया (लोगो!) इन घाटियों में अलग-अलग और मुंतशिर हो जाओ क्योंकि तुम पर अल्लाह तआला का अम्र (अज़ाब) नाज़िल हो गया है और मैं इसको अज़ाब या तूफ़ान ही ख्याल करता हूँ, हज़रत शरहबील बिन हसना (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फरमाया हमने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सोहबत पाई है... |

1 कंज़ुल उम्माल, इब्न खुज़ैमा के हवाले से, हदीस ११६७५, मुअस्ससतुर रिसाला बेरूत ४/२०३ पृष्ठ ७२० का २९६

نے فوراً رجوع فرمائی اور ان کی تصدیق کی۔

| اخرج ابن خزیمۃ فی صحیحہ عن عبدالرحمن بن غنم قال وقع الطاعون بالشام فقال عمرو بن العاص رضی اللہ تعالٰی عنہ ان ھذا الطاعون رجس ففروا منہ فی الادویۃ والشعاب، فبلغ ذلک شرجیل بن حسنۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ فغضب وقال کذب عمرو بن العاص فقد صحبت رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم وعمرو اضل من جمل اھلہ ان ھذا الطاعون دعوۃ نبیکم ورحمۃ ربکم ووفاۃ الصالحین قبلکم^1 الحدیث ولفظ ابن عساکر عن عبد الرحمن بن غنم قال کان عمرو بن العاص رضی اللہ تعالٰی عنہ حین احس بالطاعون فرق فرقاً شدیداً فقال یا ایھا الناس تبددوا فی ھذہ الشعاب وتفرقوا فانہ قد نزل بکم امر من اللہ تعالٰی لا اراہ الا رجزا او الطوفان قال شرجیل بن حسنۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ قد صحبنا رسول اللہ | ابن خزیمہ نے اپنی صحیح میں حضرت عبدالرحمن ابن غنم کے حوالے سے تخریج فرمائی، فرمایا ملک شام میں طاعون کا مرض پھوٹ پڑا تو حضرت عمرو بن عاص رضی اللہ تعالٰی عنہ نے فرمایا (لوگو!) یہ طاعون اللہ تعالٰی کا عذاب ہے لہٰذا اس سے بھاگ کر وادیوں اور پہاڑی گھاٹیوں میں چلے جاؤ، پھر شرجیل بن حسنہ رضی اللہ تعالٰی عنہ کو یہ اطلاع پہنچی تو غضبناک ہوئے اور فرمایا عمرو بن عاص نے غلط کہا ہے کیونکہ میں حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کے ساتھ رہا ہوں لیکن عمر و تو زیادہ بھٹکا ہوا ہے اپنے گھر کے اونٹ سے، بلا شبہ یہ طاعون تمہارے نبی کی دعوت ہے اور تمہارے پروردگار کی رحمت اور تم سے پہلے نیک لوگوں کی وفات ہے (الحدیث) ابن عساکر حضرت عبدالرحمن بن غنم کے حوالے سے یوں کہتے ہیں اس نے فرمایا حضرت عمرو بن عاص رضی اللہ تعالٰی عنہ کو جب طاعون محسوس ہوا تو وہ انتہائی خوفزدہ ہوئے اور فرمایا (لوگو!) ان گھاٹیوں میں الگ الگ اور منتشر ہو جاؤ کیونکہ تم پر اللہ تعالٰی

کا امر (عذاب) نازل ہو گیا ہے اور میں اس کو عذاب یا طوفان ہی خیال کرتا ہوں، حضرت شرجیل بن حسنہ رضی اللہ عنہ نے فرمایا ہم نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم |

18 کنز العمال بحوالہ ابن خزیمہ کر حدیث ۱۱۶۷۵ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۴ / ۲۰۳

Fatawa Razawiyya, Volume 24

(Arabic Text excerpt): ...peace and blessings of Allah be upon him, and you are more astray than your family's donkey. 'Amr (may Allah be pleased with him) said: You have spoken the truth. Mu'adh (may Allah be pleased with him) said to 'Amr bin al-'Aas (may Allah be pleased with him): You have lied; it is neither a flood nor a torment, but it is a mercy from your Lord, a prayer of your Prophet, and the passing away of the righteous before you[1]. (The Hadith) Imam al-Tahawi narrated it in 'Sharh Ma'ani al-Athar' from the Hadith of Shu'bah, from Yazid bin Humayr, who said: I heard Shurahbil bin Hasanah (may Allah be pleased with him) narrating from 'Amr bin al-'Aas (may Allah be pleased with him) that a plague broke out in Syria. 'Amr said: Disperse away from it, for it is a punishment. When this news reached Shurahbil bin Hasanah (may Allah be pleased with him), he said: I have been in the company of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) and I heard him saying: It is indeed a mercy from your Lord, a prayer of your Prophet, and the death of the righteous before you. Therefore, gather for it and do not disperse. Upon this, 'Amr bin al-'Aas (may Allah be pleased with him) said: He has spoken the truth[2]. There is another chain for this Hadith from Shahr.

(Urdu Translation as per the image): ...spent time with. You are even more astray than your family's donkey. Hadhrat 'Amr (may Allah be pleased with him) said: You have spoken the truth. Hadhrat Mu'adh (may Allah be pleased with him) said to Hadhrat 'Amr bin al-'Aas (may Allah be pleased with him): You have spoken wrongly; it is neither a flood nor a torment, but it is the mercy of your Provider and the prayer of your Prophet, and the death of righteous people before you. (The Hadith). Imam Tahawi narrated in 'Sharh Ma'ani al-Athar' regarding the Hadith of Shu'bah from Yazid bin Humayr, saying: I heard from Hadhrat Shurahbil bin Hasanah (may Allah be pleased with him) that he used to narrate on the authority of Hadhrat 'Amr bin al-'Aas (may Allah be pleased with him) that a plague occurred in the land of Syria. Hadhrat 'Amr bin al-'Aas said to the people: Disperse and scatter away from it because it is a torment. When this news reached Shurahbil bin Hasanah, he said: I have been in the company of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) and I heard him saying that it is a mercy from your Lord, a prayer of your Prophet, and the death of righteous people before you. Therefore, gather for it and do not be divided or scattered. At this, Hadhrat 'Amr bin al-'Aas (may Allah be pleased with him) said: It is the truth. Hadith.

Footnotes: 1. Kanz al-Ummal, with reference to Kar, Hadith 71591, Mu'assasatal-Risala Beirut, 6/705. 2. Sharh Ma'ani al-Athar, Book of Dislike, Chapter on Avoiding those with Plague, etc., H.M. Saeed Company Karachi, 2/415.

फतावा रज़विया, जिल्द 24

(अरबी पाठ का अंश): ...अल्लाह तआला की उन पर रहमत और सलामती हो, और तुम अपने घर वालों के गधे से भी ज़्यादा भटके हुए हो। 'अम्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: तुमने सच कहा। मुआज़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने 'अम्र बिन अल-आस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से कहा: तुमने झूठ कहा; यह न तो कोई तूफान है और न ही कोई अज़ाब, बल्कि यह तुम्हारे रब की रहमत, तुम्हारे नबी की दुआ और तुमसे पहले के नेक लोगों की वफ़ात है[1]। (हदीस) इमाम अल-तहावी ने 'शरह मआनी अल-आसार' में शुअबा की हदीस यज़ीद बिन हुमैर के हवाले से रिवायत की है, उन्होंने कहा: मैंने शुरहबील बिन हसनह (रज़ियल्लाहु अन्हु) को सुना कि वह 'अम्र बिन अल-आस (रज़ियल्लाहु अन्हु) के हवाले से बयान कर रहे थे कि शाम में प्लेग (ताऊन) फैल गया। 'अम्र ने कहा: इससे दूर बिखर जाओ क्योंकि यह एक अज़ाब है। जब यह खबर शुरहबील बिन हसनह (रज़ियल्लाहु अन्हु) तक पहुँची, तो उन्होंने कहा: मैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की सोहबत में रहा हूँ और मैंने उन्हें यह फ़रमाते हुए सुना है कि यह वाकई तुम्हारे रब की रहमत, तुम्हारे नबी की दुआ और तुमसे पहले के नेक लोगों की मौत है। इसलिए इसके लिए जमा हो जाओ और इससे अलग-थलग और तितर-बितर न हो। इस पर 'अम्र बिन अल-आस (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: उन्होंने सच कहा है[2]। इस हदीस की एक और सनद शहर से है।

(छवि के अनुसार उर्दू अनुवाद का हिंदी रूपांतरण): ...के साथ वक़्त गुज़ारा है तुम तो अपने घर वालों के गधे से भी ज़्यादा भटके हुए हो। हज़रत 'अम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया आपने सच कहा है। हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत 'अम्र बिन अल-आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया आपने ग़लत कहा न यह तूफ़ान है और न अज़ाब बल्कि यह तुम्हारे परवरदिगार की रहमत और तुम्हारे नबी की दुआ है और तुम से पहले नेक लोगों की मौत है (अल-हदीस)। इमाम तहावी ने 'शरह मआनी अल-आसार' में शुअबा की हदीस यज़ीद बिन हुमैर के हवाले से रिवायत फ़रमाई, फ़रमाया मैंने हज़रत शुरहबील बिन हसनह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से सुना कि वह हज़रत 'अम्र बिन अल-आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हवाले से बयान करते थे, मुल्क-ए-शाम में ताऊन (प्लेग) वाक़े हुआ तो हज़रत 'अम्र बिन अल-आस ने लोगों से फ़रमाया कि इससे मुन्तशिर (तितर-बितर) हो जाओ और बिखर जाओ क्योंकि यह अज़ाब है। जब शुरहबील बिन हसनह तक यह ख़बर पहुँची तो इरशाद फ़रमाया मैं ने आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम की सोहबत में रहा हूँ मैं ने आप को यह फ़रमाते हुए सुना है कि वह तुम्हारे रब की रहमत, तुम्हारे नबी की दुआ और

तुम से पहले नेक लोगों की मौत है लिहाज़ा इसके लिए जमा हो जाओ और इससे मुतफ़र्रिक (अलग) व मुन्तशिर न हो। इस पर हज़रत 'अम्र बिन अल-आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया सच है। हदीस।

फ़ुटनोट्स: 1. कंज़ुल उम्माल, बहवाला कर, हदीस 71591, मुअस्ससतुल रिसाला बेरूत, 6/705। 2. शरह मआनी अल-आसार, किताबुल कराहत, बाबुल इज्तिनाब मिन ज़ित-ताऊन इलख, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 2/415।

فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۴

(عربی عبارت): صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم وانت اضل من حمار اھلک قال عمرو رضی اللہ تعالیٰ عنہ صدقت قال معاذ رضی اللہ تعالیٰ عنہ لعمرو بن عاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ کذبت لیس بالطوفان ولابالرجز ولکنھا رحمۃ ربکم ودعوۃ نبیکم وقبض الصالحین قبلکم[1]۔ الحدیث ورواہ الامام الطحاوی فی شرح معانی الآثار من حدیث شعبۃ عن یزید بن حمیر قال سمعت شرحبیل بن حسنۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ یحدث عن عمرو بن العاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ ان الطاعون وقع بالشام فقال عمرو تفرقوا عنہ فانہ رجز فبلغ ذلک شرحبیل بن حسنۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فقال قد صحبت رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فسمعتہ یقول انھا رحمۃ ربکم ودعوۃ نبیکم وموت الصالحین قبلکم فاجتمعوا لہ ولا تفرقوا علیہ فقال عمرو رضی اللہ تعالیٰ عنہ صدق[2] وللحدیث طریق اخری عن شھر۔

(اردو ترجمہ): کے ساتھ وقت گزارا ہے تم تو اپنے گھر والوں کے گدھے سے بھی زیادہ بھٹکے ہوئے ہو۔ حضرت عمرو رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا آپ نے سچ کہا ہے۔ حضرت معاذ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے حضرت عمرو بن عاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے فرمایا آپ نے غلط کہا نہ یہ طوفان ہے اور نہ عذاب بلکہ یہ تمہارے پروردگار کی رحمت اور تمہارے نبی کی دعا ہے اور تم سے پہلے نیک لوگوں کی موت ہے (الحدیث) امام طحاوی نے شرح معانی الآثار میں شعبہ کی حدیث یزید بن حمیر کے حوالے سے روایت فرمائی، فرمایا میں نے حضرت شرجیل بن حسنہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے سنا کہ وہ حضرت عمرو بن عاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حوالے سے بیان کرتے تھے ، ملک شام میں طاعون واقع ہوا تو حضرت عمرو بن عاص نے لوگوں سے فرمایا کہ اس سے منتشر ہو جاؤ اور بکھر جاؤ کیونکہ یہ عذاب ہے، جب شرجیل بن حسنہ تک یہ خبر پہنچی تو ارشاد فرمایا میں نے آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی صحبت میں رہا ہوں میں نے آپ کو یہ فرماتے

ہوئے سنا ہے کہ وہ تمہارے رب کی رحمت، تمہارے نبی کی دعا اور تم سے پہلے نیک لوگوں کی موت ہے لہٰذا اس کے لئے جمع ہو جاؤ اور اس سے متفرق و منتشر نہ ہو۔ اس پر حضرت عمرو بن عاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا سچ ہے۔ حدیث

حواشی: 1. کنز العمال بحوالہ کر حدیث ۷۱۵۹۱ مؤسسۃ الرسالۃ بیروت ۶ / ۷۰۵ 2. شرح معانی الآثار کتاب الکراھۃ باب الاجتناب من ذی الطاعون الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲ / ۴۱۵

Regarding this, another chain of narration is via Shahr bin Hawshab. Therein it's narrated that Shurahbil bin Hasana (Allah be pleased with him) stood up and said, "By Allah, I embraced Islam while this leader of yours was more astray than the camel of his household. So listen to what he says." The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "When the plague breaks out in a place and you are present there, do not flee from it, for death is hanging from your necks. And when the plague breaks out somewhere, do not go there, for it scorches the hearts." (t)

Some people attribute this [act of fleeing] to the Commander of the Faithful (Allah be pleased with him), but the Commander of the Faithful himself says: "People think that I fled from the plague. O Allah! I declare my innocence before You from this accusation." The great Imam Tahawi narrates:

On the authority of Zaid bin Aslam, from his father, who said: Umar ibn al-Khattab (Allah be pleased with him) said: "O Allah! People have claimed that I fled from the plague, and I seek Your acquittal from that." This is concise. (t)

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forbade fleeing from the plague, and there is no distinction in this between inside the city and outside the city. The Hadith of Jabir (Allah be pleased with him) recorded by Imam Ahmad and the Imam of Imams Ibn Khuzaymah is as follows: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"The one who flees from the plague is like the one who flees from the battlefield (during Jihad)."

1. Kanz al-Ummal, Hadith 28751, Mu'assasat al-Risala, Beirut, 4/204.
2. Sharh Ma'ani al-Athar, Book of Disliked Acts, Chapter on Avoiding the Plagued, etc. H.M. Saeed Company, Karachi, 2/418.

फतवा रज़विया जिल्द २४

इसके लिए शहर बिन हबशा के हवाले से एक और मार्ग है। उसमें उल्लेख है कि शुरहबील बिन हसनह (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) खड़े हुए और कहा, "अल्लाह की कसम, मैंने तब इस्लाम स्वीकार किया था जब तुम्हारा यह अमीर अपने घर के ऊंट से भी ज्यादा भटका हुआ था। तो देखो वह क्या कहता है।" अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) ने फरमाया: "जब किसी स्थान पर प्लेग (ताऊन) फैल जाए और तुम वहाँ मौजूद हो, तो वहाँ से मत भागो क्योंकि मौत तुम्हारी गर्दन पर लटक रही है, और जब कहीं प्लेग फूट पड़े तो वहाँ मत जाओ क्योंकि यह दिलों को जला देता है।" (त)

कुछ लोग इसे अमीरुल मोमिनीन (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) की ओर मँढ़ देते हैं, लेकिन अमीरुल मोमिनीन स्वयं फरमाते हैं कि लोग गुमान करते हैं कि मैं प्लेग से भागा, हे अल्लाह! मैं इस आरोप से तेरे सामने अपनी बेगुनाही का ऐलान करता हूँ। इमाम अजल्ल तहावी रिवायत फरमाते हैं:

ज़ैद बिन असलम ने अपने पिता असलम से रिवायत की, उन्होंने कहा कि अमीरुल मोमिनीन जनाब उमर बिन अल-खत्ताब (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) ने फरमाया: "हे अल्लाह! लोगों ने दावा किया है कि मैं प्लेग से भागा हूँ, और मैं इस बात से तेरी दरगाह में बरी होने का ऐलान करता हूँ।" यह संक्षिप्त है। (त)

अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) ने प्लेग से भागने को हराम करार दिया है, इसमें शहर और शहर के बाहर के बीच कोई भेद नहीं है। जाबिर (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) की हदीस इमाम अहमद और इमाम अल-आइम्मा इब्न खुज़ैमा के यहाँ इस तरह है, अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) फरमाते हैं:

"प्लेग से भागने वाला ऐसा है जैसे जिहाद के मैदान से भागने वाला।"

1. कँज़ुल उम्माल, हदीस २८७५१, मुअस्ससतुर रिसाला, बेरूत ४/२०४।
2. शरह मुआनी अल-आसार, किताब अल-कराहिया, बाब अल-इजतिनाब मन ज़ी अत-ताऊन आदि, एच.एम. सईद कंपनी कराची २/४१८।

पृष्ठ २९८ / ७२०

کے لئے ایک دوسرا طریق شہر بن حوشب کے حوالے سے ہے چنانچہ اس میں فرمایا پھر شرحبیل بن حسنہ رضی اللہ تعالٰی عنہ کھڑے ہوئے اور فرمایا خدا کی قسم میں اسلام لایا جبکہ تمہارا یہ امیر اپنے گھر کے اونٹ سے بھی زیادہ بھٹکا ہوا ہے پھر دیکھو وہ کیا کہتا ہے۔ حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا جب طاعون کسی جگہ واقع ہو جائے اور تم وہاں موجود ہو تو وہاں سے نہ بھاگو کیونکہ موت تمہاری گردنوں میں لٹک رہی ہے، اور جب طاعون کہیں پھوٹ پڑے تو وہاں نہ جاؤ کیوں وہ دلوں کو جلا دیتا ہے (ت)

بعض لوگ اسے امیر المومنین رضی اللہ تعالٰی عنہ کی طرف نسبت کر دیتے ہیں مگر امیر المومنین خود فرماتے ہیں کہ لوگ گمان کرتے ہیں کہ میں طاعون سے بھاگا، الٰہی! میں اس تہمت سے تیرے ہاں براءت کرتا ہوں۔ امام اجل طحاوی روایت فرماتے ہیں:

اسلم کے بیٹے زید نے اپنے والد اسلم سے روایت کی، اس نے کہا امیر المومنین جناب عمر بن الخطاب رضی اللہ تعالٰی عنہ نے فرمایا: "یا اللہ! لوگ یہ گمان کرتے ہیں کہ میں طاعون سے بھاگا ہوں، میں اس الزام سے تیری بارگاہ میں براءت کا اعلان کرتا ہوں"۔ یہ مختصر ہے۔ (ت)

رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے طاعون سے بھاگنا حرام فرمایا اس میں کوئی تخصیص شہر و بیرون شہر کی نہیں، جابر رضی اللہ تعالٰی عنہ کی حدیث امام احمد و امام الائمہ ابن خزیمہ کے یہاں یوں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

طاعون سے بھاگنے والا ایسا ہے جیسا جہاد میں

1 كنز العمال حديث ٢٨٧٥١ موسسة الرساله بيروت ۴ / ٢٠۴ 2 شرح معانى الآثار كتاب الكراهة باب الاجتناب من ذى الطاعون الخ ايچ ايم سعيد كمپنى كراچى ٢ / ٢١٨

Fatawa Razawiyya - Volume 24

"And the one who remains patient in it [plague] is like the one who remains patient in the battlefield."[1]	**The one who flees from the disbelievers and the one who stays during a plague is like the one who shows patience and steadfastness in Jihad.**

In another narration of his, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"The one who flees from the plague is like the one who flees from the battlefield, and for the one who remains patient in it, there is the reward of a martyr."[2]	**One who flees from the plague is like one who flees from Jihad, and for the one who stays patient in it, there is the reward of a martyr.**

The Hadith of Umm al-Mu'minin Siddiqah (may Allah be pleased with her) in the Musnad of Imam Ahmad is like the first part of Jabir's Hadith, and in Ibn Sa'd it is as follows: the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"The one who flees from the plague is like the one who flees from the battlefield."[3]	**Fleeing from the plague is like fleeing from Jihad.**

Ahmad's second narration is like this: the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"The plague is a gland like the gland of a camel. The one who remains in it is like a martyr, and the one who flees from it is like the one who flees from the battlefield."[4]	**Plague is a tumor/gland just like the epidemics of camels appear; he who stays in it is like a martyr, and he who flees from it is like someone fleeing from Jihad.**

In the words of Musnad Abu Ya'la, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"A sting that affects my Ummah from their enemies among the Jinn, like the gland of camels. Whoever stays in it will be a guardian/frontline soldier, and whoever is afflicted by it will be..."	**Plague is a jab that will reach my Ummah from their enemies among the Jinn, like a camel's gland. The Muslim who stays patient in it, he will be among them...**

[1] Musnad Ahmad bin Hanbal on the authority of Jabir bin Abdullah Ansari (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami, Beirut, 3/254, 322 [2] Musnad Ahmad bin

Hanbal on the authority of Jabir bin Abdullah Ansari (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami, Beirut, 3/360 [3] Ad-Durr al-Manthur, cited by Ahmad, Abd bin Humayd, al-Bazzar, and Ibn Khuzaymah on the authority of Jabir, regarding the verse "Have you not seen those who left their homes..." 1/312 [4] Musnad Ahmad bin Hanbal on the authority of Aisha Siddiqah (may Allah be pleased with her), Al-Maktab al-Islami, Beirut, 6/125

फ़तावा रज़विया - जिल्द 24

"और उसमें धैर्य रखने वाला युद्ध के मैदान में धैर्य रखने वाले के समान है।"[1]

काफ़िरों के सामने से भागने वाला और ताऊन (महामारी) में ठहरने वाला ऐसा है जैसे जिहाद में सब्र व इस्तक़लाल (धैर्य और स्थिरता) करने वाला।

उन्हीं की दूसरी रिवायत में है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

"ताऊन से भागने वाला युद्ध से भागने वाले के समान है और जो इसमें धैर्य के साथ रुका रहा, उसके लिए शहीद का सवाब है।"[2]

ताऊन से भागने वाला जिहाद से भागने वाले की तरह है और जो इसमें सब्र के साथ रुका रहा उसके लिए शहीद का सवाब है।

उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की हदीस इमाम अहमद की मसनद में हदीस-ए-जाबिर के पहले भाग की तरह है और इब्न साद के यहाँ इस तरह है, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

"ताऊन से भागने वाला युद्ध से भागने वाले के समान है।"[3]

ताऊन से भागना जिहाद से भाग जाने के समान है।

अहमद की दूसरी रिवायत इस तरह है, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

"ताऊन एक गाँठ है जैसे ऊँट की गाँठ होती है। इसमें ठहरने वाला शहीद के समान है और इससे भागने वाला युद्ध से भागने वाले के समान है।"[4]

ताऊन एक गिल्टी है जिस तरह ऊँट की वबाएँ (महामारी) निकलती हैं, जो इसमें ठहरा रहे वो शहीद के मिस्ल (समान) है और इससे भागने वाला जिहाद से भाग जाने वाले की तरह है।

मसनद अबू यअला के लफ़्ज़ इस तरह हैं, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

"एक चुभन जो मेरी उम्मत को उनके जिन्न दुश्मनों की तरफ से पहुँचेगी, ऊँट की गाँठ की तरह। जो इसमें ठहरा रहेगा वो मुराबित (सीमा रक्षक) होगा और जिसे ये लग गया वो..."

ताऊन एक चुभन है कि मेरी उम्मत को उनके दुश्मन जिन्नों की तरफ से पहुँचेगा जैसे ऊँट की गिल्टी, जो मुसलमान इस पर सब्र करके ठहरा रहे वह उनमें से हो...

[1] मसनद अहमद बिन हंबल, जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, अल-मक्ताब अल-इस्लामी, बेरूत, 3/254, 322 [2] मसनद अहमद बिन हंबल, जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, अल-मक्ताब अल-इस्लामी, बेरूत, 3/360 [3] अद-दुर्र अल-मनसूर, अहमद, अब्द बिन हुमैद, अल-बज़ार और इब्न खुज़ैमा के हवाले से, जाबिर से, आयत 'क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने घरों से निकले...' के संदर्भ में, 1/312 [4] मसनद अहमद बिन हंबल, आयशा सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से, अल-मक्ताब अल-इस्लामी, बेरूत, 6/125

والصابر فيه كالصابر في الزحف^1 - كفار کے سامنے سے بھاگنے والا اور طاعون میں ٹھہرنے والا ایسا ہے جیسا جہاد میں صبر و استقلال کرنے والا۔

انہیں کی دوسری روایت میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

الفار من الطاعون كالفار من الزحف و من صبر فيه كان له اجر شهيد^2 - طاعون سے بھاگنے والا جہاد سے بھاگنے والے کی طرح ہے اور جو اس میں صبر میں کئے رہے اس کے لئے شہید کا ثواب ہے۔

ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا کی حدیث امام احمد کی مسند میں مثل پارہ اول حدیث جابر ہے اور ابن سعد کے یہاں یوں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

الفار من الطاعون كالفار من الزحف^3 - طاعون سے بھاگنا جہاد سے بھاگ جانے کے مثل ہے۔

احمد کی دوسری روایت یوں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

الطاعون غدة كغدة البعير المقيم بها كالشهيد و الفار منها كالفار من الزحف^4 - طاعون ایک گلٹی ہے جس طرح اونٹ کی وبائیں اس کے نکلتی ہے جو اس میں ٹھہرا رہے وہ شہید کے مثل ہے اور اس سے بھاگنے والا جہاد سے بھاگ جانے والے کی طرح ہے۔

مسند ابویعلٰی کے لفظ یوں ہیں رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

وخزة تصيب امتی من اعدائهم من الجن کغدة الابل من اقام علیها کان مرابطا و من اصیب به کان

طاعون ایک کو نچاہے کہ میری امت کو ان کے دشمن جنوں کی طرف سے پہنچے گا جیسے اونٹ کی گلٹی، جو مسلمان اس پر صبر کئے ٹھہرا رہے وہ ان میں سے ہو

1۸ مسند احمد بن حنبل عن جابر بن عبداللہ انصاری رضی اللہ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۳/ ۲۵۴، 2۸ ۳۲۲ مسند احمد بن حنبل عن جابر بن عبداللہ انصاری رضی اللہ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۳/ ۳۶۰ 3۸ الدر المنثور بحوالہ احمد و عبد بن حمید والبزار و ابن خزیمہ عن جابر آیة الم تر الی الذین خرجوا من دیارھم الخ ۱/ ۳۱۲ 4۸ مسند احمد بن حنبل عن عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہا المکتب الاسلامی بیروت ۶/ ۱۲۵

Volume 24 Fatawa Razawiyya

“...a martyr, and he who flees from it is like one who flees from a battle.”[1] — Those who stay at the borders of the infidels in the path of Allah to protect Islamic lands; the Muslim who dies therein is a martyr, and whoever flees from it is like one who turns his back and flees from the infidels.

The narration from Mu’jam al-Awsat is as follows, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: “The plague is martyrdom for my nation and a prick from your enemies among the jinn. It is a swelling like the swelling of a camel that appears in the armpits and soft parts of the body. Whoever dies in it dies a martyr, and whoever remains in it is like a Mujahid stationed in the path of Allah, and whoever flees from it is like one who flees from a battle.”[2]

I say: (firstly): In all these words of the Hadith, there is a severe warning only against fleeing from the plague, and an encouragement and emphasis on remaining patient. There is no restriction on city, neighborhood, or outskirts, etc. So, any movement intended to flee from the plague, even if it is within the quarters of the city, undoubtedly falls under this threat and warning.

Secondly: The Hadith narrated from the Mother of the Believers (may Allah be pleased with her) is recorded in Sahih Bukhari and Musnad Imam Ahmad (may Allah have mercy on him) with a Sahih chain of narration fulfilling the conditions of Bukhari and Muslim, in Bukhari vol. 6, at the end of p. 251 and the beginning of p. 252 as follows:

“Abdus Samad narrated to us, he said: Dawud ibn Abi al-Furat narrated to us, he said: Abdullah ibn Buraida narrated to us from Yahya ibn Ya'mar...” | “(Abdus Samad narrated to us (he said) Dawud ibn Abi al-Furat narrated to us (he said) Abdullah ibn Abi Buraidah narrated to us from Yahya ibn Ya’mar...)”

Note: In the printed copy of Musnad [Ahmad], it is written 'ibn Abi Buraidah', but the correct version is 'ibn Buraidah' as we have mentioned. — Musnad Ahmad's printed version says Ibn Abi Buraidah but correct is Ibn Buraidah as we explained. 12 Minhu (T).

---

[1] Al-Targhib wa al-Tarhib, Chapter: Fear of dying young, etc., Hadith 25, Mustafa al-Babi, Egypt 2/338; Majma’ al-Zawa’id, Book of Funerals, Chapter on Plague, Dar al-Kutub al-Thabit, Beirut 2/315. [2] Al-Mu’jam al-Awsat, Hadith 5527, Maktabat al-Ma’arif,

Riyadh 6/229; Kanz al-Ummal, with reference to Tabarani Al-Awsat, Hadith 28243, Mu’assasat al-Risalah, Beirut 10/87-88; Al-Jami’ al-Saghir, with reference to Tabarani Al-Awsat, Hadith 5333, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut 2/329.

खंड २४ फ़तावा रज़विया

"...शहीद है और उससे भागने वाला लड़ाई के मैदान से भागने वाले की तरह है।"[1] — जो खुदा की राह में काफिरों की सरहद पर इस्लामी देशों की रक्षा के लिए ठहरते हैं, और जो मुसलमान वहां मरता है वह शहीद है, और जो वहां से भागता है वह काफिरों को पीठ दिखाकर भागने वाले के समान है।

मुअजम अल-औसत की रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: "प्लेग (ताऊन) मेरी उम्मत के लिए शहादत है और जिन्नों में से तुम्हारे दुश्मनों का प्रहार है। यह ऊंट की गांठ की तरह एक गांठ है जो बगल और कोमल अंगों में निकलती है। जो इसमें मरता है वह शहीद मरता है, और जो इसमें ठहरता है वह खुदा की राह में काफिरों की सरहद पर जिहाद के इंतजार में ठहरने वाले के समान है, और जो इससे भागता है वह जिहाद से भागने वाले के समान है।"[2]

मैं कहता हूँ: (पहली बात): हदीस के इन सभी शब्दों में केवल प्लेग से भागने पर कड़ी चेतावनी दी गई है और सब्र के साथ ठहरे रहने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। इसमें शहर, मुहल्ले या इलाके की कोई पाबंदी नहीं है। इसलिए, प्लेग से भागने के इरादे से की गई कोई भी गतिविधि, चाहे वह शहर के ही मुहल्लों के भीतर क्यों न हो, निस्संदेह इस चेतावनी के दायरे में आती है।

दूसरी बात: उम्मुल मोमिनीन (रज़ियल्लाहु अन्हा) से वर्णित हदीस सहीह बुखारी शरीफ और मसनद इमाम अहमद (रहमतुल्लाह अलैहि) में बुखारी और मुस्लिम की शर्तों पर सहीह सनद के साथ बुखारी खंड ६, पृष्ठ २५१ के अंत और २५२ के प्रारंभ में इस प्रकार है:

"हमसे अब्दुल समद ने बयान किया, उन्होंने कहा: हमसे दाऊद इब्न अबी अल-फुरात ने बयान किया, उन्होंने कहा: हमसे अब्दुल्ला इब्न बुरैदा ने याह्या इब्न यामर से बयान किया..." | "(हमसे अब्दुल समद ने बयान किया (उन्होंने कहा) हमसे दाऊद इब्न अबी अल-फुरात ने बयान किया (उन्होंने कहा) हमसे अब्दुल्ला इब्न अबी बुरैदा ने याह्या इब्न यामर से...)"

नोट: मसनद (अहमद) के छपे हुए संस्करण में 'इब्न अबी बुरैदा' लिखा है, लेकिन सही 'इब्न बुरैदा' है जैसा कि हमने बताया है। — मसनद अहमद के छपे हुए नुस्खे में इब्न अबी बुरैदा लिखा है लेकिन सही इब्न बुरैदा है जैसा कि हमने बयान किया है। १२ मिन्हु (त)।

---

[1] अल-तरगीब वल-तरहीब, अध्याय: इंसान के जवानी में मरने का डर आदि, हदीस २५, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र २/३३८; मजमा-उज़-ज़वाइद, जनाज़ा की किताब, ताऊन का अध्याय, दार अल-कुतुब अल-थाबित, बेरुत २/३१५। [2] अल-मुअजम अल-औसत, हदीस ५५२७, मकबत अल-मआरिफ, रियाद ६/२२९; कंज़ुल उम्माल, तबरानी अल-औसत के हवाले से, हदीस २८२४३, मुअस्ससत अल-रिसाला, बेरुत १०/८७-८८; अल-जामे-उस-सगीर, तबरानी अल-औसत के हवाले से, हदीस ५३३३, दार अल-कुतुब अल-इलमिया, बेरुत २/३२९।

पृष्ठ ३००/७२०

جلد ۲۴ فتاوی رضویہ

شہیدًا والفار منه کالفار من الزحف[1]- جو راہ خدا میں سرحد کفار پر بلاد اسلام کی حفاظت کے لئے اقامت کرتے ہیں اور جو مسلمان اس میں مرے وہ شہید ہوا اور جو اس سے بھاگے وہ کافروں کو پیٹھ دے کر بھاگنے والے کی مانند ہو۔

معجم اوسط کی روایت یوں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں : الطاعون شهادة لامتي و وخز اعدائكم من الجن ، غدة كغدة البعير تخرج في الاباط و المراق من مات فيه مات شهيدا ومن اقام فيه كان كالمرا بط في سبيل الله ومن فر منه كان كالفار من الزحف[2]- طاعون میری امت کے لئے شہادت ہے اور وہ تمہارے دشمن جنوں کا چونچا ہے اونٹ کے غدود کی طرح گلٹی ہے کہ بغلوں اور نرم جگہوں میں نکلتی ہے جو اس میں مرے شہید مرے اور جو ٹھہرے وہ راہ خدا میں سرحد کفار پر بانظار جہاد اقامت کرنے والے کی مانند ہے اور جو اس سے بھاگ جائے جہاد سے بھاگ جانے کے مثل ہو۔

اقول: (میں کہتا ہوں) اولاً: ان تمام الفاظ حدیث میں صرف طاعون سے بھاگنے پر وعید شدید اور صبر کئے ٹھہرے رہنے کی ترغیب و تاکید ہے ، شہر یا محلے یا والی شہر وغیرہ کی کچھ قید نہیں، تو جو نقل و حرکت طاعون سے بھاگنے کے لئے ہو گی اگرچہ شہر ہی کے محلوں میں وہ بلاشبہ اس وعید و تہدید کے نیچے داخل ہے۔

ثانیاً: حدیث ام المومنین رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی صحیح بخاری شریف، مسند امام احمد رحمہ اللہ تعالی میں بسند صحیح بر شرط بخاری و مسلم بر جال بخاری جلد ششم آخر ص ۲۵۱ واول ۲۵۲ میں یوں ہے :

حدثنا عبد الصمد ثنا داود یعني ابن ابی الفرات ثنا عبداللہ بن بریدۃ عنہ عن یحیی بن یعمر | (ہم سے عبد الصمد نے بیان کیا (اس نے کہا) ہم سے داؤد ابن ابی الفرات نے بیان کیا (اس نے کہا) ہم سے عبداللہ بن ابی بریدہ نے عن یحیی بن یعمر)

عہ: وقع ھھنا فی نسخۃ المسند المطبوعۃ ابن ابی بریدۃ والصواب ابن بریدۃ کما ذکرنا ۱۲منہ۔ | مسند احمد کے مطبوعہ نسخہ میں ابن ابی بریدہ لکھا ہے مگر درست ابن بریدہ ہے جیسا کہ ہم نے بیان کیا ہے ۱۲منہ (ت)

---

[1] الترغیب والترھیب، الترغیب من ان یموت الانسان الاسنان الخ حدیث ۲۵ مصطفی البابی مصر ۳۳۸/۲، مجمع الزوائد کتاب الجنائز باب في الطاعون و الثابت دار الکتب بیروت ۳۱۵/۲ [2] المعجم الاوسط حدیث ۵۵۲۷ مکتبۃ المعارف الریاض ۲۲۹/۶، کنز العمال بحوالہ طس حدیث ۲۸۲۴۳ مؤسسۃ الرسالۃ بیروت ۸۷/۱۰ ۸۸، جامع الصغیر بحوالہ طس حدیث ۵۳۳۳ دار الکتب العلمیہ بیروت ۳۲۹/۲

Volume 24 | Fatawa Rizwia

On the authority of Aisha (may Allah be pleased with her), she said: I asked the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) about the plague, and the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) informed me that it was a punishment that Allah Almighty used to send upon whomsoever He willed, but He made it a mercy for the believers. There is no man who, when the plague occurs, remains in his house, patient and seeking reward, knowing that nothing will strike him except what Allah has written for him, but he will have a reward like that of a martyr. [1] | It is narrated from Yahya bin Ya'mar from Sayyidah Aisha Siddiqah (may Allah be pleased with her) who said: I asked the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) about the plague (T). The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: The plague was a punishment that Allah Almighty used to send upon whomsoever He willed, and He has made it a mercy for this Ummah. So, whoever remains in his house during the time of plague, seeking reward with patience, with the belief that nothing will reach him except what God has written for him, for him is the reward of a martyr.

In this Sahih Hadith, there is a clear instruction to stay specifically in one's own house. Thirdly: If you consider carefully, there is essentially no difference between this Hadith and the Hadith in Bukhari. The words of Sahih Bukhari, Book of Medicine, are:

"No servant, when the plague occurs, remains in his city patient..." [2] | There is no such servant that if plague occurs and he remains in his city with patience (T).

And in the mention of the Children of Israel:

"No one, when the plague occurs, remains in his city patient and seeking reward..." [3] | There is no such person that if plague occurs then he remains in his city while being patient for the sake of reward. (T)

And it is obviously known that it does not mean any place on the entire face of the earth, then...

[1] Musnad Imam Ahmad bin Hanbal from Aisha (may Allah be pleased with her), Al-Maktab al-Islami Beirut 6/251-52 [2] Sahih al-Bukhari, Book of Medicine, Chapter on the reward of those who are patient during the plague, Qadimi Kutub Khana Karachi 2/853 [3] Sahih al-Bukhari, Book of the Prophets, Chapter on the Hadith of the Cave, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/494 Page 301 of 720

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि उन्होंने कहा: मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से ताऊन (प्लेग) के बारे में पूछा, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मुझे बताया कि यह एक अज़ाब था जिसे अल्लाह तआला जिस पर चाहता था भेजता था, लेकिन उसने इसे मोमिनों के लिए रहमत बना दिया है। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो ताऊन होने पर अपने घर में सब्र और सवाब की नीयत से ठहरा रहे, यह जानते हुए कि उसे वही पहुँचेगा जो अल्लाह ने उसके लिए लिख दिया है, मगर उसे शहीद जैसा सवाब मिलेगा। [1] | याह्या बिन या'मर से बयान किया गया है कि उन्होंने सैयदा आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत की, उन्होंने फरमाया: मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से ताऊन के बारे में दरयाफ्त किया (त), तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ताऊन एक अज़ाब था जिसे अल्लाह तआला जिस पर चाहता भेजता था और इस उम्मत के लिए इसे रहमत कर दिया है। तो जो शख़्स ज़माना-ए-ताऊन में अपने घर में सब्र के लिए, सवाब की तलब के लिए इस एतकाद के साथ ठहरा रहे कि उसे वही पहुँचेगा जो खुदा ने लिख दिया है, उसके लिए शहीद का सवाब है।

इस सहीह हदीस में विशेष रूप से अपने घर में ठहरे रहने का स्पष्ट उल्लेख है। तीसरा: ज़रा गौर कीजिए तो इस हदीस और बुखारी की हदीस में असल में कोई अंतर नहीं है, सहीह बुखारी किताब-अल-तिब्ब के शब्द ये हैं:

"कोई ऐसा बंदा नहीं है जो ताऊन वाक़े हो और अपने शहर में सब्र के साथ ठहरा रहे..." [2] | कोई ऐसा बंदा नहीं कि ताऊन वाक़े हो और वह अपने शहर में सब्र के साथ ठहरा रहे (त)

और बनी इस्राइल के ज़िक्र में:

"कोई ऐसा शख़्स नहीं कि ताऊन वाक़े हो फिर वह अपने शहर में सब्र करते हुए सवाब की खातिर ठहरा रहे..." [3] | कोई ऐसा शख़्स नहीं कि ताऊन वाक़े हो फिर वह अपने शहर में सब्र करते हुए सवाब की खातिर ठहरा रहे। (त)

और ज़ाहिर तौर पर मालूम है कि मुतलकन रूह-ए-ज़मीन में से किसी जगह ताऊन वाक़े होना मुराद नहीं है, तो...

[1] मसनद इमाम अहमद बिन हनबल, आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत ६/ २५१-५२ [2] सहीह अल-बुखारी, किताब अल-तिब्ब, बाब अज्र अल-साबिरीन फ़ित-ताऊन, क़दीमी कुतुब खाना कराची २/ ८५३ [3] सहीह अल-बुखारी, किताब अल-अंबिया, बाब हदीस अल-ग़ार, क़दीमी कुतुब खाना कराची १/ ४९४ पेज ३०१/७२०

عن عائشة رضی اللہ تعالی عنها انها قالت سألت رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیه وسلم عن الطاعون فاخبرنی رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیه وسلم انه کان عذاباً یبعثه اللہ تعالی علی من یشاء فجعله رحمة للمؤمنین، فلیس من رجل یقع الطاعون فیمکث فی بیته صابرًا محتسبًا یعلم انه لایصیبه الاما کتب اللہ له الاکان له مثل اجر الشهید۔ ۱ | بیان کیا اس نے یحیی بن یعمر سے اس نے سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی انہوں نے فرمایا میں آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے طاعون کے بارے میں دریافت کیا (ت) تو رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا طاعون ایک عذاب تھا کہ اللہ تعالیٰ جس پر چاہتا بھیجتا اور اس امت کے لئے اسے رحمت کر دیا ہے تو جو شخص زمانہ طاعون میں اپنے گھر میں صبر کے لئے طلب ثواب کے لئے اس اعتقاد کے ساتھ ٹھہرا رہے کہ اسے وہی پہنچے گا جو خدا نے لکھ دیا ہے اس کے لئے شہید کا ثواب ہے۔

اس حدیث صحیح میں خاص اپنے گھر میں ٹھہرے رہنے کی تصریح ہے۔ ثالثاً : ذرا غور کیجئے تو اس حدیث اور حدیث بخاری میں اصلاً اختلاف نہیں، صحیح بخاری کتاب الطب کے لفظ یہ ہیں:

لیس من عبد یقع الطاعون فیمکث فی بلده صابرًا ۲ | کوئی ایسا بندہ نہیں کہ طاعون واقع ہو اور وہ اپنے شہر میں صبر کے ساتھ ٹھہرا رہے (ت)

اور ذکر بنی اسرائیل میں:

لیس من احد یقع الطاعون فیمکث فی بلده صابراً محتسباً ۳۔ | کوئی ایسا شخص نہیں کہ طاعون واقع ہو پھر وہ اپنے شہر میں صبر کرتے ہوئے ثواب کی خاطر ٹھہرا رہے۔ (ت)

اور بداہۃً معلوم ہے کہ مطلقاً روئے زمین میں سے کسی جگہ وقوع طاعون مراد نہیں تو

۱ مسند امام احمد بن حنبل عن عائشہ رضی اللہ عنہا المکتب الاسلامی بیروت ۶/ ۲۵۱-۵۲ ۲ صحیح البخاری کتاب الطب باب اجر الصابرین فی الطاعون قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۸۵۳ ۳ صحیح البخاری کتاب الانبیاء باب حدیث الغار قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۴۹۴ Page 301 of 720

Fatawa Rizvia, Volume 24

In the Hadith of Bukhari, the phrase "fi baldatihi" (in his city), and in the Hadith of Ahmad, "fi baytihi" (in his house) relate to both "yamkuth" (stays) and "yaqa'u" (happens) by way of grammatical conflict (tanazu'). Imam 'Ayni states in 'Umdat al-Qari, the commentary of Sahih al-Bukhari:

His words "fi baldatihi" (in his city) are among those in which two verbs conflict, namely his words "yaqa'u" (it occurs) and "fayamkuthu" (and he stays). 1	His statement "fi baldatihi" is a case of conflict between two verbs (namely yamkuth and yaqa'u). Both verbs are in conflict over the prepositional phrase "fi baldatihi", each seeking to be associated with it. (T)

So the meaning of both narrations is that the one in whose city a plague occurs should not flee from the city, and the one in whose own house it occurs should not flee from his house. The conclusion is that one should not flee from the plague; fleeing from the city or house is not prohibited in itself. If a tyrannical oppressor enters a city to arrest someone unjustly, and that person flees the city to escape him, there is no accountability at all, even if it is a time of plague, because this flight was not from the plague but rather from the oppression of the oppressor. Allah Almighty knows the intention. Therefore, it is stated in the Hadith of 'Abd al-Rahman bin 'Auf (may Allah be pleased with him):

When it (the plague) occurs in a land while you are in it, do not depart from it, fleeing from it. 2	When a plague occurs in a place and you are present there, do not flee from the plague and go elsewhere. (T) Not "minha" (i.e., from the place of plague. T).

And the Hadith of Usama bin Zaid (may Allah be pleased with both) in the complete narration of Bukhari and Muslim is similar, and in the narration of Muslim it is as follows:

So do not depart fleeing from it. 3	Do not go out from the place of plague while fleeing from it. (T)

Naturally, it is stated in the commentary of Sahih Muslim:

They (the scholars) have agreed on the permissibility of leaving for work or a	The people of knowledge are in agreement that it is permissible to leave a place of plague for any work or purpose other than

purpose other than fleeing, and the evidence for this is in explicit Hadiths. 4

fleeing, and there are explicit Hadiths as proof for this. (T)

1. 'Umdat al-Qari Sharh al-Bukhari, Kitab al-Tibb, Chapter: Reward for those patient during plague, Idarat al-Tiba'at al-Muniriyyah, Beirut, 21/26.
2. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Tibb, Chapter: What is mentioned regarding plague, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/853.
3. Sahih Muslim, Kitab al-Salam, Chapter: Plague and Omens, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/228.
4. Sharh Muslim lil-Nawawi, Kitab al-Salam, Chapter: Plague and Omens, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/229.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

बुख़ारी की हदीस में 'फ़ी बलदतिही' (उसके शहर में) और अहमद की हदीस में 'फ़ी बैतिही' (उसके घर में) दोनों 'यमकुथ' (ठहरता है) और 'यक़उ' (वाक़े होता है) से मुतअल्लिक़ हैं। इमाम ऐनी 'उम्दतुल क़ारी' शरह सहीह अल-बुख़ारी में फ़रमाते हैं:

कौलुहू फ़ी बलदतिही मिम्मा तनाज़ुल फ़अलानि फ़ीही अअनी कौलह यक़ओ व कौलहु फ़-यमकुथु १	उनका इरशाद "फ़ी बलदतिही" इसमें तनाज़ु' फ़ेअ़लैन (यानी यमकुथ और यक़उ जो दो फ़ेअ़ल हैं) उनका फ़ी बलदतिही जार मज्रूर में तनाज़ु' है, इनमें से हर एक चाहता है कि वह मेरे साथ मुतअल्लिक़ हो। (त)

तो दोनों रिवायतों का मतलब यह हुआ कि जिसके शहर में ताऊन (प्लेग) वाक़े हो वह शहर से न भागे और जिसके ख़ुद घर में वाक़े हो वह अपने घर से न भागे और हासिल इसी तरफ़ रुजूअ़ करेगा कि ताऊन से न भागे, शहर या घर से भागना लज़ातिही (स्वयं) ममनूअ़ (वर्जित) नहीं, अगर कोई ज़ालिम जब्बार शहर में ज़ुल्मन उसकी गिरफ़्तारी को आया और यह उससे बचने को शहर से भाग गया हरगिज़ मुआख़ज़ा (पकड़) नहीं अगरचे ज़माना-ए-ताऊन ही का हो कि यह भागना ताऊन से न था बल्कि ज़ुल्म-ए-ज़ालिम से, और अल्लाह अज़्व-व-जल्ल नीयत को जानता है, व-लिज़ा हदीस-ए-अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु में इरशाद हुआ:

इज़ा वक़आ बि-अर्ज़िन व अंतुम बिहा फ़ला तख़रुजू फ़रारन मिन्हु २	जब किसी जगह ताऊन वाक़े हो और तुम वहां मौजूद हो तो ताऊन से भाग कर कहीं बाहर दूसरी जगह न जाओ। (त) न कि मिन्हा (यानी जाए ताऊन से।त)

और हदीस-ए-उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा रिवायत-ए-तामह शैख़ैन में इसके मिस्ल और रिवायत-ए-मुस्लिम में यों आई:

फ़ला तख़रुजू फ़रारन मिन्हु ३ जाए ताऊन से बाहर न जाओ उससे भागते हुए। (त)

ला-जरम शरह सहीह मुस्लिम में है:

इत्तफ़क़ू अला जवाज़िल ख़ुरूजि बि-शुग़लिन व ग़रज़िन ग़ैरल फ़रारी व दलीलुहू सरीहुल अहादीस ४

अहल-ए-इल्म का इस पर इत्तिफ़ाक़ है, भागने के इलावा किसी दूसरे शुग़ल और ग़रज़ के लिए मक़ाम-ए-ताऊन से बाहर निकलना जाइज़ है और इसके सुबूत में सरीह अहादीस हैं। (त)

1. उम्दतुल क़ारी शरह अल-बुख़ारी किताबुत्तैब बाब अज़रुस्साबिरीन फ़ित्ताऊन इदारतुल तिबाअ़तुल मुनीरया बैरूत 21/26.
2. सहीह अल-बुख़ारी किताबुत्तैब बाब मा यज़करू फ़ित्ताऊन पुरानी कुतुब ख़ाना कराची 2/853.
3. सहीह मुस्लिम किताबुस्सलाम बाब अत्ताऊन वत्तियरा पुरानी कुतुब ख़ाना कराची 2/228.
4. शरह मुस्लिम लिन-नववी किताबुस्सलाम बाब अत्ताऊन वत्तियरा पुरानी कुतुब ख़ाना कराची 2/229.

فتاوٰی رضویہ، جلد ۲۴

حدیث بخاری میں فی بلدہ اور حدیث احمد میں فی بیتہ برسبیل تنازع یمکث ویقع دونوں سے متعلق ہیں امام عینی عمدۃ القاری شرح صحیح البخاری میں فرماتے ہیں:

قولہ فی بلدہ مما تنازع الفعلان فیہ اعنی قولہ یقع و قولہ فیمکث ۱۔

ان کا ارشاد "فی بلدہ" اس میں تنازع فعلین (یعنی یمکث اور یقع جو دو فعل ہیں) ان کا فی بلدہ جار مجرور میں تنازع ہے اس ہر ایک چاہتا ہے کہ وہ میرے ساتھ متعلق ہو۔ (ت)

تو دونوں روایتوں کا مطلب یہ ہوا کہ جس کے شہر میں طاعون واقع ہو وہ شہر سے نہ بھاگے اور جس کے خود گھر میں واقع ہو وہ اپنے گھر سے نہ بھاگے اور حاصل اسی طرف رجوع کریگا کہ طاعون سے نہ بھاگے، شہر یا گھر سے بھاگنا لذاتہ ممنوع نہیں، اگر کوئی ظالم جبار شہر میں ظلماً اس کی گرفتاری کو آیا اور یہ اس سے بچنے کو شہر سے بھاگ گیا ہرگز مؤاخذہ نہیں اگرچہ زمانہ طاعون ہی کا ہو کہ یہ بھاگنا طاعون سے نہ تھا بلکہ ظلم ظالم سے، اور اللہ عزوجل نیت کو جانتا ہے، ولذا حدیث عبد الرحمن بن عوف رضی اللہ تعالٰی عنہ میں ارشاد ہوا:

اذا وقع بارض وانتم بھا فلا تخرجوا فرار امنہ ۲۔

جب کسی جگہ طاعون واقع ہو اور تم وہاں موجود ہو تو طاعون سے بھاگ کر کہیں باہر دوسری جگہ نہ جاؤ۔ (ت) نہ کہ منہا (یعنی جائے طاعون سے۔ت)

اور حدیث اسامہ بن زید رضی اللہ تعالٰی عنہما روایت تامہ شیخین میں اس کے مثل اور روایت مسلم میں یوں آئی:

فلا تخرجو افرار امنہ ۳۔جائے طاعون سے باہر نہ جاؤ اس سے بھاگتے ہوئے۔ (ت)

لاجرم شرح صحیح مسلم میں ہے:

اتفقوا علی جواز الخروج بشغل وغرض غیر الفرار و دلیل صریح الاحادیث ۴۔	اہل علم کا اس پر اتفاق ہے، بھاگنے کے علاوہ کسی دوسرے شغل اور غرض کے لئے مقام طاعون سے باہر نکلنا جائز ہے اور اس کے ثبوت میں صریح احادیث ہیں۔ (ت)

۱۔ عمدۃ القاری شرح البخاری کتاب الطب باب اجر الصابرین فی الطاعون ادارۃ الطباعۃ المنیریۃ بیروت ۲۱/۲۶ ۲۔ صحیح البخاری کتاب الطب باب مایذکر فی الطاعون قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۸۵۳ ۳۔ صحیح مسلم کتاب السلام باب الطاعون والطیرۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۲۲۸ ۴۔ شرح مسلم للنووی کتاب السلام باب الطاعون والطیرۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۲۲۹

Volume 24 Fatawa Razawiyya

Likewise, it has been narrated and established in Al-Hadiqat an-Nadiyyah, and when the point of focus is fleeing from the plague and not from the city, then the debate of whether the city outskirts are included in this ruling like the Friday prayer or like a journey is irrelevant. Any movement for the sole purpose of fleeing from the plague is under prohibition, whether to the outskirts or within the city itself.

Fourthly: If you consider, this very Hadith 'stay in his city' (then he stays in his city) explicitly forbids planning to flee even within the neighborhoods of the city. In it, it's not just said that he should stay in the city, but it was clearly stated:

He stays in his city, being patient and seeking reward, knowing that nothing will reach him except what Allah has written for him.	**He stays in his city, hoping for reward from Allah Almighty, knowing that only that which Allah has written in his destiny will reach him, holding onto the hem of patience. (T)**

He should stay in his city with three qualities: first, patience and steadfastness; second, submission, delegation, and seeking reward upon being pleased with the Divine Decree; third, the true belief that no calamity can strike without divine predestination. Now, assess the state of a person in whose city the plague has occurred at one end, and out of fear, he leaves his house and flees to the other end. Will he be called steadfast, patient, firm, and pleased with the Divine Decree? If he were so, why would he flee? His staying in the city is not for patience and pleasure, but because this edge of the city is still safe. If the plague comes here tomorrow, see him fleeing from here as well. If he goes and stays outside the city and the epidemic reaches there too, he will leave the outskirts and take refuge in another settlement altogether; then where does 'patiently seeking reward' hold true?

Fifthly: The Prophet (may Allah bless him and grant him peace) compared fleeing from the plague to fleeing from Jihad. It can be understood from this observation that fleeing is not restricted only to leaving for another city. If the leader of the Muslims is performing Jihad against the disbelievers outside the city, and some people flee from the battle and go and sit in their houses, will it not be fleeing? Rather, let alone sitting in houses, if they flee from the battle and hide in some mountain or cave in that same field, the disgrace of fleeing will certainly be immediate, for they have abandoned the battlefield in every way and turned their faces from facing the disbelievers. The Quranic text is a clear proof of this:

Allah Almighty says, "Verily, those..."	**It is the word of Allah Almighty, the Great, "Verily you..."**

[1] Sahih al-Bukhari, Book of Prophets, Chapter on the Hadith of the Cave, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/494.

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

इसी तरह अल-हदीक़त अन-नदिय्यह में नक़ल किया गया और स्थापित रखा गया, और जब मुख्य उद्देश्य ताऊन (प्लेग) से भागना है न कि शहर से, तो यह बहस कि शहर के बाहरी इलाके भी जुमे की नमाज़ की तरह इस हुक्म में शामिल हैं या सफ़र की तरह, अप्रासंगिक है। केवल ताऊन से भागने के लिए की जाने वाली कोई भी गतिविधि वर्जित (मना) है, चाहे वह उपनगरों में हो या शहर के भीतर ही।

चौथा: गौर करें तो खुद यही हदीस 'फयमकुसु फी बलदही' (फिर वह अपने शहर में ठहरा रहे) शहर के मोहल्लों के भीतर ही भागने की योजना बनाने से स्पष्ट रूप से मना कर रही है। इसमें केवल यह नहीं कहा गया कि वह शहर में रहे, बल्कि साफ़ तौर पर इरशाद हुआ:

यमकुसु फी बलदही साबिरन मुह्तसिबन य'अलमु अन्नहु ला युसीबहु इल्ला मा कतबललाहु लहू।	**वह अपने शहर में अल्लाह तआला से अज्र व सवाब की उम्मीद रखते हुए और यह जानते हुए कि उसे वही कुछ पहुँचेगा जो अल्लाह तआला ने उसके मुक़द्दर में लिख दिया है, सब्र का दामन थामे हुए ठहरा रहे। (त)**

अपने शहर में तीन खूबियों के साथ रहे: पहला सब्र और दृढ़ता, दूसरा खुदा की इच्छा के सामने आत्मसमर्पण और रज़ा (संतुष्टि) पर सवाब की चाह, तीसरा यह सच्चा विश्वास कि ईश्वरीय विधान के बिना कोई मुसीबत नहीं आ सकती। अब उसकी हालत का अंदाज़ा लगाइये जिसके शहर के एक कोने में ताऊन फैल गया हो और वह उसके डर से घर छोड़कर दूसरे कोने की तरफ भाग गया हो, क्या उसे दृढ़, सब्र करने वाला, स्थिर और ईश्वरीय इच्छा पर राजी कहा जाएगा? अगर वह ऐसा होता तो भागता क्यों? शहर में उसका ठहरना सब्र और रज़ा के लिए नहीं बल्कि इसलिए है कि शहर का यह कोना अभी सुरक्षित है। कल अगर यहाँ भी ताऊन आया तो उसे यहाँ से भी भागते देख लेना। अगर वह शहर से बाहर जाकर रुका और वहाँ भी महामारी पहुँची तो उपनगरों को भी छोड़कर दूसरी बस्ती में शरण लेगा, फिर 'साबिरन मुह्तसिबन' (सब्र और सवाब की उम्मीद के साथ) कहाँ सच साबित हुआ?

पाँचवाँ: सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने ताऊन से भागने की तुलना जिससे फरमाई यानी जिहाद से भागना, उसी के अवलोकन से मालूम हो सकता है कि शहर छोड़कर दूसरे शहर चले जाने को ही भागना सीमित नहीं किया गया। अगर मुसलमानों का इमाम शहर के बाहर काफिरों से जिहाद कर रहा हो और कुछ लोग मुक़ाबले से भागकर अपने घरों में जा बैठें तो क्या वह

भागना नहीं होगा? बल्कि घरों में जा बैठना तो दूर की बात है, अगर मैदान-ए-जंग से भागकर उसी मैदान के किसी पहाड़ या गुफा में जा छुपें तो निश्चित रूप से भागने की रुसवाई उसी समय होगी कि उन्होंने हर तरह से जंग का मैदान छोड़ दिया और काफिरों के मुक़ाबले से मुँह मोड़ लिया। कुरआन की आयत इस पर स्पष्ट दलील है:

अल्लाह अज़-व-जल ने फ़रमाया: 'इन्नल्लज़ीना'	**अल्लाह तआला ग़ालिब और बड़ी ज़ात का इरशाद है: बेशक तुम...**

[1] सहीह अल-बुखारी, किताबुल अंबिया, बाब हदीसुल गार, क़दीमी कुतुब खाना कराची, 1/494.

اسی طرح حدیقہ ندیہ میں نقل فرمایا اور مقرر رکھا، اور جب مطمحِ نظر فرار عن الطاعون ہے نہ کہ عن البلد تو یہ بحث کہ فنائے شہر بھی مثلِ جمعہ اس حکم میں داخل ہے یا مثل سفر خارج محض طاعون سے بھاگنے کے لئے جو نقل و حرکت ہو سب زیرِ نہی ہے اگرچہ مضافات خواہ فناخواہ شہر کی شہر میں۔

رابعاً: نظر کیجئے تو خود یہی حدیث فیمکث فی بلدہ (پھر وہ اپنے شہر میں ٹھہرارہے۔ ت) محلاتِ شہر ہی میں تجویز فرار سے صریحاً ابا فرما رہی ہے اس میں فقط اتنا ہی نہ فرمایا کہ شہر میں رہے بلکہ صاف ارشاد ہوا:

یمکث فی بلدہ صابراً وہ اپنے شہر میں اللہ تعالیٰ سے اجر و ثواب کی امید رکھتے ہوئے اور محتسباً یعلم انہ لایصیبہ یہ جانتے ہوئے کہ اسے وہی کچھ پہنچے گا جو اللہ تعالیٰ نے اس کے الا ما کتب اللہ لہ۔ مقدر میں لکھ دیا ہے، صبر کا دامن تھامے ہوئے ٹھہرا رہے (ت)

اپنے شہر میں تین وصفوں کے ساتھ ٹھہرے: اول صبر واستقلال، دوم تسلیم و تفویض و رضا بالقضاء پر طلب ثواب، سوم یہ سچا اعتقاد کہ بے تقدیر الٰہی کوئی بلا نہیں پہنچ سکتی۔ اب اس کے حال کو اندازہ کیجئے جس کے شہر کے ایک کنارے میں طاعون واقع ہو اور وہ اس کے خوف سے گھر چھوڑ کر دوسرے کنارے کو بھاگ گیا کیا اسے ثابت قدم و صابر و مستقل و راضی بالقضاء کہا جائے گا، وہ ایسا ہوتا تو کیوں بھاگتا، شہر میں اس کا قیام صبر و رضا کے لئے نہیں بلکہ اس لئے کہ یہ کنارہ شہر ہنوز محفوظ ہے کل اگر یہاں بھی طاعون آیا تو اسے یہاں سے بھی

بھاگتے دیکھ لینا، اگر اب بیرونِ شہر جا کر پڑا اور وہاں بھی وبا پہنچی تو مضافات کو بھی چھوڑ کر دوسری ہی بستی میں دم لے گا پھر صابراً محتسباً کہاں صادق آیا۔

خامساً: سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرار عن الطاعون کو جس کا مماثل فرمایا یعنی جہاد سے بھاگنا اسی کے ملاحظہ سے معلوم ہو سکتا ہے کہ شہر چھوڑ کر دوسرے شہر کو چلے جانے ہی پر فرار محصور نہیں کیا گیا اگر امام مسلمانان بیرونِ شہر کفار سے جہاد کر رہا ہو اور کچھ لوگ مقابلہ سے بھاگ کر اپنے گھروں میں جا بیٹھیں تو فرار نہ ہو گا بلکہ گھروں میں جا بیٹھنا در کنار اگر معرکہ سے بھاگ کر اسی میدان کے کسی پہاڑ یا غار میں جا چھپے ضرور عارِ فرار نقد وقت ہو گی کہ میدانِ کارزار تو ہر طرح چھوڑا اور مقابلہ کفار سے منہ موڑا، نص قرآنی اس پر دلیل صریح ہے:

قال اللہ عز وجل "اِنَّ الَّذِیْنَ" اللہ تعالیٰ غالب اور بڑی ذات کا ارشاد ہے بیشک تم

[1] صحیح البخاری کتاب الانبیاء باب حدیث الغار قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۴۹۴

Fatawa Rizwia Volume 24

"Indeed, those of you who turned back on the day the two armies met, it was Satan who caused them to slip because of some [sins] they had earned. But Allah has already forgiven them. Indeed, Allah is Forgiving and Forbearing."[1]

And He (Allah), whose word is of the highest truth, said: "And He has already forgiven you, and Allah is the possessor of bounty for the believers."[2]

"[Remember] when you were climbing up [to flee] without looking back at anyone while the Messenger was calling you from behind; so He gave you sorrow for [your] sorrow..." (End of verse).

In Ma'alim [al-Tanzil] it is stated: Abu Abd al-Rahman al-Sulami and Qatadah recited the word "tus'iduna" with a fatha (short 'a') on the letters 'ta' and 'ayn'. The well-known recitation is with a damma (short 'u') on the 'ta' and a kasra (short 'i') on the 'ayn'. In the latter case, coming from the derived verb form 'al-Is'ad' (الاصعاد), it means "fleeing across the land." In the former case, being from the simple verb form 'su'ud' (صعود), it means "ascending or climbing high," whether onto roofs or mountains. Both recitations are correct and valid. Thus, on that day, some defeated people were fleeing blindly while others were climbing the nearby mountain. (Summarized)

Sixthly: Based on the wisdoms for which the All-Wise, Generous, Kind, and Merciful (Peace and blessings be upon him and his family) spoke regarding the plague...

---

[1] Al-Quran al-Karim 3/155 [2] Al-Quran al-Karim 3/152 [3] Ma'alim al-Tanzil on the margin of al-Khazin under the verse "And He has already forgiven you etc.", Mustafa al-Babi al-Halabi, Egypt 1/434.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

"बेशक तुम में से जिन लोगों ने उस दिन मुँह फेरा जिस दिन दोनों जमातें (जंग के लिए) आमने-सामने आईं, शैतान ने उनके कुछ कामों की वजह से उन्हें फिसला दिया था। और बेशक अल्लाह ने उन्हें माफ़ कर दिया, बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला और बुर्दबार है।"[1]

और उसने इरशाद फ़रमाया जो कहने वालों में बड़ी शान वाला है: "और बेशक अल्लाह ने तुम्हें माफ़ कर दिया और अल्लाह मोमिनों पर फ़ज़्ल फ़रमाने वाला है।"[2]

"जब तुम ऊपर चढ़ रहे थे और पीछे मुड़कर भी न देखते थे और रसूल-ए-मुकर्रम तुम्हें पीछे से आवाज़ें दे रहे थे, फिर तुम्हें ग़म पर ग़म ने आ लिया..." (आयत के अंत तक)।

मआलिम में है: अबू अब्दुर्रहमान सुल्मी और क़तादा ने शब्द 'तुस'इदूना' (تصعدون) के हर्फ़ ता और ऐन को ज़बर (फ़त्हा) के साथ पढ़ा है, जबकि मशहूर किरात ता की पेश (दम्मा) और ऐन की ज़ेर (क़सरा) के साथ है। फिर वह इस तरह 'अब्वाब-ए-मज़ीद' के बाब 'इफ़आल' से होने की वजह से 'अल-इसआद' से बना है जिसका मतलब 'ज़मीन में चलना' (भागना) है, जबकि पहले तरीके पर मुजर्रद होने की वजह से लफ़्ज़ 'सुऊद' से बना है जिसका मतलब 'ऊपर चढ़ना, बुलंदी पर जाना' है, चाहे छतों पर हो या पहाड़ों पर। और दोनों किरातें दुरुस्त और सही हैं। चुनाँचे उस दिन कुछ शिकस्त-खोरदा लोग मुँह उठाए भागे जा रहे थे और कुछ क़रीबी पहाड़ी पर चढ़ रहे थे। (संक्षेप में)

छठा: जिन हिकमतों की बिना पर हकीम करीम रऊफ़ रहीम (उन पर और उनकी आल पर सलात व सलाम हो) ने ताऊन (प्लेग) से...

---

[1] अल-क़ुरान अल-करीम 155/3 [2] अल-क़ुरान अल-करीम 152/3 [3] मआलिम अत-तन्ज़ील, अल-ख़ाज़िन के हाशिये पर, आयत 'व लक़द अफ़ा अ़नकुम' के तहत, मुस्तफ़ा अल-बाबी अल-हलबी मिस्र 1/434.

पृष्ठ 304 / 720

فتاٰوی رضویہ جلد ۲۴

"اِنَّ الَّذِیْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ یَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّیْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِیْمٌ"۱ میں سے جن لوگوں نے دو جماعتوں کے (جنگ کیلئے) آمنے سامنے آجانے والے دن منہ پھیرا ان کے بعض افعال کی وجہ سے شیطان نے انہیں پھسلا دیا بے شک اللہ تعالٰی نے انہیں معاف کردیا کیونکہ اللہ تعالٰی معاف فرمانے والا بردبار ہے،

وقال جل من قائل "وَ لَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ وَ اللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ"۲ اس نے ارشاد فرمایا جو کہنے والوں سے بڑی شان رکھتا ہے، بے شک اللہ تعالٰی نے تمہیں معاف فرمادیا اور اللہ تعالٰی مومنوں پر احسان فرمانے والا ہے،

"اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَ لَا تَلْوٗنَ عَلٰۤى اَحَدٍ وَّ الرَّسُوْلُ یَدْعُوْكُمْ فِیْۤ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ" الایۃ۔ اور یاد کرو جب تم اوپر چڑھ رہے تھے اور پیچھے مڑ کر بھی نہ دیکھتے تھے اور رسول مکرم تمہیں آوازیں دے کر بلا رہے تھے پھر تمہیں غم پر غم نے آلیا الایۃ (ت)

معالم میں ہے: قرأ ابو عبدالرحمن السلمی و قتادۃ تصعدون بفتح التاء والعین والقراءۃ المعروفۃ بضم التاء وکسر العین والاصعاد السیر فی الارض والصعود الارتفاع علی الجبال والسطوح وکلیتا القراءتین صواب فقد کان یومئذ من المنھزمین مصعد وصاعداہ باختصار۔ ابوعبدالرحمن سلمی اور قتادہ نے اس لفظ تصعدون کے حرف تاء اور عین کو زبر سے پڑھا ہے جبکہ مشہور قرات تاء کی پیش اور عین کی زیر کے ساتھ ہے، پھر وہ اس طور پر ابواب مزید باب افعال سے ہونے کی وجہ سے
"الاصعاد" سے بنا ہے جس کے معنی "زمین میں چلنا" ہے جبکہ پہلے طور پر مجرد ہونے کی وجہ سے لفظ "صعود" سے بنا ہے جس کے معنی "اوپر چڑھنا، بلندی پر جانا" ہے خواہ چھتوں پر

ہو یا پہاڑوں پر۔ اور دونوں قراتیں درست اور صحیح ہیں۔ پس اس دن کچھ شکست خوردہ لوگ منہ اٹھائے بھاگے جارہے تھے اور کچھ قریبی پہاڑی پر چڑھ رہے تھے اھ باختصار (ت) ۳

سادسا: جن حکمتوں کی بنا پر حکیم کریم رؤف رحیم علیہ وعلیٰ آلہ الصلوٰۃ والتسلیم نے طاعون سے

---

۱ القرآن الکریم ۱۵۵/۳ ۲ القرآن الکریم ۱۵۲/۳ ۳ معالم التنزیل علیٰ ہامش الخازن تحت آیۃ ولقد عفا عنکم الخ مصطفی البابی الحلبی مصر ۱/ ۴۳۴

Fatawa Razvia, Volume 24

Fleeing (from a plague) has been declared forbidden. One of the wisdoms behind this is that if the healthy people flee, the sick will be left to perish; there will be no one to tend to them or look after them. Furthermore, who will perform the funeral rites for those who die? This is similar to what is currently happening among the non-Muslims in our city and surrounding areas, where children have abandoned parents, and parents have abandoned children to save themselves. The corpses of prominent people are being put on carts by laborers and dumped. If the pure Sharia had also commanded Muslims to flee, then God forbid, the same helplessness and misery would have surrounded their sick and deceased, which the Sharia absolutely forbids. It is stated in Irshad-us-Sari, the commentary on Sahih al-Bukhari:

(Do not go out fleeing from it, for it is fleeing from the divine decree, and so that the sick are not neglected for lack of those who look after them, and the dead for lack of those who prepare them (for burial).)

(Do not go anywhere out from a place of plague) because it is equivalent to fleeing from the divine decree, and so that the sick do not perish because, due to this chaos, there will be no one for the care and protection of the patients, and no one for the funeral rites and burial of the deceased. (T)

Similarly, it is mentioned in Zurqani's commentary on Al-Muwatta. 'Ayni's commentary on Bukhari has also quoted and established this. The apparent reason is that just as fleeing to another city is prohibited, so is going to the outskirts of the city or even leaving a neighborhood of the sick to settle in a neighborhood of the healthy. Thus, the truth is that moving with the intention of fleeing is absolutely forbidden. Moreover, this reason implies that this ruling applies not only to the plague but to every epidemic. Therefore, Shaykh Muhaqqiq (may Allah have mercy on him) stated in Ash'at al-Lam'at, the commentary on Mishkat:

What has been mentioned in the Hadiths regarding fleeing from a plague and going out of the city where it has occurred is strongly forbidden. Warnings of punishment have been given, and it has been likened to fleeing from battle. One who remains patient is promised martyrdom. By this, an epidemic, widespread death, and general illness are meant, and it is specifically what doctors determine...

Whatever is mentioned in the Hadiths about fleeing from the plague and going out of the city, it has been forbidden, and a warning of torment has been given for it. It

has been declared equivalent to fleeing from war, and a decree of martyrdom has been announced for staying firm and remaining there. Therefore, from this, an epidemic and general death...

1. Irshad-us-Sari Sharh al-Bukhari, Book of Medicine, Chapter on Plague, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 8/385.
2. Sharh al-Zurqani 'ala Muwatta Imam Malik, under Hadith 721, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 4/420.
3. 'Umdat al-Qari Sharh Sahih al-Bukhari, Book of Prophets, Idarat al-Tiba'ah al-Muniriyyah, Beirut, 12/59.

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 24

(प्लेग से) भागना हराम करार दिया गया है। इसमें एक हिकमत (बुद्धिमत्ता) यह है कि अगर तंदुरुस्त लोग भाग जाएंगे, तो बीमार बेसहारा रह जाएंगे; उनका कोई तीमारदार या देखभाल करने वाला नहीं होगा। फिर जो मरेंगे, उनका कफ़न-दफ़न कौन करेगा? जैसा कि आजकल हमारे शहर और आसपास के हिंदुओं में मशहूर हो रहा है कि औलाद ने माँ-बाप को और माँ-बाप ने औलाद को छोड़कर अपनी राह ली। बड़े-बड़े लोगों की लाशें मज़दूरों ने ठेलों पर डालकर ठिकाने लगाईं। अगर शरीयत-ए-मुतह्हरा मुसलमानों को भी भागने का हुक्म देती, तो माज़अल्लाह यही बेबसी और बेकसी उनके बीमारों और मृतकों को भी घेर लेती, जिसे शरीयत कतई तौर पर हराम फरमाती है। 'इरशाद-उस-सारी' (सहीह अल-बुख़ारी की व्याख्या) में है:

(उससे भागते हुए बाहर न निकलो, क्योंकि यह तक़दीर-ए-इलाही से भागना है, और ताकि बीमार उन लोगों की कमी के कारण बर्बाद न हों जो उनकी देखभाल करते हैं, और मृतक उनकी कमी के कारण जो उन्हें तैयार करते हैं (दफ़नाने के लिए)।)

(प्लेग वाले स्थान से भागकर कहीं बाहर न जाओ) क्योंकि यह ईश्वरीय इच्छा से भागने के समान है, और ताकि बीमार बर्बाद न हों क्योंकि इस अफ़रातफ़री के कारण रोगियों की देखभाल और सुरक्षा के लिए कोई नहीं होगा, और मरने वालों के कफ़न-दफ़न के लिए भी कोई नहीं होगा। (त)

इसी तरह 'ज़रक़ानी' (अल-मुवत्ता की व्याख्या) में है। 'ऐनी' (बुख़ारी की व्याख्या) में भी इसे उद्धृत कर पुख्ता किया गया है। ज़ाहिर यह है कि जो कारण दूसरे शहर भाग जाने में है, वही शहर के बाहर जाकर रहने, बल्कि बीमारों के मुहल्ले को छोड़कर स्वस्थ लोगों के मुहल्ले में जाकर बसने में भी है। अतः सच तो यह है कि भागने की नीयत से हिलना-डुलना (स्थानांतरण) पूर्णतः हराम है। साथ ही यह कारण इस बात को अनिवार्य बनाता है कि यह हुक्म न केवल प्लेग बल्कि हर महामारी पर लागू होता है। इसलिए शेख़ मुहक़्क़िक़ (रहमतुल्लाह अलैहि) ने 'अशअतुल लमआत' (मिशकात की व्याख्या) में फरमाया:

जो कुछ हदीसों में प्लेग से भागने और उस शहर से बाहर निकलने के बारे में बताया गया है जहाँ यह फैला हो, उसमें सख़्त मनाही की गई है और सज़ा की चेतावनी दी गई है। इसे जंग से भागने के समान बताया गया है और सब्र करने वाले के लिए शहादत का वादा किया गया है। इससे मुराद वबा

(महामारी), आम मौत और आम बीमारी है, और विशेष रूप से वह जिसे हकीम (डॉक्टर) निर्धारित करें..

हदीसों में जो कुछ भी प्लेग से भागने और शहर से बाहर जाने के बारे में ज़िक्र किया गया है, उससे मना किया गया है और उस पर अज़ाब की धमकी दी गई है। इसे युद्ध से भागने के समान बताया गया है और वहीं जमे रहने और ठहरे रहने पर शहादत का हुक्म सुनाया गया है। अतः इससे वबा और आम मौत का...

1. इरशाद-उस-सारी शरह अल-बुख़ारी, किताब अल-तिब्ब, बाबू मा युज़करु फ़िल-ताऊन, दार अल-किताब अल-अरबी, बेरुत, 8/385।
2. शरह अल-ज़रक़ानी अला मुवत्ता इमाम मालिक, हदीस 721 के तहत, दार अल-मअरिफ़ा, बेरुत, 4/420।
3. उम्दतुल क़ारी शरह सहीह अल-बुख़ारी, किताब अल-अंबिया, इदारात अल-तिबाअत अल-मुनीरिया, बेरुत, 12/59।

पृष्ठ 305/720

فرار حرام فرمایا ان میں ایک حکمت یہ ہے کہ اگر تندرست بھاگ جائیں گے بیمار ضائع رہ جائیں گے ان کا کوئی تیماردار ہو گا نہ خبر گیراں، پھر جو مریں گے ان کی تجہیز و تکفین کون کرے گا، جس طرح خود آج کل ہمارے شہر اور گردونواح کے ہنود میں مشہور ہورہا ہے کہ اولاد کو ماں باپ، ماں باپ کو اولاد نے چھوڑ کر اپنا راستہ لیا۔ بڑوں بڑوں کی لاشیں مزدوروں نے ٹھیلے پر ڈال کر جہنم پہنچائیں، اگر شرع مطہر مسلمانوں کو بھی بھاگنے کا حکم دیتی تو معاذاللہ یہی بے بسی بیکسی ان کے مریضوں میتوں کو بھی گھیرتی جسے شرع قطعاً حرام فرماتی ہے۔ ارشاد الساری شرح صحیح البخاری میں ہے:

(لا تخرجوا فرارا منه فانه فرار من القدر ولئلا تضیع المرضی لعدم من یتعهدهم والموتی ممن یجهزهم[1]۔

(مقام طاعون سے بھاگ کر کہیں باہر نہ جاؤ) کیونکہ یہ تقدیر الہی سے بھاگنے کے مترادف ہے اور تاکہ بیمار ضائع نہ ہونے پائیں اس لئے کہ اس افراتفری کے باعث مریضوں کی نگہبانی اور حفاظت کے لئے کوئی نہیں ہوگا اور مرنے والوں کی تجہیز و تکفین اور تدفین کے لئے بھی کوئی نہ ہوگا۔ (ت)

اسی طرح زرقانی[2] شرح علی مؤطا میں ہے۔ عینی[3] شرح بخاری میں بھی اسے نقل کر کے مقرر رکھا۔ ظاہر یہ ہے کہ علت جس طرح غیر شہر کو بھاگ جانے میں ہے یو ہیں بیرون شہر جاپڑنے بلکہ محلہ مریضاں چھوڑ کر محلہ صحیحان میں جابسنے میں بھی، تو حق یہ کہ بہ نیت فرار مطلقاً

نقل و حرکت حرام ہے نیز یہ علت موجب ہے کہ نہ صرف طاعون بلکہ ہر وبا کا یہی حکم ہے اھ، ولہذا شیخ محقق رحمہ اللہ تعالیٰ نے اشعۃ اللمعات شرح مشکوٰۃ میں فرمایا:

آنچہ در احادیث مذکور شدہ و بر گریختن ازاں بیرون رفتن از شہرے کہ واقع شدہ اشد دراں نہی کردہ ووعید نمودہ و تشبیہ بفرار از زحف دادہ برصبر براں بشادت حکم کردہ مراد وبا و موت عام و مرض عام ست و مخصوص بانچہ اطبا تعیین

جو کچھ حدیثوں میں ذکر کیا گیا کہ طاعون سے بھاگنا اور شہر سے باہر چلے جانا تو اس سے منع فرمایا گیا اور اس پر عذاب کی دھمکی دی گئی اور اسے جنگ سے بھاگنے کے مترادف قرار دیا گیا اور قدم جما کر وہیں ٹھہرے رہنے پر شہادت کا حکم سنایا گیا لہذا اس سے وبا اور عام موت کا

[1] ارشاد الساری شرح البخاری کتاب الطب باب ما یذکر فی الطاعون دار الکتاب العربی بیروت ۳۸۵/۸ [2] شرح الزرقانی علی مؤطا امام مالک تحت حدیث ۷۲۱ دار المعرفۃ بیروت ۴۲۰/۴ [3] عمدۃ القاری شرح صحیح البخاری کتاب الانبیاء ادارۃ الطباعۃ المنیریۃ بیروت ۵۹/۱۲

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Persian text]: It has been shown, and therefore in the Hadiths it has been mentioned with the words 'waba' (plague) and 'general death', and although it has also occurred with the word 'ta'un' (pestilence), the Imam intended the meaning of 'waba'. It was an error to interpret 'ta'un' according to the specific terminology of physicians and thus consider fleeing from other epidemic diseases as permissible. Even if, hypothetically, the discourse is taken in this sense, it would still be a type of 'waba' and not exclusive to that specific meaning. Therefore, what will this speaker say about those Hadiths in which the words 'waba' and 'general death' are mentioned? We ask Allah for well-being.

[Urdu explanation]: It has been mentioned that although the word 'ta'un' has also appeared, in those instances as well, the meaning of 'waba' is intended. Therefore, an error was made by deducing 'ta'un' based on the specific terminology of physicians, which led to the belief that fleeing from other epidemic diseases is permissible. If, hypothetically, the discourse is interpreted in this sense, then it would become a category of 'waba' and not remain specific to that meaning. Thus, what will this speaker say regarding those Hadiths in which the words 'waba' and 'general death' are mentioned? We ask Allah Almighty for safety. (T)

Benefit: Imam Ahmad in 'Musnad' and Ibn Sa'd in 'Tabaqat' narrate from Abu 'Usaib (may Allah be pleased with him) with a sound chain of narration that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Arabic]: Jibril came to me with fever and plague. I held back the fever in Medina and sent the plague to Syria. So the plague is martyrdom for my Ummah and a mercy for them, and a filth (punishment) for the disbelievers. (2) | [Translation]: Gabriel the trustworthy (peace be upon him) came to me with fever and plague. I let the fever remain in Medina the Radiant and sent the plague to the land of Syria. Thus, the plague is martyrdom and mercy for my Ummah and a torment and retribution for the disbelievers.

Siddiq al-Akbar (may Allah be pleased with him) knew that the plague had been destined for the land of Syria and the cities of Syria were to be conquered. Therefore, regarding the army that Siddiq al-Akbar would dispatch to the land of Syria, he would take a pledge and covenant from them equally on two things: first, not to flee from the spears of the enemies; second, not to flee from the plague. Imam Musaddad, the teacher of Imam Bukhari and Muslim, narrates in his 'Musnad' from Abu al-Safar:

[Arabic]: He said: Abu Bakr (may Allah be pleased with him), when he would send [an army] to Syria, would take their pledge on... | [Translation]: Abu al-Safar said: When Hazrat Abu Bakr Siddiq (may Allah be pleased with him) would dispatch any army to the land of Syria, he would [take a pledge] from them...

1 Ash'at al-Lam'at, Book of Funerals, Chapter on Visiting the Sick, Section One, Maktaba Nooriya Razawiyya Sukkur 1/38-763 2 Musnad Imam Ahmad, narrated by Abi 'Usaib (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami Beirut 5/81

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[फ़ारसी पाठ]: यह दिखाया गया है, और इसलिए हदीसों में 'वबा' (महामारी) और 'मौत-ए-आम' (सामान्य मृत्यु) शब्दों के साथ उल्लेख किया गया है, और यद्यपि 'ताऊन' (प्लेग) शब्द के साथ भी आया है, इमाम का अर्थ 'वबा' ही था। यह एक गलती थी कि 'ताऊन' को चिकित्सकों की विशिष्ट शब्दावली के अनुसार व्याख्यायित किया गया और इस प्रकार अन्य महामारी रोगों से भागने को जायज़ समझा गया। यदि, काल्पनिक रूप से, इस प्रवचन को इसी अर्थ में लिया जाए, तो भी यह 'वबा' का ही एक प्रकार होगा न कि उस विशिष्ट अर्थ के साथ अनन्य। इसलिए, यह वक्ता उन हदीसों के बारे में क्या कहेगा जिनमें 'वबा' और 'मौत-ए-आम' शब्द आए हैं? हम अल्लाह से सलामती की दुआ करते हैं।

[उर्दू व्याख्या]: उल्लेख किया गया है कि हालांकि 'ताऊन' शब्द भी आया है, लेकिन उनमें भी 'वबा' के अर्थ ही अभिप्रेत हैं। अतः यह गलती हुई कि 'ताऊन' को हकीमों की विशेष शब्दावली पर अनुमान कर लिया गया, जिसके कारण अन्य संक्रामक रोगों से भागना जायज़ समझ लिया गया। यदि मान लिया जाए कि बात इसी अर्थ पर आधारित है, तो भी वह 'वबा' की श्रेणी में ही आएगा न कि उस अर्थ के साथ विशिष्ट। फिर यह वक्ता उन हदीसों के बारे में क्या कहेगा जिनमें 'वबा' और 'आम मौत' के शब्द आए हैं? हम अल्लाह तआला से आफियत (सलामती) का सवाल करते हैं। (त)

फ़ायदा: इमाम अहमद 'मुसनद' में और इब्न सअद 'तबाक़ात' में अबू उसैब (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से सही सनद के साथ रिवायत करते हैं, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[अरबी]: जिब्रील मेरे पास बुखार और ताऊन लेकर आए। मैंने बुखार को मदीना में रोक लिया और ताऊन को शाम भेज दिया। तो ताऊन मेरी उम्मत के लिए शहादत और रहमत है और काफिरों के लिए अज़ाब। (2) | [अनुवाद]: मेरे पास जिब्रील अमीन (अलैहिस्सलाम) बुखार और ताऊन लेकर हाज़िर हुए। मैंने बुखार को मदीना तैयबा में रहने दिया और ताऊन को मुल्क-ए-शाम भेज दिया, तो ताऊन मेरी उम्मत के लिए शहादत और रहमत है और काफिरों पर अज़ाब और सज़ा है।

सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) को मालूम था कि ताऊन का हुक्म मुल्क-ए-शाम के लिए हुआ है और शाम के शहरों को फतह करना था। इसलिए सिद्दीक़-ए-अकबर जो लश्कर मुल्क-ए-शाम रवाना फरमाते, उससे दो बातों पर समान रूप से बैअत और अहद-ओ-पैमान लेते: एक यह

कि दुश्मनों के नेजों से न भागना, दूसरा यह कि ताऊन से न भागना। इमाम मुसद्दद, जो इमाम बुखारी और मुस्लिम के उस्ताद हैं, अपनी मुसनद में अबू अल-सफ़र से रिवायत करते हैं:

[अरबी]: उन्होंने कहा: अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) जब शाम की तरफ भेजते तो उनसे बैअत लेते... | [अनुवाद]: अबू अल-सफ़र ने कहा: हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) जब कोई लश्कर मुल्क-ए-शाम रवाना फरमाते तो उनसे...

1 अशअतुल लमआत, किताबुल जनाइज़, बाब अयादतुल मरीज़, अल-फ़स्ल अल-अव्वल, मकतबा नूरिया रज़विया सक्खर 1/38-763 2 मुसनद इमाम अहमद, अन अबी उसैब (रज़ियल्लाहु अन्हु), अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत 5/81

نموده اند نیست و لہذا در احادیث به لفظ و با و موت عام مذکور شده و اگر چه بلفظ طاعون نیز واقع شده امام را مراد معنی و با است و غلط کرده که طاعون رابر مصطلح اطباء حمل کرده و در غیر آن فرار مباح داشته و اگر فرضا بر ہمیں معنی محمول باشد فردی از و با خواهد بود نه مخصوص باں وایں قائل آں احادیث را که در و لفظ و با و موت عام واقع شده چه خواهد گفت۔ نسأل اللہ العافیۃ۔ ذکر کیا گیا اگر چہ لفظ طاعون بھی وارد ہوا ہے لیکن اس میں بھی و با کے معنی مراد ہیں۔ لہذا یہ غلطی ہو گئی کہ طاعون کو طبیبوں کی خصوصی اصطلاح پر قیاس کر لیا گیا اس لئے دوسری وبائی امراض سے بھاگنا مباح سمجھا گیا، اگر بالفرض اسی معنی پر بھی کلام کو محمول کیا جائے تو پھر وہ از قسم و با ہو جائے گا نہ کہ اس معنی کے ساتھ مخصوص ۔ لہذا یہ قائل ان حدیثوں کے متعلق کیا کہے گا کہ جن میں لفظ و با اور موت عام کے الفاظ مذکور ہوئے ہیں۔ ہم اللہ تعالیٰ سے عافیت کا سوال کرتے ہیں۔ (ت) فائدہ: امام احمد مسند اور ابن سعد طبقات میں ابو عسیب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بسند صحیح روایت کرتے ہیں، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں :

اتانی جبرئیل بالحمی والطاعون فامسکت الحمی بالمدینۃ وارسلت الطاعون الی الشام فالطاعون شھادۃ لامتی ورحمۃ لھم ورجس علی الکافرین -2 | میرے پاس جبرئیل امی علیہ الصلوٰۃ والتسلیم بخار اور طاعون لے کر حاضر ہوئے میں نے بخار مدینہ طیبہ میں رہنے دیا اور طاعون ملک شام کو بھیج دیا، تو طاعون میری امت کے لئے شہادت و رحمت اور کافروں پر عذاب و نقمت ہے۔

صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو معلوم تھا کہ طاعون کو ملک شام کا حکم ہوا ہے اور بلاد شام فتح کرنے تھے لہذا صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ جو لشکر ملک شام روانہ فرماتے اس سے

دونوں باتوں پر یکساں بیعت و عہد و پیمان لیتے ، ایک یہ کہ دشمنوں کے نیزوں سے نہ بھاگنا، دوسرے یہ کہ طاعون سے نہ بھاگنا، امام مسدد استاذ امام بخاری و مسلم اپنی مسند میں ابوالسفر سے روایت کرتے ہیں:

قال کان ابوبکر رضی اللہ تعالی عنہ اذا بعث الی الشام بایعھھم علی | ابوالسفر نے کہا حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ جب کوئی لشکر ملک شام روانہ فرماتے تو ان سے

1 اشعۃ اللمعات کتاب الجنائز باب عیادۃ المریض الفصل الاول مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۳۸۔

۷۶۳ 2 مسند امام احمد عن ابی عسیب رضی اللہ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۵/ ۸۱

Fatawa Razawiya Volume 24

At-Ta'n wal-Ta'un (Stabbing and Plague)

This bay'at (oath/covenant) was taken: first, not to flee from the enemy's spears, and second, not to flee from a place of plague. (T)

From this, it is well-proven and evident that anyone who encourages Muslims to flee from the plague is not their well-wisher but an ill-wisher. For physicians and doctors to discourage patience and steadfastness in this matter is a false path contrary to goodness and reform. Allah Almighty sent the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) as a mercy for the whole world and made him especially kind and merciful towards the Muslims. Regarding Siddiq-e-Akbar (may Allah be pleased with him), it is stated in a Hadith: "The most merciful of my Ummah towards my Ummah is Abu Bakr" 2 (The one who has the most kindness and mercy for the state of my Ummah among the entire Ummah is Abu Bakr. T). If there were good in fleeing from the plague and harm in staying, then why would the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), who is more merciful to his Ummah than parents, encourage staying and forbid fleeing with such severe emphasis? And why would Siddiq-e-Akbar (may Allah be pleased with him), who is the greatest well-wisher of the Ummah among them all, take a covenant not to flee from it? It is understood that those who encourage fleeing from the plague are actually ill-wishers of the Ummah and provide misguided advice, refuge is sought with Allah. It is like a foolish, undiscerning, and misguided woman who, seeing the hardship of studying and the strictness of the teacher, encourages her child to run away from school. In her false imagination, she considers it love, whereas it is clear enmity.

The friendship of the ignorant is enmity. (The friendship of fools is in reality enmity. T)

Unfortunate is the child who listens to her and disregards the kind father's emphasis and warning. Rather, in fairness, this situation is worse than that example. The hardship of studying in school applies to everyone, and its intensity is also predominant and common. Whereas where a plague breaks out, it is not necessary for everyone or most to be afflicted; rather, by the permission of Allah Almighty, the number of those who remain safe is greater. Therefore, comparing it to fire or an earthquake is invalid. To understand it under the verse: "and do not throw yourselves into destruction" 3 (O people! do not fall into destruction by your own hands. T) is mere delusion, because in those (fire/earthquakes), destruction is predominant, as per the words of Hazrat...

1 2 Musnad Imam Ahmad, narrated by Anas (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami Beirut, 3/281. 3 Al-Quran al-Karim, 2/195.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

अत-तअन वत-ताऊन (छुरा घोंपना और प्लेग)

यह बैत (वचन/अहद-ओ-पैमान) लिया जाता था: पहली बात, दुश्मन के भालों से न भागना, और दूसरी बात, प्लेग के स्थान से न भागना। (त)

यहाँ से अच्छी तरह सिद्ध और स्पष्ट हो गया कि जो कोई मुसलमानों को प्लेग से भागने के लिए प्रोत्साहित करता है, वह उनका शुभचिंतक नहीं बल्कि दुर्भावना रखने वाला है। और चिकित्सकों तथा डॉक्टरों का इस मामले में धैर्य और दृढ़ता से रोकना भलाई और सुधार के विरुद्ध एक गलत रास्ता है। अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पूरी दुनिया के लिए रहमत बनाकर भेजा और मुसलमानों पर विशेष रूप से दयालु और कृपालु (रऊफ़-ओ-रहीम) बनाया। और सिद्दीक-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के बारे में हदीस में आया है: "मेरी उम्मत में मेरी उम्मत के साथ सबसे अधिक दयालु अबू बक्र हैं" 2 (अर्थात् अबू बक्र को मेरी उम्मत की हालत पर जितनी दया और करुणा है, उतनी पूरी उम्मत में किसी को नहीं है। त)। अगर प्लेग से भागने में भलाई और रुकने में बुराई होती, तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), जो अपनी उम्मत पर माता-पिता से भी अधिक दयालु हैं, रुकने के लिए क्यों प्रोत्साहित करते और भागने से इतनी सख्त ताकीद के साथ मना क्यों फरमाते? और सिद्दीक-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु), जो पूरी उम्मत में सबसे बड़े शुभचिंतक हैं, इससे न भागने का वचन क्यों लेते? यह पता चला कि प्लेग से भागने के लिए प्रोत्साहित करने वाले ही वास्तव में उम्मत के बुरा चाहने वाले और उलटी सलाह देने वाले हैं, अल्लाह की पनाह (व-अल-इयाज़ु बिल्लाह)। यह वैसा ही है जैसे कोई नासमझ, बेतमीज़ और कम-अक्ल औरत पढ़ाई की मेहनत और उस्ताद की सख्ती देखकर अपने बच्चे को मदरसे (मकतब) से भाग आने के लिए उकसाए। वह अपने झूठे ख्याल में इसे प्यार समझती है, जबकि यह स्पष्ट दुश्मनी है।

मूर्खों की दोस्ती दुश्मनी होती है। (बेवकूफों की दोस्ती वास्तव में दुश्मनी होती है। त)

बदकिस्मत वह बच्चा है जो उसकी बात मान ले और दयालु पिता की ताकीद और चेतावनी को ध्यान में न लाए। बल्कि निष्पक्ष रूप से यह स्थिति इस उदाहरण से भी बदतर है। मकतब में पढ़ने की मेहनत सभी पर होती है और उसकी सख्ती भी प्रबल और सामान्य है। जबकि जहाँ प्लेग फैलता है, वहाँ सभी या अधिकांश का प्रभावित होना आवश्यक नहीं है, बल्कि अल्लाह तआला की अनुमति से सुरक्षित रहने वालों की संख्या अधिक होती है। इसलिए, आग और भूकंप पर इसकी तुलना (क़यास)

करना गलत है। इसे आयत "और अपने हाथों स्वयं को विनाश में न डालो" 3 (ओ लोगों! अपने हाथों खुद को हलाकत में न डालो। त) के तहत समझना केवल एक भ्रम (वसवसा) है, क्योंकि उनमें (आग/भूकंप) विनाश प्रबल होता है, जैसा कि हज़रत का कलाम है...

1 2 मुसनद इमाम अहमद, अन अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु), अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरुत, 3/281.
3 अल-कुरान अल-करीम, 2/195.

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

الطعن والطاعون ۔

یہ بیعت (عہد و پیمان) لیتے کہ ایک تو دشمن کے نیزوں سے نہ بھاگنا دوسرے مقامِ طاعون سے نہ بھاگنا۔ (ت)

یہاں سے خوب ثابت و ظاہر ہوا کہ مسلمانوں کو فرار عن الطاعون کی ترغیب دینے والا ان کا خیر خواہ نہیں بد خواہ ہے اور طبیبوں ڈاکٹروں کا اس میں صبر و استقلال سے منع کرنا خیر و صلاح کے خلاف باطل راہ ہے، اللہ عز وجل نے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو سارے جہاں کے لئے رحمت بنا کر بھیجا اور مسلمانوں پر بالخصوص رؤف رحیم بنایا اور صدیق اکبر رضی اللہ تعالٰی عنہ کے لئے ارحم امتی بامتی ابوبکر ۲ (میری امت میں میری امت کے ساتھ سب سے بڑے مہربان ابوبکر صدیق (رضی اللہ تعالٰی عنہ) ہیں۔ ت) حدیث میں آیا یعنی جو رافت و رحمت میری امت کے حال پر ابوبکر کو ہے اتنی تمام امت میں کسی کو نہیں، اگر طاعون سے بھاگنے میں بھلائی اور ٹھہرنے میں برائی ہوتی تو رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کہ اپنی امت پر ماں باپ سے زیادہ مہربان ہیں کیوں ٹھہرنے کی ترغیب دیتے اور بھاگنے سے اس قدر تاکید شدید کے ساتھ منع فرماتے اور صدیق اکبر رضی اللہ تعالٰی عنہ کہ تمام امت میں سب سے بڑھ کر خیر خواہ امت ہیں کیوں اس سے نہ بھاگنے کا عہد و پیمان لیتے، معلوم ہوا کہ طاعون سے بھاگنے کی ترغیب دینے والے ہی حقیقتًا امت کے بدخواہ اور الٹی مت سمجھانے والے ہیں والعیاذ باللہ تعالٰی، جیسے کوئی بد عقل بے تمیز کج فہم عورت پڑھنے کی محنت استاذ کی شدت دیکھ کر اپنے بچے کو مکتب سے بھاگ آنے کی ترغیب دے وہ اپنے خیالِ باطل میں اسے محبت سمجھتی ہے حالانکہ صریح دشمنی ہے ع

دوستی بیخردان دشمنی ست (بیوقوفوں کی دوستی در حقیقت دشمنی ہوتی ہے۔ ت)

بد نصیب وہ بچہ کہ اس کے کہنے میں آجائے اور مہربان باپ کی تاکید و تہدید خیال میں نہ لائے بلکہ انصافًا یہ حالت اس مثال سے بھی بدتر ہے مکتب میں پڑھنے کی محنت سبھی پر ہوتی ہے اور شدت بھی غالب و اکثری ہے اور جہاں طاعون پھوٹے وہاں سب یا اکثر کا مبتلا ہونا کچھ ضرور نہیں بلکہ باذنہ تعالٰی محفوظ ہی رہنے والوں کا شمار زائد ہوتا ہے و لہذا آگ اور زلزلے پر اس کا قیاس باطل

"وَلَا تُلْقُوْا بِاَیْدِیْکُمْ اِلَی التَّھْلُکَۃِ" ۳ (لوگو! اپنے ہاتھوں ہلاک میں نہ پڑو۔ت) کے نیچے سمجھنا محض وسوسہ ہے کہ ان میں ہلاک غالب ہے جیسا کہ کلامِ حضرت

۱ ۲ مسند امام احمد عن انس رضی اللہ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۳/ ۲۸۱ ۳ القرآن الکریم ۲/ ۱۹۵

صفحہ 307 کا 720

Fatawa Rizvia, Volume 24

It has been mentioned by Shaykh al-Muhaqqiq (may Allah sanctify his secret) that true destruction is to consider the pure words of Mustafa (Allah bless him and grant him peace), which are pure mercy and well-wishing for the Ummah, as harmful (God forbid), and to consider the words of physicians and doctors against it as beneficial for oneself.

See from whom you have severed ties and with whom you have joined and attached.

There is no might nor power except with Allah, the Most High, the Most Great (No one has any strength or power except through the bestowal and gift of Allah Almighty, who is high in rank and magnificent). Therefore, the manner of the righteous predecessors was to exercise patience and steadfastness during plagues. Imam Abu Umar bin Abdul Barr says:

Arabic	**Urdu Translation**
I have not heard of anyone from among the carriers of knowledge fleeing from it, except for what al-Madaini mentioned regarding Ali bin Zaid bin Jud'an, that he fled from it to al-Sayyala. He would come to gather every Friday and return after the gathering. They would shout at him: 'He fled from the plague!' Then he was struck by the plague and died in al-Sayyala.	That is, no narration reached me regarding anyone having fled from the plague except what al-Madaini mentioned that Ali bin Zaid bin Jud'an fled from the plague in the city to al-Sayyala. Every Friday he would come to the city to pray and return. When he would return, people would make a noise, 'He has fled from the plague.' Finally, in al-Sayyala, he became afflicted with the plague itself and died.

This Ali bin Zaid was not among such reliable scholars; Imam Sufyan bin Uyaynah, Imam Hammad bin Zaid, Imam Ahmad bin Hanbal, Imam Yahya bin Ma'in, Imam Bukhari, Imam Abu Hatim, Imam Ibn Khuzaymah, Imam Ujli, Imam Daraqutni, and other general Imams of *Jarh wa Ta'dil* (scrutiny and accreditation) have declared him weak. Even his religious leanings were not correct; Ujli said he was a Shia, rather it is narrated from Imam Yazid bin Zuray' that he was a Rafidi. Furthermore, this action of his was not even during the time of his sound mind and healthy senses; at the end of his life, his mind was not sound. Imam Shu'bah bin al-Hajjaj said: "Ali related to us before he became confused" (Ali bin Zaid narrated to us before the period of mental confusion). Fasawee said: "He became confused in his old age." Then, coming to the city, i.e., Basra, every Friday for prayer and returning after praying is clear evidence.

1. Al-Tamhid by Ibn Abdul Barr, Abdullah bin Aamir bin Rabi'ah, Maktaba al-Quddusiyya Lahore, 6/15-213.
2. Mizan al-I'tidal, biography of Ali bin Zaid (5844), Dar al-Ma'rifah Beirut, 3/712.
3. Mizan al-I'tidal, biography of Ali bin Zaid (5844), Dar al-Ma'rifah Beirut, 3/128.

फ़तावा रज़विया, खंड 24

शेख़ मोहक़्क़िक़ (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र रखे) से गुज़रा और सच्ची हलाकत तो यह है कि मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पाक फरमान को, जो उम्मत के लिए ऐन रहमत और खैरख्वाही है, माज़अल्लाह (ईश्वर न करे) नुकसानदेह समझा जाए और उसके मुक़ाबले में हकीमों और डॉक्टरों की बात को अपने लिए फायदेमंद समझा जाए।

देख तो सही कि तुमने किससे रिश्ता तोड़ा और किससे रिश्ता जोड़ा और मिलाया।

नेकी करने की ताक़त और बुराई से बचने की कुव्वत सिर्फ़ अल्लाह की तौफ़ीक़ से है जो बहुत बुलंद और अज़ीमुश्शान है। इसीलिए नेक पूर्वजों (सलफ़-ए-सालेह) का यही अदब रहा कि वे वबा (महामारी) में सब्र और इस्तक़ामत से काम लेते थे। इमाम अबू उमर बिन अब्दुल बर्र फ़रमाते हैं:

अरबी

मुझे इल्म रखने वालों में से किसी के बारे में यह नहीं पता चला कि वह इससे भागा हो, सिवाय इसके जो मदैनी ने अली बिन ज़ैद बिन जुदआन के बारे में ज़िक्र किया कि वह इससे भागकर सैयाला चले गए। वह हर जुमे को नमाज़ के लिए जमा होते और जमा होने के बाद लौट आते। लोग उन्हें पुकारते: 'वह वबा से भाग गया!' फिर वह वबा का शिकार हुए और सैयाला में उनकी मृत्यु हो गई।

उर्दू अनुवाद

यानी मुझे किसी के बारे में यह रिवायत नहीं पहुँची कि वह ताऊन (प्लेग) से भागा हो, सिवाय उसके जिसे मदैनी ने ज़िक्र किया कि अली बिन ज़ैद बिन जुदआन ताऊन के दौरान शहर से भागकर सैयाला चले गए थे। हर जुमे को शहर आकर नमाज़ पढ़ते और लौट जाते। जब लौटते तो लोग शोर मचाते कि यह ताऊन से भागा है। आख़िरकार सैयाला में ही ताऊन में मुब्तला होकर मर गए।

यह अली बिन ज़ैद ऐसे मुस्तनद (विश्वसनीय) उलेमा में से नहीं थे; इमाम सुफ़ियान बिन उयैना, इमाम हम्माद बिन ज़ैद, इमाम अहमद बिन हंबल, इमाम यह्या बिन मईन, इमाम बुखारी, इमाम अबू हातिम, इमाम इब्न खुज़ैमा, इमाम उजली, इमाम दारकुतनी और अन्य आम आइम्मा-ए-जरह-ओ-तादील ने उन्हें कमज़ोर (ज़ईफ़) ठहराया है। उनके मज़हब में भी कुछ ठीक न था; उजली ने कहा कि वह शिया थे, बल्कि इमाम यज़ीद बिन ज़ुरै से रिवायत है कि वह राफ़िज़ी थे। फिर उनका यह काम अक़्ल और होश की सलामती के दौर का भी न था, आख़िरी उम्र में अक़्ल सही नहीं रही थी। इमाम शोबा बिन अल-हज्जाज ने फ़रमाया: "हमसे अली ने अक़्ल के गड़बड़ाने से पहले बयान किया है।" फ़सवी ने

कहा: "बुढ़ापे में उनकी अक़्ल गड़बड़ा गई थी।" फिर हर जुमे को नमाज़ के लिए शहर यानी बसरा में आना और नमाज़ पढ़कर पलट जाना एक साफ़ दलील है।

---

1. अल-तमहीद, इब्न अब्दुल बर्र, अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन रबीअ, मकतबा अल-क़ुद्दूसिया लाहौर, 6/15-213.
2. मीज़ानुल एतदाल, अली बिन ज़ैद की जीवनी (5844), दारुल मारिफ़ा बेरुत, 3/712.
3. मीज़ानुल एतदाल, अली बिन ज़ैद की जीवनी (5844), दारुल मारिफ़ा बेरुत, 3/128.

पृष्ठ 308/720

شیخ محقق قدس سرہ سے گزرا اور سچا ہلاک تو یہ ہے کہ مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ارشاد اقدس کو کہ عین رحمت و خیر خواہی امت ہے معاذاللہ مضرت رساں خیال کیا جائے اور اس کے مقابل طبیبوں اور ڈاکٹروں کی بات کو اپنے لئے نافع سمجھا جائے۔ ع

یہیں کہ از کہ برید ی وباکہ پیوستی (دیکھو تو سہی کہ تم نے کس سے رشتہ کاٹا اور کس سے رشتہ جوڑا اور ملایات)

ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم (کسی کی کوئی طاقت اور قوت نہیں مگر اللہ تعالیٰ کی عطاء وبخشش سے ہے جو بلند مرتبہ اور عظیم الشان ہے۔ت) ولذا سلف صالح کا ادب یہی رہا کہ طاعون میں صبر و استقلال سے کام لیتے۔ امام ابوعمر بن عبدالبر فرماتے ہیں:

عربی متن	اردو ترجمہ
لم یبلغنی عن احد من حملۃ العلم انہ فر منہ الاما ذکر المدائنی ان علی بن زید بن جدعان ھرب منہ الی السیالۃ فکان یجمع کل جمعۃ و یرجع اذا جمع صاحوا بہ فر من الطاعون فطعن فمات بالسیالۃ ۔	یعنی مجھے کسی کی نسبت یہ روایت نہ پہنچی کہ وہ طاعون سے بھاگا ہو مگر وہ جو مدائنی نے ذکر کیا کہ علی بن زید بن جدعان طاعون میں شہر سے بھاگ کر سیالہ کو چلے گئے تھے ہر جمعہ کو شہر میں آکر نماز پڑھتے اور پلٹ جاتے جب پلٹتے لوگ شور مچاتے طاعون سے بھاگا ہے آخر سیالہ میں طاعون ہی میں مبتلا ہوکر مرے۔

یہ علی بن زید کچھ ایسے مستند علما سے نہ تھے امام سفیان بن عیینہ و امام حماد بن زید و امام احمد بن حنبل و امام یحییٰ بن معین و امام بخاری و امام ابو حاتم و امام ابن خزیمہ و امام عُجلی و

امام دار قطنی و غیرھم عامہ ائمہ جرح و تعدیل نے ان کی تضعیف کی، اور مذہب کے بھی کچھ ٹھیک نہ تھے، عُجلی نے کہا شیعی تھا بلکہ امام یزید بن زریع سے مروی ہوا رافضی تھا، پھر اس کا یہ فعل زمانہ سلامت عقل و صحت حواس کا بھی نہ تھا، آخر عمر میں عقل صحیح نہ رہی تھی، امام شعبہ بن الحجاج نے فرمایا: حدثنا علی قبل ان یختلط (ہم سے علی بن زید نے زمانہ اختلاط عقل سے پہلے بیان کیا ہے۔ت) فسوی نے کہا: اختلط فی کبرہ (اس کو بڑھاپے میں اختلاط ہو گیا تھا۔ت) پھر ہر جمعہ کو نماز کے لئے شہر یعنی بصرہ میں آنا اور نماز پڑھ کر پلٹ جانا دلیل واضح ہے

---

1. التمہید لابن عبدالبر عبد اللہ بن عامر بن ربیعہ رقم المکتبۃ القدوسیہ لاہور ۶/ ۱۵۔ ۲۱۳
2. میزان الاعتدال ترجمہ علی بن زید ۵۸۴۴ دارالمعرفۃ بیروت ۳/ ۷۱۲
3. میزان الاعتدال ترجمہ علی بن زید ۵۸۴۴ دارالمعرفۃ بیروت ۳/ ۱۲۸

Fatawa Rizwia, Volume 24

Syala was such a nearby place from Basra. Ali bin Zaid passed away in 131 AH, which was the era of the Tabi'in. So it is proven that going to the outskirts of the city is also included in this forbidden flight, due to which this person became cursed and pointed at in the entire city. Every Friday when he returned, the people of the city, who were Tabi'in and Atba' al-Tabi'in, would raise a clamor that he fled from the plague. We seek refuge with Allah Almighty.

Important Note: Just as fleeing from the plague is forbidden, going there is also unauthorized and sinful. Explicit Hadiths have forbidden both. In the first case, it is fleeing from divine destiny, while in the second, it is confronting a divine calamity, and the excuse of showing trust (Tawakkul) for it is mere foolishness. Tawakkul is not the name for opposing causes. The great Imam Ibn Daqiq al-Id (may Allah Almighty have mercy on him) says:

Arabic	**Urdu Translation**
Entering into it is exposing oneself to calamity, and perhaps one may not be patient with it. Sometimes there may be a kind of claim to the station of patience or trust (Tawakkul). Thus, it was prohibited to avoid self-delusion and to guard against the claims of the self, which in reality have no stability or firmness.	Entering into it is presenting oneself to affliction and calamity, and one may not be able to be patient with it. Sometimes a kind of claim to the station of patience and trust (Tawakkul) arises within it; thus, it was forbidden for the sake of avoiding self-delusion and guarding against the claims of the self, which in truth have no stability or firmness. (T)

There is absolutely no room for argument regarding this prohibition. Now, as for going out of a plague-stricken city or entering it from elsewhere when there is no intention of fleeing or confronting it, the research of our scholars is that it is not forbidden in itself. However, from a foresighted perspective, there are two scenarios: First, if a person has complete faith, "Nothing will happen to us except what Allah has written for us"[2] (The gladness and luminosity of this verse have permeated his heart). If he goes to a plague-stricken city for some work and gets afflicted, he will not suffer from the regret that he came unnecessarily and the calamity caught him; or if he goes out for work, he will not think that it was good that he escaped this calamity. In short, if his coming and going is exactly as it would be in a time when there is no plague, then he has pure permission.

[1] Sharh al-Zarqani on Muwatta Imam Malik, Chapter: What has been narrated regarding the plague, under Hadith 271, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 4/238. [2] The Holy Quran 9/51.

फ़तावा रज़विया, खंड 24

स्याला बसरा के पास ही एक ऐसी जगह थी। अली बिन ज़ैद का निधन 131 हिजरी में हुआ, जो ताबईन का युग था। तो यह सिद्ध हुआ कि शहर के बाहरी इलाकों में जाना भी इसी हराम पलायन (भागने) में शामिल है, जिसके कारण यह व्यक्ति पूरे शहर में तिरस्कृत और चर्चा का विषय बन गया। हर शुक्रवार को जब वह लौटता, तो शहर के लोग, जो ताबईन और तब-ए-ताबईन ही थे, शोर मचाते कि वह प्लेग से भाग गया। अल्लाह तआला की पनाह।

महत्वपूर्ण सूचना: जिस तरह प्लेग से भागना हराम है, वहां जाना भी नाजायज़ और गुनाह है। स्पष्ट हदीसों में दोनों से मना किया गया है। पहले में ईश्वरीय नियति से भागना है, और दूसरे में ईश्वरीय विपत्ति का सामना करना है, और इसके लिए तवक्कुल (ईश्वर पर भरोसा) प्रदर्शित करने का बहाना कोरी मूर्खता है। तवक्कुल कारणों (अस्बाब) का विरोध करने का नाम नहीं है। महान इमाम इब्न दकीक अल-ईद (रहमतुल्लाह अलैह) फरमाते हैं:

अरबी	**उर्दू अनुवाद**
इसमें कदम रखना अपने आप को मुसीबत और बला पर पेश करना है और शायद वह उस पर सब्र न कर सके। और कभी-कभी इसमें सब्र या तवक्कुल के मुकाम के दावे जैसा कुछ पैदा हो जाता है। इसलिए नफ़्स के धोखे और नफ़्स के दावों से बचने के लिए इससे मना किया गया है, क्योंकि वास्तव में इनमें कोई स्थिरता और दृढ़ता नहीं होती।	इस पर कदम रखना अपने आप को मुसीबत और बला पर पेश करना है और वह इस पर सब्र नहीं कर सकेगा और कभी इसमें एक प्रकार की शान-ए-दावा पैदा हो जाती है सब्र और तवक्कुल के मुकाम की, तो इसलिए इससे रोक दिया गया ताकि नफ़्स के फरेब से बचा जा सके और नफ़्स के दावों से बचा जा सके जिस पर वास्तव में कोई स्थिरता और दृढ़ता नहीं है। (त)

इतनी मनाही के बारे में बहस की कोई गुंजाइश नहीं है। अब रही बात यह कि जब प्लेग से भागने या उसका मुकाबला करने का इरादा न हो, तो प्लेगग्रस्त शहर से बाहर निकलना या दूसरी जगह से उसमें जाना अपने आप में कैसा है? हमारे विद्वानों का शोध यह है कि यह स्वयं हराम नहीं है, लेकिन दूरदर्शिता की दृष्टि से यहाँ दो स्थितियाँ हैं: पहली यह कि इंसान कामिल-उल-ईमान (पूर्ण विश्वासी) हो, "हमें कुछ भी नहीं पहुँच सकता सिवाय उसके जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दिया है"[2] (इस आयत की खुशी और नूरानियत उसके दिल के अंदर समाई हुई हो)। अगर वह किसी काम के लिए

प्लेगग्रस्त शहर में जाए और संक्रमित हो जाए, तो उसे यह पछतावा नहीं होगा कि वह बेवजह आया और बला ने पकड़ लिया; या अगर वह काम के लिए बाहर जाए, तो यह नहीं सोचेगा कि अच्छा हुआ कि इस बला से निकल आया। संक्षेप में, यदि उसका आना-जाना बिल्कुल वैसा ही हो जैसा प्लेग न होने के समय में होता, तो उसे पूर्ण अनुमति है।

---

[1] शरह अल-ज़रकानी अल मुवत्ता अल-इमाम मलिक, अध्याय: जो प्लेग के बारे में वर्णित है, हदीस 271 के तहत, दार अल-मारिफ़ा, बेरूत, 4/238. [2] अल-कुरान अल-करीम 9/51.

کہ سیالہ کوئی ایسی ہی قریب جگہ بصرہ سے تھی علی بن زید کا انتقال ۱۳۱ھ میں ہے وہ زمانہ تابعین کا تھا، تو ثابت ہوا کہ مضافات شہر میں چلا جانا بھی اسی فرار حرام میں داخل ہے جس پر یہ شخص تمام شہر میں مطعون وانگشت نما ہوا ہر جمعہ کو اس کے پلٹتے وقت اہل شہر میں کہ تابعین و تبع تابعین ہی تھے غل پڑ جاتا کہ وہ طاعون سے بھاگا۔ والعیاذ باللہ تعالٰی۔

تنبیہ نبیہ: جس طرح طاعون سے بھاگنا حرام ہے اور اس کے لئے وہاں جانا بھی ناجائز و گناہ ہے، احادیث صریحہ میں دونوں سے ممانعت فرمائی، پہلے میں تقدیر الہی سے بھاگنا ہے تو دوسرے میں بلائے الہی سے مقابلہ کرنا ہے اور اس کے لئے اظہار توکل کا عذر محض سفاہت۔ توکل معارضہ اسباب کا نام نہیں۔ امام اجل ابن دقیق العید رحمۃ اللہ تعالی فرماتے ہیں:

عربی	اردو ترجمہ
الاقدام علیه تعرض للبلاء ولعله لا یصبر علیه و ربما کان فیه ضرب من الدعوی لمقام الصبر او التوکل فمنع ذلک لاغترار النفس ودعوها ما لا تثبت علیه عند التحقیق۔	اس پر اقدام کرنا اپنے آپ کو مصیبت اور بلاء پر پیش کرنا ہے اور وہ اس پر صبر نہ کرسکے گا اور کبھی اس میں ایک قسم کی شانِ دعوٰی پیدا ہو جاتی ہے صبر اور توکل کے مقام کی، پس اس لئے اس سے روک دیا گیا فریبِ نفس سے بچاؤ کی خاطر اور نفس کے دعووں سے بچاؤ کی خاطر کہ جس پر در حقیقت کوئی استقرار اور ثبات نہیں۔ (ت)

اس قدر کی ممانعت میں ہر گز گنجائش سخن نہیں، اب رہا یہ کہ جب طاعون سے بھاگنے یا اس کے مقابلہ کی نیت نہ ہو تو شہر طاعونی سے نکلنا یا دوسری جگہ سے اس میں جانا فی نفسہ کیسا

ہے، اس میں ہمارے علماء کی تحقیق یہ ہے کہ بجائے خود حرام نہیں مگر نظریہ پیش بینی یہاں دوسورتیں ہیں ایک یہ کہ انسان کامل الایمان ہے " لَّن يُّصِيْبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللهُ لَنَا "[2] (ہمیں ہر گز کچھ نہیں پہنچ سکتا سوائے اس کے جو اللہ تعالی نے ہمارے لئے لکھ دیا ہے۔ت) کی بشاشت و نورانیت اس کے دل کے اندر سرایت کئے ہوئے ہے اگر طاعونی شہر میں کسی کام کو جائے اور مبتلا ہو جائے تو اسے یہ پشیمانی عارض نہ ہوگی کہ ناحق آیا کہ بلاء نے لے لیا یا کسی کام کو باہر جائے تو یہ خیال نہ کرے گا کہ خوب ہوا کہ اس بلا سے نکل آیا، خلاصہ یہ کہ اس کا آنا جانا بالکل ایسا ہو جیسا طاعون نہ ہونے کے زمانہ میں ہوتا تو اسے خالص اجازت ہے

---

1 شرح الزرقانی علی مؤطا الامام مالک باب ماجاء فی الطاعون تحت حدیث ۲۷۱ دارالمعرفہ بیروت ۲۳۸/۴ 2 القرآن الکریم ۹ / ۵۱

Fatawa Rizvia, Volume 24

Let him come and go for his work as he pleases, because currently there is no corrupt intention, nor is there any fear of future mental corruption. And for one who is not like this, it is disliked (Makruh), because although there is no corrupt intention currently that would warrant a ruling of prohibition (Haram), there is a fear of corruption arising in the future, hence the dislike. The Hadiths in which the prohibition of leaving or entering a plague-stricken city itself is narrated, like one narration of the Hadith from Usama (may Allah be pleased with him):

Words:

Arabic	Translation
If you hear of a plague in a land, do not enter it; and if it breaks out in a land while you are there, do not leave it. Narrated by the two Sheikhs.	When a plague occurs in any land, do not go there; and if the plague breaks out where you are present, then do not come out from there. Narrated by Bukhari and Muslim. (T)

Or a narration of the Hadith of Abdur Rahman bin Auf (may Allah be pleased with him) with the words:

Arabic	Translation
So if you hear of it in a land, do not enter it. Narrated by At-Tabarani in Al-Kabir.	If you hear about the appearance of plague in any place, then never go there. Imam At-Tabarani has narrated it in Mu'jam Al-Kabir. (T)

Or the Hadith of Ikrimah bin Khalid Al-Makhzumi from his father and uncle, from his grandfather (may Allah be pleased with him):

Arabic	Translation
If plague breaks out in a land while you are there, do not leave it; and if you are elsewhere, do not proceed towards it. Narrated by Ahmad, At-Tahawi, At-Tabarani, Al-Baghawi, and Ibn Qani'.	When plague spreads over a region of land and you are already residing there, then do not leave from there; and if you are in another place, then do not go to the location of the plague. Imam Ahmad, Tahawi, Tabarani, Baghawi, and Ibn Qani' have narrated it. (T)

These, if kept in their absolute sense, meaning not restricted by the intention of fleeing or opposing.

Arabic	Translation
Based on what Imam Ibn al-Humam has researched.	On the basis that the research scholar (Sheikh Muhaqqiq) Imam Ibn al-Humam has done this research.

[1] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Tibb, Bab Ma Yudhkiru fil-Ta'un, Qadimi Kutub Khana Karachi, 853/2; Sahih Muslim, Kitab al-Salam, Bab al-Ta'un wal-Tiyarah, Qadimi Kutub Khana Karachi, 228/2 [2] Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 268 & 272, Al-Maktabah al-Faysaliyyah Beirut, 11/130 & 131 [3] Sharh Ma'ani al-Athar, Kitab al-Karahah, Bab al-Ijtinab min Dhi Da' al-Ta'un, H.M. Saeed Company Karachi, 2/415; Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 15/18 & 51; Kanz al-Ummal, Hadith 28361, 10/82; and Musnad Ahmad bin Hanbal, 3/216

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

उसे अपने कामों के लिए आने-जाने दें जैसा वह चाहे, क्योंकि वर्तमान में कोई दूषित नियत (बुरा इरादा) नहीं है, न ही भविष्य में वैचारिक भ्रष्टाचार की आशंका है। और जो ऐसा नहीं है, उसके लिए यह मकरूह (नापसंद) है क्योंकि हालाँकि वर्तमान में कोई दूषित नियत नहीं है कि हराम (वर्जित) होने का हुक्म हो, लेकिन भविष्य में फ़साद (बिगाड़) पैदा होने की आशंका है, इसलिए कराहत (नापसंदगी) है। वे हदीसें जिनमें खुद प्लेग प्रभावित शहर से निकलने और उसमें जाने की मनाही बयान की गई है, जैसे हज़रत ओसामा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की एक रिवायत के

अल्फ़ाज़ (शब्द):

अरबी	**अनुवाद**
यदि तुम किसी भूमि में प्लेग के बारे में सुनो, तो उसमें प्रवेश न करो; और यदि वह किसी भूमि में फैल जाए जहाँ तुम हो, तो वहाँ से न निकलो। इसे दोनों शेखों (बुखारी और मुस्लिम) ने रिवायत किया है।	जब किसी सरज़मीन में प्लेग वाक़े हो जाए तो वहाँ न जाओ और अगर प्लेग फूट पड़ने वाली जगह तुम मौजूद हो तो फिर वहाँ से न निकलो। बुखारी व मुस्लिम ने इसे रिवायत किया है। (त)

या हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) की हदीस की रिवायत इन शब्दों के साथ:

अरबी	**अनुवाद**
तो यदि तुम किसी भूमि में इसके बारे में सुनो, तो उसमें प्रवेश न करो। इसे अत्-तबरानी ने अल-कबीर में रिवायत किया है।	अगर किसी जगह प्लेग के ज़ाहिर होने के मुताल्लिक सुनो तो फिर वहाँ हरगिज़ न जाओ। इमाम तबरानी ने मुअजम कबीर में इसे रिवायत किया है। (त)

या अकरमा बिन खालिद अल-मख़ज़ूमी की हदीस अपने वालिद और चचा से, उन्होंने अपने दादा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की:

अरबी	**अनुवाद**
यदि किसी भूमि में प्लेग फैल जाए और तुम वहाँ हो, तो वहाँ से न निकलो; और यदि तुम उसके अलावा कहीं और हो, तो वहाँ न	जब किसी ख़ित्ता-ए-ज़मीन पर प्लेग फैल जाए और तुम पहले से वहाँ इक़ामत पज़ीर हो तो फिर वहाँ से न निकलो, और अगर तुम किसी दूसरी जगह हो तो

अरबी	अनुवाद
जाओ। इसे अहमद, तहवी, तबरानी, बग़वी और इब्न क़ानि ने रिवायत किया है।	मुक़ाम-ए-ताऊन पर न जाओ। इमाम अहमद, तहवी, तबरानी, बग़वी और इब्न क़ानि ने इसे रिवायत किया है। (त)

ये (हदीसें) अगर अपने इतलाक़ (सामान्य भाव) पर रखी जाएँ यानी भागने या मुकाबला करने की नियत से प्रतिबंधित न की जाएँ।

अरबी	अनुवाद
इमाम इब्न अल-हुमाम ने जो शोध किया है उसके आधार पर।	इस बिना पर कि शेख मुहाक़्क़िक़ इमाम इब्न-ए-हुमाम ने यह तहक़ीक़ (शोध) की।

---

[1] सहीह अल-बुखारी, किताब अत-तिब्ब, बाब मा युज़करु फिल-ताऊन, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 853/2; सहीह मुस्लिम, किताब अस-सलाम, बाब अत्-ताऊन वत-तियराह, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 228/2 [2] अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस 268 व 272, अल-मकतबा अल-फ़ैसलिया बेरुत, 11/130 व 131 [3] शरह मानी अल-आसार, किताब अल-कराहह, बाब अल-इज्तिनाब मिन ज़ी दा अल-ताऊन, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 2/415; अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस 15/18 व 51; कंज़ुल उम्माल, हदीस 28361, 10/82; और मुसनद अहमद बिन हंबल, 3/216

اپنے کاموں کو آئے جائے جو چاہے کرے کہ نہ فی الحال نیت فاسدہ ہے نہ آئندہ فساد فکر کا اندیشہ ہے اور جوایسانہ ہوا سے مکروہ ہے کہ اگرچہ فی الحال نیت فاسدہ نہیں کہ حکم حرمت ہو مگر آئندہ فساد پیدا ہونے کا اندیشہ ہے لہذا کراہت ہے وہ حدیثیں جن میں خود شہر طاعونی سے نکلنے اور اس میں جانے کی ممانعت مروی ہوئی جیسے ایک روایت حدیث اسامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے الفاظ:

عربی متن	اردو ترجمہ
اذا سمعتم بالطاعون بأرض فلا تدخلواها واذا وقع بأرض و انتم بها فلا تخرجوا منها رواہ الشیخان۔	جب کسی سرزمین میں طاعون واقع ہو جائے تو وہاں نہ جاؤ اور اگر طاعون پھوٹ پڑنے والی جگہ تم موجود ہو تو پھر وہاں سے نہ نکلو۔ بخاری و مسلم نے اسے روایت کیا ہے۔ (ت)

یا ایک روایت حدیث عبدالرحمن بن عوف رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے لفظ :

عربی متن	اردو ترجمہ
فاذا سمعتم به فی ارض فلا تدخلواها رواہ الطبراني في الکبیر۔	اگر کسی جگہ طاعون کے ظاہر ہونے کے متعلق سنو تو پھر وہاں ہرگز نہ جاؤ۔ امام طبرانی نے معجم کبیر میں اسے روایت کیا ہے۔ (ت)

یا حدیث عکرمہ بن خالد المخزومی عن ابیہ وعمہ عن جدہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ :

عربی متن	اردو ترجمہ
اذا وقع الطاعون فی ارض وانتم بها فلا تخرجوا منها و ان کنتم بغیرها فلا تقدموا علیها رواہ احمد و الطحاوی والطبرانی والبغوی و ابن قانع۔	جب کسی خطہ زمین پر طاعون پھیل جائے اور تم پہلے سے وہاں اقامت پذیر ہو تو پھر وہاں سے نہ نکلو، اور اگر تم کسی دوسری جگہ ہو تو مقام طاعون پر نہ جاؤ۔ امام احمد، طحاوی، طبرانی، بغوی اور ابن قانع نے اسے روایت کیا ہے۔ (ت)

یہ اگر اپنے اطلاق پر رکھی جائیں یعنی نیت فرار و مقابلہ سے مقید نہ کی جائیں۔

عربی متن	اردو ترجمہ
بناء علی ما حقق الامام ابن الهمام اس بنا پر کہ شیخ محقق امام ابن ہمام نے یہ تحقیق	

---

[1] صحیح البخاری کتاب الطب باب مایذکر فی الطاعون قدیمی کتب خانہ کراچی ۸۵۳/۲، صحیح مسلم کتاب السلام باب الطاعون والطیرۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲۲۸/۲ [2] المعجم الکبیر حدیث ۲۶۸ و ۲۷۲ المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۱۱ / ۱۳۰ و ۱۳۱ [3] شرح معانی الآثار کتاب الکراھۃ باب الاجتناب من ذي داء الطاعون ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۴۱۵، المعجم الکبیر حدیث ۵۱/۱۸ وکنز العمال حدیث ۲۸۳۶۱ ۸۲/۱۰ و مسند احمد بن حنبل ۲۱۶/۳

Fatawa Razawiyya | Volume 24

[Arabic Text Box 1]: Indeed, the absolute is not applied to the restricted even if the ruling and the incident are the same, unless necessity calls for it, as in Al-Fath. - 1 [Urdu Translation Box 1]: It is stated that an absolute ruling will not be applied to a restricted one even if the ruling and the incident are the same, as long as there is no driving necessity, as in Fath al-Qadir. (T)

Therefore, their interpretation is this specific case of dislike which was just mentioned, and the absolute application is because most people are of this type, and rulings are based on the majority and common occurrence. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Arabic Text Box 2]: When someone leaves a city where the plague has spread, if he knows that everything is by the decree of Allah the Almighty, then there is no harm in his leaving and entering. But if he thinks that if he leaves he will be saved, and if he enters he will be afflicted, then it is disliked for him to do so. Therefore, he should not enter nor leave, to safeguard his belief. And upon this is the prohibition in the noble Hadith applied. Majma' al-Fatawa 2 AH. [Urdu Translation Box 2]: When someone leaves such a city where the plague is widespread, if he knows and has firm conviction that everything occurs by the decree and predestination of Allah the Almighty, then there is no harm in his movement, entering and leaving. And if it is in his thought that "if I go out from here I will be saved and if I do not leave from here I will be afflicted by the disease," then for such a person, movement is disliked. Therefore, neither should he go to a place of plague nor leave a place of plague, in order to save and keep his belief secure. Thus, the prohibition of the noble Hadith is applied to this. AH. (T)

Similarly, it is in Fatawa Zahiriyya, and its complete verification is in what we have annotated on Radd al-Muhtar (we have added its complete investigation to the margins of Radd al-Muhtar (Fatawa Shami). T). And Allah Almighty knows best.

Tract Taysir al-Ma'un lil-Sakn fi al-Ta'un (Facilitating Aid for Residing during the Plague) Ended

Page 311 of 720

1. Fath al-Qadir, Chapter of Dhihar, Section on Expiation, Maktabah Nooriya Razviyya, Sukkur, 4/108.

2. Durr al-Mukhtar, Miscellaneous Matters, before the Book of Inheritance, Matba' Mujtabai, Delhi, 2/351.

फ़तावा रज़विया | जिल्द २४

[अरबी पाठ बॉक्स १]: बेशक, मुतलक़ (निरपेक्ष) को मुक़य्यद (प्रतिबंधित) पर महमूल नहीं किया जाएगा, भले ही हुक्म और वाक़िया एक ही हों, जब तक कि इसके लिए कोई ज़रूरत दाई न हो, जैसा कि अल-फ़तह में है। - १ [उर्दू अनुवाद बॉक्स १]: फ़रमाया है कि हुक्म-ए-मुतलक़ किसी मुक़य्यद पर महमूल नहीं किया जाएगा अगरचे हुक्म और हादसा एक हों जब तक कि कोई ज़रूरत दाई न हो जैसा कि फ़तह अल-क़दीर में है। (त)

तो उनका महमल यही सूरत-ए-कराहत है जो अभी मज़कूर हुई और इतलाक़ इस बिना पर कि अक्सर लोग इसी क़िस्म के होते हैं और अहकाम की बिना कसीर व ग़ालिब पर है। दुर्रे मुख्तार में है:

[अरबी पाठ बॉक्स २]: जब कोई ऐसे शहर से निकलता है जहाँ ताऊन (प्लेग) फैला हो, पस अगर वह जानता हो कि हर चीज़ अल्लाह तआला की क़द्र (नियति) से है, तो उसके निकलने और दाखिल होने में कोई हर्ज नहीं। और अगर उसके पास (ख्याल में) यह हो कि अगर वह निकला तो नजात पा जाएगा और अगर दाखिल हुआ तो उसमें मुब्तला हो जाएगा, तो उसके लिए यह मकरूह है; पस वह अपने अक़ीदे की हिफाज़त के लिए न दाखिल हो और न निकले। और इसी पर हदीस शरीफ़ में मनाही महमूल है। मजमा-उल-फ़तावा २ अह्। [उर्दू अनुवाद बॉक्स २]: जब कोई किसी ऐसे शहर से निकले जहाँ ताऊन फैला हुआ हो अगर वह जानता और पुख्ता यक़ीन रखता हो कि हर चीज़ अल्लाह तआला की कज़ा व क़द्र से वुक़ू पज़ीर होती है तो उसकी आमद व रफ़्त, दुख़ूल व ख़ुरूज में कोई हरज नहीं और अगर उसके ख़याल में यह हो कि अगर यहाँ से बाहर चला गया तो बच जाऊँगा और यहाँ से न निकला तो मर्ज़ में मुब्तला हो जाऊँगा तो ऐसे शख़्स के लिए नक़्ल व हरकत मकरूह है लिहाज़ा न मकाम-ए-ताऊन पर जाए और न मकाम-ए-ताऊन से निकले अपने अक़ीदे को बचाने और महफ़ूज़ रखने के लिए। पस इसी हदीस शरीफ़ की नही (मनाही) महमूल है अह्। (त)

इसी तरह फ़तावा ज़हीरिया में है और "व तमाम-ए-तहक़ीक़िही फ़ीमा अल्लक़नाहु अला रद-उल-मुहतार" (इसकी पूरी तहक़ीक़ हमने रद-उल-मुहतार (फ़तावा शामी) के हवाशी पर चढ़ा दी है। त) वल्लाह तआला आलम।

रिसाला तयसीर अल-माऊन लिल-सकन फ़ि अल-ताऊन ख़त्म हुआ

1. फ़तह अल-क़दीर, बाब अल-ज़िहार, कफ़्फ़ारा का खंड, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, ४/१०८।
2. दुर्रे मुख्तार, विविध मामले, किताबुल फ़राइज़ से पहले, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, २/३५१।

ان المطلق لا یحمل علی المقید وان اتحد الحکم والحادثۃ مالم تدع الیہ ضرورۃ کما فی الفتح - 1 | فرمائی ہے کہ حکم مطلق کسی مقید پر محمول نہیں کیا جائے گا اگر چہ حکم اور حادثہ ایک ہوں جب تک کہ کوئی ضرورت داعی نہ ہو جیسا کہ فتح القدیر میں ہے۔ (ت)

تو ان کا محمل یہی صورت کراہت ہے جو ابھی مذکور ہوئی اور اطلاق اس بناء پر کہ اکثر لوگ اسی قسم کے ہوتے ہیں اور احکام کی بناء کثیر و غالب پر ہے۔ در مختار میں ہے :

اذا خرج من بلدۃ بھا الطاعون فأن علم ان کل شیئ بقدر اللہ تعالی فلا بأس بان یخرج ویدخل وان کان عندہ انہ لو خرج نجا ولو دخل ابتلی بہ کرہ لہ ذلک فلا یدخل ولا یخرج صیانۃ لاعتقادہ و علیہ حمل النھي في الحدیث الشریف۔ مجمع الفتاوٰی 2 اھ | جب کوئی کسی ایسے شہر سے نکلے جہاں طاعون پھیلا ہوا ہو اگر وہ جانتا اور پختہ یقین رکھتا ہو کہ ہر چیز اللہ تعالٰی کی قضا و قدر سے وقوع پذیر ہوتی ہے تو اس کی آمد و رفت ، دخول و خروج میں کوئی حرج نہیں اور اگر اس کے خیال میں یہ ہو کہ اگر یہاں سے باہر چلا گیا تو بچ جاؤں گا اور یہاں سے نہ نکلا تو مرض میں مبتلا ہو جاؤں گا تو ایسے شخص کے لئے نقل و حرکت مکروہ ہے لہذا نہ مقام طاعون پر جائے اور نہ مقام طاعون سے نکلے اپنے اعتقاد کو بچانے اور محفوظ رکھنے کے لئے۔ پس اسی حدیث شریف کی نہی محمول ہے اھ (ت)

اسی طرح فتاوی ظہیریہ میں ہے و تمام تحقیقہ فیما علقناہ علی ردالمحتار (اس کی پوری تحقیق ہم نے ردالمحتار (فتاوی شامی) کے حواشی پر چڑھادی ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

رسالہ تیسیر الماعون للسکن في الطاعون ختم ہوا

1 فتح القدير باب الظهار فصل في الكفارة مكتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱۰۸/۴ 2 در مختار مسائل شتی قبیل کتاب الفرائض مطبع مجتبائی دہلی ۳۵۱/۲

Fatawa Razawiyya, Volume 24

Company, Socializing, Love and Enmity

Issue 94: From Bhopal State, 1304 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Some French disbelievers live in the city of Bhopal. Some Muslims eat and drink with them without any hesitation. What is the status of this act according to Sharia? If these Muslims do not stop when forbidden, and the rest of the Muslims avoid eating with them for this reason, is it appropriate or inappropriate? Explain so you may be rewarded.

The Answer: Indeed, it is absolutely necessary to avoid such mingling with disbelievers and being their dining companions, especially where Islam is weak. There are many proofs from the Pure Sharia established on this, some of which are present in the mind of this humble person at this time and are mentioned: First: Allah Almighty said: "And if Satan should cause you to forget, then do not remain after the reminder with the wrongdoing people."[1] And if Satan makes you forget, then after recollection, do not sit with the wrongdoing people.

[1] The Holy Quran 6/68

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

संगति, मेल-मिलाप, प्रेम और शत्रुता

मसला 94: रियासत भोपाल से, 1304 हिजरी विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि भोपाल शहर में कुछ फ्रांसीसी काफ़िर रहते हैं, कुछ मुसलमान बिना किसी झिझक के उनके साथ खाते-पीते हैं। शरीयत के अनुसार यह कार्य कैसा है? यदि ये मुसलमान मना करने पर भी न मानें, और बाकी मुसलमान इस कारण उनके साथ खाने से परहेज करें, तो क्या यह उचित है या अनुचित? स्पष्ट करें ताकि आपको पुण्य मिले।

उत्तर: निस्संदेह, काफ़िरों के साथ इस तरह के मेल-मिलाप और उनके साथ भोजन साझा करने से बचना अत्यंत आवश्यक है, विशेष रूप से वहां जहां इस्लाम कमजोर हो। शुद्ध शरीयत में इस पर कई प्रमाण मौजूद हैं, जिनमें से कुछ इस समय इस विनम्र व्यक्ति के ध्यान में हैं और उनका उल्लेख किया जा रहा है: प्रथम: अल्लाह अज़्ज़ वजल्ल ने फ़रमाया: "और यदि शैतान तुम्हें भुला दे, तो याद आने के बाद ज़ालिम लोगों के पास न बैठो।"[1] और अगर शैतान तुम्हें भुला दे, तो याद आने पर ज़ालिमों के पास न बैठो।

[1] अल-कुरआन अल-करीम 6/68

पृष्ठ 312/720

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۴

صحبت وموالات ومحبت وعداوت

مسئلہ ۹۴: از ریاست بھوپال ۱۳۰۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ شہر بھوپال میں کچھ فرانسیسی کفار رہتے ہیں، بعض اہل اسلام بے تکلف ان کے ساتھ کھاتے پیتے ہیں یہ فعل شرعاً کیسا ہے اور یہ مسلمان اگر منع کئے سے نہ مانیں اور باقی مسلمان اس وجہ سے ان کے ساتھ کھانے سے احتراز کریں تو بجا ہے یا بے جا؟ بینوا توجروا (بیان کرو تاکہ اجر پاؤ۔ت)

الجواب: بیشک کفار سے ایسی مخالطت اور ان کے ساتھ ہم پیالہ وہم نوالہ ہونے سے بہت ضرور احتراز کرنا چاہئے خصوصاً جہاں اسلام ضعیف ہو شرع مطہر سے بہت دلائل اس پر قائم جن کے بعض اس وقت کی نظر میں ذہن فقیر میں مستحضر ہوئے مذکور ہوتے ہیں: اول: قال اللہ عزوجل: "وَاِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ۝"[1] اور اگر شیطان تجھے بھلا دے تو یاد آئے پر ظالموں کے پاس نہ بیٹھو۔

[1] القرآن الکریم ۶/۶۸

Fatawa Razawiya Volume 24

And who is more unjust than a disbeliever? Allah, the Exalted, said: "So who is more unjust than he who lies about Allah and denies the truth when it has come to him? Is there not in Hell a residence for the disbelievers?" (Quran 39:32) Who is more unjust than the one who invented a lie against God and rejected the truth when it came to him? Is there not a dwelling in Hell for the disbelievers? When a disbeliever is the ultimate wrongdoer, and sitting with a wrongdoer is forbidden, then being close, friendly, and sharing meals is even worse.

Second: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Whoever joins a polytheist and lives with him is like him." - Narrated by Abu Dawud from Samurah bin Jundab (may Allah be pleased with him) with a good (hasan) chain, and reported by Al-Tirmidhi as suspended (mu'allaq) from him. The one who joins a polytheist and stays with him is like that polytheist. (Imam Abu Dawud narrated it from Samurah bin Jundab (may Allah be pleased with him) with a good chain. However, Imam Al-Tirmidhi mentioned it as suspended on the authority of Abu Dawud - Translator)

Third: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "I am free from every Muslim who is with a polytheist, so that their fires should not be visible to each other." This was mentioned in Al-Nihayah. I say: A similar hadith is found in Abu Dawud and Al-Tirmidhi with a chain whose narrators are trustworthy. I am weary of that Muslim who is with polytheists; the fire of a Muslim and a disbeliever should not be facing each other, meaning distance is necessary. (Allama Ibn Athir included this in 'Al-Nihayah'. I say a similar Hadith is mentioned in Abu Dawud and Tirmidhi with such a chain that all its narrators are authentic. - Translator)

Fourth: He (peace and blessings of Allah be upon him) says:

1. The Holy Quran 39:32
2. Sunan Abi Dawud, Book of Jihad, Chapter on Residing in the Land of Shirk, Aftab-e-Alam Press Lahore 2/29
3. Sunan Abi Dawud, Book of Jihad, Chapter on the Prohibition of Killing One who Seeks Refuge by Prostrating, Aftab-e-Alam Press Lahore 1/356

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

और काफ़िर से बढ़कर ज़ालिम कौन है। अल्लाह जल्ल जलालुहू ने फ़रमाया: "फ़मन् अज़्लमु मिम्मन् कज़बा अलल्लाहि व कज़्ज़बा बिस्सिद्कि इज़्जाअहु अलैसा फ़ी जहन्नमा मस्वलिल् काफ़िरीन।" (क़ुरान 39:32) उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जिसने ख़ुदा पर झूठ बाँधा और सच को झुठलाया जब वह उसके पास आया, क्या जहन्नम में काफ़िरों का ठिकाना नहीं है। जब काफ़िर हद दर्जे का ज़ालिम हो और ज़ालिम के पास बैठने से मना फ़रमाया गया हो, तो घनिष्ठता, मित्रता और साथ भोजन करना और भी बुरा है।

दूसरा: रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "मन जामाअल मुश्रिका व सकना मअहू फ़इन्नहू मिस्लुहू।" - अबू दाऊद ने समुरह बिन जुंदब (रज़ियल्लाहु अन्हु) से हसन सनद के साथ रिवायत किया और तिर्मिज़ी ने उनसे मुअल्लाक ज़िक्र किया। जो मुश्रिक (बहुदेववादी) से मिलता है और उसके साथ रहता है, वह उसी मुश्रिक के समान है। (इमाम अबू दाऊद ने समुरह बिन जुंदब रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले से सनद-ए-हसन के साथ इसे रिवायत किया। लेकिन इमाम तिर्मिज़ी ने अबू दाऊद के हवाले से इसे मुअल्लाक ज़िक्र किया - अनु.)

तीसरा: रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "अना बरीउम मिन कुल्लि मुस्लिमिम मअ मुश्रिकिन ला तरा नारा हुमा।" इसे 'अन्-निहाया' में उद्धृत किया गया है। मैं कहता हूँ कि इसी तरह की हदीस अबू दाऊद और तिर्मिज़ी के पास ऐसी सनद से मौजूद है जिसके तमाम रावी मोतबर (विश्वसनीय) हैं। मैं उस मुसलमान से बेज़ार (अलग) हूँ जो मुश्रिकों के साथ हो; मुसलमान और काफ़िर की आग आमने-सामने नहीं होनी चाहिए, यानी दूरी अनिवार्य है। (अल्लामा इब्न असीर ने 'निहाया' में इसे शामिल किया है। मैं कहता हूँ कि इसी तरह की हदीस अबू दाऊद और तिर्मिज़ी में ऐसी सनद के साथ वर्णित है जिसके सभी वर्णनकर्ता विश्वसनीय हैं। - अनु.)

चौथा: आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

1. अल-क़ुरान अल-करीम 39/32
2. सुनन अबी दाऊद, किताब अल-जिहाद, बाब फ़िल इक़ामति बिअरज़िश शिर्क, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 2/29
3. सुनन अबी दाऊद, किताब अल-जिहाद, बाब अन-नह्यि अन क़त्लि मन इ'अतसमा बिस्सुजूद, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 1/356

اور کافر سے بڑھ کر ظالم کون ہے۔ قال اللہ جل جلالہ: "فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ اِذْ جَآءَهٗؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ۝" 1 اس سے بڑھ کر ظالم جس نے خدا پر جھوٹ باندھا اور سچ کو جھٹلایا جب وہ اس کے پاس آیا کیا نہیں ہے دوزخ میں کافروں کا ٹھکانا۔ جب کافر حد درجہ کا ظالم ہو اور ظالم کے پاس بیٹھنے سے منع فرمایا تو شیر و شکر و ہمکاسہ ہونا تو اور بد تر ہے۔

دوم : رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں : من جامع المشرک و سکن معہ فانہ مثلہ ۔ رواہ ابو داؤد عن سمرۃ بن جندب رضی اللہ تعالیٰ عنہ باسناد حسن و علقہ عنہ الترمذی۔ جو مشرک سے یکجا ہو اور اس کے ساتھ رہے وہ اسی مشرک کی مانند ہے۔ (امام ابو داؤد نے سمرہ بن جندب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حوالے سے سندِ حسن کے ساتھ اسے روایت کیا۔ لیکن امام ترمذی نے ابوداؤد کے حوالے سے اسے معلق ذکر کیا۔ت)

سوم: فرماتے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم : انا بریٔ من کل مسلم مع مشرک لا تری نارا ھما، اوردہ فی النھایۃ قلت والحدیث نہوہ عند ابی داؤد والترمذی بسند رجالہ ثقات ۔ میں بیزار ہوں اس مسلمان سے جو مشرکوں کے ساتھ ہو مسلمان اور کافر کی آگ آمنے سامنے نہ ہونا چاہئے یعنی دوری لازم ہے (علامہ ابن اثیر نہایہ میں اسے لائے ہیں، میں کہتا ہوں اسی جیسی حدیث ابوداؤد اور ترمذی میں ایسی سند سے مذکور ہے کہ جس کے تمام راوی مستند ہیں۔ت)

چہارم: فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم:

1 القرآن الکریم ۳۹ / ۳۲ 2 سنن ابی داؤد کتاب الجهاد باب فی الاقامة بارض الشرک آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۲۹ 3 سنن ابی داؤد کتاب الجهاد باب النهی عن قتل من اعتصم بالسجود آفتاب عالم پریس لاہور ۳۵۶/۱

Volume 24 | Fatawa Razawiyya

Arabic Text	Urdu Translation
"Do not accompany except a believer, and let no one eat your food except the pious." - Narrated by Ahmad, Abu Dawood, Tirmidhi, Ibn Hibban, and Al-Hakim from Abu Sa'id al-Khudri (may Allah be pleased with him) with authentic chains of narration.	Do not keep company except with people of faith, and let none eat your food except the God-fearing (Narrated by Imam Ahmad, Abu Dawood, Tirmidhi, Ibn Hibban, and Hakim from Hadrat Abu Sa'id Khudri (may Allah be pleased with him) with authentic chains of narration. - T)

Fifth: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

Arabic Text	Urdu Translation
"The example of a righteous companion and an evil companion is like that of a musk-seller and a blacksmith's bellows. The musk-seller will either give you some musk, or you will buy it from him, or at least you will smell its good fragrance. As for the blacksmith's bellows, it will either burn your clothes, or you will experience a foul odor from it." - Narrated by the Two Shaykhs (Bukhari and Muslim) from Abu Musa al-Ash'ari (may Allah be pleased with him).	The example of a good companion and a bad companion is like one who has musk and another who is blowing a blacksmith's bellows. The musk-seller will either give you musk for free, or you will buy it from him, or at the very least, you will enjoy its fragrance. The other will either burn your clothes or you will get a foul smell from him. (Bukhari and Muslim narrated it from Abu Musa Ash'ari (may Allah be pleased with him). - T)

In the Hadith of Anas (may Allah be pleased with him), the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic Text	Urdu Translation
"The example of an evil companion is like that of a blacksmith's forge; even if its blackness does not touch you, its smoke surely will." - Narrated by Abu Dawood and Nasa'i.	That is, the company of the wicked is like a blacksmith's furnace: even if your clothes do not turn black, the smoke will definitely reach you. (Abu Dawood and Nasa'i narrated it. - T)

1. Musnad Ahmad bin Hanbal, on the authority of Abu Sa'id Khudri (may Allah be pleased with him), Dar al-Fikr, Beirut, 3/38; Sunan Abi Dawood, Kitab al-Adab, Chapter: Who is ordered to sit with whom, etc., Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/308; Jami' at-Tirmidhi, Abwab al-Zuhd, Amin Company, Delhi, 2/62.
2. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Dhaba'ih, Chapter: Musk, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 2/830; Sahih Muslim, Kitab al-Birr wa al-Sila, Chapter: Desirability of sitting with the righteous, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 2/330.
3. Sunan Abi Dawood, Kitab al-Adab, Chapter: Who is ordered to sit with whom, etc., Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/308.

अरबी पाठ

"मोमिन के अलावा किसी की सोहबत न रखो, और तुम्हारा खाना सिवाय परहेज़गार के कोई न खाए।" - इमाम अहमद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, इब्न हिब्बान और हाकिम ने हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले से सही सनदों के साथ इसे रिवायत किया है।

उर्दू अनुवाद

सोहबत न रखो मगर ईमान वालों से और तुम्हारा खाना न खाएं मगर परहेज़गार (इमाम अहमद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, इब्न हिब्बान और हाकिम ने हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले से सही सनदों के साथ इसे रिवायत किया है। - त)

पाँचवाँ: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

अरबी पाठ

"अच्छे साथी और बुरे साथी की मिसाल ऐसी है जैसे कस्तूरी (मुश्क) रखने वाला और धौंकनी (भट्टी) चलाने वाला। कस्तूरी वाला या तो तुम्हें तोहफ़े में देगा या तुम उससे खरीद लोगे, और कुछ नहीं तो उसकी खुशबू तो आएगी ही। और धौंकनी वाला या तो तुम्हारे कपड़े जला देगा या तुम उससे बदबू पाओगे।" - बुखारी और मुस्लिम ने अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से इसे रिवायत किया है।

उर्दू अनुवाद

नेक हम-नशीन और बद जलीस की मिसाल यूँ है जैसे एक के पास मुश्क है और दूसरा धौंकनी धौंक रहा है। मुश्क वाला या तो तुझे मुश्क वैसे ही दे देगा या तू उससे मोल लेगा, और कुछ न सही तो खुशबू तो आएगी। और वह दूसरा तेरे कपड़े जला देगा या तू उससे बदबू पाएगा। (बुखारी और मुस्लिम ने अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से इसे रिवायत किया है। - त)

अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

अरबी पाठ

"बुरे साथी की मिसाल लोहार की भट्टी की तरह है; अगर उसकी कालिख तुम्हें न लगे, तो उसका धुआँ तो तुम तक ज़रूर पहुँचेगा।" - अबू दाऊद और नसाई ने इसे रिवायत किया है।

उर्दू अनुवाद

यानी बदों की सोहबत ऐसी है जैसे लोहार की भट्टी कि कपड़े काले न हुए तो धुआँ जब भी पहुँचेगा। (अबू दाऊद और नसाई ने इसे रिवायत किया है। - त)

1. मुसनद अहमद बिन हंबल, हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से, दारुल फिक्र बेरूत 3/38; सुनन अबी दाऊद, किताबुल अदब, बाब: किसके साथ बैठने का हुक्म दिया गया है, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 2/308; जामि' तिर्मिज़ी, अबवाबुल ज़ुहद, अमीन कंपनी दिल्ली 2/62।
2. सही अल-बुखारी, किताबुल ज़बाईह, बाबुल मुश्क, कदीमी कुतुब खाना कराची 2/830; सही मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब: नेकों की सोहबत का मुस्तहब होना, कदीमी कुतुब खाना कराची 2/330।
3. सुनन अबी दाऊद, किताबुल अदब, बाब: किसके साथ बैठने का हुक्म दिया गया है, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 2/308।

पृष्ठ 314 / 720

عربی عبارت	اردو ترجمہ
لا تصاحب الا مؤمنا ولا يأكل طعامك الا تقي - رواه احمد وابو داود والترمذی وابن حبان والحاكم عن ابی سعيد الخدری رضی الله تعالیٰ عنہ باسانيد صحاح۔	صحبت نہ رکھ مگر ایمان والوں سے اور تیرا کھانا نہ کھائیں مگر پرہیزگار (امام احمد، ابوداؤد، ترمذی، ابن حبان اور حاکم نے حضرت ابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حوالے سے صحیح سندوں کے ساتھ اسے روایت کیا ۔ت)

پنجم : فرماتے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
انما مثل الجليس الصالح وجليس السوء كحامل المسك ونافخ الكير فحامل المسك اما ان يحذيك واما ان تبتاع منه واما ان تجد منه ريحاً طيبة ونافخ الكير اما ان يحرق ثيابك اما ان تجد منه ريحاً خبيثة۔ رواه الشيخان عن ابی موسی الاشعری رضی الله تعالی عنہ۔	نیک ہم نشین اور بد جلیس کی مثال یوں ہے جیسے ایک کے پاس مشک ہے اور دوسرا دھونکنی دھونک رہا ہے مشک والا یا تو تجھے مشک ویسے ہی دے گا یا تو اس سے مول لے گا، اور کچھ نہ سہی تو خوشبو تو آئے گی اور وہ دوسرا تیرے کپڑے جلادے گا یا تو اس سے بدبو پائے گا۔ (بخاری و مسلم نے ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اسے روایت کیا ۔ت)

انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی حدیث میں ہے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں :

عربی عبارت	اردو ترجمہ
مثل جليس السوء كمثل صاحب الكيران	یعنی بدوں کی صحبت ایسی ہے جیسے لوہار کی بھٹی کہ
لم يصبك من سواده اصابك من دخانه۔	کپڑے کالے نہ ہوئے تو دھواں جب بھی پہنچے گا
رواه ابو داؤد والنسائی۔	(ابوداؤد اور نسائی نے اسے روایت کیا ۔ت)

---

1 مسند احمد بن حنبل عن ابی سعید خدری رضی اللہ عنہ دارالفکر بیروت ۳ / ۳۸، سنن ابی داؤد کتاب الادب باب من یومر ان یجالس الخ آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۳۰۸، جامع الترمذی ابواب الزھد امین کمپنی دہلی ۲ / ۶۲ 2 صحیح البخاری کتاب الذبائح باب المسك قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۸۳۰، صحیح مسلم کتاب البر والصلۃ باب استحباب مجالسۃ الصالحین قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۳۳۰ 3 سنن ابی داؤد کتاب الادب باب من یومر ان یجالس الخ آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۳۰۸

Fatawa Rizwia, Volume 24

The gist is that a person suffers loss by sitting with the wicked.

Sixth: It is in the Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic Text	Urdu Translation
اِيَّاكَ وقرين السوء فانك به تعرف - رواہ ابن عساکر عن انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔	Avoid an evil companion because you will be identified with him (Ibn Asakir narrated it on the authority of Hazrat Anas bin Malik. T)

Meaning, as is a person's company, people consider him to be like them.

Seventh: He (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic Text	Urdu Translation
اعتبروا الصاحب بالصاحب - رواہ ابن عدی عن ابن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔	Judge a man by his companion (Ibn Adi narrated it with the chain of Hazrat Abdullah bin Masood. T)

Eighth: It is in the Hadith that the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic Text	Urdu Translation
لا تجالسوا اهل القدر ولا تفاتحوهم - رواہ احمد و ابوداؤد والحاکم۔	Do not sit with those who deny predestination, nor let them sit with you, nor initiate greetings or conversation with them (Imam Ahmad, Abu Dawood and Hakim have narrated it. T)

Ninth: It is in the Hadith that the Chief of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic Text	Urdu Translation
ان اللہ اختارنی واختار لی اصحابہ و اصہارا و سیأتي قوم یسبونهم وینتقصونهم فلا تجالسوهم ولا تشاربوهم ولا تؤا کلوهم ولا تناکحوهم -	Indeed Allah Almighty chose me and chose for me companions and in-laws, and soon a people will come who will speak ill of them and [disparage] their stature... [repeats] and their stature.

---

[1] Tahdhib Tarikh Ibn Asakir, biography of Al-Anzi Al-Jurjani Al-Faqih, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 4 / 292 [2] Kanz al-Ummal with reference to [Ibn] Adi from Ibn Masood Hadith 30734, Mu'assasatu al-Risalah Beirut 11 / 89 [3] Sunan Abi Dawood, Book of

Sunnah, Chapter on children of polytheists, Aftab-e-Alam Press Lahore 2 / 293, Sunan Imam Ahmad bin Hanbal translated by Umar bin Khattab (may Allah be pleased with him) Dar al-Fikr Beirut 30/1

Page 315 of 720

निष्कर्ष यह है कि दुष्टों के साथ बैठने से मनुष्य को हानि होती है।

छठा: हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
اِيَّاكَ وقرين السوء فانك به تعرف - رواہ ابن عساکر عن انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔	बुरे साथी से बचो कि तुम उसी के साथ पहचाने जाओगे (इब्न असाकिर ने हज़रत अनस बिन मालिक के हवाले से इसे रिवायत किया। त)

अर्थात् जैसी संगति होगी, लोग उसे वैसा ही जानेंगे।

सातवाँ: आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
اعتبروا الصاحب بالصاحب - رواہ ابن عدی عن ابن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔	आदमी को उसके हमनशीन (साथी) पर परखो (इब्न अदी ने हज़रत अब्दुल्ला बिन मसूद की सनद से इसे रिवायत किया। त)

आठवाँ: हदीस में है कि सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
لا تجالسوا اهل القدر ولا تفاتحوهم - رواہ احمد و ابوداؤد والحاکم۔	तकदीर के मुनकिरों (इनकार करने वालों) के पास न बैठो, न उन्हें अपने पास बिठाओ, न उनसे सलाम और बातचीत की शुरुआत करो (इमाम अहमद, अबू दाऊद और हाकिम ने इसे रिवायत किया है। त)

नवाँ: हदीस में है कि सरवरे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
ان اللہ اختارنی واختار لی اصحابہ و اصہارا و سیأتي قوم یسبونهم وینتقصونهم فلا تجالسوهم ولا تشاربوهم ولا تؤا کلوهم ولا تناکحوهم -	बेशक अल्लाह तआला ने मुझे पसंद फ़रमाया और मेरे लिए असहाब (साथी) और असहार (ससुराल वाले) पसंद किए, और जल्द ही एक कौम आएगी जो उन्हें बुरा

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
	कहेगी और उनकी शान... [पुनरावृत्ति] और उनकी शान।

---

[1] तहज़ीब तारीख इब्न असाकिर, अल-अंज़ी अल-जुरजानी अल-फकीह की जीवनी, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत 4/292 [2] کنز उल-उम्माल इब्न मसूद से इब्न अदी के हवाले से हदीस 30734, मुअस्ससतु अल-रिसाला बेरूत 11/89 [3] सुनन अबी दाऊद, किताब अल-सुन्नह, मुशरिकों की संतानों का अध्याय, आफताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 2/293, सुनन इमाम अहमद बिन हंबल उमर बिन खत्ताब (रज़ियल्लाहु अन्हु) द्वारा अनूदित, दार अल-फ़िक्र बेरूत 1/30

حاصل یہ ہے کہ اشرار کے پاس بیٹھنے سے آدمی نقصان اٹھاتا ہے۔

ششم: حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

عربی متن	**اردو ترجمہ**
اِیَّاكَ وقرین السوء فانك به تعرف - رواہ ابن عساکر عن انس بن مالک رضی اللہ تعالٰی عنہ۔	بُرے مصاحب سے بچ کہ تواُسی کے ساتھ پہچانا جائے گا (ابن عساکر نے حضرت انس بن مالک کے حوالے سے اسے روایت کیا۔ت)

یعنی جیسے لوگوں کے پاس آدمی کی نشست وبرخاست ہوتی ہے لوگ اسے ویسا ہی جانتے ہیں۔

ہفتم: فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم :

عربی متن	**اردو ترجمہ**
اعتبروا الصاحب بالصاحب - رواہ ابن عدی عن ابن مسعود رضی اللہ تعالٰی عنہ۔	آدمی کو اس کے ہمنشین پر قیاس کرو (ابن عدی نے حضرت عبداللہ بن مسعود کی سند سے اسے روایت کیا۔ت)

ہشتم: حدیث میں ہے سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

عربی متن	اردو ترجمہ
لا تجالسوا اهل القدر ولا تفاتحوهم - رواه احمد و ابوداؤد والحاكم۔	منکران تقدیر کے پاس نہ بیٹھو ، نہ انہیں اپنے پاس بٹھاؤ نہ ان سے سلام کلام کی ابتدا کرو (امام احمد ، ابو داؤد اور حاکم نے اسے روایت کیا ہے۔ت)

نہم: حدیث میں ہے سرور عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں :

عربی متن	اردو ترجمہ
ان الله اختارنی واختار لی اصحابہ و اصہارا و سيأتي قوم يسبونهم وينتقصونهم فلا تجالسوهم ولا تشاربوهم ولا تؤا كلوهم ولا تناكحوهم -	بیشک اللہ تعالیٰ نے مجھے پسند فرمایا اور میرے لئے اصحاب و اصہار پسند کئے ، اور قریب ایک قوم آئے گی کہ انہیں برا کہے گی اور ان کی شان گی اور ان کی شان

---

[1] تہذیب تاریخ ابن عساکر ترجمہ العنزی الجرجانی الفقیہ دار احیاء التراث العربی بیروت ۴ / ۲۹۲ [2] کنز العمال بحوالہ عد عن ابن مسعود حدیث ۳۰۷۳۴ موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۱ / ۸۹ [3] سنن ابی داؤد کتاب السنۃ باب فی ذراري المشركين آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۲۹۳ ، سنن امام احمد بن حنبل ترجمہ عمر بن خطاب رضی اللہ عنہ دار الفکر بیروت ۱/۳۰

Fatawa Rizvia Volume 24

[Box 1] Arabic: Reported by Ibn Hibban and al-Uqayli, and the wording is his, from Anas (may Allah be pleased with him). Urdu Translation: ...distance yourself from them, do not sit with them, do not drink with them, do not eat with them, and do not intermarry with them. (Ibn Hibban and al-Uqayli have narrated this, and these are the words of al-Uqayli on the authority of Hazrat Anas (may Allah be pleased with him). -T)

When such commands exist for those who speak ill of the Ahl al-Bayt (Prophet's family) and the Noble Sahaba (Companions, may Allah be pleased with them), then how much more severe should be the command regarding the people of disbelief and those who - Allah forbid - commit blatant blasphemy against Allah and His Messenger?

Tenthly: It is mentioned in the Hadith that the Master of the Messengers (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Box 2] Arabic: Seek closeness to Allah by hating the people of disobedience, and meet them with stern faces. Seek Allah's pleasure through their anger, and seek closeness to Allah by distancing yourselves from them. - Narrated by Ibn Shahin in al-Afrad from Abdullah bin Mas'ud (may Allah be pleased with him). Urdu Translation: Gain proximity to Allah by hating the sinners, and meet them with a stern countenance, and seek Allah's pleasure in their displeasure, and desire closeness to Allah through distancing from them. (Ibn Shahin has narrated this in the book al-Afrad on the authority of Abdullah bin Mas'ud (may Allah be pleased with him). -T)

Who are more sinful than the disbelievers who are the very embodiment of disobedience, and for whom it is impossible to have even a trace of goodness?

Eleventh: Experience bears witness that eating together fosters love and affection, and friendship with the disbelievers is a deadly poison. Allah the Almighty says:

[Box 3] Arabic: "And whoever among you takes them for friends, then he is indeed one of them." (3) Urdu Translation: Whoever among you keeps friendship with them will be counted among them.

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Box 4] Arabic: "A person is with the one he loves." - Narrated by Ahmad and al-Bukhari (4). Urdu Translation: A man is with his friend, i.e., on the Day of Resurrection.

---

1 Al-Du'afa al-Kabir by al-Uqayli, Biography 153, Ahmad ibn Imran al-Akhnas, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 1/126. 2 Kanz al-Ummal with reference to Ibn Shahin, Hadith 5585, 5511, Muassasat al-Risalah, Beirut, 3/81, 67. 3 Al-Quran al-Karim, 5/51. 4 Sahih al-Bukhari, Kitab al-Adab, Chapter on the Signs of Love for the sake of Allah, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/911.

फतावा रज़विया जिल्द 24

[बॉक्स 1] अरबी: इब्न हिब्बान और अल-अक़ीली द्वारा रिपोर्ट किया गया और शब्द उनके हैं, अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से। उर्दू अनुवाद: ...उनसे दूर रहें, उनके पास न बैठें, न उनके साथ पानी पिएं न खाना खाएं न शादी-ब्याह करें। (इब्न हिब्बान और अक़ीली ने इसे रिवायत किया है, और हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हवाले से अक़ीली के शब्द यही हैं।-त)

जब अहले बैत और नेक सहाबा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) को बुरा कहने वालों के लिए ऐसे आदेश हैं, तो उन काफिरों और उन लोगों के लिए कितने कड़े आदेश होने चाहिए जो - अल्लाह न करे - अल्लाह और उसके रसूल की शान में ज़ाहिरी गुस्ताखियाँ करते हैं?

दसवाँ: हदीस में है कि सैयदुल मुरसलीन (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[बॉक्स 2] अरबी: अल्लाह की नज़दीकी हासिल करो गुनाहगारों से नफ़रत करके और उनसे सख़्त चेहरों के साथ मिलो। अल्लाह की रज़ामंदी उनकी नाराज़गी में तलाश करो, और अल्लाह की नज़दीकी उनसे दूर रहकर चाहो। - इब्न शाहीन ने अल-अफ़राद में अब्दुल्ला बिन मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। उर्दू अनुवाद: अल्लाह तआला की तरफ़ तक़र्रूब (नज़दीकी) हासिल करो अहले मआसी (गुनाहगारों) के बुग़्ज़ (नफ़रत) से और उनसे तुर्शरूई (सख़्त चेहरा) के साथ मिलो और अल्लाह तआला की रज़ामंदी उनकी ख़फ़गी (नाराज़गी) में ढूँढो और अल्लाह की नज़दीकी उनकी दूरी से चाहो। (इब्न शाहीन ने किताबुल अफ़राद में अब्दुल्ला बिन मसूद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हवाले से इसे रिवायत किया है।-त)

काफ़िरों से बढ़कर अहले मआसी (गुनाहगार) कौन है जो पूरी तरह से अवज्ञा के प्रतीक हैं, और जिनके पास किसी भी तरह की अच्छाई का होना असंभव है?

ग्यारहवाँ: अनुभव गवाह है कि साथ खाना खाने से प्रेम और स्नेह बढ़ता है, और काफ़िरों की संगति जानलेवा ज़हर है। अल्लाह तआला फरमाता है:

[बॉक्स 3] अरबी: "और तुम में से जो उनसे दोस्ती करेगा, वह उन्हीं में से होगा।" (3) उर्दू अनुवाद: जो तुम में से उनसे दोस्ती रखेगा, उसे उन्हीं में से गिना जाएगा।

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[बॉक्स 4] अरबी: "आदमी उसी के साथ है जिससे वह प्रेम करता है।" - अहमद और बुख़ारी द्वारा रिवायत। (4) उर्दू अनुवाद: आदमी अपने दोस्त के साथ है, यानी हश्र (प्रलय) के दिन।

---

1 अल-ज़ुआफ़ा अल-कबीर अल-अक़ीली द्वारा, जीवनी 153, अहमद बिन इमरान अल-अख़नस, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 1/126। 2 कंज़ अल-उम्माल इब्न शाहीन के संदर्भ में, हदीस 5585, 5511, मुअस्सासत अल-रिसाला, बेरुत, 3/81, 67। 3 अल-कुरान अल-करीम, 5/51। 4 सहीह अल-बुख़ारी, किताब अल-अदब, अल्लाह के लिए प्रेम के संकेतों पर अध्याय, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/911।

رواہ ابن حبان والعقیلی واللفظ لہ عن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔ گھٹائے گی، تم ان کے پاس مت بیٹھنا، نہ ان کے ساتھ پانی پینا، نہ کھانا کھانا، نہ شادی بیاہت کرنا (ابن حبان اور عقیلی نے اسے روایت کیا ہے، اور عقیلی کے الفاظ حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حوالے سے یہی ہیں۔ت)

جب اہل بیت اور صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم کے برا کہنے والوں کے لئے یہ حکم ہیں تو اہل کفر اور عیاذاً باللہ خدا اور رسول کی جناب میں صریح گستاخیاں کرنے والوں کی نسبت کس قدر سخت حکم چاہئے۔ دہم: حدیث میں ہے سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں :

تقربوا الی اللہ ببغض اھل المعاصی و القوھم بوجوہ مکفھرۃ التمسوا رضا اللہ بسخطھم و تقربوا الی اللہ بالتباعد عنھم - رواہ ابن شاہین فی الافراد عن عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔ اللہ تعالیٰ کی طرف تقرب کرو اہل معاصی کے بغض سے اور ان سے ترش روئی کے ساتھ ملو اور اللہ تعالیٰ کی رضامندی ان کی خفگی میں ڈھونڈو اور اللہ کی نزدیکی ان کی دوری سے چاہو۔ (ابن شاہین نے کتاب الافراد میں عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حوالے سے اسے روایت کیا ہے۔ت)

کافروں سے بڑھ کر اہل معاصی کون ہے جو سراپا معصیت ہیں اور ان کے پاس حسنہ کا نام ہونا محال۔ یاز دہم: تجربہ شاہد کہ ساتھ کھانا مورث محبت و و داد ہوتا ہے اور کفار کی موالات سم قاتل ہے ، قال اللہ تعالیٰ:

"وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ" 3 جو تم میں ان سے دوستی رکھے گا انہیں میں سے شمار کیا جائے گا۔

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

المرء مع من احب۔ رواہ احمد و البخاری 4 آدمی اپنے دوست کے ساتھ ہے ، یعنی حشر میں۔

---

1 الضعفاء الکبیر للعقیلی ترجمہ ۱۵۳ احمد بن عمران الاخنس دار الکتب العلمیة بیروت ۱۲۶/۱ 2 کنز العمال بحوالہ ابن شاهین حدیث ۵۵۸۵، ۵۵۱۱ موسسة الرسالة بیروت ۸۱/۳، ۶۷ 3 القرآن الکریم ۵/۵۱ 4 صحیح البخاري کتاب الادب باب علامة الحب في الله قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۹۱۱

Fatawa Razawiyya - Volume 24

[Table Header - Left Column: Arabic | Right Column: Urdu]

Muslim, Abu Dawud, al-Tirmidhi, and al-Nasa'i narrated it from Anas; and the two Shaykhs (Bukhari and Muslim) from Ibn Mas'ud; Ahmad and Muslim from Jabir; and al-Tirmidhi from Safwan bin ‘Assal; and Abu Dawud similarly from Abu Dharr. In this chapter, there are also reports from Ali, Abu Hurairah, and Abu Musa, may Allah be pleased with them. | Ahmad, Bukhari, Abu Dawud, Tirmidhi, and Nasa'i narrated this through Hazrat Anas. Also, Bukhari and Muslim through Abdullah ibn Mas'ud; Musnad Ahmad and Muslim through Hazrat Jabir; and Tirmidhi through Hazrat Safwan bin Assal. Abu Dawud and other similar hadith scholars narrated it from Hazrat Abu Dharr, and in this chapter, there are narrations from جناب (respected) Ali, Abu Hurairah, and Abu Musa Ash'ari, may Allah be pleased with all of them. (T)

And he (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Table - Left Column: Arabic | Right Column: Urdu]

"There are three things I swear by," and he counted among them: "No man loves a people except that Allah makes him be with them." - Narrated by Ahmad, al-Nasa'i, al-Hakim, and al-Bayhaqi from the Mother of the Believers al-Siddiqah; and al-Tabarani in al-Kabir and Abu Ya'la from Ibn Mas'ud; and also in al-Kabir from Abu Umamah; and in al-Awsat and al-Saghir from the Commander of the Faithful Ali, may Allah be pleased with them, with excellent chains of transmission. | I state by taking an oath that whoever befriends a people, Allah Almighty will make him their companion. (Musnad Ahmad, Nasa'i, Hakim, and Imam Bayhaqi narrated it from Umm al-Mu'minin Aisha Siddiqah; and Imam Tabarani in Kabir, and Abu Ya'la from Abdullah ibn Mas'ud; also in Kabir from Hazrat Abu Umamah, and in Awsat and Saghir from Commander of the Faithful Hazrat Ali, may Allah honor his face, with excellent chains. May Allah be pleased with all of them. T)

In the hadith of Abu Qarsafa (may Allah be pleased with him), the Radiant Messenger (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Table - Left Column: Arabic | Right Column: Urdu]

"Whoever loves a people, Allah will resurrect him in their group." - Narrated by al-Diya in al-Mukhtara and al-Tabarani in al-Kabir. | Allah Almighty will raise the friends

of every people in their group. (Diya narrated it in al-Mukhtara and Tabarani in al-Kabir. T)

Footnotes: 1. Musnad Imam Ahmad bin Hanbal, from Aisha (may Allah be pleased with her), Dar al-Fikr, Beirut, 6/125. 2. Al-Mu'jam al-Kabir by al-Tabarani, Hadith 2519, al-Maktabat al-Faysaliyya, Beirut, 3/19.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 24

[तालिका शीर्षक - बायां कॉलम: अरबी | दायां कॉलम: उर्दू]

मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और नसाई ने अनस से इसे रिवायत किया है; और शैखैन (बुखारी और मुस्लिम) ने इब्न मसूद से; अहमद और मुस्लिम ने जाबिर से; और तिर्मिज़ी ने सफ़वान बिन अस्साल से; और अबू दाऊद ने इसी तरह अबू ज़र से रिवायत किया है। इस बाब (अध्याय) में हज़रत अली, अबू हुरैरा और अबू मूसा से भी रिवायतें हैं, अल्लाह उन सब से राज़ी हो। | अहमद, बुखारी, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और नसाई ने हज़रत अनस के हवाले से इसे रिवायत किया है। साथ ही बुखारी और मुस्लिम ने अब्दुल्ला इब्न मसूद से, मुसनद अहमद और मुस्लिम ने हज़रत जाबिर से, और तिर्मिज़ी ने हज़रत सफ़वान बिन अस्साल के हवाले से रिवायत किया है। अबू दाऊद और उनके जैसे अन्य मुहादिसीन ने हज़रत अबू ज़र से रिवायत की, और इस बाब में जनाब अली, अबू हुरैरा और अबू मूसा अशअरी से रिवायत है, अल्लाह तआला सब से राज़ी हो। (त)

और आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[तालिका - बायां कॉलम: अरबी | दायां कॉलम: उर्दू]

"तीन चीज़ें ऐसी हैं जिन पर मैं क़सम खाता हूँ" और उनमें से एक यह गिनी: "कोई व्यक्ति किसी क़ौम से प्रेम नहीं करता सिवाय इसके कि अल्लाह उसे उन्हीं के साथ कर देता है।" - इसे अहमद, नसाई, हाकिम और बैहक़ी ने उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा से रिवायत किया है; और तबरानी ने अल-कबीर में और अबू यअला ने इब्न मसूद से; और साथ ही अल-कबीर में अबू उमामा से; और अल-औसत और अस-सगीर में अमीरुल मोमिनीन अली से रिवायत किया है, अल्लाह उन सब से राज़ी हो, उम्दा सनदों के साथ। | मैं क़सम खाकर फ़रमाता हूँ कि जो शख़्स किसी क़ौम से दोस्ती करेगा अल्लाह तआला उसे उन्हीं का साथी बनाएगा। (मुसनद अहमद, नसाई, हाकिम और इमाम बैहक़ी ने उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा से और इमाम तबरानी ने कबीर में, और अबू यअला ने अब्दुल्ला इब्न मसूद से, साथ ही कबीर में हज़रत अबू उमामा और औसत और सगीर में अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली करम अल्लाह वज्हू से उम्दा सनदों के साथ इसे रिवायत किया है। अल्लाह तआला सब से राज़ी हो। त)

अबू क़रसाफ़ा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) की हदीस में है कि हुज़ूर पुरनूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[तालिका - बायां कॉलम: अरबी | दायां कॉलम: उर्दू]

"जो किसी क़ौम से प्यार करता है, अल्लाह उसे उन्हीं के गिरोह में उठाएगा।" - इसे ज़िया ने अल-मुख़्तारा में और तबरानी ने अल-कबीर में रिवायत किया है। | हर क़ौम के दोस्तों को अल्लाह तआला उन्हीं के गिरोह में उठाएगा। (ज़िया ने मुख़्तारा और तबरानी ने अल-कबीर में इसे रिवायत किया है। त)

पाद-टिप्पणियाँ: 1. मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल, हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) से, दारुल फ़िक्र, बेरूत, 6/125। 2. अल-मुअजम अल-कबीर लित-तबरानी, हदीस 2519, अल-मकतबतुल फ़ैसलिया, बेरूत, 3/19।

ومسلم وابوداؤد والترمذی والنسائی عن انس والشیخان عن ابن مسعود، احمد ومسلم عن جابر والترمذی عن صفوان بن عسال وابوداؤد نحوہ عن ابي ذر وفی الباب عن علی وابی ھریرۃ و ابی موسی رضي اللہ تعالی عنھم۔ | احمد، بخاری، ابوداؤد، ترمذی اور نسائی نے حضرت انس کے حوالے سے اس کو روایت کیا ہے۔ نیز بخاری اور مسلم نے عبد اللہ ابن مسعود سے، مسند احمد اور مسلم نے حضرت جابر سے، اور ترمذی نے حضرت صفوان بن عسال کے حوالے سے روایت کیا ہے۔ ابوداؤد اور اس جیسے دوسرے محدثین نے حضرت ابوذر سے روایت کی، اور اس باب میں جناب علی، ابو ہریرہ اور ابو موسیٰ اشعری سے روایت ہے، اللہ تعالیٰ سب سے راضی ہو۔ (ت)

اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم :

ثلث احلف علیھن وعد منھا لایحب رجل قوما الا جعلہ اللہ معھم - رواہ احمد والنسائی والحاکم و البیھقی عن ام المومنین الصدیقۃ والطبرانی فی الکبیر وابویعلی عن ابن مسعود وایضا فی الکبیر عن ابی امامۃ وفی الاوسط والصغیر عن امیر المومنین علی رضي اللہ تعالی عنھم باسانید جیاد۔ | میں قسم کھا کر فرماتا ہوں کہ جو شخص کسی قوم سے دوستی کرے گا اللہ تعالیٰ اسے انہیں کا ساتھی بنائے گا (مسند احمد، نسائی حاکم اور امام بیہقی نے ام المومنین عائشہ صدیقہ سے اور امام طبرانی نے کبیر میں، اور ابو یعلی نے عبد اللہ ابن مسعود سے، نیز کبیر میں حضرت ابوامامہ اور اوسط اور صغیر میں امیر المومنین حضرت علی کرم وجہہ سے جید سندوں کے ساتھ اس کو روایت کیا ہے۔ اللہ تعالیٰ سب سے راضی ہو۔ ت)

ابو قرصافہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی حدیث میں ہے حضور پر نور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

من احب قوما حشرہ اللہ فی زمرتھم - رواہ الضیا في المختارۃ والطبرانی فی الکبیر۔ | ہر قوم کے دوستوں کو اللہ تعالیٰ انہیں کے گروہ میں اٹھائے گا (ضیاء نے مختارہ اور طبرانی نے الکبیر میں اسے روایت کیا ہے۔ ت)

1 مسند امام احمد بن حنبل عن عائشہ رضی اللہ تعالی عنہا دار الفکر بیروت ۶/ ۱۲۵ 2 المعجم الکبیر للطبرانی حدیث ۲۵۱۹ المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۳/ ۱۹

Fatawa Razawiyya, Volume 24

Twelfth: Certainly, this act will be a cause of hatred for Muslims, and it is not permissible to cause aversion in Muslims without a Sharia-compliant reason. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Give glad tidings and do not cause aversion. (Narrated by the Imams Ahmad, al-Bukhari, Muslim, and an-Nasa'i from Anas, may Allah be pleased with him).

Say things that please the heart and do not cause hatred. (Imams such as Imam Ahmad, Bukhari, Muslim, and Nasa'i have narrated this from Hazrat Anas. May Allah be pleased with all of them -T)

Thirteenth: At the very least, it is such that this matter will not be pleasing to the ears of the listeners, and such an act is prohibited in Sharia. It is stated in a Hadith that the Master of the two worlds (peace and blessings of Allah be upon him) said:

Beware of that which offends the ear. (Narrated by Ahmad from Abu al-Ghadhiya, at-Tabarani in al-Kabir, Ibn Sa'd in at-Tabaqat, al-Askari in al-Amthal, Ibn Mandah in al-Ma'rifah, al-Khatib in al-Mu'talif from Umm al-Ghadhiya, Abu Nu'aym in al-Ma'rifah from Habib bin al-Harith (may Allah be pleased with them), and Abdullah bin Ahmad in az-Zawa'id from al-As bin Amr al-Ghaffari as a Mursal report).

Stay away from that which sounds bad to the ear (Imam Ahmad narrated from Abu al-Ghadhiya and Tabarani in al-Kabir and Ibn Sa'd in Tabaqat and Askari in Amthal and Ibn Mandah in al-Ma'rifah and Khatib in al-Mu'talif from Umm al-Ghadhiya, Abu Nu'aym in al-Ma'rifah from Habib bin Harith (may Allah be pleased with them), Abdullah bin Ahmad narrated in Zawa'id from As bin Amr Ghaffari without any chain (Al-Kurrah, the correct understanding of this word was reached). (T))

Fourteenth: It will make one needy of an apology before Muslims, and it is not the act of a wise person to commit such a thing. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Beware of every matter for which an apology must be made. (Narrated likewise by ad-Daylami with a good chain from Anas, may Allah be pleased with him).	**Avoid that which requires making an excuse. (Daylami narrated with a good chain from Hazrat [Anas])**

1. Sahih al-Bukhari, Book of Knowledge, Chapter: What the Prophet (pbuh) used to do..., Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/16
2. Musnad Imam Ahmad bin Hanbal, translation Abu al-Ghadhiya, Dar al-Fikr Beirut, 4/76
3. Al-Firdaws bi-Ma'thur al-Khitab, Hadith 755/1, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut, 1/241; Ithaf al-Sadat al-Muttaqin, Second Chapter on the Ranks of People, Dar al-Fikr Beirut, 10/251

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

बारहवां: निश्चित रूप से यह कार्य मुसलमानों के लिए घृणा का कारण होगा और बिना किसी शरीयत कारण के मुसलमानों को विरक्त करना जायज़ नहीं है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

सुसमाचार दो और विरक्ति पैदा मत करो। (इसे इमाम अहमद, बुखारी, मुस्लिम और नसाई ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है)।

दिल को खुश करने वाली बात कहो और नफरत मत दिलाओ (इमामों जैसे इमाम अहमद, बुखारी, मुस्लिम और नसाई ने हज़रत अनस के हवाले से इसे रिवायत किया है। अल्लाह इन सभी से प्रसन्न हो -टी)

तेरहवां: कम से कम इतना तो है कि यह बात सुनने वालों के कानों को प्रिय नहीं लगेगी और शरीयत में ऐसे कार्य की मनाही है। हदीस में आया है कि दोनों जहानों के आका (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:

उस बात से बचो जो कान को बुरी लगे। (इमाम अहमद ने अबू अल-ग़ादिया से, तबरानी ने अल-कबीर में, इब्न साद ने अल-तबाक़ात में, असकरी ने अल-अमशाल में, इब्न मंदा ने अल-मारिफ़ा में, खतीब ने अल-मुअतलिफ़ में उम्म अल-ग़ादिया से, अबू नुएम ने अल-मारिफ़ा में हबीब बिन हारिस (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से, और अब्दुल्लाह बिन अहमद ने अल-ज़वाइद में आस बिन उमर अल-ग़फ़ारी से मुरसलन रिवायत किया है)।

उस बात से बचो जो कान को बुरी लगे (इमाम अहमद ने अबुल-ग़ादिया से और तबरानी ने अल-कबीर में और इब्न साद ने तबाक़ात में और असकरी ने अमशाल में और इब्न मंदा ने अल-मारिफ़ा में और खतीब ने अल-मुअतलिफ़ में उम्म अल-ग़ादिया से, अबू नुएम ने अल-मारिफ़ा में हबीब बिन हारिस से (अल्लाह उन सब से राज़ी हो), अब्दुल्लाह बिन अहमद ने ज़वाइद में आस बिन अम्र ग़फ़ारी से बिना किसी सनद के रिवायत किया है (अल-कुर्रह, इस शब्द की सही समझ आ गई)। (टी))

चौदहवां: यह मुसलमानों के सामने माफ़ी मांगने की ज़रूरत पैदा करेगा और बुद्धिमान व्यक्ति का काम नहीं है कि वह ऐसा कार्य करे। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

हर उस बात से बचो जिसके लिए माफ़ी मांगनी पड़े। (इसी तरह दैलमी ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से हसन सनद के साथ रिवायत किया है)।

उस बात से बचो जिसमें माफ़ी मांगने की ज़रूरत पड़े। (दैलमी ने हसन सनद के साथ हज़रत [अनस] से रिवायत की)

1. सहीह अल-बुखारी, किताबुल इल्म, बाब: नबी (स.) क्या करते थे..., कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/16
2. मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल, अनुवाद अबू अल-ग़ादिया, दारुल फिक्र बेरुत, 4/76
3. अल-फिरदौस बि-मासूर अल-खिताब, हदीस 755/1, दारुल कुतुब अल-इल्मिया बेरुत, 1/241; इत्तेहाफ-उस-सादातुल मुत्तकीन, दूसरा अध्याय लोगों के पदों के बारे में, दारुल फिक्र बेरुत, 10/251

دوازدہم: بیشک یہ حرکت مسلمانوں کے لئے موجب نفرت ہوگی اور بلاوجہ شرعی مسلمانوں کو متنفر کرنا جائز نہیں، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

بشّروا ولا تنفّروا۔ رواہ الائمہ احمد والبخاری و مسلم والنسائی عن انس رضی اللہ تعالٰی عنہ۔

دل خوش کرنے والی بات کہو اور نفرت نہ دلاؤ (ائمہ مثلاً امام احمد، بخاری، مسلم اور نسائی نے حضرت انس کے حوالے سے اس کو روایت کیا ہے۔ اللہ تعالٰی ان سب سے راضی ہو ت-)

سیزدہم: اقل درجہ اتنا تو ہے کہ یہ بات سننے والوں کے کانوں کو خوش نہ آئے گی اور ایسے فعل سے شرع میں ممانعت ہے، حدیث میں آیا سید الکونین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا:

ایاک وما یسوء الاذن - رواہ احمد عن ابی الغادیہ و الطبرانی فی الکبیر و ابن سعد فی الطبقات و العسکری فی الامثال وابن مندۃ فی المعرفۃ و الخطیب فی المؤتلف عن ام الغادیہ وابو نعیم فی المعرفۃ عن حبیب بن الحارث رضی اللہ تعالٰی عنہم و عبداللہ بن احمد فی الزوائد عن العاص بن عمر و الغفاری مرسلا۔

بچ اس بات سے جو کان کو بری لگے (امام احمد نے ابوالغادیہ سے اور طبرانی نے الکبیر میں اور ابن سعد نے طبقات میں اور العسکری نے امثال میں اور ابن مندہ نے المعرفہ میں اور خطیب نے المؤتلف میں ام الغادیہ سے، ابونعیم نے المعرفہ میں حبیب بن حارث سے (اللہ تعالٰی ان سب سے راضی ہو) عبداللہ بن احمد نے زوائد میں عاص بن عمرو غفاری سے بغیر کسی سند کے روایت کیا ہے (الکرۃ، اس لفظ کی صحیح سمجھ میں آئی)۔ (ت))

چہاردہم: مسلمانوں کے آگے معذرت کی طرف محتاج کرے گی اور عاقل کا کام نہیں کہ ایسی بات کا مرتکب ہو، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

ایاک وکل امر یعتذر منہ - رواہ ایضاً اس بات سے بچ جس میں عذر کرنے کی حاجت پڑے۔

الدیلمی بسند حسن عن انس رضی اللہ (دیلمی نے سند حسن کے ساتھ حضرت [انس])

1 صحیح البخاری کتاب العلم باب ما کان النبی صلی اللہ علیہ وسلم الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۶/۱ 2 مسند امام احمد بن حنبل ترجمہ ابو الغادیہ دارالفکر بیروت ۷۶/۴ 3 الفردوس بماثور الخطاب حدیث ۷۵۵/۱ دار الکتب العلمیہ بیروت ۲۴۱/۱، اتحاف السادۃ المتقین الفصل الثانی فی مراتب الناس دارالفکر بیروت ۲۵۱/۱۰

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Anas (Allah be pleased with him)] narrated it. I say: In this chapter, narrations are present from Sa'd bin Abi Waqqas, Abu Ayyub, Jabir bin Abdullah, Abdullah bin 'Amr, and Sa'd bin 'Amarah (may Allah Almighty be pleased with them all), as we have detailed in Kamal al-Ikmal. (T)

Fifteenth: Company is definitely influential, and natures are prone to imitation and hearts are fickle, and refuge is sought with Allah, Lord of the worlds. The Messenger of Allah (may Allah Almighty send peace and blessings upon him) says:

"The heart (qalb) is named so because of its turning (fluctuation/change). Verily, the likeness of the heart is like a feather in an open field, caught at the base of a tree, which the winds keep turning over and over." (Narrated by Al-Tabarani in Al-Kabir with a good chain of transmission from Abu Musa Al-Ash'ari, may Allah Almighty be pleased with him, and it is found in Ibn Majah in a summarized form with an excellent chain of transmission. T)

That is why Mevlana Rumi (may his secret be sanctified) says:

The company of the righteous will make you righteous, the company of the wicked will make you wicked. Stay away from the company of a bad friend, a bad friend is worse than a poisonous snake. A bad snake only strikes at life, but a bad friend strikes at both life and faith.

1. Kanz al-Ummal, referencing Al-Tabarani in Al-Kabir, Hadith 1210, Mu'assasat al-Risalah Beirut 1/241.
2. Masnavi Mevlana Rumi, "Contention of the Princes with each other", Noorani Kutub Khana Peshawar, Volume 1, p. 22.
3. Guldasta-e-Masnavi (Scattered Pearls), Nazir Sons Urdu Bazaar Lahore, p. 94.
4. Masnavi Mevlana Rumi, Volume 5, Noorani Kutub Khana Peshawar, p. 76.

फतावा रजविया जिल्द 24

[अनस (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो)] ने इसे रिवायत किया। मैं कहता हूँ: इस बाब में स'द बिन अबी वक़्क़ास, अबू अय्यूब, जाबिर बिन अब्दुल्लाह, अब्दुल्लाह बिन अम्र और स'द बिन अ़मारा (अल्लाह तआला उन सब से राजी हो) से रिवायतें मौजूद हैं जैसा कि हमने कमाल अल-इकमल में इसे तफसील से बयान किया है। (त)

पन्द्रहवाँ: सोहबत (संगत) यकीनन असरदार होती है और तबीअतें नकल करने वाली और दिल बदलने वाले होते हैं, और अल्लाह रब्बुल आलमीन की पनाह। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

"दिल को 'क़ल्ब' (पलटने वाला) इसलिए कहते हैं क्योंकि वह पलटता (बदलता) रहता है। दिल की मिसाल जंगल में किसी पेड़ की जड़ में अटके हुए उस पर (पंख) की तरह है जिसे हवाएँ कभी सीधा और कभी उल्टा पलटती रहती हैं।" (इमाम तबरानी ने अल-कबीर में सनद-ए-हसन के साथ हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है और इब्न माजा में उम्दा सनद के साथ मुख्तसरन मौजूद है। त)

इसीलिए मौलवी म'नवी (कुद्दिसा सिर्रहु) फरमाते हैं:

नेक की सोहबत तुझे नेक बनाएगी, बद की सोहबत तुझे बद बनाएगी। बुरे दोस्त की सोहबत से दूर रह, बुरा दोस्त ज़हरीले सांप से भी बदतर है। बुरा सांप तो सिर्फ जान पर हमला करता है, पर बुरा दोस्त जान और ईमान दोनों पर वार करता है।

1. कंजुल उम्माल, बहवाला अल-तबरानी फिल कबीर हदीस 1210 मुअस्सतुर रिसाला बैरूत 1/241
2. मसनवी मौलवी म'नवी "मुनाज़अत करदन उमरा बा यकदीगर" नूरानी कुतुब खाना पेशावर दफ्तर अव्वल सफा 22
3. गुलदस्ता-ए-मसनवी बिखरे मोती नज़ीर संस उर्दू बाज़ार लाहौर सफा 94
4. मसनवी मौलवी म'नवी दफ्तर पंजुम नूरानी कुतुब खाना पेशावर सफा 76

पेज 319 का 720

تعالٰی عنہ قلت فی الباب عن سعد بن ابی وقاص وعن ابی ایوب وعن جابر بن عبد اللہ وعن ابن عمرو عن سعد بن عمارۃ رضی اللہ تعالٰی عنہم کما فصلناہ فی کمال الاکمال۔ انس رضی اللہ تعالٰی عنہ سے اس کو روایت کیا۔ میں کہتا ہوں اس باب میں سعد بن ابی وقاص، ابو ایوب، جابر بن عبداللہ، عبداللہ بن عمرو اور سعد بن عمارہ (اللہ تعالٰی ان سب سے راضی ہو) سے روایات موجود ہیں جیسا کہ ہم نے کمال الاکمال میں اس کو مفصل بیان کیا ہے۔ ت)

پانزدہم صحبت قطعاً مؤثر ہے اور طبیعتیں سراقہ اور قلوب متقلب، والعیاذ باللہ رب العالمین۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

انما سمی القلب من تقلبہ انما مثل القلب مثل ریشۃ بالفلاۃ تعلقت فی اصل شجرۃ تقلبھا الریاح ظھر البطن ، رواہ الطبرانی ۱ فی الکبیر بسند حسن عن ابی موسی الاشعری رضی اللہ تعالی عنہ وھو عند ابن ماجۃ بسند جید مختصراً۔ دل کو قلب اس لئے کہتے ہیں کہ وہ انقلاب کرتا ہے، دل کی کہاوت ایسی ہے جیسے جنگل میں کسی پیڑ کی جڑ سے ایک پر لپٹا ہے کہ ہوائیں اسے پلٹی دے رہی ہیں کبھی سیدھا کبھی الٹا (امام طبرانی نے الکبیر میں سند حسن کے ساتھ اس کو حضرت ابو موسٰی اشعری رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ہے اور ابن ماجہ میں عمدہ سند کے ساتھ مختصراً موجود ہے۔ ت)

اسی لئے مولوی معنوی قدس سرہ، فرماتے ہیں :

صحبت صالح ترا صالح کند صحبت طالح ترا طالح کند ۲ دور شواز اختلاط یار بد یار بد بدتر از مار بد ۳ مار بد تنہا ہمیں بر جاں زند یار بد بر جان و بر ایمان زند ۴

۱ کنز العمال بحوالہ الطبرانی فی الکبیر حدیث ۱۲۱۰ مؤسسۃ الرسالۃ بیروت ۱ / ۲۴۱ ۲ مثنوی مولوی معنوی منازعت کردن امراء با یکدیگر نورانی کتب خانہ پشاور دفتر اول ص ۲۲ ۳ گلدستہ مثنوی بکھرے موتی نذیر سنز اردو بازار لاہور ص ۹۴ ۴ مثنوی مولوی معنوی دفتر پنجم نورانی کتب خانہ پشاور ص ۷۶

Volume 24

Fatawa Ridawiyya

(The company of a good person will make you good, and the company of a bad person will make you bad. Stay away from a bad companion as much as possible, for a bad companion is worse than a venomous snake; because a venomous snake only strikes at life, while a bad companion strikes at both life and faith. - T)

This calamity is the most severe. We seek refuge in Allah, and there is no power or strength except with Allah (and refuge is with Allah Almighty; the strength to do good and the power to avoid evil is not obtained without the guidance of Allah Almighty. - T).

In short, no one would commit such an act without Sharia necessity unless they are compromising in their religion or devoid of reason. SubhanAllah, how shameful it is that if someone abuses a person's parents, they cannot bear to look at them, yet they make those who insult God and His Messenger their close friends. 'To Allah we belong and to Him we shall return.' (Indeed, we belong to Allah Almighty and to Him we shall return. - T). The Messenger of Allah (peace be upon him) says:

"None of you becomes a [true] believer until I am more beloved to him than his children, his parents, and all of mankind." (Narrated by Ahmad, Bukhari, Muslim, Nasai, and Ibn Majah on the authority of Anas bin Malik, may Allah be pleased with him. - T)

There are many proofs, and this much is sufficient for an attentive ear. Then, he who does not believe is hard-hearted and the infidels are fire; the stone that stays with fire will itself become so hot that one must avoid it. Thus, if the people of Islam avoid these people, they will not be doing anything wrong. Allah Almighty knows best, and His knowledge, glorified be His majesty, is the most complete and most perfect. (Allah Almighty is the greatest knower, and the knowledge of the one with honor and greatness is more complete and more firm. - T)

1 Sahih al-Bukhari, Book of Faith, Chapter: Love for the Messenger is part of Faith, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/7

जिल्द 24

फ़तावा रज़विया

(अच्छे व्यक्ति की संगति आपको अच्छा बना देगी, और बुरे की संगति आपको बुरा बना देगी। जब तक हो सके बुरे साथी से दूर रहें क्योंकि बुरा साथी ज़हरीले साँप से भी बुरा है; क्योंकि ज़हरीला साँप केवल जीवन पर प्रहार करता है, जबकि बुरा साथी जीवन और ईमान (आस्था) दोनों पर प्रहार करता है। - त)

यह आफ़त सबसे गंभीर है। हम अल्लाह की शरण मांगते हैं और अल्लाह के अलावा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है (और पनाह अल्लाह तआला के साथ है; नेक काम करने की ताकत और बुराई से बचने की शक्ति अल्लाह तआला की तौफीक के बिना हासिल नहीं होती। - त)।

संक्षेप में, बिना किसी शरीयत की आवश्यकता के कोई भी इस कार्य को तब तक नहीं करेगा जब तक कि वह अपने धर्म में ढीला या बुद्धि से रहित न हो। सुभानअल्लाह, यह कितनी शर्म की बात है कि यदि कोई किसी के माता-पिता को गाली देता है, तो वह उसका चेहरा देखना पसंद नहीं करता, फिर भी वह उन लोगों को अपना घनिष्ठ मित्र बनाता है जो ईश्वर और उसके रसूल का अपमान करते हैं। 'बेशक हम अल्लाह के लिए हैं और उसी की ओर लौटने वाले हैं।' (बेशक हम अल्लाह तआला के लिए हैं और उसी की तरफ वापस जाने वाले हैं। - त)। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

"तुममें से कोई तब तक [सच्चा] मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसे उसकी संतान, उसके माता-पिता और समस्त मानव जाति से अधिक प्रिय न हो जाऊं।" (इमाम अहमद, बुखारी, मुस्लिम, नसाई और इब्न माजाह ने हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले से इसे रिवायत किया है। - त)

प्रमाण बहुत हैं और सुनने वाले कान के लिए इतना ही पर्याप्त है। फिर, जो नहीं मानता वह पत्थर दिल है और काफ़िर आग हैं; जो पत्थर आग का साथ देगा वह खुद इतना गर्म हो जाएगा कि आदमी को उससे बचना चाहिए। अत; यदि इस्लाम के लोग इन लोगों से परहेज करते हैं, तो वे कुछ भी गलत नहीं करेंगे। अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान, उसकी महिमा महिमामय है, सबसे पूर्ण और सबसे सटीक है। (अल्लाह तआला सबसे बड़ा आलिम है और उस बड़प्पन और महानता वाले का ज्ञान अधिक पूर्ण और अधिक परिपक्व है। - त)

1 सहीह अल-बुखारी, किताबुल ईमान, बाब हुब्बुल रसूल मिनल ईमान आदि, क़दीमी कुतुब खाना कराची 1/7

पृष्ठ 320 का 720

جلد ۲۴

فتاوی رضویہ

(اچھے آدمی کی مجلس تجھے اچھا کر دے گی، اور برے کی مجلس تجھے برا بنا دے گی۔ جب تک ہو سکے برے ساتھی سے دور رہ کیونکہ برا ساتھی برے سانپ سے بھی برا ہے کیونکہ برا سانپ صرف جان کو ڈستا ہے جبکہ برا ساتھی جان و ایمان دونوں پر ضرب لگاتا ہے۔ ت)

یہ آفت سب سے اشد ہے والعیاذ باللہ ولا حول ولا قوۃ الا باللہ (اور اللہ تعالٰی کی پناہ، نیکی کرنے کی طاقت اور برائی سے بچنے کی قوت اللہ تعالٰی کی توفیق کے بغیر حاصل نہیں ہوتی۔ ت)

بالجملہ بلا ضرورت شرعیہ اس امر کا مرتکب نہ ہو گا مگر دین میں مداہن یا عقل سے مبائن، سبحان اللہ کتنے شرم کی بات ہے کہ آدمی کے ماں باپ کو اگر کوئی گالی دے اس کی صورت دیکھنے کو روادار نہ رہے اور خدا اور رسول کو برا کہنے والوں کو ایسا یارِ غار بنائے انا للہ وانا الیہ راجعون (بیشک ہم اللہ تعالٰی کے لئے ہیں اور اسی کی طرف لوٹ کر جانے والے ہیں۔ ت)
رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

| لا یؤمن احدکم حتی اکون احب الیہ من ولدہ و ولدہ والناس اجمعین۔ رواہ احمد والبخاری ومسلم و نسائی و ابن ماجہ عن انس بن مالک رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ | تم میں کوئی مسلمان نہیں ہوتا جب تک میں اسے اس کی اولاد اور ماں باپ اور تمام آدمیوں سے زیادہ پیارا نہ ہوں۔ (امام احمد، بخاری، مسلم، نسائی اور ابن ماجہ نے حضرت انس بن مالک رضی اللہ تعالٰی عنہ کے حوالے سے اسے روایت کیا ہے۔ ت) |

دلائل کثیر ہیں اور گوش شنوا کو اسی قدر کافی، پھر جو نہ مانے سنگدل ہے اور کافر آگ، آگ کا ساتھ جو پتھر دے گا وہ خود اتنا گرم ہو جائے گا کہ آدمی کو اس سے بچنا چاہئے، پس اگر اہل اسلام ان لوگوں سے احتراز کریں کچھ بے جا نہ کریں گے۔ واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم (اللہ تعالٰی سب سے بڑا عالم ہے اور اس شرف و بزرگی والے کا علم زیادہ تام اور زیادہ پختہ ہے۔ ت)

1 صحیح البخاری کتاب الایمان باب حب الرسول من الایمان الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۷

Fatawa Razawiyya Volume 24

Problem 95: From Gilgit Cantonment, Signal Office, sent by Syed Muhammad Yusuf Ali, Sha'ban 1312 AH. Respected Maulvi Sahib, may you be safe. After greetings, the submission is: Is it permissible to deal/interact with Shias or not? Please explain and you will be rewarded.

The Answer: The Rafidis and other innovators (people of wrong beliefs) whose innovation has reached the level of disbelief (kufr) are apostates (murtad). Any dealing with them is not permissible, not even like dealing with a Muslim or a non-Muslim dhimmi. It is mandatory for Muslims to consider them exactly like a pig in all matters of sitting, eating, drinking, etc. And those whose innovation is not to that extent, should also not be befriended or loved at all.

Allah Almighty says: "And whoever among you takes them for friends, then surely he is one of them." (1) Translation: The command of Allah Almighty is: Whoever among you keeps friendship with them, then he is surely from among them. (T)

And do not keep even simple social interaction without absolute necessity and compulsion, because the love of an innovator is fire and their company is a snake, and one should keep a complete distance from both. The Lord Almighty says: "And if the devil causes you to forget, then do not sit after remembrance with the wrongdoing people." (2) Translation: If the devil makes you forget, then do not sit with the wrongdoers after you remember. (T)

It is necessary for an ignorant person to avoid their company because there is a greater fear of evil influence on him. And a general leader (religious guide) should avoid it so that the ignorant, seeing him, do not fall into this calamity themselves; rather, it is not surprising that seeing him meet them, the vileness of their religion becomes light in their eyes. It is stated in Fatawa Alamgiri: "It is disliked (Makruh) for a well-known person who is followed to mix with a man from the people of falsehood and evil except to the extent of necessity, because he would be aggrandizing his matter before the people. If it is a man who is not known, and he behaves politely with him to ward off injustice from himself without sin, then there is no harm in it. Similarly in al-Multaqat." (3) Translation: It is disliked for a famous leader to maintain social ties with a person who is from the people of falsehood and evil, except to the extent of necessity. (This prohibition is because) his reputation will spread among the people (leading to bad influences). And if an unknown person moves among them

solely for self-defense and protection from oppression, then there is no harm in it. It is mentioned similarly in Al-Multaqat. (T)

1. Al-Quran al-Kareem 5/51
2. Al-Quran al-Kareem 6/68
3. Fatawa Hindiyyah, Kitab al-Karahiya, Chapter 14, Noorani Kutub Khana Peshawar 5/346

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

मसाला 95: गिलगित छावनी के सिग्नल कार्यालय से, सैयद मोहम्मद यूसुफ़ अली द्वारा प्रेषित, शाबान 1312 हिजरी। आदरणीय मौलवी साहब, आप सुरक्षित रहें। सलाम के बाद, निवेदन यह है कि शिया के साथ व्यवहार करना जायज़ है या नहीं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: राफ़ज़ी और अन्य ऐसे लोग जिनकी बिदअत (नवाचार) कुफ़्र (अधर्म) की सीमा तक पहुँच गई है, वे तो मुर्तद (धर्मत्यागी) हैं। उनके साथ कोई भी व्यवहार करना जायज़ नहीं है, न मुसलमानों की तरह और न ही गैर-मुस्लिम ज़िम्मी की तरह। मुसलमानों पर लाज़िम है कि उठने-बैठने, खाने-पीने और अन्य सभी मामलों में उन्हें बिल्कुल सुअर के समान समझें। और जिनकी बिदअत उस सीमा तक नहीं है, उनसे भी दोस्ती और प्रेम बिल्कुल न रखें।

अल्लाह तआला का फ़रमान है: "और तुम में से जो कोई उनसे दोस्ती रखेगा, वह यकीनन उन्हीं में से होगा।" (1) अनुवाद: अल्लाह तआला का फ़रमान है: जो कोई तुम में से उनसे दोस्ती रखेगा, वह यकीनन उन्हीं में से होगा। (त)

और बिना किसी सख्त ज़रूरत और मजबूरी के सामान्य मेल-जोल भी न रखें, क्योंकि एक बिदअती का प्रेम आग है और उसकी सोहबत सांप है, और दोनों से पूरी तरह बचना चाहिए। रब अज़्ज़-व-जल्ल फ़रमाता है: "और अगर शैतान तुझे भुला दे, तो याद आने के बाद ज़ालिम लोगों के साथ मत बैठो।" (2) अनुवाद: अगर शैतान तुझे भुला दे, तो याद आने के बाद ज़ालिमों के साथ मत बैठो। (त)

एक अज्ञानी (जाहिल) के लिए उनकी सोहबत से बचना इसलिए ज़रूरी है क्योंकि उस पर बुरे प्रभाव का ज़्यादा डर है। और एक सामान्य नेता (धार्मिक मार्गदर्शक) को इसलिए बचना चाहिए ताकि आम लोग उसे देखकर खुद इस मुसीबत में न पड़ें; बल्कि यह भी हो सकता है कि उसे उनसे मिलता देखकर उनके मज़हब की बुराई उनकी नज़रों में कम हो जाए। फ़तावा आलमगीरी में है: "एक प्रसिद्ध व्यक्ति जिसका अनुसरण किया जाता है, उसके लिए किसी बातिल (झूठे) और शर (दुष्ट) वाले व्यक्ति के साथ मेल-जोल रखना मकरूह है, सिवाय ज़रूरत के, क्योंकि वह लोगों के सामने उसके मामले को बड़ा बना देगा। अगर वह व्यक्ति प्रसिद्ध नहीं है, और वह अपने बचाव के लिए बिना किसी गुनाह के उनके साथ नरमी से पेश आता है, तो इसमें कोई हर्ज नहीं है। अल-मुल्तक़त में ऐसा ही उल्लेख है।" (3) अनुवाद: एक मशहूर पेशवा (नेता) के लिए ऐसे व्यक्ति से मेल-जोल रखना जो बातिल और शर वालों में से हो, मकरूह है, सिवाय ज़रूरत की सीमा तक। (यह मनाही इसलिए है)

कि लोगों में उसकी चर्चा होगी (जिसका बुरा प्रभाव पड़ेगा)। और अगर कोई गुमनाम व्यक्ति केवल अपने बचाव और ज़ुल्म से बचने के लिए उनमें घूमे-फिरे, तो इसमें कोई हर्ज नहीं। अल-मुल्तक़त में भी इसी तरह ज़िक्र है। (त)

1. अल-क़ुरआन अल-करीम 5/51
2. अल-क़ुरआन अल-करीम 6/68
3. फ़तावा हिन्दिया, किताब अल-कराहिया, बाब 14, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 5/346

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

مسئلہ ۹۵: از گلگت چھاؤنی جو سگنل مرسلہ سید محمد یوسف علی شعبان ۱۳۱۲ھ جناب مولوی صاحب مخدوم مکرم سلامت بعد آداب تسلیمات کے گذارش یہ ہے کہ شیعہ کے ساتھ برتاؤ کرنا جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: رافضی وغیرہ بد مذہبوں میں جس کی بدعت حد کفر تک پہنچی ہو وہ تو مرتد ہے اس کے ساتھ کوئی معاملہ مسلمان بلکہ کافر ذمی کے مانند بھی برتاؤ جائز نہیں، مسلمانوں پر لازم ہے کہ اٹھنے بیٹھنے کھانے پینے و غیرہا تمام معاملات میں اسے بعینہ مثل سور کے سمجھیں اور جس کی بدعت اس حد تک نہ ہو اس سے بھی دوستی محبت مطلقا نہ کریں۔

قال اللہ تعالٰی " وَ مَنْ یَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ط" 1- اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے جو کوئی تم میں سے ان سے دوستی رکھے گا تو وہ یقینا انہی میں سے ہو گا (ت)

اور بے ضرورت و مجبوری محض کے خالی میل جول بھی نہ رکھیں کہ بد مذہب کی محبت آگ ہے اور صحبت ناگ اور دونوں سے پوری لاگ۔ رب عزوجل فرماتا ہے: "وَ اِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰی مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ۲۸ " 2 اگر تجھے شیطان بھلا دے تو یاد آجانے کے بعد ظالموں کے ساتھ مت بیٹھو۔ (ت)

جاہل کو ان کی صحبت سے یوں اجتناب ضروری ہے کہ اس پر اثر بد کا زیادہ اندیشہ ہے اور عام مقتداء یوں بچے کہ جاہل اسے دیکھ کر خود بھی اس بلا میں نہ پڑیں بلکہ عجب نہیں کہ اسے ان سے ملتا دیکھ کر ان کے مذہب کی شناعت ان کی نظروں میں ہلکی ہو جائے۔ فتاوٰی عالمگیری میں ہے: یکرہ للمشہور المقتدی بہ الاختلاط الی رجل من اھل الباطل والشر الا بقدر الضرورۃ لانہ یعظم

امرہ بین یدی الناس ولوکان رجل لایعرف یداریہ لیدفع الظلم عن نفسہ من غیر اثم فلابأس بہ کذا فی الملتقط 3۔ مشہور پیشوا کے لئے ایسے شخص سے میل جول رکھنا جو اہل باطل اور اہل شر میں سے ہو مکروہ ہے مگر ضرورت کی حد تک جائز ہے (یہ ممانعت اس لئے ہے کہ) کہ لوگوں میں اس کا چرچا ہو جائے گا (جس کے برے اثرات مرتب ہوں گے) اور اگر غیر معروف شخص ان میں محض اپنے دفاع اور ظلم سے بچاؤ کے لئے گھومے پھرے تو اس میں کوئی حرج نہیں۔ الملتقط میں یونہی مذکور ہے۔ (ت)

1 القرآن الکریم ۵/ ۵۱ 2 القرآن الکریم ۶/ ۶۸ 3 فتاوٰی ہندیہ کتاب الکراہیۃ الباب الرابع عشر نورانی کتب خانہ پشاور ۵/ ۳۴۶

Fatawa Razawiyya Volume 24

Ibn Hibban and Uqayli narrate from Anas bin Malik (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Verily, Allah Almighty has chosen me and chosen companions and relatives by marriage for me. And soon a people will come who will abuse them and disparage them. Do not sit with them, do not drink with them, do not eat with them, and do not intermarry with them."

This Hadith is an explicit text. May Allah grant Muslims the ability to act upon it. Amen! And Allah knows best.

Masala 96: From Nagaria Kalan village, Bareilly district, sent by Wazir Khan, 2nd Safar 1321 AH. Zaid claimed, "I am a Syed and belong to the Sunnat Jamaat." Zaid also led the Eid prayer. Later it was discovered that Zaid is a Rafizi (Shia), prays with hands at his sides, and performs ablution like Rafizis. In such a situation, is Zaid's leadership (imamat) of the prayer valid for the Sunnat Jamaat? Is it permissible for the Sunnat Jamaat to eat food at Zaid's place? Is it permissible for Zaid to educate boys? Zaid claims he can teach the Quran in eleven months; is it permissible to have the Giyarwin Sharif Fatiha recited by Zaid? Please explain and earn reward.

The Answer: Prayer behind a Rafizi is absolutely void; it does not take place. The obligation remains upon the person, and it is a sin besides. The leadership of a Rafizi is just like the leadership of a Hindu or a Jew. Nowadays, Rafizis are generally apostates. Eating their food, eating with them, or having any kind of social interaction with them is a sin. All will be deserving of punishment. Having children taught by him is strictly forbidden (haram) and sheer misguidance. It is obligatory for Muslims to distance themselves from a Rafizi. Getting the Giyarwin Sharif Fatiha recited by a Rafizi is severe foolishness. Not just this, but no kind of Fatiha should ever be recited by a Rafizi because Fatiha is for sending rewards, and no reward is reached through a Rafizi's recitation because...

1. Al-Du'afa of Al-Uqayli, Biography 153, Ahmad bin Imran al-Akhnasi, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 1/126.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

इब्न हिब्बान और अक़ीली अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "बेशक अल्लाह अज़्ज़वजल ने मुझे चुना और मेरे लिए साथी और ससुराल के रिश्तेदार पसंद फरमाए। और जल्द ही कुछ लोग आएंगे जो उन्हें बुरा कहेंगे और उनकी शान घटाएंगे। तुम उनके पास न बैठना, उनके साथ पानी न पीना, खाना न खाना और न शादी-ब्याह करना।"

यह हदीस स्पष्ट प्रमाण (नस-ए-सरीह) है, अल्लाह तआला मुसलमानों को अमल की तौफीक दे। आमीन! और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 96: ग्राम नगरिया कलां, जिला बरेली से, प्रेषक वज़ीर खान, 2 सफ़र 1321 हिजरी। ज़ैद ने दावा किया, "मैं सैयद हूँ और सुन्नत जमात से हूँ।" ज़ैद ने ईद की नमाज़ भी पढ़ाई। बाद में पता चला कि ज़ैद राफ़ज़ी (शिया) है, हाथ छोड़कर नमाज़ पढ़ता है और राफ़ज़ियों की तरह वज़ू करता है। ऐसी स्थिति में, क्या सुन्नत जमात के लिए ज़ैद की इमामत जायज़ है? और क्या सुन्नत जमात के लिए ज़ैद के यहाँ खाना खाना जायज़ है? क्या लड़कों के लिए ज़ैद की तालीम जायज़ है? ज़ैद दावा करता है कि वह ग्यारह महीने में कुरान शरीफ पढ़ा सकता है; क्या ज़ैद से ग्यारहवीं शरीफ की फातिहा दिलवाना जायज़ है? बयान फरमाएं और सवाब पायें।

जवाब: राफ़ज़ी के पीछे नमाज़ बिल्कुल बातिल (अमान्य) है; होती ही नहीं। फर्ज़ सिर पर वैसा ही रहेगा और गुनाह अलग से। राफ़ज़ी की इमामत वैसी ही है जैसे किसी हिंदू या यहूदी की इमामत। आजकल के राफ़ज़ी आमतौर पर मुर्तद (धर्मत्यागी) हैं। उनके यहाँ का खाना या उनके साथ खाना या उनसे किसी भी तरह का मेल-जोल रखना गुनाह है। सब अज़ाब के हकदार होंगे। और बच्चों को उनसे पढ़वाना सख्त हराम और निरी गुमराही है। मुसलमानों पर फर्ज़ है कि राफ़ज़ी को अलग कर दें। राफ़ज़ी से ग्यारहवीं शरीफ की फातिहा दिलवाना सख्त हिमाकत (मूर्खता) है। सिर्फ यही नहीं, किसी भी तरह की फातिहा राफ़ज़ी से हरगिज़ न दिलवाई जाए क्योंकि फातिहा सवाब पहुँचाने के लिए है और राफ़ज़ी के पढ़ने से सवाब नहीं पहुँचाता क्योंकि...

1. अज़-ज़ुआफ़ा अल-अक़ीली, जीवनी 153, अहमद बिन इमरान अल-अखनासी, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 1/126।

ابن حبان عقیلی انس بن مالک رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کرتے ہیں رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں : ان اللہ اختارنی واختارلی اصحاباً واصھاراً وسیأتی قوم لیسبونھم وینتقصونھم فلاتجالسوھم ولا تشاربوھم ولاتواکلوھم ولاتنا کحوھم - 1 بیشک اللہ عزوجل نے مجھے چن لیا اور میرے لئے یار اور خسرال کے رشتہ دار پسند فرمائے اور عنقریب کچھ لوگ آئیں گے کہ انہیں برا کہیں گے اور ان کی شان گھٹائیں گے تم ان کے پاس نہ بیٹھنا ان کے ساتھ پانی پینا نہ کھانا کھانا نہ شادی بیاہت کرنا (ت)۔

یہ حدیث نص صریح ہے، اللہ تعالٰی مسلمانوں کو توفیق عمل بخشے۔ آمین ! واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۹۶: از موضع نگر یا کلاں ضلع بریلی مرسلہ وزیر خاں دوم صفر ۱۳۲۱ھ زید نے بیان کیا کہ میں سید ہوں اور سنت جماعت ہوں اور عید کی نماز بھی زید نے پڑھائی بعد کو معلوم ہوا کہ زید رافضی ہے اور نماز ہاتھ چھوڑ کر پڑھتا ہے اور وضو بھی رافضیوں کا کرتا ہے ایسی حالت میں سنت جماعت کے واسطے زید کی امامت جائز ہے یا نہیں؟ اور کھانا کھانا زید کے یہاں کا سنت جماعت کو جائز ہے یا نہیں؟ لڑکوں کے واسطے تعلیم زید کی جائز ہے یا نہیں؟ زید بیان کرتا ہے کہ میں قرآن شریف گیارہ میں پڑھا سکتا ہوں فاتحہ گیارہویں شریف کی زید سے دلانا جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا (بیان فرمایئے اجر پایئے ۔ ت)

الجواب: رافضی کے پیچھے نماز محض باطل ہے ، ہوتی ہی نہیں، فرض سر پر ویسا ہی رہے گا اور گناہ علاوہ ، رافضی کی امامت ایسی ہی ہے جیسی کسی ہند و یا یہودی کی امامت ۔ آج کل کے رافضی عموماً مرتد ہیں ان کے یہاں کا کھانا یا ان کے ساتھ کھانا یا ان سے کسی قسم کا میل جول

رکھنا گناہ ہے سب عذاب کے مستحق ہوں گے اور بچوں اس سے پڑھوانا سخت حرام اور نری گمراہی ہے۔ مسلمانوں پر فرض ہے کہ رافضی کو جدا کر دیں رافضی سے گیارہویں شریف کی فاتحہ دلانا سخت حماقت ہے اور ایک یہی کیا کسی قسم کی فاتحہ رافضی سے ہر گز نہ دلائی جائے کہ فاتحہ ثواب پہنچانے کے لئے ہے اور رافضی کے پڑھنے سے ثواب نہیں پہنچتا کیونکہ

1 الضعفاء للعقیلی ترجمہ ۱۵۳ احمد بن عمران الاخنسی دار الکتب العلمیہ بیروت ۱/ ۱۲۶

Fatawa Razawiya Volume 24

Rafidis (Shias) are apostates due to their denial of the necessities of religion. Even if a Rafidi recites some Quran during Fatiha, there is no hope for Sunnis from a Rafidi's Fatiha. God knows what foul words he might utter; will reward reach or rather punishment? May Allah open the eyes of Sunnis and grant them the guidance to stay away from the misguided. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) gave a clear command: "ایاکم وایاهم لا یضلونکم ولا یفتنونکم" [Stay away from them and keep them away from you, lest they lead you astray or into trial.] (1) Stay away from people of false beliefs and keep them away from you, lest they throw you into trial or lead you astray. It is stated in the Holy Quran:

"وَاِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ۲"	**And if Satan causes you to forget, then after the remembrance, sit not with the wrongdoing people.**

And among the people of false beliefs, especially Rafidis, 'Taqiyya' (dissimulation) is very prevalent; they hide their religion a lot. Their word should never be trusted. Where there is no gain or loss, pretending to be a Sunni is their minor trick, so where there is a gain of even two pennies, what does it cost them to pretend to be a Sunni? And Allah Almighty knows best.

Issue 97: From the town of Tasua, village Faridpur, sent by Mr. Mahdi Hasan. What do the scholars of religion and the jurists of the clear Sharia say regarding this matter: Is it permissible for the people of Sunnat-o-Jamaat to take offerings (Niyaz) from the Sayyids of the Shia community, besides the offerings on the 8th date for Hazrat Abbas Alamdar and the offerings for Hussain, such as Sherbet, Malida, bread, Langar, and Tabarruk from the gatherings of Ahle Sunnat-o-Jamaat, or not?

The Answer: In the Hadith, the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says regarding this group:

لا تجالسوهم ولا تؤاكلوهم ولا تشاربوهم ۳	**Do not sit with them, do not eat with them, and do not drink with them.**

Therefore, going to their gatherings is absolutely haraam (forbidden), as they insult the Holy Quran and consider it incomplete and...

1. Sahih Muslim, Muqaddimat-ul-Kitab, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 1/10.
2. Al-Quran Al-Karim, 6/68.

3. Al-Du'afa Al-Kabir, biography 153, Ahmad bin Imran al-Akhnas, Dar al-Kutub al-Ilmiyya Beirut, 1/126; Kanz al-Ummal with code 'Aq' from Anas, Hadith 32468, Mu'assasat al-Risala Beirut, 11/529.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

रवाफ़िज़ (शिया) दीन की ज़रूरी चीज़ों के इनकार के कारण मुर्तद (धर्मत्यागी) हैं, फिर यह उस समय भी है जब फ़ातिहा में राफ़ज़ी कुछ कुरान पढ़े, लेकिन सुन्नियों के लिए फ़ातिहा में राफ़ज़ी से भी कोई उम्मीद नहीं है। खुदा जाने वह क्या नापाक शब्द बकेगा; उनका सवाब पहुँचेगा या अज़ाब होगा। अल्लाह तआला सुन्नियों की आँखें खोले और उन्हें तौफ़ीक़ दे कि गुमराहों से दूर रहें, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने साफ़ हुक्म फ़रमाया है: "اياكم واياهم لا يضلونكم ولا يفتنونكم!" [उनसे दूर रहो और उन्हें अपने से दूर करो, कहीं वे तुम्हें गुमराह न कर दें या फ़ितने में न डाल दें।] (1) बद-मज़हबों से दूर रहो और उनको अपने से दूर करो कहीं वे तुम्हें फ़ितने में न डाल दें कहीं वे तुम्हें गुमराह न कर दें। कुरान शरीफ में फ़रमाया गया:

"وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۲"	**और अगर शैतान तुम्हें भुला दे, तो याद आने के बाद ज़ालिम लोगों के पास न बैठो।**

और बद-मज़हब लोगों में, विशेष रूप से राफ़ज़ियों के यहाँ 'तक़िया' (धार्मिक छल) बहुत अधिक है, वे अपने धर्म को बहुत छिपाते हैं। उनकी बात पर कभी भरोसा नहीं करना चाहिए। जहाँ नफ़ा-नुक़सान कुछ न हो वहाँ सुन्नी बन जाना उनका मामूली करतब है, तो जहाँ दो पैसे का नफ़ा हो वहाँ सुन्नी बनते हुए उन्हें क्या लगता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसअला 97: कस्बा टसुआ, मौज़ा फ़रीदपुर से, प्रेषक मेहदी हसन साहब। दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मसअले में क्या फ़रमाते हैं: क्या अहले सुन्नत व जमाअत के लिए अहल-ए-तशैया (शिया) के सादात के यहाँ की नियाज़, जैसे हज़रत अब्बास अलमदार की 8वीं तारीख़ की नियाज़ और इमाम हुसैन की नियाज़, जैसे शरबत, मलीदा, रोटी, लंगर और तबर्रुक अहले सुन्नत व जमाअत की मजलिस में लेना जायज़ है या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर): हदीस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इस क़ौम के बारे में फ़रमाते हैं:

لا تجالسوهم ولا تؤاكلوهم ولا تشاربوهم ۳	**उनके पास न बैठो, उनके साथ खाना न खाओ और उनके साथ पानी न पियो।**

इसलिए उनकी मजलिसों में जाना पूरी तरह हराम है क्योंकि वे कुरान मजीद का अपमान करते हैं और उसे अधूरा मानते हैं और...

1. सहीह मुस्लिम, मुक़द्दमतुल किताब, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1/10।
2. अल-कुरान अल-करीम, 6/68।
3. अद-दुआफ़ा अल-कबीर, जीवनी 153, अहमद बिन इमरान अल-अख़नस, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरुत, 1/126; कंज़ुल उम्माल कोड 'अक़' अन अनस हदीस 32468, मुअस्ससतुर रिसाला बेरुत, 11/529।

روافض انکار ضروریات دین کے باعث مرتد ہیں، پھر یہ بھی اس وقت ہے کہ فاتحہ میں رافضی کچھ قرآن پڑھے مگر سنیوں کے لئے فاتحہ میں رافضی سے بھی امید نہیں خدا جانے کیا کچھ ناپاک کلمے بکے گا ان کا ثواب پہنچے گا یا اور عذاب ہوگا۔ اللہ تعالیٰ سنیوں کی آنکھیں کھولے اور انہیں توفیق دے کہ گمراہوں سے دور رہیں، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے صاف حکم فرمایا ہے کہ ایاکم وایاہم لایضلونکم ولا یفتنونکم ۱ بدمذہبوں سے دور رہو اور ان کو اپنے سے دور کرو کہیں وہ تمہیں فتنے میں نہ ڈال دیں کہیں وہ تمہیں گمراہ نہ کر دیں، قرآن شریف میں فرمایا:

"وَاِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ۲"

اور تجھے شیطان بھلادے تو یاد آنے پر پاس نہ بیٹھ ظالم لوگوں کے۔

اور بد مذہب لوگ خصوصاً رافضیوں کے یہاں تقیہ بہت ہے یہ بہت اپنے مذہب کو چھپاتے ہیں ان کی بات پر ہرگز اعتبار نہ کرنا چاہئے جہاں نفع نقصان کچھ نہ ہو وہاں سنی بن جانا ان کا ادنیٰ شعبدہ ہے تو جہاں دو پیسے کا نفع ہو وہاں سنی بنتے ہوئے انہیں کیا لگتا ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۹۷: از قصبہ ٹسوا موضع فرید پور مرسلہ مہدی حسن صاحب کیا ارشاد فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرعِ متین اس مسئلہ میں اہل سنت و جماعت کو سادات اہل تشیع کے یہاں کی علاوہ نیاز ۸ ٹھویں تاریخ حضرت عباس علمدار کے نیاز حسین کی مثلاً شربت و ملیدہ و روٹی ولنگر و تبرک مجلسِ اہلسنت و جماعت صاحبان کر لینا جائز ہے یا نہیں؟

الجواب: حدیث میں نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اس قوم کی نسبت فرماتے ہیں:

لا تجالسوھم ولا تؤاکلوھم ولا تشاربوھم ۳

ان کے پاس نہ بیٹھو اور ان کے ساتھ کھانا نہ کھاؤ اور ان کے ساتھ پانی نہ پیو۔

لہٰذا ان کی مجلس میں جانا مطلقاً حرام کہ وہ قرآنِ مجید کی توہین کرتے ہیں اور اسے ناقص جانتے ہیں اور

۱ صحیح مسلم مقدمة الکتاب قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۱۰ ۲ القرآن الکریم ۶/۶۸ ۳ الضعفاء الکبیر ترجمہ ۱۵۳ احمد بن عمران الاخنس دارالکتب العلمیہ بیروت ۱/۱۲۶، کنزالعمال برمز عق عن انس حدیث ۳۲۴۶۸ مؤسسة الرساله بیروت ۱۱/۵۲۹

No sharbat, maleeda, or lungar should be taken from them. And Allah Almighty knows best.

Problem 98: From town Tuswa, village Faridpur, sent by Mahdi Hasan Sahib. What do the scholars of the religion of Ahl-e-Sunnat wa Jama'at say regarding that person who forbids people from taking 'Niaz-e-Husain' (peace be upon him) from the homes of the Sadat of the People of Tashayyu (Shias) and says that this Niaz is haraam (forbidden)? Please explain and you will be rewarded.

The Answer: From the answer to the above question, it has become known that the one who prohibits is prohibiting correctly and his prohibition is not out of place. And Allah Almighty knows best.

Problem 99: From Jadupur, Bhujipura Police Station, Tehsil and District Bareilly, questioned by Shamshad Ali Sahib, 12 Rajab 1329 AH. What do the scholars of the religion say in this matter that there is a town in which cow slaughter has always taken place; this year its Hindus quarreled with the Muslims. There used to be a market in this village; they lured the people and moved it to another village so that the profit of those (Muslim) people goes away. The Hindus naturally followed what the Hindus said, but some Muslims also joined them. They were even told that just as the Hindus have separated their market, you also make a separate market for Muslims and participate in it and do not participate with the Hindus, but they do not agree. In this case, what is the ruling for such people? Please explain and you will be rewarded.

The Answer: It is a matter of regret for those Muslims who support Hindus in opposition to Muslims, increase their gathering, desire their benefit, and harm Muslims, especially in a matter whose foundation is on a religious act. They should repent, otherwise, they should fear that if death comes in this state, then the resurrection will also be with the Hindus. It is in the Hadith that the Messenger of Allah (may the peace and blessings of Allah be upon him) says:

"Whoever associates with a polytheist and lives with him is like him."[1] And in [another] wording: "Do not live with polytheists and do not gather with them. So whoever lives with them or gathers with them, he is [like them]."

Whoever gathers with any polytheist and chooses to live and stay with him, then that Muslim is also in the same manner. And in some narrations, these words have also appeared: "with those who commit shirk (polytheism)".

[1] Sunan Abi Dawood, Kitab al-Jihad, Bab fi al-Iqamah Ardh al-Shirk, Aftab Alam Press, Lahore, 29/2

उनके यहाँ से शरबत, मलीदा, लंगर कोई चीज़ न ली जाए। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 98: कस्बा टसवा, मौज़ा फरीदपुर से, प्रेषक मेहदी हसन साहब। क्या इर्शाद फरमाते हैं उलमा-ए-दीन अहल-ए-सुन्नत व जमाअत उस शख़्स की निस्बत कि जो शख़्स सादात-ए-अहल-ए-तशय्युआ (शियाओं) के यहाँ की नियाज़-ए-हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) के लेने से लोगों को मना करे और कहे कि यह नियाज़ हराम है। बय्यिनू तुजरू (स्पष्ट करें, पुण्य पायें)।

अल-जवाब (उत्तर): मंदरजा-ए-बाला सवाल के जवाब से मालूम हो गया कि मना करने वाला ठीक मना करता है और उसका मना करना बेजा (अनुचित) नहीं। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 99: जादू पुर, थाना भोजीपुरा, तहसील व ज़िला बरेली, मुस्तफ़्ती (प्रश्नकर्ता) शमशाद अली साहब, 12 रजब 1329 हिजरी। क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मसले में कि एक कस्बा जिसमें हमेशा से गौकशी (गाय वध) होती आई, इस साल उसके हनूद (हिंदुओं) ने मुसलमानों से निज़अ़ (झगड़ा) किया। इस गाँव में बाज़ार होता था, उन्होंने लोगों को वरग़ला (बहला) कर दूसरे गाँव उठवा दिया कि उन लोगों का नफ़अ़ (लाभ) जाता रहे। हिंदू तो हिंदुओं के कहने से चले ही गए, बाज़ (कुछ) मुसलमान भी उन्हीं के शरीक (शामिल) हुए। उनसे कहा भी गया कि जिस तरह हनूद ने अपना बाज़ार अलग कर लिया है, तुम भी अलग बाज़ार मुसलमानों का करो और उसमें शरीक हो और हनूद की शिरकत न करो, मगर वो नहीं मानते। इस सूरत में ऐसे लोगों के लिए क्या हुक्म है? बय्यिनू तुजरू।

अल-जवाब (उत्तर): अफ़सोस है उन मुसलमानों पर जो मुसलमानों की मुख़ालफत में हनूद का साथ दें और उनकी जमाअत बढ़ाएं उनका नफ़अ़ चाहें, मुसलमानों को नुक्सान पहुँचाएँ ख़ुसूसन (विशेषकर) वो भी ऐसी बात में जिसकी बिना (आधार) मज़हबी काम पर हो। उनको तौबा करनी चाहिए वरना अंदेशा करें कि इसी हालत में मौत आ गई तो हश्र (पुनरुत्थान) भी हनूद ही के साथ होगा। हदीस में है, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

"जो मुशरिक (मूर्तिपूजक) के साथ जमा हो और उसके साथ रहे, तो वो उसी की तरह है।"[1] और अल्फ़ाज़ में है: "मुशरिकों के साथ न रहो और न ही उनके साथ इकट्ठे हो। तो जो उनके साथ रहे या उनके साथ इकट्ठा हो, वह [उन्हीं जैसा है]।"

जो कोई किसी मुशरिक के साथ जमा हो और उसके साथ रहना-सहना अख्तियार करे तो वह मुसलमान भी इसी तरह है। और बाज़ रिवायतों में ये अल्फ़ाज़ भी आए हैं: "शर्क करने वालों के साथ"।

---

[1] सुनन अबी दाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़िल इक़ामत अर्ज़ुश-शर्क, आफ़ताब आलम प्रेस, लाहौर, 29/2।

اُن کے یہاں سے شربت، ملیدہ، لنگر کوئی چیز نہ لی جائے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۹۸: از قصبہ ٹسوا موضع فرید پور مرسلہ مہدی حسن صاحب کیا ارشاد فرماتے ہیں علمائے دین اہلِ سنت و جماعت اس شخص کی نسبت کہ جو شخص ساداتِ اہلِ تشیع کے یہاں کی نیاز حسین علیہ السلام کے لینے سے لوگوں کو منع کرے اور کہے یہ نیاز حرام ہے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: مندرجہ بالا سوال کے جواب سے معلوم ہو گیا کہ منع کرنے والا ٹھیک منع کرتا ہے اور اس کا منع کرنا بیجا نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۹۹: از جادو پور تھانہ بھوجی پورہ تحصیل و ضلع بریلی مسئولہ شمشاد علی صاحب ۱۲ رجب ۱۳۲۹ ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک قصبہ جس میں ہمیشہ سے گاؤ کشی ہوتی آئی اس سال اس کے ہنود نے مسلمانوں سے نزاع کیا اس گاؤں میں بازار ہوتا تھا وہ لوگوں کو ورغلا کر دوسرے گاؤں اٹھوا دیا کہ ان لوگوں کا نفع جاتا رہے، ہندوتو ہندؤوں کے کہنے سے چلے ہی گئے بعض مسلمان بھی انہیں کے شریک ہوئے ان سے کہا بھی گیا کہ جس طرح ہنود نے اپنا بازار الگ کر لیا ہے تم بھی الگ بازار مسلمانوں کا کرو اور اس میں شریک ہو اور ہندؤوں کی شرکت نہ کرو مگر وہ نہیں مانتے، اس صورت میں ایسے لوگوں کے لئے کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: افسوس ہے ان مسلمانوں پر جو مسلمانوں کی مخالفت میں ہندؤوں کا ساتھ دیں اور ان کی جماعت بڑھائیں ان کا نفع چاہیں مسلمانوں کو نقصان پہنچائیں خصوصاً وہ بی ایسی بات میں جس کی بنامد ہبی کام پر ہو ان کو توبہ کرنا چاہئے ورنہ اندیشہ کریں کہ اسی حالت میں موت آگئی تو

حشر بھی ہندؤوں ہی کے ساتھ ہو گا۔ حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

جَامَعَ الْمُشْرِكَ وَسَكَنَ مَعَهُ فَإِنَّهُ مِثْلُهُ[1] وفي لفظ لَا تُسَاكِنُوا الْمُشْرِكِينَ وَلَا تُجَامِعُوهُمْ فَمَنْ سَاكَنَهُمْ أَوْ جَامَعَهُمْ فَهُو

جو کوئی کسی مشرک کے ساتھ جمع ہو اور اس کے ساتھ رہنا سہنا اختیار کرے تو وہ مسلمان بھی اسی طرح ہے۔ اور بعض روایات میں یہ الفاظ بھی آئے ہیں: شرک کرنے والوں کے ساتھ

---

[1] سنن ابی داؤد کتاب الجهاد باب فی الاقامۃ ارض الشرک آفتاب عالم پریس لاہور ۲۹/۲

Fatawa Rizvia, Volume 24

مثلهم[1] (Like them) Narrated first by Abu Dawud from Samurah bin Jundub (RA) with a good chain and lastly by Tirmidhi from him as a suspended (mu'allaq) report.	Do not take up residence and do not keep congregation with them. Then whoever adopts residence with them or gathers with them, he is just like them. The first Hadith has been narrated by Imam Abu Dawud on the authority of Samurah bin Jundub (may Allah be pleased with him) with a good (hasan) chain of narration, while the second Hadith has been narrated by Imam Tirmidhi from the aforementioned companion as a suspended (mu'allaq) report. (T)

In the second Hadith, he (Peace and blessings of Allah be upon him) says: | | |
| :--- | :--- | | **من كثر سواد قوم فهو منهم**[2] | He who increases the number of a group is among them. |

In the third Hadith, he (Peace and blessings of Allah be upon him) says: | | |
| :--- | :--- | | **من اعان على خصومة بغير حق لم يزل فى سخط الله حتى ينزع** - Narrated by Ibn Majah[3] and al-Hakim from Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them both) with a good chain. | Whoever helps those in the wrong in any dispute, will always remain under the wrath of God until he desists from it (Ibn Majah and Hakim have narrated this from Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them both) with a good chain. T). |

In the fourth Hadith, he (Peace and blessings of Allah be upon him) says: | | |
| :--- | :--- | | **من مات على شيئ بعثه الله عليه** - Narrated by Ahmad[4] and al-Hakim from Jabir bin Abdullah. | Whoever dies in a certain state, Allah Almighty will raise him in that same state. (Imam Ahmad and Hakim from Jabir bin Abdullah...) |

---

1. Jami' al-Tirmidhi, Chapters on Jihad, Chapter on what has been narrated regarding the dislike of staying..., Amin Company Delhi 1/194
2. Al-Firdaws bi-Ma'thur al-Khitab, Hadith 5621, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut 3/519; Kanz al-Ummal, Hadith 35727, Mu'assasat al-Risalah Beirut 9/22
3. Sunan Ibn Majah, Book of Judgments, Chapter on one who claims what does not belong to him..., H.M. Saeed Company Karachi p. 169; al-Mustadrak al-Hakim, Book of Judgments, Dar al-Fikr Beirut 2/99

4. Musnad Imam Ahmad bin Hanbal on the authority of Jabir (RA), Dar al-Kutub al-Islami Beirut 3/312; al-Mustadrak al-Hakim, Book of Softening the Hearts, Dar al-Fikr Beirut 2/313

फतावा रज़विया, जिल्द 24

مثلهم[1] (उनके जैसा) इसे पहले अबू दाऊद ने समुरह बिन जुंदुब (रज़ियल्लाहु अन्हु) से हसन सनद के साथ रिवायत किया और आखिर में तिर्मिज़ी ने उनसे मुअल्लक रिवायत किया।

निवास मत अपनाओ और न उनके साथ मेल-जोल रखो। फिर जो कोई उनके साथ निवास करे या उनके साथ जमा हो, वह उन्हीं की तरह है। पहली हदीस को इमाम अबू दाऊद ने समुरह बिन जुंदुब (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के हवाले से हसन सनद के साथ रिवायत किया है, जबकि दूसरी हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने इसी उल्लेखित सहाबी से मुअल्लक के तौर पर रिवायत किया है। (त)

दूसरी हदीस में है, फरमाते हैं (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम): | | | | :--- | :--- | | **من كثر سواد قوم فهو منهم**[2] | जो किसी गिरोह की जमात (संख्या) बढ़ाए, वह उन्हीं में से है। |

तीसरी हदीस में है, फरमाते हैं (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम): | | | | :--- | :--- | | **من اعان على خصومة بغير حق لم يزل فى سخط الله حتى ينزع** - इसे इब्न माजह[3] और हाकिम ने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से हसन सनद के साथ रिवायत किया है। | जो किसी झगड़े में नाहक़ (गलत) लोगों की मदद करे, वह हमेशा खुदा के ग़ज़ब (क्रोध) में रहेगा जब तक कि वह उससे बाज़ (अलग) न आ जाए। (इब्न माजह और हाकिम ने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से हसन सनद के साथ इसे रिवायत किया है। त) |

चौथी हदीस में है, फरमाते हैं (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम): | | | | :--- | :--- | | **من مات على شيئ بعثه الله عليه** - इसे अहमद[4] और हाकिम ने जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत किया है। | जो जिस हाल में मरेगा, अल्लाह तआला उसे उसी हाल में उठाएगा। (इमाम अहमद और हाकिम ने जाबिर बिन अब्दुल्लाह से...) |

---

1. जामिअ अल-तिर्मिज़ी, अबवाब अल-सियर, बाब मा जाअ फ़ी कराहीयत अल-मुक़ाम... अमीन कंपनी दिल्ली 1/194
2. अल-फिरदौस बि-मासूर अल-ख़िताब, हदीस 5621, दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या बेरूत 3/519; कंजुल उम्माल, हदीस 35727, मुअस्ससत अल-रिसाला बेरूत 9/22

3. सुनन इब्न माजह, किताब अल-अहकाम, बाब मन इद्दआ मा लैसा लहू... एच.एम. सईद कंपनी कराची पृ. 169; अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताब अल-अहकाम, दार अल-फ़िक्र बेरूत 2/99
4. मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल, हदीस जाबिर (रज़ियल्लाहु अन्हु), दार अल-कुतुब अल-इस्लामी बेरूत 3/312; अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताब अल-रिक़ाक़, दार अल-फ़िक्र बेरूत 2/313

مثلھم [1] رواہ بالاول ابوداؤد عن سمرۃ بن جندب رضی اللہ تعالٰی عنہ بسند حسن وبالآخر الترمذی عنہ تعلیقا۔

رہائش اختیار نہ کرو اور نہ ان کے ساتھ اجتماع رکھو پھر جو کوئی ان کے ساتھ سکونت اختیار کرے یا ان کے ساتھ جمع ہو تو وہ ان ہی کی طرح ہے۔ پہلی حدیث کو امام ابوداؤد نے سمرہ بن جندب رضی اللہ تعالٰی عنہ کے حوالے سے سند حسن کے ساتھ روایت کیا ہے جبکہ دوسری حدیث کو امام ترمذی نے اسی مذکور صحابی سے بطور تعلیق روایت کیا ہے۔ (ت)

دوسری حدیث میں ہے فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم : | | | | :--- | :--- | | **من کثر سواد قوم فھو منھم** [2] | جو کسی گروہ کی جماعت بڑھائے وہ انہیں میں سے ہے۔ |

تیسری حدیث میں ہے فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم : | | | | :--- | :--- | | **من اعان علی خصومۃ بغیر حق لم یزل فی سخط اللہ حتی ینزع**۔رواہ ابن ماجۃ[3] والحاکم عن عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما بسند حسن۔ | جو کسی جھگڑے میں ناحق والوں کو مدد دے ہمیشہ خدا کے غضب میں رہے جب تک اس سے باز آئے (ابن ماجہ اور حاکم نے عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے بسند حسن اسے روایت کیا ہے۔ ت) |

چوتھی حدیث میں ہے فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم : | | | | :--- | :--- | | **من مات علی شیئ بعثہ اللہ علیہ**۔رواہ احمد[4] والحاکم عن جابر بن عبداللہ | جو جس حال میں مرے گا اللہ تعالٰی اسی حال پر اسے اٹھائے گا (امام احمد و حاکم نے جابر بن عبداللہ |

---

1. جامع الترمذی ابواب السیر باب ماجاء فی کراہیۃ المقام الخ امین کمپنی دہلی ۱ / ۱۹۴

2. الفردوس بماثور الخطاب حدیث ۵۶۲۱ دار الکتب العلمیہ بیروت ۳ / ۵۱۹، کنز العمال حدیث ۳۵۷۲۷ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۹ / ۲۲

3. سنن ابن ماجہ کتاب الاحکام باب من ادعی مالیس لہ الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۶۹، المستدرک للحاکم کتاب الاحکام دار الفکر بیروت ۲ / ۹۹

4. مسند امام احمد بن حنبل عن جابر رضی اللہ عنہ دار الکتب الاسلامی بیروت ۳ / ۳۱۲، المستدرک للحاکم کتاب الرقاق دار الفکر بیروت ۲ / ۳۱۳

Volume 24 Fatawa-e-Razvia

(It has been narrated) from both of them (May Allah be pleased with them) with a good chain of narration, and Allah knows best. | This has been narrated from both of them (May Allah be pleased with them) with a good chain of narration. T) And Allah knows best.

Problem 100: From the village of Sarnian, asked by Amir Ali Sahab, 11th Jumada al-Ula 1331 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Shari'ah say regarding this matter: Zaid has participated in the wedding processions (barat) of Hindus several times and participates in every grief and joy. Now there is a wedding at Zaid's place; many Hindus will be part of the procession, and at Zaid's place, women will play drums and there will also be dancing. What is the ruling for Zaid if this happens in the wedding procession, and should the questioner participate in the meal or not? Explain and be rewarded. Further, Umar asks: I took Hindus for labor; is it permissible to give them food as wages, which is the customary practice for labor? Further, Umar asks: There is a Hindu's field near my field, and often it is such that one field is between another, and during agricultural work, out of necessity, some communication is required, but not without necessity. Further, if some social interaction arises from eating with Hindus, should one develop intimacy or not? Only this, explain and be rewarded.

The Answer: In this situation, it is evident that Zaid is a transgressor and a sinner. If the questioner has such influence over him that he can stop him, then he must surely participate to stop him. And if he (Zaid) holds him so dear that he cannot bear his non-participation and for the sake of his participation he would give up those forbidden acts, then it is obligatory upon the questioner to flatly refuse participation until he refrains from those impurities. If neither of these conditions applies, then if the questioner is a leader of the community, he should never participate. If he is from the common people and that forbidden gathering takes place in the same house where the food is served in front of the eaters, then also he should never go. If the forbidden gathering is separate and the dining area is separate, then he has a choice, but it is better that no Muslim participates. Taking a Hindu for labor and giving food as wages is permissible. There is no harm in speaking to a Hindu out of necessity, provided the matter itself is a permissible act. Heartfelt intimacy with any disbeliever is forbidden. And outward interaction, in which there is neither glorification of the disbeliever nor humiliation of the Muslim, nor any unlawful method adopted, there is no harm in doing so with a Hindu for the sake of any permissible work. Avoid it even

without necessity, as increased social interaction often leads to many unlawful matters...

Page 326 of 720

(अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो) एक अच्छी सनद (हसन सनद) के साथ, और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। | यह उन दोनों (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो) से एक अच्छी सनद के साथ वर्णित है। त) और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला १००: ग्राम सरनियां से, सायल (पूछने वाले) अमीर अली साहब, ११ जमादी अल-उला १३३१ हिजरी। दीन के विद्वान और स्पष्ट शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद कई बार हिंदुओं की बारात में शरीक हुआ है और हर दुख-सुख में शरीक होता है। अब ज़ैद के यहाँ शादी है; बारात में बहुत से हिंदू शामिल होंगे और ज़ैद के यहाँ औरतें ढोल बजाएँगी और नाच भी होगा। बारात में ऐसा होने पर ज़ैद के लिए क्या हुक्म है और सायल को खाने में शरीक होना चाहिए या नहीं? बयान फ़रमाएं पुण्य प्राप्त करें। अन्य, उमर पूछता है: हिंदुओं को मजदूरी पर लिया, उन्हें मजदूरी के रूप में भोजन देना जो कि मजदूरी की रस्म है, कैसा है? अन्य, उमर पूछता है कि मेरे खेत के पास हिंदुओं का खेत है और अक्सर ऐसा भी होता है कि एक खेत के बीच में दूसरा खेत है और खेती के काम में ज़रूरत के अनुसार कुछ कहना पड़ता है, और बिना ज़रूरत के नहीं। अन्य, यदि किसी हिंदू के साथ खाने-पीने से मेलजोल पैदा हो, तो क्या आत्मीयता (दोस्ती) बढ़ानी चाहिए या नहीं? बस इतना ही, बयान फ़रमाएं।

जवाब: इस सूरत में ज़ाहिर है कि ज़ैद फासिक व फ़ाजिर (पापी और अवज्ञाकारी) है। सायल अगर उस पर इतना दबाव रखता है कि उसे रोक सकेगा, तो ज़रूर शरीक होकर रोके। और अगर उसे (ज़ैद को) वह इतना प्रिय है कि उसका शरीक न होना उसे गवारा न होगा और उसकी शिरकत की खातिर वह उन नाजायज़ बातों को छोड़ देगा, तो सायल पर लाज़िम है कि शिरकत से साफ़ इनकार कर दे जब तक कि वह उन नापाकियों से बाज़ न आ जाए। और अगर ये दोनों बातें नहीं हैं, तो सायल अगर कौम का पेशवा (नेता) है तो हरगिज़ हरगिज़ शरीक न हो। और अगर आम लोगों में से है और वह हराम मजमा (सभा) खाने के मकान में खाने वालों के सामने होगा, तब भी हरगिज़ न जाए। और अगर हराम मजमा अलग है और खाने का मकान अलग है, तो उसे विकल्प है और बेहतर यही है कि कोई मुसलमान शरीक न हो। हिंदू को मजदूरी पर लेना और मजदूरी में भोजन देना जायज़ है। ज़रूरत के कारण किसी हिंदू से कोई बात कर लेने में कोई हर्ज नहीं, जबकि वह बात स्वयं एक जायज़ काम हो। किसी काफ़िर से दिली मोहब्बत (आत्मीयता) करना हराम है। और बाहरी मेलजोल, जिसमें न काफ़िर का सम्मान हो, न मुसलमान की ज़िल्लत (अपमान), और न ही कोई नाजायज़

तरीका अपनाया जाए, किसी जायज़ काम के लिए हिंदू से कर लेने में कोई हर्ज नहीं। बिना ज़रूरत इससे भी बचें क्योंकि आपस में मेल-जोल बढ़ कर अक्सर नाजायज़ बातों तक ले जाता है...

पृष्ठ ३२६/७२०

رضی اللہ تعالیٰ عنہما بسند حسن واللہ تعالیٰ اعلم۔ | رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے بسند حسن اس کو روایت کیا ہے۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۰۰: از موضع سرنیاں مسئولہ امیر علی صاحب ۱۱ جمادی الاولی ۱۳۳۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید چند بار اہل ہنود کی برات میں شریک ہوا ہے اور ہر ایک غمی شادی میں شریک ہوتا ہے اب زید کے یہاں شادی ہے بہت ہنود شامل برات ہوں گے اور زید کے یہاں عورتیں ڈھول بجائیں گی اور ناچ بھی۔ برات میں ہوگا تو زید کے لئے کیا حکم ہے اور سائل کو کھانے میں شریک ہونا چاہئے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔ دیگر عمر دریافت کرتا ہے اہل ہنود مزدوری میں لیا اس کو مزدوری خوراک دینا جو کہ رسم مزدوری کی ہے۔ دیگر عمر دریافت کرتا ہے کہ میرے کھیت کے پاس ہنود کا کھیت ہے اور اکثر ایسا بھی ہے ایک کھیت کے درمیان ایک کھیت ہے اور کام کاشتکاری میں بضرورت کسی کام کے کچھ کہنا پڑتا ہے اور بغیر ضرورت کے نہیں۔ دیگر کسی ہنود سے کوئی میل کھانے سے نکلتا ہو تو انسیت پیدا کرے یا نہیں؟ فقط بینوا توجروا۔

الجواب: اس صورت میں ظاہر ہے کہ زید فاسق فاجر ہے، سائل اگر اس پر ایسا دباؤ رکھتا ہے کہ اسے روک سکے گا تو ضرور شریک ہو کر روکے، اور اگر اسے اتنا عزیز ہے کہ اس کا شریک نہ ہونا اسے گوارا نہ ہوگا اور اس کی شرکت کی غرض سے وہ ناجائز باتیں اٹھا دے گا تو سائل پر لازم ہے کہ شرکت سے صاف انکار کردے جب تک وہ ان ناپاکیوں سے باز نہ رہے، اور اگر یہ دونوں باتیں نہیں تو سائل اگر قوم کا پیشوا ہے تو ہرگز ہرگز شریک نہ ہو، اور اگر عوام میں سے

ہے اور وہ حرام جلسہ جلسہ طعام کے مکان میں کھانے والوں کے سامنے ہوگا جب بھی ہرگز نہ جائے، اور اگر حرام جلسہ الگ ہے اور کھانے کا مکان الگ تو اختیار ہے اور بہتر یہی ہے کہ کوئی مسلمان شریک نہ ہو۔ ہندو کو مزدوری میں لینا اور مزدوری کی خوراک دینا جائز ہے۔

ضرورت کے سبب کوئی بات ہندو سے کرلینے میں حرج نہیں جبکہ وہ بات خود ایک جائز امر ہو۔ دلی انس کسی کافر سے کرنا حرام ہے، اور ظاہر میل جس میں نہ کافر کی تعظیم ہو نہ مسلمان کی ذلت نہ کوئی طریقہ ناجائز برتا جائے کسی جائز کام کے سبب ہندو سے کر لینے میں حرج نہیں، بلا ضرورت اس سے بھی بچے کہ آپس میں راہ و رسم بڑھ کر اکثر ناجائز باتوں

...reach up to.

"Whosoever grazes around a sanctuary is likely to fall into it." 1. And Allah knows best.	**He who grazes animals near a pasture, it is possible that he enters inside and moves about. And Allah Almighty knows best.**

Issue 101: From Lucknow, Ihata Muhammad Khan, near Zahoor Bakhsh's shop, requested by Hazrat Maulana Syed Muhammad Miyan Sahib (may his blessings continue). Saturday, 28th Rabi' al-Akhir 1337 AH.

Calling an infidel (kafir), apostate (murtad), innovator (mubtadi'), or heretic (bad-madhhab) as an open sinner (fasiq mu'lan), or calling someone whose state as such is doubtful to the speaker, by any relation like father, grandfather, maternal grandfather, brother, son, etc., as one's own or as another Muslim's - even though they are infidels, apostates, etc. - what is the prohibition for this? Or initiating greetings (salam) to such people, or meeting them with a smiling face, laughing and talking, maintaining friendship like worldlings do for laughing, talking, and playing, and in this regard sending them gifts, or honoring them such that one stands up when they arrive, or addressing them in writing or speech as 'kindly granted', 'generously bestowed', 'benevolent kind friend', or 'Janab Sahib' (Mr. Sir), or similar behaviors as are common today, especially towards those who are worldly and influential. The crux is, behaving with such people in a way that makes them happy or they perceive it as respect, even if the doer's intention is not for that happiness or respect, while from a religious perspective, they are considered deservingly despicable – is this permissible or impermissible? If impermissible, to what degree? Essentially, to what extent do these actions not reach the point where the ruling of infidelity or innovation etc. applies to the doer himself? And if these things are done for some religious or worldly purpose, what is the ruling? Please clarify and be rewarded.

Answer: Initiating greetings (salam) to these people without necessity or compulsion is forbidden (haram), and socializing or outward friendliness with them without a Shari'a-compliant reason is also forbidden. In the Great Quran, there is a clear prohibition against sitting with them (Qu'ud). And in Hadith, there is a warning that the light of faith (Nur-e-Iman) leaves the heart upon meeting them with a smiling face. Acts of respect like standing up are even more severe. Words of praise, as stated in Hadith:

1 Sahih al-Bukhari, Book of Sales, Chapter: Halal is clear and Haram is clear, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/577; Sahih Muslim, Book of Musaqat, Chapter: Taking Halal and Avoiding Ambiguities, Qadimi Kutub Khana Karachi 2/28.

...तक पहुँचते हैं,

"जो चरागाह के आसपास पशु चराता है, संभावना है कि वह उसमें प्रवेश कर जाए।" 1. और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

जो व्यक्ति किसी चरागाह के पास जानवर चराए तो हो सकता है कि वह उसके अंदर घुस जाए और चला जाए। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसअला १०१: लखनऊ से, अहाता मुहम्मद खान, ज़हूर बख्श की दुकान के पास, हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद मियां साहब (दामत बरकातुहुम) द्वारा पूछा गया। शनिवार, २८ रबी-उल-आखिर १३३७ हिजरी।

किसी काफ़िर, मुर्तद (धर्मत्यागी), मुब्तदी' (नया सिद्धांत गढ़ने वाला), या बद-मज़हब को खुल्लम-खुल्ला गुनहगार (फ़ासिक़-ए-मु'लन) कहना, या उसे जिसका ऐसा होना कहने वाले के नज़दीक संदेहास्पद हो, उसे पिता, दादा, नाना, भाई, पुत्र आदि जैसे किसी रिश्ते से पुकारना, चाहे वह खुद का हो या किसी अन्य मुसलमान का, जबकि वे असल में काफ़िर, मुर्तद आदि ही हैं - यह मनाही कैसी है? या ऐसे लोगों को पहल करके सलाम करना, या उनसे मुस्कुराकर मिलना, हंसना-बोलना, ऐसी दोस्ती रखना जैसी दुनियादार लोग हंसने-बोलने और खेलने के लिए रखते हैं, और इसी सिलसिले में उन्हें तोहफ़े भेजना, या उनका ऐसा सम्मान करना कि उनके आने पर खड़े हो जाना, लिखाई या बोलचाल में उन्हें 'इनायत फ़रमाया', 'करम फ़रमाया', 'मुश्फ़िक़ मेहरबान', या 'जनाब साहब' लिखना, या इसी तरह का बर्ताव उनसे करना जैसा कि आजकल कसरत से आम है, विशेषकर दुनियावी रसूख वाले लोगों के साथ। सारांश यह कि ऐसे लोगों के साथ ऐसा बर्ताव जिससे वे खुश हों या उसमें अपना सम्मान समझें, चाहे करने वाले की नीयत उस खुशी या सम्मान की हो या न हो, जबकि धार्मिक दृष्टिकोण से वे केवल नफरत के ही पात्र हों - क्या ये बातें जायज़ हैं या नाजायज़? यदि नाजायज़ हैं, तो किस दर्जे की? क्या ये बातें उस हद तक नहीं पहुँचतीं कि खुद करने वाले पर भी उनकी तरह कुफ्र या बिदअत आदि का हुक्म लागू हो जाए? और अगर ये बातें किसी दीनी या दुनियावी मक़सद के लिए की जाएँ तो क्या हुक्म है? बयान फ़रमाएँ सवाब पाएँ।

अल-जवाब (उत्तर): इन लोगों को बिना ज़रूरत और मजबूरी के पहल करके सलाम करना हराम है, और बिना किसी शरीय कारण के उनसे मेल-जोल और ज़ाहिरी प्यार-मोहब्बत भी हराम है। कुरान

अज़ीम में उनके साथ बैठने (क़ुऊद) की साफ़ मनाही मौजूद है। और हदीस में उनसे मुस्कुराकर मिलने पर दिल से ईमान का नूर निकल जाने की चेतावनी दी गई है। सम्मानजनक कार्य जैसे खड़ा होना तो और भी अधिक सख़्त हैं। प्रशंसा के शब्द, जैसा कि हदीस में है:

1 सहीह अल-बुखारी, किताबुल बुयू', बाब अल-हलालु बय्यिनुन वल हरामू बय्यिनुन, कदीमी कुतुब खाना कराची १/५७७; सहीह मुस्लिम, किताबुल मुसाक़ात, बाब अख्ज़ल हलाल व तरकुश शुबुहात, कदीमी कुतुब खाना कराची २/२८।

पृष्ठ ३२७ (७२० में से)

تک پہنچا کرتے ہیں،

ومن ارتع حول الحمٰی اوشک ان جو شخص کسی چرا گاہ کے آس پاس جانور چرائے تو ہو سکتا یقع فیہ 1۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ ہے کہ اس کے اندر گھسے اور چلا جائے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۰۱: از لکھنؤ احاطہ محمد خاں متصل دکان ظہور بخش مسئولہ حضرت مولانا سید محمد میاں صاحب دامت برکاتہم ۔ بروز شنبہ ۲۸ ربیع الآخر ۱۳۳۷ھ

کافر مرتد مبتدع بد مذہب کو فاسق معلن یا اس کو جس کا ان جیسا ہونا قائل کے نزدیک متردد ہو کوئی رشتہ مثل باپ دادا نانا بھائی بیٹا وغیرہ خود اپنا کہنا یا کسی اور مسلم کا کہنا حالانکہ ان کو کافر مرتد وغیرہ جیسے ہیں ویسے ہی مانع یہ کیسا ہے یا ایسے لوگوں کو ابتداء سلام کہنا یا ان سے بخندہ پیشانی پیش آنا ہنسنا بولنا ایسی دوستی رکھنا جیسے دنیادار ہنسنے بولنے کھیلنے کی رکھتے ہیں اور اسی سلسلہ میں انہیں تحائف روانہ کرنا یا ان کی ایسی تعظیم کرنا کہ وہ آئیں تو کھڑے ہو گئے تحریراً یا تقریراً انہیں عنایت فرمایا کرم فرمایا مشفق مہربان یا جناب صاحب لکھنا یا اسی طرح کے اور برتاؤ ان سے برتنا جیسے آج کل شائع ہیں کثرت سے خصوصاً ایسوں میں کے دنیاوی با اثر لوگوں سے، خلاصہ کلام یہ کہ ایسے لوگوں سے ایسا برتاؤ جس سے وہ خوش ہوں یا اس میں اپنی تعظیم جانیں اگرچہ فاعل کی نیت اس خوش یا تعظیم کی ہو یا نہ ہو جبکہ مذہبی نقطہ نظر سے انہیں ان کے لائق فتیح ہی سمجھیں جائز ہیں یا ناجائز؟ ناجائز تو کس درجہ کی؟ غرض کہاں تک اس حد تک نہیں پہنچتیں کہ فاعل پر بھی خود ان کی طرح حکم کفر یا بدعت وغیرہ عائد ہو، اور اگر یہ باتیں کسی دینی یا دنیاوی غرض کے لئے کریں تو کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: ان لوگوں کو بے ضرورت و مجبوری ابتداء سلام حرام اور بلاوجہ شرعی ان سے مخالطت اور ظاہری ملاطفت بھی حرام، قرآن عظیم میں قعود معھم سے نہی صریح موجود، اور حدیث میں ان سے بخندہ پیشانی ملنے پر قلب سے نور ایمان نکل جانے کی وعید، افعال تعظیمی مثل قیام تو اور سخت تر ہیں کلمات مدح، حدیث میں ہے:

1 صحیح البخاری کتاب البیوع باب الحلال بین والحرام بین قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۵۷۷ ، صحیح مسلم کتاب المساقات باب اخذ الحلال وترک الشبہات قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۲۸

Fatawa-e-Razvia Volume 24

| When a transgressor (committer of a major sin) is praised, the Lord becomes angry and the Throne of the Beneficent shakes at this action. (T)[1] | When a transgressor (one who commits a major sin) is praised, Allah Almighty becomes wrathful, and the Throne of the Compassionate trembles at this act (T). |

In another hadith, the ruling regarding a transgressor (fasiq) among them is easier; there is no absolute harm, and religious interests will be considered. However, there is absolute prohibition regarding an apostate (murtad) or an innovative preacher (mubtadi' da'iyah), though Sharia necessities are always an exception, for "necessities make prohibited things permissible." (T) There is no absolute harm in stating lineage, just as Umar bin al-Khattab and Ali bin Abi Talib [are mentioned], even though Khattab and Abu Talib did not embrace Islam. (T) Treatment towards them that is prohibited in word and deed makes the one who does so without necessity a sinner; he is not like them as long as he does not consider their disbelief, innovation, or transgression as good or permissible. And Allah Almighty knows best.

Question 102: Sent by Musahib Ali, student. 14 Safar al-Muzaffar 1335 AH. A person has committed major sins like adultery, drinking, and usury, but also performs good deeds like prayer, fasting, and Zakat, and holds love for scholars and spiritual guides. If, due to his good deeds, love, friendship, and social interaction are maintained with such a person, it seems to contradict those verses and hadiths commanding avoidance and hatred of a transgressor. Conversely, if he is avoided due to his bad deeds, it seems to contradict those hadiths and verses commanding social interaction and good behavior with Muslims. How should such a person be treated? Explain and be rewarded.

The Answer: Love and hatred can coexist for two reasons; rather, hatred for a transgressor (fasiq) is truthfully directed towards his actions, not his person. The methodology of the predecessors (Salaf) varied in dealing with such a person based on different circumstances. If it's known that a transgressor will return to the right path through softness and friendliness, then that is required. If it's known that he will leave foul deeds being influenced by severity and avoidance, then that is required. And from whom there is no hope at all, one should absolutely refrain from them, especially for someone who fears being negatively influenced by his bad company.

[1] Shu'ab al-Iman, Hadith 2886, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 4/230.

फतावा-ए-रज़विया जिल्द 24

| यदि किसी फासिक (बड़े पाप करने वाले) की प्रशंसा की जाती है, तो ईश्वर क्रोधित हो जाता है और उसके इस कार्य से रहमान का अर्श कांप जाता है। (त)[1] | जब किसी फासिक (कबीरा गुनाह करने वाले) की तारीफ की जाए तो अल्लाह तआला गज़बनाक हो जाता है और इस हरकत से अर्श-ए-रहमान लर्ज़ जाता है (त)। |

दूसरी हदीस में है कि उनमें फासिक का हुक्म आसान है, मुतलकन कोई हर्ज नहीं और दीनी भलाई पर नज़र रखी जाएगी। लेकिन मुर्तद (धर्मत्यागी) और बिदअती दाई (नवाचार फैलाने वाले) से पूरी तरह मनाही है, और शरई ज़रूरतें हर जगह मुस्तस्ना (अपवाद) हैं, क्योंकि "ज़रूरतें वर्जित कार्यों को वैध कर देती हैं।" (त) रिश्ता बताने में मुतलकन कोई हर्ज नहीं, जैसे उमर बिन अल-खत्ताब और अली बिन अबी तालिब, हालाँकि खत्ताब और अबू तालिब दोनों मुसलमान नहीं थे। (त) उनके साथ जो व्यवहार बोलचाल या व्यवहार में वर्जित है, बिना ज़रूरत उसे करने वाला गुनहगार है; वह उनके जैसा नहीं है जब तक कि वह उनके कुफ्र, बिदअत या फिस्क (पाप) को अच्छा या जायज़ न समझे। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसाला 102: प्रेषित मुसाहिब अली, छात्र। 14 सफर अल-मुजफ्फर 1335 हिजरी। एक व्यक्ति ने ज़िना, शराब और सूद (ब्याज) जैसे कबीरा गुनाहों का इर्तिकाब किया है, और नमाज़, रोज़ा, ज़कात जैसे नेक कार्य भी करता है और उलेमा व मशाइख से मुहब्बत रखता है। तो अगर नेक कामों के कारण ऐसे व्यक्ति से मुहब्बत, दोस्ती और मेल-जोल रखा जाए, तो उन आयतों और हदीसों के खिलाफ होता है जिनमें फासिक से बचने, दूर रहने और नफ़रत करने का हुक्म है। और अगर बुरे कामों के कारण ऐसे व्यक्ति से परहेज किया जाए, तो उन हदीसों और आयतों के खिलाफ होता है जिनमें मुसलमानों से मेल-जोल रखने और अच्छा व्यवहार करने का हुक्म है। तो ऐसे व्यक्ति से कैसा व्यवहार किया जाए? बयान करें, आपको पुण्य मिलेगा।

जवाब: दो कारणों से मुहब्बत और नफ़रत एक साथ हो सकते हैं, बल्कि फासिक से नफ़रत वास्तव में उसके कर्म की ओर होती है, न कि उसकी ज़ात (स्वयं) की ओर। ऐसे व्यक्ति के साथ व्यवहार में पूर्वजों (सलफ) का तरीका अलग-अलग रहा है, जिसका आधार परिस्थितियों की भिन्नता है। जिस फासिक के बारे में यह पता हो कि वह नरमी और मेल-जोल से सही रास्ते पर आ जाएगा, वहाँ वही करना चाहिए। जिसके बारे में यह पता हो कि वह सख्ती और उपेक्षा से प्रभावित होकर बुरे काम

छोड़ देगा, वहाँ वही करना चाहिए। और जिससे किसी भी तरह की उम्मीद न हो, उससे पूरी तरह बचना चाहिए, विशेष रूप से उस व्यक्ति को जिसे उसकी बुरी संगत से प्रभावित होने का डर हो।

[1] शुअ़बुल ईमान, हदीस 2886, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 4/230।

| اذا مدح الفاسق غضب الرب واھتزلہ عرش | جب کسی فاسق (مرتکب گناہِ کبیرہ) کی تعریف کی جائے تو | | الرحمن[1]۔ | اللہ تعالٰی غضبناک ہوجاتا ہے اور اس کی اس حرکت سے عرشِ | | | رحمان لرز جاتا ہے (ت) |

دوسری حدیث میں ہے ان میں فاسق کا حکم آسان ہے مطلقاً حرج نہیں اور مصالح دینیہ پر نظر کی جائے گی اور مرتد مبتدع داعیہ سے بالکل ممانعت اور ضروریات شرعیہ ہر جگہ مستثنٰی فان الضرورات تبیح المحظورات (اس لئے کہ ضرورتیں ممنوع کاموں کو مباح کردیتی ہیں۔ت) رشتہ بتانے میں مطلقاً حرج نہیں جیسے عمر بن الخطاب وعلی بن ابی طالب مع ان الخطاب واباطالب لم یسلما (حضرت عمر خطاب کے بیٹے اور حضرت علی ابوطالب کے فرزند حالانکہ خطاب اور ابوطالب دونوں مسلمان نہ تھے۔ت) ان کے ساتھ جو برتاؤ قولاً فعلاً ممنوع ہے بے ضرورت ان کا مرتکب عاصی ہے ان کا مثل نہیں جب تک ان کے کفر و بدعت و فسق کو اچھا یا جائز نہ جانے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۰۲: مرسلہ مصاحب علی طالب علم ۱۴ صفر المظفر ۱۳۳۵ھ ایک شخص نے زنا و شراب و سود وغیرہ گناہِ کبیرہ کا ارتکاب کیا ہے اور نماز و روزہ وزکوٰۃ وغیرہ افعالِ نیک بھی کرتا ہے اور علماء و مشائخ سے محبت رکھتا ہے تو اگر بہ سبب افعالِ نیک کے ایسے شخص سے محبت و دوستی و میل جول رکھا جائے تو ان آیات اور احادیث کا خلاف لازم آتا ہے جس میں فاسق سے بچنے اور دور رہنے اور بغض رکھنے کا حکم ہے اور اگر بسبب افعالِ بد کے ایسے شخص سے

پرہیز کیا جائے تو ان احادیث اور آیات کا خلاف لازم آتا ہے جس میں مسلمانوں سے میل جول رکھنے اور اچھا برتاؤ کرنے کا حکم ہے تو ایسے شخص سے کیسا برتاؤ کیا جائے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: دو وجہ سے محبت و بغض جمع ہوسکتے ہیں بلکہ فاسق سے بغض حقیقۃً اس کے فعل کی طرف راجع ہے، نہ ذات کی طرف۔ایسے شخص سے برتاؤ میں طریقہ سلف مختلف رہا اس کا مبنیٰ اختلافِ احوال ہے جس فاسق کو یہ جانے کہ نرمی و ائتلاف سے رو براہ ہو جائے گا وہاں یہی چاہئے جسے یہ جانے کہ شدت و اعراض سے متاثر ہو کر افعالِ قبیحہ چھوڑ دے گا وہاں یہی چاہئے اور جس سے کسی طرح امید نہ ہو اس سے مطلقاً احتراز چاہئے خصوصاً وہ شخص کو، ایک وہ جو اس کی صحبتِ بد سے متاثر ہونے کا اندیشہ رکھے

---

[1] شعب الایمان حدیث ۲۸۸۶ دارالکتب العلمیہ بیروت ۲۳۰/۴

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

Secondly, those who are scholars and leaders, if people see them interacting with such individuals, the public's perception of sin will diminish. And Allah knows best.

Problem 103: Sent by Dost Khan Philban, State of Suket, District Kangra, Punjab. 22 Rabi al-Akhir 1335 AH. A tribe in the mountains is called Chandail. Among them, the elders used to interact with Muslims, but now these people neither interact nor invite Muslims for funeral rites. Instead, like Hindus, they shave their beards and mustaches, do not exchange greetings with any Muslim, and never pray or fast. Now, some Muslims meet with them. What is the ruling for those who meet with them? Only.

The Answer: If these people call themselves Muslims and then commit disbelief, they are apostates, and for a Muslim to interact with them is forbidden (Haram). Muslims who meet them deserve punishment. And if they were never Muslims and were Hindus from the beginning, then interacting for worldly transactions like buying and selling is permissible to the same extent as with a Hindu. But if they interact more than that and make them their friends and allies, then they deserve punishment, and it is even more severe. And Allah knows best.

Problem 104: To the service of Shams-ul-Ulama, Head of Jurists, i.e., Maulana Maulvi Haji and Mufti Aala Hazrat (may his shadow be prolonged)! It is humbly requested in your noble presence whether, if a Qadiani gives money etc. for mosque expenses, or invites a student or another person to his house for food or sends it, is it permissible to eat in both these cases? Or how is it to use that money in the mosque? Explain and be rewarded.

The Answer: Neither should that money be taken, nor should the food be eaten, and going to his place to eat is strictly forbidden (Haram). And Allah knows best.

Problem 105: From Saranya village, District Bareilly, sent by Sheikh Amir Ali Rizwi. 29 Rabi al-Akhir 1336 AH. A Wahhabi is on an irrigation canal patrol and a postman who delivers letters is a Shia. One has to talk to these people; sometimes bread is shared for one's own needs, but they are considered enemies. There is no social interaction; they are avoided as much as possible, and it is necessary to talk during work.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

दूसरे वे जो विद्वान और धर्मगुरु हैं, यदि लोग उन्हें ऐसे व्यक्तियों के साथ मेलजोल करते देखेंगे, तो आम जनता के दिलों में पाप की पहचान कम हो जाएगी। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसाला 103: प्रेषित दोस्त खान फ़िलबान, सुकेत रियासत, जिला कांगड़ा, पंजाब। 22 रबी उल आखिर 1335 हिजरी। पहाड़ों में चंडेल नामक एक समुदाय है। इनमें उनके बड़े बुजुर्ग मुसलमानों से मेलजोल रखते थे, लेकिन अब ये लोग न तो मिलते हैं और न ही अंतिम संस्कार के कार्यों में मुसलमानों को बुलाते हैं। बल्कि हिंदुओं की तरह दाढ़ी-मूंछ मुंडवाते हैं, न किसी मुसलमान से सलाम-दुआ करते हैं और न ही कभी नमाज़-रोज़ा करते हैं। अब कुछ मुसलमान उनसे मिलते हैं, तो उन मुसलमानों के लिए क्या हुक्म है जो उनसे मिलते हैं? केवल।

उत्तर: यदि ये लोग स्वयं को मुसलमान कहते हैं और फिर कुफ्र करते हैं, तो वे धर्मत्यागी (मुरतद) हैं और उनसे मेलजोल रखना मुसलमान के लिए हराम है। जो मुसलमान उनसे मिलते हैं वे सजा के पात्र हैं। और यदि ये लोग शुरू से ही हिंदू हैं और कभी मुसलमान नहीं रहे, तो उनसे दुनिया के लेनदेन और खरीद-बिक्री में उतना मेलजोल जायज है जितना किसी हिंदू के साथ होता है। लेकिन अगर इससे ज्यादा मिलते हैं और उन्हें अपना दोस्त व वली बनाते हैं तो वे सजा के पात्र हैं बल्कि अधिक सख्त सजा के। और अल्लाह ताला बेहतर जानता है।

मसाला 104: शम्सुल उलेमा, फकीहों के शिरोमणि यानी मौलाना मौलवी हाजी और मुफ्ती आला हजरत (उनका साया बना रहे) की सेवा में! आपकी सेवा में विनम्र निवेदन है कि यदि कोई कादियानी मस्जिद के खर्च के लिए रुपया आदि दे, या किसी छात्र या अन्य व्यक्ति को घर बुलाकर खाना खिलाए या भेजे, तो क्या इन दोनों स्थितियों में खाना खाना जायज है या नहीं? या वह रुपया मस्जिद में लगाना कैसा है? बयान फरमाएं और सवाब पाएं।

उत्तर: न वह रुपया लिया जाए और न ही वह खाना खाया जाए, और उसके यहाँ जाकर खाना खाना सख्त हराम है। और अल्लाह ताला बेहतर जानता है।

मसाला 105: गांव सरन्या, जिला बरेली से प्रेषित शेख अमीर अली रिज़वी। 29 रबी उल आखिर 1336 हिजरी। सिंचाई नहर पर एक गश्ती दल (पेट्रोल) वाला वहाबी है और डाक बांटने वाला डाकिया भी शिया है। इन लोगों से बातचीत करनी पड़ती है, कभी अपनी जरूरत के लिए रोटी का भी

इत्तेफाक होता है, पर उन्हें अपना दुश्मन ही समझा जाता है। मेलजोल बिल्कुल नहीं किया जाता, जहाँ तक संभव हो बचते हैं और काम के समय बात करना आवश्यक होता है।

पेज 329 का 720

دوسرے وہ کہ عالم و مقتداء ہو کہ اسے اس سے میل جول کرتا ہوا دیکھ کر قلوب عوام سے فسق کی شناخت کم ہو گی۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۱۰۳: مرسلہ دوست خان فیلبان ریاست سکیت ضلع کانگڑہ پنجاب ۲۲ ربیع الآخر ۱۳۳۵ھ ایک قوم پہاڑ میں چنڈیل کہلاتی ہے اس میں ان کے بڑے مسلمانوں سے ملتے جلتے تھے مگر اب یہ لوگ نہ ملتے ہیں نہ مردہ کی تجہیز و تکفین میں مسلمانوں کو بلاتے ہیں بلکہ مثل ہنود کے داڑھی مونچھ منڈواتے ہیں، نہ کسی مسلمان سے سلام علیک لیتے ہیں نہ کبھی نماز روزہ ہوتا ہے۔ اب بعض مسلمان ان سے ملتے ہیں، جو ان سے ملتے ہیں ان کے واسطے کیا حکم ہے؟ فقط

الجواب: یہ لوگ اگر اپنے آپ کو مسلمان کہتے ہیں اور پھر کفر کرتے ہیں تو مرتد ہیں اور ان سے ملنا جلنا مسلمان کو حرام ہے، جو مسلمان ان سے ملتے ہیں مستحق عذاب ہیں، اور اگر یہ لوگ سرے سے ہندو ہیں مسلمان ہو کر کافر نہ ہوئے تو ان سے کسی دنیا کے لین دین خرید وفروخت میں اتنا ملنا جائز ہے جتنا ہندو سے، اور اگر اس سے زائد ملیں اور اپنا دوست ولی بنائیں تو پھر مستحق عذاب ہیں بلکہ سخت تر، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۰۴: بخدمت شمس العلماء راس الفقہاء اعنی جناب مولانا مولوی حاجی و مفتی اعلیٰحضرت مدظلہ العالی! حضور کی خدمت اقدس میں دست بستہ عرض ہے کہ اگر کوئی قادیانی مسجد کے خرچ کے واسطے روپیہ وغیرہ دے یا کسی طالب علم یا اور شخص کو مکان پر بلا کر کھانا کھلائے یا بھیج دے، ان دونوں صورتوں میں کھانا کھانا جائز ہے یا نہیں؟ یا وہ روپیہ مسجد میں لگانا کیسا ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: نہ وہ روپے لئے جائیں، نہ کھانا کھایا جائے، اور اس کے یہاں جا کر کھانا سخت حرام ہے، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۰۵: از موضع سرنیا ضلع بریلی مرسلہ شیخ امیر علی رضوی ۲۹ ربیع الآخر ۱۳۳۶ ھ ایک پٹرول آپاشی نہر پر وہابی ہے اور ایک ڈاکیا خط تقسیم کرنے والا بھی شیعہ ہے، ان شخصوں سے بات چیت کرنی پڑتی ہے کبھی روٹی کا بھی اتفاق اپنے مطلوب کی غرض سے ہوتا ہے اور ان کو اپنا دشمن ہی سمجھا جاتا ہے میل جول کچھ نہیں کیا جاتا ہے جہاں تک ممکن ہوتا ہے بچتے ہیں اور کام کے وقت بات کرنا ضرور ہوتی ہے۔

Fatawa Rizvia Volume 24

The Answer: If it is a factual matter that there is genuine hatred and enmity towards them in the heart and no social interaction is maintained, nor is any matter regarding correspondence ever discussed, or bread is occasionally given in which some correct wisdom is intended, then there is no harm. And Allah knows the secrets of the hearts. Allah Almighty knows best.

Problem 106: From Balrampur, District Gonda, Purnia Talab area adjacent to the orphanage, sent by Nazr Muhammad Atishbaz, 17 Safar 1338 AH. What do the scholars of religion say in this matter: what is it like to take the side of alcoholics, opium addicts, and non-followers (Ghair Muqallids) and to maintain constant social interaction with them? Is there any sin or not?

The Answer: To accompany and support non-followers is misguidance and irreligiousness. Supporting alcoholics and opium addicts, if it pertains to their sin, is a severe major sin; otherwise, it is improper and evil.

[Table] Arabic: Allah Almighty said, "And if Satan causes you to forget, then do not sit after the reminder with the wrongdoing people." 1- And Allah Almighty knows best. Urdu/English Translation: Allah Almighty said: If Satan makes you forget, then do not sit with wrongdoers after remembering. And Allah Almighty knows best.

Problem 107: From Pandol Buzurg, Post Office Raipur, District Muzaffarpur, questioned by Nemat Shah Khaki Burah. What is the ruling on conducting marriages at a Wahhabi/non-follower's house, praying with them, or eating at their house? Explain so you may be rewarded.

The Answer: Socializing with a Wahhabi or a non-follower is absolutely forbidden (Haram), and marriage with them is pure adultery. It is stated in a Hadith:

[Table] Arabic: Do not eat with them, do not drink with them, do not sit with them, do not pray with them, and do not pray over them. 2- And Allah Almighty knows best. Urdu/English Translation: Neither eat with them nor drink water with them, nor sit near them, nor pray with them, nor pray their funeral prayer. And Allah Almighty knows best. (T)

1. The Holy Quran 6/68
2. Kanz al-Ummal, Hadith 42529, Al-Resala Foundation, Beirut 11/540.

फतावा रज़विया जिल्द 24

अल-जवाब: अगर यह असलियत है कि दिल में उनसे हकीकी नफरत और दुश्मनी है और कोई मेल-जोल नहीं रखा जाता, न ही खत के मुताल्लिक कोई बात कभी की जाती है या कभी रोटी दे दी जाती है जिसमें कोई सही मसलहत (हिकमत) पेश-ए-नजर हो, तो कोई हर्ज नहीं। और अल्लाह दिलों का हाल खूब जानता है। वल्लाह ताला आलम।

मसला 106: बलरामपुर, जिला गोंडा, मोहल्ला पुरनिया तालाब, यतीमखाना के पास से, मुर्सला नज़र मोहम्मद आतिशबाज़, 17 सफर 1338 हिजरी। दीन के उलमा इस मसले में क्या फरमाते हैं कि शराब पीने वालों, चांडूबाज़ों और गैर-मुकल्लदों की तरफदारी करना और उनके साथ उठना-बैठना कैसा है? क्या इसमें कोई गुनाह है या नहीं?

अल-जवाब: गैर-मुकल्लदों का साथ देना और उनकी तरफदारी करना गुमराही और बद-दीनी है। और शराबखोरों और चांडूबाज़ों की तरफदारी अगर उनके गुनाह में है तो सख्त कबीरा गुनाह है, वरना बेजा और बुरा है।

[तालिका] अरबी: अल्लाह तआला ने फरमाया: "व इम्मा युन्सियन्नकश शैत़ानु फला तक़'उद ब'अदज्ज़िक्रि म'अल क़ौमिज़् ज़ालिमीन" 1- वल्लाह ताला आलम। उर्दू/हिंदी अनुवाद: अल्लाह तआला ने फरमाया: अगर तुम्हें शैतान भुला दे तो फिर याद आने के बाद ज़ालिमों के पास मत बैठो। वल्लाह ताला आलम।

मसला 107: पंडौल बुज़ुर्ग, डाकखाना रायपुर, जिला मुजफ्फरपुर से, सायला नेमत शाह खाकी बोड़ाह। वहाबी गैर-मुकल्लद के घर शादी-ब्याह करना, उसके साथ नमाज़ पढ़ना, उसके घर खाना खाना कैसा है? बयान फरमाएं ताकि अज्र पाएं।

अल-जवाब: वहाबी या गैर-मुकल्लद से मेल-जोल मुतलकन (बिल्कुल) हराम है और उसके साथ शादी-ब्याह खालिस ज़िना (व्यभिचार) है। हदीस में फरमाया गया:

[तालिका] अरबी: ला तुआकिलुहुम व ला तुशारिबुहुम व ला तुजालिसुहुम व ला तुस़ल्लु म'अहुम व ला तुस़ल्लु 'अलैहिम 2- वल्लाह ताला आलम। उर्दू/हिंदी अनुवाद: न उनके साथ खाना खाओ, न उनके

साथ पानी पियो, न उनके पास बैठो, न उनके साथ नमाज़ पढ़ो, न उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ो। वल्लाह ताला आलम (त)।

1. अल-कुरान अल-करीम 6/68
2. कन्ज़ अल-उम्माल, हदीस 42529, मुअस्ससतुर रिसाला, बैरुत 11/540.

पृष्ठ 330/720

الجواب: اگر یہ امر واقعی ہے کہ قلب میں ان سے نفرت و عداوت واقعی ہے اور کوئی میل جول نہیں رکھا جاتا نہ ہی یا خط کے متعلق کوئی بات کبھی کر لی جاتی ہے یا کبھی روٹی دے دی جاتی ہے جس میں کوئی مصلحتِ صحیح خیال کی گئی ہو تو حرج نہیں اور اللہ دلوں کا نور جانتا ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۰۶: از بلرامپور ضلع گونڈہ محلہ پورنیا تالاب متصل یتیم خانہ مرسلہ نذر محمد آتشباز ۱۷ صفر ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ شراب خوروں اور چانڈو بازوں اور غیر مقلدوں کی طرفداری کرنا اور ان کا ساتھ دینا برابر نشست و برخاست رکھنا کیسا ہے، کچھ گناہ ہے یا نہیں؟

الجواب: غیر مقلدوں کا ساتھ اور ان کی طرفداری کرنا گمراہی و بد دینی ہے اور شراب خوروں اور چانڈو بازوں کی طرفداری اگر ان کے اس گناہ میں ہے تو سخت عظیم کبیرہ ورنہ بیجا و بد۔

[جدول] عربی: قال اللہ تعالٰی " وَاِمَّا یُنْسِیَنَّکَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّکْرٰی مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ" 1- واللہ تعالٰی اعلم۔ اردو: اللہ تعالٰی نے فرمایا: اگر تمہیں شیطان بھلا دے تو پھر یاد آنے کے بعد ظالموں کے پاس مت بیٹھو۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۰۷: از پنڈول بزرگ ڈاکخانہ رائے پور ضلع مظفر پور مسئولہ نعمت شاہ خاکی بوڑاہ وہابی غیر مقلد کے گھر شادی بیاہ کرنا، اس کے ساتھ نماز پڑھنا، اس کے گھر کھانا کیسا ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: وہابی یا غیر مقلد سے میل جول مطلقاً حرام ہے اور اس کے ساتھ شادی بیاہ خالص زنا، حدیث میں فرمایا:

[جدول] عربی: لاتوا کلوہم ولا تشاربوہم ولا تجالسوہم ولا تصلوا معہم ولا تصلوا علیہم 2- واللہ تعالٰی اعلم۔ اردو: نہ ان کے ساتھ کھانا کھاؤ نہ ان کے ساتھ پانی پیو، نہ ان کے پاس بیٹھو نہ ان کے ساتھ نماز پڑھو نہ ان کے جنازے کی نماز پڑھو، واللہ تعالٰی اعلم(ت)

١ القرآن الکریم ٦/٦٨ ٢ کنز العمال حدیث ٤٢٥٢٩ مؤسسة الرساله بیروت ١١/٥٤٠

Volume 24 | Fatawa Rizvia

Issue 108: Moti Bazaar Lahore, Hakim Ali B.A., 25th October 1920. (Copy of letter) Distinguished master, supporter of the pure nation, our superior Maulana by grace, Mr. Shah Ahmad Raza Khan, may his shadow endure. Peace be upon you and the mercy of Allah and His blessings. I am sending the fatwa on the back of this for your esteemed study and request that you please correct the second copy on its back and send it back to this humble servant by return post if possible, or at least by the next day. A meeting of the General Council of Anjuman Himayat-i-Islam is to be held on Sunday, October 31, 1920. It is to be presented there. The Deobandis and Necharis (Naturalists) have not hesitated to destroy Muslims. They have established 'muwalat' (close alliance/friendship) with Hindus and Gandhi and have decided to obstruct the work of Muslims. May Allah, the Knower of the hidden, protect us from their hands and may you be rewarded by Allah. Your humble well-wisher. Hakim Ali B.A., Moti Bazaar Lahore, 25th October 1920.

Allah Almighty has forbidden us from 'tawalli' (intimacy/alliance) with disbelievers and Jews and Christians, but Abul Kalam forcefully defines 'tawalli' as transactions (muamalat) and defines 'tark-e-mualat' (severing ties) as non-cooperation (non-transactional). This is an explicit coercion being done with the Holy Words of Allah Almighty. The aforementioned person came to the General Council committee meeting on October 20, 1920, and applied this by saying that unless the government aid of Islamia College Lahore is stopped and its affiliation with the University is severed, non-cooperation with the British cannot be achieved. He also gave a fatwa to the boys of Islamia College that if this doesn't happen, they should leave the college. Consequently, he spread such restlessness in the college that studies began to suffer greatly. This fatwa of the aforementioned scholar is wrong. By remaining affiliated with the university and taking aid, 'muamalat' (dealings) are maintained, not 'muwalat' (intimacy/friendship), which means love and not work, which is the meaning of 'muamalat'. Due to this coercion of the aforementioned, Islamia College is being destroyed. The aforementioned Maulvi Mahmood Hasan Sahib and Maulvi Abdul Haq Sahib hold Deobandi views and forcefully give fatwas according to their motives. Therefore, I give the fatwa that affiliation with the university and taking aid is permissible. Have my fatwa corrected by those who are not Deobandis, for example, the supporter of the pure nation, Hazrat Maulana Maulvi Shah Ahmad Raza Khan Sahib Qadri Barelvi from Rohilkhand region, and Maulvi Ashraf Ali Sahib Thanwi from North-Western provinces.

मसला १०८: मोती बाज़ार लाहौर, हाकिम अली बी.ए., २५ अक्टूबर १९२०ई. (पत्र की प्रति) प्रतिष्ठित स्वामी, शुद्ध राष्ट्र के समर्थक, कृपा से हमारे श्रेष्ठ मौलाना श्री शाह अहमद रज़ा खान साहब, आपका साया बना रहे। आप पर शांति हो और अल्लाह की दया और उसकी बरकतें हों। मैं इस पत्र के पीछे दिए गए फतवे को आपके गरिमामयी अध्ययन के लिए भेज रहा हूँ और निवेदन करता हूँ कि यदि संभव हो तो दूसरी प्रति के पीछे उसे संशोधित कर इस तुच्छ सेवक के नाम वापस डाक से भेज दें, या कम से कम अगले दिन भेज दें। अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम की जनरल काउंसिल की बैठक रविवार ३१ अक्टूबर १९२०ई. को आयोजित होनी है। इसे वहाँ प्रस्तुत किया जाना है। देवबंदियों और नेचारियों (प्रकृतिवादियों) ने मुसलमानों को तबाह करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। उन्होंने हिंदुओं और गांधी के साथ 'मुआलात' (घनिष्ठ मैत्री) स्थापित कर ली है और मुसलमानों के कामों में बाधा डालने की ठान ली है। अल्लाह, जो गुप्त को जानने वाला है, हमें उनके हाथों से बचाए और आपको अल्लाह के यहाँ प्रतिफल मिले। आपका विनम्र शुभचिंतक। हाकिम अली बी.ए., मोती बाज़ार लाहौर, २५ अक्टूबर १९२०ई.

अल्लाह तआला ने हमें काफ़िरों और यहूदियों एवं ईसाइयों के साथ 'तवल्ली' (घनिष्ठता/गठबंधन) से मना फ़रमाया है, लेकिन अबुल कलाम ज़बरदस्ती 'तवल्ली' का अर्थ 'मुआमलात' (लेन-देन) और 'तर्कए-मुआलात' (संबंध विच्छेद) को 'नॉन-कोऑपरेशन' (असहयोग) करार देते हैं। यह अल्लाह तआला के पवित्र कलाम के साथ की जा रही स्पष्ट ज़्यादती है। उक्त व्यक्ति ने २० अक्टूबर १९२०ई. को जनरल काउंसिल की कमेटी में आकर यह लागू कर दिया कि जब तक इस्लामिया कॉलेज लाहौर की सरकारी मदद बंद न की जाए और यूनिवर्सिटी से इसका संबंध विच्छेद न किया जाए, तब तक अंग्रेज़ों से तर्कए-मुआलात नहीं हो सकता। उन्होंने इस्लामिया कॉलेज के लड़कों को भी यह फतवा दे दिया कि यदि ऐसा न हो तो कॉलेज छोड़ दो। इस प्रकार कॉलेज में ऐसी बेचैनी फैला दी गई कि पढ़ाई का भारी नुकसान होने लगा। उक्त विद्वान का यह फतवा ग़लत है। यूनिवर्सिटी के साथ संबद्ध रहने और सहायता लेने से 'मुआमलात' (लेन-देन) कायम रहते हैं, न कि 'मुआलात' (घनिष्ठता/मित्रता), जिसका अर्थ प्रेम है न कि काम, जो कि 'मुआमलात' का अर्थ है। उक्त की इस ज़बरदस्ती से इस्लामिया कॉलेज तबाह हो रहे हैं। उक्त मौलवी महमूद हसन साहब और मौलवी अब्दुल हक़ साहब तो देवबंदी विचारों के हैं और ज़बरदस्ती अपने उद्देश्य के अनुसार फतवा देते हैं। इसलिए, मैं फतवा देता हूँ कि यूनिवर्सिटी के साथ संबद्धता और सहायता लेना जायज़ है। मेरे फतवे को उन लोगों से

संशोधित कराएँ जो देवबंदी नहीं हैं, उदाहरण के लिए मुय्यिद-ए-मिल्लत ताहिर हज़रत मौलाना मौलवी शाह अहमद रज़ा खान साहब कादरी बरेलवी, रोहिलखंड क्षेत्र, और मौलवी अशरफ़ अली साहब थानवी, उत्तर-पश्चिमी प्रांत।

पृष्ठ ३३१ / ७२०

مسئلہ ۱۰۸: موتی بازار لاہور حاکم علی بی اے ۲۵/ اکتوبر ۱۹۲۰ء (نقل خط) آقائے نامدار مؤید ملت طاہرہ مولانا وبافضل اولنا جناب شاہ احمد رضا خاں صاحب دام ظلکم السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ۔ پشت ہذا پر کا فتویٰ مطالعہ گرامی کے لئے ارسال کر کے التجا کرتا ہوں کہ دوسری نقل کی پشت پر اس کی تصحیح فرما کر احقر نیاز مند کے نام بواپسی ڈاک اگر ممکن ہو سکے یا کم از کم دوسرے روز بھیج دیں انجمن حمایت اسلام کی جنرل کونسل کا اجلاس بروز اتوار بتاریخ ۳۱ اکتوبر ۱۹۲۰ء منعقد ہونا ہے اس میں یہ پیش کرنا ہے، دیو بندیوں اور نیچریوں نے مسلمانوں کو تباہ کرنے میں کوئی تامل نہیں کیا ہے ہندوؤں اور گاندھی کے ساتھ موالات قائم کر لی ہے اور مسلمانوں کے کاموں میں روڑا اٹکانے کی ٹھان لی ہے، اللہ عالم خفیہ کو ان کے ہاتھوں سے بچائیں اور عند اللہ ماجور ہوں، نیاز مند دعا گو ہے۔ حاکم علی بی اے موتی بازار لاہور ۲۵ اکتوبر ۱۹۲۰ء

اللہ تعالیٰ نے ہمیں کافروں اور یہود و نصاریٰ کے ساتھ تولی سے منع فرمایا ہے مگر ابوالکلام زبردست تولی کے معنی معاملت اور ترک موالات کو ترک معاملت "نان کو آپریشن" قرار دیتے ہیں اور یہ صریح زبردستی ہے جو اللہ تعالیٰ کے کلام پاک کے ساتھ کی جارہی ہے۔ مذکور نے ۲۰ اکتوبر ۱۹۲۰ء کی جنرل کونسل کی کمیٹی میں تشریف لا کر اطلاق یہ کر دیا کہ جب تک اسلامیہ کالج لاہور کی سرکاری امداد بند نہ کی جائے اور یونیورسٹی سے اس کا قطع الحاق نہ کیا جائے تب تک انگریزوں سے ترک موالات نہیں ہو سکتی اور اسلامیہ کالج کے لڑکوں کو فتویٰ دے دیا کہ اگر ایسا نہ ہو تو کالج چھوڑ دو، لہذا اس طرح سے کالج میں بے چینی پھیلا دی کہ پھر پڑھائی کا سخت نقصان ہونا شروع ہو گیا، علامہ مذکور کا یہ فتویٰ غلط ہے یونیورسٹی کے ساتھ الحاق رہنے سے اور امداد لینے سے معاملت قائم رہتی ہے نہ کہ موالات جن کے معنی محبت کے ہیں نہ

کہ کام کے جو کہ معاملت کے معنی ہیں مذکور کی اس زبردستی سے اسلامیہ کالج تباہ ہو رہے ہیں مذکور مولوی محمود حسن صاحب مولوی عبدالحق صاحب تو دیوبند خیالات کے ہیں زبردستی فتویٰ اپنے مدعا کے مطابق دیتے ہیں، لہذا میں فتویٰ دیتا ہوں کہ یونیورسٹی کے ساتھ الحاق اور امداد لینا جائز ہے میرے فتویٰ کی تصحیح ان اصحاب سے کرائیں جو دیوبندی نہیں مثلاً مؤید ملت طاہر حضرت مولانا مولوی شاہ احمد رضا خاں صاحب قادری بریلوی علاقہ روہیل کھنڈ، اور مولوی اشرف علی صاحب تھانوی ممالک مغربی وشمالی۔

Fatawa Razawiya Volume 24

The Answer: There is a vast difference between 'Mualat' (loyal friendship) and mere dealing. Worldly dealings that do not harm religion are not forbidden with anyone except apostates (murtads) like Wahhabis, Deobandis, and their ilk. As for a 'Dhimmi' (non-Muslim citizen), they are like Muslims in dealings: "To them belongs what belongs to us, and upon them is what is upon us." (i.e., they have the same rights and responsibilities). Even with a non-Dhimmi, it is permissible to buy, sell, lease, take on lease, gift, or receive a gift, provided it's legally pure. Buying any property is absolutely permissible if it is valued for a Muslim, and selling any permissible thing is allowed as long as it does not involve aiding a war [against Islam] or insulting Islam. Employing them for work that isn't against Sharia, or doing permissible work for them where there's no dominance of a non-Muslim over a Muslim, is allowed. Similarly, hiring them or working for them for wages based on Sharia interest, giving gifts that don't honor a ritual of disbelief, and accepting their gifts if it doesn't lead to criticism of religion—even marrying a woman from the 'People of the Book' (Kitabiyah) is inherently permissible. If they incline towards peace, then make peace, but not a peace that makes the forbidden permissible or the permissible forbidden. Likewise, entering into a treaty and truce to a certain extent is allowed, and fulfilling a permissible pledge is mandatory, along with other rulings. In 'Durr al-Mukhtar' it is stated:

Arabic	**Urdu**
And an apostate woman is imprisoned forever, and she is not sat with nor eaten with until she submits (returns to Islam), and she is not killed. 1H. I say: and this is the cause, for she remains and does not perish, and it has encompassed the apostate [man] in our times and our cities, so the prevention of killing [applies].	(A woman who has turned away from Islam) An apostate woman should always be kept in imprisonment. Sitting or socializing with her should be avoided until she becomes a Muslim, but she should not be killed. 1H. I say this is the reason that always remains and never ends; therefore, in our times and our cities, this same reason applies to the apostate man as well, because he cannot be killed [due to circumstances]. (T)
If he intends to go out for trade to the land of the enemy with safe-conduct, then if he is a leader who does not fear for him from it, and	When he goes to the enemy's country with a permit to do business peacefully, then if the leader is such that there is no fear or danger for the one going.

Arabic	Urdu
they were people who fulfill the covenant.	

1. Durr al-Mukhtar, Book of Jihad, Chapter on the Apostate, Mujtabai Press, Delhi, 1/360. Page 332 of 720

उत्तर: 'मुआलात' (निष्ठापूर्ण मित्रता) और केवल लेनदेन में ज़मीन-आसमान का फ़र्क है। सांसारिक लेनदेन जिससे धर्म को कोई हानि न हो, वहाबी, देवबंदी और उनके जैसे धर्मत्यागियों (मुरतद) को छोड़कर किसी से भी मना नहीं है। ज़िम्मी (गैर-मुस्लिम नागरिक) तो लेनदेन में मुसलमान के समान है: "उनके लिए वही है जो हमारे लिए है, और उन पर वही अनिवार्य है जो हम पर अनिवार्य है।" (अर्थात, उनके अधिकार और कर्तव्य समान हैं)। और गैर-ज़िम्मी से भी खरीदना, बेचना, किराए पर देना, किराए पर लेना, उपहार देना या उपहार लेना वैध है, बशर्ते वह कानूनी रूप से पवित्र हो। किसी भी संपत्ति को खरीदना पूर्णतः वैध है यदि वह एक मुसलमान के लिए मूल्यवान हो, और किसी भी वैध वस्तु को बेचना तब तक अनुमत है जब तक कि उसमें युद्ध (इस्लाम के विरुद्ध) में सहायता या इस्लाम का अपमान न हो। उन्हें ऐसे काम के लिए नौकर रखना जो शरिया के खिलाफ न हो, या उनके लिए अनुमेय काम करना जिसमें एक मुसलमान पर गैर-मुस्लिम का वर्चस्व न हो, जायज़ है। इसी तरह, शरिया के हित के आधार पर मजदूरी पर उनसे काम लेना या उनका काम करना, उपहार देना जिसमें कुफ्र की किसी रस्म का सम्मान न हो, और उनका उपहार स्वीकार करना जिससे धर्म पर कोई आपत्ति न हो - यहाँ तक कि किताबिया (अहले किताब की महिला) से निकाह करना भी अपने आप में हलाल है। यदि वे शांति की ओर झुकें तो समझौता करें, लेकिन वह समझौता ऐसा न हो जो हराम को हलाल या हलाल को हराम कर दे। इसी तरह, एक सीमा तक संधि और युद्धविराम करना भी जायज़ है और जो जायज़ वादा कर लिया गया है उसे पूरा करना अनिवार्य है, इसके अलावा अन्य नियम भी हैं। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

अरबी

और धर्मत्यागी महिला को हमेशा के लिए कैद किया जाए, और जब तक वह इस्लाम स्वीकार न कर ले, उसके साथ न बैठा जाए और न ही उसके साथ खाया जाए, और उसे मारना नहीं चाहिए। १ह। मैं कहता हूँ: यही कारण है, क्योंकि वह जीवित रहती है और नष्ट नहीं होती, और हमारे समय और हमारे शहरों में यह धर्मत्यागी

उर्दू

(इस्लाम से फिर जाने वाली) धर्मत्यागी महिला को हमेशा जेल में रखा जाए। उसके साथ उठना-बैठना तब तक न किया जाए जब तक कि वह मुसलमान न हो जाए, लेकिन उसे मारा न जाए। १ह। मैं कहता हूँ कि यही वह कारण है जो हमेशा बना रहता है, कभी समाप्त नहीं होता; इसलिए, हमारे समय और हमारे शहरों में यही कारण धर्मत्यागी पुरुष को भी शामिल है, क्योंकि उसे मारा नहीं जा सकता। (त)

अरबी	उर्दू
(पुरुष) पर भी लागू होता है, अतः उसकी हत्या निषिद्ध है।	
यदि वह सुरक्षा-पत्र के साथ दुश्मन के देश में व्यापार के लिए बाहर जाने का इरादा रखता है, तो यदि वह ऐसा नेता है जिसे उसके लिए वहाँ से कोई डर न हो, और वे ऐसे लोग हों जो वादे को पूरा करते हों।	जब दुश्मन के देश में परमिट लेकर शांतिपूर्ण ढंग से व्यापार करने के लिए जाए, फिर अगर अमीर (नेता) ऐसा हो कि जाने वाले को उससे कोई डर और खतरा न हो।

1. दुर्रे मुख्तार, किताबुल जिहाद, बाबुल मुरतद, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली १/३६०। पृष्ठ ३३२ का ७२०

الجواب : موالات و مجرد معاملہ میں زمین و آسمان کا فرق ہے دنیوی معاملت جس سے دین پر ضرر نہ ہو سوا مرتدین مثل وہابیہ دیوبندیہ وامثالہم کے کسی سے ممنوع نہیں ذمی تو معاملت میں مثل مسلم ہے لھم مالنا و علیہم ماعلینا (ان کے لئے ہے جو کچھ ہمارے لئے ہے ، اور ان پر وہی کچھ لازم ہے جو کچھ ہم پر لازم ہے۔ ت) اور غیر ذمی سے بھی خرید ، فروخت ، اجارہ، استجار، ہبہ ، استیہاب بشرطِ طہاجائز، خرید نامطلقاً ہر مال کا ہر مسلمان کے حق میں متقوم ہو اور بیچنا ہر جائز چیز کا جس میں اعانت حرب یا اہانت اسلام نہ ہو، اسے نوکر رکھنا جس میں کوئی کام خلاف شرع نہ ہو اس کی جائز نوکری کرنا جس میں مسلم پر اس کا استعلانہ ہو ایسے ہی امور میں اجرت پر اس سے کام لینا یا اس کا کام کرنا بمصلحت شرعی سے ہدیہ دینا جس میں کسی رسم کفر کا اعزاز نہ ہو اس کا ہدیہ قبول کرنا جس سے دین پر اعتراض نہ ہو حتی کہ کتابیہ سے نکاح کرنا بھی فی نفسہ حلال ہے وہ صلح کی طرف جھکیں تو مصالحت کرنا مگر وہ صلح کہ حلال حرام کرے یا حرام کو حلال ، یونہی ایک حد تک معاہدہ و موادعت کرنا بھی اور جو جائز عہد کر لیا اس کی وفا فرض ہے اور عذر حرام الی غیر ذلک من الاحکام (اور اس کے علاوہ باقی احکام ۔ ت) در مختار میں ہے :

عربی عبارت	اردو ترجمہ
والمرتدۃ تحبس ابدا ولا تجالس ولاتؤا کل حتی تسلم ولا تقتل ۱ھ قلت وھو العلۃ فأنھا تبقی ولا تفنی وقد شملت المرتد فی	(اسلام سے پھر جانے والی) مرتد عورت ہمیشہ قید وبند میں رکھی جائے۔ پس اس کے ساتھ نشست برخاست نہ کی جائے یہاں تک کہ وہ مسلمان ہوجائے لیکن وہ قتل نہ کی جائے ۱ھ میں کہتا ہوں یہی وہ علت ہے جو ہمیشہ باقی رہتی ہے کبھی ختم نہیں ہوتی، پس

عربی عبارت	اردو ترجمہ
اعصارنا و امصارنا فالامتناع القتل۔	ہمارے زمانے اور ہمارے شہروں میں یہی علت مرتد مرد کو بھی شامل ہے اس لئے کہ اسے قتل نہیں کیا جاسکتا۔ (ت)
اذا اراد الخروج للتجارة الی ارض العدو بأمان فان کان امیرا لا یخاف علیه منه وکانوا قوما یوفون بالعهد	جب دشمن کے ملک میں اجازت نامہ لے کر پُر امن طور پر کاروبار کرنے کے لئے جائے پھر اگر امیر ایسا ہو کہ جانے والے کو اس سے کوئی خوف وخطرہ نہ ہو

۱ در مختار کتاب الجہاد باب المرتد مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۳۶۰ Page 332 of 720

...they are known for that and he has a benefit in it, so there is no harm in disobeying them [parents].[1] | And if those people also fulfill their promises, rather they are famous and well-known for fulfilling covenants, and if there is a personal benefit for him in going and traveling, then there is no issue or harm in his going. (T)

It is stated in Al-Hindiyyah: If a Muslim wants to enter Dar al-Harb (the land of war) with a grant of security for trade, he should not be prevented from it. Likewise, if he wants to carry goods to them by sea in a ship.[2] | When a Muslim enters Dar al-Harb for trade after obtaining safety, he should not be stopped from this journey. The same ruling applies when a person wants to go towards them by loading goods on a sea vessel (so he should also not be stopped from this journey). (T)

It is also stated in it: Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) said: There is no harm in a Muslim carrying whatever he wishes to the people of war, except for horses and weapons. If it is veils made of silk or thin clothes made of raw silk, there is no harm in bringing them to them. There is also no harm in bringing brass and similar alloys to them because these are not used for weapons.[3] | Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) said: If a Muslim wants to take anything to the people of war, there is no harm in it, except that he should not take horses and weapons. Then, if there are clothes of pure silk or golden fine cloth, there is no harm in taking them there. Furthermore, there is no issue in taking gold, brass, and similar items there, because the aforementioned items are not used for weapons. (T)

It is also stated in it: He should not be prevented from bringing mules, donkeys, oxen, and camels.[4] | Mules, donkeys, oxen, camels, etc., should not be prevented from being taken. (T)

---

[1] Fatawa Hindiyyah, Book of As-Siyar, Chapter One, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/189. [2] Fatawa Hindiyyah, Book of As-Siyar, Chapter Six, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/233. [3] Fatawa Hindiyyah, Book of As-Siyar, Chapter Six, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/233. [4] Fatawa Hindiyyah, Book of As-Siyar, Chapter Six, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/233.

फ़तावा रज़विया - खंड 24

...वे इसके लिए जाने जाते हैं और इसमें उसका लाभ है, इसलिए उनके[माता-पिता के] विरोध में कोई हर्ज नहीं है।[1] | और यदि वे लोग भी अपना वादा पूरा करते हों, बल्कि वे संधि का पालन करने के लिए प्रसिद्ध और जाने-माने हों, और यदि उसके जाने और यात्रा करने में उसका व्यक्तिगत लाभ भी हो, तो उसके जाने में कोई आपत्ति या हर्ज नहीं है। (त)

अल-हिन्दिया में है: यदि कोई मुसलमान व्यापार के लिए सुरक्षा के साथ दारुल हरब (युद्ध क्षेत्र) में प्रवेश करना चाहता है, तो उसे इससे नहीं रोका जाना चाहिए। इसी तरह, यदि वह जहाज में समुद्र के रास्ते उन तक सामान ले जाना चाहता है।[2] | जब कोई मुसलमान सुरक्षा लेकर व्यापार के लिए दारुल हरब में प्रवेश करना चाहे, तो उसे इस यात्रा से नहीं रोका जाना चाहिए। और यही हुक्म तब है जब कोई व्यक्ति समुद्री बेड़े में सामान लादकर उनकी ओर जाना चाहे (तो उसे भी इस यात्रा से नहीं रोका जाना चाहिए)। (त)

इसी में है: इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) ने कहा: एक मुसलमान के लिए दारुल हरब के लोगों के पास जो चाहे ले जाने में कोई बुराई नहीं है, सिवाय घोड़ों और हथियारों के। यदि वह रेशम से बनी ओढ़नी या कच्चे रेशम के बारीक कपड़े हों, तो उन्हें उनके पास ले जाने में कोई बुराई नहीं है। पीतल और इसी तरह की धातुओं को उनके पास ले जाने में भी कोई हर्ज नहीं है क्योंकि इनका उपयोग हथियारों के लिए नहीं किया जाता है।[3] | इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) ने फ़रमाया कि अगर कोई मुसलमान दारुल हरब वालों की तरफ जो कुछ उठाकर ले जाना चाहे तो इसमें कोई हर्ज नहीं, मगर यह कि घोड़े और हथियार (न ले जाए)। फिर अगर खालिस रेशम या सुनहरी बारीक कपड़े हों तो उन्हें वहाँ ले जाने में कोई हर्ज नहीं। इसके अलावा सोना, पीतल और उन जैसी चीजों के वहाँ ले जाने में भी कोई आपत्ति नहीं, क्योंकि उक्त चीजें हथियारों के लिए इस्तेमाल नहीं की जातीं। (त)

इसी में है: खच्चर, गधे, बैल और ऊंट लाने से नहीं रोका जाना चाहिए।[4] | खच्चर, गधे, बैल और ऊंट वगैरह ले जाने से न रोका जाए। (त)

---

[1] फ़तावा हिन्दिया, किताबुस सियर, बाब अव्वल, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 2/189। [2] फ़तावा हिन्दिया, किताबुस सियर, बाब सादिस, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 2/233। [3] फ़तावा हिन्दिया,

किताबुस सियर, बाब सादिस, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 2/233। [4] फ़तावा हिन्दिया, किताबुस सियर, बाब सादिस, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 2/233।

पृष्ठ 333 का 720

یعرفون بذلك وله في ذلك منفعة فلابأس بأن یعصیهما[1]۔ | اور وہ لوگ بھی وعدہ پورا کرتے ہوں بلکہ ایفائے عہد میں مشہور و معروف ہوں، اور اس جانے اور سفر کرنے میں اس کا ذاتی فائدہ بھی ہو تو اس کے جانے میں کچھ مضائقہ اور حرج نہیں۔ (ت)

ہندیّہ میں ہے : اذا اراد المسلم ان یدخل دار الحرب بأمان للتجارة لم یمنع ذٰلك منه و كذلك اذا اراد حمل الامتعة الیهم في البحر في السفینة[2]۔ | جب کوئی مسلمان دارِ حرب میں امان لے کر تجارت کے لئے داخل ہو تو اسے اس سفر سے نہ روکا جائے اور یہی حکم ہے جب کوئی شخص بحری بیڑے میں سامان لاد کر ان کی طرف جانا چاہے (تو اسے بھی اس سفر سے نہ روکا جائے)۔ (ت)

اسی میں ہے: قال محمد لابأس بأن یحمل المسلم الی اهل الحرب ماشاء الا الكراع والسلاح فان كان خُمراً من باریسم او ثیاباً رقاقاً من القز فلابأس بادخالها الیهم ولا بأس بادخال الصفر والشبهة الیهم لان هذا لا یستعمل للسلاح[3]۔ | امام محمد علیہ الرحمہ نے فرمایا اگر کوئی مسلمان اہل حرب کی طرف جو کچھ اٹھا کر لے جانا چاہے تو اس میں کچھ حرج نہیں مگر یہ کہ گھوڑے اور ہتھیار (نہ لے جائے) پھر اگر خالص ریشم یا سنہری باریک کپڑے ہوں تو انہیں وہاں لے جانے میں کچھ حرج نہیں نیز سونا، پیتل اور ان جیسی اشیاء کے وہاں لے جانے میں کچھ مضائقہ نہیں، اس لئے کہ اشیاء مذکورہ ہتھیاروں کے لئے استعمال نہیں کی جاتیں۔ (ت)

اسی میں ہے: لا یمنع من ادخال البغال والحمیر والثور والبعیر[4]۔ | خچر، گدھے، بیل اور اونٹ وغیرہ لے جانے سے نہ روکا جائے۔(ت)

---

[1] فتاوٰی ہندیہ کتاب السیر الباب الاول نورانی کتب خانہ پشاور ۲/ ۱۸۹ [2] فتاوٰی ہندیہ کتاب السیر الباب السادس نورانی کتب خانہ پشاور ۲/ ۲۳۳ [3] فتاوٰی ہندیہ کتاب السیر الباب السادس نورانی کتب خانہ پشاور ۲/ ۲۳۳ [4] فتاوٰی ہندیہ کتاب السیر الباب السادس نورانی کتب خانہ پشاور ۲/ ۲۳۳

Fatawa Rizwia, Volume 24

In Fatawa Imam Zahir Bukhari: (Arabic): A Muslim hiring himself out to a Majusi (Zoroastrian) is permissible. (Urdu): If a Muslim works for a fire-worshipper, there is no harm in it. (T)

In Hidaya: (Arabic): Whoever sends his Majusi employee or his servant and he buys meat, and says: 'I bought it from a Jew, a Christian, or a Muslim,' he should eat it. (Urdu): If someone sent their fire-worshipper laborer or servant, and then he bought meat, and (upon enquiry) he said, "I bought it from a Jew or Christian or Muslim," then (believing him to be truthful) that meat shall be eaten. (T)

In Durr-e-Mukhtar: (Arabic): A non-believer (Kafir) may be appointed as a judge to rule between the Dhimmis; al-Zayla'i mentioned it in the discussion of arbitration. (Urdu): It is permissible to follow and emulate the decision of a non-believer in passing judgment over the Dhimmis; accordingly, Allama Zayla'i has mentioned this in the discussion of arbitration. (T)

In Muhit: (Arabic): Muhammad said: Whatever the enemy king sends as a gift to the commander of the Muslim army or to the Great Imam while he is with the army, there is no harm in accepting it; it becomes spoils of war (fay') for the Muslims. Similarly, if their king gives a gift to one of the Muslim leaders who has power. If he gives a gift to one of the prominent Muslims who has no power, it belongs exclusively to him. (Urdu): Imam Muhammad (may the mercy of Allah be upon him) said that whatever gifts or presents the enemy king sends to the commander or the supreme commander of the Islamic army while he is with the army, there is no harm in accepting them, and they will become spoils of war for the people of Islam. Likewise, if their king sends a gift to a Muslim leader who possesses strength and power (then there is no harm in taking it too). And if he offers a gift to a prominent individual among the Muslims who does not possess defensive power, then it will be specific to him. (T)

1. Khulasat al-Qari, Book of Hiring (Al-Ijarat), Chapter 10, Habibia Library, Quetta, 3/149
2. Al-Hidayah, Book of Disliked Matters (Al-Karahiyah), Section on Eating and Drinking, Yusufi Press, Lucknow, 4/451
3. Durr-e-Mukhtar, Book of Judiciary (Al-Qada), Mujtabai Press, Delhi, 2/71

4. Fatawa Hindiyya, Book of Military Expeditions (Al-Siyar), Chapter 6, Section 3, Noorani Library, Peshawar, 2/236

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

फ़तावा इमाम ज़ाहिर बुखारी में है: (अरबी): एक मुसलमान का एक मजूसी (पारसी) के यहाँ काम करना जायज़ है। (उर्दू): अगर कोई मुसलमान किसी अग्नि-पूजक की नौकरी करे तो इसमें कोई हर्ज नहीं। (त)

हिदाया में है: (अरबी): जो कोई अपने मजूसी कर्मचारी या अपने सेवक को भेजता है और वह मांस खरीदता है, और कहता है: 'मैंने इसे किसी यहूदी, ईसाई या मुसलमान से खरीदा है,' तो उसे इसे खाना चाहिए। (उर्दू): अगर किसी ने अपना अग्नि-पूजक मजदूर या सेवक भेजा, फिर उसने मांस खरीदा (पूछने पर) उसने कहा मैंने यह यहूदी या ईसाई या मुसलमान से खरीदा है (तो उसे सच्चा समझकर) वह मांस खाया जाएगा। (त)

दुर्र-ए-मुख्तार में है: (अरबी): ज़िम्मियों के बीच न्याय करने के लिए एक काफ़िर (गैर-मुस्लिम) को न्यायाधीश नियुक्त करना जायज़ है; अल-ज़यलई ने मध्यस्थता की चर्चा में इसका उल्लेख किया है। (उर्दू): अहले-ज़िम्मा पर हुक्म देने में काफ़िर के फैसले की तक़लीद और इत्तेबा करना जायज़ है, चुनाँचे अल्लामा ज़यलई ने बहस-ए-तहकीम में इसका वर्णन किया है। (त)

मुहित में है: (अरबी): मुहम्मद ने कहा: दुश्मन राजा मुस्लिम सेना के सेनापति या महान इमाम को जो उपहार भेजता है, जबकि वह सेना के साथ हो, उसे स्वीकार करने में कोई बुराई नहीं है; यह मुसलमानों के लिए युद्ध की संपत्ति (फ़य) बन जाता है। इसी तरह, अगर उनका राजा उन मुस्लिम नेताओं में से किसी एक को उपहार देता है जिनके पास शक्ति है। यदि वह उन प्रमुख मुसलमानों में से किसी एक को उपहार देता है जिसके पास शक्ति नहीं है, तो वह विशेष रूप से उसी का है। (उर्दू): इमाम मुहम्मद (अल्लाह की उन पर रहमत हो) ने फ़रमाया कि दुश्मन का बादशाह इस्लामी लश्कर के अमीर या अमीर-ए-अकबर को जो कुछ तोहफा व हदीया भेजे जबकि वह लश्कर में हो, तो उसको कबूल करने में कुछ हर्ज नहीं, और वह अहल-ए-इस्लाम के लिए माल-ए-गनीमत हो जाएगा। यूँ ही उनका बादशाह मुसलमानों के किसी ऐसे कमांडर को तोहफा भेजे जिसमें शक्ति और बल हो (तो उसे लेने में भी कोई हर्ज नहीं)। और अगर वह मुसलमानों के किसी बड़े व्यक्ति को तोहफा पेश करे जिसमें रक्षात्मक शक्ति न हो, तो वह फिर उसके लिए ही विशिष्ट होगा। (त)

1. खुलासा अल-क़ारी, किताब अल-इजारात, दसवां अध्याय, हबीबिया पुस्तकालय, क्वेटा, 3/149

2. अल-हिदाया, किताब अल-कराहिया, खाने और पीने का अनुभाग, यूसुफ़ी प्रेस, लखनऊ, 4/451
3. दुर्रे मुख्तार, किताब अल-क़ज़ा, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 2/71
4. फ़तावा हिन्दिया, किताब अल-सियर, छठा अध्याय, तीसरा खंड, नूरानी पुस्तकालय, पेशावर, 2/236

فتاوٰی امام طاہر بخاری میں ہے: (عربی): مسلم اجر نفسه من مجوسی لا باس به 1۔ (اردو): اگر کوئی مسلمان کسی آتش پرست کی نوکری کرے تو اس میں کوئی حرج نہیں۔ (ت)

ہدایہ میں ہے: (عربی): من ارسل اجیراله مجوسیا او خادما فاشتری لحما فقال اشتریته من یهودی او نصرانی او مسلم واکله 2۔ (اردو): اگر کسی نے اپنا آتش پرست مزدور یا خادم بھیجا پھر اس نے گوشت خریدا (پوچھنے پر) اس نے کہا میں نے یہ یہودی یا عیسائی یا مسلمان سے خریدا ہے (تو اسے سچا سمجھ کر) وہ گوشت کھایا جائے گا (ت)

در مختار میں ہے: (عربی): الکافر یجوز تقلیده القضاء لیحکم بین اهل الذمة ذکره الزیلعي في التحکیم 3۔ (اردو): اہل ذمہ پر حکم دینے میں کافر کے فیصلے کی تقلید اور اتباع کرنا جائز ہے، چنانچہ علامہ زیلعی نے بحث تحکیم میں اس کو بیان فرمایا ہے۔ (ت)

محیط میں ہے: (عربی): قال محمد مایبعثه ملك العدو من الهدیة ان امیر جیش المسلمین او الی الامام الاکبر وهو مع الجیش فانه لا باس بقبولها یصیر فیئاً للمسلمین وکذلك اذا اهدی ملکهم الی قائد من قواد المسلمین له منعة ولوکان اهدی الی واحد من کبار المسلمین لیس له منعة یختص هو بها 4۔ (اردو): امام محمد رحمۃ اللہ علیہ نے فرمایا دشمن کا بادشاہ اسلامی لشکر کے امیر یا امیر اکبر کو جو کچھ تحفہ و ہدیہ بھیجے جبکہ وہ لشکر میں ہو تو اس کو قبول کرنے میں کچھ حرج نہیں، اور وہ اہل اسلام کے لئے مال غنیمت ہو جائے گا، یونہی ان کا بادشاہ مسلمانوں کے کسی ایسے قائد کو ہدیہ بھیجے کہ جس میں قوت و زور ہو (توس اس کو لینے میں بھی کوئی حرج نہیں) اور اگر وہ مسلمانوں کے

کسی بڑے فرد کو ہدیہ پیش کرے کہ جس میں قوت دفاع نہ ہو وہ پھر اس کے لئے مختص ہوگا۔

(ت)

1. خلاصة القاری کتاب الاجارات الفصل العاشر مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۱۴۹/۳
2. الهداية كتاب الكراهية فصل فی الاكل والشرب مطبع يوسفی لكهنو ۴۵۱/۴
3. درمختار کتاب القضاء مطبع مجتبائی دہلی ۷۱/۲
4. فتاویٰ ہندیہ کتاب السیر الباب السادس الفصل الثالث نورانی کتب خانہ پشاور ۲۳۶/۲

Fatawa-e-Razawiyyah, Volume 24

In it, it is mentioned:

If a Muslim army enters the 'Dar-ul-Harb' (territory of war), and their commander presents a gift to the ruler of the enemy, there is no harm in it. Similarly, if a border commander presents a gift to the king of the enemy of Islam, and the enemy king presents a gift or offering to the Islamic commander, there is no objection in both cases. Allah Almighty has said: "...And chaste women from among the believers and chaste women from among those who were given the Scripture before you, when you have given them their due compensation..."[2] and its complete investigation is mentioned in our Fatawa. And Allah Almighty said: "And if they incline to peace, then incline to it [also]..."[3] And Allah Almighty said: "Except for those with whom you made a treaty among the polytheists and then they have not been deficient toward you in anything and have not supported anyone against you; so fulfill for them their treaty until their term. Indeed, Allah loves the righteous [who fear Him]."[4] And Allah Almighty said: "And fulfill the covenant; indeed, the covenant will be questioned about."[5] And from him (may Allah the Almighty's peace and blessings be upon him): "Reconciliation is permissible between Muslims, except for reconciliation that makes a forbidden thing lawful or a lawful thing forbidden."[6] And he (may Allah the Almighty's peace and blessings be upon him) said:

---

1. Fatawa al-Hindiyyah, Kitab al-Siyar, Chapter Six, Second Section, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/236
2. Al-Quran Al-Karim, 5/5
3. Al-Quran Al-Karim, 8/61
4. Al-Quran Al-Karim, 9/4
5. Al-Quran Al-Karim, 17/34
6. Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 30, Al-Maktaba al-Faysaliya Beirut, 17/22

फतवा-ए-रज़विया, खंड 24

इसमें उल्लेख है:

यदि एक मुस्लिम सेना 'दार-उल-हरब' (युद्ध क्षेत्र) में प्रवेश करती है, और उनका कमांडर दुश्मन के शासक को कोई उपहार भेंट करता है, तो इसमें कोई हर्ज नहीं है। इसी तरह, यदि सीमाओं का कमांडर इस्लामी दुश्मन के राजा को उपहार देता है, और दुश्मन राजा इस्लामी कमांडर को कोई उपहार या भेंट देता है, तो दोनों ही स्थितियों में कोई आपत्ति नहीं है। अल्लाह सर्वशक्तिमान ने फरमाया है: "...और मोमिनों की पाक दामन औरतें और उन लोगों की भी पाक दामन औरतें जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई है (अर्थात अहले किताब यहूदी और ईसाई), जब तुम उन्हें उनके महर अदा कर दो (तो उनके साथ निकाह करना जायज़ है)"[2] और इसकी पूरी जाँच हमारे फतवों में वर्णित है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान ने फरमाया: "और यदि वे शांति की ओर झुकें, तो आप भी उसकी ओर झुकें.."[3] और अल्लाह सर्वशक्तिमान ने फरमाया: "सिवाय उन मुशरिकों के जिनसे आपने संधि की है और फिर उन्होंने आपके साथ कोई कमी नहीं की और न ही आपके विरुद्ध किसी की सहायता की; तो उनके साथ की गई संधि को उनकी अवधि तक पूरा करें। बेशक, अल्लाह परहेज़गारों से प्रेम करता है।"[4] और अल्लाह सर्वशक्तिमान ने फरमाया: "और वादे को पूरा करो; बेशक वादे के बारे में सवाल किया जाएगा।"[5] और उनसे (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम): "मुसलमानों के बीच सुलह जायज़ है, सिवाय उस सुलह के जो हराम को हलाल कर दे या हलाल को हराम कर दे।"[6] और सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

---

1. फतवा अल-हिंदिया, किताबुस सियर, अध्याय छह, दूसरा खंड, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 2/236
2. अल-कुरान अल-करीम, 5/5
3. अल-कुरान अल-करीम, 8/61
4. अल-कुरान अल-करीम, 9/4
5. अल-कुरान अल-करीम, 17/34
6. अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस 30, अल-मकतबा अल-फैसलिया बेरुत, 17/22

فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۴

اسی میں ہے:

لو ان عسکرا من المسلمین دخلوا دار الحرب فاھدی امیرھم الی ملك العدو ھدیة فلابأس به وکذلك لو ان امیر الثغور اھدی الی ملك العدو ھدیة واھدی ملك العدو الیه ھدیة - وقال الله تعالیٰ "وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِیْنَ أُوْتُوا الْکِتٰبَ مِنْ قَبْلِکُمْ إِذَا اٰتَیْتُمُوْھُنَّ أُجُوْرَھُنَّ" ۲ و تمام تحقیقه فی فتاونا وقال تعالیٰ "وَ اِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَھَا" ۳ وقال تعالیٰ "اِلَّا الَّذِیْنَ عٰھَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِکِیْنَ ثُمَّ لَمْ یَنْقُصُوْکُمْ شَیْئًا وَّلَمْ یُظَاھِرُوْا عَلَیْکُمْ اَحَدًا فَأَتِمُّوْا إِلَیْھِمْ عَھْدَھُمْ إِلٰی مُدَّتِھِمْ إِنَّ اللّٰہَ یُحِبُّ الْمُتَّقِیْنَ" ۴ وقال تعالیٰ "وَاَوْفُوْا بِالْعَھْدِ اِنَّ الْعَھْدَ کَانَ مَسْئُوْلًا" ۵ و عنه صلی الله تعالیٰ علیه وسلم الصلح جائز بین المسلمین الاصلحاً احل حراماً او حرم حلالاً ۶ وقال صلی الله تعالیٰ علیه

اگر اسلامی فوج دار الحرب میں داخل ہو، پھر ان کا امیر دشمن کے حکمران کو کوئی ہدیہ پیش کرے تو اس میں کچھ حرج نہیں۔ اور اسی طرح اگر امیر سرحد اسلامی دشمن کے بادشاہ کو کوئی ہدیہ پیش کرے اور دشمن کا بادشاہ اسلامی امیر کو کوئی تحفہ وہدیہ پیش کرے تو دونوں صورتوں میں کچھ مضائقہ نہیں، اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا اور مسلمان پارسا عورتیں، اور ان لوگوں کی پارسا عورتیں جن کو تم سے پہلے کتاب عطا ہوئی (یعنی اہل کتاب یہودی اور عیسائی) جب تم انہیں ان کے مہر ادا کردو (تو پھر ان دونوں سے عقد نکاح کرنا جائز ہے) اور اس کی پوری تحقیق ہمارے فتاویٰ میں مذکور ہے۔ اور اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا: اگر وہ صلح کے لئے جھک جائیں تو پھر تم بھی اس کے لئے جھک جاؤ۔ اور اللہ تعالیٰ نے فرمایا: مگر وہ شرک کرنے والے کہ جن سے تم نے معاہدہ کیا پھر انہوں نے تم سے کوئی کمی نہ کی اور تم پر کسی کو

١ فتاوىٰ ہندیہ کتاب السیر الباب السادس الفاصل الثانی نورانی کتب خانہ پشاور ٢/٢٣٦ ٢ القرآن الکریم ٥/٥ ٣ القرآن الکریم ٦١/٨ ٤ القرآن الکریم ٩/٤ ٥ القرآن الکریم ١٧/٣٤ ٦ المعجم الکبیر حدیث ٣٠ المکتبة الفیصلیة بیروت ٢٢/١٧

...and peace be upon him: Do not betray. 1 ...did not give dominance. Then, fulfill the promise made to them until their specified term. Verily, Allah loves those who fear (Him). And Allah Almighty said: (O people!) Fulfill the promise, for about the promise, there will be questioning (before Allah Almighty). And it is narrated from the Noble Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) that reconciliation is permissible among Muslims, except for that reconciliation which makes the forbidden (haram) lawful (halal) or makes the lawful (halal) forbidden (haram) [such is not permissible]. And the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) said: (O people!) Do not practice deception. (T)

That affiliation and receiving of aid, if it is not conditioned by any matter contrary to Islam or opposed to Sharia, nor leading towards it, then there is no dispute in its permissibility. Otherwise, it will certainly be impermissible and forbidden (haram). However, this non-permissibility will be due to that condition or consequence, not on the basis of an absolute prohibition of the transaction itself for which there is fundamentally no basis in Sharia. And the conduct of these objectors themselves bears witness to the falsehood of their claim; is not benefiting from the rail, telegraph, and post a transaction? The difference is that in receiving aid, money is taken, and in their use, it is given. Strange that in boycott, giving money is lawful (halal) and taking it is forbidden (haram)! The answer given to this is that rail, telegraph, and post were built in our own country with our own money. Glory be to Allah! Does the money for educational aid come from England? That too is from here. So the conclusion remains the same: that in boycott, benefiting others from one's own wealth is prescribed (mashru') and taking it for oneself is forbidden (mamnu'). What is the cure for this inverted logic? But what complaint against this group which has overturned not only Sharia but the very essence of Islam? They made friendship, rather union, rather slavish obedience to polytheists (mushrikeen) obligatory (fard). For the pleasure of Hindus, the symbols of Islam were closed and the symbols of infidelity (kufr) were raised high on foreheads. Shouting 'Jai' (victory) to polytheists, shouting slogans of their praise, making them their imam and guide in their religious need—which they consider not only obligatory but the axis of faith, to the extent that they issue fatwas of infidelity (kufr) against those who do not participate in it—taking a polytheist into the mosque and standing him higher than Muslims and making him a preacher to Muslims, carrying the bier of a polytheist on shoulders to the cremation ground, making the mosque a place of mourning for him, putting up

advertisements for prayers for his forgiveness and funeral prayer, etc., etc. These unspeakable acts are causes of infidelity (kufr) and sources of misguidance (dalal). They even clearly wrote that 'if you please your Hindu brothers, you will please your God.' They clearly wrote that 'we are thinking of making such a religion that will remove the distinction between Hindu and Muslim and will establish Sangam Prayag as a sacred symbol.' They clearly wrote that 'we have [spent] our whole lives [interpreting] the Quran and Hadith as idol worship...'

1 Musnad Ahmad bin Hanbal, from Buraidah al-Aslami (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami Beirut, 8/358.

...और उन पर शांति हो: विश्वासघात मत करो। 1 ...वर्चस्व नहीं दिया। फिर, उनके साथ किए गए वादे को उनकी निर्धारित अवधि तक पूरा करो। निस्संदेह, अल्लाह उन लोगों को पसंद करता है जो (उससे) डरते हैं। और अल्लाह तआला ने फरमाया: (ऐ लोगो!) वादा पूरा करो, क्योंकि वादे के बारे में (अल्लाह तआला के यहाँ) पूछताछ होगी। और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से रिवायत है कि मुसलमानों के बीच सुलह जायज़ है, सिवाय उस सुलह के जो हराम को हलाल और हलाल को हराम ठहराए (ऐसी सुलह जायज़ नहीं है)। और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया: (ऐ लोगो!) धोखाबाज़ी मत किया करो। (त)

वह जुड़ाव और सहायता प्राप्त करना, यदि वह इस्लाम के विरुद्ध या शरीयत के विपरीत किसी बात पर आधारित न हो और न ही उसकी ओर ले जाता हो, तो उसकी वैधता में कोई विवाद नहीं है। अन्यथा, यह निश्चित रूप से अवैध और हराम होगा। लेकिन यह अवैधता उस शर्त या परिणाम के कारण होगी, न कि स्वयं उस लेन-देन के पूर्ण निषेध के आधार पर जिसके लिए शरीयत में मौलिक रूप से कोई आधार नहीं है। और स्वयं इन विरोध करने वालों का आचरण उनके दावे के झूठ का गवाह है: क्या रेल, तार और डाक से लाभ उठाना लेन-देन नहीं है? अंतर यह है कि सहायता प्राप्त करने में धन लिया जाता है, और उनके उपयोग में दिया जाता है। अजीब बात है कि बहिष्कार (मुकातअत) में धन देना हलाल है और लेना हराम! इसका उत्तर यह दिया जाता है कि रेल, तार और डाक हमारे ही देश में हमारे ही पैसों से बने हैं। सुब्हान अल्लाह! क्या शैक्षिक सहायता का पैसा इंग्लैंड से आता है? वह भी यहीं का है। तो निष्कर्ष वही रहा कि बहिष्कार में अपनी संपत्ति से दूसरों को लाभ पहुँचाना शरीयत सम्मत (मशरूअ) है और स्वयं लेना वर्जित (ममनूअ) है। इस उल्टी बुद्धि का क्या इलाज? लेकिन उस कौम से क्या शिकायत जिसने न केवल शरीयत बल्कि इस्लाम के मूल स्वरूप को ही पलट दिया। मुशरिकों (बहुदेववादियों) से मित्रता, बल्कि एकता, बल्कि दासतापूर्ण आज्ञाकारिता को फर्ज़ (अनिवार्य) बना दिया। हिंदुओं की प्रसन्नता के लिए इस्लाम के प्रतीकों को बंद कर दिया गया और कुफ्र (अधर्म) के प्रतीकों को माथे पर ऊँचा किया गया। मुशरिकों की 'जय' पुकारना, उनकी प्रशंसा के नारे लगाना, उन्हें अपनी उस धार्मिक आवश्यकता में इमाम और मार्गदर्शक बनाना—जिसे वे न केवल फर्ज़ बल्कि ईमान का केंद्र मानते हैं, यहाँ तक कि इसमें शामिल न होने वालों पर कुफ्र का फतवा लगाते हैं—मस्जिद में मुशरिक को ले जाकर मुसलमानों से ऊँचा खड़ा करके उन्हें मुसलमानों का उपदेशक (वाइज़) बनाना, मुशरिक की अर्थी कंधों पर उठाकर श्मशान घाट तक ले जाना,

मस्जिद को उनके लिए मातमगाह बनाना, उनके लिए क्षमा की प्रार्थना (दुआ-ए-मगफिरत) और नमाज़-ए-जनाज़ा के विज्ञापन लगाना आदि-आदि। ये अकथनीय कार्य कुफ्र के कारण और गुमराह करने वाले हैं, यहाँ तक कि साफ लिख दिया गया कि 'यदि तुमने अपने हिंदू भाइयों को खुश कर लिया तो तुमने अपने खुदा को खुश कर लिया।' साफ लिख दिया गया कि 'हम ऐसा धर्म बनाने की सोच रहे हैं जो हिंदू और मुस्लिम के भेदभाव को मिटा देगा और संगम प्रयाग को पवित्र प्रतीक बना देगा।' साफ लिख दिया गया कि 'हमने अपनी पूरी उम्र कुरान और हदीस को मूर्ति पूजा...'

1 मुसनद अहमद बिन हंबल, बुरैदा अल-असलमी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत, अल-मकतब अल-इस्लामी, बेरुत, 8/358।

وسلم لاتغدروا ۱۔ غلبہ نہ دیا۔ پھر ان سے ان کی طے شدہ مدت تک ان سے کیا ہوا وعدہ پورا کرو بیشک اللہ تعالٰی ڈرنے والوں کو پسند کرتا ہے۔ اور اللہ تعالٰی نے فرمایا: (لوگو!) وعدہ پورا کرو اس لئے کہ وعدے کے بارے میں (اللہ تعالٰی کے ہاں) باز پرس ہو گی اور حضور اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے روایت ہے کہ صلح مسلمانوں کے درمیان جائز ہے، مگر وہ صلح جو حرام کو حلال اور حلال کو حرام ٹھہرائے (ایسی جائز نہیں) اور حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: (لوگو!) دھوکہ بازی نہ کیا کرو۔ (ت)

وہ الحاق واخذ امداد اگر نہ کسی امر خلاف اسلام و مخالف شریعت سے مشروط نہ اس کی طرف منجر، تو اس کے جواز میں کلام نہیں۔ ورنہ ضرور ناجائز وحرام ہوگا۔ مگر یہ عدم جواز اس شرط یا لازم کے سبب سے ہو گا نہ بربنائے تحریم مطلق معاملہ جس کے لئے شرع میں اصلاً اصل نہیں اور خود ان مانعین کی طرز عمل ان کے کذب دعوٰی پر شاہد، ریل، تار، ڈاک سے تمتع کیا معاملت نہیں۔ فرق یہ ہے کہ اخذ امداد میں مال لینا ہے اور ان کے استعمال میں دینا، عجب کہ مقاطعت میں مال دینا حلال اور لینا حرام، اس کا جواب یہ دیا جاتا ہے کہ ریل تار ڈاک ہمارے ہی ملک میں ہمارے ہی روپے سے بنے ہیں، سبحان اللہ! امداد تعلیم کا روپیہ کیا انگلستان سے آتا ہے وہ بھی یہیں کا ہے تو حاصل وہی ٹھہرا کہ مقاطعت میں اپنے مال سے نفع پہنچانا مشروع اور خود لینا ممنوع۔ اس الٹی عقل کا کیا علاج۔ مگر اس قوم سے کیا شکایت جس نے نہ صرف شریعت بلکہ نفس اسلام کو پلٹ دیا۔ مشرکین سے وداد بلکہ اتحاد بلکہ غلامانہ انقیاد فرض کیا۔ خوشنودی ہنود کے لئے شعار اسلام بند اور شعار کفر کا ماتھوں پر علم بلند۔ مشرکین کی جے پکارنا ان کی حمد کے نعرے مارنا انہیں اپنی اس حاجت دینی میں جسے نہ صرف فرض بلکہ مدار ایمان ٹھہراتے ہیں

یہاں تک کہ اس میں شریک نہ ہونے والوں پر حکم کفر لگاتے ہیں اپنا امام و ہادی بنانا مسجد میں مشرک کو لے جاکر مسلمانوں سے اونچا کھڑا کر کے واعظ مسلمین ٹھہرانا مشرک کی ٹکٹی کندھوں پر اٹھا کر مرگھٹ میں لے جانا مسجد کو اس کا ماتم گاہ بنانا اس کیلئے دعائے مغفرت و نماز جنازہ کے اشتہار لگانا وغیرہ وغیرہ ناگفتہ بہ افعال موجب کفر و مورث ضلال، یہاں تک کہ صاف لکھ دیا کہ اگر اپنے ہندو بھائیوں کو راضی کر لیا تو اپنے خدا کو راضی کر لوگے، صاف لکھ دیا کہ ہم ایسا مذہب بنانے کی فکر میں ہیں جو ہندو و مسلم کا امتیاز اٹھا دے گا اور سنگم پریاگ کو مقدس علامت ٹھہرا دے گا صاف لکھ دیا کہ ہم نے قرآن وحدیث کی تمام عمر بت پرستی

۱ مسند احمد بن حنبل عن بریدۃ الاسلمی رضی اللہ تعالیٰ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۸/۳۵۸

Volume 24 Fatawa Rizvia

...sacrificed. This is friendship (muwalat), this is forbidden, these are acts of disbelief, this is complete misguidance. So Glory be to the Changer of hearts and sights, and there is no power nor strength except with Allah, the One, the Subduer (Pure is the One who turns hearts and eyes; no one has the power to avoid sins and perform good deeds except through the help of Allah Almighty, the Unique and the Most Powerful. - T) And Allah Almighty knows best.

Page 337 of 720

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

...निसार कर दी। यह मुआलात (मैत्री) है, यह हराम है, ये कुफ़्रियात हैं, यह मुकम्मल गुमराही है। पस पाक है दिलों और आँखों को फेरने वाला, और गुनाहों से बचने और नेकी करने की ताक़त किसी में नहीं सिवाय इसके कि अल्लाह तआला जो यकता और सबसे ज़बरदस्त है, मदद फ़रमाए। (त) और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

पेज 337 ऑफ 720

نثار کردی یہ ہے موالات ، یہ ہے حرام، یہ ہیں کفریات، یہ ہے ضلال تام فسبحٰن مقلب القلوب والابصار ولا حول ولا قوۃ الا باللہ الواحد القھار (پاک ہے دلوں اور آنکھوں کا پھیرنے والا، گناہوں سے بچنے اور نیکی کرنے کی قوت کسی میں نہیں بجز اس کے کہ اللہ تعالیٰ یکتا اور سب سے زبردست، مدد فرمائے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

Volume 24 Fatawa Ridawiyya

Oppression and Harm to a Muslim, Abandonment and Severing of Ties

Problem 109: 9 Rabi' al-Thani 1308 AH from Old City What do the scholars of religion say about this matter: Zaid slaughtered a cow at his house for an occasion, and Amr, despite being a Muslim man, forbade the slaughter of the cow and quarreled to the point that he filed a complaint against Zaid. How is this act of Amr according to the noble Sharia? Explain and be rewarded. (t)

The Answer: Shariah-wise, he is guilty of sin. He is not only liable for violating the rights of Allah but also the rights of the servant (fellow human being). It is obligatory upon him to repent to Allah Almighty and seek forgiveness from Zaid for his fault.

From the Prophet (peace and blessings of Allah Almighty be upon him): "There should be no harming nor reciprocating harm in Islam."[1] | It is narrated from the Noble Prophet (peace and blessings of Allah Almighty be upon him) that in Islam, there is neither causing distress nor inflicting distress upon others. (t)

[1] Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 5189, Maktabat al-Ma'arif Riyadh, 6/91; Nasb al-Raya, Chapter: What a man causes in the way, Al-Maktaba al-Islamiyya Riyadh, 4/384.

जिल्द 24 फ़तावा रज़विय्या

मुसलमान पर जुल्म और ईज़ा, और बहिष्कार और सम्बन्ध विच्छेद

मसाला 109: 9 रबी-उल-आख़िर 1308 हिजरी, पुराने शहर से दीन के उलेमा इस मसले में क्या फरमाते हैं कि: ज़ैद ने अपने घर किसी समारोह में गाय ज़बह की और अम्र ने, इसके बावजूद कि वह एक मुसलमान मर्द है, गाय ज़बह करने से मना किया और झगड़ा किया यहाँ तक कि ज़ैद पर शिकायत दर्ज करा दी। अम्र का यह कार्य शरीअत-ए-मुतहरा के अनुसार कैसा है? बयान फरमाएं और सवाब पाएं। (त)

जवाब: शरीअत की दृष्टि में वह गुनहगार हुआ और न सिर्फ हक़ुल्लाह (अल्लाह के हक़) बल्कि हक़ुल-अब्द (बंदे के हक़) में भी मुब्तला हुआ। उस पर फर्ज़ है कि अल्लाह तआला से तौबा करे और ज़ैद से अपना कसूर माफ कराए।

नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से रिवायत है: "इस्लाम में न कोई नुकसान पहुँचाना है और न ही नुकसान का बदला नुकसान से देना है।"[1] | नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से रिवायत है कि इस्लाम में न कोई दुख है न दूसरे को दुख पहुँचाना। (त)

[1] अल-मुअजम अल-औसत, हदीस 5189, मक्तबत अल-मआरिफ रियाद, 6/91; नसब-उर-राया, बाब: मा युहदिसुहुर-रजुलु फिट-तरीक़, अल-मक्तबा अल-इस्लामिया रियाद, 4/384।

पृष्ठ 338 का 720

ظلم وایذائے مُسلم وبجران وقطع تعلق

مسئلہ ۱۰۹: ۹ ربیع الآخر ۱۳۰۸ھ از شہر کہنہ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنے گھر کسی تقریب میں گائے ذبح کی اور عمرو نے باوجودیکہ مردِ مسلمان ہے گائے ذبح کرنے کو منع کیا اور جھگڑا کیا یہاں تک کہ زید پر نالش کردی یہ فعل عمرو کا موافق شرع شریف کے کیسا ہے؟ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائیے۔ ت)

الجواب: شرعاً وہ مرتکب گناہ ہوا اور نہ صرف حق اللہ بلکہ حق العبد میں بھی مبتلا اس پر فرض ہے کہ اللہ تعالیٰ سے توبہ کرے اور زید سے اپنا قصور معاف کرائے۔

عن النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم لاضرر ولاضرار في الاسلام ۱۔ | نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے روایت ہے کہ اسلام میں نہ کوئی دکھ ہے نہ دوسرے کو دکھ پہنچانا۔ (ت)

۱ المعجم الاوسط حدیث ۵۱۸۹ مکتبۃ المعارف ریاض ۶/ ۹۱، نصب الرایۃ باب مایحدثہ الرجل فی الطریق المکتبۃ الاسلامیہ ریاض ۴/ ۳۸۴

Fatawa Razawiyya, Volume 24

The petitioner states that it was not a place where slaughtering cows was legally a crime, rather sacrifice had always taken place there. Therefore, Amr's prohibition can by no means be interpreted as wanting to protect his Muslim brother from legal authorities; instead, it was merely an intention to cause harm and distress, and filing a complaint is clear evidence of this, as is not hidden (t). And Allah Almighty knows best.

Mas'ala 110: 21 Safar 1313 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: A person was asked to contribute funds for making a 'Takht' (tomb model) for Muharram. A contribution of ten annas each was levied on everyone. He also gave, but said, "We will not take the responsibility for this on ourselves; we will give if we want to, and as much as we want." At this, people expelled him from the community and cut off his social ties (Hookah-Pani). Also, the 'Khichra' (dish) he cooked as an offering (Niyaz) for Hazrat Imam (Radi Allahu Anhu) and distributed among Muslims, they prevented people from taking it, saying it was from a 'Bhangi's' (low-caste person's) house. In this situation, what is the Sharia ruling? Clarify and be rewarded (t).

The Answer: In the mentioned case, the allegation placed by the community members against this person is completely void according to Sharia. He is innocent of this charge. In fact, those people who shun him and expel him from the community because of this are sinners. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "La tahajaru wala tadabaru wala tabaghadu wala tanafasu wa kunu 'ibadallahi ikhwana" [1]. People! Do not desert one another, do not turn your backs on each other, do not keep hatred and grudge in your hearts, do not boast over each other (and do not try to compete with one another). O servants of Allah! become brothers among yourselves. (t)

The second allegation against those people is that they committed this violence for refusing to participate in a useless and improper act, and they obstructed 'Niyaz' which is an acceptable and commendable act. And Allah Almighty knows best.

Mas'ala 111: From Bengal, District Noakhali, sent by Molvi Abdul Bari Sahib. 23 Shaban 1320 AH. What is your statement, may Allah have mercy on you (t), that...

---

1. Sahih Muslim, Kitab al-Birr wa al-Sila, Chapter on Prohibition of Suspicion, etc., Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/316

फतावा रज़विया, जिल्द 24

सायल (प्रार्थी) का कहना है कि वह ऐसी जगह नहीं थी जहाँ कानूनी तौर पर गाय ज़िबह करना अपराध हो, बल्कि वहाँ हमेशा से कुर्बानी होती रही है। इसलिए अम्र की मनाही को किसी भी तरह इस पर नहीं समझा जा सकता कि वह अपने मुसलमान भाई को कानूनी कार्रवाई से बचाना चाहता था, बल्कि यह केवल नुकसान पहुँचाने और कष्ट देने का इरादा था, और शिकायत करना इसका स्पष्ट प्रमाण है जैसा कि छिपा नहीं है। (त) वल्लाह तआला आलम।

मसला 110: 21 सफ़र 1313 हिजरी उलमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति से मुहर्रम के तहत (ताज़िया) बनाने में चंदे की भागीदारी के लिए कहा गया। सब पर दस-दस आने डाले गए थे। उसने भी दिए लेकिन कहा कि हम इसकी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर नहीं लेंगे, अगर चाहेंगे तो देंगे और जितना चाहेंगे देंगे। इस पर लोगों ने उसे बिरादरी से निकाल दिया और हुक्का-पानी बंद कर दिया, और जो खिचड़ा उसने हज़रत इमाम रज़ियल्लाहु अन्हु की नियाज़ (प्रसाद) के रूप में पकाकर मुसलमानों में बाँटा, उसे लोगों को लेने नहीं दिया और कहा कि यह भंगी के यहाँ का है। इस सूरत में शरीअत का क्या हुक्म है? बयान फ़रमाएं सवाब पाएँ। (त)

जवाब: उपरोक्त स्थिति में बिरादरी वालों ने उस व्यक्ति पर जो इल्ज़ाम लगाया है, वह शरीअत की दृष्टि से बिल्कुल बातिल (अमान्य) है। वह इस इल्ज़ाम से बरी (मुक्त) है, बल्कि इस वजह से जो लोग उसे छोड़ते हैं और बिरादरी से निकालते हैं, वे गुनाहगार हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "ला तहाजरू वला तदाबरू वला तबागज़ू वला तनाफ़सू व कूनू इबादल्लाहि इख्वाना"।1 लोगो! एक-दूसरे को न छोड़ो और न एक-दूसरे से पीठ फेरो और न आपस में बुग्ज़-ओ-कीना (द्वेष और ईर्ष्या) रखो और न एक-दूसरे पर फ़ख्र करो (और न मुकाबला करने की कोशिश करो)। ऐ अल्लाह के बंदो! आपस में भाई-भाई बन जाओ। (त)

उन लोगों पर दूसरा इल्ज़ाम यह है कि एक फ़ज़ूल और बेजा काम में शरीक होने से इनकार करने पर यह शिद्दत (सख्ती) की और नियाज़, जो कि मक़बूल और महमूद (पसंदीदा) काम है, उसमें अड़चन डाली। वल्लाह तआला आलम।

मसला 111: बंगाल प्रांत के ज़िला नोआखली से, प्रेषक मौलवी अब्दुल बारी साहब। 23 शाबान 1320 हिजरी। मा क़ौलिकुम रज़ियल्लाहु अन्हु (अल्लाह तआला आप पर रहम फ़रमाए, आपका क्या फ़रमान है? त) कि...

1. सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब तहरीमुज़ ज़न इल्ख़, कदीमी कुतुब खाना कराची 2/316

पृष्ठ 339/720

سائل مظہر کہ وہ ایسی جگہ نہ تھی جہاں قانوناً گائے ذبح کرنا جرم ہو بلکہ وہاں ہمیشہ سے قربانی ہوتی ہے تو اس صورت میں عمر و کی ممانعت ہر گز اس پر محمول نہیں ہو سکتی کہ اپنے بھائی مسلمان کو حضرت قانونی سے بچانا چاہتا تھا بلکہ محض قصدِ ایذا و اضرار تھا اور نالش کرنا اس پر دلیل واضح کما لا یخفی (جیسا کہ پوشیدہ نہیں۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۱۰: ۲۱ صفر ۱۳۱۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص سے محرم کے تخت بنانے میں چندہ کی شرکت کو کہا گیا دس دس آنے سب پر ڈالے تھے اس نے بھی دیئے مگر کہا ہم اپنے ذمہ اس کی کر نہ باندھ لیں گے اگر چاہیں گے دیں گے اور جتنا چاہیں گے دیں گے، اس پر لوگوں نے اسے برادری سے نکال دیا اور حقہ پانی ڈال دیا اور کھچڑا جو حضرت امام رضی اللہ تعالٰی عنہ کی نیاز کا اس نے پکا کر مسلمانوں میں تقسیم کیا وہ لوگوں کو نہ لینے دیا اور کہاہیہ بھنگی کے یہاں کا ہے، اس صورت میں شرع کا کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائیے ۔ت)

الجواب: صورت مذکورہ میں اس شخص کے ذمہ جو الزام برادری والوں نے قائم کیا شرع کی رو سے بالکل باطل ہے وہ اس الزام سے بری ہے بلکہ اس وجہ سے جو لوگ اسے چھوڑے اور برادری سے نکالتے ہیں وہ گنہگار ہیں۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں: لا تھاجروا ولا تدابروا ولا تباغضوا ولا تنافسوا و کونوا عباد اللہ اخواناً ۱ ۔ لوگو! ایک دوسرے کو نہ چھوڑو اور نہ ایک دوسرے سے پیٹھ پھیرو اور نہ آپس میں بغض و کینہ رکھو اور نہ ایک دوسرے پر فخر کرو (اور نہ مقابلہ کرنے کی کوشش کرو۔ اللہ کے بندو! آپس میں بھائی بھائی بن جاؤ۔ (ت))

دوسرا الزام ان لوگوں پر یہ ہے کہ ایک فضول و بیجا کام میں شرکت سے انکار پر یہ تشدد کیا اور نیاز میں کہ مقبول و محمود کام ہے رخنہ ڈالا۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۱۱۱: از ملک بنگالہ ضلع نواکھالی مرسلہ مولوی عبدالباری صاحب ۲۳ شعبان ۱۳۲۰ھ ما قولکم رحمکم اللہ (اللہ تعالیٰ آپ پر رحم فرمائے آپ کا کیا فرمان ہے ت) کہ

---

۱ صحیح مسلم کتاب البر والصلۃ باب تحریم الظن الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۳۱۶/۲

Fatawa Rizwia Volume 24

Question: A person forcibly takes the entire property of an orphan for his own use and expenditure, while the poor orphan had nothing else besides that property which this person has taken unjustly. The orphan has to beg from others for food. This person uses excuses and evasions to keep the property, despite being a well-known knowledgeable person. It is also known that he has performed Hajj. Will his deeds be accepted in such a state or not, and what about his other actions? Also, should one maintain greetings and conversation, i.e., the way of the people of Islam, with such a person or not? Please explain from the Holy Quran and authentic Hadiths with references. May you be rewarded.

The Answer: Such a person is a severe tyrant, a sinner, a committer of major sins, and deserves the punishment of Hellfire and the wrath of the All-Powerful. Allah Almighty says:

"Indeed, those who unjustly consume the property of orphans are only consuming fire into their bellies and will be burned in a Blaze." [1]

Indeed, those who consume the wealth of orphans unjustly, they eat fire into their bellies and will soon enter a blazing fire.

The acceptance of deeds and worship of every person is at the discretion of Allah, Glorified and Exalted. However, whatever worship is performed with this impure money will never be accepted.

It is stated in a Hadith: "Verily, Allah is Pure and accepts only that which is pure." [2]

Indeed, Allah Almighty is Pure and accepts only what is pure. (T)

If Hajj was also performed with this same money, then it deserves to be rejected. It is stated in a Hadith: When someone goes for Hajj with forbidden (haram) money and says "Labaik" (at your service), an angel replies to him:

"Neither your 'Labaik' is accepted nor your service, and your Hajj is rejected back to you until you return what is in your hands (of forbidden wealth)." [3]

Neither is your Labaik accepted, nor your service, and your Hajj is rejected back to you until you return this forbidden wealth that is with you.

1. Al-Quran al-Karim 4/10

2. Sunan al-Kubra by al-Bayhaqi, Book of Salat al-Istisqa, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 3/346
3. Ithaf al-Sadat al-Muttaqin, Book of Secrets of Hajj, Chapter Three, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 4/331; Kanz al-Ummal, Hadith 11891, Mu'assasat al-Risalah, Beirut, 5/247; al-Ilal al-Mutanahiyah, Hadith regarding Hajj with forbidden wealth, Hadith 930, Dar Nashr al-Kutub al-Islamiyyah, Egypt, 2/57.

फ़तावा रिज़विया जिल्द 24

प्रश्न: एक व्यक्ति अनाथ की सारी संपत्ति जबरदस्ती अपने निजी खर्च में इस्तेमाल करता है। हालाँकि उस गरीब अनाथ के पास उस संपत्ति के अलावा और कुछ नहीं था जिसे इस व्यक्ति ने अन्यायपूर्वक ले लिया, अब वह दूसरों से माँग कर खाता है। वह व्यक्ति टालमटोल करता है और वह एक प्रसिद्ध विद्वान भी है। यह भी ज्ञात हुआ है कि उसने हज भी किया है। क्या इस स्थिति में उसके ये कर्म स्वीकार्य होंगे या नहीं, और अन्य इबादतें भी? इसके अतिरिक्त, क्या इस व्यक्ति के साथ सलाम-दुआ, यानी इस्लाम के लोगों का तरीका अपनाना चाहिए या नहीं? कृपया पवित्र कुरान और प्रमाणिक हदीसों से संदर्भ सहित स्पष्ट करें। उत्तर दें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: ऐसा व्यक्ति घोर अत्याचारी, पापी, बड़े पापों का अपराधी है, और नरक की आग तथा सर्वशक्तिमान ईश्वर के क्रोध का पात्र है। अल्लाह तआला ने फरमाया:

"इन्नल्लज़ीना या'कुलूना अमवालल यतामा ज़ुल्मन इन्नमा या'कुलूना फी बुतूनीहिम नारन व स-यसलौना सईरा" [1]

बेशक जो लोग अनाथों का माल अन्यायपूर्वक खाते हैं, वे अपने पेट में आग भर रहे हैं और शीघ्र ही वे दहकती आग में झोंके जाएंगे।

कर्मों और इबादत की स्वीकार्यता हर व्यक्ति के लिए अल्लाह सुब्हानहू व तआला के अधिकार में है। हाँ, इस अपवित्र धन से की गई इबादत कभी स्वीकार नहीं होगी।

हदीस में है: "इन अल्लाहा तय्यिबुन ला यक़बलु इल्ला अल-तय्यिब" [2]

बेशक अल्लाह तआला पवित्र है और केवल पवित्र चीज़ ही स्वीकार करता है। (त)

यदि हज भी उसी धन से किया गया है, तो वह खारिज होने के योग्य है। हदीस में है: जो हराम (निषिद्ध) माल से हज के लिए जाता है और जब 'लब्बैक' कहता है, तो फरिश्ता उसे उत्तर देता है:

"ला लब्बैक व ला सा'दैक व हज्जुका मरदूदुन अलैका हत्ता तरुद्दा मा फी यदैक" [3]

न तो तुम्हारी 'लब्बैक' स्वीकार है और न ही तुम्हारी सेवा, और तुम्हारा हज तुम पर वापस लौटा दिया गया है जब तक कि तुम वह हराम धन जो तुम्हारे पास है, वापस न कर दो।

1. अल-कुरान अल-करीम 4/10

2. सुनन अल-कुबरा लिल-बैहकी, किताब सलात अल-इस्तिक्का, दार अल-मआरिफ़ा, बेरूत, 3/346
3. इत्तेहाफ़ अल-सादात अल-मुत्तकीन, किताब असरार अल-हज, अध्याय 3, दार अल-मआरिफ़ा, बेरूत, 4/331; कंज़ अल-उम्माल, हदीस 11891, मुअस्ससाह अल-रिसालाह, बेरूत, 5/247; अल-इलाल अल-मुतनाहियाह, हराम माल से हज के बारे में हदीस, हदीस 930, दार नश्र अल-कुतुब अल-इस्लामियाह, मिस्र, 2/57।

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

ایک شخص مالِ یتیم زبردستی تمام اپنے صرف و خرچ میں لاتا ہے اور بیچارہ یتیم حالانکہ اس کے پاس اور کچھ نہیں تھا سوائے اس جائداد کے جو اس شخص نے ظلماً لے لی دوسروں سے مانگ کر کھاتا ہے اور بسا اوقات کرتا ہے اور وہ شخص حیلہ و حوالہ کرتا ہے اور مشہور علم داں ہے، یہ بھی معلوم ہوا کہ حج بھی کیا ہے، یہ اعمال اس کے ایسی حالت میں مقبول ہوں گے یا نہیں و دیگر عبارات بھی؟ اور نیز اس شخص سے سلام کلام یعنی طریقہ اہلِ اسلام برتنا چاہئے یا نہیں؟ قرآن پاک واحادیث صحیح مع سند بیان فرمائیے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: ایسا شخص سخت ظالم، فاجر، مرتکبِ کبائر، مستحقِ عذابِ نار و غضبِ جبار ہے۔ قال اللہ تعالٰی!

"اِنَّ الَّذِیْنَ یَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْیَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا یَاْكُلُوْنَ فِیْ بُطُوْنِهِمْ نَارًاؕ وَ سَیَصْلَوْنَ سَعِیْرًا" ۱ بیشک جو لوگ یتیموں کے مال ناحق کھاتے ہیں وہ اپنے پیٹ میں آگ بھرتے ہیں اور قریب ہے کہ دوزخ کی بھڑکتی آگ میں جائیں گے۔

قبولِ عمل و عبادت ہر شخص کا حق سبحانہ و تعالٰی کے اختیار ہے، ہاں اس ناپاک سے جو عبادت مال کرے گا ہرگز قبول نہ ہوگی۔ حدیث میں ہے: ان اللہ طیب لایقبل الا الطیب ۲۔ بیشک اللہ تعالٰی پاک ہے اور پاک چیز ہی قبول فرماتا ہے۔ (ت)

حج بھی اگر اسی روپے سے کیا تو مستحقِ مردود ہے۔ حدیث میں ہے: جو حرام مال سے حج کو جائے جب لبیک کہے فرشتہ اسے جواب دیتا ہے: لالبیک ولاسعدیک وحجک مردود علیک حتی ترد

مافی یدیک ۳۔ نہ تیری لبیک قبول، نہ خدمت قبول اور تیرا حج تجھ پر مردود ہے یہاں تک کہ تو یہ مال حرام جو تیرے پاس ہے واپس دے۔

۱ القرآن الکریم ۴ / ۱۰ ۲ سنن الکبری للبیهقی کتاب صلوة الاستسقاء دارالمعرفة بیروت ۳ / ۳۴۶ ۳ اتحاف السادة المتقین کتاب اسرار الحج الباب الثالث دارالمعرفة بیروت ۴ / ۳۳۱، کنزالعمال حدیث ۱۱۸۹۱ مؤسسة الرسالة بیروت ۵ / ۲۴۷، العلل المتناهیة حدیث فی الحج بمال حرام حدیث ۹۳۰ دارنشر الکتب الاسلامیہ مصر ۲ / ۵۷

Fatawa Razawiyya - Volume 24

Initiating Salam (greeting) with such a person is impermissible and a sin. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

[Arabic] 'It is disliked to offer Salam to an open sinner.' [1] | Anyone who is a blatant sinner, giving them Salam is disliked (Makruh). (T)

Muslims should avoid socializing with such a person, nor should they sit with them in agreement, lest their 'fire' (evil influence) spreads to them as well. Allah the Almighty said:

[Arabic] 'And if Satan causes you to forget, then do not sit after remembrance with the wrongdoing people.' [2] | If Satan makes you forget, then do not sit with the wrongdoers after remembering.

And He [Allah] said:

[Arabic] 'And do not incline toward those who do wrong, lest you be touched by the Fire.' [3] | Do not incline towards the wrongdoers, lest the Fire touches you.

And refuge is sought with Allah the Almighty, and Allah the Almighty knows best.

Problem 112: Asked by Farhatullah Sahib from Badaun, 29 Muharram 1332 AH

What do the scholars of religion and the Muftis of the luminous Shariah say about the following issue: A person is respectable, dignified, possesses knowledge, and also adheres to fasting and prayers. Regarding him, a few respectable persons, in the presence of a high-ranking Hindu official who holds that person in high regard, said insultingly, 'This person is a Julaha (weaver) by caste.' What is the ruling of the noble Shariah on saying this? Is the person who said this a sinner? If so, what is the degree of their sin? Please provide a satisfying answer. Explain and be rewarded.

The Answer:

If that person is not actually from the Julaha caste, then this is a lie, a slander, and unjustified harm caused to a Muslim. The speaker has committed multiple major sins (Kaba'ir), is entangled in the violation of human rights (Haqq al-Abd), and is deserving of the punishment of Hellfire. It is obligatory (Fard) upon him to repent and seek forgiveness from that person for his fault; otherwise, he will be detained in Tinat al-Khabal until he brings proof of what he said. And since the statement is contrary to fact, where will the proof come from?

[Footnotes] 1. Durr-e-Mukhtar, Book of Prohibition and Permission, Section on Sale, Mujtabai Press, Delhi, 2/251. 2. The Holy Quran, 6/68. 3. The Holy Quran, 11/113.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 24

ऐसे व्यक्ति से सलाम की पहल करना नाजायज़ और गुनाह है। दुर्रे मुख्तार में है:

[अरबी] 'खुलेआम गुनाह करने वाले (फासिक) को सलाम करना मकरूह है।' [1] | जो कोई खुलेआम फासिक हो उसे सलाम देना मकरूह है। (त)

मुसलमानों को ऐसे व्यक्ति से मेल-जोल नहीं रखना चाहिए, उसके पास सहमति के साथ नहीं उठना-बैठना चाहिए, कहीं उसकी आग (बुरा असर) उनमें भी न फैल जाए। अल्लाह तआला ने फरमाया:

[अरबी] 'और अगर शैतान तुम्हें भुला दे, तो याद आने के बाद ज़ालिम लोगों के साथ न बैठो।' [2] | अगर शैतान तुम्हें भुला दे तो याद आने पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

और फरमाया:

[अरबी] 'और उन लोगों की तरफ न झुको जिन्होंने ज़ुल्म किया, वर्ना तुम्हें आग छुएगी।' [3] | ज़ालिमों की तरफ झुकाव न करो कि तुम्हें आग छुए।

व अल-इयाज़ु बिल्लाहि तआला (अल्लाह की पनाह), और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 112: प्रश्नकर्ता फरहतुल्लाह साहिब, बदायूँ, 29 मुहर्रम 1332 हिजरी

दीन के उलेमा और शरिया के मुफ़्ती इस मसले में क्या फरमाते हैं कि एक व्यक्ति सम्मानित और प्रतिष्ठित है, ज्ञान भी रखता है और रोज़ा-नमाज़ का भी पाबंद है। उसके बारे में कुछ सम्मानित व्यक्तियों ने एक हिंदू उच्च अधिकारी के सामने, जिसकी नज़रों में वह व्यक्ति प्रतिष्ठित माना जाता है, अपमानजनक तरीके से यह कहा कि 'यह व्यक्ति जुलाहा जाति का है'। शरिया के अनुसार ऐसा कहना कैसा है? और क्या ऐसा कहने वाला गुनहगार है या नहीं? यदि है, तो किस दर्जे का गुनहगार है? कृपया संतोषजनक उत्तर दें। बयान करें और सवाब पाएं।

उत्तर:

अगर वह व्यक्ति वास्तव में जुलाहा जाति का नहीं है, तो यह झूठ है, तोहमत है और एक मुसलमान को नाहक दुख पहुँचाना है। कहने वाला कई कबीरा गुनाहों का अपराधी हुआ, हक़-उल-अब्द (बन्दों के अधिकार) के उल्लंघन में फंसा और जहन्नुम की आग की सज़ा का हक़दार हुआ। उस पर फर्ज़ है कि तौबा करे और उस व्यक्ति से अपनी गलती की माफी माँगे, वरना उसे 'तीनतुल खबाल' में तब

तक रोका जाएगा जब तक कि वह अपनी कही बात का सबूत न ले आए। और चूंकि बात हकीकत के खिलाफ है, तो उसका सबूत कहाँ से आएगा?

[पाद-टिप्पणियाँ] 1. दुर्रे मुख्तार, किताबुल हज़र वल इबाहत, फसल फिल बैअ, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 2/251. 2. अल-कुरान अल-करीम, 6/68. 3. अल-कुरान अल-करीम, 11/113.

पृष्ठ 341/720

ایسے شخص سے ابتدا اسلام ناجائز و گناہ ہے۔ در مختار میں ہے:

1- یکرہ السلام علی الفاسق لو معلناً | جو کوئی اعلانیہ فاسق ہوا اسے سلام دینا مکروہ ہے۔ (ت)

مسلمانوں کو ایسے شخص سے میل جول رکھنا، اس کے پاس موافقت کے ساتھ اٹھنا بیٹھنا چاہئے، کہیں اس کی آگ ان میں بھی سرایت نہ کرے۔ قال اللہ تعالٰی:

2- "وَإِمَّا يُنسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرَىٰ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ" | اگر تجھے شیطان بھلا دے تو یاد آنے پر پاس نہ بیٹھ ظالموں کے۔

وقال تعالٰی:

3- "وَلَا تَرْكَنُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ" | ظالموں کی طرف میل نہ کرو کہ تمہیں آگ چھوئے۔

والعیاذ باللہ تعالٰی، واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۱۲: مسئولہ فرحت اللہ صاحب از بدایوں ۲۹ محرم ۱۳۳۲ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرعِ متین مسئلہ ذیل میں کہ ایک شخص معزز با وقعت ہے اور علم بھی رکھتا ہے اور نیز روزہ نماز کا بھی پابند ہے، اس کی نسبت چند معزز اشخاص و ایک ہندو حکامِ اعلٰی کے روبرو جن کے نزدیک وہ شخص با وقعت سمجھا گیا یہ لفظ ایک توہین کے ساتھ کہنا کہ یہ شخص قوم کا جولا ہے یہ کہنا بروئے شرعِ شریف کیسا ہے؟ اور نیز ایسا کہنے والا گنہگار ہے یا نہیں؟ اگر ہے تو کس درجہ کا گنہگار ہے؟ جواب سے تشفی بخشے۔ بینوا توجروا۔

الجواب:

اگر وہ شخص واقع میں قوم کا جولا ہ نہیں تو کذب ہوا، افترا ہوا، مسلمان کی ناحق ایذا ہوئی، کہنے والا متعدد کبائر کا مرتکب ہوا، حق العبد میں گرفتار و مستحق عذابِ نار ہوا، اس پر فرض ہے کہ توبہ کرے اور اس شخص سے اپنی خطا کی معافی چاہے ورنہ طینۃ الخبال میں روکا جائے گا حتی یاتی بنفاد ما قال یہاں تک کہ جو بات کہی اس کا ثبوت لائے: اور جبکہ بات خلافِ واقع ہے تو اس کا ثبوت کہاں سے

[حواشی] 1 درمختار کتاب الحظر والاباحۃ فصل فی البیع مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۲۵۱ 2 القرآن الکریم ۶/ ۶۸ 3 القرآن الکریم ۱۱/ ۱۱۳

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

...will bring. 'Teenat al-Khabal' is the name of a river of pus and blood, hotter than fire, which will collect from the mouths of the dwellers of Hell, and refuge is sought with Allah Almighty. If, in reality, that person was a weaver, but there was no Sharia-based benefit in mentioning it at that time, and the intent was only to cause harm and disgrace, even then this person has sinned. It is still obligatory to repent and seek forgiveness from him. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Whoever harms a Muslim has harmed me, and whoever harms me has harmed Allah. — Whoever harms a Muslim without a valid Sharia reason has harmed me, and whoever harms me has harmed Allah Almighty. (Narrated by Tabarani in Al-Kabir from Hazrat Anas (may Allah be pleased with him) with a good chain of narration).] Narrated by at-Tabarani[1] in al-Kabir from Anas (may Allah be pleased with him) with a good chain of narration.

And if there was some Sharia-based benefit in its disclosure and the matter was factual, then there is no blame on the speaker. And Allah Almighty knows best.

Issue 113: From Lucknow, Aminabad, queried by Sayyid Barkat Ali Sahib Barelvi, Saturday, 25 Shawwal 1334 AH.

What is the ruling on not calling a Sayyid of correct lineage a Sayyid, but instead comparing him to people of improper professions (like Mirasi etc.)? Is prayer permissible behind someone who gives such an example? And is the one who disrespects a Sayyid a misguided person of bad faith or not? Only.

The Answer: Disrespecting a Sunni Sayyid is strictly forbidden. It is stated in a sahih (authentic) hadith:

[Six people are cursed by me, and Allah has cursed them, and every Prophet's prayer is accepted: the one who adds to the Book of Allah, the one who denies the Decree of Allah, and the one who deems lawful regarding my progeny that which Allah has made unlawful... (Hadith[2]). — Six people are those whom I have cursed, may Allah curse them; and the Prophet's prayer is accepted. Among them is the one who adds anything of his own to the Book of Allah, and the one who denies that everything, good and bad, happens by the decree of Allah, and the one who treats my children in a way that Allah has forbidden.]

[1] Kanz al-Ummal, Hadith 25303, 7/102; and Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 3632, 4/373. [2] Sunan at-Tirmidhi, Kitab al-Qadr, Hadith 2141, Dar al-Fikr, Beirut, 4/21.

फतावा रज़विया, जिल्द 24

...लाएगा। 'तीनत-उल-खबाल' उस आग से अधिक गर्म और खोलते हुए पीप और रक्त की नदी का नाम है जो नरकवासियों के मुँह से एकत्र होगी, और अल्लाह तआला की पनाह। और यदि वास्तव में वह व्यक्ति जुलाहा था, लेकिन उस समय उसे प्रकट करने में कोई शरिया लाभ नहीं था, बल्कि केवल उसे कष्ट देना और अपमानित करना उद्देश्य था, तब भी यह व्यक्ति अपराधी हुआ। तौबा करना और उससे क्षमा माँगना अब भी अनिवार्य है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[जिसने किसी मुसलमान को कष्ट पहुँचाया, उसने मुझे कष्ट पहुँचाया और जिसने मुझे कष्ट पहुँचाया, उसने अल्लाह को कष्ट पहुँचाया। — जिसने किसी मुसलमान को बिना किसी शरिया कारण के कष्ट पहुँचाया, उसने मुझे कष्ट पहुँचाया, और जिसने मुझे कष्ट पहुँचाया, उसने अल्लाह अज़्ज़वजल को कष्ट पहुँचाया। (तबरानी ने कबीर में इसे हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हसन सनद के साथ रिवायत किया।)] इसे अत्तबरानी[1] ने कबीर में अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हसन सनद के साथ रिवायत किया।

और यदि इसके प्रकटीकरण में कोई शरिया लाभ था और बात वास्तविक थी, तो कहने वाले पर कोई आरोप नहीं है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 113: लखनऊ, अमीनाबाद से, प्रेषक सैयद बरकत अली साहब बरेलवी, शनिवार, 25 शव्वाल 1334 हिजरी।

किसी सही नसब (वंश) वाले सैयद को सैयद न कहना बल्कि उसे अनुचित पेशावर लोगों (मिरासी आदि) से उदाहरण देना कैसा है? और ऐसा उदाहरण देने वाले के पीछे नमाज़ जायज़ है या नहीं? और सैयद का अनादर करने वाला गुमराह और कुमार्गी है या नहीं? बस।

उत्तर: सुन्नी सैयद का अनादर करना सख्त हराम है। सही हदीस में है:

[छह व्यक्ति वे हैं जिन पर मैंने लानत की है, और अल्लाह ने उन पर लानत की है, और हर नबी की दुआ क़बूल होती है: वह जो अल्लाह की किताब में अपनी ओर से कुछ बढ़ाए, वह जो अल्लाह की तक़दीर को झुठलाए, और वह जो मेरी संतान के प्रति उस चीज़ को हलाल समझे जिसे अल्लाह ने हराम किया है... (हदीस[2])। — छह व्यक्ति वे हैं जिन पर मैंने लानत की है, अल्लाह उन पर लानत

करे; और नबी की दुआ क़बूल है। उनमें से एक वह है जो अल्लाह की किताब में अपनी ओर से कुछ बढ़ाए, और वह जो इस बात से इनकार करे कि सब कुछ, भला और बुरा, अल्लाह की तक़दीर से होता है, और वह जो मेरी संतान के साथ वह व्यवहार करे जिसे अल्लाह ने मना किया है।]

[1] कंज़ुल उम्माल, हदीस 25303, 7/102; और अल-मुअजम अल-औसत, हदीस 3632, 4/373। [2] सुनन अत-तिर्मिज़ी, किताबुल क़द्र, हदीस 2141, दारुल फिक्र बेरुत, 4/21।

لائے گا، طینۃ الخبال اس آگ سے زیادہ گرم اور کھولتے ہوئے پیپ اور لہو کی نہر کا نام ہے جو دوزخیوں کے منہ سے لے کر جمع ہوگی والعیاذباللہ تعالیٰ (اللہ تعالیٰ کی پناہ‌ت)، اور اگر واقع میں وہ شخص جولاہا تھا مگر اس کے اظہار میں اس وقت کوئی مصلحت شرعی نہ تھی صرف اس کی ایذا و تضییح مقصود تھی جب بھی یہ شخص گنہگار ہوا، توبہ کرنا اور اس سے معافی چاہنا اب بھی فرض ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

[من اذی مسلما فقد اذانی ومن اذانی فقد اذی اللہ۔ — جس نے کسی مسلمان کو بلا وجہ شرعی ایذا دی اس نے مجھے ایذا دی اور جس نے مجھے ایذا دی اس نے اللہ عزوجل کو ایذا دی (طبرانی نے کبیر میں اس کو حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے سند حسن کے ساتھ روایت کیا‌ت)] رواہ الطبرانی ۱ فی الکبیر عن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ بسند حسن۔

اور اگر اس کے اظہار میں کوئی مصلحت شرعی تھی اور بات واقعی تھی تو اس قائل پر کوئی الزام نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۱۳: از لکھنؤامین آباد مسئولہ سید برکت علی صاحب بریلوی شنبہ ۲۵ شوال ۱۳۳۴ھ

کسی سید کو صحیح النسب سید نہ کہنا بلکہ اس کو ناجائز پیشہ وروں (میراثی وغیرہ) سے مثال دینا کیسا ہے اور اس مثال دینے والے کے پیچھے نماز جائز ہے یا نہیں؟ اور سید کی بے توقیری کرنے والا گمراہ بد مذہب ہے یا نہیں؟ فقط

الجواب: سنی سید کی بے توقیری سخت حرام ہے، صحیح حدیث میں ہے:

[ستّۃ لعنتہم لعنہم اللہ وکل نبی مجاب الزائد فی کتاب اللہ والمکذب بقدر اللہ والمستحل من عترتی ما حرم اللہ الحدیث ۲۔ — چھ شخص ہیں جن پر میں نے لعنت کی اللہ ان پر لعنت کرے، اور نبی کی دعا قبول ہے از آنجملہ ایک وہ جو کتاب اللہ میں اپنی طرف سے کچھ بڑھائے اور وہ جو خیر و شر سب کچھ اللہ کی تقدیر سے ہونے کا انکار کرے اور وہ جو میری اولاد سے اس چیز کو حلال رکھے جو اللہ نے حرام کیا۔]

۱ کنزالعمال حدیث ۲۵۳۰۳ ۷ / ۱۰۲ والمعجم الاوسط حدیث ۳۶۳۲ ۴ / ۳۷۳ ۲ سنن الترمذی کتاب القدر حدیث ۲۱۴۱ دار الفکر بیروت ۴ / ۲۱

Fatawa Razawiyya Volume 24

And in a Hadith, it is mentioned that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Arabic]: Whoever does not recognize the right of my progeny is not free from one of three things: either he is a hypocrite, or a child of adultery, or his mother conceived him while not in a state of purity (menstruation). — 1 [Urdu]: Whoever does not recognize the right of my progeny is not free from one of three things: either he is a hypocrite, or illegitimate, or a child of menstruation.

It is mentioned in Majma' al-Anhur:

[Arabic]: Whoever calls a scholar 'Uwaylim' or an Alawi 'Ulaywi' out of contempt has indeed committed disbelief. — 2 [Urdu]: Whoever calls a scholar 'Moulwiya' or a Sayyid 'Meero' for the purpose of contempt is a disbeliever.

And there is no doubt that one who despises a Sayyid because of their lineage (Sayyid-hood) is absolutely a disbeliever; praying behind such a person is completely invalid, otherwise, it is disliked (Makruh). And if a person is famous as a Sayyid, even if the reality is not known, to say without Sharia proof that they are not of correct lineage is a clear major sin if it meets the conditions of slander (Qadhf), and such a person deserves eighty lashes, and after that, their testimony is forever rejected. And if the conditions of slander are not met, then at the very least, it is causing harm to a Muslim without Sharia reason, and causing harm to a Muslim without Sharia reason is forbidden (Haram). Allah Almighty says:

[Arabic]: "And those who harm believing men and believing women for [something] other than what they have earned have certainly borne upon themselves a slander and manifest sin." 3 [Urdu]: Those who hurt the hearts of believing men and believing women without them having done (any offensive act), then indeed they have taken upon their heads the burden of making a false accusation and a manifest sin. (T)

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Arabic]: Whoever harms a Muslim has indeed harmed me, and whoever has harmed me has indeed harmed Allah. — 4 [Urdu]: Whoever harms a Sunni Muslim without Sharia reason has indeed harmed me, and whoever has harmed me has indeed

harmed Allah Almighty. And we seek refuge in Allah Almighty. And Allah Almighty knows best.

1 Kanz al-Ummal, Hadith 34199, Muassasat al-Risalah, Beirut, 2/104 2 Majma' al-Anhur Sharh Multaqa al-Abhur, Chapter on Apostates, then these words of disbelief are types, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/295 3 Al-Quran Al-Karim 33/58 4 Al-Mu'jam al-Awsat of Tabarani, Hadith 3233, Maktabat al-Ma'arif, Riyadh, 4/373

फतावा रज़विया जिल्द 24

और एक हदीस में है कि इरशाद फरमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम:

[अरबी]: जो मेरी औलाद का हक़ न पहचाने वह तीन बातों में से एक से खाली नहीं, या तो मुनाफिक है या ज़िना की औलाद या उसकी माँ ने उसे नापाकी (मासिक धर्म) की हालत में धारण किया। — 1 [उर्दू]: जो मेरी औलाद का हक़ न पहचाने वह तीन बातों में से एक से खाली नहीं, या तो मुनाफिक है या हराम (की औलाद) या हैज़ी (मासिक धर्म के दौरान पैदा हुआ) बच्चा।

मजमा अल-अन्हूर में है:

[अरबी]: जो किसी आलिम को 'उवैलिम' या किसी अलवी को 'उलैवी' उनकी हिकारत (अपमान) के लिए कहे, वह काफ़िर हो गया। — 2 [उर्दू]: जो किसी आलिम को 'मौलविया' या सैय्यद को 'मीरो' उसकी तहक़ीर (अपमान) के लिए कहे वह काफ़िर है।

और इसमें शक नहीं जो सैय्यद की तहक़ीर बवजह-ए-सियादत (सैय्यद होने के कारण) करे वह मुतलक़न काफ़िर है, उसके पीछे नमाज़ महज़ बातिल है वरना मकरूह, और जो सैय्यद मशहूर हो अगरचे वाक़ईयत मालूम न हो उसे बिला दलील-ए-शरई कह देना कि यह सहीहुन्नसब (सही खानदान से) नहीं अगर शरायत-ए-क़ज़्फ़ (झूठे आरोप के नियमों) का जामे है तो साफ़ कबीरा (गुनाह) है और ऐसा कहने वाला अस्सी कोड़ों का सज़ावार, और इसके बाद उसकी गवाही हमेशा को मरदूद (रद्द), और अगर शर्त-ए-क़ज़्फ़ न हो तो कम अज़ कम बिलावजह-ए-शरई ईज़ा-ए-मुस्लिम (मुसलमान को दुख पहुँचाना) है और बिलावजह-ए-शरई ईज़ा-ए-मुस्लिम हराम है, अल्लाह तआला फरमाता है:

[अरबी]: "और जो लोग ईमानदार मर्दों और ईमानदार औरतों को बगैर इसके कि उन्होंने (कुछ) कमाया (किया) हो, दुख पहुँचाते हैं, तो बेशक उन्होंने बोहतान और खुले गुनाह का बोझ उठा लिया है।" 3 [उर्दू]: जो लोग ईमानदार मर्दों और ईमानदार औरतों को बगैर इसके कि उन्होंने (कोई बुरा काम) किया हो, उनका दिल दुखाते हैं तो बेशक उन्होंने अपने सर पर बोहतान बाँधने और साफ़ गुनाह का बोझ उठा लिया। (त)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

[अरबी]: जिसने किसी मुसलमान को ईज़ा (दुख) पहुँचाई उसने मुझे ईज़ा पहुँचाई और जिसने मुझे ईज़ा पहुँचाई उसने अल्लाह को ईज़ा पहुँचाई। — 4 [उर्दू]: जिसने बिलावजह-ए-शरई सुन्नी मुसलमान

को ईज़ा (दुख) दी उसने मुझे ईज़ा दी और जिसने मुझे ईज़ा दी उसने अल्लाह अज़्ज़वजल को ईज़ा दी। अल्लाह इससे पनाह दे। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

1 कंज़ुल उम्माल, हदीस 34199, मुअस्ससतुर्-रिसाला, बेरुत, 2/104 2 मजमा उल-अन्हूर शरह मुल्तक़ल अबहुर, बाबुल मुर्तद, दार इह्याउत तुरासिल अरबी, बेरुत, 1/295 3 अल-क़ुरआन अल-करीम, 33/58 4 अल-मुअजमुल औसत लित्तबरानी, हदीस 3233, मकतबतुल मआरिफ़, रियाद, 4/373

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

اور ایک حدیث میں ہے کہ ارشاد فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم:

[عربی]: من لم یعرف حق عترتی فلاحدی ثلث اما منافق واما لـدزانیۃ واما حملتہ امہ علی غیر طھر - 1 [اردو]: جو میری اولاد کا حق نہ پہچانے وہ تین باتوں میں سے ایک سے خالی نہیں، یا تو منافق ہے یا حرام یا حیضی بچہ۔

مجمع الانہر میں ہے:

[عربی]: من قال لـعـالـم عویلم او لـعلوی علیوی استخفافا فقد کفر - 2 [اردو]: جو کسی عالم کو مولوی یا سید کو میرو اس کی تحقیر کے لئے کہے وہ کافر ہے۔

اور اس میں شک نہیں جو سید کی تحقیر بوجہ سیادت کرے وہ مطلقاً کافر ہے اس کے پیچھے نماز محض باطل ہے ورنہ مکروہ، اور جو سید مشہور ہو اگرچہ واقعیت معلوم نہ ہو اسے بلا دلیل شرعی کہہ دینا کہ یہ صحیح النسب نہیں اگر شرائط قذف کا جامع ہے تو صاف کبیرہ ہے اور ایسا کہنے والا اسی کوڑوں کا سزاوار، اور اس کے بعد اس کی گواہی ہمیشہ کو مردود، اور اگر شرط قذف نہ ہو تو کم از کم بلاوجہ شرعی ایذائے مسلم ہے اور بلاوجہ شرعی ایذائے مسلم حرام، قال اللہ تعالٰی:

[عربی]: "وَالَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَیْرِ مَا اکْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُھْتَانًا وَّ اِثْمًا مُّبِیْنًا" 3 [اردو]: جو لوگ ایماندار مردوں اور ایماندار عورتوں بغیر اس کے کہ انہوں نے (کوئی معیوب کام) کیا ہو ان کا دل دکھاتے ہیں تو بیشک انہوں نے اپنے سر پر بہتان باندھنے اور صریح گناہ کا بوجھ اٹھالیا (ت)

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

[عربی]: من اذی مسلما فقد اذاني ومن اذاني فقد اذی اللہ - 4 [اردو]: جس نے بلاوجہ شرعی سنی مسلمان کو ایذا دی اس نے مجھے ایذا دی اور جس نے مجھے ایذا دی اس نے اللہ عزوجل کو ایذا دی۔ والعیاذ باللہ تعالیٰ عنہ۔ واللہ تعالٰی اعلم

1 کنز العمال حدیث ۳۴۱۹۹ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۲ / ۱۰۴ 2 مجمع الانہر شرح ملتقی الابحر باب المرتد ثم ان الفاظ الکفر انواع داراحیاء التراث العربی بیروت ۱ / ۲۹۵ 3 القرآن الکریم ۵۸/۳۳ 4 المعجم الاوسط للطبرانی حدیث ۳۲۳۳ مکتبۃ المعارف ریاض ۴ / ۳۷۳

Fatawa Rizvia, Volume 24

Problem 114: From the town of Sadi Abad, District Ghazipur, sent by Sheikh Muhammad Ali Hussain Sahib, 24th Dhu al-Qi'dah 1335 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say regarding this: A person named Mughal Khan from the Nat community became a Muslim. After becoming a Muslim, he offers prayers, fasts, recites the Holy Quran, and has built a mosque where he performs the five daily prayers. However, some people say that the women in his house still practice tattooing. But this newly converted Muslim denies it, saying that nothing like that happens anymore. So, is it Sharia-permissible to eat and drink with such a new Muslim and consume his leftovers? If it is permissible, then do those who are harsh towards people eating with such a new Muslim, boycott them, and disgrace them, oppose the noble Sharia or not? What is the Sharia ruling regarding such people?

The Answer: Al-Jawab: Getting tattoos on the body is Sharia-forbidden, and having ill suspicion about a Muslim is even more forbidden. When he denies it and there is no sufficient Sharia evidence, then to consider him lowly and disgrace him based solely on suspicion is strictly forbidden. Yes, if it is proven by Sharia evidence that this act occurs at his place, then there are two possibilities: either he is not pleased with it, forbids it, and manages it as much as necessary, but the women do not listen – in this case, there is no blame on him. Allah Almighty says: "And no bearer of burdens will bear the burden of another."[1] No soul shall bear the burden (weight) of another soul. (T) And if it is proven by Sharia evidence that he is pleased with this heinous act, then undoubtedly he is deserving of reproach and boycott, for this is not just a sin, but rather, God forbid, it carries the scent of disbelief (Kufr), as they are still persisting in those impure habits. And Allah Almighty knows best.

Problem 115: From Swai Madhopur, town of Sangod, State of Kota Rajputana, sent by Alif Khan, Manager of Madrasa Anjuman-e-Islamia, 12th Dhu al-Hijjah 1335 AH. Is it permissible to eat with someone born out of wedlock (illegitimate child), and when he becomes a scholar, is his leadership in prayer (Imamat) valid or not, and can he be called illegitimate (harami)?

The Answer: Al-Jawab: Eating with him and, on the condition of him being a scholar, praying behind him are both valid, and to [address] him in this manner...

[1] Al-Quran al-Karim 6/164 Page 344 of 720

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 24

मसला 114: कस्बा सादी आबाद, जिला गाजीपुर, प्रेषक शेख मुहम्मद अली हुसैन साहब, 24 ज़िल-कादा 1335 हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस बारे में क्या कहते हैं: मुगल खान नाम का एक व्यक्ति जो नट समुदाय से था, मुसलमान हो गया। मुसलमान होने के बाद वह नमाज़ पढ़ता है, रोज़ा रखता है, पवित्र कुरान की तिलावत करता है, उसने एक मस्जिद बनवाई है जिसमें वह पांच वक्त की नमाज़ अदा करता है। लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि उसके घर की औरतें गोदना (टैटू) गुदवाती हैं। मगर उस नट नव-मुस्लिम का इनकार है कि अब कुछ नहीं होता है। तो क्या ऐसे नव-मुस्लिम के साथ खाना-पीना और उसका जूठा खाना-पीना शरीयत के अनुसार जायज़ है या नहीं? अगर जायज़ है, तो जो लोग ऐसे नव-मुस्लिम के साथ खाने वालों पर सख्ती करते हैं, उन्हें छोड़ देते हैं और उन्हें अपमानित करते हैं, क्या वे शरीयत का विरोध करते हैं या नहीं? ऐसे लोगों के बारे में शरीयत का क्या हुक्म है?

उत्तर: अल-जवाब: शरीर पर गोदना गुदवाना शरीयत में हराम है, और मुसलमान पर बुरा गुमान (संदेह) करना उससे भी बड़ा हराम है। जब वह इनकार करता है और कोई पर्याप्त शरीयत प्रमाण न हो, तो केवल संदेह के आधार पर उसे नीच समझना और अपमानित करना सख्त हराम है। हाँ, अगर शरीयत प्रमाण से यह सिद्ध हो जाए कि यह कार्य उसके यहाँ होता है, तो अब दो स्थितियाँ हैं: या तो वह इससे सहमत नहीं है, मना करता है और अपनी क्षमता अनुसार प्रबंध करता है लेकिन औरतें नहीं मानतीं, तो भी उस पर कोई दोष नहीं है। अल्लाह तआला ने फरमाया: "और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा।"[1] कोई भी जान किसी दूसरी जान का बोझ (वजन) नहीं उठाएगी। (त) और अगर यह शरीयत प्रमाण से सिद्ध हो जाए कि वह इस घृणित कार्य पर सहमत है, तो निस्संदेह वह तिरस्कार और त्याग के योग्य है, क्योंकि यह न केवल पाप है, बल्कि इसमें माज़अल्लाह कुफ्र (अविश्वास) की बू आती है कि वे अभी भी उन अपवित्र आदतों पर कायम हैं। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 115: सवाई माधोपुर, कस्बा सांगोद, रियासत कोटा राजपूताना, प्रेषक अलिफ़ खान, प्रबंधक मदरसा अंजुमन-ए-इस्लामिया, 12 ज़िल-हिज्जा 1335 हिजरी। क्या किसी अवैध संतान (वल्दुज़िना) के साथ खाना खाना और जब वह विद्वान (आलिम) बन जाए तो उसकी इमामत (नमाज़ का नेतृत्व) सही है या नहीं, और क्या उसे 'हरामी' कहा जाएगा?

उत्तर: अल-जवाब: उसके साथ खाना खाना और विद्वान होने की शर्त पर उसके पीछे नमाज़ पढ़ना दोनों सही हैं और उसे इस तरह से...

[1] अल-कुरान अल-करीम 6/164 पृष्ठ 344 का 720

مسئلہ ۱۱۴: قصبہ سادی آباد ضلع غازیپور مرسلہ شیخ محمد علی حسین صاحب ۲۴ ذی القعدہ ۱۳۳۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیان شرع متین اس بارہ میں کہ ایک شخص مغل خاں نام قوم نٹ کا مسلمان ہوا اور بعد مسلمان ہونے کے وہ نماز پڑھتا ہے روزہ رکھتا ہے کلام مجید کی تلاوت کرتا ہے اس نے مسجد بنوائی ہے اس میں نماز پنجگانہ ادا کرتا ہے لیکن بعض لوگ کہتے ہیں کہ اس کے گھر کی عورتیں گودنا گودتی ہیں مگر اس نٹ نو مسلم کو انکار ہے کہ اب کچھ نہیں ہوتا ہے پس ایسے نو مسلم کے ساتھ کھانا پینا اور اس کا جھوٹا کھانا اور پانی پینا شرعاً جائز ہے یا نہیں؟ اگر جائز ہے تو جو لوگ ایسے نو مسلم کے ساتھ کھانے والوں پر سختی کرتے ہیں ان کو ترک کرتے ہیں اور ان کا فضیحتا کرتے ہیں وہ شرع شریف کا مقابلہ کرتے ہیں یا نہیں؟ ایسے لوگوں کے بارے میں شرع کا کیا حکم ہے؟

الجواب: بدن گودوانا شرعاً حرام ہے، اور مسلمان پر بدگمانی اس سے بڑھ کر حرام، جب وہ انکار کرتا ہے اور کوئی ثبوت شرعی کافی نہ ہو تو محض بدگمانی کی بناء پر اسے ذلیل سمجھنا اور تفضیح کرنا سخت حرام ہے، ہاں اگر ثبوت شرعی سے ثابت کہ یہ فعل اس کے یہاں ہوتا ہے تو اب دو صورتیں ہیں، یا تو وہ اس پر راضی نہیں منع کرتا ہے بقدر ضرورت بندوبست کرتا ہے اور عورتیں نہیں مانتیں جب بھی اس پر الزام نہیں، قال اللہ تعالٰی "لَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰی"۔ ۱۔ کوئی جان کسی دوسری جان کا بوجھ (وزن) نہیں اٹھائے گی۔ (ت) اور اگر یہ ثبوت شرعی ثابت ہو کہ وہ اس فعل شنیع پر راضی ہے تو بلا شبہ قابل ملامت ولائق ترک ہے کہ یہ نہ گناہ نہیں ہے بلکہ اس میں معاذ اللہ بوئے کفر آتی ہے کہ ابھی انہیں ناپاک عادتوں پر قائم ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۱۵: از سوائی مادھوپور قصبہ سانگور ریاست کوٹہ راجپوتانہ مرسلہ الف خاں مہتمم مدرسہ انجمن اسلامیہ ۱۲ ذی الحجہ ۱۳۳۵ھ ولد الزنا کے ساتھ کھانا کھانا اور جبکہ وہ عالم ہو جائے تو اس کی امامت درست ہے یا نہیں اور کیا اس کو حرامی کہا جائے گا؟

الجواب: اس کے ساتھ کھانا اور بشرط علم اس کے پیچھے نماز دونوں درست ہیں اور اسے اس طور پر...

۱ القرآن الکریم ۶/۱۶۴ صفحہ 344 از 720

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

To call something 'Haram' in a way that causes distress to others is not permissible. And Allah Almighty knows best.

Problem 116: From the city behind Kotwali, questioned by Qaisar Hussain, 7 Shawwal 1337 AH. What do the scholars of religion say in this matter: Zaid has a paternal uncle and a sister. There was always a grievance between Zaid's uncle and Zaid's father, to the extent that Zaid's father passed away without meeting his brother. After his father's death, Zaid continued to meet his uncle and his sister. Later, Zaid's mother also passed away, after which a severe rift occurred between Zaid's sister and the uncle. Now, Zaid's sister tells her real brother Zaid, "If you meet your uncle, I will not meet you; if you want to meet me, do not meet your uncle." Now it is time for Zaid's marriage, and he is the only brother of his sister. If Zaid does not listen to his sister, she will be deeply hurt. Since their parents have passed away and he is her only brother, she cannot participate in his wedding due to the uncle's presence. In such a situation, what should Zaid do? That is, should Zaid follow his sister's wish and keep her happy and include her in the wedding, or should he choose his uncle? He would have to leave either his sister or his uncle, because Zaid cannot please his sister without leaving his uncle, nor can his sister participate in the wedding.

Answer: Both the sister and the uncle are close blood relatives (Dhu-Rahm Muhram); severing ties with either of them is not permissible. He should try to please his sister in any way possible, even if it means secretly inviting his uncle to the wedding and telling his sister, "I agree with you in every way for your sake; I will not invite them nor include them. All I ask of you is that if they come on their own accord, don't be angry with me, because they are in the place of our father. If an outsider comes uninvited, it's uncivilized to turn them out, let alone a father figure." In short, he should use ambiguous statements to try and satisfy both and he will be rewarded for this. When he says "I will not invite them," he should mean "I will not personally go to invite them," even if he sends someone else or a letter. When he says "their coming," he should mean "coming on their own feet," not "me carrying them over." In essence, he should speak in a way that has double meanings; the meaning of using 'lying/ falsehood' phrases here is that they may appear false on the surface but have a true intended meaning. It is stated in a Hadith:

"Indeed, in double-meanings there is an escape from lying." | Indeed, there is an alternative to lying in talking through hints.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

हराम कहना जिसमें उसे ईज़ा (कष्ट) हो, जायज़ नहीं है। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 116: शहर अक़ब कोतवाली से, मुस्तफ़सीर (पूछने वाले) क़ैसर हुसैन, 7 शव्वाल 1337 हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद का एक ताया (बड़ा चाचा) है और एक बहन है। ज़ैद के ताया और ज़ैद के वालिद के बीच हमेशा रंजिश (दुश्मनी) रही, यहाँ तक कि ज़ैद के वालिद का इंतकाल हो गया मगर ज़ैद के वालिद अपने भाई से नहीं मिले। ज़ैद अपने वालिद के मरने के बाद अपने ताया और अपनी बहन से मिलता रहा। फिर ज़ैद की वालिदा का भी इंतकाल हो गया, इसके बाद ज़ैद की बहन और ताया के बीच सख्त रंजिश हो गई। अब ज़ैद की बहन अपने सगे भाई ज़ैद से कहती है कि "अगर तुम अपने ताया से मिलोगे तो मैं तुमसे नहीं मिलूँगी। अगर मुझसे मिलना मंज़ूर है तो अपने ताया से मत मिलो।" अब ज़ैद की शादी का वक्त आया और ज़ैद अपनी बहन का इकलौता भाई है। अगर ज़ैद अपनी बहन की बात नहीं मानता है तो ज़ैद की बहन को बहुत ज़्यादा दुःख होगा। चूँकि उसके माता-पिता का इंतकाल हो चुका है और यह उसका इकलौता भाई है और वह ताया की भागीदारी की वजह से उसकी शादी में शरीक नहीं हो सकती। ऐसी स्थिति में ज़ैद को क्या करना चाहिए? यानी ज़ैद को अपनी बहन की बात माननी चाहिए और उसे खुश करना चाहिए और उसे शादी में शरीक करना चाहिए, या अपने ताया को चुनना चाहिए? ज़ैद को अपनी बहन को छोड़ना चाहिए या अपने ताया को, क्योंकि ज़ैद अपने ताया को छोड़े बिना अपनी बहन का दिल खुश नहीं कर सकता और न ही उसकी बहन शादी में शरीक हो सकती है।

अल-जवाब (उत्तर): बहन और चाचा दोनों 'ज़ी-रहम महरम' (करीबी खून के रिश्तेदार) हैं, किसी से भी रिश्ता तोड़ना जायज़ नहीं है। उसे चाहिए कि अपनी बहन को जिस तरह मुमकिन हो राज़ी करे। भले ही इस तरह कि गुप्त रूप से अपने चाचा को शादी में शामिल होने की दावत दे दे और अपनी बहन से कह दे कि "मुझे हर तरह से तेरी खुशी मंज़ूर है, मैं न तो उन्हें बुलाऊँगा और न शरीक करूँगा। बस तुझसे इतना चाहता हूँ कि अगर वो खुद आ जाएँ तो मुझ पर नाराज़ न होना, क्योंकि वे तेरे और मेरे दोनों के बाप की जगह हैं। अगर कोई अजनबी बिन बुलाए आ जाए तो उसे निकालना बदतमीज़ी है, फिर वो तो बाप समान हैं।" संक्षेप में, वह हेर-फेर वाली (दोहरे अर्थ वाली) बातों से दोनों को राज़ी करने की कोशिश करे और इस पर पुण्य पाएगा। "मैं उन्हें नहीं बुलाऊँगा" से उसका मतलब यह हो कि "मैं खुद बुलाने नहीं जाऊँगा", चाहे वह किसी और को भेज दे या पत्र भेज दे।

"उनके आने से" उसका मतलब यह हो कि "वे अपने पैरों से चलकर आएँ', न कि "मैं उन्हें उठा कर लाऊँ। संक्षेप में, वह ऐसी बात कहे जिसका ज़ाहिरी (दिखने वाला) अर्थ झूठ लगे लेकिन दिल में उसका अर्थ सच हो। हदीस में फ़रमाया गया है:

"बेशक, इशारों में बात करने में झूठ से बचने का रास्ता है।" | बेशक इशारों में गुफ़्तगू करने में झूठ से नजात है।

فتاوی رضویہ، جلد ۲۴

حرام کہنا کہ جس میں اسے ایذا ہو جائز نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم مسئلہ ۱۱۶: از شہر عقب کوتوالی مسئولہ قیصر حسین ۷ شوال ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کے ایک تایا ہے اور ایک بہن ہے، زید کے تایا اور زید کے والد میں ہمیشہ رنج رہی یہاں تک کہ زید کے والد کا انتقال ہو گیا مگر زید کے والد اپنے بھائی سے ملے نہیں، زید اپنے والد کے مرنے کے بعد اپنے تایا سے اور اپنی ہمشیرہ سے ملتا رہا، پھر زید کی والدہ کا بھی انتقال ہو گیا، اس کے بعد زید کی بہن اور تایا کے درمیان سخت رنجش ہو گئی۔ اب زید کی بہن اپنے سگے بھائی زید سے یہ کہتی ہے کہ تم اگر اپنے تایا سے ملو گے تو میں تم سے نہیں ملوں گی اگر تجھ سے ملنا منظور ہے تو اپنے تایا سے مت ملو۔ اب زید کی شادی کا وقت آیا اور زید اپنی بہن کا ایک ہی بھائی ہے اگر زید اپنی بہن کا کہنا نہیں کرتا ہے تو زید کی بہن کو انتہا درجہ کا صدمہ ہوتا ہے۔ چونکہ اس کے والدین کا انتقال ہو چکا ہے اور یہ ایک ہی اس کے بھائی ہے اور وہ اس کی شادی میں شریک نہیں ہو سکتی بوجہ تایا کی شرکت کے، ایسی حالت میں زید کو کیا کرنا چاہئے یعنی زید کو اپنی بہن کا کہنا اور خوشی کرنا چاہئے اور اپنی بہن کو شادی میں شریک کرنا چاہئے یا اپنے تایا کو، اور اپنی بہن کو چھوڑنا چاہئے یا اپنے تایا کو، کیونکہ زید بغیر اپنے تایا کو چھوڑے ہوئے اپنی بہن کا دل خوش نہیں کر سکتا اور نہ اس کی بہن شادی میں شریک ہو سکتی ہے۔ الجواب: بہن اور چچا دونوں ذی رحم محرم ہیں کسی سے قطع کرنا اس کو جائز نہیں اسے چاہئے اپنی بہن کو جس طرح ممکن ہو راضی کرے اگر چہ یوں کہ خفیہ اپنے چچا کو شادی میں شریک ہونے کی دعوت دے اور اپنی بہن سے کہہ دے کہ مجھے ہر طرح تیری خاطر منظور ہے نہ ان کو بلاؤں گا نہ شریک کروں گا اتنا تجھ سے چاہتا ہوں کہ وہ اگر اپنے آپ آجائیں تو اس پر مجھ سے ناراض نہ ہو

کیونکہ وہ تیرے اور میرے دونوں کے باپ کی جگہ ہیں غیر آدمی بے بلائے ہوئے آجائیں تو ان کو نکالنا بے تہذیبی ہے نہ کہ باپ کو ، غرض جھوٹے سچے فقرے ملا کر دونوں کو راضی کر سکے کرے اور اس پر اجر پائے گا میں ان کو نہ بلاؤں گا۔ مراد یہ رکھے کہ میں خود ان کو بلانے نہ جاؤں گا اگرچہ آدمی یا رقعہ بھیجوں، آپ چلے آنے سے یہ مراد رکھے کہ وہ اپنے پاؤں سے چلے آئیں نہ یہ کہ میں اٹھا کر لاؤں، غرض پہلو دار بات کہے جھوٹے سچے فقرے سے مراد یہی ہے کہ اس کا ظاہر جھوٹ اور مرادی معنی سچ۔ حدیث میں فرمایا: ان في المعاریض لمندوحة عن | بیشک اشاروں میں گفتگو کرنے میں سے جھوٹ Page 345 of 720

Fatawa-e-Razvia Volume 24

...is a lie. And Allah Almighty knows best. ...is free [from it]. And Allah Almighty knows best (T).

Question 117 to 120: From Agra, Syed Barh Alam Ganj, sent by Taj Muhammad Sahib 11 Shawwal 1337 AH What do the scholars of religion say regarding these matters? A person named 'Zaid' abandons fasting and prayers, is a usurper, a severe oppressor, and extremely powerful. He forcibly buys whoever's property he wishes and does not pay the full amount. He has embezzled thousands of rupees from people. Common people are aggrieved, and the ultimate cruelty is that whoever he finds opposing his will, he gathers five to ten people from his circle and shuts down their business, market activities, marriages, and expels them from the community. This causes extreme suffering, loss of honor, notoriety, hardship, hunger, and humiliation. Since a person's profession is their means of livelihood, when the profession is shut down, that oppressed person, along with their dependents, is ruined by starvation. Although the entire community is unhappy with him, they remain silent out of fear. Therefore, the questions are: (1) What punishments does such an oppressive and tyrant person deserve according to the commands of Allah and His Messenger (peace and blessings of Allah be upon him)? (2) What rulings apply to the helpers of this tyrant, by whose strength he commits these oppressions? (3) Should the other faithful members of the community follow the unjust commands of the tyrant? Or should they excommunicate him from the Islamic brotherhood for the crimes of adultery, wine drinking, coercion, and oppression? Was it mandatory to stop greetings, socializing, eating/drinking, and transactions with him, or what? And is it mandatory for his companions and helpers to repent from the tyrant with contempt, or what? (4) What is the ruling for those who, after hearing the fatwa, do not act upon it, persist in stubbornness, do not help the oppressed, and prefer the command of the tyrant over Allah and His Messenger?

The Answer: (1) A person possessing the characteristics mentioned in the question is deserving of the punishment of fire, the wrath of the All-Compelling (Al-Jabbar), and the curse of the Sustainer. We seek refuge in Allah Almighty. He causes pain to Allah and His Messenger, and one who causes pain to Allah and His Messenger does not attain success. Allah the Mighty and Sublime says:

[1] Al-Sunan al-Kubra by al-Bayhaqi, Book of Testimonies, Chapter of Evasions, etc. Dar Sader, Beirut, 10/199. Page 346 of 720

झूठ है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। से आज़ादी है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (त)।

मसला 117 से 120: आगरा, सैयद बाढ़ आलम गंज से, प्रेषक ताज मोहम्मद साहिब 11 शव्वाल 1337 हिजरी दीन के उलेमा इन मसलों में क्या फरमाते हैं कि 'ज़ैद' नामी शख्स रोज़ा और नमाज़ छोड़ने वाला, गसब करने वाला, सख्त ज़ालिम और ज़बरदस्त काबू पाने वाला है। वह जिसका चाहता है माल जबरन खरीद लेता है और पूरा रुपया नहीं देता है। हज़ारों रुपये लोगों के मार खाया है। आम लोग दुखी हैं और सख्त ज़ुल्म यह है कि जिन खुदा के बंदों को अपनी मर्जी के खिलाफ पाता है, तो अपने मेल के दस-पाँच लोगों को जमा करके जिसका चाहता है कारोबार, बाज़ार, निकाह, शादी, बिरादरी से खारिज करके सब बंद कर देता है, जो सख्त तकलीफ पहुँचाने, आबरू रेज़ी, बदनामी, तंगी, भूख और अपमान का कारण होता है। चूँकि जिस शख्स का जो पेशा (व्यवसाय) होता है, वह अपनी गुजर-बसर उसी पेशे से करता है, जब पेशा बंद हो जाता है तो वह मज़लूम अपने घर वालों के साथ फाकाकशी करके तबाह व बर्बाद हो जाता है। हालाँकि पूरी बिरादरी के लोग उससे दुखी हैं, लेकिन डर के मारे खामोश हैं। इसलिए सवाल यह है कि: (1) ऐसा ज़ालिम और ज़बरदस्ती करने वाला शख्स अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के हुक्म से किन-किन सज़ाओं का हक़दार है? (2) ज़ालिम के मददगार, जिनके बल पर वह ज़ुल्म करता है, वे किस-किस हुक्म के लायक हैं? (3) क्या बिरादरी के दूसरे ईमान वालों को ज़ालिम की नाहक बात माननी चाहिए? या उसका हुक्म, ज़िना, शराबखोरी, ज़बरदस्ती और ज़ुल्म के जुर्म में उसे बिरादरी-ए-इस्लाम से बाहर करना और उससे सलाम, मेल-जोल, खाने-पीने और लेन-देन बंद करना वाजिब था या क्या? और क्या उसके साथियों और मददगारों को ज़ालिम से तौबा करके घृणा करना वाजिब है या क्या? (4) जो लोग फतवा सुनकर अमल न करें, ज़िद और हठ करें, मज़लूम की मदद न करें और ज़ालिम के हुक्म को अल्लाह और रसूल पर तरजीह दें, उनके लिए क्या हुक्म है?

अल-जवाब (उत्तर): (1) जिस शख्स में सवाल में बताई गई बातें हों, वह आग के अज़ाब, अल्लाह के गज़ब और रब की लानत का मुस्तहिक (पात्र) है। हम इससे अल्लाह तआला की पनाह माँगते हैं। वह अल्लाह और उसके रसूल को तकलीफ देता है और अल्लाह और उसके रसूल को तकलीफ पहुँचाने वाला कभी सफल नहीं होता। अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फरमाता है:

[1] अस-सुनन अल-कुबरा लिल-बैहकी, किताबुश-शहादात, बाबुल्-मआरिज़ आदि, दार सादिर बेरूत, 10/199. पेज 346 ऑफ़ 720

الکذب - واللہ تعالٰی اعلم۔ سے آزادی ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۱۷تا۱۲۰: از آگرہ سید باڑھ عالم گنج مرسلہ تاج محمد صاحب ۱۱ شوال ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں کہ زید شخص تارک صوم وصلوۃ، غاصب، سخت جابر و ظالم زبردست قابو یافتہ ہے وہ چاہے جس کا مال جبراً خرید لیتا ہے اور پورا روپیہ نہیں دیتا ہے ہزارہا روپیہ لوگوں کا مار کھایا ہے عام لوگ نالاں ہیں اور سخت ظلم یہ ہے کہ جن بندگان خدا کو اپنی مرضی کے خلاف پاتا ہے تو اپنے میل کے دس پانچ اشخاص جمع کرکے چاہے جس کا کاروبار بازار نکاح شادی برادری سے خارج کرکے سب بند کردیتا ہے کہ جو باعث اشد ایذا رسانی وآبرو ریزی بدنامی تنگی گرسنگی ہتک حرمت کا ہوتا ہے چونکہ جس شخص کا جو پیشہ ہوتا ہے وہ اپنے گزر اوقات اس پیشہ سے کرتا ہے جب پیشہ بند ہو جاتا ہے تو وہ مظلوم مع اپنے متعلقین کے فاقہ کشی کرکے تباہ و برباد ہو جاتا ہے حالانکہ تمام برادری کے لوگ اس سے نالاں ہیں لیکن بخوف دم نہیں مارتے خاموش ہیں اس لئے کہ سوال یہ ہے کہ: (۱) یہ کہ ایسا شخص ظالم جابر بھول بحکم خدا اور رسول صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کس کس سزا کا سزاوار ہے؟ (۲) یہ کہ جابر ظالم کے مددگار انکہ جن کے زور ظلم ظالم کرتا ہے کس کس حکم کے لائق ہیں؟ (۳) دیگر اہل برادری ایمان داران کو ظالم جابر کا ناحق ماننا چاہئے یا اس کا حکم بجرم زنا و شراب خوری و جبر و ظلم کے اس کو برادری اسلام سے خارج کرنا اور اس سے سلام میل جول خورد نوش لین دین ترک کرنا واجب تھا یا کیا اور اس کے ساتھی و مددگاران کو ظالم سے توبہ کرکے حقارت واجب ہے یا کیا؟ (۴) جو لوگ فتوٰی سن کر عمل نہ کریں ضد و ہٹ کریں مظلوم کی دادرسی نہ کریں حکم ظالم کو خدا اور رسول پر ترجیح دیں ان کے واسطے کیا حکم ہے؟

الجواب: (۱) جس شخص میں امور مذکورہ سوال ہوں وہ مستحق عذاب نار و غضب جبار و لعنت پروردگار و العیاذ باللہ تعالیٰ، وہ اللہ و رسول کو ایذا دیتا ہے اور اللہ و رسول کا ایذا دینے والا فلاح نہیں پاتا۔ اللہ عزوجل فرماتا ہے:

1 السنن الکبری للبیہقی کتاب الشہادات باب المعاریض الخ دارصادر بیروت ۱۰/ ۱۹۹ Page 346 of 720

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

"Indeed, those who have tortured the believing men and believing women and then have not repented will have the punishment of Hell, and they will have the punishment of the Burning Fire." (Quran 85:10) | Indeed, those people who put Muslim men and women into trial (torture) and then did not repent, for them is the punishment of Hell and for them is the punishment of fire.

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whoever harms a Muslim has harmed me, and whoever harms me has harmed Allah Almighty." | Whoever unjustly caused pain to any Muslim, indeed he caused pain to me, and whoever caused pain to me, he caused pain to Allah Almighty.

Allah Almighty says: "Unquestionably, the curse of Allah is upon the wrongdoers." (Quran 11:18) | Listen, the curse of Allah is upon the oppressors.

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Oppression will be darkness on the Day of Resurrection." | Oppression is darkness on the Day of Judgment. And Allah Almighty knows best.

(2) The helpers of the oppressor are themselves oppressors and more deserving of punishment and wrath. Allah Almighty says: "And do not cooperate in sin and aggression." (Quran 5:2) | It is forbidden for you to help one another in sin and exceeding the limits.

It is mentioned in the Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whoever walks with an oppressor to aid him, knowing that he is an oppressor, has indeed left Islam." | Whoever knowingly goes with an oppressor to help him, he has left Islam (this...

1. Al-Quran Al-Karim 85/10
2. Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 3632, Maktaba al-Ma'arif, Riyadh 4/373
3. Al-Quran Al-Karim 11/18
4. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Mazalim, Bab al-Zulmu Zulumatun Yawm al-Qiyamah, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/331
5. Al-Quran Al-Karim 2/2

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

"बेशक जिन लोगों ने मुसलमान मर्दों और औरतों को फ़ितने (तकलीफ़) में डाला, फिर तौबा न की, उनके लिए जहन्नुम का अज़ाब है और उनके लिए आग का अज़ाब है।" (क़ुरआन 85:10) | बेशक जिन लोगों ने मुसलमान मर्दों और औरतों को फ़ितने में डाला, फिर तौबा न की, उनके लिए जहन्नुम का अज़ाब है और उनके लिए आग का अज़ाब।

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "जिसने किसी मुसलमान को ईज़ा (दुख) पहुँचाई, उसने मुझे ईज़ा पहुँचाई, और जिसने मुझे ईज़ा पहुँचाई, उसने अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल को ईज़ा पहुँचाई।" | जिसने नाहक़ किसी मुसलमान को ईज़ा दी, बेशक उसने मुझे ईज़ा दी और जिसने मुझे ईज़ा दी, उसने अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल को ईज़ा दी।

अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल फ़रमाता है: "सुनो! ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है।" (क़ुरआन 11:18) | सुन रखो अल्लाह की लानत है ज़ालिमों पर।

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "ज़ुल्म क़यामत के दिन अंधेरियाँ होगा।" | ज़ुल्म अंधेरियाँ है क़यामत के दिन। वल्लाह तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

(2) ज़ुल्म के मददगार ज़ालिम हैं और उससे बढ़कर अज़ाब व ग़ज़ब के हक़दार। अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल फ़रमाता है: "और गुनाह और हद से बढ़ने (सरकशी) में एक-दूसरे की मदद न करो।" (क़ुरआन 5:2) | तुम पर हराम है कि गुनाह और हद से बढ़ने में एक दूसरे की मदद करो।

हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "जो जानते हुए किसी ज़ालिम के साथ उसकी मदद करने के लिए चला, वह इस्लाम से निकल गया।" | जो दीदह व दानिस्ता (जान-बूझकर) किसी ज़ालिम के साथ उसे मदद देने चला वह इस्लाम से निकल गया (इसको...

1. अल-क़ुरआन अल-करीम 85/10
2. अल-मुअजम अल-औसत हदीस 3632 मकतबा अल-मआरिफ़ रियाज़ 4/373
3. अल-क़ुरआन अल-करीम 11/18
4. सहीह अल-बुखारी किताब अल-मज़ालिम बाब अज़-ज़ुल्मु ज़ुलुमातुन यौम अल-क़ियामा क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 1/331

5. अल-क़ुरआन अल-करीम 2/2

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

"اِنَّ الَّذِیْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ یَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِیْقِ ۱" | بیشک جن لوگوں نے مسلمان مردوں عورتوں کو فتنے میں ڈالا پھر توبہ نہ کی ان کے لئے جہنم کا عذاب ہے اور ان کے لئے آگ کا عذاب۔

رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: من اذی مسلما فقد اذانی ومن اذانی فقد اذی اللہ ۲ | جس نے ناحق کسی مسلمان کو ایذا دی بیشک اس نے مجھے ایذا دی اور جس نے مجھے ایذا دی اس نے اللہ عزوجل کو ایذا دی۔

اللہ عزوجل فرماتا ہے: "اَلَا لَعْنَةُ اللهِ عَلَی الظّٰلِمِیْنَ ۳" | سن رکھو اللہ کی لعنت ہے ظالموں پر۔

رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: الظلم ظلمات یوم القیمۃ ۴ | ظلم اندھیریاں ہے قیامت کے دن۔ واللہ تعالٰی اعلم

(۲) ظلم کے مددگار ظالم ہیں اور اس سے بڑھ کر عذاب و غضب کے سزاوار۔ اللہ عزوجل فرماتا ہے: "وَ لَا تَعَاوَنُوْا عَلَی الْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِ ص ۵" | تم پر حرام ہے کہ گناہ اور حد سے بڑھنے میں ایک دوسرے کی مدد کرو۔

حدیث میں ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: من مشی مع ظالم لیعینه و هو یعلم انه ظالم فقد خرج من الاسلام | جو دیدہ و دانستہ کسی ظالم کے ساتھ اسے مدد دینے چلا وہ اسلام سے نکل گیا (اس کو

١ القرآن الكريم ٨٥/ ١٠ ٢ المعجم الاوسط حديث ٣٦٣٢ مكتبة المعارف الرياض ۴/ ٣٧٣ ٣ القرآن الكريم ١١/١٨ ۴ صحيح البخارى كتاب المظالم باب الظلم ظلمات يوم القيمة قديمى كتب خانہ كراچى ١/ ٣٣١ ٥ القرآن الكريم ٢/٢

Volume 24 Fatawa Razawiyya

Narrated by Tabarani in al-Mu'jam al-Kabir and al-Diya in Sahih al-Mukhtara from Aws ibn Shurahbil (may Allah be pleased with him) - And Allah Almighty knows best.

(3) Yes, it is obligatory upon the helpers to repent and separate from helping him. Allah Almighty, in the Holy Quran, after forbidding mocking a Muslim, taunting them, or calling them by bad names, says:

"And whoever does not repent - then it is those who are the wrongdoers." (2) | Those who do not repent from these things are indeed the wrongdoers.

What comparison do these things have with the actions mentioned in the question? Those who do not repent from helping in them, how severe a degree of wrongdoers they will be! It is not permissible for the brotherhood or any Muslim to obey the command of an oppressor in his oppressions. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

There is no obedience to anyone in disobedience to Allah Almighty. (3) | There is no obedience to anyone in the disobedience of Allah Almighty.

And if the oppressor does not desist, the Muslims should expel him from the brotherhood, leave his company, and not sit with him, lest his fire also consume them. And Allah, Blessed and Exalted, says:

"And if Satan causes you to forget, then do not sit after the reminder with the wrongdoing people." (4) | If Satan makes you forget, then after remembering, do not sit with the wrongdoers. (T)

(4) Whoever is capable of helping the oppressed and does not do so, for him is the punishment of humiliation. It is mentioned in the Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Whoever has his Muslim brother backbitten in his presence and does not help him while he is able to help him, Allah Almighty will seize him in this world and the hereafter. Narrated by Ibn Abi al-Dunya | The one in whose presence a Muslim brother's backbiting is done and he is capable of helping him but does not, Allah Almighty will humiliate him in both this world and the hereafter. To him...

1 Al-Mu'jam al-Kabir by Tabarani, Hadith 619, Al-Maktaba al-Faysaliyya, Beirut, 1/227 2 The Holy Quran, 49/11 3 Al-Mustadrak for al-Hakim, Book of Knowledge of the Sahaba, Dar al-Fikr, Beirut, 3/123 4 The Holy Quran, 6/68

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

तबरानी ने अल-मुअजम अल-कबीर में और ज़िया ने सहीह अल-मुख्तारा में औस बिन शुरहबील (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है - और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(3) हाँ, मददगारों पर फ़र्ज़ है कि तौबा करें और उसकी मदद से अलग हो जाएँ। अल्लाह अज्ज़वजल क़ुरान करीम में किसी मुसलमान का मज़ाक उड़ाने, उसे ताना देने और उसे बुरे नाम से पुकारने से मना करने के बाद फ़रमाता है:

"और जो तौबा न करें, तो वही लोग ज़ालिम हैं।" (2) | जो इन बातों से तौबा न करें वही ज़ालिम हैं।

इन बातों का सवाल में बताए गए कामों से क्या मुक़ाबला? जो उनमें मदद करने से तौबा न करें, वे कितने सख्त दर्जे के ज़ालिम होंगे! भाईचारे या किसी भी मुसलमान के लिए ज़ालिम के ज़ुल्म में उसका हुक्म मानना जायज़ नहीं है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

अल्लाह तआला की नाफ़रमानी में किसी की इताअत (आज्ञापालन) नहीं है। (3) | अल्लाह तआला की नाफ़रमानी में किसी की इताअत नहीं।

और अगर ज़ालिम बाज़ न आए, तो मुसलमानों को चाहिए कि उसे बिरादरी से निकाल दें, उससे मेल-जोल छोड़ दें, उसके पास न बैठें ताकि उसकी आग उन्हें भी न जला दे। और अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाता है:

"और अगर शैतान तुझे भुला दे, तो याद आने के बाद ज़ालिम लोगों के साथ न बैठ।" (4) | अगर तुझे शैतान भुला दे, तो याद आने पर ज़ालिमों के पास न बैठ। (त)

(4) जो मज़लूम की मदद करने पर क़ादिर हो और न करे, तो उसके लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

जिसके सामने उसके मुसलमान भाई की ग़ीबत की जाए और वह उसकी मदद पर क़ादिर होने के बावजूद उसकी मदद न करे, अल्लाह तआला उसे दुनिया और आख़िरत दोनों में पकड़ेगा। इब्ने अबी अद्दुनया ने रिवायत किया। | जिसके सामने मुसलमान भाई की ग़ीबत की जाए और यह उसकी मदद पर क़ादिर हो और न करे, अल्लाह तआला उसे दुनिया और आख़िरत दोनों में ज़लील करेगा। उसको...

1 अल-मुअजम अल-कबीर लिल-तबरानी हदीस 619 अल-मकतबा अल-फ़ैसलिया बैरुत, 1/227 2 अल-क़ुरान अल-करीम, 49/11 3 अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम किताब मारिफ़त अल-सहाबा दार अल-फ़िक्र बैरुत, 3/123 4 अल-क़ुरान अल-करीम, 6/68

رواه الطبراني في المعجم الكبير والضياء في صحيح المختارة عن اوس بن شرحبيل رضي الله تعالى عنه - واللہ تعالٰی اعلم۔

(۳) ہاں مددگاروں پر فرض ہے کہ توبہ کریں اور اس کی مدد سے جدا ہوں، اللہ عزوجل قرآن کریم میں کسی مسلمان کے ساتھ مسخری کرنے، اس پر طعن کرنے، اس کا برا لقب رکھنے سے منع کر کے فرماتا ہے:

"وَمَنْ لَّمْ یَتُبْ فَاُولٰٓئِکَ ہُمُ الظّٰلِمُوْنَ" ۲ | جو ان باتوں سے توبہ نہ کریں وہی ظالم ہیں۔

ان باتوں کو افعال مذکورہ سوال سے کیا نسبت، جو ان میں مدد سے توبہ نہ کریں کیسے سخت درجے کے ظالم ہوں گے، اہل برادری یا کسی مسلمان کو ظالم کا حکم اس کے ظلموں میں ماننا جائز نہیں۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

لاطاعة لاحد فی معصیة اللہ تعالٰی ۳ | اللہ تعالیٰ کی نافرمانی میں کسی کی اطاعت نہیں۔

اور ظالم باز نہ آئے تو مسلمانوں کو چاہئے اسے برادری سے نکال دیں اس سے میل جول چھوڑ دیں اس کے پاس نہ بیٹھیں کہ اس کی آگ انہیں بھی نہ پھونک دے۔ اور فرماتا ہے اللہ تبارک وتعالیٰ:

"وَاِمَّا یُنْسِیَنَّکَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّکْرٰی مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ" ۴ | اگر تجھے شیطان بھلا دے تو یاد آئے پر ظالموں کے پاس نہ بیٹھ۔ (ت)

(۴) جو مظلوم کی دادرسی پر قادر ہو اور نہ کرے تو اس کے لئے ذلت کا عذاب ہے۔ حدیث میں ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

من اغتِیب عندہ اخوہ المسلم فلم ینصرہ وھو یستطیع نصرہ ادرکہ اللہ تعالٰی فی الدنیا والآخرۃ۔ رواہ ابن ابی الدنیا | جس کے سامنے مسلمان بھائی کی غیبت کی جائے اور یہ اس کی مدد پر قادر ہو اور نہ کرے اللہ تعالیٰ اسے دنیا و آخرت دونوں میں ذلیل کرے گا۔ اس کو

---

۱ المعجم الکبیر للطبراني حدیث ۶۱۹ المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۱/ ۲۲۷ ۲ القرآن کریم ۴۹/ ۱۱ ۳ المستدرک للحاکم کتاب معرفۃ الصحابۃ دار الفکر بیروت ۳/ ۱۲۳ ۴ القرآن کریم ۶/ ۶۸

Fatawa Ridawiyya Volume 24

In condemnation of backbiting, Ibn Adi narrated in al-Kamil from Anas (may Allah be pleased with him). (The Hadith scholar Ibn Abi al-Dunya narrated in Dhamm al-Ghibah and Ibn Adi in al-Kamil from Hazrat Anas (may Allah be pleased with him). -T)

And persisting in sin after hearing the command makes one deserving of the punishment of Fire. Allah Almighty says: "And when it is said to him, 'Fear Allah,' pride in sin takes hold of him. Sufficient for him is Hell, and what an evil resting place." [Quran 2:206]

To follow Satan and not follow the commands of Allah and His Messenger, and to follow the orders of an oppressor, is a sin, a major sin (Kabira), and leads to Hell. However, no matter how sinful or corrupt a Muslim may be, they do not think that an oppressor's command is superior to the command of Allah and His Messenger. If someone believes so, then they become a disbeliever themselves. May Allah protect us from this. And Allah Almighty knows best.

Problem 121: From Nathdwara, State of Udaipur, region of Mewar. What do the scholars of the religion and the jurists of the clear Sharia say about this matter: A person severs ties with his offspring, does not visit them during illness, does not provide for their sustenance and maintenance, does not arrange for medical treatment, and after their death, does not participate in the funeral arrangements or shroud (Kafan), even if someone else provides the shroud in the name of Allah while he has the means himself. What is the ruling for such a person? Since this person also has knowledge of Fiqh (jurisprudence) and Hadith and often gives advice and sermons to people, yet his own actions are contrary to Sharia. What is the ruling for such a person? Please write a proper answer along with Hadith, Fiqh, and Quranic verses. May Allah Almighty grant you a great reward.

Answer: If their maintenance was legally obligatory upon the father (e.g., a minor child, an unmarried girl, or a young son unable to earn), and he did not provide maintenance, then he is involved in a severe and grave sin. And if legally his maintenance upon the father...

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

पीठ पीछे बुराई (गीबत) की निंदा में, इब्न अदी ने अल-कामिल में अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है। (मुहद्दिस इब्न अबी अल-दुनिया ने ज़म्म अल-गीबत में और इब्न अदी ने अल-कामिल में हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। -त)

और हुक्म सुनने के बाद गुनाह पर अड़े रहना आग के अज़ाब का हक़दार बनाता है। अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल फरमाता है: "और जब उससे कहा जाए कि अल्लाह से डर, तो उसे गुनाह की ज़िद चढ़ती है। ऐसे के लिए जहन्नम काफी है, और वह क्या ही बुरा ठिकाना है।" [कुरान 2:206]

इब्लीस की पैरवी करते हुए खुदा और रसूल के हुक्म पर न चलना और ज़ालिम के हुक्म पर चलना गुनाह है, कबीरा (बड़ा गुनाह) है और जहन्नम का हक़दार बनाता है। लेकिन कोई मुसलमान चाहे कितना ही फासिक-ओ-फाजिर (पापी) हो, वह यह ख्याल नहीं करता कि अल्लाह और रसूल के हुक्म पर ज़ालिम के हुक्म को तरजीह (प्राथमिकता) हासिल है। अगर कोई ऐसा समझे तो वह खुद ही काफिर है। अल्लाह की पनाह। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला 121: नाथद्वारा, रियासत उदयपुर, मुल्क मेवाड़ से। दीन के उलमा और शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या फरमाते हैं कि एक शख्स अपनी औलाद से कतअ-ए-रहम (रिश्ता तोड़ना) रखता है, उनकी बीमारी में उनकी अयादत (हाल-चाल पूछना) और नान-नफ़का (खर्च-पानी) की खबर नहीं लेता, इलाज-ओ-मुआलजा की तदबीर नहीं करता, और मौत के बाद तजहीज़-ओ-तक्फीन (कफन-दफन) के सामान में शरीक नहीं होता, यहाँ तक कि अल्लाह के नाम पर कोई और शख्स कफन वगैरह देता है जबकि उसके पास अपनी गुंजाइश है। ऐसे शख्स के लिए क्या हुक्म है? चूंकि यह शख्स इल्म-ए-फिक्ह और हदीस की वाकफियत भी रखते हैं और लोगों को नसीहत और वाज़ भी करते हैं, मगर उनका अपना अमल शरीयत के खिलाफ है। ऐसे शख्स के लिए क्या हुक्म है? इसका सही जवाब हदीस, फिक्ह और कुरान की आयत के साथ तहरीर फरमाएं। अल्लाह तआला आपको अजर-ए-अज़ीम अता फरमाएगा।

अल-जवाब (उत्तर): अगर उनका नफ़का (खर्च) शरीयत के हिसाब से बाप पर लाज़िम था, मिसाल के तौर पर नाबालिग बच्चा या ऐसी लड़की जिसकी शादी न हुई हो या जवान लड़का जो कमाने के काबिल न हो, और उसने नफ़का नहीं दिया तो वह सख्त शदीद गुनाह में मुब्तला है। और अगर शरीयत के हिसाब से उसका नफ़का बाप पर...

فی ذم الغیبۃ و ابن عدی فی الکامل عن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔ (محدث ابن ابی الدنیا نے ذم الغیبتہ میں اور ابن عدی نے الکامل میں حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا۔ت)

اور حکم سن کر گناہ پر ہٹ کرنا استحقاق عذاب نار ہے۔ اللہ عزوجل فرماتا ہے: "وَاِذَا قِیْلَ لَہ اتَّقِ اللّٰہَ اَخَذَتْہُ الْعِزَّۃُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُہٗ جَھَنَّمُ وَ لَبِئْسَ الْمِھَادُ" 2 جب اس سے کہا جائے اللہ سے ڈر تو اسے گناہ کی ضد چڑھے ایسے کو جہنم کافی ہے اور کیا برا ٹھکانہ۔

ابلیس کی پیروی سے حکم خدا و رسول پر نہ چلنا اور ظالم کے حکم پر چلنا گناہ ہے کبیرہ ہے استحقاق جہنم ہے مگر کوئی مسلمان کیسا ہی فاسق فاجر ہو یہ خیال نہیں کرتا کہ اللہ ورسول کے حکم پر اس کے حکم کو ترجیح ہے ایسا سمجھے تو آپ ہی کافر ہے۔والعیاذ باللہ تعالیٰ۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۲۱: از ناتھ دوارہ ریاست اودے پور ملک میواڑ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص کو قطع رحم اپنی اولاد سے رکھنا اس کی بیماری میں اس کی عیادت و نان نفقہ کی خبر و علاج و معالجہ کی تدبیر نہ کرنا اور بعد مر جانے کے سامان تجہیز و تکفین میں شریک نہ ہونا اور کفن وغیرہ غیر شخص کا اللہ نام دینا حتی المقدور اپنے پاس ہوتے ہوئے یہ برتاؤ اپنی اولاد سے کرنا، ایسے شخص کے واسطے کیا حکم ہے چونکہ یہ شخص علم فقہ و حدیث سے بھی واقفیت رکھتے ہیں اور پندو وعظ کو بھی لوگوں کو کہا کرتے ہیں مگر اپنا عمل خلاف شرع آتا ہے ایسے شخص کے واسطے کیا حکم ہے؟ اس کا جواب باصواب مع حدیث فقہ و آیت کلام کے تحریر فرمائیں خدا تعالیٰ آپ کو اجر عظیم عطا فرمائے گا۔

الجواب: اگر اس کا نفقہ شرعاً باپ پر لازم تھا مثلاً نابالغ بچہ یا لڑکی جس کی شادی نہ ہوئی یا جوان لڑکا کہ کچھ کمانے پر قادر نہیں اس کو نفقہ نہ دیا تو سخت شدید گناہ میں مبتلا ہے، اور اگر شرعاً اس کا نفقہ باپ پر

Fatawa-e-Razvia Volume 24

...it was not, for example, a daughter who has a husband or a young son capable of earning, then there is no sin in not providing maintenance for them. And medical treatment and medicine are not obligatory on anyone, not even on one's own self. And if the children are disrespectful and do not desist, or (God forbid) they become a person of bad faith (heretic), and the father abandons them, then this severing of ties (qata'-e-rahm) is from the children's side, not the father's. The burden of sin is upon the children. Sayyiduna Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them) did not speak to one of his sons for his entire life because of a single word. A son of Hazrat Maulana-e-Manawi (may his secret be sanctified) was insolent towards Hazrat Shams Tabriz (may his secret be honored), so on his death, Maulavi (Rumi) did not participate in his son's funeral. Yes, if it is not the children's fault, then severing ties is a great sin for the father. The two situations for not providing a shroud (kafan) are the same as those for maintenance (nafaqa). If the maintenance was the father's responsibility and he did not provide the shroud, he is a sinner; if it was not, then there is no blame for not providing the shroud.

Issue 122: What do the scholars of religion and the muftis of the firm Shariah say about this matter: the father-in-law has detained the wife of Musti Chida and refuses to send her back despite all the neighborhood people asking and appealing in the name of God and the Messenger. All the neighborhood people also assured him that they would be responsible if his daughter faced any kind of trouble. So, what is the ruling of the Prophetic Shariah regarding the person who does not listen to the neighbors and the appeals made in the name of God and the Messenger? Is it permissible or impermissible for everyone to socialize with him? Please state clearly. Explain and you shall be rewarded.

The Answer: The questioner does not write any reason why he has detained her. If there is actually a Sharia-compliant reason, then there is no blame on him, nor is he required to accept the guarantee of the neighbors. Appeals are for things that are not harmful, and if an appeal is made for something harmful to another, the one making the appeal is a sinner. Yes, if there is no Shariah reason for detaining her and he detains her for no reason at all, then that detention itself is oppression. Then, not accepting the appeal is a second oppression. And Allah knows best.

Issue 123: From the city, Gulab Nagar neighborhood, asked by Khuda Bakhsh Sahib Rizvi, box maker, 28 Rajab 1339 AH. What do the scholars of religion say about this

matter: a person continuously troubles Zaid and is bent on troubling him by every means, whether through amulets (taweez) or magic, etc. Zaid has remained silent until now and is enduring all the hardships. It has come to light from one or two people that he is now intent on taking his life. The story is that Zaid has a house; he says that the house should be given to me, and that is his heart's desire. It is Zaid's personal house, he is asking for it without any reason.

...नहीं था मसलन लड़की कि शौहर वाली या जवान लड़का कमाई पर क़ादिर है तो उसे नफ़क़ा (ख़र्च) न देने में कुछ गुनाह नहीं और इलाज व दवा तो किसी पर वाजिब नहीं ख़ुद अपनी वाजिब नहीं और औलाद अगर हुक़ूक़ (नाफ़रमानी) करे और बाज़ न आए या माअज़अल्लाह बद-मज़हब हो जाए और बाप उसे छोड़ दे तो यह क़तअ-ए-रहम (रिश्ता तोड़ना) उस की औलाद की तरफ़ से है बाप की तरफ़ से नहीं, वबाल औलाद पर है। सैयदुना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने एक लफ़्ज़ के सबब अपने एक साहिबज़ादे से उम्र भर कलाम न फ़रमाया, हज़रत मौलवी मानवी क़ुद्दस सर्रहु शरीफ़ के एक साहिबज़ादे ने हज़रत शम्स तबरेज़ क़ुद्दस सर्रहु-ल-अज़ीज़ की शान में गुस्ताख़ी की, उन के मरने पर मौलवी बेटे के जनाज़े में शरीक न हुए। हाँ अगर औलाद का क़ुसूर नहीं तो बाप पर क़तअ-ए-रहम का वबाल अज़ीम (बड़ा गुनाह) है, कफ़न न देने की वही दो सूरतें हैं जो नफ़क़ा में थीं, अगर इस का नफ़क़ा बाप पर था और उस ने कफ़न न दिया गुनहगार हुआ और न था तो कफ़न न देने का कुछ इल्ज़ाम नहीं।

मसला 122: क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन व मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस मसले में कि मुस्टी चीदा की बीवी को उस के ससुर ने रोक रखा है और बावजूद तमाम अहल-ए-मोहल्ला के कहने पर और ख़ुदा और रसूल का वास्ता देने पर भी रवाना नहीं करता और तमाम अहल-ए-मोहल्ला ने इस अम्र का भी इत्मीनान दिलाया कि तेरी बेटी को अगर किसी क़िस्म की तकलीफ़ होगी तो अहल-ए-मोहल्ला ज़िम्मेदार हैं। पस जो शख़्स अहल-ए-मोहल्ला के कहने को और ख़ुदा और रसूल का वास्ता देने को न माने उस के बारे में शरीअत-ए-नबवी का क्या हुक्म है आया उस से तमाम का मेल-जोल जाइज़ है या नाजाइज़? साफ़ इरशाद फ़रमाएं। बयान करें सवाब पायें।

अल-जवाब: साइल (पूछने वाला) कोई वजह नहीं लिखता कि उस ने क्यों रोक रखा, अगर वाक़ई में इस की कोई वजह शरअ (धर्मसम्मत) हो तो उस पर कुछ इल्ज़ाम नहीं, न मोहल्ले वालों की ज़मानत मानना उसे ज़रूर, और वास्ता उन बातों में होता है जिन में ज़रर (नुक़सान) न हो और दूसरे की ज़रर की बात पर वास्ता दिया जाए तो वह वास्ता देने वाला गुनहगार होता है, हाँ अगर कोई वजह शरई रोकने की नहीं है महज़ बिला-वजह रोका तो वह रोकना ही ज़ुल्म, फिर वह वास्ता न मानना दूसरा ज़ुल्म। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 123: अज़ शहर मोहल्ला गुलाब नगर मसूला ख़ुदा बख़्श साहब रिज़वी संदूक़ साज़, 28 रजब 1339 हि. क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मसले में कि एक शख़्स ज़ैद को तकलीफ़ देता रहता है और तकलीफ़ देने पर आमादा है हर तरीक़ से तावीज़ या जादू वग़ैरा से, और ज़ैद अब तक ख़ामोश है और सब तकलीफ़ें सह रहा है, एक दो शख़्स से मालूम हुआ है कि वह अब जान लेने पर आमादा है, क़िस्सा यह है कि ज़ैद का मकान है वह यह कहता है कि मकान मुझ को मिल जाए और इस की दिली मंशा यही है। ज़ैद का ज़ाती मकान है बिला-वजह मांगता है।

पेज 350 ऑफ़ 720

نہ تھا مثلاً لڑکی کہ شوہر والی یا جوان لڑکا کمائی پر قادر ہے تو اسے نفقہ نہ دینے میں کچھ گناہ نہیں اور علاج و دوا تو کسی پر واجب نہیں خود اپنی واجب نہیں اور اولاد اگر حقوق کرے اور باز نہ آئے یا معاذ اللہ بد مذہب ہو جائے اور باپ اسے چھوڑ دے تو یہ قطع رحم اس کی اولاد کی طرف سے ہے باپ کی طرف سے نہیں، وبال اولاد پر ہے۔ سیدنا عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے ایک لفظ کے سبب اپنے ایک صاحبزادے سے عمر بھر کلام نہ فرمایا، حضرت مولوی معنوی قدس سرہ شریف کے ایک صاحبزادے نے حضرت شمس تبریز قدس سرہ العزیز کی شان میں گستاخی کی، ان کے مرنے پر مولوی بیٹے کے جنازے میں شریک نہ ہوئے۔ ہاں اگر اولاد کا قصور نہیں تو باپ پر قطع رحم کا وبال عظیم ہے، کفن نہ دینے کی وہی دو صورتیں ہیں جو نفقہ میں تھیں، اگر اس کا نفقہ باپ پر تھا اور اس نے کفن نہ دیا گناہگار ہوا اور نہ تھا تو کفن نہ دینے کا کچھ الزام نہیں۔

مسئلہ ۱۲۲: کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ مسٹی چیدہ کی بیوی کو اس کے خسر نے روک رکھا ہے اور باوجود تمام اہل محلہ کے کہنے پر اور خدا اور رسول کا واسطہ دینے پر بھی روانہ نہیں کرتا اور تمام اہل محلہ نے اس امر کا بھی اطمینان دلایا کہ تیری بیٹی کو اگر کسی قسم کی تکلیف ہوگی تو اہل محلہ ذمہ دار ہیں۔ پس جو شخص اہل محلہ کے کہنے کو اور خدا اور رسول کا واسطہ دینے کو نہ مانے اس کے بارے میں شریعت نبوی کا کیا حکم ہے آیا اس سے تمامی کا میل جول جائز ہے یا ناجائز ؟ صاف ارشاد فرمائیں۔ بینوا توجروا۔

الجواب: سائل کوئی وجہ نہیں لکھتا کہ اس نے کیوں روک رکھا، اگر واقع میں اس کی کوئی وجہ شرع ہو تو اس پر کچھ الزام نہیں، نہ محلہ والوں کی ضمانت ماننا اسے ضرور، اور واسطہ ان باتوں میں ہوتا ہے جن میں ضرر نہ ہو اور دوسرے کی ضرر کی بات پر واسطہ دیا جائے تو وہ واسطہ دینے والا گنہگار ہوتا ہے، ہاں اگر کوئی وجہ شرعی روکنے کی نہیں ہے محض بلاوجہ روکا تو وہ روکنا ہی ظلم، پھر وہ واسطہ نہ ماننا دوسرا ظلم ۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۲۳: از شہر محلہ گلاب نگر مسئولہ خدا بخش صاحب رضوی صندوق ساز ۲۸ رجب ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص زید کو تکلیف دیتا رہتا ہے اور تکلیف دینے پر آمادہ ہے ہر طریق سے تعویذ یا جادو وغیرہ سے، اور زید اب تک خاموش ہے اور سب تکالیف سہہ رہا ہے، ایک دو شخص سے معلوم ہوا ہے کہ وہ اب جان لینے پر آمادہ ہے، قصہ یہ ہے کہ زید کا مکان ہے وہ یہ کہتا ہے کہ مکان مجھ کو مل جائے اور اس کی دلی منشا یہی ہے۔ زید کا ذاتی مکان ہے بلا وجہ مانگتا ہے۔

Fatawa Razawiyya

Volume 24

Question: Now Zaid can no longer bear it; now Zaid also wants to be harmful to him in every way. To what extent does the Sharia permit this?

The Answer: One cannot cause harm with the intention of causing harm. One can take measures for self-protection unless it is proven that self-protection is impossible without causing harm. In that case, one can only do as much as is necessary for self-protection. And for the harm that has been inflicted, one can only take an equivalent retribution; doing more would be an act of oppression. And if one practices patience, it is much better. And Allah Almighty knows best.

फ़तावा रज़विया

जिल्द २४

प्रश्न: अब ज़ैद सहन नहीं कर सकता, अब ज़ैद भी यह चाहता है कि मैं हर तरह से उसे कष्ट पहुँचाऊँ शरीयत कहाँ तक अनुमति देती है?

उत्तर: कष्ट पहुँचाने के इरादे से कष्ट नहीं पहुँचाया जा सकता। अपने बचाव का उपाय किया जा सकता है जब तक कि यह साबित न हो जाए कि बिना कष्ट पहुँचाए अपना बचाव संभव नहीं होगा, तो उस समय केवल उतना ही किया जा सकता है जिससे अपना बचाव हो सके। और जो कष्ट उसने पहुँचाया है, उसका बदला केवल उतना ही लिया जा सकता है; यदि इससे अधिक किया गया तो वह उस पर अत्याचार होगा। और यदि सब्र (धैर्य) किया जाए तो बहुत बेहतर है। और अल्लाह तआला ही सबसे बेहतर जानता है।

فتاویٰ رضویہ

جلد ۲۴

اب زید متحمل نہیں ہو سکا اب زید بھی یہ چاہتا ہے کہ میں ہر طریق سے اس کو تکلیف رساں ہوں شریعت کہاں تک حکم دیتی ہے؟

الجواب: ایذاء رسانی کے ارادے پر ایذا نہیں دے سکتا اپنے بچاؤ کی تدبیر کر سکتا ہے جب تک کہ اس کا عزم ایسا نہ ثابت ہو کہ بے ایذا دے اپنا بچاؤ نہ ہو سکے گا تو اس وقت صرف اتنی بات جس میں اپنا بچاؤ ہو سکے کر سکتا ہے اور جو ایذا اس نے پہنچائی ہے اس کا عوض اتنا ہی لے سکتا ہے اس سے زیادہ کرے تو اس کا ظلم ہو گا اور اگر صبر کرے تو بہت بہتر۔ واللہ تعالیٰ اعلم

Volume 24 Fatawa Rizvia

Lying, Backbiting, Breach of Promise, etc.

Problem 122: 20 Muharram al-Haram 1313 AH What do the scholars of religion say regarding this matter? Zaid and Amr bought goods in partnership. Then Zaid said to Amr, "Either you take it or give it to me." Zaid took it by paying a profit to Amr. Later, Amr said to Zaid, "You committed a breach of promise, meaning you did not continue the partnership." Is this a breach of promise or not?

The Answer: When Amr himself agreed to dissolve the partnership and handed over the goods after taking a profit, there is no accusation of breach of promise against Zaid. In fact, if a person makes a promise to someone without any intention of deception at that time, but later a difficulty arises and due to that, he abandons the matter, even then he is not accused of breaking his word. The resplendent Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Breaking a promise is not when a man makes a promise with the intention of fulfilling it [but fails]. Rather, breaking a promise is when a man makes a promise with the intention of not fulfilling it.

It is not a breach of promise if a person makes a promise (to someone) with the intention of fulfilling it but is unable to do so; rather, a breach of promise is when a person makes a promise with no intention whatsoever of fulfilling it.

Page 352 of 720

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

झूठ, ग़ीबत और वादा-ख़िलाफ़ी वग़ैरह

मसला 122: 20 मुहर्रम-उल-हराम 1313 हिजरी दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं? ज़ैद और अम्र ने साझेदारी में माल ख़रीदा। फिर ज़ैद ने अम्र से कहा, "या तो तुम इसे ले लो या मुझे दे दो।" ज़ैद ने अम्र को मुनाफ़ा देकर माल ले लिया। बाद में अम्र ने ज़ैद से कहा, "तुमने वादा-ख़िलाफ़ी की, यानी साझेदारी नहीं निभाई।" क्या यह वादा-ख़िलाफ़ी है या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर): जब अम्र ख़ुद साझेदारी खत्म करने पर राज़ी हो गया और मुनाफ़ा लेकर माल दे दिया, तो ज़ैद पर वादा-ख़िलाफ़ी का कोई आरोप नहीं है। बल्कि, जो व्यक्ति किसी से किसी बात का वादा करे और उस समय उसकी नीयत में धोखा न हो, लेकिन बाद में उसमें कोई अड़चन आ जाए और इस वजह से वह उस काम को छोड़ दे, तो उस पर भी वादा-ख़िलाफ़ी का आरोप नहीं लगता। हुज़ूर-ए-पुर-नूर सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

वादा-ख़िलाफ़ी यह नहीं है कि कोई व्यक्ति वादा करे और उसकी नीयत उसे पूरा करने की हो [मगर न कर सके]। बल्कि वादा-ख़िलाफ़ी यह है कि कोई व्यक्ति वादा करे और उसकी नीयत उसे पूरा करने की बिल्कुल न हो।

यह वादा-ख़िलाफ़ी नहीं है कि आदमी (किसी व्यक्ति से) वादा करे और नीयत उसे पूरा करने की हो और पूरा न कर सके, बल्कि वादा-ख़िलाफ़ी यह है कि आदमी वादा करे और उसे पूरा करने का सिरे से इरादा ही न हो।

पृष्ठ 352 का 720

جھوٹ وغیبت وبد عہدی وغیرہ

مسئلہ ۱۲۲: ۲۰ محرم الحرام ۱۳۱۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں ، زید اور عمرو نے مال بشراکت خرید کیا پھر زید نے عمرو سے کہا تم اس کو لو یا مجھے دو۔ زید نے نفع دے کر لے لیا، عمرو سے۔ عمرو نے پھر کہا زید سے، تم نے بد عہدی کی یعنی شرکت نہیں کی۔ آیا یہ بد عہدی ہے یا نہیں؟

الجواب: جبکہ عمرو خود قطع شرکت پر راضی ہو گیا اور نفع لے کر مال دے دیا تو زید کے ذمہ کوئی الزام بد عہدی کا نہیں بلکہ جو شخص کسی سے ایک امر کا وعدہ کرے اور اس وقت اس کی نیت میں فریب نہ ہو بعد کو اس میں کوئی حرج ظاہر ہو اور اس وجہ سے اس امر کو ترک کرے تو اس پر بھی خلافِ وعدہ کا الزام نہیں، حضور پر نور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

لیس الخلف ان یعد الرجل ومن نیتہ ان یفی ولکن الخلف ان یعد الرجل ومن نیتہ ان لا یفی۔

یہ بد عہدی نہیں کہ آدمی (کسی شخص سے) وعدہ کرے اور نیت اسے پورا کرنے کی ہو اور پورا نہ کر سکے، بلکہ بد عہدی یہ ہے کہ آدمی وعدہ کرے اور اسے پورا کرنے کا سرے سے ارادہ ہی نہ ہو۔

Vol 24 Fatawa Razawiyya

Narrated by Abu Ya'la in his Musnad from Zaid bin Arqam (may Allah be pleased with him) with a good chain of narrators. And Allah knows best. (Abu Ya'la narrated it in his Musnad with a good chain from Zaid bin Arqam, may Allah be pleased with him. - Translator) And Allah knows best.

Problem 125: From Shahar Kohna, sent by Barkatullah Khan Sahib, 21 Dhu al-Qi'dah 1317 AH. What do the scholars of religion and guides of the steadfast say regarding this matter: Zaid's property, measuring 3 biswa, whose estimated value was two thousand rupees, was auctioned for a debt of two hundred and twenty rupees owed to a grocer. Since Bakr was influential and wealthy, he purchased it in the auction according to British rules without informing Zaid. Zaid, due to fear for his honor and lack of power to oppose him, did not resist. Bakr obtained possession solely on the basis of the auction's legality through force, and did not carry out any other procedures like mutation (transfer of title), etc. Therefore, Zaid's name remains in the British government records. In this situation, is it permissible for Zaid to seek legal remedy for his possession by using ambiguous speech (which might appear false but has a truthful interpretation in reality) so that there is a strong hope of getting his right back? Secondly, should Zaid return the auction money to Bakr now, or should what Bakr has already collected from the property be deducted from it? Please explain and be rewarded. (T: - Translator)

The Answer: To revive a dead right (reclaim a lost right), saying something with double meaning, which outwardly appears false but has a true meaning intended in reality, is undoubtedly permissible according to the scholars of religion, and its permissibility is proven from authentic hadiths, provided that the right cannot be obtained without this method. Otherwise, even this is not permissible. An example of ambiguous speech is: Suppose an oppressor has wrongfully held possession of someone's property for so long that under British law, it becomes barred by the statute of limitations and the right is legally lost. However, the opponent does not have written proof of his possession; it depends on the owner's statement. If the owner admits that indeed, for example, for twelve years he hasn't had possession, then the right is lost and the oppressor wins. Therefore, it is permitted to say, "Yes, I have had possession," meaning in the past tense. If further clarification is sought, he can say, "Until today, my possession has come (aaya)," intending the word "aaya" (came) as a word of interrogation (like asking "Is it true?"), meaning "Has my possession continued until today?" as a rhetorical denial. Thus, the meaning of this

sentence becomes: "Did my possession continue until today? No, it did not; rather my possession was interrupted and the opponent took possession." Or he could say, "Until yesterday, my possession was continuous; I don't know about today."

[1] Kanz al-Ummal, with reference to 'A', from Zaid bin Arqam, Hadith 7168, Mu'assasatu ar-Risalah, Beirut, 3/347. Page 353 of 720

अबू याला ने अपनी मुसनद में ज़ैद बिन अर्क़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) से एक अच्छी सनद (हसन) के साथ रिवायत किया है। और अल्लाह बेहतर जानता है। (अबू याला ने अपनी मुसनद में हसन सनद के साथ ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु अन्हु से इसे रिवायत किया है। - अनु.) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 125: शहर-ए-कोहना से, बरकतुल्लाह खान साहब द्वारा प्रेषित, 21 ज़िलक़ादा 1317 हिजरी। दीन के उलेमा और हिदायत देने वाले इस मसले में क्या फ़रमाते हैं: ज़ैद की संपत्ति, जो 3 बिसवा थी और जिसकी अनुमानित कीमत लगभग दो हज़ार रुपये थी, ज़ैद पर एक बनिये के दो सौ बीस रुपये के कर्ज़ के बदले नीलाम हो गई। चूंकि बक्र एक प्रभावशाली और धनी व्यक्ति था, उसने ज़ैद को सूचित किए बिना ब्रिटिश नियमों के अनुसार नीलामी में इसे खरीद लिया। ज़ैद अपनी इज़्ज़त के डर और मुक़ाबले की ताकत न होने के कारण चुप रहा। बक्र ने नीलामी की वैधता के आधार पर ज़बरदस्ती कब्ज़ा तो हासिल कर लिया, लेकिन दाखिल-ख़ारिज (नाम परिवर्तन) जैसी कोई अन्य कानूनी कार्रवाई नहीं की। इसलिए सरकारी कागज़ात में ज़ैद का नाम अब भी दर्ज है। ऐसी स्थिति में, क्या ज़ैद के लिए अपने कब्ज़े को वापस पाने के लिए कूटनीति या द्विअर्थी बात (जो ज़ाहिर तौर पर झूठ लगे पर हकीकत में सच हो) का सहारा लेकर कानूनी चाराजोई करना जायज़ है, जिससे उसे अपना हक़ वापस मिलने की पूरी उम्मीद हो? दूसरा यह कि क्या ज़ैद को अब नीलामी की रक़म बक्र को लौटानी चाहिए या बक्र ने उस संपत्ति से अब तक जो कुछ भी कमाया है, उसे उस रक़म में समायोजित (कम) किया जाना चाहिए? बयान फरमाएं, आपको सवाब मिलेगा।

अल-जवाब (उत्तर): अपने मरे हुए हक़ को ज़िंदा करने के लिए ऐसी बात कहना जिसके दो अर्थ निकलते हों, जिसका बाहरी अर्थ झूठ लगे लेकिन वास्तव में उसका एक सच्चा अर्थ मुराद हो, बिला-शुबहा उलेमा-ए-दीन के नज़दीक जायज़ है और सही हदीसों से इसका जायज़ होना साबित है, बशर्ते कि वह हक़ इस तरीके के बिना मिलना मुमकिन न हो। वरना यह भी जायज़ नहीं है। द्विअर्थी बात का उदाहरण: मान लीजिए कि किसी ज़ालिम ने किसी चीज़ पर ज़बरदस्ती कब्ज़ा कर रखा है और इतना समय बीत गया है कि ब्रिटिश कानून के तहत 'लिमिटेशन' (समय सीमा) लागू हो जाने से मालिक का हक़ कानूनी तौर पर खत्म हो जाता है, लेकिन विरोधी के पास अपने कब्ज़े का कोई दस्तावेज़ी सबूत नहीं है और मामला मालिक के बयान पर टिका है। अगर मालिक यह स्वीकार कर ले कि वास्तव में पिछले बारह वर्षों से उसका कब्ज़ा नहीं है, तो उसका हक़ खत्म हो जाएगा और ज़ालिम जीत जाएगा।

इसलिए, ऐसी स्थिति में यह कहने की अनुमति है कि "हाँ, मेरा कब्ज़ा रहा है," जिसका अर्थ अतीत काल में कब्ज़ा होने से हो। और अगर अधिक स्पष्टीकरण माँगा जाए, तो वह कह सकता है कि "आज तक मेरा कब्ज़ा चला आया," और अपनी नियत में "आया" शब्द को एक प्रश्नवाचक शब्द (जैसे क्या) के रूप में ले, जैसे कहते हैं "आया यह बात सच है?" यानी क्या यह बात सच है? तो इस वाक्य का अर्थ यह होगा कि "क्या आज तक मेरा कब्ज़ा चला? यानी ऐसा नहीं हुआ, बल्कि मेरा कब्ज़ा खत्म हो गया और विरोधी का कब्ज़ा हो गया।" या वह यह कह दे कि "कल तक मेरा कब्ज़ा बराबर रहा, आज के हाल का पता नहीं।"

[1] कंज़ अल-उम्माल, संदर्भ 'अ', ज़ैद बिन अर्क़म से, हदीस 7168, मुअस्ससतुल रिसाला, बेरूत, 3/347। पृष्ठ 353 का 720

رواہ ابو یعلٰی' مسندہ عن زید بن ارقم رضی اللہ تعالٰی (ابویعلی نے اپنی مسند میں سند حسن کے ساتھ زید بن ارقم رضی عنہ بسند حسن۔واللہ تعالیٰ اعلم۔ اللہ تعالیٰ عنہ سے اسے روایت کیا ہے ۔ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۲۵: از شہر کہنہ مرسلہ برکت اللہ خاں صاحب ۲۱ ذیقعدہ ۱۳۱۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و ہادیان متین اس مسئلہ میں کہ زید کے حقیقت تعدادی ۳ بسوہ جس کی قیمت تخمیناً دو ہزار روپے کے تھی بعوض مبلغ دو سو بیس روپیہ بابت قرضہ بقال خود ذمہ زید تھا نیلام ہوئی چونکہ بکر ایک زبردست اور متمول تھا اس نے بلا اطلاع زید کے نیلام حسب قاعدہ انگریزی خرید لیا زید کو بسبب خوف آبرو قوت مقابلہ نہ تھی اور بکر نے بزعم زبردستی بجز اس قبضے کے جواز روئے نیلام حاصل ہوا تھا اور کوئی کارروائی مثل داخل خارج وغیرہ نہ کرائی اس لئے نام زید کا کاغذات انگریزی میں بدستور ہے، پس اس صورت میں زید کو اپنے قبضہ کی چارہ جوئی بمقتضائے مصلحت از روئے دروغ گوئی کہ جس سے زید کو اپنا حق پانے کی قوی امید ہے یا نہیں؟ دوسرے یہ کہ زید کو زر نیلام اس وقت بکر کو دینا چاہئے یا جو کچھ بکر نے اس وقت اس جائداد سے تحصیل کیا ہے اس میں محسوب ہونا چاہئے، بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائیے۔ت)

الجواب: اپنا حق مردہ زندہ کرنے کے لئے پہلودار بات کہنا کہ جس کا ظاہر دروغ ہو اور واقعی میں اس کے سچے معنے مراد ہوں اگرچہ سننے والا کچھ سمجھے بلاشبہ بلاشبہ علمائے دین جائز اور احادیث صحیحہ سے اس کا جواز ثابت ہے جبکہ وہ حق بے اس طریقے کے ملنا میسر نہ ہو، ورنہ یہ بھی جائز نہیں، پہلودار بات یوں کہ مثلاً ظالم نے ظلماً اس کی کسی چیز پر قبضہ مخالفانہ اس مدت تک رکھا جس کے باعث انگریزی قانون میں تمادی عارض ہو کر حق ناحق ہو جاتا ہے

مگر مخالف کے پاس اپنے قبضہ کا کاغذی ثبوت نہیں اس کے بیان پر رکھا گیا، اگر یہ اقرار کئے دیتا ہے کہ واقعی مثلاً بارہ برس سے میرا قبضہ نہیں تو حق جاتا اور ظالم فتح پاتا ہے، لہٰذا یوں کہنے کی اجازت ہے کہ ہاں میرا قبضہ رہا ہے یعنی زمانہ گزشتہ میں، اور زیادہ تصریح چاہی جائے تو یوں کہہ سکتا ہے کہ "آج تک میرا قبضہ چلا آیا" اور نیت میں لفظ "آیا" کو کلمہ استفہام لے جیسے کہتے ہیں آیا یہ بات حق ہے یعنی کیا یہ بات حق ہے، تو استفہام انکاری کے طور پر اس کلمے کا یہ مطلب ہوا کہ کیا آج تک میرا قبضہ چلا یعنی ایسا نہ ہوا بلکہ میرا قبضہ منقطع ہو کر مخالف کا قبضہ چلا یعنی ایسا نہ ہوا بلکہ میرا قبضہ منقطع ہو کر مخالف کا قبضہ ہو گیا، یا یوں کہے "کل تک برابر میرا قبضہ رہا آج کا حال نہیں

[1] کنز العمال بحوالہ ع عن زید بن ارقم حدیث ۷۱۶۸ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۳ / ۳۴۷ Page 353 of 720

...knows what the court might order." And by the word "Kal" (tomorrow), a near time is meant, just as a young boy is called "a child of yesterday," even though his age is twenty or twenty-two years. In this sense, the Day of Judgment is called "Roz-e-Farda" (The Day of Tomorrow), meaning it is coming tomorrow, i.e., it is very near. Or if the question is about an opponent's possession, one might say "His possession was never there" or "never happened," meaning there was once a time when he didn't have possession. If more clarification is needed, say "His possession was never for a single moment, nor is it," meaning true possession over everything belongs to Allah (Exalted and Majestic), and another's possession cannot exist. In short, a person aware of the manipulations of words and meanings can find a way out beforehand. However, their permissibility is only in a state where one is truly oppressed and cannot escape oppression without such ambiguous talk; otherwise, as mentioned above, it is not permissible at all. Now, as for the situation where even ambiguous talk doesn't work, then outright lying to repel oppression and revive a right is permissible. Scholars' statements on this differ; many narrations suggest permission, while many prominent elders have explicitly prohibited it. To the extent possible, the cautious path is to avoid it. Perhaps the final decision would be to weigh the severity of that oppression and the calamity of the lie on the scale of sound reason and upright religion, and avoid whichever side outweighs the other. For example, if some oppressor seized someone's entire livelihood, and if they don't take it back, they and their family will starve, and it cannot be recovered without a blatant lie; then for the repelling of such unbearable severe oppression, it is hoped that permission to say a false thing is granted. But if someone withheld a hundred or two hundred rupees from a wealthy person, then permission for a blatant lie should not be given to them because the corruption of lying is greater and bearing such oppression is not so heavy for that wealthy person. It is proven from Hadith and is an established principle of jurisprudence, rather a universal rule of reason and tradition, that: "Whoever is afflicted with two calamities should choose the lighter of the two." [1] This is what I have, and the knowledge of the truth is with my Lord. (He who is trapped between two calamities should choose the one that is easier. This is what I had, and complete knowledge of the truth is only with my Lord. - Translator's note). It is in Durr-ul-Mukhtar:

Arabic	Urdu
Lying is permissible to revive one's right and repel oppression from oneself. What is meant is 'ta'reed' (ambiguity/ allusion) because the essence of lying is forbidden. He said: and it is the truth. Allah Almighty said: "Cursed be the liars."	Lying is forbidden, and this is the truth. However, to express and revive one's right or to protect oneself from oppression and loss, it is permissible to use a lie, provided that the lie is in the form of 'ta'reed,' meaning an indication, allusion, or ambiguous words.

[1] Al-Ashbah wan-Naza'ir, First Art, Fifth Rule, Idarat al-Qur'an Karachi 1/123

मालूम कि कचहरी क्या हुक्म दे।" और लफ़्ज़ "कल" से ज़माना क़रीब मुराद ले जैसे नौजवान लड़के को कहते हैं कल का बच्चा, हालांकि उसकी उम्र बीस बाइस साल की है, इस मायने पर क़यामत को "रोज़-ए-फ़र्दा" कहते हैं कल आने वाली है यानी बहुत नज़दीक है। या मुखालिफ़ के क़ब्ज़े की निस्बत सवाल हो तो कहे "उसका क़ब्ज़ा कभी न था" या "कभी न हुआ" और मुराद यह है कि कभी वह वक़्त भी था कि उसका क़ब्ज़ा न था। ज़्यादा तसरीह (स्पष्टीकरण) दरकार हो तो कहे "उसका क़ब्ज़ा असलन किसी वक़्त एक आन को न हुआ न है" और मायने यह ले कि हक़ीक़ी क़ब्ज़ा हर शय पर अल्लाह अज़्ज़-ओ-जल्ल का है, दूसरे का क़ब्ज़ा हो नहीं सकता। ग़रज़ जो शख़्स तसर्रुफ़ात-ए-अल्फ़ाज़ ओ मानी से आगाह है सो पहले निकाल सकता है, मगर उनका जवाज़ भी सिर्फ़ इसी हालत में है जब यह वाक़ई मज़लूम है और बग़ैर ऐसी पहलूदार बात के ज़ुल्म से नजात नहीं मिल सकती वरना ऊपर मज़कूर हुआ कि यह भी हरगिज़ जाइज़ नहीं। अब रही यह सूरत कि जहाँ पहलूदार बात से भी काम न चले वहाँ सरीह किज़ब (सरासर झूठ) भी दफ़-ए-ज़ुल्म ओ इहया-ए-हक़ (हक़ ज़िंदा करने) के लिये जाइज़ है, इस बारे में कलमात-ए-उलेमा मुख़्तलिफ़ हैं, बहुत रिवायत से इजाज़त निकलती है और बहुत अकाबिर ने मना की तसरीह फ़रमाई है हत्तल-वसा (जहाँ तक हो सके) एहतियात इससे इज्तिनाब (परहेज) में है और शायद क़ौल-ए-फ़ैसल यह हो कि इस ज़ुल्म की शिद्दत और किज़ब की मुसीबत को अक़्ल-ए-सलीम ओ दीन-ए-क़वीम की मीज़ान (तराज़ू) में तोले जिधर का पल्ला ग़ालिब पाए उससे एहतराज़ करे। मसलन उसका ज़रिया-ए-रिज़्क़ तमाम-ओ-कमाल किसी ज़ालिम ने छीन लिया अब अगर न ले तो यह और इसके अहल-ओ-अयाल (घरवाले) सब फ़ाक़े मरेंगे, और वह बे-किज़ब-ए-सरीह (सरासर झूठ के बिना) नहीं मिल सकता तो इस नाक़ाबिल-ए-बर्दाश्त ज़ुल्म-ए-अशद के दफ़अ (दूर करने) को उम्मीद है कि ग़लत बात कह देने की इजाज़त हो। और अगर किसी मालदार शख़्स के सौ दो सौ रुपये किसी ने दबा लिये तो उसके लिये सरीह झूठ की इजाज़त उसे न होनी चाहिये कि झूठ का फ़साद ज़्यादा है और इतने ज़ुल्म का तहम्मुल उस मालदार पर ऐसा गिराँ नहीं। हदीस से साबित और फ़िक़्ह का क़ायदा मुक़र्ररा बल्कि अक़्ल ओ नक़्ल का ज़ाब्ता-ए-कुल्लिया है कि: "मन इब्तलिया बिबलिय्यतैन इख़्तारा अह्वनहुमा" १- जो शख़्स दो बलाओं में गिरफ़्तार हो उनमें जो आसान है उसे अख्तियार करे (यह वह कुछ है जो मेरे पास था और हक़ का पूरा-पूरा इल्म तो मेरे रब ही के पास है। -त) दुर्रे मुख़्तार में है:

अरबी	उर्दू/हिंदी अनुवाद
अल-किज़बु मुबाहुल-लि-इहयाए हक़्क़िही व दफ़्इज़-ज़ुल्मी अन नफ़्सिही वल-मुरादुत-तारीज़ु लि-अन्ना ऐनल-किज़बि हरामून क़ाला व हुवल-हक़्क़ु क़ाला तआला "क़ुतिलल-ख़र्रासून"	झूठ हराम है और यही हक़ है अलबत्ता अपने हक़ के इज़हार और इहया (पुनर्जीवित करने) के लिये या अपनी ज़ात को ज़ुल्म ओ नुक़सान से बचाने के लिये झूठ से काम लेना मुबाह (जायज़) है बशर्ते कि झूठ ब-सूरत-ए-तारीज़ यानी इशारा कनाया या ज़ू-मानी अल्फ़ाज़ में हो इसलिये

१- अल-अश्बाह वन-नज़ाइर, अल-फ़नुल अव्वल, अल-क़ायदतुल् ख़ामिसा, इदारातुल क़ुरआन कराची १/१२३

معلوم کہ کچہری کیا حکم دے"۔ اور لفظ "کل" سے زمانہ قریب مراد لے جیسے نوجوان لڑکے کو کہتے ہیں کل کا بچہ ، حالانکہ اس کی عمر بیس بائیس سال کی ہے ، اس معنی پر قیامت کو "روزِ فردا" کہتے ہیں کل آنے والی ہے یعنی بہت نزدیک ہے۔ یا مخالف کے قبضے کی نسبت سوال ہو تو کہے "اس کا قبضہ کبھی نہ تھا" یا "کبھی نہ ہوا" اور مراد یہ ہے کہ کبھی وہ وقت بھی تھا کہ اس کا قبضہ نہ تھا۔ زیادہ تصریح درکار ہو تو کہے "اس کا قبضہ اصلاً کسی وقت ایک آن کو نہ ہوا نہ ہے" اور معنی یہ لے کہ حقیقی قبضہ ہر شے پر اللہ عزوجل کا ہے دوسرے کا قبضہ ہو نہیں سکتا، غرض جو شخص تصرفات الفاظ و معانی سے آگاہ ہے سو پہلے نکال سکتا ہے، مگر ان کا جواز بھی صرف اسی حالت میں ہے جب یہ واقعی مظلوم ہے اور بغیر ایسی پہلو دار بات کے ظلم سے نجات نہیں مل سکتی ورنہ اوپر مذکور ہوا کہ یہ بھی ہر گز جائز نہیں۔ اب رہی یہ صورت کہ جہاں پہلو دار بات سے بھی کام نہ چلے وہاں صریح کذب بھی دفع ظلم و احیائے حق کے لئے جائز ہے اس بارے میں کلمات علماء مختلف ہیں، بہت روایات سے اجازت نکلتی ہے اور بہت اکابر نے منع کی تصریح فرمائی ہے حتی الوسع احتیاط اس سے اجتناب میں ہے اور شاید قول فیصل یہ ہو کہ اس ظلم کی شدت اور کذب کی مصیبت کو عقل سلیم و دین قویم کی میزان میں تولے جدھر کا پلہ غالب پائے اس سے احتراز کرے مثلاً اس کا ذریعہ رزق تمام و کمال کسی ظالم نے چھین لیا اب اگر نہ لے تو یہ اور اس کے اہل و عیال سب فاقے مریں، اور وہ بے کذب صریح نہیں مل سکتا تو اس نا قابلِ برداشت ظلمِ اشد کے دفع کو امید ہے کہ غلط بات کہہ دینے کی اجازت ہو اور اگر کسی مالدار شخص کے سو دوسو روپے کسی نے دبالئے تو اس کے لئے صریح جھوٹ کی اجازت اسے نہ ہونی چاہئے کہ جھوٹ کا فساد زیادہ ہے اور اتنے ظلم کا تحمل اس مالدار پر ایسا گراں نہیں، حدیث

سے ثابت اور فقہ کا قاعدہ مقررہ بلکہ عقل و نقل کا ضابطہ کلیہ ہے کہ من ابتلی بلیتین اختار اھونھما ۱ ھٰذا ما عندي والعلم بالحق عند ربی- جو شخص دو بلاؤں میں گرفتار ہو ان میں جو آسان ہے اسے اختیار کرے (یہ وہ کچھ ہے جو میرے پاس تھا اور حق کا پورا پورا علم تو میرے رب ہی کے پاس ہے۔ت) در مختار میں ہے :

عربی	اردو
الكذب مباح لإحياء حقه ودفع الظلم عن نفسه و المراد التعريض لان عين الكذب حرام قال وهو الحق قال تعالى "قتل الخراصون"	جھوٹ حرام ہے اور یہی حق ہے البتہ اپنے حق کے اظہار اور احیاء کے لئے یا اپنی ذات کو ظلم و نقصان سے بچانے کے لئے جھوٹ سے کام لینا مباح ہے بشرطیکہ جھوٹ بصورت تعریض یعنی اشارہ کنایہ یا ذومعنی الفاظ میں ہو اس لئے

۱ الاشباہ والنظائر الفن الاول القاعدۃ الخامسۃ ادارۃ القرآن کراچی ۱ / ۱۲۳

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

Section 1: Arabic text: All of this is from Al-Mujtaba, and in Al-Wahbaniyya it is said: Lying is permissible for reconciliation, or to repel an oppressor, or to please one's family, or in war to achieve victory. Urdu explanation: Outright lying is forbidden. Allah Almighty has said, "Cursed be the conjecturers." All of this is quoted from "Al-Mujtaba." In "Al-Wahbaniyya," it is stated: Lying is permissible for reconciliation or to ward off oppression. It is also permissible to lie to please one's wife and to boost morale in war. (T)

Section 2: Arabic text (from Radd al-Muhtar): Lying is permissible to revive one's right, such as a person entitled to pre-emption (shafi') who learns of a sale at night. When morning comes, he testifies and says, "I have just found out." Similarly, a minor girl who reaches puberty at night and chooses to separate from her husband says, "I have just seen the blood (of menstruation)." Know that lying is sometimes permissible and sometimes obligatory. The rule for this, as mentioned in 'Tabyin al-Maharim' and others from 'Ihya [Ulum al-Din]', is: for every commendable goal that can be reached by both truthfulness and lying, lying is forbidden. If it can only be reached through lying, then it is permissible if achieving that goal is permissible, and it is obligatory if achieving that goal is obligatory. For example, if one sees an innocent person hiding from an oppressor who intends to kill or harm him, then lying in this situation is... Urdu explanation: Lying is permissible to establish one's right. For instance, if a person entitled to pre-emption (shafi') learns about a sale at night, he may testify in the morning saying he only just found out about the deal. Likewise, if a minor girl reaches puberty at night and tells her husband in the morning that she has just seen the menstrual blood. Be aware that lying is sometimes permissible and sometimes obligatory. The guideline for this, as mentioned in 'Tabyin al-Maharim' etc. with reference to 'Ihya al-Ulum', is: for any good objective that can be achieved through both truth and lying, lying is forbidden in that case. And for any good objective that can only be reached through lying, lying is permissible if achieving that objective is permissible. If achieving that objective is obligatory, then lying becomes obligatory. For example, if you see an innocent person (Ma'sum) hiding from an oppressor who intends to kill or harm them, then in such a situation...

Footnote: [1] Durr al-Mukhtar, Kitab al-Hazr wal-Ibaha, Chapter on Selling, Mujtabai Press, Delhi, 2/254. Page 355 of 720

फ़तावा रज़विया, खंड २४

अनुभाग १: अरबी पाठ: यह सब 'अल-मुज्तबा' से है और 'अल-वहबनिया' में कहा गया है: मेल-मिलाप के लिए, या अत्याचारी को रोकने के लिए, या परिवार को प्रसन्न करने के लिए, या युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए झूठ बोलना जायज़ है। उर्दू व्याख्या: स्पष्ट रूप से झूठ बोलना हराम है। अल्लाह तआला का इरशाद है: "अटकलें लगाने वाले मारे जाएँ।" यह सब 'अल-मुज्तबा' से उद्धृत है। 'वहबनिया' में फ़रमाया: सुलह (मेल-मिलाप) या ज़ुल्म को रोकने के लिए झूठ बोलना जायज़ है, बीवी की रज़ामंदी (प्रसन्नता) के लिए और जंग में हौसला बढ़ाने के लिए भी झूठ बोलना मुबाह (अनुमेय) है। (त)

अनुभाग २: अरबी पाठ (रद्दुल मुहतार से): अपना अधिकार जीवित करने के लिए झूठ बोलना मुबाह है, जैसे कि शफ़ीअ (शुफ़ा का अधिकार रखने वाला) जिसे रात में बिक्री का पता चला, जब सुबह हुई तो वह गवाही देता है और कहता है, "मुझे अभी पता चला है।" इसी तरह एक नाबालिग लड़की जो रात में बालिग हुई और उसने खुद को पति से अलग करने का विकल्प चुना, वह कहती है, "मैंने अभी खून (हैज़) देखा है।" जान लें कि झूठ कभी मुबाह होता है और कभी वाजिब। इसका नियम, जैसा कि 'तबीनुल महारिम' आदि में 'एहयाउल उलूम' के हवाले से वर्णित है: हर वह सराहनीय लक्ष्य जिसे सच्चाई और झूठ दोनों से प्राप्त किया जा सकता है, वहाँ झूठ बोलना हराम है। और हर वह सराहनीय लक्ष्य जो केवल झूठ से ही प्राप्त हो सके, तो झूठ बोलना मुबाह है यदि उस लक्ष्य को प्राप्त करना मुबाह हो, और वाजिब है यदि उस लक्ष्य को प्राप्त करना वाजिब हो। उदाहरण के तौर पर, यदि कोई किसी निर्दोष को किसी ऐसे अत्याचारी से छिपते हुए देखे जो उसे जान से मारने या कष्ट पहुँचाने का इरादा रखता हो, तो ऐसी स्थिति में झूठ बोलना... उर्दू व्याख्या: अपना अधिकार साबित करने के लिए झूठ बोलना मुबाह है जैसे शुफ़ा करने वाले को बिक्री का ज्ञान रात को हुआ था, सुबह के समय वह यह गवाही दे कि मुझे अभी-अभी सौदे के बारे में ज्ञान हुआ है। इसी तरह नाबालिग लड़की रात को बालिग हुई और उसने शौहर से सुबह यह कहा कि मैंने अभी-अभी हैज़ का खून देखा है। जान लीजिए कि झूठ कभी मुबाह और कभी वाजिब होता है। इसमें नियम जैसा कि 'तबीनुल महारिम' वगैरह में 'एहयाउल उलूम' के हवाले से ज़िक्र है कि हर अच्छा मक़सूद (लक्ष्य) जिस तक सच्चाई और झूठ दोनों से पहुँचा जा सके, तो इस सूरत में झूठ बोलना हराम है। और हर अच्छा मक़सूद जिस तक पहुँच सिर्फ झूठ से हो सके, तो झूठ बोलना मुबाह है जबकि उस मक़सूद को हासिल करना मुबाह हो। और अगर मक़सूद हासिल करना वाजिब हो, तो फिर झूठ बोलना वाजिब है जैसा कि बेगुनाह

(मासूम) को देखे जो किसी ऐसे ज़ालिम से छिप रहा है जो उसे मार डालने या दुख पहुँचाने का इरादा रखता हो, तो ऐसी सूरत में...

पादलेख: [1] दुर्रे मुख़्तार, किताबुल हज़्र वल इबाहह, फ़स्ल फ़िल बैअ, मत्तबअ मुज्तबाई दिल्ली २/२५४। पृष्ठ ३५५/७२०

فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۴

پہلا حصہ: عربی عبارت: الکل عن المجتبی وفی الوھبانیة قال: وللصلح جاز الکذب او دفع ظالم واھل لترضی والقتال لیظفروا[1] اردو وضاحت: کہ صریح جھوٹ حرام ہے۔ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے مارے جائیں انکل پچو سے کام لینے والے۔ یہ سب "المجتبی" سے منقول ہے، اور وہبانیتہ میں فرمایا: صلح یا دفعِ ظلم کے لئے جھوٹ بولنا جائز ہے بیوی کی رضاجوئی کے لئے اور جنگ میں حوصلہ افزائی کے لئے بھی جھوٹ بولنا مباح ہے۔ (ت)

دوسرا حصہ: عربی عبارت (ردالمحتار سے): الکذب مباح لاحیاء حقه کالشفیع یعلم بالبیع باللیل فاذا اصبح یشهد ویقول علمت الأن وکذا الصغیرة تبلغ فی اللیل و تختار نفسها من الزوج وتقول رأیت الدم الأن واعلم ان الکذب قدیباح وقد یجب والضابط فیه کما فی تبیین المحارم وغیره عن الاحیاء ان کل مقصود محمود یمکن التوصل الیه بالصدق والکذب جمیعاً فالکذب فیه حرام وان امکن التوصل الیه بالکذب وحده فمباح ان ابیح تحصیل ذلك المقصود وواجب ان وجب کما لو رأی معصوماً اختفی من ظالم یرید قتله او ایذائه فالکذب هنا اردو وضاحت: اپنا حق ثابت کرنے کے لئے جھوٹ بولنا مباح ہے جیسے شفعہ کرنے والے کو بیع کا علم رات کو ہوا تھا صبح کے وقت یہ گواہی دے کہ مجھے ابھی ابھی سودے کے بارے میں علم ہوا ہے، اسی طرح نابالغہ لڑکی رات کو بالغ ہوئی اور اس نے شوہر سے صبح یہ کہا کہ میں نے ابھی ابھی خون حیض دیکھا ہے، جان لیجئے کہ جھوٹ کبھی مباح اور کبھی واجب ہوتا ہے اس میں ضابطہ جیسا کہ تبیین المحارم وغیرہ میں احیاء العلوم کے حوالہ سے مذکور ہے کہ ہر اچھا مطلوب کہ جس تک صدق وکذب دونوں سے رسائی ہوسکے تو اس صورت میں جھوٹ بولنا حرام ہے اور ہر اچھا مطلوب جس تک رسائی صرف کذب سے ہو سکے تو جھوٹ بولنا مباح ہے جبکہ اس مطلوب کو حاصل کرنا مباح ہو اور اگر مطلوب حاصل

کرنا واجب ہو تو پھر جھوٹ بولنا واجب ہے جیسا کہ بے گناہ (معصوم) کو دیکھے جو کسی ایسے ظالم سے روپوش ہو رہا ہے جو اسے مار ڈالنے یا ایذا پہنچانے کا ارادہ رکھتا ہو تو ایسی صورت میں

حاشیہ: [1] در مختار کتاب الحظر والاباحة فصل فی البیع مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۲۵۴ صفحہ ۳۵۵ از ۷۲۰

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Main Text Body] It is mandatory (to save this oppressed person) to lie and say, "I did not see him" or "I have no knowledge about him." Similarly, if an oppressor asks about someone's trust/deposit which he intends to seize, it is necessary—meaning mandatory—to express ignorance and deny it. In short, when any noble purpose or desired goal cannot be achieved without lying, then in that case, lying is permissible (mubah), whether it pertains to war, or to reconciliation between Muslims, or for the consolation of one who has suffered a loss. And if the ruler of the time asks him about a sin he committed in private, such as adultery, drinking alcohol, etc., then it is permissible for him to say plainly, "I did not do this," because revealing it is another sin. It is also permissible for him to refuse to disclose the secret of another Muslim brother when questioned about him. It is appropriate for a person to compare the corruption caused by a lie with the outcome of the truth. If there is a fear of chaos from the truth, then lying is forbidden [Note: This word 'haram' appears in the text, though contextually it should be 'permissible' based on the Arabic source], and if it concerns his own person, it is recommended (mustahabb) not to lie. And if it concerns someone else, then it is not permissible to be lenient or overlook it regarding the rights of the other, and caution lies in not overlooking it because it is [only] permissible. (T)

Issue 126: From Daulatpur, district Bulandshahr, sent by Sher Muhammad Khan Sahib, 15 Sha'ban 1329 AH. If someone makes a firm promise regarding a matter with a Sharia oath (Muhammadiya), how is it to act against it?

[1] Radd al-Muhtar, Kitab al-Hazr wa al-Ibaha, Section on Sale, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/274. Page 356 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

[मुख्य पाठ] (इस मज़लूम को बचाने के लिए) झूठ बोलना और यह कहना कि मैंने उसे नहीं देखा या मुझे उसके बारे में कोई ज्ञान नहीं, वाजिब है। इसी तरह अगर कोई ज़ालिम किसी की अमानत के बारे में पूछे जिसे लेने का वह इरादा रखता हो, तो उस अमानत के बारे में अनभिज्ञता का इज़हार और इनकार कर देना ज़रूरी यानी वाजिब है। सारांश यह कि जब कोई मक़सूद व मतलूब (वांछित उद्देश्य) बिना झूठ बोले पूरा न हो, तो उस स्थिति में झूठ बोलना मुबाह (जायज़) है, चाहे उसका संबंध युद्ध से हो, या मुसलमानों के बीच सुलह कराने से हो, या जिसका नुकसान हुआ हो उसकी दिलजोई के लिए हो। और अगर बादशाह-ए-वक़्त उससे ऐसे गुनाह के बारे में प्राप्त करे जो उससे परदे में सरज़द हुआ हो जैसे बदकारी, शराबनोशी वग़ैरा, तो उसके लिए रवा (जायज़) है कि साफ़ कह दे कि मैंने यह काम नहीं किया क्योंकि उसका ज़ाहिर करना दूसरा गुनाह है। और उसके लिए यह भी जायज़ है कि किसी और मुसलमान भाई के बारे में प्राप्त करने पर भाई का भेद ज़ाहिर करने से इनकार कर दे। और मुनासिब है कि आदमी झूठ के फ़साद का सच्चाई के नतीजे से मुक़ाबला करे। अगर सच्चाई से फ़साद का अंदेशा हो तो झूठ बोलना हराम है [नोट: पाठ में 'हराम' लिखा है, हालाँकि अरबी मूल के अनुसार यह 'जायज़' होना चाहिए], और अगर इसका ताल्लुक़ उसकी अपनी ज़ात से हो तो झूठ न बोलना मुस्तहब है, और अगर किसी दूसरे से ताल्लुक़ हो तो दूसरे के हक़ में चश्मपोशी से काम लेना या नज़रअंदाज़ करना जायज़ नहीं है और होशियारी चश्मपोशी न करने में है क्योंकि यह मुबाह है। (त)

मसला १२६: दौलतपुर, जिला बुलंदशहर से प्रेषक शेर मोहम्मद ख़ाँ साहब, १५ शाबान १३४१ हिजरी। किसी अमर का वादा मुस्तहकम हल्फ़-ए-शरई मोहम्मदिया से करे, उसके ख़िलाफ़ करना कैसा है?

[1] रद अल-मुह्तार, किताब अल-हज्र वल-इबाह, बिक्री पर अध्याय, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 5/274। पेज 356/720

واجب وکذا لو سأله عن ودیعة یرید اخذها یجب انکارها ومهما کان لایتم مقصود حرب او اصلاح ذات البین او استمالة قلب المجنی علیه الا بالکذب فیباح ولو سأله سلطان عن فاحشة وقعت منه سرا کزنا او شرب فله ان یقول مافعلته لان اظهارها فاحشة اخری وله ایضا ان ینکر سراخیه وینبغی ان یقابل مفسدة الکذب المفسدة المترتبة علی الصدق فان کانت مفسدة الصدق اشد فله الکذب وان بالعکس او شك حرم وان تعلق بنفسه استحب ان لایکذب وان تعلق بغیره لم تجز المسامحة بحق غیره والحزم ترکه حیث ابیح ۔

(اس مظلوم کو بچانے کے لئے) جھوٹ بولنا اور یہ کہنا کہ میں نے اسے نہیں دیکھا یا مجھے اس کے بارے میں کوئی علم نہیں، واجب ہے۔ اسی طرح اگر کوئی ظالم کسی کی امانت کے متعلق پوچھے جس کے لینے کا وہ ارادہ رکھتا ہو تو اس امانت کے بارے میں لاعلمی کا اظہار اور انکار کردینا ضروری یعنی واجب ہے حاصل یہ کہ جب کوئی مقصود و مطلوب بغیر جھوٹ کہے پورا نہ ہو اس صورت میں جھوٹ بولنا مباح ہے خواہ اس کا تعلق جنگ سے ہو یا مسلمانوں کے درمیان صلح کرانے سے ہو یا جس کا نقصان ہوا ہو اس کی دلجوئی کے لئے ہو اور اگر بادشاہ وقت اس سے ایسے گناہ کے بارے میں دریافت کرے جو اس سے درپردہ سرزد ہوا ہو جیسے بدکاری۔ شراب نوشی وغیرہ تو اس کے لئے روا ہے کہ صاف کہہ دے کہ میں نے یہ کام نہیں کیا کیونکہ اس کا ظاہر کرنا دوسرا گناہ ہے اور اس کے لئے یہ بھی جائز ہے کہ کسی اور مسلمان بھائی کے بارے میں دریافت کئے پر بھائی کا بھید ظاہر کرنے سے انکار کر دے، اور مناسب ہے کہ آدمی جھوٹ کے فساد کا سچائی کے نتیجے سے تقابل کرے۔ اگر سچائی سے فساد کا اندیشہ ہو تو جھوٹ کہنا حرام ہے اور اگر اس کا تعلق اس کی اپنی ذات سے ہو تو جھوٹ نہ بولنا مستحب ہے، اور اگر

کسی دوسرے سے تعلق ہو تو دوسرے کے حق میں چشم پوشی سے کام لینا یا صرف نظر کرنا جائز نہیں ہے اور ہوشیاری چشم پوشی نہ کرنے میں ہے کیونکہ یہ مباح ہے۔ (ت)

مسئلہ ۱۲۶: از دولت پور ضلع بلند شہر مرسلہ شیر محمد خاں صاحب ۱۵ شعبان ۱۳۲۹ھ کسی امر کا وعدہ مستحکم حلف شرعی محمدیہ سے کرے اس کے خلاف کرنا کیسا ہے؟

[1] ردالمحتار کتاب الحظر والاباحة فصل في البیع دار احیاء التراث العربي بیروت ۵/ ۲۷۴ صفحہ ۳۵۶ از ۷۲۰

Volume 24 Fatawa Rizvia

The Answer:

If that matter was obligatory and mandatory, then breaking that promise is forbidden (Haram) and unlawful. And if that matter was unlawful and forbidden, such as someone making a firm promise under oath to drink wine, then breaking it is mandatory and obligatory. And if it was a permissible (Mubah) matter and some excuse arose, then breaking the promise is permissible, and without an excuse, it is disliked. Yes, if at the time of making the promise, it was in the heart that one would not fulfill it, then making such a promise is also forbidden (Haram). The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"It is not breaking the promise that a man makes a promise with the intention to fulfill it, but breaking the promise is when a man makes a promise while his intention is not to fulfill it." (Narrated by Abu Ya'la in his Musnad from Zayd bin Arqam, may Allah be pleased with him, with a good chain of transmission (Hasan). And Allah Almighty knows best.)

This is not a violation of a promise that a man makes a promise to someone and his intention is that he will fulfill it, but a violation is that a man makes a promise to someone and the intention is that he will not fulfill it. Abu Ya'la narrated this in his Musnad from Zayd bin Arqam (may Allah be pleased with him) with a good chain of narration. And Allah Almighty knows everything well. (T)

Problem 127: What kind of sin is lying oneself and forcing another person to lie?

The Answer:

Lying and making someone lie without a Sharia necessity is a major sin.

Allah Almighty said: "Cursed be the conjecturers."[2] And Allah Almighty knows best.

Allah Almighty said: May those people be destroyed who are the ones making things up with guesswork. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 128: Questioned by Muhammad Qasim Khokhar from Dhamonki, Tehsil Daska, District Sialkot, Punjab, on Monday, 11th Rabi al-Awwal 1336 AH. What do the Hanafi scholars (may Allah Almighty have mercy on them) say regarding this issue: a follower (Muqtadi) who, with the aim of harming the reputation of his Imam, insults and mocks him in public with contempt, although he has previously...

[1] Kanz al-Ummal, via Maz' from Zayd bin Arqam, Hadith 718, Muassasat al-Risalah, Beirut, 3 / 34. [2] Al-Quran al-Karim, 51 / 10.

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

जवाब:

अगर वह मामला वाजिब और फ़र्ज़ था, तो उस वादे का ख़िलाफ़ करना हराम और नाजायज़ है। और अगर वह मामला नाजायज़ और हराम था, जैसे किसी ने शराब पीने का कड़े हलफ़ (शपथ) के साथ वादा किया, तो उसका ख़िलाफ़ करना फ़र्ज़ और वाजिब है। और अगर वह मुबाह (अनुमति योग्य) मामला था और कोई बहाना पेश आया, तो वादा ख़िलाफ़ी जायज़ है, और बिना किसी बहाने के नापसंद है। हाँ, वादा करते समय ही अगर दिल में था कि वह उसे पूरा नहीं करेगा, तो ऐसा वादा करना भी हराम है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं:

"यह वादा ख़िलाफ़ी नहीं है कि आदमी वादा करे और उसकी नियत उसे पूरा करने की हो, लेकिन वादा ख़िलाफ़ी यह है कि आदमी वादा करे और उसकी नियत उसे पूरा न करने की हो।" (अबू याला ने इसे अपनी मुस्नद में ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु से हसन सनद के साथ रिवायत किया। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।)	यह वादे की ख़िलाफ़वर्जी नहीं है कि आदमी किसी से वादा करे और उसका इरादा यह हो कि वह उसे पूरा करे, लेकिन ख़िलाफ़वर्जी यह है कि आदमी किसी से वादा करे और नियत यह हो कि वह उसे पूरा नहीं करेगा। इसे अबू याला ने अपनी मुस्नद में ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले से हसन सनद के साथ रिवायत किया है। और अल्लाह तआला सब कुछ अच्छी तरह जानता है। (त)

मसला 127: स्वयं झूठ बोलना और दूसरे व्यक्ति को मजबूर करके झूठ बुलवाना कैसा गुनाह है?

जवाब:

बिना शरीयत की ज़रूरत के झूठ बोलना और बुलवाना कबीरा (बड़ा) गुनाह है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "मारे जाएँ अटकलपच्चू बातें करने वाले।"[2] और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।	अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया: मारे जाएँ वह लोग जो अटकलपच्चू से बातें बनाने वाले हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 128: प्रार्थी मोहम्मद क़ासिम खोखर, निवासी ढामोंकी, तहसील डस्का, ज़िला सियालकोट, पंजाब। सोमवार, 11 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1336 हिजरी। हनफ़ी उलेमा (अल्लाह तआला उन पर रहम फ़रमाए) इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि: जो मुक़्तदी अपने इमाम की नेकनामी को नुक़सान

पहुँचाने की ग़रज़ से आम लोगों में हिकारत के साथ उसकी तौहीन और मज़ाक उड़ाए, हालांकि उसे पहले कई...

---

[1] कंज़ुल उम्माल, रिवायत ज़ैद बिन अरक़म, हदीस 718, मुअस्ससतुर रिसाला, बेरूत, 3 / 34 [2] अल-क़ुरआन अल-करीम, 51 / 10

الجواب:

اگر وہ امر واجب و فرض تھا تو اس وعدہ کا خلاف کرنا حرام و ناجائز ہے اور اگر وہ امر ناجائز و حرام تھا جیسے کسی نے شراب پینے کا بحلف مستحکم وعدہ بحلف کیا تو اس کا خلاف کرنا فرض و واجب ہے اور اگر وہ مباح امر تھا اور کوئی عذر پیش آیا تو خلاف وعدہ جائز ہے اور بلاعذر ناپسند ہے ہاں وعدہ کرتے وقت ہی دل میں تھا کہ پورا نہ کرے گا تو ایسا وعدہ کرنا بھی حرام ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

لیس الخلف ان یعد الرجل ومن نیتہ ان یفی ولکن الخلف ان یعد الرجل ومن نیتہ ان لا یفی۔ رواہ ابو یعلیٰ فی مسندہ عن زید بن ارقم رضی اللہ تعالٰی عنہ بسند حسن۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

یہ وعدے کی خلاف ورزی نہیں کہ آدمی کسی سے وعدہ کرے اور اس کا ارادہ یہ ہو کہ وہ اسے پورا کرے، لیکن خلاف ورزی یہ ہے کہ آدمی کسی سے وعدہ کرے اور نیت یہ ہے کہ وہ اسے پورا نہ کرے گا۔ اس کو ابویعلیٰ نے اپنی مسند میں زید بن ارقم رضی اللہ تعالٰی عنہ کے حوالے سے بسند حسن اس کو روایت کیا ہے۔ اور اللہ تعالیٰ سب کچھ اچھی طرح جانتا ہے۔ (ت)

مسئلہ ۱۲۷: خود جھوٹ بولنا اور دوسرے شخص کو مجبور کرکے جھوٹ بلوانا کیسا گناہ ہے؟

الجواب:

بلا ضرورت شرعی جھوٹ بولنا اور بلوانا کبیرہ گناہ ہے،

قال اللہ تعالٰی "قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ" ۲۔ اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا: مارے جائیں وہ لوگ جو اٹکل پچو سے باتیں بنانے والے ہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۲۸: مسئولہ محمد قاسم کھو کھر از ڈھا مونکی تحصیل ڈسکہ ضلع سیالکوٹ پنجاب بروز دوشنبہ بتاریخ ۱۱ ربیع الاول شریف ۱۳۳۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے احناف رحمہم اللہ تعالیٰ اس مسئلہ میں کہ جو مقتدی اپنے امام کی نیک نامی کو گزند پہنچانے کی غرض سے بچشم حقارت عوام الناس میں اس کی توہین و ہجو کرے حالانکہ اس کو سابقہ کئی...

---

۱ کنز العمال بر مزع عن زید بن ارقم حدیث ۷۱۸ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۳ / ۳۴ ۲ القرآن الکریم ۵۱ / ۱۰

Volume 24 Fatawa Razawiyya

Admonition has been given several times, but he does not desist from his intention. For such a person, according to the noble Shari'ah, as a warning, is any expiation (Kaffarah) mandatory besides repentance? If so, what and how much? Previously, this person has also paid an expiation for providing unlawful assistance in a Shari'ah matter. Please provide a detailed answer along with your signature and seal. May Allah Almighty grant you a good reward. Peace.

Answer: The accusation he makes against the Imam, if false, makes him a slanderer and deserving of severe punishment. It is stated in a Sahih (authentic) Hadith that whoever falsely accuses a Muslim will be thrown into the stinking and intensely hot pus that flows from the bodies of the people of Hell like a river, and he will be ordered to stay in it until he provides proof of what he said; and how can he provide it when it is a lie? And if the accusation is true, but the flaw in the Imam is hidden, which he conceals and does not wish to reveal, and this person became aware of it and publicizes it, then he is guilty of three sins: spreading indecency is one, and speaking behind the Imam's back is backbiting (Ghibah), about which it is stated in a Sahih Hadith:

"Backbiting is more severe than adultery."1 | Backbiting is more severe than adultery.

And what he said against the Imam is causing harm to a Muslim (Iza-e-Muslim), and it is stated in a Sahih Hadith that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"Whoever hurts a Muslim has hurt me, and whoever hurts me has hurt Allah." | "Whoever has caused harm to a Muslim without a Shari'ah reason has caused harm to me, and whoever has caused harm to me has caused harm to Allah." (Tabarani narrated it in Al-Awsat from Anas [may Allah be pleased with him] with a good chain of narration. - T) Narrated by Tabarani2 in Al-Awsat from Anas (may Allah be pleased with him) with a good chain.

Repentance is obligatory for him, and seeking forgiveness from the Imam and pleasing him is also necessary as it is a Right of the Servant (Haqq al-Abd), but besides that, there is no financial expiation or anything else. And Allah Almighty knows best.

Problem 129: From Khandesh district, Sitara neighborhood, inquired by Hafiz Ilyas Mahbub Bhusawal. 7 Ramadan 1339 AH If Zaid backbites another person, what should he do? Explain and be rewarded.

1. Shu'ab al-Iman, Hadith 6741, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 5/306; Majma' al-Zawa'id, Chapter: What has been narrated regarding backbiting, etc., Dar al-Kutub, Beirut, 8/91
2. Al-Mu'jam al-Awsat of Tabarani, Hadith 3633, Maktabat al-Ma'arif, Riyadh, 4/373

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

दफ़ा फ़हमश भी की गई है मगर वह अपने इरादे से बाज़ नहीं आता है ऐसे शख़्स के हक़ में अज़रू-ए-शरह शरीफ़ बतौरे तन्बीह सिवाए तौबा के कुछ कफ़्फ़ारा लाज़िम है अगर है तो क्या और किस क़दर। साबिक़ा अज़ीं इस शख़्स ने एक शरी'ई मामला में नाजायज़ इमदाद देने पर कफ़्फ़ारा भी अदा किया हुआ है, जवाब इसका तफ़सील म'अ अपने दस्तख़त व मोहर सब्त तहरीर फ़रमादें अल्लाह तआला आप को जज़ा-ए-ख़ैर अता फ़रमाए। वस्सलाम

अल-जवाब: जो इल्ज़ाम वह इमाम पर रखता है अगर झूठा है तो मुफ़्तरी और सख़्त अज़ाब का मुस्तहिक़ सहीह हदीस में है जो किसी मुसलमान पर झूठा इल्ज़ाम रखे वह सख़्त बदबू और सख़्त गर्म पीप जो दोज़खिओं के बदन से बह कर मिस्ल दरिया के हो जाएगी इसमें डाला जाएगा और हुक्म दिया जाएगा कि इसी में रह जब तक कि अपने कहे हुए का सुबूत न दे दे और कहाँ से दे सकेगा जबकि झूठी बात है और अगर इल्ज़ाम सच्चा है मगर इमाम में वह ऐब ख़ुफ़िया है जिसे वह छुपाता है और ज़ाहिर नहीं करना चाहता यह इस पर मुत्तले हो गया और इसे शाए' करता है तो तीन गुनाहों का मुर्तकिब है इशाअत-ए-फ़ाहशा एक और इमाम के पस-पुश्त कहा तो ग़ीबत जिसे सहीह हदीस में फ़रमाया:

"ग़ीबत ज़िना से सख़्त तर है।"1 | ग़ीबत ज़िना से सख़्त तर है।

और जो इमाम के बर-रद कहा तो यह ईज़ा-ए-मुस्लिम है और सहीह हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

"जिसने किसी मुसलमान को ईज़ा दी उसने मुझे ईज़ा दी और जिसने मुझे ईज़ा दी उसने अल्लाह को ईज़ा दी।" | "जिसने किसी मुसलमान को बिला वजह शरी'ई ईज़ा दी उसने मुझे ईज़ा दी और जिसने मुझे ईज़ा दी उसने अल्लाह को ईज़ा दी" (तबरानी ने औसत में अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बसन्द-ए-हसन इसे रिवायत किया। त) रवाह-अत-तबरानी2 फ़िल औसत 'अन अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बसन्द-ए-हसन।

इस पर तौबा फ़र्ज़ है और इमाम से मुआफ़ी चाहना और उसे राज़ी करना भी कि हक़-उल-अब्द है मगर सिवा कोई माली कफ़्फ़ारा वग़ैरा कुछ नहीं। वल्लाह तआला अ'लम।

मसअला 129: अज़ ज़िला खान्देस मुहल्ला सितारा मसऊला हाफ़िज़ इलियास महबूब भुसावल। 7 रमज़ान 1339 हि. ज़ैद एक दूसरे की ग़ीबत करे तो उसको क्या करना चाहिये? बैय्यिनू तुजरू।

1. शु'अब अल-ईमान हदीस 6741, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 5/306; मजमा-अज़-ज़वाइद, बाब: मा जा-अ फ़िल ग़ीबत वग़ैरा, दार अल-कुतुब, बेरुत, 8/91
2. अल-मुअजम अल-औसत लित-तबरानी हदीस 3633, मकतबत अल-मआरिफ़ रियाज़ 4/373

دفعہ فہمائش بھی کی گئی ہے مگر وہ اپنے ارادہ سے باز نہیں آتا ہے ایسے شخص کے حق میں ازروئے شرع شریف بطور تنبیہ سوائے توبہ کے کچھ کفارہ لازم ہے اگر ہے تو کیا اور کس قدر۔ سابقہ ازیں اس شخص نے ایک شرعی معاملہ میں ناجائز امداد دینے پر کفارہ بھی ادا کیا ہوا ہے، جواب اس کا تفصیل مع اپنے دستخط و مہر ثبت تحریر فرمادیں اللہ تعالی آپ کو جزاء خیر عطا فرمائے۔ والسلام

الجواب: جو الزام وہ امام پر رکھتا ہے اگر جھوٹا ہے تو مفتری اور سخت عذاب کا مستحق صحیح حدیث میں ہے جو کسی مسلمان پر جھوٹا الزام رکھے وہ سخت بدبو اور سخت گرم پیپ جو دوزخیوں کے بدن سے بہہ کر مثل دریا کے ہو جائے گا اس میں ڈالا جائے گا اور حکم دیا جائے گا کہ اسی میں رہ جب تک کہ اپنے کہے ہوئے کا ثبوت نہ دے دے اور کہاں سے دے سکے گا جبکہ جھوٹی بات ہے اور اگر الزام سچا ہے مگر امام میں وہ عیب خفیہ ہے جسے وہ چھپاتا ہے اور ظاہر نہیں کرنا چاہتا یہ اس پر مطلع ہو گیا اور اسے شائع کرتا ہے تو تین گناہوں کا مرتکب ہے اشاعت فاحشہ ایک اور امام کے پس پشت کہا تو غیبت جسے صحیح حدیث میں فرمایا:

الغیبۃ اشد من الزنا ۱ | غیبت زنا سے سخت تر ہے۔

اور جو امام کے بر رد کہا تو یہ ایذائے مسلم ہے اور صحیح حدیث میں ہے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

من اذی مسلماً فقد اذانی ومن اذانی فقد اذی اللہ۔ | جس نے کسی مسلمان کو بلا وجہ شرعی ایذا دی اس نے مجھے ایذا دی اور جس نے مجھے ایذا دی اس نے اللہ کو ایذا دی (طبرانی نے اوسط میں

انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بسند حسن اسے روایت کیا۔ت) رواہ الطبرانی ۲ فی الاوسط عن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ بسند حسن۔

اس پر توبہ فرض ہے اور امام سے معافی چاہنا اور اسے راضی کرنا بھی کہ حق العبد ہے مگر سوا کوئی مالی کفارہ وغیرہ کچھ نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۲۹: از ضلع خاندیس محلہ ستارہ مسئولہ حافظ الیس محبوب بھوساول ۷ رمضان ۱۳۳۹ھ

زید ایک دوسرے کی غیبت کرے تو اس کو کیا کرنا چاہئے؟ بینوا توجروا۔

۱ شعب الایمان حدیث ۶۷۴۱ دار الکتب العلمیہ بیروت ۵ / ۳۰۶، مجمع الزوائد باب ماجاء فی الغیبۃ الخ دار الکتب بیروت ۸ / ۹۱ ۲ المعجم الاوسط للطبرانی حدیث ۳۶۳۳ مکتبہ المعارف ریاض ۴ / ۳۷۳

Vol. 24 Fatawa Razawiyya

The Answer: Backbiting (Gheebat) is forbidden, except in specific cases of exception. For example, backbiting a sinner (fasiq) regarding their sin is permissible. It is mentioned in a Hadith: "There is no backbiting for a sinner."[1] (Meaning, if a sinner is spoken of in regard to their sin, it is not considered backbiting. - T). And it is very necessary to mention the evils of those with deviant beliefs (bad-mazhab). It is stated in a Hadith:

"Do you hesitate to mention the wicked person so that people may know him? Mention the wicked person for what he is, so that people may be wary of him."[2]

Do you hesitate to mention the evildoer? Then when will people recognize him? Therefore, describe the defects and evils present in the evildoer so that people may avoid him. (T)

However, for those whom backbiting is not permissible, it is a grave major sin (kabira). It is mentioned in a Hadith: "Backbiting is worse than adultery."[3] (Gheebat is worse than committing adultery. - T). Such a person should be counselled and asked to repent; if they do not agree, they should be left alone. And Allah Almighty knows best.

---

[1] Kashf al-Khafa, Hadith 3080, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut, 2/344. [2] Tarikh Baghdad, biography 349 Muhammad ibn Ahmad al-Wati, Dar al-Kitab al-Arabi Beirut, 1/382; Nawadir al-Usul by al-Tirmidhi, Principle 166, Dar Sadir Beirut, p. 213. [3] Mishkat al-Masabih, Book of Manners, Chapter on Guarding the Tongue and Backbiting, Third Section, Mujtabai Delhi, p. 415; Shu'ab al-Iman, Hadith 6721 and 6726, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut, 5/306.

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

जवाब: गीबत (पीठ पीछे बुराई करना) हराम है, लेकिन अपवाद वाली स्थितियों में, उदाहरण के लिए एक फासिक (पापी) की गीबत उसके पाप के संबंध में जायज़ है। हदीस में फरमाया गया है: "पापी के लिए कोई गीबत नहीं है।"[1] (यानी, अगर किसी पापी की गीबत उसके पाप के लिए की जाए तो वह गीबत नहीं मानी जाती। - त)। और बद-मज़हब (भटके हुए मत वालों) की बुराइयाँ बयान करना बहुत ज़रूरी है। हदीस में है:

"क्या तुम बदकार का ज़िक्र करने से घबराते हो ताकि लोग उसे पहचान सकें? बदकार का ज़िक्र उसकी बुराइयों के साथ करो ताकि लोग उससे बच सकें।"[2]

क्या तुम बदकार का ज़िक्र करने से डरते हो? तो फिर लोग उसे कब पहचानेंगे? इसलिए, बदकार में जो भी दोष और कमियां हैं उन्हें बयान करो ताकि लोग उससे सुरक्षित रहें। (त)

हाँ, जिसकी गीबत जायज़ नहीं है, वह एक गंभीर कबीरा गुनाह (बड़ा पाप) है। हदीस में फरमाया गया: "गीबत व्यभिचार (ज़िना) से भी बदतर है।"[3] (गीबत करना ज़िना करने से भी बुरा है। - त)। उसे समझाना चाहिए, तौबा करानी चाहिए; अगर वह न माने तो उसे छोड़ देना चाहिए। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

---

[1] कश्फ़ अल-खफ़ा, हदीस 3080, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरुत, 2/344। [2] तारीख़ बगदाद, जीवनी 349 मुहम्मद बिन अहमद अल-वाती, दार अल-किताब अल-अरबी बेरुत, 1/382; नवाद़िर अल-उ़सूल अल-तिर्मिज़ी, मूल 166, दार सादिर बेरुत, पृष्ठ 213। [3] मिशकात अल-मसाबीह, किताब अल-अदब, ज़ुबान की हिफ़ाज़त और गीबत का अध्याय, तीसरा भाग, मुज्तबाई दिल्ली, पृष्ठ 415; शेअ़ब अल-ईमान, हदीस 6721 और 6726, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरुत, 5/306।

पृष्ठ 359 का 720

الجواب: غیبت حرام ہے مگر مواضع استثناء میں، مثلاً فاسق کی غیبت اس کے فسق میں جائز ہے، حدیث میں فرمایا: لا غیبۃ لفاسق[1] (اگر فاسق کی غیبت کی جائے تو وہ غیبت نہیں۔ ت) اور بدمذہب کی برائیاں بیان کرنا بہت ضرور ہے حدیث میں ہے:

اترعون عن ذکر الفاجر متی یعرفہ الناس اذکروا الفاجر بما فیہ یحذرہ الناس[2]

کیا تم بدکار کا ذکر کرنے سے گھبراتے ہو تو پھر کب لوگ اسے پہچانیں گے، لہٰذا بدکار میں جو کچھ نقائص اور خرابیاں ہیں انہیں بیان کرو تاکہ لوگ اس سے بچیں۔ (ت)

ہاں جس کی غیبت جائز نہیں وہ سخت کبیرہ، حدیث میں فرمایا: الغیبۃ اشد من الزنا[3] (غیبت زنا کرنے سے بدتر ہے۔ ت) اسے سمجھانا چاہئے توبہ لینا چاہئے، نہ مانے تو اسے چھوڑ دینا چاہئے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

---

[1] کشف الخفاء حدیث ۳۰۸۰ دار الکتب العلمیہ بیروت ۲ / ۳۴۴ [2] تاریخ بغداد ترجمہ ۳۴۹ محمد بن احمد الواطی دار الکتاب العربی بیروت ۱ / ۳۸۲ ، نوادر الاصول للترمذی الاصل السادس والستون والمائۃ دار صادر بیروت ص ۲۱۳ [3] مشکوۃ المصابیح کتاب الادب باب حفظ اللسان والغیبۃ الفصل الثالث مجتبائی دہلی ص ۴۱۵، شعب الایمان حدیث ۶۷۲۱ و ۶۷۲۶ دار الکتب العلمیہ بیروت ۵ / ۳۰۶

Fatawa Rizvia Volume 24

Lawsuit, Judgment, and Witnessing

Issue 130 to 135: From Marehra Mutahira, District Etah, sent by the respected Sahibzada Maulvi Syed Muhammad Mian Sahib, May his blessings increase, 3 Safar al-Muzaffar 1334 AH. What is the ruling according to the Pure Sharia and the Hanafi school of thought on the following issues: (1) Those courts and those officials who do not observe the restrictions of the Muhammadan Sharia in their decisions and related proceedings, such as the testimony of witnesses, etc., but instead act upon self-made rules—though it is a different matter if something happens to coincide with the True Sharia—is it Sharia-wise considered disbelief (Kufr) or what, to call such courts and such officials, especially when they belong to disbelievers and the judge is also from among disbelievers, as 'justice' and the judge as 'just' or 'fair' and their proceedings and decisions as 'just' and 'equitable'? (2) Statements of claim, defense, and similar things in which today's legal practitioners (lawyers) habitually use such words and then have the parties confirm and accept them with words like "this statement of claim etc. is accepted by us, and in our view and knowledge the entire content of this statement of claim is correct," rather sometimes they make them say and write "correct" word for word. Now, some parties are those who, despite being aware of these words and having heard them, do not pay any heed to them because they exceed the actual point, and they sometimes heedlessly accept the statement of claim etc. Others are those who consider these words wrong and do not accept them, but...

फतावा रिज़विया जिल्द 24

दावा, न्याय और साक्ष्य

मसला 130 से 135: मारहरा मुतहरा, जिला एटा से, प्रेषक आदरणीय साहिबज़ादा मौलवी सैयद मोहम्मद मियां साहिब, उनकी बरकतें बढ़ें, 3 सफ़र अल-मुज़फ़्फ़र 1334 हिजरी। पावन शरीयत और हनफी मज़हब के अनुसार निम्नलिखित मसलों में क्या हुक्म है: (1) वे अदालतें और वे अधिकारी जो अपने फैसलों और संबंधित कार्यवाहियों, जैसे गवाहों की गवाही आदि में मोहम्मदी शरीयत की पाबंदियों का पालन नहीं करते, बल्कि स्वयं निर्मित नियमों पर अमल करते हैं—यह अलग बात है कि इत्तेफाक से कोई बात सच्ची शरीयत के मुताबिक हो जाए—ऐसी अदालतों और ऐसे अधिकारियों को, विशेष रूप से जबकि वे काफिरों की हों और वह न्यायाधीश भी काफिरों में से हो, अदालत को 'न्याय' और न्यायाधीश को 'न्यायप्रिय' या 'मुंसिफ' और उनकी कार्यवाहियों व फैसलों को 'न्यायपूर्ण' और 'मुंसिफ़ाना' कहना क्या शरीयत की दृष्टि से कुफ्र है या क्या है? (2) दावे का बयान, जवाब और उनके जैसे अन्य मामले, जिनमें आजकल के कानूनी पैरोकार (वकील) अपनी आदत के अनुसार ऐसे शब्दों का उपयोग करते हैं और फिर पक्षों से उनकी पुष्टि और स्वीकृति ऐसे शब्दों में कराते हैं कि "यह अर्ज़ी दावा आदि हमें स्वीकार है और हमारे विचार व ज्ञान में इस अर्ज़ी दावे की पूरी सामग्री सही है", बल्कि कभी-कभी शब्द-दर-शब्द "सही" कहलवाते और लिखवाते हैं। अब कुछ पक्ष तो वे हैं जो इन शब्दों की मौजूदगी से अवगत होने और उन्हें सुनने के बाद भी, वास्तविक अर्थ से अधिक होने के कारण उन पर कोई ध्यान नहीं देते और असावधानीवश कभी अर्ज़ी दावा आदि को स्वीकार कर लेते हैं। कुछ वे हैं जो इन शब्दों को बुरा जानते हैं और स्वीकार नहीं करते, लेकिन...

دعوٰی وقضاء وشھادۃ

مسئلہ ۱۳۰ تا ۱۳۵: از مارہرہ مطہرہ ضلع ایٹہ مرسلہ صاحبزادہ گرامی قدر مولوی سید محمد میاں صاحب زیدت برکاتہم ۳ صفر المظفر ۱۳۳۴ھ کیا حکم ہے بروئے شرع مطہر مطابق مذہب حنفی مسائل ذیل میں: (۱) وہ کچہریاں اور وہ حکام جو اپنے فیصلوں اور کاروائی متعلقہ مثل گواہی گواہان وغیرہ میں پابندی شریعت محمدیہ ملحوظ نہیں رکھتے بلکہ خود ساختہ قواعد پر عمل درآمد کرتے ہیں اگر اتفاق سے کوئی امر شریعت حقہ کے مطابق ہو جائے یہ اور بات ہے ایسی کچہریوں اور ایسے حکام کو بالخصوص جبکہ وہ کفار کی ہوں اور وہ حاکم بھی کفار سے ہو عدالت اور حاکم کو عادل یا منصف اور ان کاروائیوں کو فیصلوں کو عادلانہ اور منصفانہ کہنا آیا یہ شرعاً کفر ہے یا کیا؟ (۲) بیان دعوٰی وجواب و امثالہا جن میں آج کل کے پیروکار وکلا قانونی اپنے حسب عادت ایسے الفاظ استعمال کرتے اور پھر ان کی تصدیق و تسلیم فریقین سے ایسے الفاظ سے کراتے ہیں کہ یہ عرضی دعوٰی وغیرہ ہم کو تسلیم اور ہمارے نزدیک اور علم میں کل مضمون مندرجہ عرضی دعوٰی ہذا صحیح ہے بلکہ بعض دفعہ لفظ لفظ صحیح کہلواتے لکھواتے ہیں اب بعض فریقین تو وہ ہیں جو ان الفاظ کی موجودگی پر مطلع پھر ان کو سن بھی لیا ہو جب بھی توجہ ان کی نفس مطلب سے زائد ہونے کی وجہ سے ان پر کچھ لحاظ نہیں کرتے غافلانہ کبھی عرضی دعوٰی وغیرہ کو تسلیم کرتے ہیں بعض وہ ہیں جو ان الفاظ کو برا جانتے تسلیم نہیں کرتے ہیں مگر---

Fatawa Razawiyya Volume 24

Since it is now a common practice, they also write that "all this petition/claim, etc. is accepted by us" or they write exactly as the legal representative says. Now, what is the ruling for each of these? If the latter party writes that they accept every word, even for emphasis, but intends that only the essence of the claim stated in the petition is accepted, not the foul words added beyond the main point, then what is the ruling?

(3) There are certain documents in which these words are written by the government, and their verification and acceptance are required from the government's side, or the parties need to get them issued for their respective tasks, such as summons, etc., or the judge himself makes them say such sentences containing these words. In such a situation, what is the ruling for those who verify, those who issue the summons, and those who utter these words, and what is appropriate for them?

(4) Legal representatives, in their arguments, according to habit, use such words without the explicit permission of their clients, and those arguments are considered by the judge as being on behalf of each representative's client. If the clients are present, they remain silent. So, if in their hearts they do not accept those specific words, or are oblivious to them, and only agree with the actual point of the argument, does any blame attach to them due to their silence when the representative uses such words? If yes, is it equal to, less than, or more than the person saying it?

(5) The English court, which is named 'Munsifi' (Judiciary/Justice), is commonly called 'Munsifi' and its judge 'Munsif' (just/fair). By this, only that specific court and its judge are meant, and the mind is void of the original meaning of 'justice' while saying it. In this case, how is this application of the term?

(6) If by the word 'Adalat' (Court/Justice) only the government court is meant, and by 'Adil Munsif' (Just Judge) only the ruler, then would the application of these words to disbelievers and transgressors be correct or not? Explain and you shall be rewarded.

Answer: Even if the empire is Islamic and the ruler is a Muslim, nay, even the Sultan of Islam himself, if he gives a ruling contrary to what Allah has revealed, the Imams have declared calling him 'just' as disbelief (kufr). In Al-Hindiyyah, it is narrated from Imam Ilm-ul-Huda Abu Mansur Maturidi (may his secret be sanctified):

Man qala li sultani zamanina Whoever said to the Sultan of his time that he is just

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

चूंकि अब यह एक आम आदत है, इसलिए वे यह भी लिख देते हैं कि "हमें यह सारा अर्जी दावा (याचिका) आदि स्वीकार है" या जैसा कि पैरोकार (कानूनी प्रतिनिधि) कहता है वैसा ही लिख देते हैं। अब इनमें से प्रत्येक का क्या हुक्म है? यदि बाद वाला पक्ष लिखे कि उन्हें हर एक शब्द, यहाँ तक कि ज़ोर देने के लिए भी स्वीकार है, लेकिन यह नियत (इरादा) रखे कि इस अर्जी दावे में जो दावे का मुख्य विवरण है वह स्वीकार है, न कि उसके वे अशोभनीय शब्द जो मुख्य विषय से अधिक हैं, तो क्या हुक्म है?

(3) कुछ दस्तावेज़ ऐसे होते हैं जिनमें सरकार की ओर से ये शब्द लिखे होते हैं और सरकार की ओर से उनका सत्यापन और स्वीकृति चाही जाती है या पक्षों को अपने-अपने कार्यों के लिए उन्हें जारी कराने की आवश्यकता होती है, जैसे समन आदि, या न्यायाधीश स्वयं ऐसा वाक्य कहलवाता है जिसमें ये शब्द आते हैं। ऐसी स्थिति में, उन सत्यापन करने वालों, समन जारी करने वालों और इन शब्दों को कहने वालों के लिए क्या हुक्म है और उनके लिए क्या उचित है?

(4) कानूनी पैरोकार अपनी बहसों में अपनी आदत के अनुसार मुवक्किलों (ग्राहकों) की स्पष्ट अनुमति के बिना ऐसे शब्दों का उपयोग करते हैं, और वह बहस न्यायाधीश के यहाँ प्रत्येक पैरोकार के अपने मुवक्किल के पक्ष में मानी जाती है। और यदि मुवक्किल मौजूद हों, तो वे उस पर चुप रहते हैं। तो यदि वे अपने दिल से उन विशिष्ट शब्दों को स्वीकार नहीं करते हैं या उनसे बेखबर रहते हैं, उन पर ध्यान ही नहीं देते हैं, और केवल मुख्य विषय की बहस को स्वीकार करते हैं, तो पैरोकार के ऐसे शब्दों के उपयोग पर उनकी चुप्पी के कारण क्या उन पर कोई दोष आता है? यदि हाँ, तो क्या वह कहने वाले के बराबर है, या कम या अधिक?

(5) अंग्रेजी कचहरी जिसका नाम 'मुन्सिफी' (न्यायपीठ) है, उसे आमतौर पर मुन्सिफी और उसके हाकिम (न्यायाधीश) को 'मुन्सिफ' (न्यायप्रिय) कहा जाता है। इससे तात्पर्य वही विशिष्ट कचहरी और उसका हाकिम होता है। यह कहते समय मन 'इंसाफ' (न्याय) के मूल अर्थ से खाली होता है। ऐसी स्थिति में यह शब्द प्रयोग कैसा है?

(6) यदि 'अदालत' शब्द से केवल सरकारी कचहरी मुराद ली जाए और 'आदिल मुन्सिफ' (न्यायप्रिय न्यायाधीश) से केवल हाकिम, तो क्या इन शब्दों का प्रयोग काफिरों और गुनहगारों पर सही होगा या नहीं? कृपया स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: भले ही सल्तनत (साम्राज्य) इस्लामी हो और हाकिम (शासक) मुसलमान हो, बल्कि स्वयं सुल्तान-ए-इस्लाम हो, और यदि वह अल्लाह द्वारा उतारे गए कानून के विरुद्ध फैसला करे, तो उसे 'आदिल' (न्यायप्रिय) कहना इमामों ने कुफ़्र (अविश्वास) बताया है। 'हिन्दिया' में इमाम इल्म-उल-हुदा अबू मंसूर मातुरीदी (अल्लाह उनकी पवित्रता को कायम रखे) से वर्णित है:

मन काला लिसुलतानि ज़मानाना जिसने अपने ज़माने के सुल्तान को आदिल (न्यायप्रिय) कहा

چونکہ اب عادت عام ہے لہٰذا لکھ وہ بھی دیتے ہیں کہ یہ سب عرضی دعویٰ وغیرہ ہم کو تسلیم ہے یا اور جیسے پیروکار کہتا ہے ویسے بھی لکھ دیتے ہیں اب ان میں سے ہر ہر کا کیا حکم ہے اگر فریق آخر الذکر لفظ سب بلکہ تاکیداً لفظ لفظ بھی تسلیم ہو نالکھ دیں مگر یہ نیت کرے کہ نفسِ بیانِ دعویٰ جو اس عرضی دعویٰ میں ہے وہ تسلیم ہے، نہ اس کے الفاظ قبیحہ نفسِ مطلب پر زائد تو کیا حکم ہے؟

(۳) بعض کاغذات ایسے ہوتے ہیں جن میں حکومت کی جانب سے یہ الفاظ لکھے ہوتے ہیں اور ان کی تصدیق و تسلیم منجانب حکومت چاہی جاتی ہے یا فریقین کو اپنے اپنے کاموں میں ان کو جاری کرانے کی ضرورت پڑتی ہے جیسے سمن وغیرہ یا حاکم خود ایسا جملہ کہلواتا ہے جس میں یہ الفاظ آتے ہیں ایسی حالت میں ان تصدیق کرنے والوں سمن اجرا کرنے والوں اور ان الفاظ کہنے والوں کا کیا حکم ہے اور انہیں کیا زیبا ہے؟

(۴) پیروکار قانونی اپنی بحثوں میں حسب عادت خود بلا اجازت صریح مُوَکِّلان ایسے الفاظ استعمال کرتے ہیں اور وہ بحث ہر پیروکار کے اپنے اپنے مُوَکِّل کے حق میں حاکم کے یہاں مسلمہ مُوَکَّل ہوتی ہے اور اگر مُوَکِّل موجود ہوں تو اس پر ساکت ہی رہتے ہیں تو اگر وہ دل سے ان الفاظ مخصوصہ کو نہ تسلیم کریں یا ان سے غافل رہیں لحاظ ہی نہ کریں اور اصل مطلب کی بحث کو مانیں تو پیروکار کے ایسے الفاظ استعمال کرنے سے ان پر ان کے سکوت کی وجہ سے کوئی قباحت آتی ہے اگر ہاں تو پیروکار کہنے والے کے برابر یا کم زائد؟

(۵) انگریزی جو کچہری بنام منصفی ہے عام طور پر اس کو منصفی اور اس کے حاکم کو منصف کہتے ہیں اور اس سے مراد وہی مخصوص کچہری اور اس کا حاکم ہوتا ہے انصاف کے اصل معنی سے نیت کا ذہن یہ کہتے وقت خالی ہوتا ہے اس صورت میں یہ اطلاق کیسا ہے؟

(۶) اگر لفظ عدالت سے صرف کچہری حکومت مراد لیا جائے اور عادل منصف سے صرف حاکم تو ان الفاظ کا اطلاق کفار فجار پر صحیح ہوگا یا نہیں؟ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائیے۔ت)

الجواب: سلطنت اگرچہ اسلامیہ ہو اور حاکم مسلم بلکہ خود سلطان اسلام اور حکم خلاف ما انزل اللہ کرے اسے عادل کہنے کو ائمہ نے کفر بتایا۔ ہندیہ میں امام علم الہدیٰ ابو منصور ماتریدی قدس سرہ سے ہے:

من قال لسلطان زماننا جس نے اپنے زمانے کے سلطان کو عادل

Fatawa Razawiya, Volume 24

[Box Header] Left: Whoever equates [anyone with Allah] has surely disbelieved. 1 Right: He said, "He has committed disbelief." (T)

[Main Text Body] The praised Imam is saying this regarding the Sultan of Islam of his time, whose passing occurred 100 years ago. Confirming a claim document means confirming its content. Even if it is written such that "every word is correct," it also means that no affirmation or negation in it is contrary to facts. Strengthening the literal application of words is not intended at all, nor is it understood from it in any way. Therefore, no blame can be placed on them in any case, except for remaining silent upon evil (munkar). That silence was at a time when there was power [to change it], absence of fitna (trial/unrest), and ignorance of the perpetrator, and a hope for acceptance, otherwise [remaining silent] is forbidden.

The example of the third condition is, for instance, shaving the beard. Every Muslim knows it is forbidden in Sharia. So, it is not mandatory to keep telling a person who shaves their beard that it is forbidden and they should stop. Yes, it is necessary to tell those who are under one's control. The same applies to confirming documents and proceedings; there too, endorsing the literal word is neither intended nor understood, and the power to change it is absent. As for making someone say such a sentence, the goal is to convey that meaning, not verbatim transcription. In paraphrasing, there is great latitude. He who, despite having the power, does not change the word, is surely a perpetrator of violating Sharia and becomes deserving and entitled to the Sharia ruling appropriate for that word. The follower is also an agent for the original purpose of conveying meanings, not its expression. Knowingly, without intending the original literal meaning, [bad] character cannot be attributed in this crime. Just like calling out "Abdul Uzza" (Slave of Uzza) — speaking prohibited words by stripping them of their original meaning and carrying them to a permissible meaning is also forbidden without compelling necessity, because the application of the word itself was forbidden, and that [application] still exists. And Allah the Almighty knows best.

Issue 136: From Saharanpur, Madrasa Makhzan-ul-Uloom, Mohalla Lakhni Darwaza, questioned by Muhammad Ishaq and Mahmood Hassan, 22 Ramadan 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A city Qazi does not act upon 'Tark-e-Muwalaat' (non-cooperation) despite it being obligatory as per the mentioned issue. He is also an honorary magistrate, deciding cases according to British law

which is against Sharia. During the current era's war, upon the defeat of Muslims, he participates in meetings and processions celebrating the joy of the enemies of Islam. He has been single for twelve years and does not marry despite having the means. And he pays interest. Is it permissible to pray behind him or not? And in such a state, should he be accepted as the city Qazi or not? And what is the ruling for him? Explain and be rewarded.

[Footnote] 1 Fatawa Hindiyyah, Kitab al-Siyar, Chapter Nine, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/281.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

[बॉक्स हेडर] बायाँ: जिसने [किसी को अल्लाह के] समान ठहराया, उसने कुफ़्र किया। 1 दायाँ: उसने कहा, "उसने कुफ़्र किया।" (त)

[मुख्य पाठ] प्रशंसित इमाम अपने समय के सुल्तान-ए-इस्लाम के बारे में ऐसा कह रहे हैं, जिनके निधन को 100 साल बीत चुके हैं। दावा पत्र की पुष्टि से आशय उसकी विषयवस्तु की पुष्टि होता है। भले ही ऐसा लिखा हो कि "शब्द-शब्द सही है", इसका मतलब भी यही होता है कि इसमें कोई भी पुष्टि या खंडन तथ्य के विरुद्ध नहीं है। शब्दों के शाब्दिक प्रयोग को पुष्ट करने का उद्देश्य बिल्कुल नहीं होता और न ही उससे किसी तरह यह अर्थ निकलता है। इसलिए उन पर किसी भी स्थिति में कोई आरोप नहीं लगता, सिवाय इसके कि बुराई (मुनकर) पर चुप्पी साध ली गई। वह चुप्पी शक्ति होने, फ़ितना न होने, अपराधी की अज्ञानता और बात माने जाने की आशा के समय [की बात] है, अन्यथा [चुप रहना] हराम है।

तीसरी शर्त का उदाहरण यह है, जैसे दाढ़ी मूंडना; हर मुसलमान जानता है कि यह शरीयत में हराम है। तो यह ज़रूरी नहीं है कि दाढ़ी मूंडने वाले से बार-बार कहा जाए कि यह हराम है, इसे छोड़ दो। हाँ, जो अपने नियंत्रण में हो, उससे कहना ज़रूरी है। दस्तावेज़ों की पुष्टि और कार्यवाही के मामले में भी यही स्थिति है कि वहां भी शब्द के प्रयोग का अनुमोदन न तो उद्देश्य है और न ही अर्थ, और बदलने की शक्ति का अभाव है। रहा ऐसा जुमला कहलवाना, तो उससे भी उस भाव को व्यक्त करना उद्देश्य होता है न कि शब्दशः नकल। अर्थानुवाद में बड़ी गुंजाइश है। जो शक्ति होने के बावजूद शब्द नहीं बदलता, वह निश्चित रूप से शरीयत के उल्लंघन का अपराधी है और उस शब्द के उपयुक्त शरिया हुक्म का हकदार है। अनुयायी भी मूल अर्थ को व्यक्त करने में उसका प्रतिनिधि है न कि उसकी अभिव्यक्ति में। जानबूझकर, बिना मूल अर्थ के इरादे के [खराब] आचरण इस अपराध में नहीं आ सकता। जैसे 'अब्दुल उज़्ज़ा' (उज़्ज़ा का गुलाम) कहना - प्रतिबंधित शब्दों को उनके मूल अर्थ से अलग करके किसी जायज़ अर्थ पर महमूल बनाकर बोलना भी बिना मजबूर करने वाली आवश्यकता के हराम है, क्योंकि शब्द का प्रयोग ही हराम था और वह [प्रयोग] मौजूद है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 136: सहारनपुर, मदरसा मखज़ल-उल-उलूम, मोहल्ला लखनी दरवाज़ा से, सायल मुहम्मद इसहाक और महमूद हसन, 22 रमज़ान 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं:

एक शहर का काज़ी, 'तर्कए-मुवालात' (असहयोग) के फ़र्ज़ होने के बावजूद उस पर अमल नहीं करता। वह मानद मजिस्ट्रेट भी है, शरीयत के खिलाफ ब्रिटिश कानून के अनुसार मुकदमों का फैसला करता है। वर्तमान समय के युद्ध में मुसलमानों की हार पर, इस्लाम के दुश्मनों की खुशी के जलसे और जुलूस में शामिल होता है। बारह साल से अविवाहित है, सामर्थ्य होने के बावजूद निकाह नहीं करता। और वह ब्याज देता है। क्या उसके पीछे नमाज़ पढ़ना जायज़ है या नहीं? और ऐसी स्थिति में उसे शहर का काज़ी स्वीकार किया जाए या नहीं? और उसके लिए क्या हुक्म है? बयान फरमाएं ताकि आपको सवाब मिले।

[फुटनोट] 1 फ़तावा हिन्दिया, किताब अल-सियर, अध्याय नौ, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 2/281।

فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۴

[باکس ہیڈر] عادَل فقد کفر ۱۔ | کہا اس نے کفر کیا۔ (ت)

[متن] امام ممدوح اپنے وقت کے سلطان اسلام کی نسبت ایسا فرما رہے ہیں ان کے وصال کو ۱۰۰ برس ہوئے، کاغذ دعویٰ کی تصدیق سے تصدیق مضمون مراد ہوتی ہے اگر چہ یو ہیں لکھا ہو کہ لفظ لفظ صحیح ہے اس کا مطلب بھی یہی ہوتا ہے کہ اس کا کوئی ایجاب یا سلب خلاف واقع نہیں تقویت اطلاقات الفاظ کی طرف اصلاً نظر نہیں ہوتی نہ وہ کسی طرح اس سے مفہوم ہو تو خود ان پر کسی صورت میں کچھ الزام نہیں سوا اس کے کہ سکوت علی المنکر ہوا، وہ وقت قدرت و عدم فتنہ و جہل مرتکب و رجائے اجابت حرام والا لا۔

شرط سوم کی مثال یہ ہے مثلاً داڑھی منڈانا، ہر مسلمان جانتا ہے کہ شرعاً حرام ہے، تولازم نہیں کہ یہ داڑھی منڈے سے کہتے پھرئیے کہ یہ حرام ہے اسے چھوڑ دے، ہاں جو اپنے قابو کا ہو اس سے کہنا ضرور ہے، یہی صورت تصدیق کاغذات و اجراء میں ہے کہ وہاں بھی تصویب اطلاق لفظ نہ مراد نہ مفہوم اور قدرت علی التغییر معدوم، رہا ایسا جملہ کہلوانا اس سے بھی وہ مضمون ادا کرانا مقصود ہوتا ہے نہ کہ نقل باللفظ تو نقل بالمعنی میں وسعت عظیم جو باوصف قدرت تبدیل لفظ نہ کرے وہ ضرور مخالفت شرع کا مرتکب ہے اور اس لفظ کے لائق حکم شرعی کا مستوجب و مستحق ہوا، پیروکار بھی اصل ادائے مطالب میں اس کا وکیل ہے نہ کہ تعبیر اس سے بطور علم بے ارادہ اصل معنی وضع اول اخلاق اس جرم میں نہیں آسکتا جیسے جار عبد العزیٰ الفاظ محرمہ اپنے اصل معنی سے تجرید کر کے کسی معنی جائز پر محمول بنا کر بولنا بھی بلا ضرورت ملجیہ حرام ہے کہ لفظ کا اطلاق ہی حرام تھا وہ موجود ہے، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۳۶: از سہارسپور مدرسہ مخزن العلوم محلہ لکھنی دروازہ مسئولہ محمد اسحق و محمود حسن ۲۲ رمضان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک قاضی شہر ترک موالات پر باوجود فرض ہونے مسئلہ مذکور کے، عامل نہیں، آنریری مجسٹریٹ بھی ہے خلاف شرع انگریز قانون کے مطابق مقدمات فیصلہ کرتا ہے مسلمانوں کی شکست پر موجودہ زمانے کی جنگ میں اعدائے اسلام کی خوشی کے جلسہ و جلوس میں شریک ہو، بارہ سال سے مجرد ہو باوجو د استطاعت نکاح نہ کرے اور سود دیتا ہو تو اس کے پیچھے نماز پڑھنی جائز ہے یا نہیں؟ اور ایسی حالت میں اس کو قاضی شہر تسلیم کیا جائے یا نہیں؟ اور اس کے لئے کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا۔

[حاشیہ] ۱ فتاویٰ ہندیہ کتاب السیر الباب التاسع نورانی کتب خانہ پشاور ۲۸۱/۲

صفحہ 362 کا 720

Volume 24 Fatawa Razawiyya

The Answer: To decide a case contrary to the Shari'ah is forbidden (haram). The Great Quran mentions three terms for this: transgression (fusuq), injustice (zulm), and disbelief (kufr). And, God forbid, if there is heartfelt joy at the defeat of Islam, it is disbelief (kufr), otherwise it is transgression (fusuq). Paying interest, if done out of sheer necessity and helplessness, is not sinful; otherwise, it is also transgression. It is mentioned in Sahih Muslim:

"The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) cursed the one who consumes interest, the one who pays it, the one who writes the document for it, and its witnesses, and said they are all equal."[1]

Such a person is not worthy of being made an Imam or a Qazi, even though 'Qazi' here refers to a marriage registrar, as this involves honoring him, and honoring a transgressor (fasiq) is prohibited. It is stated in Tabyin al-Haqa'iq:

"Because putting him forward involves honoring him, whereas in the Shari'ah, it is obligatory for people to humiliate him."[2]

As for being isolated for twelve years, this is not a reason for such accountability. Cutting off relations (tark-e-muwalat) with every disbeliever (kafir) is absolutely mandatory, and it has been mandatory not just from today but always. Like with Jews, Christians, and Magians, even more so, alliance and accord with Hindus is strictly forbidden (haram qat'i). However, mere permissible dealings with an original disbeliever are not forbidden at all. Details of this are in our book 'Al-Mahajjat al-Mu'tamanah'*. To subvert a Shari'ah ruling and present it as a Shari'ah ruling is a double crime and a severe innovation in religion. "And Allah guides whom He wills to a straight path."[3] (And Allah Almighty shows the right path to whoever He wills. T). And Allah Almighty knows best.

Problem 713: From Leonader, Puran region, Malwa, submitted by Qasim Ali, 18 Dhu al-Qi'dah 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this problem: a Qazi who abandons the five daily prayers and has prostitutes dance at his house.

*Note: The book 'Al-Mahajjat al-Mu'tamanah' is printed in Fatawa Razawiyya, Raza Foundation, Lahore, Volume 14, page 419.

[1] Sahih Muslim, Kitab al-Musaqat, Bab al-Riba, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/72. [2] Tabyin al-Haqa'iq, Bab al-Imamah wal-Hadath fi as-Salah, Al-Matba'at al-Kubra, Bulaq, Egypt, 1/134. [3] The Holy Quran, 2/213.

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

अल-जवाब (उत्तर): शरीअत के खिलाफ मुक़दमे का फैसला करना हराम है, कुरान अज़ीम में इसके लिए तीन शब्द इरशाद हुए हैं: फुसुक (अवज्ञा), ज़ुल्म (अन्याय) और कुफ्र (अविश्वास)। और मा'ज़-अल्लाह इस्लाम की शिकस्त (हार) पर अगर दिल से खुशी हो तो कुफ्र है वरना फुसुक। ब्याज देना अगर बेहद ज़रूरत और मजबूरी व लाचारी से हो तो हर्ज नहीं वरना वह भी फुसुक है। सहीह मुस्लिम शरीफ में है:

"रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने ब्याज खाने वाले, खिलाने वाले, उसका दस्तावेज़ लिखने वाले और उसके गवाहों पर लानत फरमाई, और फरमाया कि वे सब बराबर हैं।"[1]

ऐसा शख्स इमाम और काज़ी बनाने के लायक नहीं, हालाँकि यहाँ काज़ी शहर निकाह पढ़ने वाले को कहते हैं, क्योंकि इसमें उसकी ताज़ीम (सम्मान) है, और फासिक (पापी) की ताज़ीम मना है। तबयीनुल हक़ाइक में है:

"क्योंकि उसे आगे करने में उसकी ताज़ीम है, जबकि शरीअत में लोगों पर उसकी तौहीन (अपमान) वाजिब है।"[2]

रहा बारह बरस से मुजर्रद (अलग-थलग) होना, यह कोई ऐसी वजह नहीं जिस पर इतना मुआख़िज़ा (जवाबदेही) किया जाए। हर काफिर से तर्कए-मुवालात (संबंध विच्छेद) मुतलक़न फ़र्ज़ है और आज से नहीं हमेशा से फ़र्ज़ है, यहूदी, नसारा और मजूस की तरह बल्कि उनसे भी ज़्यादा हिनूद (हिंदुओं) से भी इत्तेहाद (एकता) और मुवाफ़क़त हराम-ए-क़तई है। और महज़ जायज़ मामलात किसी काफिर-ए-असली से असल में मना नहीं हैं, इसकी तफ़सील हमारी किताब 'अल-महज्जतुल मुअतमना'* में है। हुक्म-ए-शरई को उलट देना और उसे हुक्म-ए-शरई ठहराना दोहरा जुर्म और दीन में सख्त इब्तिदा' (नवाचार) है। "और अल्लाह जिसे चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है।"[3] (त) और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 713: अज़ लियोनादर इलाका पुरान मुल्क मालवा, मुस्तफ़सिर (पूछने वाला) कासिम अली, 18 ज़िल-क़ादा 1339 हिजरी। क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मसले में कि एक काज़ी पंजगाना नमाज़ छोड़ता है और रंडियों को अपने घर नचवाता है।

*नोट: किताब 'अल-महज्जतुल मुअतमना' फतावा रज़विया मतबुआ रज़ा फाउंडेशन लाहौर जिल्द 14 सफा 419 पर मरकूम है।

1. सहीह मुस्लिम, किताबुल मुसाक़ात, बाबुर रिबा, क़दीमी कुतुब खाना कराची, 2/72
2. तबयीनुल हक़ाइक, बाबुल इमामत वल हदाथ फिस सलात, अल-मतबअतुल कुबरा बुलाक़ मिस्र, 1/134
3. अल-कुरानुल करीम 2/213

पृष्ठ 363/720

الجواب: خلاف شرع مقدمہ فیصلہ کرنا حرام ہے، قرآن عظیم میں اس کے لئے تین لفظ ارشاد ہوئے: فسقون، ظلمون، کفرون۔ اور معاذ اللہ شکستِ اسلام پر اگر دل سے خوشی ہو کفر ورنہ فسق، سود دینا اگر بچی ضرورت و مجبوری و ناچاری سے ہے حرج نہیں ورنہ وہ بھی فسق ہے۔ صحیح مسلم شریف میں ہے:

لعن رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم اکل الربوا ومؤکلہ وکاتبہ و شاہدیہ وقال ھم سواء۔۱ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے لعنت فرمائی سود کھانے والے اور سود دینے والے اور اس کا کاغذ لکھنے والے اور اس کے گواہوں پر، اور فرمایا وہ سب برابر ہیں۔

ایسا شخص امام و قاضی بنانے کے لائق نہیں اگر چہ یہاں قاضی شہر نکاح خواں کو کہتے ہیں کہ اس میں اس کی تعظیم ہے، اور فاسق کی تعظیم منع۔ تبیین الحقائق میں ہے:

لان فی تقدیمہ تعظیمہ وقد وجب علیھم اھانتہ شرعاً ۔۲ اس لئے کہ اس کو آگے کرنے میں اس کی تعظیم ہے حالانکہ شریعت میں لوگوں پر اس کی توہین واجب ہے(ت)

رہا بارہ برس سے مجرد ہونا یہ کوئی ایسی وجہ نہیں جس پر جتنا مؤاخذہ کیا جائے۔ ترک موالات ہر کافر سے مطلقاً فرض ہے اور آج سے نہیں ہمیشہ سے فرض ہے یہود و نصاریٰ و مجوس کی طرح بلکہ ان سے بھی زائد ہنود سے بھی اتحاد و موافقت حرام قطعی ہے اور مجرد معاملتِ جائزہ کسی کافرِ اصلی سے اصلاً منع نہیں، اس کی تفصیل ہماری کتاب المحجۃ المؤتمنۃ عہ میں ہے۔ حکم شرعی کو الٹ دینا اور اسے حکمِ شرعی ٹھہرانا دوہرا جرم اور سخت ابتداع فی الدین ہے "وَاللہُ

یَھْدِیْ مَنْ یَّشَآءُ اِلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ"۔۳ (اور اللہ تعالٰی جس کو چاہے سیدھا راستہ دکھاتا ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۷۱۳: از لیونادر علاقہ پران ملک مالوہ مسئولہ قاسم علی ۱۸ ذی القعدہ ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ قاضی تارکِ نماز پنجگانہ رنڈیوں کو اپنے گھر نچوائیں

عہ: کتاب المحجۃ المؤتمنۃ فتاوٰی رضویہ مطبوعہ رضا فاؤنڈیشن لاہور جلد ۱۴ صفحہ ۴۱۹ پر مرقوم ہے۔

۱ صحیح مسلم کتاب المساقاۃ باب الربا قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۷۲ ۲ تبیین الحقائق باب الامامۃ والحدث فی الصلوۃ المطبعۃ الکبری بولاق مصر ۱/ ۱۳۴ ۳ القرآن الکریم ۲/ ۲۱۳

Fatawa Razawiyya Volume 24

Question: Is it permissible to gather people, as if by public announcement, to involve them in an act of sin? And can such a person be appointed as a Qazi (judge) for Muslims or not? Please explain and be rewarded.

The Answer: In the pure Shariah, such impure acts are strictly forbidden, and such a dissolute transgressor who commits major sins is not worthy of being appointed as a Qazi; making him a Qazi is haram (forbidden). It is stated in Tabyin al-Haqa'iq:

"For indeed, in putting him forward is an act of honoring him, whereas it has been made obligatory upon them to humiliate him according to Shariah."

Since putting him forward involves honoring him, while according to Shariah, it is obligatory for the people to humiliate and degrade him. And Allah Almighty knows best. (T)

---

[1] Tabyin al-Haqa'iq, Chapter on Imamate and Impurity in Prayer, Bulaq Egypt, 1/134.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

प्रश्न: लोगों को इकट्ठा करके, मानो सार्वजनिक घोषणा के साथ बुलाकर पाप के कार्य में शामिल किया जाए, क्या ऐसे काम की अनुमति है? और क्या ऐसा व्यक्ति मुसलमानों का काज़ी हो सकता है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: पवित्र शरीयत में ऐसे अपवित्र कार्य सख्त वर्जित (हराम) हैं और ऐसा पापी, दुराचारी और बड़े पाप करने वाला व्यक्ति काज़ी बनने के योग्य नहीं है, उसे काज़ी बनाना हराम है। तबयीन अल-हक़ाएक़ में है:

"बेशक उसे आगे बढ़ाने में उसका सम्मान है, जबकि शरीयत के अनुसार लोगों पर उसका अपमान करना अनिवार्य है।"

चूँकि उसे आगे बढ़ाने में उसका सम्मान है, जबकि शरीयत में लोगों पर उसका अपमान और तिरस्कार करना अनिवार्य है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

---

[1] तबयीन अल-हक़ाएक़, इमामत और नमाज़ में हदस का अध्याय, बुलाक़ मिस्र, 1/134।

لوگوں کو جمع کرکے، گویا اعلان کے ساتھ بلواکے شریکِ معصیت کریں، کیا ایسے کام کی اجازت ہے؟ اور ایسا شخص مسلمانوں کا قاضی ہوسکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: شرعِ مطہر میں ایسے ناپاک کام سخت حرام ہیں اور ایسا فاسق فاجر مرتکبِ کبائر قاضی بنانے کے لائق نہیں، اسے قاضی بنانا حرام ہے۔ تبیین الحقائق میں ہے:

فان فی تقدیمہ تعظیمہ وقد وجب علیہم اہانتہ شرعاً۔ | چونکہ اس کو آگے کرنے میں اس کی تعظیم ہے جبکہ شریعت میں لوگوں پر اس کی توہین و تذلیل واجب ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

---

[1] تبیین الحقائق باب فی الامامۃ والحدث فی الصلوۃ بولاق مصر ۱/ ۱۳۴

Vol 24 Fatawa Razawiyya Good Conduct and Rights of People Exchange of Gifts and Presents etc.

Issue 138: From Etawah, sent by Maulvi Wasi Ali Sahib, Deputy Collector, Etawah. 2nd Dhu al-Qi'dah 1312 AH. What do the scholars of religion say about this matter: often courtesan women send some vegetables or mint or other fruits from the produce of their garden, and sometimes sweets, Gulgulay (sweet dumplings), Khichra (a meat and grain dish) etc. as gifts and presents. What is the Islamic legal ruling for common Muslims or their medical practitioners regarding accepting these? State and be rewarded. (State so that you may receive a reward. - Translator)

Answer: The wealth of prostitutes is of five types: First: That which was given to them as wages for a forbidden act, for example, adultery, singing, or dancing, or as a bribe for illicit intimacy. Whether it is cash or kind, it is absolutely forbidden (haram). It falls under the ruling of usurped property (maghsuba) as they do not own it themselves, as explicitly stated in Al-Hindiyya, Durr al-Mukhtar, and others. (As explicitly stated in Fatawa Hindiyya and Durr al-Mukhtar etc. - Translator)

Second: That which they obtained from this forbidden kind. For example, if someone gave some pieces of Gulbadan fabric as the aforementioned wages or bribe, and the prostitute sold them and obtained money, or bought dancing clothes etc. from those pieces of fabric, this...

खंड 24 फ़तावा रज़विया सदाचार और बंदों के अधिकार उपहारों और तोहफों आदि का लेन-देन

मसला 138: इटावा से प्रेषित, मौलवी वसी अली साहब, नायब नाज़िम कलेक्टरी इटावा। 2 ज़ुल-क़ादा 1312 हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: अक्सर तवायफ़ औरतें अपने बाग़ की पैदावार में से कभी-कभी कुछ सब्ज़ी या पुदीना या अन्य फलों में से और कभी मिठाई, गुलगुले, खिचड़ा आदि बतौर उपहार और तोहफ़े के भेजा करती हैं। आम मुसलमानों या उनके हकीमों (इलाज करने वालों) के लिए इन्हें लेने का शरई हुक्म क्या है? बयान करें ताकि आप पुण्य प्राप्त करें। (बयान फरमाएं ताकि अज्र पाएं। - अनुवादक)

उत्तर: वेश्याओं का धन पाँच प्रकार का होता है: पहला: वह चीज़ जो उन्हें किसी हराम काम जैसे कि व्यभिचार (ज़िना), गायन या नृत्य की मज़दूरी या अवैध संबधों की रिश्वत के रूप में दी गई हो। यह नक़द हो या वस्तु, पूरी तरह से हराम है, और इसका हुक्म छीनी हुई संपत्ति (मग़सूबा) के समान है क्योंकि वे स्वयं इसकी स्वामी नहीं होतीं, जैसा कि अल-हिंदिया और दुर्र-अल-मुख़्तार आदि में स्पष्ट रूप से बताया गया है। (जैसा कि फ़तावा हिंदिया और दुर्र-अल-मुख़्तार आदि में स्पष्ट रूप से कहा गया है। - अनुवादक)

दूसरा: वह चीज़ जो उन्होंने इस हराम ज़रिये से हासिल की हो। उदाहरण के लिए, यदि किसी ने उक्त मज़दूरी या रिश्वत में गुलबदन (एक प्रकार का कपड़ा) के कुछ थान दिए, और वेश्या ने उन्हें बेचकर नक़द रुपया प्राप्त किया या उन थानों से नाचने के कपड़े आदि खरीद लिए, यह...

جلد ۲۴ فتاوٰی رضویہ حسن سلوک وحقوق العباد ہدایا و تحائف و غیرہ کالین دین

مسئلہ ۱۳۸: از اٹاوہ مرسلہ مولوی وصی علی صاحب نائب ناظم کلکٹری اٹاوہ ۲ ذیقعدہ ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ کے بارے میں، اکثر عورت طوائف اپنے باغ کی پیداواری میں سے کبھی کبھی کچھ ترکاری یا پودینہ یا اور پھلوں میں سے اور کبھی شیرینی گلگلے کھچڑا وغیرہ بطور ہدیہ و تحفہ کے بھیجا کرتی ہیں ان کالینا عام مسلمانوں کو یا اس کے طبیب معالج کو شرعاً کیا حکم رکھتا ہے؟ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائیے۔ ت)

الجواب: رنڈیوں کے مال پانچ قسم ہیں: ایک وہ چیز جو انہیں کسی فعل حرام مثلاً زنا یا غنا یار قص کی اجرت یا آشنائی کی رشوت میں دی گئی یہ نقد ہو یا جنس مطلقاً حرام، اور حکم مغصوبہ میں ہے کہ وہ خود اس کی مالک نہیں ہوتیں کما نص علیہ فی الھندیۃ ودرالمختار وغیرہما(جیسا کہ فتاوٰی ہندیہ اور درمختار وغیرہ میں صراحتاً فرمایا گیا ہے۔ ت)

دوسرے وہ چیز جو انہوں نے اس جنس حرام سے حاصل کی مثلاً کسی نے اجرت یار شوت مذکورہ میں کچھ تھان گلبدن کے دیئے رنڈی نے انہیں بیچ کر روپیہ حاصل کیا ان تھانوں سے ناچ وغیرہ خرید لیا یہ

...is also absolutely haram, for "the haram (prohibited) thing, when it is an exchange, is also haram." (Because when the exchange is for something haram, that exchange itself is also haram).

Thirdly, that thing which they obtained in exchange for the same haram cash such that the contract took place on that cash and the same was paid. For example, the money that a prostitute received as a bribe or wages, or money received as a bribe or wages—for instance, obtained by selling stolen items—she showed that same money to the seller and said, "Give me sweets, wheat, meat, or the seed or cutting of such-and-call plant in exchange for this," or she put the money before him and said, "Give me such-and-such things," he gave them, and she paid that same haram money as the price. In this case as well, whatever was obtained is all haram and usurped according to the correct legal school of thought.

"And the statement of the one who said it is permissible because the contract is not attached to the specific item but to its equivalent, due to its lack of specification, even if it were an analogy; however, it is contrary to 'Istihsan' (juristic preference) as stated in Al-Fath."	And whoever spoke of its permissibility did so because the contract is not linked to the specific object but to an unspecified equivalent. Although analogy demands this, it is haram due to being contrary to juristic preference (Istihsan), as conveyed in Fath al-Qadir (by Researcher Ibn al-Humam).

Fourthly, something bought with haram cash, but both the contract and the payment did not converge on the haram wealth. For example, haram money received as wages or a bribe, or obtained by selling such a type of thing. Showing that money, one says, "Give [this item] in exchange for it." When the seller gives it, the buyer pays with halal money as the price, setting the haram money aside. Here, the contract was on haram [money], but payment was not made with it. Or, without showing the money or pointing to it, one simply says, "Give such a thing for one rupee." The seller gives it, and then one pays haram money as the price. Here, payment was made with it, but the contract did not occur upon it. In this case, scholars differ; many scholars state this is also absolutely haram.

"For when the invalidity is due to lack of ownership, it affects what is specified and	Because when invalidity is due to lack of ownership, it applies absolutely to

what is not specified, both the original and the exchange, absolutely."	the specified, unspecified, original, and exchange.

And many scholars have issued a fatwa based on the statement of Imam Karkhi (may Allah Almighty have mercy on him) that a thing purchased in this manner is not haram. The foulness of haram cash only transfers to its exchange when both the contract and the payment converge upon it. It is stated in Tanwir al-Absar:

"Upon this, the fatwa is given, and its equivalent is in al-Dhakhirah."	The fatwa has been given according to this statement, and its equivalent is [in Al-Dhakhirah].

...भी पूर्णतः हराम है, क्योंकि "जब हराम का बदला हो, तो वह बदला भी हराम होता है।" (क्योंकि जब विनिमय किसी हराम चीज़ के लिए होता है, तो वह विनिमय भी हराम होता है)।

तीसरा, वह चीज़ जो उन्होंने उसी हराम नकद के बदले इस प्रकार प्राप्त की कि अनुबंध उस नकद पर हुआ और वही भुगतान किया गया। उदाहरण के लिए, वह पैसा जो किसी वेश्या को रिश्वत या मज़दूरी में मिला, या रिश्वत और मज़दूरी में मिला हुआ पैसा—उदाहरण के लिए, चोरी का सामान बेचकर प्राप्त किया गया—उसने वही पैसा विक्रेता को दिखाया और कहा, "इसके बदले में मुझे मिठाई, गेहूँ, मांस, या फलां पौधे का बीज या कलम दे दो," या उसने उसके सामने पैसा रखा और कहा, "फलां-फलां चीज़ें दे दो," उसने वे चीज़ें दे दीं, और उसने वही हराम पैसा कीमत के रूप में दे दिया। इस स्थिति में भी, जो कुछ भी प्राप्त किया गया है, सही पंथ (मज़हब) के अनुसार वह सब हराम और हड़पा हुआ है।

"और उस व्यक्ति का कथन जिसने इसकी अनुमति दी है क्योंकि अनुबंध स्वयं वस्तु से नहीं बल्कि उसके समान से जुड़ा है क्योंकि वह निर्दिष्ट नहीं है, भले ही यह सादृश्य (क़ियास) हो; हालाँकि, यह 'इस्तिहसान' (न्यायिक वरीयता) के विरुद्ध है जैसा कि अल-फ़तह में बताया गया है।"

और जिसने इसके हलाल होने की बात की, वह इसलिए कि अनुबंध विशिष्ट वस्तु से नहीं बल्कि अनिर्दिष्ट समान वस्तु से जुड़ा है। हालाँकि सादृश्य (क़ियास) यही माँग करता है, लेकिन इस्तेहसान के विरुद्ध होने के कारण यह हराम है जैसा कि फ़तह अल-क़दीर में (मुहक़्क़िक़ इब्न अल-हुमाम ने) बताया है।

चौथा, वह चीज़ जो हराम नकद से खरीदी गई लेकिन अनुबंध और भुगतान दोनों हराम धन पर एकत्र नहीं हुए। उदाहरण के लिए, हराम पैसा जो मज़दूरी या रिश्वत में मिला, या वैसी ही कोई चीज़ बेचकर प्राप्त किया गया। वह पैसा दिखाकर उसके बदले में माँगा। जब विक्रेता ने वह चीज़ दी, तो उसने कीमत में हलाल पैसा दिया और वह हराम पैसा अलग रख लिया। यहाँ अनुबंध हराम पर हुआ लेकिन भुगतान उससे नहीं हुआ। या बिना पैसा दिखाए या उसकी ओर इशारा किए यूँ ही कहा कि एक रुपये की फलां चीज़ दे दो। उसने दे दी, अब कीमत में हराम पैसा दिया; यहाँ भुगतान तो उसी से हुआ लेकिन अनुबंध उस पर नहीं हुआ था। इस स्थिति में विद्वान मतभेद रखते हैं; बहुत से विद्वान इसे भी पूर्णतः हराम बताते हैं।

"क्योंकि जब अमान्यता (फ़साद) स्वामित्व की कमी के कारण हो, तो वह निर्दिष्ट और अनिर्दिष्ट, मूल और विनिमय दोनों पर पूर्णतः लागू होती है।"	क्योंकि जब अमान्यता (फ़साद) स्वामित्व की कमी के कारण हो, तो वह निर्दिष्ट, अनिर्दिष्ट, मूल और बदले सब पर पूर्णतः लागू होती है।

और बहुत से विद्वानों ने इमाम करख़ी (अल्लाह उन पर कृपा करे) के कथन पर फ़तवा दिया है कि इस तरह खरीदी गई चीज़ हराम नहीं है। हराम नकद की गंदगी उसके बदले में तभी आती है जब अनुबंध और भुगतान दोनों उस पर जमा हों। तनवीर अल-अबसार में है:

"इसी पर फ़तवा दिया जाता है और इसके समान अल-ज़खीरा में है।"	इसी कथन के अनुसार फ़तवा दिया गया है और इसी के समान [अल-ज़खीरा में है]।

بھی مطلقاً حرام ہے فان الحرام اذا کان البدل ایضاً) کیونکہ جب حرام کا بدل ہو تو وہ بدل بھی حرام ہے۔ ت) تیسرے وہ چیز جو انہوں نے اسی نقد حرام کے بدلے یوں حاصل کی کہ اس کے نقد پر عقد واقع ہوا اور وہی ادا کیا مثلاً جو روپیہ رنڈی کو رشوت یا اجرت میں ملا یار شوت واجرت میں ملے ہوئے مثلاً تھانوں کو بیچ کر حاصل کیا اس نے بائع کو وہی روپیہ دکھا کر کہا کہ اس کے عوض شیرینی یا گیہوں یا گوشت یا فلاں شئی کی تخم یاد رخت کی قلم دے دے یار وپیہ اس کے سامنے ڈال دیا کہ فلاں فلاں چیز دے اس نے دیں اس نے وہی زرِ حرام ثمن دے دیا اس صورت میں بھی جو کچھ حاصل کیا مذہب صحیح پر سب حرام و غصب ہے،

وقو ل من قال بحلہ لعدم تعلق العقد بینہ بل مثلہ لعدم تعیینہ وان کان قیاساً لکنہ خلاف الاستحسان کما افادہ فی الفتح۔

اور جس نے اس کے حلال ہونے کی بات کی اس لئے کہ عین شئی کے ساتھ عقد متعلق نہیں بلکہ مثل غیر متعین کے ساتھ متعلق ہے اگر چہ قیاس کا تقاضا یہی ہے لیکن خلاف استحسان ہونے کی وجہ سے حرام ہے جیسا کہ فتح القدیر میں (محقق ابن ہمام نے) اس کا افادہ دیا (ت)

چوتھی وہ چیز کہ نقد حرام سے خریدی مگر عقد واداد دونوں مال حرام پر جمع نہ ہوئے مثلاً زر حرام کہ خود اُجرت ور شوت میں ملایا ایسی جنس جو پائی تھی اسے بیچ کر حاصل کیا وہ روپیہ دکھا کر اس کے عوض دے دے جب اس نے دی ثمن میں حلال روپیہ دیا وہ حرام روپیہ الگ کر لیا یہاں عقد حرام پر ہوا مگر ادا اس سے ادا نہ ہوئی یا بغیر روپیہ دکھائے یا اس کی طرف اشارہ کئے یو نہیں کہا کہ ایک روپیہ کی فلاں شے دے اس نے دی اب ثمن میں زرِ حرام دیا کہ یہاں ادا تو اس

سے ہوئی مگر عقد اس پر واقع نہ ہوا تھا اس صورت میں علماء مختلف ہیں بہت سے علماء اسے بھی حرام مطلق بتاتے ہیں،

فان الفساد اذا کان لعدم الملک عمل فیما یتعین وما لا یتعین اصلاً وبدلا علی الاطلاق۔

کیونکہ فساد جب عدم ملکیت کی وجہ سے ہو تو پھر متعین ، غیر متعین۔ اصل اور بدل سب میں علی الاطلاق کرتا ہے (ت)

اور بہت سے علماء نے امام کرخی رحمہ اللہ تعالیٰ کے قول پر فتویٰ کیا کہ یوں جو چیز مول لے وہ حرام نہیں ، نقد حرام کی خباثت اس کے بدل میں جبھی آتی ہے کہ عقد و ادا دونوں اس پر مجتمع ہوں ۔ تنویر الابصار میں ہے :

به یفتی و مثله فی الذخیرة اسی قول کے مطابق فتویٰ دیا گیا اور اسی کی مثل

Fatawa Razawiyya - Volume 24

And others, as mentioned in Jami' al-Rumuz, and this is the path of all reliable texts, such as al-Nuqaya, al-Islah, and al-Ghurar, etc. (T)

Fifth, for example, if a prostitute took a loan from someone, or if someone gave her an award or gift apart from the wages of forbidden acts like singing, dancing, or adultery, or the bribe of illicit relations, or if she received wages for permissible acts like sewing, etc.; all this is lawful (halal), and whatever is obtained from it will also be lawful.

[Arabic]: In Fatawa al-Imam Qazi Khan: If a man is a singer, they say it is permitted if given without a condition. And if he takes it on a condition, then if he knows the owner of the wealth, he must return it, and if he does not know him, he gives it in charity (Sadaqah). (End of quote). The detailed discussion on this statement is present in our fatwas under the chapter of 'Hazr' (Prohibition). (T)

So if it is known that the gift she brought is from the first three types of wealth, then it is not permissible for anyone, doctor or non-doctor, to take it. And if it is known that it is from the fifth type, then taking it is lawful for everyone. And if taken from the fourth type, one is not a sinner. All this is when the recipient knows which category the gift falls into. In the state of lack of knowledge, since most of her wealth is from forbidden means—as is common with prostitutes—many scholars say taking her gift is absolutely forbidden unless it is known that this specific thing is from a lawful source. However, the original doctrine and the correct and reliable view is that in a state of ignorance, taking it is permissible unless it is known that this specific thing is from a forbidden source. The editor of the school of thought, our master Imam Muhammad (may Allah have mercy on him), says:

[Arabic]: We take by it as long as we do not know something to be specifically forbidden, and this is the view of Abu Hanifa. / [Urdu]: As long as we do not know something to be specifically forbidden, it is permissible; we adopt this view, and this [is...]

1. Fatawa Qazi Khan, Kitab al-Hazr wa al-Ibahah, Section on Taslim, Naval Kishore Press Lucknow, 4/947. Page 368 of 720

फतावा रज़विया - जिल्द 24

और अन्य, जैसा कि जामे-उल-रुमूज़ में है, और यही विश्वसनीय ग्रंथों का मार्ग है जैसे कि अल-नुकाया, अल-इसलाह और अल-घुरर आदि। (टी)

पांचवां, उदाहरण के लिए, यदि किसी वेश्या ने किसी से ऋण लिया हो, या गायन, नृत्य या व्यभिचार जैसे निषिद्ध कार्यों की मजदूरी और अवैध संबंधों की रिश्वत के अलावा किसी ने उसे वैसे ही कोई पुरस्कार या उपहार दिया हो, या सिलाई आदि जैसे जायज़ कार्यों की मजदूरी में उसे कुछ मिला हो; तो यह सब हलाल (वैध) है और इससे जो कुछ प्राप्त किया जाएगा वह भी हलाल होगा।

[अरबी]: फतावा इमाम काज़ी ख़ान में है: यदि कोई पुरुष गायक है, यदि उसे बिना शर्त दिया जाए तो वे कहते हैं कि यह जायज़ है। और यदि वह शर्त पर लेता है, तो यदि वह धन के स्वामी को जानता है, तो उसे वापस करना होगा, और यदि नहीं जानता, तो उसे दान (सदका) कर देना चाहिए। (उद्धरण समाप्त)। इस कथन का विस्तृत विवरण हमारे फतवों की 'हज्र' (निषेध) की बहस में मौजूद है। (टी)

अतः यदि यह ज्ञात हो कि वह जो उपहार लाई है वह पिछली तीन प्रकार की संपत्तियों में से है, तो चिकित्सक या गैर-चिकित्सक किसी के लिए भी उसे लेना जायज़ नहीं है। और यदि यह ज्ञात हो कि वह पांचवीं श्रेणी से है, तो उसे लेना सभी के लिए हलाल है। और यदि चौथी श्रेणी से लिया जाए, तो लेने वाला पापी नहीं है। यह सब तब है जब उपहार प्राप्त करने वाले को पता हो कि उपहार किस श्रेणी का है। ज्ञान न होने की स्थिति में, क्योंकि उसकी अधिकांश संपत्ति हराम (निषिद्ध) माध्यमों से होती है—जैसा कि वेश्याओं के साथ आम है—तो कई विद्वान उसका उपहार लेना पूर्णतः हराम बताते हैं जब तक कि यह ज्ञात न हो जाए कि यह विशिष्ट वस्तु हलाल स्रोत से है। हालाँकि, मूल पंथ और सही एवं विश्वसनीय मत यह है कि अनभिज्ञता की स्थिति में इसे लेना जायज़ है जब तक कि यह ज्ञात न हो कि यह विशिष्ट वस्तु हराम स्रोत से है। विचारधारा के संपादक, हमारे स्वामी इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) फरमाते हैं:

[अरबी]: हम इसे तब तक स्वीकार करते हैं जब तक हमें किसी चीज़ के विशेष रूप से हराम होने का पता न हो, और यही अबू हनीफा का मत है। / [उर्दू]: जब तक हम किसी चीज़ को विशेष रूप से हराम नहीं जानते, वह जायज़ है; हम इसी को अपनाते हैं, और यही...

1. फतावा काज़ी ख़ान, किताब अल-हज्र व अल-इबाहत, तस्लीम पर अनुभाग, नवल किशोर प्रेस लखनऊ, 4/947। पृष्ठ 368 / 720

وغیرھا کما فی جامع الرموز وعلیہ مشت المتون المعتمدۃ النقایۃ والاصلاح والغرر- ذخیرہ وغیرہ میں ہے جیسا کہ جامع الرموز میں ہے تمام متون معتبرہ کی یہی روش ہے مثلاً النقایہ، الاصلاح اور الغرر وغیرہ (ت)

پانچویں مال مثلاً رنڈی نے کسی سے قرض لیا یا اسے گانے ناچنے زنا وغیرہ محرمات کی اجرت اور آشنائی کی رشوت سے جدا کسی نے ویسے ہی کچھ انعام دیا ہبہ کیا یا سینے پرونے وغیرہ ہا افعال جائزہ کی اُجرت میں لیا کہ یہ سب حلال ہے اور اس سے جو کچھ حاصل کیا جائے گا وہ بھی حلال ہے،

فی فتاوی الامام قاضی خان الرجل اذا کان معرباً مغنیناً ان اعطی بغیر شرط قالوا یباح وان کان یاخذہ علی شرط ذو المال علی صاحبہ ان کان یعرفہ و ان لم یعرفہ یتصدق بہ اھ وتفصیل القول فی الحظر من فتاوٰینا۔ | فتاوی قاضی خان میں ہے کہ اگر کوئی آدمی کسی مرد گائیک کو بغیر شرط کے کچھ دے دے یا گویا اس شرط پر لے لے کہ بصورت تعارف اور پہچان کے وہ مال وصول کردہ اصل مالک کو واپس کردے گا اور مالک کا پتہ نہ لگ سکنے کی صورت میں وہ مال صدقہ کردے گا اھ اور اس قول کی تفصیل ہمارے فتاوی کی بحث حظر میں موجود ہے(ت)

پس اگر معلوم ہو کہ یہ تحفہ جو وہ لائی ہے اگلے تین مالوں سے ہے تو طبیب و غیر طبیب کسی کو لینا جائز نہیں اور اگر معلوم ہو کہ قسم پنجم سے ہے تو سب کو لینا حلال اور قسم چہارم میں لے لے تو گنہگار نہیں، یہ سب اس حال میں ہے کہ تحفہ کا حاصل اس لینے والے کو معلوم ہو کہ کس قسم کا ہے اور بحال عدم علم جب کہ اس کا اکثر مال وجہ حرام سے ہو کہ رنڈیوں میں غالب یہی

ہے تو بہت علماء اس کا تحفہ لینا مطلقاً حرام بتاتے ہیں جب تک معلوم نہ ہو کہ یہ خاص چیز وجہ حلال سے ہے مگر اصل مذہب و قول صحیح و معتمد یہ ہے کہ بحال ناواقفیت لینا جائز ہے جب تک معلوم نہ ہو کہ یہ خاص چیز وجہ حرام سے ہے، محرّ ر مذہب سید نا امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں:

بہ ناخذ مالم نعرف شیئاً حراماً بعینہ وھو قول ابی حنیفۃ | جب تک ہم کسی چیز کو بعینہ حرام نہ جانیں تو وہ جائز ہے، ہم اسی کو اختیار کرتے ہیں، اور یہی

1 فتاوی قاضی خان کتاب الحظر والاباحۃ فصل فی تسلیم والتسلیم مطبع نولکشور لکھنؤ ۴/۹۴۷

Fatawa Rizvia, Volume 24

...and his companions (may Allah Almighty be pleased with them), mentioned in Al-Hindiyya[1]. This is the saying of Hazrat Imam Abu Hanifa and his companions (may Allah be pleased with them). It is narrated in Al-Hindiyya on the authority of Az-Zahiriya, from Abu al-Layth, from Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him). (T) From Az-Zahiriya on the authority of Abu al-Layth from Muhammad, may Allah Almighty have mercy on him.

However, there is no doubt that although the fatwa is for permissibility, piety (Taqwa) lies in avoidance. "And we have detailed the statement regarding this in our fatwas." (We have explained it in detail in our fatwas). (T) And Allah, Glorified and Exalted, knows best.

Problem 139: What do the scholars of religion say regarding the rights of a biological mother and a stepmother? What is the difference between a biological and a stepmother and their rights? Should a stepmother be considered exactly like a biological mother, or should there be some distinction in maintaining their respective ranks, and to what extent? Clarify and be rewarded.

The Answer: There is a vast difference (like earth and sky) between the rights of a biological mother and a stepmother. A biological mother herself is intrinsically deserving of every kind of service, respect, honor, and obedience. Causing her grief is (Allah forbid) causing grief to Allah and His Messenger. A stepmother has no personal right of her own; whatever right she has is through the father. That is, nothing should be done that would cause grief to the father, for causing grief to the father is causing grief to Allah and His Messenger (Glory be to Him, and may peace and blessings of Allah be upon Him). And Allah Almighty knows best.

Problem 140: From Najibabad, District Bijnor, asked by Mr. Ahmed Hussain Khan, 7 Dhu al-Hijjah 1339 AH. (1) What are the rights of a disciple (murid) over his spiritual guide (pir)? (2) What are the rights of a spiritual guide over his disciple?

The Answer: (1) The right of a disciple over his guide is that the guide should treat him like his own children. If he sees anything bad, he should forbid and prevent him from it, and encourage him towards good deeds. He should wish well for him in his presence and absence, include him in his prayers, and overlook any ignorance, rudeness, or disrespect that may occur from his side. He should not be angry for his

own self, but may show anger for the disciple's guidance while inwardly desiring his well-being.

---

[1] Fatawa Hindiyya, Kitab al-Karahiya, Chapter 12, Noorani Kutub Khana Peshawar, 5/342.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

...और उनके साथी (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो), अल-हिन्दिया[1] में वर्णित है। यह हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा और उनके साथियों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) का कथन है। इसे हिन्दिया में ज़हीरिया के हवाले से अबुल लैथ से, उन्होंने इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहमत करे) से रिवायत किया है। (त) ज़हीरिया के हवाले से अबुल लैथ से, उन्होंने मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहमत करे) से रिवायत किया।

हालाँकि इसमें कोई संदेह नहीं है कि यद्यपि फ़तवा अनुमति का है, लेकिन परहेज़गारी (तक़वा) इससे बचने में है। "और हमने इस बारे में अपने फ़तवों में विस्तार से वर्णन किया है।" (हमने इसे अपने फ़तवों में विस्तार से समझाया है)। (त) और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

मसला 139: धर्म के विद्वान सगी माँ और सौतेली माँ के अधिकारों के बारे में क्या कहते हैं? सगी और सौतेली माँ और उनके अधिकारों में क्या अंतर है? क्या सौतेली माँ को सगी माँ के समान समझना चाहिए या उनके पद की गरिमा बनाए रखने में दोनों में कुछ अंतर करना चाहिए और कितना? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

अल-जवाब: सगी माँ और सौतेली माँ के अधिकारों में ज़मीन-आसमान का अंतर है। सगी माँ स्वयं हर प्रकार की सेवा, आदर, सम्मान और आज्ञाकारिता की पात्र है और उसे कष्ट देना (अल्लाह न करे) अल्लाह और उसके रसूल को कष्ट देना है। सौतेली माँ का अपना कोई व्यक्तिगत अधिकार नहीं है, जो कुछ भी है वह पिता के माध्यम से है। यानी ऐसी कोई बात न हो जिससे पिता को कष्ट हो, क्योंकि पिता को कष्ट देना अल्लाह और उसके रसूल को कष्ट देना है (जल्द जलालहु, व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 140: नजीबाबाद, ज़िला बिजनौर से, प्रेषक जनाब अहमद हुसैन खाँ साहब, 7 ज़ुल-हिज्जा 1339 हिजरी। (1) मुरीद के अपने पीर पर क्या अधिकार हैं? (2) पीर के मुरीद पर क्या अधिकार हैं?

अल-जवाब: (1) मुरीद का पीर पर यह अधिकार है कि वह उसे अपनी संतान की तरह समझे। यदि वह उसमें कोई बुराई देखे तो उसे उससे मना करे, रोके और नेक कार्यों के लिए प्रोत्साहित करे। उसकी उपस्थिति और अनुपस्थिति में उसका शुभचिंतक रहे, अपनी प्रार्थनाओं में उसे सम्मिलित करे, उसकी ओर से अज्ञानता के कारण जो गुस्ताख़ी या अभद्रता हो उसे क्षमा करे। उस पर अपने स्वार्थ के लिए क्रोधित न हो, बल्कि उसके मार्गदर्शन के लिए क्रोध प्रकट करे और मन में उसकी भलाई की कामना करता रहे।

[1] फ़तावा हिन्दिया, किताब अल-कराहिया, अध्याय 12, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 5/342।

واصحابہ رضی اللہ تعالٰی عنھم، ذکرہ فی الھندیہ۱ قول حضرت امام ابو حنیفہ اور ان کے اصحاب رضی اللہ تعالٰی عنھم کا ہے۔ اس کو ہندیہ میں بحوالہ ظہیریہ اس نے ابواللیث سے اس نے امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی سے روایت کیا۔ (ت) عن الظھیریۃ عن ابی اللیث عن محمد رحمہ اللہ تعالٰی۔

تاہم شک نہیں کہ اگرچہ فتوٰی جواز ہے تقوٰی احتراز ہے، وقد فصلنا القول فیہ فی فتاونا (ہم نے اس کو تفصیل کے ساتھ اپنے فتاوٰی میں بیان کیا ہے۔ (ت) واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۳۹: کیا فرماتے ہیں علمائے دین حقیقی مادر اور سوتیلی ماں کے حق حقوق کے بارہ میں، حقیقی اور سوتیلی ماں میں اور ان کے حق میں کیا فرق ہے؟ سوتیلی ماں کو مثل حقیقی والدہ کے سمجھنا چاہئے یا حفظ مراتب میں دونوں کے کچھ فرق کرنا چاہئے اور کس قدر؟ بینوا توجروا۔

الجواب: حقیقی ماں اور سوتیلی کے حقوق میں زمین آسمان کا فرق ہے، حقیقی ماں بذات خود مستحق ہر گونہ خدمت وادب و تعظیم واطاعت کی ہے اور اسے ایذا دینی معاذ اللہ ورسول کو ایذا دینی ہے، اور سوتیلی ماں کا اپنا ذاتی کوئی حق نہیں جو کچھ ہے باپ کے ذریعہ سے ہے یعنی وہ بات نہ ہو جس میں باپ کو ایذا ہو کہ باپ کی ایذا اللہ ورسول کی ایذا ہے جل جلالہ ، و صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۴۰: از نجیب آباد ضلع بجنور مسئولہ جناب احمد حسین خاں صاحب ۷ ذی الحجہ ۱۳۳۹ھ
(۱) مرید کے پیر پر کیا حقوق ہیں؟ (۲) پیر کے مرید پر کیا حقوق ہیں؟

الجواب: (۱) مرید کا پیر پر حق یہ ہے کہ اسے مثل اپنی اولاد کے جانے ، جو بات بری دیکھے اس سے منع کرے، روکے، نیکیوں کی ترغیب دے۔ حاضر و غائب اس کی خیر خواہی کرے، اپنی

دعاؤں میں اسے شریک کرے، اس کی طرف سے براہِ نادانی جو گستاخی بے ادبی واقع ہو اس سے درگزر کرے ، اس پر اپنے نفس کے لئے ناراض نہ ہو، اس کی ہدایت کے لئے غصہ ظاہر کرے اور دل میں اس کی بھلائی کا خواستگار رہے،

---

۱ فتاویٰ ہندیہ کتاب الکراھیۃ الباب الثانی عشر نورانی کتب خانہ پشاور ۵ / ۳۴۲

...should not seek anything from his wealth, and should be a helper in every difficulty as far as possible, etc. And Allah knows best.

(2) The rights of a spiritual guide (Pir) over a disciple (Murid) are beyond count. The summary is that one should remain in his hands like a dead body in the hands of the living. Consider his pleasure as Allah's pleasure and his displeasure as Allah's displeasure. Believe him to be better for oneself than all the saints of the time. If any blessing is apparently received from another, consider it also as the gift of one's Pir and a charity of his focused attention. Be ready to sacrifice wealth, offspring, and life for him. Even if something he says or does appears to be against Islamic law or, God forbid, a major sin in one's own view, one should not object or let any ill-will enter the heart. Instead, be certain that it is a fault of one's own understanding. If one sees another person flying in the sky, consider giving one's hand to someone other than the Pir as severe fire. Do not take another father after one father. Do not speak in his presence; laughing is a big deal, one should keep eyes, ears, and heart fully attentive towards him. Answer whatever he asks in a very soft voice with etiquette and become silent quickly. Respect his clothes, his sitting place, his children, his house, his neighborhood, and his city. Whatever he commands, do not ask "why" and do not delay. Give him precedence over all tasks. Even in his absence, do not sit in his place. After his death, do not marry his wife. Daily, if he is alive, pray abundantly for his safety and well-being. If he has passed away, daily send the reward of Fatihah and Durood in his name. Be a friend to his friend and an enemy to his enemy. In short, after Allah and His Messenger (Jalla Jalalahu wa Sallallahu Alaihi Wasallam), give preference to his relationship over all worldly relationships with all your heart and act upon it, etc. When one is like this, the help of Allah (Almighty), the Master of the World (Sallallahu Alaihi Wasallam), and the noble Mashaikh (may Allah be pleased with them) will remain with him in life, at the time of death, in the grave, on the Day of Resurrection, at the Scales (Mizan), on the Bridge (Sirat), and at the Pond (Hawd)—everywhere. Even if one's Pir himself is nothing, his Pir is surely something, or his Pir's Pir, and so on until the master of the spiritual lineage, the luminous Presence Ghous (may Allah be pleased with him). Then this lineage continues to Mawla Ali (may Allah honor his face), then to the Master of the Messengers (Sallallahu Alaihi Wasallam), and from him to Allah, the Lord of the worlds. Yes, it is necessary that the Pir possesses all four conditions of initiation (Bay'at), then his good faith can bear all kinds of fruit, Insha'Allah. And Allah knows best.

Issue 124: From Khairabad, District Sitapur, Mohalla Mian Sarai Qadeem, Madrasa Arabiya, sent by Maulvi Syed Fakhrul Hasan Sahib.

There is a special need to see the details of the rights of Allah (Huquq-ullah) and the rights of people (Huquq-ul-Ibad). If these rights are recorded in detail in any of the religious books, please inform about the name of the book along with the address, chapter, and section, it would be appreciated, otherwise...

...उसके धन से कुछ भी पाने की इच्छा न रखे, जहाँ तक संभव हो उसकी हर कठिनाई में सहायक बने, इत्यादि। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

(2) मुरीद (शिष्य) पर पीर (आध्यात्मिक गुरु) के अधिकार अनगिनत हैं। सारांश यह है कि उसके हाथों में ऐसे रहे जैसे ज़िंदा के हाथ में मुर्दा। उसकी प्रसन्नता को अल्लाह की प्रसन्नता और उसकी अप्रसन्नता को अल्लाह की अप्रसन्नता समझे। उसे अपने लिए ज़माने के तमाम औलिया (संतों) से बेहतर समझे। यदि कोई कृपा प्रत्यक्ष रूप से किसी और से मिले, तो उसे भी अपने पीर की ही देन और उनकी कृपादृष्टि का सदका समझे। धन, संतान और प्राण सब उस पर न्योछावर करने को तैयार रहे। उनकी जो बात अपनी नज़र में शरीयत के खिलाफ बल्कि माज़अल्लाह (ईश्वर न करे) कबीरा गुनाह लगे, उस पर भी न एतराज करे, न दिल में कोई बुरा विचार लाए, बल्कि पक्का यकीन रखे कि यह मेरी अपनी समझ की गलती है। यदि किसी दूसरे को आसमान में उड़ते हुए देखे, तब भी पीर के सिवा किसी और का हाथ थामने को भीषण आग समझे। एक पिता के बाद दूसरा पिता न बनाए। उनके सामने बात न करे, हँसना तो बड़ी बात है, अपनी आँख, कान और दिल पूरी तरह उनकी ओर लगाए रखे। जो वह पूछें, अत्यंत विनम्र स्वर में अदब के साथ बताकर जल्दी खामोश हो जाए। उनके कपड़ों, उनके बैठने की जगह, उनकी संतान, उनके घर, उनके मोहल्ले और उनके शहर का सम्मान करे। वह जो आदेश दें, उस पर "क्यों" न कहे और न ही देरी करे। सभी कार्यों पर उन्हें प्राथमिकता दे। उनकी अनुपस्थिति में भी उनके बैठने की जगह पर न बैठे। उनकी मृत्यु के बाद भी उनकी पत्नी से निकाह न करे। यदि वह जीवित हैं, तो रोज़ाना उनकी सलामती और खैरियत की कसरत से दुआ करता रहे, और यदि उनका देहांत हो गया है, तो रोज़ाना उनके नाम पर फ़ातिहा और दुरूद का सवाब पहुँचाए। उनके दोस्त का दोस्त और उनके दुश्मन का दुश्मन रहे। संक्षेप में, अल्लाह और उसके रसूल (जल्ला जलालाहू व सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद उनके संबंध को पूरी दुनिया के संबंधों पर दिल से तरजीह (प्राथमिकता) दे और इसी पर कायम रहे, इत्यादि। जब ऐसा होगा, तो हर समय अल्लाह अज़्ज़वजल, सईदुल आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मशाइख-ए-किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) की मदद जीवन में, मौत के समय, कब्र में, हश्र (कयामत) में, मीज़ान (तराजू) पर, सिरात (पुल) पर और हौज़ (तालाब) पर, हर जगह उसके साथ रहेगी। उसका पीर यदि स्वयं कुछ नहीं है, तो उसका पीर तो कुछ है, या पीर का पीर, यहाँ तक कि सिलसिले के मालिक हुज़ूर पुरनूर गौस (रज़ियल्लाहु अन्हु), फिर यह सिलसिला मौला अली (करमल्लाहु वजहुल करीम) और उनसे

सय्यदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनसे अल्लाह रब्बुल आलमीन तक लगातार चला गया है। हाँ, यह ज़रूरी है कि पीर बैअत (दीक्षा) की चारों शर्तों का पालन करता हो, फिर उसका नेक विश्वास ही सब कुछ फल ला सकता है, इंशाअल्लाह। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला 124: खैरआबाद, जिला सीतापुर, मोहल्ला मियां सराय कदीम, मदरसा अरबिया से, मौलवी सैयद फख्रुल हसन साहब द्वारा भेजा गया।

हुकूक-उल्लाह (अल्लाह के अधिकार) और हुकूक-उल-इबाद (बंदों के अधिकार) का विवरण देखने की विशेष आवश्यकता है। यदि दीनी किताबों में से किसी किताब में ये अधिकार विस्तार से दर्ज हों, तो कृपया किताब का नाम, पते, अध्याय और खंड के साथ बताकर अनुग्रहित करें, अन्यथा...

اس کے مال سے کچھ طلب نہ رہے، تا بمقدور اس کی ہر مشکل میں مددگار رہے وغیرہ وغیرہ۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

(۲) پیر کے حقوق مرید پر شمار سے افزوں ہیں، خلاصہ یہ ہے کہ اس کے ہاتھ میں مردہ بدست زندہ ہو کر رہے، اس کی رضا کو اللہ کی رضا اس کی ناخوشی کو اللہ کی ناخوشی جانے، اسے اپنے حق میں تمام اولیائے زمانہ سے بہتر سمجھے، اگر کوئی نعمت بظاہر دوسرے سے ملے تو اسے بھی پیر ہی کی عطا اور اسی کی نظر توجہ کا صدقہ جانے، مال اولاد جان سب اس پر تصدق کرنے کو تیار رہے، اس کی جو بات اپنی نظر میں خلاف شرع بلکہ معاذ اللہ کبیرہ معلوم ہو اس پر بھی نہ اعتراض کرے، نہ دل میں بد گمانی کو جگہ دے بلکہ یقین جانے کہ میری سمجھ کی غلطی ہے، دوسرے کو اگر آسمان پر اڑتا دیکھے جب پیر کے سوا دوسرے کے ہاتھ میں ہاتھ دینے کو سخت آگ جانے، ایک باپ سے دوسرا باپ نہ بنائے، اس کے حضور بات نہ کرے، ہنسنا تو بڑی چیز ہے، اس کے سامنے آنکھ کان دل ہمہ تن اسی کی طرف مصروف رکھے، جو وہ پوچھے نہایت نرم آواز سے بحال ادب بتا کر جلد خاموش ہو جائے، اس کے کپڑوں، اس کے بیٹھنے کی جگہ، اس کی اولاد، اس کے مکان، اس کے محلہ، اس کے شہر کی تعظیم کرے۔ جو وہ حکم دے کیوں نہ کہے دیر نہ کرے، سب کاموں پر اسے تقدیم دے، اس کی غیبت میں بھی اس کے بیٹھنے کی جگہ نہ بیٹھے۔ اس کی موت کے بعد بھی اس کی زوجہ سے نکاح نہ کرے، روزانہ اگر وہ زندہ ہے اس کی سلامت و عافیت کی دعا بکثرت کرتا رہے، اور اگر انتقال ہو گیا تو روزانہ اس کے نام پر فاتحہ و درود کا ثواب پہنچائے۔ اس کے دوست کا دوست، اس کے دشمن کا دشمن رہے۔ غرض اللہ و رسول جل جلالہ و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے بعد اس کے علاقہ کو تمام جہان کے علاقہ

پر دل سے ترجیح دے اور اسی پر کار بند رہے وغیرہ وغیرہ۔ جب یہ ایسا ہوگا تو ہر وقت اللہ عزوجل و سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم و حضرات مشائخ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم کی مدد زندگی میں نزع میں قبر میں حشر میں میزان پر صراط پر حوض پر ہر جگہ اس کے ساتھ رہے گی۔ اس کا پیر اگر خود کچھ نہیں تو اس کا پیر تو کچھ ہے یا پیر کا پیر یہاں تک کہ صاحب سلسلہ حضور پر نور غوث رضی اللہ تعالیٰ عنہ پھر یہ سلسلہ مولیٰ علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ اور ان سے سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اور ان سے اللہ رب العلمین تک مسلسل چلا گیا ہے، ہاں یہ ضرور ہے کہ پیر چاروں شرائط بیعت کا جامع ہو، پھر اس کا حسنِ اعتقاد سب کچھ پھل لا سکتا ہے ان شاء اللہ تعالیٰ۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۱۲۴: از خیر آباد ضلع سیتا پور محلہ میاں سرائے قدیم مدرسہ عربیہ مرسلہ مولوی سید فخر الحسن صاحب

تفصیل حقوق اللہ و حقوق العباد کے دیکھنے کی خاص ضرورت درپیش ہے اگر کتب دینیہ میں سے کسی کتاب میں مفصلاً حقوق درج ہوں تو نام کتاب سے مع پتہ باب وفصل مشکور فرمائی جائے ورنہ

Fatawa Razawiyya, Volume 24

May some guidance be provided so that a full detail of the rights of Allah and the rights of the servant (mankind) can be ascertained.

The Answer: The rights of Allah and the rights of the servants are countless; rather, the entire pure Sharia, including both the 'Greater' and 'Lesser' Jurisprudence, is the detailed explanation of these very rights. No command within the religious sciences is outside of them. In the fatwas of this humble servant, there is some discussion on the rights of parents, spouses, and children. For more detail, refer to the noble book 'Ihya al-Ulum', volume two, 'Book of the Etiquette of Brotherhood'. And Allah, the Glorified and Most High, knows best.

Problem 143 to 144: Inquired by Muhammad Mian, a student from Behari, Bareilly, Mohalla Saudagaran. What do the scholars of religion say regarding these issues: (1) Is it mandatory (fard) or obligatory (wajib) for parents to warn their adult children towards goodness? (2) To what extent is the right of parents over children?

The Answer: (1) The same ruling that applies to an action also applies to the awareness provided about it: mandatory for mandatory, obligatory for obligatory, Sunnah for Sunnah, and recommended for recommended. However, this is conditional upon ability and the hope of benefit; otherwise: "O you who have believed, upon you is [responsibility for] yourselves. Those who have gone astray will not harm you when you have been guided." [Quran 5:105] - By Allah, (O people!) concern yourselves with your own souls; thus, those who have gone astray will not harm you if you are guided. And Allah Almighty knows best. (T) Allah Almighty knows best. (2) It is to such an extent that fulfillment is impossible, except if they were to die and one could bring them back to life anew; let him do so, for they are the cause of his existence. And Allah Almighty knows best.

Problem 145: From the city Madrasa Ahle Sunnat wa Jama'at, inquired by Mawlawi Muhammad Afzal Sahib Kabuli, a first-grade student of the mentioned madrasa, 16 Dhu al-Qi'dah 1335 AH.

[Table Content] (Persian Text): If a person does not teach his child religious knowledge, (and only teaches) English and Nagari, and (consequently) the child does not know what are the commands and prohibitions of God and the Prophet at present... (Urdu Text): If a father did not teach his son the religion of Islam, hence

that child, apart from English and Nagari, does not know the knowledge of Allah Almighty and His Noble Messenger that...

1 Al-Qur'an al-Karim 5/105 Page 371 of 720

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

ऐसी कुछ हिदायत फरमाई जाए जिससे पूरे तौर पर हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल इबाद की तफ़सील दरयाफ़्त हो जाए।

अल-जवाब: हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल इबाद बेशुमार हैं बल्कि तमाम शरीअत-ए-मुतह्हरा बल्कि फ़िक़्ह-ए-अकबर और असग़र सब उन्हीं की तफ़सील में हैं। तमाम उलूम-ए-दीनिया का कोई हुक्म इनसे बाहर नहीं। फ़तावा-ए-फ़क़ीर में हुक़ूक़ुल वालिदैन, हुक़ूक़-ए-ज़ौजैन और हुक़ूक़-ए-औलाद का क़दरे बयान है। किताब-ए-मुसतताब 'एहया उल-उलूम शरीफ़' में ज़्यादा तफ़सील है, जिल्द सानी 'किताब आदाबुल इखवत' मुलाहज़ा हो। वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम।

मसला 143 ता 144: मुसतफ़सरह मुहम्मद मियाँ तालिब-ए-इल्म बहारी बरेली मोहल्ला सौदागरान। क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन इन मसलों में: (1) वालिदैन का हक़ औलाद-ए-बालीग़ को तन्बीह-ए-खैर वाजिब है या फ़र्ज़? (2) हक़-ए-वालिदैन औलाद पर किस क़दर है?

अल-जवाब: (1) जो हुक्म फेल का है वही उस पर आगाही देनी है; फ़र्ज़ पर फ़र्ज़, वाजिब पर वाजिब, सुन्नत पर सुन्नत, मुसतहब पर मुसतहब। मगर बशर्ते-बक़ुदरत बक़दर-ए-कुदरत बा-उम्मीद-ए-मन्फ़अत, वरना: "ऐ ईमान वालो! तुम अपनी फ़िक्र करो, अगर तुम हिदायत पर हो तो जो गुमराह हुआ वह तुम्हें कोई नुक़सान नहीं पहुँचाएगा।" 1- वल्लाह (लोगो!) अपनी जानों की फ़िक्र करो, लिहाज़ा तुम्हें कुछ नुक़सान नहीं जो भटक गया जबकि तुम हिदायत याफ़्ता हो। वल्लाहु तआला आलम। (त) तआला आलम। (2) इतना ही कि अदा करना मुमकिन नहीं, मगर यह कि वे मर जाएँ और यह उनको अज़ सर-ए-नौ ज़िंदा कर सके तो करे कि वे इसके वजूद का सबब हैं। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 145: अज़ शहर मदरसा अहले सुन्नत व जमाअत मूसतफ़सरह मौलवी मुहम्मद अफ़ज़ल साहब काबुली तालिब-ए-इल्म दर्जा अव्वल मदरसा मज़कूर 16 ज़ी अल-क़ादा 1335 हिजरी।

[तालिका सामग्री] (फारसी): अगर किसी शख़्स ने अपने बच्चे को दीन का इल्म नहीं सिखाया सिवाय अंग्रेज़ी और नागरी के और वह बच्चा अल्लाह और उसके रसूल के बारे में नहीं जानता कि अभी क्या हुक्म है और क्या मना है... (उर्दू): अगर बाप ने अपने बेटे को दीन-ए-इस्लाम न सिखाया, लिहाज़ा वह बच्चा इंग्लिश और नागरी के बग़ैर अल्लाह तआला और उसके रसूल-ए-गिरामी के इल्म को नहीं जानता कि...

1 अल-क़ुरआन अल-करीम 5/105 पेज 371/720

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۴

ایسی کچھ ہدایت فرمائی جائے جس سے پورے طور پر تفصیل حقوق اللہ و حقوق العبد کی دریافت ہو جائے۔

الجواب: حقوق اللہ و حقوق العباد بیشمار ہیں بلکہ تمام شریعت مطہرہ بلکہ فقہین اکبر و اصغر سب انہیں کی تفصیل میں ہیں تمام علوم دینیہ کا کوئی حکم ان سے باہر نہیں۔ فتاویٰ فقیر میں حقوق الوالدین و حقوق زوجین و حقوق اولاد کا قدرے بیان ہے، کتاب مستطاب احیاء العلوم شریف میں زیادہ تفصیل ہے جلد ثانی کتاب آداب الاخوۃ ملاحظہ ہو۔ واللہ سبحنہ و تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۴۳ تا ۱۴۴: مستفسرہ محمد میاں طالب علم بہاری بریلی محلہ سوداگرا ن کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسئلوں میں : (۱) والدین کا حق اولادِ بالغ کو تنبیہ خیر واجب ہے یا فرض؟ (۲) حقِ والدین اولاد پر کس قدر ہے؟

الجواب: (۱) جو حکم فعل کا ہے وہی اس پر آگاہی دینی ہے فرض پر فرض، واجب پر واجب، سنت پہ سنت، مستحب پہ مستحب۔ مگر بشرطِ بقدرت بقدرِ قدرت بامیدِ منفعت، ورنہ: "عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ" 1- واللہ (لوگو!) اپنی جانوں کی فکر کرو، لہذا تمہیں کچھ نقصان نہیں جو بھٹک گیا جبکہ تم ہدایت یافتہ ہو۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت) تعالیٰ اعلم۔ (۲) اتنا ہی کہ ادا نا ممکن ہے مگر یہ کہ وہ مر جائیں اور یہ ان کو از سر نو زندہ کر سکے تو کرے کہ وہ اس کے وجود کا سبب ہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۴۵: از شہر مدرسہ اہلسنت و جماعت مسئولہ مولوی محمد افضل صاحب کابلی طالب علم درجہ اول مدرسہ مذکور ۱۶ ذی القعدہ ۱۳۳۵ھ

[جدول] اگر شخصے بچہ خود را تعلیم علم دین نکرد بغیر انگریزی و ناگری و علم | اگر والد نے اپنے بیٹے کو دینِ اسلام نہ سکھایا، لہذا وہ بچہ انگلش خدا و رسول را بچہ نمی داند کہ چہ امر ست وچہ نہی الحال | اور ناگری کے بغیر اللہ تعالیٰ اور اس کے رسولِ گرامی کے علم کو نہیں جانتا کہ

1 القرآن الکریم ۵ / ۱۰۵ صفحہ ۳۷۱ از ۷۲۰

Fatawa Razawiyya, Volume 24

Question: Does such a father have any rights over his son or not? Please explain and be rewarded. What is the command regarding his commands and prohibitions? Therefore, does such a father have any rights over his son or not? State and gain reward. (T)

Answer: Even if a father falls short in fulfilling his duties towards his son, the rights of the father upon the son are not nullified. Allah (Exalted) knows best. If a father has been negligent or deficient in fulfilling the son's rights, (then despite this) the father's rights remain intact; they can never be waived (or forgiven) by the son. And Allah (Exalted) knows everything perfectly. (T)

Problem 146 & 147: From Maulvi Nazir Ahmed Sahib, resident of Samohan, Pargana Nawabganj, Bareilly, 27th Muharram-ul-Haram 1336 AH. What do the noble scholars and esteemed Muftis say regarding the following detailed issues: (1) What are the rights of a wife over her husband? (2) What are the rights of a husband over his wife? Please explain and be rewarded.

Answer: (1) Maintenance, housing, dower (Mahr), good companionship, teaching and emphasizing good conduct, modesty, and hijab, and forbidding with warnings against their opposites; cheering her heart in every permissible matter; and if granted the success to follow the practice of the men of God, then enduring her grievances beyond what is forbidden in Shari'ah is a matter of great excellence, although it is not a right of the woman. (2) In matters related to the marital relationship, total obedience to him, as in these matters obedience to him takes precedence even over parents; strictly protecting his honor, protecting his property, wishing him well in every matter, always seeking his pleasure in permissible matters, considering him her master, calling him by name, not making unfair complaints about him to anyone, and if God gives strength, avoiding even justified ones. Not going to her parents' house before the eighth day or to relatives' houses before a year has passed without his permission. If he is angry, to appease him with extreme flattery and place her hand in his, saying, "This hand of mine is in your hand until you are pleased, meaning I am your possession, do what you will but be pleased." And Allah (Exalted) knows best.

फ़तावा रज़विया, जिल्द २४

प्रश्न: क्या ऐसे पिता का अपने पुत्र पर कोई अधिकार है या नहीं? उत्तर दें और पुण्य प्राप्त करें। उनका आदेश और निषेध क्या है? इसलिए, क्या अब ऐसे पिता का अपने पुत्र पर कोई अधिकार है या नहीं? विवरण दें और प्रतिफल प्राप्त करें। (त)

उत्तर: यदि पिता ने पुत्र के प्रति अपने कर्तव्यों में कोई चूक की हो, तो पुत्र पर पिता के अधिकार समाप्त नहीं होते। अल्लाह (सर्वोच्च) बेहतर जानता है। यदि पिता से पुत्र का अधिकार पूरा करने में कोई कोताही या त्रुटि हुई हो, (तो इसके बावजूद) पिता के अधिकार बने रहते हैं, वे पुत्र से कभी भी समाप्त (और माफ़) नहीं हो सकते। और अल्लाह सब कुछ अच्छी तरह जानता है। (त)

मसला १४६ और १४७: मौलवी नज़ीर अहमद साहब, निवासी समोहन, परगना नवाबगंज, बरेली, २७ मुहर्रम-उल-हराम १३३६ हिजरी। विद्वान और मुफ़्ती निम्नलिखित विस्तृत मुद्दों पर क्या कहते हैं: (१) पति पर पत्नी के क्या अधिकार हैं? (२) पत्नी पर पति के क्या अधिकार हैं? विवरण दें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: (१) भरण-पोषण, आवास, मेहर, अच्छा व्यवहार, अच्छी बातों और हया व पर्दे की शिक्षा और ताकीद, तथा इसके विपरीत कार्यों से चेतावनी के साथ रोकना; हर जायज़ बात में उसका दिल खुश करना; और यदि ईश्वर के भक्तों के मार्ग पर चलने का अवसर मिले, तो शरीयत में मना किए गए कार्यों के अलावा उसकी दी हुई तक़लीफों को सहन करना अत्यंत श्रेष्ठता की बात है, यद्यपि यह स्त्री का अधिकार नहीं है। (२) वैवाहिक मामलों में पूरी तरह से उसकी आज्ञा मानना, क्योंकि इन मामलों में उसकी आज्ञा का पालन माता-पिता पर भी प्राथमिकता रखता है। उसके सम्मान (नामूस) की पूरी सुरक्षा करना, उसके धन की सुरक्षा, हर मामले में उसका भला चाहना, हर समय जायज़ कामों में उसकी रज़ा (प्रसन्नता) का इच्छुक रहना, उसे अपना स्वामी समझना, नाम लेकर पुकारना, किसी से उसकी अनुचित शिकायत न करना, और यदि ईश्वर सामर्थ्य दे, तो उचित शिकायत से भी बचना। उसकी अनुमति के बिना आठ दिनों से पहले माता-पिता के पास या साल भर से पहले रिश्तेदारों के यहाँ न जाना। यदि वह नाराज़ हो, तो उसे अत्यधिक खुशामद करके मनाना, अपना हाथ उसके हाथ में रखकर कहना कि "यह मेरा हाथ तुम्हारे हाथ में है जब तक तुम राज़ी न हो जाओ, यानी मैं तुम्हारी संपत्ति (ममलूका) हूँ, जो चाहो करो लेकिन प्रसन्न हो जाओ।" और अल्लाह (सर्वोच्च) बेहतर जानता है।

पृष्ठ ३७२ का ७२०

ایس چنیں پدر را بر پسر حق ست یانہ؟ بینوا توجروا۔ ان کا حکم اور نہی کیا ہے؟ لہذا اب اس طرح کے والد کا اپنے بیٹے پر کوئی حق ہے یا نہیں؟ بیان فرماؤ اور اجر پاؤ۔(ت)

الجواب: پدر اگر در حق پسر تقصیر کرد حقوق پدر ذمہ پسر ساقط نتواں شد۔ واللہ تعالٰی اعلم اگر والد سے بیٹے کا حق ادا کرنے میں کوتاہی اور قصور ہو گیا (تو اس کے باوجود) والد کے حقوق بحال ہیں وہ بیٹے سے کبھی ساقط (اور معاف) نہیں ہو سکتے۔ اور اللہ تعالٰی سب کچھ بخوبی جانتا ہے۔ (ت)

مسئلہ ۱۴۶ و ۱۴۷: مولوی نذیر احمد صاحب ساکن سموہان پرگنہ نواب گنج بریلی ۲۷ محرم الحرام ۱۳۳۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے کرام ومفتیان عظام مسائل مفصلہ ذیل میں: (۱) بی بی کے حقوق شوہر پر کیا ہیں؟ (۲) شوہر کے حقوق بی بی پر کیا ہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: (۱) نفقہ سکنی، مہر حسن معاشرت، نیک باتوں اور حیاء و حجاب کی تعلیم و تاکید اور اس کے خلاف سے منع التہدید، ہر جائز بات میں اس کی دل جوئی اور مردان خدا کی سنت پر عمل کی توفیق ہو تو ماورائے مناہی شرعیہ میں، اس کی ایذا کا تحمل کمال خیر ہے اگر چہ یہ حق زن نہیں۔ (۲) امور متعلقہ زن شوی میں مطلقاً اس کی اطاعت کہ ان امور میں اس کی اطاعت والدین پر بھی مقدم ہے، اس کے ناموس کی بشدت حفاظت، اس کے مال کی حفاظت، ہر بات میں اس کی خیر خواہی، ہر وقت امور جائز میں اس کی رضا کا طالب رہنا، اسے اپنا مولٰی جاننا، نام لے کر پکارنا، کسی سے اس کی بے جا شکایت نہ کرنا، اور خدا توفیق دے تو بجا سے بھی احتراز کرنا ہے اس کی اجازت کے آٹھویں دن سے پہلے والدین یا سال بھر سے پہلے اور محارم کے یہاں جانا وہ

ناراض ہو تو اس کی انتہائی خوشامد کرکے اسے منانا اپنا ہاتھ اس کے ہاتھ میں رکھ کر کہنا کہ یہ میرا ہاتھ تمہارے ہاتھ میں ہے یہاں تک کہ تم راضی ہو یعنی میں تمہاری مملوکہ ہوں جو چاہو کرو مگر راضی ہو جاؤ۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

Fatawa-e-Razvia Volume 24

Question 149 & 128: From the town of Hasanpur, District Moradabad, Tehsil Chandpur, sent by Ashraf Ali Khan, 24 Rabi al-Awwal 1336 AH. (1) A man had mutual love for an unmarried woman, meaning a virgin without marriage. There was no illicit relationship. Then, she got married to another man. After the marriage, the first man committed adultery (zina) with this woman. Her husband did not know about it. After some time, the person who committed adultery sought forgiveness from her husband in this way: "Whatever sin I have committed against you, forgive it" or "Forgive whatever there is to be said." He said, "I forgive." Then the woman died. Now, please state whether this forgiveness mentioned above is sufficient or not? And if it is insufficient, how should forgiveness be sought so that Allah Almighty forgives this great sin? (2) What are those sins which Allah will forgive only after His servant, against whom the sin was committed, forgives them first, such as adultery with a married woman?

Answer: (1) Saying "Forgive what there is to say" is not sufficient at all because 'adultery' is not included in the hearing or saying of it. And saying "Forgive whatever sin I have committed against you," if said with such generalities that it includes adultery and he forgave it based on that generality, then it is forgiven. But if the words were so vague and ambiguous that his mind would not go towards such a major matter, and his mind would rather go towards lighter matters such as speaking ill, backbiting, or taking some wealth or property, then this forgiveness would be specific to those things and, according to the clearer opinion, would not include adultery. Therefore, he should say to him: "Whatever kind of sin a man can commit against another in this world regarding body, life, wealth, or honor, etc., whether small or large, whatever has occurred from me regarding your rights, please forgive it all for the sake of Allah." And he should make this generality very clear in his mind. If after that, he clearly forgives, then there is a strong hope that, God willing, it will be forgiven. (2) All rights of fellow human beings (Huquq-ul-Ibad) are like this: they will not be forgiven unless the person whose right was violated forgives them. And Allah Almighty knows best.

Question 150: From Post Office Chigang, Mohalla Medang, District Akyab, sent by Muhammad Umar, 5 Rabi al-Akhar 1336 AH. A man committed adultery with a non-mahram woman. The parents, brothers, and younger relatives of that woman are present. Now, that adulterer wants to seek forgiveness from that adulterous woman. Is seeking forgiveness only from that adulteress...

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

मसला 149 और 128: कस्बा हसनपुर, जिला मुरादाबाद, तहसील चंदपुर से, प्रेषक अशरफ अली खाँ, 24 रबी-उल-अव्वल 1336 हिजरी। (1) एक व्यक्ति का एक अविवाहित स्त्री, यानी कुंवारी लड़की से आपसी प्रेम था, कोई अवैध संबंध नहीं था। फिर उसका विवाह दूसरे पुरुष से हो गया। निकाह के बाद पहले व्यक्ति ने उस स्त्री के साथ व्यभिचार (ज़िना) किया। उसके पति को इसका पता नहीं चला। कुछ समय बाद व्यभिचार करने वाले व्यक्ति ने उसके पति से इस तरह माफ़ी चाही कि "मैंने तुम्हारा जो कुछ गुनाह किया है उसे माफ़ कर दो" या "जो कुछ कहना है माफ़ कर दो।" उसने कहा कि माफ़ किया। फिर वह स्त्री मर गई। अब आप यह बताएं कि क्या ऊपर लिखी गई यह माफ़ी काफी है या नहीं? और अगर नाकाफी है तो किस तरह माफ़ी लेनी चाहिए ताकि अल्लाह तआला इस बड़े गुनाह को माफ़ कर दे? (2) वे कौन-कौन से गुनाह हैं जिन्हें अल्लाह उस वक्त माफ़ करेगा जब पहले उसका बंदा, जिसके साथ गुनाह हुआ है, माफ़ कर दे, जैसे कि शादीशुदा औरत के साथ ज़िना।

जवाब: (1) यह कहना कि "जो कहना है माफ़ कर दो" बिल्कुल काफी नहीं है क्योंकि 'ज़िना' कहने-सुनने में शामिल नहीं है। और यह कहना कि "मैंने तुम्हारा जो गुनाह किया है उसे माफ़ कर दो," अगर ऐसी व्यापकता के साथ कहा गया कि इसमें ज़िना भी शामिल हो और उसने इसी व्यापकता के आधार पर माफ़ किया तो माफ़ हो गया। और अगर शब्द इतने ही गोल और अस्पष्ट थे जिससे उसका ध्यान इतनी बड़ी बात की तरफ न जाए, बल्कि हल्की बातें जैसे बुरा-भला कहना, गीबत (पीठ पीछे बुराई) करना या कुछ धन-संपत्ति लेना इनकी तरफ ध्यान जाए, तो यह माफ़ी इन्हीं बातों के लिए खास रहेगी और स्पष्ट मत के अनुसार इसमें ज़िना शामिल नहीं होगा। इसलिए उसे उससे इस तरह कहना चाहिए कि दुनिया में एक मर्द दूसरे का जिस-जिस किस्म का गुनाह कर सकता है—शरीर, जान, माल या इज़्ज़त आदि के बारे में—उन सब में छोटे से छोटा या बड़े से बड़ा जो कुछ भी मुझसे तुम्हारे हक में हुआ है, सब अल्लाह के लिए माफ़ कर दो। और इस व्यापकता को उसके मन में अच्छी तरह बिठा दे। इसके बाद अगर वह स्पष्ट रूप से माफ़ कर दे, तो पूरी उम्मीद है कि इंशा अल्लाह तआला माफ़ हो जाएगा। (2) बंदों के तमाम अधिकार (हुकूक-उल-इबाद) ऐसे ही हैं कि जब तक हक वाला माफ़ न करे, माफ़ नहीं होंगे। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 150: डाकखाना चीगांग, मोहल्ला मेदंग, जिला अकयाब से, प्रेषक मुहम्मद उमर, 5 रबी-उल-आख़िर 1336 हिजरी। एक व्यक्ति ने एक गैर औरत (अजनबी स्त्री) से ज़िना किया और उस औरत

के माता-पिता, भाई और छोटे रिश्तेदार आदि मौजूद हैं। अब वह व्यभिचारी व्यक्ति उस व्यभिचारिणी स्त्री से माफ़ी लेना चाहता है, क्या केवल उस ज़ानिया (व्यभिचारिणी) से माफ़ी लेना...

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۴

مسئلہ ۱۴۹ و ۱۲۸ : از قصبہ حسن پور ضلع مراد آباد تحصیل چنور مرسلہ اشرف علی خاں ۲۴ ربیع الاول ۱۳۳۶ھ (۱) ایک شخص کا ایک عورت نا کدخدا سے یعنی بلانکا حی کنواری عورت سے باہمی محبت تھی کوئی تعلق نا جائز نہ تھا، پھر اس کا نکاح ایک دوسرے مرد سے ہو گیا، بعد نکاح کے پہلے شخص نے اس عورت سے زنا کیا، اس کے شوہر کو معلوم نہ ہوا، کچھ مدت کے بعد زنا کرنے والے شخص نے اس کے شوہر سے اس طرح معافی چاہی کہ میں نے جو کچھ تمہارا گناہ کیا ہے اس کو معاف کرو یا جو کچھ کہنا ہے معاف کرو۔ اس نے کہا کہ معاف کیا۔ پھر وہ عورت مر گئی۔ اب آپ یہ فرمائیے گا کہ آیا یہ معافی جو اوپر تحریر ہے کافی ہے یا نہیں؟ اور اگر ناکافی ہے تو کس طرح معافی لینا چاہئے تا کہ یہ گناہ عظیم اللہ تعالیٰ معاف کر دے۔ (۲) وہ کون کون سے گناہ ہیں جو اللہ اس وقت معاف کرے گا پیشتر اس کا بندہ جس کے ساتھ گناہ ہوا ہے معاف کرے جیسا کہ شوہر والی عورت کا زنا۔

الجواب: (۱) یوں کہنا کہ "جو کہنا ہے معاف کرو" اصلاً کافی نہیں کہ زنا کہنے سننے میں داخل نہیں اور یوں کہنا کہ "میں نے جو تیر ا گناہ کیا ہے معاف کر دے" یہ اگر ایسی تعمیوں کے ساتھ کہا کہ زنا کو بھی شامل ہو اور اس نے اسی عموم کے طور پر معاف کیا تو معاف ہو گیا اور اگر اتنی ہی گول مجمل لفظ تھے جس سے اس کا ذہن ایسی بڑی بات کی طرف نہ جائے ہلکی باتیں مثلاً برا بھلا کہنا غیبت کرنا یا کچھ مال و بالینا ان کی طرف ذہن جائے تو یہ معافی انہیں باتوں کے لئے خاص رہے گی اور قول اظہر پر زنا کو شامل نہ ہو گی لہٰذا اسے اس سے یوں کہنا چاہئے کہ دنیا میں ایک مرد دوسرے کا جس جس قسم کا گناہ کر سکتا ہے جسم یا جان یا مال یا آبرو وغیرہ وغیرہ کے متعلق ان سب میں چھوٹے سے چھوٹا یا بڑے سے بڑا جو کچھ بھی مجھ سے تمہارے حق میں

واقع ہوا سب لوجہ اللہ معاف کر دو، اور اس تعمیم کو خوب اس کے ذہن میں کر دے اور اس کے بعد وہ صاف معاف کرے تو امید واثق ہے کہ ان شاء اللہ تعالیٰ معاف ہو جائے۔ (۲) تمام حقوق العباد ایسے ہی ہیں کہ جب تک صاحب حق معاف نہ کرے معاف نہ ہو گی ، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۵۰ : از ڈاکخانہ چیگانگ محلہ میدنگ ضلع اکیاب مرسلہ محمد عمر ۵ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ ایک شخص نے ایک غیر عورت سے زنا کیا اور اسی عورت کا والدین اور برادران اور خورد اران وغیرہ ہم موجود ہیں اب وہ شخص زنا کار اس زانیہ عورت سے معافی لینا چاہتا ہے آیا فقط اس زانیہ سے معافی لینا

Fatawa Rizvia Volume 24

...should one also seek forgiveness from parents, brothers, and youngsters? And if the rights of the people (Huquq-ul-Ibad) are forgiven, will the rights of Allah (Huquq-ul-Allah) be forgiven too, or will it be through repentance and seeking forgiveness?

The Answer:

There are two ways for the rights of Allah to be forgiven:

First: Repentance (Tawbah). Allah Almighty says:

"It is He who accepts repentance from His servants and pardons misdeeds." [1] | It is He (Allah Almighty) who accepts the repentance of His servants and forgives sins. (T)

Second: Divine Pardon. Allah Almighty says:

"Then He forgives whom He wills and punishes whom He wills." [2] | Allah Almighty forgives whom He wills, and punishes whom He wills. (T)

And Allah Almighty says:

"Indeed, Allah forgives all sins. Indeed, He is the Forgiving, the Merciful." [3] | Certainly, Allah Almighty forgives all sins because He is the Forgiving and the Merciful. (T)

And there are also two ways for the rights of people to be forgiven:

(1) That which can be fulfilled should be fulfilled, otherwise seek forgiveness from them. It is in Sahih Bukhari that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"Whoever has a claim [against him] for an injustice to his brother, regarding his honor or anything else, let him seek his forgiveness for it today, before [the time comes] when there will be neither dinar nor dirham. If he has any good deeds, they will be taken from him in proportion to his injustice; and if he has no good deeds, then some of his [brother's] sins will be taken [and cast upon him]." | Whoever is responsible for an injustice against his brother concerning his honor or anything else, it is necessary for him to seek forgiveness from him here [in this world] before the time comes when there will be neither rupee nor gold coin (Ashrafi). If he has any good deeds, they will be taken from him according to the victim's right and given to him; otherwise, the victim's sins will be placed on him.

[1] Al-Quran al-Karim 42/25 [2] Al-Quran al-Karim 2/284 [3] Al-Quran al-Karim 39/53

फ़तावा रिज़विया जिल्द 24

...चाहिए या वालिदैन और बिरादरान और खुर्द दारान (छोटों) से भी माफ़ी लेना ज़रूरी है और अगर हुक़ूक़-उल-इबाद (बंदों के अधिकार) माफ़ हो तो हुक़ूक़ अल्लाह (अल्लाह के अधिकार) माफ़ होंगे या नहीं? या तौबा इस्तिग़फ़ार से होंगे?

अल-जवाब (उत्तर):

हुक़ूक़ अल्लाह माफ़ होने की दो सूरतें हैं:

अव्वल: तौबा, अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"हुवल-लज़ी यक़बलुत्तौब-ता अन इबादिही व यअ्फ़ू अनिस-सय्यिआत" [1] | वही (अल्लाह तआला) है जो अपने बंदों की तौबा क़बूल फ़रमाता है और गुनाह माफ़ करता है। (त)

दुव्वम: अफ़्व-ए इलाही (दैवीय क्षमा), अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"फ़यग़्फ़िरु लिमय-यशाउ व युअज्ज़िबु मय-यशाउ" [2] | अल्लाह तआला जिसको चाहे माफ़ फ़रमा दे, और जिसको चाहे सज़ा दे। (त)

और अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"इन्नल-लाहा यग़्फ़िरुज़-ज़ुनूबा जमीआ, इन्नहू हुवल-ग़फ़ूरुर-रहीम" [3] | यक़ीनन अल्लाह तआला सब गुनाह बख़्श देता है क्योंकि वही गुनाह बख़्शने वाला और मेहरबान है। (त)

और हुक़ूक़-उल-इबाद माफ़ होने की भी दो सूरतें हैं:

(1) जो क़ाबिल-ए अदा है अदा करना वरना उनसे माफ़ी चाहना, सहीह बुख़ारी शरीफ़ में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

"मन कानत लहू मज़्लमतुन लि-अख़ीहि मिन इरज़िही औ शैयइन फ़ल-यतहल्लल्हु मिन्हुल-यौ-मा क़ब-ला अल्ला यकूना दीनारुन वला दिरहम, इन काना लहू अ-मलुन सालिहुन उख़िज़ा मिन्हु बिक़द-रि मज़्लमतिही व इन लम यकुन लहू हसनातून उख़िज़ा मिन सय्यिआति" | जिसके ज़िम्मे अपने भाई की आबरू वग़ैरह किसी बात का मज़्लमा (अन्याय) हो उसे लाज़िम है कि यहीं उससे माफ़ी चाह ले

क़ब्ल इस वक़्त के आने के कि वहां न रुपया होगा न अशरफ़ी, अगर उसके पास कुछ नेकियां होंगी तो बक़दर उसके हक़ के उससे लेकर उसे दी जाएंगी वरना उसके गुनाह उस पर [डाल दिए जाएंगे]।

[1] अल-क़ुरान अल-करीम 42/25 [2] अल-क़ुरान अल-करीम 2/284 [3] अल-क़ुरान अल-करीम 39/53

چاہئے یا والدین اور برادران اور خورد داران سے بھی معافی لینا ضروری ہے اور اگر حقوق العباد معاف ہوں تو حقوق اللہ معاف ہوں گے یا نہیں؟ یا توبہ استغفار سے ہوگا؟

الجواب:

حقوق اللہ معاف ہونے کی دو صورتیں ہیں:

اول: توبہ، قال اللہ تعالٰی:

"هُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَ يَعْفُوا عَنِ السَّيِّاٰتِ" [1] | وہی (اللہ تعالٰی) ہے جو اپنے بندوں کی توبہ قبول فرماتا ہے اور گناہ معاف کرتا ہے۔ (ت)

دوم عفو الٰہی، قال اللہ تعالٰی:

"فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ" [2] | اللہ تعالی جس کو چاہے معاف فرمادے، اور جس کو چاہے سزا دے۔ (ت)

وقال اللہ تعالیٰ:

"اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ" [3] | یقیناً اللہ تعالیٰ سب گناہ بخش دیتا ہے کیونکہ وہی گناہ بخشنے والا اور مہربان ہے۔ (ت)

اور حقوق العباد معاف ہونے کی بھی دو صورتیں ہیں:

(۱) جو قابل ادا ہے ادا کرنا ورنہ ان سے معافی چاہنا، صحیح بخاری شریف میں ہے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

مَنْ كَانَتْ لَهُ مَظْلَمَةٌ لِأَخِيهِ مِنْ عِرْضِهِ أَوْ شَيْءٍ فَلْيَتَحَلَّلْهُ مِنْهُ الْيَوْمَ قَبْلَ أَنْ لَا يَكُونَ دِينَارٌ وَلَا دِرْهَمٌ إِنْ كَانَ لَهُ عَمَلٌ صَالِحٌ أُخِذَ مِنْهُ بِقَدْرِ مَظْلَمَتِهِ وَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ حَسَنَاتٌ أُخِذَ مِنْ سَيِّئَاتِ | جس کے ذمہ اپنے بھائی کی آبرو وغیرہ کسی بات کا مظلمہ ہوا سے لازم ہے کہ یہیں اس سے معافی چاہ لے قبل اس وقت کے آنے کے کہ وہاں نہ روپیہ ہو گا نہ اشرفی، اگر اس کے پاس کچھ نیکیاں ہوں گی تو بقدر اس کے حق کے اس سے لے کر اسے دی جائیں گی ورنہ اس کے گناہ اس پر۔

[1] القرآن الكريم ٢٥/ ٤٢ [2] القرآن الكريم ٢/ ٢٨٤ [3] القرآن الكريم ٣٩/ ٥٣

Fatawa Razawiya, Volume 24

...placed upon him. (1) (2) The second method is for the claimant (possessor of the right) to forgive without receiving any compensation. Allah Almighty says: "Pardon and overlook." (2) - Forgive others and overlook their faults. (T) And Allah Almighty says: "Do you not love that Allah should forgive you?" (3) - Do you not like that Allah Almighty should grant you forgiveness? (T) And some comprehensive ways through which the rights of Allah and the rights of people are all forgiven by the permission of Allah Almighty, the details of which we have mentioned in the annotations of 'Radd al-Muhtar'. "Among them is martyrdom at sea, being killed while imprisoned (Qatl al-Sabr), Hajj Mabroor (accepted pilgrimage), and others." - Among these is being a martyr at sea, being killed as a target while held, and among them is an accepted Hajj, and other works of this type. (T) If a woman, God forbid, is an adulteress, meaning adultery occurred with her consent, then she has no right in this regard, so what is the need for an apology to her? Rather, she herself is caught in the violation of others' rights. If she has a husband or close male relatives (Maharim), and if the information of the adultery has reached the husband or the woman's guardians, then undoubtedly it is necessary to ask for their forgiveness. It will not be forgiven without them forgiving. And if the information has not reached them, then even now, has their right become attached or not? Regarding backbiting (Ghibat), scholars have clarified that it will not be attached, and at that time there is no need to ask for forgiveness from them; only repentance (Tawbah) and seeking forgiveness (Istighfar) are sufficient. It is stated in the commentary of 'Fiqh al-Akbar': "The jurist Abu al-Layth (may Allah Almighty have mercy on him) said: People have discussed the repentance of backbiters; is it permissible without seeking pardon from the one backbitten? He said..." - Faqih Abu al-Layth Samarqandi (may Allah Almighty have mercy on him) said: People have differed about the repentance of those who backbite. Is it permissible to repent without seeking forgiveness from the person who was backbitten or not?

1. Sahih al-Bukhari, Chapters on Injustices and Retaliation, Chapter on whoever has been wronged etc., Qadeemi Kutub Khana Karachi 1/331
2. Al-Quran al-Kareem 2:109
3. Al-Quran al-Kareem 24:22

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

...उसके ऊपर रखे जाएँगे। (1) (2) दूसरा तरीका यह है कि हक़ वाला बिना मुआवज़ा लिए माफ़ कर दे, अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "माफ़ करो और दरगुज़र करो।" (2) - दूसरों को माफ़ कर दो और उनसे दरगुज़र करो। (त) और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "क्या तुम पसंद नहीं करते कि अल्लाह तुम्हें माफ़ कर दे?" (3) - क्या तुम इस बात को पसंद नहीं करते कि अल्लाह तआला तुम्हें बख़्श दे? (त) और कुछ ऐसे जामे तरीके जिनसे अल्लाह के हुक़ूक़ और बंदों के हुक़ूक़ अल्लाह के हुक्म से सब माफ़ हो जाते हैं, जिनका विवरण हमने 'रद्दुल मुहतार' की टिप्पणियों में दिया है। "उनमें से समुद्र में शहीद होना है, 'क़त्ल-उस-सब्र' (बांधकर मारा जाना) है, हज्ज-ए-मबरूर (मक़बूल हज्ज) है और इसी तरह के अन्य कार्य।" - इनमें से समुद्र में शहीद होना है, रोक कर निशाना बना कर मारा जाना है, और इनमें से मक़बूल हज्ज है, और इसी प्रकार के दूसरे काम हैं। (त) अगर औरत माज़अल्लाह ज़ानिया है यानी ज़िना उसकी मर्ज़ी से हुआ, तो इसमें उसका कोई हक़ नहीं, तो उससे माफ़ी माँगने की क्या ज़रूरत? बल्कि वह ख़ुद दूसरों के हक़ में गिरफ़्तार है। जबकि वह शौहर या महरम रखती हो, अगर ज़िना की सूचना शौहर या औरत के वलियों तक पहुँच गई तो निस्संदेह उनसे माफ़ी माँगना ज़रूरी है। उनके माफ़ किए बिना माफ़ न होगा। और अगर सूचना नहीं पहुँची तो क्या अब भी उनका हक़ संबंधित हुआ या नहीं? गीबत (पीठ पीछे बुराई) के बारे में उलेमा ने स्पष्ट किया है कि संबंधित नहीं होगा और उस समय उनसे माफ़ी माँगने की ज़रूरत नहीं, सिर्फ तौबा और इस्तिग़फ़ार काफ़ी है। 'शरह फ़िक़्ह अकबर' में है: "फ़क़ीह अबुल लैस (रहमतुल्लाह अलैह) ने फ़रमाया: लोगों ने गीबत करने वालों की तौबा के बारे में बात की है: क्या उस व्यक्ति से माफ़ी कराए बिना तौबा जायज़ है जिसकी गीबत की गई? उन्होंने कहा..." - फ़क़ीह अबुल लैस समरक़ंदी (रहमतुल्लाह अलैह) ने फ़रमाया: लोगों ने गीबत करने वालों की तौबा के बारे में मतभेद किया है, क्या जिसकी गीबत की गई उससे माफ़ कराए बिना तौबा करना जायज़ है या नहीं?

1. सहीह अल-बुख़ारी, अबवाबुल मज़ालिम वल क़िसास, बाब मन कानत लहू मज़्लिमह अलख, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 1/331
2. अल-क़ुरआन अल-करीम 2:109
3. अल-क़ुरआन अल-करीम 24:22

पेज 375 ऑफ़ 720

صاحبہ فحمل علیہ ۱۔ رکھے جائیں گے۔ (۲) دوسرا طریقہ یہ کہ صاحب حق بلامعاوضہ لئے معاف کردے، قال تعالیٰ: "فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا" ۲۔ تم دوسروں کو معاف کردو اور ان سے درگزر کرو۔ (ت) وقال تعالیٰ: "اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ یَّغْفِرَ اللّٰہُ لَکُمْ ط" ۳۔ کیا تم اس بات کو پسند نہیں کرتے کہ اللہ تعالیٰ تمہیں بخش دے۔ (ت) اور بعض طرق جامعہ جن سے حقوق اللہ و حقوق العباد باذن اللہ تعالیٰ سب معاف ہوجاتے جن کی تفصیل ہم نے تعلیقات رد المحتار میں ذکر کی۔ منھا شھادۃ البحر، ومنھا قتل الصبر ومنھا الحج المبرور وغیرذلک۔ ان میں سے دریائی شہادت ہے ان میں سے روک کر نشانہ سے مار ڈالنا ہے، اور ان میں سے حج مقبول، اور اسی نوع کے دوسرے کام ہیں۔ (ت) عورت اگر معاذ اللہ زانیہ ہے یعنی زنا اس کی رضا سے ہوا تو اس میں اس کا کچھ حق نہیں تو اس سے معافی کی حاجت کیا بلکہ خود اوروں کے حق میں گرفتار ہے جبکہ شوہر یا محارم رکھتی ہو زنا کی اطلاع شوہر یا اولیائے زن کو پہنچ گئی تو بلاشبہ ان سے معافی مانگنا ضرور ہے بہ ان کے معاف کئے معاف نہ ہوگا اور اگر اطلاع نہ پہنچی تو اب بھی ان کا حق متعلق ہوا یا نہیں، درباره غیبت علماء نے تصریح فرمائی کہ متعلق نہ ہوگا اور اس وقت ان سے معافی مانگنے کی حاجت نہیں صرف توبہ واستغفار کافی ہے، شرح فقہ اکبر میں ہے: قال الفقیہ ابواللیث رحمہ اللہ تعالیٰ قدتکلم الناس فی توبۃ المغتابین ھل تجوز من غیر ان یستحل من صاحبہ قال فقیہ ابواللیث سمرقندی رحمہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا لوگوں نے غیبت کرنے والوں کی توبہ کے بارے میں اختلاف کیا ہے، کیا جس کی غیبت کی اس سے معاف کرائے بغیر توبہ کرنی جائز ہے یا نہیں؟

۱ صحیح البخاری ابواب المظالم والقصاص باب من کانت لہ مظلمۃ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۳۳۱ ۲ القرآن الکریم ۱۰۹/۲ ۳ القرآن الکریم ۲۲/۲۴

Volume 24 Fatawa Razawiyya

Some have said it is not permissible. In our view, there are two scenarios: first, if the statement reached the person who was slandered, then repentance involves seeking forgiveness from them. If it has not reached them, then one should seek forgiveness from Allah, the Exalted, and intend in one's heart never to do such a thing again. (T)

It is in Durr-e-Mukhtar: If the news [of the backbiting] does not reach him, remorse is sufficient. If the person who was slandered does not receive information about the backbiting, then only regret is enough. (T)

And regarding adultery, no explicit mention has been seen; apparently, the same ruling should apply here as well. And it has come in the Hadith: Backbiting is more severe than adultery. It is stated in the noble Hadith that backbiting is a worse sin than adultery (fornication). (T)

However, since no explicit clarification has been encountered in this regard, seeking forgiveness seems appropriate. If the person forgives, it provides sufficient peace of mind. But in requesting forgiveness, there should neither be an explicit mention of adultery—as he might not forgive after that, and it's possible it could lead to mischief (fitna)—nor should one be satisfied with such general terms as "forgive all my rights," because before Allah, only those rights will be forgiven as far as his intention reaches. Therefore, there should be words of general inclusion that certainly encompass every type of sin and that specific clarification which causes mischief should also not be there. For example, "Whatever sin, from the smallest to the greatest, that one man can commit against another, regarding life, property, honor, or anything else, whatever sin I have committed against you, forgive me for all of it." It is in the commentary of Fiqh-e-Akbar: In an-Nawazil: A man to whom another owes a debt... In an-Nawazil, it is said: one person became a debtor to another and...

1. Manh al-Rawd al-Azhar Sharh al-Fiqh al-Akbar, Matlab Yajibu Ma'rifat al-Mukaffirat etc., Mustafa al-Babi, Egypt, p. 159.
2. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Hazr wa al-Ibahah, Fasl fi al-Bay', Matba' Mujtabai, Delhi, 2/251.
3. Shu'ab al-Iman, Hadith 6721 & 6726, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 5/306.

कुछ लोगों ने कहा है कि यह जायज़ नहीं है। हमारे नज़दीक इसकी दो सूरतें हैं: पहली यह कि जिस व्यक्ति की ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई) की गई, उसे इसकी सूचना मिल गई, तो तौबा का तरीका यह है कि उससे माफ़ी माँगी जाए। और अगर उसे सूचना नहीं मिली, तो इस सूरत में सिर्फ अल्लाह तआला से माफ़ी माँगे और अपने दिल में यह संकल्प करे कि फिर कभी ऐसा नहीं करेगा। (त)

दुर्र-ए-मुख़्तार में है: यदि उसे [ग़ीबत की] सूचना न मिले, तो पछतावा ही पर्याप्त है। अगर ग़ीबत की सूचना उस व्यक्ति को न हो जिसकी ग़ीबत की गई, तो सिर्फ पछतावा काफी है। (त)

और ज़िना (व्यभिचार) के बारे में कोई स्पष्ट उल्लेख नज़र से नहीं गुज़रा, ज़ाहिर है यहाँ भी यही हुक्म होना चाहिए। और हदीस में आया है: ग़ीबत ज़िना से भी अधिक गंभीर है। हदीस शरीफ़ में आया है कि ग़ीबत, ज़िना (व्यभिचार) से भी बदतर गुनाह है। (त)

मगर चूंकि इस बारे में कोई स्पष्ट विवरण नज़र से नहीं गुज़रा, इसलिए माफ़ी माँगना उचित जान पड़ता है। यदि उसने माफ़ कर दिया तो पूर्ण इत्मीनान है, लेकिन माफ़ी माँगने में न तो ज़िना का स्पष्ट उल्लेख हो क्योंकि संभव है इसके बाद वह माफ़ न करे और इससे फ़ितना (अशांति) पैदा होने की संभावना हो, और न ही इतनी संक्षिप्तता पर संतोष किया जाए कि 'मेरे सब हक़ माफ़ कर दे', क्योंकि अल्लाह के यहाँ उतने ही हक़ माफ़ होंगे जहाँ तक उसका ध्यान पहुँचेगा। इसलिए व्यापक शब्द होने चाहिए जो हर प्रकार के गुनाह को निश्चित रूप से शामिल कर लें और वह विशेष उल्लेख भी न हो जो फ़ितना का कारण बने। उदाहरण के तौर पर: "छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा जो भी गुनाह एक इंसान दूसरे के साथ कर सकता है—जान, माल, इज़्ज़त-आबरू हर चीज़ के संबंध में—उनमें से जो गुनाह मैंने तुम्हारे प्रति किया हो, उन सब के लिए मुझे माफ़ कर दो।" शरह फ़िक़्ह-ए-अकबर में है: 'नवाज़िल' में है: एक व्यक्ति जिसका दूसरे पर ऋण हो... नवाज़िल में है, एक व्यक्ति दूसरे का ऋणी हुआ और...

1. मन्ह अल-रौद अल-अज़हर शरह अल-फ़िक़्ह अल-अकबर, मतलब यजीबु मआरिफ़त अल-मुकफ़्फ़िरात आदि, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, पृ. १५९
2. दुर्र अल-मुख़्तार, किताब अल-हज़र वल-इबाहह, फ़स्ल फ़िल-बैअ, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, २/२५१
3. शुअब अल-ईमान, हदीस ६७२१ व ६७२६, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, ५/३०६

بعضہم لایجوز وھو عندنا علی وجھین احدھما ان کان ذلك القول قد بلغ الی الذی اغتابہ فتوبتہ ان یستحل منہ وان لم یبلغ الیہ فلیستغفر اللہ سبحانہ ویضمر ان لا یعود الی مثلہ ۱۔ بعض نے فرمایا کہ جائز نہیں۔ اور اس کی ہمارے نزدیک دو صورتیں ہیں ، ان میں سے ایک یہ ہے کہ جس شخص کی غیبت کی گئی اس کو غیبت کی اطلاع ہوگئی تو پھر توبہ کرنے کی صورت یہ ہے کہ اس سے معاف کرائے اور اگر اسے اطلاع نہیں ہوئی تو اس صورت میں صرف اللہ تعالٰی سے معافی مانگے اور اپنے دل میں یہ عہد کرے کہ پھر ایسا کبھی نہ کرے گا۔ (ت)

در مختار میں ہے: اذالم تبلغہ یکفیہ الندم ۲۔ اگر غیبت کی اطلاع (جس کی غیبت کی گئی) اس کو نہ ہو تو پھر صرف ندامت کافی ہے۔ (ت)

اور درباره زنا اس کی کوئی تصریح نظر سے نہ گزری ، ظاہر ایہاں بھی یہی حکم ہونا چاہئے۔ وقدجاء فی الحدیث الغیبۃ اشد من الزناء ۳۔ حدیث شریف میں آیا ہے کہ غیبت زنا (بدکاری) سے بھی بدتر گناہ ہے۔ (ت)

مگر ازاں جاکہ اس بارے میں کوئی تصریح نظر سے نہ گزری معافی چاہنا مناسب معلوم ہوتا ہے کہ اگر اس نے معاف کردیا تو اطمینان کافی ہے مگر طلب معافی میں نہ تو صاف تصریح زنا ہو کہ شاید اس کے بعد معافی نہ ہو بلکہ ممکن کہ اس سے فتنہ پیدا ہو اور نہ اتنی ہی اجمالی پر قناعت کی جائے کہ مجھے اپنے سب حق معاف کر دے کہ اس میں عند اللہ اتنے ہی حقوق معاف ہوں گے جہاں تک اس کا خیال پہنچے لہٰذا تعمیم عام کے الفاظ ہونا چاہئیں جو ہر قسم گناہ کو یقینا عام بھی ہو جائیں اور وہ تصریح خاص باعث فتنہ بھی نہ ہو مثلاً چھوٹے سے چھوٹا بڑے سے بڑا جو گناہ

ایک مرد دوسرے کا کر سکتا ہے جان مال عزت آبرو ہر شے کے متعلق اس میں سے جو تیرا میں نے گناہ کیا ہو سب مجھے معاف کردے۔ شرح فقہ اکبر میں ہے: فی النوازل رجل لہ علی آخر دین نوازل میں ہے ایک شخص کا دوسرا مقروض ہوا اور

۱ منح الروض الازہر شرح فقہ الاکبر مطلب یجب معرفة المکفرات الخ مصطفی البابی مصر ص ۱۵۹ ۲ در مختار کتاب الحظر والاباحة فصل فی البیع مطبع مجتبائی دہلی ۲ / ۲۵۱ ۳ شعب الایمان حدیث ۶۷۲۱ و ۶۷۲۶ دار الکتب العلمیہ بیروت ۵ / ۳۰۶

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

[Right Column] ...if he does not know all its details, the debtor said to the creditor, "Absolve me of whatever right of yours is upon me," upon which the creditor said, "I have absolved you." Imam Nasir said that the absolution will occur only for the amount that the creditor imagined, i.e., thought was owed by the debtor. However, Muhammad bin Salama said that he will be absolved of everything. Faqih Abu al-Layth said that in judicial ruling (qada), it is what Muhammad bin Salama stated, but the ruling for the Hereafter is what Imam Nasir stated. And it is mentioned in 'Al-Qunya' that if a person owes rights and seeks forgiveness from the owner of those rights without specifying them, and the owner forgives them on the grounds that he knows that even if they were detailed, he would have inevitably forgiven them, then in this case they are forgiven; otherwise, they are not. Some have said this is a good distinction, although it is also narrated that the rights are forgiven absolutely. In 'Al-Khulasa', it is stated that a person said to another person, "Forgive me for every right you have over me, i.e., make it lawful (halal) for me," so he granted absolution. If the owner of the right knows all those rights, then the one seeking forgiveness will be legally absolved by consensus. As for the matter of religious integrity (diyanat), then in it Imam Muhammad (may Allah have mercy on him)...

[Left Column] ...and he does not know all of that. So the debtor said to him: "Absolve me of what you have against me." The creditor said: "I have absolved you." Nasir said: He is not absolved except for the amount that he (the creditor) imagines, i.e., thinks is owed. Muhammad bin Salama said: He is absolved of everything. The jurist Abu al-Layth said: The judicial ruling is what Muhammad bin Salama said, and the ruling of the Hereafter is what Nasir said. In 'Al-Qunya': One who owes rights sought absolution from their owner without detailing them, so he absolved him with the excuse that if he knew them in detail, he would have absolved him; if not, then no. Some said this is good, although it is narrated that he becomes absolutely absolved. In 'Al-Khulasa': A man said to another, "Pardon me from every right of yours," and he absolved him. If the right-holder knows of it, he is legally absolved by consensus. As for the religious/conscientious aspect, according to Imam Muhammad he is not absolved, and according to Abu Yusuf he is, and the fatwa is upon this. Ended. And in it [is mentioned] that it is contrary to what Abu al-Layth chose, and perhaps his statement is based on piety. 1.

[Footnote] 1 Minah al-Rawd al-Azhar Sharh al-Fiqh al-Akbar, Section: It is mandatory to know the factors of disbelief etc., Mustafa al-Babi, Egypt, p. 159.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 24

[दायां कॉलम] ...वह उसकी पूरी तफ़सील न जानता हो तो मक़रूज़ (ऋणी) ने क़र्ज़ख़्वाह (लेनदार) से कहा, "जो कुछ भी तेरा मेरे ज़िम्मे है उससे मेरी बरीअत (मुक्ति) कर दे," इस पर क़र्ज़ख़्वाह ने कहा, "मैंने तेरी बरीअत कर दी।" इमाम नसीर ने फ़रमाया कि उसकी केवल उतनी ही मात्रा से बरीअत हो जाएगी जितनी मात्रा का क़र्ज़ख़्वाह को वहम हुआ हो कि इस क़द्र (मात्रा) क़र्ज़ मक़रूज़ पर है, लेकिन मुहम्मद बिन सलमा ने फ़रमाया कि सब से उसकी बरीअत हो जाएगी। फ़क़ीह अबुल लैथ ने फ़रमाया कि क़ज़ा (न्यायिक निर्णय) में तो वही हुक्म है जो कुछ मुहम्मद बिन सलमा ने फ़रमाया, लेकिन आख़िरत (परलोक) का हुक्म वह है जो कुछ इमाम नसीर ने फ़रमाया। और 'कुनिया' में है कि अगर किसी पर हुक़ूक़ (अधिकार) हों और उसने साहिब-ए-हुक़ूक़ (अधिकार स्वामी) से माफ़ कर देने की दरख़्वास्त की लेकिन उनकी कुछ तफ़सील बयान नहीं की, और साहिब-ए-हुक़ूक़ ने उन्हें माफ़ कर दिया इस उज़्र (कारण) से कि वह जानता है कि अगर उनकी उसके सामने तफ़सील पेश की जाती तो वह ला-महाला (अवश्य ही) माफ़ कर देता तो इस सूरत में वे माफ़ हो जाएंगे वरना बसूरत-ए-दीगर (अन्यथा) वे माफ़ न होंगे। बाज़ (कुछ) ने फ़रमाया कि यह अच्छी तफ़सील है, अगरचे यह भी मरवी (वर्णित) है कि वे हुक़ूक़ मुतलक़न (पूर्णतः) माफ़ हो जाएंगे। 'ख़ुलासा' में है कि एक शख़्स ने दूसरे शख़्स से कहा कि तेरा जो भी मेरे ज़िम्मे हक़ है वह मुझे माफ़ कर दे यानी मेरे लिए हलाल कर दे, तो उसने बरीअत कर दी, अगर साहिब-ए-हक़ उन तमाम हुक़ूक़ का इल्म रखता है तो फिर माफ़ कराने वाला हुकमन बिल-इत्तिफ़ाक़ (सर्वसम्मति से कानूनी तौर पर) बरी हो जाएगा। रहा मामला दयानत तो इसमें इमाम मुहम्मद अलैहिर्रहमा...

[बायां कॉलम] ...और वह उन सबका ज्ञान नहीं रखता। अतः ऋणी ने उससे कहा: "मुझे उन अधिकारों से बरी कर दें जो आपके मेरे ऊपर हैं।" लेनदार ने कहा: "मैंने आपको बरी कर दिया।" नसीर ने कहा: वह केवल उसी मात्रा से बरी होगा जिसका उसे (लेनदार को) भ्रम है, अर्थात वह सोचता है कि उस पर बकाया है। मुहम्मद बिन सलमा ने कहा: वह सब से बरी हो जाएगा। विधिवेत्ता अबू अल-लैथ ने कहा: न्यायिक निर्णय वह है जो मुहम्मद बिन सलमा ने कहा, और परलोक का निर्णय वह है जो नसीर ने कहा। 'अल-कुनिया' में: जिसके ऊपर अधिकार थे, उसने उनके स्वामी से बिना विवरण दिए बरी होने का अनुरोध किया, तो उसने उसे इस बहाने बरी कर दिया कि यदि उसे विस्तार से पता होता, तो वह उसे बरी कर देता; यदि नहीं, तो नहीं। कुछ ने कहा कि यह अच्छा है, हालाँकि यह वर्णित है कि वह पूर्णतः बरी हो जाता है। 'अल-ख़ुलासा' में: एक व्यक्ति ने दूसरे से कहा,

"मुझे अपने हर अधिकार से मुक्त कर दो," और उसने उसे बरी कर दिया। यदि अधिकार रखने वाले को इसका ज्ञान था, तो वह सर्वसम्मति से कानूनी रूप से बरी है। जहाँ तक धार्मिक दयानत (ईमानदारी) का प्रश्न है, इमाम मुहम्मद के अनुसार वह बरी नहीं है, और अबू यूसुफ़ के अनुसार वह बरी है, और इसी पर फ़तवा है। समाप्त। और इसमें [उल्लेख है] कि यह अबू अल-लैथ द्वारा चुने गए मत के विपरीत है, और शायद उनका कथन धर्मपरायणता (तक़वा) पर आधारित है। 1.

[पाद टिप्पणी] 1 मिनह अर-रौद अल-अज़हर शरह अल-फ़िक़ह अल-अकबर, मतलब यजीबु मारिफ़त अल-मुकफ़्फ़िरात आदि, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, पृष्ठ 159।

[دایاں کالم] وہ اس کی پوری تفصیل نہ جانتا ہو تو مقروض نے قرض خواہ سے کہا جو کچھ بھی تیرا میرے ذمے ہے اس سے میری براءت کر دے، اس پر قرض خواہ نے کہا میں نے تیری براءت کر دی۔ امام نصیر نے فرمایا اس کی صرف اتنی ہی مقدار سے براءت ہو جائے گی کہ جتنی مقدار کا قرض خواہ کو وہم ہوا ہو کہ اس قدر قرض مقروض پر ہے لیکن محمد بن سلمہ نے فرمایا کہ سب سے اس کی براءت ہو جائے گی۔ فقیہ ابواللیث نے فرمایا قضاء میں تو وہی حکم ہے جو کچھ محمد بن سلمہ نے فرمایا لیکن آخرت کا حکم وہ ہے جو کچھ امام نصیر نے فرمایا۔ اور قنیہ میں ہے اگر کسی پر حقوق ہوں اور اس نے صاحبِ حقوق سے معاف کر دینے کی درخواست کی لیکن اُن کی (اس کے آگے) کچھ تفصیل نہ بیان کیا، اور صاحبِ حقوق نے انہیں معاف کر دیا اس عذر سے کہ وہ جانتا ہے کہ اگر ان کی اس کے سامنے تفصیل پیش کی جاتی تو وہ لامحالہ معاف کر دیتا تو اس صورت میں وہ معاف ہو جائیں گے ورنہ بصورتِ دیگر وہ معاف نہ ہوں گے۔ بعض نے فرمایا کہ یہ اچھی تفصیل ہے، اگرچہ یہ بھی مروی ہے کہ وہ حقوق مطلقاً معاف ہو جائیں گے۔ خلاصہ میں ہے کہ ایک شخص نے دوسرے شخص سے کہا کہ تیرا جو بھی میرے ذمے حق ہے وہ مجھے معاف کر دے یعنی میرے لئے حلال کر دے، تو اس نے براءت کر دی، اگر صاحبِ حق ان تمام حقوق کا علم رکھتا ہے تو پھر معاف کرانے والا حکماً بالاتفاق بری ہو جائے گا۔ رہا معاملہ دیانت تو اس میں امام محمد علیہ الرحمہ

[بایاں کالم] وهو لا يعلم بجميع ذلك فقال له المديون ابرأني مما لك عليّ فقال الدائن ابرأتک قال نصير لا يبرأ الا عن مقدار مايتوهم اى يظن انه عليه و قال محمد بن سلمة يبرأ عن الكل قال الفقيه ابواللیث حكم القضاء ما قاله محمد بن سلمة و حكم الآخرة ما قاله نصير وفي القنية من عليه حقوق فاستحل

صاحبها و لم يفصلها فجعله فى حل بعذر ان علم انه لو فصله يجعله في حل والا فلا قال بعضهم انه حسن وان روى انه يصير فى حل مطلقا. وفي الخلاصة رجل قال الآخر حللني من كل حق هو لك فأبرأه ان كان صاحب الحق عالما به برئ حكماً بالاجماع و اما ديانة فعند محمد لا يبرأ و عند ابى يوسف يبرأ وعليه الفتوى اهو فيه انه خلاف ما اختاره ابوالليث و لعل قوله مبنى على التقوىٰ 1.

1 منح الروض الازہر شرح الفقہ الاکبر مطلب یجب معرفة المکفرات الخ مصطفی البابی مصر ص ١٥٩

Fatawa Razawiya Volume 24

...will not be absolved of responsibility according to [some], but according to Qadi Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him), he will be absolved, and the fatwa is based on this. There is a complication here that this situation is contrary to what Faqih Abu al-Layth al-Samarqandi adopted; perhaps the aforementioned jurist's statement was based on piety (taqwa). (T) In short, regarding difficult matters, whoever turns towards Allah Almighty with a sincere heart, His grace surely accepts them. And Allah Almighty knows best.

Problem 151 and 152: From Faizabad, Mughalpura Mosque, sent by Sheikh Akbar Ali Muazzin and Mawlawi Abdul Ali, 19 Rabi' al-Akhir 1336 AH. (1) How did the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) behave towards a petitioner or a complainant who came to him, asked for forgiveness, and repented? (2) Is it permissible in Sharia that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) dined with travelers and honored guests who were worldly leaders and from whom there was income, while not paying attention to the poor?

The Answer: (1) The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) never scolded a petitioner whose request was not unjust. He always listened to complainants, and if they were in the right, he provided redress and assistance. He accepted the repentance of those who repented and granted forgiveness to those who sought it, albeit sometimes after a delay due to religious wisdom. However, in matters regarding the limits (Hudud) of Allah, there is no command to overlook them once they become obligatory. And Allah Almighty knows best. (2) The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) came specifically to show kindness to the poor; day and night, the care for both the poor and the rich continued from the government. However, he also commanded:

Anzil-un-naasa manaazilahum - 1 | Give people positions according to their ranks and degrees (i.e., honor and host them according to their status). (T)

And in the Hadith, it is mentioned:

Idha ataakum kareemu qawmin fa akrimoohu - 2 | When an honorable person of a community comes to you, honor them.

---

1 Sunan Abi Dawud, Kitab al-Adab, Bab Tanzil al-Nas Manazilahum, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/309. 2 Sunan Ibn Majah, Kitab al-Adab, Bab Idha Atakum etc., H.M. Saeed Company, Karachi, p. 272.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

...के नज़दीक बरी-उज़-ज़िम्मा नहीं होगा लेकिन क़ाज़ी इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैह) के नज़दीक बरी-उज़-ज़िम्मा हो जाएगा, और इसी पर फ़तवा है। और इसमें यह उलझन है कि यह सूरत उसके ख़िलाफ़ है जो फ़क़ीह अबू अल-लैस समरकंदी ने इख़्तियार किया, शायद फ़क़ीह मौसूफ़ का कौल तक्का (परहेज़गारी) पर मबनी हो। (त) बहरहाल, मुश्किल मामलों में जो सच्चे दिल से अल्लाह तआला की तरफ रुजू करता है, उसका करम उसे ज़रूर कुबूल फरमाता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 151 और 152: फ़ैज़ाबाद, मुग़लपुरा मस्जिद, शेख अकबर अली मुअज़्ज़िन और मौलवी अब्दुल अली द्वारा भेजा गया, 19 रबी-उल-आख़िर 1336 हिजरी। (1) रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने किसी मांगने वाले या किसी फ़रियादी के साथ कैसा व्यवहार किया, जो उनके पास आया, माफ़ी मांगी और तौबा की? (2) क्या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन मुसाफिरों और मेहमानों के साथ खाना खाया जो दुनिया के प्रतिष्ठित रईस थे जिनसे आमदनी होती थी, और गरीबों पर ध्यान नहीं दिया, क्या यह शरीयत में जायज़ है?

जवाब: (1) हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कभी किसी ऐसे मांगने वाले को नहीं झिड़का जिसका सवाल गलत नहीं था। फ़रियादियों की हमेशा बात सुनी, और अगर वह हक पर थे तो उनकी मदद और फ़रियाद-रसी की। जिसने तौबा की उसकी तौबा कुबूल फरमाई, जिसने माफ़ी मांगी उसे माफ़ी दी, हालांकि कुछ दीनी मصلحत से देर से, लेकिन अल्लाह की सीमाओं (हुदूद) में, हद वाजिब होने के बाद उससे दरगुज़र का हुक्म नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (2) रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) गरीबों की मदद और सरपरस्ती के लिए ही तशरीफ़ लाए हैं। रात-दिन सरकार की तरफ से गरीबों और अमीरों, सभी की परवरिश जारी रहती थी। मगर आपने यह भी हुक्म फ़रमाया है:

अन्ज़िलुन-नासा मनाज़िलहुम - 1 | लोगों को उनके रुतबे और दर्जे के मुताबिक़ जगह दो (यानी उनके मक़ाम के मुताबिक़ उनकी इज़्ज़त अफ़ज़ाई और मेहमान नवाज़ी करो)। (त)

और हदीस में है:

इज़ा अताकुम करीमु क़ौमिन फ़-अक्रमूहु - 2 | जब किसी कौम का मोज़िज़ (प्रतिष्ठित व्यक्ति) तुम्हारे पास आए तो उसकी इज़्ज़त करो।

1 सुनन अबी दाऊद, किताब अल-अदब, बाब तंज़ील अल-नास मनाज़िलहुम, आफ़ताबे आलम प्रेस, लाहौर, 2/309 2 सुनन इब्न माजा, किताब अल-अदब, बाब इज़ा अताकुम... एच. एम. सईद कंपनी, कराची, पृ. 272

کے نزدیک بری الذمہ نہ ہوگا لیکن قاضی امام ابو یوسف رحمتہ اللہ علیہ کے نزدیک بری الذمہ ہو جائے گا، اور اسی پر فتوٰی ہے اھ اور اس میں یہ اشکال ہے کہ یہ صورت اس کے مخالف ہے جو فقیہ ابواللیث سمرقندی نے اختیار کیا، شاید فقیہ موصوف کا قول تقوٰی پر مبنی ہو۔(ت) با جملہ امر مشکل جو سچے دل سے مولٰی عزوجل کی طرف رجوع لاتا ہے اس کا کرم ضرور اسے قبول فرماتا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۵۱ و ۱۵۲: از فیض آباد مسجد مغلپورہ مرسلہ شیخ اکبر علی مؤذن و مولوی عبدالعلی ۱۹ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ (۱) رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے کسی سائل کو یا کسی نالشی کو جو ان کے پاس حاضر ہوا معافی مانگی توبہ کی تو حضور سرور عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کس طرح پیش آئے؟ (۲) کیا رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے جو مسافر و مہمان معزز رئیس دنیا جس سے آمدنی ہو ساتھ کھانا کھلایا اور غریبوں پر توجہ نہیں کی، شریعت میں جائز ہے؟

الجواب: (۱) حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے کبھی کسی سائل کو جس کا سوال ناحق نہ تھا زجر نہ فرمایا، نالشیوں کی ہمیشہ بات سنی، اور اگر حق پر تھا تو داد رسی و فریاد رسی فرمائی، جس نے توبہ کی توبہ قبول فرمائی، جس نے معافی مانگی اسے معافی دی اگرچہ بعض مصلحت دینیہ سے بدیر مگر حدود اللہ میں کہ بعد وجوب حد اس سے درگزر کا حکم نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم (۲) رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم غریب نوازی ہی کو تشریف لائے ہیں، شبانہ روز سرکار سے غریبوں امیروں سب کی پرورش جاری ہے مگر یہ بھی حکم فرمایا ہے:

انزلوا الناس منازلھم -۱ | لوگوں کو ان کے مراتب ودرجات کے مطابق اتارو(یعنی ان کے مقام کے مطابق ان کی عزت افزائی اور مہمان نوازی کرو)۔ (ت)

اور حدیث میں ہے:

اذا اتاکم کریم قوم فاکرموہ -۲ | جب کسی قوم کا معزز تمہارے یہاں آئے تو اس کی عزت کرو۔

---

۱ سنن ابی داؤد کتاب الادب باب تنزیل الناس منازلھم آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۳۰۹ ۲ سنن ابن ماجہ کتاب الادب باب اذا اتاکم الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۲۷۲

Fatawa Razawiyya Volume 24

A beggar came to Umm al-Mu'minin Siddiqa (may Allah be pleased with her), and she gave him a piece of food. An honorable traveler came riding a horse, and she instructed that he be invited down with honor and served a meal. She said the beggar's need was only that much, but if a noble were given a piece of food, it would be a cause of his degradation and humiliation. Therefore, observing the difference in status is necessary, and the primary basis is intention. If one considers the beggar lowly because of his poverty and considers the rich man honorable because of his worldly status, it is very wrong and very disgraceful. However, if one intends good character with everyone, then acting according to what is appropriate for each person's situation is essential. And Allah Almighty knows best.

Question 153 & 154: From Balrampur, Gonda district, Purinya Talab neighborhood, sent by Hafiz Muhammad Ainullah Sahib, 12 Rajab 1337 AH.

What do the scholars of religion say regarding these issues:

(1) A person is a scholar (Alim), and Muslims and the community regard him as a leader (peshwa), and he has a family. If he accepts the prevailing custom of 'Nyota' (gifts/money) in marriages and weddings within the community, eats the food, gives some cash as Nyota to them, and when he hosts a wedding for a boy in his home, he invites the community with Nyota, will he then become integrated into the community and fall from the status of knowledge (ilm) and no longer be a leader? Will it become obligatory for him to participate in and accept every matter of the community, whether permissible or impermissible?

(2) A person is content with what he has and has no means of livelihood except for unexpected gifts (futuh-e-ghaib), and the community regards him as a leader and provides for him through charity. He has a family. If, without compulsion or coercion, he continues the aforementioned custom of Nyota, will he fall from the status of trust in God (Tawakkul)? And will receiving charity, etc., become impermissible for him, and will participation in every good and evil of the community become obligatory for him?

Answer:

(1) For a religious scholar and leader of Muslims, socializing with the community, participating in their permissible ceremonies, complying with permissible customs, and including them in his own ceremonies is not at all prohibited, nor does it

diminish his status. He who is the best and highest in the whole world, may Allah Almighty's peace and blessings be upon him, treated his servants in this way. Yes, participating in impermissible ceremonies and following impermissible customs is certainly forbidden, and it is even more forbidden for a scholar and leader; this is definitely something that lowers one's status. It is purely incorrect to think that socializing with the community will force one to participate in impermissible matters. Why would they force him when he is a scholar and they regard him as a leader? He should clearly state that such-and-such a thing is impermissible, I cannot do it, and you should not do it either.

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के पास एक भिखारी आया, तो उन्होंने उसे एक टुकड़ा दिया। एक सम्मानित यात्री घोड़े पर सवार होकर आया, तो उन्होंने निर्देश दिया कि उसे सम्मान के साथ उतार कर भोजन कराया जाए। उन्होंने फ़रमाया कि भिखारी की ज़रूरत बस उतनी ही थी, लेकिन यदि किसी रईस को टुकड़ा दिया जाए तो यह उसकी बेइज्जती और ज़िल्लत का कारण होगा। इसलिए दर्जों का फ़र्क़ ज़रूरी है और असल दारोमदार नीयत पर है। यदि कोई भिखारी को उसकी ग़रीबी के कारण नीचा समझे और धनी व्यक्ति को उसकी दुनियावी हैसियत के कारण सम्मानित समझे, तो यह बहुत ग़लत और बहुत बुरा है। और यदि हर एक के साथ अच्छा व्यवहार करना मंज़ूर है, तो जो जिसके हाल के अनुसार उचित हो, उस पर अमल करना ज़रूरी है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला १५३ व १५४: बलरामपुर, ज़िला गोंडा, मोहल्ला पुरिनिया तालाब, प्रेषक: हाफ़िज़ मोहम्मद ऐनुल्लाह साहब, १२ रजब १३३७ हिजरी।

इन मसलों में दीन के विद्वान क्या फ़रमाते हैं:

(१) एक व्यक्ति आलिम (विद्वान) है और मुसलमान और बिरादरी उसे अपना पेशवा (नेता) मानते हैं, और वह परिवार वाला है। यदि वह बिरादरी में शादी-ब्याह में प्रचलित 'न्योता' ले ले और खाना भी खा ले, और उन्हें न्योते के तौर पर कुछ नक़द दे दे, और अपने यहाँ किसी लड़के की शादी करे और बिरादरी को न्योता देकर आमंत्रित करे, तो क्या वह बिरादरी में घुल-मिल जाएगा और इल्म (ज्ञान) के दर्जे से गिर जाएगा और पेशवा नहीं रहेगा? और क्या बिरादरी के हर मामले, चाहे जायज़ हो या नाजायज़, में शामिल होना और उसे स्वीकार करना उस पर वाजिब हो जाएगा?

(२) एक व्यक्ति संतोषी स्वभाव का है और अप्रत्याशित उपहारों (फ़ुतुह-ए-ग़ैब) के अलावा उसकी जीविका का कोई साधन नहीं है, और क़ौम उसे अपना पेशवा मानती है और दान-पुण्य से उसकी मदद करती है, और वह परिवार वाला है। यदि वह बिना किसी दबाव या मजबूरी के उक्त न्योता की रस्म जारी रखे, तो क्या वह तवक्कुल (ईश्वर पर भरोसे) के दर्जे से गिर जाएगा? और क्या उसके लिए ख़ैरात (दान) आदि लेना नाजायज़ हो जाएगा, और बिरादरी के हर भले-बुरे काम में शिरकत करना उस पर वाजिब हो जाएगा?

जवाब:

(१) जो आलिम-ए-दीन और मुसलमानों का पेशवा हो, उसके लिए बिरादरी से मेल-जोल, उनके जायज़ समारोहों में शामिल होना, जायज़ रस्मों में सहमति और अपने समारोहों में उन्हें शामिल करना हरगिज़ मना नहीं है, और न ही यह उसके दर्जे को कम करता है। वे (पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ), जो पूरी दुनिया में सबसे अफ़ज़ल और आला हैं, अपने ग़ुलामों के साथ ऐसा ही व्यवहार रखते थे। हाँ, नाजायज़ समारोहों में शामिल होना, नाजायज़ रस्मों में साथ देना निश्चित रूप से नाजायज़ है और आलिम व पेशवा के लिए और भी सख़्त नाजायज़ है; यह निश्चित रूप से दर्जा गिराने वाली चीज़ है। और यह सोचना सरासर ग़लत है कि बिरादरी से मेल-जोल नाजायज़ बातों में शामिल होने पर मजबूर करेगा। वे भला क्यों मजबूर करेंगे जब वह आलिम है और वे उसे अपना पेशवा मानते हैं? उसे साफ़ कह देना चाहिए कि फ़लाँ बात नाजायज़ है, मैं इसे नहीं कर सकता और तुम भी न करो।

ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے حضور ایک سائل حاضر ہوا اسے ٹکڑا عطا فرمایا ایک ذی عزت مسافر گھوڑے پر سوار حاضر ہوا اس کی نسبت فرمایا کہ باعزاز اتار کر کھانا کھلایا جائے۔ سائل کی حاجت اسی قدر تھی اور کسی رئیس کو ٹکڑا دیا جائے تو باعث اس کی سبکی اور ذلت کا ہو لہٰذا فرق مراتب ضرور ہے اور اصل مدار نیت پر ہے اگر سائل کو بوجہ اس کے فقر کے ذلیل سمجھے اور غنی کو بوجہ اس کی دنیا کے عزت دار جانے تو سخت بیجا سخت شنیع ہے اور اگر ہر ایک کے ساتھ خلق حسن منظور ہے تو جتنا جس کے حال کے مناسب ہے اس پر عمل ضرور ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۱۵۳ و ۱۵۴: از بلرام پور ضلع گونڈہ محلہ پورینیا تالاب مرسلہ حافظ محمد عین اللہ صاحب ۱۲ رجب ۱۳۳۷ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں:

(۱) ایک شخص عالم ہے اور اس کو اہل اسلام اور برادری پیشوا جانتے ہیں اور وہ عیال دار ہے اگر برادری میں شادی نکاح میں نیوتا مروجہ لے لے اور کھانا بھی کھائے اور ان کو بطریق نیوتا کچھ نقد دے اور اپنے یہاں کسی لڑکے کی شادی کرے اور برادری کو نیوتا دے کر مدعو کرے تو وہ برادری میں منسلک ہو جائے گا اور علم کے درجہ سے گر جائے گا اور پیشوا نہ رہے گا اور برادری کے ہر معاملہ جائز و نا جائز میں شریک ہونا اور تسلیم کرنا اس پر واجب ہوگا۔

(۲) ایک شخص قناعت گزیں ہے اور بجز فتوح غیب کوئی وجہ معاش نہیں رکھتا اور قوم اس کو پیشوا جانتی ہے اور مدد خیرات سے اس کو دیتی ہے اور عیال دار ہے اگر وہ بلا اکراہ و اجبار مثل

مذکورہ رسم نیوتا جاری رکھے تو درجہ توکل سے گر جائے گا اور خیرات وغیرہ سے لینا نا جائز ہو گا اور شرکت برادری ہر خیر و شر میں اس پر واجب ہوگی۔

الجواب:

(۱) جو عالم دین اور پیشوائے مسلمین ہو اسے برادری سے میل جول اور ان کی جائز تقریبات میں شرکت اور جائز رسموں میں موافقت اور اپنی تقریبات میں انہیں شریک کرنا ہرگز نہ ممنوع ہے نہ اس کو درجہ سے کچھ کم کر دے وہ کہ تمام عالم سے افضل و اعلیٰ ہیں۔ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اپنے غلاموں سے ایسے برتاؤ رکھتے۔ ہاں ناجائز تقریبات میں شریک ہونا، ناجائز رسموں میں ساتھ دینا یہ ضرور ناجائز اور عالم و پیشوا کے لئے سخت تر نا جائز، یہ ضرور درجہ گرا دینے والی چیز ہے اور یہ محض غلط ہے کہ برادری سے میل جول ناجائز باتوں میں شرکت پر بھی مجبور کرے گا کیوں مجبور کرے گا جب یہ عالم ہے اور وہ اسے پیشوا مانتے ہیں صاف کہہ دے کہ فلاں بات ناجائز ہے میں اسے نہیں کر سکتا اور تم بھی نہ کرو۔

صفحہ 379 کا 720

Fatawa Rizwia, Volume 24

(2) The answer regarding community partnership has been given above. And if one is an owner of Nisaab (minimum wealth threshold for Zakat) and capable of earning, then it is still not permissible for him to take obligatory charities (Sadaqat-e-Wajibah). The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Arabic Box: La tahillu al-sadaqatu lighaniyyin wala lidhi mirratin sawiyyin] [Translation in Box: Charity is not lawful for a rich person, nor for one who is healthy and strong. (T)]

And keeping one's sight on the Provider (God) and adopting permissible means of livelihood is not at all contrary to Trust in God (Tawakkul). Tawakkul is not the name for abandoning means, but rather abandoning reliance on means. It is stated in the Hadith that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Arabic Box: I'qilha wa tawakkal 'ala Allah] [Translation in Box: Relying on trust, tie the camel's leg. Allah knows best. Tie the camel and then trust in Allah. Allah knows best. (T)]

Problem 155: From the city, Phuta Darwaza neighborhood, questioned by Sheikh Naeemullah Sahib Channan Miyan, 4 Shawwal 1338 AH. If Zaid owes rights of the servants (Huquq-ul-Ibad), what is their expiation (Kaffara)? And if there is no expiation, what is needed for exoneration? State the ruling, you will be rewarded.

Answer: It is obligatory to return as much wealth as has been wrongfully taken from someone. If that person is no longer alive, give it to their heirs. If there are no heirs, give it to the poor. Without this, one cannot be exonerated. For any other harm or verbal abuse given besides wealth, one must ask for forgiveness until they forgive. Seek forgiveness in whatever way possible. If the person is deceased and was a Muslim, continue to send them the reward of charity, recitation of Quran, and voluntary prayers (Nawafil). If the person was a non-believer, there is no remedy except to turn towards one's Lord, repenting and seeking forgiveness. He is the Owner and All-Powerful. Allah knows best.

Problem 156: From the city, Zakhira neighborhood, questioned by Munshi Shaukat Ali Sahib, 24 Safar 1339 AH. What do the people of Sharia command in this matter regarding what rights a man has over a woman and a woman has over a man? State the ruling, you will be rewarded.

Answer: A woman's right over a man is the provision of food and clothing (maintenance), providing a house to live in, paying the dower (Mahr) on time, along with...

---

1. Musnad Imam Ahmad bin Hanbal from Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with him), Dar al-Fikr Beirut, 2/192.
2. Jami' al-Tirmidhi, Chapters of the Day of Judgment, Amin Company Delhi, 2/74.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

(2) बिरादरी की साझेदारी का उत्तर ऊपर आ चुका है, और यदि कोई व्यक्ति निसाब (ज़कात के लिए न्यूनतम धन सीमा) का मालिक है और कमाने में सक्षम है, तो उसके लिए अनिवार्य दान (सदक़ात-ए-वाजिबा) लेना अब भी जायज़ नहीं है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं:

[अरबी बॉक्स: ला तहिल्लु अस-सदक़तु लि-ग़नियिन वला लि-ज़ी मिर्रतिन सविय्यिन] [बॉक्स में अनुवाद: किसी मालदार, किसी तंदुरुस्त और ताकतवर के लिए सदक़ा और ख़ैरात हलाल नहीं। (त)]

और मुसब्बिब (कारणों को पैदा करने वाला, यानी अल्लाह) पर नज़र रखते हुए आजीविका के जायज़ संसाधनों को अपनाना बिल्कुल भी तवक्कुल (ईश्वर पर भरोसा) के खिलाफ नहीं है। तवक्कुल साधनों को छोड़ने का नाम नहीं है, बल्कि साधनों पर भरोसे को छोड़ने का नाम है। हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं:

[अरबी बॉक्स: इअ़किलहा व तवक्कल अ़ला अल्लाह] [बॉक्स में अनुवाद: तवक्कुल पर ऊंट के पैर बांधो, और अल्लाह बेहतर जानता है। ऊंट को बांधकर अल्लाह तआला पर भरोसा कीजिए। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)]

मसला 155: शहर मोहल्ला फूटा दरवाजा से, पूछने वाले शेख़ नईमुल्लाह साहब चनां मियां, 4 शव्वाल 1338 हिजरी। सवाल: यदि ज़ैद पर बंदों के हक़ (हुकुक़-उल-इबाद) बकाया हों, तो उनका कफ़्फ़ारा क्या है? और यदि कफ़्फ़ारा न हो, तो दोषमुक्ति के लिए क्या आवश्यक है? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: जिसका धन दबाया है, अनिवार्य है कि उसे उतना धन लौटाए। यदि वह जीवित न हो, तो उसके उत्तराधिकारियों को दे। यदि उत्तराधिकारी न हों, तो ग़रीबों को दे। इसके बिना दोषमुक्त नहीं हो सकता। धन के अतिरिक्त यदि कोई अन्य पीड़ा दी हो या बुरा-भला कहा हो, तो उससे माफ़ी मांगे यहाँ तक कि वह माफ़ कर दे। जिस तरह भी संभव हो माफ़ी ले। यदि वह जीवित न हो और मुसलमान था, तो उसके लिए दान, तिलावत और नवाफ़िल का सवाब पहुँचाता रहे। और यदि वह काफ़िर था, तो सिवाय इसके कोई इलाज नहीं कि अपने रब की ओर रुजू करे और तौबा व इस्तफ़ग़ार (क्षमा याचना) करता रहे, वह मालिक और कादिर (सर्वशक्तिमान) है। अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 156: शहर मोहल्ला ज़ख़ीरा से, पूछने वाले मुंशी शौकत अली साहब, 24 सफ़र 1339 हिजरी। सवाल: शरीअत वालों का इस मसले में क्या इर्शाद है कि औरत पर मर्द के और मर्द पर औरत के क्या-क्या हक़ हैं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: मर्द पर औरत का हक़ रोटी-कपड़ा (भरण-पोषण) देना, रहने को मकान देना, महर समय पर अदा करना, उसके साथ...

---

1. मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल, अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से, दारुल फ़िक्र बेरूत 2/192
2. जामे' अत-तिरमिज़ी, अबवाबुल क़ियामा, अमीन कंपनी दिल्ली 2/74

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

(۲) شرکت برادری کا جواب اوپر آگیا، اور اگر صاحب نصاب و قادر علی الاکتساب ہے تو اسے اب بھی صدقات واجبہ لینا جائز نہیں۔ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

لا تحل الصدقة لغني ولذي مرة سوي ۱ - کسی مالدار کسی تندرست اور طاقتور کے لئے صدقہ و خیرات حلال نہیں۔ (ت)

اور نظر مسبّب جل وعلا پر رکھ کر جائز اسبابِ رزق کا اختیار کرنا ہرگز منافیِ توکل نہیں، توکل ترکِ اسباب کا نام نہیں بلکہ اعتماد علی الاسباب کا ترک ہے۔ حدیث میں ہے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

اعقلها و توكل على الله ۲ - بر توکل پائے اشتر را ببند، واللہ تعالیٰ اعلم اونٹ کو باندھ کر اللہ تعالیٰ پر بھروسا کیجئے واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۵۵: از شہر محلہ پھوٹا دروازہ مسئولہ شیخ نعیم اللہ صاحب چناں میاں ۴ شوال ۱۳۳۸ھ ذمہ زید حقوق العباد ہوں تو ان کا کیا کفارہ ہے اور کفارہ نہ ہو تو سبکدوشی کی کیا ضرورت ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: جس کا مال دبایا ہے فرض ہے کہ اتنا مال اسے دے، وہ نہ رہا ہو اس کے وارث کو دے، وہ نہ ہوں فقیر کو دے، بے اس کے سبکدوش نہیں ہوسکتا، اور جسے علاوہ مال کچھ ایذا دی ہو یا برا کہا ہو اس سے معافی مانگے یہاں تک کہ وہ معاف کردے، جس طرح ممکن ہو معافی لے، وہ نہ رہا ہو اور تھا مسلمان تو اس کے لئے صدقہ و تلاوت و نوافل کا ثواب پہنچاتا رہے، اور کافر تھا

تو کوئی علاج نہیں سوا اس کے کہ اپنے رب کی طرف رجوع اور توبہ واستغفار کرتا رہے وہ مالک و قادر ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۵۶: از شہر محلہ ذخیرہ مسئولہ منشی شوکت علی صاحب ۲۴ صفر ۱۳۳۹ھ کیا ارشاد ہے اہل شریعت کا اس مسئلہ میں کہ عورت پر مرد کے اور مرد پر عورت کے کیا کیا حق ہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: مرد پر عورت کا حق نان و نفقہ دینا، رہنے کو مکان دینا، مہر وقت پر ادا کرنا، اس کے ساتھ۔۔

۱- مسند امام احمد بن حنبل عن عبد اللہ ابن عمر رضی اللہ عنہ دارالفکر بیروت ۲ / ۱۹۲ ۲- جامع الترمذی ابواب القیامۃ امین کمپنی دہلی ۲ / ۷۴

Fatawa Razawiyyah, Volume 24

Treating her with kindness and protecting her from matters contrary to Sharia. Allah Almighty said: "And live with them in kindness" (1) (Live and interact with women in a good manner). And Allah Almighty said: "O you who have believed, protect yourselves and your families from a Fire" (2) (O believers! Save yourselves and your family members from the fire). (T)

And the husband's right over the woman in specific marital matters is greater than all other rights after Allah and His Messenger, even greater than the right of parents. In these matters, obeying his commands and safeguarding his honor is a primary duty for the woman. Without his permission, she cannot go anywhere except to her mahrams (close relatives). Even at the home of mahrams, she can visit her parents once every eight days from morning until evening. For siblings, paternal uncles, maternal uncles, maternal aunts, and paternal aunts, she can visit once a year and cannot stay overnight anywhere. The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "If I were to command anyone to prostrate to other than God, I would have commanded the woman to prostrate to her husband." (3)

And in another Hadith: "If blood and pus were to flow from the husband's nostrils and cover his body down to his heels, and the woman were to lick it clean with her tongue, even then his right would not be fulfilled." (4) And Allah Almighty knows best.

Issue 157: From Bharatpur State, Eastern Rajputana, Dera Syed Bashiruddin Ahmad alias Syed Faqir Ahmad Sahib Jamadar Turab Fifth Regiment First, queried by Hamiduddin Ahmad Qadri, 20 Ramadan 1339 AH.

What do the scholars of the Ahmadi religion and the muftis of the Muhammadan Sharia say regarding this issue, as the reports and narrations...	What do the scholars of the divine religion and the muftis of the Muhammadan Sharia say in this matter, that the Hadiths...

1. Al-Quran al-Karim 4/19
2. Al-Quran al-Karim 66/6
3. Jami' at-Tirmidhi, Chapters on Suckling, Chapter on what is narrated regarding the husband's right over the woman, Amin Company Delhi 1/138; Kanz al-Ummal with symbol 'Ham', Hadith 44825, Mu'assasatu ar-Risalah Beirut 16/558.

4. Musnad Imam Ahmad bin Hanbal, Hadith Mu'adh bin Jabal, Al-Maktab al-Islami Beirut 5/239; Kanz al-Ummal with symbol 'Kar', Hadith 44861, Mu'assasatu ar-Risalah Beirut 16/557.

फतावा रज़विया, खंड 24

[अपनी पत्नी के साथ] अच्छा व्यवहार करना, उसे शरीयत के खिलाफ बातों से बचाना। अल्लाह तआला ने फरमाया: "और उनके साथ दयालुता से रहो" (1) (महिलाओं के साथ अच्छे तरीके से रहो-सहो)। और अल्लाह तआला ने फरमाया: "ऐ ईमान वालो! अपने आप को और अपने घर वालों को आग से बचाओ" (2) (ऐ ईमान वालों! खुद को और अपने परिवार के सदस्यों को आग से बचाओ)। (त)

और वैवाहिक संबंधों से जुड़े विशेष मामलों में महिला पर पुरुष का अधिकार अल्लाह और उसके रसूल के बाद सभी अधिकारों से अधिक है, यहाँ तक कि माता-पिता के अधिकार से भी अधिक। इन मामलों में उसके आदेशों का पालन करना और उसकी प्रतिष्ठा की रक्षा करना महिला का प्राथमिक कर्तव्य है। उसकी अनुमति के बिना, वह अपने महरम (करीबी रिश्तेदारों) के अलावा कहीं नहीं जा सकती। महरमों के घर भी, वह हर आठवें दिन सुबह से शाम तक केवल अपने माता-पिता के यहाँ जा सकती है। और भाई-बहनों, चाचा, मामा, मौसी, बुआ के यहाँ साल में एक बार जा सकती है और कहीं भी रात नहीं बिता सकती। पैगंबर (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) ने फरमाया: "अगर मैं किसी को खुदा के अलावा किसी और को सजदा करने का हुक्म देता, तो मैं औरत को हुक्म देता कि वह अपने शौहर को सजदा करे।" (3)

और एक हदीस में है: "अगर शौहर के नथुनों से खून और पीप बहकर उसके शरीर को उसकी एड़ियों तक भर दे, और औरत उसे अपनी जीभ से चाटकर साफ कर दे, तब भी उसका हक अदा नहीं होगा।" (4) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला 157: भरतपुर रियासत से, पूर्वी राजपूताना, डेरा सैयद बशीरुद्दीन अहमद उर्फ सैयद फकीर अहमद साहब जमादार तुरब पांचवीं रेजिमेंट प्रथम, मुस्तौलाई हामिदुद्दीन अहमद कादरी, 20 रमजान 1339 हिजरी।

अहमदी धर्म के विद्वान और मोहम्मदी शरीयत के मुफ्ती इस मसले के बारे में क्या कहते हैं कि जो खबरें और आसार...	ईश्वरीय धर्म के विद्वान और मोहम्मदी शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या फरमाते हैं कि हदीसें...

1. अल-कुरान अल-करीम 4/19

2. अल-कुरान अल-करीम 66/6
3. जामी अत-तिर्मिज़ी, रज़ा के अध्याय, महिला पर पति के अधिकार के बारे में क्या कहा गया है, अमीन कंपनी दिल्ली 1/138; कंज अल-उम्माल प्रतीक 'हम' के साथ, हदीस 44825, मुअस्सातु अर-रिसाला बेरूत 16/558।
4. मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल, हदीस मुआज़ बिन जबल, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत 5/239; कंज अल-उम्माल प्रतीक 'कर' के साथ, हदीस 44861, मुअस्सातु अर-रिसाला बेरूत 16/557।

पृष्ठ 381/720

بھلائی کا برتاؤ رکھنا ، اسے خلافِ شرع باتوں سے بچانا۔ قال تعالٰی: "وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ" 1 (عورتوں سے اچھی طرح رہنا سہنا کرو ت) اور اللہ تعالٰی نے فرمایا: "یٰٓاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِیْكُمْ نَارًا" 2 اے ایمان والو! اپنے آپ کو اور اپنے گھر والوں کو آگ سے بچاؤ۔ (ت)

اور عورت پر مرد کا حق خاص امور متعلقہ زوجیت میں اللہ و رسول کے بعد تمام حقوق حتٰی کہ ماں باپ کے حق سے زائد ہے ان امور میں اس کے احکام کی اطاعت اور اس کے ناموس کی نگہداشت عورت پر فرضِ اہم ہے، بے اس کے اذن کے محارم کے سوا کہیں نہیں جاسکتی اور محارم کے یہاں بھی ماں باپ کے یہاں ہر آٹھویں دن وہ بھی صبح سے شام تک کے لئے اور بہن، بھائی، چچا، ماموں، خالہ، پھوپھی کے یہاں سال بھر بعد اور شب کو کہیں نہیں جاسکتی، نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: "اگر میں کسی کو غیرِ خدا کے سجدے کا حکم دیتا تو عورت کو حکم دیتا کہ اپنے شوہر کو سجدہ کرے۔" 3

اور ایک حدیث میں ہے: "اگر شوہر کے نتھنوں سے خون اور پیپ بہہ کر اس کی ایڑیوں تک جسم بھر گیا ہو اور عورت اپنی زبان سے چاٹ کر اسے صاف کرے تو اس کا حق ادا نہ ہوگا" 4 واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۵۷: از ریاست بھرت پور شرقی راجپوتانہ ڈیرہ سید بشر الدین احمد عرف سید فقیر احمد صاحب جمعدار ترب پنجم رجمنٹ اول مسئولہ حامد الدین احمد قادری ۲۰ رمضان ۱۳۳۹ھ

چہ میفرمایند علمائے دین احمدی و مفتیانِ شرعِ دینِ الٰہی کے علماء اور شرعِ محمدی کے مفتی محمدی اندریں مسئلہ کہ اخبار و آثار یکہ حضرات اس مسئلہ میں کیا فرماتے ہیں کہ احادیث

1 القرآن الکریم ۴ / ۱۹ 2 القرآن الکریم ۶۶ / ۶ 3 جامع الترمذی ابواب الرضاء باب ما جاء فی حق الزوج علی المرأة اتمین کمپنی دہلی ۱ / ۱۳۸، کنز العمال برمز حم حدیث ۴۴۸۲۵ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۶ / ۵۵۸ 4 مسند امام احمد بن حنبل حدیث معاذ بن جبل المکتب الاسلامی بیروت ۵ / ۲۳۹، کنز العمال برمز کر حدیث ۴۴۸۶۱ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۶ / ۵۵۷

Fatawa Ridawiyya Volume 24

[Question Section - Right Column] Regarding the reports about reconciliation and accountability for 'Huquq al-Ibad' (rights of people) on the Day of Judgment: are these rights specific to believers over other believers, or are they general human rights in which believers and non-believers are equal? Are they mandatory only towards believers, or are the rights of all God's creation generally mandatory upon a believer? If a creature other than a human is the opposing party, or if the human is no longer alive, or if the matter is forgotten, or if there is no power to fulfill the rights, or if there is no hope of forgiveness from the rights-holders, or if the rights-holders do not forgive despite a request for apology—in all these scenarios, according to the Hanafi Maturidi school in Islamic Sharia, what is the way for a believer to be absolved? Is going into the Fire (Hell) necessary and deprivation of salvation inevitable? Whatever the case may be, please explain and receive a reward. (T)

[Question Section - Left Column] The reports regarding the accountability and settlement of 'Huquq al-Ibad' in the Gathering—are they specific to the rights of believers upon believers, or do they apply generally to the rights of human beings, meaning believers and non-believers are upon a believer? Generally, are the rights of creatures upon a believer human? And if the claimants are other than humans, or the human is no longer alive, or it has been forgotten, or there is no power to fulfill the rights, or there is no expectation of forgiveness from the rights-holders, or the rights-holders do not show benevolence despite the request for forgiveness—then according to the noble Sharia and the Hanafi Maturidi school, is there a way for the believer's acquittal, or is entering the Fire mandatory and deprivation of salvation inevitable? Give a fatwa, you shall be rewarded.

[The Answer] The reports and traditions concern absolute rights, whether belonging to a believer or a protected non-believer (Dhimmi), whether human or animal. Indeed, scholars have explicitly stated that: "The dispute with an animal is more severe than the dispute with a Dhimmi, and the dispute with a Dhimmi is more severe than the dispute with a Muslim," as mentioned in Fatawa Qadhikhan, Al-Durr al-Mukhtar, etc., and by consensus. Reports and traditions have been narrated regarding absolute rights, whether for a believer or a Dhimmi non-believer, for a human or an animal. This is because the noble Imams have clarified that the dispute and being an opposing party of animals is more severe than the opposition of a Dhimmi non-believer, and the opposition of a Dhimmi is more severe than the

opposition of a Muslim, as mentioned in Fatawa Qadhikhan and Durr al-Mukhtar etc. And...

1. Al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Hazr wa al-Ibahah, Section on Sale, Mujtabai Press Delhi, 2/449. Page 382 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[प्रश्न अनुभाग - दायां कॉलम] और क़यामत के दिन लोगों के अधिकारों (हुक़ूक़ुल इबाद) की सुलह-सफ़ाई और पकड़ के बारे में जो रिवायतें आई हैं, क्या वे केवल मोमिनों (ईमान वालों) के एक-दूसरे पर अधिकारों से संबंधित हैं और उन्हीं के लिए विशिष्ट हैं, या वे सामान्य मानवीय अधिकार हैं जिनमें मोमिन और ग़ैर-मोमिन बराबर हैं? क्या वे मोमिनों के ज़िम्मे लाज़िम हैं, या सामान्य रूप से अल्लाह की पूरी मख़लूक़ (सृष्टि) के अधिकार मोमिन के ज़िम्मे लाज़िम हैं? यदि मनुष्य के अलावा कोई अन्य मख़लूक़ (जीव) भी विरोधी पक्ष हो, या मनुष्य जीवित न रहे, या उसकी याद से यह बात निकल जाए, या अधिकार अदा करने की शक्ति न हो, या अधिकार वालों से माफ़ी की उम्मीद न हो, या अधिकार वाले माफ़ी माँगने के बावजूद माफ़ न करें, तो इन सभी स्थितियों में शरीयत-ए-मुहम्मदिया में हनफ़ी मातुरिदी मज़हब के अनुसार मोमिन के दोषमुक्त होने की क्या सूरत है? क्या आग (जहन्नुम) में जाना ज़रूरी है और निजात पाने से महरूम रहना लाज़िमी है? जो भी सूरत हो बयान फ़रमाएं और अज्र व सवाब पायें। (त)

[प्रश्न अनुभाग - बायां कॉलम] महशर (परलोक के मैदान) में हुक़ूक़ुल इबाद के मुआख़ज़े (जवाबदेही) और तस्फ़िये (निपटारे) के बारे में जो बातें वारिद हैं, क्या वे मोमिनों के उन अधिकारों के लिए विशिष्ट हैं जो मोमिनों के ज़िम्मे हैं, या वे आम तौर पर आदमियों के अधिकारों के बारे में हैं, यानी मोमिन और ग़ैर-मोमिन दोनों के अधिकार मोमिन के ज़िम्मे हैं? क्या सामान्यतः मख़लूक़ात के अधिकार मोमिन इंसान के ज़िम्मे हैं? और अगर मुद्दई इंसान के अलावा दूसरे भी हों, या इंसान ज़िंदा न रहे, या बात याद से निकल जाए, या हुक़ूक़ अदा करने की कुदरत न हो, या अधिकार वालों से अफ़्व (क्षमा) का गुमान न हो, या अधिकार वाले माफ़ी की मांग के बावजूद माफ़ न करें—तो शरीयत-ए-शरीफ़ के अनुसार हनफ़िया मातुरिदिया मज़हब के मुताबिक़ क्या मोमिन की बरात (छुटकारे) की कोई राह है, या आग में दाख़िल होना वाजिब और निजात से महरुमी लाज़मी है? बयान फ़रमाएं, आप सवाब पाएंगे।

[उत्तर - अल-जवाब] अख़बार और आसार (रिवायतें) मुतलक़ (निरपेक्ष) अधिकारों के बारे में हैं, चाहे वे मोमिन के हों या काफ़िर ज़िम्मी के, इंसान के हों या हैवान (जानवर) के। और अइम्मा ने तसरीह (स्पष्ट) फ़रमाया है कि: "हैवान के साथ झगड़ा ज़िम्मी के झगड़े से ज़्यादा सख़्त है, और ज़िम्मी का झगड़ा मुसलमान के झगड़े से ज़्यादा सख़्त है" जैसा कि क़ाज़ीख़ान और अल-दुर्र (मुख़्तार) वग़ैरह में है, और इज्मा (आम सहमति) के साथ। अख़बार और आसार मुतलक़ हुक़ूक़ के मुतअल्लिक़ वारिद

हुए हैं, ख़्वाह मोमिन हो या काफ़िर ज़िम्मी, इंसान हो या हैवान, इसलिए कि अइम्मा-ए-किराम ने तसरीह फ़रमाई कि जानवरों का झगड़ना और फ़रीक़-ए-मुख़ालिफ़ होना, ज़िम्मी काफ़िर की मुख़ालिफ़त से ज़्यादा सख़्त है, और ज़िम्मी की मुख़ालिफ़त मुसलमान की मुख़ालिफ़त से ज़्यादा सख़्त है जैसा कि फ़तावा क़ाज़ीख़ान और दुर्रे मुख़्तार वग़ैरह में मज़कूर है। और...

1. अल-दुर्रुल मुख़्तार, किताबुल हज्र वल इबाहह, फ़स्ल फ़िल बै' (बिक्री का अध्याय), मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 2/449। पृष्ठ 382/720

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

[سوال کا حصہ - دایاں کالم] اور آثار قیامت کے دن حقوق العباد کی صلح وصفائی و گرفت کے بارے میں جو وارد ہیں کیا وہ مومنوں کے حقوق، مومنوں کے ذمے لازم اور مخصوص ہیں یا صرف انسانی حقوق ہیں کہ جس میں مومن اور غیر مومن برابر ہیں۔ البتہ وہ مومنوں کے ذمے لازم ہیں، یا عام طور پر مخلوق الہی کے حقوق بندہ مومن کے ذمے لازم ہیں۔ اگر انسان کے علاوہ دوسری مخلوق بھی فریق مخالف ہو، یا انسان زندہ نہ رہے یا اس کی یاد سے یہ بات نکل جائے یا حقوق ادا کرنے کی طاقت نہ رکھتا ہو یا اہل حقوق سے معاف کرنے کی امید نہ ہو یا اہل حقوق معافی طلب کرنے کے باوجود معاف نہ کریں، تو ان تمام صورتوں میں شریعتِ محمدیہ میں مذہب حنفی ماتریدی کے مطابق مومن کے بری الذمہ ہونے کی کیا صورت ہے، یا آگ میں جانا ضروری اور رہائی پانے سے محروم ہونا لازمی ہے، جو بھی صورت ہو بیان فرماؤ اور اجر و ثواب پاؤ۔ (ت)

[سوال کا حصہ - بایاں کالم] در مواخذہ و تصفیہ حقوق العباد در محشر وارد اند مخصوص بحقوق مومنان بذمہ مومنان ہستند یا بعموم بحقوق آدمیان یعنی مؤمن و غیر مؤمن بذمہ مؤمن اند۔ بالعموم حقوق مخلوقات بذمہ انسان مؤمن۔ واگر خصمان علاوہ انسان ہم باشند یا انسان زندہ نماندہ باشد یا از یاد رفتہ باشد یا قدرت ادائے حقوق نباشد یا گمان عفو از صاحبان حقوق نباشد یا صاحبان حقوق باوجود طلب عفو بخل نسازند۔ پس از روئے شرع شریف حسب مذہب حنفیہ ماتریدیہ چارہ برات مؤمن ہست یا دخول نار واجب و حرمان نجات لابد ست۔ بینوا توجروا۔

[الجواب] الجواب: اخبار و آثار در مطلق حقوق ست مؤمن را باشد یا کافر ذمی را انسان را باشد یا حیوان وقد نصوا ان خصومة الدابة اشد من خصومة الذمی وخصومة الذمی اشد من خصومة المسلم

كما في الخانية والدر ١ وغيرہما، وبالجماع۔ اخبار اور آثار مطلق حقوق کے متعلق وارد ہیں، خواہ مومن ہو یا کافر ذمی، انسان ہو یا حیوان، اس لئے کہ ائمہ کرام نے تصریح فرمائی کہ جانوروں کا جھگڑا اور فریق مخالف ہونا، ذمی کافر کی مخالفت سے زیادہ سخت ہے، اور ذمی کی مخالفت مسلمان کی مخالفت سے زیادہ سخت ہے جیسا کہ فتاوی قاضیخان اور در مختار وغیرہ میں مذکور ہے۔ اور

١ الدرالمختار کتاب الحظر والاباحة فصل فی البیع مطبع مجتبائی دہلی ٢/٤٤٩ صفحہ 382 از 720

Fatawa Razawiyya, Volume 24

[Left Column - Persian/Arabic text] For the Ahl al-Sunnah, the threat regarding a Muslim is not absolute. Allah Almighty said: "Indeed, Allah does not forgive that any partner be associated with Him, but He forgives what is less than that for whom He wills." [1] Regarding what has been said about the severity of a Dhimmi's (non-Muslim citizen) enmity, that 'forgiveness is not expected from him, so he remains in his enmity', I say: it means that his enmity will be prolonged, and it does not mean that the threat [of punishment] will necessarily be implemented. Allah Almighty, whose glory is great, is the true owner of all rights and companions. "He does what He wills." [2] "He ordains what He intends." [3] We ask Allah for forgiveness and well-being. And Allah Almighty knows best.

[Right Column - Urdu translation of the above] Ahl-e-Sunnat agrees that no threat against a Muslim is absolute. Accordingly, it is the commandment of Allah Almighty that: "Surely Allah does not forgive that partners be associated with Him, and He forgives anything less than that for whom He wills." And what has been reported about the opposition of a Dhimmi being more severe, it means that there is no hope of forgiveness for him. Then he will remain in his opposition. I say that his opposition will be prolonged and this does not mean that the threat of punishment will necessarily be implemented. Allah Almighty is the true owner of all rights and companions, Whose honor is great. Therefore, He does what He wills and decides what He intends. We ask Allah Almighty for forgiveness and well-being. And Allah Almighty knows best (T).

[Footnotes] 1. Al-Quran al-Kareem 4/48 and 116 2. Al-Quran al-Kareem 3/40 and 18/22 3. Al-Quran al-Kareem 5/1

फतावा रज़विया, जिल्द २४

[बायाँ कॉलम - फ़ारसी/अरबी पाठ] अहले सुन्नत के नज़दीक एक मुसलमान के हक में अज़ाब की धमकी क़तई (अंतिम) नहीं है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "बेशक अल्लाह तआला इस बात को माफ़ नहीं करता कि उसके साथ किसी को शरीक ठहराया जाए, और इसके अलावा जिसे चाहे माफ़ कर देता है।" [1] ज़िम्मी (गैर-मुस्लिम नागरिक) की दुश्मनी की शिद्दत के बारे में जो कहा गया है कि 'उससे माफ़ी की उम्मीद नहीं की जा सकती इसलिए वह अपनी दुश्मनी पर बाक़ी रहता है', तो मैं कहता हूँ: इसका मतलब यह है कि उसकी दुश्मनी लंबी होगी, इसका यह मतलब नहीं है कि अज़ाब की धमकी ज़रूर लागू होगी। हुकूक़ और असहाब (साथियों) सबका हक़ीक़ी मालिक अल्लाह तआला है जिसकी इज़्ज़त बड़ी है। "वह जो चाहता है करता है।" [2] "वह जो इरादा करता है उसका हुक्म देता है।" [3] हम अल्लाह तआला से माफ़ी और आफियत (भलाई) मांगते हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद] अहले सुन्नत का इत्तिफ़ाक़ (सहमति) है कि कोई धमकी मुसलमान के हक़ में क़तई नहीं है। चुनाँचे अल्लाह तआला का इरशाद है कि: "बेशक अल्लाह तआला इस बात को माफ़ नहीं करता कि उसके साथ किसी को शरीक किया जाए। और इससे कमतर जिसके लिए चाहें माफ़ कर देता है।" और यह जो वारिद (उल्लिखित) हुआ है कि ज़िम्मी की मुखालफ़त (विरोध) ज़्यादा सख़्त है, इसका मतलब यह है कि उससे माफ़ी की उम्मीद नहीं। फिर वह अपनी मुखालफ़त में बाक़ी रहेगा। मैं कहता हूँ कि उसकी मुखालफ़त तवील (लंबी) हो जाएगी और इसमें यह नहीं है कि अज़ाब की धमकी ज़रूर नाफ़िज़ (लागू) होगी। हुकूक़ और असहाब सबका हक़ीक़ी मालिक अल्लाह तआला है कि जिसकी इज़्ज़त बड़ी है। लिहाज़ा वह करता है जो चाहे। और फ़ैसला करता है जिसका इरादा फ़रमाए। हम अल्लाह तआला से माफ़ी और आफियत मांगते हैं। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है (त)।

[पाद लेख (Footnotes)] १ अल-क़ुरआन अल-करीम ४/४८ और ११६ २ अल-क़ुरआन अल-करीम ३/४० और १८/२२ ३ अल-क़ुरआन अल-करीम ५/१

पृष्ठ ३८३ का ७२०

فتاوٰی رضویہ، جلد ۲۴

[بائیں طرف کا کالم] اہلسنّت پیچ وعید در حق مسلم قطعی نیست قال اللہ تعالٰی ان اللہ تعالٰی "اِنَّ اللّٰہَ لَا یَغْفِرُ اَنْ یُّشْرَکَ بِہٖ وَ یَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ یَّشَآءُ "۔1 انچہ در اشدیت خصومت ذمی گفتہ اند انہ لایرجی منہ العفو فیبقی فی خصومتہ فاقول ای یطول خصومتہ ولیس فیہ ان الوعید ینفذ ولابد حقوق واصحاب ہمہ رامالک حقیقی حضرت حق ست عز جلالہ "یَفْعَلُ مَا یَشَآءُ"۔2 "یَحْکُمُ مَا یُرِیْدُ"۔3۔ نسأل اللہ العفو والعافیۃ واللہ تعالٰی اعلم۔

[دائیں طرف کا کالم] اہلِ سنّت کا اتفاق ہے کہ کوئی دھمکی مسلمان کے حق میں قطعی نہیں۔ چنانچہ اللہ تعالٰی کا ارشاد ہے کہ بیشک اللہ تعالٰی اس بات کو معاف نہیں کرتا کہ اس کے ساتھ کسی کو شریک کیا جائے۔ اور اس سے کمتر جس کے لئے چاہیں معاف کر دیتا ہے اور یہ جو وارد ہوا ہے کہ ذمی کی مخالفت زیادہ سخت ہے اس کا مطلب یہ ہے کہ اس سے معافی کی امید نہیں۔ پھر وہ اپنی مخالفت میں باقی رہے گا۔ میں کہتا ہوں کہ اس کی مخالفت طویل ہو جائے گی اور اس میں یہ نہیں کہ عذاب کی دھمکی ضرور نافذ ہوگی، حقوق واصحاب سب کا حقیقی مالک اللہ تعالٰی ہے کہ جس کی عزت بڑی ہے۔ لہٰذا وہ کرتا ہے جو چاہے۔ اور فیصلہ کرتا ہے جس کا ارادہ فرمائے۔ ہم اللہ تعالٰی سے معافی اور عافیت مانگتے ہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

[حواشی] 1 القرآن الکریم ۴ / ۴۸ و ۱۱۶ 2 القرآن الکریم ۳ / ۴۰ و ۱۸ / ۲۲ 3 القرآن الکریم ۵ / ۱

Volume 24 Fatawa Razawiyya

Treatise Al-Huquq li-Tarh al-Uquq 1307 AH (Details of rights to eliminate disobedience)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We praise Him and invoke blessings upon His noble Messenger.

Issue 158 to 161: 12 Shaban 1311 AH What do the scholars of religion and the jurists of the firm Shariah say regarding these matters:

First issue: A son has chosen disobedience towards his father, took possession of all his father's property, and left nothing for the father's livelihood. Moreover, he is intent on humiliating and insulting his father. Since Allah (Glorified and Exalted is He) has commanded obedience to one's father in His Word (the Quran), has he acted against God's command in this situation? Has he become a denier of God's command or not? And what is the ruling of the noble Shariah for a denier of the Divine Word? And to what extent is he a sinner? Explain and be rewarded.

The Answer: The aforementioned son is a wicked transgressor (fasiq fajir), a perpetrator of major sins (kaba'ir), and is disobedient (aaq). He deserves severe punishment and the wrath of Allah.

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

रिसाला (लघु शोध) अल-हुक़ूक़ लि-तर्ह अल-उक़ूक़ १३०७ हिजरी (नाफ़रमानी को खत्म करने के लिए हुक़ूक़ (अधिकारों) का विवरण)

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान, निहायत रहम वाला है। हम उसकी प्रशंसा करते हैं और उसके सम्मानित रसूल पर दरूद भेजते हैं।

मसला १५८ से १६१ तक: १२ शाबान १३११ हिजरी क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरह-ए-मतीन इन मसलों में:

पहला मसला: एक बेटे ने अपने बाप की नाफ़रमानी अख्तियार करके बाप की सारी जायदाद पर कब्ज़ा कर लिया और बाप के पास गुज़र-बसर के लिए कुछ नहीं छोड़ा, बल्कि बाप की ज़िल्लत और तौहीन के पीछे पड़ा है। और अल्लाह जल्ल-शानहू ने अपने कलाम में बाप की इताअत का हुक्म फ़रमाया है, इस सूरत में क्या उसने खुदा के हुक्म के खिलाफ किया? क्या वह खुदा के हुक्म का मुनकिर (इनकारी) हुआ या नहीं? और अल्लाह के कलाम का इनकार करने वाले के लिए शरीयत का क्या हुक्म है? और वह कहाँ तक गुनहगार है? बयान फरमाएं और सवाब पाएं।

उत्तर: उक्त बेटा फासिक, फाजिर, कबीरा गुनाहों का मुर्तकिब और 'आक़' (नाफ़रमान) है। वह सख्त अज़ाब और अल्लाह के ग़ज़ब का मुस्तहिक (हक़दार) है।

جلد ۲۴ فتاویٰ رضویہ

رسالہ الحقوق لطرح العقوق ۱۳۰۷ھ (نافرمانی کو ختم کرنے کے لئے حقوق کی تفصیل)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم ط نحمدہ ونصلی علیٰ رسولہ الکریم ط

مسئلہ ۱۵۸تا ۱۶۱: ۱۲ شعبان ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین ان مسائل میں:

مسئلہ اولیٰ: پسر نے اپنے باپ کی نافرمانی اختیار کر کے کل جائداد پدر پر قبضہ کر لیا اور باپ کے پاس واسطے اوقات بسری کے کچھ نہ چھوڑا بلکہ درپے تذلیل و توہین پدر کے ہے اور اللہ جل شانہ نے واسطے اطاعتِ پدر کے کلام اپنے میں فرمایا ہے، صورت ہٰذا میں اس نے خلافِ فرمودہ خدا کیا وہ منکرِ حکم خدا ہوا یا نہیں؟ اور منکر کلام ربانی کے واسطے کیا حکم شرع شریف ہے؟ اور وہ کہاں تک گنہگار ہے؟ بینوا توجروا (بیان فرماؤ اجر پاؤ-ت)

الجواب: پسر مذکور فاسق فاجر مرتکبِ کبائر عاق ہے اور اسے سخت عذاب و غضبِ الٰہی کا استحقاق،

Disobedience to the father is disobedience to Allah, the All-Compelling and Subduer, and the displeasure of the father is the displeasure of Allah, the All-Compelling and Subduer. If a person pleases his parents, they are his Paradise, and if he displeases them, they are his Hell. As long as he does not please his father, no obligatory (Fard), voluntary (Nafl), or any good deed of his will be accepted at all. In addition to the punishment of the Hereafter, a severe calamity will descend upon him in this world while he is alive; there is a fear of not being granted the Kalima at the time of death, Allah forbid. It is mentioned in a Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"Obedience to Allah is obedience to the father, and disobedience to Allah is disobedience to the father." (Narrated by Tabarani from Abu Huraira, may Allah be pleased with him. – T)

In the second Hadith, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Allah's pleasure is in the father's pleasure and Allah's displeasure is in the father's displeasure." (Narrated by Tirmidhi and Ibn Hibban in his Sahih, and Al-Hakim from Abdullah bin Umar, may Allah be pleased with them both. – T)

In the third Hadith, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "They are your Paradise and your Hell." (Narrated by Ibn Majah from Abu Umamah, may Allah be pleased with him. – T) Parents are your Paradise and your Hell.

In the fourth Hadith, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "The father is the middle gate among the gates of Paradise; so if you wish, lose that gate or preserve it." The father is the middle gate among all the gates of Paradise; now, if you want, lose this gate or keep it.

1. Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 2767, Maktabat al-Ma'arif Riyadh, 3/144
2. Jami' at-Tirmidhi, Chapters on Piety and Joining Ties, Chapter on what has been narrated regarding the excellence of pleasing parents, Amin Company Delhi, 2/12
3. Sunan ibn Majah, Chapters on Manners, Chapter on being dutiful to parents, H.M. Saeed Company Delhi, p. 269

बाप की नाफ़रमानी अल्लाह जब्बार व कहार की नाफ़रमानी है और बाप की नाराज़ी अल्लाह जब्बार व कहार की नाराज़ी है। आदमी माँ-बाप को राजी करे तो वो उसकी जन्नत हैं और नाराज़ करे तो वही उसकी दोज़ख़ हैं। जब तक बाप को राजी न करेगा, उसका कोई फ़र्ज़, कोई नफ़्ल, कोई नेक अमल असल में कुबूल न होगा। आख़िरत के अज़ाब के अलावा दुनिया में ही जीते-जी सख़्त बला नाज़िल होगी; मरते वक़्त माज़अल्लाह कलिमा नसीब न होने का ख़ौफ़ है। हदीस में है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

"अल्लाह की इताअत वालिद की इताअत है, और अल्लाह की मासियत वालिद की मासियत है।" (तबरानी ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से इसे रिवायत किया। - त)

दूसरी हदीस में है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "अल्लाह की रज़ा वालिद की रज़ा में है और अल्लाह की नाराज़गी वालिद की नाराज़गी में है।" (तिर्मिज़ी और इब्ने हिब्बान ने अपनी सहीह में और हाकिम ने अब्दुल्ला बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से इसे रिवायत किया। - त)

तीसरी हदीस में है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "वो दोनों (माँ-बाप) तुम्हारी जन्नत और तुम्हारी दोज़ख़ हैं।" (इब्ने माजह ने अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से इसे रिवायत किया। - त) माँ-बाप तुम्हारी जन्नत और तुम्हारी दोज़ख़ हैं।

चौथी हदीस में है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "वालिद जन्नत के दरवाजों में से बीच का दरवाजा है; अब अगर तुम चाहो, तो उस दरवाजे को खो दो या उसे सुरक्षित रखो।" वालिद जन्नत के सब दरवाज़ों में बीच का दरवाज़ा है; अब तू चाहे तो इस दरवाज़े को अपने हाथ से खो दे या इसे महफ़ूज़ रख।

1. अल-मुअजम अल-औसत, हदीस 2767, मकतबतुल मआरिफ रियाज़, 3/144
2. जामिअत तिर्मिज़ी, अबवाबुल बिर्रे वस्सिला, बाब मा जा'अ मिनल फ़ज़ले फ़ी रज़ाल वालिदैन, अमीन कंपनी दिल्ली, 2/12
3. सुनन इब्ने माजह, अबवाबुल अदब, बाब बिर्रुल वालिदैन, एच.एम. सईद कंपनी दिल्ली, पृ. 269

باپ کی نافرمانی اللہ جبار وقہار کی نافرمانی ہے اور باپ کی ناراضی اللہ جبار و قہار کی ناراضی ہے، آدمی ماں باپ کو راضی کرے تو وہ اس کے جنت ہیں اور ناراض کرے تو وہی اس کے دوزخ ہیں۔ جب تک باپ کو راضی نہ کرے گا اس کا کوئی فرض، کوئی نفل، کوئی عمل نیک اصلاً قبول نہ ہوگا، عذاب آخرت کے علاوہ دنیا میں ہی جیتے جی سخت بلاء نازل ہوگی مرتے وقت معاذ اللہ کلمہ نصیب نہ ہونے کا خوف ہے۔ حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

طاعة اللہ طاعة الوالد ومعصیة اللہ معصیة الوالد۔ رواہ الطبرانی۱ عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔ اللہ کی اطاعت ہے والد کی اطاعت، اور اللہ کی معصیت ہے والد کی معصیت (طبرانی نے ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اسے روایت کیا۔ت)

دوسری حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں : رضا اللہ فی رضا الوالد وسخط اللہ فی سخط الوالد۔ رواہ الترمذی ۲ وابن حبان فی صحیحہ والحاکم عن عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنھما۔ اللہ کی رضا والد کی رضا میں ہے اور اللہ کی ناراضی والد کی ناراضی میں ہے (ترمذی اور ابن حبان نے اپنی صحیح میں اور حاکم نے عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے اسے روایت کیا۔ت)

تیسری حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں : ھما جنتک ونارک۔ رواہ ابن ماجۃ ۳ عن ابی امامۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔ ماں باپ تیری جنت اور تیری دوزخ ہیں (ابن ماجہ نے ابی امامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اسے روایت کیا۔ت)

چوتھی حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں : الوالد اوسط ابواب الجنة فان شئت فاصنع ذلك الباب او احفظہ۔ رواہ والد جنت کے سب دروازوں میں بیچ کا دروازہ ہے اب تو چاہے تو اس دروازے کو اپنے ہاتھ (سے کھو دے) یا اسے محفوظ رکھ۔

۱ المعجم الاوسط حدیث ۲۷۶۷ مکتبۃ المعارف ریاض ۳ / ۱۴۴ ۲ جامع الترمذی ابواب البر والصلة باب ماجاء من الفضل فی رضا الوالدین امین کمپنی دہلی ۲ / ۱۲ ۳ سنن ابن ماجہ ابواب الادب باب بر الوالدین ایچ ایم سعید کمپنی دہلی ص ۲۶۹

[Box 1] Arabic: At-Tirmidhi recorded in his Sahih, Ibn Majah, and Ibn Hibban narrated from Abu al-Darda (may Allah be pleased with him). Urdu Translation: "...whether to lose it or to preserve it." (Tirmidhi narrated it in his Sahih, and Ibn Majah and Ibn Hibban narrated it from Abu al-Darda. - T)

In the fifth Hadith, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Box 2] Arabic: "Three people will not enter Paradise: the one who is disobedient to his parents, the cuckold (dayyuth), and the woman who adopts a masculine appearance." - Narrated by an-Nasa'i and al-Bazzar with a good chain of narrators, and al-Hakim from Ibn 'Umar (may Allah be pleased with them both). Urdu Translation: Three persons will not enter Paradise: one who is disobedient to parents, a cuckold (dayyuth), and a woman who adopts a masculine appearance. (An-Nasa'i and al-Bazzar narrated it with a good chain, and al-Hakim narrated it from Ibn 'Umar (may Allah be pleased with them both). - T)

In the sixth Hadith, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Box 3] Arabic: "Three people, Allah (Mighty and Sublime) will not accept from them any obligatory or voluntary deed: the one who is disobedient to his parents, the one who reminds others of his favors (after charity), and the one who denies the divine decree (Qadr)." - Narrated by Ibn Abi 'Asim in 'As-Sunnah' with a good chain from Abu Umamah (may Allah be pleased with him). Urdu Translation: Allah Almighty does not accept any obligatory or voluntary act from three people: one who is disobedient to parents, one who reminds others of his favors after giving charity, and one who does not believe every good and evil to be from divine decree. (Narrated by Ibn Abi 'Asim in 'As-Sunnah' with a good chain from Abu Umamah (may Allah be pleased with him). - T)

In the seventh Hadith, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Box 4] Arabic: "Allah may defer the punishment of all sins to the Day of Resurrection as He wills, except for disobedience to parents. Indeed, Allah hastens its punishment for its perpetrator in this life before death." Urdu Translation: Allah Almighty, if He

wills, defers the punishment of all sins until the Day of Judgment, except for disobedience to parents, for which He brings punishment in this life.

Majlis of Dawat-e-Islami

Footnotes: 1. Jami' al-Tirmidhi, Chapters on Piety and Good Manners, Chapter on the Merit of Pleasing Parents, Amin Company, Delhi, 2/12. 2. Sunan al-Nasa'i, Book of Zakat, Chapter on the one who reminds of his favors, Nur Muhammad Factory, Karachi, 1/357; Al-Mustadrak by al-Hakim, Book of Faith, 'Three will not enter Paradise', Dar al-Fikr, Beirut, 1/72. 3. Al-'Ilal al-Mutanahiyah, Chapter on the mention of Decree and the Qadariyyah, Hadith 239, Dar Nashr al-Kutub al-Islamiyyah, 1/151; Majma' al-Zawa'id, Chapter on Those Who Deny Decree, Dar al-Kutub al-'Arabi, Beirut, 7/206.

जिल्द २४ | फतावा रज़विया

[बॉक्स १] अरबी: तिरमिज़ी ने अपनी सहीह में, इब्ने माजा और इब्ने हिब्बान ने अबू दरदा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया। उर्दू अनुवाद: "...चाहे तो उसे खो दे या उसे सुरक्षित रखे।" (तिरमिज़ी ने अपनी सहीह में और इब्ने माजा और इब्ने हिब्बान ने अबू दरदा से इसे रिवायत किया। - त)

पाँचवीं हदीस में है, रसूले खुदा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[बॉक्स २] अरबी: "तीन व्यक्ति जन्नत में नहीं जाएँगे: माता-पिता की नाफ़रमानी करने वाला, दय्यूथ (बेगैरत) और वह औरत जो मर्दाना हुलिया इख्तियार करे।" - नसाई और बज़ार ने अच्छी सनद के साथ और हाकिम ने इब्ने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया। उर्दू अनुवाद: तीन व्यक्ति जन्नत में नहीं जाएँगे: माता-पिता की नाफ़रमानी करने वाला, दय्यूथ और वह औरत जो मर्दाना वज़अ (दिखावट) बनाए। (नसाई और बज़ार ने इसनाद-ए-जय्यद के साथ और हाकिम ने इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से इसे रिवायत किया। - त)

छठी हदीस में है, रसूले खुदा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[बॉक्स ३] अरबी: "तीन लोगों का, अल्लाह (अज़्ज़ व जल्ल) न कोई फ़र्ज़ अमल कुबूल फ़रमाता है और न नफ़्ल: माता-पिता का नाफ़रमान, एहसान जताने वाला और तक़दीर को झुठलाने वाला।" - इब्ने अबी आसिम ने 'अल-सुन्ना' में हसन सनद के साथ अबू उमामा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया। उर्दू अनुवाद: तीन व्यक्तियों का कोई फ़र्ज़ और नफ़्ल अल्लाह तआला कुबूल नहीं फ़रमाता: माता-पिता का नाफ़रमान, सदका देकर एहसान जताने वाला और हर नेकी और बदी को तक़दीर-ए-इलाही से न मानने वाला। (इब्ने अबी आसिम ने अल-सुन्ना में सनद-ए-हसन के साथ अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया। - त)

सातवीं हदीस में है, रसूले खुदा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[बॉक्स ४] अरबी: "अल्लाह तमाम गुनाहों की सज़ा को कयामत के दिन तक के लिए मुल्तवी कर देता है जिसे वह चाहता है, सिवाय माता-पिता की नाफ़रमानी के। बेशक अल्लाह इसके कर्ता को मरने से पहले इसी दुनिया में सज़ा दे देता है।" उर्दू अनुवाद: सब गुनाहों की सज़ा अल्लाह तआला चाहे तो कयामत के लिए उठा रखता है मगर माता-पिता की नाफ़रमानी कि इसकी सज़ा जीते जी पहुँचाता है।

पाद-टिप्पणियाँ (Footnotes): १. जामे तिरमिज़ी, अबवाबुल बिर वल सिला, बाब माजा-अ फिल फ़ज़्ल फी रिज़ा अल-वालिदैन, अमीन कंपनी, दिल्ली, २/१२। २. सुनन नसाई, किताबुल ज़कात, बाब अल-मन्नान बिमा आ'ता, नूर मुहम्मद कारखाना, कराची, १/३५७; अल-मुस्तदरक अल-हाकिम, किताबुल ईमान, 'तीन जन्नत में नहीं जाएँगे', दारुल फिक्र, बैरूत, १/७२। ३. अल-इलाल अल-मुतनाहिया, बाब ज़िक्र अल-क़द्र वल-क़दरिया, हदीस २३९, दार नश्र अल-कुतुब अल-इस्लामिया, १/१५१; मजमअ अल-ज़वाइद, बाब माजा-अ फ़ीमन युकज़्ज़िबु बिल क़द्र, दारुल कुतुब अल-अरबी, बैरूत, ७/२०६।

الترمذی ۱ فی صحیحہ و ابن ماجۃ و ابن حبان عن ابی الدرداء رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ | سے کھودے خواہ نگاہ رکھ (ترمذی نے اپنی صحیح میں اور ابن ماجہ اور ابن حبان نے ابوالدرداء سے اسے روایت کیا ت)

پانچویں حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

ثلثۃ لایدخلون الجنۃ العاق لوالدیہ والدیوث و الرجلۃ من النساء ۲ - رواہ النسائی والبزار باسناد جید والحاکم عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما۔ | تین اشخاص جنت میں نہ جائیں گے : ماں باپ کی نافرمانی کرنے والا اور دیوث اور وہ عورت کہ مردانی وضع بنائے ۔ (نسائی اور بزار نے اسناد جید کے ساتھ اور حاکم نے ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے اسے روایت کیا ت)

چھٹی حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

ثلثۃ لا یقبل اللہ عز وجل منھم صرفا ولا عدلا عاق و منان ومکذب بقدر - رواہ ابن ابی عاصم فی السنۃ ۳ بسند حسن عن ابی امامۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ | تین شخصوں کا کوئی فرض و نفل اللہ تعالٰی قبول نہیں فرماتا : عاق اور صدقہ دے کر احسان جتانے والا اور ہر نیکی وبدی کو تقدیر الٰہی سے نہ ماننے والا (ابن ابی عاصم نے السنہ میں سند حسن کے ساتھ ابو امامہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا۔ (ت)

ساتویں حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

كل الذنوب يؤخرمنہا ماشاء الی یوم القیمة الاعقوق الوالدین فان اللہ یعجلہ لصاحبہ فی الحیاة قبل الممات | سب گناہوں کی سزا اللہ تعالیٰ چاہے تو قیامت کے لئے اٹھا رکھتا ہے مگر ماں باپ کی نافرمانی کہ اس کی سزا جیتے جی پہنچاتا ہے۔

Majlis of DawateIslami

۱ جامع الترمذی ابواب البر والصلة باب ماجاء من الفضل فی رضا الوالدین امین کمپنی دہلی ۲ / ۱۲ ۲ سنن النسائی کتاب الزکاة باب المنان بما اعطی نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ۱ / ۳۵۷، المستدرک للحاکم کتاب الایمان ثلثہ لا یدخلون الجنة دار الفکر بیروت ۱ / ۷۲ ۳ العلل المتناہیة باب ذکر القدر والقدریة حدیث ۲۳۹ دار نشر الکتب الاسلامیہ ۱ / ۱۵۱، مجمع الزوائد باب ماجاء فیمن یکذب بالقدر دار الکتب العربی بیروت ۷ / ۲۰۶

Fatawa Razawiya Volume 24

[Boxed Text] Narrated by Al-Hakim, Al-Asbahani, and At-Tabarani from Abu Bakr, may Allah be pleased with him. | (Al-Hakim, Al-Asbahani, and At-Tabarani narrated this from Abu Bakr, may Allah be pleased with him. - T)

In the eighth hadith, it is stated: A young man was in the throes of death; the Kalimah was being prompted to him, but it could not be uttered until the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) arrived and said, "Say: La ilaha illallah (There is no god but Allah)." It was submitted that it could not be said. It was discovered that his mother was displeased; when she was reconciled, the Kalimah came forth from his tongue. Narrated by Imam Ahmad and At-Tabarani from Abdullah bin Abi Awfa, may Allah be pleased with him. (Imam Ahmad and At-Tabarani narrated this from Abdullah bin Abi Awfa, may Allah be pleased with him. - T)

However, in these matters, he is a sinner and his action was contrary to the command of God; it does not necessarily imply he is a denier of God as long as he does not say that obedience to the father is not religiously necessary or (God forbid) that insulting and humiliating the father is permissible. One who holds such a belief absolutely and without interpretation would undoubtedly be a denier of the Divine, and upon him is the explicit charge of disbelief (kufr). May Allah Almighty protect us. And Allah Almighty knows best, and His knowledge, may His glory be exalted, is most complete and most perfect.

Issue Two: What is the ruling for one who levels various types of evil accusations against a stepmother? And does a stepmother have a right over her stepson or not?

The Answer: Rights are held by every Muslim over every other Muslim, and it is strictly forbidden to level accusations against any Muslim, especially (God forbid) if the accusation is of adultery, regarding which the Great Quran has stated:

[Boxed Text] "Allah admonishes you, lest you repeat such a thing ever again, if you are believers."[3] | Allah advises you that you should never do the like of this again if you are believers.

Footnotes: [1] Al-Mustadrak lil-Hakim, Kitab al-Birr wa'l-Silah, Chapter on 'All sins are delayed as Allah wills...', Dar al-Fikr, Beirut, 4/156; Kanz al-Ummal, Hadith 45525, Beirut; and Al-Durr al-Manthur under verses 17/22, 23 and 2/474. [2] Shu'ab al-Iman, Hadith 8927, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 6/198. Note: Despite a search, the hadith

with these exact words could not be found in Ahmad and Tabarani; it is found with these words in Shu'ab al-Iman. [3] Al-Quran al-Karim, 24/17

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

[बॉक्स] अल-हाकिम, अल-असबहानी और अत-तबरानी ने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से इसे रिवायत किया। | (हाकिम और असबहानी और तबरानी ने अबी बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इसे रिवायत किया। - त)

आठवीं हदीस में है: एक जवान मौत की कशमकश (नज़अ) में था, उसे कलिमा पढ़ाया जा रहा था, लेकिन वह कह नहीं पा रहा था यहाँ तक कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और फ़रमाया: कहो 'ला इलाहा इल्लल्लाह', अर्ज़ किया गया कि नहीं कहा जाता। मालूम हुआ कि माँ नाराज़ है, उसे राज़ी किया तो कलिमा ज़बान से निकला। इमाम अहमद और तबरानी ने अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इसे रिवायत किया। (इमाम अहमद और तबरानी ने अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इसे रिवायत किया। - त)

मगर इन उमूर से वह गुनहगार हुआ और उसका काम ख़ुदा के हुक्म के ख़िलाफ़ हुआ, इससे उसका ख़ुदा का मुनकिर (इनकारी) होना लाज़िम नहीं आता जब तक यह न कहे कि बाप की इताअत (आज्ञाकारी) शरई तौर पर ज़रूरी नहीं या (अल्लाह न करे) बाप की तौहीन और मज़म्मत जाइज़ है। जो मुतलक तौर पर बिना किसी तावील के ऐसा अकीदा रखता हो, वह बेशक ख़ुदा का मुनकिर होगा और उस पर साफ़ तौर पर कुफ़्र का इल्ज़ाम होगा। अल्लाह तआला हमें अपनी पनाह में रखे। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है और उसका इल्म सबसे कामिल और सबसे पुख्ता है।

दूसरा मसला: सौतेली माँ पर तरह-तरह की बुरी तोहमत (इल्ज़ाम) लगाने वाले के लिए क्या हुक्म है? और क्या सौतेली माँ का अपने सौतेले बेटे पर कोई हक़ है या नहीं?

जवाब: हुक़ूक तो हर मुसलमान के हर दूसरे मुसलमान पर होते हैं, और किसी भी मुसलमान पर तोहमत लगाना कतई हराम है, ख़ासतौर पर (अल्लाह न करे) अगर तोहमत ज़िना (व्यभिचार) की हो, जिसके बारे में कुरान-ए-अज़ीम ने फ़रमाया:

[बॉक्स] "अल्लाह तुम्हें नसीहत फ़रमाता है कि अब ऐसा कभी न करना अगर तुम मोमिन हो।"[3] | अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है कि अगर तुम ईमान वाले हो तो फिर कभी ऐसा न करना।

फ़ुटनोट्स: [1] अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताबुल बिर्र वल सिलाह, बाब 'तमाम गुनाह जिन्हें अल्लाह चाहे मुल्तवी रखे...', दारुल फ़िक्र बेरुत 4/156, कंज़ुल उम्माल हदीस 45525 बेरुत और अद-दुरुल मंसूर आयत 17/22, 23 और 2/474 के तहत। [2] शेबुल ईमान हदीस 8927 दारुल कुतुबुल इल्मिया बेरुत 6/198 नोट: तलाश के बावजूद अहमद और तबरानी में इन अल्फ़ाज़ के साथ हदीस नहीं मिल सकी, शेबुल ईमान में इन्हीं अल्फ़ाज़ के साथ मुलाहिज़ा हो। [3] अल-कुरान अल-करीम 24/17

[Boxed Text] رواہ الحاکم ۱ والاصبہانی والطبرانی عن ابی بکر رضی اللہ تعالٰی عنہ | (حاکم اور اصبہانی اور طبرانی نے ابی بکر رضی اللہ تعالٰی عنہ سے اسے روایت کیا۔ ت)

آٹھویں حدیث میں ہے: ایک جوان نزع میں تھا اسے کلمہ تلقین کرتے تھے، نہ کہا جاتا تھا یہاں تک کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم تشریف لے گئے اور فرمایا: کہہ لا الہ الا اللہ، عرض کی نہیں کہا جاتا، معلوم ہوا کہ ماں ناراض ہے، اسے راضی کیا تو کلمہ زبان سے نکلا۔ رواہ الامام احمد ۲ والطبرانی عن عبد اللہ بن ابی اوفی رضی اللہ تعالٰی عنہ (امام احمد اور طبرانی نے عبداللہ بن ابی اوفی رضی اللہ تعالٰی عنہ سے اسے روایت کیا۔ ت)

مگر ان امور سے وہ عاصی اور اس کا فعل مخالفِ حکمِ خدا ہوا، اس کا منکرِ خدا ہونا لازم نہیں آتا جب تک یہ نہ کہے کہ باپ کی اطاعت شرعاً ضروری نہیں یا معاذ اللہ باپ کی توہین و تذلیل جائز ہے جو مطلقاً بلا تاویل ایسا اعتقاد رکھتا ہو وہ بے شک منکرِ الٰہی ہوگا اور اس پر صریح الزامِ کفر، والعیاذ باللہ تعالٰی، واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم۔

مسئلہ ثانیہ: سوتیلی مادر پر تہمت بد طرح طرح کی لگائے اس کے واسطے کیا حکم ہے؟ اور سوتیلی مادر کا حق پسر علاتی پر ہے یا نہیں؟

الجواب: حقوق تو مسلمان پر ہر مسلمان رکھتا ہے اور کسی مسلمان کو تہمت لگانی حرامِ قطعی ہے خصوصاً معاذ اللہ اگر تہمت زنا ہو، جس پر قرآنِ عظیم نے فرمایا:

[Boxed Text] "یَعِظُکُمُ اللّٰہُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِہٖٓ اَبَدًا اِنْ کُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ۝" 3 | اللہ تمہیں نصیحت فرماتا ہے کہ اب ایسا نہ کرنا اگر ایمان رکھتے ہو۔

حواشی: 1 المستدرك للحاكم كتاب البر والصلة باب كل الذنوب يؤخر الله ماشاء منها دار الفكر بيروت ۴ / ۱۵۶ ، كنز العمال حديث ۴۵۵۲۵ بيروت و الدر المنثور تحت آيات ۱۷ / ۲۲ ، ۲۳ و ۲ / ۴۷۴ 2 شعب الايمان حديث ۸۹۲۷ دار الكتب العلمية بيروت ۶ / ۱۹۸ ف: تلاش کے باوجود احمد و طبرانی سے ان الفاظ کے ساتھ حدیث نہیں مل سکی شعب الایمان میں انہی الفاظ سے ملاحظہ ہو۔ 3 القرآن الكريم ۲۴ / ۱۷

Fatawa Razawiyya Volume 24

One who falsely accuses of adultery is given eighty lashes, and their testimony is rejected forever; Allah has named them a transgressor (fasiq). These rules apply to every Muslim, even if there is no original relationship or connection with them. And a stepmother has a great and special connection to one's father, because of which her respect and sanctity are undoubtedly obligatory upon him. Due to this sanctity, the Lord of Honor, Glorious and Exalted, has made her eternally forbidden (for marriage) like a real mother. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

"Indeed, the best of good deeds is for a person to treat their father's friends well." - Narrated by Muslim from Ibn Umar (may Allah be pleased with them).

In another hadith, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) included this among the ways of being dutiful to parents:

"And to honor their friends." - (Narrated by Abu Dawud, Ibn Majah, and Ibn Hibban in their Sahih collections from Malik bin Rabi'ah al-Sa'idi (may Allah be pleased with him).)

When these rules apply to a father's friends, why wouldn't the respect and honor for his wedded wife and his dignity be more deserving and emphasized? Especially since her displeasure leads to the father's displeasure, and the father's displeasure is the displeasure of Allah the Almighty. And Allah knows best.

Third Issue: Whose right is greater over children: the father's or the mother's? Please explain, may you be rewarded.

Answer: The rights of parents over children are very great, and the mother's right is even greater than his. Allah the Almighty said:

Footnotes: 1. Sahih Muslim, Book of Piety and Joining Ties, Chapter: The virtue of joining friends of the father and mother, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 2/312. 2. Sunan Abi Dawud, Book of Manners, Chapter: Concerning honoring parents, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/447; Sunan Ibn Majah, Chapters of Manners, Chapter: Join whoever your father used to join, H.M. Saeed Company, Karachi, p. 269.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

जो व्यक्ति व्यभिचार (ज़िना) का झूठा आरोप लगाता है, उसे अस्सी कोड़े मारे जाते हैं और उसकी गवाही हमेशा के लिए रद्द कर दी जाती है; अल्लाह ने उसका नाम 'फ़ासिक़' (अवज्ञाकारी) रखा है। ये सभी नियम हर मुसलमान के मामले में हैं, भले ही उससे कोई मूल संबंध या नाता न हो। और सौतेली माँ का तो अपने पिता से एक बहुत बड़ा और विशेष संबंध है, जिसके कारण उसका सम्मान और मान-मर्यादा उस पर निस्संदेह अनिवार्य है। इसी मर्यादा के कारण गौरवशाली और महान रब ने उसे सगी माँ की तरह हमेशा के लिए हराम (विवाह के लिए वर्जित) कर दिया है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

"निश्चित रूप से सबसे बड़ी भलाई यह है कि पुत्र अपने पिता के मित्रों के साथ अच्छा व्यवहार करे।" - मुस्लिम ने इसे इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया है।

दूसरी हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने के तरीकों में इसे भी गिना है:

"और उनके मित्रों का सम्मान करना।" - (अबू दाऊद, इब्न माजाह और इब्न हिब्बान ने अपनी-अपनी सहिह (हदीस संग्रह) में मालिक बिन रबीआ अल-साइदी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से इसे रिवायत किया है।)

जब पिता के मित्रों के संबंध में ये नियम हैं, तो उसकी विवाहित पत्नी और उसके सम्मान (नामूस) का आदर और सत्कार क्यों अधिक आवश्यक और दृढ़ नहीं होगा? विशेष रूप से जब उसकी नाराज़गी पिता की नाराज़गी है और पिता की नाराज़गी अल्लाह तआला की नाराज़गी है। और अल्लाह बेहतर जानता है।

तीसरा मसला: संतान पर पिता का अधिकार अधिक है या माता का? बयान फरमाएं, पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: संतान पर माता-पिता का अधिकार अत्यंत महान है और माता का अधिकार पिता से भी अधिक महान है, अल्लाह तआला ने फरमाया:

फुटनोट: 1. सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिलह, बाब: पिता और माता के मित्रों को जोड़ने की फजीलत, कदीमी कुतुब खाना कराची 2/312। 2. सुनन अबी दाऊद, किताबुल अदब, बाब: माता-पिता की भलाई के बारे में, आफताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 2/447, सुनन इब्न माजाह, अबवाबुल अदब, बाब: उससे मिलो जिससे तुम्हारा बाप मिला करता था, एच.एम. सईद कंपनी कराची पृ. 269।

تہمت زنا لگانے والے کو اسی کوڑے لگتے ہیں اور ہمیشہ کو اس کی گواہی مردود ہوتی ہے اللہ تعالٰی نے اس کا نام فاسق رکھا، یہ سب احکام ہر مسلمان کے معاملے میں ہیں اگرچہ اس سے کوئی رشتہ علاقہ اصلاً نہ ہو، اور سوتیلی ماں تو ایک عظیم و خاص علاقہ اس کے باپ سے رکھتی ہے جس کے باعث اس کی تعظیم و حرمت اس پر بلاشبہ لازم، اسی حرمت کے باعث رب العزت جل وعلا نے اسے حقیقی ماں کی مثل حرام ابدی کیا۔ حدیث رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

ان ابر البر صلۃ الرجل اھل ود ابیہ- رواہ مسلم عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما۔ (بیشک سب نکوکاریوں سے بڑھ کر نکوکاری یہ ہے کہ فرزند اپنے باپ کے دوستوں سے اچھا سلوک کرے - مسلم نے ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے اسے روایت کیا-ت)

دوسری حدیث میں ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ماں باپ کے ساتھ نکوکاری کے طریقوں میں یہ بھی شمار فرمایا:

وا کرم صدیقہما۔ ابوداؤد ابن ماجۃ و ابن حبان فی صحاحہم عن مالک بن ربیعۃ الساعدی رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ (ان کے دوست کی عزت کرنا۔ - ابوداؤد، ابن ماجہ اور ابن حبان نے اپنی اپنی صحاح میں مالک بن ربیعہ الساعدی رضی اللہ تعالٰی عنہ سے اسے روایت کیا-ت)

باپ کے دوستوں کی نسبت یہ احکام تو اس کی منکوحہ اس کی ناموس کی تعظیم و تکریم کیوں نہ احق و اکد ہوگی خصوصاً جبکہ اس کی ناراضی میں باپ کی ناراضی اللہ تعالٰی کی ناراضی ہے واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ثالثہ: اولاد پر حق پدر زیادہ ہے یا حق مادر؟ بینوا توجروا (بیان فرماؤ، اجر پاؤ-ت)

الجواب: اولاد پر ماں باپ کا حق نہایت عظیم ہے اور ماں کا حق اس سے اعظم، قال اللہ تعالٰی:

حواشی: 1 صحیح مسلم کتاب البر والصلۃ باب فضل صلۃ اصدقاء الاب والام قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۳۱۲ 2 سنن ابی داؤد کتاب الادب باب فی بر الوالدین آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۴۴۷، سنن ابن ماجہ ابواب الادب باب صل من کان ابوک یصل ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۲۶۹

Fatawa Razawiyya Volume 24

"And We have enjoined upon man, to his parents, good treatment. His mother carried him with hardship and gave birth to him with hardship, and his bearing and weaning is [a period of] thirty months." 1 Man is commanded to behave well with his parents; his mother bore him in her womb with pain, and gave birth to him with pain, and his staying in the womb and weaning is completed in thirty months.

In this noble verse, the Lord Almighty emphasized the rights of both parents, then specifically singled out the mother and counted those hardships and pains she faced during pregnancy, childbirth, and breastfeeding for two years—where she fed him the essence of her blood (milk)—due to which her right became most intense and great. Similarly, He stated in another verse:

"And We have enjoined upon man [care] for his parents. His mother carried him, [increasing her] in weakness upon weakness, and his weaning is in two years. Be grateful to Me and to your parents." 2 We emphasized to man regarding the right of his parents that his mother carried him in her womb, bearing hardship upon hardship, and his weaning is in two years; acknowledge My right and that of your parents.

Here, no limit was set for the rights of parents as He counted them along with His own majestic right. He says: Express gratitude to Me and to your parents. Allah is the Greatest, Allah is the Greatest, and Allah is sufficient for us and He is the Best Disposer of affairs, and there is no power nor strength except with Allah, the Most High, the Supreme. These two verses, and likewise many Hadiths, are evidence that the mother's right exceeds the father's right. The Mother of the Believers, Siddiqa (may Allah be pleased with her) narrates:

"I asked the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), 'Who among people has the greatest right over a woman?' He said, 'Her husband.' I asked, 'And who among people has the greatest right over a man?' He said, 'His mother.'" (Narrated by Al-Bazzar with a good chain and Al-Hakim 3). Meaning I submitted to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), "Who has the greatest right over a woman?" He said, "The husband." I submitted, "And who has the greatest right over a man?" He said, "His mother." (Bazzar narrated it with a good chain and Hakim also narrated it).

1. The Holy Quran 46:15

2. The Holy Quran 31:14
3. Al-Mustadrak lil-Hakim, Book of Virtue and Kinship, 'The person with the greatest right over a man is his mother', Dar al-Fikr Beirut 4/175

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

"और हमने मनुष्य को उसके माता-पिता के प्रति भलाई का आदेश दिया। उसकी माँ ने उसे कष्ट सहकर गर्भ में रखा और कष्ट सहकर उसे जन्म दिया, और उसका गर्भ में रहना और दूध छुड़ाना तीस महीने का है।" 1 आदमी को अपने माता-पिता के साथ नेक व्यवहार करने की ताकीद है; उसकी माँ उसे दर्द के साथ पेट में लिए रही, और उसे दर्द के साथ जन्म दिया, और उसका पेट में रहना और दूध छुड़ाना तीस महीनों में है।

इस आयत-ए-करीमा में रब्बुल इज़्ज़त ने माता-पिता दोनों के अधिकार के बारे में ताकीद फरमाकर माँ को फिर विशेष रूप से अलग करके गिना और उसकी उन कठोरताओं और कष्टों को गिना जो उसे गर्भावस्था, प्रसव और दो वर्ष तक अपने रक्त का अर्क(दूध) पिलाने के दौरान झेलने पड़े, जिनके कारण उसका अधिकार अत्यंत प्रबल और महान हो गया। इसी प्रकार दूसरी आयत में इरशाद फरमाया:

"और हमने मनुष्य को उसके माता-पिता के बारे में ताकीद की। उसकी माँ ने उसे कमज़ोरी पर कमज़ोरी सहकर गर्भ में रखा, और उसका दूध छुड़ाना दो वर्षों में है। मेरा और अपने माता-पिता का आभार व्यक्त कर।" 2 हमने मनुष्य को उसके माता-पिता के अधिकार के बारे में ताकीद की कि उसकी माँ ने उसे सख़्ती पर सख़्ती उठाकर अपने पेट में रखा, और उसका दूध छुड़ाना दो वर्ष में है, यह कि मेरा और अपने माता-पिता का हक़ मान।

यहाँ माता-पिता के अधिकार की कोई सीमा नहीं रखी गई क्योंकि उन्हें अपने महान अधिकार के साथ गिना गया है। वह फरमाता है: मेरा शुक्र अदा कर और अपने माता-पिता का भी। अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है और हमारे लिए अल्लाह काफी है और वह बेहतरीन कार्यसाधक है, और सर्वोच्च और महान अल्लाह के सिवा कोई शक्ति और सामर्थ्य नहीं है। ये दोनों आयतें और इसी तरह कई हदीसें इस बात का प्रमाण हैं कि माँ का अधिकार पिता के अधिकार से अधिक है। उम्मुल मोमिनीन सिद्दीका (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) फरमाती हैं:

"मैंने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से पूछा, 'लोगों में से एक स्त्री पर सबसे बड़ा अधिकार किसका है?' आपने फरमाया, 'उसके पति का।' मैंने पूछा, 'और लोगों में से एक पुरुष पर सबसे बड़ा अधिकार किसका है?' आपने फरमाया, 'उसकी माँ का।'" (बज़ार ने हसन सनद के साथ और हाकिम ने इसे रिवायत किया है 3)। अर्थात मैंने हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु तआला अलैहि

वसल्लम) से निवेदन किया कि औरत पर सबसे बड़ा हक़ किसका है? फरमाया शौहर का। मैंने निवेदन किया और मर्द पर सबसे बड़ा हक़ किसका है? फरमाया उसकी माँ का। (बज़ार ने हसन सनद के साथ और हाकिम ने इसे रिवायत किया है)।

1. पवित्र कुरान 46/15
2. पवित्र कुरान 31/14
3. अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताबुल बिर्र वस्सिला, 'पुरुष पर सबसे बड़ा हक़ उसकी माँ का है', दारुल फिक्र बेरूत 4/175

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

"وَ وَصَّیْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَیْهِ اِحْسٰنًاؕ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّ وَضَعَتْهُ كُرْهًاؕ وَ حَمْلُهٗ وَ فِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًاؕ " 1

آدمی کو اپنے ماں باپ کے ساتھ نیک برتاؤ کی، اسے پیٹ میں رکھے رہی اس کی ماں تکلیف سے، اور اسے جنا تکلیف سے، اور اس کا پیٹ میں رہنا اور دودھ چھڑانا تیس مہینے میں ہے۔

اس آیہ کریمہ میں رب العزت نے ماں باپ دونوں کے حق میں تاکید فرما کر ماں کو پھر خاص الگ کر کے گنا اور اس کی ان سختیوں اور تکلیفوں کو جو اسے حمل و ولادت اور دو برس تک اپنے خون کا عطر پلانے میں پیش آئیں جن کے باعث اس کا حق بہت اشد و اعظم ہو گیا شمار فرمایا اسی طرح دوسری آیت میں ارشاد فرمایا:

"وَ وَصَّیْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَیْهِۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّ فِصٰلُهٗ فِیْ عَامَیْنِ اَنِ اشْكُرْ لِیْ وَلِوَالِدَیْكَؕ " 2

تاکید کی ہم نے آدمی کو اس کے ماں باپ کے حق میں کہ پیٹ میں رکھا اسے اس کی ماں نے سختی پر سختی اٹھاکر، اور اس کا دودھ چھڑانا دو برس میں ہے، یہ کہ حق مان میرا اور اپنے ماں باپ کا۔

یہاں ماں باپ کے حق کی کوئی نہایت نہ رکھی کہ انہیں اپنے حق جلیل کے ساتھ شمار کیا، فرماتا ہے: شکر بجا لا میرا اور اپنے ماں باپ کا، اللہ اکبر اللہ اکبر وحسبنا اللہ ونعم الوکیل ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم، یہ دونوں آیتیں اور اسی طرح بہت حدیثیں دلیل ہیں کہ ماں کا حق باپ کے حق سے زائد ہے، ام المؤمنین صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا فرماتی ہیں:

سألت رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ای الناس اعظم حقا علی المرأۃ قال زوجھا قلت فای الناس اعظم حقا علی الرجل قال امہ رواہ البزار بسند حسن والحاکم 3۔ یعنی میں نے حضور اقدس صلی اللہ

تعالیٰ علیہ وسلم سے عرض کی عورت پر سب سے بڑا حق کس کا ہے، فرمایا شوہر کا، میں نے عرض کی اور مرد پر سب سے بڑا حق کس کا ہے، فرمایا اس کی ماں کا، (بزار نے بسند حسن اور حاکم نے اسے روایت کیا-ت)

۱ القرآن الکریم ۱۵/۴۶ ۲ القرآن الکریم ۳۱/۱۴ ۳ المستدرک للحاکم کتاب البر والصلۃ اعظم الناس حقا علی الرجل امہ دارالفکر بیروت ۴/۱۷۵

Fatwa Razawiyya Volume 24

Abu Hurayrah (Allah be pleased with him) says:

[Table Header Style Layout] A man came to the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) and said, "O Messenger of Allah, who among the people is most deserving of my good companionship?" He said, "Your mother." He asked, "Then who?" He said, "Your mother." He asked, "Then who?" He said, "Your mother." He asked, "Then who?" He said, "Your father." —Reported by the two Shaykhs [Bukhari and Muslim] in their Sahihs. (1) | A person presented himself in the exalted presence of the Noble Messenger (peace and blessings be upon him) and submitted: "O Messenger of Allah, who is most deserving that I should maintain good companionship with him?" He replied: "Your mother." He asked: "Then [who]?" He replied: "Your father." (Imam Bukhari and Muslim narrated it in their respective Sahih books. -T)

It is mentioned in the third Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) says:

I enjoin a man concerning his mother, I enjoin a man concerning his mother, I enjoin a man concerning his mother, I enjoin a man concerning his father. —Reported by Imam Ahmad, Ibn Majah, al-Hakim, and al-Bayhaqi in al-Sunan (2) from Abu Salamah. | I enjoin a man regarding his mother's right, I enjoin regarding his mother's right, I enjoin regarding his mother's right, I enjoin regarding his father's right. (Imam Ahmad, Ibn Majah, Hakim, and Bayhaqi narrated it in [their] Sunan from Abu Salamah. -T)

However, the meaning of this addition is that preference should be given to the mother over the father in rendering service; for example, if there are one hundred rupees and there is no specific reason preventing detailing to the mother, then give twenty-five (25) to the father and seventy-five (75) to the mother. Or, if both mother and father asked for water at the same time, give it to the mother first and then to the father. Or, if both have returned from a journey, first...

---

1. Sahih al-Bukhari, Book of Manners, Chapter: Who is most deserving of good companionship, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/883; Sahih Muslim, Book of Virtue and Joining Ties, Chapter: Goodness to parents, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/312.

2. Musnad Ahmad bin Hanbal, Hadith of Khidash Abi Salamah, Al-Maktab al-Islami Beirut, 4/311; Sunan Ibn Majah, Chapters of Manners, HM Saeed Company Karachi, p. 268; Al-Mustadrak lil-Hakim, Book of Virtue and Joining Ties, Chapter: Goodness to your mother, Dar al-Fikr Beirut, 4/150; Al-Sunan al-Kubra, Book of Zakat, Chapter: Choice in voluntary charity, Dar Sadir Beirut, 4/179.

फतावा रज़विया खंड २४

अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं:

एक आदमी अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास आया और कहा, "हे अल्लाह के रसूल, लोगों में मेरी अच्छी सोहबत का सबसे अधिक हकदार कौन है?" उन्होंने कहा, "तुम्हारी माँ।" उन्होंने पूछा, "फिर कौन?" उन्होंने कहा, "तुम्हारी माँ।" उन्होंने पूछा, "फिर कौन?" उन्होंने कहा, "तुम्हारी माँ।" उन्होंने पूछा, "फिर कौन?" उन्होंने कहा, "तुम्हारे पिता।" —शेखैन [बुखारी और मुस्लिम] ने अपनी सहीह में इसे रिवायत किया है। (१) | एक व्यक्ति अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पवित्र सेवा में उपस्थित हुआ और निवेदन किया: "हे अल्लाह के रसूल, सबसे अधिक कौन इसका हकदार है कि मैं उसके साथ नेक सुलूक करूँ?" फरमाया: "तुम्हारी माँ।" अर्ज़ की: "फिर [कौन]?" फरमाया: "तुम्हारा बाप।" (इमाम बुखारी और मुस्लिम ने अपनी-अपनी सहीह में इसे रिवायत किया है। -त)

तीसरी हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

मैं एक आदमी को उसकी माँ के बारे में वसीयत करता हूँ, मैं एक आदमी को उसकी माँ के बारे में वसीयत करता हूँ, मैं एक आदमी को उसकी माँ के बारे में वसीयत करता हूँ, मैं एक आदमी को उसके पिता के बारे में वसीयत करता हूँ। —इमाम अहमद, इब्न माजाह, अल-हाकिम और अल-बैहकी ने सुनन (२) में अबू सलामा से इसे रिवायत किया है। | मैं एक आदमी को वसीयत करता हूँ उसकी माँ के हक में, वसीयत करता हूँ उसकी माँ के हक में, वसीयत करता हूँ उसकी माँ के हक में, वसीयत करता हूँ उसके बाप के हक में। (इमाम अहमद और इब्न माजाह और हाकिम और बैहकी ने सुनन में अबी सलामा से इसे रिवायत किया। -त)

मगर इस ज़्यादती (अधिकता) का मतलब यह है कि सेवा करने में पिता पर माँ को वरीयता दी जाए; उदाहरण के लिए, यदि सौ रुपये हैं और कोई विशेष कारण माँ के विवरण में बाधक नहीं है, तो पिता को पच्चीस (२५) दें और माँ को पचहत्तर (७५), या यदि माँ और पिता दोनों ने एक साथ पानी माँगा तो पहले माँ को पिलाए फिर पिता को, या दोनों यात्रा से आए हैं तो पहले...

1. सहीह अल-बुखारी, किताब अल-अदब, अध्याय: अच्छी सोहबत का सबसे अधिक हकदार कौन है, कदीमी कुतुब खाना कराची, २/८८३; सहीह मुस्लिम, किताब अल-बिर्र वस-सिला, अध्याय: माता-पिता के साथ भलाई, कदीमी कुतुब खाना कराची, २/३१२।
2. मुसनद अहमद बिन हंबल, हदीस खिदाश अबी सलामा, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत, ४/३११; सुनन इब्न माजाह, अबवाब अल-अदब, एचएम सईद कंपनी कराची, पृष्ठ २६८; अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताब अल-बिर्र वस-सिला, अध्याय: तुम्हारी माँ के साथ भलाई, दार अल-फिक्र बेरूत, ४/१५०; अल-सुनन अल-कुबरा, किताब अल-ज़कात, अध्याय: नफ़ली सदके में चुनाव, दार सादिर बेरूत, ४/१७९।

ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ فرماتے ہیں:

جاء رجل الی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فقال یارسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم من احق الناس بحسن صحابتی قال امك قال ثم من قال امك قال ثم من قال امك قال ثم من قال ابوك۔رواہ الشیخان۱ فی صحیحھما۔ | ایک شخص نے خدمت اقدس حضور پر نور صلوات اللہ وسلامہ علیہ میں حاضر ہو کر عرض کی یارسول اللہ سب سے زیادہ کون اس کا مستحق ہے کہ میں اس کے ساتھ نیک رفاقت کروں، فرمایا تیری ماں، عرض کی پھر، فرمایا تیرا باپ۔ (امام بخاری اور مسلم نے اپنی اپنی صحیح میں اسے روایت کیا۔ت)

تیسری حدیث میں ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

اوصی الرجل بأمہ اوصی الرجل بأمہ اوصی الرجل بأمہ اوصی الرجل بأبیہ۔رواہ الامام احمد وابن ماجۃ والحاکم والبیھقی فی السنن۲ عن ابی سلامۃ۔ | میں ایک آدمی کو وصیت کرتا ہوں اس کی ماں کے حق میں، وصیت کرتا ہوں اس کی ماں کے حق میں، وصیت کرتا ہوں اس کی ماں کے حق میں، وصیت کرتا ہوں اس کے باپ کے حق میں۔ (امام احمد اور ابن ماجہ اور حاکم اور بیہقی نے سنن میں ابی سلامہ سے اسے روایت کیا۔ت)

مگر اس زیادت کے یہ معنی ہیں کہ خدمت میں دینے میں باپ پر ماں کو ترجیح دے مثلاً سو روپے ہیں اور کوئی خاص وجہ مانع تفصیل مادر نہیں تو باپ کو پچیس ۲۵ دے ماں کو پچھتر ۷۵، یا ماں باپ دونوں نے ایک ساتھ پانی مانگا تو پہلے ماں کو پلائے پھر باپ کو، یا دونوں سفر سے آئے ہیں پہلے

١ صحیح البخاری کتاب الادب باب من احق الناس بحسن الصحبة قدیمی کتب خانہ کراچی ٨٨٣/٢، صحیح مسلم کتاب البر والصلة باب بر الوالدین قدیمی کتب خانہ کراچی ٣١٢/٢ ٢ مسند احمد بن حنبل حدیث خداش ابی سلامہ المکتب الاسلامی بیروت ٣١١/٤، سنن ابن ماجہ ابواب الادب ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ٢٦٨، المستدرک للحاکم کتاب البر والصلة باب بر امك دار الفکر بیروت ١٥٠/٤، السنن الکبری کتاب الزکوٰة باب الاختیار فی صدقة التطوع دار صادر بیروت ١٧٩/٤

Fatawa Rizvia, Volume 24

[Massage] the mother's feet and then the father's, and so on. It should not be that if there is a dispute between the parents, he sides with the mother and, God forbid, sets out to harm the father, or treats him harshly in any way, or answers back, or looks him in the eye disrespectfully; all these things are forbidden and are acts of disobedience to Allah Almighty. This is neither obedience to the mother nor the father. Siding with either in such a manner is never permissible. They both are his Paradise and Hell; whoever he harms, he will deserve Hell, and refuge is sought with Allah. There is no obedience to anyone in matters of disobedience to the Creator. For example, if the mother wants him to cause some kind of distress to the father and he refuses, and she gets angry, let her be; he should never obey her. Similarly, from the father's side regarding the mother, such anger of theirs is not worth considering as it is their pure excess, wanting disobedience to Allah Almighty. Rather, our scholars have divided it such that preference is given to the mother in service, examples of which we have written, and respect for the father is greater because he is also the ruler and master of her mother. It is mentioned in 'Alamgiri':

Arabic Text

If it is difficult for a person to fulfill the rights of both parents together, such that by fulfilling the rights of one, the other is hurt, then the father's right is preferred in matters of respect and honor, and the mother's right is preferred in matters of service and benevolence. From 'Ala al-A'imma al-Hamami, it is said: Our masters (may Allah have mercy on them) say: The father is given precedence over the mother in respect, and the mother in service. So much so that if both enter a house to see him, he should stand up for the respect of the father, and if both ask him for water and neither has taken it from his hand yet, he should offer it to the mother first. Likewise in 'Al-Quniyah'. And Allah is the Glorious.

Urdu Translation

When it becomes difficult for a person to observe the rights of each of the parents, for example, observing one's right causes pain to the other, then in respect and honor, one should observe the right of the father and in service, the right of the mother. Allama Hamami said our Imams state that the father is prior in respect and the mother will be prior in service, so much so that if both come to him in the house, he should stand for the respect of the father, and if both asked him for water and neither has yet taken it from his hand, he should present it to the mother first. Similarly, it is in 'Quniyah'. And Allah is the Glorious.

1 Fatawa Hindiyyah Bandiyyah, Book of Disliked Matters, Chapter 26, Nurani Kutub Khana Peshawar, 5/365.

माँ के पाँव दबाए फिर बाप के, और इसी तरह। ऐसा न हो कि अगर माता-पिता के बीच विवाद हो, तो माँ का साथ देकर खुदा न करे बाप को दुख पहुँचाए या उन पर किसी तरह की सख्ती करे या उन्हें जवाब दे या अदब के खिलाफ आँख मिलाकर बात करे, ये सब बातें हराम हैं और अल्लाह अज़्ज़-ओ-जल्ल की नाफरमानी हैं। यह न माँ की आज्ञाकारिता है न बाप की, तो माता-पिता में से किसी का ऐसा साथ देना हरगिज़ जायज़ नहीं। वे दोनों उसकी जन्नत और आग (नर्क) हैं; जिसे वह दुख पहुँचाएगा, वह नर्क का हकदार होगा और अल्लाह की पनाह (माँगते हैं), सृष्टिकर्ता की नाफरमानी में किसी की आज्ञाकारिता नहीं। अगर उदाहरण के लिए माँ चाहती है कि यह बाप को किसी तरह का कष्ट पहुँचाए और यह नहीं मानता तो वह नाराज़ होती है, होने दे और हरगिज़ न माने, ऐसे ही बाप की तरफ से माँ के मामले में। उनकी ऐसी नाराज़गियाँ विचारणीय नहीं होंगी क्योंकि यह सरासर उनकी ज़्यादती है कि वे अल्लाह की नाफरमानी चाहते हैं। बल्कि हमारे उलेमा-ए-किराम ने इस तरह बाँटा है कि सेवा में माँ को प्राथमिकता दी जाए, जिसके उदाहरण हमने लिखे हैं, और सम्मान में पिता को अधिक महत्व दिया जाए क्योंकि वह उसकी माँ का भी शासक और मालिक है। 'आलमगीरी' में है:

अरबी पाठ

जब व्यक्ति के लिए माता-पिता में से प्रत्येक के अधिकार का पालन करना कठिन हो जाए, जिससे एक के पालन से दूसरे को कष्ट पहुँचता हो, तो सम्मान और आदर में पिता के अधिकार को वरीयता दी जाती है और सेवा तथा उपकार में माता के अधिकार को। अला अल-आइम्मा अल-हमामी से रिवायत है: हमारे आदरणीय उस्ताद (अल्लाह उन पर रहम करे) फरमाते हैं: सम्मान में पिता को माता पर प्राथमिकता दी जाती है और सेवा में माता को। यहाँ तक कि अगर दोनों उसके पास घर में आएँ तो वह पिता के सम्मान में खड़ा हो, और अगर दोनों उससे पानी माँगें और किसी ने अभी तक उसके हाथ से पानी नहीं लिया है, तो वह पहले माता को पेश करे।

उर्दू अनुवाद

जब आदमी के लिए माता-पिता में से प्रत्येक के अधिकार की रियायत मुश्किल हो जाए, मसलन एक की रियायत से दूसरे को तकलीफ पहुँचती हो, तो ताज़ीम व एहतराम में वालिद के हक की रियायत करे और खिदमत में वालिदा के हक की। अल्लामा हम्मामी ने फरमाया: हमारे इमाम फरमाते हैं कि एहतराम में बाप मुकद्दम (अग्रणी) है और खिदमत में वालिदा मुकद्दम होगी, यहाँ तक कि अगर घर में दोनों उसके पास आएँ तो बाप की ताज़ीम के लिए खड़ा हो, और अगर दोनों ने उससे पानी माँगा और किसी ने उसके हाथ से पानी नहीं पकड़ा तो पहले वालिदा को

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
इसी तरह 'अल-कुनिया' में है। और अल्लाह सुब्हानहू (सर्वोच्च) है।	पेश करे, इसी तरह कुनिया में है। वल्लाहु सुब्हानहू।

1 फ़तावा हिंदिया बंदिया, किताब अल-कराहिया, अध्याय 26, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 5/365।

ماں کے پاؤں دبائے پھر باپ کے، وعلیٰ ھذا القیاس، نہ یہ کہ اگر والدین میں باہم تنازع ہو تو ماں کا ساتھ دے کر معاذ اللہ باپ کے درپے ایذا ہو یا اس پر کسی طرح درشتی کرے یا اسے جواب دے یا بے ادبانہ آنکھ ملا کر بات کرے، یہ سب باتیں حرام اور اللہ عزوجل کی معصیت ہیں، نہ ماں کی اطاعت ہے نہ باپ کی، تو اسے ماں باپ میں سے کسی کا ایسا ساتھ دینا ہرگز جائز نہیں، وہ دونوں اس کی جنت و نار ہیں، جسے ایذا دے گا دوزخ کا مستحق ہوگا والعیاذ باللہ، معصیتِ خالق میں کسی کی اطاعت نہیں، اگر مثلاً ماں چاہتی ہے کہ یہ باپ کو کسی طرح کا آزار پہنچائے اور یہ نہیں مانتا تو وہ ناراض ہوتی ہے، ہونے دے اور ہرگز نہ مانے، ایسے ہی باپ کی طرف سے ماں کے معاملہ میں، ان کی ایسی ناراضیاں کچھ قابل لحاظ نہ ہوں گی کہ یہ ان کی نری زیادتی ہے کہ اس سے اللہ تعالیٰ کی نافرمانی چاہتے ہیں بلکہ ہمارے علمائے کرام نے یوں تقسیم فرمائی ہے کہ خدمت میں ماں کو ترجیح ہے جس کی مثالیں ہم لکھ آئے ہیں، اور تعظیم باپ کی زائد ہے کہ وہ اس کی ماں کا بھی حاکم و آقا ہے، عالمگیری میں ہے:

عربی عبارت	**اردو ترجمہ**
اذا تعذر علیه جمع مراعاة حق الوالدین بأن یتأذی احدهما بمراعاة الآخر یرجح حق الاب فیما یرجع الی التعظیم والاحترام وحق الام فیما یرجع الی الخدمة والانعام وعن علاء الائمة الحمامي قال مشائخنا رحمهم الله تعالی الاب یقدم علی الام في	جب آدمی کے لئے والدین میں سے ہر ایک کے حق کی رعایت مشکل ہو جائے مثلاً ایک کی رعایت سے دوسرے کو تکلیف پہنچتی ہے تو تعظیم و احترام میں والد کے حق کی رعایت کرے اور خدمت میں والدہ کے حق کی۔ علامہ حمامی نے فرمایا ہمارے امام فرماتے ہیں کہ احترام میں باپ مقدم ہے اور خدمت میں والدہ مقدم

عربی عبارت	اردو ترجمہ
الاحترام والام في الخدمة حتى لو دخلا عليه في البيت يقوم للاب ولو سألا منه ماء ولم يأخذ من يده احدهما فيبدأ بالام كذا في القنية، والله سبحنه	ہوگی حتیٰ کہ اگر گھر میں دونوں اس کے پاس آئے ہیں تو باپ کی تعظیم کے لئے کھڑا ہو، اور اگر دونوں نے اس سے پانی مانگا اور کسی نے اس کے ہاتھ سے پانی نہیں پکڑا تو پہلے والدہ کو پیش کرے، اسی طرح قنیہ میں ہے۔ واللہ سبحنہ

۱ فتاویٰ ہندیہ بندیہ کتاب الکراھیۃ الباب السادس والعشرون نورانی کتب خانہ پشاور ۳۶۵/۵

Fatawa Razawiya Volume 24

And Allah Almighty knows best, and His knowledge, may His Majesty be glorified, is most precise. And Allah Almighty knows best, and His knowledge, may His Majesty be glorified, is most precise. (T)

Fourth Problem: Between husband and wife, whose right is greater and to what extent?

The Answer: Among husband and wife, many rights are obligatory on each for the other. Whoever does not fulfill them will be caught in their own sin. If one party does not fulfill a right, the other cannot use that as a justification to nullify their duty; however, for those rights which are dependent on a right from the other party, if one abandons that foundational right, the other may abandon the dependent rights. For example, a woman's maintenance and sustenance are in exchange for her remaining committed at the husband's home; if she leaves his home unjustly, she will not receive anything until she returns. In short, regarding being obligatory, being demandable, and being sinful for non-fulfillment without a valid Sharia reason, the rights of husband and wife are equal. Yes, the husband's rights over the wife are numerous, and the obligation for them is more severe and emphasized. We have already written the Hadith that the greatest right over a woman is that of her husband, meaning even more than her parents. And the greatest right over a man is that of his mother, meaning the wife's right is less than that, and even less than the father's. "That is because of what Allah has bestowed upon some of them over others." (This is Allah Almighty's grace upon some over others. T) And Allah Almighty knows best.

Problem 162: Asked by Munshi Shaukat Ali Sahib Faruqi, 14 Rabi' al-Akhir 1320 AH What do you say, may Allah Almighty have mercy on you, regarding this matter: (May Allah Almighty's mercy be upon you, what is your guidance regarding this matter? T) after the death of parents, what rights do the parents still have over the children? Clarify with the Book, you will be rewarded with the reward.

The Answer: (1) The very first right after death is the preparation of their funeral, bathing (Ghusl), shrouding (Kafan), funeral prayer, and burial, and observing the Sunnahs and recommended acts (Mustahabbat) in these tasks, through which every goodness, blessing, mercy, and expansiveness is hoped for them. (2) Always making prayers (Dua) and seeking forgiveness (Istighfar) for them; never being negligent in this. (3) Continually sending the rewards of charity (Sadaqah), donations, and

righteous deeds to them, not falling short in this according to one's capacity. Offer prayers for them along with your own prayers, keep fasts for them along with your own fasts; rather, whatever good deed you do, bestow its reward upon them and all Muslims, as for all of them the reward...

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है और उसका इल्म, उसकी महिमा महिमामंडित हो, सबसे कामिल (पूर्ण) है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है और उसका इल्म, उसकी महिमा महिमामंडित हो, सबसे कामिल है। (त)

चौथा मसला: पति और पत्नी के बीच किसका अधिकार अधिक है और कहाँ तक?

अल-जवाब: पति और पत्नी में हर एक के दूसरे पर बहुत से अधिकार वाजिब (अनिवार्य) हैं। उनमें से जो इन्हें पूरा नहीं करेगा, वह अपने गुनाह में गिरफ्तार होगा। अगर एक हक अदा न करे तो दूसरा उसे ढाल बनाकर उसके हक को खत्म नहीं कर सकता, सिवाय उन अधिकारों के जो दूसरे के किसी अधिकार पर आधारित हों। अगर वह अपने ऐसे अधिकार को छोड़ दे, तो दूसरा उस पर आधारित अधिकारों को छोड़ सकता है। जैसे औरत का नान-ओ-नफ़क़ा (खर्च-पानी) उसके शौहर के यहाँ पाबंद रहने का बदला है। अगर वह बिना किसी जायज़ वजह के वहाँ से चली जाएगी, तो जब तक वापस नहीं आएगी, उसे कुछ नहीं मिलेगा। सारांश यह कि वाजिब होने, मुतालबा (मांग) होने और बिला शरई वजह के अदा न करने से गुनहगार होने में तो पति और पत्नी के अधिकार बराबर हैं। हाँ, शौहर के अधिकार औरत पर बहुत ज़्यादा हैं और उनकी अनिवार्यता भी बहुत सख्त और ताकीदी है। हम इस पर हदीस लिख चुके हैं कि औरत पर सबसे बड़ा हक उसके शौहर का है यानी माँ-बाप से भी ज़्यादा। और मर्द पर सबसे बड़ा हक उसकी माँ का है यानी बीवी का हक उससे बल्कि बाप से भी कम है। "यह अल्लाह का कुछ लोगों पर कुछ की तुलना में दिया गया फ़ज़्ल (अनुग्रह) है।" (त) और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला १६२: मुंशी शौकत अली साहब फ़ारूक़ी द्वारा प्रेषित, १४ रबी-उल-आख़िर १३२० हिजरी। आप पर अल्लाह तआला की रहमत हो, इस मसले में आपका क्या इरशाद है: (आप पर अल्लाह तआला की रहमत हो, इस मसले के बारे में आपकी क्या राय है? त) कि वालिदैन (माता-पिता) के इंतकाल के बाद औलाद पर वालिदैन का क्या अधिकार रहता है? किताब (क़ुरआन व हदीस) की रोशनी में वाज़ेह करें, आपको इसका सवाब (पुण्य) मिलेगा।

अल-जवाब: (१) वफ़ात के बाद सबसे पहला हक उनके जनाज़े की तजहीज़-ओ-तकफ़ीन (तैयारी), ग़ुस्ल, कफ़न, नमाज़-ए-जनाज़ा और दफ़न है और इन कामों में सुन्नतों और मुस्तहब कामों का लिहाज़ रखना जिससे उनके लिए हर ख़ूबी, बरकत, रहमत और कुशादगी की उम्मीद हो। (२) उनके

लिए हमेशा दुआ और इस्तिग़फ़ार (क्षमा प्रार्थना) करते रहना, इससे कभी लापरवाही न करना। (३) सदक़ा-ओ-खैरात और नेक आमाल का सवाब उन्हें पहुँचाते रहना, अपनी हैसियत के मुताबिक़ इसमें कमी न करना। अपनी नमाज़ के साथ उनके लिए भी नमाज़ पढ़ना, अपने रोज़ों के साथ उनके वास्ते भी रोज़े रखना, बल्कि जो भी नेक काम करें सबका सवाब उन्हें और तमाम मुसलमानों को बख्श देना कि उन सबको सवाब...

पेज ३९२ ऑफ़ ७२०

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

وتعالٰی اعلم وعلمہ جل مجدہ احکم۔ وتعالٰی اعلم وعلمہ جل مجدہ احکم۔ (ت)

مسئلہ رابعہ: مابین زن و شوہر حق زیادہ کس کا ہے اور کہاں تک؟

الجواب: زن و شوہر میں ہر ایک کے دوسرے پر حقوق کثیرہ واجب ہیں ان میں جو بجانہ لائے گا اپنے گناہ میں گرفتار ہوگا، اگر ایک ادائے حق نہ کرے تو دوسرا اسے دستاویز بنا کر اس کے حق کو ساقط نہیں کر سکتا مگر وہ حقوق کہ دوسرے کے کسی حق پر مبنی ہوں اگر یہ اس کا ایسا حق ترک کرے وہ دوسرا اس کے یہ حقوق کہ اس پر مبنی تھے ترک کر سکتا ہے جیسے عورت کا نان ونفقہ کہ شوہر کے یہاں پابند رہنے کا بدلہ ہے، اگر ناحق اس کے یہاں سے چلی جائے گی جب تک واپس نہ آئے گی کچھ نہ پائے گی، غرض واجب ہونے مطالبہ ہونے، بے وجہ شرعی ادا نہ کرنے سے گنہگار ہونے میں تو حقوق زن و شوہر برابر ہیں ہاں شوہر کے حقوق عورت پر بکثرت ہیں اور اس پر وجوب بھی اشد و آکد، ہم اس پر حدیث لکھ چکے کہ عورت پر سب سے بڑا حق شوہر کا ہے یعنی ماں باپ سے بھی زیادہ، اور مرد پر سب سے بڑا حق ماں کا ہے یعنی زوجہ کا حق اس سے بلکہ باپ سے بھی کم ، ذٰلك بمافضل الله بعضهم على بعض (یہ اللہ تعالٰی کا بعض پر بعض کا فضل ہے۔ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۶۲: مسئولہ منشی شوکت علی صاحب فاروقی ۱۴ ربیع الآخر ۱۳۲۰ھ ماقولکم رحمکم اللہ تعالی اندریں مسئلہ (آپ پر اللہ تعالٰی کی رحمت ہو، اس مسئلہ کے بارے میں آپ کا کیا ارشاد ہے۔ ت) کہ بعد فوت ہو جانے والدین کے اولاد پر کیا حق والدین کا رہتا ہے؟ بینوا بالکتاب توجروا بالثواب۔

الجواب: (۱) سب سے پہلا حق بعد موت ان کے جنازے کی تجہیز، غسل و کفن و نماز و دفن ہے اور ان کاموں میں سنن و مستحبات کی رعایت جس سے ان کے لئے ہر خوبی و برکت و رحمت و وسعت کی امید ہو۔ (۲) ان کے لئے دعا و استغفار ہمیشہ کرتے رہنا اس سے کبھی غفلت نہ کرنا۔ (۳) صدقہ و خیرات و اعمالِ صالحہ کا ثواب انہیں پہنچاتے رہنا، حسب طاقت اس میں کمی نہ کرنا، اپنی نماز کے ساتھ ان کے لئے بھی نماز پڑھنا، اپنے روزوں کے ساتھ ان کے واسطے بھی روزے رکھنا بلکہ جو نیک کام کرے سب کا ثواب انہیں اور سب مسلمانوں کو بخش دینا کہ ان سب کو ثواب

...will reach them, and there will be no reduction in their reward; rather, it will increase significantly.

(4) If they owe a debt to someone, strive with the utmost haste and effort to pay it off. Consider paying their debt from your own wealth a blessing in both worlds. If you lack the means, seek assistance from other relatives, then from other charitable people in paying it.

(5) If any obligatory acts (fard) remain unfulfilled by them, strive to fulfill them to the best of your ability. If they haven't performed Hajj, perform Hajj on their behalf or arrange for Hajj-e-Badal. If Zakāt or Ushr is demanded from them, pay it. If any prayers (Salah) or fasts remain, give their expiation (kaffara), and similarly, make every effort to clear them of their responsibilities in every way.

(6) Strive as much as possible to execute any lawful Shari'i will (wasiyyat) they have made, even if it is not legally binding upon you according to Sharia, and even if it is a burden on yourself. For example, if they willed half of their property to a non-inheriting relative or a total stranger, though according to Sharia it is not enforceable for more than one-third without the heirs' consent, it is appropriate for the children to follow their will and prioritize fulfilling their wishes over their own desires.

(7) Keep their oaths respected even after their death. For instance, if the parents had sworn that "my son shall not go to such a place" or "shall not meet such a person" or "shall do such a task", then after them, do not think that they are no longer here so there is no need to heed their oath; rather, remain as bound by it as you were during their lifetime, as long as there is no Shari'i impediment. And it is not just about oaths; in every permissible matter, remain bound by their wishes even after death.

(8) Visit their graves every Friday, recite Surah Yaseen there in such a voice that they can hear, and convey its reward to their souls. Whenever you pass by their grave on your way, do not pass without offering Salaam and Fatiha.

(9) Continue treating their relatives well throughout your life.

(10) Maintain friendships with their friends and always treat them with honor and respect.

(11) Never abuse someone else's parents, lest they abuse yours in return.

(12) The most severe, most general, and most constant right is to never cause them pain in the grave by committing a sin. News of all deeds reaches parents; they rejoice upon seeing good deeds, and their faces glow and shine with joy, and they are grieved upon seeing sins, and it causes trauma to their hearts. It is not the right of parents to be caused grief even in the grave.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

...पहुंच जाएगा और उसके सवाब में कोई कमी नहीं होगी, बल्कि बहुत तरक्की पाएगा।

(4) यदि उन पर किसी का कोई ऋण हो, तो उसे चुकाने में यथासंभव शीघ्रता और प्रयास करें। अपने धन से उनका ऋण चुकाना दोनों लोकों का सौभाग्य समझें। यदि आपमें सामर्थ्य न हो, तो अन्य रिश्तेदारों और फिर अन्य नेक लोगों से इसे चुकाने में सहायता लें।

(5) यदि उन पर कोई फ़र्ज़ (अनिवार्य कार्य) शेष रह गया हो, तो अपनी सामर्थ्य अनुसार उसे पूरा करने का प्रयास करें। यदि उन्होंने हज न किया हो, तो उनकी ओर से हज करें या हज-ए-बदल करवाएं। यदि ज़कात या उश्र उन पर बकाया हो, तो उसे अदा करें। यदि नमाज़ या रोज़ा शेष हो, तो उसका कफ़्फ़ारा दें। इसी तरह हर संभव तरीके से उन्हें उनके दायित्वों से मुक्त कराने के लिए संघर्ष करें।

(6) उन्होंने जो भी वैध शरई वसीयत की हो, उसे लागू करने का यथासंभव प्रयास करें, चाहे वह शरीयत के अनुसार आप पर अनिवार्य न हो और चाहे वह आप पर भारी पड़े। उदाहरण के लिए, यदि उन्होंने अपनी आधी संपत्ति किसी गैर-वारिस रिश्तेदार या अजनबी के लिए वसीयत की हो, तो हालांकि शरीयत में वारिसों की अनुमति के बिना एक-तिहाई से अधिक वसीयत लागू नहीं होती, लेकिन औलाद के लिए उचित है कि वे उनकी वसीयत को मानें और उनकी खुशी पूरी करने को अपनी इच्छा पर प्राथमिकता दें।

(7) उनकी मृत्यु के बाद भी उनकी कसमों का सम्मान बनाए रखें। उदाहरण के लिए, यदि माता-पिता ने कसम खाई थी कि मेरा बेटा फलां जगह नहीं जाएगा या फलां से नहीं मिलेगा या फलां काम करेगा, तो उनके बाद यह न सोचें कि अब वे तो हैं नहीं, उनकी कसम का क्या ख्याल रखना, बल्कि उसके वैसे ही पाबंद रहें जैसे उनके जीवन में रहते थे, जब तक कि कोई शरई रुकावट न हो। और केवल कसम की बात नहीं है, हर जायज़ मामले में मृत्यु के बाद भी उनकी इच्छा का पाबंद रहना चाहिए।

(8) प्रत्येक शुक्रवार को उनकी कब्र की ज़ियारत के लिए जाएं, वहां सूरह यासीन इतनी आवाज़ में पढ़ें कि वे सुनें और उसका सवाब उनकी रूह को पहुंचाएं। रास्ते में जब भी उनकी कब्र आए, तो बिना सलाम और फ़ातिहा के न गुज़रें।

(9) उनके रिश्तेदारों के साथ जीवन भर नेक व्यवहार करते रहें।

(10) उनके दोस्तों के साथ दोस्ती निभाएं और हमेशा उनका सम्मान और सत्कार करें।

(11) कभी किसी के माता-पिता को बुरा न कहकर जवाब में उन्हें बुरा न कहलवाना।

(12) सबसे कठिन, सबसे व्यापक और निरंतर अधिकार यह है कि कभी कोई गुनाह करके उन्हें कब्र में कष्ट न पहुंचाएं। औलाद के सभी कार्यों की खबर माता-पिता तक पहुँचती है। नेकियाँ देखकर वे खुश होते हैं और उनका चेहरा प्रसन्नता से चमकता और दमकता है, और गुनाह देखकर वे दुखी होते हैं और उनके हृदय को ठेस पहुँचती है। माता-पिता का यह अधिकार नहीं है कि उन्हें कब्र में भी दुख पहुँचाया जाए।

پہنچ جائے گا اور اس کے ثواب میں کمی نہ ہو گی بلکہ بہت ترقیاں پائے گا۔

(۴) ان پر کوئی قرض کسی کا ہو تو اس کے ادا میں حد درجہ کی جلدی و کوشش کرنا اور اپنے مال سے ان کا قرض ادا ہونے کو دونوں جہاں کی سعادت سمجھنا، آپ قدرت نہ ہو تو اور عزیزوں قریبوں پھر باقی اہل خیر سے اس کی ادا میں امداد لینا۔

(۵) ان پر کوئی فرض رہ گیا تو بقدر قدرت اس کے ادا میں سعی بجا لانا، حج نہ کیا ہو تو ان کی طرف سے حج کرنا یا حج بدل کرانا، زکوٰۃ یا عشر کا مطالبہ ان پر رہا تو اسے ادا کرنا، نماز یا روزہ باقی ہو تو اس کا کفارہ دینا و علی ہذا القیاس ہر طرح ان کی براءت ذمہ میں جدو جہد کرنا۔

(۶) انہوں نے جو وصیت جائز ہ شرعیہ کی ہو حتی الامکان اس کے نفاذ میں سعی کرنا اگرچہ شرعاً اپنے اوپر لازم نہ ہوا گرچہ اپنے نفس پر بار ہو مثلاً وہ نصف جائداد کی وصیت اپنے کسی عزیز غیر وارث یا اجنبی محض کے لئے کر گئے تو شرعاً تہائی مال سے زیادہ میں بے اجازت وارثان نافذ نہیں مگر اولاد کو مناسب ہے کہ ان کی وصیت مانیں اور ان کی خوشخبری پوری کرنے کو اپنی خواہش پر مقدم جانیں۔

(۷) ان کی قسم بعد مرگ بھی بچی ہی رکھنا مثلاً ماں باپ نے قسم کھائی تھی کہ میرا بیٹا فلاں جگہ نہ جائے گا یا فلاں سے نہ ملے گا یا فلاں کام کرے گا تو ان کے بعد یہ خیال نہ کرنا کہ اب وہ تو نہیں ان کی قسم کا خیال نہیں بلکہ اس کا ویسے ہی پابند رہنا جیسا ان کی حیات میں رہتا جب تک کوئی حرج شرعی مانع نہ ہو اور کچھ قسم ہی پر موقوف نہیں ہر طرح امور جائزہ میں بعد مرگ بھی ان کی مرضی کا پابند رہنا۔

(۸) ہر جمعہ کو ان کی زیارت قبر کے لئے جانا، وہاں یٰس شریف پڑھنا ایسی آواز سے کہ وہ سنیں اور اس کا ثواب ان کی روح کو پہنچانا، راہ میں جب کبھی ان کی قبر آئے بے سلام وفاتحہ نہ گزرنا۔

(۹) ان کے رشتہ داروں کے ساتھ عمر بھر نیک سلوک کئے جانا۔

(۱۰) ان کے دوستوں سے دوستی نباہنا ہمیشہ ان کا اعزاز واکرام رکھنا۔

(۱۱) کبھی کسی کے ماں باپ کو برا کہہ کر جواب میں انہیں برا نہ کہلوانا۔

(۱۲) سب میں سخت تر وعام تر ومدام تر یہ حق ہے کہ کبھی کوئی گناہ کر کے انہیں قبر میں ایذا نہ پہنچانا، اس کے سب اعمال کی خبر ماں باپ کو پہنچتی ہے، نیکیاں دیکھتے ہیں تو خوش ہوتے ہیں اور ان کا چہرہ فرحت سے چمکتا اور دمکتا ہے، اور گناہ دیکھتے ہیں تو رنجیدہ ہوتے ہیں اور ان کے قلب پر صدمہ ہوتا ہے، ماں باپ کا یہ حق نہیں کہ انہیں قبر میں بھی رنج پہنچائے۔

Fatawa Razawiyya - Volume 24

May Allah, the Forgiving, the Merciful, the Mighty, the Generous, whose glory is exalted, by the grace of His Compassionate and Merciful one, upon whom and his family be the best of blessings and peace, grant us and all Muslims the tawfiq (guidance) for good deeds and protect us from sins. May He always bring light and joy to the graves of our elders, for He is All-Powerful and we are helpless, He is Self-Sufficient and we are needy. Allah is sufficient for us, and He is the best Disposer of affairs, the best Protector, and the best Helper. There is no power and no strength except with Allah, the Most High, the Most Great. And may Allah Almighty send blessings upon the Intercessor, the Exalted, the All-Forgiving, the Generous, the Compassionate, the Merciful, our master Muhammad, and upon all his family and companions. Ameen, and praise be to Allah, the Lord of the worlds.

Now, let me mention some of those Hadiths from which this humble servant has extracted these rights, sufficient for the purpose:

Hadith 1: An Ansari (may Allah be pleased with him) came to the noble presence of the radiant Prophet, the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him), and asked: O Messenger of Allah! After the death of parents, is there any way left to do good to them that I may perform? He replied:

[Arabic Column]: Yes, four things: Praying for them, seeking forgiveness for them, fulfilling their pledges after them, honoring their friends, and maintaining family ties that are only linked through them. This is what remains of being good to them after their death. - Narrated by Ibn an-Najjar[1] from Abu Usaid as-Sa'idi (may Allah be pleased with him) with the story, and narrated by al-Bayhaqi[2] in his Sunan from him (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: Nothing remains for a child to do good for a father except four things: praying for him, supplicating for him, fulfilling his pledge after him, maintaining his family ties, and honoring his friend.

[Urdu Column]: Yes, there are four things: praying for them, and seeking prayer and forgiveness for them, and fulfilling their will, and honoring their friends, and maintaining those kinship ties which are only through them with good treatment; this is the goodness that remains to be done with them after their death. (Ibn an-Najjar narrated from Abu Usaid as-Sa'idi (may Allah be pleased with him) along with the story. And al-Bayhaqi narrated it in his Sunan, and al-Bayhaqi in his Sunan narrated from him (may Allah be pleased with him), he said: The Messenger of Allah

(peace and blessings of Allah be upon him) said: There are four things for being good to a father: praying for him and seeking prayer and forgiveness for him, fulfilling his will, being kind to his relatives, and respecting his friends. - T)

[1] Kanz al-Ummal, with reference to Ibn an-Najjar, Hadith 45932, Mu'assasah al-Risalah, Beirut, 9/579. [2] Al-Sunan al-Kubra, Book of Funerals, Chapter on what is not recommended for the guardian of the deceased, etc., Dar Sadir, Beirut, 4/61 and 62.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 24

अल्लाह ग़फ़ूर रहीम अज़ीज़ करीम जल जलालाहु, अपने रऊफ़ रहीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और उनकी आल पर अफ़ज़ल और तस्लीम के सदक़े में हम सब मुसलमानों को नेकियों की तौफ़ीक़ दे, गुनाहों से बचाए, हमारे अकाबिर की क़ब्रों में हमेशा नूर व सरूर पहुँचाए, क्योंकि वह क़ादिर है और हम आजिज़, वह ग़नी है और हम मोहताज। और हमें अल्लाह काफ़ी है और वह बेहतरीन कार्यसाधक, बेहतरीन मालिक और बेहतरीन मददगार है। और कोई ताक़त और कोई क़ुव्वत नहीं है सिवाय अल्लाह अली अल-अज़ीम की मदद के। और अल्लाह तआला दुरूद व सलाम भेजे शफ़ीअ, रफ़ीअ, अफ़ू करीम, रऊफ़ रहीम हमारे आक़ा मुहम्मद और उनकी आल और उनके तमाम सहाबा पर। आमीन और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है।

अब वह हदीसें जिनसे फ़क़ीर ने ये हुक़ूक़ अख़ज़ (निकाले) किए हैं, उनमें से कुछ ज़रूरत के मुताबिक़ ज़िक्र करूँ

हदीस 1: कि एक अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हुज़ूर पुरनूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह-ए-अक़दस में हाज़िर होकर अर्ज़ की: या रसूल अल्लाह! माँ-बाप के इंतक़ाल के बाद कोई तरीक़ा उनके साथ नेकी का बाक़ी है जिसे मैं बजा लाऊँ फ़रमाया:

[अरबी कॉलम]: हाँ, चार बातें हैं: उन पर नमाज़, उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ, उनके बाद उनके वादे (वसीयत) को पूरा करना, उनके दोस्तों का एहतराम करना और उन रिश्तेदारों के साथ अच्छा बर्ताव करना जिनसे रिश्ता सिर्फ उनके कारण हो। तो ये वह नेकियाँ हैं जो उनकी मौत के बाद उनके साथ करने के लिए बाक़ी हैं। - इसे इब्ने नज्जार[1] ने अबी उसैद साअदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से क़िस्से के साथ रिवायत किया, और बैहक़ी[2] ने अपनी सुनन में उनसे रिवायत किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: औलाद के लिए वालिद के साथ नेकी करने की सिर्फ चार बातें बाक़ी हैं: उस पर नमाज़ पढ़ना, उसके लिए दुआ व मग़फ़िरत करना, उसके बाद उसकी वसीयत नाफ़िज़ करना, उसके रिश्तेदारों के साथ नेक बर्ताव करना और उसके दोस्तों का एहतराम करना।

[उर्दू कॉलम]: हाँ चार बातें हैं: उन पर नमाज़, और उनके लिए दुआ, मग़फ़िरत, और उनकी वसीयत नाफ़िज़ (लागू) करना, और उनके दोस्तों की बुज़ुर्गदाश्त (सम्मान), और जो रिश्ता सिर्फ उन्हीं की जानिब से हो नेक बर्ताव से उसका क़ायम रखना, ये वो नेकी है कि उनकी मौत के बाद उनके साथ

करनी बाक़ी है (इब्ने नज्जार ने अबी उसैद साअदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से क़िस्से के साथ रिवायत किया। और बैहक़ी ने अपनी सुनन में उन्हें रिवायत किया, और बैहक़ी ने अपनी सुनन में उन्हें रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया, कहा फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने: वालिद के साथ नेकी की चार बातें हैं: उस पर नमाज़ पढ़ना और उसके लिए दुआ मग़फ़िरत करना, उसकी वसीयत नाफ़िज़ करना, उसके रिश्तेदारों से नेक बर्ताव करना, उसके दोस्तों का एहतराम करना। त)

[1] कन्ज़ अल-उम्माल, इब्ने नज्जार के हवाले से, हदीस 45932, मुअस्ससाह अर-रिसाला, बेरुत, 9/579। [2] अस-सुनन अल-कुबरा, किताब अल-जनाइज़, बाब मा ला युस्तहब्बु लिवली अल-मय्यित इल्ख, दार सादिर, बेरुत, 4/61 और 62।

اللہ غفور رحیم عزیز کریم جل جلالہ صدقہ اپنے رؤف رحیم علیہ وعلیٰ آلہ افضل والتسلیم کا ہم سب مسلمانوں کو نیکیوں کی توفیق دے گناہوں سے بچائے، ہمارے اکابر کی قبروں میں ہمیشہ نور و سرور پہنچائے کہ وہ قادر ہے اور ہم عاجز، وہ غنی ہے ہم محتاج، وحسبنا اللہ ونعم الوکیل نعم المولیٰ ونعم النصیر ولاحول ولاقوۃ الاباللہ العلی العظیم، وصلی اللہ تعالیٰ علی الشفیع علی الرفیع العفو الکریم الرؤف الرحیم سیّدنا محمّد وآلہ واصحابہ اجمعین اٰمین والحمد للہ رب العلمین۔ اب وہ حدیثیں جن سے فقیر نے یہ حقوق استخراج کئے ان میں سے بعض بقدر کفایت ذکر کروں: حدیث ۱: کہ ایک انصاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے خدمتِ اقدس حضور پرنور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم میں حاضر ہو کر عرض کی: یا رسول اللہ ! ماں باپ کے انتقال کے بعد کوئی طریقہ ان کے ساتھ نکوئی کا باقی ہے جسے میں بجالاؤں۔ فرمایا:

نعم اربعة الصلاة عليهما والاستغفار لهما وانفاذ عهدهما من بعدهما واكرام صديقهما وصلة الرحم التى لا رحم لك الا من قبلهما فهذا الذى بقى من برهما بعد موتهما - رواه ابن النجار[1] عن ابى اسيد الساعدى رضى الله تعالى عنه مع القصة، ورواه البيهقى[2] في سننه عنه رضى الله تعالیٰ عنہ قال قال رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم لايبقى للولد من بر الوالد الا اربع الصلوة عليه والدعاء له وانفاذ عهده من بعده وصلة رحمه واكرام صديقه۔

ہاں چار باتیں ہیں: ان پر نماز، اور ان کے لئے دعا، مغفرت، اور ان کی وصیت نافذ کرنا، اور ان کے دوستوں کی بزرگ داشت، اور جو رشتہ صرف انہیں کی جانب سے ہو نیک برتاؤ سے اس کا قائم رکھنا، یہ وہ نکوئی ہے کہ ان کی موت کے بعد ان کے ساتھ کرنی باقی ہے (ابن نجار نے ابی اسید ساعدی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مع قصہ کے روایت کیا۔ اور بیہقی نے اپنی سنن میں انہیں

روایت کیا، اور بیہقی نے اپنی سنن میں انہیں رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا، کہا فرمایا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے: والد کے ساتھ نیکی کی چار باتیں ہیں: اس پر نماز پڑھنا اور اس کے لئے دعا مغفرت کرنا، اس کی وصیت نافذ کرنا، اس کے رشتہ داروں سے نیک برتاؤ کرنا، اس کے دوستوں کا احترام کرنا۔ ت)

[1] کنز العمال بحوالہ ابن النجار حدیث ۴۵۹۳۲ موسسۃ الرسالہ بیروت ۹/ ۵۷۹ [2] السنن الکبریٰ کتاب الجنائز باب مالا یستحب لولی المیت الخ دار صادر بیروت ۴/ ۶۱ و ۶۲

Fatawa Razawiya, Volume 24

Hadith 2: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Seeking forgiveness by the child for his father after death is an act of righteousness." - Narrated by Ibn al-Najjar from Abi Usaid bin Malik bin Zurarah (may Allah be pleased with him). Translation: It is part of good treatment towards parents that children seek forgiveness for them after their death. (Ibn al-Najjar narrated it from Abi Usaid bin Malik bin Zurarah, may Allah be pleased with him. T)

Hadith 3: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "When a servant stops praying for his parents, his sustenance is cut off." - Narrated by al-Tabarani in 'al-Tarikh' and al-Daylami from Anas bin Malik (may Allah be pleased with him). Translation: When a person stops praying for his parents, his sustenance is severed. (Al-Tabarani narrated it in 'al-Tarikh' and al-Daylami from Anas bin Malik, may Allah be pleased with him. T)

Hadith 4 & 5: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "When any of you gives voluntary charity, let him do it on behalf of his parents, so that they receive its reward and nothing is diminished from his own reward." - Narrated by al-Tabarani in 'al-Awsat' and Ibn 'Asakir from Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them both), and similarly by al-Daylami in 'Musnad al-Firdaws' from Mu'awiyah ibn Haydah al-Qushayri (may Allah be pleased with him). Translation: When one of you performs optional charity, he should do it on behalf of his parents so that they receive the reward and there is no reduction in his own reward. (This Hadith was narrated by al-Tabarani in 'al-Awsat' and by Ibn 'Asakir from Abdullah bin Amr, may Allah be pleased with them both, and similarly by al-Daylami in 'Musnad al-Firdaws' from Mu'awiyah ibn Haydah al-Qushayri, may Allah be pleased with him. T)

1. Kanz al-Ummal with reference to Ibn al-Najjar, Hadith 45449, Muassasat al-Risalah Beirut, 16/463
2. Kanz al-Ummal al-Tabarani in al-Tarikh and al-Daylami from Anas, Hadith 45556, Muassasat al-Risalah Beirut, 16/482
3. Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 2946, Maktabat al-Ma'arif Riyadh, 7/279
4. Al-Jami' al-Saghir with reference to Ibn 'Asakir, Hadith 9337, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut, 2/485
5. Al-Firdaws bima'thur al-khitab from Mu'awiyah bin Haydah, Hadith 2322, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut, 2/109

फतावा रज़विया, जिल्द 24

हदीस 2: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "मृत्यु के बाद पिता के लिए संतान का क्षमा प्रार्थना करना नेक व्यवहार (नेकी) में से है।" - इसे इब्न अन-नज्जार ने अबी उसैद बिन मालिक बिन ज़रारा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। अनुवाद: माँ-बाप के साथ नेक सुलूक में से यह बात है कि औलाद उनके बाद उनके लिए मगफिरत (क्षमा) की दुआ करे। (इब्न अन-नज्जार ने अबी उसैद बिन मालिक बिन ज़रारा रज़ियल्लाहु अन्हु से इसे रिवायत किया। त)

हदीस 3: रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "जब बंदा माता-पिता के लिए दुआ करना छोड़ देता है, तो उसका रिज़्क़ (रोज़ी) काट दिया जाता है।" - इसे तबरानी ने 'तारीख' में और दैलमी ने अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। अनुवाद: आदमी जब माँ-बाप के लिए दुआ छोड़ देता है तो उसका रिज़्क़ कट जाता है। (तबरानी ने तारीख में और दैलमी ने अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से इसे रिवायत किया। त)

हदीस 4 और 5: हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "जब तुम में से कोई स्वेच्छा से दान (नफ़्ल खैरात) करे, तो उसे अपने माता-पिता की ओर से करना चाहिए, ताकि उसका सवाब उन्हें मिले और उसके अपने सवाब में कोई कमी न हो।" - इसे तबरानी ने 'औसत' में और इब्न असाकिर ने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया है, और इसी तरह दैलमी ने 'मुसनद अल-फिरदौस' में मुआविया इब्न हैदा अल-कुशैरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। अनुवाद: जब तुम में से कोई व्यक्ति कुछ नफ़्ल खैरात करे, तो चाहिए कि उसे अपने माँ-बाप की तरफ से करे कि उसका सवाब उन्हें मिलेगा और उसके सवाब में से कुछ न घटेगा। (इस हदीस को तबरानी ने औसत में और इब्न असाकिर ने अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया और ऐसे ही दैलमी ने मुसनद अल-फिरदौस में मुआविया इब्न हैदा कुशैरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया। त)

1. कंज अल-उम्माल इब्न अन-नज्जार के हवाले से, हदीस 45449, मुअस्ससतुर् रसाला बेरूत, 16/463
2. कंज अल-उम्माल तबरानी फी अल-तारीख वल दैलमी अन अनस, हदीस 45556, मुअस्ससतुर् रसाला बेरूत, 16/482
3. अल-मुअजम अल-औसत, हदीस 2946, मकतबतुल् मारिफ रियाज़, 7/279

4. अल-जामी अल-सगीर इब्न असाकिर के हवाले से, हदीस 9337, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत, 2/485
5. अल-फिरदौस बमासूर अल-खिताब मुआविया बिन हैदा से, हदीस 2322, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत, 2/109

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

حدیث ۲: کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: استغفار الولد لابیه من بعد الموت من البر-رواه ابن النجار ۱ عن ابی اسید بن مالك بن زرارة رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔ ماں باپ کے ساتھ نیک سلوک سے یہ بات ہے کہ اولاد ان کے بعد ان کے لئے دعائے مغفرت کرے (ابن النجار نے ابی اسید بن مالک بن زراره رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اسے روایت کیا۔ت)

حدیث ۳: کہ فرماتے ہیں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم : اذا ترك العبد الدعاء للوالدین فانه ینقطع عنه الرزق- رواه الطبراني ۲ في التاریخ والدیلمي عن انس بن مالك رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔ آدمی جب ماں باپ کے لئے دعا چھوڑ دیتا ہے اس کا رزق قطع ہو جاتا ہے (طبرانی نے تاریخ میں اور دیلمی نے انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اسے روایت کیا۔ت)

حدیث ۴ و ۵: کہ فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم : اذا تصدق احدکم بصدقة تطوعاً فلیجعلها عن ابویه فیکون لهما اجرها ولا ینقص من اجره شیئاً۔ رواه الطبراني في الاوسط ۳ وابن عساکر ۴ عن عبد اللہ بن عمر ورضی اللہ تعالیٰ عنہما ونحوه الدیلمي في مسند الفردوس ۵ عن معویة ابن حیدة القشیری رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔ جب تم سے کوئی شخص کچھ نفل خیرات کرے تو چاہئے کہ اسے اپنے ماں باپ کی طرف سے کرے کہ اس کا ثواب انہیں ملے گا اور اس کے ثواب میں سے کچھ نہ گھٹے گا (اس حدیث کو طبرانی نے اوسط میں اور ابن عسا کر نے عبد اللہ بن عمر و رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کیا اور ایسے ہی دیلمی نے مسند الفردوس میں معاویہ ابن حیدہ قشیرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا۔ت)

١ كنز العمال بحواله ابن النجار حديث ۴۵۴۴۹ موسسة الرسالة بيروت ١۶/ ۴۶۳ ٢ كنز العمال الطبرانى فى التاريخ والديلمى عن انس حديث ۴۵۵۵۶ موسسة الرسالة بيروت ١۶/ ۴٨٢ ٣ المعجم الاوسط حديث ٢٩۴۶ مكتبة المعارف رياض ٧/ ٢٧٩ ۴ الجامع الصغير بحواله ابن عسا كر حديث ٩٣٣٧ دار الكتب العلميه بيروت ٢/ ۴٨۵ ۵ الفردوس بماثور الخطاب عن معاويه بن حيده حديث ٢٣٢٢ دار الكتب العلميه بيروت ٢/ ١٠٩

Hadith 6: A companion (may Allah be pleased with him) came and submitted: O Messenger of Allah! I used to treat my parents well during their lifetime; now they have passed away, what is the way to treat them well now? He replied:

[Arabic Quote]: "Indeed, among the acts of righteousness after death is that you pray for them along with your prayer and fast for them along with your fast." - Narrated by Al-Daraqutni.

[Urdu Translation]: After death, being dutiful means that along with your own prayers, you offer prayers for them as well, and along with your own fasts, you keep fasts for them too. (Narrated by Al-Daraqutni - T)

That is, when one performs some voluntary (nafl) prayers or fasts to gain reward for oneself, one should also perform some voluntary prayers on their behalf to send them the reward, or for any good deed like prayer and fasting, one should also intend for the reward to reach them so they receive it and your own reward will not be reduced either.

[Arabic Principle]: As indicated by the word "ma'a" (with), it carries two possibilities, but this is more aligned with the meaning of companionship.

[Urdu Translation]: As the word "ma'a" indicates, because both mentioned possibilities exist in it, rather the latter reason for companionship is more appropriate. (T)

It is mentioned in Al-Muhit, then Tatar-Khaniyah, then in Radd al-Muhtar:

[Arabic Quote]: It is better for one who gives voluntary charity to intend it for all believing men and women, because it reaches them and it does not decrease anything from his own reward.

[Urdu Translation]: For a person who gives voluntary charity, it is better to make the intention for all believers because the reward will reach them too and his own reward will not be lessened. (T)

Hadith 7: He (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Arabic Quote]: "Whoever performs Hajj on behalf of his parents or pays off a debt for them, Allah will resurrect him on the Day of Judgment with the righteous." - Narrated by Al-Tabarani in Al-Awsat and Al-Daraqutni.

[Urdu Translation]: Whoever performs Hajj on behalf of his parents or pays off their debt will rise with the righteous on the Day of Judgment. (Narrated by Al-Tabarani in Al-Awsat and Al-Daraqutni...)

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, citing Al-Daraqutni, Book of Hajj, Chapter on Hajj on behalf of others, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/237. 2. Radd al-Muhtar, citing Al-Daraqutni, Book of Hajj, Chapter on Hajj on behalf of others, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/236. 3. Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 7967, Maktabat al-Ma'arif, Riyadh, 8/393. 4. Sunan al-Daraqutni, Book of Hajj, Chapter on Al-Mawaqit, Hadith 110, Nashr al-Sunnah, Multan, 2/260.

जिल्द 24 (Volume 24) फ़तावा रज़विया

हदीस 6: एक सहाबी (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने हाज़िर होकर अर्ज़ की: या रसूलल्लाह! मैं अपने माता-पिता के साथ उनके जीवन में अच्छा व्यवहार करता था, अब वे मर गए हैं, उनके साथ अच्छे व्यवहार का क्या रास्ता है? फ़रमाया:

[अरबी उद्धरण]: "बेशक मौत के बाद भलाई में से यह है कि तुम अपनी नमाज़ के साथ उनके लिए भी नमाज़ पढ़ो और अपने रोज़ों के साथ उनके लिए भी रोज़े रखो।" - इसे दारकुतनी ने रिवायत किया।

[उर्दू अनुवाद]: मृत्यु के बाद नेक व्यवहार यह है कि तुम अपनी नमाज़ के साथ उनके लिए भी नमाज़ पढ़ो और अपने रोज़ों के साथ उनके लिए भी रोज़े रखो। (इसे दारकुतनी ने रिवायत किया - त)

यानी जब अपने सवाब मिलने के लिए कुछ नफ़ली (ऐच्छिक) नमाज़ पढ़े या रोज़े रखे, तो कुछ नफ़ल नमाज़ उनकी तरफ से पढ़े ताकि उन्हें सवाब पहुँचे, या नमाज़-रोज़ा जो नेक काम करे साथ ही उन्हें सवाब पहुँचने की भी नीयत कर ले कि उन्हें सवाब मिले और तुम्हारा सवाब भी कम न होगा।

[अरबी सिद्धांत]: जैसा कि "मअ" (साथ) शब्द इंगित करता है, इसके दो अर्थ हो सकते हैं, बल्कि यह सहचारिता (साथ होने) के अर्थ के अधिक निकट है।

[उर्दू अनुवाद]: जैसा कि "मअ" शब्द इस पर दलालत करता है क्योंकि इसमें उपर्युक्त दोनों संभावनाएँ हैं, बल्कि अंतिम कारण सहचारिता को अधिक उपयुक्त बनाता है। (त)

मुहीत, फिर तातार खानिया, फिर रद-उल-मुहतार में है:

[अरबी उद्धरण]: नफ़ली सदका देने वाले के लिए बेहतर यह है कि वह तमाम मोमिन पुरुषों और महिलाओं की नीयत करे क्योंकि यह उन तक पहुँचता है और उसके सवाब में कुछ भी कमी नहीं आती।

[उर्दू अनुवाद]: जो व्यक्ति नफ़ली सदका दे, उसके लिए बेहतर यह है कि तमाम ईमान वालों की नीयत करे क्योंकि उन्हें भी सवाब पहुँचेगा और उसके सवाब में भी कोई कमी नहीं होगी। (त)

हदीस 7: हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[अरबी उद्धरण]: "जो अपने माता-पिता की ओर से हज करे या उनका कर्ज़ अदा करे, अल्लाह उसे कयामत के दिन नेक लोगों के साथ उठाएगा।" - तबरानी ने अल-औसत में और दारकुतनी ने रिवायत किया।

[उर्दू अनुवाद]: जो अपने माता-पिता की तरफ़ से हज करे या उनका कर्ज़ अदा करे, वह क़यामत के दिन नेकों के साथ उठेगा। (इसे तबरानी ने औसत में और दारकुतनी ने रिवायत किया...)

पाद टिप्पणियाँ: 1. रद-उल-मुहतार, हवाला दारकुतनी, किताबुल हज, बाबुल हज अनिल ग़ैर, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 2/237 2. रद-उल-मुहतार, हवाला दारकुतनी, किताबुल हज, बाबुल हज अनिल ग़ैर, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 2/236 3. अल-मुअजम अल-औसत, हदीस 7967, मकतबतुल मआरिफ़, रियाज़, 8/393 4. सुनन अल-दारकुतनी, किताबुल हज, बाबुल मवाक़ीत, हदीस 110, नश्र-उस-सुन्ना मुल्तान, 2/260

पृष्ठ 396/720

حدیث ۶: کہ ایک صحابی رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے حاضر ہو کر عرض کی: یارسول اللہ ! میں اپنے ماں باپ کے ساتھ زندگی میں نیک سلوک کرتا تھا اب وہ مر گئے ان کے ساتھ نیک سلوک کی کیا راہ ہے؟ فرمایا:

[Arabic Box]: ان من البر بعد الموت ان تصلی لهما مع صلوتك وتصوم لهما مع صيامك۔ رواه الدارقطنی [1] [Urdu Box]: بعدِ مرگ نیک سلوک سے یہ ہے کہ تو اپنی نماز کے ساتھ ان کے لئے بھی نماز پڑھے اور اپنے روزوں کے ساتھ ان کے لئے روزے رکھے۔ (اسے دار قطنی نے روایت کیا ۔ ت)

یعنی جب اپنے ثواب ملنے کے لئے کچھ نفلی نماز پڑھے یا روزے رکھے تو کچھ نفل نماز ان کی طرف کہ انہیں ثواب پہنچائے یا نماز روزہ جو نیک عمل کرے ساتھ ہی انہیں ثواب پہنچنے کی بھی نیت کرلے کہ انہیں ثواب ملے گا اور تیرا بھی کم نہ ہوگا،

[Arabic Box]: كما يدل عليه لفظ "مع" انه يحتمل لوجهين بل هذا الصق بالمعية۔ [Urdu Box]: جیسا کہ لفظ "مع" اس پر دال ہے کیونکہ اس میں مذکورہ دونوں احتمال ہیں بلکہ آخری وجہ معیت کو زیادہ مناسب ہے۔ (ت)

محیط پھر تاتار خانیہ پھر ردالمحتار میں ہے:

[Arabic Box]: الافضل لمن يتصدق نفلا ان ينوی لجميع المؤمنين والمؤمنات لانها تصل اليهم ولا ينقص من اجره شيئ [2]۔ [Urdu Box]: جو شخص نفلی صدقہ دے اس کے لئے افضل یہ ہے کہ

تمام ایمان والوں کی نیت کرے کیونکہ انہیں بھی ثواب پہنچے گا اور اس کا ثواب بھی کم نہ ہوگا۔ (ت)

حدیث ۷: کہ فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم :

[Arabic Box]: من حج عن والدیه او قضی عنهما مغرماً بعثه الله یوم القیمة مع الابرار۔ رواه الطبرانی [3] فی الاوسط و الدار قطنی [4] فی [Urdu Box]: جو اپنے ماں باپ کی طرف سے حج کرے یا ان کا قرض ادا کرے روزِ قیامت نیکوں کے ساتھ اٹھے (اسے طبرانی نے اوسط میں اور دار قطنی نے

حواشی: 1. رد المحتار بحوالہ الدار قطنی کتاب الحج باب الحج عن الغیر داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۲۳۷ 2. رد المحتار بحوالہ الدار قطنی کتاب الحج باب الحج عن الغیر داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۲۳۶ 3. المعجم الاوسط حدیث ۷۹۶۷ مکتبۃ المعارف ریاض ۸/ ۳۹۳ 4. سنن الدار قطنی کتاب الحج باب المواقیت حدیث ۱۱۰ نشر السنۃ ملتان ۲/ ۲۶۰

Fatawa Razawiyya, Volume 24

Al-Sunan from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them). (Narrated in Sunan from Ibn Abbas, may Allah be pleased with them.)

Hadith 8: The Commander of the Faithful, Umar Farooq al-A'zam (may Allah be pleased with him), had a debt of eighty thousand at the time of his death. He called his son, Hazrat Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them), and said:

[Arabic]: "Sell Umar's property for my debt. If it suffices, [fine]; otherwise, ask the Banu Adi tribe. If it suffices, [fine]; otherwise, ask the Quraysh, and do not go beyond them."

In paying my debt, first sell my property if it's enough; otherwise, ask my tribe, the Banu Adi, to fulfill it. If even then it's not fulfilled, ask the Quraysh and do not ask anyone besides them.

Then he said to his son: "Guarantee it, you take responsibility for my debt." He became a guarantor, and before the burial of the Commander of the Faithful, he made the prominent Muhajireen and Ansar witnesses that those eighty thousand are upon him. Not a week had passed before Abdullah (may Allah be pleased with him) paid off all that debt. (Narrated by Ibn Sa'd in Al-Tabaqat from Uthman bin Urwah. t)

Hadith 9: A lady from the tribe of Juhaynah came to the holy presence of the Master of the World (may Allah bless him and grant him peace) and submitted: "O Messenger of Allah! My mother had made a vow to perform Hajj. She could not perform it and passed away. May I perform Hajj on her behalf?" He said:

[Arabic]: "Perform Hajj on her behalf. Do you see if your mother had a debt, would you have paid it? Pay Allah's [debt], for Allah is more worthy of fulfillment." (Narrated by al-Bukhari from Ibn Abbas, may Allah be pleased with them.)

Yes, perform Hajj on her behalf. Just see, if your mother had a debt, would you have paid it or not? Similarly, pay God's debt, for He has more right to be paid. (Bukhari narrated this from Ibn Abbas, may Allah be pleased with them. t)

Hadith 10: He (may Allah bless him and grant him peace) says:

[Arabic]: "When a man performs Hajj on behalf of his parents..."

When a person performs Hajj on behalf of his parents.

1. Al-Tabaqat al-Kubra by Ibn Sa'd, mention of the succession of Umar (may Allah be pleased with him), Dar Sader Beirut, 3/358.
2. Sahih al-Bukhari, Chapters of Umrah, chapter of Hajj and Vow on behalf of the deceased, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/250; Sahih al-Bukhari, Book of Holding Fast, chapter of Known Likeness, etc., Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/1088.

फतावा रजविया, जिल्द 24

सुनन इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से। (सुनन में इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया गया त)

हदीस 8: अमीर-उल-मोमिनीन उमर फारूक-ए-आजम रज़ियल्लाहु अन्हु पर उनकी वफात के वक्त अस्सी हजार का कर्ज था। उन्होंने अपने साहबजादे हजरत अब्दुल्ला बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुलाकर फरमाया:

[अरबी]: "उमर की संपत्ति को इसके लिए बेच दो। अगर वह काफी हो जाए तो ठीक है, वरना बनी अदी कबीले से पूछो। अगर काफी हो जाए तो ठीक है, वरना कुरैश से पूछो, और उनके अलावा किसी और से मत पूछना।"

मेरे दीन (कर्ज) में सबसे पहले मेरा माल बेचना अगर काफी हो जाए तो बेहतर, वरना मेरी कौम बनी अदी से मांग कर पूरा करना, अगर यूं भी पूरा न हो तो कुरैश से मांगना और उनके सिवा दूसरों से सवाल न करना।

फिर साहबजादे मौसूफ से फरमाया: "इसकी जमानत कर लो, तुम मेरे कर्ज की जिम्मेदारी लो।" वह जामिन (गारंटर) बन गए और अमीर-उल-मोमिनीन के दफन से पहले बड़े मुहाजिरीन और अंसार को गवाह बना लिया कि वे अस्सी हजार मुझ पर हैं। अभी एक हफ्ता भी नहीं बीता था कि अब्दुल्ला रज़ियल्लाहु अन्हु ने वह सारा कर्ज अदा कर दिया। (इसे इब्न साद ने तबाक़ात में उस्मान बिन उरवा से रिवायत किया। त)

हदीस 9: जुहैना कबीले की एक बीवी रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुजूर सैय्यद-ए-आजम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाजिर होकर अर्ज की: "या रसूल अल्लाह! मेरी मां ने हज करने की मन्नत मानी थी, वह अदा न कर सकीं और उनका इंतकाल हो गया, क्या मैं उनकी तरफ से हज कर लूँ?" फरमाया:

[अरबी]: "उनकी तरफ से हज करो। बताओ, अगर तुम्हारी मां पर कोई कर्ज होता, तो क्या तुम उसे अदा करतीं? अल्लाह का कर्ज अदा करो, क्योंकि अल्लाह वफा का ज्यादा हकदार है।" (बुखारी ने इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया।)

हाँ उसकी तरफ से हज कर, भला तू देख तो तेरी मां पर अगर कर्ज होता तो तू अदा करती या नहीं? यूँ ही खुदा का दीन अदा करो कि वह ज्यादा हक-ए-अदा रखता है। (इसे बुखारी ने इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया। त)

हदीस 10: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

[अरबी]: "जब कोई आदमी अपने माता-पिता की तरफ से हज करता है..."

इंसान जब अपने वालिदैन (माता-पिता) की तरफ से हज करता है।

---

1. अल-तबाक़ात अल-कुबरा, इब्न साद, हजरत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के खिलाफत का जिक्र, दार सादिर बेरुत 3/358
2. सही अल-बुखारी, अबवाबुल उमराह, मरे हुए की तरफ से हज और मन्नत का बाब, कदीमी कुतुब खाना कराची 1/250; सही अल-बुखारी, किताबुल एतिसाम, बाब शबहह असलुन मालूमून वगैरा, कदीमी कुतुब खाना कराची 2/1088

पेज 397/720

فتاوٰی رضویہ ، جلد ۲۴

السنن عن ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما۔ سنن میں ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا گیا ت)

حدیث ۸: امیر المومنین عمر فاروق اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ پر اسی ہزار قرض تھے وقت وفات اپنے صاحبزادے حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما کو بلا کر فرمایا:

بیع فیھا اموال عمر فان وفت والا فسل بنی عدی فان وفت والا فسل قریشا ولا تعدھم۔

میرے دین (قرض) میں اول تو میرا مال بیچنا اگر کافی ہو جائے فیہا ورنہ میری قوم بنی عدی سے مانگ کر پورا کرنا اگر یوں بھی پورا نہ ہو تو قریش سے مانگنا اور ان کے سوا دوسروں سے سوال نہ کرنا۔

پھر صاحبزادہ موصوف سے فرمایا: ضمنھا تم میرے قرض کی ضمانت کر لو، وہ ضامن ہو گئے اور امیر المومنین کے دفن سے پہلے اکابر مہاجرین وانصار کو گواہ کر لیا کہ وہ اسی ہزار مجھ پر ہیں، ایک ہفتہ نہ گزرا تھا کہ عبداللہ رضی اللہ تعالٰی عنہ نے وہ سارا قرض ادا فرما دیا۔ رواہ ابن سعد فی الطبقات عن عثمان بن عروۃ (اسے ابن سعد نے طبقات میں عثمان بن عروہ سے روایت کیا۔ ت)

حدیث ۹: قبیلہ جہینہ سے ایک بی بی رضی اللہ تعالٰی عنہا نے خدمت اقدس حضور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم میں حاضر ہو کر عرض کی: یا رسول اللہ ! میری ماں نے حج کرنے کی منت مانی تھی وہ ادا نہ کر سکیں اور ان کا انتقال ہو گیا کیا میں ان کی طرف سے حج کر لوں ، فرمایا:

حجی عنها ارأیت لوکان علی امک دین اکنت قاضیته اقضوا اللہ فاللہ احق بالوفاء۔ رواہ البخاری عن ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما۔

ہاں اس کی طرف سے حج کر، بھلا تو دیکھ تو تیری ماں پر اگر دین ہوتا تو تو ادا کرتی یا نہیں؟ یونہی خدا کا دین ادا کرو کہ وہ زیادہ حقِ ادا رکھتا ہے (اسے بخاری نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کیا ت)

حدیث ۱۰: فرماتے صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم:

اذا حج الرجل عن والدیہ

انسان جب اپنے والدین کی طرف سے حج کرتا ہے

---

۱ الطبقات الکبری لابن سعد ذکر استخلاف عمر رضی اللہ عنہ دار صادر بیروت ۳/۳۵۸ ۲ صحیح البخاری ابواب العمرۃ باب الحج و النذر عن المیت قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۵۰ ، صحیح البخاری کتاب الاعتصام باب شبهه اصلا معلوما الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۱۰۸۸

[Arabic]: It is accepted from him and from them both, and their souls in heaven are gladdened by it, and he is recorded with Allah as being dutiful (to parents). - Narrated by Dar-Qutni[1] on the authority of Zaid bin Arqam (may Allah be pleased with him). [Urdu]: That Hajj is accepted on his behalf and on behalf of his parents, and their souls in the heavens rejoice because of it, and this person is recorded as a virtuous doer towards his parents in the sight of Allah Almighty. (Dar-Qutni narrated this from Zaid bin Arqam, may Allah be pleased with him. - T)

Hadith 11: That the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: [Arabic]: "Whoever performs Hajj on behalf of his father and mother has fulfilled the Hajj for them, and he will have the merit of ten (additional) Hajj pilgrimages." - Narrated by Dar-Qutni[2] on the authority of Jabir bin Abdullah (may Allah be pleased with them both). [Urdu]: Whoever performs Hajj on behalf of his parents, the Hajj will be fulfilled on their behalf, and he will receive the reward of ten extra Hajj pilgrimages. (Dar-Qutni narrated this from Jabir bin Abdullah, may Allah be pleased with them both. - T)

Hadith 12: That he (peace and blessings of Allah be upon him) said: [Arabic]: "Whoever performs Hajj on behalf of his parents after their death, freedom from the Fire will be recorded for him, and those for whom the Hajj was performed will have the reward of a complete Hajj without anything being diminished from their rewards." - Narrated by Al-Asbahani in 'At-Targhib' and Al-Bayhaqi in 'Ash-Shu'ab'[3] on the authority of Ibn Umar (may Allah be pleased with them both). [Urdu]: Whoever performs Hajj on behalf of his parents after their death, Allah Almighty will write freedom from Hell for him, and there will be the reward of a full Hajj for both of them, in which there will be no reduction at all. (Al-Asbahani narrated it in Al-Targhib and Al-Bayhaqi in Al-Shu'ab from Ibn Umar, may Allah be pleased with them both. - T)

Hadith 13: That he (peace and blessings of Allah be upon him) said:

Footnotes: 1 Sunan al-Daraqutni, Kitab al-Hajj, Bab al-Mawaqit, Hadith 109, Nashr al-Sunnah Multan, 2/260. 2 Sunan al-Daraqutni, Kitab al-Hajj, Bab al-Mawaqit, Hadith 112, Nashr al-Sunnah Multan, 2/220. 3 Shu'ab al-Iman, Hadith 9112, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut, 6/205.

फतवा-ए-रज़विया जिल्द २४

[अरबी]: यह उससे और उन दोनों (माता-पिता) की ओर से स्वीकार किया जाता है और स्वर्ग में उनकी आत्माएं इससे प्रसन्न होती हैं, और वह अल्लाह के पास माता-पिता के प्रति आज्ञाकारी के रूप में दर्ज किया जाता है। - दार-कुत्नी ने ज़ैद बिन अर्क़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया। [उर्दू]: वह हज उसकी ओर से और उसके माता-पिता की ओर से स्वीकार किया जाता है और उनकी आत्माएं आसमान में उससे प्रसन्न होती हैं, और यह व्यक्ति अल्लाह अज़्ज़वजल के नज़दीक माँ-बाप के साथ नेक सुलूक करने वाला लिखा जाता है। (इसे दार कुत्नी ने ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया। - त)

हदीस ११: कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते हैं: [अरबी]: "जिसने अपने पिता और माता की ओर से हज किया, उसने उनके लिए हज पूरा कर दिया, और उसके लिए दस अतिरिक्त हजों का पुण्य होगा।" - दार-कुत्नी ने जाबिर बिन अब्दुल्ला (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया। [उर्दू]: जो अपने माँ-बाप की ओर से हज करे उनकी ओर से हज अदा हो जाए और उसे दस हज का सवाब ज़्यादा मिले। (दार कुत्नी ने जाबिर बिन अब्दुल्ला रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से इसे रिवायत किया। - त)

हदीस १२: कि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते हैं: [अरबी]: "जिसने अपने माता-पिता की मृत्यु के बाद उनकी ओर से हज किया, उसके लिए नरक से मुक्ति लिख दी जाएगी, और जिनके लिए हज किया गया है उन्हें बिना उनके पुण्य में किसी कमी के पूरे हज का पुण्य मिलेगा।" - इसे असबहानी ने 'अत-तरग़ीब' में और बैहक़ी ने 'अश-शुअब' में इब्ने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया। [उर्दू]: जो अपने वालिदैन की वफात के बाद उनकी ओर से हज करे अल्लाह तआला उसके लिए दोज़ख़ से आज़ादी लिखे और उन दोनों के वास्ते पूरे हज का सवाब हो जिसमें असल में कमी न हो। (इसे असबहानी ने तरग़ीब में और बैहक़ी ने शुअब में इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत किया। - त)

हदीस १३: कि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

पाद टिप्पणियाँ (Footnotes): १. सुनन अल-दाराकुत्नी, किताब अल-हज्ज, बाब अल-मवाक़ीत, हदीस १०९, नश्र अल-सुन्नत मुल्तान, २/२६०। २. सुनन अल-दाराकुत्नी, किताब अल-हज्ज, बाब अल-

मवाक़ीत, हदीस ११२, नश्र अल-सुन्नत मुल्तान, २/२२०। ३. शुअब अल-ईमान, हदीस ९११२, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत, ६/२०५।

पृष्ठ ३९८/७२०

تقبل منه ومنهما واستبشرت ارواحهما في السماء وكتب عند الله برا ۔رواه الدار قطنی[1] عن زید بن ارقم رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ | وہ حج اس کی اور اس کے والدین کی طرف سے قبول کیا جاتا ہے اور ان کی روحیں آسمان میں اس سے شاد ہوتی ہیں، اور یہ شخص اللہ عزوجل کے نزدیک ماں باپ کے ساتھ نیک سلوک کرنے والا لکھا جاتا ہے (اسے دار قطنی نے زید بن ارقم رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ۔ت)

حدیث ۱۱: کہ فرماتے ہیں رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم: من حج عن ابیه وامه فقد قضی عنه حجته فكان له فضل عشر حجج - رواه الدار قطنی[2] عن جابر بن عبداللہ رضی اللہ تعالٰی عنہما۔ | جو اپنے ماں باپ کی طرف سے حج کرے ان کی طرف سے حج ادا ہو جائے اور اسے دس حج کا ثواب زیادہ ملے ۔ (دار قطنی نے جابر بن عبداللہ رضی اللہ تعالٰی عنہما سے اسے روایت کیا ۔ت)

حدیث ۱۲: کہ فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم: من حج عن والديه بعد وفاتهما كتب له عتقا من النار وكان للمحجوج عنهما اجر حجة تامة من غيران ينقص من اجورهما شيئا - رواه الاصبهانی في الترغيب والبيهقی في الشعب[3] عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما۔ | جو اپنے والدین کی وفات کے بعد ان کی طرف سے حج کرے اللہ تعالٰی اس کے لئے دوزخ سے آزادی لکھے اور ان دونوں کے واسطے پورے حج کا ثواب ہو جس میں اصلاً کمی نہ ہو۔ (اسے اصبہانی نے ترغیب میں اور بیہقی نے شعب میں ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا ۔ت)

حدیث ۱۳: کہ فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم:

1 سنن الدار قطنی کتاب الحج باب المواقیت حدیث ۱۰۹ نشر السنة ملتان ۲۶۰/۲ 2 سنن الدار قطنی کتاب الحج باب المواقیت حدیث ۱۱۲ نشر السنة ملتان ۲۲۰/۲ 3 شعب الایمان حدیث ۹۱۱۲ دار الکتب العلمیة بیروت ۲۰۵/۶

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Arabic Section]: Whoever fulfills their (parents') oaths after them, pays their debts, and does not cause them to be insulted (by insulting others' parents), is recorded as being dutiful to parents, even if he was disobedient during their lifetime. And whoever does not fulfill their oaths, does not pay their debts, and causes them to be insulted, is recorded as being disobedient, even if he was dutiful during their lifetime. - Narrated by al-Tabarani in al-Awsat from Abdur Rahman bin Samura (may Allah be pleased with him).

[Urdu Section]: Whoever fulfills the oath of their parents after their death, settles their debts, and does not cause them to be insulted by insulting anyone's parents, is recorded as being a well-doer to the parents even if he was disobedient during their lifetime. And whoever does not fulfill their oath, does not settle their debts, and causes them to be insulted by insulting others' parents, shall be recorded as disobedient even if he was a well-doer during their lifetime. (Narrated by al-Tabarani in al-Awsat from Abdur Rahman bin Samura, may Allah be pleased with him.)

Hadith 14: That he (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Arabic Section]: Whoever visits the grave of his parents or one of them every Friday once, Allah will forgive him and he will be recorded as being dutiful. - Narrated by Imam Tirmidhi al-Arif Billah al-Hakim in Nawadir al-Usul from Abu Huraira (may Allah be pleased with them both).

[Urdu Section]: Whoever visits the grave of both his parents or one of them once every Friday, Allah the Almighty will forgive his sins and he will be recorded as one who treats parents well. (Imam al-Hakim Arif Billah Tirmidhi narrated it in Nawadir al-Usul from Abu Huraira, may Allah be pleased with him.)

Hadith 15: That he (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Arabic Section]: Whoever visits the grave of his parents or one of them on Friday and recites Surah Yasin there, he will be forgiven. - Narrated by Ibn Adi from al-Siddiq al-Akbar (may Allah be pleased with him). And in another wording: "Whoever visits the grave of his parents or one of them every Friday and recites Surah Yasin there, Allah will forgive him for the number of every letter in it." - Narrated by him and al-Khalili.

[Urdu Section]: Whoever visits the grave of his parents or one of them on the day of Friday and recites Surah Yasin near it, he shall be forgiven. (Ibn Adi narrated it from

Siddiq-e-Akbar, may Allah be pleased with him. And in other words: T) Whoever visits the grave of parents or one of them every Friday and recites Surah Yasin there, then for every letter in Surah Yasin...

---

1. Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 5815, Maktabat al-Ma'arif, Riyadh, 6/384.
2. Nawadir al-Usul by al-Tirmidhi, 15th Principle, Dar Sadir, Beirut, p. 24.
3. Al-Kamil by Ibn Adi, biography of Umar bin Ziyad bin Abdur Rahman bin Thawban, Dar al-Fikr, Beirut, 5/1801.

फ़तावा रज़विय्या जिल्द २४

[अरबी खंड]: जो अपने (माता-पिता के) बाद उनकी कसम पूरी करे, उनका कर्ज चुकाए और उन्हें अपमानित न होने दे (दूसरों के माता-पिता को अपमानित करके), वह माता-पिता के प्रति कर्तव्यपरायण माना जाता है, भले ही वह उनके जीवनकाल में अवज्ञाकारी रहा हो। और जो उनकी कसम पूरी नहीं करता, उनका कर्ज नहीं चुकाता, और उन्हें अपमानित करवाता है, वह अवज्ञाकारी माना जाएगा, भले ही वह उनके जीवनकाल में कर्तव्यपरायण रहा हो। - अल-तबरानी द्वारा अल-औसत में अब्दुर रहमान बिन समरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से वर्णित।

[उर्दू खंड]: जो व्यक्ति अपने माता-पिता के बाद उनकी कसम पूरी करे, उनका कर्ज अदा करे और किसी के मां-बाप को बुरा कह कर उन्हें बुरा न कहलवाए, वह माता-पिता के साथ नेक व्यवहार करने वाला लिखा जाता है, भले ही वह उनकी जिंदगी में नाफ़रमान था। और जो उनकी कसम पूरी न करे, उनका कर्ज न चुकाए और दूसरों के माता-पिता को बुरा कह कर उन्हें बुरा न कहलवाए, वह अवज्ञाकारी (आक़) लिखा जाएगा, भले ही वह उनकी जिंदगी में नेक व्यवहार करने वाला था। (इसे तबरानी ने औसत में अब्दुर्रहमान बिन समरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया।)

हदीस १४: कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[अरबी खंड]: जो अपने माता-पिता दोनों या उनमें से एक की कब्र पर हर जुमा के दिन एक बार ज़ियारत के लिए हाज़िर हो, अल्लाह उसके गुनाह माफ कर देगा और वह माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने वाला लिखा जाएगा। - (इमाम हकीम आरिफ बिल्लाह तिर्मिज़ी ने नवादिर अल-उसूल में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से इसे रिवायत किया है।)

[उर्दू खंड]: जो अपने माता-पिता दोनों या एक की कब्र पर हर जुमा के दिन ज़ियारत को हाज़िर हो, अल्लाह तआला उसके गुनाह बख्श दे और माता-पिता के साथ अच्छा बर्ताव करने वाला लिखा जाए। (इमाम अल-हकीम आरिफ बिल्लाह तिर्मिज़ी ने नवादिर अल-उसूल में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से इसे रिवायत किया।)

हदीस १५: कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[अरबी खंड]: जो शख्स जुमा के दिन अपने माता-पिता या उनमें से एक की कब्र की ज़ियारत करे और उसके पास 'य़ासीन' पढ़े, उसे बख्श दिया जाएगा। - (इसे इब्न अदी ने सिद्दीक अकबर

रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। और दूसरे शब्दों में:) "जो हर जुमा को माता-पिता या उनमें से एक की कब्र की ज़ियारत करके वहाँ 'य़ासीन' पढ़े, अल्लाह तआला उसे उसमें मौजूद हर अक्षर की संख्या के बराबर माफ़ कर देगा।" - इसे उन्होंने और अल-खलीली ने रिवायत किया।

[उर्दू खंड]: जो शख्स जुमा के दिन अपने वालिदैन या एक की ज़ियारत-ए-क़ब्र करे और उसके पास य़ासीन पढ़े, बख्श दिया जाए। (इसे अदी ने सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया। और दीगर अलफ़ाज़ में: त) जो हर जुमा वालिदैन या एक की ज़ियारत-ए-क़ब्र करके वहाँ य़ासीन पढ़े, य़ासीन शरीफ़ में जितने हर्फ़ हैं उन सब की...

---

1. अल-मुअजम अल-औसत हदीस ५८१५ मकतबतुल मआरिफ रियाज़ ६ / ३८४
2. नवादिरुल उसूल लित-तिर्मिज़ी अल-अस्ल अल-खामिस अशर दार सादर बेरूत पृ. २४
3. अल-कामिल लि-इब्न अदी तर्जमा उमर बिन ज़ियाद बिन अब्दुर्रहमान बिन सौबान दारुल फिक्र बेरूत ५ / १८०१

पृष्ठ ३९९/७२०

فتاوی رضویه جلد ۲۴

من بر قسمهما وقضی دینهما ولم یستسب لهما کتب بارا و ان کان عاقا فی حیاته ومن لم یبر قسمهما ولم یقض دینهما واستسب لهما کتب عاقا وان کان بارا فی حیاتهما۔ رواه الطبرانی فی الاوسط عن عبد الرحمن بن سمرة رضی الله تعالی عنہ۔

جو شخص اپنے ماں باپ کے بعد ان کی قسم سچی کرے اور ان کا قرض ادا کرے اور کسی کے ماں باپ کو برا کہہ کر انہیں برا نہ کہلوائے وہ والدین کے ساتھ نکوکار لکھا جاتا ہے اگرچہ ان کی زندگی میں نافرمان تھا اور جو ان کی قسم پوری نہ کرے اور ان کا قرض نہ اتارے اوروں کے والدین کو برا کہہ کر انہیں برا نہ کہلوائے وہ عاق لکھا جائے اگرچہ ان کی حیات میں نکوکار تھا۔ (اسے طبرانی نے اوسط میں عبدالرحمن بن سمرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا۔)

حدیث ۱۴: کہ فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم : من زار قبر والدیه او احدهما في کل یوم جمعة مرة غفر الله له وکتب برا۔ رواه الامام الترمذی العارف بالله الحکیم فی نوادر الاصول عن ابی هریرة رضی الله تعالی عنهما۔ جو اپنے ماں باپ دونوں یا ایک کی قبر پر ہر جمعہ کے دن زیارت کو حاضر ہو اللہ تعالیٰ اس کے گناہ بخش دے اور ماں باپ کے ساتھ اچھا برتاؤ کرنے والا لکھا جائے (الامام الحکیم عارف باللہ ترمذی نے نوادر الاصول میں ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اسے روایت کیا۔)

حدیث ۱۵: کہ فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم : من زار قبر ابویه او احدهما یوم الجمعة فقرأ عنده یس غفرله۔ رواه ابن عدی عن الصدیق الاکبر رضی الله تعالی عنہ وفی لفظ من زار قبر والدیه او احدهما فی کل جمعة فقرأ عنده یس غفر الله له بعدد کل حرف منها۔ رواه هو والخلیلي

جو شخص روزِ جمعہ اپنے والدین یا ایک کی زیارت قبر کرے اور اس کے پاس یٰس پڑھے بخش

دیا جائے (اسے عدی نے صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا۔ اور دیگر الفاظ میں۔ ت) جو ہر جمعہ والدین یا ایک کی زیارت قبر کرکے وہاں یٰس پڑھے یٰس شریف میں جتنے حرف ہیں ان سب کی

---

1 المعجم الاوسط حدیث ۵۸۱۵ مکتبۃ المعارف ریاض ۶ / ۳۸۴ 2 نوادر الاصول للترمذی الاصل الخامس عشر دار صادر بیروت ص ۲۴ 3 الکامل لابن عدی ترجمہ عمر بن زیاد بن عبدالرحمن بن ثوبان دارالفکر بیروت ۵ / ۱۸۰۱

...count (of those) Allah the Almighty grants him forgiveness. (This is narrated by al-Tirmidhi, al-Khalili, Abu al-Shaykh, al-Daylami, Ibn al-Najjar, al-Rafi'i, and others from Umm al-Mu'minin al-Siddiqah [Aisha], who narrated from her noble father [Abu Bakr] al-Siddiq al-Akbar, who narrated from the Holy Prophet ﷺ - T).

Hadith 16: That he ﷺ says: Whoever visits the grave of his parents or one of them with the intention of reward, it will be like an accepted Hajj. And whoever is a frequent visitor to them, angels will visit his grave. (Narrated by Imam al-Tirmidhi al-Hakim and Ibn 'Adi from Ibn 'Umar, may Allah be pleased with them both - T).

Imam Ibn al-Jawzi, the Hadith scholar, narrates in the book 'Uyun al-Hikayat' with his own chain of transmission from Muhammad ibn al-Abbas al-Warraq, that a man went on a journey with his son. On the way, the father passed away. It was a forest of 'Muql' (Guggul) trees. After burying him under those trees, the son went where he intended to go. When he returned and reached that stage at night, he did not go to his father's grave. Suddenly, he heard someone saying: I saw you crossing the 'Dom' forest at night and you did not see fit to speak to the people of 'Dom'. And in the 'Dom' forest lies a resident; if you were in his place, you would have stayed. So pass by the people of 'Dom', turn aside and offer salutations. (I saw you that at night you cross this forest and he is in those young trees...)

Footnotes: 1. Ittihaf al-Sadah al-Muttaqin referring to Abu al-Shaykh and others, chapter on visiting graves and praying for the deceased, Dar al-Fikr Beirut 10/323 2. Nawadir al-Usul by al-Tirmidhi, the fifteenth principle, Dar Sadr Beirut p. 44 3. Al-Kamil by Ibn 'Adi, biography of Hafs ibn Salamah etc., Dar al-Fikr Beirut 2/801 4. Sharh al-Sudur referring to 'Uyun al-Hikayat, chapter on visiting graves, knowledge of the dead, Khilafat Academy Mingora Swat p. 91

...संख्या के बराबर अल्लाह तआला उसे क्षमा प्रदान करे। (इसे तिर्मिज़ी, अल-खलीली, अबू अल-शेख, अल-दयलमी, इब्न अल-नज्जार, अल-रफी'ई और अन्य लोगों ने उम्मुल मुमिनीन सिद्दीक़ा से रिवायत किया है, जिन्होंने अपने पिता सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से, और उन्होंने पैगंबर ﷺ से। - टी)

हदीस 16: कि वे ﷺ फ़रमाते हैं: जो सवाब की नीयत से अपने माता-पिता दोनों या किसी एक की क़ब्र की ज़ियारत करे, उसे एक मक़बूल हज के बराबर सवाब मिलेगा। और जो कसरत से उनकी क़ब्र की ज़ियारत करता हो, फ़रिश्ते उसकी क़ब्र की ज़ियारत के लिए आएँगे। (हकीम तिर्मिज़ी और इब्न 'अदी ने इब्न उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से इसे रिवायत किया है। - टी)

इमाम इब्न अल-जौज़ी, हदीस के विद्वान, अपनी किताब 'उयून अल-हिकायात' में अपनी सनद से मुहम्मद इब्न अल-अब्बास वर्राक़ के माध्यम से रिवायत करते हैं कि एक व्यक्ति अपने बेटे के साथ सफ़र पर गया। रास्ते में बाप का इंतकाल हो गया। वह जंगल 'मुक़ल' (गुग्गुल) के पेड़ों का था। उनके नीचे दफ़न करके बेटा जहाँ जाना था चला गया। जब वापस लौटा और रात के समय उस मंज़िल पर पहुँचा, तो बाप की क़ब्र पर नहीं गया। अचानक सुना कि कोई कहने वाला कहता है: मैंने तुम्हें देखा कि तुम रात में 'डोम' (जंगल) को पार कर रहे हो और तुमने 'डोम' के लोगों से बात करना उचित नहीं समझा। और 'डोम' के जंगल में एक निवासी है; यदि तुम उसकी जगह होते तो ठहरते। तो 'डोम' के लोगों के पास से गुज़रो, मुड़ो और सलाम करो। (मैंने तुम्हें देखा कि रात में तुम इस जंगल को पार करते हो और वह उन जवान पेड़ों में है...)

फुटनोट्स: 1. इत्तिहाफ़ अल-सादाह अल-मुत्तक़ीन, अबू अल-शेख और अन्य के हवाले से, क़ब्रों की ज़ियारत और मृतकों के लिए दुआ का बयान, दार अल-फ़िक्र बेरुत 10/323 2. नवादिर अल-उसूल, तिर्मिज़ी, पंद्रहवाँ सिद्धांत, दार सादिर बेरुत पृ. 44 3. अल-कामिल, इब्न 'अदी, हफ़्स इब्न सलामा की जीवनी आदि, दार अल-फ़िक्र बेरुत 2/801 4. शरह अल-सुदूर, 'उयून अल-हिकायात' के हवाले से, क़ब्रों की ज़ियारत का अध्याय, मुर्दों का इल्म, ख़िलाफ़त अकादमी मिंगोरा स्वात पृ. 91

گنتی کے برابر اللہ تعالٰی اس کے لئے مغفرت فرمائے (اسے روایت کیا ترمذی، الخلیلی اور ابوالشیخ اور دیلمی اور ابن نجار اور رافعی وغیرہم نے ام المؤمنین صدیقہ سے انہوں نے اپنے والد گرامی صدیق اکبر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے انہوں نے نبی اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے۔ت)

حدیث ۱۶: کہ فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم: من زار قبر ابویه او احدهما احتسابا کان کعدل حجة مبرورة ومن کان زوارا لهما زارت الملئکۃ قبره رواه الامام الترمذی الحکیم وابن عدی عن ابن عمر رضی اللہ تعالی عنهما۔ جو بہ نیت ثواب اپنے والدین دونوں یا ایک کی زیارت قبر کرے حج مقبول کے برابر ثواب پائے، اور جو بکثرت ان کی زیارت قبر کیا کرتا ہو فرشتے اس کی قبر کی زیارت کو آئیں (حکیم ترمذی اور ابن عدی نے ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے اسے روایت کیا۔ت)

امام ابن الجوزی محدث کتاب عیون الحکایات میں بسند خود محمد ابن العباس وراق سے روایت فرماتے ہیں ایک شخص اپنے بیٹے کے ساتھ سفر کو گیا راہ میں باپ کا انتقال ہو گیا وہ جنگل درختان مقل یعنی گوگل کے پیڑوں کا تھا ان کے نیچے دفن کر کے بیٹا جہاں جانا تھا چلا گیا جب پلٹ کر آیا اس منزل میں رات کو پہنچا باپ کی قبر پر نہ گیا تو ناگاہ سنا کہ کوئی کہنے والا کہتا ہے: رأیتك تطوی الدوم لیلا ولا تری ... علیك بأهل الدوم ان تتکلما وبالدوم ثاو لو ثویت مکانه ... فمر بأهل الدوم عاج فسلما (میں نے تجھے دیکھا کہ تو رات میں اس جنگل کو طے کرتا ہے اور وہ جوان پیڑوں میں ہے

حواشی: ۱ اتحاف السادة للمتقین بحواله ابی الشیخ وغیره بیان زیارة القبور والدعاء للمیت دار الفکر بیروت ۱۰ / ۳۲۳ ۲ نوادر الاصول للترمذی الاصل الخامس عشر دار صادر بیروت ص ۴۴ ۳ الکامل لابن عدی ترجمہ حفص بن سلمہ الخ دار الفکر بیروت ۲ / ۸۰۱ ۴ شرح الصدور بحوالہ عیون الحکایات باب زیارة القبور علم الموتی خلافت اکیڈمی منگوره سوات ص ۹۱

He does not consider it necessary to speak to him, even though he resides in those trees. If you were in his place and he passed by here, he would have deviated from his path to come and greet you at your grave. (T)

Hadith 17: He (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Whoever wishes to be kind to his father in his grave should maintain good relations with his father's brothers [friends/relatives] after him." Narrated by Abu Ya'la[1] and Ibn Hibban from Ibn Umar (may Allah be pleased with them both). | Whoever wants to treat his father well while he is in his grave should behave kindly towards his father's dear friends and relatives after his death. (Abu Ya'la and Ibn Hibban narrated this from Ibn Umar, may Allah be pleased with them both. - T)

Hadith 18: He (peace and blessings of Allah be upon him) says: "It is part of righteousness to maintain ties with your father's friend." Narrated by At-Tabarani[2] in Al-Awsat from Anas (may Allah be pleased with him). | It is part of doing good to one's father that you treat his friend well. (At-Tabarani narrated this in Al-Awsat from Anas, may Allah be pleased with him. - T)

Hadith 19: He (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Indeed, the best form of righteousness is for a man to maintain ties with his father's loved ones after the father passes away." Narrated by the Imams Ahmad and Al-Bukhari in Al-Adab al-Mufrad, and Muslim[3] in his Sahih, and Abu Dawud and At-Tirmidhi from Ibn Umar (may Allah be pleased with them both). | Indeed, the greatest of all acts of righteousness towards a father is for a person to maintain a good relationship with his father's friends after his death. (The honorable Imams Ahmad and Bukhari in Al-Adab al-Mufrad, and Muslim in his Sahih, and Abu Dawud and Tirmidhi have narrated this from Ibn Umar, may Allah be pleased with them both. - T)

Hadith 20: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Safeguard your father's friendship, do not break it, or else Allah will extinguish [your light]..." | Keep a watchful eye on the friendship of your parents, do not sever it...

---

[1] Musnad Abu Ya'la, Hadith 5623, Mu'assasatu Ulum al-Qur'an, Beirut, 5/260. [2] Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 2997, Maktabat al-Ma'arif, Riyadh, 8/129. [3] Sahih Muslim, Kitab al-Birr wa as-Sila, Chapter on the Virtue of Maintaining Ties with Father's and Mother's Friends, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/314; Kanz al-Ummal with reference

to Ahmad, Bukhari in Adab al-Mufrad, Abu Dawud, and Tirmidhi, Hadith 25262, Mu'assasat al-Risala, Beirut, 9/465.

फ़तावा रिज़विया जिल्द 24

उससे कलाम करना अपने ऊपर लाज़िम नहीं जानता हालांकि उन दरख्तों में वह मुकीम है कि अगर उसकी जगह तू होता और वह यहाँ गुज़रता तो वह राह से फिर कर आता और तेरी क़ब्र पर सलाम करता। (त)

हदीस 17: कि फ़रमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम: "मन अहब्बा अन यसिला अबाहु फ़ी क़ब्रिही फ़ल-यसिल इखवाना अबीही मिम बादिही।" रिवायत किया अबू या'ला[1] और इब्न हिब्बान ने इब्न उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से। | जो चाहे कि बाप की क़ब्र में उसके साथ हुस्न-ए-सुलूक करे वह बाप के बाद उसके अज़ीज़ों दोस्तों से नेक बर्ताव रखे। (अबू या'ला और इब्न हिब्बान ने इब्न उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से इसे रिवायत किया।त)

हदीस 18: फ़रमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम: "मिनल बिर्रि अन तसिला सदीक़ा अबीका।" रिवायत किया तबरानी[2] ने अल-औसत में अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से। | बाप के साथ नेकोकारी से है यह कि तू उसके दोस्त से अच्छा बर्ताव करे। (तबरानी ने औसत में अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से इसे रिवायत किया।त)

हदीस 19: कि फ़रमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम: "इन्नल बिर्रा अन यसिलर रजुलु अहला वुद्दि अबीही बाद अन युवलियाल अबु।" रिवायत किया आइम्मा अहमद और बुखारी ने अदब अल-मुफ़रद में और मुस्लिम[3] ने अपनी सहीह में और अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने इब्न उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से। | बेशक बाप के साथ सब नेकोकारियों से बढ़ कर यह नेकोकारी है कि आदमी बाप के बाद उसके दोस्तों से अच्छी रफ़्तार पर निबाहे। (इसे अइम्मा किराम अहमद और बुखारी ने अदब अल-मुफ़रद में और मुस्लिम ने अपनी सहीह में और अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने इब्न उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत किया।त)

हदीस 20: कि फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम: "इहफ़ज़ वुद्दा अबीका ला तक़-तअ'हु फ़-युतफ़िउल्लाह" | अपने माँ-बाप की दोस्ती पर निगाह रख उसे क़ता न कर...

---

[1] मसनद अबू या'ला हदीस 5623 मुअस्ससतुल उलूमुल क़ुरआन बेरुत 5/260 [2] अल-मुअजमुल औसत हदीस 2997 मकतबतुल मआरिफ रियाज़ 8/129 [3] सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्रि वस-सिलह

बाब फ़ज़लु सिलति अदिक़ाइल अबि वल उम क़दीमी कुतुब खाना कराची 2/314, कंज़ुल उम्माल बहवाला अहमद, बुख़ारी (अदब), दाऊद, तिर्मिज़ी हदीस 25262 मुअस्ससतुर रिसाला बेरुत 9/465

पृष्ठ 401/720

اس سے کلام کرنا اپنے اوپر لازم نہیں جانتا حالانکہ ان درختوں میں وہ مقیم ہے کہ اگر اس کی جگہ تو ہوتا اور وہ یہاں گزرتا تو وہ راہ سے پھر کر آتا اور تیری قبر پر سلام کرتا۔ (ت)

حدیث ۱۷ : کہ فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم : من احب ان یصل اباہ فی قبرہ فلیصل اخوان ابیہ من بعدہ۔ رواہ ابو یعلی ۱ وابن حبان عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما۔ | جو چاہے کہ باپ کی قبر میں اس کے ساتھ حسن سلوک کرے وہ باپ کے بعد اس کے عزیزوں دوستوں سے نیک برتاؤ رکھے۔ (ابویعلٰی وابن حبان نے ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے اسے روایت کیا۔ت)

حدیث ۱۸ : فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم : من البر ان تصل صدیق ابیک۔ رواہ الطبرانی ۲ فی الاوسط عن انس رضی اللہ تعالٰی عنہما۔ | باپ کے ساتھ نیکوکاری سے ہے یہ کہ تو اس کے دوست سے اچھا برتاؤ کرے۔ (طبرانی نے اوسط میں انس رضی اللہ تعالٰی عنہما سے اسے روایت کیا۔ت)

حدیث ۱۹ : کہ فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم : ان البر ان یصل الرجل اھل ود ابیہ بعد ان یولی الاب۔ رواہ الائمۃ احمد والبخاری فی الادب المفرد و مسلم ۳ فی صحیحہ و ابوداؤد والترمذی عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما۔ | بے شک باپ کے ساتھ سب نیکوکاریوں سے بڑھ کر یہ نیکوکاری ہے کہ آدمی باپ کے بعد اس کے دوستوں سے اچھی روش پر نباہے۔ (اسے ائمہ کرام احمد اور بخاری نے ادب المفرد میں اور مسلم نے اپنی صحیح میں اور ابوداؤد اور ترمذی نے ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا۔ت)

حدیث ۲۰ : کہ فرماتے ہیں رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم : احفظ ودّ ابیک لا تقطعہ فیطفئ اللہ | اپنے ماں باپ کی دوستی پر نگاہ رکھ اسے قطع

---

۱ مسند ابویعلی حدیث ۵۶۲۳ مؤسسۃ علوم القرآن بیروت ۵/ ۲۶۰ ۲ المعجم الاوسط حدیث ۲۹۹۷ مکتبۃ المعارف ریاض ۸/ ۱۲۹ ۳ صحیح مسلم کتاب البر والصلۃ باب فضل صلۃ اصدقاء الاب والام قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۳۱۴، کنز العمال بحوالہ حم خدم۔ دت حدیث ۲۵۲۶۲ موسسۃ الرسالۃ بیروت ۹/ ۴۶۵

Fatawa Rizvia, Volume 24

[Arabic]: Nuraka. Narrated by al-Bukhari in al-Adab al-Mufrad, at-Tabarani in al-Awsat, and al-Bayhaqi in al-Shu'ab from Ibn Umar (may Allah be pleased with them both).

[Urdu Translation]: Do not do [so], for Allah the Almighty will extinguish your light. (Narrated by Bukhari in al-Adab al-Mufrad, Tabarani in al-Awsat, and Bayhaqi in al-Shu'ab from Ibn Umar, may Allah be pleased with them both.)

Hadith 21: The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Arabic]: Actions are presented to Allah the Almighty on Mondays and Thursdays, and they are presented to the Prophets and to fathers and mothers on Fridays. They rejoice at their good deeds, and their faces increase in whiteness and joy. So fear Allah and do not harm your dead. Narrated by Imam al-Hakim from the father of Abdul Aziz (may Allah be pleased with him).

[Urdu Translation]: Every Monday and Thursday, deeds are presented before Allah the Almighty, and before the noble Prophets (peace and blessings be upon them) and parents every Friday. They rejoice at the good deeds, and the purity and radiance of their faces increase. So fear Allah and do not cause grief to your deceased through your sins. (Narrated by Imam al-Hakim from his father Abdul Aziz, may Allah be pleased with him.)

In short, the right of parents is not such that a person can ever fulfill it. They are the cause of one's life and existence. Therefore, whatever religious and worldly blessings one receives is all because of them, as every blessing and perfection depends on existence, and they were the cause of existence. Thus, simply being a parent is the cause of such a great right that one can never be absolved of, let alone their efforts in one's upbringing, their hardships for one's comfort, especially the mother's sufferings during pregnancy, birth, and breastfeeding. To what extent can their gratitude be expressed? In summary, for the child, they are the manifestation of the shadow, Lordship, and mercy of Allah and His Messenger (mighty be His glory and peace and blessings be upon him). Therefore, in the Great Quran, Allah the Almighty mentioned their right along with His own right: "Give thanks to Me and to your parents" — fulfill my right and that of your parents.

1. Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 8628, Maktabat al-Ma'arif Riyadh 9/288; Kanz al-Ummal with reference to Khidr, Tabarani, Ibn Hibban from Ibn Abbas, Hadith 25460, Mu'assasat al-Risala Beirut 16/464.
2. Nawadir al-Usul by al-Tirmidhi, Principle 167 etc., Dar Sadir Beirut p. 213.
3. The Holy Quran 31/14.

फ़तावा रिज़विया, खंड 24

[अरबी]: नूरका। इसे बुखारी ने 'अल-अदब अल-मुफ़रद' में, तबरानी ने 'अल-औसत' में और बैहक़ी ने 'शुआब' में इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया है।

[उर्दू अनुवाद]: ऐसा मत करो, वरना अल्लाह तुम्हारी रोशनी बुझा देगा। (इसे बुखारी ने 'अल-अदब अल-मुफ़रद' में, तबरानी ने 'अल-औसत' में और बैहक़ी ने 'शुआब' में इब्न उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है।)

हदीस 21: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

[अरबी]: हर सोमवार और गुरुवार को आमाल अल्लाह के दरबार में पेश किए जाते हैं, और हर जुमे को अंबिया और मां-बाप के सामने। वे नेक आमाल पर खुश होते हैं और उनके चेहरों की चमक और ताज़गी बढ़ जाती है। तो अल्लाह से डरो और अपने मुर्दों को कष्ट न पहुँचाओ। इसे इमाम हकीम ने अब्दुल अज़ीज़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) के पिता से रिवायत किया है।

[उर्दू अनुवाद]: हर सोमवार और गुरुवार को अल्लाह अज़्ज़वजल के दरबार में आमाल पेश किए जाते हैं, और हर जुमे को अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम और मां-बाप के सामने। वे नेक आमाल पर खुश होते हैं और उनके चेहरों की सफाई और चमक बढ़ जाती है। तो अल्लाह से डरो और अपने गुनाहों से अपने मुर्दों को दुख न पहुँचाओ। (इसे इमाम हकीम ने अपने पिता अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।)

संक्षेप में, माता-पिता का अधिकार ऐसा नहीं है कि कोई व्यक्ति कभी उससे मुक्त हो सके। वे जीवन और अस्तित्व का कारण हैं। अत; जो कुछ भी धार्मिक और सांसारिक आशीर्वाद व्यक्ति को मिलता है, वह सब उन्हीं की बदौलत है, क्योंकि हर आशीर्वाद और पूर्णता अस्तित्व पर निर्भर है, और वे अस्तित्व का कारण बने। अत; केवल माता-पिता होना ही इतने महान अधिकार का कारण है जिससे कभी छुटकारा नहीं पाया जा सकता, अकेले उनके पालन-पोषण के प्रयासों, आराम के लिए उनकी तकलीफों, विशेष रूप से माँ के कष्टों - गर्भ में रखना, जन्म देना, स्तनपान कराना - का शुक्र कहाँ तक अदा हो सकता है? सारांश यह है कि वे बच्चे के लिए अल्लाह और उसके रसूल (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बरसाए) की छाया, प्रभुत्व और दया के प्रतिबिंब हैं। इसीलिए कुरान मजीद में अल्लाह ताला ने अपने अधिकार के साथ उनका उल्लेख किया है: "मेरा शुक्र अदा करो और अपने माता-पिता का।" - अधिकार मेरा है और तुम्हारे माता-पिता का है।

1. अल-मुजम अल-औसत हदीस 8628, मकतबतुल मआरिफ रियाज़ 9/288; कंज़ुल उम्माल हदीस 25460, मुअस्ससतुर् रसाला बेरूत 16/464
2. नवादिरुल उसूल तिर्मिज़ी, दार सादिर बेरूत, पृष्ठ 213
3. अल-कुरान अल-करीम 31/14

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

نورک۔ رواہ البخاری فی الادب المفرد والطبرانی فی الاوسط و البیہقی فی الشعب عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما۔

نہ کرنا کہ اللہ تعالٰی نور تیرا بجھا دے گا۔ (اسے بخاری نے ادب المفرد میں اور طبرانی نے اوسط میں اور بیہقی نے شعب میں ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا۔ ت)

حدیث ۲۱: کہ فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم:

تعرض الاعمال یوم الاثنین والخمیس علی اللہ تعالٰی وتعرض علی الانبیاء وعلی الاباء والامہات یوم الجمعۃ فیفرحون بحسناتہم ویزدادون وجوھم بیضاء ونزھۃ فاتقوا اللہ ولا توذوا موتاکم۔ رواہ الامام الحکیم عن والد عبدالعزیز رضی اللہ تعالی عنہ۔

ہر دو شنبہ و پنجشنبہ کو اللہ عزوجل کے حضور اعمال پیش ہوتے ہیں اور انبیاء کرام علیہم الصلوۃ والتسلیم اور ماں باپ کے سامنے ہر جمعہ کو، وہ نیکیوں پر خوش ہوتے ہیں اور ان کے چہروں کی صفائی و تابش بڑھ جاتی ہے، تو اللہ سے ڈرو اور اپنے مردوں کو اپنے گناہوں سے رنج نہ پہنچاؤ (اسے امام حکیم نے اپنے والد عبد العزیز رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا۔ ت)

بالجملہ والدین کا حق وہ نہیں کہ انسان اس سے کبھی عہدہ برآ ہو وہ اس کے حیات وجود کے سبب ہیں تو جو کچھ نعمتیں دینی و دنیوی پائے گا سب انہیں کے طفیل میں ہوئیں کہ ہر نعمت و کمال وجود پر موقوف ہے اور وجود کے سبب وہ ہوئے تو صرف ماں باپ ہونا ہی ایسے عظیم حق کا موجب ہے جس سے بری الذمہ کبھی نہیں ہو سکتا نہ کہ اس کے ساتھ اس کی پرورش میں ان کی کوششیں، اس کے آرام کے لئے ان کی تکلیفیں خصوصاً پیٹ میں رکھنے، پیدا ہونے میں، دودھ

پلانے میں ماں کی اذیتیں، ان کا شکر کہاں تک ادا ہو سکتا ہے، خلاصہ یہ کہ وہ اس کے لئے اللہ ورسول جل جلالہ و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے سائے اور ان کی ربوبیت و رحمت کے مظہر ہیں، ولہذا قرآن عظیم میں اللہ جل جلالہ نے اپنے حق کے ساتھ ان کا ذکر فرمایا کہ "آن اشکرلی ولوالدیک" حق مان میرا اور اپنے ماں باپ کا۔

---

1 المعجم الاوسط حدیث ۸۶۲۸ مکتبہ المعارف ریاض ۹/ ۲۸۸، کنزالعمال بحوالہ خد، طس، حب عن ابن عباس حدیث ۲۵۴۶۰ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۶/ ۴۶۴ 2 نوادر الاصول للترمذی الاصل السابع والستون والمائۃ الخ دار صادر بیروت ص ۲۱۳ 3 القرآن الکریم ۱۴/ ۳۱

Fatawa Razawiyya Volume 24

It is mentioned in a Sahih Hadith that a companion (may Allah be pleased with him) came and said: O Messenger of Allah! On a path with stones so hot that if meat were placed on them, it would be roasted, I carried my mother on my neck for 6 miles. Have I now fulfilled her rights? The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Arabic: La'allahu an yakuna bitallaqatin wahidatin. Narrated by at-Tabarani in al-Awsat from Buraidah (may Allah be pleased with him).] [Urdu Translation: Perhaps it may compensate for one of the labor pains she endured during your birth. (Narrated by at-Tabarani in Al-Awsat from Buraidah, may Allah be pleased with him. -Translator)]

May Allah (Almighty and Majestic) protect from disobedience [to parents] and grant the ability to fulfill their rights. Ameen, Ameen by Your mercy, O Most Merciful of those who show mercy. And may the peace and blessings of Allah be upon our master and leader Muhammad, and upon his family and all his companions. Ameen, and all praise is due to Allah, Lord of the worlds. And Allah knows best.

Problem 163: From Bengal, district Kamar-la, village Har Mandal, sent by Mawlawi Abdul Jabbar Sahib, 25th Rabi al-Awwal 1320 AH. Question: What do the scholars of religion and muftis of the firm Shariah say about this matter? A person who has some capability engages in fighting, brawling, hitting, striking, oppression, and tyranny against his righteous parents. He himself insults, reproaches, and abuses his parents, and makes others do the same. This person is also characterized as a usurper, a liar, and a thief. Is it permissible or disliked (makruh) to pray behind such a person? If it is disliked, what kind of disliked is it? And if someone prays behind such a person due to ignorance, must he repeat his prayer or not? Is it correct to invite such a person who is disobedient to parents, or to give him charity, etc.? And how is it to eat an invited meal at his house? What kind of punishment does such a person deserve according to the noble Shariah? And what is the ruling of the noble Shariah regarding those who support him? Please provide guidance with evidence from the Quran, Hadith, and sayings of the Imams.

The Answer: Such a person is the most sinful of the sinful, the vilest of the contemptible, and deserving of the severe wrath of the Lord of the worlds, great punishment, and the fire of Hell.

Hadith 1: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

1. Kanz al-Ummal with reference to Tabarani from Buraidah, Hadith 25506, Mu'assasat al-Risala Beirut 16/473; Majma' al-Zawa'id with reference to at-Tabarani in al-Saghir, Kitab al-Birr wa al-Sila, Chapter on what was narrated regarding kindness and the right of parents, Dar al-Kutub 8/13.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

हदीस शरीफ में है कि एक सहाबी (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हाज़िर होकर अर्ज़ की: या रसूलल्लाह! एक ऐसी राह में जहाँ पत्थर इतने गरम थे कि अगर उन पर गोश्त डाला जाता तो कबाब हो जाता, मैं अपनी माँ को अपनी गर्दन पर बिठाकर 6 मील तक ले गया। क्या अब मैंने उनके हक से निजात पा ली? रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:

[अरबी: लअल्लहू अन यकूना बितल्लाकतिन वाहिदतिन। - इसे तबरानी ने अल-औसत में बुरैदा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है।] [हिन्दी अनुवाद: शायद यह उस एक प्रसव पीड़ा के झटके का बदला हो सके जो उन्होंने तुम्हारे पैदा होने के समय उठाया था। (इसे तबरानी ने औसत में बुरैदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया। -त)]

अल्लाह अज़्ज़वजल माता-पिता की नाफरमानी से बचाए और उनके हक अदा करने की तौफीक अता फरमाए। आमीन, आमीन अपनी रहमत से या अरहमर राहिमीन। और अल्लाह की रहमत और सलामती हो हमारे आका और मौला मुहम्मद और उनकी आल और उनके तमाम असहाब पर। आमीन और तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसअला 163: बंगाल से, जिला कमरला, गाँव हर मंडल, मौलवी अब्दुल जब्बार साहब द्वारा प्रेषित, 25 रबीउल अव्वल 1320 हिजरी। प्रश्न: दीन के उलेमा और शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या फरमाते हैं कि एक व्यक्ति जिसमें कुछ योग्यता है, वह अपने नेक माता-पिता के साथ झगड़ा, लड़ाई, मार-पीट, ज़ुल्म और सितम करता है, और वह खुद अपने माता-पिता को ताना देता है और उन्हें गालियाँ देता है, और दूसरों से भी ऐसा करवाता है। वह व्यक्ति ग़ासिब (हक मारने वाला), झूठा और चोर भी है। क्या ऐसे व्यक्ति के पीछे नमाज़ जायज़ है या मकरूह? अगर मकरूह है तो किस किस्म की मकरूह है? और अगर कोई अज्ञानता के कारण ऐसे व्यक्ति के पीछे नमाज़ पढ़ ले, तो क्या उसे अपनी नमाज़ दोबारा पढ़नी होगी या नहीं? और क्या ऐसे माता-पिता के नाफरमान को दावत देना, सदका आदि देना सही है या नहीं? और उसके घर में दावत खाना कैसा है? और वह व्यक्ति शरीयत के अनुसार किस सज़ा (ताज़ीर) का हक़दार है? और उसका समर्थन करने वालों के लिए शरीयत का क्या हुक्म है? कुरान, हदीस और इमामों के कथनों के प्रमाण के साथ मार्गदर्शन फरमाएँ।

जवाब: ऐसा व्यक्ति पापियों में सबसे बड़ा पापी, सबसे नीच और नीच है, और रब्बुल आलमीन के कड़े क्रोध, भारी अज़ाब और जहन्नुम की आग का पात्र है।

हदीस 1: रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:

1. कंज़ुल उम्माल के हवाले से तबरानी, बुरैदा से हदीस 25506, मुअस्ससतुर रिसाला बैरूत 16/473; मज्मउज़ ज़वाइद के हवाले से तबरानी, अस-सगीर में, किताबुल बिर्र वस सिलाह, माता-पिता के साथ नेकी और उनके अधिकार के अध्याय में, दारुल कुतुब 8/13।

حدیث شریف میں ہے کہ ایک صحابی رضی اللہ تعالی عنہ نے حاضر ہو کر عرض کی: یارسول اللہ! ایک راہ میں ایسے گرم پتھروں پر کہ اگر گوشت ان پر ڈالا جاتا کباب ہو جاتا میں ۶ میل تک اپنی ماں کو گردن پر سوار کر کے لے گیا ہوں کیا میں اب اس کے حق سے بری ہو گیا۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے فرمایا:

لعلہ ان یکون بطلقۃ واحدۃ ۔ رواہ الطبرانی فی الاوسط عن بریدۃ رضی اللہ تعالی عنہ۔ تیرے پیدا ہونے میں جس قدر دردوں کے جھٹکے اس نے اٹھائے ہیں شاید ان میں سے ایک جھٹکے کا بدلہ ہوسکے (اسے طبرانی نے اوسط میں بریدہ رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کیا۔ت)

اللہ عزوجل عقوق سے بچائے اور ادائے حقوق کی توفیق عطا فرمائے آمین آمین برحمتک یا ارحم الراحمین وصلی اللہ تعالیٰ علی سیدنا و مولانا محمد وآلہ وصحبہ اجمعین آمین والحمد للہ رب العلمین۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۶۳: از بنگالہ ضلع کمر لا موضع ہر منڈل مرسلہ مولوی عبدالجبار صاحب ۲۵ ربیع الاول شریف ۱۳۲۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص کچھ لیاقت رکھنے والا اپنے والدین صالحین کے ساتھ جنگ وجدل وزد وضرب و ظلم و ستم کرتا ہے اور خود اپنے والدین کو طعنے تشنیع و دشنام کرتا ہے اور لوگوں سے کرواتا ہے اور وہ شخص غاصب وکاذب وسارق کے ساتھ موصوف ہے، ایسے شخص کے پیچھے نماز جائز ہے یا مکروہ؟ اگر مکروہ ہے تو کون قسم کی مکروہ ہے؟ اور ایسے شخص کے پیچھے جو کوئی بسبب ناواقفی کے نماز پڑھے تو نماز اس کو دوبارہ پڑھنا ہوگی یا نہیں؟ اور ایسے عاق الوالدین کو دعوت کرنا

کروانا صدقہ وغیرہ دینا دلوانا درست ہے یا نہیں؟ اور اس کے مکان میں دعوت کھانا کیسی ہے اور وہ شخص از روئے شرع شریف کے کس تعزیر کے لائق ہے اور اس کی تائید کرنے والے پر از روئے شرع شریف کیا حکم ہے با دلائل قرآن وحدیث و اقوال ائمہ ارشاد فرمایا جائے۔

الجواب: ایسا شخص افسق الفاسقین واخبث مہین و مستحق غضب شدید رب العالمین و عذاب عظیم و نار جحیم ہے۔

حدیث ۱: رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے فرمایا:

۱ کنز العمال بحوالہ طس عن بریدہ حدیث ۲۵۵۰۶ مؤسسۃ الرسالۃ بیروت ۱۶ / ۴۷۳، مجمع الزوائد بحوالہ الطبرانی فی الصغیر کتاب البر و الصلۃ باب ما جاء فی البر و حق الوالدین دار الکتب ۸ / ۱۳

Fatawa Razawiyya, Volume 24

[Arabic Box]: Shall I not inform you of the greatest of major sins? Shall I not inform you of the worst of major sins? Shall I not inform you of the most severe of major sins?

[Urdu Box]: Shall I not tell you what is the most severe of all major sins? Shall I not tell you what is worse than all major sins? Shall I not tell you what is more intense than all major ones?

The companions (may Allah be pleased with them) requested: "Please tell us." He (peace be upon him) said:

[Arabic Box]: Associating partners with Allah and being disobedient to parents. [End of Hadith]. Narrated by the Two Shaykhs (Bukhari and Muslim)[1] and At-Tirmidhi[2] from Abu Bakrah (may Allah be pleased with him).

[Urdu Box]: Associating a partner with Allah the Almighty and distressing one's parents. [End of Hadith]. (Imam Bukhari, Muslim, and Tirmidhi narrated this from Abu Bakrah, may Allah be pleased with him.)

Hadith 2: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Arabic Box]: Three will not enter Paradise: one who is disobedient to his parents, a dayyooth (a man lacking protective jealousy over female relatives), and a woman who imitates men. Narrated by An-Nasa'i[3] and Al-Bazzar with two excellent chains, and Al-Hakim[4] from Ibn Umar (may Allah be pleased with them both).

[Urdu Box]: Three persons will not enter Paradise: the one who distresses parents, the dayyooth, and the woman who adopts the appearance of men. (An-Nasa'i and Bazzar narrated with excellent chains, and Al-Hakim narrated from Ibn Umar, may Allah be pleased with them both.)

Hadith 3: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Arabic Box]: Three persons from whom Allah, the Mighty and Sublime, will accept neither obligatory nor voluntary prayer: one who is disobedient to parents, one who gives charity then reminds of the favor, and one who denies predestination. Narrated by Ibn Abi 'Asim[5] in 'As-Sunnah' with a good chain.

[Urdu Box]: There are three persons whose obligatory and voluntary acts Allah the Almighty will not accept: the one who gives pain to parents, the one who gives

charity and then places an obligation of favor upon the poor, and the one who denies fate/predestination.

Footnotes: 1 Sahih Bukhari, Kitab al-Shahadat, Bab Ma Qila fi Shahadat al-Zur, Qadeemi Kutub Khana Karachi, 1/362; Sahih Muslim, Kitab al-Iman, Bab al-Kaba'ir, Qadeemi Kutub Khana Karachi, 1/64 2 Jami' at-Tirmidhi, Abwab al-Birr wal-Silah, 2/12; Abwab al-Shahadat, 2/54, Amin Company Delhi 3 Sunan an-Nasa'i, Kitab al-Zakat, Bab al-Mannan bima A'ta, Nur Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi, 351/1 4 Al-Mustadrak al-Hakim, Kitab al-Iman, Thalathatun la Yadkhulun al-Jannah, Dar al-Fikr Beirut, 1/72 5 Al-Ilal al-Mutanahiya, Bab Dhikr al-Qadr wal-Qadriyya, Hadith 239, Dar Nashr al-Kutub al-Islamiyya, 1/152; Majma' al-Zawa'id, Bab Ma Ja'a fiman Yukadhdhibu bil-Qadr, Dar al-Kutub al-Arabi Beirut, 7/206

फतावा रज़विया, जिल्द 24

[अरबी बॉक्स]: क्या मैं तुम्हें सबसे बड़े महापापों (कबीरा गुनाहों) के बारे में न बताऊँ? क्या मैं तुम्हें सबसे बड़े महापापों के बारे में न बताऊँ? क्या मैं तुम्हें सबसे बड़े महापापों के बारे में न बताऊँ?

[उर्दू बॉक्स]: क्या मैं तुम्हें न बताऊँ कि सब कबीरा गुनाहों से सख़्त तर गुनाह क्या है? क्या न बता दूँ कि सब कबायर से बदतर क्या है? क्या न बता दूँ कि सब कबीरों से शदीद तर क्या है?

सहाबा ने अर्ज़ की: इरशाद हो। फ़रमाया:

[अरबी बॉक्स]: अल्लाह के साथ शरीक ठहराना और माता-पिता की नाफरमानी करना। [अल-हदीस]। इसे दोनों शैखों (बुखारी व मुस्लिम)[1] और तिर्मिज़ी[2] ने अबी बकरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है।

[उर्दू बॉक्स]: अल्लाह तआला का शरीक ठहराना और माँ-बाप को सताना। [अल-हदीस]। (इसे इमाम बुखारी व मुस्लिम और तिर्मिज़ी ने अबी बकरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया।)

हदीस 2: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[अरबी बॉक्स]: तीन लोग जन्नत में दाख़िल नहीं होंगे: माता-पिता का नाफ़रमान, दय्यूथ (वह व्यक्ति जिसमें अपनी घर की औरतों के प्रति ग़ैरत न हो) और मर्दों जैसी वज़अ (रूप) बनाने वाली औरत। इसे नसाई[3] और बज़्ज़ार ने उम्दा सनदों के साथ और हाकिम[4] ने इब्ने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया है।

[उर्दू बॉक्स]: तीन शख़्स जन्नत में न जाएँगे: माँ-बाप को सताने वाला, और दय्यूथ, और मर्दों की वज़अ बनाने वाली औरत। (नसाई और बज़्ज़ार ने जयीद सनदों के साथ और हाकिम ने इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत किया।)

हदीस 3: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[अरबी बॉक्स]: तीन शख़्स ऐसे हैं कि अल्लाह अज़्ज़-ओ-जल्ल न उनका फ़र्ज़ क़बूल करेगा न नफ़्ल: माता-पिता का नाफ़रमान, सदक़ा देकर एहसान जताने वाला, और तक़दीर को झुठलाने वाला। इसे इब्ने अबी आसिम[5] ने 'अस्-सुन्नाह' में हसन सनद के साथ रिवायत किया है।

[उर्दू बॉक्स]: तीन शख़्स हैं कि अल्लाह तआला न उनके फ़र्ज़ क़बूल करे न नफ़्ल: माँ-बाप को ईज़ा (तकलीफ़) देने वाला और सदक़ा देकर फ़क़ीर पर एहसान रखने वाला और तक़दीर का झुठलाने वाला।

पाद-टिप्पणियाँ: 1 सही बुखारी, किताबुश शहादात... सही मुस्लिम, किताबुल ईमान... 2 जामे तिर्मिज़ी, अबवाबुल बिर्रे वस्सिला... 3 सुनन नसाई, किताबुज़ ज़कात... 4 अल-मुस्तदरक अल-हाकिम, किताबुल ईमान... 5 अल-इल्लुल मुतनाहिया, बाब ज़िक्रिल क़द्र वल क़दरिया...

فتاوٰی رضویہ ، جلد ۲۴

[Arabic Box]: الا انبئکم باکبر الکبائر، الا انبئکم باکبر الکبائر، الا انبئکم باکبر الکبائر۔

[Urdu Box]: میں تمہیں نہ بتاؤں کہ سب کبیرہ گناہوں سے سخت تر گناہ کیا ہے، کیانہ بتادوں کہ سب کبائر سے بدتر کیا ہے، کیانہ بتادوں کہ سب کبیروں سے شدید تر کیا ہے۔

صحابہ نے عرض کی: ارشاد ہو۔ فرمایا:

[Arabic Box]: الاشراك بالله عقوق الوالدین۔ الحدیث رواہ الشیخان[1] والترمذی[2] عن ابی بکرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ۔

[Urdu Box]: اللہ تعالٰی کا شریک ٹھہرانا اور ماں باپ کو ستانا۔ الحدیث، (اسے امام بخاری و مسلم اور ترمذی نے ابی بکرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا۔ت)

حدیث ۲: رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

[Arabic Box]: ثلثۃ لایدخلون الجنۃ العاق لوالدیہ والدیوث و الرجلۃ من النساء۔ رواہ النسائی[3] والبزار بسندین جیدین والحاکم[4] عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما۔

[Urdu Box]: تین شخص جنت میں نہ جائیں گے : ماں باپ کو ستانے والا اور دیوث اور مردوں کی وضع بنانے والی عورت۔ (نسائی اور بزار نے جید سندوں کے ساتھ اور حاکم نے ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا۔ت)

حدیث ۳: رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

[Arabic Box]: ثلثۃ لایقبل اللہ عزوجل منھم صرفاً ولا عدلا عاق و منان ومکذب بقدر۔ رواہ ابن ابی عاصم[5] فی السنۃ بسند حسن

[Urdu Box]: تین شخص ہیں کہ اللہ تعالیٰ نہ ان کے فرض قبول کرے نہ نفل : ماں باپ کو ایذا دینے والا اور صدقہ دے کر فقیر احسان رکھنے والا اور تقدیر کا جھٹلانے والا۔

حواشی: 1 صحیح بخاری کتاب الشھادات باب ماقیل فی شھادۃ الزور قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۳۶۲، صحیح مسلم کتاب الایمان باب الکبائر قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۶۴ 2 جامع الترمذی ابواب البر والصلۃ ۲/ ۱۲ ابواب الشھادۃ ۲/ ۵۴ امین کمپنی دہلی 3 سنن النسائی کتاب الزکوۃ باب المنان بما اعطی نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ۱/۳۵۱ 4 المستدرک الحاکم کتاب الایمان ثلثۃ لایدخلون الجنۃ دارالفکر بیروت ۱/ ۷۲ 5 العلل المتنابیۃ باب ذکر القدر والقدریۃ حدیث ۲۳۹ دار نشر الکتب الاسلامیہ ۱/ ۱۵۲، مجمع الزوائد باب ماجاء فیمن یکذب بالقدر دارالکتب العربی بیروت ۷/ ۲۰۶

Fatawa Rizwia, Vol 24

Narrated by Abu Umamah (may Allah be pleased with him). (Recorded by Asim in As-Sunnah with a good chain from Abu Umamah (may Allah be pleased with him). -T)

Hadith 4: The Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him) said that Allah the Almighty says: "Cursed is he who treats his parents badly, cursed is he who treats his parents badly, cursed is he who treats his parents badly." (Reported by al-Tabarani and al-Hakim [1] from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him). -T)

Hadith 5: The Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "Allah's curse is upon the one who insults his parents." (Reported by Ibn Hibban [2] from Ibn Abbas (may Allah be pleased with him). -T)

Hadith 6: A young man was being prompted to say the Kalimah (declaration of faith) at the time of death, but he could not say it. The Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) was informed and he went there. He said, "Say: There is no god but Allah." The young man replied, "I cannot say it." He asked, "Why?" It was said that the person used to hurt his mother. The Mercy to the Worlds (may Allah's peace and blessings be upon him) called his mother and asked, "Is this your son?" She replied, "Yes." He asked: "Suppose a huge fire is lit and it is said to you that if you intercede for him, we will release him, otherwise we will burn him. Would you intercede for him then?" She replied, "O Messenger of Allah! In that case, I would certainly intercede." He said, "Then take Allah and me as witnesses that you are pleased with him." She said, "O Lord! I take You and Your Messenger as witnesses that I am pleased with my son."

Footnotes: 1. At-Targhib wat-Tarhib, with reference to Al-Tabarani and Al-Hakim, Hadith 4, Mustafa Al-Babi, Egypt, 3/287. 2. Mawarid al-Zam'an, Chapter on Major Sins, Hadith 53, Al-Matba'at al-Salafiyyah, p. 43.

फ़तावा रिज़विया, खंड २४

अबू उमामा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रिवायत है। (इसे आसिम ने अस-सुन्नह में अबू उमामा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से एक अच्छी सनद के साथ रिवायत किया है। -टी)

हदीस ४: अल्लाह के रसूल (अल्लाह की उन पर शांति और कृपा हो) ने फ़रमाया कि अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल फ़रमाता है: "लानत है उस पर जो अपने माता-पिता को सताए, लानत है उस पर जो अपने माता-पिता को सताए, लानत है उस पर जो अपने माता-पिता को सताए।" (इसे तबरानी और हाकिम [१] ने अबू हुरैरा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रिवायत किया है। -टी)

हदीस ५: अल्लाह के रसूल (अल्लाह की उन पर शांति और कृपा हो) ने फ़रमाया: "अल्लाह की लानत उस पर हो जो अपने माँ-बाप को गाली दे।" (इसे इब्न हिब्बान [२] ने इब्न अब्बास (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रिवायत किया है। -टी)

हदीस ६: एक युवक को मरते समय कलमा सिखाया जा रहा था, लेकिन वह कह नहीं पा रहा था। नबी (अल्लाह की उन पर शांति और कृपा हो) को खबर हुई तो वह वहाँ तशरीफ़ ले गए, फ़रमाया: कहो 'ला इलाहा इल्लल्लाह'। उसने कहा: मुझसे नहीं कहा जाता। फ़रमाया: क्यों? बताया गया कि वह व्यक्ति अपनी माँ को सताता था। रहमते आलम (अल्लाह की उन पर शांति और कृपा हो) ने उसकी माँ को बुलाकर फ़रमाया: क्या यह तुम्हारा बेटा है? उसने अर्ज़ की: हाँ। फ़रमाया: "भला सुन, अगर एक बहुत बड़ी आग भड़काई जाए और कोई तुझसे कहे कि अगर तू इसकी सिफ़ारिश (शफ़ाअत) कर दे तो हम इसे छोड़ देंगे, वरना जला देंगे, तो क्या उस वक्त तू इसकी शफ़ाअत करेगी?" उसने अर्ज़ की: या रसूलल्लाह! तब तो ज़रूर शफ़ाअत करूँगी। फ़रमाया: तो अल्लाह को और मुझे गवाह कर ले कि तू उससे राज़ी हो गई। उसने अर्ज़ की: ऐ अल्लाह! मैं तुझे और तेरे रसूल को गवाह करती हूँ कि मैं अपने बेटे से राज़ी हूँ।

पाद-टिप्पणियाँ: १. अत-तरगीब वत-तरहीब, तबरानी और हाकिम के हवाले से, हदीस ४, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, ३/२८७। २. मवारिद अल-ज़मआन, बड़े गुनाहों (कबायिर) का अध्याय, हदीस ५३, अल-मतबअतुल सलफ़िया, पृ. ४३।

पृष्ठ ४०५ / ७२०

عن ابی امامۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ (اسے عاصم نے السنۃ میں بسند حسن ابی امامہ رضی اللہ تعالٰی عنہ نے روایت کیا۔ ت)

حدیث ۴: رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں کہ اللہ عز وجل فرماتا ہے: ملعون من عق والدیہ ملعون من عق والدیہ ملعون من عق والدیہ۔ رواہ الطبرانی والحاکم ۱ عن ابی ہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ ملعون ہے جو اپنے والدین کو ستائے، ملعون ہے جو اپنے والدین کو ستائے، ملعون ہے جو اپنے والدین کو ستائے۔ (اسے طبرانی اور حاکم نے ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا۔ ت)

حدیث ۵: رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: لعن اللہ من سبّ والدیہ۔ رواہ ابن حبان ۲ عن ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ اللہ کی لعنت اس پر جو اپنے ماں باپ کو گالی دے (ابن حبان نے ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہ سے اسے روایت کیا۔ ت)

حدیث ۶: کہ ایک جوان کو نزع کے وقت کلمہ تلقین کیا، نہ کہہ سکا۔ نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو خبر ہوئی تشریف لے گئے، فرمایا کہہ لا الہ الا اللہ۔ کہا: مجھ سے نہیں کہا جاتا۔ فرمایا کیوں؟ کہا: وہ شخص اپنی ماں کو ستاتا تھا، رحمت عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے اس کی ماں کو بلا کر فرمایا: یہ تیرا بیٹا ہے؟ عرض کی: ہاں۔ فرمایا؟ ارأیت لو اججت نار ضخمۃ فقیل لك ان شفعت لہ خلیلہٗ و الاحرقنا ہ ا کنت تشفعین لہ۔ بھلا سن تو اگر ایک عظیم الشان آگ بھڑکائی جائے اور کوئی تجھ سے کہے کہ تو اس کی شفاعت کرے جب تو ہم اسے چھوڑتے ہیں ورنہ جلا دیں گے، کیا اس وقت تو اس کی شفاعت کرے گی۔ عرض کی: یارسول اللہ! جب تو شفاعت کروں گی، فرمایا: تو اللہ

کو اور مجھے گواہ کر لے کہ تو اس سے راضی ہو گئی۔ اس نے عرض کی: الٰہی! میں تجھے اور تیرے رسول کو گواہ کرتی ہوں کہ میں اپنے بیٹے سے۔

۱ الترغیب والترھیب بحوالہ الطبرانی والحاکم من اللواط حدیث ۴ مصطفی البابی مصر ۳/ ۲۸۷ ۲ موارد الظمآن باب فی الکبائر حدیث ۵۳ المطبعۃ السلفیہ ص ۴۳

Fatawa Rizvia Volume 24

...was pleased. Now the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) said to the youth: "O boy! Say, 'There is no god but Allah, alone, He has no partner, and I bear witness that Muhammad is His servant and His Messenger'." The youth recited the Kalima and passed away. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Arabic Boxed Text]: Arabic: الحمد لله الذي انقذه بي من النار - رواه الطبراني عن عبد الله بن ابى اوفى رضي الله تعالى عنهما. Translation: Thanks be to that God who saved him from Hell through my means. (Tabarani narrated this from Abdullah bin Abi Aufa, may Allah be pleased with him. - T)

Hadith 7: Awam bin Hawshab (may Allah have mercy on him), who is among the prominent Imams of the Tabi' al-Tabi'in and passed away in 28 AH, says: I went to a neighborhood, at the edge of which was a cemetery. At the time of Asr, a grave split open and a man came out of it whose head was that of a donkey and the rest of the body was human. He made three braying sounds like a donkey, then the grave closed. An old woman was sitting there spinning (yarn). A woman said to me, "Do you see this old lady?" I said, "What is her story?" She said, "She is the mother of the person in the grave. He used to drink wine. When he would return in the evening, his mother would advise him, 'O son! Fear God, how long will you drink this filth?' He would reply, 'You bray like a donkey.' This person died after Asr. Since then, every day after Asr, his grave splits open, he makes three donkey sounds like that, and then it closes. Narrated by al-Asbahani[2] and others. (Asbahani and others have narrated this. - T)

Similarly, the prohibitions of anger, lying, and theft are from the necessities of religion. Praying behind such a person is severely disliked (Makruh), specifically prohibitively disliked (Makruh Tahrimi), which is close to being forbidden (Haram) and must be repeated. If it was prayed unknowingly, then repeating it is obligatory (Wajib). It is mentioned in Saghiriy:

[Arabic Boxed Text]: Arabic: يكره تقديم الفاسق كراهة تحريم[3]. Translation: To make a transgressor (Fasiq) the Imam is prohibitively disliked. 12 Saghiriy. (T)

It is in Ghunya:

1. Shu'ab al-Iman, Hadith 8927, Dar al-Kutub al-Ilmiyya, Beirut, 6/198.

2. Sharh al-Sudur, citing al-Asbahani in al-Targhib, Chapter on the Punishment of the Grave, Khilafat Academy Mingora Swat, pp. 71 and 72.
3. Al-Saghiriy in Sharh Munyat al-Musalli, Discussions on Imamat, Mujtabai Press Delhi, p. 264.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

...राज़ी हुई, अब सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने जवान से फ़रमाया: ऐ लड़के! कह: ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहु। जवान ने कलिमा पढ़ा और इंतक़ाल किया, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

[अरबी बॉक्स]: अरबी: अलहम्दुलिल्लाहिल्लज़ी अन्क़ज़हू बी मिनन्नार - रवाह-त-तबरानी अन अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा। अनुवाद: शुक्र उस ख़ुदा का जिसने मेरे वसीले से उसे दोज़ख़ से बचा लिया। (इसे तबरानी ने अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया - त)

हदीस 7: अव्वाम बिन हौशब (रहमतुल्लाह अलैह) जो कि जलीलुल क़द्र तबे ताबईं आइम्मा में से हैं और 28 हिजरी में वफ़ात पाई, फ़रमाते हैं: मैं एक मोहल्ले में गया जिसके किनारे पर एक क़ब्रिस्तान था। असर के वक़्त एक क़ब्र फटी और उसमें से एक आदमी निकला जिसका सर गधे का और बाक़ी बदन इंसान का था। उसने गधे की तरह तीन बार आवाज़ निकाली और फिर क़ब्र बंद हो गई। वहाँ एक बुढ़िया बैठी सूत कात रही थी। एक औरत ने मुझसे कहा, "आप इन बड़ी बी को देख रहे हैं?" मैंने पूछा, "इनका क्या मामला है?" उसने कहा, "यह क़ब्र वाले की माँ हैं। वह शराब पीता था। जब वह शाम को घर आता तो माँ नसीहत करती कि ऐ बेटे! ख़ुदा से डर, कब तक इस नापाकी को पिएगा? वह जवाब देता कि तू तो गधे की तरह रेंकती है। यह शख़्स असर के बाद मरा था। तब से हर रोज़ असर के बाद इसकी क़ब्र फटती है, वह इसी तरह गधे की तीन आवाज़ें निकालता है और फिर क़ब्र बंद हो जाती है।" रवाह-उल-असबहानी[2] वग़ैरह (असबहानी वग़ैरह ने इसे रिवायत किया है - त)।

इसी तरह ग़ुस्सा, झूठ और चोरी की हुरमतें ज़रूरियात-ए-दीन से हैं। ऐसे शख़्स के पीछे नमाज़ सख़्त मकरूह है, मकरूह-ए-तहरीमी है जो हराम के क़रीब है और नमाज़ को दोहराना वाजिब है। अगर अनजाने में पढ़ ली हो तो उसे दोहराना वाजिब है। सग़ीरी में है:

[अरबी बॉक्स]: अरबी: युकरहु तक़दीमुल फ़ासिक़ किराहत-ए-तहरीम[3]। अनुवाद: फ़ासिक़ को इमाम बनाना मकरूह-ए-तहरीमी है। 12 सग़ीरी (त)।

ग़ुन्या में है:

1. शोबुल ईमान, हदीस 8927, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, 6/198।
2. शरहुस सुद्दूर, ब-हवाला असबहानी फ़ित-तर्ग़ीब, बाब अज़ाबुल क़ब्र, ख़िलाफ़त एकेडमी मिंगोरा स्वात, पेज 71 और 72।
3. अस-सग़ीरी फ़ी शरह मुन्यातुल मुसल्ली, मबाहिसुल इमामाह, मतब-ए-मुजतबाई दिल्ली, पेज 264।

راضی ہوئی، اب سیّد عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے جوان سے فرمایا : اے لڑکے! کہہ لا الہ الا اللہ وحدہ لا شریک لہ واشھد ان محمداً عبدہ ورسولہ۔ جوان نے کلمہ پڑھا اور انتقال کیا، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا:

الحمد للہ الذي انقذہ بی من النار - رواہ الطبراني عن عبداللہ بن ابی اوفی رضی اللہ تعالٰی عنہما۔ شکر اس خدا کا جس نے میرے وسیلے سے اس کو دوزخ سے بچالیا۔ (اسے طبرانی نے عبد اللہ بن ابی اوفی رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ۔ت)

حدیث ۷ : عوام بن حوشب رحمۃ اللہ علیہ کو اجلہ ائمہ تبع تابعین سے ہیں ۱۲۸ھ میں انتقال کیا، فرماتے ہیں میں ایک محلے میں گیا اس کے کنارے پر قبرستان تھا عصر کے وقت ایک قبر شق ہوئی اور اس میں سے ایک آدمی نکلا جس کا سر گدھے اور باقی بدن انسان کا، اس نے تین آوازیں گدھے کی طرح کیں پھر قبر بند ہو گئی، ایک بڑھیا بیٹھی کات رہی تھی ایک عورت نے مجھ سے کہا ان بڑی بی کو دیکھتے ہو؟ میں نے کہا: اس کا کیا معاملہ ہے؟ کہا : یہ قبر والے کی ماں ہے وہ شراب پیتا تھا جب شام کو آتا ماں نصیحت کرتی کہ اے بیٹے! خدا سے ڈر کب تک اس ناپاک کو پیئے گا؟ یہ جواب دیتا کہ تو تو گدھے کی طرح چلاتی ہے، یہ شخص عصر کے بعد مرا جب سے ہر روز بعد عصر اس کی قبر شق ہوتی ہے اور یوں تین آوازیں گدھے کی کر کے پھر بند ہو جاتی ہے رواہ الاصبھانی ۲ وغیرہ (اصبہانی وغیرہ نے اسے روایت کیا ہے ۔ت)

اسی طرح غضب وکذب وسرقہ کی حرمتیں ضروریات دین سے ہیں ایسے شخص کے پیچھے نماز سخت مکروہ ہے مکروہ تحریمی قریب بحرام اور واجب الاعادہ ہے کہ نادانستہ پڑھ لی ہو تو پھیرنا واجب ہے۔ صغیرہ میں ہے:

یکرہ تقدیم الفاسق کراھۃ تحریم ۳۔ فاسق کو امام بنانا مکروہ تحریمی ہے ۱۲ صغیری۔ (ت)

غنیہ میں ہے :

1 شعب الایمان حدیث ۸۹۲۷ دار الکتب العلمیہ بیروت ۶ / ۱۹۸ 2 شرح الصدور بحوالہ اصبھانی فی الترغیب باب عذاب القبر خلافت اکیڈمی منگورہ سوات ص ۷۱ و ۷۲ 3 الصغیری فی شرح منیۃ المصلی مباحث الامامۃ مطبع مجتبائی دہلی ص ۲۶۴

[Arabic]: وقدموا فاسقاً يأثمون بناء على ان كراهة تقديمه كراهة تحريمية ١-	**[Urdu]:** Those who appoint a transgressor (fasiq) as Imam will be sinners, because making him an Imam is prohibitively disliked (Makruh Tahrimi). 12 Ghunyah (T)

In Durr-e-Mukhtar: | | | | :--- | :--- | | **[Arabic]:** كل صلوٰة اديت مع كراهة التحريم وجب اعادتها ٢- | **[Urdu]:** Every prayer that was performed with prohibitive dislike (Karaha Tahrimiyya), it is mandatory (Wajib) to repeat it. 12 (T) |

It is commanded by Sharia to harbor hatred towards such a severe transgressor and sinner, and any act that results in his honor or respect is illegitimate and prohibited without necessity or compulsion. In Tabyin al-Haqa'iq, Maraqi al-Falah, Fath al-Mu'in, and the Hashiya of Durr-e-Mukhtar by Allama al-Tahtawi, etc., it is stated:

[Arabic]: الفاسق وجب عليهم اهانته شرعاً ٣-	**[Urdu]:** Legally, it is mandatory (Wajib) to humiliate a transgressor. 12 (T)

One should not invite him, nor should one desire to eat at his place upon invitation. In Sunan Abi Dawud and Jami' al-Tirmidhi, it is narrated from Abdullah bin Mas'ud (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Arabic]: لما وقعت بنو اسرائيل في المعاصى نهتهم علماؤهم فلم ينتهوا فجالسوهم واكلوهم وشاربوهم فضرب اللہ قلوب بعضهم ببعض فلعنهم على لسان داؤد و عيسى بن مريم ذلک بما عصوا وكانوا يعتدون ٤-	**[Urdu]:** When the Children of Israel fell into sins, their scholars forbade them but they did not desist. These scholars then sat with them in their gatherings, ate with them, and drank with them. Then Allah Almighty cast the influence of those criminals' hearts onto those sitting with them, so they all became alike. Then He cursed all of them through the tongue of David and Jesus son of Mary (peace be upon them). This was the reward for their sins and for exceeding limits.

---

1. Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Imamate, Sohail Academy Lahore, p. 513
2. Durr al-Mukhtar, Book of Prayer, Chapter on Making up Missed Prayers, Mujtabai Press Delhi, 1/100
3. Hashiyat al-Tahtawi on al-Durr al-Mukhtar, Book of Prayer, Chapter on Leasing, Dar al-Ma'rifah Beirut, 1/243; Tabyin al-Haqa'iq, Chapter on Imamate, al-

Matba'ah al-Kubra Bulaq Egypt, 1/134; Fath al-Mu'in, Book of Prayer, Chapter on Imamate, H.M. Saeed Company Karachi, 1/208

4. Mishkat al-Masabih with reference to Dawud and al-Tirmidhi, Book of Manners, Chapter on Enjoining Good, Mujtabai Press Delhi, p. 438

जिल्द २४ | फ़तावा रज़विया

[अरबी]: وقدموا فاسقاً يأثمون بناء على ان كراهة تقديمه كراهة تحريمية ١-

[उर्दू]: फासिक (दुराचारी) को इमाम बनाने वाले गुनहगार होंगे, क्योंकि उसे इमाम बनाना मकरूह-ए-तहरीमी है। १२ गुनया (त)

दुर्र-ए-मुख्तार में है: | | | | :--- | :--- | | **[अरबी]:** كل صلوٰة اديت مع كراهة التحريم وجب اعادتها ٢-। **[उर्दू]:** हर वह नमाज़ जो कराहत-ए-तहरीमी के साथ अदा की गई हो, उसका दोबारा पढ़ना वाजिब है। १२ (त) |

ऐसे घोर फासिक और गुनहगार से शरीयत के अनुसार घृणा करने का हुक्म है। जिस कार्य में उसका सम्मान या आदर झलकता हो, वह बिना किसी आवश्यकता या मजबूरी के नाजायज़ और मना है। 'तब्ईन अल-हक़ाएक', 'मराक़ी अल-फ़लाह', 'फ़त्ह अल-मुईन' और अल्लामा ताहतावी के'हाशिया दुर्र-ए-मुख्तार' आदि में है:

[अरबी]: الفاسق وجب عليهم اهانته شرعاً ٣-

[उर्दू]: शरीयत के अनुसार फासिक का अपमान करना वाजिब है। १२ (त)

उसे न तो दावत पर बुलाना चाहिए और न ही उसके यहाँ दावत में खाना चाहिए। सुनन अबू दाऊद और जामे तिरमिज़ी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

[अरबी]: لما وقعت بنو اسرائيل في المعاصى نهتهم علماؤهم فلم ينتهوا فجالسوهم واكلوهم وشاربوهم فضرب اللہ قلوب بعضهم ببعض فلعنهم على لسان داؤد و عيسى بن مريم ذلک بما عصوا وكانوا يعتدون ٤-

[उर्दू]: जब बनी इसराईल गुनाहों में पड़े, उनके उलेमा ने मना किया, वे बाज़ न आए। ये उलेमा उनके पास उनके जलसों में बैठे, उनके साथ खाना खाया-पिया, तो अल्लाह तआला ने उन मुजरिमों के दिलों पर असर उन पास बैठने वालों पर भी डाला कि सब एक से हो गए। फिर उन सब पर दाऊद व ईसा बिन मरियम अलैहिमुस्सलाम की ज़बान से लानत फ़रमाई। यह बदला था उनके गुनाहों और हद से बढ़ने का।

---

1. गुनयातुल मुस्तमली, फ़स्ल फ़िल इमामा, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ ५१३

2. दुर्र-ए-मुख्तार, किताबुस सलात, बाबु क़ज़ा इल फ़वाइत, मतबा मुजतबाई देहली, १/१००
3. हाशिया अत-ताहतावी अलल दुर्रिल मुख्तार, किताबुस सलात, फ़स्ल फ़िल इज़ाराह, दारुल मारिफ़ा बेरुत, १/२४३; तब्ईनुल हक़ाएक, बाबुल इमामा, अल मतबअतुल कुबरा बूलाक़ मिस्र, १/१३४; फ़त्हुल मुईन, किताबुस सलात, बाबुल इमामा, एच.एम. सईद कंपनी कराची, १/२०८
4. मिश्कातुल मसाबीह, अबू दाऊद व तिरमिज़ी के हवाले से, किताबुल अदब, बाबुल अम्र बिल मारूफ़, मतबा मुजतबाई देहली, पृष्ठ ४३८

पृष्ठ ७२० का ४०७

وقدموا فاسقاً یأثمون بناء علی ان کراھة تقدیمه کراھة تحریمیة ۱- فاسق کو امام بنانے والے گنہگار ہوں گے ، کیونکہ اسے امام بنانا مکروہِ تحریمی ہے ۱۲ اغنیہ (ت)

در مختار میں ہے: | | | | :--- | :--- | | کل صلوٰۃ ادیت مع کراھة التحریم وجب اعادتھا ۲- | ہر وہ نماز جو کراہتِ تحریمہ کے ساتھ ادا کی گئی ہو اس کا دوبارہ پڑھنا واجب ہے ۱۲ (ت) |

ایسے اشد فاسق فاجر سے شرعاً بغض رکھنے کا حکم ہے اور جس بات میں اس کا اعزاز واکرام نکلے بے ضرورت و مجبوری ناجائز و ممنوع ہے۔ تبیین الحقائق و مراقی الفلاح وفتح المعین و حاشیہ در مختار للعلاۃ الطحطاوی وغیرہما میں ہے:

الفاسق وجب علیھم اھانتہ شرعاً ۳- شرعی طور پر فاسق کی توہین واجب ہے ۱۲ (ت)

اس کی دعوت کرنا نہ اس کے یہاں دعوت کھانا کچھ نہ چاہئے۔ سنن ابی داؤد و جامع ترمذی میں عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

لما وقعت بنو اسرائیل في المعاصی نھتھم علماؤھم فلم ینتھوا فجالسوھم واکلوھم وشاربوھم فضرب اللہ قلوب بعضھم ببعض فلعنھم علی لسان داؤد و عیسی بن مریم ذلک بما عصوا وکانوا یعتدون ٤-

جب بنی اسرائیل گناہوں میں پڑے ان کے علماء نے منع کیا وہ باز نہ آئے یہ علماء ان کے پاس ان کے جلسوں میں بیٹھے ان کے ساتھ کھانا کھایا پیا تو اللہ تعالیٰ نے ان مجرموں کے دلوں پر اثر ان پاس بیٹھنے والوں پر بھی ڈالا کہ سب ایک سے ہوگئے پھر ان سب پر داؤد و عیسی بن مریم علیہم الصلوٰۃ والسلام کی زبان سے لعنت فرمائی یہ بدلہ تھا ان کے گناہوں اور حد سے بڑھنے کا۔

1 غنية المستملی فصل فی الامامة سہیل اکیڈمی لاہور ص ۵۱۳ 2 در مختار کتاب الصلوة باب قضاء الفوائت مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۰۰ 3 حاشیة الطحطاوی علی الدرالمختار کتاب الصلوة فصل فی الاجارة دارالمعرفة بیروت ۱/ ۲۴۳، تبیین الحقائق باب الامامة المطبعة الکبری بولاق مصر ۱/ ۱۳۴، فتح المعین کتاب الصلوة باب الامامة ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۲۰۸ 4 مشکوة المصابیح بحوالہ داؤد والترمذی کتاب الادب باب الامر بالمعروف مطبع مجتبائی دہلی ص ۴۳۸

Volume 24 Fatawa Razawiyya

He is deserving of the severest punishment, the extent of which is entrusted to the opinion of the Islamic judge. And if theft is proven through legal evidence, the Islamic judge will cut off his hand from the wrist. All those who support him are severe sinners. Allah the Almighty says:

"And do not cooperate in sin and aggression."[1] (Quran 5:2) (T)

You have already heard the Hadith that a curse descended upon those who sat and ate with them. Then what will be the state of those who support or seek support for such acts? May Allah Almighty grant refuge and grant Muslims the guidance for repentance, Ameen!

As for giving or facilitating charity, if he is seen as needy, destitute, naked, or hungry, then there is no harm as long as there is no intention of supporting or aiding him in his sins. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"There is a reward for [serving] every living being (possessing a moist liver)." - Narrated by the two Sheikhs [Bukhari and Muslim][2] from Abu Hurairah. Also narrated in this chapter by Abdullah bin Amr from Suraqah bin Malik (may Allah be pleased with them).

There is reward in [serving] every living being. (Imam Bukhari and Muslim narrated it from Abu Hurairah, and in this chapter, Abdullah bin Amr narrated it from Suraqah bin Malik, may Allah be pleased with them. T)

It is stated in a Sahih Hadith that giving water even to a dog is rewarding, to the extent that Allah Almighty forgave a prostitute because of it, as mentioned in the Sahih books.[3] (To the extent that Allah Almighty granted forgiveness to a lewd woman for this reason. T) And Allah Almighty knows best.

Problem 164: 7 Rabi' al-Akhir Sharif 1321 AH What do the scholars of the religion say about this matter: When Hindah became certain of her death during her terminal illness, she addressed her husband Zaid in the presence of those attending and requested forgiveness for her rights and shortcomings. She forgave all her rights to Zaid, and specifically forgave the debt of dower (mahr) in detail. Zaid also forgave his rights and shortcomings in her service. In this situation, does any form of accountability remain against each other before Allah, or is the general phrase 'all rights and shortcomings' sufficient?

[1] Al-Quran Al-Karim 5/2 [2] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Musaqat 1/318 - Abwab al-Mazalim 1/333 - Kitab al-Adab 2/889, Qadimi Kutub Khana Karachi; Sahih Muslim, Kitab Qatl al-Hayyat, Bab Fadl Saqi al-Baha'im al-Muharramah, Qadimi Kutub Khana Karachi 2/73; Musnad Ahmad bin Hanbal from Abdullah bin Amr, al-Maktab al-Islami Beirut 2/222 [3] Sahih Muslim, Kitab Qatl al-Hayyat, Bab Fadl Saqi al-Baha'im al-Muharramah, Qadimi Kutub Khana Karachi 2/73

जिल्द २४ फ़तावा रज़विया

वह सख्त से सख्त ताज़ीर (सज़ा) के काबिल है जिसकी मात्रा हाकिम-ए-शरअ (धार्मिक न्यायाधीश) की राय पर सुपुर्द है और अगर चोरी शरीअत की गवाही से साबित हो जाए तो हाकिम-ए-शरअ उसका हाथ कलाई से काट देगा। इसकी हिमायत करने वाले सब सख्त गुनहगार हैं, अल्लाह तआला फरमाता है:

"وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ" १ "और गुनाह और ज़्यादती पर परस्पर मदद न करो।" (त)

अभी हदीस सुन चुके कि पास बैठने, साथ खाने वालों पर लानत उतरी। फिर हिमायत करने और कराने वालों का क्या हाल होगा, अल्लाह अज़्ज़ा वजल्ल पनाह दे और मुसलमानों को तौबा की तौफीक अता फरमाए, आमीन!

रहा सदक़ा देना दिलाना, अगर उसे मोहताज ज़रूरत मंद नंगा भूखा देखें तो हर्ज नहीं जबकि गुनाहों में उसकी हिमायत व सहायता की नीयत न हो, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

"فِي كُلِّ ذَاتِ كَبِدٍ حَرَّاءَ اَجْرٌ" - इसे दो शेखों (बुखारी और मुस्लिम) ने रिवायत किया २ अबू हुरैरा से और इस अध्याय में अब्दुल्लाह बिन अम्र से उन्होंने सुराका बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से रिवायत किया है।

हर गर्म जिगर वाले (जीवित प्राणी) की सेवा में सवाब है। (इमाम बुखारी और मुस्लिम ने अबू हुरैरा से और इस अध्याय में अब्दुल्लाह बिन अम्र से उन्होंने सुराका बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से इसे रिवायत किया है। त)

सही हदीस में है कि कुत्ते को भी पानी पिलाना सवाब है यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने इस कारण से एक बदचलन औरत की मगफिरत फरमाई जैसा कि सहाह ३ में है (यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने इस कारण से फाहिशा औरत की मगफिरत फरमाई। त) वल्लाहु तआला आलम।

मसला १६४: ७ रबी-उल-आख़िर शरीफ १३२१ हिजरी दीन के उलेमा इस मसले में क्या फरमाते हैं कि हिन्दा को जब मरज़-उल-मौत (मृत्यु शय्या) में अपनी मौत का यकीन हुआ तो उसने अपने पति ज़ैद को उपस्थित लोगों के सामने संबोधित करके अधिकारों और कोताहियों की माफी माँगी और अपने तमाम अधिकार ज़ैद को माफ कर दिए, मेहर का ऋण विस्तार से अलग माफ किया, ज़ैद ने भी

अपने अधिकार और सेवाओं की कमी को माफ कर दिया। अब इस स्थिति में अल्लाह के यहाँ एक-दूसरे पर किसी प्रकार की जवाबदेही शेष तो नहीं रही या संक्षिप्त शब्द 'तमाम अधिकार और कोताहियां' काफी हैं?

१ अल-कुरआन अल-करीम ५/२ २ सहीह अल-बुखारी, किताब अल-मुसाकात १/३१८ - अबवाब अल-मज़ालिम १/३३३ - किताब अल-अदब २/८८९ पुरानी कुतुब खाना कराची, सहीह मुस्लिम किताब कत्ल अल-हय्यात बाब फज़्ल ़सकी अल-बहाइम अल-मुहर्रमा पुरानी कुतुब खाना कराची २/७३, मुसनद अहमद बिन हंबल अन अब्दुल्लाह बिन अम्र अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत २/२२२ ३ सहीह मुस्लिम किताब कत्ल अल-हय्यात बाब फज़्ल ़सकी अल-बहाइम अल-मुहर्रमा पुरानी कुतुब खाना कराची २/७३

पेज ४०८ / ७२०

وہ سخت سے سخت تعزیر کے قابل ہے جس کی مقدار حاکم شرع کی رائے پر سپرد ہے اور اگر سرقہ شہادت شرعیہ سے ثابت ہوجائے تو حاکم شرع اس کا ہاتھ کلائی سے کاٹ دے گا اس کی تائید کرنے والے سب سخت گناہگار ہیں ، قال اللہ تعالٰی :

"وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ" ۱ اور گناہ اور زیادتی پر باہم مدد نہ کرو۔ (ت)

ابھی حدیث سن چکے کہ پاس بیٹھنے، ساتھ کھانے والوں پر لعنت اتری۔ پھر تائید کرنے کرانے والوں کا کیا حال ہوگا، اللہ عزوجل پناہ دے اور مسلمانوں کو توفیق توبہ بخشے، آمین!

رہا صدقہ دینا دلانا، اگر اسے محتاج ضرورت مند ننگا بھوکا دیکھیں تو حرج نہیں جبکہ گناہوں میں اس کی تائید واعانت کی نیت نہ ہو، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

فِي كُلِّ ذَاتِ كَبِدٍ حَرَّاءَ اَجْرٌ - رواہ الشیخان ۲ عن ابی ہریرۃ وفی الباب عن عبد اللہ بن عمرو عن سراقۃ بن مالك رضی اللہ تعالی عنہم -

ہر گرم جگر والی میں ثواب ہے۔ (امام بخاری اور مسلم نے ابو ہریرہ سے اور اس باب میں عبد اللہ بن عمرو سے انہوں نے سراقہ بن مالک رضی اللہ تعالٰی عنہم سے اسے روایت کیا ۔ ت)

صحیح حدیث میں ہے کہ کتے کو بھی پانی پلانا ثواب ہے حتی غفر اللہ تعالٰی بہ البغی کما فی الصحاح ۳ (حتی کہ اللہ تعالیٰ نے اس سبب سے فاحشہ عورت کی مغفرت فرمائی ۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۶۴ : ۷ ربیع الآخر شریف ۱۳۲۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ کو جب مرض الموت میں اپنے مرگ کا یقین ہوا تو اپنے شوہر زید کو بمواجہہ موجودیں مخاطب کرکے عفو حقوق و تقصیرات کی مقتدعی ہوئی اور اپنے جملہ حقوق زید کو معاف کئے دین مہر کو بہ تفصیل علیحدہ معاف کیا زید نے بھی اپنے حقوق و قصور خدمات کی معافی دی اب اس صورت میں کسی قسم کا مواخذہ ایک دوسرے پر عند اللہ باقی تو نہ رہا یا لفظ مجمل جملہ حقوق و قصور کافی

۱ القرآن الکریم ۲/۵ ۲ صحیح البخاری، کتاب المساقات ۱ / ۳۱۸ - ابواب المظالم ۱ / ۳۳۳ - کتاب الادب ۲ / ۸۸۹ قدیمی کتب خانہ کراچی، صحیح مسلم کتاب قتل الحیات باب فضل سقی البھائم المحرمة قديمي كتب خانه كراچی ۲ / ۷۳ ، مسند احمد بن حنبل عن عبد الله بن عمرو المكتب الاسلامي بيروت ۲ / ۲۲۲ ۳ صحیح مسلم کتاب قتل الحیات باب فضل سقی البھائم المحرمة قديمي كتب خانه كراچی ۲ / ۷۳

Fatawa Rizwia Volume 24

...it was not separate. It was necessary to explain each mistake and right, and Zaid has become free from the debt of the dower, or this forgiveness will be considered as a bequest during the terminal illness (Maradh-ul-Mawt) and will be liable for two-thirds, even if the heirs do not demand it in this world due to shame or custom. Provide a clarification and be rewarded.

The Answer: The general forgiveness of rights that Zaid gave to Hindah and Hindah to Zaid, in that, the financial rights of Hindah like dower and other debts will be dependent on the permission of Hindah's heirs as we have explained in the chapter of Gift (Hibah) in our Fatawa. (As stated in the chapter of Gift in our Fatawa - Translator). Apart from these, the non-financial rights of Hindah and the financial and non-financial rights of Zaid, whatever was in the knowledge of the forgiver (Zaid or Hindah) were all forgiven. And those which were not in knowledge but were ordinary, easy rights that would not have been an issue if known specifically, they were also forgiven. And those which were so large, great, or severe that if told in detail, the owner of the right would not forgive, the forgiveness of such rights in such general and brief words is a matter of difference among scholars. Some, looking at the outward meaning of the word, consider all to be forgiven, and some consider it necessary to specify them in detail and then ask for forgiveness. The first is more extensive and the second is more precautionary. It is mentioned in 'Minh ar-Rawdh al-Azhar':

Arabic

Is it sufficient for a debtor to say to a creditor, "I owe you a debt, so forgive me," or is it necessary to specify its amount? In 'Al-Nawazil', a man owes another a debt, and he (the creditor) does not know the full extent of it. The debtor says to him, "Absolve me of what you have against me," and he replies, "I have absolved you." Naseer said: He is not absolved except for the amount he imagined, i.e., what he thought he owed. Muhammad ibn Salama said: He is absolved of everything. The

Urdu Translation

Is it enough for a debtor to say to the creditor, "I owe you a debt, forgive me," or is it necessary to specify the amount of the debt? It is in 'Nawazil' that one person has a debt on another and he does not know the total debt; the debtor says to him, "Forgive me your debt," he said, "I have forgiven you." Naseer says that only as much will be forgiven as was in his thought, Muhammad ibn Salama says that everything will be forgiven. Faqih Abu

Arabic	Urdu Translation
jurist Abu al-Layth said: The judicial ruling (Hukm al-Qada) is what Muhammad ibn Salama said, and the hereafter ruling (Hukm al-Akhirah) is what Naseer said. And in 'Al-Qunyah', regarding one who has...	al-Layth said: The judge's decision is what Muhammad ibn Salama's saying is, and the rule for the hereafter is what Naseer said. In 'Qunyah' it is that a person who owes someone...

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

...अलग नहीं था। प्रत्येक गलती और अधिकार की व्याख्या आवश्यक थी, और ज़ैद मेहर के ऋण से मुक्त हो गया, या इस माफी को मरज़ुल मौत (मृत्यु पूर्व बीमारी) की वसीयत का हुक्म मानकर दो-तिहाई का ज़िम्मेदार माना जाएगा, भले ही वारिस दुनिया में शर्म या रिवाज़ के कारण मांग न करें। स्पष्टीकरण दें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: ज़ैद ने हिंदा को और हिंदा ने ज़ैद को जो सामान्य अधिकारों की माफी दी, उनमें हिंदा के वित्तीय अधिकार जैसे मेहर और अन्य ऋणों की माफी हिंदा के उत्तराधिकारियों की अनुमति पर निर्भर करेगी, जैसा कि हमने अपने फ़तावा में 'हिबा' (उपहार) के अध्याय में स्पष्ट किया है। (जैसा कि हमारे फ़तावा में हिबा के अध्याय में वर्णित है। - अनुवादक) इनके अलावा हिंदा के गैर-वित्तीय अधिकार और ज़ैद के वित्तीय और गैर-वित्तीय अधिकार, जो कुछ भी माफी देने वाले (ज़ैद या हिंदा) के ज्ञान में थे, वे सब माफ़ हो गए। और जो ज्ञान में नहीं थे लेकिन सामान्य, आसान अधिकार थे कि यदि विशेष रूप से ज्ञात होते तो माफी में कोई हर्ज नहीं होता, वे भी माफ़ हो गए। और जो इतने बड़े, महान या गंभीर थे कि यदि विस्तार से बताए जाते तो अधिकार का स्वामी माफ़ नहीं करता, ऐसे सामान्य संक्षिप्त शब्दों में उन अधिकारों की माफी हो जाने के बारे में विद्वानों में मतभेद है। कुछ लोग शब्द के बाह्य रूप को देखते हुए सभी की माफी मानते हैं और कुछ विशेष रूप से विस्तार से बताकर माफी मांगना आवश्यक मानते हैं। पहला अधिक व्यापक है और दूसरा अधिक सावधानी वाला है। 'मिन्हा अल-रौद अल-अज़हर' में है:

अरबी

क्या ऋणी के लिए यह पर्याप्त है कि वह ऋणदाता से कहे, "मुझ पर तुम्हारा ऋण है, इसलिए मुझे माफ़ कर दो," या उसकी राशि निर्धारित करना आवश्यक है? 'अल-नवाज़िल' में है कि एक व्यक्ति का दूसरे पर ऋण है और उसे (ऋणदाता को) पूरे ऋण का पता नहीं है। ऋणी उससे कहता है, "मेरे पास जो तुम्हारा है उससे मुझे मुक्त कर दो," तो वह कहता है, "मैंने तुम्हें मुक्त कर दिया।" नसीर ने कहा: वह केवल

उर्दू अनुवाद

क्या ऋणी के लिए यह पर्याप्त है कि वह ऋणदाता से कहे कि मुझ पर तुम्हारा ऋण है मुझे माफ़ कर दो या ऋण की मात्रा निश्चित करना आवश्यक है? 'नवाज़िल' में है कि एक आदमी का दूसरे पर ऋण है और उसे पूरे ऋण का ज्ञान नहीं है, ऋणी उससे कहता है कि तू मुझे अपना ऋण माफ़ कर दे, उसने कहा मैंने तुझे माफ़ कर दिया। नसीर कहते

अरबी

उतनी ही राशि से मुक्त होगा जितनी उसने कल्पना की थी, यानी जितना उसने सोचा था कि उस पर बकाया है। मुहम्मद बिन सलमा ने कहा: वह सब कुछ से मुक्त हो जाएगा। फ़क़ीह अबू लैथ ने कहा: न्यायिक निर्णय (हुक्म अल-क़ज़ा) वही है जो मुहम्मद बिन सलमा ने कहा, और परलोक का निर्णय (हुक्म अल-आख़िरा) वही है जो नसीर ने कहा। और 'अल-कुन्या' में है, जिस पर किसी का...

उर्दू अनुवाद

हैं कि उतना ही माफ़ होगा जितना उसके विचार में था, मुहम्मद बिन सलमा कहते हैं कि पूरा माफ़ हो जाएगा। फ़क़ीह अबू लैथ ने फ़रमाया: काज़ी का फ़ैसला वही है जो मुहम्मद बिन सलमा का कथन है, और आख़िरत का हुक्म वह है जो नसीर ने फ़रमाया, 'कुन्या' में है कि जिस व्यक्ति पर किसी का...

نہ تھا علیحدہ ہر خطا وحق کی تشریح ضرور تھی اور زید دین مہر سے بری ہو گیا یا یہ معافی زمانہ مرض الموت کی حکم وصیت میں منصور ہو کر دو ثلث کا مواخذہ دار رہے گا اگر چہ ورثاء دنیا میں شرم یا رسم کے باعث متقاضی نہ ہوں۔ بینوا توجروا۔

الجواب: عام حقوق کی معافی جو زید نے ہندہ اور ہندہ نے زید کو کی ان میں ہندہ کے حقوق مالیہ مثل مہر و دیگر ڈیون کی معافی توا جازت وارثان ہندہ پر موقوف رہے گی کما بیناہ فی الہبۃ من فتاؤنا (جیسا کہ ہمارے فتاوی میں ہبہ کے باب میں بیان کیا گیا ہے۔ ت) ان کے سوا ہندہ کے حقوق غیر مالیہ اور زید کے حقوق مالیہ و غیر مالیہ جو کچھ معاف کنندہ زید خواہ ہندہ کے علم میں تھا وہ سب معاف ہو گیا اور جو علم میں نہ تھا مگر معمولی حقوق سہل و آسان سے تھا کہ بالخصوص معلوم ہوتا تو معافی میں باک نہ ہوتا وہ بھی معاف ہو گیا اور جو اتنا کثیر یا عظیم یا شدید تھا کہ اگر تفصیلاً بتایا جائے تو صاحب حق معاف نہ کرے ایسے عام مجمل لفظ میں ان حقوق کی معافی ہو جانا علماء میں مختلف فیہ ہے بعض بنظر ظاہر لفظ سب کی معافی مانتے ہیں اور بعض بالخصوص تفصیلاً ان کا بتا کر معافی مانگنا ضروری جانتے ہیں اول اوسع ہے اور ثانی احوط منح الروض الازہر میں ہے:

عربی	اردو ترجمہ
هل يكفيه ان يقول لك على دين فاجعلني في حل ام لابد ان يعين مقداره؟ ففي النوازل رجل له على	کیا مقروض کے لئے یہ کافی ہے کہ قرض خواہ سے کہے کہ مجھ پر تمہارا قرض ہے مجھے معاف کردے یا ضروری ہے کہ قرض کی مقدار معین کرے؟ نواز ل میں ہے کہ ایک

عربی	اردو ترجمہ
اخر دين وهو لا يعلم بجميع ذالك فقال	آدمی کا دوسرے پر قرض ہے اور اسے تمام قرض کا علم
له المديون ابرئنى مما لك على فقال	نہیں مقروض اسے کہتا ہے کہ تو مجھے اپنا قرض معاف
ابرأتك، فقال نصير لا يبرأ الا مقدار	کردے، اس نے کہا میں نے تجھے معاف کر دیا۔ نصیر کہتے
ما يتوهم اى يظن انه عليه، وقال	ہیں کہ اسی قدر معاف ہوگا جتنا کہ اس کے گمان میں تھا،
محمد بن سلمة يبرأ عن الكل. قال	محمد بن سلمہ کہتے ہیں کہ تمام معاف ہو جائے گا۔ فقیہ
الفقيه ابو الليث حكم القضاء ماقاله	ابواللیث نے فرمایا: قاضی کا فیصلہ وہی ہے جو محمد بن
محمد بن سلمة وحكم الأخرة ماقاله	سلمہ کا قول ہے، اور آخرت کا حکم وہ ہے جو نصیر نے
نصير، وفى القنية من عليه	فرمایا، قنیہ میں ہے کہ جس شخص پر کسی کے

Fatawa Rizvia, Volume 24

[Right Column - Urdu Translation/Exposition of the Arabic text] If there are some rights [owed to someone], and one asks the owner of those rights, "Please forgive me," without specifying the details of the rights, and the owner forgives him; then if it is known that the owner would forgive him even after knowing the details of the rights, they will be forgiven, otherwise not. Some scholars said: This detail is excellent. It is also narrated that the rights will be forgiven in any case. It is mentioned in 'Al-Khulasa' that a person said to another, "Forgive me every right you have over me," and he forgave him. If the owner of the rights has knowledge [of them], then the one seeking forgiveness will be absolved legally (Qada'an) and religiously (Diyanatan) (i.e., in terms of judgment and also before Allah). If he [the owner] does not have knowledge, then by consensus, the judgment will be that he is absolved [legally]. As for the religious aspect (Diyanatan - before Allah), then according to Imam Muhammad, he will not be absolved, but according to Imam Abu Yusuf, he will be absolved, and the fatwa is based on this. [End of citation]. There is an objection to this that it goes against the preferred view of Jurist Abu al-Layth; it is possible that his saying is based on piety (Taqwa). The discourse of 'Minah al-Rawd' ends here. I say: (I say that) there is room for discussion regarding it being against the preferred view of Jurist Abu al-Layth because in 'Al-Khulasa', the discussion is about when a person has no knowledge of the rights at all and forgives them, and the discourse of Jurist Abu al-Layth is about that...

[Left Column - Arabic Original] Rights [owed], so he sought permission from their owner without detailing them, and the owner pardoned him. They are excused if it is known that had he detailed them, he would have pardoned him; otherwise, no. Some said it is good. It is narrated that he becomes absolved unconditionally. In 'Al-Khulasa', a man said to another: 'Absolve me of every right of yours over me,' and he did. If the owner was aware of it, he is absolved legally by consensus. As for religiously, according to Muhammad (may Allah have mercy on him), he is not absolved; according to Abu Yusuf, he is, and the fatwa is based on this. It ends here. It is noted that this contradicts what Abu al-Layth chose, and perhaps his saying is based on piety. This is the end of what is in 'Minah al-Rawd'. I say: In its contradiction to what the Jurist chose, there is consideration, for the discussion here is about acquittal from rights unknown to the owner at all, whereas there it was regarding when a quantity was assumed and the reality was more, and there was a great difference between them. For one who...

[1] Minah al-Rawd al-Azhar Sharh al-Fiqh al-Akbar, Chapter on Repentance and its Conditions, Mustafa al-Babi, Egypt, p. 159. Page 410 of 720

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] यदि कुछ अधिकार (ऋण आदि) हों और वह व्यक्ति अधिकारों के मालिक से कहे कि मुझे माफ़ कर दे और अधिकारों का विवरण न दे, और मालिक उसे माफ़ कर दे; तो अगर यह मालूम हो कि मालिक अधिकारों का विवरण जानकर भी माफ़ कर देता, तो वे माफ़ हो जाएंगे, अन्यथा नहीं। कुछ विद्वानों ने फ़रमाया: यह विवरण बहुत अच्छा है। यह भी रिवायत है कि किसी भी सूरत में अधिकार माफ़ हो जाएंगे। 'अल-ख़ुलासा' में है कि एक व्यक्ति ने दूसरे से कहा, "तुम मुझे अपना हर अधिकार माफ़ कर दो," उसने माफ़ कर दिया। अगर अधिकार के मालिक को उन अधिकारों का ज्ञान है, तो माफ़ी माँगने वाला कानूनी (क़ज़ाअन) और धार्मिक (दियानतन) तौर पर (यानी फ़ैसले के लिहाज़ से भी और अल्लाह के नज़दीक भी) बरी हो जाएगा। और अगर उसे ज्ञान नहीं है, तो सर्वसम्मति से यह फ़ैसला होगा कि वह बरी हो गया। रही बात धार्मिक (दियानतन - अल्लाह के नज़दीक) पहलू की, तो इमाम मुहम्मद के नज़दीक वह बरी नहीं होगा, जबकि इमाम अबू यूसुफ़ के नज़दीक वह बरी हो जाएगा और इसी पर फ़तवा है। 'इंतिही' (समाप्त)। इसमें आपत्ति यह है कि यह फ़क़ीह अबू अल-लैथ के पसंदीदा विचार के ख़िलाफ़ है; मुमकिन है कि उनका यह कहना तक़वा (परहेज़गारी) पर आधारित हो। 'मिनाह अल-रौद' का कलाम यहाँ ख़त्म हुआ। अक़ूल: (मैं कहता हूँ कि) फ़क़ीह अबू अल-लैथ के पसंदीदा विचार के ख़िलाफ़ होने में चर्चा की गुंजाइश है क्योंकि 'ख़ुलासा' में उस बारे में बात हो रही है जब एक व्यक्ति को अधिकारों का बिल्कुल ज्ञान न हो और वह उन्हें माफ़ कर दे, और फ़क़ीह अबू अल-लैथ का कलाम इसी सिलसिले में है...

[बायां कॉलम - अरबी मूल] अधिकारों के संबंध में उसने स्वामी से अनुमति माँगी और उनका विवरण नहीं दिया, और स्वामी ने उसे मुक्त कर दिया। उन्हें क्षमा माना जाएगा यदि यह ज्ञात हो कि यदि वह उनका विवरण देता तो भी वह उसे मुक्त कर देता, अन्यथा नहीं। कुछ ने कहा कि यह उत्तम है। यह भी वर्णित है कि वह बिना शर्त मुक्त हो जाता है। 'अल-ख़ुलासा' में है: एक व्यक्ति ने दूसरे से कहा: 'मुझे अपने हर अधिकार से मुक्त कर दो,' और उसने कर दिया। यदि स्वामी को उनका ज्ञान था, तो वह सर्वसम्मति से कानूनी तौर पर मुक्त है। जहाँ तक धार्मिक पक्ष का प्रश्न है, मुहम्मद (अल्लाह उन पर दया करे) के अनुसार वह मुक्त नहीं है; अबू यूसुफ़ के अनुसार वह मुक्त है, और इसी पर फ़तवा है। यहाँ समाप्त हुआ। यह नोट किया गया है कि यह अबू अल-लैथ द्वारा चुने गए विचार के विरुद्ध है, और संभवतः उनका कथन परहेज़गारी (तक़वा) पर आधारित है। यह 'मिनाह अल-रौद' में जो है उसका अंत है। मैं कहता हूँ: फ़क़ीह द्वारा चुने गए विचार के साथ इसके विरोधाभास में विचारणीय

बात है, क्योंकि यहाँ चर्चा उन अधिकारों से मुक्ति के बारे में है जो स्वामी को बिल्कुल अज्ञात हैं, जबकि वहाँ चर्चा उस स्थिति की थी जहाँ मात्रा का अनुमान लगाया गया था और वास्तविकता उससे अधिक थी, और उनके बीच बहुत बड़ा अंतर था। क्योंकि जो...

[1] मिनाह अल-रौद अल-अज़हर शरह अल-फ़िक्ह अल-अकबर, तौबा और उसकी शर्तों पर बहस, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, पृष्ठ 159। पेज 410 / 720

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

[دائیں کالم کا متن] کچھ حق ہوں وہ صاحب حق سے کہے کہ مجھے معاف کردے اور حقوق کی تفصیل نہ کرے صاحب حق اسے معاف کردے، تو اگر یہ معلوم ہو کہ صاحب حق حقوق کی تفصیل کو جان کر بھی معاف کردے گا تو معاف ہوجائیں گے ورنہ نہیں۔ بعض علماء نے فرمایا: یہ تفصیل عمدہ ہے۔ یہ بھی روایت ہے کہ اسے بہر صورت حقوق معاف ہوجائیں گے۔ خلاصہ میں ہے کہ ایک شخص نے دوسرے کو کہا تم مجھے اپنا ہر حق معاف کر دو، اس نے معاف کردیا، اگر صاحب حق کو علم ہے پھر تو معافی مانگنے والا قضاءً ودیانۃً (یعنی فیصلے کے اعتبار سے بھی اور عند اللہ بھی) بری ہوجائے گا اور اگر اسے علم نہیں تو بالاتفاق یہ فیصلہ ہوگا کہ وہ بری ہوگیا، رہا دیانۃً (عند اللہ) تو امام محمد کے نزدیک بری نہیں ہوگا امام ابویوسف کے نزدیک بری ہوجائے گا اسی پر فتوٰی ہے انتہٰی، اس میں اعتراض ہے کہ یہ فقیہ ابواللیث کے مختار کے خلاف ہے ہو سکتا ہے ان کا قول تقوٰی پر مبنی ہو۔ منح الروض کا کلام ختم ہوا۔ اقول: (میں کہتا ہوں) کہ فقیہ ابواللیث کے مختار کے خلاف ہونے میں کلام ہے کیونکہ خلاصہ میں اس بارے میں گفتگو ہے کہ ایک شخص کو حقوق کا بالکل علم نہیں وہ انہیں معاف کردیتا ہے اور فقیہ ابواللیث کی کلام اس میں ہے

[بائیں کالم کا متن - عربی] حقوق فاستحل صاحبها ولم يفصلها فجعله في حل يعذران علم انه لو فصله يجعله في حل والا فلا قال بعضهم انه حسن وان روي انه يصير في حل مطلقاً، وفي الخلاصة رجل قال الآخر حللني من كل حق هو لك ففعل فابرأه ان كان صاحب الحق عالماً به برئ حكماً بالإجماع واما ديانة فعند محمد رحمه الله تعالٰى لايبرأ عند ابي يوسف يبرأ عليه الفتوى انتهى، وفيه انه خلاف ما اختار ابواللیث ولعل قوله مبني على التقوى ١ اه ما في منح الروض - اقول: وفي مخالفته لما اختار الفقيه نظر

فان الكلام ههنا في البراءة من الحقوق المجهولة لصاحبها اصلا وثمه فيما اذا ظن مقدارا وكان الواقع ازيد وبينهما بون بين فان من

١ منح الروض الازہر شرح الفقہ الاکبر بحث التوبہ وشرائطها مصطفی البابی مصر ص ١٥٩ Page of 720 410

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Arabic Text]: If one pardons rights generally, they do not intend specifically what is in their knowledge. However, if one pardons a known right, their mind only goes to the extent of what is in their knowledge. And Allah Almighty knows best.

[Urdu Translation]: That a person's estimation of the amount of rights is one thing while in reality, they were more, and there is a great difference in both these cases. Because a person who pardons his rights absolutely does not intend that I am only pardoning those rights which are in my knowledge. But the person who pardons a specific right, his mind goes towards that alone, meaning he pardons as much as he knows. And Allah Almighty knows best. (T)

Also, in Manh al-Rawd it is stated:

[Arabic Text]: Is it sufficient for him to say, 'I have backbited you, so pardon me,' or is it necessary for him to explain what he backbited? In the Manasik of Ibn al-Ajami, it says he should not inform him if he knows that informing him will incite trouble (fitna). Evidence for this is that the pardoning of unknown rights is permissible according to us. But it was previously mentioned whether this is sufficient legally and religiously. (End of quote from Manh al-Rawd).

[Urdu Translation]: Is it enough for a man to say to another, 'I have backbited you, forgive me,' or is it necessary to also tell him that I have committed this specific backbiting of yours? In Ibn al-Ajami's Manasik, it is written that if he thinks that detailing the backbiting will create trouble, then he should not disclose it. For us, the permissibility of pardoning unknown rights indicates this. But it has already been discussed whether it is sufficient in terms of a judicial decision or in terms of piety. (Alahazrat [may his secret be sanctified] says:)

[Arabic Text]: I say: There is room for discussion regarding the continuation of the aforementioned disagreement here. For backbiting does not become one of the rights of a servant until it reaches him. And when it reaches him, it is no longer among the unknown rights. It is stated in Manh [al-Rawd] itself, its text is: Faqih Abu al-Layth said:

[Urdu Translation]: I say: (I say that) there is discourse in the continuation of the past disagreement here because backbiting does not become the right of a person until it reaches him. When it reaches him, it will no longer be among the unknown rights. It is stated in Manh al-Rawd itself that Faqih Abu al-Layth said:

1. Manh al-Rawd al-Azhar Sharh al-Fiqh al-Akbar, Discussion on Repentance and its conditions, Mustafa al-Babi, Egypt, p. 160.

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

[अरबी पाठ]: यदि कोई व्यक्ति अधिकारों को सामान्य रूप से क्षमा करता है, तो वह विशेष रूप से अपने ज्ञान में मौजूद चीज़ों का इरादा नहीं करता है। हालांकि, यदि कोई व्यक्ति किसी ज्ञात अधिकार को क्षमा करता है, तो उसका मन केवल उसी सीमा तक जाता है जो उसके ज्ञान में है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

[उर्दू अनुवाद]: कि एक व्यक्ति के गुमान में अधिकारों की एक मात्रा थी जबकि वे हकीकत में ज़्यादा थे, और इन दोनों सूरतों में बहुत बड़ा फर्क है। क्योंकि जो व्यक्ति मुतलकन (पूर्ण रूप से) अपने अधिकार माफ़ कर देता है, उसका इरादा यह नहीं होता कि मैं सिर्फ वही अधिकार माफ़ कर रहा हूँ जो मेरे इल्म (ज्ञान) में हैं। और जो व्यक्ति किसी निश्चित अधिकार को माफ़ करता है, तो उसका ज़हन उसी तरफ जाता है कि जितना मुझे इल्म है उसी कद्र (मात्रा) माफ़ कर रहा हूँ। वल्लाहु तआला आलम (त)

साथ ही, मन्ह अल-रौज़ में है:

[अरबी पाठ]: क्या उसके लिए यह कहना पर्याप्त है, 'मैंने तुम्हारी ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई) की है, इसलिए मुझे माफ़ कर दो,' या यह आवश्यक है कि वह बताए कि उसने क्या ग़ीबत की? इब्न अल-अजमी के मनासिक में है कि यदि वह जानता है कि उसे बताने से फ़ितना (कलह) पैदा होगा, तो वह उसे सूचित न करे। इसका प्रमाण यह है कि हमारे यहाँ अज्ञात अधिकारों को माफ़ करना जायज़ है। लेकिन पहले यह उल्लेख किया गया था कि क्या यह कानूनी और धार्मिक रूप से पर्याप्त है। (मन्ह अल-रौज़ का उद्धरण समाप्त)।

[उर्दू अनुवाद]: क्या यह काफ़ी है कि एक आदमी दूसरे से कहे कि मैंने तुम्हारी ग़ीबत की है मुझे माफ़ कर दो, या यह ज़रूरी है कि यह भी बताए कि मैंने तुम्हारी यह ग़ीबत की है। इब्न अल-अजमी के मनासिक में है कि अगर यह समझता है कि ग़ीबत के तफ्सीलन (विस्तार से) बताने से फ़ितना पैदा होगा तो उसका इज़हार न करे, हमारे नज़दीक नामलूम हुकूक (अज्ञात अधिकारों) के माफ़ करने का जवाज़ (वैधता) इस पर दलालत करता है। लेकिन यह बात गुज़र चुकी है कि आया फ़ैसले के एतबार से काफ़ी है या दयानत के तौर पर। (आलाहज़रत कुद्स सर्रहु फरमाते हैं:)

[अरबी पाठ]: मैं कहता हूँ: यहाँ उल्लिखित मतभेद के जारी रहने के संबंध में चर्चा की गुंजाइश है। क्योंकि ग़ीबत तब तक बंदे के अधिकारों में से नहीं होती जब तक कि वह उस तक न पहुँच जाए।

और जब वह उस तक पहुँच जाती है, तो वह अज्ञात अधिकारों में से नहीं रह जाती। मन्ह [अल-रौज़] में ही कहा गया है, उसका पाठ है: फ़क़ीह अबू अल-लैथ ने फ़रमाया:

[उर्दू अनुवाद]: अकुल: (मैं कहता हूँ कि) यहाँ गुज़िश्ता (पिछले) इख्तिलाफ़ (मतभेद) के जारी होने में कलाम (चर्चा) है क्योंकि ग़ीबत उस वक़्त तक बंदे का हक नहीं बनती जब तक कि उसे न पहुँच जाए, जब पहुँच जाए तो नामलूम हुकूक में से न रहेगी, खुद मन्ह अल-रौज़ में है कि फ़क़ीह अबू अल-लैथ ने फ़रमाया:

---

1. मन्ह अल-रौज़ अल-अज़हर शरह अल-फ़िक्ह अल-अकबर, बहस-ए-तौबा और उसकी शरायत (शर्तें), मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, पृ. १६०

पृष्ठ ४११ / ७२०

جعل فی حل مطلقا لم یرد خصوص ما فی علمه اما من جعل فی حل من حق معلوم له فانما یذهب ذهنه الی قدر ما فی علمه، واللہ تعالٰی اعلم۔ کہ ایک شخص کے گمان میں حقوق کی ایک مقدار جبکہ وہ در حقیقت زیادہ تھے اور ان دونوں صورتوں میں بہت بڑا فرق ہے کیونکہ جو شخص مطلقاً اپنے حقوق معاف کر دیتا ہے اس کا ارادہ یہ نہیں ہوتا کہ میں صرف وہ حقوق معاف کر رہا ہوں جو میرے علم میں ہیں اور جو شخص کسی معین حق کو معاف کرتا ہے تو اس کا ذہن اسی طرف جاتا ہے کہ جتنا مجھے علم ہے اسی قدر معاف کررہا ہوں۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

نیز منح الروض میں ہے: هل یکفیه ان یقول اغتبتك فاجعلنی فی حل ام لابد ان یبین ما اغتاب؟ ففي منسك ابن العجمی لا یعلمه بها ان علم ان اعلامه یثیر فتنة، ویدل علیه ان الابراء عن الحقوق المجهولة جائز عندنا لکن سبق انه هل یکفیه حکومة ودیانة اھ ما فی منح الروض کیا یہ کافی ہے کہ ایک آدمی دوسرے سے کہے کہ میں نے تمہاری غیبت کی ہے مجھے معاف کردو، یا یہ ضروری ہے کہ یہ بھی بتائے کہ میں نے تمہاری یہ غیبت کی ہے۔ ابن العجمی کے منسک میں ہے کہ اگر یہ سمجھتا ہے کہ غیبت کے تفصیلاً بتانے سے فتنہ پیدا ہوگا تو اس کا اظہار نہ کرے، ہمارے نزدیک نامعلوم حقوق کے معاف کرنے کا جواز اس پر دلالت کرتا ہے لیکن یہ بات گزر چکی ہے کہ آیا فیصلے کے اعتبار سے کافی ہے یا دیانت کے طور پر اھ (اعلیٰحضرت قدس سرہ فرماتے ہیں)

اقول: وفی جریان الخلاف المذکور ههنا نظر فان الغیبة لا تصیر من حقوق العبد مالم تبلغه واذا بلغته لم تکن من الحقوق المجهولة وقد قال فی المنح نفسه یا نصه قال الفقیه ابواللیث اقول: (میں کہتا ہوں کہ) یہاں گزشتہ اختلاف کے جاری ہونے میں کلام ہے کیونکہ غیبت اس وقت تک بندے کا حق نہیں

بنتی جب تک اسے نہ پہنچ جائے، جب پہنچ جائے تو نامعلوم حقوق میں سے نہ رہے گی، خود منح الروض میں ہے کہ فقیہ ابواللیث نے فرمایا:

---

1 منح الروض الازہر شرح الفقہ الاکبر بحث التوبة وشرائطها مصطفی البابی مصر ص ۱۶۰

Fatawa Razawiyya Volume 24

People have spoken about the repentance of those who backbite: is it permissible without seeking forgiveness from the person backbitten? Some said it is permissible, while others said it is not. According to us, there are two scenarios: (1) If that talk has reached the person who was backbitten, then his repentance is to seek forgiveness from him. (2) And if the backbiting has not reached him, he should seek forgiveness from Allah the Glorious and resolve in his heart not to repeat its like. It is mentioned in 'Rawdat al-Ulama': I asked Abu Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him): "If the one who committed backbiting repents before it reaches the person backbitten, will his repentance be beneficial?" He replied: "Yes, because he repented before the sin became a matter of a servant's right, for it becomes such a sin only when it reaches him." I asked: "What if it reaches him after his repentance?" He replied: "His repentance will not be invalidated. Instead, Allah Almighty will forgive both of them: the backbiter because of his repentance, and the one backbitten because of the hardship that comes to him from it. For He, the Almighty, is Generous, and it does not befit His Generosity to reject a repentance after accepting it; rather, He will pardon both of them." End.

[Urdu Column Translation]: If the person who committed backbiting repents without seeking forgiveness from the person whose backbiting was done, people have stated different views on this; some said it is permissible and some said it is not permissible. According to us, there are two scenarios: (1) If that talk reached the person who was backbitten, then his repentance is to ask for forgiveness from that person. (2) And if the backbiting did not reach that person, then he should pray for forgiveness from Allah Almighty and resolve in his heart that he will not backbite again. In 'Rawdat al-Ulama' it is mentioned that I asked Abu Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) whether repentance would be beneficial for the backbiter if the backbiting did not reach the person whose backbiting was done. He replied: "Yes, because he repented before it became related to the right of a fellow human. Backbiting becomes a human right at the time it reaches them." I asked: "What if the backbiting reaches that person after the repentance?" He said that his repentance will not be invalidated; rather, Allah Almighty will forgive both of them: the backbiter due to his repentance and the one backbitten due to the distress caused by hearing the backbiting. For Allah Almighty is Generous; it cannot be said of Him that He would accept someone's repentance and then reject it; instead, He will forgive both. End. (T)

[1]Minh al-Rawd al-Azhar Sharh al-Fiqh al-Akbar, Discussion on Repentance and its Conditions, Mustafa al-Babi, Egypt, p. 159.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई) करने वालों की तौबा के बारे में लोगों ने चर्चा की है: क्या उस व्यक्ति से माफ़ी मांगे बिना तौबा करना जायज़ है जिसकी ग़ीबत की गई है? कुछ लोगों ने कहा कि यह जायज़ है, और दूसरों ने कहा कि यह जायज़ नहीं है। हमारे नज़दीक इसकी दो स्थितियाँ हैं: (1) यदि वह बात उस व्यक्ति तक पहुँच गई है जिसकी ग़ीबत की गई थी, तो उसकी तौबा यह है कि वह उस व्यक्ति से माफ़ी मांगे। (2) और यदि ग़ीबत उस व्यक्ति तक नहीं पहुँची है, तो उसे अल्लाह सुब्हानहु से माफ़ी मांगनी चाहिए और अपने दिल में यह संकल्प करना चाहिए कि फिर वैसा नहीं करेगा। 'रौज़तुल उलेमा' में है कि मैंने अबू मोहम्मद (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) से पूछा: "यदि ग़ीबत करने वाला ग़ीबत पहुँचने से पहले तौबा कर ले, तो क्या उसकी तौबा फ़ायदेमंद होगी?" उन्होंने फ़रमाया: "हाँ, क्योंकि उसने गुनाह के बंदे के हक़ से संबंधित गुनाह बनने से पहले तौबा कर ली है, क्योंकि वह गुनाह तब बनता है जब वह उस तक पहुँच जाए।" मैंने पूछा: "अगर तौबा के बाद वह बात उस व्यक्ति तक पहुँच जाए तो?" उन्होंने फ़रमाया: "उसकी तौबा बातिल नहीं होगी। बल्कि अल्लाह तआला दोनों को बख़्श देगा: ग़ीबत करने वाले को तौबा के कारण और जिसकी ग़ीबत की गई उसे उस कठिनाई के कारण जो उसे इसके कारण पहुँची है। क्योंकि वह तआला करीम है, और उसकी उदारता से यह मेल नहीं खाता कि वह तौबा स्वीकार करने के बाद उसे रद्द कर दे, बल्कि वह दोनों को माफ़ कर देगा।" अंत।

[उर्दू कॉलम का अनुवाद]: कि ग़ीबत करने वाला साहिबे-ग़ीबत (जिसकी ग़ीबत की गई) से माफ़ी मांगे बिना तौबा करे तो इसमें लोगों ने विभिन्न बातें कही हैं, कुछ ने कहा जायज़ है और कुछ ने कहा नाजायज़ है। हमारे नज़दीक इसकी दो सूरतें हैं: (1) वह बात उस शख़्स तक पहुँच गई जिसकी ग़ीबत की गई थी, तो उसकी तौबा यह है कि उस शख़्स से माफ़ी मांगे। (2) और अगर ग़ीबत उस शख़्स तक नहीं पहुँची तो अल्लाह तआला से मग़फ़िरत की दुआ मांगे और अपने दिल में यह अहद (संकल्प) करे कि फिर ग़ीबत नहीं करूँगा। रौज़तुल उलेमा में है कि मैंने अबू मोहम्मद रहमतुल्लाहि तआला अलैहि से पूछा कि अगर ग़ीबत उस शख़्स तक नहीं पहुँची जिसकी ग़ीबत की गई थी तो ग़ीबत करने वाले के लिए तौबा फ़ायदेमंद होगी? उन्होंने फ़रमाया: हाँ क्योंकि उसने बंदे के हक़ के मुताल्लिक होने से पहले तौबा कर ली है, ग़ीबत बंदे का हक़ उस वक़्त होगी जब उस तक पहुँच जाएगी, मैंने कहा कि अगर तौबा के बाद उस शख़्स तक ग़ीबत पहुँच जाए? फ़रमाया कि उसकी तौबा बातिल नहीं होगी बल्कि अल्लाह तआला दोनों को बख़्श देगा: ग़ीबत करने वाले को तौबा की

वजह से और जिसकी ग़ीबत की गई उसे उस तकलीफ़ की वजह से जो उसे ग़ीबत सुनकर हुई है क्योंकि अल्लाह तआला करीम है उसके मुताल्लिक यह नहीं कहा जा सकता कि वह किसी की तौबा क़बूल फ़रमा कर रद्द फ़रमा दे बल्कि दोनों को बख़्श देगा। अंत। (त)

[1] मिन्ह अर-रौद अल-अज़हर शरह अल-फ़िक़्ह अल-अकबर, तौबा और उसकी शर्तों पर बहस, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, पृ. 159

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

قد تكلم الناس في توبة المغتابين هل تجوز من غير ان يستحل من صاحبه؟ قال بعضهم يجوز وقال بعضهم لا يجوز، وهو عندنا على وجهين احدهما ان كان ذلك القول قد بلغ الى الذى اغتابه فتوبته ان يستحل منه وان لم يبلغ اليه فليستغفر الله سبحنه ويضمر ان لا يعود الى مثله، وفى روضة العلماء سألت ابا محمد رحمه الله تعالى فقلت له اذا تاب صاحب الغيبة قبل وصولها الى المغتاب عنه هل تنفعه توبة قال نعم فانه تاب قبل ان يصير الذنب ذنبا اى ذنباً يتعلق به حق العبد لانها انها تصير ذنباً اذا بلغت اليه، قلت فان بلغت اليه بعد توبته؟ قال لا تبطل توبته بل يغفر الله تعالى لهما جميعاً المغتاب بالتوبة والمغتاب عنه بما يلحقه من المشقة، لانه تعالى كريم ولا يجمل من كرمه رد توبته بعد قبولها بل يعفو عنهما جميعاً انتهى الخ۔

کہ غیبت کرنے والا صاحبِ غیبت (جس کی غیبت کی گئی) سے معافی مانگے بغیر توبہ کرے تو تو اس میں لوگوں نے مختلف باتیں کہی ہیں، بعض نے کہا جائز ہے اور بعض نے کہا نہ جائز ہے۔ ہمارے نزدیک اس کی دو صورتیں ہیں: (۱) وہ بات اس شخص تک پہنچ گئی جس کی غیبت کی گئی تھی تو اس کی توبہ یہ ہے کہ اس شخص سے معافی مانگے۔ (۲) اور اگر غیبت اس شخص تک نہیں پہنچی تو اللہ تعالی سے مغفرت کی دعا مانگے اور اپنے دل میں یہ عہد کرے کہ پھر غیبت نہیں کروں گا۔ روضۃ العلماء میں ہے کہ میں نے ابو محمد رحمہ اللہ تعالی سے پوچھا کہ اگر غیبت اس شخص تک نہیں پہنچی جس کی غیبت کی گئی تھی تو غیبت کرنے والے کے لئے توبہ فائدہ مند ہو گی؟ انہوں نے فرمایا: ہاں کیونکہ اس نے بندے کے حق کے متعلق ہونے سے پہلے توبہ کر لی ہے، غیبت بندے کا حق اس وقت ہو گی جب اس تک پہنچ جائے گی، میں نے کہا کہ اگر توبہ کے بعد اس شخص تک غیبت پہنچ جائے فرمایا کہ اس کی توبہ باطل نہیں ہوگی بلکہ اللہ تعالیٰ

دونوں کو بخش دے گا غیبت کرنے والے کو توبہ کی وجہ سے اور جس کی غیبت کی گئی اسے اس تکلیف کی وجہ سے جو اسے غیبت سن کر ہوئی ہے کیونکہ اللہ تعالی کریم ہے اس کے متعلق یہ نہیں کہا جاسکتا کہ وہ کسی کی توبہ قبول فرما کر رد فرما بلکہ دونوں کو بخش دے گا انتہی الخ۔ (ت)

[1]منح الروض الازہر شرح الفقہ الاکبر بحث التوبۃ و شرائطھا مصطفی البابی مصر ص ۱۵۹

Fatawa Razawiya Volume 24

The humble servant says, may Allah Almighty forgive him, if such great and severe rights are detailed that there is no hope for forgiveness from the right-holder, then they may not be forgiven through mere general words as they are specifically implied. However, if forgiveness was sought with these words: "Forgive me by making every possible severe right in the world obligatory for me," and the person accepted it, then now apparently all rights, even without detail, will be forgiven.

Due to the explicit text on generalization along with the specification for every severe and great right, and the explicit statement surpasses implication, as they (scholars) have stated in more than one issue. And Allah the Pure and Exalted knows best.

Because he has said, "forgive me every right," and along with it, he also said, "forgive me by making even the greatest right obligatory for me." And an explicit statement has superiority over implication, as scholars have clarified in many issues. And Allah the Pure and Exalted knows best. (T)

Problem 165: What do the scholars of religion say regarding this matter: after the rights of parents, what is the extent of the rights of a teacher? For a teacher from whom some religious and worldly knowledge has been gained, and from the grace of those sciences, worldly and religious benefits have been achieved, please state some rights of such a teacher in the light of sacred verses and authentic Hadith.

Answer:

It is stated in Alamgiri and also by Imam Hafiz al-Din al-Kardari:

Al-Zandawisti said: The right of a scholar over an ignorant person and the right of a teacher over a student is the same. It is that [the student] should not start speaking before him, should not sit in his place even in his absence, should not refute his words, and should not walk ahead of him.

Meaning, Imam Zandawisti said that the right of a scholar over the ignorant and the right of a teacher over the student are equal. That is, [the student] should not speak before him, should not sit in his sitting place even in his absence, and should not walk ahead of him while walking.

In the same [book], it is from [the book] Gharaib:

It is appropriate for a man to observe the rights of his teacher...	**A person should observe the rights and etiquettes of his teacher...**

1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Da'wa, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/439
2. Fatawa Hindiyya, Kitab al-Karahiyya, Chapter 30, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 5/373

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

फ़क़ीर कहता है, अल्लाह तआला उसे क्षमा करे, यदि ऐसे महान और गंभीर अधिकारों का विवरण दिया जाए जिनके लिए अधिकार धारक से माफ़ी की कोई उम्मीद न हो, तो वे ज़ाहिर तौर पर केवल सामान्य शब्दों से माफ़ नहीं हो सकते क्योंकि वे स्पष्ट रूप से विशिष्ट होते हैं। लेकिन अगर इन शब्दों के साथ माफ़ी माँगी गई कि "दुनिया भर में जो भी सबसे गंभीर अधिकार कल्पनीय हो, उन सबको मेरे लिए अनिवार्य मानकर माफ़ कर दे" और उसने स्वीकार कर लिया, तो अब ज़ाहिर तौर पर बिना विवरण के भी सभी अधिकार माफ़ हो जाएँगे।

क्योंकि हर गंभीर और महान अधिकार के लिए विशिष्ट उल्लेख के साथ सामान्यीकरण पर स्पष्ट पाठ है, और स्पष्ट कथन निहितार्थ पर भारी पड़ता है, जैसा कि विद्वानों ने एक से अधिक मसलों में स्पष्ट किया है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है।

क्योंकि उसने कह दिया है कि मुझे हर हक़ माफ़ कर दे और साथ ही यह भी कह दिया है कि हर बड़े से बड़ा हक़ मेरे बारे में फ़र्ज़ करके माफ़ कर दे और स्पष्टीकरण (तस़रीह) निहितार्थ (दलालत) पर प्राथमिकता रखती है जैसा कि उलमा ने बहुत से मसाइल में स्पष्ट किया है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 165: इस मसले में दीन के उलमा क्या फ़रमाते हैं कि माता-पिता के अधिकारों के बाद उस्ताद के अधिकार कितने हैं? जिस उस्ताद से कुछ दीनी और दुनियावी इल्म हासिल किया हो और उन उलूम के फैज़ान से दुनियावी और दीनी लाभ हासिल हुए हों, ऐसे उस्ताद के कुछ अधिकार पवित्र आयतों और सही हदीस की रोशनी में बयान फ़रमाएँ।

जवाब:

आलमगीरी में और इमाम हफ़िज़ुद्दीन करदरी से भी है:

इमाम ज़ंदविस्ती ने फ़रमाया: आलिम का हक़ जाहिल पर और उस्ताद का हक़ शागिर्द पर एक समान है। और वह यह है कि उससे पहले बात न करे, उसकी जगह पर उसकी अनुपस्थिति में भी न बैठे, उसकी बात न काटे और चलते समय उससे आगे न बढ़े।

यानी फ़रमाया इमाम ज़ंदविस्ती ने कि आलिम का हक़ जाहिल पर और उस्ताद का हक़ शागिर्द पर यकसाँ (एक जैसा) है और वह यह कि उससे पहले बात न करे और उसके बैठने की जगह उसकी ग़ैबत (अनुपस्थिति) में भी न बैठे और चलने में उससे आगे न बढ़े।

इसी में ग़राइब से है:

आदमी के लिए उचित है कि अपने उस्ताद के अधिकारों का ध्यान रखे...

आदमी को चाहिए कि अपने उस्ताद के हुक़ूक़ और आदाब का...

1. रद-उल-मुहतार, किताबुद दावा, दारु इह़या-उत-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 2/439
2. फ़तावा हिन्दिया, किताबुल कराहिया, बाब 30, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 5/373

पृष्ठ 413 का 720

فقیر کہتا ہے غفر اللہ تعالی لہ ایسے حقوق عظیمہ شدید ہ جن کی تفصیل بیان ہو تو صاحبِ حق سے معافی کی امید نہ ہو ظاہراً مجرد اجمالی الفاظ سے معاف نہ ہو سکیں کہ وہ دلالۃً مخصوص ہیں مگر اگر ان الفاظ سے معافی چاہی کہ "دنیا بھر میں سخت سے سخت جو حق متصور ہو وہ سب میرے لئے فرض کر کے معاف کر دے" اور اس نے قبول کیا تو اب ظاہراً تمام حقوق بلا تفصیل بھی معاف ہو جائیں گے،

للنص علی التعمیم مع التنصیص بالتخصیص علی کل حق شدید عظیم والصریح یفوق الدلالۃ کما نصوا علیہ ۱ فی غیر ما مسألۃ واللہ سبحنہ وتعالٰی اعلم۔

کیونکہ اس نے کہہ دیا ہے کہ مجھے ہر حق معاف کر دے اور ساتھ ہی یہ بھی کہہ دیا ہے کہ ہر بڑے سے بڑا حق میرے بارے میں فرض کر کے معاف کر دے اور تصریح دلالت پر فوقیت رکھتی ہے جیسے کہ علماء نے بہت سے مسائل میں تصریح کی ہے۔ واللہ سبحنہ وتعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۶۵ : کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ بعد حقوقِ والدین کے استاد کے حقوق کس قدر ہیں، جس استاد نے کچھ علم دینی اور دنیوی کی تعلیم حاصل کی ہو اور ان علوم کے فیضان سے منافع دنیاوی اس کو ونیز دینی حاصل ہوئے ہوں ایسے استاد کے کچھ حقوق از روئے آیہ شریفہ وحدیث صحیح سے بیان فرمائےگا۔

الجواب:

عالمگیری میں نیز امام حافظ الدین کردری سے ہے:

قال الزند ویستی حق العالم علی الجاهل و حق الاستاذ علی التلمیذ واحد علی السواء و هو ان لا یفتتح بالکلام قبله ولا یجلس مکانه وان غاب ولا یرد علی کلامه ولا یتقدم علیه فی مشیه ۲.

یعنی فرمایا امام زند ویستی نے کہ عالم کا حق جاہل اور استاد کا حق شاگرد پر یکساں ہے اور وہ یہ کہ اس سے پہلے بات نہ کرے اور اس کے بیٹھنے کی جگہ اس کی غیبت (عدم موجودگی) میں بھی نہ بیٹھے اور چلنے میں اس سے آگے نہ بڑھے۔

اسی میں غرائب سے ہے:

ینبغی لرجل ان یراعی حقوق استاذه آدمی کو چاہئے کہ اپنے استاد کے حقوق و آداب کا

1. رد المحتار کتاب الدعوی داراحیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۴۳۹
2. فتاوی ہندیہ کتاب الکراہیۃ الباب الثلاثون نورانی کتب خانہ پشاور ۵ / ۳۷۳

Fatawa Razawiyya Volume 24

- And among his manners is that he should not be stingy with anything from his wealth[1] - He should be considerate and not be miserly with any of his wealth towards him; that is, whatever he requires, he should present it with a happy heart and consider it a favor and his own good fortune in his acceptance of it.

In the same, it is mentioned from Tatar Khaniyah: The right of his teacher is prioritized over the rights of his parents and all Muslims. He should humble himself before the one who taught him something good, even if it is just one letter. It is not appropriate for him to desert him, nor should anyone be preferred over him. If he does so, he has broken a bond from the bonds of Islam. Part of his respect is that he should not knock on his door, but rather wait for him to come out[2] etc., in brief. That is, he should prioritize the teacher's right over the rights of his parents and all Muslims. And whoever taught him good knowledge, even if he taught only one aspect, he should show humility towards him. It is not fitting that at any time he should refrain from helping him, nor should he give preference to anyone over his teacher. If he does so, he will have untied one of the ropes from the ropes of Islam. The respect for the teacher is that if he is inside and one is present, one should not strike his door but rather wait for him to come out, etc., in brief.

Allah the Almighty said: "Indeed, those who call you from behind the chambers - most of them do not use reason. And if they had been patient until you [could] come out to them, it would have been better for them. And Allah is Forgiving and Merciful."[3] - ((Allah Almighty said) Verily O Beloved! Those who call you from outside the chambers, most of them are foolish. Had they waited patiently until you yourself came out, it would have been better for them. Allah the Almighty is All-Forgiving, Most Merciful. (T))

A religious scholar is generally the deputy of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) for every Muslim, and especially a teacher of religious knowledge for his student. Yes, if he commands something contrary to Shariah, never do it.

There is no obedience to anyone in disobedience to Allah Almighty[4] - There is no obedience to anyone in the disobedience of Allah the Almighty. (T)

But even in this refusal, one should not behave with insolence or disrespect, for an evil is not removed by another evil (because

[1] Fatawa Hindiyya, Book of Abominations, Chapter Thirty on Miscellaneous Matters, Noorani Kutub Khana Peshawar, 5 / 378 [2] Fatawa Hindiyya, Book of Abominations, Chapter Thirty on Miscellaneous Matters, Noorani Kutub Khana Peshawar, 5 / 378-379 [3] The Holy Quran 49 / 4 & 5 [4] Musnad Ahmad bin Hanbal, Remaining of the Hadith of Al-Hakam bin Amr Al-Ghaffari, Al-Maktab Al-Islami Beirut 5/66

फ़तावा रजविया जिल्द २४

- और उसके शिष्टाचार में यह है कि वह अपने धन में से किसी चीज़ के लिए उसके साथ कंजूसी न करे[1] - वह अपने धन में से किसी चीज़ के साथ उसके प्रति कंजूसी न करे, यानी जो कुछ उसे चाहिए उसे प्रसन्नतापूर्वक प्रस्तुत करे और उसकी स्वीकृति में उसका अहसान और अपना सौभाग्य समझे।

उसी में तातार खानिया से है: शिक्षक के अधिकार को अपने माता-पिता और सभी मुसलमानों के अधिकार पर प्राथमिकता दी जाती है। जिसने उसे कुछ भी अच्छा सिखाया हो, चाहे वह एक अक्षर ही क्यों न हो, उसके सामने विनम्र रहे। उसके लिए यह उचित नहीं है कि वह उसे अकेला छोड़ दे और न ही किसी और को उस पर प्राथमिकता दी जाए। यदि वह ऐसा करता है, तो उसने इस्लाम के बंधनों में से एक बंधन तोड़ दिया है। उसका सम्मान यह है कि उसके द्वार को न खटखटाए बल्कि उसके बाहर आने की प्रतीक्षा करे[2] आदि संक्षेप में। अर्थात शिक्षक के अधिकार को अपने माता-पिता और सभी मुसलमानों के अधिकार से ऊपर रखे। और जिसने उसे अच्छा ज्ञान सिखाया, चाहे एक ही पक्ष पढ़ाया हो, उसके लिए विनम्रता दिखाए और यह उचित नहीं है कि किसी भी समय उसकी सहायता से पीछे हटे, अपने शिक्षक पर किसी को प्राथमिकता न दे। यदि वह ऐसा करेगा, तो उसने इस्लाम की रस्सियों में से एक रस्सी खोल दी। शिक्षक का सम्मान यह है कि वह अंदर हो और यह उपस्थित हो तो उसके द्वार पर हाथ न मारे बल्कि उसके बाहर आने का इंतज़ार करे आदि संक्षेप में।

अल्लाह तआला ने फरमाया: "बेशक जो लोग आपको हजरों के पीछे से पुकारते हैं उनमें से अक्सर नासमझ हैं। और अगर वे सब्र करते यहाँ तक कि आप खुद बाहर आ जाते तो यह उनके लिए बेहतर होता, और अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान है।"[3] - ((अल्लाह तआला ने फरमाया) बेशक ऐ हबीब! जो लोग कमरों के बाहर से आपको पुकारते हैं, उनमें से अधिकांश मूर्ख हैं। यदि वे धैर्य रखते जब तक कि आप स्वयं बाहर न आ जाते, तो यह उनके लिए बेहतर होता। अल्लाह तआला क्षमाशील और दयालु है। (त))

एक धार्मिक विद्वान सामान्य रूप से प्रत्येक मुसलमान के लिए और विशेष रूप से धार्मिक ज्ञान का शिक्षक अपने छात्र के लिए पवित्र पैगंबर (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) का प्रतिनिधि है। हाँ, यदि वह शरीयत के विरुद्ध किसी बात का आदेश दे, तो उसे कभी न करें।

अल्लाह तआला की अवज्ञा में किसी की आज्ञाकारिता नहीं है[4] - अल्लाह तआला की अवज्ञा में किसी की आज्ञा मानना जायज़ नहीं है। (त)

लेकिन इस इनकार में भी ढिठाई और अशिष्टता से पेश न आए क्योंकि बुराई को बुराई से दूर नहीं किया जाता (क्योंकि

[1] फतावा हिंदिया, किताबुल कराहिया, अध्याय तीस विविध विषयों पर, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 5 / 378 [2] फतावा हिंदिया, किताबुल कराहिया, अध्याय तीस विविध विषयों पर, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 5 / 378-379 [3] अल-कुरान अल-करीम 49 / 4 और 5 [4] मुसनद अहमद बिन हंबल, अल-हकम बिन अम्र अल-ग़फ़्फ़ारी की शेष हदीस, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरूत 5/66

• وآدابہ لا یضن بشیئ من مالہ[1] - لحاظ رکھے اپنے مال میں کسی چیز سے اس کے ساتھ بخل نہ کرے یعنی جو کچھ اسے درکار ہو بخوشی خاطر حاضر کرے اور اس کے قبول کرلینے میں اس کا احسان اور اپنی سعادت جانے،

اسی میں تاتار خانیہ سے ہے: یقدم حق معلمہ علی حق ابویہ وسائر المسلمین و یتوضع لمن علمہ خیرا ولو حرفاً ولا ینبغی ان یخذلہ ولا یسائر علیہ احد فان فعل ذلك فقد فصم عروۃ من عری الاسلام و من اجلالہ ان لا یقرع بابہ بل ینتظر خروجہ[2] اہ مختصراً - یعنی استاد کے حق کو اپنے ماں باپ اور تمام مسلمانوں کے حق سے مقدم رکھے اور جس نے اسے اچھا علم سکھایا اگرچہ ایک ہی طرف پڑھایا ہو اس کے لئے تواضع کرے اور لائق نہیں کہ کسی وقت اس کی مدد سے باز رہے، اپنے استاد پر کسی کو ترجیح نہ دے، اگر ایسا کرے گا تو اس نے اسلام کی رسیوں سے ایک رسی کھول دی، استاد کی تعظیم یہ ہے کہ وہ اندر ہو اور یہ حاضر ہو تو اس کے دروازے پر ہاتھ نہ مارے بلکہ اس کے باہر آنے کا انتظار کرے اہ مختصراً۔

قال اللہ تعالٰی: "إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِنْ وَرَاءِ الْحُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّى تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ"[3]- (اللہ تعالٰی نے فرمایا) بیشک اے حبیب! جو لوگ حجروں سے باہر کھڑے ہو کر تمہیں بلاتے ہیں ان میں سے اکثر بیوقوف ہیں وہ صبر کرتے حتی کہ تم خود بخود باہر آجاتے تو ان کے لئے بہتر تھا اللہ تعالٰی بخشنے والا مہربان ہے۔ (ت)

عالم دین ہر مسلمان کے حق میں عموماً اور استاد علم دین اپنے شاگرد کے حق میں خصوصاً نائب حضور پر نور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ہے، ہاں اگر کسی خلاف شرع بات کا حکم دے ہرگز نہ کرے۔

لا طاعة لاحد في معصية الله تعالیٰ[4]- اللہ تعالیٰ کی نافرمانی میں کسی کی اطاعت نہیں ہے۔ (ت)

مگر اس نہ ماننے پر بھی گستاخی وبے ادبی سے پیش نہ آئے فان المنکر لا یزال بمنکر (کیونکہ

[1] فتاوٰی ہندیہ کتاب الکراہیۃ الباب الثلاثون فی المتفرقات نورانی کتب خانہ پشاور ۵ / ۳۷۸ [2] فتاوٰی ہندیہ کتاب الکراہیۃ الباب الثلاثون فی المتفرقات نورانی کتب خانہ پشاور ۵ / ۳۷۸-۳۷۹ [3] القرآن الکریم ۴۹ / ۴ و ۵ [4] مسند احمد بن حنبل بقیہ حدیث الحکم بن عمر والغفاری المکتب الاسلامی بیروت ۵/ ۶۶

Fatawa Razawiyya Volume 24

An undesirable thing is not removed by an undesirable action. (T) The answer regarding disobedience to commands has become clear from this discourse. That command which is against Sharia will be excluded; he should apologize with utmost humility and pleading and avoid it. And if the command is regarding permissible matters, then as far as possible, he should consider it his good fortune to carry it out. The ruling on disobedience is already known—it has untied a knot of Islam. Scholars say that whoever causes any kind of harm to their teacher will be deprived of the blessings of knowledge. And if the commands are among the religious obligations, then it is obvious that their necessity becomes even greater; disobedience to them is a direct path to Hell, may Allah protect us. And Allah Almighty knows best.

Problem 166:

[Left Column (Persian)] What do the scholars of religion say in this matter, that in the Hazara district of the Punjab districts, the custom is such that people of knowledge and piety are appointed in mosques for the sake of Imamat (leadership in prayer), so that they reside in the mosque, call the Adhan, and perform the Imamat, and whoever from among the students of knowledge comes, they give him lessons in the Great Quran and religious sciences. And since they are kept away from engaging in their own needs, naturally, people take responsibility for their livelihood and present gifts and offerings in their service according to their capacity. On this same practice, a man of noble descent, advanced in age, a scholar of religion, devout, and God-fearing, who is from the pure lineage of the noble Sadat, was appointed in a mosque for a long time and performed the aforementioned works with good management, teaching students the Quran and Fiqh (jurisprudence). A man from the Gujjar tribe (who are counted among the common and lower classes in this region) abandoned the profession of farming, took the path of learning, and read the Quran and Kanz and Quduri etc. religious books from this same Syed, then a desire for philosophy entered his head...

[Right Column (Urdu)] What do the scholars of religion say regarding this matter that in Hazara district there is a custom to appoint people of knowledge and piety for leadership in prayer (Imamat). They reside in the mosque, call the Adhan, lead prayers, and teach the Quran and religious sciences to any student who comes. Since they cannot focus on fulfilling their own needs, people take responsibility for fulfilling their needs and present gifts and offerings in their service according to their

capacity. Following this practice, a person of noble descent, aged, a religious scholar, pious, and God-fearing, belonging to the pure lineage of the Sadat, had been appointed in a mosque for a long time and performed the aforementioned duties efficiently, teaching Quran and Jurisprudence (Fiqh) to students. A man from the Gujjar tribe (who are considered of lower status in this region) abandoned his ancestral profession of farming and started seeking knowledge. He studied the Quran, Kanz, Quduri, and other religious books from the same Syed Sahib, and then developed an interest in philosophy.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

एक अवांछनीय चीज़ एक अवांछनीय क्रिया से समाप्त नहीं होती। (त) आदेशों की अवज्ञा के बारे में उत्तर इसी चर्चा से स्पष्ट हो गया है। उनका वह आदेश जो शरीयत के खिलाफ हो, उसे अपवाद माना जाएगा; उसे पूरी विनम्रता और गिड़गिड़ाहट के साथ माफ़ी मांगनी चाहिए और उससे बचना चाहिए। और यदि आदेश जायज़ बातों (मुबाहात) के बारे में है, तो जहाँ तक संभव हो, उसे पूरा करने में अपना सौभाग्य समझना चाहिए। अवज्ञा का हुक्म पहले से ही ज्ञात है—उसने इस्लाम की गांठों में से एक गांठ खोल दी। विद्वान कहते हैं कि जिससे उसके उस्ताद (शिक्षक) को किसी भी तरह का कष्ट पहुँचे, वह ज्ञान के आशीर्वाद से वंचित रहेगा। और यदि उनके आदेश धार्मिक कर्तव्यों में से हैं, तो यह स्पष्ट है कि उनकी अनिवार्यता और भी अधिक हो जाती है; उनमें अवज्ञा करना सीधे नर्क का रास्ता है, अल्लाह की पनाह। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

मसला 166:

[बायाँ कॉलम (फ़ारसी)] दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि पंजाब के ज़िलों में से हज़ारा ज़िले में दस्तूर ऐसा है कि ज्ञान और तक़वा (परहेज़गारी) वाले लोगों को मस्जिदों में इमामत के लिए मुक़र्रर किया जाता है, कि वे मस्जिद में ही बैठें, अज़ान कहें और इमामत करें, और जो भी इल्म का छात्र आए उसे अज़ीम क़ुरान और दीनी उलूम का सबक़ दें। और चूँकि उन्हें अपनी ज़रूरतों में मसरूफ़ होने से रोका जाता है, इसलिए लोग उनकी जीविका का ज़िम्मा ले लेते हैं और अपनी सामर्थ्य के अनुसार हदीये और नज़रानें उनकी ख़िदमत में पेश करते हैं। इसी मामूल पर एक शरीफ़ नसब, बुज़ुर्ग, आलिमे दीन, मुत्तक़ी और परहेज़गार शख़्स जो सादात की पाक नस्ल से हैं, एक मस्जिद में मुद्दत से मुक़र्रर थे और मज़कूरा काम अच्छी तरह अंजाम देते थे और छात्रों को क़ुरान और फ़िक़्ह सिखाते थे। गुर्जर क़ौम (जिन्हें इस इलाक़े में कम दर्जे का गिना जाता है) के एक शख़्स ने खेतीबाड़ी का पेशा छोड़कर इल्म हासिल करने की राह अपनाई और इसी सैयद से क़ुरान और कँज़ व क़ुदूरी वग़ैरा दीनी किताबें पढ़ीं, फिर उसके सर में फ़लसफ़े का शौक समाया...

[दायाँ कॉलम (उर्दू)] क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मसले में कि ज़िला हज़ारा में रिवाज है कि अहल-ए-इल्म व तक़वा को इमामत के लिये मुक़र्रर करते हैं, वह मस्जिद में रहते हैं, अज़ान कहते हैं, इमामत कराते हैं और जो तालिब-ए-इल्म आये उसे क़ुरान मजीद और उलूम-ए-दीनिया पढ़ाते हैं। चूँकि वह अपनी ज़रूरतें पूरी करने की तरफ़ तवज्जोह नहीं दे सकते, इसलिये लोग उनकी ज़रूरतों

को पूरा करने का ज़िम्मा ले लेते हैं और हस्बे ताक़त हदीये और नज़रानें उनकी ख़िदमत में पेश करते हैं। इसी तरीक़े पर एक शख़्स शरीफ़ुन-नसब, मोअम्मर, आलिम-ए-दीन, मुत्तक़ी, परहेज़गार जो सादात की नस्ल-ए-पाक से है, मुद्दत से एक मस्जिद में मुक़र्रर था और मज़कूर-ए-बाला काम अच्छी तरह अदा करता था। तल्बा को क़ुरान मजीद और फ़िक़्ह पढ़ाता था। गुर्जर क़ौम (जो लोग इस इलाक़े में कम मर्तबा शुमार किये जाते हैं) के एक आदमी ने अपना आबाई पेशा तर्क करके इल्म हासिल करना शुरू कर दिया और इन्हीं सैयद साहब से क़ुरान मजीद, कँज़ व कुदूरी वग़ैरा कुतुब-ए-दीनिया पढ़ीं।

पृष्ठ 415/720

ناپسندیدہ چیز ناپسند عمل سے زائل نہیں ہوتی۔ت) نافرمانی احکام کا جواب اسی تقریر سے واضح ہوگیا اس کا وہ حکم کہ خلاف شرع ہو مستثنیٰ کیا جائے گا بکمال عاجزی و زاری معذرت کرے اور بچے اور اگر اس کا حکم مباحات میں ہے تو حتی الوسع اس کی بجا آوری میں اپنی سعادت جانے اور نافرمانی کا حکم معلوم ہو چکا اس نے اسلام کی گرہوں سے ایک گرہ کھول دی۔ علماء فرماتے ہیں جس سے اس کے استاد کو کسی طرح کی ایذا پہنچے وہ علم کی برکت سے محروم رہے گا اور اگر اس کے احکام واجبات شرعیہ ہیں جب تو ظاہر ہے کہ ان کا لزوم اور زیادہ ہو گیا ان میں اس کی نافرمانی صریح راہ جہنم ہے،والعیاذ باللہ۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۶۶:

[بایاں کالم (فارسی)] چہ می فرمایند علمائے دین اندریں مسئلہ کہ در ضلع ہزارہ از اضلاع پنجاب دستور آنچنانست کہ اہل علم و تقوی را در مساجد بہر امامت معین می کنند کہ ہم بمسجد نشینند واذان گویند و امامت نمایند و ہر کہ از طلبہ علم آید او را درس قرآن عظیم و علوم دینیہ دہند و چوں ایشاں را از اشتغال بخوائج خود باز می دارند لاجرم تکفل معیشت آناک می کنند وحسب مقدور ہدایا و نذور بخدمت ایشاں می گزارند ہم بریں معمول مردے شریف النسب کبیر السن عالم دین ورع متقی کہ از نسل پاک حضرات سادات ست بمسجدے از زمانہ دراز مقرر وکارہائے مذکورہ بحسن انتظام انجام میداد و طلبہ را قرآن وفقہ می آموخت مردے از قوم گوجر کہ دریں دیار از اراذل واجلاف معدود شوند پیشہ آبادی ترک گرفتہ راہ تعلم پیش گرفت و بریں سید قرآن خواند وکنز وقدوری وغیرہما کتب دینیہ نیز باز ہوائے فلسفہ در سرش

[دایاں کالم (اردو)] کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلے میں کہ ضلع ہزارہ میں رواج ہے کہ اہل علم و تقویٰ کو امامت کے لئے مقرر کرتے ہیں وہ مسجد میں رہتے ہیں، اذان کہتے ہیں امامت کراتے ہیں اور جو طالب علم آئے اسے قرآن مجید اور علوم دینیہ پڑھاتے ہیں، چونکہ وہ اپنی ضروریات پورا کرنے کی طرف توجہ نہیں دے سکتے اس لئے لوگ ان کی ضروریات پورا کرنے کا ذمہ لے لیتے ہیں اور حسب طاقت ہدیے اور نذرانے ان کی خدمت میں پیش کرتے ہیں اسی طریقے پر ایک شخص شریف النسب، معمر، عالم دین، متقی، پرہیزگار جو سادات کی نسل پاک سے ہے مدت سے ایک مسجد میں مقرر تھا اور مذکورہ بالا کام اچھی طرح ادا کرتا تھا، طلباء کو قرآن مجید اور فقہ پڑھاتا تھا گوجر قوم (جو لوگ اس علاقہ میں کم مرتبہ شمار کئے جاتے ہیں) کے ایک آدمی نے اپنا آبائی پیشہ ترک کرکے علم حاصل کرنا شروع کر دیا اور انہی سید صاحب سے قرآن مجید، کنز وقدوری وغیرہ کتب دینیہ پڑھیں

صفحہ 415/720

Fatawa Razawiya Volume 24

[Left Column - Persian Transcription] جنبید وبر بعض مردمان چیزے از طبیعیات والہیات آں آنچناں کہ مقرر درس ہندیان ست خواند خود را عالمی کبیر گرفت وباستاذ اول کہ معلم علم دین بود بسر کتے برآمد و از طمع او را معلوم کہ نصیب ائمہ می شود بروے ثابت شود از منصب امامت برآوردن و خود بجائے او قیام کردن خواست وبر بنائے حرفے چند کہ از علوم فلسفیہ آموختہ است خود را براں فقیہ فضل نہاد و اولی تر بامامت وانمود حالانکہ زنہار نہ در علم دین ہمسنگ او بود نہ در ورع و تقوی ہم رنگ او حتی کہ از حق استاذش منکر شد و در ابتدائی امر قرآن و غیرہ آموختن را وقعی نہ نہاد وموجب حقوق استاذی ندانست آیا ایں چنیں کس سزائے امامت است یا نہ ، و اگر باشد پس اولی بامامت آں سید ست یا ایں کس و بہر حال آیا روا باشد کہ آں پیر فقیہ شریف متقی رابے قصوری از منصب امامت برانداز د ولینکس را بجایش مقرر سازند و معلوم ست کہ دریں اضلاع آنچنانکہ منصب امامت موجب اعزاز و کرامت ست ،ہمچناں در معزولی ازاں تذلیل واہانت اگر کسے بورغلانیدن متصدی این کار شد شرعاً خاطی و آثم بود یا نہ ؟ بینوا توجروا ۔

[Right Column - Urdu Transcription] پھر اسے فلسفے کا خط (جنون سوار) ہوا تو کچھ لوگوں نے طبعیات والہیات کا ایک حصہ پڑھا جیسے کہ ہندوستان کے مدارس کا طریقہ ہے اور اپنے آپ کو بہت بڑا عالم سمجھنا شروع کردیا اور جس استاذ نے اسے علم دین پڑھایا تھا اس کا مقابلہ شروع کر دیا تھا اور آمدنی کی لالچ میں استاد کو برطرف کروا کر خود اس کی جگہ مقرر ہونے کی کوشش شروع کردی اور فلسفے کے چند مسائل پڑھ لینے کی وجہ سے اس فقیہ پر اپنی فضیلت بگھارنے لگا اور اپنے آپ کو امامت کا زیادہ حقدار دکھانے لگا حالانکہ نہ علم دین میں اس کے برابر ہے نہ تقوی و پر ہیز گاری میں ، حتی کہ اس کے حق استاذی کا انکار کردیا اور ابتداء میں قرآن مجید و غیرہ پڑھنے کو کچھ اہمیت نہ دی اور نہ ہی اس بناء پر اس کے حق استاذی کو تسلیم کیا، آیا ایسا شخص امامت کے لائق ہے یا نہیں؟ اور اگر امامت کے لائق ہے تو امامت کے لئے زیادہ بہتر وہ سید صاحب ہیں یا یہ شخص؟ بہر حال کیا یہ جائز ہے کہ اس معمر شریف (سید) فقیہ اور متقی کو بلا وجہ امامت سے ہٹادیں اور اس کی جگہ اس شخص کو مقرر کردیں، اور یہ واضح ہے کہ اس علاقے میں جس طرح کسی کو امامت کے لئے مقرر کرنے میں اس کی عزت ہے اسی طرح اسے امامت سے برطرف کرنے میں اس کی توہین اور بے عزتی ہے اگر کوئی شخص بہکانے پر اس کام کے درپے ہو جائے تو شرعاً گنہگار اور مجرم ہو گا یا نہیں؟ بیان فرمائیں اور اللہ تعالیٰ سے اجر پائیں۔ (ت)

[Translation of Content] Then, gripped by a passion for philosophy, some people studied a portion of physics and theology according to the curriculum of Indian seminaries and began to regard themselves as great scholars. This person then rose up against his first teacher who had taught him religious knowledge. Driven by the greed for income, he sought to have his teacher dismissed and tried to be appointed in his place. On the basis of having learned a few matters from the philosophical sciences, he began to boast of his superiority over that jurist (faqih) and present

himself as more worthy of the Imamate, whereas he is in no way equal to him in religious knowledge, nor in piety and God-consciousness. He even denied the rights of his teacher and gave no importance to the initial education he received in the Holy Quran etc., nor did he acknowledge his teacher's rights on that basis. Is such a person worthy of the Imamate or not? And if someone is worthy, is that noble Syed more deserving of the Imamate or this person? In any case, is it permissible to remove that elderly, noble (Syed), jurist, and pious man from the position of Imam without any fault and appoint this person in his place? It is well known that in these regions, just as the appointment to the position of Imamate is a matter of honor and dignity, its removal is a cause of humiliation and insult. If someone, through instigation, pursues this course of action, will they be a sinner and a criminal according to Sharia or not? Please explain and receive a reward from Allah Almighty. (T)

[बायां कॉलम - फ़ारसी प्रतिलेखन] جنبید وبر بعض مردمان چیزے از طبیعیات والہیات آں آنچناں کہ مقرر درس ہندیان ست خواند خود را عالمی کبیر گرفت وباستاذ اول کہ معلم علم دین بود بسر کتے برآمد و از طمع او را معلوم کہ نصیب ائمہ می شود بروے ثابت شود از منصب امامت برآوردن و خود بجائے او قیام کردن خواست وبر بنائے حرفے چند کہ از علوم فلسفیہ آموختہ است خود را براں فقیہ فضل نہاد و اولی تر بامامت وانمود حالانکہ زنہار نہ در علم دین ہمسنگ او بود نہ در ورع و تقوی ہم رنگ او حتی کہ از حق استاذش منکر شد و در ابتدائی امر قرآن و غیرہ آموختن را وقعی نہ نہاد وموجب حقوق استاذی ندانست آیا ایں چنیں کس سزائے امامت است یا نہ ، و اگر باشد پس اولی بامامت آں سید ست یا ایں کس و بہر حال آیا روا باشد کہ آں پیر فقیہ شریف متقی رایے قصوری از منصب امامت برانداز د ولینکس را بجایش مقرر سازند و معلوم ست کہ دریں اضلاع آنچنانکہ منصب امامت موجب اعزاز و کرامت ست ،ہمچناں در معزولی ازاں تذلیل واہانت اگر کسے بورغلانیدن متصدی این کار شد شرعاً خاطی و آثم بود یا نہ ؟ بینوا توجروا ۔

[दायां कॉलम - उर्दू प्रतिलेखन] پھر اسے فلسفے کا خط (جنون سوار) ہوا تو کچھ لوگوں نے طبعیات والہیات کا ایک حصہ پڑھا جیسے کہ ہندوستان کے مدارس کا طریقہ ہے اور اپنے آپ کو بہت بڑا عالم سمجھنا شروع کردیا اور جس استاذ نے اسے علم دین پڑھایا تھا اس کی کا مقابلہ شروع کر دیا تھا اور آمدنی کی لالچ میں استاد کو برطرف کروا کر خود اس جگہ مقرر ہونے کی کوشش شروع کردی اور فلسفے کے چند مسائل پڑھ لینے کی وجہ سے اس فقیہ پر اپنی فضیلت بگھارنے لگا اور اپنے آپ کو امامت کا زیادہ حقدار دکھانے لگا حالانکہ نہ علم دین میں اس کے برابر ہے نہ تقوی و پر ہیز گاری میں ، حتی کہ اس کے حق استاذی کا انکار کردیا اور ابتداء میں قرآن مجید و غیرہ پڑھنے کو کچھ اہمیت نہ دی اور نہ ہی اس بناء پر اس کے حق استاذی کو تسلیم کیا، آیا ایسا شخص امامت کے لائق ہے یا نہیں؟ اور اگر امامت کے لائق ہے تو امامت کے لئے زیادہ بہتر وہ سید صاحب ہیں یا یہ شخص؟ بہر حال کیا یہ جائز ہے کہ اس معمر شریف (سید) فقیہ اور متقی کو بلا وجہ امامت سے ہٹادیں اور اس کی جگہ اس شخص کو مقرر کردیں، اور یہ واضح ہے کہ اس علاقے میں جس طرح کسی کو امامت کے لئے مقرر کرنے میں اس کی عزت ہے اسی

طرح اسے امامت سے برطرف کرنے میں اس کی توہین اور بے عزتی ہے اگر کوئی شخص بہکانے پر اس کام کے درپے ہو جائے تو شرعاً گنہگار اور مجرم ہو گا یا نہیں؟ بیان فرمائیں اور اللہ تعالیٰ سے اجر پائیں۔ (ت)

[विषयवस्तु का अनुवाद] फिर उसे दर्शन (फ़लसफ़ा) का जुनून सवार हुआ, तो कुछ लोगों ने भौतिकी और धर्मशास्त्र का एक हिस्सा पढ़ा जैसा कि भारत के मदरसों का तरीका है, और उसने खुद को एक बहुत बड़ा विद्वान समझना शुरू कर दिया। उसने अपने पहले शिक्षक, जिन्होंने उसे धार्मिक ज्ञान सिखाया था, के खिलाफ विद्रोह कर दिया। आय के लालच में, उसने शिक्षक को बर्खास्त करवाकर खुद उनकी जगह नियुक्त होने की कोशिश शुरू कर दी। दर्शन शास्त्र से सीखी गई कुछ बातों के आधार पर, वह उस फ़कीह (धर्मशास्त्री) पर अपनी श्रेष्ठता जताने लगा और खुद को इमामत का अधिक हकदार दिखाने लगा, जबकि वह न तो धार्मिक ज्ञान में उनके बराबर है और न ही परहेज़गारी और ईश-भय में। यहाँ तक कि उसने अपने शिक्षक के अधिकारों को भी नकार दिया और शुरुआत में कुरान मजीद आदि पढ़ने को कोई महत्व नहीं दिया, और न ही इस आधार पर शिक्षक के अधिकारों को स्वीकार किया। क्या ऐसा व्यक्ति इमामत के योग्य है या नहीं? और अगर कोई योग्य है, तो इमामत के लिए वह शरीफ़ सैय्यद साहब बेहतर हैं या यह व्यक्ति? बहरहाल, क्या यह जायज़ है कि उस बुजुर्ग, शरीफ़ (सैय्यद), फ़कीह और मुत्तकी (परहेज़गार) व्यक्ति को बिना किसी कारण के इमामत से हटा दिया जाए और उनकी जगह इस व्यक्ति को नियुक्त कर दिया जाए? यह स्पष्ट है कि इस क्षेत्र में जिस तरह किसी को इमामत के लिए नियुक्त करने में उसका सम्मान है, उसी तरह उसे इमामत से हटाने में उसका अपमान और बेइज्जती है। यदि कोई व्यक्ति बहकावे में आकर इस काम में लग जाए, तो क्या वह शरीअत के अनुसार गुनाहगार और अपराधी होगा या नहीं? कृपया बयान करें और अल्लाह तआला से अज्र (पुण्य) पाएँ। (त)

पृष्ठ 416 का 720

جنبید وبر بعض مردمان چیزے از طبیعیات والہیات آں پھر اسے فلسفے کا خط (جنون سوار) ہوا تو کچھ لوگوں نے طبعیات آنچناں کہ مقرر درس ہندیان ست خواند خود را عالمی کبیر والہیات کا ایک حصہ پڑھا جیسے کہ ہندوستان کے مدارس کا گرفت وباستاذ اول کہ معلم علم دین بود بسر کتے برآمد و از طمع طریقہ ہے اور اپنے آپ کو بہت بڑا عالم سمجھنا شروع کردیا اور او را معلوم کہ نصیب ائمہ می شود بروے ثابت شود از جس استاذ نے اسے علم دین پڑھایا تھا اس کا مقابلہ شروع کر منصب امامت برآوردن و خود بجائے او قیام کردن خواست دیا تھا اور آمدنی کی لالچ میں استاد کو برطرف کروا کر خود اس وبر بنائے حرفے چند کہ از علوم فلسفیہ آموختہ است خود را کی جگہ مقرر ہونے کی کوشش شروع کردی اور فلسفے کے چند براں فقیہ فضل نہاد و اولی تر بامامت وانمود حالانکہ زنہار نہ مسائل پڑھ لینے کی وجہ سے اس فقیہ پر اپنی فضیلت بگھارنے لگا در علم دین ہمسنگ او بود نہ در ورع و تقوی ہم رنگ او حتی کہ از اور اپنے آپ کو امامت کا زیادہ حقدار دکھانے لگا حالانکہ نہ علم حق استاذش منکر شد و در ابتدائی امر قرآن و غیرہ آموختن را دین میں اس کے برابر ہے نہ تقوی و پر ہیز گاری میں ، حتی کہ وقعی نہ نہاد وموجب حقوق استاذی ندانست آیا ایں چنیں کس اس کے حق استاذی کا انکار کردیا اور ابتداء میں قرآن مجید و غیرہ سزائے امامت است یا نہ ، و اگر باشد پس اولی بامامت آں سید پڑھنے کو کچھ اہمیت نہ دی اور نہ ہی اس بناء پر اس کے حق ست یا ایں کس و بہر حال آیا روا باشد کہ آں پیر فقیہ شریف استاذی کو تسلیم کیا، آیا ایسا شخص امامت کے لائق ہے یا نہیں؟ متقی رابے قصوری از منصب امامت برانداز د ولینکس را بجایش اور اگر امامت کے لائق ہے تو امامت کے لئے زیادہ بہتر وہ سید مقرر سازند و معلوم ست کہ دریں اضلاع آنچنانکہ منصب صاحب ہیں یا یہ شخص؟ بہر حال کیا یہ جائز ہے کہ اس معمر

امامت موجب اعزاز و کرامت ست ،ہمچناں در معزولی ازاں شریف (سید) فقیہ اور متقی کو بلا وجہ امامت سے ہٹادیں اور تذلیل واہانت اگر کسے بورغلانیدن متصدی این کار شد شرعاً اس کی جگہ اس شخص کو مقرر کردیں، اور یہ واضح ہے کہ اس خاطی و آثم بود یا نہ ؟ بینوا توجروا ۔ علاقے میں جس طرح کسی کو امامت کے لئے مقرر کرنے میں اس کی عزت ہے اسی طرح اسے امامت سے برطرف کرنے میں اس کی توہین اور بے عزتی ہے اگر کوئی شخص بہکانے پر اس کام کے درپے ہو جائے تو شرعاً گنہگار اور مجرم ہو گا یا نہیں؟ بیان فرمائیں اور اللہ تعالٰی سے اجر پائیں۔ (ت)

Volume 24 Fatawa Razawiyya

The Answer: O Allah! Grant guidance to the truth and pure correctness. Anyone who has traversed the path of knowledge and has an eye on Fiqh (jurisprudence) and Hadith knows more clearly than the break of dawn that this person, by these actions of his, has proved his unworthiness. For numerous reasons, he has stepped outside the circle of Sharia; firstly, ingratitude towards the teacher, which is a dreadful calamity and a devastating disease, and one that obliterates the blessings of knowledge (may Allah protect us). The Master of both worlds, may Allah's peace and blessings be upon him, has said: "He does not thank Allah who does not thank people" (Narrated by Abu Dawood and Tirmidhi from Abu Hurairah). The Prophet, may Allah's peace and blessings be upon him, said: "Whoever has not thanked people has not thanked Allah." This Hadith was narrated by Imam Ahmad in 'Al-Musnad', Imam Tirmidhi in 'Al-Jami', and Al-Diya in 'Al-Mukhtara' with a good (Hasan) chain from Abu Sa'id al-Khudri (may Allah be pleased with him), and Abdullah bin Ahmad narrated it in 'Zawa'id al-Musnad' from Nu'man bin Bashir.

Footnotes: 1. Sunan Abi Dawood, Kitab al-Adab, Chapter: Gratitude for Kindness, Aftab-e-Alam Press Lahore, 2/306. Jami' al-Tirmidhi, Chapters on Piety and Joining Ties, Chapter on what has been narrated about gratitude, etc., Amin Company Delhi, 2/17. 2. Jami' al-Tirmidhi, Chapters on Piety and Joining Ties, Chapter on what has been narrated about gratitude, etc., Amin Company Delhi, 2/17. Musnad Ahmad bin Hanbal from Abu Sa'id al-Khudri, Al-Maktab al-Islami Beirut, 3/32 and 3/78.

जिल्द २४ फ़तावा रज़विया

उत्तर: ऐ अल्लाह! हक़ और विशुद्ध सत्य का मार्ग दिखा। जिसने भी ज्ञान की गलियों में समय बिताया है और फ़िक़्ह व हदीस पर जिसकी नज़र है, वह सुबह की सफेदी से भी अधिक स्पष्ट रूप से जानता है कि इस व्यक्ति ने अपनी इन हरकतों से अपनी नालायकी का हक़ अदा कर दिया है। कई कारणों से वह शरीयत के दायरे से बाहर कदम रख चुका है; सबसे पहले उस्ताद (गुरु) की नाशुक्रगुज़ारी, जो एक भयानक आपदा और विनाशकारी बीमारी है और ज्ञान की बरकतों को खत्म करने वाली है (अल्लाह की पनाह)। दोनों जहानों के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है: वह व्यक्ति अल्लाह तआला का शुक्र अदा नहीं करता जो लोगों का शुक्रिया अदा नहीं करता (अबू दाऊद और तिर्मिज़ी, अबू हुरैरा से)। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिसने लोगों का शुक्रिया अदा नहीं किया उसने अल्लाह तआला का शुक्र अदा नहीं किया।" इस हदीस को इमाम अहमद ने मुस्नद में, इमाम तिर्मिज़ी ने जामे में, ज़िया ने अल-मुख्तारा में सनद हसन के साथ अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से और अब्दुल्लाह बिन अहमद ने ज़वाइद अल-मुस्नद में नुमान बिन बशीर से रिवायत किया है।

पादलेख: १. सुनन अबी दाऊद, किताब अल-अदब, बाब: एहसान का शुक्रिया, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, २/३०६। जामे अल-तिर्मिज़ी, अबवाब अल-बिर वस्सिलाह, बाब: शुक्र के बारे में, आदि, अमीन कंपनी दिल्ली, २/१७। २. जामे अल-तिर्मिज़ी, अबवाब अल-बिर वस्सिलाह, बाब: शुक्र के बारे में, आदि, अमीन कंपनी दिल्ली, २/१७। मुस्नद अहमद बिन हंबल, अबू सईद ख़ुदरी से, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरूत, ३/३२ और ३/७८।

पृष्ठ ७२० का ४१७

الجواب: اللھم ھدایۃ الحق والصواب ہر کرا در کوچہ علم گزرے و بر فقہ و حدیث نظرے ست روشن تر از سپیدہ صبح می داند کہ آنکس بایں حرکات خودش داد نا حفاظیما داد بوجوہ چند در چند قدم از دائرہ شرع بیرون نہاد و یکے ناسپاسی اوستاذ کہ بلائست بائل ودانست قائل و برکات علم را مزیل و مبطل والعیاذ باللہ سبحنہ و تعالی سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرمودہ است لا یشکر اللہ من لا یشکر الناس خدائے را شکر نہ کند آنکہ مردمان راسپاس نیارد اخرجہ ابوداؤد و الترمذی[1] وصححہ عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ وفرمودہ است صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم من لم یشکر الناس لم یشکر اللہ ہر کہ مردمان را شکر نہ کرد خدائے عزوجل راسپاس نیارد اخرجہ احمد فی المسند والترمذی[2] فی الجامع والضیاء فی المختارہ بسند حسن عن ابی سعید الخدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ و عبداللہ بن احمد فی زوائد المسند عن النعمان بن

اے اللہ ! حق اور خالص صواب کی ہدایت فرما۔ جسے کوچہ علم میں گزر اور فقہ و حدیث پر نظر ہے وہ صبح کی سفیدی سے بھی واضح طور پر جانتا ہے کہ اس شخص نے اپنی ان حرکتوں سے نالائقی کا حق ادا کر دیا ہے اور بے شمار وجوہ کی بنا پر شریعت کے دائرے سے قدم باہر رکھ چکا ہے؛ اول استاذ کی ناشکری جو کہ خوفناک بلا اور تباہ کن بیماری ہے اور علم کی برکتوں کو ختم کرنے والی (خدا کی پناہ) دو جہان کے سردار صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا ہے: وہ آدمی اللہ تعالیٰ کا شکر بجا نہیں لاتا جو لوگوں کا شکریہ ادا نہیں کرتا (ابوداؤد و ترمذی از ابوہریرہ) حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا لم یشکر الناس لم یشکر اللہ جس نے لوگوں کا شکریہ ادا نہیں کیا اس نے اللہ تعالیٰ کا شکر ادا نہیں کیا۔ اس حدیث کو امام احمد نے مسند میں، امام

ترمذی نے جامع میں ، ضیا نے المختارہ میں سند حسن کے ساتھ ابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اور عبد اللہ بن احمد نے زوائد المسند میں نعمان بن بشیر سے روایت کیا۔

حواشی: 1 سنن ابی داؤد کتاب الادب باب فی شکر المعروف آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۳۰۶ ، جامع الترمذی ابواب البر والصلۃ باب ما جاء فی الشکر الخ امین کمپنی دہلی ۲ / ۱۷ 2 جامع الترمذی ابواب البر والصلۃ باب ماجاء فی الشکر الخ امین کمپنی دہلی ۲ / ۱۷ ، مسند احمد بن حنبل عن ابی سعید الخدری المکتب الاسلامی بیروت ۳ / ۳۲ و ۳ / ۷۸

Fatawa Rizwia, Vol 24

Bashir (Radi Allahu Anhu), Allah Almighty said: Allah Almighty says: "If you are grateful, I will surely increase you; but if you deny, indeed, My punishment is severe." (1) If you show gratitude, I will surely give you more, and if you adopt ingratitude, then (know that) indeed My punishment is severe. "Lain shakartum la-azidannakum wa lain kafartum inna adhabi lashadid" (1) Verily, if you bring thanks, I will surely increase and bestow more upon you, and if you show ingratitude, then indeed My punishment is severe. And His Majesty said: Also ordained: "Indeed, Allah does not like everyone self-deluded and boastful." (2) Verily, Allah does not like anyone who is arrogant and boastful. He also said: "And do We recompense except the ungrateful?" (3) We shall only punish the ungrateful. "Inna Allaha la yuhibbu kulla mukhtalin fakhur" (2) Verily, God does not like any extremely arrogant and ungrateful person. And He, the Most Glorious, said: "Hal nujzi illa al-kafur" (3) The Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whoever is shown a kindness and finds no way to repay it except by praise, has given thanks; and whoever conceals it has been ungrateful (a kafir of the favor)." (Narrated by Bukhari (Al-Adab Al-Mufrad), Abu Dawood, Tirmidhi, Ibn Hibban, and Al-Maqdisi from Jabir bin Abdullah). And the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whoever is shown a kindness and finds no recompense for it except to praise the benefactor well, then indeed he has fulfilled his gratitude. And whoever hides it, then indeed he has become an ungrateful denier of the favor." This was recorded by Al-Bukhari in Al-Adab Al-Mufrad, Abu Dawood in Al-Sunan, Tirmidhi in Al-Jami', Ibn Hibban in Al-Taqasim wal-Anwa', and Al-Maqdisi in Al-Mukhtara from reliable narrators on the authority of Jabir bin Abdullah (may Allah be pleased with them both), and the wording is: "Whoever praises has given thanks, and whoever conceals has committed ingratitude." (5) Second, the denial of the teacher's rights, which...

Footnotes: (1) Al-Quran Al-Karim 14/7 (2) Al-Quran Al-Karim 31/18 (3) Al-Quran Al-Karim 34/17 (4) Sunan Abi Dawood, Book of Adab, Chapter on Gratitude for Kindness, Aftab-e-Alam Press Lahore 2/307; Al-Targhib wat-Tarhib, Chapter on Gratitude for Kindness, Mustafa Al-Babi Egypt 2/77 (5) Jami' Al-Tirmidhi, Chapters on Piety and Joining Ties, Ameen Company Delhi 2/24

फतावा रज़विया, जिल्द 24

बशीर (रज़ियल्लाहु अन्हु), अल्लाह तआला ने फरमाया: अल्लाह तआला फरमाता है: "अगर तुम शुक्र अदा करोगे तो बेशक मैं तुम्हें और ज़्यादा दूँगा और अगर नाशुक्री इख्तियार करोगे तो (जान लो कि) बेशक मेरा अज़ाब सख़्त है।" (1) "लइन् शकर्तुम ल-अज़ीदन्नकुम व लइन् कफ़र्तुम इन्ना अज़ाबी ल-शदीद" (1) यकीनन अगर आप शुक्र लाएँगे तो मैं बेशक बढ़ाऊँगा और आपको और अधिक बख्शूँगा, और अगर आप नाशुक्री करेंगे तो वास्तव में मेरा अज़ाब सख़्त है। और उनकी महानता ने फरमाया: अल्लाह ने यह भी फरमाया: "बेशक अल्लाह हर इतराने वाले और फ़ख्र करने वाले को पसंद नहीं फरमाता।" (2) बेशक अल्लाह तआला हर घमंडी और अहंकार करने वाले को पसंद नहीं करता। यह भी फरमाया: "हम नाशुक्रे को ही बदला देंगे।" (3) "इन्ना अल्लाहा ला युहिब्बु कुल्ला मुख़्तालिन फ़खूर" (2) यकीनन ईश्वर किसी भी अत्यंत अभिमानी और नाशुक्रे व्यक्ति को पसंद नहीं करता। और गौरवशाली अल्लाह ने फरमाया: "हल नुज्ज़ी इल्ला अल-कफ़ूर" (3) सय्यदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "जिसके साथ नेकी की गई और वह अपने उपकारी को प्रशंसा के सिवा और कोई बदला देने में असमर्थ रहा, तो उसने उसका शुक्रिया अदा कर दिया। और जिसने उस एहसान को छुपाया, वह नाशुकरा (काफ़िर-ए-नेमत) हुआ।" (बुखारी (अल-अदब अल-मुफ़रद), अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने हिब्बान, मकदिसी जाबिर बिन अब्दुल्लाह से)। और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "जिसे कोई उपकार प्राप्त हुआ और उसे इसका कोई बदला न मिला सिवाय इसके कि उसने उपकारी की अच्छी प्रशंसा की, तो उसने निश्चित रूप से उसका आभार व्यक्त किया। और जिसने इसे छिपाया, वह वास्तव में एहसान का नाशुकरा हो गया।" इसे अल-बुखारी ने अल-अदब अल-मुफ़रद में, अबू दाऊद ने अल-सुनन में, तिर्मिज़ी ने अल-जामी' में, इब्ने हिब्बान ने अल-तक़ासीम वल-अनवा' में, और अल-मक़्दिसी ने अल-मुख़्तारा में विश्वसनीय वर्णनकर्ताओं के माध्यम से जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से उद्धृत किया है, और इसके शब्द हैं: "जिसने प्रशंसा की उसने शुक्रिया अदा किया, और जिसने छुपाया उसने नाशुक्री की।" (5) दूसरा, शिक्षक के अधिकारों का इनकार, जो कि...

फुटनोट्स (पाद टिप्पणियां): (1) अल-कुरान अल-करीम 14/7 (2) अल-कुरान अल-करीम 31/18 (3) अल-कुरान अल-करीम 34/17 (4) सुनन अबी दाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी शुक्रिल मअरूफ़, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 2/307; अल-तरगीब वत-तरहीब, अल-तरगीब फ़ी शुक्रिल

मअरूफ़, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 2/77 (5) जामी' अल-तिर्मिज़ी, अबवाबुल बिर्रे वल-सिलह, अमीन कंपनी दिल्ली 2/24

بشیر رضی اللہ تعالیٰ عنہ ، حق عزوجل فرمایا : اللہ تعالٰی فرماتا ہے: لئن شکرتم لازیدنکم ولئن کفرتم ان عذابی لشدید ط اگر تم نے شکر ادا کیا تو بے شک میں تمہیں اور زیادہ دوں گا اور اگر ناشکری اختیار کرو گے تو (جان لو کہ) بیشک میرا عذاب سخت ہے۔ "لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ" (۱) ہر آئینہ اگر سپاس آرید بیشک بیفزایم و بیشتر بخشم شمار اواگر ناسپاسی ورزید پس بدرستیکہ عذاب من سخت است وفرمود جلت عظمتہ : نیز ارشاد فرمایا : "إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ" ہ بے شک اللہ تعالی ہر اترانے والے اور فخر کرنے والے کو پسند نہیں فرماتا، یہ بھی فرمایا : "هَلْ نُجْزِي إِلَّا الْكَفُورَ" ہ ہم ناشکرے ہی کو بدلہ دیں گے۔ "إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ" (۲) بدرستیکہ خدائے دوست نمی دارد ہر بسیار واغل سخت ناسپاس را، وفرمود عزشانہ "هَلْ نُجْزِي إِلَّا الْكَفُورَ" (۳) ماکراز امید ہم۔ سرور عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا : من اولی معروفا فلم یجد لہ جزاءً الا الثناء فقد شکرہ ومن کتمہ فقد کفر جس کے ساتھ نیکی کی گئی وہ سوائے تعریف کے محسن کے لئے کچھ نہ کر سکا تو اس نے اس کا شکریہ ادا کر دیا اور جس نے اس احسان کو چھپایا وہ کافر نعمت (ناشکرا) ہوا۔ (بخاری (ادب المفرد)، ابو داؤد، ترمذی، ابن حبان، مقدسی از جابر بن عبد اللہ)۔ وسرور عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرمود من اولی معروفا فلم یجد لہ جزاءً الا الثناء فقد شکرہ ومن کتمہ فقد کفر ہر کہ بادے احسانی کردہ شد و او را عوض نیافت جز آنکہ برائے محسن ثنائے نیک نمودہ پس بہ تحقیق کہ سپاس او نجا آورد و ہر کہ پوشید پس بدرستیکہ کافر نعمت شد اخرجہ البخاری فی الادب المفرد وابوداؤد فی السنن والترمذی فی الجامع وابن حبان فی التقاسیم والانواع والمقدسی فی المختارۃ برواۃ ثقات عن جابر بن عبد اللہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما ولفظ من اثنی فقد شکر ومن کتم فقد کفر (۵)۔ دوم استاذ کے حقوق کا انکار جو کہ

حواشی: (۱) القرآن الکریم ۱۴/۷ (۲) القرآن الکریم ۳۱/۱۸ (۳) القرآن الکریم ۳۴/۱۷ (۴) سنن ابی داؤد کتاب الادب باب فی شکر المعروف آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۳۰۷، الترغیب والترہیب الترغیب فی شکر المعروف مصطفیٰ البابی مصر ۲ / ۷۷ (۵) جامع الترمذی ابواب البروالصلۃ امین کمپنی دہلی ۲ / ۲۴

Second: Denying his rights, which is clearly a violation of the consensus of Muslims, and indeed all rational people. This is different from ingratitude because ingratitude means not returning a favor with goodness, whereas denial means not acknowledging the favor at all. Saying that the teacher only taught me in the beginning is not helpful for this person, because there is a consensus on this matter, and the noble Hadith says: "He who is not thankful for the little will not be thankful for the much." One who does not express gratitude for a small favor will not be thankful for a large one. This Hadith was narrated by Abdullah bin Imam in Az-Zawaid with a chain (there is no harm in it). Imam Bayhaqi also narrated it in As-Sunan from Nu'man bin Bashir (may Allah be pleased with him). There is a completion to this Hadith which is more complete according to Imam Bayhaqi; Ibn Abi al-Dunya mentioned it briefly in Istina' al-Ma'ruf.

Third: This person belittled a good deed and favor, not valuing the initial teaching at all. The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Do not belittle any act of kindness, even if it is just meeting your brother with a cheerful face." No one should ever consider a good deed trivial, even if it is just meeting your brother with a smile. Muslim narrated this from Abu Dharr (may Allah be pleased with him).

1. Musnad Ahmad bin Hanbal, narrated from Nu'man bin Bashir, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 4/278 & 507.
2. Shu'ab al-Iman, Hadith 9119, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 6/516.
3. Sahih Muslim, Book of Virtue and Joining Ties, Chapter on the Recommendation of a Cheerful Face, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 1/329.

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 24

दूसरा: उसके अधिकारों का इंकार करना, जो स्पष्ट रूप से मुसलमानों, बल्कि सभी बुद्धिमान लोगों की आम सहमति के विरुद्ध है। यह बात नाशुक्रगुज़ारी से अलग है क्योंकि नाशुक्रगुज़ारी तो यह है कि एहसान के बदले कोई नेकी न की जाए और इंकार यह है कि सिरे से एहसान ही को न माना जाए। यह कहना कि उस्ताद ने तो मुझे सिर्फ शुरुआत में पढ़ाया था, उस व्यक्ति के लिए कुछ भी उपयोगी नहीं है क्योंकि इस बात पर आम सहमति है और हदीस शरीफ में है: "जिसने थोड़े एहसान का शुक्रिया अदा नहीं किया, उसने ज़्यादा का भी शुक्र नहीं किया।" इस हदीस को अब्दुल्ला बिन इमाम ने 'ज़वाइद' में सनद (इसमें कोई हर्ज नहीं) के साथ रिवायत किया है। इमाम बैहकी ने 'सुनन' में नोमान बिन बशीर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से इसे रिवायत किया है। इस हदीस का एक पूरक भाग (ततम्मा) भी है जो इमाम बैहकी के पास अधिक पूर्ण है; इब्न अबी अल-दुनिया ने इसे 'इस्तिना अल-मारूफ' में संक्षेप में उल्लेख किया है।

तीसरा: इस व्यक्ति ने नेकी और एहसान को तुच्छ माना और शुरुआती शिक्षा के एहसान की कोई कद्र नहीं की। नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: "किसी भी नेकी को हरगिज़ मामूली न समझो, चाहे वह इतनी ही क्यों न हो कि तुम अपने भाई से मुस्कुरा कर मिलो।" इसे मुस्लिम ने अबू ज़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है।

1. मुस्नद अहमद बिन हंबल, नोमान बिन बशीर से रिवायत, अल-मकतब अल-इस्लामी, बेरुत, 4/278 और 507।
2. शुअब अल-ईमान, हदीस 9119, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 6/516।
3. सहीह मुस्लिम, किताब अल-बिर्र वस-सिलाह, मुस्कुराते चेहरे की अनुशंसा का अध्याय, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 1/329।

पृष्ठ 419 / 720

دوم انکارِ حقوقش کہ صریح خرقِ اجماعِ مسلمین بلکہ کافۂ عقلاء است و ہذا غیر الکفران فانہ ترك العمل وھذا جحد الاصل کما لا یخفی و تخصیصش بتلمذِ ابتدائے سودش ندھد کہ اجماع مطلق است و در حدیث مصطفی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم آمدہ من لم یشکر القلیل لم یشکر الکثیر ۱ ہر کہ اندک را شکر نہ کند بسیار را سپاس نیارد اخرجہ عبد اللہ بن الامام في الزوائد ۲ باسناد لا باس بہ والبیھقی فی السنن عن نعمان بن بشیر رضی اللہ تعالٰی عنہ وللحدیث تتمة وھو عند البیھقی اتم واورده ابن ابی الدنیا فی اصطناع المعروف مختصرا۔

مسلمانوں بلکہ تمام عقل والوں کے اتفاق کے خلاف ہے، یہ بات ناشکری سے جدا ہے کیونکہ ناشکری تو یہ ہے کہ احسان کے بدلے کوئی نیکی نہ کی جائے اور انکار یہ ہے کہ سرے سے احسان ہی کو نہ مانا جائے اور یہ کہنا کہ استاذ نے تو مجھے صرف ابتداء میں پڑھایا تھا اس شخص کے لئے کچھ مفید نہیں کیونکہ اس بات پر اتفاق ہے اور حدیث شریف "من لم یشکر القلیل لم یشکر الکثیر" جس نے تھوڑے احسان کا شکریہ ادا نہیں کیا اس نے زیادہ کا بھی شکر نہیں کیا۔ اس حدیث کو عبداللہ بن امام نے زوائد میں باسنا د (اس میں حرج نہیں) روایت کیا۔ اور امام بیہقی نے سنن میں نعمان بن بشیر رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا اور اس حدیث کا تتمہ ہے کہ امام بیہقی کے نزدیک اتم ہے اس کو ابن ابی الدنیا نے اصطناع المعروف میں مختصر طور پر ذکر کیا ہے۔

سوم آنکہ ایں تحقیر نکوئے واحسان است کہ تعلیم ابتدائی را بجوئے نسنجید و مصطفی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرمود لا تحقرن من المعروف شیئا ولو ان تلقی اخاك بوجه طلیق ۳ زنہار پیچ نکوئے

را خوار مپندار اگرچہ ایں قدر کہ برادرِ خود را برائے کشادہ پیش آئی۔ اخرجہ مسلم ۳ عن ابی ذر رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔

سوم اس شخص نے نیکی کو حقیر جانا اور ابتدائی تعلیم کے احسان کی کچھ قدر نہ کی۔ نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: لا تحقرن من المعروف شیئا ولو ان تلقی اخاك بوجه طلیق ہرگز کوئی شخص نیکی کو معمولی نہ سمجھے گو کہ اتنی ہو کہ تو اپنے بھائی کو مسکرا کر ملے۔ اسے مسلم نے ابوذر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا۔

۱ مسند احمد بن حنبل عن نعمان بن بشیر المکتب الاسلامی بیروت ۴/ ۲۷۸ و ۵۰۷ ۲ شعب الایمان حدیث ۹۱۱۹ دار الکتب العلمیہ بیروت ۶/ ۵۱۶ ۳ صحیح مسلم کتاب البر والصلۃ باب استحباب طلاقة الوجہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۳۲۹

Fatawa Rizwia Volume 24

The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) also said: 'O Muslim women! No woman should look down upon a gift from her neighbor, even if it is a sheep's trotter (foot)' (Bukhari & Muslim from Abu Hurairah). Another Hadith says, 'even if it is a burnt trotter.' This was specifically addressed to women because they tend to be more prone to displeasure and ingratitude than men. Glory be to Allah! Perhaps this person considered sincere initial education and spiritual nurturing to be even lowlier and of less status than a burnt sheep's trotter, such that he gives it no importance and does not count it as a right.

Fourthly, seeking refuge in Allah, considering the teacher's initial education as insignificant leads to disrespecting the Holy Quran and summarized books of jurisprudence (Fiqh). It is as if he who learned these has learned nothing. Greatness is for Allah! If this action was done persistently, it would certainly have reached the level of clear disbelief (Kufr). Even now, this act is severely forbidden and the worst kind of evil. We seek forgiveness and safety from Allah Almighty. Scholars say a righteous man appointed a teacher for his son. As soon as the son learned Surah Al-Fatihah, the father sent four thousand dinars in gratitude. The teacher said, 'What have they seen yet that...'

---

1 Sahih al-Bukhari, Kitab al-Hiba, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/349, Sahih Muslim, Kitab al-Zakat, Bab al-Hath 'ala al-Nifaq, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/331 2 Sunan al-Nasa'i, Kitab al-Zakat, Bab Radd al-Saa'il, Noor Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi 1/358

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह भी फरमाया: 'ऐ मुसलमान औरतों! कोई भी औरत अपनी पड़ोसन के उपहार को तुच्छ न समझे, चाहे वह बकरी का खुर (पैर) ही क्यों न हो' (बुखारी और मुस्लिम, अबू हुरैरा से)। एक अन्य हदीस में है, 'चाहे वह जला हुआ खुर ही क्यों न हो।' यह विशेष रूप से महिलाओं के लिए कहा गया था क्योंकि उनमें पुरुषों की तुलना में नाखुशी और कृतघ्नता की प्रवृत्ति अधिक होती है। सुब्हान अल्लाह! शायद इस व्यक्ति ने निष्ठापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा और आध्यात्मिक पोषण को एक जले हुए बकरी के खुर से भी तुच्छ और कम दर्जे का समझा, कि वह इसे कोई महत्व ही नहीं देता और न ही इसे अधिकार मानता है।

चौथा, अल्लाह की पनाह मांगते हुए, शिक्षक की प्रारंभिक शिक्षा को तुच्छ समझना पवित्र कुरान और न्यायशास्त्र (फिक्ह) की संक्षिप्त पुस्तकों के प्रति अनादर की ओर ले जाता है। यह ऐसा है मानो जिसने इन्हें सीखा उसने कुछ भी नहीं सीखा। बड़ाई अल्लाह के लिए है! यदि यह कार्य दृढ़ता के साथ किया गया होता, तो यह निश्चित रूप से स्पष्ट कुफ्र (अविश्वास) के स्तर तक पहुँच गया होता। अब भी, यह कार्य गंभीर रूप से निषिद्ध और सबसे खराब प्रकार की बुराई है। हम अल्लाह सर्वशक्तिमान से क्षमा और सुरक्षा चाहते हैं। विद्वान कहते हैं कि एक नेक आदमी ने अपने बेटे के लिए एक शिक्षक नियुक्त किया। जैसे ही बेटे ने सूरह अल-फातिहा सीखी, पिता ने आभार स्वरूप चार हजार दीनार भेजे। शिक्षक ने कहा, 'अभी उन्होंने क्या देखा है कि...'

---

१ सहीह अल-बुखारी, किताब उल-हिबा, कदीमी कुतुब खाना कराची १/३४९, सहीह मुस्लिम, किताबुज़-ज़कात, बाब अल-हथ अला अल-निफाक, कदीमी कुतुब खाना कराची १/३३१ २ सुनन अन-नसाई, किताबुज़-ज़कात, बाब रद्द अल-साइल, नूर मुहम्मद कारखाना तिजारत कुतुब कराची १/३५८

آپ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے یہ بھی فرمایا: یا نساء المسلمات لا تحقرن جارۃ لجارتھا ولو فرسن شاۃ اے مسلمان عورتو! کوئی عورت بھی اپنی پڑوسن کے ہدیے کو حقیر نہ سمجھے اگرچہ بکری کا سُم ہی کیوں نہ ہو، (بخاری و مسلم از ابو ہریرہ) ایک اور حدیث میں ہے ولو بظلف محرق اگرچہ جلا ہوا سُم ہی ہو۔ عورتوں کو خاص طور پر اس لئے فرمایا کہ ناپسندیدگی اور نا شکری میں عورتیں مردوں سے بڑھ کر ہوتی ہیں۔ سبحان اللہ ! شاید اس شخص نے پر خلوص ابتدائی تعلیم اور روح کی پرورش کو جلے ہوئے سُم سے بھی حقیر اور کم مرتبہ جانا کہ اسے کچھ اہمیت ہی نہیں دیتا اور نہ ہی اس کا کوئی حق شمار ہوتا ہے۔ چہارم خدا کی پناہ استاذ کی ابتدائی تعلیم کو حقیر جاننا قرآن مجید اور فقہ کی مختصر کتابوں کی بے ادبی کی طرف راجع ہے گویا کہ جس نے انہیں پڑھا اس نے کچھ بھی نہیں پڑھا اگر وہ شخص اسے لازم پکڑتا تو معاملہ یقینا کفر کی حد تک پہنچ جاتا اب بھی یہ بات شدید حرام اور بدترین خبیث ہے۔ ہم اللہ تعالیٰ سے عفو و عافیت طلب کرتے ہیں۔ علماء فرماتے ہیں ایک نیک آدمی نے اپنے لڑکے کو ایک استاد کے سپرد کیا ابھی لڑکے نے سورہ فاتحہ

---

1 صحیح البخاری کتاب الہبۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۳۴۹، صحیح مسلم کتاب الزکوۃ باب الحث علی النفاق قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۳۳۱ 2 سنن النسائی کتاب الزکوۃ باب رد السائل نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ۱/ ۳۵۸

Fatawa Razawiyya, Volume 24

...had read that the father sent four thousand dinars as a gesture of gratitude. The teacher said, "What have you seen yet that you have shown such kindness?" The father replied, "After this, do not teach my son at all, because there is no respect for the Holy Quran in your heart." Seek refuge in Allah, the Sublime and Exalted.

Fifthly, confronting the teacher is also more than ingratitude because ingratitude is simply not giving thanks, but in the case of confrontation, instead of giving thanks, there is also opposition to him. See, the person who does not keep the favor in mind has been ungrateful for the favor, as we have proven from hadiths. He who returns evil for a favor has committed a sin even greater than ingratitude. And this is just like being disobedient to one's father, because the teacher is counted equal to the father. That is why the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Indeed, I am for you in the position of a father, teaching you." This was narrated by Imam Ahmad, Darimi, Abu Dawood, Nasai, Ibn Majah, and Ibn Hibban from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him).

1. Sunan Abi Dawud, Kitab al-Taharah, Bab Karahiya Istiqbal al-Qiblah, Aftab-e-Alam Press Lahore, 1/3; Sunan an-Nasa'i, Bab al-Nahy 'an al-Iktifa' fi Istityaba bi-aqall, Nur Muhammad Karkhana Kutub Karachi, 1/16; Sunan Ibn Majah, Bab al-Istinja' bi'l-Hijarah, H.M. Saeed Company Karachi, p. 27.

फतवा रज़विया, खंड 24

...पढ़ा था कि पिता ने चार हजार दीनार आभार के रूप में भेजे। शिक्षक ने कहा, "आपने अभी क्या देखा है कि इतनी दया दिखाई?" पिता ने कहा, "इसके बाद मेरे बेटे को बिल्कुल मत पढ़ाना, क्योंकि तुम्हारे दिल में पवित्र कुरान के लिए कोई सम्मान नहीं है।" अल्लाह, जो पवित्र और सर्वोच्च है, की शरण मांगता हूँ।

पांचवां, शिक्षक का मुकाबला करना भी कृतघ्नता से अधिक है क्योंकि कृतघ्नता तो यह है कि शुक्र न किया जाए, और मुकाबले की स्थिति में शुक्र के बजाय उसका विरोध भी है। देखिए, जो व्यक्ति अहसान को ध्यान में नहीं रखता, उसने अहसान की नाशुक्री की है, जैसा कि हमने हदीसों से साबित किया है। जिसने अहसान के बदले बुराई की, उसने कृतघ्नता से भी बड़ा गुनाह किया। और यह ठीक उसी तरह है जैसे पिता की अवज्ञा की जाए, क्योंकि शिक्षक को पिता के बराबर गिना गया है। इसीलिए पवित्र नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "मैं तुम्हारे लिए पिता की हैसियत रखता हूँ, तुम्हें ज्ञान सिखाता हूँ।" इसे इमाम अहमद, दारीमी, अबू दाऊद, नसाई, इब्न माजा और इब्न हिब्बान ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है।

1. सुनन अबी दाऊद, किताब अल-तहारह, बाब कराहिया इस्तिक़बाल अल-क़िबला, आफताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 1/3; सुनन अन-नसाई, बाब अल-नही अन अल-इक्तिफ़ा फ़ी इस्तिताबा बि-अक़ल्ल, नूर मोहम्मद कारखाना कुतुब कराची, 1/16; सुनन इब्न माजा, बाब अल-इस्तिंजा बिल-हिजारा, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृ. 27.

پڑھی تھی کہ باپ نے چار ہزار دینار شکریے کے طور پر بھیجے، استاد نے کہا ابھی آپ نے کیا دیکھا ہے کہ اتنی مہربانی فرمائی، باپ نے کہا اس کے بعد میرے لڑکے کو ہرگز نہ پڑھانا کہ تمہارے دل میں قرآن مجید کی عزت ہی نہیں ہے۔ والعیاذ باللہ سبحنہ وتعالٰی۔

پنجم استاذ کا مقابلہ کرنا یہ بھی ناشکری سے زائد ہے کیونکہ ناشکری تو یہ ہے کہ شکر نہ کیا جائے اور مقابلے کی صورت میں بجائے شکر کے اس کی مخالفت بھی ہے دیکھئے جو شخص احسان کو پیش نظر نہیں رکھتا اس نے احسان کی ناشکری کی ہے جیسے کہ ہم نے احادیث سے ثابت کیا جس نے احسان کے بدلے برائی کی اس لئے تو ناشکری سے بھی بڑا گناہ کیا اور یہ اسی طرح ہے کہ جیسے باپ کی نافرمانی کی جائے کیونکہ استاذ کو باپ کے برابر شمار کیا گیا ہے، اسی لئے نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: انما انا لکم بمنزلۃ الوالد اعلمکم میں تمہارے لئے باپ کی حیثیت رکھتا ہوں میں تمہیں علم سکھاتا ہوں۔ اسے امام احمد، دارمی، ابوداؤد، نسائی، ابن ماجہ اور ابن حبان نے ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا۔

1 سنن ابی داؤد کتاب الطھارۃ باب کراھیۃ استقبال القبلۃ آفتاب عالم پریس لاہور 1 / 3، سنن النسائی باب النھی عن الاکتفاء في استطابۃ باقل الخ نور محمد کارخانہ کتب کراچی 1 / 16، سنن ابن ماجہ باب الاستنجاء بالحجارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص 27

صفحہ 720 میں سے 421

(Arabic/Persian Text)	(Urdu Translation/Explanation)
	Rather, the scholars say that the right of the teacher should be prioritized over the rights of parents because physical life is through parents, while the teacher is the cause of the life of the soul. In 'Ain al-Ilm it is written: Kindness should be shown to parents because disobedience to them is a very big sin, and the right of the teacher should be prioritized over the right of parents because he is the means of the life of the soul. (Summary).
In 'Ain al-Ilm, it is mentioned: honoring parents is recommended, but disobedience to them is among the major sins. The right of the teacher is prioritized over their rights because the teacher is the cause of the life of the soul. (Summary). Allama Munawi (may Allah be pleased with him) writes in the commentary of Taysir Sharh Jami' al-Saghir:	
	Allama Munawi, in the commentary of Jami' al-Saghir, Taysir, narrates that the person who teaches people knowledge is the best father because he is the father of the soul, not of the body.
He who teaches people is the best father.	
	It is evident how far reaching the evil consequence of disobedience is, to the extent that Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him) mentioned it alongside associating partners with Allah and counted it among the worst of the major sins.
He is the father of the soul, not the father of the semen.	
It is evident from this where the evil of disobedience reaches, to the point that Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him) placed it alongside Shirk (associating partners with Allah) and counted it as one of the severest	Imam Bukhari, Muslim, and Tirmidhi have narrated from Hazrat Abu Bakr (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and

(Arabic/Persian Text)	(Urdu Translation/Explanation)
major sins. Shaikhan (Bukhari and Muslim) and Tirmidhi have narrated from Abu Bakra (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'Shall I not inform you of the greatest of major sins?' He said this three times. We said: 'Yes, O Messenger of Allah.' He said: 'Associating partners with Allah and disobedience to parents.' (Hadith). And if we were to start counting the ahadith on this subject, it would require a whole register.	blessings of Allah be upon him) said: 'Shall I not tell you the biggest sin?' You said this three times. The companions submitted: 'Please do inform us.' You said: 'To associate partners with Allah...'

[Watermark: I.T. Majlis of Dawateislami]

1. 'Ain al-Ilm, Chapter Eight, Imrat Press Lahore, pp. 334 to 335.
2. Al-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir, under the Hadith: 'Indeed, I am for you like a father,' Maktaba al-Imam al-Shafi'i, Riyadh, 1/361.
3. Sahih al-Bukhari, Book of Testimonies, Chapter on what was said regarding false testimony, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/362; Sahih Muslim, Book of Faith, Chapter on Major Sins, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/63; Jami' at-Tirmidhi, Chapters on Goodness and Connection, 12/2, Chapters on Testimonies, 2/54, Amin Company.

(अरबी/फारसी पाठ)

ऐन अल-इल्म में उल्लेख है: माता-पिता का सम्मान करना पुण्य है, लेकिन उनकी अवज्ञा करना बड़े पापों में से है। शिक्षक के अधिकार को उनके अधिकारों पर प्राथमिकता दी जाती है क्योंकि शिक्षक आत्मा के जीवन का कारण है। (सारांश)। अल्लामा मुनावी (अल्लाह उन पर दया करे) 'तयसीर शरह जामे सगीर' में लिखते हैं:

वह जो लोगों को सिखाता है वह सबसे अच्छा पिता है।

वह आत्मा का पिता है, वीर्य का पिता नहीं।

यह स्पष्ट है कि अवज्ञा की बुराई कहाँ से कहाँ तक पहुँचती है, यहाँ तक कि मुस्तफ़ा (अल्लाह की शांति और

(उर्दू अनुवाद/व्याख्या)

बल्कि विद्वान कहते हैं कि शिक्षक के अधिकार को माता-पिता के अधिकारों पर प्राथमिकता दी जानी चाहिए क्योंकि शारीरिक जीवन माता-पिता के माध्यम से होता है, जबकि शिक्षक आत्मा के जीवन का कारण है। ऐन अल-इल्म में लिखा है: माता-पिता के साथ दयालुता बरती जानी चाहिए क्योंकि उनकी अवज्ञा बहुत बड़ा पाप है, और शिक्षक के अधिकार को माता-पिता के अधिकार पर प्राथमिकता दी जानी चाहिए क्योंकि वह आत्मा के जीवन का साधन है। (सारांश)।

अल्लामा मुनावी, जामे सगीर की व्याख्या 'तयसीर' में उल्लेख करते हैं कि जो व्यक्ति लोगों को ज्ञान सिखाता है वह सबसे अच्छा पिता है क्योंकि वह आत्मा का पिता है, शरीर का नहीं।

यह स्पष्ट है कि अवज्ञा का बुरा परिणाम कहाँ तक पहुँचता है, इस सीमा तक कि मुस्तफ़ा (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने इसे अल्लाह के साथ शरीक करने के साथ रखा और इसे सबसे बुरे बड़े पापों में गिना।

इमाम बुखारी, मुस्लिम और तिर्मिज़ी ने हज़रत अबू बक्र (अल्लाह उनसे प्रसन्न

(अरबी/फारसी पाठ)

आशीर्वाद उन पर हो) ने इसे शिर्क(अल्लाह के साथ किसी को साझा करना) के साथ रखा और सबसे कठिन कबीरा गुनाहों में शुमार किया। शैखान (बुखारी और मुस्लिम) और तिर्मिज़ी ने अबू बकरा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत की है कि अल्लाह के रसूल (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने फ़रमाया: 'क्या मैं तुम्हें सबसे बड़े गुनाहों के बारे में न बताऊँ?' आपने यह तीन बार कहा। हमने कहा: 'हाँ, ऐ अल्लाह के रसूल।' आपने फ़रमाया: 'अल्लाह के साथ शिर्क करना और माता-पिता की नाफ़रमानी करना।' (हदीस)। और यदि हम इस विषय पर हदीसों को गिनना शुरू करें, तो एक पूरा रजिस्टर भर जाएगा।

(उर्दू अनुवाद/व्याख्या)

हो) से रिवायत की है कि अल्लाह के रसूल (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने फ़रमाया: 'क्या मैं तुम्हें सबसे बड़ा गुनाह न बता दूँ?' आपने यह तीन बार फ़रमाया। सहाबा ने निवेदन किया: 'कृपया बताएँ।' आपने फ़रमाया: 'अल्लाह के साथ शिर्क करना...'

[वॉटरमार्क दावत-ए-इस्लामी की आई.टी. मजलिस]

1. ऐन अल-इल्म, अध्याय आठ, इमरत प्रेस लाहौर, पृष्ठ 334 से 335।
2. अल-तयसीर शरह अल-जामे अल-सगीर, हदीस के तहत: 'वास्तव में, मैं तुम्हारे लिए एक पिता की तरह हूँ', मकतबा अल-इमाम अल-शाफ़ई, रियाद, 1/361।
3. सहीह अल-बुखारी, गवाही की किताब, झूठी गवाही के संबंध में जो कहा गया है उस पर अध्याय, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 1/362; सहीह मुस्लिम, ईमान की किताब, बड़े पापों पर अध्याय, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 1/63; जामे अत-तिर्मिज़ी, भलाई और संबंध के अध्याय, 12/2, गवाही के अध्याय, 2/54, अमीन कंपनी।

(عربی و فارسی عبارات) **(اردو ترجمہ و تشریح)**

بلکہ علماء فرماتے ہیں کہ استاذ کے حق کو والدین کے حق پر مقدم رکھنا چاہئے کیونکہ والدین کے

في عين العلم يبر الوالدين فالعقوق من الكبائر ذریعے بدن کی زندگی ہے اور استاذ روح کی

يقدم حق المعلم على حقهما فهو سبب حيوة زندگی کا سبب ہے۔ عین العلم میں ہے: والدین کے

الروح ۱ ملخصا۔ علامہ مناوی رحمہ اللہ تعالٰی ساتھ نیکی کرنی چاہئے کیونکہ ان کی نافرمانی بہت

در تیسر شرح جامع صغیر می آرد، بڑا گناہ ہے اور استاذ کے حق کو والدین کے حق پر مقدم رکھنا چاہئے کیونکہ وہ روح کی زندگی کا ذریعہ ہے (ملخصاً)

علامہ مناوی جامع صغیر کی شرح تیسر میں نقل

من علم الناس ذاك خير اب فرماتے ہیں کہ جو شخص لوگوں کو علم سکھائے وہ بہترین باپ ہے

ذاك ابو الروح لا ابو النطف ۲ کیونکہ وہ بدن کا نہیں روح کا باپ ہے،

وخود پیداست کہ شامت عقوق از کجا تا ظاہر ہے کہ نافرمانی کی شامت کہاں تک ہے، حتٰی

کجاست تا آنکہ مصطفٰی صلی اللہ تعالٰی علیہ کہ نبی اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے اسے

وسلم اورا در جنب اشراک باللہ داشت واز شرک کے پہلو میں شمار کیا اور بدترین کبیرہ گناہ

سخت ترین کبائر انگاشت فقد اخرج الشیخان و خیال فرمایا۔ امام بخاری، مسلم اور ترمذی نے

الترمذی عن ابی بکرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ قال حضرت ابو بکر رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت

(عربی و فارسی عبارات)	(اردو ترجمہ و تشریح)
قال رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم الا انبئكم باكبر الكبائر ثلثا قلنا بلى يارسول الله قال الاشراك بالله وعقوق الوالدين ٣ الحديث، وخود اگر احاديث ايں باب شمردن گيريم دفترى باليست	کی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کیا میں تمہیں سب سے بڑا گناہ نہ بتادوں؟ یہ بات آپ نے تین دفعہ فرمائی۔ صحابہ نے عرض کی: فرمائیے۔ آپ نے فرمایا: اللہ تعالیٰ کے ساتھ شرک کرنا

[واٹر مارک: I.T. Majlis of Dawateislami]

١ عين العلم الباب الثامن امرت پريس لاہور ص ٣٣٤ تا ٣٣٥ ٢ التيسير شرح الجامع الصغير تحت حديث انما انا لكم بمنزلة الوالد مكتبة الامام الشافعي رياض ٣٦١/١ ٣ صحيح البخاري كتاب الشهادات باب ماقيل في شهادة الزور قديمى كتب خانہ كراچى ١/ ٣٦٢، صحيح مسلم كتاب الايمان باب الكبائر قديمى كتب خانہ كراچى ١/ ٦٣، جامع الترمذى ابواب البر والصلة ١٢/٢، ابواب الشهادات ٢/ ٥٤ امين كمپنى

Fatawa Razawiyya, Volume 24

...and disobeying parents. And if one starts counting such Hadees (traditions), a whole register would be needed. Sixth: It is just like a slave running away from his master. Tabarani narrated from Hazrat Abu Umamah (may Allah be pleased with him) that the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whoever teaches a servant a verse from the Book of Allah the Almighty, he is his master." Whoever taught a person one verse of the Holy Quran, he is his master. It is narrated from the Commander of the Faithful, Hazrat Ali (may Allah be pleased with him), he said: "Whoever taught me a single letter, he has made me his slave; if he wishes he may sell me, and if he wishes he may set me free." Whoever taught me a letter, he effectively made me his slave, whether he wants to sell or set free. Imam Shamsuddin Sakhawi narrates in 'Al-Maqasid al-Hasana' from the Commander of the Faithful in Hadees, Shu'bah bin Hajjaj (may Allah have mercy on him), that he said: "Whoever I have written four or five Hadees from, I am his slave until I die." From whomsoever I wrote four or five Hadees, I became his slave until I die. Rather, in another wording he said: "I never wrote a Hadees from anyone..."

Footnotes: 1. Al-Mu'jam al-Kabir, Hadees 5287, Al-Maktaba al-Faysaliyya, Beirut, 8 / 132. 3. Al-Maqasid al-Hasana, under Hadees 1155, Dar al-Kutub al-Ilmiyya, Beirut, p. 421.

फ़तावा रज़विया, खंड 24

...और माता-पिता की अवज्ञा करना। और अगर इस तरह की हदीसों को गिनना शुरू कर दिया जाए, तो उनके लिए एक पूरे दफ्तर (पंजी) की आवश्यकता होगी। छठा: यह वैसा ही है जैसे एक गुलाम अपने मालिक से भाग जाए। तबरानी ने हज़रत अबू उमामा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है कि सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "जिसने किसी बंदे को अल्लाह तआला की किताब की एक आयत सिखाई, तो वह उसका मालिक है।" जिसने किसी व्यक्ति को कुरान मजीद की एक आयत सिखाई, वह उसका मालिक है। अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है, आप फरमाते हैं: "जिसने मुझे एक अक्षर (हर्फ) सिखाया, उसने मुझे अपना गुलाम बना लिया, चाहे तो मुझे बेच दे और चाहे तो आज़ाद कर दे।" जिसने मुझे एक हर्फ सिखाया, उसने वास्तव में मुझे अपना गुलाम बना लिया, चाहे वह बेचे या आज़ाद करे। इमाम शम्सुद्दीन सखावी 'अल-मक़ासिद अल-हसना' में हदीस के अमीर-उल-मोमिनीन शुबा बिन हज्जाज (रहमतुल्लाह अलैह) से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फरमाया: "जिससे मैंने चार या पाँच हदीसें लिखीं, मैं मरते दम तक उसका गुलाम हूँ।" जिससे मैंने चार या पाँच हदीसें लिखीं, मैं उसका गुलाम बन गया यहाँ तक कि मैं मर जाऊं। बल्कि उन्होंने दूसरे शब्दों में फरमाया: "मैंने कभी किसी से हदीस नहीं लिखी..."

फुटनोट: 1. अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस 5287, अल-मकतबा अल-फ़ैसलिया, बेरूत, 8 / 132. 3. अल-मक़ासिद अल-हसना, हदीस 1155 के तहत, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, पृ. 421.

पृष्ठ 720 का 423

اور والدین کی نافرمانی کرنا۔ اور اگر اس قسم کی حدیثیں گننا شروع کر دی جائیں تو ان کے لئے دفتر درکار ہو گا۔ ششم: یہ اسی طرح ہے جس طرح ایک غلام اپنے آقا سے بھاگ جائے، طبرانی نے حضرت ابو امامہ رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کی کہ سید عالم صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں: "من علّم عبداً آیة من کتاب اللہ تعالی فھو مولاہ" ۱ جس نے کسی آدمی کو قرآن مجید کی ایک آیت پڑھائی وہ اس کا آقا ہے۔ امیر المومنین حضرت علی رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت ہے آپ فرماتے ہیں: "من علمني حرفاً فقد صیرني عبداً ان شاء باع وان شاء اعتق" ۲ جس نے مجھے ایک حرف سکھایا اس نے مجھے اپنا غلام بنا لیا چاہے تو مجھے بیچ دے اور چاہے تو آزاد کر دے۔ امام شمس الدین سخاوی حدیث کے امیر المومنین شعبہ بن حجاج رحمہ اللہ تعالی سے روایت کرتے ہیں کہ انھوں نے فرمایا: "من کتبت عنه اربعة احادیث او خمسة فانا عبده حتی اموت" ۳ جس سے میں نے چار یا پانچ حدیثیں لکھیں میں اس کا تاحیات غلام ہوں بلکہ انہوں نے فرمایا: "ما کتبت عن احد حدیثاً"

حواشی: ۱۔ المعجم الکبیر، حدیث ۵۲۸۷، المکتبة الفیصلیة، بیروت، ۸ / ۱۳۲ ۲۔ [کوئی متن فراہم نہیں کیا گیا] ۳۔ المقاصد الحسنة، تحت حدیث ۱۱۵۵، دار الکتب العلمیہ، بیروت، ص ۴۲۱

Fatawa Razawiyya Volume 24

"Except that I would be his slave for as long as I live." (1) Meaning: From whomever I have written one Hadith, I am his slave for the rest of my life. These Hadiths and narrations also root out that false assumption which does not recognize any value for basic education. It is self-evident that running away (abāq) from the master is a major and great sin, so much so that the Master of the Universe (Sallallahu Alaihi Wa Sallam) has called running away as disbelief (kufr), as narrated by Muslim (2) from Jarir bin Abdullah al-Bajali (Radi Allahu Anhu). The non-acceptance of his prayers is mentioned in many Hadiths, like the Hadith of Muslim (3) from him, the Hadith of Tirmidhi from Abu Umamah, the Hadith of Tabarani, Ibn Khuzaymah, and Ibn Hibban from Jabir, and the Hadith of al-Hakim and the two Ma'ajim (al-Awsat and al-Saghir) from Ibn Umar (Radi Allahu Anhum), all from the Prophet (Sallallahu Alaihi Wa Sallam); and to list them all would be lengthy.

Seventh: To consider oneself superior to the teacher, and this is contrary to what is commanded. Tabarani in 'al-Awsat' and Ibn Adi in 'al-Kamil' narrated from Abu Hurairah (Radi Allahu Anhu) from the Prophet (Sallallahu Alaihi Wa Sallam): "Acquire knowledge and learn..."

Footnotes: 1. Al-Maqasid al-Hasanah, under Hadith 1155, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, p. 441. 2. Sahih Muslim, Book of Faith, Chapter: Naming a runaway slave a disbeliever, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 1/58. 3. Sahih Muslim, Book of Faith, Chapter: Naming a runaway slave a disbeliever, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 1/58.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

"सिवाय इसके कि मैं जब तक जीवित रहूँ उसका दास रहूँ।" (1) अर्थात: जिससे भी मैंने एक हदीस लिखी है, मैं जीवन भर उसका दास हूँ। ये हदीसें और रिवायतें उस निराधार धारणा को भी जड़ से उखाड़ देती हैं जो बुनियादी शिक्षा को कोई महत्व नहीं देती। यह स्वयं सिद्ध है कि स्वामी से भाग जाना (अबाक़) एक बहुत बड़ा और महान पाप है, यहाँ तक कि सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने भागने को कुफ़्र (अविश्वास) कहा है, जैसा कि मुस्लिम (2) ने जरीर बिन अब्दुल्लाह अल-बजली (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। उसकी नमाज़ों का स्वीकार न होना कई हदीसों में दर्ज है, जैसे कि उनसे मुस्लिम (3) की हदीस, अबू उमामा से तिर्मिज़ी की हदीस, जाबिर से तबरानी, इब्न खुज़ैमा और इब्न हिब्बान की हदीस, और इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से हाकिम और दोनों मआजम (औसत और सग़ीर) की हदीसें, ये सभी नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से हैं; और सब को विस्तार से लिखना लम्बा हो जाएगा।

सातवाँ: स्वयं को उस्ताद (शिक्षक) से श्रेष्ठ समझना, और यह आदेश के विपरीत है। तबरानी ने 'औसत' में और इब्न अदी ने 'कामिल' में अबू हुरायरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत की है: "इल्म (ज्ञान) हासिल करो और सीखो..."

फुटनोट्स: 1. अल-मक़ासिद अल-हसना, हदीस 1155 के अंतर्गत, दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत, पृष्ठ 441। 2. सहीह मुस्लिम, किताब अल-ईमान, अध्याय: भागने वाले दास को काफ़िर कहना, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 1/58। 3. सहीह मुस्लिम, किताब अल-ईमान, अध्याय: भागने वाले दास को काफ़िर कहना, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 1/58।

पृष्ठ 424 / 720 मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी

الا وکنت لہ عبداً ماحیی ۱ یعنی از ہر کہ یک حدیث نوشتہ ام مدۃ العمر اورا بندہ ام۔ وایں احادیث وروایات آں زعم باطل را نیز از بیخ برمی کند کہ تعلیم ابتدائی را قد رے ندانست و خود معلوم ست کہ اباق از مولی کبیرہ ایست عظیم تا آنکہ سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اباق راکفر گفتہ است کما رواہ مسلم ۲ عن جریر بن عبداللہ البجلی رضی اللہ تعالیٰ عنہ و نا پذیر ا شدن نمازش در احادیث کثیرہ واردست کحدیث مسلم ۳ عنہ وحدیث الترمذی عن ابی امامۃ و حدیث الطبرانی وابن خزیمۃ وابن حبان عن جابر و حدیث الحاکم والمعجمین الاوسط والصغیر عن ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہم کلہم عن النبی صلی علیہ وسلم والسرد یطول۔

"الا وکنت له عبداً ما حیي" جس سے میں نے ایک حدیث لکھی میں اس کا عمر بھر غلام رہا ہوں۔ یہ حدیثیں اور روایتیں اس باطل خیال کو جڑ سے اکھیڑ دیتی ہیں کہ ابتدائی تعلیم کی کیا قدر ہے اور واضح ہے کہ آقا سے بھاگ جانا بہت بڑا گناہ ہے حتیٰ کہ سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے بھاگنے والے غلام کو کافر فرمایا ہے جیسے کہ امام مسلم نے جریر بن عبداللہ بجلی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا بھاگنے والے غلام کی نمازوں کا نامقبول ہونا بہت سی حدیثوں میں وارد ہے جیسے کہ امام مسلم نے جریر بن عبد اللہ سے امام ترمذی نے ابو امامہ سے طبرانی، ابن خزیمہ اور ابن حبان نے حضرت جابر سے حاکم معجم اوسط اور معجم صغیر نے ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے روایت کی تمام روایات کے نقل کرنے سے طوالت پیدا ہوگی۔

ہفتم خود را بر استاذ فضل می نہد وایں خلاف مامورست اخرج الطبرانی فی الاوسط وابن عدی فی الکامل عن ابی ہریرۃ عن النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تعلموا العلم وتعلموا

ہفتم اپنے آپ کو استاذ سے افضل قرار دینا ہے اور یہ خلاف مامور ہے طبرانی نے اوسط میں اور ابن عدی نے کامل میں ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں تعلموا العلم وتعلموا

۱ المقاصد الحسنۃ تحت حدیث ۱۱۵۵ دار الکتب العلمیۃ بیروت ص۴۴۱ ۲ صحیح مسلم کتاب الایمان باب تسمیۃ العبد الآبق کافرا قدیمی کتب خانہ کراچی ۵۸/۱ ۳ صحیح مسلم کتاب الایمان باب تسمیۃ العبد الآبق کافرا قدیمی کتب خانہ کراچی ۵۸/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 24

“Adopt tranquility and dignity for the sake of knowledge, and be humble towards those from whom you learn.”

Learn, and for the sake of knowledge, learn respect and honor. Adopt humility and submissiveness before the teacher who taught you knowledge. Wise and fortunate individuals, even if they surpass their teacher, consider it the bounty and blessing of their teacher and rub their heads on the dust of the teacher's feet even more than before. (Verse fragment): “After all, O morning breeze! All this is but your favor.”

When the foolish, wicked, and senseless gain strength and power, they assert themselves over their elderly father and choose to defy his orders. It will soon be seen that when they themselves become old, they will taste the punishment of their own deeds with their own hands; as you sow, so shall you reap, and the punishment of the Hereafter is severe and everlasting.

Eighth: Scholars state that it is also a right of the teacher over the student that he should not sit on the teacher's bed even if the teacher is not present. In 'Radd al-Muhtar,' the marginalia of 'Durr al-Mukhtar,' from 'Manh al-Ghaffar,' it is quoted from 'Fatawa Bazzaziya,' who quoted from Imam Zandiwisti, that the right of a scholar over the ignorant and the right of a teacher over a student are equally the same: that he should not start speaking before him and should not sit in his place even if he is absent.

---

1. Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 6180, Maktabat al-Ma'arif Riyadh 7/105; Al-Kamil by Ibn Adi, biography of Abbad bin Kathir al-Thaqafi, Dar al-Fikr Beirut 4/1642.

फ़तावा रज़विया, जिल्द २४

“ज्ञान के लिए शांति और गरिमा अपनाओ, और जिनसे तुम सीखते हो उनके प्रति विनम्र रहो।”

सीखो और ज्ञान के लिए शिष्टाचार और सम्मान सीखो। जिस शिक्षक ने तुम्हें ज्ञान सिखाया है, उसके सामने विनम्रता और अधीनता अपनाओ। बुद्धिमान और भाग्यशाली व्यक्ति, भले ही वे अपने शिक्षक से आगे निकल जाएँ, इसे अपने शिक्षक का अनुग्रह और आशीर्वाद मानते हैं और पहले से भी अधिक शिक्षक के चरणों की धूल पर अपना सिर रगड़ते हैं। (कविता का अंश): “आखिरकार, ओ सुबह की हवा! यह सब तुम्हारा ही उपकार है।”

जब मूर्ख, दुष्ट और नासमझ शक्ति और सामर्थ्य प्राप्त कर लेते हैं, तो वे अपने वृद्ध पिता पर ही जोर आज़माते हैं और उनके आदेशों की अवज्ञा करते हैं। जल्द ही देखा जाएगा कि जब वे स्वयं वृद्ध होंगे, तो वे अपने ही कर्मों की सजा अपने हाथों से चखेंगे; जैसा करोगे वैसा भरोगे, और परलोक का दंड अत्यंत कठोर और सदैव रहने वाला है।

आठवां: विद्वान कहते हैं कि शिष्य पर शिक्षक का यह भी अधिकार है कि वह शिक्षक के बिस्तर पर न बैठे, भले ही शिक्षक उपस्थित न हो। 'रद्द अल-मुह्तार' (दुर्र अल-मुख्तार का हाशिया) में 'मन्ह अल-ग़फ़्फ़ार' के माध्यम से 'फ़तावा बज़्ज़ाज़िया' से उद्धृत किया गया है, जिन्होंने इमाम ज़न्दीविस्ती से उद्धृत किया है कि अज्ञानी पर विद्वान का अधिकार और शिष्य पर शिक्षक का अधिकार एक समान है: कि वह उनसे पहले बोलना शुरू न करे और उनके स्थान पर न बैठे, भले ही वे अनुपस्थित हों।

---

1. अल-मुअजम अल-औसत, हदीस ६१८०, मकतबत अल-मारिफ रियाद ७/१०५; अल-कामिल इब्न अदी द्वारा, अब्बाद बिन कसीर अल-सकफी की जीवनी, दार अल-फ़िक्र बेरूत ४/१६४२।

पृष्ठ ७२० का ४२५

فتاوی رضویہ ، جلد ۲۴

للعلم السکینۃ والوقار وتواضعوا لمن تعلمون منہ

سیکھو اور علم کے لئے ادب واحترام سیکھو، جس استاذ نے تجھے علم سکھایا ہے اس کے سامنے عاجزی اور انکساری اختیار کرو عقلمند اور سعادت مند اگر استاذ سے بڑے بھی جائیں تو اسے استاذ کا فیض اور اس کی برکت سمجھتے ہیں اور پہلے سے بھی زیادہ استاذ کے پاؤں کی مٹی پر سر ملتے ہیں ع

آخر اے باد صبا ! سب تیرا ہی احسان ہے

بے عقل اور شریر اور ناسمجھ جب طاقت و توانائی حاصل کر لیتے ہیں تو بوڑھے باپ پر ہی زور آزمائی کرتے ہیں اور اس کے حکم کی خلاف ورزی اختیار کرتے ہیں جلد نظر آجائے گا کہ جب خود بوڑھے ہوں گے تو اپنے کئے ہوئے کی سزا اپنے ہاتھ سے چکھیں گے، جیسا کرو گے ویسا بھرو گے، اور آخرت کا عذاب سخت اور ہمیشہ رہنے والا ہے۔

ھشتم علماء فرماتے ہیں کہ استاذ کا شاگرد پر یہ بھی حق ہے کہ استاذ کے بستر پر نہ بیٹھے اگرچہ استاذ موجود نہ ہو ، درمختار کے حاشیہ ردالمحتار میں منح الغفار سے انہوں نے فتاوی بزازیہ سے انہوں نے امام زندویستی سے نقل کیا کہ عالم کا حق جاہل پر اور استاذ کا حق شاگرد پر برابر ہے کہ اس سے پہلے بات نہ کرے اس کی جگہ نہ بیٹھے اگرچہ وہ موجود نہ ہو اور اس کی

۱۔ المعجم الاوسط حدیث ۶۱۸۰ مکتبۃ المعارف ریاض ۷/ ۱۰۵، الکامل لابن عدی ترجمہ عباد بن کثیر الثقفی دارالفکر بیروت ۴ / ۱۶۴۲

Fatawa Razawiyya Volume 24

One should not reject his (teacher's) speech nor walk ahead of him[1]. Therefore, how could it be permissible to forcibly remove a teacher from his position and take his place oneself while boasting about it? Even though there is a clear difference between a seat and livelihood, and between a bedding and a rank. (i.e., when one should not sit in the teacher's place or on his bedding, how can it be right to snatch his source of livelihood and rank?)

Ninth: Similarly, scholars have stated that a student should not precede the teacher in speaking or walking, as mentioned just now. Then how can it be right to force the teacher back and take over the position of Imamat (leading prayers) oneself?

Tenth: Although the said Syed (descendant of the Prophet) may not be this person's teacher, he is still a Muslim. This action chosen by this person clearly causes distress to the Syed. Causing distress to a Muslim without any Sharia-compliant reason is strictly forbidden (Haram). Allah Almighty said: "Indeed, those who abuse Allah and His Messenger - Allah has cursed them in this world and the Hereafter and prepared for them a humiliating punishment."[2] "And those who [cause harm to] believing men..."

[1] Rad al-Muhtar, Miscellaneous Matters, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/581. [2] The Holy Quran 33/57.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

उसकी (शिक्षक की) बात को न काटे और चलते समय उससे आगे न बढ़े।[1] अतः यह कैसे जायज़ होगा कि उस्ताद (शिक्षक) को जबरन उनके पद से हटाकर स्वयं उनकी जगह बैठ जाए और डींगें मारे? हालांकि बैठने के स्थान और आजीविका में, और बिस्तर और पद में वैसा ही स्पष्ट अंतर है। (अर्थात, जब उस्ताद की जगह और उनके बिस्तर पर बैठना उचित नहीं है, तो उनकी आजीविका और पद को छीनना कैसे सही हो सकता है?)

नवां: इसी प्रकार विद्वानों ने कहा है कि छात्र को बात करने और चलने में उस्ताद से आगे नहीं बढ़ना चाहिए, जैसा कि अभी बताया गया। फिर यह कैसे सही होगा कि उस्ताद को विवश करके पीछे हटा दिया जाए और स्वयं इमामत का पद संभाल लिया जाए?

दसवां: यद्यपि उक्त सैयद इस व्यक्ति के उस्ताद न हों, फिर भी वे एक मुसलमान तो हैं। और यह कार्य जो इस व्यक्ति ने अपनाया है, वह स्पष्ट है कि इसमें सैयद साहब को कष्ट होगा। और किसी मुसलमान को बिना किसी शरीयत सम्मत कारण के कष्ट देना कतई हराम (वर्जित) है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "बेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को सताते हैं, अल्लाह ने उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत भेजी है और उनके लिए अपमानजनक अज़ाब तैयार कर रखा है।"[2] "वे लोग जो ईमान वाले मर्दों..."

[1] रद अल-मुह्तार, विविध मामले, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 5/581। [2] पवित्र कुरान 33/57।

पृष्ठ 720 का 426 दावत-ए-इस्लामी की मजलिस

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

ولایرد علیه کلامه ولایتقدم علیه فی مشیه[1] پس چگونہ روا باشد کہ اوستاذ را بزور از منصبش افگنند وخود بجایش برآمدہ لافہا زنند حالانکہ از مجلس تا معاش و از منصب تافراش فرقے کہ ہست پیداست۔

بات کو رد نہ کرے اور چلنے میں اس سے آگے نہ ہو، لہذا کس طرح جائز ہوگا کہ استاذ کو طاقت کے ذریعے اس کے مرتبے سے گرا کر خود اس کی جگہ بیٹھ جائے اور لافیں ماری جائیں حالانکہ بیٹھنے کی جگہ اور معاش میں اسی طرح بستر اور مرتبے میں واضح فرق ہے (یعنی جب استاذ کی جگہ اور اس کے بستر پر بیٹھنا نہیں چاہئے تو اس کے ذریعہ معاش اور مرتبے کو چھینا کس طرح درست ہوگا)

نہم ہمچنین فرمودہ اند کہ تلمیذ را در رفتن و سخن گفتن بر اوستاذ تقدم و سبقت نمی رسد کما سمعت انفاً پس چہاں گوارا آید کہ اورا بالجبر پست نمایند و خود پیشی و بیشی گرفتہ بر منصب امامت بر آیند۔

نہم اسی طرح علماء نے فرمایا ہے کہ شاگرد کو بات کرنے اور چلنے میں استاذ سے آگے نہیں بڑھنا چاہئے جیسے کہ ابھی گزرا، پھر یہ کس طرح درست ہوگا کہ استاذ کو مجبور کرکے پیچھے ہٹا دیا جائے اور خود منصب امامت سنبھال لیا جائے۔

دہم آنکہ سید موصوف گو اوستاذ ایں کس نباش اما آخر مسلما نیست و ایں کار کہ فلاں خواست بالبدابت موجب ایذائے اوست و ایذائے مسلم بے وجہ شرعی حرام قطعی قال اللہ "إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ

وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُهِينًا"[2] آنانکہ آزار دہند مردان مومن و زنان مومنہ را بے جرم پس بہ تحقیق کہ

دہم سید موصوف اگرچہ اس شخص کے استاذ نہ ہوں آخر مسلمان تو ہیں اور یہ کام جو اس شخص نے اختیار کیا ہے واضح ہے اس میں سید صاحب کی تکلیف ہے اور مسلمان کو بغیر کسی شرعی وجہ کے تکلیف دینا قطعی حرام ہے اللہ تعالیٰ نے فرمایا: "إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُهِينًا" "وہ لوگ جو ایماندار مردوں

[1]رد المحتار مسائل شتی دار احیاء التراث العربي بیروت ۵۸۱/۵ [2]القرآن الکریم ۳۳/ ۵۷

Volume 24 Fatawa Razawiyyah

...and they cause distress to women without [their having committed] any crime. Indeed, they have taken upon themselves a slander and a manifest sin. The Master of the World, may Allah Almighty's peace and blessings be upon him, says: "Whoever harms a Muslim has harmed me, and whoever harms me has harmed Allah." Whoever has caused distress to a Muslim has caused distress to me, and whoever has caused distress to me has caused distress to Allah Almighty, meaning whoever has caused distress to Allah Almighty, Allah Almighty will ultimately seize him in punishment. Tabarani narrated it in Al-Awsat from Hazrat Anas, may Allah be pleased with him, with a good chain of narration. And the most noble Imam Rafi'i narrated from Sayyiduna Ali, may Allah honor his face, that the Chosen One (Prophet Muhammad), may Allah Almighty's peace and blessings be upon him, said: "He is not of us who cheats a Muslim, or harms him, or deceives him." This means that person is not from our group who deceives a Muslim or causes him harm or acts craftily with him. There are numerous hadiths on this subject, to the point that there is no room for seeking more. Eleventhly, this matter is a cause for the humiliation of that Muslim, as described by the questioner. And the Chosen One, may Allah Almighty's peace and blessings be upon him, said: "Whoever sees a believer being humiliated in his presence and does not help him while he is able to help him, Allah will humiliate him before all witnesses on the Day of Resurrection." This means whoever, in whose presence...

1. Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 3632, Maktabat al-Ma'arif Riyadh, 4/373
2. Al-Tadwin fi Ajnad Qazwin, Chapter of Shin, Ziyarat of the letter Shin, Beirut, 3/87

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

...और वे बिना किसी अपराध के औरतों को तकलीफ़ देते हैं, बेशक उन्होंने बोहतान और खुला गुनाह अपने सिर ले लिया है। सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "जिसने किसी मुसलमान को तकलीफ़ दी उसने मुझे तकलीफ़ दी और जिसने मुझे तकलीफ़ दी उसने अल्लाह तआला को तकलीफ़ दी।" यानी जिसने मुसलमान को तकलीफ़ दी उसने मुझे तकलीफ़ दी और जिसने मुझे तकलीफ़ दी उसने अल्लाह तआला को तकलीफ़ दी यानी जिसने अल्लाह तआला को तकलीफ़ दी, आखिरकार अल्लाह तआला उसे अज़ाब में गिरफ्तार फ़रमाएगा। तबरानी ने 'औसत' में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बसन्दे हसन रिवायत किया। और इमाम अजल्ल रफ़ई ने सैयदुना अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से रिवायत की कि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "वह हम में से नहीं है जो मुसलमान को धोखा दे या उसे नुकसान पहुँचाए या उसके साथ मक्कारी करे।" इसका मतलब है कि वह व्यक्ति हमारे गिरोह में से नहीं है जो मुसलमान को धोखा देता है या तकलीफ़ पहुँचाता है या उसके साथ मक्र (चालबाज़ी) करता है। इस बारे में बेशुमार हदीसें हैं, यहाँ तक कि और अधिक तलाश करने की कोई गुंजाइश नहीं है। ग्यारहवाँ यह कि यह बात उस मुसलमान की बेइज़्ज़ती का सबब है, जैसा कि सवाल करने वाले ने बयान किया। और मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिसके सामने किसी मोमिन की ज़िल्लत की जाए और वह उसकी मदद न करे जबकि वह उसकी मदद करने पर क़ादिर हो, अल्लाह उसे क़यामत के दिन तमाम गवाहों के सामने ज़लील करेगा।" यानी जिस शख़्स के सामने...

1. अल-मुअजम अल-औसत, हदीस 3632, मकतबतुल माआरिफ़ रियाज़, 4/373
2. अत-तदवीन फ़ी अजनाद क़ज़वीन, बाब-उश-शिन, ज़ियारात हर्फ़ शिन, बेरुत, 3/87

पेज 427/720

اور عورتوں کو بغیر کسی جرم کے تکلیف دیتے ہیں بے شک انہوں نے بہتان اور کھلا گناہ اپنے ذمے لے لیا۔ سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: من اٰذی مسلما فقد اذانی ومن اذانی فقد اٰذی اللہ جس نے مسلمان کو تکلیف دی اس نے مجھے تکلیف دی اور جس نے مجھے تکلیف دی اس نے اللہ تعالیٰ کو تکلیف دی یعنی جس نے اللہ تعالیٰ کو تکلیف دی بالآخر اللہ تعالیٰ اسے عذاب میں گرفتار فرمائے گا۔ طبرانی نے اوسط میں حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بسند حسن روایت کیا۔ وامام اجل رافعی نے سیدنا علی کرم اللہ وجہہ سے روایت کی مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایاولیس منّا من غش مسلما اوضرہ او ما کرہ یعنی وہ شخص ہمارے گروہ میں سے نہیں ہے جو مسلمان کو دھوکا دے یا تکلیف پہنچائے یا اس کے ساتھ مکر کرے، اس بارے میں بے شمار حدیثیں ہیں۔ "یازدہم یہ بات اس مسلمان کی بے عزتی کا سبب ہے جیسے کہ سوال کرنے والے نے بیان کیا اور نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: من اذلّ عندہ مؤمن فلم ینصرہ وھو یقدر علی ان ینصرہ اذلّہ اللہ علی رؤس الاشھاد یوم القیامۃ یعنی جس شخص کے سامنے ایک مؤمن کی تذلیل کی جائے اور وہ اس کی مدد نہ کرے باوجود یہ کہ وہ مدد کرنے پر قادر ہو تو اللہ تعالیٰ اسے قیامت کے دن تمام گواہوں کے سامنے ذلیل کرے گا"

1 المعجم الاوسط حدیث ۳۶۳۲ مکتبۃ المعارف ریاض ۴ / ۳۷۳ 2 التدوین فی اجناد قزوین باب الشین زیارات حرف ش بیروت ۳ / ۸۷

Fatawa Razawiyya Volume 24

If a Muslim is insulted in front of someone and despite having the power to help, they do not assist him, then on the Day of Resurrection, Allah Almighty will publicly disgrace and humiliate him. This was narrated by Imam Ahmad from Sahl bin Hanif (may Allah be pleased with him) with a good (hasan) chain of narration; all majesty belongs to Allah Almighty. It can be estimated that if remaining silent while witnessing the insult of a Muslim causes such painful punishment, then how much more would seeking to humiliate him oneself and attempting to undermine the rank for which he is respected among Muslims cause Allah's punishment and wrath.

Twelfth: Envy (attempting to strip someone of their rank/status); its evil needs no explanation. The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Faith and envy do not gather in the heart of a servant." This was narrated by Ibn Hibban in his Sahih and by al-Bayhaqi from Abu Huraira (may Allah be pleased with him). The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Beware of envy, for envy consumes good deeds as fire consumes wood."

Footnotes: 1. Musnad Ahmad bin Hanbal, from Sahl bin Hanif, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 3/487. 2. Mawarid al-Zaman, Book of Jihad, Hadith 1597, Al-Matba'at al-Salafiyya, p. 385; Shu'ab al-Iman, Hadith 6609, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 5/267.

Page 428 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

यदि किसी मुसलमान का अपमान किसी के सामने किया जाए और शक्ति होने के बावजूद वह उसकी सहायता न करे, तो कयामत के दिन अल्लाह तआला उसे सरेआम अपमानित और ज़लील करेगा। इसे इमाम अहमद ने सहल बिन हनीफ़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) से हसन सनद के साथ रिवायत किया है; सारी महिमा अल्लाह तआला के लिए है। अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि यदि किसी मुसलमान के अपमान को देखकर चुप रहना ऐसे दर्दनाक अज़ाब का कारण है, तो स्वयं उसे अपमानित करने के पीछे पड़ना और जिस पद के कारण उसे मुसलमानों के बीच सम्मान प्राप्त है, उसमें बाधा डालने की कोशिश करना कितना अधिक अज़ाब और अल्लाह तआला के क्रोध का कारण होगा।

बारहवाँ: हसद (ईर्ष्या - यह कोशिश करना कि किसी का पद छिन जाए); इसकी बुराई किसी वर्णन की मोहताज नहीं है। नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "किसी बंदे के दिल में ईमान और हसद एक साथ जमा नहीं हो सकते।" इसे इब्न हिब्बान ने अपनी सहीह में और बैहक़ी ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "हसद से बचो, क्योंकि हसद नेकियाँ को इस तरह खा जाता है जैसे आग लकड़ी को खा जाती है।"

पाद-टिप्पणी: 1. मसनद अहमद बिन हंबल, सहल बिन हनीफ़ से, अल-मकतब अल-इस्लामी, बेरूत, 3/487। 2. मवारिद अल-ज़मान, किताब अल-जिहाद, हदीस 1597, अल-मताबत अस-सलफ़िय्या, पृष्ठ 385; शुअब अल-इमान, हदीस 6609, दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत, 5/267।

पृष्ठ 428/720

سامنے کسی مسلمان کی بے عزتی کی جائے اور طاقت کے باوجود اس کی امداد نہ کرے تو قیامت کے دن اللہ تعالیٰ اسے برملا ذلیل ورسوا کرے گا۔ اسے امام احمد نے سہل بن حنیف رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اسناد حسن کے ساتھ روایت کیا، تمام عظمتیں اللہ تعالیٰ کے لئے ہیں۔ اندازہ کیا جا سکتا ہے کہ مسلمان کی بے عزتی کو دیکھ کر خاموش رہنا ایسے عذاب کا باعث ہے تو خود اسے ذلیل کرنے کے درپے ہونا اور جس مرتبہ کی وجہ سے اسے مسلمانوں کے نزدیک عزت حاصل ہو اس میں رخنہ اندازی کی کوشش کرنا کس قدر عذاب اور اللہ تعالیٰ کے غضب کا سبب ہوگا۔

دوازدہم حسد (یہ کوشش کرنا کہ کسی کا مرتبہ چھن جائے) کی برائی محتاج بیان نہیں۔ نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: لا یجتمع فی جوف عبد الایمان والحسد آدمی کے دل میں ایمان اور حسد جمع نہیں ہوتے۔ اس ابن حبان نے اپنی صحیح میں اور بیہقی نے ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا۔ نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: ایاکم والحسد فان الحسد یاکل الحسنات کما تاکل النار الحطب و قال

حواشی: 1 مسند احمد بن حنبل عن سهل بن حنيف المكتب الاسلامي بيروت ۳/ ۴۸۷ 2 موارد الظمآن كتاب الجهاد حديث ۱۵۹۷ المطبعة السلفية ص ۳۸۵، شعب الايمان حديث ۶۶۰۹ دار الكتب العلمية بيروت ۵/ ۲۶۷

Fatawa Razawiyya - Volume 24

"Stay away from envy, for envy consumes good deeds as fire consumes wood, or (as he said) as it consumes grass." (Narrated by Abu Dawood and al-Bayhaqi from Abu Hurayrah, and by Ibn Majah and others from Anas bin Malik).

In Musnad al-Firdous, it is narrated from Mu'awiya ibn Haydah that the Master of the World (peace be upon him) said: "Envy destroys faith as 'al-sabr' destroys honey." Envy ruins faith just as the bitter extract called 'sabr' ruins honey. 'Sabr' (with a fatha on the letter 'sad' and a kasra under 'ba') is an extremely bitter extract of a tree. Envy is defined as wishing for someone else's blessing to be taken away, as defined by scholars. The consequence of desiring to take another's blessing and take their place is profound.

Thirteenth: The Lawgiver (Prophet peace be upon him) has extreme compassion and kindness for Muslims; however, he did not consider it permissible for one Muslim to propose marriage to a woman to whom another Muslim has already proposed.

Footnotes: 1. Sunan Abi Dawud, Kitab al-Adab, Bab fi al-Hasad, Aftab-e-Alam Press Lahore 2/316; Shu'ab al-Iman, Hadith 6608, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut 5/266. 2. Sunan Ibn Majah, Abwab al-Zuhd, Bab al-Hasad, H.M. Saeed Company Karachi, p. 320. 3. Kashf al-Khafa, referencing al-Daylami from Mu'awiyah bin Haydah, Hadith 1129, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut 1/317.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 24

"ईर्ष्या (हसद) से दूर रहो, क्योंकि ईर्ष्या नेक कार्यों को उसी तरह खा जाती है जैसे आग लकड़ी को खा जाती है, या (जैसा कि उन्होंने कहा) घास को खा जाती है।" (अबू दाऊद और अल-बैहकी द्वारा अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से, और इब्न माजाह और अन्यों द्वारा अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत)।

मुसनद अल-फिरदौस में मुआविया इब्न हैदाह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि विश्व के स्वामी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "ईर्ष्या ईमान को उसी तरह नष्ट कर देती है जैसे 'अल-सब्र' शहद को नष्ट कर देता है।" ईर्ष्या ईमान को वैसे ही बर्बाद कर देती है जैसे 'सब्र' नाम का एक बेहद कड़वा अर्क शहद को खराब कर देता है। 'सब्र' (स़ाद पर ज़बर और बा के नीचे ज़ेर के साथ) एक पेड़ का अत्यंत कड़वा अर्क है। विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषा के अनुसार ईर्ष्या का अर्थ है किसी की नेमत (वरदान) छिन जाने की इच्छा करना। किसी की नेमत को खत्म करके खुद उसकी जगह पाने की इच्छा का वबाल (दुष्परिणाम) कहाँ तक पहुंचेगा।

तेरहवाँ यह कि शरीयत बनाने वाले (नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मुसलमानों के साथ अत्यंत दया और स्नेह है; इसके बावजूद, आपने इसे जायज़ नहीं ठहराया कि एक मुसलमान उस महिला को निकाह का संदेश भेजे जिसे पहले ही कोई दूसरा मुसलमान संदेश भेज चुका हो।

पादलेख: 1. सुनन अबी दाऊद, किताब अल-अदब, बाब फ़ी अल-हसद, आफताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 2/316; शुअ़ब अल-ईमान, हदीस 6608, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत 5/266। 2. सुनन इब्न माजाह, अबवाब अज़-ज़ुहद, बाब अल-हसद, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृ. 320। 3. कश्फ़ अल-ख़फ़ा, अल-दैलामी के हवाले से मुआविया बिन हैदाह से, हदीस 1129, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत 1/317।

पृष्ठ 429 / 720

العشب حسد سے دور رہو کیونکہ حسد نیکیوں کو اس طرح کھا جاتا ہے جس طرح آگ ایندھن کو، یا فرمایا گھاس کو کھا جاتی ہے (ابوداؤد و بیہقی از ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ ابن ماجہ وغیرہ از انس رضی اللہ تعالٰی عنہا)۔

مسند الفردوس میں معاویہ ابن حیدہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت ہے کہ سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: الحسد یفسد الایمان کما یفسد الصبر العسل حسد ایمان کو اسی طرح تباہ کر دیتا ہے جس طرح صبر شہد کو تباہ کر دیتا ہے۔ صبر، صاد پر فتحہ اور باء کے نیچے کسرہ ایک درخت کا انتہائی کڑوا نچوڑ ہے پھر حسد اسے کہتے ہیں کہ کسی کی نعمت کے چھن جانے کی آرزو کی جائے جیسے کہ علماء نے حسد کی تعریف کی ہے، پھر کسی کی نعمت کو ختم کر کے خود اس کی جگہ پہنچنے کی خواہش کا وبال کہاں تک ہو گا۔

تیرہواں یہ کہ شارع صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو مسلمانوں کے ساتھ بے حد شفقت ہے اس کے باوجود آپ نے اس بات کو جائز نہ رکھا کہ ایک مسلمان نے کسی عورت کو نکاح کا پیغام دیا۔

حواشی: ۱ سنن ابی داؤد کتاب الادب باب فی الحسد آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۳۱۶، شعب الایمان حدیث ۶۶۰۸ دار الکتب العلمیۃ بیروت ۵ / ۲۶۶ ۲ سنن ابن ماجہ ابواب الزہد باب الحسد ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۳۲۰ ۳ کشف الخفاء بحوالہ الدیلمی عن معاویۃ بن حیدہ حدیث ۱۱۲۹ دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱ / ۳۱۷

Fatawa Rizvia, Volume 24

[Left Column] Imams Ahmad and the two Shaykhs (Bukhari and Muslim) narrated from Abu Huraira (may Allah be pleased with him) that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "A man should not propose over the proposal of his brother, nor should he make a deal over the deal of his brother." (1) There are also narrations in this chapter from Uqbah bin Amir and from Ibn Umar (may Allah be pleased with them). This means that if someone is buying something and the buyer and seller have agreed on something, another person comes and increases the price and takes it for himself. Or a man has proposed to a woman and they have decided on marriage, another person stands up, causes a stir, and takes the proposed woman for himself. All of this is forbidden and unlawful. While in these cases it was just an agreement and not attainment. Then how can it be permissible to extend the hand of transgression against a Muslim and snatch away a present blessing already attained by him? This itself is blatant oppression, and the Chosen One (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Oppression is darkness on the Day of Resurrection." (2) Narrated by Bukhari and Muslim.

[Right Column] ...has offered, then another should also offer, or a man is dealing, and another also starts dealing. (Imam Ahmad, Bukhari and Muslim from Abu Huraira, may Allah be pleased with him). The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "A man should not propose over the proposal of his brother, nor should he bargain over the bargain of his brother." In this regard, there are also narrations from Uqbah bin Aamir and Ibn Umar (may Allah be pleased with them). That is, a man is buying something, both the buyer and the seller have agreed, and another man comes and takes that thing by giving a higher price. Or a man has sent a marriage proposal to a woman and both have agreed, and another man somehow marries that woman. All this is illegal and forbidden, even though in these cases there was only agreement and nothing was gained yet. When this is illegal, then how will it be permissible that someone gets a blessing and it is snatched away from him by being excessive? This is open oppression. The Holy Prophet...

[Footnotes] 1. Sahih al-Bukhari, Book of Sales 1/287 and Book of Conditions 1/367, Qadimi Kutub Khana Karachi; Sahih Muslim, Book of Marriage, Chapter on the prohibition of combining a woman and her paternal aunt, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/453; Musnad Ahmad bin Hanbal from Abu Huraira, Al-Maktab al-Islami Beirut 2/508 and 529. 2. Sahih al-Bukhari, Chapters of Grievances, Chapter on 'Oppression is darkness on the Day of Resurrection', Qadimi Kutub Khana Karachi

1/331; Jami' at-Tirmidhi, Chapters of Piety and Joining ties, Chapter on what has been narrated about oppression, Amin Company Delhi 2/24.

फ़तावा रज़विया, खंड 24

[बायाँ कॉलम] इमाम अहमद और शैख़ैन (बुखारी व मुस्लिम) ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "कोई व्यक्ति अपने भाई के निकाह के पैगाम पर पैगाम न भेजे और न ही उसके सौदे पर सौदा करे।" (1) इस बारे में उकबा बिन आमिर और इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से भी रिवायत है। यानी कोई चीज़ खरीद रहा है और खरीदार व विक्रेता एक चीज़ पर सहमत हो चुके हैं, दूसरा आता है और कीमत बढ़ा देता है और खुद ले लेता है। या एक मर्द ने एक औरत को निकाह का पैगाम दिया है और शादी की बात तय हो गई है, दूसरा खड़ा होता है, खलल डालता है और उस मंगेतर को अपने लिए ले लेता है। यह सब मना और नाजायज़ है, जबकि इन सूरतों में महज़ इकरार था न कि हुसूल। तो फिर कैसे जायज़ होगा कि किसी मुसलमान पर ज़्यादती का हाथ बढ़ाया जाए और उससे मौजूद हासिल शुदा नेमत छीन ली जाए? यह खुद खुला ज़ुल्म है, और मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "ज़ुल्म क़यामत के दिन अंधेरा होगा।" (2) इसे बुखारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

[दायां कॉलम] ...दे रखा हो तो दूसरा भी दे दे या एक आदमी सौदा कर रहा हो दूसरा भी सौदा करने लग जाए (इमाम अहमद, बुखारी और मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से)। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "कोई व्यक्ति अपने भाई के पैगाम पर पैगाम न दे और न ही उसके सौदे पर सौदा करे।" इस सिलसिले में उकबा बिन आमिर और इब्न उमर रज़ियल्लाहु अन्हुम से भी रिवायत है यानी एक आदमी कोई चीज़ खरीद रहा है खरीदार और फरोख्त करने वाला दोनों राज़ी हो चुके हैं एक और आदमी ज़ियादा कीमत देकर वो चीज़ ले जाता है या एक मर्द ने किसी औरत को निकाह का पैगाम दे रखा है और दोनों रज़ामंद हो चुके हैं एक और आदमी किसी तरीक़े से उस औरत के साथ निकाह कर लेता है ये सब नाजायज़ और ममनू (वर्जित) है हालांकि इन सूरतों में सिर्फ़ रज़ामंदी थी कुछ हासिल न हुआ था, जब ये नाजायज़ है तो ये किस तरह जायज़ होगा कि किसी को एक नेमत हासिल हो और उस पर ज़्यादती करके इस नेमत को छीन लिया जाए, ये सरीह (स्पष्ट) ज़ुल्म है। नबी अकरम...

[पादलेख] 1. सहीह अल-बुखारी, किताबुल बुयू 1/287 और किताबुश शूरूत 1/367 कदीमी कुतुब खाना कराची; सहीह मुस्लिम किताबुन निकाह बाब तहरीमुल जमअ बैनल मरअती व अम्मतिहा कदीमी कुतुब खाना कराची 1/453; मुसनद अहमद बिन हंबल अन अबी हुरैरा अल-मकतब अल-इस्लामिया बेरूत 2/508 और 529। 2. सहीह अल-बुखारी अबवाबुल मज़ालिम बाब अल-ज़ुल्मु

ज़ुलुमातुन यौमल कियामा कदीमी कुतुब खाना कराची 1/331; जामी अत-तिर्मिज़ी अबवाबुल बिर वस्सिला बाब मा जाअ फ़िज़ ज़ुल्म अमीन कंपनी दिल्ली 2/24।

पृष्ठ 720 में से 430

[بایاں کالم] اخرج الائمۃ احمد والشیخان عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ ان النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم قال لایخطب الرجل علی خطبۃ اخیہ ولا یسوم علی سومہ ۱۔ وفی الباب عن عقبہ بن عامر وعن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہم یعنی یکے می خرد و بائع و مشتری بر چیزی تراضی کردہ اند دیگری آید و بہا افزاید و خود بہر دیا یکے مرد زنی را خواستگاری کردہ است ورائے بر تزویج قرار بگرفتہ دیگری برخیزد و سپی انگیز و مخطوبہ اورا بجالہ خود کشید ایں ہمہ ممنوع و نارواست حالانکہ دریں صورتہا محض قرار دادست نہ حصول پس چہاں حلال باشد کہ بر مسلمانی دست تعدی دراز نمایند و از وی نعمت موجودہ حاصلہ بر بایند ایں خود ستم صریح است و مصطفی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرمود الظلم ظلمۃ یوم القیامۃ ستم تاریکیہاست روز قیامت ۲ اخرجۃ البخاری ومسلم

[دایاں کالم] دے رکھا ہو تو دوسرا بھی دے دے یا ایک آدمی سودا کر رہا ہو دوسرا بھی سودا کرنے لگ جائے (امام احمد ، بخاری و مسلم از ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ) حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: لَا یَخْطُبُ الرَّجُلُ عَلٰی خِطْبَۃِ اَخِیہِ وَلَا یَسُوْمُ عَلٰی سَوْمِہٖ۔ اس سلسلہ میں عقبہ بن عامر اور ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے بھی روایت ہے یعنی ایک آدمی کوئی چیز خرید رہا ہے خریدار اور فروخت کنندہ دونوں راضی ہو چکے ہیں ایک اور آدمی زیادہ قیمت دے کر وہ چیز لے جاتا ہے یا ایک مرد نے کسی عورت کو نکاح کا پیغام دے رکھا ہے اور دونوں رضامند ہو چکے ہیں ایک اور آدمی کسی طریقے سے اس عورت کے ساتھ نکاح کر لیتا ہے یہ سب ناجائز اور ممنوع ہے حالانکہ ان صورتوں میں صرف رضامندی تھی کچھ حاصل نہ ہوا تھا، جب یہ

ناجائز ہے تو یہ کس طرح جائز ہوگا کہ کسی کو ایک نعمت حاصل ہو اور اس پر زیادتی کر کے اس نعمت کو چھین لیا جائے، یہ صریح ظلم ہے۔ نبی اکرم

[حواشی] ۱ صحیح البخاری کتاب البیوع ۱ / ۲۸۷ و کتاب الشروط ۱ / ۳۶۷ قدیمی کتب خانہ کراچی، صحیح مسلم کتاب النکاح باب تحریم الجمع بین المراۃ وعمتھا قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۴۵۳، مسند احمد بن حنبل عن ابی ہریرۃ المکتب الاسلامیۃ بیروت ۲ / ۵۰۸ و ۵۲۹ ۲ صحیح البخاری ابواب المظالم باب الظلم ظلمات یوم القیامۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۳۳۱، جامع الترمذی ابواب البر والصلۃ باب ما جاء فی الظلم امین کمپنی دہلی ۲ / ۲۴

Fatawa Ridawiyya Volume 24

(The Prophet) peace and blessings of Allah be upon him says: "Oppression will be many darknesses on the Day of Resurrection" (Bukhari, Muslim, Tirmidhi from Ibn Umar, may Allah be pleased with them both). For him, this decree of Allah Almighty is sufficient: "Unquestionably, the curse of Allah is upon the wrongdoers." [1] Curse of God be upon the oppressors. We seek refuge with Allah Almighty.

Fourteenthly, especially since these evils are being committed against a Muslim who is old and elderly, the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) said: "He is not from us who does not show mercy to our young ones and recognize the honor of our elders." (Imam Ahmad, Tirmidhi, Hakim from Abdullah bin Amr bin al-Aas, may Allah be pleased with them both). He also said: "He is not of us who does not show mercy to our small ones and does not respect our great ones," meaning he is not on our path who does not show mercy to children and does not respect elders (Imam Ahmad, Tirmidhi).

And at-Tirmidhi from Ibn Umar (may Allah be pleased with them both) and with his chain is the word of Him, Glorified and Exalted: "Unquestionably, the curse of Allah is upon the wrongdoers." [1] And we seek refuge with Allah Almighty.

Fourteenthly, that this Muslim against whom such evils are being committed is especially old and senior in age, and the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) said: "He is not from us who does not show mercy to our young ones and recognize the honor of our elders." [2] Whoever does not show kindness to our young and recognize the greatness of our elders is not from us. This was recorded by Ahmad, at-Tirmidhi, and al-Hakim from Abdullah bin Amr bin al-Aas (may Allah be pleased with them both) with a good (hasan) or rather authentic (sahih) chain. And (the Prophet) peace and blessings of Allah be upon him said: "He is not of us who does not show mercy to our small ones and does not respect our great ones," meaning he is not on our path who does not show mercy to the young and does not respect the elderly. The first two recorded this.

[Footnotes] 1. The Holy Quran 11/18 2. Musnad Ahmad bin Hanbal from Amr bin al-Aas, Al-Maktab al-Islami Beirut 2/185 and 222, Jami' at-Tirmidhi Chapters of Piety and Joining Ties, Chapter on what has been narrated regarding mercy to children, Qadimi Kutub Khana Karachi 2/12, Al-Mustadrak al-Hakim Book of Faith, Dar al-Fikr Beirut 1/62.

फतवा रज़विया खंड 24

(पैगंबर) सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं: "जुल्म कयामत के दिन बहुत सी अंधेरों के बराबर होगा" (बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी इब्न उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से)। उसके लिए अल्लाह तआला का यह फरमान काफी है: "खबरदार! ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है।" [१] ज़ालिमों पर खुदा की लानत। हम अल्लाह तआला की पनाह मांगते हैं।

चौदहवें, विशेष रूप से यह कि ये बुराइयां जिस मुसलमान के साथ की जा रही हैं, वह बूढ़ा और बुजुर्ग है, सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "वह हम में से नहीं जो हमारे बच्चों पर मेहरबानी नहीं करता और हमारे बड़ों की इज़्ज़त को नहीं पहचानता" (इमाम अहमद, तिर्मिज़ी, हाकिम अब्दुल्ला बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा से)। आपने यह भी फरमाया: "वह व्यक्ति हमारे तरीके पर नहीं जो बच्चों पर मेहरबानी नहीं करता और बड़ों की इज़्ज़त नहीं करता" (इमाम अहमद, तिर्मिज़ी)।

और तिर्मिज़ी ने इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत की है और उनकी सनद के साथ अल्लाह सुभानहु व तआला का कौल है: "खबरदार! ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है।" [१] और अल्लाह तआला की पनाह।

चौदहवें, यह कि वह मुसलमान जिसके खिलाफ ऐसी बुराइयां की जा रही हैं, विशेष रूप से वृद्ध और बड़ी उम्र का है, और सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "वह हम में से नहीं जो हमारे छोटे बच्चों पर दया नहीं करता और हमारे बड़ों के सम्मान को नहीं पहचानता।" [२] वह हम में से नहीं है जो हमारे छोटों पर दया न करे और हमारे बड़ों की महानता को न पहचाने। इसे अहमद, तिर्मिज़ी और हाकिम ने अब्दुल्ला बिन अम्र बिन अल-आस (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से हसन बल्कि सहीह सनद के साथ रिवायत किया है। और (पैगंबर) सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "वह हम में से नहीं जो हमारे छोटों पर दया नहीं करता और हमारे बड़ों का सम्मान नहीं करता", यानी वह हमारे रास्ते पर नहीं है जो छोटों पर दया नहीं करता और बड़ों का सम्मान नहीं करता। पहले दो ने इसे रिवायत किया है।

[फुटनोट] १. अल-कुरान अल-करीम ११/१८ २. मुसनद अहमद बिन हंबल अम्र बिन अल-आस से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत २/१८५ और २२२, जामी अत-तिर्मिज़ी नेकी और मेल-जोल के

अध्याय, बच्चों पर दया के बारे में अध्याय, पुराने कुतुब खाना कराची २/१२, अल-मुस्तदरक अल-हाकिम ईमान की किताब, दार अल-फिक्र बेरूत १/६२।

صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں : الظلم ظلمت یوم القیمۃ ظلم قیامت کے روز کئی اندھیروں کے برابر ہوگا (بخاری، مسلم، ترمذی از ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما) اس کے لئے اللہ تعالٰی کا یہ فرمان کافی ہے "اَلَا لَعْنَۃُ اللّٰہِ عَلَی الظّٰلِمِیْنَ"(۱) ظالموں پر خدا کی لعنت۔ والعیاذ باللہ تعالٰی۔

چہارم دہم خاص طور پر یہ برائیاں جس مسلمان کے ساتھ کی جارہی ہیں بوڑھا اور معمر ہے، سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: لیس منّا من لم یرحم صغیرنا ویعرف شرف کبیرنا وہ ہم میں سے نہیں جو بچوں پر مہربانی نہیں کرتا اور بزرگوں کی عزت کو نہیں پہچانتا (امام احمد، ترمذی، حاکم از عبداللہ بن عمرو بن عاص رضی اللہ تعالٰی عنہما) یہ بھی فرمایا: لیس منّا من لم یرحم صغیرنا ولم یوقّر کبیرنا وہ شخص ہمارے طریقے پر نہیں جو بچوں پر مہربانی نہیں کرتا اور بڑوں کی عزت نہیں کرتا (امام احمد، ترمذی،)

والترمذی عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما وبسندہ است قول او سبحانہ وتعالی "اَلَا لَعْنَۃُ اللّٰہِ عَلَی الظّٰلِمِیْنَ"(۱) والعیاذ باللہ تعالٰی۔

چہاردہم آنکہ ایں مسلمان کہ باوے ایں چنیں بدبیہا میرود بالخصوص پیر و کبیر السن ست و سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرمود لیس منّا من لم یرحم صغیرنا ویعرف شرف کبیرنا ۲ از ما نیست ہر کہ مہر نکند برخورد ما و بزرگی نشناسد بہر کلاں ما اخرجہ احمد والترمذی والحاکم عن عبداللہ بن عمرو بن العاص رضی اللہ تعالٰی عنہما بسند حسن بل صحیح وفرمودے صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم لیس منّا من لم یرحم صغیرنا ولم یوقّر کبیرنا یعنی بر روش مانیست ہر کہ برخوردان رحم و بر پیران را توقیر نکند اخرجہ الاولان

۱ القرآن الکریم ۱۸/۱۱ ۲ مسند احمد بن حنبل عن عمرو بن العاص المکتب الاسلامی بیروت ۲/ ۱۸۵ و ۲۲۲، جامع الترمذی ابواب البر والصلۃ باب ماجاء فی رحمۃ الصبیان قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۱۲ المستدرک للحاکم کتاب الایمان دار الفکر بیروت ۱/ ۶۲

And Ibn Hibban narrated from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both) with a good chain of narration, and similarly At-Tabarani in Al-Mu'jam al-Kabir narrated from Wathilah bin al-Asqa' (may Allah be pleased with him), and [the Prophet] ﷺ said: "He is not of us who does not have mercy on our young and does not recognize the right of our old, and he is not of us who cheats us. A believer is not a [true] believer until he loves for the believers what he loves for himself." This means: he is not one of us who does not show compassion to the young and does not recognize the rights of the elders, nor he who betrays believers. A Muslim does not become a [true] Muslim until he desires for all believers that which he desires for himself. At-Tabarani recorded it in al-Kabir from Damrah (may Allah be pleased with him) with a chain of narration: He ﷺ said: "Indeed, it is part of glorifying Allah Almighty to honor the grey-haired Muslim." (The Hadith) Part of honoring God is to hold in high regard the Muslim with white hair. Recorded by Abu Dawud from Abu Musa (may Allah be pleased with him).

Fifteenth: That elderly person, especially one who possesses religious knowledge, and to be ill-disposed towards scholars and behaving badly with them...

1. Jami' at-Tirmidhi, Chapters on Piety and Joining Ties, Chapter on what has been narrated regarding mercy to children, Amin Company Delhi 2/14; Musnad Ahmad bin Hanbal from Ibn Abbas, Al-Maktab al-Islami Beirut 1/257; Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 17225, 122, Al-Maktabah al-Faysaliyyah Beirut 11/449.
2. Al-Mu'jam al-Kabir from Damrah bin Abi Damrah, Hadith 8153, Al-Maktabah al-Faysaliyyah Beirut 2/309.
3. Sunan Abi Dawud, Book of Manners, Chapter on putting people in their proper stations, Aftab-e-Alam Press Lahore 2/309.

और इब्न हिब्बान ने इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया और इसकी सनद हसन है, और इसी तरह तबरानी ने अल-मुअजम अल-कबीर में वाथिला बिन अल-असका' (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया, और [नबी] ﷺ ने फरमाया: "वह हममें से नहीं जो हमारे छोटों पर रहम नहीं करता और हमारे बड़ों का हक़ नहीं पहचानता, और वह हममें से नहीं जो हमें धोखा देता है। और मोमिन उस वक्त तक पूर्ण मोमिन नहीं होता जब तक वह मोमिनों के लिए वही पसंद न करे जो वह अपने लिए पसंद करता है।" यानी: वह हममें से नहीं जो छोटों पर शफक़त (करुणा) नहीं करता और बड़ों का हक़ नहीं पहचानता, और न वह जो मोमिनों के साथ खयानत (धोखाधड़ी) करता है। और मुसलमान तब तक [सच्चा] मुसलमान नहीं होता जब तक वह तमाम मोमिनों के लिए वही न चाहे जो वह अपनी जान के लिए चाहता है। तबरानी ने अल-कबीर में ज़मरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से एक सनद के साथ रिवायत किया कि आप ﷺ ने फरमाया: "बेशक अल्लाह तआला की ताज़ीम (महिमा) में से यह भी है कि सफेद बालों वाले मुसलमान की इज़्ज़त की जाए।" (हदीस)। खुदा की ताज़ीम में से है कि सफेद बालों वाले मुसलमान को बड़ा जाना जाए। अबू दाऊद ने अबू मूसा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से इसे रिवायत किया।

15 पन्द्रहवां: वह बुज़ुर्ग, विशेष रूप से वह जो दीनी इल्म (धार्मिक ज्ञान) रखता है, और उलेमा के साथ बुरा होना और उनके साथ बुरा बर्ताव करना...

1. जामेअ तिर्मिज़ी, अबवाब अल-बिर वल-सिला, बच्चों पर रहम के बारे में, अमीन कंपनी दिल्ली 2/14; मुसनद अहमद बिन हंबल, इब्न अब्बास से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत 1/257; अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस 17225, 122, अल-मकतबा अल-फैसलिया बेरूत 11/449।
2. अल-मुअजम अल-कबीर, ज़मरा बिन अबी ज़मरा से, हदीस 8153, अल-मकतबा अल-फैसलिया बेरूत 2/309।
3. सुनन अबू दाऊद, किताबुल अदब, लोगों को उनके मर्तबे के हिसाब से रखने का बाब, आफताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 2/309।

وابن حبان عن ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما و اسنادہ حسن و بنحوہ للطبرانی فی المعجم الکبیر عن وائلۃ بن الاسقع رضی اللہ عنہ وفرمود صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم لیس منّا من لم یرحم صغیرنا ولم یعرف حق کبیرنا ولیس منّا من غشنا ولا یکون المؤمن مؤمناً حتی یحب للمؤمنین ما یحب لنفسہ یعنی از مانیست ہر کہ بر خورد سالاں شفقت و مر سال خورداں را حق نشناسد و نہ آنکہ مومناں را خیانت کند و مسلمان مسلمان نمی شود تا آنکہ ہمہ مومنین راہماں خواہد کہ از بہر جان خود میخواھد اخرجہ الطبرانی فی الکبیر عن ضمرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ باسناد فرمود صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ان من اجلال اللہ تعالی اکرام ذی الشیبۃ المسلم الحدیث، از تعظیم خدا ست بزرگ داشتن مسلمان سپید موی اخرجہ ابوداؤد عن ابی موسیٰ رضی اللہ تعالٰی عنہ۔

و ابن حبان از ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما و طبرانی از واثلہ بن الاسقع رضی اللہ تعالٰی عنہ (یہ بھی فرمایا : لیس منّا من لم یرحم صغیرنا ولم یعرف حق کبیرنا ولیس منّا من غشنا ولا یکون المؤمن مؤمناً حتی یحب المؤمنین ما یحب لنفسہ وہ ہم میں سے نہیں جو بچوں پر شفقت نہیں کرتا اور بڑوں کا حق نہیں پہچانتا، اور وہ شخص جو مومنوں کے ساتھ خیانت کرتا ہے اور آدمی اس وقت تک مسلمان نہیں ہو سکتا جب تک دوسروں کے لئے وہی کچھ پسند نہ کرے جو اپنے لئے پسند کرتا ہے (طبرانی از ضمیرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ) نبی اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا : ان من اجلال اللہ تعالی اکرام ذی الشیبۃ المسلم اللہ تعالٰی کی تعظیم میں سے یہ بھی ہے کہ سفید بالوں والے مسلمان کی عزت کی جائے۔ (ابوداؤد از ابو موسیٰ رضی اللہ تعالٰی عنہ)

۱۵ پانزدہم وہ معمر بالخصوص علم دین سے بہرہ ور ہے اور علماء کے ساتھ برا ہونا اور ان کے...

1 جامع الترمذی ابواب البر والصلۃ باب ماجاء فی رحمۃ الصبیان امین کمپنی دہلی ۲ / ۱۴، مسند احمد بن حنبل عن ابن عباس المکتب الاسلامی بیروت ۱ / ۲۵۷، المعجم الکبیر حدیث ۱۷۲۲۵ ۱۲۲ المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۱۱ / ۴۴۹ 2 المعجم الکبیر عن ضمرہ بن ابی ضمرہ حدیث ۸۱۵۳ المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۲ / ۳۰۹ 3 سنن ابی داؤد کتاب الادب باب تنزیل الناس منازلھم آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۳۰۹

Fatawa Razawiya Volume 24

[Table Body] (Left Column Text - Mostly Persian/Arabic) To speak ill is so bad that it can hardly be expressed; the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) says: 'He is not of my nation who does not honor our elders, show mercy to our young, and recognize the right of our scholar.' He is not from my Ummah who does not respect our elders, does not show compassion to our children, and does not recognize the rights of our scholars. Reported by Ahmad in Al-Musnad, Al-Hakim in Al-Mustadrak, and Al-Tabarani in Al-Kabir from 'Ubadah bin al-Samit (may Allah be pleased with him) with a good chain. And he (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'There are three whose rights none but a hypocrite belittles: the one who has grown old in Islam, the scholar, and the just ruler.' These are three whose rights only a hypocrite considers insignificant: first, one whose hair has turned gray in Islam; second, a scholar; and third, a just king. Reported by Al-Tabarani from Abu Umamah (may Allah be pleased with him) through a chain which Imam al-Tirmidhi declared 'hasan' (good) while narrating another text. Sixteenthly, that this scholar is particularly a 'Sayyid' (descendant of the Prophet), and honoring this pure lineage and noble descent is among the most important duties, while hurting them or wishing them ill is among the gravest destructive sins. In a Hadith by Abu al-Shaykh...

(Right Column Text - Urdu Translation/Explication) Doing wrong to others is so bad that it cannot be described. The Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) says: 'He is not of my nation who does not honor our elders, show mercy to our young, and recognize the right of our scholar.' That person is not from my community who does not respect our elders and does not show kindness to our children and does not recognize the rights of our scholars (Imam Ahmad, Hakim, Tabarani in Al-Kabir from 'Ubadah bin al-Samit, may Allah be pleased with him). The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says: 'There are three whose rights none but a hypocrite belittles: the gray-haired person in Islam, the scholar, and the just ruler.' There are three people whose rights only a hypocrite deems trivial: (1) that Muslim whose hair has turned white in Islam, (2) a scholar, (3) a just king (Tabarani narrated this Hadith with such a chain which Imam al-Tirmidhi declared 'hasan' while narrating another Hadith). "Sixteenthly, especially those scholars are Sayyids, and their enmity is a cause of severe destruction. In the narration of Abu al-Shaykh, Ibn Hibban, and Daylami, it is: 'Whoever does not recognize the right of my progeny and the Ansar...'" [End Table]

1. Musnad Ahmad bin Hanbal from 'Ubadah bin al-Samit, Al-Maktab al-Islami Beirut 5/323; At-Targhib wat-Tarhib with reference to Ahmad, At-Tabarani and Al-Hakim; At-Targhib fi Ikram al-Ulama, Al-Mustafa al-Babi Egypt 4/11.
2. Al-Mu'jam al-Kabir from Abu Umamah, Hadith 8167, Al-Maktabat al-Faysaliyya Beirut 8/338.

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

[तालिका मुख्य भाग] (बायाँ कॉलम - मुख्य रूप से फारसी/अरबी) बुराई करना इतना बुरा है कि इसे व्यक्त नहीं किया जा सकता; जगत के स्वामी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: 'वह मेरी उम्मत से नहीं है जो हमारे बड़ों का सम्मान नहीं करता, हमारे छोटों पर दया नहीं करता और हमारे विद्वान के अधिकार को नहीं पहचानता।' वह व्यक्ति मेरी उम्मत में से नहीं है जो हमारे बुज़ुर्गों का सम्मान नहीं करता, हमारे बच्चों पर दया नहीं दिखाता और हमारे विद्वान के हक़ को नहीं पहचानता। इसे इमाम अहमद ने मसनद में, हाकिम ने मुस्तदरक में और तबरानी ने अल-कबीर में उबादा बिन अल-सामित (रज़ियल्लाहु अन्हु) से एक अच्छी सनद के साथ वर्णित किया है। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: 'तीन व्यक्ति ऐसे हैं जिनके अधिकारों को केवल एक पाखंडी ही तुच्छ समझता है: इस्लाम में बूढ़ा हुआ व्यक्ति, विद्वान और न्यायप्रिय शासक।' ये तीन लोग हैं जिनके हक़ को केवल पाखंडी ही तुच्छ समझता है: पहला वह जिसके बाल इस्लाम में सफेद हो गए हों, दूसरा विद्वान और तीसरा न्यायप्रिय राजा। तबरानी ने इसे अबू उमामा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से एक ऐसी सनद के माध्यम से वर्णित किया है जिसे इमाम तिर्मिज़ी ने एक अन्य पाठ का वर्णन करते समय 'हसन' (उत्तम) घोषित किया था। सोलहवीं बात यह है कि विशेष रूप से वह विद्वान 'सैयद' हैं, और इस पवित्र वंश और गौरवशाली वंशावली का सम्मान करना सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्यों में से है, जबकि उन्हें नुकसान पहुँचाना या उनका बुरा चाहना सबसे गंभीर विनाशकारी पापों में से है। अबू अल-शेख की एक हदीस में है...

(दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या) दूसरों के साथ बुरा करना इतना बुरा है कि उसे बयान नहीं किया जा सकता। जगत के स्वामी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: 'वह मेरी उम्मत से नहीं है जो हमारे बड़ों का सम्मान नहीं करता, हमारे छोटों पर दया नहीं करता और हमारे विद्वान के अधिकार को नहीं पहचानता।' वह व्यक्ति मेरी उम्मत में से नहीं है जो हमारे बड़ों का सम्मान नहीं करता और हमारे बच्चों पर मेहरबानी नहीं करता और हमारे विद्वान का हक़ नहीं पहचानता (इमाम अहमद, हाकिम, तबरानी अल-कबीर में उबादा बिन अल-सामित रज़ियल्लाहु अन्हु से)। नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: 'तीन व्यक्ति ऐसे हैं जिनके अधिकारों को केवल एक पाखंडी ही तुच्छ समझता है: इस्लाम में सफेद बालों वाला व्यक्ति, विद्वान और न्यायप्रिय शासक।' तीन व्यक्ति ऐसे हैं जिनके हक़ को केवल पाखंडी ही तुच्छ समझता है: (१) वह मुसलमान जिसके बाल इस्लाम में सफेद हो चुके हों, (२) विद्वान, (३) न्यायप्रिय राजा (तबरानी ने इस हदीस को ऐसी सनद से

रिवायत किया है जिसे इमाम तिर्मिज़ी ने एक और हदीस रिवायत करते हुए 'हसन' करार दिया)। "सोलहवीं बात विशेष रूप से वे विद्वान 'सैयद' हैं और उनकी दुश्मनी सख्त तबाही का कारण है। अबू अल-शेख, इब्न हिब्बान और दैलमी की रिवायत में है: 'जिसने मेरी संतान और अंसार के हक़ को नहीं पहचाना...'" [तालिका समाप्त]

I.T. Majlis of Dawatelslami

1. मसनद अहमद बिन हंबल, उबादा बिन अल-सामित से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरुत ५/३२३; अत-तरगीब वत-तरहीब अहमद, अत-तबरानी और अल-हाकिम के हवाले से; अत-तरगीब फ़ी इकराम अल-उलेमा, अल-मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र ४/११।
2. अल-मोजम अल-कबीर, अबू उमामा से, हदीस ८१६७, अल-मकतबत अल-फैसलिया बेरुत ८/३३८।

पृष्ठ ४३३ / ७२०

نچنداں برست کہ بگفتن آید، سرور عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ و سلم فرماید لیس من امتی من لم یجل کبیرنا ویرحم صغیرنا ویعرف لعالمنا حقه از امت من نیست آنکہ تعظیم نکند بزرگ مارا و شفقت ننماید خورد ما را و حق نشناسد عالم مارا اخرج احمد۱ في المسند والحاكم في المستدرك و الطبرانی فی الکبیر عن عبادة بن الصامت رضی اللہ تعالٰی عنہ بسند حسن۔ وفرمود صلی اللہ تعالیٰ علیہ و سلم ثلثة لا یستخف بحقهم الا منافق ذو الشیبة فی الاسلام وذو العلم و امام مقسط سہ کساند کہ سبک نگیرد حق ایشان را مگر منافق یکے آنکہ در اسلام مویش سپید شد، دوم عالم، سوم پادشاہ عادل اخرج الطبرانی ۲ عن ابی امامة رضی اللہ تعالٰی عنہ بطریق حسنها الترمذی لغیر هذا المتن۔ شانزدہم آنکہ ایں ذی علم بالخصوص سید ست و تعظیم ایں نسل طاہر و نسب فاخر از اہم واجبات و ایذائے آناں و بد خواہی ایشاں از اشد موبقات در حدیث ابوالشیخ

ساتھ برائی کرنا اتنا برا ہے کہ بیان نہیں کیا جا سکتا سرور عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں : لیس من امتی من لم یجل کبیرنا ویرحم صغیرنا ویعرف لعالمنا حقه وہ شخص میری امت میں سے نہیں جو ہمارے بڑے کی تعظیم نہیں کرتا اور ہمارے بچے پر مہربانی نہیں کرتا اور ہمارے عالم کا حق نہیں پہچانتا (امام احمد، حاکم، طبرانی فی الکبیر از عبادہ بن صامت رضی اللہ تعالٰی عنہ) نبی اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: ثلثة لا یستخف بحقهم الا منافق ذو الشیبة فی الاسلام وذو العلم و امام مقسط تین شخص ہیں جن کے حق کو صرف منافق خفیف سمجھتا ہے (۱) وہ مسلمان جس کے بال سفید ہو چکے ہوں (۲) عالم (۳) عادل بادشاہ (طبرانی نے اس حدیث کو ایسی سند سے روایت کیا جسے امام ترمذی نے ایک اور حدیث روایت کرتے ہوئے حسن قرار دیا)

"شانزدہم بالخصوص وہ عالم سید ہیں اور ان کی دشمنی سخت ہلاکت کا سبب ہے ابوالشیخ ابن حبان اور دیلمی کی روایت میں ہے: من لم یعرف حق عترتی والانصار"

I.T. Majlis of Dawatelslami

۱ مسند احمد بن حنبل عن عبادة بن الصامت المکتب الاسلامی بیروت ۵/ ۳۲۳، الترغیب والترھیب بحوالہ احمد والطبرانی و الحاکم الترغیب فی اکرام العلماء المصطفیٰ البابی مصر ۴/۱۱ ۲ المعجم الکبیر عن ابی امامة حدیث ۸۱۶۷ المکتبة الفیصلیة بیروت ۸/ ۳۳۸

Page 433 of 720

Fatawa Razviya Volume 24

It is narrated by Ibn Hibban and Daylami that the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whoever does not recognize the rights of my progeny (Ahl al-Bayt), the Ansar, and the Arabs is one of three: either a hypocrite, or a child of adultery, or a child conceived by his mother during her period of impurity." 1. Anyone who does not recognize the rights of my family, the Ansar, and the Arabs is so because of one of three reasons: either he is a hypocrite, or he is born of adultery, or his mother conceived him during days of impurity. Ibn 'Asakir and Abu Nu'aym narrated from the Commander of the Faithful, 'Ali (may Allah honor his face), who attributed it to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "Whoever harms a hair of mine (meaning anyone with even a minor connection to me) has harmed me, and whoever harms me has harmed Allah." 2. Abu Nu'aym added the words: "So may the curse of Allah be upon him to the fullness of the heavens and the fullness of the earth." 3. Meaning, the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whoever caused pain to a hair of mine (i.e., someone with the slightest connection), he has indeed caused me pain, and whoever caused me pain has indeed offended Allah Almighty; then upon him is God's curse equal to the filling of the earth and the sky." The hadiths regarding the majesty of the pure progeny and the emphasis on their rights have reached the level of mass-narration (tawatur).

Footnotes: 1. Al-Firdous bi-Ma'thur al-Khitab, Hadith 5955, Dar al-Kutub al-Ilmiyya, Beirut, 3/626. 2. Kanz al-Ummal, citing Ibn 'Asakir, from 'Ali bin Abi Talib, Hadith 36152, Mu'assasat ar-Risalah, Beirut, 12/95. 3. Kanz al-Ummal, citing Karr and Ibn al-Mughaffal, Hadith 35352, Mu'assasat ar-Risalah, Beirut, 12/349.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

इब्न हिब्बान और दैलमी से रिवायत है कि सैयदे आलम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "जो शख़्स मेरी इतरत (संतान), अंसार और अरब का हक़ नहीं पहचानता, वह इन तीन में से एक है: या तो मुनाफ़िक़ है, या वह वल्द-ए-ज़िना (हरामज़ादा) है, या फिर उस औरत का बच्चा है जो नापाकी (मासिक धर्म) की हालत में हामिला हुई हो।" 1. जो शख़्स मेरी आल, अंसार और अहले अरब का हक़ न पहचाने, वह इन तीन वजहों में से एक की बिना पर है: या तो वह मुनाफ़िक़ है, या वल्द-ए-ज़िना है, या उसकी माँ ने नापाकी के दिनों में गर्भ धारण किया है। इब्न असाकिर और अबू नुऐम ने हज़रत अमीरल मोमिनीन अली (करमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम) से रिवायत किया, उन्होंने नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से इसे मरफ़ूअन रिवायत किया: "जिसने मेरे एक बाल (यानी मुझसे ज़रा सा भी ताल्लुक़ रखने वाले) को ईज़ा (तकलीफ़) दी, उसने मुझे ईज़ा दी, और जिसने मुझे ईज़ा दी उसने अल्लाह को ईज़ा दी।" 2. अबू नुऐम ने इन लफ़्ज़ों का इज़ाफ़ा किया: "तो उस पर ज़मीन व आसमान की वुसअतों के बराबर अल्लाह की लानत हो।" 3. यानी सैयदे आलम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: जिस किसी ने मेरे एक बाल (यानी अदना से अदना ताल्लुक़ रखने वाले) को तकलीफ़ दी तो यक़ीनन उसने मुझे तकलीफ़ पहुँचाई और जिसने मुझे तकलीफ़ पहुँचाई उसने यक़ीनन अल्लाह अज़्ज़वजल को अज़ियत दी, पस उस पर ज़मीन व आसमान भरने के बराबर ख़ुदा की लानत व फटकार हो। और इतरत-ए-ताहिरा की जलालत-ए-शान और उनके हुक़ूक़ की ताकीद के बारे में अहादीस हद-ए-तवातुर को पहुँची हुई हैं।

हाशिये (फुटनोट): 1. अल-फ़िरदौस बि-मअसूर अल-ख़िताब, हदीस 5955, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 3/626 2. कन्ज़ अल-उम्माल, ब-हवाला इब्न असाकिर, अज़ अली बिन अबी तालिब, हदीस 36152, मुअस्ससा-अर-रिसाला, बेरुत, 12/95 3. कन्ज़ अल-उम्माल, ब-हवाला कर्र व इब्न अल-मुग़फ़्फ़ल, हदीस 35352, मुअस्ससा-अर-रिसाला, बेरुत, 12/349

पेज 434 का 720

ابن حبان و دیلمی سے مروی ہے کہ سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا: "جو شخص میری عترت (اولاد)، انصار اور عرب کا حق نہیں پہچانتا، وہ ان تین میں سے ایک ہے: یا تو منافق ہے، یا وہ ولد زنا (حرامزادہ) ہے، یا پھر ایسی عورت کا بیٹا ہے جس کا حمل حیض (ناپاکی) کی حالت میں ٹھہرا ہو۔" ۱۔ جو شخص میری آل، انصار اور اہل عرب کا حق نہ پہچانے وہ ان تین وجوہات میں سے ایک کی بنا پر ہے: یا تو وہ منافق ہے، یا ولد الزنا ہے، یا اس کی ماں نے ایام ناپاکی میں حمل ٹھہرایا ہے۔ ابن عساکر اور ابو نعیم نے حضرت امیر المومنین علی کرم اللہ وجہہ الکریم سے روایت کیا، انہوں نے نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے اسے مرفوعاً روایت کیا: "جس نے میرے ایک بال (یعنی مجھ سے ذرا سا بھی تعلق رکھنے والے) کو ایذا دی، اس نے مجھے ایذا دی، اور جس نے مجھے ایذا دی اس نے اللہ کو ایذا دی۔" ۲، ابونعیم نے ان الفاظ کا اضافہ کیا: "تو اس پر زمین و آسمان کی وسعتوں کے برابر اللہ کی لعنت ہو۔" ۳ یعنی سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جس کسی نے میرے ایک بال (یعنی ادنیٰ سے ادنیٰ تعلق رکھنے والے) کو تکلیف دی تو یقیناً اس نے مجھے تکلیف پہنچائی اور جس نے مجھے تکلیف پہنچائی اس نے یقیناً اللہ عزوجل کو اذیت دی، پس اس پر زمین و آسمان بھرنے کے برابر خدا کی لعنت و پھٹکار ہو۔ اور عترتِ طاہرہ کی جلالتِ شان اور ان کے حقوق کی تاکید کے بارے میں حدیثیں حدِ تواتر کو پہنچی ہوئی ہیں۔

حواشی: ۱ الفردوس بمأثور الخطاب، حدیث ۵۹۵۵، دار الکتب العلمیۃ، بیروت، ۶۲۶/۳ ۲ کنز العمال، بحوالہ ابن عساکر، از علی بن ابی طالب، حدیث ۳۶۱۵۲، موسسۃ الرسالہ، بیروت، ۹۵/۱۲ ۳ کنز العمال، بحوالہ کر وابن المغفل، حدیث ۳۵۳۵۲، موسسۃ الرسالہ، بیروت، ۱۲/ ۳۴۹

Fatawa-e-Razvia, Volume 22

...reached. And success is through Allah. Seventeenth: Since the said Sayyid, according to the questioner's description, is superior and more excellent in knowledge, piety, age, and lineage, he is the one worthy of the honor and respect of leadership (Imamate). These four factors are reasons for being more entitled to leadership, as stated in major books of jurisprudence like *Tanveer al-Absar* and others. Therefore, disputing with such a person is clearly against the command of Sharia. "And whoever transgresses the limits of Allah has certainly wronged himself" (1). Eighteenth: This person wants to make his knowledge a means of acquiring worldly gains. It is stated in a noble Hadith of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "Whoever eats by means of knowledge, Allah will efface his face and return him on his heels, and the Fire will be more deserving of him." This means whoever makes knowledge a means to earn wealth, Allah Almighty will disfigure his face, turn him back on his heels, and the fire of Hell will be more suitable for him (Narrated by Al-Shirazi in *Al-Alqab* from Abu Huraira, may Allah be pleased with him) (2). In another Hadith, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said...

1. Al-Quran Al-Kareem 1/25
2. Kanz al-Ummal with reference to Al-Shirazi in Al-Alqab, Hadith 29034, Mu'assasat al-Risalah, Beirut 10/196.

फतावा-ए-रजविया, खंड 22

...पहुँची हुई हैं और तौफीक अल्लाह ही की तरफ से है। सत्रहवाँ: जब उक्त सैय्यद साहब, प्रश्नकर्ता के वर्णन के अनुसार, ज्ञान, संयम, आयु और वंश में श्रेष्ठ और उत्तम हैं, तो वही इमामत (नेतृत्व) के सम्मान और आदर के पात्र हैं। ये चारों बातें इमामत के अधिक हकदार होने का कारण हैं, जैसा कि 'तन्वीर अल-अब्सार' आदि जैसी न्यायशास्त्र की बड़ी किताबों में स्पष्ट रूप से उल्लेखित है। इसलिए, ऐसे व्यक्ति के साथ विवाद करना शरीयत के हुक्म के खिलाफ है। "और जो अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करता है, उसने अपने आप पर जुल्म किया" (1)। अठारहवाँ: यह व्यक्ति चाहता है कि अपने ज्ञान को दुनिया हासिल करने का साधन बनाए। नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हदीस शरीफ में है: "जो व्यक्ति ज्ञान के माध्यम से खाता (रोजी कमाता) है, अल्लाह उसके चेहरे को बिगाड़ देगा और उसे उसकी एड़ियों के बल लौटा देगा, और आग उसके लिए अधिक उपयुक्त होगी।" इसका अर्थ है कि जो व्यक्ति ज्ञान को दुनिया कमाने का जरिया बनाता है, अल्लाह तआला उसके चेहरे को बिगाड़ देगा, उसे उसकी एड़ियों पर वापस मोड़ देगा और जहन्नम की आग उसके लिए अधिक योग्य है (शिराज़ी ने 'अल-अल्काब' में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की) (2)। दूसरी हदीस में है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया...

1. अल-कुरान अल-करीम 1/25
2. कंज अल-उम्माल शिराजी के हवाले से 'अल-अल्काब' में, हदीस 29034, मुअस्ससत अल-रिसाला, बेरुत 10/196.

पृष्ठ 435 / 720

پہنچی ہوئی ہیں وباللہ التوفیق۔ ہفد ھم جب سید صاحب موصوف سائل کے کہنے کے مطابق علم و تقوٰی عمر اور نسب میں اعلٰی اور افضل ہیں تو وہی امامت کی عزت و تعظیم کے لائق ہے اور یہ چاروں باتیں امامت کے زیادہ حقدار ہونے کا سبب ہیں جیسے کہ تنویر الابصار وغیرہ فقہ کی بڑی بڑی کتابوں میں تصریح ہے پس ایسے شخص کے ساتھ جھگڑا شریعت کے حکم کے خلاف ہے اور جو اللہ تعالٰی کی قائم کی ہوئی حدوں سے پھاند گیا اس نے اپنے اوپر ظلم کیا (1)۔ ہژدھم یہ شخص چاہتا ہے کہ اپنے علم کو دنیا حاصل کرنے کا ذریعہ بنائے۔ نبی اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی حدیث شریف میں ہے : من اکل بالعلم طمس اللہ وجہہ ورده علی عقبیہ وکانت النار اولٰی بہ جو شخص علم کو دنیا کمانے کا ذریعہ بناتا ہے اللہ تعالٰی اس کے چہرے کو بگاڑ دے گا اور اسے اس کی ایڑیوں پر واپس لوٹادے گا اور دوزخ کی آگ اس کے زیادہ لائق ہے (شیرازی نے القاب میں ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کی) (2)۔ دوسری حدیث میں ہے نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم

1 القرآن الکریم ۱ / ۲۵ 2 کنزالعمال بحوالہ شیرازی فی الالقات حدیث ۲۹۰۳۴ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰ / ۱۹۶

Fatawa Rizvia, Volume 24

(Prophet) peace and blessings be upon him said: "Whoever increases in knowledge but does not increase in detachment from the world, only increases in distance from Allah." (Reported by Al-Daylami from Ali, may Allah be pleased with him). There are numerous hadiths on this topic.

Nineteenth: That person for whom learning embellished philosophy and gathering the leftovers of the infidels' absurdities through intellectual begging is a great, innovative task and a source of high pride and honor, on which basis he considers himself more worthy of leadership than this Syed Faqih (Jurist). However, these sciences of the philosophers, i.e., Physics and Metaphysics, which are filled and packed with heinous misguidance and atrocious falsehoods, to the extent that they contain heaps of disbelief (Kufr), polytheism (Shirk), and denial of religious necessities, and loads of contradictions to the Quran and the sayings of the Prophets and Messengers (peace be upon them all). We have detailed some of these soon in our treatise which we named "Maqami' al-Hadid 'ala Khadd al-Mantiq al-Jadid" (Iron Maces on the Cheek of Modern Logic). In it, we have brought a great calamity upon the reckless pseudo-philosophers of this time. And with Allah is all success.

---

1 Al-Firdaws bi-Ma'thur al-Khitab on the authority of Ali, Hadith 5887, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut 3 / 202

फ़तावा रिज़विया, खंड 24

(हज़रत मुहम्मद) सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिस व्यक्ति ने ज्ञान तो बढ़ाया लेकिन दुनिया से विरक्ति नहीं बढ़ाई, उसने अल्लाह से केवल दूरी ही बढ़ाई।" (अल-दैलामी द्वारा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित)। इस विषय में कई हदीसें मौजूद हैं।

उन्नीसवां: वह व्यक्ति जिसके नज़दीक बनावटी दर्शन (फिलॉसफी) सीखना और काफ़िरों की बेतुकी बातों के बचे-खुचे हिस्सों को भीख मांगकर इकट्ठा करना एक बड़ा और नया काम है और गर्व तथा ऊंचे सम्मान का कारण है, जिसके आधार पर वह स्वयं को इस सैयद फ़क़ीह से इमामत (नेतृत्व) के लिए अधिक योग्य समझता है। हालांकि दार्शनिकों के ये विज्ञान, यानी भौतिकी और अध्यात्म, जो घोर पथभ्रष्टता और भयानक असत्य से भरे हुए हैं, यहाँ तक कि उनमें कुफ़्र (अविश्वास), शिर्क(बहुदेववाद) और धर्म की अनिवार्यताओं के इनकार के ढेर लगे हुए हैं, और बहुत सी बातें क़ुरआन मजीद और अंबिया व मुर्सलीन (पैगंबरों) के निर्देशों के विपरीत हैं। जैसा कि हमने इनमें से कुछ बातों का विवरण जल्द ही अपने उस रिसाले (लेख) में दिया है जिसका नाम हमने "मक़ामि' अल-हदीद अला ख़द्द अल-मंतिक़ अल-जदीद" (आधुनिक तर्कशास्त्र के गाल पर लोहे की गदा) रखा है। हमने इसमें इस ज़माने के दार्शनिकों के दावेदारों पर कयामत बरपा कर दी है। और अल्लाह की ओर से ही सफलता है।

---

1 अल-फ़िरदौस बि-मा'सूर अल-खिताब, हज़रत अली से वर्णित, हदीस 5887, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 3/202।

تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: من ازداد علما ولم یزدد فی الدنیا زھداً لم یزدد من اللہ الا بعداً جس شخص نے علم زیادہ حاصل کیا لیکن دنیا سے بے رغبتی زیادہ نہ ہوئی اسے اللہ تعالیٰ سے دوری کے سوا کچھ نہ ملا (دیلمی از حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ) اس بارے میں بے شمار حدیثیں وارد ہیں۔

نوزدہم وہ شخص جس کے نزدیک ملمع شدہ فلسفہ سیکھنا اور کافروں کی بیہودگی کے باقیماندہ حصے کو گداگری کے ذریعے جمع کرنا بہت بڑا کام ہے اور فخر و ناز کا باعث ہے جس کی بنا پر اپنے آپ کو اس سید فقیہ سے امامت کے زیادہ لائق سمجھتا ہے حالانکہ فلسفیوں کے یہ علوم یعنی طبیعیات اور الہیات جو بد ترین گمراہیوں سے پُر ہیں حتی کہ ان میں کفر و شرک اور ضرورت دین کے انکار کے ڈھیر لگے ہوئے ہیں اور بہت سی باتیں قرآن مجید اور انبیاء و مرسلین کے ارشادات کے مخالف ہیں جیسا کہ ہم نے بعض باتوں کی تفصیل اپنے رسالے "مقامع الحدید علی خد المنطق الجدید" (جدید منطق کے منہ پر لوہے کے گرز) میں کی ہے ہم نے اس میں اس زمانے کے فلسفے کے دعویداروں پر قیامت قائم کردی ہے ان وباللہ التوفیق۔

---

1 الفردوس بمأثور الخطاب عن علی حدیث ۵۸۸۷ دارالکتب العلمیۃ بیروت ۳ / ۲۰۲

Fatawa Razawiya Volume 24

Studying these sciences (without refuting them) is categorically forbidden (haram). In Al-Durr al-Mukhtar, it is stated: "Verily, the acquisition of knowledge is an individual obligation (fard 'ayn), up to the point where it is said that sometimes studying knowledge becomes forbidden, such as the science of philosophy, sorcery, astrology, geomancy, natural sciences, and magic." 1- Allama Zayn bin Nujaym al-Misri (may Allah have mercy on him) states in Al-Ashbah wa al-Naza'ir: "Knowledge can sometimes be forbidden, and that is the science of philosophy, etc." 2 Allama Ibn Hajar al-Makki (may Allah have mercy on him) says in his Fatawa: "The part of natural science (Hikmat Tabi'iyya) that follows the way of the philosophers is forbidden." 3- It is also mentioned therein: "Ibn al-Salah issued a fatwa on the prohibition of philosophy and logic, severely censuring those engaged in them, and spoke at length regarding this. It is obligatory upon the ruler of Islam to expel such people from Islamic schools, imprison them, and close the doors of their evil, even if they claim not to believe in the dogmas of the philosophers, because their state itself belies them. 4- If one does not like the beliefs of philosophers, why be bound to philosophy? It has also been seen that a person..."

1. Al-Durr al-Mukhtar, Introduction of the book, Mujtabai Press, Delhi, 1/6.
2. Al-Ashbah wa al-Naza'ir, Third Art, Idarat al-Qur'an, Karachi, 2/258.
3. Fatawa Hadithiyya, Topic: Astrology is permissible, Al-Jamaliyya Press, Egypt, p. 35.
4. Al-Fatawa al-Fiqhiyya, Chapter of Istinja, Dar al-Kutub al-Ilmiyya, Beirut, 50/1.

फतावा रज़विया जिल्द 24

इन विज्ञानों का (बिना खंडन के) अध्ययन करना निश्चित रूप से हराम (वर्जित) है। अल-दुर्र अल-मुख्तार में लिखा है: "निश्चित रूप से ज्ञान प्राप्त करना फर्ज़-ए-ऐन (व्यक्तिगत अनिवार्य कर्तव्य) है, यहाँ तक कि उन्होंने कहा है कि कभी-कभी ज्ञान प्राप्त करना हराम हो जाता है, जैसे कि दर्शनशास्त्र (फ़लसफ़ा), बाजीगरी (शुअ़बदा), ज्योतिष (नजूम), रमल (धूल पर लकीरें खींचकर भविष्य बताना), प्राकृतिक विज्ञान (हिकमत-ए-तबईया) और जादू।" 1- अल्लामा ज़ैन बिन नुजैम मिस्री (अल्लाह उन पर रहम करे) अशबाह वन-नज़ायर में फरमाते हैं: "ज्ञान कभी-कभी हराम हो जाता है और वह दर्शनशास्त्र (फ़लसफ़ा) का ज्ञान है, इत्यादि।" 2 अल्लामा इब्ने हजर मक्की (अल्लाह उन पर रहम करे) अपने फतावा में फरमाते हैं: "प्राकृतिक दर्शन (हिकमत-ए-तबईया) का वह हिस्सा जो दार्शनिकों के तरीके पर हो, उसका पढ़ना हराम है।" 3- इसी में है: "इब्ने सलाह ने दर्शनशास्त्र और तर्कशास्त्र (मंतिक़) की हुरमत (प्रतिबंध) का फतवा दिया और उन्हें पढ़ने वालों की कड़ी निंदा की और इस बारे में लंबी बातचीत की। इस्लाम के बादशाह पर वाजिब है कि ऐसे लोगों को इस्लामी मदरसों से निकालकर कैद कर दे और उनके शर (बुराई) के दरवाज़े बंद कर दे, भले ही उनका ख्याल यह हो कि हम दार्शनिकों के अक़ायद (विश्वासों) को नहीं मानते, क्योंकि उनकी स्थिति खुद उन्हें झुठला रही है। 4- अगर वह दार्शनिकों के अक़ायद को पसंद नहीं करता तो दर्शनशास्त्र का पाबंद क्यों है? कभी ऐसा भी देखा गया है कि इंसान..."

1. अल-दुर्र अल-मुख्तार, मुक़दमा-ए-किताब, मतिबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/6
2. अल-अशबाह वन-नज़ायर, अल-फन्नुस सालिस, इदारातुल कुरान कराची, 2/258
3. फतावा हदीसिया, मतलब: ज्योतिष शास्त्र जायज़ है, मतिबा अल-जमालिया मिस्र, पृष्ठ 35
4. अल-फतावा अल-फिक़्हिया, बाबुल इस्तिनजा, दारुल कुतुब अल-इल्मिया बेरूत, 50/1

पृष्ठ 437/720

علوم کا (بغیر تردید کے) پڑھنا قطعاً حرام ہے در مختار میں ہے: بیشک علم کا پڑھنا فرض عین ہے، یہاں تک کہ انہوں نے فرمایا اور کبھی علم کا پڑھنا حرام ہوتا ہے جیسے کہ علم فلسفہ، شعبدہ، نجوم، رمل، حکمت، طبعیہ اور جادو۔ 1- علامہ زین بن نجیم مصری رحمہ اللہ تعالٰی اشباہ والنظائر میں فرماتے ہیں: علم کا پڑھنا کبھی حرام ہوتا ہے جیسے کہ فلسفہ، علامہ ابن حجر مکی رحمہ اللہ تعالٰی 2 اپنے فتاوٰی میں فرماتے ہیں: حکمۃ طبعیہ کا جو حصہ فلاسفہ کے طریقے پر ہو اس کا پڑھنا حرام ہے، 3- اسی میں ہے: ابن صلاح نے فلسفے اور منطق کی حرمت کا فتوٰی دیا اور انہیں پڑھنے والے پر سخت طعن و تشنیع کی اور اس بارے میں طویل گفتگو کی بادشاہِ اسلام پر واجب ہے کہ ایسے لوگوں کو اسلامی مدارس سے نکال کر قید کردے اور ان کے شر کے دروازے کو بند کردے اگرچہ ان کا خیال یہ ہو کہ ہم فلاسفہ کے عقائد کے قائل نہیں کیونکہ ان کی حالت خود انہیں جھٹلارہی ہے 4- اگر فلاسفہ کے عقائد کو پسند نہیں کرتا تو فلسفے کا پابند کیوں ہے کبھی ایسا بھی دیکھا ہے کہ انسان

1 درمختار مقدمۃ الکتاب مطبع مجتبائی دہلی ۶/۱ 2 الاشباہ والنظائر الفن الثالث ادارۃ القرآن کراچی ۲۵۸/۲ 3 فتاوٰی حدیثیہ مطلب یجوز علم التنجیم مطبعۃ الجمالیۃ مصر ص ۳۵ 4 الفتاوٰی الفقہیۃ باب الاستنجاء دار الکتب العلمیۃ بیروت ۵۰/۱

Fatawa Ridawiyya - Volume 24

It does not befit a Muslim, nor a philosophizing person who is deeply engrossed in these ignorances named as 'knowledge' and spends his life in it. If he claims, 'I have not given a place in my heart for their beliefs,' his own condition is sufficient to belie him. For if he did not like it, why is he bound to it? No wise person voluntarily spends their life with something they hate, passes nights with it, clings to its skirt for ages, raises a clamor of pride upon its attainment, and breaks caps in exaltation. By God, these are all signs of pleasure and preference; otherwise, it is difficult to spend even an hour with an enemy. 'O crow of separation, I wish there was a distance between me and you like that between the East and the West.' This is the discourse of his speech according to his aim, may Allah have mercy on him. And what he mentioned regarding philosophy is correct, and therefore Imam al-Awza'i, may Allah have mercy on him, said: its prohibition is the correct and right view. As for what he mentioned regarding the logic of philosophers, it is that which is prohibited to occupy oneself with, and his words 'averting their evil' and his words 'being a believer in their beliefs' point to this. [End of excerpt], and there is much length in it.

The humble one [the author] says: And Allah, the Glorified, forgive me, the first evidence for its prohibition, philosophizing, and the vileness of its state is a Hadith narrated by Imam Abdur Rahman al-Darimi in his 'Sunan' from our master Jabir...

(Right Column Urdu Translation to English): To dislike something and then voluntarily spend one's entire life in it, pass nights after it, remain attached to it for ages, and take pride in acquiring it—never! These are all signs of liking; otherwise, it is difficult to spend even a moment with an enemy. From the 'Kosa' of separation (those who distance one from religion), I wish there was a distance between me and you like that between the East and the West. What the Allama said about philosophy is correct, which is why Imam Awza'i said that the prohibition of philosophy is right. As for the issue of logic, studying the logic of philosophers is forbidden; the Allama's speech itself points in this direction (because in their logic, examples were included according to their [erroneous] creed, and it was not unlikely that through repeated iterations, they would settle in the mind. 12)

The humble one says that the evidence for the prohibition of philosophy and its evil is the Hadith which Imam Abdur Rahman al-Darimi [narrated] in 'Sunan' from our master Jabir...

1 Al-Fatawa al-Fiqhiyyah, Book of Istinja, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 1/50.

फ़तावा रिज़विया - खंड २४

एक मुसलमान के लिए यह शोभा नहीं देता, और वह व्यक्ति जो दर्शनशास्त्र (फिलोसोफी) में डूबा हुआ है और जिसे 'ज्ञान' कहा जाने वाला इन अज्ञानताओं में पूरी उम्र गुज़ार देता है। यदि वह दावा करता है कि 'मैंने उनके विश्वासों को अपने दिल में जगह नहीं दी है,' तो उसकी अपनी स्थिति ही उसे झुठलाने के लिए पर्याप्त है। क्योंकि अगर वह इसे पसंद नहीं करता था, तो वह इससे क्यों बंधा हुआ है? कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति स्वेच्छा से अपनी पूरी उम्र उस चीज़ के साथ नहीं बिताता जिसे वह नापसंद करता है, उसके पीछे रातें गुज़ारता है, युगों तक उसके दामन से लिपटा रहता है, उसे प्राप्त करने पर गर्व का शोर मचाता है, और अभिमान में अपनी टोपी उछालता है। ईश्वर की कसम, ये सभी पसंदगी और प्राथमिकता के संकेत हैं; अन्यथा, दुश्मन के साथ एक क्षण बिताना भी कठिन होता है। 'हे विछोह के कौवे, काश मेरे और तुम्हारे बीच पूर्व और पश्चिम जैसी दूरी होती।' अल्लामा ने दर्शन के विषय में जो कहा वह सही है, इसीलिए इमाम औज़ाई ने फरमाया कि दर्शनशास्त्र का हराम (वर्जित) होना ही सही बात है। जहाँ तक तर्कशास्त्र (लॉजिक) का प्रश्न है, तो दार्शनिकों का तर्कशास्त्र पढ़ना वर्जित है; अल्लामा का कथन स्वयं इसी ओर संकेत कर रहा है (क्योंकि उनके तर्कशास्त्र में उनके धर्म के अनुसार उदाहरण दिए जाते थे, और यह संभव था कि बार-बार दोहराने से वे मन में बैठ जाएं)।

मुझ फकीर का कहना है कि दर्शनशास्त्र के हराम होने और उसकी बुराई का प्रमाण वह हदीस है जिसे इमाम अब्दुल रहमान दारमी ने अपनी 'सुनन' में हमारे सरदार जाबिर से...

(दायां कॉलम उर्दू अनुवाद): एक चीज़ को नापसंद रखना जो फिर अपनी मर्जी से अपनी तमाम उम्र उस में सर्फ़ कर दे, रातें उस के पीछे गुज़ार दे और मुद्दतों उस के साथ वाबस्ता रहे और उस के हासिल करने पर फ़ख़्र करे हरगिज़ नहीं, ये सब पसंदगी की अलामतें हैं वरना दुश्मन के साथ एक लम्हा गुज़ारना भी मुश्किल होता है जुदाई के को से (दीन से दूर करने वाले) काश मेरे और तेरे दरमियान मशरिक़ और मग़रिब का फ़ासला होता, अल्लामा ने फ़लसफ़ा के मुतअल्लिक़ जो फ़रमाया वो सही है इसी लिए इमाम औज़ाई ने फ़रमाया फ़लसफ़े का हराम होना दुरुस्त है। रहा मन्तिक़ का मसला तो फ़लासिफ़ा का मन्तिक़ पढ़ना हराम, अल्लामा का कलाम ख़ुद इस तरफ़ इशारा कर रही है (क्यूंकि उन के मन्तिक़ में उन के मज़हब के मुताबिक़ मिसालें दर्ज होती थीं कुछ दूर नहीं था कि उन के बार बार तकरार से ज़ेहन में बैठ जाएं १२)

फ़क़ीर कहता है कि फ़लसफ़े के हराम होने और उस की बुराई की दलील वो हदीस है जो इमाम अब्दुल रहमान दारमी ने सुनन में सैय्यदना जाबिर...

१ अल-फ़तावा अल-फ़िक़्हिया, बाबू अल-इस्तिंजा, दारुल कुतुबुल इलमिया, बेरुत ५०/१

पृष्ठ ४३८ का ७२०

بمسلماناں نرسد ومرد متفلسف کہ دریں جہالات مسمیٰ بعلم توغل دارد وعمری گزارد اگرد علوی کند کہ من بدل عقائد آنہا راجائے نداده ام خود حال او بہر تکذیب او بسندست کہ اگر نہ پسند ست چرا پائے بندست بیچ دیده انساں ہر چیزے را کہ دشمن دارد باختیار خود باوے عمر گزارد و شبہا باوے سحر کند ومدتہا چنگ بدا منش زند و بحصولش غلغلہ تفاخر افگند و کلہ گو شہا بر آسمان شکند حاش اللہ ایں ہمہ علامات رضا و ایثارست ورنہ با دشمن ساعتی بسر بردن شوار ست یا غراب البین لیت بینی و بینك بعد المشرقین ایں ست تقریر کلامش برحسب مرا مش رحمہ اللہ تعالٰی وماذکرہ فی الفلسفۃ صحیح و من ثم قال الاوزاعی رحمہ اللہ تعالٰی تحریمها هو الصحیح الصواب و اما ماذکرہ فی المنطق الفلاسفة هو الذی یحرم الاشتغال بہ ویدل لذلک قولہ کف شرهم وقولہ ومعتقد لعقائدهم ۱ ھ ملتقطاً وفیه طول کثیر۔

فقیر میگویم واللہ سبحانہ یغفر لی از اول دلیل بر تحریم و تفلسف و تقیح حالش حدیثی ست کہ امام عبدالرحمٰن دارمی در سنن خودش از سیدنا

(دایاں کالم اردو ترجمہ): ایک چیز کو ناپسند رکھنا جو پھر اپنی مرضی سے اپنی تمام عمر اس میں صرف کردے، راتیں اس کے پیچھے گزار دے اور مدتوں اس کے ساتھ وابستہ رہے اور اس کے حاصل کرنے پر فخر کرے ہر گز نہیں، یہ سب پسندیدگی کی علامتیں ہیں ورنہ دشمن کے ساتھ ایک لحظہ گزارنا بھی مشکل ہوتا ہے جدائی کے کو سے (دین سے دور کرنے والے) کاش میرے اور تیرے درمیان مشرق اور مغرب کا فاصلہ ہوتا، علامہ نے فلسفہ کے متعلق جو فرمایا وہ صحیح ہے اسی لیے امام اوزاعی نے فرمایا فلسفے کا حرام ہونا درست ہے۔ رہا منطق کا مسئلہ تو فلاسفہ کا منطق پڑھنا حرام، علامہ کا کلام خود اس طرف اشارہ کر رہی ہے (کیونکہ ان کے منطق میں ان

کے مذہب کے مطابق مثالیں درج ہوتی تھیں کچھ دور نہیں تھا کہ ان کے بار بار تکرار سے ذہن میں بیٹھ جائیں ۱۲)

فقیر کہتا ہے کہ فلسفے کے حرام ہونے اور اس کے برائی کی دلیل وہ حدیث ہے جو امام عبدالرحمٰن دارمی نے سنن میں سیدنا جابر

۱ الفتاویٰ الفقهية باب الاستنجاء دار الكتب العلمية بيروت ۱/۵۰

Fatawa Ridawiyya Volume 24

[Left Column] Jabir bin Abdullah (may Allah be pleased with them both) narrated that: 'Umar bin al-Khattab (may Allah be pleased with him) came to the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) with a copy of the Torah and said: "O Messenger of Allah, this is a copy of the Torah." He (the Prophet) remained silent, so he ('Umar) began to read, and the face of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) began to change (in anger). Abu Bakr (may Allah be pleased with him) said: "May the bereaved mothers be bereaved of you! Do you not see what is on the face of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)?" Then 'Umar looked at the face of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) and said: "I seek refuge in Allah from the anger of Allah and the anger of His Messenger (peace and blessings of Allah be upon him). We are pleased with Allah as our Lord, with Islam as our religion, and with Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) as our Prophet." Then the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "By the One in whose hand is the soul of Muhammad, if Moses were to appear to you and you were to follow him and leave me, you would surely go astray from the straight path; and if he were alive and reached my prophethood, he would surely follow me."' That is, 'Umar (may Allah be pleased with him) brought a copy of the Torah before the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) and submitted: "O Messenger of Allah, this is a copy of the Torah." The Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him)...

[Right Column] It is narrated from bin Abdullah (may Allah be pleased with them both) that: 'Umar bin al-Khattab (may Allah be pleased with him) came to the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) with a copy of the Torah and said: "O Messenger of Allah, this is a copy of the Torah." He (the Prophet) remained silent, so he began to read, and the face of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) began to change. Abu Bakr (may Allah be pleased with him) said: "May the bereaved mothers be bereaved of you! Do you not see what is on the face of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)?" Then 'Umar looked at the face of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) and said: "I seek refuge in Allah from the anger of Allah and the anger of His Messenger (peace and blessings of Allah be upon him). We are pleased with Allah as our Lord, with Islam as our religion, and with Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) as our Prophet." Then the Messenger of

Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "By the One in whose hand is the soul of Muhammad, if Moses were to appear to you and you were to follow him and leave me, you would surely go astray from the straight path; and if he were alive and reached my prophethood, he would surely follow me." That is, 'Umar Farooq (may Allah be pleased with him) brought a copy of the Torah into the presence of the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) and submitted: "O Messenger of Allah! This is a copy of the Torah." The Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him)...

---

[1] Sunan ad-Darimi, Chapter: What to avoid in the interpretation of the Prophet's Hadith (peace be upon him), Hadith 431, Nashr al-Sunnah Multan 1/95.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[बायां कॉलम] जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि: उमर बिन अल-खत्ताब (रज़ियल्लाहु अन्हु) अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास तौरात का एक नुस्खा लेकर आए और कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल, यह तौरात का एक नुस्खा है।" आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) खामोश रहे, तो वह (उमर) पढ़ने लगे और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के मुबारक चेहरे का रंग बदलने लगा। अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: "शोक मनाने वाली माएं तुम पर शोक मनाएं! क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के चेहरे पर क्या है?" फिर उमर ने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के चेहरे की ओर देखा और कहा: "मैं अल्लाह के गुस्से और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के गुस्से से अल्लाह की पनाह मांगता हूँ। हम अल्लाह के रब होने, इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के नबी होने पर राज़ी हैं।" तब अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "उस जात की कसम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है, अगर मूसा तुम्हारे सामने आ जाते और तुम उनकी पैरवी करते और मुझे छोड़ देते, तो तुम सीधे रास्ते से भटक जाते; और अगर वह ज़िंदा होते और मेरी नबुवत का दौर पाते, तो वह ज़रूर मेरी ही पैरवी करते।" यानी उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने सय्यदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सामने तौरात का नुस्खा पेश किया और अर्ज़ की: "ऐ अल्लाह के रसूल, यह तौरात से एक नुस्खा है।" सय्यदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)...

[दायां कॉलम] बिन अब्दुल्लाह (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि: उमर बिन अल-खत्ताब (रज़ियल्लाहु अन्हु) अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास तौरात का एक नुस्खा लेकर आए और कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल, यह तौरात का एक नुस्खा है।" आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) खामोश रहे, तो उन्होंने पढ़ना शुरू किया और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के चेहरे का रंग बदलने लगा। अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: "शोक मनाने वाली माएं तुम पर शोक मनाएं! क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के चेहरे पर क्या है?" फिर उमर ने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के चेहरे की ओर देखा और कहा: "मैं अल्लाह के गुस्से और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के गुस्से से अल्लाह की पनाह मांगता हूँ। हम अल्लाह के रब होने, इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के नबी होने पर राज़ी हैं।" तब अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "उस जात की कसम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है, अगर मूसा तुम्हारे सामने आ जाते और तुम

उनकी पैरवी करते और मुझे छोड़ देते, तो तुम सीधे रास्ते से भटक जाते; और अगर वह ज़िंदा होते और मेरी नबुवत का दौर पाते, तो वह ज़रूर मेरी ही पैरवी करते।" यानी उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) सय्यदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की खिदमत में तौरात का एक नुस्खा लाए और अर्ज़ की: "ऐ अल्लाह के रसूल! यह तौरात का एक नुस्खा है।" सय्यदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)...

---

[1] सुनन अल-दारिमी, बाब: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हदीस की तफ़सीर में जिससे बचना चाहिए, हदीस 431, नश्रुस सुन्ना मुल्तान 1/95.

[بایاں کالم] جابر بن عبداللہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما روایت کردہ ان عمر بن الخطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ اتی رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بنسخۃ من التورۃ فقال یا رسول اللہ ھذہ نسخۃ من التورۃ فسکت فجعل یقرأ و وجہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم یتغیر فقال ابوبکر رضی اللہ تعالیٰ عنہ ثکلتک الثواکل ماتری ما بوجہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فنظر عمر الی وجہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فقال اعوذ باللہ من غضب اللہ و غضب رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم رضینا باللہ ربا وبالاسلام دینا و بمحمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نبیا فقال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم والذی نفس محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بیدہ لو بدا لکم موسی فاتبعتموہ وترکتمونی لضللتم عن سواء السبیل ولو کان حیا وادرک نبوتی لاتبعنی ۔ یعنی عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ پیش سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نسخہ از توریت آورد و عرض داشت کہ یا رسول اللہ ایں نسخہ ایست از توریت سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

[دایاں کالم] بن عبداللہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی ہے کہ : ان عمر بن الخطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ اتی رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بنسخۃ من التوراۃ فقال یارسول اللہ ھذہ نسخۃ من التوراۃ فسکت فجعل یقرأ و وجہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم یتغیر فقال ابوبکر رضی اللہ تعالیٰ عنہ ثکلتک الثواکل ماتری ما بوجہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فنظر عمر الی وجہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فقال اعوذ باللہ من غضب اللہ و غضب رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم رضینا باللہ ربا وبالاسلام دینا وبمحمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نبیا فقال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم والذی نفس محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بیدہ لوبدا لکم موسی فاتبعتموہ ترکتمونی لضللتم عن سواء السبیل و لو کان حیا و ادرك نبوتی لا تبعنی ۔ یعنی عمر فاروق

رضی اللہ تعالیٰ عنہ سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں توراہ کا ایک نسخہ لائے اور عرض کی: یارسول اللہ ! یہ توراہ کا ایک نسخہ ہے۔ سید عالم صلی اللہ تعالیٰ

---

1 سنن الدارمی باب مایتقی من تفسیر حدیث النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم حدیث ۴۳۱ نشر السنة ملتان ۱ / ۹۵

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Left Column: Persian] ...did not answer and remained silent. Umar (may Allah be pleased with him) began to read, and the blessed face of the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) was changing from one state to another due to the intensity of anger. Umar was unaware of this until Siddiq al-Akbar (may Allah be pleased with him) said, "O Umar! May the weeping women weep for you, do you not see the state visible on the blessed face of the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him)?" Then Umar looked up and saw the sacred face and said to him, "I seek refuge in Allah from the anger of Allah and His Messenger (peace and blessings of Allah be upon him). I have accepted Allah as my Lord, Islam as my religion, and Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) as my Prophet." Upon these words, the anger of the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) subsided. Then the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) said, "By Him in Whose hand is the soul of Muhammad, if Moses (peace be upon him) were to appear among you and you were to follow him and leave me, you would surely have gone astray from the straight path. And if Moses were alive in the world and reached the time of the manifestation of my prophethood, he would certainly have followed me (peace and blessings of Allah be upon him)." Now the eye of justice should be opened: the Torah is the Word of Allah and the Quran has confirmed it, but just because it has been corrupted, reading it caused such displeasure to the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him). This accursed philosophy, which leads to disbelief and misguidance...

[Right Column: Urdu Translation] (Peace and blessings be upon him) remained silent and did not give any answer. Umar Farooq (may Allah be pleased with him) began to read. The blessed face of the Leader of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) was changing from one state to another due to the intensity of anger. حضرت Umar Farooq was unaware of this until Siddiq al-Akbar (may Allah be pleased with him) said: "O Umar! May weeping women weep for you, do you not see the state of the luminous face of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him)?" Then Umar Farooq (may Allah be pleased with him) looked at the luminous face of the Prophet and immediately said: "Refuge with Allah from the anger of Allah Almighty and His Messenger. We are pleased with Allah being the Lord, Islam being the religion, and Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) being the Prophet." The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "I swear

by that Being in whose hand of power is my soul, if Moses (peace be upon him) were to appear before you and you were to follow him leaving me, you would surely have strayed from the straight path. And if Moses (peace be upon him) were in the world and found the time of the manifestation of my prophethood, he would have followed me. Now the eye of justice should be opened that the Torah is the Word of God and the Holy Quran has confirmed it, but only on the basis that it has been corrupted, reading it became the cause of such displeasure of the Leader of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him). This rejected philosophy which is disbelief and misguidance..."

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[बायां कॉलम: फ़ारसी] ...जवाब नहीं दिया और खामोश रहे। उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने पढ़ना शुरू कर दिया, और सरवरे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का मुबारक चेहरा गुस्से की तीव्रता के कारण एक हालत से दूसरी हालत में बदल रहा था। हज़रत उमर को इसकी खबर नहीं थी, यहाँ तक कि हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फरमाया: "ऐ उमर! तुझे रोने वाली औरतें रोएं क्या तुम नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के चेहरा-ए-अनवर की हालत नहीं देख रहे?" तब हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हुज़ूर के चेहरा-ए-अनवर को देखा और फौरन कहा, "अल्लाह ताला और उसके रसूल के गज़ब (गुस्से) से खुदा की पनाह। हम अल्लाह के रब होने पर, इस्लाम के दीन होने पर और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के नबी होने पर राजी हुए।" इन शब्दों पर सरवरे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का गुस्सा कम हो गया। फिर सरवरे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "मुझे उस ज़ात की कसम जिसके कब्ज़ा-ए-कुदरत में मेरी जान है, अगर तुम पर मूसा अलैहिस्सलाम ज़ाहिर होते और तुम मुझे छोड़कर उनकी इत्तेबा (अनुसरण) करते, तो तुम सीधे रास्ते से भटक जाते। और अगर मूसा अलैहिस्सलाम दुनिया में होते और मेरी नबूवत के ज़हूर के ज़माने को पाते, तो मेरी पैरवी करते। अब इंसाफ की आँख खोलनी चाहिए कि तौरात खुदा का कलाम है और कुरान मजीद ने उसकी तस्दीक की है, लेकिन सिर्फ इस बिना पर कि उसमें तहरीफ़ (बदलाव) हो चुकी है, उसका पढ़ना सरवरे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की इस कदर नाराज़गी का कारण बना। यह ठुकराया हुआ दर्शन जो कि कुफ्र और पथभ्रष्टता है..."

[दायां कॉलम: उर्दू अनुवाद] (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) खामोश रहे और कोई जवाब न दिया, उमर फारूक (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने पढ़ना शुरू कर दिया। सरवरे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का चेहरा मुबारक गुस्से की शिद्दत की वजह से एक हालत से दूसरी हालत की तरफ बदल रहा था। हज़रत उमर फारूक को इसकी खबर न थी यहाँ तक कि हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फरमाया: "ऐ उमर! तुझे रोने والی औरतें रोएं क्या तुम नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के चेहरा-ए-अनवर की हालत नहीं देख रहे?" तब हज़रत उमर फारूक (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हुज़ूर के चेहरा-ए-अनवर को देखा और फौरन कहा, "अल्लाह ताला और उसके रसूल के गज़ब से खुदा की पनाह। हम अल्लाह के रब होने पर, इस्लाम के दीन होने पर और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के नबी होने पर राजी हुए।" नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

ने फरमाया: "मुझे उस ज़ात की कसम जिसके कब्ज़ा-ए-कुदरत में मेरी जान है, अगर तुम पर मूसा अलैहिस्सलाम ज़ाहिर होते और तुम मुझे छोड़कर उनकी इत्तेबा करते, तो तुम सीधे रास्ते से भटक जाते। और अगर मूसा अलैहिस्सलाम दुनिया में होते और मेरी नबूवत के ज़हूर के ज़माने को पाते, तो मेरी पैरवी करते। अब इंसाफ की आँख खोलनी चाहिए कि तौरात खुदा का कलाम है और कुरान मजीद ने उसकी तस्दीक की है, लेकिन सिर्फ इस बिना पर कि उसमें तहरीफ़ हो चुकी है, उसका पढ़ना सरवरे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की इस कदर नाराज़गी का कारण बना। यह मरदूद फलसफा जो कि कुफ्र और ज़लालत है..."

[بایاں کالم: فارسی] پاسخ نداد و سکوت فرمود عمر رضی اللہ تعالٰی عنہ خواندن گرفت و چھرہ مبارک سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم از حالی بحالی گردید بجہت شدت غضب و عمرازیں معنی آگاہی نداشت تا آنکہ صدیق اکبر رضی اللہ تعالٰی عنہ گفت اے عمر ترا بگریند زنان گریہ کنان نمی بینی حالتیکہ در روئے مبارک سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم پید است آنگاہ عمر نظر بالا کرد و جانب چھرہ اقدس دید او را گفت بخدا پناہ میبرم از غضب خدا و رسول خدا صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم پسندیدم خدائے را پروردگار و اسلام را دین و محمد را نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم وازیں کلمہا غضب سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرد می نشست پس سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرمود بخدائے کہ جان محمد بقبضہ قدرت اوست اگر ظاہر شود شما موسٰی علیہ السلام و شما اتباع او کنید و مرا بگزارید ہر آئینہ راہ راست گم کردہ باشید و اگر موسٰی بدنیا بودے و زمانہ ظہور نبوتم دریافتے بدرستی کہ مرا پیروی کردی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم حالا چشم انصاف کشادنی ست توریت کہ کلام الہی ست و قرآن بہ تصدیقش نازل محض بوجہ اختلاط تحریفات کارش بجائے رسید کہ قرائنش چنداں موجب غضب سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ایں فلسفہ ملعونہ بکفرو

[داہنا کالم: اردو] علیہ وسلم خاموش رہے اور کوئی جواب نہ دیا ، عمر فاروق رضی اللہ تعالٰی عنہ نے پڑھنا شروع کر دیا، سرور عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا چہرہ مبارک شدت غضب کی وجہ سے ایک حالت سے دوسری حالت کی طرف بدل رہا تھا ، حضرت عمر فاروق کو اس کی خبر نہ تھی کہ حضرت صدیق اکبر رضی اللہ تعالٰی عنہ نے فرمایا : اے عمر! تجھے رونے والی عورتیں روئیں تم نبی اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے چہرہ انور کی حالت نہیں دیکھ رہے۔ تب حضرت عمر فاروق رضی اللہ تعالٰی عنہ نے حضور کے چہرہ انور کو دیکھا اور فوراً کہا اللہ تعالیٰ اور اس

کے رسول کے غضب سے خدا کی پناہ ہم اللہ کے رب ہونے پر اسلام کے دین ہونے پر اور محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے نبی ہونے پر راضی ہوئے۔ نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا مجھے اس ذات کی قسم جس کے قبضہ قدرت میں میری جان ہے اگر تم پر موسیٰ علیہ السلام ظاہر ہوتے اور تم مجھے چھوڑ کر ان کی اتباع کرتے تو راہ راست سے بھٹک جاتے اور اگر موسیٰ علیہ السلام دنیا میں ہوتے اور میری نبوت کے ظہور کے زمانے کو پاتے تو میری پیروی کرتے۔ اب انصاف کی آنکھ کھولنی چاہئے کہ توراہ کلام الہی ہے اور قرآن مجید نے اس کی تصدیق کی ہے لیکن صرف اس بناء پر کہ اس میں تحریف ہو چکی ہے اس کا پڑھنا سرور عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی اس قدر ناراضگی کا سبب بنا ، یہ مردود فلسفہ جو کہ کفر وضلالت

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Left Column - Persian/Arabic] It is full of misguidance and is a collection of several ignorances. They have blocked the path of religion upon God's servants. The bond of certainty has been broken from their necks. To Allah belongs all Honor. How can it be that they consider it a great reward, spend lifetimes over it, and plant the seed of its love in hearts? Despite all this, can they remain safe and not deserve severe wrath? No, by Allah, it shall not be, even if the falsifiers dislike it. Again, Ahmad in 'Musnad' and Bayhaqi in 'Shu'ab al-Iman' have narrated from Jabir (may Allah be pleased with him) that 'Umar (may Allah be pleased with him) came to the holy presence of the Protector of the World, the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) and submitted: "Inna nasma'u ahaditha min yahuda tu'jibuna afatara an naktuba ba'daha" (We hear narrations from the Jews that please us. Should we write some of them?). The Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Amatahukuna antum kama tahawwakatil yahudu wan nasara" (Are you confused in the religion of Islam and its perfection, completeness, and total self-sufficiency that you desire the narrations of others? Just as the Jews and Christians became confused in their own religion and, not content with Divine knowledge, fell into this and that, and engaged in idle talk. Verily, I have come to you...).

[Right Column - Urdu Translation] ...is full of and is a collection of ignorances. And he who has blocked the path of religion for the servants of religion, and the philosophers have cast off the chain of religion from their necks, how is he worthy that a great reward should be expected for him, and lifetimes be spent on it, and its love be given a place in the heart, and despite all this, they remain safe and not deserve severe wrath? By God, it cannot be so, even if the falsifiers do not like it. Imam Ahmad in 'Musnad' and Bayhaqi in 'Shu'ab al-Iman' narrated from Hadrat Jabir (may Allah be pleased with him) that Hadrat Umar Farooq (may Allah be pleased with him) came to the presence of the Master of both worlds (peace and blessings of Allah be upon him) and submitted: 'Inna nasma'u ahadithan min yahuda tu'jibuna afatara an naktuba ba'daha' (We hear many things from the Jews that we like. Do we have permission to write down some of those things?). The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'Amatahukuna antum kama tahawwakatil yahudu wan nasara' (Are you confused about the completeness and sufficiency of the religion of Islam that you pay attention to the words of others, just as the Jews and Christians became confused in their religion and, not sufficing with what Allah gave them, became occupied here and there? Indeed, I have come to you...).

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

[बायां कॉलम - फारसी/अरबी] यह गुमराहियों से भरा हुआ और कई अज्ञानताओं का समूह है। उन्होंने खुदा के बंदों पर दीन का रास्ता बंद कर दिया है। उनके गले से यकीन का बंधन टूट गया है। सारी इज़्ज़त अल्लाह ही के लिए है। यह कैसे संभव है कि वे इसे महान प्रतिफल समझें, इस पर उम्र बिताएँ और इसके प्रेम का बीज दिलों में बोएँ इन सब के बावजूद, क्या वे सुरक्षित रह सकते हैं और भीषण क्रोध के पात्र नहीं बन सकते? नहीं, अल्लाह की कसम, ऐसा नहीं होगा, भले ही झुठलाने वाले इसे नापसंद करें। फिर, अहमद ने 'मुसनद' में और बैहकी ने 'शुअब अल-ईमान' में जाबिर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है कि उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) विश्व के रक्षक, ब्रह्मांड के स्वामी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पवित्र उपस्थिति में आए और निवेदन किया: "इन्ना नस्मऊ अहादीसन मिन यहूदा तुजिबुना अफ़तरा अन नक्तुबा बाज़हा" (हम यहूदियों से ऐसी बातें सुनते हैं जो हमें पसंद आती हैं। क्या हमें उनमें से कुछ लिखना चाहिए?)। ब्रह्मांड के स्वामी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "अमतहुकूँ अंतुम कमा तहव्वकतिल यहूदु वन नसारा" (क्या तुम दीन-ए-इस्लाम और उसकी पूर्णता, संपूर्णता और पूर्ण आत्मनिर्भरता में भ्रमित हो कि तुम दूसरों के वर्णनों की इच्छा रखते हो? जैसे कि यहूदी और ईसाई अपने ही धर्म में भ्रमित हो गए और, ईश्वरीय ज्ञान से संतुष्ट न होकर, इस और उस में पड़ गए, और व्यर्थ बातों में लग गए। वास्तव में, मैं तुम्हारे पास आया हूँ...)।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद] ...से भरा हुआ और अज्ञानताओं का समूह है। और जिसने धर्म के सेवकों के लिए धर्म का रास्ता बंद कर दिया है, और दार्शनिकों ने धर्म की जंजीर अपने गले से उतार फेंकी है, वह कब इस लायक है कि उसके लिए बहुत बड़े पुण्य की आशा की जाए, और उस पर उम्रें खर्च कर दी जाएं और उसके प्रेम को दिल में जगह दी जाए, और इसके बावजूद वे सुरक्षित रहें और तीव्र प्रकोप के पात्र न हों? खुदा की कसम, ऐसा नहीं हो सकता, भले ही झूठ बोलने वाले इसे पसंद न करें। इमाम अहमद ने 'मुसनद' में और बैहकी ने 'शुअब अल-ईमान' में हजरत जाबिर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है कि हजरत उमर फारूक (रज़ियल्लाहु अन्हु) दो जहानों के आका (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सेवा में उपस्थित हुए और निवेदन किया: 'इन्ना नस्मऊ अहादीसन मिन यहूदा तुजिबुना अफ़तरा अन नक्तुबा बाज़हा' (हम यहूदियों से ऐसी कई बातें सुनते हैं जो हमें अच्छी लगती हैं। क्या हमें अनुमति है कि हम उनमें से कुछ बातें लिख लें?)। नबी ए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: 'अमतहुकूँ अंतुम कमा तहव्वकतिल यहूदु वन नसारा' (क्या तुम दीन-ए-इस्लाम के पूर्ण और पर्याप्त होने में भ्रमित हो कि दूसरों की बातों की ओर ध्यान देते हो, जैसे कि

यहूदी और ईसाई अपने धर्म में भ्रमित हो गए और अल्लाह के दिए हुए पर संतोष न करके इधर-उधर व्यस्त हो गए? वास्तव में, मैं तुम्हारे पास आया हूँ...)।

पृष्ठ ४४१ / ७२०

[بایاں کالم - فارسی/عربی] ضلال مشحونہ کہ جہلی چند است. برہم نبستہ وراہ دین بر خدا مش بستہ در بقمہ یقین از گلوئے شان گسستہ العزۃ للہ چہ جائے آں دارد کہ او را اجر عظیم پندارند و عمر ہا نظر بروے گمارند و تخم ودادش بدلہا کارند با اینہمہ سلامت روند غضب اشد را مستحق نشوند لا واللہ لا یکون ولو کرہ المبطلون باز احمد در مسند و بیہقی در شعب الایمان از جابر رضی اللہ تعالی عنہ چناں آوردہ اند کہ عمر رضی اللہ تعالی عنہ باقدس بارگاہ عالم پناہ سید عالم صلی اللہ تعالی علیہ وسلم حاضر آمد و بعرض قدسی رساند کہ انا نسمع احادیث من یہود تعجبنا افتری ان نکتب بعضہا ما از یہود حدیثہا می شنویم کہ مارا خوش می آید آیا بروانگی باشد کہ چیزے ازانہا بنویسیم سید عالم فرمود صلی اللہ تعالی علیہ وسلم امتہوکون انتم کما تہوکت الیہود والنصاری آیا متحیر ید در دین اسلام و کمال و تمام واغنائے تام او کہ در احادیث دیگراں طمع دارید چنانکہ یہود و نصاری در دین خود متحیر شدند و بر علم الہی قناعت نا کردہ در ایں وآں فتادن و در قیل و قال زدند لقد جئتکم

[دایاں کالم - اردو ترجمہ] سے بھرا ہوا اور جہالتوں کا مجموعہ ہے اور جس نے دین کے خادموں کے لئے دین کا راستہ بند کیا ہوا ہے اور فلسفیوں نے دین کی زنجیر اپنے گلے سے اتار پھینکی ہے وہ کب اس لائق ہے کہ اس کا بہت بڑا ثواب گمان کیا جائے اور عمریں اس پر صرف کردی جائیں اور اس کی محبت کو دل میں جگہ دی جائے اس کے باوجود محفوظ رہیں اور شدید غضب کے مستحق نہ ہوں۔ بخدا اس طرح نہیں ہوسکتا اگرچہ جھوٹے اسے پسند نہ کریں۔ امام احمد نے مسند میں اور بیہقی نے شعب الایمان میں حضرت جابر رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کی ہے کہ حضرت عمر فاروق رضی اللہ تعالی عنہ سرورِ دو جہاں صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہو کر عرض گزار ہوئے کہ انا نسمع احادیث من یہود تعجبنا افتری ان نکتب بعضہا ہم

یہودیوں سے کئی ایسی باتیں سنتے ہیں جو ہمیں اچھی لگتی ہیں کیا ہمیں اجازت ہے کہ ہم ان میں سے کچھ باتیں لکھ لیا کریں۔ نبی اکرم صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے فرمایا: امتھوکون انتم کما تھوکت الیھود والنصاری کیا تم دین اسلام کے مکمل اور کافی ہونے میں متحیر ہو کہ دوسروں کی باتوں کی طرف توجہ دیتے ہو جیسے کہ یہودی اور عیسائی اپنے مذہب میں متحیر ہو گئے اور اللہ تعالیٰ کے دئے ہوئے پر اکتفا نہ کر کے ادھر اُدھر مصروف ہو گئے لقد جئتکم

Fatawa Razawiya Volume 24

'I have brought this pure and white Shariah (law) to you, in which there is no room for doubt or suspicion, nor is there any need for anything else. If Moses were alive today, he would have no choice but to follow me.' It is evident that matters which appeal to a personality like Umar Farooq (may Allah be pleased with him) would certainly not be contrary to the Shariah. Despite this, the Prophet (peace be upon him) forbade it and demonstrated that with the presence of the pure Shariah, there is no need for anything else. How can it be permissible to cast aside a clear and transparent river (the holy Shariah) and hold onto the skirts of the disbelievers of Greece, thus inviting a miserable death in the wilderness of misguidance? Only someone who has debased and humiliated themselves could do such a thing. In short, the misguidance of these philosophies and their claimants is more apparent than yesterday's sun. Therefore, only one whose heart is diseased and whose faith is weak will doubt its prohibition, we seek refuge in Allah from that. Come, let us return to the main point...

Footnote 1: Mishkat al-Masabih, citing Ahmad and Bayhaqi in 'Ash-Shu'ab', Chapter on 'Adhering to the Book and Sunnah', Mujtabai Press Delhi, p. 30; Musnad Ahmad ibn Hanbal from Jabir (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami Beirut, 3/387; Sharh al-Sunnah by al-Baghawi, Chapter on 'Hadith of the People of the Book', Al-Maktab al-Islami Beirut, 10/27.

"मैं तुम्हारे पास यह स्पष्ट और पवित्र शरीयत लाया हूँ कि इसमें न तो संदेह और संशय की गुंजाइश है और न ही किसी और चीज़ की ज़रूरत है। 'अगर मूसा (अलैहिस्सलाम) जीवित होते तो उनके पास भी मेरा अनुसरण करने के अलावा कोई चारा न होता।' यह स्पष्ट है कि जो बातें उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) जैसी शख्सियत को पसंद आती हों, वे हरगिज़ शरीयत के खिलाफ नहीं होंगी। इसके बावजूद हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मना फरमाया और बता दिया कि मुताह्हरा शरीयत के होते हुए किसी और चीज़ की ज़रूरत नहीं है। यह किस तरह जायज़ होगा कि साफ़ और पारदर्शी नदी (मुकद्दस शरीयत) को पीछे छोड़कर यूनान के काफ़िरों का दामन थामा जाए और गुमराहियों के जंगल में मुसीबत की मौत मोल ली जाए? यह वही व्यक्ति कर सकता है जिसने अपने आप को तुच्छ और अपमानित बना लिया हो। संक्षेप में, इन दर्शनों (फ़िलॉसफ़ी) और उनके दावेदारों की गुमराही बीते हुए कल और सूरज से ज़्यादा ज़ाहिर है। इसलिए इसकी हराम होने में सिर्फ वही व्यक्ति शक करेगा जिसका दिल बीमार और ईमान कमज़ोर हो, हम इससे अल्लाह की पनाह माँगते हैं। आइए, ताकि मुख्य उद्देश्य की ओर..."

पाद-टिप्पणी 1: मिश्कात अल-मसाबीह, अहमद और बैहक़ी के हवाले से 'अश-शुअ़ब' में, अध्याय 'किताब और सुन्नत को मज़बूती से पकड़ना', मुजतबाई प्रेस दिल्ली, पृष्ठ 30; मसनद अहमद इब्न हंबल, जाबिर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरूत, 3/387; शरह अल-सुन्नत लिल-बग़वी, अध्याय 'अहल-ए-किताब की हदीस', अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरूत, 10/27।

بھا بیضاء نقیة میں تمہارے پاس یہ واضح اور پاکیزہ شریعت لایا ہوں کہ اس میں نہ تو شک وشبہہ کی گنجائش ہے اور نہ کسی اور چیز کی ضرورت ولو کان موسیٰ حیا ما وسعه الا اتباعی اگر موسیٰ علیہ السلام دنیا میں ہوتے تو انہیں بھی میری پیروی کے سوا چارہ نہ ہوتا۔ ظاہر ہے کہ جو باتیں عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہ ایسی شخصیت کو پسند آتی ہوں وہ ہرگز شریعت کے مخالف نہ ہوں گی، اس کے باوجود حضور نے منع فرمایا اور بتا دیا کہ شریعت مطہرہ کے ہوتے ہوئے کسی اور چیز کی ضرورت نہیں، یہ کس طرح جائز ہوگا کہ صاف و شفاف دریا (شریعت مقدسہ) کو پس پشت ڈال کر یونان کے کافروں کا دامن تھاما جائے اور گمراہی کے جنگل میں مصیبت کی موت مول لی جائے یہ وہی شخص کر سکتا ہے جس نے اپنے آپ کو حقیر و ذلیل بنا دیا ہو۔

الحاصل یہ فلسفے اور فلسفے کے دعویداروں کی گمراہی گزشتہ دن اور سورج سے زیادہ ظاہر ہے لہذا اس کی حرمت میں صرف وہی شخص شک کرے گا جس کا دل بیمار اور ایمان کمزور ہو، نعوذ باللہ من ذالک۔ آئیے تاکہ اصل مطلب کی طرف

---

۱ مشکوة المصابیح بحوالہ احمد و بیهقی فی الشعب باب الاعتصام بالکتاب والسنة مطبع مجتبائی دہلی ص ۳۰، مسند احمد بن حنبل عن جابر رضی اللہ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۳/ ۳۸۷، شرح السنة للبغوی باب حدیث اهل الکتاب المکتب الاسلامی بیروت ۱۰ / ۲۷

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

...considered it a means of superiority and a reason for precedence in prayers to the Majestic Lord. It is clear what greater praise could there be than this, and this meaning—Allah forbid—borders on infidelity (kufr), as scholars have explicitly stated in numerous secondary issues. Imam Abdur Rashid Bukhari, a disciple of the most noble Imam Zahiri and the jurisprudent Imam Qazi Khan (may Allah have mercy on them), states in "Al-Khulasa": "Whoever says 'well done' to that which is legally loathsome, or calls it 'good', has committed disbelief (kufr)." (1) O Lord! Do these pseudo-philosophers not show mercy to themselves, that they open their tongues in pride and boastfulness over a forbidden act?

"Nay! but that which they have earned has rusted their hearts." (2), and we ask Allah for safety.

Twentieth: Giving preference to the excellence of philosophy over the excellence of jurisprudence (fiqh), because the basis and origin of the claim of priority for leadership can only be that. This implies contempt for the knowledge of religion, as is not hidden, and contempt in a clear manner is definitive disbelief (kufr) here, because...

(Right Column Explanation:) Pay attention that the aforementioned person, the claimant of philosophy, prides himself on something because of which he considers himself superior and more worthy of leadership, which scholars have called forbidden (haram). It is clear what greater praise and appreciation of this forbidden act could there be? We seek refuge in Allah from that. In this, an aspect of disbelief also emerges, as scholars have clarified in many issues. The student of the most noble Imam Zahiri and the jurisprudent Imam Qazi Khan, Imam Abdur Rashid Bukhari (may Allah have mercy on them), says: In "Al-Khulasa" it is mentioned that whoever says "you did well" to someone who committed a legally loathsome act, becomes a disbeliever. O Lord! Perhaps these claimants of philosophy do not show mercy to themselves, that they boast and take pride on the basis of a forbidden act; yes, the blackness of their deeds has covered their hearts.

1. Twentieth: Giving preference to the excellence of philosophy (over the excellence of jurisprudence), because this could be the only reason for the claim of being more worthy of leadership. This implicitly contains an insult to the

knowledge of religion, as is evident, and explicit insult to the knowledge of religion is disbelief, since here...

---

1. Minh al-Rawd al-Azhar Sharh al-Fiqh al-Akbar, Section on Disbelief (explicit and implicit), Mustafa al-Babi, Egypt, p. 189.
2. The Holy Quran 83 / 14.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

...महान प्रभु की प्रार्थना में इसे श्रेष्ठता का साधन और प्रधानता का कारण माना। यह स्पष्ट है कि इससे बड़ी प्रशंसा और क्या हो सकती है, और यह अर्थ—अल्लाह न करे—कुफ़्र (ईश्वरनिंदा) की सीमा को छूता है, जैसा कि विद्वानों ने कई गौण मुद्दों में स्पष्ट रूप से कहा है। महानतम इमाम ज़हिरी और न्यायविद् इमाम काज़ी ख़ान (अल्लाह उन पर दया करे) के शिष्य इमाम अब्दुर रशीद बुखारी "अल-ख़ुलासा" में कहते हैं: "जिसने भी उस चीज़ को 'शाबाश' कहा जो कानूनी रूप से घृणित है, या उसे 'अच्छा' कहा, उसने कुफ़्र किया।" (1) हे प्रभु! क्या ये छद्म-दार्शनिक स्वयं पर दया नहीं करते, कि वे एक निषिद्ध कार्य पर गर्व और अभिमान में अपनी ज़ुबान खोलते हैं?

"कदापि नहीं! बल्कि उनके दिलों पर उनके कर्मों की कालिख छा गई है।" (2), और हम अल्लाह से सलामती माँगते हैं।

बीसवाँ: दर्शन की श्रेष्ठता को न्यायशास्त्र (फ़िक़्ह) की श्रेष्ठता पर प्राथमिकता देना, क्योंकि नेतृत्व के लिए प्राथमिकता के दावे का आधार और मूल यही हो सकता है। इसमें धर्म के ज्ञान का अपमान निहित है, जैसा कि छुपा नहीं है, और स्पष्ट तरीके से अपमान यहाँ निश्चित कुफ़्र है, क्योंकि...

(दाहिना कॉलम स्पष्टीकरण:) ध्यान दें कि उपर्युक्त व्यक्ति, दर्शन का दावेदार, उस चीज़ पर गर्व करता है जिसके कारण वह खुद को श्रेष्ठ और नेतृत्व के अधिक योग्य समझता है, जिसे विद्वानों ने हराम (वर्जित) कहा है। यह स्पष्ट है कि इस हराम कार्य की इससे बड़ी प्रशंसा और सराहना क्या हो सकती है? हम इससे अल्लाह की पनाह माँगते हैं। इसमें कुफ़्र का एक पहलू भी निकलता है जैसा कि विद्वानों ने कई मसलों में स्पष्ट किया है। महान इमाम ज़हिरी और न्यायविद् इमाम काज़ी ख़ान के शिष्य इमाम अब्दुर रशीद बुखारी (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "ख़ुलासा" में है कि जिस व्यक्ति ने शरई तौर पर घृणित कार्य करने वाले से कहा कि 'तुमने अच्छा किया' तो वह काफिर हो गया। ऐ अल्लाह! शायद ये दर्शन के दावेदार अपने आप पर रहम नहीं करते कि हराम कार्य की बिना पर फख़्र और तक़ब्बुर (अहंकार) करते हैं, हाँ उनके दिलों पर उनके आमाल की सियाही छा चुकी है।

1. बीसवाँ: दर्शन की श्रेष्ठता को तरजीह देना (फ़िक़्ह की श्रेष्ठता पर) क्योंकि इमामत के ज़्यादा लायक होने के दावे की यही वजह हो सकती है। इसमें ज़िमनी (अप्रत्यक्ष) तौर पर इल्म-ए-दीन

(धर्म के ज्ञान) की तौहीन (अपमान) है जैसा कि ज़ाहिर है और इल्म-ए-दीन की सराहतन (स्पष्ट) तौहीन कुफ़्र है यहाँ चूंकि...

---

1. मिन्ह अल-रौद अल-अज़हर शरह अल-फ़िक़्ह अल-अकबर, कुफ़्र के बयान में अध्याय (स्पष्ट और सांकेतिक), मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, पृ. 189।
2. अल-कुरान अल-करीम 83 / 14।

فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۴

وسیلہ تفضیل و باعث تقدیم در مناجات رب جلیل دانست۔ پیدا است کہ کدام تحسین بالاتر ازیں باشد و ایں معنی العیاذ باللہ پہلو بکفر زند چنانچہ علماء در فروع کثیرہ تنصیص کردہ اند و امام عبدالرشید بخاری تلمیذ امام اجل ظہیری وامام فقیہ النفس قاضی خان رحمہم اللہ تعالیٰ در خلاصہ فرمایند من قال احسنت لما ھو قبیح شرعاً او جودت کفر (1) یارب مگر متفلسفان بر خویشتن نمی بخشایند کہ ہر فعل محرم بس نا کردہ زبان بتکبر و تفاخر می کشایند۔

" كَلَّا بَلْ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ " (2)، و نسأل اللہ العافیۃ۔

بستم آنکہ فضل تفلسف را بر فضل تفقہ ترجیح دادن کہ ادعائے اولویت با مامت را منشاء و منزع ہمون تواند بود متضمن تحقیر علم دین ست کما لا یخفی و تحقیر برو جہ صریح کفر قطعی ست اینجا چوں

(دائیں کالم کی وضاحت:) توجہ دیں کہ مذکورہ بالا شخص، فلسفے کا دعویدار اس چیز پر فخر کرتا ہے کہ بناء بریں اپنے آپ کو فضیلت والا اور امامت کے زیادہ لائق سمجھتا ہے جسے علماء نے حرام کہا ہے واضح ہے کہ اس سے بڑھ کر اس حرام فعل کی تعریف و تحسین اور کیا ہو سکتی ہے نعوذ باللہ من ذلک اس میں تو ایک پہلو کفر کا بھی نکلتا ہے چنانچہ علماء نے بہت سے مسائل میں تصریح کی ہے، امام اجل ظہیری اور امام فقیہ النفس قاضی خاں کے شاگرد امام عبدالرشید بخاری رحمہم اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں: خلاصہ میں ہے کہ من قال احسنت لما ھو قبیح شرعاً او جودت کفر (جس شخص نے شرعی قبیح کے مرتکب کو کہا کہ تونے اچھا کیا تو وہ کافر ہو گیا) بار الٰہا!

شاید یہ فلسفے کے دعویدار اپنے اوپر رحم نہیں کرتے کہ حرام فعل کی بناء پر فخر اور تکبر کرتے ہیں، ہاں ان کے دلوں پر ان کے اعمال کی سیاہی چھا چکی ہے۔

۲۰۔ بستم فلسفے کی فضیلت کو ترجیح دینا (فقہ کی فضیلت پر) کیونکہ امامت کے زیادہ لائق ہونے کے دعویٰ کی یہی وجہ ہو سکتی ہے اس میں ضمناً علم دین کی توہین ہے جیسے کہ ظاہر ہے اور علم دین کی صراحۃً توہین کفر ہے یہاں چونکہ

---

1 منح الروض الازہر شرح الفقہ الاکبر فصل فی الکفر صریحاً و کنایۃ مصطفیٰ البابی مصر ص ۱۸۹ 2 القرآن الکریم ۸۳ / ۱۴

Fatawa Rizvia, Volume 24

[Left Column] ...The inclusion of conflict between necessity and commitment is evident as we have explained in 'Maqam al-Hadid', and Allah is the Guide to the straight path. These are twenty reasons, sound and strong, useful for the jurist and destructive for the foolish, which have been written spontaneously in a state of haste and concluded. It is likely that if further reflection is done, more reasons would become manifest, but this much is preferred and lengthy discourse is disliked. Now Muslims should see that the pure Shariah does not approve of the leadership (imamat) of a sinner (fasiq), to the extent that many scholars have called their imamat 'makruh tahrimi' (prohibitively disliked), close to 'haram' (forbidden), and those who appoint them as imams are said to be involved in sin. Allama Ibrahim Halabi (may Allah have mercy on him), in 'Sharh Kabir Munya', quoting from 'Fatawa al-Hujjah', says: "There is an indication in this that if they appoint a 'fasiq' as imam, they will be sinning, based on the fact that the dislike for his appointment is 'karahat tahrim' (prohibitive dislike) due to his lack of concern for religious matters and his negligence in fulfilling its essentials. So it is not unlikely that he might omit some conditions of prayer or do something that invalidates it; rather, this is the predominant likelihood given his sinfulness. Therefore, prayer behind him is not permissible at all according to [Imam] Malik and in one narration from [Imam] Ahmad." And this is the statement of Imam Zaila'i in 'Tabyin al-Haqaiq'.

[Right Column] This point has come up incidentally, so it will be said that it necessitates the insult of religious knowledge; this person did not commit to it (therefore, a verdict of disbelief will not be given), as we explained in "Maqam al-Hadid".

These twenty excellent and best reasons, useful for the jurist and ruinous for the fool, have been written down extemporaneously. If more thought is given, other reasons may also appear, however, these are sufficient; there is no need for more. Now Muslims should consider that the Holy Shariah has not liked the imamat of a sinner (fasiq), to the extent that many scholars have called it 'makruh tahrimi' and close to 'haram' and have declared those who make such a person an imam as being involved in a great sin. Allama Ibrahim Halabi in 'Kabir Sharh Munya', quoting from 'Fatawa Hujjah', says: In this there is an indication that those who make a 'fasiq' an imam will be sinners, because making him an imam is 'makruh tahrimi' since he does not care much for religious matters and acts with laziness in performing the necessary matters of Shariah. It is not far-fetched that he might abandon some

conditions of prayer and do some work contrary to prayer; rather, in view of his sinfulness, this is the predominant suspicion. For this reason, according to Imam Malik, prayer behind him is not permissible at all. Tabyin al-Haqaiq, commentary on Kanz al-Daqaiq.

---

1 Ghunyat al-Mustamli Sharh Munyat al-Musalli, Chapter on Imamat, Sohail Academy Lahore, pp. 512-513. Page 444 of 720

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 24

[बायां कॉलम] ...ज़रूरत और प्रतिबद्धता के बीच विवाद स्पष्ट है जैसा कि हमने 'मक़ाम अल-हदीद' में स्पष्ट किया है, और अल्लाह सीधे रास्ते का मार्गदर्शक है। ये बीस कारण हैं, जो ठोस और मजबूत हैं, फ़क़ीह (विधिवेत्ता) के लिए उपयोगी और मूर्खों के लिए विनाशकारी हैं, जिन्हें जल्दबाजी की स्थिति में सहज रूप से लिखकर समाप्त कर दिया गया है। यह संभव है कि यदि और चिंतन किया जाए, तो और भी कारण प्रकट होंगे, लेकिन इतना ही पर्याप्त है और लंबी चर्चा नापसंद है। अब मुसलमानों को देखना चाहिए कि पाक शरीयत ने एक फ़ासिक़ (पापी) के नेतृत्व (इमामत) को पसंद नहीं किया है, यहाँ तक कि कई विद्वानों ने उनकी इमामत को 'मक़रुह तहरीमी' (निषिद्ध के करीब नापसंद) कहा है, हराम के करीब, और जो उन्हें इमाम नियुक्त करते हैं उन्हें पाप में लिप्त बताया गया है। अल्लामा इब्राहीम हलबी (अल्लाह उन पर रहम करे), 'शरह कबीर मुनिया' में 'फ़तावा अल-हुज्जाह' से उद्धृत करते हुए कहते हैं: "इसमें एक संकेत है कि यदि वे एक 'फ़ासिक़' को इमाम नियुक्त करते हैं, तो वे पाप कर रहे होंगे, इस तथ्य के आधार पर कि उसकी नियुक्ति के प्रति नापसंदगी 'कराहते तहरीम' (निषेधात्मक नापसंदगी) है क्योंकि उसे धार्मिक मामलों की परवाह नहीं है और इसके आवश्यक तत्वों को पूरा करने में उसकी लापरवाही है। इसलिए यह असंभव नहीं है कि वह नमाज़ की कुछ शर्तों को छोड़ दे या कुछ ऐसा करे जो इसे अमान्य कर दे; बल्कि, उसकी पापपूर्णता को देखते हुए यही प्रबल संभावना है। इसलिए, [इमाम] मालिक के अनुसार और [इमाम] अहमद के एक वर्णन में उनके पीछे नमाज़ बिल्कुल भी जायज़ नहीं है।" और यही इमाम ज़ैलई का 'तबीन अल-हक़ाएक़' में कथन है।

[दायां कॉलम] यह बात संयोगवश आ गई है, इसलिए यही कहा जाएगा कि इससे धार्मिक ज्ञान का अपमान आवश्यक हो जाता है; इस व्यक्ति ने इसे नहीं अपनाया (इसलिए कुफ्र का फैसला नहीं दिया जाएगा), जैसा कि हमने "मक़ाम अल-हदीद" में बयान किया।

ये बीस उत्कृष्ट और बेहतरीन कारण, फ़क़ीह के लिए उपयोगी और मूर्ख के लिए विनाशकारी, बिना किसी तैयारी के तत्काल लिख दिए गए हैं। अगर और सोचा जाए तो और भी कारण सामने आ सकते हैं, हालांकि, ये काफी हैं; और अधिक की आवश्यकता नहीं है। अब मुसलमानों को विचार करना चाहिए कि पवित्र शरीयत ने एक फ़ासिक़ की इमामत को पसंद नहीं किया है, यहाँ तक कि कई विद्वानों ने इसे 'मक़रुह तहरीमी' और 'हराम' के करीब कहा है और ऐसे व्यक्ति को इमाम बनाने वालों को बड़े पाप में शामिल घोषित किया है। अल्लामा इब्राहीम हलबी 'कबीर शरह मुनिया' में 'फ़तावा हुज्जाह' से उद्धृत करते हुए कहते हैं: इसमें एक संकेत है कि फ़ासिक़ को इमाम बनाने वाले

गुनहगार होंगे, क्योंकि उसे इमाम बनाना 'मक़रुह तहरीमी' है क्योंकि वह धार्मिक मामलों का ज़्यादा ख्याल नहीं रखता और शरीयत के ज़रूरी कामों को पूरा करने में सुस्ती से काम लेता है। यह दूर की बात नहीं है कि वह नमाज़ की कुछ शर्तों को भी छोड़ दे और नमाज़ के विरुद्ध कोई काम कर बैठे; बल्कि उसके फ़िस्क़ (पाप) के मद्देनज़र प्रबल गुमान यही है। इसी वजह से इमाम मालिक के नज़दीक उसके पीछे नमाज़ बिल्कुल जायज़ नहीं। तबीन अल-हक़ाएक़, कन्ज़ुद दक़ाएक़ की व्याख्या।

---

1 गुन्यात अल-मुस्तमली शरह मुन्यात अल-मुसल्ली, इमामत पर अध्याय, सोहैल अकादमी लाहौर, पृ. 512-513। पृष्ठ 444 of 720

[بایاں کالم] پائے تضمن در میان ست نزاع لزوم والتزام عیان ست کما بیناہ فی مقام الحدید واللہ الہادی الی المسلك السدید۔ این بست وجہ است، نجیح ووجیہ مفید فقیہ ومبید سفیہ کہ بر نہج ارتجال بحال استعجال سپرد خاتمہ نمودہ شد ومانا کہ اگر غوری رود وجوہ دیگر منجلی شود اما ہمیں قدر پسند ست و تطویل ممل نا پسند حالا مسلماناں نگہ کنند کہ شرع مطہر امامت فاسق رانہ پسندیدہ تا آنکہ بسیار از علماء اما متش را مکروہ تحریمی قریب حرام وآناں را کہ بتصدیقش بر دارند مبتلائے اثام گفتہ اند علامہ ابراہیم حلبی رحمہ اللہ تعالی در شرح کبیر منیہ عبارت فتاوی الحجہ نقل کردہ میفر ماید فیہ اشارۃ الی انھم لو قدموا فاسقاً یأثمون بناء علی ان کراھۃ تقدیمہ کراھۃ تحریم لعدم اعتنائہ بأموردینہ وتساھلہ فی الاتیان بلوازمہ فلا یبعد منہ الاخلال ببعض شروط الصلوۃ وفعل ما ینافیھا بل ھو الغالب بالنظر الی فسقہ ولذا لم تجز الصلوۃ خلفہ اصلا عند مالك وروایۃ عن احمد، وہمیں است ارشاد امام زیلعی در تبیین الحقائق۔

[دایاں کالم] یہ بات ضمناً آگئی ہے اس لئے یہی کہا جائے گا کہ علم دین کی توہین لازم آتی ہے اس شخص نے اس کا التزام نہیں کیا (اس لئے کفر کا قول نہیں کیا جائے گا) جیسا کہ ہم نے "مقام الحدید" میں بیان کیا۔

یہ بیس عمدہ اور بہترین وجوہیں فقیہ کے لئے مفید اور بیوقوف کے لئے تباہ کن قلم برداشتہ فی البدیہ لکھ دی گئی ہیں، اگر مزید غور کیا جائے تو اور وجوہ بھی ظاہر ہوسکتی ہیں تاہم انہیں پر اکتفاء کیا جاتا ہے زیادہ کی ضرورت نہیں۔ اب مسلمانوں کو غور کرنا چاہئے کہ شریعت مقدسہ نے فاسق کی امامت کو پسند نہیں کیا حتیٰ کہ بہت سے علماء نے اسے مکروہ تحریمی اور حرام کے قریب فرمایا ہے اور ایسے شخص کو امام بنانے والوں کو گناہِ عظیم کا مبتلا قرار دیا ہے، علامہ

ابراھیم حلبی کبیر شرح منیہ میں فتاویٰ حجہ سے نقل کر کے فرماتے ہیں: اس میں اشارہ ہے کہ فاسق کو امام بنانے والے گناہ گار ہوں گے، کیونکہ اسے امام بنانا مکروہ تحریمی ہے اس لئے کہ وہ امور دین کا چنداں خیال نہیں کرتا اور شریعت کے لازمی امور کے ادا کرنے میں سستی سے کام لیتا ہے کچھ بعید نہیں کہ وہ نماز کی بعض شرطوں کو بھی ترک کردے اور نماز کے مخالف کوئی کام کربیٹھے بلکہ اس کے فسق کے پیش نظر غالب یہی گمان ہے اسی لئے امام مالک کے نزدیک اس کے پیچھے نماز بالکل جائز نہیں۔ تبیین الحقائق شرح کنز الدقائق

---

1 غنیۃ المستملی شرح منیۃ المصلی فصل فی الامامۃ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۵۱۲-۵۱۳ Page 444 of 720

Fatawa Razawiya Volume 24

...Sharh Kanz-ud-Daqaiq. And Allama Hasan Shurunbulali in Maraqi al-Falah also means the same from the statement of Imam Zaylai. Allama Hasan Shurunbulali, in his commentary on the text of Noor-ul-Idah, Maraqi al-Falah, and Allama Sayyid Ahmad Tahtawi in his marginalia (Hashiya) on Maraqi, have also stated similarly, Glory be to Allah (Subhan-Allah)! When the imamate of a person is not correct in whom a single sin (fisq) is found, how can it be correct to make a person an Imam in whom sin is found for several reasons, and some reasons even lead to infidelity (kufr) (we seek refuge in Allah from that)? Is there any scope for scholars to allow making such a person an Imam or to have any difference of opinion regarding the impermissibility of following him? It is true that there is a possibility of prayer behind a sinner (fasiq), but who would imagine it permissible to lead for a person whose very Islam is disputed? Don't you know that making him an Imam involves showing him respect, and that is strictly forbidden by Shariah? Despite this, our scholars narrate from Imam Abu Yusuf (may Allah Almighty be pleased with him) that the imamate of theologians (mutakallimin) is not permissible even if their belief is correct, as reported by the eminent Imam Hinduani, Zahidi (author of Al-Qunya and Al-Mujtaba), Imam Bukhari (author of Al-Khulasa), and Ibn Humam (author of Fath-ul-Qadir), based on the fatwa of Imam-ul-Aimmah Shams-ul-Aimmah Halwani.

Sharh Kanz-ud-Daqaiq. And Allama Hasan Shurunbulali in Maraqi al-Falah... (Persian/Arabic text) ...commented on his own text Noor-ul-Idah, and Allama Sayyid Ahmad Tahtawi in Hashiya Maraqi (may Allah have mercy on them all). Glory be to Allah! When it has reached the point that the imamate of a sinner with one sin is so, what of someone who has gathered numerous aspects of sin, some of which lead towards disbelief? (Allah forbid). There is no place for considering it permissible to make him an Imam or for there to be any dispute regarding the prohibition of following him. I grant that prayer behind a sinner has a legal basis, but for someone whose very Islam has room for dispute, who is there that would consider his imamate permissible? Do you not see that in putting him forward is his glorification, and that is categorically forbidden in Shariah? Furthermore, our scholars have narrated from Imam Abu Yusuf (may Allah Almighty be pleased with him) that the imamate of theologians is not permissible even if they have correct beliefs, as cited by the most eminent Imam Hinduani, Zahidi the author of Al-Qunya and Al-Mujtaba, Imam Bukhari the author of Al-Khulasa, and the learned researcher Imam where he

expressed it generally in 'Al-Fath'. This is the meaning of the fatwa of the most eminent Imam Shams-ul-Aimmah Halwani (may Allah's mercy be upon him).

1 Fath al-Qadir, Book of Prayer, Chapter on Imamate, Maktaba Nooria Razvia, Sukkur, 1/302. 2 Khulasa al-Fatawa, Book of Prayer, Fifth Section, Maktaba Habibiya, Quetta, 1/129.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

...शर्ह कंज़-उद-दक़ाइक़। और अल्लामा हसन शुरनबुलाली ने मराक़ी अल-फ़लाह में इमाम ज़ैलई के कथन का भी यही मतलब निकाला है। अल्लामा हसन शुरनबुलाली ने नूर-उल-इदाह की अपनी व्याख्या मराक़ी अल-फ़लाह में और अल्लामा सय्यद अहमद तहतावी ने हशिया मराक़ी में भी इसी तरह कहा है, सुभान अल्लाह! जब उस व्यक्ति की इमामत सही नहीं है जिसमें एक भी फ़िस्क़ (पाप) पाया जाता हो, तो उस व्यक्ति को इमाम बनाना कैसे सही होगा जिसमें कई कारणों से फ़िस्क़ पाया जाता है और कुछ कारण तो कुफ्र (अविश्वास) तक पहुँचाते हैं (अल्लाह इससे बचाए)। क्या विद्वानों के लिए ऐसे व्यक्ति को इमाम बनाने की अनुमति देने की कोई गुंजाइश है या उसके पीछे नमाज़ पढ़ने के अवैध होने में कोई मतभेद हो सकता है? यह सच है कि एक फ़ासिक़ (पापी) के पीछे नमाज़ होने की एक स्थिति है, लेकिन जिस व्यक्ति के इस्लाम में ही विवाद हो, उसकी इमामत को कौन हलाल समझेगा? क्या आप नहीं जानते कि उसे इमाम बनाने में उसका सम्मान है, और वह शरीयत के अनुसार निश्चित रूप से हराम (वर्जित) है? इसके बावजूद हमारे विद्वान इमाम अबू युसूफ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत करते हैं कि मुतकल्लिमीन (धर्मशास्त्रियों) की इमामत जायज़ नहीं है भले ही उनका अक़ीदा (विश्वास) सही हो, जैसा कि महान इमाम हिंदुवानी, ज़ाहिदी (क़ुन्या और मुज्तबा के लेखक), इमाम बुखारी (खुलासा के लेखक) और इब्न हुमाम (फ़त्ह-उल-क़दीर के लेखक) ने इमाम-उल-अइम्मा शम्स-उल-अइम्मा हलवानी के फतवे में उद्धृत किया है।

शर्ह कंज़-उद-दक़ाइक़। और अल्लामा हसन शुरनबुलाली मराक़ी अल-फ़लाह में... (फ़ारसी/अरबी पाठ) ...अपने ही पाठ नूर-उल-इदाह पर टिप्पणी की और अल्लामा सय्यद अहमद तहतावी ने हशिया मराक़ी में (अल्लाह उन सब पर रहम करे)। सुभान अल्लाह! जब बात यहाँ तक पहुँच गई है कि एक पाप वाले फ़ासिक़ की इमामत ऐसी है, तो उस व्यक्ति का क्या होगा जिसने पाप के कई पहलुओं को इकट्ठा कर लिया है, जिनमें से कुछ कुफ्र की ओर ले जाते हैं? (अल्लाह की पनाह)। उसे इमाम बनाने की अनुमति देने या उसके पीछे नमाज़ पढ़ने की मनाही के बारे में किसी विवाद की कोई जगह नहीं है। मैं मानता हूँ कि एक पापी के पीछे नमाज़ पढ़ने का कानूनी आधार है, लेकिन जिसके इस्लाम में ही विवाद की गुंजाइश हो, वह कौन है जो उसकी इमामत को जायज़ समझेगा? क्या आप नहीं देखते कि उसे आगे करने में उसका सम्मान है, और शरीयत में वह स्पष्ट रूप से हराम है? इसके अलावा, हमारे विद्वानों ने इमाम अबू युसूफ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत की है कि धर्मशास्त्रियों की इमामत जायज़ नहीं है भले ही वे सही विश्वास रखते हों, जैसा कि सबसे प्रमुख इमाम हिंदुवानी,

ज़ाहिदी जो अल-क़ुन्या और अल-मुज्तबा के लेखक हैं, इमाम बुखारी जो अल-खुलासा के लेखक हैं, और विद्वान शोधकर्ता इमाम ने उद्धृत किया है जहाँ उन्होंने इसे 'अल-फ़त्ह' में सामान्य रूप से व्यक्त किया है। यही सबसे प्रमुख इमाम शम्स-उल-अइम्मा हलवानी (उन पर अल्लाह की कृपा हो) के फतवे का अर्थ है।

1 फ़त्ह अल-क़दीर, किताबुस सलात, बाबुल् इमामत, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/302। 2 खुलासा अल-फ़तावा, किताबुस सलात, पाँचवाँ खंड, मकतबा हबीबिया, क्वेटा, 1/129।

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

شرح کنز الدقائق۔ وعلامہ حسن شرنبلالی در مراقی الفلاح میں امام زیلعی کے ارشاد کا بھی یہی مطلب ہے۔ علامہ حسن شرنبلالی نور الایضاح کی شرح مراقی الفلاح میں اور علامہ سید احمد طحطاوی نے حاشیہ مراقی میں بھی اسی طرح فرمایا سبحان اللہ جب اس شخص کی امامت درست نہیں جس میں ایک فسق پایا جاتا ہو تو اس شخص کو امام بنانا کس طرح درست ہوگا جس میں کئی وجہ سے فسق پایا جاتا ہے اور بعض وجہیں کفر تک پہنچاتی ہیں (نعوذ باللہ من ذلک) کیا کچھ گنجائش ہے کہ علماء ایسے شخص کے امام بنانے کو جائز رکھیں یا اس کی اقتداء کے ناجائز ہونے میں کچھ اختلاف کریں یہ درست ہے کہ فاسق کے پیچھے نماز ہونے کی ایک صورت ہے لیکن جس شخص کے اسلام ہی میں اختلاف پایا جاتا ہو اس کی امامت کو کون حلال گمان کرے گا کیا تجھے خبر نہیں کہ اسے امام بنانے میں اس کی تعظیم ہے اور وہ شرعاً قطعی طور پر حرام ہے اس کے باوجود ہمارے علماء امام ابویوسف رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ متکلمین کی امامت جائز نہیں اگرچہ ان کا عقیدہ صحیح ہو جیسے کہ امام اجل ہندوانی زاہدی صاحب قنیہ و مجتبی امام بخاری صاحب خلاصہ اور ابن ہمام صاحب فتح القدیر نے نقل کیا، امام الائمہ شمس الائمہ حلوائی کے فتوی میں

شرح کنز الدقائق۔ وعلامہ حسن شرنبلالی در مراقی الفلاح شرح متن خودش نور الایضاح ذکر کردش وعلامہ سید احمد طحطاوی در حاشیہ مراقی رحمۃ اللہ علیہم اجمعین سبحان اللہ چوں امامت فاسق بفسق واحد ارانوبت باینجا رسیدست ایں کسے کہ وجوہ عدیدہ از فسق جمع کردہ کہ ازانہا بعضے روئے بسوئے کفر آوردہ والعیاذ باللہ بیچ محل آں باشد کہ امام کردن او روا دارند یا در حرمت اقتدایش نزاعی آرند گیرم کہ نماز پس فاسق وجہ حلت دارد اما کسیکہ در نفس اسلامش خلاف

را گنجایشے باشد کیست کہ امامت او را حلال انگارد الاتری ان فی تقدیمہ تعظیمہ وھو حرام عند الشرع بالقطع معہذا علماء ما از امام ابویوسف رضی اللہ تعالی عنہ روایت کردہ اند کہ امامت متکلمان جائز نیست اگر چہ باعتقاد صحیح باشند کما نقلہ الامام الاجل الہندوانی والزاھدی صاحب القنیۃ والمجتبی والامام البخاری صاحب الخلاصۃ والامام العلامۃ المحقق حیث اطلق فی الفتح ہمیں معنی فتوای امام اجل شمس الائمہ حلوانی رحمۃ اللہ

1 فتح القدیر کتاب الصلوۃ باب الامامۃ مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱ / ۳۰۲ 2 خلاصۃ الفتاوی کتاب الصلوۃ الفصل الخامس مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۱ / ۱۲۹

Fatawa Razawiya, Volume 24

[The following was] found in his blessed handwriting as stated in Al-Khulasa, and this narration has been accepted and affirmed by all the praised Imams. In clarifying its meaning and refining its benefits, various ways have been pursued. The focus of the majority's discourse is that 'theologian' (Mutakallim) here refers to someone who is excessively engrossed in the arts of theology beyond necessity, and wastes his precious life in increasing doubts and mental gymnastics. This was stated by Imam al-Hinduwaani and Allamah Abdul Ghani al-Nabulsi in 'Al-Hadiqa al-Nadiyya', a commentary on 'Al-Muhammadiyya'. It says: 'It is narrated from Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him) that the leadership (imamate) of a theologian in prayer is not permissible even if he is on the right path. This is understood to apply to one who exceeds the measure of necessity and is deeply immersed in it, as it has been said: "Whoever seeks religion through speculative theology becomes a heretic." He does not mean by "theologian" one who follows the laws of philosophers, because their discussions are not called "theology" (ilm al-kalam) due to their departure from the laws of Islam, and it is part of the "had" (limitation), as in "Al-Bazzaziyah". Thus, the imamate of those who follow philosophy is even more rightfully impermissible, as is not hidden. In short, the pure Sharia strictly disapproves... that the aforementioned Sayyid...'

What was found from his blessed handwriting, this very thing is written as it is in 'Al-Khulasa'. This narration was accepted by all perfect Imams, and its meaning has been explained in various ways. Most have gone towards the view that 'Mutakallim' here refers to a person who has more than necessary involvement and absorption in the various arts of theology and wastes his precious life in the abundance of doubts and suspicions. This meaning was stated by Imam Hinduwaani. Allamah Abdul Ghani Nabulsi says in 'Hadiqa Nadiyya' that the narration quoted from Imam Abu Yusuf—that a theologian's imamate is not permissible even if he holds correct beliefs—means that prayer is not permissible behind someone who gives more than necessary attention and absorption to theology, as it has been said that whoever sought religious knowledge through theology became a heretic. By 'Mutakallim', Imam Abu Yusuf does not mean a person who speaks based on philosophical laws because the debates of philosophers are not called 'theology' (ilm al-kalam) as they are outside the law of Islam, and this is part of the definition (had), as in 'Bazzaziyah'.

When prayer behind those who exaggerate in theology is impermissible, then it will be impermissible behind those who claim philosophy by way of priority.

1. Al-Hadiqa al-Nadiyya Sharh al-Tariqa al-Muhammadiyya, the second type of the three types, etc., Maktaba Nooriya Razawiyya, Faisalabad, 1/332.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

[जैसा कि] अल-ख़ुलासा में कहा गया है, उनके धन्य हस्तलेखन में पाया गया है, और इस वर्णन को सभी प्रशंसित इमामों द्वारा स्वीकार और पुष्टि की गई है। इसके अर्थ को स्पष्ट करने और इसके लाभों को परिष्कृत करने में, विभिन्न तरीके अपनाए गए हैं। अधिकांश विमर्श का केंद्र यह है कि यहाँ 'धर्मशास्त्री' (मुतक़ल्लिम) से तात्पर्य उस व्यक्ति से है जो आवश्यकता से अधिक धर्मशास्त्र की कलाओं में अत्यधिक व्यस्त है, और संदेह और मानसिक व्यायाम को बढ़ाने में अपना बहुमूल्य जीवन व्यर्थ गँवा देता है। यह इमाम अल-हिंदुवानी और अल्लामा अब्दुल गनी अल-नाबुलसी द्वारा 'अल-हदीक़ा अन-नदिया' में कहा गया था, जो 'अल-मुहम्मदिया' की व्याख्या है। इसमें कहा गया है: 'इमाम अबू यूसुफ (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) से वर्णित है कि नमाज़ में एक धर्मशास्त्री का नेतृत्व (इमामत) जायज़ नहीं है, भले ही वह सही रास्ते पर हो। इसे उस व्यक्ति पर लागू माना जाता है जो आवश्यकता की सीमा से अधिक हो जाता है और इसमें गहराई से डूबा हुआ होता है, जैसा कि कहा गया है: "जो कोई सट्टा धर्मशास्त्र के माध्यम से धर्म चाहता है वह पाखंडी बन जाता है।" "धर्मशास्त्री" से उनका तात्पर्य उन लोगों से नहीं है जो दार्शनिकों के नियमों का पालन करते हैं, क्योंकि उनकी चर्चाओं को इस्लाम के नियमों से उनके प्रस्थान के कारण "धर्मशास्त्र" (इल्म अल-कलाम) नहीं कहा जाता है, और यह "हद" (सीमा) का हिस्सा है, जैसा कि "अल-बज़्ज़िया" में है। इस प्रकार, दर्शन का पालन करने वालों की इमामत और भी अधिक उचित रूप से नाजायज़ है, जैसा कि छिपा नहीं है। संक्षेप में, शुद्ध शरीयत सख्त नापसंदगी करती है... कि पूर्वोक्त सैय्यद...'

जो उनके मुबारक हाथ के लिखे हुए से मिला, वही बात लिखी है जैसा कि 'ख़ुलासा' में है। इस रिवायत को सभी कामिल इमामों ने कुबूल किया और इसका मतलब मुख्तलिफ़ तरीकों से बयान फ़रमाया। अक्सर इस तरफ गए हैं कि यहाँ 'मुतक़ल्लिम' से मुराद वो शख्स है जो इल्म-ए-कलाम के मुख्तलिफ़ फुनून में ज़रूरत से ज़्यादा डूबा रहता हो और शक-ओ-शुबहात की कसरत में अपनी कीमती उम्र जाया कर दे। यह मतलब इमाम हिंदूवानी ने बयान फ़रमाया। अल्लामा अब्दुल ग़नी नाबुलसी 'हदीक़ा नदिया' में फ़रमाते हैं कि इमाम अबू यूसुफ़ से जो ये रिवायत नक्ल की गई है कि मुतक़ल्लिम चाहे सही अकायद रखता हो उसकी इमामत नाजायज़ है, इसका मतलब ये है कि जो शख्स ज़रूरत से ज़्यादा इल्म-ए-कलाम में तवज्जो और मशगूलियत रखता हो उसके पीछे नमाज़ नाजायज़ है, जैसा कि कहा गया है कि जिसने कलाम के ज़रिये दीन का इल्म हासिल किया वो ज़ंदीक हो गया। मुतक़ल्लिम से इमाम अबू यूसुफ़ की मुराद वो शख्स नहीं जो फलासफ़ा (दर्शनशास्त्र) के

कानून पर बात करता हो क्योंकि फ़लसफ़ियों की बहसों को इल्म-ए-कलाम नहीं कहा जाता क्योंकि वो तो इस्लाम के कानून ही से खारिज हैं और ये हदों के अजज़ा में से है, जैसा कि 'बज़्ज़िया' में है। जब इल्म-ए-कलाम में गुलू (अति) करने वालों के पीछे नमाज़ नाजायज़ है तो फ़लसफ़े के दावेदारों के पीछे तो और भी ज़्यादा नाजायज़ होगी।

1. अल-हदीक़ा अन-नदिया शरह अत-तरीक़ा अल-मुहम्मदिया, तीन किस्मों में से दूसरी किस्म, आदि। मकतबा नूरिया रज़विया, फैसलाबाद, 1/332।

पृष्ठ 446 का 720

تعالٰی علیہ بخطِ مبارکش یافتہ اند کما نصّ علیہ فی الخلاصۃ وایں روایت را ہمہ ائمہ ممدوحین بقبول و تقریر گرفتہ اند و در توضیح مراد و تنقیحِ مفاد طرقِ عدیدہ رفتہ محوِ کلامِ اکثری آنست کہ اینجا مراد بمتکلم کسے ست کہ در فنونِ کلامیہ زائد بر حاجت توغل دارد و در تکثیرِ شکوک و شقاشقِ عقلہ عمرِ عزیز ضایع برد افاد ذلک الامام الہندوانی و علامہ عبدالغنی نابلسی در حدیقہ ندیہ شرح محمدیہ گوید المروی عن ابی یوسف رحمہ اللہ تعالٰی ان امامۃ المتکلم وان کان بحق لاتجوز محمول علی الزائد علی قدر الحاجۃ والموغل فیہ کما قیل من طلب الدین بالکلام تزندق ولایرید المتکلم علی قانون الفلاسفۃ لانہ لایطلق علی مباحثہم علم الکلام لخروجہ عن قانون الاسلام و ہو من اجزاء الحد، کما فی البزازیۃ، پس امامتِ متفلسفان اولی واجدر بعدمِ جوازست کمالایخفی، بالجملہ شرعِ مطہر زنہار نہ پسندد کہ سید موصوف را

جو ان کے خط مبارک سے پایا گیا یہی بات لکھی ہے جیسے کہ خلاصہ میں ہے اس روایت کو تمام ائمہ کاملین نے قبول کیا اور اس کی مراد مختلف طریقوں سے بیان فرمائی ہے، اکثر اس طرف گئے ہیں کہ اس جگہ متکلم سے مراد وہ شخص ہے جو علم کلام کے مختلف فنون میں ضرورت سے زیادہ انہماک رکھتا ہو اور شکوک وشبہات کی کثرت میں عمر عزیز کو ضائع کر دے، یہ مطلب امام ہندوانی نے بیان فرمایا، علامہ عبدالغنی نابلسی حدیقہ ندیہ میں فرماتے ہیں کہ امام ابو یوسف سے جو یہ روایت نقل کی گئی ہے کہ متکلم اگر چہ صحیح عقائد رکھتا ہو اس کی امامت ناجائز ہے اس کا مطلب یہ ہے کہ جو شخص ضرورت سے زیادہ علم کلام میں توجہ اور توغل رکھتا ہو اس کے پیچھے نماز ناجائز ہے جیسے کہا گیا ہے کہ جس نے کلام کے ذریعے علم دین کو طلب کیا وہ زندیق ہو گیا متکلم سے امام ابو یوسف کی مراد وہ شخص نہیں جو فلاسفہ کے قانون

پر کلام کرتا ہو کیونکہ فلسفیوں کی بحثوں کو علم کلام نہیں کہا جاتا کیونکہ وہ تو قانون اسلام ہی سے خارج ہیں اور یہ اجزاء حد میں سے ہے، جیسا کہ بزازیہ میں ہے جب علم کلام میں غلو کرنے والوں کے پیچھے نماز ناجائز ہے تو فلسفے کے دعویداروں کے پیچھے بطریق اولی ناجائز ہو گی

۱ الحديقة الندية شرح الطريقة المحمدية النوع الثانی من الانواع الثلثہ الخ مکتبہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۱/۳۳۲

Fatawa Razawiya, Volume 24

[Left Column]: Despite having such virtues and complete entitlement, if they remove him from the office of Imamate, and appoint this person (the unworthy one) in his place despite all his sins, prohibitions, and destructive traits, then surely anyone who engages in this reprehensible act will be a partner with that pretender (philosopher) in sin. They will be an assistant in causing harm and oppression, violating the dignity of lineage (Syed) and knowledge. They will be subject to many of the aforementioned atrocities, as is not hidden from one with an enlightened heart. And Allah is the Guide in every beginning and end. Allah, the Exalted, says: "And do not cooperate in sin and transgression"[1]—and do not help one another in sin and oppression. Al-Hakim, Al-Uqayli, Al-Tabarani, Ibn 'Adi, and Al-Khatib al-Baghdadi have narrated through their chains of transmission from Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them both) that the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whoever appoints a man from a group while there is someone among them who is more pleasing to Allah than him, has betrayed Allah, His Messenger, and the believers."[2] This means that if anyone appoints a man from a group to any of their tasks while there is someone among them who is more preferred (more suitable/pious)...

[Right Column]: ...as it is not hidden. In short, the pure Sharia will never approve of removing the aforementioned Syed from the office of Imamate despite his many virtues and entitlement, and appointing this person in his place despite all his sins and forbidden actions. Surely, the person who does this undesirable act will be a partner with this claimant of philosophy in sin, in providing help for it, and in causing harm, oppression, and insulting the dignity of lineage and knowledge, and in many previous evils, as is not hidden from the 'Sahib-e-Sharh-e-Sadr' (enlightened person). Allah the Exalted says: "And do not cooperate in sin and transgression." Do not help each other in sin and oppression. Al-Hakim, Al-Uqayli, Al-Tabarani, Ibn 'Adi, and Al-Khatib al-Baghdadi narrated through their chains from Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them both) that the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Whoever appoints a man from a group while there is someone among them who is more pleasing to Allah than him, has betrayed Allah, His Messenger, and the believers." The person who appoints any man from a group over any of their tasks while among those people there is someone more [pleasing than him]...

[1] Al-Quran al-Karim 5/2 [2] Al-Mustadrak lil-Hakim, Book of Rulings, Dar al-Fikr Beirut 4/92; Al-Du'afa al-Kabir, biography 295, Husain bin Qais, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut 1/448.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

[बायां कॉलम]: इन तमाम गुणों और पूर्ण अधिकार باوجود کے، यदि वे उन्हें इमामत के पद से हटाते हैं और इस व्यक्ति (अयोग्य) को उसके तमाम पापों, वर्जनाओं और विनाशकारी प्रवृत्तियों के बावजूद उसके स्थान पर नियुक्त करते हैं, तो निश्चित रूप से जो कोई भी इस निंदनीय कार्य में शामिल होगा, वह उस ढोंगी (दार्शनिक) के साथ पाप में भागीदार होगा। वह हानि पहुँचाने और उत्पीड़न करने में, और वंश (सैयद) और ज्ञान की गरिमा का अपमान करने में सहायक होगा। वे ऊपर वर्णित कई अत्याचारों के पात्र होंगे, जैसा कि प्रबुद्ध हृदय वाले व्यक्ति से छिपा नहीं है। और अल्लाह हर शुरुआत और अंत में मार्गदर्शक है। अल्लाह तआला फरमाता है: "और पाप और उल्लंघन में एक-दूसरे का सहयोग न करो"[1] — और पाप और उत्पीड़न में एक-दूसरे की मदद न करें। अल-हाकिम, अल-उकैली, अल-तबरानी, इब्न अदी और अल-खतीब अल-बगदादी ने अपनी श्रृंखलाओं के माध्यम से अब्दुल्ला बिन अब्बास (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से रिवायत की है कि दुनिया के मालिक (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने फरमाया: "जिसने किसी समूह में से किसी व्यक्ति को नियुक्त किया जबकि उनमें कोई ऐसा व्यक्ति मौजूद था जो अल्लाह को उससे अधिक प्रिय था, तो उसने अल्लाह, उसके रसूल और ईमान वालों के साथ विश्वासघात किया है।"[2] इसका अर्थ है कि यदि कोई व्यक्ति किसी समूह के किसी व्यक्ति को उनके किसी कार्य के लिए नियुक्त करता है जबकि उनके बीच कोई ऐसा व्यक्ति है जो अधिक पसंदीदा (अधिक उपयुक्त/परहेजगार) है...

[दायां कॉलम]: ...जैसा कि छिपा नहीं है। संक्षेप में, शुद्ध शरीयत कभी भी इस बात को पसंद नहीं करेगी कि उक्त सैयद को उनके कई गुणों और पात्रता के बावजूद इमामत के पद से हटा दिया जाए, और इस व्यक्ति को उसके सभी पापों और निषिद्ध कार्यों के बावजूद उनके स्थान पर नियुक्त किया जाए। निश्चित रूप से, जो व्यक्ति यह अवांछनीय कार्य करेगा, वह इस दर्शन के दावेदार के साथ पाप में, उसकी सहायता करने में, और हानि, उत्पीड़न, और वंश तथा ज्ञान की गरिमा के अपमान और कई पिछली बुराइयों में भागीदार होगा, जैसा कि 'साहिब-ए-शराह-ए-सदर' (प्रबुद्ध व्यक्ति) से छिपा नहीं है। अल्लाह तआला फरमाता है: "और पाप और शत्रुता में एक-दूसरे की सहायता न करो।" पाप और उत्पीड़न में एक-दूसरे की मदद न करें। अल-हाकिम, अल-उकैली, अल-तबरानी, इब्न अदी और अल-खतीब अल-बगदादी ने अपनी सनदों (श्रृंखलाओं) से अब्दुल्ला बिन अब्बास (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से रिवायत की कि सरवर-ए-आलम (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) फरमाते हैं: "जिसने किसी जमात (समूह) में से किसी व्यक्ति को नियुक्त किया जबकि उनके बीच

कोई ऐसा था जो अल्लाह को उससे अधिक पसंद था, तो उसने अल्लाह, उसके रसूल और मोमिनों (ईमान वालों) के साथ खयानत (विश्वासघात) की।" जो व्यक्ति एक जमात में से किसी आदमी को उनके किसी काम पर मुकर्रर (नियुक्त) करता है जबकि उन लोगों में उससे ज्यादा [पसंदीदा कोई मौजूद हो]...

[1] अल-कुरान अल-करीम 5/2 [2] अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताबुल अहकाम, दारुल फिक्र बेरूत 4/92; अल-ज़ुफ़ा अल-कबीर, जीवनी 295, हुसैन बिन कैस, दारुल कुतुब अल-इल्मिया बेरूत 1/448.

فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۴

[بایاں کالم]: باوصف چنیں فضائل واستحقاق کل از منصب امامت بہ آرند وایں کس را با آنمہ معاصی ومنہای وذواہی و تباہی بجالیش بر دارند لاجرم ہر کہ بایں کار واجب الانکار پردازد شریک آں متفلسف باشد در اثم و معاونش در ایذا و ظلم مستحق بشان سیادت و علم و مورد بسیاری از شنائع مذکورۃ الصدر کما لا یخفی علی المنشرح الصدر واللہ الھادی في کل ورد وصدر حضرت حق جل وعلا فرماید: "وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ" ۱ و بہمدگر مکنید بر گناہ و ستم۔ وحاکم و عقیلی و طبرانی و ابن عدی و خطیب بغدادی با سانید خود ہا از عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما روایت کنند کہ جناب سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم می فرمایند: من استعمل رجلا من عصابۃ وفیھم من ھو ارضی اللہ منہ فقد خان اللہ ورسولہ والمؤمنین ۲ یعنی ہر کہ مردی را از جماعتی بر کارے از کار ہائے ایشاں نصب کرد و در ایشاں کسے است کہ پسندیدہ تر است...

[دایاں کالم]: جیسا کہ مخفی نہیں۔ الحاصل شریعت مطہرہ ہرگز پسند نہیں کرے گی کہ سید موصوف کو اتنے فضائل اور مستحق ہونے کے باوجود منصب امامت سے بر طرف کر دیا جائے اور اس شخص کو تمام گناہوں ممنوع حرکتوں کے باوجود ان کی جگہ مقرر کر دیا جائے یقیناً جو شخص یہ نا پسندیدہ کام کرے گا وہ گناہ اور اس کی امداد ، ایذاء، ظلم ، شان سیادت اور علم کی توہین اور بہت ساری سابقہ قباحتوں میں فلسفے کے اس دعویدار کا شریک ہوگا جیسے کہ صاحب شرح صدر پر مخفی نہیں ، اللہ تعالیٰ فرماتا ہے "وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ" گناہ اور ظلم میں ایک دوسرے کی امداد نہ کرو۔ حاکم ، عقیلی ، طبرانی ، ابن عدی اور خطیب بغدادی نے اپنی سندوں سے عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی کہ سرور عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں : من استعمل رجلا من عصابتہ وفیھم من ھو ارضی اللہ منہ فقد خان اللہ

ورسولہ والمؤمنین جو شخص ایک جماعت میں سے کسی آدمی کو ان کے کسی کام پر مقرر کرتا ہے حالانکہ ان لوگوں میں اس سے زیادہ پسندیدہ کوئی موجود ہو...

۱ القرآن الکریم ۵/۲ ۲ المستدرک للحاکم کتاب الاحکام دار الفکر بیروت ۴ / ۹۲ ، الضعفاء الکبیر ترجمہ ۲۹۵ حسین بن قیس دار الکتب العلمیہ بیروت ۱ / ۴۴۸

Fatawa Ridawiyya - Volume 24

[Right Column - Urdu Translation/Explanation] ...an individual acceptable in the court of Divine is present, then he has betrayed Allah, His Messenger, and the Muslims. Abu Ya'la narrated from Hudhayfah bin al-Yaman (Allah be pleased with him) that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whosoever appoints a person over a group of ten people while knowing that there is someone better than him among those ten, then he has betrayed Allah, His Messenger, and the community of Muslims." (1) Allamah Munawi (may Allah have mercy on him) in his commentary 'At-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir' states regarding the previous Hadith: 'man ista'mala rajulan min 'asabatin', meaning whoever appoints someone as a leader, guardian, representative, or Imam of prayer for a group, while there were others more acceptable to Allah present, then he is a traitor. Imam Bukhari (2) in 'At-Tarikh', Ibn Asakir from Abu Umamah al-Bahili, and Tabarani in 'al-Mu'jam al-Kabir' from Marthad al-Ghanawi (may Allah be pleased with them) narrated that the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) said: (and this is the Hadith of Abu Umamah) "If it pleases you that your prayers be accepted, then let the best among you lead you in prayer." If you desire your prayer to be accepted, then your best individual should lead you.

[Left Column - Original Persian and Arabic Text] From him, in the sight of God, he has indeed betrayed God, His Messenger, and the Muslims. Abu Ya'la narrated from Hudhayfah bin al-Yaman (may Allah be pleased with him) attributing it to the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him): "Whichever man appoints a man over ten souls while knowing that among the ten there is one better than whom he appointed, then he has indeed cheated Allah, cheated His Messenger, and cheated the group of Muslims." Allamah Munawi (may Allah have mercy on him) in 'at-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir' under the first Hadith says: "Whoever appoints a man from a group, meaning sets him over them as a leader, a manager, a head, or an Imam for prayer..." Imam Bukhari in 'at-Tarikh' and Ibn Asakir from Abu Umamah al-Bahili and Tabarani in 'al-Mu'jam al-Kabir' from Marthad al-Ghanawi (may Allah be pleased with both of them) narrated that the Master of the World (may Allah's peace and blessings be upon him) said (and this is the Hadith of Abu Umamah): "If it pleases you that your prayers be accepted, then let the best among you lead you." If it makes you happy that your prayer is accepted, then the best among you must lead you. Daraqutni (3) and Bayhaqi from Abdullah...

[Footnotes] 1. Kanz al-Ummal, with reference to 'A, from Hudhayfah, Hadith 17653, Muassasat al-Risalah, Beirut, 6/19. 2. At-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir, under the Hadith "man ista'mala rajulan...", Maktabat al-Imam al-Shafi'i, Riyadh, 2/396. 3. Kanz al-Ummal, with reference to Ibn Asakir, Hadith 20433, Muassasat al-Risalah, Beirut, 7/596; Kanz al-Ummal, with reference to Tab[arani], Hadith 27433, Muassasat al-Risalah, Beirut, 7/597; Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 7777, Muassasat al-Risalah, Beirut, 20/328.

फ़तवा रज़विया - जिल्द 24

[दायाँ स्तंभ - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] ...ईश्वर की दरगाह में स्वीकार्य व्यक्ति मौजूद है, तो उसने अल्लाह, उसके रसूल और मुसलमानों के साथ विश्वासघात किया है। अबू याला ने हुजैफ़ा बिन अल-यमन (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रिवायत की है कि नबी (अल्लाह की उन पर शांति और कृपा हो) ने फ़रमाया: "जिस किसी ने दस लोगों की जमात पर एक व्यक्ति को नियुक्त किया, जबकि वह जानता था कि उन दस लोगों में उससे बेहतर कोई मौजूद है, तो उसने अल्लाह, उसके रसूल और मुसलमानों के समुदाय के साथ विश्वासघात किया है।" (1) अल्लामा मुनावी (अल्लाह उन पर दया करे) अपनी टिप्पणी 'अत-तयसीर शरह अल-जामि' अल-सगीर' में पिछली हदीस के बारे में कहते हैं: 'मन इस्तअमला रजुलन मिन असाबा', अर्थात जिस किसी ने किसी को किसी समूह के लिए नेता, रक्षक, प्रतिनिधि, या नमाज़ का इमाम नियुक्त किया, जबकि वहाँ अल्लाह के पास अधिक स्वीकार्य अन्य लोग मौजूद थे, तो वह विश्वासघाती है। इमाम बुखारी (2) ने 'अत-तारीख' में, इब्न असाकिर ने अबू उमामा अल-बाहीली से, और तबरानी ने 'अल-मुअजम अल-कबीर' में मरथद अल-गनवी (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से रिवायत की है कि विश्व के स्वामी (अल्लाह की उन पर शांति और कृपा हो) ने फ़रमाया: (और यह अबू उमामा की हदीस है) "यदि तुम्हें यह प्रसन्न करता है कि तुम्हारी नमाज़ स्वीकार की जाए, तो तुममें से जो सबसे अच्छे हों, उन्हें अपनी नमाज़ का नेतृत्व करने दें।" यदि आप चाहते हैं कि आपकी नमाज़ स्वीकार हो, तो आपके बेहतरीन व्यक्ति को आपका नेतृत्व करना चाहिए।

[बायाँ स्तंभ - मूल फ़ारसी और अरबी पाठ] खुदा के नज़दीक उसके पास से, तो वास्तव में उसने खुदा, उसके रसूल और मुसलमानों के साथ विश्वासघात किया है। अबू याला ने हुजैफ़ा बिन अल-यमन (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रिवायत की, इसे नबी (अल्लाह की उन पर शांति और कृपा हो) तक पहुँचाते हुए: "जो कोई व्यक्ति दस आत्माओं पर एक व्यक्ति को नियुक्त करता है, जबकि वह जानता है कि उन दस में से कोई ऐसा है जो उससे बेहतर है जिसे उसने नियुक्त किया है, तो उसने वास्तव में अल्लाह को धोखा दिया है, उसके रसूल को धोखा दिया है, और मुसलमानों की जमात को धोखा दिया है।" अल्लामा मुनावी (अल्लाह उन पर दया करे) 'अत-तयसीर शरह अल-जामि' अल-सगीर' में पहली हदीस के तहत कहते हैं: "जिसने किसी समूह से एक व्यक्ति को नियुक्त किया, अर्थात उसे उन पर एक अमीर, एक प्रबंधक, एक मुखिया, या नमाज़ के लिए इमाम के रूप में स्थापित किया..." इमाम बुखारी 'अत-तारीख' में और इब्न असाकिर अबू उमामा अल-बाहीली से और तबरानी 'अल-मुअजम

अल-कबीर' में मरथद अल-गनवी (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से रिवायत करते हैं कि विश्व के स्वामी (अल्लाह की उन पर शांति और कृपा हो) ने फ़रमाया (और यह अबू उमामा की हदीस है): "यदि तुम्हें यह प्रसन्न करता है कि तुम्हारी नमाज़ स्वीकार की जाए, तो तुममें से जो सबसे अच्छे हों, उन्हें अपना नेतृत्व करने दें।" यदि यह आपको प्रसन्न करता है कि आपकी नमाज़ स्वीकार की जाए, तो आपमें से सबसे अच्छे व्यक्ति को आपका नेतृत्व करना चाहिए। दाराकुतनी (3) और बैहकी ने अब्दुल्लाह से...

[पादलेख] 1. कंज़ अल-उम्माल, 'अ' के संदर्भ के साथ, हुजैफ़ा से, हदीस 17653, मुअस्ससत अल-रिसाला, बेरुत, 6/19। 2. अत-तयसीर शरह अल-जामि' अल-सगीर, हदीस "मन इस्तअमला रजुलन..." के तहत, मकतबत अल-इमाम अल-शाफ़ई, रियाद, 2/396। 3. कंज़ अल-उम्माल, इब्न असाकिर के संदर्भ के साथ, हदीस 20433, मुअस्ससत अल-रिसाला, बेरुत, 7/596; कंज़ अल-उम्माल, तब[रानी] के संदर्भ के साथ, हदीस 27433, मुअस्ससत अल-रिसाला, बेरुत, 7/597; अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस 7777, मुअस्ससत अल-रिसाला, बेरुत, 20/328।

فتاویٰ رضویہ - جلد ۲۴

[دایاں کالم] مقبول بارگاہِ الہی آدمی موجود ہے تو اس نے اللہ و رسول اور مسلمانوں کی خیانت کی ابو یعلی نے حذیفہ بن یمان سے روایت کی کہ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جس شخص نے دس آدمیوں کی جماعت پر ایک شخص کو مقرر کیا حالانکہ اسے علم ہے کہ ان دس آدمیوں میں مقرر شدہ آدمی سے افضل موجود ہے تو اس نے اللہ ورسول اور مسلمانوں سے خیانت کی، علامہ منادی1۔ علامہ مناوی رحمہ اللہ تعالیٰ در شرح تیسیر شرح جامع صغیر میں سابقہ حدیث کے تحت فرماتے ہیں کہ من استعمل رجلا من عصابة یعنی جس شخص نے کسی آدمی کو ایک جماعت کا امیر یا محافظ یا نمائندہ یا نماز کا امام بنادیا حالانکہ اس سے زیادہ مقبولِ الہی موجود تھے تو وہ خائن ہے، امام بخاری2 تاریخ میں، ابن عساکر نے ابوامامہ باہلی سے اور طبرانی نے معجم کبیر میں مرثد غنوی رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی کہ سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں (وھذا حدیث ابی امامة) ان سرکم ان تقبل صلوتکم فلیؤمکم خیارکم اگر تمہیں پسند ہے کہ تمہاری نماز مقبول ہو تو ایسا شخص امام بنے جو تم میں سے افضل ہو،

[بایاں کالم] ازوے نزدِ خدا پس تحقیق او خیانت کرد خدا و رسول و مسلماناں را واخرج ابویعلی عن حذیفة بن الیمان رضی اللہ تعالی عنه یرفعه الی النبی صلی اللہ تعالی علیه وسلم ایما رجل استعمل رجلا علی عشرة انفس و علم ان فی العشرة افضل ممن استعمل فقد غش اللہ وغش رسوله وغش جماعة المسلمین - علامہ مناوی رحمہ اللہ تعالیٰ در شرح تیسیر شرح جامع صغیر زیر حدیث اول گوید من استعمل رجلا من عصابة ای نصبه علیهم امیرا وقیما او عریفا او اماما للصلوة امام بخاری در تاریخ وابن عساکر از ابوامامہ باہلی وطبرانی در معجم کبیر از مرثد غنوی رضی اللہ تعالیٰ عنما روایت کنند کہ سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماید (وھذا حدیث ابی امامة) ان سرکم ان تقبل صلوتکم

فليؤمكم خياركم اگر شما را خوش آيد كه نماز شما ر مقبول شود بايد كه شمارا بهترين شما امامت كند دار قطنى3 و بيهقى از عبد الله

[حواشى] 1 كنزالعمال بحواله ع عن حذيفه حديث ۱۷۶۵۳ مؤسسة الرسالة بيروت ۱۹/۶ 2 التيسير شرح الجامع الصغير تحت حديث من استعمل رجلا الخ مكتبة الامام الشافعى رياض ۲/ ۳۹۶ 3 كنزالعمال بحواله ابن عساكر حديث ۲۰۴۳۳ مؤسسة الرسالة بيروت ۷ / ۵۹۶ ، كنز العمال بحواله طب حديث ۲۷۴۳۳ مؤسسة الرسالة بيروت ۷ / ۵۹۷ ، المعجم الكبير حديث ۷۷۷۷ مؤسسة الرسالة بيروت ۲۰/ ۳۲۸

Ibn Umar (may Allah be pleased with them) narrates that the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Make your best ones your Imams, for they are your representatives between you and your Lord." [1] Appoint the best among you as Imams, for they are your ambassadors between you and your Lord, the Almighty. There is also a narration on this subject from Wathilah bin al-Asqa' (may Allah be pleased with him) recorded by al-Tabarani in 'Al-Mu'jam al-Kabir'.

Daraqutni and Bayhaqi narrate from Hazrat Abdullah Ibn Umar (may Allah be pleased with them) that the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Make your best ones your Imams, for they are your representatives between you and your Lord." Appoint your best person as Imam because they are representatives between you and your Lord. Tabarani has also narrated from Wathilah bin al-Asqa' in Al-Mu'jam al-Kabir regarding this.

In short, the summary of the ruling is that this person is from among the worst of the wicked and transgressors. Due to several reasons, he deserves severe punishment, and his leading the prayer (Imamat) is prohibited and illegitimate. Rather, it is better for Muslims to avoid his company and never allow that a Sayyid scholar (Faqih) be removed from Imamat and this foolish pseudo-philosopher be appointed and honored in his place. Whoever undertakes this task himself deserves punishment and becomes a sinner. How can there be priority and Imamat [for him]? Rather, it is appropriate for this person to turn away from the aforementioned abominations, wash the stain of ingratitude from his forehead, say farewell to the cursed philosophy, believe in the excellence of knowledge and the greatness of its truth, consider affectation, philosophizing, and arrogant speech as vile and abhorrent, recite the Kalima Tayyiba of Islam anew, and thereafter perform a renewal of marriage. For this is the most cautious path, as...

Summary of the Answer: This person is a worst-class sinner and transgressor and, due to numerous reasons, is deserving of severe punishment. His Imamat is illegitimate and forbidden, and Muslims should abstain from his company. It is absolutely not permitted that this Sayyid Faqih be dismissed from Imamat and this foolish claimant of philosophy be appointed in his place. Whoever pursues this matter, punishment is necessary for them. Instead, this person should desist from the aforementioned flaws, wash the stain of ungratefulness from his forehead, bid farewell to the rejected philosophy, and believe in the virtue of religious knowledge

and the greatness of its truth. He should consider philosophy-worship, affectation, and absurdity as bad and dislike them, and renew his Islam by reciting the Kalima Tayyiba anew.

[1] Sunan al-Daraqutni, Chapter on shortening the recitation in case of need, Nashr-us-Sunnah Multan 2/98.

इब्ने उमर (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो) रिवायत करते हैं कि आका-ए-दो-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "अपने में से सबसे बेहतरीन लोगों को अपना इमाम बनाओ, क्योंकि वे तुम्हारे और तुम्हारे रब के बीच तुम्हारे प्रतिनिधि (वफ़द) हैं।" [1] अपने बेहतरीन लोगों को इमाम बनाओ क्योंकि वे तुम्हारे और तुम्हारे रब अज़्ज़-ओ-जल्ल के बीच तुम्हारे सफ़ीर (दूत) हैं। इस विषय में तबरानी ने 'अल-मुअजम अल-कबीर' में वाथिला बिन अल-असक़ा (अल्लाह उनसे राज़ी हो) से भी रिवायत की है।

दाराकुत्नी और बैहक़ी हज़रत अब्दुल्ला इब्ने उमर (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो) से रिवायत करते हैं कि आका-ए-दो-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "अपने में से सबसे बेहतरीन लोगों को अपना इमाम बनाओ, क्योंकि वे तुम्हारे और तुम्हारे रब के बीच तुम्हारे प्रतिनिधि हैं।" अपने बेहतरीन आदमी को इमाम बनाओ क्योंकि वे तुम्हारे और तुम्हारे रब के बीच नुमाइंदे (प्रतिनिधि) हैं। इस बारे में तबरानी ने मुअजम कबीर में वाथिला बिन अल-असक़ा से भी रिवायत की है।

कुल मिलाकर हुक्म का सारांश यह है कि यह व्यक्ति सबसे बुरे फासिक़ों और गुनहगारों में से है और कई कारणों से कड़ी सज़ा का हक़दार है। उसका इमामत करना मना और नाजायज़ है। बल्कि मुसलमानों के लिए बेहतर है कि उसकी सोहबत से बचें और कभी भी इसकी इजाज़त न दें कि उस सैय्यद फ़क़ीह (विद्वान) को इमामत से हटा दिया जाए और इस बेवक़ूफ़ दर्शनशास्त्र के दावेदार को उनकी जगह नियुक्त और सम्मानित किया जाए। जो कोई भी इस काम को करने की कोशिश करेगा वह खुद सज़ा का हक़दार और गुनहगार होगा। इमामत और प्रधानता की तो बात ही क्या, बल्कि इस व्यक्ति को चाहिए कि ऊपर बताई गई बुराइयों से बाज़ आए, अपनी पेशानी से नाशुक्री का दाग धोए, लानती फ़िलॉसफ़ी को अलविदा कहे, इल्म की फ़ज़ीलत और उसकी सच्चाई की बड़ाई पर ईमान लाए, बनावट, फ़िलॉसफ़ी और फालतू की बातों को बुरा और घिनौना समझे, और नए सिरे से इस्लाम का कलमा-ए-तय्यिबा पढ़े और उसके बाद अपने निकाह का नवीनीकरण (तजदीद) करे। क्योंकि यही सबसे ज़्यादा एहतियात वाला रास्ता है जैसा कि...

जवाब का सारांश: यह व्यक्ति बदतरीन फासिक़-ओ-फ़ाजिर है और अनगिनत वजहों से सख़्त सज़ा का मुस्तहिक़ है। उसकी इमामत नाजायज़ और ममनू (वर्जित) है और मुसलमानों को उसकी सोहबत से परहेज़ करना चाहिए। हरगिज़ इजाज़त नहीं कि उस सैय्यद फ़क़ीह को इमामत से बरतरफ़ किया

जाए और फ़िलॉसफ़ी के इस दावेदार बेवक़ूफ़ को उसकी जगह मुक़र्रर किया जाए। जो शख़्स इस काम के दर-पे होगा उसके लिए सज़ा ज़रूरी है। बल्कि उस शख़्स को चाहिए कि मज़कूरा-बाला (ऊपर बताई गई) ख़राबियों से बाज़ आए और नाशुक्री का दाग़ अपने माथे से धोए और मरदूद फ़िलॉसफ़ी को रुख़सत करे और इल्म-ए-दीन की फ़ज़ीलत और उसके हक़ की बुज़ुर्गी पर ईमान लाए। फ़िलॉसफ़ी-परस्ती, तकल्लुफ़ और बेहुदगी को बुरा समझे और नापसंद रखे और अज़-सरे-नौ कलमा-ए-तय्यिबा पढ़कर इस्लाम की तजदीद करे।

[1] सुनन अल-दाराकुत्नी, अध्याय: ज़रूरत के समय क़िरात को छोटा करना, नश्र-उस-सुन्ना मुल्तान 2/98।

ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما روایت دارند، سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرمایا اجعلوا ائمتکم خیارکم فانہم وفدکم فیما بینکم وبین ربکم [۱] بہتران خودرا امام کنید کہ ایشاں سفیر شمایند میان شما و پروردگار شما عزوجل وفی الباب عن واثلۃ بن الاسقع رضی اللہ تعالیٰ عنہ اخرجہ الطبرانی فی المعجم الکبیر۔

دار قطنی اور بیہقی حضرت عبداللہ ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کرتے ہیں کہ سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: اجعلوا ائمتکم خیارکم فانہم وفدکم فیما بینکم وبین ربکم اپنے بہترین آدمی کو امام بناؤ کیونکہ وہ تمہارے اور تمہارے رب کے درمیان نمائندے ہیں۔ اس بارے میں طبرانی نے معجم کبیر میں واثلہ بن الاسقع سے بھی روایت کی ہے۔

الحاصل خلاصہ حکم آنست کہ ایں کس از بدترین فساق وفجار است و بوجوہ چند در چند تعزیر شدید راسز وار و امامتش ممنوع وناروا بلکہ مسلماناں را از صحبتش احتراز اولی وزنہار رخصت نباشد کہ آں سید فقیہ را از امامت براندازند و ایں متفلسف سفیہ را بجایش مقرر وموقر سازند کہ متصدی ایں کار شود خود واجب التعزیر وگنہ گار شود تقدیم کفو وامامت از کجابلکہ ایں کس را می شاید کہ از شناعات مذکورہ خود باز آید داغ کفران از جبینش وفلسفہ ملعونہ راوداع گوید وبر فضل علم وبزرگی حقش ایمان آرد و تکلف وتفلسف وتشدق و تصلف را قبیح پندارد و شنیع انگارد واز سر نو کلمہ طیبہ اسلام خواند و بعد ازاں تجدید نکاح بتقدیم رساند فان ذلک ھو الاحوط کما

خلاصہ جواب: یہ شخص بدترین فاسق وفاجر ہے اور بے شمار وجوہ کی بناء پر سخت سزا کا مستحق ہے اس کی امامت ناجائز اور ممنوع ہے اور مسلمانوں کو اس کی صحبت سے پرہیز کرنا

چاہئے اور ہر گز اجازت نہیں کہ اس سید فقیہ کو امامت سے بر طرف کیا جائے اور فلسفے کے اس دعویدار بیوقوف کو اس کی جگہ مقرر کیا جائے جو شخص اس کام کے در پے ہو گا خود اس کے لئے سزا ضروری ہے بلکہ اس شخص کو چاہئے کہ مذکورہ بالا خرابیوں سے باز آئے اور ناشکری کا داغ اپنے ماتھے سے دھوئے اور مردود فلسفے کو رخصت کرے اور علم دین کی فضیلت اور اس کے حق کی بزرگی پر ایمان لائے فلسفہ پرستی تکلف اور بیہودگی کو برا سمجھے اور ناپسند رکھے اور ازسر نو کلمہ طیبہ اسلام پڑھ کر اسلام کی تجدید

[۱] سنن الدار قطنی باب تخفیف القراۃ الحاجۃ نشر السنۃ ملتان ۹۸/۲

(Arabic Section): It becomes evident upon reviewing Al-Durr al-Mukhtar and other works of the perfected scholars. And Allah, the Glorified and Exalted, knows best, and His knowledge, glorified be His majesty, is most complete and most precise. Only.

(Urdu Section): After this, he should renew the marriage (Nikah); there is caution in this, as it will become apparent from looking into Durr al-Mukhtar etc. And Allah, the Glorified and Exalted, knows best, and His knowledge, glorified be His majesty, is most complete and most precise. Only.

Treatise Al-Huquq li-Tarh al-'Uquq Concluded.

(अरबी अनुभाग): अद-दुर्रुल मुख्तार और अन्य मुकम्मल विद्वानों की किताबों को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है और उसका इल्म, उसकी महिमा सबसे पूर्ण और सबसे सटीक है। बस।

(उर्दू अनुभाग): इसके बाद वह निकाह की तजदीद (नवीनीकरण) करे, इसी में एहतियात (सावधानी) है, जैसा कि दुर्रे मुख्तार वगैरह देखने से ज़ाहिर हो जाएगा। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है और उसका इल्म, उसकी महिमा सबसे पूर्ण और सबसे सटीक है। बस।

रिसाला (लघु पुस्तक) अल-हक़ूक़ लि-तरहिल उक़ूक़ समाप्त हुआ।

یظھر بمراجعة الدرالمختار وغیرہ من اسفار الکملة، واللہ سبحنہ و تعالی اعلم و علمہ جل مجدہ اتم واحکم فقط

اس کے بعد تجدید نکاح کرے، اسی میں احتیاط ہے، جیسے کہ در مختار وغیرہ دیکھنے سے ظاہر ہوجائے گا واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم فقط

رسالہ الحقوق لطرح العقوق ختم ہوا

Fatawa Razawiyya Volume 24

Treatise Mash'alat al-Irshad fi Huquq al-Awlad (The Torch of Guidance on the Rights of Children (Upon Parents))

Question 167: From Soron, District Etah, Mohalla Malik Zadgan, sent by Hamid Hasan Sahib, 7 Jumada al-Ula 1310 AH.

What do the scholars of religion say regarding these matters: how much right does a son have over his father? If there is a right and he does not fulfill it, what is the Sharia ruling for him? Please write in detail. Explain and be rewarded. (T)

Answer:

Although Allah Almighty has declared the right of the father over the child to be extremely great, to the extent that He mentioned it alongside His own right:

"Give thanks to Me and to your parents" (1) "Acknowledge My right and that of your parents." However, the right of the child over the father has also been made significant, because a child holds the most special and specific position, combining all rights: general Islam, then specific neighborliness, then specific kinship, and then specific family. As the level of specificity increases, the right becomes more intense and emphasized. Noble scholars in their illustrious books such as Ihya al-Ulum, 'Ayn al-Ulum, Madkhal, Kimya-e-Sa'adat, Zakhirat al-Muluk, etc., have touched upon the rights of children very briefly. However, I am turning my attention only towards the Marfu' (elevated) Hadiths of the radiant Prophet, the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him). With the grace of Allah, the Exalted, I hope that this few-word writing of this humble servant will prove to be so beneficial and comprehensive...

1 Quran al-Karim 31/14 Page 452 of 720

फ़तावा रज़विया खंड २४

रिसाला (लघु पुस्तिका) मशअ़लतुल इरशाद फ़ी हुक़ूक़िल औलाद (माता-पिता पर बच्चों के अधिकारों के संबंध में मार्गदर्शन का चिराग)

मसला १६७: सोरों, ज़िला एटा, मोहल्ला मलिक ज़ादगान से प्रेषक हामिद हसन साहब, ७ जमादी-उल-उला १३१० हिजरी।

धर्म के विद्वान इन मसलों में क्या कहते हैं कि पिता पर बेटे का कितना हक़ है? यदि हक़ है और वह उसे अदा न करे तो उसके लिए शरीअत का हुक्म क्या है? विस्तार से लिखें। बयान फरमाएं और पुण्य (अज्र) पाएं। (त)

जवाब:

यद्यपि अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने पिता के हक़ को संतान पर अत्यंत महान बताया है, यहाँ तक कि अपने हक़ के साथ उसका ज़िक्र फ़रमाया कि:

"मेरा शुक्र अदा कर और अपने माता-पिता का।" (१) "हक़ मान मेरा और अपने माँ-बाप का।" मगर औलाद का हक़ भी पिता पर महान रखा है, क्योंकि औलाद मुतलक़ (निरपेक्ष) इस्लाम, फिर विशेष पड़ोस, फिर विशेष रिश्तेदारी, फिर विशेष परिवार, इन सब अधिकारों का संग्रह होकर सबसे अधिक विशेष विशिष्टता रखती है। और जिस कदर विशेषता बढ़ती जाती है, हक़ उतना ही अधिक और ताकीदी होता जाता है। विद्वानों ने अपनी महान पुस्तकों जैसे इह्या-उल-उलूम, अ़ैन-उल-उलूम, मदख़ल, कीमिया-ए-साअ़दत, ज़ख़ीरतुल मुलूक आदि में औलाद के अधिकारों का बहुत संक्षेप में ज़िक्र किया है, लेकिन मैं केवल हुज़ूर पुर नूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मरफ़ूअ़ (उच्च) हदीसों की ओर ध्यान दे रहा हूँ। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से उम्मीद है कि फ़क़ीर का यह संक्षिप्त लेखन इतना लाभकारी और व्यापक होगा...

१ अल-क़ुरआन अल-करीम ३१/१४ पेज ४५२/७२०

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

رسالہ مشعلۃ الارشاد فی حقوق الاولاد (والدین پر اولاد کے حقوق کے بارے میں رہنمائی کی قندیل)

مسئلہ ۱۶۷: از سوروں ضلع ایٹہ محلہ ملک زادگان مرسلہ حامد حسن صاحب ۷ جمادی الاولٰی ۱۳۱۰ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں کہ باپ پر بیٹے کا کس قدر حق ہے، اگر ہے اور وہ ادا نہ کرے تو اس کے واسطے حکم شرعی کیا ہے؟ مفصل طور پر ارقام فرمائیے۔ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائیے۔ ت)

الجواب:

اللہ عزوجل نے اگر چہ والد کا حق ولد پر نہایت اعظم بتایا یہاں تک کہ اپنے حق کے برابر اس کا ذکر فرمایا کہ

"اَنِ اشْكُرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیْكَ ط" ۱ "حق مان میرا اور اپنے ماں باپ کا۔" مگر ولد کا حق بھی والد پر عظیم رکھا ہے کہ ولد مطلق اسلام، پھر خصوص جوار، پھر خصوص قرابت، پھر خصوص عیال، ان سب حقوق کا جامع ہو کر سب سے زیادہ خصوصیت خاصہ رکھتا ہے، اور جس قدر خصوص بڑھتا جاتا ہے حق اشد و اکد ہوتا جاتا ہے۔ علمائے کرام اپنی کتب جلیلہ مثل احیاء العلوم وعین العلوم و مدخل و کیمیائے سعادت و ذخیرۃ الملوک وغیرہا میں حقوق ولد سے نہایت مختصر طور پر کچھ تعرض فرمایا مگر میں صرف احادیث مرفوعہ حضور پر نور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی طرف توجہ کرتا ہوں فضل الٰہی جل وعلا سے امید کہ فقیر کی یہ چند حرفی تحریر ایسی نافع و جامع واقع ہو

Volume 24 Fatawa Ridawiyya

That its parallel may not be found in lengthy books; regarding this matter, as many Hadiths as are presently in my memory and sight, by the grace of Allah Almighty, if I were to write them in detail along with their references, it would form a whole treatise. The purpose here is only the communication of rulings, therefore, for now, I will count only those rights which these Hadiths indicate, with extreme summarization and brevity, and success is from Allah: (1) The very first right, even before the existence of children, is that a person should not marry into a base or low caste, for a bad vein (lineage) definitely shows its color (traits). (2) Marry among religious people because the habits of the maternal grandfather and uncles also affect the child. (3) Do not enter into relationships with Zanjis or Abyssinians lest the mother's black complexion make the child look unsightly. (4) Start sexual intercourse with Bismillah, otherwise Satan becomes a partner in the child. (5) At that time, do not look at the woman's private parts as there is a risk of the child being born blind. (6) Do not talk much, as there is a danger of the child being mute or a stutterer. (7) Man and woman should cover themselves with a cloth and not be naked like animals, lest there be a danger of the child being shameless. (8) When a child is born, immediately say the Adhan in the right ear and the Iqamah in the left ear so that the child is saved from the interference of Satan and Umm al-Sibyan (a type of jinn). (9) Chew a date or some other sweet thing and put it in the child's mouth, for it is a good omen for sweetness of character. (10) Perform Aqiqah on the seventh day, or if not possible, then on the fourteenth or twenty-first day; one for a girl and two for a boy, as this is like ransoming the child from a pledge. (11) Give one thigh to the midwife as a token of gratitude on behalf of the child. (12) Have the head hair shaved. (13) Weigh the hair against silver and give it in charity. (14) Apply saffron on the head. (15) Give a name, even to a premature baby who is miscarried, otherwise they will complain before Allah Mighty and Majestic. (16) Do not give a bad name, as a bad omen is ill-fated. (17) Name the child Abdullah, Abdur Rahman, Ahmed, Hamid, etc. (names related to worship and praise) or after Prophets, Saints, or the righteous elders among your predecessors, as this is a source of blessing; especially the pure name Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him), for the infinite blessings of this blessed name benefit the child in this world and the hereafter.

कि इसकी मिसाल लंबी किताबों में न मिले; इस बारे में जितनी हदीसें अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इस वक्त मेरी याददाश्त और नज़र में हैं, अगर उन्हें तफ़सील से उनके हवाले के साथ लिखूँ तो एक पूरा रिसाला बन जाए। मक्सद सिर्फ़ अहकाम की जानकारी देना है, इसलिए फिलहाल सिर्फ़ उन हुकूक को, जिनका ये हदीसें इरशाद फ़रमा रही हैं, इन्तहाई खुलासे और संक्षेप के साथ शुमार करूँ और तौफ़ीक़ अल्लाह ही से है: (१) सबसे पहला हक़ औलाद के वजूद से भी पहले ये है कि आदमी अपना निकाह किसी नीच या कमज़ोर कौम में न करे, क्योंकि बुरी रग (वंश) अपना असर ज़रूर दिखाती है। (२) दीनदार लोगों में शादी करे क्योंकि बच्चे पर नाना और मामा की आदतों का भी असर पड़ता है। (३) ज़ंगियों या हब्शियों में रिश्ता न करे ताकि माँ का काला रंग बच्चे को बदसूरत न बना दे। (४) हमबिस्तरी की शुरुआत बिस्मिल्लाह से करे वरना बच्चे में शैतान शरीक हो जाता है। (५) उस वक़्त औरत की शर्मगाह पर नज़र न करे कि बच्चे के अंधे होने का अंदेशा है। (६) ज़्यादा बातें न करे कि गूँगे या तुतले होने का ख़तरा है। (७) मर्द और औरत कपड़ा ओढ़ लें, जानवरों की तरह नग्न न हों, वरना बच्चे के बेहया होने का अंदेशा है। (८) जब बच्चा पैदा हो, फ़ौरन सीधे कान में अज़ान और बाएँ कान में तकबीर (इक़ामत) कहे ताकि शैतान और उम्मुल सिबयान (एक प्रकार का जिन्न) के खलल से बचा रहे। (९) छुहारा या कोई और मीठी चीज़ चबाकर उसके मुँह में डाले कि ये अख़्लाक़ (चरित्र) की मिठास के लिए अच्छा शगुन है। (१०) सातवें दिन, और न हो सके तो चौदहवें या इक्कीसवें दिन अक़ीक़ा करे; लड़की के लिए एक और लड़के के लिए दो, कि इसमें बच्चे को मानो गिरवी से छुड़ाना है। (११) एक रान दाई को दे कि ये बच्चे की तरफ़ से शुक्राना है। (१२) सर के बाल उतरवाए। (१३) बालों के बराबर चाँदी तौलकर ख़ैरात (दान) करे। (१४) सर पर ज़ाफ़रान (केसर) लगाए। (१५) नाम रखे, यहाँ तक कि उस कच्चे बच्चे का भी जो कम दिनों का होकर गिर जाए, वरना वो अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल के यहाँ शिकायत करेगा। (१६) बुरा नाम न रखे कि बुरा शगुन बुरा होता है। (१७) अब्दुल्लाह, अब्दुर्रहमान, अहमद, हामिद वग़ैरह इबादत और हम्द वाले नाम या अंबिया, औलिया या अपने बुज़ुर्गों में जो नेक लोग गुज़रे हों उनके नाम पर नाम रखे कि ये बरकत का सबब है; ख़ासकर पाक नाम 'मुहम्मद' (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) कि इस मुबारक नाम की बेपनाह बरकत बच्चे के दुनिया और आख़िरत में काम आती है।

पेज ४५३ ऑफ़ ७२०

کہ اس کی نظیر کتب مطولہ میں نہ ملے اس بارہ میں جس قدر حدیثیں بحمد اللہ تعالٰی اس وقت میرے حافظہ و نظر میں ہیں انہیں بالتفصیل مع تخریجات لکھے تو ایک رسالہ ہوتا ہے اور غرض صرف افادہ احکام لہذا سر دست فقط وہ حقوق کہ یہ حدیثیں ارشاد فرمارہی ہیں کمال تلخیص و اختصار کے ساتھ شمار کروں، وباللہ التوفیق: (۱) سب سے پہلا حق وجود اولاد سے بھی پہلے یہ ہے کہ آدمی اپنا نکاح کسی رذیل کم قوم سے نہ کرے کہ بُری رگ ضرور رنگ لاتی ہے۔ (۲) دیندار لوگوں میں شادی کرے کہ بچہ پر نانا و ماموں کی عادات کا بھی اثر پڑتا ہے۔ (۳) زنگیوں حبشیوں میں قرابت نہ کرے کہ ماں کا سیاہ رنگ بچہ کو بد نما نہ کردے۔ (۴) جماع کی ابتداء بسم اللہ سے کرے ورنہ بچہ میں شیطان شریک ہو جاتا ہے۔ (۵) اس وقت شرمگاہ زن پر نظر نہ کرے کہ بچہ کے اندھے ہونے کا اندیشہ ہے۔ (۶) زیادہ باتیں نہ کرے کہ گونگے یا تو تلے ہونے کا خطرہ ہے۔ (۷) مردوزن کپڑا اوڑھ لیں جانوروں کی طرح برہنہ نہ ہوں کہ بچہ کے بے حیا ہونے کا اندیشہ ہے۔ (۸) جب بچہ پیدا ہو فوراً سیدھے کان میں اذان بائیں میں تکبیر کہے کہ خلل شیطان وام الصبیان سے بچے۔ (۹) چھوہار او غیرہ کوئی میٹھی چیز چبا کر اس کے منہ میں ڈالے کہ حلاوت اخلاق کی فال حسن ہے۔ (۱۰) ساتویں اور نہ ہوسکے تو چودھویں ورنہ اکیسویں دن عقیقہ کرے، دختر کے لئے ایک پسر کے لئے دو کہ اس میں بچے کا گویا رہن سے چھڑانا ہے۔ (۱۱) ایک ران دائی کو دے کہ بچہ کی طرف سے شکرانہ ہے۔ (۱۲) سر کے بال اتروائے۔ (۱۳) بالوں کے برابر چاندی تول کر خیرات کرے۔ (۱۴) سر پر زعفران لگائے۔ (۱۵) نام رکھے یہاں تک کہ کچے بچے کا بھی جو کم دنوں کا گر جائے ورنہ اللہ عز و جل کے یہاں شاکی ہوگا۔ (۱۶) برا نام نہ رکھے کہ بد فال بد ہے۔ (۱۷) عبداللہ، عبدالرحمن، احمد، حامد وغیرہ با عبادت و حمد کے نام یا

انبیاء و اولیاء یا اپنے بزرگوں میں جو نیک لوگ گزرے ہوں ان کے نام پر نام رکھے کہ موجب برکت ہے خصوصاً نام پاک محمد صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کہ اس مبارک نام کی بے پایاں برکت بچہ کے دنیا و آخرت میں کام آتی ہے۔

(18) When naming someone 'Muhammad', show him respect and honor. (19) In a gathering, leave space for him. (20) Exercise caution in hitting or saying bad things to him. (21) Give him what he asks for in an appropriate manner. (22) Do not give undignified nicknames out of affection, as an established name is difficult to change. (23) Let the child be breastfed for two years by the mother or a virtuous, prayerful, righteous, and noble wet nurse. (24) Avoid milk from a lowly or ill-behaved woman, as milk changes the temperament. (25) It is obligatory to provide for the child's maintenance, including all necessities and protection. (26) Whatever remains after meeting your own needs and fulfilling Shariah obligations, the primary right belongs to your family and children; what remains from them should reach others. (27) Provide the child with sustenance from pure earnings, for impure wealth instills impure habits. (28) Do not eat alone without your children; rather, subject your desires to theirs. Give them the good things they desire and eat yourself for their sake. If there isn't enough, let them eat. (29) Treat these trusts from God with love and kindness. Show them affection, embrace them, and carry them on your shoulders. (30) Talk to them about things that make them laugh, play, and feel comforted. Always keep their solace, encouragement, care, and protection in mind, even during prayer and sermons. (31) Give new fruits to them first, for they are also fresh fruits; it is appropriate to give the new to the new. (32) Occasionally, as needed, give them sweets, etc., and good things for eating, wearing, and playing that are permissible under Shariah. (33) Do not make false promises to pacify them; rather, only make a promise to a child that you intend to fulfill. (34) If you have multiple children, give everything to all of them equally; do not give preference to one over the other without religious virtue. (35) When returning from a journey, definitely bring some gift for them.

फतावा रजविया जिल्द २४

(१८) जब 'मुहम्मद' नाम रखे तो उसका सम्मान और आदर करे। (१९) सभा में उसके लिए जगह छोड़े। (२०) मारने या बुरा कहने में सावधानी बरते। (२१) जो मांगे, उचित तरीके से दे। (२२) प्यार में छोटे अपमानजनक उपनाम न रखे क्योंकि पड़ा हुआ नाम मुश्किल से छूटता है। (२३) माँ या किसी नेक, नमाज़ी, सदाचारी और कुलीन दाई से दो साल तक दूध पिलवाए। (२४) नीच या दुराचारी स्त्री के दूध से बचाए क्योंकि दूध स्वभाव को बदल देता है। (२५) बच्चे का भरण-पोषण, उसकी ज़रूरत का सारा सामान मुहैया करना स्वयं अनिवार्य है, जिसमें सुरक्षा भी शामिल है। (२६) अपनी ज़रूरतों और शरीयत के अनिवार्य कर्तव्यों को पूरा करने के बाद जो कुछ बचे, उसमें सबसे पहला हक परिवार और बच्चों का है; जो उनसे बचे वह दूसरों को पहुँचे। (२७) बच्चे को पाक (हलाल) कमाई से रोज़ी दे क्योंकि नापाक धन नापाक आदतें डालता है। (२८) बच्चों के बिना अकेले न खाए बल्कि अपनी इच्छा को उनकी इच्छा के अधीन रखे। जिस अच्छी चीज़ को उनका जी चाहे, उन्हें दे और उनके ज़रिये आप भी खाएं। अगर ज़्यादा न हो तो उन्हें ही खिलाए। (२९) खुदा की इन अमानतों के साथ प्यार और दया का व्यवहार रखे। उन्हें प्यार करे, गले लगाए, कंधे पर बिठाए। (३०) उनके हंसने, खेलने और बहलने की बातें करे। उनकी दिलासा, हौसला अफ़ज़ाई, रियायत और सुरक्षा हर समय यहाँ तक कि नमाज़ और खुतबे में भी ध्यान में रखे। (३१) नया फल पहले उन्हें दे क्योंकि वे भी ताज़ा फल हैं; नए को नया देना उचित है। (३२) कभी-कभी ज़रूरत के अनुसार उन्हें मिठाई आदि, खाने, पहनने, खेलने की अच्छी चीज़ें जो शरीयत में जायज़ हों, देता रहे। (३३) बहलाने के लिए झूठा वादा न करे बल्कि बच्चे से भी वही वादा जायज़ है जिसे पूरा करने का इरादा रखता हो। (३४) यदि आपके कई बच्चे हों तो जो चीज़ दें, सबको बराबर दें; बिना किसी धार्मिक श्रेष्ठता के एक को दूसरे पर वरीयता न दें। (३५) यात्रा से आए तो उनके लिए कुछ तोहफा ज़रूर लाए।

पृष्ठ ४५४ / ७२०

(۱۸) جب محمد نام رکھے تو اس کی تعظیم و تکریم کرے۔ (۱۹) مجلس میں اس کے لئے جگہ چھوڑے۔ (۲۰) مارنے بُرا کہنے میں احتیاط رکھے۔ (۲۱) جو مانگے برو جہ مناسب دے۔ (۲۲) پیار میں چھوٹے لقب بیقدر نام نہ رکھے کہ پڑا ہوا نام مشکل سے چھوٹتا ہے۔ (۲۳) ماں خواہ نیک دایہ نمازی صالحہ شریف القوم سے دو سال تک دودھ پلوائے۔ (۲۴) رذیل یا بد افعال عورت کے دودھ سے بچائے کہ دودھ طبیعت کو بدل دیتا ہے۔ (۲۵) بچے کا نفقہ اس کی حاجت کے سب سامان مہیا کرنا خود واجب ہے جن میں حفاظت بھی داخل۔ (۲۶) اپنے حوائج وادائے واجبات شریعت سے جو کچھ بچے اس میں عزیزوں قریبوں محتاجوں غریبوں سب سے پہلے حق عیال واطفال کا ہے جو ان سے بچے وہ اوروں کو پہنچے۔ (۲۷) بچہ کو پاک کمائی سے روزی دے کہ ناپاک مال ناپاک ہی عادتیں ڈالتا ہے۔ (۲۸) اولاد کے ساتھ تنہا خوری نہ برتے بلکہ اپنی خواہش کو ان کی خواہش کے تابع رکھے جس اچھی چیز کو ان کا جی چاہے انہیں دے کر ان کے طفیل میں آپ بھی کھائے زیادہ نہ ہو تو انہیں کو کھلائے۔ (۲۹) خدا کی ان امانتوں کے ساتھ مہر و لطف کا برتاؤ رکھے پہلے انہیں پیار کرے بدن سے لپٹائے کندھے پر چڑھائے۔ (۳۰) ان کے ہنسنے کھیلنے بہلنے کی باتیں کرے ان کی دلجوئی، دلداری، رعایت و محافظت ہر وقت حتیٰ کہ نماز و خطبہ میں بھی ملحوظ رکھے۔ (۳۱) نیا میوہ پھل پہلے انہیں کو دے کہ وہ بھی تازے پھل ہیں نئے کو نیا مناسب ہے۔ (۳۲) کبھی کبھی حسب ضرورت انہیں شیرینی وغیرہ کھانے، پہنے، کھیلنے کی اچھی چیز کہ شرعاً جائز ہے دیتا رہے۔ (۳۳) بہلانے کے لئے جھوٹا وعدہ نہ کرے بلکہ بچے سے بھی وعدہ وہی جائز ہے جس کو پورا کرنے کا قصد رکھتا ہو۔ (۳۴) اپنے چند بچے ہوں تو جو چیز دے

سب کو برابر یکساں دے، ایک کو دوسرے پر بے فضیلت دینی ترجیح نہ دے۔ (۳۵) سفر سے آئے تو ان کے لئے کچھ تحفہ ضرور لائے۔

Volume 24 Fatawa Razawiya

(36) If they are sick, then treat them. (37) To the extent possible, avoid harsh and painful treatments. (38) As soon as they start speaking, teach them "Allah, Allah", then the full Kalima "La ilaha illallah", the complete Kalima Tayyiba. (39) When they gain discernment, teach them manners of eating, drinking, laughing, speaking, standing, sitting, walking, and moving; modesty, regard, respect for elders, parents, teachers; and teach daughters the methods and etiquettes of obedience to the husband as well. (40) Have them read the Holy Quran. (41) Entrust them to a teacher who is virtuous, pious, God-fearing, of sound belief, and aged; and have daughters taught by a virtuous, pious woman. (42) After completing the Quran, always emphasize regular recitation. (43) Teach them the beliefs of Islam and Sunnah because the blank slate of nature is created for Islam and the acceptance of truth; what is taught at this time will be like a line carved in stone. (44) Instill the love and reverence for the Most Noble Presence, the Mercy to the Worlds, peace and blessings of Allah be upon him, in their hearts, for it is the core and essence of faith. (45) Teach the love and greatness of the family and companions of the Radiant Presence, peace and blessings of Allah be upon him, and of the saints and scholars, for it is the core of the Sunnah and the ornament of faith, rather it is the cause for the persistence of faith. (46) From the age of seven, start verbal emphasis on prayer (Salah). (47) Teach religious knowledge, especially the rulings of Wudu, Ghusl, Salah, and Fasting; the virtues of reliance on God (Tawakkul), contentment, asceticism, sincerity, humility, trustworthiness, truthfulness, justice, modesty, purity of heart and tongue, etc.; and the vices of greed, worldliness, love for status, ostentation, vanity, arrogance, betrayal, lying, oppression, obscenity, backbiting, envy, malice, and other evils. (48) Observe kindness and gentleness while teaching and instructing. (49) When necessary, show sternness, caution, or threat, but do not curse them, for cursing will not be a cause for reform, but rather carries the risk of even more corruption. (50) If striking, do not strike on the face. (51) Most of the time, be content with threats and intimidation; keep the whip or scissors in their sight so that a sense of awe remains in the heart. (52) During the period of education, also set aside a time for play so that the temperament remains cheerful.

खंड २४ फ़तावा रज़विया

(३६) यदि वे बीमार हों तो उपचार करें। (३७) जहाँ तक संभव हो, कठोर और कष्टदायक उपचार से बचाएं। (३८) जैसे ही वे बोलना शुरू करें, "अल्लाह अल्लाह" फिर पूरा कलिमा "ला इलाहा इल्लल्लाह", पूर्ण कलिमा तैय्यबा सिखाएं। (३९) जब वे समझदार हो जाएं तो उन्हें खाने, पीने, हंसने, बोलने, उठने, बैठने, चलने, फिरने के आदाब सिखाएं हया, लिहाज़, बड़ों का सम्मान, माता-पिता, उस्ताद का आदर सिखाएं और बेटियों को पति की आज्ञाकारिता के तरीके और आदाब भी बताएं। (४०) उन्हें कुरान मजीद पढ़वाएं। (४१) उन्हें किसी ऐसे उस्ताद के सुपुर्द करें जो नेक, सालेह, मुत्तकी, सही अकीदा और उम्रदराज हो; और बेटियों को किसी नेक और पाकबाज़ औरत से पढ़वाएं। (४२) कुरान खत्म करने के बाद हमेशा तिलावत की ताकीद रखें। (४३) इस्लाम और सुन्नत के अक़ाइद सिखाएं क्योंकि स्वभाव की कोरी तख्ती इस्लामी प्रकृति और सत्य को स्वीकार करने के लिए बनी है; इस समय जो सिखाया जाएगा वह पत्थर की लकीर बन जाएगा। (४४) हुज़ूर अक़दस रहमत-ए-आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मुहब्बत और ताज़ीम उनके दिल में डालें क्योंकि यही ईमान की जड़ और असल ईमान है। (४५) हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के आल, असहाब, औलिया और उलमा की मुहब्बत और अज़मत की तालीम दें क्योंकि यह असल सुन्नत और ईमान का ज़ेवर है, बल्कि ईमान की बक़ा का सबब है। (४६) सात साल की उम्र से नमाज़ की ज़बानी ताकीद शुरू कर दें। (४७) दीन का इल्म, विशेष रूप से वज़ू, ग़ुस्ल, नमाज़ और रोज़ा के मसाइल; तवक्कुल, क़नाअत, ज़ुहद, इख़्लास, तवाज़ो, अमानत, सच्चाई, इंसाफ़, हया, दिल और ज़बान की पाकीज़गी जैसी खूबियों के फ़ज़ाइल और लालच, दुनिया की चाहत, ओहदे की चाहत, दिखावा, घमंड, तकब्बुर, खयानत, झूठ, ज़ुल्म, बेहयाई, गीबत, हसद, कीना जैसी बुराइयों की रज़ालतें (बुराइयां) पढ़ाएं। (४८) पढ़ाने और सिखाने में नरमी और शफ़क़त का ख्याल रखें। (४९) मौके पर आंखें दिखाएं डांटें या डराएं मगर कोसें नहीं क्योंकि कोसना सुधार का कारण नहीं बनेगा बल्कि और ज़्यादा बिगाड़ का अंदेशा है। (५०) अगर मारें तो चेहरे पर न मारें। (५१) अक्सर मर्तबा डराने-धमकाने पर ही इक्तिफ़ा (संतोष) करें; कोड़ा या कैंची उनकी नज़रों के सामने रखें ताकि दिल में रोब बना रहे। (५२) शिक्षा के दौर में एक समय खेल का भी रखें ताकि मिज़ाज में ताज़गी और खुशी बनी रहे।

पृष्ठ ४५५ / ७२०

(۳۶) بیمار ہوں تو علاج کرے۔ (۳۷) حتی الامکان سخت و موذی علاج سے بچائے۔ (۳۸) زبان کھلتے ہی اللہ اللہ پھر پورا کلمہ لا الہ الا اللہ بھر پور کلمہ طیبہ سکھائے۔ (۳۹) جب تمیز آئے ادب سکھائے کھانے، پینے، ہنسنے، بولنے، اٹھنے، بیٹھنے، چلنے، پھرنے، حیا، لحاظ، بزرگوں کی عظیم، ماں باپ، استاذ اور دختر کو شوہر کے بھی اطاعت کے طرق و آداب بتائے۔ (۴۰) قرآن مجید پڑھائے۔ (۴۱) استاذ نیک، صالح، متقی، صحیح العقیدہ، سن رسیدہ کے سپرد کردے، اور دختر کو نیک پارسا عورت سے پڑھوائے۔ (۴۲) بعد ختم قرآن ہمیشہ تلاوت کی تاکید رکھے۔ (۴۳) عقائد اسلام و سنت سکھائے کہ لوح سادہ فطرتِ اسلامی و قبولِ حق پر مخلوق ہے اس وقت کا بتایا پتھر کی لکیر ہوگا۔ (۴۴) حضور اقدس رحمت عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی محبت و تعظیم ان کے دل میں ڈالے کہ اصل ایمان و عین ایمان ہے۔ (۴۵) حضور پر نور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے آل و اصحاب و اولیاء و علماء کی محبت و عظمت تعلیم کرے کہ اصل سنت و زیور ایمان بلکہ باعثِ بقائے ایمان ہے۔ (۴۶) سات برس کی عمر سے نماز کی زبانی تاکید شروع کردے۔ (۴۷) علم دین خصوصاً وضو، غسل، نماز و روزہ کے مسائل توکل، قناعت، زہد، اخلاص، تواضع، امانت، صدق، عدل، حیا، سلامتِ صدور و لسان و غیرہا خوبیوں کے فضائل حرص و طمع، حب دنیا، حب جاہ، ریا، عجب، تکبر، خیانت، کذب، ظلم، فحش، غیبت، حسد، کینہ و غیرہا برائیوں کے رذائل پڑھائے۔ (۴۸) پڑھانے سکھانے میں رفق و نرمی ملحوظ رکھے۔ (۴۹) موقع پر چشم نمائی تنبیہ تہدید کرے مگر کو سنا نہ دے کہ اس کا کو سنان کے لئے سبب اصلاح نہ ہوگا بلکہ اور زیادہ افساد کا اندیشہ ہے۔ (۵۰) مارے تو منہ پر نہ مارے۔ (۵۱) اکثر اوقات تہدید و تخویف پر قانع رہے کوڑا

قینچی اس کے پیش نظر رکھے کہ دل میں رعب رہے۔ (۵۲) زمانہ تعلیم میں ایک وقت کھیلنے کا بھی کہ طبیعت نشاط پر باقی رہے۔

(53) But never, never allow sitting in bad company because a bad companion is worse than a bad snake. (54) Never ever let them see books like Bahadur Danesh, Mina Bazar, Mathnawi Ghanimat and other erotic books and immoral ghazals. Because a soft branch bends whichever way it is bent. It is proven from Sahih Hadith that girls should not be taught the translation of Surah Yusuf because it mentions the guile of women. Then how can it be appropriate to expose children to poetic nonsense? (55) When he reaches ten years of age, enforce prayer through punishment if necessary. (56) From this age, do not let him sleep with himself or anyone else; keep him on a separate bed and separate bedding near oneself. (57) When he reaches adulthood, get him married; in marriage, keep in mind considerations of lineage, religion, character, and appearance. (58) Now, if something is to be said where there is a chance of disobedience, do not say it in the form of a command or order. Instead, say it with gentleness and kindness as advice, so that he does not fall into the trial of being undutiful. (59) Do not deprive him of inheritance, as some people register all property in the name of another heir or a stranger with the intention of it not reaching a particular heir. (60) Even after death, keep their concern in mind; that is, leave behind at least two-thirds of the estate and do not give more than one-third in charity.

These sixty rights are for both son and daughter; rather, all heirs share in the last two rights. Special rights of a son include: (61) teaching him to write, (62) swim, (63) and martial arts/soldiering. (64) Teach Surah Al-Ma'idah. (65) Perform his circumcision with public announcement. Special rights of a daughter include: (66) do not show unhappiness at her birth; rather, consider it a divine blessing, (67) teach her sewing, weaving, spinning, and cooking, (68) teach Surah An-Nur, (69) never teach her writing as there is a risk of temptation/mischief, (70) maintain more consolation with daughters as their hearts are very soft, (71) in giving, treat them and sons equally with precise balance, (72) whatever is given, give to them first and then to sons, (73) from the age of nine, do not let her sleep near oneself nor with brothers etc., (74) start special oversight from this age, (75) never let her go to weddings or celebrations where there is singing and dancing, even if it is at her own brother's house, because singing is a severe and serious magic. (76) These delicate glasses (daughters) are shattered by even a small bump; rather, completely prohibit them from going to gatherings, make the house a fortress for them, do not let them live on upper floors, (77) adorn them with clothes and jewelry in the house so that marriage

proposals come with interest; when a suitable match is found, do not delay the marriage; as far as possible, marry her off at the age of twelve, (78) never to a transgressor (fasiq)...

(53) लेकिन खबरदार! कभी बुरी सोहबत में न बैठने दें क्योंकि बुरा यार (दोस्त) बुरे सांप से भी बदतर है। (54) कभी हरगिज़-हरगिज़ 'बहादुर दानिश', 'मीना बाज़ार', 'मसनवी गनीमत' और इसके जैसी अन्य इश्किया किताबें और गंदी गज़लें न देखने दें। क्योंकि नरम लकड़ी को जिधर मोड़ो, मुड़ जाती है। सही हदीस से साबित है कि लड़कियों को सूरह यूसुफ शरीफ का तर्जुमा न पढ़ाया जाए क्योंकि इसमें औरतों के मक्र (चालों) का ज़िक्र है। फिर बच्चों को शायराना खुराफात में डालना कैसे सही हो सकता है? (55) जब (बेटा) दस साल का हो जाए तो नमाज़ के लिए सख्ती (मारकर) करे। (56) इस उम्र से अपने या किसी और के साथ न सुलाए, बल्कि अलग बिस्तर और अलग चारपाई पर अपने पास रखे। (57) जब जवान हो जाए तो उसकी शादी कर दे; शादी में खानदान, दीन, सीरत (चरित्र) और सूरत (रूप) का ख्याल रखे। (58) अब अगर कोई ऐसा काम कहना हो जिसमें नाफरमानी की संभावना हो, तो उसे हुक्म या आदेश के लहजे में न कहे, बल्कि नरमी और शफकत के साथ मशवरे के तौर पर कहे, ताकि वह नाफरमानी के गुनाह में न पड़े। (59) उसे विरासत (Inheritance) से महरूम न करे, जैसा कि कुछ लोग किसी वारिस को हिस्सा न देने की नीयत से सारी जायदाद किसी दूसरे वारिस या किसी गैर के नाम लिख देते हैं। (60) अपनी मौत के बाद भी उनकी फिक्र रखे, यानी कम से कम दो-तिहाई हिस्सा विरासत में छोड़ जाए, एक-तिहाई (1/3) से ज़्यादा खैरात (दान) न करे।

ये साठ हक तो बेटे और बेटी दोनों के हैं, बल्कि आखिरी दो हक में तो तमाम वारिस बराबर के शरीक हैं। विशेष रूप से बेटे के हकों में ये शामिल हैं: (61) उसे लिखना, (62) तैरना और (63) सिपहगरी (युद्ध कला) सिखाए। (64) सूरह मायदा की तालीम दे। (65) ऐलान के साथ उसका खतना (Circumcision) करे। बेटी के विशेष हकों में ये हैं: (66) उसके पैदा होने पर नाखुशी न जताए बल्कि इसे अल्लाह की नेमत समझे, (67) उसे सीना-पिरोना, कताई और खाना पकाना सिखाए, (68) सूरह नूर की तालीम दे, (69) लिखना हरगिज़ न सिखाए कि इसमें फितने (बुराई) का अंदेशा है, (70) बेटियों का दिल ज़्यादा बहलाए क्योंकि उनका दिल बहुत नाज़ुक होता है, (71) देने के मामले में उनके और बेटों के बीच तराज़ू के काँटे की तरह बराबरी रखे, (72) जो भी चीज़ दे, पहले उन्हें दे फिर बेटों को, (73) नौ साल की उम्र से उसे न अपने पास सुलाए और न भाई वगैरह के साथ सोने दे, (74) इस उम्र से उसकी विशेष देखभाल शुरू करे, (75) शादी-ब्याह में जहाँ गाना-बजाना और नाच हो, वहाँ हरगिज़ न जाने दे, चाहे अपने सगे भाई के यहाँ ही क्यों न हो, क्योंकि गाना एक सख्त और

संगीन जादू है। (76) और ये नाज़ुक शीशे (बेटियाँ) ज़रा सी ठेस से टूट जाते हैं, बल्कि समारोहों में जाने पर पूरी तरह पाबंदी लगाए, घर को उनके लिए किला बना दे, उन्हें उपरी मंजिलों पर न रहने दे, (77) घर में उन्हें अच्छे कपड़ों और ज़ेवरों से सजाकर रखे ताकि शादी के रिश्ते दिलचस्पी के साथ आएँ, जब बराबरी का रिश्ता (कफ़ु) मिल जाए तो निकाह में देर न करे, जहाँ तक संभव हो बारह साल की उम्र में निकाह कर दे, (78) कभी किसी फासिक (गुनाहगार) से...

(۵۳) مگرز نہارز نہار بری صحبت میں نہ بیٹھنے دے کہ یار بد مار بد سے بد تر ہے۔ (۵۴) نہ ہر گز ہر گز بہادر دانش ، مینا بازار ، مثنوی غنیمت و غیر ہاکتب عشقیہ و غزلیات فسقیہ دیکھنے دے کہ نرم لکڑی جدھر جھکائے جھک جاتی ہے صحیح حدیث سے ثابت ہے کہ لڑکیوں کو سورہ یوسف شریف کا ترجمہ نہ پڑھایا جائے کہ اس میں مکر زنان کا ذکر فرمایا ہے ، پھر بچوں کو خرافات شاعرانہ میں ڈالنا کب بجاہو سکتا ہے۔ (۵۵) جب دس برس کا ہو نماز مار کر پڑھائے۔ (۵۶) اس عمر سے اپنے خواہ کسی کے ساتھ نہ سلائے جدا بچھونے جدا پلنگ پر اپنے پاس رکھے۔ (۵۷) جب جوان ہو شادی کر دے ، شادی میں وہی رعایت قوم و دین و سیرت و صورت ملحوظ رکھے۔ (۵۸) اب جو ایسا کام کہنا ہو جس میں نافرمانی کا احتمال ہو اسے امر و حکم کے صیغہ سے نہ کہے بلکہ برفق و نرمی بطور مشورہ کہے کہ وہ بلائے عقوق میں نہ پڑ جائے۔ (۵۹) اسے میراث سے محروم نہ کرے جیسے بعض لوگ اپنے کسی وارث کو نہ پہنچنے کی غرض سے کل جائداد دوسرے وارث یا کسی غیر کے نام لکھ دیتے ہیں۔ (۶۰) اپنے بعد مرگ بھی ان کی فکر رکھے یعنی کم سے کم دو تہائی ترکہ چھوڑ جائے ثلث سے زیادہ خیرات نہ کرے۔

یہ ساٹھ حق تو پسر و دختر سب کے ہیں بلکہ دو حق اخیر میں سب وارث شریک ، اور خاص پسر کے حقوق سے ہے کہ اسے ۶۱ لکھنا ، ۶۲ تیر نا ، ۶۳ سپہگری سکھائے۔ ۶۴ سورہ مائدہ کی تعلیم دے۔ ۶۵ اعلان کے ساتھ اس کا ختنہ کرے۔ خاص دختر کے حقوق سے ہے کہ ۶۶ اس کے پیدا ہونے پر ناخوشی نہ کرے بلکہ نعمت الہیہ جانے ، ۶۷ اسے سینا پرونا کا تنا کھانا پکانا سکھائے ، ۶۸ سورہ نور کی تعلیم دے ، ۶۹ لکھنا ہر گز نہ سکھائے کہ احتمال فتنہ ہے ، ۷۰ بیٹیوں سے زیادہ دلجوئی رکھے کہ ان کا دل بہت تھوڑا ہوتا ہے ، ۷۱ دینے میں انہیں اور بیٹوں کو کانٹے کی تول

برابر رکھے ، ۷۲ جو چیز دے پہلے انہیں دے کر بیٹوں کو دے ، ۷۳ نو برس کی عمر سے نہ اپنے پاس سلائے نہ بھائی وغیرہ کے ساتھ سونے دے ، ۷۴ اس عمر سے خاص نگہداشت شروع کرے ، ۷۵ شادی برات میں جہاں گانا ناچ ہو ہر گز نہ جانے دے اگر چہ خاص اپنے بھائی کے یہاں ہو کہ گانا سخت سنگین جادو ہے۔ اور ۷۶ ان نازک شیشوں کو تھوڑی ٹھیس بہت ہے ، بلکہ ہنگاموں میں جانے کی مطلق بندش کرے گھر کو ان پر زنداں کر دے بالا خانوں پر نہ رہنے دے ، ۷۷ گھر میں لباس و زیور سے آراستہ کرے کہ پیام رغبت کے ساتھ آئیں ، جب کفو ملے نکاح میں دیر نہ کرے ، حتی الامکان بارہ برس کی عمر میں بیاہ دے ، ۷۸ زنہار کسی فاسق...

Fatawa Razviya Volume 24

...give reward, especially in marriage to one of bad faith. These are those 80 rights that came to mind from Marfu' Hadiths upon consideration at this time. Most of them are recommended (mustahabbat), for the omission of which there is no accountability at all. And for some, there may be a claim in the Hereafter, but in this world, there is no seizure or compulsion upon the father for the son, nor is it permissible for the son to quarrel or dispute with the father, except for a few rights in which the compulsion of the ruler, legal recourse, and objection have a place.

First: Maintenance (nafaqah) that is obligatory upon the father and he does not provide it, the ruler will forcibly fix it; if he does not comply, he will be imprisoned, even though for no other debt of the descendants are the ancestors imprisoned.

> In Radd al-Muhtar from al-Dhakhirah: A father, no matter how high, is not imprisoned for his son's debt, no matter how low, except for maintenance, because in it is the destruction of the minor. 1 Fatawa Shami quotes from Dhakhirah: A father cannot be imprisoned for his son's debt, whether the lineage goes upwards in terms of father or downwards in terms of son. However, in the case of non-payment of maintenance, the father will be imprisoned because it involves infringing upon the right of the minor. (T)

Second: Suckling (radha'at), if there is no mother's milk, hiring a wet nurse; if one is not available for free, then paying wages is obligatory. If not given, it will be taken forcibly, provided the child has no property of its own. Similarly, if a mother after divorce and expiry of the waiting period does not suckle without wages, she will also be given wages as mentioned in al-Fath, Radd al-Muhtar, etc. (as clarified in al-Fath and Radd al-Muhtar etc. - T)

Third: Custody (hazanat) till the age of seven for a boy and nine for a girl, they will be kept with women like mother, maternal grandmother, paternal grandmother, maternal aunt, paternal aunt. If none among them agrees without wages, and the child is poor while the father is wealthy, wages will be forcibly provided as clarified in Radd al-Muhtar. (as explained in Radd al-Muhtar. - T)

Fourth: After the end of the custody period, it is obligatory for the father to take the child into his care and protection. If he does not, the ruler will compel him, as

mentioned in Radd al-Muhtar from Sharh al-Majma'. (as quoted from Sharh al-Majma' in Radd al-Muhtar. - T)

Fifth: Leaving inheritance for them, because after the right of heirs attaches, i.e., in the state of terminal illness, the testator is compelled to do so...

---

1 Radd al-Muhtar, Kitab al-Talaq, Bab al-Nafaqah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/271

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

...अजर विशेष रूप से बुरे मज़हब वाले के निकाह में न दे। ये वही ८० अधिकार हैं जो इस समय की नज़र में हदीसे मरफूआ से ख्याल में आए, उनमें से अधिकांश मुस्तहबात (ऐच्छिक) हैं जिनके छोड़ने पर बिल्कुल भी पकड़ नहीं है। और कुछ के लिए आख़िरत (परलोक) में मांग हो सकती है, लेकिन दुनिया में बेटे के लिए बाप पर कोई पकड़ या ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं है, और न ही बेटे के लिए जायज़ है कि वह बाप से झगड़ा या विवाद करे, सिवाय कुछ अधिकारों के जिनमें शासक की ज़बरदस्ती, कानूनी कार्रवाई और आपत्ति की गुंजाइश है।

पहला: गुज़ारा भत्ता (नफ़क़ा) जो बाप पर वाजिब है और वह न दे तो शासक उसे जबरन तय करेगा; अगर वह नहीं मानता तो उसे कैद किया जाएगा, हालाँकि औलाद के किसी और कर्ज के लिए बुज़ुर्गों को कैद नहीं किया जाता।

> रद-उल-मुहतार में ज़ख़ीरा के हवाले से: बाप, चाहे कितना भी ऊपर (दादा आदि) हो, अपने बेटे के कर्ज के लिए कैद नहीं किया जाएगा, चाहे वह कितना भी नीचे (पोता आदि) हो, सिवाय गुज़ारे भत्ते के क्योंकि इसमें छोटे बच्चे की बर्बादी है। १ फ़तावा शामी में ज़ख़ीरा के हवाले से उद्धृत है: पिता को अपने बेटे के कर्ज के सिलसिले में कैद नहीं किया जा सकता, चाहे वंशक्रम ऊपर पिता के रूप में हो या नीचे बेटे के रूप में। हालाँकि, गुज़ारा भत्ता न देने की स्थिति में पिता को कैद किया जाएगा क्योंकि इसमें छोटे बच्चे की हक़-तल्फी (अधिकारों का हनन) है। (त)

दूसरा: दूध पिलाना (रज़ाअत), यदि माँ का दूध न हो तो दाई रखना; यदि मुफ्त में न मिले तो मज़दूरी देना वाजिब है। यदि नहीं दिया जाता तो जबरन लिया जाएगा, बशर्ते कि बच्चे की अपनी कोई संपत्ति न हो। इसी तरह, यदि तलाक और इद्दत की अवधि बीतने के बाद माँ बिना मज़दूरी के दूध न पिलाए, तो उसे भी मज़दूरी दी जाएगी जैसा कि अल-फ़तह, रद-उल-मुहतार आदि में है। (जैसा कि फ़तह और रद-उल-मुहतार आदि में है। - त)

तीसरा: पालन-पोषण (हज़ानत) लड़के के लिए सात वर्ष और लड़की के लिए नौ वर्ष की आयु तक, वे महिलाओं जैसे कि माँ, नानी, दादी, मौसी, बुआ के पास रखे जाएंगे। यदि उनमें से कोई भी बिना मज़दूरी के नहीं मानती, और बच्चा गरीब है जबकि पिता धनवान है, तो जबरन मज़दूरी दिलाई जाएगी

जैसा कि रद-उल-मुहतार में स्पष्ट किया गया है। (जैसा कि रद-उल-मुहतार में इसकी व्याख्या की गई है। - त)

चौथा: पालन-पोषण की अवधि समाप्त होने के बाद, बच्चे को अपनी देखरेख और सुरक्षा में लेना पिता पर वाजिब है। यदि वह नहीं लेगा तो शासक उसे मजबूर करेगा, जैसा कि रद-उल-मुहतार में शरह अल-मजमा से उद्धृत है। (जैसा कि शरह अल-मजमा से रद-उल-मुहतार में उद्धृत किया गया है। - त)

पाँचवाँ: उनके लिए विरासत छोड़ना, क्योंकि वारिसों का अधिकार जुड़ने के बाद, यानी मृत्यु-रोग की स्थिति में, वसीयतकर्ता इसके लिए मजबूर होता है...

---

१ रद-उल-मुहतार, किताब-उत-तलाक़, बाब-उन-नफ़क़ा, दार इहया अत-तुरात अल-अरबी, बेरुत, २/२७१

اجر خصوصاً بد مذہب کے نکاح میں نہ دے۔ یہ اسی ۸۰ حق ہیں کہ اس وقت کی نظر میں احادیث مرفوعہ سے خیال میں آئے ان میں اکثر تو مستحبات ہیں جن کے ترک پر اصلاً مواخذہ نہیں۔ اور بعض آخرت میں مطالبہ ہو، مگر دنیا میں بیٹے کے لئے باپ پر گرفت وجبر نہیں، نہ بیٹے کو جائز کہ باپ سے جدال ونزع کرے سوا چند حقوق کے کہ ان میں جبر حاکم و چارہ جوئی و اعتراض کو دخل ہے۔

اول: نفقہ کہ باپ پر واجب ہو اور وہ نہ دے تو حاکم جبر اً مقرر کرے گا، نہ مانے تو قید کیا جائے گا حالانکہ فروع کے اور کسی دین میں اصول محبوس نہیں ہوتے۔

> فی ردالمحتار عن الذخیرۃ لا یحبس الوالد وان علا فی دین ولدہ وان سفل لافی النفقۃ لان فیہ اتلاف الصغیر ۱۔ فتاوی شامی میں ذخیرہ کے حوالے سے نقل کیا ہے والد اپنے بیٹے کے قرض کے سلسلے میں قید نہیں کیا جاسکتا خواہ سلسلہ نسب اوپر تک بلحاظ باپ اور نیچے تک بلحاظ بیٹا چلا جائے البتہ نان نفقہ کی عدم ادائیگی کی صورت میں والد کو قید کیا جائے گا کیونکہ اس میں چھوٹے کی حق تلفی ہے۔ (ت)

دوم: رضاعت کہ ماں کے دودھ نہ ہو تو دائی رکھنا، بے تنخواہ نہ ملے تو تنخواہ دینا، واجب نہ دے تو جبراً لی جائے گی جبکہ بچہ کا اپنا مال نہ ہو، یونہی ماں بعد طلاق و مرورِ عدت بے تنخواہ دودھ نہ پلائے تو اسے بھی تنخواہ دی جائے گی کما فی الفتح وردالمحتار وغیرہما (جیسا کہ فتح اور ردالمحتار وغیرہ میں ہے۔ت)

سوم: حضانت کہ لڑکا سات برس، لڑکی نو برس کی عمر تک جن عورتوں مثلاً ماں نانی دادی ہیں خالہ پھوپھی کے پاس رکھے جائیں گے، اگر ان میں کوئی بے تنخواہ نہ مانے اور بچہ فقیر اور باپ غنی ہے تو جبراً تنخواہ دلائی جائے گی کما اوضحہ فی ردالمحتار (جیسا کہ ردالمحتار میں اس کی وضاحت کی گئی ہے۔ت)

چہارم: بعد انتہائے حضانت بچہ کو اپنی حفظ و صیانت میں لینا باپ پر واجب ہے اگر نہ لے گا حاکم جبر کرے گا کما فی ردالمحتار عن شرح المجمع (جیسا کہ شرح مجمع سے ردالمحتار میں نقل کیا گیا ہے۔ت)

پنجم: ان کے لئے ترکہ باقی رکھنا کہ بعد تعلق حق ورثہ یعنی بحالت مرض الموت مورث اس پر مجبور

---

۱ ردالمحتار کتاب الطلاق باب النفقة دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۲۷۱

Volume 24 Fatawa Rizvia

...it happens to the extent that in more than one-third, his will is not effective without the permission of the heirs. Sixth: Marrying off one's adult son or daughter to someone who is not a 'kufu' (equal/compatible match), or with 'ghabn fahish' (excessive deception/loss) in the 'mahr mithl' (standard dower). For example, the daughter's 'mahr mithl' is a thousand, but the marriage is performed for five hundred; or the daughter-in-law's 'mahr mithl' is five hundred but a thousand is fixed; or marrying off a son to a slave girl, or a daughter to a person who has such a defect in religion, lineage, profession, actions, or wealth that marriage with him causes shame. Such a marriage performed by the father is effective once, provided he is not intoxicated. However, if he performs such a marriage for any of his minor children a second time, it will not be valid at all, as we have already established in the discussion on marriage. (As we have explained before in the discussion of Nikah. - T) Seventh: There is also a form of compulsion in circumcision, that if the people of a city abandon it, the Sultan of Islam will compel them; if they do not agree, he will wage Jihad against them, as stated in Al-Durr al-Mukhtar. (As it is in Durr al-Mukhtar. - T) And Allah Almighty knows best.

Treatise Masha'lat al-Irshad fi Huquq al-Awlad (The Torch of Guidance on the Rights of Children) Concluded

Page 458 of 720

जिल्द 24 फ़तावा रिज़विया

...होता है यहाँ तक कि एक तिहाई (तिहाई) से अधिक में उसकी वसीयत उत्तराधिकारियों की अनुमति के बिना प्रभावी नहीं होती। छठा: अपने वयस्क पुत्र या पुत्री का विवाह किसी ऐसे व्यक्ति से कर देना जो 'कुफ़ु' (बराबर का मेल) न हो, या 'महर-ए-मिस्ल' (मानक मेहर) में 'ग़बन-ए-फ़ाहिश' (अत्यधिक धोखा/नुकसान) के साथ। उदाहरण के लिए, पुत्री का 'महर-ए-मिस्ल' एक हज़ार है, लेकिन विवाह पाँच सौ पर कर दिया गया; या बहू का 'महर-ए-मिस्ल' पाँच सौ है लेकिन एक हज़ार तय कर लिया गया; या पुत्र का विवाह किसी दासी से कर देना, या पुत्री का विवाह ऐसे व्यक्ति से कर देना जिसके धर्म, वंश, पेशे, कार्यों या धन में ऐसा दोष हो जिसके कारण उससे विवाह अपमान का कारण बने। पिता द्वारा किया गया ऐसा विवाह एक बार तो प्रभावी होता है, बशर्ते वह नशे में न हो। लेकिन अगर वह अपने किसी नाबालिग बच्चे का ऐसा विवाह दूसरी बार करेगा, तो वह बिल्कुल भी सही नहीं होगा, जैसा कि हमने निकाह (विवाह) की चर्चा में पहले ही स्पष्ट कर दिया है। (जैसा कि हमने निकाह की बहस में इसे पहले बयान कर दिया है। - त) सातवाँ: खतना में भी विवशता का एक रूप है कि यदि किसी शहर के लोग इसे छोड़ दें, तो सुल्तान-ए-इस्लाम (इस्लाम का शासक) उन्हें मजबूर करेगा; यदि वे नहीं मानेंगे, तो वह उनके विरुद्ध जिहाद करेगा, जैसा कि 'अल-दुर्र अल-मुख्तार' में है। (जैसा कि दुर्रे मुख्तार में है। - त) और अल्लाह तआला ही सबसे बेहतर जानता है।

रिसाला मशअ़लतुल इरशाद फ़ी हुक़ूक़िल औलाद (बच्चों के अधिकारों के संबंध में मार्गदर्शन की मशाल) संपन्न हुआ

पृष्ठ 458/720

ہوتا ہے یہاں تک کہ ثلث سے زائد میں اس کی وصیت بے اجازت ورثہ نافذ نہیں۔ ششم: اپنے بالغ پسر خواہ دختر کو غیر کفو سے بیاہ دینا یا مہرِ مثل میں غبن فاحش کے ساتھ مثلاً دختر کا مہرِ مثل ہزار ہے پانسو پر نکاح کردیا یا بہو کا مہرِ مثل پانسو ہے ہزار باندھ لینا یا پسر کا نکاح کسی باندی سے یا دختر کا کسی ایسے شخص سے جو مذہب یا نسب یا پیشہ یا افعال یا مال میں وہ نقص رکھتا ہو جس کے باعث اس سے نکاح موجب عار ہو ایک بار تو ایسا نکاح باپ کا کیا ہوا نافذ ہوتا ہے جبکہ نشہ میں نہ ہو مگر دوبارہ اپنے کسی نابالغ بچے کا ایسا نکاح کرے گا تو اصلاً صحیح نہ ہوگا کما قد منافی النکاح (جیسا کہ بحث نکاح میں ہم نے اسے پہلے بیان کر دیا ہے۔ ت) ہفتم: ختنہ میں بھی ایک صورت جبر کی ہے کہ اگر کسی شہر کے لوگ چھوڑ دیں سلطان اسلام انہیں مجبور کرے گا نہ مانیں گے تو ان پر جہاد فرمائے گا کما فی الدر المختار (جیسا کہ در مختار میں ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

رسالہ مشعلۃ الارشاد فی حقوق الاولاد ختم ہوا

Fatawa Razawiyya Volume 24

Treatise A'jab al-Imdad fi Mukaffirat Huquq al-'Ibad 1310 AH (An extremely surprising aid regarding matters that expiate for the rights of servants [human rights])

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

Issue 168: Can the rights of people (Huquq al-'Ibad) be forgiven in any way without the forgiveness of the one whose right it is? Please state clearly and how many types of rights of people are there? State it and be rewarded (Bayan farmaiye ajr paiye - t).

The Answer: A 'Right of the Servant' (Haq al-'Abd) is every financial claim that is legally established against someone for another, and every harm and distress caused without Shari'ah permission through any word, action, or omission to someone's religion, honor, body, wealth, or even just their heart. Thus, these are of two types: the first is called 'Debts' (Duyun) and the second is called 'Injustices/Grievances' (Mazalim). Both are also called 'Consequences' (Taba'aat) and sometimes even both are called 'Debts'. There is a relationship of 'General and Specific in some aspects' (umum wa khusus min wajh) between these two types. That is, in some cases, a 'Debt' exists but not an 'Injustice', such as the price of a purchased item, a laborer's wages, a woman's dower, etc.—debts that became mandatory through valid Shari'ah contracts, but if he did not unfairly delay or reduce their payment, this is the servant's right upon him but there is no 'oppression' (zulm). In other cases, an 'Injustice' is found but not a 'Debt', such as hitting someone, abusing them, speaking ill of them, or backbiting if the news reaches them—all these are 'Rights of the Servant' and 'Injustices', but there is no debt payable. And in some cases, both 'Debt' and 'Injustice' exist, such as stealing someone's property, snatching it, looting, or bribery.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

रिसाला (लघु पुस्तिका) अजब अल-इमदाद फ़ी मुकफ़्फ़िरात हुकूक़ अल-इबाद 1310 हिजरी (बन्दों के हुकूक़ का कफ़्फ़ारा अदा करने वाले उमूर के बारे में इंतिहाई हैरान कुन इमदाद)

बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम

मसला 168: क्या हुकूक़ुल इबाद (बन्दों के अधिकार) भी किसी तरह माफ़ हो सकते हैं उस शख़्स के माफ़ किए बग़ैर जिसका हक़ है? साफ़ तहरीर फ़रमाएं और हुकूक़ुल इबाद कितने हैं? बयान फ़रमाएं अजर पाएं। (त)

अल-जवाब: हक़ अल-अब्द (बन्दे का हक़) हर वो माली मुतालबा है जो शरई तौर पर किसी के ज़िम्मे किसी दूसरे के लिए साबित हो, और हर वो नुक़सान व तकलीफ़ जो बिना शरई इजाज़त के किसी कौल (बात), फ़ेल (काम) या तर्क(काम न करने) से किसी के दीन, आबरू, जिस्म, माल या सिर्फ़ दिल को पहुँचाई जाए। तो ये दो किस्में हुईं: पहली को 'दुयून' (कर्ज़) और दूसरी को 'मज़ालिम' (ज़ुल्म/ज़्यादती) कहते हैं, और दोनों को 'तबआत' (नतीजे/परिणाम) और कभी दोनों को 'दुयून' भी कहते हैं। इन दोनों किस्मों में 'उमूम व खुसूस मिन वज्ह' (कुछ पहलुओं में सामान्य और कुछ में विशिष्ट) का ताल्लुक़ है, यानी कहीं तो 'दैन' पाया जाता है 'मज़लिमा' (अन्याय) नहीं, जैसे खरीदी हुई चीज़ की क़ीमत, मज़दूर की मज़दूरी, औरत का मेहर वग़ैरह - ऐसे कर्ज़ जो जायज़ शरई अक़्द (अनुबंधों) से उसके ज़िम्मे लाज़िम हुए और उसने उनकी अदायगी में बेजा कमी या ताख़ीर (देरी) नहीं बरती, तो ये हक़ अल-अब्द उसकी गर्दन पर है मगर कोई ज़ुल्म नहीं। और कहीं 'मज़लिमा' पाया जाता है 'दैन' नहीं, जैसे किसी को मारना, गाली देना, बुरा कहना, ग़ीबत करना अगर उसकी खबर उसे पहुँच जाए - ये सब हुकूक़ुल इबाद और ज़ुल्म हैं मगर कोई दैन (कर्ज़) वाजिबुल अदा (अदा करने योग्य) नहीं। और कहीं दैन और मज़लिमा दोनों होते हैं जैसे किसी का माल चुराना, छीनना, लूटना, रिश्वत लेना।

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۴

رسالہ اعجب الامداد فی مکفرات حقوق العباد ۱۳۱۰ھ (بندوں کے حقوق کا کفارہ ادا کرنے والے امور کے بارے میں انتہائی حیران کن امداد)

بسم اللہ الرحمن الرحیم ط

مسئلہ ۱۶۸: حق العباد بھی کسی طرح معاف ہو سکتا ہے بغیر اس کے معاف کے جس کا حق ہے صاف ارقام فرمائیے اور حق العباد کس قدر ہیں؟ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائیے ت)

الجواب: حق العبد ہر وہ مطالبہ مالی ہے کہ شرعاً اس کے ذمہ کسی کے لئے ثابت ہو اور ہر وہ نقصان و آزار جو بے اجازت شرعیہ کسی قول فعل ترک سے کسی کے دین ، آبرو ، جسم ، مال یا صرف قلب کو پہنچایا جائے۔ تو یہ دو قسمیں ہوئیں ، اول کو دیون ، ثانی کو مظالم ، اور دونوں کو تبعات اور کبھی دیون بھی کہتے ہیں۔ ان دونوں قسم میں نسبت عموم خصوص من وجہ ہے یعنی کہیں تو دین پایا جاتا ہے مظلمہ نہیں ، جیسے خریدی چیز کی قیمت ، مزدور کی اجرت ، عورت کا مہر و غیرہا دیون کہ عقودِ جائز ہ شرعیہ سے اس کے ذمہ لازم ہوئے اور اس نے ان کی ادا میں کمی و تاخیر ناروانہ برتی یہ حق العبد اس کی گردن پر ہے مگر کوئی ظلم نہیں ، اور کہیں مظلمہ پایا جاتا ہے دین نہیں جیسے کسی کو مارا ، گالی دی ، برا کہا ، غیبت کی کہ اس کی خبر اسے پہنچی، یہ سب حقوق العبد و ظلم ہیں مگر کوئی دین واجب الادا نہیں ، اور کہیں دین اور مظلمہ دونوں ہوتے ہیں جیسے کسی کا مال چرایا ، چھینا ، لوٹا ، رشوت

Taken in interest or gambling, all these are debts as well as injustices. The first category includes all forms of contracts and financial claims; the second encompasses eighteen types resulting from actions, words, or omissions affecting religion, honor, life, body, property, or heart—each category comprising hundreds of scenarios. Thus, how can we count how many the rights of people (Huquq-ul-Ibad) are? However, their general principle has been stated: wherever a matter from these two categories is found, consider it a right of the servant. Then, whatever kind of right it may be, it is not forgiven until the owner of the right forgives it. As for the rights of Allah (Huquq-Allah), it is evident that who else can forgive besides Him? "And who forgives sins except Allah?"1 — who forgives sins except Allah? All praise be to Allah, for forgiveness is in the hands of the Generous, Self-Sufficient, Powerful, Kind, and Merciful. And from the Generous, nothing proceeds except generosity. Even regarding the rights of people, the Sovereign of Judgment (Allah) has maintained this principle in His Abode of Justice: it will not be forgiven until that servant forgives. Although the Exalted Lord is the owner of us and all our lives, wealth, and rights, if He were to forgive our rights as He pleased without our consent, it would still be absolute truth and justice, for we and our rights were appointed by Him. If He had not made our blood, wealth, and honor sacred and respected, no matter how much harm anyone caused us, they would not be held accountable for our rights. Even now, after this sanctity and protection, should He choose to forgo our rights, we would have no room for excuse. Yet, it is the mercy of that Generous and Merciful Lord that He has placed the authority over our rights in our own hands and has not provided a way for them to be forgiven without our pardoning, so that no oppressed person says, "O my Master! I did not receive justice." It is mentioned in the Hadith that the luminous presence, the Master of Messengers (peace and blessings of Allah be upon him), said:

Arabic Text	**Urdu Translation**
Ad-Dawawin-u-Thalathatun: Fa Diwanun la yaghfirullahu minhu shay'an, wa Diwanun la yu'ballahu bihi shay'an, wa Diwanun la yatrukullahu minhu shay'an. Fa ammal-Diwanu-lladhi la yaghfirullahu minhu shay'an fal-	Namely, there are three registers: In one register, Allah Almighty will not forgive anything; for one register, Allah Almighty has no concern; and in one register, Allah Almighty will not leave anything. The register in which there is absolutely no room for forgiveness is polytheism (disbelief) in Allah 'azza wa jalla,

Arabic Text

ishraku billahi 'azza wa jalla. Wa ammal-Diwanu-lladhi la yu'ballahu bihi shay'an fa dhulmul-abdi nafsahu fima baynahu wa bayna Rabbihi.

Urdu Translation

which will not be forgiven in any way. And the register for which Allah Almighty has no concern is the servant's sin against his own soul in the matter between him and his Lord, such as a fast of some day...

1 Al-Quran al-Karim 3 / 135

ब्याज या जुए में लिया गया, ये सभी ऋण भी हैं और अन्याय भी। पहली श्रेणी में सभी प्रकार के अनुबंध और वित्तीय दावे शामिल हैं; दूसरी श्रेणी में धर्म, सम्मान, जीवन, शरीर, संपत्ति या हृदय पर आघात करने वाले शब्दों, कार्यों या चूक से उत्पन्न होने वाले अठारह प्रकार शामिल हैं—प्रत्येक श्रेणी में सैकड़ों स्थितियां शामिल हैं। तो हम कैसे गिन सकते हैं कि बंदों के अधिकार (हुकूक-उल-इबाद) कितने हैं? हाँ, उनका एक व्यापक नियम बता दिया गया है कि इन दो श्रेणियों में से जहाँ भी कोई बात पाई जाए, उसे बंदे का अधिकार समझें। फिर अधिकार चाहे किसी भी प्रकार का हो, जब तक अधिकार का स्वामी क्षमा न करे, वह क्षमा नहीं होता। अल्लाह के अधिकारों (हुकूक-अल्लाह) के मामले में तो यह स्पष्ट है कि उसके अतिरिक्त और कौन क्षमा करने वाला है? "और अल्लाह के सिवा कौन पापों को क्षमा करता है?"1 — अल्लाह के अलावा कौन पापों को क्षमा करता है? अल्लाह का शुक्र है कि क्षमा उस उदार, आत्मनिर्भर, शक्तिशाली, दयालु और कृपालु के हाथ में है। और उदार से उदारता के सिवा कुछ और नहीं निकलता। और बंदों के अधिकारों के मामले में भी, न्याय के स्वामी (अल्लाह) ने अपने न्याय के घर में यही नियम रखा है कि जब तक वह बंदा क्षमा न करे, क्षमा नहीं होगा। यद्यपि अल्लाह तआला हमारा और हमारे जान-माल और सभी अधिकारों का स्वामी है, यदि वह हमारी सहमति के बिना हमारे अधिकारों को जिसे चाहे क्षमा कर दे, तो भी यह पूर्ण सत्य और न्याय ही है, क्योंकि हम भी उसी के हैं और हमारे अधिकार भी उसी ने निर्धारित किए हैं। यदि वह हमारे रक्त, धन और सम्मान आदि को पवित्र और सम्मानित न बनाता, तो कोई हमें कितना ही कष्ट क्यों न पहुँचाता, हमारे अधिकारों के मामले में उस पर कोई पकड़ न होती। इसी तरह अब भी इस पवित्रता और सुरक्षा के बाद भी, वह जिसके लिए चाहे हमारे अधिकार छोड़ दे, तो हमें आपत्ति करने का कोई अवसर नहीं है। लेकिन उस उदार और दयालु रब की दया है कि हमारे अधिकारों का अधिकार हमारे अपने हाथों में रखा है और हमारे क्षमा किए बिना उनके क्षमा होने का कोई तरीका नहीं रखा, ताकि कोई पीड़ित यह न कहे कि "ऐ मेरे मालिक! मुझे न्याय नहीं मिला।" हदीस में है कि प्रकाशमान उपस्थिति, संदेशवाहकों के स्वामी (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) ने फरमाया:

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद**
अद-दवावीन-उ-थलाथतुन: फा दीवानुन ला यग़फिरुल्लाह-हु मिन्हु शैअन, व दीवानुन ला	यानी रजिस्टर तीन हैं: एक रजिस्टर में अल्लाह तआला कुछ भी क्षमा नहीं करेगा; एक रजिस्टर की अल्लाह

अरबी पाठ

यु'बल्लाहु बिही शैअन, व दीवानुन ला यत्रुकुल्लाह-हु मिन्हु शैअन। फा अम्माल-दीवानु-ल्लज़ी ला यग़फिरुल्लाह-हु मिन्हु शैअन फल-इशराकु बिल्लाहि 'अज़्ज़ा व जल्ला। व अम्माल-दीवानु-ल्लज़ी ला यु'बल्लाहु बिही शैअन फा ज़ुल्मुल-अब्दि नफ़्सहु फ़ीमा बैनहु व बैना रब्बिही।

1 पवित्र कुरान 3 / 135

पेज 461 of 720

उर्दू अनुवाद

तआला को कोई परवाह नहीं है; और एक रजिस्टर में अल्लाह तआला कुछ भी नहीं छोड़ेगा। वह रजिस्टर जिसमें क्षमा का बिल्कुल स्थान नहीं है, वह अल्लाह 'अज़्ज़ा व जल्ल के साथ शिर्क है जिसे किसी भी तरह क्षमा नहीं किया जाएगा। और वह रजिस्टर जिसकी अल्लाह तआला को कोई परवाह नहीं है, वह बंदे का अपने और अपने रब के बीच के मामले में शुद्ध रूप से अपनी जान पर ज़ुल्म है, जैसे किसी दिन का रोज़ा...

سود جوئے میں لیا، یہ سب دیون بھی ہیں اور ظلم بھی۔ قسم اول میں تمام صور عقود و مطالبہ مالیہ داخل، دوسری میں قول و فعل و ترک کو دین آبرو جان جسم مال قلب میں ضرب دینے سے اٹھارہ انواع حاصل، ہر نوع صدہا صورتوں کو شامل، تو کیونکر گنا سکتے ہیں کہ حقوق العباد کس قدر ہیں، ہاں ان کا ضابطہ کلیہ بتا دیا گیا ہے کہ ان دو قسموں سے جو امر جہاں پایا جائے اسے حق العبد جانے پھر حق کس قسم کا ہو جب تک صاحب حق معاف نہ کرے معاف نہیں ہوتا، حقوق اللہ میں تو ظاہر کہ اس کے سوا دوسرا معاف کرنے والا کون "وَمَنْ یَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰہُ"1 - کون گناہ بخشے اللہ کے سوا۔ الحمد للہ کہ معافی کریم غنی قدیر رؤف رحیم کے ہاتھ ہے والکریم لایأتی منہ الا الکرم (کریم سے سوائے کرم کے کچھ اور صادر نہیں ہوتا۔ت) اور حقوق العباد میں بھی ملکِ دیان عز جلالہ نے اپنے دارالعدل کا یہی ضابطہ رکھا ہے کہ جب تک وہ بندہ معاف نہ کرے معاف نہ ہوگا اگر چہ مولیٰ تعالیٰ ہمارا اور ہمارے جان و مال و حقوق سب کا مالک ہے اگر وہ بے ہماری مرضی کے ہمارے حقوق جسے چاہے معاف فرمادے تو بھی عین حق و عدل ہے کہ ہم بھی اسی کے اور ہمارے حقوق بھی اسی کے مقرر فرمائے ہوئے، اگر وہ ہمارے خون و مال و عزت وغیرہ ہا کو معصوم و محترم نہ کرتا تو ہمیں کوئی کیسا ہی آزار پہنچاتا نام کو بھی ہمارے حق میں گرفتار نہ ہوتا۔ یو ہیں اب اس حرمت و عصمت کے بعد بھی جسے چاہے ہمارے حقوق چھوڑ دے ہمیں کیا مجال عذر ہے مگر اس کریم رحیم جل وعلا کی رحمت کہ ہمارے حقوق کا اختیار ہمارے ہاتھ رکھا ہے بے ہمارے بخشے معاف ہو جانے کی شکل نہ رکھی کہ کوئی ستم رسیدہ یہ نہ کہے کہ اے مالک میرے! میں اپنی داد کو نہ پہنچا۔ حدیث میں ہے حضور پر نور سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
الدواوين ثلثة فديوان لا يغفر الله منه شيئا وديوان لا يعبأ الله به شيئا وديوان لا يترك الله منه شيئا فأما الديوان الذي لا يغفر الله منه شيئا فالاشراك بالله عز وجل وأما الديوان الذي لا يعبأ الله به شيئا فظلم العبد نفسه فيما بينه و بين ربه	یعنی دفتر تین ہیں، ایک دفتر میں اللہ تعالیٰ کچھ نہ بخشے گا اور ایک دفتر کی اللہ تعالیٰ کو کچھ پروا نہیں اور ایک دفتر میں اللہ تعالیٰ کچھ نہ چھوڑے گا، وہ دفتر جس میں اصلاً معافی کی جگہ نہیں وہ تو اللہ عز و جل کے ساتھ شرک ہے کہ کسی طرح نہ بخشا جائے گا اور وہ دفتر جس کی اللہ عز وجل کو کچھ پروا نہیں وہ بندے کا گناہ ہے خالص اپنے اور اپنے رب کے معاملہ میں کہ کسی دن کا روزہ...

1 القرآن الكريم ٣ / ١٣٥

Fatawa Razawiyya Volume 24

(Arabic Hadith): As for the fast of a day that was missed or a prayer that was abandoned, indeed Allah Almighty will forgive that if He wills and overlook it if He wills. However, the record from which Allah will not leave anything out is the injustices among people; retribution is inevitable. - Reported by Imam Ahmad in Al-Musnad and Al-Hakim in Al-Mustadrak (1) from the Mother of the Believers, Siddiqah (Aisha), may Allah be pleased with her.

(Urdu Translation): If one missed a fast or a prayer, Allah Almighty may forgive it if He wills and overlook it. But the register from which Allah will not leave anything out is the mutual injustices among His servants, for which retribution is certain. (Imam Ahmad narrated this in Musnad and Al-Hakim in Mustadrak from the Mother of the Believers, Sayyidah Aisha Siddiqah, may Allah be pleased with her. - Translator)

To the extent that the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) says:

(Arabic Hadith): You shall certainly restore rights to those who deserve them on the Day of Resurrection, even to the point that the hornless sheep will retaliate against the horned sheep that butted it. - Narrated by the Imams: Ahmad in the Musnad, Muslim (2) in his Sahih, Al-Bukhari in Al-Adab al-Mufrad, and At-Tirmidhi in Al-Jami' from Abu Hurairah, may Allah be pleased with him.

(Urdu Translation): Indeed, on the Day of Resurrection, you will have to pay the rights to those who deserve them, to the extent that the hornless sheep will take revenge from the horned sheep for butting it. (The eminent Imams narrated this, such as Imam Ahmad in Musnad, Imam Muslim in Sahih Muslim, Imam Bukhari in Al-Adab al-Mufrad, and Imam Tirmidhi in Jami' from Hazrat Abu Hurairah, may Allah be pleased with him. - Translator)

In one narration, it is stated:

(Arabic Hadith): Until even an ant from an ant. - Narrated by Imam Ahmad (3) with a sound chain.

(Urdu Translation): Even an ant will take retribution from another ant. (Imam Ahmad has narrated this with an authentic chain. - Translator)

Since there are no rupees or gold coins there to be given in compensation for rights, the method of payment will be that his good deeds will be given to the rightful

owner. If it is settled, it is a blessing, otherwise, the owner's sins will be placed upon him, until...

Footnotes: 1. Musnad Ahmad bin Hanbal, Hadith 25500, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 7/322; Al-Mustadrak al-Hakim, Book of States, Chapter: Allah Making Retribution Among Animals, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 4/72-765. 2. Sahih Muslim, Book of Virtue and Joining Ties, Chapter: Helping a Brother Oppressor or Oppressed, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/320; Musnad Ahmad bin Hanbal from Abu Hurairah, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 2/301. 3. Musnad of Imam Ahmad bin Hanbal from Abu Hurairah, may Allah be pleased with him, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 2/363.

फतावा रज़विया जिल्द 24

(अरबी हदीस): यदि किसी दिन का रोज़ा छोड़ दिया या कोई नमाज़ छोड़ दी, तो अल्लाह तआला चाहे तो उसे माफ़ कर दे और दरगुज़र फरमाए। और वह दफ़्तर जिसमें से अल्लाह तआला कुछ न छोड़ेगा, वह बंदों का आपस में एक-दूसरे पर ज़ुल्म है कि इसमें ज़रूर बदला होना है। - इसे इमाम अहमद ने मसनद में और हाकिम ने मुस्तदरक (1) में उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत किया है।

(उर्दू अनुवाद): यदि किसी ने रोज़ा या नमाज़ छोड़ दी, तो अल्लाह तआला चाहे तो उसे माफ़ कर दे और दरगुज़र फरमाए। और वह रजिस्टर जिसमें से अल्लाह तआला कुछ भी नहीं छोड़ेगा, वह बंदों के बीच आपसी ज़ुल्म हैं, जिसका बदला लेना निश्चित है। (इमाम अहमद ने मसनद में और हाकिम ने मुस्तदरक में उम्मुल मोमिनीन सैयदा आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से इसकी रिवायत फरमाई है। - अनुवादक)

यहाँ तक कि हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

(अरबी हदीस): तुम कयामत के दिन हकदारों को उनके हक ज़रूर अदा करोगे, यहाँ तक कि सींग रहित बकरी का बदला सींग वाली बकरी से लिया जाएगा जिसने उसे टक्कर मारी थी। - इसे इमामों: अहमद ने मसनद में, मुस्लिम (2) ने अपनी सहीह में, बुखारी ने अल-अदब अल-मुफ़रद में और तिर्मिज़ी ने जामि' में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।

(उर्दू अनुवाद): बेशक कयामत के दिन तुम्हें हकदारों को उनके हक अदा करने होंगे, यहाँ तक कि बिना सींग वाली बकरी का बदला सींग वाली बकरी से लिया जाएगा क्योंकि उसने उसे सींग मारा था। (आइमा किराम ने इसे रिवायत किया है जैसे इमाम अहमद ने मसनद में, इमाम मुस्लिम ने सहीह मुस्लिम में, इमाम बुखारी ने अल-अदब अल-मुफ़रद में और इमाम तिर्मिज़ी ने जामि' में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया। - अनुवादक)

एक रिवायत में फ़रमाया:

(अरबी हदीस): यहाँ तक कि चींटी से चींटी का बदला लिया जाएगा। - इसे इमाम अहमद (3) ने सही सनद के साथ रिवायत किया है।

(उर्दू अनुवाद): यहाँ तक कि चींटी से चींटी का बदला लिया जाएगा। (इसे इमाम अहमद ने सही सनद के साथ रिवायत किया है। - अनुवादक)

फिर वहाँ रुपये अशर्फियाँ तो हैं नहीं कि हक़ के बदले में दी जाएँ अदायगी का तरीका यह होगा कि उसकी नेकियाँ हक़दार को दे दी जाएँगी। अगर अदायगी हो गई तो ग़नीमत है, वर्ना हक़दार के गुनाह उस पर रख दिए जाएँगे यहाँ तक...

फुटनोट्स: 1. मसनद अहमद बिन हंबल, हदीस 25500, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 7/322; अल-मुस्तदरक अल-हाकिम, किताबुल अहवाल, बाब: अल्लाह का जानवरों के बीच बदला दिलाना, अल-मक्तब अल-इस्लामी, बेरूत, 4/72-765। 2. सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिलाह, बाब: भाई की मदद करना चाहे वह ज़ालिम हो या मज़लूम, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/320; मसनद अहमद बिन हंबल, अबू हुरैरा से, अल-मक्तब अल-इस्लामी, बेरूत, 2/301। 3. मसनद इमाम अहमद बिन हंबल, हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से, अल-मक्तब अल-इस्लामी, बेरूत, 2/363।

من صوم یوم ترکه او صلاة ترکها فان الله تعالی یغفر ذلك ان شاء ویتجاوز ان شاء و اما الدیوان الذی لا یترك الله منه شیئاً فمظالم العباد بینهم القصاص لامحالة - رواه الامام احمد في المسند و الحاکم فی المستدرك ۱ عن ام المؤمنین الصدیقة رضی الله تعالی عنها۔

ترک کیا یا کوئی نماز چھوڑ دی اللہ تعالٰی چاہے تو اسے معاف کردے اور درگزر فرمائے اور وہ دفتر جس میں سے اللہ تعالٰی کچھ نہ چھوڑے گا وہ بندوں کا آپس میں ایک دوسرے پر ظلم ہے کہ اس میں ضرور بدلہ ہونا ہے (امام احمد نے مسند میں اور حاکم نے مستدرک میں ام المؤمنین سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے اس کی روایت فرمائی۔ ت)

یہاں تک کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

لتؤدن الحقوق الی اهلها یوم القیمة حتی یقاد للشاة الجلحاء من الشاة القرناء تنطحها - رواه الائمة احمد في المسند ومسلم ۲ فی صحیحه والبخاري في الادب المفرد والترمذی فی الجامع عن ابی هریرة رضی الله تعالٰی عنه۔

بیشک روز قیامت تمہیں اہل حقوق کو ان کے حق ادا کرنے ہوں گے یہاں تک کہ منڈی بکری کا بدلہ سینگ والی بکری سے لیا جائے گا کہ اسے سینگ مارے (ائمہ کرام نے اس کو روایت کیا مثلاً امام احمد نے مسند میں، امام مسلم نے صحیح مسلم میں، امام بخاری نے الادب المفرد میں اور امام ترمذی نے جامع میں حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا۔ ت)

ایک روایت میں فرمایا :

حتی الذرة من الذر - رواه الامام احمد ۳ بسند صحیح۔

یہاں تک کہ چیونٹی سے چیونٹی کا عوض لیا جائے گا۔ (اسے امام احمد نے صحیح سند کے ساتھ روایت کیا ہے۔ ت)

پھر وہاں روپے اشرفیاں تو ہیں نہیں کہ معاوضہ حق میں دی جائیں طریقہ ادا یہ ہوگا کہ اس کی نیکیاں صاحب حق کو دی جائیں گی اگر ادا ہو گیا غنیمت ورنہ اس کے گناہ اس پر رکھے جائیں گے یہاں تک

حواشی: ۱۔ مسند احمد بن حنبل حدیث ۲۵۵۰۰ داراحیاء التراث العربی بیروت ۷/۳۲۲، المستدرك للحاکم کتاب الاحوال باب جعل اللہ القصاص بین الدواب المکتب الاسلامی بیروت ۴/۷۲-۷۶۵ ۲۔ صحیح مسلم کتاب البر والصلة باب نصر الاخ ظالماً او مظلوماً قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۳۲۰، مسند احمد بن حنبل عن ابی ھریرة المکتب الاسلامی بیروت ۲/ ۳۰۱ ۳۔ مسند امام احمد بن حنبل عن ابی ھریرة رضی اللہ تعالیٰ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۲/ ۳۶۳

Fatawa Razawiyyah, Volume 24

...so that the weight in the scale of justice is complete. Numerous Hadiths are narrated on this subject, among them the Hadith of Sahih Muslim and others from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him):

Arabic Original

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Do you know who the bankrupt one is?" They said: "The bankrupt among us is the one who has neither dirham nor wealth." He said: "The bankrupt one of my Ummah is he who comes on the Day of Resurrection with prayer, fasting, and Zakat, but comes having insulted this one, falsely accused that one, consumed the wealth of this one, shed the blood of this one, and struck that one. So this one will be given from his good deeds, and that one from his good deeds. If his good deeds are exhausted before what is due from him is settled, then some of their sins will be taken and cast upon him, then he will be thrown into the Fire."[1] - And refuge is sought with Allah, the Pure and Most High.

Urdu Translation

That is, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Do you know who the bankrupt one is?" The companions submitted: "Among us, the bankrupt is one who has no money or wealth." He said: "The bankrupt in my Ummah is he who will come on the Day of Judgment with prayer, fasting, and Zakat, and will come having insulted one, falsely accused another of adultery, consumed another's wealth, shed another's blood, and beaten another. So his good deeds will be given to them. Then if his good deeds run out and rights remain, their sins will be taken and cast upon him, then he will be thrown into Hell. Refuge is sought with Allah, the Pure and Most High." (T)

In short, the rights of people will not be forgiven without their forgiveness. Therefore, it is narrated that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Backbiting is worse than adultery." Someone asked: "How is that so?" He said:

Arabic Original

"A man commits adultery then repents, so Allah accepts his repentance. But the one who backbites will not be forgiven until his companion (the person backbitten) forgives him." - Narrated by Ibn Abi al-Dunya in 'Dham

Urdu Translation

If an adulterer repents, Allah the Almighty accepts it, but the forgiveness of a backbiter will not happen until the one whose ill was spoken of forgives him. And Imam

Arabic Original	Urdu Translation
al-Ghibah' and al-Tabarani in 'al-Awsat'[2] from Jabir bin Abdullah.	Tabarani in Al-Awsat from Hazrat Jabir bin Abdullah...

[1] Sahih Muslim, Kitab al-Birr wal-Silah, Bab Tahrim al-Zulm, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/320. [2] Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 6586, Maktabat al-Ma'arif, Riyadh, 7/306.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

...ताकि न्याय के तराजू में वजन पूरा हो। इस विषय में कई हदीसें वर्णित हैं, जिनमें से सही मुस्लिम आदि की हदीस अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से है:

अरबी मूल

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "क्या तुम जानते हो कि मुफ़लिस (कंगाल) कौन है?" उन्होंने कहा: "हमारे बीच मुफ़लिस वह है जिसके पास न दिरहम हो और न ही कोई सामान।" फ़रमाया: "मेरी उम्मत का मुफ़लिस वह है जो कयामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात लेकर आएगा, लेकिन इस हाल में आएगा कि उसने इसे गाली दी होगी, उस पर तोहमत लगाई होगी, इसका माल खाया होगा, उसका खून बहाया होगा और इसे मारा होगा। तो इसे उसकी नेकियाँ दी जाएँगी और उसे उसकी नेकियाँ। फिर अगर उसकी नेकियाँ उसके हक़ चुकाने से पहले ही खत्म हो गईं, तो उनके गुनाह लेकर उस पर डाल दिए जाएँगे और फिर उसे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।"[1] - और अल्लाह पाक और बुलंद व बरतर की पनाह।

उर्दू अनुवाद

यानी हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "जानते हो मुफ़लिस कौन है?" सहाबा ने अर्ज़ की: "हमारे यहाँ तो मुफ़लिस वह है जिसके पास ज़र व माल न हो।" फ़रमाया: "मेरी उम्मत में मुफ़लिस वह है जो क़यामत के दिन नमाज़, रोज़े, ज़कात लेकर आए और यूँ आए कि उसे गाली दी, उसे ज़िना की तोहमत लगाई, उसका माल खाया, उसका खून बहाया, उसे मारा तो उसकी नेकियाँ उसे दी गईं, फिर अगर नेकियाँ ख़त्म हो गईं और हक़ बाक़ी हैं तो उनके गुनाह लेकर उस पर डाल दिए गए फिर जहन्नम में फेंक दिया। अल्लाह तआला पाक और बुलंद व बरतर ज़ात की पनाह।" (त)

संक्षेप में, बंदों के हक़ उनकी माफी के बिना माफ नहीं होंगे। इसलिए वर्णित है कि हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "ग़ीबत (चुगली) ज़िना से भी बदतर है।" किसी ने पूछा: "यह कैसे?" फ़रमाया:

अरबी मूल

"एक आदमी ज़िना करता है फिर तौबा करता है, तो अल्लाह उसकी तौबा कुबूल फरमा लेता है। लेकिन ग़ीबत करने वाले की मग़फिरत (क्षमा) तब तक नहीं होगी जब तक

उर्दू अनुवाद

ज़ानी तौबा करे तो अल्लाह तआला कुबूल फ़रमा ले और ग़ीबत वाले की मग़फ़िरत न होगी जब तक वह न

अरबी मूल	उर्दू अनुवाद
कि उसका साथी (जिसकी ग़ीबत की गई) उसे माफ न कर दे।" - इसे इब्न अबी अद-दुनिया ने 'ज़म अल-ग़ीबत' में और तबरानी ने 'अल-औसत'[2] में जाबिर बिन अब्दुल्ला से रिवायत किया है।	बख़्शे जिसकी बुराई की गई। और इमाम तबरानी ने अल-औसत में हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से...

---

[1] सही मुस्लिम, किताब अल-बिर्र वस-सिलह, बाब तहरीम अल-जुल्म, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/320. [2] अल-मुअजम अल-औसत, हदीस 6586, मकतबत अल-मआरिफ, रियाद, 7/306.

کہ ترازوئے عدل میں وزن پورا ہو۔ احادیثِ کثیرہ اس مضمون میں وارد، ازاں جملہ حدیثِ صحیح مسلم وغیرہ ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ:

متن عربی	**ترجمہ اردو**
ان رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم قال اتدرون من المفلس قالوا المفلس فینا من لادرھم لہ ولا متاع فقال ان المفلس من امتی من یأتی یوم القیمۃ بصلوۃ و صیام وزکوۃ ویأتی قد شتم ھذا وقد قذف ھذا واکل مال ھذا وسفك دم ھذا وضرب ھذا فیعطی ھذا من حسناتہ وھذا من حسناتہ فان فنیت حسناتہ قبل ان یقضی ماعلیہ اخذ من خطایاہم فطرحت علیہ ثم طرح فی النار ۱۔ والعیاذ باللہ سبحنہ وتعالٰی۔	یعنی حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا جانتے ہو مفلس کون ہے؟ صحابہ نے عرض کی ہمارے یہاں تو مفلس وہ ہے جس کے پاس زر و مال نہ ہو۔ فرمایا میری امت میں مفلس وہ ہے جو قیامت کے دن نماز، روزے، زکوٰۃ لے کر آئے اور یوں آئے کہ اسے گالی دی اسے زنا کی تہمت لگائی اس کا مال کھایا اس کا خون گرایا اسے مارا تو اس کی نیکیاں اسے دی گئیں پھر اگر نیکیاں ختم ہو چکیں اور حق باقی ہیں تو ان کے گناہ لے کر اس پر ڈالے گئے پھر جہنم میں پھینک دیا۔ اللہ تعالٰی پاک اور بلند و برتر ذات کی پناہ۔ (ت)

غرض حقوق العباد بے ان کی معافی کے معاف نہ ہوں گے ولذا مروی ہوا کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: الغیبۃ اشد من الزنا غیبت زنا سے سخت تر ہے۔ کسی نے عرض کی: یہ کیونکر؟ فرمایا:

متن عربی	ترجمہ اردو
الرجل یزنی ثم یتوب فیتوب اللہ علیہ وان زانی توبہ کرے تو اللہ تعالیٰ قبول فرمالے اور غیبت	
صاحب الغیبۃ لایغفر لہ حتی یغفر لہ صاحبہ۔	والے کی مغفرت نہ ہوگی جب تک وہ نہ بخشے
رواہ ابن ابی الدنیا فی ذم الغیبۃ و الطبرانی فی	جس کی برائی کی) میں اور امام طبرانی نے
الاوسط ۲ عن جابر بن عبداللہ	الاوسط میں حضرت جابر بن عبداللہ

---

۱ صحیح مسلم کتاب البر والصلۃ باب تحریم الظلم قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۳۲۰ ۲ المعجم الاوسط حدیث ۶۵۸۶ مکتبۃ المعارف ریاض ۷ / ۳۰۶

Fatawa Razawiyya, Volume 24

[Box 1] Left Column: And from Abu Sa'id al-Khudri and Al-Bayhaqi from both of them and from Anas may Allah Almighty be pleased with them. Right Column: And it was narrated by Hazrat Abu Sa'id Khudri and Imam Bayhaqi from Hazrat Anas (may Allah Almighty be pleased with them) in addition to those two. (T)

Then, seeking forgiveness here is easy; on the Day of Judgment, hoping for it will be difficult, for there every person will be preoccupied with their own state, seeking virtues and loathing vices. Who would find it bad if others' virtues come into their hands and their own vices go onto someone else's head? It has even been stated in the Hadith that parents will have some debt upon their son; they will confront him on the Day of Judgment saying, 'Give us our debt.' He will say, 'I am your child,' perhaps hoping for mercy. They will wish, 'If only it were more.'

[Box 2] Left Column (Arabic): At-Tabarani from Ibn Mas'ud (may Allah Almighty be pleased with him) said: I heard the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) say: "Indeed, parents will have a debt upon their child. When it is the Day of Resurrection, they will cling to him, and he will say, 'I am your child,' and they will love or wish that it was more than that."[1] Right Column (Urdu): In Tabarani, it is narrated from Ibn Mas'ud (may Allah Almighty be pleased with him) who said: I heard from the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) that he was saying: "Parents will have a debt upon their son. On the Day of Judgment, parents will rush towards the son, and the son will say 'I am your son.' Then the parents will be given their right, and they will wish: 'If only our right were even more.'" (T)

When this is the state of parents, hoping from others is a vain thought. Yes, the Generous and Merciful Lord and Master (Glorious and Exalted), when He wishes to show mercy to someone, He will do so by granting the claimant priceless palaces in Paradise as compensation, thus making them pleased to waive their right. In one miracle of grace, both will benefit: neither will his good deeds be given to them, nor will his sins be placed on him, nor will his right be lost. Rather, he will receive something thousands of times better and more excellent. By the mercy of the Truth and the kindness of the Lord, the oppressor is saved and the oppressed is satisfied. "So for Allah is all praise, abundant, pure, and blessed, as our Lord loves and is pleased with." (Then all praise and glorification is for Allah alone, whose essence is most pure and blessed. (T)) It is mentioned in the Hadith:

[Box 3] Left Column (Arabic): While the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)... Right Column (Urdu): Meaning one day, the Radiant Presence, the Master of the Worlds (peace and blessings of Allah be upon him)...

---

[1] Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith, Faisalya Library Beirut 1/270

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

[बॉक्स 1] बायाँ कॉलम: और हज़रत अबू सईद खुदरी से और इमाम बेहक़ी ने इन दोनों के अलावा हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से इसकी रिवायत फ़रमाई। दायाँ कॉलम: और हज़रत अबू सईद खुतरी और इमाम बैहक़ी ने उन दोनों के अलावा हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से इसकी रिवायत की। (त)

फिर यहाँ माफ़ करा लेना आसान है, क़यामत के दिन इसकी उम्मीद मुश्किल है कि वहाँ हर शख़्स अपने-अपने हाल में गिरफ़्तार नेकियों का तलबगार और बुराइयों से बेज़ार होगा। दूसरों की नेकियां अपने हाथ आना और अपनी बुराइयां उनके सिर जाना किसे बुरा लगता है? यहाँ तक कि हदीस में आया है कि माँ-बाप का बेटे पर कुछ हक़ होगा, वे क़यामत के दिन उसे घेरेंगे कि हमारा हक़ दे, वह कहेगा कि मैं तुम्हारा बच्चा हूँ, शायद रहम करें, लेकिन वे तमन्ना करेंगे कि काश और ज़्यादा होता।

[बॉक्स 2] बायाँ कॉलम (अरबी): अत-तबरानी इब्ने मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत करते हैं कि उन्होंने कहा: मैंने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को फरमाते हुए सुना: "बेशक माता-पिता का अपनी संतान पर कुछ हक़ होगा। जब क़यामत का दिन होगा, वे उससे लिपट जाएंगे। वह कहेगा, 'मैं तुम्हारी संतान हूँ', और वे चाहेंगे या तमन्ना करेंगे कि काश यह और अधिक होता।"[1] दायाँ कॉलम (उर्दू): तबरानी में इब्न मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना कि आप फरमा रहे थे कि माता-पिता का बेटे पर हक़ होगा। क़यामत के दिन माता-पिता बेटे पर झपटेंगे, तो बेटा कहेगा कि मैं तुम्हारा बेटा हूँ, फिर माता-पिता को उनका हक़ दिलाया जाएगा और वे तमन्ना करेंगे कि काश हमारा हक़ और ज़्यादा होता। (त)

जब माँ-बाप का यह हाल है तो दूसरों से उम्मीद करना बेकार है। हाँ, करीम और रहीम मालिक और मौला (जल्ल जलालुहू व तबारक व तआला) जिस पर रहम करना चाहेगा, तो ऐसा करेगा कि हक़ वाले को जन्नत में बेशक़ीमती महल मुआवज़े के तौर पर देकर हक़ माफ़ करने पर राज़ी कर देगा। करम के एक करिश्मे में दोनों का भला होगा: न तो उसकी नेकियाँ ली जाएंगी, न उसकी बुराइयाँ दूसरे पर डाली जाएंगी, और न ही हक़ ज़ाया होगा, बल्कि हक़ से हज़ारों गुना बेहतर चीज़ मिलेगी। हक़ की रहमत और बंदा-नवाज़ी से ज़ालिम निजात पा जाएगा और मज़लूम राज़ी हो जाएगा। "तो अल्लाह ही के लिए तमाम हम्द (प्रशंसा) है, बहुत ज़्यादा, पाकीज़ा और बरकत वाली, जैसा हमारा रब

पसंद करता है और जिससे राज़ी होता है।" (फिर अल्लाह तआला ही के लिए हम्द और सना है जिसकी ज़ात बहुत ज़्यादा पाकीज़ा और बा-बरकत है। त) हदीस में है:

[बॉक्स 3] बायाँ कॉलम (अरबी): जबकि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)... दायाँ कॉलम (उर्दू): यानी एक दिन हुज़ूर पुर नूर सैय्यदुल आलमीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)...

---

[1] अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस, मकतबा अल-फैसलिया बेरुत 1/270

[پہلا خانہ] بایاں کالم: و ابی سعید الخدری و البیھقی عنھما و عن انس رضی اللہ تعالٰی عنھم۔ دایاں کالم: اور حضرت ابو سعید خدری سے اور امام بیہقی نے ان دونوں کے علاوہ حضرت انس رضی اللہ تعالٰی عنہم سے اس کی روایت فرمائی۔ت)

پھر یہاں معاف کرا لینا سہل ہے قیامت کے دن اس کی امید مشکل کہ وہاں ہر شخص اپنے اپنے حال میں گرفتار نیکیوں کا طلبگار برائیوں سے بیزار ہوگا پرائی نیکیاں اپنے ہاتھ آتے اپنی برائیاں اس کے سر جاتے کسے بری معلوم ہوتی ہیں، یہاں تک کہ حدیث میں آیا ہے کہ ماں باپ کا بیٹے پر کچھ دین آتا ہوگا اسے روز قیامت پیٹیں گے کہ ہمارا دین دے وہ کہے گا میں تمہارا بچہ ہوں، یعنی شاید رحم کریں وہ تمنا کریں گے کاش اور زیادہ ہوتا۔

[دوسرا خانہ] بایاں کالم (عربی): الطبرانی عن ابن مسعود رضی اللہ تعالٰی عنہ قال سمعت رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم یقول انہ یکون للوالدین علی ولد ھما دین فاذا کان یوم القیمۃ یتعلقان بہ فیقول انا ولد کما فیودان او یتمنیان لو کان اکثر من ذلك۔1 دایاں کالم (اردو): طبرانی میں ابن مسعود رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت ہے انہوں نے کہا کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے سنا کہ آپ فرمارہے تھے کہ والدین کا بیٹے پر دین ہوگا قیامت کے روز والدین بیٹے پر لپکیں گے تو بیٹا کہے گا میں تمہارا بیٹا ہوں تو والدین کو حق دلایا جائے گا اور تمنا کریں گے کاش ہمارا حق اور زائد ہوتا۔(ت)

جب ماں باپ کا یہ حال تو اوروں سے امید خام خیال، ہاں کریم و رحیم مالک و مولٰی جل جلالہ و تبارک و تعالٰی جس پر رحم فرمانا چاہے گا تو یوں کرے گا کہ حق والے کو بے بہا قصور جنت

معاوضہ میں عطا فرما کر عفو حق پر راضی کر دے گا ایک کرشمہ کرم میں دونوں کا بھلا ہو گا نہ اس کی حسنات اسے دی گئیں نہ اس کی سیآت اس کے سر رکھی گئیں نہ اس کا حق ضائع ہونے پایا بلکہ حق سے ہزاروں درجے بہتر افضل پایار حمت حق کی بندہ نوازی ظالم ناجی مظلوم راضی، فلہ الحمد حمدا کثیرا طیبا مبارکا فیہ کما یحب ربنا و یرضی (پھر اللہ تعالیٰ ہی کے لئے حمد وثنا ہے جس کی ذات بہت زیادہ پاکیزہ اور بابرکت ہے۔ت) حدیث میں ہے :

[تیسرا خانہ] بایاں کالم (عربی): بینا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ دایاں کالم (اردو): یعنی ایک دن حضور پر نور سید العالمین صلی اللہ تعالیٰ

---

1 المعجم الکبیر حدیث المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۱/ ۲۷۰

Fatwa Razawiyya, Volume 24

...while he [the Prophet ﷺ] was sitting, when we saw him laugh until his front teeth were visible. Umar (may Allah be pleased with him) said: "O Messenger of Allah, may my parents be sacrificed for you, what made you laugh?"

He said:

Two men from my community knelt before the Lord of Might, Glory be to Him. One of them said: "O my Lord, take for me what was wrongfully taken by my brother." Allah Almighty said to the claimant: "What will you do with your brother, as nothing remains of his good deeds?" He replied: "O my Lord, then let him carry some of my burdens (sins)." Upon saying this, the eyes of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) overflowed with tears, then he said: "Indeed, that is a momentous day; people will be in need of others carrying their burdens." Then Allah said to the claimant: "Raise your gaze and look." He raised his gaze and said: "O my Lord, I see cities of gold and palaces of gold adorned with pearls. For which Prophet is this, or for which truthful one (Siddiq), or for which martyr?" Allah, the Blessed and Exalted, said: "It is for whoever pays the price." He said: "O my Lord, who can possibly pay its price?" He replied: "You." He asked: "How?"

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

...और वह [नबी ﷺ] बैठे हुए थे, जब हमने उन्हें मुस्कुराते हुए देखा यहाँ तक कि उनके सामने के दाँत दिखाई देने लगे। उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अर्ज़ की: "या रसूल अल्लाह, मेरे माँ-बाप आप पर कुर्बान हों, आपको किस बात पर हँसी आई?"

आपने फ़रमाया:

मेरी उम्मत के दो आदमी रब्बुल इज़्ज़त (अल्लाह) के सामने घुटनों के बल खड़े हुए। उनमें से एक ने अर्ज़ की: "ऐ मेरे रब! मेरे इस भाई ने मुझ पर जो ज़ुल्म किया है, उसका बदला मुझे दिला।" अल्लाह तआला ने दावेदार से फ़रमाया: "तू अपने भाई का क्या करेगा जबकि उसकी नेकियाँ तो खत्म हो चुकी हैं?" उसने अर्ज़ की: "ऐ मेरे रब! तो वह मेरे गुनाहों का बोझ उठा ले।" यह फ़रमाकर हुज़ूर रहमते आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की आँखों से आँसू बह निकले, फिर फ़रमाया: "बेशक वह दिन बड़ा सख़्त है, लोग इस बात के मोहताज होंगे कि उनके गुनाहों का कुछ बोझ दूसरे उठाएँ।" अल्लाह तआला ने दावेदार से फ़रमाया: "अपनी नज़र उठाकर देख।" उसने नज़र उठाई और कहा: "ऐ मेरे रब! मैं सोने के शहर और सोने के महल देख रहा हूँ जो मोतियों से जड़े हुए हैं। ये किस नबी के हैं, या किस सिद्दीक़ के, या किस शहीद के?" अल्लाह तबारक व तआला ने फ़रमाया: "यह उसके लिए है जो इसकी कीमत अदा करे।" उसने कहा: "ऐ मेरे रब! भला इसकी कीमत कौन दे सकता है?" फ़रमाया: "तू।" अर्ज़ की: "कैसे?"

पृष्ठ 465 / 720

فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۴

وسلم جالس اذ رأیناہ اضحک حتی بدت ثنایاہ فقال لہ عمر ما اضحکک یارسول اللہ بابی انت وامی۔

علیہ وسلم تشریف فرما تھے ناگاہ خندہ فرمایا کہ اگلے دندان مبارک ظاہر ہوئے، امیر المومنین فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے عرض کی یا رسول اللہ میرے ماں باپ حضور پر قربان کس بات پر ہنسی آئی ؟

ارشاد فرمایا:

رجلان من امتی جثیا بین یدی رب العزۃ فقال احد ہما یا رب خذلی مظلمتی من اخی فقال اللہ تعالیٰ للطالب کیف تصنع باخیک ولم یبق من حسناتہ شیئ قال یارب فیحمل من اوزاری، ففاضت عینا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بالبکاء ثم قال ان ذلك الیوم عظیم یحتاج الناس ان یحمل عنہم من اوزارہم فقال اللہ للطالب ارفع بصرک فانظر فرفع فقال یارب اری مدائن من ذہب وقصورا من ذہب مکللۃ باللؤلؤ لای نبی ہذا اولای صدیق ہذا اولای شہید ہذا قال لمن اعطی الثمن قال یارب ومن یملك ذلك قال انت تملکہ قال بماذا قال بعفوک عن اخیك قال یارب فانی قد عفوت عنہ قال اللہ تعالیٰ فخذ بید اخیك فادخلہ الجنۃ فقال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم عند

دو مرد میری امت سے رب العزت جل جلالہ کے حضور زانوؤں پر کھڑے ہوئے، ایک نے عرض کی: اے رب میرے! میرے اس بھائی نے جو ظلم مجھ پر کیا ہے اس کا عوض میرے لئے لے۔ رب تعالیٰ نے فرمایا: اپنے بھائی کے ساتھ کیا کرے گا اس کی نیکیاں تو سب ہو چکیں، مدعی نے عرض کی: اے رب میرے! تو میرے گناہ وہ اٹھا لے۔ یہ فرما کر حضور رحمت عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی آنکھیں گریہ سے بہہ نکلیں، پھر فرمایا: بیشک وہ دن بڑا سخت ہے لوگ اس

کے محتاج ہوں گے کہ ان کے گناہوں کا کچھ بوجھ اور لوگ اٹھائیں۔ مولیٰ عزوجل نے مدعی سے فرمایا: نظر اٹھا کر دیکھ۔ اس نے نگاہ اٹھائی کہا اے رب میرے! میں کچھ شہر دیکھتا ہوں سونے اور محل سونے کے سراپا موتیوں سے جڑے ہوئے یہ کس نبی کے ہیں یا کس صدیق یا کس شہید کے۔ مولیٰ تبارک و تعالیٰ نے فرمایا: اس کے ہیں جو قیمت دے کہا: اے رب میرے! بھلا ان کی قیمت کون دے سکتا ہے؟ فرمایا: تو۔ عرض کی: کیوں کر؟

'Therefore, fear Allah and mend the relationships between you, for indeed Allah will make peace between the Muslims on the Day of Resurrection.' - Narrated by Al-Hakim in Al-Mustadrak, Al-Bayhaqi in the Book of Resurrection and Raising, Abu Ya'la in his Musnad, and Sa'id ibn Mansur in his Sunan from Anas bin Malik, may Allah be pleased with him. He (the Prophet) said: "Tell him to forgive his brother." He (the man) said: "O my Lord! If it is so, then I have forgiven him." The Exalted Lord said: "Take your brother's hand and lead him into Paradise." The Master of the Universe (peace and blessings be upon him) narrated this and said: "Fear Allah and make peace among yourselves, for the Exalted Lord will reconcile the Muslims on the Day of Resurrection." (Al-Hakim narrated it in Al-Mustadrak, Imam Al-Bayhaqi in Kitab al-Ba'th wa al-Nushur, Abu Ya'la in Musnad, and Sa'id bin Mansur in his Sunan from Hazrat Anas bin Malik, may Allah be pleased with him. — Translator)

And he (peace and blessings be upon him) says: 'When the creation meets on the Day of Resurrection, a caller will call out: O people of the assembly, abandon the injustices among yourselves, and your reward is with Allah.' - Narrated by Al-Tabarani from Anas, also, may Allah be pleased with him, with a good chain of transmission. When the creation is gathered on the Day of Resurrection, a herald will announce from the side of the Lord of Honor and Glory: "O gathered people! Redress the injustices among yourselves, and your reward is My responsibility." (Imam Al-Tabarani has narrated this from Hazrat Anas bin Malik, may Allah be pleased with him, with a good chain of transmission. — Translator)

And in another Hadith, the noble Messenger (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'Indeed, Allah will gather the first and the last on the Day of Resurrection on one single plain. Then a caller from beneath the Throne will call out: O people of Tawheed (Monotheism), indeed Allah, Mighty and Majestic, has forgiven you. Then the people will stand and cling to one another regarding worldly injustices, then a caller will cry out: O people of...' That is, indeed Allah (Exalted is He) will gather all the predecessors and successors on one piece of land on the Day of Resurrection. Then from beneath the Throne, a caller will announce: "O monotheists! The Lord Most High has forgiven you His rights." People will stand and confront each other regarding worldly injustices. The caller will shout: "O people of monotheism! Each other..."

1 Al-Mustadrak al-Hakim, Kitab al-Ahwal, Dar al-Fikr, Beirut, 4/576. Ad-Durr al-Manthur, cited from Ibn Abi al-Shaykh, Abu Ya'la, and Al-Hakim, Maktaba A'zami, Qom, Iran, 3/161. 2 Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 5120, Maktabat al-Ma'arif, Riyadh, 6/67.

'इसलिए, अल्लाह से डरो और अपने बीच के संबंधों को सुधारो, क्योंकि वास्तव में अल्लाह प्रलय के दिन मुसलमानों के बीच सुलह कराएगा।' - अल-हाकिम द्वारा अल-मुस्तद्रक में, अल-बैहकी द्वारा पुनरुत्थान और प्रसार की पुस्तक में, अबू याला द्वारा उनकी मसनद में, और सईद बिन मंसूर द्वारा अनस बिन मलिक, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, से उनकी सुनन में वर्णित। उन्होंने (पैगंबर) फरमाया: "उससे कहो कि अपने भाई को माफ कर दे।" उसने (व्यक्ति ने) कहा: "ऐ मेरे रब! अगर ऐसा है, तो मैंने उसे माफ कर दिया।" मौला जल मज्दहू ने फरमाया: "अपने भाई का हाथ पकड़ो और उसे स्वर्ग में ले जाओ।" हुज़ूर सैय्यद-ए-आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसे बयान करते हुए फरमाया: "अल्लाह से डरो और आपस में सुलह करो क्योंकि मौला अज़्ज़-व-जल्ल प्रलय के दिन मुसलमानों के बीच सुलह कराएगा।" (हाकिम ने मुस्तद्रक में, इमाम बैहकी ने किताब अल-बा'थ व अल-नुशूर में, अबू याला ने मसनद में और सईद बिन मंसूर ने अपनी सुनन में हज़रत अनस बिन मलिक रज़ियल्लाहु अन्हु से इसे रिवायत किया है। — त.)

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं: 'जब प्रलय के दिन सृष्टि एकत्रित होगी, तो एक पुकारने वाला पुकारेगा: ऐ सभा के लोगो, अपने बीच के अन्यायों को त्याग दो, और तुम्हारा प्रतिफल अल्लाह पर है।' - अल-तबरानी द्वारा अनस से भी रिवायत किया गया है, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, एक अच्छी सनद के साथ। जब प्रलय के दिन सृष्टि इकट्ठी होगी, तो रब्बुल इज़्ज़त जल-व-अला की ओर से एक मुनादी आवाज़ देगा: "ऐ मजमे वालो! आपस के जुल्मों का बदला चुका लो और तुम्हारा सवाब मेरे ज़िम्मे है।" (इमाम तबरानी ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से बसंद हसन इसे रिवायत किया है। — त.)

और एक हदीस में है हुज़ूर वाला सलवातुल-लाहि त'आला व-सलामुहू अलैहि ने फरमाया: 'वास्तव में, अल्लाह प्रलय के दिन पहले और बाद के सभी लोगों को एक ही मैदान में इकट्ठा करेगा। फिर अर्श के नीचे से एक पुकारने वाला पुकारेगा: ऐ तौहीद वालो, वास्तव में अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने तुम्हें माफ कर दिया है। फिर लोग खड़े होंगे और सांसारिक अन्यायों के बारे में एक-दूसरे से लिपटेंगे, फिर एक पुकारने वाला चिल्लाएगा: ऐ तौहीद वालो...' यानी बेशक अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल प्रलय के दिन सब अगले-पिछलों को एक ज़मीन में जमा फरमाएगा, फिर ज़ेर-ए-अर्श से मुनादी निदा करेगा: "ऐ तौहीद वालो! मौला त'आला ने तुम्हें अपने हुकूक माफ फरमा दिए।" लोग खड़े होकर आपकी दुनियावी मज़लूमों में एक दूसरे से लिपटेंगे, मुनादी पुकारेगा: "ऐ तौहीद वालो! एक दूसरे..."

1 मुस्तद्रक लिल-हाकिम, किताबुल अहवाल, दारुल फिक्र बेरुत 4/576, अद-दुर्रुल मनसूर बहवाला इब्न अबी अल-शेख़ व अबू याला वल-हाकिम मक्तबा आज़मी क़ुम ईरान 3/161। 2 अल-मुअजम अल-अवसत हदीस 5120 मक्तबतुल मआरिफ़ अल-रियाज़ 6/67।

ذٰلك اتقوا الله واصلحوا ذات بينكم فان الله يصلح بين المسلمين يوم القيمۃ۔ رواہ الحاکم فی المستدرك ۱ والبیہقی فی کتاب البعث والنشور و ابویعلٰی فی مسندہ وسعید بن منصور فی سننہ عن انس بن مالك رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ فرمایا:یوں کہ اپنے بھائی کو معاف کردے۔ کہا: اے رب میرے! یہ بات ہے تو میں نے معاف کیا۔ مولٰی جل مجدہ نے فرمایا: اپنے بھائی کا ہاتھ پکڑ لے اور جنت میں لے جا۔ حضور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے اسے بیان کر کے فرمایا کہ اللہ تعالٰی سے ڈرو اور آپس میں صلح کرو کہ مولٰی عزوجل قیامت کے دن مسلمانوں میں صلح کرائے گا۔ (حاکم نے مستدرک میں امام بیہقی نے کتاب البعث والنشور میں ابو یعلٰی نے مسند اور سعید بن منصور نے اپنی سنن میں حضرت انس بن مالک رضی اللہ تعالٰی عنہ سے اس کو روایت کیا ہے۔ت)

اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم: اذا التقی الخلائق یوم القیمۃ نادی منادیا یا اھل الجمع تتارکوا المظالم بینکم و ثوابکم علی اللہ۔ رواہ الطبرانی ۲ عن انس ایضا رضی اللہ تعالٰی عنہ بسند حسن۔ جب مخلوق روز قیامت بہم ہوگی ایک منادی رب العزت جل وعلا کی طرف سے ندا کرے گا اے مجمع والو! آپس کے ظلموں کا تدارک کرلو اور تمہارا ثواب میرے ذمہ ہے۔ (امام طبرانی نے حضرت انس رضی اللہ تعالٰی عنہ سے بسند حسن اس کو روایت کیا ہے۔ ت)

اور ایک حدیث میں ہے حضور والا صلوات اللہ تعالٰی وسلامہ علیہ نے فرمایا: ان اللہ یجمع الاولین والاخرین یوم القیمۃ في صعید واحد ثم ینادی مناد من تحت العرش یا اھل التوحید ان اللہ عزوجل قد عفا عنکم، فیقوم الناس فیتعلق بعضھم ببعض فی ظلامات ثم ینادی مناد یا اھل یعنی بیشک اللہ عزوجل روز قیامت سب اگلوں پچھلوں کو ایک زمین میں جمع فرمائے گا پھر زیر عرش سے منادی ندا کرے گا اے توحید والو! مولٰی تعالٰی نے تمہیں اپنے حقوق معاف فرمائے لوگ کھڑے ہو کر آپ

کے دنیاوی مظلوموں میں ایک دوسرے سے لپٹیں گے منادی پکارے گا اے توحید والو! ایک دوسرے

---

1 مستدرك للحاكم كتاب الاهوال دارالفكر بيروت ۴/ ۵۷۶، الدرالمنثور بحوالہ ابن ابی الشیخ وابو یعلی والحاکم مکتبہ اعظمی قم ایران ۳/ ۱۶۱ 2 المعجم الاوسط حدیث ۵۱۲۰ مکتبۃ المعارف الریاض ۶/ ۶۷

Fatawa Rizvia Volume 24

[Arabic Box]: "At-Tawheed (The Oneness of God requires) that you forgive one another, and rewarding you is My responsibility." - Narrated also from Umm Hani (may Allah be pleased with her). ...forgive, and giving the reward is my responsibility. (Tabarani also narrated this from Sayyidah Umm Hani (may Allah be pleased with her). - T)

May the Most Generous of the generous, whose greatness is exalted, grant this great wealth and supreme blessing to this low, black-faced, sinful being, purely out of His kindness and grace.

"For sinners are worthy of dignity." (Sinners are deserving of being granted honor and greatness. - T)

In view of that time, His magnificent and beautiful promise, clearly and explicitly stated (either directly or as if explicitly), has come for five groups: First: The pilgrim (Haji) who performs Hajj with pure wealth, pure earnings, and pure intention, and during it, avoids quarrels, disputes, talk of sexual intercourse before women, and all kinds of sins and disobedience. Up to that time, whatever sins were committed are forgiven, provided the Hajj is accepted. Then, if he dies immediately after Hajj and did not get enough time to fulfill the rights of Allah (Mighty and Majestic) or people that were due on him, or even to worry about fulfilling them, there is strong hope that the Almighty Lord will absolutely forgive all His own rights, meaning the obligatory acts like prayer, fasting, Zakat etc., which he failed to perform; the pen of Divine forgiveness will be applied even to their claim. And regarding the rights of people, debts, and injustices, such as owing someone a loan, snatching property, or speaking ill - the Almighty Lord will take them all upon His own Generosity, making the claimants satisfied on the Day of Judgment and granting salvation from claim and enmity. Similarly, if he remains alive afterwards and fulfills the rights to the extent of his ability, i.e., pays Zakat, performs missed prayers and fasts, pays back whoever's claim comes, seeks forgiveness from whoever he troubled, and for a claim whose claimant is no longer present or known, gives charity on their behalf - and if due to short time some right of Allah or a person remains unfulfilled despite his efforts to fulfill them, he makes a will about it in his wealth. In short, as long as he had the power to follow the path of exoneration and did not fall short, the hope for him is even stronger, for the original rights have been addressed by this measure, and the sin of opposing Hajj has been washed away. Yes, if after Hajj, despite having the

power, he remains deficient in these matters, then all these sins will be back on his head, because the rights themselves were still outstanding, and then delay and deficiency in fulfilling them became fresh sins, and that Hajj...

[1] Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 1358, Maktabat al-Ma'arif, Riyadh, 2/200

फ़तावा रज़विया खंड २४

[अरबी बॉक्स]: "अत-तौहीद... (ईश्वर की एकता की आवश्यकता है) कि तुम एक-दूसरे को क्षमा करो, और तुम्हें पुरस्कृत करना मेरी जिम्मेदारी है।" - उम्मे हानी (रज़ियल्लाहु अन्हा) से भी वर्णित है। ...क्षमा कर दो और पुण्य देना मेरी ज़िम्मेदारी है। (इसे तबरानी ने सैय्यदा उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा से भी रिवायत किया है। - टी)

उदारों में सबसे उदार (अकरमुल अकरमीन), जिनकी महिमा महान है, अपने विशुद्ध अनुग्रह और कृपा से इस नीच, काले चेहरे वाले, पाप-मूर्ति को भी यह महान धन और सर्वोच्च आशीर्वाद प्रदान करें।

"कि पापी ही गरिमा के योग्य हैं।" (पापी सम्मान और बड़प्पन दिए जाने के योग्य हैं। - टी)

उस समय की दृष्टि में, उनका वह महान और सुंदर वादा, जो स्पष्ट रूप से और साफ़ तौर पर (या तो सीधे तौर पर या जैसे कि स्पष्ट हो) पाँच समूहों के लिए आया है: प्रथम: वह हाजी जो शुद्ध धन, शुद्ध कमाई और शुद्ध नीयत से हज करे, और उसमें लड़ाई-झगड़े, और महिलाओं के सामने संभोग के ज़िक्र, और हर प्रकार के पाप व अवज्ञा से बचे। उस समय तक जितने पाप किए थे, स्वीकृति की शर्त पर सब माफ़ हो जाते हैं। फिर अगर हज के बाद तुरंत मर गया और इतनी मोहलत न मिली कि अल्लाह (अज़्ज़ व जल्ल) के अधिकार या बंदों के जो अधिकार उसके ज़िम्मे थे, उन्हें पूरा करता या पूरा करने की चिंता करता, तो पूर्ण आशा है कि मौला तआला अपने तमाम अधिकारों से पूर्णतः क्षमा फरमाए, यानी नमाज़, रोज़ा, ज़कात वग़ैरह फ़राइज़ जो उसने अदा नहीं किए थे, उनकी माँग पर भी ईश्वरीय क्षमा की कलम फिर जाए। और बंदों के अधिकार, ऋण और ज़ुल्म जैसे किसी का कर्ज आता हो, माल छीना हो, बुरा कहा हो - मौला तआला उन सब को अपने करम (उदारता) के ज़िम्मे ले ले, कयामत के दिन अधिकार रखने वालों को प्रसन्न कर दे और दावे व दुश्मनी से मुक्ति दिलाए। इसी तरह अगर बाद में जीवित रहा और सामर्थ्य के अनुसार अधिकारों की भरपाई कर ली, यानी ज़कात दे दी, कज़ा नमाज़-रोज़े पूरे किए, जिसका जो दावा आता था दे दिया, जिसे कष्ट पहुँचाया था उससे माफ़ करा लिया, जिस दावे का लेने वाला नहीं रहा या ज्ञात नहीं उसकी ओर से दान (सदका) कर दिया - और मोहलत की कमी के कारण अल्लाह या बंदे का जो अधिकार पूरा करते-करते रह गया, उसके संबंध में अपने धन में वसीयत कर दी। संक्षेप में, जहाँ तक दोषमुक्ति के मार्ग पर सामर्थ्य मिली, कमी नहीं की, तो उसके लिए उम्मीद और भी मज़बूत है कि मूल अधिकारों की यह तदबीर हो

गई और हज के विरोध का पाप धुल चुका था। हाँ, अगर हज के बाद सामर्थ्य होने के बावजूद इन मामलों में कमी की, तो ये सब पाप नए सिरे से उसके सिर होंगे, क्योंकि अधिकार तो स्वयं शेष ही थे, और उनकी अदायगी में देरी और कमी नए पाप हो गए, और वह हज उनके..

[1] अल-मुअजम अल-औसत, हदीस 1358, मकतबत अल-मआरिफ, रियाद, 2/200

التوحید لیعف بعضکم عن بعض وعلی الثواب - رواہ ایضاً عن ام ھانی رضی اللہ تعالٰی عنہا۔ کو معاف کردو اور ثواب دینا میرے ذمہ ہے۔ (اسے بھی طبرانی نے سیدہ ام ہانی رضی اللہ تعالٰی عنہا سے روایت کیا ت)

یہ دولت کبرٰی ونعمت عظمٰی کہ اکرم الاکرمین جلت عظمتہ اپنے محض کرم و فضل سے اس ذلیل روسیاہ سراپا گناہ کو بھی عطا فرمائے۔ ع

کہ مستحقِ کرامت گنہگارانند (گنہگار شرف وبزرگی عطا کئے جانے کے لائق ہیں۔ ت)

اس وقت کی نظر میں اس کا جلیل وعدہ جمیل خردہ صاف صریح بالتصریح یا کالتصریح تصریح پانچ فرقوں کے لئے وارد ہوا: اوّل: حاجی کہ پاک مال، پاک کمائی، پاک نیت سے حج کرے، اور اس میں لڑائی جھگڑے اور عورتوں کے سامنے تذکرہ جماع اور ہر قسم کے گناہ و نافرمانی سے بچے، اس وقت تک جتنے گناہ کئے تھے بشرطِ قبول سب معاف ہوجاتے ہیں، پھر اگر حج کے بعد فوراً مر گیا تو اتنی مہلت نہ ملی کے حقوق اللہ عزوجل یا بندوں کے اس کے ذمہ تھے انہیں ادا یا ادا کی فکر کرتا تو امید واثق ہے کہ مولٰی تعالٰی اپنے تمام حقوق سے مطلقاً در گزر فرمائے یعنی نماز، روزہ، زکوۃ و غیرہا فرائض کہ بجانہ لایا تھا ان کے مطالبہ پر بھی قلمِ عفو الٰہی پھر جائے اور حقوق العباد و دیون و مظالم مثلاً کسی کا قرض آتا ہو ، مال چھینا ہو ، برا کہا ہو ان سب کو مولٰی تعالٰی اپنے ذمہ کرم پر لے لے اصحابِ حقوق کو روزِ قیامت راضی فرما کر مطالبہ و خصومت سے نجات بخشے، یو ہیں اگر بعد کو زندہ رہا اور بقدرِ قدرت تدارک حقوق ادا کرلیا یعنی زکوۃ دے دی نماز روزہ کی قضا ادا کی جس کا جو مطالبہ آتا تھا دے دیا جسے آزار پہنچا تھا معاف

کرا لیا جس مطالبہ کا لینے والا نہ رہا یا معلوم نہیں اس کی طرف سے تصدق کردیا بوجہ قلتِ مہلت جو حق اللہ عزوجل یا بندہ کا ادا کرتے کرتے رہ گیا اس کی نسبت اپنے مال میں وصیت کردی، غرض جہاں تک طریقِ برائت پر قدرت ملی تقصیر نہ کی تو اس کے لئے امید اور زیادہ قوی کہ اصل حقوق کی یہ تدبیر ہو گئی اور اثمِ مخالفت حج سے دھل چکا تھا، ہاں اگر بعد حج باوصفِ قدرت ان امور میں قاصر رہا تو یہ سب گناہ از سر نو اس کے سر ہوں گے کہ حقوق تو خود باقی ہی تھے ان کی ادا میں پھر تاخیر و تقصیر گناہِ تازہ ہوئے اور وہ حج ان کے

[1] المعجم الاوسط حدیث ۱۳۵۸ مکتبۃ المعارف الریاض ۲ / ۲۰۰

Fatawa Razawiyya, Volume 24

It will not be sufficient for the removal of sins that Hajj washes away past sins; it is not a permit for future lawlessness. Rather, the sign of a 'Hajj Mabrur' (an accepted Hajj) is that one returns better than before. "Indeed, we belong to Allah and indeed to Him we shall return. And there is no power or strength except with Allah, the Most High, the Most Great." (Indeed, we are for Allah Almighty and certainly, we are to return to Him alone. The power to avoid sins and perform good deeds is not in anyone without the grace of Allah Almighty, the Great and Superior. - T) This decisive statement in the matter of Hajj is the one which this humble servant (may Allah forgive him) adopted after scrutinizing evidence and schools of thought and encompassing all aspects and sides. A precious research, by the help of Allah Almighty, was written by this humble servant (may Allah forgive him) in a separate treatise after the arrival of this question. What is here is sufficient, and with Allah is the success (Success is achieved only by the grace of Allah Almighty. - T).

Ahadith: Ibn Majah in his Sunan completely, and Abu Dawud briefly, and Imam Abdullah son of Imam Ahmad in Zawa'id al-Musnad, and Tabarani in Mu'jam al-Kabir, and Abu Ya'la in Musnad, and Ibn Hibban in al-Du'afa, and Ibn Adi in al-Kamil, and Bayhaqi in Sunan al-Kubra and Shu'ab al-Iman and Kitab al-Ba'th wa al-Nushur, and Diya al-Maqdisi with the benefit of correction in al-Mukhtarah from Hazrat Abbas ibn Mirdas; and Imam Abdullah ibn al-Mubarak with a sound chain and Abu Ya'la and Ibn Mani' due to the latter part from Hazrat Anas ibn Malik; and Abu Nu'aym in Hilyat al-Awliya and Imam Ibn Jarir al-Tabari in Tafsir, and Hasan ibn Sufyan in Musnad and Ibn Hibban in al-Du'afa from Hazrat Abdullah ibn Umar al-Faruq al-A'zam; and Abd al-Razzaq in al-Musannaf and Tabarani in Mu'jam al-Kabir from Hazrat Ubadah ibn al-Samit; and Daraqutni and Ibn Hibban from Hazrat Abu Hurairah; and Ibn Mandah in Kitab al-Sahaba and Khatib in Talkhis al-Mutashabih from Hazrat Zayd grandfather of Abd al-Rahman ibn Abdullah ibn Zayd (may Allah Almighty be pleased with them all) have narrated through numerous paths, many wordings, and similar meanings:

Arabic Text	**Urdu Translation**
This is the hadith of Imam Abdullah ibn al-Mubarak from Sufyan al-Thawri, from al-Zubayr ibn Adi, from Anas (may Allah be pleased with him), who said: The Prophet (may Allah's peace and	(This hadith is narrated by Imam Abdullah ibn al-Mubarak from Imam Sufyan al-Thawri from Hazrat Anas may Allah be pleased with him. - T). That is, the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings

Arabic Text

blessings be upon him) stood at Arafat when the sun was about to set, and said, "O Bilal! Tell the people to be quiet for me." So Bilal stood up and said, "Listen to the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him)..."

Urdu Translation

be upon him) performed 'Wuquf' (standing) in Arafat until the sun was about to set. At that time, it was ordered, "O Bilal! Make people silent for me." Bilal stood up and called out, "Listen to the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him)..."

फ़तावा रज़विया, खंड 24

पापों को दूर करने के लिए यह पर्याप्त नहीं होगा कि हज पिछले पापों को धो देता है; यह भविष्य के लिए बेलगाम होने का परमिट नहीं है। बल्कि, 'हज मबरूर' (स्वीकृत हज) की निशानी ही यह है कि व्यक्ति पहले से बेहतर होकर वापस लौटे। "बेशक, हम अल्लाह के लिए हैं और बेशक हम उसी की ओर लौटने वाले हैं। और अल्लाह, सबसे ऊंचे, सबसे महान की शक्ति के बिना किसी में भी पापों से बचने और अच्छे काम करने की शक्ति नहीं है।" (बेशक हम अल्लाह तआला के लिए हैं और निश्चित रूप से हम उसी की ओर लौटने वाले हैं। पापों से बचने और पुण्य करने की शक्ति अल्लाह तआला महान और श्रेष्ठ की तौफीक के बिना किसी में नहीं। - त) हज के मामले में यह निर्णायक बयान वह है जिसे इस फकीर (अल्लाह उसे क्षमा करे) ने साक्ष्यों और विचारधाराओं की जांच के बाद और सभी पहलुओं और पक्षों को घेरने के बाद अपनाया है। अल्लाह तआला की सहायता से एक अनमोल शोध इस फकीर (अल्लाह उसे क्षमा करे) द्वारा इस प्रश्न के आने के बाद एक अलग लेख में लिखा गया था। यहाँ इतना ही पर्याप्त है, और सफलता अल्लाह के पास है (अल्लाह तआला के करम से ही तौफीक प्राप्त होती है। - त)।

अहादीस: इब्न माजाह ने अपनी सुनन में पूरी तरह से, और अबू दाऊद ने संक्षेप में, और इमाम अब्दुल्ला इब्न इमाम अहमद ने ज़वैद अल-मुसनद में, और तबरानी ने मुअजम अल-कबीर में, और अबू यअला ने मुसनद में, और इब्न हिब्बान ने अल-दुअफा में, और इब्न अदी ने अल-कामिल में, और बैहक़ी ने सुनन अल-कुबरा और शुअब अल-ईमान और किताब अल-बा'थ व अल-नुशूर में, और ज़िया अल-मक़दिसी ने अल-मुख्तारह में सुधार के लाभ के साथ हज़रत अब्बास इब्न मिरदास से; और इमाम अब्दुल्ला इब्न अल-मुबारक ने एक सही श्रृंखला के साथ और अबू यअला और इब्न मनी ने हज़रत अनस इब्न मालिक से; और अबू नुऐम ने हिल्या अल-औलिया में और इमाम इब्न जरीर अल-तबरी ने तफ़सीर में, और हसन इब्न सुफियान ने मुसनद में और इब्न हिब्बान ने अल-दुअफा में हज़रत अब्दुल्ला इब्न उमर अल-फ़ारूक़ अल-आज़म से; और अब्द अल-रज्ज़ाक ने अल-मुसन्नफ में और तबरानी ने मुअजम अल-कबीर में हज़रत उबादा इब्न अल-सामित से; और दाराक़ुत्नी और इब्न हिब्बान ने हज़रत अबू हुरैरा से; और इब्न मंदा ने किताब अल-सहाबा में और खतीब ने तलखीस अल-मुतशाबिह में हज़रत ज़ैद, अब्द अल-रहमान इब्न अब्दुल्ला इब्न ज़ैद के दादा (अल्लाह उन सभी से प्रसन्न हो) से कई मार्गों, अनेक शब्दों और समान अर्थों के साथ वर्णन किया है:

अरबी पाठ

यह इमाम अब्दुल्ला इब्न अल-मुबारक की हदीस है सुफयान अल-थौरी से, जुबैर इब्न अदी से, अनस (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से, उन्होंने कहा: नबी (अल्लाह की शांति और उन पर आशीर्वाद हो) अराफात में खड़े हुए जब सूरज डूबने ही वाला था, तो आपने कहा, "हे बिलाल! लोगों को मेरे लिए चुप कराओ।" तो बिलाल खड़े हुए और कहा, "अल्लाह के रसूल (अल्लाह की शांति और उन पर आशीर्वाद हो) की बात सुनें..."

हिंदी अनुवाद

(यह हदीस इमाम अब्दुल्ला इब्न अल-मुबारक ने इमाम सुफियान थौरी से उन्होंने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की है। - त) यानी हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अराफात में वुक़ूफ़ फरमाया यहाँ तक कि सूरज डूबने पर आया। उस समय आदेश हुआ, "ऐ बिलाल! लोगों को मेरे लिए खामोश कर।" बिलाल ने खड़े होकर पुकारा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि...

ازالہ کو کافی نہ ہوگا کہ حج گزرے گناہوں کو دھو تا ہے آئندہ کے لئے پروانہ بیقیدی نہیں ہوتا بلکہ حج مبرور کی نشانی ہی یہ ہے کہ پہلے سے اچھا ہو کر پلٹے فانّا للہ وانا الیہ راجعون ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم (بے شک ہم اللہ تعالٰی کے لئے ہیں اور یقیناً اسی کی طرف لوٹ کر جانے والے ہیں، گناہوں سے بچنے اور نیکی کرنے کی طاقت اللہ تعالٰی بزرگ وبرتر کی توفیق کے بغیر کسی میں نہیں۔ت) مسئلہ حج میں بحمد اللہ تعالٰی یہ وہ قول فیصل ہے جسے فقیر غفر اللہ تعالٰی لہ نے بعد تنقیح دلائل ومذاہب واحاطہ اطراف وجوانب اختیار کی نفیس تحقیق بعونہ تعالٰی فقیر غفر اللہ تعالٰی لہ نے بعد ورود اس سوال کے ایک تحریر جداگانہ میں لکھی، یہاں اس قدر کافی ہے وباللہ التوفیق (اللہ تعالٰی ہی کے کرم سے توفیق حاصل ہوتی ہے۔ ت)

احادیث: ابن ماجہ اپنی سنن میں کلاً اور ابوداؤد مختصراً اور امام عبداللہ بن امام احمد زوائد مسند اور طبرانی معجم کبیر اور ابویعلی مسند اور ابن حبان ضعفاء اور ابن عدی کامل اور بیہقی سنن کبری و شعب الایمان وکتاب البعث والنشور اور ضیاء مقدسی با فادہ تصحیح مختارہ میں حضرت عباس بن مرداس اور امام عبداللہ بن مبارک بسند صحیح اور ابو یعلی وابن منیع بوجہ آخر حضرت انس بن مالک اور ابونعیم حلیۃ الاولیا اور امام ابن جریر طبری تفسیر اور حسن بن سفیان مسند اور ابن حبان ضعفاء میں حضرت عبداللہ بن عمر فاروق اعظم اور عبد الرزاق مصنف اور طبرانی معجم کبیر میں حضرت عبادہ بن صامت اور دار قطنی و ابن حبان حضرت ابوہریرہ اور ابن مندہ کتاب الصحابہ اور خطیب تلخیص المتشابہ میں حضرت زید جد عبد الرحمن بن عبد اللہ بن زید رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین سے بطرق عدیدہ والفاظ کثیرہ ومعانی متقارب راوی:

عربی متن	اردو ترجمہ
وهذا حديث الامام عبد الله بن المبارك على سفين الثورى عن الزبير بن عدى عن انس رضى الله تعالى عنه قال وقف النبى صلى الله تعالى عليه وسلم بعرفات وقد كادت الشمس ان تغرب فقال يا بلال انصت لى الناس فقام بلال فقال انصتوا لرسول الله صلى الله	(یہ حدیث امام عبداللہ بن مبارک نے امام سفیان ثوری سے انہوں حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی ہے۔ت) یعنی حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے عرفات میں وقوف فرمایا یہاں تک کہ آفتاب ڈوبنے پر آیا اس وقت ارشاد ہوا اے بلال! لوگوں کو میرے لئے خاموش کر، بلال نے کھڑے ہو کر پکارا کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ

Fatawa Razawiyya, Volume 24

Arabic

...may peace and blessings be upon him, so the people became silent. Then he said: O people, Jibril came to me just now and conveyed the salutations of my Lord to me, and said that Allah, the Almighty and Majestic, has forgiven the people of Arafat and the people of Mahshar, and has taken responsibility for their mutual liabilities. Then Umar bin al-Khattab (may Allah be pleased with him) stood up and said: O Messenger of Allah, is this specifically for us? He said: It is for you and for those who come after you until the Day of Judgment. Umar bin al-Khattab said: Allah's goodness is abundant and pure. (1)

Urdu Translation

...be silent for him (peace be upon him), and the people became still. The Resplendent Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: O people! Jibril has just come and conveyed my Lord's salutation and message to me, that Allah, the Almighty and Majestic, has forgiven the people of Arafat and Mash'ar al-Haram, and has Himself become the guarantor of their mutual rights. The Commander of the Faithful, Umar (may Allah be pleased with him), stood up and submitted: O Messenger of Allah, is this bounty specifically for us? He said: It is for you and for all those who come after you until the Day of Judgment. Umar (may Allah be pleased with him) said: The goodness of Allah, the Almighty and Majestic, is abundant and pure. (T)

And all praise is due to Allah, the Lord of all worlds (And all praise is for Allah who is the Sustainer of all the worlds. T).

Second: A martyr of the sea, who strives (Jihad) in the sea specifically seeking the pleasure of Allah, the Almighty and Majestic, and to make His word supreme, and drowns there and becomes a martyr. It is mentioned in the hadiths that the Lord, the Almighty and Majestic, Himself seizes his soul with His hand of power and forgives him all His rights, and takes upon His gracious self all the claims of His servants that were against him.

Hadiths: Ibn Majah and Tabarani in Mu'jam al-Kabir narrate from Hazrat Abu Umamah, and Abu Nu'aym in Hilya from Hazrat Safiyah bint Abdul Muttalib, the paternal aunt of the Holy Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him), and Shirazi in Kitab al-Alqab from Hazrat Abdullah ibn Amr ibn al-Aas (may Allah be pleased with them all):

Arabic

The wording is from Abu Umamah (may Allah be pleased with him), who said: The Messenger of Allah (may peace and blessings of Allah be upon him) said: All the sins of a martyr on land are forgiven except for debts...

Urdu Translation

(These are the words of Hazrat Abu Umamah, may Allah be pleased with him. T) That is, the Holy Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him) says: For one who is martyred on land, all his sins are forgiven except for the rights of fellow beings (debts).

1. Ad-Durr al-Manthur, citing Ibn Mubarak from Anas (may Allah be pleased with him), Maktaba Ayatollah al-Uzma, Qom, Iran 1/31-330.

अरबी

...सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए खामोश हो जाओ, लोग खामोश हो गए। हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ऐ लोगो! अभी जिब्रील ने हाज़िर होकर मुझे मेरे रब का सलाम और पैगाम पहुँचाया कि अल्लाह अज़्ज़ वजल ने अरफ़ात और मशअरुल हराम वालों की मग़फ़िरत फ़रमाई और उनके आपसी हुकूक का खुद ज़ामिन हो गया। अमीरुल मोमिनीन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने खड़े होकर अर्ज़ की: या रसूलल्लाह! क्या यह दौलत खास हमारे लिए है? फ़रमाया: तुम्हारे लिए और जो तुम्हारे बाद क़यामत तक आएँगे उन सबके लिए। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: अल्लाह अज़्ज़ वजल की खैर बहुत ज़्यादा और पाकीज़ा है। (1)

उर्दू अनुवाद

...सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए खामोश हो जाओ, लोग साकित (खामोश) हो गए। हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ऐ लोगो! अभी जिब्रील ने हाज़िर होकर मुझे मेरे रब का सलाम और पैगाम पहुँचाया कि अल्लाह अज़्ज़ वजल ने अरफ़ात और मशअरुल हराम वालों की मग़फ़िरत फ़रमाई और उनके आपसी हुकूक का खुद ज़ामिन हो गया। अमीरुल मोमिनीन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने खड़े होकर अर्ज़ की: या रसूलल्लाह! क्या यह दौलत खास हमारे लिए है? फ़रमाया: तुम्हारे लिए और जो तुम्हारे बाद क़यामत तक आएँगे उन सबके लिए। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: अल्लाह अज़्ज़ वजल की खैर बहुत ज़्यादा और पाकीज़ा है। (त)

और तमाम तारीफें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं (और सब तारीफ अल्लाह तआला के लिए है जो तमाम जहानों का परवरदिगार है। त)।

दूसरा: समुंदर का शहीद जो खास अल्लाह अज़्ज़ वजल की रज़ा चाहने और उसके दीन का बोलबाला करने के लिए समुंदर में जेहाद करे और वहां डूब कर शहीद हो जाए। हदीसों में आया है कि मौला अज़्ज़ वजल खुद अपने दस्ते कुदरत से उसकी रूह कब्ज़ करता है और अपने तमाम हुकूक उसे माफ़ फ़रमाता है और बंदों के सब मुतालबे जो उस पर थे अपने ज़िम्मे करम पर ले लेता है।

हदीसें: इब्ने माजह और तबरानी मोअजम कबीर में हज़रत अबू उमामा से और अबू नुऐम हिल्या में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफी हज़रत सफ़िया बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब से और शीराज़ी किताबुल अलकाब में हज़रत अब्दुल्ला इब्ने अम्र इब्ने आस रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन से रावी हैं:

अरबी

और ये अल्फाज़ हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु के हैं, फ़रमाया रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने: जो खुश्की में शहीद हो उसके सब गुनाह बख्श दिए जाते हैं सिवाय कर्ज़ के..

उर्दू अनुवाद

(हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु के अल्फाज़ हैं। त) यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: जो खुश्की में शहीद हो उसके सब गुनाह बख्श दिए जाते हैं मगर हुकूकुल इबाद।

1. अद्दुर्रुल मंसूर, हवाले से इब्ने मुबारक, हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से, मकतबा आयतुल्लाह उज़मा, क़ुम, ईरान 1/31-330।

पृष्ठ 469/720

عربی متن	اردو ترجمہ
تعالٰی علیہ وسلم فنصت الناس فقال	وسلم کے لئے خاموش ہو جاؤ، لوگ ساکت ہوئے۔ حضور پر
یامعاشر الناس اتانی جبریل انفا	نور صلوات اللہ تعالٰی وسلامہ علیہ نے فرمایا اے لوگو! ابھی
فاقرأنی من ربی السلام وقال ان اللہ	جبریل نے حاضر ہو کر مجھے میرے رب کا سلام و پیام
عزوجل غفر لاھل عرفات واھل	پہنچایا کہ اللہ عز وجل نے عرفات اور مشعر الحرام والوں
المحشر وضمن عنہم التبعات فقام	کی مغفرت فرمائی اور ان کے باہمی حقوق کا خود ضامن ہو
عمر بن الخطاب رضی اللہ تعالٰی عنہ	گیا۔ امیر المومنین عمر رضی اللہ تعالٰی عنہ نے کھڑے ہو کر
فقال یارسول اللہ ھذا لنا خاصۃ قال ھذا عرض کی یا رسول اللہ کیا یہ دولت خاص ہمارے لئے ہے؟	
لکم ولمن اتی من بعدکم الی یوم القیمۃ	فرمایا تمہارے لئے اور جو تمہارے بعد قیامت تک آئیں سب
فقال عمر بن الخطاب کثر خیر اللہ	کے لئے عمر رضی اللہ تعالٰی عنہ نے کہا اللہ عز وجل کی
وطاب ۱۔	خیر کثیر و پاکیزہ ہے انتہی (ت)

والحمد اللہ رب العلمین (اور سب تعریف اللہ تعالٰی کے لئے ہے جو تمام جہانوں کا پروردگار ہے۔ت)

دوم : شہید بحر کہ خاص اللہ عز وجل کی رضا چاہنے اور اس کا بول بالا ہونے کے لئے سمندر میں جہاد کرے اور وہاں ڈوب کر شہید ہو حدیثوں میں آیا کہ مولٰی عز وجل خود اپنے دست قدرت سے اس کی روح قبض کرتا اور اپنے تمام حقوق اسے معاف فرماتا اور بندوں کے سب مطالبے جو اس پر تھے اپنے ذمہ کرم پر لیتا ہے۔

احادیث: ابن ماجہ اور طبرانی معجم کبیر میں حضرت ابو امامہ اور ابو نعیم حلیہ میں حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی پھوپھی حضرت صفیہ بنت عبد المطلب اور شیرازی کتاب الالقاب میں حضرت عبداللہ ابن عمر و بن عاص رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین سے راوی :

عربی متن **اردو ترجمہ**

واللفظ لابی امامۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ (حضرت ابوامامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے الفاظ ہیں۔ت)

قال قال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم یغفر لشھید البر الذنوب کلھا الا الدین، و یعنی حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: جو خشکی میں شہید ہو اس کے سب گناہ بخشے جاتے ہیں مگر حقوق العباد۔

۱ الدر المنثور بحوالہ ابن مبارک عن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ مکتبہ آیتہ العظمی قم ایران ۱ / ۳۱۔ ۳۳۰

Fatawa-e-Razvia, Volume 24

- "For the martyr of the sea, all sins and debts are forgiven."[1] And whoever attains martyrdom in the sea, all their sins and the rights of servants (debts/obligations towards others) are forgiven.

O Allah! Grant us this through his lofty status with You, peace and blessings of Allah be upon him. Amen. (O Allah! By the virtue of the high rank that the Prophet ﷺ holds in Your presence, grant us this blessing. Amen. - Translator)

Third is the 'Martyr of Patience' (Shaheed-e-Sabr), meaning that Sunni Muslim of correct belief who was captured by an oppressor and killed, crucified, or hanged in a state of helplessness and compulsion because, due to being captive, he was unable to fight back or defend himself. This is unlike the martyr of Jihad who fights and dies. His helplessness and lack of resources become a greater cause for Divine mercy, such that no rights of Allah or rights of servants remain (unforgiven), if Allah Almighty wills. (If Allah Almighty wills. - Translator)

Hadiths: Al-Bazzar narrates from Umm al-Mu'minin [Aisha] Siddiqa (may Allah be pleased with them) with an authentic chain that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: - "The killing of patience (execution in captivity) does not pass by any sin but that it erases it."[2] Martyrdom in a state of patience does not pass over any sin except that it obliterates it.

Also, Al-Bazzar narrates from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: - "The killing of a man in patience is an expiation for his preceding sins."[3] A man being killed by way of patience is an expiation for all past sins.

Al-Munawi said in 'at-Taysir': "Its apparent meaning is even if the person killed was a sinner and died without repentance. In this, there is a refutation against the Kharijites and Mu'tazilites."[4] End of quote. And I saw that I had written on its margin, the text of which is: "I say: rather, there is no other interpretation for it."

Allama Munawi said in 'at-Taysir' that its apparent meaning is that even if the killed person was a sinner and died without repenting. So, in this is a refutation of the Kharijites and Mu'tazilites (end of quote). I remember that I wrote on its margin, the text of which is: I say...

[1] Al-Mu'jam al-Kabir Hadith 7176, Al-Maktaba al-Faysaliya Beirut 8/201; Sunan Ibn Majah, Book of Jihad, Chapter on the Virtue of Sea Raids, H.M. Saeed Company Karachi p. 202. [2] Kashf al-Astar 'an Zawa'id al-Bazzar, Book of Hudud, Chapter on Killing in Patience, Hadith 1545, Mu'assasat al-Risala Beirut 2/214. [3] Kashf al-Astar 'an Zawa'id al-Bazzar, Book of Hudud, Chapter on Killing in Patience, Hadith 1544, Mu'assasat al-Risala Beirut 2/213. [4] At-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir, under the Hadith "Killing in Patience...", Al-Imam al-Shafi'i Library Riyadh 2/193.

फ़तावा-ए-रजविया, जिल्द 24

- "समुद्र के शहीद के लिए सभी पाप और ऋण माफ़ कर दिए जाते हैं।"[1] और जो समुद्र में शहादत पाता है, उसके सभी पाप और बंदों के अधिकार (कर्ज) सब माफ़ हो जाते हैं।

ऐ अल्लाह! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस ऊंचे मर्तबे के सदके जो उनका तेरी बारगाह में है, हमें यह दौलत नसीब फ़रमा। आमीन। (ऐ अल्लाह! नबी ﷺ के उस उच्च पद के माध्यम से जो आपके पास है, हमें यह वरदान प्रदान करें। आमीन। - अनुवादक)

तीसरा 'शहीदे सब्र' है, यानी वह सुन्नी मुसलमान सही अकीदा जिसे किसी ज़ालिम ने गिरफ्तार करके बेकसी और मजबूरी की हालत में कत्ल कर दिया, सूली पर चढ़ा दिया, या फांसी दे दी क्योंकि कैद होने के कारण वह लड़ने या बचाव करने में सक्षम नहीं था। यह जिहाद के शहीद के विपरीत है जो लड़ते हुए मरता है। उसकी बेबसी और लाचारी ईश्वरीय दया का और अधिक कारण बनती है, जिससे अल्लाह के हक और बंदों के हक कुछ बाकी नहीं रहते, यदि अल्लाह चाहे। (यदि अल्लाह सर्वशक्तिमान चाहे। - अनुवादक)

हदीस: बज़ार ने उम्मुल मोमिनीन सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा से सही सनद के साथ रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: - "सब्र के साथ कत्ल किया जाना (कैद में मृत्युदंड) किसी गुनाह पर नहीं गुज़रता मगर यह कि उसे मिटा देता है।"[2] सब्र की हालत में शहादत किसी भी गुनाह पर से नहीं गुजरती मगर यह कि उसे पूरी तरह मिटा देती है।

साथ ही, बज़ार ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: - "आदमी का सब्र की वजह से मारा जाना उसके पिछले तमाम गुनाहों का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) है।"[3] आदमी का सब्र के साथ मारा जाना उसके पिछले सभी पापों का कफ़्फ़ारा है।

अल्लामा मुनावी ने 'तयसीर' में फरमाया: "इसका ज़ाहिरी अर्थ यह है कि भले ही मारा गया व्यक्ति गुनहगार हो और बिना तौबा के मर जाए। इसमें खवारिज और मोतज़िला का खंडन है।"[4] उद्धरण समाप्त। और मैंने देखा कि मैंने इसके हाशिये (मार्जिन) पर लिखा था जिसका पाठ यह है: "मैं कहता हूँ: बल्कि इसके अलावा इसका कोई दूसरा अर्थ नहीं है।"

अल्लामा मुनावी ने 'तयसीर' में फरमाया कि इसका ज़ाहिरी अर्थ यह है कि भले ही मारा गया व्यक्ति गुनहगार हो और बिना तौबा के मर जाए। तो इसमें खवारिज और मोतज़िला का खंडन है (उद्धरण समाप्त)। मुझे याद है कि मैंने इसके हाशिये पर लिखा था जिसकी इबारत (पाठ) यह है: मैं कहता हूँ...

---

[1] अल-मुअजम अल-कबीर हदीस 7176, अल-मक्तबा अल-फैयासलिया बेरूत 8/201; सुनन इब्न माजाह, जिहाद की किताब, समुद्री छापों के गुण पर अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची पृ. 202। [2] कशफ अल-अस्तार अन ज़वाइद अल-बज़ार, हुदूद की किताब, सब्र में कत्ल पर अध्याय, हदीस 1545, मुअस्ससत अल-रिसाला बेरूत 2/214। [3] कशफ अल-अस्तार अन ज़वाइद अल-बज़ार, हुदूद की किताब, सब्र में कत्ल पर अध्याय, हदीस 1544, मुअस्ससत अल-रिसाला बेरूत 2/213। [4] अत-तयसीर शरह अल-जामी अल-सगीर, हदीस "सब्र में कत्ल..." के तहत, अल-इमाम अल-शाफई लाइब्रेरी रियाद 2/193।

पृष्ठ 470/720 आई.टी. मज्लिस दावत-ए-इस्लामी

• یغفر لشهید البحر الذنوب کلها والدّین - 1 اور جو دریا میں شہادت پائے اس کے تمام گناہ و حقوق العباد سب معاف ہو جاتے ہیں۔

اللھم ارزقنا بجاھه عندك صلی اللہ تعالٰی علیه وسلم و بارك امین (اے اللہ! حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے اس بلند پایہ رتبہ کے طفیل جو ان کا تیری بارگاہ میں ہے ہمیں یہ دولت نصیب فرما آمین۔ ت)

سوم شہید صبر یعنی وہ مسلمان سنی المذہب صحیح العقیدہ جسے ظالم نے گرفتار کرکے بحالتِ بیکسی و مجبوری قتل کیا، سولی دی، پھانسی دی کہ یہ بوجہ اسیری قتال و مدافعت پر قادر نہ تھا، بخلاف شہید جہاد کہ مارتا مرتا ہے اس کی بیکسی و بے دست پائی زیادہ باعث رحمت الٰہی ہوتی ہے کہ حق اللہ و حق العبد کچھ نہیں رہتا ان شاء اللہ تعالٰی (اگر اللہ تعالٰی چاہے۔ ت)

احادیث: بز ار ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہما سے بسند صحیح راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: - قتل الصبر لا یمر بذنب الا محاہ - 2 قتلِ صبر کسی گناہ پر نہیں گزرتا مگر یہ کہ اسے مٹا دیتا ہے۔

نیز بزار ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: - قتل الرجل صبرا کفارۃ لما قبلہ من الذنوب - 3 آدمی کا بر وجہِ صبر مارا جانا تمام گزشتہ گناہوں کا کفارہ ہے۔

قال المناوی فی التیسیر ظاھرہ وان کان المقتول عاصیاً ومات بلا توبۃ ففیہ ردّ علی الخوارج والمعتزلۃ - 4 اہ ورأیتنی کتبت علی ھامشہ مأنصہ اقول: بل لا محمل لہ سواہ

علامہ مناوی نے تیسر میں فرمایا اس کا ظاہر مفہوم یہ ہے کہ اگرچہ مقتول گنہگار ہو اور بغیر توبہ مر جائے۔ پس اس میں خارجیوں اور معتزلہ کا رد ہے اھ، مجھے یاد ہے کہ میں نے اس کے حاشیہ پر لکھا کہ جس کی عبارت یہ ہے میں کہتا ہوں

---

1 المعجم الکبیر حدیث ۷۱۷۶ المکتبة الفیصلیة بیروت ۸/ ۲۰۱، سنن ابن ماجہ کتاب الجہاد باب فضل الغزو البحر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۲۰۲ 2 کشف الاستار عن زوائد البزار کتاب الحدود باب قتل الصبر حدیث ۱۵۴۵ موسسة الرساله بیروت ۲/ ۲۱۴ 3 کشف الاستار عن زوائد البزار کتاب الحدود باب قتل الصبر حدیث ۱۵۴۴ موسسة الرساله بیروت ۲/ ۲۱۳ 4 التیسیر شرح الجامع الصغیر تحت حدیث قتل الصبر الخ مکتبة الامام الشافعی الریاض ۲/ ۱۹۳

(Arabic) For if he was not a sinner, the killing would not pass through a sin, and if he had repented, it is the same, for one who repents from sin is like one who has no sin.	**(Urdu) Moreover, there is no other interpretation for it, because if the deceased was not a sinner, then the sin of killing would not apply (if there is no sin, how can it apply?). And if he had repented, the ruling is the same because one who repents from sins becomes like a person who has no sin at all. (Translator's note)**

The Hadiths are absolute and the specifying factor is missing, 'Narrate from the sea and there is no harm'. And we specified the Sunni school because it is mentioned in the Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

(Arabic) Even if a person with an innovation, denying destiny (Qadr), is killed oppressed, patiently, and seeking reward, between the Corner (Rukn) and the Station (Maqam), Allah will not look at any of his matters until He enters him into Hell. - Narrated by Abu al-Faraj in Al-'Ilal from the path of Kathir bin Salim to Anas bin Malik (may Allah be pleased with him), who said: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said... and he mentioned it.	**(Urdu) If an innovator who denies the good and evil of destiny is killed while oppressed and patient specifically between the Black Stone (Hajar-e-Aswad) and the Station of Abraham (Maqam-e-Ibrahim), and he even intends to receive divine reward in this killing, Allah Almighty will not look at any of his matters until he enters Hell, and we seek refuge with Allah Almighty. (Abu al-Faraj narrated in 'Al-Ilal' from Kathir bin Salim to Anas bin Malik, may Allah be pleased with him, that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said, then he mentioned the full Hadith. Translator's note)**

Fourth: A debtor who took a debt for a legitimate Shari'a need for a good and permissible purpose, and did not neglect its payment within his means, nor did he ever cause an unjustified delay, but was always ready with a sincere heart to pay it and kept thinking about it to the extent of his ability. If it then could not be paid due to compulsion and death came, then Lord Almighty will forgive him for that debt and on the Day of Resurrection, by paying it from His treasury of power, He will satisfy the creditor. This promise is specific to this debt, not for all the rights of the servants.

Hadiths: Ahmad, Bukhari, and Ibn Majah from Abu Huraira; Tabarani in Mu'jam al-Kabir with a sound (sahih) chain from Maimun al-Kurdi; Hakim in Mustadrak and Tabarani in Kabir from Abu Umama al-Bahili; and Ahmad, Bazzar, Tabarani, and Abu Nu'aym with a good (hasan) chain.

[1] Al-Ilal al-Mutanahiyah, Chapter on the entry of the innovator into the fire, Hadith 215, Nashr al-Kutub al-Islamiyah Lahore, 1/120.

(अरबी) क्योंकि यदि वह पापी नहीं था, तो हत्या किसी पाप के माध्यम से नहीं गुज़रेगी, और यदि उसने पश्चाताप किया था, तो भी वैसा ही है, क्योंकि पाप से पश्चाताप करने वाला उस व्यक्ति की तरह है जिसका कोई पाप नहीं है।

(उर्दू) बल्कि इसके अलावा इसका और कोई अर्थ नहीं है क्योंकि अगर मकतूल (मृतक) गुनहगार न हो तो फिर कत्ल का गुनाह लागू नहीं होगा (गुनाह ही न हो तो उस पर लागू कैसा) और अगर उसने तौबा कर ली तो फिर भी यही हुक्म है क्योंकि गुनाहों से तौबा करने वाला उस शख्स की तरह हो जाता है जिसका कोई गुनाह ही नहीं। (त)

हदीसें पूर्ण (निरपेक्ष) हैं और विशिष्ट करने वाला कारक अनुपस्थित है, 'समुद्र से वर्णन करो और कोई हानि नहीं है'। और हमने सुन्नी संप्रदाय को इसलिए निर्दिष्ट किया क्योंकि हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) ने फ़रमाया:

(अरबी) यदि कोई नवाचारी (बिदअती), भाग्य (तक़दीर) को झुठलाने वाला, मज़लूम, धैर्यवान और प्रतिफल की आशा रखते हुए रुकन और मकाम के बीच मारा जाए, तो अल्लाह उसके किसी भी मामले पर नज़र नहीं फ़रमाएगा यहाँ तक कि उसे जहन्नुम में दाखिल कर दे। - अबू अल-फ़रज ने अल-इलाल में कसीर बिन सलीम से अनस बिन मलिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) तक के मार्ग से रिवायत किया, उन्होंने कहा: अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) ने फ़रमाया... फिर उसे ज़िक्र किया।

(उर्दू) अगर कोई बद-मजहब तकदीर पर खैर और शर का मुनकिर (इनकारी) खास हजर-ए-अस्वद और मकाम-ए-इब्राहिम अलैहिस्सलातो वस्सलाम के दरमियान महज मज़लूम और साबिर मारा जाए और वह अपने इस कत्ल में सवाब-ए-इलाही मिलने की नियत भी रखे, तो भी अल्लाह अज़वजल उसकी किसी बात पर नज़र न फ़रमाए यहाँ तक कि उसे जहन्नुम में दाखिल कर दे, वल-इयाज़ु बिल्लाहि तआला। (अबू अल-फ़रज ने अल-इलाल में कसीर बिन सलीम से अनस बिन मलिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सनद से रिवायत किया और फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया, फिर पूरी हदीस का ज़िक्र किया। त)

चौथा: वह देनदार जिसने किसी शरीयत की ज़रूरत के लिए किसी अच्छे और जायज़ काम के लिए ऋण (कर्ज़) लिया, और अपनी चलती (क्षमता) के अनुसार उसके भुगतान में कोई कमी नहीं की, न ही कभी अनुचित देरी की, बल्कि हमेशा सच्चे दिल से अदायगी पर आमादा रहा और अपनी कुदरत (शक्ति) भर उसकी चिंता करता रहा। फिर मजबूरी के कारण अदायगी न हो सकी और मौत आ गई, तो मौला अज़वजल उसके लिए उस दीन (ऋण) से दरगुज़र फ़रमाएगा और कयामत के दिन अपने कुदरत के खज़ाने से अदायगी फ़रमा कर दाइन (लेनदार) को राज़ी कर देगा। यह वादा विशेष रूप से इसी दीन के लिए है, न कि बंदों के सभी अधिकारों (हुकुक़-उल-इबाद) के लिए।

हदीसें: अहमद, बुखारी और इब्न माजा ने हज़रत अबू हुरैरा से; तबरानी ने मुअजम अल-कबीर में सही सनद के साथ हज़रत मैमुन कुर्दी से; हाकिम ने मुस्तदरक में और तबरानी कबीर में हज़रत अबू उमामा बाहिली से; और अहमद, बज़्ज़ार, तबरानी और अबू नुऐम ने हसन सनद के साथ।

[1] अल-इलाल अल-मुतनाहिया, बिदअती के आग में प्रवेश का अध्याय, हदीस 215, नश्र अल-कुतुब अल-इस्लामिया लाहौर, 1/120।

فانه ان لم یکن عاصیاً لم یمر القتل بذنب وان کان تاب فکذلك فان التائب من الذنب کمن لا ذنب له۔

بلکہ اس کے علاوہ اس کا اور کوئی محمل نہیں اس لئے کہ اگر مقتول گنہگار نہ ہو تو پھر قتل کا گناہ پر گزر نہ ہوگا (گناہ ہی نہ ہو تو اس پر گزر کیسا) اور اگر اس نے توبہ کر لی تو پھر بھی یہی حکم ہے اس لئے کہ گناہوں سے توبہ کرنے والا اس شخص کی طرح ہو جاتا ہے کہ جس کا کوئی گناہ ہی نہیں۔ت)

احادیث مطلق ہیں اور مخصص مفقود وحدث عن البحر ولا حرج اور ہم نے سنی المذہب کی تخصیص اس لئے کی کہ حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

لو ان صاب بدعة مکذبا بالقدر قتل مظلوما صابرا محتسبا بین الرکن والمقام لم ینظر الله في شیئ من امره حتی یدخله جهنم-رواه ابوالفرج في العلل[1] من طریق کثیر من سلیم تا انس بن مالک رضی الله تعالٰی عنه قال قال رسول الله صلی الله تعالٰی علیه وسلم فذکره۔

اگر کوئی بد مذہب تقدیر پر خیر و شر کا منکر خاص حجر اسود و مقام ابراہیم علیہ الصلوۃ والسلام کے درمیان محض مظلوم و صابر مارا جائے اور وہ اپنے اس قتل میں ثواب الٰہی ملنے کی نیت بھی رکھے تاہم اللہ عزوجل اس کی کسی بات پر نظر نہ فرمائے یہاں تک کہ اسے جہنم میں داخل کرے، والعیاذ باللہ تعالٰی۔ (ابوالفرج نے العلل میں کثیر بن سلیم تا انس بن مالک رضی اللہ تعالٰی عنہ کی سند سے روایت کیا اور فرمایا کہ حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا، پھر پوری حدیث کو ذکر کیا۔ت)

چہارم : مدیون جس نے بحاجت شرعیہ کسی نیک جائز کام کے لئے دین لیا اور اپنی چلتی ادا میں کمی نہ کی نہ کبھی تاخیر ناروا رکھی بلکہ ہمیشہ سچے دل سے ادا پر آمادہ اور تاحد قدرت اس کی فکر کرتا رہا پھر بمجبوری ادا نہ ہو سکا اور موت آگئی تو مولیٰ عزوجل اس کے لئے اس دین سے در گزر فرمائے گا اور روز قیامت اپنے خزانہ قدرت سے ادا فرما کر دائن کو راضی کر دے گا اس کے لئے یہ وعدہ خاص اسی دین کے واسطے ہے نہ تمام حقوق العباد کے لئے۔

احادیث: احمد و بخاری و ابن ماجہ حضرت ابوہریرہ اور طبرانی معجم کبیر میں بسند صحیح حضرت میمون کردی اور حاکم مستدرک اور طبرانی کبیر میں حضرت ابو امامہ باہلی اور احمد و بزار و طبرانی و ابو نعیم بسند حسن

[1] العلل المتناهية باب دخول المبتدع النار حديث ٢١٥ نشر الكتب الاسلاميه لاہور ١/ ١٢٠

Allah Almighty will say: "My servant speaks the truth; I am most worthy of fulfilling it on your behalf." 1 Then Allah (Subhanahu wa Ta'ala) will send for something and place it in the scale of his deeds so that his good deeds outweigh his bad deeds, and that servant will enter Paradise by the grace of Divine Mercy.

Fifth: The noble saints (Awliya-e-Kiram), Sufis, and masters of spiritual knowledge—may their secrets be sanctified and may Allah benefit us with their blessings in this world and the hereafter—are, by the definitive text of the Quran, safe and protected from every fear and grief on the Day of Judgment.

Allah Almighty said: "Behold! verily on the friends of Allah there is no fear, nor shall they grieve" 2. | Allah Almighty said: (O people!) Be aware, surely the friends of Allah (will be safe from every fear and grief), no fear will be upon them nor will they be saddened. (T)

So, if some shortcoming occurs in some divine rights due to human nature, considering their rank and station (the good deeds of the righteous are the misdeeds of the near ones), Allah Almighty has forgiven it before it occurred, as:

"I have given to you before you asked Me, and I have answered you before you called Me, and I have surely forgiven you before you disobeyed Me." 3 | I gave you before you asked anything from Me, and I accepted your request before you called Me, and surely I forgave you before you committed disobedience. (T)

Similarly, if there was some sort of resentment or shortcoming regarding a servant's rights, such as the Companions (Sahaba), may Allah be pleased with them...

---

1. Musnad Imam Ahmad bin Hanbal on the authority of Abd al-Rahman bin Abi Bakr, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 1/198; At-Targhib wat-Tarhib with reference to Ahmad, al-Bazzar, at-Tabarani, and Abu Nu'aym, Mustafa al-Babi, Egypt, 2/602.
2. The Holy Quran, 10/62.
3. Mafatih al-Ghayb (Tafsir al-Kabir), under the verse of Surah al-Qasas 'And you were not on the western side...', Al-Matba'a al-Bahiyya al-Misriyya, 24/257.

अल्लाह सर्वशक्तिमान फरमाएगा: "मेरे बंदे ने सच कहा; मैं सबसे अधिक योग्य हूँ कि तेरी ओर से (हक) अदा कर दूँ।" 1 फिर अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) कोई चीज़ मँगवा कर उसके आमाल के तराज़ू के पलड़े में रख देगा ताकि उसकी नेकियाँ बुराइयों पर भारी हो जाएँ, और वह बंदा ईश्वरीय दया के फज़्ल से जन्नत में दाखिल होगा।

पाँचवाँ: औलिया-ए-किराम, सूफ़ी, और मारिफत (आध्यात्मिक ज्ञान) के स्वामी—अल्लाह उनके रहस्यों को पवित्र करे और हमें दुनिया और आख़िरत में उनकी बरकतों से फ़ायदा पहुँचाए—क़ुरआन के स्पष्ट प्रमाण (नस्से क़तई) के अनुसार क़यामत के दिन हर डर और ग़म से सुरक्षित रहेंगे।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "आगाह हो जाओ! बेशक अल्लाह के दोस्तों पर न कोई खौफ़ होगा और न वे ग़मगीन होंगे।" 2। | अल्लाह तआला ने फ़रमाया: (लोगो!) आगाह हो जाओ, निश्चित रूप से अल्लाह के दोस्त (हर डर और ग़म से सुरक्षित होंगे), न उन पर कोई डर होगा और न वे दुखी होंगे। (त)

तो अगर मानव स्वभाव के कारण कुछ ईश्वरीय अधिकारों में उनके पद और स्थान के अनुसार (नेक लोगों की नेकियाँ निकटतम लोगों की कमियाँ मानी जाती हैं) कोई कमी हो जाए, तो अल्लाह सर्वशक्तिमान ने उसे होने से पहले ही माफ़ कर दिया है, जैसा कि:

"मैंने तुम्हें माँगने से पहले ही अता कर दिया, और मैंने तुम्हारी पुकार से पहले ही तुम्हारी दरख्वास्त स्वीकार कर ली, और निश्चित रूप से तुम्हारी नाफरमानी से पहले ही मैंने तुम्हें माफ़ कर दिया।" 3 | मैंने तुम्हें अता कर दिया इससे पहले कि तुम मुझसे कुछ माँगो, और मैंने तुम्हारी दरख्वास्त स्वीकार कर ली इससे पहले कि तुम मुझे पुकारो, और निश्चित रूप से तुम्हारी नाफरमानी करने से पहले ही मैंने तुम्हें माफ़ कर दिया। (त)

इसी प्रकार यदि आपस में किसी प्रकार की नाराज़गी या किसी बंदे के हक में कोई कमी हो, जैसे कि सहाबा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो)...

---

1. मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल, अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र के हवाले से, अल-मकतब अल-इस्लामी, बेरूत, 1/198; अत-तर्ग़ीब वत-तरहीब, अहमद, अल-बज़्ज़ार, अत-तबरानी और अबू नुऐम के हवाले से, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 2/602।

2. अल-क़ुरआन अल-करीम, 10/62।
3. मफ़ातीह अल-ग़ैब (तफ़सीर-ए-कबीर), सूरह अल-क़सस की आयत 'और आप पश्चिमी दिशा में नहीं थे...' के अंतर्गत, अल-मत्बा अल-बहिया अल-मिसरिया, 24/257।

مولٰی عزوجل فرمائے گا: صدق عبدی فأنا احق من قضی عنک 1 | میرا بندہ سچ کہتا ہے سب سے زیادہ میں مستحق ہوں کہ تیری طرف سے ادا فرمادوں۔ پھر مولٰی سبحانہ وتعالٰی کوئی چیز منگا کر اس کے پلہ میزان میں رکھ دے گا کہ نیکیاں برائیوں پر غالب آجائیں گی اور وہ بندہ رحمت الٰہی کے فضل سے داخل جنت ہوگا۔ پنجم : اولیائے کرام صوفیہ صدق ارباب معرفت قدست اسرارہم ونفعنا اللہ ببرکاتہم فی الدنیا والآخرۃ (ان کے راز پاک کر دیئے گئے ،اللہ تعالٰی ہمیں دنیا اور آخرت میں ان کی برکتوں سے فائدہ پہنچائے۔ت) کہ بنص قطعی قرآن روز قیامت ہر خوف وغم سے محفوظ وسلامت ہیں۔

قال تعالی: "اَلَآ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰہِ لَا خَوْفٌ عَلَیْھِمْ وَ لَا ھُمْ یَحْزَنُوْنَ" 2۔ | اللہ تعالٰی نے ارشاد فرمایا: (لوگو!) آگاہ ہو جاؤ یقیناً اللہ تعالٰی کے دوست (ہر خوف اور غم سے محفوظ ہوں گے) نہ انہیں کوئی ڈر ہوگا اور نہ وہ غمگین ہوں گے۔ (ت)

تو ان میں بعض سے اگر بتقاضائے بشریت بعض حقوق الٰہیہ میں اپنے منصب و مقام کے لحاظ سے حسنات الابرار سیئات المقربین کوئی تقصیر واقع ہو تو مولٰی عزوجل اسے وقوع سے پہلے معاف کر چکا کہ:

قد اعطیتکم من قبل ان تسألونی و قد اجبتکم من قبل ان تدعونی وقد غفرت لکم من قبل ان تعصونی 3۔ | میں نے تمہیں عطا فرمادیا اس سے پہلے کہ تم مجھ سے کچھ مانگو، اور میں نے تمہاری درخواست قبول کر لی قبل اس کے کہ تم مجھے پکارو، اور یقیناً تمہاری نافرمانی کرنے سے پہلے میں نے تمہیں معاف کر دیا۔ (ت)

یوہیں اگر باہم کسی طرح کی شکر رنجی یا کسی بندہ کے حق میں کچھ کمی ہو جیسے صحابہ رضوان اللہ تعالیٰ

---

1 مسند امام احمد بن حنبل عن عبدالرحمٰن بن ابی بکر المکتب الاسلامی بیروت ۱/ ۱۹۸، الترغیب والترہیب بحوالہ احمد والبزار و الطبرانی وابی نعیم مصطفیٰ البابی مصر ۲/ ۶۰۲ 2 القرآن الکریم ۱۰/ ۶۲ 3 مفاتیح الغیب التفسیر الکبیر تحت آیۃ سورۃ القصص و ما کنت بجانب الغربی الخ المطبعۃ البھیۃ لمصریۃ ۲۴/ ۲۵۷

Fatawa Razawiya, Volume 24

Regarding the disputes among them [the Companions], may Allah be pleased with them all:

[Arabic]: "There will soon be lapses from my companions, which Allah Almighty will forgive for them because of their precedence with me." [Urdu]: Soon my companions will have some lapses, which Allah Almighty will forgive because of their precedence. (T)

Then the Lord Almighty, taking those rights upon His own generous responsibility, will command the claimants of those rights to forgive, and after effecting mutual reconciliation, will seat them facing each other on magnificent thrones of Paradise, as [it is said]:

[Arabic]: "And We shall remove from their hearts any deep feeling of bitterness [that they may have]. [So they will be like] brothers facing each other on thrones." (Quran 15:47) [Urdu]: We will cleanse their chests of grudges and malice, then they will be as brothers sitting on thrones facing one another. (T)

Regarding the masters and leaders of this blessed group, the people of Badr, may Allah Almighty be pleased with them all, it is declared:

[Arabic]: "Do whatever you wish, for I have already forgiven you." [Urdu]: Do whatever you want, for I have forgiven you.

Among the senior masters from them is the Leader of the Faithful, 'Uthman al-Ghani, may Allah Almighty be pleased with him, for whom it was said many times:

[Arabic]: "Nothing 'Uthman does after today shall harm him. Nothing 'Uthman does after today shall harm him." [Urdu]: From today, whatever 'Uthman does, there is no accountability for it; from today, whatever 'Uthman does, there is no accountability for it.

The poor servant [the author], may Allah forgive him, says [concerning the] Hadith:

[Arabic]: "When Allah loves a servant, no sin harms him." Narrated by al-Daylami in Musnad al-Firdaws. [Urdu]: When Allah Almighty starts to love a servant, no sin causes him harm. Narrated by Muhaddith Daylami.

Footnotes: 1. Al-Jami' al-Saghir, Hadith 3356, Dar al-Kutub al-Ilmiyya, Beirut, 1/201. 2. Al-Qur'an al-Karim, 15/47. 3. Sahih al-Bukhari, Book of Al-Maghazi, Chapter on the

excellence of those who witnessed Badr, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 2/567. 4. Jami' al-Tirmidhi, Chapters of Virtues (Manaqib), Virtues of 'Uthman ibn 'Affan, Amin Company, Delhi, 2/211. 5. Al-Firdaws bi-Ma'thur al-Khitab, Hadith 2432, Dar al-Kutub al-Ilmiyya, Beirut, 2/77; Al-Durr al-Manthur, cited from Al-Qushayri and Ibn Najjar under the verse "Indeed, Allah loves those who turn to Him...", Publications of the Library of Ayatollah al-Uzma, Qom, Iran, 1/261.

फ़तावा रज़विया, जिल्द २४

उनके[सहाबा] के बीच हुए मतभेदों के बारे में कि:

[अरबी]: "जल्द ही मेरे साथियों से कुछ भूलें होंगी, जिन्हें अल्लाह तआला उनके मेरे साथ होने के कारण माफ़ कर देगा।" [उर्दू]: जल्द ही मेरे साथियों से कुछ लग़्ज़िशें (चूकें) होंगी जिन्हें अल्लाह तआला उनके पूर्व-योगदानों के कारण माफ़ फ़रमा देगा। (त)

तो मौला तआला उन हक़ों को अपने ज़िम्मा-ए-करम पर लेकर हक़दारों को माफ़ करने का हुक्म फ़रमाएगा और आपसी सफ़ाई कराकर उन्हें जन्नत के आलीशान तख्तों पर आमने-सामने बिठाएगा, जैसा कि:

[अरबी]: "और हम उनके दिलों से कीने और रंजिशें निकाल देंगे, वे भाई-भाई बनकर तख्तों पर एक-दूसरे के आमने-सामने होंगे।" (कुरान १५:४७) [उर्दू]: उनके सीनों को कीनों और कदुरतों से हम पाक-साफ कर देंगे, फिर वे भाई-भाई होकर एक-दूसरे के आमने-सामने तख्त-नशीन होंगे। (त)

इसी मुबारक कौम के सरवर और सरदार, अहल-ए-बद्र (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन) के लिए इर्शाद होता है:

[अरबी]: "जो चाहो करो कि मैंने तुम्हें बख्श दिया है।" [उर्दू]: जो चाहो करो कि मैं तुम्हें बख्श चुका।

इन्हीं के बड़े सरदारों में से अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं जिनके लिए कई बार फ़रमाया गया:

[अरबी]: "आज के बाद उस्मान जो भी करे उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाएगा। आज के बाद उस्मान जो भी करे उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाएगा।" [उर्दू]: आज से उस्मान कुछ करे उस पर कोई मुआख़ज़ा (जवाबदेही) नहीं, आज से उस्मान कुछ करे उस पर कोई मुआख़ज़ा नहीं।

फ़क़ीर (अल्लाह उसे माफ़ करे) कहता है कि हदीस है:

[अरबी]: "जब अल्लाह किसी बंदे से मोहब्बत करने लगता है, तो उसे कोई गुनाह नुकसान नहीं पहुँचाता।" इसे दैलमी ने मुसनद अल-फिरदौस में रिवायत किया है। [उर्दू]: जब अल्लाह तआला किसी बंदे से मोहब्बत करने लगे तो उसे कोई गुनाह नुकसान नहीं देता, मुहद्दिस दैलमी ने...

पाद-टिप्पणियाँ: १. अल-जामिअ-उस-सगीर हदीस ३३५६ दारुल कुतुब अल-इल्मिया बेरुत १/२०१ २. अल-कुरानुल करीम १५/४७ ३. सहीह अल-बुखारी किताबुल मगाज़ी बाब फ़ज़्लु मन शहदा बदरा कदीमी कुतुब खाना कराची २/५६७ ४. जामिअ अत-तिरमिज़ी अबवाबुल मनाकिब मनाकिब उस्मान इब्न अफ़्फ़ान अमीन कंपनी दिल्ली २/२११ ५. अल-फिरदौस बि-मासूरिल खिताब हदीस २४३२ दारुल कुतुब अल-इल्मिया बेरुत २/७७, अद-दुर्रुल मंसूर हवालए अल-कुशैरी व इब्न नज्जार तह्त आयत इन्नल्लाहा युहिब्बुत्तव्वाबीन अल-ख मंसूरात मक्तबा आयतुल्लाहुल उज़्मा कुम ईरान १/२६१

पृष्ठ ४७४ / ७२०

فتاوٰی رضویہ، جلد ۲۴

علیہم اجمعین کے مشاجرات کہ :

ستکون لاصحابي زلة یغفرها الله تعالی لهم لسابقتهم معی 1 - (عربی) عنقریب میرے ساتھیوں سے کچھ لغزشیں ہوں گی جنہیں ان کی پیش قدمی کے باعث اللہ تعالٰی معاف فرمادے گا۔ (ت)

تو مولٰی تعالٰی وہ حقوق اپنے ذمہ کرم پر لے کر ارباب حقوق کو حکم تجاوز فرمائے گا اور باہم صفائی کرا کر آمنے سامنے جنت کے عالیشان تختوں پر بٹھائے گا کہ :

"وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ" 2 - (عربی) ان کے سینوں کو کینوں اور کدورتوں سے ہم پاک صاف کر دیں گے پھر وہ بھائی بھائی ہو کر ایک دوسرے کے آمنے سامنے تخت نشین ہوں گے۔ (ت)

اسی مبارک قوم کے سرور و سردار حضرات اہل بدر رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین ارشاد ہوتا ہے:

اعملوا ماشئتم فقد غفرت لکم 3 - (عربی) جو چاہو کرو کہ میں تمہیں بخش چکا۔

انہیں کے اکابر سادات سے حضرت امیر المومنین عثمان غنی رضی اللہ تعالٰی عنہ ہیں جن کے لئے بارہا فرمایا گیا:

ماعلی عثمان ماعمل بعد هذه ماعلی عثمان ماعمل بعد هذه 4 - (عربی) آج سے عثمان کچھ کرے اس پر مواخذہ نہیں، آج سے عثمان کچھ کرے اس پر مواخذہ نہیں۔

فقیر غفر اللہ تعالٰی کہتا ہے حدیث:

اذا احب الله عبدا لم یضره ذنب رواه الدیلمی فی مسند الفردوس 5 و (عربی) جب اللہ تعالیٰ کسی بندے سے محبت کرنے لگے تو اسے کوئی گناہ نقصان نہیں دیتا، محدث دیلمی نے

حواشی: 1 الجامع الصغیر حدیث ۳۳۵۶ دار الکتب العلمیہ بیروت ۱ / ۲۰۱ 2 القرآن الکریم ۱۵ / ۴۷ 3 صحیح البخاری کتاب المغازی باب فضل من شهد بدرا قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۵۶۷ 4 جامع الترمذی ابواب المناقب مناقب عثمان ابن عفان امین کمپنی دہلی ۲ / ۲۱۱ 5 الفردوس بمأثور الخطاب حدیث ۲۴۳۲ دارالکتب العلمیۃ بیروت ۲ / ۷۷، الدر المنثور بحوالہ القشیری و ابن نجار تحت آیة ان الله یحب التوابین الخ منشورات مکتبۃ آیت اللہ العظمیٰ قم ایران ۱ / ۲۶۱

[Boxed Text] Al-Imam al-Qushayri in his treatise and Ibn al-Najjar in his history narrated from Anas bin Malik (may Allah be pleased with him) from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). (T) It was narrated in Musnad al-Firdaws, by Imam Qushayri in his treatise, and by Ibn al-Najjar in his history, on the authority of Hadrat Anas bin Malik (may Allah be pleased with him) from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). (T)

The best interpretation of this is that the beloved of God do not commit sins in the first place. *Inna al-muhibba liman yuhibbu muti'u* (Indeed, the one who loves is obedient to the one he loves. T) And this is what our master and father (may Allah be pleased with him) chose. (And our respected father (may Allah be pleased with him) has preferred this. T). And if occasionally any shortcoming occurs, the divine preacher and restrainer alerts them and grants them the success of repentance; then "The one who repents from sin is like him who has no sin" (The one who repents from sins becomes like that person who has not committed any sin at all. T) This is a part of the Hadith. And this is the path followed by al-Munawi in *al-Taysir*. (This is exactly the approach adopted by 'Allamah al-Munawi in al-Taysir. T). And even if, hypothetically, the Divine Will was implemented in another way for the manifestation of forgiveness and pardon, and the demonstration of the station of acceptance and belovedness, then absolute forgiveness and the pleasure of the People of Truth are present before us; by the grace of Allah Almighty, the harm of sin is absent in every way. Praise be to Allah, the Generous, the Loving. And this is what I have added by the grace of the One who is Praised. (All praise is for that God who is Great and Supreme, Honorable, and the Lover and Beloved of His servants; this is what I have added through the grace and kindness of Allah Almighty, Who possesses praised attributes. T) In the opinion of the humble servant (may Allah Almighty forgive him), in the mentioned Hadith of Umm Hani (may Allah be pleased with her) "A caller will call out from beneath the Throne: O People of Monotheism, the Hadith" (A caller will announce from beneath the Throne: O monotheists, the Hadith. T). By "People of Monotheism", these very beloved ones of God are meant, for pure, complete, and total monotheism, purified from every kind of hidden and most hidden polytheism (shirk khafi and akhfa), is their portion. This is contrary to the worldly people who have been called "slaves of the dinar, slaves of the dirham, slaves of greed, slaves of desire, slaves of inclination."

1 Al-Firdaws bi-Ma'thur al-Khitab, Hadith 2432, Dar al-Kutub al-Ilmiyya, Beirut, 2/77. 2 Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 1358, Maktabat al-Ma'arif, Riyadh, 2/200.

[बॉक्स में पाठ] इमाम कुशैरी ने अपने रिसाला में और इब्न-ए-नज्जार ने अपनी तारीख़ में इसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) के हवाले से हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत किया। (त) इमाम कुशैरी ने अपने रिसाला में और इब्न-ए-नज्जार ने अपनी तारीख़ में इसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) के हवाले से हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत किया। (त)

इसका सबसे अच्छा अर्थ यही है कि ईश्वर के प्रियजन पहली बात तो यह कि पाप करते ही नहीं। इन्नल मुहिब्बा लिमन युहिब्बु मुती' (बेशक, प्रेम करने वाला जिससे प्रेम करता है, उसका आज्ञाकारी होता है। त) और यही वह चीज़ है जिसे हमारे पिता (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने पसंद फरमाया। (और इसी को हमारे आदरणीय पिता (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने पसंद फरमाया। त)। और अगर कभी-कभार कोई कमी हो जाए, तो ईश्वर का उपदेशक और रोकने वाला उन्हें सतर्क कर देता है और उन्हें तौबा (पश्चाताप) की प्रेरणा देता है; फिर "पापों से तौबा करने वाला उस व्यक्ति की तरह है जिसने कोई पाप किया ही न हो" (पापों से तौबा करने वाला उस आदमी की तरह हो जाता है जिसने कोई पाप किया ही न हो। त) यह हदीस का एक हिस्सा है। और इसी मार्ग पर अल्लामा मुनावी 'अत-तयसीर' में चले हैं। (यह वही है जिस पर अल्लामा मुनावी ने तयसीर में तरीका अपनाया है। त)। और यदि मान लिया जाए कि ईश्वरीय इच्छा क्षमा और माफ़ी की महिमा के प्रकट होने और स्वीकार्यता एवं प्रियता के स्थान के प्रदर्शन के लिए दूसरे तरीके से लागू हुई, तो पूर्ण क्षमा और सत्य के लोगों की प्रसन्नता सामने मौजूद है; अल्लाह तआला की कृपा से पाप की हानि हर तरह से अनुपस्थित है। सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो उदार और प्रेम करने वाला है। और यह वह है जो मैंने प्रशंसित (अल्लाह) की कृपा से बढ़ाया है। (सब प्रशंसा उस खुदा के लिए है जो महान और सर्वोच्च, सम्मानित और अपने सेवकों को प्यार करने वाला और उनका प्रिय है; यह वह है जिसे मैंने अल्लाह तआला के प्रशंसनीय गुणों की कृपा और दया से जोड़ा है। त) इस तुच्छ सेवक (अल्लाह उसे क्षमा करे) के विचार में, उम्म-ए-हानी (रज़ियल्लाहु अन्हा) की उल्लेखित हदीस में "अर्श के नीचे से एक पुकारने वाला पुकारेगा: ऐ एकेश्वरवादियो (अह्ल-ए-तौहीद), अल-हदीस" (अर्श के नीचे से एक आवाज़ देने वाला आवाज़ देगा: ऐ तौहीद परस्तो, अल-हदीस। त)। अह्ल-ए-तौहीद से मुराद खुदा के यही प्रियजन हैं, क्योंकि शुद्ध, पूर्ण और संपूर्ण एकेश्वरवाद, जो हर प्रकार के गुप्त और अति-गुप्त शिर्क(अशुद्धता) से पवित्र और निर्मल

है, उन्हीं का हिस्सा है। यह उन दुनियादार लोगों के विपरीत है जिन्हें "दीनार का दास, दिरहम का दास, लालच का दास, इच्छा का दास, झुकाव का दास" कहा गया है।

1 अल-फ़िरदौस बि-मासूर अल-ख़िताब, हदीस 2432, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, 2/77।
2 अल-मुअजम अल-औसत, हदीस 1358, मकतबत अल-मआरिफ़, रियाद, 2/200।

पृष्ठ 475/720

[خانہ] الامام القشیری فی رسالتہ وابن النجار فی تاریخہ | اسے مسند الفردوس میں ، امام قشیری نے اپنے رسالہ میں اور عن انس بن مالک رضی اللہ تعالٰی عنہ عن النبی صلی | ابن نجار نے اپنی تاریخ میں حضرت انس بن مالک رضی اللہ اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔ | تعالٰی عنہ کے حوالہ سے اسے حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام سے روایت کیا۔ (ت)

کا عمدہ محمل یہی ہے کہ محبوبان خدا اول تو گناہ کرتے ہی نہیں ع ان المحب لمن یحب مطیع (بے شک محبت کرنے والا جس سے محبت کرتا ہے اس کا فرمانبردار مطیع ہوتا ہے۔ت) وہذا ما اختارہ سیدنا الوالد رضی اللہ تعالٰی عنہ (اور اسی کو ہمارے والد گرامی (اللہ تعالٰی ان سے راضی ہو) نے پسند فرمایا۔ت) اور احیاناً کوئی تقصیر واقع ہو تو واعظ وزاجر الہی انہیں متنبہ کرتا اور توفیق انابت دیتا ہے پھر التائب من الذنب کمن لا ذنب لہ 1 (گناہوں سے توبہ کرنے والا اس آدمی کی طرح ہو جاتا ہے جس نے کوئی گناہ کیا ہی نہ ہو۔ت) اس حدیث کا ٹکڑا ہے وھذا ما مشی علیہ المناوی فی التیسیر (یہ وہی ہے جس پر علامہ مناوی نے تیسیر میں روش اختیار فرمائی۔ت) اور بالفرض ارادۂ الہیہ دوسرے طور پر تجلی شان عفو و مغفرت و اظہارِ مکان قبول و محبوبیت پر نافذ ہوا تو عفو مطلق و رضائے اہلِ حق سامنے موجود ، ضررِ ذنب بحمد اللہ تعالٰی ہر طرح مفقود، والحمد للہ الکریم الودود ، وھذا مازدتہ بفضل المحمود (سب تعریف اس خدا کے لئے جو بزرگ وبرتر ، معزز اور بندوں کو دوست رکھنے والا اور ان کا محبوب ہے ، یہ وہ ہے جس کا میں نے اللہ تعالٰی ستودہ صفات کے فضل و کرم سے اضافہ کیا ہے۔ت) فقیر غفراللہ تعالٰی لہ کے گمان میں حدیثِ مذکور امِ ہانی رضی اللہ تعالٰی عنہا ینادی مناد من تحت العرش یا اھل التوحید، الحدیث 2 (عرش کے نیچے سے ایک ندا کرنے والا ندا کرے گا اے توحید پرستو، الحدیث۔ت) میں اہل توحید سے یہی محبوبانِ

خدا مراد ہیں کہ توحید خالص تمام کامل ہر گونہ شرک خفی واخفیٰ سے پاک و منزہ انہیں کا حصہ ہے ، بخلاف اہلِ دنیا جنہیں عبدالدینار عبدالدرہم عبد الطمع عبد الہویٰ عبد رغب فرمایا گیا۔

1 الفردوس بماثور الخطاب حدیث ۲۴۳۲ دارالکتب العلمیۃ بیروت ۲ / ۷۷ 2 المعجم الاوسط حدیث ۱۳۵۸ مکتبۃ المعارف الریاض ۲ / ۲۰۰

Fatawa Ridawiyya Volume 24

And Allah the Almighty said: "Have you seen him who has taken his own desire as his god?" [1]	**Allah the Almighty has proclaimed: (O Beloved!) Have you seen the one who has taken his desire as his god. (T)**

And certainly, without attaining divine recognition, it is extremely difficult to escape the obedience of one's carnal desires. These servants of God practice monotheism (Tawhid) in their Lord (Exalted is He) not only in worship but in their quest and intention, and even in the very essence of existence. For the commonality, the meaning of 'La ilaha illa Allah' (There is no true deity except Allah - T) is 'La ma'buda illallah' (There is none worthy of worship except Allah - T). For the elite, it is 'La maqsuda illallah' (There is no objective or desired one except Allah - T). For the people of guidance, it is 'La mashhuda illallah' (There is no one whose oneness can be witnessed and in whose presence the creation appears except Allah - T). For the elite of the elite, the masters of the final stages, it is 'La mawjuda illallah' (There is no one truly existent except Allah - T). Therefore, the true title of "People of Monotheism" (Ahl-e-Tawhid) only suits them, and hence their knowledge is called Monotheism (Tawhid):

May Allah Almighty make us among their servants and the dust of their feet in this world and the hereafter, and forgive us through their high status before Him, for He is the One to be feared and He is the One to forgive. Ameen!	**May Allah the Almighty include us among their servants and make us the dust of their feet in this world and the hereafter, and for the sake of their high rank which they hold in His presence, forgive us. Indeed, He alone is worthy of being feared, and He alone possesses the power to forgive. O Allah! Accept and approve my prayer. (T)**

I hope that this interpretation of this Hadith is better and more excellent than the interpretation of Imam Ghazali (may his secret be sanctified), and success is from Allah. Furthermore, even in those cases where this method was adopted—pleasing the owner of the right and obtaining forgiveness by giving compensation—the general rule remained true that the right of a slave is not forgiven without the slave's forgiveness. In short, the matter is delicate, the situation is severe, deeds are ruinous, hopes are distant, but His grace is universal, His mercy is immense, and faith...

1 The Holy Quran 45/23 Page 476 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "क्या आपने उस व्यक्ति को देखा जिसने अपनी इच्छा को अपना ईश्वर बना लिया है?" [1]

अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया: (ऐ महबूब!) क्या आपने उसे देखा जिसने अपनी इच्छा को अपना माबूद (ईश्वर) बना रखा है। (त)

और निस्संदेह ईश्वरीय ज्ञान (मआरिफ़त) प्राप्त किए बिना मन की इच्छाओं की अधीनता से बाहर आना बहुत कठिन है। अल्लाह के ये बंदे न केवल इबादत में, बल्कि अपनी चाह और इरादे में, बल्कि स्वयं अस्तित्व और वजूद के मूल में अपने रब (महान है उसकी शान) की तौहीद (एकेश्वरवाद) करते हैं। "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं - त) का अर्थ आम लोगों के पास 'ला मअबूदा इल्लल्लाह' (अल्लाह के सिवा कोई ऐसा नहीं जिसकी इबादत की जाए - त) है। खास लोगों के पास 'ला मक़सूदा इल्लल्लाह' (अल्लाह के सिवा कोई उद्देश्य और वांछित नहीं - त) है। हिदायत वालों के पास 'ला मशहूदा इल्लल्लाह' (अल्लाह के सिवा कोई ऐसा नहीं जिसकी एकता की गवाही दी जाए और जिसकी दरगाह में सृष्टि उपस्थित होने वाली हो - त) है। अख़सुल ख़वास (विशेषों के विशेष) लोगों के लिए जो अंतिम चरणों के स्वामी हैं, 'ला मौजूद इल्लल्लाह' (वास्तव में अल्लाह के सिवा कोई मौजूद नहीं - त) है। तो अहल-ए-तौहीद का सच्चा नाम उन्हीं को शोभा देता है, इसलिए उनके ज्ञान को तौहीद कहते हैं:

अल्लाह तआला हमें उनके सेवकों में और दुनिया और आख़िरत में उनके चरणों की धूल बनाए और उनके उच्च पद के माध्यम से हमें क्षमा करे, निस्संदेह वह डरने के योग्य है और क्षमा करने की योग्यता रखता है, आमीन!

अल्लाह तआला हमें उनके ख़ादिमों (सेवकों) में शामिल फ़रमाए और दुनिया और आख़िरत में उनके क़दमों की मिट्टी बना दे और उनके उस मर्तबा-ए-आलिया (उच्च पद) के तुफ़ैल (माध्यम) से जो उनका उसकी बारगाह में है, हमें बख़्श दे। बेशक वही इस लायक़ है कि उससे डरा जाए और वही बख़्श देने की अहलियत (योग्यता) रखता है। ऐ अल्लाह! मेरी दुआ क़बूल व मंज़ूर फ़रमा। (त)

मुझे उम्मीद है कि इस हदीस की यह तावील (व्याख्या) इमाम ग़ज़ाली (अल्लाह उनकी रूह को पाकीज़ा रखे) की तावील से बेहतर और उम्दा है, और तौफ़ीक़ अल्लाह ही से है। फिर उन सूरतों में भी जहाँ यही तरीका अपनाया गया कि हक़ वाले को राज़ी किया जाए और मुआवज़ा देकर उसी से

माफ़ी माँगी जाए, तो वह सिद्धांत हर तरह से सही रहा कि बंदे का हक़ बंदे की माफ़ी के बिना माफ़ नहीं होता। संक्षेप में, मामला नाज़ुक है, स्थिति गंभीर है, कर्म विनाशकारी हैं, उम्मीदें दूर की हैं, और कृपा व्यापक है, दया महान है, और ईमान...

१ अल-क़ुरआन अल-करीम ४५/२३ पेज ४७६ / ७२०

وقال اللہ تعالٰی " اَفَرَاَیْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰـهَهٗ هَوٰىهُ " - 1

اللہ تعالٰی نے ارشاد فرمایا: (اے محبوب!) کیا آپ نے دیکھا جس نے اپنی خواہش کو اپنا معبود بنا رکھا ہے۔ (ت)

اور بیشک بے حصولِ معرفت الٰہی اطاعت ہوائے نفس سے باہر آنا سخت دشوار، یہ بندگان خدا نہ صرف عبادت بلکہ طلب وارادت بلکہ خود اصلِ ہستی و وجود میں اپنے رب جل مجدہ کی توحید کرتے ہیں لا الہ الا اللہ (اللہ تعالٰی کے سوا کوئی سچا معبود نہیں۔ ت) کے معنی عوام کے نزدیک لامعبود الا اللہ (اللہ تعالٰی کے سوا کوئی ایسا نہیں جس کی عبادت کی جائے۔ ت)، خواص کے نزدیک لا مقصود الا اللہ (اللہ تعالٰی کے سوا مقصود و مطلوب نہیں۔ ت)، اہل ہدایت کے نزدیک لامشہود الا اللہ (اللہ تعالٰی کے سوا کوئی ایسا نہیں جس کی وحدانیت کی گواہی دی جائے اور جس کی بارگاہ میں مخلوق حاضر ہونے والی ہو۔ ت) ان اخص الخواص ارباب نہایت کے نزدیک لاموجود الا اللہ (اللہ تعالٰی کے سوا حقیقتاً کوئی موجود نہیں۔ ت) تو اہل توحید کا سچا نام انہیں کو زیبا، ولہذا ان کے علم کو توحید کہتے ہیں:

جعلنا اللہ تعالٰی من خدامھم و تراب اقدامھم فی الدنیا والاٰخرۃ وغفرلنا بجاھھم عندہ انہ اھل التقوٰی واھل المغفرۃ اٰمین!

اللہ تعالٰی ہمیں ان کے خادموں میں شامل فرمائے اور دنیا و آخرت میں ان کے قدموں کی مٹی بنا دے اور ان کے اس مرتبہ عالیہ کے طفیل جو ان کا اس کی بارگاہ میں ہے ہمیں بخش دے بیشک وہی اس لائق ہے کہ اس سے خوف رکھا جائے اور وہی بخش دینے کی اہلیت رکھتا ہے۔ اے اللہ! میری دعا قبول و منظور فرما۔ (ت)

امید کرتا ہوں کہ اس حدیث کی یہ تاویل تاویلِ امام غزالی قدس سرہ العالی سے احسن واجود، وباللہ التوفیق۔ پھر ان صورتوں میں بھی جبکہ طرز یہی برتی گئی کہ صاحب حق کو راضی فرمائیں اور معاوضہ دے کر اسی سے بخشوائیں تو وہ کلیہ ہر طرح صادق رہا کہ حق العبد بے معانی عبد معاف نہیں ہوتا۔ غرض معاملہ نازک ہے اور امر شدید اور عمل تباہ امل بعید، اور کرم عمیم اور رحم عظیم، اور ایمان

1 القرآن الکریم ۴۵/۲۳ Page 476 of 720

Fatawa Razawiyyah (Volume 24)

Between fear and hope.

[Table Header] [Arabic Text]: Sufficient for us is Allah, and He is the best Disposer of affairs. There is no power nor might except with Allah, the Most High, the Most Great. And may the blessings of Allah Almighty be upon the intercessor for the sinners, the salvation of the perished, the hope of the wretched, Muhammad, and upon all his family and companions. All praise is for Allah, the Lord of the worlds. And Allah, Glory be to Him and Exalted is He, knows best, and His knowledge, glorified be His majesty, is most complete and most perfect.

[Urdu Translation]: And Allah Almighty is sufficient for us and He is the best supporter, and the power to keep away from sins and the ability to do good is not in anyone without His guidance and favor; He is a being of high rank, great and supreme. May the infinite mercies of Allah Almighty be upon the being who intercedes for sinners, the means of salvation for the ruined, and the center of hope for the hopeless, that is, our Master and Lord, Prophet Muhammad Mustafa (peace and blessings of Allah Almighty be upon him and his family), and upon all his descendants and companions. All praise is for Allah Almighty, Who is the Lord of all the worlds. And Allah Almighty is pure, exalted, and the greatest Knower, and the knowledge of that Majestic Being is extremely complete, solid, and firm. (T) 14th Jumada al-Ula 1310 AH.

Treatise

A'jab al-Imdad fi Mukaffirat Huquq al-'Ibad (The Most Marvellous Assistance Regarding the Expiation for Violating People's Rights)

Finished

I.T. Majlis of Dawat-e-Islami

Page 477 of 720

फ़तावा रज़विया (खण्ड 24)

डर और उम्मीद के बीच।

[तालिका शीर्षक] [अरबी पाठ]: हमें अल्लाह ही काफी है और वह सबसे अच्छा कार्यसाधक है। अल्लाह के अलावा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है, जो सबसे ऊँचा और महान है। और अल्लाह तआला की कृपा और शांति पापियों के लिए सिफारिश करने वाले, विनाश की ओर बढ़ने वालों के रक्षक, बेबसों की आशा, हज़रत मुहम्मद और उनके सभी परिवार और साथियों पर हो। सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो संसारों का पालनहार है। और अल्लाह, जो महान और सर्वोच्च है, सबसे अच्छा जानता है, और उसका ज्ञान, उसकी महिमा महान हो, सबसे पूर्ण और सबसे सुदृढ़ है।

[उर्दू अनुवाद]: और हमें अल्लाह तआला ही काफी है और वह बेहतरीन कारसाज़ है, और गुनाहों से किनारा-कश होने की ताकत और नेकी करने की कुदरत उसकी तौफीक और इनायत के बिना किसी में नहीं है, वह बुलंद मरतबा बुज़ुर्ग और बरतर ज़ात है, अल्लाह तआला की बेपायां रहमतें हों गुनहगारों के लिए सिफारिश करने वाली ज़ात पर, तबाह हालों के वसीला-ए-नजात पर और ना-उम्मीद होने वालों के मरकज़-ए-उम्मीद पर यानी हमारे आका व मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलीही व सल्लम पर, उनकी सब औलाद और साथियों पर, सब तारीफ अल्लाह तआला के लिए है जो तमाम जहानों का परवरदिगार है और अल्लाह तआला पाक, बुलंद व बाला सबसे बड़ा आलिम है और उस अज़मत वाली ज़ात का इल्म निहायत दर्जा कामिल और मोहकम व मज़बूत है। (त) 14 जमादी-उल-उला 1310 हिजरी।

रिसाला (लघु पुस्तक)

अजबुल इमदाद फ़ी मुकफ़्फ़िरात हिकुकुल इबाद (लोगों के अधिकारों के उल्लंघन के प्रायश्चित के संबंध में अद्भुत सहायता)

खत्म हुआ

I.T. मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी

पृष्ठ 477 / 720

فتاوٰی رضویہ (جلد ۲۴)

خوف ورجا کے درمیان۔

[جدول] [عربی متن]: وحسبنا اللہ ونعم الوکیل ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم وصلی اللہ تعالٰی علی شفیع المذنبین نجاہ الھالکین مرتجی البائسین محمد و آلہ وصحبہ اجمعین والحمد للہ رب العلمین۔ واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم و احکم۔

[اردو ترجمہ]: اور ہمیں اللہ تعالٰی ہی کافی ہے اور وہ بہترین کارساز ہے، اور گناہوں سے کنارہ کش ہونے کی طاقت اور نیکی کرنے کی قدرت اس کی توفیق و عنایت کے بغیر کسی میں نہیں، وہ بلند مرتبہ بزرگ وبرتر ذات ہے، اللہ تعالٰی کی بے پایاں رحمتیں ہوں گنہگاروں کیلئے سفارش کرنے والی ذات پر، تباہ حالوں کے وسیلہ نجات پر اور ناامید ہونے والوں کے مرکز امید پر یعنی ہمارے آقا و مولٰی حضرت محمد مصطفٰی صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم پر، ان کی سب اولاد اور ساتھیوں پر، سب تعریف اللہ تعالٰی کے لئے ہے جو تمام جہانوں کا پروردگار ہے اور اللہ تعالٰی پاک بلند و بالا سب سے بڑا عالم ہے اور اس عظمت والی ذات کا علم نہایت درجہ کامل اور محکم و مضبوط ہے۔ (ت) ۱۴/ جمادی الاولٰی ۱۳لوھ

رسالہ

اعجب الامداد فی مکفرات حقوق العباد

ختم ہوا

I.T. Majlis of Dawat-e-Islami

Volume 24 Fatawa Rizwia

Mourning, Wailing, and Lamentation

Problem 169 to 171: From Muhammad Ganj, District Bareilly, sent by Abdul Qadir Khan Sahib Rampuri, 19 Dhu al-Qi'dah 1315 AH. What do the scholars of religion say regarding these matters: (1) If a Muslim person's three children, aged one year, two years, or three years, die by divine decree, and that person, in a state of grief, offers prayer, thanks God, and exercises patience; when this person thanked Allah and showed patience upon the death of his children, will the parents receive any reward for this patience on the Day of Judgment or not? Please explain and be rewarded. (2) Does a person who cries loudly (wails) upon the death of children cause any distress to the deceased by such wailing or not? Please explain and be rewarded. (3) Is wailing loudly permissible or impermissible? Please explain and be rewarded. (Explain and gain reward. - T)

The Answer: (1) Allah Almighty says: "Indeed, the patient will be given their reward without account [i.e., limit]."[1] So it is, that those who are patient will be given their full reward, countlessly.

[1] Al-Quran al-Kareem 39/10 Page 478 of 720

जिल्द २४ फ़तावा रज़विया

शोक, मातम और विलाप

मसला १६९ से १७१: मुहम्मद गंज, ज़िला बरेली से, अब्दुल क़ादिर ख़ान साहब रामपुरी द्वारा प्रेषित, १९ ज़िल-क़ादा १३१५ हिजरी। धर्म के विद्वान इन मसलों में क्या फ़रमाते हैं: (१) यदि किसी मुसलमान व्यक्ति के तीन बच्चे, जो एक वर्ष, दो वर्ष या तीन वर्ष के हों, ईश्वरीय विधान से मर जाएँ, और वह व्यक्ति दुख की स्थिति में नमाज़ पढ़कर ईश्वर का शुक्र अदा करे और सब्र (धैर्य) करे; जब उस व्यक्ति ने अपने बच्चों की मृत्यु पर अल्लाह का शुक्र अदा किया और सब्र किया, तो क्या इस सब्र का फल बच्चों के माता-पिता को क़यामत (प्रलय) के दिन कुछ मिलेगा या नहीं? बयान कीजिए और पुण्य कमाइए। (२) जो व्यक्ति बच्चों की मौत पर चिल्लाकर रोते हैं, क्या उस चिल्लाकर रोने से मृत आत्मा को कोई तकलीफ़ होती है या नहीं? बयान कीजिए और पुण्य कमाइए। (३) चिल्लाकर रोना जायज़ है या नाजायज़? बयान कीजिए और पुण्य कमाइए। (बयान फरमाइए और अज्र पाइए।-त)

जवाब: (१) अल्लाह अज़्वजल फ़रमाता है: "बेशक सब्र करने वालों को उनका बदला भरपूर बिना हिसाब दिया जाएगा।"[1] यूँ ही है कि सब्र करने वालों को उनका बदला पूरा-पूरा दिया जाएगा, बेशुमार।

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम ३९/१० पेज ४७८ ऑफ ७२०

سوگ و نوحہ وجزع وفزع

مسئلہ ۱۶۹ تا ۱۷۱: از محمد گنج ضلع بریلی مرسلہ عبد القادر خاں صاحب رامپوری ۱۹ ذیقعدہ ۱۳۱۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں: (۱) اگر کسی شخص مسلمان کے تین بچے سال سال بھر کے یا دو دو برس یا تین تین کے کہ قضائے الہی سے فوت ہو جائیں اور وہ شخص رنج کی حالت میں نماز پڑھ کر خدا کا شکر ادا کرے اور صبر کرے جب اس شخص نے اپنے بچوں کے مرنے پر اللہ کا شکر کیا اور صبر کیا تب اس صبر کی جزا بچوں کے والدین کو قیامت میں کچھ ملے گی یا نہیں؟ بینوا توجروا۔ (۲) جو شخص بچوں کے مرنے پر چلا کر روتے ہیں اس چلا کے رونے سے میت پر کچھ تکلیف ہوتی ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔ (۳) چلا کے رونا جائز ہے یا ناجائز؟ بینوا توجروا۔ (بیان فرمائیے اجر پائیے۔ت)

الجواب: (۱) اللہ عزوجل فرماتا ہے: "اِنَّمَا یُوَفَّی الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَیْرِ حِسَابٍ۝" 1 یونہی ہے کہ صبر کرنے والوں کو ان کا اجر پورا پورا دیا جائے گا بے شمار۔

1 القرآن الکریم ۱۰/۳۹ Page 478 of 720

Fatawa Razawiyya Volume 24

And He says:

| "Those are the ones upon whom are blessings from their Lord and mercy. And it is those who are the [rightly] guided." [1] | Upon such people are blessings from their Lord and mercy, and it is these who are the ones on the right path. |

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

| "No Muslim whose three children die before reaching the age of puberty but Allah will admit him into Paradise by the virtue of His mercy towards them." (Narrated by the two Sheikhs [Bukhari and Muslim], an-Nasa'i, and Ibn Majah from Anas bin Malik; Ahmad from his mother, and from 'Amr bin 'Abasah, and from Abu Hurairah; and 'Abdullah bin Ahmad in Zawa'id al-Musnad and Abu Ya'la with a Sahih chain; and al-Hakim who authenticated it from al-Harith bin Aqish, may Allah be pleased with them all.) | Any Muslim who has three children die before puberty, Allah Almighty will admit him into Paradise due to the blessing of the mercy He shows towards those children. (Imam Bukhari, Muslim, Nasa'i, and Ibn Majah have narrated this from Hazrat Anas bin Malik. Ahmad narrated it from his mother, and from Amr bin Abdullah and Abu Hurairah. Ibn Hibban narrated it from Hazrat Abu Dharr, and Nasa'i from Hazrat Abu Hurairah, and Abdullah bin Ahmad in Zawa'id Musnad, and Abu Ya'la narrated it with a correct chain. Hakim declared it authentic and narrated it from Hazrat Harith bin Aqish, may Allah be pleased with him. (T)) |

And he (peace and blessings of Allah be upon him) says:

| "There is no Muslim whose three children die before reaching the age of puberty but they will meet him at the eight gates of Paradise, so that he may enter through whichever of them he wishes." (Narrated by Ibn Majah) [3] | Any Muslim whose three children die before reaching puberty, they will welcome him at all eight gates of Paradise, so he may enter from whichever one he desires. (Ibn Majah narrated this) |

[1] Al-Quran Al-Kareem 2/157 [2] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Jana'iz, Bab Ma Qila fi Awlad al-Muslimin, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/184; Sunan Ibn Majah, Abwab Ma Ja'a fil-Jana'iz, Bab Ma Ja'a fi Thawab man Usiba etc., H.M. Saeed Company Karachi, p. 116; Sunan an-Nasa'i, Kitab al-Jana'iz, Bab Thawab man Ihtasaba etc., Nur Muhammad Kutub Khana Karachi 1/264. [3] Sunan Ibn Majah, Abwab Ma Ja'a fil-Jana'iz, Bab Ma Ja'a fi Thawab man Usiba etc., H.M. Saeed Company Karachi, p. 116; Kanz al-Ummal, Hadith 2560, Mu'assasat ar-Risalah Beirut 3/284.

फतावा रज़विया जिल्द 24

और वह फ़रमाता है:

| "उन पर उनके रब की ओर से दुआएं(बरकतें) और रहमत है, और वही लोग सीधे रास्ते पर चलने वाले हैं।" 1 | ऐसे लोगों पर उनके रब की ओर से बरकतें और दया है, और यही लोग राह पाने वाले हैं। |

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

| "जिस किसी मुसलमान के तीन बच्चे बालिग होने से पहले मर जाते हैं, अल्लाह उन्हें उन बच्चों पर अपनी दया के कारण जन्नत में दाखिल करेगा।" (इसे शैखैन [बुखारी और मुस्लिम], नसाई और इब्न माजा ने अनस बिन मालिक से रिवायत किया; अहमद ने अपनी माँ से, और अम्र बिन अबासा से, और अबू हुरैरा और अब्दुल्लाह बिन अहमद से ज़वाइद अल-मुसनद में; और अबू याला ने एक सही सनद के साथ; और अल-हाकिम ने इसे सही करार देते हुए हारिस बिन अकीश रज़ियल्लाहु अन्हुम से रिवायत किया।) | जिस मुसलमान के तीन बच्चे नाबालीग अवस्था में मरेंगे, अल्लाह तआला उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा उस रहमत की बरकत से जो वह उन बच्चों पर फ़रमाएगा। (इमाम बुखारी, मुस्लिम, नसाई और इब्न माजा ने हज़रत अनस बिन मालिक के हवाले से इसे रिवायत किया है। अहमद ने अपनी माँ से, और अम्र बिन अब्दुल्लाह और अबू हुरैरा से रिवायत किया। इब्न हिब्बान ने हज़रत अबू ज़र से और नसाई ने हज़रत अबू हुरैरा से और अब्दुल्लाह बिन अहमद ने ज़वाइद मुसनद में और अबू याला ने सही सनद के साथ रिवायत किया है। और हाकिम ने इसे सही क़रार देकर हज़रत हारिस बिन अकीश से रिवायत किया है, अल्लाह तआला उन सब से राज़ी हो। (त)) |

और सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

| "जिस किसी मुसलमान के तीन बच्चे बालिग होने से पहले मर जाते हैं, वे जन्नत के आठों दरवाजों पर उसका स्वागत करेंगे ताकि वह उनमें से जिससे चाहे दाखिल हो सके।" (इसे इब्न माजा ने रिवायत किया है) 3 | जिस मुसलमान के तीन बच्चे नाबालिग मरेंगे वे जन्नत के आठों दरवाज़ों से उसका इस्तक़बाल (स्वागत) करेंगे कि जिससे चाहे दाख़िल हो। (इब्न माजा ने इसे रिवायत किया) |

1. अल-कुरान अल-करीम 2/157

2. सहीह अल-बुखारी किताब अल-जनाइज़ बाब मा क़ीला फ़ी औलाद अल-मुसलिमीन कदीमी कुतुब खाना कराची 1/184, सुनन इब्न माजा अबवाब मा जाआ फ़िल-जनाइज़ बाब मा जाआ फ़ी सवाब मन उस़ीबा वग़ैरह एच.एम. सईद कंपनी कराची पृ. 116, सुनन अन-नसाई किताब अल-जनाइज़ बाब सवाब मन एहतिसाबा वग़ैरह नूर मुहम्मद कुतुब खाना कराची 1/264
3. सुनन इब्न माजा अबवाब मा जाआ फ़िल-जनाइज़ बाब मा जाआ फ़ी सवाब मन उस़ीबा वग़ैरह एच.एम. सईद कंपनी कराची पृ. 116, कनुज़ अल-उम्माल हदीस 2560 मुअस्ससतुर रिसाला बेरूत 3/284

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

اور فرماتا ہے:

| "أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ﴿١٥٧﴾" 1 | ایسے لوگوں پر درودیں ہیں ان کے رب کی طرف سے اور مہربانی، اور یہی لوگ راہ پانے والے ہیں۔ |

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

| مامسلم یموت لہ ثلثۃ لم یبلغوا الحنث الا ادخلہ الجنۃ بفضل رحمتہ ایاھم۔ رواہ الشیخان 2 و النسائی وابن ماجۃ عن انس بن مالک واحمد عن امہ وعن عمرو بن عبسۃ وعن ابی ھریرۃ وعبد اللہ بن احمد فی زوائد المسند وابویعلی بسند صحیح والحاکم وصححہ عن الحارث بن ا قیش رضی اللہ تعالی عنہم۔ | جس مسلمان کے تین بچے نابالغی میں مریں گے اللہ تعالیٰ اسے جنت میں داخل فرمائے گا اس رحمت کی برکت سے جو ان بچوں پر فرمائے گا (امام بخاری، مسلم، نسائی اور ابن ماجہ نے حضرت انس بن مالک کے حوالہ سے اس کو روایت کیا ہے۔ احمد نے اپنی والدہ، اور عمرو بن عبداللہ اور ابوہریرہ سے روایت کیا۔ ابن حبان نے حضرت ابوذر سے اور نسائی نے حضرت ابوہریرہ سے اور عبداللہ بن احمد نے زوائد مسند میں اور ابویعلی نے صحیح سند کے ساتھ روایت کیا ہے۔ اور حاکم نے اسے صحیح قرار دے کر حضرت حارث بن ا قیش سے روایت کیا ہے، اللہ تعالیٰ ان سے راضی ہو۔ (ت)) |

اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم :

| مامن مسلم یموت لہ ثلثۃ من الولد لم یبلغوا الحنث الاتلقوہ من ابواب الجنۃ الثمانیۃ من ایھا شاء دخل۔ رواہ ابن ماجۃ 3 | جس مسلمان کے تین بچے نابالغ مریں گے وہ جنت کے آٹھوں دروازوں سے اس کا استقبال کریں گے کہ جس سے چاہے داخل ہو۔ (ابن ماجہ نے اس کو) |

1 القرآن الکریم ۲/ ۱۵۷ 2 صحیح البخاری کتاب الجنائز باب ماقیل فی اولاد المسلمین قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۸۴، سنن ابن ماجہ ابواب ماجاء فی الجنائز باب ماجاء فی ثواب من اصیب الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۱۶، سنن النسائی کتاب الجنائز باب ثواب من احتسب الخ نور محمد کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۶۴ 3 سنن ابن ماجہ ابواب ماجاء فی الجنائز باب ماجاء فی ثواب من اصیب الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۱۶، کنز العمال حدیث ۲۵۶۰ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۳/ ۲۸۴

Fatawa Razawiyya Volume 24

Narrated by Utbah bin Abd al-Sulami (may Allah be pleased with him) with a good chain (hasan). It is narrated from Utbah bin Abd al-Sulami (may Allah be pleased with him) with a good chain. (T) Once the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) narrated this same hadith that was mentioned before. The companions asked: "O Messenger of Allah, even if there are two?" He replied: "Even if there are two." They asked: "Even if there is one?" He replied: "Even if there is one." Then he said: "By Him in Whose hand is my soul, the miscarried fetus will pull its mother by its umbilical cord to Paradise, if she seeks reward from Allah (and is patient)." (Imam Ahmad narrated it with a sound chain and Al-Tabarani from Mu'adh (may Allah be pleased with him). (T)) And the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "When a slave's child dies, Allah Almighty says to His angels: 'Have you taken the soul of my slave's child?' They say: 'Yes.' He says: 'Have you taken the fruit of his heart?' They say: 'Yes.' He says: 'What did My slave say?' They say: 'He praised You and said, "To Allah we belong and to Him we shall return" (Inna lillahi wa inna ilayhi raji'un).' Then Allah says: 'Build for My slave a house in Paradise and call it "The House of Praise" (Bayt al-Hamd).'" (Narrated by Ahmad and Al-Tirmidhi, and he graded it as good (hasan).)

1. Musnad Ahmad bin Hanbal, Mu'adh bin Jabal, Al-Maktab al-Islami Beirut, 5/241
2. Jami' al-Tirmidhi, Chapters on Funerals, Chapter on the Virtue of Calamity when one seeks reward, Amin Company Delhi, 1/112

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

हज़रत उत्बा बिन अब्द अल-सलमी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से एक अच्छी सनद (हसन) के साथ रिवायत है। सनद हसन के साथ उत्बा इब्न अब्द अल-सलमी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया गया है। (त) एक बार हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने यही हदीस बयान फ़रमाई जो पहले ज़िक्र हुई, सहाबा ने अर्ज की: या रसूलल्लाह! क्या दो (बच्चों की मौत पर भी)? फ़रमाया: हाँ दो। अर्ज की: क्या एक? फ़रमाया: हाँ एक। फिर फ़रमाया: उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, वह अधुरा बच्चा जो गिर जाता है (गर्भपात), अगर उसकी माँ सवाब की उम्मीद में सब्र करे, तो वह अपनी नाभि की नाल से अपनी माँ को जन्नत में खींच ले जाएगा। (इसे इमाम अहमद ने सही सनद के साथ और इमाम तबरानी ने हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है। त) और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: जब किसी मुसलमान का बच्चा मरता है, तो अल्लाह अज़्वजल अपने फ़रिश्तों से फ़रमाता है: 'क्या तुमने मेरे बंदे के बच्चे की रूह कब्ज़ कर ली?' वे कहते हैं: 'हाँ।' फ़रमाता है: 'क्या तुमने उसके दिल का फल ले लिया?' वे कहते हैं: 'हाँ।' फ़रमाता है: 'फिर मेरे बंदे ने क्या कहा?' वे कहते हैं: 'उसने तेरी हम्द (तारीफ़) की और "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" पढ़ा।' अल्लाह फ़रमाता है: 'मेरे बंदे के लिए जन्नत में एक घर बनाओ और उसका नाम "हम्द का घर" (बैतुल हम्द) रखो।' (इमाम अहमद और तिरमिज़ी ने इसे रिवायत किया है और इसे हसन कहा है।)

1. मसनद अहमद बिन हंबल, मुआज़ बिन जबल, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत 5/241
2. जामि' अत-तिरमिज़ी, अबवाब अल-जनाइज़, बाब फ़ज़्ल अल-मुसीबा इज़ा एह्तसब, अमीन कंपनी दिल्ली 1/112

पृष्ठ 480 / 720

عن عتبة بن عبدالسلمی رضی اللہ تعالی عنه بسند حسن۔ سند حسن کے ساتھ عتبہ ابن عبدالسلمی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ہے۔ (ت) ایک بار حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے یہی حدیث کہ پہلے مذکور ہوئی بیان فرمائی صحابہ نے عرض کی: یارسول اللہ اواثنان یا دو، عرض کی: او واحد یا ایک، فرمایا: وواحد یا ایک۔ پھر فرمایا: والذی نفسی بیده ان السقط لیجرامه بسرره الی الجنة اذا احتسبته۔ رواه الامام احمد بسند صالح والطبرانی عن معاذ رضی اللہ تعالی عنه۔ قسم ہے اس کی جس کے ہاتھ میں میری جان ہے کہ کچا بچہ جو گر جاتا ہے اگر ثواب الہی کی امید میں اس کی ماں صبر کرے تو وہ اپنے نال سے اپنی ماں کو جنت میں کھینچ لے جائے گا۔ (اس کو امام احمد نے سند صالح کے ساتھ اور امام طبرانی نے حضرت معاذ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اس کو روایت کیا ہے۔ ت) اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم: اذا مات ولد العبد قال اللہ لملئکته قبضتم ولد عبدی، فیقولون نعم فیقول قبضتم ثمرة فواده، فیقولون نعم، فیقول ماذا قال عبدی، فیقولون حمدك واسترجع، فیقول ابنوا لعبدی بیتا فی الجنة وسمّوه بیت الحمد۔ رواه احمد والترمذی وحسنه جب مسلمان کا بچہ مرتا ہے اللہ عزوجل فرماتا ہے: تم نے میرے بندے کے بچے کی روح قبض کرلی۔ عرض کرتے ہیں: ہاں۔ فرماتا ہے: تم نے اس کے دل کا پھل لے لیا۔ عرض کرتے ہیں: ہاں۔ فرماتا ہے: پھر میرے بندے نے کیا کہا: عرض کرتے ہیں: تیرا شکر ادا کیا اور انا للہ وانا الیہ راجعون کہا فرماتا ہے: میرے بندے کے لئے جنت میں ایک گھر بناؤ اور اس کا نام "حمد کا مکان" رکھو۔ (امام احمد نے اسے روایت کیا ہے اور ترمذی نے اسے حسن کہا ہے۔)

1. مسند احمد بن حنبل معاذ بن جبل المکتب الاسلامی بیروت ۵ / ۲۴۱
2. جامع الترمذی ابواب الجنائز باب فضل المصیبة اذا احتسب امین کمپنی دہلی ۱ / ۱۱۲

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

Ibn Hibban reported in 'Sahih al-Taqasim wa al-Anwa' from Abu Musa al-Ash'ari (may Allah be pleased with him). - And Allah knows best. Imam Tirmidhi declared it fair (Hasan), and the Hadith scholar Ibn Hibban narrated it in 'Sahih al-Taqasim wa al-Anwa' from Hazrat Abu Musa Ash'ari (may Allah be pleased with him). - (Translator's note: T) And Allah Almighty knows best.

(2) Wailing loudly certainly causes pain to the deceased. In the belief of the Ahl al-Sunnah, the soul does not die with death, nor does its knowledge, hearing, and sight cease; rather, they progress. When the funeral is placed, the deceased hears and sees everything people say and do. These matters are proven by numerous Hadiths, as we have explained in 'Hayat al-Amwat fi Bayan Sama' al-Amwat' (Life of the Dead in Explaining the Hearing of the Dead). Loud wailing disturbs the living and causes them distress, let alone the deceased who has just gone through such intense suffering. Their distress and pain are beyond description. Now that they have entered the Abode of Truth, every calamity causes them grief, and every good deed brings them joy. This (wailing) causes them a hundredfold pain; whether child or youth, it is the same for everyone. It is stated in a Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

"Do not distress your deceased with loud wailing." Narrated by Ibn Mandah and al-Daylami from Umm al-Mu'minin Umm Salamah (may Allah be pleased with her). (Hadith scholar Ibn Mandah and al-Daylami narrated it from the Mother of the Believers, Sayyidah Umm Salamah, may Allah be pleased with her. - T)

Hazrat Abdullah ibn Mas'ud (may Allah be pleased with him) saw some women at a funeral and said:

"Go back burdened with sin, not rewarded. You tempt the living and distress the deceased." Narrated by Sa'id ibn Mansur in his Sunan. (Go back filled with burden and devoid of reward; you put the living into trials and cause distress to the deceased. Sa'id ibn Mansur narrated it in his Sunan. - T)

Imam Bakr bin Abdullah al-Muzani, a Tabi'i, says:

1. Al-Firdaws bi-Ma'thur al-Khitab, Hadith 318, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 1/98.
2. Kanz al-Ummal, on the authority of al-Khatib from Abi Hadyah, Hadith 42607, Mu'assasat al-Risalah, Beirut, 15/657.

फ़तावा रज़विया, जिल्द २४

इब्न हिब्बान ने 'सहीह अल-तक़ासीम वल-अनवा' में अबू मूसा अल-अशअरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है - और अल्लाह बेहतर जानता है। इमाम तिर्मिज़ी ने इसे हसन कहा है और मुहद्दिस इब्न हिब्बान ने 'सहीह अल-तक़ासीम वल-अनवा' में हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से इसे रिवायत किया है। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(२) चिल्लाकर रोने से मुर्दे को ज़रूर तकलीफ़ होती है। अहले सुन्नत के मज़हब में मौत से रूह नहीं मरती, न उसका इल्म, सुनना और देखना ख़त्म होता है, बल्कि उसमें तरक़्क़ी होती है। जब जनाज़ा रखा होता है, लोग जो कुछ कहते और करते हैं मुर्दा सब सुनता और देखता है। ये सब बातें बहुत सी हदीसों से साबित हैं, जैसा कि हमने इसे "हयातुल अमवात फी बयान समाअल अमवात" में बयान किया है। (त) चिल्लाकर रोने से ज़िंदा लोग परेशान हो जाते हैं और उन्हें दुख पहुँचता है, तो फिर मुर्दे का क्या कहना जिस पर अभी इतनी सख़्त तकलीफ़ गुज़री है। उसकी परेशानी और उसका दुख बयान से बाहर है। अब वह हक़ के घर में चला गया है, अब उसे हर मुसीबत रंज देती है और हर नेकी ख़ुशी देती है। यह अमल उसके लिए सौ गुना दुख का कारण बनता है, चाहे बच्चा हो या जवान, इसमें सब बराबर हैं। हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

"चिल्लाकर रोने से अपने मुर्दों को तकलीफ़ न दो।" (मुहद्दिस इब्न मंदा और दैलमी ने उम्मुल मोमिनीन सैयदा उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से इसे रिवायत किया है। - त)

हज़रत अब्दुल्ला इब्न मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक जनाज़े में कुछ औरतों को देखा तो फ़रमाया:

"पलट जाओ गुनाह से भरी हुई और सवाब से खाली होकर। तुम ज़िंदों को फ़ितने में डालती हो और मुर्दों को तकलीफ़ देती हो।" (सईद बिन मंसूर ने इसे अपनी सुनन में रिवायत किया है। - त)

इमाम बक्र बिन अब्दुल्ला मुज़नी ताबई फ़रमाते हैं:

1. अल-फ़िरदौस बि-मअसूर अल-ख़िताब हदीस ३१८ दारुल कुतुब अल-इल्मिया बेरुत १/९८
2. कन्ज़ुल उम्माल हवालह अल-ख़तीब अन अबी हदिया हदीस ४२६०७ मुअस्ससतु ररिसाला बेरुत १५/६५७

पृष्ठ ४८१ / ७२०

وابن حبان في صحيح التقاسيم والانواع عن ابي موسى الاشعري رضي الله تعالى عنه ۔ واللہ تعالی اعلم۔ امام ترمذی نے اس کی تحسین فرمائی اور محدث ابن حبان نے "صحیح التقاسیم والانواع" میں حضرت ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اس کو روایت کیا۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم

(۲) چلّا کے رونے سے مُردے کو ضرور تکلیف ہوتی ہے۔ اہلسنت کے مذہب میں موت سے روح نہیں مرتی، نہ اس کا علم و سمع و بصر زائل ہوتا ہے بلکہ ترقی پاتا ہے، جنازہ رکھا ہوتا ہے لوگ جو کچھ کہتے کرتے ہیں مردہ سب سنتا دیکھتا ہے۔ یہ سب امور احادیث کثیرہ سے ثابت ہیں کما بیّنا ہ فی "حیاۃ الموات فی بیان سماع الاموات" (جیسا کہ ہم نے اس مسئلہ کو "حیات الموات فی بیان سماع الاموات" میں بیان کیا ہے۔ت) چلّا کے رونے سے زندہ پریشان ہو جاتے ہیں ایذا پاتے ہیں نہ کہ مردہ جس پر ابھی ایسی سخت تکلیف چلانے کی گزر چکی ہے اس کی پریشانی اس کی ایذا، بیان سے باہر ہے۔ پھر وہ تو دار حق میں گیا اب اسے ہر مصیبت رنج دیتی اور ہر حسنہ سرور بخشتی ہے یہ امر اس کے لئے صد گونہ ایذا کا باعث ہوتا ہے، بچہ ہو یا جوان اس میں سب یکساں ہیں۔ حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

لا تئو ذوا امواتکم بعویل۔رواہ ابن مندۃ والدیلمی عن ام المؤمنین ام سلمۃ رضي اللہ تعالی عنہا۔ | چلّا کر رونے سے اپنے مردوں کو ایذا نہ دو (محدث ابن مندہ اور دیلمی نے ام المؤمنین سیدہ ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے اس کو روایت کیا ہے۔ت)

حضرت عبداللہ ابن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ایک جنازے میں کچھ عورتیں دیکھیں فرمایا:

ارجعن مأزورات غیر مأجورات انکن لتفتن الاحیاء وتؤذین الاموات۔رواہ سعید بن منصور فی سننہ۔ | پلٹ جاؤ وبال سے بھری ثواب سے بری، تم زندوں کو فتنوں میں ڈالتی اور مُردوں کو ایذا دیتی ہو (سعید بن منصور نے اس کو اپنی سنن میں روایت کیا ہے۔ت)

امام بکر بن عبداللہ مزنی تابعی فرماتے ہیں:

1 الفردوس بمأثور الخطاب حدیث ۳۱۸ دار الکتب العلمیہ بیروت ۱/ ۹۸ 2 کنز العمال بحوالہ الخطیب عن ابی ھدیۃ حدیث ۴۲۶۰۷ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۵/ ۶۵۷

[Arabic Box Text] “Indeed, there is no person who dies but his soul is in the hand of the Angel of Death. So while they wash him and shroud him, he sees what his family is doing, but he is unable to speak to forbid them from wailing and crying.” — Narrated by Imam Abu Bakr bin Abi al-Dunya.

[Urdu Translation in Box] It has reached me through Hadith that whoever dies, his soul is in the hand of the Angel of Death. People bathe and shroud him while he sees whatever his family is doing, but he cannot speak to them to forbid them from shouting and wailing. (Narrated by Imam Abu Bakr bin Abi al-Dunya. -T)

In a Hadith, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "A person's deeds are presented to their parents after their death; they are happy with good deeds and their faces shine even more. So fear Allah and do not hurt your dead with your sins." — Narrated by Imam al-Hakim al-Tirmidhi from the father of Abdul Aziz (Imam Hakim Tirmidhi narrated this from the father of Abdul Aziz. -T). The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Arabic Box Text] "Indeed, the deceased is punished by the crying of his family over him." — Narrated by the Two Sheikhs (Bukhari & Muslim) from Umar and Ibn Umar (may Allah be pleased with them both).

[Urdu Translation in Box] Indeed, the deceased suffers pain and grief because of the crying of his family over him. (Bukhari and Muslim narrated this from Umar and Ibn Umar, may Allah be pleased with them both. -T)

Scholars state:

[Arabic Box Text] "The meaning of 'punishment' (in the mentioned Hadith) is the pain that the deceased feels when he hears them crying or when it reaches him, for he experiences suffering due to that behavior." — Narrated by Mulla Ali al-Qari.

[Urdu Translation in Box] In the mentioned Hadith, 'punishment' refers to the feeling of sorrow that the deceased experiences when hearing them cry and wail, as they feel pain and distress due to this behavior; as Mulla Ali al-Qari has stated.

---

1. Sharh as-Sudur, on the authority of Ibn Abi al-Dunya, Chapter: Knowledge of the deceased about who washes him, etc., Khilafat Academy, Mangora Swat, p. 4.

2. Al-Jami' as-Saghir, on the authority of al-Hakim from the father of Abdul Aziz, Hadith 3316, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut 1/199.
3. Jami' at-Tirmidhi, Chapters of Funerals, Chapter on the dislike of crying, Amin Company, Delhi 1/119.

[अरबी बॉक्स पाठ] "वास्तव में, ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मरता जिसकी आत्मा मौत के फरिश्ते (मलकुल मौत) के हाथ में न हो। जब लोग उसे नहलाते और कफ़न पहनाते हैं, वह देख रहा होता है कि उसके घरवाले क्या कर रहे हैं, लेकिन वह उन्हें विलाप और शोर मचाने से रोकने के लिए बोल नहीं पाता।" — इमाम अबू बक्र बिन अबी अल-दुनिया द्वारा वर्णित।

[बॉक्स में उर्दू अनुवाद का हिंदी] मुझ तक हदीस पहुँची है कि जो मरता है उसकी रूह मलकुल मौत के हाथ में होती है। लोग उसे ग़ुस्ल और कफ़न देते हैं और वह देखता है जो कुछ उसके घर वाले करते हैं, लेकिन वह उनसे बात नहीं कर पाता कि उन्हें शोर और विलाप से मना करे। (इमाम अबू बक्र बिन अबी अद-दुनिया ने इसे रिवायत किया। -त)

एक हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "आदमी के आमाल (कर्म) उसकी मौत के बाद उसके माता-पिता के सामने पेश किए जाते हैं; नेक आमाल पर वे खुश होते हैं और उनके चेहरे और भी चमकने लगते हैं। इसलिए अल्लाह से डरो और अपने गुनाहों से अपने मृतकों को कष्ट न पहुँचाओ।" — इमाम हकीम तिर्मिज़ी ने अब्दुल अज़ीज़ के पिता से इसे रिवायत किया है। (इमाम हकीम तिर्मिज़ी ने अब्दुल अज़ीज़ के पिता से इसे रिवायत किया। -त) अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[अरबी बॉक्स पाठ] "निश्चित रूप से, मृतक को उसके परिवार के रोने के कारण अज़ाब (कष्ट) दिया जाता है।" — उमर और इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से बुखारी और मुस्लिम द्वारा वर्णित।

[बॉक्स में उर्दू अनुवाद का हिंदी] बेशक मृतक को उसके घरवालों के रोने के कारण दर्द और दुख होता है। (इसे बुखारी और मुस्लिम ने उमर और उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया। -त)

उलेमा फरमाते हैं:

[अरबी बॉक्स पाठ] "अज़ाब (सज़ा) से मुराद वह पीड़ा है जो मृतक को तब महसूस होती है जब वह उन्हें रोते हुए सुनता है या उस तक यह बात पहुँचती है, क्योंकि वह इस व्यवहार से दर्द और बेचैनी महसूस करता है।" — मुल्ला अली अल-कारी द्वारा उद्धृत।

[बॉक्स में उर्दू अनुवाद का हिंदी] (उक्त हदीस में) अज़ाब से मुराद वह दुःख का एहसास है जो मैयत (मृतक) को होता है जो उन्हें रोते-पीटते सुनता है क्योंकि इस रवैये से वह दर्द और बेचैनी महसूस करता है; जैसा कि मुल्ला अली अल-क़ारी ने नकल किया है।

---

1. शरह अस-सुदूर, बहवाला इब्न अबी अद-दुनिया, अध्याय: मैयत की पहचान कि उसे कौन नहला रहा है आदि, खिलाफत एकेडमी, मंगोरा स्वात, पृ. 4।
2. अल-जामे अस-सग़ीर, बहवाला अल-हकीम, अब्दुल अज़ीज़ के वालिद से, हदीस 3316, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत 1/199।
3. जामे अत-तिर्मिज़ी, जनाज़ा के अध्याय, रोने की नापसंदगी के बारे में अध्याय, अमीन कंपनी, दिल्ली 1/119।

पृष्ठ 482/720

[عربی متن] انه مامن میت یموت الا وروحه فی ید ملك الموت فهم یغسلونه ویکفنونه وهو یری ما یصنع اهله فلم یقدر علی الکلام لنهاهم عن الرنة والعویل-رواه الامام ابو بکر ابن ابی الدنیا۔

[اردو ترجمہ] مجھے حدیث پہنچی کہ جو مرتا ہے اس کی روح ملک الموت کے ہاتھ میں ہوتی ہے لوگ اسے غسل و کفن دیتے ہیں اور وہ دیکھتا ہے جو کچھ اس کے گھر والے کرتے ہیں ان سے بات نہیں کرتا کہ انہیں شور و فریاد سے منع کرے (امام ابو بکر بن ابی الدنیا نے اس کو روایت کیا۔ ت)

ایک حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: ماں باپ پر ان کی موت کے بعد آدمی کے اعمال پیش ہوتے ہیں، نیکیوں پر شاد ہوتے ہیں اور ان کے منہ اور زیادہ چمکنے لگتے ہیں فاتقوا اللہ ولا تؤذوا امواتکم تو اللہ سے ڈرو اپنے مردوں کو اپنے گناہوں سے ایذا نہ دو- رواہ الامام الترمذی الحکیم عن والد عبدالعزیز (امام حکیم ترمذی نے عبد العزیز کے والد سے اس کو روایت کیا ہے۔ ت) رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

[عربی متن] ان المیت لیعذب ببکاء اهله علیه - رواه الشیخان عن عمر وعمر رضی اللہ تعالی عنهما۔

[اردو ترجمہ] بیشک مردے پر جو اس کے گھر والے روتے ہیں اس سے اسے عذاب والم ہوتا ہے (اس کو بخاری مسلم نے عمر و عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا۔ ت)

علماء فرماتے ہیں:

[عربی متن] المراد بالعذاب هو الالم الذي یحصل للمیت اذ سمعهم یبکون اوبلغه ذلك فانه یحصل له تألم بذلك نقله ملا علی القاری

[اردو ترجمہ] (حدیث مذکور میں) عذاب سے وہ احساسِ دکھ مراد ہے جو میت کو حاصل ہوتا ہے جو انہیں روتے پیٹتے سنتی ہے کیونکہ اس رویہ سے وہ درد والم محسوس کرتی ہے، چنانچہ ملا علی قاری نے

---

1 شرح الصدور بحوالہ ابن ابی الدنیا باب معرفة المیت من یغسله الخ خلافت اکیڈمی منگورہ سوات ص ۴ 2 الجامع الصغیر بحوالہ الحکیم عن والد عبدالعزیز حدیث ۳۳۱۶ دارالکتب العلمیہ بیروت ۱/ ۱۹۹ 3 جامع الترمذی ابواب الجنائز باب ماجاء فی کراهیة البکاء امین کمپنی دہلی ۱/ ۱۱۹

In *Mirqat*[1] it is narrated from Sayyid Shah Mirak al-Muhaddith from Imam Shams al-Din Muhammad bin Muhammad bin Muhammad al-Jazari that he said in *Tashih al-Masabih*: "In my opinion—and Allah knows best—the intended meaning of 'punishment' etc. in the aforementioned hadith is pain and anguish." I say: Before I came across this, the same thought was bothering my heart until I saw it in the words of these two elders. And for Allah are all praises, virtues, and commendations. And Allah, Glory be to Him and Most High, is the All-Knowing. (T)

(3) Wailing loudly over the deceased and showing extreme restlessness and anguish is forbidden, severely forbidden. The Messenger of Allah (may peace and blessings of Allah be upon him) said: "Two things among people are acts of disbelief: slandering lineage and wailing [over the dead]." Narrated by Muslim[2] from Abu Huraira (may Allah be pleased with him), and narrated by Ibn Hibban and al-Hakim, and al-Hakim added, "and tearing garments." (T)

And he (may peace and blessings of Allah be upon him) said: "Two voices are cursed in this world and the Hereafter: a musical instrument at the time of a blessing and wailing at the time of an affliction." Narrated by al-Bazzar[3] from Anas (with a sound chain of narration).

Footnotes: 1. Mirqat al-Mafatih Sharh Mishkat al-Masabih, Book of Funerals, Chapter on Weeping over the Deceased, Maktabah Habibiyyah Quetta, 4/223. 2. Sahih Muslim, Book of Faith, Chapter on applying the name 'Disbelief' to slandering lineage, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/58. 3. Kashf al-Astar 'an Zawa'id al-Bazzar, Book of Funerals, Chapter on what was mentioned regarding wailing, Mu'assasah al-Risalah Beirut, 1/377.

मिर्क़ात[1] में सैय्यद शाह मीरक अल-मुहद्दिस के हवाले से इमाम शम्स अल-दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-जज़री से उद्धृत किया गया है कि उन्होंने तसहीह अल-मसाबीह में फरमाया: "मेरे अनुसार—और अल्लाह बेहतर जानता है—मगर ज़िक्र की गई हदीस में अज़ाब (दंड) से मुराद दर्द और कष्ट है आदि।" मैं कहता हूँ: इससे वाकिफ होने से पहले मेरे दिल में भी यही बात खटकती थी यहाँ तक कि मैंने इन दोनों बुज़ुर्गों के कलाम में इसे देख लिया। और तमाम खूबियाँ, गुण और प्रशंसा अल्लाह ही के लिए हैं। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला सबसे बड़ा जानने वाला है। (त)

(३) मय्यत (मृतक) पर चिल्ला कर रोना और अत्यधिक बेचैनी व विलाप करना हराम है, सख़्त हराम है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "लोगों में दो बातें कुफ़्र हैं: किसी के वंश (नसब) पर ताना मारना और मय्यत पर मातम/विलाप करना।" इसे मुस्लिम[2] ने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के हवाले से रिवायत किया है, और इब्न हिब्बान व अल-हाकिम ने भी इसे रिवायत किया है, लेकिन अल-हाकिम ने यह इज़ाफ़ा (वृद्धि) किया "और गिरेबान फाड़ना"। (त)

और आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "दुनिया और आख़िरत में दो आवाज़ें शापित हैं: नेमत (आशीर्वाद) के समय वाद्ययंत्र और मुसीबत के समय विलाप करना।" इसे अल-बज़्ज़ार[3] ने अनस से रिवायत किया (सही सनद के साथ)।

पादलेख (Footnotes): १. मिर्क़ात अल-मफ़ातीह शरह मिश्कात अल-मसाबीह, जनाज़े की किताब, मृतक पर रोने का अध्याय, मकतबा हबीबिया क्वेटा, ४/२२३। २. सहीह मुस्लिम, ईमान की किताब, वंश पर ताना मारने को कुफ़्र कहने का अध्याय, क़दीमी कुतुब खाना कराची, १/५८। ३. कश्फ़ अल-अस्तार अन ज़वाइद अल-बज़्ज़ार, जनाज़े की किताब, विलाप के बारे में जो आया है, मुअस्ससतुर्-रिसाला बेरूत, १/३७७।

पृष्ठ ४८३/७२०

فی المرقاۃ[1] عن السید الشاہ میرك المحدث عن الامام شمس الدین محمد بن محمد بن محمد الجزري انه قال في تصحیح المصابیح عندي واللہ اعلم لکن المراد بالعذاب الخ قلت وقد تخالج صدري قبل ان اطلع علیه حتی رأیته فیهما وللہ الحمد ، واللہ سبحانه وتعالی اعلم۔ مرقات شرح مشکوٰۃ میں سید میرک شاہ محدث بخاری کے حوالہ سے اسے نقل فرمایا اس نے امام شمس الدین محمد بن محمد بن محمد جزری سے نقل کیا انہوں نے تصحیح المصابیح میں ذکر فرمایا اللہ تعالٰی سب کچھ بہتر جانتا ہے مگر میرے نزدیک حدیث مذکور میں عذاب سے درد و کرب مراد ہے الخ میں کہتا ہوں اس پر مطلع ہونے سے پہلے میرے دل میں بھی یہی بات کھٹکتی تھی یہاں تک کہ میں نے ان دونوں بزرگوں کے کلام میں اسے دیکھ لیا۔ اور اللہ تعالٰی ہی کے لئے تمام خوبیاں ، محاسن، محامد ہیں۔ اور اللہ تعالٰی پاک اور برتر بڑا عالم ہے۔ (ت)

(۳) میت پر چلا کر رونا جزع فزع کرنا حرام سخت حرام ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں : اثنتان في الناس هما بهم کفر في النسب والنیاحة۔ رواہ مسلم[2] عن ابي هریرة رضي اللہ تعالی عنه ورواہ ابن حبان والحاکم وزاد ا شق الجیب۔ لوگوں میں دو باتیں کفر ہیں کسی کے نسب پر طعنہ اور میت پر نوحہ۔ (امام مسلم نے اس کو حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ کے حوالے سے روایت کیا ، ابن حبان اور حاکم نے بھی اس کو روایت کیا ہے مگر حاکم نے یہ اضافہ " اور گریبان پھاڑنا"۔ (ت)

اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم : صوتان ملعونان في الدنیا والآخرة مزمار عند نعمة ورنّة عند المصیبة۔ رواہ البزار[3] عن انس۔ دو آوازوں پر دنیا و آخرت میں لعنت ہے ، نعمت کے وقت باجا اور مصیبت کے وقت چلانا (محدث بزار نے اس کو صحیح سند کے ساتھ)۔

حواشی: 1. مرقات المفاتیح شرح مشکوٰۃ المصابیح کتاب الجنائز باب البکاء علی المیت مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۴/ ۲۲۳ 2. صحیح مسلم کتاب الایمان باب اطلاق اسم الکفر علی الطعن فی النسب قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۵۸ 3. کشف الاستار عن زوائد البزار کتاب الجنائز باب ما جاء فی النوح مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱/ ۳۷۷

Fatawa Ridawiyyah Volume 24

...may Allah Almighty be pleased with him, with a sound chain. (Narrated with reference to Hazrat Anas, may Allah Almighty be pleased with him. - T)

And he (peace and blessings of Allah be upon him) says: "The wailing woman, if she does not repent before her death, will be made to stand on the Day of Resurrection wearing a shirt of pitch and a coat of mail of mange." Narrated by Muslim on the authority of Abu Malik al-Ash'ari. If a woman who wails loudly does not repent before her death, she will be made to stand on the Day of Resurrection in such a way that there will be a shirt of sulfur (pitch) on her body and a shawl of itching (mange). (Imam Muslim has narrated it on the authority of Abu Malik al-Ash'ari, may Allah Almighty be pleased with him. - T)

And in one narration it is: "Allah will cut for her clothes of pitch and a coat of mail from the flame of fire." Narrated by Ibn Majah from him. Allah Almighty will clothe her in garments of sulfur and cover her from above with a shawl of hellfire's flame. (Ibn Majah has narrated it from Abu Malik al-Ash'ari, may Allah Almighty be pleased with him. - T)

In one Hadith, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Indeed, these wailing women will be placed in two rows in Hell on the Day of Resurrection, a row on their right and a row on their left, and they will bark at the people of the Fire as dogs bark." Narrated by al-Tabarani in 'al-Awsat' on the authority of Abu Hurayrah, may Allah Almighty be pleased with him. These wailing women will be made into two rows in Hell on the Day of Resurrection, to the right and left of the dwellers of Hell, and they will bark there just as female dogs bark. (Imam al-Tabarani has narrated this in 'al-Awsat' on the authority of Hazrat Abu Hurayrah, may Allah Almighty be pleased with him. - T)

1. Sahih Muslim, Kitab al-Jana'iz, Section on the Warning for the Wailing Woman, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/303.
2. Sunan Ibn Majah, Chapters on what has been narrated regarding Funerals, Chapter on the Prohibition of Wailing, H.M. Saeed Company, Karachi, p. 112.
3. Al-Mu'jam al-Awsat of al-Tabarani, Hadith 5225, Maktaba al-Ma'arif, Riyadh, 6/110.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

...रज़ी अल्लाह तआला अन्हु सनद-ए-सही के साथ। (हज़रत अनस रज़ी अल्लाह तआला अन्हु के हवाले से रिवायत किया गया है। - त)

और फ़रमाते हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम: "चिल्लाकर रोने वाली (नैयाह) अगर अपनी मौत से पहले तौबा न करे, तो क़यामत के दिन वह इस हाल में खड़ी की जाएगी कि उसके बदन पर राल (पिच) का कुर्ता और खुजली (खाज) की चादर होगी।" (इमाम मुस्लिम ने इसे अबू मालिक अशअरी रज़ी अल्लाह तआला अन्हु के हवाले से रिवायत किया है। - त) चिल्ला कर रोने वाली जब अपनी मौत से क़ब्ल तौबा न करे तो क़यामत के दिन खड़ी की जाएगी यूँ कि उस के बदन पर गंधक का कुर्ता होगा और खुजली का दुपट्टा। (इमाम मुस्लिम ने इसे अबू मालिक अशअरी रज़ी अल्लाह तआला अन्हु के हवाले से रिवायत किया है। - त)

और एक रिवायत में है: "अल्लाह उसके लिए राल के कपड़े और आग की लपट का कवच काटेगा।" (अल्लाह तआला उसे गंधक के कपड़े पहनाएगा और ऊपर से दोज़ख की लपट का दुपट्टा ओढ़ाएगा। - इब्ने माजा ने इसे अबू मालिक अशअरी रज़ी अल्लाह तआला अन्हु से रिवायत किया है। - त) अल्लाह तआला उसे गंधक के कपड़े पहनाएगा और ऊपर से दोज़ख की लपट का दुपट्टा ओढ़ाएगा। (इब्ने माजा ने इस को अबू मालिक अशअरी रज़ी अल्लाह तआला अन्हु से रिवायत किया है। - त)

एक हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "क़यामत के दिन ये मातम करने वाली औरतें जहन्नुम में दो सफ़ों (लाइनें) में की जाएँगी, एक सफ़ उनके दाहिनी ओर और एक सफ़ उनके बाईं ओर होगी, और वे जहन्नुमियों पर वैसे ही भौंकेंगी जैसे कुत्तियाँ भौंकती हैं।" (इमाम तबरानी ने इसे 'अल-औसत' में हज़रत अबू हुरैरा रज़ी अल्लाह तआला अन्हु के हवाले से रिवायत किया है। - त) ये नूहा करने वालियाँ क़यामत के दिन जहन्नुम में दो सफें की जाएँगी दोज़खियों के दाएँ बाएँ वहाँ ऐसे भौंकेंगी जैसे कुत्तियाँ भौंकती हैं। (इमाम तबरानी ने इस को 'अल-औसत' में हज़रत अबू हुरैरा रज़ी अल्लाह तआला अन्हु के हवाले से रिवायत किया है। - त)

1. सहीह मुस्लिम, किताबुल जनाइज़, फ़स्ल फ़िल वईद लिन-नैयाह अलख, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 1/303
2. सुनन इब्ने माजा, अबवाब मा जाआ फ़िल जनाइज़, बाब फ़िन-नही अनिल नियाह, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, पृ. 112

3. अल-मुअजमुल औसत लित-तबरानी, हदीस 5225, मकतबतुल मआरिफ़, रियाज़, 6/110

رضی اللہ تعالٰی عنہ بسند صحیح۔ حضرت انس رضی اللہ تعالٰی عنہ کے حوالہ سے روایت کیا ہے ۔ ت)

اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم : النائحة اذا لم تتب قبل موتها تقام یوم القیمة و علیها سربال من قطران ودرع من جرب رواہ مسلم ۱ عن ابی مالك الاشعری۔ چلا کر رونے والی جب اپنی موت سے قبل توبہ نہ کرے تو قیامت کے دن کھڑی کی جائے گی یوں کہ اس کے بدن پر گندھک کا کُرتا ہوگا اور کھجلی کا دوپٹہ۔ (امام مسلم نے اسے ابو مالک اشعری رضی اللہ تعالٰی عنہ کے حوالے سے روایت کیا ہے۔ ت)

اور ایک روایت میں ہے : قطع اللہ ثیاباً من قطران و درعاً من لہب النار۔ رواہ ابن ماجة عنه ۲۔ اللہ تعالی اسے گندھک کے کپڑے پہنائے گا اور اوپر سے دوزخ کی لپٹ کا دوپٹہ اڑھائے گا۔ (ابن ماجہ نے اس کو ابومالک اشعری رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ہے۔ ت)

ایک حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: ان ھؤلاء النوائح یجعلون یوم القیمة صفین في جھنّم صف عن یمینھم وصف عن یسارھم فینبحن علی اھل النار کماتنبح الکلاب۔ رواہ الطبرانی ۳ فی الاوسط عن ابی ھریرة رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ یہ نوحہ کرنے والیاں قیامت کے دن جہنم میں دو صفیں کی جائیں گی دوزخیوں کے دائیں بائیں وہاں ایسے بھونکیں گی جیسے کتیاں بھونکتی ہیں۔ (امام طبرانی نے اس کو "الاوسط" میں حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ کے حوالے سے روایت کیا ہے۔ ت)

١ صحیح مسلم کتاب الجنائز فصل فی الوعید للنائحة الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ١/ ٣٠٣ ٢ سنن ابن ماجہ ابواب ما جاء فی الجنائز، باب فی النہی عن النیاحة ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ١١٢ ٣ المعجم الاوسط للطبرانی حدیث ٥٢٢٥ مکتبة المعارف ریاض ۶/ ١١٠

Fatawa Razawiyya Volume 24

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Hadith 1] Arabic: "I am free from the one who shaves (the head in grief), screams out loud, and tears the garment." - Narrated by Shaikhan from Abu Musa al-Ash'ari (may Allah have mercy on him). Urdu Translation: "I am disassociated from the one who shaves their head, wails loudly, and tears their clothes [in mourning]. (Reported by Bukhari and Muslim on the authority of Hazrat Abu Musa al-Ash'ari, may Allah have mercy on him. - T)"

And he (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Hadith 2] Arabic: "Do you not hear? Verily, Allah does not punish for the tears of the eye nor for the sorrow of the heart, but He punishes because of this (and he pointed to his tongue) or bestows mercy. And verily, the deceased is punished because of his family's wailing over him." - Narrated from Ibn Umar (may Allah be pleased with them both). Urdu Translation: "Do you not listen? Indeed, Allah does not punish for crying with tears nor for the grief of the heart (and he pointed towards the tongue and said) Yes, He punishes because of this or bestows mercy. And surely, the deceased is punished for the wailing of his family members over him. (Bukhari and Muslim narrated this from Hazrat Abdullah ibn Umar, may Allah be pleased with them both. - T)"

It is mentioned in [Fatawa] Alamgiri from Jami al-Mudmiraat:

[Ruling 1] Arabic: "Loud wailing is not permissible, but crying with a tender heart is not a problem." Urdu Translation: "Wailing loudly and mourning [with loud cries] is not permissible (in Islam), but crying without sound and shedding tears is not prohibited. (T)"

It is mentioned in Durr-e-Mukhtar:

[Ruling 2] Arabic: "Hiring for the sake of sins like singing, wailing, and entertainment is not valid." Urdu Translation: "Hiring (taking wages) for sins is not correct; singing, music, wailing and lamenting are acts of sin. And Allah knows best. (T)"

1. Sahih Muslim, Kitab al-Iman, Bab Tahrim Darb al-Khudood, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/70
2. Sahih Bukhari, Kitab al-Janaiz, Bab al-Buka' 'ind al-Marid, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/174

3. Fatawa Hindiyya, Kitab al-Salat, al-Fasl al-Sadis, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/167
4. Durr-e-Mukhtar, Kitab al-Ijarah al-Fasidah, Matba' Mujtabai Delhi, 2/179

फतावा रजविया खंड 24

रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[हदीस 1] अरबी: "इना बरी-उन मिम्मन हलक़ा व सलक़ा व ख़रक़ा - रवाह-उश-शैख़ान 'अन अबी मूसा अल-अशअरी रहमतुल्लाहि अलैह।" उर्दू अनुवाद: "मैं उस व्यक्ति से बेज़ार (अलग) हूँ जो (शोक में) सिर मुंडवाता है, जोर-जोर से चिल्लाता है, और कपड़े फाड़ता है। (बुखारी और मुस्लिम ने हज़रत अबू मूसा अशअरी रहमतुल्लाह अलैहि के हवाले से इसे रिवायत किया। - त)"

और वह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[हदीस 2] अरबी: "अ-ला तस्मऊ'न अन्नल्लाह ला युअज़्ज़िबु बि-दमिअल 'ऐनि व ला बि-हुज़्नल क़ल्बि व लाकिन युअज़्ज़िबु बि-हाज़ा व अशारा इला लिसानिहि औ यर्हमु व अन्नल मय्यिता युअज़्ज़िबु बि-बुक़ा-इ अहलिहि अलैहि - रवाह-उ 'अन इब्नि उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा।" उर्दू अनुवाद: "अरे! क्या तुम सुनते नहीं हो? बेशक अल्लाह आँखों के आँसू और दिल के गम पर अज़ाब नहीं देता, लेकिन (अपनी ज़बान की तरफ इशारा करके फरमाया) हाँ, वह इस पर अज़ाब देता है या रहम फरमाता है। और यकीनन मुर्दे पर उसके घर वालों के उस पर नूह (विलाप) करने की वजह से अज़ाब होता है। (इसे बुखारी और मुस्लिम ने हज़रत अब्दुल्ला इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है। - त)"

आलमगीरी में जामे-उल-मुज़मरात से है:

[कानूनी फैसला 1] अरबी: "अन-नौह-उल 'आली ला यजूजु वल-बुक़ा-उ म'आ रिक्क़तुल क़ल्बि ला बा-स बिहि -" उर्दू अनुवाद: "ऊँची आवाज़ में विलाप करना और बैन करना (इस्लाम में) जायज़ नहीं है, लेकिन दिल की कोमलता के साथ (बिना आवाज़) रोने में कोई हर्ज नहीं है। ऊँची आवाज़ से रोना और बैन करना मना है, लेकिन बिना आवाज़ रोना और आँसू बहाना मना नहीं है। (त)"

दुर्रे मुख्तार में है:

[कानूनी फैसला 2] अरबी: "ला तसिह्हुल इजा-रतु लि-अजलिल मआसी मिसलल ग़िना-इ वन-नौहि वल मलाही -" उर्दू अनुवाद: "गुनाहों के कामों पर उजरत (मजदूरी) लेना सही नहीं है जैसे कि गाना,

विलाप करना और खेल-तमाशे। ये अफ़आल (काम) गुनाह हैं, और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। (त)"

1. सही मुस्लिम, किताब अल-ईमान, बाब तहरीम दर्ब अल-ख़ुद्दूद, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1/70
2. सही बुखारी, किताब अल-जनाइज़, बाब अल-बका 'इन्द अल-मरीज़, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1/174
3. फतावा हिंदिया, किताब अल-सलात, अल-फस्ल अल-सादिज़, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/167
4. दुर्रे मुख्तार, किताब अल-इजारा अल-फासिदा, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 2/179

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

انا بریٔ ممن حلق وسلق وخرق - رواہ الشیخان عن ابی موسٰی الاشعری رحمہ اللہ تعالٰی۔ میں بیزار ہوں اس سے جو بھدرا کرے اور چلا کر روئے اور گریبان چاک کرے۔ (بخاری و مسلم نے حضرت ابو موسٰی اشعری رحمہ اللہ تعالٰی کے حوالہ سے اسے روایت کیا۔ت)

اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم :

الاتسمعون ان اللہ لایعذب بدمع العین ولابحزن القلب ولکن یعذب بھذا واشار الی لسانہ اویرحم وان المیت یعذب ببکاء اھلہ علیہ - رواہ عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما۔ ارے سنتے نہیں ہو بیشک اللہ نہ آنسوؤں سے رونے پر عذاب کرے نہ دل کے غم پر (اور زبان کی طرف اشارہ کرکے فرمایا) ہاں اس پر عذاب ہے۔ یا رحم فرمائے اور بیشک مردے پر عذاب ہوتا ہے اس کے گھر والوں کے اس پر نوحہ کرنے سے۔ (اس کو بخاری و مسلم نے حضرت عبداللہ ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا ہے۔ت)

عالمگیری میں جامع المضمرات سے ہے:

النوح العالی لایجوز والبکاء مع رقۃ القلب لابأس بہ - بلند آواز سے رونا اور بین کرنا (اسلام میں) جائز نہیں لیکن بغیر آواز کے رونا اور آنسو بہانا ممنوع نہیں۔ (ت)

در مختار میں ہے:

لا تصح الاجارۃ لاجل المعاصی مثل الغناء والنوح و الملاھی - گناہوں پر اجارہ (مزدوری کرنا) درست نہیں ، گانا بجانا رونا پیٹنا یہ افعال گناہ ہیں، واللہ تعالٰی اعلم (ت)

۱ صحیح مسلم کتاب الایمان باب تحریم ضرب الخدود قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۷۰ ۲ صحیح بخاری کتاب الجنائز باب البکاء عند المریض قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۱۷۴ ۳ فتاوی ہندیہ کتاب الصلوۃ الفصل السادس نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۱۶۷ ۴ در مختار کتاب الاجارہ فاسدہ مطبع مجتبائی دہلی ۲ / ۱۷۹

Fatawa Rizvia, Volume 24

Problem 176: 12 Sha'ban 1317 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: what is the translation of this Hadith, and some non-followers (Ghair Muqallid) derive the permissibility of wailing (Noha) over the deceased from it; is this correct or not?

Narrated by Anas (may Allah be pleased with him): When the condition of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) became heavy, he began to be covered [by the agony of death]. Fatima (may Allah be pleased with her) said: "O the distress of my father!" He said to her: "There will be no more distress for your father after today." When he passed away, she said: "O father! He responded to the call of his Lord. O father! His abode is the Garden of Firdaus. O father! To Gabriel we announce his death." When he was buried, Fatima said: "O Anas! How could you find it within yourselves to pour dust over the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)?" - Narrated by Bukhari. 1

Explain and be rewarded. (Translation is present in the answer)

The Answer: It is narrated from Anas (may Allah be pleased with him) that when the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) was afflicted with the heaviness of illness, restlessness overcame him. Hazrat Batool Zahra (Fatima) said, "O the restlessness of my father!" The Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) said, "After today, there will never be any kind of restlessness for your father." When the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) passed away, Hazrat Batool Zahra said, "O my father, you have gone at the call of Allah. O my father, whose abode is in the gardens of Firdaus. O my father, we relate the calamity of his passing to Gabriel." When they had finished burying the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him), Hazrat Batool Zahra said, "O Anas! How did your hearts allow you to hide the pure body of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) in the dust?" This Hadith is narrated by Bukhari.

Hazrat Batool Zahra did not utter these words with shouting or wailing, nor did she mention any error or unverified quality in them, nor did any word indicate a complaint against the Lord of Might or dissatisfaction with the divine decree. Therefore, there is no reason for prohibition in this. It is stated in Zarqani:

Arabic Text	Urdu Translation
He said to her: "There is no more distress for your father after today," and this indicates	The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said to his daughter
that she did not raise [her voice/wail].	After today, your honorable father will have no anxiety...

1. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Maghazi, Chapter: The Illness of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), Qadimi Kutub Khana Karachi 2/641 Page 486 of 720

फ़तावा रज़विया, जिल्द २४

मसला १७६: १२ शाबान १३१७ हिजरी दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि इस हदीस का अनुवाद क्या है, और कुछ गैर-मुक़ल्लिद इससे मृतक पर नोहा (विलाप) करने का औचित्य निकालते हैं, क्या यह सही है या नहीं?

अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हालत भारी हो गई, तो उन पर बेहोशी छाने लगी। फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा: "हाय मेरे पिता की बेचैनी!" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे फरमाया: "आज के बाद तुम्हारे पिता पर कोई बेचैनी नहीं होगी।" जब उनका इंतकाल हो गया, तो उन्होंने कहा: "ऐ पिता! उन्होंने अपने रब की पुकार पर लब्बैक कहा। ऐ पिता! जन्नतुल फिरदौस उनका ठिकाना है। ऐ पिता! हम जिब्रील से उनके इंतकाल की खबर देते हैं।" जब उन्हें दफन कर दिया गया, तो फातिमा ने कहा: "ऐ अनस! तुम्हारे दिलों ने कैसे गवारा किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पाक जिस्म पर धूल डालो।" - इसे बुखारी ने रिवायत किया है। १

बयान करें ताकि सवाब मिले। (अनुवाद जवाब में मौजूद है)

अल-जवाब: अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बीमारी की वजह से भारीपन हुआ, बेचैनी हावी हो गई, तो हज़रत बतूल ज़हरा ने कहा, 'हाय मेरे पिता की बेचैनी'। सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, 'आज के बाद तुम्हारे पिता पर कभी किसी तरह की बेचैनी नहीं होगी'। जब हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इंतकाल फरमाया, तो हज़रत बतूल ज़हरा ने कहा, 'ऐ मेरे पिता! आप अल्लाह के बुलावे पर तशरीफ़ ले गए, ऐ मेरे पिता! जिनका ठिकाना फिरदौस के बागों में है, ऐ मेरे पिता! हम उनके इंतकाल की मुसीबत जिब्रील से बयान करते हैं'। जब सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दफन कर चुके तो हज़रत बतूल ज़हरा ने फरमाया, 'ऐ अनस! तुम्हारे दिलों ने क्योंकर गवारा किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिस्म-ए-अतहर को खाक (मिट्टी) में छिपाओ'। यह हदीस बुखारी ने रिवायत की।

हज़रत बतूल ज़हरा ने ये शब्द न तो चीख-पुकार के साथ कहे, न उनमें कोई गलती या बिना शोध वाली विशेषता बयान की, न ही कोई शब्द रब की शिकायत या ईश्वरीय इच्छा पर नाराजगी दर्शाता था, इसलिए इसमें मनाही का कोई कारण नहीं है। ज़रक़ानी में है:

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद**
पस आपने उनसे कहा: आज के बाद तुम्हारे पिता पर कोई कष्ट नहीं होगा, और यह इस बात का प्रमाण है कि उन्होंने आवाज़ बुलंद (विलाप) नहीं की।	हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी बेटी से फरमाया आज के बाद तुम्हारे वालिद-ए-गिरामी को कोई घबराहट...

१ सही अल-बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीमारी, कदीमी कुतुब खाना कराची २/६४१ पृष्ठ ४८६/७२०

جلد ۲۴ - فتاویٰ رضویہ

مسئلہ ۱۷۶ : ۱۲ شعبان ۱۳۱۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اس حدیث کا ترجمہ کیا ہے اور اس سے میت پر نوحہ کرنے کا جواز بعض غیر مقلد نکالتے ہیں، یہ صحیح ہے یا نہیں؟

عن انس قال لما ثقل النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم جعل یتغشاہ فقالت فاطمۃ واکرب اباہ فقال لہا لیس علٰی ابیک کرب بعد الیوم فلما مات قالت یا ابتاہ اجاب ربا دعاہ یا ابتاہ من جنۃ الفردوس ماواہ یا ابتاہ الٰی جبریل ننعاہ فلما دفن قالت فاطمۃ یا انس اطابت انفسکم ان تحثوا علٰی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم التراب ۔ رواہ البخاری ۱

بینوا توجروا ۔ (ترجمہ جواب میں موجود ہے)

الجواب: انس رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت ہے جب نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو مرض سے گرانی ہوئی، بے چینی نے غلبہ کیا، حضرت بتول زہرا نے کہا ہائے میرے باپ کی بے چینی، سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا آج کے بعد تیرے باپ پر کبھی کسی قسم کی بے چینی نہیں، جب حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے انتقال فرمایا حضرت بتول زہرا نے کہا اے باپ میرے اللہ کے بلانے پر تشریف لے گئے، اے باپ میرے وہ کہ فردوس کے باغ میں جن کا ٹھکانا، اے باپ میرے ہم ان کے انتقال کی مصیبت جبریل سے بیان کرتے ہیں جب سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو دفن کر چکے حضرت بتول زہرا نے فرمایا اے انس! تمہارے دلوں نے کیونکر گوارا کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے جسم اطہر کو خاک میں پنہاں کرو۔ یہ حدیث بخاری نے روایت کی۔

حضرت بتول زہرا نے یہ کلمات نہ صیحہ و فریاد کے ساتھ کہے نہ ان میں کوئی غلطی یا بے تحقیق وصف بیان فرمایا نہ کوئی کلمہ شکایت رب العزہ و ناراضی قضائے الہٰی پر دال تھا، لہٰذا اس میں کوئی وجہ ممانعت نہیں۔ زرقانی میں ہے:

فقال لہا لا کرب علی ابیک بعد الیوم وھذا یدل علی	**حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے اپنی بیٹی سے فرمایا**
انہالم ترفع	آج کے بعد تیرے والد گرامی کو گھبراہٹ

۱ صحیح البخاری کتاب المغازی باب مرض النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۶۴۱

Volume 24

Fatawa Razawiyya

[Arabic]: ...her voice, otherwise he would have forbidden her.[1] [Urdu Explanation]: There would be no distress; this instruction indicates that the Lady (Sayeeda) did not raise her voice (while saying the aforementioned words), otherwise, you would have forbidden it. (T)

In the same [source] from Fath al-Bari: [Arabic]: It is inferred from this that saying these words after a person's death when the deceased was characterized by them is not prohibited. In contrast, if it is not established that the person was characterized by them, then saying such words falls under the prohibition.[2] [Urdu Explanation]: It is inferred from this that saying these words after a person's death, provided they were characterized by them, is not forbidden. Conversely, if the person was not characterized by them, then saying such words is included in the prohibition. (T)

There are consecutive (Mutawatir) Hadiths regarding the prohibition of wailing (Noha). Only an ignorant person would attempt to prove the permissibility of wailing from this. Allah is the Guide (Allah Almighty is the One Who guides. T) and Allah, Glorified and Exalted, knows best.

Problem 173: Asked by Syed Maqbool Ali Miyan Sahib, Bareilly, New Mohalla, Safar 1345 AH: What do the scholars of religion and the jurists of the clear Sharia say regarding this matter: Is it permissible for the Ahl al-Sunnat wa'l-Jama'at to express sorrow and grief during the ten days of Muharram al-Haram or not? Explain and be rewarded.

The Answer: The foundation of faith for the Ahl al-Sunnat wa'l-Jama'at is the love for the Master of the Messengers, peace and blessings of Allah be upon him. Until one loves the Prophet more than their mother, father, children, and the entire world, they are not a [true] Muslim. The Holy Prophet himself, peace and blessings of Allah be upon him, says: [Arabic]: "None of you will believe until I am more beloved to him than his father, his children, and all of mankind."[3] [Urdu Translation]: None of you becomes a Muslim until I am dearer to him than his parents, children, and all people.

And to a lover, every thing belonging to the beloved is dear, even the dog of his street. - Hazrat Maulana (may his secret be sanctified).

[1] Sharh al-Zarqani 'ala al-Mawahib al-Ladunniyah, The Tenth Objective, Chapter One, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 8/273 [2] Sharh al-Zarqani 'ala al-Mawahib al-Ladunniyah, The Tenth Objective, Chapter One, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 8/283 [3] Sahih al-Bukhari, Book of Faith, Chapter on Love for the Messenger, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/7

जिल्द 24

फ़तावा रज़विया

[अरबी]: ...उनकी आवाज़, अन्यथा वह उसे मना कर देते।[1] [उर्दू व्याख्या]: और कोई बेचैनी नहीं होगी; यह निर्देश इस बात की ओर संकेत करता है कि सैयदा ने अपनी आवाज़ (उल्लेखित शब्दों को कहते समय) ऊँची नहीं की थी, अन्यथा आप मना फ़रमा देते। (त)

उसी में फ़त्ह अल-बारी से है: [अरबी]: इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद ये शब्द कहना, जबकि मृतक उनसे युक्त था, वर्जित नहीं है। इसके विपरीत, यदि यह सिद्ध नहीं होता कि वह व्यक्ति उनसे युक्त था, तो ऐसे शब्द कहना मनाही में शामिल है।[2] [उर्दू व्याख्या]: इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद ये शब्द कहना, जबकि वह उनसे युक्त हो, मना नहीं है। इसके विपरीत, यदि व्यक्ति उनसे युक्त न हो, तो ऐसे शब्द कहना मनाही में शामिल है। (त)

विलाप (नोहा) की मनाही में मुतवातिर (लगातार) हदीसें मौजूद हैं। इससे विलाप की वैधता केवल एक अज्ञानी ही सिद्ध करेगा। अल्लाह मार्गदर्शक है (अल्लाह तआला ही मार्ग दिखाने वाला है। त) और अल्लाह, जो महिमामयी और सर्वोच्च है, सबसे अच्छी तरह जानता है।

मसला 173: प्रश्नकर्ता सैयद मक़बूल अली मियां साहब, बरेली, नया मोहल्ला, सफ़र 1345 हिजरी: दीन के उलेमा और स्पष्ट शरीयत के मुफ़्ती इस मामले में क्या फ़रमाते हैं: क्या अहले सुन्नत वल जमात के लिए मुहर्रम उल हराम के दस दिनों में रंज ओ ग़म (शोक) करना जायज़ है या नहीं? विस्तार से बताएं और पुण्य के पात्र बनें।

जवाब: अहले सुन्नत वल जमात के ईमान का आधार सैयदुल मुरसलीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मोहब्बत है। जब तक कोई हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अपने माँ, बाप, औलाद और पूरी दुनिया से ज़्यादा प्यार न करे, वह मुसलमान नहीं है। हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) स्वयं फ़रमाते हैं: [अरबी]: "तुममें से कोई तब तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उसे उसके पिता, उसकी संतान और सभी लोगों से ज़्यादा प्यारा न हो जाऊं।"[3] [उर्दू अनुवाद]: तुममें से कोई भी मुसलमान नहीं होता जब तक कि मैं उसे उसके माता-पिता, बच्चों और सभी लोगों से ज़्यादा प्यारा न होऊं।

और एक प्रेमी को अपने महबूब की हर चीज़ अज़ीज़ होती है, यहाँ तक कि उसकी गली का कुत्ता भी। - हज़रत मौलाना (क़ुद्दसा सिर्रुहु)।

[1] शर्ह अल-ज़रक़ानी अलल मवाहिब अल-लदुन्निया, अल-मक़सद अल-आशिर, अल-फ़स्ल अल-अव्वल, दार अल-मआरिफ़ा, बेरूत, 8/273 [2] शर्ह अल-ज़रक़ानी अलल मवाहिब अल-लदुन्निया, अल-मक़सद अल-आशिर, अल-फ़स्ल अल-अव्वल, दार अल-मआरिफ़ा, बेरूत, 8/283 [3] सहीह अल-बुखारी, किताब अल-ईमान, बाब हुब्ब अल-रसूल, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 1/7

جلد ۲۴

فتاوی رضویہ

صوتھا والا نھاھا[1]۔ اور کوئی بے چینی نہ ہو گی، یہ ارشاد اس پر دلالت کرتا ہے کہ سیدہ نے اپنی آواز (کلمات مذکورہ کہتے ہوئے) بلند نہ کی تھی ورنہ آپ منع فرما دیتے۔ (ت)

اسی میں فتح الباری سے ہے: یؤخذ منه ان تلك الالفاظ كان الميت متصفا بها انه لا يمنع ذكره بها بعد موته بخلاف ما اذا لا يتحقق اتصافه بها فتدخل في المنع[2]۔ اس سے استدلال کیا جاتا ہے کہ آدمی کے مرنے کے بعد یہ الفاظ کہنا جبکہ وہ ان سے متصف ہو منع نہیں۔ بخلاف اس کے کہ آدمی ان سے متصف نہ ہو تو پھر ایسے الفاظ کہنا ممانعت میں داخل ہیں۔ (ت)

تحریم نوحہ میں احادیث متواترہ موجود ہیں اس سے جواز نوحہ ثابت نہ کرے گا مگر جاہل۔ واللہ الھادی (اللہ تعالی ہدایت فرمانے والا ہے۔ ت) واللہ سبحنہ وتعالی اعلم۔

مسئلہ ۱۷۳: مسئولہ سید مقبول علی میاں صاحب بریلی نو محلہ صفر ۱۳۴۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیان شرع متین بیچ اس امر کے اہلسنت وجماعت کو عشرہ محرم الحرام میں رنج و غم کرنا جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: اہل سنت وجماعت کا مدار ایمان حضور سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی محبت ہے جب تک اپنے ماں ، باپ ، اولاد ، تمام جہان سے زیادہ حضور کی محبت نہ رکھے مسلمان نہیں، خود حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: لا یؤمن احدکم حتی اکون احب الیه من والده و ولده والناس اجمعین[3]۔ تم میں کوئی مسلمان نہیں ہوتا جب تک میں اسے اس کے ماں باپ اور اولاد اور سب لوگوں سے زیادہ پیارا نہ ہوں۔

اور محب کو محبوب کی ہر شے عزیز ہوتی ہے یہاں تک کہ اس کی گلی کا کتا بھی۔ حضرت مولانا قدس سرہ

[1] شرح الزرقانی علی المواہب اللدنیہ المقصد العاشر الفصل الاول دار المعرفۃ بیروت ۸ / ۲۷۳ [2]

شرح الزرقانی علی المواہب اللدنیہ المقصد العاشر الفصل الاول دار المعرفۃ بیروت ۸ / ۲۸۳ [3]

صحیح البخاری کتاب الایمان باب حب الرسول قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۷

Volume 24 Fatawa Razawiyya

In the Masnavi Sharif, the story of Hazrat Majnun (may Allah have mercy on him) is narrated that someone saw him kissing a dog out of extreme love. That person objected, saying that a dog is impure, it is like this and that. He (Majnun) replied, "You do not know:

This is a magic bound by the Lord; this is the guardian of Laila's street.1 (Meaning, as if this is an image created by Allah, this (dog) is the watchman of Laila's lane.)

If this is the state of sincere lovers with worldly beloveds, who may have perfection in fleeting beauty but also thousands of flaws and defects, then what can be said about our Beloved (peace and blessings of Allah be upon him), who is at the peak of perfection in all praiseworthy qualities, whose every perfection is eternal and everlasting, and who is pure and matchless beyond every flaw and defect? Every association of his is the crown on a Sunni's head, whether they be the Companions, the Wives, or the Family of the House (may Allah be pleased with them all). Furthermore, what can be said of those who are pieces of the Prophet's heart and the stars of the eye of the Throne? The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Husain is from me and I am from Husain. Allah loves him who loves Husain. Husain is a grandson among grandsons.2	**Husain is mine and I am Husain's. Allah love him who loves Husain. Husain is an origin of a prophetic lineage.**

How deeply this Hadith is colored in love! Using the name once and then using pronouns three times would have been sufficient, but no, for the pleasure of love, he repeated the name every time, as they say regarding the poet's words:

By Allah, O gazelles of the plain, tell us: Is Laila one of you, or is Laila from among humans? (By God, O deer of the flat land! Tell us, is Laila from among you or from among humans?)

Which Sunni would there be who does not grieve the horrific event of Karbala, or whose heart is not saddened and eye not moist at its memory? Yes, we have been commanded to be patient in calamities. Sharia forbids wailing and lamentation. For one who does not truly have grief in their heart, a false display of grief is hypocrisy. And intentional grief-bringing and grief-nurturing is against the will (of Allah). He who does not have his grief should not remain without grief.

1 Masnavi Ma'navi, Story of Majnun caressing that dog etc., Noorani Kutub Khana Peshawar, Vol 3, p. 17. 2 Jami' at-Tirmidhi, Chapters on Merits, Merits of Abi Muhammad al-Hasan etc., Amin Company Delhi, 2/219.

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

मसनवी शरीफ़ में हज़रत मजनूं (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि) की हिकायत लिखी गई है कि किसी ने उन्हें देखा कि वे कमाल-ए-मोहब्बत के तौर पर एक कुत्ते के बोसे ले रहे हैं। उस शख़्स ने एतराज़ किया कि कुत्ता नजिस (नापाक) है, ऐसा है, वैसा है। उन्होंने फ़रमाया, "तुम नहीं जानते:

काइन तिलस्म-ए-बस्ता मौला-स्त ईं, पासबान-ए-कूचा-ए-लैला-स्त ईं।1 (जैसे यह अल्लाह की बनाई हुई तस्वीर है, यह (कुत्ता) लैला की गली का चौकीदार है।)

जब दुनिया के महबूबों के साथ सच्चे प्रेमियों का यह हाल है, जिनमें एक फ़ानी (नश्वर) हुस्न का कमाल सही, पर हज़ारों ऐब व नुक्स भी होते हैं, तो फिर हमारे महबूब (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) का क्या कहना, जिन्हें तमाम अच्छी सिफ़तों में आला दर्जे का कमाल हासिल है, और जिनका हर कमाल अबदी (शाश्वत) और लाज़वाल है और जो हर ऐब व नुक्स से पाक और बेमिसाल हैं। उनका हर ताल्लुक रखने वाला सुन्नी के सर का ताज है, चाहे वे सहाबा हों, अज़वाज-ए-मुतह्हरात हों या अहले-बैत (रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम् अजमईन)। फिर उनका क्या कहना जो हुज़ूर के जिगर के टुकड़े और अर्श की आँख के तारे हैं। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

हुसैन मिन्नी व अना मिन हुसैन, अहब-अल्लाहु मन अहब्बा हुसैनन, हुसैनुन् सिब्तुन मिनल अस्बात।2	**हुसैन मेरा है और मैं हुसैन का हूँ। अल्लाह उसे महबूब रखे जो हुसैन को महबूब रखे। हुसैन नबियों की नस्लों में से एक असल (मूल) है।**

यह हदीस किस क़दर मोहब्बत के रंग में डूबी हुई है! एक बार नाम लेकर तीन बार ज़मीर (सर्वनाम) का इस्तेमाल काफ़ी था, मगर नहीं, हर बार मोहब्बत की लज़्ज़त के लिए नाम ही का दोहराव फ़रमाया, जैसा कि किसी शायर के कौल के बारे में कहा गया:

बिल्लाहि या ज़बियात-अल-काअ् कुल्ना लना, अलैला मिनकुन्ना अम लैला मिनल बशर। (ख़ुदा की क़सम ऐ हमवार ज़मीन के हिरनों! हमें यह बता दो कि क्या लैला तुम में से है या इंसानों में से है।)

कौन ऐसा सुन्नी होगा जिसे कर्बला के हौलनाक वाक़िये का ग़म नहीं, या जिसकी याद से उसका दिल दुखी और आँख नम नहीं? हाँ, मुसीबत में हमें सब्र करने का हुक्म दिया गया है। शरीअत रोने-पीटने और बेताबी दिखाने से मना फ़रमाती है। और जिसे वाक़ई दिल में ग़म न हो, उसका झूठा इज़हार

करना रिया (दिखावा) है। और जान-बूझकर ग़म पैदा करना और ग़म पालना रज़ा (ईश्वरीय इच्छा) के ख़िलाफ़ है। जिसे उनका ग़म न हो, उसे बेग़म नहीं रहना चाहिए।

---

1 मसनवी मानवी, क़िस्सा-ए-नवाख़्तन-ए-मजनूं आं सग अलख, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, दफ़्तर सोम, पृ. 17 2 जामिया तिरमिज़ी, अबवाबुल मनाक़िब, मनाक़िब अबी मोहम्मद अल-हसन अलख, अमीन कंपनी दिल्ली, 2/219

مثنوی شریف میں حضرت مجنوں رحمۃ اللہ تعالیٰ کی حکایت تحریر فرمائی کہ کسی نے ان کو دیکھا کمال محبت کے طور پر ایک کتے کے بوسے لے رہے ہیں، اعتراض کیا کہ کتا نجس ہے چنیں ہے چناں ہے۔ فرمایا نہیں جانتے

کایں طلسمِ بستہ مولیٰ ست ایں پاسبانِ کوچہ لیلی ست ایں ۱ (جیسے یہ اللہ کی بنائی ہوئی تصویر ہے، یہ (کتا) لیلیٰ کی گلی کا چوکیدار ہے۔ ت)

یہ کتا لیلیٰ کی گلی کا ہے محبانِ صادق کا جب دنیا کے محبوبوں کے ساتھ یہ حال ہے جن میں ایک حسن فانی کا کمال سہی ہزاروں عیب و نقص بھی ہوتے ہیں، تو کیا کہنا ہے ہمارے محبوب صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا جنہیں تمام اوصافِ حمیدہ میں اعلیٰ کمال، اور جن کا ہر کمال ابدی اور لازوال اور جو ہر عیب و نقص سے منزہ و بے مثال، ان کا ہر علاقہ والا سنی کے سر کا تاج ہے، صحابہ ہوں خواہ ازواج خواہ اہلبیت رضوان اللہ تعالیٰ علیہم اجمعین۔ پھر یہ کہنا ہے ان کا جو حضور کے جگر پارے اور عرش کی آنکھ کے تارے ہیں، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

حسین منّی و انا من حسین، احب اللہ من احب حسیناً، حسین سبط من الاسباط ۲

حسین میرا اور میں حسین کا، اللہ دوست رکھے اسے جو حسین کو دوست رکھے، حسین ایک نسلِ نبوت کی اصل ہے۔

یہ حدیث کس قدر محبت کے رنگ میں ڈوبی ہوئی ہے، ایک بار نام لے کر تین بار ضمیر کافی تھی مگر نہیں ہر بار لذت محبت کے لئے نام ہی کا اعادہ فرمایا، کما قالوا فی قول القائلہ

باللہ یا ظبیات القاع قلن لنا الیلای منکن ام لیلی من البشر (خدا کی قسم اے ہموار زمین کے ہرنوں! ہمیں یہ بتادو کیا لیلیٰ تم میں سے ہے یا انسانوں میں سے ہے۔ ت)

کون ساسنی ہوگا جسے واقعہ ہائلہ کربلا کا غم نہیں یا اس کی یاد سے اس کا دل محزون اور آنکھ پر نم نہیں، ہاں مصائب میں ہم کو صبر کا حکم فرمایا ہے، جزع فزع کو شریعت منع فرماتی ہے، اور جسے واقعی دل میں غم نہ ہو اسے جھوٹا اظہار غم ریا ہے اور قصداً غم آوری و غم پروری خلاف رضا ہے جسے اس کا غم نہ ہو اسے بیغم نہ رہنا چاہئے

---

۱ مثنوی معنوی قصہ نواختن مجنون آن سگ الخ نورانی کتب خانہ پشاور دفتر سوم ص ۱۷ ۲ جامع الترمذی ابواب المناقب مناقب ابی محمد الحسن الخ امین کمپنی دہلی ۲/ ۲۱۹

In fact, one should grieve for not having this grief, as its absence indicates a deficiency in love, and one whose love is deficient, his faith is deficient. And Allah Almighty knows best.

Problem 171: From Mr. Intizam Ali Khan, Chhatta Sheikh Mangloo, near Jamia Masjid Delhi. 18th Jamadi-ul-Akhirah. In every Milad Sharif, during the narration of martyrdom and reciting elegiac verses (nauha), the reciters cry themselves and make others cry too. For example, reciting that Zainab, Kulsoom, Sughra, etc., used to recite and cry in this way - is it permissible or not? That is, reciting in this manner.

Answer: Elegiac mourning (Nauha matam) is forbidden (haram). Narrating the martyrdom of Hussain in an unauthorized manner is prevalent among the ignorant; it is itself prohibited, and bringing such things into a Milad gathering—a gathering for the Master of the Universe—is even greater foolishness. And Allah Almighty knows best.

Problem 175 to 178: 11th Muharram al-Haram 1339 AH. What do the scholars of the religion and the deputies of the Messengers say regarding the following issues: (1) Some people of the Sunnah do not cook food during the day nor do they sweep during the first ten days of Muharram (Ashura). They say that food will be cooked after the burial of the Ta'ziyah. (2) They do not change their clothes during these ten days. (3) They do not perform marriages in the month of Muharram. (4) During these days, they do not offer Niyaz or Fatiha for anyone except Imam Hasan and Imam Hussain (may Allah be pleased with them). Is this permissible or not?

Answer: The first three practices are acts of mourning (sog), and mourning is forbidden (haram). The fourth point is ignorance; Niyaz for every saint (wali) and Fatiha for every Muslim can be offered on any date of any month. And Allah Almighty knows best.

फतावा रज़विया जिल्द 24

बल्कि इस गम न होने का गम होना चाहिए कि उसकी मुहब्बत अधूरी है और जिसकी मुहब्बत अधूरी उसका ईमान अधूरा। वल्लाह तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसाला 171: जनाब इंतेज़ाम अली खान, छत्ता शेख मंगलू, ज़ेर-ए-जामिया मस्जिद दिल्ली। 18 जमादि-उल-आखिरह। हर मीलाद शरीफ में शहादत का बयान और नौहा (शोक गीत) के शेर पढ़ते ही मीलाद पढ़ने वाले खुद रोते हैं और दूसरों को भी रुलाते हैं। मिसाल के तौर पर कि ज़ैनब, कुलसूम, सुगरा वग़ैरह-वग़ैरह इस तरह से पढ़ती थीं और रोती थीं - क्या इस तरह पढ़ना जायज़ है या नहीं?

जवाब: नौहा मातम हराम है, हुसैन की शहादत का बयान गलत तरीके से जाहिलों में प्रचलित है, वह खुद ही मना है और मीलाद की मजलिस में जो कि रसूले करीम की महफिल है, उसमें ऐसी बातें लाना और भी बड़ी हिमाकत है। वल्लाह तआला आलम।

मसाला 175 से 178: 11 मुहर्रम अल-हराम 1339 हिजरी। दीन के उलमा और रसूलो के नायब (खलीफा) इन मसाइल के बारे में क्या फरमाते हैं: (1) कुछ सुन्नी जमात के लोग मुहर्रम के शुरू के 10 दिनों (अशरा) में न तो दिन भर खाना पकाते हैं और न ही झाड़ू लगाते हैं। वे कहते हैं कि ताज़िया दफन होने के बाद ही खाना पकाया जाएगा। (2) इन दस दिनों में कपड़े नहीं बदलते हैं। (3) मुहर्रम के महीने में शादी-ब्याह नहीं करते हैं। (4) इन दिनों में इमाम हसन और इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अलावा किसी और की नियाज़-फातिहा नहीं दिलाते हैं। क्या यह जायज़ है या नहीं?

जवाब: पहली तीनों बातें सोग (शोक) मनाना हैं और सोग हराम है। और चौथी बात जहालत (अज्ञानता) है, हर महीने की हर तारीख में हर वली की नियाज़ और हर मुसलमान की फातिहा हो सकती है। वल्लाह तआला आलम।

पेज 489 ऑफ़ 720

بلکہ اس غم نہ ہونے کا غم چاہئے کہ اس کی محبت ناقص ہے اور جس کی محبت ناقص اس کا ایمان ناقص۔ واللہ تعالی اعلم

مسئلہ ۱۷۱: جناب انتظام علی خاں چھتہ شیخ منگلو زیر جامع مسجد دہلی ۱۸ جمادی الاخرہ ہر میلاد شریف میں شہادت کا بیان اور نوحہ اشعاروں کے پڑھتے ہی میلاد خواں خود روتے ہیں اور دوسروں کو بھی رلاتے ہیں۔ مثال کہ زینب، کلثوم، صغری وغیرہ وغیرہ اس طرح سے پڑھتی تھیں اور روتی تھیں جائز ہے یا نہیں؟ یعنی اس طرح سے پڑھنا۔

الجواب: نوحہ ماتم حرام ہے، بیان شہادت حسین ناجائز طور پر جاہلوں میں رائج ہے خود ہی ممنوع اور مجلس میلاد مبارک میں کہ مجلس سرور عالم کے ساتھ اس کام لانا اور حماقت۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۱۷۵ تا ۱۷۸: ۱۱ محرم الحرام ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و خلیفہ مرسلین مسائل ذیل میں: (۱) بعض سنت جماعت عشرہ ۱۰ محرم الحرام کو نہ تودن بھر روٹی پکاتے ہیں اور نہ جھاڑو دیتے ہیں کہتے ہیں کہ بعد دفن تعزیہ روٹی پکائی جائے گی۔ (۲) ان دس دن میں کپڑے نہیں اتارتے ہیں۔ (۳) ماہ محرم میں بیاہ شادی نہیں کرتے ہیں۔ (۴) ان ایام میں سوائے امام حسن و امام حسین رضی اللہ تعالی عنہ کے کسی کی نیاز فاتحہ نہیں دلاتے ہیں، آیا یہ جائز ہے یا نہیں؟

الجواب: پہلی تینوں باتیں سوگ ہیں اور سوگ حرام ہے، اور چوتھی بات جہالت ہے ہر مہینہ ہر تاریخ میں ہر ولی کی نیاز اور ہر مسلمان کی فاتحہ ہو سکتی ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

Volume 24 Fatawa Razawiyya

Tazia and Related Innovations

Problem 179: From Bisoli, Badaun District, sent by Khalil Ahmad Sahib, 9 Shawwal 1319 AH. What do the religious scholars say about whether the people of the Sunnah and Jamat should make or watch Tazia, or believe in it from their hearts? And what Sharia ruling will be issued for someone who does this? Explain and be rewarded. (Trans: Explain and receive a reward.)

The Answer: The currently prevalent Tazia is a collection of heinous and evil innovations (Bid’ah). Making or watching it is not permissible, and its veneration and devotion are strictly forbidden (Haram) and a severe innovation. May Allah Subhanahu wa Ta’ala guide our Muslim brothers to the path of truth. Ameen! And Allah Subhanahu wa Ta’ala knows best.

Problem 180: From Isanagar, Lakhimpur District, Oudh region, sent by Syed Mazhar Hasan Sahib, 15 Safar 1320 AH. Respected Maulvi Sahib! We are residents of Isanagar, Lakhimpur District, specifically from the Isanagar Post Office. We have heard that in Bareilly, in Mohalla Saudagaran, there is a great scholar named Maulana Ahmad Raza Khan who provides excellent Sharia rulings. Recently, a person here has been spreading nonsense, saying things like, "Do not raise the Mohammadi flag, do not make Tazia," forbidding the consumption of sweets offered on Tazia, and prohibiting the playing of drums on the "Khuda'i night." He also opposes Milad Sharif at the houses of professional singers and jesters...

जिल्द २४ फ़तावा रज़विया

ताज़िया और उससे संबंधित बिदअतें

मसला १७९: बिसौली, जिला बदायूँ से प्रेषित, खलील अहमद साहब द्वारा, ९ शव्वाल १३१९ हिजरी। विद्वान इस बारे में क्या कहते हैं कि सुन्नी मुसलमानों को ताज़िया बनाना, देखना या उस पर दिल से विश्वास करना चाहिए या नहीं? और जो ऐसा करे उस पर शरीयत के अनुसार क्या हुक्म होगा? बयान फरमाएं और पुण्य पाएं। (त: बयान फरमाएं और सवाब पाएं।)

जवाब: वर्तमान में प्रचलित ताज़िया घृणित और बुरी बिदअतों (नवाचारों) का एक समूह है। इसे बनाना या देखना जायज़ नहीं है, और इसकी ताज़ीम व अकीदत (सम्मान और श्रद्धा) सख्त हराम और गंभीर बिदअत है। अल्लाह सुब्हानहु व तआला मुस्लिम भाइयों को सच्चाई के रास्ते पर चलने का मार्गदर्शन दे। आमीन! और अल्लाह सुब्हानहु व तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला १८०: ईसानगर, जिला लखीमपुर, अवध क्षेत्र से प्रेषित, सैयद मज़हर हसन साहब द्वारा, १५ सफ़र १३२० हिजरी। जनाब मौलवी साहब! हम ईसानगर, जिला लखीमपुर के निवासी हैं और ईसानगर डाकघर क्षेत्र से हैं। हमने सुना है कि बरेली के मोहल्ला सौदागरान में जनाब मौलवी अहमद रज़ा खान साहब एक बहुत बड़े विद्वान हैं और शरीयत के बहुत अच्छे आदेश देते हैं। हमारे यहाँ पिछले कुछ दिनों से एक व्यक्ति ने व्यर्थ की बातें फैलाई हैं कि 'मोहम्मदी झंडा मत लगाओ और ताज़िया मत बनाओ'। वह ताज़िये पर चढ़ाई गई मिठाई खाने से मना करता है, और 'खुदाई रात' में ढोल बजाने से रोकता है। वह रंडियों और भाँडों के यहाँ मौलूद शरीफ़ (मिलाद) करने से भी रोकता है...

पृष्ठ ४९० का ७२०

تعزیہ اور اس سے متعلقہ بدعات

مسئلہ ۱۷۹: از بسولی ضلع بدایوں مرسلہ خلیل احمد صاحب ۹ شوال ۱۳۱۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ تعزیہ کا بنانا اور دیکھنا ان پر دل سے معتقد ہونا اہل سنت و جماعت کو چاہئے یا نہیں؟ اور جو ایسا کرے اس پر بموجب شرع کیا حکم صادر ہوگا؟ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائیے ۔ت)

الجواب: تعزیہ رائجہ مجمعِ بدعاتِ شنیعہ سیئہ ہے، اس کا بنانا دیکھنا جائز نہیں، اور تعظیم و عقیدت سخت حرام واشد بدعت۔ اللہ سبحانہ وتعالٰی مسلمان بھائیوں کو راہ حق کی ہدایت فرمائے۔ آمین! واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۸۰: از عیسی نگر ضلع لکھیری ملک اودھ مرسلہ سید مظہر حسن صاحب ۱۵ صفر ۱۳۲۰ھ جناب مولوی صاحب! ہم لوگ ساکنان عیسی نگر ضلع لکھیری و ڈاک خانہ خاص عیسی نگر کے ہیں اور جناب کا نام سنا ہے کہ بریلی میں جناب مولوی احمد رضا خاں صاحب محلہ سوداگران میں بہت بڑے مولوی ہیں اور بہت اچھا حکم شریعت کا دیتے ہیں، ہمارے یہاں تھوڑے دنوں سے ایک شخص نے واہی بات مچائی ہے کہ محمدی جھنڈا مت کھڑا کرو اور تعزیہ مت بناؤ اور تعزیہ پر مٹھائی چڑھاتے ہیں اسے کھانے کو منع کرتا ہے اور خدائی رات میں ڈھول بجانے کو منع کرتا ہے اور مولود شریف رنڈی اور بھانڈی کے یہاں...

(A person) says he won't come to recite unless paid for labor: "Bring sweets and I'll recite, or don't bring sweets and I'll still recite for you." So Maulvi Sahib, why would they give us rewards without sweets? And if we stop making Ta'ziyas etc., the name of Muslims will not remain here. Now a Maulvi Sahib has come who also forbids Milad Sharif and Giyarween. So a big dispute occurred between Maulvi Sahib and Ahmad. After the dispute, it was decided that two or three people together should not recite ghazals with uncovered heads, and they should not recite the story of the deer but should read from authentic books. And they should not stand. Since then, Ahmad stands and recites Milad Sharif, and Maulvi Sahib also remains standing. They tell those who recite the rhyming five-line stanzas (Khamsa) to recite, and they read the ghazals themselves.

Now it is settled that whatever is written as good in the aforementioned writing by Maulvi Ahmad Raza Khan Sahib Barelvi, we will all do together, and there is no dispute over anything else. Among the things mentioned in this paper, whichever is better and carries more reward, please write that down. Regarding Giyarween, it has been decided to perform Fatiha on any date and offer its reward to the soul of Hazrat Bare Peer Sahib (Ghaus-ul-Azam) for Allah's sake. Do not think that if Giyarween is not performed, we will suffer some loss. Whoever wishes can do it on the 11th, or the 10th or 9th; there is reward at all times.

Now they forbid one more thing: "Do not go to the wedding of Ghazi Miyan Syed Salar in Bahraich." Now some of our people don't want to go there either, to the extent that they even forbid their banners (Nishan). And we have a marriage amongst ourselves; we will participate in the wedding after your reply comes. Please write a clear answer, you will be performing a great virtuous deed. For the reply, (the postage/envelope) is attached for service.

The Answer:

One kind of flag is for Jihad, which is specific to the army of the Sultan of Islam. Its original place is not here; neither is there a Sultan of Islam nor an army of Islam, so what is the use of that flag? And if a flag is made for any other purpose, then its purpose must be known. If the purpose is praiseworthy and there is a need for fame or a sign, then there is no harm. And we have researched this in our Fatawa (and we have done its investigation in our Fatawa. - Ed.). And if the purpose is condemned or vain and useless, then forbidding it is correct. Ta'ziya is forbidden; it has no basis in

Shariah. And whatever innovations (Bid'at) are done along with them are strictly impermissible. And I have detailed some of these matters in the Fatawa (Indeed, I have detailed some issues in the Fatawa. - Ed.). Muslims are recognized by following the commands of Shariah.

फतावा रज़विया - जिल्द 24

(एक व्यक्ति) कहता है कि वह पढ़ने नहीं आएगा, मजदूरी करके लाओ: "मिठाई लाओ तो पढ़ दूँगा या मिठाई मत लाओ, तुम्हारे यहाँ वैसे ही पढ़ दूँगा।" तो मौलवी साहब, वे हमें बिना मिठाई के सवाब क्यों देंगे? और अगर हम ताज़िया वगैरह बनाना छोड़ दें, तो यहाँ मुसलमानों का नाम भी नहीं रहेगा। अब एक मौलवी साहब आए हैं, वे मौलूद शरीफ और ग्यारहवीं से भी मना करते हैं। तो मौलवी साहब और अहमद के बीच खूब झगड़ा हुआ। झगड़े के बाद यह बात तय हुई कि दो-दो, तीन-तीन आदमी मिलकर नंगे सिर ग़ज़लें न पढ़ें, और हिरनी का किस्सा न पढ़ें, बल्कि सही किताब की रिवायतें पढ़ें। और खड़े न हों। तब से अहमद वैसे ही खड़े होकर मौलूद शरीफ पढ़ता है, और मौलवी साहब भी वैसे ही खड़े रहते हैं। वे उन लोगों को पढ़ने के लिए कहते हैं जो तुकबंदी वाली पाँच पंक्तियों (खम्सा) को पढ़ते हैं, और वे खुद ग़ज़लें पढ़ते हैं।

अब यह बात तय हुई है कि मौलवी अहमद रज़ा खाँ साहब बरेलवी जिस बात को उपरोक्त लेख में अच्छा लिख देंगे, हम सब मिलकर उसे करेंगे, और किसी अन्य बात का झगड़ा नहीं है। इस कागज़ में ऊपर जो बातें दर्ज हैं, उनमें से जो बात बेहतर और जिसमें ज़्यादा सवाब हो, वह लिख दीजियेगा। ग्यारहवीं के बारे में यह फैसला हुआ है कि चाहे जिस तारीख में फातिहा करो और उसका सवाब अल्लाह के लिए हज़रत बड़े पीर साहब (ग़ौस-उल-आज़म) की रूह को ईसाल-ए-सवाब करें। यह मत सोचो कि अगर ग्यारहवीं नहीं करेंगे तो हमें कुछ नुकसान होगा। जिसका दिल चाहे ग्यारहवीं करे, जिसका दिल चाहे दसवीं या नवीं करे, हर समय सवाब है।

अब एक बात के लिए और मना करते हैं कि "बहराइच में गाजी मियां सैयद सालार की शादी में मत जाओ।" अब हमारे कुछ लोग वहाँ भी नहीं जाना चाहते, यहाँ तक कि उनके निशानों (झंडों) को भी मना करते हैं। और हमारे आपस में शादी है; आपके जवाब आने के बाद हम शादी में शामिल होंगे। साफ-साफ जवाब लिख दीजियेगा, आप बहुत बड़े पुण्य (सवाब) के भागीदार होंगे। जवाब के लिए (डाक/लिफाफा) सेवा में संलग्न है।

उत्तर (अल-जवाब):

झंडा एक तो जिहाद का होता है, वह सुल्तान-ए-इस्लाम की सेना के साथ विशिष्ट है। यहाँ उसका मूल स्थान नहीं है; न सुल्तान-ए-इस्लाम है और न ही इस्लाम की सेना, तो उस झंडे का क्या काम? और अगर किसी अन्य उद्देश्य के लिए कोई झंडा बनाया जाता है, तो उसका उद्देश्य ज्ञात होना चाहिए।

यदि उद्देश्य प्रशंसनीय है और उसमें ख्याति या संकेत की आवश्यकता है, तो कोई हर्ज नहीं है। और हमने अपने फतावा में इसकी तहकीकात कर दी है। (और हमने अपने फतावा में इसकी जाँच कर ली है। - सं.) और यदि उद्देश्य निंदनीय या व्यर्थ और निरर्थक है, तो उसे रोकना सही है। ताज़िया मना है; शरीयत में इसका कोई आधार नहीं है। और उनके साथ जो भी बिदअत (नवाचार) किए जाते हैं, वे सख्त नाजायज हैं। और मैंने फतावा में इनमें से कुछ मसलों का विवरण दिया है। (बेशक मैंने फतावा में कुछ मुद्दों का विवरण दिया है। - सं.) मुसलमान शरीयत के आदेशों के पालन से पहचाने जाते हैं।

पृष्ठ 720 में से 491

پڑھنے کو نہیں جاتا کہتا ہے مزدوری کر کے لاؤ شیرینی تو پڑھ دوں گا یا شیرینی مت لاؤ تمہارے یہاں ویسے ہی پڑھ دوں گا تو مولوی صاحب ہم کو شیرینی بغیر ثواب کیوں کریں اور ہم تعزیہ وغیرہ بنانا چھوڑ دیں تو یہاں مسلمان کا نام بھی نہ رہے گا اب ایک مولوی صاحب آئے ہیں وہ مولود شریف اور گیارہویں کو بھی منع کرتے ہیں تو مولوی صاحب اور احمد کا جھگڑا خوب ہوا اور جھگڑا ہو کر یہ بات ٹھہری کہ وہ دو دو تین تین آدمی مل کر غزلیں سربلا کر نہ پڑھا کریں اور قصہ ہرنی کا نہ پڑھیں صحیح کتاب کی روایات پڑھا کریں اور کھڑے نہ ہوں جب سے احمد ویسے ہی کھڑا ہو کر مولود شریف پڑھتا ہے اور مولوی صاحب بھی ویسے ہی کھڑے رہتے ہیں اور جوڑ کے خمسہ پڑھتے ان کے پڑھنے کو کہتے ہیں اور جو غزل خود پڑھتے ہیں۔

اب یہ بات ٹھہری ہے کہ جس بات کو تحریر مذکورہ بالا میں اچھا لکھ دیں گے مولوی احمد رضا خاں صاحب بریلوی کے وہ ہم سب مل کر کریں گے اور کسی بات کا جھگڑا نہیں ہے جو باتیں اس کاغذ میں اوپر درج ہیں ان میں سے جو جو بات بہتر اور ثواب زیادہ جس کے کرنے میں ہو وہ تحریر کر دیجئے گا اور گیارہویں کی بابت یہ فیصلہ ہو گیا ہے چاہے جس تاریخ میں فاتحہ کرو اور اس کا ثواب نذر اللہ کرکے حضرت بڑے پیر صاحب کی روح کو ایصالِ ثواب کریں، یہ مت خیال کرو کہ اگر گیارہویں کونہ کریں گے تو ہم کو کچھ نقصان ہوگا جس کا دل چاہے گیارہویں کرے جس کا دل چاہے دسویں نویں کرے ہر وقت ثواب ہے۔

اب ایک بات کو اور منع کرتے ہیں کہ غازی میاں سید سالار کے بیاہ میں مت جاؤ بہرائچ، اب ہمارے کچھ لوگ وہاں کو بھی نہیں جانا چاہتے ہیں یہاں تک کہ ان کے نشان کو بھی منع کرتے ہیں

اور ہماری آپس میں شادی ہے، آپ کے جواب آنے کے بعد شادی میں شریک ہوں گے، صاف صاف جواب لکھ دیجئے گا، بہت ثواب کے مرتکب ہوں گے، جواب کے واسطے ارسال خدمت منسلک ہے۔

الجواب:

جھنڈا ایک تو جہاد کا ہوتا ہے وہ لشکر سلطانِ اسلام کے ساتھ خاص ہے یہاں اس کا اصل محل نہیں نہ سلطانِ اسلام نہ لشکر اسلام تو اس جھنڈے کا کیا کام۔ اور اگر کسی اور غرض سے کوئی جھنڈا بنایا جاتا ہو تو اس کا معلوم ہونا چاہئے، اگر غرض محمودہ اور اس میں شہرت اور علامت کی حاجت ہے تو حرج نہیں وقد حققنا فی فتاوٰنی (اس کی تحقیق ہم نے اپنے فتاویٰ میں کردی ہے۔ت) اور اگر غرض مذموم یا عبث و فضول ہے تو منع کرنا ٹھیک ہے تعزیہ ممنوع ہے شرع میں کچھ اصل نہیں اور جو کچھ بدعات ان کے ساتھ کی جاتی ہیں سخت ناجائز ہیں وفصلت بعضھا فی الفتاویٰ (بیشک میں نے فتاویٰ میں بعض مسائل کی تفصیل بیان کردی ہے۔ت) مسلمان اتباعِ احکامِ شرع سے ہوتے ہیں۔

Fatawa Razawiyya Volume 24

Although the sweets offered on a Tazia (as part of an unauthorized practice) do not become haram (forbidden), eating them in the eyes of the ignorant would increase the prestige of a religiously unauthorized act, whereas abstaining from them should instill a dislike for such acts. Therefore, they should not be eaten. Beating drums is haram, and to commit sin and disobedience on the night named "God's Night" instead of worshipping is as if, God forbid, considering sin as worship, and this is even more haram. One must never participate in Milad gatherings held at the houses of prostitutes, female singers, or jesters with their haram money.

Indeed, Allah is Pure and accepts only what is pure. - 1 (T)

In fact, one should not go to the houses of prostitutes or female singers at all, even if they organize the gathering with money from lawful labor, because going to their places invites suspicion (tuhmat), and there is a command to avoid suspicion. It is stated in a Hadith:

Whoever believes in Allah and the Last Day should not stand in places of suspicion. - 2

It is a complete misconception to think that there will be no reward without sweets. Is the mention of the noble birth of the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, not itself a cause for reward? Yes, there is more reward in sweets because along with the noble mention, charity to the poor and gifts to loved ones are also included; physical closeness (to God) is joined by financial closeness. A Milad Sharif gathering is highly recommended (Mustahab), encouraged (Mandub), better, and good. Standing (Qiyam) during it is also commendable and liked. The celebration of "Giyarwin Sharif" is also beautiful and liked, and there is no legal (Sharia) harm in specifying the 11th date. However, it is wrong to think that reward will only be obtained on the specific 11th and not on other days. Reciting in unison by a few people with a beautiful voice is also permissible as long as the verses are religiously sound and there is no intent for musical melody (ragini). But unbearded young boys should not be included in them as there is fitnah (trial/temptation) in them. All these issues have been mentioned many times. The story of the deer, to the extent it appears in Hadith, is certainly acceptable and reliable, and reading and narrating it all brings reward. Yes, if something has been added from one's own side, it is wrong and must be removed. In the Hadith, this story is as follows: The Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, was in the wilderness when the sound of

someone calling was heard. The Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, looked but saw no one, then looked...

1 Al-Sunan al-Kubra by al-Bayhaqi, Book of Salat al-Istisqa, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 3/366. 2 Maraqi al-Falah with Hashiyah al-Tahtawi, Chapter on Perceiving the Obligatory, Nur Muhammad Karkhana Tijarat Kutub, Karachi, p. 249.

फतावा रज़विया जिल्द 24

हालाँकि ताज़िये पर चढ़ाई गई मिठाई हराम नहीं हो जाती, लेकिन उन्हें खाने से अज्ञानियों की नज़र में एक ग़ैर-शरिया कार्य का महत्व बढ़ता है, जबकि उन्हें छोड़ने से उस कार्य के प्रति अरुचि पैदा होनी चाहिए। इसलिए, उन्हें नहीं खाना चाहिए। ढोल बजाना हराम है, और जिस रात का नाम "खुदाई रात" (ईश्वरीय रात) रखा गया है, उसमें इबादत के बजाय गुनाह और अवज्ञा करना मानों गुनाह को, अल्लाह न करे, इबादत ठहराना है, और यह और भी अधिक हराम है। वेश्याओं, गाने वालियों और भांडों के यहाँ उनके हराम माल से होने वाली मिलाद शरीफ की महफ़िलों में हरगिज़ शामिल न हुआ जाए।

निस्संदेह अल्लाह पाक है और वह केवल पाक चीज़ ही स्वीकार करता है। - 1 (त)

बल्कि वेश्याओं और गाने वालियों के यहाँ किसी भी तरह नहीं जाना चाहिए, चाहे वे हलाल कमाई के पैसे से महफ़िल करें, क्योंकि उनके यहाँ जाने में तोहमत (संदेह) है, और तोहमत से बचने का हुक्म है। हदीस में है:

जो अल्लाह और कयामत के दिन पर ईमान रखता हो, वह तोहमत की जगह पर न खड़ा हो। - 2

यह समझना पूरी तरह गलत है कि बिना मिठाई के सवाब (पुण्य) नहीं होगा। क्या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विलादत (जन्म) के पवित्र ज़िक्र मात्र से सवाब नहीं मिलता? हाँ, मिठाई में ज़्यादा सवाब है क्योंकि ज़िक्र के साथ गरीबों को सदका और अपनों को तोहफे देना भी शामिल हो गया; शारीरिक इबादत के साथ माली इबादत भी जुड़ गई। मिलाद शरीफ की महफ़िल बहुत ही मुस्तहब (पसंदीदा), मंदूब, बेहतर और अच्छी है, और उनमें कयाम (खड़े होना) भी मुस्तहसन (सराहनीय) और पसंदीदा है। ग्याहरवीं शरीफ भी अच्छी और पसंदीदा है, और ग्यारहवीं तारीख तय करने में भी शरिया के अनुसार कोई हर्ज नहीं है। हाँ, यह समझना गलत है कि केवल खास ग्यारहवीं को ही सवाब मिलेगा और अन्य दिनों में नहीं। कुछ लोगों का मिलकर सुरीली आवाज़ में पढ़ना भी जायज़ है, बशर्ते कि शेर (कविता) शरिया के अनुसार अच्छे हों और रागिनी (संगीत) का इरादा न हो। लेकिन कम उम्र लड़कों को उनमें शामिल न किया जाए क्योंकि उनमें फ़ितना (बुराई का डर) है। ये सभी मसले कई बार ज़िक्र हो चुके हैं। हिरनी का किस्सा जिस हद तक हदीस में आया है, वह ज़रूर स्वीकार्य और विश्वसनीय है, और उसे पढ़ना और सुनाना सब सवाब है। हाँ, अगर अपनी तरफ से कुछ बढ़ा दिया गया हो तो वह गलत है, उसे निकाल देना ज़रूरी है। हदीस में यह

किस्सा इस प्रकार है: रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जंगल में तशरीफ़ रखते थे कि किसी के पुकारने की आवाज़ आई, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने देखा, कोई नज़र नहीं आया, फिर नज़र...

1 अल-सुनन अल-कुबरा लिल-बैहक़ी, किताब सलात अल-इस्तिस्का, दार अल-मआरिफ़ा, बेरूत, 3/366। 2 मराक़ी अल-फ़लाह मआ हाशिया अल-तहतावी, बाब इदराक अल-फ़रीज़ा, नूर मोहम्मद कारखाना तिज़ारत कुतुब, कराची, पृ. 249।

نہ امور ناجائزہ سے تعزیہ پر جو مٹھائی چڑھائی جاتی ہے اگر چہ حرام نہیں ہوجاتی مگر اس کے کھانے میں جاہلوں کی نظر میں ایک امر ناجائز شرعی کی وقعت بڑھانے اور اس کے ترک میں اس سے نفرت دلانی ہے لہذا نہ کھائی جائے۔ ڈھول بجانا حرام ہے اور جس رات کا نام خدائی رات رکھا ان میں بجائے عبادت گناہ و معصیت کرنا گویا گناہ کو معاذ اللہ عبادت ٹھہرانا ہے اور یہ اور زیادہ حرام ہے۔ رنڈیوں، ڈومنیوں، بھانڈوں کے یہاں جو مجلس میلاد شریف ان کے حرام مال سے کی جائے ان میں شرکت ہر گز نہ کی جائے،

فان اللہ طیب لایقبل الا الطیب-1 بلاشبہ اللہ تعالٰی پاک ہے اور پاک چیز ہی قبول فرماتا ہے۔(ت)

بلکہ رنڈیوں ڈومنیوں کے یہاں کسی طرح جانا نہ چاہئے اگر چہ وہ حلال مزدوری کے مال سے مجلس کریں کہ ان کے یہاں جانے میں تہمت ہے اور تہمت سے بچنے کا حکم ہے۔ حدیث میں ہے:

من کان یومن باللہ والیوم الآخر فلا یقفن مواقف التھم-2 جو اللہ اور قیامت پر ایمان رکھتا ہو وہ تہمت کی جگہ کھڑا نہ ہو۔

یہ سمجھنا محض غلط ہے کہ بغیر شیرینی کے ثواب نہ ہوگا، کیا رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی ولادت شریف کا ذکر اقدس ویسے ہی موجب ثواب نہیں! ہاں شیرینی میں زیادہ ثواب ہے کہ ذکر شریف کے ساتھ صدقہ فقراء و ہدیہ احبا بھی شامل ہو گیا قربت بدنی کے ساتھ قربت مالی بھی ہو گئی، مجلس میلاد شریف اعلٰی مستحب و مندوب و بہتر و خوب ہے اور ان میں قیام بھی مستحسن و مرغوب ہے اور گیار ہویں شریف بھی حسن و محبوب ہے اور گیار ہویں تاریخ کی تخصیص میں بھی شرعاً کوئی حرج نہیں، ہاں یہ سمجھنا غلط ہے کہ خاص گیارہویں ہی کو ثواب

ملے گا اور دن نہ ملے گا۔ چند آدمیوں کا مل کر خوش الحانی سے پڑھنا بھی جائز ہے جبکہ شعر شرعاً اچھے ہوں اور راگنی کا قصد نہ کریں مگر امر دلڑکوں کو ان میں شریک نہ کیا جائے کہ ان میں فتنہ ہے۔ یہ سب مسائل بارہا ذکر ہو گئے ہیں۔ ہرنی کا قصہ جس قدر حدیث میں آیا ہے ضرور مقبول و معتبر ہے اور اس کا پڑھنا اور سنانا سب ثواب ہے ہاں اپنی طرف سے کچھ بڑھادیا ہو تو غلط ہے اسے نکال دینا ضرور ہے۔ حدیث میں یہ قصہ یوں ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم جنگل میں تشریف رکھتے تھے کہ کسی کے پکارنے کی آواز آئی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے دیکھا کسی کو نہ پایا پھر نظر

1 السنن الکبری للبیهقي کتاب صلاة الاستسقاء دار المعرفة بیروت ۳/ ۳۶۶ 2 مراقی الفلاح مع حاشیة الطحطاوی باب ادراك الفریضه نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۲۴۹

Volume 24 | Fatawa Razawiyya

...and found a doe tied up, which said: "O Messenger of Allah! Come near me." The Mercy of the World, may Allah's peace and blessings be upon him, approached the doe and asked: "What is your need?" She replied:

Arabic: *Inna lii khashfayni fii dhaalikal jabali fahal-linii hattaa adhhaba fa-urdi'ahumaa thumma arji'a ilayka.* **Translation:** I have two fawns in this mountain; may your presence release me so that I can go and suckle them and then return to your presence.

The Mercy of the World, may Allah's peace and blessings be upon him, asked: "Will you be true to your word?" The doe replied:

Arabic: *'Adhabaniyallahu 'adhabal 'ash-shaari il lam af'al.* **Translation:** If I do not do so, may Allah punish me with the punishment of those who used to forcibly seize property from people through oppression.

The Mercy of the World, may Allah's peace and blessings be upon him, released her. She went, suckled her young, and returned. Mustafa, may Allah's peace and blessings be upon him, tied her back up. The desert dweller who had tied the doe woke up and said: "O Messenger of Allah! Is there anything I can do for you?" He said: "Yes, that you release this doe." He released her. The doe ran off, saying:

Arabic: *Ash-hadu alla ilaha illallahu wa annaka rasulullah.* **Translation:** I bear witness that there is no true deity but Allah and that you are indeed the Messenger of Allah.

This Hadith is narrated by Tabarani in Al-Mu'jam al-Kabir from Umm al-Mu'minin Umm Salama, may Allah be pleased with her. The "marriage of Ghazi Miyan" is nothing; it is a purely ignorant custom, and there is no basis for their emblem. And Allah knows best.

Issue 181: 26 Muharram 1330 AH Making an *alam* (standard) or a *ta'ziya* (replica tomb), having it carried by Hindu porters or laborers accompanied by drums, cymbals, or any English musical instruments, pronouncing the sacred names of Hazrat Imam Hasan and Hazrat Imam Husain (may Allah be pleased with them) with undue emphasis (*tashdid*), beating the chest forcefully with both hands, parading the *ta'ziya* through the markets, showing it to Hindus and Muslims as a spectacle, holding a fair on the 10th of Muharram, placing the *ta'ziya* in an Imambara and having Hindus and Muslims offer sugar drops (*batasha*) and sesame sweets (*rewri*),

placing kettle-drums (*naubat*) at the Imambara, lighting it up and decorating it lavishly, and on the 10th of Muharram having Hindu porters or...

---

1. Al-Mu'jam al-Kabir, narrations of Umm Salama (may Allah be pleased with her), Hadith 763, Al-Maktabat al-Faysaliyya, Beirut, 23/331-332.

जिल्द 24 | फतावा रज़विया

...तो एक हिरनी बंधी हुई पाई और उसने अर्ज़ की: ऐ अल्लाह के रसूल! हुज़ूर मेरे पास तशरीफ़ लाएँ। रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हिरनी के करीब तशरीफ़ ले गए, फ़रमाया: तेरी क्या हाजत है? उसने अर्ज़ की:

अरबी: ان لی خشفین فی ذلک الجبل فحلنی حتی اذہب فارضیعھما ثم ارجع الیک۔ **अनुवाद:** इसी पहाड़ में मेरे दो बच्चे हैं, हुज़ूर मुझे खोल दें कि मैं जाकर उन्हें दूध पिला आऊँ फिर हुज़ूर के पास हाज़िर हो जाऊँगी।

हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तू अपना वादा पूरा करेगी? हिरनी ने अर्ज़ की:

अरबी: عذبنی اللہ عذاب العشار ان لم افعل۔ **अनुवाद:** मैं ऐसा न करूँ तो अल्लाह तआला मुझ पर उन लोगों का अज़ाब करे जो ज़ुल्मन (अन्यायपूर्ण तरीके से) लोगों से माल वसूल करते थे।

रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उसे खोल दिया, वह गई, बच्चों को दूध पिलाकर वापस आई, मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उसे फिर बांध दिया। वह देहाती (बदवी) जिसने यह हिरनी बांधी थी, होशियार हुआ और अर्ज़ की: ऐ अल्लाह के रसूल! हुज़ूर का कोई काम है कि मैं बजा लाऊँ फ़रमाया: हाँ, यह कि तू इस हिरनी को छोड़ दे। उसने छोड़ दी। वह हिरनी दौड़ती हुई यह कहती हुई चली गई कि:

अरबी: اشہد ان لا الہ الا اللہ و انک رسول اللہ۔ **अनुवाद:** मैं गवाही देती हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं और यह कि बेशक आप अल्लाह के रसूल हैं।

यह हदीस तबरानी ने 'मोजम कबीर' में हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत की। ग़ाज़ी मियाँ का ब्याह कोई चीज़ नहीं, महज़ जाहिलाना रस्म है, न उनके निशान की कोई असल। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 181: 26 मुहर्रम 1330 हिजरी अलम या ताज़िया बनाना, ढोल-ताशा या किसी अंग्रेज़ी बाजे के साथ हिन्दू कहार या बेलदारों से उठवाना और हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के मुक़द्दस नामों को तशदीद के साथ पुकारना और ज़ोर-ज़ोर से दोनों हाथों से सीना पीटना और ताज़िया को बाज़ारों में लिये फिरना, हिन्दू-मुसलमानों को बतौर तमाशे के

दिखाना और दस मुहर्रम को एक मेला लगाना और इमामबाड़े में ताज़िया रखकर बताशा रेवड़ी हिन्दू-मुसलमानों से पढ़वाना और इमामबाड़े पर नौबत रखवाना और उसमें रौशनी करना और खूब सजाना और दस मुहर्रम को हिन्दू कहारों या...

---

1. अल-मोजम अल-कबीर, मरुवियात उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा, हदीस 763, मकतबतुल फ़ैसलिया बेरूत 23/331-332।

فرمائی تو ایک ہرنی بندھی ہوئی پائی اور اس نے عرض کی: ادن منی یارسول اللہ! حضور میرے پاس تشریف لائیں۔ رحمت عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ہرنی کے قریب تشریف لے گئے، فرمایا: تیری کیا حاجت ہے؟ اس نے عرض کی:

عربی: ان لی خشفین فی ذلک الجبل فحلنی حتی اذہب فارضیعھما ثم ارجع الیک۔ **اردو:** اسی پہاڑ میں میرے دو بچے ہیں حضور مجھے کھول دیں کہ میں جاکر انہیں دودھ پلا آؤں پھر حضور کے پاس حاضر ہو جاؤں گی۔

حضور رحمت عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: تو اپنا سچا کرے گی؟ ہرنی نے عرض کی:

عربی: عذبنی اللہ عذاب العشار ان لم افعل۔ **اردو:** میں ایسا نہ کروں تو اللہ تعالیٰ مجھ پر ان لوگوں کا عذاب کرے جو ظلماً لوگوں سے مال تحصیلتے تھے۔

رحمت عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اسے کھول دیا، وہ گئی، بچوں کو دودھ پلا کر واپس آئی، مصطفی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اسے پھر باندھ دیا، وہ بادیہ نشین جس نے یہ ہرنی باندھی تھی ہوشیار ہوا اور عرض کی: یارسول اللہ! حضور کا کوئی کام ہے کہ میں بجالاؤں۔ فرمایا: ہاں یہ کہ تو اس ہرنی کو چھوڑ دے اس نے چھوڑ دی۔ وہ ہرنی دوڑتی ہوئی یہ کہتی ہوئی چلی گئی کہ:

عربی: اشہد ان لا الہ الا اللہ و انک رسول اللہ۔ **اردو:** میں گواہی دیتی ہوں کہ اللہ کے سوا کوئی سچا معبود نہیں اور یہ کہ بیشک آپ اللہ کے رسول ہیں۔

یہ حدیث طبرانی نے معجم کبیر میں حضرت ام المومنین ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی۔ غازی میاں کا بیاہ کوئی چیز نہیں محض جاہلانہ رسم ہے، نہ ان کے نشان کی کوئی اصل۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۸۱: ۲۶ محرم ۱۳۳۰ھ عَلَم تعزیہ کو بنانا، ڈھول تاشہ یا کسی انگریزی باجے کے ساتھ ہندو کہار بیلداروں سے اٹھوانا اور حضرت امام حسن اور حضرت امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے اسم مقدس کو بتشدید کہنا اور زور زور سے دونوں ہاتھ سے سینہ پیٹنا اور تعزیہ کو بازاروں میں لئے پھرنا، ہندو مسلمانوں کو بطور تماشہ کے دکھانا اور دس محرم کو ایک میلہ لگانا اور امام باڑہ میں تعزیہ رکھ کر بتاشہ ریوڑی ہندو مسلمانوں سے پڑھوانا اور امام باڑہ پر نوبت رکھوانا اور اس میں روشنی کرنا اور خوب مرصع کرنا اور دس محرم کو ہندو کہاروں یا...

---

1 المعجم الکبیر مرویات ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا حدیث ۷۶۳ مکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۲۳/ ۳۳۱۔ ۳۳۲

Fatawa Razawiyya Volume 24

Is it proven anywhere to have laborers dig a pit to bury a tazia and bring back the throne, and for the common people to seek such desires and make children mendicants, collecting offerings from house to house, and wearing new colorful green clothes? It often happens that a child dies soon after birth. In such a situation, seeking this desire: "O Hazrat Imam Hussain! If our child lives by your prayer, we will make the child a mendicant, a Bihishti, or a Paik in your name for ten years, and after ten years, we will conclude the mendicancy by feeding the community, the needy, or the poor with great joy and a procession," and going from place to place to recite elegies (marsiya), preparing dhanya (coriander mixture) and sending it to children through elders as a share or Eid gift, and cooking khichra to distribute it in the community and eating it themselves while feeding the needy - from where is this proven? And baking breads and throwing them as langar (free food) such that they fall into hands or wherever - who is the doer of this act and whose actions are these? And what should a believer do during these ten days regarding the incident of the martyrdom of Imam Hussain (may Allah be pleased with him)? Explain and be rewarded. (T)

Answer: Muslims should increase charity, almsgiving, and good deeds during these days, especially fasting, particularly on the day of Ashura, for which there is reward equivalent to a year's fasting and forgiveness for the past year's sins, as proven in the Sahih Hadith. And it is better to fast on both the ninth and tenth days.

[Arabic Quote: According to the saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "If I remain until the next year, I will surely fast on the ninth." 1]

[Urdu Translation: Because the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "If I remain alive in the coming year, I will certainly fast on the ninth date as well." (T)]

Perform as much charity and send rewards (isāl-e-thawāb) as possible in the blessed name of the prince in the red robe, Imam Hussain, the martyr of Karbala, and other noble martyrs (may Allah be pleased with them). Rather, dedicate the reward of these fasts and all other good deeds to that high-ranking presence. In summers, serve sherbet in their name; in winters, serve tea. And with good intention and pure wealth, make the sherbet, tea, and food as delicious and expensive as desired; it is all good. Distribute khichra, pulao, firni, or whatever is easily available among the community, feed the needy, and feed your family members.

1 Sahih Muslim, Book of Fasting, Chapter on the Day of Ashura, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/359

बेलदारों से गढ़ा खुदवाकर उसमें ताज़िया दफ़न कर देना और तख़्त को वापस लाना और आम लोगों की ये मुरादें माँगना और उनका फ़क़ीर बनाना, घर-घर से माँगकर नियाज़ दिलवाना और रंगीन हरे-हरे कपड़े नए-नए पहनना; अक्सर ऐसा होता है कि बच्चा पैदा होते ही मर जाता है। ऐसी हालत में यह मुराद माँगना कि "या हज़रत इमाम हुसैन! आपकी दुआ से अगर हमारा बच्चा ज़िंदा रहा तो हम दस बरस तक आपके नाम के बच्चे को फ़क़ीर या बहिश्ती या पैक बना देंगे, और दस बरस के बाद बिरादरी, मोहताज या मसायकीन को निहायत खुशी और जुलूस के साथ खाना खिलाकर फ़क़ीरी को खत्म कराएंगे," और जगह-जगह मरसिया जाकर पढ़ना, धनिया बनाकर बिरादरी में बतौर हिस्सा या ईदी की तरह बड़ों में रखकर बच्चों के लिए भेजना और खिचड़ा पकाकर बिरादरी में तक़सीम करना और खुद खाना, मोहताजों को खिलाना - और यह कहाँ से साबित हुआ है? और रोटियाँ पकवाकर इस तरह लंगर लुटाना कि हाथ में गिरें या जहाँ कहीं - इस फ़ेल का करने वाला कौन है और ये अफ़आल किसके हैं? और मोमिन को इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) की शहादत के वाकिए में इन दस दिनों में क्या करना चाहिए? बयान फरमाएं और सवाब पायें। (त)

जवाब: मुसलमानों को इन दिनों में सदक़ात, खैरात और नेक कामों की कसरत करनी चाहिए, विशेषकर रोज़ा, विशेषकर आशूरा का रोज़ा कि इसमें साल भर के रोज़ों का सवाब है और पिछले एक साल के गुनाहों की माफ़ी है, जैसा कि सहीह हदीस से साबित है। और बेहतर यह है कि नौवीं और दसवीं दोनों तारीख का रोज़ा रखे।

[अरबी उद्धरण: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस कथन के कारण: "यदि मैं अगले वर्ष तक जीवित रहा, तो मैं निश्चित रूप से नौवीं तारीख को भी उपवास रखूँगा।" 1]

[उर्दू अनुवाद: इसलिए कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया: "अगर मैं आइंदा साल ज़िंदा रहा तो ज़रूर नौ तारीख का भी रोज़ा रखूँगा।" (त)]

हज़रत शहज़ादा-ए-गुलगूँ क़बा इमाम हुसैन शहीद-ए-कर्बला और अन्य शहीद-ए-कराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के पाक नाम पर जितना हो सके सदक़ा और ईसाल-ए-सवाब करें। बल्कि इन रोज़ों और अन्य तमाम नेकियों का सवाब उन्हीं बुलंद मर्तबा हस्तियों की नज़र करें। गर्मियों में उनके नाम पर शरबत पिलाएं, सर्दियों में चाय पिलाएं। और नेक नीयत और पाक माल से शरबत, चाय और खाने को जितना चाहें लज़ीज़ और कीमती बनाएं, सब खैर है। खिचड़ा, पुलाव, फिरनी, जो चाहें और बिना

किसी दिक़्क़त के मयस्सर हो, बिरादरी में बांटें, मोहताजों को खिलाएं और अपने घर वालों को खिलाएं।

---

1 सहीह मुस्लिम, किताबुस-सियाम, बाब यौम-ए-आशूरा, क़दीमी कुतुब खाना कराची, 1/359

بیلداروں سے گڑھا کھدوا کر اس میں تعزیہ دفن کر دینا اور تخت کو واپس لانا اور عوام الناس کی یہ مرادیں مانگنا اور ان کا فقیر بنانا، گھر گھر سے مانگ کر نیاز دلوانا اور رنگین ہرے ہرے کپڑے نئے نئے پہنا، اکثر ایسا ہوتا ہے کہ بچہ پیدا ہوتے ہی مر جاتا ہے ایسی حالت میں یہ مراد مانگنا کہ یا حضرت امام حسین ! آپ کی دعا سے اگر ہمارا بچہ زندہ رہا تو ہم دس برس تک آپ کے نام کے بچہ کو فقیر یا بہشتی یا پیک بنا دیں گے، اور بعد دس برس کے برادری محتاج یا مساکین کو نہایت خوشی اور جلوس کے ساتھ کھانا کھلا کر فقیری کو ختم کرائیں گے اور جابجا مرثیہ جا کر پڑھنا دھنیا بنا کر برادری میں بطور حصہ یا عیدی کی طرح بڑوں میں رکھ کر بچوں کے لئے بھیجنا اور کھچڑا پکا کر برادری میں تقسیم کرنا اور خود کھانا محتاجوں کو کھلانا اور یہ کہاں سے ثابت ہوا ہے اور روٹیاں پکوا کر اس طرح لنگر لٹانا کہ ہاتھ میں گرے یا جہاں کہیں اس فعل کا کرنے والا کون ہے اور یہ افعال کس کے ہیں اور مومن کو امام حسین رضی اللہ تعالٰی عنہ کی شہادت کے واقعہ میں ان دس ایام میں کیا کرنا چاہئے۔ بینوا توجروا (بیان فرمایئے اجر پایئے ۔ ت)

الجواب: مسلمانوں کو ان ایام میں صدقات و خیرات و میراث و حسنات کی کثرت چاہئے خصوصاً روزے خصوصاً روز عاشورا کہ سال بھر کے روزوں کا ثواب اور ایک سال گزشتہ کے گناہوں کی معافی ہے کماثبت فی الحدیث الصحیح (جیسا کہ صحیح حدیث سے ثابت ہے۔ ت) اور بہتر یہ ہے کہ نویں دسویں دونوں کا روزہ رکھے۔

لقولہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم لئن بقیت الی قابل لاصومن التاسع ۱۔ اس لئے کہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا اگر میں آئندہ سال میں زندہ رہا تو ضرور میں نو تاریخ کا بھی روزہ رکھوں گا (ت)

حضرت شہزادہ گلگوں قبا امام حسین شہید کربلا و دیگر شہدائے کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم کے نام پاک پر جس قدر ہوسکے تصدق و ایصالِ ثواب کریں بلکہ ان روزوں وغیرہا تمام حسنات کا ثواب اسی جناب گردوں قباب کی نذر کریں گرمیوں میں ان کے نام پر شربت پلائیں جاڑے میں چائے پلائیں اور نیک نیت پاک مال سے شربت چائے کھانے کو جتنا چاہیں لذیذ و بیش قیمت کریں سب خیر ہے کھچڑا پلاؤ فرنی جو چاہیں اور بے دقت میسر ہو برادری میں بانٹیں محتاجوں کو کھلائیں اپنے گھر والوں کو کھلائیں

---

۱ صحیح مسلم کتاب الصیام باب یوم عاشوراء قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۳۵۹

Volume 24 Fatawa Rizvia

...with good intention, it's all rewardable. As established in authentic hadiths, to the extent that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whatever you feed yourself is charity for you." (T) As for the question of where 'Khichda' (a grain dish) is proven from - it is from where wedding pilaf and feast 'Zarda' (sweet rice) are proven. These are customary specifications, not Shariah-mandated. Yes, whoever considers it Shariah-mandatory is on falsehood. Baking and distributing bread is also good, but throwing it away is forbidden. Its coming under feet or falling in an impure place causes severe accountability; firstly, disrespecting bread whose honor is commanded in Hadith, and secondly, disrespecting an offering (niyaz). An offering is something to be honored, as indicated by an excellent Hadith in 'Bahjat-ul-Asrar' (As an excellent Hadith mentioned in Bahjat-ul-Asrar points to this. - T). The disrespectful Wahhabis claim that impurity has come into it because of being 'Sadaqah' (charity). This is their own heart's impurity because they have enmity towards the names of Allah's beloveds. Becoming a 'Behishti' (water carrier), if it's free from innovations and not just mere naming and imitation but actual work and action - meaning filling water and giving it to Muslims to drink and for ablution - is certainly a good deed and a cause for reward. Its reward can also be dedicated to the martyrs. However, acting like a 'Paik' (messenger/runner) is mere imitation and absurdly meaningless. Hanging bells is forbidden in Hadith. Similarly, becoming a beggar and asking for alms without necessity or compulsion is prohibited, as many well-known and famous Hadiths declare this meaning. (T) And giving to such people is also prohibited because it is 'assistance in sin' (as mentioned in 'Durr-e-Mukhtar'). And the vow taken to do this for ten years is all futile and forbidden.

The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "There is no vow in an act of disobedience." The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) stated: There is no vow (mannat) in a sinful act. (T)

---

1. Musnad Imam Ahmad bin Hanbal, Hadith of Hazrat Miqdam bin Ma'di Karib, Dar-ul-Fikr Beirut, 4/131.
2. Sunan Abi Dawud, Book of Oaths, Chapter on whoever considers expiation mandatory, Aftab-e-Alam Press Lahore, 2/111.

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

नेक नीयत से, सब सवाब (पुण्य) है। जैसा कि सही हदीसों से साबित है, यहाँ तक कि हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया: "जो कुछ तू अपने आप को खिलाए वो भी तेरे लिए सदक़ा है।" (त) रहा यह कि 'खिचड़ा' कहाँ से साबित हुआ, जहाँ से शादी का पुलाव और दावत का 'ज़रदा' साबित हुआ। ये रस्मी (उर्फी) विशेषताएं हैं न कि शरीअत की, हाँ जो इसे शरीअत के तौर पर ज़रूरी समझे वो बातिल (झूठ) पर है। रोटियाँ पकाकर तक़सीम (वितरित) करना भी भलाई है मगर फेंकना मना है और उनका पाँव के नीचे आना या नापाक जगह गिरना सख़्त शदीद मुआख़ज़ा (जवाबदेही) का सबब है, एक तो रोटी की बेअदबी जिसकी ताज़ीम का हदीस में हुक्म फ़रमाया, दूसरे नियाज़ की चीज़ की बे-तौकीरी, नियाज़ की चीज़ मोअज्ज़म (सम्मानित) होती है जैसा कि इस पर एक उम्दा हदीस दलालत करती है जो बहजतुल असरार में मज़कूर है (त)। बेअदब वहाबियों का कहना कि इसमें तो सदक़ा होने की वजह से ख़बासत आ गई, यह उनके दिल की ख़बासत है कि महबूबाने ख़ुदा के नाम से उन्हें अदावत (दुश्मनी) है। 'बहिश्ती' बनना अगर बिदअतों से पाक हो और महज़ नाम व नक़ल न हो बल्कि काम और फेल हो यानी पानी भर-भर कर मुसलमानों को पिलाएँ वुज़ू कराएँ तो ज़रूर अच्छा काम और बाइसे अज्र (पुण्य का कारण) है और इसका सवाब शहदा-ए-किराम की नज़्र भी हो सकता है। और 'पैक' बनना निरा ढोंग और बेहूदा बे-मक़सद है और घंटे लटकाना हदीस में मना फ़रमाया। इसी तरह फ़क़ीर बनकर बिना ज़रूरत व मजबूरी भीख माँगना हराम है, जैसा कि बहुत सी मशहूर व मारूफ़ हदीसें इस मानी पर नातिक़ (स्पष्ट) हैं (त)। और ऐसों को देना भी हराम है क्योंकि यह गुनाह के काम पर दूसरे की मदद करना है (जैसा कि दुर्रे मुख़्तार में मज़कूर है। त)। और वो मन्नत मानी कि दस बरस तक ऐसा करेंगे, सब बेकार और ममनूअ (वर्जित) है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया: "गुनाह के काम में कोई नज़्र (मन्नत) नहीं।" (त)

1- मुस्नद इमाम अहमद बिन हंबल, हदीस हज़रत मिक़दाम बिन मादी करीब, दारुल फिक्र बेरुत, 4/131 2- सुनन अबी दाऊद किताबुल ईमान बाब मन राआ अलैहि कफ़्फ़ारा, आफ़ताबे आलम प्रेस लाहौर, 2/111

पृष्ठ 720 में से 495

نیک نیت سے، سب ثواب ہے۔ کما ثبت فی الاحادیث الصحاح حتیٰ قال صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ما اطعمت نفسك فهو لك صدقة 1- جیسا کہ صحیح حدیثوں سے ثابت ہے، یہاں تک کہ حضور انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا: جو کچھ تو اپنے آپ کو کھلائے وہ بھی تیرے لئے صدقہ ہے۔ (ت) رہا یہ کہ کھچڑا کہاں سے ثابت ہوا، جہاں سے شادی کا پلاؤ دعوت کا زردہ ثابت ہوا۔ یہ تخصیصات عرفیہ ہیں نہ شرعیہ، ہاں جو اسے شرعاً ضروری جانے وہ باطل پر ہے۔ روٹیاں پکا کر تقسیم کرنا بھی خیر ہے مگر پھینکنا منع ہے اور ان کا پاؤں کے نیچے آنا یا ناپاک جگہ گرنا سخت شدید مواخذہ کا موجب، ایک توروٹی کی بیحرمتی جس کی تعظیم کا حدیث میں حکم فرمایا، دوسرے نیاز کی چیز کی بے توقیری نیاز کی چیز معظم ہوتی ہے کما دلّ علیہ حدیث نفیس فی بھجۃ الاسرار (جیسا کہ اس پر ایک عمدہ حدیث دلالت کرتی ہے جو بھجۃ الاسرار میں مذکور ہے۔ ت) بے ادب وہابیوں کا کہنا کہ اس میں تو صدقہ کے سبب سے اور خباثت آگئی، ان کی قلبی خباثت ہے کہ محبوبان خدا کے نام سے انہیں عداوت ہے، بہشتی بننا اگر بدعات سے خالی ہو اور محض نام و نقل نہ ہو بلکہ کام اور فعل ہو یعنی پانی بھر بھر کر مسلمانوں کو پلائیں وضو کرائیں تو ضرور اچھا کام اور باعث اجر ہے اور اس کا ثواب بھی نذر شہدائے کرام ہو سکتا ہے اور پیک بننا نری نقالی اور بیہودہ بے معنی ہے اور گھنٹے لٹکانا حدیث میں منع فرمایا، یوہیں فقیر بن کر بلا ضرورت و مجبوری بھیک مانگنا حرام، کما نطقت بہ احادیث مستفیضۃ (جیسا کہ بہت سی مشہور و معروف حدیثیں اس معنی پر ناطق ہیں۔ ت) اور ایسوں کو دینا بھی حرام لانہ اعانۃ علی المعصیۃ اس لیے کہ یہ گناہ کے کام پر دوسرے کی امداد کرنا ہے جیسا کہ در مختار میں مذکور ہے۔ ت) اور وہ منت مانی کہ دس برس تک ایسا کریں گے سب مہمل و ممنوع ہے۔ قال صلی

اللہ تعالیٰ علیہ وسلم لا نذر فی معصیۃ 2- حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا گناہ کے کام میں کوئی نذر (منت) نہیں۔ (ت)

1- مسند امام احمد بن حنبل حدیث حضرت مقدام بن معدی کرب دارالفکر بیروت ۴ /۱۳۱ 2- سنن ابی داؤد کتاب الایمان باب من رأی علیہ کفارۃ الخ آفتاب عالم پریس لاہور ۲ /۱۱۱

Volume 24 Fatawa Razawiyya

Yes, seeking help (istimdad), assistance (istianat), prayers (dua), and intercession (shafa'at) in one's needs from our noble master [Imam Hussain] (upon his noble grandfather and upon him be blessings and peace) is permissible and beloved.

Allah the Almighty said: "And seek the means [of approach] to Him." - And Allah the Almighty said: "Those whom they call upon seek the means [of approach] to their Lord."	Allah the Almighty commanded: Search for a means (wasila) to reach the presence of Allah, and Allah the Almighty said: These are the ones whom they worship, [yet] they themselves seek a means to their Lord. (T)

There was no inherent harm in making coriander (dhaniya), eating it, or sending it in bowls to children, but the basis on which it is done is religiously impermissible. Its origin is that those accustomed to eating betel leaves (paan) give it up during the ten days of Muharram out of a sense of mourning. In its place, [eating] coriander was invented. Sharia has commanded a woman to mourn for four months and ten days on her husband's death, and for others, it has allowed mourning up to three days; anything beyond that is forbidden. Renewing mourning every year is not fundamentally permissible for anyone. Then look at the reality: even the claim of grief is false. If a person cannot eat paan in grief, then these formalities of coriander —which cost a hundred times more time and money and provide even more pleasure —will certainly bring a smile to the lips. Similarly, wearing green-colored clothes during the ten days of Muharram is also impermissible as they are for the purpose of mourning. The original dress for mourning is black, which the Rafidhis (Shias) adopted, and it suited them because the color of their hearts is also the same. Secondly, our master Imam Shafi'i (may Allah be pleased with him) said:

"The Shias are the women of this Ummah."	"The Shias are the women of this nation (Ummah)."

Mourning and lamentation come very naturally to women. Our ignorant Sunni brothers avoided black to avoid resemblance with the Rafidhis but chose greenery (green color) which is very close to it. When green becomes dark, it takes on a blackish hue; light black is called green. The sky is blue; in Arabic it is called 'khadra' (greenish), in Persian 'charkh-e-sabza faam' (the green-colored sphere). In Urdu,

when the beard starts growing (mooch bheegna), at that time the blackness of the hair is not very deep, it is called the beginning of 'sabza' (greenery).

1. Al-Quran Al-Karim 5/35
2. Al-Quran Al-Karim 17/57

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

हाँ, हमारे आका हज़रत आली मकाम [इमाम हुसैन], उनके बुज़ुर्ग दादा पर और उन पर दुरुद ओ सलाम हो, से अपनी ज़रूरत में मदद माँगना, सहायता चाहना, दुआ और शफ़ाअत की तलब करना जायज़ और महबूब है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और उसकी तरफ़ वसीला तलाश करो।" - और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "वही हैं जिन्हें वो पुकारते हैं, वो खुद अपने रब की तरफ़ वसीला तलाश करते हैं।"	अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया: अल्लाह तआला की बारगाह तक रसाई के लिए वसीला तलाश करो, और अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया: यही वो हैं जिनकी वो इबादत करते हैं कि वो अपने रब की तरफ़ वसीला तलाश करते हैं। (त)

धनिया बनाने, खाने और बरतनों में रखकर बच्चों को भेजने में अपने आप में कोई हर्ज नहीं था, लेकिन जिस बुनियाद पर यह किया जाता है, वह शरीयत के अनुसार नाज़ायज़ है। इसकी असलियत यह है कि जो लोग पान खाने के आदी हैं, वे मुहर्रम के दस दिनों में सोग (शोक) के ख्याल से पान छोड़ देते हैं, और उसकी जगह धनिया का ईजाद हुआ है। शरीयत ने औरत को शौहर की मौत पर चार महीने दस दिन सोग मनाने का हुक्म दिया है और दूसरों की मौत पर तीन दिन तक की इजाज़त दी है, बाकी हराम है। हर साल सोग को ताज़ा करना तो किसी के लिए भी कतई हलाल नहीं है। फिर हकीकत देखिए तो गम का दावा भी झूठा है; अगर गम में आदमी से पान नहीं खाया जाता, तो धनिये के ये दिखावे कि समय में सौ गुना ज़्यादा और खर्च भी ज़्यादा और लज़्ज़त भी बढ़ गई, ये यक़ीनन होंठों पर मुस्कान लाएंगे। इसी तरह मुहर्रम के दस दिनों के हरे रंगे हुए कपड़े भी नाज़ायज़ हैं, ये भी सोग के मक़सद से हैं। सोग में असल लिबास काला है, जिसे राफ़ज़ियों (शियाओं) ने अपना लिया और उन्हें फबता भी था क्योंकि उनके दिलों की रंगत भी यही है। दूसरे यह कि सैयदुना इमाम शाफ़ई (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया:

"अल-शिया निसाउ हाज़िहिल उम्माह।" "शिया इस उम्मत की औरतें हैं।"

सोग और मातम औरतों को ही खूब आता है। हमारे जाहिल सुन्नी भाई काले रंग से तो बचे ताकि राफ़ज़ियों से समानता न हो, लेकिन उससे बहुत करीबी रंग हरा (सब्ज़ी) चुन लिया। जब हरा रंग गहरा होता है तो उसमें कालापन आ जाता है; हल्के काले रंग को सब्ज़ी कहते हैं। आसमान नीला है, इसे अरबी में 'खज़रा' (हरा), फ़ारसी में 'चर्ख़-ए-सब्ज़ा फ़ाम' (हरे रंग का आसमान) कहते हैं। उर्दू में

मूँछें भीगने को, उस समय बालों की स्याही (कालापन) खूब गहरी नहीं होती, उसे 'सब्ज़ा' का आगाज़ कहते हैं।

1. अल-कुरान अल-करीम 5/35
2. अल-कुरान अल-करीम 17/57

पेज 496/720

ہاں سید نا حضرت عالی مقام علی جدہ الکریم ثم علیہ الصلوۃ والتسلیم سے اپنی حاجت میں استمداد و استعانت و طلب دعا و شفاعت جائز و محبوب،

قال اللہ تعالٰی "وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ" - وقال اللہ تعالٰی "أُوْلَئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَى رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ"۔

اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا: اللہ تعالیٰ کی بارگاہ تک رسائی کے لئے وسیلہ تلاش کرو، اور اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا: یہی وہ ہیں جن کی وہ عبادت کرتے ہیں کہ وہ اپنے رب کی طرف وسیلہ تلاش کرتے ہیں۔ (ت)

دھنیا بنانے کھانے بٹوں میں رکھ کر بچوں کو بھیجنے میں فی نفسہ کچھ حرج نہ تھا مگر وہ مبنی جس کی بنا پر یہ کیا جاتا ہے شرعاً ناجائز ہے، اس کی اصل یوں ہے کہ پان کھانے کے عادی ہیں محرم کے عشرہ میں سوگ کے خیال سے پان چھوڑ دیتے ہیں اس کی جگہ پر دھنیا ایجاد ہوا ہے، شریعت نے عورت کو شوہر کی موت پر چار مہینے دس دن سوگ کا حکم دیا ہے اوروں کی موت کے تیسرے دن تک اجازت دی ہے باقی حرام ہے اور ہر سال سوگ کی تجدید تو کسی کے لئے اصلاً حلال نہیں پھر حقیقت دیکھئے تو دعویٰ غم بھی جھوٹا، غم میں آدمی سے پان نہ کھایا جائے تو دھنیے کے یہ تکلفات کہ وقت میں اس سے سو جگہ زائد اور خرچ بھی زیادہ اور لذت بھی افزوں، یہ ضرور ہونٹ سکیں گے، یو ہیں عشرہ محرم کے سبز رنگے ہوئے کپڑے بھی ناجائز ہیں یہ بھی سوگ کی غرض سے ہیں، سوگ میں اصل سیاہ لباس ہے وہ تو رافضیوں نے لیا اور انہیں زیبا بھی تھا کہ ایک تو ان کے دلوں کی بھی یہی رنگت ہے۔ دوسرے یہ کہ سید نا امام شافعی رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا:

الشيعة نساء هذه الامّة -3 شیعہ اس امت کی عورتیں ہیں۔

سوگ و ماتم عورتوں ہی کو خوب آتے ہیں۔ ہمارے جاہل سنی بھائی سیاہی سے تو بچے کہ رافضیوں کی مشابہت نہ ہو مگر اس سے قریب تر رنگت سبزی پائی اسے اختیار کیا، سبزی جب گہری ہوگی سیاہی لے آئے گی ہلکی سیاہی کو سبزی کہتے ہیں، آسمان نیلا ہے اسے عربی میں خضراء، فارسی میں چرخ سبزہ فام ، کہتے ہیں، اردو میں میں بھیگنے کو، اس وقت بالوں کی سیاہی خوب گہری نہیں ہوتی، سبزہ آغاز کو کہتے ہیں،

1. القرآن الكريم ٥/ ٣٥

2. القرآن الكريم ١٧/ ٥٧ 3.

Therefore, even with this intention, it is impermissible. A Muslim should avoid three colors during the blessed ten days (of Muharram): black, green, and red. The reasons for black and green are already known, and nowadays the wretched Nasibis wear red with the intention of celebration. Dark purple, blue, and lilac are included in black. Moss green, yellowish green, and pistachio green are included in green. Pink, burgundy, and orange are all included in red. In short, if any color resembling these is worn with the intention of mourning or celebration, then it is inherently forbidden; otherwise, it is better to avoid resembling them. Similarly, the elegies (marsiyas) that are prevalent are all forbidden and impermissible. It is mentioned in the Hadith:

"The Messenger of Allah (may Allah send peace and blessings upon him) forbade elegies."

And mourning and beating one's chest are also forbidden; there are numerous famous hadiths explicitly stating their prohibition. To repeat "Hasan, Hasan" with emphasis was mere ignorance, but mourning is strictly forbidden. Similarly, flags (alam), replicas of tombs (ta'ziya), biers (takht), palm branches (jareeda), musical instruments, and all sorts of play and amusement are nonsensical, innovations (bid'ah), and prohibited. Likewise, the ta'ziya, offerings, the house of Imam Bargah, its ceremonial music (naubat), lighting, and decoration are all [considered] as described. This noise and commotion of play and sport in the name of grief and sorrow, and the hope for the pleasure of the honorable Imam through it. And what can be said of this inverted intellect that the reverence for the ta'ziya is such that, God forbid, it is treated exactly like the blessed body of the radiant presence of the exalted Imam, or even more so, to the extent that there is no hesitation in prostrating to it. And on the other hand, what a practice that palanquin bearers, laborers, and others, including non-believers, carry it around, and people are told: "O believers! Lift the funeral bier of Hussain." I seek forgiveness from Allah! Then parading it through streets and alleys, and then breaking it apart and burying it – what a bizarre contradiction. Then in the artificial Karbala, which they treat as the real one, they leave no stone unturned in absurdities and forbidden acts. There are even swings for prostitutes; in fact, a prostitute sits on each platform. What a connection to the exalted Imam, and what a severely heinous act! If only Allah the Almighty would give sense to our brothers that the thousands of rupees they waste in such "virtue destroyed, sin mandatory" activities, they instead gave as charity in the name of the holy martyrs, gave to the poor, or made quilts, comforters, and warm clothes

for them in winter, etc. – how much better that would be. May Allah guide us, Ameen! And Allah the Almighty knows best.

---

1. Musnad Imam Ahmad bin Hanbal on the authority of Abdullah bin Abi Awfa, Al-Maktab al-Islami Beirut, 4/356. Page 497 of 720

इसलिए इस नीयत से यह भी नाजायज़ है। मुसलमान को चाहिए कि मुबारक दस दिनों (मुहर्रम) में तीन रंगों से बचे: काला, हरा और लाल। काले और हरे के कारण तो मालूम हो गए, और आजकल घृणित नासिबी खुशी की नीयत से लाल पहनते हैं। काले में गहरा जामुनी (औदा), नीला, कासनी शामिल हैं। हरे में काहरी, धानी, पिस्तई शामिल हैं। लाल में गुलाबी, अन्नाबी, नारंगी सब शामिल हैं। संक्षेप में, यदि इनमें से कोई भी रंग शोक या खुशी की नीयत से पहना जाए, तो वह स्वयं हराम है, अन्यथा उनकी समानता से बचना बेहतर है। इसी तरह, जो मर्सिये प्रचलित हैं, वे सब हराम और नाजायज़ हैं। हदीस में है:

"अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मर्सियों से मना फ़रमाया है।"

और मातम करना, छाती पीटना भी हराम है; इसके हराम होने पर प्रसिद्ध हदीसें स्पष्ट हैं। "हसन, हसन" ज़ोर देकर कहना तो अज्ञानता ही थी, लेकिन मातम सख़्त मना है। इसी तरह अलम, ताज़िए, तख़्त, जरीदे (खजूर की टहनियाँ), बाजे, खेल-तमाशे सब बेहुदा, बिदअत और वर्जित हैं। इसी तरह ताज़िया, चढ़ावा, इमामबाड़े का मकान, उसकी नौबत, रोशनी, सजावट सब वैसा ही है जैसा बताया गया। शोक और दुख के नाम पर खेल-कूद का यह शोर-शराबा और इस पर हज़रत इमाम की प्रसन्नता की आशा। और इस उल्टी बुद्धि का क्या ठिकाना कि ताज़िए का इतना सम्मान कि मानो (ईश्वर न करे) यह हूबहू इमाम-ए-आली मक़ाम का पवित्र पार्थिव शरीर है, बल्कि उससे भी बढ़कर, यहाँ तक कि इसे सजदा करने में भी कोई झिझक नहीं। और कहाँ यह हरकत कि कहार, बेलदार और अन्य लोग जिनमें काफ़िर भी शामिल हैं, इसे उठाए फिरें और उस पर पुकारा जाए कि "ऐ मोमिनो! हुसैन का जनाज़ा उठाओ।" अस्तगफ़िरुल्लाह! फिर गलियों और कूचों में गश्त, फिर तोड़-फोड़ कर दबा देना कितनी बड़ी विसंगति है। फिर बनावटी कर्बला में जिसे हक़ीक़ी के समान मानते हैं, वे बेहूदगी और वर्जित कार्यों में कोई कसर नहीं छोड़ते। वेश्याओं के झूले तक होते हैं, बल्कि तख़्तों पर एक-एक वेश्या बैठी होती है। कहाँ इमाम-ए-आली मक़ाम से संबंध और कहाँ यह घृणित हरकत! काश अल्लाह अज़्ज़वजल हमारे भाइयों को समझ देता कि हज़ारों रुपये जो वे इस "पुण्य नष्ट, पाप अनिवार्य" जैसे कार्यों में बर्बाद करते हैं, वे उन्हें पवित्र शहीदों के नाम पर दान करते, गरीबों को देते, सर्दियों में उनके लिए लिहाफ़, रज़ाई, गर्म कपड़े बनवाते आदि नेक काम करते तो कितना बेहतर होता। अल्लाह हिदायत दे, आमीन! और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

1. मुसनद इमाम अहमद बिन हनबल, हदीस अब्दुल्ला बिन अबी औफ़ा, अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरूत 4/356. पृष्ठ 497 / 720

لہٰذا اس نیت سے یہ بھی ناجائز، مسلمان کو چاہئے عشرہ مبارک میں تین رنگوں سے بچے: سیاہ، سبز، سرخ۔ سیاہ، سبز کی وجہیں تو معلوم ہو گئیں اور سرخ آج کل ناصبی خبیث خوشی کی نیت سے پہنتے ہیں، سیاہ میں اودا، نیلا، کاسنی۔ سبز میں کاہی، دھانی، پستئی۔ سرخ میں گلابی، عنابی، نارنجی سب داخل ہیں۔ غرض جس پر ان میں کوئی رنگ صادق آئے اگر سوگ یا خوشی کی نیت سے پہنے جب تو خود ہی حرام ہے ورنہ ان کی مشابہت سے بچنا بہتر ہے، یوہیں مرثیے کہ رائج ہیں سب حرام و ناجائز ہیں۔ حدیث میں ہے:

نَھٰی رَسُوْلُ اللہِ صلّی اللہ تعالٰی علیہ وسلم عَنِ المَرَثِی۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے مرثیوں سے منع فرمایا۔

اور ماتم کرنا، چھاتی پیٹنا بھی حرام ہے نطقاً بتتحریمِہِ احادیث بالغۃ حدالاشتہار (درجہ شہرت تک پہنچی ہوئی حدیثیں اس کے حرام ہونے پر ناطق ہیں۔ت) حسن حسن بتشدید کہنا تو جہالت ہی تھا مگر ماتم سخت منع ہے۔ یوہیں عَلَم ، تعزیے، تخت، جریدے، باجے، کھیل تماشے سب بیہودہ و بدعت وممنوع ہیں۔ یوہیں تعزیہ، چڑھاوا، امام باڑے کا مکان، اس کی نوبت، روشنی، آرائش سب بشرحِ صدر ہیں۔ غم والم کا نام اور لہو ولعب کی یہ دھوم دھام اور اس پر امید خوشنودیِ حضرت امام۔ اور اس الٹی مت کا کیا ٹھکانا کہ یہ تو تعزیہ کی وہ تعظیم کہ گویا معاذ اللہ بعینہ یہی نعش مبارکِ حضورِ پر نورِ امامِ عالی مقام ہے بلکہ اس سے بھی زائد، یہاں تک کہ اسے سجدہ کرنے سے بھی باک نہیں۔ اور کہاں یہ حرکت کہ کہار بیلدار و غیر ہم کفار اسے اٹھائے پھریں اور اس پر پڑھایا جائے کہ اسے مومنو! اٹھاؤ جنازہ حسین کا۔ استغفراللہ، پھر گلی کوچوں میں گشت، پھر توڑ تاڑ کر دبا دینا کتنی شتر گربگی ہے، پھر مصنوعی کربلا میں جسے حقیقی کے مثل ٹھہراتے ہیں،

کوئی دقیقہ لغویات و ممنوعات کا اٹھا نہیں رکھتے، رنڈیوں کے جھولے تک ہوتے ہیں بلکہ تختوں پر ایک ایک رنڈی جلوہ گر ہوتی ہے، کہاں امامِ عالی مقام کی طرف نسبت اور کہاں یہ سخت شنیع حرکت، کاش اللہ عزوجل ہمارے بھائیوں کو سمجھ دیتا کہ ہزاروں روپے جو یوں نیکی برباد گناہ لازم میں تباہ کرتے انہیں حضراتِ شہیدانِ پاک کے نام پر تصدق کرتے، مساکین کو دیتے جاڑے میں ان کے لحاف رضائی گرم کپڑے بناتے وغیرہ وغیرہ افعالِ حسنہ کرتے تو کتنا بہتر ہوتا۔ اللہ ہدایت دے آمین! واللہ تعالٰی اعلم۔

۱۔ مسند امام احمد بن حنبل عن عبداللہ بن ابی اوفیٰ المکتب الاسلامی بیروت ۴/ ۳۵۶ صفحہ ۴۹۷ از ۷۲۰

Fatawa Razawiyya Volume 24

Problem 182 and 183: Asked by Maulana Zafaruddin Sahab, 26 Muharram-ul-Haram 1330 AH. Are these anecdotes present in the discourses (Malfoozat) of Hazrat Sayyid Abdur Razzaq Hanswi (may his secret be sanctified) or not? (1) It was the 10th of Muharram. The mentioned Maulana joined a Tazia procession belonging to weavers, which people were taking to be buried in a simulated Karbala. Due to him, servants and disciples also joined and stayed together until Karbala, even staying there for a long time. After a few days, some special disciples asked, and he said, "I have no concern with the Tazias. I joined after seeing the exalted Imam, as there was a gathering of saints with him." (2) There is a story of the same elder that one day on Ashura, he was sitting in the mosque performing ablution. His blessed cap was placed on the parapet when suddenly he came down bareheaded in the same manner and joined a Tazia. This time, when people inquired, he said that Hazrat Sayyidat-un-Nisa (Fatima) was present. To what extent are both narrations correct?

The Answer: Both anecdotes are purely false and baseless. Tazia-worshippers find neither any legal (Shari'i) proof nor any statement from a reliable authority; they resort to fabricating stories. Stories of this nature are attributed by some to Shah Abdul Aziz Sahab, by some to Maulana Shah Abdul Majid Sahab, by some to Hazrat Maulana Fazl-e-Rasool Sahab, by some to Maulvi Fazl-ur-Rahman, and by some to my own noble grandfather (may Allah's mercy be upon them all), and all are void and fabricated. I am still alive, and it was said about me that we saw him going with a Tazia or perhaps an 'Alam (standard), and the falsehood of this story is evident from the statement itself: "I have no concern with the Tazias. I joined after seeing the exalted Imam, as there was a gathering of saints with him." Subhan Allah! When Tazias are so venerable, accepted, and beloved in the court that the luminous presence of the Imam of the people (peace and blessings be upon him and his noble grandfather) personally accompanies them and walks with them, then to have "no concern" with them would mean having no concern with the beloved and venerable of Allah Almighty, which is unbecoming of a saint, let alone any Muslim. Then observe the concluding words: "there was a gathering of saints with him." This 'kaf' cannot be explanatory; it must be causal. Meaning, even being with the Imam wouldn't warrant attention, but what to do, there was a gathering of saints with him, so he had to join. One needs skill even to commit a flaw. Yes, I remember well, on 31 Jamadi-ul-Akhira 1327 AH, a question came from Tulsar stating that you have made Tazia-dari permissible; what is the truth of this news? A...

फ़तावा रज़विया खंड 24

मसाला 182 और 183: प्रेषित मौलाना ज़फ़रुद्दीन साहब, 26 मुहर्रम-उल-हराम 1330 हिजरी। क्या हज़रत सैय्यद अब्दुर रज़्ज़ाक हांसवी (उनका रहस्य पवित्र हो) के मलफूज़ात (वचनों) में ये कहानियाँ हैं या नहीं? (1) मुहर्रम की दसवीं तारीख थी। उल्लेखित मौलाना जुलाहों के एक ताज़िये के साथ हो लिए, जिसे लोग कृत्रिम कर्बला में दफनाने के लिए ले जा रहे थे। आपकी वजह से सेवक और शिष्य भी साथ हो लिए और कर्बला तक साथ रहे, बल्कि वहाँ काफी देर रुके। कुछ दिनों बाद कुछ विशेष शिष्यों ने पूछा तो फरमाया, "मुझे ताज़ियों से कोई सरोकार नहीं है। हम तो इमाम-ए-आली मक़ाम को देखकर उनके साथ हो लिए थे क्योंकि उनके साथ औलिया-ए-कराम (संतों) का मजमा (समूह) था।" (2) उन्हीं बुजुर्ग का किस्सा है कि एक दिन आशूरा को वे मस्जिद में बैठे वज़ू कर रहे थे। उनकी मुबारक़ टोपी मुँडेर पर रखी थी कि अचानक वे उसी तरह नंगे सिर नीचे आ गए और एक ताज़िये के साथ हो लिए। इस बार लोगों ने पूछा तो फरमाया कि हज़रत सैय्यदा-तुन-निसा (फातिमा) तशरीफ़ लाई थीं। दोनों रिवायतें (वर्णन) कहाँ तक सही हैं?

जवाब: दोनों कहानियाँ बिल्कुल गलत और निराधार हैं। ताज़ियादारों को न तो कोई शरीयत की दलील मिलती है और न ही किसी विश्वसनीय व्यक्ति का कथन; वे मजबूरी में कहानियाँ गढ़ते हैं। इसी तरह की कहानियाँ कोई शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब से जोड़ता है, कोई मौलाना शाह अब्दुल मजीद साहब से, कोई हज़रत मौलाना फज़ल-ए-रसूल साहब से, कोई मौलवी फज़लुर रहमान से, कोई मेरे दादा हज़रत से (अल्लाह उन पर रहम करे), और सब झूठी और बनावटी हैं। मैं तो अभी जीवित हूँ, मेरे बारे में कह दिया गया कि हमने उन्हें ताज़िये या शायद अलम के साथ जाते देखा, और इस कहानी का झूठ खुद उसी बात से ज़ाहिर है कि फरमाया: "मुझे ताज़ियों से कोई सरोकार नहीं है। हम तो इमाम-ए-आली मक़ाम को देखकर साथ हो लिए थे कि उनके साथ संतों का मजमा था।" सुभान अल्लाह! जब ताज़िये इतने आदरणीय, स्वीकार्य और दरबार में प्रिय हैं कि स्वयं इमाम-ए-अनाम (उन पर और उनके महान दादा पर शांति और दुआएँ हों) स्वयं उनकी शोभा बढ़ाते हैं और उनके साथ चलते हैं, तो उनसे "कोई सरोकार न होना" अल्लाह के प्रिय और आदरणीय से सरोकार न होना है, जो किसी वली तो क्या, किसी मुसलमान की शान नहीं। फिर आगे के शब्दों पर गौर करें कि "उनके साथ संतों का मजमा था।" यहाँ 'काफ' वर्णनात्मक नहीं हो सकता, यह निश्चित रूप से कारण बताने वाला (ता'लीलिया) है। यानी हज़रत इमाम के साथ होने पर भी कोई ध्यान न दिया जाता, लेकिन क्या करें, उनके साथ संतों का मजमा था इसलिए शामिल होना पड़ा। बुराई करने के लिए भी हुनर

चाहिए। हाँ, अच्छी तरह याद आया, 31 जमादि-उल-आखिरा 1327 हिजरी को तलसर से एक सवाल आया था कि आपने ताज़िया-दारी को जायज़ कर दिया है; इस खबर की हकीकत क्या है? एक...

पृष्ठ 498 का 720

مسئلہ ۱۸۲ و ۱۸۳: مسئولہ مولانا ظفر الدین صاحب ۲۶ محرم الحرام ۱۳۳۰ھ ملفوظات حضرت سید عبدالرزاق بانسوی قدس سرہ میں یہ حکایتیں ہیں یا نہیں ؟ (۱) محرم کی دس تھی کہ حضرت مولانا ممدوح ایک تعزیہ کے ساتھ ہولئے جو جلاہوں کا تھا اور مصنوعی کربلا میں دفن ہونے کے لئے لوگ لئے جاتے تھے آپ کی وجہ سے اور خدام و مریدین بھی ساتھ ہولئے کربلا تک ساتھ ساتھ رہے بلکہ دیر تک قیام فرمایا کچھ دنوں بعد بعض خاص مریدین نے پوچھا تو فرمایا کہ مجھے تعزیوں سے کچھ مطلب نہیں ہم تو امام عالی مقام کو دیکھ کر ساتھ ہولئے تھے کہ ان کے ساتھ اولیائے کرام کا مجمع تھا۔ (۲) انہیں بزرگ کا قصہ ہے کہ ایک دن عاشورہ کو مسجد میں بیٹھے وضو کر رہے تھے ٹوپی مبارک فصیل پر رکھی تھی کہ یکایک اسی طرح سر برہنہ نیچے تشریف لے آئے اور ایک تعزیہ کے ساتھ ہولئے اس دفعہ لوگوں نے دریافت کیا تو فرمایا کہ حضرت سیدۃ النساء تشریف فرما تھیں۔ دونوں روایتیں کہاں تک صحیح ہیں ؟

الجواب: دونوں حکایتیں محض غلط و بے اصل ہیں، تعزیہ داروں کو نہ کوئی دلیل شرعی ملتی ہے نہ کسی معتمد کا قول، مجبورانہ حکایت بناتے ہیں، اسی ساخت کی حکایت کوئی شاہ عبدالعزیز صاحب سے نقل کرتا ہے، کوئی مولانا شاہ عبدالمجید صاحب سے، کوئی حضرت مولانا فضل رسول صاحب سے، کوئی مولوی فضل الرحمن سے، کوئی میرے حضرت جدامجد سے، رحمتہ اللہ علیہم، اور سب باطل و مصنوع ہیں۔ میں تو ابھی زندہ ہوں میری نسبت کہہ دیا کہ ہم نے اسے تعزیہ شاید علم بتائے کہ ان کے ساتھ جاتے دیکھا اور اس حکایت کا کذب تو خود اسی سے روشن کہ فرمایا: "مجھے تعزیوں سے کچھ مطلب نہیں ہم تو امام عالی مقام کو دیکھ کر ساتھ ہولئے تھے کہ ان کے ساتھ اولیائے کرام کا مجمع تھا"۔ سبحان اللہ! جب تعزیے ایسے معظم و مقبول و محبوب

بارگاہ ہیں کہ خود حضور پر نور امام انام علی جدہ الکریم ثم علیہ الصلوٰۃ والسلام بنفس نفیس ان کی مشایعت فرماتے ہیں، ان کے ساتھ چلتے ہیں تو ان سے کچھ مطلب نہ ہونا اللہ عزوجل کے محبوب و معظم سے مطلب نہ ہونا ہے جو ولی تو ولی کسی مسلمان کی شان نہیں۔ پھر آگے تتمہ کلام ملاحظہ ہو کہ "اُن کے ساتھ اولیائے کرام کا مجمع تھا" یہ کاف بیانیہ تو ہو نہیں سکتا ضرور تعلیلیہ ہے یعنی حضرت امام کے ساتھ ہونے پر بھی کچھ توجہ نہ ہوتی مگر کیا کیجئے ان کے ساتھ مجمع اولیاء تھا لہٰذا شامل ہونا پڑا۔ عیب بھی کرنے کو ہنر چاہئے، ہاں خوب یاد آیا ۳۱ جمادی الآخرہ ۱۳۲۷ھ کو تلسر سے ایک سوال آیا تھا کہ تو نے تعزیہ داری کو جائز کر دیا ہے اس خبر کی کیا حقیقت ہے؟ ایک

The Rafidi proudly quotes this narration; also, a fatwa of yours and a few other scholars of Bareilly has been prepared stating that the Pure Wives (Azwaj-e-Mutahhirat) are not included under the Verse of Purification (Ayat-e-Tathir). A copy of this fatwa was seen with that Rafidi, that's all. Now say, what more proof is needed? When this is the treatment with the living, whatever is said regarding the revival of the people of the Barzakh (afterlife) is less. And Allah Almighty knows best.

Amir Ali, Sarnia District Bareilly, 11 Muharram 1331 AH. Problem 182: What do the Muftis of the luminous Shariah say regarding this matter: some people who are from the Ahl-e-Sunnat-o-Jama'at believe in vows of 'Tazia', 'Alam' (banners), and 'Mehndi'. They take these to the original Tazia-holder's Tazia to offer them. They bring sweets and various kinds of food there to offer 'Fatiha' (prayers for the deceased) and distribute it as 'Tabarruk' (sacred blessings). While taking it from home, they recite 'Marsiya' (elegies) loudly every four steps. The sound of drums, 'tashe', 'majeere' (cymbals), etc., is loud. Often they beat their chests, calling it 'Maatam' (mourning). It is often seen that women go around from the evening of the 7th and 9th and from the dawn of the 10th to watch the 'Alam', 'Mehndi', 'Tazia', and men, etc. Often during the ten days (Ashura), from morning till evening at the place designated as 'Karbala Sharif', everyone watches the spectacles. Many men and women, after burying the Tazia, place bread and sweets on the grave, mourn, and then offer Fatiha. Furthermore, Zaid, being from the Ahl-e-Sunnat, goes to the Tazia to read the mention of martyrdom, i.e., what they call a 'majlis', with enthusiasm, and also recites Marsiya. Further, if a 'Takht' or 'Alam' etc. goes from one village to another or from one neighborhood to another, Amr should not go to see it and should not participate at the grave site. Further, Bakr says that on these days, Fatiha will not be offered for anyone except Imam Hussain (peace be upon him), not for any prophet or saint. Further, Zaid says that there is no harm in going to see the workmanship and beauty of the 'Takht' and 'Tazia' etc. Further, Zaid says that fasting for ten days is forbidden because Yazid's mother kept it for the purpose of winning the battle. What is the Shariah ruling on all these questions?

The Answer: 'Alam', 'Tazia', 'Mehndi', their vows, processions, offerings, drums, 'tashe', 'majeere', 'marsiyas', 'maatam', going to artificial Karbala, women coming out to see Tazias—all these things are forbidden, sinful, illegitimate, and prohibited. Fatiha is permissible, whether on bread, sweets, or sherbet. However, placing it on a Tazia or being in front of it is ignorance. Considering it 'Tabarruk' because it was

offered on it is foolishness. Yes, if separate from the Tazia, with a pure and sincere intention, an offering (Niyaz) is made for the honorable martyrs (Allah be pleased with them), that is certainly 'Tabarruk'. The wretched Wahhabi who calls it wretched is himself wretched. One should not even participate in the sherbet of 'Tazia-dars' so that it is not considered participation in Tazia, but rather separate sherbet...

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

राफ़ज़ी बड़े गर्व से इस रिवायत को उद्धृत करता है; साथ ही आपका और बरेली के कुछ अन्य विद्वानों का एक फ़तवा तैयार हुआ है कि 'आयत-ए-ततहीर' के अंतर्गत पवित्र पत्नियाँ (अज़वाज-ए-मुतह्हरात) शामिल नहीं हैं। इस फ़तवे की एक प्रति उस राफ़ज़ी के पास देखी गई है, बस इतना ही। अब बताइए, इससे बड़ा और क्या प्रमाण चाहिए? जब जीवितों के साथ यह व्यवहार है, तो बरज़ख (परलोक) के लोगों के पुनरुद्धार के संबंध में जो कुछ भी कहा जाए वह कम है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

अमीर अली, सरनिया ज़िला बरेली, 11 मुहर्रम 1331 हिजरी। मसला 182: शरीअत के मुफ़्ती इस मामले में क्या कहते हैं कि जो लोग सुन्नत जमात के हैं, वे 'ताज़िया', 'अलम' और 'मेहंदी' की मन्नतें मानते हैं। वे उन्हें असली ताज़ियादार के ताज़िया पर ले जाकर चढ़ाते हैं और वहां मिठाई और हर तरह का खाना ले जाकर 'फ़ातिहा' पढ़ते हैं और उसे 'तबर्रुक' (प्रसाद) के रूप में बांटते हैं। घर से ले जाते समय हर चार कदम पर ज़ोर-ज़ोर से 'मर्सिया' (शोक गीत) पढ़ते हैं और ढोल, ताशे, मजीरे आदि की आवाज़ तेज़ होती है और अक्सर छाती पीटते हैं जिसे वे मातम कहते हैं। अक्सर देखा गया है कि औरतें सात और नौ तारीख की शाम से और दस की सुबह से 'अलम', 'मेहंदी' और 'ताज़िया' देखने के लिए और मर्दों आदि का नज़ारा करने के लिए निकलती हैं। अक्सर अशरा (मुहर्रम के दस दिन) के दौरान सुबह से शाम तक जिसे 'कर्बला शरीफ़' करार दिया गया है, वहां हर कोई तमाशा देखता है। अक्सर पुरुष और स्त्रियां ताज़िया दफन करके कब्र पर रोटी और मिठाई रखकर मातम करते हैं और फिर फ़ातिहा देते हैं। इसके अलावा ज़ैद सुन्नत जमात का होकर ताज़िया पर जाकर शहादत का ज़िक्र यानी जिसे वे मजलिस कहते हैं, बड़े शौक से जाकर पढ़ता है और मर्सिया भी। इसके अलावा, एक गांव से दूसरे गांव या एक मोहल्ले से दूसरे मोहल्ले में जब 'तख्त' या 'अलम' आदि जाता है, तो अम्र को उसे देखने नहीं जाना चाहिए और न ही कब्र के स्थान पर शामिल होना चाहिए। इसके अलावा बक्र कहता है कि इन दिनों में इमाम हुसैन (अलैहिस्सलाम) के अलावा किसी भी पैगंबर या औलिया-ए-किराम की फ़ातिहा नहीं होगी। इसके अलावा ज़ैद कहता है कि तख्त और ताज़िया आदि की कारीगरी और खूबसूरती देखने जाने में कोई नुकसान नहीं है। इसके अलावा ज़ैद कहता है कि दस दिन रोज़ा रखना हराम है क्योंकि यज़ीद की माँ ने जंग जीतने की नीयत से रोज़ा रखा था। इन सभी सवालों का शरीअत में क्या हुक्म है?

अल-जवाब (उत्तर): अलम, ताज़िया, मेहंदी, उनकी मन्नत, गश्त (जुलूस), चढ़ावा, ढोल, ताशे, मजीरे, मर्सिया, मातम, कृत्रिम कर्बला जाना, औरतों का ताज़िया देखने निकलना—ये सभी बातें हराम, गुनाह, नाजायज़ और मना हैं। फ़ातिहा जायज़ है, चाहे वह रोटी, मिठाई या शरबत पर हो। लेकिन ताज़िया पर रखकर या उसके सामने होना अज्ञानता है और उस पर चढ़ाने के कारण उसे तबर्रुक समझना मूर्खता है। हाँ, अगर ताज़िया से अलग, शुद्ध और सच्ची नीयत से शहीद महानुभावों (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की 'नियाज़' (प्रसाद) हो, तो वह निश्चित रूप से तबर्रुक है। वह खबीस (नीच) वहाबी जो इसे खबीस कहता है, वह स्वयं खबीस है। ताज़ियादारों के शरबत में भी शामिल न हों ताकि इसे ताज़िया में शामिल होना न समझा जाए, बल्कि अलग शरबत...

पृष्ठ 499/720

رافضی بڑے فخر سے اس روایت کو نقل کرتا ہے ایضاً تیرا اور دیگر چند علمائے بریلی کا فتویٰ تیار ہوا ہے کہ آیت تطہیر کے تحت میں ازواج مطہرات داخل نہیں، اس فتویٰ کی نقل اس رافضی کے پاس دیکھنے میں آئی ہے فقط، اب فرمائیے اس سے بڑھ کر اور کیا ثبوت درکار، جب زندوں کے ساتھ یہ برتاؤ ہے تو احیائے عالم برزخ کی نسبت جو ہو کم ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

امیر علی سرنیا ضلع بریلی ۱۱ محرم ۱۳۳۱ھ مسئلہ ۱۸۲: کیا فرماتے ہیں مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ جو اشخاص سنت جماعت ہوں وہ منت تعزیہ و عَلَم و مہندی کی مانتے ہیں ان کو اصل تعزیہ دار کے تعزیہ پر لے جا کر چڑھاتے ہیں اور شیرینی اور کھانا ہر قسم کا لیجا کر وہاں فاتحہ دیتے ہیں اور اس کو بطور تبرک کے تقسیم کرتے ہیں اور گھر سے لیجاتے وقت چار چار قدم پر مرثیہ بآوازِ بلند پڑھتے ہیں اور ڈھول تاشے مجیرے وغیرہ کی آواز بلند ہوتی ہے اور اکثر چھاتی کوٹتے ہیں اس کو ماتم قرار دیتے ہیں، اکثر عورت کو دیکھا ہے کہ سات و نو تاریخ کی شام سے اور دس کی فجر سے گشت کرتی ہیں عَلَم و مہندی و تعزیہ اور آدمیوں وغیرہ کا نظارہ کرتی ہیں اور اکثر عشرہ کو صبح سے شام تک جس کو کربلا شریف قرار دیا ہے ہر ایک تماشے دیکھتے ہیں اکثر لوگ اور عورت تعزیہ کو دفن کر کے روٹی اور شیرنی قبر پر رکھ کر ماتم کرتے اور پھر فاتحہ دیتے ہیں، دیگر زید سنت جماعت ہو کر تعزیہ پر جا کر ذکرِ شہادت یعنی جس کو مجلس قرار دیتے ہیں شوق سے جا کر پڑھتے ہیں مرثیہ بھی، دیگر ایک گاؤں سے دوسرے گاؤں میں یا ایک محلہ سے دوسرے محلہ میں تحت یا عَلَم وغیرہ جائے عمرو دیکھنے نہ جائے اور شرکتِ تربت دے، دیگر بکر کہتا ہے کہ ان یوم میں فاتحہ سوائے امام حسین علیہ السلام کے اور کسی پیغمبر اور اولیاء کرام کی نہیں ہوگی۔ دیگر زید کہتا ہے کہ تخت اور تعزیہ وغیرہ کا کام اور

خوشنمائی دیکھنے جائے تو کوئی نقصان نہیں ہے۔ دیگر زید کہتا ہے کہ دس یوم روزہ رکھنا حرام ہے کیونکہ یزید کی ماں نے بغرض لڑائی جیت کے رکھی تھی۔ ان سب سوالوں کا شرع میں کیا حکم ہے؟

الجواب: عَلَم، تعزیے، مہندی، ان کی منت، گشت، چڑھاو، ڈھول، تاشے، مجیرے، مرثیے، ماتم، مصنوعی کربلا کو جانا، عورتوں کا تعزیے دیکھنے کو نکلنا، یہ سب باتیں حرام و گناہ و ناجائز و منع ہیں۔ فاتحہ جائز ہے روٹی شیرینی شربت جس چیز پر ہو، مگر تعزیہ پر رکھ کر یا اس کے سامنے ہونا جہالت ہے اور اس پر چڑھانے کے سبب تبرک سمجھنا حماقت ہے ہاں تعزیہ سے جدا ہو خالص سچی نیت سے حضرات شہدائے کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم کی نیاز ہو وہ ضرور تبرک ہے وہابی خبیث کہ اسے خبیث کہتا ہے وہ خود خبیث ہے۔ تعزیہ داروں کے شربت میں بھی شرکت نہ کرے کہ تعزیہ میں شرکت سمجھی جائے گی بلکہ الگ شربت...

...should do, and nowadays as it is the winter season, tea should be served instead of sherbet. Offering Niyaz (consecrated food) in the name of all Prophets and Saints (may peace and blessings be upon them) and Fatiha for every Muslim is permissible at all times and in every era, even if it is specifically during the ten days [of Muharram]. Anyone who says otherwise is wrong and is slandering the pure Sharia. It is also a sin to go and watch forbidden acts as entertainment. Fasting during the ten days of Muharram brings great reward and is highly virtuous. Their excellence is mentioned in Hadiths, especially fasting on the 10th of Muharram, which carries a reward equal to a year's worth of fasting and brings forgiveness for a year's sins. Zaid is a liar and is slandering the noble Sharia by calling these fasts forbidden. And Allah Almighty knows best.

Problem 185: From Badaun, Jalandhari Mohalla, asked by Mr. Muhammad Idris Khan, 28 Muharram al-Haram 1331 AH.

What do the scholars of religion and muftis of the clear Sharia say regarding this issue: is it permissible to make and take out Taziyas, Alam (standards), Bairaq (flags), Mehndi, etc., to demonstrate the grandeur and majesty of Islam? Furthermore, what is the ruling on considering Taziya as a fulfiller of needs (Hajat Rawa) or saying that the Taziya is our vow (Mannat) and if we stop making it, our children and wealth will suffer loss? Is it permissible to eat meat slaughtered by a Taziya-dar (one who keeps a Taziya) or a Taziya-parast (Taziya worshipper)?

The Answer: Alams, Taziyas, Bairaqs, and Mehndi, as they are currently prevalent, are innovations (Bid'at), and the grandeur of Islam does not come from innovation. Considering Taziya as Hajat Rawa, i.e., a means to fulfill needs, is ignorance upon ignorance. Regarding it as a vow is foolishness, and thinking that not doing it causes loss is a feminine superstition. A Muslim should refrain from such actions and thoughts. Nevertheless, a Taziya-dar is a Muslim and the meat slaughtered by his hand is certainly halal. Not even the most ignorant Muslim considers the Taziya to be a deity. The term 'Taziya-parast' (Taziya worshipper) is an exaggeration of the Wahhabis/polytheism-accusers, just as they label Muslims as 'Qabar-parast' (grave worshippers) for showing respect and honor to blessed shrines. All this is their ignorance and injustice. And Allah Almighty knows best.

Problem 186: From Sitapur, Mohalla Qaziyara, house of Qazi Syed Muhammad Raza Sahib, 7 Rabi al-Akhir 1331 AH.

What do the scholars of religion say about this issue: how is it to make a Taziya? And how is it to offer sweets etc. on it? What is the ruling of Sharia for the one who makes it and the one who honors it? And how is it to call someone an infidel (Kafir) or an apostate (Murtad) because they believe in the impermissibility of Taziya, or to consider them an infidel and not pray behind them? And how is it to pray behind someone who is excessive in Taziya-dari? Please explain and be rewarded.

...करना चाहिए, और आजकल जबकि सर्दियों का मौसम है, शरबत की जगह चाय होनी चाहिए। मुहर्रम वगैरह हर वक्त हर ज़माने में तमाम अंबिया और औलिया किराम (उन पर सलाम और रहमत हो) की नियाज़ और हर मुसलमान की फ़ातिहा जायज़ है, चाहे वह मुहर्रम के खास दस दिनों में ही क्यों न हो। इसके अलावा जो कुछ कहता है वह गलत है और शरीयत-ए-मुतह्हरा (पवित्र शरीयत) पर आरोप लगाता है। जो काम नाजायज़ है उसे तमाशे के तौर पर देखने जाना भी गुनाह है। मुहर्रम के दस दिनों के रोज़े बहुत सवाब और निहायत अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) हैं। हदीसों में उनकी फ़ज़ीलत (महिमा) बयान की गई है, विशेष रूप से दसवें मुहर्रम का रोज़ा, जिसका सवाब साल भर के रोज़ों के बराबर है और एक साल के गुनाहों की माफ़ी है। ज़ैद झूठा है और शरीयत-ए-मुतह्हरा पर आरोप लगाता है कि वह इन रोज़ों को हराम बताता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला १८५: बदायूँ, मोहल्ला जालंधरी से, प्रेषक मुहम्मद इदरीस खाँ साहब, २८ मुहर्रम अल-हराम १३३१ हिजरी।

क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस मसले में कि इस्लाम की शान-ओ-शौकत और दबदबे के लिए ताज़िया बनाना और निकालना, अलम, बैरक और मेहंदी वगैरह निकालना जायज़ है या नहीं? इसके अलावा, ताज़िया को हाजत-रवा (ज़रूरतें पूरी करने वाला) समझना या यह कहना कि ताज़िया हमारी मन्नत का है, अगर हम इसे बनाना बंद कर दें तो हमारी औलाद और माल का नुकसान होगा, यह कैसा है? ताज़ियादार या ताज़ियापरस्त के हाथ का ज़बीहा (ज़बह किया हुआ जानवर) खाना जायज़ है या नहीं?

अल-जवाब: अलम, ताज़िया, बैरक, मेहंदी जिस तरह से प्रचलित हैं, वे बिदअत (नवाचार) हैं और बिदअत से इस्लाम की शान-ओ-शौकत नहीं बढ़ती। ताज़िया को हाजत-रवा यानी हाजत पूरी करने का ज़रिया समझना जहालत पर जहालत है, इसे मन्नत मानना हिमाक़त (मूर्खता) है, और इसे न करने को नुकसान का कारण समझना औरतों वाला वहम है। मुसलमान को ऐसी हरकतों और खयालों से बचना चाहिए। इसके बावजूद ताज़ियादार मुसलमान है और उसके हाथ का ज़बीहा यकीनन हलाल है। कोई बड़े से बड़ा जाहिल मुसलमान भी ताज़िया को माबूद (उपास्य) नहीं मानता। 'ताज़ियापरस्त' शब्द वहाबियों की ज़्यादती है, जैसे वे मज़ारत-ए-तय्यबा की ताज़ीम-ओ-तकरीम करने वाले

मुसलमानों को 'क़ब्रपरस्त' का खिताब देते हैं। यह सब उनकी जहालत और ज़ुल्म है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला १८६: सीतापुर, मोहल्ला क़ज़ियारा, काज़ी सैयद मुहम्मद रज़ा साहब का मकान, ७ रबी-उल-आख़िर १३३१ हिजरी।

क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मसले में कि ताज़िया बनाना कैसा है? और उस पर शीरीनी (मिठाई) वगैरह चढ़ाना कैसा है? और इसे बनाने वाले और इसकी ताज़ीम करने वाले के लिए शरीयत का क्या हुक्म है? और जो व्यक्ति ताज़िया के नाजायज़ होने का कायल है, उसे काफ़िर या मुर्तद कहना और काफ़िर समझकर उसके पीछे नमाज़ न पढ़ना कैसा है? और ताज़ियादारी में गुलू (अतिशयोक्ति) करने वाले के पीछे नमाज़ पढ़ना कैसा है? बयान फरमाएं ताकि आपको सवाब मिले।

पृष्ठ ७२० का ५००

کرے اور آجکل کہ جاڑے کا موسم ہے شربت کی جگہ چائے ہونا چاہئے۔ محرم وغیرہ ہر وقت ہر زمانہ میں تمام انبیاء و اولیاء کرام علیہم الصلوٰۃ والسلام کی نیاز اور ہر مسلمان کی فاتحہ جائز ہے اگر چہ خاص عشرہ کے دن ہو۔ بجز غلط کہتا ہے اور شریعتِ مطہرہ پر افتراء کرتا ہے، جو کام ناجائز ہے اسے تماشے کے طور پر دیکھنے جانا بھی گناہ ہے۔ عشرہ محرم کے روزے بہت ثواب نہایت افضل ہے۔ حدیثوں میں ان کی فضیلت ارشاد ہوئی ہے خصوصاً دسویں محرم کا روزہ کہ سال بھر کے روزوں کے برابر ثواب ہے اور ایک سال کے گناہوں کی معافی ہے۔ زید جھوٹا ہے اور شرعِ شریف پر افتراء کرتا ہے کہ ان روزوں کو حرام بتاتا ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۸۵: از بدایوں محلہ جالندھری مسئولہ محمد ادریس خاں صاحب ۲۸ محرم الحرام ۱۳۳۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ بناء بر شوکت و دبدبہ اسلام تعزیہ بنانا اور نکالنا، علم و بیرق اور مہندی وغیرہ نکالنا جائز ہے یا نہیں؟ نیز تعزیہ کو حاجت روا سمجھنا یا یہ کہنا کہ تعزیہ ہماری منت کا ہے اگر بند کریں نہ بنائیں تو ہمارا نقصان اولاد و مال ہوگا، کیسا ہے؟ تعزیہ دار یا تعزیہ پرست کے ہاتھ کا ذبیحہ کھانا درست ہے یا نہیں؟

الجواب: علم، تعزیہ، بیرق، مہندی جس طرح رائج ہیں بدعت ہیں اور بدعت سے شوکتِ اسلام نہیں ہوتی۔ تعزیہ کو حاجت روا یعنی ذریعہ حاجت روا سمجھنا جہالت پر جہالت ہے اور اسے منت جاننا اور حماقت، اور نہ کرنے کو باعث نقصان خیال کرنا زنانہ وہم ہے مسلمان کو ایسی حرکات و خیال سے باز آنا چاہئے۔ بایں ہمہ تعزیہ دار مسلمان ہے اور اس کے ہاتھ کا ذبیحہ ضرور حلال ہے کوئی جاہل ساجاہل مسلمان بھی تعزیہ کو معبود نہیں جانتا، تعزیہ پرست کا لفظ وہابیہ شرک پرست کی

زیادتی ہے جس طرح تعظیم و تکریم مزاراتِ طیبہ پر مسلمانوں کو قبر پرست کا لقب دیتے ہیں، یہ سب ان کا جہل و ظلم ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۸۶: از سیتا پور محلہ قضیارہ مکان قاضی سید محمد رضا صاحب ۷ ربیع الآخر ۱۳۳۱ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ تعزیہ بنانا کیسا ہے؟ اور اس پر شیرینی وغیرہ چڑھانا کیسا ہے؟ اور بنانے والے اور تعظیم کرنے والے کا عندالشرع کیا حکم ہے؟ اور جو شخص تعزیہ کے ناجوازی کا قائل ہے اس کو کافر یا مرتد کہنا اور کافر سمجھ کر اس کے پیچھے نماز نہ پڑھنا کیسا ہے؟ اور تعزیہ داری میں غلو کرنے والے کے پیچھے نماز پڑھنا کیسا ہے؟ بینوا توجروا۔

Fatawa Rizvia Volume 24

The Answer: The prevalent Taziya is impermissible and an innovation (bid'ah). Making it is a sin and disobedience, and offering sweets etc. upon it is pure ignorance, and its veneration is an innovation and ignorance. And whoever calls the person who says Taziya is impermissible a Kafir (disbeliever) or Murtad (apostate) on this basis, it is a most severe and major sin; the speaker must renew their Islam and marriage. Similarly, not praying behind someone for this reason is rejected and void. However, if a Wahhabi is called a Kafir or Murtad, there is no harm, and praying behind a Wahhabi is undoubtedly impermissible. One who is excessive in Taziya-dari or is known for it, even if not excessive, one should not pray behind them, but if prayed, it will be valid, though it is forbidden to make him an Imam. And Allah Almighty knows best.

Issue 178 to 191: Sent by Respected Maulana Muhammad Abu Zar from Sambhal, District Moradabad, Mohalla Debasrai. What do the scholars of Ahl-e-Sunnat wa Jama'at (may Allah have mercy on them and be kind to them) say regarding the following issues: (1) Is it permissible to convey rewards (Isal-e-Thawab) to the soul of our master Imam Hussain (peace be upon him) on the day of Ashura or not? (2) Is it permissible to make Taziya, take out Mehndi, and light up the night of Ashura or not? (3) Is it permissible to establish a gathering for the mention of martyrdom and in it read the elegies (Marsiya) of Dabir and Anis etc. from the speech of Rafidis (Shias) as melodious recitation (Soz Khawani) or recitation? And is it disliked (Makruh), prohibited (Haram) or permissible for the people of Sunnah to participate in such gatherings? (4) Is the marriage of Hazrat Qasim in the field of Karbala, on the basis of which Mehndi is taken out, proven according to the Ahl-e-Sunnat or not? In case of lack of proof of this incident, is it disrespectful to the family of the Prophet to attribute the daughter of Hazrat Imam Hasan (peace be upon him) to Hazrat Qasim? (5) Is it permissible to hold a fair (mela) on the day of Ashura, bury Taziyas, and recite Fatiha over them or not? And is it permissible to establish gatherings for the 12th and 20th of Muharram and 20th of Safar, and for Teja (3rd day), Daswan (10th day), and Chaliswan (40th day) and hold a fair or not?

The Answer: (1) Conveying rewards to the victorious soul of the fragrant flower of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), our master Imam Hussain (may Allah be pleased with him), in a correct manner on Ashura and every day is recommended (mustahabb) and good (mustahsan). (2) Taziya, Mehndi, and lighting as mentioned, are all innovation and impermissible. (3) The gathering of the

noble mention itself, in which their virtues, merits, and correct and reliable Hadiths and narrations...

उत्तर: प्रचलित ताज़िया नाजायज़ और बिदअत (नवाचार) है और इसे बनाना गुनाह और अवज्ञा है और इस पर मिठाई आदि चढ़ाना महज़ जहालत है और इसकी ताज़ीम (सम्मान) बिदअत और जहालत है। और जो ताज़िया को नाजायज़ कहने वाले को इस आधार पर काफ़िर या मुर्तद कहे, यह बहुत बड़ा और घोर पाप है, कहने वाले को इस्लाम और निकाह का नवीनीकरण करना चाहिए। इसी तरह, इस कारण से उसके पीछे नमाज़ न पढ़ना रद और बातिल है। अलबत्ता अगर किसी वहाबी को काफ़िर या मुर्तद कहा जाए तो कोई हर्ज नहीं, और वहाबी के पीछे नमाज़ यक़ीनन नाजायज़ है। जो ताज़ियादारी में अतिरेक करता हो या उसके लिए प्रसिद्ध हो, चाहे अतिरेक न भी करता हो, उसके पीछे नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिए, लेकिन अगर पढ़ ली जाए तो हो जाएगी, हाँ, उसे इमाम बनाना मना है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसाला १७८ से १९१: प्रेषित जनाब मौलवी मोहम्मद अबू ज़र, संभल जिला मुरादाबाद, मोहल्ला देबा सराय से। अहले सुन्नत व जमाअत के उलेमा (अल्लाह उन पर रहम करे और करम करे) निम्नलिखित मसलों में क्या फरमाते हैं: (१) आशूरा के दिन सैयदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की रूह को ईसाल-ए-सवाब करना जायज़ है या नहीं? (२) ताज़िया बनाना और मेहंदी निकालना और शब-ए-आशूरा को रोशनी करना जायज़ है या नहीं? (३) ज़िक्र-ए-शहादत की मजलिस कायम करना और उसमें दबीर और अनीस वगैरह राफ़ज़ियों (शियाओं) का कलाम सोज़ख़्वानी के तौर पर या ज़बानी पढ़ना जायज़ है या नहीं? और अहले सुन्नत का ऐसी मजलिसों में शामिल होना मकरूह है या हराम या जायज़ है? (४) हज़रत क़ासिम की शादी का मैदान-ए-कर्बला में होना जिस आधार पर मेहंदी निकाली जाती है, अहले सुन्नत के नज़दीक साबित है या नहीं? इस घटना के सबूत न होने की सूरत में हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम की साहबज़ादी का संबंध हज़रत क़ासिम की तरफ करना ख़ानदान-ए-नुबुव्वत के साथ बेअदबी है या नहीं? (५) आशूरा के दिन मेला लगाना और ताज़ियों को दफन करना और उन पर फातिहा पढ़ना जायज़ है या नहीं? और बारहवीं और बीसवीं मुहर्रम और बीसवीं सफ़र को तीजा, दसवां और चालीसवां और मजलिसें कायम करना और मेला लगाना जायज़ है या नहीं?

उत्तर: (१) अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के महकते फूल सैयदना इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) की रूह-ए-पुरफ़ुत्ूह को सही तरीके से आशूरा के दिन और हर दिन सवाब पहुँचाना मुस्तहब (पसंदीदा) और मुस्तहसन (अच्छा) है। (२) ताज़िया, मेहंदी, रोशनी जिसका ज़िक्र

किया गया, सब बिदअत और नाजायज़ है। (३) ज़िक्र-ए-शरीफ की मजलिस का नफ़्स (मूलत:), जिसमें उनके फज़ाइल और मनाकिब और सही और मोतबर हदीसों और रिवायतों से...

الجواب: تعزیہ رائج ناجائز وبدعت ہے اور اس کا بنانا گناہ ومعصیت اور اس پر شیرینی وغیرہ چڑھانا محض جہالت اور اس کی تعظیم بدعت و جہالت۔ اور جو تعزیہ کو ناجائز کہے اس بنا پر اسے کافر یا مرتد کہنا اشد عظیم گناہِ کبیرہ ہے، کہنے والے کو تجدید اسلام ونکاح چاہئے، یونہیں اس وجہ سے اس کے پیچھے نماز نہ پڑھنا مردود و باطل ہے البتہ اگر کسی وہابی کو کافر مرتد کہا تو مضائقہ نہیں، اور وہابی کے پیچھے نماز بیشک ناجائز ہے، جو تعزیہ داری میں غلو رکھے یا اس سے معروف ہوا گرچہ غلو نہ رکھے اس کے پیچھے بھی نماز نہ چاہئے مگر پڑھیں تو ہو جائے گی ، ہاں اسے امام بنانا منع ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۱۷۸ تا ۱۹۱: مرسلہ جناب مولوی محمد ابوزر از سنبھل ضلع مراد آباد محلہ دیبا سرائے کیا فرماتے ہیں علمائے اہل سنت وجماعت رحمہم اللہ و کرمہم اللہ تعالیٰ مسائل ذیل میں: (۱) ایصالِ ثواب بر روح سیدنا امام حسین علیہ السلام بروز عاشورہ جائز ہے یا نہیں؟ (۲) تعزیہ بنانا اور مہندی نکالنا اور شب عاشورہ کو روشنی کرنا جائز ہے یا نہیں؟ (۳) مجلس ذکرِ شہادت قائم کرنا اور اس میں مرثیہ دبیر اور انیس وغیرہ روافض کے کلام پڑھنا بطور سوز خوانی یا تحت اللفظ جائز ہے یا نہیں اور اہل سنت کو ایسی مجالس میں شریک ہونا مکروہ ہے یا حرام یا جائز ہے؟ (۴) حضرت قاسم کی شادی کا میدانِ کربلا میں ہونا جس بنا پر مہندی نکالی جاتی ہے اہلسنت کے نزدیک ثابت ہے یا نہیں؟ در صورتِ عدمِ ثبوت اس واقعہ میں حضرت امام حسن علیہ السلام کی صاحبزادی کی نسبت حضرت قاسم کی طرف کرنا خاندانِ نبوت کے ساتھ بے ادبی ہے یا نہیں؟ (۵) روز عاشورہ کو میلہ قائم کرنا اور تعزیوں کو دفن کرنا اور ان پر فاتحہ پڑھنی جائز ہے یا نہیں؟

اور بارھویں اور بیسویں محرم اور بیسویں صفر کو تیجا اور دسواں اور چالیسواں اور مجلسیں قائم کرنا اور میلہ لگانا جائز ہے یا نہیں؟

الجواب: (۱) روحِ پر فتوح ریحانہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سیدنا امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو ایصالِ ثواب بروجہ صواب عاشورہ اور ہر روز مستحب و مستحسن ہے۔ (۲) تعزیہ مہندی روشنی مذکور سب بدعت و ناجائز ہے۔ (۳) نفسِ ذکرِ شریف کی مجلس جس میں ان کے فضائل ومناقب واحادیث وروایاتِ صحیحہ ومعتبرہ سے

...be narrated and there should be no mourning, then it is commendable. And elegies (Marsiya) are forbidden, especially those of the Rafidis, as they are rarely free from cursed insults (Tabarra). It is forbidden for Sunnis to participate in such gatherings.

(4) Neither is this marriage proven, nor is this henna (Mehndi) anything but an invented innovation. Nor is this misrepresentation to the extent of reaching specific insults.

(5) The Ashura fair is frivolous, vain, and forbidden. Similarly, the burial of Ta'ziyahs (replicas of the tomb of Hussain) in the manner it is done is based on false intentions and venerating them is an innovation (Bid'at). Reciting Fatiha over a Ta'ziyah is ignorance, foolishness, and meaningless. The state of gatherings and fairs has been mentioned above. Also, the answer regarding gifting of reward (Isal-e-Thawab) is that it is commendable every day when it is done in a permissible way. Allah Almighty knows best.

Issue 192: From Moradabad Bazar Sambhal, sent by Allah Bakhsh Sahib. What do the scholars of the religion and the jurists of the bright Shari'ah say on this issue? Zaid went to a Ta'ziyah and made a vow: "I am taking a date from here; if my work is completed, I will have a silver date made and offer it next year." Please explain, and may you be rewarded.

The Answer: This vow is completely void and impermissible. Allah Almighty knows best.

Issue 193: From Berar, Nirpur Soneth, Darwha district, Yavatmal, Mohammad Zaman alias Sheikh Jhu, Wednesday, 12 Dhu al-Qi'dah 1333 AH. What do the scholars of the firm religion say on this issue? A person calls Ta'ziyah-dari (the practice of making Ta'ziyahs) permissible. If someone denies it, he treats them harshly. For instance, when the Imam of the mosque in Darwha, Yavatmal district, Berar province, denied it and said that Ta'ziyah-dari is strictly forbidden, he said, "You are wrong, and your imamate is not valid. You eat pork and consume haram." Upon this, all the Muslims of the town gathered and asked him, and he told all the Muslims, "You all eat pork." He also said that leading prayers for a wage is not permissible. Now the question is, how far is this person's statement correct? Is Ta'ziyah-dari right? And is leading prayers for a wage not permissible? If someone calls all Muslims pork-eaters, is he a sinner and a transgressor (Fasiq) or not? Should he repent or not? How should

Muslims treat such a person? A Muslim has income from farming and trade, and also from interest. Is it permissible to eat at such a person's house or not? If a Muslim eats there, will they be called an interest-eater, or is it permissible to call them so? Is celebrating the "Eid of sixteen lamps" in the month of Shah Madar permissible according to books of jurisprudence or not?

...बयान किए जाएं और गम-परवरी न हो, तो यह मुस्तहसन (सराहनीय) है। और मरसिए हराम हैं, खास तौर पर राफिज़ियों के, क्योंकि वे शापित अपशब्दों (तबर्रा) से शायद ही खाली होते हैं। सुन्नियों के लिए ऐसी मजलिसों में शामिल होना हराम है।

(४) न यह शादी साबित है न यह मेहंदी सिवाय एक नई ईजाद (बिदअत) के और कुछ नहीं। न ही यह गलतबयानी खास तौहीन की हद तक पहुँचने वाली है।

(५) आशूरा का मेला फालतू, खेल-तमाशा और वर्जित है। इसी तरह ताज़ियों का दफन जिस तरह से किया जाता है, वह गलत नीयत पर आधारित है और उनकी ताज़ीम (सम्मान) बिदअत है। ताज़िए पर फातिहा पढ़ना अज्ञानता, मूर्खता और अर्थहीन है। महफिलों और मेलों का हाल ऊपर बताया जा चुका है। साथ ही सवाब पहुँचाने (ईसाल-ए-सवाब) का जवाब यह है कि यह हर दिन अच्छा है बशर्ते कि जायज़ तरीके से हो। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला १९२: मुरादाबाद बाज़ार संभल से, प्रेषक अल्लाह बख्श साहब। क्या उलेमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस बारे में क्या फरमाते हैं कि ज़ैद ने एक ताज़िए पर जाकर यह मन्नत मानी कि "मैं यहाँ से एक खजूर ले जा रहा हूँ; अगर मेरा काम पूरा हो गया, तो अगले साल चाँदी का खजूर बनवाकर चढ़ाऊँगा।" कृपया उत्तर दें, आपको पुण्य मिलेगा।

जवाब: यह मन्नत पूरी तरह बातिल (अमान्य) और नाजायज़ है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला १९३: मुल्क बरार, स्थान नीरपुर सोनीथ, मोहल्ला दारव्हा, ज़िला यवतमाल से, मोहम्मद ज़माँ उर्फ शेख झूँ, बुधवार, १२ ज़ुल-क़ादा १३३३ हिजरी। क्या उलेमा-ए-दीन-ए-मतीन इस मसले में क्या फरमाते हैं कि एक व्यक्ति ताज़िया-दारी को जायज़ कहता है। अगर कोई इनकार करता है, तो वह उसके साथ कड़ाई से पेश आता है। यहाँ तक कि जब दारव्हा तहसील, ज़िला यवतमाल, प्रांत बरार की मस्जिद के पेश इमाम ने मना किया और कहा कि ताज़िया-दारी सख्त मना है, तो उसने कहा कि "तुम गलत कहते हो और तुम्हारी इमामत जायज़ नहीं है, तुम सूअर खाते हो और हराम खाते हो।" इस पर बस्ती के तमाम मुसलमान इकट्ठा हुए और उससे पूछा, तो उसने तमाम मुसलमानों से कहा कि "तुम सब सूअर खाते हो।" और कहा कि मज़दूरी पर इमामत जायज़ नहीं है। अब सवाल यह है कि ऐसे व्यक्ति की बात कहाँ तक सही है? क्या ताज़िया-दारी सही है? और क्या उजरत (मज़दूरी) पर इमामत जायज़ नहीं है? और जो तमाम मुसलमानों को सूअर खाने वाला कहे, तो क्या वह गुनहगार

और फासिक़ है या नहीं? उसे तौबा करनी चाहिए या नहीं? मुसलमानों को ऐसे व्यक्ति के साथ कैसा व्यवहार रखना चाहिए? एक मुसलमान की आमदनी खेती और व्यापार से भी है और सूद (ब्याज) से भी, तो क्या ऐसे व्यक्ति के यहाँ खाना खाना सही है या नहीं? अगर किसी मुसलमान ने उसके यहाँ खाना खाया, तो क्या उसे सूद खाने वाला कहेंगे, या ऐसा कहना उसके लिए जायज़ है या नहीं? शाह मदार के महीने में 'सोलह चिरागों की ईद' मनाना फ़िक्ह की किताबों के अनुसार जायज़ है या नहीं?

पृष्ठ ५०२/७२०

بیان کئے جائیں اور غم پروری نہ ہو مستحسن ہے اور مرثیے حرام خصوصاً رافضیوں کے کہ تبرائے ملعونہ سے کمتر خالی ہوتے ہیں اہلسنت کو ایسی مجالس میں شرکت حرام ہے۔

(۴) نہ یہ شادی ثابت نہ یہ مہندی سوا اختراع اخترائی کے کوئی چیز۔ نہ یہ غلط بیانی حد خاص توہین تک بالغ۔

(۵) عاشورہ کا میلہ لغو ولہو و ممنوع ہے۔ یو ہیں تعزیوں کا دفن جس طور پر ہوتا ہے نیت باطلہ پر مبنی اور تعظیم بدعت ہے اور تعزیہ پر فاتحہ جہل و حمق وبے معنی ہے۔ مجلسوں اور میلوں کا حال اوپر گزرا، نیز ایصال ثواب کا جواب کہ ہر روز محمود ہے جبکہ بوجہ جائز ہو۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۱۹۲: از مراد آباد بازار سنبھل مرسلہ اللہ بخش صاحب کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے تعزیہ پر جا کر یہ منت مانی کہ میں یہاں سے ایک خرما لئے جاتا ہوں در صورتِ کام پورا ہونے کے سالِ آئندہ میں نقرئی خرما تیار کرا کر چڑھاؤں گا۔ بینوا توجروا۔

الجواب: یہ نذر محض باطل و ناجائز ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۱۹۳: از ملک برار مقام نیر پور سونیتھ محلہ داروہ ضلع ایوت محل محمد زماں عرف شیخ جھو چہار شنبہ بتاریخ ۱۲ ذو القعدہ ۱۳۳۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین متین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص تعزیہ داری کو جائز کہتا ہے اگر کوئی انکار کرتا ہے تو سخت کلامی سے پیش آتا ہے چنانچہ پیش امام مسجد نیز واقع تعلقہ داروہ ضلع ایوت محل ملک برار نے جب انکار کر کے کہا کہ

تعزیہ داری سخت منع ہے تو اس نے کہا کہ تم خلاف کہتے ہو اور تمہاری امامت جائز نہیں ہے تم سور کھاتے اور حرام کھاتے ہو۔ اس پر تمام بستی کے مسلمانوں نے جمع ہو کر اس سے پوچھا تو تمام مسلمانوں کو کہا کہ تم سب سور کھاتے ہو۔ اور کہا کہ اجرت پر امامت جائز نہیں۔ اب سوال یہ ہے کہ ایسے شخص کا قول کہاں تک صحیح ہے؟ کیا تعزیہ داری درست ہے اور اجرت پر امامت جائز نہیں؟ اور جو تمام مسلمانوں کو سور کھانے والا بولے تو وہ گنہگار ہے فاسق ہے یا نہیں اسے توبہ کرنا چاہئے یا نہیں؟ مسلمانوں کو ایسے شخص سے برتاؤ کیا رکھنا چاہئے؟ ایک مسلمان کی آمدنی کھیتی و تجارت سے بھی ہے اور سود سے بھی ہے ایسے شخص کے یہاں کھانا کھانا درست ہے یا نہیں؟ اگر کسی مسلمان نے اس کے یہاں کھانا کھایا تو اس کو سود کھانے والا کہیں گے یا ایسا کہنا اس کو جائز ہے یا نہیں؟ شاہ مدار کے مہینہ سولہ چراغوں کی عید کرنا کتب فقہ سے جائز ہے یا نہیں؟

Fatawa Rizvia, Volume 24

The Answer: Ta'ziya-dari is impermissible, and the fatwa (legal ruling) is that taking wages for leading prayers (Imamat) is permissible, as mentioned in 'Radd al-Muhtar' and most other major books. For a person who has both halal (permissible) and haram (forbidden) income, eating their food is not prohibited until it is known that this specific food is from haram earnings. In 'Al-Dhakhirah' and 'Fatawa 'Alamgiri', it is narrated from Imam Muhammad (may Allah be pleased with him):

"We adopt this as long as we do not know a specific thing to be haram."[1] | We choose this path until we know of something specific being prohibited. (t)

It is a different matter that eating at a usurer's place should ideally be from halal money, but to categorically call someone who eats there a 'usurer' is a slander against the Sharia. Calling common Muslims such names is an even more devilish act. Repentance is obligatory for such a person, and they must seek forgiveness from Muslims. If they do not desist and persist in this behavior, they are considered a transgressor (fasiq), and they should be treated as the law prescribes for a transgressor. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"Whoever harms a Muslim has harmed me, and whoever harms me has harmed Allah."[2] | Whoever harms a Muslim without a Sharia reason has harmed me, and whoever harms me has harmed Allah Almighty.

Indeed, such a person has harmed many Muslims and has become an oppressor. The Great Quran forbids sitting with oppressors. Allah the Almighty says:

"And if the devil makes you forget, then after recollection, do not sit with the wrongdoing people."[3] | If the devil makes you forget, then do not sit with the oppressors after remembering. (t)

What is this 'Eid of Sixteen Lamps'? What is done in it? What is the intention? This practice does not exist at all in our region, and its state has never been heard of. An answer can be given once details are provided. And Allah knows best.

[1] Fatawa Hindiyyah, Book of Disliked Acts, Chapter 12, Noorani Kutub Khana Peshawar, 5/342. [2] Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 3633, Maktabat al-Ma'arif Riyadh, 4/373. [3] The Holy Quran, 6/68.

फ़तावा रज़विया, खंड 24

उत्तर: ताज़िया-दारी नाजायज़ है और फतवा यह है कि इमामत पर उजरत (मज़दूरी) लेना हलाल है, जैसा कि 'रद-अल-मुह्तार' और अधिकांश अन्य बड़ी किताबों में वर्णित है। जिस व्यक्ति की आय हलाल और हराम दोनों तरह की हो, उसके यहाँ खाना तब तक हराम नहीं होता जब तक यह ज्ञात न हो कि यह विशेष भोजन हराम धन से है। 'अज़-ज़खीरा' और 'फ़तावा आलमगिरी' में इमाम मुहम्मद (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से वर्णित है:

"हम इसे तब तक अपनाते हैं जब तक कि हम किसी विशिष्ट वस्तु को हराम न जान लें।"[1] | हम इसी को पसंद करते हैं जब तक किसी विशेष चीज़ के हराम होने को न जान लें। (त)

यह दूसरी बात है कि सूदखोर के यहाँ खाना भले ही हलाल धन से होना चाहिए, लेकिन उसके यहाँ खाने वाले को स्पष्ट रूप से 'सूदखोर' कहना शरीयत पर कलंक लगाना है। आम मुसलमानों को ऐसा कहना और भी अधिक शैतानी शब्द है। ऐसे व्यक्ति पर तौबा (पश्चाताप) करना अनिवार्य है और उसे मुसलमानों से माफ़ी माँगनी चाहिए। यदि वह नहीं मानता और इस पर अड़ा रहता है, तो वह फासिक (उल्लंघन करने वाला) है और उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए जैसा कि एक फासिक के साथ करने का आदेश है। अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) फ़रमाते हैं:

"जिसने किसी मुसलमान को कष्ट पहुँचाया, उसने मुझे कष्ट पहुँचाया और जिसने मुझे कष्ट पहुँचाया, उसने अल्लाह को कष्ट पहुँचाया।"[2] | जिसने किसी मुसलमान को बिना किसी शरीयत के कारण कष्ट पहुँचाया, उसने मुझे कष्ट पहुँचाया, और जिसने मुझे कष्ट पहुँचाया, उसने अल्लाह अज़्ज़-व-जल को कष्ट पहुँचाया।

निश्चित रूप से, उसने इतने मुसलमानों को कष्ट पहुँचाया कि वह अत्याचारी (ज़ालिम) हो गया, और महान कुरान में अत्याचारियों के साथ बैठने से मना किया गया है। अल्लाह तआला का फ़रमान है:

"और यदि शैतान आपको भुला दे, तो याद आने के बाद ज़ालिमों के साथ न बैठो।"[3] | यदि शैतान आपको भुला दे तो फिर याद आने के बाद ज़ालिमों के पास न बैठो। (त)

यह 'सोलह चिरागों की ईद' कैसी होती है? इसमें क्या-क्या किया जाता है? क्या नीयत होती है? हमारे क्षेत्र में यह बिल्कुल नहीं है और इसके बारे में कभी सुनने में नहीं आया। विस्तार मिलने पर ही उत्तर दिया जा सकता है। और अल्लाह बेहतर जानता है।

[1] फ़तावा हिंदीया, किताब-उल-कराहीया, अध्याय 12, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 5/342। [2] अल-मुअजम अल-अवसत, हदीस 3633, मकतबत-उल-मआरिफ़ रियाद, 4/373। [3] पवित्र कुरान, 6/68।

الجواب: تعزیہ داری ناجائز ہے اور فتوٰی اس پر ہے کہ امامت پر اجرت لینا حلال ہے کما فی ردالمحتار وعامۃ الاسفار (جیسا کہ فتاوٰی شامی اور عام بڑی بڑی کتابوں میں مذکور ہے۔ت) جس کے یہاں حلال وحرام دونوں طرح کی آمدنی ہے اس کا کھانا حرام نہیں ہوتا جب تک معلوم نہ ہو کہ یہ خاص کھانا حرام مال سے ہے۔ ذخیرہ وفتاوٰی عالمگیریہ میں امام محمد رضی اللہ تعالٰی عنہ سے ہے:

به نأخذ ما لم نعرف شیئا حراما بعینه ۱۔ | ہم اسی کو اختیار کرتے ہیں جب تک کسی معین چیز کے حرام ہونے کو نہ جانیں۔ (ت)

یہ دوسری بات ہے کہ سودخور کے یہاں کھانا اگرچہ حلال مال سے ہو چاہئے مگر مطلقاً اس کے کھانے والے کو سود کھانے والا کہنا شریعت پر افترا ہے اور عام مسلمانوں کو ایسا کہنا اور زیادہ شیطانی لفظ ہے اس پر توبہ فرض ہے اور مسلمانوں سے معافی مانگے ،اگر نہ مانے اور اصرار کئے جائے تو وہ فاسق ہے اس سے وہی برتاؤ چاہئے جو ایک فاسق سے کرنے کا حکم ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

من اذی مسلما فقد اذانی ومن اذانی فقد اذی اللہ ۲۔ | جس نے کسی مسلمان کو بلا وجہ شرعی ایذا دی اس نے مجھے ایذا دی اور جس نے مجھے ایذا دی اس نے اللہ عزوجل کو ایذا دی۔

اس نے اتنے مسلمانوں کو ایذا دی بے شک وہ ظالم ہوا اور ظالم کے پاس بیٹھنے کو قرآن عظیم میں منع فرمایا، قال اللہ تعالٰی:

"وَإِمَّا يُنسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرَىٰ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ " ۳ | اگر تمہیں شیطان بھلا دے تو پھر یاد آنے کے بعد ظالموں کے پاس نہ بیٹھو (ت)

یہ سولہ چراغوں کی عید کیسی ہوتی ہے اس میں کیا کیا جاتا ہے کیانیت ہوتی ہے ہمارے دیار میں یہ بالکل نہیں اس کا حال کبھی سننے میں نہیں آیا تفصیل ہونے پر جواب ہوسکتا ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

۱ فتاوی ہندیۃ کتاب الکراہیۃ الباب الثانی عشر نورانی کتب خانہ پشاور ۵ / ۳۴۲ ۲ المعجم الاوسط حدیث ۳۶۳۳ مکتبۃ المعارف ریاض ۴ / ۳۷۳ ۳ القرآن الکریم ۶ / ۶۸

Fatawa Razawiyya Volume 24

Problem 194: Asked by Sayyid Maqbool Isa Miyan Sahib, Bareilly, No Mahalla, 7 Safar 1335 AH. What do the scholars of religion and jurists of the firm Shariah say about this matter: that making a Tazia (replica of a tomb) is an evil innovation (Bid'at-e-Sayyi'ah)? Or is it polytheism (Shirk) and a major sin? Explain and be rewarded. **Answer:** Making a Tazia is not polytheism; this is a Wahhabi view. However, it is an innovation and a sin. And Allah the Almighty knows best.

Problem 195: From Budaun, Islam Nagar, sent by Aziz Hasan Constable, 24 Rabi-ul-Awwal 1336 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: if a person makes a Tazia, or offers an offering on a Tazia, or recites elegies (Marsiya), or participates in a gathering of Marsiya, or plays musical instruments, or participates in it, or distributes sweets, or eats them, or feeds them, or gives charity on a fixed date? Are these things permissible in the religion of Islam on the 7th, 9th, and 10th dates of Muharram or not? If permissible, what is the proof? The proof should include the name of the book, page, and line, and be from the Quran and Hadith. If it is impermissible, then also write the proof with the page, line, and from the Quran and Hadith. **Answer:** Distributing sweets, feeding people, reciting Fatiha, offering Niaz—even if it is with a fixed date—as long as this fixing of the date is not considered a religious obligation (Wajib-e-Shari), these matters are permissible in Shariah. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Whoever among you has the power to benefit his brother, let him benefit him."[1] Imam Badr al-Din Mahmud al-Ayni, in *Binayah Sharh Hidayah*, has narrated the consensus (Ijma) of the Ummah on the excellence of conveying reward (Isal-e-Thawab) and stated that this is the creed of the Ahl al-Sunnah wa'l-Jama'at. As for the other things mentioned in the question—Tazia, musical instruments, Marsiya, and gatherings of Marsiya, and offerings on a Tazia—all these are impermissible, innovations, and sins. And Allah the Almighty knows best.

Problem 196: From village Omri Kalan, Post Office Kanth, District Moradabad, sent by Zafar Ahsan Sahib, 6 Muharram-ul-Haram 1337 AH. What do the scholars of religion say in this matter that the start of the first of Muharram was from the time of Shah Timur; it was not part of the Sunnat-o-Jama'at. The pictures of the shrines there, which are attributed to Imam Hussain (may Allah be pleased with him)...

[1] Sahih Muslim, Book of Salam, Chapter: Recommendation of Ruqyah from the Evil Eye, etc., Qadimi Kutub Khana Karachi, 4/224.

फ़तावा रजविया जिल्द 24

मसला 194: मुस्तफ़सिर (पूछने वाले) सैय्यद मकबूल ईसा मियां साहब, बरेली, नौ महल्ला, 7 सफ़र 1335 हिजरी। दीन के उलेमा और मज़बूत शरीयत के मुफ़्तियाने-किराम इस बारे में क्या फरमाते हैं कि ताज़िया बनाना बिदअते सय्यिया (बुरी ईजाद) है, या शिर्क और गुनाहे कबीरा (बड़ा पाप) है? बयान फरमाएं और सवाब पाएं। **अल-जवाब:** ताज़िया बनाना शिर्क नहीं है, यह वहाबियों का ख्याल है, हाँ बिदअत और गुनाह है। वल्लाह तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला 195: बदायूं, इस्लाम नगर से मुर्सला (भेजने वाले) अज़ीज़ हसन कांस्टेबल, 24 रबी-उल-अव्वल 1336 हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फरमाते हैं कि अगर कोई व्यक्ति ताज़िया बनाए या ताज़िया पर चढ़ावा चढ़ाए या मर्सिया (शोकगीत) पढ़े या मर्सिया की महफ़िल में शामिल हो या बाजा बजाए या उसमें शरीक हो या शीरीनी (मिठाई) तक़सीम करे या खाए या खिलाए या तारीख़ मुक़र्रर करके खैरात करे, मुहर्रम की सातवीं, नौवीं और दसवीं तारीख को ये बातें मज़हबे इस्लाम में जायज़ हैं या नहीं? अगर जायज़ हैं तो क्या सुबूत है? सुबूत किताब के नाम, सफ़ा (पेज) और सतर (लाइन) के साथ और क़ुरआन व हदीस से हो। अगर नाजायज़ हो तो भी सुबूत सफ़ा, सतर और क़ुरआन व हदीस के साथ तहरीर फरमाएं। **अल-जवाब:** शीरीनी तक़सीम करना, खाना खिलाना, फ़ातिहा देना, नियाज़ दिलाना, अगरचे तारीख़ के तईयुन (निश्चित करने) के साथ हो, जब तक कि इस तईयुन को वाजिबे शरई (धार्मिक अनिवार्यता) न समझा जाए, ये बातें शरीयत में जायज़ हैं। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "तुम में से जो कोई अपने भाई को फायदा पहुँचाने की ताक़त रखता है, उसे अपने भाई को फायदा पहुँचाना चाहिए।"[1] इमाम बदरुद्दीन महमूद ऐनी ने 'बिनाया शरह हिदाया' में ईसाले सवाब की खुबी पर इजमा-ए-उम्मत (उम्मत की सहमति) नक़ल फरमाया है और फरमाया है कि अहले सुन्नत व जमाअत का यही मज़हब है। बाकी जो बातें सवाल में हैं, ताज़िया, बाजा, मर्सिया और मर्सिया की मजलिसें और ताज़िया का चढ़ावा, ये सब नाजायज़, बिदअत और गुनाह हैं। वल्लाह तआला आलम।

मसला 196: मौज़ा उमरी कलां, डाकखाना कांठ, जिला मुरादाबाद से मुर्सला ज़फ़र अहसन साहब, 6 मुहर्रम-उल-हराम 1337 हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फरमाते हैं कि अव्वल मुहर्रम का जारी होना शाह तैमूर के वक्त से हुआ, यह सुन्नत व जमाअत में से नहीं था। वहां के रौज़ों की तस्वीरें जो इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से मंसूब (जुड़ी) हैं...

[1] सही मुस्लिम, किताबुस सलाम, बाब: नज़र-ए-बद से रुक़या की मुस्तहब्बत वगैरह, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 4/224।

مسئلہ ۱۹۴: مسئولہ سید مقبول عیسیٰ میاں صاحب بریلی نو محلہ ۷ صفر ۱۳۳۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرعِ متین بیچ اس امر کے کہ تعزیہ بنانا بدعت سیئہ ہے۔ یا شرک و گناہِ کبیرہ؟ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائیے۔ ت) الجواب: تعزیہ بنانا شرک نہیں یہ وہابیہ کا خیال ہے، ہاں بدعت و گناہ ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۹۵: از بدایوں اسلام نگر مرسلہ عزیز حسن کانسٹیبل ۲۴ ربیع الاول ۱۳۳۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں، اگر کوئی شخص تعزیہ بنائے یا تعزیہ پر چڑھاو ا چڑھائے یا مرثیہ پڑھے یا مرثیہ کی مجلس میں شریک ہو یا باجا بجائے یا اس میں شریک ہو یا شیرینی تقسیم کرے یا کھائے یا کھلائے یا تاریخ مقرر کرکے خیرات کرے، محرم کی ساتویں نویں دسویں تاریخ کو یہ باتیں مذہبِ اسلام میں جائز ہیں یا نہیں؟ اگر جائز ہیں تو کیا ثبوت ہے ثبوت مع نام کتاب صفحہ و سطر اور قرآن و حدیث سے ہو اگر ناجائز ہو تو بھی ثبوت مع صفحہ و سطر قرآن و حدیث سے تحریر فرمائیں۔ الجواب: شیرینی تقسیم کرنا، کھانا کھلانا، فاتحہ دینا، نیاز دلانا اگرچہ تعینِ تاریخ کے ساتھ ہو جبکہ اس تعین کو واجبِ شرعی نہ سمجھے یہ باتیں شریعت میں جائز ہیں۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: مَنِ اسْتَطَاعَ مِنْکُمْ اَنْ یَنْفَعَ اَخَاہُ فَلْیَنْفَعْہُ ۱؎۔ جو کوئی تم میں سے اپنے بھائی کو فائدہ پہنچانے کی طاقت رکھتا ہے تو اسے اپنے بھائی کو فائدہ پہنچانا چاہئے۔ (ت) امام بدر الدین محمود عینی نے بنایہ شرح ہدایہ میں خوبی ایصال ثواب پر اجماعِ امت نقل فرمایا ہے اور فرمایا اہلسنت و جماعت کا یہی مذہب ہے، باقی جو باتیں سوال میں ہیں تعزیہ اور باجا اور مرثیہ اور مرثیہ کی مجلسیں اور تعزیہ کا چڑھاو ا یہ سب ناجائز و بدعت و گناہ ہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۹۶: از موضع اومری کلاں ڈاکخانہ کانٹھ ضلع مراد آباد مرسلہ ظفر احسن صاحب ۶ محرم الحرام ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اول محرم کا جاری ہونا شاہ تیمور کے وقت سے ہو واجبِ سنت و جماعت نہیں تھا وہاں کے روضوں کی تصویریں جو منسوب امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے

ـــ۱ صحیح مسلم کتاب السلام باب استحباب الرقیۃ من العین الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۴/ ۲۲۴

Fatawa Rizwia, Vol 24

[...he would] have the shrines taken down and kept aside, fulfilling the King's desire. Since this matter is also not proven by any divine command or prophetic tradition, what legal status does it hold? Furthermore, when ignorant people perform prostration (sajdah) during Muharram and make vows on Taziyas, offering cooked grain or sweets, performing Fatihah; when Taziyas are accompanied by musical instruments; and when elegies (marsiya) by Anis and others, who are not Sunnis, which are long and contrary to actual events, are recited with melodies and varying rhythmic voices; when they describe the state of the women of the Prophet's household (Aal-e-Aba) in markets and streets—God forbid; when they bake bread on top of Taziyas; when they designate a specific place as Karbala and distribute bread there; when fights often break out over who goes first or last; when women, often without veils, go to Taziyas; when they perform the third and fortieth day rituals (sawam, chehlum) of Taziyas and perform Fatihah; the excuses given by the group of Taziya-practitioners are that this custom has always existed. The uneducated say, "We do not prostrate, we merely make them in memory of Imam Hussain (may Allah be pleased with him) and the martyrs of the desert of Karbala, and charity is given because of the Taziya." They claim Taziya is a cause for remembrance; some say it provides an opportunity to play fencing (gadka). For hundreds of years, the result has been that fights, riots, and disturbances occur everywhere due to this Taziya. The incident of Amroha is recent, in which many Muslims went to jail, killings occurred, and thousands of rupees of Muslims were spent on legal battles, leading to many homes being ruined. Therefore, it is a request to the scholars and jurists of Sharia: what do those who make Taziyas, those who sympathize, those who play musical instruments, those who join this group, and those who spend in the above-mentioned way in the name of charity, deserve? And does spending in this manner count as any valid category of expenditure?

The Answer: Taziya, as it is currently practiced, is certainly a detestable innovation (bid'at-e-shanee'ah). The extent to which Sultan Timur acted—keeping a correct replica of the blessed shrine of Imam (may Allah be pleased with him) for the satisfaction of his longing—was like the maps of the Radiant Mausoleum (Roza Munawwara) and the Magnificent Kaaba; at that time, there was not such harm in it. Now, due to Shiite influence and likeness, even that is not permitted. These musical instruments, drums (tashe), elegies (marsiyas), mourning (matam), images of 'Barq Pari', seeking wishes from the Taziya, making vows to it, bowing down repeatedly in

greeting, prostrating to it, etc., etc.—numerous innovations have entered into it, and now this is what 'Taziya-dari' is named. This is certainly forbidden (haram). The elegies of Dabir, Anis, and others, mostly by Rafidhis, contain insults (tabarra), even if the ignorant do not understand. Even if they don't, fabricated false narrations, words contrary to Sharia, and descriptions of the purified People of the House (Ahl-e-Bayt) in a state of extreme humiliation—God forbid—and who has made elegies for the sake of mere mourning lawful? It is stated in the Hadith:

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forbade... | [Arabic text: naha Rasulullah...]

[...वह] मज़ार के ढाँचों को उतरवा कर रख लेता था और राजा अपनी इच्छा पूरी कर लेता था। चूँकि यह मामला भी किसी ईश्वरीय आदेश या पैग़ंबरी हदीस से प्रमाणित नहीं है, इसलिए इसकी क्या स्थिति है? और जब मुहर्रम में अज्ञानी लोग सजदा करते हैं और लोग ताजियों पर मन्नतें मानकर पके हुए अनाज या मिठाई चढ़ाते हैं, फ़ातिहा पढ़ते हैं; ताजिया के साथ बाजा बजता है और अनीस आदि के मरसिये (शोकगीत), जो सुन्नी नहीं हैं, और जिनकी रचनाएँ वास्तविक घटनाओं के विपरीत लंबी हैं, वे राग और कई आवाज़ों के साथ लय में पढ़ते हैं; बाज़ारों और गलियों में पैग़ंबर के घराने (आल-ए-अबा) की महिलाओं की जो स्थिति वे बयान करते हैं—ईश्वर की पनाह; ताजियों पर रोटी पकवा कर रखते हैं; कर्बला के नाम पर एक विशेष स्थान नियत करके वहाँ रोटी बाँटते हैं; अक्सर यहाँ भी आगे-पीछे होने की बहस में लड़ाईयाँ हो जाती हैं; औरतें अक्सर बिना पर्दे के ताजियों पर जाती हैं; ताजियों का तीसरा (सवम) और चालीसवाँ (चेहलुम) करते हैं, फ़ातिहा दिलाते हैं; ताजियादारी करने वाले समूह के बहाने ये हैं कि हमेशा से यही प्रथा चली आ रही है। अनपढ़ कहते हैं कि हम सजदा नहीं करते, केवल इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) और कर्बला के शहीदों की याद में बनाते हैं और ताजिया के कारण दान-पुण्य होता है। ताजिया याद दिलाने का कारण है, कुछ कहते हैं कि फिर भी गदका खेलने का अवसर मिलता है। परिणाम सैकड़ों वर्षों से यह निकल रहा है कि इस ताजिया की बदौलत जगह-जगह लड़ाई-दंगे और फ़साद होते हैं। अमरोहा की घटना हाल की है जिसमें बहुत से मुसलमान जेल गए, हत्याएँ भी हुईं, मुसलमानों के हज़ारों रुपये मुक़दमेबाज़ी में खर्च हुए और बहुत से घर उजड़ गए। अतः विद्वानों और शरीयत के मुफ़्तियों से गुज़ारिश है कि ताजिया बनाने वाले, सहानुभूति रखने वाले, बाजा बजाने वाले, इस समूह में शामिल होने वाले, इस उपर्युक्त तरीके से दान के नाम पर खर्च करने वाले किस चीज़ के हक़दार हैं? और इस तरीके से किया गया खर्च किसी मद में गिना जाता है या नहीं?

उत्तर: ताजिया जिस तरह प्रचलित है, वह निश्चित रूप से एक घृणित नवाचार (बिदअत-ए-शनीआ) है। सुल्तान तैमूर ने जिस हद तक किया था कि अपनी इच्छा की संतुष्टि के लिए हज़रत इमाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) के मुबारक रौज़े की सही नकल रखी थी, वह वैसी ही थी जैसे रौज़ा मुनव्वरा और काबा मुअज़्ज़मा के नक्शे; उस समय तक इसमें इतना हर्ज नहीं था। अब शिया प्रभाव और समानता के कारण इसकी भी अनुमति नहीं है। ये जो बाजे, ताशे, मरसिये, मातम, बर्क परी की तस्वीरें, ताजिये से मुरादें माँगना, उसकी मन्नतें मानना, उसे झुक-झुक कर सलाम करना, सजदा करना आदि-आदि

अनेक बिदअतें इसमें शामिल हो गई हैं और अब इसी का नाम ताजियादारी है। यह निश्चित रूप से हराम (वर्जित) है। दबीर और अनीस आदि के मरसिये, जो अधिकतर राफ़ज़ियों (शियाओं) के हैं, उनमें 'तबर्रा' (गाली-गलौज) शामिल होता है, भले ही अज्ञानी लोग न समझें। और यदि न भी हो, तो झूठी गढ़ी हुई कहानियाँ, शरीयत के विरुद्ध शब्द, और पवित्र अहले बैत (पैग़ंबर का घराना) की हालत का—ईश्वर की पनाह—अत्यंत अपमानजनक वर्णन, और सिरे से शोक मनाने के मरसिये किसने हलाल (वैध) किए हैं? हदीस में है:

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मना किया... | [अरबी पाठ: नही रसूलुल्लाह...]

पृष्ठ 505 / 720

روضے تھے اُتروا کر رکھ کر شاہ اپنا خیال پورا کر لیتا تھا اور چونکہ یہ امر بھی حکمِ خدا و نیز کسی حدیثِ نبوی سے ثابت نہیں ہے اس لئے وہ کیا حکم رکھتا ہے اور جبکہ محرم کو جاہل لوگ سجدہ کرتے ہیں اور منتیں لوگ تعزیوں پر از قسم اناج پکا ہوا یا شیرینی چڑھاتے ہیں فاتحہ دیتے ہیں تعزیہ کے ساتھ باجہ ہوتا ہے اور مرثیہ انیس وغیرہ کے جو سنی نہیں ہیں ان کی تصنیف کے جو اصل واقع کے برخلاف طویل ہیں وہ سُر راگنی اور کئی آواز سے ڈھپ سے پڑھتے ہیں بازار گلی کوچوں میں آلِ عبا کی عورتوں کی حالت وہ بیان کرتے ہیں معاذ اللہ تازیوں پر روٹی پکوا کر رکھتے ہیں کربلا ایک مخصوص جگہ مقرر کر کے وہاں روٹی بانٹتے ہیں اکثر یہاں بھی آگے پیچھے کی بحث میں لڑائیاں ہو جاتی ہیں عورتیں اکثر مسلمانوں کی بلا پردہ تعزیوں پر جاتی ہیں تعزیوں کا سوم چہلم کرتے ہیں فاتحہ دلاتے ہیں معذرات گروہ تعزیہ داری یہ ہیں ہمیشہ سے یہی رسم جاری ہے نا تعلیم یافتہ کہتے ہیں کہ ہم سجدہ نہیں کرتے محض یادگاری امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ و شہیدانِ دشتِ کربلا بناتے ہیں اور تعزیہ کی وجہ سے صدقہ ہوتا ہے تعزیہ یادگاری کا باعث، بعض کہتے ہیں پھر بھی گدکہ کھیلنے کا موقع ملتا ہے، نتیجہ صدہا سال سے یہ نکل رہا ہے کہ جا بجا لڑائی دنگہ فساد اس تعزیہ کے بدولت ہوتے ہیں، امروہہ کا واقعہ قریب کا ہے جس میں بہت سے مسلمان جیل خانہ گئے قتل بھی ہوا ہزاروں روپیہ مسلمانوں کا مقدمہ بازی میں خرچ ہوا بہت سے گھر ویران ہو گئے۔ پس گزارش عالمان و مفتیانِ شرع سے ہے کہ تعزیہ بنانے والے، ہمدردی کرنے والے، باجہ بجانے والے، اس گروہ میں شامل ہونے والے، اس طریقہ متذکرہ بالا کہ بموجب صدقہ کے نام سے خرچ کرنے والے کس امر کے مستحق ہیں اور اس طریقہ سے خرچ کسی مد میں شمار ہوتا ہے یا نہیں؟ الجواب: تعزیہ جس طرح رائج ہے ضرور بدعتِ شنیعہ ہے،

جس قدر بات سلطان تیمور نے کی کہ روضہ مبارک حضرت امام رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی صحیح نقل تسکینِ شوق کو رکھی وہ ایسی تھی جیسے روضہ منورہ و کعبہ معظمہ کے نقشے اس وقت تک اس قدر حرج میں نہ تھا اب بوجہ شیعی و شبیہ اس کی بھی اجازت نہیں، یہ جو باجے، تاشے، مرثیے، ماتم، برق پری کی تصویریں، تعزیے سے مرادیں مانگنا اس کی منتیں ماننا، اسے جھک جھک کر سلام کرنا، سجدہ کرنا وغیرہ وغیرہ بدعاتِ کثیرہ اس میں ہوگئی ہیں اور اب اسی کا نام تعزیہ داری ہے یہ ضرور حرام ہے دبیر و انیس وغیرہ اکثر روافض کے مرثیے تبر ا پر مشتمل ہوتے ہیں اگرچہ جاہل نہ سمجھیں اور نہ بھی ہو تو جھوٹی ساختہ روایتیں خلافِ شرع کلمات اہل بیتِ طہارت کی معاذ اللہ نہایت ذلت کے ساتھ بیان اور سرے سے غم پروری کے مرثیے کس نے حلال کئے۔ حدیث میں ہے: نھی رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم | رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے

Fatawa Razawiyyah Volume 24

...and [Peace be upon him] forbade elegies (Marasi)[1].

And the excuse that it is a means for charity is a false excuse. O servants of Allah, those who consider Taziya and other innovations (Bid'at) as forbidden, still perform Niyaz and charity. Niyaz for the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) is held in Rabi-ul-Awwal. Niyaz for our master Ghous-e-Azam (may Allah be pleased with him) is held in Rabi-ul-Akhir. Which Taziya is present in those? And even if, hypothetically, Taziya were a reason for charity, charity is a recommended act (Mustahab) while innovations are forbidden (Haram). Forbidden cannot become permissible for the sake of a recommended act. It is strange of them that they won't perform a recommended act unless reminded by a forbidden one. Furthermore, 'Ji Gadka' (a type of fencing/play) is a permissible (Mubah) thing. How can forbidden become permissible for a permissible act? In short, all excuses are absurd. All those who commit these acts are sinners, and helping them is impermissible. Whatever is spent on banners, Taziyas, and thrones is all waste and forbidden. Scattering the Niyaz food of Taziya, throwing bread on the ground, and it coming under feet is all absurd. Yes, if one performs Niyaz for the noble martyrs while avoiding all innovations, it is the essence of blessing and fortune. And Allah knows best.

Problem 179 to 203: From Laharpur, District Sitapur, Madrasa Islamia, sent by Muhammad Faizullah, a Bengali student, 6 Shaban 1337 AH.

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We praise Him and send blessings upon His Noble Messenger.

What do the scholars of religion say in this matter: Zaid, a claimant of being Hanafi, says that since Taziya is a model of the holy shrine of our master Imam Hussain (may Allah be pleased with him) and is attributed to our master the Great Imam (may Allah be pleased with him), therefore making it is a necessary matter, a cause of reward, worthy of veneration, and a means of salvation for us. And anyone who opposes its veneration and making is a Yazidi. Thus, the following matters require investigation:

(1) Is making Taziya permissible or an innovation and forbidden? Is it a cause of reward and veneration, or a cause of the punishment of hellfire? (2) Is any kind of assistance in making it permissible or not? (3) Is the one who makes it a transgressor (Fasiq) resembling the Shiites or not? And if it is forbidden and an innovation, is the one who considers it permissible an infidel (Kafir) or a severe transgressor? (4) Is

there any proof for it in the school of Imam Abu Hanifa (may Allah have mercy on him) or not? If not, then its...

---

[1] Musnad Ahmad bin Hanbal, Baqiyah Hadith Abdullah bin Abi Awfa, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 4/356.

फतावा रज़विया जिल्द २४

...और [सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम] ने मरसियों से मना फ़रमाया १।

और इसके कारण सदक़ा-खैरात होना एक झूठा बहाना है। ऐ अल्लाह के बंदो! जो लोग ताजिया आदि बिदअत (नवाचारों) को हराम मानते हैं, वे भी नियाज़ और खैरात करते हैं। रबी-उल-अव्वल शरीफ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नियाज़ होती है, रबी-उल-आख़िर शरीफ में हुज़ूर सैय्यदना गौस-ए-आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु की नियाज़ होती है। उनमें कौन सा ताजिया होता है? और अगर गलत तौर पर मान भी लिया जाए कि ताजिया ही खैरात का कारण है, तो खैरात एक मुस्तहब (पसंदीदा) चीज़ है और बिदअत हराम। मुस्तहब के लिए हराम हलाल नहीं हो सकता। ताज्जुब है उनसे कि वे तब तक मुस्तहब काम नहीं करेंगे जब तक हराम उसकी याद न दिलाए। फिर 'जी गडका' (एक प्रकार का खेल) एक मुबाह (अनुमेय) बात है। मुबाह के लिए हराम कैसे हलाल हो सकता है? संक्षेप में, सभी बहाने बेतुके हैं। इन कार्यों को करने वाले सभी गुनहगार हैं और उनकी मदद करना नाजायज़ है। परचम, ताजिये और तख्त पर जो कुछ भी खर्च होता है, वह सब इसराफ़ (अतिव्यय) और हराम है। ताजिये की नियाज़ का लंगर लुटाना, रोटियों को ज़मीन पर फेंकना और उनका पैरों के नीचे आना, यह सब बेतुका है। हाँ, अगर बिदअतों से बचकर शहीद-ए-कर्बला की नियाज़ की जाए, तो यह बरकत और सौभाग्य की बात है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला १७९ से २०३: लहरपुर जिला सीतापुर, मदरसा इस्लामिया से प्रेषित मुहम्मद फैज़ुल्लाह, बंगाली छात्र, ६ शाबान १३३७ हिजरी।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम। नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम।

दीन के उलेमा इस मसले में क्या कहते हैं: ज़ैद, जो हनफ़ी होने का दावा करता है, कहता है कि चूँकि ताजिया हमारे आका हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के पवित्र रौज़े का नक्शा है और सैयदना इमाम हुमाम रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर मंसूब है, इसलिए इसे बनाना ज़रूरी है और सवाब का कारण, सम्मान के योग्य और हमारे लिए मुक्ति का जरिया है। और जो व्यक्ति इनके सम्मान और बनाने का विरोधी है, वह यज़ीदी है। अतः निम्नलिखित बातों की जाँच आवश्यक है:

(१) ताजिया बनाना जायज़ है या बिदअत और हराम? यह सवाब और सम्मान का कारण है या जहन्नम की आग की सज़ा का कारण? (२) इसे बनाने में किसी प्रकार की सहायता जायज़ है या नहीं? (३) इसे बनाने वाला शियाओं जैसा फासिक़ (पापी) है या नहीं? और अगर यह हराम और बिदअत है, तो इसे

जायज़ समझने वाला काफ़िर है या बड़ा फासिक़? (४) इमाम अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैहि के मज़हब में भी इसका कोई सबूत है या नहीं? यदि नहीं, तो इसका...

---

१ मुसनद अहमद बिन हंबल, बक़िया हदीस अब्दुल्ला बिन अबी औफ़ा, अल-मकतब अल-इस्लामी, बेरूत ४/३५६।

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

وسلم عن المراثی ۱۔ مرثیوں سے منع فرمایا۔

اور اس کے سبب صدقہ خیرات ہونا جھوٹا عذر ہے اللہ کے بندے کہ تعزیہ وغیرہ بدعات کو حرام جانتے ہیں نیاز و خیرات کرتے ہیں ربیع الاول شریف میں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی نیازیں ہوتی ہیں ربیع الآخر شریف میں حضور سید نا غوث اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی نیازیں ہوتی ہیں ان میں کون سا تعزیہ ہوتا ہے اور بفرض غلط اگر تعزیہ ہی باعث خیرات ہو تو خیرات ایک مستحب چیز ہے اور بدعات حرام، مستحب کے لئے حرام حلال نہیں ہوسکتا، عجب ان سے کہ مستحب نہ کریں گے جب تک حرام اس کی یاد نہ دلائے، پھر جی گد کا ایک مباح بات ہے، مباح کے لئے حرام کیونکر حلال ہو سکتا ہے غرض عذرات سب بیہودہ ہیں اور ان افعال کے مرتکب سب گنہگار اور انہیں مدد دینا ناجائز اور علم تعزیے تخت میں جو کچھ صرف ہوتا ہے سب اسراف و حرام اور تعزیے کی نیاز لنگر کا لٹانا روٹیوں کا زمین پر پھینکنا پاؤں کے نیچے آنا سب بیہودہ ہے ہاں نیاز کے طور پر سب بدعات سے بچ کر حضرات شہدائے کرام کی نیاز کریں تو عین برکت و سعادت ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۱۷۹ تا ۲۰۳: از لہر پور ضلع سیتا پور مدرسہ اسلامیہ مرسلہ محمد فیض اللہ طالب العلم بنگالی ۶ شعبان ۱۳۳۷ھ

بسم اللہ الرحمن الرحیم ۔ نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید مدعی حنفیت کہتا ہے کہ تعزیہ چونکہ نقشہ ہے سید نا حضرت امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے روضہ مقدسہ کا، اور منسوب ہے سید نا امام

ہمام رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی طرف، لہذا اس کا بنانا امر ضروری ہے اور باعث ثواب و قابل تعظیم و ذریعہ نجات ہمارے لئے ہے اور جو شخص ان کی تعظیم و بنانے کا مخالف ہے وہ یزید ہے پس امور ذیل تحقیق طلب ہیں :

(۱) تعزیہ بنانا جائز ہے یا بدعت اور حرام اور باعث ثواب و تعظیم ہے یا باعث عذاب نار جحیم ہے۔ (۲) اس کے بنانے میں کسی قسم کی امداد جائز ہے یا نہیں ؟ (۳) اس کا بنانے والا فاسق مشابہ اہل تشیع ہے یا نہیں اور بر تقدیر حرام و بدعت اس کا جائز سمجھنے والا کافر ہے یا اشد فاسق ؟ (۴) مذہب امام ابوحنیفہ رحمتہ اللہ تعالیٰ علیہ میں بھی اس کا ثبوت ہے یا نہیں۔ بر تقدیر ثانی اس کا

---

۱ مسند احمد بن حنبل بقیہ حدیث عبد اللہ بن ابی اوفی المکتب الاسلامی بیروت ۴/ ۳۵۶

Fatawa-e-Razvia Volume 24

...whether the one who makes it is a follower of Imam-e-Azam (may Allah's mercy be upon him) or not, and is his claim of being Hanafi, which attracts the common people towards making Ta'ziya, a deception or not, and a cause of misguidance or not?

(5) Is it permissible or forbidden for Hanafi people to make such a person their leader and spiritual guide (pir), and is it obligatory for disciples to break the oath of allegiance (bay'at) or not? And is following such a person in prayer (salat) permissible, or is it disliked (Makruh Tanzihi or Tahrimi), or forbidden (Haram)?

(6) What is the ruling on calling those who deny Ta'ziya as 'Yazidi' or 'irreligious'? If those who deny are not worthy of such taunts and criticism, does this statement return to the sayers themselves or not? That is, how much burden and sin will fall upon the sayers, and will they fall under the principle of the Hadith Sharif that if one calls another a disbeliever (kafir) and he is not truly so, then the caller himself becomes a disbeliever?

(7) Since the founder of Ta'ziya causes the presence of common Muslims, so under the assumption of it being forbidden and an innovation (bid'at), are the attendees and the founder equal in sin, or is one's sin complete and the other's deficient?

The Answer:

Ta'ziya, in the way it is prevalent, is not just one innovation but a collection of innovations. It is not even a map/diagram of the blessed shrine. Even if it were, are mourning, breast-beating, parades with drums and instruments, and burying it in the earth befitting the glory of the blessed shrine? Perhaps there are also images of fairies and Buraq in the blessed shrine? Attributing one's invented whims to the exalted Imam is an insult to Imam (may Allah be pleased with him). Is insulting the Imam worthy of veneration? In the pre-Islamic era (Jahiliyyah), polytheists made images of our masters Ibrahim and Ismail (peace be upon them both) in the Kaaba and placed arrows in their hands. They were cursed, and those images were erased. That was an attribution to the great prophets; did those cursed arrows become revered because of it, or the images worth preserving? And calling it necessary is an even harsher and filthier fabrication. And that too against the pure Sharia!

"Indeed, those who invent falsehood against Allah will not succeed."	**Indeed, those who attribute lies to Allah will never succeed or prosper. (T)**

And calling its denier 'Yazid' is a filthy Rafidhi (Shia) act. No kind of assistance in Ta'ziya is permissible.

Allah Almighty says: "And do not cooperate in sin..."

Allah Almighty has said: ...in sin and transgression.

1. Al-Quran Al-Karim 10/69

फतावा-ए-रजविया जिल्द 24

...बनाने वाला इमाम-ए-आज़म (रहमतुल्लाह अलैह) का अनुयायी है या नहीं, और उसका यह दावा कि मैं हनफी हूँ जिससे आम लोग भी ताज़िया बनाने की ओर आकर्षित होते हैं, यह धोखा देना है या नहीं, और गुमराह करने का कारण है या नहीं?

(5) ऐसे व्यक्ति को यदि हनफी लोग अपना अगुआ और पीर बनाएँ तो क्या यह जायज़ है या हराम, और मुरीदों पर बैअत तोड़ना वाजिब है या नहीं? और ऐसे व्यक्ति की इमामत में नमाज़ पढ़ना जायज़ है या मकरूह-ए-तंजीही या तहरीमी या हराम?

(6) ताज़िया का विरोध करने वालों को यजीदी या बेदीन कहना कैसा है? यदि विरोध करने वाले इस ताने और आलोचना के पात्र नहीं हैं, तो क्या यह बात स्वयं कहने वालों की ओर ही लौटती है या नहीं? यानी कहने वालों पर इसका कितना बोझ और गुनाह होगा, और क्या वे हदीस शरीफ के इस नियम के अंतर्गत आएँगे या नहीं कि यदि कोई किसी को काफिर कहे और वास्तव में वह वैसा न हो, तो कहने वाला स्वयं काफिर हो जाता है?

(7) चूंकि ताज़िया बनाने वाला आम मुसलमानों की उपस्थिति का कारण बनता है, इसलिए इसे हराम और बिदअत (नवाचार) मानने की स्थिति में, क्या उपस्थित होने वाले और बनाने वाले दोनों गुनाह में समान हैं या किसी का गुनाह पूरा है और किसी का कम?

उत्तर (अल-जवाब):

ताज़िया जिस तरह से प्रचलित है, वह केवल एक बिदअत नहीं बल्कि बिदअतों का समूह है। वह पवित्र रौज़े (मकबरे) का नक्शा भी नहीं है। और यदि हो भी, तो मातम करना, सीना कोबी (छाती पीटना), ताशे-बाजों के साथ घूमना और मिट्टी में दबाना, क्या यह पवित्र रौज़े की शान के अनुरूप है? शायद परियों और बुराक़ के चित्र भी पवित्र रौज़े में होंगे? अपनी मनगढ़ंत इच्छाओं को महान इमाम से जोड़ना इमाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) का अपमान है। क्या इमाम का अपमान सम्मान के योग्य है? काबा मुअज्ज़मा में अज्ञानता के काल (जाहिलियत) में मुशरिकों ने सैय्यदना इब्राहिम और सैय्यदना इस्माइल (अलैहिमुस्सलाम) के चित्र बनाए थे और उनके हाथों में पासे (तीर) दिए थे। उन पर लानत की गई और उन चित्रों को मिटा दिया गया। वह तो महान नबीयों की ओर निस्बत थी; क्या इससे वे लानती पासे सम्मानित हो गए या चित्र सुरक्षित रखने योग्य? और इसे आवश्यक कहना तो और भी कठोर और अत्यंत गंदा झूठ (इफ्तरा) है, वह भी किस पर, शरीअत-ए-मुतह्हरा (पवित्र शरीयत) पर!

"बेशक जो अल्लाह तआला के ज़िम्मे झूठ लगाते हैं वे कभी सफल नहीं होंगे।"	**बेशक जो अल्लाह तआला पर झूठ गढ़ते हैं, वे कभी कामयाब और सफल नहीं होंगे। (त)**

और इसके इनकार करने वाले को यजीद कहना गंदा राफ़िज़ी काम है। ताज़िया में किसी भी प्रकार की सहायता जायज़ नहीं है।

अल्लाह तआला ने फरमाया: "और गुनाह और ज़्यादती में एक दूसरे की मदद न करो।"	**अल्लाह तआला ने फरमाया: गुनाह और ज़्यादती के..**

1. अल-कुरान अल-करीम 10/69

...بنانے والا متبعِ امام اعظم رحمتہ اللہ تعالیٰ علیہ ہے یا نہیں اور اس کا یہ دعویٰ کہ میں حنفی ہوں جس سے عوام بھی تعزیہ بنانے کی طرف راغب ہوتے ہیں یہ دھوکا دینا ہے یا نہیں اور باعثِ گمراہی ہے یا نہیں؟

(۵) ایسے شخص کو اگر حنفی لوگ اپنا پیشوا و پیر بنائیں تو جائز ہے یا حرام، اور مریدین پر فسخ بیعت واجب ہے یا نہیں اور ایسے شخص کی اقتدائی الصلوۃ جائز ہے یا مکروہِ بکراہت تنزیہی یا تحریمی یا حرام؟

(۶) منکرینِ تعزیہ کو یزید یا بد دین کہنا کیسا ہے اگر منکرین محلِ اس طعن و تشنیع کے نہیں ہیں تو یہ قول خود قائلین کی طرف رجوع کرتا ہے یا نہیں یعنی اس کا وبال و گناہ قائلین پر کتنا ہوگا اور حدیث شریف کے اس قاعدے کے تحت میں داخل ہوں گے یا نہیں کہ اگر کسی کو کافر کہے اور وہ فی الحقیقت ایسا نہیں تو قائل خود کافر ہوتا ہے۔

(۷) بانیِ تعزیہ چونکہ عام مسلمانوں کے حضور کی کا باعث ہوتا ہے پس بر تقدیرِ حرام وبدعت حاضرین و بانی دونوں گناہ میں مساوی ہیں یا اکمل و انقص ہیں۔

الجواب:

تعزیہ جس طرح رائج ہے نہ ایک بدعت مجمعِ بدعات ہے نہ وہ روضہ مبارک کا نقشہ ہے اور ہو تو ماتم اور سینہ کوبی اور تاشے باجوں کے گشت اور خاک میں دبانا یہ کیا روضہ مبارک کی شان ہے اور پریوں اور براق کی تصویریں بھی شاید روضہ مبارک میں ہوں گی امامِ عالی مقام کی طرف اپنی ہوسات مخترعہ کی نسبت امام رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی توہین ہے کیا توہینِ امام قابلِ

تعظیم ہے۔ کعبہ معظمہ میں زمانہِ جاہلیت میں مشرکین نے سیدنا ابراہیم و سیدنا اسمعیل علیہما الصلوۃ والسلام کی تصویریں بنائیں اور ہاتھ میں پانسے دئے تھے جن پر لعنت فرمائی اور ان تصویروں کو محو فرمادیا یہ تو انبیائے عظام کی طرف نسبت تھی کیا اس سے وہ ملعون پانسے معظم ہوگئے یا تصویریں قابلِ ابقاء اور اسے ضروری کہنا تو اور سخت ترافتراءِ اخبث ہے وہ بھی کس پر شرعِ مطہر پر،

"اِنَّ الَّذِیْنَ یَفْتَرُوْنَ عَلَی اللّٰہِ الْکَذِبَ لَا یُفْلِحُوْنَ ؕ" **بے شک جو اللہ تعالٰی کے ذمے جھوٹ لگاتے ہیں وہ کبھی کامیاب اور بامراد نہ ہوں گے۔ (ت)**

اور اس کے منکر کو یزید کہنا رفضِ پلید ہے تعزیہ میں کسی قسم کی امداد جائز نہیں۔

قال اللہ تعالٰی "وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَی الْاِثْمِ" اللہ تعالٰی نے ارشاد فرمایا: گناہ اور زیادتی کے...

1 القرآن الکریم ۱۰ / ۶۹

“...and [not] in enmity [1]. (Do not help each other in [sinful] dealings (T)).” The aforementioned method is certainly a sin and follows the ways of the Rafidha (Shia), and considering the Tazia as permissible is a sin of belief. However, it is not a denial of the necessities of religion such that one becomes a disbeliever, nor does it remove one's status as a Hanafi. If sin were to remove Hanafism, then no one except the great elite saints could remain a Hanafi. The Mu'tazilites were fundamentally irreligious but followed the Hanafi school in secondary matters. When a false statement is made against another, its burden falls back upon the speaker; that same statement does not necessarily turn back on the person. Calling someone a donkey unjustly does not make the speaker a donkey. Similarly, one who calls a Sunni Muslim 'Yazid' will not become Yazid himself, but rather a follower of the Rafidha. Praying behind such a person is 'Makruh-e-Tahrimi' (prohibitively disliked), and taking an oath of allegiance (bay'at) to him is forbidden and invalid. Each of the attendees bears their own sin, and the founder/instigator bears a burden equal to all of theirs. “Nothing will be diminished from their burdens” [2] (And there will be no reduction in their sins. T). And Allah Almighty knows best.

Issue 204: From Habib Wala, District Bijnor, Tehsil Dhampur, sent by Manzoor Ahmed Sahib. 11 Shawwal 1337 AH. Question: What do the scholars of religion say regarding the issue of making Tazias, offering 'Malida' (a type of sweetmeat) on them, and holding gatherings in which, God forbid, the household of the Prophet (Ahl al-Bayt) is insulted and disgraced? The outcome is that people prostrate to them and seek vows from them. Are those who perform these acts or participate in them doing something permissible or prohibited? While the rule of principles is that when a recommended (mustahabb) act, due to certain necessities, leaves its rank and enters the category of being obligatory or fard, then abandoning it becomes recommended. So now, based on these principles, are the aforementioned issues permissible or not? Is there any harm? Please provide a reasoned response.

The Answer: Making Tazia is impermissible, and any gathering in which, God forbid, there is insult to the noble Ahl al-Bayt is strictly forbidden (Haram), and participating in them is impermissible and forbidden. And Allah Almighty knows best.

Issue 205: Sultan-ul-Islam Ahmed Sahib, Ajmer Sharif. Question: Is it permissible to make and take out a Tazia, play drums and cymbals with it, create a representation of

a grave and carry it out like a funeral procession, and offer flowers etc. upon it? That is all.

The Answer: All these things are impermissible. And Allah Almighty knows best.

---

[1] Al-Quran al-Karim 5/2 [2] Sahih Muslim, Kitab al-'Ilm, Bab Man Sanna Sunnatan Hasanatan etc., Qadimi Kutub Khana Karachi 2/341.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

"...और शत्रुता में [नहीं] [1]। (लेन-देन के मामलों में एक-दूसरे की [गलत] मदद न करो (त))।" उक्त तरीका निश्चित रूप से फ़िस्क़ (गुनाह) और राफ़िज़ियों (शियाओं) का अनुसरण है, और ताज़िया को जायज़ समझना अक़ीदे (विश्वास) का फ़िस्क़ है। हालाँकि, यह धर्म की आवश्यक चीज़ों का इनकार नहीं है कि कोई काफ़िर हो जाए, और न ही इससे हनफ़ियत ख़त्म होती है। यदि गुनाह हनफ़ियत को मिटाने वाला होता, तो महान वरिष्ठ औलिया के अलावा कोई हनफ़ी न रह पाता। मोतज़िला लोग सैद्धांतिक रूप से धर्मभ्रष्ट थे लेकिन व्यावहारिक रूप से हनफ़ी थे। जब किसी दूसरे के बारे में गलत बात कही जाती है, तो उसका बोझ कहने वाले पर पड़ता है; वही बात हूबहू वापस नहीं पलटती। किसी को अन्यायपूर्ण तरीके से गधा कहने से कहने वाला गधा नहीं बन जाता। इसी तरह, किसी सुन्नी मुसलमान को 'यज़ीद' कहने वाला खुद यज़ीद नहीं बन जाएगा, बल्कि वह राफ़िज़ियों का अनुयायी कहलाएगा। उसके पीछे नमाज़ पढ़ना 'मकरूह-ए-तहरीमी' है, और उससे बैअत (दीक्षा) लेना वर्जित और अमान्य है। उपस्थित लोगों में से प्रत्येक पर अपना गुनाह है, और इसके प्रवर्तक पर उन सबके बराबर बोझ होगा। "उनके बोझों में से कुछ भी कम नहीं किया जाएगा" [2] (और उनके पापों में कोई कमी नहीं होगी। त)। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला 204: हबीब वाला, ज़िला बिजनौर, तहसील धामपुर से, प्रेषक मंज़ूर अहमद साहब। 11 शव्वाल 1337 हिजरी। प्रश्न: धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि ताज़िया बनाना, उन पर मलीदा चढ़ाना और ऐसी सभाएं करना जिसमें, अल्लाह न करे, अहले-बैत (पैगंबर के परिवार) की बेअदबी और रुसवाई हो? नतीजा यह होता है कि लोग उन्हें सजदा करते हैं और उनसे मन्नतें मांगते हैं। ये कार्य करने वाले या इनमें शामिल होने वाले लोग जायज़ हैं या नाजायज़? जबकि सिद्धांतों का मसला यह है कि जब कोई मुस्तहब (पसंदीदा) कार्य किन्हीं कारणों से अपनी श्रेणी छोड़ कर वाजिब या फ़र्ज़ के दर्जे में आ जाए, तो उस समय उसका त्याग करना मुस्तहब हो जाता है। तो अब सिद्धांतों के आधार पर ये उपरोक्त मसले जायज़ हैं या नहीं? क्या कोई नुकसान है? तर्कपूर्ण उत्तर दें।

अल-जवाब: ताज़िया बनाना नाजायज़ है, और ऐसी सभा जिसमें, अल्लाह न करे, अहले-बैत-ए-किराम की तौहीन हो, वह पूरी तरह हराम (वर्जित) है, और उनमें शामिल होना नाजायज़ और हराम है। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला 205: सुल्तान-उल-इस्लाम अहमद साहब, अजमेर शरीफ़। प्रश्न: ताज़िया बनाकर निकालना, उसके साथ ढोल-नगाड़े बजाना, कब्र की शक्ल बनाकर जनाज़े की तरह निकालना, उस पर फूल आदि चढ़ाना जायज़ है या नहीं? बस।

अल-जवाब: ये सब बातें नाजायज़ हैं। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

---

[1] अल-कुरान अल-करीम 5/2 [2] सहीह मुस्लिम, किताब अल-इल्म, बाब मन सन्ना सुन्नतन हसतन आदि, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 2/341।

وَالْعُدْوَانِ ط ۱ (معاملات میں ایک دوسرے کی مدد نہ کرو (ت)) طریقہ مذکورہ ضرور فسق و اتباعِ روافض اور تعزیہ کو جائز سمجھنا فسقِ عقیدہ مگر انکارِ ضروریاتِ دین نہیں کہ کافر ہو نہ اس سے حنفیت زائل ہو کہ گناہِ مزیلِ حنفیت ہو تو سوا اجلہ اکابر اولیاء کے کوئی حنفی نہ ہوسکے معتزلہ اصولاً بد دین تھے اور فروعاً حنفی، جو قولِ باطل دوسرے کو کہا جائے اس کا وبال قائل پر آتا ہے بعینہ وہی قول پلٹنا مطلق نہیں کسی کو ناحق گدھا کہنے سے قائل گدھا نہ ہوجائے گا، یو ہیں کسی مسلمان سنی کو یزید کہنے والا یزید نہ ہوجائے گا بلکہ اس میں روافض کا پیرو۔ اس کے پیچھے نماز مکروہ تحریمی ہے اور اس سے بیعت ممنوع و ناقابلِ ابقا۔ حاضرین میں ہر ایک پر اپنا گناہ ہے اور بانی دوای پر ان سب کے برابر۔ لَا یَنقُصُ مِن أوزارھم شیئاً ۲ (اور ان کے گناہوں میں سے کچھ کمی نہ ہوگی۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۰۴: از حبیب والا ضلع بجنور تحصیل دھامپور مرسلہ منظور احمد صاحب ۱۱ شوال ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ تعزیہ بنانے اور ان پر ملیدہ چڑھانے اور ایسی مجلسیں کرنا کہ جس میں اہلبیت کی فضیحت اور رسوائی ہو اور نتیجہ یہ ہو کہ ان کو سجدے کئے جائیں اور منتیں ان سے مانگی جائیں، یہ فعل یا اس فعل میں شرکت کرنے والے کیسے ہیں جائز ہیں یا ناجائز؟ حالانکہ مسئلہ اصول کا ہے کہ فعلِ مستحب جب کسی لوازم کی وجہ سے وہ اپنے درجہ کو چھوڑ کر واجب یا فرضیت میں آجائے تو اس وقت اس کا ترک مستحب ہے تو اب بنا بر اصول کہ یہ مسائل مذکورہ بالا جائز ہیں یا نہیں نقصان ہے؟ مدلل تحریر کیجئے۔

الجواب: تعزیہ ناجائز ہے اور ایسی مجلس جس میں معاذ اللہ توہینِ اہلبیتِ کرام ہو قطعاً حرام اور ان میں شرکت ناجائز و حرام۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۰۵: سلطان الاسلام احمد صاحب اجمیر شریف تعزیہ بنا کے نکالنا، اس کے ساتھ ڈھول نقارے بجانا، قبر کی صورت بنا کر جنازہ کی طرح نکالنا، اس پر پھول وغیرہ چڑھانا جائز ہے یا نہیں؟ فقط

الجواب: یہ سب باتیں ناجائز ہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم

---

1 القرآن الکریم ۲/۵ 2 صحیح مسلم کتاب العلم باب من سن سنۃ حسنۃ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۳۴۱

Fatawa Razawiya Volume 24

Problem 206: From Riyasat Rajgarh Biyawra, Agency Bhopal, Central India, sent by Muhammad Ismail Sawar Risala Body Guard, 15 Muharram-ul-Haram 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding the following: In the month of Muharram, making tazia, making vows (mannat) from it, raising the alam (standard), offering mehndi (henna), dressing children in green clothes and putting threads around their necks to make them "Imam Husayn's (radiyallahu anhu) faqir", remaining in mourning for ten days, and after that performing suum (third day), daswan (tenth day), and chaliswan (fortieth day) ceremonies, reciting elegies (marsiya) while beating the chest and lamenting, considering these acts as fulfilling the rights of love for the Ahl-ul-Bayt, calling the cursed Yazid a "mal'un" (accursed) along with his companions, speaking ill of Hazrat Amir Mu'awiya (radiyallahu anhu) and considering this a requirement of love for Ali (radiyallahu anhu), and believing that Hazrat Imam Hasan and Husayn (radiyallahu anhuma) hold a higher rank than all the Prophets, and even thinking that the Sufis held this view, and considering such a belief as the essence of faith? Explain and be rewarded.

The Answer: To consider the honorable Imams (radiyallahu anhuma) superior to any Prophet (peace be upon them) is absolute disbelief (kufr). Speaking ill of Hazrat Amir Mu'awiya (radiyallahu anhu) or any Companion is Rafz (heresy). Those companions of Yazid who assisted him in his cursed oppressions are indeed wicked and accursed, but regarding calling him (Yazid) a "kafir" (disbeliever) and "mal'un" (accursed), there is a difference of opinion; our Imam's (Imam Abu Hanifa's) stance is silence (sukoot), and anyone who calls him so is not a target of blame. Some scholars of the Ahl-ul-Sunnat consider suum, daswan, and chaliswan ceremonies for sending rewards (isal-e-sawab) as permissible, and these are customary specifications for isal-e-sawab and are recommended (mustahab). The remaining practices mentioned in the question are all prohibited and impermissible. And Allah Almighty knows best.

Problem 207 to 219: From Sambhal, Moradabad district, near Ziyarat Habibullah Shah, sent by Muhammad Farooq Husayn, 19 Muharram-ul-Haram 1339 AH. What do the scholars of religion and the firm Muftis of Sharia (may Allah reward them with the best reward among Muslims) say regarding these issues: (1) Was the marriage of Hazrat Qasim bin Husayn (radiyallahu anhu) to Hazrat Kubra bint Husayn (peace be upon her) confirmed by correct narrations on the day of Ashura at Karbala, or not, according to the Ahl-ul-Sunnat and Jama'at? (2) Since when has the practice of tazia-

dari been prevalent? (3) The current practice of tazia-dari, the illuminations on the night of martyrdom, and burying the tazia on the day of Ashura.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

मसअला 206: रियासत राजगढ़ ब्यावरा, एजेंसी भोपाल, मध्य भारत से, मोहम्मद इस्माइल सवार रिसाला बॉडी गार्ड द्वारा प्रेषित, 15 मुहर्रम-उल-हराम 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान इस बारे में क्या कहते हैं कि मुहर्रम में ताज़िया बनाना, उससे मन्नतें मांगना, अलम उठाना, मेहंदी चढ़ाना, बच्चों को हरे कपड़े पहनाना और उनके गले में धागे बाँधकर उन्हें हज़रत इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) का फ़कीर बनाना, दस दिनों तक शोक मनाना, और उसके बाद तीसरा (सुओम), दसवां और चालीसवां (चेहलुम) करना, सीना पीटकर और विलाप करते हुए मरसिया पढ़ना, इन रस्मों को अहल-ए-बैत के प्रति प्रेम की अदायगी समझना, शापित यज़ीद के साथ उसके साथियों को मलऊन (शापित) कहना, हज़रत अमीर मुआविया (रज़ियल्लाहु अन्हु) को बुरा कहना और इसे हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) के प्रति प्रेम का तकाज़ा समझना, हज़रत इमाम हसन और हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) को सभी नबियों से ऊंचे दर्जे का समझना और यहाँ तक कि सूफ़िया-ए-किराम का भी यही विचार था, ऐसा समझना और इसे ही ईमान का मूल समझना कैसा है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: हज़रत इमामों (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) को किसी नबी (अलैहिस्सलाम) से श्रेष्ठ कहना कुफ़्र है। हज़रत अमीर मुआविया (रज़ियल्लाहु अन्हु) या किसी सहाबी (साथी) को बुरा कहना रफ़्ज़ (भटकाव) है। यज़ीद के वे साथी जिन्होंने उसके शापित अत्याचारों में उसकी मदद की, वे निश्चित रूप से दुष्ट और शापित हैं, लेकिन उसे (यज़ीद को) काफ़िर और मलऊन कहने में मतभेद है, हमारे इमाम का रुख इस पर मौन है, और जो उसे ऐसा कहता है वह भी निंदा का पात्र नहीं है। अहल-ए-सुन्नत के कुछ विद्वान तीसरा, दसवां और चालीसवां (ईसाल-ए-सवाब) को पुण्य का कार्य मानते हैं, और ये ईसाल-ए-सवाब के लिए प्रथागत विशिष्टताएं हैं और मुस्तहब (पसंदीदा) हैं। प्रश्न में उल्लिखित शेष प्रथाएं सभी प्रतिबंधित और नाजायज़ हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसअला 207 से 219: संभल, जिला मुरादाबाद, ज़ियारत हबीबुल्लाह शाह के पास से, मुहम्मद फ़ारूक़ हुसैन द्वारा प्रेषित, 19 मुहर्रम-उल-हराम 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के सुदृढ़ मुफ़्ती (अल्लाह उन्हें मुसलमानों की ओर से सबसे अच्छा बदला दे) इन मसलों में क्या कहते हैं: (1) क्या हज़रत क़ासिम बिन हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) का निकाह हज़रत कुबरा बिन्त हुसैन (अलैहिस्सलाम) से आशूरा के दिन कर्बला के मैदान में हुआ था? क्या यह अहल-ए-सुन्नत व जमाअत के नज़दीक सही रिवायतों से साबित है या नहीं? (2) ताज़ियादारी किस समय से शुरू हुई है? (3)

प्रचलित ताज़ियादारी, शहादत की रात को रौशनी आदि करना, और आशूरा के दिन ताज़िया को दफ़न करना।

पृष्ठ 509 का 720

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۴

مسئلہ ۲۰۶: از ریاست راجگڑھ بیاورہ، ایجنسی بھوپال، سنٹرل انڈیا، مسئولہ محمد اسماعیل سوار رسالہ باڈی گارڈ ۱۵ محرم الحرام ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس بارے میں کہ محرم میں تعزیہ بنانا اور اس سے منتیں مانگنی، علم اٹھانا، مہندی چڑھانا، بچوں کو سبز کپڑے پہنانے اور ان کے گلوں میں ڈوریاں باندھ کر ان کو حضرت امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا فقیر بنانا، دس روز تک سوگوار رہنا، اور اس کے بعد سوئم اور دسواں چالیسواں کرنا، ایسے مرثیوں کا پڑھنا جس میں اہلبیت کے سر پیٹنے اور بین کرنے، خلاف شرع امور کا ذکر ہے، اور یہ کہ ان مراسم کی ادائیگی کو حب اہلبیت سمجھنا عام طور سے ہمراہیا ن یزید کو لعین مردود کافر کہنا حضرت امیر معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو برا کہنا اور اس کو مقتضائے حب علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سمجھنا، حضرت امام حسن و حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہما کو جملہ انبیاء سے بھی رتبہ میں بڑھ کر سمجھنا بایں خیال کہ حضرات صوفیہ کرام نے بھی ایسا ہی سمجھا ہے اور ایسا سمجھنے کو عین ایمان کہنا کیسا ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: حضرات امامین رضی اللہ تعالیٰ عنہما خواہ کسی غیر نبی کو کسی نبی سے افضل کہنا کفر ہے۔ حضرت امیر معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ یا کسی صحابی کو برا کہنا رفض ہے۔ ہمراہیا ن یزید یعنی جو ان مظالم ملعونہ میں اس کے مدد و معاون تھے ضرور خبیث و مردود تھے، اور کافر و ملعون کہنے میں اختلاف ہے، ہمارے امام کا مذہب سکوت ہے، اور جو کہے وہ بھی مورد الزام نہیں کہ یہ بھی امام احمد وغیرہ بعض ائمہ اہلسنت کا مذہب ہے، سوم، دسواں، چالیسواں ایصال ثواب ہیں اور یہ تخصیصات عرفیہ ہیں اور ایصال ثواب مستحب، باقی مراسم کہ سوال میں مذکور ہوئے سب ممنوع و ناجائز ہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۲۰۷ تا ۲۱۹: از سنبھل ضلع مراد آباد محلہ گھگر سرائے متصل زیارت حبیب اللہ شاہ مسئولہ محمد فاروق حسین صاحب ۱۹ محرم الحرام ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیان شرع متین جزاہم اللہ تعالیٰ خیر الجزاء عن المسلمین ان مسائل میں کہ: (۱) حضرت قاسم بن حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہما کا نکاح جناب کبری بنت حسین علیہ السلام سے بروز عاشورہ بمقام کربلا ہوا تھا یا نہیں اور روایات صحیح سے ثابت ہے یا نہیں، نزدیک اہلسنت و جماعت کے؟ (۲) تعزیہ داری کس وقت سے جاری ہے؟ (۳) تعزیہ داری مروجہ، شب شہادت کو روشنی وغیرہ کرنا، بروز عاشورہ تعزیہ کو دفن کرنا،

Fatawa Razawiyya Volume 24

(3) Is it permissible according to the Ahl-e-Sunnat wal-Jama'at to offer Fatiha for 'Sehwam' on the 12th of Muharram, calculating it as the fortieth day (Chehlum) from the Day of Ashura? (4) Is it permissible to participate in gatherings where elegies (marsiye) etc. are recited? (5) Is it permissible to provide 'Sabeel' (free drinks) to people who play drums and cymbals, or to set up a 'Sabeel' at a fair? Will such a 'Sabeel' earn reward or cause punishment? (6) After the martyrdom of Imam Hussain (peace be upon him), where did his wife, Lady Shahr Bano, go? (7) Were the sons of Hazrat Muslim martyred in Kufa or not? Tarikh al-Tabari states that the sons were not with him in Kufa. (8) For whom is it permissible to listen to Qawwali? (9) Is making a Tazia (replica of the tomb) permissible or not? (10) If one makes a Tazia, how great is the sin? (11) Is it permissible or not to kiss the thumbs during the recitation of the verse 'Muhammad is not the father of any of your men'[1] (Muhammad sallallahu alayhi wa sallam is not the father of any of your men - Trans.) and during the Adhan (call to prayer) at the words 'Ashhadu anna Muhammadan Rasulullah'? (12) After the martyrdom, how many blessed heads were sent to Damascus and how many returned? (13) Since when has the custom of Mehndi etc. been prevalent?

The Answer: (1) There is no evidence for this. And Allah Almighty knows best. (2) It is a very recent invention of Indians. And Allah Almighty knows best. (3) Fatiha is permissible at all times, but innovations like Tazia etc. are impermissible. And Allah Almighty knows best. (4) It is forbidden (Haram). And Allah Almighty knows best. (5) Water or syrup can be given to any Muslim, but a 'Sabeel' should not be set up at a fair—not because of opposition to the 'Sabeel' itself, but because of participation in the fair. And Allah Almighty knows best.

[1] Al-Quran al-Karim 33/40 Page 510 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

(३) १२ मुहर्रम को 'सेवम' की फ़ातिहा देना, आशूरा के दिन के हिसाब से चालीसवां (चेहलम) करना अहले सुन्नत व जमात के नज़दीक जाइज़ है या नहीं? (४) ऐसी महफ़िलों में शरीक होना जिनमें मर्सिया वग़ैरह होते हैं? (५) जो लोग ढोल-ताशे बजाते हों उनको सबील का शरबत पिलाना या मेले में सबील लगाना जाइज़ है या नहीं? और ऐसी सबील सवाब का बाइस होगी या अज़ाब का? (६) जनाब इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की शहादत के बाद उनकी ज़ौजा (पत्नी) जनाब शहर बानो कहाँ गईं? (७) हज़रत मुस्लिम के साहबज़ादे कूफ़ा में शहीद हुए या नहीं? तारीख़-ए-तबरी में है कि कूफ़ा में साहबज़ादे हमराह न थे। (८) क़व्वाली सुनना किन लोगों के लिए जाइज़ है? (९) ताज़िया बनाना जाइज़ है या नहीं? (१०) अगर ताज़िया बनाए तो किस क़दर गुनाह है? (११) आयत-ए-करीमा 'مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ'[1] (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं। - तर्जुमा) की तिलावत के वक़्त और अज़ान में लफ़्ज़ 'अशहदु अन्ना मुहम्मदन रसूलुल्लाह' पर अंगूठे चूमना जाइज़ है या नहीं? (१२) शहादत के बाद कितने सर-ए-मुबारक दमिश्क रवाना हुए थे और कितने वापस आए? (१३) मेहंदी वग़ैरह का रिवाज कब से है?

अल-जवाब: (१) इसका कोई सुबूत नहीं। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)। (२) बहुत जदीद (नया), हिंदुस्तानियों की ईजाद है। वल्लाहु तआला आलम। (३) फ़ातिहा हर वक़्त जाइज़ है और ताज़िया वग़ैरह बिदआत (नवाचार) नाजाइज़ हैं। वल्लाहु तआला आलम। (४) हराम है। वल्लाहु तआला आलम। (५) पानी या शरबत हर मुसलमान को पिला सकते हैं और मेले में सबील न लगाई जाए, इसलिए नहीं कि सबील की मुख़ालफ़त है बल्कि मेले में शिरकत की वजह से। वल्लाहु तआला आलम।

१ अल-क़ुरआन अल-करीम ३३/४० पेज ५१० / ७२०

(۳) بروز ۱۲ محرم سوم کی فاتحہ دینا یوم عاشورہ کے حساب سے چالیسواں کرنا اہلسنت و جماعت کے نزدیک جائز ہے یا نہیں؟ (۴) ایسی مجلسوں میں شریک ہونا جس میں مرثیہ وغیرہ ہوتے ہیں؟ (۵) جو لوگ ڈھول تاشے بجاتے ہوں ان کو سبیل کا شربت پلانا یا میلہ میں سبیل لگانا جائز ہے یا نہیں؟ اور ایسی سبیل موجب ثواب ہوگی یا موجب عذاب؟ (۶) بعد شہادت جناب امام حسین علیہ السلام کی زوجہ جناب شہر بانو کہاں گئیں؟ (۷) حضرت مسلم کے صاحبزادے کوفہ میں شہید ہوئے یا نہیں؟ تاریخ طبری میں ہے کہ کوفہ میں صاحبزادے ہمراہ نہ تھے۔ (۸) قوالی کا سننا کن اشخاص کو جائز ہے؟ (۹) تعزیہ بنانا جائز ہے یا نہیں؟ (۱۰) اگر تعزیہ بنائے تو کس قدر گناہ ہے؟ (۱۱) انگوٹھے چومنا وقت تلاوتِ آیہ کریمہ "مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَا اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ" 1 (محمد صلی اللہ تعالی علیہ وسلم تمہارے مردوں میں سے کسی کے باپ نہیں۔ت) اور اذان میں لفظ اشہد ان محمداً رسول اللہ پر جائز ہے یا نہیں؟ (۱۲) بعد شہادت کس قدر سر مبارک دمشق کو روانہ ہوئے تھے اور کس قدر واپس آئے؟ (۱۳) مہندی وغیرہ کا کس وقت سے رواج ہے؟

الجواب: (۱) اس کا کوئی ثبوت نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم (۲) بہت جدید، ہندوستانیوں کی ایجاد ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم (۳) فاتحہ ہر وقت جائز ہے اور تعزیہ وغیرہ بدعات ناجائز۔ واللہ تعالیٰ اعلم (۴) حرام ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم (۵) پانی یا شربت ہر مسلمان کو پلا سکتے ہیں اور میلہ میں سبیل نہ لگائی جائے، نہ اس وجہ سے کہ سبیل کی مخالفت ہے بلکہ میلہ میں شرکت کی۔ واللہ تعالیٰ اعلم

۱ القرآن الکریم ۳۳ / ۴۰ Page 510 of 720

Fatawa Razawiyya Volume 24

(6) Madinah Tayyibah. And Allah the Almighty knows best. (7) I do not remember this at the moment, nor do I have the opportunity to check the date, nor is there a need for this question. (8) Listening to Qawwali with musical instruments is not permissible for any person. And Allah the Almighty knows best. (9) Not permissible. And Allah the Almighty knows best. (10) Whatever the sin of innovation (bid'at) is, its measure of sin is not in this world. And Allah the Almighty knows best. (11) It is permissible, rather commendable, while listening to the Adhan; but the way it is prevalent while listening to a sacred verse (ayah karima) is impermissible. And Allah the Almighty knows best. (12) It is stated in a Hadith that the excellence of a person's Islam is that he abandons useless things. (13) [Men's] Henna is impermissible and it must have been started by some ignorant, foolish person. And Allah the Almighty knows best.

फ़तावा रज़विय्या जिल्द २४

(६) मदीना तैय्यबा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (७) यह मुझे इस समय याद नहीं, न ही तारीख देखने की फ़ुरसत है, और न ही इस सवाल की ज़रूरत है। (८) वाद्ययंत्रों (मज़ामीर) के साथ कव्वाली सुनना किसी भी व्यक्ति के लिए जायज़ नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (९) नाजायज़। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (१०) बिदअत का जो गुनाह है वह है, गुनाह का माप-तोल दुनिया में नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (११) अज़ान सुनते समय जायज़ बल्कि मुस्तहब है, और आयते करीमा सुनते समय जिस तरह प्रचलित है वह नाजायज़ है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (१२) हदीस में फ़रमाया गया है कि इंसान के इस्लाम की खूबी यह है कि वह फ़ुज़ूल (बेकार) बातों को छोड़ दे। (१३) [मर्दों के लिए] मेहंदी नाजायज़ है और इसकी शुरुआत किसी जाहिल बेवकूफ ने की होगी। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

पृष्ठ ७२० का ५११

(۶) مدینہ طیبہ۔ واللہ تعالیٰ اعلم (۷) یہ نہ مجھے اس وقت یاد، نہ تاریخ دیکھنے کی فرصت ، نہ اس سوال کی حاجت۔ (۸) قوالی مع مزامیر سننا کسی شخص کو جائز نہیں ۔واللہ تعالیٰ اعلم (۹) ناجائز۔ واللہ تعالیٰ اعلم (۱۰) بدعت کا جو گناہ ہے وہ ہے، گناہ کی ناپ تول دنیا میں نہیں ۔واللہ تعالیٰ اعلم (۱۱) اذان سنتے وقت جائز بلکہ مستحب ہے اور آیہ کریمہ سنتے وقت جس طرح رائج ہے ناجائز ہے ۔واللہ تعالیٰ اعلم (۱۲) حدیث میں فرمایا آدمی کے اسلام کی خوبی یہ ہے کہ بیکار باتیں چھوڑے۔ (۱۳) مہندی ناجائز ہے اور اس کا آغاز کسی جاہل سفیہ نے کیا ہوگا۔ واللہ تعالیٰ اعلم

Volume 24 Fatawa Razwiya

Treatise Aa'ali al-Ifada fi Ta'ziyat al-Hind wa Bayan al-Shahada 1321 AH (Sublime benefits regarding the rulings of Taziyadari and narration of martyrdom in India)

Issue 220 to 227: In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful

Indeed, the best condolence for the hearts of Muslims against the onslaught of innovations (Bid'ah) upon the symbols of religion is that all praise be to Allah, Lord of the worlds, and the best blessings and most complete peace be upon the master of those who testify to the truth on the Day of Resurrection, and upon his family and companions, the distinguished and honored ones. Amen!

Question One: 24 Safar 1308 AH What do the scholars of religion say on this matter: what is the ruling on Taziyadari? Explain so that you may be rewarded. (T)

खंड 24 फ़तावा रज़विया

रिसाला (लघु पुस्तिका) आली अल-इफ़ादा फ़ी तअज़ियत अल-हिन्द व बयान अल-शहादा १३२१ हिजरी (भारत में ताज़ियादारी और शहादत के बयान के अहकाम से मुताल्लिक़ बुलंद पायः फ़वाइद)

मसअला २२० से २२७: बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम

दीनी शिआर पर बिदअत के हुजूम की वजह से मुसलमानों के दिलों के लिए बेहतरीन तअज़ियत (तसल्ली), अल्लाह तआला रब्बुल आलमीन की हम्द, और क़यामत के रोज़ हक़ की शहादत देने वालों के सरदार पर बेहतरीन सलात और कामिल तरीन सलाम और उनकी आल व अस्हाब मुमताज़ इज़्ज़त वालों पर। आमीन!

सवाल अव्वल: २४ सफ़र १३०८ हिजरी क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसअले में कि ताज़ियादारी का क्या हुक्म है? बय्यिनू तूजरू (बयान फ़रमाएं ताकि अज्र पाएं)।

पृष्ठ ७२० का ५१२

جلد ۲۴ فتاویٰ رضویہ

رسالہ اعالی الافادة في تعزية الهند وبيان شهادة ۱۳۲۱ھ (ہندوستان میں تعزیہ داری اور بیان شہادت کے احکام سے متعلق بلند پایہ فوائد)

مسئلہ ۲۲۰ تا ۲۲۷: بسم اللہ الرحمن الرحیم

دینی شعائر پر بدعات کے ہجوم کی وجہ سے مسلمانوں کے دلوں کے لئے بہترین تعزیت ، اللہ تعالیٰ رب العالمین کی حمد، اور قیامت کے روز حق کی شہادت دینے والوں کے سردار پر بہترین صلوۃ اور کامل ترین سلام اور ان کی آل واصحاب ممتاز عزت والوں پر۔ آمین!

سوال اول: ۲۴ صفر ۱۳۰۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ تعزیہ داری کا کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا (بیان فرماؤ تاکہ اجر پاؤ۔ ت)

صفحہ 512 از 720

Fatawa Razawiyya, Volume 24

The Answer:

The origin of 'Ta'ziyah' was only this much: making an accurate replica of the radiant tomb of the prince in the rose-colored robe, Husayn, the martyr of oppression and injustice (may the prayers and peace of Allah Almighty be upon his noble grandfather and upon him), with the intention of seeking blessings and keeping it in the house. There was no harm in this according to Sharia, as making or keeping images of buildings and other non-living things is permissible. Moreover, keeping replicas of things associated with the sanctities of religion to evoke reverence with the intention of seeking blessings is absolutely permissible. For example, for centuries, generation after generation of religious leaders and believing scholars have made sketches of the 'Na'layn Sharifin' (noble sandals) of the Master of the Two Worlds (peace and blessings of Allah Almighty be upon him) and written independent treatises on their great benefits and abundant advantages. Those who have doubts should study Imam Allama Tilmisani's 'Fath al-Muta'al' and other works.

However, the ignorant have completely obliterated this permissible origin and fabricated hundreds of superstitions that make the pure Sharia cry out for protection. Firstly, the actual replica of the blessed tomb is no longer considered in the 'Ta'ziyah' itself; everywhere there's a new cut and a new design which has no relation or resemblance to that replica. Then, some contain fairies, some have the Buraq, and others have absurd pomposity. Furthermore, their parade through every street and desert to spread grief, the chest-beating around them, and the clamor of orchestrated mourning—some are bowing and saluting these images, some are busy circumambulating them, some have fallen into prostration, and some—God forbid, God forbid—consider these foundations of innovations as the manifestation of Hazrat Imam, his grandfather, and upon him be prayers and peace. They ask for desires and make vows to this mica and tinsel, considering it a fulfiller of needs. Then, the remaining spectacles, music, drums, the mixing of men and women at night, and various kinds of nonsensical games are the crown of it all.

In short, the ten days of Muharram al-Haram, which from previous Sharias to this pure Sharia was established as a highly blessed time and a place for worship, have been turned into a period of ignorant and sinful fairs by these absurd customs. Then, the fervor for sinful innovation became such that even charity was not kept as charity. Ostentation and pride are displayed openly. And even then, it's not given

straight to the needy; rather, people sit on roofs and throw it. Breads fall to the ground, disrespecting the divine sustenance. Coins fall in the sand and disappear, wasting wealth. But the name is made that 'so-and-so is distributing the langar (free meal).' Now the 'flowers' of the spring of the ten days have bloomed, drums and music continue playing, there's the roar of various games, a crowd of bazar women everywhere, complete customs of lustful fairs—this is the celebration, and with it, the thought is such that as if these man-made images are exactly the martyrs (may Allah be pleased with them)...

Note: See our treatise 'Shifa al-Walih fi Suwar al-Habib wa Mazaruhu wa Na'aluhu' (May Allah Almighty bless the Beloved, his family, and grant them peace). 12 minhu.

फतावा रज़विया, जिल्द 24

अल-जवाब (उत्तर):

ताज़िया की असल केवल इतनी थी कि अत्याचार और अन्याय के शहीद, गुलाब के रंग के चोगे वाले शहज़ादे हुसैन (अल्लाह तआला की रहमतें और सलाम उनके महान दादा और उन पर हों) के रौज़े की सही नकल बनाकर बरकत की नीयत से घर में रखना। इसमें शरीयत के अनुसार कोई बुराई नहीं थी क्योंकि इमारतों और अन्य निर्जीव वस्तुओं के चित्र बनाना या रखना पूरी तरह जायज़ है। इसके अलावा, ऐसी चीज़ें जो दीन की पवित्रताओं से जुड़ी हों और अज़मत (महानता) पैदा करें, उनकी प्रतिकृति (तस्वीर) बरकत की नीयत से पास रखना बिल्कुल जायज़ है। उदाहरण के तौर पर, सदियों से पीढ़ी-दर-पीढ़ी दीन के इमामों और आलिमों ने हुज़ूर सैयदुल कौनैन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के नैलैन शरीफैन (पवित्र जूतों) के नक्शे बनाए और उनके महान लाभों पर स्वतंत्र शोध पत्र लिखे। जिसे संदेह हो, वह इमाम अल्लामा तिलमिसानी की 'फतह अल-मुताल' आदि का अध्ययन करे।

लेकिन अज्ञानियों ने इस जायज़ असल को पूरी तरह से नष्ट कर दिया और सैकड़ों ऐसी अंधविश्वास और कुरीतियाँ पैदा कर दीं कि पवित्र शरीयत से 'पनाह-पनाह' की आवाज़ें आने लगीं। सबसे पहले तो ताज़िया में रौज़े की नकल का कोई ध्यान नहीं रहा; हर जगह नई काट-छाँट और नई बनावट है जिसका उस नकल से कोई संबंध नहीं है। फिर किसी में परियाँ, किसी में बुराक़, और किसी में अन्य व्यर्थ का आडंबर। इसके बाद, दुख फैलाने के लिए गली-गली और जंगल-जंगल उनका जुलूस निकालना, उनके इर्द-गिर्द सीनाज़नी (छाती पीटना), और बनावटी मातम का शोर-शराबा। कोई इन चित्रों को झुक-झुक कर सलाम कर रहा है, कोई तवाफ़ (परिक्रमा) में व्यस्त है, कोई सजदे में गिरा है, और कोई इन बिदअतों (कुरीतियों) को—अल्लाह की पनाह, अल्लाह की पनाह—हज़रत इमाम, उनके दादा और उन पर दुरूद व सलाम हो, उनका जलवागाह समझकर इस पन्नी और चमकीली चीज़ से मुरादें माँगता है, मन्नतें मानता है और उसे हाजत रवा (ज़रूरतें पूरी करने वाला) समझता है। फिर बाकी तमाशे, बाजे, ताशे, रात को मर्द-औरतों का मिलना-जुलना और तरह-तरह के व्यर्थ खेल इन सब पर हावी हैं।

संक्षेप में, मुहर्रम-उल-हराम के दस दिन, जो पिछली शरीयतों से लेकर इस पाक शरीयत तक अत्यंत बरकत वाले और इबादत के समय थे, इन व्यर्थ रस्मों ने उन्हें अज्ञानतापूर्ण और पापपूर्ण मेलों के दौर में बदल दिया है। फिर बिदअत (नवाचार) का वह जोश हुआ कि खैरात (दान) को भी दान की तरह

नहीं रखा गया, दिखावा और अहंकार खुल्लम-खुल्ला होता है। और वह भी यह नहीं कि सीधे ज़रूरतमंदों को दें, बल्कि छतों पर बैठकर फेंकेंगे। रोटियाँ ज़मीन पर गिर रही हैं, ईश्वरीय रिज़्क (अन्न) का अपमान हो रहा है। पैसे रेत में गिरकर गायब हो जाते हैं, धन की बर्बादी हो रही है, लेकिन नाम हो गया कि फलां साहब लंगर लुटा रहे हैं। अब दस दिनों की 'बहार' के फूल खिले हैं, ताशे-बाजे बज रहे हैं, तरह-तरह के खेलों की धूम है, हर तरफ बाज़ारू औरतों की भीड़ है, कामुक मेलों की पूरी रस्में हैं। यह कैसा उत्सव है और इसके साथ यह विचार कि मानो ये हाथ से बनी तस्वीरें हूबहू शहीद हज़रात (अल्लाह उन सब से राज़ी हो)...

नोट: हमारा शोध पत्र 'शिफ़ा अल-वालिह फ़ी सुवर अल-हबीब व मज़ारुहु व नैलुहु' देखें (अल्लाह तआला महबूब, उनके परिवार पर रहमत और बरकत नाज़िल फरमाए)। 12 मिन्हु।

पृष्ठ 513 कुल 720 में से

الجواب:

تعزیہ کی اصل اس قدر تھی کہ روضہ پر نور شہزادہ گلگوں قبا حسین شہید ظلم وجفا صلوات اللہ تعالیٰ وسلامہ علیٰ جدہ الکریم وعلیہ کی صحیح نقل بنا کر بہ نیت تبرک مکان میں رکھنا اس میں شرعاً کوئی حرج نہ تھا کہ تصویر مکانات وغیرہ ہر غیر جاندار کی بنانا ، رکھنا ، سب جائز، اور ایسی چیزیں کہ معظمات دین کی طرف منسوب ہو کر عظمت پیدا کریں ان کی تمثال بہ نیت تبرک پاس رکھنا قطعاً جائز، جیسے صد ہا سال سے طبقہ فطبقہ ائمہ دین وعلمائے معتقدین نعلین شریفین حضور سید الکونین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے نقشے بناتے اور ان کے فوائد جلیلہ و منافع جزیلہ میں مستقل رسالے تصنیف فرماتے ہیں جسے اشتباہ ہو امام علامہ تلمسانی کی فتح المتعال وغیرہ مطالعہ کرے، مگر جہاں بیخرد نے اس اصل جائز کو بالکل نیست و نابود کرکے صدہا خرافات وہ تراشیں کہ شریعت مطہرہ سے الاماں الاماں کی صدائیں آئیں، اول تو نفس تعزیہ میں روضہ مبارک کی نقل ملحوظ نہ رہی، ہر جگہ نئی تراش نئی گھڑت جسے اس نقل سے کچھ علاقہ نہ نسبت، پھر کسی میں پریاں، کسی میں براق، کسی میں اور بیہودہ طمطراق، پھر کوچہ بکوچہ و دشت بدشت، اشاعت غم کے لئے ان کا گشت، اور ان کے گرد سینہ زنی، اور ماتم سازشی کی شور افگنی، کوئی ان تصویروں کو جھک جھک کر سلام کر رہا ہے، کوئی مشغولِ طواف، کوئی سجدہ میں گرا ہے، کوئی ان مایہ بدعات کو معاذ اللہ معاذ اللہ جلوہ گاہ حضرت امام علی جدہ وعلیہ الصلوۃ والسلام سمجھ کر اس ابرک پنی سے مرادیں مانگتا منتیں مانتا ہے، حاجت روا جانتا ہے، پھر باقی تماشے ، باجے، تاشے، مردوں عورتوں کا راتوں کو میل، اور طرح طرح کے بیہودہ کھیل ان سب پر طرہ ہیں۔ غرض عشرہ محرم الحرام کہ اگلی شریعتوں سے اس شریعت پاک تک نہایت بابرکت و

محلِ عبادت ٹھہرا ہوا تھا، ان بیہودہ رسوم نے جاہلانہ اور فاسقانہ میلوں کا زمانہ کردیا پھر وبال ابتداع کا وہ جوش ہوا کہ خیرات کو بھی بطور خیرات نہ رکھا، ریاء وتفاخر علانیہ ہوتا ہے پھر وہ بھی یہ نہیں کہ سیدھی طرح محتاجوں کو دیں بلکہ چھتوں پر بیٹھ کر پھینکیں گے روٹیاں زمین پر گر رہی ہیں رزقِ الہی کی بے ادبی ہوتی ہے پیسے ریتے میں گر کر غائب ہوتے ہیں، مال کی اضاعت ہورہی ہے، مگر نام تو ہو گیا کہ فلاں صاحب لنگر لٹا رہے ہیں، اب بہار عشرہ کے پھول کھلے، تاشے باجے بجتے چلے، طرح طرح کے کھیلوں کی دھوم، بازاری عورتوں کا ہر طرف ہجوم، شہوانی میلوں کی پوری رسوم، جشن یہ کچھ اور اس کے ساتھ خیال وہ کچھ کہ گویا یہ ساختہ تصویریں بعینہا حضرات شہداء رضوان اللہ...

عہ: ہمارا رسالہ شفاء الوالہ فی صور الحبیب ومزارہ ونعالہ دیکھئے صلی اللہ تعالیٰ علی الحبیب و آلہ و بارک و سلم ۱۲ منہ۔

صفحہ 513 از 720

Volume 24 Fatawa Razawiyya

...are the funerals of [the righteous ones] may Allah be pleased with all of them, some were torn apart and the rest broken and buried. This separate crime and burden of wasting wealth occurs every year. May Allah Almighty, for the sake of the martyrs of Karbala (may Allah's pleasure and praise be upon them), grant our brothers the guidance for good deeds and the repentance from bad things, Ameen! Now, that Taziya-dari (the mourning ritual) by this disapproved method is strictly an innovation (bid'ah), illegitimate, and forbidden. Yes, if the people of Islam would limit themselves to the virtue of conveying rewards (Isal-e-Sawab) to the pure souls of the noble martyrs (may Allah's pleasure be upon them) in a permissible manner, how excellent and beloved it would be. And if, in their longing and love, there was a need for a replica of the luminous shrine, they should have contented themselves with a permissible extent—that is, keeping an accurate replica in their homes for the purpose of blessings and visitation, while avoiding the display of grief, artificial sorrow, wailing, chest-beating, and other heinous acts and definitive innovations. Even in this, there would be no harm. However, now in this replica as well, there is a resemblance to the people of innovation and the risk of being accused of Taziya-dari, and a fear of future generations or believers falling into innovations. It is stated in a Hadith: "Avoid places of suspicion."[1] (Avoid suspicious situations. – Translator)

And it has been narrated:

Whoever believes in Allah and the Last Day should not stand in places of suspicion.[2]	**The person who believes in Allah Almighty and the Hereafter should never stay in places of suspicion. (T)**

Therefore, one should not even make such a picture of the holy shrine of the Leader of Martyrs (may Allah be pleased with him). Instead, content yourself with an accurate map/diagram on paper and keep it for blessings without any forbidden mixtures, just as diagrams of the Great Kaaba and the Exalted Shrine come from the Two Holy Cities, or as diagrams of the luminous graves are drawn in Dala'il al-Khayrat Sharif. And peace be upon him who follows the guidance. And Allah, Glory be to Him, the Exalted, knows best.

Second Question: From Marrah Wahh, sent by Maulvi Syed Muhammad Shah Sahib, Milad Khwan, 22 Shaban 1311 AH. What is the ruling of the scholars of the firm religion in this matter: in Milad Sharif gatherings, regarding the [reading of] Shahadat Nama (account of martyrdom)...

[1] Kashf al-Khafa, Hadith 88, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut 1/37; Ittihaf as-Sadah, Kitab Aja'ib al-Qalb, Biyan Tafsil Madakhil ash-Shaytan ila al-Qalb, Dar al-Fikr Beirut 7/283. [2] Maraqi al-Falah with Hashiyah al-Tahtawi, Kitab as-Salat, Bab Idrak al-Faridah, Nur Muhammad Karkhana Tijarat Karachi, p. 249.

जिल्द २४ फ़तावा रज़विया

...ये उन सभी (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के जनाज़े हैं, कुछ को नोचकर अलग किया गया और बाकी को तोड़-फोड़ कर दफ़न कर दिया गया। यह हर साल धन की बर्बादी का एक अलग अपराध और बोझ बना रहता है। अल्लाह तआला कर्बला के शहीदों (अल्लाह की उन पर प्रसन्नता और प्रशंसा हो) के सदके हमारे भाइयों को नेक काम करने की तौफीक दे और बुरी बातों से तौबा अता फरमाए, आमीन! अब जबकि ताज़ियादारी इस नापसंद तरीके का नाम है, तो यह कतई तौर पर बिदअत (नवाचार), नाजायज़ और हराम है। हाँ, अगर इस्लाम के मानने वाले जायज़ तरीके से शहीदे कर्बला (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) की पावन आत्माओं को सवाब पहुँचाने (ईसाल-ए-सवाब) की सआदत पर बस करते, तो यह कितना अच्छा और प्रिय होता। और अगर प्रेम और स्नेह के कारण रौज़ा-ए-अनवर की नक़ल (प्रतिकृति) की ज़रूरत थी, तो बस इतनी जायज़ सीमा तक ही संतोष करते कि बरकत और ज़ियारत के लिए अपने घरों में उसकी सही नक़ल रखते, और शोक के प्रदर्शन, बनावटी गम, विलाप और मातम जैसी घृणित चीज़ों और स्पष्ट बिदअतों से बचते। इसमें भी कोई हर्ज नहीं था। लेकिन अब इस नक़ल में भी बिदअतियों से समानता और ताज़ियादारी की तोहमत (आरोप) का अंदेशा है, और भविष्य में अपनी संतानों या विश्वास रखने वालों के बिदअतों में फंसने का डर है। और हदीस में आया है: "आशंका के स्थानों से बचो।"[1] (संदेह के स्थानों से बचें। – अनुवादक)

और वर्णित है:

जो व्यक्ति अल्लाह और आखिरत के दिन पर विश्वास रखता है, उसे संदेह के स्थानों पर नहीं खड़ा होना चाहिए।[2]	**जो व्यक्ति अल्लाह तआला और आखिरत पर ईमान रखता है, वह हरगिज़ तोहमत (संदेह) के स्थानों में न ठहरे। (त)**

इसलिए, हुज़ूर सैयदुश शुहदा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के पवित्र रौज़े की ऐसी तस्वीर भी न बनाएँ बल्कि केवल कागज़ पर उसके सही नक़्शे (मानचित्र) पर संतोष करें और उसे बरकत की नियत से बिना किसी वर्जित मिलावट के अपने पास रखें। ठीक वैसे ही जैसे हरमैन शरीफैन से काबा और रौज़ा-ए-अकबर के नक़्शे आते हैं, या दलाईलुल खैरात शरीफ़ में पवित्र कब्रों के नक़्शे बने होते हैं। हिदायत की पैरवी करने वालों पर सलाम हो। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है।

दूसरा प्रश्न: मर्रह वहह से, प्रेषक मौलवी सैयद मुहम्मद शाह साहब मिलाद ख़ान, 22 शाबान 1311 हिजरी। दीन-ए-मतीन के विद्वानों का इस मसले में क्या कहना है कि: मिलाद शरीफ़ की महफ़िलों में शहादत नामा का...

---

[1] कशफ़ुल खफ़ा, हदीस 88, दारुल कुतुबुल इलमिया बेरुत 1/37; इत्तिहाफ़ुस सादा, किताब अजायबुल क़ल्ब, बयान तफ़सील मदाख़िलुश शैतान इलल क़ल्ब, दारुल फ़िक्र बेरुत 7/283। [2] मराक़ियुल फ़लाह मअ हाशिया अत्तहतावी, किताबुस सालात, बाब इदराकुल फ़रीज़ा, नूर मोहम्मद कारखाना तिज़ारत कराची, पृष्ठ 249।

تعالیٰ علیہم اجمعین کے جنازے ہیں، کچھ نوچ اتار باقی توڑ تاڑ دفن کر دیئے۔ یہ ہر سال اضاعتِ مال کے جرم و وبال جدا گانہ رہے۔ اللہ تعالیٰ صدقہ حضراتِ شہدائے کربلا علیہم الرضوان والثناء کا ہمارے بھائیوں کو نیکیوں کی توفیق بخشے اور بری باتوں سے توبہ عطا فرمائے، آمین! اب کہ تعزیہ داری اس طریقہ نامرضیہ کا نام ہے قطعاً بدعت و ناجائز و حرام ہے، ہاں اگر اہل اسلام جائز طور پر حضراتِ شہدائے کرام علیہم الرضوان کی ارواح طیبہ کو ایصال ثواب کی سعادت پر اقتصار کرتے تو کس قدر خوب و محبوب تھا اور اگر نظر شوق و محبت میں نقل روضہ انور کی حاجت تھی تو اسی قدر جائز پر قناعت کرتے کہ صحیح نقل بغرضِ تبرک و زیارت اپنے مکانوں میں رکھتے اور اشاعتِ غم و تصنع الم و نوحہ زنی و ماتم کنی و دیگر امورِ شنیعہ وبدعات قطعیہ سے بچتے اس قدر میں بھی کوئی حرج نہ تھا مگر اب اس نقل میں بھی اہلِ بدعت سے ایک مشابہت اور تعزیہ داری کی تہمت کا خدشہ اور آئندہ اپنی اولاد یا اہل اعتقاد کے لئے ابتلاء بدعات کا اندیشہ ہے، اور حدیث میں آیا ہے: اتقوا مواضع التھم ۱ (تہمت کے مواقع سے بچو۔ ت)

اور وارد ہوا:

من کان یؤمن باللہ والیوم الآخر فلا یقفن مواقف التھم ۲ — **جو شخص اللہ تعالیٰ اور آخرت پر ایمان رکھتا ہے وہ ہرگز تہمت کے مواقع میں نہ ٹھہرے۔ (ت)**

لہذا روضہ اقدس حضور سید الشہداء رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی ایسی تصویر بھی نہ بنائے بلکہ صرف کاغذ کے صحیح نقشے پر قناعت کرے اور اسے بقصد تبرک بے آمیزشِ منہیات اپنے پاس رکھے جس طرح حرمین محترمین سے کعبہ معظمہ اور روضہ عالیہ کے نقشے آتے ہیں یا دلائل

الخیرات شریف میں قبور پرنور کے نقشے لکھے ہیں والسلام علی من اتبع الھدی، واللہ سبحنہ و تعالی اعلم۔

سوال دوم: از مررہ وہہ مرسلہ مولوی سید محمد شاہ صاحب میلاد خواں ۲۲ شعبان ۱۳۱۱ھ کیا ارشاد ہے علمائے دین متین کا اس مسئلہ میں کہ مجالسِ میلاد شریف میں شہادت نامہ کا

---

۱ کشف الخفاء حدیث ۸۸ دار الکتب العلمیہ بیروت ۱ / ۳۷، اتحاف السادة کتاب عجائب القلب بیان تفصیل مداخل الشیطان الی القلب، دار الفکر بیروت ۷ / ۲۸۳ ۲ مراقی الفلاح مع حاشیة الطحطاوي کتاب الصلوة باب ادراك الفریضة نور محمد کارخانہ تجارت کراچی ص ۲۴۹

Fatawa Razawiya, Volume 24

Is it permissible to read or not? Clarify and be rewarded.

The Answer: The accounts of martyrdom (Shahadat Nama) in prose or poetry that are prevalent among the common people today are mostly filled with false and baseless narrations and consist of fabricated lies. Reading or listening to such accounts, whether it is about martyrdom or anything else, and whether it is in a Mawlid gathering or elsewhere, is absolutely forbidden (Haram) and impermissible. Especially when those accounts include superstitions that cause instability in the beliefs of the common people, then it becomes even more like a deadly poison. In view of such reasons, Imam Hujjat al-Islam Muhammad Muhammad Muhammad Ghazali (may his secret be sanctified) and other leading scholars have ruled that reading Shahadat Nama is forbidden. Allama Ibn Hajar Makki (may his secret be sanctified) states in Al-Sawa'iq al-Muhriqah:

Arabic Quote	**Urdu Translation**
Al-Ghazali and others said: It is forbidden for the preacher and others to narrate the killing of al-Hasan and al-Husayn and its story, etc.	Imam Ghazali and others have stated that it is forbidden for a preacher to narrate the martyrdom of the Noble Hasanayn and baseless events related to it to the people, etc.

Then he said:

Arabic Quote	**Urdu Translation**
What he mentioned regarding the prohibition of narrating the killing of al-Husayn and what followed it does not contradict what I have mentioned in this book. This is because this true statement, which is necessary to believe regarding the greatness of the Companions and their innocence from every defect, is contrary to what ignorant preachers do. Indeed, they bring false and fabricated reports and the like, and they do not	The prohibition mentioned regarding narrating the martyrdom of Imam Husayn and the events following it does not contradict what I have mentioned in this book. Because these truths, which comprise the greatness of the noble Companions and their innocence from every defect and weakness, are mandatory to believe in. This is contrary to what ignorant preachers narrate; they present false, fabricated, and self-made reports before the people and do not

Arabic Quote	Urdu Translation
explain the interpretations and the truth that must be believed, etc.	provide their proper context, whereas it is necessary to hold the belief in the truth, etc.

1. Al-Sawa'iq al-Muhriqah, Al-Khatimah fi Bayan I'tiqad Ahl al-Sunnah, Maktabah Majeediyah Multan, p. 223
2. Al-Sawa'iq al-Muhriqah, Al-Khatimah fi Bayan I'tiqad Ahl al-Sunnah, Maktabah Majeediyah Multan, p. 224

फ़तावा रज़विया, खंड 24

पढ़ना जायज़ है या नहीं? बयान फरमाएँ और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: शहादत नामा (शहादत के वृत्तांत) गद्य या पद्य में, जो आज कल आम जनता में प्रचलित हैं, उनमें से अधिकांश झूठी और निराधार कहानियों से भरे हुए हैं और गढ़ी हुई बातों पर आधारित हैं। ऐसे वृत्तांतों का पढ़ना-सुनना, चाहे वह शहादत हो या कुछ और, और चाहे वह मिलाद की सभा में हो या कहीं और, पूरी तरह से हराम और नाजायज़ है। विशेष रूप से तब जब उन वृत्तांतों में ऐसी अंधविश्वासपूर्ण बातें शामिल हों जिनसे आम लोगों की आस्था डगमगा जाए, तो यह और भी घातक ज़हर की तरह है। इन्हीं कारणों को देखते हुए इमाम हुज्जत-उल-इस्लाम मुहम्मद मुहम्मद मुहम्मद ग़ज़ाली और अन्य प्रतिष्ठित विद्वानों ने आदेश दिया है कि शहादत नामा पढ़ना हराम है। अल्लामा इब्न हजर मक्की अपनी पुस्तक 'सवाइक़-ए-मुहर्रिका' में फरमाते हैं:

अरबी उद्धरण

ग़ज़ाली और अन्य ने कहा: उपदेशक और अन्य के लिए अल-हसन और अल-हुसैन की हत्या और उसकी कहानी का वर्णन करना मना है, इत्यादि।

उर्दू अनुवाद

इमाम ग़ज़ाली और अन्य ने फरमाया है कि उपदेशक के लिए हराम है कि वह हसनैन करीमैन की शहादत और उसके बेबुनियाद वाकयात लोगों को सुनाए, इत्यादि।

आगे फरमाया:

अरबी उद्धरण

इमाम हुसैन की हत्या और उसके बाद की घटनाओं के वर्णन की मनाही के बारे में जो उल्लेख किया गया है, वह इस पुस्तक में मेरे द्वारा बताई गई बातों के विपरीत नहीं है। क्योंकि यह सत्य विवरण, जिस पर विश्वास करना अनिवार्य है, वह सहाबा किराम की महानता और हर दोष से उनकी पवित्रता के बारे में है। यह उन अज्ञानी उपदेशकों के काम के विपरीत है जो झूठी और मनगढ़ंत खबरें पेश

उर्दू अनुवाद

इमाम हुसैन की शहादत और उसके बाद की घटनाओं के विवरण का हराम होना जो बयान किया गया, वह इसके विरुद्ध नहीं है जो कुछ मैंने इस पुस्तक में उल्लेख किया है क्योंकि ये सच्चाइयाँ जो सहाबा किराम की महानता और हर कमी और कमज़ोरी से उनकी बरीअत (निर्दोषता) पर आधारित हैं, उन पर विश्वास रखना अनिवार्य है। इसके विपरीत जो अज्ञानी उपदेशक बयान करते हैं, वे झूठी, बनावटी और स्व-निर्मित खबरें लोगों के

अरबी उद्धरण	उर्दू अनुवाद
करते हैं और उनकी सही व्याख्या नहीं करते, जबकि सत्य पर विश्वास रखना आवश्यक है, इत्यादि।	सामने पेश करते हैं और उनका संदर्भ नहीं समझाते, जबकि सत्य पर विश्वास रखना अनिवार्य है, इत्यादि।

1. अल-सवाइक़ अल-मुहर्रिका, अल-ख़ातिमा फ़ी बयान एतिकाद अहल-ए-सुन्नत, मकतबा मजीदिया मुल्तान, पृष्ठ 223
2. अल-सवाइक़ अल-मुहर्रिका, अल-ख़ातिमा फ़ी बयान एतिकाद अहल-ए-सुन्नत, मकतबा मजीदिया मुल्तान, पृष्ठ 224

پڑھنا جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: شہادت نامے نثر یا نظم جو آج کل عوام میں رائج ہیں اکثر روایاتِ باطلہ وبے سروپا سے مملو اور اکاذیبِ موضوعہ پر مشتمل ہیں، ایسے بیان کا پڑھنا سننا وہ شہادت ہو خواہ کچھ، اور مجلس میلاد مبارک میں ہو خواہ کہیں اور، مطلقاً حرام وناجائز ہے، خصوصاً جبکہ وہ بیان ایسی خرافات کو متضمن ہو جن سے عوام کے عقائد میں تزلزل واقع ہو کہ پھر تو اور بھی زیادہ زہرِ قاتل ہے،ایسے ہی وجوہ پر نظر فرماکر امام حجۃ الاسلام محمد محمد محمد غزالی قدس سرہ العالی وغیرہ ائمہ کرام نے حکم فرمایا کہ شہادت نامہ پڑھنا حرام ہے۔ علامہ ابن حجر مکی قدس سرہ المکی صواعقِ محرقۃ میں فرماتے ہیں:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
قال الغزالي وغيره يحرم على الواعظ وغيره رواية مقتل الحسن والحسين وحكايته الخ	امام غزالی وغیرہ نے فرمایا کہ واعظ کے لئے حرام ہے کہ وہ شہادتِ حسنین کریمین اور اس کے بے سروپا واقعات لوگوں کو سنائے الخ (ت)

پھر فرمایا:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
ما ذكره من حرمة رواية قتل الحسين ومابعده لاينافي ماذكرته فى هذا الكتاب لان هذا البيان الحق الذى يجب اعتقاده	امام حسین کی شہادت اور اس کے بعد کے واقعات کی روایات کا حرام ہونا جو بیان کیا گیا وہ اس کے خلاف نہیں جو کچھ میں نے اس کتاب میں ذکر کیا کیونکہ یہ سچائیان

عربی عبارت	اردو ترجمہ
من جلالة الصحابة وبرائتهم من كل نقص بخلاف مايفعله الوعاظ الجهلة فانهم يأتون بالاخبار الكاذبة والموضوعة ونحوها ولا يبينون المحامل والحق الذى يجب اعتقاده الخ۔	جو صحابہ کرام کی جلالت شان اور ہر نقص و کمزوری سے ان کی برات پر مشتمل ہے اس پر اعتقاد رکھنا واجب ہے۔ بخلاف اس کے جو جاہل واعظین بیان کرتے ہیں، وہ جھوٹی، بناوٹی اور خود ساختہ خبریں لوگوں کے سامنے پیش کرتے ہیں اور ان کا محمل نہیں بیان کرتے حالانکہ حق پر عقیدہ رکھنا ضروری ہے الخ (ت)

1. الصواعق المحرقة الخاتمة في بيان اعتقاد اهل السنة مكتبة مجيدية ملتان ص ٢٢٣
2. الصواعق المحرقة الخاتمة في بيان اعتقاد اهل السنة مكتبة مجيدية ملتان ص ٢٢٤

Fatawa Razawiyya, Vol 24

Likewise, when the objective is to nurture grief, affectation, and sorrow, even this intention is not commendable according to Shariah. The pure Shariah has commanded patience and submission during grief and to remove existing grief from the heart as much as possible, not to artificially and forcefully bring about non-existent grief, nor to consider it a means of proximity and reward. These are all detestable innovations (bid'ahs) of the Rafidah, which a Sunni must avoid. God forbid, if there were any virtue in it, then the nurturing of grief for the sacred demise of the Lord of the Worlds (may peace and blessings of Allah be upon him and his progeny) would be most important and necessary. Look, the month of the birth and the month of the demise of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) is the same blessed month of Rabi-ul-Awwal. Yet, the scholars of the Ummah and the supporters of the Sunnah did not designate it as a period of mourning for his demise, but rather made it a season of joy for his sacred birth. The praised Imam states in the aforementioned book:

[Arabic Quote]: Beware, and again beware, let not the Day of Ashura occupy you with the innovations of the Rafidah and their likes, such as lamenting, wailing, and grieving; for that is not from the character of the believers. Had it been so, the day of the demise of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) would have been more deserving and appropriate for that, etc.

[Translation]: He should avoid and abstain from becoming occupied on the Day of Ashura with the innovations of the Rafidah and similar people, which consist of wailing, lamenting, and grieving. This is because these matters are not part of the character of believers. Otherwise, the day of the demise of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) would have a greater right to these things. [i.e., If there were scope and permission for demonstrations of wailing, lamenting, and grief, these things would most of all be practiced and seen on the day of his (the Prophet's) demise]. (T)

Even if common gathering reciters (Majlis-khwan), hypothetically, were to recite only authentic narrations in a correct manner, those aware of their condition know well that their purpose in reciting the account of the noble martyrdom is precisely this: affected weeping and forced making others weep, and creating an atmosphere through this weeping and making others weep. What doubt is there in its vileness? Yes, if specifically with the intention of mentioning the noble people of the pure

household (Ahl al-Bayt) (peace and blessings of Allah be upon them, their leader, and their family), they were to describe their grand virtues and beautiful qualities from authentic narrations in a correct manner, and in that context, the mention of their martyrdom also came up to demonstrate their great excellence and beautiful patience, and if there were complete avoidance of the style of nurturing grief and inciting mourning, then there would be no harm in it. But alas! Their ways and habits are entirely separate from this good intention. If the objective were to mention noble virtues, was their only merit this martyrdom? Allah Almighty bestowed upon them countless great virtues.

1. Al-Sawa'iq al-Muhriqah, Chapter Eleven, Maktaba Majeediya Multan, p. 183.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

इसी प्रकार जब इससे उद्देश्य शोक मनाना, बनावट और गम करना हो, तो यह नियत भी शरीअत की दृष्टि से सराहनीय नहीं है। पाक शरीअत ने गम में सब्र और समर्पण का और मौजूद गम को जहाँ तक संभव हो दिल से दूर करने का हुक्म दिया है, न कि गैर-मौजूद गम को बनावट और ज़बरदस्ती लाने का, न ही उसे कुर्बत और सवाब का कारण ठहराने का। ये सब राफ़िज़ियों (روافض) की घिनौनी बिदअतें हैं जिनसे सुन्नी को बचना ज़रूरी है। अल्लाह न करे, अगर इसमें कोई खूबी होती तो हुज़ूर सरवरे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विसाल का गम मनाना सबसे ज्यादा अहम और ज़रूरी होता। देखो, हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की विलादत का महीना और विसाल का महीना वही मुकद्दस रबी-उल-अव्वल शरीफ है। फिर उम्मत के उलेमा और सुन्नत के समर्थकों ने इसे विसाल का मातम नहीं ठहराया बल्कि विलादत की खुशी का मौसम बनाया। प्रशंसित इमाम उपर्युक्त किताब में फरमाते हैं:

[अरबी उद्धरण]: बचो, और फिर बचो, कि कहीं आशुरा का दिन तुम्हें राफ़िज़ियों और उनके जैसों की बिदअतों जैसे कि रोना-पीटना, मातम और गम में मशगूल न कर दे; क्योंकि यह मोमिनों के अखलाक से नहीं है। अगर ऐसा होता, तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विसाल का दिन इसके लिए अधिक योग्य और उपयुक्त होता, इत्यादि।

[अनुवाद]: वह बचे और परहेज़ करे इस बात से कि कहीं यौम-ए-आशुरा में रवाफ़िज़ और उनके जैसे लोगों की बिदअतों में न मशगूल हो जाए जो रोना-पीटना और गम करना होता है क्योंकि ये उमूर (मामले) मोमिनों के अखलाक से नहीं हैं वरना हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का विसाल का दिन इन चीज़ों का ज़्यादा हक़ रखता है। [यानी अगर रोने-पीटने और दुख-गम के प्रदर्शनों की गुंजाइश और इजाज़त होती तो सबसे ज़्यादा ये चीज़ें आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विसाल के दिन अमल में आतीं और देखी जातीं]। (त)

अवाम मज्लिस ख़्वां (सभा में पढ़ने वाले) अगर फर्ज़ कर लिया जाए कि केवल सही रिवायतें सही तरीके से पढ़ें भी, तब भी जो उनके हाल से वाकिफ है, वह अच्छी तरह जानता है कि ज़िक्र-ए-शहादत शरीफ पढ़ने से उनका मकसद यही बनावटी रोना, ज़बरदस्ती रुलाना और इस रोने-रुलाने से रंग जमाना है। इसकी बुराई में क्या संदेह है? हाँ, अगर खास तौर पर अहले-बैत-ए-तहारत (अल्लाह उन पर और उनके सरदार पर रहमत व सलामती भेजे) के ज़िक्र की नियत से उनकी महान

फ़ज़ीलतों और खूबसूरत गुणों को सही रिवायतों से सही तरीके से बयान करते और उसी के दौरान उनकी महान फ़ज़ीलत और सुंदर धैर्य के इज़हार के लिए शहादत का ज़िक्र भी आ जाता और गम मनाने और मातम उकसाने के अंदाज़ से पूरी तरह परहेज़ होता तो इसमें कोई हर्ज़ न था। लेकिन अफ़सोस! उनके तौर-तरीके और आदतें इस अच्छी नियत से बिल्कुल अलग हैं। अगर नेक फ़ज़ीलतों का ज़िक्र मकसूद होता तो क्या इन अल्लाह के महबूबों की फ़ज़ीलत सिर्फ यही शहादत थी? अल्लाह अज़्ज़वजल ने उन्हें अनगिनत महान खूबियाँ अता फरमाई हैं।

1. अल-सवाइक़ुल मुहरिका, अध्याय ग्यारहवां, मकतबा मजीदिया मुल्तान, पृष्ठ 183.

पृष्ठ 516/720

یونہی جبکہ اس سے مقصود غم پروری و تصنع و حزن ہو تو یہ نیت بھی شرعاً محمود، شرع مطہر نے غم میں صبر و تسلیم اور غم موجود کو حتی المقدور دل سے دور کرنے کا حکم دیا ہے نہ کہ غم معدوم بتکلف وزور لانا کہ بتصنع وزور بنانا، نہ کہ اسے باعث قرب و ثواب ٹھہرانا، یہ سب بدعات شنیعہ روافض ہیں جن سے سنی کو احتراز لازم، حاشا للہ اس میں کوئی خوبی ہوتی تو حضور پر نور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی وفات اقدس کی غم پروری سب سے زیادہ اہم و ضروری ہوتی، دیکھو حضور اقدس صلوات اللہ وسلامہ علیہ وعلٰی آلہ کماہ ولادت و ماہ وفات وہی ماہ مبارک ربیع الاول شریف ہے پھر علمائے امت و حامیان سنت نے اسے ماتم وفات نہ ٹھہرایا بلکہ موسم شادی ولادت اقدس بنایا، امام ممدوح کتاب موصوف میں فرماتے ہیں:

ایاہ ثم ایاہ ان یشغلہ ای یوم العاشوراء ببدع الرافضۃ ونحوھم من الندب والنیاحۃ والحزن اذ لیس ذلك من اخلاق المؤمنین والالکان یوم وفاتہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم اولی بذلك واحری الخ

بچے اور پرہیز کرے اس بات سے کہ کہیں یوم عاشورہ میں روافض اور ان جیسے لوگوں کی بدعات میں نہ مشغول ہو جائے جو رونا پیٹنا اور غم کرنا ہوتا ہے کیونکہ یہ امور مومنوں کے اخلاق سے نہیں ورنہ حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کا یوم وصال ان چیزوں کا زیادہ حق رکھتا ہے اھ (یعنی اگر رونے پیٹنے اور دکھ غم کے مظاہروں کی گنجائش اور اجازت ہوتی تو سب سے زیادہ یہ چیزیں آپ کے یوم وصال پر عمل میں آتیں اور دیکھی جاتیں)۔ (ت)

عوام مجلس خواں اگرچہ بالفرض صرف روایات صحیحہ بروجہ صحیح پڑھیں بھی تاہم جو ان کے حال سے آگاہ ہے خوب جانتا ہے کہ ذکر شہادت شریف پڑھنے سے ان کا مطلب یہی بہ تصنع رونا بہ تکلف رلانا اور اس رونے رلانے سے رنگ جمانا ہے اس کی شناعت میں کیا شبہ ہے، ہاں اگر خاص بہ نیت ذکر شریف حضرات اہلبیت طہارت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم علی سیدہم وعلیہم و بارک وسلم ان کے فضائل جلیلہ و مناقب جمیلہ روایات صحیحہ سے بروجہ صحیح بیان کرتے اور اس کے ضمن میں ان کے فضل جلیل صبر جمیل کے اظہار کو ذکر شہادت بھی آجاتا اور غم پروری و ماتم انگیزی کے انداز سے کامل احتراز ہوتا تو اس میں حرج نہ تھا مگر ہیہات ان کے اطوار ان کی عادات اس نیت خیر سے یکسر جدا ہیں، ذکر فضائل شریف مقصود ہوتا تو کیا ان محبوبان خدا کی فضیلت صرف یہی شہادت تھی، بے شمار مناقب عظیم اللہ عزوجل نے انہیں عطا فرمائے

1 الصواعق المحرقة الباب الحادی عشر مکتبہ مجیدیہ ملتان ص ۱۸۳

Fatawa Razawiyya Volume 24

...to abandon those and adopt this, expanding upon it with heart-wrenching and mournful words, and meanings evocative of grief and sorrow—this indicates corrupted motives. In short, it is extremely difficult to find any sound reason for this for the general public. Furthermore, the gathering of angels for the noble Mawlid is a gathering of immense joy, happiness, and the greatest celebration; mentioning mourning and grief is not appropriate for it. I [the humble author] do not like including the mention of the passing, as is prevalent among some of the common folk, although both the life of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and his passing are a source of goodness for us. After writing this, I came across an explanation by Allama Muhaddith Sayyidi Muhammad Tahir Fatani (may his secret be sanctified), who concurred with my opinion. Praise be to Allah, Lord of the Worlds. At the end of the noble book Majma' Bihar al-Anwar, he states:

[Table Content] (Arabic Text): The month of joy and delight, the manifestation of the source of lights and mercy, the month of Rabi' al-Awwal. Indeed, it is a month in which we are commanded to express happiness every year. So, we shall not tarnish it with the name of death, for that resembles the renewal of mourning. Scholars have explicitly stated the dislike of annually mourning our Master Husayn, even though it has no basis in the primary Islamic lands. They avoid the name of mourning in the death anniversaries (Urs) of the saints, so how could it be liked in the case of the Master of the Purified, may Allah Almighty bless him and grant him peace?

(Urdu Translation): Meaning, the blessed month of Rabi' al-Awwal is a month of happiness and joy, and it is the time of the appearance of the source of the lights of mercy (peace and blessings of Allah be upon him). We are commanded to be happy in it every year; therefore, we will not darken it with the name of "passing," as this is similar to renewing mourning. Indeed, the scholars have clearly stated that the annual mourning for our Master Imam Husayn (may Allah be pleased with him) is religiously disliked (makruh), and it has no foundation in major Islamic cities. If they avoid the term "mourning" in the Urs celebrations of the saints, how can they approve of it regarding the radiant Master of the Purified (peace and blessings of Allah be upon him)? All praise is due to Allah for what He has inspired. And Allah, Glory be to Him, knows best.

Third Question: From Rampur State, Miyan Gana Mohalla, sent by Maulvi Muhammad Yahya Sahab, 2nd Muharram 1321 AH. What do the scholars of religion say regarding

the issue: Is it permissible to recite a Shahadat-nama (account of martyrdom), and in it...

---

1 Majma' Bihar al-Anwar, Khatimah al-Kitab, Dar al-Iman, Al-Madinah al-Munawwarah, 5/307. Page 517 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

...उन्हें छोड़कर इसी को अपनाना और इसमें तरह-तरह के हृदयविदारक और विलापपूर्ण शब्दों और शोक और दुख बढ़ाने वाले अर्थों को विस्तार देना, यह भ्रष्ट उद्देश्यों का संकेत दे रहा है। संक्षेप में, आम जनता के लिए इसमें कोई ठोस कारण देखना अत्यंत कठिन है। फिर, फ़रिश्तों की सभा, नबी के जन्म का पवित्र अवसर तो अपार हर्ष, प्रसन्नता और सबसे बड़ी ईद की सभा है; इसमें शोक और मातम का ज़िक्र उसके अनुकूल नहीं है। मैं (विनम्र लेखक) इसमें वफ़ात (देहांत) का ज़िक्र भी पसंद नहीं करता, जैसा कि कुछ आम लोगों में प्रचलित है, हालांकि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का जीवन भी हमारे लिए भला है और उनका वफ़ात भी हमारे लिए भला है। इस लेख के बाद, अल्लामा मुहद्दिस सैयदी मुहम्मद ताहिर फ़तनी (क़ुद्स सरुहुश-शरीफ़) की व्याख्या मेरी नज़र से गुज़री, उन्होंने भी मेरी इस राय से सहमति व्यक्त की। अलहम्दुलिल्लाह रब्बिल आलमीन। प्रतिष्ठित पुस्तक 'मजमा बिहार अल-अनवार' के अंत में वे फ़रमाते हैं:

[तालिका सामग्री] (अरबी पाठ): खुशी और प्रसन्नता का महीना, नूर और रहमत के स्रोत के प्रकट होने का महीना रबी-उल-अव्वल है। वास्तव में, यह वह महीना है जिसमें हमें हर साल खुशी ज़ाहिर करने का हुक्म दिया गया है। इसलिए हम इसे वफ़ात के नाम से मैला नहीं करेंगे, क्योंकि यह मातम के नवीनीकरण के समान है। विद्वानों ने स्पष्ट रूप से हमारे आका हुसैन के लिए हर साल मातम करने की नापसंदगी (कराहियत) का ज़िक्र किया है, जबकि प्रमुख इस्लामी शहरों में इसका कोई आधार नहीं है। वे संतों के उर्स में मातम के नाम से परहेज़ करते हैं, तो आकाओं के सरदार (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के मामले में इसे कैसे पसंद किया जा सकता है?

(उर्दू अनुवाद): यानी रबी-उल-अव्वल का मुबारक महीना खुशी और प्रसन्नता का महीना है और रहमत के नूर के स्रोत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ज़ुहूर का समय है। हमें हुक्म है कि हर साल इसमें खुशी मनाएँ तो इसे वफ़ात के नाम से गंदा न करेंगे क्योंकि यह मातम ताज़ा करने जैसा है। और बेशक उलेमा ने साफ़ तौर पर फ़रमाया कि हर साल जो सैय्यदना इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) का मातम किया जाता है, वह शरीयत में मकरूह (नापसंद) है, और ख़ास इस्लामी शहरों में इसकी कोई बुनियाद नहीं है। औलिया-ए-कराम के उर्सों में मातम के नाम से बचते हैं, तो हुज़ूर पुरनूर सैय्यद-उल-असफ़िया (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के मामले में इसे कैसे पसंद कर सकते हैं। तो जो कुछ अल्लाह ने इल्हाम फ़रमाया उस पर उसका शुक्र है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

तीसरा प्रश्न: रियासत रामपुर, मोहल्ला मियाँगाना से, प्रेषक: मौलवी मुहम्मद यहया साहब, 2 मुहर्रम 1321 हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि शहादत-नामा पढ़ना कैसा है और इसमें और...

---

1 मजमा बिहार अल-अनवार, खातिमा अल-किताब, दार अल-ईमान, अल-मदीना अल-मुनव्वरा, 5/307। पृष्ठ 720 का 517

انہیں چھوڑ کر اسی کو اختیار کرنا اور اس میں طرح طرح سے بالفاظ رقت خیز و نوحہ نما و معانی حزن انگیز و غم افزا بیان کو وسعتیں دینا انہیں مقاصد فاسدہ کی خبریں دے رہا ہے، غرض عوام کے لئے اس میں کوئی وجہ سالم نظر آنا سخت دشوار ہے پھر مجلس ملائکہ مآنس میلاد اقدس تو عظیم شادی و خوشی وعید اکبر کی مجلس ہے اذکار غم و ماتم اس کے مناسب نہیں، فقیر اس میں ذکر وفات والا بھی جیسا کہ بعض عوام میں رائج ہے پسند نہیں کرتا حالانکہ حضور کی حیات بھی ہمارے لئے خیر اور حضور کی وفات بھی ہمارے لئے خیر، صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔ اس تحریر کے بعد علامہ محدث سیدی محمد طاہر فتنی قدس سرہ الشریف کی تصریح نظر فقیر سے گزری انہوں نے بھی اس رائے فقیر کی موافقت فرمائی والحمد للہ رب العلمین، آخر کتاب مستطاب مجمع بحار الانوار میں فرماتے ہیں:

[جدول] شهر السرور والبهجة مظهر منبع الانوار والرحمة شهر ربیع الاول، فانہ شہر امرنا باظهار الحبور فیہ کل عام، فلا نکدرہ باسم الوفاة، فانہ یشبہ تجدید المأتم، وقد نصوا علی کراهیته کل عام فی سیدنا الحسین مع انه لیس له اصل في امهات البلاد الاسلامیة، وقد تحاشوا عن اسمه فی اعراس الاولیاء فکیف فی سید الاصفیاء صلی اللہ تعالیٰ علیہ و سلم۔

یعنی ماہ مبارک ربیع الاول خوشی و شادمانی کا مہینہ ہے اور سرچشمہ انوار رحمت صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا زمانہ ظہور ہے، ہمیں حکم ہے کہ ہر سال اس میں خوشی کریں، تو اسے وفات کے نام سے مکدر نہ کریں گے کہ یہ تجدید ماتم کے مشابہ ہے، اور بیشک علماء نے بتصریح کی کہ ہر سال جو سیدنا امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا ماتم کیا جاتا ہے شرعاً مکروہ ہے، اور خاص

اسلامی شہروں میں اس کی کچھ بنیاد نہیں، اولیائے کرام کے عرسوں میں نام ماتم سے احتراز کرتے ہیں تو حضور پر نور سید الاصفیاء صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے معاملہ میں اسے کیونکر پسند کر سکتے ہیں۔ فالحمد للہ علی ما الھم، واللہ سبحٰنہ و تعالٰی اعلم۔

سوال سوم: از ریاست رامپور محلہ میانگانانہ مرسلہ مولوی محمد یحیٰی صاحب ۲ محرم ۱۳۲۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ شہادت نامہ پڑھنا کیسا ہے اور اس میں اور

---

۱ مجمع بحار الانوار خاتمہ الکتاب دار الایمان المدینۃ المنورۃ ۵ / ۳۰۷ Page 517 of 720

Fatawa Razawiyya Volume 24

Question: What are the differences in legal rulings concerning Ta'ziya-dari? Explain and you will be rewarded.

Answer: The mention of the noble martyrdom, when free from fabricated reports, forbidden words, and illegitimate intentions, is the very essence of bliss.

[Table/Box Text:] Arabic: Mercy descends at the mention of the righteous. Urdu: Upon the mention of the righteous, the mercy of Allah Almighty descends. (T)

A detailed and beautiful explanation of this is in the humble fatwas of this pauper (the author). The difference in rulings between this and Ta'ziya-dari requires the preamble of a premise.

I say, and success is from Allah (I say that success is obtained only with the help of Allah Almighty - T): For every thing, there is an essence (Haqiqat), and there are certain additional matters that are either necessary concomitants (Lawaazim) or accidental attributes (Awaridh). Shari'ah rulings apply to a thing according to its existence; mere intellectual consideration, devoid of actual existence, is not the target of Shari'ah rulings, because jurisprudence (Fiqh) discusses the actions of accountable persons (Mukallafin). What cannot come into actuality is excluded from the subject matter. A change in ruling due to a change in consideration can only occur where those considerations are actual, separable, and sequential, such that the thing is found with one at one time and with another at another time. Thus, different rulings can be given according to both modes of existence. The point here is that the ruling of the thing itself may be separate from some rulings of the thing along with certain considerations. However, regarding additions that are necessary for existence, no ruling separate from their ruling can exist for the essence, because separation from what is necessary is impossible. When this is the case with necessities, it is impossible to ignore the pillars of the essence that are involved in the stripping of nature (Mahiya). Furthermore, in customary nature (Mahiyat-e-Urfiyya), being a pillar is subject to custom, and a change in consideration from subsequent parts is not the stripping of nature but a change in the customary nature. For example, prayer (Salah) in the custom of Shari'ah is the name of a collection of specific pillars with known forms. Now, if someone names a form "Salah" which is separate from these pillars, or rather, with changed forms, starting with sitting and ending with standing, and in which prostration (Sujood) precedes bowing (Ruku), then the very essence of prayer has changed, not that the essence is achieved

and the consideration is substituted. Once this important premise is established, the difference in rulings becomes clear. The customary essence of reading a 'Shahadat-nama' (account of martyrdom) is simply that the mention of the noble martyrdom of the two beloved grandsons (basils) of the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, be read before Muslims. God forbid, the inclusion of fabricated and false narrations, or the mention containing a disparagement of the dignity of the Companions, is neither part of its essence nor a necessary condition of its existence. Therefore, those people who [read] correct, reliable, clean, and pure narrations...

---

1. Ithaf al-Sadat al-Muttaqin, Kitab Adab al-Uzlah, Chapter Two, Dar al-Fikr Beirut, 6/350.

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

प्रश्न: ताज़िया-दारी के संबंध में कानूनी नियमों (अहकाम) में क्या अंतर है? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: पवित्र शहादत का ज़िक्र, जब वह मनगढ़ंत कथाओं, वर्जित शब्दों और अवैध इरादों से मुक्त हो, तो वह सरासर सौभाग्य है।

[कोशिका पाठ:] अरबी: नेक लोगों के ज़िक्र पर रहमत नाज़िल होती है। उर्दू: नेक लोगों के ज़िक्र पर अल्लाह तआला की रहमत नाज़िल होती है। (त)

इसका विस्तृत और सुंदर विवरण इस फ़क़ीर (लेखक) के फ़तवों में मौजूद है। इसमें और ताज़िया-दारी के नियमों में अंतर के लिए एक भूमिका की आवश्यकता है।

मैं कहता हूँ, और सफलता अल्लाह की ओर से है (मैं कहता हूँ कि सफलता केवल अल्लाह तआला की सहायता से ही प्राप्त होती है।): किसी भी चीज़ के लिए एक मूल (हक़ीक़त) होती है, और कुछ अतिरिक्त बातें होती हैं जो या तो आवश्यक (लवाज़िम) होती हैं या आकस्मिक (अव़ारिज़)। शरीअत के नियम किसी चीज़ के अस्तित्व के अनुसार होते हैं; केवल बौद्धिक विचार, जो वास्तविक अस्तित्व से रहित हो, शरीअत के नियमों का केंद्र नहीं होता, क्योंकि फ़िक़्ह (धर्मशास्त्र) उत्तरदायी व्यक्तियों (मुकल्लिफ़ीन) के कार्यों पर चर्चा करता है। जो चीज़ वास्तविकता में नहीं आ सकती, वह विषय से बाहर है। विचार बदलने से नियम में बदलाव वहीं हो सकता है जहाँ वे विचार वास्तविक, अलग होने वाले और क्रमिक हों, जैसे कि चीज़ कभी एक के साथ पाई जाए और कभी दूसरे के साथ। इस प्रकार, अस्तित्व के दोनों तरीकों के अनुसार अलग-अलग नियम दिए जा सकते हैं। यहाँ उद्देश्य यह है कि वस्तु का स्वयं का नियम, वस्तु के कुछ नियमों से कुछ विचारों के साथ अलग हो सकता है। हालाँकि, उन अतिरिक्त चीज़ों के संबंध में जो अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं, उनके नियम से अलग सार के लिए कोई नियम नहीं होगा, क्योंकि आवश्यक चीज़ से अलग होना असंभव है। जब आवश्यक चीज़ों के साथ यह स्थिति है, तो सार के उन स्तंभों (अरकान) की उपेक्षा करना असंभव है जो प्रकृति (माहियत) के निष्कर्षण में शामिल हैं। इसके अलावा, प्रथागत प्रकृति (माहियत-ए-उर्फ़िया) में, स्तंभ होना प्रथा के अधीन है, और बाद के हिस्सों से विचार में परिवर्तन प्रकृति का छीनना नहीं है बल्कि प्रथागत प्रकृति का परिवर्तन है। उदाहरण के लिए, शरीअत की प्रथा में नमाज़ ज्ञात रूपों के साथ विशिष्ट स्तंभों के संग्रह का नाम है। अब, यदि कोई इन स्तंभों से अलग, बल्कि रूपों के परिवर्तन

के साथ, एक ऐसी स्थिति का नाम नमाज़ रखे जो बैठने से शुरू हो और खड़े होने पर समाप्त हो, और जिसमें सजदा रुकू से पहले हो, तो नमाज़ की हकीक़त ही बदल गई, न कि हकीक़त हासिल हुई और विचार बदल गया। जब यह महत्वपूर्ण भूमिका स्थापित हो गई, तो नियमों का अंतर स्पष्ट हो गया। 'शहादत-नामा' पढ़ने की प्रथागत हक़ीक़त केवल इतनी है कि अल्लाह के रसूल, सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दो प्रिय नवासे (रायहनतैन) की महान शहादत का ज़िक्र मुसलमानों के सामने पढ़ा जाए। खुदा न करे, मनगढ़ंत और झूठी कहानियों का समावेश, या ज़िक्र में सहाबा की शान में गुस्ताखी शामिल होना, न तो इसकी हक़ीक़त का हिस्सा है और न ही इसके अस्तित्व के लिए आवश्यक है। इसलिए, जो लोग सही, विश्वसनीय, साफ़ और पाक कहानियाँ...

---

1. इत्हाफ़ुस सादातुल मुत्तक़ीन, किताब आदाबुल उज़लाह, अध्याय दो, दारुल फ़िक्र बेरूत, 6/350.

पेज 518/720

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

تعزیہ داری میں فرقِ احکام کیا ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: ذکرِ شہادتِ شریف جبکہ روایاتِ موضوعہ و کلماتِ ممنوعہ و نیتِ نامشروعہ سے خالی ہو عین سعادت ہے۔

[خانہ:] صالحین کے ذکر پر اللہ تعالٰی کی رحمت نازل ہوتی ہے (ت) | عند ذکر الصلحین تنزل الرحمۃ ۔

اس کی تفصیل جمیل فتاوٰی فقیر میں ہے اور اس میں اور تعزیہ داری میں فرقِ احکام ایک مقدمہ کی تمہید چاہتا ہے،

فأقول: وباللہ التوفیق (میں کہتا ہوں کہ اللہ تعالٰی ہی کی مدد سے توفیق حاصل ہوتی ہے۔ت) شے کے لئے ایک حقیقت ہوتی ہے اور کچھ امور زوائد کہ لوازم یا عوارض ہوتے ہیں، احکام شرعیہ شے پر بحسبِ وجود ہوتے ہیں مجرد اعتبار عقلی ناصالحِ وجودِ مطمحِ احکامِ شرع نہیں ہوتا کہ فقہ افعالِ مکلفین سے باحث ہے جو فعلیت میں آنہیں سکتا موضوع سے خارج ہے تغائرِ اعتبار سے تغائرِ احکام وہیں ہو سکتا ہے جہاں وہ اعتبارات واقعیہ مفارقہ متعاقبہ ہوں کہ شے کبھی ایک کے ساتھ پائی جائے کبھی دوسرے کے، تو ہر دو انحائے وجود کے اعتبار سے مختلف حکم دیا جا سکتا ہے اور ایسی جگہ مقصود ہے کہ نفسِ شے کا حکم ان بعض احکامِ شے مع بعض الاعتبار سے جدا ہو مگر زوائد کہ لوازم الوجود ہوں ان کے حکم سے جدا کوئی حکم حقیقت کے لئے نہ ہو گا کہ لازم سے انفکاک محال ہے جب لوازم میں یہ حال ہے تو ارکانِ حقیقت کہ سلخِ ماہیت میں داخل ہوں ان سے قطع نظر ناممکن، پھر ماہیتِ عرفیہ میں رکنیت تابعِ عرف ہے اور بعدِ اجزاء سے سلخِ ماہیت

کا تغیر اعتبار شے نہیں بلکہ تغیرِ ماہیتِ عرفیہ ہے مثلاً نماز عرفِ شرع میں مجموعِ ارکانِ مخصوصہ بہیئاتِ معلومہ کا نام ہے، اب اگر کوئی ان ارکان سے جدا بلکہ تبدیلِ ہیئات ہی کے ساتھ ایک صورت کا نام نماز رکھے جو قعود سے شروع اور قیام پر ختم ہو اور اس میں رکوع پر سجود مقدم، تو یہ حقیقتِ نماز ہی تبدیل ہو گئی نہ کہ حقیقتِ حاصل، اور اعتبارِ مبتدل، جب یہ مقدمہ مہمہ ہو لیا فرقِ احکام ظاہر ہو گیا شہادت نامہ پڑھنے کی حقیقتِ عرفیہ صرف اس قدر کہ ذکرِ شہادتِ شریف حضراتِ ریحانتینِ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مسلمانوں کے آگے پڑھا جائے، معاذاللہ روایاتِ کا موضوع و باطل یا ذکر کا تنقیصِ شانِ صحابہ پر مشتمل ہونا ہر گز نہ داخلِ حقیقت ہے نہ لازمِ وجود، ولہذا جو لوگ روایاتِ صحیحہ معتبرہ نظیفہ مطہرہ

---

1 اتحاف السادة المتقين كتاب آداب العزلة الباب الثانى دار الفكر بيروت ۶ / ۳۵۰

Like reading 'Sirr al-Shahadatayn' etc., which is also definitively called reading 'Shahadat' and the gathering is called 'Majlis-e-Shahadat'. Thus, it is known that the forbidden matters that have occurred are still considered as incidental. A permissible or good thing does not become evil due to evil incidents; rather, in its essence, it remains on its original ruling, and the prohibition is directed towards the evil incidents. For example, offering prayer wearing silk clothes; we will not, God forbid, call the essence of prayer evil. Instead, those incidents and additions are the evil part. The attachment of these incidents to 'Shahadat-namas' is exactly like some ignorant people in India today who have chosen to read fabricated narrations, baseless stories, and even words insulting angels and prophets (peace and blessings be upon them) in gatherings of the blessed Mawlid. The reality did not change because of this, nor did the incidents step beyond the circle of occurrence. Those gatherings which are pure and clean are also definitely called 'Majlis-e-Milad-e-Mubarak', and no one ever suspects that this is something else with a reality separate from those gatherings. This is contrary to 'Ta'ziya dari', whose origin is said to be that Sultan Timur, seeing his yearly visit to the holy shrine of the Master of Martyrs, the prince of the crimson cloak, upon his noble ancestor be blessings and praise, disrupted by state affairs, had a replica of the blessed shrine made out of longing and for blessings. There was no Sharia objection to this much. However, this matter is completely unrelated to the known reality, both in existence and non-existence. If someone keeps a picture of the illuminated shrine of Medina or the honorable Kaaba on paper or in a mirror, they will never call it 'Ta'ziya', nor that person a 'Ta'ziya dar', even though that much is definitely present. These paper cuttings of new designs every year, some with 'Buraq', some with 'fairies', which are paraded through streets and alleys, are by no means a replica of the blessed shrine of the Master of Martyrs. If they were replicas, they wouldn't be in hundreds of different forms but of one kind. They are necessarily called 'Ta'ziya' and their practitioners 'Ta'ziya dar'. So it is patently clear that the reality of 'Ta'ziya dari' has become the name for these forbidden matters, not that the actual customary reality is that permissible thing and these forbidden things are considered separable incidents. Therefore, this humble servant, after mentioning the permissible limit in his fatwas, said that where the ignorant person has completely annihilated this permissible original, etc., and said in the end: Now, 'Ta'ziya dari' is the name of this disapproved method, which is

definitely an innovation, impermissible, and forbidden. This was an allusion to that grand and refined distinction mentioned in the introductory premise.

In short, the reality of 'Shahadat-nama' is still that permissible and commendable matter. If the ugly additions and incidents are removed from them and the intention is pure of evil, it is certainly permissible. But the reality of 'Ta'ziya dari' is these very impermissible matters.

जैसे 'सिर्र अल-शहादतैन' वगैरह पढ़ते हैं, उसे भी निश्चित रूप से शहादत ही पढ़ना और मजलिस को 'मजलिस-ए-शहादत' ही कहते हैं। तो मालूम हुआ कि वे वर्जित (नामश्रूआ) बातें जो शामिल हो गई हैं, अभी तक आकस्मिक (आवारिज़) ही समझी जाती हैं। और बुरे आकस्मिक कारणों से कोई वैध (मुबाह) या अच्छी चीज़ बुरी नहीं हो जाती, बल्कि वह अपनी मूल सत्ता में अपने मूल हुक्म पर रहती है और निषेध (नही) उन बुरे आकस्मिक कारणों की ओर होता है। जैसे रेशमी कपड़े पहनकर नमाज़ पढ़ना कि नमाज़ की मूल सत्ता को, ईश्वर न करे, बुरा नहीं कहेंगे, बल्कि उन आकस्मिक और अतिरिक्त चीज़ों को। 'शहादत-नामों' में इन आकस्मिक चीज़ों का जुड़ना बिल्कुल वैसा ही है जैसे आज कल भारत में कुछ अज्ञानियों ने मजलिस-ए-मीलाद-ए-मुबारक में गढ़ी हुई (मौज़ूआ) रिवायतें, बेबुनियाद किस्से, बल्कि फरिश्तों और अंबिया (अलैहिमुस्सलाम) की तौहीन वाले शब्द पढ़ना चुन लिया है। इससे वास्तविकता नहीं बदली, और न ही आकस्मिक चीज़ों ने अपने दायरे से बाहर कदम रखा। जो मजलिसें पाक-साफ होती हैं, उन्हें भी निश्चित रूप से 'मजलिस-ए-मीलाद-ए-मुबारक' ही कहा जाता है और किसी को भी यह गुमान नहीं होता कि यह कोई दूसरी चीज़ है जो इन मजलिसों से अलग वास्तविकता रखती है। इसके विपरीत 'ताज़िया दारी' है, जिसके बारे में सुना गया है कि इसकी शुरुआत यूँ हुई कि सुल्तान तैमूर ने जब देखा कि सैयदुश्शुहदा (शहीदों के सरदार) के पवित्र रौज़े पर हर साल की हाज़िरी से सल्तनत के काम प्रभावित हो रहे हैं, तो शौक और बरकत के लिए रौज़ा-ए-मुबारक का एक मॉडल (तम्साल) बनवाया। और इस हद तक कोई शरीअत की मनाही नहीं थी। लेकिन यह बात जानी-मानी हकीकत से वजूद और अदम (होने और न होने) दोनों तरह से बिल्कुल अलग है। अगर कोई व्यक्ति मदीना मुनव्वरा या काबा मोअज़्ज़मा के नक्शों की तरह कागज़ पर सैयदुश्शुहदा के रौज़े का मॉडल शीशे में लगा रखे, तो उसे कभी भी 'ताज़िया' नहीं कहेंगे और न ही उस व्यक्ति को 'ताज़िया दार', हालांकि इतनी चीज़ तो निश्चित रूप से मौजूद है। और ये हर साल नई-नई नक्काशी वाली कागज़ की पत्तियां, किसी में बुराक़, किसी में परियां, जो गली-कूचों में घुमाई जाती हैं, हरगिज़ हज़रत सैयदुश्शुहदा के रौज़ा-ए-मुबारक का मॉडल नहीं हैं। क्योंकि अगर मॉडल होता तो सैकड़ों अलग-अलग तरह के नहीं बल्कि एक ही तरह का होता। इन्हें ज़रूर 'ताज़िया' और इनके करने वाले को 'ताज़िया दार' कहा जाता है। तो स्पष्ट है कि ताज़िया दारी की असलियत इन वर्जित (नामश्रूआ) चीज़ों का ही नाम है, न कि उसकी असल हकीकत वह जायज़ बात है और इन वर्जित चीज़ों को अलग होने वाले आकस्मिक कारण समझा जाता हो। इसीलिए फकीर ने अपने फतवों में

जायज़ सीमा का ज़िक्र करके कहा कि जहाँ नासमझ ने इस जायज़ असल को बिल्कुल खत्म कर दिया है, आदि। और अंत में कहा कि अब ताज़िया दारी इस नापसंदीदा तरीके का नाम है जो निश्चित रूप से बिदअत, नाजायज़ और हराम है। यह उसी बड़े और बारीक फर्क की तरफ इशारा था जो इस बुनियादी मुकद्दमे में गुज़रा।

संक्षेप में, 'शहादत नामा' की असलियत अभी भी वही जायज़ और प्रशंसनीय (मुबाह व महमूद) बात है। और अगर इनमें से वे बुरी अतिरिक्त चीज़ें और आकस्मिक बुराइयाँ हटा दी जाएँ और नीयत भी खराब न हो, तो वह ज़रूर जायज़ है। और ताज़िया दारी की असलियत ही ये नाजायज़ बातें हैं।

पृष्ठ 519 का 720

مثل سرالشہادتین وغیرہ پڑھتے ہیں اسے بھی قطعاً شہادت ہی پڑھنا اور مجلس کو مجلس شہادت ہی کہتے ہیں تو معلوم ہوا کہ وہ امور نامشروعہ کہ عارض ہوگئے ہنوز عوارض ہی سمجھے جاتے ہیں اور عوارضِ قبیحہ سے نفسِ شیئ مباح یا حسن قبیح نہیں ہوجاتی بلکہ وہ اپنی حد ذات میں اپنے حکم اصلی پر رہتی اور نہی عوارضِ قبیحہ کی طرف متوجہ ہوتی ہے جیسے ریشمیں کپڑے پہن کر نماز پڑھنا کہ نفسِ ذاتِ نماز کو معاذاللہ قبیح نہ کہیں گے بلکہ ان عوارض و زوائد کو تو شہادت ناموں میں ان عوارض کا لحوق بعینہ ایسا ہے جیسے آج کل بعض جُہّال ہندوستان نے مجلسِ میلادِ مبارک میں روایاتِ موضوعہ و قصصِ بے سروپا بلکہ کلماتِ توہینِ ملائکہ وانبیاء علیہم الصلوٰۃ والثناء پڑھنا اختیار کیا ہے، اس سے حقیقت متبدل نہ ہوئی، نہ عوارض نے دائرہ عروض سے آگے قدم رکھا جو مجالسِ طیبہ طاہر ہوتی ہیں انہیں بھی قطعاً مجالسِ میلادِ مبارک ہی کہا جاتا ہے اور ہرگز کسی کو یہ گمان نہیں ہوتا کہ یہ کوئی دوسری شیئ ہے جو ان مجالس سے حقیقتِ جداگانہ رکھتی ہے، بخلاف تعزیہ داری کے کہ اس کا آغاز اگر چہ یوں ہی سنا گیا ہے کہ سلطان تیمور نے ازانجا کہ ہر سال حاضریِ روضہ مقدسہ حضور سید الشہداء شہزادہِ گلگوں قبا علیٰ جدہ الکریم علیہ الصلوٰۃ والثناء کو مختل امورِ سلطنت دیکھا تو بنظرِ شوق و تبرک تمثالِ روضہ مبارک بنوائی اور اس قدر میں کوئی حرج شرعی نہ تھا مگر یہ امر حقیقتِ متعارفہ سے وجوداً وعدماً بالکل بے علاقہ ہے اگر کوئی شخص روضہِ انور مدینہ منورہ و کعبہ معظمہ کے نقشوں کی طرح کاغذ پر تمثالِ روضہِ حضرت سید الشہداء آئینہ میں لگا رکھے ہر گز اسے تعزیہ کہیں گے نہ اس شخص کو تعزیہ دار، حالانکہ اتنا امر قطعاً موجود ہے اور یہ ہر سال نئی نئی تراش و خراش کی کپی پتیاں، کسی میں براق، کسی میں پریاں، جو گلی کوچے گشت کرائی جاتی ہیں، ہر گز تمثالِ روضہِ مبارک

حضرت سید الشہداء نہیں کہ تمثال ہوتی تو ایک طرح کی نہ کہ صدہا مختلف، انہیں ضرور تعزیہ اور ان کے مرتکب کو تعزیہ دار کہا جاتا ہے تو بداہتہً ظاہر کہ حقیقتِ تعزیہ داری انہیں امورِ نامشروعہ کا نام ٹھہرا ہے نہ کہ نفسِ حقیقتِ عرفیہ وہی امرِ جائز ہو اور یہ نامشروعہ عوارضِ مفارقہ سمجھے جاتے ہوں، ولہٰذا فقیر نے اپنے فتاوے میں قدرِ مباح کو ذکر کر کے کہا کہ جہاں بیخرد نے اس اصلِ جائز کو بالکل نیست و نابود کر کے الخ، اور آخر میں کہا اب کہ تعزیہ داری اس طریقۂ نامرضیہ کا نام ہے قطعاً بدعت و ناجائز و حرام ہے۔ یہ اسی فرق جلیل و نفیس کی طرف اشارہ تھا جو اس مقدمۂ ممہدہ میں گزرا۔

بالجملہ شہادت نامے کی حقیقت ہنوز وہی امرِ مباح و محمود ہے اور شنائع زوائد و عوارض اگر ان سے خالی اور نیت نامحمود سے پاک ہو ضرور مباح ہے اور تعزیہ داری کی حقیقت ہی یہ امورِ ناجائزہ۔

Volume 24 Fatawa Rizvia

...they have no connection with the phrase "it is permissible to this extent," nor do they exist because of its existence or cease to exist because of its absence. Thus, in itself, it is impermissible and forbidden. Its precedent in previous nations is the beginning of idols; Wadd, Suwa', Yaghuth, Ya'uq, and Nasr were righteous people. After their passing, their images were carved to remember them. With the passage of time, later generations took them as deities. So no one can say that the state of these idols remained in their initial reality; these atrocities were additional external occurrences. Therefore, divine laws were revealed absolutely to reject and deny them. Bukhari and others narrate from Hazrat Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them both):

Arabic Text	Urdu Translation
They were the names of righteous men from the people of Noah. When they died, Satan inspired their people to erect stone altars in the places where they used to sit and to name them by their names. They did so, and they were not worshipped until those people died and knowledge was abolished, then they were worshipped.[1]	Wadd, Suwa', etc. were names of righteous people from the nation of Noah (peace be upon him). When they passed away, Satan put a whisper in the hearts of their people to erect statues of them in the gatherings where they used to sit and mention their names (i.e., remember them). So people did exactly that, but they did not engage in their worship until those people left the world, knowledge was lost, and the subsequent people, i.e., the generation that came later, unaware of the reality, started worshipping them. (T)

Al-Fakihi narrates from Ubaidullah bin Ubaid bin Umair:

Arabic Text	Urdu Translation
He said: The first time idols were made was in the time of Noah. Children used to be dutiful to their fathers. Then a man among them died, and his son grieved for him and could not bear being without him. So he made an image in his likeness, and whenever he longed for him, he would look at it. Then he died, and the	Abdullah ibn Ubaid said that idol worship first appeared in the era of Noah. Sons used to treat their fathers with kindness. Then if any of them died, his son would become restless and impatient, and unable to endure, he would make his statue for his solace. And when he felt

Arabic Text	Urdu Translation
same was done for him, then they followed suit.	the urge to see the original, he would look at this likeness...

[1] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Tafsir, Surah Nuh, Chapter: Waddan wa la Suwa'an, etc. Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/737.

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

...उनका "इस हद तक जायज़ है" से कोई संबंध नहीं रहा, न वे उसके अस्तित्व से मौजूद होते हैं और न उसके अभाव से लुप्त, तो यह अपने आप में नाजायज़ और हराम है। पिछली उम्मतों में इसका उदाहरण बुतपरस्ती (मूर्तियों) की शुरुआत है; वद्द, सुवा, यगूस, यऊक़ और नस्र नेक लोग थे। उनके देहांत के बाद उनकी याद के लिए उनकी मूरतें तराशी गईं, समय बीतने के बाद पिछली नस्लों ने उन्हीं को माबूद (ईश्वर) समझ लिया। तो कोई यह नहीं कह सकता कि उन बुतों की हालत अपनी शुरुआती हकीक़त पर बाकी थी; ये ज़्यादतियां बाहरी परिस्थितियाँ थीं। इसलिए, ईश्वरीय नियम (शरीयत) पूरी तरह से उनके खंडन और इनकार के लिए उतरे। बुखारी आदि ने हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत की है:

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद**
वे नूह की कौम के नेक लोगों के नाम थे। जब वे मर गए, तो शैतान ने उनकी कौम को प्रेरित किया कि जहाँ वे बैठा करते थे, वहाँ उनकी यादगारें (वेदी) खड़ी कर दें और उनके नाम पर उनके नाम रख दें। उन्होंने ऐसा ही किया, और उनकी पूजा तब तक नहीं की गई जब तक कि वे लोग मर नहीं गए और ज्ञान लुप्त नहीं हो गया, फिर उनकी पूजा की जाने लगी।[1]	वद्द, सुवा आदि नूह अलैहिस्सलाम की कौम के नेक लोगों के नाम थे। जब वे वफ़ात पा गए, तो शैतान ने उनकी कौम के दिलों में यह वसवसा (कुविचार) डाला कि उनकी महफिलों में जहाँ वे बैठा करते थे, उनके मुजस्सिमे (मूर्तियाँ) बनाकर खड़े कर दो और उनके नामों का ज़िक्र करो (अर्थात उन्हें याद करो)। चुनाँचे लोगों ने ऐसा ही किया, मगर वे उनकी इबादत में मशगूल नहीं हुए, यहाँ तक कि वे लोग दुनिया से रुख़सत हो गए और इल्म (ज्ञान) मिट गया और पिछले लोग यानी बाद में आने वाली नस्ल हकीक़त से नावाकिफ़ होते हुए उनकी पूजा करने लगी। (त)

फ़ाकीही उबैदुल्लाह बिन उबैद बिन उमैर से रिवायत करते हैं:

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद**
उन्होंने कहा: मूर्तियों की शुरुआत सबसे पहले नूह के युग में हुई। बेटे अपने पिताओं के प्रति आज्ञाकारी थे। फिर उनमें से एक व्यक्ति मर गया, और उसका बेटा उसके लिए दुखी हुआ और	अब्दुल्लाह इब्न उबैद ने कहा कि सबसे पहले बुतपरस्ती का ज़ुहूर (आरंभ) नूह के ज़माने में हुआ, और बेटे अपने बाप-दादाओं से नेक सुलूक किया करते थे। फिर उनमें से कोई शख़्स मर

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
उसके बिना नहीं रह सका। इसलिए उसने उसकी छवि में एक मूर्ति बनाई, और जब भी वह उसे याद करता, उसे देखता। फिर वह मर गया, और उसके साथ भी वैसा ही किया गया, फिर वे एक के बाद एक ऐसा ही करते गए।	जाता तो उसका बेटा उसके लिए बेकरार और बेचैन हो जाता और सब्र न कर सकता और अपनी तस्कीन (सुकून) के लिए उसकी मूरत बना लेता और जब असल को देखने का शौक होता तो इस शबीह (छवि) को देखकर...

[1] सहीह अल-बुखारी, किताब अल-तफ़सीर, सूरह नूह, अध्याय: वद्दं व ला सुवाआं आदि। कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/737.

ہیں، "اس قدر جائز ہے" سے کوئی تعلق نہ رہا، نہ اس کے وجود سے موجود ہوتی ہے نہ اس کے عدم سے معدوم، تو یہ فی نفسہ نا جائز و حرام ہے۔ اس کی نظیر امم سابقہ میں آغاز اصنام ہے، وُد و سواع و یغوث و یعوق و نسر صالحین تھے ان کے انتقال پر ان کی یاد کے لئے ان کی صورتیں تراشیں ،بعدِ مرورِ زماں پچھلی نسلوں نے انہیں کو معبود سمجھ لیا تو کوئی نہیں کہہ سکتا کہ ان بتوں کی حالت اپنی انہیں ابتدائی حقیقت پر باقی تھی یہ شنائع زوائد عوارضِ خارجہ تھے ،ولہٰذا شرائعِ الٰہیہ مطلقاً ان کے ردّ و انکار پر نازل ہوئیں ، بخاری وغیرہ حضرت عبد اللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے راوی :

عربی متن	اردو ترجمہ
كانوا اسماء رجال صالحين من قوم نوح فلما هلكوا اوحى الشيطن الى قومهم ان انصبوا الى مجالسيهم التى كانوا يجلسون انصاباً وسمّوها باسمائهم ففعلوا فلم تعبد حتى اذا هلك اولئك ونسخ العلم عبدت[1]۔	وُد، سواع وغیرہ قوم نوح علیہ السلام کے نیک لوگوں کے نام تھے جب وہ وفات پا گئے تو شیطان نے ان کی قوم کے دلوں میں یہ وسوسہ ڈالا کہ ان کی مجلسوں میں جہاں وہ بیٹھا کرتے تھے ان کے مجسمے بنا کر کھڑے کر دو اور ان کے اسماء کا ذکر کرو (یعنی انہیں یاد کرو) چنانچہ لوگوں نے ایسا ہی کیا مگر وہ ان کی عبادت میں مشغول نہیں ہوئے تا آنکہ وہ لوگ دنیا سے رخصت ہو گئے اور علم مٹ گیا اور پچھلے لوگ یعنی بعد میں آنے والی نسل حقیقت سے ناآشنا ہوتے ہوئے ان کی پوجا کرنے لگی۔ (ت)

فاکہی عبید اللہ بن عبید بن عمیر سے راوی :

عربی متن	اردو ترجمہ
قال اول ماحدثت الاصنام علی عهد	عبد اللہ ابن عبید نے کہا سب سے پہلے بت پرستی کا ظہور
نوح وکانت الابناء تبر الآباء فمات	زمانہ نوح میں ہوا، اور بیٹے اپنے آباء سے حسنِ سلوک کیا
رجل منهم فجزع علیه ابنه فجعل	کرتے تھے ، پھر ان میں سے کوئی شخص مر جاتا تو اس کا
لایصبر عنه فاتخذ مثالا علی صورته	بیٹا اس کے لئے بیقرار اور بے چین ہو جاتا اور صبر نہ کر
فکلما اشتاق الیه نظره ثم مات ففعل	سکتا اور اپنی تسکین کے لئے اس کی مورتی بنا لیتا اور جب
به کما فعل ثم تتابعوا	اصل کو دیکھنے کا شوق ہوتا تو اس شبیہ کو دیکھ کر

[1]صحیح البخاری کتاب التفسیر سورہ نوح اے باب وداً ولا سواعاً الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۷۳۷

"Upon this, the fathers died, and the sons said: 'Our fathers did not take these except that they were their gods,' so they worshipped them." (The son) would console his heart, and when he died, the same treatment was given to him. This work continued for a long time continuously and incessantly. When the first ancestors died, the upcoming offspring began to say that these were the deities of our first ancestors, then they started worshipping them (thus idol-worship began). (T)

This subtle difference is worth remembering well, because by neglecting this, the Wahhabis apply the rulings of accidental attributes (awāriḍ) to the original reality, and the Taziya-dārs consider the change of reality as a difference in accidental attributes. Both fall into grave error. And with Allah is the protection, and Allah, the Exalted, knows best. (And protection is possible only by the guidance of Allah, and Allah, the Exalted, is the Most Knowing. T)

Question 4: From Dhampur, district Bijnor, sent by Hafiz Sayyid Bunyaad Ali Sahib, 8 Muharram al-Haram 1313 AH. What do the scholars of religion say regarding the issue of setting up water stalls (sabeel), feeding people, and distributing food (langar) on the tenth day (Ashura)? Deobandi scholars prohibit this, as well as books of martyrdom (shahadat). Please write what is correct according to the Sharia. And how is listening to the narration of martyrdom and elegies (marthiya) in a Muharram gathering? Explain so that you may be rewarded. (T)

Answer: Setting up a stall for water or syrup with a commendable intention and purely for the sake of Allah to convey reward (Isal-e-Thawab) to the pure souls of the Noble Imams is undoubtedly better, recommended (mustahabb), and a virtuous act. It is mentioned in the Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

"When your sins become numerous, then give water upon water to drink; sins will fall away as leaves fall from a tree." When your sins increase, then serve water upon water, sins will shed like (leaves of) a tree in a storm. (T)

1: Fath al-Bari on the authority of Fakihi from Ubaydullah bin Ubayd, Surah Nuh, Mustafa al-Babi Egypt, 10/295. Al-Durr al-Manthur on the authority of Fakihi from Ubaydullah bin Ubayd, Surah Nuh, Publications of Maktabah Ayatullah Qom Iran, 6/269.

"इसी पर बाप-दादा मर गए, तो बेटों ने कहा: 'हमारे बाप-दादा ने इन्हें नहीं अपनाया था सिवाय इसके कि ये उनके देवता थे,' तो उन्होंने उनकी पूजा की।" (बेटा) अपने दिल को तसल्ली दे लेता और जब वह मर जाता तो उसके साथ वही बर्ताव किया जाता। एक लंबे समय तक लगातार और निरंतर यह काम होता रहा, और जब पहले बाप-दादा मर गए तो आने वाली औलाद कहने लगी कि ये तो हमारे पहले बाप-दादाओं के माबूद (देवता) थे, फिर वे उनकी इबादत करने लगे (इस तरह मूर्ति पूजा की शुरुआत हुई)। (त)

यह सूक्ष्म अंतर अच्छी तरह याद रखने योग्य है, क्योंकि इसी से ग़फ़लत (लापरवाही) करके वहाबी असल हक़ीक़त पर आरिज़ (आकस्मिक गुणों) का हुक्म लगाते हैं और ताज़िया-दार हक़ीक़त की तब्दीली को अवारिज़ (गुणों) का इख़्तिलाफ़ (अंतर) ठहराते हैं। दोनों ही सख्त और बड़ी गलती में पड़ जाते हैं। वबिल्लाहिल इस्मत, वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम। (और अल्लाह की तौफ़ीक़ से ही बचाव मुमकिन है और अल्लाह सुब्हानहू व तआला ही ज़्यादा जानने वाला है। त)

सवाल 4: धामपुर, ज़िला बिजनौर से हाफ़िज़ सैय्यद बुनियाद अली साहब द्वारा प्रेषित, 8 मुहर्रम-उल-हराम 1313 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि आशूरा के दिन सबील लगाना, खाना खिलाना और लंगर लुटाने के बारे में देवबंद के विद्वान मना करते हैं और साथ ही शहादत की किताबों को भी। जो बात शरीअत के अनुसार सही हो उसे लिखें। और मुहर्रम की महफ़िल में ज़िक्र-ए-शहादत और मर्सिया सुनना कैसा है? बयान फ़रमाएँ ताकि आप सवाब पाएँ। (त)

जवाब: पानी या शरबत की सबील लगाना जब सराहनीय नीयत और शुद्ध रूप से अल्लाह की रज़ा के लिए आइम्मा-ए-अतहार (पवित्र इमामों) की रूहों को सवाब पहुँचाने के उद्देश्य से हो, तो वह निस्संदेह बेहतर, मुस्तहब और सवाब का काम है। हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

"जब तुम्हारे गुनाह ज़्यादा हो जाएँ तो पानी पर पानी पिलाओ; गुनाह वैसे ही झड़ जाएँगे जैसे पेड़ से पत्ते झड़ते हैं।" जब तेरे गुनाह ज़्यादा हो जाएँ तो पानी पर पानी पिला, गुनाह ऐसे झड़ जाएँगे जैसे आँधी में पेड़ के(पत्ते)। (त)

1: फ़तह-उल-बारी, फ़ाकिही के हवाले से उबैदुल्लाह बिन उबैद से, सूरह नूह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 10/295। अद-दुर्र अल-मन्सूर, फ़ाकिही के हवाले से उबैदुल्लाह बिन उबैद से, सूरह नूह, मकतबा आयतुल्लाह क़ुम ईरान 6/269।

पृष्ठ 521/720

عَلٰی ذٰلِكَ فَمَاتَ الْآبَاءُ فَقَالَ الِابْنَاءُ مَا اتَّخَذَ اٰبَآؤُنَا هٰذِهِ الَّا اِنَّهَا اٰلِهَتُهُمْ فَعَبَدُوهَا۔ دل کو تسلی دے لیتا اور جب وہ مر جاتا تو اس کے ساتھ وہی برتاؤ کیا جاتا، عرصہ دراز تک لگاتار اور مسلسل یہ کام ہوتا رہا، اور جب پہلے باپ دادا مر گئے تو آنے والی اولاد کہنے لگی کہ یہ تو ہمارے پہلے باپ دادوں کے معبود تھے پھر یہ ان کی عبادت کرنے لگے (پس اس طرح بت پرستی کا آغاز ہوا)۔ (ت)

یہ فرقِ نفیس خوب یاد رکھنے کا ہے کہ اسی سے غفلت کر کے وہابیہ اصل حقیقت پر حکمِ عوارض لگاتے اور تعزیہ دار تبدیلِ حقیقت کو اختلافِ عوارض ٹھہراتے اور دونوں سخت خطائے فاحش میں پڑ جاتے ہیں وباللہ العصمۃ واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم۔ (اور اللہ تعالٰی ہی کی توفیق سے بچاؤ ممکن ہے اور اللہ سبحانہ و تعالٰی بڑا عالم ہے۔ت)

سوال چہارم: از دھام پور ضلع بجنور مرسلہ حافظ سید بنیاد علی صاحب ۸ محرم الحرام ۱۳۱۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ یومِ عشرہ میں سبیل لگانا اور کھانا کھلانا اور لنگر لٹانے کے بارے میں دیوبند کے علماء ممانعت کرتے ہیں ونیز کتب شہادت کو بھی، جو امر صحیح ہو عند الشرع ارقام فرمائیے اور مجلسِ محرم میں ذکرِ شہادت اور مرثیہ سننا کیسا ہے؟ بینوا توجروا (بیان فرماؤ تاکہ اجر پاؤ۔ت)

الجواب: پانی یا شربت کی سبیل لگانا جبکہ بہ نیت محمود اور خالصاً لوجہ اللہ ثواب رسانی ارواح طیبہ ائمہ اطہار مقصود ہو بلاشبہ بہتر و مستحب و کارِ ثواب ہے، حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

اِذَا کَثُرَتْ ذُنُوبُکَ فَاسْقِ الْمَاءَ عَلَی الْمَاءِ تَتَنَاثَرُ کَمَا یَتَنَاثَرُ الْوَرَقُ مِنَ الشَّجَرِ جب تیرے گناہ زیادہ ہو جائیں تو پانی پر پانی پلا گناہ جھڑ جائیں گے جیسے آندھی میں پیڑ کے (پتے۔ ت)

۱۔ فتح الباری بحوالہ فاکھی عن عبیداللہ بن عبید سورہ نوح مصطفی البابی مصر ۱۰ / ۲۹۵، الدر المنثور بحوالہ فاکھی عن عبید اللہ بن عبید سورۃ نوح منشورات مکتبہ آیۃ اللہ قم ایران ۶ / ۲۶۹

Fatawa Razawiya - Volume 24

[Box 1] Arabic: In the violent wind - Narrated by al-Khatib from Anas bin Malik (may Allah be pleased with him). Urdu: ...were. (Khatib narrated this from Anas bin Malik, may Allah be pleased with him. - T)

Similarly, feeding people and distributing food (langar) is also recommended and a cause for reward. In a Hadith, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Box 2] Arabic: Indeed, Allah the Almighty and Majestic boasts to His angels about those of His servants who feed people food. - Narrated by Abu al-Shaykh in 'At-Thawab' from al-Hasan as a Mursal tradition. Urdu: Allah Almighty boasts to the angels about those of His servants who feed people, saying, 'Look at what a good deed they are doing.' (Abu al-Shaykh narrated this in 'At-Thawab' from Hasan as a Mursal tradition) (T)

However, what is called 'Langar Lutana' (tossing food), where people sit on roofs and throw loaves of bread, some landing in hands, some falling on the ground, and some underfoot, is prohibited because it involves disrespect towards the sustenance provided by Allah. Many scholars have forbidden the tossing of money, as is customary during the showering of coins (Nishawar) over a bride and groom, stating that Allah Almighty created money to fulfill the needs of creation, so it should not be thrown. Tossing bread is extremely absurd. In 'Bazzaziyya, Book of Dislikes (Kitab al-Karahiya), Fourth Type regarding Gifts and Inheritance', it is stated:

[Box 3] Arabic: Is it permissible to scatter dirhams? It was said 'no', and it was said 'there is no harm in it'. This applies to dinars and small coins (fulus) as well. Those who disliked it may have sought evidence from the saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): 'Dirhams and dinars are two seals among the seals of Allah Almighty; whoever goes with a seal among the seals of Allah Almighty, his need is fulfilled.' Urdu: Is it permissible to toss dirhams? Some said it is not permissible, and some said there is no harm. Dinars and coins fall under the same ruling. Those who find it undesirable argued from the saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that 'Dirhams and Dinars are seals among the seals of Allah Almighty, so whoever received a seal has found his need met by the seal of Allah Almighty.' (T)

Footnotes: 1. Tarikh Baghdad, biography 4364, Ishaq bin Muhammad, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 6/404 & 405. 2. Al-Targhib wa al-Tarhib, citing Abu al-Shaykh in 'At-Thawab', chapter 'Encouragement for feeding food', Hadith 21, Mustafa al-Babi, Egypt, 2/68. 3. Fatawa Bazzaziyya on the margin of Fatawa Hindiyya, Book of Dislikes, Fourth Type regarding Gifts and Inheritance, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 6/362.

फतावा रजविया - खंड 24

[बॉक्स 1] अरबी: तेज़ हवा में - अल-खतीब द्वारा अनस बिन मालिक (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से वर्णित। उर्दू: ...थे। (इसे खतीब ने अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित किया है। - टी)

इसी तरह, खाना खिलाना और लंगर बांटना भी अनुशंसित और पुण्य (सवाब) का कारण है। हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[बॉक्स 2] अरबी: बेशक, अल्लाह अज़्ज़वजल अपने उन बंदों पर फरिश्तों के सामने गर्व (मुबाहात) करता है जो लोगों को खाना खिलाते हैं। - अबू अल-शेख द्वारा 'अत-थवाब' में हसन से मुरसल के रूप में वर्णित। उर्दू: अल्लाह तआला अपने उन बंदों के बारे में फरिश्तों के सामने गर्व फरमाता है जो लोगों को खाना खिलाते हैं कि 'देखो, वे कितना अच्छा काम कर रहे हैं।' (अबू अल-शेख ने इसे सवाब में हसन से मुरसल के रूप में वर्णित किया है) (टी)

लेकिन जिसे 'लंगर लुटाना' कहते हैं, जहाँ लोग छतों पर बैठकर रोटियां फेंकते हैं, कुछ हाथों में आती हैं, कुछ ज़मीन पर गिरती हैं, कुछ पैरों के नीचे आती हैं, यह मना है क्योंकि इसमें ईश्वरीय अन्न का अनादर होता है। बहुत से विद्वानों ने तो रुपयों-पैसों का लुटाना, जैसा कि दूल्हा-दुल्हन पर न्योछावर करने का रिवाज है, मना फरमाया है कि अल्लाह अज़्ज़वजल ने रुपयों-पैसों को सृष्टि की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए बनाया है, इसलिए उन्हें फेंकना नहीं चाहिए। रोटी फेंकना तो अत्यंत बेतुका है। 'बज़ज़िया, किताबुल कराहिया, अन-नौअ रबे अल-हदिय्या वल-मीरास' में है:

[बॉक्स 3] अरबी: क्या दिरहम लुटाना वैध है? कहा गया 'नहीं' और कहा गया 'इसमें कोई हर्ज नहीं है'। यही दीनार और छोटे सिक्कों (फुलूस) पर भी लागू होता है। नापसंद करने वालों ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के इस कथन से प्रमाण लिया होगा कि: 'दिरहम और दीनार अल्लाह तआला की मुहरों में से दो मुहरें हैं; जो कोई अल्लाह तआला की मुहरों में से कोई मुहर लेकर चलता है, उसकी आवश्यकता पूरी हो जाती है।' उर्दू: क्या दिरहम लुटाना वैध है? कुछ ने कहा वैध नहीं है और कुछ ने कहा कोई हर्ज नहीं। इसी नियम में दीनार और पैसे भी आते हैं। नापसंद कहने वालों ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के इस फरमान से प्रमाण लिया कि 'दिरहम और दीनार अल्लाह तआला की मुहरों में से मुहरें हैं, तो जिसे कोई मुहर मिली, उसने अल्लाह तआला की मुहर से अपनी ज़रूरत पूरी पाई।' (टी)

पादलेख: 1. तारीख़ बग़दाद, जीवनी 4364, इसहाक़ बिन मुहम्मद, दारुल किताब अल-अरबी, बेरुत, 6/404 और 405। 2. अत-तरग़ीब वत-तरहीब, सन्दर्भ अबू अल-शेख 'अत-थवाब', अध्याय 'भोजन कराने का प्रोत्साहन', हदीस 21, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 2/68। 3. फतावा बज़ज़िया, फतावा हिन्दिया के हाशिये पर, किताबुल कराहिया, अन-नौअ रबे अल-हदिय्या वल-मीरास, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 6/362।

पृष्ठ 522/720

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

[دائیں کالم]: في الريح العاصف-رواه الخطيب عن انس بن مالك رضي الله تعالى عنه-

اسی طرح کھانا کھلانا لنگر بانٹنا بھی مندوب و باعث اجر ہے، حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

[دائیں کالم]: ان الله عزوجل يباهي ملئكته بالذين يطعمون الطعام من عبيده-رواه ابو الشيخ فی الثواب عن الحسن مرسلا- بائیں کالم: اللہ تعالٰی اپنے ان بندوں سے جو لوگوں کو کھانا کھلاتے ہیں فرشتوں کے ساتھ مباہات فرماتا ہے کہ دیکھو یہ کیسا اچھا کام کر رہے ہیں (اس کو ابوالشیخ نے ثواب میں حسن سے مرسلاً روایت کیا)(ت)

مگر لنگر لٹانا جسے کہتے ہیں کہ لوگ چھتوں پر بیٹھ کر روٹیاں پھینکتے ہیں، کچھ ہاتھوں میں جاتی ہیں کچھ زمین پر گرتی ہیں، کچھ پاؤں کے نیچے ہیں، یہ منع ہے کہ اس میں رزق الہی کی بے تعظیمی ہے، بہت علماء نے تو روپوں پیسوں کا لٹانا جس طرح دلہن دولہا کی نچھاور میں معمول ہے منع فرمایا کہ روپے پیسے کو اللہ عزوجل نے خلق کی حاجت روائی کے لئے بنایا ہے تو اسے پھینکنا نہ چاہئے، روٹی کا پھینکنا تو سخت بیہودہ ہے، بزازیہ کتاب الکراہیۃ، النوع الرابع فی الھدیۃ والمیراث میں ہے:

[دائیں کالم]: هل يباح نثر الدراهم قيل لا وقيل لاباس به وعلى هذا الدنانير والفلوس وقد يستدل من كره بقوله صلى الله تعالى عليه وسلم الدراهم والدنانير خواتمان من خواتيم الله تعالٰی فمن ذهب بخاتم من خواتيم الله تعالٰی قضيت حاجته- بائیں کالم: کیا دراہم لٹانا مباح ہے، بعض نے کہا مباح نہیں اور بعض نے کہا کوئی حرج نہیں ہے، اسی حکم میں دنانیر اور پیسے ہیں، ناپسند کہنے والوں نے حضور

علیہ الصلوۃ والسلام کے ارشاد کہ "دراہم و دنانیر اللہ تعالٰی کی مہروں سے مہریں ہیں تو جس نے کوئی مہر پائی اس نے اللہ تعالٰی کی مہر سے حاجت پائی" سے استدلال کیا۔ (ت)

حواشی: 1. تاریخ بغداد ترجمہ ۴۳۶۴ اسحق بن محمد دار الکتاب العربی بیروت ۶/ ۴۰۴ و ۴۰۵ 2. الترغیب والترہیب بحوالہ ابی الشیخ فی الثواب الترغیب فی اطعام الطعام حدیث ۲۱ مصطفٰی البابی مصر ۲/ ۶۸ 3. فتاوٰی بزازیہ علی ہامش فتاوٰی ہندیہ کتاب الکراہیتہ النوع الرابع فی الھدیۃ والمیراث مکتبہ نورانی کتب خانہ پشاور ۶ / ۳۶۲

Fatawa Ridawiyya Volume 24

The books of martyrdom (Shahadat) prevalent nowadays mostly consist of fabricated tales and false narrations. Similarly, reciting or listening to elegies (Marthiya) containing such things is a sin and forbidden. It is stated in a Hadith:

Arabic	Urdu Translation
The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forbade elegies. (Narrated by Abu Dawud and al-Hakim from Abdullah ibn Abi Awfa, may Allah be pleased with him).	The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forbade elegies. (Reported from Abu Dawud and Hakim through Abdullah bin Abi Awfa, may Allah be pleased with him.)

Similarly, Imam Hujjat al-Islam and other esteemed scholars forbid the mention of martyrdom in this manner, as mentioned by Imam ibn Hajar al-Makki in 'as-Sawa'iq al-Muhriqa' (as Imam ibn Hajar al-Makki has narrated it in Sawa'iq Muhriqa). However, if authentic narrations are related, and no words insulting the status of any Prophet, Angel, the Ahl al-Bayt, or Sahabi (Companions) are mentioned in exaggerated praise, etc., and if there is no wailing, lamentation, chest-beating, tearing of clothes, mourning rituals, affectation, or renewal of grief which are forbidden in Sharia, then indeed, mentioning the virtues and merits of our master Imam Hussain (may Allah be pleased with him) is a cause of reward and the descent of mercy. "Upon the mention of the righteous, divine mercy descends." (Divine mercy descends upon the mention of the righteous ones). Therefore, Imam ibn Hajar al-Makki, after the aforementioned statement, says:

Arabic	Urdu Translation
What I mentioned regarding the prohibition of narrating the killing of Hussain and what follows it does not contradict what I mentioned in this book, because this is the true explanation that must be believed regarding the majesty of the Sahaba and their innocence from every deficiency. This is contrary to what ignorant preachers do, for they bring false,	The prohibition of narrating the martyrdom of Hussain (may Allah be pleased with him) and what was mentioned after it is not contrary to the narrations I have mentioned in this book. This is because it is an explanation of the truth comprising the majesty of the Sahaba and their innocence from every defect. This is contrary to ignorant preachers who narrate lies and fabricated

Arabic	Urdu Translation
fabricated reports and such, and they do not clarify...	news, and [do not provide] a correct basis or credible belief.

1. Sunan Ibn Majah, Chapters on Funerals, Chapter on Weeping over the Deceased, H.M. Saeed Company Karachi, p. 115; Al-Mustadrak al-Hakim, Book of Funerals, Weeping over the Deceased, Dar al-Fikr Beirut, 1/383.
2. Ithaf al-Sadat al-Muttaqin, Book of Manners of Seclusion, Second Chapter, Dar al-Fikr Beirut, 6/350.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

शहादत की किताबें जो आजकल प्रचलित हैं, उनमें से अधिकांश गढ़ी हुई कहानियों और गलत हदीसों पर आधारित हैं। इसी तरह, ऐसी चीजों वाली मरसियों (शोकगीतों) को पढ़ना या सुनना पाप और हराम है। हदीस में है:

अरबी	**उर्दू अनुवाद**
अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मरसियों से मना फरमाया। (इसे अबू दाऊद और हाकिम ने अब्दुल्लाह बिन अबी औफी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है)	अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मरसियों से मना फरमाया। (इसे अबू दाऊद और हाकिम ने अब्दुल्लाह बिन अबी औफी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।)

इसी तरह, इमाम हुज्जतुल इस्लाम और अन्य सम्मानित विद्वान इस तरह से शहादत का ज़िक्र करने से मना करते हैं, जैसा कि इमाम इब्न हजर अल-मक्की ने 'अस-सवाइक़ अल-मुहरिका' में ज़िक्र किया है (जैसा कि इमाम इब्न हजर मक्की ने सवाइक़ मुहरिका में इसे रिवायत किया है)। हाँ, अगर सही रिवायतें बयान की जाएं और किसी नबी, फरिश्ते, अहले बैत या सहाबी की शान में गुस्ताखी वाले शब्द न हों, चाहे वे बढ़ा-चढ़ाकर की गई प्रशंसा में ही क्यों न हों, और अगर वहां वैन, विलाप, सीना-कोबी, कपड़े फाड़ना, मातम, बनावट या गम को ताज़ा करना आदि जैसी शरीयत में मना की गई बातें न हों, तो हमारे आका हज़रत इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) के गुणों और श्रेष्ठता का ज़िक्र निस्संदेह सवाब का कारण और रहमत के अवतरण का ज़रिया है। "नेक लोगों के ज़िक्र पर अल्लाह की रहमत नाज़िल होती है।" (नेक लोगों के ज़िक्र पर ईश्वरीय कृपा बरसती है।) इसलिए इमाम इब्न हजर अल-मक्की उपरोक्त कथन के बाद कहते हैं:

अरबी	**उर्दू अनुवाद**
हुसैन की शहादत और उसके बाद की घटनाओं को बयान करने की मनाही के बारे में मैंने जो कुछ कहा है, वह इस किताब में मेरे द्वारा बताई गई बातों के विपरीत नहीं है, क्योंकि यह सच्चाई का वह बयान है जिस पर सहाबा की महानता और हर दोष से उनकी बेगुनाही के बारे में विश्वास करना	हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) की शहादत के बयान की मनाही और उसके बाद जो कुछ ज़िक्र किया गया, वह मेरी इस किताब में दी गई रिवायतों के विपरीत नहीं है क्योंकि यह सहाबा किराम की महानता और हर दोष से उनकी बेगुनाही पर आधारित सच्चाई का बयान है। इसके विपरीत,

अरबी	उर्दू अनुवाद
चाहिए। यह अज्ञानी उपदेशकों के काम के विपरीत है, क्योंकि वे झूठी, गढ़ी हुई खबरें और वैसी ही बातें लाते हैं और वे स्पष्ट नहीं करते...	जाहिल उपदेशक झूठ और गढ़ी हुई खबरें सुनाते हैं और सही संदर्भ और विश्वसनीय विश्वास [प्रदान नहीं करते]...

1. सुनन इब्न माजा, जनाज़ा के अध्याय, मृत व्यक्ति पर रोने का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृ. 115; अल-मुस्तदरक अल-हाकिम, जनाज़ा की किताब, मृत व्यक्ति पर रोना, दार अल-फ़िक्र बेरूत, 1/383।
2. इत्हाफ़ अल-सादात अल-मुत्तक़ीन, एकांत के शिष्टाचार की पुस्तक, दूसरा अध्याय, दार अल-फ़िक्र बेरूत, 6/350।

पृष्ठ 523/720

کتب شہادت جو آج کل رائج ہیں اکثر حکایات موضوعہ وروایات باطلہ پر مشتمل ہیں، یو ہیں مرثیے ایسی چیزوں کا پڑھنا سننا سب گناہ وحرام ہے۔ حدیث میں ہے:

| نھی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم عن المراثی۔ رواہ ابوداؤد والحاکم عن عبداللہ بن ابی اوفی رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ | رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے مرثیوں سے منع فرمایا (اسے ابوداؤد اور حاکم نے عبداللہ بن ابی اوفی رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیات) |

ایسے ہی ذکر شہادت کو امام حجۃ الاسلام وغیرہ علمائے کرام منع فرماتے ہیں کما ذکرہ امام ابن حجر المکی فی الصواعق المحرقۃ (جیسا کہ امام ابن حجر مکی نے صواعق محرقہ میں اسے روایت کیا ہےت) ہاں اگر صحیح روایات بیان کی جائیں اور کوئی کلمہ کسی نبی یاملک یا اہلبیت یا صحابی کی توہین شان کا مبالغہ مدح وغیرہ میں مذکور نہ ہو، نہ وہاں بین یانوحہ یا سینہ کوبی یا گریبان دری یا ماتم یا تصنع یا تجدید غم وغیرہ ممنوعات شرعیہ نہ ہوں تو ذکر شریف فضائل و مناقب حضرت سیدنا امام حسین رضی اللہ تعالٰی عنہ کا بلاشبہ موجب ثواب و نزول رحمت ہے عند ذکر الصالحین تنزل الرحمۃ (صالحین کے ذکر پر رحمت الٰہیہ نازل ہوتی ہےت) ولہٰذا امام ابن حجر مکی بعد بیان مذکور کے فرماتے ہیں:

| مأذکر من حرمۃ روایۃ قتل الحسین ومابعدہ لا ینافی مأذکرتہ فی ہٰذا الکتاب لان ہٰذا البیان الحق الذی یحب اعتقادہ من جلالۃ الصحابۃ وبرائتھم من کل نقص، بخلاف مأیفعلہ الوعاظ الجھلۃ، فانھم یأتون بالاخبار الکاذبۃ الموضوعۃ ونحوھا ولا یبینون | شہادت حسین رضی اللہ تعالٰی عنہ کے بیان کی محرمت اور اس کے بعد جو کچھ ذکر کیا وہ میری اس کتاب میں ذکر کردہ روایات کے منافی نہیں

ہے کیونکہ یہ صحابہ کرام کی جلالت اور ہر نقص سے ان کی برات پر مشتمل حق کا بیان ہے، بخلاف جاہل واعظین کے کہ وہ جھوٹ اور موضوع قسم کی خبریں سناتے ہیں اور صحیح محمل اور قابل اعتقاد |

1 سنن ابن ماجہ ابواب ماجاء فی الجنائز باب ماجاء فی البکاء علی المیت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۱۵، المستدرک للحاکم کتاب الجنائز البکاء علی المیت دار الفکر بیروت ۱ / ۳۸۳ 2 اتحاف السادۃ المتقین کتاب آداب العزلۃ الباب الثانی دار الفکر بیروت ۶ / ۳۵۰

The interpretations and the truth that it is obligatory to believe in.[1] And Allah, Glory be to Him, knows best. (T) And Allah the Exalted knows best.

Fifth Question: From Mufti Ganj, District Patna, Post Office Eilinger Sarai, sent by Muhammad Nawab Sahib Qadri and other residents of Mufti Ganj, 12th Ramadan Sharif 1318 AH. Here, during the ten days of Muharram, assemblies for reciting elegies (Marsiya Khwani) are held, and elegies of the Sufi masters are read, and chest-beating and wailing do not take place, and the head of the assembly is a Sunni. What is the ruling on participating in such an assembly or on reciting elegies in it? Clarify and be rewarded.

The Answer: The assembly dedicated to the noble remembrance of Hazrat Sayyiduna Imam Husain and the Household (Ahl al-Bayt) - may Allah Almighty be pleased with them - in which their virtues and merits are described through authentic and reliable narrations, and which is completely free from mourning, renewal of grief, and other matters contrary to the Sharia, is in itself good and commendable, whether prose is read in it or poetry. Even if that poem, being a 'Musaddas' (six-line stanza) containing the mention of the Master of Martyrs, is commonly known as 'Marsiya' in the present context; for this is no longer the 'Marsiya' regarding which it is said: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forbade elegies (Marathi).[2] The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forbade elegies. And Allah, Glory be to Him, knows best. (T) [2] And Allah, Glory be to Him, knows best.

Sixth Question: From Nawab Ganj, 20 Muharram al-Haram 1321 AH. What do the scholars of religion and the jurists of the firm Sharia say in these matters:

[1] *As-Sawa'iq al-Muhriqa al-Khatima fi Bayan I'tiqad Ahl al-Sunnah*, Maktaba Majidia, Multan, p. 227. [2] *Al-Mustadrak lil-Hakim*, Kitab al-Jana'iz, Al-Buka' 'ala al-Mayyit, Dar al-Fikr, Beirut, 1/383; *Sunan Ibn Majah*, Abwab ma ja'a fil Jana'iz, Bab ma ja'a fil Buka' 'ala al-Mayyit, H. M. Saeed Company, Karachi, p. 115.

महमिल और वह हक़ जिसका मानना वाजिब है।[1] और अल्लाह सुब्हानहू और तआला बेहतर जानता है। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

पाँचवाँ सवाल: मुफ़्ती गंज, ज़िला पटना, डाकखाना ईलिंगर सराए से मुरसला मोहम्मद नवाब साहब क़ादरी और दीगर बाशिंदगान मुफ़्ती गंज, 12 रमज़ान शरीफ़ 1318 हिजरी। यहाँ अशरा-ए-मुहर्रम में मज्लिस-ए-मर्सिया ख़्वानी होती है, और मर्सिये सूफिया-ए-किराम के पढ़े जाते हैं, और सीना-कोबी व बैन नहीं होता, और मीर-ए-मज्लिस सुन्नी-उल-मज़हब है, ऐसी मज्लिस में शिरकत या इसमें मर्सिया ख़्वानी का क्या हुक्म है? साफ़ बयान करें और सवाब पायें।

जवाब: जो मज्लिस हज़रत सय्यदना इमाम हुसैन और अहल-ए-बैत-ए-किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के ज़िक्र-ए-शरीफ़ की हो जिसमें रिवायत-ए-सहीहा मोतबरा से उनके फ़ज़ाइल व मनाक़िब बयान किए जाएँ और मातम व तज्दीद-ए-ग़म व ग़ैर-ए-उमूर-ए-मुखालिफ़-ए-शरा से यकसर पाक हो, वह अपने आप में ह़सन और महमूद है, चाहे उसमें नस्र (गद्य) पढ़ी जाए या नज़्म (पद्य)। अगरचे वह नज़्म बवजह एक मुसद्दस होने के, जिसमें ज़िक्र हज़रत सय्यदुश्शुहदा है, उर्फ़ए-हाल में बनाम-ए-मर्सिया मौसूम हो कि अब यह वह मर्सिया नहीं जिसकी निस्बत है: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मराथी (मर्सियों) से मना फ़रमाया।[2] रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मर्सियों से मना फ़रमाया। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। (त) [2] और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

छठा सवाल: नवाब गंज से, 20 मुहर्रम-उल-हराम 1321 हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन व मुफ़्तियान-ए-शरा-ए-मतीन इन सूरतों में:

[1] अस्सवाइकुल मुह्रिका अल-ख़ातिमा फ़ी बयान एतिकाद अहल-ए-सुन्नत, मकतबा मजीदिया मुल्तान, स. 227। [2] अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताबुल जनाइज़, अल-बुका अला अल-मय्यित, दारुल फ़िक्र बैरूत, 1/383; सुनन इब्न माजा, अबवाब मा जाअ फ़िल जनाइज़, बाब मा जाअ फ़िल बुका अला अल-मय्यित, एच. एम. सईद कंपनी कराची, स. 115।

المحامل والحق الذی یجب اعتقادہ ۱ واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم (ت) وتعالٰی اعلم۔

سوال پنجم: از مفتی گنج ضلع پٹنہ ڈاک خانہ ایلنگر سرائے مرسلہ محمد نواب صاحب قادری و دیگر سکان مفتی گنج ۱۲/ رمضان شریف ۱۳۱۸ھ یہاں عشرہ محرم میں مجلس مرثیہ خوانی کی ہوتی ہے، اور مرثیے صوفیہ کرام کے پڑھے جاتے ہیں، اور سینہ کوبی و بین نہیں ہوتا، اور میر مجلس سنی المذہب ہے، ایسی مجلس میں شرکت یا اس میں مرثیہ خوانی کا کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: جو مجلس ذکر شریف حضرت سیدنا امام حسین واہل بیت کرام رضی اللہ تعالٰی عنہم کی ہو جس میں روایات صحیحہ معتبرہ سے ان کے فضائل و مناقب بیان کئے جائیں اور ماتم و تجدیدِ غم و غیرہ امور مخالفہ شرع سے یکسر پاک ہو نفسہ حسن و محمود ہے خواہ اس میں نثر پڑھیں یا نظم، اگرچہ وہ نظم بوجہ ایک مسدس ہونے کے جس میں ذکر حضرت سید الشہداء ہے عرفِ حال میں بنامِ مرثیہ موسوم ہو کہ اب یہ وہ مرثیہ نہیں جس کی نسبت ہے: نھی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم عن المراثی ۲ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے مرثیوں سے منع فرمایا۔ واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم (ت) ۲۔ واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم۔

سوال ششم: از نواب گنج ۲۰ محرم الحرام ۱۳۲۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین ان صورتوں میں:

۱۔ الصواعق المحرقہ الخاتمہ فی بیان اعتقاد اھل السنۃ مکتبہ مجیدیہ ملتان ص ۲۲۷ ۲۔ المستدرک للحاکم کتاب الجنائز البکاء علی المیت دارالفکر بیروت ۱/ ۳۸۳، سنن ابن ماجہ ابواب ما جاء فی الجنائز باب ما جاء فی البکاء علی المیت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۱۵

Fatawa Razawiyya Volume 24

(1) A person says, "I do not eat offerings made to the Tazia; I eat the Niyaz (blessed food) of Hazrat Imam Hussain (may Allah be pleased with him)." (2) A person says, "It's not limited to Tazia; I don't eat any kind of offering; I only eat Niyaz." (3) A person says, "Whatever food or drink is available during the ten days of Muharram is considered an offering to the Tazia for those ten days." (4) A person says, "A Tazia is like an idol because it is a representation created without a valid reason." (5) A person says, "This form is like that of Buraq and the Houri of Paradise." (6) A person says, "There is no difference between a Tazia and a mosque; rather, he says, what is in a mosque? It's just bricks and mortar where you prostrate, and in a Tazia, there are papers of mica etc." (7) A person said, "Brother, these are matters of Sharia; put them in writing and hand them over to Sharia, do not quarrel among yourselves." (8) A person says, "You do not understand Sharia." (9) A person said, "Since you do not understand Sharia, I consider the offering of Tazia to be forbidden (haram)."

The Answer: (1) The first person says a good thing; indeed, one should eat Niyaz in the name of the Hazrat Imam and should not eat offerings of Tazia. If his statement means that he doesn't eat it with the intention that it's a Tazia offering, but rather with the intention that it's the Imam's Niyaz, then this is wrong and absurd. By offering it on a Tazia, it does not become the Niyaz of Hazrat Imam Hussain (may Allah be pleased with him). And if they offer it as Niyaz first and then place it on the Tazia, or offer Niyaz after placing it, one should avoid eating it. That distinction in intention will not remove its corruption (mufsadah). The corruption lies in the fact that by eating it, one either increases the value of an impermissible act in the eyes of the ignorant, or at the very least, makes oneself suspect in their belief. Both of these things are heinous and reprehensible; therefore, one should abstain from eating and drinking it. And Allah Ta'ala knows best. (2) There is a bit of exaggeration in the second person's statement. The sweets taken to the shrines of the Saints with the intention of charity (tasadduq) are also called offerings by some; there is absolutely no harm for a poor person (faqir) in eating them. (3) The third person did not differentiate between Niyaz and the offering of Tazia; this is wrong. An offering is only that which is taken to the Tazia or placed near it in front of everyone with the intention of a vow (nazr) to the Tazia. All other food...

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

(१) एक व्यक्ति कहता है कि मैं ताज़िये का चढ़ावा नहीं खाता हूँ, हज़रत इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) की नियाज़ का खाता हूँ। (२) एक व्यक्ति कहता है कि ताज़िये पर क्या मुनहसिर है, चढ़ौना कोई भी हो मैं नहीं खाता हूँ, नियाज़ खाता हूँ। (३) एक व्यक्ति कहता है कि अशरा-ए-मुहर्रमुल हराम में जो कुछ खाने-पीने वगैरह में होता है, दस दिन तक ताज़िये का चढ़ावा होता है। (४) एक व्यक्ति कहता है कि ताज़िया बुत है, बिना किसी कारण के रूप बनाने के कारण। (५) एक व्यक्ति कहता है कि यह सूरत वैसी है जैसी बुराक और हूर-ए-जन्नत की होती हैं। (६) एक व्यक्ति कहता है कि ताज़िये और मस्जिद में कोई फ़र्क़ नहीं, बल्कि कहता है कि मस्जिद में क्या है, वह ईंट-गारा ही तो है जहाँ तुम सज्दे करते हो और ताज़िये में अभ्रक के कागज़ वगैरह हैं। (७) एक व्यक्ति ने कहा कि भाई ये बातें शरीअत की हैं, लिखकर शरीअत के सुपुर्द करो, आपस में झगड़ा मत करो। (८) एक व्यक्ति कहता है कि तुम शरीअत नहीं समझते। (९) एक व्यक्ति ने कहा कि जिस हालत में तुम शरीअत को नहीं समझते हो, तो मैं ताज़िये के चढ़ौने को हराम समझता हूँ।

जवाब: (१) पहला व्यक्ति अच्छी बात कहता है, वास्तव में हज़रत इमाम के नाम की नियाज़ खानी चाहिए और ताज़िये का चढ़ावा नहीं खाना चाहिए। अगर उसके कहने का मतलब यह है कि वह ताज़िये का चढ़ावा इस नीयत से नहीं खाता कि वह ताज़िये का चढ़ावा है, बल्कि इस नीयत से खाता है कि वह इमाम की नियाज़ है, तो यह ग़लत और बेतुका है। ताज़िये पर चढ़ाने से वह हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नियाज़ नहीं हो जाती। और अगर नियाज़ देकर चढ़ाएं या चढ़ाकर नियाज़ दिलाएं तो उसके खाने से परहेज़ करना चाहिए और वह नीयत का फ़र्क़ उसकी बुराई (मफ़सदा) को दूर नहीं करेगा। बुराई इसमें है कि इसे खाने से अज्ञानी लोगों की नज़रों में एक नाजायाज़ काम की अहमियत बढ़ती है या कम से कम इंसान खुद को उनके विश्वास के लिहाज़ से सन्देह के घेरे में डालता है। और दोनों ही बातें बुरी और निंदनीय हैं, इसलिए इसके खाने-पीने से बचना चाहिए। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)। (२) दूसरे व्यक्ति की बात में थोड़ी अतिशयोक्ति है। औलिया-ए-किराम की मज़ारों पर जो मिठाई सदक़े(तसद्दुक) की नीयत से ले जाते हैं, उसे भी कुछ लोग चढ़ौना कहते हैं, उसके खाने में फ़क़ीर को कोई हर्ज़ नहीं। (३) तीसरे व्यक्ति ने नियाज़ और ताज़िये के चढ़ावे में फ़र्क़ नहीं किया, यह ग़लत है। चढ़ौना वही है जो ताज़िये पर या उसके पास ले जाकर सबके सामने ताज़िये की मन्नत (नज़्र) की नीयत से रखा जाए, बाक़ी सब खाना...

पृष्ठ ७२० का ५२५

(۱) ایک شخص کہتا ہے کہ میں تعزیہ کا چڑھاوہ نہیں کھاتا ہوں حضرت امام حسین (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) کی نیاز کا کھاتا ہوں۔ (۲) ایک شخص کہتا ہے تعزیہ پر کیا منحصر ہے چڑھونا کوئی ہو میں نہیں کھاتا ہوں نیاز کھاتا ہوں۔ (۳) ایک شخص کہتا ہے کہ عشرہ محرم الحرام میں جو کچھ کھانے پینے وغیرہ میں ہوتا ہے دس روز تک تعزیہ کا چڑھاوہ ہوتا ہے۔ (۴) ایک شخص کہتا ہے تعزیہ بت ہے بے سبب لگانے صورت کے۔ (۵) ایک شخص کہتا ہے کہ یہ صورت وہ ہے جو بُراق اور حُورِ جنت میں ہیں۔ (۶) ایک شخص کہتا ہے کہ تعزیہ اور مسجد میں کچھ فرق نہیں بلکہ کہتا ہے کہ مسجد میں کیا ہے وہ اینٹ گارا ہی تو ہے جو وہاں سجدے کرتے ہو اور تعزیہ میں ابرق کا کاغذ وغیرہ ہیں۔ (۷) ایک شخص نے کہا کہ بھائی یہ باتیں شرع کی ہیں لکھ کر شرع کے سپرد کرو، آپس میں جھگڑا مت کرو۔ (۸) ایک شخص کہتا ہے کہ تم شرع نہیں سمجھتے۔ (۹) ایک شخص نے کہا کہ جس حالت میں تم شرع کو نہیں سمجھتے ہو تو میں تعزیہ کے چڑھونے کو حرام سمجھتا ہوں۔

الجواب: (۱) پہلا شخص اچھی بات کہتا ہے واقعی حضرت امام کے نام کی نیاز کھانی چاہئے اور تعزیہ کا چڑھاوہ نہ کھانا چاہئے، اگر اس کے قول کا یہ مطلب ہے کہ وہ تعزیہ کا چڑھاوہ اس نیت سے نہیں کھاتا کہ وہ تعزیہ کا چڑھاوہ ہے بلکہ اس نیت سے کھاتا ہے کہ وہ امام کی نیاز ہے تو یہ غلط اور بیہودہ ہے، تعزیہ پر چڑھانے سے حضرت امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی نیاز نہیں ہو جاتی، اور اگر نیاز دے کر چڑھائیں یا چڑھا کر نیاز دلائیں تو اس کے کھانے سے احتراز چاہئے اور وہ نیت کا تفرقہ اس کے مفسدہ کو دفع نہ کرے گا، مفسدہ اس میں ہے کہ اس کے کھانے سے جاہلوں کی نظر میں ایک امرِ ناجائز کی وقعت بڑھانی یا کم از کم اپنے آپ کو اس کے اعتقاد سے

متہم کرتا ہے، اور دونوں باتیں شنیع و مذموم ہیں لہذا اس کے کھانے پینے سے احتراز چاہئے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ (۲) دوسرے شخص کی بات میں ذرا زیادتی ہے اولیاء کرام کے مزارات پر جو شیرینی کھانا بہ نیت تصدق لے جاتے ہیں اسے بھی بعض لوگ چڑھونا کہتے ہیں اس کے کھانے میں فقیر کو اصلاً حرج نہیں۔ (۳) تیسرے شخص نے نیاز اور تعزیہ کے چڑھاوے میں فرق نہ کیا یہ غلط ہے چڑھونا وہی ہے جو تعزیہ پر یا اس کے پاس لے جا کر سب کے سامنے نذرِ تعزیہ کی نیت سے رکھا جائے باقی سب کھانے

Sharbat etc., which are given during the ten days of Muharram with the intention of Isal-e-Thawab (conveying reward), cannot be called 'offerings' (in the sense of idol offerings).

(4) A physical image/statue is called an idol. In this sense, those images which are put on 'taziyas' can also be called so metaphorically as a whole. And if 'idol' means an absolute deity, then this is extreme injustice. In fairness, even the most ignorant person does not consider the 'taziya' a deity.

(5) This person's claim is pure fabrication. Where is the beauty of the Houris and Al-Buraq, and where are these paper-and-strip figures? Far more beautiful ones are made daily at the homes of craftsmen/puppet-makers. And even if they were (representative), when is it permissible to make images of Houris and Al-Buraq?

(6) This person is clearly misguided, senseless, and foul-mouthed. No one prostrates to the mosque building itself. Its reality is not just bricks and mortar; rather, it is that land which has been separated from all worldly rights to perform prayers and worship of Allah, and by the command of Allah Almighty, it has been left for His special ownership to seek proximity to Him. Now it has become part of the 'Symbols of Allah' (Sha'air Allah), and the command is to respect the Symbols of Allah. Allah Almighty says:

"And whoever honors the symbols of Allah - indeed, it is from the piety of hearts." (1). What comparison is there between this collection of innovations (bid'at) and that? But compound ignorance is a severe illness, may Allah protect us.

(7) This person did well; this is the command for Muslims: that what you do not know, do not pass judgment on it yourself, but rather ask the people of Sharia. Allah Almighty says:

"So ask the people of the message if you do not know." (2). O people! Ask the people of knowledge if you do not know. (t)

(8) If the meaning of his statement is that 'you people are ignorant, do not argue among yourselves, ask the people of Sharia,' then he did well. But if it means that 'taziya is Shari'a-wise a good thing, you don't understand Sharia,' then this is a very big claim and a fabrication against Sharia. And if the intention was that 'disapproval

from Sharia is clearly evident, but you people don't understand,' then he also did well.

---

(1) Al-Quran Al-Karim 22 / 32 (2) Al-Quran Al-Karim 16 / 43 and 21 / 7 Page 526 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

शरबत वग़ैरा जो मुहर्रम के दस दिनों में ईसाले सवाब (सवाब पहुँचाने) की नीयत से हों, वे चढ़ावा नहीं हो सकते।

(4) मुजस्सम (साकार) तस्वीर को बुत (मूर्ति) कहते हैं, इस मायने में वे तस्वीरें जो ताज़िया में लगाई जाती हैं और मजाज़न (लाक्षणिक रूप से) पूरे को भी कह सकते हैं। और अगर बुत से मुराद माबूदे मुतलक़ (निरपेक्ष देवता) हो तो यह सख़्त ज़्यादती है, इंसाफ़ यह है कि कोई जाहिल से जाहिल भी ताज़िया को माबूद (उपास्य) नहीं जानता।

(5) इस शख़्स का यह महज़ इफ़्तरा (झूठा आरोप) है, कहाँ हूर और बुर्क़ और कहाँ ये काग़ज़-पट्टी की मूर्तियाँ, जिनसे कहीं ज़्यादा ख़ूबसूरत कँगरों (खिलौने बनाने वालों) के यहाँ रोज़ बनती हैं। और अगर हों भी, तो हूर और बुर्क़ की तस्वीरें बनानी कब हलाल हैं?

(6) यह शख़्स सरीह (स्पष्ट) गुमराह, बदअक़्ल और बदज़बान है। मस्जिद को कोई सजदा नहीं करता, न उसकी हक़ीक़त ईंट-गारा है, बल्कि वह ज़मीन जो नमाज़ और इबादते इलाही बजा लाने के लिए तमाम हुक़ूक़े इबाद (बन्दों के अधिकारों) से जुदा करके अल्लाह अज़्ज़वजल के हुक्म से उसकी तरफ़ तक़र्रुब (नज़दीकी) के वास्ते ख़ास मिल्के इलाही (ईश्वर के स्वामित्व) पर छोड़ी गई, अब वह शआअिरे अल्लाह (अल्लाह की निशानियों) से हो गई और शआअिरे अल्लाह की ताज़ीम (सम्मान) का हुक्म है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"और जो अल्लाह की निशानियों का सम्मान करे, तो ये दिलों के परहेज़गार होने से है।" (1)। इस मजमुआ-ए-बिदआत (नवाचारों के समूह) को उससे क्या निस्बत (सम्बन्ध), मगर जहले मुरक्कब (दोहरा अज्ञान) सख़्त मर्ज़ है, वल-अयाज़ु बिल्लाह (अल्लाह की पनाह)।

(7) इस शख़्स ने अच्छा किया, मुसलमानों को यही हुक्म है कि जो बात न जाने ख़ुद उस पर कोई हुक्म न लगाए बल्कि अले शरअ (शरिया के विशेषज्ञों) से दरियाफ़्त (पता) करे। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"तो अले ज़िक्र (ज्ञान वालों) से पूछो अगर तुम्हें इल्म नहीं।" (2)। ऐ लोगो! इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म नहीं। (त)

(8) इसके क़ौल का अगर यही मतलब है कि तुम लोग बे-इल्म हो आपस में बहस न करो अहले शरअ से पूछो तो अच्छा किया, और अगर ये मुराद है कि ताज़िया शरअन् अच्छी चीज़ है तुम शरअ नहीं समझते तो ये बहुत बड़ा कहना और शरअ पर इफ़्तरा किया, और अगर ये मक़सूद हो कि शरअ से तो मज़म्मत (निंदा) साफ़ ज़ाहिर है मगर तुम लोग नहीं समझते तो ये भी अच्छा किया।

---

(1) अल-क़ुरआन अल-करीम 22/32 (2) अल-क़ुरआन अल-करीम 16/43 और 21/7 पृष्ठ 526 / 720

شربت وغیرہ کہ عشرہ محرم میں بہ نیت ایصالِ ثواب ہوں وہ چڑھاوا نہیں ہوسکتے۔

(۴) مجسم تصویر کو بت کہتے ہیں، اس معنٰی پر وہ تصویریں کہ تعزیہ میں لگائی جاتی ہیں اور مجازاً کل کو بھی کہہ سکتے ہیں اور اگر بت سے مراد معبودِ مطلق ہو تو یہ سخت زیادتی ہے انصاف یہ کوئی جاہل سے جاہل بھی تعزیہ کو معبود نہیں جانتا۔

(۵) اس شخص کا یہ محض افتراء ہے کہاں حور و براق اور کہاں یہ کاغذ پٹی کی مورتیں جس سے کہیں زیادہ خوبصورت کنگروں کے یہاں روز بنتی ہیں، اور اگر ہو بھی تو حور و براق کی تصویریں بنانی کب حلال ہیں۔

(۶) یہ شخص صریح گمراہ و بدعقل و بدزبان ہے، مسجد کو کوئی سجدہ نہیں کرتا، نہ اس کی حقیقت اینٹ گارا ہے بلکہ وہ زمین کہ نماز و عبادت الٰہی بجالانے کے لئے تمام حقوق عباد سے جدا کر کے اللہ عزوجل کے حکم سے اس کی طرف تقرب کے واسطے خاص ملک الٰہی پر چھوڑی گئی اب وہ شعائر اللہ سے ہو گئی اور شعائر اللہ کی تعظیم کا حکم ہے قال اللہ تعالٰی:

"وَمَنْ یُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَی الْقُلُوْبِ" (1) ۔ اس مجموعہ بدعات کو اس سے کیا نسبت، مگر جہل مرکب سخت مرض ہے، والعیاذ باللہ۔

(۷) اس شخص نے اچھا کیا مسلمانوں کو یہی حکم ہے کہ جو بات نہ جانے خود اس پر کوئی حکم نہ لگائے بلکہ اہل شرع سے دریافت کرے، قال اللہ تعالٰی:

"فَسْئَلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ" (2) ۔ اے لوگو! علم والوں سے پوچھو اگر تمہیں علم نہیں۔(ت)

(۸) اس کے قول کا اگر یہی مطلب ہے کہ تم لوگ بے علم ہو آپس میں بحث نہ کرو اہل شرع سے پوچھو تو اچھا کیا، اور اگر یہ مراد ہے کہ تعزیہ شرعاً اچھی چیز ہے تم شرع نہیں سمجھتے تو یہ بہت بڑا کہنا اور شرع پر افتراء کیا اور اگر یہ مقصود ہو کہ شرع سے تو مذمت صاف ظاہر ہے مگر تم لوگ نہیں سمجھتے تو یہ بھی اچھا کیا۔

---

(1) القرآن الکریم ۲۲ / ۳۲ (2) القرآن الکریم ۱۶ / ۴۳ و ۲۱ / ۷ Page 526 of 720

Fatawa Ridawiyya Volume 24

(9) His statement has exceeded limits; eating offerings made to Ta'ziya is indeed disliked and unpleasant for the reasons we mentioned, but calling it forbidden (haram) is incorrect. In 'Fatawa Alamgiri' it is stated: "Regarding the goat which a Hindu had slaughtered by a Muslim in the name of his idol, and Muslims slaughtered it by reciting the Takbeer of Allah (the Mighty and Majestic); it is clearly stated that it is halal, but it is disliked (Makruh) for a Muslim." 1

When there is only a ruling of dislike there, why would there be prohibition here? And Allah Almighty knows best.

Question Seven: From Atrauli district Aligarh, Mohalla Mughlan, sent by Ikram Azeem Sahib, 18 Jamadi al-Ula 1321 AH. Is it permissible for the Ahl-e-Sunnat wa-Jamaat to participate and be involved in the mourning assemblies (Majlis Marsiya Khawani) of the Shia people or not? Explain and you will be rewarded.

The Answer: It is forbidden (haram). It is in the Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic	Translation
Whoever increases the number of a people is of them. 2	Whoever makes the prominence of any group large is of them. (T)

Those foul-mouthed impure people often utter insults (Tabarra) in such a way that the ignorant listeners are not even aware. It has been heard repeatedly that the drink they give to Sunnis, they mix impurity in it. Even if nothing else, they mix the impure water of their basins (Qullatayn). If nothing else, it is not free from fabricated narrations, repulsive words, and forbidden mourning (Maatam). They will witness this and will not be able to prevent it. Going to such a place is forbidden. Allah Almighty says:

Arabic	Translation
"...then sit not after the remembrance with the wrongdoing people." 3	So when you remember, do not sit with the oppressors. And Allah Almighty knows best. (T)

1. Fatawa Hindiya, Kitab al-Dhaba'ih, Chapter 1, Nurani Kutub Khana Peshawar, 5/286
2. Al-Maqasid al-Hasana, Hadith 701, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut, p. 426

3. Quran Kareem 6/68

फतावा रिज़विया जिल्द २४

(९) उनका कथन सीमा से बाहर है; ताजिया का चढ़ावा खाना उन कारणों से जो हमने बताए, मकरूह (नापसंद) और अरुचिकर ज़रूर है, लेकिन इसे हराम कहना गलत है। 'फतावा आलमगिरी' में है: "उस बकरी के बारे में जिसे एक हिंदू ने अपने मूर्ति के नाम पर एक मुसलमान से जिबह करवाया और मुसलमानों ने अल्लाह अज़्ज़-ओ-जल्ल की तकबीर कहकर जिबह कर दिया; यह स्पष्ट किया गया है कि वह हलाल है लेकिन मुसलमान के लिए मकरूह है।" १

जब वहां केवल मकरूह (नापसंदगी) का हुक्म है तो यहां हराम क्यों कर? और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

सातवां प्रश्न: अतरौली जिला अलीगढ़, मोहल्ला मुग़लां से, प्रेषक इकराम अज़ीम साहब, १८ जमादी अल-उला १३२१ हिजरी। शिया लोगों की मर्सिया ख्वानी (शोक सभा) की मजलिस में अहले सुन्नत व जमात का शामिल और शरीक होना जायज़ है या नहीं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: यह हराम है। हदीस में है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

अरबी	**अनुवाद**
जिसने किसी कौम की तादाद बढ़ाई, वह उन्हीं में से है। २	जिसने किसी कौम की पहचान को बढ़ाया वह उन्हीं में से है। (त)

वे अपशब्द कहने वाले अपवित्र लोग अक्सर तबर्रा (गाली-गलौज) इस तरह बक जाते हैं कि अज्ञानी सुनने वालों को खबर भी नहीं होती। और बार-बार सुना गया है कि वे सुन्नियों को जो शरबत देते हैं, उसमें गंदगी मिलाते हैं। यदि और कुछ नहीं, तो वे अपने यहाँ के अपवित्र हौज़ (कुल्लतैन) का पानी मिलाते हैं। यदि और कुछ भी न हो, तो वह मजलिस मनगढ़ंत कथाओं, घृणित शब्दों और हराम मातम से खाली नहीं होती। वे इसे देखेंगे और इसे रोक नहीं सकेंगे, ऐसी जगह जाना हराम है। अल्लाह तआला फरमाता है:

अरबी	अनुवाद
"...तो याद आने पर ज़ालिमों के पास न बैठो।" ३	तो याद आने पर ज़ालिमों के पास न बैठें। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

1. फतावा हिन्दिया, किताब अल-ज़बाइह, अध्याय १, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, ५/२८६
2. अल-मक़ासिद अल-हसना, हदीस ७०१, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरुत, पृष्ठ ४२६
3. कुरआन करीम ६/६८

पृष्ठ ७२० का ५२७

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

(۹) اس کا قول حد سے گزرا ہوا ہے تعزیہ کا چڑھاوا کھانا ان وجوہ سے جو ہم نے ذکر کیں مکروہ و ناپسند ضرور ہے مگر حرام کہنا غلط ہے، فتاوٰی عالمگیریہ میں ہے: "اس بکری کو جو ہندو نے اپنے بت کے نام پر مسلمان سے ذبح کرایا اور مسلمانوں نے اللہ عزوجل کی تکبیر کہہ کر ذبح کر دی تصریح فرمائی کہ حلال ہے مگر مسلم مسلمان کے لئے مکروہ ہے۔" 1

جب وہاں صرف کراہت کا حکم ہے تو یہاں تحریم کیوں کر۔ واللہ تعالٰی اعلم

سوال ہفتم: از اترولی ضلع علی گڑھ محلہ مغلاں مرسلہ اکرام عظیم صاحب ۱۸ جمادی الاولٰی ۱۳۲۱ھ مجلس مرثیہ خوانی اہل شیعہ میں اہلسنت و جماعت کو شریک و شامل ہونا جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: حرام ہے: حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

عربی	ترجمہ
مَن کثّر سواد قوم فہو منہم 2	جس نے کسی قوم کا تشخص کثیر بنایا وہ ان میں کا ہے۔ (ت)

وہ بد زبان ناپاک لوگ اکثر تبرا بک جاتے ہیں اس طرح کہ جاہل سننے والوں کو خبر بھی نہیں ہوتی اور متواتر سنا گیا ہے کہ سنیوں کو جو شربت دیتے ہیں اس میں نجاست ملاتے ہیں اور کچھ نہ ہو تو اپنے یہاں کے ناپاک قُلتین کا پانی ملاتے ہیں اور کچھ نہ ہو تو وہ روایات موضوعہ و کلمات شنیعہ و ماتمِ حرام سے خالی نہیں ہوتی اور یہ دیکھیں گے اور منع نہ کر سکیں گے ایسی جگہ جانا حرام ہے، اللہ تعالٰی فرماتا ہے:

عربی	ترجمہ
" فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ" 3	تو یاد آئے پر ظالموں کے پاس نہ بیٹھ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

1 فتاوٰی ہندیہ کتاب الذبائح الباب الاول نورانی کتب خانہ پشاور ۵ / ۲۸۶ 2 المقاصد الحسنہ حدیث ۷۰۱ دار الکتب العلمیہ بیروت ص ۴۲۶ 3 القرآن الکریم ۶ / ۶۸

Fatawa Rizvia, Volume 24, Page 528

Eighth Question: What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say regarding the issue of making ta'ziyas, offering vows and oblations upon them, hanging petitions (ara'iz) in the hope of fulfilling needs, and considering these acts as good deeds with the intention of Bid'at-e-Hasana (good innovation), and regarding them as being in accordance with Sharia? How much of a sin is this, and everything related to or arising from it? If Zaid considers these contemporary practices related to ta'ziya-making and flag-bearing to be in accordance with the creed of the Ahl-e-Sunnat, what kind of person is he deemed, and what Sharia punishment is mandatory for him? Does committing these acts involve him in hidden or open polytheism (shirk), and does his wife leave his marriage or not, given that he performs these aforementioned acts with a sense of devotion as a member of the Ahl-e-Sunnat wa Jama'at for the sake of reward? Explain and be rewarded.

The Answer: The aforementioned acts as they are prevalent among the common people of this era are an evil innovation (bid'at-e-sayyia), prohibited, and impermissible. Considering them worthy of reward and believing them to be in accordance with the Sharia of the Ahl-e-Sunnat creed is an even more severe error in belief and extreme ignorance. Sharia punishment is delegated to the opinion of the Sharia ruler or Sultan. Nevertheless, it is absolutely not polytheism (shirk) or disbelief (kufr), nor does a woman leave her marriage because of this. Hanging petitions with the hope of fulfilling needs is purely with the intention of 'tawassul' (intercession), which is his ignorance, as prohibited matters are not fit for intercession. As for the actual fulfiller of needs, no reciter of the Kalima (Muslim) considers His Eminence Imam [Husain], may Allah be pleased with him, to be so independently, which would be polytheism, God forbid. This is the ignorance and misguidance of the Wahhabis. And Allah knows best. Only.

Booklet A'la al-Ifada fi Ta'ziyat al-Hind wa Bayan Shahadah Concluded.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 24, पेज 528

सवाल 8: दीन के उलेमा और शरिया के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ताज़िया बनाना और उस पर नज़र-नियाज़ करना, हाजत पूरी होने की उम्मीद में अर्ज़ियाँ (अरज़ियां) लटकाना और बिदअते-हसना की नियत से इसे नेकियों में दाखिल समझना और इन कामों को और जो कुछ इससे पैदा हो या ताल्लुक रखे, शरियत के मुताबिक समझना कितना गुनाह है? और अगर ज़ैद इन बातों को जो आजकल ताज़ियादारी और अलमदारी से ताल्लुक रखती हैं, अहले सुन्नत के मज़हब के मुवाफ़िक (अनुकूल) समझे, तो वह किस तरह का गुनहगार हुआ और उस पर शरीअत की क्या सज़ा लाज़िम आती है? और क्या इन कामों के करने से वह शिर्कए-ख़फ़ी (छुपा हुआ शिर्क) या जली (प्रकट शिर्क) में मुब्तला (शामिल) है या नहीं, और क्या उसकी बीवी उसके निकाह से बाहर हो गई या नहीं, जबकि वह ऊपर बताए गए कामों को सवाब की नियत से अहले सुन्नत व जमात के अक़ीदे का हिस्सा समझकर करता हो? बयान करें और सवाब पायें।

जवाब: ऊपर बताए गए काम जिस तरह आजकल आम लोगों में प्रचलित हैं, वे बिदअते-सय्यिया (बुरी बिदअत), मना और नाजायज़ हैं। उन्हें सवाब का काम समझना और अहले सुन्नत मज़हब की शरीअत के मुताबिक मानना उससे भी ज़्यादा सख़्त गलती, अक़ीदे की ख़ता और घोर जहालत है। शरीई ताज़ीर (सज़ा) हाकिमे-शरा (इस्लामी शासक) की राय पर निर्भर है। इसके बावजूद, यह हरगिज़ शिर्क और कुफ़्र नहीं है, और न ही इस वजह से औरत निकाह से बाहर होती है। हाजत पूरी होने की उम्मीद में अर्ज़ियाँ लटकाना महज़ 'तवस्सुल' (वसीला) की नियत से है, जो उसकी जहालत है क्योंकि मना किए गए काम तवस्सुल के लायक नहीं होते। रही बात हक़ीक़ी हाजत रवा (ज़रूरत पूरी करने वाला) होने की, तो कोई भी कलमा पढ़ने वाला (मुसलमान) हज़रत इमाम आली मकाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) को ज़ाती तौर पर ऐसा नहीं मानता, कि माज़अल्लाह शिर्क हो जाए; यह वहाबियों की जहालत और गुमराही है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है)। फ़क़त।

रिसाला आला अल-इफ़ादह फ़ी तज़ियात अल-हिंद व बयान शहादत ख़त्म हुआ।

فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۴، صفحہ ۵۲۸

سوال ہشتم: کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرعِ متین اس مسئلہ میں کہ تعزیہ بنانا اور اس پر نذر نیاز کرنا عرائض بامید حاجت براری لٹکانا اور بہ نیت بدعتِ حسنہ اس کو داخلِ حسنات جاننا اور موافقِ شریعت ان امور کو اور جو کچھ اس سے پیدا اور یا متعلق ہوں کتنا گناہ ہے، اور زید اگر ان باتوں کو جو فی زمانہ متعلق تعزیہ داری و علم داری کے ہیں موافقِ مذہب اہل سنت کے تصور کرے تو وہ کس قسم کے مرتکب ہوا اور اس پر شرع کی تعزیر کیا لازم آتی ہے، اور ان امور کے ارتکاب سے وہ شرک خفی یا جلی میں مبتلا ہے یا نہیں، اور اس کی زوجہ اس کے نکاح سے باہر ہوئی یا نہیں، درصورتیکہ وہ امور متذکرہ بالا کو داخل عقیدتِ اہلسنت و جماعت بنظرِ ثواب عمل میں لاتا ہو۔ بینوا توجروا۔

الجواب: افعالِ مذکورہ جس طرح عوامِ زمانہ میں رائج ہیں بدعتِ سیئہ و ممنوع و نا جائز ہیں انہیں داخل ثواب جاننا اور موافقِ شریعت مذہبِ اہلسنت ماننا اس سے سخت تر و خطائے عقیدہ و جہلِ اشد ہے، شرعی تعزیر حاکمِ شرع سلطان کی رائے پر مفوض ہے بایں ہمہ وہ شرک و کفر ہر گز نہیں ، نہ اس بناء پر عورت نکاح سے باہر ہو، عرائض بامید حاجت براری لٹکانا محض بہ نیت توسل ہے جو اس کا جہل ہے کہ امورِ ممنوعہ لائقِ توسل نہیں ہوتے باقی حاجت روا بالذات کوئی کلمہ گو حضرت امام عالی مقام رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو بھی نہیں جانتا کہ معاذ اللہ تعالیٰ شرک ہو، یہ وہابیہ کا جہل وضلال ہے، واللہ تعالیٰ اعلم فقط۔

رسالہ اعلیٰ الافادۃ فی تعزیۃ الہند و بیان شہادۃ ختم ہوا

Fatawa Razawiyya, Volume 24

Imitating Others Practices of Disbelievers etc.

Problem 228: From Pilibhit, Mohalla Muhammad Wasil, sent by Maulvi Muhammad Wasi Ahmad Sahib Surti, 24 Safar 1313 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say about this issue: Is the dhoti a general Indian dress or is it specifically the dress of Hindus? A scholar says that the dhoti is the dress of Hindus and according to the Hadith 'Whoever imitates a people is one of them'[1] (Translation: Whoever adopts a resemblance to a people will be counted among them) a Muslim who wears a dhoti becomes a Hindu, and no righteous deed like prayer or fasting is accepted from him. It is forbidden for Muslims to have marital relations, social gatherings, eat or drink, or exchange greetings with someone who wears a dhoti. In fact, if a dhoti-wearer says 'Assalamu Alaikum', one should not even respond to their greeting. So, should a person wearing a dhoti be treated as that scholar claims, or as a Muslim? Whatever the Sharia command is in this regard, please explain. Clarify and be rewarded. (Translation: Explain so that you may receive a reward.)

---

1 Sunan Abi Dawud, Kitab al-Libas, Bab Labs al-Shuhrah, Aftab-e-Alam Press Lahore, 2/203.

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 24

तशब्बुह बिल-ग़ैर (दूसरों की नकल करना) शआर-ए-कुफ़्फ़ार (काफिरों के तौर-तरीके) आदि

मसला 228: पीलीभीत, मोहल्ला मोहम्मद वासिल से, मौलवी मोहम्मद वसी अहमद साहब सूरती द्वारा प्रेषित, 24 सफ़र 1313 हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस मसले में कि धोती भारतीय पोशाक है या विशेष रूप से हिंदुओं की पोशाक है? एक आलिम साहब कहते हैं कि धोती हिंदुओं की पोशाक है और हदीस 'मन तशब्बहा बि-क़ौमिन फ़हुवा मिन्हुम'[1] (जो कोई किसी कौम से समानता अपनाएगा, वह उन्हीं में से गिना जाएगा - अनुवाद) के अनुसार जो मुसलमान धोती पहनता है वह हिंदू है, और उसकी नमाज़, रोज़ा आदि कोई नेक अमल मक़बूल (स्वीकार्य) नहीं है। मुसलमानों के लिए धोती पहनने वाले के साथ वैवाहिक संबंध रखना, उठना-बैठना, खाना-पीना और सलाम-दुआ सब वर्जित है। बल्कि, अगर धोती पहनने वाला 'अस्सलाम-ओ-अलैकुम' कहे तो उसके सलाम का जवाब भी न दिया जाए। तो क्या धोती पहनने वाले के साथ वैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए जैसा आलिम साहब कहते हैं या मुसलमानों जैसा? इस बारे में शरीयत का जो हुक्म हो, इरशाद फ़रमाएं। बय्यिनू तूजरू (बयान फ़रमाएं ताकि पुण्य पाएं - अनुवाद)।

---

1 सुनन अबी दाऊद, किताबुल लिबास, बाब लुब्सुश शुहरा, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 2/203.

تشبّہ بالغیر شعارِ کُفار وغیرہ

مسئلہ ۲۲۸: از پیلی بھیت محلہ محمد واصل مرسلہ مولوی محمد وصی احمد صاحب سورتی ۲۴ صفر ۱۳۱۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ دھوتی لباسِ ہند ہے یا کہ خاص ہنود کا لباس ہے، ایک عالم صاحب کہتے ہیں کہ دھوتی لباسِ ہنود ہے اور بموجب من تشبّہ بقوم فھو منھم ۱ (جو کوئی کسی قوم سے مشابہت اختیار کرے گا تو وہ انہی میں سے شمار ہوگا ت) کے جو مسلمان دھوتی پہنے وہ ہندو ہے اور نماز روزہ وغیرہ کوئی عملِ صالح اس کا مقبول نہیں مسلمانوں کو دھوتی پہنے والے کے ساتھ مناکحت و نشست برخاست کھانا پینا کھلانا پلانا صاحب سلامت سب منع ہے بلکہ دھوتی پہنے والا اسلام علیک کرے تو اس کے سلام کا جواب بھی نہ دے، پس دھوتی پہنے والے کے ساتھ وہی برتاؤ چاہئے جیسا کہ عالم صاحب کہتے ہیں یا کہ مسلمانوں کا سا، اس بارہ میں جو حکم شریعت ہو ارشاد فرمایا جائے۔ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پاہئے۔ت)

---

1 سنن ابی داؤد کتاب اللباس باب لبس الشہرۃ آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۲۰۳

Fatawa Razawiyya Volume 24

The Answer:

I say: And with Allah's guidance (I say only with the guidance of Allah Almighty). The truth of investigation and the investigation of truth in this type of issue is that imitation (tashabbuh) is of two types: commitment-based (iltizami) and consequential (luzumi). Commitment-based is when a person adopts the specific style and form of a nation with the precise intention of looking like them and achieving similarity to them. In reality, this is what 'tashabbuh' is, for the meaning of intention and effort is observed in it, as is not hidden. Consequential (luzumi) is when there is no intention of similarity, but that style has become such a distinctive trait of that nation that similarity will inevitably arise. In commitment-based imitation, there are three scenarios regarding intention:

First: That he likes the similarity because he considers that nation beloved and pleasing. If this is with innovators, it is a bid'ah (innovation), and if with disbelievers, it is - Allah forbid - disbelief. The hadith "Whoever imitates a people is one of them" (i.e., whoever adopts the resemblance of a nation will be counted among them) specifically applies to this scenario in reality. It is mentioned in Ghamz al-'Uyun wa'l-Basa'ir:

[Arabic Text Block]: "Our masters (scholars) have agreed that whoever regards an action of the disbelievers as good has committed disbelief. They even said regarding a man who said that not speaking while eating is a good practice of the Magians, or that not lying with a woman during menstruation is a good practice of theirs, that he is a disbeliever." Our noble masters have agreed that anyone who considers any action of the disbelievers to be good undoubtedly becomes a disbeliever. To the extent that they stated if someone calls not talking while eating or not sleeping with a woman during her period a good habit of the Magians and fire-worshippers, then he is a disbeliever. (T)

Second: Opting for it due to the necessity of an acceptable purpose. In that case, the ugliness of that style and the necessity of that purpose will be weighed. If the necessity prevails, then to the extent of the necessity and at the time of necessity, this imitation - let alone being disbelief - will not even be prohibited. Just as it is narrated from the noble Companions (Allah be pleased with them) that in some conquests, they worked by changing their guise and wearing the clothes of the Romans, and through this means, with Allah's permission, they gained dominance

over large groups of evil disbelievers. Similarly, during the time of the late Sultan Salahuddin Yusuf (may Allah illuminate his proof), when all the disbelievers of Europe...

---

1 Sunan Abi Dawud, Kitab al-Libas, Bab Labs al-Shuhrah, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/203 2 Ghamz 'Uyun al-Basa'ir with al-Ashbah wa'n-Nazir, al-Fann al-Thani, Kitab al-Siyar, Bab al-Riddah, Idarat al-Qur'an, Karachi, 1/295

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

उत्तर:

मैं कहता हूँ: और अल्लाह की तौफ़ीक़ से (मैं अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ ही से कहता हूँ)। इस प्रकार के मसलों में शोध का सत्य और सत्य का शोध यह है कि तशब्बुह (नकल/समानता) दो प्रकार का है: इल्तिज़ामी और लुज़ूमी। इल्तिज़ामी यह है कि यह व्यक्ति किसी कौम के विशेष ढंग और रूप को इसी इरादे से अपनाए कि उनकी तरह अपनी सूरत बनाए और उनसे समानता हासिल करे। वास्तव में तशब्बुह इसी का नाम है, क्योंकि इसमें इरादे और प्रयास का अर्थ शामिल है जैसा कि छिपा नहीं है। और लुज़ूमी यह है कि उसका इरादा तो समानता का नहीं है लेकिन वह रूप उस कौम की ऐसी विशिष्ट पहचान बन गई है कि चाहो या न चाहो समानता पैदा होगी। इल्तिज़ामी में इरादे की तीन सूरतें हैं:

पहला: यह कि उस कौम को प्रिय और पसंद मानकर उनसे समानता पसंद करे। यह बात अगर बिदअतियों (नवाचारियों) के साथ हो तो बिदअत है और काफ़िरों के साथ हो तो - अल्लाह की पनाह - कुफ़्र (अविश्वास) है। हदीस "जिसने किसी कौम की समानता अपनाई वह उन्हीं में से है" वास्तव में विशेष रूप से इसी सूरत से संबंधित है। ग़म्ज़ अल-उयून वल-बसायर में है:

[अरबी पाठ]: "हमारे बुज़ुर्गों (विद्वानों) का इस पर इत्तेफाक (सहमति) है कि जो कोई काफिरों के किसी काम को अच्छा समझे तो वह निस्संदेह काफिर हो जाता है। यहाँ तक कि उन्होंने उस आदमी के बारे में कहा जिसने कहा कि खाना खाते समय न बोलना मजूसियों (अग्निपूजकों) की अच्छी आदत है या मासिक धर्म के दौरान पत्नी के पास न लेटना उनकी अच्छी आदत है, तो वह काफिर है।" हमारे नेक बुज़ुर्गों का इस पर इत्तेफाक है कि जो कोई काफिरों के किसी काम को अच्छा समझे तो वह बिना किसी संदेह के काफिर हो जाता है। यहाँ तक कि उन्होंने फ़रमाया कि जो कोई खाना खाते समय बातें न करने को और मासिक धर्म की स्थिति में औरत के पास न लेटने को मजूसियों और अग्निपूजकों की अच्छी आदत कहे तो वह काफिर है। (त)

दूसरा: किसी स्वीकार्य उद्देश्य की आवश्यकता के कारण इसे अपनाए। वहां उस रूप की बुराई और उस उद्देश्य की आवश्यकता के बीच तुलना की जाएगी। यदि आवश्यकता प्रबल हो, तो आवश्यकता की सीमा तक और आवश्यकता के समय यह समानता, कुफ़्र तो क्या, मना भी नहीं होगी। जिस तरह सहाबा किराम (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से वर्णित है कि कुछ विजय अभियानों में उन्होंने रोमियों के

कपड़े पहनकर वेश बदलकर काम किया और इस माध्यम से अल्लाह की अनुमति से दुष्ट काफिरों की बड़ी जमातों पर विजय प्राप्त की। इसी प्रकार मरहूम सुल्तान सलाहुद्दीन यूसुफ (अल्लाह उनके प्रमाण को प्रकाशित करे) के समय में जब यूरोप के सभी काफिर...

---

1 सुनन अबी दाऊद, किताबुल लिबास, बाब लब्सुश शुहरा, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, 2/203
2 ग़म्ज़ उयून अल-बसायर मअ अल-अशबाह वन-नज़ायर, अल-फन्न अल-सानी, किताबुल सियर, बाब अल-रिद्दह, इदारतुल कुरआन, कराची, 1/295

الجواب:

اقول: وباللہ التوفیق (میں اللہ تعالیٰ کی توفیق ہی سے کہتا ہوں۔ت) اس جنس مسائل میں حق تحقیق و تحقیقِ حق یہ ہے کہ تشبہ دو وجہ پر ہے: التزامی و لزومی۔ التزامی یہ ہے کہ یہ شخص کسی قوم کے طرز و وضع خاص اسی قصد سے اختیار کرے کہ ان کی سی صورت بنائے ان سے مشابہت حاصل کرے حقیقۃً تشبہ اسی کا نام ہے فان معنی القصد والتکلف ملحوظ فیہ کمالایخفی (اس لئے کہ قصد اور تکلف کے مفہوم کا اس میں لحاظ رکھا گیا ہے جیسا کہ پوشیدہ نہیں۔ ت) اور لزومی یہ کہ اس کا قصد تو مشابہت کا نہیں مگر وہ وضع اس قوم کا شعارِ خاص ہورہی ہے کہ خواہی نخواہی مشابہت پیدا ہوگی، التزامی میں قصد کی تین صورتیں ہیں:

اول: یہ کہ اس قوم کو محبوب و مرضی جان کر اُن سے مشابہت پسند کرے یہ بات اگر مبتدع کے ساتھ ہو بدعت اور کفار کے ساتھ معاذ اللہ کفر، حدیث من تشبہ بقوم فھو منھم (جو کسی قوم سے مشابہت اختیار کرے تو وہ انہی میں سے شمار ہوگا۔ت) حقیقۃً صرف اسی صورت سے خاص ہے۔ غمز العیون والبصائر میں ہے:

اتفق مشائخنا ان من رأی امر الکفار حسنا فقد کفر حتی قالوا فی رجل قال ترك الکلام عند اکل الطعام حسن من المجوس او ترك المضاجعة عندھم حال الحیض حسن فھو کافر - ہمارے مشائخ کرام کا اس پر اتفاق ہے کہ جو کوئی کافروں کے کسی کام کو اچھا سمجھے تو وہ بلا شبہ کافر ہو جاتا ہے یہاں تک کہ انہوں نے فرمایا کہ جو کوئی کھانا کھاتے وقت باتیں نہ کرنے کو اور حالت حیض میں عورت کے پاس نہ لیٹنے کو مجوسیوں اور آتش پرستوں کی اچھی عادت کہے تو وہ کافر ہے۔ (ت)

دوم: کسی غرض مقبول کی ضرورت سے اسے اختیار کرے وہاں اس وضع کی شناعت اور اس غرض کی ضرورت کا موازنہ ہوگا اگر ضرورت غالب ہو تو بقدر ضرورت کا وقت ضرورت یہ تشبیہ کفر کیا معنی ممنوع بھی نہ ہوگا جس طرح صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے مروی کہ بعض فتوحات میں منقول رومیوں کے لباس پہن کر بھیس بدل کر کام فرمایا اور اس ذریعہ سے کفار اشرار کی بھاری جماعتوں پر باذن اللہ غلبہ پایا اسی طرح سلطان مرحوم صلاح الدین یوسف انار اللہ تعالیٰ برہانہ کے زمانے میں جبکہ تمام کفارِ یورپ

---

1 سنن ابی داؤد کتاب اللباس باب لبس الشهرة آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۲۰۳ 2 غمز عیون البصائر مع الاشباہ والنظائر الفن الثانی کتاب السیر باب الردة ادارة القرآن کراچی ۱/ ۲۹۵

Fatawa Razawiya, Volume 24

...caused a great uproar; two scholars toured in the guise of priests and extinguished this fire of prejudice. In *Khulasa*, it is stated:

[Arabic]: If one ties a zunnar around his waist and enters Dar al-Harb (the abode of war) to rescue captives, he does not commit disbelief (kufr). However, if he enters for the purpose of trade, he becomes a disbeliever. This was mentioned by Imam Abu Ja'far al-Ustrushani. | [Urdu]: If a person ties a zunnar around his waist and enters Dar al-Harb to liberate prisoners, he will not become a disbeliever. But if he goes there for trade during that period, he will become a disbeliever. Imam Abu Ja'far Ustrushani has mentioned this. (T)

Multaqat states:

[Arabic]: If one ties a zunnar, takes a shackle, or wears the cap of the Magians, whether seriously or in jest, he commits disbelief, unless he does so as a stratagem in war. | [Urdu]: When a person ties a zunnar, puts on a yoke, or wears the cap of fire-worshippers, whether seriously or as a joke, he becomes a disbeliever. However, if he does so as a tactic in war (to mislead the enemy), he will not be a disbeliever. (T)

Minah al-Rawd states:

[Arabic]: If a Muslim ties a zunnar and enters Dar al-Harb for trade, he commits disbelief, meaning because he wore the clothing of disbelief without intense necessity and without a resulting benefit, unlike one who wears it to rescue captives, as mentioned previously. | [Urdu]: If a Muslim goes to Dar al-Kufr for business while tied with a zunnar, he will become a disbeliever because he wore the dress of disbelief without any severe compulsion and without any resultant benefit (which was not permissible for him), unlike the person who used the dress of disbelief (as a stratagem) to free prisoners, as mentioned earlier. (T)

1. *Khulasat al-Fatawa*, Book of Words of Disbelief, Chapter Two, Sixth Council, Maktaba Habibiya Quetta, 4 / 387.
2. *Minah al-Rawd al-Azhar* citing *Al-Multaqat*, Section on Disbelief Explicitly and Metaphorically, Mustafa al-Babi Egypt, p. 185.
3. *Minah al-Rawd al-Azhar 'ala al-Fiqh al-Akbar*, Section on Disbelief Explicitly and Metaphorically, Mustafa al-Babi Egypt, p. 185.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

...ने भारी हंगामा खड़ा कर दिया; दो विद्वानों ने पादरियों के वेश में दौरा किया और पूर्वाग्रह की इस आग को बुझा दिया। खुलासा में है:

[अरबी]: यदि कोई अपनी कमर में ज़ुन्नार (एक प्रकार का धागा) बांधे और कैदियों को छुड़ाने के लिए दारुल-हर्ब (युद्ध क्षेत्र) में प्रवेश करे, तो वह काफ़िर नहीं होता। लेकिन यदि वह व्यापार के उद्देश्य से प्रवेश करता है, तो वह काफ़िर हो जाता है। इसका उल्लेख इमाम अबू जाफ़र अल-उस्त्रुशानी ने किया है। | [उर्दू]: अगर कोई व्यक्ति अपनी कमर में ज़ुन्नार बांधे और कैदियों को छुड़ाने के लिए दारुल-हर्ब में दाखिल हो तो काफ़िर नहीं होगा। और अगर उस अवधि में व्यापार के लिए जाए तो काफ़िर हो जाएगा। इमाम अबू जाफ़र उस्त्रुशानी ने इसका ज़िक्र किया है। (त)

मुल्तक़त में है:

[अरबी]: जब कोई ज़ुन्नार बांधे या बेड़ी डाले या मजूसी (अग्निपूजक) की टोपी पहने, चाहे गंभीरता से या मज़ाक में, तो वह कुफ़्र (अविश्वास) करता है, जब तक कि वह युद्ध में धोखे (रणनीति) के रूप में ऐसा न करे। | [उर्दू]: जब किसी व्यक्ति ने ज़ुन्नार बांधा या तौक लिया या अग्निपूजकों की टोपी पहनी, चाहे गंभीरता के साथ या हँसी-मज़ाक के तौर पर, तो काफ़िर हो गया। मगर जंग में (दुश्मन को धोखे में डालने के लिए) बतौर तदबीर (रणनीति) ऐसा करे तो काफ़िर न होगा। (त)

मिनहल रौज़ में है:

[अरबी]: यदि कोई मुसलमान ज़ुन्नार बांधकर व्यापार के लिए दारुल-हर्ब में प्रवेश करता है, तो वह कुफ़्र करता है, अर्थात क्योंकि उसने बिना किसी तीव्र आवश्यकता के और बिना किसी परिणामी लाभ के कुफ़्र का पहनावा पहना, उस व्यक्ति के विपरीत जिसने कैदियों को छुड़ाने के लिए इसे पहना था, जैसा कि पहले बताया गया है। | [उर्दू]: अगर मुसलमान ज़ुन्नार बांधकर दारुल-कुफ़्र में कारोबार के लिए जाए तो काफ़िर हो जाएगा, इसलिए कि उसने बिना किसी गंभीर मजबूरी के और बिना किसी परिणामी लाभ के कुफ़्र का लिबास पहना (जो उसके लिए जायज़ न था), बरअक्स उस शख्स के

जिसने कैदियों को आज़ाद कराने के लिए लिबास-ए-कुफ़्र (बौतर-ए-हीला/रणनीति) इस्तेमाल किया, जैसा कि पहले ज़िक्र हुआ। (त)

1. खुलासतुल फ़तावा, किताब अल्फ़ाज़ुल कुफ़्र, दूसरा अध्याय, छठी सभा, मकतबा हबीबिया क्वेटा, 4 / 387।
2. मिनहल रौज़ुल अज़हर बा-हवाला अल-मुल्तक़त, कुफ़्र के स्पष्ट और रूपक खंड में, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, पृ. 185।
3. मिनहल रौज़ुल अज़हर अला अल-फ़िक्ह अल-अकबर, कुफ़्र के स्पष्ट और रूपक खंड में, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, पृ. 185।

نے سخت شورش مچائی تھی دو عالموں نے پادریوں کی وضع بنا کر دورہ کیا اور اس آتش تعصب کو بجھا دیا۔ خلاصہ میں ہے:

لوشد الزنار علی وسطہ ودخل دار الحرب لتخلیص الاساری لا یکفر ولو دخل لاجل التجارۃ یکفر ذکرہ القاضی الامام ابوجعفر الاستروشنی۔[1] | اگر کوئی شخص اپنی کمر میں زنار باندھے اور قیدیوں کو چھڑانے کے لئے دارالحرب میں داخل ہو تو کافر نہیں ہوگا اور اگر اس مدت میں تجارت کے لئے جائے تو کافر ہوجائے گا۔ امام ابو جعفر استروشنی نے اس کو ذکر کیا ہے۔ (ت)

ملتقط میں ہے:

اذا شد الزنار او اخذ الغل اولبس قلنسوۃ المجوس جادا او ھازلا یکفر الا اذا فعل خدیعۃ فی الحرب۔[2] | جب کسی شخص نے زنار باندھا یا طوق لیا یا آتش پرستوں کی ٹوپی پہنی خواہ سنجیدگی کے ساتھ یا ہنسی مذاق کے طور پر تو کافر ہو گیا۔ مگر جنگ میں (دشمن کو مغالطے میں ڈالنے کے لئے) بطور تدبیر ایسا کرے تو کافر نہ ہوگا۔ (ت)

منح الروض میں ہے:

ان اشد المسلم الزنار و دخل دارالحرب للتجارۃ کفر ای لانہ تلبس بلباس کفر من غیر ضرورۃ شدیدۃ و لافائدۃ مترتبۃ بخلاف من لبسھا لتخلیص الاساری علی ما تقدم۔[3] | اگر مسلمان زنار باندھ کر دارالکفر میں کاروبار کیلئے جائے تو کافر ہو جائے گا اس لئے کہ اس نے بغیر کسی شدید مجبوری کے اور بغیر کسی ترتب فائدہ کے لباس کفر پہنا (جو اس کے لئے روانہ تھا)، بخلاف اس شخص کے جس

نے قیدیوں کو آزاد کرانے کے لئے لباس کفر (برائے حیلہ) استعمال کیا، جیسا کہ پہلے ذکر ہوا (ت)

[1] خلاصہ الفتاوی کتاب الفاظ الکفر الفصل الثانی المجلس السادس مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۴ / ۳۸۷ [2] منح الروض الازہر بحوالہ الملتقط فصل فی الکفر صریحاً وکنایةً مصطفی البابی مصر ص ۱۸۵ [3] منح الروض الازہر علی الفقہ الاکبر فصل فی الکفر صریحاً وکنایةً مصطفی البابی مصر ص ۱۸۵

Third: Neither does he consider them good, nor is there any Shari'ah necessity prompting him, but rather he commits this act for some worldly gain or simply by way of jest and mockery. In such a case, there is no doubt about it being haram (forbidden) and prohibited. And if that style is a religious symbol of those disbelievers, such as the sacred thread (zunnar), forehead mark (qashqa), tuft of hair (chutiya), or the cross (salib), then the scholars have given a ruling of disbelief (kufr) even in this scenario, as you have just heard. In fact, in the case of mockery, the ruling of kufr is apparent and not hidden. Even in necessary matters, the ruling of prohibition remains as long as there is no compulsion or force, such as a Western haircut, English hat, jacket, trousers, or reverse veil (ulta parda). Although these things are not religious to the disbelievers, they are ultimately their symbols, so avoiding them is obligatory and committing them is a sin. Therefore, scholars have forbidden wearing the clothing of transgressors (fasiqs). It is stated in Fatawa-e-Khaniya:

"If a shoemaker or a tailor is hired to sew something in the style of transgressors and is given a high wage for it, it is not commendable for him to do it because it is assisting in sin." (If a cobbler or tailor prepares clothes according to the style of the immoral and wicked for a higher than usual wage, then this work is not recommended for him because it is aid and assistance in sin.)

However, for this to be realized, it is absolutely necessary for it to be their specific symbol in that time and place, through which they are recognized, and it should not be common between them and others; otherwise, where is the ground for necessity? Yes, if that thing is inherently reprehensible according to Shari'ah, then it will remain forbidden or disliked for that reason, not for the sake of imitation. Imam Qastallani states in 'Mawahib al-Ladunniyya' regarding the tailasan (a type of cloak or scarf) which was a Jewish attire:

"As for what Ibn al-Qayyim mentioned regarding the story of the Jews, Hafiz Ibn Hajar said: This reasoning was correct only at the time when the tailasan was their symbol. This has ceased in these times, so it has entered the general category of permissible (mubah) things. Ibn Abd al-Salam (may Allah have mercy on him) has mentioned it in the examples..." (Regarding what Hafiz Ibn Qayyim has narrated about the incident of the Jews, Hafiz Ibn Hajar stated in this regard that this reasoning was correct while the mentioned shawl used to be their (religious) symbol. But in this era, this thing is

ending, so now it is included in the general permissible matters. Accordingly, Allama Ibn Abd al-Salam (may Allah have mercy on him) has included it in the examples of permissible innovation (bid'ah mubah)...)

1. Fatawa Qazi Khan, Kitab al-Hazr wa al-Ibaha, Naval Kishore Press, Lucknow, 4/780.

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

तीसरा: न तो वह उन्हें अच्छा समझता है और न ही कोई शरई ज़रूरत उसे इस पर प्रेरित करती है, बल्कि वह किसी दुनियावी फ़ायदे के लिए या यूँ ही हंसी-मज़ाक़ और मखौल के तौर पर यह काम करता है, तो इसके हराम और वर्जित होने में कोई शक नहीं। और अगर वह शैली उन काफ़िरों का धार्मिक निशान (शआर) है, जैसे जनेऊ (ज़ुन्नार), तिलक (क़श्क़ा), चोटी (चुटिया), सलीब (चलीपा), तो उलेमा ने इस स्थिति में भी कुफ़्र का हुक्म दिया है, जैसा कि आपने अभी सुना। वास्तव में मज़ाक़ उड़ाने की स्थिति में कुफ़्र का हुक्म साफ़ ज़ाहिर है और छिपा हुआ नहीं है। और ज़रूरी मामलों में भी मनाही का हुक्म है जब तक कि कोई मजबूरी या ज़ोर-ज़बरदस्ती न हो, जैसे अंग्रेज़ी बाल काटना, अंग्रेज़ी टोपी, जैकेट, पतलून, उल्टा पर्दा। हालाँकि ये चीज़ें काफ़िरों की धार्मिक नहीं हैं, लेकिन आख़िरकार उनके निशान (शआर) हैं, इसलिए उनसे बचना वाजिब है और इन्हें अपनाना गुनाह है। इसीलिए उलेमा ने गुनाहगारों (फ़ुस्साक़) की शैली के कपड़े पहनने से मना फ़रमाया है। फ़तावा-ए-खानिया में है:

"अगर किसी मोची या दर्ज़ी को फ़ुस्साक़ (गुनाहगारों) की शैली के अनुसार कुछ सिलने के लिए काम पर रखा जाए और उसे इसके लिए बहुत ज़्यादा मज़दूरी दी जाए, तो उसके लिए यह काम करना मुस्तहब (पसंदीदा) नहीं है क्योंकि यह गुनाह में मदद करना है।" (अगर मोची या दर्ज़ी फ़ासिकों और फ़ाजिरों (बदचलन और गुनाहगारों) की शैली के अनुसार सामान्य से अधिक मज़दूरी पर कपड़े तैयार करे, तो उसके लिए यह काम मुस्तहब नहीं है क्योंकि यह गुनाह पर मदद और सहायता है।)

मगर इसकी हक़ीक़त के लिए यह नितांत आवश्यक है कि वह उस समय और स्थान में उनका विशिष्ट शआर (निशान) हो जिससे वे पहचाने जाते हों, और उनके और दूसरों के बीच साझा न हो, अन्यथा अनिवार्यता (लुज़ूम) का क्या आधार होगा? हाँ, अगर वह चीज़ स्वयं शरीअत की दृष्टि से निंदनीय हो, तो वह उस कारण से वर्जित या मकरूह (नापसंद) रहेगी, न कि नक़ल (तशब्बुल) के आधार पर। इमाम क़स्तलानी ने 'मवाहिब अल-लदुन्निया' में तैलासान (एक प्रकार की चादर) के बारे में, जो यहूदियों की पोशाक थी, फ़रमाया है:

"रही बात जो इब्न अल-क़य्यिम ने यहूदियों की कहानी के बारे में ज़िक्र की है, तो हाफ़िज़ इब्न हजर ने फ़रमाया: यह दलील उसी समय सही थी जब तैलासान उनका शआर (धार्मिक निशान) हुआ करती थी। इस दौर में यह चीज़ समाप्त हो गई है, इसलिए अब यह सामान्य मुबाह (अनुमत) चीज़ों में

शामिल है। इब्न अब्द अल-सलाम (रहमतुल्लाह अलैहि) ने इसे उदाहरणों में ज़िक्र किया है..." (जहाँ तक हाफ़िज़ इब्न क़य्यिम द्वारा वर्णित यहूदियों की घटना का सवाल है, हाफ़िज़ इब्न हजर ने इस बारे में फ़रमाया कि यह तर्क तब सही था जब उक्त चादर उनका (धार्मिक) शआर हुआ करती थी। लेकिन इस दौर में यह चीज़ ख़त्म हो रही है, लिहाज़ा अब यह आम मुबाह में शामिल है, चुनाँचे अल्लामा इब्न अब्द अल-सलाम (रहमतुल्लाह अलैहि) ने इसे 'बिदअत-ए-मुबाह' (अनुमत नवाचार) के उदाहरणों में...)

1. फ़तावा क़ाज़ी खान, किताब अल-हज़र वल-इबाह, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, ४/७८०।

سوم: نہ تو انہیں اچھا جانتا ہے نہ کوئی ضرورتِ شرعیہ اس پر حامل ہے بلکہ کسی نفعِ دنیوی کے لئے یا یو ہیں بطور ہزل واستہزاء اس کام مرتکب ہوا تو حرام و ممنوع ہونے میں شک نہیں اور اگر وہ وضعِ ان کفار کا مذہبی دینی شعار ہے جیسے زنار، قشقہ، چٹیا، چلیپا، تو علماء نے اس صورت میں بھی حکم کفر دیا کما سمعت انفاً (جیسا کہ تم نے ابھی سنا۔ت) اور فی الواقع صورتِ استہزاء میں حکم کفر ظاہر ہے کمالایخفی (جیسا کہ پوشیدہ نہیں۔ت) اور لزومی میں بھی حکم ممانعت ہے جبکہ اکراہ وغیرہ مجبوریاں نہ ہوں جیسے انگریزی منڈا، انگریزی ٹوپی، جاکٹ، پتلون، الٹا پردہ، اگرچہ یہ چیزیں کفار کی مذہبی نہیں مگر آخر شعار ہیں تو ان سے بچنا واجب اور ارتکاب گناہ۔ ولہذا علماء نے فساق کی وضع کے کپڑے موزے سے ممانعت فرمائی۔ فتاوٰی خانیہ میں ہے:

الاسکاف او الخیاط اذا استوجر علی خیاطۃ شیئ من زي الفساق ویعطی لہ في ذلك کثیرا اجر لایستحب لہ ان یعمل لانہ اعانۃ علی المعصیۃ ۱۔ موچی یا درزی فساق و فجار کی وضع کے مطابق معمول سے زیادہ اُجرت پر لباس تیار کرے تو اس کے لئے یہ کام مستحب نہیں اس لئے کہ یہ گناہ پر امداد واعانت ہے۔ (ت)

مگر اس کے تحقق کو اس زمان و مکان میں ان کا شعار خاص ہونا قطعاً ضرور جس سے وہ پہچانے جاتے ہوں اور ان میں اور ان کے غیر میں مشترک نہ ہو ورنہ لزوم کا کیا محل، ہاں وہ بات فی نفسہ شرعاً مذموم ہوئی تو اس وجہ سے ممنوع یا مکروہ رہے گی نہ کہ تشبہ کی راہ سے، امام قسطلانی نے مواہب لدنیہ میں دربارہ طیلسان کہ پوشش یہود تھی فرماتے ہیں:

اما ماذکرہ ابن القیم من قصة الیهود فقال الحافظ ابن حجر انما یصح الاستدلال به فی الوقت الذی تکون الطیالسة من شعارهم وقد ارتفع ذلك فی هذه الازمنة فصار داخلا فی عموم المباح وقد ذکرہ ابن عبدالاسلام رحمه الله تعالی فی امثلة رہا یہ کہ جو کچھ حافظ ابن قیم نے یہودیوں کا واقعہ بیان کیا ہے تو اس بارے میں حافظ ابن حجر نے فرمایا کہ یہ استدلال اس وقت درست تھا جبکہ مذکورہ چادر اُن کا (مذہبی) شعار ہوا کرتی تھی لیکن اس دَور میں یہ چیز ختم ہورہی ہے لہٰذا اب یہ عموم مباح میں داخل ہے، چنانچہ علامہ ابن عبد السلام رحمتہ اللہ علیہ نے اس کو بدعتِ مباح کی مثالوں

١ فتاوی قاضی خان کتاب الحظر والاباحة مطبع نولکشور لکهنو ۴/ ۷۸۰

Fatawa Razawiyya Volume 24

Permissible Innovation (Al-Bid'ah al-Mubahah) - It is mentioned in this.

The great Imam, the expert jurist, Fakhr al-Millah wa-al-Din Qadi Khan, then Imam Muhammad Muhammad bin al-Hajj al-Halabi in 'Hilyah Sharh Munyah' in the chapter on the dislikes of prayer, then Allamah Zayn bin Nujaym al-Misri in 'al-Bahr al-Ra'iq', then Allamah Muhammad bin Ali al-Dimashqi in 'Durr al-Mukhtar' say:

[Arabic]: Imitating the People of the Book is not disliked in everything. We eat and drink as they do. Prohibited imitation is that which is blameworthy or where the intention is to imitate them. [Urdu]: Imitation of the People of the Book is not disliked in everything, such as there is no dislike in the ways of eating and drinking, etc. Imitation of them is prohibited in those matters that are blameworthy, i.e., bad, or in which the intention is to imitate them.

Allamah Ali Qari says in 'Minh al-Rawd':

[Arabic]: We are prohibited from imitating the slogans (distinctive practices) of the disbelievers and the people of rejected innovations. We are not forbidden from every innovation even if it is permissible, whether it is from the actions of the People of Sunnah or from the actions of disbelievers and the people of innovation. Therefore, the matter depends on whether it is a distinctive slogan. [Urdu]: We have been forbidden from imitating the slogans (distinctive signs) of the disbelievers and those who commit rejected innovations. However, if that innovation is at the level of being permissible (mubah), it is not forbidden, whether it be the actions of the People of Sunnah or the disbelievers and the people of innovation. Therefore, the basis of the matter is on it being a slogan.

In 'Fatawa Alamgiri' from 'al-Muhit' it is mentioned:

[Arabic]: Hisham said in his 'Nawadir': I saw Imam Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him) wearing two shoes surrounded by iron nails. I said to him, "Do you see any problem with this iron?" He said, "No." I said that Safin and... [Urdu]: Hisham said in 'Nawadir': I saw Imam Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him) wearing shoes that had iron nails all around them. I asked, "Do you consider any problem with this iron?" He said, "No." I...

---

1. Al-Mawahib al-Ladunniyyah, Second Type, Dress: Wearing the Taylasan, Al-Maktab al-Islami Beirut 2/450.

2. Durr al-Mukhtar, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer, Matba' Mujtabai Delhi 1/90.
3. Minh al-Rawd al-Azhar 'ala al-Fiqh al-Akbar, Section on Explicit Disbelief, Mustafa al-Babi Egypt, p. 185.

फ़तावा रज़विया खंड 24

जायज़ बिदअत (अल-बिदअत अल-मुबाह) - इसमें ज़िक्र किया गया है।

महान इमाम, फ़क़ीह-ए-नफ़्स फ़खरुल् मिल्लत वद-दीन क़ाज़ी ख़ाँ, फिर इमाम मुहम्मद मुहम्मद बिन अल-हज्ज अल-हलबी 'हिल्या शरह मुन्या' के नमाज़ की नापसंदीदा चीज़ों के अध्याय में, फिर अल्लामा ज़ैन बिन नुजैम अल-मिसरी 'अल-बहर अल-राइक' में, फिर अल्लामा मुहम्मद बिन अली दिमश्क़ी 'दुर्र-ए-मुख़्तार' में फ़रमाते हैं:

[अरबी]: अहले किताब (पुस्तकों वाले लोग) की हर चीज़ में समानता नापसंदीदा नहीं है। हम उनके जैसे ही खाते-पीते हैं। उनसे हराम समानता वह है जो निंदनीय (बुरी) है या जहाँ समानता का इरादा हो। [उर्दू]: अहले किताब (पुस्तकों वाले लोग) की हर चीज़ में समानता नापसंदीदा नहीं है, जैसे खाने-पीने आदि के तरीक़ों में कोई बुराई नहीं है। उनसे समानता उन कामों में हराम है जो निंदनीय यानी बुरे हैं या जिनमें समानता का इरादा किया जाए।

अल्लामा अली क़ारी 'मिन्ह अल-रौद' में फ़रमाते हैं:

[अरबी]: हमें काफ़िरों और बुरी बिदअतों (नवाचारों) के करने वालों के प्रतीकों (शआर) की समानता से मना किया गया है। हर उस बिदअत से नहीं रोका गया है जो जायज़ (मुबाह) हो, चाहे वह अहले सुन्नत के कार्य हों या काफ़िरों और अहले बिदअत के। इसलिए सारा दारोमदार शआर (प्रतीक) होने पर है। [उर्दू]: हमें काफ़िरों और मुनकर बिदअतों (बुरी नवाचारों) के करने वालों के शआर (प्रतीक/चिह्न) की समानता से मना किया गया है। हाँ, अगर वह बिदअत जो जायज़ (मुबाह) का दर्जा रखती हो, उससे नहीं रोका गया है, चाहे वह अहले सुन्नत के कार्य हों या काफ़िरों और अहले बिदअत के। लिहाज़ा काम का आधार शआर (प्रतीक) होने पर है।

'फ़तावा आलमगीरी' में 'मुहीत' से उल्लेख है:

[अरबी]: हिशाम ने अपने 'नवादिर' में कहा: मैंने इमाम अबू यूसुफ़ (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) को ऐसे दो जूते पहने देखा जो लोहे की कीलों से घिरे थे। मैंने उनसे कहा, "क्या आप इस लोहे में कोई हर्ज़ (बुराई) देखते हैं?" उन्होंने कहा, "नहीं।" मैंने कहा कि सफीन और... [उर्दू]: हिशाम ने 'नवादिर' में फ़रमाया: मैंने इमाम अबू यूसुफ़ रहमतुल्लाह अलैह को ऐसे जूते पहने हुए देखा जिनमें

चारों तरफ़ लोहे की कीलें लगी हुई थीं। मैंने अर्ज़ किया, क्या आप इस लोहे से कोई हर्ज़ समझते हैं? तो फ़रमाया कि नहीं। मैंने...

---

1. अल-मवाहिब अल-लदुन्निय्या, दूसरा प्रकार, लिबास: तैलासान पहनना, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत 2/450।
2. दुर्र-ए-मुख़्तार, नमाज़ की किताब, नमाज़ तोड़ने वाली चीज़ों का अध्याय, मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/90।
3. मिन्ह अल-रौद अल-अज़हर अलल फ़िक्ह अल-अकबर, स्पष्ट कुफ़्र का अनुभाग, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, पृ. 185।

البدعۃ المباحۃ ۱۔ میں ذکر فرمایا ہے۔ (ت) امام اجل فقیہ النفس فخر الملۃ والدین قاضی خاں پھر امام محمد محمد بن الحاج حلبی حلیہ شرح منیہ فصل مکروہات الصلوۃ پھر علامہ زین بن نجیم مصری بحر الرائق پھر علامہ محمد بن علی دمشقی در مختار میں فرماتے ہیں :

التشبہ باھل الکتاب لایکرہ فی کل شیئ فأنا نأکل ونشرب کمایفعلون ان الحرام التشبہ بھم فیماکان مذموما او فیمایقصد بہ التشبہ ۲۔ ہر چیز میں اہل کتاب سے مشابہت مکروہ نہیں جیسے کھانے پینے وغیرہ کے طور طریقے میں کوئی کراہت نہیں۔ ان سے تشبہ ان کاموں میں حرام ہے جو مذموم یعنی برے ہیں یا جن میں مشابہت کا ارادہ کیا جائے۔ (ت)

علامہ علی قاری منح الروض میں فرماتے ہیں :

انّما منوعون من التشبیہ بالکفرۃ واھل البدعۃ المنکرۃ فی شعارھم لامنھیون عن کل بدعۃ ولو کانت مباحۃ سواء کانت من افعال اھل السنۃ او من افعال الکفر واھل البدعۃ فالمدار علی الشعار ۳۔ ہمیں کافروں اور منکر بدعات کے مرتکب لوگوں کے شعار کی مشابہت سے منع کیا گیا ہے ہاں اگر وہ بدعت جو مباح کا درجہ رکھتی ہو اس سے نہیں روکا گیا خواہ وہ اہل سنت کے افعال ہوں یا کفار اور اہل بدعت کے۔ لہٰذا مدار کار شعار ہونے پر ہے۔ (ت)

فتاوٰی عالمگیری میں محیط سے ہے:

قال ھشام فی نوادرہ ورأیت علی ابی یوسف رحمہ اللہ تعالی نعلین محفوفین بسامیر الحدید فقلت لہ اتری بھذا الحدید بأسا قال لا فقلت لہ ان سفین و ہشام نے نوادر میں فرمایا میں نے امام ابو یوسف رحمہ اللہ تعالٰی کو ایسے جوتے پہنے ہوئے دیکھا جن کے چاروں طرف لوہے کی کیلیں لگی ہوئی

تھیں، میں نے عرض کی، کیا آپ اس لوہے سے کوئی حرج سمجھتے ہیں؟ تو فرمایا کہ نہیں، میں نے

۱۔ المواہب اللدنیۃ النوع الثانی اللباس لبس الطیلسان المکتب الاسلامی بیروت ۲/ ۴۵۰ ۲۔ درمختار کتاب الصلوٰۃ باب مایفسد الصلوٰۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۹۰ ۳۔ منح الروض الازہر علی الفقہ الاکبر فصل فی الکفر صریحاً مصطفی البابی مصر ص ۱۸۵

[Arabic Boxed Text]: Thawr bin Yazid disliked it because it resembled monks. Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him) said: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) used to wear sandals that had hair, even though that was also the clothing of Christian monks... etc.

[Urdu Boxed Text]: It was submitted that Sufyan and Thawr bin Yazid did not like them because they found a resemblance to Christian monks in them. Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him) said: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) used to wear such shoes which had hair on them, although this was also the dress of Christian monks. (T)

From this investigation, it has become clear that only that imitation (tashabbuh) is forbidden and disliked in which the performer intends to imitate, or if that thing is a specific characteristic of those with false beliefs or has some inherent legal (Sharia) issue. Without these situations, there is absolutely no reason for prohibition. Now, regarding the questioned issue: Muslims who tie a dhoti certainly do not intend to make themselves look like disbelievers, nor has the claimant based his argument on this; rather, he has absolutely declared tying a dhoti as subject to these harsh and innovative rulings. One should never judge based on ill-will in the heart;

[Arabic Boxed Text]: Allah Almighty says: "And do not pursue that of which you have no knowledge. Indeed, the hearing, the sight and the heart - about all those [one] will be questioned." (Quran 17:36)

[Urdu Boxed Text]: Allah Almighty has said: Do not follow things about which you have no knowledge. Indeed, about the ear, the eye, and the heart (on the Day of Resurrection) it will be asked. (T)

And if the state of the dhoti is looked at in itself, there is no inherent legal objection in it. In fact, it is one of the types of covering (satr) that is commanded. It only differs from the original Sunnah and pure Arab dress, i.e., the tahband (loincloth), by letting it hang and tucking it in at the back. There is no contradiction to any Sharia command in this, so the two reasons for prohibition are absolutely ruled out. As for it being a specific characteristic of disbelievers, that is also false. In the general cities of Bengal etc. in the East, this is the attire of all inhabitants, both Hindus and Muslims. Similarly, in the villages of all districts of India, Hindus and Muslims follow this same style. As for the urban people of Central India, even among them, in the outskirts of

the city and among the craftsmen etc. within the city itself—who are called low castes —some tie a dhoti all the time and some during their work and needs.

---

1. Fatawa Hindiyya, Book of Disliked Matters, Chapter Nine, Noorani Kutub Khana Peshawar, 5/333.
2. Al-Quran al-Kareem, 17/36.

फतावा रज़विया - खंड 24

[अरबी बॉक्स]: थौर बिन यजीद ने इसे नापसंद किया क्योंकि यह भिक्षुओं के समान था। इमाम अबू यूसुफ (अल्लाह उन पर रहम करे) ने कहा: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ऐसे सैंडल पहनते थे जिनमें बाल होते थे, हालांकि वह भी ईसाई भिक्षुओं की पोशाक थी... इत्यादि।

[उर्दू बॉक्स]: पेश किया गया कि सुफयान और थौर बिन यजीद उन्हें पसंद नहीं करते थे क्योंकि उनमें ईसाई भिक्षुओं से समानता पाई जाती थी। इमाम अबू यूसुफ (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) ने फरमाया: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ऐसे जूते पहनते थे जिनमें बाल होते थे, जबकि यह भी ईसाई भिक्षुओं का पहनावा था। (त)

इस शोध से यह स्पष्ट हो गया है कि केवल वही नकल (तशब्बुह) वर्जित और नापसंद है जिसमें कर्ता की मंशा नकल करने की हो, या वह चीज़ उन गलत अकीदे वालों की विशेष पहचान हो या स्वयं शरीयत के अनुसार उसमें कोई समस्या हो। इन स्थितियों के बिना, मनाही का कोई कारण नहीं है। अब पूछे गए मसले की ओर चलते हैं: धोती बांधने वाले मुसलमानों का यह इरादा हरगिज़ नहीं होता कि वे काफिरों जैसा रूप बनाएं, और न ही दावेदार ने अपनी बात का आधार इस पर रखा है, बल्कि उसने निरपेक्ष रूप से धोती बांधने को इन कठोर और मनगढ़ंत आदेशों का पात्र घोषित कर दिया है। हृदय के आधार पर बुरा अनुमान लगाना कभी भी जायज़ नहीं है;

[अरबी बॉक्स]: अल्लाह तआला फरमाता है: "और उस चीज़ के पीछे न पड़ो जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं है। निस्संदेह कान, आँख और हृदय - इन सबके बारे में (कयामत के दिन) पूछा जाएगा।"

[उर्दू बॉक्स]: अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया: उन बातों के पीछे न पड़ो जिनका तुम्हें कुछ ज्ञान नहीं। बेशक कान, आँख और दिल के बारे में (प्रलय के दिन) पूछा जाएगा। (त)

और यदि स्वयं धोती की स्थिति को देखा जाए, तो इसके अपने आप में कोई शरीयत सम्बन्धी आपत्ति नहीं है, बल्कि यह सतर (शरीर ढकने) के उन रूपों में से है जिसका आदेश दिया गया है। सुन्नत और पवित्र अरब पोशाक, यानी तहबंद, से इसमें केवल लटकाने और पीछे खोंसने का फर्क है। इसमें किसी शरीयत के आदेश का उल्लंघन नहीं है, इसलिए मनाही के दोनों कारण पूरी तरह समाप्त हो जाते हैं। रही बात काफिरों की विशेष पहचान होने की, तो वह भी गलत है। बंगाल आदि पूर्व के आम शहरों में सभी निवासी, चाहे हिंदू हों या मुसलमान, यही पोशाक पहनते हैं। इसी तरह भारत के सभी जिलों के गांवों में हिंदू और मुसलमान यही पहनावा रखते हैं। मध्य भारत के शहरी लोगों की बात

करें, तो उनमें भी शहर के बाहरी इलाकों और स्वयं शहर के दस्तकारों आदि में—जिन्हें निम्न जाति कहा जाता है—कुछ हर समय और कुछ अपने काम और ज़रूरतों के दौरान धोती बांधते हैं।

---

1. फतावा हिन्दिया, किताबुल कराहियाह, अध्याय नौ, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 5/333.
2. अल-कुरान अल-करीम, 17/36.

[عربی باکس]: ثور بن یزید کرھا ذلك لانه تشبه بالرھبان فقال ابویوسف رحمه الله تعالی کان رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم یلبس النعال التي لها شعور وانها من لباس الرھبان الخ

[اردو باکس]: عرض کی لیکن سفیان اور ثور بن یزید تو انہیں پسند نہیں فرماتے کیونکہ ان میں عیسائی راہبوں سے مشابہت پائی جاتی ہے۔ امام ابو یوسف رحمہ اللہ تعالٰی نے فرمایا رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ایسے جوتے پہنتے تھے جن کے بال ہوتے تھے حالانکہ یہ بھی عیسائی راہبوں کا لباس تھا۔ (ت)

اس تحقیق سے روشن ہو گیا کہ تشبہ وہی ممنوع و مکروہ ہے جس میں فاعل کی نیت تشبہ کی ہو یا وہ شے ان بد مذہبوں کا شعار خاص یا فی نفسہ شرعاً کوئی حرج رکھتی ہو، بغیر ان صورتوں کے ہرگز کوئی وجہ ممانعت نہیں۔ اب مسئلہ مسئولہ کی طرف، چلئے دھوتی باندھنے والے مسلمانوں کا یہ قصد تو ہرگز نہیں ہوتا کہ وہ کافروں کی سی صورت بنائیں، نہ مدعی نے اس پر بنائے کلام کی بلکہ مطلقاً دھوتی باندھنے کو ان سخت شدید اختراعی احکام کا مورد قرار دیا نہ زنہار قلب پر حکم روانہ بدگمانی جائز،

[عربی باکس]: قال الله تعالی "وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۚ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا" 2-

[اردو باکس]: اللہ تعالٰی نے ارشاد فرمایا: ان باتوں کے پیچھے نہ پڑو جن کا تمہیں کچھ علم نہیں۔ بے شک کان، آنکھ اور دل کے متعلق (بروز قیامت) پوچھا جائے گا۔ (ت)

اور فی نفسہ دھوتی کی حالت کو دیکھا جائے تو اس کی اپنی ذات میں کوئی حرج شرعی بھی نہیں بلکہ ساتر مامور بہ کے افراد سے ہے اصل سنت و لباس پاک عرب یعنی تہبند سے صرف لٹکتا چھوڑنے اور پیچھے گھرس لینے کا فرق رکھتی ہے اس میں کسی امر شرعی کا خلاف نہیں تو دو وجہ ممانعت تو قطعاً منتفی ہیں۔ رہا خاص شعار کفار ہونا، وہ بھی باطل۔ بنگالہ وغیرہ پورب کے عام شہروں میں تمام سکان ہندو و مسلمان سب کا یہی لباس ہے۔ یو ہیں سب اضلاع ہند کے دیہات میں ہندو مسلمین یہی وضع رکھتے ہیں۔ رہے وسط ہند کے شہری لوگ، ان میں بھی فنائے شہر اور خود شہر کے اہل حرفہ وغیرہ ہم جنہیں کم قوم کہا جاتا ہے بعض ہر وقت اور بعض اپنے کاموں ضرورتوں کی حالت میں دھوتی باندھتے ہیں۔

---

۱ فتاویٰ ہندیہ کتاب الکراھیة الباب التاسع نورانی کتب خانہ پشاور ۵ / ۳۳۳ ۲ القرآن الکریم ۱۷ / ۳۶

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

Yes, this practice is not prevalent among the respectable citizens here, but the outcome is only that they are going against their own culture, not that someone who wears it should be considered to have committed an act of infidelity. The ultimate result is that for a dignified person of these districts, wearing it outside the house would be disliked (makruh) because departing from the religious custom and national habit without a Shar'i reason is a cause of notoriety and a source of dislike. Allama Qadi Iyad al-Maliki, the most eminent Imam Abu Zakariya Nawawi ash-Shafi'i (commentators on Sahih Muslim), and then the Knower of Allah, Sayyidi Abdul Ghani al-Nabulsi al-Hanafi (commentator on Al-Tariqa al-Muhammadiyya) state:

[Arabic Box: Its departure from habit is a cause of fame and is disliked.] Violation of habit and custom is disliked and a cause of notoriety. (T)

And if the Muslims there consider it as the dress of disbelievers, then avoiding it is emphasized. The problem lies in it becoming a hindrance, otherwise, the loincloth (Tahband) is exactly according to the Sunnah. Beyond this, the verbosity mentioned by the said person is purely baseless, false, and devoid of the appearance of truth and correctness. For the sake of argument, even if wearing a dhoti was absolutely forbidden, it wouldn't carry as much sin as there is in intentionally fabricating lies against the pure Shari'ah.

[Arabic Box: And refuge is with Allah Almighty. We ask Allah for guidance to the path of righteousness and protection from the path of deviation and corruption. Amen. And Allah, Glory be to Him and Exalted, knows best.] And refuge in Allah. We seek guidance from Allah to the straight path and protection from the path of crookedness and corruption, O Allah! Accept my prayer. Allah Almighty is Pure, Exalted, and the Greatest Knower. (T)

Problem 229: From Maulvi Abdul Hamid Sahib, Mohalla Parkanda, Benares. 10 Shaban 1345 AH. Zaid wears a coat, collar, and necktie, wears Peshawari pajamas, a Turkish cap, and boots/shoes, and has his hair in English fashion. Amr says that this is imitating Christians (Tashabbuh bin-Nasara), and Zaid says that it is not so at all because even a slight difference is sufficient to distinguish and avoid imitation. Which of these two is on the right path? Clarify and be rewarded. (T)

Answer: Things that are the emblem/symbol of disbelievers, innovators, evil-doers, or sinners, [adopted] without any valid Shar'i necessity...

1 Al-Shifa bi-Ta'rif Huquq al-Mustafa, chapter: 'And among its glorification...', Abdul Tawab Academy, Bohar Gate, Multan, 2/44. Page 536 of 720

फतावा रज़विया, जिल्द 24

हाँ, यहाँ के सम्मानित नागरिकों में इसका रिवाज नहीं है, लेकिन इसका निष्कर्ष केवल इतना है कि वे अपनी सभ्यता के विरुद्ध जाते हैं, न कि यह कि जो इसे पहने उसे कुफ्र (अधर्म) का दोषी माना जाए। अंततः बात यह है कि इन क्षेत्रों के प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए घर से बाहर इसे पहनना मकरूह (नापसंद) होगा क्योंकि बिना किसी शरई कारण के अपनी कौम के रस्म-ओ-रिवाज और आदत को छोड़ना प्रसिद्धि (दिखावे) का कारण और नापसंदगी की वजह है। अल्लामा काज़ी अयाज़ मालिकी, इमाम अबू ज़कारिया नववी शाफ़ई (सही मुस्लिम के व्याख्याकार), और फिर आरिफ़ बिल्लाह सैय्यदी अब्दुल ग़नी नाबुलसी हनफ़ी (तरीक़ा-ए-मुहम्मदिया के व्याख्याकार) फरमाते हैं:

[अरबी बॉक्स: आदत (रिवाज) से हटना प्रसिद्धि का कारण और मकरूह है।] आदत और रिवाज का उल्लंघन मकरूह और प्रसिद्धि का कारण है। (त)

और अगर वहां के मुसलमान इसे काफिरों का लिबास समझते हों, तो इससे बचना ज़रूरी (मुअक्कद) है। समस्या इसके रुकावट बनने में है, वरना तहबंद (धोती जैसा वस्त्र) तो सुन्नत के ऐन मुताबिक है। इसके अलावा उक्त व्यक्ति द्वारा कही गई लफ़्फ़ाज़ियां पूरी तरह से निराधार, असत्य और सत्यता के स्वरूप से रहित हैं। मान लीजिए, अगर धोती पहनना पूरी तरह वर्जित भी होता, तो भी उसमें इतना गुनाह नहीं था जितना कि पवित्र शरीयत पर जानबूझकर झूठा आरोप लगाने में है।

[अरबी बॉक्स: और अल्लाह तआला की पनाह। हम अल्लाह तआला से हिदायत और सीधे रास्ते की रहनुमाई चाहते हैं और टेढ़ेपन व फसाद की राह से अल्लाह की पनाह चाहते हैं। आमीन। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है।] और अल्लाह तआला की पनाह, हम अल्लाह तआला से सीधे रास्ते की रहनुमाई चाहते हैं और टेढ़ेपन और फसाद की राह से ऐ अल्लाह! हिफाज़त चाहते हैं, या अल्लाह मेरी दुआ कुबूल फरमा, अल्लाह तआला पाक और बुलंद व सबसे बड़ा जानने वाला है। (त)

मसला 229: मुस्तफ़्ती मौलवी अब्दुल हमीद साहब, मोहल्ला परकंडा, बनारस। 10 शाबान 1345 हिजरी। ज़ैद कोट, कॉलर और नेक-टाई पहनता है, पेशावरी पाजामा, तुर्की टोपी और बूट-जूता पहनता है और अंग्रेज़ी फैशन के बाल रखता है। अमर कहता है कि इसमें ईसाइयों की नकल (तशब्बुह बिन-नारा) है, और ज़ैद कहता है कि बिल्कुल नहीं क्योंकि नकल से बचने के लिए ज़रा सा फर्क भी काफी है। इन दोनों में कौन हक (सत्य) पर है? बयान फरमाएं और सवाब पायें। (त)

अल-जवाब: जो बातें काफिरों, कुमार्गियों, दुष्टों या पापियों का प्रतीक (निशान) हों, बिना किसी सही शरई ज़रूरत के..

---

1 अल-शिफ़ा बि-तारीफ़ हुक़ूक अल-मुस्तफ़ा, अध्याय: 'और उनकी महिमा में से...', अब्दुल तवाब अकादमी, बोहड़ गेट, मुल्तान, 2/44. पृष्ठ 536 of 720

ہاں یہاں کے معزز شہریوں میں اس کا رواج نہیں مگر اس کا حاصل اس قدر کہ اپنی تہذیب کے خلاف جاتے ہیں نہ یہ کہ جو باندھے اسے فعل کفر کا مرتکب سمجھیں تو غایت یہ کہ ان اضلاع کے شہری وجاہت دار آدمی کو گھر سے باہر اس کا باندھنا مکروہ ہوگا کہ بلاوجہ شرعی عرف وعادت قوم سے خروج بھی سبب شہرت وباعث کراہت ہے۔ علامہ قاضی عیاض مالکی، امام اجل ابو زکریا نووی شافعی شارحان صحیح مسلم پھر عارف باللہ سیدی عبدالغنی نابلسی حنفی شارح طریقہ محمدیہ فرماتے ہیں:

خروجہ عن العادۃ شھرۃ ومکروہ - عادت اور عرف کی خلاف ورزی مکروہ اور باعث شہرت ہے (ت)

اور اگر وہاں کے مسلمان اسے لباس کفار سمجھتے ہوں تو احتراز مؤکد ہے، حرج پیچھے گھرنے میں ہے، ورنہ تہہ بند تو عین سنت ہے۔ اس سے زائد کچھ لفاظیاں شخص مذکور نے کہیں محض بے اصل وبباطل اور حلیہ صدق وصواب سے عاطل ہیں، بالفرض اگر دھوتی باندھنا مطلقاً ممنوع بھی ہوتا تاہم اس میں اتنا وبال نہ تھا جو شرع مطہر پر دانستہ افترا کرنے میں۔

والعیاذ باللہ تعالٰی، نسئل اللہ ھدایۃ سبیل الرشاد والعصمۃ عن طریق الزیغ والفساد، أمین۔ واللہ سبحنہ وتعالٰی اعلم۔ اور اللہ تعالٰی کی پناہ، ہم اللہ تعالٰی سے راہِ راست کی رہنمائی چاہتے ہیں اور کجی اور فساد کی راہ سے اے اللہ! حفاظت چاہتے ہیں، یا اللہ میری دعا قبول فرما، اللہ تعالٰی پاک وبرتر بڑا عالم ہے (ت)

مسئلہ ۲۲۹: مسئولہ مولینا مولوی عبدالحمید صاحب از بنارس محلہ پر کنڈہ ۱۰ شعبان ۱۳۴۵ھ زید کوٹ و کالر و نکٹائی پہنتا ہے اور پیشوری پاجامہ وتر کی ٹوپی وبوٹ جوتا پہنتا اور انگریزی فیشن کے بال رکھتا ہے۔ عمرو کہتا ہے کہ اس میں تشبہ بالنصاریٰ ہے، اور زید کہتا ہے کہ ہر گز نہیں اس لئے کہ ادنیٰ فرق تشبیہ کے لئے کافی ہے۔ ان دونوں میں کون حق پر ہے؟ بینوا توجروا (بیان فرمایئے اجر پایئے۔ت)

الجواب: جو بات کفار یا بدمذہباں اشرار یا فساق فجار کا شعار ہو بغیر کسی حاجت صحیحہ شرعیہ کے

---

۱ الشفاء بتعریف حقوق المصطفیٰ فصل ومن اعظامہ الخ عبدالتواب اکیڈمی بوہڑگیٹ ملتان ۲/ ۴۴

Fatawa Rizvia Volume 24

To adopt something out of personal desire that inevitably leads to imitation [of the opposite sex] in a specific manner is forbidden, prohibited, and a sin. Even if it is just one thing, it is sufficient for prohibition, even if there is no imitation in other respects. Its example is like rose water and urine. A bottle filled with rose water that has a single drop of urine in it is impure and spoiled; it is not necessary for the entire bottle to be urine for it to be impure. Therefore, in general, rulings of prohibition and restriction have been given in Hadiths and jurisprudence for every such thing. It is not that imitation from head to toe in all aspects is required for it to be forbidden; this is mere ignorance or intellectual corruption. And if it is intentional, it is open defiance of the pure Sharia. Here, twenty-five issues from Hadith and jurisprudence are presented to refute such delusions.

Issue 1: It is narrated in Sahih Bukhari from Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

Arabic	**Urdu Translation**
Allah's curse is upon men who imitate women and women who imitate men.	Allah's curse is upon those men who imitate women and those women who imitate men.

This is a general principle; look at its sub-branches. Arab women used to wrap their headscarves around their heads for protection. Regarding this, it was commanded that they give it one wrap, not two, so that it does not resemble a turban. It is forbidden for a woman to imitate a man and for a man to imitate a woman. Imam Ahmad, Abu Dawood, and Hakim narrated with a good chain of narration from the Mother of the Believers, Umm Salama (may Allah be pleased with her):

Arabic	**Urdu Translation**
Indeed, the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) entered upon her while she was wrapping a headscarf, and he said: "[Give it] one wrap, not two."	The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) visited Sayyidah Umm Salama (may Allah be pleased with her) and (saw) that she was wrapping a headscarf. He said: "There should be only one wrap on the head, not two wraps."

(T) It is mentioned in Taysir Sharh Jami' al-Saghir:

1. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Libas, Bab al-Mutashabbihin etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2 / 878
2. Sunan Abi Dawood, Kitab al-Libas, Bab Kayf al-Ikhtimar, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2 / 212; Musnad Ahmad bin Hanbal, narrated by Umm Salama (may Allah be pleased with her), Al-Maktab al-Islami, Beirut, 6 / 292 & 296

फ़तावा रिज़विया खंड 24

अपनी इच्छा से ऐसी चीज़ अपनाना जो किसी विशेष तरीके से [विपरीत लिंग] की नकल की ओर ले जाए, वर्जित, नाजायज़ और पाप है। भले ही वह एक ही चीज़ हो, वह निषेध के लिए पर्याप्त है, भले ही अन्य पहलुओं में नकल न हो। इसका उदाहरण गुलाब जल और पेशाब जैसा है। गुलाब जल से भरी बोतल जिसमें पेशाब की एक बूंद हो, वह नापाक और खराब है; यह ज़रूरी नहीं कि पूरी बोतल पेशाब हो तभी वह नापाक हो। इसलिए, सामान्य तौर पर, हदीसों और न्यायशास्त्र (फ़िक़्ह) के निर्देशों में ऐसी हर चीज़ पर हराम और मनाही का हुक्म दिया गया है। यह नहीं कि सिर से पैर तक सभी पहलुओं में नकल हो तभी मनाही हो; यह केवल अज्ञानता या बुद्धि का विकार है। और यदि जानबूझकर किया जाए, तो यह शरीअत-ए-मुतहरा से खुला विरोध है। यहाँ इस तरह के भ्रमों को दूर करने के लिए हदीस और फ़िक़्ह से पच्चीस मसले सुनाए जा रहे हैं।

मसला 1: सहीह बुखारी में अब्दुल्ला बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

अरबी	उर्दू अनुवाद
अल्लाह की लानत हो उन मर्दों पर जो औरतों की नकल करते हैं और उन औरतों पर जो मर्दों की नकल करती हैं।	अल्लाह की लानत हो उन मर्दों पर जो औरतों से तशब्बुह (नकल) करें और उन औरतों पर जो मर्दों से।

यह एक सामान्य सिद्धांत है; इसकी शाखाओं को देखें। अरब की महिलाएँ सुरक्षा के लिए अपने सिर पर ओढ़नी लपेटती थीं। इस पर निर्देश दिया गया कि वे एक लपेट दें, दो नहीं, ताकि वह पगड़ी (इमामा) जैसा न लगे। औरत का मर्द से और मर्द का औरत से तशब्बुह हराम है। इमाम अहमद, अबू दाऊद और हाकिम ने उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से अच्छी सनद के साथ रिवायत की है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उनके पास तशरीफ़ लाए जबकि वह ओढ़नी ओढ़ रही थीं, तो फ़रमाया: "एक लपेट, दो लपेट नहीं।"	नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सैयदा उम्मे सलमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के यहाँ तशरीफ़ ले गए तो (क्या देखा) कि वह ओढ़नी ओढ़ रही हैं, तो इरशाद फ़रमाया: सिर पर सिर्फ एक पेच (लपेट) हो, दो-दो पेच न हों।

(त) तैसीर शरह जामे सगीर में है:

1. सहीह अल-बुखारी, किताब अल-लिबास, बाब अल-मुतशब्बेहीन आदि, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2 / 878
2. सुनन अबी दाऊद, किताब अल-लिबास, बाब कैफ़ अल-इख्तिमार, आफताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, 2 / 212; मसनद अहमद बिन हंबल, रिवायत उम्मे सलमा (रज़ियल्लाहु अन्हा), अल-मक्तब अल-इस्लामी, बेरूत, 6 / 292 और 296

بر غبتِ نفس اس کا اختیار ممنوع و ناجائز و گناہ ہے اگر چہ وہ ایک ہی چیز ہو کہ اس سے اس وجہ خاص میں ضرور ان سے تشبہ ہوگا اسی قدر منع کو کافی ہے اگر چہ دیگر وجوہ سے تشبہ نہ ہو، اس کی نظیر گلاب اور پیشاب ہیں۔ شیشہ بھرا ہوا گلاب اور اس میں ایک قطرہ پیشاب ہے تو وہ ناپاک و خراب ہے نہ کہ پورا شیشہ پیشاب ہو جبھی نجس و خراب ہو۔ ولہذا عموماً احادیث ارشادات فقہ میں ہر ایسی چیز پر حکم حرمت و ممانعت دیا ہے نہ یہ کہ سر سے پاؤں تک من جمیع الوجوہ ان سے تشبہ ہو اسی وقت منع ہو، یہ محض جہل یا عقل کا فساد ہے اور اگر دانستہ ہو تو شریعت مطہرہ سے کھلا عناد ہے، ابطالِ وہم کو یہاں صرف پچیس مسائل حدیث و فقہ سے سنائیں۔

مسئلہ ۱: صحیح بخاری میں عبد اللہ بن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما سے ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

لعن اللہ المتشبہین من الرجال بالنساء والمتشبہات من النساء بالرجال -

اللہ کی لعنت ان مردوں پر جو عورتوں سے تشبہ کریں اور ان عورتوں پر جو مردوں پر۔

یہ اصل کلی ہے اس کے فروع دیکھئے زنان عرب جو اوڑھنی اوڑھتیں حفاظت کے لئے سر پر پیچ دے لیتیں اس پر ارشاد ہوا کہ ایک پیچ دیں دو نہ ہوں کہ عمامہ سے مشابہت نہ ہو عورت کو مرد، مرد کو عورت سے تشبہ حرام ہے، امام احمد وابوداؤد و حاکم نے بسند حسن ام المومنین ام سلمہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے روایت کی:

ان النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم دخل علیھا وھی تختمر فقال لیۃ لالیتین ۔

نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سیدہ ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے ہاں تشریف لے گئے تو (کیا دیکھا) کہ وہ اوڑھنی اوڑھ رہی ہیں تو ارشاد فرمایا سر پر صرف ایک پیچ دو دو پیچ نہ ہوں۔

(ت) تیسیر شرح جامع صغیر میں ہے:

۱ صحیح البخاری کتاب اللباس باب المتشبھین الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۸۷۸ ۲ سنن ابی داؤد کتاب اللباس باب کیف الاختمار آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۲۱۲، مسند احمد بن حنبل عن ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا المکتب الاسلامی بیروت ۶ / ۲۹۲ و ۲۹۶

(Arabic): Guarding against resembling those who wear turbans.[1]

(Urdu): For fear that they might resemble men who wear turbans. (T)

Look, even the entire female attire was not sufficient to prevent resemblance; just two wraps of the dupatta on the head became a cause for resemblance.

Problem 2: A woman passed by with a bow hanging on her shoulder. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

(Arabic): Allah has cursed women who imitate men. Narrated by al-Tabarani[2] in al-Kabir from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both). The hadith without the story is found in Ahmad, Abu Dawud, al-Tirmidhi, and Ibn Majah; indeed, it has already been mentioned from al-Bukhari. The suggestion in 'al-Taysir' that all of them narrated the story is not the case.

(Urdu): Allah the Almighty has cursed those women who imitate men. (Imam al-Tabarani narrated this hadith in Mu'jam al-Kabir on the authority of Hazrat Abdullah Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both). Imam Ahmad (Musnad Ahmad), Abu Dawud, Tirmidhi, Ibn Majah, and even Imam Bukhari (mentioned earlier) narrated it without mentioning the story. However, the author of al-Taysir's assumption that all of them narrated it with the aforementioned story is contrary to the facts (therefore, the assumption is incorrect. T))

Abdullah bin 'Amr (may Allah be pleased with them both) saw Umm Sa'id bint Umm Jamil carrying a bow and walking with a masculine gait, and he said:

(Arabic): I heard the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) say: "Those women who imitate men are not of us, and those men who imitate women are not of us." Narrated by Ahmad[3] and al-Tabarani.

(Urdu): I heard the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) say: "That woman is not among us who adopts resemblance to men, and that man is also not among us who adopts resemblance to women." Imam Ahmad and Imam Tabarani narrated this. (T)

---

[1] *Al-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir*, under hadith 'liyya la yalaytain', Maktaba al-Imam al-Shafi'i, Riyadh, 2/335 [2] *Al-Mu'jam al-Kabir li-al-Tabarani*, hadith 12677, Al-Maktaba al-Faysaliyya, Beirut, 11/252; *Sunan Ibn Majah*, Book of Marriage, Chapter on Those Who

Imitate, H.M. Saeed Company, Karachi, p. 38 [3] *Musnad Ahmad bin Hanbal*, Musnad Abdullah bin 'Amr, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 2/200; *Majma' al-Zawa'id* citing al-Tabarani, Book of Etiquette, regarding those who imitate, Dar al-Kitab, Beirut, 8/103

(अरबी): पगड़ी पहनने वालों के सदृश होने से बचाव हेतु।[1]

(उर्दू): इस डर से कि कहीं पगड़ी बाँधने वाले पुरुषों से समानता न हो जाए। (त)

देखो, सारा स्त्रियोचित पहनावा समानता रोकने के लिए पर्याप्त नहीं हुआ; सिर पर दुपट्टे के केवल दो घुमाव ही समानता का कारण बन गए।

मसला 2: एक महिला अपने कंधे पर धनुष टांगे हुए गुजरी, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:

(अरबी): अल्लाह ने पुरुषों की नकल करने वाली महिलाओं पर लानत भेजी है। इसे तबरानी[2] ने अल-मुअजम अल-कबीर में इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया है। बिना कहानी के यह हदीस अहमद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्न माजाह में है; वास्तव में, यह पहले ही बुखारी से उद्धृत किया जा चुका है। 'अल-तयसीर' में यह भ्रम कि उन सभी ने कहानी के साथ इसे रिवायत किया है, वास्तविकता के विपरीत है।

(उर्दू): अल्लाह तआला ने उन महिलाओं पर लानत फरमाई है जो पुरुषों की नकल (तशब्बुह) करती हैं। (इमाम तबरानी ने मुअजम कबीर में हज़रत अब्दुल्ला इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की सनद से इस हदीस को रिवायत फरमाया। इमाम अहमद (मुसनद अहमद), अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, इब्न माजाह, बल्कि इमाम बुखारी से पहले गुज़र चुकी, इन तमाम मुहद्दिसीन ने बिना किस्सा (कहानी) ज़िक्र किए इसे रिवायत फरमाया, मगर मुसन्निफ अल-तयसीर का यह वहम करना कि सब ने किस्सा मज्कूरा समेत इसे रिवायत किया है, खिलाफे वाकया (वास्तविकता के विरुद्ध) है (लिहाज़ा वहम दुरुस्त नहीं। त))

अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने उम्मे सईद बिन्त उम्मे जमील को धनुष टांगे हुए मर्दानी चाल चलते देखा, तो फरमाया:

(अरबी): मैंने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को फरमाते सुना: "वह महिलाएं हम में से नहीं हैं जो पुरुषों की नकल करती हैं, और न ही वे पुरुष हम में से हैं जो महिलाओं की नकल करते हैं।" इसे अहमद[3] और तबरानी ने रिवायत किया है।

(उर्दू): मैंने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को इरशाद फरमाते सुना, वह औरत हम में से नहीं जो पुरुषों से समानता (मुशबाहत) अख्तियार करे, और वह मर्द भी हम में से नहीं जो औरतों से तशब्बुह अख्तियार करे। इमाम अहमद और इमाम तबरानी ने इसे रिवायत फरमाया। (त)

---

[1] अल-तयसीर शरह अल-जामि अल-सगीर, हदीस 'लिय्या ला यलयतैन' के तहत, मकतबा अल-इमाम अल-शाफ़ई, रियाद, 2/335। [2] अल-मुअजम अल-कबीर लिल-तबरानी, हदीस 12677, अल-मकतबा अल-फ़ैसलिया, बेरूत, 11/252; सुनन इब्न माजाह, निकाह की किताब, नकल करने वालों के अध्याय में, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, पेज 38। [3] मुसनद अहमद बिन हंबल, मुसनद अब्दुल्ला बिन अम्र, अल-मकतब अल-इस्लामी, बेरूत, 2/200; मजमा अल-ज़वाइद तबरानी के हवाले से, अदब की किताब, नकल करने वालों के बारे में, दार अल-किताब, बेरूत, 8/103।

حذراً من التشبہ بالمتعممین۔[1] اس خطرہ سے کہ کہیں پگڑی باندھنے والے مردوں سے مشابہت نہ ہو جائے۔ (ت)

دیکھو تمام زنانہ لباس دفعِ تشبہ کے لئے کافی نہ ہوا صرف دوپٹہ کے سر پر دو پیچ مورثِ تشبہ ہوئے۔

مسئلہ ۲: ایک عورت کندھے پر کمان لگائے گزری رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

لعن اللہ المتشبہات من النساء بالرجال رواہ الطبرانی[2] فی الکبیر عن ابن عباس رضی اللہ تعالی عنہما والحدیث من دون القصۃ عند احمد وابی داؤد والترمذی وابن ماجۃ بل قد تقدم عن البخاری و ایہام التیسیر انہم جمیعاً رووا القصۃ لیس بالواقع۔ اللہ تعالیٰ نے ان عورتوں پر لعنت فرمائی ہے جو مردوں سے تشبہ کریں (امام طبرانی نے معجم کبیر میں حضرت عبد اللہ ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما کی سند سے اس حدیث کو روایت فرمایا۔ امام احمد (مسند احمد)، ابوداؤد، ترمذی، ابن ماجہ بلکہ امام بخاری سے پہلے گزر چکی، ان تمام محدثین نے بغیر قصہ ذکر کئے اس کو روایت فرمایا مگر مصنف التیسیر کا یہ وہم کرنا کہ سب نے قصہ مذکورہ سمیت اس کو روایت کیا ہے خلاف واقع ہے (لہٰذا وہم درست نہیں۔ ت)

عبداللہ بن عمر و رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے ام سعید بنت ام جمیل کو کمان لگائے مردانی چال چلتے دیکھا، فرمایا:

سمعت رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم يقول ليس منّا من تشبّه بالرجال من النساء ولا من تشبّه بالنساء من الرجال۔ رواه احمد[3] والطبرانی۔

میں نے حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو ارشاد فرماتے سنا، وہ عورت ہم میں سے نہیں جو مردوں سے مشابہت اختیار کرے، اور وہ مرد بھی ہم میں سے نہیں جو عورتوں سے تشبہ اختیار کرے۔ امام احمد اور امام طبرانی نے اس کو روایت فرمایا۔ (ت)

---

[1] التیسیر شرح الجامع الصغیر تحت حدیث لیۃ لایلیتین مکتبۃ الامام الشافعی ریاض ۲/ ۳۳۵ [2] المعجم الکبیر للطبرانی حدیث ۱۲۶۷۷ المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۱۱/ ۲۵۲، سنن ابن ماجہ کتاب النکاح باب فی المتشبھین ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۳۸ [3] مسند احمد بن حنبل مسند عبداللہ بن عمرو المکتب الاسلامی بیروت ۲/ ۲۰۰، مجمع الزوائد بحوالہ الطبرانی کتاب الادب فی المتشبھین دارالکتاب بیروت ۸/ ۱۰۳

Problem 3: Women were commanded to apply henna to their hands so that they do not resemble the hands of men. Abu Dawood narrates from Mother of the Believers, Siddiqa (may Allah be pleased with her):

Arabic	Urdu Translation
Hind bint Utbah (may Allah be pleased with her) said: "O noble Prophet of Allah! Accept my oath of allegiance." He said: "I will not accept your oath until you change your palms, for they look like the paws of a predator."[1]	Hind, daughter of Utbah (may Allah be pleased with her) requested: "O noble Prophet of Allah! Please accept my oath of allegiance." He said: "I will not accept your oath until you bring change to your palms (by coloring them), for your palms are like the paws of a beast." (T)

It is stated in Mirqat:

Arabic	Urdu Translation
He compared her hands, when they were not dyed, to the paws of a predator out of dislike, because in that state she resembled men.[2]	His Holiness (peace and blessings be upon him) compared her uncolored hands to those of a wild beast out of dislike because in that state, they resembled men's hands. (T)

In a Hadith, it is commanded that if nothing else, at least the nails should be colored. Ahmad, Abu Dawood, and Nasa'i narrate with a good (Hasan) chain from the Mother of the Believers (may Allah be pleased with her):

Arabic	Urdu Translation
A woman gestured from behind a curtain with a hand holding a letter for the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) held back his hand and said: "I do not know if this is a man's hand or a woman's hand." She said: "Rather, it is a woman's hand." He said: "If you were a woman, you would have changed (the	A woman motioned from behind a curtain with a hand holding a letter for the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) pulled back his hand and said: "I do not know whether this is a man's hand or a woman's hand." She submitted: "This is not a man's hand but a woman's hand." He said: "If you were a woman, you would surely

Arabic	Urdu Translation
appearance of) your fingernails (with henna)."	change the plainness of your hands with henna."

[1] Sunan Abi Dawood, Kitab al-Tarajjul, Chapter on Dyeing for Women, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/218 [2] Mirqat al-Mafatih Sharh al-Mishkat, Kitab al-Libas, Chapter on al-Tarajjul, under Hadith 4466, Maktaba Habibiyah, Quetta, 8/444

मसला 3: औरतों को हुक्म दिया गया कि हाथों में मेहंदी लगाएँ ताकि वे मर्दों के हाथों के समान न हों। अबू दाऊद उम्मुल मोमिनीन सिद्दीका (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) से रिवायत करते हैं:

अरबी

हिंद बिन्त उतबा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) ने कहा: ऐ अल्लाह के नबी! मेरी बैअत स्वीकार करें। उन्होंने फ़रमाया: "मैं तुम्हारी बैअत तब तक स्वीकार नहीं करूँगा जब तक तुम अपनी हथेलियों को बदल न लो, क्योंकि वे दरिंदे की हथेलियों जैसी लग रही हैं।"[1]

उर्दू अनुवाद

उतबा की बेटी हिंदा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) ने अर्ज़ की: ऐ अल्लाह तआला के मुकर्रम नबी! मुझसे बैअत लीजिए। फ़रमाया: "मैं तुम्हें बैअत नहीं करता जब तक तुम अपनी हथेलियों में (उन्हें रंगीन करके) बदलाव न लाओ, तुम्हारी हथेलियाँ तो दरिंदे की हथेलियों की तरह हैं।" (त)

मिरकात में है:

अरबी

उन्होंने नापसंदगी के कारण बिना मेहंदी वाले हाथों की तुलना दरिंदे के पंजों से की, क्योंकि उस समय वह पुरुषों के समान थी।[2]

उर्दू अनुवाद

हुज़ूर (अलैहिस्सलातु वस्सलाम) ने नापसंदगी के कारण बिना रंगे हाथों को जंगली दरिंदे से उपमा दी क्योंकि उस स्थिति में वे पुरुषों के समान हो गए थे। (त)

एक हदीस में फ़रमाया गया कि ज़्यादा न हो तो नाखून ही रंगीन रखें। अहमद, अबू दाऊद और नसाई ने हसीन सनद के साथ उम्मुल मोमिनीन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) से रिवायत की है:

अरबी

एक महिला ने पर्दे के पीछे से हाथ में एक पत्र लेकर अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर इशारा किया। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपना हाथ वापस खींच लिया और फ़रमाया: "मुझे नहीं पता कि यह किसी पुरुष का हाथ है या महिला का।" उसने कहा: "बल्कि यह एक महिला का हाथ

उर्दू अनुवाद

एक महिला ने पर्दे के पीछे से हाथ में एक ख़त लेकर हुज़ूर (अलैहिस्सलातु वस्सलाम) की ओर इशारा किया। हुज़ूर (अलैहिस्सलातु वस्सलाम) ने अपना हाथ पकड़ लिया, फिर फ़रमाया: "मुझे नहीं पता कि यह किसी पुरुष का हाथ है या महिला का।" उसने अर्ज़ की: "यह पुरुष का हाथ नहीं बल्कि महिला का हाथ है।" फ़रमाया: "अगर तुम

अरबी	उर्दू अनुवाद
है।" उन्होंने फ़रमाया: "यदि तुम एक महिला होतीं, तो अपने नाखूनों (के रंग) को ज़रूर बदलतीं।"	महिला होतीं तो ज़रूर अपने हाथों की सादगी को मेहंदी (से बदलतीं)।"

---

[1] सुनन अबी दाऊद, किताब अल-तरज्जुल, बाब फ़िल खिज़ाब लिन-निसा, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, 2/218 [2] मिरकात अल-मफ़ातीह शरह अल-मिशकात, किताब अल-लिबास, बाब अल-तरज्जुल, हदीस 4466 के तहत, मकतबा हबीबिया, क्वेटा, 8/444

مسئلہ ۳: عورتوں کو حکم فرمایا کہ ہاتھوں میں مہندی لگائیں کہ مردوں کے ہاتھ سے مشابہ نہ ہو۔

ابو داؤد ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے راوی:

عربی متن	اردو ترجمہ
ان هندة بنت عتبة رضی الله تعالٰی عنها قالت یانبی الله بائعنی قال لا ابایعك حتی تغیری کفیك کأنهما کفاسبع[1]۔	عتبہ کی بیٹی ہندہ رضی اللہ تعالٰی عنہا نے عرض کی: اے اللہ تعالٰی کے مکرم نبی! مجھے بیعت فرمائیے ۔ ارشاد فرمایا: میں تمہیں بیعت نہیں کرتا جب تو اپنی ہتھیلیوں میں (انہیں رنگین کر کے) تبدیلی نہ لائے، تیری ہتھیلیاں تو درندے کی ہتھیلیوں کی طرح ہیں۔ (ت)

مرقاۃ میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
شبه یدیها حین لم تخضبهما بکفی سبع فی الکراهیة لانها حینئذ شبیهة بالرجال[2]۔	حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے ناپسندیدگی کی وجہ سے اسے غیر رنگین ہاتھوں کو جنگلی درندے سے تشبیہ دی کیونکہ اس حالت میں وہ مردوں کے مشابہ ہو گئی۔ (ت)

ایک حدیث میں ارشاد ہوا کہ زیادہ نہ ہو تو ناخن ہی رنگین رکھیں۔ احمد وابو داؤد ونسائی بسند حسن ام المومنین رضی اللہ تعالٰی عنہا سے راوی:

عربی متن	اردو ترجمہ
اومأت امرأة من وراء ستر بیدها کتاب الی رسول الله صلی الله تعالٰی علیہ وسلم فقبض النبی صلی الله تعالٰی علیہ وسلم یده فقال ماادری اید رجل ام ید امرأة قالت بل ید امرأة قال لو کنت امرأة لغیرت اظفارك	ایک عورت نے پردے کے پیچھے سے اشارہ کیا کہ جس کے ہاتھ میں حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کی طرف ایک خط تھا، تو حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے اس کا ہاتھ پکڑ لیا، پھر ارشاد فرمایا مجھے معلوم نہیں کہ کیا یہ کسی مرد کا ہاتھ ہے یا عورت کا۔ اس نے عرض کی یہ مرد کا ہاتھ نہیں بلکہ عورت کا ہاتھ ہے۔ ارشاد فرمایا اگر تو عورت ہوتی تو ضرور اپنے ہاتھوں کی سادگی کو مہندی (سے بدلتی)

---

[1] سنن ابی داؤد کتاب الترجل باب فی الخضاب للنساء آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۲۱۸ [2] مرقاۃ المفاتیح شرح المشکاۃ کتاب اللباس باب الترجل تحت حدیث ۴۴۶۶ مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۸/ ۴۴۴

Fatawa-e-Razviya Volume 24

...would change by applying henna[1]. (T)

Shaykh Muhaqqiq Abdul Haq Muhaddith Dehlawi states in Ash'at al-Lam'at:

"They have said that the reason for dislike and rejection is imitation of men, and it was previously known that it is disliked for women to imitate men."[2]

The esteemed Imams have said that the reason for the dislike and rejection by the Prophet (peace and blessings be upon him) is resemblance to men. And it has already become known that for women to resemble men is 'Makruh' (i.e., a disliked matter). (T)

I say: (T) Rather, this reasoning is clearly stated in the text, as it was said: "You keep your hand like a man's hand by not applying henna."

It is narrated in Musnad Ahmad from a woman who prayed towards both Qiblas with the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him), she said: "The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) came to me and said: 'Apply henna. One of you leaves off applying henna until her hands become like the hands of men.' She said: 'So I never left off applying henna until I met Allah the Almighty, and she was eighty years old.'"[3]

In Musnad Ahmad, it is narrated from a fortunate woman who performed prayer under the leadership of the Prophet (peace and blessings be upon him) facing both Qiblas (the Kaaba and Bayt al-Maqdis). She said that once when I presented myself before the Prophet (peace and blessings be upon him), he said: "Color your hands with henna. One of you leaves off coloring hands with henna etc., until her hands are like those of men (plain). After that, she never left off applying henna to her hands, even though she reached the age of eighty years." (T)

Issue 4: In Jami' al-Tirmidhi, it is narrated from Sayyiduna [Sa'd] bin Abi Waqqas (may Allah be pleased with him):

[1] Sunan Abi Dawud, Kitab al-Tarajjul, Chapter on Henna for Women, Aftab-e-Alam Press Lahore, 2/218; Musnad Ahmad bin Hanbal, from Aisha (may Allah be pleased with her), Al-Maktab al-Islami Beirut, 6/262. [2] Ash'at al-Lam'at, Kitab al-Libas, Chapter on Grooming, Maktaba Nooria Razvia Sukkur, 3/581. [3] Musnad Ahmad bin Hanbal, from a woman (may Allah be pleased with her), Al-Maktab al-Islami Beirut, 6/473.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 24

...मेंहदी लगाकर बदल देती। (त)

शेख़ मोहक़्क़िक अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी 'अशअतुल लम्आत' में फ़रमाते हैं:

"कहा गया है कि नापसंदगी और इनकार की वजह पुरुषों की समानता है, और पहले यह ज्ञात हो चुका है कि महिलाओं के लिए पुरुषों की नकल करना मकरूह है।"[2]

आइमा-ए-किराम ने फ़रमाया कि हुज़ूर अलैहिस सलातो वस्सलाम की नापसंदगी और इनकार की वजह पुरुषों से समानता है। और पहले ही मालूम हो गया है कि औरतों का पुरुषों से समानता करना मकरूह है (यानी नापसंदीदा बात है)। (त)

अक़ूल (मैं कहता हूँ। त): बल्कि यह दलील स्पष्ट रूप से वर्णित है कि फ़रमाया: बिना मेंहदी लगाए अपना हाथ पुरुषों जैसा रखती हो।

मुसनद अहमद में एक ऐसी सौभाग्यशाली महिला से रिवायत है जिसने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथ दोनों क़िब्लों (काबा शरीफ़ और बैतुल मुक़द्दस) की ओर रुख करके नमाज़ पढ़ी थी। उन्होंने कहा कि एक बार जब मैं हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुई तो आपने फ़रमाया: "हाथों को ख़िज़ाब (मेंहदी) से रंगीन कीजिए। तुम में से कोई हाथों को मेंहदी आदि से रंगना छोड़ देती है, यहाँ तक कि उसके हाथ पुरुषों के हाथों की तरह (सादे) हो जाते हैं।" उसके बाद उन्होंने हाथों पर मेंहदी लगाना नहीं छोड़ा, हालांकि उनकी उम्र अस्सी वर्ष की हो गई थी। (त)

मसला 4: जामि' तिरमिज़ी में सय्यदुना [सअद] बिन अबी वक़्क़ास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से है:

[1] सुनन अबी दाऊद, किताबुल तरज्जुल, बाब फ़िल ख़िज़ाब लिन-निसा, आफ़ताबे आलम प्रेस लाहौर, 2/218; मुसनद अहमद बिन हंबल, हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से, अल-मक्तबुल इस्लामी बेरूत, 6/262। [2] अशअतुल लम्आत, किताबुल लिबास, बाबुल तरज्जुल, मक्तबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, 3/581। [3] मुसनद अहमद बिन हंबल, एक महिला (रज़ियल्लाहु अन्हा) से, अल-मक्तबुल इस्लामी बेरूत, 6/473।

पेज 540/720

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

بالحنـاء 1- لگا کر تبدیل کردیتی۔ (ت)

شیخ محقق عبد الحق محدث دہلوی اشعۃ اللمعات میں فرماتے ہیں:

وگفتہ اند کہ وجہ کراہت و انکار تشبہ بر جال ست و سابقاً معلوم شد کہ زنان را تشبہ بر جال مکروہ ست 2-

ائمہ کرام نے فرمایا حضور علیہ الصلوۃ والسلام کی ناپسندیدگی اور انکار کرنے کی وجہ مردوں سے مشابہت ہے۔ اور پہلے معلوم ہو گیا ہے کہ عورتوں کا مردوں سے مشابہت کرنا مکروہ ہے (یعنی ناپسندیدہ امر ہے) (ت)

اقول: (میں کہتا ہوں۔ ت) بلکہ یہ تعلیل منصوص ہے کہ فرمایا: بے مہندی لگائے اپنا ہاتھ مرد کا سا رکھتی ہو۔

احمد فی مسندہ عن امرأۃ صلت القبلتین مع رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم قالت دخل علی رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فقال اختضبی تترك احدکن الخضاب حتی تکون یدھاکید الرجل قالت فما ترکت الخضاب حتی لقیت اللہ تعالیٰ وھی بنت ثمانین 3-

مسند احمد میں ایک ایسی خوش نصیب عورت سے روایت ہے کہ جس نے آنحضرت صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کی اقتداء میں دو قبلوں (کعبہ شریف اور بیت المقدس) کی طرف منہ کر کے نماز پڑھی، اس نے کہا کہ میں ایک دفعہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام کی خدمت میں حاضر ہوئی تو آپ نے ارشاد فرمایا: ہاتھوں کو خضاب سے رنگین کیجئے۔ تم میں سے ایک ، ہاتھوں کو خضاب وغیرہ سے رنگنا چھوڑ دیتی ہے ، یہاں تک کہ اس کے ہاتھ مردوں کے ہاتھوں کی طرح (سفید)

ہوتے ہیں۔ پھر اس کے بعد انہوں نے ہاتھوں پر خضاب لگانا نہ چھوڑا حالانکہ ان کی عمر اسی سال کی ہو گئی (ت)

مسئلہ ۴: جامع ترمذی میں سیدنا بن ابی وقاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ہے:

1 سنن ابی داؤد کتاب الترجل باب فی الخضاب للنساء آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۲۱۸ ، مسند احمد بن حنبل عن عائشہ رضی اللہ عنہا المکتب الاسلامی بیروت ۶/ ۲۶۲ 2 اشعۃ اللمعات کتاب اللباس باب الترجل مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۳/ ۵۸۱ 3 مسند احمد بن حنبل عن امرأۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہا المکتب الاسلامی بیروت ۶/ ۴۷۳

Fatawa Rizvia, Volume 24

"Clean your courtyards and do not resemble the Jews."[1] Keep the grounds in front of your doors clean; do not imitate the Jews because ever since humiliation and poverty were cast upon them, their lands have remained dirty and filthy. Here, resemblance has been mentioned regarding a purely external thing which is not even related to body or clothing.

Issue 5: In Sunan Abi Dawud, it is narrated from Ibn Abi Mulayka: "It was said to Aisha that a woman wears (men's) shoes. She replied: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) cursed women who imitate men's appearance."[2] It was submitted to Mother of the Believers Aisha Siddiqah (may Allah be pleased with her) that a woman wears men's shoes. She said that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) cursed those women who adopt a masculine style.

In Marqat it is stated: "She wears the sandal, meaning that which is specific to men."[3] "Wearing sandals" means a woman wearing shoes that are specific to men. (T)

Issue 6: Resembling the People of the Book in any action or state during prayer is forbidden. For the prayer of Muslims to be distinct from theirs in general actions, characteristics, and forms, it prevents resemblance. Therefore, it is disliked (Makruh) for the Imam to stand in the arch (mihrab). It is in Al-Hidayah: "It is disliked to stand in the arch because it resembles the practice of the People of the Book in terms of designating a specific place for the leader (Imam)."[4] It is disliked for the Imam to stand completely inside the arch because this act bears resemblance to the People of the Book, in the sense that a specific place (the arch) is reserved for the Imam. (T)

Issue 7: For the same reason, it is disliked for the Imam to be on a distinct elevation above all followers. It is in Al-Hidayah: "It is disliked for the Imam to be alone on a raised platform (dukan)." It is disliked for the Imam alone to stand on any distinct high place.

---

[1] Jami' al-Tirmidhi, Chapters on Permission and Manners, Chapter on Cleanliness, Amin Company Delhi 2/103. [2] Sunan Abi Dawud, Book of Clothing, Chapter on Women's Clothing, Aftab-e-Alam Press Lahore 2/210. [3] Mirqat al-Mafatih, Sharh al-Mishkat, Book of Clothing, Hadith 4470, Al-Maktabat al-Habibiya Quetta 8/246. [4] Al-Hidayah, Book of Prayer, Chapter on things that invalidate prayer, Al-Maktabat al-Arabia Karachi 1/120.

फतावा रज़विया, खंड 24

"अपने आंगन साफ रखें और यहूदियों के समान न बनें।"[1] अपने दरवाजों के सामने की ज़मीन को साफ़ रखें, यहूदियों के साथ समानता न करें क्योंकि जब से उन पर अपमान और दरिद्रता थोपी गई है, उनकी ज़मीनें गंदी और दूषित रहती हैं। यहाँ केवल एक बाहरी चीज़ पर समानता की बात कही गई है जिसका शरीर या कपड़ों से भी कोई संबंध नहीं है।

मसला 5: सुनन अबी दाऊद में इब्न अबी मुलैका से है: "आयशा (रज़ि.) से कहा गया कि एक महिला (पुरुषों के) जूते पहनती है। उन्होंने कहा: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन महिलाओं पर लानत की है जो पुरुषों का हुलिया अपनाती हैं।"[2] उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीका (रज़ियल्लाहु अन्हा) से निवेदन किया गया कि एक महिला मर्दाना जूते पहनती है, उन्होंने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन औरतों पर लानत फ़रमाई जो मर्दाना वज़ह (शैली) अख्तियार करें।

मर्क़ात में है: "वह सैंडल पहनती है, अर्थात वह जो पुरुषों के लिए विशिष्ट है।"[3] "जूता पहनना" यानी औरत वह जूता पहनती है जो मर्दों की विशिष्टता रखता है। (टी)

मसला 6: नमाज़ में किसी भी क्रिया या अवस्था में अहले किताब (किताब वाले) की समानता मना है। मुसलमानों की नमाज़ का उनके सामान्य कार्यों, गुणों और स्वरूपों में उनकी नमाज़ से अलग होना समानता को रोकता है, इसलिए इमाम का मेहराब में खड़ा होना मकरूह (नापसंद) है। हिदाया में है: "मेहराब में खड़ा होना मकरूह है क्योंकि यह अहले किताब के अभ्यास के समान है, जहाँ इमाम के लिए एक विशिष्ट स्थान निर्धारित किया जाता है।"[4] इमाम का पूरी तरह से मेहराब में खड़ा होना मकरूह है क्योंकि यह कार्रवाई अहले किताब से समानता रखती है इस लिहाज़ से कि इमाम के लिए एक जगह (मेहराब) को विशिष्ट कर दिया गया। (टी)

मसला 7: इसी कारण से इमाम का सभी मुक्तदियों (पीछे नमाज़ पढ़ने वालों) से ऊँचे स्थान पर होना मकरूह है। हिदाया में है: "इमाम का अकेले किसी चबूतरे (दुकान) पर होना मकरूह है।" अकेले इमाम का किसी ऊँची विशिष्ट जगह पर खड़ा होना मकरूह है।

---

1 जामे तिर्मिज़ी, इजाज़त और शिष्टाचार के अध्याय, स्वच्छता का अध्याय, अमीन कंपनी दिल्ली 2/103. 2 सुनन अबी दाऊद, पोशाक की किताब, महिलाओं की पोशाक का अध्याय, आफ़ताब-ए-

आलम प्रेस लाहौर 2/210. 3 मर्क़ात अल-मफ़ातीह, शरह अल-मिश्क़ात, पोशाक की किताब, हदीस 4470, अल-मकतबत अल-हबीबिया क्वेटा 8/246. 4 अल-हिदाया, नमाज़ की किताब, नमाज़ को बिगाड़ने वाली चीज़ों का अध्याय, अल-मकतबत अल-अरबिया कराची 1/120.

पृष्ठ 541 का 720

نظفوا افنیتکم ولا تشبھوا بالیھود[1]۔ اپنے پیش دروازہ زمینیں ستھری رکھو یہودیوں سے تشبہ نہ کرو کہ جب سے ان پر ذلّت و مسکنت ڈالی گئی ان کی زمینیں میلی کثیف رہتیں۔ یہاں محض ایک بیرونی شے پر جسے جسم ولباس سے بھی علاقہ نہیں تشبہ فرمایا گیا۔

مسئلہ ۵: سنن ابی داؤد میں ابن ابی ملیکہ سے ہے: قیل لعائشۃ ان امرأۃ تلبس النعل فقالت لعن رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم الرجلۃ من النساء[2]۔ ام المومنین عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے عرض کی گئی ایک عورت مردانہ جوتا پہنتی ہے، فرمایا رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ان عورتوں پر لعنت فرمائی جو مردانی وضع اختیار کریں۔

مرقاۃ میں ہے: تلبس النعل ای التی تختص بالرجال[3]۔ تلبس النعل یعنی عورت وہ جوتا پہنتی جو مردوں سے خصوصیت رکھتا ہے۔ (ت)

مسئلہ ۶: نماز میں کسی فعل و حالت میں اہل کتاب سے تشبہ منع ہوا اور نماز مسلمین کا اپنے عامہ افعال وصفات و ہیئات میں ان کی نماز سے جدا ہونا مانع تشبہ نہ ہوا اسی لئے امام کا محراب میں کھڑا ہونا مکروہ ہے۔ ہدایہ میں ہے: یکرہ ان یقوم فی الطاق لانہ یشبہ صنیع اھل الکتاب من حیث تخصیص الامام بالمکان[4]۔ امام کا مکمل طور پر محراب میں کھڑا ہونا مکروہ ہے اس لئے کہ یہ کارروائی اہل کتاب سے مشابہت رکھتی ہے اس حیثیت سے کہ امام کی ایک جگہ (محراب) سے تخصیص کردی۔ (ت)

مسئلہ ۷: اسی لئے امام کا سب مقتدیوں سے بلندی ممتاز پر ہونا مکروہ ہوا۔ ہدایہ میں ہے: یکرہ ان یکون الامام وحدہ علی الدکان تنہا امام کا کسی بلند ممتاز جگہ کھڑا ہونا مکروہ ہے،

1 جامع الترمذی ابواب الاستیذان والادب باب ماجاء فی النظافة امین کمپنی دہلی ۲/ ۱۰۳ 2 سنن ابی داؤد کتاب اللباس باب فی لباس النساء آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۲۱۰ 3 مرقاة المفاتیح شرح المشکوٰة کتاب اللباس حدیث ۴۴۷۰ المکتبۃ الحبیبیہ کوئٹہ ۸/ ۲۴۶ 4 الہدایۃ کتاب الصلوٰة باب مایفسد الصلوٰة المکتبۃ العربیہ کراچی ۱/ ۱۲۰

Fatawa Razawiyya Volume 24

“Because of what we said”[1] - And its reason is the same as we have already stated. (T) It is in Bahr al-Ra'iq and Radd al-Muhtar: They justified it because it resembles the People of the Book, for they used to adopt a platform for their Imam.[2] The jurists have established the reason for this is that this practice resembles the People of the Book because they used to designate a prominent, distinguished, and elevated platform (separate from others) for their Imam. (T)

Issue 8: Reading from the Holy Quran during prayer while looking at it is, according to Imam Azam (may Allah be pleased with him), a nullifier of prayer. The Sahabain (may Allah have mercy on them) consider the prayer valid but disliked (makruh) due to resemblance to the People of the Book. It is stated in Al-Hidayah: If the Imam reads from the Mushaf (Quran manuscript), his prayer is invalidated according to Abu Hanifah (may Allah be pleased with him), while they (the two disciples) said it is complete but disliked because it resembles the action of the People of the Book.[3] When the Imam recites from the Holy Quran while in prayer, according to Imam Abu Hanifah (may Allah be pleased with him), the prayer becomes void (i.e., breaks). However, his two famous students stated that the prayer is complete, but doing so is disliked because this method resembles the practice of the People of the Book. (T)

Issue 9: Where a picture of a living being is kept openly without disrespect, even if it is behind the person praying, the prayer is disliked (makruh) due to resemblance. It is in Radd al-Muhtar: The reason for the prohibition of making pictures is the imitation of Allah's creation, and the reason for the dislike of praying with them is resemblance.[4] The reason for pictures being forbidden (haram) is attempting to resemble Allah Almighty's creation (the things He made), which creates an illusion of partnership, and praying with a picture is disliked; hence, its reason is resemblance. (T)

Issue 10: Similarly, if there is a cross in the direction of the Qibla, prayer is disliked as it is a resemblance to the Christians. - Radd al-Muhtar

[1] Al-Hidayah, Kitab al-Salah, Bab Ma Yufsid al-Salah, Al-Maktabah al-Arabiyyah, Karachi, 1/120 [2] Radd al-Muhtar, Kitab al-Salah, Bab Ma Yufsid al-Salah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/434 [3] Al-Hidayah, Kitab al-Salah, Bab Ma Yufsid al-Salah, Al-Maktabah al-Arabiyyah, Karachi, 1/116 [4] Radd al-Muhtar, Kitab al-Salah, Bab Ma Yufsid al-Salah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/435

"जैसा कि हमने कहा"[1] - और इसका कारण वही है जो हम पहले बयान कर चुके हैं। (त) बहर अल-रैक और रद्द अल-मुह्तार में है: उन्होंने इसे इसलिए उचित ठहराया क्योंकि यह अहले किताब (किताब वाले लोगों) के समान है, क्योंकि वे अपने इमाम के लिए एक चबूतरा अपनाते थे।[2] न्यायविदों ने इसका कारण यह निर्धारित किया है कि यह व्यवहार अहले किताब के साथ समानता रखता है क्योंकि वे लोग अपने इमाम के लिए (सब से अलग) एक विशिष्ट, प्रमुख और ऊंचे चबूतरे का निर्धारण करते थे। (त)

मसला ८: नमाज़ में क़ुरआन मजीद देख कर पढ़ना इमाम आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के नज़दीक नमाज़ को अमान्य (मुफ़्सिद) कर देता है। साहबैन रहमहुमुल्लाहु नमाज़ को सही मानते हैं मगर अहले किताब के साथ समानता के कारण मकरूह (नापसंद) जानते हैं। हिदाया में है: यदि इमाम मुसहफ़ (कुरान की पांडुलिपि) से पढ़ता है, तो अबू हनीफा रज़ियल्लाहु अन्हु के अनुसार उसकी नमाज़ अमान्य हो जाती है, जबकि उन दोनों ने कहा कि यह पूरी है लेकिन मकरूह है क्योंकि यह अहले किताब के कार्य के समान है।[3] जब इमाम (नमाज़ की स्थिति में) क़ुरआन मजीद देख कर तिलावत करे तो इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के नज़दीक नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी (यानी टूट जाएगी) लेकिन उनके दो प्रसिद्ध शिष्यों ने फ़रमाया कि नमाज़ पूरी हो गई मगर इस तरह करना मकरूह है क्योंकि यह तरीका अहले किताब की कार्रवाई से समानता रखता है। (त)

मसला ९: जहाँ जानदार की तस्वीर खुली हुई बे-इहानत रखी हो, चाहे नमाज़ी के पीछे ही क्यों न हो, वहाँ नमाज़ समानता के कारण मकरूह है। रद्द अल-मुह्तार में है: तस्वीर बनाने की मनाही का कारण अल्लाह तआला की रचना की नकल करना है, और उनके साथ नमाज़ पढ़ने की नापसंदगी का कारण समानता है।[4] तस्वीर के हराम होने का कारण (वजह) अल्लाह तआला की रचना (बनाई हुई चीज़ों) में समानता अपनाना है (जो साझेदारी का भ्रम पैदा करता है) और तस्वीर के साथ नमाज़ पढ़ना मकरूह है, अतः इसका कारण समानता है। (त)

मसला १०: इसी तरह क़िबला की दिशा में अगर सलीब (क्रॉस) हो तो नमाज़ मकरूह है क्योंकि यह ईसाइयों से समानता है। - रद्द अल-मुह्तार

[1] अल-हिदाया, किताब अस-सलाह, बाब मा युफ़्सिद अस-सलाह, अल-मकतबा अल-अरबिय्या, कराची, १/१२० [2] रद्द अल-मुह्तार, किताब अस-सलाह, बाब मा युफ़्सिद अस-सलाह, दार इहया अत-

तुराथ अल-अरबी, बेरुत, १/४३४ [3] अल-हिदाया, किताब अस-सलाह, बाब मा युफ़्सिद अस-सलाह, अल-मकतबा अल-अरबिय्या, कराची, १/११६ [4] रद्द अल-मुह्तार, किताब अस-सलाह, बाब मा युफ़्सिद अस-सलाह, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, १/४३५

पृष्ठ ५४२ / ७२०

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

"لما قلنا" ۱۔ اور اس کی وجہ وہی ہے جو ہم نے پہلے بیان کردی۔ (ت) بحر الرائق ورد المحتار میں ہے: عللوہ بأنه تشبه بأهل الكتاب فإنهم يتخذون لامامهم دگانا ۲۔ فقہائے کرام نے اس کی علت یہ قرار دی کہ یہ رویہ اہل کتاب سے مشابہت رکھتا ہے کیونکہ وہ لوگ اپنے امام کے لئے (سب سے الگ) ایک نمایاں، ممتاز اور بلند چبوترہ متعین کرتے تھے (ت)

مسئلہ ۸: نماز میں قرآن مجید دیکھ کر پڑھنا امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے نزدیک تو مفسد نماز ہے صاحبین رحمہم اللہ تعالیٰ نماز صحیح مانتے ہیں مگر مشابہت اہل کتاب کے باعث مکروہ جانتے ہیں۔ ہدایت میں ہے: اذا قرأ الامام من المصحف فسدت صلاته عند ابی حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ وقالا ھی تامة الانه یکرہ لانه تشبہ بصنع اھل الکتاب ۳۔ جب امام (بحالت نماز) قرآن مجید دیکھ کر تلاوت کرے تو امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے نزدیک نماز فاسد ہو جائے گی (یعنی ٹوٹ جائے گی) لیکن ان کے دونا مور شاگردوں نے فرمایا نماز پوری ہو گئی مگر اس طرح کرنا مکروہ ہے اس لئے کہ یہ طریقہ اہل کتاب کی کارروائی سے مشابہت رکھتا ہے (ت)

مسئلہ ۹: جہاں جاندار کی تصویر کھلی ہوئی بے اہانت رکھی ہو اگر چہ نمازی کے پس پشت، وہاں نماز بوجہ تشبہ مکروہ ہے۔ رد المحتار میں ہے: وعلة حرمة التصوير المضاهاة لخلق الله تعالیٰ وعلة كراهة الصلاة بها التشبه ۴۔ تصویر کے حرام ہونے کی علت (وجہ) اللہ تعالیٰ کی تخلیق (بنائی ہوئی چیزوں) میں مشابہت اختیار کرنا ہے (جو شرکت کا وہم پیدا کرتا ہے) اور تصویر کے ساتھ نماز پڑھنا مکروہ ہے، پس اس کی علت تشبہ ہے۔ (ت)

مسئلہ ۱۰: یونہی جہت قبلہ میں اگر صلیب ہو نماز مکروہ ہے کہ نصاری سے تشبہ ہے۔ رد المحتار

۱ الهدایۃ کتاب الصلوٰۃ باب ما یفسد الصلوٰۃ المکتبۃ العربیہ کراچی ۱/ ۱۲۰ ۲ رد المحتار کتاب الصلوٰۃ باب ما یفسد الصلوٰۃ الخ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۴۳۴ ۳ الهدایۃ کتاب الصلوٰۃ باب ما یفسد الصلوٰۃ المکتبۃ العربیہ کراچی ۱/ ۱۱۶ ۴ رد المحتار کتاب الصلوٰۃ باب ما یفسد الصلوٰۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۴۳۵

Fatawa Razawiyyah, Volume 24

Following the aforementioned text, this is the issue regarding pictures.

[Table/Column Section 1]

Arabic Text: اقول: والظاهر انه یلحق به الصلیب وان لم یکن تمثال ذی روح لان فیه تشبها بالنصاری ویکره التشبه بهم فی المذموم وان لم یقصده ١ اهـ اقول: فی الصورة علة اخری سوی التشبه وهو امتناع الملئکة من دخول بیت هی فیه غیر مهانة ولم یثبت مثله فی الصلیب فلایتأتی الالحاق علی الاطلاق الا اذا کانت فی جهة القبلة وح یلتحق بکافون فیه ضرام من جمر اونار- والله تعالی اعلم- Urdu Text Translation/Explanation: I say: It is apparent that the cross should be equated with pictures, even if the picture is not of a living being. That is, the ruling for both the cross and the picture is the same. This is because it involves imitation of Christians, and imitating them in blameworthy matters is disliked (Makruh) even if unintended. I say: Here, in the case of pictures, there is another reason (cause) besides "imitation," which is that angels do not enter a house where a picture is kept without being debased. This reason does not exist in the case of a cross. Therefore, an absolute equation with pictures is not possible for the cross, unless the cross is in the direction of the Qibla. Then, in that case, it would be equated with a stove or brazier in which flames of fire are burning. And Allah Almighty knows best. (T)

[End Table/Column Section 1]

Issue 11: It is forbidden (Haram) for a man to apply henna to his palms or soles, or even just his nails, as it is an imitation of women.

[Table/Column Section 2]

Arabic Text: الحناء سنة للنساء ویکره لغیرهن من الرجال الا ان یکون لعذر لانه تشبه بهن ٢ اهـ اقول: والکراهة تحریمیة للحدیث المار لعن الله المتشبهین من الرجال بالنساء Urdu Text Translation/Explanation: Applying henna is a Sunnah for women, but it is disliked (Makruh) for men unless there is a valid excuse (in which case there is room for its use). The reason for this is that men using henna would be an imitation of women. I say: This dislike is prohibited (Tahrimi) due to the aforementioned Hadith: Allah has cursed men who imitate women.

[End Table/Column Section 2]

1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Salat, Bab Ma Yufsid al-Salat, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/435.

2. Mirqat al-Mafatih Sharh al-Mishkat, Kitab al-Libas, Hadith 4428, Al-Maktabah al-Habibiyyah, Quetta, 8/217; Shir'at al-Islam, Section on Clothing, Maktabah Islamiyyah, Quetta, pp. 401-402.

फतावा रज़विया, जिल्द 24

उक्त इबारत के बाद यह तस्वीर का मसला है।

[तालिका/स्तंभ खंड 1]

अरबी पाठ: اقول: والظاهر انه يلحق به الصليب وان لم يكن تمثال ذى روح لان فيه تشبها بالنصارى ويكره التشبه بهم فى المذموم وان لم يقصده ١ اهـ اقول: فى الصورة علة اخرى سوى التشبه وهو امتناع الملئكة من دخول بيت هى فيه غير مهانة ولم يثبت مثله فى الصليب فلايتأتى الالحاق على الاطلاق الا اذا كانت فى جهة القبلة وح يلتحق بكافون فيه ضرام من جمر اونار- والله تعالى اعلم- उर्दू पाठ का अनुवाद/व्याख्या: मैं कहता हूँ: ज़ाहिर यह है कि तस्वीर के साथ सलीब (क्रॉस) को भी शामिल किया जाए, भले ही तस्वीर किसी जानदार की न हो, यानी सलीब और तस्वीर दोनों का हुक्म एक ही है। इसलिए कि इसमें ईसाइयों के साथ समानता है और बुरे कामों में उनसे समानता रखना मकरूह है, चाहे वह अनजाने में ही क्यों न हो। मैं कहता हूँ: यहाँ तस्वीर में "समानता" के अलावा एक और कारण (वजह) भी है और वह यह है कि जिस घर में बेअदबी के बिना तस्वीर रखी हो, वहाँ फरिश्ते प्रवेश नहीं करते। और यह कारण सलीब में साबित नहीं है। इसलिए तस्वीर के साथ सलीब को पूर्ण रूप से समान नहीं माना जा सकता, सिवाय इसके कि सलीब क़िबला की दिशा में हो। फिर उस स्थिति में इसे उस चूल्हे और अंगीठी के समान माना जाएगा जिसमें आग की लपटें भड़क रही हों। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

[तालिका/स्तंभ खंड 1 समाप्त]

मसला 11: पुरुष के लिए हथेली या तलवों, बल्कि सिर्फ नाखूनों पर भी मेंहदी लगाना हराम है क्योंकि यह महिलाओं के साथ समानता है।

[तालिका/स्तंभ खंड 2]

अरबी पाठ: الحناء سنة للنساء ويكره لغيرهن من الرجال الا ان يكون لعذر لانه تشبه بهن ٢ اهـ اقول: والكراهة تحريمية للحديث المار لعن الله المتشبهين من الرجال بالنساء उर्दू पाठ का अनुवाद/व्याख्या: मेंहदी लगाना महिलाओं के लिए सुन्नत है लेकिन पुरुषों के लिए मकरूह है जब तक कि कोई मजबूरी (उज़्र) न हो (तो फिर इसके उपयोग की गुंजाइश है)। इसका कारण यह है कि

पुरुषों द्वारा मेंहदी का उपयोग करना महिलाओं के साथ समानता होगी। मैं कहता हूँ: यह मकरूह-ए-तहरीमी (निषिद्ध के करीब) है।

[तालिका/स्तंभ खंड 2 समाप्त]

1. रद अल-मुह्तार, किताब अस-सलात, बाब मा युफ़सिद अस-सलात, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 1/435।
2. मिर्कात अल-मफ़ातीह शरह अल-मिश्कात, किताब अल-लिबास, हदीस 4428, अल-मकतबा अल-हबीबिया, क्वेटा, 8/217; शिरअतुल इस्लाम, लिबास का अध्याय, मकतबा इस्लामिया, क्वेटा, पृ. 401-402।

فتاوی رضویہ ، جلد ۲۴

میں بعد عبارت مذکورہ یہ مسئلہ تصویر ہے۔

[جدول / کالم سیکشن 1]

عربی متن: اقول: والظاھر انه یلحق به الصلیب وان لم یکن تمثال ذی روح لان فیه تشبھا بالنصاری ویکره التشبه بھم فی المذموم وان لم یقصده ۱ اھ اقول: فی الصورة علة اخری سوی التشبه وھو امتناع الملئکة من دخول بیت ھی فیه غیر مھانة ولم یثبت مثله فی الصلیب فلایتأتی الالحاق علی الاطلاق الا اذا کانت فی جھة القبلة وح یلتحق بکافون فیه ضرام من جمر اونار۔ واللہ تعالی اعلم۔ اردو ترجمہ/ تشریح: اقول: ظاہر یہ ہے کہ تصویر کے ساتھ صلیب کا الحاق کیا جائے جبکہ تصویر کسی جاندار کی نہ ہو، یعنی صلیب اور تصویر دونوں کا حکم ایک ہے۔ اس لئے کہ اس میں عیسائیوں سے مشابہت ہے اور برے کاموں میں ان سے مشابہت رکھنا مکروہ ہے اگرچہ غیر ارادی طور پر ہو اھ اقول: (میں کہتا ہوں) یہاں تصویر میں "تشبہ" کے علاوہ ایک اور علت (وجہ) بھی ہے اور وہ یہ ہے کہ جس گھر میں بغیر تذلیل تصویر رکھی ہو وہاں فرشتے داخل نہیں ہوتے۔ اور یہ وجہ (علت) صلیب میں نہیں۔ لہذا تصویر کے ساتھ صلیب کا علی الاطلاق الحاق نہیں ہو سکتا، مگر یہ کہ صلیب جہت قبلہ میں ہو۔ پھر اس صورت میں اس چولہے اور انگیٹھی سے اس کا الحاق کردیا جائے گا کہ جس میں آگ کے شعلے بھڑک رہے ہوں۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

[جدول / کالم سیکشن 1 ختم]

مسئلہ ۱۱: مرد کو ہتھیلی یا تلوے بلکہ صرف ناخنوں ہی میں مہندی لگانی حرام ہے کہ عورتوں سے تشبہ ہے۔

[جدول / کالم سیکشن 2]

عربی متن: الحناء سنة للنساء ویکرہ لغیرھن من الرجال الا ان یکون لعذر لانہ تشبہ بھن ۲ اھـ اقول: والکراھة تحریمیة للحدیث المار لعن اللہ المتشبھین من الرجال بالنساء اردو ترجمہ/تشریح: مہندی لگانی عورتوں کے لئے سنت ہے لیکن مردوں کے لئے مکروہ ہے مگر جبکہ کوئی عذر ہو (تو پھر اس کے استعمال کرنے کی گنجائش ہے) اس کی وجہ یہ ہے کہ مردوں کے مہندی استعمال کرنے میں عورتوں سے مشابہت ہوگی اھ اقول: (میں کہتا ہوں) کہ یہ کراہت تحریمی ہے

[جدول / کالم سیکشن 2 ختم]

۱۔ ردالمحتار کتاب الصلوۃ باب مأیفسد الصلوۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۲۴۵ ۲۔ مرقاۃ المفاتیح شرح المشکوۃ کتاب اللباس حدیث ۴۴۲۸م المکتبۃ الحبیبیہ کوئٹہ ۸/ ۲۱۷، شرعۃ الاسلام فصل فی اللباس مکتبہ اسلامیہ کوئٹہ ص ۴۰۱-۴۰۲

Fatawa Ridawiyya Volume 24

Prohibition is clarified, then its generalization included the nails. I say: and in it is the text of the aforementioned Hadith: "If you were a woman, you would have changed your nails with henna." As for the exception of an excuse, I say: this is when nothing takes its place, nor is it suitable for its composition with something that negates its color, and it is used not for the purpose of decoration.

Because of the previous holy Hadith in which it is stated that Allah Almighty cursed those men who adopt resemblance to women, therefore, the prohibition, i.e., Makruh Tahrimi (highly disliked), became correct. And the generalization (of the words of the Hadith) also includes the nails. I say: In this too, the clarification of the previous Hadith is present (Hadith: If you were a woman, you would surely change your white nails by applying henna). As for the exception of an excuse, my opinion regarding it is that (an excuse will be accepted only when) there is no other substitute for henna, nor can henna be mixed with any other thing that removes its color. And henna should also be used purely out of necessity as medicine and treatment, and beautification and decoration should not be the objective. (T)

Issue 12: It is forbidden for a woman to cut the hair of her head, and if she cuts them, she is cursed as it is a resemblance to men. In Al-Durr al-Mukhtar it is stated: If she cuts the hair of her head, she has sinned and is cursed, and the effective reasoning is the resemblance to men. 2 If any woman cuts the hair of her head, she becomes a sinner, and also Allah Almighty's curse descends upon her. And the effective reasoning in it is "resemblance" to men. (T)

Issue 13: It is permissible for a man to have the middle of his head shaved, which is called 'paan banwana', provided the hair on the sides is left and not braided, otherwise shaving the hair of the forehead or the nape is a resemblance to the Magians (fire-worshippers), and braiding is like some other disbelievers. In Al-Dhakhira, Tatar-Khaniyya, Al-Hindiyya, and Radd al-Muhtar it is stated: There is no harm for a man to shave the middle of his head and let his hair hang without braiding it, and if he braids it, then that is disliked (Makruh) because it becomes a resemblance to some of the disbelievers. There is no harm if a man shaves the middle part of his head and leaves the rest of the hair loose without braiding, and if he braids them, doing so is disliked because in that case he resembles some of the disbelievers.

1 Sunan Abi Dawood, Book of Grooming, Chapter on Dyeing for Women, 2/218 and Musnad Imam Ahmad bin Hanbal on the authority of Aisha (may Allah be pleased with her), 6/262. 2 Al-Durr al-Mukhtar, Book of Prohibition and Permission, Section on Sale, Mujtabai Press Delhi, 2/250.

फतावा रज़विया जिल्द 24

निषेध स्पष्ट है फिर सामान्यीकरण में नाखून भी शामिल हैं। मैं कहता हूँ: इसमें पिछले वर्णित हदीस का पाठ है: "यदि तुम महिला होतीं तो अपने नाखूनों का रंग मेंहदी से बदल लेतीं।" जहाँ तक बहाने (उज़्र) के अपवाद की बात है, तो मैं कहता हूँ: यह तब है जब उसके स्थान पर कोई और चीज़ न हो, और उसे किसी ऐसी चीज़ के साथ नहीं मिलाया जा सकता जो उसके रंग को समाप्त कर दे, और इसका उपयोग सुंदरता के लिए न किया जाए।

पिछले हदीस पाक के कारण जिसमें यह आया है कि अल्लाह तआला ने उन पुरुषों पर लानत भेजी है जो महिलाओं के साथ समानता अपनाते हैं, इसलिए निषेध यानी 'कराहते तहरीमी' सही हुई। और (हदीस के शब्दों का) सामान्यीकरण नाखूनों को भी शामिल करता है। मैं कहता हूँ: इसमें भी पिछली हदीस का स्पष्टीकरण मौजूद है (हदीस: अगर तुम औरत होतीं तो ज़रूर अपने सफेद नाखूनों को मेंहदी लगाकर बदल देतीं)। रहा बहाने का अपवाद करना, तो उसके बारे में मेरी राय यह है कि (बहाना उस वक्त स्वीकार किया जाएगा कि) जब मेंहदी का कोई अन्य विकल्प न हो, साथ ही मेंहदी किसी ऐसी दूसरी चीज़ के साथ मिश्रित न हो सके जो इसके रंग को मिटा दे। और मेंहदी का उपयोग भी केवल आवश्यकता के आधार पर दवा और उपचार के रूप में हो, सजावट और सौंदर्य उद्देश्य न हो। (त)

मसला 12: महिला के लिए अपने सिर के बाल काटना हराम है और अगर वह काटती है तो वह अभिशप्त है क्योंकि यह पुरुषों की नकल है। 'दुर्रे मुख्तार' में है: यदि उसने अपने सिर के बाल काट लिए तो उसने पाप किया और उस पर लानत हुई और इसका प्रभावी कारण पुरुषों की नकल करना है। 2 किसी महिला ने सिर के बाल काट डाले तो वह गुनहगार हुई, साथ ही अल्लाह तआला की उस पर लानत बरसी। और इसमें जो कारण प्रभावी है वह पुरुषों से "तशब्बोह" (नकल) है। (त)

मसला 13: पुरुष के लिए अपने सिर का ऊपरी हिस्सा मुंडवाना (जिसे पान बनवाना कहते हैं) हलाल है जबकि किनारों के बाल बाकी रखे और उन्हें गूँथे नहीं, अन्यथा माथे या गर्दन के पिछले हिस्से के बाल मुंडवाना मजूसी (अग्निपूजकों) की नकल है और गूँथना कुछ अन्य काफिरों की तरह है। जखीरा, तातारखानिया, हिंदिया और रदुल मुहतार में है: पुरुष के लिए अपने सिर के बीच का हिस्सा मुंडवाने और अपने बालों को बिना गूँथे खुला छोड़ने में कोई हर्ज नहीं है, और अगर उसने उन्हें गूँथ लिया तो वह मकरूह (नापसंद) है क्योंकि वह कुछ काफिरों के समान हो जाता है। कोई हर्ज नहीं कि पुरुष

अपने सिर का बीच का हिस्सा मुंडवाए और बाकी बाल बिना गूँथे खुले छोड़ दे, और अगर उसने उन्हें गूँथ लिया तो ऐसा करना मकरूह है क्योंकि उस स्थिति में वह कुछ काफिरों से मिलता-जुलता हो जाता है।

1 सुनन अबी दाऊद, किताबुल तरज्जुल, महिलाओं के लिए मेंहदी के अध्याय में, 2/218 और मसनद इमाम अहमद बिन हंबल, आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत, 6/262। 2 दुर्रे मुख्तार, किताबुल हज़र वल इबाहत, खरीद-बिक्री का अध्याय, मुज्तबाई प्रेस दिल्ली, 2/250।

पृष्ठ 544 का 720

فصح التحریم ثم الاطلاق شمل الاظفار اقول: وفیه نص الحدیث المار لوکنت امراۃ لغیرت اظفارك بالحناء اما ثنیا العذر فاقول هذا اذا لم یقم شیئ مقامه ولا صلح ترکیبه مع شیئ ینفی لونه واستعمل لا علی وجه تقع به الزینۃ۔

گزشتہ حدیث پاک کی وجہ سے کہ جس میں یہ آیا ہے کہ اللہ تعالٰی نے ان مردوں پر لعنت فرمائی جو عورتوں سے مشابہت اختیار کریں، لہذا تحریم یعنی کراہت تحریمی صحیح ہوئی۔ اور اطلاق (الفاظ حدیث) ناخنوں کو بھی شامل ہے۔ اقول: (میں کہتا ہوں) اس میں بھی گزشتہ حدیث کی صراحت موجود ہے (حدیث: اگر تو عورت ہوتی تو ضرور اپنے سفید ناخنوں کو مہندی لگا کر تبدیل کر دیتی) رہا عذر کا استثناء کرنا، تو اس کے متعلق میری صوابدید یہ ہے کہ (عذر اس وقت تسلیم کیا جائے گا کہ) جب مہندی کے قائم مقام کوئی دوسری چیز نہ ہو، نیز مہندی کسی ایسی دوسری چیز کے ساتھ مخلوط نہ ہو سکے جو اس کے رنگ کو زائل کردے۔ اور مہندی استعمال میں بھی محض ضرورت کی بنا پر بطور دوا اور علاج ہو، زیب وزینت اور آرائش مقصود نہ ہو۔ (ت)

مسئلہ ۱۲: عورت کو اپنے سر کے بال کترنا حرام ہے اور کترے تو ملعونہ کہ مردوں سے تشبہ ہے۔ درمختار میں ہے: قطعت شعر رأسها اثمت ولعنت والمعنی المؤثر التشبه بالرجال 2۔ کسی عورت نے سر کے بال کتر ڈالے تو وہ گنہگار ہوئی، نیز اللہ تعالٰی کی اس پر لعنت برسی۔ اور اس میں جو علت مؤثرہ ہے وہ مردوں سے "تشبہ" ہے۔ (ت)

مسئلہ ۱۳: مرد کو اپنا سر کھلوانا جسے پان بنوانا کہتے ہیں حلال ہے جبکہ اطراف کے بال باقی رکھے اور گوندھے نہیں ورنہ پیشانی یا قفا کے بال مونڈنا مجوس سے تشبہ ہے اور گوندھنا بعض دیگر کفار سے۔ ذخیرہ و تاتارخانیہ و ہندیہ و ردالمحتار میں ہے: لاباس للرجل ان یحلق وسط رأسه ویرسل شعره من غیر ان یفتله وان فتله فذلك مکروه لانه یصیر مشابها ببعض الکفرة کوئی حرج نہیں کہ مرد اپنے سر کا درمیانی حصہ منڈوائے اور بقیہ بال بغیر گوندھے کھلے چھوڑ دے، اور اگر اس نے انہیں گوندھ ڈالا تو ایسا کرنا مکروہ ہے کیونکہ اس صورت میں وہ بعض کافروں سے مشابہ

1 سنن ابی داؤد کتاب الترجل باب فی الخضاب للنساء ۲/ ۲۱۸ و مسند امام احمد بن حنبل عن عائشہ رضی اللہ عنہا ۶/ ۲۶۲ 2 درمختار کتاب الحظر والاباحة فصل فی البیع مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۲۵۰

Volume 24 Fatawa Razawiyya

[Box 1] (Arabic): "And the Magians in our lands let their hair hang loose without braiding, but they do not shave the middle of the head; rather, they clip the forelock. Yanabi[1]" (Urdu Translation): ...will be. And our regional fire-worshippers leave their hair loose without braiding, but they do not shave the hair on the top of the head; instead, they trim the hair on the forehead. (T)

It is in 'Alamgiriya': [Box 2] (Arabic): "From Abu Hanifa (may Allah be pleased with him): It is disliked to shave the nape of the neck except during cupping.[2]" (Urdu Translation): It is narrated from Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) that shaving the hair at the back of the neck is disliked (Makruh) except when having cupping done. (T)

Problem 14: For a man, a silver ring weighing less than four and a half mashas with one gemstone is permissible; two or more stones are prohibited as it becomes women's jewelry. In Jami' ar-Rumuz and Radd al-Muhtar it is stated:

[Box 3] (Arabic): "Wearing a silver ring is only permissible if it is in the style of men's rings. But if it has two stones or more, it is prohibited.[3]" (Urdu Translation): Wearing a silver ring is permissible provided it is in the shape and style of men's rings (and has only one gemstone). If there are two or more stones, it is prohibited. (T)

Problem 15: A woman should not wear a man's silver ring, and if she wears one, she should color it with saffron etc. Sheikh Muhaqiq says in Ashi'at al-Lam'at:

[Box 4] (Persian): "It is disliked for women to imitate men, to the extent that a silver ring is disliked for women, and if they do, they should color it with saffron and the like.[4]" (Urdu Translation): It is disliked (Makruh) for women to adopt resemblance to men, and this is considered to the extent that it is disliked for women to wear a silver ring; if they happen to wear one by chance, they should color it with saffron etc. (T)

1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Hazr wal-Ibahah, Chapter on Sales, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/261
2. Fatawa Hindiyyah, Kitab al-Kirahiyah, Chapter 19, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 5/357
3. Radd al-Muhtar, Kitab al-Hazr wal-Ibahah, Chapter on Clothing, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/331
4. Ashi'at al-Lam'at Sharh al-Mishkat, Kitab al-Libas, Chapter on Grooming, Maktaba Nooria Razvia Sukkur, 3/581

जिल्द 24 फतावा रज़विया

[बॉक्स 1] (अरबी): "और हमारे क्षेत्रों में मजूसी (अग्नि-पूजक) बालों को बिना गूंथे खुला छोड़ देते हैं, लेकिन वे सिर के बीच के बाल नहीं मुंडवाते; बल्कि वे माथे के बालों को कतरते हैं। यनाबी[1]" (उर्दू अनुवाद): ...हो जाएगा। और हमारे क्षेत्रीय अग्नि-पूजक अपने बालों को बिना गूंथे खुला छोड़ देते हैं, लेकिन वे सिर की चोटी के बाल नहीं मुंडवाते, बल्कि वे माथे के बाल कतरते हैं। (त)

'आलमगीरिया' में है: [बॉक्स 2] (अरबी): "इमाम अबू हनीफ़ा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत है: पछने (cupping) लगाने के अलावा गुद्दी के बाल मुंडवाना मकरूह है।[2]" (उर्दू अनुवाद): इमाम अबू हनीफ़ा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से वर्णित है कि गुद्दी के बाल मुंडवाना मकरूह है, सिवाय उस स्थिति के जब पछने लगवाए जा रहे हों। (त)

मसला 14: एक पुरुष के लिए साढ़े चार माशे से कम वजन की एक नग वाली चांदी की अंगूठी जायज़ है। दो या अधिक नग हराम हैं क्योंकि यह महिलाओं के आभूषण जैसा हो जाता है। जामे-उर-रुमूज़ और रद्द-उल-मुहतार में है:

[बॉक्स 3] (अरबी): "चांदी की अंगूठी पहनना केवल तभी जायज़ है जब वह पुरुषों की अंगूठियों की शैली में हो। लेकिन अगर इसमें दो या अधिक नग हों, तो यह हराम है।[3]" (उर्दू अनुवाद): चांदी की अंगूठी पहनना जायज़ है बशर्ते वह पुरुषों की अंगूठियों की शक्ल-ओ-सूरत में हो (और उसका एक नग हो)। अगर दो या अधिक नग हों, तो यह हराम है। (त)

मसला 15: एक महिला को पुरुष की चांदी की अंगूठी नहीं पहननी चाहिए, और यदि वह पहनती है, तो उसे केसर आदि से रंग लेना चाहिए। शेख मुहक्किक 'अशिअतुल लम्आत' में फ़रमाते हैं:

[बॉक्स 4] (फ़ारसी): "महिलाओं के लिए पुरुषों की नकल करना मकरूह है, यहाँ तक कि महिलाओं के लिए चांदी की अंगूठी पहनना मकरूह है, और यदि वे पहनती हैं, तो उन्हें केसर और इसी तरह की चीज़ों से उसे रंगना चाहिए।[4]" (उर्दू अनुवाद): महिलाओं के लिए पुरुषों जैसी समानता अपनाना मकरूह है, और यह इस हद तक है कि महिलाओं के लिए चांदी की अंगूठी पहनना मकरूह है। अगर कभी इत्तेफ़ाक़न पहननी पड़े, तो उसे केसर आदि से रंग लेना चाहिए। (त)

1. रद्द-उल-मुहतार, किताब अल-हज़र वल-इबाहत, फ़स्ल फ़िल-बैय, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 5/261

2. फतावा हिन्दिया, किताब अल-कराहिया, बाब 19, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 5/357
3. रद्द-उल-मुहतार, किताब अल-हज़र वल-इबाहत, फ़स्ल फ़िल-लिबास, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 5/331
4. अशिअतुल लम्आत शरह अल-मिश्कात, किताब अल-लिबास, बाब अत-तरज्जुल, मकतबा नूरिया रज़विया, सक्खर, 3/581

पेज 545, कुल 720

[باکس ۱] والمجوس في دیارنا یرسلون الشعر من غیر فتل ولکن لایحلقون وسط الرأس بل یجزون الناصیة. ینابیع[1] | ہو جائے گا۔ اور ہمارے علاقائی آتش پرست بغیر گوندھے اپنے بال کھلے چھوڑتے ہیں لیکن وہ سر کی چوٹی کے بال نہیں مونڈھتے بلکہ پیشانی کے بال کتر ڈالتے ہیں۔ (ت)

عالمگیریہ میں ہے: [باکس ۲] عن ابي حنیفة رضي اللہ تعالی عنه یکره ان یحلق قفاه الاعند الحجامة[2] | امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ہے کہ گدی کے بال مونڈھنا مکروہ ہیں مگر جبکہ پچھنے لگوائے۔ (ت)

مسئلہ ۱۴: مرد کو ساڑھے چار ماشے سے کم وزن کی ایک انگوٹھی ایک نگ کی جائز ہے دو یا زیادہ نگ حرام کہ زیورِ زنان ہو گیا۔ جامع الرموز وردا لمحتار میں ہے:

[باکس ۳] انما یجوز التختم بالفضة لو علی هیأة خاتم الرجال امالوله فصان اواکثر حرم[3] | چاندی کی انگوٹھی پہننا جائز ہے بشر طیکہ مردانہ انگوٹیوں کی شکل وصورت پر ہو (نیز اس کا ایک نگینہ ہو) اگر دو یا زیادہ نگینے ہوں تو حرام ہے۔ (ت)

مسئلہ ۱۵: چاندی کی مردانی انگوٹھی عورت کو نہ چاہئے اور پہنے توز عفران وغیرہ سے رنگ لے۔ شیخ محقق اشعۃ اللمعات میں فرماتے ہیں:

[باکس ۴] زنان را تشبہ برجال مکروہ است تا آنکہ انگشتری نقرہ زنان را مکروہ است واگر بکنند باید کہ رنگ کنند بزعفران وما نند آن[4] | عورتوں کو مردوں سے مشابہت اختیار کرنی مکروہ ہے اور اس کا لحاظ اس حد تک ہے کہ عورتوں کو چاندی کی انگوٹھی پہننی مکروہ ہے اگر کبھی اتفاقاً پہننی پڑے تو اسے زعفران وغیرہ سے رنگ لے۔ (ت)

[1] ردالمحتار کتاب الحظر والاباحة فصل فی البیع داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۶۱/۵ [2] فتاویٰ ہندیۃ کتاب الکراہیۃ الباب التاسع عشر نورانی کتب خانہ پشاور ۳۵۷/۵ [3] ردالمحتار کتاب الحظر والاباحة فصل فی اللبس داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۳۱/۵ [4] اشعة اللمعات شرح المشکوة کتاب اللباس باب الترجل مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۵۸۱/۳

Fatawa Razawiyya Volume 22

Issue 16: It is disliked (makruh) for a man to spin thread on a spinning wheel like a woman, as it is a feminine task and constitutes imitation. In Durr al-Mukhtar, it is stated:

Arabic Text	Urdu Translation
غزل الرجل على هيأة غزل المرأة يكره ۔[1]	A man spinning thread in the manner of a woman is disliked (makruh). (T)

It is stated in Tahtawi:

Arabic Text	Urdu Translation
لما فيه من التشبه وقد لعن رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم المتشبهين والمتشبهات ۔[2]	Because it contains imitation, and the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) cursed men who imitate women and women who imitate men. (T)

Issue 17: Without a genuine necessity, it is forbidden for a woman to ride a horse as it is a masculine task; this is cursed in the Hadith. Ibn Hibban narrates in his Sahih from Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them), that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

Arabic Text	Urdu Translation
يكون فى اخر امتى نساء يركبن على مرج كاشباه الرجال الحديث وفى اخره العنهن فانهن ملعونات ۔[3]	In the latter part of my Ummah, there will be women who ride on animals like men. (Al-Hadith) and at its end these words appear: "Send curses upon those women because they are cursed." (T)
اقول: وكان ما اشتهر حديثا بلفظ لعن اللہ الفروج على السروج ماخوذ من هذا نقلا بالمعنى۔[4]	I say: What has recently become famous with the words "Allah cursed the vulvas on saddles" is derived from this through a paraphrase (transmission of meaning). (T) **I say:** (I mean that) it seems the words of the famous Hadith are taken from the aforementioned Hadith as a paraphrase: "May Allah Almighty curse those private parts (vulvas) that are mounted on saddles (seats)." (T)

Issue 18: A man should not wear a ring on his right hand as it is a distinctive sign of the Rafidis. In Durr al-Mukhtar, it is stated:

[1] Durr al-Mukhtar, Kitab al-Hazr wa al-Ibaha, Chapter on Sales, Mujtabai Press Delhi, 2/253 [2] Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Hazr wa al-Ibaha, Chapter on Sales, al-Maktaba al-Arabiyya Quetta, 4/211 [3] Mawarid al-Zam'an, Chapter on what is forbidden for women that describes the skin, Hadith 1352, al-Matba'a al-Salafiyya, p. 351 [4] Asrar al-Mawdu'a, Hadith 517, Dar al-Kutub al-Ilmiyya Beirut, p. 185

फ़तावा रज़विया जिल्द २२

मसला १६: पुरुष के लिए स्त्री की तरह चरखा कातना मकरूह (नापसंद) है क्योंकि यह स्त्रियों का कार्य है और इसमें समानता (नकल) होगी। दुर्रे मुख्तार में है:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
غزل الرجل على هيأة غزل المرأة يكره ۔[1]	किसी पुरुष का स्त्रियों की तरह चरखा कातना मकरूह है। (त)

तहावी में है:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
لما فيه من التشبه وقد لعن رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم المتشبهين والمتشبهات ۔[2]	इसलिए कि इसमें समानता है (और वह वर्जित है) क्योंकि हुज़ूर (अलैहिस्सलातु वसल्लम) ने स्त्रियों से समानता करने वाले पुरुषों, और पुरुषों से समानता करने वाली स्त्रियों पर लानत फ़रमाई है। (त)

मसला १७: बिना किसी सही ज़रूरत के स्त्री का घोड़े पर सवार होना वर्जित है क्योंकि यह पुरुषों का कार्य है, हदीस में इस पर लानत आई है, इब्ने हिब्बान ने अपनी सहीह में अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
يكون فى اخر امتى نساء يركبن على مرج كاشباه الرجال الحديث وفى اخره العنهن فانهن ملعونات ۔[3]	मेरी उम्मत के अंत में कुछ ऐसी स्त्रियाँ होंगी जो पुरुषों की तरह जानवरों पर सवार होंगी, हदीस, और उसके अंत में ये शब्द आए हैं: उन स्त्रियों पर लानत भेजो क्योंकि वे मलयून (शापित) हैं। (त)
حديثا اقول: وكان ما اشته بلفظ لعن اللہ الفروج على السروج ماخوذ من هذا نقلا بالمعنى۔[4]	अकुल: (मैं कहता हूँ कि) गोया मशहूर हदीस के जो शब्द हैं वे इसी ज़िक्र की गई हदीस से अर्थ के आधार पर नकल के रूप में लिए गए हैं "अल्लाह तआला उन फ़ुरुज (शर्मगाहों) पर लानत करे जो ज़ीनों (काठियों) पर सवार हों।" (त)

मसला १८: पुरुष सीधे हाथ में अंगूठी न पहने क्योंकि यह राफ़ज़ियों की निशानी (शआर) है। दुर्रे मुख्तार में है:

---

[1] दुर्रे मुख्तार, किताब अल-हज़र वल इबाह, फ़स्ल फ़िल बै, मतबा मुजतबाई दिल्ली, २/२५३ [2] तहावी अलद दुर्रे मुख्तार, किताब अल-हज़र वल इबाह, फ़स्ल फ़िल बै, अल-मकतबा अल-अरबिय्या क्वेटा, ४/२११ [3] मवारिद अल-ज़मआन, बाब फ़ीमा यहरुमु अल-निसा मिम्मा यसिफ़ुल बशरा, हदीस १३५२, अल-मतबा अल-सल्फिया, पृ. ३५१ [4] असरार अल-मौदूआ, हदीस ५१७, दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या बेरूत, पृ. १८५

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۲

مسئلہ ۱۶: مرد کو عورت کی طرح چرخہ کاتنا مکروہ ہے کہ زنانہ کام ہے تشبہ ہوگا ۔ در مختار میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
غزل الرجل علی ھیأۃ غزل المرأۃ یکرہ ۔[1]	کسی مرد کا عورتوں کی طرح چرخہ کاتنا مکروہ ہے (ت)

طحطاوی میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
لما فیہ من التشبہ وقد لعن رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم المتشبھین والمتشبھات ۔[2]	اس لئے کہ اس میں تشبہ ہے (اور وہ ممنوع ہے) اس لئے کہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے عورتوں سے مشابہت کرنے والے مردوں، اور مردوں سے مشابہت کرنے والی عورتوں پر لعنت فرمائی ہے (ت)

مسئلہ ۱۷: بلا ضرورت صحیحہ عورت کو گھوڑے پر چڑھنا منع ہے کہ مردانہ کام ہے، حدیث میں اس پر لعنت آئی، ابن حبان اپنی صحیح میں عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
یکون فی اخر امتی نساء یرکبن میری امت کے آخر میں کچھ ایسی عورتیں ہوں گی جو مردوں کی علی مرج کاشباہ الرجال الحدیث طرح جانوروں پر سوار ہوں گی، الحدیث، اور اس کے آخر میں یہ	

عربی عبارت	اردو ترجمہ
وفی اخرہ العنھن فانھن ملعونات ۔[3]	الفاظ آئے ہیں: ان عورتوں پر لعنت بھیجو کیونکہ وہ ملعون ہیں۔ (ت)
اقول: وکان ما اشتھر حدیثا بلفظ لعن اللہ الفروج علی السروج ماخوذ من ھذا نقلا بالمعنی۔[4]	اقول: (میں کہتا ہوں کہ) گویا مشہور حدیث کے جو الفاظ ہیں وہ اسی حدیث مذکور سے نقل معنوی کے طور پر لئے گئے ہیں "اللہ تعالٰی ان فروج (شرمگاہوں) پر لعنت کرے جو زینوں (کاٹھیوں) پر سوار ہوں۔" (ت)

مسئلہ ۱۸: مرد سیدھے ہاتھ میں انگوٹھی نہ پہنے کہ رافضیوں کا شعار ہے۔ در مختار میں ہے:

---

1 در مختار کتاب الحظر والاباحۃ فصل فی البیع مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۲۵۳ 2 طحطاوی علی الدر المختار کتاب الحظر والاباحۃ فصل فی البیع المکتبۃ العربیۃ کوئٹہ ۴/ ۲۱۱ 3 موارد الظمان باب فیما یحرم علی النساء مما یصف البشرۃ حدیث ۱۳۵۲ المطبعۃ السلفیہ ص ۳۵۱ 4 اسرار الموضوعۃ حدیث ۵۱۷ دار الکتب العلمیۃ بیروت ص ۱۸۵

Fatawa Razawiyya, Volume 22

One should wear the ring on the left hand such that its stone faces the palm. It has also been said that one should wear it on the right hand. However, this practice is a hallmark (symbol) of the Rafidis (Shias). Therefore, it is necessary to avoid it, as mentioned by Qahistani and others. I say: The inherent permissibility of a thing is not contradictory to the obligation of avoiding it for some other reason. (Explanation: A thing might be permissible in itself, but it can be worth abandoning due to some other reason. Thus, there is no contradiction between these two points. It shouldn't be asked how something can be both permissible and forbidden, because here the aspects of permissibility and impermissibility have changed, so no contradiction is found. For a contradiction to exist, the aspects must be identical, as mentioned in books of logic. Consider here: originally, wearing a ring on either hand is permissible; there is no harm in it. However, because the Rafidis wear the ring on the right hand, one should avoid wearing it on the right hand to avoid resembling them. Therefore, if they abandon this practice, then one can wear it on the right hand as well - Translator). Furthermore, the attribution of this issue is not only to Allama Qahistani (as is evident). Therefore, this issue...

---

1. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Hazr wal-Ibaha, Section on Clothing, Matba' Mujtabai Delhi, 2/240.
2. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Hazr wal-Ibaha, Section on Clothing, Matba' Mujtabai Delhi, 2/240.

फतावा रज़विया, जिल्द 22

अंगूठी अपने बाएं हाथ में इस तरह पहने कि उसका नगीना हाथ की अंदरूनी सतह (हथेली) की तरफ हो। और यह भी कहा गया कि दाएं हाथ में पहने। मगर यह रवैया राफ़िज़ियों (शियाओं) का प्रतीक (चिन्ह) है। इसलिए इससे बचना ज़रूरी है, कहिस्तानी वग़ैरह। मैं (अहमद रज़ा खान) कहता हूँ: किसी चीज़ का स्वयं में जायज़ होना, किसी अन्य कारण से उससे बचने की अनिवार्यता के विपरीत नहीं है। (स्पष्टीकरण: एक चीज़ मूल रूप से जायज़ है, लेकिन किसी और चीज़ की वजह से छोड़ने के योग्य है, तो इन दोनों बातों में कोई विरोधाभास नहीं है। इसलिए यह नहीं कहा जाएगा कि यह कैसे हो सकता है कि एक चीज़ जायज़ भी हो और मना भी, क्योंकि यहाँ जवाज़ (अनुमति) और अदम-ए-जवाज़ (मनाही) के पहलू बदल गए हैं, इसलिए विरोधाभास नहीं पाया जाएगा। क्योंकि विरोधाभास होने के लिए पहलुओं का एक होना ज़रूरी है जैसा कि तर्कशास्त्र (मंतिक) की किताबों में वर्णित है। यहाँ गौर करें: मूल रूप से अंगूठी दोनों हाथों में पहनना जायज़ है, इसमें कोई बुराई नहीं है। लेकिन चूंकि राफ़िज़ी दाएं हाथ में अंगूठी पहनते हैं, इसलिए उनकी समानता से बचने के लिए दाएं हाथ में अंगूठी न पहने। इसलिए अगर वे इस प्रथा को छोड़ दें, तो फिर दाएं हाथ में भी पहन सकता है - अनुवादक)। और इसके अलावा यह भी है कि इस मसले का श्रेय केवल अल्लामा कहिस्तानी को ही नहीं है (जैसा कि ज़ाहिर है)। इसलिए यह मसला...

---

1. दुर्रे मुख़्तार, किताबुल हज़्र वल इबाहत, लिबास का अध्याय, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 2/240।
2. दुर्रे मुख़्तार, किताबुल हज़्र वल इबाहत, लिबास का अध्याय, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 2/240।

يجعله لبطن كفه فی يده اليسری وقيل اليمنی الا انه من شعار الروافض فيجب التحرز عنه قهستاني وغيره اه اقول: والجواز فی نفسه لا ينافی وجوب الاحتراز لغيره، علی انه لم يعزه للقهستاني وحده فلعله عن غيره فاندفع ما فی ش هذا وقال فی الدر بعده قلت ولعله كان وبأن فتبصر قال ش ای كان ذلك من شعارهم فی الزمن السابق ثم انقطع فلا ينهی عنه و فی غاية البيان قد سوی الفقيه ابواللیث فی شرح الجامع الصغير بين اليمين واليسار وهو الحق لانه قد اختلف الروايات عن رسول الله صلی الله تعالیٰ عليه وسلم فی ذلك و قول بعضهم انه فی اليمين من علامات

انگوٹھی اپنے بائیں ہاتھ میں اس طرح پہنے کہ اس کا نگینہ ہاتھ کی اندرونی سطح کی طرف ہو۔ اور یہ بھی کہا گیا کہ دائیں ہاتھ میں پہنے۔ مگر یہ رویہ رافضیوں کا شعار (علامت) ہے۔ لہٰذا اس سے اجتناب ضروری ہے، قہستانی وغیرہ اھ اقول: (میں کہتا ہوں کہ) کسی چیز کا بذاتہ جواز، احتراز لغیرہ کے وجوب کے منافی نہیں۔ (وضاحت: ایک چیز بالذات جائز ہے لیکن کسی اور چیز کی بناء پر قابلِ ترک ہے تو ان دونوں باتوں میں کوئی تضاد نہیں، لہٰذا یہ نہ کہا جائے گا کہ یہ کیسے ہوسکتا ہے کہ ایک چیز جائز بھی ہو اور منع بھی ہو، اس لئے کہ یہاں جواز و عدم جواز کی جہات بدل گئیں لہٰذا تناقض نہ پایا جائے گا کیونکہ وجودِ تناقض کے لئے اتحاد جہات ضروری ہے جیسا کہ کتب منطق میں مذکور ہے۔ یہاں غور کیجئے اصل کے اعتبار سے انگوٹھی دونوں ہاتھوں میں پہننی جائز ہے، اس میں کوئی قباحت نہیں لیکن چونکہ روافض دائیں ہاتھ میں انگوٹھی پہنتے ہیں لہٰذا ان کی مشابہت سے بچنے کے لئے دائیں ہاتھ میں انگوٹھی نہ پہنے۔ لہٰذا اگر وہ اس معمول کو چھوڑ دیں تو پھر دائیں ہاتھ میں بھی پہن سکتا ہے۔ مترجم) اور اس کے علاوہ یہ بھی ہے کہ اس مسئلہ کا انتساب صرف علامہ قہستانی ہی کی طرف نہیں (جیسا کہ ظاہر ہے) لہٰذا یہ مسئلہ...

1 درمختار کتاب الحظر والاباحة فصل فی اللبس مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۲۴۰ 2 درمختار کتاب الحظر والاباحة فصل فی اللبس مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۲۴۰

[Left Column - Arabic/Urdu Mix] ...the people of rebellion is nothing, because authentic transmission from the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) denies that (End of quote). And to complete it, I say: There is nothing more in it than this, rather he mentioned two narrations explaining his statement 'the narrations have differed'. However, in al-Mirqat from Sharh al-Sunnah by Imam al-Baghawi, under the Hadith from the Sahihayn (Bukhari and Muslim) narrated by Ibn Umar (may Allah be pleased with them both), who said: 'The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) took a ring of gold and placed it on his right hand, then he threw it away...' This Hadith contains two matters in which the command changed afterwards: First, wearing a gold ring, and the ruling regarding it became prohibition for men. Second, wearing the ring on the right hand, and the final practice of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) was wearing it on the left hand (2). And only the final action of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) is followed. And Allah Almighty knows best.

[Right Column - Urdu] It is narrated from other scholars besides Quhistani, therefore what was said in its explanation 'Sh' has been defended. Then, it is stated in Durr-e-Mukhtar, I say: (I, the author of Durr-e-Mukhtar, say) perhaps in previous times this was the hallmark of the Rafidites, so now it is no longer their hallmark (therefore look carefully and think). 'Sh' (the commentator) said, meaning wearing a ring on the right hand was a hallmark of the Rafidites in the past and that has ended, so now there is no prohibition due to the removal of the cause of confusion. And in Ghayat-ul-Bayan, it is mentioned that Faqih Abu al-Layth al-Samarqandi (may Allah have mercy on him) in the commentary of Jami' al-Saghir declared wearing a ring on the right and left hands as equally permissible, and this is the truth because various narrations are reported from the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny) on this chapter. And the statement of some that wearing a ring on the right hand is a sign of rebels holds no truth or weight, because its authentic transmission from the Prophet (peace and blessings be upon him) denies it. The text is complete and the full detail is present in it. I say: (I say) there is nothing more than this in it, rather the author mentioned two narrations to clarify his statement (the narrations have differed). However, in Sharh Mishkat by Mulla Ali Qari, with reference to Imam al-Baghawi's Sharh al-Sunnah, regarding the Hadith of Bukhari and Muslim narrated on the authority of Hazrat Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them both), under which...

[Footnotes] 1. Rad al-Muhtar, Kitab al-Hazr wal-Ibahah, Section on Clothing, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/230. 2. Mirqat al-Mafatih, Kitab al-Libas, Chapter on the Ring, Hadith 4383, Maktabah Habibiyah, Quetta, 8/177.

[बायां कॉलम - अरबी/उर्दू मिश्रण] ...विद्रोहियों की बात कुछ भी नहीं है, क्योंकि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से प्रामाणिक रिवायत इसका खंडन करती है (समाप्त)। और इसकी पूर्णता में मैं कहता हूँ: इसमें इसके अलावा और कुछ नहीं है, बल्कि उन्होंने अपने कथन 'रिवायतें भिन्न हैं' की व्याख्या के लिए दो रिवायतें ज़िक्र की हैं। लेकिन इमाम बग़वी की 'शर्ह अस-सुन्ना' से उद्धृत 'अल-मिरक़ात' में, इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस के तहत, उन्होंने कहा: 'नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सोने की एक अंगूठी ली और उसे अपने दाहिने हाथ में पहना, फिर उसे फेंक दिया...' इस हदीस में दो बातें शामिल हैं जिनमें बाद में आदेश बदल गया: पहला, सोने की अंगूठी पहनना, और पुरुषों के लिए इसका हुक्म हराम (वर्जित) हो गया। दूसरा, दाहिने हाथ में अंगूठी पहनना, और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का अंतिम कार्य इसे बाएं हाथ में पहनना था (2)। और केवल बाद वाले कार्य को ही अपनाया जाता है, अतः नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का अंतिम कार्य ही मान्य है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[दायां कॉलम - उर्दू] कुहिस्तानी के अलावा अन्य विद्वानों से भी उद्धृत है, इसलिए इसकी व्याख्या 'श' में जो कुछ कहा गया है उसका बचाव हो गया है। और फिर इसके बाद 'दुर्रे मुख्तार' में है, मैं (मुसन्निफ़) कहता हूँ: शायद पिछले ज़माने में यह राफ़ज़ियों का चिन्ह था, इसलिए अब यह उनका चिन्ह नहीं रहा (अतः ध्यान से देखें और सोचें)। 'श' (व्याख्याकार) ने कहा कि दाएं हाथ में अंगूठी पहनना बीते समय में राफ़ज़ियों का चिन्ह था और वह समाप्त हो गया है, इसलिए अब भ्रम का कारण समाप्त हो जाने के कारण कोई मनाही नहीं रही। और 'ग़ायतुल बयान' में है कि फ़क़ीह अबुल लैस समरकंदी (रहमतुल्लाह अलैह) ने 'शर्ह जामिया सग़ीर' में दाएं और बाएं दोनों हाथों में अंगूठी पहनने को समान रूप से जायज़ करार दिया है, और यही सत्य है क्योंकि इस विषय में हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से विभिन्न रिवायतें वर्णित हैं। और कुछ लोगों का यह कहना कि दाएं हाथ में अंगूठी पहनना विद्रोहियों की निशानी है, अपने आप में कोई सच्चाई या वज़न नहीं रखता, क्योंकि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से प्रामाणिक रूप से वर्णित होना इसका खंडन करता है। इबारत पूरी हुई और इसमें पूरा विवरण मौजूद है। मैं कहता हूँ: इसमें इससे अधिक कुछ नहीं है, बल्कि लेखक ने अपने कथन (रिवायतें भिन्न हैं) को स्पष्ट करने के लिए दो रिवायतें ज़िक्र की हैं। लेकिन मुल्ला अली क़ारी की 'शर्ह मिश्कात' में इमाम बग़वी की 'शर्ह अस-सुन्ना' के हवाले से बुख़ारी

और मुस्लिम की हदीस, जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की सनद से वर्णित है, उसके तहत...

[पादलेख] 1. रद अल-मुह्तार, किताब अल-हज़्र वल-इबाहह, लिबास का अध्याय, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 5/230। 2. मिरक़ात अल-मफ़ातीह, किताब अल-लिबास, अंगूठी का अध्याय, हदीस 4383, मकतबा हबीबिया, क्वेटा, 8/177।

पृष्ठ 548/720

[بایاں کالم] اہل البغی لیس بشیئ لان النقل الصحیح عن رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ینفی ذلک اھ وتمامہ فیہ اقول: لیس فیہ زیادۃ علی ھذا بل ذکر روایتین بیانا لقولہ قداختلف الروایات لکن فی المرقاۃ عن شرح السنۃ للامام البغوی تحت حدیث الصحیحین عن ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما قال اتخذ النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم خاتماً من ذھب وجعلہ فی یدہ الیمنی ثم القاہ الحدیث، ھذا الحدیث یشتمل علی امرین تبدل الامر فیھما من بعد، احدھما لبس خاتم الذھب، وصار الحکم فیہ ای التحریم فی حق الرجال، وثانیھما لبس الخاتم فی الیمین وکان آخر الامرین من النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم لبسہ فی الیسار ۲ اھ وانما یؤخذ بالآخر فالاخر من فعلہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

[دایاں کالم] قہستانی کے علاوہ دوسرے اہل علم سے بھی منقول ہے، لہذا اس کی شرح "ش" میں جو کچھ کہا گیا اس کا دفاع ہو گیا ہے۔ اور پھر اس کے بعد در مختار میں ہے اقول: (میں مصنفِ در مختار کہتا ہوں) شاید یہ زمانہ سابقہ میں شعارِ روافض تھا لہذا اب ان کا شعار نہیں رہا (لہذا غور سے دیکھئے اور سوچئے) ش (شارح) نے فرمایا یعنی دائیں ہاتھ میں انگوٹھی پہننا گزشتہ زمانے میں رافضیوں کا شعار تھا اور وہ ختم ہو گیا ہے لہذا اب وجہِ اشتباہ زائل ہو جانے کی بنا پر ممانعت نہ رہی۔ اور غایۃ البیان میں ہے کہ فقیہ ابواللیث سمرقندی رحمۃ اللہ علیہ نے شرح جامع صغیر میں دائیں اور بائیں ہاتھ میں انگوٹھی پہننے کو یکساں طور پر جائز قرار دیا ہے، اور یہی حق ہے کیونکہ اس باب میں حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم سے مختلف روایات مروی ہیں۔ اور بعض کا یہ کہنا کہ دائیں ہاتھ میں انگوٹھی پہننا باغیوں کی علامت ہے اپنے اندر کچھ حقیقت اور وزن نہیں رکھتا، کیونکہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام سے صحیح طور پر منقول ہونا اس کی نفی کرتا۔ عبارت مکمل ہوگئی اور پوری تفصیل اس میں موجود۔ اقول: (میں کہتا ہوں) اس

میں اس سے زائد نہیں، بلکہ موصوف نے دوروایتیں اپنے قول (قد اختلف الروایات) کی وضاحت کے لئے ذکر فرمائیں۔ لیکن شرح مشکوٰۃ ملا علی قاری میں امام بغوی کی شرح السنۃ کے حوالے سے بخاری اور مسلم کی حدیث جو حضرت عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کی سند سے مروی ہے اس کے ذیل میں

[حواشی] 1. رد المحتار کتاب الحظر والاباحۃ فصل فی اللبس داراحیاء التراث العربی بیروت ۵ / ۲۳۰ 2. مرقاۃ المفاتیح کتاب اللباس باب الخاتم حدیث ۴۳۸۳ مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۸ / ۱۷۷

Fatawa Rizvia Volume 24

It was stated that the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) had a gold ring made, wore it on his right hand, and then discarded it (as per the Hadith). This Hadith encompasses two points, both of which subsequently saw a change in command. One of them is the wearing of a gold ring; the change in its ruling is that gold became prohibited for men. The second point is wearing the ring on the right hand. However, the final practice (action) of the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) recorded in books of narrations is that he wore the ring on his left hand. (And the principle is that) the final action of the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) is taken as the standard (i.e., it is acted upon), and his final action was that he wore the ring on his left hand. And Allah Almighty knows best. (T)

Issue 19: In certain eras and cities, a specific cap was part of the dress of the Rafizis. Scholars stated that wearing it is a sin. It is mentioned in 'Minh al-Rawd': "Wearing the crown of the Rafidah is macrooh tahreemi (highly disliked to the point of being forbidden), even if it is not disbelief (kufr), based on the absence of a verdict of disbelief against them, and because of the saying of the Prophet (may Allah Almighty bless him and grant him peace): 'Whoever imitates a people is one of them.'" [1] Wearing the cap of the Rafizis is macrooh tahreemi, even though it is not disbelief, because their takfeer (declaring them disbelievers) is not reported. (The reason for the dislike is that) the Prophet (peace and blessings be upon him) said: "Whoever imitates a people is (in reality) among them." (T)

Issue 20: This was imitation of a rejected woman or a misguided person; then, God forbid, the wickedness of imitating disbelievers is even greater. The Imams of the religion have stated that wearing a Magian (fire-worshipper) cap without Sharia necessity is disbelief, even if worn in jest. If someone wears it and, when objected to, says, "As long as the heart is upright, the style of clothing doesn't matter," he becomes a disbeliever because he has rejected the commands of Sharia. In 'Khizanat al-Muftin', it is stated: "If he places a Magian cap on his head, the most correct view is that he becomes a disbeliever." [2] When someone places the cap of fire-worshippers on his head, the more correct view is that he becomes a disbeliever. (T)

Extracted, then in 'Minh al-Rawd' it is:

1. Minh al-Rawd al-Azhar Sharh al-Fiqh al-Akbar, Section on Disbelief explicitly and implicitly, Mustafa al-Babi, Egypt, p. 185.

2. Khizanat al-Muftin, Section on Words of Disbelief, Manuscript 1/201.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

इरशाद फ़रमाया हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने सोने की अंगूठी बनवाई फिर उसे अपने दाएं हाथ में पहना फिर उसे फेंक दिया (अल-हदीस), और यह हदीस दो बातों पर मुश्तमिल है, फिर उसके बाद दोनों में अम्र तब्दील हो गया, इन दोनों में से एक यह है कि सोने की अंगूठी पहनी, इसमें हुक्म की तब्दीली इस तरह हुई कि सोना मर्दों के हक़ में हराम हो गया, दूसरी बात यह है कि दाएं हाथ में अंगूठी पहनी। लेकिन हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम का आख़िरी अम्र (तर्ज़े-अमल) कुतुबे-रिवायत में यह आया है कि आपने बाएं हाथ में अंगूठी पहनी अह (और उसूल यह है कि) हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के आख़िरी अमल को लिया जाता है (यानी उस पर अमल किया जाता है) और आपका आख़िरी अमल यही है कि आपने बाएं हाथ में अंगूठी पहनी। वल्लाहु तआला आलम। (त)

मसला 19: बाज़ अअसार व अमसार में एक टोपी लिबासे-रवाफ़िज़ थी उलमा ने फ़रमाया इसका पहनना गुनाह है 'मिन्हुर-रौज़' में है: "राफ़िज़ियों का ताज (टोपी) पहनना मकरूहे-तहरीमी है अगरचे कुफ़्र नहीं, इस वजह से कि उनकी तकफ़ीर मरवी नहीं और इसलिए कि नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: जो किसी क़ौम से मुशाबहत इख़्तियार करे वो उन्हीं में से है।" - 1 राफ़िज़ियों की टोपी पहनना मकरूहे-तहरीमी है अगरचे कुफ़्र नहीं, इस वजह से कि उनकी तकफ़ीर मरवी नहीं (और कराहत की वजह यह है कि) हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया जो किसी क़ौम से मुशाबहत इख़्तियार करे वह (दर हक़ीक़त) उन्हीं में से है। (त)

मसला 20: यह तो मरदूद औरत की मुशाबहत थी या गुमराह से फिर माज़अल्लाह इसकी ख़बासत का शुमार जिसमें कुफ़्फ़ार से मुशाबहत हो, आइम्मा-ए-दीन ने फ़रमाया बिला ज़रूरत-ए-शरई मजूस की टोपी पहननी कुफ़्र है अगरचे हंसी से पहने और अगर कोई पहने और उस पर एतराज़ हो तो कहे, 'दिल मुस्तक़ीम चाहिए कपड़ा किसी वज़अ का हो', वह काफ़िर हो जाएगा कि उसने अहकामे-शरियत को रद्द किया। 'ख़ज़ानतुल-मुफ़्तीन' में है: "अगर किसी ने अपने सर पर मजूसियों की टोपी रखी तो ज़्यादा सही यह है कि वह काफ़िर हो जाएगा।" - 2 जब कोई शख़्स अपने सर पर आतिश-परस्तों की टोपी रखे तो ज़्यादा सही यह है कि वह काफ़िर हो जाएगा। (त)

मुल्तक़त फिर मिन्हुर-रौज़ में है:

1. मिन्हुर-रौज़ुल-अज़हर शरह अल-फ़िक़हुल-अकबर, फ़स्ल फ़िल-कुफ़्र सरीहन व किनायतन, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, पृ. 185

2. ख़ज़ानतुल-मुफ़्तीन, फ़स्ल फ़िल-अलफ़ाज़ अल-कुफ़्र, क़लमी नुस्ख़ा 1/ 201

पृष्ठ 549/720

ارشاد فرمایا حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے سونے کی انگوٹھی بنوائی پھر اسے اپنے دائیں ہاتھ میں پہنا پھر اسے پھینک دیا (الحدیث)، اور یہ حدیث دو باتوں پر مشتمل ہے، پھر اس کے بعد دونوں میں امر تبدیل ہو گیا، ان دونوں میں سے ایک یہ ہے کہ سونے کی انگوٹھی پہنی، اس میں حکم کی تبدیلی اس طرح ہوئی کہ سونا مردوں کے حق میں حرام ہو گیا، دوسری بات یہ ہے کہ دائیں ہاتھ میں انگوٹھی پہنی۔ لیکن حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کا آخری امر (طرزِ عمل) کتبِ روایات میں یہ آیا ہے کہ آپ نے بائیں ہاتھ میں انگوٹھی پہنی اھ (اور اصول یہ ہے کہ) حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کے آخری عمل کو لیا جاتا ہے (یعنی اس پر عمل کیا جاتا ہے) اور آپ کا آخری عمل یہی ہے کہ آپ نے بائیں ہاتھ میں انگوٹھی پہنی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۹: بعض اعصار وامصار میں ایک ٹوپی لباسِ روافض تھی علماء نے فرمایا اس کا پہننا گناہ ہے منح الروض میں ہے: لبس تاج الرفضۃ مکروہ کراھۃ تحریم وان لم یکن کفرا بناء علی عدم تکفیرھم لقولہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم من تشبہ بقوم فھو منھم - 1 رافضیوں کی ٹوپی پہننا مکروہِ تحریمی ہے اگرچہ کفر نہیں، اس وجہ سے کہ ان کی تکفیر مروی نہیں (اور کراہت کی وجہ یہ ہے کہ) حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے ارشاد فرمایا جو کسی قوم سے مشابہت اختیار کرے وہ (در حقیقت) اُن ہی میں سے ہے (ت)

مسئلہ ۲۰: یہ تو مردود عورت کا تشبہ تھا یا گمراہ سے پھر معاذ اللہ اس کی خباثت کا شمار جس میں کفار سے تشبہ ہو، ائمہ دین نے فرمایا بلا ضرورت شرعیہ مجوس کی ٹوپی پہننی کفر ہے اگرچہ ہنسی سے پہنے اور اگر کوئی پہنے اور اس پر اعتراض ہو تو کہے، دل مستقیم چاہے کپڑا کسی وضع کا ہو، وہ کافر ہو جائے گا کہ اس نے احکام شریعت کو رد کیا۔ خزانۃ المفتین میں ہے:

اذا وضع قلنسوۃ مجوس علی راسہ الاصح انہ یکفر - 2 جب کوئی شخص اپنے سر پر آتش پرستوں کی ٹوپی رکھے تو زیادہ صحیح یہ ہے کہ وہ کافر ہو جائے گا۔ (ت)

ملتقط پھر منح الروض میں ہے:

1 منح الروض الازہر شرح الفقہ الاکبر فصل فی الکفر صریحاً و کنایۃً مصطفی البابی مصر ص ۱۸۵ 2 خزانۃ المفتین فصل فی الالفاظ الکفر قلمی نسخہ ۱/ ۲۰۱

Fatawa Razawiya Volume 24

Wearing the cap of the Magians (fire-worshippers), whether done seriously or in jest, makes one a disbeliever, unless it is done as a ruse in war to deceive the infidels. (T)

In the same source, from the Fatawa of Imam Zahir al-Din al-Marghinani: Whoever places the cap of the Magians on his head and, when asked why, replies, 'The heart should be upright,' has committed disbelief. It is stated that the reason for his disbelief is that he invalidated and rejected the manifest ruling of the Shari'ah. (T)

Problem 21: It is forbidden to wear the cap of the infidels or to tie a scarf in that shape on the head, to the extent that some Imams have ruled it as disbelief. It is mentioned in Jami' al-Fusulayn: To make one's scarf resemble the cap of the Magians and place it on the head is disbelief according to some scholars, though most of them do not hold this view. (T)

Problem 22 and 23: Applying a religious mark (tilak) on the forehead or placing a cross on the shoulder is disbelief. In Manh al-Rawd: If someone places a chain (cross) on their shoulder, they have committed disbelief, provided they were not coerced. In the same work, quoting Fatawa al-Multaqat: Whether the chain is placed seriously or in jest, in both cases, the person becomes a disbeliever, unless it is done as a deception in war.

Footnotes: 1 Manh al-Rawd al-Azhar Sharh al-Fiqh al-Akbar, Chapter on Disbelief, Explicit and Implicit, Mustafa al-Babi Egypt, p. 185 2 Manh al-Rawd al-Azhar Sharh al-Fiqh al-Akbar, Chapter on Disbelief, Explicit and Implicit, Mustafa al-Babi Egypt, p. 185 3 Jami' al-Fusulayn, Chapter Eight, on issues regarding words of disbelief, Islami Kutub Khana Karachi, 12/312 4 Manh al-Rawd al-Azhar Sharh al-Fiqh al-Akbar, Chapter on Disbelief, Explicit and Implicit, Mustafa al-Babi Egypt, p. 185 5 Manh al-Rawd al-Azhar Sharh al-Fiqh al-Akbar, Chapter on Disbelief, Explicit and Implicit, Mustafa al-Babi Egypt, p. 185

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

मजूसियों (अग्नि-पूजकों) की टोपी पहनना, चाहे वह गंभीरता से किया गया हो या मज़ाक में, व्यक्ति को काफ़िर बना देता है, सिवाय इसके कि जब युद्ध में काफ़िरों को धोखा देने के लिए ऐसा किया जाए। (त)

इसी में इमाम ज़हीर उद्दीन मरग़ीनानी के फ़तावा से है: जिस किसी ने अपने सिर पर मजूसियों की टोपी रखी, फिर उससे पूछा गया (तूने ऐसा क्यों किया), तो उसने कहा 'दिल सीधा होना चाहिए', तो वह काफ़िर हो गया। फ़रमाया गया (यानी उसके कुफ़्र का कारण यह है कि) उसने शरीयत के ज़ाहिरी हुक्म को बातिल करार दिया और उसका रद किया। (त)

मसला 21: काफ़िरों की टोपी पहनना या सिर पर उस शक्ल में रुमाल बाँधना भी हराम है, यहाँ तक कि कुछ इमामों ने इस सूरत में कुफ़्र का हुक्म दिया है। जामे-उल-फ़ुसूलैन में है: अपने रुमाल को मजूसियों की टोपी के समान बनाना और उसे सिर पर रखना अइम्मा किराम के नज़दीक कुफ़्र है, लेकिन अक्सर अइम्मा के नज़दीक ऐसा नहीं है। (त)

मसला 22 और 23: माथे पर कशका (तिलक) लगाना या कंधे पर सलीब (क्रॉस) रखना कुफ़्र है। मन्ह-उर-रौज़ में है: यदि किसी ने अपने कंधे पर ज़ंजीर (सलीब के तौर पर) रखी तो वह काफ़िर हो गया, बशर्ते कि उसे मजबूर न किया गया हो। और इसी में (मन्ह-उर-रौज़) फ़तावा मुल्तकत के हवाले से है: ज़ंजीर चाहे संजीदगी से रखी हो या हँसी-मज़ाक में, दोनों सूरतों में व्यक्ति काफ़िर हो जाता है, जब तक कि जंग में चाल के रूप में न किया गया हो।

फुटनोट्स: 1 मन्ह-उर-रौज़ अल-अज़हर शरह फ़िक्ह अल-अकबर, फ़स्ल फ़ील कुफ़्र सरीहन व कनायतन, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, पृ. 185 2 मन्ह-उर-रौज़ अल-अज़हर शरह फ़िक्ह अल-अकबर, फ़स्ल फ़ील कुफ़्र सरीहन व कनायतन, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, पृ. 185 3 जामे-उल-फ़ुसूलैन, फ़स्ल आठवां, कुफ़्र के शब्दों के मसलों में, इस्लामी कुतुब ख़ाना कराची, 12/312 4 मन्ह-उर-रौज़ अल-अज़हर शरह फ़िक्ह अल-अकबर, फ़स्ल फ़ील कुफ़्र सरीहन व कनायतन, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, पृ. 185 5 मन्ह-उर-रौज़ अल-अज़हर शरह फ़िक्ह अल-अकबर, फ़स्ल फ़ील कुफ़्र सरीहन व कनायतन, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, पृ. 185

पृष्ठ 550 का 720

لبس قلنسوة المجوس جادا او ہازلا یکفر الا اذا فعل خدیعة في الحرب 1۔ آتش پرستوں کی ٹوپی پہنی خواہ سنجیدگی سے ایسا کیا خواہ ہنسی مذاق سے۔ دونوں صورتوں میں کافر ہوگیا مگر جبکہ جنگ میں کفار کو فریب دینے کے لئے ایسا کیا (ت)

اسی میں فتاوٰی امام ظہیر الدین مرغینانی سے ہے: من وضع قلنسوة المجوس علی راسه فقیل له فقال ینبغی ان یکون القلب سویا کفر" قال ای لانه ابطل حکم ظواهر الشریعة 2۔ جس نے اپنے سر پر آتش پرستوں کی ٹوپی رکھی، پھر اس سے کہا گیا (تو نے ایسا کیوں کیا) تو اس نے کہا دل سیدھا ہونا چاہئے۔ تو وہ کافر ہو گیا فرمایا (یعنی اس کے کفر کی وجہ یہ ہے کہ) اس نے ظاہر شریعت کے حکم کو باطل قرار دیا اور اس کا رد کیا۔ (ت)

مسئلہ ۲۱: وضع کفار کی ٹوپی، الگ رومال اس شکل پر بنا کر سر پر رکھنا بھی حرام ہے یہاں تک کہ بعض ائمہ نے اس صورت میں حکم کفر دیا۔ جامع الفصولین میں ہے : جعل مندیله یشبه قلنسوة المجوسی ووضعه علی راسه کفر، لاعند اکثرهم 3۔ آتش پرستوں کی ٹوپی کے مشابہ رومال بنا کر اپنے سر پر رکھا تو ائمہ کرام کے نزدیک کافر ہو گیا لیکن اکثر ائمہ کے نزدیک ایسا نہیں۔ (ت)

مسئلہ ۲۲ و ۲۳: ماتھے پر قشقہ تلک لگانا یا کندھے پر صلیب رکھنا کفر ہے، وفی منح الروض، لو وضع الغل علی کتفه فقد کفر اذا لم یکن مکرها 4 وفیه عن الملتقط، اخذ الغل جادا او ہازلا لا یکفر الا اذا فعل خدیعة فی الحرب 5 اھا قول: وھذا منح الروض میں ہے اگر کسی نے اپنے کندھے پر زنجیر (صلیب) رکھی تو کافر ہو گیا بشرطیکہ مجبور نہ کیا گیا ہو، اور اسی (منح الروض) میں فتاوٰی

ملتقط کے حوالے سے ہے۔ زنجیر خواہ سنجیدگی سے رکھی یا ہنسی مذاق سے، دونوں صورتوں میں کافر ہو جاتا ہے، جب تک کہ جنگ میں کفار کو فریب دینے کے لئے ایسا نہ کیا ہو۔

1 منح الروض الازہر شرح فقہ الاکبر فصل فی الکفر صریحاً و کنایةً مصطفی البابی مصر ص ۱۸۵

2 منح الروض الازہر شرح فقہ الاکبر فصل فی الکفر صریحاً و کنایةً مصطفی البابی مصر ص ۱۸۵

3 جامع الفصولین الفصل الثامن في مسائل کلمات الکفر اسلامی کتب خانہ کراچی ۱۲/ ۳۱۲ 4 منح الروض الازہر شرح فقہ الاکبر فصل فی الکفر صریحاً و کنایةً مصطفی البابی مصر ص ۱۸۵ 5 منح الروض الازہر شرح فقہ الاکبر فصل فی الکفر صریحاً و کنایةً مصطفی البابی مصر ص ۱۸۵

Fatawa Razawiyyah, Volume 22

...something not known in our lands, and the wording of Jami' al-Fusulayn is: 'placing a cross on his shoulder is disbelief (kufr)'. This is clear, so perhaps what is in al-Minh is a scribal error. And Allah Almighty knows best. Urdu: ...except if done to deceive the disbelievers in war (then there is leeway). I say: (The meaning of 'ghul' is a chain) and this meaning is not prevalent in our cities. The words of Jami' al-Fusulayn are: "If someone placed a cross on his shoulder, he undoubtedly became a disbeliever." This is clear, therefore what is mentioned in Minh al-Rawd is a clerical error. Allah Almighty knows best. (T)

Problem 24: Wearing a Zunnar is disbelief. It is in Minh al-Rawd: "If one tied a Zunnar around his waist, he has disbelieved, i.e., if he was not coerced." Urdu: If someone tied a Zunnar (a thread as a sign of disbelief) on his waist, he surely became a disbeliever, provided it was not done under compulsion. (T)

In the same work, from Multaqit: "Tying the Zunnar, whether seriously or jokingly, constitutes disbelief, except if done as a ruse in war." Urdu: Tying the Zunnar, whether done seriously or in jest, makes one a disbeliever, except when done in war to deceive the enemy (then there is some leeway). (T)

In the same work, from Muheet: "If a Muslim tied the Zunnar and entered the abode of war for trade, he disbelieved." Urdu: If a Muslim tied a Zunnar around his neck and went to the abode of war (abode of disbelief) for business, he became a disbeliever. (T)

Similarly, in Jami' al-Fusulayn, Khizanat al-Muftin, and al-Ashbah wa'n-Nazair: "Worship of an idol is disbelief, and likewise it is a ruling of disbelief if one girded himself with the Zunnar of Jews and Christians and entered their place of worship." Urdu: Idol worship is disbelief, and similarly the ruling is disbelief if someone tied the Zunnar of Jews or Christians around their neck.

Footnotes: 1 Jami' al-Fusulayn, Chapter Eight, on matters of words of disbelief, Islami Kutub Khana Karachi, 2/312 2 Minh al-Rawd al-Azhar Sharh Fiqh al-Akbar, chapter on explicit and implicit disbelief, Mustafa al-Babi Egypt, p. 185 3 Minh al-Rawd al-Azhar Sharh Fiqh al-Akbar, chapter on explicit and implicit disbelief, Mustafa al-Babi Egypt, p. 185 4 Minh al-Rawd al-Azhar Sharh Fiqh al-Akbar, chapter on explicit and implicit disbelief, Mustafa al-Babi Egypt, p. 185

फ़तावा रज़विया, जिल्द 22

...ऐसी चीज़ जो हमारे क्षेत्रों में ज्ञात नहीं है, और जामे अल-फ़ुसुलैन के शब्द हैं: 'अपने कंधे पर सलीब (क्रॉस) रखना कुफ़्र है'। यह स्पष्ट है, इसलिए शायद मिन्ह अल-रौज़ में जो है वह लेखकीय त्रुटि है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। उर्दू: ...मगर यह कि युद्ध में काफ़िरों को धोखा देने के लिए ऐसा किया (तो गुंजाइश है)। मैं कहता हूँ: (ग़ुल का अर्थ जंजीर है) और यह अर्थ हमारे शहरों में प्रचलित नहीं है। जामे अल-फ़ुसुलैन के शब्द यह हैं: "किसी ने अपने कंधे पर सलीब रखी तो निस्संदेह काफ़िर हो गया।" और यह स्पष्ट है, इसलिए मिन्ह अल-रौज़ में जो कुछ उल्लेख किया गया है वह लेखन की गलती है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 24: ज़ुन्नार बांधना कुफ़्र है। मिन्ह अल-रौज़ में है: "अगर किसी ने अपनी कमर पर ज़ुन्नार बांधा तो निस्संदेह वह काफ़िर हो गया, यानी अगर उस पर ज़बरदस्ती न की गई हो।" उर्दू: अगर किसी ने अपनी कमर पर ज़ुन्नार (कुफ़्र के चिह्न वाला धागा) बांधा तो बेशक काफ़िर हो गया बशर्ते कि उस पर ज़बरदस्ती न की गई हो। (त)

इसी में मुल्तक़ित से है: "ज़ुन्नार बांधना चाहे गंभीरता से हो या मज़ाक में, कुफ़्र है, सिवाय इसके कि युद्ध में धोखा देने के लिए किया जाए।" उर्दू: ज़ुन्नार बांधना चाहे गंभीरता से ऐसा किया या हँसी-मज़ाक में, तो काफ़िर हो गया, लेकिन जब युद्ध में दुश्मन को धोखे में डालने के लिए ऐसा किया (तो कुछ हद तक गुंजाइश है)। (त)

इसी में मुहीत से है: "यदि किसी मुसलमान ने ज़ुन्नार बांधा और व्यापार के लिए दार-अल-हर्ब (काफ़िरों के देश) में गया, तो वह काफ़िर हो गया।" उर्दू: अगर किसी मुसलमान ने ज़ुन्नार गले में बांधा और दार-अल-हर्ब (कुफ़्र का घर) में व्यापार के लिए गया तो काफ़िर हो गया। (त)

इसी तरह जामे अल-फ़ुसुलैन, ख़ज़ाना-तुल-मुफ़्तीं और अल-अशबाह वन-नज़ैर में है: "मूर्ति की पूजा कुफ़्र है, और इसी तरह कुफ़्र का हुक्म है अगर किसी ने यहूदियों या ईसाइयों का ज़ुन्नार बांधा और उनके पूजा स्थल में प्रवेश किया।" उर्दू: मूर्ति की पूजा कुफ़्र है, और इसी तरह कुफ़्र का हुक्म है अगर किसी ने यहूदियों या ईसाइयों का ज़ुन्नार गले में बांधा।

पादलेख (Footnotes): 1 जामे अल-फ़ुसुलैन, आठवां अध्याय, कुफ़्र के शब्दों के मसलों में, इस्लामी कुतुब खाना कराची, 2/312 2 मिन्ह अल-रौज़ अल-अज़हर शरह फ़िक़्ह अल-अकबर, स्पष्ट और सांकेतिक कुफ़्र का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, पृ. 185 3 मिन्ह अल-रौज़ अल-अज़हर शरह

फ़िक़्ह अल-अकबर, स्पष्ट और सांकेतिक कुफ़्र का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, पृ. 185 4 मिन्ह अल-रौज़ अल-अज़हर शरह फ़िक़्ह अल-अकबर, स्पष्ट और सांकेतिक कुफ़्र का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, पृ. 185

شیئ لا یعرف في دیارنا ولفظ جامع الفصولین وضع صلیبا علی کتفه کفر اه وهذا واضح فلعل ما في المنح تصحیف۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ ہو گیا مگر یہ کہ جنگ میں کفار کو مغالطہ دینے کے لئے ایسا کیا (تو گنجائش ہے) اھ اقول: (میں کہتا ہوں) (غل کے معنی زنجیر ہیں) اور یہ اس معنی میں ہمارے شہروں میں متعارف نہیں۔ اور جامع الفصولین کے الفاظ یہ ہیں "کسی نے اپنے کندھے پر صلیب رکھی تو بلاشبہ کافر ہوگیا اور یہ واضح ہے، لہذا منح الروض میں جو کچھ مذکور ہوا وہ کتابت کی غلطی ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۲۴: زنار باندھنا کفر ہے۔ منح الروض میں ہے: لو شد الزنار علی وسطه فقد کفر ای اذا لم یکن مکرھا۔ اگر کسی نے اپنی کمر پر زنار (علامتِ کفر کا دھاگا) باندھا تو بیشک کافر ہوگیا بشرطیکہ اس پر زبردستی نہ کی گئی ہو۔ (ت)

اسی میں ملتقط سے ہے: شد الزنار جادا او ھازلا لا یکفر الا اذا فعل خدیعة في الحرب۔ زنار باندھا خواہ سنجیدگی سے ایسا کیا یا ہنسی مذاق سے، تو کافر ہو گیا مگر جبکہ جنگ میں دشمن کو دھوکے میں ڈالنے کے لئے ایسا کیا (تو کسی قدر گنجائش ہے) (ت)

اسی میں محیط سے ہے: ان شد المسلم الزنار ودخل دار حرب للتجارة کفر۔ اگر کسی مسلمان نے زنار گلے میں باندھا اور دارِ حرب (دار کفر) میں کاروبار کے لئے گیا تو کافر ہو گیا۔ (ت)

اسی طرح جامع الفصولین وخزانیۃ المفتین میں ہے اشباہ والنظائر میں ہے: عبادة الصنم کفر وکذا لو تزنر بزنار الیھود والنصاری دخل کنیستھم بت کی پرستش کفر ہے، اور اسی طرح حکم کفر ہے اگر کسی نے یہودیوں یا عیسائیوں کا زنار گلے میں باندھا

حواشی: ١ جامع الفصولين الفصل الثامن في مسائل كلمات الكفر اسلامی كتب خانہ كراچی ٢/ ٣١٢ ٢

منح الروض الازهر شرح فقه الاكبر فصل فی الكفر صريحا و كناية مصطفی البابی مصر ص ١٨٥ ٣

منح الروض الازهر شرح فقه الاكبر فصل فی الكفر صريحا و كناية مصطفی البابی مصر ص ١٨٥ ٤

منح الروض الازهر شرح فقه الاكبر فصل فی الكفر صريحا و كناية مصطفی البابی مصر ص ١٨٥

Fatawa Razawiyya Volume 24

- (He will become an infidel by this act) whether he enters their church or not. (T)

It is in 'Bahr-ul-Raiq': Binding a 'Zunnar' (sacred thread) around one's waist makes one an infidel, unless done as a deception in war or as a scout for the Muslims to gather information about the infidels beforehand (and one binds the Zunnar for that purpose). (T)

Issue 25: It is not even a 'Zunnar', but someone tied a piece of rope around their waist. Someone asked, "What is this?" They replied, "A Zunnar." They will become an infidel. It is stated in 'Khulasa', 'Alamgiriya', 'Bazzaziya', 'Zahiriyya', 'Jami-ul-Fusulain', 'Khizanat-ul-Muftin', etc.: - A woman tied a rope around her waist and said, "This is a Zunnar," she becomes an infidel. (Someone asked her, "What is this?" She replied, "This is a Zunnar," so she will become an infidel). (T)

It is in 'Zahiriyya' and 'Manh-ul-Rawd': "And the husband became forbidden" (that woman became prohibited for her husband, meaning she is out of the marriage contract. T). Here, there is such a difference in the physical appearance of the thing itself, but infidelity occurred just by naming it. So, where both appearance and name are present, how can the ruling of 'resemblance' (tashabbuh) be absent? In short, thinking that resemblance in one matter is negated by non-resemblance in other matters is not the way of anyone except a madman or an irreligious person. It is not the false claim of 'Zaid', the summary of which is that if there are a hundred aspects of resemblance and one is missing, resemblance will cease to exist. The value that the pure Shari'ah holds in the eyes of such people is obvious, but they have also bid farewell to human reason and civility. Would a person of Zaid's school of thought, unless he is mad, tolerate that someone wears women's clothes from head to toe—a bodice, a shirt, pleated trousers, applies henna on hands and feet—and just by wearing a cap on the head, claim there is no resemblance? That a minor difference is sufficient to dispel resemblance? Rather, what is even the need for a cap with such women's clothing?

Footnotes: 1. Al-Ashbah wa an-Naza'ir, Al-Fann ath-Thani, Kitab as-Siyar, Bab ar-Riddah, Idarat al-Qur'an Karachi, 11/295 2. Bahr-ul-Raiq, Kitab as-Siyar, Bab Ahkam al-Murtaddin, H.M. Saeed Company Karachi, 5/123 3. Fatawa Hindiyya, citing Khulasa, Kitab as-Siyar, Al-Bab ath-Thamin, Noorani Kutub Khana Peshawar, 3/777 4. Manh-ul-

Rawd al-Azhar Sharh al-Fiqh al-Akbar, الفصل في الكفر صريحا وكناية, Mustafa al-Babi Egypt, p. 185

Page 552 of 720

फ़तावा रज़विया खंड 24

• (इस कृत्य से वह काफ़िर हो जाएगा) चाहे वह उनके चर्च में जाए या न जाए। (त)

'बहर-उर-रैक' में है: कमर में 'ज़ुन्नार' (धार्मिक धागा) बांधने से व्यक्ति काफ़िर हो जाता है, जब तक कि युद्ध में काफ़िरों को धोखा देने के लिए या मुस्लिम सेना के लिए जासूसी करने हेतु पहले सूचना प्राप्त करने के लिए ऐसा न किया गया हो (और ज़ुन्नार बांध लिया हो)। (त)

मसला 25: वह ज़ुन्नार भी नहीं है, किसी ने रस्सी का एक टुकड़ा कमर से बांध लिया। किसी ने पूछा, "यह क्या है?" उसने कहा, "ज़ुन्नार।" वह काफ़िर हो जाएगा। 'खुलासा', 'आलमगीरिया', 'बज़ाज़िया', 'ज़हीरिया', 'जामि-उल-फ़ुसुलैन', 'खिज़ानत-उल-मुफ़्तीन' आदि में है: - एक महिला ने अपनी कमर में रस्सी बांधी और कहा, "यह ज़ुन्नार है," वह काफ़िर हो जाती है। (उससे पूछा गया कि यह क्या है? उसने जवाब दिया कि यह ज़ुन्नार है, इसलिए वह काफ़िर हो जाएगी)। (त)

'ज़हीरिया' और 'मन्ह-उल-रौद' में है: "और पति हराम हो गया" (उस महिला पर पति हराम हो गया, यानी वह निकाह से बाहर हो गई। त)। यहाँ तो स्वयं उस चीज़ की भौतिक बनावट में कितना अंतर है, लेकिन केवल नाम देने से कुफ़्र (अविश्वास) आ गया। तो जहाँ रूप और नाम दोनों मौजूद हों, वहाँ 'तशब्बुह' (समानता) का नियम कैसे अनुपस्थित हो सकता है? संक्षेप में, यह सोचना कि एक बात में समानता अन्य बातों में समानता न होने से दूर हो जाती है, किसी पागल या धर्महीन व्यक्ति के अलावा किसी का काम नहीं हो सकता। यह 'ज़ैद' का निराधार दावा है, जिसका सार यह है कि यदि समानता के सौ पहलू हों और एक न हो, तो समानता नहीं रहेगी। ऐसे लोगों की नज़र में शरीयत-ए-मुतहरा की जो कद्र है वह स्पष्ट है, लेकिन उन्होंने मानवीय बुद्धि और सभ्यता को भी विदा कर दिया है। क्या ज़ैद जैसी विचारधारा वाला व्यक्ति, जब तक कि वह पागल न हो, यह स्वीकार करेगा कि कोई सिर से पाँव तक महिलाओं के कपड़े—अंगिया, कुर्ती, कलियों वाले पाँचे—पहने, हाथों और पैरों में मेहंदी रचाए और सिर्फ सिर पर टोपी रख लेने से कहे कि समानता नहीं रही? कि एक मामूली सा अंतर समानता को दूर करने के लिए काफी है? बल्कि, ऐसे महिलाओं के कपड़ों के साथ टोपी की भी क्या आवश्यकता है?

फुटनोट: 1. अल-अशबाह व अन-नज़ैर, अल-फ़न अत-थानी, किताब अस-सियर, बाब अर-रिद्दा, इदारत अल-कुरान कराची, 11/295 2. बहर-उर-रैक, किताब अस-सियर, बाब अहकाम अल-मुर्तद्दीन, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 5/123 3. फ़तावा हिन्दिया, ब-हवाला खुलासा, किताब अस-

सियर, अल-बाब अत-तामिम, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 3/777 4. मन्ह-उल-रौद अल-अज़हर शरह अल-फ़िक्ह अल-अकबर, الفصل في الكفر صريحا وكناية, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, पृ. 185

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

اولم یدخل ۱۔ (تو اس حرکت سے کافر ہو جائے گا) خواہ ان کے گرجے میں جائے یا نہ جائے۔ (ت)

بحر الرائق میں ہے: یکفر بشد الزنار في وسطه الا اذا فعل ذلك خدیعة في الحرب وطلیعة للمسلمین ۲۔ کمر میں زنار باندھنے سے کافر ہو جائے گا مگر جبکہ جنگ میں کفار کو مغالطہ اور دھوکا دینے کے لئے ایسا کرے یا لشکر اسلام سے کفار کے حالات معلوم کرنے کے لئے پہلے جائے (اور زنار باندھ لے)۔ (ت)

مسئلہ ۲۵: زنار بھی نہیں کوئی رستی کا ٹکڑا کمر سے باندھا کسی نے کہا یہ کیا ہے، کہا زنار۔ کافر ہو جائے گا۔ خلاصہ و عالمگیر یہ و بزاز یہ وظہیریہ و جامع الفصولین و خزانۃ المفتین وغیرہ میں ہے: امرأۃ شدت علی وسطھا حبلا وقالت ھذا زنار تکفر ۳۔ کسی عورت نے اپنی کمر میں کوئی رسی باندھی (تو اس سے پوچھا گیا یہ کیا ہے؟) اس نے جواب دیا یہ زنار ہے تو وہ کافر ہو جائے گی۔ (ت)

ظہیریہ و منح الروض میں ہے: وحرم الزوج ۴ (اس عورت پر شوہر حرام ہو گیا یعنی وہ نکاح سے نکل گئی۔ ت) یہاں تو خود اس چیز ہی میں مشابہت صوری میں کتنا فرق ہے مگر نام رکھنے سے کفر آیا تو جہاں صورت و نام سب موجود حکم تشبہ کیونکر مفقود۔ بالجملہ ایک بات میں تشبہ کو اور باتوں میں تشبہ نہ ہونے سے مندفع جاننا ہر گز گام نہیں مگر مجنوں یا بد دین کا ، نہ کہ زید کا ادعاء باطل ، جس کا حاصل یہ کہ سو باتیں تشبہ کی ہوں ایک نہ ہو تو تشبہ نہ رہے گا ، ایسوں کی نگاہ میں شریعت مطہرہ کی تو جو قدر ہوتی ہے بدیہی ہے مگر انسانی عقل و تہذیب کو بھی رخصت کر دیا ، کیا زید کے سے مسلک والا بشر طیکہ مجنوں نہ ہو گوارا کرے گا کہ سر سے

پاؤں تک زنانہ لباس انگیا، کرتی ، کلیوں دار پانچے، ہاتھ پاؤں میں مہندی رچائے صرف ٹوپی سر پر کھلے تشبہ نہ رہا، کہ ادنی فرق دفع تشبہ کے لئے کافی ہے بلکہ ٹوپی کی بھی کیا حاجت ہے اس زنانے کپڑے کے

حواشی: ۱ الاشباہ والنظائر الفن الثانی کتاب السیر باب الردۃ ادارۃ القرآن کراچی ۱۱ / ۲۹۵ ۲ بحر الرائق کتاب السیر باب احکام المرتدین ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۵ / ۱۲۳ ۳ فتاوٰی ہندیہ بحوالہ خلاصہ کتاب السیر الباب التاسع نورانی کتب خانہ پشاور ۳ / ۷۷۷ ۴ منح الروض الازہر شرح الفقہ الاکبر فصل فی الکفر صریحاً و کنایۃً مصطفی البابی مصر ص ۱۸۵

Fatawa Razawiya Volume 24

...along with wearing a girl's dupatta on the head and having the hair braided, would merely shaving the mustache be sufficient to remove the resemblance? Even though every sane person would consider such a man to be feminine; in fact, if his entire dress is masculine, he is armed, mounted on a horse, yet speaks while placing a finger on his nose, then surely all wise people will laugh at him and call him feminine. Against this single trait, all those clothes, weapons, and horses will be of no avail. In the ways of the disbelievers where he finds false justifications, would he also accept performing this act? After all, imitating a disbeliever is a thousand degrees superior in filth and depravity to imitating a woman. May Allah Almighty grant guidance to the Muslims. Amen! And Allah Almighty knows best.

Page 553 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

...साथ में लड़की का दुपट्टा भी सर पर ओढ़े और चोटी भी गुंधवाए, क्या मूंछों का साफ़ करना ही समानता (नक़ल) दूर करने के लिए काफ़ी होगा? हालांकि हर समझदार इंसान ऐसे व्यक्ति को जनाना ही समझेगा, बल्कि अगर सारा लिबास मर्दाना हो, हथियार लगाए घोड़े पर सवार हो और नाक पर उंगली रखकर बात करे तो यकीनन तमाम अकलमंद उस पर हंसेंगे और उसे जनाना कहेंगे। इस एक ही बात के सामने वे तमाम लिबास, हथियार और घोड़े काम न देंगे। काफ़िरों के जिस तौर-तरीके में उसे झूठी दलीलें सूझती हैं, क्या वह यह हरकत करना भी मंज़ूर करेगा? आख़िरकार काफ़िर की नक़ल करना, औरत की नक़ल करने से गंदगी और बुराई में हज़ार दर्जा ज़्यादा है। अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल मुसलमानों को हिदायत अता फ़रमाए। आमीन! और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

पेज 553 / 720

ساتھ بنت کا دوپٹہ بھی سر پر اوڑھے اور چوٹی بھی گندھوائیے، منہ کی مونچھیں ہی دفع تشبہ کو بس ہوں گی حالانکہ ہر عاقل ایسے شخص کو زنانہ جانے گا بلکہ اگر تمام لباس مردانہ ہو ہتھیار لگائے گھوڑے پر سوار ہو اور بات کرے ناک پر انگلی رکھ کر تو یقیناً تمام عقلاء اس پر ہنسیں گے اور اسے زنانہ کہیں گے ، اس ایک ہی بات کے آگے وہ تمام لباس و سلاح واسپ کام نہ دیں گے ، جس وضع کفار میں وہ جھوٹی تاویلیں سوجھیں کیا یہ حرکت کرنا بھی قبول کرے گا کہ آخر کافر سے تشبہ ، عورت سے تشبہ پر خبیث و شناعت میں ہزار درجہ فائق ہے۔ اللہ عزوجل مسلمانوں کو ہدایت فرمائے۔ آمین! واللہ تعالیٰ اعلم۔

صفحہ 553 از 720

Volume 24 Fatawa Razawiya

Hookah and Paan (Betel Leaf)

Problem 230 to 232: From Muzaffarnagar, Khatoli, submitted by Akhtar Mian, scribe, 4th Safar-ul-Muzaffar 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A Maulana resides in Khatoli who uses both hookah and paan, considers both permissible, and also states that shaving the center of the head (pan khulwana) is permissible. The matter to be investigated is what the ruling for this is according to the Quran and Hadith; please provide a detailed and reasoned response.

The Answer: (1 & 2) Betel leaf (paan) is undoubtedly permissible and has been prevalent among Muslims without objection since the era of Hazrat Sheikh-ul-Alam Farid-ud-din Ganj Shakar and Hazrat Sultan-ul-Mashaikh Nizam-ul-Millah wad-Din (may Allah be pleased with them both). Smoking hookah in a way that some do at the time of breaking fast, which impairs the senses, is haram. If it is dense and foul-smelling, it is 'makruh tanzihi' (disliked but not sinful), like eating raw garlic or onion; otherwise, it is purely permissible (mubah). (3) Shaving the middle part of the head (pan khulwana) is also permissible as long as the hair on the forehead/front is left, as stated in 'Al-Hindiyyah': "There is no harm for a man to shave the middle of his head."[1] (There is no harm if a man shaves the crown (center) of his head, and Allah knows best).

[1] Fatawa Hindiyyah, Book of Disliked Acts, Chapter 19, Noorani Kutub Khana Peshawar, 5/357. Page 554 of 720

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

हुक्का और पान

मसला 230 से 232: मुज़फ़्फ़रनगर खतौली से, सायल अख्तर मियां मुहर्रिर, 4 सफ़र-उल-मुज़फ़्फ़र 1337 हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या कहते हैं: खतौली में एक मौलवी साहब रहते हैं, वह हुक्का और पान दोनों का इस्तेमाल करते हैं और दोनों को जायज़ मानते हैं और सर के बीच के बाल मुंडवाना (सर पर पान खुलवाना) जायज़ बताते हैं। अब सवाल यह है कि कुरान और हदीस की रोशनी में इसका क्या हुक्म है; कृपया विस्तार और दलीलों के साथ जवाब लिखें।

अल-जवाब: (1 और 2) पान निस्संदेह जायज़ है और हज़रत शेख़-उल-आलम फ़रीद-उद-दीन गंज शकर और हज़रत सुल्तान-उल-मशायख़ निज़ाम-उल-मिल्लत वद-दीन (अल्लाह उन पर राज़ी हो) के ज़माने से मुसलमानों में बिना किसी ऐतराज़ के प्रचलित है। हुक्का पीना उस तरह जैसे कुछ लोग इफ़्तार के वक्त करते हैं जिससे होश-ओ-हवास ठीक नहीं रहते, हराम है। और अगर वह गाढ़ा और बदबूदार हो तो 'मकरूह तंज़ीही' है, जैसे कच्चा लहसुन और प्याज़; वरना वह खालिस मुबाह (जायज़) है। (3) सर के बीच का हिस्सा मुंडवाना भी जायज़ है जबकि माथे के बाल बाकी रखे जाएं, जैसा कि 'हिन्दिया' में है: "मर्द के लिए अपने सर के बीच का हिस्सा मुंडवाने में कोई हर्ज नहीं है।"[1] (कोई हर्ज नहीं कि मर्द अपने सर की चोटी (सेंटर) मूंड डाले, और अल्लाह बेहतर जानता है)।

[1] फ़तावा हिन्दिया, किताबुल कराहिया, बाब 19, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 5/357। पेज 554/720

حقہ و پان

مسئلہ ۲۳۰ تا ۲۳۲: از مظفر نگر کھاتولی مسئولہ اختر میاں محرر ۴ صفر المظفر ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ کھاتولی میں ایک مولوی صاحب مقیم ہیں، حقہ اور پان دونوں استعمال کرتے ہیں اور دونوں کو جائز جانتے ہیں اور سر پر پان کھلوانا جائز بتلاتے ہیں۔ اب دریافت طلب یہ امر ہے کہ اس کا حکم قرآن و حدیث سے مفصل و مدلل تحریر فرمائیے۔

الجواب: (۱ و ۲) پان بلاشبہ جائز ہے اور زمانہ حضرت شیخ العالم فریدالدین گنج شکر و حضرت سلطان المشائخ نظام الملۃ والدین علیہما الرضوان سے مسلمانوں میں بلانکیر رائج ہے، حقہ کا دم لگانا جس طرح جتال وقت افطار کرتے ہیں جس سے حواس صحیح نہیں رہتے حرام ہے اور کثیف اور بدبودار کھا جائے تو مکروہ تنزیہی، جیسے کچا لہسن اور پیاز، ورنہ مباح خالص ہے۔ (۳) سر پر پان کھلوانا بھی جائز ہے جبکہ پیشانی کے بال باقی رکھے جائیں، ہندیہ میں ہے: ولا بأس للرجل ان یحلق وسط راسہ ۱۔ (کوئی حرج نہیں کہ مرد اپنے سر کی چوٹی (سنٹر) مونڈ ڈالے، واللہ تعالی اعلم (ت))

۱۔ فتاویٰ ہندیۃ کتاب الکراھیۃ الباب التاسع عشر نورانی کتب خانہ پشاور ۵ / ۳۵۷ Page 554 of 720

Volume 24 Fatawa Rizvia

Problem 233: Submitted by Hafiz Abdul Majeed Sahab from the town of Tehsil Swar Khas, Rampur State region. On Tuesday, 10 Rabi al-Thani 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding the issue that if those who smoke hookah are included in the 'Tosha' (offering/distribution) of Shah Maulana Abdul Haqq Sahab and the People of the Cave (Ashab-e-Kahf), what problem will arise, and what is the ruling on smoking hookah in the Sharia?

The Answer: Hookahs are of three types. One is like the way scoundrels smoke at the time of Iftar in the noble Ramadan, which causes the eyes to roll up and senses to become altered; that is haram (forbidden). It is stated in the Hadith:

Arabic Text	Urdu Translation (T)
نهى رسول اللہ صلى اللہ تعالى عليہ وسلم عن مسكر و مفتر - [1]	The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) forbade the use of anything that causes intoxication or creates languidness (weakness) in the body. (T)

The second is that which careless people smoke, where care is not taken to keep it fresh and the tobacco is heavy and foul-smelling; it is Makruh Tanzihi (disliked) and contrary to what is better, like raw garlic and raw onion. It is stated in Durr al-Mukhtar:

Arabic Text	Urdu Translation (T)
الحاقاً بالثوم والبصل - [2]	It is likened to raw garlic and onion, therefore both are given the same ruling. (T)

The third is when it is kept away from foul smells and does not involve any religiously forbidden (munkar) act; it is purely permissible (mubah).

Arabic Text	Urdu Translation (T)
قال اللہ تعالىٰ: "خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا" - [3]	(It is Allah Almighty Who has created for you all that is present on the earth. (T))

There is no condition for not smoking hookah in the Tosha of the People of the Cave. However, it is a common practice regarding the Tosha of Hazrat Shah Abdul Haqq Radolvi (may his secret be sanctified) that it is not given to hookah smokers; there is no harm in this practice.

---

[1] Sunan Abi Dawud, Kitab al-Ashriba, Bab Ma Jaa fi al-Sukr, Aftab-e-Aalam Press Lahore, 2/163 [2] Durr al-Mukhtar, Kitab al-Ashriba, Matba' Mujtabai, 2/261 [3] Al-Quran al-Kareem, 2/29

खण्ड २४ फ़तावा रज़विया

मसाला २३३: हफ़िज़ अब्दुल मजीद साहब द्वारा प्रेषित, क़स्बा तहसील सवार ख़ास, रामपुर रियासत क्षेत्र। मंगलवार, १० रबी अल-थानी १३३७ हिजरी। विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि शाह मौलाना अब्दुल हक साहब और असहाब-ए-कहफ़ का जो 'तोशा' (प्रसाद/वितरण) होता है, उसमें हुक्का पीने वालों को अगर शरीक कर लिया जाए तो क्या दोष उत्पन्न होगा, और हुक्का पीना शरई शरीफ़ में क्या हुक्म रखता है?

उत्तर: हुक्के तीन प्रकार के होते हैं। एक वह जिस तरह दुष्ट लोग रमज़ान शरीफ़ में इफ़्तार के समय दम लगाते हैं जिससे आँखें चढ़ जाती हैं और होश-ओ-हवास बदल जाते हैं; वह हराम है। हदीस में है:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद (टी)
نهی رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم عن مسکر و مفتر - [1]	नबी अकरम (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) ने हर नशा लाने वाली और शरीर में सुस्ती पैदा करने वाली चीज़ के इस्तेमाल से मना फ़रमाया है। (टी)

दूसरा वह जिसे लापरवाह लोग पीते हैं जिनमें ताज़ा होने का प्रबंध नहीं होता और तंबाकू गाढ़ा और दुर्गंधयुक्त होता है; वह मकरूह तंज़ीही (नापसंद) और बेहतर के खिलाफ़ है, जैसे कच्चा लहसुन और कच्ची प्याज़। दुर्रे मुख़्तार में है:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद (टी)
الحاقاً بالثوم والبصل - [2]	इसे कच्चे लहसुन और प्याज़ के साथ जोड़ा गया है, इसलिए दोनों का एक ही हुक्म रखा गया है। (टी)

तीसरा वह कि इसे दुर्गंध से बचाया जाए और किसी शरई बुराई पर आधारित न हो; वह विशुद्ध रूप से मुबाह (अनुमेय) है।

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद (टी)
قال اللہ تعالیٰ: "خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِی الْاَرْضِ جَمِيْعًا" - [3]	(वही अल्लाह तआला है जिसने तुम्हारे लिए वह सब कुछ पैदा किया जो ज़मीन में मौजूद है। (टी))

असहाब-ए-कहफ़ के तोशा में हुक्का न पीने की कोई शर्त नहीं है, अलबत्ता हज़रत शाह अब्दुल हक रुदौलवी (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र रखे) के तोशा में यही नियम है कि हुक्का पीने वाले को न दिया जाए; इसमें कोई हर्ज़ नहीं है।

---

1. सुनन अबी दाऊद, किताब अल-अशरबा, बाब मा जा फ़िल सुक्र, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, २/१६३
2. दुर्रे मुख़्तार, किताब अल-अशरबा, मतबा मुजतबाई, २/२६१
3. अल-कुरान अल-करीम, २/२९

पृष्ठ ५५५ (७२० में से)

مسئلہ ۲۳۳: مسئولہ حافظ عبدالمجید صاحب از قصبہ تحصیل سوار خاص علاقہ ریاست رامپور۔ بروز سہ شنبہ ۱۰ ربیع الثانی ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ شاہ مولانا عبدالحق صاحب اور اصحابِ کہف کا جو توشہ ہوتا ہے اس میں حقہ پینے والوں کو اگر شریک کر لیا جائے تو کیا قباحت لازم آئے گی اور حقہ پینا شرع شریف میں کیا حکم رکھتا ہے؟

الجواب: حقے تین قسم ہیں، ایک وہ جس طرح چنڈال رمضان شریف میں افطار کے وقت دم لگاتے ہیں جس سے آنکھیں چڑھ جاتی ہیں حواس متغیر ہو جاتے ہیں وہ حرام ہے، حدیث میں ہے:

Arabic Text	Urdu Translation
نہی رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم عن مسکر و مفتر - ۱	نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے ہر نشہ آور اور جسم میں سستی پیدا کرنے والی چیز کے استعمال سے منع فرمایا ہے۔ (ت)

دوسرا وہ جسے بے احتیاط لوگ پیتے ہیں جن کے تازہ ہونے کا اہتمام نہ ہو اور تمباکو کثیف و بدبو ہو وہ مکروہ تنزیہی و خلاف اولیٰ ہے جیسے کچا لہسن اور کچی پیاز، در مختار میں ہے:

Arabic Text	Urdu Translation
الحاقاً بالثوم والبصل - ۲	اس کو کچے لہسن اور پیاز کے ساتھ الحاق کیا گیا لہذا دونوں کا ایک حکم رکھا گیا (ت)

تیسرا وہ کہ اسے بدبو سے بچایا جائے اور کسی منکرِ شرعی پر مشتمل نہ ہو وہ مباحِ خالص ہے،

Arabic Text	Urdu Translation
قال اللہ تعالیٰ: "خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا" - ۳	(وہی اللہ تعالیٰ ہے کہ جس نے تمہارے لئے وہ سب کچھ پیدا فرمایا جو زمین میں موجود ہے۔ (ت))

توشہ اصحابِ کہف میں حقہ نہ پینے کی کوئی شرط نہیں البتہ توشہ حضرت شاہ عبدالحق ردولوی قدس سرہ العزیز میں یونہی معمول ہے کہ حقہ پینے والے کو نہ دیا جائے اس میں کوئی حرج نہیں۔

---

1. سنن ابی داؤد کتاب الاشربہ باب ماجاء فی السکر آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۱۶۳
2. درمختار کتاب الاشربہ مطبع مجتبائی ۲/ ۲۶۱
3. القرآن الکریم ۲/ ۲۹

Fatawa Razawiyya Volume 24

Nor does it prove an absolute condemnation of smoking hookah. The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said regarding the burial of one of his daughters, 'Only he who did not approach his wife tonight should descend into her grave.' This does not prove a condemnation of approaching one's wife; these are specific matters of wisdom whose secrets are known to the people of spiritual insight, and Allah knows best.

Masala 244: From Gondal region, Kathiawar, Abdul Sattar bin Ismail Rizvi. Saturday, 7 Rajab 1342 AH. Is eating tobacco in betel leaf (paan) or on its own without paan permissible or not? Whether the tobacco is pure or edible fragrant tobacco made in Lucknow? Answer: Tobacco and hookah have the same ruling. Just as that is prohibited, this is also prohibited, and as that is permissible, this is also permissible. If it has a foul smell, it is disliked (makruh); otherwise, it is permissible without dislike. There is only one difference: those who eat non-fragrant tobacco and keep it pressed in their mouth, their mouth becomes filled with its foul smell such that someone talking nearby senses it. Eating tobacco in this way is not permissible because the person will offer prayer in this state, and prayer in such a state is 'Makruh-e-Tehrimi' (prohibitively disliked). This is unlike hookah, where no residue remains in the mouth and its smell is instantly removed by rinsing. And Allah knows best.

Masala 245: Asked through Adamjee Seth Atam Baig, Gondal and Kathiawar. Saturday, 1st Shaban 1342 AH. How is smoking hookah, cheroot, and bidi? Answer: Cheroot is disliked because of its association with Christians. There is no harm in bidi. Hookah, as it is commonly practiced, is permissible (mubah) but abandoning it is better (tark-e-awla).

Masala 246: From Topkhana Bazar Camp, asked by Muhammad Husain. 16 Jamadi-ul-Awwal 1346 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A traveler has come from Panipat, Karnal. He says that smoking hookah and eating paan is forbidden (haram). They will not even eat flour from the house of a person who smokes hookah and eats paan. Only those who have given up eating these things join the congregation and do not allow others. They say, 'Pray your prayer separately.' At the time of Zuhr, when the congregation was ready, I wanted to join after performing ablution. They stopped me and said, 'Pray your prayer separately.' I prayed my prayer separately. When the time for Asr came, the congregation...

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

न इससे हुक्का पीने की मुतलक़न मज़म्मत (बुराई) साबित होती है, हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपनी एक साहबज़ादी के दफ़्न में फ़रमाया 'उनकी क़ब्र में वही उतरे जो आज की रात अपनी औरत के पास न गया हो'। इससे अपनी औरत के पास जाने की मज़म्मत साबित नहीं होती, ये मसालेह-ए-ख़ासा हैं जिनके असरार अहले बातिन (अध्यात्मिक ज्ञान रखने वाले) जानते हैं, वल्लाहु तआला आलम।

मसअला 244: अज़ गोंडल इलाक़ा काठियावाड़ अब्दुल सत्तार बिन इस्माईल रज़वी। बरोज़ शंबा (शनिवार), 7 रजब 1342 हिजरी। तम्बाकू का खाना पान में या यूँ ही बिला पान के जायज़ है या नहीं? तम्बाकू ख़ालिस हो या खुर्दनी खुशबूदार जो लखनऊ में बनता है? अल-जवाब: तम्बाकू और हुक्का का एक ही हुक्म है, जैसा वो हराम है ये भी हराम है और जैसा वो जायज़ है ये भी जायज़। बदबू है तो ब-कराहत (नापसंदगी के साथ) वरना बिला कराहत। फ़क़त एक फ़र्क़ है जो लोग ग़ैर खुशबूदार तम्बाकू खाते हैं और उसे मुँह में दबा रखते हैं उनका मुँह उसकी बदबू से बस जाता है कि क़रीब से बात करने में दूसरे को एहसास होता है, इस तरह तम्बाकू खाना जायज़ नहीं कि ये नमाज़ भी यूँ ही पढ़ेगा और ऐसी हालत से नमाज़ मकरूहे तहरीमी (सख्त नापसंदीदा) है, बखिलाफ़ हुक्का के कि इसमें कोई जुर्म मुँह में बाक़ी नहीं रहता और उसका तग़य्युर (बदलाव/बदबू) कुल्लियों से फ़ौरन ज़ाइल हो जाता है। वल्लाहु तआला आलम।

मसअला 245: मसूला मारफ़त आदम जी सेठ अतम बेग गोंडल और काठियावाड़। शंबा (शनिवार), 1 शाबान 1342 हिजरी। हुक्का, चरूट, बीड़ी का पीना कैसा है? अल-जवाब: चरूट ब-वजह नसारा (ईसाइयों की वजह से) मकरूह है और बीड़ी में हर्ज नहीं और हुक्का जैसा आम तौर पर रायज (प्रचलित) है मुबाह और तर्कए-औला (छोड़ देना बेहतर) है।

मसअला 246: अज़ तोपखाना बाज़ार कैंप मसूला मुहम्मद हुसैन। 16 जमादी-उल-अ़व्वल 1346 हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसअले में कि एक मुसाफ़िर पानीपत करनाल से आया है वो ये कहता है कि हुक्का पीना और पान खाना हराम है, जो शख़्स हुक्का पियेगा और पान खायेगा उसके मकान का आटा तक नहीं खाएंगे। जिन्होंने खाना छोड़ दिया वही लोग जमाअत में शरीक होते हैं और दूसरों को नहीं होने देते वो ये कहते हैं कि अलहदा अपनी नमाज़ पढ़ लो। ज़ुहर के वक़्त जमाअत तैयार थी मैंने वज़ू करके जमाअत में शामिल होना चाहा मुझको मना कर दिया और ये कहा

कि अपनी नमाज़ अलहदा पढ़ लो मैंने अपनी नमाज़ अलहदा पढ़ ली, अस्र का वक़्त हुआ जब भी जमाअत...

पृष्ठ 556 का 720

نہ اس سے حقہ پینے کی مطلقاً مذمت ثابت ہوتی، حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اپنی ایک صاحبزادی کے دفن میں فرمایا ان کی قبر میں وہی اترے جو آج کی رات اپنی عورت کے پاس نہ گیا ہو"۔ اس سے اپنی عورت کے پاس جانے کی مذمت ثابت نہیں ہوتی، یہ مصالح خاصہ ہیں جن کے اسرار اہل باطن جانتے ہیں، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۴۴: از گوندل علاقہ کاٹھیاواڑ عبد الستار بن اسمعیل رضوی بروز شنبہ ۷ رجب ۱۳۴۲ھ تمباکو کا کھانا پان میں یا یوں ہی بلا پان کے جائز ہے یا نہیں، تمباکو خالص ہو یا خوردنی خوشبودار جو لکھنؤ میں بنتا ہے؟ الجواب: تمباکو اور حقہ کا ایک حکم ہے، جیسا وہ حرام ہے یہ بھی حرام ہے اور جیسا وہ جائز ہے یہ بھی جائز، بد بو ہے تو باکراہت ورنہ بلا کراہت۔ فقط ایک فرق ہے جو لوگ غیر خوشبو دار تمباکو کھاتے ہیں اور اسے منہ میں دبا رکھتے ہیں ان کا منہ اس کی بدبو سے بس جاتا ہے کہ قریب سے بات کرنے میں دوسرے کو احساس ہوتا ہے اس طرح تمباکو کھانا جائز نہیں کہ یہ نماز بھی یوں ہی پڑھے گا اور ایسی حالت سے نماز مکروہ تحریمی ہے بخلاف حقہ کے کہ اس میں کوئی جرم منہ میں باقی نہیں رہتا اور اس کا تغیر کلیوں سے فوراً زائل ہو جاتا ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۲۴۵: مسئولہ معرفت آدم جی سیٹھ اتم بیگ گوندل اور کاٹھیاواڑ شنبہ یکم شعبان ۱۳۴۲ھ حقہ، چروٹ، بیڑی کا پینا کیسا ہے؟ الجواب: چرٹ بوجہ نصاریٰ مکروہ ہے اور بیڑی میں حرج نہیں اور حقہ جیسا عام طور پر رائج ہے مباح اور ترک اولیٰ۔

مسئلہ ۲۴۶: از توپخانہ بازار کیمپ مسئولہ محمد حسین ۱۶ جمادی الاولیٰ ۱۳۴۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک مسافر پانی پت کرنال سے آیا ہے وہ یہ کہتا ہے کہ حقہ پینا اور پان کھانا حرام ہے، جو شخص حقہ پیئے گا اور پان کھائے گا اس کے مکان کا آٹا تک نہیں کھائیں گے جنہوں نے کھانا چھوڑ دیا وہی لوگ جماعت میں شریک ہوتے ہیں اور دوسروں کو نہیں ہونے دیتے وہ یہ کہتے ہیں علیحدہ اپنی نماز پڑھ لو، ظہر کے وقت جماعت تیار تھی میں نے وضو کر کے جماعت میں شامل ہونا چاہا مجھ کو منع کردیا اور یہ کہا کہ اپنی نماز علیحدہ پڑھ لو میں نے اپنی نماز علیحدہ پڑھ لی، عصر کا وقت ہوا جب بھی جماعت

Fatawa Razawiyya Volume 24

...was ready, even then it was forbidden.

The Answer: Betel leaf (Pan) is undoubtedly permissible. Hazrat Mahbub-e-Ilahi Nizam-ul-Haq wal-Din (may Allah be pleased with him), and even Sufis before him, used it. Hazrat Amir Khusrau (may mercy be upon him) praised it. The permissibility of lime (chuna) in it is clearly stated in the book 'Nisab al-Ihtisab'. The permissibility of hookah (huqqa) is explicitly mentioned in reliable books such as 'Ghamz al-Uyun', 'Sharh-e-Hadya-e-Ibn al-Imad', 'Kitab al-Sulh bayn al-Ikhwan', 'Durr-e-Mukhtar', 'Tahtawi', 'Radd al-Muhtar', etc. To call something permissible 'forbidden' is a great audacity of that person. And to say that one who eats pan or smokes hookah should not join the congregation is severe oppression and far-reaching misguidance. Such a person makes it a Shari'a ruling and thereby slanders the pure Shari'a, and one who slanders Allah deserves severe punishment. Allah Almighty says:

"And do not say about what your tongues assert of untruth, 'This is lawful and this is forbidden,' to invent falsehood about Allah. Indeed, those who invent falsehood about Allah will not succeed."[1]	**Whatever lies your tongues utter, do not say regarding it that this is lawful and this is forbidden, so that you attribute lies to Allah Almighty. Indeed, those who attribute lies to Allah, i.e., attribute falsehood to Him, can never be successful and prosperous. (T)**

Repentance is obligatory for him. If he does not repent and does not desist from these conditions and actions, then he deserves that Muslims should not allow him into the mosque. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

Similarly, every harmer is barred even if it is with his tongue.[2] And Allah knows best.	**In the same way, every person who causes distress, even if it is only verbal, should be stopped from the mosque. And Allah Almighty knows best. (T)**

Problem 221 to 223: What do the scholars of religion say regarding these issues: (1) Is hookah permissible or not? The Maulvi says it is pure. (2) Is it permissible to keep or make portraits (pictures), and what is the ruling on the one who makes it permissible?

[1] The Holy Quran 16/116 [2] Durr-e-Mukhtar, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer, Mujtabai Press Delhi 1/94

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

...तैयार थी, उस वक़्त भी मना कर दिया गया।

अल-जवाब: पान बेशक हलाल है, हज़रत महबूब-ए-इलाही निज़ाम-उल-हक़ वल-दीन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) बल्कि उनसे पहले औलिया किराम ने इसका इस्तेमाल फ़रमाया है, हज़रत अमीर खुसरो (अलैहिर्रहमा) ने इसकी मदह (प्रशंसा) फ़रमाई है। इसमें चूने का जवाज़ (वैधता) किताब 'निसाब-अल-इहतिसाब' में स्पष्ट है। हुक़्क़ा का जवाज़ 'ग़मज़ अल-उयून', 'शराह हदीया इब्न अल-इमाद', 'किताब अल-सुल्ह बैन अल-इख़्वान', 'दुर्रे मुख़्तार', 'तहतावी', 'रद अल-मुहतार' आदि विश्वसनीय किताबों में स्पष्ट रूप से वर्णित है। हलाल को हराम कहना उस व्यक्ति की बड़ी जुर्रत है। और यह कहना कि पान खाने वाला या हुक़्क़ा पीने वाला जमात (नमाज़) में शरीक न हो, उसका यह ज़ुल्म शदीद (कठोर अन्याय) बल्कि ज़लाल-ए-बईद (गहरी गुमराही) है। वह इसे शरीअत का हुक्म ठहराकर शरा-ए-मुतह्हरा (पवित्र शरीअत) पर इफ़्तरा (झूठा आरोप) करता है और अल्लाह पर इफ़्तरा करने वाला शदीद अज़ाब का हक़दार है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"व ला तक़ूलू लिमा तसिफ़ु अलसिनतुकुमु अल-कज़िबा हाज़ा हलालुन व हाज़ा हरामुल लि-तफ़्तरू अलाल्लाहि अल-कज़िबा इन्नल-लज़ीना यफ़्तरूना अलाल्लाहि अल-कज़िबा ला युफ़्लिहूँ।"[1]	**जो कुछ तुम्हारी ज़बानें झूठ बयान करती हैं, उसके मुताल्लिक़ यह न कहा करो कि यह हलाल है और यह हराम, ताकि तुम अल्लाह तआला के ज़िम्मे झूठ लगाओ, बेशक जो अल्लाह तआला पर झूठ बाँधते हैं यानी उसके ज़िम्मे झूठ लगाते हैं, वे कभी कामयाब और बा-मुराद नहीं हो सकते। (त)**

उस पर तौबा फ़र्ज़ है, अगर तौबा न करे और अपने इन अहवाल व हरकात से बाज़ न आए तो वही उसका मुस्तहक़ (पात्र) है कि मुसलमान उसे मस्जिद में न आने दें। दुर्रे मुख़्तार में है:

व कज़ा युमनाउ मिन्हु कुल्लु मुज़िन व लौ बिलिसानिही[2] वल्लाहु तआला आलम।	**इसी तरह हर तकलीफ़ देने वाले को, चाहे ज़बानी ही हो, उसे मस्जिद से रोक देना चाहिए। वल्लाहु तआला आलम (त)**

मसला 221 से 223: क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन इन मसाइल में कि: (1) हुक़्क़ा जायज़ है या नहीं? मौलवी पाक बताता है। (2) तस्वीर रखना या बनाना जायज़ है या नहीं और जायज़ करने वाले पर क्या हुक्म है?

---

[1] अल-कुरानुल करीम 16/116 [2] दुर्रे मुख़्तार, किताबुस सलात, बाब मा युफ़्सिदुस सलात, मतबा मुजतबाई देहली 1/94

تیار تھی اس وقت بھی منع کردیا گیا۔

الجواب: پان بیشک حلال ہے ، حضرت محبوب الٰہی نظام الحق والدین رضی اللہ تعالیٰ عنہ بلکہ ان سے پہلے اولیاء کرام نے اس کا استعمال فرمایا ہے ، حضرت امیر خسرو علیہ الرحمہ نے اس کی مدح فرمائی اس میں چونے کا جواز کتاب نصاب الاحتساب میں مصرح ہے، حقہ کا جواز غمز العیون و شرح ہدیہ ابن العماد و کتاب الصلح بین الاخوان و در مختار وطحطاوی وردالمحتار وغیرہ کتب معتمدہ میں مصرح ہے ، حلال کو حرام کہنا اس شخص کی بڑی جرات اور یہ کہ پان کھانے والا یا حقہ پینے والا جماعت میں شریک نہ ہو اس کا ظلم شدید بلکہ ضلال بعید ہے وہ اسے حکم شرع ٹھہرا کر شرع مطہر پر افتراء کرتا ہے اور اللہ پر افتراء کرنے والا عذاب شدید کا مستحق ہے ، اللہ تعالیٰ فرماتا ہے :

"وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللهِ الْكَذِبَ ط اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ط ۱"

جو کچھ تمہاری زبانیں جھوٹ بیان کرتی ہیں ، اس کے متعلق یہ نہ کہا کرو کہ یہ حلال ہے اور یہ حرام ، تاکہ تم اللہ تعالیٰ کے ذمے جھوٹ لگاؤ ، بے شک جو اللہ تعالیٰ پر جھوٹ باندھتے ہیں یعنی اس کے ذمے جھوٹ لگاتے ہیں وہ کبھی کامیاب اور بامراد نہیں ہوسکتے ۔ (ت)

اس پر توبہ فرض ہے ، اگر توبہ نہ کرے اور اپنے ان احوال و حرکات سے باز نہ آئے تو وہی اس کا مستحق ہے کہ مسلمان اسے مسجد میں نہ آنے دیں ۔ در مختار میں ہے :

وکذا یمنع منه کل موذ ولو بلسانه اسی طرح ہر تکلیف دینے والے کو خواہ زبانی ہی ہو اسے

۲ واللہ تعالیٰ اعلم ۔ مسجد روک دینا چاہئے ۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۲۲۱ تا ۲۲۳ : کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں کہ : (۱) حقہ جائز ہے یا نہیں ؟ مولوی پاک بتلاتا ہے ۔ (۲) تصویر کار رکھنا بنانا جائز ہے یا نہیں اور جائز کرنے والے پر کیا حکم ہے ؟

---

۱ القرآن الکریم ۱۱۶/۱۶ ۲ در مختار کتاب الصلوۃ باب ما یفسد الصلوۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۹۴

(3) Is listening to singing allowed or not? Is it allowed with musical instruments, or in weddings or Sunnat (circumcision) etc., i.e., in a child's Sunnat etc. or not? (4) A Mawlawi Pesh-Imam has given this fatwa that the Messenger of Allah (peace be upon him) urinated while standing and it is allowed. (5) Is Taziyadari (Muharram mourning rituals) allowed or not? And a Mawlawi has declared all these as allowed.

The Answer: (1) Hookah is allowed, but inhaling smoke that affects the senses is haram. Hookah water is pure according to Sharia; anyone calling it impure is slandering the Sharia. (2) Making pictures of living beings is absolutely haram. Whoever calls it allowed is slandering Sharia, is astray, and deserves punishment and the fire of Hell. Keeping them is allowed in three cases: First, if the face has been cut off or distorted. Second, if it is so small that its body details are not visible when viewed from a standing position while it's on the ground. Third, if it is in a place of humiliation and disgrace, like on a floor rug; otherwise, keeping them is also haram. Yes, drawing or having pictures made of non-living things like trees and buildings is allowed. (3) Musical instruments are haram. Simple singing without instruments in weddings or Sunnat ceremonies is allowed provided there is no fear of fitna (mischief) nor frivolous behavior. (4) Urinating while standing is against etiquette, disrespectful, a Christian practice (Sunnat-e-Nasrani), disliked (Makruh), and forbidden. The Holy Prophet (peace be upon him) did it once due to the excuse of leg pain, and that too with great care, and in explicit Hadith, he forbade it. (5) Taziyadari is not allowed. And Allah the Almighty knows best.

Issue 222: From Bikaner Marwar, Mahalla Mahawattan, sent by Qazi Qamar-ud-din, 9 Rabi al-Awwal Sharif 1338 AH. Question: What do the scholars of religion say regarding this matter: Is eating betel leaf (paan) a Sunnat or what? State the ruling and be rewarded.

The Answer: Eating betel leaf is neither Sunnat nor mustahab (recommended); it is merely mubah (permissible). Yes, it can become mustahab due to certain external factors, such as if not eating would break the host's heart, or for the purpose of making the mouth fragrant for kissing one's wife.

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

(३) गाना सुनना जायज़ है या नहीं? मज़ामीर बाजे के साथ या शादी या सुन्नत (ख़तना) वग़ैरह में जायज़ है या नहीं यानी बच्चा की सुन्नत वग़ैरह में? (४) एक मौलवी पेश-इमाम ने यह फ़तवा दिया है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने खड़े-खड़े पेशाब किया था और जायज़ है। (५) ताज़ियादारी जायज़ है या नहीं? और एक मौलवी ने इन सब को जायज़ कर दिया है।

अल-जवाब: (१) हुक्का जायज़ है मगर दम लगाना जिससे हवास में फ़र्क आता है हराम है, हुक्का का पानी शरीअत के नज़दीक पाक है इसे नापाक कहने वाला शरअ पर इफ़्तरा (झूठ) करता है। (२) जानदार की तस्वीर बनाना मुतलक़न हराम है, जो इसे जायज़ कहे शरीअत पर इफ़्तरा करता है गुमराह है मुस्तहिक़-ए-ताज़ीर (सज़ा के लायक़) व सज़ा-ए-नार (दौज़ख़ की आग) है, रखना तीन सूरतों में जायज़ है: एक यह कि चेहरा काट दिया हो या बिगाड़ दिया हो। दूसरे यह कि इतनी छोटी हो कि ज़मीन पर रख कर खड़े हो कर देखें तो आज़ा (अंगों) की तफ़सील नज़र न आए। तीसरे यह कि ख़्वारी व ज़िल्लत की जगह पड़ी हो जैसे फ़र्श पाअंदाज़ में वरना रखना भी हराम। हाँ ग़ैर-जानदार मिस्ल दरख़्त व मकान की तस्वीर खींचना खिंचवाना सब जायज़ है। (३) मज़ामीर हराम हैं, बग़ैर बाजे के सादा गाना सुन्नत वग़ैरह की शादी में जायज़ है जबकि अंदेशा-ए-फ़ितना हो न ख़फ़ीफ़ुल-हरकाती (हल्कापन)। (४) खड़े होकर पेशाब करना बद-तहज़ीबी व बे-अदबी व सुन्नत-ए-नसरानी व मकरूह व मना है, हुज़ूर अक़दस ने एक बार दर्द के उज़्र (बहाने) से ऐसा किया वह भी बड़े एहतिमाम के साथ, और सरीह (स्पष्ट) हदीस में इसे मना फ़रमाया। (५) ताज़ियादारी नाजायज़ है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला २२२: अज़ बीकानेर मारवाड़ मोहल्ला महावतां मुर्सला क़ाज़ी क़मरुद्दीन ९ रबीउल अव्वल शरीफ़ १३३८ हि. क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मसले में कि पान खाना सुन्नत है या क्या? बैनू तूजरू (बयान फ़रमाइए अज्र पाइए)।

अल-जवाब: पान खाना न सुन्नत है न मुस्तहब सिर्फ़ मुबाह (अनुमेय) है, हाँ बाज़ अवारिज़-ए-ख़ारिज़िया (बाहरी कारणों) के बाइस मुस्तहब हो सकता है जैसे न खाने में मेज़बान की दिल-शिकनी हो या बोसा-ए-ज़ौजा (पत्नी के चुंबन) के लिए मुँह को ख़ुशबूदार करने की नियत से।

पेज ५५८ ऑफ़ ७२०

(۳) گانا سننا جائز ہے یا نہیں؟ مزامیر باجے کے ساتھ یا شادی یا سنت (ختنہ) وغیرہ میں جائز ہے یا نہیں یعنی بچہ کی سنت وغیرہ میں؟ (۴) ایک مولوی پیش امام نے یہ فتویٰ دیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ تعالیٰ علیہ وسلم نے کھڑے کھڑے پیشاب کیا تھا اور جائز ہے۔ (۵) تعزیہ داری جائز ہے یا نہیں؟ اور ایک مولوی نے ان سب کو جائز کر دیا ہے۔ الجواب: (۱) حقہ جائز ہے مگر دم لگانا جس سے حواس میں فرق آتا ہے حرام ہے، حقہ کا پانی شریعت کے نزدیک پاک ہے اسے ناپاک کہنے والا شرع پر افتراء کرتا ہے۔ (۲) جاندار کی تصویر بنانا مطلقاً حرام ہے، جو اسے جائز کہے شریعت پر افتراء کرتا ہے گمراہ ہے مستحق تعزیر و سزائے نار ہے رکھنا تین صورتوں میں جائز ہے: ایک یہ کہ چہرہ کاٹ دیا ہو یا بگاڑ دیا ہو۔ دوسرے یہ کہ اتنی چھوٹی ہو کہ زمین پر رکھ کر کھڑے ہو کر دیکھیں تو اعضاء کی تفصیل نظر نہ آئے۔ تیسرے یہ کہ خواری و ذلت کی جگہ پڑی ہو جیسے فرش پائنداز میں ورنہ رکھنا بھی حرام، ہاں غیر جاندار مثل درخت و مکان کی تصویر کھینچنا کھوانا سب جائز ہے۔ (۳) مزامیر حرام ہیں، بغیر باجے کے سادہ گانا سنت وغیرہ کی شادی میں جائز ہے جبکہ اندیشہ فتنہ ہو نہ خفیف الحرکاتی۔ (۴) کھڑے ہو کر پیشاب کرنا بدتہذیبی و بے ادبی و سنت نصرانی و مکروہ و منع ہے، حضور اقدس نے ایک بار درد کے عذر سے ایسا کیا وہ بھی بڑے اہتمام کے ساتھ، اور صریح حدیث میں اسے منع فرمایا۔ (۵) تعزیہ داری ناجائز ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم مسئلہ ۲۲۲: از بیکانیر مارواڑہ محلہ مہاوتاں مرسلہ قاضی قمر الدین ۹ ربیع الاول شریف ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ پان کھانا سنت ہے یا کیا؟ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائیے ت) الجواب: پان کھانا نہ سنت ہے نہ مستحب صرف مباح

ہے، ہاں بعض عوارض خارجیہ کے باعث مستحب ہو سکتا ہے جیسے نہ کھانے میں میزبان کی دل شکنی ہو یا بوسہ زوجہ کے لئے منہ کو خوشبودار کرنے کی نیت سے۔

Fatawa Razawiyya Volume 24

...rather, it is even obligatory (wajib), for example, if parents command it and not obeying would cause them distress. Similarly, it can be disliked (makruh) due to an incidental cause, like during the recitation of the Holy Quran, or even forbidden (haram), like during prayer. And Allah Almighty knows best.

Problem 243: From Pindol Buzurg, Post Office Raipur, District Muzaffarpur, Niamat Shah Khaki Borah. Question: What is the ruling on consuming betel leaf (paan), lime (chuna), hookah, tobacco, and chewing tobacco (surti)?

The Answer: Eating betel leaf is permissible, as is an amount of lime that does not cause harm, and an amount of tobacco that does not affect the senses. Here, 'surti' refers to tobacco itself. And Allah Almighty knows best.

www.dawateislami.net I.T. Majlis of DawateIslami Page 559 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

...बल्कि वाजिब भी जैसे माँ-बाप हुक्म दें और न मानने में उनकी ईज़ा (तकलीफ़) हो, यूँ ही आरिज़ (कारण) के सबब मकरूह भी हो सकता है जैसे तिलावते क़ुरआने मजीद में बल्कि हराम भी जैसे नमाज़ में। वल्लाहु तआला आलम।

मसाला 243: अज़ पिंडोल बुज़ुर्ग डाकखाना राय पुर ज़िला मुज़फ़्फ़र पुर नेमत शाह ख़ाकी बूड़ाह। सवाल: पान, चूना और हुक्का और तम्बाकू और सुरती खाना कैसा है?

अल-जवाब: पान खाना जायज़ है और इतना चूना भी कि ज़रर (नुकसान) न करे और इतना तम्बाकू भी कि हवास (होश-ओ-हवास) पर असर न आए, यहाँ सुरती तम्बाकू को ही कहते हैं। वल्लाहु तआला आलम।

www.dawateislami.net आई.टी. मज्लिस-ए-दावते इस्लामी पेज 559 ऑफ़ 720

بلکہ واجب بھی جیسے ماں باپ حکم دے اور نہ ماننے میں اس کی ایذا ہو یونہی عارض کے سبب مکروہ بھی ہو سکتا ہے جیسے تلاوت قرآن مجید میں بلکہ حرام بھی جیسے نماز میں۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۴۳: از پنڈول بزرگ ڈاکخانہ رائے پور ضلع مظفر پور نعمت شاہ خاکی بوڑاہ پان ، چونا اور حقہ اور تمباکو اور سرتی کھانا کیسا ہے؟

الجواب: پان کھانا جائز ہے اور اتنا چونا بھی کہ ضرر نہ کرے اور اتنا تمباکو بھی کہ حواس پر اثر نہ آئے، یہاں سرتی تمباکو کو ہی کہتے ہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم

www.dawateislami.net آئی ٹی مجلسِ دعوتِ اسلامی صفحہ 559 از 720

Fatawa Razawiya Volume 24

Picture

Question 244: From Pilibhit 19 Rabi al-Akhir 1310 AH What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say regarding this issue: Every Muslim artisan makes sugar figures of halal and haram animals, and also makes a figure of the Jama Masjid of Delhi. Making which figure is permissible, and eating which image is permissible or impermissible? Please explain and be rewarded. (T)

The Answer: Making pictures of living beings is absolutely forbidden. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Arabic Text Box] Indeed, the people most severely punished on the Day of Resurrection will be the picture-makers. Reported by Ahmad and Muslim from Ibn Mas'ud, may Allah be pleased with him.

[Urdu Text Box] The most severe punishment on the Day of Resurrection will be upon those who make pictures of living beings. (Imam Ahmad and Muslim have narrated this from Hazrat Abdullah bin Mas'ud, may Allah be pleased with him. T)

And its buying and selling is also not permissible, to the extent that scholars state: He who makes and sells clothes with pictures on them, his...

---

1 Musnad Imam Ahmad bin Hanbal from Abdullah bin Mas'ud (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami Beirut 1/426, Sahih Muslim Kitab al-Libas, Chapter on the prohibition of depicting animal forms, etc., Qadimi Kutub Khana Karachi 2/201.

फ़तावा रज़विया खंड 24

चित्र

प्रश्न 244: पीलीभीत से 19 रबी-उल-आख़िर 1310 हिजरी दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या कहते हैं कि हर मुस्लिम कारीगर हलाल और हराम जानवरों की चीनी की मूर्तियाँ (शबीह) बनाते हैं, और दिल्ली की जामा मस्जिद की आकृति भी बनाते हैं। किस आकृति का बनाना जायज़ है और किस तस्वीर का खाना जायज़ या नाज़ायज़ है? कृपया स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें। (त)

उत्तर: जानदार (जीवित वस्तु) की तस्वीर बनाना बिल्कुल हराम (वर्जित) है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[अरबी पाठ बॉक्स] निश्चित रूप से, कयामत के दिन उन लोगों को सबसे कठोर दंड दिया जाएगा जो (जानदार की) तस्वीर बनाते हैं। इसे अहमद और मुस्लिम ने इब्न मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।

[उर्दू अनुवाद बॉक्स] सब से ज्यादा सख्त अज़ाब रोज़-ए-कयामत उन पर होगा जो जानदार की तस्वीर बनाते हैं। (इमाम अहमद और मुस्लिम ने हज़रत अब्दुल्ला बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु से इसकी तख़रीज फरमाई है। त)

और इसकी खरीद-फरोख्त भी जायज़ नहीं है, यहाँ तक कि विद्वान फरमाते हैं: जो तस्वीर वाले कपड़े बनाकर बेचे उसकी...

---

1 मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल, हज़रत अब्दुल्ला बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु से, अल-मकतबतुल इस्लामी बेरूत 1/426, सही मुस्लिम किताबुल लिबास, जानवरों की तस्वीर बनाने की मनाही का अध्याय आदि, कदीमी कुतुब खाना कराची 2/201।

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

تصویر

مسئلہ ۲۴۴: از پیلی بھیت ۱۹ ربیع الآخر ۱۳۱۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرعِ متین اس مسئلہ میں کہ ہر مسلمان کاریگر شبیہ شکر کی حلال جانور اور حرام جانور کی بناتے ہیں نیز شبیہ مسجد جامع دہلی کی بناتے ہیں۔ کس شبیہ کا بنانا جائز ہے اور کس تصویر کا کھانا جائز و ناجائز ہے؟ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائیے -ت)

الجواب: جاندار کی تصویر بنانا مطلقاً حرام ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

[عربی عبارت] ان اشد الناس عذاباً یوم القیمۃ المصورون۔اخرجہ احمد ومسلم عن ابن مسعود رضی اللہ تعالٰی عنہ۔

[اردو عبارت] سب سے زیادہ سخت عذاب روزِ قیامت ان پر ہوگا جو جاندار کی تصویر بناتے ہیں (امام احمد اور مسلم نے حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالٰی عنہ سے اس کی تخریج فرمائی ہے۔ ت)

اور اس کی خرید وفروخت بھی جائز نہیں یہاں تک کہ علماء فرماتے ہیں: جو تصویر دار کپڑے بنائے بیچے اس کی

---

1 مسند امام احمد بن حنبل عن عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۱/ ۴۲۶، صحیح مسلم کتاب اللباس، باب تحریم تصویر صورۃ الحیوان الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۲۰۱

Fatawa Rizvia, Volume 24

Evidence is rejected.

| (Arabic) In Al-Hindiyyah from Al-Muheet from Al-Aqdiyah: If a man sells clothes with pictures or weaves them, his testimony is not accepted. [1] | (Urdu) It is cited in Fatawa Hindiyyah with reference to Al-Muheet from Al-Aqdiyah that when a person makes or sells clothes with pictures, his testimony is unacceptable. (T) |

And there is an abominable and bad association in the image of a forbidden animal that will reflect on the eater because the common people refer to an image by the name of the original. For instance, if someone eats a candy/food shaped like a dog, it will still be said that such-and-such person ate a dog. Just as a person must avoid bad deeds, they should similarly avoid bad names. Although making images of non-living things is permissible, in the case of images of great religious things like the Jami' Mosque etc., breaking and eating them would be against etiquette and the same bad association would necessarily follow, that such-and-such person broke the mosque or ate the mosque. Even if free from all these things, it is a kind of participation in the festivals of disbelievers and their absurd customs, from which there is a legal (Sharia) order to abstain. In fact, if, God forbid, buying and eating these things is specifically with the intention of celebrating Diwali, then the ruling is extremely severe. Even if it is purely with the intention of eating and drinking, one should refrain during those days. Yes, if before or after Diwali, such things whose images are not of living beings and no offensive association is implied by breaking or eating them are made, sold, bought, or eaten, then there is no harm.

| (Arabic) In Al-Durr al-Mukhtar: If he gives a gift to a Muslim and did not intend to honor the day, but it happened according to people's custom, he does not become an unbeliever. It is appropriate that he do it before or after it to dispel suspicion. And if he buys in it what he did not buy before, if he intended to honor it, he becomes an unbeliever, and if he intended eating, drinking, and luxury, he does not become an unbeliever. Zil'ai. [2] And in Radd al-Muhtar from... | (Urdu) In Durr al-Mukhtar, it is stated: If a Muslim gives a gift (or if a gift was given to a Muslim) but did not intend to honor the Hindu festival, rather it happened according to people's custom, he does not become an unbeliever. However, it is appropriate to do this before or after the festival so that no suspicion arises. And if he bought something on the day of the Hindu festival which he had not bought before, then if he intended to honor it, he

became an unbeliever; and if he only intended eating, drinking, and luxury, then he will not become an unbeliever. Zil'ai etc., in Fatawa Shami. |

1. Fatawa Hindiyyah, Book of Testimonies, Chapter Four, Noorani Kutub Khana Peshawar 3/469
2. Durr al-Mukhtar, Miscellaneous Issues, Matba' Mujtabai Delhi 2/350

फतवा रज़विया, खंड 24

गवाही खारिज है।

| (अरबी) अल-हिंदिया में अल-मुहित अन अल-अक़्दिया से: यदि कोई व्यक्ति चित्रों वाले कपड़े बेचता है या उन्हें बुनता है, तो उसकी गवाही स्वीकार नहीं की जाती है। [1] | (उर्दू) फतवा हिंदिया में मुहित अन अल-अक़्दिया के हवाले से उद्धृत है कि जब कोई व्यक्ति चित्रों वाले कपड़े बनाता या बेचता है, तो उसकी गवाही स्वीकार्य नहीं है। (त) |

और हराम जानवर के चित्र में एक घृणित और बुरी संगति है जो खाने वाले पर लागू होगी क्योंकि लोग रिवाज के तौर पर चित्र को उसके मूल नाम से ही पुकारते हैं। उदाहरण के तौर पर, यदि किसी ने कुत्ते के आकार की कोई मिठाई/चीज़ खाई, तो यही कहा जाएगा कि फलां व्यक्ति ने कुत्ता खाया। जैसे व्यक्ति को बुरे कर्मों से बचना चाहिए, वैसे ही बुरे नामों से भी बचना चाहिए। हालांकि निर्जीव वस्तुओं के चित्र बनाना जायज़ है, लेकिन जामा मस्जिद आदि जैसी महान धार्मिक चीजों के चित्रों के मामले में, उन्हें तोड़ना और खाना शिष्टाचार के खिलाफ होगा और वही बुरी संगति भी लागू होगी कि फलां व्यक्ति ने मस्जिद तोड़ी या मस्जिद खा ली। और अगर इन सब बातों से मुक्त भी हो, तो यह काफिरों के त्योहारों और उनके निरर्थक रीति-रिवाजों में एक प्रकार की भागीदारी है जिससे शरीयत में बचने का हुक्म है। बल्कि अगर खुदा न खास्ता ये चीजें खरीदना और खाना विशेष रूप से दिवाली मनाने की नियत से हो, तो हुक्म बहुत सख्त है। और अगर सिर्फ खाने-पीने की नियत से हो, तब भी उन दिनों में परहेज करना चाहिए। हाँ, दिवाली से पहले या बाद में ऐसी चीजें जिनके चित्र सजीव न हों और जिन्हें तोड़ने या खाने से कोई अरुचिकर संगति अनिवार्य न हो, बनाई जाएं, बेची जाएं, खरीदी जाएं या खाई जाएं, तो कोई हर्ज नहीं।

| (अरबी) दुर्रे मुख्तार में: यदि उसने किसी मुसलमान को उपहार दिया और उस दिन का सम्मान करने का इरादा नहीं किया, बल्कि यह लोगों की आदत के अनुसार हुआ, तो वह काफिर नहीं होगा। उचित यह है कि वह इसे संदेह दूर करने के लिए इससे पहले या बाद में करे। और यदि उसने इसमें वह खरीदा जो उसने पहले नहीं खरीदा था, यदि उसने सम्मान का इरादा किया, तो वह काफिर हो जाता है, और यदि उसने खाने, पीने और विलासिता का इरादा किया, तो वह काफिर नहीं होता। ज़िलई। [2] और रद अल-मुह्तार में... | (उर्दू) दुर्रे मुख्तार में है: अगर किसी मुसलमान ने उपहार या भेंट दी (अगर किसी मुसलमान को उपहार दिया गया), लेकिन हिंदू त्योहार के सम्मान का इरादा नहीं

किया, बल्कि लोगों की आदत के अनुसार ऐसा हुआ, तो वह काफिर नहीं होगा। लेकिन उचित यह है कि यह काम त्योहार से पहले या बाद में करे ताकि संदेह न हो। और अगर उसने हिंदू त्योहार वाले दिन कुछ ऐसा खरीदा जो पहले नहीं खरीदा था, तो यदि उसने सम्मान का इरादा किया तो वह काफिर हो गया, और यदि केवल खाने-पीने और भोग-विलास का इरादा किया तो वह काफिर नहीं होगा। ज़िलई आदि, फतवा शामी में। |

1. फतवा हिंदिया, किताबुश शहादात, अध्याय चार, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 3/469
2. दुर्रे मुख्तार, मसायल शत्ती, मतबा मुजतबाई दिल्ली 2/350

पृष्ठ 561 of 720

گواہی مردود ہے۔

| في الهندية عن المحيط عن الاقضية اذا كان الرجل يبيع الثياب المصورة او ينسجها لا تقبل شهادته ۱۔

| فتاوٰی ہندیہ میں محیط عن الاقضیہ کے حوالے سے منقول ہے کہ جب کوئی شخص تصویروں والے کپڑے بنائے یا بیچے تو اس کی گواہی نامقبول ہے۔ (ت) |

اور حرام جانور کی تصویر میں ایک شنیع وبد نسبت ہے جو کھانے والے کی طرف ہوگی کہ اہل عرف تصویر کو اصل ہی کے نام سے یاد کرتے ہیں تو مثلاً تصویر کا کتا کسی نے کھایا تو اسے بھی کہا جائے گا کہ فلاں شخص نے کتا کھایا، آدمی کو جیسے برے کام سے بچنا ضرور ہے یو ہیں۔ برے نام سے بھی بچنا چاہئے۔ غیر جاندار کی تصویر بنانی اگرچہ جائز ہے مگر دینی معظم چیز مثل مسجد جامع وغیرہ کی تصویروں میں انہیں توڑنا اور کھانا خلاف ادب ہوگا اور وہی بری نسبت بھی لازم آئے گی کہ فلاں شخص نے مسجد توڑی مسجد کو کھا لیا اور ان سب باتوں سے خالی ہو تو کفار کے تہواروں ان کے بیہودہ رسم میں ایک طرح کی شرکت ہے جس سے شرعاً اجتناب کا حکم، بلکہ اگر معاذاللہ یہ چیزیں خریدنا کھانا خاص بہ نیت دوالی منانے کے ہو تو حکم نہایت سخت ہے اور نرے کھانے پینے کی نیت سے ہو جب بھی ان ایام میں احتراز چاہئے، ہاں دوالی سے پہلے یا ختم کے بعد ایسی چیزوں کی تصویر جو جاندار نہ ہوں نہ ان کے توڑنے یا کھانے سے کوئی مکروہ نسبت لازم آئے بنائیں بیچیں خریدیں کھائیں تو کچھ حرج نہیں۔

| في الدر المختار لواهدى لمسلم ولم يرد تعظيم اليوم بل جرى على عادة الناس لا يكفر وينبغى ان يفعله قبله او بعده نفياً للشبهة ولو شرى فيه مالم يشتره قبله ان اراد تعظيمه كفر وان اراد الاكل و الشرب

التنعم لا یکفر زیلعی ۲ اھ۔ وفي رد المحتار عن | در مختار میں ہے اگر کسی مسلمان نے تحفہ وہدیہ دیا (اگر کسی مسلمان کو ہدیہ دیا گیا) لیکن ہندو تہوار کی تعظیم کا ارادہ نہ کیا بلکہ لوگوں کی عادت کے مطابق ایسا ہوا تو کافر نہ ہوگا۔ لیکن مناسب یہ ہے کہ یہ کام تہوار سے پہلے یا بعد میں کرے تاکہ شبہ نہ ہونے پائے اور اگر اس نے ہندو تہوار والے دن کچھ خریدا جو پہلے نہیں خریدا تھا تو اگر اس نے تعظیم کا ارادہ کیا تو کافر ہو گیا، اور محض کھانے پینے اور عیش و عشرت کا ارادہ کیا تو کافر نہ ہوگا، زیلعی اھ، فتاویٰ شامی میں |

۱ فتاویٰ ہندیہ کتاب الشھادات الباب الرابع نورانی کتب خانہ پشاور ۳/ ۴۶۹ ۲ در مختار مسائل شتی مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۳۵۰

Fatawa Razawiyya Volume 24

Jami' al-Fasulayn, the first priority for Muslims is not to agree with them in such situations by expressing joy and pleasure. This was mentioned regarding an invitation hosted by a Magian on the occasion of shaving his son's head. I say: even if something is not from their false religious rituals, it is still more appropriate to avoid such acts and it is more fitting. The matter is clear and cannot be denied. (T) It is narrated with reference to Jami' al-Fasulayn that it is better for Muslims that they should not agree with non-Muslims at all while expressing joy and pleasure in these circumstances. This was mentioned in respect of the feast which a Magian arranged on the occasion of shaving his child's head. I say that even if there is nothing from the rituals of their false religion, still it is better and more appropriate to avoid such a thing, and the matter is clear which cannot be denied. (T)

Similarly, before or after these days, if the picture of a halal animal was not purchased by oneself but given by someone else, there is no harm in eating it, for the sin lies in making and purchasing the picture. If these two actions are absent, then only its 'non-existence' remains, and that is what is sought, not its 'avoidance', as is not hidden. And Allah Almighty knows best, and the knowledge of the One whose glory is exalted is more complete and firm. (T) Because the trouble lies in making and buying pictures. When these two works are not there, only 'non-existence' i.e., not being, will remain and that is required, not 'escape' i.e., to run away from it. As it is not hidden. And Allah Almighty knows well and the knowledge of that Great One is more complete and firm. (T)

Issue 225: From Mulla Hasan Peshawari, 2 Dhu al-Hijjah 1311 AH. What do the scholars of religion and the jurists of the firm Shariah say about this matter: that the absolute prohibition of pictures has been proven from the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him), or is it restricted, i.e., complete or incomplete, as photographic or hand-made as is famous? What do the scholars of religion and the jurists of the firm Shariah say in this matter: is the absolute prohibition of pictures from the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) proven or not?

1 Radd al-Muhtar, Miscellaneous Issues, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5 / 481

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

जामे अल-फ़ुसूलैन के हवाले से नक़ल है कि मुसलमानों के लिए बेहतर यह है कि वे इन स्थितियों में खुशी और आनंद का इज़हार करते हुए गैर-मुसलमानों की सहमति हरगिज़ न करें। इसे उस दावत के हक़ में ज़िक्र किया गया जो किसी पारसी (मजूसी) ने अपने बच्चे के सिर मुंडाने के मौके पर दी हो। मैं कहता हूँ कि उनके बातिल धर्म की रस्मों में से कोई चीज़ न हो, फिर भी जो इस तरह का काम हो उससे भी बचना ज़्यादा बेहतर और ज़्यादा उचित है और मामला स्पष्ट है जिससे इनकार नहीं किया जा सकता। (त)

इसी तरह इन दिनों से पहले या बाद में हलाल जानवर की तस्वीर अगर खुद न खरीदी हो बल्कि किसी और ने दी हो तो उसके खाने में भी कोई हर्ज नहीं है, क्योंकि हर्ज तस्वीर बनाने और खरीदने में है। जब ये दोनों काम न हों तो सिर्फ अदाम यानी न होना बाकी रहेगा और वही वांछित है न कि महरूब यानी उससे भागा जाए। जैसा कि गुप्त नहीं है। और अल्लाह तआला खूब जानता है और उस बड़ी महानता वाले का ज्ञान अधिक पूर्ण और पुख्ता है। (त) क्योंकि हर्ज तस्वीर बनाने और खरीदने में है। जब ये दोनों काम न हों तो सिर्फ अदाम यानी न होना बाकी रहेगा और वही मक़सूद है न कि महरूब यानी उससे भागा जाए। जैसा कि पोशीदा नहीं। और अल्लाह तआला खूब जानता है और उस बड़ी बुज़ुर्गी वाले का इल्म ज़ियादा कामिल और पुख्ता है। (त)

मसला 225: अज़ मुल्ला हसन पेशावरी, 2 ज़िल-हिज्जा 1311 हिजरी। उलेमा-ए-दीन और मुफ्ती-ए-शरअ-ए-मतीन इस मसले में क्या फरमाते हैं कि जनाब सैय्यद आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से तस्वीरों का मुतलक (पूर्णत;) मना होना साबित है या मुक़य्यद यानी कामिल या नाक़िस जैसा कि अक्सी (फोटो) और दस्ती (हाथ से बनी) मशहूर है? उलेमा-ए-दीन और मुफ्ती-ए-शरअ-ए-मतीन इस मसले में क्या फरमाते हैं कि जनाब सैय्यद आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से तस्वीरों का मुतलक ममनू (पूर्णतः प्रतिबंधित) होना साबित है या नहीं?

1 रद्द अल-मुह्तार, मसाइल-ए-शत्ता, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बैरूत 5/481।

جامع الفصولین، الاولی للمسلمین ان لایوافقواھم علی مثل ھذہ الاحوال لاظھار الفرح والسرور ۱ ھ ذکرہ فی حق دعوۃ اتخذھا مجوسی لحلق راس ولدہ، قلت ولیس ذلک شیئاً من رسوم مذھبھم الباطل فماکان کذلک کان اولی بالاجتناب واجدر و الامر واضح لا ینکر۔ جامع الفصولین کے حوالے سے منقول ہے کہ مسلمانوں کے لئے بہتر یہ ہے کہ وہ ان حالات میں خوشی اور سرور کا اظہار کرتے ہوئے غیر مسلموں کی موافقت ہر گز نہ کریں اھ، اس کو اس دعوت کے حق میں ذکر فرمایا جو کسی مجوسی نے اپنے بچہ کے سرمنڈوانے کے موقع پر کی ہو۔ میں کہتا ہوں کہ ان کے باطل مذہب کی رسومات میں سے کوئی چیز نہ ہو، پھر بھی جو اس طرح کا کام ہو اس سے بھی بچنا زیادہ بہتر اور زیادہ مناسب ہے اور معاملہ واضح ہے جس سے انکار نہیں کیا جاسکتا۔ (ت)

یو ہیں ان ایام کے قبل یا بعد حلال جانور کی تصویر اگر خود نہ خریدی بلکہ دوسرے نے دی تو اس کے کھانے میں بھی مضائقہ نہیں، فان البأس فی اتخاذہ واشترائہ فأذا عدمالم یبق الا اعدامہ وھو مطلوب لامھروب کما لا یخفی واللہ تعالٰی اعلم و علمہ جل مجدہ اتم واحکم۔ کیونکہ حرج تصویر بنانے اور خریدنے میں ہے۔ جب یہ دونوں کام نہ ہوں تو صرف اعدام یعنی نہ ہونا باقی رہے گا اور وہی مطلوب ہے نہ کہ مہروب یعنی اس سے بھاگا جائے۔ جیسا کہ پوشیدہ نہیں۔ اور اللہ تعالٰی خوب جانتا ہے اور اس بڑی بزرگی والے کا علم زیادہ کامل اور پختہ ہے۔ (ت)

مسئلہ ۲۲۵: از ملا حسن پشاوری ۲ ذی الحجہ ۱۳۱۱ھ چہ می فرمایند علمائے دین و مفتیان شرع متین اندریں مسئلہ کہ از جناب سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم امتناع تصاویر مطلقہ بہ ثبوت رسیدہ است یا مقید یعنی کامل یا ناقص کہ عکسی و دستی مشہورست۔ علمائے دین و مفتیان شرع

متین اس مسئلہ میں کیا فرماتے ہیں کہ جناب سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے تصویروں کا مطلق ممنوع ہونا ثابت ہے یا نہیں؟

۱ ردالمحتار مسائل شتّٰی داراحیاء التراث العربی بیروت ۵ / ۴۸۱

Fatawa-e-Razvia, Volume 24

[Question Section - Left Box] In various places, disputes and discussions have arisen on this matter. Some say that every image is forbidden. Others say that an image drawn on paper or a wall, like a shadow, which is not handmade and has a smooth surface, is permissible to create and possess. However, that which has a physical body and is made of wood or iron, whose surface is not flat, is not permissible, and keeping it is also prohibited and unlawful. Give a ruling, and may you be rewarded.

[Question Section - Right Box] Are restricted images—whether complete or incomplete, photographic or handmade—forbidden or not? In various places, the situation regarding image-making has escalated to competitions, exhibitions, and debates. Some people believe that any image, without restriction, is forbidden. Meanwhile, others claim that an image made on paper or a wall, like a shadow, not handmade, with a flat and even surface, is permissible to create and keep. But images with a physical body made of clay, wood, or iron, whose surface is not smooth and even, are not permissible; hence, preserving them is forbidden and unlawful. Please clarify and receive a reward. (T)

[The Answer:]

[Answer Section - Left Box] Image-making is absolutely haraam (forbidden), whether it has a shadow or not, whether it is handmade or a photograph. During the blessed era of the Master of Men and Jinn (peace and blessings of Allah be upon him), both kinds of images were made—those with a physical body and those on a flat surface. In the Hadiths, a firm prohibition of image-making in general and severe warnings regarding its craft have been recorded without any exception or restriction. Therefore, all its types fall under the prohibition. Considering shadowless images permissible is solely the doctrine of some Rawafiz (a sect). Mother of the Believers Siddiqah (may Allah be pleased with her) bought a cushion with images. The Master of Messengers (peace and blessings of Allah be upon him) saw it and did not step inside the house. When the Mother of the Believers [saw] the signs of anger and grief on the beautiful face of the Beloved of the Majesty (peace and blessings of Allah be upon him)...

[Answer Section - Right Box] Making an image of any living thing is haraam without any condition or restriction, whether it has a shadow or not, whether it is handmade or just a photograph. During the blessed time of the Master of Humans and Jinn (peace and blessings of Allah be upon him), people used to make both types of

pictures: those in the form of sculptures and those as mere reflections or shadows. Accordingly, in the Hadiths, a categorical prohibition against image-making and severe warnings without any specification or restriction have been mentioned. Thus, all types of images are included in the prohibition. Declaring shadowless images as permissible is only the doctrine of some Rawafiz. For instance, the Mother of the Believers Sayyidah Siddiqah (may Allah be pleased with her) once bought a pillow with images, and the Master of the Prophets (peace and blessings of Allah be upon him)...

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 24

[प्रश्न अनुभाग - बायां बॉक्स] कई जगहों पर इस मामले में विवाद और बहस हुई है। कुछ लोग कहते हैं कि हर प्रकार का चित्र निषिद्ध है। कुछ अन्य कहते हैं कि जो चित्र कागज़ या दीवार पर छाया की तरह बनाया गया हो, जो हाथ से न बना हो और जिसकी सतह समतल हो, उसे बनाना और अपने पास रखना जायज़ है। और जिसका भौतिक शरीर हो, जो लकड़ी या लोहे से बना हो और जिसकी सतह समतल न हो, वह जायज़ नहीं है, और उसे रखना भी निषिद्ध और गैर-शरियाई है। उत्तर दें, आप पुण्य के भागी बनेंगे।

[प्रश्न अनुभाग - दायां बॉक्स] क्या प्रतिबंधित चित्र, यानी पूर्ण या अपूर्ण, फोटो या हाथ से बने, निषिद्ध हैं या नहीं? जगह-जगह चित्रकारी के बारे में मुक़ाबलों, उनकी प्रदर्शनी और बहसों तक बात पहुँच चुकी है। कुछ लोगों का मानना है कि बिना किसी शर्त के चित्र पूर्णतः निषिद्ध है, जबकि कुछ कहते हैं कि जो चित्र कागज़ या दीवार पर छाया की तरह बनाया गया हो और हाथ से न बना हो और उसकी सतह भी समतल और बराबर हो, ऐसा चित्र बनाना और अपने पास रखना जायज़ है। लेकिन वह चित्र जो भौतिक शरीर रखता हो, मिट्टी, लकड़ी या लोहे से बनाया गया हो, जिसकी सतह समतल और बराबर न हो, वह जायज़ नहीं है; अतः उसका संरक्षण निषिद्ध और नाजायज़ है। स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें। (त)

[उत्तर:]

[उत्तर अनुभाग - बायां बॉक्स] चित्रकारी पूर्णतः हराम है, चाहे वह छायादार हो या बिना छाया की, हाथ से बनी हो या फोटो। इंसानों और जिन्नों के सरदार (उन पर अल्लाह की कृपा और शांति हो) के धन्य समय में, दोनों प्रकार के चित्र बनाए जाते थे - ठोस भी और समतल भी। हदीसों में सामान्य रूप से चित्रकारी की कड़ी मनाही और इसके शिल्प के बारे में गंभीर चेतावनी बिना किसी अपवाद या प्रतिबंध के आई है। अतः इसके सभी प्रकार निषेध के अंतर्गत आते हैं। बिना छाया वाले चित्रों को जायज़ मानना केवल कुछ रफ़ाज़ियों (एक संप्रदाय) का मत है। मोमिनों की माँ सिद्दीका (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने चित्रों वाला एक तकिया खरीदा। रसूलो के सरदार (उन पर अल्लाह की कृपा और शांति हो) ने उसे देखा और घर के भीतर कदम नहीं रखा। जब मोमिनों की माँ ने महान अल्लाह के प्रिय (उन पर अल्लाह की कृपा और शांति हो) के सुंदर चेहरे पर क्रोध और शोक के निशान देखे...

[उत्तर अनुभाग - दायां बॉक्स] किसी भी जीवित चीज़ का चित्र बनाना बिना किसी शर्त या प्रतिबंध के हराम है, चाहे वह छायादार हो या बिना छाया का, चाहे हाथ से बना हो या केवल फोटो हो। इंसानों और जिन्नों के स्वामी (उन पर अल्लाह की कृपा और शांति हो) के धन्य समय में लोग दोनों प्रकार के चित्र बनाया करते थे, जो मूर्तियों के रूप में या केवल प्रतिबिंब और छाया के रूप में होते थे। तदनुसार, हदीसों में सामान्य रूप से चित्रकारी पर प्रतिबंध और बिना किसी विशेषता या प्रतिबंध के कड़ी चेतावनी दर्ज की गई है। इसलिए चित्र के सभी प्रकार निषेध में शामिल हैं। और बिना छाया वाले चित्र को जायज़ ठहराना केवल कुछ रफ़ाज़ियों का मत है। उदाहरण के लिए, मोमिनों की माँ सैयदा सिद्दीका (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) एक बार चित्रों वाला एक तकिया लेकर आईं और नबियों के सरदार (उन पर अल्लाह की कृपा और शांति हो) ने...

فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۴

[سوال - بایاں کالم] جا بجادریں امر معارضہ ومباحثہ بوقوع رسیدہ بعضے می گویند کہ مطلق تصویر ممنوع ست و بعضے میگویند کہ تصویرے کہ مثل سایہ بر کاغذ یا بر دیوار کشیدہ شدہ باشد و دستی نباشد و سطح نیز ہموار باشد آں تصویر کشیدن و با خود داشتن جائزست وانچہ جسم می دارد واز ہیزم وآہن ساختہ باشد کہ سطح آں ہموار نباشد جائز نباشد و نگاہ داشتن آں نیز ممنوع غیر مشروع ست۔ بینوا توجروا۔

[سوال - دایاں کالم] یا مقید تصویریں یعنی کامل یا ناقص، عکسی یا دستی ممنوع ہیں یا نہیں؟ جگہ جگہ تصاویر سازی کے متعلق مقابلے، ان کی نمائش اور مباحثوں تک نوبت پہنچ چکی ہے بعض لوگوں کا خیال ہے کہ بلاقید مطلق تصویر منع ہے جبکہ بعض کہتے ہیں کہ جو تصویر سایہ کی طرح کاغذ یا دیوار پر بنائی گئی ہو اور ہاتھ سے بنی ہوئی نہ ہو اور اس کی سطح بھی ہموار اور برابر ہو ایسی تصویر کھینچنا اور اپنے پاس رکھنا جائز ہے لیکن وہ تصویر جو جسم رکھتی ہو مٹی، لکڑی یا لوہے سے بنائی گئی ہو اس کی سطح ہموار اور برابر نہ ہو وہ جائز نہیں پس اس کا محفوظ رکھنا ممنوع اور ناجائز ہے۔ بیان فرماؤ اجر پاؤ (ت)

الجواب:

[جواب - بایاں کالم] صورت گری مطلقاً حرام ست سایہ دار باشد یا بے سایہ دستی باشد یا عکس، در زمان برکت نشان سید الانس والجان صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ہر دوگانہ تصویرے ساختند ہم بجسم و ہم مسطح و در احادیث از مطلق صورت گری نہی اکید و در صنعت او وعید شدید بے تخصیص و تقیید ورود یافت پس جمیع اقسام او زیر منع درآمد تصویر بے سایہ را روا داشتن مذہب بعض

روافض ست و بس، ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا وسادہ با تصویر خرید سید المرسلین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ملاحظہ فرمود درون خانہ قدم مبارک نہ نہاد ام المومنین چوں اثر خشم وملال در چہرہ باجمال محبوب ذی الجلال صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم

[جواب - دایاں کالم] کسی جاندار کی تصویر بنانا بغیر کسی قید اور شرط کے حرام ہے خواہ سایہ دار ہو یا بے سایہ خواہ ہاتھ کی بنی ہوئی ہو یا محض عکس ہو۔ آقائے انس وجان صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے زمانہ بابرکت میں لوگ دونوں قسم کی تصاویر بنایا کرتے تھے جو مجسمات کی صورت میں یا محض عکس اور سایہ کی صورت میں ہوتی تھیں چنانچہ احادیث میں مطلق تصویر سازی پر نہی اور بغیر کسی تخصیص و تقیید کے سخت وعید وارد ہوئی ہے لہذا تصویر کی تمام اقسام ممانعت میں داخل ہیں، اور بے سایہ تصویر کو جائز قرار دینا صرف بعض روافض کا مذہب ہے چنانچہ ام المومنین سیدہ صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا ایک دفعہ تصویر والا تکیہ خرید لائیں اور سید الانبیاء صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے

fatawa razwiyya Volume 24

[Right Column] Upon entering the house, as soon as he saw it, he stopped his blessed steps from going further. When the Mother of the Believers saw the signs of anger and displeasure on the holy face of the beloved of the Lord of Majesty, she began to tremble like a willow tree and started to plead: "O Messenger of Allah! I repent to Allah and His Messenger. What mistake have I made? O Messenger of Allah, I turn towards Allah and His Messenger. What fault have I committed?" The Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Indeed, those who make pictures will be punished on the Day of Resurrection, and it will be said to them, 'Put life (soul) into what you have created.'" And he said, "In whichever house there is a picture, the angels do not enter it." Bukhari and Muslim have narrated this from Sayyidah Siddiqah (may Allah be pleased with her). It is evident that the picture was on a cushion; it must have been a photographic or painted image, not a carved statue. Undoubtedly, the people of knowledge have explicitly stated the absolute prohibition of pictures. Accordingly, Mulla Ali Qari (may Allah's mercy be upon him) stated in Mirqat: "Our associates and other scholars have stated that making pictures of animals is strictly prohibited, and it is included among the major sins because there is a severe warning against it."

[Left Column] [Peace and blessings be upon him] sees [it]; she trembles like a willow tree within herself and offers: "O Messenger of Allah, I repent to Allah and His Messenger. What sin have I committed, O Messenger of Allah? I repent to God and the Messenger of God. What sin did I commit?" The Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Indeed, the makers of these pictures will be punished on the Day of Judgment, and it will be said to them, 'Give life to what you have created.'" And he said, "Indeed, the house in which there are pictures, the angels do not enter." These picture-makers will be punished on the Day of Resurrection and it will be said to them that they should bring to life what they have created, and he said the house in which there is a picture, angels do not enter it. (Reported by the two Sheikhs [Bukhari and Muslim] from her, may Allah be pleased with her). It is clear that whatever was on the cushion was a painted and shadeless image, not carved or three-dimensional. Necessarily, the scholars have explicitly stated the absolute prohibition. Maulana Ali Qari (may the mercy of the Creator be upon him) said in Mirqat: "Our associates and other scholars said: depicting the image of an animal is strictly prohibited, and it is among the major sins because it is threatened [with punishment]."

[Footer] 1 Sahih Muslim, Kitab al-Libas wa al-Zinah, Chapter: Prohibition of Animal Images etc. Qadimi Kutub Khana, Karachi 2/201. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Buyu', Chapter: Trade in what is disliked for men and women to wear. Qadimi Kutub Khana, Karachi 1/283. Page 564 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[दायां कॉलम] घर में तशरीफ़ लाते ही देख लिया तो आगे जाने से कदम मुबारक रोक लिए, उम्मुल मोमिनीन ने रब्ब ज़ुल-जलाल के महबूब मुकर्रम के चेहरा मुक़द्दस पर गुस्से और नाराज़गी के असरात देखे तो बेद के दरख़्त की तरह लरज़ने और कांपने लगीं और अर्ज़ करने लगीं: "ऐ अल्लाह के रसूल! मैं अल्लाह और उसके रसूल की बारगाह में तौबा करती हूँ, मुझसे कौन सी ख़ता हुई है? या रसूल अल्लाह मैं अल्लाह और उसके रसूल की तरफ रुजू लाती हूँ मैं ने कौन सा क़ुसूर किया?" सरवर-ए-आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "यकीनना तस्वीर साज़ क़यामत के दिन अज़ाब दिए जाएंगे और उनसे कहा जाएगा कि अपनी बनाई हुई तस्वीरों में जान (रूह) डालो।" और इरशाद फ़रमाया कि जिस घर में तस्वीर हो उसमें फ़रिश्ते नहीं आते। बुखारी व मुस्लिम ने सैयदा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से इसको रिवायत किया है। ज़ाहिर है कि तकिया पर तस्वीर थी वह अक्सी और नक्काशी ही होगी न कि तराशीदा मुजस्समा। बिलाशुबा अहल-ए-इल्म ने बिला कैद मुतलक़ तस्वीर के हराम होने की सराहत फ़रमाई है, चुनांचे मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैह ने मिर्क़ात में फ़रमाया: "हमारे असहाब और दीगर उलमा-ए-किराम ने फ़रमाया हैवानात की तस्वीर बनाना शदीद हराम है और यह कबीरा गुनाहों में शामिल है क्योंकि इस पर शदीद वईद..."

[बायां कॉलम] सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम देखते हैं, वह अपने आप में बेद की तरह कांपती हैं और अर्ज़ करती हैं: "या रसूल अल्लाह, मैं अल्लाह और उसके रसूल की तरफ तौबा करती हूँ। मैंने क्या गुनाह किया है या रसूल अल्लाह? मैं ख़ुदा और रसूल-ए-ख़ुदा की तरफ तौबा करती हूँ कि मैंने क्या गुनाह किया?" सरवर-ए-आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "बेशक इन तस्वीरों वाले क़यामत के दिन अज़ाब दिए जाएंगे और उनसे कहा जाएगा कि जो तुमने पैदा किया उसे ज़िंदा करो।" और फ़रमाया: "बेशक वह घर जिसमें तस्वीरें हों उसमें फ़रिश्ते दाखिल नहीं होते।" ये तस्वीर बनाने वाले क़यामत के दिन अज़ाब दिए जाएंगे और उनसे कहा जाएगा कि जिसे तुमने बनाया है उसे ज़िंदा करो। और फ़रमाया कि जिस घर में तस्वीर हो, फ़रिश्ते उसमें नहीं आते। (इमाम बुखारी और मुस्लिम ने इसे हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत किया है)। ज़ाहिर है कि जो कुछ तकिये पर था वह नक़्श की हुई और बिना साये वाली तस्वीर थी, न कि तराशी हुई और मुजस्समा। लिहाज़ा उलमा ने मुतलक़ हराम होने की सराहत फ़रमाई है। मौलाना अली क़ारी अलैहिर रहमतुल

बारी ने मिर्क़ात में फ़रमाया: "हमारे असहाब और अन्य उलमा ने कहा: जानदार की तस्वीर बनाना सख़्त हराम है और यह कबीरा गुनाहों में से है क्योंकि इस पर [अज़ाब की] धमकी दी गई है।"

[फुटर] 1 सहीह मुस्लिम किताबुल लिबास वज़ ज़ीनह बाब तहरीम सूरतिल हैवान इल्ख़, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 2/201, सहीह अल-बुख़ारी किताबुल बुयूअ बाबुत तिजारति फ़ीमा यकरहु लबसुहु लिर-रिजाले वन-निसाए, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 1/283 पेज 564 / 720

[دایاں کالم] گھر میں تشریف لاتے ہی دیکھ لیا تو آگے جانے سے قدم مبارک روک لئے، ام المومنین نے رب ذوالجلال کے محبوب مکرم کے چہرہ مقدس پر غصے اور ناراضگی کے اثرات دیکھے تو بید کے درخت کی طرح لرزنے اور کانپنے لگیں اور عرض کرنے لگیں اے اللہ کے رسول ! میں اللہ اور اس کے رسول کی بارگاہ میں توبہ کرتی ہوں مجھ سے کونسی خطا ہوئی ہے؟ یا رسول اللہ میں اللہ اور اس کے رسول کی طرف رجوع لاتی ہوں میں نے کون سا قصور کیا؟ سرور عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا یقینا تصویر ساز قیامت کے دن عذاب دیئے جائیں گے اور ان سے کہا جائے گا کہ اپنی بنائی ہوئی تصویروں میں جان (روح) ڈالو۔ اور ارشاد فرمایا کہ جس گھر میں تصویر ہو اس میں فرشتے نہیں آتے۔ بخاری و مسلم نے سیدہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے اس کو روایت کیا ہے ظاہر ہے کہ تکیہ پر تصویر تھی وہ عکسی اور نقاشی ہی ہوگی نہ کہ تراشیدہ مجسمہ۔ بلاشبہ اہل علم نے بلا قید مطلق تصویر کے حرام ہونے کی صراحت فرمائی ہے، چنانچہ ملا علی قاری رحمۃ اللہ علیہ نے مرقاۃ میں فرمایا ہمارے اصحاب اور دیگر علماء کرام نے فرمایا حیوانات کی تصویر بنانا شدید حرام ہے اور یہ کبیرہ گناہوں میں شامل ہے کیونکہ اس پر شدید وعید

[بایاں کالم] وسلم می بیند برخود پیچو بید می لرزد و عرضہ می دارد یارسول اللہ اتوب الی اللہ والٰی رسولہ ماذا اذنبیت یارسول اللہ من توبہ می کنم بسوئے خدا و رسول خدا چہ گناہ کردم سرور عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرمود ان اصحاب ہذہ الصور یعذبون یوم القیمۃ ویقال لھم احیوا ماخلقتم وقال ان البیت الذی فیہ الصور لاتدخلہ الملئکۃ این صورتگراں روز قیامت عذاب کردہ شوند و ایشاں را گفتہ شود کہ زندہ کنند آنچہ آفریدہ اید و فرمودہ خانہ کہ در و تصویر است فرشتگان در و در نیایند

اخرجہ الشیخان ۱ عنہا رضی اللہ تعالیٰ عنہا پیداست کہ انچہ بروساوہ باشد ہمیں تصویر منقوش وبے سایہ است نہ منحوت و مجسم، لاجرم علماء بتحریم مطلق تصریح فرمودہ اند مولانا علی قاری علیہ الرحمۃ الباری در مرقات فرمود قال اصحابنا وغیرہم من العلماء تصویر صورۃ الحیوان حرام شدید التحریم وھو من الکبائر لا نہ متوعد علیہ

[فٹ نوٹ] ۱ صحیح مسلم کتاب اللباس والزینۃ باب تحریم صورۃ الحیوان الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۲۰۱، صحیح البخاری کتاب البیوع باب التجارۃ فیما یکرہ لبسہ للرجال والنساء قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۲۸۳ Page 564 of 720

Fatawa Razawiyya, Volume 24

Regarding this severe warning mentioned in the Hadiths, whether the image is made on clothing, a carpet, a dirham, a dinar, or anything else. (1) Allama Shami states in Durr-ul-Mukhtar: The act of image-making is impermissible in general because it is an imitation of the creation of Allah Almighty. (2) Similarly, from Bahr-ur-Raiq: Making it is forbidden in every situation because there is an imitation of Allah Almighty's creation, whether it is on clothing, a carpet, a dirham, a vessel, a wall, etc. (3) And since the reason for the prohibition is similarity to Allah's creation, it makes no difference whether they draw it with a pen or print a photograph, because the reason is present in all cases. The Master of the Universe (peace and blessings of Allah Almighty be upon him) said: "The most severely punished people on the Day of Resurrection will be those who imitate Allah's creation." On the Day of Resurrection, those who imitate the creation of the Lord (Mighty and Majestic) will be in severe punishment.

This [warning] has come as mentioned in the Hadiths, whether an image is made on any cloth, or made on any bedding, or made on a dirham, dinar, and coin, or apart from these on any other thing, image-making is impermissible, forbidden, and constitutes a violation of the Shariah. Allama Shami states in Rad al-Muhtar that making images is absolutely not permissible because this is a resemblance to Allah Almighty's creation. In the same work, it is cited from Bahr al-Raiq that image-making is forbidden in all circumstances because it resembles Divine creation, whether this work is on cloth or any other object, such as bedding, dirham, dinar, vessel, wall, paper, etc. When the reason and cause for it being forbidden is the resemblance to Divine handiwork, then it makes no difference whether the image is made with a pen or by photographic printing, because this reason is present everywhere. The Master of the Universe (peace and blessings of Allah Almighty be upon him) stated: Those who will receive the most severe punishment on the Day of Resurrection will be those who used to imitate Allah Almighty's creation. Those who will be in severe punishment on the Day of Resurrection are those who (used to imitate) Allah Almighty's attribute of creation (making).

Footnotes: 1. Mirqat al-Mafatih Sharh al-Mishkat, Kitab al-Libas, Bab al-Tasawir, Maktaba al-Habibiyyah Quetta, 8/262; Mirqat al-Mafatih Sharh al-Mishkat, Kitab al-Libas, Bab Man Lam Yadkhul Shai'an, Maktaba al-Habibiyyah Quetta, 3/881. 2. Radd al-Muhtar, Kitab al-Salat, Bab Ma Yufsid al-Salat wa Ma Yukrah fiha, Dar Ihya al-Turath

al-Arabi Beirut, 1/437. 3. Radd al-Muhtar, Kitab al-Salat, Bab Ma Yufsid al-Salat wa Ma Yukrah fiha, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 1/435.

फ़तावा रज़विया, जिल्द २४

हदीसों में वर्णित इस कड़ी चेतावनी के संबंध में, चाहे छवि कपड़े पर बनाई गई हो, कालीन पर, दिरहम पर, दीनार पर, या किसी और चीज़ पर। (१) अल्लामा शामी 'दुर्र-उल-मुख्तार' में कहते हैं: चित्र बनाने का कार्य सामान्यतः वर्जित है क्योंकि यह अल्लाह सर्वशक्तिमान की रचना की नकल है। (२) इसी तरह, 'बहर-उर-राइक़' से: इसे बनाना हर स्थिति में हराम है क्योंकि इसमें अल्लाह सर्वशक्तिमान की रचना की समानता है, चाहे वह कपड़े पर हो, कालीन पर, दिरहम पर, बर्तन पर, दीवार पर, आदि। (३) और चूँकि पाबंदी का कारण ईश्वर की रचना से समानता है, इसलिए इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे इसे कलम से खींचते हैं या फोटो छापते हैं, क्योंकि कारण सभी मामलों में मौजूद है। ब्रह्मांड के स्वामी (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बरसाए) ने फरमाया: "कयामत के दिन सबसे कठोर दंड उन लोगों को दिया जाएगा जो अल्लाह की रचना की नकल करते हैं।" कयामत के दिन, वे लोग जो प्रभु (शक्तिशाली और प्रतापी) की रचना की नकल करते हैं, वे गंभीर दंड में होंगे।

यह [चेतावनी] हदीसों में जैसा उल्लेख है, आई है, चाहे किसी कपड़े पर चित्र बनाया जाए, किसी बिछौने पर बनाया जाए, या दिरहम, दीनार और सिक्के पर बनाया जाए, या इनके अलावा किसी अन्य वस्तु पर चित्रकारी करना नाजायज़, हराम और शरीयत का उल्लंघन है। अल्लामा शामी 'रद अल-मुह्तार' में फरमाते हैं कि चित्र बनाना कतई जायज़ नहीं है क्योंकि यह अल्लाह तआला की रचना के समान है। उसी में 'बहर अल-राइक़' से उद्धृत है कि चित्रकारी हर हाल में हराम है क्योंकि इसमें ईश्वरीय रचना से समानता है, चाहे यह काम कपड़े पर हो या किसी अन्य चीज़ पर, जैसे बिछौना, दिरहम, दीनार, बर्तन, दीवार और कागज़ आदि। जब हराम होने का कारण और वजह ईश्वरीय निर्माण के साथ समानता है, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि चित्र कलम से बनाया गया है या अक्सी (फोटो) छाप से, क्योंकि यह कारण हर जगह मौजूद है। सैय्यद-ए-आलम (अल्लाह तआला उन पर कृपा और शांति बरसाए) ने इरशाद फरमाया: कयामत के दिन सबसे ज़्यादा अज़ाब (दंड) पाने वाले वे लोग होंगे जो अल्लाह तआला की रचना की नकल करते थे। कयामत के दिन सख्त अज़ाब वाले वे लोग होंगे जो अल्लाह तआला के सृजन (बनावट) के गुण से (नकल करते थे)।

पाद-टिप्पणियाँ: १. मिर्क़ात अल-मफ़ातीह शरह अल-मिश्क़ात, किताब अल-लिबास, बाब अत-तसावीर, मकतबा अल-हबीबिया क्वेटा, ८/२६२; मिर्क़ात अल-मफ़ातीह शरह अल-मिश्क़ात, किताब अल-लिबास, बाब मन लम यदखुल शैयान, मकतबा अल-हबीबिया क्वेटा, ३/८८१। २. रद अल-

मुह्तार, किताब अस-सलात, बाब मा युफ़सिद अस-सलात व मा युकरह फीहा, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी बेरूत, १/४३७। ३. रद अल-मुह्तार, किताब अस-सलात, बाब मा युफ़सिद अस-सलात व मा युकरह फीहा, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी बेरूत, १/४३५।

पृष्ठ ७२० का ५६५

بہذا الوعید الشدید المذکور فی الاحادیث سواء صنعه فی ثوب اوبساط اودرهم اودینار او غیرذلك۔

ـــــ۱ علامہ شامی در ردالمحتار فرماید فعل التصویر غیرجائز مطلقا لانه مضاهاة لخلق الله تعالی۔

ـــــ۲ ہمدان از بحر الرائق ست صنعته حرام بکل حال لان فیه مضاهاة لخلق الله تعالی وسواء کان فی ثوب اوبساط اودرهم و اناء وحائط وغیرها۔ ـــــ۳ و چوں علت تحریم مشابہت بخلق الٰہی ست تفاوت نمی کند کہ بخامہ کشند یا عکس را منطبع سازند زیرا کہ علت ہمہ جاحاصل ست سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرمود اشدالناس عذابا یوم القیمة الذین یضاهون بخلق الله تعالی روز قیامت در سخت عذاب آں باشند کہ مشابہت می کنند بآفرینیش خداوند عزوجل۔

آئی ہے جو احادیث میں مذکور ہے خواہ کسی کپڑے پر تصویر بنائی جائے، کسی بچھونے پر بنائی جائے یا درہم و دینار اور سکے پر بنائی جائے یا ان کے علاوہ کسی بھی اور چیز پر تصویر کشی ناجائز، حرام اور شریعت کی خلاف ورزی کا ارتکاب ہے۔ علامہ شامی ردالمختار میں فرماتے ہیں تصویر بنانا مطلقاً جائز نہیں اس لئے کہ یہ اللہ تعالیٰ کی تخلیق سے مشابہت ہے۔ اسی میں بحر الرائق سے نقل ہے کہ تصویر سازی ہر حال میں حرام ہے کیونکہ اس میں تخلیق الہی سے مشابہت ہے، خواہ یہ کام کپڑے پر ہو یا کسی اور چیز پر مثلاً بچھونا، درہم دینار، برتن، دیوار اور کاغذ وغیرہ۔ جب حرام ہونے کی علت اور وجہ بناوٹ الہی کے ساتھ مشابہت ہے تو اس سے کوئی فرق نہیں پڑتا کہ قلم سے تصویر بنائی جائے یا عکسی چھاپ سے، کیونکہ یہ علت سب جگہ موجود ہے، سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا قیامت کے دن سب سے زیادہ عذاب پانے والے وہ لوگ ہوں گے جو اللہ تعالیٰ کی تخلیق سے مشابہت کرتے تھے۔ قیامت کے دن سخت عذاب والے وہ لوگ ہوں گے جو اللہ تعالیٰ کی صفت پیدائش (بناوٹ) سے

حاشیہ: ۱؎ مرقاۃ المفاتیح شرح المشکوۃ کتاب اللباس باب التصاویر مکتبہ الحبیبیہ کوئٹہ ۸/ ۲۶۲،
مرقاۃ المفاتیح شرح المشکوۃ کتاب اللباس باب من لم یدخل شیئا مکتبہ الحبیبیہ کوئٹہ ۸۸۱/۳ ۲؎
ردالمحتار کتاب الصلوۃ مایفسد الصلوۃ ومایکرہ فیھا داراحیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۴۳۷ ۳؎
ردالمحتار کتاب الصلوۃ مایفسد الصلوۃ ومایکرہ فیھا داراحیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۴۳۵

Volume 24 Fatawa-e-Razviyya

[Left Column Text - Persian/Arabic blend] It was narrated by the Imams Ahmad, al-Bukhari (1), Muslim, and al-Nasa'i from the Mother of the Believers, may Allah be pleased with her. The passages from Radd al-Muhtar have just passed, and therein also lies the reason for the prohibition of pictures: their imitation of the creation of Allah the Almighty. This reason is present in all the mentioned forms. This ruling pertains to picture-making and portraiture. As for keeping pictures with oneself or in the house, there is a detailed explanation here. Prohibition and restriction have been made conditional upon several factors; if all of them are present, keeping them is unlawful, otherwise it is permissible. One is that the image of a living being must be in a state of being alive, and not such that merely looking at it reveals its lifelessness. For instance, a picture of a face, as opposed to one that lacks hands, feet, eyes, nose, or ears, as their absence results in them being excluded from the category of external organs, whether they were not made with the head from the start, or were made but then severed or erased. Keeping such a picture is permissible. Second, the picture should not be of extreme smallness and fineness, to the extent that if placed on the ground and viewed while standing...

[Right Column Text - Urdu translation/explanation] ...continued to resemble. The eminent Imams, for example, Hazrat Imam Ahmad, Bukhari, Muslim, and Nasa'i, have narrated this from the Mother of the Believers, may Allah be pleased with her. The passages from Radd al-Muhtar have just been cited, and they also state that the reason for images being forbidden is their resemblance to Allah's creation, and this reason is present in all the aforementioned cases. This ruling is regarding image-making and photography. There is some detail regarding keeping images in front of one, facing them, or preserving them in one's home. The scholars have made the prohibition of images conditional upon several requirements; if all are met, then keeping them for safekeeping is forbidden, otherwise it is permissible. (1) The image of a living thing must be in its living state, and not in such a way that merely looking at the image makes its lifelessness apparent, such as a picture of a face that does not have hands, feet, eyes, nose, or ears. Their absence is the cause for being excluded from the visible organs; they were not made with the head, or were made but then cut off. Keeping such a picture for safekeeping is permissible. (2) Second condition: The picture should not be extremely small and fine. If on the ground...

1. Sahih al-Bukhari, Book of Clothing, Chapter on what is trodden upon of images, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/880; Sahih Muslim, Book of Clothing, Chapter on the prohibition of portraying animal forms, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/201.
2. Radd al-Muhtar, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/435.

जिल्द 24 फ़तावा-ए-रज़विया

[बायां कॉलम - फ़ारसी/अरबी मिश्रण] इमाम अहमद, अल-बुखारी (1), मुस्लिम और अन-नसाई ने इसे उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया है। रद-अल-मुह्तार के उद्धरण अभी गुज़रे हैं, और उनमें यह भी है कि चित्र के हराम होने का कारण अल्लाह तआला की रचना से समानता है, और यह कारण सभी उल्लेखित रूपों में मौजूद है। यह हुक्म चित्रकारी और चित्र बनाने के बारे में है। जहाँ तक तस्वीरों को अपने पास या घर में रखने की बात है, यहाँ विस्तार से बताया गया है। निषेध और पाबंदी को कुछ शर्तों के साथ जोड़ा गया है; यदि वे सभी एक साथ हों, तो उन्हें रखना नाजायज़ है, अन्यथा जायज़ है। एक यह कि जीवित प्राणी का चित्र जीवित अवस्था में हो, ऐसा न हो कि चित्र को देखने मात्र से ही उसका निर्जीव होना स्पष्ट हो जाए। जैसे चेहरे का चित्र, इसके विपरीत जिसमें हाथ, पैर, आँख, नाक या कान न हों, क्योंकि इनकी अनुपस्थिति उन्हें बाहरी अंगों की श्रेणी से बाहर कर देती है, चाहे वे शुरू से ही सिर के साथ नहीं बनाए गए हों, या बनाए गए हों लेकिन फिर काट दिए गए या मिटा दिए गए हों। ऐसे चित्र को रखना जायज़ है। दूसरा यह कि चित्र अत्यंत छोटा और बारीक न हो, इस हद तक कि यदि उसे ज़मीन पर रखकर खड़े होकर देखा जाए...

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] ...समानता करते रहे। प्रतिष्ठित इमामों, जैसे हज़रत इमाम अहमद, बुखारी, मुस्लिम और नसाई ने इसे उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत किया है। अभी रद-अल-मुह्तार के उद्धरण गुज़रे हैं और उनमें यह भी है कि चित्र के हराम होने की वजह अल्लाह की रचना से समानता है, और यह वजह तमाम ऊपर बताई गई सूरतों में मौजूद है। यह हुक्म चित्र बनाने और फोटोग्राफी के बारे में है। तस्वीर अपने सामने और रूबरू रखने और अपने घर में महफूज़ करने के बारे में कुछ तफ़सील है। चित्र के हराम होने को विद्वानों ने कुछ शर्तों के साथ जोड़ा है; अगर सब जमा हों तो फिर उसका हिफ़ाज़त से रखना नाजायज़ है वरना जायज़। (1) जीवित चीज़ की तस्वीर उसकी ज़िंदगी की हालत में हो, न इस तरह कि सिर्फ तस्वीर देखने से उसका बेजान होना ज़ाहिर हो जाए, जैसे कि चेहरे की तस्वीर जिसमें हाथ, पैर, आँख, नाक या कान न हों कि उनका न होना बाहरी अंगों से निकलने का सबब है कि वे सिर के साथ नहीं बनाए गए या बनाए गए मगर उन्हें काट दिया गया, ऐसी तस्वीर को हिफ़ाज़त से रखना जायज़ है। (2) दूसरी शर्त: तस्वीर निहायत छोटी और बारीक न हो। अगर ज़मीन पर...

1. सहीह अल-बुखारी, किताबुल लिबास, बाब: चित्रों के ऊपर चलना, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/880; सहीह मुस्लिम, किताबुल लिबास, बाब: जानवरों की तस्वीरें बनाने की मनाही आदि, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/201।
2. रद अल-मुह्तार, किताबुस सलात, बाब: नमाज़ को खराब करने वाली चीज़ें और उनमें नापसंद चीजें, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 1/435।

رواہ الائمۃ احمد والبخاری ۱ ومسلم والنسائی عن ام المؤمنین رضی اللہ تعالیٰ عنہا عبارات ردالمختار حالا گذشت وہمدر است علّت حرمۃ التصویر المضاھاۃ لخلق اللہ تعالیٰ وھی موجودۃ فی کل ما ذکر ۲ ایں حکم تصویر گری و صورت کشی ست اما تصویر پیش خود یا در خانہ نگاہداشتن ایں جا تفصیل ست تحریم و منع اور ابچند شرط مشروط کردہ اند کہ اگر ہمہ بہم آید نگاہداشتن ناروا باشد ورنہ جائز، یکے آنکہ صورت جاندار بحالت جانداری باشد نہ چنانکہ بدیدن نفس صورت بیجان بودنش پیدا بود چنانچہ تصویر چہرہ بخلاف آنکہ دست یا پائے چشم یابنی یا گوش ندارد کہ عدم اینہا موجب خروج از اعضائے ظاہریہ از سر ساختہ اند یا ساختہ را قطع یا محو نمودہ اند نگاھداشتنش روا باشد۔ دوم آنکہ تصویر در نہایت صغر و باریکی نباشد بحدیکہ اگر بر زمین نہادہ استادہ ببیند

مشابہت کرتے رہے۔ ائمہ کرام مثلاً حضرت امام احمد، بخاری، مسلم اور نسائی نے اس کو ام المومنین رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کیا ہے، ابھی ردالمختار کی عبارات گزری ہیں اور اسی میں یہ بھی ہے کہ تصویر کے حرام ہونے کی علت تخلیق الٰہی سے مشابہت ہے، اور یہ علت تمام مذکورہ صورتوں میں موجود ہے اور یہ حکم تصویر سازی اور تصویر کشی کے بارے میں ہے۔ تصویر اپنے سامنے اور روبرو رکھنے اور اپنے گھر میں محفوظ کرنے کے بارے میں کچھ تفصیل ہے۔ تصویر کے حرام ہونے کو اہل علم حضرات نے چند شرائط کے ساتھ مشروط کیا ہے اگر سب جمع ہوں تو پھر اس کا حفاظت سے رکھنا نا جائز ہے ورنہ جائز۔ (۱) زندہ چیز کی تصویر اس کی زندگی کی حالت میں ہو، نہ اس طرح کہ صرف صورت دیکھنے سے اس کا بے جان ہونا ظاہر ہو جائے، جیسا کہ چہرہ کی تصویر بخلاف ہاتھ پاؤں، آنکھ ناک یا کان نہ رکھتی ہو کہ ان کا نہ ہونا اعضائے ظاہری سے نکلنے کا سبب ہے کہ سر کے ساتھ یہ نہیں بنائے گئے یا

بنائے گئے مگر انہیں کاٹ دیا گیا ایسی تصویر کو بحفاظت رکھنا جائز ہے۔ (۲) دوسری شرط: تصویر انتہائی چھوٹی اور باریک نہ ہو۔ اگر زمین پر

1 صحیح البخاری کتاب اللباس باب ما وطی من التصاویر قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۸۸۰ ،

صحیح مسلم کتاب اللباس باب تحریم تصویر صورۃ الحیوان الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۲۰۱ 2

رد المحتار کتاب الصلوٰۃ باب مفسد الصلوٰۃ و مایکرہ فیھا دار احیاء التراث العربی بیروت ۱ / ۴۳۵

Fatawa Rizvia Volume 24

(Left Column - Arabic/Persian text) ...the details of its limbs should not be visible. Constructing such an image is forbidden, but keeping it is permissible. Third, the image should not be held in honor, such as on a floor mat, or on a carpet that is trampled, or on the soil, and similar cases where keeping it in such a manner is not intended. In Al-Durr al-Mukhtar: "It is not disliked if it was under his feet or the place of his sitting because it is an insult (to the image)." In Radd al-Muhtar: "And likewise if it was on a carpet that is trodden upon or a cushion that is leaned upon as in Al-Bahr." In Al-Durr: "Or if it was small such that the details of its limbs are not apparent to the onlooker standing while it is on the ground, Al-Halabi mentioned it, or it is decapitated, or the face is missing, or a limb is effaced without which it could not live." And its full details are in its marginalia. And Allah Almighty knows best. (T)

(Right Column - Urdu translation/explanation) ...if placed such that it appears in an upright position, it is permissible as long as the details of its limbs are not apparent. Thus, making such a type of image is forbidden (haram), but keeping it is permissible. (3) The third condition: the image should not be kept in a respected state; it should be in a lowly state, such as on the floor under feet, or being trampled upon a carpet etc., or lying on the ground, or other similar situations where keeping it with respect is not intended. It is stated in Al-Durr al-Mukhtar: "It is not prohibited to keep an image if it is under the feet or in a place of sitting, because in this case, it is being debased." It is stated in Radd al-Muhtar: "Similarly if it is on a carpet that is trodden upon or on a cushion (mifraq - resting place) that is leaned upon, as in Al-Bahr al-Ra'iq." It is stated in Al-Durr: "Or if it is on the ground but so small that its limbs' details are not clear to a person standing. Ibrahim Al-Halabi has mentioned it, or its head is cut off, or the face is effaced, or parts are erased without which life is impossible." Complete details of this are in its marginalia. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 246: 7 Sha'ban al-Mu'azzam 1319 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: if images are printed on some cloth, is it permissible to pray (Salah) in it or not? And is it permissible to sell it or not? And those images are of birds. And if a garment is made from that cloth, what should be done with it,

especially those images in which a living being could survive? Explain and be rewarded. (T)

1. Al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Salah, Bab Ma Yufsidu al-Salah wa Ma Yukrahu Fiha, Matba' Mujtabai Delhi, 1/92.
2. Radd al-Muhtar, Kitab al-Salah, Bab Ma Yufsidu al-Salah wa Ma Yukrahu Fiha, Matba' Mujtabai Delhi, 1/435.
3. Al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Salah, Bab Ma Yufsidu al-Salah wa Ma Yukrahu Fiha, Matba' Mujtabai Delhi, 1/92.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

(बायां कॉलम - अरबी/फ़ारसी पाठ) ...अंगों का विवरण दिखाई न दे। ऐसी सूरत (चित्र) बनाना हराम और रखना जायज़ है। तीसरा यह कि चित्र का अपमान हो, जैसे कि पायदान वाले फर्श पर, या कालीन पर जहाँ उसे पैरों से रौंदा जाता हो, या मिट्टी पर, और इसी तरह की चीज़ें जिनमें उसे सम्मान से रखना उद्देश्य नहीं है। 'अल-दुर्रे अल-मुख़्तार' में है: यह मकरूह (नापसंद) नहीं है यदि यह उसके पैरों के नीचे हो या उसके बैठने के स्थान पर हो क्योंकि यह अपमानजनक है। 'रद्द अल-मुह्तार' में: और इसी तरह यदि यह रौंदे जाने वाले कालीन पर हो या उस गद्दी पर हो जिस पर टेक लगाई जाती है जैसा कि 'अल-बहर' में है। 'अल-दुर्र' में: या यदि वह इतना छोटा हो कि खड़े व्यक्ति को उसके अंगों का विवरण स्पष्ट न हो जब वह ज़मीन पर हो, अल-हलबी ने इसका उल्लेख किया है, या उसका सिर कटा हो, या चेहरा, या कोई ऐसा अंग मिटा हो जिसके बिना वह जीवित न रह सके। और इसका पूरा विवरण इसके हाशिये में है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

(दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या) ...रखी जाए तो खड़ी सूरत में दिखाई दे तो दे मगर इसके अंगों का विवरण स्पष्ट न हो। तो इस प्रकार का चित्र बनाना हराम (वर्जित) है, लेकिन उसे रखना जायज़ है। (3) तीसरी शर्त: चित्र को सम्मानित स्थिति में न रखा जाए बल्कि उसे अपमानित स्थिति में रखा जाए, जैसे कि फर्श पर पैरों के नीचे हो, या कालीन आदि पर पैरों से कुचला जा रहा हो, या ज़मीन की सतह पर पड़ा हो, या इस प्रकार की अन्य स्थितियाँ हों जिनमें उसे सम्मानपूर्वक रखना उद्देश्य न हो। 'दुर्रे मुख़्तार' में है: चित्र रखना वर्जित नहीं है जब वह पैरों के नीचे हो या बैठने की जगह पर हो, क्योंकि इस स्थिति में उसका तिरस्कार है। 'रद्दुल मुहतार' में है: इसी तरह यदि वह कुचले जाने वाले बिछौने पर हो या तकिए (मिरफ़क़ - आराम गाह) पर हो जिस पर सहारा लिया जाता है, जैसा कि 'बहरुल राइक' में है। 'दुर्रे मुख़्तार' में है: या ज़मीन पर हो लेकिन इतना छोटा हो कि खड़े होकर देखने वाले को अंगों का विवरण स्पष्ट न हो। इब्राहिम हलबी ने इसका उल्लेख किया है, या उसका सिर कटा हुआ हो, या चेहरा मिटा हुआ हो, या ऐसे अंग मिटे हुए हों जिनके बिना जीवन संभव न हो। इसका पूरा विवरण इसके हाशिये (टिप्पणियों) में है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

प्रश्न 246: 7 शाबानुल मुअज़्ज़म 1319 हिजरी धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि यदि किसी कपड़े पर चित्र छपे हों, तो क्या उससे नमाज़ पढ़ना जायज़ है या नहीं? और क्या उसे बेचना जायज़ है या नहीं? और वे चित्र पक्षियों के हों। और यदि उस कपड़े से कोई पोशाक तैयार हो गई हो,

तो उसका क्या किया जाए, विशेष रूप से वे चित्र जिनमें जीवित प्राणी जीवित रह सकता है? व्याख्या करें और पुण्य प्राप्त करें। (त)

1. दुर्रे मुख़्तार, किताबुस सलात, बाबू मा युफ़्सिदुस सलात व मा युक़रहु फ़ीहा, मतबअ मुज्तबाई दिल्ली, 1/92
2. रद्दुल मुहतार, किताबुस सलात, बाबू मा युफ़्सिदुस सलात व मा युक़रहु फ़ीहा, मतबअ मुज्तबाई दिल्ली, 1/435
3. दुर्रे मुख़्तार, किताबुस सलात, बाबू मा युफ़्सिदुस सलात व मा युक़रहु फ़ीहा, मतबअ मुज्तबाई दिल्ली, 1/92

(بایاں کالم - عربی/فارسی متن) تفصیل اعضائش پدیدار نشود همچو صورت ساختن حرام وداشتن جائز۔ سوم آنکہ صورت راخوار نداشتہ باشد چنانکہ در فرش پائنداز یادربساط پامال یابروئے خاک وامثال ذلک کہ این چنیں داشتن منظور نیست في الدرالمختار لا یکرہ لو کانت تحت قدمیه او محل جلوسه لانها مهانة اه وفي رد المحتار وکذا لو کانت علی بساط یوطاء او مرفقة یتکاء علیها کما في البحر اه وفي الدراو کانت صغیرة لا تتبین تفاصیل اعضائها للناظر قائما وهي علی الارض ذکرہ الحلبي او مقطوعة الرأس او الوجه او ممحوة عضو لا تعیش بدونه اه وتمام تفصیله في حواشیه، واللہ تعالی اعلم۔ (ت)

(دایاں کالم - اردو ترجمہ و تشریح) رکھی جائے تو کھڑی صورت میں دکھائی دے تو دے مگر اس کے اعضاء کی تفصیل ظاہر نہ ہو۔ پس اس نوع کی تصویر بنانا حرام ہے مگر اس کا رکھنا جائز ہے (۳) تیسری شرط: تصویر کو ذلیل حالت میں نہ رکھا جائے کہ فرش پر پاؤں میں پڑی ہو یا بچھونے (قالین وغیرہ) پر پامال ہو یا سطح زمین پر پڑی ہو یا اس نوع کی دوسری صورتیں ہوں کہ اس طرح رکھنا منظور نہ ہو۔ در مختار میں ہے تصویر رکھنا ممنوع نہیں جبکہ قدموں کے نیچے ہو یا بیٹھنے کی جگہ پر ہو کیونکہ اس صورت میں اس کی تذلیل ہے، ردالمحتار میں ہے اسی طرح اگر پامال شدہ بچھونے پر ہو یا مرفق (آرام گاہ) پر ہو جس پر تکیہ لگایا جائے جیسا کہ بحر الرائق میں ہے۔ در مختار میں ہے یا زمین پر ہو مگر اتنی چھوٹی ہو کہ اس کے اعضاء کی تفصیل دیکھنے والے پر واضح نہ ہو۔ ابراہیم حلبی نے اس کو ذکر کیا ہے یا سر کٹا ہوا یا چہرہ یا ایسے اعضاء مٹے ہوئے ہوں کہ جن کے بغیر زندگی نہ ہوسکے۔ اس کی مکمل تفصیل اس کے حواشی میں ہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۲۴۶: ۷ شعبان المعظم ۱۳۱۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اگر کسی کپڑے پر تصویریں چھپی ہوئی ہوں اس سے نماز پڑھنا جائز ہے یا نہیں؟ اور اس کو فروخت کرنا جائز ہے یا نہیں؟ اور وہ تصویریں پرندوں کی ہوں۔ اور اگر اسی کپڑے کا کوئی عدد تیار ہو گیا تو اس کا کیا کرنا چاہئے اور وہ تصویریں جس میں جاندار زندہ رہ سکتا ہے؟ بینوا توجروا۔ (بیان فرمائیے اجر پائیے۔ت)

1 درمختار کتاب الصلوۃ باب ما یفسد الصلوۃ وما یکرہ فیہا مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۹۲ 2 ردالمحتار کتاب الصلوۃ باب ما یفسد الصلوۃ وما یکرہ فیہا مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۴۳۵ 3 درمختار کتاب الصلوۃ باب ما یفسد الصلوۃ وما یکرہ فیہا مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۹۲

Fatawa Razawiyya (Volume 24)

Answer: A picture of any living being in which its face is present and it is large enough that if placed on the ground and viewed while standing, the details of the limbs are apparent—it is impermissible to wear, cause someone to wear, sell, or give in charity such a garment on which such a picture exists. Praying while wearing it is Makruh Tahrimi (prohibitively disliked), making it mandatory to repeat the prayer. The picture should be erased from such a garment or its head or face should be completely obliterated. After this, wearing it, causing it to be worn, selling it, giving it in charity, and praying in it will all become permissible. If it is of such fast color that it cannot be erased or washed away, then black ink of similarly fast color should be applied over its head or face in such a way that that part of the picture is obliterated. It shouldn't be that only the color of that part appears black, as this would not be considered obliteration or contrary to the form. And Allah Almighty knows best.

Problem 744: Sent by Muhammad Siddiq Beg Sahib, Muradabad, from Bareilly. What do the scholars of religion say in this matter that nowadays in the world, the common practice of photography is that images are made without pen and ink and without touching by hand. There is a box of photographic equipment called a 'camera' in English, placed in front of whatever object is intended to be photographed. By the effect of the glass, through attraction, the image appears on ordinary glass placed near the fire-glass i.e. lens. It is then put in English chemicals, printed on paper, and dried. In this way, a photograph is formed. What is the ruling regarding this in the Noble Sharia? That is, to what extent can the person taking such pictures, the one getting them taken, the one keeping them, the one selling them, and the one buying them be sinful? And is prayer permissible in a house where there are pictures, or is there no sin in it according to Sharia? Please inform with a correct answer.

Answer: The Sharia has declared picture-making (depicting living beings) prohibited and did not restrict the ruling to any specific method of making, nor does the peculiarity of the method have any influence. A photo cannot be made by itself without intention, action, and movements. The difference between manual (painting/drawing) and photographic is only in the reduction of effort, like walking versus traveling by train. Wherever going is prohibited by Sharia, both walking and taking the train are the same. One cannot say that I didn't have to move my feet or stop at every station. In short, the rulings for making and keeping photographic and manual pictures are exactly the same, and there is no reason for any difference. Look at the

custom itself: can one who makes a picture which is conventionally insulting, shameless, and a legal crime, make it photographically and offer the same excuse that it was made without pen and ink and without touching by hand? Not at all. Thus, it is clear that being photographic makes no difference to the purposes of a picture; rather, sometimes it even increases them. And a thing is prohibited or permitted based on its purposes.

फ़तावा रज़विया (खंड 24)

उत्तर: किसी भी सजीव प्राणी का चित्र जिसमें उसका चेहरा मौजूद हो और वह इतना बड़ा हो कि ज़मीन पर रखकर खड़े होकर देखने पर अंगों का विवरण स्पष्ट हो—ऐसे चित्र वाले कपड़े को पहनना, पहनाना, बेचना या दान करना सब नाजायज़ है, और इसे पहनकर नमाज़ पढ़ना मकरूह-ए-तहरीमी है, जिसे दोबारा पढ़ना अनिवार्य है। ऐसे कपड़े से चित्र को मिटा दिया जाना चाहिए या उसका सिर या चेहरा पूरी तरह से मिटा दिया जाना चाहिए। इसके बाद इसे पहनना, पहनाना, बेचना, दान करना और इसमें नमाज़ पढ़ना, सब जायज़ हो जाएगा। यदि वह ऐसे पक्के रंग का हो कि मिट न सके या धुल न सके तो उसी तरह के पक्के काले रंग की स्याही उसके सिर या चेहरे पर इस तरह लगा दी जाए कि चित्र का वह अंग मिट जाए। केवल यह न हो कि उस अंग का रंग काला दिखाई दे, क्योंकि यह मिटाने या रूप के विपरीत नहीं होगा। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 744: प्रेषक मुहम्मद सिद्दीक बेग साहब, मुरादाबाद, बरेली से। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि आज कल दुनिया में फोटोग्राफी का आम रिवाज यह है कि बिना कलम और स्याही के और बिना हाथ लगाए इस तरह चित्र बनाते हैं। कि चित्रकारी के उपकरणों का एक डिब्बा होता है जिसे अंग्रेज़ी में कैमरा कहते हैं, जिसे उस वस्तु के सामने रखा जाता है जिसका चित्र लेना हो। शीशे के प्रभाव से आकर्षण के साथ, चित्र सामान्य शीशे पर आ जाता है जो आतिशी शीशे यानी लेंस के पास लगा होता है। इसे अंग्रेज़ी रसायनों (केमिकल्स) में डालकर कागज़ पर उतार कर सुखाया जाता है। इस तरह चित्र बन जाता है। शरीयत-ए-मुकद्दसा में इसके बारे में क्या हुक्म है? यानी ऐसे चित्र खींचने वाले, खिंचवाने वाले, रखने वाले, बेचने वाले और खरीदने वाले किस हद तक गुनहगार हो सकते हैं? और जिस घर में चित्र हों, क्या वहाँ नमाज़ जायज़ है या नहीं? या शरीयत के अनुसार इसमें कोई गुनाह नहीं है? सही उत्तर से सूचित करें।

उत्तर: शरीयत ने चित्र बनाने (सजीव का) को हराम फरमाया है और हुक्म को बनाने के किसी विशेष तरीके के साथ सीमित नहीं किया, न ही तरीके की किसी विशेषता का इसमें कोई दखल है। कोई फोटो बिना इरादे, क्रिया और हरकतों के खुद-ब-खुद नहीं बन सकता। हाथ से बनाने और फोटो खींचने में केवल मेहनत की कमी का अंतर है, जैसे पैदल और रेल। जहाँ जाना शरीयत के अनुसार हराम है, वहाँ पैदल और रेल दोनों एक समान हैं। वह यह नहीं कह सकता कि मुझे इसमें पैर हिलाने नहीं पड़े और न ही हर मंज़िल पर रुकना पड़ा। संक्षेप में, चित्र बनाने और रखने के मामले में फोटो और हाथ से बने चित्र के नियम बिल्कुल एक जैसे हैं और अंतर का कोई कारण नहीं है। प्रथा को ही

देखें, क्या वह व्यक्ति जो ऐसा चित्र बनाता है जो प्रथा के अनुसार अपमानजनक, निर्लज्ज और कानूनी अपराध है, उसे फोटोग्राफिक रूप से बना सकता है और वही बहाना कर सकता है कि यह बिना कलम और स्याही के और बिना हाथ लगाए बनाया गया है? बिल्कुल नहीं। अतः स्पष्ट हुआ कि फोटोग्राफिक होने से चित्र के उद्देश्यों में कोई अंतर नहीं आता, बल्कि कभी-कभी तो वृद्धि ही हो जाती है। और कोई चीज़ अपने उद्देश्यों के आधार पर ही वर्जित या अनुमत होती है।

पृष्ठ 568 / 720

الجواب: کسی جاندار کی تصویر جس میں اس کا چہرہ موجود ہو اور اتنی بڑی ہو کہ زمین پر رکھ کر کھڑے سے دیکھیں تو اعضا کی تفصیل ظاہر ہو، اس طرح کی تصویر جس کپڑے پر ہو اس کا پہننا، پہنانا یا بیچنا، خیرات کرنا سب ناجائز ہے، اور اسے پہن کر نماز مکروہ تحریمی ہے جس کا دوبارہ پڑھنا واجب ہے۔ ایسے کپڑے پر سے تصویر مٹادی جائے یا اس کا سر یا چہرہ بالکل محو کر دیا جائے۔ اس کے بعد اس کا پہننا، پہنانا، بیچنا، خیرات کرنا، اس سے نماز، سب جائز ہو جائے گا۔ اگر وہ ایسے پکے رنگ کی ہو کہ مٹ نہ سکے دھل نہ سکے تو ایسے ہی پکے رنگ کی سیاہی اس کے سر یا چہرے پر اس طرح لگادی جائے کہ تصویر کا اتنا عضو محو ہو جائے صرف یہ نہ ہو کہ اتنے عضو کا رنگ سیاہ معلوم ہو کہ یہ محو و منافی صورت نہ ہو گا۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۷۴۴: مرسلہ محمد صدیق بیگ صاحب مراد آباد از بریلی کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ آج کل دنیا میں عام رواج مصوری کا یہ ہے کہ بغیر قلم اور روشنائی کے اور بغیر ہاتھ لگائے اس طرح پر تصویر بناتے ہیں۔ کہ ایک بکس سامان مصوری کا ہوتا ہے جس کو انگریزی میں کیمرہ میں لگا کر جس شیئ کی تصویر لینا مقصود ہو اس کو سامنے رکھتے ہیں شیشہ کے اثر سے کشش کے ساتھ تصویر معمولی شیشہ پر جو آتشی شیشہ یعنی لینس کے پاس لگا ہوتا ہے آجاتی ہے۔ اس کو انگریزی مصالحہ میں ڈال کر کاغذ پر لکھ کر خشک کرتے ہیں اس طرح سے تصویر بن جاتی ہے۔ شرع شریف میں اس کی بابت کیا حکم ہے یعنی ایسی تصویر کھینچنے والے، کھینچوانے والے، رکھنے والے، فروخت کرنے والے، خریدنے والے کس حد تک گنہگار ہو سکتے ہیں اور جس مکان میں تصویریں ہوں وہاں نماز جائز ہے یا نہیں؟ یا شرع کے موافق اس میں کوئی گناہ نہیں ہے؟ جواب باصواب سے مطلع فرمائیں۔

الجواب: شرع نے تصویر حرام فرمائی اور کسی طریقہ ساخت کے ساتھ حکم کو مقید نہ فرمایا، نہ کسی خصوصیت طریقہ کو اس میں دخل، نہ فوٹو ہے اس کے عزم و فعل و حرکات کے خود بخود بن سکے، دستی و عکسی میں صرف تخفیف عمل کا فرق ہے جیسے پیادہ اور ریل۔ جہاں جانا شرعاً حرام ہے پیادہ و ریل دونوں یکساں ہیں۔ وہ نہیں کہہ سکتا کہ اس میں مجھے پاؤں کو حرکت دینی نہ پڑی نہ منزل منزل ٹھہرتا گیا، بالجملہ تصویر عکس و دستی کے بنانے، رکھنے سب باتوں کے احکام قطعاً ایک ہیں اور فرق کی کوئی وجہ نہیں، عرف ہی کو دیکھئے، کیا جو تصویر بنانی عرفاً توہین و بے حیائی اور قانونی جرم ہے وہ عکسی بنا سکتا ہے اور وہی عذر کر سکتا ہے کہ بے قلم و روشنائی اور بے ہاتھ لگائے بنائی، ہرگز نہیں، تو ظاہر ہوا کہ عکسی ہونے سے تصویر کے مقاصد میں کچھ فرق نہیں آتا بلکہ بسا اوقات کچھ زیادت ہی ہو جاتی ہے اور شیئ اپنے مقاصد ہی کے لحاظ سے ممنوع یا مشروع ہوتی ہے،

Fatawa Razawiyya Volume 24

As it is not hidden (T). And Allah subhanahu wa ta'ala knows best. Issue 228: Sent by Sayyid Abdul Rashid Sahib, Jawahar Kun, from Bombay, Naya Qazi Mohalla, Chand Building 40 Post, 19 Jumadi al-Ula 1332 AH. What do the scholars of the firm religion say regarding the issue of whether making a half-body photograph and having it made is permissible to any extent, and why is a full-body photograph impermissible? Please provide an answer from Hadith and verses; by which Sharia arguments are both cases, half-body and full-body, declared permissible or impermissible?

The Answer: Whether it is a photograph or a hand-drawn picture, full or half-body, making it or having it made is completely forbidden (Haram). Furthermore, keeping it with respect is Haram, even if it is half-body, because 'picture' is the name of only the face. The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says: "The most severely punished people on the Day of Resurrection will be those who killed a prophet or were killed by a prophet, and the picture-makers." And he (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Indeed, the angels do not enter a house in which there is a dog or a picture." The Great Imam Abu Jafar al-Tahawi narrates from our master Abu Huraira (may Allah be pleased with him): "The picture is the head." - And Allah knows best. Only the face is the picture. And Allah knows best.

Issue 229: Sent by Muhammad Taqi, Bhakkar, near the railway station, through Haji Rahim Bakhsh, 30 Rabi-ul-Awwal 1335 AH. Is taking a photograph permissible or not?

1. Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 1049, Al-Maktaba al-Faysaliyya Beirut 10/260, Kanz al-Ummal Hadith 9366 Mu'assasat al-Risala Beirut 4/35.
2. Sunan Ibn Majah, Kitab al-Libas, Bab al-Suwar fi al-Bayt, H.M. Saeed Company Karachi, p. 268.
3. Sharh Ma'ani al-Athar, Kitab al-Karahiya, Bab al-Tasawir fi al-Thawb, H.M. Saeed Company Karachi 2/366.

फतावा रज़विया जिल्द 24

जैसा कि छिपा नहीं है। (त) और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। मसअला 228: प्रेषक सैय्यद अब्दुल रशीद साहब, जवाहर कुन, बॉम्बे, नया क़ाज़ी मोहल्ला, चाँद बिल्डिंग 40 पोस्ट, 19 जमादी अल-उला 1332 हिजरी। दीन-ए-मतीन के उलेमा इस मसअले के बारे में क्या फ़रमाते हैं कि आधे शरीर का फोटो बनवाना और खुद बनाना किस हद तक जायज़ है और पूरे कद का फोटो क्यों नाजायज़ है? हदीस और आयतों से जवाब इनायत फरमाएँ दोनों सूरतों (आधा कद और पूरा कद) को किन-किन शरीय दलीलों से जायज़ और नाजायज़ करार दिया जाता है?

अल-जवाब: फोटो हो या हाथ से बनी तस्वीर, पूरी हो या आधी, बनाना और बनवाना सब हराम है। साथ ही इसे इज़्ज़त से रखना भी हराम है चाहे वह आधे कद की हो, क्योंकि तस्वीर सिर्फ चेहरे का नाम है। नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "क़यामत के दिन सबसे ज़्यादा सख़्त अज़ाब उस पर है जिसने किसी नबी को शहीद किया या उसे नबी ने क़त्ल फ़रमाया, और तस्वीर वालों पर।" और आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "बेशक फ़रिश्ते उस घर में दाख़िल नहीं होते जिसमें कुत्ता या तस्वीर हो।" इमाम-ए-अजल अबू जाफ़र तहावी सैय्यदना अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत फ़रमाते हैं: "तस्वीर सर ही है।" - और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। सिर्फ चेहरा तस्वीर है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसअला 229: प्रेषक मुहम्मद तक़ी, भक्कर, रेलवे स्टेशन के पास, मार्फत हाजी रहीम बख़्श, 30 रबी-उल-अव्वल 1335 हिजरी। फोटो खींचना जायज़ है या नहीं?

1. अल-मुअजम अल-कबीर हदीस 1049, अल-मक्तबा अल-फैसलिया बेरुत 10/260, कंज़ुल उम्माल हदीस 9366 मुअस्ससतुर रिसाला बेरुत 4/35।
2. सुनन इब्न माजा, किताबुल लिबास, बाबुल सुवर फिल बैत, एच.एम. सईद कंपनी कराची पृ. 268।
3. शरह मानी अल-आसार, किताबुल कराहिया, बाबुल तसावीर फिस्सौब, एच.एम. सईद कंपनी कराची 2/366।

पृष्ठ 569/720

کما لا یخفی (جیسا کہ پوشیدہ نہیں۔ ت) واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۲۲۸: مرسلہ سید عبدالرشید صاحب جواہر کن از بمبئی نیا قاضی محلہ چاند بلڈنگ ۴۰ پوسٹ ۱۹ جمادی الاولٰی ۱۳۳۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین متین اس مسئلہ میں کہ فوٹو نصف شکل کا بنوانا اور خود بنانا کس حد تک جائز ہے اور تمام قد کا سراپا عکس کیوں ناجائز ہے؟ حدیث وآیات سے جواب مرحمت فرمائیں، دونوں صورتوں کا نصف قد اور قد تمام کن کن شرعی دلائل سے جائز اور ناجائز قرار دیا جاتا ہے؟

الجواب: فوٹو ہو یا دستی تصویر پوری ہو یا نیم قد، بنانا، بنوانا سب حرام ہے نیز اس کا عزت سے رکھنا حرام اگرچہ نصف قد کی ہو کہ تصویر فقط چہرہ کا نام ہے، نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: اشد الناس عذاباً یوم القیامۃ من قتل نبیاً اوقتلہ نبی والمصورون۔ قیامت کے دن سب سے زیادہ سخت عذاب اس پر ہے جس نے کسی نبی کو شہید کیا یا اسے نبی نے قتل فرمایا اور تصویر والوں پر۔ اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم : ان الملئکۃ لادخل بیتاً فیہ کلب ولا صورۃ۔ رحمت کے فرشتے اس گھر میں نہیں جاتے جس میں کتا یا تصویر ہو۔ امام اجل ابو جعفر طحاوی سیدنا ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت فرماتے ہیں: الصورۃ ھو الرأس - واللہ تعالٰی اعلم۔ فقط چہرہ تصویر ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۲۹: مرسلہ محمد تقی مقام بھکھر متصل اسٹیشن ریلوے بتوسط حاجی رحیم بخش ۳۰ ربیع الاول ۱۳۳۵ھ تصویر کھینچنا جائز ہے یا نہیں؟

1 المعجم الکبیر حدیث ۱۰۴۹ المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۱۰/ ۲۶۰، کنز العمال حدیث ۹۳۶۶ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۴/ ۳۵ 2 سنن ابن ماجہ کتاب اللباس باب الصور فی البیت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۲۶۸ 3 شرح معانی الآثار کتاب الکراہیۃ باب التصاویر فی الثوب ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۳۶۶

Fatawa Razawiyya Volume 24

The Answer: It is forbidden to draw pictures of living beings. It has been stated in a Sahih Hadith:

[Arabic Text]: The people who will receive the most severe punishment on the Day of Resurrection are those who killed a prophet, or those who were killed by a prophet, and the picture-makers. And Allah Almighty knows best.

[Urdu Translation]: On the Day of Judgment, the most severe punishment will be for the one who martyred a Prophet or who was killed by a Prophet, and the picture-maker. And Allah Almighty knows best (T).

---

1. Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 10497 & 10515, Al-Maktaba al-Faysaliyya Beirut 10/266, 270; Kanz al-Ummal, Hadith 9366, Mu'assasah al-Risalah Beirut 4/35.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

उत्तर: जानदार की तस्वीर बनाना हराम है। सहीह हदीस में इरशाद हुआ है:

[अरबी पाठ]: क़ियामत के दिन सबसे सख्त अज़ाब उन लोगों को होगा जिन्होंने किसी नबी को शहीद किया या जिन्हें किसी नबी ने कत्ल किया, और तस्वीर बनाने वाले। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

[उर्दू अनुवाद]: क़ियामत में सबसे सख्त अज़ाब उस पर होगा जिसने किसी नबी को शहीद किया या जिसे किसी नबी ने कत्ल किया और मुसव्विर (तस्वीर बनाने वाला)। वल्लाह तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है) (त)।

---

1. अल-मुअजम अल-कबीर हदीस 10497 और 10515, अल-मकतबा अल-फैसलिया बेरुत 10/266, 270; कन्ज़ुल उम्माल हदीस 9366, मुअस्ससा अर-रिसाला बेरुत 4/35।

पेज 570 ऑफ़ 720

الجواب: جاندار کی تصویر کھینچنی حرام ہے۔ صحیح حدیث میں ارشاد ہوا:

اشد الناس عذابا یوم القیمۃ من قتل نبیا اوقتلہ نبی والمصورون1۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

قیامت میں سب سے سخت تر عذاب اس پر ہوگا جس نے کسی نبی کو شہید کیا یا جسے کسی نبی نے قتل کیا اور مصور۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

---

1 المعجم الکبیر حدیث ۱۰۴۹۷ و ۱۰۵۱۵ المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۱۰ / ۲۶۶، ۲۷۰، کنز العمال حدیث ۹۳۶۶ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۴ / ۳۵

Volume 24 Fatawa Razawiyya

Treatise Al-Ataya al-Qadiriyyah fi Hukm al-Taswir 1331 AH (Gifts of the Almighty concerning the ruling on images)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. Praise be to Allah alone, and peace and blessings be upon the one after whom there is no prophet, and upon his family and his noble companions.

Issue 250: From Ahmedabad, Jamalpur neighborhood, adjacent to the Glass Mosque, sent by Maulana Abdul Rahim Sahib, 29 Safar al-Muzaffar 1331 AH.

What do the scholars of religion and the jurists of the firm Shariah say about this matter? Currently, in the city of Ahmedabad, photographic copies are being sold for a price of 0.02, and an original sample is sent to you for your observation. These photos are of Hazrat Pir Ibrahim Baghdadi (may his formal and spiritual blessings continue), the custodian of the shrine of Hazrat Ghaus al-Azam Hazrat Piran-e-Pir (may Allah sanctify his noble secret). People in Ahmedabad and elsewhere keep these for blessings. Is it forbidden to keep them in houses or not? And will the angels of mercy enter houses where these photos are present or not? And will blessings descend by keeping this photo or not? And is it permissible in Shariah and Tariqah to place the photo of the Sheikh in front for the purpose of 'Barzakh-e-Sheikh' (meditation on the image of the spiritual guide)? Please provide a comprehensive and satisfying explanation, and may you receive a full reward from Allah. (Provide a healing explanation and receive full reward and merit from the court of Allah Almighty. - T)

Page 572 of 720

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

रिसाला (लघु ग्रंथ) अल-अताया अल-क़दीरिय्या फ़ी हुक्म अत-तस्वीर 1331 हिजरी (चित्रों के हुक्म के बारे में शक्तिशाली के उपहार)

बिस्मिल्लाह हिर-रहमान निर-रहीम। सारी प्रशंसा अकेले अल्लाह के लिए है, और उस पर दुरूद और सलाम हो जिसके बाद कोई नबी नहीं है, और उसके परिवार और उसके पास मौजूद सम्मानित साथियों पर।

मसला 250: अहमदाबाद, जमालपुर मोहल्ला, कांच मस्जिद के पास से, भेजने वाले मौलवी अब्दुल रहीम साहब, 29 सफ़र अल-मुज़फ़्फ़र 1331 हिजरी।

दीन के विद्वान और शरीयत-ए-मतीन के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि इन दिनों अहमदाबाद शहर में फ़ोटोग्राफ़ की कापियाँ 0.02 की कीमत पर बिक रही हैं और एक असली नमूना आपकी सेवा में भेजा गया है, आप इसे मुलाहिज़ा फरमाएँ। ये फ़ोटो हज़रत पीर इब्राहिम बग़दादी (उनका भौतिक और आध्यात्मिक फ़ैज़ जारी रहे) की है, जो हज़रत गौस-ए-आज़म हज़रत पीरान-ए-पीर (अल्लाह उनके पवित्र रहस्य को और अधिक पवित्र करे) की खानक़ाह के सज्जादा नशीन हैं। अहमदाबाद आदि के लोग इसे तबर्रुक के रूप में रखते हैं। क्या इसे घरों में रखना हराम है या नहीं? और जिन घरों में ये फ़ोटो होंगे, उनमें रहमत के फ़रिश्ते आएंगे या नहीं? और इस फ़ोटो को रखने से बरकत नाज़िल होगी या नहीं? और बरज़ख-ए-शेख़ जमाने (गुरु के ध्यान) के लिए शेख़ का फ़ोटो सामने रखकर उसका बरज़ख जमाना शरीयत और तरीक़त में जायज़ है या नहीं? खुलकर साफ़ बयान फरमाएँ, आपको पूरा-पूरा अज्र व सवाब मिले। (शफ़ा-बख़्श बयान फरमाएँ और अल्लाह तआला की बारगाह से पूरा अज्र व सवाब पाएँ। - त)

पृष्ठ 720 में से 572

جلد ۲۴ فتاویٰ رضویہ

رسالہ العطایا القدیر فی حکم التصویر ۱۳۳۱ھ (تصویر کے حکم کے بارے میں قدرت والے کی عطائیں)

بسم اللہ الرحمن الرحیم ط الحمد للہ وحدہ والصلوۃ والسلام علی من لانبی بعدہ وعلی الہ وصحبہ المکرمین عندہ

مسئلہ ۲۵۰: از احمد آباد محلہ جمالپور متصل مسجد کانچ مرسلہ مولوی عبدالرحیم صاحب ۲۹ صفر المظفر ۱۳۳۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ان دنوں شہر احمد آباد میں کاپیاں فوٹو گراف کی قیمت /۰۲ کے بک رہی ہیں اور نمونہ اصل خدمت میں آپ کی مرسل ہے آپ اس کو ملاحظہ فرمائیں، یہ فوٹو حضرات پیر ابراہیم بغدادی عم فیضہ الصوری والمعنوی سجادہ نشین خانقاہ حضرت غوث اعظم حضرت پیرانِ پیر قدس سرہ العزیز کا ہے اس کو احمد آبادی وغیرہ تبرک کے طور پر رکھتے ہیں اس کا رکھنا مکانوں میں حرام ہے یا نہیں؟ اور جن مکانوں میں یہ فوٹو ہو گا ان میں رحمت کے فرشتے آئیں گے یا نہیں؟ اور اس فوٹو کے رکھنے سے برکت نازل ہو گی یا نہیں؟ اور برزخِ شیخ جمانے کے لئے فوٹو شیخ کا سامنے رکھ کر اس کا برزخ جمانا شریعت و طریقت میں جائز ہے یا نہیں؟ بینوا بیانًا شافیًا توجروا اجرا وافیا (شفا بخش بیان فرماؤ اور اللہ تعالیٰ کی بارگاہ سے پورا پورا اجر و ثواب پاؤ۔ت)

صفحہ ۵۷۲ از ۷۲۰

Answer: In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

All praise and glorification be to Allah, the Creator, the Producer, the Fashioner, who fashioned us and made our forms beautiful, and who alone created the entire world, whether it be the pit of a date stone or any other ordinary thing. He decreed the severest punishment for those who attempt to imitate Allah's creation; let them then create a tiny particle, a grain, or a barley seed. Peace and blessings be upon him who came to abolish idols and proclaim the oneness of the Merciful, and who forbade picture-making, whether small or large, and declared it a major sin. And upon his progeny, his companions, his noble son Ghaus al-Azam (the great helper), and all his followers; may there be such magnificent blessings and peace that are equal to their honor and dignity. O my Lord! I seek refuge in You from the promptings of the devils, and I seek refuge in You, my Lord, lest they come to me (and disturb me with their deception). (T)

जिल्द २४

उत्तर: बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हर प्रकार की प्रशंसा और महिमा उस अल्लाह के लिए है, जो (सृष्टि का) अनुमान लगाने वाला, बनाने वाला और स्वरूप देने वाला है, जिसने हमें बनाया और हमें सुंदर और आकर्षक रूप प्रदान किए। उसने अकेले ही पूरी दुनिया को पैदा किया, चाहे वह खजूर की गुठली का गड्ढा हो या कोई और मामूली चीज़। उसने उन लोगों के लिए सबसे कठोर दंड का फैसला सुनाया है जो अल्लाह की रचना की नकल करते हैं; तो वे एक अणु, या एक दाना, या एक जौ पैदा करके दिखाएँ। उस हस्ती पर दुरूद और सलाम हो जो मूर्तियों को मिटाने और रहमान की एकता का वर्णन करने के लिए आए, और उन्होंने छोटे-बड़े चित्र बनाने को हराम (वर्जित) ठहराया और इसे एक बड़ा पाप करार दिया। और उनके वंशजों, उनके साथियों, उनके सम्मानित पुत्र ग़ौस-ए-आज़म (महान सहायक), और उनके सभी अनुयायियों पर ऐसा शानदार दुरूद और सलाम हो जो उनके सम्मान और प्रतिष्ठा के बराबर हो। ऐ मेरे पालनहार! मैं शैतानों के बहकावे से तेरी पनाह चाहता हूँ, और ऐ मेरे पालनहार! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि वे मेरे पास आएं(और मुझे अपने छल-कपट से परेशान करें)। (त)

पृष्ठ ७२० में से ५७३

جلد ۲۴

الجواب: بسم اللہ الرحمن الرحیم ط

الحمد للہ الخالق البارئ المصور الذی صورنا فاحسن صورنا وخلق وحدہ العالم فقیرہ وقطیرہ وقضی بالعذاب اشد ھو العقاب علی الذین یضاھؤن خلق اللہ فیخلقوا ذرۃ اولیخلقوا حبۃ اولیخلقوا شعیرۃ او الصلوۃ والسلام علی من اتی بمحق الاوثان وتوحید الرحمن وحرم التصویر صغیرۃ وکبیرۃ وجعلہ کبیرۃ وعلی الہ وصحبہ وابنہ الاکرم الغوث الاعظم وسائر حزبہ صلوۃ وسلاماً توازیان عزہ وتوقیرہ رب انی اعوذ بك من ھمزات الشیطین واعوذ بك رب ان یحضرون-

ہر قسم کی تعریف و توصیف اس اللہ تعالی کے لئے ہے جو (تخلیق کا) اندازہ کرنے والا، بنانے والا اور تصویر کشی کرنے والا کہ جس نے ہماری صورتیں بنائیں اور ہمیں حسین و جمیل صورتوں سے نوازا، اور اس نے تنہا ساری دنیا کو پیدا فرمایا خواہ تخم خرما کا گڑھا ہو یا اور کوئی معمولی چیز ہو، اور اس نے عذاب دینے کا بڑا سخت فیصلہ فرمایا کہ ان لوگوں پر نزولِ عقاب ہے جو اللہ تعالی کی تخلیق میں اس سے مشابہت اختیار کرتے ہیں تو وہ کوئی ذرہ یا کوئی دانہ یا جو پیدا کر دکھائیں اور درود و سلام ان پر جو بتوں کو مٹانے اور وحدانیتِ رحمن کو بیان فرمانے کیلئے تشریف لائے اور انہوں نے چھوٹی بڑی تصویر کو حرام ٹھہرایا اور اس کام کو کبیرہ گناہ قرار دیا، اور ان کی آل اور ساتھیوں پر، اور ان کے مکرم شہزادے غوثِ اعظم (بڑے فریاد رس) پر، اور ان کے باقی تمام گروہ پر (ہدیہ درود و سلام ہو) ایسا شاندار درود و سلام کہ ان کی عزت و توقیر کے برابر اور مساوی ہو۔ اے میرے پروردگار! میں شیاطین کے وسوسوں سے تیری پناہ چاہتا ہوں، میرے پروردگار! میں تیری پناہ چاہتا ہوں کہ وہ میرے پاس آئیں (اور مجھے اپنے مکر و فریب سے پریشان کریں)۔ (ت)

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

May Allah Almighty protect us from the deception of Iblis. The beginning of idol worship in the world happened like this: out of love for the righteous, people made their pictures and kept them in homes and mosques for blessings, seeking strength for the pleasure of worship through them. Gradually, they became the ones worshipped. In Sahih Bukhari and Sahih Muslim, from Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them both), regarding the noble verse:

"And they said: 'Never leave your gods and never leave Wadd or Suwa' or Yaghuth and Ya'uq and Nasr.'" (71:23)[1] | The disbelievers said: "Never leave your gods, and never leave Wadd, Suwa', Yaghuth, Ya'uq, and Nasr." (T)

In its interpretation, it is stated:

"He said: These were the names of righteous men from the people of Noah. When they died, Satan inspired their people to set up idols in the places where they used to sit and to name them by their names. They did so. They were not worshipped until those people died and knowledge was vanished, then they were worshipped."[2] | Hadrat Ibn Abbas (may Allah be pleased with him) said: These are the names of the virtuous and pious people of the nation of Hadrat Noah (peace be upon him). When they passed away, Satan put a whisper into the hearts of the later generations to set up statues in the places where those people used to sit (i.e., stand them up systematically) and give them the same names they had (during their lives). People did so (out of ignorance). Then, for a while, they were not worshipped, until those who revered them died and knowledge was lost (and ignorance spread everywhere), then their worship began. (T)

Abd bin Humayd narrates in his tafsir from Abu Ja'far bin al-Muhallab:

"He said: Wadd was a Muslim man and was loved among his people. When he died, they encamped around his grave in the land of Babylon and grieved over him. When [someone] saw..." | Abu Ja'far said: "Wadd" was a Muslim man who was a favored and beloved person among his people. When he died, people gathered around his grave in the land of Babylon and [grieved] over his separation...

[1] Al-Quran al-Karim 71/23 [2] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Tafsir, Bab Waddan wa Suwa'an etc., Qadimi Kutub Khana Karachi 2/732

फतावा रज़विया, खंड 24

अल्लाह अज़ व जल इब्लीस के छल से पनाह दे। दुनिया में मूर्ति पूजा की शुरुआत इस प्रकार हुई कि नेक लोगों की मोहब्बत में उनकी तस्वीरें बनाकर घरों और मस्जिदों में बरकत के लिए रखी गईं और उनसे इबादत के आनंद में सहायता की उम्मीद की गई। धीरे-धीरे वही पूज्य बन गए। सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम में हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से इस आयत-ए-करीमा के बारे में है:

"और उन्होंने कहा: 'अपने देवताओं को कभी न छोड़ो और न ही वद्द, सुवा, यगूस, य'ऊक़ और नस्र को छोड़ो।'" (71:23)[1] | काफ़िरों ने कहा: "अपने खुदाओं को कभी न छोड़ना, और वद्द, सुवा, यगूस, य'ऊक़ और नस्र को कभी न छोड़ना।" (त)

इसकी तफ़सीर में है:

"उन्होंने कहा: ये नूह की क़ौम के नेक लोगों के नाम थे। जब वे मर गए, तो शैतान ने उनकी क़ौम को प्रेरित किया कि जहाँ वे बैठते थे वहाँ उनकी मूर्तियाँ स्थापित करें और उन्हें उनके नाम दें। उन्होंने ऐसा ही किया। उन्हें तब तक नहीं पूजा गया जब तक कि वे लोग मर नहीं गए और ज्ञान लुप्त नहीं हो गया, तब उनकी पूजा की जाने लगी।"[2] | हज़रत इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने फरमाया: ये हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) की क़ौम के नेक और परहेज़गार लोगों के नाम हैं। जब वे वफ़ात पा गए तो शैतान ने बाद वालों के दिलों में वसवसा डाला कि जहाँ ये लोग बैठते थे वहीं उन मजलिसों में उन्हें स्थापित कर दो (यानी सलीक़े से उन्हें खड़ा कर दो) और जो उनके नाम (ज़िन्दगी में) थे वही नाम रख दो। तो लोगों ने (जहालत से) ऐसा ही किया। फिर कुछ समय तक उनकी इबादत नहीं हुई, यहाँ तक कि जब वे ताज़ीम करने वाले मर गए और इल्म मिट गया (और हर तरफ जहालत फैल गई) तो फिर उनकी इबादत शुरू हो गई। (त)

अब्द बिन हुमैद अपनी तफ़सीर में अबू जाफ़र बिन अल-मुहल्लब से रावी हैं:

"उन्होंने कहा: वद्द एक मुसलमान आदमी था और अपनी क़ौम में प्रिय था। जब वह मर गया, तो वे बाबुल की भूमि में उसकी कब्र के चारों ओर जमा हो गए और उस पर शोक मनाया। जब [किसी ने] देखा..." | अबू जाफ़र ने फरमाया: "वद्द" एक मुसलमान व्यक्ति था जो अपनी क़ौम में एक पसंदीदा और महबूब व्यक्ति था। जब वह मर गया तो सरज़मीन-ए-बाबुल में लोग उसकी कब्र के आस-पास जमा हुए और उसकी जुदाई पर...

[1] अल-कुरआन अल-करीम 71/23 [2] सहीह अल-बुखारी, किताब-अत-तफ़सीर, बाब वद-दन व सुवा'अन आदि, क़दीमी कुतुब खाना कराची 2/732

पृष्ठ 574/720

اللہ عز وجل ابلیس کے مکر سے پناہ دے، دنیا میں بت پرستی کی ابتداء یوہیں ہوئی کہ صالحین کی محبت میں ان کی تصویریں بنا کر گھروں اور مسجدوں میں تبرکا رکھیں اور ان سے لذتِ عبادت کی تائید سمجھی، شدہ شدہ وہی معبود ہو گئیں، صحیح بخاری و صحیح مسلم میں عبد اللہ بن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما سے آیہ کریمہ :

"وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّ لَا سُوَاعًا ۙ وَّ لَا یَغُوْثَ وَیَعُوْقَ وَنَسْرًا ۚ" (۷۱:۲۳) ۱ | کافروں نے کہا ہر گز اپنے خداؤں کو نہ چھوڑو، اور ود، سواع، یغوث، یعوق اور نسر کو کبھی نہ چھوڑو۔ (ت)

کی تفسیر میں ہے :

قال کانوا اسماء رجال صالحین من قوم نوح فلما ھلکوا اوحی الشیطان الی قومھم ان انصبوا الی مجالسھم التی کانوا یجلسون انصاباً وسموھا باسمائھم ففعلوا فلم تعبد حتی اذا ھلك اولئك ونسخ العلم عبدت ۲ | حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما نے فرمایا یہ حضرت نوح (علیہ السلام) کی قوم کے نیک اور پارسا لوگوں کے نام ہیں، جب وہ وفات پاچکے تو شیطان نے بعد والوں کے دلوں میں وسوسہ ڈالا کہ جہاں یہ لوگ بیٹھتے تھے وہیں اُن مجالس میں انہیں نصب کر دو (یعنی قرینے سے انہیں کھڑا کر دو) اور جو ان کے نام (زندگی میں) تھے وہی نام رکھ دو، تو لوگوں نے (جہالت سے) ایسا ہی کیا۔ پھر کچھ عرصہ ان کی عبادت نہ ہوئی، یہاں تک کہ جب وہ تعظیم کرنے والے مر گئے اور علم مٹ گیا (اور ہر طرف جہالت پھیل گئی) تو پھر ان کی عبادت شروع ہو گئی۔ (ت)

عبد بن حمید اپنی تفسیر میں ابو جعفر بن المہلب سے راوی :

قال كان ود رجلاً مسلماً وكان محبوباً فی قومه فلما مات عسكروا حول قبره في ارض بابل وجزعوا عليه فلما رأی | ابو جعفر نے فرمایا: "ود" ایک مسلمان شخص تھا جو اپنی قوم میں ایک پسندیدہ اور محبوب شخص تھا جب وہ مرگیا تو سرزمین بابل میں لوگ اس کی قبر کے آس پاس جمع ہوئے اور اس کی جدائی پر

۱ القرآن الکریم ۷۱ / ۲۳ ۲ صحیح البخاری کتاب التفسیر باب ودا وسواعا الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۷۳۲

صفحہ ۵۷۴ از ۷۲۰

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

Arabic Text: Iblis became distressed on account of them (and could not endure it). When Satan saw the people's distress at his separation, he came to them in human form and said: 'I see your grief over the death of this person. Do you think it appropriate if I create an image for you exactly like him, so that it may be in your assembly and you may remember him by it?' They said, 'Yes.' So he fashioned a likeness for them, and they placed it in their assembly and began to remember him through it. When he saw the impact of this remembrance on them, he said, 'Shall I make an image like this for every one of you in your homes, so that it may be in each house and you may remember him?' They said, 'Yes.' So he created an image like him for every household. They accepted it and began to remember him by it. The narrator said, their children reached maturity and saw what they were doing with it. They multiplied, and the matter of remembering him faded away until they eventually took it as a deity to be worshipped besides Allah. He said, 'The first thing worshipped besides Allah on earth was the idol they named Wadd.'[1]

Urdu Translation: They became restless (and could not be patient). When Satan saw the people restless due to his (a pious person's) separation, he came to them in human form and said: 'I see your restlessness at this person's death. Do you think it appropriate if I make a picture for you exactly like him, so that it remains in your assembly and you remember him by looking at it?' The people said: 'Yes, this is a good suggestion.' Then Satan made an image for the people exactly like him, and people decorated their assemblies with it and began to remember him. Then when Satan saw the state of the people due to his remembrance, he said: 'Do you think it appropriate if I prepare a likeness of your elder for each of you in your houses so that he is present in everyone's home, and you all (individually and collectively) keep remembering him?' The people said: 'Yes, this is absolutely right.' Then he prepared one photo each for all household members exactly like him. Then people turned towards it and started remembering him by looking at his photo. The narrator said, and their children found this era, then they continued to see what their elders were doing, and then the generation grew (and spread). When the sequence of his remembrance became old, to the point that out of ignorance, previous and coming generations made him a god, leaving Allah Almighty and began worshipping him. (The narrator said) The first thing worshipped on earth besides Allah Almighty is this very idol that people named 'Wadd'. (T)

Footnote: 1 Al-Durr al-Manthur, with reference to Abd bin Humayd under Verse 71/23, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 8 / 272-273.

फतावा रज़विया, खंड २४

अरबी पाठ: इबलीस उनके लिए व्यथित हो गया (और सहन न कर सका)। जब शैतान ने उसकी जुदाई में लोगों की व्याकुलता देखी, तो वह मानवीय रूप में उनके पास आया और कहने लगा: 'मैं इस व्यक्ति की मृत्यु पर आपका शोक देख रहा हूँ। क्या आप इसे उचित समझते हैं कि मैं आपके लिए बिल्कुल उसी के समान एक छवि बना दूँ, ताकि वह आपकी सभा में रहे और आप उसके माध्यम से उसे याद कर सकें?' उन्होंने कहा, 'हाँ।' तो उसने उनके लिए एक छवि बनाई, और उन्होंने उसे अपनी सभा में रखा और उसके माध्यम से उसे याद करने लगे। जब उसने उन पर इस स्मरण का प्रभाव देखा, तो उसने कहा, 'क्या मैं आप में से प्रत्येक के लिए आपके घरों में ऐसी ही एक छवि बना दूँ, ताकि वह हर घर में रहे और आप उसे याद करें?' उन्होंने कहा, 'हाँ।' तो उसने प्रत्येक घर के लिए उसके समान एक छवि बनाई। उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया और उसके माध्यम से उसे याद करने लगे। रावी (वर्णनकर्ता) ने कहा, उनके बच्चे वयस्क हुए और देखा कि वे इसके साथ क्या कर रहे थे। उनकी संख्या बढ़ी, और उसे याद करने की बात तब तक धूमिल होती गई जब तक कि उन्होंने अंततः उसे अल्लाह के अलावा पूजे जाने वाले देवता के रूप में स्वीकार नहीं कर लिया। उसने कहा, 'धरती पर अल्लाह के अलावा सबसे पहले जिसकी पूजा की गई, वह यही मूर्ति थी जिसे उन्होंने वद्द नाम दिया था।'[1]

उर्दू अनुवाद: वे बेचैन हो गए (और सब्र न कर सके)। जब शैतान ने उसकी जुदाई में लोगों को बेचैन पाया, तो वह मानवीय रूप में उनके पास आया और कहने लगा: 'मैं इस व्यक्ति के मरने पर तुम्हारी बेचैनी देख रहा हूँ। क्या तुम मुनासिब समझते हो कि मैं बिल्कुल वैसी ही तुम्हारे लिए उसकी तस्वीर बना दूँ, फिर वह तुम्हारी सभा में रहे और तुम उसकी तस्वीर देखकर उसे याद करो?' लोगों ने कहा: 'हाँ, यह तो अच्छी तजवीज़ है।' फिर शैतान ने लोगों के लिए बिल्कुल वैसी ही उसकी तस्वीर बना दी और लोगों ने उसे अपनी सभाओं में सजा लिया और उसकी याद करने लगे। फिर जब शैतान ने देखा कि उसके ज़िक्र से लोगों की क्या हालत होती है, तो शैतान कहने लगा: 'क्या तुम यह मुनासिब समझते हो कि मैं तुम में से हर व्यक्ति के लिए उसके घर में उसके बुज़ुर्ग का अक्स तैयार करके सजा दूँ ताकि वह उसके घर में मौजूद हो, और तुम सब लोग (व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से) उसका ज़िक्र करते रहो?' लोगों ने कहा: 'हाँ, यह बिल्कुल ठीक है।' फिर उसने सब घर वालों के लिए बिल्कुल वैसी ही उसकी एक-एक फोटो तैयार कर दी। फिर लोग उसकी तरफ मुतवज्जे हो गए और उसकी फोटो देखकर उसे याद करते रहे। रावी ने कहा कि उनकी औलाद ने यह दौर पा लिया, फिर

वे देखते रहे कि जो कुछ उनके बड़े करते रहे, और फिर नस्ल आगे बढ़ी (और फैली)। जब उसके ज़िक्र का सिलसिला कुछ पुराना हो गया, यहाँ तक कि अज्ञानता के कारण पिछली और आने वाली नस्लों ने उसे खुदा बना लिया और अल्लाह तआला को छोड़कर उसकी इबादत करने लगे। (रावी ने कहा) ज़मीन पर सबसे पहले अल्लाह तआला के अलावा जिसकी इबादत की गई, वह यही बुत है जिसका नाम लोगों ने 'वद्द' रखा है। (त)

पाद-टिप्पणी: १ अल-दुर्र अल-मन्सूर, सन्दर्भ: अब्द बिन हुमैद, आयत २३/७१ के तहत, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत ८ / २७२-२७३।

पृष्ठ ७२० का ५७५

ابليس جزعهم عليه تشبه في صورة انسان ثم قال ارى جزعكم على هذا فهل لكم ان اصورلكم مثله فيكون في ناديكم فتذكرونه به قالوا نعم فصورلهم مثله فوضعوه في ناديهم وجعلوا يذكرونه فلمارأى ما لهم من ذكره قال هل لكم ان اجعل لكم في منزل كل رجل منكم تمثالا مثله فيكون في بيته فتذكرونه قالوا نعم فصور لكل اهل بيت تمثالا مثله فأقبلو ا فجعلوا يذكرونه به قال وادرك ابناؤهم فجعلوا يرون ما يصنعون به وتناسلوا ودرس امر ذكرهم اياه حتى اتخذوه الها يعبدونه من دون الله قال وكان اول ما عبد غير الله في الارض ود الصنم الذى سموه بود - 1

بیقرار ہوئے (اور صبر نہ کرسکے) جب شیطان نے اس کی جدائی میں لوگوں کو بیقرار پایا تو وہ انسانی صورت میں ان کے پاس آیا اور کہنے لگا میں اس شخص کے مرنے پر تمہاری بیقراری دیکھ رہا ہوں کیا مناسب سمجھتے ہو کہ میں بالکل اس جیسی تمہارے لئے اس کی تصویر بنادوں، پھر وہ تمہاری مجلس میں رہے پھر اس کی تصویر دیکھ کر تم اسے یاد کرو۔ لوگوں نے کہا ہاں یہ تو اچھی تجویز ہے۔ پھر شیطان نے لوگوں کے لئے بالکل اسی جیسی اس کی تصویر بنادی اور لوگوں نے اسے اپنی مجالس میں سجا رکھا اور اس کی یاد کرنے لگے۔ پھر جب شیطان نے دیکھا کہ اس کے ذکر سے لوگوں کی جو حالت ہوتی ہے۔ پھر شیطان کہنے لگا کیا تم یہ مناسب کہتے ہو کہ میں تم میں سے ہر شخص کے لئے اس کے گھر میں اس کے بزرگ کا عکس تیار کرکے سجاؤں تاکہ وہ اس کے گھر میں موجود ہو، اور تم سب لوگ (انفرادی اور اجتماعی طور پر) اس کا تذکرہ کرتے رہو۔ لوگ کہنے لگے ہاں یہ بالکل ٹھیک ہے۔ پھر اس نے سب گھر والوں کے لئے بالکل اسی جیسا اس کا ایک ایک فوٹو تیار کردیا پھر لوگ اس کی طرف متوجہ ہو گئے اور اس کا فوٹو دیکھ کر اُسے یاد کرتے رہے۔ راوی نے کہا اور ان کی اولاد نے یہ دور پالیا، پھر وہ دیکھتے

رہے کہ جو کچھ ان کے بڑے کرتے رہے، اور پھر نسل آگے بڑھی (اور پھیلی) جب اس کے ذکر کا سلسلہ کچھ پرانا ہو گیا یہاں تک کہ جہالت سے پچھلے اور آنے والی نسلوں نے اسے خدا بنالیا کہ اللہ تعالیٰ کو چھوڑ کر اس کی عبادت کرنے لگے۔ (راوی نے کہا) سب سے پہلے زمین پر اللہ تعالیٰ کے علاوہ جس کی عبادت کی گئی وہ یہی بت ہے کہ جس کا نام لوگوں نے وَد رکھا ہے۔ (ت)

1 الدرالمنشور بحوالہ عبد بن حمید تحت آیۃ ۲۳/۷۱ داراحیاء التراث العربی بیروت ۸ / ۷۲۔ ۲۷۳

Also, in the Sahihayn (Bukhari and Muslim), it is narrated from the Mother of the Believers, al-Siddiqah (may Allah be pleased with her):

[Arabic]: When the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) fell ill, some of his wives mentioned a church called Maryam (Maria). Sayyidah Umm Salama and Umm Habiba (may Allah be pleased with them both) had visited the land of Abyssinia. They mentioned its beauty and the images within it. So, the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) raised his head and said: "When a righteous and pious man among those people died, they would build a mosque over his grave and then place those images in it. Those are the worst of Allah's creatures in His sight." (Footnote 1)

[Urdu]: When the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) fell ill, some of his wives mentioned a church called Maria. Since Sayyidah Umm Salama and Umm Habiba (may Allah be pleased with them both) had visited the land of Abyssinia, they saw that church there. Both of them mentioned its beauty and the images decorated in it. Hearing this, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) raised his blessed head and said: "When any good and righteous person died among those people, they would build a mosque over his grave, then they would decorate and keep those images in it. They are the worst creation of Allah." (T)

It is stated in Mirqat, a commentary on Mishkat al-Sharif:

[Arabic]: They made images, meaning images of the righteous, to remember them and to encourage worship because of them. Then those after them came, and Satan beautified their deeds for them and said to them: 'Your predecessors used to worship these images.' So they fell into idol worship. (Footnote 2)

[Urdu]: (The Hadith Sharif says that) those ignorant people would make images of good and righteous people and display them in their places of worship so that they would be remembered and through them, a desire for the worship of Allah would be created. Then, after them, when other people came into the world, Satan presented the deeds of the predecessors as adorned in the eyes of those who followed and told them that your ancestors used to worship these images. Consequently, they too became occupied in worshipping them. (T)

1. Sahih al-Bukhari, Book of Funerals, Chapter on Building Mosques over Graves, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/179; Sahih Muslim, Book of Mosques, Chapter on the Prohibition of Building Mosques over Graves, Qadimi Kutub Khana 1/201.
2. Mirqat al-Mafatih, Commentary on al-Mishkat, Book of Clothing, Chapter on Images, Al-Maktaba al-Habibiyyah Quetta 8/282.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 24

इसके अलावा, सहीहैन (बुखारी और मुस्लिम) में उम्मुल मोमिनीन सिद्दीका (रज़ियल्लाहु अन्हा) से वर्णित है:

[अरबी]: जब हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बीमार हुए, तो आपकी कुछ पत्नियों ने एक चर्च का ज़िक्र किया जिसे मारिया कहा जाता था। सैयदा उम्म सलमा और उम्म हबीबा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) हबशा (इथियोपिया) की धरती पर गई थीं। उन्होंने उसकी सुंदरता और उसमें मौजूद चित्रों का ज़िक्र किया। तब हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपना मुबारक सिर उठाया और फ़रमाया: "जब उन लोगों में कोई नेक और सालेह (धार्मिक) आदमी मर जाता, तो वे उसकी कब्र पर मस्जिद बनाते और फिर उसमें वे चित्र सजा देते। अल्लाह की नज़रों में वे अल्लाह की सबसे बुरी मखलूक (सृष्टि) हैं।" (फुटनोट 1)

[उर्दू]: जब हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बीमार हुए, तो आपकी कुछ पत्नियों ने एक गिरजे का ज़िक्र फ़रमाया जिसे मारिया कहा जाता था। चूंकि सैयदा उम्म सलमा और उम्म हबीबा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) मुल्के हबशा में तशरीफ़ ले गई थीं, तो उन्होंने वहां ये गिरजा देखा, दोनों ने इसके हुस्न और उसमें सजी तस्वीरों का तज़किरा फ़रमाया, तो हुज़ूरे अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपना सर मुबारक उठा कर फ़रमाया: जब उन लोगों में कोई नेक और सालेह आदमी मर जाता तो उसकी क़ब्र पर मस्जिद तामीर करते फिर इन तस्वीरों को सजा कर उसमें रख देते वही अल्लाह तआला की बदतरीन मख़लूक़ हैं। (त)

मिरकात शर्ह मिश्कात शरीफ़ में है:

[अरबी]: उन्होंने तस्वीरें बनाईं, यानी नेक लोगों की तस्वीरें, ताकि उनकी याद ताज़ा रहे और उनकी वजह से इबादत की ओर प्रोत्साहन मिले। फिर उनके बाद आने वाले लोग आए, और शैतान ने उनके कामों को उनके लिए लुभावना बना दिया और उनसे कहा: 'तुम्हारे पूर्वज इन तस्वीरों की पूजा करते थे।' तो वे मूर्ति पूजा में पड़ गए। (फुटनोट 2)

[उर्दू]: (हदीस शरीफ़ में है कि) वे नादान लोग अच्छे और सालेह लोगों की तस्वीरें बना कर अपनी इबादत गाहों में सजा कर रख देते ताकि उनकी याद आती रहे और उनके ज़रिए इबादत-ए-इलाही की तरफ़ रग़बत पैदा हो। फिर उनके बाद जब और लोग दुनिया में आए तो शैतान ने पहलों के कारनामे इन आने वाले लोगों की निगाहों में आरास्ता करके पेश किए और उनसे कहा कि तुम्हारे

अस्लाफ़ इन तस्वीरों की परस्तिश किया करते थे, तो फिर ये भी उनकी इबादत में मसरूफ़ हो गए। (त)

---

1. सहीह अल-बुखारी, किताबुल जनाइज़, बाब बिनाउल मस्जिद अलल कब्र, कदीमी कुतुब खाना कराची 1/179; सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब अल-नहयु अन बिनाउल मस्जिद अलल कुबूर, कदीमी कुतुब खाना 1/201.
2. मिरकात अल-मफातीह शर्ह अल-मिश्कात, किताबुल लिबास, बाब अत-तसावीर, अल-मकतबा अल-हबीबिय्या क्वेटा 8/282.

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

نیز صحیحین بخاری و مسلم میں ام المؤمنین صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے ہے:

[عربی]: لما اشتکی النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ذکر بعض نسائہ کنیسۃ یقال لھا ماریۃ وکانت ام سلمۃ وام حبیبۃ رضی اللہ تعالی علیھما اتتا ارض الحبشۃ فذکرتا من حسنھا وتصاویر فیھا فرفع صلی اللہ تعالی علیہ وسلم رأسہ فقال اولئك اذا مات فیھم الرجل الصالح بنوا علی قبرہ مسجدا ثم صوّروا فیہ تلك الصور واولئك شرار خلق اللہ عند اللہ- 1

[اردو]: جب حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم بیمار ہوئے تو آپ کی بعض بیویوں نے ایک گرجے کا ذکر فرمایا کہ جس کو ماریہ کہا جاتا تھا چنانچہ سیدہ ام سلمہ اور ام حبیبہ رضی اللہ تعالٰی عنہما (اللہ تعالٰی ان دونوں سے راضی ہو) ملک حبشہ میں تشریف لے گئیں، پھر انہوں نے وہاں یہ گرجا دیکھا، دونوں نے اس کے حسن اور اس میں سجی تصویروں کا تذکرہ فرمایا، تو حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے اپنا سر مبارک اٹھا کر فرمایا: جب ان لوگوں میں کوئی نیک اور صالح آدمی مرجاتا تو اس کی قبر پر مسجد تعمیر کرتے پھر ان تصویروں کو سجا کر اس میں رکھ دیتے وہی اللہ تعالٰی کی بدترین مخلوق ہیں۔ (ت)

مرقاۃ شرح مشکوۃ شریف میں ہے:

[عربی]: صوروا ای صور الصلحاء تذکیراً بھم ترغیباً في العبادۃ لاجلھم ثم جاء من بعدھم فزیّن لھم الشیطان اعمالھم وقال لھم سلفکم یعبدون ھذہ الصور فوقعوا في عبادۃ الاصنام - 2

[اردو]: (حدیث شریف میں ہے کہ) وہ نادان لوگ اچھے اور صالح لوگوں کی تصویریں بنا کر اپنی عبادت گاہوں میں سجا کر رکھ دیتے تاکہ ان کی یاد آتی رہے اور ان کے ذریعے عبادت الہی کی

طرف رغبت پیدا ہو۔ پھر ان کے بعد جب اور لوگ دنیا میں آئے تو شیطان نے پہلوں کے کارنامے ان آنے والے لوگوں کی نگاہوں میں آراستہ کر کے پیش کئے اور ان سے کہا کہ تمہارے اسلاف ان تصویروں کی پرستش کیا کرتے تھے، تو پھر یہ بھی ان کی عبادت میں مصروف ہو گئے۔ (ت)

---

1. صحیح البخاری کتاب الجنائز باب بناء المسجد علی القبر قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۱۷۹، صحیح مسلم کتاب المساجد باب النھی عن بناء المسجد علی القبور قدیمی کتب خانہ ۱ / ۲۰۱
2. مرقاۃ المفاتیح شرح المشکوۃ کتاب اللباس باب التصاویر المکتبۃ الحبیبیہ کوئٹہ ۸ / ۲۸۲

Fatawa Razawiyya - Volume 24

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Arabic Column] "The angels do not enter a house in which there is a dog or a picture" - Narrated by the Imams Ahmad, the Six [Canonical Books of Hadith], and al-Tahawi from Abu Talhah; and al-Bukhari and al-Tahawi from Ibn Umar and Ibn Abbas; and Muslim, Abu Dawud, al-Nasa'i, and al-Tahawi from the Mother of the Believers, Maymunah; and Muslim, Ibn Majah, and al-Tahawi from the Mother of the Believers, al-Siddiqah [Aisha]; and Ahmad, Muslim, al-Nasa'i, al-Tahawi, and Ibn Hibban from Abu Hurayrah; and Imam Ahmad, al-Darimi, Sa'id bin Mansur, Abu Dawud, al-Nasa'i, Ibn Majah, Ibn Khuzaymah, Abu Ya'la, al-Tahawi, Ibn Hibban, al-Diya, al-Shashi, and Abu Nu'aym in...

[Urdu Column] Angels of mercy do not enter a house in which there is a dog or a picture (Imams of Hadith, for example, Imam Ahmad, the other six Imams of Hadith, and Imam al-Tahawi narrated this from Hazrat Abu Talhah; also, Bukhari and al-Tahawi narrated it from Hazrat Abdullah ibn Umar and Hazrat Ibn Abbas. Imam Muslim, Abu Dawud, Sunan Nasa'i, and al-Tahawi narrated it from the Mother of the Believers, Sayyidah Maymunah, and Muslim, Ibn Majah, and al-Tahawi narrated it from the Mother of the Believers, Sayyidah Aisha Siddiqah. Musnad Ahmad, Muslim, Nasa'i, al-Tahawi, and Ibn Hibban narrated it on the authority of Hazrat Abu Hurayrah (and similarly) Imams Ahmad, al-Darimi, Sa'id ibn Mansur, Abu Dawud, al-Nasa'i, Ibn Majah, Ibn Khuzaymah, Abu Ya'la, al-Tahawi, Ibn Hibban, al-Diya, al-Shashi, and Abu Nu'aym have...

[Footnotes] 1. Musnad Ahmad bin Hanbal, on the authority of Abu Talhah, 4/28; Sahih al-Bukhari, Book of the Beginning of Creation, 1/458, 468; Sahih Muslim, Book of Dress, 2/200; Sunan Abi Dawud, Book of Dress, 2/216; Jami` at-Tirmidhi, Chapters on Manners, 2/103; Sunan an-Nasa'i, p. 299; Sharh Ma'ani al-Athar, Book of Disliking, Chapter: Regarding Pictures on Clothes, H.M. Saeed Company Karachi, 2/400. 2. Sharh Ma'ani al-Athar, on the authority of Ibn Abbas, H.M. Saeed Company Karachi, 1/400; Sahih al-Bukhari, Book of Military Expeditions, 2/570 and Book of Dress, 2/881. 3. Sahih Muslim, 2/199; Musnad Ahmad bin Hanbal, 6/330; and Sunan Abi Dawud, 2/217. 4. Sahih Muslim, 2/200, 201; Sunan Ibn Majah, p. 218; and Sharh Ma'ani al-Athar, 2/401, 400. 5. Sahih Muslim, 2/202; Sunan an-Nasa'i, 2/301; and Sharh Ma'ani al-Athar, 2/402.

फतावा रज़विया - खंड 24

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:

[अरबी कॉलम] "रहमत के फरिश्ते उस घर में दाखिल नहीं होते जिसमें कुत्ता या तस्वीर हो" - इसे इमाम अहमद, छह इमामों और अल-तहावी ने अबू तल्हा से रिवायत किया है; और अल-बुखारी और अल-तहावी ने इब्न उमर और इब्न अब्बास से रिवायत किया है; और मुस्लिम, अबू दाऊद, अल-नसाई और अल-तहावी ने उम्मुल मोमिनीन मैमूना से रिवायत किया है; और मुस्लिम, इब्न माजाह और अल-तहावी ने उम्मुल मोमिनीन सिद्दीका (आयशा) से रिवायत किया है; और अहमद, मुस्लिम, अल-नसाई, अल-तहावी और इब्न हिब्बान ने अबू हुरैरा के हवाले से रिवायत किया है; और इमाम अहमद, दारीमी, सईद बिन मंसूर, अबू दाऊद, अल-नसाई, इब्न माजाह, इब्न खुज़ैमा, अबू याला, अल-तहावी, इब्न हिब्बान, अल-ज़िया, अल-शाशी और अबू नुऐम ने...

[उर्दू कॉलम] रहमत के फरिश्ते उस घर में नहीं आते जिसमें कुत्ता या तस्वीर हो (मुहद्दिसीन के इमाम, उदाहरण के लिए, इमाम अहमद, अन्य छह हदीस के इमामों और इमाम अल-तहावी ने इसे हज़रत अबू तल्हा से रिवायत किया है; इसके अलावा, बुखारी और अल-तहावी ने इसे हज़रत अब्दुल्ला इब्न उमर और हज़रत इब्न अब्बास से रिवायत किया है। इमाम मुस्लिम, अबू दाऊद, सुनन नसाई और अल-तहावी ने इसे उम्मुल मोमिनीन सैयदा मैमूना से रिवायत किया है, और मुस्लिम, इब्न माजा और अल-तहावी ने इसे उम्मुल मोमिनीन सैयदा आयशा सिद्दीका से रिवायत किया है। मसनद अहमद, मुस्लिम, नसाई, अल-तहावी और इब्न हिब्बान ने हज़रत अबू हुरैरा के हवाले से इसे रिवायत किया है (और इसी तरह) इमाम अहमद, दारीमी, सईद बिन मंसूर, अबू दाऊद, नसाई, इब्न माजा, इब्न खुज़ैमा, अबू याला, तहावी, इब्न हिब्बान, अल-ज़िया, अल-शाशी और अबू नुऐम ने...

[पाद टिप्पणियाँ] 1 मसनद अहमद बिन हंबल, अबू तल्हा से, 4/28; सहीह अल-बुखारी, किताब बद्-उल-खल्क, 1/458, 468; सहीह मुस्लिम, किताब अल-लिबास, 2/200; सुनन अबी दाऊद, किताब अल-लिबास, 2/216; जामि अत-तिर्मिज़ी, अबवाब अल-अदब, 2/103; सुनन अन-नसाई, पृ. 299; शरह मआनी अल-आसार, किताब अल-कराहिया, बाब: कपड़ों में तस्वीरें, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 2/400। 2 शरह मआनी अल-आसार, इब्न अब्बास से, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/400; सहीह अल-बुखारी, किताब अल-मगाज़ी, 2/570 और किताब अल-लिबास, 2/881। 3 सहीह मुस्लिम, 2/199; मसनद अहमद बिन हंबल, 6/330; और सुनन अबी दाऊद, 2/217। 4

सहीह मुस्लिम, 2/200, 201; सुनन इब्न माजा, पृ. 218; और शरह मआनी अल-आसार, 2/401, 400। 5 सहीह मुस्लिम, 2/202; सुनन अन-नसाई, 2/301; और शरह मआनी अल-आसार, 2/402।

पृष्ठ 720 में से 577

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۴

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

[عربی کالم] لا تدخل الملئکۃ بیتا فیہ کلب ولا صورۃ - رواہ الائمۃ احمد والستۃ والطحاوی عن ابی طلحۃ والبخاری والطحاوی عن ابن عمر وعن ابن عباس، ومسلم وابوداؤد والنسائی والطحاوی عن ام المومنین میمونۃ، ومسلم وابن ماجۃ والطحاوی عن ام المومنین الصدیقۃ واحمد ومسلم والنسائی والطحاوی وابن حبان عن ابی ہریرۃ والامام احمد والدارمی وسعید بن منصور وابوداؤد والنسائی وابن ماجۃ وابن خزیمۃ وابویعلی والطحاوی وابن حبان والضیاء والشاشی وابونعیم فی

[اردو کالم] رحمت کے فرشتے اس گھر میں نہیں آتے جس میں کتا یا تصویر ہو (ائمہ محدثین مثلاً امام احمد، دوسرے چھ ائمہ حدیث اور امام طحاوی نے حضرت ابوطلحہ سے اس کو روایت فرمایا، نیز بخاری اور طحاوی نے حضرت عبداللہ ابن عمر، اور حضرت ابن عباس سے اس کو روایت کیا۔ امام مسلم، ابوداؤد، سنن نسائی اور طحاوی نے ام المومنین سیدہ میمونہ سے اور مسلم وابن ماجہ اور طحاوی نے ام المومنین سیدہ عائشہ صدیقہ سے اس کو روایت کیا ہے۔ مسند احمد، مسلم، نسائی، طحاوی اور ابن حبان نے بحوالہ حضرت ابوہریرہ اس کو روایت کیا ہے (اور اسی طرح) امام احمد، دارمی، سعید بن منصور، ابوداؤد، نسائی، ابن ماجہ، ابن خزیمہ، ابویعلی، طحاوی، ابن حبان، الضیاء، الشاشی، اور ابونعیم نے

[حواشی] 1 مسند احمد بن حنبل، عن ابی طلحۃ، ۴/ ۲۸ وصحیح البخاری کتاب بدء الخلق ۱/ ۴۵۸، ۴۶۸، صحیح مسلم کتاب اللباس ۲/ ۲۰۰ و سنن ابی داؤد کتاب اللباس ۲/ ۲۱۶، جامع الترمذی ابواب الادب ۲/ ۱۰۳ و سنن النسائی ص ۲۹۹، شرح معانی الآثار کتاب الکراہیۃ باب الصور تکون في

الثیاب ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۴۰۰ 2 شرح معانی الآثار عن ابن عباس ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۴۰۰، صحیح البخاری کتاب المغازی ۲/ ۵۷۰ و کتاب اللباس ۲/ ۸۸۱ 3 صحیح مسلم ۲/ ۱۹۹ و مسند احمد بن حنبل ۶/ ۳۳۰ و سنن ابی داؤد ۲/ ۲۱۷ 4 صحیح مسلم ۲/ ۲۰۰ و ۲۰۱ سنن ابن ماجہ ص ۲۱۸ و شرح معانی الآثار ۲/ ۴۰۱، ۴۰۰ 5 صحیح مسلم ۲/ ۲۰۲ و سنن النسائی ۲/ ۳۰۱ و شرح معانی الآثار ۲/ ۴۰۲

Volume 24 Fatawa Razawiyya

[Box 1] It is narrated in Al-Hilya from the Leader of the Faithful, Hazrat Ali (may Allah be pleased with him). Also, Imam Malik narrated it in "Al-Muwatta", and Tirmidhi and Tahawi in "Al-Mu'jam al-Kabir" from Hazrat Usama bin Zaid. Similarly, Tahawi narrated it with reference to Hazrat Abu Ayyub Ansari (may Allah be pleased with all of them). We have explained all these matters in detail in our Fatawa. (T)

[Main Paragraph] And the presence of a religious dignitary's picture in it can neither be an excuse nor can it save one from this great burden (of sin). On the contrary, the picture of a religious dignitary is more cause for burden and punishment because it will be revered, and the veneration of an animate picture is a specific form of idol worship and, so to speak, an explicit opposition to the Islamic faith. You have just heard the Hadith that they used to keep pictures of saints, upon which He (peace be upon him) called them the worst of Allah's creation. Who could be more of a religious dignitary than the Prophets (peace be upon them)? And among the Prophets, who could be like the Leader of the Prophets, the Friend of the Almighty, our master Ibrahim, and his noble son (peace be upon them both, best of blessings and salutations), who, after our noble Presence (peace and blessings of Allah be upon him), are superior to and higher than the entire world? Their pictures, along with those of Hazrat Isma'il (sacrificed for Allah) and Hazrat Batul Maryam (peace be upon them), were painted on the walls of the Ka'bah by the disbelievers. When Makkah was conquered, the noble Presence (peace and blessings of Allah be upon him) first sent the Leader of the Faithful, Faruq al-A'zam (may Allah be pleased with him), to erase them all. When he entered the Ka'bah, he found some remnants of them, so he asked for water and washed them off himself. Regarding the makers (of such pictures), he said "Qatalahum Allah" (May Allah destroy them).

[Box 2] This is the meaning of what Imam Bukhari narrated in his Sahih and the Imam...

[Footnotes] 1. Sunan Abi Dawud, 2/216; Sunan an-Nasa'i, 2/300; Sharh Ma'ani al-Athar, 2/400. 2. Jami' at-Tirmidhi, 2/104; Muwatta Imam Malik, Chapter: Regarding Images and Statues, p. 726. 3. Musnad Ahmad bin Hanbal, 5/203; Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 387, 1/162; Sharh Ma'ani al-Athar, 2/400. 4. Sharh Ma'ani al-Athar, Kitab al-Karahiyah, Chapter: Images being on clothes, H.M. Saeed Company, Karachi, 2/400; Sahih al-Bukhari, Kitab al-Manasik, 1/218; Kitab al-Anbiya, 1/473, Qadimi Kutub

Khana, Karachi; Sunan Abi Dawud, Kitab al-Manasik, 1/277; Musnad Ahmad bin Hanbal from Ibn Abbas, 1/335 & 365.

जिल्द २४ फ़तावा रज़विया

[बॉक्स 1] 'अल-हिल्या' में अमीर-अल-मोमिनीन हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) से इसे रिवायत किया गया है। साथ ही इमाम मालिक ने "मुअत्ता" में और तिर्मिज़ी और तहावी ने "मुअजम कबीर" में हज़रत ओसामा बिन ज़ैद से इसे रिवायत किया है। और इसी तरह तहावी ने हज़रत अबू अय्यूब अंसारी के हवाले से इसे रिवायत किया है, अल्लाह तआला इन तमाम बुज़ुर्गों से राज़ी हो। और हमने इन सब बातों को अपने फ़तावा में तफ़सील से बयान फ़रमाया है। (त)

[मुख्य पैराग्राफ] और इसमें किसी धार्मिक प्रतिष्ठित व्यक्ति (मुअज़्ज़म-ए-दीनी) का चित्र होना न कोई बहाना हो सकता है और न ही इस महान पाप (वबाल-ए-अज़ीम) से बचा सकता है। बल्कि, किसी धार्मिक प्रतिष्ठित व्यक्ति का चित्र और भी अधिक पाप और सज़ा का कारण है क्योंकि उसका सम्मान (ताज़ीम) किया जाएगा, और किसी सजीव (ज़ी-रुह) के चित्र का सम्मान मूर्तिपूजा का एक विशेष रूप है और इस्लामी धर्म (मिल्लत-ए-इस्लामी) का स्पष्ट विरोध है। आपने अभी हदीस सुनी कि वे संतों (औलिया) के ही चित्र रखते थे, जिस पर उन्हें अल्लाह की निकृष्टतम रचना (बद-तरीन ख़ल्क़-उल्लाह) कहा गया। पैग़ंबरों (अंबिया अलैहिमुस्सलाम) से बढ़कर धार्मिक रूप से प्रतिष्ठित और कौन होगा? और पैग़ंबरों में भी संतों के सरदार, अल्लाह के मित्र हमारे आका इब्राहीम और उनके नेक बेटे (उन पर और हमारे आका सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अल्लाह की अफ़ज़ल रहमतें और सलाम हों), जो हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद सारी दुनिया से श्रेष्ठ और उच्च हैं? उनके और हज़रत इस्माईल (ज़बीहुल्लाह) और हज़रत बतुल मरियम (अलैहिमुस्सलाम) के चित्र काफ़िरों ने काबा की दीवारों पर उकेरे हुए थे। जब मक्का फ़तह हुआ, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पहले अमीर-अल-मोमिनीन फ़ारूक़-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) को भेजकर उन्हें मिटा दिया। जब वह काबा मुअज़्ज़मा में तशरीफ़ लाए और कुछ निशान बाक़ी पाए, तो उन्होंने पानी मंगवाकर खुद उन्हें धोया। और इसे बनाने वालों के लिए फ़रमाया "क़ातलाहुम अल्लाह" (अल्लाह उन्हें तबाह करे)।

[बॉक्स 2] यही अर्थ है उसका जो इमाम बुखारी ने अपनी 'सहीह' में और इमाम...

[पाद टिप्पणियाँ] 1. सुनन अबी दाऊद 2/216 और सुनन अन-नसाई 2/300 और शरह मा'आनी अल-आसार 2/400 2. जामी अत-तिर्मिज़ी 2/104 और मुअत्ता इमाम मालिक, चित्रों और प्रतिमाओं का अध्याय, पृ. 726 3. मुस्नद अहमद बिन हंबल 5/203 और अल-मुअजम अल-कबीर हदीस 387, 1/162 और शरह मा'आनी अल-आसार 2/400 4. शरह मा'आनी अल-आसार किताब अल-

कराहिया, कपड़ों पर चित्रों का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची 2/400, सहीह अल-बुखारी किताब अल-मनासिक 1/218 और किताब अल-अंबिया 1/473 क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, सुनन अबी दाऊद किताब अल-मनासिक 1/277 और मुस्नद अहमद बिन हंबल इब्न अब्बास से 1/335 और 365

पृष्ठ 578/720

[Box 1] الحلیة عن امیرالمؤمنین ۱ علی والامام مالك فی الموطأ، والترمذی والطحاوی عن ابی سعید ۲ الخدری، واحمد والطحاوی والطبرانی فی الکبیر۳ عن اسامة بن زید والطحاوی عن ابی ایوب الانصاری رضی اللہ تعالٰی عنہم وقد فصلناھا فی فتاؤنا۔ حلیہ میں امیر المومنین حضرت علی رضی اللہ تعالٰی عنہ سے اس کو روایت کیا ہے۔ نیز امام مالک نے "موطا" میں ترمذی اور طحاوی نے "معجم کبیر" میں حضرت اسامہ بن زید سے اس کو روایت فرمایا۔ اور اسی طرح طحاوی نے حضرت ابوایوب انصاری کے حوالہ سے اس کو روایت فرمایا، اللہ تعالٰی ان تمام بزرگوں سے راضی ہو۔ اور ہم نے ان سب باتوں کو اپنے فتاوٰی میں تفصیل سے بیان فرمایا ہے (ت)

[Paragraph] اور اس میں کسی معظم دینی کی تصویر ہونا نہ عذر ہو سکتا ہے نہ اس وبالِ عظیم سے بچا سکتا ہے بلکہ معظم دینی کی تصویر زیادہ موجبِ وبال و نکال ہے کہ اس کی تعظیم کی جائے گی اور تصویر ذی روح کی تعظیم خاصی بت پرستی کی صورت اور گویا ملتِ اسلامی سے صریح مخالفت ہے۔ ابھی حدیث سن چکے کہ وہ اولیاء ہی کی تصویریں رکھتے تھے جس پر ان کو بدترین خلق اللہ فرمایا۔ انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام سے بڑھ کر کون معظم دین ہوگا اور نبی بھی کون حضرت شیخ الانبیاء خلیل کبریا سیدنا ابراہیم علی ابنہ الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم کہ ہمارے حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے بعد تمام جہان سے افضل واعلٰی ہیں ان کی اور حضرت سیدنا اسمعیل ذبیح اللہ و حضرت بتول مریم علیہم الصلوٰۃ کی تصویریں دیوارِ کعبہ پر کفار نے منقش کی تھیں، جب مکہ معظمہ فتح ہوا حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے امیر المومنین فاروق اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کو پہلے بھیج کر وہ سب محو کرا دیں، جب کعبہ معظمہ

میں تشریف فرما ہوئے بعض کے نشان کچھ باقی پائے پانی منگا کر بنفسِ نفیس انہیں دھویا اور بنانے والوں کو قاتل اللہ فرمایا اللہ انہیں قتل کرے،

[Box 2] ہذا معنی ماروی البخاری۴ فی صحیحہ والامام جو کچھ امام بخاری نے اپنی صحیح میں روایت فرمایا

[Footnotes] 1 سنن ابی داؤڈ ۲/ ۲۱۶ وسنن النسائی ۲/ ۳۰۰ و شرح معانی الآثار ۲/ ۴۰۰ 2 جامع الترمذی ۲/ ۱۰۴ و موطا امام مالك ماجاء فی الصور والتماثیل ص ۷۲۶ 3 مسند احمد بن حنبل ۵/ ۲۰۳ و المعجم الکبیر حدیث ۳۸۷/ ۱/ ۱۶۲ و شرح معانی الآثار ۲/ ۴۰۰ 4 شرح معانی الآثار کتاب الکراہیة باب الصور تکون فی الثیاب ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۴۰۰، صحیح البخاری کتاب المناسك ۱/ ۲۱۸ و کتاب الانبیاء ۱/ ۴۷۳ قدیمی کتب خانہ کراچی، سنن ابی داؤد کتاب المناسك ۱/ ۲۷۷ و مسند احمد بن حنبل عن ابن عباس ۱/ ۳۳۵ و ۳۶۵

Fatawa Razawiyya, Volume 24

[Arabic Box 1] Al-Tahawi reported from Ibn Abbas, and Imam Ahmad and Abu Dawood from Jabir bin Abdullah and Umar bin Shaba, and Imam Al-Tahawi from Usama bin Zaid (may Allah be pleased with them) as we have detailed in our Fatawa.

[Urdu Box 1] Its meaning and sense is the same; Imam Tahawi narrated from Hadrat Abdullah bin Abbas, Imam Ahmad and Abu Dawood narrated from Hadrat Jabir bin Abdullah, and Umar bin Shaba and Imam Tahawi narrated from Usama bin Zaid (may Allah be pleased with them), as we have explained in detail in our Fatawa. (T)

Indeed, at first glance, a doubt may arise here that the portrait of the aforementioned young gentleman is only up to the chest, and a human cannot live with only that much of a body. And it is in 'Durr-ul-Mukhtar' that when an organ is erased from a picture without which life is impossible, then it is exempted from the prohibition.

[Arabic Box 2] As he said (or if it is small) its details are not clear to the observer standing while it is on the ground, Al-Halabi mentioned it (or the head or face is cut off) or an organ is erased without which it cannot live (or for a non-living thing) it is not disliked. 1

[Urdu Box 2] Accordingly, he said if the picture is so small that if placed on the ground, a person standing cannot see the details of its limbs. As Halabi stated this, or if its head or face has been cut off, or such an organ has been erased without which it cannot remain alive, or if it is a picture of an inanimate object, then in all these cases there will be no dislike (Karahat). (T)

And erasing after creating it and it not being there from the start both have the same ruling. It is in 'Radd-ul-Muhtar':

[Arabic Box 3] His saying 'or the head is cut off' i.e., whether it was from the original or it had a head and it was erased. 2 I say: and success is through Allah and through Him is the attainment of the heights of research.

[Urdu Box 3] The author's statement that either the head of the picture was cut off, meaning it didn't have a head from the beginning, or it had a head but it was erased. I say: (I say) success is only attained by the grace of Allah Almighty and because of Him, a person can reach the peak of research (T).

Here, this saying could be of someone who has not served Fiqh (jurisprudence) and Hadith, nor has gained insight into the objectives of Shariah. Firstly, in the place of refinement, this entire passage is questionable; as many books of Fiqh, texts, and commentaries as the humble servant...

---

1 Durr-ul-Mukhtar, Kitab-us-Salat, Chapter: What invalidates prayer and what is disliked in it, Matba Mujtabai Delhi, 1/92. 2 Radd-ul-Muhtar, Kitab-us-Salat, Chapter: What invalidates prayer and what is disliked in it, Dar Ihya-ut-Turath-ul-Arabi Beirut, 1/436.

फ़तावा रज़विया, खंड २४

[अरबी बॉक्स १] अत-तहावी इब्न अब्बास से, और इमाम अहमद और अबू दाऊद जाबिर बिन अब्दुल्ला और उमर बिन शबा से, और इमाम अत-तहावी उसामा बिन ज़ैद (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से जैसा कि हमने अपने फ़तवा में विस्तार से बताया है।

[उर्दू बॉक्स १] इसका तात्पर्य और अर्थ यही है; इमाम तहावी ने हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास से, इमाम अहमद, अबू दाऊद ने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्ला के हवाले से, और उमर बिन शबा और इमाम तहावी ने उसामा बिन ज़ैद से इसे रिवायत किया है (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो), जैसा कि हमने अपने फ़तवा में विस्तार से वर्णन किया है। (त)

हाँ, प्रथम दृष्टया यहाँ यह संदेह उत्पन्न हो सकता है कि उक्त साहबज़ादे का यह चित्र केवल छाती तक ही है और मनुष्य इतने शरीर के साथ जीवित नहीं रह सकता। और 'दुर्रे मुख्तार' में है कि जब चित्र से वह अंग मिटा दिया जाए जिसके बिना जीवन संभव न हो, तो वह प्रतिबंध से मुक्त है।

[अरबी बॉक्स २] जहाँ उन्होंने कहा (या यदि वह छोटा है) खड़े होकर देखने वाले को उसके अंगों का विवरण स्पष्ट न हो जब वह ज़मीन पर हो, अल-हलबी ने इसका उल्लेख किया है (या सिर या चेहरा कटा हुआ हो) या ऐसा अंग मिटा दिया गया हो जिसके बिना वह जीवित नहीं रह सकता (या किसी निर्जीव वस्तु का हो) तो वह मकरूह (नापसंद) नहीं है। १

[उर्दू बॉक्स २] चुनाँचे फ़रमाया कि अगर तस्वीर इतनी छोटी हो कि ज़मीन पर रखी हो तो खड़े होकर देखने वाले को उसके अंगों का विवरण मालूम न हो सके। जैसा कि हलबी ने इसे बयान फ़रमाया या उसका सिर या चेहरा काट दिया गया हो या उसके किसी ऐसे अंग को मिटा दिया गया हो जिसके बिना वह जीवित न रह सके या किसी निर्जीव की तस्वीर हो तो इन सभी स्थितियों में कराहत (नापसंदगी) नहीं होगी। (त)

और बनाने के बाद मिटा देना और शुरू से ही न होना दोनों का एक ही हुक्म है। 'रद्दुल मुहतार' में है:

[अरबी बॉक्स ३] उनका कहना कि 'या सिर कटा हुआ हो' यानी चाहे वह मूल रूप से हो या उसका सिर था और उसे मिटा दिया गया हो। २ मैं कहता हूँ: और अल्लाह की कृपा से ही सफलता है और उसी के द्वारा शोध की ऊँचाइयों तक पहुँचा जा सकता है।

[उर्दू बॉक्स ३] लेखक का कथन है कि या तो तस्वीर का सिर काट दिया गया हो, यानी मूल रूप से उसका सिर न हो, या सिर हो लेकिन उसे मिटा दिया गया हो। अक़ूल: (मैं कहता हूँ) अल्लाह तआला के करम ही से तौफ़ीक़ हासिल होती है और इसी वजह से आदमी तहक़ीक़ (शोध) की चोटी तक पहुँच सकता है। (त)

यहाँ यह कथन उसका हो सकता है जिसने फ़िक़्ह और हदीस की सेवा नहीं की, न ही उसे शरीयत के उद्देश्यों पर दृष्टि मिली। सर्वप्रथम, शोध के स्थान पर यह पूरा गद्यांश संदिग्ध है; जैसा कि फ़क़ीर ने जितनी भी फ़िक़्ही किताबों, मतून और शरूहात (टीकाओं) का...

---

१ दुर्रे मुख्तार, किताबुस सलात, अध्याय: नमाज़ को बिगाड़ने वाली और उसमें नापसंद चीजें, मतबा मुजतबाई दिल्ली, १/९२। २ रद्दुल मुहतार, किताबुस सलात, अध्याय: नमाज़ को बिगाड़ने वाली और उसमें नापसंद चीजें, दार इह्या-उत-तुराथ-उल-अरबी बेरुत, १/४३६।

पृष्ठ ७२० का ५७९

[عربی باکس ۱] الطحاوی عن ابن عباس والامام احمد وابوداود عن جابر بن عبداللہ وعمر بن شبیہ والامام الطحاوی عن اسامۃ بن زید رضی اللہ تعالٰی عنہم کما فصلناہ فی فتاونا۔

[اردو باکس ۱] اس کا مفہوم اور معنی یہی ہے، امام طحاوی نے حضرت عبداللہ بن عباس سے۔ امام احمد، ابوداود نے حضرت جابر بن عبداللہ کے حوالہ سے۔ اور عمر بن شبہ اور امام طحاوی نے اسامہ بن زید سے اس کو روایت کیا ہے رضی اللہ تعالٰی عنہم۔ جیسا کہ ہم نے اپنے فتاوٰی میں اس کو مفصل بیان کیا ہے۔ (ت)

ہاں بادی النظر میں یہاں یہ شبہ گزر سکتا ہے کہ صاحبزادہ موصوف کی یہ تصویر صرف سینے تک ہے اور انسان اتنے جسم سے زندہ نہیں رہتا۔ اور در مختار میں ہے کہ جب تصویر سے وہ عضو محو کر دیا جائے جس کے بغیر حیات نہ ہو تو وہ ممانعت سے مستثنٰی ہے۔

[عربی باکس ۲] حیث قال(اوکانت صغیرۃ) لاتبین تفاصیل اعضائھا للناظر قائماوھی علی الارض ذکرہ الحلبی(او مقطوعۃ الراس اوالوجہ)اوممحوۃ عضو لاتعیش بدونہ(اولغیر ذی روح)لایکرہ ۱۔

[اردو باکس ۲] چنانچہ فرمایا اگر تصویر اتنی چھوٹی ہو کہ زمین پر رکھی ہو تو کھڑے ہو کر دیکھنے والے کو اس کے اعضاء کی تفصیل معلوم نہ ہوسکے۔ چنانچہ حلبی نے اس کو بیان فرمایا یا اس کا سر یا چہرہ کاٹ دیا گیا ہو یا اس کے کسی ایسے اندام کو مٹا دیا گیا ہو کہ جس کے بغیر وہ زندہ نہ رہ سکے، یا کسی غیر جاندار کی تصویر ہو تو ان ساری صورتوں میں کراہت نہ ہوگی(ت)

اور بنانے کے بعد مٹا دینا اور سرے سے نہ ہونا دونوں کا ایک حکم ہے۔ ردالمحتار میں ہے:

[عربی باکس ۳] قولہ اومقطوعۃ الرأس ای سواء کان من الاصل اوکان لھا رأس ومحٰی۲۔ اقول: وباللہ التوفیق وبہ الوصول الی ذری التحقیق۔

[اردو باکس ۳] مصنف کا قول کہ یا تصویر کا سر کاٹ دیا گیا، یعنی اصل سے اس کا سر نہ ہو، یا سر ہو لیکن اسے مٹا دیا گیا ہو۔ اقول:(میں کہتا ہوں) اللہ تعالیٰ کے کرم ہی سے توفیق حاصل ہوتی ہے اور اسی کی وجہ سے آدمی تحقیق کی چوٹی تک پہنچ سکتا ہے (ت)

یہاں یہ قول اس کا ہو سکتا ہے جس نے خدمت فقہ و حدیث نہ کی، نہ اسے مقاصد شرع پر نظر ملی، اولاً مقام تنقیح میں سرے سے یہ عبارت ڈری محل نظر ہے فقیر نے جس قدر کتب فقہیہ متون و شروح

---

۱ درمختار کتاب الصلوٰۃ باب مائیفسد الصلوٰۃ ومایکرہ فیھا مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۹۲ ۲ ردالمحتار کتاب الصلوٰۃ باب مائیفسد الصلوٰۃ ومایکرہ فیھا دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۴۳۶

Volume 24 Fatawa Razawiyyah

And the fatwas are present, all were referred to. No predecessor of Durr-e-Mukhtar was found in this generalization in the statement of the ruling, to the extent that even in Bahr and Durar, which are the main sources of books, there is no sign of it. General books like Hidayah, Wiqayah, Niqayah, Kanz, Wafi, Ghurar, Islah, Multaqi, Munyah, Nur al-Idah, Hidayah, Sharh Wiqayah, Barjandi, Tabyin, Kafi, Durar, Idah, Majma' al-Anhur, Maraqi al-Falah, Fath al-Qadir, Inayah, Khaniyah, Khizanat al-Muftin, and Hindiyyah, even in Jami' al-Saghir, the recorded school of Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him), only restricted it to the mention of the head, stating that if the picture is headless or its head is cut off, there is no dislike. And Khulasah, then following it Tanwir al-Absar, Hilyah, Bahr al-Ra'iq, Jami' al-Rumuz, Ghunyah, Sagheeri, Shurunbulali, and Abdul Halim ali al-Durar added "wajah" (face) that erasing the face is also like cutting off the head. Zakhirat al-Uqba, Shalabi ali al-Zayla'i, Hasan 'Ajaymi ali al-Durar, Sa'di Effendi ali al-'Inayah, and Miskeen ali al-Kanz, even Sayyid Abu al-Sa'ud Azhari who takes extensively from Durr-e-Mukhtar, did not address this addition at all. I say: and the mention of "face" is not a real addition because the application of "head" often refers to the face. Cutting off the neck is called cutting the head, so the purpose of Khulasah is also to convey that erasing is like cutting. Its text is this:

[Table 1] Arabic: If the head is cut off, there is no harm in it, and if the face of the picture is erased, it is like cutting off the head. - 1 Urdu/English Translation: If the head of the picture is cut off, then there is no harm in keeping it, and erasing the face of the picture is like cutting off the head. (T)

Then I say: (Then I say. T) Other parts are not in the meaning of face and head, even if they are similar in being the locus of life, because the face itself is the essence in the picture of a living being. Therefore, our master Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) named it the picture, and there is no doubt that only the face is called a picture, and makers often restrict themselves to this. The Christian kings who want their picture on coins mostly keep it up to the face, and indeed general purposes of a picture are achieved by the face. "A thing is judged by its purposes." The great Imam Abu Ja'far Tahawi narrates from our master Abu Hurairah (may Allah be pleased with him):

[Table 2] Arabic: He said: The picture is the head, so anything that does not have a head is not a picture. - 2 Urdu/English Translation: He said: Picture is the name of the "head", therefore, whatever does not have a head is not a picture. (T)

---

1 Khulasat al-Fatawa, Kitab al-Salah, Chapter Two, Type regarding what is disliked in prayer, Maktabah Habibiyyah, Quetta, 1/58 2 Sharh Ma'ani al-Athar, Kitab al-Karahiyyah, Chapter: The picture that is on clothes, H.M. Saeed Company, Karachi, 2/403

और फ़तवे मौजूद हैं, सभी की ओर रुजू किया गया, हुक्म के बयान में इस सामान्यीकरण में दुर्रे मुख्तार का कोई पूर्ववर्ती नहीं पाया गया, यहाँ तक कि बहर और दुरर, जो कि अधिकांश किताबों के स्रोत हैं, उनमें भी इसका कोई निशान नहीं है। आम किताबें जैसे हिदाया, वक़ाया, नुक़ाया, कंज़, वाफ़ी, ग़ुरर, इसलाह, मुल्तक़ा, मुन्या, नूर अल-ईज़ाह, हिदाया, शर्ह वक़ाया, बरजंदी, तबीन, काफ़ी, दुरर, ईज़ाह, मज्मअ अल-अन्हुर, मराक़ी अल-फ़लाह, फ़त्ह अल-क़दीर, इनाया, ख़ानिया, ख़िज़ानत अल-मुफ़्तीन और हिन्दिया, यहाँ तक कि खुद जामिअ सगीर, इमाम मुहम्मद (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) के मज़हब के संकलन में केवल सिर के उल्लेख पर इक्तिफ़ा किया गया है कि अगर तस्वीर बिना सिर के हो या उसका सिर काट दिया जाए तो कोई कराहत नहीं है। और ख़ुलासा, फिर उसकी पैरवी में तन्वीर अल-अबसार, हिल्या, बहर अर-राइक़, जामिअ अर-रुमूज़, ग़ुन्या, सग़ीरी, शुरुनबुलाली और अब्दुल हलीम अली अद-दुरर में "वजह" (चेहरा) का इज़ाफ़ा किया गया कि चेहरा मिटा देना भी सिर काट देने की तरह है। ज़ख़ीरत अल-उक़्बा, शलबी अली अज़-ज़ैलाई, हसन अजैमी अली अद-दुरर, सादी अफ़ंदी अली अल-इनाया और मिस्कीन अली अल-कंज़, यहाँ तक कि सैय्यद अबू अल-सऊद अज़हरी ने भी जो दुर्रे मुख्तार से बहुत अधिक लेते हैं, इस इज़ाफ़े से बिल्कुल तआरुज़ नहीं किया। मैं कहता हूँ: और "वजह" (चेहरे) का उल्लेख वास्तव में कोई वृद्धि नहीं है क्योंकि 'रास' (सिर) का प्रयोग अक्सर चेहरे पर होता है। गर्दन अलग कर देने को ही सिर काटना कहते हैं, तो ख़ुलासा का मक़सद यह बताना भी है कि मिटाना भी काटने की तरह है, इसकी इबारत यह है:

[तालिका १] अरबी: यदि सिर कटा हुआ हो तो उसमें कोई हर्ज नहीं, और यदि तस्वीर का चेहरा मिटा दिया जाए तो वह सिर काटने की तरह है। - 1 उर्दू/हिंदी अनुवाद: अगर तस्वीर का सर काट दिया गया तो फिर उसके रखने में कोई हर्ज नहीं, और तस्वीर के चेहरे को मिटा देना सर काटने की तरह है। (त)

फिर मैं कहता हूँ: (फिर मैं कहता हूँ। त) अन्य अंग चेहरे और सिर के अर्थ में नहीं हैं, भले ही वे जीवन का आधार होने में समान हों, क्योंकि चेहरा ही जानदार की तस्वीर में असल है, और इसीलिए हमारे आक़ा अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने इसी का नाम तस्वीर रखा और इसमें कोई शक नहीं कि केवल चेहरे को ही तस्वीर कहते हैं और बनाने वाले अक्सर इसी पर इक्तिफ़ा करते हैं। ईसाइयों के राजा जो सिक्कों पर अपनी तस्वीर चाहते हैं, अक्सर चेहरे तक ही रखते हैं और बेशक तस्वीर के आम मक़सद

चेहरे से हासिल होते हैं। "और वस्तु अपने मक़सदों पर निर्भर होती है।" इमाम-ए-अजल अबू जाफ़र तहावी हज़रत सैय्यदना अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रावी हैं:

[तालिका २] अरबी: उन्होंने कहा: तस्वीर सिर है, इसलिए जिस चीज़ का सिर न हो वह तस्वीर नहीं है। - 2 उर्दू/हिंदी अनुवाद: फ़रमाया: तस्वीर "सर" का नाम है लिहाज़ा जिस चीज़ का सर न हो वो तस्वीर नहीं (त)

---

1 ख़ुलासत अल-फ़तावा, किताब अस-सलात, अल-फ़स्ल अत्-थानी, अल-जिंस फ़ीमा युकराहु फ़िस-सलात, मकतबा हबीबिया, क्वेटा, 1/58 2 शर्ह मआनी अल-आसार, किताब अल-कराहिया, बाब: तस्वीर जो कपड़ों में हो, एच. एम. सईद कंपनी, कराची, 2/403

पृष्ठ ७२० का ५८०

وفتاوٰی حاضر ہیں سب کی طرف مراجعت کی، بیانِ حکم میں اس تعمیم میں درمختار کا سلف نہ پایا یہاں تک کہ بحر ودرر کہ اکثر ماخذِ کتاب ہیں ان میں بھی اس کا نشان نہیں، عامہ کتب مثل ہدایہ و وقایہ و نقایہ و کنز و وافی و غرر و اصلاح و ملتقٰی و منیہ و نور الایضاح و ہدایہ و شرح وقایہ و بر جندی و تبیین و کافی و درر و ایضاح و مجمع الانہر و مراقی الفلاح و فتح القدیر و عنایہ و خانیہ و خرانۃ المفتین و ہندیہ حتی کہ خود جامعِ صغیر محرّرِ مذہب امام محمد رحمہ اللہ تعالی میں صرف ذکرِ راس پر اقتصار فرمایا کہ اگر تصویر بے سر کی ہو یا اس کا سر کاٹ دیں تو کراہت نہیں، اور خلاصہ پھر اس کی تبعیت سے تنویر الابصار و حلیہ و بحر الرائق و جامع الرموز و غنیہ و صغیری و شرنبلالی و عبدالعلیم علی الدرر میں "وجہ" کا اضافہ کیا کہ چہرہ مٹادینا بھی سر کاٹ دینے کی مثل ہے ذخیرۃ العقبی و شلبی علی الزیلعی و حسن عجیمی علی الدرر و سعدی افندی علی العنایہ و مسکین علی الکنز کہ سید ابو السعود ازہری نے بھی کہ درمختار سے کثیر الاخذ ہیں زیادت سے اصلاً تعرض نہ کیا اقول: اور ذکر "وجہ" حقیقۃً زیادت نہیں کہ راس کا اطلاق اکثر چہرہ پر آتا ہے گردن جدا کردینے کو سر کاٹنا ہی کہتے ہیں تو مقصودِ خلاصہ اس کا افادہ بھی ہے کہ محو بھی مثلِ قطع ہے اس کی عبارت یہ ہے :

[جدول ۱] عربی: ان کان مقطوع الراس لابأس به ولو محی وجه الصورة فهو كقطع الراس - 1 اردو: اگر تصویر کا سر کاٹ دیا گیا تو پھر اس کے رکھنے میں کوئی حرج نہیں، اور تصویر کے چہرے کو مٹا دینا سر کاٹنے کی طرح ہے۔ (ت)

ثم اقول : (پھر میں کہتا ہوں۔ ت) دیگر اعضا وجہ دراس کے معنی میں نہیں اگرچہ مدارِ حیات ہونے میں مماثل ہوں کہ چہرہ ہی تصویرِ جاندار میں اصل ہے، ولہذا سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ

تعالیٰ عنہ نے اسی کا نام تصویر رکھا اور شک نہیں کہ فقط چہرہ کو تصویر کہتے اور بنانے والے بارہا اسی پر اقتصار کرتے ہیں ملوکِ نصاریٰ کہ سکہ میں اپنی تصویر چاہتے ہیں اکثر چہرہ تک رکھتے ہیں اور بیشک عامہ مقاصد تصویر چہرہ سے حاصل ہوتے ہیں وانما الشییع بمقاصدہ (یہی بات ہے کہ شے اپنے مقاصد پر مبنی ہوتی ہے۔ ت) امام اجل ابو جعفر طحاوی حضرت سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی:

[جدول ۲] عربی: قال الصورۃ الراس فکل شییئ لیس لہ راس فلیس بصورۃ - 2 اردو: فرمایا: تصویر "سر" کا نام ہے لہٰذا جس چیز کا سر نہ ہو وہ تصویر نہیں (ت)

---

1 خلاصۃ الفتاوٰی کتاب الصلوٰۃ الفصل الثانی الجنس فیما یکرہ فی الصلوٰۃ مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۱ / ۵۸

2 شرح معانی الآثار کتاب الکراھیۃ باب الصورۃ تکون فی الثیاب ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲ / ۴۰۳

And towards this, the phrase of Hidaya is indicative:

Arabic Text	Urdu Translation
Where it is stated: "If the statue has its head cut off, it is no longer a statue." 1	Similarly, (the author of Hidaya) stated that when the head of a statue is cut off, it is no longer a statue. (T)

Rather, this is an explicit text from the Great Imam in Al-Jami' al-Saghir:

Arabic Text	Urdu Translation
Muhammad narrated from Ya'qub from Abu Hanifa (Allah Almighty be pleased with them): "If the head of the image is cut off, it is not a statue." 2	Imam Muhammad narrated from Imam Abu Yusuf, with reference to Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with them), that if the head of a picture is cut off, then it is undoubtedly no longer a 'tamthal' (statue/idol). (T)

Undoubtedly, Imam Nasafi has clarified in Al-Wafi and Al-Kafi that if the head of the image is not severed, the dislike (karahat) is not removed.

Arabic Text	Urdu Translation
And this is his text: "If there is an image above his head in the ceiling, or in front of him, or opposite to him, and its head is not cut off, it is disliked." 3	Imam Nasafi's clarification is this: if a picture is on the ceiling above a person's head, or in front of him, or facing him, but its head has not been cut off, then it will be disliked. (T)

It is evident that this also applies to half-length or chest-up portraits, as the head is not severed, so the ruling of prohibition is not removed. And Allah Almighty knows best.

Secondly: Take the statement of Durr al-Mukhtar, which was followed by commentators in their explanations and by Khadimi in the margin of Durar:

Arabic Text	Urdu Translation
Where he said: "Head severed", and the meaning is the effacement of a limb without which life cannot exist, like the face. 4	So he said the head of the image should be cut off, meaning that one of its body parts should be erased without which life is not possible, such as the face. (T)

Although the humble servant (faqir) has not found this generalization elsewhere in the statement of the ruling, however, in the reasoning for a ruling in the discourse of Fath...

---

1 Al-Hidaya, Kitab al-Salat, Bab ma yufsidu al-salat wa ma yukrahu fiha, Al-Maktaba al-Arabiyya, Karachi, 1/122 2 Al-Jami' al-Saghir, Kitab al-Salat, Bab fi al-imam ayna tustahabbu lahu an yaquma, Matba' Yusufi, Lucknow, p. 11 3 Kafi, Sharh al-Wafi 4 Hashiyat al-Durar 'ala al-Ghurar by Khadimi, Kitab al-Salat, Bab ma yufsidu al-salat, Matba' Uthmaniya, p. 70

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

और इसी ओर हिदाया की इबारत इशारा कर रही है:

अरबी इबारत	उर्दू अनुवाद
जहाँ कहा गया: "यदि प्रतिमा का सिर कटा हुआ हो, तो वह प्रतिमा नहीं है।" १	चुनांचे (साहिबे हिदाया ने) फरमाया कि जब किसी मुजस्समे (प्रतिमा) का सिर काट दिया गया हो तो फिर वह मुजस्समे नहीं रहेगा। (त)

बल्कि यह जामे सगीर में इमाम-ए-कबीर का स्पष्ट पाठ (नस्स) है:

अरबी इबारत	उर्दू अनुवाद
मुहम्मद ने याक़ूब से, उन्होंने अबू हनीफा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत की: "यदि चित्र का सिर कटा हुआ है, तो वह प्रतिमा नहीं है।" २	इमाम मुहम्मद ने इमाम अबू यूसुफ के हवाले से इमाम अबू हनीफा (अल्लाह उन सब पर प्रसन्न हो) से रिवायत की है कि अगर तस्वीर का सिर काट दिया गया है तो फिर वह बिना किसी शक के तमसाल (मूर्ति) नहीं रहती। (त)

निश्चित रूप से इमाम नसफी ने वाफी और काफी में स्पष्ट किया है कि यदि तस्वीर का सिर कटा हुआ नहीं है, तो कराहत (नापसंदगी) दूर नहीं होती।

अरबी इबारत	उर्दू अनुवाद
और यह उनका पाठ है: "यदि उसके सिर के ऊपर छत में, या उसके सामने, या उसके विपरीत कोई ऐसा चित्र हो जिसका सिर कटा हुआ न हो, तो यह मकरूह है।" ३	इमाम नसफी की तसरीह (स्पष्टीकरण) यह है कि अगर तस्वीर किसी व्यक्ति के सिर के ऊपर छत में हो या उसके सामने हो या उसके मुक़ाबले में हो, लेकिन उसका सिर न काटा गया हो तो कराहत होगी। (त)

ज़ाहिर है कि यह आधे कद या सीने तक की तस्वीर पर भी लागू होता है कि उसका सिर कटा हुआ नहीं है, तो मना करने का हुक्म हटा नहीं है। वल्लाहु तआला आलम।

दूसरे: दुर्रे मुख्तार का कथन ही ले लीजिए जिस पर हाशियों (टीकाकारों) ने तक़रीर में और खादिमी ने हाशिया दुरर में पैरवी की है:

अरबी इबारत	उर्दू अनुवाद
जहाँ उन्होंने कहा: "कटा हुआ सिर", और इसका अर्थ है किसी ऐसे अंग का मिटा दिया जाना जिसके बिना जीवन संभव नहीं, जैसे चेहरा। ४	चुनांचे उन्होंने कहा कि तस्वीर का सिर काट दिया गया हो, मुराद (तात्पर्य) यह है कि उसके किसी ऐसे अंग को मिटा दिया गया हो जिसके बिना जीवन नहीं हो सकता, जैसे चेहरा। (त)

मसअले के बयान में हालांकि फ़क़ीर ने यह आम नियम कहीं नहीं पाया, मगर एक मसअले की दलील में कलाम-ए-फ़तह से इसकी...

---

१ अल-हिदाया, किताबुस सलात, बाबु मा युफ़सिदुस सलात व मा युकरहु फ़ीहा, अल-मकतबतुल अरबीया, कराची, १/१२२ २ अल-जामेउल सगीर, किताबुस सलात, बाबु फ़िल इमामि ऐना तुस्तहब्बु लहु अं यक़ूमा, मतबअ यूसुफ़ी, लखनऊ, पृ. ११ ३ काफ़ी, शरह अल-वाफ़ी ४ हाशियातुल दुरर अलल ग़ुरर लिल ख़ादिमी, किताबुस सलात, बाबु मा युफ़सिदुस सलात, मतबअ उस्मानिया, पृ. ७०

اور اسی طرف عبارت ہدایہ ناظر:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
حیث قال اذا کان التمثال مقطوع الراس فلیس بتمثال ۱۔	چنانچہ (صاحبہ ہدایہ نے) فرمایا کہ جب کسی مجسمے کا سر کاٹ دیا گیا ہو تو پھر وہ مجسمہ نہ ہوگا۔ (ت)

بلکہ یہ جامع صغیر میں نص امام کبیر ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
محمد عن یعقوب عن ابی حنیفۃ رضی اللہ تعالی عنھم اذا کان راس الصورۃ مقطوعا فلیس بتمثال ۲۔	امام محمد نے امام ابو یوسف کے حوالہ سے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہم سے روایت فرمائی کہ اگر تصویر کا سر کاٹ دیا گیا ہے تو پھر وہ بلا شبہ تمثال (مورتی) نہیں (ت)

لا جرم امام نسفی نے وافی و کافی میں تصریح فرمائی کہ اگر تصویر کا سر مقطوع نہیں کراہت مدفوع نہیں۔

عربی عبارت	اردو ترجمہ
وھذا نصہ لو کان فوق راسہ فی السقف او بین یدیہ او بحذائہ صورۃ غیر مقطوع راسھا کرہ ۳۔	امام نسفی کی تصریح یہ ہے، اگر تصویر کسی شخص کے سر کے اوپر چھت میں موجود ہو یا اس کے سامنے ہو یا اس کے مقابل ہو لیکن اس کا سر نہ کاٹا گیا ہو تو کراہت ہو گی (ت)

ظاہر ہے کہ نیم قد یا سینہ تک کی تصویر پر بھی صادق ہے کہ اس کا سر مقطوع نہیں تو حکم منع مدفوع نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم

ثانیاً: قول در مختار ہی لیجئے جس پر محشیوں نے تقریر اور خادمی نے حاشیہ درر میں تبعیت کی،

عربی عبارت	اردو ترجمہ
حیث قال مقطوعة الراس والمراد محو عضو لا تعیش بدونه کالوجه ۴۔	چنانچہ اس نے کہا تصویر کا سر کاٹ دیا گیا ہو، مراد یہ ہے کہ اس کے کسی ایسے اندام کو مٹا دیا گیا ہو کہ جس کے بغیر زندگی نہیں ہو سکتی جیسے چہرہ۔ (ت)

بیان مسئلہ میں اگر چہ یہ تعمیم فقیر نے کہیں نہ پائی مگر ایک مسئلہ کی دلیل میں کلام فتح سے اس کی

---

۱ الھدایة کتاب الصلوٰۃ باب ما یفسد الصلوٰۃ وما یکرہ فیھا المکتبة العربیه کراچی ۱/ ۱۲۲ ۲ الجامع الصغیر کتاب الصلوٰۃ باب في الامام این تستحب له ان یقوم مطبع یوسفی لکھنؤ ص ۱۱ ۳ کافی شرح وافی ۴ حاشیة الدرر علی الغرر للخادمی کتاب الصلوٰۃ باب ما یفسد الصلوٰۃ مطبع عثمانیه ص ۷۰

Fatawa Razawiyya - Volume 24

An indication towards this was understood:

(Arabic Text)	(English Translation)
As it is said, if the hands and feet are cut off, the dislike (makruh) is not removed, because a human's limbs can be cut off while they are still alive.	While in *Fath al-Qadir* it is stated: If someone cuts off the hands and feet of a picture (photo), the dislike will not be removed, because sometimes a human's limbs, meaning hands and feet etc., are cut off but they remain alive despite that. (T)

Allama Tahtawi deduced a generalization from this, writing in the marginalia of *Maraqi al-Falah*:

(Arabic Text)	(English Translation)
This reasoning indicates that cutting the head is not a restriction; rather, the intent is to put it in a state in which it absolutely cannot live.	This reasoning provided the benefit that the mention of cutting the head is not as a restriction, but rather it means to put the picture in such a state that in its presence, it absolutely cannot remain alive. (T)

I say: (Aqul. T) There is an apparent observation in this deduction,

(Arabic Text)	(English Translation)
For the summary of the speech in *Al-Fath* is that this is disliked because it is in a state in which life can exist, and everything that is such is disliked. It does not follow from this that everything that is disliked is such, for a universal affirmative proposition does not reverse into itself. I found an example of this in *Al-Hidayah* when it says: Divorce is of two types: explicit (sarih) and metaphorical (kinaya). The explicit is his saying: You are divorced (anti taliq) and 'mutallaqah'...	The gist of the text in *Fath al-Qadir* is that this is disliked because the thing is in such a state where life can be found (meaning that state is not an impediment to life), and every act that is like this is disliked. But it does not necessarily follow from this that every act which is disliked is like this. The reason is that a universal affirmative proposition's converse is not itself (i.e., the converse of a universal affirmative is not a universal affirmative). I found a parallel to this in *Hidayah* because the author of *Hidayah* stated that divorce has two types: (1) Sarih (explicit), (2) Kinaya (metaphorical). For example, the instance of Sarih divorce is this...

[1] Fath al-Qadir, Book of Prayer, Section: what is disliked for the worshiper, etc. Maktaba Nooria Razawiyya, Sukkur, 1/363 [2] Hashiyat al-Tahtawi 'ala Maraqi al-Falah, Book of Prayer, Section on Disliked Acts. Nur Muhammad Karkhana Tijarat Kutub, p. 199

एक संकेत इस ओर समझा गया:

(अरबी पाठ)	(हिंदी अनुवाद)
जैसा कि कहा गया है, यदि हाथ और पैर काट दिए जाएं तो नापसंदगी (मक़रूह) समाप्त नहीं होती, क्योंकि इंसान के अंग जीवित रहते हुए भी काटे जा सकते हैं।	जबकि फ़तह अल-क़दीर में फ़रमाया गया: अगर किसी ने तस्वीर (फ़ोटो) के हाथ-पाँव काट दिए, तो कराहत (नापसंदगी) समाप्त नहीं होगी, क्योंकि कभी-कभी इंसान के अंग यानी हाथ-पाँव वग़ैरह काट दिए जाते हैं, लेकिन इसके बावजूद वह जीवित रहता है। (त)

अल्लामा तहतावी ने इससे यह सामान्यीकरण निकाला, मराक़ी अल-फ़लाह के हाशिये में लिखा:

(अरबी पाठ)	(हिंदी अनुवाद)
इस तर्क ने यह लाभ दिया कि सिर काटना कोई शर्त नहीं है, बल्कि उद्देश्य उसे ऐसी स्थिति में लाना है जिसमें वह बिल्कुल जीवित न रह सके।	इस तर्क ने यह लाभ दिया कि सिर काटने का ज़िक्र शर्त के तौर पर नहीं है, बल्कि इससे मुराद यह है कि तस्वीर को ऐसी हालत में कर देना कि जिसकी मौजूदगी में वह बिल्कुल ज़िंदा न रह सके। (त)

अक़ूल: (मैं कहता हूँ। त) इस निष्कर्ष में एक स्पष्ट विचार है,

(अरबी पाठ)	(हिंदी अनुवाद)
क्योकि अल-फ़तह के कलाम का सार यह है कि यह मक़रूह है क्योंकि यह एक ऐसी स्थिति में है जिसमें जीवन रह सकता है, और जो कुछ भी ऐसा है वह मक़रूह है। इससे यह लाज़िम नहीं आता कि हर मक़रूह चीज़ ऐसी ही हो, क्योंकि एक व्यापक सकारात्मक प्रतिज्ञप्ति (Universal Affirmative) स्वयं में नहीं उलटती। मैंने अल-हिदाया में इसका एक उदाहरण पाया है जब वह कहता है:	फ़तह अल-क़दीर के कलाम का हासिल यह है कि यह मक़रूह है इसलिए कि चीज़ ऐसी हालत पर है कि जिसकी मौजूदगी में ज़िंदगी पाई जा सकती है (मुराद यह कि वह हालत जीवन में बाधक नहीं है) और हर काम जो इस तरह हो वह मक़रूह है लेकिन इससे यह लाज़िम नहीं आता कि हर काम जो मक़रूह है वह इसी तरह हो और इसकी वजह यह है कि मोजबा कुलिया (Universal Affirmative) का अक्स (Converse) बि-नफ़्सिही नहीं (यानी मोजबा कुलिया

(अरबी पाठ)

तलाक़ दो प्रकार के होते हैं: स्पष्ट (सरिह) और सांकेतिक (किनाया)। स्पष्ट यह कहना है: 'तुम्हें तलाक़ है' (अंति तालिक़) और 'मुतल्लक़ा'...

(हिंदी अनुवाद)

का अक्स मोजबा कुलिया नहीं है)। मैंने हिदाया में इसकी नज़ीर (उदाहरण) पाई है क्योंकि साहिब-ए-हिदाया ने फ़रमाया कि तलाक़ की दो क़िस्में हैं: (1) सरिह, (2) किनाया, चुनांचे तलाक़-ए-सरिह की मिसाल मसलन यह...

1. फ़तह अल-क़दीर, किताब-उस-सलात, फ़स्ल: युकरहु लिल-मुसल्ली वग़ैरह, मकतबा नूरिय्या रज़विय्या, सुक्कुर, 1/363
2. हाशियत-अत-तहतावी अला मराक़ी अल-फ़लाह, किताब-उस-सलात, फ़स्ल फ़िल-मक़रूहात, नूर मोहम्मद कारख़ाना तिज़ारत-ए-कुतुब, पृ. 199

طرف اشارہ سمجھاگیا:

(عربی عبارت)	(اردو ترجمہ)
اذ قال لو قطع یدیھا ورجلیھا لاترفع الکراھۃ لان الانسان قد تقطع اطرافہ وھو حی[1].	جبکہ فتح القدیر میں فرمایا اگر کسی نے تصویر (فوٹو) کے ہاتھ پاؤں کاٹ دیئے تو کراہت مرفوع نہ ہوگی اس لئے کہ کبھی انسان کے اطراف یعنی ہاتھ پاؤں وغیرہ کاٹ دیئے جاتے ہیں مگر اس کے باوجود وہ زندہ ہوتا ہے۔ (ت)

علامہ طحطاوی نے اس سے وہ تعمیم استنباط فرمائی حاشیہ مراقی الفلاح میں لکھا:

(عربی عبارت)	(اردو ترجمہ)
افاد بھذا التعلیل ان قطع الراس لیس بقید بل المراد جعلھا علی حالۃ لاتعیش معھا مطلقا[2].	اس تعلیل نے یہ فائدہ دیا کہ قطع الراس کا ذکر بطور قید نہیں بلکہ اس سے مراد یہ ہے کہ تصویر کو ایسی حالت میں کر دینا کہ جس کی موجودگی میں وہ مطلقاً زندہ نہ رہ سکے۔ (ت)

اقول: (میں کہتا ہوں۔ ت) اس استنباط میں نظر ظاہر ہے،

(عربی عبارت)	(اردو ترجمہ)
فان حاصل کلام الفتح ان ھذا مکروہ لکونہ علی حالۃ یعاش معھا وکل ماکان کذا فھو مکروہ ولا یلزم منہ ان کل ماھو مکروہ فھو کذا	فتح القدیر کے کلام کا حاصل یہ ہے کہ یہ مکروہ ہے اس لئے کہ شیئی ایسی حالت پر ہے کہ جس کی موجودگی میں زندگی پائی جا سکتی ہے (مراد یہ کہ وہ حالت مانع حیات نہیں) اور ہر کام جو اس طرح ہو وہ مکروہ ہے لیکن اس سے یہ لازم نہیں

(عربی عبارت)	(اردو ترجمہ)
فان الموجبة الكلية لا تنعكس كنفسها ووجدت نظيره فى الهداية اذقال الطلاق على ضربين صريح وكناية فالصريح قوله انت طالق ومطلقة و	آتا۔ ہر کام جو مکروہ ہے وہ اس طرح ہے اور اس کی وجہ یہ ہے کہ موجبہ کلیہ کا عکس بنفسہ نہیں (یعنی موجبہ کلیہ کا عکس موجبہ کلیہ نہیں) میں نے ہدایہ میں اس کی نظیر پائی ہے کیونکہ صاحب ہدایہ نے فرمایا کہ طلاق کی دو قسمیں ہیں: (۱) صریح، (۲) کنایہ، چنانچہ طلاق صریح کی مثال مثلاً یہ

[1] فتح القدير كتاب الصلوة فصل ويكره للمصلى الخ مكتبہ نوريہ رضويہ سكهر ١ / ٣٦٣ [2] حاشية الطحطاوى على مراقى الفلاح كتاب الصلوة فصل فى المكروبات نور محمد كارخانه تجارت كتب ص ١٩٩

Fatawa-e-Razvia Volume 24

[Arabic Text Section] "Tallaqtuki (I have divorced you): and with this, a revocable divorce (Raj'i) occurs, because these words are used for divorce and are not used for anything else. Thus, it is explicit (Sarih). And it is followed by the right of return (Raj'ah) by text, and it does not require intention because it is explicit due to the predominance of usage." - End of quote.

I say: The basis of explicitness (Sarahat) is the predominance of usage, as stated later. What is not used for anything other than divorce is even more worthy of being explicit in it. Therefore, the reason for the explicitness in the three terms was explained by this. And it does not imply that if it is rarely used for something else, it would not be explicit. In short, it is a reasoning that contains the cause with something additional that benefits it a fortiori. Similarly, here, the basis for prohibition is the head on its own; so when everything needed for life remains, it contains the cause with an addition, yielding the benefit of prohibition.

[Urdu Translation/Explanation Section] To say (addressing one's wedded wife), "You are a divorced woman" (Anti Taaliq), "Divorce has happened to you" (Anti Mutallaqah), or "I have divorced you" (Tallaqtuki), then through these words, a revocable divorce (Talaq-e-Raj'i) takes place. This is because the aforementioned words are used only for divorce, therefore they are not used for any other meaning (hence these are explicit words for divorce). Consequently, after the occurrence of any one of these, there will be the possibility of return (Raj'at), and it does not depend on intention because these do not convey meaning but are "explicit" (Sarih), and the reason for this is the predominance of usage.

I say (author's commentary): The basis of explicitness is the predominance of usage, as the author of Hidaya presented this benefit at the end: those words which are not used except for divorce are more worthy of being explicit in the chapter of divorce. Therefore, this is the reason the author mentioned the reasoning for the explicitness of divorce in the three aforementioned words; meaning the aforementioned words are explicit words for divorce and the cause is the predominance of usage. And this is not useful for the point that if the aforementioned words are rarely used in a sense other than divorce, then they would not be explicit in the meaning of divorce (rather, despite that, they are explicit words for divorce). (Summary of the discourse) It is such a thing...

1 Al-Hidaya, Kitab al-Talaq, Bab Iyqa' al-Talaq, Al-Maktaba al-Arabiyya, Karachi, 2/329.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[अरबी पाठ अनुभाग] "तल्लकतुकि (मैंने तुम्हें तलाक दे दिया): और इससे एक प्रतिसंहरणीय तलाक (रजई) प्रभावी हो जाता है, क्योंकि ये शब्द तलाक के लिए उपयोग किए जाते हैं और किसी अन्य चीज के लिए उपयोग नहीं किए जाते हैं। इसलिए, यह स्पष्ट (सरीह) है। और इसके बाद कानूनी पाठ के अनुसार वापसी (रजअत) का अधिकार होता है, और इसमें नीयत की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि यह उपयोग की व्यापकता के कारण स्पष्ट है।" - उद्धरण समाप्त।

मैं कहता हूँ: स्पष्टता (सराहत) का आधार उपयोग की व्यापकता है, जैसा कि बाद में बताया गया है। जो तलाक के अलावा किसी और चीज़ के लिए उपयोग नहीं किया जाता है, वह उसमें स्पष्ट होने के अधिक योग्य है। इसलिए, तीन शब्दों में स्पष्टता के कारण को इसके द्वारा समझाया गया था। और इसका अर्थ यह नहीं है कि यदि यह दुर्लभ रूप से किसी और चीज़ के लिए उपयोग किया जाता है, तो यह स्पष्ट नहीं होगा। संक्षेप में, यह एक ऐसा तर्क है जिसमें किसी अतिरिक्त चीज़ के साथ कारण शामिल है जो इसे और अधिक लाभ पहुंचाता है। इसी तरह, यहाँ निषेध का आधार अकेला सिर है; इसलिए जब जीवन के लिए आवश्यक सब कुछ शेष रहता है, तो इसमें अतिरिक्त चीज़ के साथ कारण शामिल होता है, जिससे निषेध का लाभ मिलता है।

[उर्दू अनुवाद/व्याख्या अनुभाग] कहना (अपनी विवाहित पत्नी को संबोधित करते हुए), "तुम तलाक वाली हो" (अंति तालिक़), "तुम्हें तलाक हो गया है" (अंति मुतल्लक़ह), या "मैंने तुम्हें तलाक दे दिया" (तल्लकतुकि), तो इन शब्दों के माध्यम से एक प्रतिसंहरणीय तलाक (तलाक़-ए-रजई) हो जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उपर्युक्त शब्द केवल तलाक के लिए उपयोग किए जाते हैं, इसलिए वे किसी अन्य अर्थ में उपयोग नहीं किए जाते हैं (इसलिए ये तलाक के स्पष्ट शब्द हैं)। नतीजतन, इनमें से किसी एक के होने के बाद, वापसी (रजअत) की संभावना होगी, और यह नीयत (इरादे) पर निर्भर नहीं है क्योंकि ये अर्थ प्रदान नहीं करते हैं बल्कि "स्पष्ट" (सरीह) हैं, और इसका कारण उपयोग की प्रधानता है।

मैं कहता हूँ (लेखक की टिप्पणी): स्पष्टता का आधार उपयोग की प्रधानता है, जैसा कि हिदाया के लेखक ने अंत में यह लाभ प्रस्तुत किया है: वे शब्द जो तलाक के अलावा उपयोग नहीं किए जाते हैं, तलाक के अध्याय में स्पष्ट होने के अधिक योग्य हैं। इसलिए, यही कारण है कि लेखक ने उपर्युक्त तीनों शब्दों में तलाक की स्पष्टता के तर्क का उल्लेख किया है; अर्थात उपर्युक्त शब्द तलाक के स्पष्ट

शब्द हैं और कारण उपयोग की प्रधानता है। और यह इस बात के लिए उपयोगी नहीं है कि यदि उपर्युक्त शब्दों का उपयोग कभी-कभार तलाक के अलावा किसी अन्य अर्थ में किया जाता है, तो वे तलाक के अर्थ में स्पष्ट नहीं होंगे (बल्कि इसके बावजूद, वे तलाक के स्पष्ट शब्द हैं)। (चर्चा का सारांश) वह ऐसी चीज़ है...

---

1 अल-हिदाया, किताबुत्-तलाक़, बाबु ईक़ाअित्-तलाक़, अल-मकतबतुल् अरबिया, कराची, 2/329.

[عربی متن] طلقتک فھذا یقع بہ الطلاق الرجعی لان ھذہ الالفاظ تستعمل فی الطلاق ولا تستعمل فی غیرہ فکان صریحاً وانہ یعقب الرجعۃ بالنص ولا یفتقر الی النیۃ لانہ صریح فیہ لغلبۃ الاستعمال ' اھ اقول: فمناط الصراحۃ ھو غلبۃ الاستعمال کما افاد اخراً مالم یستعمل فی غیر الطلاق کان اولیٰ بالصراحۃ فیہ فلذا علل الصراحۃ بہ فی الالفاظ الثلاثۃ وھو لا یفید ان یستعمل فی غیرہ نادرا لایکون صریحاً فیہ وبالجملۃ وھو تعلیل بما یتضمن العلۃ مع شیئ زائد یفیدہ من باب اولی کذا ھھنا مناط المنع ھو الراس ولو وحدہ فاذا کان جمیع ما یحتاج الیہ للحیاۃ باقیاً تضمن العلۃ شیئ مع زائدہ افاد المنع

[اردو ترجمہ و تشریح] کہنا (اپنی منکوحہ کو مخاطب کرتے ہوئے) تو طلاق والی ہے (انت طالق)، تو طلاق ہو گئی ہے (انت مطلقۃ) میں نے تجھے طلاق دے دی (طلقتک) پس ان الفاظ سے طلاق رجعی واقع ہو گئی۔ اس لئے کہ الفاظ مذکورہ صرف طلاق میں استعمال کئے جاتے ہیں لہذا کسی دوسرے مفہوم میں استعمال نہیں کئے جاتے (اس لئے یہ طلاق کے الفاظ صریحہ ہیں) لہذا ان میں سے کسی ایک کے وقوع کے بعد رجعت ہوگی، اور یہ محتاجِ نیت نہیں، اس لئے کہ یہ افادیت معنیٰ نہیں، "صریح" ہیں، اور اس کی وجہ غلبہ استعمال ہے اھ اقول: (میں کہتا ہوں۔ ت) صراحت کا مدار غلبہ استعمال ہے جیسا کہ آخر میں صاحبِ ہدایہ نے یہ افادہ پیش کیا، جو الفاظ بغیر طلاق نہ استعمال کئے جائیں وہ بابِ طلاق میں صریح ہونے کے زیادہ لائق ہیں۔ لہذا یہی وجہ ہے کہ مصنف نے الفاظِ ثلاثہ مذکورہ میں صراحتِ بالطلاق ہونے کی تعلیل ذکر فرمائی ہے، یعنی الفاظِ مذکورہ طلاق صریح کے الفاظ ہیں اور علت غلبہ استعمال ہے اور یہ اس بات کیلئے مفید نہیں کہ اگر الفاظِ مذکورہ بطورِ نادر غیر طلاق میں استعمال کئے جائیں تو پھر وہ مفہومِ طلاق میں صریح نہ ہوں گے (بلکہ اس کے باوجود وہ صریح طلاق کے الفاظ ہیں) (خلاصہ کلام) وہ ایک ایسی چیز

١ الهداية كتاب الطلاق باب ايقاع الطلاق المكتبة العربيہ كراچی ٢/ ٣٢٩ صفحہ 720 کا 583

Fatwa Razawiyya - Volume 24

[Right Column - Urdu Commentary] It is a reasoning with something additional that contains the cause with an extra element, which is more effective for the ruling by way of priority (awlawiyyah). So here too, the basis of prohibition is the head, even if it is alone. Then, when all the things necessary for life remain, the cause will include an additional element, so the prohibition will be even more established by way of priority. Therefore, there is no contradiction or inconsistency between the first and last statements of the author of al-Hidayah. *Fath al-Qadir* has presented exactly this benefit: a word whose use in a certain meaning is predominant and most common, such that that meaning is immediately understood as real or metaphorical, then that word is "explicit" (Sarih) in that meaning. And if it is not used in any other meaning at all, it will be even more explicit. Hence, the explicitness in these words is based on the fact that the mentioned words are used only in the sense of divorce and not in any other sense. Then he (the objector) perceived a contradiction, whereas it was refuted by his own exposition (and affirmation). (T)

[Left Column - Arabic/Urdu Mix] ...by way of priority, so there is no contradiction between the first and last words of *al-Hidayah*. He had already stated this in *al-Fath* itself when he said: what is predominantly used in a meaning such that it is immediately understood, whether literally or metaphorically, is explicit (Sarih). If it is not used in anything else, it is even more deserving of being explicit. Therefore, the explicitness in these words was based on their use in divorce and nothing else [1]. Then he claimed a contradiction, even though it had been refuted by what he established.

[Lower Section] All praise is to Allah, an indication can be found in the words of his student, Imam Ibn Amir Hajj, in a similar discussion, and its answer is also like that. Where he says: "As for cutting off the head from the body with a thread while the head remains in its state, it does not negate..." Accordingly, the aforementioned person says: if the head is separated and cut off with some thread while the head still remains in its original state, then the dislike (karahah) is negated from it.

[Footer] [1] Fath al-Qadir, Book of Divorce, Chapter on Effecting Divorce, Maktaba Nuriyya Razawiyya Sukkur 3/351. Page 584 of 720

फतवा रज़विया - जिल्द 24

[दायां कॉलम - उर्दू टिप्पणी] यह एक अतिरिक्त चीज़ के साथ तर्क है जिसमें अतिरिक्त तत्व के साथ कारण शामिल है, जो प्राथमिकता के आधार पर (औलवियत) हुक्म के लिए अधिक प्रभावी है। इसलिए यहाँ भी यही स्थिति है कि निषेध का आधार सिर है, भले ही वह अकेला हो। फिर जब जीवन के लिए आवश्यक सभी चीज़ें बनी रहती हैं, तो कारण में एक अतिरिक्त तत्व शामिल होगा, तो प्राथमिकता के आधार पर निषेध का लाभ और भी अधिक होगा। इसलिए हिदाया के लेखक के पहले और पिछले कथनों में कोई विरोधाभास या असंगति नहीं है। फतह अल-क़दीर में बिल्कुल यही लाभ बताया गया है: जिस शब्द का प्रयोग किसी अर्थ में इतना प्रबल और सामान्य हो कि वह अर्थ वास्तविक या लाक्षणिक रूप से तुरंत समझ में आ जाए, तो वह शब्द उस अर्थ में "स्पष्ट" (सरीह) है। और यदि इसका प्रयोग किसी अन्य अर्थ में बिल्कुल न किया जाए, तो वह स्पष्टता में और भी श्रेष्ठ होगा। अतः इन शब्दों में स्पष्टता इस बात पर आधारित है कि उल्लिखित शब्द केवल तलाक के अर्थ में प्रयोग किए जाते हैं, न कि किसी अन्य अर्थ में। फिर उसने विरोधाभास समझा, जबकि वह उसके अपने प्रतिपादन (और पुष्टि) से ही दूर हो गया। (त)

[बायां कॉलम - अरबी/उर्दू मिश्रण] ...प्राथमिकता के आधार पर, इसलिए हिदाया के पहले और अंतिम वचनों के बीच कोई विरोधाभास नहीं है। उन्होंने स्वयं अल-फतह में यह बात स्पष्ट की थी जब उन्होंने कहा था: जिस शब्द का प्रयोग किसी अर्थ में इतना प्रबल हो कि वह तुरंत समझ में आ जाए, चाहे वह शाब्दिक हो या लाक्षणिक, वह स्पष्ट (सरीह) है। यदि इसका प्रयोग किसी और चीज़ में नहीं किया जाता है, तो यह स्पष्ट होने का और भी अधिक पात्र है। इसलिए, इन शब्दों में स्पष्टता तलाक में उनके उपयोग पर आधारित थी न कि किसी और चीज़ पर [1]। फिर उसने विरोधाभास का दावा किया, भले ही वह उसके द्वारा स्थापित किए गए तर्क से दूर हो गया था।

[निचला हिस्सा] ईश्वर की स्तुति हो, इसी तरह की एक चर्चा में उनके शिष्य इमाम इब्न अमीर हज्ज के शब्दों में एक संकेत मिल सकता है, और उसका उत्तर भी वैसा ही है। जहाँ वे कहते हैं: "जहाँ तक धागे से शरीर से सिर काटने का सवाल है जबकि सिर अपनी स्थिति में बना रहे, तो यह इसे नकारता नहीं है..." तदनुसार, उपरोक्त व्यक्ति कहते हैं: यदि सिर को किसी धागे से अलग और काट दिया जाए, इसके बावजूद कि सिर यथावत अपनी स्थिति में रहे, तो इससे नापसंदगी (कराहियत) समाप्त हो जाती है।

[फुटनोट] [1] फतह अल-क़दीर, किताब अल-तलाक़, बाब ईक़ा अल-तलाक़, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर 3/351. पेज 584/720

[دایاں کالم] کے ساتھ تعلیل ہے جو شیئ زائد سمیت علت پر مشتمل ہے، جو بطریقِ اولٰی حکم کے لئے مفید ہے پس یہاں بھی اسی طرح ہے کہ منع کا مدار راس (سر) ہے اگرچہ اکیلا ہو، پھر جب تمام محتاجِ الیہ حیات باقی ہوں تو پھر علت شیئ زائد پر مشتمل ہوگی، تو پھر اس سے ممانعت بطریقِ اولٰی کا فائدہ ہوگا، لہٰذا صاحبِ ہدایہ کے پہلے اور پچھلے کلام میں کوئی تدافع اور تناقض نہیں، فتح القدیر میں بالکل یہی افادہ پیش فرمایا، جس لفظ کا استعمال کسی معنی میں غالب اور زیادہ تر ہو کہ بطور حقیقت یا مجاز وہی معنی متبادر ہو تو پھر وہ لفظ اس معنی میں "صریح" ہے۔ اور اگر کسی دوسرے معنی میں بالکل استعمال نہ کیا جائے تو پھر وہ اولٰی بالصراحت ہوگا، لہٰذا یہی وجہ ہے کہ ان الفاظ میں صراحت اس بات پر مرتب ہے کہ الفاظ مذکورہ صرف معنی طلاق میں مستعمل ہیں نہ کہ کسی دوسرے معنی میں اھ پھر اس نے تدافع سمجھا حالانکہ وہ اس کی تقریر (اور اثبات) سے دفع ہوگیا ہے۔ (ت)

[بایاں کالم] بالاولی فلاتدافع بین کلامی الھدایۃ اولاً وآخراً وقد کان افاد ھذا فی الفتح نفسہ اذقال ماغلب استعمالہ فی معنی بحیث یتبادر حقیقۃ اومجازاً صریح فان لم یستعمل فی غیرہ فاولی بالصراحۃ فلذا رتب الصراحۃ فی ھذہ الالفاظ علی الاستعمال فی الطلاق دون غیرہ $1^$ اہ ثم زعم التدافع مع انہ قد اندفع بماقرر۔

[نیچے والا حصہ] واللہ الحمد اسی طرز پر ایک بحث میں اُن کے تلمیذ امام ابن امیر حاج کے کلام سے اشارہ نکل سکتا ہے اور ویسا ہی اس کا جواب ہے، حیث یقول اما قطع الراس عن الجسد بخیط مع بقاء الراس علی حالہ فلا ینفی چنانچہ موصوف فرماتے ہیں اگر سر کو کسی دھاگے سے جدا اور قطع کیا جائے باوجودیکہ سر بدستور اپنے حال پر باقی رہے تو اس سے کراہت منتفی

[فٹ نوٹ] ^{1} فتح القدیر کتاب الطلاق باب ایقاع الطلاق مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۳/ ۳۵۱

Fatawa Razawiya Volume 24

(Arabic Text/Translation): The dislike (karahah) exists because some birds are 'mutawwaq' (ringed), so cutting is not established by that. This is how they mentioned it, and it is limited to birds. It appears that the dislike does not cease in other animals by this method, just as it does not cease in birds. Therefore, other cases require a justification other than this. Perhaps it is better to say that a living animal may have something covering its neck, like a thread or something else, for some purpose. Thus, this is equivalent to it, so the dislike does not cease with it. Furthermore, I have not come across whether, if the upper half and the lower half were separated by a thread so that it becomes as if it were cut into two parts, would the dislike cease? The apparent view is that it would not cease, as in the case of the head, for the reasons we mentioned earlier regarding the head, especially in humans, because that would be equivalent to tying the waist. And Allah Almighty knows best. I say: And coming...

(Urdu Text): It will not be [removed] because some birds are ringed (i.e., they have a collar), so cutting is not found through this. Thus, the noble Imams have mentioned it in this way. And this is restricted to birds. But the apparent view is that the dislike in other animals also needs another justification besides this one; perhaps the best thing is to say that sometimes it happens due to some purpose. Often, a thread etc. is placed on the neck of an animal which covers its neck. Therefore, this is in its place, meaning it stands in its stead; hence, the dislike will not be removed by it. Then, I am not aware or informed that if the upper half and the lower half (i.e., the top and bottom parts) were separated by a thread and it became such that it is as if it was cut into two parts, would the dislike be removed in this case or not? The apparent view is that the dislike will not be removed, just as the dislike will not be removed in the case of the head (ra's), provided that the action is taken on the head according to the method we described for the head, especially in humans, because in that case, that action stands in place of girding the waist. And Allah [knows best].

Footnote: 1 Hilyat al-Mahalli Sharh Munyat al-Musalli

Page 585 of 720

फतावा रज़विया जिल्द 24

(अरबी पाठ का अनुवाद): नापसंदगी (कराहियत) इसलिए है क्योंकि कुछ पक्षी 'मुतव्वक़' (पट्टे वाले) होते हैं, इसलिए उससे कटना सिद्ध नहीं होता। उन्होंने इसी तरह उल्लेख किया है, और यह पक्षियों तक ही सीमित है। ज़ाहिर है कि इस तरीके से अन्य जानवरों में भी नापसंदगी खत्म नहीं होती, जैसे कि पक्षियों में खत्म नहीं होती। इसलिए, अन्य मामलों में इसके अलावा किसी और तर्क की आवश्यकता है। शायद यह कहना बेहतर है कि एक जीवित जानवर की गर्दन पर किसी उद्देश्य के लिए धागा या कुछ और ढकने वाली चीज़ रखी जा सकती है। अत; यह उसके समान ही है, इसलिए इससे नापसंदगी खत्म नहीं होती। इसके अलावा, मुझे यह जानकारी नहीं मिली कि यदि ऊपरी आधे और निचले आधे हिस्से को धागे से इस तरह अलग कर दिया जाए कि वह दो भागों में कटा हुआ सा हो जाए, तो क्या नापसंदगी खत्म हो जाएगी? ज़ाहिर है कि यह खत्म नहीं होगी, जैसा कि सिर के मामले में हमने पहले सिर के बारे में जो उल्लेख किया है, विशेष रूप से मनुष्यों में, क्योंकि वह कमर कसने के समान होगा। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। मैं कहता हूँ: और आना...

(उर्दू पाठ): नहीं होगी क्योंकि कुछ पक्षी मुतव्वक़ (यानी पट्टे वाले) होते हैं तो उससे कटना नहीं पाया जाता, जैसा कि अइम्मा किराम ने इसी तरह ज़िक्र फ़रमाया। और यह सिर्फ पक्षियों में सीमित (बंद) है। लेकिन ज़ाहिर यह है कि कराहियत (नापसंदगी) बाकी जानवरों में भी इस तौजीह (व्याख्या) के अलावा किसी और तौजीह की ज़रूरत है, शायद औला (बेहतर) यह है कि कहा जाए कि कभी ऐसा होता है किसी न किसी ग़र्ज़ (उद्देश्य) की वजह से। अक्सर धागा वगैरह किसी जानवर की गर्दन पर रख दिया जाता है जो उसकी गर्दन को ढांप देता है। लिहाज़ा यह उसकी जगह यानी उसके क़ायम मक़ाम है, पस उससे कराहियत ज़ाइल (खत्म) न होगी। फिर मैं इस पर वाक़िफ़ और मुत्तला नहीं हुआ कि अगर निस्फ़ आला (ऊपरी आधा) और निस्फ़ अस्फ़ल (यानी ऊपर और नीचे के हिस्से) में किसी धागे से फ़स्ल (अलग) कर दिया जाए और वह इस तरह हो जाए कि गोया दो हिस्सों में कतअ (काट) कर दिया गया है तो क्या इस सूरत में कराहियत ज़ाइल हो जाएगी या नहीं? ज़ाहिर यह है कि कराहियत ज़ाइल न होगी, जैसा कि हालत-ए-रास (सर) में कराहियत ज़ाइल न होगी बशर्ते कि रास में इस तरीक़े के मुताबिक़ कार्रवाई की जाए कि जिसको रास में हमने बयान किया है, खुसूसन इंसान में, क्योंकि उसमें वह कार्रवाई कमर बस्तगी के क़ायम मक़ाम है। वल्लाहु (और अल्लाह जानता है)।

पादलेख (Footnote): 1 हिलयत अल-महल्ली शरह मुनियत अल-मुसल्ली

(عربی عبارت): الكراهة لان من الطير ماهو مطوق فلايتحقق القطع بذلك كذا ذكروه هو قاصر على الطير والظاهر ان الكراهة لاتنتفى في غيره من الحيوانات بهذا الضنيع كمالاتنتفى فيه فيحتاج الغير الى توجيه غير هذا ولعل الاولى ان يقال لان الحيوان الحى قد يجعل على رقبته شيئ ساتر لها من خيط او غيره لغرض من الاغراض فيكون هذا بمنزلته فلا تزول به الكراهة ثم لم اقف على انه لو فصل بين نصفه الاعلى والاسفل بخيط حتى صار كأنه مقطوع شطرين هل تزول الكراهة الظاهر انها لا تزول كما في الراس لنحو ماذكرنا انفا فى الراس ولاسيما فى الآدمى فان ذلك يكون فيه بمنزلة شد الوسط والله تعالى اعلم' اهـ اقول: والاتيان

(اردو عبارت): نہ ہوگی کیونکہ کچھ پرندے مطوق (یعنی طوق کئے ہوئے ہوتے ہیں) تو اس سے قطع نہیں پایا جاتا چنانچہ ائمہ کرام نے اسی طرح ذکر فرمایا۔ اور یہ صرف پرندے میں منحصر (بند) ہے۔ لیکن ظاہر یہ ہے کہ کراہت باقی حیوانات میں بھی اس توجیہ کے علاوہ کسی اور توجیہ کی ضرورت ہے، شاید اولی یہ ہے کہ کہا جائے کہ کبھی ایسا ہوتا ہے کسی نہ کسی غرض کی وجہ سے۔ اکثر دھاگہ وغیرہ کسی حیوان کی گردن پر رکھ دیا جاتا ہے جو اس کی گردن کو ڈھانپ دیتا ہے۔ لہذا یہ اس کی جگہ یعنی اس کے قائم مقام ہے، پس اس سے کراہت زائل نہ ہوگی۔ پھر میں اس پر واقف اور مطلع نہیں ہوا کہ اگر نصف اعلیٰ اور نصف اسفل (یعنی اوپر اور نیچے کے حصہ میں) کسی دھاگے سے فصل کر دیا جائے اور وہ اس طرح ہو جائے کہ گویا دو حصوں میں قطع کر دیا گیا ہے تو کیا اس صورت میں کراہت زائل ہو جائے گی یا نہیں؟ ظاہر یہ ہے کہ کراہت زائل نہ ہوگی، جیسا کہ حالت راس (سر) میں کراہت زائل نہ ہوگی بشرطیکہ راس میں اس طریقہ

کے مطابق کارروائی کی جائے کہ جس کو راس میں ہم نے بیان کیا ہے، خصوصاً انسان میں، کیونکہ اس میں وہ کارروائی کمر بستگی کے قائم مقام ہے۔ واللہ

حاشیہ: 1 حلیۃ المحلی شرح منیہ المصلی

Fatawa Ridawiyyah, Volume 24

Allah knows best. I say: The mention of the word 'apparent' (zahir) in both places is due to the intense piety and caution of the author (may Allah's mercy be upon him). Otherwise, the ruling in both is certain. No one should entertain the notion that if a string is tied around the neck of a human figure, or in its middle—not an animal—then the legal ruling would be lifted, and its keeping would become permissible. Thus, the essence of it is exactly what is mentioned in *Fath al-Qadir*: that which is not contrary to life does not negate the dislike (karahah), and it does not necessarily follow from this that whatever is contrary to life negates the dislike, as this matter is not hidden. Do you not see that what is not contrary to humanity does not negate animality? For if it negated animality, it would negate humanity. It is not that whatever is contrary to humanity negates animality, such as *saheel* (neighing of a horse), *naheeq* (braying of a donkey), and *tarahhub* (monasticism). This is because all these are contrary to humanity but not contrary to animality. (T)

It is not surprising if the researcher Al-Alai, after seeing these passages from *Al-Fath* and *Al-Hilyah*, added this generalization, although it is not a useful generalization. Yes, this humble one found an indication of it in the discourse of Imam Abu Ja'far al-Tahawi,

Where he (may Allah Almighty have mercy on him) said, after presenting arguments against those who claimed that images are absolutely disliked even if they are not of animals, such as trees, etc.: "Accordingly, Imam al-Tahawi (may Allah's mercy be upon him) presented arguments against those who said that images are absolutely disliked even if they are of non-animals, such as trees, etc."

फ़तावा रज़विया, खंड 24

अल्लाह बेहतर जानता है। मैं कहता हूँ: 'ज़ाहिर' शब्द का दो स्थानों पर उल्लेख लेखक (रहमतुल्लाहि अलैहि) के अत्यंत परहेज़गारी और सावधानी के कारण है, अन्यथा दोनों में आदेश निश्चित है। और कोई यह वहम न करे कि यदि किसी मानवीय चित्र की गर्दन में कोई धागा बाँध दिया जाए या उसके मध्य में ऐसा किया जाए—न कि किसी चौपाये में—तो इस स्थिति में शरीयत का हुक्म समाप्त हो जाएगा और फिर उसे सुरक्षित रखना जायज़ होगा। फिर इसका सार बिल्कुल वही है जो 'फ़तह अल-क़दीर' में उल्लेखित है, जो चीज़ जीवन के विपरीत नहीं है, वह नापसंदगी (कराहियत) को दूर नहीं करती। और इससे यह अनिवार्य नहीं होता कि जो चीज़ जीवन के विपरीत हो, वह नापसंदगी को दूर कर दे, जैसा कि यह बात छुपी हुई नहीं है। क्या तुम नहीं देखते कि जो चीज़ मानवता के विपरीत नहीं है, वह पशुता (हैवानियत) को दूर नहीं करती? क्योंकि यदि पशुता दूर हो जाए, तो मानवता भी दूर हो जाएगी। और ऐसा नहीं है कि जो मानवता के विपरीत हो, उससे पशुता दूर हो जाए, जैसे 'सहील' (घोड़े का हिनहिनाना), 'नहीक़' (गधे का रेंकना), और 'तरहहुब' (सन्यासी बनना)। क्योंकि ये सब मानवता के विपरीत हैं लेकिन पशुता के विपरीत नहीं हैं। (त)

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि शोधकर्ता अल्लामा अलाउद्दीन ने 'फ़तह' और 'हलिया' के इन उद्धरणों को देखकर यह सामान्यीकरण (तमीम) जोड़ा हो, हालाँकि वह उपयोगी सामान्यीकरण नहीं है। हाँ, इस फकीर ने इमाम अबू जाफ़र तह़ावी के कलाम में इसकी ओर इशारा पाया है।

जहाँ उन्होंने (अल्लाह तआला उन पर रहम फरमाए) उन लोगों के खिलाफ दलील पेश करने के बाद फ़रमाया जिन्होंने यह कहा था कि चित्र बिल्कुल नापसंद (मक़रूह) हैं, भले ही वे गैर-जीव के क्यों न हों, जैसे पेड़ आदि: "चुनांचे इमाम तह़ावी (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने उन लोगों के खिलाफ दलील पेश की जिन्होंने कहा कि चित्र बिल्कुल मकरूह हैं, चाहे वे गैर-जीव ही क्यों न हों, जैसे पेड़ वगैरह।"

पृष्ठ 586 का 720

بلفظ الظاھر فی الموضعین من شدۃ ورعہ رحمہ اللہ تعالی والا فالحکم مقطوع بہ فیھما ولایتوھم احد ان لو ربط خیط فی عنق صورۃ انسان لا بھیمۃ اوفی وسطھا ذھب الحکم الشرعی و جاز اقتناؤھا ، ثم لیس حاصلہ الامثل مافی الفتح ان کل مالاینافی الحیاۃ لاینفی الکراھۃ ولایلزم منہ ان کل ما ینافی الحیاۃ ینفی الکراھۃ کما لا یخفی الاتری ان کل ما لاینافی الانسانیۃ لا ینفی الحیوانیۃ اذ لو نفی الحیوانیۃ ینافی الانسانیۃ ولیس ان کلما ینافی الانسانیۃ ینفی الحیوانیۃ کالصھیل والنھیق والتوھب فان کل ذلک ینافی الانسانیۃ ولا ینافی الحیوانیۃ۔

تعالیٰ اعلم ،اقول : (میں کہتا ہوں) لفظ "ظاہر" دو جگہ ذکر کرنے سے مصنف علیہ الرحمۃ کی شدت ورع اور احتیاط ہے ورنہ دونوں میں حکم یقینی ہے اور کوئی یہ وہم نہ کرے کہ اگر کسی انسانی تصویر کی گردن میں کوئی دھاگہ باندھ دیا جائے یا اس کے وسط (درمیان) میں ایسا کیا جائے نہ کہ چوپایہ میں ۔ پس اس صورت میں حکم شرعی ختم ہوجائے گا اور پھر اس کو محفوظ رکھنا جائز ہوگا۔ پھر اس کا حاصل بالکل وہی ہے جو فتح القدیر میں مذکور ہے، جو چیز حیات کے منافی نہ ہو تو وہ کراہت کی نفی نہیں کرتی اور اس سے یہ لازم نہیں آتا کہ جو چیز حیات کے منافی ہو وہ کراہت کی نفی کرتی ہے جیسا کہ یہ امر مخفی اور پوشیدہ نہیں، کیا تم دیکھتے نہیں کہ جو چیز انسانیت کے منافی نہیں وہ حیوانیت کی نفی نہیں کرتی کیونکہ اگر حیوانیت کی نفی ہو تو انسانیت کی نفی ہوجائے، اور ایسا نہیں کہ جو انسانیت کے منافی ہو اس سے حیوانیت کی نفی ہوجائے جیسے صہیل (گھوڑے کا ہنہنانا) اور نہیق (گدھے کا ڈھینچوں کرنا) اور ترھب (راہب بننا) اس لئے کہ یہ سب کچھ انسانیت کے منافی ہے لیکن حیوانیت کے منافی نہیں۔ (ت)

عجب نہیں کہ مدقق علائی نے انہیں عبارات فتح وحلیہ کو دیکھ کر یہ تعمیم اضافہ فرمائی ہو حالانکہ وہ مفید تعمیم نہیں، ہاں کلام امام ابو جعفر طحاوی میں فقیر نے اس کی طرف اشارہ پایا،

حیث قال رحمه الله تعالى بعد ما احتج على من قال بكراهة الصورة مطلقاً ولو لغير حيوان كشجر

چنانچہ امام طحاوی رحمۃ اللہ علیہ نے ان لوگوں کے خلاف استدلال پیش کرنے کے بعد فرمایا جنہوں نے یہ کہہ دیا کہ تصویر مطلقاً مکروہ ہے اگر چہ غیر حیوان کی کیوں نہ ہو، مثلاً درخت وغیرہ

Fatawa Razawiyya Volume 24

For example, through hadiths that contain the command to cut off the heads of statues, the text of which is: "When statues were permitted after cutting off their heads—which, if cut from a living creature, it would not survive—this indicated the permissibility of depicting what has no soul, and the exclusion of what has no soul from the images prohibited in the reports we mentioned in this chapter. It has also been narrated from Ikrimah in this chapter, as Muhammad bin al-Nu'man narrated to us (mentioning with his chain) from Ikrimah, from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him), who said: 'The image is the head,' until the end of what was mentioned before."

...depiction, because of those narrations in which the command to cut off the heads of statues (idols) was given; accordingly, this is the text of the mentioned author. When permission was granted for statues after the cutting off of the head (separating the head) and it was declared permissible, therefore, if the head of a living being is cut off, it will no longer remain in the form of a living being. This is evidence for the permissibility of an image of a non-living thing, and what does not have a soul is excluded from those images that were prohibited in the reports we mentioned in this chapter. Accordingly, in this chapter, a hadith is also narrated from Hazrat Ikrimah which Muhammad bin Nu'man narrated to us; we narrate it with the chain on the authority of Ikrimah from Hazrat Abu Hurairah (may Allah be pleased with him), who said: 'The image is the name of the head.' Until the end, it is the same discourse that has been mentioned before. (T)

For repeating the discourse, this is the utmost beginning of the chain. I say: although their final discourse and reliance on the hadith of Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) indicates that the basis for exclusion from the prohibition is the cessation of it being an image, and this is what is required as Sharia gave the command of prohibition for a visible, non-debased image. So, as long as the image is visible without debasement, the prohibition remains; yes, when the image no longer remains or there is debasement, the prohibition will cease as the reason for prohibition is removed. In cutting off the head, the image does not remain, as has passed from the hadith of Abu Hurairah and the text of Hidaya from the words of Imam Azam himself, contrary to other limbs; as long as the face remains, the image remains even if other limbs are not present. This is why Gabriel the Trustworthy (peace and blessings be upon him) in the upcoming hadith, and the recorder of the school of thought Imam Muhammad in Jami' al-Saghir, and all mentioned books of

the school of thought—texts, commentaries, and fatwas—limited it only to the removal of the head. And Allah knows best; in any case, proceed on this. So I say: And with the success of Allah (I say only with the help of success from Allah - T). Life in a picture...

[1] Sharh Ma'ani al-Athar, Book of Disliked Matters, Chapter: Images on Clothing, H.M. Saeed Company Karachi, 2/403.

उदाहरण के लिए, उन हदीसों के माध्यम से जिनमें मूर्तियों के सिर काटने का आदेश है, जिसका पाठ इस प्रकार है: "जब मूर्तियों के सिर काटने के बाद उन्हें अनुमति दी गई—जिसे यदि किसी जीवित प्राणी से अलग कर दिया जाए तो वह जीवित नहीं रहेगा—तो यह बिना आत्मा वाली चीज़ों के चित्रण की अनुमति और उन चित्रों से बिना आत्मा वाली चीज़ों के बहिष्करण का संकेत देता है जो इस अध्याय में वर्णित उल्लेखों में प्रतिबंधित हैं। इस अध्याय में इकरिमा से भी वर्णित है जैसा कि हमें मुहम्मद बिन अल-नुअमान ने (अपनी श्रृंखला के साथ) इकरिमा से, अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से सुनाया, उन्होंने कहा: 'चित्र सिर है' अंत तक जैसा पहले बताया गया है।"

...की तस्वीर, उन रिवायतों की वजह से जिनमें मूर्तियों (प्रतिमाओं) के सिर काटने का हुक्म दिया गया है, चुनांचे मौसूफ़ की यह नस (पाठ) है। जब कत-ए-रास (सिर अलग कर देना) के बाद मूर्तियों की इजाज़त दी गई (और इसे मुबाह/वैध करार दिया गया) लिहाज़ा अगर जानदार का सिर काट दिया जाए तो फिर वह जानदार की सूरत न रहेगी, और यह गैर-जानदार की तस्वीर के मुबाह होने की दलील है और जिसमें रूह न हो वह उस तस्वीर से ख़ारिज है जिससे उन आसार (रिवायतों) में मना कर दिया गया जिन्हें हमने इस बाब (अध्याय) में ज़िक्र किया है, चुनांचे इस बाब में हज़रत इकरिमा से वह हदीस मरवी है जिसे हमसे मुहम्मद बिन नोमान ने बयान फ़रमाया, हम इसे सनद से बहवाला इकरिमा हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बयान करते हैं, फ़रमाया: तस्वीर सिर का नाम है। आख़िर तक वही कलाम है जो पहले बयान हो चुका। (त)

कलाम दोहराने के लिए यह सनद की इन्तहा है। मैं कहता हूँ: अगरचे उनका आख़िरी कलाम और हदीस-ए-अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इस्तिनाद बता रहा है कि तस्वीर न रहना हुक्म-ए-मना से ख़ारिज करने का मदार (आधार) है और यही चाहिए कि शरअ ने हुक्म-ए-मना ऐसी ज़ाहिर तस्वीर पर फ़रमाया जो अपमानित न हो, तो जब तक तस्वीर अपमान के बिना ज़ाहिर है, मना बाक़ी है, हाँ जब तस्वीर न रहे या अपमान हो तो मना न रहेगा क्योंकि मना का आधार ख़त्म हो गया। सिर काटने में तस्वीर नहीं रहती जैसा कि हदीस-ए-अबू हुरैरा और हिदाया की इबारत से ख़ुद कलाम-ए-इमाम-ए-आज़म से गुज़रा, बरअक्स दीगर अंगों के कि जब तक चेहरा बाक़ी है तस्वीर बाक़ी है चाहे और अंग न हों, और इसीलिए जिब्रील अमीन अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने आइंदा हदीस में और मज़हब के मुहर्रिर इमाम मुहम्मद ने जामे सगीर और मज़हब की तमाम मज़कूरा कुतुब (किताबों) के मतून, शूरूह और फ़तावा में सिर्फ़ सिर की नफ़ी पर इक्तिसार फ़रमाया, वल्लाहु तआला आलम,

बहरहाल इसी पर चलिए। फ़-अक़ूलु: वबिल्लाहित्तौफीक (अल्लाह तआला की तौफीक ही के सहारे मैं कहता हूँ। - त) तस्वीर में हयात...

[1] शरह मानी अल-आसार, किताब अल-कराहिया, बाब अस-सुवर तकूनु फिश-शियाब, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 2/403।

مثلاً باحادیث فیھا الامر بقطع راس التماثیل مانصہ فلما ابیحت التماثیل بعد قطع راسھا الذي لو قطع من ذی الروح لم یبق،دل ذلك علی اباحة تصویر مالاروح لہ وعلی خروج مالاروح لمثلہ من الصور مماقد نھی عنہ في الآثار التی ذکرنا في ھذا الباب وقدروی عن عکرمة في ھذا الباب ایضاً ما حدثنا محمد بن النعمن (نذکر بسندہ) عن عکرمة عن ابي ھریرة رضي اللہ تعالی عنہ قال الصورة الراس الی اخر ما تقدم ۔ کی تصویر ، ان روایات کی وجہ سے کہ جن میں تماثیل (مجسمے) کے سر کاٹنے کا حکم دیا گیا ہے، چنانچہ موصوف کی یہ نص ہے۔ جب قطع راس (سر الگ کر دینا) کے بعد تماثیل کی اجازت دی گئی (اور اسے مباح قرار دیا گیا) لہٰذا اگر ذی روح کا سر کاٹ دیا جائے تو پھر وہ ذی روح کی صورت نہ رہے گی، اور یہ غیر ذی روح کی تصویر کے مباح ہونے کی دلیل ہے اور جس میں روح نہ ہو وہ اس تصویر سے خارج ہے کہ جس سے ان آثار میں منع کر دیا گیا کہ جنہیں ہم نے اس باب میں ذکر کیا ہے، چنانچہ اس باب میں نیز حضرت عکرمہ سے وہ حدیث مروی ہے کہ جس کو ہم سے محمد بن نعمان نے بیان فرمایا ہم اسے سند سے بحوالہ عکرمہ حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے بیان کرتے ہیں، فرمایا: تصویر سر کا نام ہے۔ آخر تک وہی کلام ہے جو پہلے بیان ہو چکا۔ (ت) کلام دُہر کے لئے یہ غایت ابدائے سند ہے اقول : اگرچہ ان کا آخر کلام اور حدیث ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے استناد بتا رہا ہے کہ تصویر نہ رہنا حکم منع سے خارج کرنے کا مدار ہے اور یہی چاہئے کہ شرع نے حکم منع تمثالِ ظاہر غیر مستہان پر فرمایا تو جب تک تمثال بلا اہانت ظاہر ہے منع باقی ہے، ہاں جب تمثال نہ رہے یا اہانت ہو منع نہ رہے گا کہ مناطِ منع منتفی ہو گیا قطعِ سر میں تمثال نہیں رہتی جیسا کہ حدیث ابوہریرہ و عبارتِ ہدایہ سے خود کلامِ امامِ اعظم سے گزرا بخلاف دیگر اعضا کہ جب تک چہرہ باقی تصویر باقی اگرچہ اور اعضا

نہ ہوں ولذا جبریل امین علیہ الصلوٰۃ والتسلیم نے حدیثِ آئندہ اور محرر مذہب امام محمد نے جامع صغیر اور جملہ کتبِ مذکورہ مذہب متون وشروح وفتاویٰ میں صرف نفیِ راس پر اقتصار فرمایا، واللہ تعالیٰ اعلم، بہرحال اسی پر چلئے۔ فاقول: وباللہ التوفیق (اللہ تعالیٰ کی توفیق ہی کے سہارے میں کہتا ہوں ۔ ت) تصویر میں حیات

۱ شرح معانی الآثار کتاب الکراھیۃ باب الصور تکون في الثیاب ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۴۰۳

Fatawa Razawiyya, Volume 24

It never exists in any state, nor does it in any case encompass all the organs which are the pivot of life. In a reflection, it is obvious that even if it is full-length, it would only bring the reflection of the upper surface of one side. Even if half the body were in a shell, life would habitually be impossible, let alone just half the surface. And even in a statue, internal organs like the heart, liver, and veins are not present. Take a specific medical picture in which all internal and external nerves and muscles are shown, then where would blood come from in the veins? In short, a picture can in no way encompass that which sustains life. The difference is only in the depiction and the observer's understanding. If its depiction of the subject gives a sign of life, i.e., the observer thinks as if they are looking at a living subject of the picture, then it is a picture of a living being. And if the depiction does not show life, and the observer knows by observing it that this is not the form of a living being but is of a dead and lifeless one, then it is of a non-living being. It is narrated from Abu Huraira (may Allah be pleased with him) in Sunan Abi Dawud, Jami' at-Tirmidhi, Sunan an-Nasa'i, Sahih Ibn Hibban, Sharh Ma'ani al-Athar by Imam Tahawi, and Mustadrak al-Hakim:

Arabic Text

He said, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: Gabriel came to me and said: I came to you last night, and nothing prevented me from entering except that there were statues at the door, and there was a thin curtain in the house with images on it, and there was a dog. So order that the head of the statue at the door of the house be cut off so that it becomes like a tree trunk, and order that the curtain be cut up and made into two cushions to be thrown down and stepped on, and order that the dog be taken out. So the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) did so.[1]

Urdu Translation

(Hazrat Abu Huraira) narrated that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: Hazrat Gabriel came to my service and said: I had come to your service last night but the only thing that prevented me from entering was that there were pictures on the door and there was also a thin curtain in the house on which pictures were present, as well as a dog in the house. Therefore, you should order regarding the picture that its head be cut off so that it becomes like a tree, and regarding the curtain, order that it be torn into pieces and made into two cushions that are placed on the ground and trodden upon by feet, and regarding the dog, order that it be taken out. So the Holy Prophet (peace and blessings of

Arabic Text	Urdu Translation
	Allah be upon him) did everything like that. (T)

[1] Sunan Abi Dawud, Kitab al-Libas, Bab fi as-Suwar, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/217; Jami' at-Tirmidhi, Abwab al-Adab, Bab ma ja'a inna al-mala'ikata la tadkhulu baytan, etc., Amin Company, Delhi, 2/103; Sharh Ma'ani al-Athar, Kitab al-Karahiyah, Bab as-Suwar takunu fi ath-thiyab, H.M. Saeed Company, Karachi, 2/402.

यह किसी भी स्थिति में नहीं होता है, और न ही यह किसी भी मामले में उन सभी अंगों को समाहित करता है जो जीवन का आधार हैं। एक प्रतिबिंब में, यह स्पष्ट है कि यदि यह पूर्ण लंबाई का भी हो, तो यह केवल एक पक्ष की ऊपरी सतह का प्रतिबिंब लाएगा। यदि खोल में आधा शरीर भी होता, तो आदतन जीवन असंभव होता, केवल आधी सतह की तो बात ही छोड़िए। और एक मूर्ति में भी, हृदय, यकृत और नसों जैसे आंतरिक अंग मौजूद नहीं होते हैं। एक विशिष्ट चिकित्सा चित्र लें जिसमें सभी आंतरिक और बाहरी नसों और मांसपेशियों को दिखाया गया है, तो नसों में रक्त कहाँ से आएगा? संक्षेप में, एक चित्र किसी भी तरह से जीवन को बनाए रखने वाली चीज़ों को समाहित नहीं कर सकता है। अंतर केवल चित्रण और देखने वाले की समझ में है। यदि विषय का इसका चित्रण जीवन का संकेत देता है, यानी देखने वाला यह समझता है कि जैसे वह चित्र के एक जीवित विषय को देख रहा है, तो वह एक जीवित प्राणी का चित्र है। और यदि चित्रण जीवन नहीं दिखाता है, और देखने वाला इसे देखकर जानता है कि यह एक जीवित प्राणी का रूप नहीं है, बल्कि एक मृत और निर्जीव का है, तो वह एक निर्जीव प्राणी का है। सुनन अबी दाऊद, जामी अत-तिर्मिज़ी, सुनन अन-नसाई, सहीह इब्न हिब्बान, इमाम तहावी की शरह मानी अल-अथार और मुस्तदरक अल-हाकिम में अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है:

अरबी पाठ

उन्होंने कहा, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: जिब्रईल मेरे पास आए और कहा: मैं पिछली रात तुम्हारे पास आया था, और मुझे अंदर आने से किसी चीज़ ने नहीं रोका सिवाय इसके कि दरवाज़े पर मूर्तियाँ थीं, और घर में एक बारीक पर्दा था जिस पर चित्र थे, और घर में एक कुत्ता था। इसलिए दरवाज़े पर लगी मूर्ति का सिर काटने का आदेश दें ताकि वह पेड़ के तने जैसा हो जाए, और पर्दे को काटकर दो तकिए बनाने का आदेश दें जिन्हें नीचे गिराया

उर्दू अनुवाद

(हज़रत अबू हुरैरा ने) फ़रमाया कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरी ख़िदमत में हज़रत जिब्रईल हाज़िर हुए और फ़रमाया कि मैं गुज़शता रात आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ था लेकिन मुझे अंदर दाख़िल होने से सिर्फ़ इस चीज़ ने रोका कि दरवाज़े पर तस्वीरें थीं और घर में भी बारीक पर्दा था जिस पर तस्वीरें मौजूद थीं नीज़ घर में कुत्ता था लिहाज़ा आप उस तस्वीर के मुतअल्लिक़ फ़रमा दें कि इसका सर काट दिया जाए ताकि वह दरख़्त की तरह हो जाए, और पर्दे के बारे में फ़रमा दें कि उसे टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए और दो मसनदें बनाई

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
जाए और उन पर पैर रखे जाएं और कुत्ते को बाहर निकालने का आदेश दें। तो अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने वैसा ही किया।[1]	जाएं जो ज़मीन पर डाली और पाँव से रौंदी जाएं और कुत्ते के बारे में फ़रमा दीजिये कि उसे बाहर निकाल दिया जाए तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सब कुछ इसी तरह किया। (त)

[1] सुनन अबी दाऊद, किताबुल लिबास, बाब फ़िस सुवर, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, 2/217; जामी अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुल अदब, बाब मा जा'अ इन्ना अल-मलाईकाता ला तदख़ुलु बैतन आदि, अमीन कंपनी, दिल्ली, 2/103; शरह मानी अल-अथार, किताबुल कराहियाह, बाब अस-सुवर तकूनु फ़िथ थियाब, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 2/402.

آپ تو کسی حالت میں نہیں ہوتی نہ وہ کسی حال میں جملہ اعضائے مدار حیات کا استیعاب کرتی ہے عکسی میں تو ظاہر کہ اگر پورے قد کی بھی ہو تو صرف ایک طرف کی سطح بالا کا عکس لائے گی خول میں نصف جسم بھی ہوتا تو عادۃً حیات ناممکن ہوتی نہ کہ صرف نصف سطح اور بت میں بھی اندرونی اعضا مثل دل و جگر و عروق نہیں ہوتے اور ڈاکٹری کی ایک تصویر خاص لیجئے جس میں اندر باہر کے رگ پٹھے تک سب دکھائے جاتے ہیں تو رگوں میں خون کہاں سے آئے گا غرض تصویر کسی طرح استیعاب مابہ الحیاۃ نہیں ہو سکتی فقط فرق حکایت و فہم ناظر کا ہے اگر اس کی حکایت گئی عنہ میں حیات کا پتا دے یعنی ناظر یہ سمجھے کہ گویا ذوالتصویر زندہ کو دیکھ رہا ہے تو وہ تصویر ذی روح کی ہے اور اگر حکایت حیات نہ کرے ناظر اس کے ملاحظہ سے جانے کہ یہ حی کی صورت نہیں، میت و بے روح کی ہے تو وہ غیر ذی روح کی ہے، سنن ابی داؤد جامع ترمذی و سنن نسائی و صحیح ابن حبان و شرح معانی الآثار امام طحاوی و مستدرک حاکم میں ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
قال قال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اتانی جبریل قال اتیتك البارحۃ فلم یمنعنی ان اکون دخلت الا انہ کان علی الباب تماثیل وکان فی البیت قرام ستر فیہ تماثیل وکان فی البیت کلب فمر برأس التمثال	(حضرت ابوہریرہ نے) فرمایا کہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے فرمایا کہ میری خدمت میں حضرت جبرائیل حاضر ہوئے اور فرمایا کہ میں گزشتہ رات آپ کی خدمت میں حاضر ہوا تھا لیکن مجھے اندر داخل ہونے سے صرف اس چیز نے روکا کہ دروازے پر تصویریں تھیں اور گھر میں بھی باریک پردہ تھا کہ جس پر تصویریں موجود تھیں نیز گھر میں کتا تھا

عربی عبارت	اردو ترجمہ
لہذا آپ اس تصویر کے متعلق فرمادیں کہ اس کا سر کاٹ دیا جائے تاکہ وہ درخت کی طرح ہو جائے، اور پردے کے بارے میں فرمادیں کہ اسے ٹکڑے ٹکڑے کردیا جائے اور دو مسندیں بنائی جائیں جو زمین پر ڈالی اور پاؤں سے روندی جائیں، اور کتے کے بارے میں فرما دیجئے کہ اسے باہر نکال دیا جائے تو حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے سب کچھ اس طرح کیا۔(ت)	الذی علی باب البیت فیقطع فیصیر کھیأۃ الشجرۃ ومربالستر فلیقطع فلیجعل وسادتین منبوذتین توطآن ومرالکلب فلیخرج ففعل رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم 1۔

1 سنن ابی داؤد کتاب اللباس باب فی الصور آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۲۱۷ جامع الترمذی ابواب الادب باب ماجاء ان الملائکۃ لاتدخل بیتا الخ امین کمپنی دہلی ۲/ ۱۰۳ ، شرح معانی الآثار کتاب الکراھیۃ باب الصور تکون فی الثیاب ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۴۰۲

Fatawa Razawiyya Volume 24

Look, Gabriel (peace and blessings be upon him) also requested that a command be given to cut off the heads of these pictures so that their form becomes like that of a tree and no longer animal-like. Its clear implication is that without cutting off the head, the prohibition will not be removed, as without it, they can neither be like a tree nor excluded from animal form. And if one descends from that level, it is at least necessary to make it such that it appears like a lifeless thing, from which the state of soul-lessness is understood. Therefore, Allama Sayyid Tahtawi (may Allah have mercy on him) said in the commentary of this statement in 'Durr':

Arabic Text	**Urdu Translation/Explanation**
His statement "it cannot live without it": Verily, praying towards it is not disliked because it is an image of a dead person, and a dead person is not worshipped.[1] I say: It is better to say "it is not worshipped" because polytheists used to worship the dead. Allah Almighty said, "Dead, not alive."[2] Yes, they do not depict them as dead, but as living.	The author's statement that life is not possible without it. So, praying facing such a picture is not disliked because it is a picture of a dead person, while the dead are not worshipped. I say: (I say that) it would have been better to say that the *form* of a dead person is not worshipped, because polytheists do worship the dead. This is why Allah Almighty said: "They are dead, not living." Yes, it is certain that they do not make their pictures in the form of the dead, but rather in the form of the living. (T)

And there is no doubt that photographic pictures, even if they are half-length or up to the chest, or even just the face, are never like trees nor like the dead. They depict the subject; rather, they certainly show the form of a living, breathing person. The viewer's mind is drawn to the state of life of the subject; no one understands it as a picture of a dead person. And the basis of the ruling was on this perception, not on actual life and death, with which a picture has no share. Do you not see that Christian kings get such incomplete pictures of themselves engraved on coins? If the state of death were understood from it, they would never want their dead form to be shown on coins. So, in fairness, this passage from 'Durr-e-Mukhtar' also does not negate the prohibition of these pictures. It is for a picture that is broken down to such a state that it no longer depicts the state of life, so that whoever sees it recognizes it as the form of a soulless corpse. I say: (I say. T) And now it is not surprising that in some cases, the original absence or removal by destruction and annulment of other vital

organs besides the face may make a difference in whether the intended meaning of life is conventionally understood or not. Unlike the face, which if not made at all or...

---

[1] Hashiyat at-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/274. [2] The Holy Quran 16/21.

फतावा रज़विया, खंड 24

देखिए, जिब्रील-ए-अमीन (अलैहिस्सलाम) ने भी निवेदन किया कि इन चित्रों के सिर काटने का आदेश दे दिया जाए जिससे उनका रूप वृक्ष के समान हो जाए और पशु-रूप न रहे। इसका स्पष्ट अर्थ यही है कि सिर काटे बिना मनाही का आदेश नहीं हटेगा, क्योंकि इसके बिना न वे पेड़ के समान हो सकते हैं और न पशु-रूप से बाहर। और यदि इससे थोड़ा नीचे उतरें, तो इतना तो आवश्यक है कि उसे ऐसा कर दिया जाए जिससे वह एक निर्जीव वस्तु का रूप प्रतीत हो, जिससे उसकी बे-रुही (प्राणहीनता) की स्थिति समझ में आए। इसीलिए अल्लामा सैयद तहतावी (रहमतुल्लाह अलैहि) ने 'दुर्र' के इसी कथन की व्याख्या में फ़रमाया:

अरबी पाठ

उनका कथन "इसके बिना वह जीवित नहीं रह सकता": वास्तव में उसकी ओर मुख करके नमाज़ पढ़ना मकरूह (नापसंद) नहीं है क्योंकि वह एक मृत व्यक्ति का चित्र है और मृत की पूजा नहीं की जाती है।[1] मैं कहता हूँ: बेहतर यह होता कि "इसकी पूजा नहीं की जाती" कहा जाता क्योंकि मुशरिक (बहुदेववादी) तो मुर्दों की पूजा करते ही हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "मरे हुए हैं, जीवित नहीं।"[2] हाँ, वे उन्हें मृत रूप में चित्रित नहीं करते, बल्कि जीवित रूप में करते हैं।

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

लेखक का कथन कि इसके बिना जीवन संभव नहीं है। अतः ऐसे चित्र की ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ना मकरूह नहीं है क्योंकि वह एक मुर्दे का चित्र है, जबकि मुर्दे की पूजा नहीं की जाती। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ कि) अधिक बेहतर यह होता कि कहा जाता कि मुर्दे के रूप की पूजा नहीं की जाती, क्योंकि मुशरिक तो मुर्दों की पूजा किया करते हैं, यही कारण है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "वे मुर्दे हैं जो जीवित नहीं।" हाँ, यह निश्चित है कि वे मुर्दों के रूप में उनके चित्र नहीं बनाते, बल्कि जीवितों के रूप में उनके चित्र बनाते हैं। (त)

और इसमें कोई संदेह नहीं कि फोटोग्राफिक चित्र, भले ही वे आधे कद के हों या छाती तक, या सिर्फ चेहरे के हों, वे कभी न तो पेड़ के समान होते हैं और न ही मुर्दे के समान। वे मूल व्यक्ति का वर्णन करते हैं, बल्कि निश्चित रूप से एक जीते-जागते व्यक्ति का रूप दिखाते हैं। दर्शकों का मन उनसे मूल व्यक्ति के जीवित होने की स्थिति की ओर ही जाता है; कोई भी यह नहीं समझता कि यह मुर्दे का रूप है। और आदेश का आधार इसी समझ पर था, न कि वास्तविक जीवन और मृत्यु पर, जिससे चित्र का कोई सरोकार नहीं है। क्या आप नहीं देखते कि ईसाई राजा अपने ऐसे ही अपूर्ण चित्र सिक्कों पर अंकित करवाते हैं? यदि उससे मृत्यु की स्थिति समझ में आती, तो वे कभी नहीं चाहते कि सिक्कों

पर उनका मृत रूप दिखाया जाए। अतः निष्पक्ष रूप से, 'दुर्र-ए-मुख्तार' का यह कथन भी इन चित्रों से प्रतिबंध को समाप्त नहीं करता। यह उस चित्र के लिए है जिसे तोड़-मरोड़ कर ऐसी स्थिति में कर दिया जाए कि उसमें जीवन की स्थिति का वर्णन न रहे, ताकि जो उसे देखे वह उसे निर्जीव शव का रूप समझे। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ। त) और अब यह आश्चर्य की बात नहीं कि चेहरे के अलावा अन्य महत्वपूर्ण अंगों की मूल अनुपस्थिति या उनके विनाश और निरस्तीकरण से कुछ मामलों में इस बात पर फर्क पड़े कि जीवन का इच्छित अर्थ पारंपरिक रूप से समझ में आता है या नहीं। इसके विपरीत चेहरा, जिसे शुरू से बनाया ही न गया हो या...

---

[1] हाशिया अत-तहतावी अली अल-दुर्र अल-मुख्तार, किताबुस-सलात, नमाज़ को अमान्य करने वाली चीज़ों का अध्याय, दार अल-मआरिफा, बेरुत, 1/274. [2] अल-कुरान अल-करीम 16/21.

دیکھئے جبریلِ امین علیہ الصلوۃ والتسلیم نے بھی عرض کی کہ ان تصویروں کے سر کاٹنے کا حکم فرما دیجئے جس سے ان کی ہیئت درخت کے مثل ہو جائے حیوانی صورت نہ رہے اس کا صریح مفاد تو وہی ہے کہ بے قطعِ راس حکم منع نہ جائے گا کہ بغیر اس کے نہ پیڑ کی مثل ہو سکتی ہیں نہ صورتِ حیوانی سے خارج، اور اگر تنزل کیجئے تو اس قدر تو لازم کہ ایسا کر دیجئے جس سے وہ ایک بے جان کی صورت معلوم ہو اس سے حالتِ بے روحی مفہوم ہو، ولہٰذا علامہ سید طحطاوی رحمہ اللہ تعالی نے اسی قولِ دُرِ کی شرح میں فرمایا:

عربی متن	اردو ترجمہ و تشریح
قولہ لاتعیش بدونہ انما لاتکرہ الصلوۃ الیھا لانھا صورۃ میت وھو لا یعبد[1] اھ اقول: والاولی وھی لاتعبد لان المشرکین انما یعبدون المیت قال اللہ تعالٰی " أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَاءٍ "[2] نعم لایصورونھم صورۃ میت بل حی۔	مصنف کا ارشاد کہ اس کے بغیر زندگی نہ ہو۔ پس ایسی تصویر کی طرف منہ کر کے نماز پڑھنا مکروہ نہیں کیونکہ وہ مردے کی تصویر ہے جبکہ مردے کی عبادت نہیں کی جاتی اھ اقول: (میں کہتا ہوں کہ) زیادہ بہتر یہ ہے کہ کہا جاتا کہ مردے کی صورت کی عبادت نہیں کی جاتی، اس لئے کہ مشرک تو مُردوں کی عبادت کیا کرتے ہیں، یہی وجہ ہے کہ اللہ تعالٰی نے ارشاد فرمایا: "وہ مُردے ہیں جو زندہ نہیں" ہاں یہ ضرور ہے کہ وہ مُردوں کی صورت پر ان کی تصویریں نہیں بناتے بلکہ زندوں کی صورت پر ان کی تصویریں بناتے ہیں۔ (ت)

اور شک نہیں کہ عکسی تصویریں اگرچہ نیم قد یا سینہ تک بلکہ اگر صرف چہرہ کی ہو ہرگز نہ مثلِ شجر ہوتی ہیں نہ مردہ، ذوالصورۃ کی حکایت کرتی ہیں بلکہ یقیناً جیتے جاگتے کی صورت

دکھاتی ہیں، اور ناظرین کا ذہن ان سے حالتِ حیات ذوالصورۃ ہی کی طرف جاتا ہے کوئی نہیں سمجھتا کہ یہ مردہ کی صورت ہے اور مدارِ حکم اسی فہم پر تھا، نہ حیات وموتِ حقیقی پر جس سے تصویر کو بہرہ نہیں۔ آیا نہیں دیکھتے کہ سلاطینِ نصاریٰ اپنی ایسی ہی ناقص تصویریں سکہ پر منقوش کراتے ہیں اگر اس سے حالتِ موت مفہوم ہوتی تو کبھی نہ چاہتے کہ سکہ میں اپنی مردہ کی صورت دکھائیں تو انصافاً یہ عبارتِ دُرِ مختار بھی ان تصویروں سے نفی ممانعت نہیں کرتی وہ اس تصویر کے لئے ہے جسے توڑ پھوڑ کر اس حالت پر کر دیں کہ اس میں حالتِ حیات کی حکایت نہ رہے جو اسے دیکھے میت بے روح کی صورت جانے۔ اقول: (میں کہتا ہوں۔ ت) اور اب عجب نہیں کہ چہرہ کے سوا دیگر اعضائے مدارِ حیات کے عدمِ اصلی واعدام بنقض و ابطال میں معنیِ مقصود بکارِ حیاۃ عرفاً مفہوم ہونے نہ ہونے سے بعض صور میں فرق پیدا ہو۔ بخلاف چہرہ کہ سرے سے نہ بنایا یا

---

[1] حاشیۃ الطحطاوی علی الدرالمختار کتاب الصلوۃ باب مائیفسد الصلوۃ دارالمعرفۃ بیروت ۱ / ۲۷۴ [2] القرآن الکریم ۱۶ / ۲۱

Fatawa Rizwiya Volume 24

...was broken after being made, in any case, it is not a narrative as it is not hidden, so one should ask, and success is only by the grace of Allah Almighty. (t)

Thirdly: By the guidance of Allah, the Mighty and Majestic, describe that research through which all the causes, rulings, principles, and branches of this subject are manifested. Regarding the prohibition of pictures, the cause for the dislike (*karahah*) of prayer and the ruling of prohibition has been stated by the noble Shaikhs (may Allah have mercy on them) as resemblance to the worship of an idol. In *Al-Hidayah*, it is explicitly restricted to this:

Where it said, "There is no harm in praying while in front of him is a suspended Mushaf (Quran) or a suspended sword, because they are not worshipped, and it is in consideration of [worship] that the dislike is established."	Accordingly, he said that there is no harm if a person prays while the Holy Quran or a sword is hanging in front of him because neither of these two are worshipped, and dislike is established in consideration of worship. (t)

In *Fath al-Qadir* it is stated:

"His statement 'and in consideration of it dislike is established,' he prioritized the object (*ma'mool*) to intend conveying the benefit of restriction (*hasr*)."	The author's statement that dislike is established because of worship—in this, the object has been put forward so that the benefit of restriction is obtained. (t)

In *Tabyeen al-Haqa'iq* it is stated:

"[An image] is not worshipped when it is small such that it does not appear clearly to the viewer, and the dislike is in consideration of worship, so when the like of it is not worshipped, it is not disliked."	When the picture is so small that it is not clear to the observer, it is not worshipped; and dislike is with respect to worship, so when this kind of picture is not worshipped, there is no dislike. (t)

And the prohibition of having a picture on the clothes of the worshipper was justified by the resemblance to one carrying an idol, as stated in *Hidayah*, *Kafi*, and *Tabyeen*:

---

1. *Al-Hidayah*, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, Al-Maktabah al-Arabiyyah Karachi, 1/122

2. *Fath al-Qadir*, Book of Prayer, Section on what is disliked for the worshipper, Maktaba Nooriya Razawiyya Sukkur, 1/361
3. *Tabyeen al-Haqa'iq*, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, Al-Matba'ah al-Kubra Bulaq Egypt, 1/166

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

...बनने के बाद तोड़ दिया गया, बहरहाल यह कोई कहानी नहीं है जैसा कि यह बात छिपी नहीं है, फिर पूछना चाहिए, और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल ही से तौफ़ीक़ हासिल हो सकती है। (त)

तीसरा: अल्लाह अज़्ज़ा वजल्ल की तौफ़ीक़ से वह तहक़ीक़ बयान करें जिससे इस बहस के तमाम कारण, अहकाम, उसूल और फ़ुरूह (शाखाएं) स्पष्ट हो जाएं। तस्वीर की मुमानअत (प्रतिषेध) में नमाज़ की कराहत और मुमानअत के हुक्म का कारण मशाईखे किराम (रहमतुल्लाह अलैहि) ने बुत की इबादत से मुशाबहत (समानता) बताया है, 'हिदाया' में स्पष्ट रूप से इसी में सीमित (हस्र) फरमाया है:

जैसा कि कहा गया, "इसमें कोई हर्ज नहीं है कि कोई नमाज़ पढ़े जबकि उसके सामने लटका हुआ मुसहफ़ (क़ुरआन) या लटकी हुई तलवार हो, क्योंकि इन दोनों की इबादत नहीं की जाती, और इबादत के एतबार से ही कराहत साबित होती है।"

चुनाँचे फ़रमाया कि इसमें कोई हर्ज नहीं कि आदमी नमाज़ पढ़े जबकि उसके सामने मुसहफ़ शरीफ़ या तलवार लटकी हुई हो इसलिए कि इन दोनों की इबादत नहीं की जाती, और इबादत के एतबार से कराहत साबित होती है। (त)

फ़तह अल-क़दीर में है:

"उनका कहना 'और उसके एतबार से कराहत साबित होती है' में मऊमूल को पहले रखा गया है ताकि हस्र (सीमितता) का फ़ायदा हासिल हो।"

मुसन्निफ़ (लेखक) का यह कहना कि इबादत की वजह से कराहत साबित होती है, इसमें मऊमूल को मुक़द्दम किया गया है ताकि हस्र का फ़ायदा हासिल हो। (त)

तय्यबीन अल-हक़ाएक़ में है:

"[तस्वीर] की इबादत नहीं की जाती जब वह इतनी छोटी हो कि देखने वाले को स्पष्ट न हो, और कराहत इबादत के एतबार से है, तो जब इस जैसी चीज़ की इबादत नहीं की जाती तो कराहत नहीं है।"

जब तस्वीर छोटी हो कि देखने वाले के लिए वाज़ेह (स्पष्ट) न हो तो उसकी इबादत नहीं की जाती और कराहत इबादत के लिहाज़ से है, फिर जब इस क़िस्म की तस्वीर की इबादत न की गई तो कराहत नहीं। (त)

और मुसल्ली (नमाज़ पढ़ने वाले) के कपड़ों पर तस्वीर होने की मुमानअत का कारण 'बुत उठाने वाले' से मुशाबहत बताया गया है, जैसा कि हिदाया, काफ़ी और तय्यबीन में है:

---

1. अल-हिदाया, किताबुस सलात, बाबु मा युफ़सिदुस सलात व मा युक़रहु फ़ीहा, अल-मकतबतुल अरबिया कराची, 1/122
2. फ़तह अल-क़दीर, किताबुस सलात, फ़सलुन व युक़रहु लिल-मुसल्ली, मकतबा नूरियह रज़वियह सुक्कुर, 1/361
3. तय्यबीन अल-हक़ाएक़, किताबुस सलात, बाबु मा युफ़सिदुस सलात व मा युक़रहु फ़ीहा, अल-मतबअतुल कुबरा बोलाक़ मिस्र, 1/166

पृष्ठ 590/720

بنا ہوا توڑ دیا بہر حال حکایت نہیں ہوتی کمالا یخفی فلیتسأل وباللہ التوفیق (جیسا کہ یہ بات پوشیدہ نہیں، پھر پوچھنا چاہئے، اور اللہ تعالٰی کے فضل ہی سے توفیق حاصل ہو سکتی ہے۔ت)

ثالثاً: بتوفیق اللہ وجل کے وہ تحقیق بیان کریں جس سے اس مبحث کے تمام علل واحکام واصول وفروع متجلی ہوں۔ تصویر ممنوع میں کراہت نماز وحکم ممانعت کی علت مشائخ کرام رحمہم اللہ تعالٰی نے مشابہت عبادت صنم بتائی، ہدایہ میں صراحۃً اسی میں حصر فرمایا:

حیث قال لابأس بأن یصلی وبین یدیه مصحف معلق او سیف معلق جبکہ اس کے سامنے مصحف شریف یا تلوار لٹکی ہوئی ہو اس لانهما لا یعبدان وباعتباره تثبت الکراهة 1۔ لئے کہ ان دونوں کی عبادت نہیں کی جاتی، اور باعتبارِ عبادت کراہت ثابت ہوتی ہے۔(ت)

فتح القدیر میں ہے:

قوله وباعتباره تثبت الکراهة قدم المعمول لقصد افادة الحصر 2۔ مصنف کا یہ کہنا کہ عبادت کی وجہ سے کراہت ثابت ہوتی ہے اس میں معمول کو مقدم کیا گیا ہے تاکہ حصر کا فائدہ حاصل ہو۔ (ت)

تبیین الحقائق میں ہے:

لا تعبد اذا کانت صغیرة بحیث لاتبدو للناظر و الکراهة باعتبار العبادة فاذالم یعبد مثلها لایکره 3۔ جب تصویر چھوٹی ہو کہ دیکھنے والے کے لئے واضح نہ ہو تو اس کی عبادت نہیں کی جاتی اور کراہت بلحاظ عبادت ہے، پھر

جب اس قسم کی تصویر کی عبادت نہ کی گئی تو کراہت نہیں۔

(ت)

اور مصلی کے کپڑوں پر تصویر ہونے کی ممانعت کو حاملِ صنم کی مشابہت سے تعلیل فرمایا جیسا کہ ہدایہ وکافی و تبیین میں ہے:

---

1 الہدایۃ کتاب الصلوۃ باب مایدفسد الصلوۃ و ما یکرہ فیہا المکتبۃ العربیہ کراچی ۱/ ۱۲۲ 2 فتح القدیر کتاب الصلوۃ فصل و یکرہ للمصلی مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۳۶۱ 3 تبیین الحقائق کتاب الصلوۃ باب ما یفسد الصلوۃ و ما یکرہ فیہا المطبعۃ الکبریٰ بولاق مصر ۱/ ۱۶۶

Volume 22 Fatawa Razawiyya

The wording in al-Hidayah is: If someone wears a garment that has images on it, it is disliked (Makruh) because this state resembles one who is carrying an idol. Prayer is valid in all these cases because all its conditions are met, though the prayer should be repeated in a non-disliked manner. (T) [Reference 1]

This does not contradict the restriction that at the time of worship, resembling an idol-bearer is also like idol worship. However, from these books, two justifications for these issues are understood: first, that where a forbidden image is kept, angels do not enter that place, and a place where angels of mercy do not come is worse than anywhere else; second, the veneration of the image. It is mentioned in al-Hidayah:

It is disliked for images to be above one's head on the ceiling, in front of him, or opposite him, or for a picture to be hanging, because of the Hadith of Gabriel: "Indeed, we do not enter a house in which there is a dog or an image." [Reference 2]

Added in al-Kafi: "And a house into which angels do not enter is the worst of houses." [Reference 3]

Imam Zaila'i combined both justifications: Where he said: Due to the saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "Angels do not enter a house in which..." Therefore, he said because of this statement of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), and that is that angels such...

Footnotes: 1 Al-Hidayah, Kitab al-Salah, Bab Ma Yufsid al-Salah wa Ma Yukrah Fiha, Al-Maktabah al-Arabiyyah, Karachi, 1/122. 2 Al-Hidayah, Kitab al-Salah, Bab Ma Yufsid al-Salah wa Ma Yukrah Fiha, 1/122. 3 Al-Kafi Sharh al-Wafi.

जिल्द २२ फ़तावा रज़विया

हिदाया के शब्द ये हैं: यदि कोई ऐसा कपड़ा पहनता है जिसमें चित्र हों, तो वह मकरूह (नापसंद) है, क्योंकि यह स्थिति मूर्ति ले जाने वाले के समान है। इन सभी मामलों में नमाज़ वैध है, क्योंकि इसकी सभी शर्तें पूरी होती हैं, हालाँकि नमाज़ को गैर-मकरूह तरीके से दोहराया जाना चाहिए। (त) [संदर्भ १]

यह इस प्रतिबंध के विपरीत नहीं है कि इबादत के समय मूर्ति ले जाने वाले के समान होना भी मूर्ति पूजा के समान है। हालाँकि, इन पुस्तकों से इन मसलों के दो कारण समझ में आते हैं: पहला यह कि जहाँ निषिद्ध चित्र रखा हो, वहाँ फ़रिश्ते नहीं आते और जिस स्थान पर रहमत के फ़रिश्ते न आएँ वह हर जगह से बदतर है; दूसरा चित्र का सम्मान। हिदाया में है:

यह मकरूह है कि किसी मनुष्य के सिर के ऊपर छत में चित्र लगा हो, या उसके सामने हो, या उसके सम्मुख चित्र हों, या कोई चित्र लटका हुआ हो, क्योंकि जिब्रील (अ.) की हदीस है कि उन्होंने फरमाया: "हम ऐसे घर में प्रवेश नहीं करते जिसमें कुत्ता या चित्र हो।" [संदर्भ २]

काफ़ी में इतना और जोड़ा गया है: "और वह घर जिसमें फ़रिश्ते प्रवेश नहीं करते, वह सबसे बुरा घर है।" [संदर्भ ३]

इमाम ज़ैलेई ने दोनों कारणों को एकत्रित किया है: जहाँ उन्होंने कहा: हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस इरशाद के कारण कि "फ़रिश्ते ऐसे घर में प्रवेश नहीं करते जिसमें..." चुनांचे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस इरशाद की वजह से फरमाया और वह यह है कि फ़रिश्ते ऐसे...

पादलेख (Footnotes): १ अल-हिदाया, किताब अल-सलाह, बाब मा युफसिद अल-सलाह व मा युकरह फीहा, अल-मकतबाह अल-अरबिया, कराची, १/१२२। २ अल-हिदाया, किताब अल-सलाह, बाब मा युफसिद अल-सलाह व मा युकरह फीहा, १/१२२। ३ काफ़ी शरह अल-वाफ़ी।

पृष्ठ ५९१ / ७२०

واللفظ للهداية، لو لبس ثوبا فيه تصاوير يكره لانه يشبه حامل الصنم والصلوة جائزة فی جميع ذلك لاستجماع شرائطها وتعاد علی وجه غير مكروه ۔ 1 ہدایہ میں یہ الفاظ ہیں کہ اگر کسی نے ایسا کپڑا پہنا کہ جس میں تصویریں ہیں تو مکروہ ہے اس لئے کہ یہ حالت بت اٹھانے والے کے مشابہ ہے اور نماز ان تمام صورتوں میں جائز ہے، اس لئے کہ اس کی تمام شرائط موجود ہیں البتہ غیر مکروہ صورت پر نماز کو لوٹایا جائے۔ (ت)

اس حصر کے منافی نہیں کہ وقت عبادت حامل صنم سے مشابہت بھی عبادت صنم سے مشابہت ہے مگر انہیں کتب سے تعلیل مسائل میں دو علتیں اور مفہوم ہوتی ہیں، ایک یہ کہ جہاں تصویر ممنوع رکھی ہو ملائکہ اس مکان میں نہیں جاتے اور جس مکان میں ملائکہ رحمت نہ آئیں وہ ہر جگہ سے بدتر ہے، دوسرے تعظیم تصویر۔ ہدایہ میں ہے :

يكره ان يكون فوق راسه فی السقف او بين يديه او بحذائه تصاوير او صورة معلقة لحديث جبريل انا لاندخل بيتا فيه كلب وصورة 2۔ یہ مکروہ ہے کہ کسی انسان کے سر کے اوپر چھت میں تصویر لگی ہوئی ہو یا اس کے سامنے ہو یا اس کے مقابل تصویریں ہوں یا کوئی تصویر لٹکی ہوئی ہو، اور اس کراہت کی وجہ حدیث جبرائیل ہے کہ انہوں نے فرمایا: "ہم ایسے گھر میں داخل نہیں ہوتے کہ جس میں کتا یا تصویر ہو۔ (ت)

کافی میں اتنا زائد کیا: وبيت لاتدخل فيه الملئكة شر البيوت 3۔ جس گھر میں فرشتے داخل نہ ہوں وہ بدترین گھر ہے۔ (ت)

امام زیلعی نے دونوں تعلیلوں کو جمع فرمایا: حیث قال لقولہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم لا تدخل الملئکۃ بیتا فیہ چنانچہ حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کے اس ارشاد کی وجہ سے فرمایا اور وہ یہ ہے کہ فرشتے ایسے

1 الهداية كتاب الصلوٰة باب مائفسد الصلوٰة وما يكره فيها المكتبة العربيہ كراچی ١ / ١٢٢ 2 الهداية كتاب الصلوٰة باب مائفسد الصلوٰة وما يكره فيها ١ / ١٢٢ 3 كافی شرح وافی

Fatawa Razawiyya | Volume 24

[Table Header/Row 1] (Arabic): [Angels do not enter a house with] a dog or an image, because it resembles the worship of images, so it is disliked. (Urdu): [Angels] do not enter a house in which there is a dog or an image. One reason for this is that it involves resemblance to the worship of images, therefore it is disliked (Makruh). (T)

Also, it is stated in the three books:

[Table Header/Row 2] (Arabic): If the image is on a discarded pillow or a spread-out carpet, it is not disliked because it is stepped upon and trodden, unlike if the pillow is standing or if it is on a screen/curtain (sitrah), because that is an act of honoring it. This is the wording of Al-Hidayah. The wording of Al-Kafi and Al-Tabyin is "or it is on the screen (al-satr)", i.e., without the 'ta' [at the end of 'sitrah'], which is better as is not hidden. (Urdu): If an image is on a pillow that is lying down or on bedding that is spread out, it is not disliked because in this case it is being trampled upon and kept underfoot. This is contrary to the case when a pillow is kept standing or there is an image on a curtain (in this case it will be disliked) because honoring of the image is found. These are the words of Hidayah, and the words of Kafi and Tabyin are "or there are patterns of an image on some curtain (satr)". My meaning is that at the end of the word 'satr' there should not be the letter 'ta' and this is better, as is not hidden. (T)

In Fath al-Qadir, the researcher attributed the dislike of having an image kept in a place as a mark of respect entirely to the prayer, even if it does not constitute a resemblance to worship.

[Table Header/Row 3] (Arabic): As he said, if the image is behind him or under his feet, then in Sharh 'Atab it is said that the prayer is not disliked, but it is disliked with the dislike of placing an image in the house because of the Hadith: "Verily, the angels do not enter a house in which there is a dog or an image, except..." (Urdu): Accordingly, Fath al-Qadir said that if the image is behind one's back or lying under both of one's feet, then it is stated in Sharh 'Atab that in this situation the prayer will not be disliked, but keeping an image in the house is disliked based on the Hadith that "Angels of mercy do not enter that house in which there is a dog or an image". But...

[Footnotes] 1. Tabyin al-Haqa'iq, Kitab al-Salat, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, Al-Matba'at al-Kubra, Bulaq, Egypt, 1/166 2. Al-Hidayah,

Kitab al-Salat, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, Al-Maktabat al-Arabiyyah, Karachi, 1/122 3. Tabyin al-Haqa'iq, Kitab al-Salat, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, Al-Matba'at al-Kubra, Bulaq, Egypt, 1/167

फतावा रज़विया | खंड 24

[बॉक्स 1] (अरबी): कुत्ता या चित्र नहीं, और क्योंकि यह पूजा के समान है इसलिए यह मकरूह है। (उर्दू): [फरिश्ते] उस घर में प्रवेश नहीं करते जिसमें कुत्ता या चित्र हो। इसका एक कारण यह भी है कि इसमें चित्र की पूजा के साथ समानता है, इसलिए यह मकरूह (नापसंद) है। (त)

साथ ही, तीन किताबों में है:

[बॉक्स 2] (अरबी): यदि चित्र पड़े हुए तकिये पर हो या बिछे हुए कालीन पर, तो यह मकरूह नहीं है क्योंकि इसे कुचला और पैरों तले रौंदा जाता है, इसके विपरीत यदि तकिया खड़ा हो या पर्दे पर हो, क्योंकि वह उसका सम्मान करना है। यह हिदाया के शब्द हैं। काफी और तब्यीन के शब्द हैं "या वह पर्दे (सत्र) पर हो" यानी बिना 'ता' के, जो कि बेहतर है जैसा कि स्पष्ट है। (उर्दू): अगर कोई तस्वीर पड़े हुए तकिये पर हो या बिछे हुए बिछौने पर हो तो मकरूह नहीं है क्योंकि इस स्थिति में इसे पैरों तले रौंदा जाता है और पैरों के नीचे रखा जाता है। इसके विपरीत उस स्थिति के जब तकिया खड़ा किया जाए या पर्दे पर कोई तस्वीर हो (इस स्थिति में कराहत होगी) क्योंकि तस्वीर का सम्मान पाया गया। यह हिदाया के शब्द हैं, और काफी और तब्यीन के शब्द ये हैं "या किसी पर्दे पर तस्वीर के निशान हों"। मेरा मतलब यह है कि शब्द 'सत्र' के अंत में अक्षर 'ता' नहीं होना चाहिए और यह अधिक बेहतर है, जैसा कि छिपा नहीं है। (त)

शोधकर्ता ने फतह अल-कादिर में केवल स्थान में चित्र रखे होने की मनाही और सम्मान की कराहत को पूरी तरह नमाज़ की ओर बताया, चाहे वह पूजा के समान न हो।

[बॉक्स 3] (अरबी): जैसा कि उन्होंने कहा, यदि चित्र उनके पीछे हो या उनके पैरों के नीचे हो, तो शरह अताब में कहा गया है कि नमाज़ मकरूह नहीं है, लेकिन घर में चित्र रखना हदीस के कारण मकरूह है: "निश्चित रूप से फरिश्ते उस घर में प्रवेश नहीं करते जिसमें कुत्ता या चित्र हो, सिवाय..." (उर्दू): तदनुसार, फतह अल-कादिर ने फरमाया कि यदि तस्वीर पीठ के पीछे हो या दोनों पैरों के नीचे पड़ी हो, तो शरह अताब में फरमाया गया कि इस स्थिति में नमाज़ मकरूह नहीं होगी, लेकिन तस्वीर को घर में रखना मकरूह है इस हदीस के आधार पर कि "उस घर में रहमत के फरिश्ते प्रवेश नहीं करते जिसमें कुत्ता या तस्वीर हो"। लेकिन...

[पाद टिप्पणियाँ] 1. तब्यीन अल-हक़ाएक़, किताब अस-सलात, नमाज़ को खराब करने वाली और उसमें नापसंद चीज़ों का अध्याय, अल-मतबअत अल-कुबरा, बुलाक़, मिस्र, 1/166 2. अल-हिदाया,

किताब अस-सलात, नमाज़ को खराब करने वाली और उसमें नापसंद चीज़ों का अध्याय, अल-मकतबत अल-अरबिया, कराची, 1/122 3. तब्यीन अल-हक़ाएक़, किताब अस-सलात, नमाज़ को खराब करने वाली और उसमें नापसंद चीज़ों का अध्याय, अल-मतबअत अल-कुबरा, बुलाक़, मिस्र, 1/167

पृष्ठ 592/720

کلب ولا صورۃ ولانہ یشبہ عبادۃ فھا فیکرہ -1 گھر میں داخل نہیں ہوتے کہ جس میں کتا یا تصویر ہو۔ اور اس کی ایک وجہ یہ بھی ہے کہ اس میں عبادت تصویر کی مشابہت ہے لہٰذا یہ مکروہ ہے۔ (ت)

نیز کتبِ ثلاثہ میں ہے:

لو کانت الصورۃ علی وسادۃ ملقاۃ او بساط مفروش لا یکرہ لانھا تداس و توطأ بخلاف ما اذا کانت الوسادۃ منصوبۃ او کانت علی السترۃ لانہ تعظیم لھا 2 اہ ھذا لفظ الھدایۃ ولفظ الکافی والتبیین او کانت علی الستر 3 اعنی بدون التاء وھو اولی کما لا یخفی۔ اگر کوئی تصویر پڑے ہوئے تکیے پر ہو یا بچھے ہوئے بچھونے پر ہو تو مکروہ نہیں اس لئے کہ اس صورت میں اسے پامال کیا جاتا ہے اور پاؤں میں رکھا جاتا ہے۔ بخلاف اس صورت کے کہ جب تکیہ کھڑا کیا جائے یا پردے پر کوئی تصویر ہو (اس صورت میں کراہت ہوگی) اس لئے کہ تصویر کی تعظیم پائی گئی اھ یہ الفاظ ہدایہ کے ہیں، اور کافی اور تبیین کے یہ الفاظ ہیں یا کسی پردے پر تصویر کے نقوش ہوں۔ میری مراد یہ ہے کہ لفظ ستر کے آخر میں حرف تاء نہیں ہونا چاہئے اور یہ زیادہ بہتر ہے، جیسا کہ مخفی نہیں۔ (ت)

محقق نے فتح القدیر میں صرف مکان میں تصویر ممنوع بروجہ اکرام رکھے ہونے کی کراہت کو نماز کی طرف ساری بتایا اگر چہ تشبہ عبادت نہ ہو،

حیث قال لو کانت الصورۃ خلفہ او تحت رجلیہ ففی شرح عتاب لا تکرہ الصلوۃ ولکن تکرہ کراھۃ جعل الصورۃ فی البیت للحدیث ان الملئکۃ لا تدخل بیتا فیہ کلب او صورۃ الا چنانچہ فتح القدیر نے فرمایا

اگر تصویر پس پشت ہو یا اس کے دونوں پاؤں کے نیچے پڑی ہو تو شرح عتاب میں فرمایا کہ اس صورت میں نماز مکروہ نہ ہوگی لیکن تصویر کا گھر میں رکھنا مکروہ ہے اس حدیث کی بناء پر کہ "اس گھر میں رحمت کے فرشتے داخل نہیں ہوتے جس میں کتا یا تصویر ہو"۔ مگر

1 تبیین الحقائق کتاب الصلوۃ باب مایفسد الصلوۃ وما یکرہ فیھا المطبعۃ الکبری بولاق مصر ۱ / ۱۶۶

2 الھدایۃ کتاب الصلوۃ باب مایفسد الصلوۃ وما یکرہ فیھا المکتبۃ العربیہ کراچی ۱ / ۱۲۲ 3 تبیین الحقائق کتاب الصلوۃ باب مایفسد الصلوۃ وما یکرہ فیھا المطبعۃ الکبری بولاق مصر ۱ / ۱۶۷

Fatawa Razawiya Volume 24

[Left column (Arabic Text)] Indeed, this implies the dislike (makruh) of it being on a spread-out carpet and the absence of dislike if it is behind him. Their explicit speech in the first case is contrary to this. And his saying (i.e., the author of Al-Hidayah), "the most severe dislike is if it is in front of the person praying" until he said "then behind him," implies the opposite of the second [point] as well. However, it may be said that the dislike of prayer is established considering the resemblance to idol worship, and they [idolaters] do not turn their backs to them, nor do they trample them. So, in what is understood from what we mentioned from Al-Hidayah (i.e., regarding the dislike if it is behind the person praying), there is a point for reflection. It may be answered that there is no impossibility in its establishment in prayer considering the place, just as prayer was disliked in the bathhouse according to one of the two explanations, which is its being a refuge for devils. If it is said: Why then was it not said that it is disliked if it is under the foot? And what you mentioned supports this because it is in the house. This is also an objection against the author where he says it is not disliked...

[Right column (Urdu Text)] Its requirement is that if a picture is on a spread-out carpet, it will be disliked (makruh), but there will be no dislike at that time when the picture is behind him. And in the first case, the explicit words of the noble Imams are against it. And the statement of the author of Al-Hidayah is that the most severe dislike will be if a picture is in front of the person praying. He even said that after that, the degree of dislike will be less when the picture is behind him. And this necessitates a contradiction to the second case, but sometimes it is also said that the reason for the establishment of dislike in prayer is that it resembles idol worship, even though worshippers of any idol, in both cases, neither turn their backs to it nor do they trample it. But what we have mentioned from Al-Hidayah, it is understood from it that even if the picture is behind the person praying, there will be dislike. Therefore, there is a point for consideration and problem in this saying. But sometimes this answer is given that there is no distance in establishing the dislike of prayer in terms of place. Just as according to one reasoning, praying in a bathhouse is makruh because it is the abode (and center) of devils. If it were asked why it wasn't said that if the picture were under the feet, there would still be dislike, even though what was stated provides this benefit, because the picture is present in the house, despite the fact that from it...

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[बायां कॉलम (अरबी पाठ)] निश्चित रूप से, यह एक बिछे हुए कालीन पर इसके होने की नापसंदगी (मकरूह) और इसके पीछे होने की स्थिति में नापसंदगी के अभाव को दर्शाता है। पहले मामले में उनका स्पष्ट कथन इसके विपरीत है। और उनका कहना (अर्थात हिदाया के लेखक), "सबसे गंभीर नापसंदगी तब है जब यह नमाज़ पढ़ने वाले के सामने हो," जब तक कि उन्होंने यह नहीं कहा "फिर उसके पीछे," यह दूसरे बिंदु के विपरीत भी संकेत देता है। हालाँकि, यह कहा जा सकता है कि नमाज़ की नापसंदगी मूर्ति पूजा की समानता को ध्यान में रखते हुए स्थापित की गई है, और वे [मूर्तिपूजक] न तो उनके प्रति अपनी पीठ फेरते हैं, और न ही उन्हें रौंदते हैं। इसलिए, हमने हिदाया से जो उल्लेख किया है (अर्थात नमाज़ी के पीछे होने पर नापसंदगी के संबंध में), उसमें विचार करने योग्य बिंदु है। इसका उत्तर यह दिया जा सकता है कि स्थान को ध्यान में रखते हुए नमाज़ में इसकी स्थापना में कोई असंभावना नहीं है, जैसे कि दो स्पष्टीकरणों में से एक के अनुसार स्नानागार में नमाज़ पढ़ना नापसंद किया गया था, जो कि शैतानों का शरणस्थल होना है। यदि यह कहा जाए: तो फिर यह क्यों नहीं कहा गया कि यदि यह पैर के नीचे हो तो यह नापसंद है? और आपने जो उल्लेख किया है वह इसका समर्थन करता है क्योंकि यह घर में है। यह लेखक के विरुद्ध एक आपत्ति भी है जहाँ वे कहते हैं कि इसका होना... नापसंद नहीं है।

[दायां कॉलम (उर्दू पाठ)] इसका तकाज़ा तो यह है कि अगर तस्वीर किसी बिछी हुई कालीन पर हो तो मकरूह (नापसंद) होगी, लेकिन उस समय मकरूह नहीं होगी जब तस्वीर उसके पीछे हो। और पहली सूरत में अइम्मा किराम का स्पष्ट कलाम इसके विपरीत है। और हिदाया के लेखक का कहना है कि सबसे अधिक कराहत (नापसंदगी) तब होगी, जब कोई तस्वीर नमाज़ी के आगे हो। यहाँ तक कि उन्होंने कहा कि फिर उससे कम दर्जे की कराहत होगी जब तस्वीर उसके पीछे हो। और यह दूसरी सूरत के विपरीत का तकाज़ा करती है लेकिन कभी यह भी कह दिया जाता है कि नमाज़ में कराहत साबित होने की वजह यह है कि इसमें मूर्ति पूजा से समानता है, हालांकि किसी भी मूर्ति के पुजारी दोनों ही स्थितियों में न तो उससे पीठ फेरते हैं और न ही उसे पैरों तले रौंदते हैं, लेकिन जो कुछ हमने हिदाया से ज़िक्र किया उससे तो यही समझ आता है कि अगर तस्वीर नमाज़ी के पीछे हो तो भी मकरूह होगी। इसलिए इस कथन में विचार और आपत्ति है। लेकिन कभी यह जवाब दिया जाता है कि स्थान के लिहाज़ से नमाज़ की कराहत के साबित होने में कोई दूरी नहीं है। जैसा कि एक दलील के अनुसार हम्माम (स्नानगृह) में नमाज़ पढ़ना मकरूह है क्योंकि वह शैतानों का ठिकाना

(और केंद्र) है। अगर कहा जाए कि यह क्यों नहीं कहा गया कि अगर तस्वीर पैरों के नीचे पड़ी हो तो भी कराहत होगी, हालांकि जो कुछ बयान किया गया उससे तो यही फ़ायदा हासिल होता है, क्योंकि तस्वीर घर में मौजूद है, बावजूद इसके कि उससे...

[بایاں کالم (عربی متن)] ان هذا يقتضى كراهة كونها فى بساط مفروش وعدم الكراهة اذا كانت خلفه وصريح كلامهم فى الاول خلافه وقوله (اى صاحب الهداية) اشدها كراهة ان تكون امام المصلى الى ان قال ثم خلفه يقتضى خلاف الثانى ايضا لكن قد يقال كراهة الصلوة ثبت باعتبار التشبه بعبادة الوثن وليسوا يستدبرونه ولا يوطونه ففيما يفيما يفهم مماذكرنا من الهداية (اى من الكراهة اذا كانت خلف المصلى) نظر و قد يجاب بانه لا بعد في ثبوتها فى الصلوة باعتبار المكان كما كرهت الصلوة فى الحمام على احد التعليلين وهو كونها ماوى الشياطين فان قيل فلم لم يقل بالكراهة ان كانت تحت القدم وماذكرت يفيده لانها فى البيت، وبه يعترض على المصنف ايضا حيث يقول لايكره كونها

[دایاں کالم (اردو متن)] اس کا تقاضا تو یہ ہے کہ اگر تصویر کسی بچھے ہوئے بچھونے پر ہو تو کراہت ہوگی لیکن اس وقت کراہت نہ ہوگی جبکہ تصویر اس کے پیچھے ہو۔ اور در صورت اول ائمہ کرام کا صریح کلام اس کے خلاف ہے۔ اور صاحب ہدایہ کا ارشاد کہ شدید تر کراہت ہوگی، اگر کوئی تصویر نمازی کے آگے ہو۔ یہاں تک کہ فرمایا پھر اس سے کم درجہ کراہت ہوگی جبکہ تصویر اس کے پیچھے ہو۔ اور یہ صورت ثانیہ کے خلاف کا تقاضا کرتی ہے لیکن کبھی یہ بھی کہہ دیا جاتا ہے کہ نماز میں ثبوت کراہت کی وجہ یہ ہے کہ اس میں عبادت صنم سے تشبہ ہے، حالانکہ کسی صنم کے پجاری دونوں صورتوں میں نہ تو اس سے پیٹھ پھیرتے ہیں نہ ہی اسے پامال کرتے ہیں لیکن جو کچھ ہم نے ہدایہ سے ذکر فرمایا اس سے تو یہی مفہوم ہوتا ہے کہ اگر تصویر نمازی کے پیچھے ہو تو بھی کراہت ہوگی۔ لہذا اس قول میں نظر اور اشکال ہے۔ لیکن کبھی یہ جواب دیا جاتا ہے کہ بحیثیت مکان کراہت نماز کے ثبوت میں کوئی بعد نہیں۔ جیسا کہ ایک تعلیل کے مطابق حمام میں نماز پڑھنا مکروہ ہے اس لئے کہ وہ شیاطین کا ٹھکانا (اور مرکز) ہے۔ اگر

کہا جائے کہ یہ کیوں نہ کہا گیا کہ اگر تصویر پاؤں میں پڑی ہو تو بھی کراہت ہوگی، حالانکہ جو کچھ بیان فرمایا گیا اس سے تو یہ فائدہ حاصل ہوتا ہے، اس لئے کہ تصویر گھر میں موجود ہے، باوجودیکہ اس سے

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Table Top Section] Arabic: In a pillow placed (on the ground), the answer is that it is not disliked to place it in a location in such a manner so that it extends to the prayer. The Hadith of Gabriel is specific to that (summarized). Urdu: An objection could be raised against the author (may Allah have mercy upon him) because he states that if there is an image on a cushion placed down, there will be no dislike (karahat). The answer is that keeping an image in a house in this manner is not disliked so that it would affect the prayer. And the Hadith of Gabriel is specific to that, summarized. (T)

[Middle Text Section] His student, the researcher Ibn Amir al-Hajj, in 'Hilya', argued that the reason for prohibition is solely the prevention of angels' entry and denied it depends on resemblance (tashabbuh), although he said it increases the dislikedness (karahat).

[Table Bottom Section] Arabic: And this is his text: If it is said that the cause for the dislike is that the place where the prayer is performed is not entered by angels, then in that case, because the worst of places is a place where angels do not enter, it follows that the prayer should be disliked in a house containing an image, whether it is treated with disrespect or not. For the apparent text of the Sahihayn (Bukhari and Muslim) from the Prophet (may Allah the Almighty bless him and grant him peace) 'Angels do not enter a house in which there is a dog or an image' implies that angels do not enter this house also (meaning the one containing an image in a disrespectful state). Because an indefinite noun in a negative context is general, the ultimate point is that the dislike of prayer in... Urdu: Accordingly, this is the clarification of the mentioned researcher: If it is said that the cause of dislike is the non-entry of angels into the house, then in whichever house an image is present, the prayer there should be disliked, whether that image is in a state of disrespect or not. This is because the apparent text of Bukhari and Muslim implies exactly this—that angels will not enter that house in which an image is kept, even if in a state of disrespect. This is because an indefinite noun (nakira) in a negative context (siyaq-e-nafi) is general. And the text narrated from the Noble Prophet (may Allah Almighty bless him and his progeny and grant them peace) is that angels do not enter a house in which a dog or an image is present. (An indefinite noun in a negative context is general; its meaning is that in the pure Hadith, the word "baytan" is indefinite, meaning "any house," and this "la tadkhulu" which is a negative sentence, falls under it, meaning angels...)

[Footer] 1. Fath al-Qadir, Kitab as-Salat, Bab Yufsidu as-Salat wa Ma Yukrahu Fiha, Maktabah Nooriya Razawiyya Sukkur, 1/362

फ़तावा रज़विया खंड 24

[तालिका शीर्ष अनुभाग] अरबी: जमीन पर रखे तकिए के संबंध में, उत्तर यह है कि किसी स्थान पर इस तरह से चित्र रखना नापसंद नहीं है ताकि यह नमाज़ तक न फैले। जिब्रईल की हदीस इसके लिए विशिष्ट है (संक्षेप में)। उर्दू: लेखक (अल्लाह की उन पर रहमत हो) पर आपत्ति की जा सकती है क्योंकि वे कह रहे हैं कि यदि नीचे रखे गद्दे में चित्र हो तो अरुचि (कराहत) नहीं होगी। तो इसका उत्तर यह है कि मकान में इस प्रकार चित्र रखना मकरूह (नापसंद) नहीं है ताकि यह नमाज़ की ओर बढ़े। और जिब्रईल की हदीस इससे विशिष्ट है, संक्षेप में। (त)

[मध्य पाठ अनुभाग] उनके शिष्य, शोधकर्ता इब्न अमीर अल-हाज ने 'हिलिया' में तर्क दिया कि निषेध का कारण केवल फरिश्तों के प्रवेश में बाधा है और इस बात से इनकार किया कि यह समानता (तशब्बुह) पर आधारित है, हालांकि उन्होंने कहा कि यह अरुचि को बढ़ा देता है।

[तालिका निचला अनुभाग] अरबी: और यह उनका पाठ है: यदि यह कहा जाए कि अरुचि का कारण यह है कि जिस स्थान पर नमाज़ पढ़ी जाती है वहाँ फरिश्ते प्रवेश नहीं करते हैं, तो उस स्थिति में, क्योंकि सबसे खराब स्थान वह है जहाँ फरिश्ते प्रवेश नहीं करते हैं, तो यह निष्कर्ष निकलता है कि उस घर में नमाज़ नापसंद होनी चाहिए जिसमें चित्र हो, चाहे उसका अपमान किया जा रहा हो या नहीं। क्योंकि पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सहीहैन (बुखारी और मुस्लिम) का स्पष्ट पाठ है 'फरिश्ते उस घर में प्रवेश नहीं करते जिसमें कुत्ता या चित्र हो' यह दर्शाता है कि फरिश्ते इस घर में भी प्रवेश नहीं करते (यानी जिसमें चित्र अपमानित अवस्था में हो)। क्योंकि नकारात्मक संदर्भ में एक अनिश्चित संज्ञा व्यापक होती है, अंतिम बात यह है कि नमाज़ की अरुचि... उर्दू: तदनुसार, उक्त शोधकर्ता का स्पष्टीकरण यह है: यदि कहा जाए कि अरुचि का कारण घर में फरिश्तों का प्रवेश न करना है, तो जिस घर में चित्र मौजूद हो वहां नमाज़ मकरूह होनी चाहिए, चाहे वह चित्र अपमान की स्थिति में हो या अपमान के बिना, क्योंकि बुखारी और मुस्लिम का स्पष्ट पाठ यही चाहता है कि उस घर में फरिश्ते प्रवेश नहीं करेंगे जिसमें चित्र अपमानित अवस्था में ही रखा हो क्योंकि नकिरा नकारात्मक संदर्भ (सियाक-ए-नफ़ी) में व्यापक होता है। और जो पाठ हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से वर्णित है वह यह है कि उस घर में फरिश्ते प्रवेश नहीं करते जिसमें कुत्ता या चित्र मौजूद हो। (नकारात्मक संदर्भ में नकिरा व्यापक होता है, इसका अर्थ यह है कि हदीस पाक में शब्द "बेता" (baytan) नकिरा है जिसका अर्थ "कोई घर" है और यह "ला तदखुलु" जो नकारात्मक वाक्य है, इसके अंतर्गत आता है, यानी फरिश्ते...)

[पाद लेख] 1. फ़तह अल-क़दीर, किताब अस-सलात, बाब युफ़सिदु अस-सलात व मा युकराहु फ़ीहा, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, 1/362

[جدول کا اوپر والا حصہ] عربی: في وسادة ملقاة فالجواب لا یکرہ جعلھا في المکان کذلك لیتعدی الی الصلوۃ وحدیث جبریل مخصوص بذلك اھ ملخصا۔ اردو: مصنف علیہ الرحمہ پر اعتراض کیا جاسکتا ہے اس لئے کہ وہ فرما رہے ہیں کہ اگر پڑے ہوئے گدے میں تصویر ہو تو کراہت نہ ہوگی ، تو اس کا جواب یہ ہے کہ مکان میں بایں طور تصویر رکھنا مکروہ نہیں تاکہ نماز کی طرف تعدیہ ہو۔ اور حدیث جبریل اس سے مخصوص ہے اھ ملخصا (ت)

[درمیانی عبارت] ان کے تلمیذ محقق ابن امیر الحاج نے حلیہ میں صرف امتناع ملئکہ کے علت ہونے کا استظہار اور تشبہ پر مدار سے انکار فرمایا ، ہاں اسے موجب زیادت کراہت بتایا،

[جدول کا نچلا حصہ] عربی: وھذا نصہ فان قیل ان کانت العلۃ في الکراھۃ کون المحل الذی تقع فیہ الصلوۃ لاتدخلہ الملئکۃ حینئذ لان شر البقاع بقعۃ لا تدخلھا الملئکۃ فینبغی ان تکرہ الصلوۃ في بیت فیہ الصورۃ سواء کانت مھانۃ او غیر مھانۃ فان ظاھر نص الصحیحین عن النبي صلی اللہ تعالی علیہ وسلم لا تدخل الملئکۃ بیتا فیہ کلب ولا صورۃ یقتضی انہ لا تدخل الملئکۃ ھذا البیت ایضا (ای مافیہ الصورۃ مھانۃ) لان النکرۃ في سیاق النفی عامۃ غایۃ الامر ان کراھۃ الصلوۃ فیما اردو: چنانچہ محقق موصوف کی یہ تصریح ہے ، اگر کہا جائے کہ کراہت کی علت گھر میں فرشتوں کا داخل نہ ہونا ہے تو جس گھر میں تصویر موجود ہو وہاں نماز مکروہ ہو وہ تصویر خواہ تذلیل کی صورت میں ہو یا غیر تذلیل کی صورت میں ہو، کیونکہ بخاری اور مسلم کی ظاہر نص یہی چاہتی ہے کہ اس گھر میں فرشتے داخل نہ ہوں گے جس میں تصویر بصورت تذلیل ہی رکھی ہو کیونکہ نکرہ سیاق نفی میں عام ہوتا ہے، اور نص جو حضور اکرم (صلی اللہ تعالی علیہ وآلہ وسلم) سے مروی ہے وہ یہ ہے کہ اس گھر میں فرشتے داخل نہیں ہوتے کہ جس میں کتا یا تصویر موجود ہو۔ (نکرہ سیاق نفی میں

عام ہوتا ہے، اس کا مطلب یہ ہے کہ حدیث پاک میں لفظ "بیتا" نکرہ ہے جس کا معنی "کوئی گھر" ہے اور یہ "لاتدخلہ" جو جملہ منفیہ ہے اس کے تحت داخل ہے یعنی فرشتے

[حاشیہ] 1 فتح القدیر کتاب الصلوٰۃ باب یفسد الصلوٰۃ و ما یکرہ فیھا مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۳۶۲

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Arabic Box 1]: If the image is at the place of prostration, or in front of him, or above him, it is more severe [in dislikedness]. And if the reason for the dislike is the resemblance to the worship of images, then it is not disliked if it is not in front of him nor above his head, because resemblance only manifests in one of these two ways. The answer is that what appears is that the cause is the first matter, and as for the rest, it is an addition that indicates the severity of the dislike. Furthermore, the generality of the mentioned text is specifically limited by excluding what was previously excluded from being disliked. Summary.

[Urdu Box 1]: (Translator's note: They [Angels] do not enter a house where a picture is present in any state). The ultimate point is that in prayer, under these circumstances, there will be a more intense dislike if the picture is at the place of prostration, or in front of the worshiper, or above them. And if the reason for the dislike is the resemblance to image-worship, then if the picture is not in front of the worshiper or above their head, there would be no dislike, because resemblance is only apparent in these two scenarios. The response is that what is apparent is that the cause is only the first point, and anything beyond that adds to the severity of the dislike. Additionally, the generality of the stated text is specifically restricted; from it, that dislike has been excluded whose exclusion was mentioned earlier. Summary. (T)

On this basis, the reason for the denial of dislike regarding small images was explained by Bidayah, Kafi, Tabyin, and common scholars, and their Sheikh, the absolute researcher, commented and objected to it.

[Arabic Box 2]: So he said, as for the absence of dislike when the image is small and not visible to an observer from a distance, they said it is because it is not worshipped. The dislike was only due to the resemblance to worship, and you have known what is in this.

[Urdu Box 2]: Researcher Ibn al-Humam stated: As for the point that there will be no dislike when the picture is so small that it is not clear and prominent to a viewer from a distance, the Imams of jurisprudence said regarding the absence of dislike that such a small picture is not worshipped, and the establishment of dislike is due to the resemblance of worship; certainly, you have recognized the flaw in this. (T)

The author of Bahr followed them in Bahr, rather he decided upon their clear expression.

[Arabic Box 3]: So he said: "Indeed, prayer was not disliked in a house..."

[Urdu Box 3]: The author of Bahr al-Ra'iq said, to pray prayer in such a house...

---

1. Hilyat al-Mahalli Sharh Munyat al-Musalli
2. Hilyat al-Mahalli Sharh Munyat al-Musalli Page 595 of 720

फतावा रज़विया जिल्द 24

[अरबी बॉक्स 1]: यदि चित्र सजदा करने के स्थान पर, या उसके सामने, या उसके ऊपर हो, तो यह अधिक नापसंद (कराहत) है। और यदि नापसंदगी का कारण चित्र पूजा के समान होना है, तो यह नापसंद नहीं होगा यदि वह उसके सामने या उसके सिर के ऊपर न हो, क्योंकि समानता केवल इन्हीं दो तरीकों में से एक में प्रकट होती है। उत्तर यह है कि जो प्रकट होता है वह यह है कि कारण पहला मामला है, और बाकी के लिए, यह एक अतिरिक्त है जो नापसंदगी की तीव्रता का संकेत देता है। इसके अलावा, उल्लिखित पाठ की व्यापकता विशेष रूप से उन चीजों को बाहर करके सीमित है जिन्हें पहले नापसंदगी से बाहर रखा गया था। सारांश।

[उर्दू बॉक्स 1]: (अनुवादक की टिप्पणी: वे [फ़रिश्ते] उस घर में प्रवेश नहीं करते जहाँ किसी भी स्थिति में चित्र मौजूद हो)। मुख्य बात यह है कि नमाज़ में, इन परिस्थितियों में, अधिक तीव्र नापसंदगी (कराहत) होगी यदि चित्र सजदे के स्थान पर हो, या नमाज़ी के सामने हो, या उनके ऊपर हो। और यदि नापसंदगी का कारण चित्र-पूजा के साथ समानता है, तो यदि चित्र नमाज़ी के सामने या उनके सिर के ऊपर नहीं है, तो कोई नापसंदगी नहीं होगी, क्योंकि समानता केवल इन दो स्थितियों में ही स्पष्ट होती है। प्रतिक्रिया यह है कि जो स्पष्ट है वह यह है कि कारण केवल पहला बिंदु है, और उसके अलावा जो कुछ भी है वह नापसंदगी की गंभीरता को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त, उल्लिखित पाठ की व्यापकता विशेष रूप से प्रतिबंधित है; उससे वह नापसंदगी बाहर कर दी गई है जिसके निष्कासन का उल्लेख पहले आ चुका है। सारांश। (त)

इसी आधार पर, छोटे चित्रों के संबंध में नापसंदगी के खंडन का कारण बिदाया, काफी, तबयीन और आम विद्वानों द्वारा समझाया गया था, और उनके शेख, मुहाक्क़िक़ अली अल-इतलाक़ ने इस पर टिप्पणी और आपत्ति की।

[अरबी बॉक्स 2]: तो उन्होंने कहा, जहाँ तक नापसंदगी की अनुपस्थिति का सवाल है जब चित्र छोटा हो और दूर से देखने वाले को दिखाई न दे, तो उन्होंने कहा क्योंकि इसकी पूजा नहीं की जाती है। नापसंदगी केवल पूजा के समान होने के कारण थी, और आप जान चुके हैं कि इसमें क्या है।

[उर्दू बॉक्स 2]: मुहाक्क़िक़ इब्न अल-हुमाम ने कहा: जहाँ तक इस बात का संबंध है कि जब चित्र इतना छोटा हो कि दूर से देखने वाले के लिए स्पष्ट और प्रमुख न हो, तो कोई नापसंदगी नहीं होगी, न्यायशास्त्र के इमामों ने नापसंदगी की अनुपस्थिति के बारे में कहा कि ऐसे छोटे चित्र की पूजा नहीं

की जाती है, और नापसंदगी की स्थापना पूजा की समानता के कारण है; निश्चित रूप से, आपने इसमें जो दोष है उसे पहचान लिया है। (त)

बहर के लेखक ने बहर में उनका अनुसरण किया, बल्कि उनकी स्पष्ट अभिव्यक्ति पर निर्णय लिया।

[अरबी बॉक्स 3]: तो उन्होंने कहा: "वास्तव में, एक घर में नमाज़ नापसंद नहीं थी..."

[उर्दू बॉक्स 3]: बहर अल-राईक़ के लेखक ने कहा, ऐसे घर में नमाज़ पढ़ना...

---

1. हिल्या अल-महल्ली शरह मुन्या अल-मुसल्ली
2. हिल्या अल-महल्ली शरह मुन्या अल-मुसल्ली पृष्ठ 720 में से 595

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

[عربی باکس ۱]: اذا کانت الصورۃ فی موضع سجودہ اوامامہ اوفوقہ اشد وان کانت العلۃ فی الکراھۃ التشبہ بعبادۃ الصورۃ فلاتکرہ اذالم تکن امامہ ولا فوق راسہ لان التشبہ لا یظھر الا اذا کان علی احد ھذین الوجھین فالجواب ان الذی یظھر ان العلۃ ھی الامر الاول واما الباقی فعلاوۃ تفید اشدیۃ الکراھۃ غیر ان عموم النص المذکور مخصوص باخراج ماتقدم اخراجہ من الکراھۃ اھ ملخصا۔

[اردو باکس ۱]: کسی ایسے گھر میں نہیں جاتے جہاں کسی بھی حالت میں تصویر موجود ہو۔ مترجم) انتہائی امر یہ ہے کہ نماز میں اس صورت میں شدید تر کراہت ہوگی جبکہ تصویر محلِ سجدہ میں ہو یا نمازی کے آگے یا اس کے اوپر ، اور اگر کراہت کی علت عبادت تصویر سے تشبہ ہو تو اگر تصویر نمازی کے آگے یا اس کے سر کے اوپر نہ ہو تو کراہت نہ ہوگی کیونکہ تشبہ صرف ان دو صورتوں میں ظاہر ہوتا ہے۔ جواب یہ ہے کہ جو کچھ ظاہر ہوتا ہے وہ یہ ہے کہ علت صرف پہلا امر ہے اور اس کے علاوہ جو کچھ باقی ہے وہ شدید تر کراہت کا فائدہ دیتا ہے۔ علاوہ یہ کہ نصِ مذکور کا عموم ، مخصوص منہ البعض ہے کہ اس سے وہ کراہت خارج کردی گئی کہ جس کے اخراج کا ذکر پہلے آگیا ہے اھ ملخصاً (ت)

اسی بنا پر صور صغار سے نفی کراہت کی دلیل کہ بدایہ وکافی و تبیین وعامہ مشائخ کرام نے افادہ فرمائی اور ان کے شیخ محقق علی الاطلاق نے اس پر تقریر کی، اعتراض فرمادیا،

[عربی باکس ۲]: فقال اما عدم الکراھۃ اذاکانت الصورۃ صغیرہ لا تظھر للناظر علی بعد فقالوا لانھا لا تعبد والکراھۃ انما کانت باعتبار شبہ العبادۃ وقد عرفت ما فی ھذا ۔

[اردو باکس ۲]: محقق ابنِ ہمام نے فرمایا، رہی یہ بات کہ کراہت نہ ہوگی جبکہ تصویر اتنی چھوٹی ہو کہ دیکھنے والے کے لئے دور سے واضح اور نمایاں نہ ہو تو ائمہ فقہ نے عدم کراہت کے بارے میں ارشاد فرمایا کہ اس قدر چھوٹی تصویر کی عبادت نہیں کی جاتی ، اور تحقق کراہت باعتبارِ شبہ عبادت ہے ، بلا شبہ اس میں جو نقص ہے آپ اسے پہچان گئے (ت)

صاحبِ بحر نے بحر میں ان کی تبعیت کی بلکہ ان کے استظہار پر جزم کیا،

[عربی باکس ۳]: فقال انما لم تکرہ الصلوۃ فی بیت

[اردو باکس ۳]: مصنفِ بحرِ رائق نے فرمایا، ایسے گھر میں نماز پڑھنی

---

۱ حلیۃ المحلی شرح منیۃ المصلی ۲ حلیۃ المحلی شرح منیۃ المصلی صفحہ ۵۹۵ از ۷۲۰

Fatawa Rizvia Volume 24

| (Arabic) فيه صورة مهانة مع عموم الحديث ان الملئكة لاتدخله وهو علة الكراهة لوجود مخصص(الى ان قال)الا ان تكون صغيرة لان الصغار جدا لاتعبد والكراهة انما كانت باعتبار شبه العبادة كذا قالوا وقد عرفت مافيه اه قال فى منحة الخالق مافيه اى ان العلة ليست التشبه بل عدم دخول الملئكة عليهم السلام اه اقول: كل كلامه ههنا مأخوذ عن الحلية و ان لم يعز اليها ولم يقدم ماقدم هو لنفى علية التشبه من لزوم ان لاتكره اذا لم تكن امامه ولا فوقه فلم يستقم له قوله قد عرفت ما فيه۔ | (Urdu) It is not disliked where the image is humiliated, despite the general nature of the Hadith stating that angels do not enter a house with images. Their non-entry is the cause for dislike, despite the existence of a specific qualifier. It was mentioned, "unless it is very small, because extremely small images are not worshipped." The dislike is due to the resemblance to worship, as stated by the Imams. You know the weakness in this view. In "Minhat al-Khaliq," it is stated that the reason (cause) is not just the resemblance (to idols), but rather the non-entry of angels, peace be upon them. I say: All of his speech here is taken from "Al-Hilyah," although he did not attribute it to it nor did he put forward what he (the author of Hilyah) put forward to negate the causality of resemblance based on the necessity that prayer is not disliked if the image is not in front or above. Therefore, his statement "you already know what is in it" is not correct or straight. |

Then Muhaqqiq Halabi, during the course of the discussion, also inclined towards the two remaining causes, namely resemblance and glorification, to the extent that he made the form of resemblance and the likeness of glorification a cause (for dislike), and Al-Bahr followed suit as usual.

| (Arabic) وهذا نص الحلية بعد ما قدمنا عنها ذكر الاحاديث المخصصة، قال نعم على هذا يقال ينبغى ان لاتكره الصلوة على بساط فيه صورة وان كانت فى | (Urdu) This is the text from "Al-Hilyah" after what we previously mentioned from it regarding the citation of specific Hadiths. He said: "Yes, based on this, it can be said that it is appropriate that prayer on a rug containing an image should not be disliked, even if it is..." |

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Salah, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, H.M. Saeed Company Karachi, 1/27, 28.
2. Minhat al-Khaliq 'ala al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, H.M. Saeed Company Karachi, 1/27, 28.

फतावा रज़विया जिल्द 24

| (Arabic) فيه صورة مهانة مع عموم الحديث ان الملئكة لاتدخله وهو علة الكراهة لوجود مخصص(الى ان قال)الا ان تكون صغيرة لان الصغار جدا لاتعبد والكراهة انما كانت باعتبار مافيه اه قال فى منحة الخالق مافيه اى ان العلة ليست تشبه العبادة كذا قالوا وقد عرف التشبه بل عدم دخول الملئكة عليهم السلام اه اقول: كل كلامه ههنا مأخوذ عن الحلية و ان لم يعز اليها ولم يقدم ماقدم هو لنفى علية التشبه من لزوم ان لاتكره اذا لم تكن امامه ولا فوقه فلم يستقم له قوله قد عرفت ما فيه۔ | (Hindi) यह मकरूह (नापसंद) नहीं है जहाँ चित्र का अपमान हो, बावजूद हदीस की व्यापकता के कि चित्र वाले घर में फ़रिश्ते प्रवेश नहीं करते। उनका प्रवेश न करना ही कराहत (नापसंदगी) का कारण है, इसके बावजूद कि इसका एक विशिष्ट कारण (मखसूस) मौजूद है। यहाँ तक कि कहा गया, "सिवाय इसके कि चित्र बहुत छोटा हो, क्योंकि बहुत छोटे चित्रों की पूजा नहीं की जाती।" कराहत इबादत (पूजा) की समानता के आधार पर है, जैसा कि अइम्मा (इमामों) ने फरमाया है। और आप जानते हैं कि इसमें क्या कमज़ोरी है। "मिन्हतुल खालिक" में फरमाया गया कि कारण केवल समानता नहीं है, बल्कि फ़रिश्तों का वहां प्रवेश न करना है। मैं कहता हूँ: यहाँ उनका सारा कलाम "अल-हिलिया" से लिया गया है, हालाँकि उन्होंने उसकी ओर संकेत नहीं किया और न ही उसे पहले ज़िक्र किया जिसे उन्होंने (हिलिया के लेखक ने) समानता की वजह को नकारने के लिए पेश किया था, इस आधार पर कि नमाज़ मकरूह नहीं होती जब चित्र सामने या ऊपर न हो। इसलिए, उनका यह कहना कि "आप पहले से ही जानते हैं कि इसमें क्या है" सही और सुसंगत नहीं है। |

फिर मुहक़्क़िक़ ह़लबी ने बातचीत के दौरान बाकी दो कारणों, यानी तशबीह (समानता) और ताज़ीम (महिमामंडन) की ओर भी झुकाव दिखाया, यहाँ तक कि तशबीह और ताज़ीम की समानता को (कराहत का) कारण ठहराया, और बहर ने भी अपनी आदत के अनुसार उनका अनुसरण किया।

| (Arabic) وهذا نص الحلية بعد ما قدمنا عنها ذكر الاحاديث المخصصة، قال نعم على هذا يقال ينبغى ان لاتكره الصلوة على بساط فيه صورة وان كانت فى | (Hindi) "अल-हिलिया" का यह स्पष्टीकरण है, इसके बाद जो हमने इसके हवाले से पहले बयान किया है और विशिष्ट हदीसों

के उल्लेख के बाद उन्होंने फरमाया: "हाँ, इस तरीके से यह कहा जा सकता है कि फिर तो उचित है कि नमाज़ ऐसे बिछौने पर..." |

1. अल-बहररार्इक, किताबुस सलात, बाब मा युफसिदुस सलात व मा युकरहु फीहा, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/27, 28।
2. मिन्हतुल खालिक अलल बहररार्इक, बाब मा युफसिदुस सलात व मा युकरहु फीहा, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/27, 28।

| فیه صورة مهانة مع عموم الحدیث ان الملئکة لاتدخله وهو علة الکراهة لوجود مخصص(الی ان قال)الا ان تکون صغیرة لان الصغار جدا لاتعبد والکراهة انما کانت باعتبار شبه العبادة کذا قالوا وقد عرفت مافیه اه قال فی منحة الخالق مافیه ای ان العلة لیست التشبه بل عدم دخول الملئکة علیهم السلام اه اقول: کل کلامه ههنا مأخوذ عن الحلیة و ان لم یعز الیها ولم یقدم ماقدم هو لنفی علیة التشبه من لزوم ان لاتکره اذا لم تکن امامه ولا فوقه فلم یستقم له قوله قد عرفت ما فیه۔ | مکروہ نہیں کہ جس میں تصویر کی تذلیل ہو باوجود عموم حدیث کہ تصویر والے گھر میں فرشتے داخل نہیں ہوتے، اور ان کا غیر دخول کراہت کے لئے علت ہے باوجودیکہ اس کا مخصص موجود ہے، یہاں تک کہ فرمایا، مگر یہ کہ تصویر چھوٹی ہو، کیونکہ بلا شبہ چھوٹی تصویروں کی عبادت نہیں ہوتی، اور کراہۃ باعتبارِ شبہ عبادت ہے، ائمہ کرام نے یونہی ذکر فرمایا۔ اور تمہیں معلوم ہے جو کچھ اس میں کمزوری ہے اھ، منحۃ الخالق میں فرمایا جو کچھ اس میں ہے (مافیہ) یعنی علت محض تشبہ نہیں بلکہ ملائکہ کرام علیہم السلام کا وہاں عدم دخول ہے اھ اقول: (میں کہتا ہوں) یہاں ان کا سارا کلام الحلیہ سے ماخوذ ہے اگرچہ اس کی طرف نسبت نہیں کی اور مقدم نہیں کیا (یعنی پہلے ذکر نہیں کیا) جو کچھ اس نے مقدم کیا تھا "علیہ" تشبہ کی نفی کے لئے بوجہ اس لزوم کے کہ نماز مکروہ نہیں ہوتی جبکہ تصویر آگے اور اوپر نہ ہو۔ لہٰذا اس کا یہ کہنا کہ قد عرفت مافیہ ٹھیک اور مستقیم نہیں۔ (ت) |

پھر محقق حلبی نے اثنائے کلام میں دو علت باقی اعنی تشبہ و تعظیم کی طرف بھی میل فرمایا یہاں تک کہ صورت تشبہ و شبہ تعظیم کو موجب ٹھہرایا، اور بحر نے بدستور اتباع کیا،

| وھذا نص الحلیة بعد ما قدمنا عنھا ذکر الاحادیث المخصصة، قال نعم علی ھذا یقال ینبغی ان لاتکرہ الصلوة علی بساط فیه صورة وان کانت فی | حلیہ کی یہ تصریح، اس کے بعد سے جو کچھ ہم اس کے حوالہ سے پہلے بیان کر آئے ہیں اور بعد ذکر فرمانے احادیث مخصصہ کے فرمایا چنانچہ اس نے کہا کہ ہاں اس روش پر یہ کہا جاسکتا ہے کہ پھر تو مناسب ہے کہ نماز ایسے بچھونے پر |

1 بحر الرائق کتاب الصلوة باب مایفسد الصلوة ومایکرہ فیھا ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۲۸، ۲۷

2 منحة الخالق علی البحر الرائق باب مایفسد الصلوة ومایکرہ فیھا ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۲۸، ۲۷

Fatawa Razawiya, Volume 24

[Arabic column]: ...the place of prostration, because that does not prevent the entry of angels as indicated by these texts (1). If you say that the dislike in this case is only due to the reason of resembling the worship of idols and nothing else, I say it is possible to say that the existence of the mentioned resemblance in this case is denied, for the worshippers of statues and images do not prostrate upon them, but rather they set them up and turn towards them. Rather, what should be disliked according to this is when the image is in front of him, not in the place of his prostration. O Allah! [Help us]. Except if it is said that when it is in front of him in the place of prostration, it becomes a form of resemblance to worshipping it during the standing and bowing states in prayer. Then, in the state of prostrating upon it, even if resemblance to its worship is not found, it is not free from a type of resemblance to honoring the images, because that resembles the form of humility towards it and kissing it. And there is no harm in this explanation, even if they (the scholars) did not mention it.

[Urdu column]: ...it should not be disliked if there is an image in it, even if it is in the place of prostration, because this does not prevent the entry of angels as these texts have benefited. If it is said that in this case, the cause of the reasoned dislike is only the resemblance to the worship of idols and nothing else, I say it is possible to say that the occurrence of the mentioned "resemblance" in this case is denied (unaccepted), because the worshippers of statues and images do not prostrate on them, but rather they keep them standing and turn towards them. Rather, it is appropriate that in this case the dislike should be when the image is in front of him and not in the place of his prostration. O Allah! It is with Your help that it is said that when the image is in front of him in his place of prostration, then during prayer in the states of standing and bowing, a form of resemblance to worship will be found. Then, in the case of prostrating on the image, even if resemblance to worship for the image is not found, yet this state will not be free from having a type of resemblance to the glorification of images, because this state will be similar to humility towards the image and kissing it. And there is no harm in mentioning this explanation, even if the venerable Imams did not mention it. (T)

Allama Shami maintained two reasons, resemblance and glorification, and deemed the reasoning based on the prevention of angels as inappropriate.

1 Hilyat al-Muhalla Sharh Munyat al-Musalli Page 597 of 720

फ़तावा रज़विया, खंड 24

[अरबी कॉलम]: ...सिजदे का स्थान, क्योंकि यह फरिश्तों के प्रवेश को नहीं रोकता जैसा कि इन ग्रंथों (1) ने बताया है। यदि आप कहें कि इस स्थिति में नापसंदगी केवल मूर्तियों की पूजा के समान होने के कारण है और कुछ नहीं, तो मैं कहता हूँ कि यह कहा जा सकता है कि इस स्थिति में उल्लेखित 'समानता' का पाया जाना वर्जित (अस्वीकार्य) है क्योंकि मूर्तियों और चित्रों के पुजारी उन पर सिजदा नहीं करते, बल्कि उन्हें स्थापित करके उनकी ओर उन्मुख होते हैं। बल्कि उचित यह है कि इसके अनुसार नापसंदगी तब हो जब चित्र उसके सामने हो, न कि उसके सिजदे के स्थान पर। ऐ अल्लाह! [मदद कर]। सिवाय इसके कि यह कहा जाए कि जब वह सिजदे के स्थान पर उसके सामने हो, तो नमाज़ में खड़े होने और झुकने (रुकू) की स्थिति में वह उसकी पूजा की समानता का रूप बन जाता है। फिर उस पर सिजदा करने की स्थिति में, भले ही उसकी पूजा की समानता न पाई जाए, फिर भी यह स्थिति इससे खाली नहीं होगी कि इसमें चित्रों के सम्मान की एक प्रकार की समानता होगी, क्योंकि यह स्थिति उसके प्रति विनम्रता और उसे चूमने के समान होगी। और इस व्याख्या का उल्लेख करने में कोई हर्ज नहीं है, भले ही इमामों (विद्वानों) ने इसका उल्लेख नहीं किया हो।

[उर्दू कॉलम]: ...मक़रूह न हो कि जिसमें तस्वीर हो अगरचे वह जाए-सिजदा में हो क्योंकि यह दुखुल-ए-मलइक़ा (फ़रिश्तों के प्रवेश) से मानअ (बाधक) नहीं जैसा कि इन नुसूस (ग्रंथों) ने अफ़ादा बख़्शा। अगर कहा जाए कि इस सूरत में कराहत-ए-मुअल्लला की इल्लत (कारण) सिर्फ़ तशब्बा इबादत-ए-असनाम (मूर्तियों की पूजा की समानता) है और कुछ नहीं। मैं कहता हूँ मुमकिन है यह कहा जाए कि इस सूरत में "तशब्बा" मज़कूर (उल्लिखित समानता) का पाया जाना ममनू (अस्वीकार्य) है इसलिए कि मूर्तियों और तस्वीरों के पुजारी उन पर सिजदा नहीं करते बल्कि उन्हें खड़ा करके उनकी तरफ़ मुतवज्जा रहते हैं बल्कि मुनासिब यह है कि इस सूरत में कराहत उस वक़्त हो कि जब तस्वीर उसके आगे हो न कि उसके महल-ए-सिजदा में हो। ऐ अल्लाह! तेरी ही नुसरत (सहायता) से यह कहा जाए कि जब तस्वीर उसके आगे उसकी जाए-सिजदा में हो तो फिर नमाज़ में ब-हालत-ए-क़ियाम और रुकूअ तशब्बा इबादत सूरतन पाया जाएगा, फिर तस्वीर पर सिजदा करने की सूरत में अगरचे तस्वीर के लिए तशब्बा इबादत न पाया जाएगा ताहम यह हाल इस से ख़ाली न होगा कि इसमें ताज़ीम-ए-तस्वीर का एक नौअ शब्बा होगा, क्योंकि यह सूरत तस्वीर के लिए आजिज़ी और उसकी बोसा-ज़नी (चूमने) के मुशाबा होगी और इस तौजीह के ज़िक्र करने में कुछ हर्ज नहीं अगरचे अइम्मा-ए-किराम ने इसे ज़िक्र नहीं फ़रमाया। (त)

अल्लामा शामी ने तशब्बा और ताज़ीम दो इल्लतें रखीं और इमतिना-ए-मलइक़ा से तालील को नामुनासिब ठहराया।

1 हिल्यतुल महल्ली शरह मुन्यतुल मुसल्ली पृष्ठ 597 / 720

[عربی کالم]: موضع السجود لان ذلك ليس بمانع من دخول الملئكة كما افادته هذه النصوص ۱، فان قلت الكراهة في هذه الصورة انما هي معللة بالتشبه بعبادة الاصنام لا غير قلت يمكن ان يقال وجود التشبه المذكور في هذه الصورة ممنوع فان عباد التماثيل والصور لا يسجدون عليها وانما ينصبونها ويتوجهون اليها بل الذي ينبغي ان يكره على هذا ما اذا كانت الصورة امامه لا في موضع سجوده اللهم الا ان يقال انها اذا كانت امامه في موضع سجوده تكون في الصلوة صورة الشبه بالعبادة لها في حالة القيام والركوع ثم في حالة السجود عليها ان لم يوجد التشبه بعبادتها فهو لا يعرى عن نوع شبه بتعظيم الصور لان ذلك يشبه في صورة الخضوع لها وتقبيلها ولا باس بهذا التوجيه وان لم يذكروه۔

[اردو کالم]: مکروہ نہ ہو کہ جس میں تصویر ہو اگرچہ وہ جائے سجدہ میں ہو کیونکہ یہ دخول ملائکہ سے مانع نہیں جیسا کہ ان نصوص نے افادہ بخشا ۔ اگر کہا جائے کہ اس صورت میں کراہت معللہ کی علت صرف تشبہ عبادت اصنام ہے اور کچھ نہیں ۔ میں کہتا ہوں ممکن ہے یہ کہا جائے کہ اس صورت میں "تشبہ" مذکور کا پایا جانا ممنوع (غیر مسلم) ہے اس لئے کہ مورتیوں اور تصویروں کے پجاری ان پر سجدہ نہیں کرتے بلکہ انہیں کھڑا کر کے ان کی طرف متوجہ رہتے ہیں بلکہ مناسب یہ ہے کہ اس صورت میں کراہت اس وقت ہو کہ جب تصویر اس کے آگے ہو نہ کہ اس کے محل سجدہ میں ہو۔ اے اللہ ! تیری ہی نصرت سے یہ کہا جائے کہ جب تصویر اس کے آگے اس کی جائے سجدہ میں ہو تو پھر نماز میں بحالت قیام اور رکوع تشبہ عبادت صورتاً پایا جائے گا ، پھر تصویر پر سجدہ کرنے کی صورت میں اگرچہ تصویر کے لئے تشبہ عبادت نہ پایا جائے گا تاہم یہ حال اس سے خالی نہ ہوگا کہ اس میں تعظیم تصویر کا ایک نوع شبہ ہوگا، کیونکہ

یہ صورت تصویر کے لئے عاجزی اور اس کی بوسہ زنی کے مشابہ ہو گی اور اس توجیہ کے ذکر کرنے میں کچھ حرج نہیں اگرچہ ائمہ کرام نے اسے ذکر نہیں فرمایا ۔ (ت)

علامہ شامی نے تشبہ و تعظیم دو علتیں رکھیں اور امتناع ملائکہ سے تعلیل کو نامناسب ٹھہرایا

۱ حلیۃ المحلی شرح منیۃ المصلی صفحہ 597 / 720

Fatawa Razawiyya Volume 24

Firstly, following Hidayah and others, he said: [Arabic] The cause of the dislike of prayer with it [a picture] is imitation [in worship].[1] [Urdu] The cause of the dislike of performing prayer with a picture is imitation in worship. (T)

Then, after a few statements, it was written: [Arabic] It has become clear from this that the cause of dislike in all [these] matters is either veneration or imitation, contrary to what follows.[2] [Urdu] From this, it became manifest and clear that in all these issues, the reason for the dislike is one of two things: (1) veneration, (2) or imitation in worship. Contrary to what will come ahead. (T)

Then after one page, summarizing the mentioned discourse of Hilya and Bahr, he said: [Arabic] I say: What appears from their [the scholars'] speech is that the cause is either veneration or imitation, as we have previously stated. Veneration is more general, as if it [the picture] were on his right, or his left, or the place of prostration; for there is no imitation in it, but rather there is veneration in it. And whatever contains both veneration and imitation is more severely disliked. And the report from Gabriel (peace and blessings be upon him) is linked to veneration, as evidenced by another Hadith and others. Thus, the angels refrain from entering only where the picture is venerated. And the reasoning for the dislike of prayer [is due to it]... [Urdu] I say, what is apparent from their (the noble Imams') speech is that the cause of dislike is veneration or imitation, as we have previously stated. Veneration is more general, such as if the picture is on his right or left side or in his place of prostration (then veneration will be found), because in these cases there is no imitation in worship, but rather only veneration. However, in a case where both veneration and imitation are present, the dislike will be more severe. The report from Hadrat Jibril (peace be upon him) is caused by veneration; its proof is another Hadith etc. The angels do not enter where a picture is kept with veneration. And the reasoning for the dislike of prayer [is linked] to veneration...

[1] Rad al-Muhtar, Kitab al-Salat, Bab Ma Yufsidu al-Salat wa Ma Yukrahu fiha, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/435 [2] Rad al-Muhtar, Kitab al-Salat, Bab Ma Yufsidu al-Salat wa Ma Yukrahu fiha, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/435

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

सबसे पहले हिदाया और अन्य का अनुसरण करते हुए फ़रमाया: [अरबी] नमाज़ में इसके साथ मकरूह (नापसंद) होने का कारण समानता (तशब्बुल) है।[1] [उर्दू] तस्वीर के साथ नमाज़ पढ़ने की मकरूहियत का कारण इबादत में समानता है। (त)

फिर कुछ कथनों के बाद लिखा: [अरबी] इससे स्पष्ट हो गया कि इन सभी मसलों में कराहत (नापसंदगी) का कारण या तो ताज़ीम (सम्मान) है या तशब्बुल (समानता), उसके विपरीत जो आगे आएगा।[2] [उर्दू] इससे यह ज़ाहिर और वाज़ेह हुआ कि इन तमाम मसाइल में कराहत की इल्लत (कारण) दो चीज़ों में से एक चीज़ है। (1) ताज़ीम (2) या तशब्बुल-ए-इबादत। इसके ख़िलाफ़ है जो कुछ आगे आएगा। (त)

फिर एक सफ़े के बाद ज़िक्र किए गए कलाम (हिल्या और बहर) का सारांश देते हुए फ़रमाया: [अरबी] मैं कहता हूँ: उनके कलाम से जो ज़ाहिर होता है वह यह है कि कारण या तो ताज़ीम है या तशब्बुल जैसा कि हमने पहले पेश किया है। ताज़ीम ज़्यादा आम है, जैसे कि अगर वह (तस्वीर) उसके दाहिने या बाएं या सजदे की जगह पर हो, क्योंकि इसमें तशब्बुल नहीं है बल्कि ताज़ीम है। और जिस चीज़ में ताज़ीम और तशब्बुल दोनों हों, वह सबसे ज़्यादा मकरूह है। और हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम की ख़बर ताज़ीम से जुड़ी है, जिसका प्रमाण दूसरी हदीस आदि है। फ़रिश्तों का प्रवेश न करना केवल वहीं है जहाँ तस्वीर ताज़ीम के साथ रखी हो। और नमाज़ की कराहत का कारण... [उर्दू] मैं कहता हूँ जो कुछ उनके(अइम्मा किराम के) कलाम से ज़ाहिर होता है वह यह है कि कराहत की इल्लत ताज़ीम या तशब्बुल है, जैसा कि हमने उसे पहले बयान कर दिया है, और ताज़ीम ज़्यादा आम है जैसा कि अगर तस्वीर उसकी दाईं या बाईं तरफ़ हो या उसके महले सजदा में हो (तो ताज़ीम पाई जाएगी) क्योंकि इन सूरतों में तशब्बुल-ए-इबादत नहीं बल्कि उनमें सिर्फ़ ताज़ीम है, लेकिन जिस सूरत में ताज़ीम और तशब्बुल दोनों हों तो फिर उसमें शदीद तर (अत्यधिक) कराहत होगी, और हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम की ख़बर मअलूल बिल-ताज़ीम है (ताज़ीम के कारण है) इसकी दलील दूसरी हदीस वग़ैरह है और फ़रिश्तों का दाख़िल न होना वहाँ है जहाँ तस्वीर ताज़ीम से रखी हो, और नमाज़ के मकरूह होने की तालील (तर्क) ताज़ीम को...

[1] रद अल-मुह्तार, किताब अल-सलात, बाब मा युफसिदु अल-सलात व मा युकराहु फिहा, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 1/435 [2] रद अल-मुह्तार, किताब अल-सलात, बाब मा युफसिदु अल-सलात व मा युकराहु फिहा, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 1/435

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

اولاً باتباع ہدایہ وغیرہ فرمایا: علة کراھة الصلوة بھا التشبہ[1]. تصویر کے ساتھ نماز پڑھنے کی کراہت کی علت تشبہ عبادت ہے (ت)

پھر چند قول کے بعد لکھا: قد ظھر من ھذا ان علة الکراھة في المسائل کلھا اما التعظیم او التشبہ علی خلاف ماياتي[2]. اس سے یہ ظاہر اور واضح ہوا کہ ان تمام مسائل میں کراہت کی علت دو چیزوں میں سے ایک چیز ہے۔ (۱) تعظیم (۲) یا تشبہ عبادت۔ اس کے خلاف ہے جو کچھ آگے آئے گا۔ (ت)

پھر ایک صفحہ کے بعد کلام مذکور حلیہ و بحر تلخیص کر کے فرمایا: اقول: الذی یظھر من کلامھم ان العلة اما التعظیم او التشبہ کما قدمناہ والتعظیم اعم کما لو کانت عن یمینہ او یسارہ او موضع سجود فانہ لا تشبہ فیھا بل فیھا تعظیم، و ماکان فیہ تعظیم و تشبہ فھو اشد کراھة، وخبر جبریل علیہ الصلوة والسلام معلول بالتعظیم بدلیل الحدیث الأخر وغیرہ فعدم دخول الملئکة انما ھو حیث کانت الصورة معظمة وتعلیل کراھة الصلوة میں کہتا ہوں جو کچھ ان کے (ائمہ کرام کے) کلام سے ظاہر ہوتا ہے وہ یہ ہے کہ کراہت کی علت تعظیم یا تشبہ ہے، جیسا کہ ہم نے اس کو پہلے بیان کر دیا ہے، اور تعظیم زیادہ عام ہے جیسا کہ اگر تصویر اس کی دائیں یا بائیں طرف ہو یا اس کے محل سجدہ میں ہو (تو تعظیم پائی جائے گی) کیونکہ ان صورتوں میں تشبہ عبادت نہیں بلکہ ان میں صرف تعظیم ہے، لیکن جس صورت میں تعظیم اور تشبہ دونوں ہوں تو پھر اس میں شدید تر کراہت ہوگی، اور حضرت جبریل علیہ السلام کی خبر معلول بالتعظیم ہے اس کی دلیل دوسری حدیث وغیرہ ہے اور فرشتوں کا داخل نہ ہونا وہاں ہے جہاں تصویر تعظیم سے رکھی ہو، اور نماز کے مکروہ ہونے کی تعلیل تعظیم کو

[1] ردالمحتار کتاب الصلوۃ باب مایفسد الصلوۃ ومایکرہ فیھا داراحیاء التراث العربی بیروت ۱ / ۴۳۵

[2] ردالمحتار کتاب الصلوۃ باب مایفسد الصلوۃ ومایکرہ فیھا داراحیاء التراث العربی بیروت ۱ / ۴۳۵

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Table Header: Left side Arabic text / Right side Urdu translation]

[Box 1] (Arabic): Choosing 'veneration' (of images) as the reason is better than the reasoning of 'non-entry of angels'. This is because veneration can sometimes be accidental; for instance, if a picture is on a spread-out rug, it is being treated with disdain and thus would not prevent the entry of angels. Despite this, if someone prays on that rug and prostrates upon the picture, it would be disliked (Makruh) because such an act constitutes veneration for it. It is evident that angels are not barred from entry due to such a temporary, accidental act. (Urdu): Regarding the non-entry of angels as the primary reason, it is far better to base the ruling on veneration. Veneration can be accidental; for example, if an image is on a floor mat in a state of humiliation, it will not prevent angels from entering. However, if one prays on that mat and prostrates on the image, it will be disliked because this act is a form of veneration for the image. Clearly, angels are not stopped from entering due to such a temporary act. (T)

[Middle Text]: It is surprising that Allama Qawam Kaki in 'Dirayah' considered the ruling of dislike (Karahah) to be established even when both veneration and resemblance are absent. In 'Durr al-Mukhtar' it is stated:

[Box 2] (Arabic): There is a difference of opinion regarding when the image is behind the person, but the more apparent view is that it is disliked. (Urdu): There is a disagreement regarding a picture being behind one's back; the more apparent view is that it will be disliked, etc. (T)

[Middle Text]: In 'Radd al-Muhtar' it is stated:

[Box 3] (Arabic): But it is easier in this case because there is neither veneration nor resemblance in it (referring to 'Mi'raj'). (Urdu): But the dislike in this case is lighter because there is neither veneration nor resemblance in it, Mi'raj. (T)

[Middle Text]: Allama Shami provided this explanation for this negation:

[Box 4] (Arabic): I say: The reason for the lack of veneration when the image is behind the person—even if it is on a wall or a curtain—is that turning one's back to it is a form of disdain towards it. This disdain contradicts the veneration implied by hanging it. This is unlike the case where the image is on a spread-out rug and one does not prostrate on it, for in that case, it is being treated with disdain in every way. (Urdu): I

say: If a picture is behind someone's back, it is as if there is no veneration for it, even if it is on a wall or a curtain. This is because keeping it behind one's back is a form of insult and disdain, which counters the veneration associated with hanging a picture. In contrast, if a picture is on a spread rug but one does not prostrate on it, then in every respect it is...

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Salah, Bab Ma Yufsidu al-Salah wa Ma Yukrahu Fiha, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/436 2. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Salah, Bab Ma Yufsidu al-Salah wa Ma Yukrahu Fiha, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/92 3. Radd al-Muhtar, Kitab al-Salah, Bab Ma Yufsidu al-Salah wa Ma Yukrahu Fiha, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/435

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[तालिका शीर्षक: बाईं ओर अरबी पाठ / दाईं ओर उर्दू अनुवाद]

[बॉक्स 1] (अरबी): 'ताज़ीम' (सम्मान) को कारण मानना 'फ़रिश्तों के प्रवेश न करने' के तर्क से कहीं बेहतर है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ताज़ीम कभी-कभी अस्थायी होती है; उदाहरण के लिए, यदि कोई चित्र बिछाई गई चटाई पर है, तो उसे अपमानित माना जाता है और वह फ़रिश्तों के प्रवेश को नहीं रोकता है। इसके बावजूद, यदि कोई उस चटाई पर नमाज़ पढ़ता है और उस चित्र पर सजदा करता है, तो यह मकरूह (नापसंद) होगा क्योंकि ऐसा करना उस चित्र की ताज़ीम है। यह स्पष्ट है कि फ़रिश्ते ऐसे अस्थायी कार्य के कारण प्रवेश करने से नहीं रुकते। (उर्दू): फ़रिश्तों के प्रवेश न करने को कारण बताने से कहीं बेहतर यह है कि इसे ताज़ीम (सम्मान) पर आधारित माना जाए। क्योंकि ताज़ीम कभी अस्थायी होती है, जैसे चित्र किसी बिछे हुए बिछौने पर अपमान की स्थिति में हो, तो यह फ़रिश्तों के प्रवेश में बाधक नहीं होगा। इसके बावजूद अगर उस बिछौने पर नमाज़ पढ़े और चित्र पर सजदा करे तो कराहत (नापसंदगी) होगी, क्योंकि उसका यह कार्य चित्र की ताज़ीम है। ज़ाहिर है कि इस अस्थायी कार्य के कारण फ़रिश्ते वहां जाने से नहीं रुकते। (त)

[मध्य पाठ]: आश्चर्य है कि अल्लामा क़वाम काकी ने 'दिरायः' में कुछ स्थितियों में ताज़ीम और तशब्बुह (समानता) दोनों के न होने के बावजूद कराहत को साबित माना है। 'दुर्रे मुख़्तार' में है:

[बॉक्स 2] (अरबी): इस बात पर मतभेद है कि जब चित्र व्यक्ति के पीछे हो, और अधिक स्पष्ट मत यह है कि यह मकरूह है। (उर्दू): इसमें मतभेद किया गया है जब चित्र पीठ पीछे हो, अधिक स्पष्ट यही है कि कराहत होगी आदि। (त)

[मध्य पाठ]: 'रद्दुल मुहतार' में है:

[बॉक्स 3] (अरबी): लेकिन इसमें यह आसान है क्योंकि इसमें न तो ताज़ीम है और न ही तशब्बुह, मेराज। (उर्दू): लेकिन इसमें कराहत आसान (कम) है क्योंकि इसमें न तो ताज़ीम है और न ही तशब्बुह, मेराज। (त)

[मध्य पाठ]: अल्लामा शामी ने इस निषेध की यह व्याख्या की है:

[बॉक्स 4] (अरबी): मैं कहता हूँ: जब चित्र पीठ पीछे हो तो ताज़ीम का न होना—चाहे वह दीवार या पर्दे पर ही क्यों न हो—इसलिए है कि उसकी ओर पीठ करना उसका अपमान है। यह अपमान उसे

लटकाने से होने वाली ताज़ीम के विपरीत है। इसके विपरीत वह स्थिति है जब चित्र बिछे हुए कालीन पर हो और उस पर सजदा न किया जाए, तो वह हर लिहाज़ से अपमानित ही है। (उर्दू): मैं कहता हूँ अगर चित्र पीठ पीछे हो तो मानो उसकी कोई ताज़ीम नहीं है, चाहे वह दीवार या पर्दे पर हो, क्योंकि उसे पीठ पीछे रखने में उसका अपमान और तिरस्कार है, और चित्र लटकाने में जो उसकी ताज़ीम है, यह उसके विरुद्ध है। इसके विपरीत वह स्थिति है जब चित्र बिछाई गई कालीन पर हो लेकिन उस पर सजदा न किया जाए, फिर वह तो हर लिहाज़ से...

[पाद लेख] 1. रद्दुल मुहतार, किताबुल सलात, बाब मा युफ़्सिदुस सलात व मा युक़रहु फ़ीहा, दार इह्याउत तुरास अल-अरबी, बेरुत, 1/436 2. दुर्रे मुख़्तार, किताबुल सलात, बाब मा युफ़्सिदुस सलात व मा युक़रहु फ़ीहा, मतब' मुज्तबाई, दिल्ली, 1/92 3. रद्दुल मुहतार, किताबुल सलात, बाब मा युफ़्सिदुस सलात व मा युक़रहु फ़ीहा, दार इह्याउत तुरास अल-अरबी, बेरुत, 1/435

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

[بائیں کالم میں عربی عبارت اور دائیں کالم میں اس کا اردو ترجمہ ہے]

[باکس ۱] بالتَّعظِیمِ أُولی مِنَ التَّعْلِیلِ بِعَدَمِ الدُّخُولِ لِأَنَّ التَّعْظِیمَ قَدْ یَکُونُ عَارِضًا لِأَنَّ الصُّورَۃَ إِذَا کَانَتْ عَلَی بِسَاطٍ مَفْرُوشٍ تَکُونُ مُهَانَۃً لَا تَمْنَعُ مِنَ الدُّخُولِ وَمَعَ هَذَا لَوْ صَلَّی عَلَی ذٰلِكَ الْبِسَاطِ وَسَجَدَ عَلَیْهَا تُکْرَہُ لِأَنَّ فِعْلَهُ ذٰلِكَ تَعْظِیمٌ لَهَا وَالظَّاهِرُ أَنَّ الْمَلَئِکَۃَ لَا تَمْنَعُ مِنَ الدُّخُولِ بِذٰلِكَ الْفِعْلِ الْعَارِضِ ۔ قرار دینا عدمِ دخولِ ملائکہ کو تعلیل قرار دینے سے کہیں بہتر ہے کیونکہ تعظیم کبھی عارضی ہوتی ہے مثلاً تصویر کسی بچھے ہوئے بچھونے پر تذلیل سے پڑی ہو تو پھر یہ دخولِ ملائکہ سے مانع نہ ہو گی۔ اس کے باوجود اگر اس بچھونے پر نماز پڑھے اور اس تصویر پر سجدہ کرے تو کراہت ہو گی، کیونکہ اس کا یہ فعل تصویر کی تعظیم ہے، اور ظاہر ہے کہ اس عارضی فعل کی وجہ سے فرشتے وہاں جانے سے نہیں رکتے۔ (ت)

عجب یہ کہ علامہ قوام کاکی نے درایہ میں بعض صورتیں تعظیم و تشبہ دونوں منتفی مان کر کراہت ثابت مانی۔ درِ مختار میں ہے:

[باکس ۲] اختُلِفَ فِیمَا إِذَا کَانَ التِّمْثَالُ خَلْفَهُ وَالْأَظْهَرُ الْکَرَاهَۃُ ۔ اس میں اختلاف کیا گیا جبکہ تصویر پیٹھ پیچھے ہو، زیادہ ظاہر یہ ہے کہ کراہت ہو گی الخ (ت)

ردالمحتار میں ہے:

[باکس ۳] لَکِنَّهَا فِیهِ أَیْسَرُ لِأَنَّهُ لَا تَعْظِیمَ فِیهِ وَلَا تَشَبُّهَ معراج ۔ لیکن کراہت اس میں زیادہ آسان ہے کیونکہ اس میں نہ تو تعظیم ہے اور نہ تشبہ ہے، معراج۔ (ت)

علامہ شامی نے اس نفی کی یہ توجیہ کی:

[باکس ۴] قُلْتُ وَكَانَ عَدَمُ التَّعْظِيمِ فِي الَّتِي خَلْفَهُ وَإِنْ كَانَتْ عَلَى حَائِطٍ أَوْ سِتْرٍ أَنَّ فِي اسْتِدْبَارِهَا اسْتِهَانَةً لَهَا فَيُعَارِضُ مَا فِي تَعْلِيقِهَا مِنَ التَّعْظِيمِ بِخِلَافِ مَا عَلَى بِسَاطٍ مَفْرُوشٍ وَلَمْ يَسْجُدْ عَلَيْهَا فَإِنَّهَا مُسْتَهَانَةٌ میں کہتا ہوں اگر تصویر پیٹھ پیچھے ہو تو گویا اس کی کوئی تعظیم نہیں اگرچہ دیوار یا پردے پر ہو اس لئے کہ اسے پیٹھ پیچھے رکھنے میں اس کی توہین و تذلیل ہے، اور تصویر لٹکانے میں جو اس کی تعظیم ہے وہ اس کے معارض ہے۔ بخلاف اس صورت کے تصویر بچھائے گئے بچھونے پر ہو لیکن اس پر سجدہ نہ کرے پھر وہ تو بہرحو جہ

[حواشی] 1 ردالمحتار کتاب الصلوٰۃ باب مایفسد الصلوٰۃ و مایکرہ فیہا دار احیاء التراث العربی بیروت ۱ / ۴۳۶ 2 درمختار کتاب الصلوٰۃ باب مایفسد الصلوٰۃ و مایکرہ فیہا مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۹۲ 3 ردالمحتار کتاب الصلوٰۃ باب مایفسد الصلوٰۃ و مایکرہ فیہا دار احیاء التراث العربی بیروت ۱ / ۴۳۵

Fatawa Razawiya (Volume 24)

From every aspect [He is disgraced and wretched. (T)]

I say: (I state) And even more strange is that despite the negation of both characteristics, after giving this justification for the establishment of dislike (karahat), immediately following it was written:

[Arabic Box Left]: It has become clear from this that the cause of dislike in all these matters is either veneration (ta'zim) or imitation (tashabbuh), and is this not but a branching out from the negation? [Urdu Box Right]: Dispute was made regarding this when the picture is behind one's back (as to what its ruling is). Thus, it is more apparent that there will be dislike. Surely it has become clear from this that the cause of dislike in these matters is veneration or imitation, and this is nothing but a corollary of the negation. (T)

These are apparently seven types of sayings. And I say: And with Allah is the success and through Him is the reaching of the pinnacles of research. (And I say: Success is only from Allah and from Him is the reaching of the heights of research. T) The instructions of the noble teachers mentioned in Al-Hidayah and the followers of Al-Hidayah are necessarily true and correct, and are clear and free from any dust of doubt. Surely, there is no cause other than imitation, and surely veneration is a cause, and surely the prevention of angels is a cause. The origin of the differences and hesitations of the later scholars is in considering these three matters as distinct, whereas they are interconnected. It is self-evident that imitation of worship without veneration is impossible, because worship is the pinnacle of veneration. Where there is absolutely no trace of veneration in any way, what meaning does a resemblance to worship have? Therefore, if there is a picture in a spread carpet, and that carpet is not a prayer mat, nor does the person praying prostrate on the picture, then by the consensus of our Imams, there is absolutely no dislike, because now no reason for veneration was found, so the imitation of worship, which was this very cause, was not realized as has preceded from the three books and similarly in the rest of them. (As references to three books have already passed and it is the same in other books. T). Similarly, the veneration of a picture necessitates imitation of worship, for veneration encompasses both; when its highest level is worship, its lowest level has a resemblance to it. I say: (I state) This is because a picture has no connection with the Lord, the Mighty and Sublime, and the truly deserving of every veneration is the Truly Majestic and Great, Mighty is His Glory. The veneration of religious sanctities is due

to their connection and relation to Him; He is in the ultimate greatness, so the ultimate veneration, i.e., worship, is worthy only of Him. Others who are attributed to Him are deserving of other descended venerations according to their respective relations by His command. So, these venerations are of the category of "giving everyone who has a right his right," rather, in reality, they are His veneration. Therefore, the Master of the Worlds, the Greatest of the Great, peace and blessings of Allah be upon him, said:

[Arabic Box Left]: Verily, it is part of glorifying Allah to honor an elderly person. [Urdu Box Right]: ...an elderly Muslim, a Sunni scholar, and a just king.

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/435. 2. Radd al-Muhtar, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/435.

फ़तावा रज़विया (खंड 24)

हर तरह से [वह ज़लील और ख़्वार है। (त)]

अक़ूल (मैं कहता हूँ): और इससे भी अचरज की बात यह है कि दोनों विशेषताओं के न होने के बावजूद, नापसंदगी (कराहत) की पुष्टि के लिए यह तर्क देने के तुरंत बाद यह लिखा गया कि:

[अरबी बॉक्स]: इससे यह स्पष्ट हो गया है कि इन सभी मामलों में नापसंदगी का कारण या तो सम्मान (ताज़ीम) है या अनुकरण (तशब्बुह), और क्या यह केवल नकार (नक़्ज़) पर आधारित एक शाखा नहीं है? [उर्दू बॉक्स]: इसमें मतभेद किया गया जब तस्वीर पीठ के पीछे हो (कि उसका क्या हुक्म है)। अतः अधिक स्पष्ट यह है कि कराहत होगी। बेशक इससे स्पष्ट हुआ कि इन मसलों में कराहत का कारण ताज़ीम या तशब्बुह है, और यह कुछ नहीं बल्कि नक़्ज़ पर तफ़रीअ (शाखाकरण) है। (त)

ये ज़ाहिर तौर पर सात तरह के कथन हैं। और मैं कहता हूँ: और अल्लाह ही की ओर से सफलता है और उसी के ज़रिए शोध की ऊंचाइयों तक पहुँचना है। (और मैं कहता हूँ अल्लाह ही की ओर से तौफ़ीक़ है और उसी से है तहक़ीक़ की बुलंदियों तक पहुँचना। त) मशाइख़-ए-किराम के इफ़ादात जो हिदाया और हिदाया के पैरोकारों में वर्णित हुए हैं, वे निश्चित रूप से सत्य और सही हैं, और हर संदेह से पाक और स्पष्ट हैं। बेशक तशब्बुह के सिवा कोई कारण नहीं है, और बेशक ताज़ीम एक कारण है, और बेशक फ़रिश्तों का रुकना एक कारण है। बाद के विद्वानों के मतभेदों और हिचकिचाहट का मूल कारण इन तीन बातों को अलग-अलग समझना है, जबकि वे आपस में जुड़े हुए हैं। ताज़ीम के बिना इबादत का तशब्बुह असंभव होना स्वतः स्पष्ट है, क्योंकि इबादत ताज़ीम की चरम सीमा है। जहाँ मौलिक रूप से किसी भी तरह से ताज़ीम का लेशमात्र भी न हो, वहाँ इबादत से समानता का क्या अर्थ? और इसीलिए, यदि बिछे हुए कालीन में तस्वीर हो और वह कालीन जाए-नमाज़ न हो, और न ही नमाज़ी तस्वीर पर सजदा करे, तो हमारे इमामों की सहमति से इसमें बिल्कुल भी कराहत नहीं है, क्योंकि अब ताज़ीम का कोई कारण नहीं पाया गया, तो इबादत का तशब्बुह, जो कि यही कारण था, सिद्ध नहीं हुआ जैसा कि तीन किताबों के हवाले से पहले गुज़र चुका है और बाकी किताबों में भी इसी तरह है। (त) इसी तरह, तस्वीर की ताज़ीम इबादत के तशब्बुह को आवश्यक बनाती है क्योंकि ताज़ीम दोनों में समान है; जब इसका उच्चतम स्तर इबादत है, तो इसके निम्न स्तर में उससे समानता है। अक़ूल (मैं कहता हूँ): यह इसलिए है क्योंकि तस्वीर का रब अज़-व-जल्ल से कोई संबंध नहीं है और हर ताज़ीम का वास्तविक हकदार वही वास्तविक जलील-ओ-अज़ीम अज़-

जलालुहू है। धार्मिक महापुरुषों का सम्मान उनके साथ उसके संबंध और नाते के कारण है। वह महानता के चरम पर है, इसलिए ताज़ीम की चरम सीमा अर्थात इबादत केवल उसी के योग्य है। अन्य जो उससे संबंधित हैं, वे अपने-अपने संबंधों के अनुसार उसके आदेश से अन्य सम्मानों के हकदार हैं, तो ये ताज़ीम "हर हकदार को उसका हक देना" की श्रेणी में आती हैं, बल्कि वास्तव में उसी का सम्मान हैं। इसीलिए दुनिया के स्वामी, महानतम विभूति सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

[अरबी बॉक्स]: निश्चय ही अल्लाह की महिमा का एक हिस्सा एक वृद्ध व्यक्ति का सम्मान करना है। [उर्दू बॉक्स]: ...एक बूढ़े मुसलमान और सुन्नी विद्वान और न्यायप्रिय राजा का (सम्मान करना)।

पादलेख: 1. रद अल-मुह्तार, किताबुस-सलात, बाब मा युफ़्सिदुस-सलात व मा युक़रहु फ़ीहा, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 1/435 2. रद अल-मुह्तार, किताबुस-सलात, बाब मा युफ़्सिदुस-सलात व मा युक़रहु फ़ीहा, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 1/435

فتاوٰی رضویہ (جلد ۲۴)

من کل وجہ (ذلیل وخوار ہے۔ (ت))

اقول: (میں کہتا ہوں) اور عجب تر یہ کہ باوجود انتفائے وصفین اثباتِ کراہت کی یہ توجیہ فرما کر اس کے متصل ہی وہ لکھا کہ:

[Arabic]: قد ظهر من هذا ان علة الكراهة في المسائل كلها التعظيم او التشبه وهل هو الا التفريع على النقض [Urdu]: اس میں اختلاف کیا گیا جبکہ تصویر بیٹھ پیچھے ہو (کہ اس کا حکم کیا ہے) پس زیادہ ظاہر یہ ہے کہ کراہت ہوگی بیشک اس سے واضح ہوا کہ ان مسائل میں کراہت کی علت تعظیم یا تشبہ ہے، اور یہ تو نہیں مگر تفریع بر نقض۔ (ت)

یہ ہیں بظاہر سات رنگ کے اقوال وانا اقول: وباللہ التوفیق وبہ الوصول الی ذری التحقیق (اور میں کہتا ہوں اللہ ہی کی طرف سے توفیق ہے اور اسی سے ہے تحقیق کی بلندیوں تک پہنچنا) افادات مشائخ کرام کہ ہدایہ واتباعِ ہدایہ میں مذکور ہوئے ضرور حق و صحیح، اور ہر غبار سے پاک و صریح ہیں بیشک سوا تشبہ کے کچھ علت نہیں، اور بیشک تعظیم علت ہے، اور بیشک امتناعِ ملائکہ علت ہے، متاخرین کے اختلافات وترددات کا منشا ان امورِ ثلثہ میں تفارق سمجھنا ہے حالانکہ ان میں باہم تلازم ہے تشبہ عبادت ہے تعظیم ناممکن ہو نا تو بدیہی کہ عبادت غایتِ تعظیم ہے جہاں اصلاً کسی طرح شائبہ تعظیم نہ ہو وہاں شبہ عبادت کیا معنی، ولہذا اگر بساط مفروش میں تصویر ہو اور وہ بساط جانماز نہ ہو نہ مصلی تصویر پر سجدہ کرے تو ہمارے ائمہ کے اجماع سے اصلاً کراہت نہیں کہ اب کوئی وجہ تعظیم نہ پائی گئی تو تشبہ عبادت کہ یہی علت تھا متحقق نہ ہوا کما تقدم من الکتب الثلثۃ ومثلہ فی سائرھن (جیسا کہ تین کتابوں کے حوالے گزر چکے اور باقی

کتابوں میں بھی اسی طرح ہے۔ ت) یو نہیں تعظیمِ تصویر تشبہ عبادت کو مستلزم کہ تعظیم دونوں کو جامع ہے جب اس کا درجہ اعلیٰ عبادت ہے ادنیٰ میں اس سے مشابہت ہے اقول: (میں کہتا ہوں) یہ اس لئے کہ تصویر کو کوئی علاقہ رب عزوجل سے نہیں اور حقیقی مستحقِ ہر تعظیم وہی حقیقی جلیل عظیم عزجلالہ ہے معظماتِ دینی کی تعظیم اس کی طرف نسبت وعلاقہ سے ہے وہ غایتِ عظمت میں ہے تو غایتِ تعظیم یعنی عبادت اسی کے لائق، دوسرے کہ اس سے منتسب ہیں، اپنی اپنی نسبتوں کے قدر اس کے حکم سے دیگر معظماتِ نازلہ کے مستحق، تو یہ تعظیمیں "اعطاہ کل ذی حق حقہ" کے قبیل سے ہوئیں بلکہ حقیقتاً اسی کی تعظیم ہیں، ولہذا حضور سید العالمین اعظم المعظمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

[Arabic]: ان من اجلال اللہ اکرام ذی الشیبۃ [Urdu]: بوڑھے مسلمان اور سنی عالم اور عادل بادشاہ کی

1. ردالمحتار کتاب الصلوۃ باب مایفسد الصلوۃ ومایکرہ فیھا داراحیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۴۳۵
2. ردالمحتار کتاب الصلوۃ باب مایفسد الصلوۃ ومایکرہ فیھا داراحیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۴۳۵

Fatawa Rizvia, Volume 24

[Arabic Text]: The Muslim, the bearer of the Quran who is neither excessive nor negligent regarding it, and honoring the just ruler. Narrated by Abu Dawud with a good chain from Abu Musa al-Ash'ari, may Allah be pleased with him. [Urdu Explanation]: To honor these is to honor Allah. (Imam Abu Dawud has narrated this with a good chain from Hazrat Abu Musa al-Ash'ari, may Allah be pleased with him. - T)

But any reason that has no connection with this Absolute Greatness is fundamentally unworthy of honor. Now, if even the slightest honor is given to it, it will carry the scent of independence because the connection of subordination is negated. Necessarily, there will be no escape from the resemblance of worship. Hence, Imam Allama Fakhr al-Islam stated in the commentary of Jami' al-Saghir:

[Arabic Text]: Keeping a picture for the sake of outward honor is disliked (Makruh), for that resembles the worship of idols. This was quoted from him in 'Al-Hilyah'. [Urdu Explanation]: Publicly picking up a picture for the sake of honor is disliked (Makruh), as it resembles idol worship. This has been quoted from the same narrator (Abu Musa al-Ash'ari) in 'Al-Hilyah'. (T)

Similarly, the prevention of angels from entering will occur only in a house where a picture is kept out of honor, otherwise not at all. The mentioned Hadith of Abu Hurayrah (may Allah be pleased with him) is an explicit text on this. Gabriel (peace be upon him), the Trustee of Revelation, explained the reason for his absence by saying that there were images engraved on a curtain. The remedy suggested was to cut it and make two cushions to be placed on the ground and trampled by feet. If the prevention had still remained after this, then what would have been the point of the remedy?

[Arabic Text]: Thus, the saying of Al-Atabi—that whatever is under the feet is disliked, just as placing them in houses is disliked due to the Hadith—is negated. It has already been mentioned from 'Al-Fath' that it is against the explicit words of the Imams. I say: rather, it is against the explicit words... [Urdu Explanation]: Therefore, the saying of Allama Atabi is negated and invalidated, which claimed that if a picture is under the feet, it would still be disliked because it is present in the house, and that this is due to the Hadith. It has already been stated with reference to 'Fath al-Qadir'

that this point is completely against the explicit words of the honorable Imams. I say (Aqool):

1. Sunan Abi Dawud, Kitab al-Adab, Chapter on Placing People in Their Stations, Aftab-e-Alam Press Lahore, 3/309.
2. Hilyat al-Mahalli Sharh Munyat al-Musalli.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 24

[अरबी पाठ]: मुसलमान, कुरान का धारक जो उसमें न तो अति करने वाला है और न ही उससे विमुख, और न्यायप्रिय शासक का सम्मान करना। अबू दाऊद ने अबू मूसा अल-अशअरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से एक अच्छी सनद के साथ रिवायत किया है। [उर्दू व्याख्या]: इनका सम्मान करना अल्लाह ही का सम्मान करना है। (इमाम अबू दाऊद ने इसे हज़रत अबू मूसा अल-अशअरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से एक अच्छी सनद के साथ रिवायत किया है। - टी)

लेकिन जिस वजह का इस हकीकी अज़ीम (ईश्वर) से कोई वास्ता नहीं है, वह असल में सम्मान के लायक नहीं है। और अब अगर इसका ज़रा भी सम्मान किया जाएगा, तो इसमें स्वाधीनता की बू आएगी क्योंकि अधीनता का रिश्ता खत्म हो चुका है। निस्संदेह, यह इबादत (पूजा) के सदृश होने से नहीं बचेगा। इसलिए, इमाम अल्लामा फख्रुल इस्लाम ने शराह जामे सगीर में फरमाया:

[अरबी पाठ]: ज़ाहिरी तौर पर सम्मान की खातिर तस्वीर रखना मकरूह है, क्योंकि यह बुतपरस्ती (मूर्ति पूजा) के सदृश है। यह उनसे 'अल-हिलिया' में उद्धृत है। [उर्दू व्याख्या]: खुलेआम सम्मान के तौर पर किसी तस्वीर को उठाना मकरूह है क्योंकि इसमें बुतपरस्ती से समानता है। 'अल-हिलिया' में इसे उसी रावी (अबू मूसा अल-अशअरी) से नक़ल किया गया है। (टी)

इसी तरह फरिश्तों का घर में प्रवेश न करना उसी घर में होगा जहाँ सम्मान की वजह से तस्वीर रखी हो, अन्यथा बिल्कुल नहीं। अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की वर्णित हदीस इस पर स्पष्ट प्रमाण है। अमीनुल वह्य (जिब्रील अलैहिस्सलाम) ने अपनी हाज़िरी न होने का कारण यह बताया कि पर्दे पर तस्वीरें बनी हुई थीं और इसका समाधान यह बताया कि उसे काटकर दो मसनद (तकिये) बना लिए जाएँ जिन्हें ज़मीन पर डाल दिया जाए और पैरों से रौंदा जाए। अगर इसके बाद भी (फरिश्तों का) न आना बना रहता, तो इस समाधान का क्या फायदा था।

[अरबी पाठ]: इस प्रकार, अल-अताबी का वह कथन खारिज हो गया कि जो पैरों के नीचे हो, वह भी मकरूह है, जैसे हदीस की वजह से घरों में रखना मकरूह है। और 'अल-फतह' के हवाले से पहले ही ज़िक्र आ चुका है कि यह इमामों के स्पष्ट कलाम के खिलाफ है। मैं कहता हूँ (अकूल): बल्कि स्पष्ट कलाम के खिलाफ... [उर्दू व्याख्या]: लिहाजा अल्लामा अताबी का यह कथन खारिज और बेअसर हो गया कि अगर तस्वीर पैरों के नीचे हो तो भी मकरूह होगी क्योंकि वह घर में मौजूद है, और ऐसा

हदीस की वजह से है। और 'फतहुल क़दीर' के हवाले से पहले ही बताया जा चुका है कि यह बात आईमा-ए-किराम के कलाम के बिल्कुल स्पष्ट खिलाफ है। मैं कहता हूँ (अकूल):

1. सुनन अबी दाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी तन्ज़ीलिन नासि मनाज़िलाहुम, आफताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 3/309.
2. हिलियतुल महल्ली शरह मुनियतुल मुसल्ली।

المسلم وحامل القرآن غیر الغالی فیہ والجافی عنہ واکرام السلطان المقسط رواہ ابو داؤد بسند حسن عن ابی موسی الاشعری رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ تعظیمیں اللہ ہی کی تعظیم ہیں (امام ابو داؤد نے سندِ حسن کے ساتھ حضرت ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اس کو روایت فرمایا ہے۔ت)

مگر جس وجہ کو اس عظیم حقیقی سے علاقہ نہیں وہ اصلاً لائقِ تعظیم نہیں اور اب جو اس کی ذرا بھی تعظیم کی جائے گی استقلال کی بودے گی کہ علاقہ تبعیت منتفی ہے لاجرم تشبہ عبادت سے مفر نہ ہوگا، ولہذا امام علام فخر الاسلام نے شرح جامع صغیر میں فرمایا:

امساك الصورة علی سبیل التعظیم ظاہرا مکروہ لان ذٰلك یشبہ عبادة الصنم اھ نقلہ عنہ فی الحلیة۔

برملا بطورِ تعظیم کسی تصویر کو اٹھانا مکروہ ہے کیونکہ اس میں عبادتِ صنم سے مشابہت ہے اھ "الحلیہ" میں اس کو اسی راوی (ابو موسیٰ اشعری) سے نقل کیا ہے۔(ت)

یو نہیں امتناعِ ملائکہ اسی گھر میں جانے سے ہوگا جہاں تصویر بوجہ تعظیم رکھی ہو ورنہ ہر گز نہیں، حدیث مذکور ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ اس میں نصِ صریح ہے، امین الوحی علیہ الصلوٰۃ والتسلیم نے اپنے نہ حاضر ہونے کی وجہ یہ عرض کی کہ پردہ پر تصویریں منقوش تھیں اور اس کا علاج یہ گزارش کیا کہ اسے کاٹ کر دو مسندیں بنائی جائیں کہ زمین پر ڈالی اور پاؤں سے روندی جائیں، اگر اس کے بعد بھی امتناع باقی رہتا تو علاج کیا ہوا،

فانتفی قول العتابی فیما کانت تحت قدمیہ انہا تکرہ کراہة جعلها فی البیوت لاجل الحدیث وقد تقدم عن الفتح انہ خلاف صریح کلامهم اقول: بل خلاف صریح کلام لہذا علامہ عتابی کا قول منفی اور زائل ہو گیا کہ اگر تصویر قدموں میں پڑی ہو تو پھر بھی کراہت ہو گی کہ وہ گھر میں موجود ہے اور

ایسا حدیث کی وجہ سے ہے، اور فتح القدیر کے حوالہ سے پہلے بیان ہو چکا کہ بات کلام ائمہ کرام کے بالکل صریح خلاف ہے اقول: (میں کہتا ہوں)

۱ سنن ابی داؤد کتاب الادب باب فی تنزیل الناس منازلہم آفتاب عالم پریس لاہور ۳ / ۳۰۹ ۲ حلیة المحلی شرح منیہ المصلی

The redactor of the school (of thought), Muhammad, where he said in his Muwatta after narrating a hadith in the same meaning: "And by this we take what contains images of carpets or bedding that is spread out, or a pillow, for there is no harm in that; rather, it is disliked in curtains and what is set up upright." This is the saying of Abu Hanifa and the majority of our jurists. And al-Tabarani narrated in al-Awsat from Abu Huraira, may Allah be pleased with him, from the Prophet, may Allah bless him and grant him peace, that he gave permission for what is trodden upon and disliked what is set up upright. | (Not only this) but this is also clearly against the words of the redactor of the school (the one who penned down the school) Imam Muhammad, as Imam Muhammad stated in his Muwatta, after narrating a Hadith with this meaning: "This is the reason we adopt this [view], that if there are pictures on a bedding that is spread out or on carpets or pillows that are spread, then there is no harm in them. Yes, if there are engravings on a curtain or on something standing upright, then there will surely be dislike, and this is the statement of Imam Abu Hanifa and our general noble jurists." (End of quote). And Imam Tabarani narrated in al-Awsat with reference to Hazrat Abu Huraira, may Allah be pleased with him, from the Noble Prophet, may Allah bless him and grant him peace, that he gave permission and allowance for the image that is trampled and humiliated, and he disliked what is upright and in a state of standing. (T)

It is correctly stated in Radd al-Muhtar: "The non-entry of angels is only when the image is revered." | The non-entry of angels into a house is at the time when the image is kept with reverence. (T)

In Mirqat, the commentary on Mishkat, it says: "Al-Khattabi said: They only do not enter..." | Allama Khattabi said: "Angels in that house..."

1. Muwatta al-Imam Muhammad, chapter of images and bells and what is disliked of them, Aftab Alam Press Lahore, p. 382.
2. Al-Mu'jam al-Awsat, hadith 5699, Maktabat al-Ma'arif Riyadh, 6/329.
3. Radd al-Muhtar, book of prayer, chapter on what spoils prayer and what is disliked in it, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 1/646.

मज़हब के संकलनकर्ता मुहम्मद, जहाँ उन्होंने अपनी मुअत्ता में इसी अर्थ में एक हदीस रिवायत करने के बाद कहा: "और इसके साथ हम उसे लेते हैं जिसमें बिछे हुए बिछौने या कालीन या तकिये में तस्वीरें हों, तो इसमें कोई हर्ज नहीं है; नापसंदगी केवल पर्दों और उन चीज़ों में है जिन्हें खड़ा किया गया हो।" यही अबू हनीफ़ा और हमारे आम फ़ुक़हा का कथन है। और तबरानी ने अल-औसत में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन चीज़ों में रियायत दी जिन्हें रौंदा जाता है और उन्हें नापसंद किया जो खड़ी की गई हों। | (यही नहीं) बल्कि यह मज़हब के संकलनकर्ता (मज़हब को क़लमबंद करने वाले) इमाम मुहम्मद के कलाम के भी साफ़ ख़िलाफ़ है जैसा कि इमाम मुहम्मद ने अपनी मुअत्ता में हदीस रिवायत करने के बाद फ़रमाया: "यही वजह है कि हम इसी को इख़्तियार करते हैं कि जिस बिछे हुए बिछौने पर तस्वीरें हों या बिछे हुए फ़र्श या तकिये में हों, तो उनमें कोई हर्ज नहीं। हाँ, अगर पर्दे पर नक़्श हों या किसी खड़ी की हुई चीज़ में हों तो ज़रूर कराहत होगी और यही इमाम अबू हनीफ़ा और हमारे आम फ़ुक़हा-ए-किराम का इरशाद है।" इमाम तबरानी ने अल-औसत में हज़रत अबू हुरैरा के हवाले से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत की कि जो तस्वीर पामाल (पैरों तले) और ज़लील शुदा हो उसकी आपने इजाज़त दी, और जो इस्तादा (खड़ी) और क़याम की हालत में हो उसे नापसंद फ़रमाया। (त)

रद-उल-मुहतार में ठीक कहा कि: "फ़रिश्तों का प्रवेश न होना महज़ वहीं है जहाँ तस्वीर सम्मानित हो।" | फ़रिश्तों का किसी घर में दाख़िल न होना उस वक़्त है जबकि तस्वीर अज़मत (सम्मान) से रखी हो। (त)

मिरक़ात शरह मिश्कात में है: "अल्लामा ख़त्ताबी ने फ़रमाया: वे दाख़िल नहीं होते..." | अल्लामा ख़त्ताबी ने फ़रमाया: "फ़रिश्ते उस घर में..."

1. मुअत्ता इमाम मुहम्मद, बाबुत-तसावीर वल-जरस... आफ़ताब आलम प्रेस लाहौर, पृ. ३८२।
2. अल-मुअजम अल-औसत, हदीस ५६९९, मकतबतुल मआरिफ़ रियाज़ ६/३२९।
3. रद-उल-मुहतार, किताबुस-सलात... दार एहयाउत-तुरास अल-अरबी बेरुत १/६४६।

पेज ६०२ (७२० में से)

محرر المذهب محمد حيث قال في مؤطأه بعد ماروى حديثا في المعنى وبهذا نأخذ ماكان فيه من تصاوير من بساط اوفراش يفرش او وسادة فلابأس بذلك انما يكره من ذلك فى الستر وما ينصب نصبا وهو قول ابى حنيفة والعامة من فقهائنا اھ وقد روى الطبراني فى الاوسط عن ابى هريرة رضى الله تعالى عنه عن النبى صلى الله تعالى عليه وسلم انه رخص فيما كان يوطأ وكره ما كان منصوباً۔ | (یہی نہیں) بلکہ یہ محرر مذہب (مذہب کو قلمبند کرنے والا) امام محمد کے کلام کے بھی صریح خلاف ہے جیسا کہ امام محمد نے اپنی مؤطا میں ارشاد فرمایا، بعد روایت کرنے حدیث کے اس معنی میں، یہی وجہ ہے کہ ہم اسی کو اختیار کرتے ہیں کہ جس بچھائے ہوئے بچھونے پر تصویریں ہوں یا بچھائے گئے فرش یا تکیے میں ہوں تو ان میں کچھ حرج نہیں، ہاں اگر پردے پر نقش ہوں یا کسی کھڑی کی ہوئی چیز میں ہو تو ضرور کراہت ہوگی اور یہی امام ابو حنیفہ اور ہمارے عام فقہائے کرام کا ارشاد ہے اھ اور امام طبرانی نے الاوسط میں حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ کے حوالہ سے نبی مکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم سے روایت فرمائی کہ جو تصویر پامال اور ذلیل شدہ ہو آپ نے اس کی رخصت اور اجازت دی، اور جو استادہ اور بحالت قیام ہو اسے ناپسند فرمایا۔ (ت)

ردالمحتار میں ٹھیک کہا کہ: عدم دخول الملئكة انما هو حيث كانت الصورة معظمة۔ | فرشتوں کا کسی گھر میں داخل نہ ہونا اس وقت ہے جبکہ تصویر عظمت سے رکھی ہو۔ (ت)

مرقاۃ شرح مشکوۃ میں ہے: قال الخطابى انما لا تدخل | علامہ خطابی نے فرمایا: فرشتے اس گھر میں

1 مؤطا الامام محمد باب التصاوير والجرس وما يكره منها آفتاب عالم پريس لاہور ص ۳۸۲ 2 المعجم الاوسط حديث ۵۶۹۹ مكتبة المعارف رياض ۶ / ۳۲۹ 3 رد المحتار كتاب الصلوة باب ما يفسد الصلوة وما يكره فيها دار احياء التراث العربى بيروت ۱ / ۶۴۶

Fatawa Rizwia, Volume 24

(Arabic Text - Left Column): ...angels [do not enter] a house in which there is a dog or a picture, the keeping of which is forbidden from among dogs and pictures. As for what is not forbidden, such as a hunting dog, or a dog for crops and livestock, and pictures that are treated with disrespect on rugs, pillows, and others, they do not prevent angels from entering the house. Al-Nawawi said: The most apparent view is that it is general for every dog and picture, and that they (angels) refrain from all of them due to the absolute nature of the traditions (Hadiths), and because the puppy that was in the house of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) under the bed had a clear excuse for it because he was unaware of it. Despite this, Gabriel (peace and blessings be upon him) refrained from entering the house and explained it by the puppy. [End of what Al-Qari quoted, affirming it.] I say: What Imam Al-Nawawi (may Allah Almighty have mercy on him and us) said is plausible regarding the dog, despite an apparent dispute.

(Urdu Text - Right Column): ...do not enter [a house] in which there is such a dog or such a picture from among those dogs or pictures whose keeping is forbidden. However, a dog and picture whose keeping is not forbidden, for example, keeping a dog for hunting or for guarding crops and livestock, or that picture which is in a state of humiliation and disrespect on bedding, pillows, etc. (and keeping such a picture is not forbidden), therefore it does not prevent angels from entering the house. Imam Nawawi said: The more apparent view is that the mentioned ruling is general, covering every dog and every picture, therefore angels refrain from going because of all these reasons because the narrated Hadiths are absolute (meaning no restriction is mentioned in them). And one reason for this is also that the puppy which was in the sacred abode of the Prophet (peace and blessings be upon him) was hidden under the bed, and in this, there was a clear excuse for the Holy Prophet because he did not know the full detail of it (and his attention was the reason for it). So despite this, Gabriel (peace and blessings be upon him) refrained from entering the house and stated the reason as being that there is a puppy in the house. [End of what Mulla Ali Qari quoted while affirming.] I say:

Footnote: 1. Mirqat al-Mafatih Sharh Mishkat al-Masabih, Book of Dress, under Hadith 4489, 8/265, 266.

Page 603 of 720

फ़तावा रिज़विया, खंड 24

(अरबी पाठ - बायां कॉलम): ...फ़रिश्ते [प्रवेश नहीं करते] उस घर में जिसमें कुत्ता या तस्वीर हो जिसे रखना हराम कुत्तों और तस्वीरों में से है। जहाँ तक उन कुत्तों का सवाल है जिनका रखना हराम नहीं है, जैसे शिकारी कुत्ता, या खेती और मवेशियों की रखवाली के लिए कुत्ता, और वे तस्वीरें जो फर्श, तकियों आदि पर अपमानजनक स्थिति में हों, तो वे फ़रिश्तों को घर में प्रवेश करने से नहीं रोकते। अल-नवावी ने कहा: सबसे स्पष्ट मत यह है कि यह हर कुत्ते और तस्वीर के लिए सामान्य है, और वे (फ़रिश्ते) उन सभी से दूर रहते हैं क्योंकि हदीसों में कोई शर्त नहीं है, और क्योंकि जो पिल्ला नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के घर में बिस्तर के नीचे था, उसके लिए एक स्पष्ट बहाना था क्योंकि वे इससे अनजान थे। इसके बावजूद, जिब्रील (अलैहिस्सलाम) घर में प्रवेश करने से रुक गए और इसका कारण पिल्ला बताया। [मुल्ला अली कारी द्वारा उद्धृत और पुष्ट किया गया।] मैं कहता हूँ: इमाम अल-नवावी (अल्लाह उन पर और हम पर दया करे) ने कुत्ते के बारे में जो कहा है वह एक स्पष्ट विवाद के बावजूद संभव है।

(उर्दू पाठ - दायां कॉलम): ...प्रवेश नहीं करते [एक घर में] जिसमें ऐसा कुत्ता या ऐसी तस्वीर हो उन कुत्तों या तस्वीरों में से जिनका रखना हराम है। लेकिन, वह कुत्ता और तस्वीर जिसका रखना हराम नहीं है, उदाहरण के लिए, शिकार के लिए या खेती और मवेशियों की रखवाली के लिए कुत्ता रखना, या वह तस्वीर जो अपमान और तिरस्कार की स्थिति में बिस्तर, तकिए आदि पर हो (और ऐसी तस्वीर रखना हराम नहीं है), इसलिए यह फ़रिश्तों को घर में प्रवेश करने से नहीं रोकता है। इमाम नवावी ने कहा: अधिक स्पष्ट विचार यह है कि उल्लिखित आदेश सामान्य है, जिसमें प्रत्येक कुत्ता और प्रत्येक तस्वीर शामिल है, इसलिए फ़रिश्ते इन सभी कारणों से जाने से रुक जाते हैं क्योंकि वर्णित हदीसें निरपेक्ष हैं (यानी उनमें कोई पाबंदी नहीं है)। और इसका एक कारण यह भी है कि जो पिल्ला हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) के पावन निवास में था, वह बिस्तर के नीचे छिपा हुआ था, और इसमें हुज़ूर के लिए एक स्पष्ट कारण था क्योंकि आपको उसका पूरा विवरण ज्ञात नहीं था (और आपका ध्यान इसका कारण था)। तो इसके बावजूद हज़रत जिब्रील (अलैहिस्सलाम) घर में प्रवेश करने से रुक गए, और इसका कारण यह बताया कि घर में पिल्ला मौजूद है। [अतः जो हज़रत मुल्ला अली कारी ने स्वीकार करते हुए उद्धृत किया।] मैं कहता हूँ:

पाद टिप्पणी: 1. मिरक़ात अल-मफ़ातीह शरह मिशकात अल-मसाबीह, किताबुल लिबास, हदीस 4489 के तहत, 8/265, 266।

(عربی متن - بایاں کالم): الملئکة بیتًا فیه کلب او صورة مما یحرم اقتناؤه من الکلاب والصور و اما مالیس بحرام من کلب الصید و الزرع والماشیة ومن الصورة التي تمتهن في البساط و الوسادة وغیرهما فلا یمنع دخول الملئکة بیته، قال النووی والاظهر انه عام في کل کلب وصورة وانهم یمتنعون من الجمیع لاطلاق الاحادیث ولان الجرو الذي کان في بیت النبي صلی تعالیٰ علیه وسلم تحت السریر کان له فیه عذر ظاهر لانه لم یعلم به، ومع هذا امتنع جبریل علیه الصلوٰة والسلام من دخول البیت وعلله بالجرو ۱ اه ما نقله القاری مقراً علیه۔ اقول: ماقاله الامام النووی رحمه الله تعالیٰ ورحمنا به محتمل في الکلب علی نزاع ظاہر۔

(اردو متن - دایاں کالم): نہیں داخل ہوتے کہ جس میں ایسا کتا یا ایسی تصویر ہو ان کتوں یا ان تصویروں میں سے کہ جن کا محفوظ رکھنا حرام ہے۔ لیکن جس کتے اور تصویر کا محفوظ رکھنا حرام نہیں مثلاً شکاری کتا یا کھیتی باڑی اور مال مویشی کی حفاظت کے لئے کتا رکھنا، یا وہ تصویر جو توہین ومذلیل کی صورت میں بچھونے اور تکیے وغیرہ پر ہو (اور ایسی تصویر کا رکھنا حرام نہیں) لہٰذا یہ فرشتوں کو گھر میں داخل ہونے سے نہیں روکتی۔ امام نووی نے فرمایا: زیادہ ظاہر یہ ہے کہ حکم مذکور عام ہے ہر کتے اور ہر تصویر کو شامل ہے لہٰذا فرشتے ان سب وجہوں سے جانے سے رک جاتے ہیں اس لئے کہ احادیث وارده میں اطلاق ہے (یعنی ان میں کوئی قید مذکور نہیں) اور اس کی ایک وجہ یہ بھی ہے کہ جو بچہ سگ حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کے کاشانہ اقدس میں تھا وہ تحت کے نیچے روپوش تھا اور اس میں حضور پاک کے لئے ایک واضح عذر تھا کیونکہ آپ کو اس کی پوری تفصیل معلوم نہ تھی (اور اس کی وجہ آپ کی توجہ تھی) پس اس کے باوجود حضرت جبریل علیہ الصلوٰۃ والسلام گھر میں داخل ہونے سے رک گئے، اور اس

کی وجہ یہ بیان فرمائی کہ گھر میں بچہ سگ موجود ہے اھ جو حضرت ملا علی قاری نے اقرار کرتے ہوئے نقل فرمائی۔ اقول:

حاشیہ: ۱ مرقاۃ المفاتیح شرح مشکواۃ المصابیح کتاب اللباس تحت حدیث ۴۴۸۹ ۸/ ۲۶۵،۲۶۶

Fatawa Razawiyya Volume 24

(Left Column - Arabic text translation): Regarding what he used as evidence, even if the Sheikh followed him in 'Ash'at al-Lum'at' and later returned to the exception of a dog whose possession is permissible. This is because there is a great difference between what the Sharia has permitted for a need and what occurred without permission without knowledge. Its example is like a legal impurity that is excused by Sharia, and another large amount with which one prayed without knowing it. As for what was mentioned regarding the image, the mentioned Hadith of Gabriel does not state it explicitly. Also, Bukhari and Imam Ahmad narrated from the Mother of the Believers that she had taken a curtain for a small opening in which there were images, so the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) tore it. She said, "So I made two cushions from it and they were in the house, we used to sit on them." Ahmad added: "And I saw him leaning on one of them."

(Right Column - Urdu text translation): (I say) Whatever Imam Nawawi has stated (may Allah shower His mercy upon him and descend His mercy upon us for his sake), due to the clear dispute regarding the dog, there is a possibility that what the aforementioned person used as evidence, even though the scholar Sheikh Abdul Haq Muhaddith Dehlavi (may Allah have mercy on him) also supported him in this matter, and in the end, he exempted the dog whose keeping is legally halal and permissible. This is because there is a big difference between that for which Sharia has given permission and concession due to some necessity, and that which occurred without permission and without knowledge. Its example is none other than the amount of impurity that is legally excused. And the other is much more than the amount of pardon, that a person prayed with it without knowledge. But what has been mentioned about the picture (Surah), the mentioned Hadith of Gabriel does not provide any clear detail about it. Moreover, Bukhari and Imam Ahmad have narrated with reference to the Mother of the Believers, Sayyidah Aisha Siddiqa, that she hung a curtain on an alcove which had embroidered pictures, so the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him)...

Footnote: [1] Sahih Bukhari, Kitab al-Mazalim wal-Qisas, Chapter: Should the jugs containing wine be broken? Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/337.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

(बायां कॉलम - अरबी लेख का अनुवाद): उस बारे में जिसके लिए उन्होंने दलील दी, हालांकि शेख ने 'अशात अल-लमात' में उनका अनुसरण किया और अंततः उस कुत्ते के अपवाद की ओर लौट आए जिसका रखना जायज़ है। ऐसा इसलिए है क्योंकि शरीयत ने ज़रूरत के लिए जो अनुमति दी है और जो बिना अनुमति के अनजाने में हुआ है, उसके बीच बहुत अंतर है। इसका उदाहरण उस कानूनी अपवित्रता की तरह है जो शरीयत द्वारा माफ है, और एक अन्य बड़ी मात्रा जिसके साथ किसी ने अनजाने में नमाज़ पढ़ी। जहाँ तक चित्र (तस्वीर) के बारे में उल्लेख किया गया है, जिब्रईल की वर्णित हदीस इसे स्पष्ट रूप से बयान नहीं करती है। इसके अलावा, बुखारी और इमाम अहमद ने उम्मुल मोमिनीन से रिवायत की है कि उन्होंने एक ताक पर एक पर्दा लटकाया था जिसमें तस्वीरें थीं, तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उसे फाड़ दिया। उन्होंने कहा, "फिर मैंने उससे दो कुशन (तकिए) बनाए और वे घर में थे, हम उन पर बैठते थे।" अहमद ने जोड़ा: "और मैंने उन्हें उनमें से एक पर सहारा लिए हुए देखा।"

(दायां कॉलम - उर्दू लेख का अनुवाद): (मैं कहता हूँ) जो कुछ इमाम नववी ने फरमाया है (अल्लाह उन पर अपनी रहमत बरसाए और उनके सदके में हम पर भी अपनी रहमत नाज़िल फरमाए), कुत्ते के बारे में स्पष्ट विवाद के कारण इस बात की संभावना है जिससे मौसूफ़ ने दलील पेश की है, हालांकि शेख मुहक़्क़िक़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी (रहमतुल्लाह अलैह) ने भी इस मसले में उनका साथ दिया है, और अंत में उस कुत्ते का अपवाद फरमाया जिसका संरक्षण करना शरई तौर पर हलाल और जायज़ है। यह इसलिए कि उसके बीच बड़ा अंतर है जिसकी किसी ज़रूरत से शरीयत ने इजाज़त और रियायत दी और उसके बीच जो बिना इजाज़त दिए बिना इल्म के वाक़े हुआ। और इसकी मिसाल नजासत की उस मिकदार की तरह है जो शरई तौर पर माफ है। और दूसरी मिकदार माफ़ी से बहुत ज़्यादा है कि बिना इल्म के उसके साथ किसी शख्स ने नमाज़ पढ़ी। लेकिन जो कुछ तस्वीर (सूरत) के बारे में ज़िक्र किया गया है, तो ज़िक्र की गई हदीस-ए-जिब्रईल इसकी कोई तसरीह (स्पष्टता) नहीं करती, और बुखारी और इमाम अहमद ने उम्मुल मोमिनीन सैयदा आयशा सिद्दीक़ा के हवाले से इसकी तख़रीज फरमाई कि माई साहिबा ने ताक़ पर एक पर्दा लटकाया जिसमें नक़्शी तस्वीरें थीं, तो हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)...

पाद लेख: [1] सहीह बुखारी, किताब अल-मज़ालिम वल-क़िसास, बाब: क्या शराब वाले बर्तन तोड़े जाएं क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1/337.

(بائیں کالم کی عربی عبارت): فیما استدل له به وان تبعه فیه الشیخ في اشعة اللمعات ورجع آخرا الی استثناء کلب یحل اقتناؤه و ذلك لانه کم من فرق بین ما رخصه الشرع لحاجة و بین ما وقع من غیر المرخص بدون علم و ما مثله الا کنجاسة معفوة شرعا واخری کثیرة صلی معها من دون علم بها۔ اما ما ذکر في الصورة فلا یصرح حدیث جبریل المذکور، وایضاً اخرج البخاري والامام احمد عن ام المؤمنین انها کانت اتخذت علی سهوة لها سترا فیه تماثیل فهتکه النبي صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم قالت فاتخذت منه نمرقتین فکانتا في البیت نجلس علیهما زاد احمد ولقد رأیته متکئا علی احدهما۔

(دائیں کالم کی اردو عبارت): (میں کہتا ہوں) جو کچھ امام نووی نے ارشاد فرمایا (اللہ تعالیٰ ان پر رحمت برسائے اور ان کے طفیل ہم پر بھی رحمت کا نزول فرمائے) کتے میں واضح نزاع کی وجہ سے اس کا احتمال ہے کہ جس سے موصوف نے استدلال کیا ہے اگرچہ شیخ محقق عبد الحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ نے بھی اس مسئلہ میں ان کا ساتھ دیا ہے، اور آخر میں اس کتے کا استثناء فرمایا کہ جس کی حفاظت کرنا شرعاً حلال اور جائز ہے، یہ اس لئے کہ بڑا فرق ہے اس کے درمیان کہ جس کی کسی ضرورت سے شریعت نے اجازت اور رخصت دی اور اس کے درمیان کہ بغیر رخصت دیئے بغیر علم واقع ہوا۔ اور اس کی مثال نہیں مگر اس مقدار نجاست کی طرح جو شرعاً معاف ہے۔ اور دوسری مقدار عفو سے بہت زیادہ ہے کہ بغیر علم اس کے ساتھ کسی شخص نے نماز پڑھی۔ لیکن جو کچھ تصویر (صورۃ) کے بارے میں ذکر کیا گیا ہے تو ذکر کردہ حدیث جبریل اس کی کوئی تصریح نہیں کرتی، نیز بخاری اور امام احمد نے ام المؤمنین سیدہ عائشہ صدیقہ کے حوالے سے اس کی تخریج فرمائی کہ مائی صاحبہ نے طاق پر ایک پردہ لٹکایا جس میں نقشی تصویریں تھیں، تو حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

حاشیہ: [1] صحیح البخاری کتاب المظالم والقصاص باب هل تکسر الدنان التی فیها الخمر قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۳۳۷

Fatawa Ridawiyya - Volume 24

(Arabic Text)	(Urdu Translation/Explanation)
...and in it was an image (etc.) - And the Messenger of Allah (may peace and blessings of Allah be upon him) would not leave anything in the house that would prevent Gabriel (peace be upon him) from entering. Rather, in her (Aisha's) narration reported by Al-Tahawi, may Allah Almighty be pleased with her, she said: I bought a cushion that had images on it. When the Messenger of Allah (may peace and blessings of Allah be upon him) entered and saw it, his expression changed. Then he said: "O Aisha, what is this?" I said: "It is a cushion I bought for you to sit on." He said: "We do not enter a house in which there are images." Therefore, the truth is that the prohibition is specific to those (images) which are not treated with disrespect. And Allah Almighty knows best.	...tore it up. The mother (Aisha) said: Then I made two small pillows from it, they were kept in the house, and we members of the household would sit on them (meaning sit leaning against them). Imam Ahmad added to this: Undoubtedly, I saw the Holy Prophet (peace be upon him) sitting while leaning against one of those two, even though there was a picture on it. It is not at all befitting the station of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) to leave anything in the house that would prevent Gabriel (peace be upon him) from entering the house. Rather, according to Imam Tahawi, the narration of the mother (Aisha, may Allah be pleased with her) is something like this: She said, I bought a cushion which had engraved pictures on it. Then, when the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) came to me and saw it, the color of his blessed face changed and he said: (O Aisha!) What is this? I submitted, it is a small cushion I have bought for your sake, so that you may lean against it. He said: We do not enter such houses in which there are pictures. The truth is that the prohibition is specific to those pictures which are kept in a respectful manner without humiliation and insult. And Allah Almighty knows best.

Thus it became clear that all three causes are interconnected and reasoning from all three is correct, and each one of them can be considered as the primary reason. The essence of the research is that the actual cause is veneration (ta'zeem). From veneration, imitation (tashabbuh) arises, and due to veneration, angels of mercy do not come. Therefore, forms of humiliation were allowed, such as floor coverings...

1. Musnad Ahmad bin Hanbal, narrated by Aisha (may Allah be pleased with her), Al-Maktab al-Islami, Beirut, 6/247.
2. Sharh Ma'ani al-Athar, Book of Disliked Matters, Chapter on Pictures on Clothing, H.M. Saeed Company, Karachi, 2/400.

फ़तावा रज़विया - खंड २४

(अरबी पाठ)

...और उसमें एक चित्र था (इत्यादि) - और अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) घर में ऐसी कोई चीज़ नहीं छोड़ते थे जो जिब्रील (उन पर शांति हो) के प्रवेश को रोकती हो। बल्कि अल-तहावी द्वारा रिपोर्ट किए गए उनके (आयशा के) वर्णन में, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो, उन्होंने कहा: मैंने एक गद्दी खरीदी जिसमें चित्र थे। जब अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) अंदर आए और उसे देखा, तो उनके चेहरे का रंग बदल गया। फिर उन्होंने कहा: "ऐ आयशा, यह क्या है?" मैंने कहा: "यह एक गद्दी है जो मैंने आपके बैठने के लिए खरीदी है।" उन्होंने कहा: "हम उस घर में प्रवेश नहीं करते जिसमें चित्र हों।" इसलिए, सच्चाई यह है कि प्रतिबंध उन (चित्रों) के लिए विशिष्ट है जिन्हें अपमान के साथ नहीं रखा जाता है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

(उर्दू अनुवाद/व्याख्या)

...उसने उसे फाड़ दिया। मइया (आयशा) ने कहा: फिर मैंने उससे दो छोटे तकिए बना लिए, वे घर में रखे रहते थे, और हम घर के लोग उन पर बैठते थे (यानी उनसे टेक लगाकर बैठते थे)। इमाम अहमद ने इसमें इतना जोड़ा: निस्संदेह, मैंने पवित्र पैगंबर (उन पर शांति हो) को उन दोनों में से एक पर टेक लगाकर बैठे हुए देखा, जबकि उस पर चित्र था। पवित्र पैगंबर (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) की यह शान बिल्कुल नहीं है कि वह घर में ऐसी कोई चीज़ छोड़ दें जो हज़रत जिब्रील (उन पर शांति हो) को घर में प्रवेश करने से रोकती हो। बल्कि इमाम तहावी के अनुसार, मइया (आयशा, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) का वर्णन कुछ इस तरह है: उन्होंने कहा, मैंने एक तकिया खरीदा जिसमें नक्काशीदार चित्र थे। फिर, जब पवित्र पैगंबर (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) मेरे पास आए और उसे देखा, तो उनके मुबारक चेहरे का रंग बदल गया और उन्होंने कहा: (ऐ आयशा!) यह क्या है? मैंने अर्ज की, यह एक छोटा सा तकिया है जो मैंने आपकी खातिर खरीदा है, ताकि आप इससे सहारा लें। उन्होंने फरमाया: हम ऐसे घरों में प्रवेश नहीं करते जिनमें चित्र हों। सच तो यह है कि मनाही उन तस्वीरों के लिए विशिष्ट है जो बिना अपमान और अनादर के सम्मानजनक तरीके से रखी गई हों। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

तो यह स्पष्ट हो गया कि तीनों कारण परस्पर जुड़े हुए हैं और तीनों से तर्क करना सही है, और उनमें से प्रत्येक को प्राथमिक कारण माना जा सकता है। शोध का सार यह है कि वास्तविक कारण श्रद्धा

(ताज़ीम) है। श्रद्धा से ही समानता (तशब्बुह) पैदा होती है, और श्रद्धा के कारण ही रहमत के फरिश्ते नहीं आते। इसलिए अपमान के रूपों को जायज़ रखा गया, जैसे फर्श...

---

1. मुसनद अहमद बिन हंबल, आयशा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से वर्णित, अल-मकतब अल-इस्लामी, बेरूत, ६/२४७।
2. शरह मआनी अल-आसार, किताब अल-कराहिया, कपड़ों पर चित्रों का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, २/४००।

पृष्ठ ६०५ का ७२०

(عربی متن) **(اردو ترجمہ و تشریح)**

وفيها صورة اھ - وما كان رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم ليترك في البيت شيئا يمنع دخول جبريل عليه الصلوة والتسليم بل في حديثها رضى الله تعالىٰ عنها عند الطحاوى قالت اشتريت نمرقة فيها تصاوير فلما دخل على رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم فرأها تغير ثم قال يا عائشة ماهذه فقلت نمرقة اشتريتها لك تقعد عليها قال انا لا ندخل بيتا فيه تصاوير فالحق ان الامتناع مختص بغير المهانة والله تعالىٰ اعلم۔

نے اسے پھاڑ ڈالا، مائی صاحبہ نے فرمایا: پھر میں نے اس کے دو چھوٹے تکیے بنا ڈالے، وہ گھر میں رکھے ہوتے، اور ہم اہل خانہ ان پر بیٹھتے (یعنی ان سے ٹیک لگا کر بیٹھتے) امام احمد نے اس پر اتنا اضافہ کیا، بلاشبہ میں نے حضور پاک کو دیکھا کہ آپ ان دونوں میں سے ایک پر ٹیک لگا کر تشریف فرما ہوتے جبکہ اس پر تصویر تھی اھ، حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی ہرگز یہ شان نہیں کہ گھر میں کوئی ایسی چیز چھوڑ دیتے جو حضرت جبریل علیہ الصلوۃ والسلام کو گھر میں داخل ہونے سے روک رکھتی، بلکہ امام طحاوی کے نزدیک مائی صاحبہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی روایت کچھ اس طرح ہے، فرمایا: میں نے ایک تکیہ خریدا جس میں نقشی تصویریں تھیں پھر جب حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم میرے ہاں تشریف لائے اور اسے دیکھا تو چہرہ اقدس کا رنگ تبدیل ہو گیا اور ارشاد فرمایا: (اے عائشہ!) یہ کیا ہے؟ میں عرض کی ایک چھوٹا سا تکیہ ہے جو میں نے آپ کی خاطر خریدا ہے، کہ اس سے آپ سہارا لگائیں گے، ارشاد فرمایا: ہم ایسے گھر میں داخل نہیں ہوتے کہ جس میں تصویریں ہوں۔ حق یہ ہے امتناع ان تصویروں

(عربی متن) **(اردو ترجمہ و تشریح)**

سے مختص ہے جو بغیر تذلیل و توہین باعزت طریقے سے رکھی

ہوں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

تو ظاہر ہوا کہ تینوں علتیں متلازم ہیں اور تینوں سے تعلیل صحیح ہے اور ان میں سے ہر ایک میں حصر بھی کر سکتے ہیں، اور مغز تحقیق یہ ہے کہ اصل علت تعظیم ہے تعظیم ہی سے تشبہ پیدا ہوتا ہے اور تعظیم ہی سے ملائکہ رحمت نہیں آتے، ولہذا اہانت کی صورتیں جائز رکھی گئیں کہ فرش

---

1 مسند احمد بن حنبل عن عائشہ رضی اللہ عنہا المکتب الاسلامی بیروت ۶/ ۲۴۷ 2 شرح معانی الآثار کتاب الکراھیۃ باب الصور تکون في الثیاب ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۴۰۰

fatawa razawiya volume 24

...where they sit, stand, and place their feet; this discourse is the speech of the Mashaikh (spiritual guides), and praise be to Allah.

Then I say: (Then I say - T) Since every glorification (ta'zim) is a form of resembling worship, and every resemblance of worship is definitely a cause of aversion for the angels, the distinction between accidental and necessary is purely baseless. In hanging and mounting, glorification arose from that very act, not that it was necessary to the essence of the form itself. Thus, in a spread carpet, when images are placed in the spot of prostration and prostrated upon, it will be exactly like hanging and mounting them. At that time, it will prevent the entry of angels because their exclusion was due to glorification, and glorification was found.

(Arabic Text)

Therefore, what Al-Shami deemed apparent is not apparent. For if a distinction is made that placing them in the flooring is an insult to them, so it conflicts with the glorification of prostration upon them, then that is another matter other than glorification being accidental. And you will know what is in it with the help of Allah Almighty. As for the statement of Al-Hilya that this does not prevent the entry of angels as these texts have stated, I say: The texts did not imply that merely placing them in a carpet or a pillow removes them from preventing angels, but rather restricted it by saying 'discarded and trampled upon'. And for Al-Nasa'i regarding a banner, he makes it a carpet to be trampled upon[2].

(Urdu Translation/Explanation)

Therefore, what Allama Shami has deemed apparent is (in reality) not apparent. And if a distinction is made that having an image in a spread carpet (and keeping it fixed) is its insult and humiliation, and obtaining glorification due to prostrating on it is contradictory and conflicting with it, then this is something else, not that it is an accidental occurrence of glorification. And soon, with the help of Allah Almighty, you will know the weakness and deficiency in it. But the author of Hilya saying that this does not prevent the entry of angels as these texts have indicated—I submit regarding this that this benefit has not been obtained from the texts that keeping any image in a carpet or pillow removes it from the prevention of angels. Rather, the texts have restricted it with the statement that those images should be discarded and trampled (so that their proper insult and humiliation is achieved). And Imam Nasai...

[1] Hilya al-Mahalla Sharh Munyat al-Musalla [2] Sunan an-Nasa'i, Kitab az-Zinah, Mention of the people most severely punished, Mir Muhammad Karkhana Kutub Karachi 2/301

फतावा रज़विया जिल्द 24

...जिस पर वे बैठते हैं, खड़े होते हैं, और अपने पैर रखते हैं; यह प्रवचन मशायख (आध्यात्मिक मार्गदर्शकों) का भाषण है, और अल्लाह की स्तुति हो।

फिर मैं कहता हूँ: (फिर मैं कहता हूँ - त) चूँकि प्रत्येक महिमामंडन (ताज़ीम) इबादत के समान होने का एक रूप है, और इबादत का प्रत्येक सादृश्य निश्चित रूप से फ़रिश्तों के लिए नफ़रत का कारण है, इसलिए आकस्मिक और आवश्यक के बीच का भेद पूरी तरह से निराधार है। लटकाने और स्थापित करने में भी महिमामंडन उसी क्रिया से उत्पन्न हुआ, न कि इसलिए कि वह स्वयं रूप के सार के लिए आवश्यक था। अतः बिछी हुई कालीन में, जब चित्रों को सजदे के स्थान पर रखकर उन पर सजदा किया जाएगा, तो यह बिल्कुल उन्हें लटकाने और स्थापित करने के समान होगा। उस समय, यह फ़रिश्तों के प्रवेश को रोकेगा क्योंकि उनका निष्कासन महिमामंडन के कारण था, और महिमामंडन पाया गया।

(अरबी पाठ)

इसलिए, अल-शामी ने जिसे ज़ाहिर (स्पष्ट) माना है, वह ज़ाहिर नहीं है। क्योंकि यदि यह भेद किया जाए कि उन्हें बिछाने में रखना उनका अपमान है, इसलिए यह उन पर सजदा करने के महिमामंडन के साथ विरोधाभासी है, तो यह महिमामंडन के आकस्मिक होने के अलावा एक और बात है। और आप अल्लाह सर्वशक्तिमान की सहायता से जान लेंगे कि इसमें क्या है। जहाँ तक अल-हिल्या के इस कथन का प्रश्न है कि यह फ़रिश्तों के प्रवेश को नहीं रोकता है जैसा कि इन ग्रंथों ने कहा है, मैं कहता हूँ: ग्रंथों का यह अर्थ नहीं था कि केवल उन्हें कालीन या तकिए में रखना उन्हें फ़रिश्तों को रोकने से हटा देता

(उर्दू अनुवाद/व्याख्या)

इसलिए, अल्लामा शामी ने जिसे ज़ाहिर (स्पष्ट) माना है, वह (वास्तव में) ज़ाहिर नहीं है। और यदि यह भेद किया जाए कि बिछी हुई कालीन में किसी चित्र का होना (और उसे लगा हुआ रखना) उसका अपमान और अनादर है, और उस पर सजदा करने के कारण महिमामंडन प्राप्त करना इसके विपरीत और परस्पर विरोधी है, तो यह कुछ और है, न कि यह कि यह महिमामंडन का आकस्मिक होना है। और जल्द ही अल्लाह तआला की मदद से आपको इसमें जो कमज़ोरी और कमी है, वह मालूम हो जाएगी। लेकिन हिल्ला के लेखक का यह कहना कि यह फ़रिश्तों के प्रवेश को नहीं रोकता जैसा कि इन ग्रंथों ने संकेत दिया है—मैं इसके बारे में यह निवेदन करता हूँ कि ग्रंथों से यह लाभ प्राप्त नहीं हुआ है कि किसी चित्र को

(अरबी पाठ)

है, बल्कि इसे 'फेंके हुए और रौंदे हुए' कहकर प्रतिबंधित किया है। और अल-नसाई के लिए एक ध्वज के संबंध में, वह इसे रौंदे जाने वाला कालीन बनाता है[2]।

(उर्दू अनुवाद/व्याख्या)

कालीन या तकिए में रखना उसे फ़रिश्तों की रोक-टोक से बाहर निकाल देता है। बल्कि, ग्रंथों ने इसे इस कथन के साथ प्रतिबंधित किया है कि वे चित्र फेंके हुए और रौंदे हुए होने चाहिए (ताकि उनका उचित अपमान और अनादर हो सके)। और इमाम नसाई...

[1] हिल्या अल-महल्ला शरह मुनियत अल-मुसल्ला [2] सुनन अन-नसाई, किताब अज़-ज़ीनह, सबसे अधिक दंडित लोगों का ज़िक्र, मीर मुहम्मद कारखाना कुतुब कराची 2/301

میں ہوں جن پر بیٹھیں، کھڑے ہوں، پاؤں رکھیں، یہ تقریر کلامِ مشائخ ہے واللہ الحمد۔ ثم اقول: (پھر میں کہتا ہوں۔ت) جبکہ ہر تعظیم تشبہ عبادت صورت ہے اور ہر تشبہ عبادت ملائکہ کے لئے قطعاً موجب نفرت، تو عارض و لازم میں تفرقہ محض بے اصل، تعلیق و نصب میں بھی تعظیم اسی فعل سے عارض ہوئی نہ کہ نفس ذات صورت کو لازم تھی تو بساط مفروش میں جب تصاویر کو موضع سجود میں رکھ کر ان پر سجدہ کیا جائے گا بعینہ انہیں معلق و منصوب کرنے کے مثل ہوگا اور اس وقت دخول ملئکہ کو منع کرے گا کہ ان کا امتناع بوجہ تعظیم تھا اور تعظیم پائی گئی۔

| فبما استظهره الشامي غير ظاهر فان فرق بأن جعلها في المفروش اهانة لها فتعارض تعظيم السجود عليها فذلك امر اخر غير كون التعظيم عارضا وستعلم مافيه بعون الله تعالٰی اما قول الحلية ذلك ليس بمانع من دخول الملئكة كما افادته هذه النصوص اقول: لم تفد النصوص ان مجرد جعلها في فراش او وسادة يخرجها عن منع الملئكة بل قيدته بقوله منبوذتين توطآن وللنسائی فی راية يجعل بساطاً يوطأ[2] |

لہٰذا علامہ شامی نے جس کو ظاہر قرار دیا ہے وہ (در حقیقت) ظاہر نہیں اور اگر یہ فرق کیا جائے کہ بچھے ہوئے فرش میں کسی تصویر کا ہونا (اور پیوستگی رکھنا) اس کی توہین و تذلیل ہے اور اس پر سجدہ کرنے کی وجہ سے حصول تعظیم اس کے متعارض و متصادم ہے تو یہ اور چیز ہے نہ یہ کہ تعظیم کا عارض ہونا ہے اور ابھی تمہیں اللہ تعالٰی کی مدد سے معلوم ہو جائے گا جو کچھ اس میں کمزوری اور نقص ہے لیکن صاحب حلیہ کا یہ کہنا کہ یہ دخول ملائکہ سے مانع نہیں جیسا کہ ان نصوص نے افادہ دیا۔ میں اس کے متعلق گزارش کرتا ہوں کہ نصوص سے یہ فائدہ حاصل نہیں ہوا کہ کسی تصویر کو فرش یا تکیے میں رکھنا اسے امتناع ملائکہ سے نکال دیتا ہے بلکہ

نصوص نے اس کو اس قول سے مقید کیا ہے کہ وہ تصویریں پھینکی ہوئی پامال شدہ ہوں (تاکہ ان کی صحیح اہانت اور تذلیل ہو) اور امام نسائی |

[1] حلیة المحلی شرح منیة المصلی [2] سنن النسائی کتاب الزینة ذکر اشد الناس عذاباً میر محمد کارخانه کتب کراچی ۲/ ۳۰۱

Fatawa Razawiyya, Volume 24

[Arabic Side]: And according to Al-Tabarani in 'Al-Awsat', permission was given for what is trampled upon. So, whoever places it on a carpet and then hangs it on the wall like curtains, or puts it on their head, it is absolutely prohibited and prevents the entry of angels. Similarly, for one who places it on a carpet and then prostrates upon it. In short, the intention is to demean [the image], and that was not achieved. Do you not see what is mentioned in 'Al-Bahr' from 'Al-Muhit': if it [the image] is on a pillow, if it is upright, it is disliked (makruh) because it is an act of honoring it, and if it is laid flat, it is not disliked. And according to what is in 'Al-Hilyah' from the commentary of 'Al-Jami' al-Saghir' by Imam Al-Nawawi: it is disliked to have images on large pillows, meaning because of their upright position, they are disliked; and likewise, anything that has a degree of elevation becomes an act of honoring it. But if it is an act of demeaning it, there is no harm, such as a carpet spread out or a pillow cast down, because in that, there is a demeaning of the image. Its meaning has already been mentioned from 'Al-Hidayah', 'Al-Kafi', and 'Al-Tabyin'.

[Urdu Side]: In the opinion of [some], a picture should be in such bedding that it is trampled upon. And it is stated in Imam Tabarani's "Al-Awsat": Permission was given for a picture that is to be trampled. Therefore, if someone puts a picture in bedding and then hangs it on the wall like a curtain or places it on their head, it is strictly forbidden (haraam) and prevents the entry of angels. Similarly, if someone places it on the floor and then prostrates upon it. (Summary of the discussion) The goal is to insult and humiliate the image, which is not achieved here. Don't you see what is quoted in 'Bahr al-Raiq' with reference to 'Al-Muhit'? If there is a picture on a pillow, if it is upright, it will be disliked (makruh) because in this case, the picture is being honored. But if it is laid out flat, then there will be no dislike. (Oh) Don't you see what is mentioned in 'Hilyah Sharh Jami' Saghir' by Imam Nawawi? Using large pillows that have printed pictures is disliked because, by propping them up, the pictures remain upright, and this ruling applies to every upright thing because it honors the picture. However, if they are treated with contempt and humiliation, then there is no harm, such as carpets spread out and pillows placed under the feet, etc., because in that, there is an insult and humiliation of the picture.

Footnotes: 1 Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 5699, Maktabat al-Ma'arif, Riyadh, 6/329. 2 Al-Bahr al-Raiq, Kitab al-Salah, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, H.M. Saeed Company, Karachi, 2/72. 3 Hilyat al-Mahalli Sharh Munyat al-Musalli.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

[अरबी पक्ष]: और अल-तबरानी के अनुसार 'अल-औसत' में, उन चित्रों के लिए अनुमति दी गई है जिन्हें पैरों तले रौंदा जाता है। अत; जो कोई इसे कालीन पर रखता है और फिर इसे पर्दों की तरह दीवार पर लटका देता है, या इसे अपने सिर पर रखता है, तो यह पूरी तरह से प्रतिबंधित है और फरिश्तों के प्रवेश को रोकता है। इसी तरह, उस व्यक्ति के लिए भी जो इसे कालीन पर रखता है और फिर उस पर सजदा करता है। संक्षेप में, उद्देश्य [चित्र] को नीचा दिखाना है, और वह प्राप्त नहीं हुआ। क्या आप वह नहीं देखते जो 'अल-बहर' में 'अल-मुहीत' से वर्णित है: यदि वह [चित्र] तकिए पर है, यदि वह सीधा खड़ा है, तो यह नापसंद (मक़रूह) है क्योंकि यह उसका सम्मान करने का कार्य है, और यदि वह सपाट बिछा हुआ है, तो यह नापसंद नहीं है। और इमाम अल-नववी द्वारा 'अल-जामी अल-सगीर' की व्याख्या से 'अल-हिल्या' में जो है उसके अनुसार: बड़े तकियों पर चित्र होना नापसंद है, जिसका अर्थ है कि उनकी सीधी स्थिति के कारण वे नापसंद हैं; और इसी तरह, कोई भी चीज़ जिसमें ऊंचाई का स्तर हो, वह उसका सम्मान करने का कार्य बन जाता है। लेकिन यदि यह उसे नीचा दिखाने का कार्य है, तो कोई हानि नहीं है, जैसे बिछा हुआ कालीन या नीचे गिरा हुआ तकिया, क्योंकि उसमें चित्र का अपमान है। इसका अर्थ पहले ही 'अल-हिदाया', 'अल-काफी' और 'अल-तबीन' से वर्णित किया जा चुका है।

[उर्दू पक्ष]: ...की राय में, तस्वीर किसी ऐसे बिछावन में हो कि उसे पैरों तले रौंदा जाए। और इमाम तबरानी की "अल-औसत" में है। उस तस्वीर की अनुमति दी गई जो पैरों तले रौंदी जाए, इसलिए जिसने तस्वीर को किसी बिछावन में रखा, फिर पर्दों की तरह दीवार पर लटका दिया या उसे सिर पर रख दिया तो यह निश्चित रूप से हराम है और फ़रिश्तों के प्रवेश को रोकता है और इसी तरह जिसने इसे फर्श पर रखा और फिर उस पर सज्दा किया। (सारांश) उद्देश्य उसका अपमान और तिरस्कार है जो यहाँ प्राप्त नहीं हुआ, क्या तुम नहीं देखते कि जो कुछ बहर-ए-राइक में बहवाला-ए-मुहित उद्धृत किया गया है। अगर कोई तस्वीर किसी तकिये पर हो, अगर वह खड़ी है तो अरुचि (कराहत) होगी क्योंकि इस स्थिति में तस्वीर का सम्मान होगा, और अगर वह बिछा हुआ है तो फिर अरुचि नहीं होगी। (अरे) तुम वह नहीं देखते जो हिल्लह शरह जामे सगीर इमाम नववी में वर्णित है। बड़े-बड़े तकियों में जो नक़्शी तस्वीरें हों (उनके उपयोग में) अरुचि है, इसलिए कि उनके ऊँचा करने से तस्वीरें खड़ी रहती हैं, और यह नियम हर खड़ी चीज़ का है क्योंकि इसमें तस्वीर का सम्मान है, लेकिन जब

उनका तिरस्कार और अपमान हो तो फिर कोई हर्ज नहीं जैसे बिछे हुए फर्श और पैरों में पड़े हुए तकिये आदि, क्योंकि इसमें तस्वीर का अपमान और तिरस्कार है।

पादलेख (Footnotes): 1 अल-मुअजम अल-औसत हदीस 5699 मकतबा अल-माआरिफ़ रियाज़ 6/329 2 बहर-ए-राइक किताबुस-सलात बाब मा युफ्सिदुस-सलात मा युक़रहु फ़ीहा एच.एम. सईद कंपनी कराची 2/72 3 हिल्लतुल महल्ली शरह मुनियतुल मुसल्ली

فتاوی رضویہ ، جلد ۲۴

[عربی حصہ]: وللطبرانی فی الاوسط رخص فیما کان یوطأ فمن جعلها فی بساط ثم علقه علی الجدار کالاستار او وضعه علی الراس حرم قطعاً ومنع الملئکة من الدخول، فکذا من جعلها فی بساط ثم سجد علیها وبالجملة القصد هو الاستهان ولم یحصل، الاتری الی مافی البحر عن المحیط اذا کانت علی الوسادة ان کانت قائمة یکره لانه تعظیم لها وان کانت مفروشة لا یکره اه والی مافی الحلیة من شرح الجامع الصغیر للامام النووی یکره ما یکون علی الوسائد الکبار ای لانتصابه یکرها وکذلك کل شیئ نصیب فیصیر تعظیما له فاما اذکان تحقیر اله فلا باس کالبساط المفروش والوسادة الملقاة لان فی ذلك استهانة بالصورة اه وقد تقدم معناه عن الهدایة والکافی والتبیین۔

[اردو حصہ]: کی رائے میں، تصویر کسی ایسے بچھونے میں ہو کہ اسے پامال کیا جائے۔ اور امام طبرانی کی "الاوسط" میں ہے۔ اس تصویر کی رخصت دی گئی جو پامال کی جائے، لہٰذا جس نے تصویر کو کسی بچھونے میں رکھا، پھر پردوں کی طرح دیوار پر لٹکا دیا یا اسے سر پر رکھ دیا تو یہ قطعی طور پر حرام ہے اور دخولِ ملائکہ سے مانع ہے اور اسی طرح جس نے اسے فرش میں رکھا اور پھر اس پر سجدہ کیا۔ (خلاصہ کلام) مقصود اس کی توہین و تذلیل ہے جو یہاں حاصل نہیں ہوا، کیا تم نہیں دیکھتے کہ جو کچھ بحرِ رائق میں بحوالہ محیط نقل کیا ہے۔ اگر کوئی تصویر کسی تکیے پر ہو اگر وہ کھڑا ہے تو کراہت ہو گی کیونکہ اس صورت میں تصویر کی تعظیم ہو گی، اور اگر وہ بچھا ہوا ہے تو پھر کراہت نہ ہو گی اھ (ارے) تم وہ نہیں دیکھتے جو حلیہ شرح جامع صغیر امام نووی میں مذکور ہے۔ بڑے بڑے تکیوں میں جو نقشی تصویریں ہوں (ان کے استعمال میں) کراہت ہے، اس لئے کہ ان کے اونچا کرنے سے تصویریں کھڑی رہتی ہیں، اور یہ حکم ہر کھڑی چیز کا ہے کیونکہ اس میں تصویر کی تعظیم ہے، لیکن جب ان کی تحقیر اور ذلت ہو

تو پھر کچھ حرج نہیں جیسے بچھے ہوئے فرش اور پاؤں میں پڑے ہوئے تکیے وغیرہ، کیونکہ اس میں تصویر کی توہین و تذلیل ہے۔

حواشی: 1 المعجم الاوسط حدیث ۵۶۹۹ مکتبۃ المعارف ریاض ۶/ ۳۲۹ 2 بحر الرائق کتاب الصلوۃ باب ما یفسد الصلوۃ ما یکرہ فیھا ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۷۲ 3 حلیۃ المحلی شرح منیۃ المصلی

Volume 24 Fatawa Razawiyya

(which is the objective of Sharia) Ah, and its meaning from the references of Hidaya, Kafi, and Tabyin has already passed. (T)

Thumma Aqul (Then I say): (Then I say - T) A picture that is behind the person praying, in such a state it is Makruh (disliked) whether it is installed, hanging, or inscribed or pasted on a wall, or fixed in a mirror, and this is definitely a form of veneration.

Fantaqa Qawl al-Mi'raj, la ta'zima fihi wala tashabbuh kama taqaddama wa layta shi'ri idha antafaya fama al-mujibu lil-karahata fa'in mayla ila al-tamassuk bi-imtina' al-mala'ikati qulna idh la ta'zima fala imtina'. | Therefore, the statement of the author of Mi'raj al-Dirayah is negated and voided, that in this case, there is neither veneration nor resemblance, as passed before. I wish I understood (this secret) that when both veneration and resemblance are negated and removed, then what is the reason for the dislike? If one leans towards the argument of the refusal of angels to enter, then we say when there is no veneration, where is the refusal? (T)

Thumma Aqul: Regarding something whose veneration the pure Sharia has made forbidden and whose humiliation it has made mandatory, if you treat it in such a way that from one aspect it is humiliation and from another aspect it is veneration, it will be forbidden and impermissible. It cannot be said that veneration and humiliation conflicted and became equal.

Idh la yajtami'u al-halalu wal-haramu illa ghalaba al-haramu wa'atabara hadha liman yaqbalu al-wathana wa yadribuhu bil-na'li fahal yuqalu takafa'a al-taqbilu wal-darbu fayajuzu, kalla bal yahrumu li'annahu khalada 'amalan salihan wa akhara sayyi'an. | Because Halal (permitted) and Haram (forbidden) do not come together (but on the basis of precaution), Haram will prevail. And this can be considered in the case of a person's (contradictory act) where on one hand he wants to kiss an idol and on the other hand, look at his state, he is hitting and beating it with shoes. Can it be said about him that the acts of kissing and hitting became equal? Therefore, both acts became permissible? Absolutely not, rather his kissing the idol is forbidden; here in this case, he has mixed a good and a bad deed together. (T)

And therefore, the writer of the Madhhab, Imam Muhammad (may Allah have mercy on him and us) (Thus, for this reason, Hazrat Imam Muhammad, who put the Madhhab into writing, may Allah Almighty have mercy and grace upon him and for his sake shower mercy on us all - T) in "Kitab al-Asl" declared the presence of a picture on a prayer mat (Sajjada) as absolutely Makruh even if the prostration is not on the picture itself. This is because the prayer mat is respected, so having a picture on it is a form of veneration for the picture. He did not consider that the prayer mat is spread on the ground and spreading it on the ground is a humiliation for the picture as feet will be placed on it and...

जिल्द 24 फतवा रज़विया

(जो शरीयत का उद्देश्य है) आह, और इसका अर्थ हिदाया, काफी और तबीयिन के संदर्भ से पहले गुजर चुका है। (त)

थुम्मा अकुल (फिर मैं कहता हूँ): (फिर मैं कहता हूँ - त) तस्वीर जो नमाज़ी के पीछे हो, ऐसी स्थिति में मकरूह है चाहे वह स्थापित हो, लटकी हुई हो, दीवार पर खुदी या चिपकी हुई हो, या आईने में लगी हो, और यह निश्चित रूप से सम्मान (ताज़ीम) है।

फन्तका कौल अल-मिराज, ला ताज़ीम फीही वला तशब्बुह कमा तक़द्दमा व लैता शिअरी इज़ा अन्तफ़या फमा अल-मोजिबु लिल-कराहते फइन मयला इला अल-तमस्सुक बि-इमतिना' अल-मलइखते कुलना इज़ ला ताज़ीम फला इमतिना'। | इसलिए मिराज अल-दिरयाह के लेखक का कथन खारिज और समाप्त हो गया कि इस मामले में न तो सम्मान है और न ही समानता, जैसा कि पहले बताया जा चुका है। काश मैं (इस रहस्य को) समझ पाता कि जब सम्मान और समानता दोनों ही मौजूद नहीं हैं, तो फिर मकरूह होने का कारण क्या है? यदि कोई फरिश्तों के न आने के तर्क की ओर झुकता है, तो हम कहते हैं कि जब सम्मान नहीं है, तो रुकावट कहाँ है? (त)

थुम्मा अकुल: जिस चीज़ का सम्मान करना पाक शरीयत ने हराम किया है और जिसका अपमान करना अनिवार्य किया है, यदि आप उसके साथ ऐसा व्यवहार करते हैं जिसमें एक तरफ से अपमान हो और दूसरी तरफ से सम्मान, तो वह हराम और नाजायज ही होगा। यह नहीं कहा जा सकता कि सम्मान और अपमान आपस में टकराकर बराबर हो गए।

इज़ ला यजतमउ अल-हलालु वल-हरामु इल्ला गलबा अल-हरामु वअतबरा हाज़ा लिमन यक़बलु अल-वथना व यदरीबुहु बिल-ना'लि फहल युकालु तकाफ़ा अल-तक़बीलु वल-दरबु फयजूज़ु, कल्ला बल यहरुमु लिअन्नहु खलदा 'अमलान सालिहन व अख़रा सय्यियन। | क्योंकि हलाल और हराम एक साथ नहीं मिलते (बल्कि एहतियातन) हराम हावी होगा। और इसे उस व्यक्ति के(विरोधाभासी कार्य) के उदाहरण से समझा जा सकता है जो एक तरफ तो मूर्ति को चूमना चाहता है और दूसरी तरफ उसकी हालत यह है कि वह उसे जूतों से मारता-पीटता है। तो क्या उसके बारे में यह कहा जा सकता है कि चूमना और मारना-पीटना दोनों काम आपस में बराबर हो गए? इसलिए ये दोनों काम जायज़ हो गए? हरगिज़ ऐसा नहीं है, बल्कि उसका मूर्ति को चूमना हराम है, यहाँ इस स्थिति में उसने अच्छे और बुरे काम को आपस में मिला दिया है। (त)

और इसीलिए मज़हब के लिखने वाले इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि व रहमना बिही) (इसलिए मज़हब को लेखनीबद्ध करने वाले हज़रत इमाम मुहम्मद, अल्लाह ताला उन पर रहम ओ करम फरमाए और उनके सदके हम सब पर भी रहमत बरसाए - त) ने "किताब अल-अस्ल" में नमाज़ के मुसल्ले (सज्जादा) में तस्वीर होने को बिल्कुल मकरूह बताया है, चाहे तस्वीर पर सजदा न हो रहा हो, क्योंकि मुसल्ला एक सम्मानित चीज़ है, तो उसमें तस्वीर होना तस्वीर का सम्मान है। उन्होंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि मुसल्ला ज़मीन पर बिछाया जाता है और ज़मीन पर बिछाना तस्वीर का अपमान है क्योंकि उस पर पैर रखे जाएंगे और...

पेज 608/720

(جو مقصد شریعت ہے) اھ اور اس کا مفہوم ہدایہ، کافی اور تبیین کے حوالہ سے پہلے گزر چکا ہے(ت)

ثم اقول: (پھر میں کہتا ہوں ت) تصویر کہ مصلی کے پس پشت ہو اسی حالت میں مکروہ ہے کہ منصوب یا معلق یاد یوار پر منقوش یا چسپاں یا آئینہ میں لگی ہو اور یہ قطعاً تعظیم ہے،

فانتقی قول المعراج، لاتعظیم فیہ ولاتشبہ کما تقدم ولیت شعري اذا انتفیا فما الموجب للکراھۃ فان میل الی التمسك بامتناع الملئکۃ قلنا اذلا تعظیم فلا امتناع۔ | لہذا مصنف معراج الدرایہ کا قول منفی اور زائل ہو گیا کہ اس صورت میں تعظیم اور تشبہ دونوں نہیں، جیسا کہ پہلے گزر چکا ہے، کاش میں (اس راز کو) سمجھ لیتا کہ جب تعظیم اور تشبہ دونوں منتفی اور زائل ہیں تو پھر وجہ کراہت کیا ہے۔ اگر امتناع ملئکہ کے استدلال کی طرف میلان کیا جائے تو ہم کہتے ہیں جب تعظیم نہیں تو امتناع کہاں ہے(ت)

ثم اقول: شرع مطہر نے جس شے کی تعظیم حرام اور توہین واجب کی اس سے اگر ایسا برتاؤ کیجئے جس میں ایک جہت سے توہین اور دوسری جہت سے تعظیم ہو وہ حرام و نا جائز ہی ہوگا اور یہ نہیں کہہ سکتے کہ تعظیم و توہین متعارض ہو کر برابر ہو گئیں۔

اذلا یجتمع الحلال والحرام الاغلب الحرام واعتبر ھذا لمن یقبل الوثن ویضربہ بالنعل فھل یقال تکافأ التقبیل والضرب فیجوز، کلابل یحرم لانہ خلط عملا صالحا واخر سیئا ۔ | اس لئے کہ حلال اور حرام جمع نہیں ہوتے (مگر بر بنائے احتیاط) حرام غالب ہوگا۔ اور اس کا اعتبار اس شخص کے (متضاد کام سے) کیا جا سکتا ہے کہ وہ ایک طرف تو صنم کو چومنا چاہتا ہے اور دوسری طرف دیکھئے

تو اس کی حالت یہ ہے کہ وہ جوتوں سے اسے مارتا پیٹتا ہے تو پھر اس کے متعلق یہ کہا جا سکتا ہے کہ بوسہ بازی اور مار پیٹ دونوں کام باہم برابر ہو گئے۔ لہٰذا یہ دونوں فعل جائز ہو گئے، ہر گز ایسا نہیں، بلکہ اس کا صنم کو بوسہ دینا حرام ہے، یہاں اس صورت میں اس نے اچھے اور برے فعل کو باہم مخلوط کر دیا ہے۔ (ت)

ولذا محرر المذہب امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ ورحمنا بہ (پس اس لئے مذہب کو قید تحریر میں لانے والے حضرت امام محمد، اللہ تعالیٰ ان پر رحم و کرم فرمائے اور ان کے صدقے ہم سب پر بھی رحمت برسائے۔ ت) نے کتاب الاصل میں سجادہ یعنی جانماز میں تصویر کا ہونا مطلقاً مکروہ ٹھہرایا اگر چہ تصویر پر سجدہ نہ ہو کہ جانماز معظم ہے تو اس میں تصویر ہونا تصویر کی تعظیم ہے اور یہ لحاظ نہ فرمایا کہ جانماز زمین پر بچھائی جائے گی اور زمین پر بچھانا تصویر کی توہین ہے اس پر پاؤں رکھا جائے گا اور

Fatawa Razawiyya, Volume 24

This is the height of insult, so the reason is the same: that reverence [towards images] is absolutely disliked (makruh), even if accompanied by insult, just as insulting religious sanctities is absolutely forbidden (haram), even if accompanied by a thousand acts of reverence. It is stated in Al-Hidayah:

"The ruling of dislike (karahah) is absolute in 'Al-Asl' because the prayer mat is something honored."[1]

Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) left the dislike absolute in the book 'Al-Asl' because a prayer mat is a thing worthy of respect. (T)

In Al-'Inayah, it is stated:

"Its meaning is that the carpet prepared for prayer is honored among all other carpets. So when there is an image on it, it is a kind of honoring of it, while we are commanded to despise it. Therefore, it is not appropriate for it to be in the place of prayer at all, whether one prostrates on it or not."[2]

Its meaning is that the floors (and carpets, etc.) prepared for prayer are superior, finer, and larger than all other floors and are worthy of respect. Then, when there is a picture on them, there will be a degree of honoring it, even though we are commanded to insult and humiliate it. Therefore, it is absolutely not suitable or appropriate for a picture to be present on any prayer mat, whether someone prostrates on it or does not prostrate. (T)

Similarly, it is mentioned in Tabyin and others:

"Thus, the justification provided by Al-Allamah Al-Shami for the absence of honoring [in images] when they are behind him on a curtain or a wall is negated. The throne of research has settled upon the necessity and the three causes; and praise be to Allah."

Therefore, that argument by which Allama Shami justified the lack of reverence has been removed and negated. If any image is behind the prayer-performer on a curtain or wall (then there will be no dislike). Thus, the peak of research has been established on the three causes and their logical necessity, and all kinds of praise and glorification are for Allah alone. (T)

Then I say: and through the success granted by Allah (Then I say with the success of Allah the Almighty. T) Resemblance is of two types: one is general, which is obtained

by keeping a prohibited image absolutely for the purpose of reverence, as mentioned before.

[1] Al-Hidayah, Book of Prayer, Chapter on what invalidates and what is disliked in prayer, Al-Maktabat-ul-Arabiyyah, Karachi, 1/122. [2] Al-'Inayah, Commentary on Al-Hidayah, on the margins of Fath al-Qadir, Chapter on what invalidates and what is disliked in prayer, Maktabah Razawiyyah, Sukkur, 1/362.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

यह अपमान की पराकाष्ठा है, तो कारण वही है कि सम्मान [छवियों के प्रति] पूर्णतः मकरूह (नापसंद) है, भले ही इसके साथ अपमान भी हो, जैसे धार्मिक पूज्य वस्तुओं का अपमान पूर्णतः हराम है, भले ही इसके साथ हजार सम्मान हों। हिदाया में है:

"अल-अस्ल में कराहत (नापसंदगी) का उल्लेख निरपेक्ष है क्योंकि मुसल्ला (जाय-ए-नमाज़) एक सम्मानित चीज़ है।"[1]

इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) ने किताब 'अल-अस्ल' में कराहत को निरपेक्ष रखा क्योंकि जाय-ए-नमाज़ एक सम्मानजनक चीज़ है। (त)

इनाया में है:

"इसका अर्थ यह है कि नमाज़ के लिए तैयार किया गया कालीन अन्य सभी कालीनों के बीच सम्मानित है। अतः जब उस पर कोई चित्र होता है, तो वह उसका एक प्रकार का सम्मान होता है, जबकि हमें उसका तिरस्कार करने का आदेश दिया गया है। इसलिए, नमाज़ की जगह पर उसका होना बिल्कुल भी उचित नहीं है, चाहे कोई उस पर सजदा करे या न करे।"[2]

इसका अर्थ यह है कि जो फ़र्श (और कालीन आदि) नमाज़ के लिए तैयार किए गए हैं, वे अन्य सभी फ़र्शों से श्रेष्ठ, उत्तम और बड़े हैं और सम्मान के पात्र हैं। फिर जब उन पर कोई चित्र हो, तो उसका एक प्रकार का सम्मान होगा, हालाँकि हमें उसका अपमान और तिरस्कार करने का आदेश दिया गया है। इसलिए पूर्णतः यह उपयुक्त और उचित नहीं है कि किसी जाय-ए-नमाज़ में चित्र मौजूद हो, चाहे कोई उस पर सजदा करे या न करे। (त)

इसी तरह तबीन आदि में है:

"इस प्रकार, अल्लामा शामी ने सम्मान की अनुपस्थिति के लिए जो तर्क दिया था कि यदि चित्र उनके पीछे पर्दे या दीवार पर हो, तो वह निरस्त हो गया है। शोध का सिंहासन तीन कारणों और उनकी अनिवार्यता पर स्थिर हो गया है; और अल्लाह के लिए ही प्रशंसा है।"

इसलिए वह बात समाप्त और निरस्त हो गई जिससे अल्लामा शामी ने सम्मान की कमी का तर्क दिया था। यदि कोई चित्र किसी पर्दे या दीवार पर नमाज़ी के पीछे हो (तो कराहत नहीं होगी)। अतः शोध

की पराकाष्ठा तीनों कारणों और उनकी अनिवार्यता पर स्थिर हो गई है, और अल्लाह तआला के लिए ही हर प्रकार की प्रशंसा और स्तुति है। (त)

फिर मैं कहता हूँ: और अल्लाह की तौफीक से (फिर मैं अल्लाह तआला की तौफीक से कहता हूँ। त) सादृश्य दो प्रकार का है: एक सामान्य कि पूर्णतः वर्जित चित्र को सम्मान के कारण रखने से प्राप्त होता है जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है।

[1] अल-हिदाया, किताबुस-सलात, बाबू मा युफ़्सिदुस-सलात व मा युकरहु फ़ीहा, अल-मकतबतुल अरबिया, कराची, 1/122 [2] अल-इनाया, शरह अल-हिदाया, फ़तह अल-क़दीर के हाशिए पर, बाबू मा युफ़्सिदुस-सलात व मा युकरहु फ़ीहा, मकतबा रज़विया, सुक्कुर, 1/362

فتاوٰی رضویہ، جلد ۲۴

یہ غایت توہین ہے تو وجہ وہی ہے کہ تعظیم مطلقاً مکروہ ہے اگرچہ اس کے ساتھ توہین بھی ہو جیسے معظماتِ دینی کی توہین مطلقاً حرام ہے اگرچہ اس کے ساتھ ہزار تعظیمیں بھی ہوں۔ ہدایت میں ہے:

اطلق الکراھۃ فی الاصل لان المصلی معظم۔[1]

امام محمد رحمۃ اللہ علیہ نے کتاب الاصل میں کراہت کو مطلق رکھا اس لئے کہ جانماز ایک قابلِ تعظیم چیز ہے۔ (ت)

عنایہ میں ہے:

معناہ ان البساط الذی اعد للصلوۃ معظم من بین سائر البسط فاذا کان فیہ صورۃ کان نوع تعظیم لھا ونحن امرنا باھانتھا فلا ینبغی ان تکون في المصلی مطلقا سجد علیھا اولم یسجد۔[2]

اس کا معنی یہ ہے کہ جو فرش (اور قالین وغیرہ) نماز کے لئے تیار کئے گئے وہ دوسرے تمام فرشوں سے اعلٰی، عمدہ اور بڑے ہیں اور قابلِ تعظیم ہیں، پھر جب ان پر کوئی تصویر ہو تو اس کی ایک گونہ تعظیم ہوگی حالانکہ ہمیں اس کی توہین و تذلیل کرنے کا حکم دیا گیا ہے لہٰذا علی الاطلاق موزوں اور مناسب نہیں کہ تصویر کسی جانماز میں موجود ہو خواہ کوئی اس پر سجدہ کرے یا سجدہ نہ کرے۔ (ت)

اسی طرح تبیین وغیرہ میں ہے:

فانتفی ما وجه به العلامة الشامی عدم التعظیم فیما اذا کانت خلفه علی ستر او حائط واستقر عرش التحقیق علی التلازم والعلل الثلاث وللہ الحمد۔

لہٰذا وہ کلام زائل اور منتفی ہوگیا کہ جس سے علامہ شامی نے عدمِ تعظیم کی توجیہ فرمائی تھی۔ اگر کوئی تصویر کسی پردے یا دیوار پر نمازی کے پس پشت ہو (تو کراہت نہ ہوگی) لہٰذا عرشِ تحقیق تینوں علتوں اور تلازم پر قرار پذیر ہوگیا، اور اللہ تعالٰی کے لئے ہی بہر نوع تعریف و توصیف ہے۔ (ت)

ثم اقول: وباللہ التوفیق (پھر میں اللہ تعالٰی کی توفیق سے کہتا ہوں۔ ت) تشبہ دو قسم ہے: ایک عام کہ مطلقاً تصویر ممنوع کو بوجہِ تعظیم رکھنے سے حاصل ہوتا ہے کما تقدم

[1] الھدایۃ کتاب الصلوۃ باب مایفسد الصلوۃ ومایکرہ فیھا المکتبۃ العربیۃ کراچی ۱/۱۲۲ [2] العنایۃ شرح الھدایۃ علی ھامش فتح القدیر باب مایفسد الصلوۃ ومایکرہ فیھا مکتبہ رضویہ سکھر ۱/۳۶۲

Fatawa Ridawiyya Volume 24

Its investigation and the explicit statement about it from Imam Fakhr al-Islam (as its investigation has already been done, and the explicit statement has come from Imam Fakhr al-Islam. T), the second is a specific resemblance which, besides the prayer itself, becomes apparent through some act or posture of the worshipper, for example, placing a picture in front and performing the acts of prayer towards it. This is more severe and wicked; it is certainly more specific than the essence of veneration.

Arabic	Urdu
وعليه يصدق قول الشامي ان التعظيم اعم وقول الحلية ان ليس مدار بل يوجب زيادة	And upon this, the statement of Allama Shami that veneration is more general undoubtedly holds true, and the author of al-Hilyah's statement that this is not the 'basis' but rather causes an increase. (T)

Where this will lead to a 'Karaha-e-Tahrimi' (prohibitive dislike) in prayer; otherwise, keeping it in the house for the purpose of veneration is absolutely forbidden and a sin.

Arabic	Urdu
في الحلية والبحر ورد المحتار هذه الكراهة كراهة تحريم زاد في البحر ينبغي ان يكون حراماً لا مكروهاً ان ثبت الاجماع او قطعية الدليل لتواتره	In Hilyah, Bahr al-Ra'iq, and Fatawa Shami, it is stated that this dislike is 'Karaha-e-Tahrimi'. And in Bahr al-Ra'iq, it was added: 'It is appropriate that it be Haram instead of being Makruh, if the consensus and definitiveness of the proof are established due to its tawatur.' (T)

And because of this, 'Karaha-e-Tanzihi' (mild dislike) will occur in prayer. It is stated in Inayah:

Arabic	Urdu
لان تنزيه مكان الصلوة عما يمنع دخول الملئكة مستحب	Because keeping the place of prayer free from something that prevents angels from entering is commendable (mustahabb). (T)

It is stated in the margin of Allama Sa'di Effendi:

1. Radd al-Muhtar, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/436.
2. Hilyat al-Mahalli Sharh Munyat al-Musalli.
3. Radd al-Muhtar, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/435.
4. Bahr al-Ra'iq, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, H.M. Saeed Company, Karachi, 2/27.
5. Al-Inayah Sharh al-Hidayah, on the margin of Fath al-Qadir, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, Maktaba Nooriya Ridawiyya, Sukkur, 1/363.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

इसकी तहक़ीक़ (जांच) और इमाम फ़ख़्रुल इस्लाम से इसकी स्पष्ट व्याख्या (जैसा कि इसकी तहक़ीक़ पहले हो चुकी है, और इमाम फ़ख़्रुल इस्लाम के हवाले से इसकी वज़ाहत आ गई है। त), दूसरी बात यह है कि विशिष्ट समानता जो नमाज़ के अलावा नमाज़ी के किसी कार्य या मुद्रा से प्रकट हो, उदाहरण के लिए चित्र को सामने रखकर उसकी ओर नमाज़ के कार्य करना, यह अधिक कठोर और बुरा है। यह निश्चित रूप से केवल सम्मान से अधिक विशिष्ट है।

अरबी	**उर्दू**
وعليه يصدق قول الشامي ان التعظيم اعم وقول الحلية ان ليس مدار بل يوجب زيادة	और इस पर अल्लामा शामी का यह कथन कि 'सम्मान अधिक व्यापक है' बिल्कुल सही बैठता है, और अल-हिलिया के लेखक का यह कहना कि यह 'आधार' नहीं है बल्कि अधिकता का कारण है। (त)

जहाँ नमाज़ में यह कराहते तहरीमी (निषिद्ध अरुचि) होगी, अन्यथा घर में सम्मान के उद्देश्य से इसे रखना पूरी तरह से वर्जित और पाप है।

अरबी	**उर्दू**
في الحلية والبحر ورد المحتار هذه الكراهة كراهة تحريم زاد في البحر ينبغي ان يكون حراماً لا مكروهاً ان ثبت الاجماع او قطعية الدليل لتواتره	हिलिया, बहरुल राइक और फतावा शामी में है कि यह कराहत 'कराहते तहरीमी' है। और बहरुल राइक में यह अतिरिक्त कहा गया है: 'यह उचित है कि यह मकरूह होने के बजाय हराम हो, यदि इजमा और दलील का कतई (निश्चित) होना इसके तवातुर की वजह से साबित हो जाए।' (त)

और इसके कारण नमाज़ में 'कराहते तन्ज़ीही' (हल्की अरुचि) आ जाएगी। इनाया में है:

अरबी	**उर्दू**
لان تنزيه مكان الصلوة عما يمنع دخول الملئكة مستحب	इसलिए कि नमाज़ की जगह को उस चीज़ से बचाना जो फरिश्तों के दाखिल होने से रोके मुस्तहब (प्रशंसनीय) है। (त)

अल्लामा सादी अफ़ंदी के हाशिये में है:

आई.टी. मज्लिस-ए-दावत-ए-इस्लामी

1. रद-उल-मुहतार, किताबुस-सलात, बाब मा युफसिदुस-सलात व मा युकराहू फिहा, दार इहया-अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 1/436।
2. हिलियतुल महल्ली शरह मुन्यतुल मुसल्ली।
3. रद-उल-मुहतार, किताबुस-सलात, बाब मा युफसिदुस-सलात व मा युकराहू फिहा, दार इहया-अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 1/435।
4. बहरुल राइक, किताबुस-सलात, बाब मा युफसिदुस-सलात व मा युकराहू फिहा, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 2/27।
5. अल-इनाया शरह अल-हिदाया, अल-हाशिया फतह अल-कादिर, किताबुस-सलात, बाब मा युफसिदुस-सलात व मा युकराहू फिहा, मकतबा नूरया रज़विया सख्खर 1/363।

पृष्ठ 610/720

تحقیقہ والتصریح بہ عن الامام فخر الاسلام (جیسا کہ اس کی تحقیق پہلے ہو چکی، اور امام فخر الاسلام کے حوالے سے اس کی تصریح آگئی۔ ت)، دوسرا تشبہ خاص کہ اس کے علاوہ نفس نماز میں مصلی کے کسی فعل یا ہیئت سے ظاہر ہو مثلاً تصویر کو سامنے رکھ کر اس کی طرف افعالِ نماز بجالانا یہ اشد و اخبث ہے یہ ضرور نفسِ تعظیم سے اخص ہے،

عربی **اردو**

وعليه يصدق قول الشامي ان التعظيم اعم وقول الحلية ان ليس بلاشبہ صادق آتا ہے، اور مصنف الحلیہ کا یہ کہنا کہ یہ "مدار" مدار بل يوجب زيادة نہیں بلکہ موجب زیادت ہے۔ (ت)

اور یہ علامہ شامی کا یہ ارشاد کہ تعظیم زیادہ عام ہے

جہاں یہ نماز میں کراہتِ تحریم ہو گی ورنہ مکان میں اس کا برو جہِ تعظیم رکھنا تو قطعاً ممنوع و گناہ ہے،

عربی **اردو**

في الحلية والبحر ورد المحتار هذه الكراهة كراهة تحريم زاد في البحر ينبغي ان يكون حراماً لا مكروهاً ان ثبت الاجماع او قطعية الدليل لتواتره (ت)

حلیہ، بحر رائق اور فتاوٰی شامی میں ہے یہ کراہتِ کراہتِ تحریمی ہے۔ اور بحرِ رائق میں یہ اضافہ فرمایا: مناسب ہے کہ یہ بجائے مکروہ ہونے کے حرام ہو، اگر اجماع اور دلیل کا قطعی ہونا ثابت ہو جائے اس کے تواتر کی وجہ سے۔

اور اس کے سبب نماز میں کراہتِ تنزیہی آجائے گی۔ عنایہ میں ہے:

عربی	اردو
لان تنزیہ مکان الصلوۃ عما یمنع دخول الملئکۃ مستحب	اس لئے کہ جائے نماز کو اپنی چیز سے بچانا جو فرشتوں کے داخل ہونے سے مانع ہو مستحب ہے (ت)

حاشیہ علامہ سعدی افندی میں ہے :

I.T. Majlis of DawateIslami

1 ردالمحتار کتاب الصلوۃ باب مائیفسد الصلوۃ وما یکرہ فیہا داراحیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۴۳۶ 2 حلیۃ المحلی شرح منیۃ المصلی 3 ردالمحتار کتاب الصلوۃ باب مائیفسد الصلوۃ وما یکرہ فیہا داراحیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۴۳۵ 4 بحر الرائق کتاب الصلوۃ باب مائیفسد الصلوۃ وما یکرہ فیہا ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲ / ۲۷ 5 العنایۃ شرح الھدایۃ علی ھامش فتح القدیر کتاب الصلوۃ باب ما یفسد الصلوۃ وما یکرہ فیھا مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱ / ۳۶۳

Fatawa Razawiya Volume 24

Therefore, this dislike (karahat) will be a 'dislike of purification' (karahat tanzihiyya). (T) This is the dislike which the researcher (Muhaqqiq) considered to apply from the place to the prayer. From our explanation, it is clear that regarding the issue of images during prayer, the term 'makruh' (disliked) mentioned in books is general, covering both 'prohibitive dislike' (karahat tahrimiyya) and 'dislike of purification' (tanzihiyya).

[Left Column - Arabic] 1- فتكون الكراهة تنزيهية - وعليه يستقيم قول الشامي ظاهِر كلام علمائنا ان مالا يؤثر كراهة في الصلوة لايكره ابقاؤه وقد صرح في الفتح وغيره بان الصورة الصغيرة لاتكره في البيت 2 اه والافعلة كراهة التحريم في الصلوة هوا لتشبه الخاص وفي الابقاء هو التعظيم وقد اعترف انه اعم من التشبه وانتفاء الاخص لا يوجب الانتفاء الاعم - اقول: وظهر لما قررنا ان السؤال الذى ذكره المحقق لم يكن وارد امن اصله فان المنتفى عند الاستد بار هو التشبه الخاص والتنحصر الكراهة فيه واقول: ظهر ايضاً ان الجواب الذي ابداه ليس مما بداه بل هو مفاد كلام المشائخ

[Right Column - Urdu] And on this, the statement of Allama Shami fits correctly: that the apparent speech of our noble scholars is that what does not affect the dislike of prayer, its presence is also not disliked. And in 'Fath al-Qadir' and others, it is clarified that if there is a small picture in the house, it will not be disliked. Otherwise, the reason for 'karahat tahrimiyya' in prayer is a specific imitation (tashabbuh), and in its presence is veneration (ta'zeem). The mentioned Allama has acknowledged that 'veneration' is more general than 'imitation', and (the rule is that) the absence of the specific does not necessitate the absence of the general. I say: (I say) what we have established clarifies that the question mentioned by the researcher is not applicable at all, because at the time of turning one's back, specific imitation is negated and removed, and dislike is not confined to it. And I say: (and I say) it also became clear that the answer which the author described as 'apparent' is not 'apparent'; rather, it is the speech of the masters (Masha'ikh) and their reasoning regarding the prevention of angels.

---

1. Hashiya Sa'di Chalabi on Al-Inaya, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, Dar Ihya al-Turath, 1/363.
2. Radd al-Muhtar, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, Al-Matba'ah al-Kubra, Bulaq, Egypt, 1/473.

फतावा रज़विया जिल्द 24

इसलिए यह कराहत, कराहते तनज़ीही (हल्की नापसंदगी) होगी। (त) यह वह कराहत है जिसे मुतक़द्दिम ने स्थान से नमाज़ की ओर माना है। हमारे इस बयान से यह स्पष्ट हो गया कि नमाज़ के बारे में तस्वीरों के मसले में किताबों में जो 'मकरूह' शब्द आया है, उससे तात्पर्य कराहते तहरीमी और तनज़ीही दोनों से है।

[बायाँ कॉलम - अरबी] 1- فتكون الكراهة تنزيهية - وعليه يستقيم قول الشامي ظاهِر كلام علمائنا ان مالا يؤثر كراهة في الصلوة لايكره ابقاؤه وقد صرح في الفتح وغيره بان الصورة الصغيرة لاتكره في البيت 2 اه والافعلة كراهة التحريم في الصلوة هوا لتشبه الخاص وفي الانتفاء الاعم ؏الابقاء هو التعظيم وقد اعترف انه اعم من التشبه وانتفاء الاخص لا يوج - اقول: وظهر لما قررنا ان السؤال الذى ذكره المحقق لم يكن وارد امن اصله فان المنتفى عند الاستد بار هو التشبه الخاص والتنحصر الكراهة فيه واقول: ظهر ايضاً ان الجواب الذي ابداه ليس مما بداه بل هو مفاد كلام المشائخ

[दायाँ कॉलम - उर्दू] और इस पर अल्लामा शामी का कथन सही बैठता है कि हमारे उलेमा-ए-किराम का ज़ाहिरी कलाम यह है कि जो चीज़ नमाज़ के मकरूह होने में असरअंदाज़ न हो, तो उसका बाक़ी रखना भी मकरूह नहीं। और फ़त्हुल क़दीर आदि में यह स्पष्ट किया गया है कि यदि घर में छोटी तस्वीर हो तो कराहत नहीं होगी। अन्यथा नमाज़ में कराहते तहरीमी का कारण विशेष 'तशब्बुह' (अनुकरण) है और उसे बनाए रखने में 'ताज़ीम' (सम्मान) है। उक्त अल्लामा ने यह स्वीकार किया है कि ताज़ीम, तशब्बुह से अधिक व्यापक है और (नियम यह है कि) विशेष का अभाव सामान्य के अभाव का कारण नहीं होता। 'अक़ूल' (मैं कहता हूँ): जो कुछ हमने साबित किया है उससे यह स्पष्ट हो गया कि जिस सवाल का मुतक़द्दिम ने ज़िक्र किया वह बिल्कुल लागू नहीं होता, क्योंकि पीठ फेरने के समय विशेष तशब्बुह खत्म हो जाता है, और कराहत केवल उसी में सीमित नहीं है। 'अक़ूल' (मैं कहता हूँ): और यह भी स्पष्ट हो गया कि लेखक ने जिस उत्तर को 'ज़ाहिर' (स्पष्ट) करार दिया वह ज़ाहिर नहीं है बल्कि वह मशाइख़ का कलाम और उनका तर्क फ़रिश्तों के प्रवेश की रुकावट है।

---

1. हाशिया सादी चलपी अल-इनाया, किताबुस सलात, बाब मा युफ़्सिदुस सलात व मा युक़रहु फीहा, दारु इहया-उत-तुरास, 1/363

2. रद-उल-मुहतार, किताबुस सलात, बाब मा युफ़्सिदुस सलात व मा युक़रहु फीहा, अल-मतबअतुल कुबरा, बोलाक़, मिस्र, 1/473

पृष्ठ 611 का 720

لہٰذا یہ کراہت ، کراہتِ تنزیہی ہوگی (ت) یہ ہے وہ کراہت جو محقق نے مکان سے نماز کی طرف ساری مانی ، ہمارے اس بیان سے ظاہر ہوا کہ مسئلہ تصاویر میں درباره نماز جو لفظ مکروہ کتب میں ارشاد ہوا اس سے مراد کراہتِ تحریمی و تنزیہی سے عام ہے ،

[بایاں کالم - عربی] فتكون الكراهة تنزيهية 1- وعليه يستقيم قول الشامي ظاهِر كلام علمائنا ان مالا يؤثر كراهة في الصلوة لايكره ابقاؤه وقد صرح في الفتح وغيره بان الصورة الصغيرة لاتكره في البيت 2 اه والافعلة كراهة التحريم في الصلوة هوا لتشبه الخاص وفي الابقاء هو التعظيم وقد اعترف انه اعم من التشبه وانتفاء الاخص لا يوجب الانتفاء الاعم - اقول: وظهر لما قررنا ان السؤال الذى ذكره المحقق لم يكن وارد امن اصله فان المنتفى عند الاستد بار هو التشبه الخاص والتنحصر الكراهة فيه واقول: ظهر ايضاً ان الجواب الذي ابداه ليس مما بداه بل هو مفاد كلام المشائخ

[دایاں کالم - اردو] اور اس پر علامہ شامی کا قول ٹھیک صادق آتا ہے کہ ہمارے علمائے کرام کا ظاہر کلام یہ ہے کہ جو چیز نماز کے مکروہ ہونے میں مؤثر نہ ہو تو اس کا باقی رکھنا بھی مکروہ نہیں۔ اور فتح القدیر وغیرہ میں یہ تصریح فرمائی کہ گھر میں چھوٹی تصویر ہو تو کراہت نہ ہوگی اھ ورنہ نماز میں کراہت تحریمی کی علت تشبہ خاص ہے اور اس کے باقی رکھنے میں تعظیم ہے، علامہ موصوف نے اس بات کا اعتراف کیا ہے کہ تشبہ سے تعظیم زیادہ عام ہے اور (قاعدہ یہ ہے کہ) خاص کا انتفاء عام کے انتفاء کا موجب نہیں۔ اقول: (میں کہتا ہوں) جو کچھ ہم نے ثابت کیا اس سے یہ واضح ہو گیا کہ جس سوال کو محقق نے ذکر فرمایا وہ بالکل وارد نہیں، اس لئے کہ وقت استدبار تشبہ خاص منتفی اور زائل ہے، اور کراہت اس میں منحصر نہیں و اقول: (اور میں

کہتا ہوں) اور یہ بھی ظاہر ہو گیا کہ موصوف نے جس جواب کو ظاہر قرار دیا وہ ظاہر نہیں بلکہ وہ کلام مشائخ اور ان کی تعلیل امتناع ملائکہ

---

1 حاشیہ سعدی چلپی علی العنایۃ کتاب الصلوۃ باب ما یفسد الصلوۃ و ما یکرہ فیھا دار احیاء التراث ۱ / ۳۶۳ 2 ردالمحتار کتاب الصلوۃ باب ما یفسد الصلوۃ و ما یکرہ فیھا المطبعۃ الکبری بولاق مصر ۱ / ۴۷۳

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

[Main Text Box]

[Arabic side]: And their reasoning based on the prevention of angels. I say: It has also become apparent that the question raised by Al-Muhaqqiq Al-Halabi regarding the issue of prostrating on an image is not originally valid. This is because even if there were an absence [of prohibition], it would be the absence of a specific resemblance. However, we do not even concede to its absence because prostrating on an image certainly resembles its worship, as clearly stated in "Al-Kafi." Its wording is: Prostrating on it resembles the worship of idols. [1] And in "At-Tabyin," its text is: Prostrating on it resembles its worship, therefore it is disliked (makruh). [2] Thus, what Al-'Allamah Ash-Shami mentioned—that there is no resemblance in it—is refuted. I say: It has also become clear that the answer provided in "Al-Hilyah," where the author assumed the scholars did not mention it, is already encompassed by their general discourse, as you have come to know. And all praise and glorification belong to Allah. I say: Through this investigation of ours, reconciliation is achieved between two issues. The first issue: performing prayer is disliked when the image is behind [the worshipper]. Those who affirmed this—and they are the majority...

[Urdu side]: ...is derived from ___ I say: (And I say) it has also become apparent that the question raised by the researcher Al-Halabi on the issue of prostrating on an image is essentially not valid. Because if there is an absence [of prohibition], it would be the absence of specific resemblance; rather, we do not even accept its absence, because prostrating on an image certainly resembles its worship, as mentioned in "Al-Kafi" with clarity. Therefore, its words are: Prostrating on an image is similar to the worship of an idol. And the clarification in "At-Tabyin" is: Prostrating on an image is similar to its worship, therefore it is disliked (makruh). Thus, Al-'Allamah's mention that there is no resemblance in it has undoubtedly been dispelled. I say: (I say) it has also become clear that the answer revealed by its author in "Al-Hilyah," and the assumption that the noble Imams did not mention it, while their discourse encompasses this answer as you know, and all praise and glorification is for Allah Almighty alone. I say: (I say) from this research of ours, agreement (and correspondence) has been created between two issues. The first issue is where the image is behind the back, even then the prayer is disliked. Those people who [affirmed] this...

[Footnotes]: 1. Al-Kafi Sharh al-Wafi 2. Tabyin al-Haqa'iq, Kitab as-Salat, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, Al-Matba'at al-Kubra, Bulaq, Egypt, 1/167.

फ़तावा रज़विया, खंड 24

[मुख्य टेक्स्ट बॉक्स]

[अरबी भाग]: और फरिश्तों के आने में रुकावट के उनके तर्क से। और मैं कहता हूँ: यह भी स्पष्ट हो गया है कि चित्र पर सजदा करने के मसले पर मुहक़्क़िक़ अल-हलबी ने जो सवाल उठाया, वह वास्तव में सही नहीं है। क्योंकि अगर इसमें निषेध का अभाव भी हो, तो वह विशिष्ट समानता का अभाव होगा। बल्कि हम इसके अभाव को भी स्वीकार नहीं करते, क्योंकि चित्र पर सजदा करना निश्चित रूप से उसकी इबादत (पूजा) के समान है, जैसा कि "अल-काफी" में स्पष्ट उल्लेख किया गया है। उसके शब्द हैं: इस पर सजदा करना मूर्तियों की पूजा के समान है। [1] और "अत-तबीईन" का पाठ यह है: इस पर सजदा करना उसकी इबादत के समान है, इसलिए यह मकरूह (नापसंद) है। [2] अतः अल्लामा शामी ने जो उल्लेख किया कि इसमें कोई समानता नहीं है, वह बात खत्म हो गई। मैं कहता हूँ: यह भी स्पष्ट हो गया कि "अल-हिलिया" में इसके लेखक ने जो जवाब ज़ाहिर किया और यह गुमान किया कि अइम्मा-ए-कराम (इमामों) ने इसे ज़िक्र नहीं फ़रमाया, हालाँकि उनका कलाम (कथन) इस जवाब को घेरे हुए है जैसा कि आप जान चुके हैं। और अल्लाह तआला के लिए ही सारी हम्द-ओ-सना (तारीफ और प्रशंसा) है। मैं कहता हूँ: हमारी इस तहक़ीक़ (शोध) से दो मसलों के बीच तालमेल (सहमति) पैदा हो गई। पहला मसला: जहाँ चित्र पीठ पीछे हो, तब भी नमाज़ मकरूह है। जिन हज़रात ने इसे...

[उर्दू भाग]: ...से हासिल है ___ वाकुल: (और मैं कहता हूँ) और यह भी ज़ाहिर हो गया कि तस्वीर पर सजदा करने के मसले पर मुहक़्क़िक़ हलबी ने जो सवाल उठाया वह असल में वारिद (लागू) नहीं होता क्योंकि इसमें अगर इन्तिफ़ा (अभाव) भी हो तो तशबीह-ए-ख़ास का इन्तिफ़ा होगा, बल्कि हम इसका इन्तिफ़ा भी तस्लीम नहीं करते, क्योंकि तस्वीर पर सजदा करना यक़ीनन उसकी इबादत के मुशाबेह (समान) है जैसा कि "अल-काफ़ी" में इसकी तसरीह (स्पष्टीकरण) पाई गई है, चुनाँचे इसके अल्फ़ाज़ यह हैं: किसी तस्वीर पर सजदा करना इबादत-ए-सनम (मूर्ति पूजा) के मुशाबेह है। और "तबीईन" की तसरीह यह है: तस्वीर पर सजदा करना उसकी इबादत के मुशाबेह है इसलिए मकरूह है। लिहाज़ा अल्लामा का यह ज़िक्र करना कि इसमें कोई तशबीह नहीं है, बिला-शुबा ज़ाइल (समाप्त) हो गया। अकुल: (मैं कहता हूँ) और यह भी वाज़ेह (स्पष्ट) हो गया कि "अल-हिलिया" में इसके मुसन्निफ़ (लेखक) ने जिस जवाब को ज़ाहिर किया है और यह गुमान किया कि अइम्मा-ए-कराम ने इसे ज़िक्र नहीं फ़रमाया, हालाँकि उनका कलाम इस जवाब पर मुहीत (व्याप्त) है जैसा कि

आप जानते हैं, और अल्लाह तआला के लिए ही तारीफ़-ओ-तौसीफ़ है। अकुल: (मैं कहता हूँ) हमारी इस तहक़ीक़ से दो मसलों के दरमियान मुवाफ़क़त (और मुताबाक़त) पैदा हो गई। पहला मसला जहाँ तस्वीर पस-पुश्त (पीठ पीछे) हो तो भी नमाज़ मकरूह है। जिन हज़रात ने इसको...

[पाद टिप्पणियाँ]: 1. अल-काफी शरह अल-वाफी 2. तबीईन अल-हक़ा'इक़, किताब अस-सलात, बाब मा यफसुद अस-सलात व मा युकराह फीहा, अल-मतबअत अल-कुबरा, बुलाक़, मिस्र, 1/167.

पृष्ठ 720 का 612

فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۴

[باکس کا متن]

[عربی حصہ]: وتعليلهم بامتناع الملئكة واقول : ظهر ايضا ان السؤال الذى اورد المحقق الحلبي على مسألة السجود على التصوير لم يكن من الوارد ايضا لانه ان انتفى فيه فالتشبه الخاص بل لانسلم انتفائه ايضا فان السجود على التصوير يشبه عبادته قطعا كما نص عليه فى الكافي ولفظه السجود عليها يشبه عبادة الاوثان ۱ والتبيين ونصه السجود عليها يشبه عبادتها فيكره ۲ فانتفى ماذكر العلامة الشامى ان لا تشبه فيه اقول : وظهر ايضا ان الجواب الذى ابداه في الحلية وظن انهم لم يذكروه كلامهم محيط به كما علمت ولله الحمد اقول : وبتحقيقنا هذا يحصل التوفيق فى مسألتين الاولى كراهة الصلاة حيث كانت الصورة خلف فمن اثبت وهم الاكثرون

[اردو حصہ]: سے حاصل ہے _____ واقول: (اور میں کہتا ہوں) اور یہ بھی ظاہر ہوگیا کہ تصویر پر سجدہ کرنے کے مسئلہ پر محقق حلبی نے جو سوال اٹھایا وہ اصلاً وارد نہیں کیونکہ اس میں اگر انتفاء بھی ہو تو تشبہ خاص کا انتفاء ہوگا بلکہ ہم اس کا انتفاء بھی تسلیم نہیں کرتے ، کیونکہ تصویر پر سجدہ کرنا یقینا اس کی عبادت کے مشابہ ہے جیسا کہ "الکافی" میں اس کی تصریح پائی گئی چنانچہ اس کے الفاظ یہ ہیں: کسی تصویر پر سجدہ کرنا عبادت صنم کے مشابہ ہے۔ اور التبیین کی تصریح یہ ہے : تصویر پر سجدہ کرنا اس کی عبادت کے مشابہ ہے لہذا مکروہ ہے، لہذا علامہ کا یہ ذکر کرنا کہ اس میں کوئی تشبیہ نہیں ، بلاشبہ زائل ہوگیا۔ اقول: (میں کہتا ہوں) اور یہ بھی واضح ہو گیا کہ "الحلیہ" میں اس کے مصنف نے جس جواب کو ظاہر کیا ہے اور یہ گمان کیا کہ ائمہ کرام نے اسے ذکر نہیں فرمایا حالانکہ ان کا کلام اس جواب پر محیط ہے جیسا کہ آپ جانتے ہیں، اور اللہ تعالیٰ کے لئے ہی تعریف و توصیف ہے۔ اقول : (میں کہتا ہوں) ہماری اس تحقیق سے

دو مسئلوں کے درمیان موافقت (اور مطابقت) پیدا ہوگئی۔ پہلا مسئلہ جہاں تصویر پس پشت ہو تو بھی نماز مکروہ ہے۔ جن حضرات نے اس کو

[حواشی]: ۱ الكافي شرح الوافي ۲ تبيين الحقائق كتاب الصلوة باب ما يفسد الصلوة و ما يكره فيها المطبعة الكبرى بولاق مصر ۱ / ۱۶۷

Fatawa Ridawiyya Volume 24

[Arabic Column] And he considered it in 'At-Tanwir' as the clearer view, establishing its 'karahat al-tanzihi' (mildly disliked). Those who denied it, such as Sadr al-Shari'ah in 'Sharh al-Wiqayah' and as asserted in the text of 'An-Niqayah', and relied upon in 'Al-Ghayah' as mentioned in 'At-Tabyin', 'Ad-Durar', and by Imam Al-Itabi in 'Al-Fath', followed by Ibn Kamal Pasha in 'Al-Idah', denied 'karahat al-tahrim' (prohibitively disliked). Second issue: Praying on a prayer mat (sajjadah) containing images when one does not prostrate on them. Imam Muhammad denied its dislike in 'Al-Jami' al-Saghir', but established it in 'Al-Asl'. Both are correct based on categorization, meaning it is 'tanzihi' (mildly disliked) not 'tahrimi' (prohibitively disliked). The reason in both cases is the presence of general resemblance (tashabbuh) rather than specific. This is clear in the first case. As for the second, it is because placing images in a place of prayer constitutes glorification of them, as you have heard. Every act of glorification resembles worship, as you know. Any prayer accompanied by such resemblance is disliked. The presence of disdain (ihanah) for another reason does not negate it, as we have previously stated. Thus, what was mentioned here in 'Al-Hulyah' is refuted, as he said: 'I say, it necessarily follows...'

[Urdu Column] ...proven, they are in the majority. In 'At-Tanwir', this was declared more apparent, thus establishing 'karahat al-tanzihi'. Those who denied it include Sadr al-Shari'ah in 'Sharh al-Wiqayah', who adopted this approach, and it was expressed with certainty in the text of 'An-Niqayah'. It was relied upon in 'Al-Ghayah', as reported from 'At-Tabyin', 'Ad-Durar', and Imam Al-Itabi, as found in 'Al-Fath'. Ibn Kamal Pasha in 'Al-Idah' also supported this, thereby denying 'karahat al-tahrim'. Second issue: Praying on such a prayer mat that contains images, provided one does not prostrate on them. In this scenario, Imam Muhammad denied its dislike in 'Al-Jami' al-Saghir'. However, he established the dislike in 'Kitab al-Asl'. All of this is correct according to the categorization (division), meaning it is 'Makruh Tanzihi' (mildly disliked) rather than 'Tahrimi' (prohibitively disliked). In both cases, the 'reason' is the presence of general resemblance, not specific. This is obvious in the first case; but in the second case, keeping a picture on a prayer mat is undoubtedly a form of glorification, as you have heard. In glorification, there is a resemblance to worship, as you know. Regarding a prayer in which such 'resemblance' is involved, it is disliked. The presence of disdain (insult) due to some other reason is not contradictory (or conflicting) to it, as we have explained before. Therefore, whatever was mentioned in 'Al-Hulyah' here has been neutralized and ended.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[अरबी कॉलम] और उन्होंने 'अत-तन्वीर' में इसे अधिक स्पष्ट विचार के रूप में माना, इसकी 'कराहते तन्ज़ीही' (हल्की नापसंदगी) को साबित किया। जिन लोगों ने इसका खंडन किया, जैसे 'शरह अल-विक़ाया' में सद्रुश-शरिया और 'अन-निक़ाया' के मूल पाठ में इसे निश्चित किया गया, और 'अल-ग़ाया' में इस पर भरोसा किया गया जैसा कि 'अत-तबीन', 'अद-दुरर' और इमाम अल-इताबी ने 'अल-फ़तह' में किया है, और 'अल-ईदाह' में इब्न कमाल पाशा ने भी उनका अनुसरण किया, उन्होंने 'कराहते तहरीमी' (सख्त नापसंदगी) का खंडन किया। दूसरा मसला: ऐसी जायनमाज़ (सज्जादा) पर नमाज़ पढ़ना जिसमें चित्र हों, बशर्ते कि उन पर सजदा न किया जाए। इमाम मुहम्मद ने 'जामे सगीर' में इसकी नापसंदगी का खंडन किया, लेकिन 'अल-अस्ल' में इसे साबित किया। ये दोनों बातें वर्गीकरण के आधार पर सही हैं, यानी यह 'तन्ज़ीही' है 'तहरीमी' नहीं। दोनों स्थितियों में कारण सामान्य समानता (तशब्बुह) की उपस्थिति है न कि विशिष्ट। पहली स्थिति में यह स्पष्ट है। जहाँ तक दूसरी स्थिति का प्रश्न है, मुसल्ले में चित्र रखना निस्संदेह उनका सम्मान करना है, जैसा कि आपने सुना है। सम्मान का प्रत्येक कार्य इबादत के समान है, जैसा कि आप जानते हैं। ऐसी प्रत्येक नमाज़ जिसमें ऐसी समानता पाई जाए, वह नापसंद (मकरूह) है। किसी अन्य कारण से उसमें अनादर (तौहीन) का पाया जाना इसका खंडन नहीं करता, जैसा कि हम पहले बता चुके हैं। अत; यहाँ 'अल-हुलिया' में जो कुछ उल्लेख किया गया है, वह निरस्त हो गया, जैसा कि उन्होंने कहा: 'मैं कहता हूँ, यह आवश्यक रूप से अनुसरण करता है...'

[उर्दू कॉलम] ...साबित किया है, वे बहुमत में हैं। 'अत-तन्वीर' में इसे अधिक स्पष्ट करार दिया गया, तो 'कराहते तन्ज़ीही' का प्रमाण दिया। जिन लोगों ने इसका खंडन किया, जैसे 'शरह अल-विक़ाया' में सद्रुश-शरिया ने यही रास्ता अपनाया और 'अन-निक़ाया' के मूल पाठ में इस पर दृढ़ विश्वास व्यक्त किया। 'अल-ग़ाया' में इसी पर भरोसा किया गया जैसा कि 'अत-तबीन', 'अद-दुरर' और इमाम अल-इताबी से वर्णित है, जैसा कि 'अल-फ़तह' में है। 'अल-ईदाह' में इब्न कमाल पाशा ने भी इसका समर्थन किया, जिससे 'कराहते तहरीमी' का खंडन हुआ। दूसरा मसला: ऐसी जायनमाज़ पर नमाज़ पढ़ना जिसमें तस्वीरें हों, जबकि उन पर सजदा न किया जाए। इस स्थिति में हज़रत इमाम मुहम्मद ने 'जामे सगीर' में नापसंदगी (कराहत) का खंडन किया। लेकिन 'किताब अल-अस्ल' में कराहत को साबित किया। यह सब वर्गीकरण (विभाजन) के अनुसार सही है, यानी यह 'मकरूह तन्ज़ीही' है न कि 'तहरीमी'। दोनों में 'कारण' सामान्य समानता (तशब्बुह) का पाया जाना है न कि विशिष्ट समानता।

पहली स्थिति में यह स्पष्ट है; लेकिन दूसरी स्थिति में, जायनमाज़ में तस्वीर रखना निस्संदेह उसका सम्मान करना है, जैसा कि आप सुन चुके हैं। सम्मान करने में इबादत की समानता है, जैसा कि आपको मालूम है। रही वह नमाज़ जिसमें यह 'तशब्बुह' शामिल हो, तो वह मकरूह है। किसी और कारण से उसमें अपमान (तौहीन) का पाया जाना इसके विपरीत (या विरोधाभासी) नहीं है, जैसा कि हम पहले बता चुके हैं। इसलिए, यहाँ 'अल-हुलिया' में जो कुछ ज़िक्र किया गया, वह समाप्त और खत्म हो गया।

पृष्ठ 613/720

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۴

[عربی کالم] وجعلہ فی التنویر الاظہر، اثبت کراھة التنزیه ومن نفي وھو الذي مشی علیه صدرالشریعة في شرح الوقایة وجزم به في متنه النقایة واعتمده في الغایة کما في التبیین والدرر والامام العتابی کما فی الفتح و تبعه ابن کمال باشافی الایضاح نفی کراھة التحریم - والثانیة الصلوٰة علی سجادة فیھا تصاویر اذا لم یسجد علیھا نفی الامام محمد الکراھة فی الجامع الصغیر، واثبتھا فی الاصل والکل صحیح بالتوزیع ای یکرہ تنزیھاالاتحریماً والوجه فیھما وجود التشبه العام دون الخاص وذلك ظاھر فی الاولی،اما الثانیة فلان وضع التصویر فی المصلی تعظیم له کما سمعت وکل تعظیم له تشبه بعبادته کما علمت وکل صلوٰة کان معھا التلبس بھذا التشبه کرھت ولاینافیھا وجود الاستھانة بوجہ اخر کما قدمنا فانتفی ما ذکر ھھنا فی الحلیة حیث قال، قلت یلزم

[اردو کالم] ثابت کیا ہے وہ اکثریت رکھتے ہیں اور "التنویر" میں اس کو زیادہ ظاہر قرار دیا تو کراہت تنزیہی کا اثبات فرمایا اور جن لوگوں نے اس کی نفی فرمائی، چنانچہ شرح وقایہ میں صدر الشریعہ نے یہی روش اختیار فرمائی اور متن "النقایہ" میں اس پر اظہارِ یقین کیا اور "الغایہ" میں اسی پر اعتماد کیا جیسا کہ تبیین اور درر اور امام عتابی سے منقول ہے جیسا کہ فتح القدیر میں ہے، اور الایضاح میں ابنِ کمال پاشا نے بھی اس کا ساتھ دیا تو کراہت تحریمی کی نفی کی۔ دوسرا مسئلہ: ایسی جانماز پر نماز پڑھنا کہ جس میں تصویریں ہوں جبکہ ان پر سجدہ نہ کرے تو اس صورت میں حضرت امام محمد نے جامع صغیر میں کراہت کی نفی فرمائی۔ لیکن کتاب الاصل میں کراہت کو ثابت کیا ہے، اور یہ سب کچھ بلحاظِ توزیع (تقسیم) صحیح ہے یعنی مکروہ تنزیہی اور تحریمی پر، اور دونوں میں "وجہ" تشبہ عام کا پایا جانا ہے نہ کہ تشبہ خاص، اور پہلی صورت میں ظاہر ہے لیکن دوسری صورت، اس لئے کہ جانماز میں تصویر رکھنا بلاشبہ اس کی تعظیم ہے

جیسا کہ آپ سن چکے ، اور تعظیم میں اس کی عبادت سے تشبہ ہے جیسا کہ تمہیں معلوم ہے، اور رہبر نماز کہ جس میں اس "تشبہ" سے تلبس ہو تو وہ مکروہ ہے اور کسی اور وجہ سے اس میں توہین کا پایا جانا اس کے منافی (اور متصادم) نہیں، جیسا کہ ہم نے پہلے بیان کردیا ہے، لہٰذا یہاں جو کچھ حلیہ میں ذکر کیا گیا وہ زائل اور ختم ہوگیا،

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Arabic Column Text] Based on this, what is in the "Al-Asl" (The Origin) refers to the prayer mat only, and what is in "Al-Jami" refers to something other than that, and there is no secret in what it contains. [Reference 1] - Ending. I say: Rather, both refer to the prayer mat, and it is necessary to apply what we mentioned. He (may Allah have mercy on him) said: It is better to say that the apparent contradiction between the two books lies in places other than the place of prostration. Either the mentioned restriction in "Al-Jami" is an incidental restriction, or what is in "Al-Asl" is restricted by what is in "Al-Jami". [Reference 2] - Ending. And it is added that the harmonization is either by referring what is in "Al-Jami" to what is in "Al-Asl" regarding the general dislike (of pictures), whether they are in the place of prostration or elsewhere, and the restriction of its being there occurred incidentally. Or by referring what is in "Al-Asl" to what is in "Al-Jami" by carrying the absolute (unrestricted) term upon the restricted one.

[Urdu Column Text] As the author of "Hilyah" said: I say that in this way it becomes necessary that what is mentioned in "Al-Asl" is about the picture that is only kept on the prayer mat, and what is mentioned in "Al-Jami al-Saghir" is about something else, and the weakness in this is not hidden from anyone. - Ending. I say: (I say) Rather, both of these relate to the prayer mat, and there is no distance in this; rather, it follows the method of harmonization that we mentioned. The author of "Hilyah" (may Allah Almighty have mercy on him) said: A better way is to say that there is an apparent contradiction between the two books regarding places other than the place of prostration (and the way to reconcile both is that) either it should be that the restriction mentioned in "Al-Jami al-Saghir" be accepted as an incidental restriction, or what is in "Al-Asl" is restricted by the wording of "Al-Jami al-Saghir". - Ending. And a further way of agreement is that what is mentioned in "Al-Jami al-Saghir" be referred back to "Al-Asl", meaning that the dislike refers to absolute dislike whether the picture is in the place of prostration or not, and the restriction that occurred in "Al-Jami al-Saghir" be accepted as an incidental restriction. Or what is mentioned in "Al-Asl" refers back to "Al-Jami al-Saghir" in such a way that here the absolute is carried upon the restricted.

[Footnotes] 1. At-Ta’liq al-Mujalla lima fi Munyat al-Musalli on the margin of Munyat al-Musalli, referring to Al-Hilyah, Makruhat as-Salah, Maktabah Qadriyah Lahore, p. 365. 2. At-Ta’liq al-Mujalla lima fi Munyat al-Musalli on the margin of Munyat al-Musalli, referring to Al-Hilyah, Makruhat as-Salah, Maktabah Qadriyah Lahore, p. 365.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[अरबी कॉलम का पाठ] इसके आधार पर, जो "अल-अस्ल" (मूल) में है वह केवल प्रार्थना चटाई (जायनमाज़) के बारे में है, और जो "अल-जामि" में है वह उसके अलावा है, और इसमें जो है वह किसी से छिपा नहीं है। [संदर्भ 1] - अंत। मैं कहता हूँ: बल्कि दोनों प्रार्थना चटाई के बारे में हैं, और जो हमने उल्लेख किया है उसे लागू करना आवश्यक है। उन्होंने (अल्लाह उन पर दया करे) कहा: यह कहना बेहतर है कि दोनों पुस्तकों के बीच स्पष्ट विरोधाभास सजदे के स्थान के अलावा अन्य स्थानों में है। या तो "अल-जामि" में उल्लेखित प्रतिबंध एक आकस्मिक प्रतिबंध है, या जो "अल-अस्ल" में है वह "अल-जामि" में जो कुछ है उससे प्रतिबंधित है। [संदर्भ 2] - अंत। और यह जोड़ा गया है कि सामंजस्य या तो "अल-जामि" में जो कुछ है उसे "अल-अस्ल" में वापस भेजकर सामान्य नापसंदगी (मकरूह होने) के बारे में है, चाहे वे सजदे के स्थान पर हों या कहीं और, और वहाँ होने का प्रतिबंध आकस्मिक रूप से हुआ। या "अल-अस्ल" में जो कुछ है उसे "अल-जामि" में वापस भेजकर निरपेक्ष (मुतलक़) शब्द को प्रतिबंधित (मुक़य्यद) शब्द पर लागू करके है।

[उर्दू कॉलम का पाठ] जैसा कि "हुलिया" के लेखक ने कहा: मैं कहता हूँ कि इस तरह यह आवश्यक हो जाता है कि जो कुछ "अस्ल" में वर्णित है वह उस तस्वीर के बारे में हो जो केवल जायनमाज़ पर रखी गई हो, और जो कुछ "जामि सग़ीर" में वर्णित है वह इसके अलावा है, और इसमें जो कमज़ोरी है वह किसी पर छिपी नहीं है। - अंत। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) बल्कि ये दोनों जायनमाज़ से संबंधित हैं, और इसमें कोई दूरी नहीं है; बल्कि इसमें वह सामंजस्य का तरीका है जिसका हमने उल्लेख किया है। "हुलिया" के लेखक (अल्लाह उन पर दया करे) ने फरमाया: अधिक बेहतर तरीका यह है कि कहा जाए कि जाहिर तौर पर दोनों किताबों में सजदे के स्थान के अलावा अन्य स्थान के बारे में विरोधाभास है (और दोनों में सामंजस्य का तरीका यह है कि) या तो यह हो कि "जामि सग़ीर" में जो प्रतिबंध उल्लेखित है उसे आकस्मिक प्रतिबंध माना जाए, या जो कुछ "अस्ल" में है वह "जामि सग़ीर" के शब्दों से प्रतिबंधित है। - अंत। और सहमति का एक और तरीका यह है कि "जामि सग़ीर" में जो उल्लेखित है उसे "अस्ल" की ओर वापस ले जाया जाए, यानी नापसंदगी से मुराद पूर्ण नापसंदगी हो चाहे तस्वीर सजदे के स्थान पर हो या सजदे के स्थान पर न हो, और "जामि सग़ीर" में जो प्रतिबंध हुआ उसे आकस्मिक प्रतिबंध माना जाए। या जो कुछ "अस्ल" में उल्लेखित है वह "जामि सग़ीर" की ओर इस तरह वापस जाता है कि यहाँ निरपेक्ष (मुतलक़) को प्रतिबंधित (मुक़य्यद) पर आधारित किया गया है।

[फ़ुटनोट्स] 1. अत-ता'लीक़ अल-मुजल्ला लिमा फ़ी मुनियत अल-मुसल्ली, मुनियत अल-मुसल्ली के हाशिये पर, अल-हुलिया के हवाले से, मकरूहात अस-सलाह, मकतबा कादरिया लाहौर, पृ. 365। 2. अत-ता'लीक़ अल-मुजल्ला लिमा फ़ी मुनियत अल-मुसल्ली, मुनियत अल-मुसल्ली के हाशिये पर, अल-हुलिया के हवाले से, मकरूहात अस-सलाह, मकतबा कादरिया लाहौर, पृ. 365।

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

[عربی کالم کا متن] علی هذا ان یکون ما فی الاصل موضوعاً فی المصلی لاغیر وما فی الجامع فیما عداه وفیه مالا یخفیٰ ۱۔ اھـ اقول: بل کلاهما فی المصلی ولابد فیه التطبیق ما ذکرنا قال رحمه الله تعالی والاحسن ان یقال ظاهر الکتابین التعارض فیما عدا موضع السجود فاما ان یکون ما فی الجامع من القید المذکور قیدا اتفاقیا و اما ان یکون ما فی الاصل مقیدا بما فی الجامع ۱۲اھـ و یزید ان التوفیق اما بارجاع ما فی الجامع الی مافی الاصل من اطلاق الکراهة سواء کانت في محل السجود اوغیره والتقیید بکونها فیه وقع وفاقا او بارجاع ما فی الاصل الی ما فی الجامع بحمل المطلق علی المقید۔

[اردو کالم کا متن] چنانچہ مصنف حلیہ نے فرمایا میں کہتا ہوں اس طور پر لازم آتا ہے کہ جو کچھ اصل میں مذکور ہے وہ اس تصویر کے بارے میں ہو جو صرف جانماز میں رکھی ہوئی ہو، اور جو کچھ جامع صغیر میں مذکور ہے وہ اس کے علاوہ میں ہے اور اس میں جو کمزوری ہے وہ کسی پر پوشیدہ نہیں اھ اقول: (میں کہتا ہوں) بلکہ یہ دونوں جانماز کے متعلق ہیں، اور اس میں کوئی بعد نہیں بلکہ اس میں وہ طریقہ تطبیق ہے جو ہم نے ذکر فرمایا مصنف حلیہ رحمہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا زیادہ اچھی بات یہ ہے کہ کہا جائے کہ بظاہر دونوں کتابوں میں محل سجود کے علاوہ تعارض ہے (اور دونوں میں مطابقت کی صورت یہ ہے کہ) یا یہ ہو کہ جامع صغیر میں جو قید مذکور ہے اس کو قید اتفاقی تسلیم کیا جائے یا جو کچھ اصل میں ہے وہ جامع صغیر کی عبارت سے مقید ہے اھ اور مزید موافقت کی صورت یہ ہے کہ جامع صغیر میں مذکور ہے اسے اصل کی طرف راجع کیا جائے یعنی کراہت سے مطلق کراہت مراد ہو خواہ تصویر محل سجدہ میں ہو یا محل سجدہ میں نہ ہو، اور جامع صغیر میں جو تقیید واقع ہوئی وہ قید اتفاقی تسلیم کی جائے یا جو کچھ

اصل میں مذکور ہے وہ جامع صغیر کی طرف بایں طریقہ راجع ہے کہ یہاں مطلق مقید پر محمول ہے۔

[حواشی] ۱ التعلیق المجلی لما فی منیة المصلی علی ہامش منیة المصلی بحوالہ الحلیہ مکر و ھات الصلوٰۃ مکتبہ قادریہ لاہور ص ۳۶۵ ۲ التعلیق المجلی لما فی منیة المصلی علی ہامش منیة المصلی بحوالہ الحلیہ مکر و ھات الصلوٰۃ مکتبہ قادریہ لاہور ص ۳۶۵

Fatawa Ridawiyya - Volume 24

I say (Aqool): It appears that while writing this, the respected researcher did not have the opportunity to refer back to 'Al-Jami' al-Saghir'. Therefore, its text does not permit the interpretation of declaring the mentioned condition redundant. Its validity would only hold if its explicit wording (mantuq) was that prayer is disliked specifically when an image is at the place of prostration. In that case, it would be inferred through conceptual implication (mafhum) that there is no dislike if the image is not at the place of prostration. He argued that the condition was incidental, but that is not the case; rather, its original explicit wording contradicts the basic principle—meaning the absence of dislike. So, where is the justification for what the respected Allama mentioned? Here is the text of Al-Jami': 'There is no harm in praying on a carpet that contains images as long as one does not prostrate on the images.' He (may Allah Almighty have mercy on him) said: This is more appropriate (i.e., the second view) because the reason for the opinion that prayer is disliked on a large floor where an image is under the prayer-performer's feet is not clear, and this is a necessary consequence of the first view, unlike the second. I say: We have already informed you...

Footnotes: 1. Al-Jami' al-Saghir, Kitab al-Salah, Bab fi al-Imam ayn yustahabb an yaqum etc., Yusufi Press, Lucknow, p. 11. 2. Al-Ta'liq al-Mujalla lima fi Muniyat al-Musalli on the margins of Muniyat al-Musalli citing Al-Hilyah, Makruhat al-Salat, Qadiriyya Library, Lahore, p. 365.

Page 615 of 720

फतावा रज़विया - जिल्द २४

मैं कहता हूँ (अक़ूल): ऐसा लगता है कि यह लिखते समय सम्मानित शोधकर्ता को 'अल-जामे अल-सगीर' को देखने का अवसर नहीं मिला। इसलिए, इसके पाठ में उल्लेखित शर्त को निरर्थक मानने की कोई गुंजाइश नहीं है। इसकी वैधता केवल तभी बनी रहती जब इसका स्पष्ट कथन (मंतुक़) यह होता कि नमाज़ नापसंद (मकरूह) है जब चित्र सजदे के स्थान पर हो। तब, अभिप्राय (मफहूम) के माध्यम से यह निष्कर्ष निकाला जाता कि यदि चित्र सजदे के स्थान पर नहीं है, तो कोई नापसंदगी नहीं है। उन्होंने तर्क दिया कि शर्त संयोगवश थी, लेकिन ऐसा नहीं है; बल्कि, इसका मूल स्पष्ट कथन मूल सिद्धांत के विपरीत है—अर्थात नापसंदगी का अभाव। तो, सम्मानित अल्लामा ने जो उल्लेख किया है उसका क्या औचित्य है? अल-जामे का पाठ यहाँ है: 'ऐसे फर्श पर नमाज़ पढ़ने में कोई हर्ज नहीं है जिसमें चित्र हों जब तक कि उन चित्रों पर सजदा न किया जाए।' उन्होंने (अल्लाह उन पर दया करे) कहा: यह अधिक उपयुक्त है (यानी दूसरा विचार) क्योंकि उस राय का कारण स्पष्ट नहीं है कि बड़े फर्श पर नमाज़ नापसंद है जहाँ नमाज़ी के पैरों के नीचे चित्र हो, और यह पहले विचार का एक अनिवार्य परिणाम है, दूसरे के विपरीत। मैं कहता हूँ: हमने पहले ही आपको सूचित कर दिया है...

पादलेख (Footnotes): १. अल-जामे अल-सगीर, किताबुस सालाह, इमाम के खड़े होने के स्थान का अध्याय, युसुफी प्रेस, लखनऊ, पृष्ठ ११। २. अल-ता'लीक़ अल-मुजल्ला (मुनियतुल मुसल्ली की हाशिए पर), अल-हिलिया के हवाले से, नमाज़ के मकरूहात, मकतबा कादिरिया, लाहौर, पृष्ठ ३६५।

पृष्ठ ६१५/७२०

اقول: وكأنه عند هذا التحرير لم يتيسر له مراجعة الجامع الصغير فان عبارته لا تحتمل ما ذكر من الغاء القيد وانما كان مساغه لو كان منطوقه كراهة الصلوة مقيدا بكون الصورة في محل السجود فكان يفيد عدم الكراهة في غيره بطريق المفهوم فقال ان القيد اتفاقي وليس كذلك بل اصل منطوقه ما ينافي الاصل اعنى عدم الكراهة فأين المساع لما ذكر وهذا نص الجامع : لابأس ان يصلى على بساط فيه تصاوير ولا يسجد على التصاوير اھ قال رحمه الله تعالى وهذا اولى (ای الثانی) لانه لا يظهر وجه القول بكراهة الصلوة على بساط كبير فيه صورة تحت قدم المصلى وهو لازم الاول بخلاف الثاني اھ اقول: قد افدناک

اقول: (میں کہتا ہوں) یہ تحریر کرتے وقت محقق موصوف کو جامع صغیر کی طرف مراجعت کی توفیق حاصل نہیں ہوئی اس لئے اس کی عبارت قید مذکور کو لغو قرار دینے کا احتمال نہیں رکھتی ، اور اس کے جواز کی صورت تب ہو سکتی کہ اس کا منطوق (عبارت ملفوظ) یہ ہوتا کہ نماز مکروہ ہو گی جبکہ تصویر محل سجدہ میں ہو۔ پھر اس سے یہ فائدہ حاصل ہوتا کہ اگر محل سجدہ میں تصویر نہ ہو تو کراہت نہ ہوگی۔ اور یہ فائدہ بلحاظِ مفہوم حاصل ہوتا ، اور کہا کہ قید اتفاقی ہے، حالانکہ اس طرح نہیں بلکہ اس کا اصل منطوق کتاب الاصل کے منافی ہے۔ میری مراد یہ ہے کہ وہ عدمِ کراہت ہے تو جو کچھ علامہ موصوف نے ذکر کیا اس کا جواز کہاں ہے، (دیکھئے) جامع صغیر کی یہ تصریح ہے ، کوئی حرج نہیں اگر ایسے فرش پر نماز پڑھے کہ جس پر تصویریں ہوں جبکہ ان تصویروں پر سجدہ نہ کرے اھ ، موصوف نے فرمایا (اللہ تعالیٰ ان پر رحم فرمائے) یہ اولیٰ ہے (یعنی دوسری) وجہ کیونکہ اس قول کی وجہ ظاہر نہیں کہ بڑے فرش پر نماز مکروہ ہے کہ جس میں تصویر نمازی کے زیرِ قدم ہو، اور یہ اول لازم ہے، بخلافِ ثانی اھ

اقول: (میں کہتا ہوں) بیشک ہم نے تمہیں

حواشی: 1 الجامع الصغیر کتاب الصلوۃ باب في الامام این یستحب ان یقوم الخ مطبع یوسفی لکھنو ص ۱۱ 2 التعلیق المجلی لما في منیة المصلی علی ھامش منیة المصلی بحواله الحلیه مکروھات الصلوۃ مکتبہ قادریہ لاہور ص ۳۶۵

صفحہ 615 از 720

Volume 24 Fatawa Razawiyya

[Arabic Column] The reason has been clarified, so be grateful. Then, no apparent reason remains for restricting it to "the large" (al-kabir) after assuming the image is under the foot, and Allah the Almighty knows best. Al-Bahr followed him in this entire discussion, except that he said: In Al-Asl, the dislike was stated absolutely in the case when there is a picture on the carpet one prays on, because that which is prayed upon is honored, so placing a picture on it is an act of honoring it, unlike a carpet that is not for prayer [1] ہ۱. Thus, he interpreted the carpet as a prayer rug just as we interpreted it. Then he followed Al-Hilya and said: It was previously mentioned from Al-Jami' al-Saghir the restriction to the place of prostration, so it is appropriate to interpret the absolute statement of Al-Asl accordingly, and that when it is under his two feet, it is not disliked by consensus [2] ہ۱. I say: His statement "and that" (wa annaha) is conjoined to his statement "to interpret" (an yuhmala), falling under "it is appropriate" (yanbaghi), and this is his discussion based on how he interpreted the original text, and you already know what is in it. Rather, it is disliked on the prayer rug absolutely.

[Urdu Column] This reason has provided a benefit, so give thanks. Furthermore, there is no apparent reason to describe and restrict the word "Bisat" (carpet) with the word "Kabir" (large) when it is assumed that the image is under the (worshipper's) feet, and Allah the Almighty knows best. Bahr al-Ra'iq followed this entire discussion, except that he stated that originally the dislike was kept absolute in the state when there is a picture on the laid-out prayer rug, because the floor on which prayer is performed is worthy of respect; then, placing someone's [image] on it is undoubtedly an honoring of that image. However, if it is a floor carpet and not a prayer rug ہ۱. Here, the author has interpreted carpet as a prayer rug, just as we have interpreted it. Then, following Al-Hilya, he said that the reference to Jami' al-Saghir has already been given, that he restricted it to the place of prostration. Therefore, it is appropriate that the absolute statement of Al-Asl be interpreted in this way, and when the image is under both feet, there is no dislike by consensus ہ۱. I say: (I say) His saying that "wa annaha" is conjoined to his statement "an yuhmala" and falls under "yanbaghi," and this is his discussion on the basis of what he interpreted the original text, and you know what is in it.

[Footnotes] 1 Bahr al-Ra'iq, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, H.M. Saeed Company Karachi, 2/28. 2 Bahr al-Ra'iq, Book of

Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, H.M. Saeed Company Karachi, 2/28.

Page 616 of 720

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

[अरबी कॉलम] कारण स्पष्ट हो गया है, अतः आभारी रहें। फिर, पैर के नीचे छवि को मानने के बाद इसे "बड़े" (अल-कबीर) तक सीमित करने का कोई स्पष्ट कारण नहीं दिखता है, और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है। अल-बहर ने इस पूरी चर्चा में उनका अनुसरण किया, सिवाय इसके कि उन्होंने कहा: अल-अस्ल में, नापसंदगी (कराहियत) को निरपेक्ष रूप से बताया गया था जब उस कालीन पर चित्र हो जिस पर कोई प्रार्थना करता है, क्योंकि जिस पर प्रार्थना की जाती है वह सम्मानित होता है, इसलिए उस पर चित्र रखना उसका सम्मान करना है, उस कालीन के विपरीत जो प्रार्थना के लिए नहीं है [1] ०।। इसलिए उन्होंने कालीन की व्याख्या प्रार्थना गलीचे के रूप में की जैसा कि हमने व्याख्या की थी। फिर उन्होंने अल-हिल्या का अनुसरण किया और कहा: अल-जामी अल-सगीर से पहले ही सजदा करने के स्थान तक प्रतिबंध का उल्लेख किया जा चुका है, इसलिए अल-अस्ल के निरपेक्ष कथन की व्याख्या करना उचित है, और यह कि जब यह उसके दोनों पैरों के नीचे हो, तो सर्वसम्मति से यह नापसंद नहीं है [2] ०।। मैं कहता हूँ: उनका कथन "और वह" (वा अन्नाहा) उनके कथन "व्याख्या करना" (अन युहमला) से जुड़ा हुआ है, "उचित है" (यनबगी) के अंतर्गत आता है, और यह उनकी चर्चा उसी आधार पर है जिस पर उन्होंने अल-अस्ल के भाषण को आधारित किया था, और आप जानते हैं कि इसमें क्या है। बल्कि, प्रार्थना गलीचे पर यह पूर्ण रूप से नापसंद है।

[उर्दू कॉलम] इस वजह का फ़ायदा पहुँचाया, लिहाज़ा शुक्रिया अदा कीजिए। फिर लफ़्ज़ "बिसात" को लफ़्ज़ "कबीर" से मौसूफ़ और मुक़ैयद करने की कोई ज़ाहिर वजह मौजूद नहीं जबकि यह फ़र्ज़ कर लिया कि तस्वीर (नमाज़ी के) ज़ेरे-क़दम है, वल्लाह तआला आलम। बहरुल रैक़ ने इस पूरी बहस में इसकी मुताब्बत की है मगर यह कि फ़रमाया असल में कराहत को मुतलक़ रखा इस हालत में जबकि बिछी हुई जानमाज़ पर तस्वीर हो क्योंकि जिस फ़र्श पर नमाज़ पढ़ी जाए वह क़ाबिले-ताज़ीम है, फिर उसमें किसी का रखना उस तस्वीर की बिला-शुबा ताज़ीम है। लेकिन वह फ़र्श हो जानमाज़ न हो ०।। यहाँ मौसूफ़ ने फ़र्श को जानमाज़ पर हम्ल किया है जैसा कि हमने हम्ल किया है। फिर हिल्या के इत्तेबा में फ़रमाया कि जामे सगीर का हवाला पहले आ चुका कि उसने उसे महले-सजदा से मुक़ैयद किया है। लिहाज़ा मुनासिब यह है कि असल के इतलाक़ को इस पर हम्ल किया जाए, और जब तस्वीर दोनों पाँव के नीचे हो तो बिल-इत्तेफ़ाक़ कराहत नहीं ०।। अक़ूल: (मैं कहता हूँ) इसका यह कहना कि "वा अन्नाहा" उसके क़ौल "अन युहमला" पर मातूफ़ है और "यनबग़ी" के ज़ैल में दाख़िल

है और यह इसकी बहस है इस बिना पर कि जिस पर उसने कलामे-असल को हम्ल किया है और तुम्हें मालूम है जो कुछ इसमें है।

[पादलेख] 1 बहरुल रैक़ किताबुस-सलात बाब युफ़्सिदुस-सलात व मा युकरहु फीहा, एच.एम. सईद कंपनी कराची 2/28। 2 बहरुल रैक़ किताबुस-सलात बाब युफ़्सिदुस-सलात व मा युकरहु फीहा, एच.एम. सईद कंपनी कराची 2/28।

पृष्ठ 616 का 720

[عربی کالم] الوجه فتشكر، ثم لا وجه يظهر لتقييده بالكبير بعد فرض الصورة تحت القدم والله تعالى اعلم وتبعه البحر في هذا البحث كله غير انه قال اطلق الكراهة في الاصل فيما اذا كان على البساط المصلي عليه صورة لان الذي يصلى عليه معظم فوضع الصورة فيه تعظيم لها بخلاف البساط الذي ليس بمصلى [۱] اه فحمل البساط على السجادة كما حملنا ثم تبع الحلية فقال، وتقدم عن الجامع الصغير التقييد بموضع السجود فينبغي ان يحمل اطلاق الاصل وانها اذا كانت تحت قدميه لا يكره اتفاقا [۲] اه اقول : قوله وانها معطوف على قوله ان يحمل، داخل تحت ينبغي فهو بحث منه بناءً على ما حصل عليه كلام الاصل وقد علمت ما فيه بل تكره في المصلى مطلقا

[اردو کالم] اس وجہ کا فائدہ بخشا لہذا شکریہ ادا کیجئے، پھر لفظ "بساط" کو لفظ "کبیر" سے موصوف اور مقید کرنے کی کوئی ظاہر وجہ موجود نہیں جبکہ یہ فرض کرلیا کہ تصویر (نمازی کے) زیرِ قدم ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔ بحرالرائق نے اس پوری بحث میں اس کی متابعت کی ہے مگر یہ کہ فرمایا اصل میں کراہت کو مطلق رکھا اس حالت میں جبکہ بچھی ہوئی جانماز پر تصویر ہو کیونکہ جس فرش پر نماز پڑھی جائے وہ قابلِ تعظیم ہے، پھر اس میں کسی کا رکھنا اس تصویر کی بلاشبہ تعظیم ہے لیکن وہ فرش ہو جانماز نہ ہو اہ (یہاں) موصوف نے فرش کو جانماز پر حمل کیا ہے جیسا کہ ہم نے حمل کیا ہے، پھر حلیہ کے اتباع میں فرمایا کہ جامعِ صغیر کا حوالہ پہلے آچکا کہ اس نے اسے محلِ سجدہ سے مقید کیا ہے۔ لہٰذا مناسب یہ ہے کہ اصل کے اطلاق کو اس پر حمل کیا جائے، اور جب تصویر دونوں پاؤں کے نیچے ہو تو بالاتفاق کراہت نہیں اہ۔ اقول: (میں کہتا ہوں) اس کا یہ کہنا کہ "و انها" اس کے قول "ان يحمل" پر معطوف ہے اور "ينبغى" کے ذیل

میں داخل ہے اور یہ اس کی بحث ہے اس بناء پر کہ جس پر اس نے کلامِ اصل کو حمل کیا ہے اور تمہیں معلوم ہے جو کچھ اس میں ہے۔

[حواشی] ۱ بحرالرائق کتاب الصلوٰۃ باب یفسد الصلوٰۃ ومایکرہ فیھا ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۸/۲

۲ بحرالرائق کتاب الصلوٰۃ باب یفسد الصلوٰۃ ومایکرہ فیھا ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۸/۲

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Arabic Column]: Even if it is under the foot, and what is in Al-Durr and others [stating] it is not disliked even if it is under his feet or the place of his sitting because it is humiliated, is specific to other than the prayer mat (Sajjada) due to the evidence. They have all transmitted from 'Al-Asl' the general absolute [dislike] regarding the place of prayer. And what they reasoned with includes every form as is not hidden. Yes, on a carpet other than it, it is not disliked if one prays on it and does not prostrate on it, even if it is not under his feet, rather even if it is in front of him, due to the presence of humiliation absolutely along with the lack of veneration for its face. It is said in 'Al-Hilya' quoting from the commentary of 'Al-Jami' al-Saghir' for Fakhr al-Islam: It is not disliked to pray on a cushion (wisada) that has images on it. I say: This is the very text of 'Al-Jami' al-Saghir' itself. Furthermore, what is meant by 'wisada' is a small cushion, not a large one that causes the image to be upright, as...

[Urdu Column]: It is a weakness; rather, having a picture on a prayer mat is absolutely disliked (makruh), even if the picture is under the feet. And what is mentioned in 'Durr' etc., that it is not disliked even if the picture is under both feet or in the place of sitting because it is in a state of humiliation and degradation, this is specific to something other than a dedicated prayer mat. The evidence is the same evidence, even though everyone has unanimously cited "absolute transmission" (itlaq-e-mursal) from the book 'Al-Asl', and the reasoning they mentioned includes every picture as is not hidden. Yes, if one prays on another rug with pictures and does not prostrate on a picture, there will be no dislike even if the picture is not under his feet, rather even if the picture is in front of him, because in this state humiliation is absolutely found, while there is no veneration for any reason. In 'Al-Hilya', citing the commentary of 'Jami' al-Saghir', it was stated: There is no dislike in praying on any floor other than a prayer mat that has pictures on it. I say: (I say) this is the clarification of 'Jami' al-Saghir' itself; 'wisada' refers to a rug smaller than a prayer mat, not a large one from which the standing of the image is produced, as...

[Footnotes]: 1. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Salat, Chapter: What invalidates prayer and what is disliked in it, Matba' Mujtabai Delhi 1/92 2. Al-Ta'liq al-Mujalla for what is in Munyat al-Musalli on the margins of Munyat al-Musalli, Disliked acts of prayer, Maktaba Qadriyah Lahore p. 363

Page 617 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[अरबी कॉलम]: भले ही वह पैर के नीचे हो, और 'अल-दुर्र' आदि में जो कुछ है कि यह मकरूह (नापसंद) नहीं है भले ही वह उसके पैरों के नीचे हो या उसके बैठने की जगह पर हो क्योंकि उसका तिरस्कार किया जा रहा है, यह प्रमाण के आधार पर जायनामज़ (प्रार्थना कालीन) के अलावा अन्य चीज़ों के लिए विशिष्ट है। उन सभी ने 'अल-अस्ल' से प्रार्थना स्थल के संबंध में सामान्य निरपेक्षता (इतलाक़-ए-मुर्सल) को उद्धृत किया है। और उन्होंने जिस कारण का उल्लेख किया है वह हर चित्र को शामिल करता है जैसा कि छिपा नहीं है। हाँ, उसके अलावा किसी अन्य कालीन पर, नमाज़ पढ़ना मकरूह नहीं है यदि उस पर नमाज़ पढ़ी जाए और उस पर सजदा न किया जाए, भले ही वह उसके पैरों के नीचे न हो, बल्कि भले ही वह उसके सामने हो, क्योंकि पूरी तरह से तिरस्कार की उपस्थिति के साथ-साथ उसके मुख के प्रति सम्मान की कमी है। 'अल-हिल्या' में 'फ़ख्र अल-इस्लाम' के'अल-जामे अल-सगीर' की व्याख्या से उद्धृत करते हुए कहा गया है: चित्रों वाली किसी विसादा (कुशन/छोटा कालीन) पर नमाज़ पढ़ना मकरूह नहीं है। मैं कहता हूँ: यह स्वयं 'अल-जामे अल-सगीर' का ही पाठ है। इसके अलावा, 'विसादा' से तात्पर्य छोटे कुशन से है, न कि बड़े से जो चित्र को सीधा (खड़ा) कर दे, जैसा कि...

[उर्दू कॉलम]: यह एक कमज़ोरी है; बल्कि जायनामज़ में तस्वीर का होना पूरी तरह से मकरूह है, भले ही तस्वीर पैरों के नीचे हो। और 'दुर्र' आदि में जो कुछ है कि यह मकरूह नहीं है भले ही तस्वीर दोनों पैरों के नीचे हो या बैठने की जगह पर हो क्योंकि वह अपमान और तिरस्कार की स्थिति में है, यह एक समर्पित जायनामज़ के अलावा अन्य चीज़ों के लिए विशिष्ट है। प्रमाण वही प्रमाण है, हालांकि सभी ने सर्वसम्मति से 'किताब अल-अस्ल' से "इतलाक़-ए-मुर्सल" का उल्लेख किया है, और उन्होंने जो कारण बताया है वह हर तस्वीर को शामिल करता है जैसा कि छिपा नहीं है। हाँ, यदि कोई चित्रों वाले किसी अन्य बिछौने पर नमाज़ पढ़ता है और चित्र पर सजदा नहीं करता है, तो मकरूह नहीं होगा भले ही चित्र उसके पैरों के नीचे न हो, बल्कि भले ही चित्र उसके सामने हो, क्योंकि इस स्थिति में पूरी तरह से अपमान पाया गया है जबकि किसी भी कारण से सम्मान नहीं है। 'अल-हिल्या' में 'जामे सगीर' की व्याख्या का उल्लेख करते हुए कहा गया है: जायनामज़ के अलावा किसी भी अन्य फ़र्श पर जिस पर चित्र हों, नमाज़ पढ़ने में कोई बुराई नहीं है। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) यह स्वयं 'जामे सगीर' का स्पष्टीकरण है; 'विसादा' से तात्पर्य जायनामज़ से छोटे बिछौने से है, न कि बड़े से जिससे चित्र का खड़ा होना उत्पन्न हो, जैसा कि...

[पाद टिप्पणी]: 1. दुर्र अल-मुख़्तार, किताब अल-सलात, अध्याय: नमाज़ को बिगाड़ने वाली और उसमें मकरूह बातें, मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/92 2. अत-तालीक़ अल-मुजल्ला, मुनियत अल-मुसल्ली पर हाशिये के साथ, नमाज़ की मकरूहात, मकतबा क़ादरिया लाहौर पृ. 363

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

[عربی کالم]: وان کانت تحت القدم و مافی الدر و غیرہ لایکرہ و لو کانت تحت قدمیہ اومحل جلوسہ لانہا مہانۃ مخصوص بغیر السجادۃ بدلیل الدلیل وقد نقلوا قاطبۃ عن الاصل الاطلاق المرسل فی المصلی و ما عللوہ بہ شامل لکل صورۃ کمالا یخفی نعم فی بساط غیرہ لایکرہ اذا صلی علیہ ولم یسجد علیہا وان لم تکن تحت قدمیہ بل ولو کانت امامہ لوجود الاہانۃ مطلقا مع عدم التعظیم لوجہ قال في الحلیۃ نقلا من شرح الجامع الصغیر لفخر الاسلام لا یکرہ ان یصلی دون وسادۃ علیہا تصاویر اھ اقول: ہو نص نفس الجامع الصغیر ثم المراد بالوسادۃ الصغیرۃ دون کبیرۃ تورث الصورۃ انتصاباً کما

[اردو کالم]: کمزوری ہے ، بلکہ جانماز میں تصویر کا ہونا علی الاطلاق مکروہ ہے اگرچہ تصویر زیر قدم ہو ، اور جو کچھ دُرر وغیرہ میں ہے کہ یہ مکروہ نہیں اگر چہ تصویر دونوں قدموں کے نیچے ہو یا اس کے بیٹھنے کی جگہ میں ہو اس لئے کہ وہ بحالت توہین و تذلیل ہے اور یہ بغیر جانماز مخصوص ہے دلیل وہی دلیل ہے حالانکہ سب نے بالاتفاق کتاب الاصل سے " اطلاق مرسل " نقل کیا ہے ، اور انہوں نے جو اس کی تعلیل ذکر فرمائی وہ ہر تصویر کو شامل ہے جیسا کہ یہ پوشیدہ نہیں ، ہاں کسی دوسرے تصویر والے بچھونے پر نماز پڑھے اور تصویر پر سجدہ نہ کرے تو کراہت نہ ہو گی اگر چہ تصویر اس کے قدموں کے نیچے نہ ہو ، بلکہ اگرچہ تصویر اس کے آگے ہی ہو اس لئے کہ اس حالت میں مطلقاً توہین پائی گئی باوجویکہ تعظیم کسی وجہ سے بھی نہیں۔ الحلیہ میں شرح جامع صغیر سے نقل کرتے ہوئے فرمایا جانماز کے علاوہ کسی اور فرش پر کہ جس میں تصویریں ہوں نماز پڑھے تو کراہت نہیں اھ اقول: (میں کہتا ہوں) یہ خود جامع صغیر کی تصریح ہے وسادہ یعنی جانماز سے چھوٹی جانماز مراد ہے نہ بڑی کہ جس سے تصویر کا قیام پیدا ہوتا ہے ، جیسا کہ

[حواشی]: ۱ در مختار کتاب الصلوة باب مایفسد الصلوة و مایکره فیها مطبع مجتبائی دہلی ۱/۹۲ ۲ التعلیق المجلی لمافی منیة المصلی علی ہامش منیة المصلی مکروہات الصلوة مکتبه قادر یه لاہور ص ۳۶۳

[Top Left Column - Arabic]: It was mentioned earlier, and then it should not be hidden from you that the reconciliation mentioned by this humble servant (the author) is better than what this researcher chose. This is because his approach involves neglecting some aspects of one of the two [opinions], while in what I mentioned, both are acted upon in all their aspects. So, look at the abundance of benefits in the words of the scholars, may Allah Almighty have mercy on them. Such is their speech when one looks deeply into it, and when success is granted by the Kind and All-Aware [Lord], whose majesty is dominant. And all praise is due to Allah.

[Top Right Column - Urdu]: It has been mentioned before, and let it not remain hidden from you that the reconciliation presented by the humble servant (Imam Ahmad Raza) is better than what this researcher adopted. This is because his way involves disregarding some contents of one of the two, while in what I have mentioned in this chapter, there is this superiority and excellence that both are given action in all instances. Therefore, observe the numerous benefits in the words of the scholars, may Allah Almighty have mercy on them. Their words are precisely like this when a deep eye is cast upon them, and the granter of success is the Kind and All-Aware Sustainer, whose majesty is dominant and powerful, and for Allah is all praise and glorification. (T)

[Middle Section - Urdu/Arabic]: Then I say, and from Him I seek help: (Then I say, seeking help from Him. - T) Although the clarification of the legal cause has been done in the best way by the grace of Allah, another great clarification remains. Since the cause for dislike is resemblance to worship, whether specific or general, it is necessary that the image belongs to the category of what polytheists worship. (The image should be of a kind that polytheists worship. - T) If polytheists do not worship it at all, it does not fall under the ruling of an idol, such that keeping it out of respect or praying towards it would be, God forbid, resemblance to idol worship. Therefore, in many places, they explain the cause of dislike through worship and its absence through the lack of worship, stating that if polytheists do not worship it, then there is no dislike. For example: (1) An image so small that if placed on the ground and looked at, the details of the body parts are not discernible, is not a cause for dislike, because it is not the habit of polytheists to worship such small images. It is stated in Al-Hidayah, Al-Kafi, and Al-Tabyin:

[Lower Box - Arabic/Urdu]: Arabic: If the image is small such that it is not clear to the observer, it is not disliked, because very small ones are not worshipped. Urdu: If an image is so small that it is not clear to the observer, then it is not disliked because such small images are not worshipped. (T)

[Footnote]: 1. Al-Hidayah, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, Al-Maktabah al-Arabiyyah Karachi, 1/122

[शीर्ष बायां कॉलम - अरबी]: यह पहले उल्लेख किया जा चुका है, फिर आप पर यह बात छिपी न रहे कि इस फ़कीर (लेखक) ने जो मेल-मिलाप बताया है, वह उस शोधकर्ता द्वारा चुने गए समाधान से बेहतर है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके तरीके में दो में से एक के कुछ पहलुओं की अनदेखी की गई है, जबकि मैंने जो उल्लेख किया है, उसमें सभी स्थितियों में दोनों पर अमल किया गया है। अतः विद्वानों के शब्दों में मौजूद अनेक लाभों को देखें, अल्लाह तआला उन पर दया करे। जब गहराई से देखा जाए तो उनका कलाम ऐसा ही होता है, और सफलता देने वाला वह दयालु और सर्वज्ञ प्रभु है, जिसकी महिमा प्रबल है। और समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है।

[शीर्ष दायां कॉलम - उर्दू]: यह पहले उल्लेख किया जा चुका है, और आप पर यह बात छिपी न रहे कि इस फ़कीर (इमाम अहमद रज़ा) ने जो मेल-मिलाप पेश किया है, वह उस शोधकर्ता द्वारा अपनाए गए समाधान से बेहतर है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके तरीके में दो में से एक की कुछ सामग्री को नज़रअंदाज़ कर दिया गया है, जबकि मैंने इस अध्याय में जो ज़िक्र किया है, उसमें यह श्रेष्ठता और खूबी है कि सभी स्थितियों में दोनों को अमल में लाया गया है। इसलिए विद्वानों (रहमतुल्लाह अलैहि) के कलाम में मौजूद अनेक लाभों को देखें। उनके शब्द बिल्कुल ऐसे ही होते हैं जब उन पर गहरी नज़र डाली जाए, और तौफीक (सफलता) देने वाला वह दयालु और सर्वज्ञ पालनहार है, जिसकी महिमा प्रबल और शक्तिशाली है, और अल्लाह तआला के लिए ही समस्त प्रशंसा और महिमा है। (त)

[मध्य खंड - उर्दू/अरबी]: फिर मैं कहता हूँ, और उसी से सहायता माँगता हूँ: (फिर मैं कहता हूँ, उसी से सहायता माँगते हुए। - त) यद्यपि अल्लाह के अनुग्रह से कारण का स्पष्टीकरण सर्वोत्तम तरीके से हो गया है, फिर भी एक और बड़ा स्पष्टीकरण शेष है। चूंकि नापसंदगी का कारण पूजा के साथ समानता है, चाहे वह विशिष्ट हो या सामान्य, तो यह आवश्यक है कि वह चित्र उस श्रेणी का हो जिसकी मुशरिक (बहुदेववादी) पूजा करते हैं। (चित्र उस श्रेणी का हो जिसकी मुशरिक पूजा करते हैं। - त) जिसे मुशरिक बिल्कुल पूजते ही नहीं, वह मूर्ति के नियम में नहीं आता कि उसे सम्मान स्वरूप रखने या उसकी ओर नमाज़ पढ़ने में, अल्लाह न करे, मूर्ति पूजा के साथ समानता हो। इसलिए, कई स्थानों पर वे नापसंदगी का कारण पूजा के होने और उसके न होने का कारण पूजा के न होने से बताते हैं कि मुशरिक इसकी पूजा नहीं करते, इसलिए कोई नापसंदगी नहीं है। उदाहरण के लिए: (१) इतना छोटा चित्र कि ज़मीन पर रखकर देखने से शरीर के अंगों का विवरण स्पष्ट न हो, तो वह नापसंदगी

का कारण नहीं है क्योंकि इतने छोटे चित्रों की पूजा करना मुशरिकों की आदत नहीं है। हिदाया, काफी और तब्यीन में उल्लेख है:

[निचला बॉक्स - अरबी/उर्दू]: अरबी: यदि चित्र इतना छोटा हो कि देखने वाले को स्पष्ट न दिखे, तो यह नापसंद नहीं है क्योंकि बहुत छोटे चित्रों की पूजा नहीं की जाती है। उर्दू: यदि चित्र इतना छोटा हो कि देखने वाले के लिए स्पष्ट न हो, तो वह मकरूह (नापसंद) नहीं है क्योंकि इतने छोटे चित्रों की पूजा नहीं होती है। (त)

[फुटनोट]: १. अल-हिदाया, किताबुस-सलात (नमाज़ का अध्याय), उन चीज़ों का बयान जो नमाज़ को खराब करती हैं और जिनमें नापसंदगी है, अल-मक्तबतुल अरबिया कराची, १/१२२

[اوپر والا بایاں کالم - عربی]: تقدم ، ثم لایخفی علیك ان التوفیق الذي ذکرہ الفقیر اولی مما اختارہ ھذا المحقق لان فیہ اھمال احدھما في بعض متناولاتہ وفیما ذکرت اعمال کلیھما في کلہ فانظر الی کثرۃ الفوائد في کلام المشائخ رحمھم اللہ تعالی وھکذا کلامھم اذا امعن فیہ النظر و ساعد التوفیق في اللطیف الخبیر عز جلالہ واللہ الحمد۔

[اوپر والا دایاں کالم - اردو]: پہلے گزر چکا، اور تم پر یہ بات پوشیدہ نہ رہے کہ جو موافقت فقیر (امام احمد رضا) نے پیش کی وہ اس سے بہتر ہے جو اس محقق نے اختیار کی کیونکہ اس میں دو میں سے ایک کے بعض مشمولات کو نظر انداز کر دینا ہے، اور جو کچھ میں نے اس باب میں ذکر کیا اس میں یہ فوقیت و خوبی ہے کہ سب میں دونوں کو عمل دینا ہے۔ لہٰذا مشائخ رحمہم اللہ تعالٰی کے کلام میں کثیر فوائد کو ملاحظہ فرمائیے، اور ان کا کلام ایسا ہی ہوتا ہے جبکہ اس پر گہری نظر ڈالی جائے اور توفیق دینے میں پروردگار لطیف و خبیر ہے کہ جس کا جلال غالب اور زبردست ہے، اور اللہ تعالٰی کے لئے ہر تعریف و توصیف ہے۔(ت)

[درمیانی حصہ - اردو/عربی]: ثم اقول: وبہ استعین (پھر میں کہتا ہوں اسی سے طلب مدد کرتے ہوئے ۔ ت) تنقیح علت اگر چہ بفضلہ تعالٰی برو جہ احسن ہوئی مگر ابھی ایک اور تنقیح عظیم باقی ہے جبکہ علت کراہت تشبہ عبادت ہے خاص ہو یا عام، تو ضرور ہے کہ وہ تصویر جنس ما یعبدہ المشرکون (تصویر اس جنس سے ہو کہ جس کی مشرکین عبادت کرتے ہیں۔ت) سے ہو کہ جسے مشرکین پوجتے ہی نہیں وہ بت کے حکم میں نہیں کہ اس کے بروجہ تعظیم رکھنے یا اس کی طرف نماز پڑھنے میں معاذ اللہ عبادت بت سے تشبہ ہو، ولہٰذا جابجا کراہت کو عبادت اور اس کے عدم کو عدم سے تعلیل فرماتے ہیں کہ یہ مشرک اس کی عبادت نہیں کرتے، لہٰذا کراہت نہیں، مثلاً:

(۱) اتنی چھوٹی تصویر کہ زمین پر رکھ کر دیکھو تو اعضا کی تفصیل نہ معلوم ہو مورت کراہت نہیں کہ اتنی چھوٹی کی عبادت مشرکین کی عادت نہیں۔ ہدایہ و کافی و تبیین میں ہے:

[نیچے والا خانہ - عربی/اردو]: عربی: لو کانت الصورۃ صغیرۃ بحیث لا تبدو للناظر لا یکرہ لان الصغار جدا لا تعبد۱۔ اردو: اگر تصویر اتنی چھوٹی ہو کہ دیکھنے والے کیلئے واضح نہ ہو تو مکروہ نہیں اس لئے کہ اتنی چھوٹی تصویروں کی پرستش نہیں ہوتی۔(ت)

[حاشیہ]: 1 الھدایۃ کتاب الصلوۃ باب ما یفسد الصلوۃ وما یکرہ فیھا المکتبۃ العربیہ کراچی ۱/۱۲۲

Fatawa Razawiya Volume 24

In Fath al-Qadir it is [stated]: Arabic: 1 ۔ فليس لها حكم الوثن فلاتكره فى البيت (So it does not have the ruling of an idol, hence it is not disliked in the house.) Urdu Box: Therefore, such a picture does not have the ruling of an idol; hence keeping it in the house is not disliked. (T)

And regarding this, reports are narrated and mentioned from the Commander of the Faithful Farooq-e-Azam, and Hazrat Abdullah bin Mas'ud, and Hudhaifa bin al-Yaman, and Nu'man bin Muqarrin, and Abdullah bin Abbas, and Abu Huraira, and Abu Musa al-Ash'ari (may Allah be pleased with them all), the companions, and our master Daniel (peace be upon him), as explained in Al-Hilya. (T)

(2) [An image that is] beheaded or with the face erased, as it is also not worshipped; and erasing eyebrows and eyes is not sufficient, nor does cutting off all four hands and feet negate the dislike. It is in Tabyin and Bahr: Arabic Box: مقطوعة الرأس لاتكره لأنها لاتعبد بدون الرأس عادة ولا اعتبار بإزالة الحاجبين أوالعينين لأنها تعبد بدونهما ۔ 2 (A beheaded image is not disliked because it is not normally worshipped without a head, and no consideration is given to removing the eyebrows or eyes because it is worshipped without them.) Urdu Box: Keeping a beheaded picture is not disliked because, customarily, it is not worshipped without a head. However, erasing both eyebrows and both eyes is of no account, because it is worshipped even without them. (T)

In Hidaya it is said: Arabic Box: 3 ۔ ممحوالرأس ليس بتمثال لانه لايعبد بدون الراس (The one with the head erased is not an image/statue because it is not worshipped without the head.) Urdu Box: If the head is erased, meaning wiped out, then it will no longer be a picture or statue, because it is not worshipped without a head. (T)

In Inaya it is: Arabic Box: 4 ۔ انه لايعبد بلا رأس فكان كالجمادات (Indeed, it is not worshipped without a head, so it was like inanimate objects.) Urdu Box: If there is no head, then it will not be worshipped because it is like mere inanimate things. (T)

Footnotes: 1. Fath al-Qadir, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, Maktaba Nooria Razawiya, Sukkur, 1/363 2. Tabyin al-Haqa'iq, Book of Prayer, 1/66 and Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer, 1/28 3. Al-Hidaya, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer, etc., Al-Maktaba al-Arabiya, Karachi, 1/122 4. Al-Inaya Sharh al-Hidaya on the margin of Fath

al-Qadir, Chapter on what invalidates prayer, Maktaba Nooria Razawiya, Sukkur, 1/363

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

फतह अल-क़दीर में है: अरबी: 1 ۔ فلیس لها حکم الوثن فلاتکره فی البیت (तो इसके लिए मूर्ति का हुक्म नहीं है, इसलिए घर में यह मकरूह नहीं है।) उर्दू बॉक्स: इसलिए ऐसी तस्वीर के लिए मूर्ति का हुक्म नहीं है, अतः इसे घर में रखना मकरूह (नापसंद) नहीं है। (त)

और इस बारे में अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़-ए-आज़म और हज़रत अब्दुल्ला बिन मसूद और हुजैफ़ा बिन अल-यमान और नुमान बिन मुक़र्रिन और अब्दुल्ला बिन अब्बास और अबू हुरैरा और अबू मूसा अशअरी (रज़ियल्लाहु अन्हुम) सहाबा और हमारे आका दानियाल (अलैहिस्सलाम) से आसार (उद्धरण) वर्णित और उल्लिखित हैं जैसा कि उन्हें 'हिलिया' में बयान फ़रमाया। (त)

(2) सिर कटा हुआ या चेहरा मिटाया हुआ कि उसकी भी पूजा नहीं होती, और भौंहें और आँखें मिटा देना काफ़ी नहीं है, और न ही चारों हाथ-पैर काट देना कराहत (नापसंदगी) को दूर करता है। 'तब्बीन' और 'बहर' में है: अरबी बॉक्स: مقطوعة الرأس لاتکره لأنها لاتعبد بدون الرأس عادة ولا اعتبار بإزالة الحاجبین أوالعینین لأنها تعبد بدونهما ۔ 2 (सिर विहीन तस्वीर मकरूह नहीं है क्योंकि आम तौर पर सिर के बिना उसकी पूजा नहीं की जाती है, और दोनों भौंहों या दोनों आँखों को हटाने का कोई महत्व नहीं है क्योंकि उनके बिना भी उसकी पूजा की जाती है।) उर्दू बॉक्स: सिर कटी हुई तस्वीर रखना मकरूह नहीं है क्योंकि सिर के बिना आदतन उसकी इबादत नहीं की जाती, लेकिन दोनों भौंहों और दोनों आँखों को मिटा देने का कोई एतबार (महत्व) नहीं है, क्योंकि उनके बिना भी उसकी इबादत की जाती है। (त)

हिदाया में फ़रमाया: अरबी बॉक्स: 3 ۔ ممحوالرأس لیس بتمثال لانه لایعبد بدون الراس (सिर मिटाया हुआ चित्र प्रतिमा नहीं है क्योंकि सिर के बिना इसकी पूजा नहीं की जाती।) उर्दू बॉक्स: अगर सिर मिटा दिया जाए (यानी मिटा दिया जाए) तो वह तस्वीर और मूर्ति नहीं रहेगी क्योंकि सिर के बिना उसकी इबादत नहीं की जाती। (त)

इनाया में है: अरबी बॉक्स: 4 ۔ انه لایعبد بلا رأس فکان کالجمادات (बेशक सिर के बिना इसकी पूजा नहीं की जाती, इसलिए यह निर्जीव वस्तुओं की तरह हो गई।) उर्दू बॉक्स: अगर सिर न हो तो उसकी इबादत न होगी क्योंकि वह महज़ बेजान चीज़ों की तरह है। (त)

पाद-टिप्पणियाँ: 1. फ़तह अल-क़दीर, किताबुस-सलात, बाब मा युफसिदुस-सलात वा मा युकराहु फीहा, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/363 2. तब्बीनुल-हक़ाइक, किताबुस-सलात, 1/66 और

अल-बहरुर-राइक, किताबुस-सलात, बाब मा युफसिदुस-सलात, 1/28 3. अल-हिदाया, किताबुस-सलात, बाब मा युफसिदुस-सलात आदि, अल-मकतबा अल-अरबिया, कराची, 1/122 4. अल-इनाया शरह अल-हिदाया, फ़तह अल-क़दीर के हाशिए पर, बाब मा युफसिदुस-सलात, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/363

فتح القدیر میں ہے: فلیس لھا حکم الوثن فلاتکرہ فی البیت ۔ 1 | لہٰذا ایسی تصویر کے لئے حکم صنم نہیں لہٰذا اس کا گھر میں رکھنا مکروہ نہیں۔ (ت)

اور اس بارے میں امیر المومنین فاروق اعظم و حضرت عبداللہ بن مسعود و حذیفہ بن الیمان و نعمان بن مقرن و عبداللہ بن عباس و ابوہریرہ و ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ تعالیٰ عنہم صحابہ اور سیدنا دانیال علیہ الصلوٰۃ والسلام سے آثار مروی و مذکور ہیں کما بینھا فی الحلیۃ (جیسا کہ انہیں حلیہ میں بیان فرمایا۔ ت)

(۲) سر بریدہ یا چہرہ محو کردہ کہ اس کی بھی عبادت نہیں ہوتی، اور بھنویں اور آنکھیں مٹا دینا کافی نہیں، نہ چاروں ہاتھ پاؤں کاٹ دینا نفی کراہت کرے۔ تبیین و بحر میں ہے: مقطوعۃ الرأس لاتکرہ لأنھا لاتعبد بدون الرأس عادۃ ولا اعتبار بإزالۃ الحاجبین أوالعینین لأنھا تعبد بدونھما ۔ 2 | سربریدہ تصویر رکھنا مکروہ نہیں اس لئے کہ بغیر سر عادتاً اس کی عبادت نہیں کی جاتی لیکن دونوں ابرو اور دونوں آنکھیں مٹا دینے کا کچھ اعتبار نہیں، اس لئے کہ ان کے بغیر بھی اس کی عبادت کی جاتی ہے۔ (ت)

ہدایہ میں فرمایا: ممحوالرأس لیس بتمثال لانہ لایعبد بدون الراس ۔ 3 | اگر سر محو کردیا جائے یعنی مٹا دیا جائے تو وہ تصویر اور مورتی نہ رہے گی کیونکہ بغیر سر اس کی عبادت نہیں کی جاتی (ت)

عنایہ میں ہے: انہ لایعبد بلا رأس فکان کالجمادات ۔ 4 | اگر سر نہ ہو تو اس کی عبادت نہ ہوگی کیونکہ وہ محض بے جان چیزوں کی طرح ہے۔ (ت)

1 فتح القدیر کتاب الصلوٰۃ باب مایفسد الصلوۃ ومایکرہ فیھا مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۳۶۳ 2 تبیین الحقائق کتاب الصلوۃ ۱/ ۶۶ و بحر الرائق کتاب الصلوۃ باب مایفسد الصلوۃ ۱/ ۲۸ 3 الہدایہ کتاب الصلوۃ باب مایفسد الصلوۃ الخ المکتبۃ العربیۃ کراچی ۱/ ۱۲۲ 4 العنایۃ شرح الہدایۃ علی ہامش فتح القدیر باب ما یفسد الصلوۃ مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۳۶۳

Fatawa Razawiyya, Volume 24

Summary from Fath, Hilya, and Bahr: [Arabic]: The wording is: "Severing both hands or both feet is not considered (to remove the prohibition)." Similarly in Al-Khulasa, then in Al-Hilya with a word of disjunction [or], and the wording of Al-Muhaqqiq is: "If both hands and both feet are severed, the dislike (karahah) is not removed." I mean with the word of conjunction [and], and that is what is intended. Urdu: The words of Bahr-ur-Raiq are: If both hands and both feet are cut off, they are not taken into account, and similarly in Khulasa and then Hilya, it is with the word of disjunction (word 'or'). And the words of the researcher (Muhaqqiq) are: if both hands and both feet are cut off, the dislike will not end. My point is that (here in the text) there is a word of conjunction (meaning with the word 'and') and this is what is intended. (T)

In Ghuniya, the reasoning for the rulings on small images and images with severed heads is stated: [Arabic]: Because they are not worshipped, so the resemblance which is the cause of dislike is eliminated.

(3) If a candle, lamp, lantern, or chandelier is in front during prayer, it is not disliked because they are not worshipped. However, if a furnace, stove, or brazier with flaming fire and glowing embers is in front, it is disliked because the Magians worship them. In Al-Inayah, after the aforementioned text, it says: [Arabic]: Thus it becomes like praying towards a candle or a lamp in that they are not worshipped, and it is disliked if there is a stove in front of him containing glowing embers or a kindled fire. Urdu: Then it is like a candle or a lamp, that one prays facing them because they are not worshipped (hence no dislike), but prayer is disliked when such a stove is placed in front of the prayer-performer that has flaming fire embers in it. (T)

1. Bahr-ur-Raiq, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, H.M. Saeed Company Karachi 2/28.
2. Fath-ul-Qadir, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, Maktaba Nooria Razawiyya Sukkur 1/363.
3. Ghuniyat-ul-Mustamli Sharh Munyat-ul-Musalli, Chapter on Dislike of Prayer, Suhail Academy Lahore p. 359.
4. Al-Inayah Sharh Al-Hidayah on the margin of Fath-ul-Qadir, Chapter on what is disliked in it, Maktaba Nooria Razawiyya Sukkur 1/363.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

फ़तह, हिलिया और बहर में सारांश है: [अरबी]: शब्द इस प्रकार हैं: "दोनों हाथों या दोनों पैरों को काटना विचारणीय नहीं है (निषेध हटाने के लिए)।" इसी तरह अल-खुलासा में, फिर अल-हिलिया में विच्छेदक शब्द [या] के साथ, और अल-मुहक्क़िक के शब्द हैं: "यदि दोनों हाथ और दोनों पैर काट दिए जाएं तो नापसंदगी (कराहियत) दूर नहीं होती।" मेरा मतलब संयोजन शब्द [और] के साथ है, और यही अभिप्रेत है। [उर्दू]: बहर-उर-राईक़ के शब्द ये हैं: यदि दोनों हाथ और दोनों पैर कटे हुए हों तो उनका कोई विचार नहीं है और इसी तरह खुलासा और फिर हिलिया में शब्द-ए-तरदीद (शब्द 'या') के साथ है और मुहक्क़िक के शब्द ये हैं: अगर दोनों हाथ और दोनों पैर काट डाले तो कराहियत ख़त्म न होगी। मेरी मुराद ये है कि (यहाँ इबारत में) हर्फ़ए-जमा (यानी लफ़्ज़ 'वाओ' के साथ) है और यही मुराद है। (त)

ग़ुनिया में छोटे और कटे हुए सिर वाले (चित्रों) के मसले की दलील में लिखा है: [अरबी]: क्योंकि उनकी पूजा नहीं की जाती, इसलिए वह समानता समाप्त हो गई जो नापसंदगी का कारण है। [उर्दू]: इसलिए कि (तस्वीर सगीरा और मक्तू'उर रास) की इबादत नहीं की जाती, लिहाज़ा वह शुबहा ज़ाइल हो गया जो कराहियत का सबब है। (त)

(3) शमा या चराग या कंदील या लैम्प या लालटेन या फानूस नमाज़ में सामने हो तो कराहियत नहीं कि उनकी इबादत नहीं होती और भड़कती आग और दहकते अंगारों का तनूर या भट्टी या चूल्हा या अंगीठी सामने हों तो मकरूह कि मजूस उनको पूजते हैं, इनाया में मजकूरा इबारत के बाद है: [अरबी]: अतः यह मोमबत्ती या दीपक की ओर प्रार्थना करने के समान हो जाता है कि उनकी पूजा नहीं की जाती है, और यदि उसके सामने सुलगते अंगारों या जलती हुई आग वाला चूल्हा हो तो यह नापसंद है। [उर्दू]: फिर वह शमा या चराग की तरह है कि उनकी तरफ मुंह करके नमाज़ पढ़े क्योंकि उनकी इबादत नहीं की जाती (लिहाज़ा कराहियत नहीं) लेकिन नमाज़ मकरूह है जबकि नमाज़ी के सामने ऐसा चूल्हा रखा हो कि जिसमें भड़कती हुई आग के अंगारे हों। (त)

1. बहर-उर-राईक़, किताब-उस-सलात, बाब मा युफ़्सिद-उस-सलात व मा युकराहु फ़ीहा, एच.एम. सईद कंपनी कराची 2/28।
2. फ़तह-उल-क़दीर, किताब-उस-सलात, बाब मा युफ़्सिद-उस-सलात व मा युकराहु फ़ीहा, मकतबा नूरया रज़विया सुक्कुर 1/363।

3. ग़ुनियत-उल-मुस्तमली शरह मुन्यत-उल-मुसल्ली, फ़स्ल कराहियत-उस-सलात, सुहैल अकादमी लाहौर पृ. 359।
4. अल-इनाया शरह अल-हिदाया अल-हामिश फ़तह-उल-क़दीर, बाब मा युकराहु फ़ीहा, मकतबा नूरया रज़विया सुक्कुर 1/363।

पृष्ठ 620 का 720

خلاصہ فتح و حلیہ و بحر میں ہے: واللفظ لہ لا اعتبار بقطع الیدین او الرجلین اھ وکذا ھو فی الخلاصۃ ثمّ الحلیۃ بحرف الترديد ولفظ المحقق لو قطع يديها ورجليها لاترفع الكراهة ۲ اھ اعنی بحرف الجمع وھو المراد۔ بحر الرائق کے الفاظ یہ ہیں : اگر دونوں ہاتھ اور دونوں پاؤں کٹے ہوئے ہوں تو ان کا کچھ اعتبار نہیں اھ اور اسی طرح خلاصہ اور پھر حلیہ میں حرف تردید (لفظ او) کے ساتھ ہے اور محقق کے الفاظ یہ ہیں : اگر دونوں ہاتھ اور دونوں پاؤں کاٹ ڈالے تو کراہت ختم نہ ہوگی اھ میری مراد یہ ہے کہ (یہاں پر عبارت) حرف جمع (یعنی لفظ واؤ کے ساتھ) ہے اور یہی مراد ہے۔ (ت)

غنیہ میں دونوں مسئلہ صغیرہ و مقطوعۃ الراس کی تعلیل میں لکھا: لانھا لا تعبد فانتفی التشبہ الذی ھو سبب الکراھۃ۳۔ اس لئے کہ (تصویر صغیرہ اور مقطوع الراس) کی عبادت نہیں کی جاتی، لہٰذا وہ شبہ زائل ہو گیا جو کراہت کا سبب ہے۔ (ت)

(۳) شمع یا چراغ یا قندیل یا لیمپ یا لالٹین یا فانوس نماز میں سامنے ہو تو کراہت نہیں کہ ان کی عبادت نہیں ہوتی اور بھڑکتی آگ اور دہکتے انگاروں کا تنور یا بھٹی یا چولہا یا انگیٹھی سامنے ہوں تو مکروہ کہ مجوس ان کو پوجتے ہیں، عنایہ میں بعد عبارت مذکورہ آنفا ہے: فصار کالصلوۃ الی شمع اوسراج فی انھما لا یعبدان و یکرہ لو کان بین یدیہ کانون فیہ جمر او نار موقدۃ٤۔ پھر وہ شمع یا چراغ کی طرح ہے کہ ان کی طرف منہ کرکے نماز پڑھے کیونکہ ان کی عبادت نہیں کی جاتی (لہٰذا کراہت نہیں) لیکن نماز مکروہ ہے جبکہ نمازی کے سامنے ایسا چولہا رکھا ہو کہ جس میں بھڑکتی ہوئی آگ کے انگارے ہوں۔ (ت)

۱ بحر الرائق کتاب الصلوۃ باب ما یفسد الصلوۃ و مایکرہ فیھا ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/۲۸ ۲

فتح القدیر کتاب الصلوۃ باب ما یفسد الصلوۃ و مایکرہ فیھا مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۳۶۳ ۳

غنیہ المستملی شرح منیۃ المصلی فصل کراھیۃ الصلوۃ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۳۵۹ ۴ العنایۃ شرح الھدایۃ علی ھامش فتح القدیر باب مایکرہ فیھا مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۳۶۳

Fatawa Razawiya, Volume 24

In "Fath" regarding the issue of candles:

[Arabic]: Because they do not worship it, but rather the flaming embers or fire. 1 [Urdu]: Because the polytheists do not worship it, but rather flaming embers or fire. (T)

In "Tabyin al-Haqa'iq" and "Bahr al-Ra'iq":

[Arabic]: He (may Allah have mercy on him) said: or a candle or a lamp, because they are not worshipped. The dislike is in consideration of [their worship], and the Magians only worship it when it is in a fireplace and there are embers in it, or in an oven. So, facing them in other ways is not disliked. 2 I say: Al-Bahr followed Al-Tabyin in saying "and the dislike is in consideration of it," so it returned to the correct path. [Urdu]: Both said (may Allah have mercy on them): Facing a candle or a lamp (while praying) is not disliked because these two are not worshipped. Dislike is due to worship, and fire-worshippers worship fire when it is in the form of flaming embers in a stove or oven. Therefore, facing it without that reason is not disliked. I say: The author of Bahr al-Ra'iq followed Tabyin in this statement "dislike is in terms of worship," so he returned to the correct path. (T)

In "Al-Kafi":

[Arabic]: If the head is cut off, there is no harm in it, because it is not worshipped without a head. For this reason, if one prays facing an oven or fireplace in which there is fire, it is disliked because it resembles their worship. But [facing] a chandelier or candle or lamp is not [disliked] due to the lack of resemblance. 3 [Urdu]: If the head of a picture is cut off, there is no harm in it, because a picture without a head is not worshipped. Therefore, if one prays facing such a stove or oven in which there is fire, it is disliked because it is similar to its worship. And if one prays facing a chandelier, candle, or lamp, there is no dislike, because there is no resemblance in it. (T)

---

1. *Fath al-Qadir*, Kitab al-Salah, Section on what is disliked for the worshipper, Maktaba Nooria Razavia Sukkur 1/364.
2. *Tabyin al-Haqa'iq*, Kitab al-Salah, Chapter on what invalidates prayer etc., Al-Matba'a al-Kubra Bulaq Egypt 1/167; *Bahr al-Ra'iq*, Kitab al-Salah, Chapter on what invalidates prayer etc., H.M. Saeed Company Karachi 2/32.

3. *Al-Kafi Sharh al-Wafi*.

फ़तावा रज़विया, खंड 24

"फ़तह" में शमा के मसले के तहत:

[अरबी]: क्योंकि वे इसकी इबादत नहीं करते, बल्कि भड़कते हुए अंगारे या आग की इबादत करते हैं। 1 [उर्दू]: क्योंकि मुशरिक इसकी (शमा की) इबादत नहीं करते बल्कि भड़कते अंगारों या आग की करते हैं। (त)

"तब्यीनुल हक़ाएक़" और "बहरुल रैक़" में है:

[अरबी]: उन्होंने (अल्लाह उन पर रहम फरमाए) कहा: या शमा या चिराग, क्योंकि इन दोनों की इबादत नहीं की जाती। नापसंदगी (मक़रूह होना) इसके(इबादत) के एतबार से है। पारसी इसकी इबादत तब करते हैं जब यह चूल्हे में हो और उसमें अंगारे हों या तंदूर में हो। तो इसके अलावा किसी और तरह से उसकी तरफ मुंह करना मक़रूह नहीं है। 2 मैं कहता हूँ: 'बहर' ने तब्यीन के इस कौल में पैरवी की है कि "नापसंदगी इबादत के एतबार से है," तो वह सही रास्ते की तरफ लौट आया। [उर्दू]: दोनों ने फरमाया (अल्लाह तआला उन पर रहम फरमाए) शमा या चिराग की तरफ (नमाज़ की हालत में) मुंह करना मक़रूह नहीं है क्योंकि इन दोनों की इबादत नहीं की जाती, और कराहत (नापसंदगी) इबादत की वजह से हुआ करती है, और आग-परस्त आग की इबादत करते हैं जब कि चूल्हे और तंदूर में आग के अंगारे हों। लिहाज़ा इसकी तरफ रुख करना बिना इस वजह के हो तो मक़रूह नहीं। मैं कहता हूँ: मुसन्निफ़ 'बहरुल रैक़' ने तब्यीन के इस कौल "कराहत इबादत के लिहाज़ से होती है" में उसका इत्तेबा (अनुसरण) किया लिहाज़ा वह राहे-सवाब की तरफ लौट गया। (त)

"काफ़ी" में है:

[अरबी]: अगर सिर काट दिया जाए तो इसमें कोई हर्ज नहीं है क्योंकि बिना सिर के इबादत नहीं की जाती। इसी वजह से अगर कोई ऐसे तंदूर या चूल्हे की तरफ नमाज़ पढ़े जिसमें आग हो तो मक़रूह है क्योंकि यह उसकी इबादत के मुशाबेह (समान) है। और क़ंदील या शमा या चिराग की तरफ नमाज़ पढ़ना मक़रूह नहीं है क्योंकि इसमें कोई मुशाबहत (समानता) नहीं है। 3 [उर्दू]: अगर तस्वीर का सर काट दिया जाए तो इसमें कोई हर्ज नहीं क्योंकि बिना सिर वाली तस्वीर की इबादत नहीं की जाती। लिहाज़ा अगर ऐसे चूल्हे या तंदूर की तरफ नमाज़ पढ़े जिसमें आग हो तो मक़रूह है क्योंकि

इसकी इबादत के मुशाबेह है, और अगर क़ंदील या शमा या चिराग की तरफ (मुंह करके नमाज़ पढ़े) तो कराहत नहीं, इसलिए कि इसमें कोई तशब्बुह (समानता) नहीं। (त)

---

1. फ़तह अल-क़दीर, किताबुस सलात, फ़स्ल: मुसल्ली के लिए क्या मक़रूह है, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर 1/364।
2. तब्यीनुल हक़ाएक़, किताबुस सलात, बाब: नमाज़ को क्या फ़ासिद करता है आदि, अल-मतबअ अल-कुबरा, बुलाक, मिस्र 1/167; बहरुल रैक़, किताबुस सलात, बाब: नमाज़ को क्या फ़ासिद करता है आदि, एच.एम. सईद कंपनी, कराची 2/32।
3. अल-काफ़ी शरह अल-वाफ़ी।

पृष्ठ 621/720

فتاوٰی رضویہ، جلد ۲۴

فتح زیرِ مسئلہ شمع ہے:

[عربی]: لانهم لا یعبدونه بل الضرام جمرا او نارا 1- [اردو]: اس لئے کہ مشرکین اس کی عبادت نہیں کرتے بلکہ بھڑکتے انگارے یا آگ کی۔ (ت)

تبیین الحقائق وبحر الرائق میں ہے:

[عربی]: قال رحمه الله تعالی او شمع او سراج لانهما لا یعبدان والکراهة باعتبارها وانما یعبدها المجوس اذا کانت في الکانون وفیها الجمر او في التنور فلا یکره التوجه الیها علی غیر ذلك الوجه 2اھ اقول: البحر تبع التبیین في قوله والکراهة باعتبارها فرجع الی الصواب۔ [اردو]: دونوں نے فرمایا (اللہ تعالٰی ان پر رحم فرمائے) شمع یا چراغ کی طرف (بحالتِ نماز منہ کرنا مکروہ نہیں اس لئے کہ ان دونوں کی عبادت نہیں کی جاتی، اور کراہت عبادت کی وجہ سے ہوا کرتی ہے، اور آتش پرست آگ کی عبادت کرتے ہیں جبکہ چولہے اور تنور میں آگ کے انگارے ہوں۔ لہٰذا اس کی طرف رخ کرنا بغیر اس وجہ کے ہو تو مکروہ نہیں اھ اقول: (میں کہتا ہوں) مصنف بحر الرائق نے تبیین کے اس قول "کراہت بلحاظِ عبادت ہوتی ہے" میں اس کا اتباع کیا لہٰذا وہ راہِ صواب کی طرف لوٹ گیا۔ (ت)

کافی میں ہے:

[عربی]: ان قطع الراس فلا بأس به لانه لا یعبد بلا رأس ولهذا لو صلی الی تنور او کانون فیه نار کره لانه یشبه عبادتها والی قندیل او شمع او سراج لا لعدم التشبه 3- [اردو]: اگر تصویر کا سر کاٹ دیا جائے تو اس میں کوئی حرج نہیں اس لئے کہ بغیر سر تصویر کی عبادت نہیں کی جاتی۔ لہٰذا اگر ایسے چولہے یا تنور کی طرف نماز پڑھے کہ جس میں آگ ہو تو مکروہ ہے کیونکہ اس کی عبادت

کے مشابہ ہے، اور اگر قندیل یا شمع یا چراغ کی طرف (منہ کر کے نماز پڑھے) تو کراہت نہیں، اس لئے کہ اس میں کوئی تشبہ نہیں۔ (ت)

---

1. فتح القدیر کتاب الصلوۃ فصل ویکرہ للمصلی مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۳۶۴
2. تبیین الحقائق کتاب الصلوۃ باب ما یفسد الصلوۃ الخ المطبعۃ الکبری بولاق مصر ۱/ ۱۶۷، بحر الرائق کتاب الصلوۃ باب ما یفسد الصلوۃ الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۳۲
3. الکافی شرح الوافی

Fatawa Razawiyya Volume 24

In 'Muhit' by Imam Shams al-Aimma al-Sarakhsi and then in 'al-Hindiyya', it is stated: "Whoever faces a tandoor (oven) with burning fire or a stove with fire in it during prayer, it is disliked (makruh). However, if they face a lantern or a lamp, it is not disliked." [Urdu Translation]: A person who turns their face during prayer towards such a tandoor or stove in which fire is blazing will be committing a disliked act. But if they face a lantern or lamp, it will not be disliked. (T)

In the Fatawa of the Exalted Imam Qadi Khan, it is stated: "It is disliked to pray while there is a burning tandoor or stove in front of him, because this resembles fire worship. If there is a lamp or lantern in front of him, it is not disliked, because it does not resemble fire worship." [Urdu Translation]: It is disliked for a person to pray in such a state that in front of him is a tandoor or stove with blazing fire, because this situation is similar to the worship of fire. If there is a lamp or lantern in front of him, it is not disliked as it does not resemble fire worship. (T)

Similarly, from this up to "it is not disliked" is in Khizanat al-Muftin: [Arabic]: "I say: These are the texts of the illustrious Imams, thus what is in al-Qunyah is superseded —that the Magians worship embers, not the ignited fire [3] (end of quote)—even though he was followed in al-Durr and al-Timurtashi, then [4] Sayyid Abu al-Su'ud al-Azhari, then Sayyid al-Tahtawi in Hashiyat al-Maraqi, and also al-Durr, with the wording: 'Because the Magians do not worship the flame, but rather the embers.' [5] (end of quote). The like is found in Majma' al-Anhur, and he indicated..." [Urdu Translation]: I say: (I say) these are the clarifications of the high-ranking Imams. Therefore, what is mentioned in Qunyah is rejected, because fire-worshippers worship the burning embers of fire and not the flames of fire. (End of quote) The author of Durr al-Mukhtar, Imam Timurtashi, Sayyid Abu Sa'ud Azhari, Sayyid Tahtawi (author of the commentary on Maraqi al-Falah), and the author of al-Durr—all these elders followed this, and its wording is: The Magians [worship] fire...

[Footnotes]: 1. Fatawa Hindiyya, citing Muhit al-Sarakhsi, Book of Prayer, Chapter 7, Section 2, Noorani Kutub Khana Peshawar 1/108. 2. Fatawa Qadi Khan, Book of Prayer, Chapter on Impurity during Prayer and what is disliked in Prayer, Naval Kishore Lucknow 1/75. 3. Al-Qunyah al-Munyah, Book of Disliked Acts, Chapter on Disliked Acts in Wudu and Modes of Prayer, printed in Calcutta, p. 129. 4. Al-Durr al-Mukhtar, Book of Disliked Acts, Chapter on what invalidates Prayer and Modes of Prayer, Mujtabai Press Delhi 1/93; Fath al-Mu'in citing Timurtashi, Book of Disliked

Acts, Chapter on what invalidates Prayer and Modes of Prayer, HM Saeed Company Karachi 1/246. 5. Al-Durrar al-Hukkam Sharh Ghurar al-Ahkam, Chapter on what invalidates Prayer and Modes of Prayer, Mir Muhammad Kutub Khana Karachi 1/110.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

इमाम शम्स अल-अइम्मा सरखसी की 'मुहीत' और फिर 'हिन्दिया' में है: "जो व्यक्ति अपनी नमाज़ में ऐसे तंदूर या चूल्हे की ओर मुँह करे जिसमें आग जल रही हो, तो यह नापसंद (मक़रूह) है। और यदि वह किसी लालटेन या चिराग़ की ओर मुँह करे, तो यह नापसंद नहीं है।" (1) [उर्दू अनुवाद]: वह व्यक्ति जो अपनी नमाज़ के दौरान ऐसे तंदूर या चूल्हे की ओर मुँह करता है जिसमें आग धधक रही हो, तो यह मक़रूह होगा, लेकिन अगर लालटेन या चिराग़ की तरफ मुँह करे तो मक़रूह नहीं होगा। (त)

इमाम अजल क़ाज़ी ख़ां के फ़तावा में है: "यह मक़रूह है कि व्यक्ति नमाज़ पढ़े और उसके सामने जलता हुआ तंदूर या चूल्हा हो, क्योंकि यह अग्नि-पूजा (आतिश परस्ती) के समान है। यदि उसके सामने चिराग़ या लालटेन हो, तो मक़रूह नहीं है क्योंकि यह अग्नि-पूजा के समान नहीं है।" (2) [उर्दू अनुवाद]: यह मक़रूह है कि आदमी (इस स्थिति में नमाज़ पढ़े) कि उसके आगे ऐसा तंदूर या चूल्हा हो जिसमें आग धधक रही हो, क्योंकि यह सूरत अग्नि-पूजा के समान है। और यदि उसके सामने चिराग़ या लालटेन हो तो मक़रूह नहीं क्योंकि यह अग्नि-पूजा के समान नहीं है। (त)

इसी तरह यहाँ से लेकर 'मक़रूह नहीं' तक ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन में है: [अरबी]: "मैं कहता हूँ: ये महान इमामों के स्पष्ट कथन (नुसूस) हैं, इसलिए 'अल-कुन्या' में जो लिखा है वह निरस्त हो गया—कि मजूसी (अग्नि-पूजक) अंगारों की पूजा करते हैं, जलती आग की नहीं (3)—हालाँकि 'अल-दुर' और 'अल-तिमुरताशी' में उसका अनुसरण किया गया है, फिर सैय्यद अबू अल-सऊद अल-अज़हरी ने, फिर सैय्यद तहतावी ने 'हाशिया मराक़ी' में, और 'अल-दुर' में भी जिसके शब्द हैं: 'क्योंकि मजूसी लपटों की पूजा नहीं करते, बल्कि अंगारों की पूजा करते हैं।' (5) इसी तरह 'मजमा' अल-अन्हुर' में है और संकेत किया..." [उर्दू अनुवाद]: मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) ये महान इमामों की व्याख्याएँ हैं। अतः 'कुन्या' में जो है वह ख़ारिज हो गया क्योंकि अग्नि-पूजक आग के अंगारों की पूजा करते हैं न कि आग की लपटों की। दुर्रे मुख़्तार के लेखक, इमाम तिमुरताशी, सैय्यद अबू सऊद अज़हरी, सैय्यद तहतावी (मराक़िल फ़लाह के हाशिये के लेखक) और अल-दुर के लेखक—इन सभी बुज़ुर्गों ने इसका अनुसरण किया है, और इसके शब्द ये हैं: मजूसी आग के..

[पद-टिप्पणियाँ]: 1. फ़तावा हिन्दिया, संदर्भ मुहीत अल-सरख़सी, किताबुस सालाह, अध्याय 7, खंड 2, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर 1/108। 2. फ़तावा क़ाज़ी ख़ां, किताबुस सालाह, नमाज़ में अपवित्रता

और नमाज़ में मक़रूहात का अध्याय, नवल किशोर लखनऊ 1/75। 3. अल-कुन्या अल-मुन्या, किताबुल कराहीया, वज़ू में मक़रूहात और नमाज़ के तरीक़ों का अध्याय, कलकत्ता में मुद्रित, पृष्ठ 129। 4. अल-दुरुल मुख़्तार, किताबुल कराहीया, नमाज़ को तोड़ने वाली चीज़ों और नमाज़ के तरीक़ों का अध्याय, मुजतबाई प्रेस दिल्ली 1/93; फ़तह अल-मुईन संदर्भ तिमुरताशी, किताबुल कराहीया, नमाज़ को तोड़ने वाली चीज़ों और नमाज़ के तरीक़ों का अध्याय, एच एम सईद कंपनी कराची 1/246। 5. अल-दुरर अल-हुक्काम शरह ग़ुरर अल-अहकाम, नमाज़ को तोड़ने वाली चीज़ों और नमाज़ के तरीक़ों का अध्याय, मीर मोहम्मद कुतुब ख़ाना कराची 1/110।

पृष्ठ 720 का 622

محیط امام شمس الائمہ سرخسی پھر ہندیہ میں ہے: من توجه فی صلوته الی تنور فیه نار نتوقد اوکانون فیه ناریکره ولوتوجه الی قندیل اوالی سراج لم یکره ۱۔ جو شخص اپنی نماز میں ایسے تنور یا چولہے کی طرف منہ کرے کہ جس میں آگ بھڑک رہی ہو تو کراہت ہوگی، لیکن اگر قندیل یا چراغ کی طرف منہ کرے تو کراہت نہ ہوگی۔ (ت)

فتاوٰی امام اجل قاضی خاں میں ہے: یکره ان یصلی وبین یدیه تنوراوکانون فیه نار موقدة لانه یشبه عبادة النار وان کان بین یدیه سراج اوقندیل لایکره لان لایشبه عبادة النار ۲۔ یہ مکروہ ہے کہ آدمی (اس حالت میں نماز پڑھے) کہ اس کے آگے ایسا تنور یا چولہا ہو کہ جس میں آگ بھڑک رہی ہو، اس لئے کہ یہ صورت عبادتِ آگ کے مشابہ ہے اور اگر اس کے سامنے چراغ یا قندیل ہو تو مکروہ نہیں کیونکہ یہ عبادتِ آگ کے مشابہ نہیں۔ (ت)

اسی طرح اس سے لایکرہ تک خزانۃ المفتین میں ہے: اقول: هذه نصوص الائمة الاجلة فسقط مافی القنیة ان المجوس یعبدون الجمر لا النار الموقدة ۳ اھ وان تبعه فی الدر و التمرتاشی ثم ۴ السید ابو السعود الازهری ثم السید الطحطاوی فی حاشیة المراقی وایضا الدر و لفظه لان المجوس لا یعبدون اللهب بل الجمر ۵ اھ ومثله فی مجمع الانهر واشار اقول: (میں کہتا ہوں) یہ جلیل القدر ائمہ کی تصریحات ہیں۔ لہٰذا قنیہ میں جو ہے وہ ساقط ہو گیا کیونکہ آتش پرست آگ کے انگاروں کی عبادت کرتے ہیں نہ کہ آگ کے شعلوں کی اھ مصنف در مختار، امام تمرتاشی، سید ابو سعود ازہری، سید طحطاوی حاشیہ مراقی الفلاح اور مصنف الدر ان سب بزرگوں نے اس کا اتباع کیا ہے، اور اس کے الفاظ یہ ہیں: مجوس آگ کے

۱ فتاوی ہندیہ بحوالہ محیط السرخسی کتاب الصلوۃ الباب السابع الفصل الثانی نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۱۰۸ ۲ فتاوی قاضی خاں کتاب الصلوۃ باب الحدث فی الصلوۃ وما یکرہ فی الصلوۃ نولکشور لکھنؤ ۱ / ۷۵ ۳ القنیۃ المنیۃ کتاب الکراھیۃ باب الکراھیۃ فی الوضوء وکیفیات الصلوۃ مطبوعہ کلکتہ ص ۱۲۹ ۴ الدر المختار کتاب الکراھیۃ باب ما یفسد الصلوۃ و کیفیات الصلوۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۹۳، فتح المعین بحوالہ تمرتاشی کتاب الکراھیۃ باب مایفسد الصلوۃ و کیفیات الصلوۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۲۴۶ ۵ الدر الحکام شرح غرر الاحکام باب مایفسد الصلوۃ و کیفیات الصلوۃ میر محمد کتب خانہ کراچی ۱ / ۱۱۰

Fatawa Ridawiyya Volume 24

[Box 1] (Arabic): Ash-Shurunbulali mentioned it in his 'Maraqi', then Az-Zahidi himself highlighted its weakness when he said after it: "It is even said that it is not disliked (to face) a blazing fire." [End Quote] I say: If it is true that they do not worship them, then what is the meaning of expressing this view with 'it is said' (indicating weakness), unless it is said that a blazing fire is rarely free from embers? There is an objection to this; rather, it is more likely that it does not contain them towards the end. Furthermore, sometimes a blazing fire is made from grass and the like, and there are no embers there. And Allah Almighty knows best.

(Urdu): They do not worship the flames but rather worship the embers of the fire. And it is similarly stated in 'Majma' al-Anhur'. Allama Shurunbulali indicated this in 'Maraqi al-Falah', then Allama Zahidi himself expressed its weakness using the word 'it is said' (Qeel). Consequently, after this, he said that it was even said that facing a flaming fire (in prayer) is not disliked. I say: (I say) If it is true that fire-worshippers do not worship pure flame, then what is the meaning of expressing this view with 'it is said', unless it is said that flaming fire is rarely without embers? But this is problematic. Rather, it consists of embers only at the end. (And it should also be considered that) sometimes fire from grass and such things contains absolutely no embers (even for name's sake). And Allah Almighty knows best.

(4) Mushaf Sharif (The Holy Quran) (5) A sword, etc. It is not disliked for a weapon to be in front, because they are not worshipped.

[Box 2] (Arabic): As mentioned in the three books and general books, and the wording of Imam al-Zayla'i is: "They both are not worshipped, and the dislike is established based on worship. Facing the Mushaf is a sign of reverence for it, and we have been commanded to do so." [Reference 2]

(Urdu): As mentioned in three books and general books, and Imam Zayla'i's words are that these two (Mushaf Sharif and sword) are not worshipped. And the dislike is established on the basis of worship. Facing the Mushaf Sharif involves its reverence, and we have been commanded to revere it. (T)

[Footnotes] 1. Al-Qunyah al-Munyah, Book of Disliked Matters, Chapter on Disliked Matters in Ablution etc., Printed in Calcutta, India, p. 149. 2. Tabyin al-Haqa'iq, Book of Prayer, Chapter on things that invalidate prayer etc., Al-Matba'ah al-Kubra Bulaq, Egypt, 1/167.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[बॉक्स 1] (अरबी): शुरूनबुलाली ने अपनी 'मराकी' में इसका उल्लेख किया, फिर ज़ाहिदी ने खुद इसकी कमज़ोरी को ज़ाहिर किया जब उन्होंने इसके बाद कहा: "यहाँ तक कि कहा गया कि प्रज्वलित अग्नि की ओर (नमाज़ पढ़ना) मकरूह नहीं है।" [समाप्त] मैं कहता हूँ: यदि यह सही है कि वे उनकी इबादत नहीं करते, तो 'कहा गया' (क़ील) शब्द के साथ इस विचार को व्यक्त करने का क्या अर्थ है, सिवाय इसके कि यह कहा जाए कि प्रज्वलित अग्नि शायद ही कभी अंगारों से खाली होती है। इस पर आपत्ति है; बल्कि, निकटतम विचार यह है कि यह अंत की ओर उन्हें शामिल नहीं करता। फिर कभी-कभी अग्नि घास और इसी तरह की चीज़ों से होती है और वहाँ कोई अंगारे नहीं होते। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(उर्दू): वे लपटों की पूजा नहीं करते बल्कि आग के अंगारों की पूजा करते हैं। और इसी तरह 'मजमा अल-अन्हुर' में है, और अल्लामा शुरूनबुलाली ने 'मराकी अल-फलाह' में इसकी ओर संकेत किया है, फिर अल्लामा ज़ाहिदी ने स्वयं 'क़ील' (कहा गया) शब्द के साथ इसकी कमजोरी व्यक्त की है, चुनाँचे इसके बाद उन्होंने कहा कि यहाँ तक कहा गया है कि ज्वाला वाली आग की ओर (नमाज़ में मुँह करना) मकरूह नहीं है। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) अगर यह बात सही है कि अग्नि-पूजक केवल आग की पूजा नहीं करते तो 'क़ील' शब्द के साथ इसे व्यक्त करने का क्या मतलब है, सिवाय इसके कि यह कहा जाए कि ज्वाला वाली आग बहुत कम अंगारों से खाली होती है, लेकिन यह आपत्तिजनक है। बल्कि अंगारों पर केवल अंत में ही शामिल होती है (और यह भी गौर करना चाहिए कि) अक्सर आग, घास और वैसी ही चीजों से जिसमें बिल्कुल (नाम के लिए भी) अंगारे नहीं होते। वल्लाह तआला आलम।

(4) मुसहफ़ शरीफ़ (पवित्र कुरान) (5) तलवार आदि, हथियार का सामने होना मकरूह नहीं क्योंकि उनकी इबादत नहीं होती।

[बॉक्स 2] (अरबी): जैसा कि तीन किताबों और सामान्य किताबों में वर्णित है और इमाम ज़ैलई के शब्द हैं: "उन दोनों की इबादत नहीं की जाती और इबादत के आधार पर मकरूह होना साबित होता है। और मुसहफ़ का सामना करना उसका सम्मान है और हमें इसका आदेश दिया गया है।" [संदर्भ 2]

(उर्दू): जैसा कि तीन किताबों और आम किताबों में ज़िक्र है और इमाम ज़ैलई के शब्द ये हैं कि इन दोनों की (मुसहफ़ शरीफ़ और तलवार की) इबादत नहीं की जाती। और कराहत (नापसंदगी) इबादत के आधार पर साबित होती है और मुसहफ़ शरीफ़ की तरफ मुँह करना, इसमें उसकी ताज़ीम (सम्मान) है, और हमें उसकी ताज़ीम करने का हुक्म दिया गया है। (त)

[फ़ुटनोट] 1. अल-कुन्या अल-मुन्या, किताबुल कराहिया, बाबुल कराहिया फिल वुज़ू आदि, मुद्रित कलकत्ता, भारत, पृष्ठ 149। 2. तबयीनुल हकाइक, किताबुस सलात, बाबु मा युफसिदुस सलात आदि, अल-मतबअतुल कुबरा बुलाक, मिस्र, 1/167।

पृष्ठ 623/720

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

[باکس ۱] (عربی): الیه الشرنبلالی فی مراقبه ثم الزاهدی نفسه اظهر ضعفه اذ قال بعده حتی قیل لاتکره الی النار الموقدة ۱ اهـ اقول: ان کان صحیحا انهم لا یعبدونها فبما معنی تعبیر هذا القیل بقیل الا ان یقال ان الموقدة قلما تخلو عن جمر وفیه نظر بل لاتشمل علیه الاقرب الانتهاء ثم ربما تکون الموقدة من حشیش ونحوه ولا جمر ثمه واللہ تعالی اعلم۔

(اردو): شعلوں کی عبادت نہیں کرتے بلکہ آگ کے انگاروں کی عبادت کیا کرتے ہیں اھ اور اسی طرح مجمع الانہر میں ہے، اور علامہ شرنبلالی نے مراقی الفلاح میں اس کی طرف اشارہ کیا ہے، پھر خود علامہ زاہدی نے اس کے ضعف کی طرف لفظ قیل کے ساتھ اس کی تعبیر فرمائی، چنانچہ اس کے بعد اس نے کہا یہاں تک کہ یہ کہا گیا ہے کہ شعلہ زن آگ کی طرف (نماز میں منہ کرنا) مکروہ نہیں اھ اقول: (میں کہتا ہوں) اگر یہ بات صحیح ہے کہ آتش پرست نری آگ کی عبادت نہیں کرتے تو اس کی تعبیر لفظ قیل کے ساتھ کرنے کا کیا مطلب ہے، مگر یہ کہ کہا جائے کہ شعلہ زن آگ بہت کم انگاروں سے خالی ہوتی ہے، لیکن یہ موجب اشکال ہے۔ بلکہ انگاروں پر صرف آخر میں مشتمل ہوتی ہے (اور یہ بھی غور کرنا چاہئے کہ) بسا اوقات آگ ، گھاس اور اس جیسی چیزوں سے جس میں بالکل (برائے نام بھی) انگارے نہیں ہوتے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

(۴) مصحف شریف (۵) تلوار وغیرہ، ہتھیار کا سامنے ہونا مکروہ نہیں کہ ان کی عبادت نہیں ہوتی۔

[باکس ۲] (عربی): کما فی الکتب الثلثة وعامة الکتب ولفظ الامام الزیلعي: انهما لا یعبدان و باعتبارها تثبت الکراهة و في استقبال المصحف تعظیمه وقد امر نا به۲۔

(اردو): جیسا کہ تین کتابوں اور عام کتابوں میں مذکور ہے اور امام زیلعی کے الفاظ یہ ہیں ان دونوں کی (مصحف شریف اور تلوار کی) عبادت نہیں کی جاتی۔ اور کراہت باعتبار عبادت ثابت ہوتی ہے اور مصحف شریف کی طرف منہ کرنا، اس میں اس کی تعظیم، اور ہمیں اس کی تعظیم کرنے کا حکم دیا گیا ہے۔ (ت)

[حواشی] ۱ القنیة المنیة کتاب الکراهیة باب الکراهیة فی الوضوء الخ مطبوعہ کلکتہ انڈیا ص ۱۴۹ ۲ تبیین الحقائق کتاب الصلوة باب ما یفسد الصلوة الخ المطبعة الکبری بولاق مصرا / ۱۶۷

I say: (I say) this is the same subtle difference that this humble servant submitted at the beginning of the discourse.

Arabic: ولفظ البحر اما المصحف فلان فی تقدیمہ تعظیمہ و تعظیمہ عبادة و الاستخفاف به کفر فانضمت هذه العبادة الی عبادة اخری فلا کراهة اه فاحفظه فانه ینفعك۔

Urdu Translation: The words of al-Bahr al-Ra'iq are: As for the Mushaf, then placing it forward is for its veneration, and its veneration is undoubtedly an act of worship, and its disparagement is disbelief. Thus, this act of worship is joined with another act of worship, so there is no dislike (Karaha). End of quote. Then remember it; undoubtedly it will benefit you. (T)

(6) By drawing an analogy with small images, the dislike (Karaha) is also negated for hidden images, as being unmanifest is like being small. For example, money in a pocket or purse, or certain Turkish caps made by Christians that have an image on the inside; in these cases, prayer is not disliked (Makruh). However, keeping forbidden images for preservation is itself prohibited, even if kept locked in a box and not opened, although prayer there would not be disliked.

It is stated in Al-Muhit, Al-Khulasa, Al-Hilya, and Al-Bahr:

Arabic: رجل في یده تصاویر وهو یوم الناس لا تکره امامته لانها مستور بالثیاب فصار کصورة في نقش خاتم و هو غیر مستبین اه ولفظ الخلاصة اذا کانت في یده (وفي نسخة علی یدیه) وهو یصلي لاباس به لانه مستور بثیابه و کذا لوکانت علی خاتمه اه عزا في

Urdu Translation: If a person has images on his arm and leads the people in prayer, his leading will not be disliked because these images are covered by clothes. Its example is like an image in the engraving of a ring when it is not clear. End of quote. The wording of Al-Khulasa is: If there were images on his arm, and in one manuscript, on his both arms, and he prays in this state, there is no harm because they are covered with clothes. Similarly, if there is an image on a ring. End of quote.

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Salat, Chapter: What spoils the prayer and what is disliked in it, H.M. Saeed Company Karachi, 2/31.
2. Al-Bahr al-Ra'iq, referring to Al-Muhit, Kitab al-Salat, Chapter: What spoils the prayer and what is disliked in it, H.M. Saeed Company Karachi, 2/77.
3. Khulasa al-Fatawa, Kitab al-Salat, Section: On what is disliked in prayer, Maktabah Habibiyah Quetta, 1/58.

अक़ौल: (मैं कहता हूँ) यह वही सूक्ष्म अंतर है जिसका उल्लेख इस तुच्छ सेवक ने प्रवचन के आरम्भ में किया था।

अरबी: व लफ्ज़ुल बह्रि अम्माल मुसहफ़ु फ़लिअन्ना फ़ी तक़दीमिही तअज़ीमुहू व तअज़ीमुहू इबादतुव वल इस्तिख़फ़ाफ़ु बिही कुफ़्रुन फन्ज़म्मति हाज़िहिल इबादतु इला इबादतिन उख़रा फ़ला कराहता। इह फ़हफ़ज़हु फ़इन्नहु यन्फ़उका।

उर्दू अनुवाद: बह्र उर-राइक़ के शब्द इस प्रकार हैं: रहा मुसहफ़ (क़ुरआन), तो उसे आगे रखना उसका सम्मान है और उसका सम्मान निस्संदेह इबादत है, और उसका अपमान कुफ़्र है। फिर यह इबादत एक दूसरी इबादत से जुड़ गई, इसलिए इसमें बिल्कुल कराहत (नापसंदगी) नहीं रही। इति। अतः इसे याद रखें, निःसंदेह यह आपको लाभ देगा। (त)

(6) छोटी तस्वीरों पर क़यास (तुलना) करते हुए छिपी हुई तस्वीरों से भी कराहत की मनाही की गई है, क्योंकि प्रकट न होना छोटे होने के समान ही है। जैसे जेब या बटुए में रखे पैसे, या कुछ तुर्की टोपियाँ जो ईसाइयों द्वारा बनाई जाती हैं और उनके अंदर की ओर तस्वीर होती है; इन स्थितियों में नमाज़ मकरूह (नापसंद) नहीं है। लेकिन वर्जित तस्वीरों को हिफ़ाज़त के लिए रखना अपने आप में मना है, चाहे उन्हें संदूक में बंद रखा जाए और खोला न जाए, हालांकि वहाँ नमाज़ मकरूह नहीं होगी।

मुहीत, ख़ुलासा, हिल्या और बह्र में है:

अरबी: रजुलुन फ़ी यदिही तसावीरु व हुवा यऊम्मुन्नासा ला तुकरहु इमामतुहू लिअन्नहा मस्तूरुम बिस-सियाबि फ़सारा क-सूरतिन फ़ी नक़्शि ख़ातिमि व हुवा ग़ैरु मुस्तबयिनिन। इह व लफ्ज़ुल ख़ुलासति

इज़ा कानत फ़ी यदिही (व फ़ी नुस्ख़तिन अला यदैहि) व हुवा युसल्ली ला बासा बिही लिअन्नहु मस्तूरुम बिसियाबिही व कज़ा लव कानत अला ख़ातिमिही। इह अज़ा फ़ी

उर्दू अनुवाद: यदि किसी व्यक्ति के बाज़ू में तस्वीरें हों और वह लोगों की इमामत कराता है, तो उसकी इमामत मकरूह नहीं होगी क्योंकि ये तस्वीरें कपड़ों से ढकी हुई हैं। इसकी मिसाल ऐसी है जैसे अंगूठी के नक़्श में तस्वीर हो जबकि वह स्पष्ट न हो। इति। ख़ुलासा के शब्द यह हैं: अगर किसी के बाज़ू में, और एक नुस्ख़े में है उसके दोनों बाज़ुओं में तस्वीर हो और वह उस हालत में नमाज़ पढ़े तो कुछ हर्ज नहीं क्योंकि वे कपड़ों से ढकी हुई हैं। और इसी तरह अगर अंगूठी पर तस्वीर हो। इति।

1. बह्र उर-राइक़, किताबुस-सलात, बाब: नमाज़ को बिगाड़ने वाली और उसमें मकरूह चीज़ें, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 2/31।
2. बह्र उर-राइक़, अल-मुहीत के हवाले से, किताबुस-सलात, बाब: नमाज़ को बिगाड़ने वाली और उसमें मकरूह चीज़ें, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 2/77।
3. ख़ुलासा-तुल-फ़तावा, किताबुस-सलात, अल-जिंस फी मा युकरहु फिस-सलात, मकतबा हबीबिया क्वेटा, 1/58।

اقول : (میں کہتا ہوں) یہ وہی فرق نفیس ہے کہ صدر کلام میں فقیر نے گزارش کیا،

| ولفظ البحر اما المصحف فلان فی تقدیمہ تعظیمہ | بحر الرائق کے الفاظ یہ ہیں رہا مصحف تو اس کی تقدیم میں اس | | و تعظیمہ عبادۃ و الاستخفاف بہ کفر فانضمت ھذہ | کی تعظیم ہے اور اس کی تعظیم بلاشبہ عبادت ہے اور اس کا | | العبادۃ الی عبادۃ اخری فلا کراھۃ اھ فاحفظہ فانہ | استخفاف کفر ہے۔ پھر یہ عبادت ایک دوسری سے پیوستہ ہو گئی | | ینفعك۔ | لہٰذا بالکل کراہت نہ رہی اھ پھر اس کو یاد رکھئے بلاشبہ یہ آپ | | | کو فائدہ دے گا۔ (ت) |

---

(۶) تصویر صغیر پر قیاس فرما کر مستور سے بھی نفی کراہت کی ، کہ ظاہر نہ ہونے میں اس کے مثل ہے جیسے جیب یا بٹوے میں روپیہ یا بعض ترکی ٹوپیوں میں کہ نصاری کی بنائی ہوتی ہیں اندر کی جانب تصویر ہوتی ہے ان صورتوں میں نماز مکروہ نہیں مگر ناجائز تصویریں حفاظت سے رکھ چھوڑنا خود ہی منع ہے اگر چہ صندوق میں بند رکھے اور نہ کھولے اگر چہ وہاں نماز مکروہ نہ ہوگی۔ محیط و خلاصہ و حلیہ وبحر میں ہے:

| رجل في یدہ تصاویر وھو یوم الناس لا تکرہ امامتہ | کسی شخص کے بازو میں تصویریں ہیں اور لوگوں کی امامت | | لانھا مستور بالثیاب فصار کصورۃ في نقش خاتم و | کراتا ہے تو اس کی امامت مکروہ نہ ہوگی اس لئے کہ یہ تصویریں | | ھو غیر مستبین اھ ولفظ الخلاصۃ اذا کانت في یدہ | کپڑوں سے چھپی ہوئی ہیں اور اس کی مثال ایسی ہے جیسے | | (وفي نسخۃ علی یدیہ) وھو یصلي لاباس بہ لانہ | انگوٹھی کے نقش میں تصویر ہو جبکہ وہ واضح نہ ہو اھ خلاصہ کے | | مستور بثیابہ و کذا لوکانت علی خاتمہ اھ عزا في | الفاظ یہ ہیں : اگر کسی کے بازو میں ، اور ایک

نسخہ میں ہے اس | | | کے دونوں بازوؤں میں تصویر ہو اور وہ اس حالت میں | | | نماز پڑھے تو کچھ حرج نہیں کیونکہ وہ کپڑوں سے ڈھانپی ہوئی | | | ہیں۔ اور اسی طرح اگر انگوٹھی پر تصویر ہو اھ |

---

1 بحر الرائق کتاب الصلوٰۃ باب مایفسد الصلوٰۃ و مایکرہ فیھا ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳۱/۲ 2 بحر الرائق بحوالہ المحیط کتاب الصلوٰۃ باب مایفسد الصلوۃ و مایکرہ فیھا ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۷۷/۲ 3 خلاصۃ الفتاوی کتاب الصلوٰۃ الجنس فیمایکرہ فی الصلوٰۃ مکتبہ حبیبہ کوئٹہ ۵۸/۱

Vol 24 Fatawa Razawiyya

[Arabic Text] Al-Hilyah: The first statement is attributed to both Al-Muhit and Al-Khulasah. In Al-Bahr, the distinction is made excellently. It states under the phrase of Al-Muhit, which implies that if the engravings on a ring are distinct, praying with it is disliked (Makruh). I say: Customarily, rings do not have anything but indistinct engravings; rather, perhaps a ring can only bear such. So, the statement of Al-Muhit "and it is indistinct" is to explain the common cause ('illa) between the ring's engraving and something covered. Al-Bahr says: This indicates that it is not disliked to pray while carrying a pouch or bag containing dinars or dirhams that have small images on them, because they are covered. An objection was raised in Al-Nahr that the smallness of the images makes the reasoning of being covered unnecessary; rather, the implication is that it would be disliked if they were exposed. It will come later that the prayer is not disliked, but it is disliked (Tanzihan - slightly disliked) to place an image in a house due to the Hadith: "The angels do not enter a house in which..."

[Urdu Text] Accordingly, in Hilyah, the first statement was attributed to Muhit and Khulasah, and in Bahr-e-Raiq, the distinction has been made in a very good manner. Under the statement of Muhit, it was said and from this the benefit emerged that if the engravings on a ring are clear, then performing Salah with it is Makruh (disliked). I say: (I mean to say) According to habit, the engravings on a ring are not clear, rather perhaps a ring has no other possibility besides unclear engravings. Therefore, Muhit's saying that the ring has unclear engravings is to state such a cause which is comprehensive for the covered engraving of the ring. The author of Bahr-e-Raiq said: From this, the benefit was obtained that if dirhams or dinars are kept in a bag or wallet and one prays while carrying them, even if there are small pictures on them, there will be no dislike because they are covered. In An-Nahr al-Faiq, this was objected to, stating that for small pictures, their smallness itself is sufficient for the lack of dislike, therefore there is no need for the reasoning of being covered. Rather, its implication is the proof of dislike when they are exposed. It will follow shortly that the prayer itself will not be disliked, but keeping a picture in the house is Makruh Tanzihan (slightly disliked) based on the Hadith: "Angels do not enter that house in which..."

1 Bahr-ur-Raiq, Kitab-us-Salah, Bab Ma Yufsid-us-Salah wa Ma Yukrahu fiha, H.M. Saeed Company Karachi 2/27 2 Bahr-ur-Raiq, Kitab-us-Salah, Bab Ma Yufsid-us-Salah wa Ma Yukrahu fiha, H.M. Saeed Company Karachi 2/27

खंड 24 फ़तावा रज़विया

[अरबी पाठ] अल-हिल्या: पहली इबारत का संबंध 'अल-मुहीत' और 'अल-खुलासा' दोनों से बताया गया है। 'अल-बहर' में बहुत अच्छे अंदाज़ में फ़र्क किया गया है। 'अल-मुहीत' के कथन के तहत कहा गया है, जिसका अर्थ यह है कि यदि अंगूठी पर नक़्श (नक्काशी) साफ़ हैं, तो उसके साथ नमाज़ पढ़ना मकरूह (नापसंद) है। मैं (लेखक) कहता हूँ: सामान्यतः अंगूठियों पर नक़्श साफ़ नहीं होते, बल्कि शायद अंगूठी में अस्पष्ट नक़्श के अलावा कोई और संभावना ही नहीं होती। इसलिए 'अल-मुहीत' का यह कहना कि 'अंगूठी के नक़्श अस्पष्ट होते हैं', एक ऐसी वजह (इल्लत) बताने के लिए है जो अंगूठी के ढके हुए नक़्श के लिए व्यापक है। 'अल-बहर' कहता है: यह संकेत देता है कि ऐसे बटुए या थैली के साथ नमाज़ पढ़ना मकरूह नहीं है जिसमें दीनार या दिरहम हों और उन पर छोटी तस्वीरें हों, क्योंकि वे ढकी हुई हैं। 'अन-नहर' में इस पर आपत्ति जताई गई कि तस्वीरों का छोटा होना ही उनके मकरूह न होने के लिए पर्याप्त है, इसलिए उनके ढके होने का तर्क देने की आवश्यकता नहीं है; बल्कि इसका अर्थ यह निकलता है कि यदि वे खुली हों तो मकरूहियत साबित होगी। आगे यह बताया जाएगा कि नमाज़ मकरूह नहीं होगी, लेकिन घर में तस्वीर रखना मकरूह-ए-तन्ज़ीही (हल्का नापसंद) है, इस हदीस के आधार पर कि "फ़रिश्ते उस घर में प्रवेश नहीं करते जिसमें..."

[उर्दू पाठ] तदनुसार, हिल्या में पहली इबारत का श्रेय मुहीत और खुलासा को दिया गया, और बहर-ए-राइक में बहुत अच्छे तरीके से अंतर किया गया है। मुहीत के कथन के अंतर्गत कहा गया और इससे यह लाभ निकला कि यदि अंगूठी में नक़्श स्पष्ट हों तो उसके साथ नमाज़ पढ़ना मकरूह है। मैं कहता हूँ: (मेरा आशय है कि) आदत के अनुसार अंगूठी पर नक़्श साफ़ नहीं होते, बल्कि शायद अंगूठी में अस्पष्ट नक़्श के अलावा कोई दूसरी संभावना ही नहीं होती। इसलिए मुहीत का यह कहना कि अंगूठी में अस्पष्ट नक़्श होते हैं, एक ऐसे कारण (इल्लत) को बताने के लिए है जो अंगूठी के ढके हुए नक़्श के लिए व्यापक है। बहर-ए-राइक के लेखक ने कहा: इससे यह लाभ प्राप्त हुआ कि यदि बटुए या थैली में दिरहम या दीनार रखे हों और कोई उनके साथ नमाज़ पढ़े, भले ही उनमें छोटी तस्वीरें हों, तो कोई मकरूहियत नहीं होगी क्योंकि वे ढकी हुई हैं। अन-नहर अल-फाइक में इस पर आपत्ति की गई कि छोटी तस्वीरों के लिए उनका छोटा होना ही मकरूह न होने के लिए काफी है, इसलिए ढके होने का तर्क देने की ज़रूरत नहीं है। बल्कि इसका निहितार्थ यह है कि यदि वे खुली हों तो मकरूहियत साबित होगी। अभी आगे आएगा कि नमाज़ मकरूह नहीं होगी, लेकिन घर में तस्वीर रखना मकरूह तन्ज़ीही है, इस हदीस के आधार पर कि "उस घर में फ़रिश्ते नहीं जाते जिसमें..."

1 बहर-उर-राइक, किताब-उस-सलाह, बाब मा युफसिद-उस-सलाह व मा युकराहु फीहा, एच.एम. सईद कंपनी कराची 2/27 2 बहर-उर-राइक, किताब-उस-सलाह, बाब मा युफसिद-उस-सलाह व मा युकराहु फीहा, एच.एम. सईद कंपनी कराची 2/27

पृष्ठ 625 का 720

[Arabic Text] الحلية العبارة الاولى للمحيط والخلاصة معا وفرق في البحر فاحسن وقال تحت قول المحيط وهو يفيد ان المستبين في الخاتم تكره الصلوة معه ١ اھ اقول: العادة ان الخاتم لايكون عليها الاغير مستبين بل لعل الخاتم لايحتمل الا اياه فقول المحيط وهو غير مستبين لبيان العلة الجامعة بين نقش الخاتم والمستور، قال البحر ويفيد انه لايكره ان يصلى و معه صرة او كيس فيه دنانير او دراهم فيها صور صغار لاستتارها ٢ اھ واعترض في النهر بان عدم الكراهة فى الصغار غنى عن التعليل بالاستتار بل مقتضاه ثبوتها اذا كانت منكشفة وسيأتى انها لاتكره الصلوة لكن يكره كراهة تنزيه جعل الصورة في البيت لخبر ان الملئكة لاتدخل بيتا

[Urdu Text] چنانچہ حلیہ میں پہلی عبارت کی محیط اور خلاصہ کی طرف نسبت کی ، اور بحر رائق میں بہت اچھے انداز سے فرق کیا ہے ، اور محیط کے قول کے ذیل میں فرمایا اور اس سے یہ فائدہ برآمد ہوا کہ اگر انگوٹھی میں نقوش واضح ہوں تو اس کے ساتھ نماز پڑھنا مکروہ ہے اھ اقول: (میں کہتا ہوں) عادت کے مطابق انگوٹھی پر نقوش واضح نہیں ہوتے بلکہ شاید انگوٹھی غیر واضح نقوش کے علاوہ کوئی اور دوسرا احتمال ہی نہیں رکھتی ، لہذا محیط کا یہ کہنا کہ انگوٹھی کے غیر واضح نقوش ہوا کرتے ہیں ، ایسی علت کے بیان کے لئے ہے جو انگوٹھی کے نقش مستور کے لئے جامع ہے۔ صاحب بحر رائق نے فرمایا: اس سے یہ فائدہ حاصل ہوا کہ اگر تھیلی یا بٹوے میں درہم ، دینار رکھے ہوں اور ان کے ساتھ نماز پڑھے جبکہ ان میں چھوٹی چھوٹی تصویریں ہوں تو کراہت نہ ہو گی اس لئے کہ وہ مستور ہیں اھ النہر الفائق میں اس پر اعتراض کیا کہ چھوٹی تصویروں میں بوجہ صغر عدم کراہت کے لئے کافی ہے لہذا تعلیل بالاستتار کی ضرورت نہیں بلکہ اس کا مقتضیٰ ثبوت کراہت ہے جبکہ وہ کھلی ہوں۔ ابھی آئے گا کہ نماز

مکروہ نہ ہو گی ، لیکن گھر میں تصویر رکھنا مکروہ تنزیہی ہے اس حدیث کی بناء پر کہ "اس گھر میں فرشتے نہیں جاتے جس میں

1 بحر الرائق کتاب الصلوۃ باب مایفسد الصلوۃ ومایکرہ فیھا ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۲۷ 2 بحر الرائق کتاب الصلوۃ باب مایفسد الصلوۃ ومایکرہ فیھا ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۲۷

Fatawa Razawiyya, Volume 24

Text: "...therein is a dog or a picture." This was quoted in Minhat al-Khaliq while affirming it. I say: It is as the author stated. The addition of "smallness" occurred coincidentally because it is customary for images on dirhams and dinars to be small. However, regarding his statement "but it is disliked," you know that if a small picture is in a house, there is no dislike (karahah). This was previously clarified with reference to Fath al-Qadir. The noble Imams have agreed upon and collaborated in narrating reports from the Sahabah (Companions) regarding this. We have already mentioned from Fakhr al-Islam that keeping a picture openly for the sake of veneration is disliked, etc. The author added the condition of being "visible" (al-zahir). Thus, the clear meaning is that if the image is not visible, it has no effect on dislike, neither in prayer nor in keeping it. The author of Al-Bahr al-Raiq said: A benefit derived from this is that if there is a picture on a garment and another garment is put over it to hide it, then praying in such a garment is not disliked because it is covered by the other garment...

Footnotes: 1. Minhat al-Khaliq 'ala al-Bahr al-Raiq, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, H.M. Saeed Company, Karachi, 2/271. 2. Al-Bahr al-Raiq, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, H.M. Saeed Company, Karachi, 2/271.

फतवा रज़विया, खंड 24

पाठ: "...उसमें एक कुत्ता या एक चित्र है।" इसे 'मिन्हात अल-खालिक' में इसकी पुष्टि करते हुए उद्धृत किया गया था। मैं कहता हूँ: यह वैसा ही है जैसा लेखक ने कहा है। 'छोटापन' का जुड़ना संयोगवश हुआ क्योंकि दिरहम और दीनार पर चित्रों का छोटा होना प्रथागत है। हालाँकि, उनके कथन "लेकिन यह नापसंद है" के बारे में, आप जानते हैं कि यदि घर में कोई छोटा चित्र हो, तो कोई नापसंदगी (कराहियत) नहीं होती है। यह पहले 'फतह अल-क़दीर' के संदर्भ में स्पष्ट किया जा चुका है। महान इमामों ने इस संबंध में सहाबा (साथियों) से रिपोर्ट सुनाने में सहमति और सहयोग किया है। हम पहले ही फख़्र अल-इस्लाम के हवाले से उल्लेख कर चुके हैं कि सम्मान के लिए खुले तौर पर चित्र रखना मक़रूह है, आदि। लेखक ने "दृश्यमान" (अल-ज़ाहिर) होने की शर्त जोड़ी। इस प्रकार, स्पष्ट अर्थ यह है कि यदि चित्र दृश्यमान नहीं है, तो नापसंदगी पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, न तो प्रार्थना में और न ही इसे रखने में। 'अल-बहर अल-रईक' के लेखक ने कहा: इससे प्राप्त एक लाभ यह है कि यदि किसी कपड़े पर कोई चित्र है और उसे छिपाने के लिए उसके ऊपर कोई दूसरा कपड़ा डाल दिया जाता है, तो ऐसे कपड़े में प्रार्थना करना मक़रूह नहीं है क्योंकि वह दूसरे कपड़े से ढका हुआ है...

पादलेख: 1. मिन्हात अल-खालिक 'अला अल-बहर अल-रईक', प्रार्थना की पुस्तक, प्रार्थना को अमान्य करने वाले और उसमें क्या मक़रूह है, इस पर अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 2/271। 2. अल-बहर अल-रईक, प्रार्थना की पुस्तक, प्रार्थना को अमान्य करने वाले और उसमें क्या मक़रूह है, इस पर अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 2/271।

کتا یا تصویر ہو اھ منحۃ الخالق میں اس کا اقرار کرتے ہوئے اسے نقل فرمایا۔ اقول: (میں کہتا ہوں) اور وہ اسی طرح ہے جیسا کہ موصوف نے کہا ہے، گویا چھوٹے پن کا اضافہ اتفاقیہ واقع ہوا کیونکہ درہم و دینار میں نقوش تصویر کا چھوٹا ہونا ایک امر معہود ہے لیکن اس کے قول "لکن یکرہ" میں آپ جانتے ہیں کہ چھوٹی تصویر گھر میں ہو تو کوئی کراہت نہیں۔ جیسا کہ اس کی تصریح فتح القدیر کے حوالہ سے پہلے گزر چکی۔ ائمہ کرام نے صحابہ رضی اللہ تعالٰی عنہم سے ایسے آثار نقل کرنے پر باہم اتفاق اور تعاون فرمایا اور ہم اس سے پہلے فخر الاسلام کے حوالے سے ذکر کر چکے ہیں کہ برملا کسی تصویر کو بطورِ تعظیم اٹھائے رکھنا مکروہ الخ موصوف نے اپنے کلام میں "الظاہر" کی قید لگائی، پس اس کا واضح مفہوم یہ ہے کہ اگر تصویر ظاہر نہ ہو تو پھر کراہت میں اس کا کوئی اثر نہیں، نہ نماز میں اور نہ اسے اٹھائے رکھنے میں، مصنف بحر رائق نے فرمایا: اس سے یہ فائدہ برآمد ہوا کہ جس کپڑے میں کوئی تصویر ہو پھر اس کے اوپر کوئی دوسرا کپڑا ڈال کر اسے چھپا لیا جائے تو پھر ایسے کپڑے پر نماز پڑھنی مکروہ نہیں اس لئے کہ وہ دوسرے کپڑے...

حواشی: 1 منحۃ الخالق علی البحر الرائق کتاب الصلوۃ باب مائیفسد الصلوۃ ومایکرہ فیھا ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲ / ۲۷۱ 2 بحر الرائق کتاب الصلوۃ باب مائیفسد الصلوۃ ومایکرہ فیھا ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲ / ۲۷۱

صفحہ 626 از 720

Volume 24 Fatawa Ridawiyya

I say: And there is no delight of the eye in it for the one who keeps images in his box to look at them whenever he wishes. For although they are hidden as long as they are in the box, he will open it and take them out, and they will appear. Thus, prohibition arises, and keeping something for a forbidden purpose is like someone who keeps a woman to commit sin with her. He is in the sin of immorality even when he is not committing it, because actions are judged by intentions. We ask Allah for safety. Moreover, even if he kept them without intending to look at them whenever he wished, it would involve preserving something that contains corruption. It is like keeping musical instruments even if one does not play them. The exalted Imam Qazi Khan said in his Fatawa: "If someone keeps any of these musical instruments and amusements, it is disliked and sinful, even if he does not use them, because keeping these things is habitually for amusement." 1.

...has been hidden from him. And Allah the Almighty is Pure and Transcendent; He is the Knower of everything. I say: (I say) There is no delight of the eye in this for that person who has kept images locked in his box for the purpose that whenever he wants, he may open the box and see them. Although the aforementioned images are hidden due to being locked in the box as long as they are in the box, when he opens the box and takes them out, they will appear before him. Then the prohibition will arise because keeping a thing for a forbidden matter is also forbidden. Its example is like that man who had kept a woman under his control so that he might commit adultery with her when the opportunity arose. Then, as long as he does not commit adultery, he will still be caught in the sin of committing adultery, because the basis of actions is on human intentions. Therefore, we ask Allah the Almighty for safety. Rather, if he kept it and did not even intend to see it whenever he wanted, even then there is this evil in it that in this situation he preserved exactly that thing in which there is corruption. And similarly, it is like a person who does not sing or play music but keeps the instruments and means of singing...

1 Fatawa Qazi Khan, Book of Prohibition and Permission, Chapter on Glorification and Greeting etc. Naval Kishore, Lucknow, 4/493.

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

मैं कहता हूँ: और उस व्यक्ति के लिए आँखों की कोई ठंडक नहीं है जो अपने संदूक में तस्वीरें रखता है ताकि जब चाहे उन्हें देख सके। क्योंकि भले ही वे संदूक में होने तक छिपी रहती हैं, लेकिन वह उसे खोलेगा और उन्हें बाहर निकालेगा, तो वे दिखाई देंगी। इस प्रकार निषेध (हराम) उत्पन्न होता है, और किसी वर्जित कार्य के लिए कुछ रखना उस व्यक्ति की तरह है जिसने किसी महिला को उसके साथ व्यभिचार करने के लिए रखा हो। वह व्यभिचार के पाप में तब भी होता है जब वह उसे नहीं कर रहा होता, क्योंकि कर्मों का दारोमदार नीयत (इरादे) पर है। हम अल्लाह से सलामती माँगते हैं। इसके अलावा, अगर उसने उन्हें बिना इस इरादे के रखा कि जब चाहे उन्हें देखे, तब भी इसमें उस चीज़ का संरक्षण शामिल है जिसमें बिगाड़ है। यह संगीत वाद्ययंत्र रखने जैसा है भले ही कोई उन्हें न बजाए। महान इमाम क़ाज़ी खान ने अपने फ़तावा में कहा है: "यदि कोई इन संगीत वाद्ययंत्रों और मनोरंजन की चीज़ों में से कुछ रखता है, तो यह नापसंद और पाप है, भले ही वह उनका उपयोग न करे, क्योंकि इन चीज़ों को रखना आमतौर पर मनोरंजन के लिए होता है।" 1.

...उससे छुपा लिया गया है। और अल्लाह तआला पाक और पवित्र है; वह सब कुछ जानने वाला है। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) इसमें उस आदमी के लिए कोई आँखों की ठंडक नहीं है जिसने अपने संदूक में तस्वीरें बंद कर रखी हैं इस उद्देश्य के लिए कि जब चाहे संदूक खोलकर उन्हें देख ले। उल्लेखित तस्वीरें यद्यपि संदूक में बंद होने के कारण गुप्त हैं जब तक वे संदूक में हैं, लेकिन जब वह संदूक खोलेगा और उन्हें निकालेगा तो वे सामने आ जाएँगी, फिर निषेध उत्पन्न हो जाएगा क्योंकि किसी वर्जित कार्य के लिए किसी चीज़ को रोके रखना भी वर्जित है। इसकी मिसाल उस आदमी जैसी है जिसने किसी औरत को अपनी निगरानी में पाबंद कर रखा था ताकि मौक़ा मिलने पर उससे व्यभिचार करे। फिर जब तक वह व्यभिचार नहीं करेगा, उस समय भी वह व्यभिचार करने के पाप में गिरफ्तार होगा, क्योंकि कर्मों का आधार मानवीय इरादों पर है। इसलिए हम अल्लाह तआला से सलामती का सवाल करते हैं। बल्कि, अगर उसने उसे रोक रखा और जब चाहे देखने का इरादा भी न किया, तब भी इसमें यह बुराई है कि उसने इस स्थिति में उसी चीज़ की रक्षा की जिसमें बिगाड़ है। और इसी तरह यह उस व्यक्ति की तरह है जो गाना-बजाना नहीं करता लेकिन गाने के वाद्ययंत्रों और साधनों को...

1 फ़तावा क़ाज़ीखान, किताब अल-हज़र वल-इबाहा, फ़स्ल फ़ी अत-तस्बीह व अत-तस्लीम आदि, नवल किशोर, लखनऊ, 4/493।

اقول: ولاقرة عين فيه لمن يمسك التصاوير في صندوقه لينظر فيها متى شاء فإنها وان كانت مستورة مادامت في الصندوق لكنه يفتحه ويخرجها فتظهر فيأتى التحريم والامساك لامر ممنوع كمن امسك امرأة ليفجر بها فهو في اثم الفجور حين لا يفجر لان الاعمال بالنيات، نسأل الله السلامة، بل لو امسكها ولم يقصد النظر فيها متى شاء، كان فيه حفظ ما فيه الفساد فكان كامساك آلة اللهو كمن لا يضرب قال الامام الاجل قاضي خان في فتاواه لو امسك شيئا من هذه المعازف والملاهي يكره ويأثم وان كان لا يستعملها لان امساك هذه الاشياء للهو عادةً ۱۔

سے چھپا لیا گیا ہے۔ اور اللہ تعالیٰ پاک و منزہ ہے، وہ سب سے زیادہ علم رکھنے والا ہے۔ اقول: (میں کہتا ہوں) اس میں کوئی آنکھوں کی ٹھنڈک نہیں اس آدمی کے لئے جو اپنے صندوق میں تصویریں بند کر رکھے اس مقصد کے لئے کہ جب چاہے صندوق کھول کر انہیں دیکھ لے، مذکورہ تصویریں اگرچہ صندوق میں بند ہونے کی وجہ سے مستور ہیں جب تک کہ صندوق میں ہیں لیکن جب وہ صندوق کو کھولے گا اور انہیں نکالے گا تو وہ سامنے آجائیں گی پھر حرمت پیدا ہو جائے گی کیونکہ کسی امر ممنوع کے لئے کسی چیز کو روکے رکھنا بھی ممنوع ہے، اس کی مثال اس آدمی جیسی ہے کہ جس نے کسی عورت کو اپنی نگرانی میں پابند کر رکھا تھا تاکہ موقع پر اس سے بدکاری کا ارتکاب کرے، پھر جس وقت تک وہ بدکاری نہ کرے گا اس وقت بھی بدکاری کرنے کے گناہ میں گرفتار ہوگا اور اس لئے کہ اعمال کا مدار انسانی ارادوں پر ہے، لہذا ہم اللہ تعالیٰ سے سلامتی کا سوال کرتے ہیں، بلکہ اگر اس نے اسے روک رکھا اور جب چاہے دیکھنے کا ارادہ بھی نہ کیا تو پھر بھی اس میں یہ خرابی ہے کہ اس نے اس صورت میں اسی چیز کی

حفاظت کی جس میں فساد ہے اور اسی طرح یہ ہے کہ جیسے کوئی آدمی گانا بجانا نہیں کرتا لیکن گانے کے آلات و اسباب کو

۱ فتاوی قاضیخان کتاب الحظر والاباحة فصل فی التسبیح و التسلیم الخ نولکشور لکھنو ۴ / ۴۹۳

Fatawa Ridawiyya Volume 24

...keeps them with himself. Thus, our great Imam, Faqih Qazi Khan, stated in his Fatawa that if someone keeps any musical instruments or amusement items with him, it is disliked (Makruh), and he will be a sinner for doing so even if he doesn't use them. This is because keeping such instruments and items is usually for the purpose of play and amusement. (T)

(7) There is no harm if pictures of the moon, sun, stars, and trees are in front of one during prayer. Although the polytheists worshipped these things, they did not worship their pictures. Somnath was indeed a temple of the moon (Som means moon and Nath means master), but it contained an idol which was considered the spiritual form of the moon, not a picture of its crescent, lunar, or full moon shape. It is stated in Rad al-Muhtar from Diraya Sharh al-Hidaya:

"If it is said that the sun, moon, stars, and green trees are worshipped, we say it is their physical self ('ayn) that is worshipped, not their representation (timthal)." I say: Through this, the invalidity of Al-Qari's arguments in Al-Mirqat becomes clear, where he said, "Whatever is worshipped besides Allah, even if it is from inanimate objects like the sun and the moon, it is appropriate that its depiction be prohibited." This, as you can see, is a strange argument that falls from credibility because there is no evidence for it. Furthermore, there is no sign of it in the speech of the leading Imams; rather, it is a contradictory statement against all the general rulings found in the texts, commentaries, and fatawa of the Madhhab books. And Allah is the Granter of Success. Then Al-Allama Al-Kaki said: Accordingly, it should be disliked.

If it is said that the sun, moon, stars, and green trees are worshipped (then what is the ruling on their pictures?), we reply that it is the essence of the aforementioned things that is worshipped, not their pictures. I say: (I say) from this, the falsehood of the statement discussed by Mulla Ali Qari in Mirqat Sharh Mishkat becomes clear. The esteemed author stated that whatever is worshipped besides Allah, even if it's from inanimate objects like the sun and moon etc., it is appropriate for its picture to be declared prohibited. Whatever he said, as you see, is a strange discussion that is devoid of any weight because there is no evidence for it, and furthermore, there is no trace of it in the speech of the great Imams. Rather, it is an opposing statement to all the general rulings present in the texts of the school's books,

1. Rad al-Muhtar, Kitab al-Salat, Bab Ma Yufsid al-Salat wa Ma Yukrah Fiha, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/436.
2. Mirqat al-Mafatih Sharh al-Mishkat al-Masabih, Kitab al-Libas, Bab al-Tasawir, Al-Fasl al-Awwal, 8/273.

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

...अपने पास रोके रखता है। चुनांचे हमारे एक जलील-उल-क़द्र इमाम फ़क़ीह क़ाज़ी ख़ां ने अपने फ़तावा में इर्शाद फ़रमाया कि अगर कोई शख्स गाने-बजाने और लहू (मनोरंजन के साधनों) में से किसी चीज़ को अपने पास रोके रखे तो वह मकरूह है, और वह ऐसा करने से गुनहगार होगा चाहे उन्हें अपने इस्तेमाल में न लाए, क्योंकि इस किस्म के आलात व अस्बाब को रोके रखना आदतन खेल-तमाशे के लिए ही होता है। (त)

(७) चाँद, सूरज, सितारों और दरख़्तों की तस्वीरें नमाज़ में सामने हों तो कोई हर्ज नहीं, क्योंकि मुशरिकों ने अगरचे इन अशिया की पूजा की, मगर इन तस्वीरों की इबादत नहीं करते। सोमनाथ अगरचे मा'बद-ए-क़मर (चंद्रमा का मंदिर) था (सोम का अर्थ क़मर है और नाथ का अर्थ मालिक), मगर इसमें बुत था जिसे सूरत-ए-रूहानियत-ए-क़मर क़रार दिया गया था, न कि हिलाली या क़मरी या बदरी शक्ल की तस्वीर। रद-उल-मुहतार में दिराया शरह-ए-हिदाया से मरक़ूम है:

"अगर यह कहा जाए कि सूरज, चाँद, सितारों और हरे पेड़ों की पूजा की जाती है, तो हम कहते हैं कि उनकी ज़ात ('ऐन) की पूजा की जाती है न कि उनके प्रतिरूप (तम्साल) की।" मैं कहता हूँ: इससे अल-क़ारी के उन तर्कों का बातिल (अमान्य) होना स्पष्ट हो गया जो उन्होंने 'अल-मिरक़ात' में दिए हैं, जहाँ उन्होंने कहा: "अल्लाह के सिवा जिसकी भी इबादत की जाए, चाहे वह बेजान चीज़ों जैसे सूरज और चाँद में से ही क्यों न हो, मुनासिब यह है कि उसकी तस्वीर को हराम क़रार दिया जाए।" यह, जैसा कि आप देख सकते हैं, एक अजीब बहस है जो एतिबार के दर्जे से साक़ित (गिरी हुई) है क्योंकि इस पर कोई दलील नहीं है। इसके अलावा, अइम्मा-ए-किराम के कलाम में इसका कोई निशान मौजूद नहीं है, बल्कि यह मज़हब की किताबों के मुतून, शुरूह और फ़तावा में मौजूद तमाम आम हुक्मों (इत्तलाक़ात) के ख़िलाफ़ एक बात है। और अल्लाह ही तौफ़ीक़ देने वाला है। फिर अल्लामा काकी ने कहा: इस आधार पर यह मकरूह होना चाहिए।

अगर यह कहा जाए कि सूरज, चाँद, सितारे और हरे दरख़्तों की इबादत की जाती है (तो फिर उनकी तस्वीरों का क्या हुक्म है?), हम इसके जवाब में अर्ज़ करते हैं कि मज़कूरा अशिया की ऐन ज़ात की इबादत की जाती है न कि उनकी तस्वीरों की। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) इससे उस कौल का बातिल होना वाज़ेह हो गया जिसकी मुल्ला अली क़ारी ने मिरक़ात शरह-ए-मिशकात में बहस की। चुनांचे मौसूफ़ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला के सिवा जिसकी इबादत की जाए, अगरचे वह बेजान चीज़ों

में से हो जैसे सूरज और चाँद वग़ैरह, तो मुनासिब यह है कि उसकी तस्वीर हराम क़रार दी जाए। यह जो कुछ फ़रमाया जैसा कि आप देखते हैं, एक अजीब बहस है जो दर्ज़ा-ए-एतिबार से साक़ित है क्योंकि इस अम्र पर कोई दलील नहीं, और नीज़ अइम्मा-ए-किराम के कलाम में इसकी कोई निशानी मौजूद नहीं बल्कि वह एक मुख़ालिफ़ कलाम है, उन तमाम इत्तलाक़ात के लिए जो मज़हब की किताबों में मुतून,

---

1. रद-उल-मुहतार, किताब-उस-सलात, बाब मा युफ़सिदुस-सलात व मा युक़रहु फ़ीहा, दार इहया-उत-तुरास अल-अरबी, बैरुत, १/४३६।
2. मिरक़ात-उल-मफ़ातीह शरह-अल-मिशकात अल-मसाबीह, किताब-उल-लिबास, बाब-अत-तसावीर, अल-फ़स्ल अल-अव्वल, ८/२७३।

اپنے پاس روکے رکھتا ہے چنانچہ ہمارے ایک جلیل القدر امام فقیہ قاضی خاں نے اپنے فتاوٰی میں ارشاد فرمایا کہ اگر کوئی شخص گانے بجانے اور لہو میں سے کسی چیز کو اپنے پاس روکے رکھے مکروہ ہے اور وہ اسی طرح کرنے سے گنہگار ہوگا اگرچہ انہیں اپنے استعمال میں نہ لائے، کیونکہ اس قسم کے آلات واسباب کو روکے رکھنا عادتاً کھیل تماشے کے لئے ہی ہوتا ہے۔ (ت)

(۷) چاند، سورج، ستاروں اور درختوں کی تصویریں نماز میں سامنے ہوں تو حرج نہیں کہ مشرکین نے اگرچہ ان اشیاء کو پوجا مگر ان تصویروں کی عبادت نہیں کرتے، سومنات اگرچہ معبد قمر تھا، سوم بمعنی قمر ہے اور ناتھ بمعنی مالک، مگر اس میں بت تھا جسے صورت روحانیت قمر قرار دیا تھا نہ شکل ہلالی یا قمری یا بدری کی تصویر، ردالمختار میں درایہ شرح ہدایہ سے ہے:

فان قیل عبد الشمس والقمر والکواکب والشجرۃ الخضراء قلنا عبد عینہ لا تمثالہ اھ اقول: وبہ ظھر بطلان مباحث القاری فی المرقاۃ اذ قال ما عبد من دون اللہ ولو کان من الجمادات کالشمس والقمر ینبغی ان یحرم تصویرہ اھ وھو کما تری بحث غریب ساقط لادلیل علیہ ولا اثر لہ فی کلام الائمہ بل مخالف لاطلاقات جمیع کتب المذھب متونا و شروحا و فتاوی واللہ الموفق ھذا۔ ثم قال العلامۃ الکاکی فعلی ھذا ینبغی ان یکرہ

اگر یہ کہا جائے سورج، چاند، ستارے اور سبز درختوں کی عبادت کی جاتی ہے (تو پھر ان کی تصویروں کا کیا حکم ہے) ہم اس کے جواب میں عرض کرتے ہیں کہ اشیاء مذکورہ کی عین ذات

کی عبادت کی جاتی ہے نہ کہ ان کی تصویروں کی اھ اقول: (میں کہتا ہوں) اس سے اس قول کا باطل ہونا واضح ہو گیا کہ ملا علی قاری نے مرقاۃ شرح مشکوٰۃ میں جس سے بحث کی، چنانچہ موصوف نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ کے سوا جس کی عبادت کی جائے اگرچہ وہ بے جان چیزوں میں سے ہو جیسے سورج اور چاند وغیرہ، تو مناسب یہ ہے کہ اس کی تصویر حرام قرار دی جائے اھ یہ جو کچھ فرمایا جیسا کہ آپ دیکھتے ہیں ایک بحث غریب ہے جو درجہ اعتبار سے ساقط ہے کیونکہ اس امر پر کوئی دلیل نہیں، اور نیز ائمہ کرام کے کلام میں اس کی کوئی نشانی موجود نہیں بلکہ وہ ایک مخالف کلام ہے، ان تمام اطلاقات کے لئے جو مذہب کی کتابوں میں متون،

---

1. ردالمحتار کتاب الصلوۃ باب مائیفسد الصلوۃ ومایکرہ فیھا داراحیاء التراث العربی بیروت ۱ / ۴۳۶

2. مرقات المفاتیح شرح المشکوۃ المصابیح کتاب اللباس باب التصاویر الفصل الاول ۸ / ۲۷۳

Fatawa Razawiya, Volume 24

...facing these things. Ash-Shami said, it is because they themselves were worshipped, unlike if their images were made and one faced their images. I say: This is a strange derivation and a unique discussion. Travelers in open spaces and on the sea, who find no refuge from facing the sun in the afternoon and the moon in it (the afternoon) or in the evening or at night, and have no escape from facing the stars at night—where can a person praying in forests and gardens flee from facing a green tree? In fact, he might not find any barrier (sutrah) other than it, so he takes refuge in it by the ruling of the Sharia. Imam Ahmad and Abu Dawud narrated from Miqdad bin al-Aswad (may Allah the Almighty be pleased with him) who said: I never saw the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)...

...are present in the form of commentaries and Fatwas, and Allah alone is the giver of success. Allamah Kaki stated that based on this, it is appropriate that facing the very essence of all these things is disliked (makruh). Similarly, Allamah Shami stated that all those things that are worshipped are their essence. Contrary to this, if their image is made and then one faces that image. (Ending of quote). I say: (I say) this is a strange derivation and a rare discussion, that travelers in open air and at sea find no place of shelter; people cannot run away anywhere from facing the sun at the time of Asr, the moon at the time of Maghrib or Isha, and the stars at the time of Isha. And where can a person praying in forests and gardens run to? Because by facing green trees in forests and gardens, rather, many times he does not find any other barrier (sutrah) besides them, then based on the ruling of Sharia, he seeks refuge in them. Imam Ahmad and Imam Abu Dawud narrated from Miqdad bin Aswad (may Allah be pleased with him), the mentioned individual said: I saw the Presence (peace and blessings be upon him) in any...

---

1 Radd al-Muhtar, citing Mi'raj al-Dirayah, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer, etc., Dar Ihya al-Turath al-Arabi, 1/346.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

...इन चीज़ों की ओर मुँह करना। शामी ने कहा, क्योंकि वे स्वयं पूजे जाते थे, इसके विपरीत यदि उनकी तस्वीरें बनाई जातीं और उनकी तस्वीरों की ओर मुँह किया जाता। मैं कहता हूँ: यह एक अजीब निष्कर्ष और दुर्लभ चर्चा है। खुले आसमान और समुद्र में यात्री, जिन्हें दोपहर में सूरज और दोपहर या शाम या रात में चाँद की ओर मुँह करने से कोई आश्रय नहीं मिलता, और रात में सितारों की ओर मुँह करने से कोई बचाव नहीं है—जंगलों और बगीचों में नमाज़ पढ़ने वाला हरे पेड़ की ओर मुँह करने से कहाँ भाग सकता है? वास्तव में, उसे इसके अलावा कोई अन्य आड़ (सुतरा) नहीं मिल सकती है, इसलिए वह शरीयत के हुक्म से इसकी शरण लेता है। इमाम अहमद और अबू दाऊद ने मिक़दाद बिन अल-असवद (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत की है, उन्होंने कहा: मैंने अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) को कभी नहीं देखा...

...शराह और फ़तावा के रूप में मौजूद हैं, और अल्लाह ही तौफ़ीक देने वाला है। अल्लामा काकी ने फ़रमाया कि फिर इस आधार पर यह उचित है कि इन तमाम चीज़ों की मूल सत्ता (ज़ात) की ओर मुँह करना मकरूह है। इसी तरह अल्लामा शामी ने फ़रमाया कि वे तमाम चीज़ें जिनकी इबादत की जाती है, वे उनका 'ऐन' (स्वयं) हैं। इसके विपरीत यदि उनकी तस्वीर बनाई जाए और फिर उस तस्वीर की ओर मुँह किया जाए। (उद्धरण समाप्त)। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) यह एक अजीब निष्कर्ष और दुर्लभ चर्चा है कि मुसाफ़िर खुली फ़ज़ा और समंदर में कोई ठिकाना नहीं पाते; अस्र के वक़्त सूरज की ओर, मग़रिब या ईशा में चाँद की ओर, और ईशा के वक़्त सितारों की ओर मुँह करने से लोग कहीं नहीं भाग सकते। और जंगलों और बाग़ों में नमाज़ी कहाँ भागकर जा सकता है? क्योंकि जंगलों और बाग़ों में हरे-भरे पेड़ों की ओर मुँह करने से, बल्कि कई बार वह उनके बिना कोई सुतरा (आड़) ही नहीं पाता, फिर शरीयत के हुक्म की बिना पर उनकी ओर पनाह लेता है। इमाम अहमद और इमाम अबू दाऊद ने मिक़दाद बिन असवद (अल्लाह उनसे राज़ी हो) से रिवायत की, उन्होंने फ़रमाया: मैंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को किसी...

---

1 रद अल-मुहतार, मेराज अद-दिराया के हवाले से, किताब-उस-सलात, नमाज़ को अमान्य करने वाली चीज़ों का अध्याय, आदि, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, 1/346.

استقبال عن هذه الاشیاء قال الشامی ای لانها عین ماعید بخلاف مالو صورها واستقبل صورتها۔ اقول: تفریغ عجیب وبحث غریب فالمسافرون فی الفضاء والبحر بما لا یجدون ملجاء من استقبال الشمس فی العصر والقمر فیها وفی المغرب او فی العشاء ولا محید لهم عن استقبال الکواکب فی العشاء واین یهرب المصلی فی الغیاض والریاض عن استقبال شجرة خضراء بل ربما لا یجدله سترة غیرها فیلجأ الیها بحکم الشرع وروی الامام احمد وابو داؤد وعن المقداد بن الاسود رضی اللہ تعالی عنه قال ما رایت رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیه...

شروح اور فتاویٰ کی صورت میں موجود ہیں، اور اللہ تعالیٰ ہی اس کی توفیق بخشنے والا ہے، علامہ کاکی نے فرمایا کہ پھر تو اس بنا پر مناسب یہ ہے کہ ان تمام چیزوں کی بعینہ ذات کی طرف منہ کرنا مکروہ ہے، چنانچہ اور علامہ شامی نے فرمایا کہ تمام وہ چیزیں جن کی عبادت کی جاتی ہے ان کا عین ہیں۔ بخلاف اس کے کہ ان کی تصویر بنائیں اور پھر اس تصویر کی طرف منہ کریں اھ اقول: (میں کہتا ہوں) یہ ایک عجیب تفریع اور نادر بحث ہے کہ مسافر کھلی فضا اور سمندر میں کوئی ٹھکانا نہیں پاتے، عصر کے وقت سورج کی طرف منہ کرنے سے اور چاند کی طرف منہ کرنے سے اور مغرب یا عشاء میں اور عشاء کے وقت ستاروں کی طرف منہ کرنے سے لوگ کہیں نہیں بھاگ سکتے۔ اور جنگلات اور باغات میں نمازی کہاں بھاگ کر جا سکتا ہے کیونکہ جنگلوں اور باغوں میں ہرے بھرے درختوں کی طرف منہ کرنے سے بلکہ بسا اوقات وہ ان کے بغیر کوئی سترہ ہی نہیں پاتا، پھر حکمِ شریعت کی بنا پر ان کی طرف پناہ لیتا ہے، امام احمد اور امام ابوداؤد نے مقداد بن اسود سے روایت کی (اللہ تعالیٰ ان سے راضی ہو) موصوف نے فرمایا میں نے حضور علیہ الصلوۃ والسلام کو کسی

1 رد المحتار بحوالہ معراج الدرایہ کتاب الصلوۃ باب ما یفسد الصلوۃ الخ دار احیاء التراث العربی ۳۴۶/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 24

...[he] was never seen praying towards a piece of wood, a pillar, or a tree except that he positioned it towards his right or left eyebrow and did not face it directly. [1] Furthermore, the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) only forbade prayer at the time when the sun is rising, when it is at its zenith, and when it is setting. He did not restrict this prohibition to it being directly in front of the person praying; rather, wherever it may be, even if it is behind his back or hidden behind thick clouds. He explained the reason for this by saying that at those times, it is between the two horns of Satan, not because it is worshipped instead of the Most Merciful. Perhaps the great distance of the moon and stars makes them independent of a sutrah (barrier). Thus, in Abu Dawud, narrated from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them), the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "When one of you prays without a sutrah, his prayer is interrupted by a donkey, a pig, a Jew, a Magian, and a woman. It is sufficient for him, if they pass in front of him, to throw a stone [in their direction]." [2] And for al-Tahawi, it is sufficient for you.

[1] Sunan Abi Dawud, Kitab al-Salah, Chapter: When one prays towards a pillar or the like, Aftab-e-Alam Press Lahore, 1/100. [2] Sunan Abi Dawud, Kitab al-Salah, Chapter: What interrupts the prayer, Aftab-e-Alam Press Lahore, 1/102.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

...[उन्हें] किसी लकड़ी, खंभे या पेड़ की ओर नमाज़ पढ़ते हुए नहीं देखा गया, सिवाय इसके कि उन्होंने उसे अपनी दाहिनी या बाईं भौंह की ओर रखा और उसकी ओर सीधे नहीं हुए। [1] इसके अलावा, पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने केवल उस समय नमाज़ पढ़ने से मना किया जब सूरज उग रहा हो, जब वह दोपहर के समय आसमान के बीच में हो, और जब वह डूब रहा हो। उन्होंने इसे इस बात तक सीमित नहीं किया कि वह नमाज़ी के सामने हो, बल्कि वह जहाँ कहीं भी हो, चाहे वह उसके पीछे हो या घने बादलों में छिपा हो। उन्होंने इसका कारण यह बताया कि उन समयों में सूरज शैतान के दो सींगों के बीच होता है, न कि इसलिए कि उस समय अल्लाह के अलावा उसकी पूजा की जाती है। शायद चाँद और सितारों की अधिक दूरी उन्हें सुतराह (बाधा) से बेनयाज़ कर देती है। (इसका मतलब यह है कि उनके सामने किसी आड़ की ज़रूरत नहीं है) इसलिए अबू दाऊद में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) के हवाले से हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ज़ात-ए-ग्रामी से मरवी है कि आपने फ़रमाया: "जब तुम में से कोई बिना सुतराह के नमाज़ पढ़े, तो गधा, सुअर, यहूदी, पारसी और औरत उसकी नमाज़ को काट देते हैं। और जब वे उसके आगे से गुज़रें, तो उसकी ओर से यही काफी है कि एक पत्थर फेंक दिया जाए।" [2] और अल-तहावी के अनुसार, यह आपके लिए काफी है।

[1] सुनन अबी दाऊद, किताब अल-सलाह, बाब: जब कोई खंभे आदि की ओर नमाज़ पढ़े, आफताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 1/100. [2] सुनन अबी दाऊद, किताब अल-सलाह, बाब: जो चीज़ें नमाज़ को काट देती हैं, आफताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 1/102.

पृष्ठ 720 का 630

وسلم صلی الی عود ولا عمود ولا شجرۃ الاجعلہ علی حاجبہ الایسر او الایمن ولا یصمد لہ صمدا ۱ ثم ان النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم انما نھی عن الصلوۃ حین تشرق الشمس وحین تستوی وحین تتدلی للغروب ولم یقیدہ بکونھا قبالۃ المصلی بل اینما کانت و لو وراء ظھرہ و لوفی غیم غلیظ و علللہ بأنھا تکون اذ ذاك بین قرنی الشیطان لابانھا عبدت من دون الرحمن ولعل شدۃ بعدھا و القمر والنجوم تغنی عن السترۃ فلابی داؤد عن ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنھما قال قال رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم اذا صلی احدکم الی غیر السترۃ فانہ یقطع صلوتہ الحمار والخنزیر والیھودی والمجوسی والمرأۃ ویجزئ عنہ اذا مروا بین یدیہ علی قذفۃ بحجر ۲ وللطحاوی یکفیك

لکڑی، کسی ستون اور کسی درخت کی طرف نماز پڑھتے ہوئے نہ دیکھا مگر آپ نے انہیں اپنے دائیں یا بائیں ابرو کی طرف رکھا اور بالکل ان کی طرف سیدھ نہ فرمائی، اور حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے لوگوں کو اس وقت نماز پڑھنے سے روکا جب سورج چڑھ رہا ہو یا دوپہر کے وقت وسطِ آسمان میں ٹھہر جائے یا غروب کے قریب ہو جائے، اور اس کو اس بات سے مقید نہ کیا کہ وہ نمازی کے سامنے اور اس کے مقابل ہو بلکہ جہاں بھی ہو اس کے لئے یہی حکم دیا اگرچہ وہ اس کے پس پشت ہو اور گہرے بادل میں چھپا ہوا ہو، اور اس کی تعلیل یہ بیان فرمائی کہ اوقات مذکورہ میں سورج شیطان کے دو سینگوں کے درمیان ہوتا ہے نہ یہ کہ اس وقت خدائے رحمان کے علاوہ اس کی پرستش کی جاتی ہے شاید اس کی وجہ زیادہ دور ہونا ہے، چاند اور ستارے نمازی کو سترہ سے بے نیاز کر دیتے ہیں (مطلب یہ کہ ان کے آگے کسی آڑ کی ضرورت نہیں) چنانچہ ابوداؤد میں حضرت عبداللہ ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہ کے حوالے سے حضور علیہ الصلوۃ والسلام کی ذاتِ گرامی سے مروی ہے کہ آپ نے فرمایا: اگر تم میں سے کوئی شخص بغیر

سترہ کے نماز پڑھے تو گدھا، سور، یہودی، آتش پرست اور عورت اس کی نماز کو قطع کر دیتے ہیں، اور جب وہ اس کے آگے سے گزریں تو اس کی طرف سے یہی کافی ہے کہ ایک پتھر پھینکنے

۱ سنن ابی داؤد کتاب الصلوۃ باب اذا صلی الی سارية او نحوها آفتاب عالم پریس لاہور ۱ / ۱۰۰ ۲ سنن ابی داؤد کتاب الصلوۃ باب مایقطع الصلوۃ آفتاب عالم پریس لاہور ۱ / ۱۰۲

Fatawa Razawiyya - Volume 24

Arabic Text Translation: "If they are at a distance of a 'ramiya' (bowshot) from you..."[1] And in 'al-Salat al-Hindiyyah' from 'al-Tatar-khaniyyah': "If the graves are behind the person praying, it is not disliked. Indeed, if there is a distance between him and the grave such that if he were in prayer and a person passed by, it would not be disliked, then here also it is not disliked."[2] As for trees, I say: The fact that they worshipped a species or a particular tree does not necessitate the dislike of facing except towards that specific species or individual, and not every tree. This is not like an image, for the ruling is related to itself without regard to it being an image of what they worshipped initially, as the realization of this will come to you, God Almighty willing, unlike specific entities, for the genus is not considered in them, but rather specifically what was worshipped in a certain way.

Urdu Explanation Translation: ...is at a distance (i.e., if they pass by at such a distance, there is no harm). And in the narration of Imam Tahawi, it is said: (O person in prayer!) It is sufficient for you that the passerby is at a distance of a bowshot from you. In 'Fatawa Alamgiri', under the discussion of prayer, it is quoted from 'Tatar-khaniyyah' that if the graves are behind the person praying, there is no dislike provided there is enough distance between the person praying and the grave as should be in front of a person praying in prayer; if a man passes in front of him, there is no dislike, so here too, if there is such a distance, there will be no dislike. As for the matter of trees, I say (regarding it): If the polytheists worshipped a certain type or a specific individual tree, then facing towards it would lead to dislike, but this would only be when facing that specific type or individual. This is not the case with every tree. The reason for this is that its case is not like that of an image because the ruling is linked to its essence without looking at whether it is an image of something polytheists previously worshipped or not, as its research will soon reach you, God willing. Unlike specific entities (beings), in which...

Footnotes: 1. Sharh Ma'ani al-Athar, Chapter: Passing in front of the one praying, etc., H.M. Saeed Company, Karachi, 1/309. 2. Fatawa Hindiyyah, Chapter Seven, Section Two, Nurani Kutub Khana, Peshawar, 1/107.

फ़तावा रज़विया - खंड 24

अरबी पाठ का अनुवाद: "यदि वे आपसे एक 'रम्य' (तीर फेंकने की दूरी) की दूरी पर हों..."[1] और 'अल-सलात अल-हिंदिया' में 'अल-ततारखानिया' के हवाले से है: "यदि कब्रें नमाज़ी के पीछे हों, तो यह नापसंद नहीं है। वास्तव में, यदि उसके और कब्र के बीच इतनी दूरी है कि यदि वह नमाज़ में हो और कोई व्यक्ति वहां से गुज़रे तो वह नापसंद नहीं होगा, तो यहाँ भी यह नापसंद नहीं है।"[2] जहाँ तक पेड़ों की बात है, मैं कहता हूँ: उनका किसी विशेष प्रकार या विशेष पेड़ की पूजा करना, उस विशेष प्रकार या व्यक्ति की ओर मुख करने की नापसंदगी को अनिवार्य नहीं बनाता, सिवाय उस विशिष्ट प्रकार या व्यक्ति के, न कि हर पेड़ के। यह एक छवि की तरह नहीं है, क्योंकि नियम स्वयं से संबंधित है बिना इस पर विचार किए कि यह उस चीज़ की छवि है जिसकी उन्होंने पहले पूजा की थी, जैसा कि इसकी वास्तविकता इंशाअल्लाह जल्द ही आपके पास आएगी, विशिष्ट संस्थाओं के विपरीत, क्योंकि उनमें वर्ग पर विचार नहीं किया जाता है, बल्कि विशेष रूप से उस पर जिसे एक निश्चित तरीके से पूजा जाता था।

उर्दू व्याख्या का अनुवाद: ...इतनी दूरी पर हो (यानी यदि वे इतनी दूरी से गुज़रें तो कोई हर्ज नहीं)। और इमाम तहावी की रिवायत में है: (ऐ नमाज़ी!) तेरे लिए यही काफ़ी है कि गुज़रने वाला तुझसे एक तीर फेंकने की दूरी पर हो। 'फ़तावा आलमगीरी' में नमाज़ की चर्चा में 'ततारखानिया' के हवाले से उद्धृत है कि यदि कब्रें नमाज़ी की पीठ के पीछे हों तो कोई कराहत (नापसंदगी) नहीं है, बशर्ते कि नमाज़ी और कब्र के बीच उतनी दूरी हो जितनी नमाज़ में नमाज़ी के आगे होनी चाहिए कि यदि कोई आदमी उसके आगे से गुज़रे तो कराहत न हो, तो यहाँ भी इस कदर दूरी हो तो कराहत नहीं होगी। रहा पेड़ों का मामला, तो मैं कहता हूँ: (इसके बारे में) कि मुशरिकों (बहुदेववादियों) द्वारा किसी विशेष प्रकार या किसी विशिष्ट पेड़ की पूजा करने से उसकी तरफ़ मुँह करने से कराहत लाज़िम आएगी, लेकिन यह तब होगा जब उस प्रकार या विशेष पेड़ की तरफ़ मुँह करे। और यह मामला हर पेड़ के साथ नहीं है। इसकी वजह यह है कि इसका मामला तस्वीर जैसा नहीं है क्योंकि हुक्म उसकी ज़ात (अस्तित्व) से जुड़ा है, बिना इस पर नज़र डाले कि यह उसकी तस्वीर है जिसकी पहले मुशरिकों ने इबादत की या नहीं, जैसा कि इंशाअल्लाह जल्द ही इसकी तहक़ीक़ (शोध) आपके पास आ जाएगी। विशिष्ट वस्तुओं (सत्ताओं) के विपरीत कि उनमें...

पादलेख: 1. शरह मआनी अल-आसार, अध्याय: नमाज़ी के आगे से गुज़रना, आदि, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/309। 2. फ़तावा हिंदिया, सातवां अध्याय, दूसरा खंड, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/107।

पृष्ठ 631/720

عربی متن: اذا کانوامنك قدررمیة[1] وفی صلوة الھندیة عن التتارخانیة ان کانت القبور وراء المصلی لایکرہ فانہ ان کان بینہ وبین القبر مقدار مالوکان في الصلوة ویمر انسان لایکرہ فھھنا ایضا لایکرہ[2] اہ اما الشجر، فاقول: کونھم عبدوا نوعاً اوشخصاً من الشجر لایلزم کراہة الاستقبال الا الی ذلک النوع او الشخص بخصوصہ لا الی کل شجرة ولیس ذلک مثل التمثال فان الحکم متعلق بنفسہ من دون نظر الی کونہ صورة ماعبدوہ اولا کما سیأتیک حقیقہ ان شاء اللہ تعالیٰ بخلاف الاعیان فلا یعتبر فیھا الجنس بل خصوص ماعبد علی وجہ۔

اردو تشریح: کی مقدار دور ہو (یعنی اگر اتنی مقدار دور سے گزریں تو کوئی حرج نہیں) اور امام طحاوی کی روایت میں ہے (اے نمازی!) تجھے یہی کافی ہے کہ گزرنے والا تجھ سے ایک تیر پھینکنے کی مقدار ہو۔ فتاویٰ عالمگیری بحث صلوٰۃ میں تاتارخانیہ کے حوالے سے منقول ہے اگر قبریں نمازی کے پس پشت ہوں تو کوئی کراہت نہیں بشرطیکہ نمازی اور قبر کے درمیان اتنی مقدار مسافت ہو کہ جتنی نماز میں نمازی کے آگے ہونی چاہئے کہ اگر کوئی آدمی اس کے آگے سے گزرے تو کراہت نہ ہو تو یہاں بھی اس قدر مسافت ہو تو کراہت نہ ہو گی اھ رہا درختوں کا معاملہ ، فاقول: (تو اس کے متعلق میں کہتا ہوں کہ) مشرکین کسی نوع یا کسی فردِ معین درخت کی عبادت کرنے سے اس کی طرف منہ کرنے سے کراہت لازم آئے گی مگر یہ اس وقت ہو گا جبکہ اس نوع یا خصوصی فرد کی طرف منہ کرے اور یہ معاملہ ہر درخت کے ساتھ نہیں، اس کی وجہ یہ ہے کہ اس کا معاملہ تصویر جیسا نہیں اس لئے کہ حکم اس کی ذات سے وابستہ ہے اس پر نظر کے بغیر کہ یہ اس کی تصویر ہے کہ جس کی پہلے مشرکین نے عبادت کی یا نہیں جیسا کہ ان شاء اللہ تعالیٰ عنقریب اس کی تحقیق تیرے پاس آجائے گی۔ بخلاف اعیان (ذوات) کہ ان میں

حواشی: [1] شرح معانی الآثار باب المرور بین یدی المصلی الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۳۰۹ [2] فتاویٰ ہندیہ الباب السابع الفصل الثانی نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۱۰۷

Fatawa Razawiyya, Volume 24

[Table Header: Left Column (Arabic), Right Column (Urdu Translation/Explanation)]

[Arabic Column]: ...Have you not seen what has passed regarding the difference between an oven containing fire and a candle or a lamp? Or have you not seen that the Prophet (may Allah the Almighty's peace and blessings be upon him) used to take cover in his prayer behind his mount, and the fact that it is of the species of animal which polytheists worship—the type of cattle, and they worshiped the figure of the calf of Samiri—did not prevent him from that? The two Shaykhs (Bukhari and Muslim) narrated from Ibn Umar (may Allah the Almighty be pleased with them both) that the Prophet (may Allah the Almighty's peace and blessings be upon him) used to position his mount and pray towards it. And in al-Fath (al-Qadir): if one takes cover behind the back of a seated person, it is a sutrah (barrier), and similarly for an animal. They differed regarding a standing person. (End). And in it and in al-Hindiyyah from al-Nihayah, they said: the ruse of the rider is to dismount.

[Urdu Column]: The genus/species is not taken into account, but rather what is worshiped within it and the manner in which it is worshiped; this specificity is kept in view. Do you not see this previous distinction made between an oven containing fire and a candle or lamp? Do you not see that the Holy Prophet (may Allah the Almighty's peace and blessings be upon him) made his mount (camel) a screen and a barrier in his prayer, and this attitude did not stop him that the camel is of that genus of animals of which one type, the cow, the polytheists continued to worship and worshiped the specific individual calf made by Samiri? Thus, Bukhari and Muslim have narrated with reference to Hazrat Abdullah bin Umar (may Allah the Almighty be pleased with them both) that when the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) intended to pray, he would make his mount (camel) sit widthwise and then pray facing towards it. In Fath al-Qadir, it is stated: if someone makes the back of a seated person a screen (while praying), then it stands in place of a sutrah for him, and the ruling is the same for any other animal. And regarding a standing person, the respected Imams have differed. (End). And in it and in Fatawa Alamgiri from Nihayah...

[Footnotes]: 1. Sahih al-Bukhari, Book of Prayer, Chapter on Praying towards the Mount, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/72. 2. Fath al-Qadir, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, Maktaba Razawiyya, Sukkur, 1/354.

फ़तावा रज़विया, खंड 24

[तालिका शीर्षक: बायाँ कॉलम (अरबी), दायाँ कॉलम (उर्दू अनुवाद/व्याख्या)]

[अरबी कॉलम]: ...क्या आपने वह नहीं देखा जो आग वाले तंदूर और शमा या चिराग के बीच के अंतर के बारे में बीत चुका है? या क्या आपने यह नहीं देखा कि नबी (अल्लाह तआला उन पर शांति और आशीर्वाद बरसाए) अपनी नमाज़ में अपनी सवारी की ओट लेते थे और इस बात ने उन्हें नहीं रोका कि वह उस पशु की जाति से है जिसकी मुशरिक इबादत करते हैं—यानी गाय की किस्म, और उन्होंने सामरी के बछड़े की मूर्ति की पूजा की थी? दोनों शेखों (बुखारी और मुस्लिम) ने इब्ने उमर (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से रिवायत की है कि नबी (अल्लाह तआला उन पर शांति और आशीर्वाद बरसाए) अपनी सवारी को सामने रखते और उसकी ओर मुंह करके नमाज़ पढ़ते थे। और अल-फत्ह (अल-क़दीर) में है: यदि कोई बैठे हुए व्यक्ति की पीठ के पीछे ओट ले, तो वह सुतरा (आड़) है, और जानवर के लिए भी यही हुक्म है। खड़े व्यक्ति के बारे में उनका मतभेद है। (समाप्त)। और इसमें और अल-हिंदिया में अन-निहाया से है, उन्होंने कहा: सवार की युक्ति यह है कि वह नीचे उतर जाए।

[उर्दू कॉलम]: जाति/प्रजाति का विचार नहीं किया जाता है, बल्कि उसमें जिसकी इबादत की जाए और जिस तरीके पर इबादत की जाए, उस विशेषता को ध्यान में रखा जाता है। क्या आप आग वाले तंदूर और शमा व चिराग के बीच किए गए पिछले अंतर को नहीं देखते? क्या आप नहीं देखते कि हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) अपनी नमाज़ में अपनी सवारी (ऊंटनी) को परदा और आड़ बनाते थे और यह बात आपको नहीं रोकती थी कि ऊंटनी उस पशु जाति में से है जिसकी एक किस्म, गाय, की मुशरिक इबादत करते रहे और सामरी के बनाए हुए विशिष्ट बछड़े की पूजा करते रहे? चुनाँचे, बुखारी और मुस्लिम ने हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) के हवाले से ज़िक्र किया है कि हुज़ूर अलैहिस्सलातो वसल्लम जब नमाज़ पढ़ने का इरादा फरमाते तो अपनी सवारी (ऊंटनी) को चौड़ाई में बिठा देते फिर उस तरफ मुंह करके नमाज़ पढ़ते। फ़त्ह अल-क़दीर में है: अगर कोई बैठे हुए व्यक्ति की पीठ को (नमाज़ पढ़ते समय) परदा बनाए तो वह उसके लिए सुतरा के स्थान पर है, और किसी दूसरे जानवर का भी यही हुक्म है, और खड़े होने वाले व्यक्ति के बारे में आइम्मा-ए-किराम ने इख्तिलाफ़ किया है। (समाप्त)। और इसमें और फ़तावा आलमगीरी में निहाया के..

[पाद टिप्पणियाँ]: 1. सहीह अल-बुखारी, किताबुस सलात, सवारी की ओर नमाज़ पढ़ने का अध्याय आदि, क़दीमी कुतुब खाना कराची, 1/72। 2. फ़त्ह अल-क़दीर, किताबुस सलात, नमाज़ को खराब करने वाली और उसमें नापसंद चीजों का अध्याय, मकतबा रज़विया सुक्कुर, 1/354।

पृष्ठ 632/720

فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۴

[جدول سرخی: بایاں کالم (عربی)، دایاں کالم (اردو ترجمہ/توضیح)]

[عربی کالم]: عبد الا تری الی مامر من الفرق بین تنور فیه نار وبین شمع وسراج أولا تری ان النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کان یستتر فی صلوته براحلته ولم یمنعه عن ذلك کونها من جنس الحیوان الذي یعبده المشرکون نوع البقر وعبدوا شخص عجل السامری، اخرج الشیخان عن ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما ان النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کان یعرض راحلته فیصلی الیها، وفی الفتح ان استتر بظهر جالس کان سترة وکذا الدابة واختلفوا فی القائم اه وفیه وفی الهندیة عن النهایة قالوا حیلة الراکب ان ینزل

[اردو کالم]: جنس کا اعتبار نہیں کیا جاتا بلکہ اس میں جس کی عبادت کی جائے جس وجہ پر عبادت کی جائے اس خصوص کو پیش نظر رکھا جاتا ہے۔ کیا آپ نہیں دیکھتے اس گزشتہ فرق کو جو ایسے تنور کہ جس میں آگ ہو اور شمع اور چراغ کے درمیان کیا گیا ہے کیا آپ نہیں دیکھتے کہ حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اپنی نماز میں اپنی سواری (ناقہ) کو پردہ اور آڑ بناتے اور اس رویہ سے آپ کو یہ چیز نہ روکتی کہ ناقہ اس جنس حیوان میں سے ہے کہ جس کی ایک قسم گائے کی مشرکین عبادت کرتے رہے اور سامری کے بنائے ہوئے فرد معین بچھڑے کی پرستش کرتے رہے، چنانچہ بخاری اور مسلم نے حضرت عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے حوالے سے تخریج فرمائی کہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام جب نماز پڑھنے کا ارادہ فرماتے تو اپنی سواری (ناقہ) کو چوڑائی میں بٹھا دیتے پھر اس طرف منہ کرکے نماز پڑھتے۔ فتح القدیر میں ہے اگر کسی بیٹھے ہوئے شخص کی پیٹھ کو (نماز پڑھتے وقت) پردہ بنائے تو پھر اس کے لئے

سترہ کے قائم مقام ہے، اور کسی دوسرے جانور کا بھی یہی حکم ہے، اور کھڑے ہونے والے شخص میں ائمہ کرام نے اختلاف کیا ہے اہ اور اس میں اور فتاویٰ عالمگیری میں نہایہ کے

[حواشی]: 1۔ صحیح البخاری کتاب الصلوۃ باب الصلوۃ الی الراحلۃ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۷۲ 2۔ فتح القدیر کتاب الصلوۃ باب مانیفسد الصلوۃ و ما یکرہ فیہا مکتبہ رضویہ سکھر ۱/ ۳۵۴

Fatawa Rizvia Volume 24

[Box Content - Arabic on left, Urdu on right]

Arabic Text: “فيجعل الدابة بينه وبين المصلي فتصير هي سترة فيمر اه فالذى تحرر بما تقرر كراهة استقبال خصوص حيوان او شجر اخضر يعبده المشركون ان نوعاً فنوعاً او شخصاً فذلك الشخص عيناً دون غيره من نوعه بشرط ان لايكون بينه وبين المصلى اكثر مما يؤثم المار هذا ما ظهر لى وارجو ان يكون صواباً ان شاء الله تعالٰى والله تعالٰى اعلم۔”

Urdu Text (Translation/Explanation): It refers to this. The leaders of jurisprudence (Aimma-e-Fiqh) stated: (a suggestion and plan for a sutra during travel is that if the one passing in front of the praying person is a rider, he should dismount, then the passer should place his animal as a barrier between himself and the praying person, so it holds the status of a sutra for him. End quote. And whatever was written according to the established truth is that it is disliked (Makruh) to face during prayer those things which polytheists worship, specifically whether it be an animal or a lush green tree. If it refers to a species/type, the ruling applies to that type. If it refers to an individual (i.e., a specific entity), then the ruling applies to that specific entity itself. Therefore, no other individual of that type would be intended. Provided the distance between them and the person praying is not so large that someone passing through it would be considered sinful. And this is the research that has become manifest to me. And I hope it will surely be based on truth, if Allah wills. And Allah knows best (T).

[Text below the box]

From all these matters, it became clear that for the sake of resemblance (tashabbuh), it is necessary for that thing to belong to the genus (jins) of what polytheists worship.

Aqool: (I say) now several questions arise here:

First: Regarding physical entities (a’yan), the meaning is clear: it should be the same type or individual that polytheists worship. However, in images, this meaning does not apply at all. Keeping an image of the sun or moon in the house is not disliked (Makruh), nor is there any dislike in having them in front during prayer, even though they are false deities. On the other hand, keeping an image of any human or animal is prohibited (Haram), and prayer with it is also disliked, even though polytheists do not worship all of them. What is the basis for this? If the reason is what was mentioned earlier—that the worship is of the actual sun and moon themselves, not their images—then it applies even more strongly here: that neither their actual selves nor their images are worshipped. If you say they (the sun and moon) are not animate

(dhi ruh) while these are animate, we say: this is exactly the question. If the basis is on worship, then why was the image of a false deity that is non-animate not forbidden or a cause for dislike, while for animate beings...

---

1 Fath al-Qadir, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, Maktaba Nooria Razvia, Sukkur, 1/352

फतवा रज़विया खंड २४

[बॉक्स सामग्री - बाईं ओर अरबी, दाईं ओर उर्दू]

अरबी पाठ: "فيجعل الدابة بينه وبين المصلي فتصير هي سترة فيمر اه فالذى تحرر بما تقرر كراهة استقبال خصوص حيوان او شجر اخضر يعبده المشركون ان نوعاً فنوعاً او شخصاً فذلك الشخص عيناً دون غيره من نوعه بشرط ان لايكون بينه وبين المصلى اكثر مما يؤثم المار هذا ما ظهر لى وارجو ان يكون صواباً ان شاء الله تعالٰى والله تعالٰى اعلم۔"

उर्दू पाठ (अनुवाद/व्याख्या): इसके संदर्भ में है। फिक़्ह के इमामों ने कहा: (सफर में सुतरा के लिए सुझाव और उपाय यह है कि यदि नमाज़ी के सामने से गुज़रने वाला घुड़सवार है, तो वह ज़मीन पर उतर जाए, फिर गुज़रने वाला अपने और नमाज़ी के बीच अपने जानवर को आड़ बना ले, तो यही उसके लिए सुतरा की हैसियत रखता है। और जो कुछ प्रमाणित सत्य के अनुसार लिखा गया है कि मुशरिक जिन चीज़ों की पूजा करते हैं, विशेष रूप से चाहे वह जानवर हो या कोई हरा-भरा पेड़, नमाज़ में उसकी ओर मुँह करना मक़रूह है। यदि वह कोई प्रजाति (क़िस्म) है, तो उस प्रजाति का यही हुक्म है। यदि कोई व्यक्ति (यानी विशिष्ट इकाई) हो, तो फिर उसी (यानी उस विशिष्ट इकाई) का यही हुक्म है। इसलिए उस प्रजाति में से किसी दूसरे का इरादा नहीं किया जाएगा। बशर्ते कि उसके और नमाज़ी के बीच इतनी अधिक दूरी न हो कि जिससे गुज़रने वाला गुनहगार होता है। और यह वह शोध है जो मुझ पर स्पष्ट हुआ है। और मुझे उम्मीद है कि वह ज़रूर सही होगा, बशर्ते अल्लाह चाहे। और अल्लाह सबसे बड़ा जानने वाला है (त)।

[बॉक्स के नीचे का पाठ]

इन तमाम मसलों से स्पष्ट हुआ कि समानता (तशब्बुह) के लिए उस चीज़ का उस श्रेणी (जिंस) से होना ज़रूरी है जिसकी पूजा मुशरिक करते हैं।

अक़ूल: (मैं कहता हूँ) अब यहाँ कई सवाल पैदा होते हैं:

पहला: भौतिक वस्तुओं (अयान) में तो इसका अर्थ स्पष्ट है कि स्वयं वही प्रजाति या व्यक्ति हो जिसकी पूजा मुशरिक करते हैं। लेकिन तस्वीर में यह अर्थ बिलकुल भी नहीं है। सूरज और चाँद की तस्वीर न घर में रखना मक़रूह है और न नमाज़ में सामने होने से कोई नापसंदगी (कराहियत) है, हालाँकि वे झूठे देवता हैं। जबकि हर इंसान और जानवर की तस्वीर रखना भी हराम है, और उससे नमाज़ भी

मक़रूह है, हालाँकि मुशरिक उन सब की पूजा नहीं करते। इसका आधार क्या है? वह जो पहले गुज़रा कि सूरज और चाँद के स्वयं की इबादत होती है, न कि तस्वीर की, यहाँ यह बात और भी लागू होती है कि न तो उनके स्वयं की इबादत होती है और न तस्वीर की। अगर आप कहें कि वे (सूरज-चाँद) सजीव (ज़ी-रूह) नहीं हैं और ये सजीव हैं, तो हम कहेंगे: यही तो सवाल है कि जब आधार इबादत पर है, तो झूठे देवता जो निर्जीव (ग़ैर ज़ी-रूह) हैं, उनकी तस्वीर क्यों मना नहीं हुई और कराहियत की वजह नहीं बनी, और सजीव...

---

1 फतह अल-कादिर, किताबुस-सलात, बाबू मा युफ्सिदुस-सलात व मा युकरहु फीहा, मक्तबा नूरुया रज़विया, सुक्कुर १/३५२

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۴

[باکس کا مواد - بائیں طرف عربی، دائیں طرف اردو]

عربی عبارت: ”فیجعل الدابة بینه وبین المصلی فتصیر هی سترة فیمر اه فالذی تحرر بما تقرر کراهة استقبال خصوص حیوان او شجر اخضر یعبده المشرکون ان نوعاً فنوعاً او شخصاً فذلك الشخص عیناً دون غیره من نوعه بشرط ان لایکون بینه وبین المصلی اکثر مما یؤثم المار هذا ما ظهر لی وارجو ان یکون صواباً ان شاء الله تعالٰی واللہ تعالٰی اعلم۔“

اردو عبارت (ترجمہ و تشریح): حوالے سے ہے۔ ائمہ فقہ نے فرمایا (سفر میں ستھرہ کے لئے تجویز وتدبیر یہ ہے کہ نمازی کے آگے سے گزرنے والا سوار ہے تو زمین پر اترے، پھر گزرنے والا اپنے اور نمازی کے درمیان اپنے جانور کو آڑ بنالے، پس یہی اس کے لئے ستھرہ کی حیثیت رکھتا ہے اھ اور جو کچھ اثبات کردہ حقیقت کے مطابق تحریر ہوا کہ مشرکین جن چیزوں کی عبادت کرتے ہیں۔ بربنائے خصوص خواہ وہ حیوان ہو یا کوئی سرسبز و شاداب درخت ہو، نماز میں اس کی طرف منہ کرنا مکروہ ہے، اگر نوع ہو تو اس نوع کا یہی حکم ہے۔ اگر شخص (یعنی فرد معین ہو تو) پھر عین (یعنی اس فرد معین کا یہی) حکم ہے۔ لہذا اس نوع میں سے کوئی دوسرا مراد نہ ہوگا۔ بشرطیکہ اس کے اور نمازی کے درمیان اتنی زیادہ مسافت نہ ہو کہ جس سے گزرنے والا گناہگار ہوتا ہے۔ اور یہ وہ تحقیق ہے جو مجھ پر ظاہر ہوئی۔ اور مجھے امید ہے کہ وہ ضرور مبنی بر صواب ہوگی بشرطیکہ اللہ تعالٰی چاہے۔ اور اللہ تعالٰی سب سے بڑا عالم ہے (ت)

[باکس کے نیچے کی عبارت]

ان تمام مسائل سے واضح ہوا کہ تشبہ کے لئے اس شے کا جنس مابعبدہ المشرکون سے ہونا ضروری ہے،

اقول: (میں کہتا ہوں) اب یہاں متعدد سوال پیدا ہوتے ہیں:

اوّل: اعیان میں تو اس کے معنی ظاہر ہیں کہ خود وہی نوع یا شخص ہو جس کی عبادت مشرکین کرتے ہیں مگر تصویر میں ہر گز یہ معنی نہیں شمس و قمر کی تصویر نہ گھر میں رکھنا مکروہ نہ نماز میں سامنے ہونے سے کراہت، حالانکہ وہ معبود ان باطل ہیں، اور ہر انسان وحیوان کی تصویر رکھنا بھی حرام، اور اس سے نماز بھی مکروہ، حالانکہ مشرکین ان سب کی عبادت نہیں کرتے، اس کا منشا کیا ہے، وہ جو گزرا کہ شمس و قمر کے عین کی عبادت ہوتی ہے، نہ تصویر کی، یہاں بدرجہ اولیٰ وارد ہے کہ ان کے نہ عین کی عبادت ہوتی ہے نہ تصویر کی، اگر کہئے وہ ذی روح نہیں یہ ذی روح ہیں، ہم کہیں گے یہی تو سوال ہے کہ جب مدار عبادت پر ہے تو معبود باطل تو غیر ذی روح کی تصویر کیوں نہ منع و وجہ کراہت ہوئی، اور ذی روح

---

۱ فتح القدیر کتاب الصلوۃ باب مایفسد الصلوۃ ومایکرہ فیھا مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۳۵۲

Fatawa Razawiyya Volume 24

Why did the image of a non-deity become forbidden and a cause of dislike?

Second: Beheading or effacing the face was made an exception because they are not worshipped. It is clear that this negation is not a negation of possibility, for with the irrationality of polytheists, the worship of anything is neither impossible nor improbable. When they worship just a phallus (Ling) and its base (Jalhari), what prevents them from worshipping the rest of the body if the head is missing? However, the meaning is a negation of habit, that it is not their habit to worship a headless body. As mentioned in 'Tabyeen al-Haqaiq' and 'Bahr al-Raiq':

"Because habitually, they are not worshipped without the head."[1] For this reason, habitually, an image without a head is not worshipped (T).

Now a clear question arises: Why did it not become permissible after cutting off all four limbs (hands and feet) of the image, as the worship of such a lump is also not their habit? In fact, the same question can be asked about erasing the eyebrows and eyes, that even in this state, the habit of worship is absent. If you say that without a head and face, life does not remain, while it is possible without those other parts, we will say then the basis is life, not the habit of worship. Therefore, the absence of life was considered because the real reason, i.e., being habitually worshipped, is negated without life, not because life itself is the primary reason such that if it remains, the ruling stays even if the habit of worship is absent.

Third: In the case of being beheaded vs. having limbs cut off, you differentiated based on life and death. What is the difference between a small picture and one with severed limbs? The potential for life is in both, and habitually, neither is worshipped. In fact, why did a large picture become worthy of exception just by being covered? Such an external change, where only the appearance changed, was beneficial, but this great change in the physical body itself, where all four limbs were cut from the root, was of no use? Even though covering can also have an aspect of honor, while cutting off hands and feet is an explicit insult.

Fourth: What is the difference that keeping a picture of Zaid or, for example, a goat in the house without insult is forbidden and prevents the angels of mercy (upon them be blessings and peace) from entering, even though polytheists do not worship Zaid or the goat, nor their pictures? Yet, keeping a cow in the house without insult is permissible, even though it is their false deity, and tying it is not for the purpose of

insult but for its protection, and many cows and bulls are kept even without being tied. If you say keeping a cow...

[1] Tabyeen al-Haqaiq, Chapter: What invalidates prayer and what is disliked in it, Al-Matba'at al-Kubra, Bulaq, Egypt, 1/166; Bahr al-Raiq, Chapter: What invalidates prayer and what is disliked in it, H.M. Saeed Company, Karachi, 2/28.

फ़तावा रज़विया खंड 24

गैर-माबूद (जिसकी इबादत न की जाए) की तस्वीर क्यों हराम और मकरूह (नापसंद) ठहरी?

दूसरा: सिर कटी या चेहरे मिटाई हुई तस्वीर को अपवाद माना गया क्योंकि उनकी इबादत नहीं होती। ज़ाहिर है कि यह निषेध संभावना का निषेध नहीं है, क्योंकि मुशरिकों (बहुदेववादियों) की अकल की कमी से किसी भी चीज़ की इबादत न तो असंभव है और न ही दूर की बात। जब वे केवल लिंग और जलहरी की पूजा करते हैं, तो यदि सिर न हो और बाकी शरीर हो, तो उन्हें कौन रोकता है? लेकिन तात्पर्य आदत का निषेध है कि सिर रहित धड़ की इबादत करना उनकी आदत नहीं है। 'तब्बीन अल-हक़ाइक' और 'बहर अल-राइक़' में आया है:

"क्योंकि आदत के तौर पर, सिर के बिना तस्वीर की इबादत नहीं की जाती है।"[1] इसलिये कि आदत के तौर पर, बगैर सिर के तस्वीर की इबादत नहीं की जाती (त)।

अब एक स्पष्ट प्रश्न है कि तस्वीर के चारों हाथ-पैर काट देने के बाद वह जायज़ क्यों नहीं हुई, क्योंकि ऐसे मांस के लोथड़े की इबादत भी उनकी आदत नहीं है। बल्कि भौहें और आँखें मिटा देने पर भी यही सवाल हो सकता है कि इस स्थिति में भी इबादत की आदत का निषेध है। यदि आप कहें कि बिना सिर और चेहरे के जीवन नहीं रहता, जबकि उन अन्य अंगों के बिना संभव है, तो हम कहेंगे कि तब आधार जीवन पर हुआ, न कि इबादत की आदत पर। इसलिए, जीवन का अभाव इसलिए माना गया क्योंकि मुख्य कारण यानी सामान्य रूप से पूज्य होना बिना जीवन के समाप्त हो जाता है, न कि इसलिए कि जीवन ही मुख्य आधार है कि यदि वह बना रहे तो नियम लागू रहेगा भले ही इबादत की आदत लुप्त हो जाए।

तीसरा: सिर कटी और अंग कटी तस्वीर में तो आपने जीवन और मृत्यु के आधार पर अंतर कर लिया। छोटी तस्वीर और अंग कटी तस्वीर में क्या अंतर है? जीवन की संभावना दोनों में है और आदतन इबादत दोनों की नहीं होती। बल्कि बड़ी तस्वीर केवल ढकी होने से अपवाद के योग्य क्यों हो गई? ऐसा बाहरी बदलाव जिसमें केवल रूप बदला वह फायदेमंद हुआ, और शरीर के स्वयं के अस्तित्व में यह महान परिवर्तन कि चारों हाथ-पैर जड़ से काट दिए गए, वह काम न आया? हालांकि पर्दा डालना सम्मान का पहलू भी रख सकता है और हाथ-पैर काट देना स्पष्ट अपमान है।

चौथा: क्या अंतर है कि ज़ैद या मान लीजिए बकरे की तस्वीर घर में बिना अपमान के रखना हराम है और रहमत के फ़रिश्तों (उन पर दरूद व सलाम हो) को रोकता है, जबकि मुशरिक न तो ज़ैद और बकरे को पूजते हैं और न ही उनकी तस्वीरों को? और गाय को घर में बिना अपमान के रखना जायज़ है, जबकि वह स्वयं उनकी झूठी माबूद (देवी) है, और उसे बाँधना अपमान के उद्देश्य से नहीं बल्कि सुरक्षा के लिए है, और कई गायें और बैल बिना बाँधे भी रखे जाते हैं। यदि कहें कि गाय का रखना...

[1] तब्बीन अल-हक़ाइक, बाब: जो नमाज़ को खराब करता है और जो उसमें मकरूह है, अल-मत्बअतुल कुबरा, बुलाक़, मिस्र, 1/166; बहर अल-राइक़, बाब: जो नमाज़ को खराब करता है और जो उसमें मकरूह है, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 2/28।

غیر معبود کی تصویر کیوں حرام و موجب کراہت ٹھہری۔

دوم: سر بریدہ و چہرہ محو کردہ کو استثناء فرمایا کہ ان کی عبادت نہیں ہوتی۔ ظاہر ہے کہ یہ نفی نفیِ امکان نہیں کہ مشرکوں کی بد عقلی سے کسی چیز کی عبادت محال کیا مستبعد بھی نہیں، جب وہ صرف لنگ اور جلھری کی پوجا کرتے ہیں تو ان کے ساتھ باقی بدن بھی اگر ہوا اور سر نہ ہوا تو کون مانع ہے مگر مراد نفیِ عادت ہے کہ تنِ بے سر کی عبادت ان کی عادت نہیں۔ تبیین الحقائق و بحر الرائق سے گزرا:

لانھا لا تعبد بدون الرأس عادۃ ۱ اس لئے کہ بطور عادت، بغیر سر ، تصویر کی عبادت نہیں کی جاتی (ت)

اب واضح سوال ہے کہ تصویر کے چاروں ہاتھ پاؤں کاٹ دینے کے بعد جواز کیوں نہ ہوا کہ ایسے لوتھڑے کی عبادت بھی ان کی عادت نہیں بلکہ بھنویں اور آنکھیں مٹادینے پر بھی یہی سوال ہو سکتا ہے کہ اس حالت پر بھی عبادت کی عادت محل منع ہے، اگر کہئے بے سرو چہرہ حیات نہیں رہتی اور ان اعضاء کے بغیر ممکن ہے، ہم کہیں گے تو مدار حیات پر ہوا، نہ عادت عبادت پر، لہذا خلفِ حیات کو اس لئے تھا کہ اصل مناط یعنی عادۃً معبود ہونا بے حیات منتفی ہے نہ اس لئے کہ حیات ہی اصل مناط ہے کہ وہ باقی ہو تو حکم ثابت رہے اگرچہ عادتِ عبادت معدوم ہو۔

سوم: سر بریدہ و اطراف بریدہ میں تو موت وحیات سے فرق کر لیا چھوٹی تصویر اور اطراف بریدہ میں کیا فرق ہے، قابلیت حیات دونوں میں ہے اور عادۃً عبادت دونوں کی نہیں ہوتی بلکہ بڑی تصویر صرف مستور رہنے سے کیوں قابلِ استثناء ہو گئی، اتنا خارجی تغیر کہ صرف ایک ہیئت

بدلی مفید ہوا اور یہ عظیم تغیرِ نفسِ جسم میں کہ چاروں ہاتھ پاؤں جڑ سے کاٹ دیئے کام نہ آیا حالانکہ پردہ ڈالنا اعزاز کا بھی پہلو رکھ سکتا ہے اور دست و پاکاٹ دینا صریح اہانت ہے۔

چہارم: کیا فرق ہے کہ زید یا مثلاً بکر کی تصویر گھر میں بے اہانت رکھنا حرام اور مانعِ ملائکہ رحمۃ علیہم الصلوٰۃ والسلام، حالانکہ مشرکین نہ زید اور بکری کو پوجتے ہیں نہ اُن کی تصویروں کو، اور گائے کا گھر میں بے اہانت رکھنا جائز حالانکہ وہ خود ان کی معبودہ باطلہ ہے اور باندھنا بغرضِ اہانت نہیں بلکہ حفظ ہے اور بہت گائے بیل بے باندھے بھی رکھے جاتے ہیں، اگر کہئے گائے کا رکھنا

۱ تبیین الحقائق باب ما یفسد الصلوۃ وما یکرہ فیہا المطبعۃ الکبری بولاق مصر ۱/۱۶۶، بحر الرائق باب ما یفسد الصلوۃ وما یکرہ فیہا ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/۲۸

Volume 24 Fatawa Ridawiyya

...is for milk and there is no valid purpose for the image. We would say there are four levels of valid purposes: necessity, need, benefit, and adornment. Although a cow belongs to the third level, people place images in the fourth level, so it's not without purpose. God forbid, there can be other purposes for an image too, such as an image of a battlefield where Allah Almighty granted Muslims victory over disbelievers, so that observing it brings to mind the scene of Muslim honor and disbeliever humiliation. It would serve as a reminder of divine blessing and inspire a desire for self-sacrifice for the religion like those servants of God, along with other benefits. (Apart from these stated benefits, there are many others. - Transl.) Despite these intentions, keeping it remains prohibited and impermissible. Thus, it becomes necessary that the subsequent meaning of 'image' be taken, and such a basis (manat) be proposed through which all these questions are resolved and all rulings of prohibition and permission apply to it. So I say, and success is from Allah: (Then I say with the success granted by Allah - Transl.) Here, the basis for prohibition is not the worship of the form, nor is it related to the being of the image, nor its type, nor its close genus. Nor is it about whether the depicted being would be alive in that state. None of these, for any reason, would resolve the questions or fulfill the detailed branches. Rather, the basis of the image is its being an 'idol' (wathan), as the researcher indicated in 'Al-Fath':

| (As it has already passed that in this state) the ruling of an idol does not apply to the image, therefore its presence in the house is not disliked. (Transl.) | Where he said, as previously mentioned, it does not have the ruling of an idol, so it is not disliked in the house. |

This is why living forms are specified, as images of non-living things are not idols. An idol is a living form made in imitation of Allah's creation so that the qualities of the depicted being can be observed. There is no doubt that every animal image, whether three-dimensional (statue) or two-dimensional on cloth or paper, handmade or photographic, falls under this meaning. So all meanings of an idol are present in it, and an idol is detested by Allah Almighty. Therefore, keeping anything that carries its meaning in the house without dishonoring it is forbidden and a cause of repulsion for the honorable angels (peace be upon them). By the grace of Allah, all questions are resolved by this much. Images of celestial bodies are not 'living images' to carry the meaning of an idol. And images of humans and animals, even if polytheists do

not worship them, carry the meaning of an idol and are thus detested by the Lord of Honor. First question.

---

1 Fath al-Qadir, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked in it, Maktaba Nooria Razviya Sukkur, 1/363.

जिल्द 24 फ़तावा रिज़विया

...दूध के लिए है और चित्र से कोई सही उद्देश्य नहीं है, हम कहेंगे कि सही उद्देश्य के चार स्तर हैं: आवश्यकता (ज़रूरत), ज़रूरत (हाजत), लाभ (मन्फ़अत), सजावट (ज़ीनत)। यद्यपि गाय तीसरे स्तर में है, लोग चित्र को चौथे स्तर में रखते हैं, तो यह निरुद्देश्य भी नहीं हुई। ईश-निंदा से बचें, चित्र में और भी उद्देश्य हो सकते हैं जैसे कि युद्ध के मैदान का चित्र जिसमें अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने मुसलमानों को काफ़िरों पर विजय प्रदान की हो, ताकि उसे देखने से मुसलमानों के सम्मान और काफ़िरों के अपमान का दृश्य आँखों के सामने आ जाए। यह ईश्वरीय अनुग्रह की याद दिलाएगा और अल्लाह के उन बंदों की तरह धर्म के लिए आत्म-बलिदान का उत्साह पैदा करेगा, इसके अलावा और भी बहुत से लाभ हैं। (इन बताए गए लाभों के अलावा और भी कई हित/मसालेह हैं। - अनु.) इसके बावजूद, इन नियतों के साथ भी इसे रखना हराम और नाजायज़ ही है। तो यह आवश्यक हुआ कि चित्र में बाद वाले अर्थ लिए जाएं और ऐसा आधार (मनात) प्रस्तावित किया जाए जिससे ये सभी प्रश्न हल हो जाएं और निषेध और अनुमति के सभी मामले उस पर लागू हों। तो मैं कहता हूँ, और सफलता अल्लाह की ओर से है: (फिर मैं अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से ही कहता हूँ। - अनु.) यहाँ निषेध का आधार न तो आकृति की पूजा होना है, न ही उस आकृति वाले का होना, न उसकी श्रेणी, न ही निकटतम प्रजाति। न ही उसका इस अवस्था में होना कि यदि वह आकृति वाला उसी अवस्था में हो तो जीवित रहे। इनमें से कुछ भी किसी कारण से प्रश्नों को हल नहीं करता और न ही शाखाओं को पूर्ण करता है। बल्कि चित्र का आधार 'मूर्ति' (वथन) होना है जैसा कि अन्वेषक ने 'अल-फ़तह' में संकेत दिया है:

| (जैसा कि पहले बीत चुका है कि इस स्थिति में) चित्र के लिए मूर्ति का हुक्म नहीं है, इसलिए उसका घर में होना मकरूह नहीं है। (अनु.) | जहाँ उन्होंने कहा, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, उसके लिए मूर्ति का हुक्म नहीं है, इसलिए घर में उसका होना नापसंद नहीं है। |

इसीलिए सजीव (हैवानिया) आकृतियों को विशेष किया गया है क्योंकि निर्जीव की आकृति मूर्ति नहीं होती। मूर्ति एक सजीव आकृति है जो अल्लाह की रचना की नकल में बनाई जाती है ताकि उस आकृति वाले की विशेषताओं का अवलोकन किया सके। इसमें कोई संदेह नहीं है कि हर सजीव चित्र चाहे वह ठोस (मूर्ति) हो या कपड़े पर समतल हो या कागज पर हस्तनिर्मित हो या छायाचित्र (फ़ोटो), इस अर्थ में सम्मिलित है। तो मूर्ति के सभी अर्थ उसमें मौजूद हैं और मूर्ति अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल को नापसंद है। तो जो कुछ उसके अर्थ में है, उसका बिना अनादर के घर में रखना हराम है और सम्मानित फ़रिश्तों (उन पर सलाम हो) की अरुचि का कारण है। अल्लाह के फ़ज़्ल से इतने से ही

सभी प्रश्न हल हो गए। खगोलीय पिंडों (सितारों आदि) के चित्र सजीव चित्र नहीं हैं कि उनमें मूर्ति का अर्थ हो। और मनुष्य और जानवरों के चित्र, भले ही मुशरिक उनकी पूजा न करते हों, उनमें मूर्ति का अर्थ मौजूद है, तो वे रब्बुल इज़्ज़त को नापसंद हैं। पहला प्रश्न।

---

1 फ़तह अल-क़दीर, किताबुस-सलात, बाब मा युफ़्सिदुस-सलात व मा युकरहु फ़ीहा, मकतबा नूरिया रिज़विया सुक्कुर, 1/363।

دودھ کے لئے ہے اور تصویر سے کوئی غرض صحیح نہیں، ہم کہیں گے غرض صحیح کے چار درجے ہیں، ضرورت، حاجت، منفعت، زینت۔ گائے اگرچہ درجہ سوم میں ہے لوگ تصویر کو درجہ چہارم میں رکھتے ہیں تو بے غرض یہ بھی نہ ہوئی، معاذاللہ اور اغراض بھی تصویر میں ہو سکتی ہیں مثلاً معرکہ جہاد کی تصویر جس میں اللہ عزوجل نے مسلمانوں کو کافروں پر غلبہ عطا فرمایا ہو کہ اس کے مشاہدہ سے مسلمانوں کی عزت کفار کی ذلت کا سماں نظر آئے گا نعمت الہی کی یاد ہوگی ان بندگان خدا کی طرح دین کے لئے جانفشانی کا شوق پیدا ہوگا الی غیر ذلک من المصالح (ان بیان کردہ فوائد کے علاوہ اور بھی بہت سے مصالح ہیں۔ ت) حالانکہ ان نیتوں سے بھی اس کا رکھنا حرام و نا جائز ہی ہے تو واجب ہوا کہ تصویر میں مابعد کے وہ معنی لئے جائیں اور ایسا مناط تجویز کیا جائے جس سے یہ سب سوالات مرتفع ہو جائیں اور تمام مسائل منع و اجازت اس پر منطبق آئیں فاقول: وباللہ التوفیق (پھر میں اللہ تعالیٰ کی توفیق سے ہی کہتا ہوں۔ ت) یہاں مناط منع، نہ صورت کی عبادت ہونا ہے نہ ذو الصورۃ کی ، نہ اس کی نوع نہ جنس قریب کی۔ نہ اس کا اس حالت پر ہونا کہ ذو الصورۃ اس حال پر ہو تو زندہ رہے ان میں سے کچھ کسی وجہ پر، نہ وہ سوال مرتفع ہوں نہ فروع ملئتم بلکہ مناط تصویر کا معنی وثن ہونا ہے جیسا کہ محقق نے فتح میں اشارہ فرمایا:

| جیسا کہ پہلے گزر چکا کہ اس حالت میں) تصویر کے لئے حکم صنم نہیں، لہٰذا اس کا گھر میں ہونا مکروہ نہیں۔ (ت) | حیث قال کما تقدم لیس لھا حکم الوثن فلا تکرہ في البیت ۔ |

ولہذا صورت حیوانیہ کی تخصیص ہوئی کہ غیر حیوان کی تصویر بت نہیں، بت ایک صورت حیوانیہ مضاہات خلق اللہ میں بنائی جاتی ہے تاکہ ذوالصورۃ کے لئے مبرات ملاحظہ ہو اور شک

نہیں کہ ہر حیوانی تصویر مجسم خواہ مسطح کپڑے پر ہو یا کاغذ پر دستی ہو یا عکسی اس معنی میں داخل ہے تو سب معنی بت میں ہیں اور بت اللہ عزوجل کا مبغوض ہے تو جو کچھ اس کے معنی میں ہے اس کا بلا اہانت گھر میں رکھنا حرام اور موجب نفرت ملائکہ کرام علیہم الصلوۃ والسلام اسی قدر سے بحمداللہ تعالی سب سوال حل ہو گئے تصویر کواکب تصویر حیوانی نہیں کہ معنی بت میں ہو اور تصویر انسان و حیوان اگر چہ مشرکین ان کی عبادت نہ کرتے ہوں معنی بت میں ہے تو مبغوض رب العزت ہے، سوال اول

---

۱ فتح القدیر کتاب الصلوۃ باب ما یفسد الصلوۃ و مایکرہ فیہا مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱ / ۳۶۳

Volume 24 Fatawa Rizvia

...was solved; the illumination is not just of an animal form, and it is a cow but itself a creation of the Lord of Honor, not made to be observed as a mirror in the attributes of Allah's creation, such that if it were detested by Allah, this meaning would also not apply to an idol. The fourth question was solved: then being called an animal form and being a mirror to be observed, both depend on the face. If there is no face, it will not be called an animal form. Regarding this, firstly, there is the saying of the Trustee of Revelation, Gabriel (peace and blessings be upon him), that "cut off their heads so they become like the shape of trees." Secondly, the saying of Abu Hurayrah (may Allah be pleased with him) that "the form is the name of the head; that which has no head is not a form." Thirdly, the saying of Imam-e-Azam (may Allah be pleased with him) that "if the head is cut off, it is no longer a form." Fourthly, the primary evidence for this is the sacred guidance of the Prophet (peace and blessings be upon him):

"When any of you fights his brother, let him avoid the face, for Allah created Adam in His image." (Arabic: اذَا قَاتَلَ أَحَدُكُمْ أَخَاهُ فَلْيَجْتَنِبِ الْوَجْهَ فَإِنَّ اللهَ خَلَقَ آدَمَ عَلَى صُورَتِهِ) Narrated by Muslim from Abu Hurayrah (may Allah be pleased with him). Imam Nawawi, in his commentary on Sahih Muslim, has mentioned three opinions regarding "in His image" (Ali Suratihi). Among them, the most plausible, moderate, authentic, and foundational opinion is that this attribution signifies honor and distinction. It is like Allah's saying, "Naqatullah" (The She-camel of Allah), or as is said about the Holy Kaaba, "Baytullah" (The House of Allah), and other similar examples. (End of quote)

When any of you among you prepares for war against his brother, he should avoid his face because Allah Almighty created Adam in His own image. Imam Muslim narrated this from Hazrat Abu Huraira (may Allah be pleased with him). Imam Nawawi, in his commentary on Sahih Muslim, has narrated three opinions regarding "upon His image". Among them, the most plausible opinion is that this attribution (idhafat) means honor and distinction. Like Allah Almighty's statement "Naqat Allah" (the she-camel of Allah), and as it is said about the Kaaba Sharif "Bait Allah" (the house of Allah) and other similar examples. (t)

The honor of the form is intended only for the respect of the face. And its existence or absence as a mirror to be observed is evident within itself; for recognition occurs through the face. If a face is seen and the rest of the body is hidden by clothes, one will say, "I recognize him/her." But if the face is not seen, one cannot say so, even if

the rest of the body was seen. Therefore, if a woman uncovers her face and shows it to witnesses and says, "I am Laila daughter of Zaid," and makes some confession or contract, it is permissible for the witnesses to testify against her, and they have no original need for identity witnesses for the rest of her life because by seeing the face, they have recognized her themselves. Seeing her...

1. Sahih Muslim, Kitab al-Birr wa-al-Silah, Chapter on the Prohibition of Striking the Face, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/327.
2. Sharh Sahih Muslim by Nawawi with Sahih Muslim, Chapter on the Prohibition of Striking the Face, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/327.

खंड 24 फतावा रज़विया

...हल हुआ; प्रकाश केवल एक पशु रूप का नहीं है, और वह गाय है लेकिन स्वयं सम्मान के स्वामी (ईश्वर) की रचना है, न कि अल्लाह की रचना के गुणों में अवलोकन के लिए दर्पण बनाई गई है कि यदि वह अल्लाह द्वारा घृणित होती, तो यह अर्थ मूर्ति में भी नहीं होता। चौथा प्रश्न हल हुआ: फिर पशु रूप कहा जाना और उसके लिए अवलोकन का दर्पण होना, दोनों चेहरे पर निर्भर हैं। यदि चेहरा नहीं है, तो उसे पशु रूप नहीं कहा जाएगा। इस पर, सबसे पहले, वहि के न्यासी जिब्रिल (अलैहिस्सलाम) का कथन बीता कि "उनके सिर काट दो ताकि वे पेड़ों की आकृति के समान हो जाएं।" दूसरे, अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) का कथन है कि "रूप सिर का नाम है; जिसके पास सिर नहीं है वह रूप नहीं है।" तीसरे, इमाम-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) का कथन है कि "यदि सिर काट दिया जाए, तो वह रूप नहीं रहता।" चौथे, इस पर प्राथमिक साक्ष्य नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का पवित्र मार्गदर्शन है:

"जब तुम में से कोई अपने भाई से युद्ध करे, तो उसे चेहरे से बचना चाहिए, क्योंकि अल्लाह ने आदम को उसके रूप पर बनाया है।" (अरबी: اِذَا قَاتَلَ أَحَدُكُمْ أَخَاهُ فَلْيَجْتَنِبِ الْوَجْهَ فَإِنَّ اللهَ خَلَقَ آدَمَ عَلَى صُورَتِهِ) इसे मुस्लिम ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। इमाम नववी ने सहीह मुस्लिम की अपनी व्याख्या में "अली सूरतिहि" के बारे में तीन मतों का उल्लेख किया है। उनमें से सबसे अधिक प्रशंसनीय, न्यायपूर्ण, प्रामाणिक और मौलिक मत यह है कि इस संबंध का अर्थ सम्मान और विशिष्टता है। जैसे अल्लाह का यह कथन "नाक़तुल्लाह" (अल्लाह की ऊंटनी), और जैसा कि काबा शरीफ के बारे में कहा जाता है "बैतुल्लाह" (अल्लाह का घर) और इसी तरह के अन्य उदाहरण। (उद्धरण समाप्त)

जब तुम में से कोई अपने भाई से युद्ध के लिए तैयार हो, तो उसे चेहरे (पर प्रहार करने) से बचना चाहिए, क्योंकि अल्लाह ने आदम को अपने रूप पर बनाया है। इसे मुस्लिम ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। इमाम नववी ने सहीह मुस्लिम की अपनी व्याख्या में "अली सूरतिहि" के बारे में तीन मतों का उल्लेख किया है। उनमें से सबसे अधिक प्रशंसनीय मत यह है कि इस संबंध (इज़ाफ़त) का अर्थ सम्मान और विशिष्टता है। जैसे अल्लाह ताला का यह कथन "नाक़तुल्लाह" (अल्लाह की ऊंटनी), और जैसा कि काबा शरीफ के बारे में कहा जाता है "बैतुल्लाह" (अल्लाह का घर) और इसी तरह के अन्य उदाहरण। (त)

रूप का सम्मान केवल चेहरे के सम्मान के उद्देश्य से है। और अवलोकन के दर्पण के रूप में इसका अस्तित्व या अनुपस्थिति स्वयं में स्पष्ट है; क्योंकि पहचान चेहरे के माध्यम से होती है। यदि चेहरा देखा जाए और शेष शरीर कपड़ों से ढका हो, तो कोई कहेगा, "मैं उसे पहचानता हूँ।" लेकिन यदि चेहरा नहीं देखा गया, तो वह ऐसा नहीं कह सकता, भले ही शेष शरीर देखा गया हो। इसलिए, यदि किसी महिला ने अपना चेहरा खोला और गवाहों को दिखाया और कहा, "मैं ज़ैद की बेटी लैला हूँ," और कुछ स्वीकारोक्ति या अनुबंध किया, तो गवाहों के लिए उसके विरुद्ध गवाही देना जायज़ है, और उन्हें उसके पूरे जीवन के लिए पहचान के गवाहों की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है क्योंकि चेहरा देखकर उन्होंने स्वयं उसकी पहचान कर ली है। उसे देखकर...

1. सहीह मुस्लिम, किताब अल-बिर वल-सिलाह, चेहरे पर मारने के निषेध का अध्याय, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/327।
2. सहीह मुस्लिम की नववी द्वारा व्याख्या, सहीह मुस्लिम के साथ, चेहरे पर मारने के निषेध का अध्याय, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/327।

पेज 636/720

حل ہوا، تنویر صورت حیوانی ہی نہیں اور گائے ہے مگر خود مخلوق رب العزت نہ کہ مضافات خلق اللہ میں مرآت ملاحظہ ہونے کو بنائی ہوئی کہ مبغوض الہی ہو تو یہ بھی معنی بت میں نہیں، سوال چہارم حل ہوا، پھر صورت حیوانی کہا جانا اور اس کے لئے مرآۃ ملاحظہ ہونا دونوں کا مدار چہرہ پر ہے، اگر چہرہ نہیں تو اسے صورت حیوانی نہ کہا جائے گا، اس پر ایک تو امین الوحی جبریل علیہ الصلوۃ و السلام کا قول گزرا کہ ان کے سرکاٹ دیجئے کہ ہیأت درخت پر ہو جائیں، دوسرے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا ارشاد گزرا کہ صورت سرکا نام ہے جس کے سر نہیں وہ صورت نہیں، تیسرے امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا ارشاد گزرا کہ سرکاٹ دیا تو صورت نہ رہی، چوتھے اس پر اول دلیل ارشاد اقدس حضور پر نور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے ہے:

اذا قاتل احد کم اخاہ فلیجتنب الوجہ فان اللہ خلق آدم علی صورتہ، رواہ مسلم عن ابی ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ حکی النووی فی شرحہ ثلثۃ اقوال امثلھا واعدلھا واصحھا واصلھا ان المراد اضافۃ تشریف واختصاص کقولہ تعالیٰ ناقۃ اللہ وکما یقال فی الکعبۃ بیت اللہ ونظائرہ اھ

تم میں سے جب کوئی شخص اپنے بھائی سے آمادہ جنگ ہو تو اس کے چہرے کو بچائے کیونکہ اللہ تعالیٰ نے حضرت آدم کو اپنی صورت پر پیدا فرمایا۔ امام مسلم نے حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اس کو روایت فرمایا۔ امام نووی نے اپنی شرح صحیح مسلم میں علی صورتہ کے متعلق تین اقوال کی حکایت فرمائی ان میں سب سے زیادہ حمل والا قول یہ ہے کہ اس اضافت سے شرافت و اختصاص مراد ہے۔ اللہ تعالیٰ کے اس ارشاد "ناقۃ اللہ" (اللہ تعالیٰ کی اونٹنی) کی طرح،

اور جیسا کہ کعبہ شریف کے بارے میں کہا جاتا ہے "بیت اللہ" (اللہ تعالٰی کا گھر) اور اسی طرح کے باقی نظائر و امثال اھ (ت)

تکریم صورت کو صرف تعظیم وجہ پر مقصود فرمایا اور مرآۃ ملاحظہ ہونے کا وجوداً و عدماً اس پر دوران خود ظاہر چہرہ ہی سے معرفت ہوتی ہے چہرہ دیکھا اور باقی بدن کپڑوں سے چھپا ہے تو کہے گا میں اسے پہچانتا ہوں، اور چہرہ نہ دیکھا تو نہیں کہہ سکتا اگرچہ باقی بدن دیکھا ہو، ولہذا اگر عورت نے اپنا منہ کھول کر گواہوں کو دکھایا اور کہا میں لیلٰی بنت زید ہوں اور کچھ اقرار یا عقد کیا گواہوں کو اس پر گواہی دینا جائز ہے اور انہیں اس کی زندگی بھر گواہان شناخت کی اصلاً حاجت نہیں کہ منہ دیکھ کر انہیں خود شناخت ہو گئی وہ اسے دیکھ کر

1 صحیح مسلم کتاب البر والصلۃ باب النھی عن ضرب الوجہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۳۲۷ 2 شرح صحیح مسلم للنووی مع صحیح مسلم باب النھی عن ضرب الوجہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۳۲۷

Fatawa Razawiyya Volume 24

(Witnesses) can state that she is the same woman who made the admission before us. If she did not show her face by uncovering it, even after identifying witnesses, they cannot testify that such-and-such a woman made this admission. Instead, they should say that a woman made this admission before us, and such-and-such witnesses stated to us that she is such-and-such a woman. It is mentioned in Alamgiri:

[Arabic Box Text]: If a woman uncovers her face and says, "I am so-and-so, daughter of so-and-so," witnesses for identification are not needed. If she dies, two witnesses are required to testify that she was so-and-so, daughter of so-and-so. If she does not reveal her face and two witnesses testify that she is so-and-so, daughter of so-and-so, it is not permissible for them (the first set of witnesses) to testify based on that, i.e., regarding the admission of so-and-so. It is only permissible for them to testify that a woman admitted such-and-such, and two witnesses testified before us that she is so-and-so, daughter of so-and-so. This is how it is mentioned in Al-Multaqat.

[Urdu Box Text]: If a woman removed the veil from her face and said, "I am so-and-so, daughter of so-and-so," then in this situation, people do not need witnesses for identification for their whole lives (because full identification and introduction were obtained from the face). Then, if she dies, people will need two witnesses to testify that she is so-and-so, daughter of so-and-so. And if she did not show her face, then two witnesses will testify that she is so-and-so, daughter of so-and-so. However, it is not permissible for these two witnesses to testify that she is that woman who made the admission. Yes, it is permissible for them to testify in this way: that a woman made an admission and two witnesses testified to us that the woman is so-and-so, daughter of so-and-so. This is mentioned in Fatawa Al-Multaqat. (T)

In the same book, from Fatawa Zahiriya:

[Arabic Box Text]: The scholars (Mashaikh) differed regarding the permissibility of bearing witness against a woman when she is veiled. Some of our scholars said that bearing witness against her is not valid without seeing her face, while some of our scholars were more lenient in this and said...

[Urdu Box Text]: The noble scholars have differed on what the situation would be for the permissibility of giving testimony when a woman is wearing a veil. Accordingly, some of our scholars said that testimony cannot be given regarding a woman

without seeing her face. However, some of our scholars have found some breadth and leeway in this.

1. Fatawa Hindiyya, Book of Testimonies, Chapter Two, Noorani Kutub Khana Peshawar, 3/453. Page 637 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

(गवाह) कह सकते हैं कि यही वह औरत है जिसने हमारे सामने इकरार किया और अगर मुँह खोल कर न दिखाया तो गवाहों की पहचान के बाद भी यह गवाही नहीं दे सकते कि फलां औरत ने यह इकरार किया बल्कि इतना कहें कि हमारे सामने एक औरत ने यह इकरार किया और फलां-फलां गवाहों ने हमसे बयान किया कि यह फलां औरत है। आलमगीरी में है:

[अरबी बॉक्स पाठ]: अगर किसी औरत ने अपना चेहरा खोला और कहा कि मैं फलां की बेटी फलां हूँ, तो पहचान के लिए गवाहों की ज़रूरत नहीं होती। अगर वह मर जाए तो दो गवाहों की ज़रूरत होगी जो यह गवाही दें कि वह फलां की बेटी फलां थी। और अगर उसने अपना चेहरा नहीं खोला और दो गवाहों ने गवाही दी कि वह फलां की बेटी फलां है, तो उनके लिए (पहले गवाहों के लिए) यह गवाही देना जायज़ नहीं है, यानी फलां के इकरार पर। उनके लिए केवल यह गवाही देना जायज़ है कि एक औरत ने ऐसा इकरार किया और हमारे पास दो गवाहों ने गवाही दी कि वह फलां की बेटी फलां है। मुलतक़त में इसी तरह है।

[उर्दू बॉक्स पाठ]: अगर किसी औरत ने अपने चेहरे से परदा उठाया और कहा मैं फलां की बेटी फलां हूँ तो इस सूरत में लोगों को पूरी ज़िंदगी पहचान कराने के लिए गवाहों की ज़रूरत नहीं (इसलिए कि चेहरे से पूरी तरह पहचान और परिचय हासिल हो गया)। फिर अगर वह मर जाए तो लोगों को इस बात की ज़रूरत होगी कि दो गवाह यह गवाही देंगे कि फलां, फलां की बेटी है और अगर उसने अपना चेहरा खोलकर न दिखाया तो फिर दो गवाह यह गवाही देंगे कि वह फलां की बेटी फलां है लेकिन इन दो गवाहों के लिए यह जायज़ नहीं कि वह यह गवाही दें कि वह फलां औरत है जिसने इकरार किया था, हाँ अलबत्ता यह जायज़ है कि वह यों ही गवाही दें कि एक औरत ने इकरार किया है और हमारे पास दो गवाहों ने गवाही दी कि वह औरत फलां की बेटी फलां है, फ़तावा मुलतक़त में इस तरह ज़िक्र है। (त)

इसी में फ़तावा ज़हीरिया से है:

[अरबी बॉक्स पाठ]: मशायख़ (विद्वानों) में इस बारे में मतभेद है कि जब औरत नकाबपोश हो तो गवाही देना जायज़ है या नहीं। हमारे कुछ मशायख़ ने कहा कि चेहरा देखे बिना उस पर गवाही देना सही नहीं है, और हमारे कुछ मशायख़ ने इसमें उदारता दिखाई और कहा...

[उर्दू बॉक्स पाठ]: मशायख़ किराम ने इस बारे में मतभेद किया है कि जब औरत नक़ाबपोश हो तो उस पर गवाही देने की गुंजाइश की क्या सूरत होगी, चुनांचे हमारे कुछ मशायख़ ने फ़रमाया कि चेहरा देखे बिना औरत के मुतल्लिक़ गवाही नहीं दी जा सकती, लेकिन हमारे कुछ मशायख़ ने इसमें कुछ गुंजाइश और विस्तार बताया है।

1. फ़तावा हिंदिया, किताबुश शहादात, बाब-ए-सानी, नूरानी कुतुब खाना पेशावर ३/४५३ पृष्ठ ७२० का ६३७

بتاسکتے ہیں کہ یہی وہ عورت ہے جس نے ہمارے سامنے اقرار کیا اور اگر منہ کھول کر نہ دکھایا تو گواہان شناخت کے بعد بھی یہ گواہی نہیں دے سکتے کہ فلاں عورت نے یہ اقرار کیا بلکہ اتنا کہیں کہ ہمارے سامنے ایک عورت نے یہ اقرار کیا اور فلاں فلاں شہود نے ہم سے بیان کیا کہ یہ فلاں عورت ہے۔ عالمگیری میں ہے :

[لو کشفت امرأة وجهها وقالت انا فلانة بنت فلان لا یحتاجون الی شهود المعرفة فان ماتت یحتاجون الی شاهدین یشهدان انها کانت فلانة بیت فلان واذا لم تسفر وجهها وشهد شاهدان انها فلانة بنت فلان لم یحل لهما ان یشهدا بذلك یعنی علی اقرار فلانة انما یجوز ان یشهدا ان امرأة اقرت بکذا وشهد عندنا شاهدان انها فلانة بنت فلان هکذا في الملتقط ۱۔]

[اگر کسی عورت نے اپنے چہرے سے پردہ اٹھایا اور کہا میں فلاں دختر فلاں ہوں تو اس صورت میں لوگوں کو پوری زندگی شناخت کرانے کے لئے گواہوں کی ضرورت نہیں (اس لئے کہ چہرے سے پوری طرح شناخت اور تعارف حاصل ہوگیا) پھر اگر وہ مرجائے تو لوگوں کو اس بات کی ضرورت ہوگی کہ دو گواہ یہ گواہی دیں گے کہ فلاں، دختر فلاں ہے اور اگر اس نے اپنا چہرہ کھول کر نہ دکھایا تو پھر دو گواہ یہ گواہی دیں گے کہ وہ فلاں دختر فلاں ہے لیکن ان دو گواہوں کے لئے یہ جائز نہیں کہ وہ یہ گواہی دیں کہ وہ فلاں عورت ہے کہ جس نے اقرار کیا تھا، ہاں البتہ یہ جائز ہے کہ وہ یونہی گواہی دیں کہ ایک عورت نے اقرار کیا ہے اور ہمارے پاس دو گواہوں نے گواہی دی کہ وہ عورت فلاں دختر فلاں ہے، فتاوٰی ملتقط میں اس طرح مذکور ہے۔(ت)]

اسی میں فتاوٰی ظہیریہ سے ہے:

[اختلف المشائخ في جواز تحمل الشهادة على المرأة اذ كانت متنقبة، بعض مشائخنا قالوا لا يصح التحمل عليها بدون رؤية وجهها وبعض مشائخنا توسعوا في هذه وقالوا]

[مشائخ کرام نے اس بارے میں اختلاف کیا ہے کہ جب عورت نقاب پوش ہو تو اس پر گواہی دینے کے جواز کی کیا صورت ہوگی، چنانچہ ہمارے بعض مشائخ نے فرمایا کہ چہرہ دیکھے بغیر عورت کے متعلق گواہی نہیں دی جاسکتی، لیکن ہمارے بعض مشائخ نے اس میں کچھ وسعت و گنجائش]

Fatawa Rizvia Volume 24

[Arabic Column]: It is valid at the time of identification, and the identification of one person is sufficient, while two is more cautious. To this inclined the Sheikh, the Imam known as Khawahir Zada, and to the first view inclined the Sheikh, the Imam Shams Al-Islam Al-Awzjandi and the Sheikh, the Imam Zahir-ud-Din. A type of rational argument points to this, as we have agreed that it is permissible to look at her face for the purpose of bearing witness. I say: Indeed, they have agreed upon the achievement of recognition by seeing the face, such that bearing witness became permissible by consensus. And upon its absence without recognition, bearing witness was not permitted by some at all, while for others, identification was required for purposes.

[Urdu Column]: ...kept, and it has been said that at the time of acquaintance and fame, giving testimony regarding it is correct and the recognition of just one person is sufficient, though two is more cautious. Accordingly, the Sheikh Imam, who is famous by the title of Khawahir Zada, inclines towards this, while Sheikh Imam Shams Al-Islam Al-Awzjandi and Sheikh Imam Zahir-ud-Din incline towards the first view. Accordingly, a rational argument points to this because we have agreed that for the sake of bearing witness, it is permissible to look towards the woman's face. (I say) The eminent scholars have agreed on this point that identification and recognition are attained by seeing the face, to the point that in this case, bearing witness is permissible by consensus. And if there is no vision, there will be no recognition, therefore according to some people (in this case) bearing witness is not permissible at all. But according to some others, identification is required for purposes. (T)

[Main Urdu Text]: Look at those who favor pictures; they would never be satisfied with a faceless picture made as a memento of someone, nor would they find it useful for their purpose, even if the rest of the entire body is pictured. Many times they are content with half-length or even just the face, considering it sufficient for their goal, as is common among photographers and evident in coin portraits. This very picture in question bears witness that its creation was for memorial purposes. By being content with it up to the mid-chest, it is patently proven that the face alone is what makes a picture resemble an idol, and the face alone is sufficient to convey that meaning. So here, "genus of what is worshipped" refers only to having the meaning

of an idol, even if neither the picture itself is an object of worship for polytheists, nor is its subject in a state that polytheists would use for their worship.

1. Fatawa Hindiyya, Book of Testimonies, Second Chapter, Nurani Kutub Khana Peshawar, 3/452.

फ़तावा रज़विया खंड 24

[अरबी कॉलम]: पहचान के समय यह मान्य है, और एक व्यक्ति द्वारा पहचान पर्याप्त है, जबकि दो अधिक सुरक्षित है। शेख अल-इमाम, जिन्हें ख्वाहर ज़ादा के नाम से जाना जाता है, इस [दूसरे विचार] की ओर झुके हुए हैं, जबकि शेख अल-इमाम शम्स अल-इस्लाम अल-औज़जंदी और शेख अल-इमाम ज़हीर-उद-दीन पहले विचार की ओर झुके हुए हैं। एक प्रकार का तर्क इस ओर इशारा करता है, क्योंकि हमने सहमति व्यक्त की है कि गवाही देने के उद्देश्य से उसके चेहरे को देखना जायज़ है। मैं कहता हूँ: वास्तव में, वे चेहरे को देखने से पहचान प्राप्त होने पर सहमत हुए हैं, जिससे कि आम सहमति से गवाही देना जायज़ हो गया। और बिना पहचान के इसकी अनुपस्थिति पर, कुछ लोगों द्वारा गवाही देने की बिल्कुल भी अनुमति नहीं दी गई थी, जबकि अन्य लोगों के लिए, उद्देश्यों के लिए पहचान की आवश्यकता थी।

[उर्दू कॉलम]: ...रखी है, और यह फ़रमाया है कि पहचान और प्रसिद्धि के समय उसके बारे में गवाही देना सही है और सिर्फ एक व्यक्ति की पहचान काफी है, और दो में अधिक सावधानी है। चुनाँचे शेख इमाम जो ख्वाहर ज़ादा के उपनाम से प्रसिद्ध हैं, इसी ओर प्रवृत्त हैं जबकि शेख इमाम शम्स अल-इस्लाम अल-औज़जंदी और शेख इमाम ज़हीर-उद-दीन पहले कथन की ओर प्रवृत्त हैं। चुनाँचे तर्क इस ओर इशारा करता है क्योंकि हमने इस बात पर सहमति जताई है कि गवाही के लिए औरत के चेहरे की ओर देखना जायज़ है। मैं कहता हूँ कि आइम्मा (विद्वानों) ने इस बात पर सहमति जताई है कि चेहरा देखने से पहचान और ज्ञान प्राप्त होता है यहाँ तक कि इस स्थिति में गवाही देना सर्वसम्मति से जायज़ है। और अगर दीदार न हो तो पहचान न होगी इसलिए कुछ लोगों के नज़दीक इस स्थिति में गवाही बिल्कुल जायज़ नहीं। लेकिन कुछ दूसरों के नज़दीक उद्देश्यों में इसके लिए पहचान की ज़रूरत होती है। (त)

[मुख्य उर्दू पाठ]: तस्वीर के शौकीनों को ही देखें, जो तस्वीर किसी की यादगार के तौर पर बनवाएँ वे कभी भी बिना चेहरे वाली तस्वीर पर राज़ी नहीं होंगे, न ही उसे अपने मक़सद के लिए फ़ायदेमंद समझेंगे, चाहे बाकी पूरे शरीर की तस्वीर ही क्यों न हो। कई बार वे आधे कद या केवल चेहरे पर ही संतोष कर लेते हैं और इसे अपने मक़सद के लिए काफी समझते हैं, जैसा कि चित्रकारों में कसरत से प्रचलित है और सिक्कों की तस्वीरों से ज़ाहिर है। खुद यह तस्वीर जिसके बारे में सवाल है, इस बात की गवाह है कि इसका बनाना यादगार के लिए ही था और आधे सीने तक संतोष किया तो साफ़ तौर पर साबित हुआ कि सिर्फ चेहरा ही वह चीज़ है जो तस्वीर को 'बुत' (मूर्ति) के अर्थ में बदल देती है,

और सिर्फ चेहरा ही उस अर्थ को पहुँचाने के लिए काफी होता है। तो यहाँ 'मा'अबूद की जिन्स' से मुराद सिर्फ बुत के अर्थ में होना है, चाहे न वह खुद मुशरिकों (बहुदेववादियों) का मा'अबूद हो और न ही उस तस्वीर वाला उस हालत में हो कि मुशरिक अपनी इबादत के लिए इस्तेमाल करें।

1. फ़तावा हिंदिया, किताबुश शहादात, बाब-ए-सानी, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 3/452

[Arabic Column]: یصح عندالتعریف و تعریف الواحد کفی والمثنی احوط والی ھذا مال الشیخ الامام المعروف بخواھر زادہ والی القول الاول مال الشیخ الامام شمس الاسلام الاوز جندی والشیخ الامام ظھیر الدین و ضرب من المعقول یدل علی ھذا فانا اجمعنا علی انہ یجوز النظر الی وجھھا لتحمل الشھادۃ ۱ اہ قلت فقد اجمعوا علی حصول المعرفۃ برؤیۃ الوجہ حتی جاز التحمل اجماعاً وعلی عدمھا بعدم معرفتھا لم یجز التحمل عند قوم اصلاً واحتیج لما التعریف عند اخرین مقاصد۔

[Urdu Column]: رکھی ہے، اور یہ فرمایا ہے کہ تعارف اور شہرت کے وقت اس کے متعلق گواہی دینا صحیح ہے اور صرف ایک آدمی کی پہچان کافی ہے اور دو میں زیادہ احتیاط ہے۔ چنانچہ شیخ امام جو خواہر زادہ کے لقب سے مشہور ہیں اسی طرف مائل ہیں جبکہ شیخ امام شمس الاسلام اوز جندی اور شیخ امام ظہیر الدین پہلے قول کی طرف مائل ہیں چنانچہ معقول قسم اس پر دلالت کرتی ہے اس لئے کہ ہم نے اتفاق کیا ہے کہ تحمل شہادت کے لئے عورت کے چہرہ کی طرف دیکھنا جائز ہے اہ میں کہتا ہوں ائمہ کرام نے اس بات پر اتفاق کیا ہے کہ چہرہ دیکھنے سے شناخت اور معرفت حاصل ہوتی ہے یہاں تک کہ (اس صورت میں) تحمل شہادت بالاتفاق جائز ہے، اور اگر رویت نہ ہو تو معرفت نہ ہو گی لہٰذا بعض لوگوں کے نزدیک (اس صورت میں) تحمل شہادت بالکل جائز نہیں۔ لیکن کچھ دوسروں کے نزدیک مقاصد میں اس کے لئے شناخت کی ضرورت ہوتی ہے۔ (ت)

[Main Urdu Text]: اہل تصویر ہی کو دیکھئے جو تصویر کسی کی یادگار کے لئے بنوائیں ہر گز بے چہرہ اس پر راضی نہ ہوں گے نہ اپنے مقصود کو مفید جانیں گے اگرچہ باقی تمام بدن کی تصویر ہو اور بارہا نیم قد بلکہ صرف چہرہ پر قناعت کرتے اور اسے اپنے مقصد کے لئے

کافی سمجھتے ہیں جیسا کہ مصوّروں میں بکثرت دائر وسائر اور سکہ کی تصویروں سے ظاہر ، اور خود یہ تصویر جس سے سوال ہے اس پر شاہد کہ اس کا بنانا یادگار ہی کے لئے تھا اور نصف سینہ تک قناعت کی تو بداہۃً ثابت ہوا کہ صرف چہرہ ہی وہ چیز ہے کہ تصویر کو معنی بت میں کرتا ہے اور صرف چہرہ ہی اس معنی کے افادہ میں کافی ہوتا ہے تو یہاں جنس مائیعبد سے مراد صرف معنی بت میں ہونا ہے اگرچہ نہ خود وہ معبودِ مشرکین ہو نہ اس کا ذوالصورۃ تو وہ اس حالت پر ہو کہ مشرکین اپنی عبادت کے لئے

۱ فتاوٰی ہندیۃ کتاب الشھادات الباب الثانی نورانی کتب خانہ پشاور ۳ / ۴۵۲

Fatawa Rizvia, Volume 24

It is usually considered mandatory that all these are additions and are not considered here. What is required here is only that the image of an animal form should be such that it is subject to observation (merat-e-mulaheza), and this depends solely on the face. Therefore, all these images are definitively in the meaning of idols. Keeping them with honor in a house, installing them, framing them and putting them on a wall, or engraving them on a curtain, wall, or any high object, even if it is half-sized or just the face, or putting human or animal faces on wall brackets, or having an animal's face on the mouth of a water tap or the upper tip of a walking stick, or keeping and using any such manufactured item, is all impermissible, prohibited, and prevents the entry of angels (peace be upon them). Prayer in such a place is definitely disliked (Makruh). Furthermore, if there is a specific resemblance, such as being in front of the person praying, the prayer is prohibitively disliked (Makruh Tahrimi) and must be repeated. Can anyone say that installing human-sized mirrors with such large images of humans and animals on the Qibla wall and praying towards them does not involve resemblance to idol worship or opposition to the pure Sharia? Never, no one can say that. Thus, it is proven that the correct view is with the general books of the Imams, in which they limited it to cutting the head or erasing the face, and comparing other limbs to them is neither narrated (riwayatan) nor accepted through reasoning (dirayatan). Therefore, a beheaded image is not prohibited because it no longer holds the meaning of an idol, but one with hands and feet cut off is impermissible because the meaning of an idol remains. Thus, the second question is resolved. An image so small that it is not distinguishable to the eye is not subject to observation, as it is not under observation itself. Similarly, if it is hidden, it is also barred from observation. Being subject to observation is far off. Moreover, for the realization of the meaning of an idol, it is also necessary that polytheists make idols so that they are objects of their false veneration. Here too, that meaning is absent. Thus, the third question is resolved.

[Arabic Box Text]: And praise be to Allah, a great, pure, and blessed praise as our Lord loves and is pleased with. May Allah's blessings be upon our Master and Leader, and his family and companions forever. This is how the research should be. And Allah Almighty is the Grantor of success. This discourse had been pulsating in my heart for a long time, and I was hoping that Allah Almighty would open [a way] with the truth, so here it is.

[Urdu Translation of Box]: Infinite and countless praise and description is for Allah Almighty alone; pure, such as contains blessings as our Lord would like. And may Allah Almighty send mercy upon our master and our protector and always send mercy upon all his family and companions. And it is appropriate that research should be done in this way and Allah Almighty alone is the Master of granting success. For a long time, the idea of speaking on this was prickling in my heart and I also hoped that Allah Almighty would open the door with truth, so this is present.

फतावा रज़विया, खंड 24

आमतौर पर यह अनिवार्य माना जाता है कि ये सभी अतिरिक्त चीज़ें हैं और यहाँ विचारणीय नहीं हैं। यहाँ केवल इतना आवश्यक है कि प्राणी के रूप का चित्र ऐसा हो कि वह अवलोकन (मिरात-ए-मुलाहिज़ा) का विषय हो, और यह पूरी तरह से चेहरे पर निर्भर है। इसलिए, ये सभी चित्र निश्चित रूप से मूर्तियों के अर्थ में हैं। उन्हें घर में सम्मान के साथ रखना, स्थापित करना, फ्रेम करके दीवार पर लगाना, या पर्दे, दीवार या किसी ऊँची वस्तु पर अंकित करना, चाहे वह आधा शरीर हो या केवल चेहरा, या दीवार के ब्रैकेट पर मानव या पशु के चेहरे लगाना, या पानी के नल के मुँह पर या छड़ी के ऊपरी सिरे पर किसी जानवर का चेहरा बनवाना, या ऐसी किसी भी निर्मित वस्तु को रखना और उपयोग करना, यह सब नाजायज, हराम और फरिश्तों (उन पर शांति हो) के प्रवेश को रोकने वाला है। ऐसे स्थान पर नमाज़ निश्चित रूप से मकरूह (नापसंद) है। इसके अलावा, यदि कोई विशेष समानता पाई जाती है, जैसे कि नमाज़ पढ़ने वाले के सामने होना, तो नमाज़ मकरूह-ए-तहरीमी (कड़ाई से नापसंद) है और उसे दोहराना अनिवार्य है। क्या कोई कह सकता है कि किबला की दीवार पर आदम-कद दर्पण, जिनमें मनुष्यों और जानवरों के इतने बड़े चित्र हों, लगाकर उनकी ओर नमाज़ पढ़ने में न तो मूर्ति पूजा की समानता है और न ही शुद्ध शरिया का विरोध? कभी नहीं, कोई ऐसा नहीं कह सकता। अतः, यह सिद्ध हुआ कि सही दृष्टिकोण इमामों की सामान्य पुस्तकों के साथ है, जिनमें उन्होंने केवल सिर काटने या चेहरे को मिटाने तक ही सीमित रखा है, और अन्य अंगों की उनसे तुलना करना न तो रिवायत (परंपरा) से प्रमाणित है और न ही दरायत (तर्क) से स्वीकार्य है। इसलिए, बिना सिर वाले चित्र में कोई मनाही नहीं है क्योंकि उसमें मूर्ति का अर्थ नहीं रहा, लेकिन हाथ-पाँव कटे हुए चित्र नाजायज हैं क्योंकि मूर्ति का अर्थ बना रहता है। इस प्रकार, दूसरा प्रश्न हल हो गया। इतना छोटा चित्र जो आँखों से स्पष्ट रूप से न दिखे, वह अवलोकन का विषय नहीं है क्योंकि वह स्वयं अवलोकन के अधीन नहीं है। इसी प्रकार, यदि वह छुपा हुआ है, तो वह भी अवलोकन से वंचित है। अवलोकन का विषय होना तो बहुत दूर की बात है। इसके अलावा, मूर्ति के अर्थ की प्राप्ति के लिए यह भी आवश्यक है कि मुशरिकों (बहुदेववादियों) ने मूर्तियों को इसलिए बनाया हो ताकि वे उनके झूठे सम्मान की वस्तु बनें। यहाँ भी वह अर्थ अनुपस्थित है। इस प्रकार, तीसरा प्रश्न हल हो गया।

[अरबी पाठ]: और अल्लाह के लिए बहुत, पवित्र और बरकत वाली प्रशंसा है जैसा कि हमारा रब पसंद करता है और जिससे वह प्रसन्न होता है। और अल्लाह तआला हमारे आका और मौला पर, और उनके परिवार और साथियों पर हमेशा हमेशा रहमत भेजे। शोध इसी तरह होना चाहिए। और

अल्लाह तआला ही तौफीक (सफलता) देने वाला है। लंबे समय से मेरे दिल में इस पर चर्चा करने की बात खटक रही थी और मुझे यह भी आशा थी कि अल्लाह तआला सच्चाई के साथ दरवाजा खोलेगा, तो यह उपस्थित है।

[उर्दू अनुवाद]: अल्लाह तआला के लिए ही बेहिसाब और अनगिनत प्रशंसा और गुणगान है; पवित्र, जिसमें ऐसी बरकत रखी गई है जैसा कि हमारा पालनहार पसंद फरमाए। और अल्लाह तआला हमारे आका और हमारे मौला पर रहमत बरसाए और उनके तमाम परिवार और साथियों पर हमेशा-हमेशा रहमत हो। और उचित यह है कि शोध इसी तरह होना चाहिए और अल्लाह तआला ही तौफीक देने का मालिक है। मुद्दत से मेरे दिल में इस पर कलाम (चर्चा) करने की बात खटक रही थी और मैं यह भी उम्मीद रखता था कि अल्लाह तआला हक (सच्चाई) के साथ दरवाजा खोले तो यह हाजिर है।

عادۃً لازم رکھتے ہیں کہ یہ سب زوائد ہیں اور یہاں غیر ملحوظ۔ یہاں صرف اس قدر درکار ہے کہ تصویر کسی صورت حیوانیہ کے لئے مراۃ ملاحظہ ہو اور اس کا مدار صرف چہرہ پر ہے تو قطعاً یہ سب تصویریں معنی بت میں ہیں اور ان کا مکان میں با عزاز رکھنا، نصب کرنا، چوکھٹوں میں رکھ کر دیوار پر لگانا یا پردے یا دیوار یا کسی اونچی رہنے والی شے پر اس کا منقوش کرنا اگرچہ نیم قد یا صرف چہرہ ہو یا دیوار گیروں پر انسان یا حیوان کے چہرے لگانا یا پانی کے نل کے منہ یا لاٹھی کی بالائی شام پر کسی حیوان کا چہرہ بنوانا یا ایسی کسی بنی ہوئی چیز کو رکھنا استعمال کرنا سب ناجائز و حرام و مانع دخول ملائکہ علیہم الصلوٰۃ والسلام اور اس مکان میں نماز یقیناً مکروہ، پھر اگر تشبہ خاص بھی پایا جائے جیسے مصلی کے سامنے ہو نا تو نماز مکروہ تحریمی واجب الاعادہ، کیا کوئی کہہ سکتا ہے کہ قد آدم آئینے جن میں اتنی بڑی بڑی آدمیوں اور جانوروں کی تصویریں ہوں دیوار قبلہ میں نصب کرکے ان کی طرف نماز پڑھنے میں نہ عبادت صورت کی مشابہت ہے نہ شرع مطہر کی مخالفت، حاشاہ ہرگز کوئی نہیں کہہ سکتا، تو ثابت ہوا کہ صواب عامہ کتب ائمہ کے ساتھ ہے جن میں صرف قطع راس و محو وجہ پر اکتفا فرمایا اور دیگر اعضاء کا ان پر قیاس ہرگز نہ روایۃً منقول نہ درایۃً مقبول۔ لاجرم سر بریدہ میں ممانعت نہ ہوئی کہ معنی بت میں نہ رہی، اور دست و پا بریدہ ناجائز ہوئی کہ معنی بت باقی سوال دوم حل ہوا، اتنی چھوٹی تصویر کہ نظر میں متمیز نہ ہو مراۃ ملاحظہ نہیں کہ آپ ہی زیر ملاحظہ نہیں یونہی مستور کہ وہ بھی خود ملاحظہ سے مہجور، مراۃ ملاحظہ ہونا تو اور دور، اور معنی بت کے حصول کو یہ بھی ضرور کہ مشرکین بتوں کو اسی لئے بناتے ہیں کہ ان کے آلہ عزومہ باطلہ کے مراۃ ملاحظہ ہوں تو یہاں بھی وہ معنی مفقود، سوال سوم حل ہوا۔

ولله الحمد حمدا كثيرا طيبا مباركا فيه كما يحب ربنا ويرضى وصلى الله تعالى على سيدنا ومولينا وآله و صحبه ابدا، هكذا ينبغى التحقيق والله تعالى ولى التوفيق وقد كان يختلج فى قلبى الكلام عليه منذ زمان وكنت ارجوان يفتح الله تعالى بالحق فهذا

اللہ تعالیٰ کے لئے ہی بے حساب و شمار تعریف و توصیف ہے پاکیزہ، ایسی میں برکت رکھی گئی جیسا کہ ہمارا پروردگار پسند فرمائے اور اللہ تعالیٰ ہمارے آقا اور ہمارے مولا پر رحمت برسائے اور ان کی تمام آل اور ساتھیوں پر ہمیشہ ہمیشہ رحمت ہو، اور مناسب یہ ہے کہ تحقیق اسی طرح ہونی چاہئے اور اللہ تعالیٰ ہی توفیق دینے کا مالک ہے۔ مدت سے میرے دل میں اس پر کلام کرنے کی بات کھٹک رہی تھی اور میں یہ بھی امید رکھتا تھا کہ اللہ تعالی حق کے ساتھ دروازہ کھولے تو یہ حاضر ہے۔

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Arabic Text Column] Or if the Lord, Glorified and Exalted is He, makes it easy for him—and to Him belongs all praise. I say: and by this it was resolved, and praise be to Allah, contrary to what al-Quhustani narrated from al-Muhit regarding taking up (making/keeping) a head, and its narration from him in Radd al-Muhtar, while they did not mention any preference in it. Thus, by the grace of Allah Almighty, the preference for prohibition is established. I say: Then, let it not escape you that what is meant by 'taking up' (ittikhad) is 'acquisition' (iqtina), as in al-Quhustani's statement a few lines later: 'It is disliked to keep (ittikhad) images in houses'. Then his statement following it: 'Keeping (ittikhad) them is not disliked if they are small'. As for making them (istina'), it is not permissible in any case, even though our scholars have explicitly stated the permissibility of taking up (making/using) a nose, tooth, or finger made of silver for someone who has lost them. For the difference between what they mentioned and taking up (making) a head is something that is not hidden from a simpleton, let alone a rational person. And Allah Almighty knows best.

[Urdu Translation/Explanation Column] That (in this matter) Allah Almighty will reveal the truth to me until the time arrived when Allah Almighty, Pure and Exalted, simplified (this knotty issue) for me. Therefore, praise and commendation are for Him. I say: (I say) while praise and commendation are for Allah Almighty, that difference became separate and distinct which Allama Quhustani narrated from 'Al-Muhit' regarding making a head, and was quoted in 'Fatawa Shami', but in it, the noble Imams did not mention any preference. I say then, let it not be that you miss the point that here 'taking up' (ittikhad) means 'acquisition/keeping' (iqtina), as after a few lines this statement of Allama Quhustani is present: "Keeping pictures in houses for preservation is forbidden." But shortly after that, he stated that if the pictures are very small, then keeping them in houses is not disliked (Makruh), but making them is not permissible under any circumstances. Although our noble scholars have clarified that making a nose, teeth, and finger from silver is permissible, and the reason for this is their being severed (replacement for a lost part). Therefore, there is a clear difference between what they mentioned and making a head, which is not hidden from even an irrational person, let alone being concealed from a rational one. And Allah Almighty knows best (T).

Fourthly, I say: And with Allah is success (I say this with reference to the success granted by Allah Almighty).

1. Jami' al-Rumuz, Book of Salat, Chapter: What invalidates Salat, Maktaba al-Islamiyya, Gunbad Qamus, Iran 1/196
2. Jami' al-Rumuz, Book of Salat, Chapter: What invalidates Salat, Maktaba al-Islamiyya, Gunbad Qamus, Iran 1/195

[अरबी पाठ कॉलम] या यदि स्वामी, जो पवित्र और सर्वोच्च है, इसे सुगम बना दे - और सारी प्रशंसा उसी के लिए है। मैं कहता हूँ: और इसी के द्वारा यह हल हो गया, और अल्लाह की स्तुति हो, इसके विपरीत जो अल-कुहुस्तानी ने अल-मुहीत से सिर बनाने (अपनाने) के संबंध में वर्णित किया था, और रद अल-मुहतार में उनसे इसका उल्लेख किया गया था, जबकि उन्होंने इसमें किसी प्राथमिकता का उल्लेख नहीं किया था। अत; अल्लाह सर्वशक्तिमान की कृपा से, निषेध की प्राथमिकता सिद्ध हो गई है। मैं कहता हूँ: फिर, यह बात आपसे ओझल न हो कि 'अपनाने' (इतिकाद) से तात्पर्य 'अर्जन/रखना' (इक्तिना) है, जैसा कि अल-कुहुस्तानी के कुछ पंक्तियों बाद के इस कथन में है: 'घरों में चित्र रखना (इतिकाद) नापसंद है'। फिर उसके बाद उनका कथन: 'उन्हें रखना (इतिकाद) नापसंद नहीं है यदि वे छोटे हों'। जहाँ तक उन्हें बनाने (इस्तिना) का प्रश्न है, यह किसी भी स्थिति में स्वीकार्य नहीं है, यद्यपि हमारे विद्वानों ने स्पष्ट रूप से चांदी की नाक, दांत या उंगली बनाने की अनुमति दी है उस व्यक्ति के लिए जिसका अंग कट गया हो। क्योंकि जो कुछ उन्होंने उल्लेख किया है और सिर बनाने के बीच का अंतर किसी मंदबुद्धि व्यक्ति से भी छिपा नहीं है, बुद्धिमान की तो बात ही क्या। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

[उर्दू अनुवाद/व्याख्या कॉलम] कि (इस मामले में) अल्लाह तआला मुझ पर सत्य प्रकट कर देगा, यहाँ तक कि वह समय आ गया जिसमें अल्लाह तआला, जो पवित्र और सर्वोच्च है, ने (इस गुत्थी को) मुझ पर आसान कर दिया। अतः उसी के लिए प्रशंसा और स्तुति है। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) जबकि अल्लाह तआला के लिए प्रशंसा और स्तुति है, उससे वह मतभेद अलग और जुदा हो गया जिसे अल्लामा कुहुस्तानी ने 'अल-मुहीत' के हवाले से सिर बनाने के संबंध में उद्धृत किया था, और 'फ़तावा शामी' में इसका उल्लेख किया गया था, लेकिन इसमें महान इमामों ने किसी प्राथमिकता का उल्लेख नहीं किया। मैं फिर कहता हूँ कि कहीं यह बात आपसे न छूट जाए कि यहाँ 'इतिकाद' से तात्पर्य 'इक्तिना' (हिफ़ाज़त करना/रखना) है, जैसा कि कुछ पंक्तियों के बाद अल्लामा कुहुस्तानी का यह कथन मौजूद है: "घरों में हिफ़ाज़त से चित्र रखना मना है।" लेकिन इसके कुछ समय बाद उन्होंने कहा कि यदि चित्र बहुत छोटे हों, तो उन्हें घरों में रखना मकरूह (नापसंद) नहीं है, लेकिन उन्हें बनाना किसी भी हाल में जायज़ नहीं है। हालाँकि हमारे महान विद्वानों ने यह स्पष्ट किया है कि चांदी की नाक, दांत और उंगली बनाना जायज़ है, और इसका कारण उनका कटा हुआ होना (अंग के विकल्प के रूप में) है। इसलिए उन्होंने जो कुछ उल्लेख किया है और सिर बनाने के बीच एक स्पष्ट

अंतर है, जो किसी नासमझ से भी छिपा नहीं है, बुद्धिमान से छिपने की तो बात ही दूर है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है (त)।

चौथा, मैं कहता हूँ: और अल्लाह की मदद से ही सफलता है (मैं अल्लाह तआला द्वारा प्रदान की गई सफलता के हवाले से कहता हूँ)।

---

1. जामे-उर-रुमुज़, किताबुस-सलात, फ़स्ल मा-युफ़्सिदुस-सलात, मकतबा अल-इस्लामिया, गुम्बद कामूस, ईरान १/१९६
2. जामे-उर-रुमुज़, किताबुस-सलात, फ़स्ल मा-युफ़्सिदुस-सलात, मकतबा अल-इस्लामिया, गुम्बद कामूस, ईरान १/१९५

पृष्ठ ६४०/७२०

[عربی متن کالم] او ان یسرہ المولی سبحانہ وتعالی ولہ الحمد اقول وبہ انفصل وللہ الحمد خلاف مانقلہ القھستاني عن المحیط في اتخاذ الراس ونقلہ عنہ في ردالمحتار ولم یذکروا فیہ ترجیحاً فثبت بحمداللہ تعالی ترجیح المنع اقول: ثم لایذھبن عنك وان المراد بالاتخاذ الاقتناء کما في قول القھستاني بعدہ باسطر، یکرہ اتخاذ الصور في البیوت، ثم قولہ بعدہ لایکرہ اتخاذھا ان صغرت اما اصطناعہ فلایجوز بحال وان صرح علماؤنا بجواز اتخاذ الانف والسن والاصبع من فضۃ لمقطوعھا فان الفرق بین ماذکروا وبین اتخاذ الرأس مما لایخفی علی بلید فضلاً عن عاقل، واللہ تعالی اعلم۔

[اردو ترجمہ و تشریح کالم] کہ (اس معاملہ میں) اللہ تعالیٰ مجھ پر حق کھول دے گا یہاں تک کہ یہ وقت آپہنچا کہ جس میں اللہ تعالیٰ پاک اور برتر نے (اس عقدہ کو) مجھ پر آسان کردیا لہذا اسی کے لئے تعریف و ستائش ہے اقول: (میں کہتا ہوں) جبکہ اللہ تعالیٰ کے لئے حمد و ستائش ہے اس سے وہ اختلاف الگ اور جدا ہوگیا کہ جس کو علامہ قہستانی نے محیط کے حوالے سے سر بنانے کے متعلق نقل کیا اور فتاویٰ شامی میں اس کو نقل فرمایا لیکن اس میں ائمہ کرام نے کوئی ترجیح ذکر نہیں، میں کہتا ہوں پھر آپ سے کہیں یہ بات رہ نہ جائے کہ یہاں اتخاذ سے اقتناء (حفاظت کرنا) مراد ہے جیسا کہ چند سطروں بعد علامہ قہستانی کا یہ قول موجود ہے "گھروں میں حفاظت سے تصویریں رکھنا منع ہیں"۔ لیکن اس کے کچھ بعد انہوں نے فرمایا کہ اگر تصویریں چھوٹی چھوٹی ہوں تو ان کا گھروں میں رکھنا مکروہ نہیں لیکن ان کا بنانا کسی حال میں بھی جائز نہیں، اگرچہ ہمارے علماء کرام نے یہ تصریح فرمائی کہ چاندی کی ناک، دانت اور انگلی بنانا جائز ہے اور اس کی وجہ ان کا مقطوع ہونا ہے اس لئے کہ جو کچھ انہوں نے ذکر فرمایا اس کے اور سر بنانے کے

درمیان واضح فرق ہے جو کسی بے عقل سے بھی پوشیدہ نہیں چہ جائیکہ صاحب عقل سے مخفی رہ جائے، واللہ تعالٰی اعلم (ت)

رابعاً اقول: وباللہ التوفیق (میں تعالٰی کی توفیق ہی کے حوالے سے کہتا ہوں)

---

1 جامع الرموز کتاب الصلوۃ فصل مائیفسد الصلوۃ مکتبۃ الاسلامیہ گنبد قاموس ایران ۱/ ۱۹۶ 2 جامع الرموز کتاب الصلوۃ فصل مائیفسد الصلوۃ مکتبۃ الاسلامیہ گنبد قاموس ایران ۱/ ۱۹۵

Fatawa Rizvia Vol 24

There is another innovative point that needs careful attention, there are four scenarios here:

First: Desecrating a picture, for example, having it on a floor mat so that people walk on it and place their feet on it. This is permissible and does not prevent the entry of angels, although making or having such pictures made is still forbidden, as mentioned in Al-Hilyah, Al-Bahr, etc. (As mentioned in Hilyah, Bahr-ul-Raiq, and other books besides these two. - T)

Second: Keeping an object with a picture on it without disrespecting it, but the lack of disrespect is not because of the picture itself but for another reason. For example, keeping money carefully and not throwing it on the ground; this is not due to the picture but because it is wealth. If the coin did not have a picture, it would still be kept with the same care. This is permissible in cases of necessity, just as in the case of money where honoring the picture is not intended and un-pictured money does not circulate here. And if the picture is erased, the money might not be accepted. "Necessities make the forbidden permissible." (Necessities make prohibited actions lawful. - T) Similarly, the pictures on stamps and postage stamps, if they are not so small that the details of the limbs are not visible when placed on the ground and looked at while standing, like a gold coin or a seal; their keeping is similarly permissible because their pictures are so small. However, without necessity, it falls into the category of 'disliked' (makruh) because even if the lack of disrespect is for another reason, it nonetheless applies to the picture, while we are commanded to desecrate it. As mentioned in Al-'Inayah: "We have been commanded to desecrate them (pictures)."[1] We have been commanded to desecrate and humiliate the pictures. (T) Therefore, avoiding desecration is avoiding a command, and there is no necessity to justify it. Pictures on knives, etc., fall under the same rule. If they are large, they should be erased or covered with paper; otherwise, it is disliked. This is also when the owner's purpose is to use the object and the picture itself is not the goal; otherwise, it will fall into the third scenario.

Third: Avoiding desecration specifically because of the picture, but without the intent of special veneration. For instance, the ignorant who hang pictures on walls for decoration and adornment. This is forbidden (Haram) and prevents the entry of the angels (peace be upon them), as the honoring of the image itself was intended, even if it wasn't considered sacred or worthy of respect.

Fourth: Not just avoiding desecration, but intentionally honoring and venerating the picture. Considering it religiously great, kissing it with respect, placing it on the head, touching it to the eyes, standing before it with folded hands, or when it is brought...

---

[1] Al-'Inayah Sharh al-Hidayah on the margins of Fath al-Qadir, Book of Prayer, Chapter on what invalidates prayer, Maktabah Nooriyah Rizvia, Sukkur, 1/362.

फ़तावा रज़विया खंड २४

एक और नया बिंदु है जिस पर ध्यान देना आवश्यक है, यहाँ चार स्थितियाँ हैं:

प्रथम: चित्र का अपमान करना, उदाहरण के लिए, पायदान (मैट) पर चित्र होना ताकि उस पर चलें और पैर रखें। यह जायज़ है और फ़रिश्तों के आने में बाधा नहीं बनता, हालाँकि ऐसे चित्र बनाना या बनवाना भी हराम है, जैसा कि अल-हिल्या, अल-बहर आदि में उल्लेख है। (जैसा कि हिल्या, बहर-उल-राइक़ और इन दोनों के अलावा दूसरी किताबों में उल्लेख है। - त)

द्वितीय: जिस चीज़ में चित्र हो उसे बिना अपमान के रखना, लेकिन अपमान न करना चित्र के कारण न हो बल्कि किसी अन्य कारण से हो, जैसे कि रुपयों को संभाल कर रखना और ज़मीन पर न फेंकना। यह चित्र के कारण नहीं बल्कि धन होने के कारण है। यदि सिक्के पर चित्र न होता, तब भी उसे उतनी ही सावधानी से रखा जाता। यह आवश्यकता की स्थिति में जायज़ है, जैसे कि रुपयों के मामले में जहाँ चित्र का सम्मान करना उद्देश्य नहीं है और बिना चित्र वाले रुपये यहाँ चलते नहीं हैं। और यदि उस पर से चित्र मिटा दिया जाए तो वह चलेगा नहीं। "ज़रूरतें हराम कामों को जायज़ कर देती हैं।" (आवश्यकताएँ वर्जित कार्यों को वैध बना देती हैं। - त) इसी तरह स्टांप के चित्र और डाक टिकट, यदि उनके चित्र इतने छोटे न हों कि ज़मीन पर रखकर खड़े होकर देखने से अंगों का विवरण स्पष्ट न हो, जैसे अशफ़र्ी या मुहर; उन्हें रखना उसी तरह जायज़ है क्योंकि उनके चित्र इतने ही छोटे हैं। और बिना आवश्यकता के यह मकरूह (नापसंद) की श्रेणी में आता है, क्योंकि भले ही अपमान न करना किसी और कारण से हो, लेकिन अंततः यह चित्र के संबंध में ही हुआ, जबकि हमें इसका अपमान करने का आदेश दिया गया है। इनाया में आया है: "हमें उनके अपमान का आदेश दिया गया है।"[1] हमें चित्रों के अपमान और तिरस्कार का आदेश दिया गया है। (त) इसलिए, अपमान न करना आदेश का उल्लंघन है और यहाँ कोई ऐसी आवश्यकता नहीं है जो इसे जायज़ बना सके। चाकुओं आदि पर जो चित्र होते हैं, वे भी इसी नियम में आते हैं। यदि वे बड़े हों, तो उन्हें मिटा दें या उन पर काग़ज़ लगा दें, अन्यथा यह मकरूह है। यह भी तब है जब रखने वाले का उद्देश्य उस वस्तु का उपयोग करना हो और चित्र मुख्य उद्देश्य न हो; अन्यथा यह तीसरी स्थिति में शामिल होगा।

तृतीय: अपमान न करना चित्र के कारण ही हो, लेकिन चित्र का विशेष सम्मान करना उद्देश्य न हो, जैसे कि अज्ञानी लोग सजावट के विचार से दीवारों पर चित्र लगाते हैं। यह हराम है और फ़रिश्तों (उन

पर शांति हो) के आने में बाधा है क्योंकि चित्र का ही सम्मान करना उद्देश्य था, भले ही उसे पूजनीय या आदर योग्य न माना गया हो।

चतुर्थ: केवल अपमान न करना ही नहीं, बल्कि जानबूझकर चित्र का सम्मान और आदर करना, उसे धार्मिक रूप से महान समझना, सम्मानपूर्वक चूमना, सिर पर रखना, आँखों से लगाना, उसके सामने हाथ बाँधकर खड़ा होना, या उसके लाए जाने पर...

---

[1] अल-इनाया शरह अल-हिदाया हाशिये पर फ़तह अल-क़दीर, किताब अस-सलात, नमाज़ को अमान्य करने वाली चीज़ों का अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, १/३६२।

ایک اور نکتہ بدیعہ ہے جس پر تنبہ لازم، یہاں چار صورتیں ہیں:

اوّل: تصویر کی توہین مثلاً فرش پا انداز میں ہونا کہ اس پر چلیں پاؤں رکھیں یہ جائز ہے اور مانع ملائکہ نہیں اگرچہ بنانا بنوانا ایسی تصویروں کا بھی حرام ہے کما فی الحلیۃ والبحر وغیرھما (جیسا کہ حلیہ، بحر رائق اور ان دو کے علاوہ دوسری کتابوں میں مذکور ہے۔ت)

دوم: جس چیز میں تصویر ہو اسے بلا اہانت رکھنا مگر وہ ترکِ اہانت بوجہ تصویر نہ ہو بلکہ اور سبب سے جیسے روپے کو سنبھال کر رکھنا زمین پر پھینک نہ دینا کہ یہ بوجہ تصویر نہیں بلکہ بہ سبب مال، اگر سکہ میں تصویر نہ ہوتی جب بھی وہ ایسی ہی احتیاط سے رکھا جاتا، یہ بحال ضرورت جائز ہے جس طرح روپے میں کہ تکریمِ تصویر مقصود نہیں اور بے تصویر کا یہاں چلنا نہیں اور اس پر سے تصویر مٹائیں تو چلے گا نہیں الضرورات تبیح المحظورات (ضرورتیں ممنوع کاموں کو مباح کردیتی ہیں۔ ت) یو ہیں اسٹامپ کی تصویریں اور ڈاک کے ٹکٹ، اگر ان کی تصویریں ایسی چھوٹی نہ ہوں کہ زمین پر رکھ کر کھڑے ہو کر دیکھنے سے تفصیل اعضا ظاہر نہ ہو جیسے اشرفی، مہر، اس کے رکھنے کا ویسے ہی جواز ہے کہ اس کی تصویریں ایسی ہی چھوٹی ہیں اور بلا ضرورت داخلِ کراہت کہ اگرچہ ترک اہانت دوسری وجہ سے ہے مگر لازم تو تصویر کی نسبت بھی آیا حالانکہ ہمیں اس کی اہانت کا حکم ہے، عنایہ سے گزرا: نحن امرنا باھانتھا۔[1] ہمیں تصویروں کی توہین وتذلیل کا حکم دیا گیا ہے۔ (ت) تو ترک اہانت میں ترک حکم ہے اور ضرورت نہیں کہ حکم جواز لائے، چاقو وغیرہ جو تصویریں ہوتی ہیں اسی حکم میں داخل ہیں اگر بڑی ہوں تو انہیں مٹادے یا کاغذ وغیرہ لگادے ورنہ مکروہ ہے۔ یہ بھی اس وقت کے رکھنے والے کو اس شے سے کام ہو تصویر مقصود نہ ہو ورنہ صورت سوم میں داخل ہوگا۔

سوم: ترک اہانت بوجہ تصویر ہی ہو مگر تصویر کی خاص تعظیم مقصود نہ ہو جیسے جہال زینت و آرائش کے خیال سے دیواروں پر تصویریں لگاتے ہیں یہ حرام ہے اور مانع ملائکہ علیہم الصلوٰۃ والسلام کہ خود صورت ہی کا اکرام مقصود ہوا اگرچہ اسے معظم و قابلِ احترام نہ مانا۔

چہارم: صرف ترکِ اہانت نہ ہو بلکہ بالقصد تصویر کی عظمت و حرمت کرنا، اسے معظم دینی سمجھنا، اسے تعظیمی بوسہ دینا، سر پر رکھنا، آنکھوں سے لگانا، اس کے سامنے دست بستہ کھڑا ہونا، اس کے لائے جانے

---

[1] العنایۃ شرح الھدایۃ علی ہامش فتح القدیر کتاب الصلوۃ باب مایفسد الصلوۃ مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱ / ۳۶۲

Standing before it, bowing the head upon seeing it, and performing such other acts of reverence—all of these are the most abominable, definitely and certainly, in summary, strictly forbidden (Haram) and severe, cursed major sins (Kabirah). It is just one step away from clear, overt idol worship. No Muslim can call it permissible (Halal) under any circumstances, even if it (the image) is torn into millions of pieces, is small, or is hidden. These conditions applied up to the third scenario; there is no restriction nor any disagreement among Muslims regarding the extreme and great prohibition of intentionally honoring the image of a living being. Rather, it is close to being one of the essentials of this pure faith (Hanifiyyah) that its strict prohibition is established. Thus, considering it good or even just deeming it permissible carries the risk of a severe matter. And we seek refuge in Allah Almighty (Wa'l-'iyadhu billahi Ta'ala).

The fourth scenario mentioned in the question is exactly this: keeping it for blessings (tabarruk), considering it a cause for the descent of blessings, regarding it as a bridge, and making it a means of reaching the Lord Almighty. All these are the same severe and extreme major sins. Habitually, in this state, they will perform the same acts of reverence, which, if considered lawful, would necessitate a renewal of Islam (re-entering the faith).

Nas'alullaha as-salamata wa la hawla wa la quwwata illa billahil aliyyil adheem. (We ask Allah for safety of life and faith. No one has the strength to avoid sins or the power to do good except that Allah, the Possessor of Great Majesty, grants the capability. -T)

The ignorant think that the luminous Master, the Leader of the Pious, the Imam of individuals, the Granter of desires by the permission of the Generous One, the Succor of the Poles and the Pillars, our Master Ghousth-e-A'zam, may Allah be pleased with him (The leader of the Sayyids, the guide of individuals, the one who fulfills desires with the permission of the Generous Allah, the helper of the Qutbs and the Awtad, our master, the greatest helper, may Allah be pleased with him. -T) would be pleased with this action of theirs, that such reverence is being shown to his son. However, the first to be severely angry and extremely displeased by this would be the Holy Master (Ghousth-e-A'zam) himself, may Allah be pleased with him. May Allah Almighty grant guidance and steadfastness, Amen!

(Arabic) Since this hurried work came out in the form of a treatise, and its compilation was in the first half of the month of light and joy, the month of Rabi' al-Awwal 1331 AH, it was fitting that I name it...

(Urdu) A work done in a sudden hurry came into existence in the form of a treatise, while its arrangement and composition took place in the first half of the month of light and joy, i.e., the month of Rabi' al-Awwal 1331 AH; therefore, it seemed appropriate that I give it this name:

पर खड़े होना, उसे देख कर सिर झुकाना और अन्य सम्मानजनक कार्य करना—ये सब अत्यंत घृणित और निश्चित रूप से अत्यधिक हराम और गंभीर महापाप (कबीरा) हैं। यह प्रत्यक्ष मूर्तिपूजा से केवल एक कदम पीछे है। कोई भी मुसलमान इसे किसी भी स्थिति में हलाल नहीं कह सकता, चाहे वह (छवि) कितनी ही कटी-फटी, छोटी या छिपी हुई क्यों न हो। ये शर्तें तीसरी स्थिति तक थीं; जीवित प्राणियों के चित्र का जानबूझकर सम्मान करना इस्लाम में अत्यंत प्रतिबंधित है। इसमें किसी मुसलमान का कोई मतभेद नहीं है, बल्कि यह माना जाता है कि इसकी सख्त मनाही इस शुद्ध धर्म (हनफ़िया) की अनिवार्यताओं में से है। अतः इसे अच्छा समझना या केवल वैध मानना ही एक गंभीर खतरे का कारण है, और अल्लाह की पनाह (वल-इयाज़ु बिल्लाहि तआला)।

प्रश्न में वर्णित चौथी स्थिति यही है कि इसे बरकत के लिए रखना, इसे बरकत के उतरने का कारण समझना, इसे एक माध्यम मानना, और रब अज़्ज़वजल तक पहुँचने का जरिया बनाना—ये सब वही अत्यंत गंभीर महापाप हैं। और सामान्यतः इस स्थिति में वे वही सम्मानजनक कार्य करेंगे जिन्हें हलाल समझने पर इस्लाम का नवीनीकरण (तजदीद-ए-इस्लाम) आवश्यक हो जाता है।

नसअलुल्लाहा अस्सलामाता व ला हौला व ला.कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम। (हम अल्लाह से जान और ईमान की सलामती की प्रार्थना करते हैं। अल्लाह की शक्ति के बिना न कोई पाप से बचने की शक्ति है और न ही भलाई करने की सामर्थ्य, सिवाय इसके कि महान शान वाला अल्लाह तौफीक अता फरमाए। -त)

अज्ञानी लोग समझते हैं कि हुज़ूर पुरनूर, सैय्यद अल-असफिया, इमाम अल-अफ़राद, वाहिब अल-मुराद बि-इज़्निल जव्वाद, ग़ौस अल-अक़्ताब वल-औताद, सैय्यदना ग़ौस-ए-आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु (सादातों के सरदार, व्यक्तियों के मार्गदर्शक, अल्लाह सखी की अनुमति से मुरादें पूरी करने वाले, .कुत्बों और औतादों के मददगार, हमारे आक़ा, सबसे बड़े फरियादरस, अल्लाह उनसे राजी हो। -त) उनकी इस हरकत से खुश होंगे कि उनके साहबज़ादे का ऐसा सम्मान किया जा रहा है, जबकि वास्तव में सबसे पहले इस पर अत्यधिक नाराज़ होने वाले और क्रोधित होने वाले स्वयं हुज़ूर (ग़ौस-ए-आज़म) होंगे रज़ियल्लाहु अन्हु। अल्लाह तआला हिदायत और दृढ़ता प्रदान करे, आमीन!

(अरबी) चूंकि यह जल्दबाजी में किया गया कार्य एक शोध पत्र के रूप में सामने आया और इसका संकलन प्रकाश और आनंद के महीने रबी-उल-अव्वल १३३१ हिजरी के पहले पखवाड़े में हुआ, इसलिए उचित लगा कि मैं इसका यह नाम रखूँ...

(उर्दू) अचानक जल्दी में किया गया काम एक शोध पत्र (रिसाले) के रूप में अस्तित्व में आ गया, जबकि इसकी व्यवस्था और संकलन प्रकाश और आनंद के महीने यानी रबी-उल-अव्वल १३३१ हिजरी के पहले आधे भाग में हुआ, इसलिए उचित लगा कि मैं इसका यह नाम रखूँ:

پر قیام کرنا، اسے دیکھ کر سر جھکانا و غیر ذلک افعالِ تعظیم بجالانا یہ سب سے اخبث اور قطعاً یقیناً اجمالاً اشد حرام و سخت کبیرہ ملعونہ ہے اور صریح کھلی بت پرستی سے ایک ہی قدم پیچھے ہے اسے کوئی مسلمان کسی حال میں حلال نہیں کہہ سکتا اگرچہ لاکھ مقطوع یا صغیر یا مستور ہو، یہ قیدیں سب صورتِ سوم تک تھیں قصداً تعظیم تصویر ذی روح کی حرمتِ شدیدہ عظیمہ میں نہ کوئی تقیید ہے نہ کسی مسلمان کا خلاف متصور بلکہ قریب ہے کہ اس کی حرمتِ شدیدہ اس ملتِ حنیفیہ کے ضروریات سے ہو تو اس کا استحسان بلکہ صرف استقلال یعنی جائز جاننا ہی سخت امرِ عظیم کا خطرہ رکھتا ہے والعیاذ باللہ تعالٰی (اور اللہ تعالٰی کی پناہ۔ت)

صورتِ مذکورہ سوال یہی صورتِ چہارم ہے کہ اسے تبرک کے طور پر رکھنا اس کے سبب نزولِ برکت جاننا اسے برزخ ٹھہرانا رب عزوجل تک وصول کا ذریعہ بنانا یہ سب وہی سخت اشد کبیرہ ہے اور عادۃً اس حالت میں اس کے ساتھ وہی افعال تعظیم بجا لائیں گے جن کے حلال جانے پر تجدیدِ اسلام مناسب ہے۔

نسأل اللہ السلامۃ ولاحول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم۔ ہم اللہ تعالٰی سے (جان وایمان کی سلامتی کا سوال کرتے ہیں۔ گناہوں سے بچنے اور بھلائی کرنے کی کسی میں طاقت نہیں مگر یہ کہ اللہ تعالٰی بڑی شان والا توفیق عطا فرمائے۔(ت)

ناواقف سمجھتے ہیں کہ حضور پرنور سیدالاسیاء، امام الافراد، واہب المراد باذن الجواد، غوث الاقطاب والاوتاد، سیدنا غوثِ اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ (سادات کے سردار، افراد کے پیشوا، اللہ تعالٰی سخی کی اجازت سے مرادیں پوری کرنے والے، قطبوں کے فریادرس اور اوتاد کے

فریادرس، ہمارے آقا، سب سے بڑے فریاد رس، اللہ تعالٰی ان سے راضی ہوـت) ان کی اس حرکت سے خوش ہوں گے کہ ان کے صاحبزادہ کی ایسی تعظیم کی حالانکہ سب سے پہلے اس پر سخت ناراض ہونے والے سخت غضب فرمانے والے حضور اقدس ہوں گے رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ اللہ تعالٰی ہدایت واستقامت بخشے، آمین!

واذ قد خرجت العجالة في صورة رسالة وكان ترصيفها في النصف الاول من شهر النور والسرور شهر ربيع الاول ١٣٣١ھ ناسب ان اسميها

اچانک جلدی میں کیا ہوا کام ایک رسالے کی صورت میں معرضِ وجود میں آگیا جبکہ اس کی ترتیب وتالیف نور وسرور کے مہینے کے نصف اول یعنی ماہِ ربیع الاول ۱۳۳۱ھ میں ہوئی، لہٰذا مناسب معلوم ہوا کہ میں اس کا یہ نام رکھوں

Fatawa Rizwia Volume 24

[Boxed Header Content] Arabic Text: Al-Ataya al-Qadir fi Hukm al-Taswir 1331 AH. And may Allah Almighty send blessings upon our leader and master Muhammad, and his family and companions, and peace. And Allah, Glory be to Him and Exalted is He, knows best, and His knowledge, glorified be His majesty, is most complete and most wise.

Urdu Text (Translation/Explanation): Al-Ataya al-Qadir fi Hukm al-Taswir (Regarding the explanation of the ruling on photography/imagery through the countless gifts and favors of the Lord who possesses boundless power and strength. - T) And may Allah Almighty send blessings and peace upon our leader and our master, who is Muhammad the Noble (peace and blessings of Allah Almighty be upon him), and upon his family and all his companions. And Allah Almighty, the Pure and Exalted, possesses the most knowledge, and His knowledge, whose glory is great, is the most perfect and the most firm (T).

[Center Seal Content] Treatise: Al-Ataya al-Qadir fi Hukm al-Taswir has ended.

Page 643 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

[बॉक्स किया हुआ हेडर टेक्स्ट] अरबी पाठ: अल-अताया अल-क़दीर फ़ी हुक्म अत-तस्वीर १३३१ हिजरी। और अल्लाह तआला हमारे आका और मौला मुहम्मद, और उनके परिवार और साथियों पर दरूद और सलाम भेजे। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है, और उसका इल्म, जिसकी शान बुलंद है, सबसे कामिल और सबसे हिकमत वाला है।

उर्दू पाठ (अनुवाद/व्याख्या): अल-अताया अल-क़दीर फ़ी हुक्म अत-तस्वीर (असीम शक्ति और सामर्थ्य रखने वाले रब के बेशुमार अता और नवाज़िशों के साथ तस्वीर के हुक्म का बयान। - त) और अल्लाह तआला हमारे आका और हमारे मौला पर दरूद-ओ-सलाम भेजे जो मुहम्मद करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) हैं और उनकी आल (संतान) और तमाम साथियों पर। और अल्लाह तआला पाक और बरतर सबसे ज़्यादा इल्म रखता है और उसका इल्म जिसकी शान बड़ी है, सबसे कामिल और सबसे ज़्यादा पुख्ता है (त)।

[मध्य मुहर की सामग्री] रिसाला: अल-अताया अल-क़दीर फ़ी हुक्म अत-तस्वीर ख़त्म हुआ।

पृष्ठ ७२० में से ६४३

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

[باکس شدہ عبارت] عربی عبارت: بعطایاالقدیر فی حکم التصویر ۱۳۳۱ھ وصلی اللہ تعالٰی علی سیدنا ومولینا محمد واٰلہ وصحبہ وسلم واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم۔

اردو عبارت (ترجمہ و تشریح): العطایاالقدیر فی حکم التصویر (بے پایاں قوت و طاقت رکھنے والے پروردگار کے بے شمار عطیات و نوازشات سے تصویر کا حکم بیان کرنے کے بارے میں۔ ت) اور اللہ تعالٰی درود و سلام ہمارے آقا اور ہمارے مولا پر بھیجے جو کہ محمد کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ہیں اور ان کی آل اور سب ساتھیوں پر اور اللہ تعالٰی پاک وبرتر سب سے زیادہ علم رکھتا ہے اور اس کا علم کہ جس کی شان بڑی ہے سب سے زیادہ کامل اور سب سے زیادہ پختہ ہے (ت)

[مرکزی مہر کی عبارت] رسالہ: العطایا القدیر في حکم التصویر ختم ہوا

صفحہ ۶۴۳ از ۷۲۰

Fatawa Razawiyya Volume 24

Keeping Animals, Fighting Them, and Mercy & Oppression Upon Them

Problem 251: From Bilgram Sharif, Hardoi District, Muhalla Maidan Pura, sent by Hazrat Syed Ibrahim, 8 Dhu al-Qi'dah 1311 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Is it permissible to keep birds such as parrots (male and female), Lal (finches), Myna, Paddi (sparrow-like bird), and domestic roosters for entertainment, and to make them fight according to custom? Explain and be rewarded. (T)

The Answer: Making them fight is absolutely impermissible and a sin because it is causing harm to the innocent without reason. It is mentioned in an authentic Hadith: "The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forbade instigating animal fights." - Narrated by Abu Dawood and At-Tirmidhi, who graded it as Hasan Sahih, on the authority of Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both). The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) has forbidden inciting and preparing animals for fighting. Abu Dawood and Tirmidhi have narrated this and, referring to Hazrat Abdullah ibn Abbas (may Allah be pleased with him), have commended and authenticated it. (T) And keeping domestic animals such as roosters, hens, pigeons, etc., is undoubtedly permissible as long as they [are provided for]...

1 Sunan Abi Dawood, Kitab al-Jihad, Chapter on Instigating Animal Fights, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 1/346; Jami' at-Tirmidhi, Chapters on Jihad, Chapter on Instigating Animal Fights, Amin Company Delhi, 1/204.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

जानवरों का पालना, लड़ाना और उन पर रहम ओ ज़ुल्म

मसला 251: बिलग्राम शरीफ़, ज़िला हरदोई, मोहल्ला मैदान पुरा, प्रेषक हज़रत सय्यद इब्राहिम, 8 ज़िल-क़ादा 1311 हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि परिंदों को पालना जैसे तोता, तोती, लाल, मैना, पद्दि और घरेलू मुर्गे को दिल बहलाने के लिए और रस्म के मुताबिक उन्हें लड़ाना कैसा है? बयान फ़रमाएं और अज्र पाएं। (त)

अल-जवाब: लड़ाना मुतलक़न (पूरी तरह) नाजायज़ और गुनाह है क्योंकि यह बिना किसी सबब के बेगुनाह को तकलीफ देना है। हदीस-ए-सहीह में है: "नही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अनि-तहरीश बैनल बहइम।" (अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जानवरों को आपस में लड़ाने के लिए उकसाने से मना फ़रमाया है।) - इसे अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और इसे इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से हसन और सहीह करार दिया है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जानवरों को (लड़ाई के लिए) उकसाने और तैयार करने से मना फ़रमाया है। अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने इसे रिवायत किया है और हज़रत अब्दुल्ला इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के हवाले से इसकी तहसीन (सराहना) और तसहीह (पुष्टि) की है। (त) और घरेलू जानवरों जैसे मुर्गा, मुर्गी और पालतू कबूतर वगैरह को पालना बिला शुबा जायज़ है जब तक कि उन्हें...

1 सुनन अबी दाऊद, किताब अल-जिहाद, बाब फ़ी अल-तहरीश बैन अल-बहइम, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 1/346; जामिअ अत-तिर्मिज़ी, अबवाब अल-जिहाद, बाब फ़ी अल-तहरीश बैन अल-बहइम, अमीन कंपनी दिल्ली 1/204।

جانوروں کا پالنا، لڑانا اور ان پر رحم و ظلم

مسئلہ ۲۵۱: از بلگرام شریف ضلع ہردوئی محلہ میدان پورہ مرسلہ حضرت سید ابراہیم ۸ ذیقعدہ ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ پالنا طیور جیسے طوطا، طوطی، لال، مینا، پدی و خروس خانگی کا بغرض جی لگنے کے اور لڑوانا ان کا علی الرسم کیسا ہے؟ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائیے۔ت) الجواب: لڑانا مطلقاً ناجائز و گناہ ہے کہ بے سبب ایذائے بیگناہ ہے حدیث صحیح میں ہے: نہی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم عن التحریش بین البھائم۔رواہ ابوداؤد والترمذی وحسنہ وصححہ عن ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنھما۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے جانوروں کو (لڑائی پر) اکسانے اور آمادہ کرنے سے منع فرمایا ہے، ابوداؤد اور ترمذی نے اس کو روایت کیا ہے اور حضرت عبداللہ ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما کے حوالے سے اس کی تحسین و تصحیح فرمائی۔ (ت) اور جانوران خانگی مثل خروس و ماکیان و کبوتر اہلی و غیرہا کا پالنا بلا شبہ جائز ہے جبکہ انہیں...

1 سنن ابی داؤد کتاب الجہاد باب فی التحریش بین البھائم آفتاب عالم پریس لاہور ۱ / ۳۴۶، جامع الترمذی ابواب الجہاد باب فی التحریش بین البھائم امین کمپنی دہلی ۱ / ۲۰۴

Volume 24 Fatawa Razawiyya

Protect it from harm and take proper care of its food and water. There is an encouragement in the Hadith itself for keeping a white rooster:

[Table Start] [Left Column - Arabic] Al-Bayhaqi narrated from Ibn Umar (may Allah be pleased with them both) that he said: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "The rooster calls for prayer. Whoever keeps a white rooster is protected from three evils: (1) the evil of Satan, (2) the evil of a sorcerer, and (3) the evil of a soothsayer." In this regard, there is a narration from Abu Zaid al-Ansari mentioned by Al-Harith in his Musnad. There is a narration from Anas bin Malik mentioned by Abu Al-Sheikh in 'Al-Azmah'. And from Khalid bin Ma'dan, it is narrated as a 'mursal' hadith (without a complete chain) by Imam Al-Baghawi in 'Al-Mu'jam'. According to Al-Harith and other Imams, it is narrated from the Mother of the Believers, Aisha Siddiqa (may Allah be pleased with her), and from Anas (may Allah be pleased with him).

[Right Column - Urdu Translation] Imam Bayhaqi narrated from Hazrat Abdullah ibn Umar (may Allah be pleased with them both). He said that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) stated: "The rooster calls for prayer. Whoever keeps a white rooster is protected from three calamities: (1) from the evil of Satan, (2) from the evil of a sorcerer, and (3) from the evil of a soothsayer." On this subject, there is a narration from Hazrat Abu Zaid al-Ansari which Harith mentioned in his chain of transmission. There is a narration from Hazrat Anas bin Malik which Abu al-Sheikh mentioned in 'Al-Azmah'. And there is a 'mursal' narration (i.e., without mentioning the chain) from Khalid bin Ma'dan which Imam Baghawi mentioned in 'Al-Mu'jam'. And according to Harith and other Imams, it is narrated from the Mother of the Believers, Hazrat Aisha Siddiqa (may Allah be pleased with her), and from Hazrat Anas (may Allah be pleased with him). (T) [Table End]

However, there is a strong emphasis on care, that water should be offered seventy times a day as mentioned in the Hadith (T), otherwise keeping it and leaving it hungry and thirsty is a severe sin.

[Table Start] [Left Column - Arabic] For it is oppression, and oppression of an animal is more severe than oppression of a Dhimmi (non-Muslim citizen), which in turn is more severe than oppression of a Muslim, as stated in Al-Durr al-Mukhtar. And the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "It is enough of a sin for a person to neglect those..."

[Right Column - Urdu Translation] Because this is oppression, and oppressing any animal is more severe than oppressing a Dhimmi (non-Muslim citizen), which is even more severe than oppressing a Muslim, as has been clarified in Durr al-Mukhtar. And the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) stated: "It is sufficient as a sin for a person to [neglect] the one whose sustenance..." [Table End]

1. Kanz al-Ummal from Ibn Umar (may Allah be pleased with them), Hadith 35278, Mu'assasatu al-Risalah, Beirut 12/332.
2. Al-Durr al-Mukhtar, Book of Prohibition and Permission, Chapter on Sale, Matba Mujtabai, Delhi 2/249.

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

इसे नुकसान से बचाएं और इसके दाने और पानी की पर्याप्त देखभाल करें। हदीस में सफेद मुर्गा पालने के लिए खुद प्रोत्साहन दिया गया है:

[टेबल शुरू] [बायां कॉलम - अरबी] अल-बैहाकी ने इब्न उमर (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से रिवायत की है कि उन्होंने कहा: अल्लाह के रसूल (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बरसाए) ने फरमाया: "मुर्गा नमाज़ के लिए अज़ान देता है। जिसने सफेद मुर्गा पाला, वह तीन बुराइयों से सुरक्षित हो गया: (1) शैतान के शर से, (2) जादूगर के शर से, और (3) ज्योतिषी के शर से।" इस विषय में हज़रत अबू ज़ैद अल-अंसारी से रिवायत है जिसे अल-हारिस ने अपनी सनद में ज़िक्र किया है। हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत है जिसे अबू अल-शेख ने 'अल-अज़मत' में बयान किया है। और खालिद बिन मादान से मुरसल (यानी सनद के ज़िक्र के बिना) रिवायत है जिसे इमाम बग़वी ने 'अल-मुअजम' में ज़िक्र किया है। और हारिस और अन्य इमामों के अनुसार, यह उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) और हज़रत अनस (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रिवायत है।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद] इमाम बैहाकी ने हज़रत अब्दुल्ला इब्न उमर (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से रिवायत की है। उन्होंने कहा कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इरशाद फरमाया: "मुर्गा नमाज़ के लिए अज़ान देता है। जिस किसी ने सफेद मुर्गा पाला, वह तीन आफ़तों से सुरक्षित हो गया: (1) शैतान के शर से, (2) जादूगर के शर से, और (3) काहिन (ज्योतिषी) के शर से।" इस बाब (अध्याय) में हज़रत अबू ज़ैद अंसारी से रिवायत है जो हारिस ने अपनी सनद में ज़िक्र की है। हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत है जो अबू अल-शेख ने 'अल-अज़मत' में बयान फरमाई। और खालिद बिन मादान से मुरसलन (यानी सनद के ज़िक्र के बिना) रिवायत है जो इमाम बग़वी ने 'अल-मुअजम' में ज़िक्र फरमाई। और हारिस और अन्य इमामों के नज़दीक उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) और हज़रत अनस (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रिवायत है। (त) [टेबल खत्म]

लेकिन देखभाल की इतनी ताकीद (ज़ोर) है कि दिन में सत्तर बार पानी दिखाया जाए जैसा कि हदीस में आया है (त), वरना इसे पालना और भूखा-प्यासा रखना सख्त गुनाह है।

[टेबल शुरू] [बायां कॉलम - अरबी] क्योंकि यह ज़ुल्म है, और जानवर पर ज़ुल्म करना धिम्मी (गैर-मुस्लिम नागरिक) पर ज़ुल्म करने से ज़्यादा सख्त है, जो कि मुस्लिम पर ज़ुल्म करने से भी ज़्यादा सख्त है, जैसा कि अल-दुर्र अल-मुख्तार में स्पष्ट किया गया है। और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "इंसान के गुनाह के लिए यही काफी है कि वह उन्हें बर्बाद कर दे जिनकी..."

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद] क्योंकि यह ज़ुल्म है और किसी जानवर पर ज़ुल्म करना धिम्मी (काफिर) पर ज़ुल्म करने से ज़्यादा सख्त है जो कि मुसलमान पर ज़ुल्म करने से भी ज़्यादा सख्त है, जैसा कि दर्रे मुख्तार में इसकी तशरीह फरमाई गई है। और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इरशाद फरमाया: इंसान के गुनाह के लिए यही काफी है कि वह उसे बर्बाद कर दे जिसकी रोज़ी..." [टेबल खत्म]

1. कंज़ अल-उम्माल इब्न उमर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से, हदीस 35278, मुअस्ससतुल रिसाला बेरूत 12/332।
2. अल-दुर्र अल-मुख्तार, किताबुल हज़र वल इबाहत, फस्ल फिल बैय, मतबा मुज्तबाई दिल्ली 2/249।

पृष्ठ 720 का 645

ایذاء سے بچائے اور آب و دانہ کی کافی خبر گیری رکھے، خود حدیث میں مرغ سپید پالنے کی ترغیب ہے:

[Left Column - Arabic] [Table Start] البیهقي عن ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما قال قال رسول اللہ تعالیٰ علیہ وسلم الدیك یؤذن بالصلوۃ من اتخذ دیکاً ابیض حفظ من ثلثۃ من شر شیطان وساحر وکاهن ۱ وفي الباب عن ابی زید الانصاری عند الحارث فی مسنده وعن انس بن مالك عند ابی الشیخ فی العظمۃ وعن خالد بن معد ان مرسلا عند البغوی فی المعجم وعن ام المؤمنین وعن انس عند الحارث وعن غیرهم رضی اللہ تعالیٰ عنهم۔

[Right Column - Urdu Translation] امام بیہقی نے حضرت عبداللہ ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی ہے انہوں نے فرمایا کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا مرغ نماز کے لئے اذان دیتا ہے جس کسی نے سفید مرغ پالا وہ تین آفتوں سے محفوظ ہوگیا (۱) شیطان کے شر سے (۲) جادوگر کے شر سے (۳) کاہن کے شر سے۔ اس باب میں حضرت ابوزید انصاری سے روایت ہے جو حارث نے اپنی سند میں ذکر کی ہے۔ حضرت انس بن مالک سے روایت ہے جو ابوالشیخ نے العظمۃ میں بیان فرمائی اور خالد بن معدان سے مرسلاً (یعنی سند کے ذکر کے بغیر) روایت ہے جو امام بغوی نے المعجم میں ذکر فرمائی۔ اور حارث اور دوسرے ائمہ کے نزدیک ام المؤمنین حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا اور حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے۔(ت) [Table End]

مگر خبر گیری کی یہ تاکید ہے کہ دن میں ستر دفعہ پانی دکھائے کما ورد فی الحدیث (جیسا کہ حدیث میں وارد ہوا ہے۔ ت) ورنہ پالنا اور بھوکا پیاسا رکھنا سخت گناہ ہے،

[Left Column - Arabic] [Table Start] فانه ظلم والظلم على الحيوان اشد من الظلم على الذمى الاشد من الظلم على سلم كما نص عليه في الدر المختار ۲-وقد قال رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه و سلم كفى بالمرء اثماً ان يضيع من

[Right Column - Urdu Translation] کیونکہ یہ ظلم ہے اور کسی جانور پر ظلم کرنا ذمی (کافر) پر ظلم کرنے سے زیادہ سخت ہے جو کہ مسلمان پر ظلم کرنے سے بھی زیادہ سخت ہے، جیسا کہ در مختار میں اس کی تصریح فرمائی گئی ہے۔ اور رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا انسان کے گناہ کے لئے یہی کافی ہے کہ جس کی روزی کا [Table End]

۱ کنز العمال عن ابن عمر رضی اللہ عنہما حدیث ۳۵۲۷۸ مؤسسة الرساله بیروت ۱۲/ ۳۳۲ ۲ الدر المختار کتاب الحظر والاباحة فصل فی البیع مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۲۴۹

[Arabic Box 1]: يقوت ، رواه الامام احمد وابوداؤد والنسائي والحاكم والبيهقي عن عبدالله بن عمر رضي الله تعالى عنهما بسند صحيح - [Urdu Translation]: He is responsible if he wastes it. Imam Ahmad, Abu Dawood, Nasai, Hakim, and Bayhaqi have narrated this with an authentic chain from Hazrat Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them). (T)

As for keeping wild animals like parrots, mynas, munias, nightingales, etc., it is cited from 'Al-Quniya' in 'Al-Alamgiri' that it is prohibited even if one does not fail in providing water and grain.

[Arabic Box 2]: حيث قال حبس بلبلا في قفس وعلفها لا يجوز كذا في القنية - [Urdu Translation]: As the author of 'Al-Quniya' said, if someone imprisoned a nightingale in a cage, even if he provides it with water and food, it is not permissible; it is mentioned thus in 'Al-Quniya'. (T)

However, a clear text of an authentic Hadith and the statements of leading scholars through scrutiny and analysis make the answer and permissibility evident, provided that the aforementioned care is sufficiently provided. And Allah knows best.

Problem 252: What do the scholars of the religion say on the matter of whether killing a snake is permissible or not? Clarify and be rewarded. (T)

Answer: Killing a snake is recommended (Mustahab), and the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) commanded its killing, to the extent that its killing is allowed even in the Haram (sacred precincts) and for a person in Ihram (pilgrim). For one who leaves it out of fear, the words 'He is not of me' (meaning he has no relation to me, i.e., my way. T) appear in the Hadith.

[Arabic Box 3]: في صحيح البخاري قال عبدالله بيننا نحن مع رسول الله تعالى عليه [Urdu Translation]: It is in Bukhari Sharif that Hazrat Abdullah bin Masood said: Once we were with the Holy Prophet (peace and blessings be upon him)...

Footnotes: 1. Sunan Abi Dawood, Kitab az-Zakat, Chapter on Maintaining Family Ties, Aftab-e-Alam Press Lahore, 1/238; Musnad Ahmad bin Hanbal from Abdullah bin Amr (RA), Al-Maktab al-Islami Beirut, 2/160, 193 & 195. 2. Fatawa Hindiyya, Kitab al-Karahiya, Chapter 30 on Miscellaneous Matters, Noorani Kutub Khana Peshawar, 5/381. 3. Sunan Abi Dawood, Kitab al-Adab, Chapter on Killing Snakes, Aftab-e-Alam Press Lahore, 2/356.

फ़तावा रज़विया | खंड 24

[अरबी बॉक्स 1]: يقوت ، رواه الامام احمد وابوداؤد والنسائي والحاكم والبيهقي عن عبدالله بن عمر رضي الله تعالى عنهما بسند صحيح - [उर्दू अनुवाद]: वह ज़िम्मेदार है अगर वह उसे जाया कर दे। इमाम अहमद, अबू दाऊद, नसाई, हाकिम और बैहक़ी ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से सही सनद के साथ इसकी रिवायत की है। (त)

जहाँ तक जंगली जानवरों जैसे तोता, मैना, लाल, बुलबुल आदि को पालने का सवाल है, आलमगीरी में 'कुनिया' से इसकी मनाही नक़ल की गई है, चाहे दाना-पानी देने में कोताही न की जाए।

[अरबी बॉक्स 2]: حيث قال حبس بلبلا في قفس وعلفها لا يجوز كذا في القنية - [उर्दू अनुवाद]: जैसा कि साहिबे कुनिया ने कहा कि किसी ने बुलबुल पिंजरे में क़ैद की हो और अगर उसे दाना-पानी दे तब भी जायज़ नहीं, कुनिया में इसी तरह ज़िक्र है (त)

मगर स्पष्ट हदीस और अहम्मा के कथनों की जाँच और शोध से साफ़ जवाब और अनुमति का पता चलता है, बशर्ते कि उक्त देखभाल पर्याप्त रूप से की जाए। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

मसला 252: दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि साँप को मारना जायज़ है या नहीं? बयान फ़रमाएं, सवाब पाएं। (त)

जवाब: साँप को मारना मुस्तहब (पसंदीदा) है, और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने उसे मारने का हुक्म दिया है, यहाँ तक कि उसे हरम में और एहराम की हालत में भी मारने की इजाज़त है। और जो डर की वजह से उसे छोड़ दे, उसके लिए हदीस में 'लैसा मिन्नी' (वह मुझमें से नहीं है यानी मेरे तरीक़े से उसका कोई ताल्लुक नहीं। त) के शब्द आए हैं।

[अरबी बॉक्स 3]: في صحيح البخاري قال عبدالله بينا نحن مع رسول الله تعالى عليه [उर्दू अनुवाद]: बुखारी शरीफ़ में है कि हज़रत अब्दुल्लाह bin मसऊद ने फ़रमाया कि हम एक बार हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के..

फ़ुटनोट्स: 1. सुनन अबी दाऊद, किताब अज़-ज़कात, अध्याय सिला-ए-रहम, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 1/238; मसनद अहमद bin हंबल, अब्दुल्लाह bin अम्र (रज़ि.) से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत, 2/160, 193 और 195। 2. फ़तावा हिन्दिया, किताब अल-कराहिया, अध्याय 30

(विविध), नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 5/381। 3. सुनन अबी दाऊद, किताब अल-अदब, साँप मारने के बारे में अध्याय, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 2/356।

[Arabic Box 1]: يقوت ، رواه الامام احمد وابوداؤد والنسائي والحاكم والبيهقي عن عبدالله بن عمر رضي الله تعالى عنهما بسند صحيح - [Urdu Translation]: وہ ذمہ دار ہو اس کو ضائع کر دے۔ امام احمد، ابو داؤد، نسائی، حاکم اور بیہقی نے صحت سند کے ساتھ حضرت عبد اللہ ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے اس کی روایت فرمائی۔ (ت)

رہا جانور ان وحشی کا پالنا جیسے طوطی، مینا، لال، بلبل وغیرہا، عالمگیری میں قنیہ سے اس کی ممانعت نقل کی اگرچہ آب ودانہ میں تقصیر نہ کرے،

[Arabic Box 2]: حيث قال حبس بلبلا في قفس وعلفها لا يجوز كذا في القنية - [Urdu Translation]: جیسا کہ صاحب قنیہ نے کہا کہ کسی نے بلبل پنجرے میں قید کیا ہو اور اگر اسے آب و دانہ دے تب بھی جائز نہیں، القنیہ میں اسی طرح مذکور ہے (ت)

مگر نص صریح حدیث صحیح و اقوال ائمہ نقد و تنقیح سے صاف جواب و اباحت مستفاد ہے جبکہ خبر گیری مذکور بروجہ کافی بجا لائے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۵۲: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ قتل کرنا سانپ کا جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائیے ۔ ت)

الجواب: قتل سانپ کا مستحب ہے، اور رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اس کے قتل کا حکم کیا ہے یہاں تک کہ اس کے قتل کی حرم میں اور محرم کو بھی اجازت ہے اور جو خوف سے چھوڑ دے اس کے لئے لفظ لیس مني (وہ شخص مجھ سے یعنی میرے طریقے سے اسے کوئی تعلق نہیں۔ ت) حدیث میں وارد،

[Arabic Box 3]: في صحيح البخاري قال عبدالله بيننا نحن مع رسول الله تعالى عليه [Urdu Translation]: بخاری شریف میں ہے کہ حضرت عبد اللہ بن مسعود نے فرمایا کہ ہم ایک دفعہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام کے

حواشی: 1. سنن ابی داؤد کتاب الزکوۃ باب صلۃ الرحم آفتاب عالم پریس لاہور ۲۳۸/۱، مسند احمد بن حنبل عن عبد اللہ بن عمر و رضی اللہ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۱۶۰/۲ و ۱۹۳ و ۱۹۵ 2. فتاوی ہندیہ کتاب الکراہیۃ الباب الثلاثون فی المتفرقات نورانی کتب خانہ پشاور ۳۸۱/۵ 3. سنن ابی داؤد کتاب الادب باب فی قتل الحیات آفتاب عالم پریس لاہور ۳۵۶/۲

Fatawa Razawiyya Volume 24

[...with him] in a cave when Surah Al-Mursalat was revealed to him. We received it from his mouth while his mouth was still moist with it. Then a snake came out, and the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Kill it." He said: We rushed towards it, but it outpaced us. Then he said: "It has been saved from your harm as you have been saved from its harm."1 We were together in the cave when Surah Al-Mursalat was revealed to you, and we received it from your blessed mouth at that very time while your blessed mouth was fresh with it. Then suddenly a snake appeared there, so the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) commanded: "Kill it." We were very quick in trying to kill it, but it escaped by outpacing us. On this, you said: "It has been saved from your harm, and you have been saved from its harm." (T)

And similar to it, Muslim and Nasa'i have narrated: In Sahih Muslim, a man asked Ibn Umar what animals a man may kill while in the state of Ihram. He said: One of the wives of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) narrated to me that he used to order the killing of the rabid dog, the mouse, the scorpion, the kite, the crow, and the snake. He said: And in prayer as well.2 In Sunan an-Nasa'i, from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), he said: Five things the Muhrim (person in Ihram) kills: the snake and... It is in Sahih Muslim Sharif that a man was asking Hazrat Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with him) that when a person is in the state of Ihram, which animals can he kill? You said that one of the Mothers of the Believers told me that the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) ordered the killing of certain animals while in the state of Ihram, and those certain ones are: (1) Biting dog, (2) Mouse, (3) Scorpion, (4) Kite (bird), (5) Crow, (6) Snake. You used to command to kill all of them and said: Even in prayer, the same ruling applies to them. It is in Sunan an-Nasa'i that the Holy Prophet (peace and blessings be upon him)...

1 Sahih al-Bukhari, Kitab Abwab al-Umrah, Chapter: What the Muhrim kills of animals, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/277; Sahih al-Bukhari, Bad' al-Khalq, Chapter: Five of the animals, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/764; Sahih al-Bukhari, Kitab al-Tafsir Surah 77, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/352-734. 2 Sahih Muslim, Kitab al-Hajj, Chapter: What is recommended for the Muhrim, etc., Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/382.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[...उनके साथ] गुफ़ा में थे जब उन पर सूरह अल-मुर्सलात नाज़िल हुई और हमने उसे उनके मुँह से उसी वक़्त हासिल किया जबकि उनका मुँह उससे नम था। और एक साँप निकला तो अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "इसे मार डालो।" रावी ने कहा: हम उसे मारने की तरफ़ लपके लेकिन वह हमसे आगे निकल गया। फिर आपने फ़रमाया: "वह तुम्हारे शर (नुकसान) से बच गया जैसे तुम उसके शर से बच गए।"1 साथ गुफ़ा में थे जबकि आप पर सूरह मुर्सलात नाज़िल हुई और हमने उसी वक़्त आपके मुँह मुबारक से इसे हासिल किया जबकि आपका मुबारक दहन (मुँह) उससे तरो-ताज़ा था, फिर अचानक वहाँ एक साँप निकला तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया: इसे मार डालो। हमने उसके मारने में बड़ी जल्दी की लेकिन वह हमसे सबक़त (बढ़त) करते हुए भाग गया। इस पर आपने यह इरशाद फ़रमाया: वह तुम्हारे शर से बच गया और तुम उसके शर से बच गए। (त)

और इसी तरह मुस्लिम और नसाई ने रिवायत किया है: सहीह मुस्लिम में है, एक आदमी ने इब्न उमर से पूछा कि आदमी एहराम की हालत में कौन से जानवर मार सकता है। उन्होंने कहा: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की अज़वाज (पत्नियों) में से एक ने मुझे बताया कि आप काटने वाले कुत्ते, चूहे, बिच्छू चील, कौवे और साँप को मारने का हुक्म देते थे। उन्होंने कहा: और नमाज़ में भी।2 और सुनन नसाई में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत है कि आपने फ़रमाया: पाँच चीजें हैं जिन्हें एहराम वाला मार देता है: साँप और... सहीह मुस्लिम शरीफ़ में है कि एक आदमी हज़रत अब्दुल्लाह इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से पूछ रहा था कि जब कोई आदमी हालत-ए-एहराम में हो तो वह कौन-कौन से जानवर मार सकता है? आपने फ़रमाया कि उम्माहातुल मोमिनीन में से एक बीबी साहिबा ने मुझसे इरशाद फ़रमाया कि हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने हालत-ए-एहराम में बाज़ जानवरों को मार डालने का हुक्म फ़रमाया और वे बाज़ ये हैं: (1) काटने वाला कुत्ता, (2) चूहा, (3) बिच्छू (4) चील, (5) कौवा, (6) साँप। इन सब को मार डालने का आप हुक्म फ़रमाया करते थे और फ़रमाया: नमाज़ में भी उनके बारे में यही हुक्म है। सुनन नसाई में है कि हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम...

1 सहीह अल-बुख़ारी किताब अबवाब अल-उमरा बाब मा यक़तुल अल-मुहरिम मिन अद-दवाब, क़दीमी कुतुब खाना कराची 1/277, सहीह अल-बुख़ारी बद' अल-खल्क़ बाब खम्सुन मिन अद-दवाब, क़दीमी कुतुब खाना कराची 1/764, सहीह अल-बुख़ारी किताब अत-तफ़सीर सूरह 77,

क़दीमी कुतुब खाना कराची 2/352-734 2 सहीह मुस्लिम किताब अल-हज्ज बाब मा युन्दबु लिल मुहरिम अलख, क़दीमी कुतुब खाना कराची 1/382

وسلم فی غار اذ نزلت علیه والمرسلات فالتلقیناها من فیه وان فاه لرطب بها وخرجت حیة فقال رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیه وسلم اقتلوها قال فابتدرناها فسبقتنا قال فقال وقیت شرکم کما وقیتم شرها1۔ ساتھ غار میں تھے جبکہ آپ پر سورہ مرسلات نازل ہوئی اور ہم نے اسی وقت آپ کے منہ مبارک سے اسے حاصل کیا جبکہ آپ کا مبارک دہن اس سے تر و تازہ تھا، پھر اچانک وہاں ایک سانپ نکلا تو حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا اسے مار ڈالو۔ ہم نے اس کے مارنے میں بڑی جلدی کی لیکن وہ ہم سے سبقت کرتے ہوئے بھاگ گیا۔ اس پر آپ نے یہ ارشاد فرمایا وہ تمہارے شر سے بچ گیا اور تم اس کے شر سے بچ گئے۔ (ت)

اور اسی کے مثل مسلم و نسائی نے روایت کیا: وفی صحیح مسلم، سأل رجل ابن عمر ما یقتل الرجل من الدواب وھو محرم قال حدثنی احدی نسوة النبی صلی اللہ تعالی علیه وسلم انه کان یامر بقتل الکلب العقور والفأرة والعقرب والحدیا والغراب والحیة قال وفی الصلوة ایضا2۔ وفی سنن النسائی عن النبی صلی اللہ تعالی علیه وسلم قال خمس یقتلهن محرم، الحیّة و صحیح مسلم شریف میں ہے کہ ایک آدمی حضرت عبداللہ ابن عمر سے پوچھ رہا تھا کہ جب کوئی آدمی حالت احرام میں ہو تو وہ کون کون سے جانور مار سکتا ہے؟ آپ نے فرمایا کہ امہات المومنین میں سے ایک بی بی صاحبہ نے مجھ سے ارشاد فرمایا کہ حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے بحالت احرام بعض جانوروں کو مار ڈالنے کا حکم فرمایا اور وہ بعض یہ ہیں: (۱) کاٹنے والا کتا (۲) چوہا (۳) بچھو (۴) چیل (۵) کوا (۶) سانپ۔ ان سب کو مار ڈالنے کا آپ حکم فرمایا کرتے تھے اور فرمایا: نماز میں بھی ان کے بارے میں یہی حکم ہے۔ سنن نسائی میں ہے کہ حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام

1 صحیح البخاری کتاب ابواب العمرة باب مایقتل المحرم من الدواب قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۲۷۷، صحیح البخاری بدأ الخلق باب خمس من الدواب قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۷۶۴، صحیح البخاری کتاب التفسیر سورة ۷۷ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۳۵۲-۷۳۴ 2 صحیح مسلم کتاب الحج باب ماینبد للمحرم الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۳۸۲

Fatawa Rizvia, Volume 24

[Arabic Text Block]: ...and the mouse, the kite, the spotted crow, and the biting dog [1]. And in Sunan Abi Dawud, from Abu Hurairah, that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: Five animals whose killing is permissible in the Haram (sacred sanctuary): the snake, the scorpion, the kite, the mouse, and the biting dog [2]. And in Sahih Muslim, that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) commanded a person in Ihram to kill a snake [3]. Meaning, and in Sunan Abi Dawud, from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), he said: Kill all snakes; whoever fears their revenge is not from me [4].

[Urdu Translation Block]: It is narrated from him that he said: There are five animals that a person in Ihram can kill: (1) snake (2) mouse (3) kite (4) black and white spotted crow (5) biting dog. In Sunan Abu Dawud, it is narrated from the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that he said: There are five animals that are lawful and permissible to kill even within the boundaries of the Haram: (1) snake (2) scorpion (3) kite (4) mouse (5) biting dog. In Sahih Muslim, it is stated that the Prophet (peace and blessings be upon him) ordered a person in Ihram to kill a snake in Mina. Also, in Sunan Abi Dawud, it is narrated from the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that he said: Kill all snakes, then whoever fears the demand for their blood (revenge) is not from me. (T)

[Bottom Section]: But killing that snake which is white in color and moves straight, i.e., does not curve while moving, is prohibited before warning. In Sunan Abi Dawud, from the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him): Kill all snakes except the white jin-snake which is like a silver rod [5]. And Az-Zayla'i narrated from him (peace and blessings of Allah be upon him): Kill...

In Sunan Abu Dawud, it is narrated from the Holy Prophet (peace and blessings be upon him): Kill all types of snakes except that white snake which appears as if it is a silver rod. Imam Zayla'i narrated from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that...

Footnotes: 1. Sunan al-Nasa'i, Book of Hajj, Chapter: Animals a person in Ihram may kill, Nur Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi, 25/2 2. Sunan Abi Dawud, Book of Rituals, Chapter: Animals a person in Ihram may kill, Aftab-e-Alam Press Lahore, 25/2 3. Sahih Muslim, Book of Killing Snakes, Qadimi Kutub Khana Karachi, 235/2 4. Sunan Abi Dawud, Book of Etiquette, Chapter on Killing Snakes, Aftab-e-Alam Press

Lahore, 356/2 5. Sunan Abi Dawud, Book of Etiquette, Chapter on Killing Snakes, Aftab-e-Alam Press Lahore, 357/2

फतावा-ए-रज़विया, जिल्द 24

[अरबी पाठ ब्लॉक]: ...और चूहा, चील, चितकबरा कौआ और काटने वाला कुत्ता [1]। और सुनन अबी दाऊद में अबू हुरैरा से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: पांच (जानवर) जिनका हरम में मारना हलाल है: सांप, बिच्छू चील, चूहा और काटने वाला कुत्ता [2]। और सहीह मुस्लिम में है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एक मुहरिम (इहराम की स्थिति में व्यक्ति) को सांप मारने का हुक्म दिया [3]। मतलब यह कि, और सुनन अबी दाऊद में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत है, उन्होंने फरमाया: सभी सांपों को मार डालो; जो कोई उनके प्रतिशोध से डरता है, वह मुझसे नहीं है [4]।

[उर्दू अनुवाद ब्लॉक]: उनसे रिवायत है कि आपने इरशाद फरमाया कि पांच जानवर ऐसे हैं कि उन्हें मुहरिम मार सकता है: (1) सांप (2) चूहा (3) चील (4) काला और सफेद निशान वाला कौआ (5) काटने वाला कुत्ता। सुनन अबू दाऊद में हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत है कि आपने इरशाद फरमाया कि पांच जानवर ऐसे हैं जिन्हें हुदूद-ए-हरम में भी मार डालना हलाल और जायज़ है: (1) सांप (2) बिच्छू(3) चील (4) चूहा (5) काट खाने वाला कुत्ता। सहीह मुस्लिम में है कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने मुहरिम को मिना में सांप मार डालने का हुक्म फरमाया। साथ ही सुनन अबी दाऊद में हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत है कि आपने इरशाद फरमाया कि तमाम सांपों को मार डालो, फिर जो कोई उनके खून के मुतालबे (बदले) से खौफ खाए वह मुझ से नहीं। (त)

[निचला भाग]: लेकिन उस सांप का मारना जो सफेद रंग का हो और सीधा चलता हो, यानी चलने में बल नहीं खाता, चेतावनी देने से पहले मना है। सुनन अबी दाऊद में अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से: तमाम सांपों को मार डालो सिवाय उस सफेद जिन्न-सांप के जो चांदी की छड़ी की तरह हो [5]। और ज़ैलई ने उनसे (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) रिवायत किया है: मारो...

सुनन अबू दाऊद में हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम से रिवायत है कि तमाम किस्म के सांप मार डालो मगर वह सफेद सांप जो इस तरह नज़र आए कि गोया वह चांदी की छड़ी है। इमाम ज़ैलई ने आनहज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत की है कि...

पादलेख: 1. सुनन अल-नसाई, किताब अल-हज, बाब: मुहरिम किन जानवरों को मार सकता है, नूर मुहम्मद कारखाना तिज़ारत कुतुब कराची, 25/2 2. सुनन अबी दाऊद, किताब अल-मनासिक, बाब:

मुहरिम किन जानवरों को मार सकता है, आफताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 25/2 3. सहीह मुस्लिम, किताब कत्ल अल-हयात, कदीमी कुतुब खाना कराची, 235/2 4. सुनन अबी दाऊद, किताब अल-अदब, बाब: सांपों को मारने के बारे में, आफताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 356/2 5. सुनन अबी दाऊद, किताब अल-अदब, बाब: सांपों को मारने के बारे में, आफताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 357/2

والفارة والحدأة والغراب الابقع والكلب العقور ١ وفي سنن ابی داؤد عن ابی هريرة ان رسول الله صلی الله تعالٰی علیه وسلم قال خمس قتلهن حلال في الحرم الحية والعقرب واحداءة والفارة والكلب العقور ٢ وفي صحيح مسلم ان رسول الله صلی الله تعالٰی علیه وسلم امر محرماً بقتل حية ٣ بمعنیٰ وفی سنن ابی داؤد عن النبی صلی الله تعالٰی علیه وسلم قال اقتلوا الحيات كلهن فمن خاف ثأرهن فليس منی ٤۔

سے روایت ہے کہ آپ نے ارشاد فرمایا کہ پانچ جانور ایسے ہیں کہ انہیں محرم مار سکتا ہے : (۱) سانپ (۲) چوہا (۳) چیل (۴) سیاہ و سفید نشان والا کوا (۵) کاٹنے والا کتا۔ سنن ابو داؤد میں حضور اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے روایت ہے آپ نے ارشاد فرمایا کہ پانچ جانور ایسے ہیں کہ انہیں حدود حرم میں بھی مار ڈالنا حلال اور جائز ہے : (۱) سانپ (۲) بچھو (۳) چیل (۴) چوہا (۵) کاٹ کھانے والا کتا۔ صحیح مسلم میں ہے کہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے محرم کو منیٰ میں سانپ مار ڈالنے کا حکم فرمایا نیز سنن ابی داؤد میں حضور اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے روایت ہے کہ آپ نے ارشاد فرمایا کہ تمام سانپوں کو مار ڈالو پھر جو کوئی ان کے خون کے مطالبے سے خوف کھائے وہ مجھ سے نہیں۔ (ت)

لیکن قتل اسی سانپ کا کہ سپید رنگ ہے اور سیدھا چلتا ہے یعنی چلنے میں بل نہیں کھاتا قبل انداز و تحذیر کے ممنوع ہے، فی سنن ابی داؤد عن رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ و سلم : اقتلوا الحیات کلھا الا الجان الابیض الذی کانہ قضیب فضۃ ٥ وروی الزیلعی عنہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم اقتلوا

سنن ابو داؤد میں حضور علیہ الصلوۃ والسلام سے روایت ہے کہ تمام قسم کے سانپ مار ڈالو مگر وہ سفید سانپ جو اس طرح نظر آئے کہ گویا وہ چاندی کی چھڑی ہے۔ امام زیلعی نے آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے روایت کی ہے کہ

حواشی: 1 سنن النسائی کتاب الحج باب یقتل المحرم من الدواب نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ۲۵/۲ 2 سنن ابی داؤد کتاب المناسک باب یقتل المحرم من الدواب آفتاب عالم پریس لاہور ۲۵/۲ 3 صحیح مسلم کتاب قتل الحیات قدیمی کتب خانہ کراچی ۲۳۵/۲ 4 سنن ابی داؤد کتاب الادب باب فی قتل الحیات آفتاب عالم پریس لاہور ۳۵۶/۲ 5 سنن ابی داؤد کتاب الادب باب فی قتل الحیات آفتاب عالم پریس لاہور ۳۵۷/۲

Fatawa Rizvia, Volume 24

[Arabic Column]: 'Dhu at-Tufyatain' (the one with two stripes) and 'al-Abtar' (the short-tailed), and beware of the white snake, for it is from the Jinn. [1] And in at-Tirmidhi, it is said that Abdullah bin al-Mubarak said: "It is only disliked to kill snakes that are thin, as if they are silver, and do not twist while walking." [2]

And similarly, those snakes that live in the houses of Medina should not be killed without warning and cautioning, except for 'Dhu at-Tufyatain' which has two white lines on its back and 'al-Abtar' which is a type of bluish-colored, short-tailed snake. The characteristic of these two types of snakes is that if their gaze falls on someone's eye, they become blind, and if a pregnant woman sees them, her pregnancy will be aborted. If such snakes live even in the houses of Medina Tayyiba, then killing them without warning is permissible.

[Arabic Column]: In Sahih Muslim, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Verily, in Medina, there is a group of Jinn who have accepted Islam. So whoever sees any of these dwellers (al-awamir), let him warn them three times. If it appears to him after that, let him kill it, for it is a devil (Shaitan)." [3] End. 'Al-Awamir' are those who inhabit houses and cause harm. In another narration: "Verily, these houses have dwellers, so if you see any of them, tell them to leave."

Urdu Column: It is in Sahih Muslim that the Prophet (peace and blessings be upon him) said: There are some Jinn in Medina Munawwarah who have become Muslims. Therefore, if anyone sees any of these inhabitants in their houses, they should warn them three times. If after that any of them are still seen, meaning they do not disappear, then they should be killed because they are devils. End. 'Awamir' are those who live in houses and cause harm to people, and in its narration, it is mentioned that in these houses, some inhabitants...

[Footnotes]: 1. Al-Ashbah wan-Nazair, with reference to Az-Zayla'i, Third Art, Idaratul Quran Karachi 183/2. 2. Jami' at-Tirmidhi, Chapters of Hunting, Chapter on Killing Snakes, Amin Company Delhi 179/1. 3. Sahih Muslim, Book of Killing Snakes etc., Qadimi Kutub Khana Karachi 235/2.

फतावा रिज़विया, जिल्द 24

[अरबी कॉलम]: 'ज़ुल तुफ़्यातैन' (दो धारियों वाला) और 'अल-अब्तर' (छोटी पूंछ वाला), और सफेद सांप से बचो, क्योंकि वह जिन्न में से है। [1] और तिर्मिज़ी में है कि अब्दुल्ला बिन अल-मुबारक ने कहा: "सांपों में से केवल उन्हें मारना नापसंद है जो पतले होते हैं, जैसे कि चांदी, और चलते समय मुड़ते नहीं हैं।" [2]

और इसी तरह वे सांप जो मदीना के घरों में रहते हैं, बिना चेतावनी और सावधानी के न मारे जाएं, सिवाय 'ज़ुल तुफ़्यातैन' के जिसकी पीठ पर दो सफेद धारियां होती हैं और 'अल-अब्तर' के जो एक किस्म का नीला, छोटी पूंछ वाला सांप है। इन दोनों किस्म के सांपों की विशेषता यह है कि जिसकी आंख पर उनकी नज़र पड़ जाए वह अंधा हो जाए, और गर्भवती महिला अगर उन्हें देख ले तो गर्भपात हो जाए। यदि इस तरह के सांप मदीना तैयबा के घरों में भी रहते हों, तो उन्हें बिना चेतावनी के मारना जायज़ है।

[अरबी कॉलम]: सहीह मुस्लिम में, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कहा: "बेशक, मदीना में जिन्न का एक समूह है जो इस्लाम स्वीकार कर चुका है। इसलिए जो कोई इन निवासियों (अल-अवामिर) में से किसी को देखे, तो वह उन्हें तीन बार चेतावनी दे। यदि वह उसके बाद भी दिखाई दे, तो उसे मार डाले, क्योंकि वह शैतान है।" [3] समाप्त। 'अवामिर' वे हैं जो घरों में रहते हैं और नुकसान पहुँचाते हैं। एक अन्य रिवायत में है: "बेशक इन घरों में रहने वाले हैं, इसलिए यदि तुम उनमें से किसी को देखो, तो उनसे बाहर जाने को कहो।"

उर्दू कॉलम: सहीह मुस्लिम में है कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इरशाद फरमाया कि मदीना मुनव्वरा में कुछ ऐसे जिन्न हैं जो मुसलमान हो गए हैं। लिहाज़ा जो कोई घरों में उनमें से किसी को आबाद देखे तो तीन बार उन्हें आगाह कर दे। अगर उसके बाद भी उनमें से कोई दिखाई दे यानी वह गायब न हो तो उसे मार डाला जाए इसलिए कि वह शैतान है। समाप्त। 'अवामिर' वे हैं जो घरों में रहते हैं और लोगों को ईज़ा पहुँचाते हैं और इसी की रिवायत में है कि इन घरों में कुछ रहने वाले...

[फुटनोट]: 1. अल-अश्बाह वन-नज़ायर, ब-हवाला अल-ज़ैलई, फ़न-ए-सालिस, इदारतुल कुरान कराची 183/2। 2. जामे तिर्मिज़ी, अबवाबुल सयद, बाब फ़ी कत्लिल हय्यात, अमीन कंपनी देहली 179/1। 3. सहीह मुस्लिम, किताब कत्लिल हय्यात व गयरुहा, कदीमी कुतुब खाना कराची 235/2।

पृष्ठ 720 में से 649

ذا الطفيتين والابتر واياكم والحية البيضاء فانها من الجن 1 وفی الترمذی قال عبدالله بن المبارك انما يكره من قتل الحيات الحية التي تكون دقيقة كانها فضة ولا تلتوی فی مشية 2۔

آپ نے فرمایا کہ جس سانپ کی پیٹھ پر دو سفید خط ہوں یا وہ چھوٹی دُم والا ہو اسے مار ڈالو لیکن سفید سانپ کے مارنے سے پرہیز کرو اس لئے کہ وہ جنات میں سے ہے۔ جامع ترمذی میں ہے کہ حضرت عبداللہ بن مبارک نے فرمایا اس سانپ کو مار ڈالنا مکروہ یعنی ناپسندیدہ عمل ہے جو باریک ہوتا ہے جو دیکھنے میں چاندی کی طرح ہے اور اپنی چال میں بل کھاتے ہوئے نہیں چلتا۔ (ت)

اور اسی طرح وہ سانپ جو مدینہ کے گھروں میں رہتے ہیں بے انذار و تحذیر کے نہ قتل کئے جائیں مگر ذوالطفیتین کہ اس کی پیٹھ پر دو خط سپید ہوتے ہیں اور ابتر کہ ایک قسم ہے سانپ کی کبود رنگ کوتاہ دم، اور ان دونوں قسم کے سانپوں کا خاصہ ہے کہ جس کی آنکھ پر ان کی نگاہ پڑ جائے اندھا ہو جائے، زن حاملہ اگر انہیں دیکھ لے حمل ساقط ہو کہ اس طرح کے سانپ اگر مدینہ طیبہ کے گھروں میں بھی رہتے ہوں تو ان کا مارنا بے انذار کے جائز ہے۔

في صحيح مسلم قال رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم ان بالمدينة نفرا من الجن قد اسلموا فمن رای شيئا من هذه العوامر فليؤذنه ثلاثا فان بدا له بعد فليقتله فانه شيطان 3 اھ والعوامر هي التي تسكن البيوت تؤذی وفی روايته ان لهذه البيوت عوامر فاذا رأيتم شيئا منها فخرجوا

صحیح مسلم میں ہے کہ حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے ارشاد فرمایا کہ مدینہ منورہ میں کچھ ایسے جنات ہیں جو مسلمان ہو گئے ہیں لہذا جو کوئی گھروں میں ان سے کسی کو آباد دیکھے تو

تین مرتبہ انہیں آگاہ کر دے اگر اس کے بعد بھی ان میں سے کوئی دکھائی دے یعنی وہ غائب نہ ہو تو اسے مار ڈالا جائے اس لئے وہ شیطان ہے اھ عوامر وہ ہیں جو گھروں میں رہتے ہیں اور لوگوں کو ایذا پہنچاتے ہیں اور اسی کی روایت میں ہے کہ ان گھروں میں کچھ رہنے والے

1 الاشباہ والنظائر بحوالہ الزیلعی الفن الثالث ادارۃ القرآن کراچی ۱۸۳/۲ 2 جامع الترمذی ابواب الصید باب فی قتل الحیات امین کمپنی دہلی ۱۷۹/۱ 3 صحیح مسلم کتاب قتل الحیات و غیرھا قدیمی کتب خانہ کراچی ۲۳۵/۲

Fatawa Razawiyya, Volume 24

| (Arabic): ...upon them three [days]; if it leaves [then let it be], otherwise kill it, for it is a disbeliever. In another narration: Indeed, in Medina, there are Jinn who have accepted Islam. So if you see any of them, warn them for three days. If it appears to you after that, then kill it, for it is only a devil. And in Sunan Abi Dawud. And Qadi Iyad said. | (Urdu): There are snakes; if you see any of them here, tell it three times to leave. If it leaves, then well and good; otherwise, kill it because it is a disbeliever. And in one narration, it is stated that some Jinn in Medina Munawwarah have become Muslims. If you see any of them in houses, keep warning them for three days, but if it is still seen after that, then kill it, because it is a devil. And it is in Sunan Abi Dawud, and Qadi Iyad said (T). |

But some scholars have considered the killing of those snakes that live in houses to be absolutely prohibited without warning, and the basis for this is the application of the word 'buyut' (houses) in some hadiths:

| (Arabic): In Sahih Muslim: Ibn Umar used to kill all snakes until Abu Lubabah bin Abd al-Mundhir al-Badri narrated to us that the Messenger of Allah (may Allah send peace and blessings upon him) forbade killing the 'jinan' (snakes) of the houses, so he abstained. In another narration: He forbade killing the 'jinan' that are in the houses. [The narration] ended. And 'al-jinan' with a kasra on the 'jim' and a fatha on the 'nun' are snakes, the plural of 'jan', and it is a small snake; and it is said... | (Urdu): It is in Sahih Muslim that Hazrat Abdullah bin Umar used to kill all types of snakes until Abu Lubabah bin Abd al-Mundhir Badri stated that the Holy Prophet (may Allah send peace and blessings upon him) forbade killing the snakes that live in houses, so then he refrained from that act. And in one narration, it is stated that he forbade killing the snakes that live in houses. End. In the hadith, the word 'Al-Jinan' is pronounced with a kasra under the letter 'jeem' and a fatha on the 'noon', which means snakes. This word is the plural of 'jaan', and 'jaan' refers to a small snake. |

1. Sahih Muslim, Book of Killing Snakes etc., Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 2/235
2. Sahih Muslim, Book of Killing Snakes etc., Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 2/235
3. Sahih Muslim, Book of Killing Snakes etc., Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 2/234
4. Sahih Muslim, Book of Killing Snakes etc., Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 2/234

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

| (अरबी): ...उन पर तीन [दिन]; अगर वह चला जाए [तो ठीक], वरना उसे मार डालो, क्योंकि वह काफ़िर है। एक और रिवायत में है: बेशक, मदीना में कुछ जिन्न हैं जो इस्लाम कबूल कर चुके हैं। इसलिए अगर तुम उनमें से किसी को देखो, तो उन्हें तीन दिनों तक आगाह करो। अगर वह उसके बाद भी तुम्हारे सामने आए, तो उसे मार डालो, क्योंकि वह सिर्फ एक शैतान है। और सुनन अबी दाऊद में। और काज़ी अयाज़ ने फ़रमाया। | (उर्दू): सांप हैं; अगर तुम यहाँ उनमें से किसी को देखो, तो उसे तीन बार चले जाने के लिए कहो। अगर वह चला जाए, तो बेहतर है; वरना उसे मार डालो क्योंकि वह काफ़िर है। और एक रिवायत में है कि मदीना मुनव्वरा में कुछ जिन्न मुसलमान हो गए हैं। अगर तुम उनमें से किसी को घरों में देखो, तो तीन दिनों तक उसे चेतावनी देते रहो, लेकिन अगर उसके बाद भी वह दिखाई दे, तो उसे मार डालो, क्योंकि वह शैतान है। और सुनन अबी दाऊद में है, और काज़ी अयाज़ ने फ़रमाया (त)। |

लेकिन कुछ उलमा ने उन सांपों को मारना जो घरों में रहते हैं, बिना चेतावनी के पूरी तरह से मना ठहराया है, और इसका आधार कुछ हदीसों में शब्द 'ब्युत' (घरों) का प्रयोग है:

| (अरबी): सहीह मुस्लिम में है: इब्न उमर सभी सांपों को मार दिया करते थे जब तक कि अबू लुबाबा बिन अब्दुल मुन्ज़िर अल-बद्री ने हमें यह नहीं बताया कि अल्लाह के रसूल (अल्लाह उन पर शांति और आशीर्वाद भेजे) ने घरों के'जिनान' (सांपों) को मारने से मना किया, इसलिए वह रुक गए। एक और रिवायत में: उन्होंने उन 'जिनान' को मारने से मना किया जो घरों में होते हैं। [रिवायत] समाप्त हुई। और 'अल-जिनान' 'जीम' पर कसरा और 'नून' पर फ़त्हा के साथ सांप हैं, जो 'जान' का बहुवचन है, और यह एक छोटा सांप है; और कहा जाता है... | (उर्दू): सहीह मुस्लिम में है कि हज़रत अब्दुल्ला इब्न उमर हर प्रकार के सांपों को मार डालते थे यहाँ तक कि अबू लुबाबा बिन अब्दुल मुन्ज़िर बद्री ने बयान फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने घरों में रहने वाले सांपों को मार डालने से मना फ़रमाया है, तो फिर वह अपने इस अमल से बाज़ आ गए। और एक रिवायत में है कि आपने घरों में रहने वाले सांपों को मार डालने से मना फ़रमाया। हदीस में लफ़्ज़ 'अल-जिनान' हर्फ़'जीम' के ज़ेर और 'नून' के ज़बर के साथ उच्चारित है जिसका अर्थ सांप है। यह लफ़्ज़ 'जान' की जमा है और 'जान' छोटे सांप को कहते हैं। |

1. सहीह मुस्लिम, किताब कत्ल अल-हयात आदि, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/235

2. सहीह मुस्लिम, किताब कत्ल अल-हयात आदि, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/235
3. सहीह मुस्लिम, किताब कत्ल अल-हयात आदि, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/234
4. सहीह मुस्लिम, किताब कत्ल अल-हयात आदि, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/234

| (عربی): علیها ثلاثاً فان ذهب والا فاقتلوه فانہ کافر وفی روایۃ ان بالمدینۃ جناً قد اسلموا فإذا رأیتم منهم شیئاً فآذنوه ثلثۃ ایام فان بدا لکم بعد ذلک فاقتلوه انما ہو شیطان وفی سنن ابوداؤد۔ وقال القاضی عیاض۔ | (اردو): سانپ ہیں اگر تم ان میں سے یہاں کسی کو دیکھو تو اسے تین مرتبہ نکل جانے کا کہو ،اگر وہ چلا جائے تو فبہا ورنہ اسے مار ڈالو کیونکہ وہ کافر ہے۔ اور ایک روایت میں ہے کہ مدینہ منورہ میں کچھ جن مسلمان ہو گئے ہیں اگر ان میں سے تم کسی کو گھروں میں دیکھو تو تین روز تک اسے متنبہ کرتے رہو لیکن اس کے بعد بھی وہ اگر دکھائی دے تو اسے مار ڈالو ، اس لئے کہ وہ شیطان ہے۔ اور سنن ابی داؤد میں ہے اور قاضی عیاض نے فرمایا۔ (ت) |

لیکن بعض علماء نے قتل ان سانپوں کا کہ گھروں میں رہتے ہیں مطلقاً بے انذار کے ممنوع ٹھہرایا ہے اور منشاء اس کا اطلاق لفظ بیوت ہے بعض احادیث میں ہے:

| (عربی): فی صحیح مسلم کان ابن عمر یقتل الحیات کلهن حتی حدثنا ابولبابۃ بن عبدالمنذر البدری ان رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نهی عن قتل جنان البیوت فامسک وفی روایۃ نهی عن قتل الجنان التی فی البیوت انتهت۔ والجنان بجیم مکسورۃ و نون مفتوحۃ ہی الحیات جمع جان وہی الحیۃ الصغیرۃ وقیل | (اردو): صحیح مسلم میں ہے کہ حضرت عبداللہ ابن عمر ہر قسم کے سانپوں کو مار ڈالتے تھے یہاں کہ کہ ابولبابہ بن عبدالمنذر بدری نے بیان فرمایا کہ حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے گھروں میں رہنے والے سانپوں کو مار ڈالنے سے منع فرمایا ہے تو پھر وہ اپنے اس عمل سے باز آگئے ۔ اور ایک روایت میں ہے کہ آپ نے گھروں میں رہنے والے سانپوں کو مار ڈالنے سے منع فرمایا اھ حدیث میں لفظ الجِنان حرف جیم کے زیر اور نون کے زبر کے ساتھ متلفظ ہے جس کے معنی سانپ کے ہیں یہ لفظ جان کی جمع ہے اور جان چھوٹے سانپ کو |

۱۔ صحیح مسلم کتاب قتل الحیات وغیرہا قدیمی کتب خانہ کراچی ۲۳۵/۲ ۲۔ صحیح مسلم کتاب قتل الحیات وغیرہا قدیمی کتب خانہ کراچی ۲۳۵/۲ ۳۔ صحیح مسلم کتاب قتل الحیات وغیرہا قدیمی کتب خانہ کراچی ۲۳۴/۲ ۴۔ صحیح مسلم کتاب قتل الحیات وغیرہا قدیمی کتب خانہ کراچی ۲۳۴/۲

Fatawa Rizwia Volume 24

[Arabic Section]: Al-Daqiqa al-Khafifa (the thin, light one) and it is said al-Daqiqa al-Bayda (the thin, white one), as stated by Imam al-Nawawi. In one narration, it is mentioned that he (the Prophet) forbade killing those (snakes) residing in houses.

[Urdu Commentary]: However, this school of thought (madhhab) is weak and not preferred. The answer to this is that 'houses' here refers to the houses of Medina, not houses in general. The aforementioned hadiths which mention permission regarding houses are restrictive and serve as explainers for those hadiths.

[Arabic Section]: Imam al-Nawawi said that al-Mazari said: The snakes of the City of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon Him) should not be killed except after warning them, as stated in these hadiths. If they are warned and do not leave, then they may be killed. As for snakes outside of Medina, in all parts of the earth, buildings, and houses, it is recommended (mustahabb) to kill them without warning, due to the generality of the authentic hadiths commanding their killing. Imam al-Nawawi also said: They (the scholars) said that these hadiths were taken to indicate the recommendation of killing snakes in general, and Medina was specifically exempted with the requirement of warning because of the hadith narrated concerning it. The reason for this is what was clearly stated in the hadith, that a group of Jinns there had accepted Islam. End.

[Urdu Section]: They say, and it is also said: a thin and light snake; and it is also said: a thin and white snake. Imam al-Nawawi has stated similarly. In one narration, it is mentioned that you (the Prophet) forbade killing snakes residing in houses. (T)

Imam al-Nawawi said that Imam al-Mazari stated that the snakes of Medina Munawwara should not be killed without giving warning, as mentioned in these hadiths. Then, if they are warned and despite that they do not disappear, then kill them. But as for the snakes that live in other lands, buildings, and houses besides Medina Tayyiba, it is recommended to kill them without warning. Based on these authentic hadiths that have been narrated regarding the killing of snakes, Imam al-Nawawi also stated that the people of knowledge have said unequivocally that these hadiths signify the desirability of killing snakes. However, the snakes of Medina Munawwara have been specified for warning (indhar), which is based on the hadith concerning Medina Sharif. (T)

Footnotes: 1. Sharh Muslim by Al-Nawawi with Sahih Muslim, Book of Killing Snakes, Qadeemi Kutub Khana Karachi, 2/235. 2. Sahih Muslim, Book of Killing Snakes, Qadeemi Kutub Khana Karachi, 2/234. 3. Sharh Sahih Muslim with Sahih Muslim, Book of Killing Snakes, Qadeemi Kutub Khana Karachi, 2/234.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[अरबी खंड]: अद-दक़ीक़ा अल-ख़फ़ीफ़ा (पतला, हल्का) और कहा गया अद-दक़ीक़ा अल-बैज़ा (पतला, सफ़ेद), जैसा कि इमाम नववी ने कहा है। एक रिवायत में है कि उन्होंने (पैगंबर ने) घरों में रहने वाले (सांपों) को मारने से मना फ़रमाया।

[उर्दू व्याख्या]: मगर यह मज़हब ज़ईफ़ (कमज़ोर) और ग़ैर-मुख़्तार (अस्वीकृत) है। इसका जवाब यह है कि यहाँ 'ब्यूत' (घरों) से मुराद मदीना के घर हैं, न कि मुतलक़ (सामान्य) घर। और ज़िक्र की गई हदीसें जिनमें घरों की इजाज़त है, वे मुक़ैयद (सीमित) हैं और इन हदीसों की व्याख्या करने वाली हैं।

[अरबी खंड]: इमाम नववी ने फ़रमाया कि इमाम माज़री ने फ़रमाया: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के शहर के सांपों को तब तक न मारा जाए जब तक उन्हें चेतावनी न दी जाए, जैसा कि इन हदीसों में आया है। फिर जब उन्हें चेतावनी दी जाए और वे न जाएँ तो उन्हें मार दिया जाए। जहाँ तक मदीना के अलावा बाक़ी ज़मीन, मकानों और घरों के सांपों का सवाल है, तो उन्हें बिना चेतावनी के मारना मुस्तहब है, क्योंकि सांपों को मारने के हुक्म वाली हदीसें आम (सामान्य) हैं। इमाम नववी ने यह भी फ़रमाया: उन्होंने (विद्वानों ने) कहा कि इन हदीसों को मुतलक़ (निरपेक्ष) तौर पर सांपों को मारने के इस्तेहबाब (सिफ़ारिश) के तौर पर लिया गया है, और मदीना को चेतावनी देने के लिए ख़ास किया गया है, उस हदीस की वजह से जो इस बारे में आई है। इसका कारण वही है जो हदीस में स्पष्ट किया गया है कि जिन्नों के एक समूह ने वहाँ इस्लाम स्वीकार कर लिया था।

[उर्दू खंड]: कहते हैं, और यह भी कहा गया है कि बारीक और हल्का-फुल्का सांप, और यह भी कहा गया कि बारीक और सफ़ेद सांप। इमाम नववी ने इसी तरह फ़रमाया है। एक रिवायत में है कि आपने घरों में रहने वाले सांपों के मार डालने से ममानअत (मनाही) फ़रमाई। (त)

इमाम नववी ने फ़रमाया कि इमाम माज़री ने फ़रमाया कि मदीना मुनव्वरा के सांपों को बग़ैर मुतन्बे (सचेत) किए न मारा जाए, जैसा कि इन हदीसों में आया है, फिर जब उन्हें तन्बीह (चेतावनी) की जाए और इसके बावजूद वे ग़ायब न हों तो फिर मार डाले। लेकिन जो सांप मदीना तय्यबा के अलावा बाक़ी ज़मीन, मकानात और घरों में रहते हों मुस्तहब है कि उन्हें बग़ैर डराए मार डाला जाए। इन सही हदीसों की बिना पर जो सांपों को मार डालने के बारे में वारिद (उल्लेख) हुई हैं इमाम नववी ने भी फ़रमाया कि अहल-ए-इल्म ने अली-उल-इतलाक़ (पूर्ण रूप से) फ़रमाया है कि सांपों को मार डालने के इस्तेहबाब में इन हदीसों को लिया गया है, अलबत्ता मदीना मुनव्वरा के सांपों की इन्ज़ार

यानी डरावे के साथ तख़्सीस (विशिष्टता) की गई है यह उस हदीस की बिना पर है जो मदीना शरीफ़ के बारे में है। (त)

पाद-टिप्पणियाँ: 1. शर्ह मुस्लिम लिन-नववी मअ सहीह मुस्लिम, किताब क़त्लुल हय्यात, क़दीमी कुतुब खाना कराची 2/235 2. सहीह मुस्लिम, किताब क़त्लुल हय्यात, क़दीमी कुतुब खाना कराची 2/234 3. शर्ह सहीह मुस्लिम मअ सहीह मुस्लिम, किताब क़त्लुल हय्यात, क़दीमी कुतुब खाना कराची 2/234

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

[عربی حصہ]: الدقیقة الخفیفة وقیل الدقیقة البیضاء کذا قال النووی، وفی روایة انه قد نهی عن ذوات البیوت۔

[اردو تبصرہ]: مگر یہ مذہب ضعیف غیر مختار ہے اور جواب اس کا یہ ہے کہ یہاں مراد بیوت سے بیوت مدینہ ہیں، نہ بیوت مطلقاً اور احادیث مذکور جن میں اذن بیوت مقید ہے مفسران حدیثوں کے مفسر ہیں۔

[عربی حصہ]: قال الامام النووی قال المازری لاتقتل حیات مدینة النبی صلی اللہ تعالی علیه وسلم الا بانذارها کما جاء فی هذه الاحادیث فاذا انذرها ولم تنصرف قتلها واماحیات غیر المدینة فی جمیع الارض و البیوت والدور فیندب قتلها من غیر انذار لعموم الاحادیث الصحیحة فی الامر بقتلها وقال الامام النووی ایضاً قالوا فاخذ بهذه الاحادیث في استحباب قتل الحیات مطلقا و خصت المدینة بالانذار للحدیث الوارد فیها وسببه ما صرح به فی الحدیث انه سلم طائفة من الجن بها اھ

[اردو حصہ]: کہتے ہیں، اور یہ بھی کہا گیا ہے کہ باریک اور ہلکا پھلکا سانپ، اور یہ بھی کہا گیا کہ باریک اور سفید سانپ۔ امام نووی نے اسی طرح فرمایا ہے۔ ایک روایت میں ہے کہ آپ نے گھروں میں رہنے والے سانپوں کے مار ڈالنے سے ممانعت فرمائی۔ (ت)

امام نووی نے فرمایا کہ امام مازری نے فرمایا کہ مدینہ منورہ کے سانپوں کو بغیر متنبہ کرنے کے نہ مارا جائے، جیسا کہ ان احادیث میں آیا ہے، پھر جب انہیں تنبیہ کرے اور اس کے باوجود وہ غائب نہ ہوں تو پھر مار ڈالے۔ لیکن جو سانپ مدینہ طیبہ کے علاوہ باقی زمین، مکانات اور گھروں میں رہتے ہوں مستحب ہے کہ انہیں بغیر ڈرائے مار ڈالا جائے۔ ان صحیح احادیث کی بنا پر جو

سانپوں کو مار ڈالنے کے بارے میں وارد ہوئی ہیں امام نووی نے بھی فرمایا کہ اہل علم نے علی الاطلاق فرمایا ہے کہ سانپوں کو مار ڈالنے کے استحباب میں ان احادیث کو لیا گیا ہے، البتہ مدینہ منورہ کے سانپوں کی انذار یعنی ڈراوے کے ساتھ تخصیص کی گئی ہے یہ اس حدیث کی بنا پر ہے جو مدینہ شریف کے بارے میں ہے۔ (ت)

حواشی: ۱۔ شرح مسلم للنووی مع صحیح مسلم کتاب قتل الحیات قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۲۳۵ ۲۔ صحیح مسلم کتاب قتل الحیات قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۲۳۴ ۳۔ شرح صحیح مسلم مع صحیح مسلم کتاب قتل الحیات قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۲۳۴

Fatawa Razawiya, Vol 24

...it has been mentioned, and the reason for this is that Hadith in which it has been clarified that a group of Jinn in the blessed city of Medina became Muslims. End. (T) And there are various methods of warning and cautioning. One is to say: "I adjure you by the covenant taken from you by Solomon, son of David, peace be upon them both, that you do not harm us and do not appear before us."

| Imam al-Nawawi said: As for the manner of warning, al-Qadi said: Ibn Habib narrated from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that he used to say, "I adjure you by the covenant taken from you by Solomon son of David, that you do not harm us and do not appear to us." (1) | Imam al-Nawawi stated that concerning the nature of the warning, Qadi Iyad's instruction is that Ibn Habib narrated from the Holy Prophet (peace be upon him) that he used to say that the person frightening snakes should say: "I adjure you by the covenant taken from you by Solomon, son of David (peace be upon them both), that you do not cause us distress and do not come before us." (T) |

Secondly, it should be said as follows: "We ask you by the means of the covenant of Noah and the covenant of Solomon, son of David, peace be upon them, that you do not harm us."

| The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "If a snake appears in the house, say to it: 'We ask you by the covenant of Noah and by the covenant of Solomon, son of David, that you do not harm us.' Then if it returns, kill it." Narrated by Abu Isa al-Tirmidhi, who then said: "This is a Hasan Gharib Hadith." (2) | The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "When a snake is seen in the house, say to it: 'We ask you for the sake of the covenant of Noah and the covenant of Solomon, son of David, that you do not cause us harm.' (If they do not comply with this covenant and appear in the house again, then kill them)." After narrating this Hadith, Imam Abu Isa al-Tirmidhi said: "This is a Hasan Gharib Hadith." (T) |

1. Sharh Sahih Muslim by al-Nawawi with Sahih Muslim, Book of Killing Snakes, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/233.
2. Jami' al-Tirmidhi, Chapters of Hunting, Chapter on Killing Snakes, Amin Company, Delhi, 1/97.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

...में वर्णित है, और इसका कारण वह हदीस है जिसमें स्पष्ट किया गया है कि मदीना तैयबा में जिन्नों का एक समूह मुसलमान हो गया था। अंत। (त) चेतावनी और सावधानी बरतने के विभिन्न तरीके हैं। एक यह है कि इस प्रकार कहा जाए: "मैं तुम्हें उस वचन की शपथ दिलाता हूँ जो सुलेमान बिन दाऊद (अलैहिमुस्सलाम) ने तुमसे लिया था कि हमें कष्ट न पहुँचाओ और हमारे सामने प्रकट न हो।"

| इमाम नववी ने कहा: चेतावनी देने की पद्धति के संबंध में, अल-क़ाज़ी ने कहा: इब्न हबीब ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से रिवायत की है कि आप फ़रमाते थे: "मैं तुम्हें उस वचन की शपथ दिलाता हूँ जो सुलेमान इब्न दाऊद ने तुमसे लिया था कि तुम हमें कष्ट न दो और हमारे सामने प्रकट न हो।" (1) | इमाम नववी ने फ़रमाया कि चेतावनी की गुणवत्ता के बारे में क़ाज़ी अयाज़ का कहना है कि इब्न हबीब ने हुज़ूर (अलैहिस्सलातो वसल्लम) से रिवायत की है कि आप फ़रमाते थे कि साँपों को डराने वाला इस तरह कहे कि मैं उस अहद (वचन) की क़सम दिलाता हूँ जो तुमसे सुलेमान बिन दाऊद (अलैहिमुस्सलाम) ने लिया था कि हमें तकलीफ़ न दो और न हमारे सामने आओ। (त) |

दूसरा यह कि इस तरह कहा जाए: "हम तुमसे नूह (अलैहिस्सलाम) के अहद और सुलेमान बिन दाऊद (अलैहिमुस्सलाम) के अहद के वसीले से माँगते हैं कि हमें कष्ट न पहुँचाओ।"

| अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: "जब घर में कोई साँप दिखाई दे, तो उससे कहो: 'हम तुमसे नूह के अहद और सुलेमान बिन दाऊद के अहद के वसीले से माँगते हैं कि हमें कष्ट न दो।' फिर यदि वह वापस आए, तो उसे मार डालो।" इसे अबू ईसा अल-तिर्मिज़ी ने रिवायत किया और फिर कहा: "यह हदीस हसन ग़रीब है।" (2) | हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने इरशाद फ़रमाया कि जब घर में कोई साँप दिखाई दे तो उससे यूँ कहो कि हम तुझसे अहदे नूह और अहदे सुलेमान बिन दाऊद के तुफ़ैल यह सवाल करते हैं कि हमें ईज़ा न पहुँचाओ (अगर वो यह अहद न मानें और दोबारा घर में ज़ाहिर हों तो उन्हें मार डालो)। इमाम अबू ईसा तिर्मिज़ी ने इस हदीस को रिवायत करके फ़रमाया कि यह हसन ग़रीब है। (त) |

1. शरह सहीह मुस्लिम लिन-नववी मअ सहीह मुस्लिम, किताब क़त्लुल हयात, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 1/233
2. जामिउत तिर्मिज़ी, अबवाबुस सैद, बाब फ़ी क़त्लुल हयात, अमीन कंपनी दिल्ली 1/97

میں وارد ہوئی اور اس کا سبب وہ حدیث ہے کہ جس میں صراحت کی گئی کہ مدینہ طیبہ میں جنّات کا ایک گروہ مسلمان ہو گیا ہے اھ(ت) اور طریقے انذار و تحذیر کے مختلف ہیں، ایک یہ کہ یوں کہا جائے میں تم کو قسم دلاتا ہوں اس عہد کی جو تم سے سلیمان بن داؤد علیہما السلام نے لیا کہ ہمیں ایذا مت دو اور ہمارے سامنے ظاہر مت ہو۔

| قال الامام النووی واما صفة الانذار فقال القاضی روی ابن حبیب عن النبی صلی اللہ تعالٰی علیه وسلم انه یقول انشد کن بالعهد الذی اخذ علیکم سلیمان ابن داؤد ان لاتؤذونا ولاتظهرن لنا۱۔ | امام نووی نے فرمایا کہ انذار کی کیفیت کے متعلق قاضی عیاض کا ارشاد ہے کہ ابن حبیب نے حضور علیہ الصلوۃ والسلام سے روایت فرمائی کہ آپ فرماتے تھے کہ سانپوں کو ڈرانے والا یوں کہے کہ میں قسم دلاتا ہوں اس عہد کی جو تم سے سلیمان بن داؤد (علیہما السلام) نے لیا تھا کہ ہمیں تکلیف نہ دو اور نہ ہمارے سامنے آؤ۔ (ت) |

دوسرے یہ کہ اس طرح کہا جائے ہم تجھ سے سوال کرتے ہیں بوسیلہ عہد نوح و عہد سلیمان ابن داؤد علیہم السلام کے کہ ہمیں ایذا مت دے،

| قال رسول اللہ صلّی اللہ تعالٰی علیه وسلم اذا ظهرت الحیة فی المسکن فقولوا لها انا نسئلك بعهد نوح و بعهد سلیمان بن داؤد ان لاتؤذینا فان عادت فاقتلوها رواه ابوعیسی الترمذی ثم قال هذا حدیث حسن غریب۲۔ | حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ جب گھر میں کوئی سانپ دکھائی دے تو اس سے یوں کہو کہ ہم تجھ سے عہد نوح اور عہد سلیمان بن داؤد کے طفیل یہ سوال کرتے

ہیں کہ ہمیں ایذا نہ پہنچاؤ (اگر وہ یہ عہد نہ مانیں اور دوبارہ گھر میں ظاہر ہوں تو انہیں مار ڈالو)

امام ابو عیسیٰ ترمذی نے اس حدیث کو روایت کر کے فرمایا یہ حسن غریب ہے۔ (ت) |

۱ شرح صحیح مسلم للنووی مع صحیح مسلم کتاب قتل الحیات قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۳۳ ۲

جامع الترمذی ابواب الصید باب فی قتل الحیات امین کمپنی دہلی ۱/ ۹۷

Fatawa Razawiyyah, Volume 24

Thirdly, I adjure you by the covenant that Noah (peace be upon him) took from you; I adjure you by the covenant that Solomon (peace be upon him) took from you: do not cause harm.

[Arabic Table Content]: As recorded in Sunan Abi Dawud, the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) was asked about snakes inhabiting houses. He said: "When you see any of them in your dwellings, say: 'I adjure you by the covenant that Solomon took from you: do not harm us.' Then, if they return, kill them." (1)

[Urdu Table Content]: As it is in Sunan Abi Dawud, when the Prophet (peace and blessings be upon him) was asked about snakes living in houses, he said: "When you see something like a snake in your houses, say to them: 'I adjure you by the covenant that Hazrat Noah took from you; I adjure you by the covenant that Hazrat Solomon took from you (peace be upon both of them): do not harm us.'" (T)

Fourthly, say: "Return by the command of God." Fifthly, say: "Leave the path of the Muslim."

[Arabic Table Content]: Imam al-Tahawi said: It should be said to it: "Go back by the permission of Allah Almighty" or "Leave the path of the Muslims," etc. [Summarized] (2)

[Urdu Table Content]: Imam Tahawi said that it should be said to the snake: "Go back by the command of Allah Almighty," or "Leave the path of Muslims," or use other words to tell it to leave. [Summarized] (T)

In short, killing snakes is generally recommended, but killing white snakes or those inhabiting houses in Medina is prohibited without prior warning and caution, except for the "Dhu al-Tufyatain" (the two-striped) and "al-Abtar" (the short-tailed) snakes. However, according to Tahawi, there is no harm in killing them even without warning, though warning is preferable.

[Arabic Table Content]: In 'al-Ashbah wa al-Naza'ir', it is mentioned that Imam al-Tahawi said: "There is no harm in killing all of them because he (the Prophet, peace and blessings be upon him) took a covenant from the jinn that they would not enter the houses of his Ummah nor show themselves."

[Urdu Table Content]: In 'al-Ashbah wa al-Naza'ir', it is stated that Imam Tahawi said: "There is no harm in killing all types of snakes without frightening them away,

because the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) took a covenant from the jinn that they would not enter the houses of my Ummah nor [show] their [selves]..."

(1) Sunan Abi Dawud, Book of Etiquette, Chapter on Killing Snakes, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/457. (2) Al-Ashbah wa al-Naza'ir, citing Al-Tahawi, Third Art, Rulings of the Jinn, Idarat al-Qur'an, Karachi, 2/183.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

तीसरा यह कि मैं तुम्हें उस अहद (प्रतिज्ञा) की शपथ देता हूँ जो नूह अलैहिस्सलाम ने तुमसे ली थी; मैं तुम्हें उस अहद की शपथ देता हूँ जो सुलैमान अलैहिस्सलाम ने तुमसे ली थी कि हमें हानि न पहुँचाओ।

[अरबी सामग्री]: जैसा कि सुनन अबी दाऊद में है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से घरों में रहने वाले साँपों के बारे में पूछा गया। आपने फरमाया: "जब तुम अपने घरों में उनमें से (साँपों जैसा) कुछ देखो, तो उनसे कहो: 'मैं तुम्हें उस अहद की कसम देता हूँ जो सुलैमान ने तुमसे ली थी कि हमें नुकसान न पहुँचाओ।' फिर अगर वे वापस आएँ तो उन्हें मार डालो।" (1)

[उर्दू सामग्री]: जैसा कि सुनन अबी दाऊद में है कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम से घरों में रहने वाले साँपों के बारे में पूछा गया तो फरमाया कि जब तुम लोग अपने घरों में साँपों की तरह कोई चीज़ देखो तो उनसे यूँ कहो कि "मैं तुम्हें उस अहद की क़सम दिलाता हूँ जो तुमसे हज़रत नूह ने लिया था, मैं तुम्हें उस अहद की क़सम दिलाता हूँ जो तुमसे हज़रत सुलैमान ने लिया था (इन दोनों पर सलाम) कि हमें ईज़ा (कष्ट) मत दो।" (त)

चौथा यह कि "अल्लाह के हुक्म से लौट जा।" पाँचवाँ यह कि "मुसलमान का रास्ता छोड़ दे।"

[अरबी सामग्री]: इमाम तहावी ने फरमाया कि उससे कहा जाए: "अल्लाह तआला की अनुमति से वापस लौट जा" या "मुसलमानों का रास्ता छोड़ दे" इत्यादि। [सारांश] (2)

[उर्दू सामग्री]: इमाम तहावी ने फरमाया कि साँप से यूँ कहा जाए कि "तू अल्लाह तआला के हुक्म से वापस चला जा", या यूँ कहा जाए कि "मुसलमानों का रास्ता छोड़ दे", या किसी अन्य शब्दों के माध्यम से उसे चले जाने को कहे। [सारांश] (त)

संक्षेप में, साँप को मारना मुस्तहब (पसंदीदा) है, लेकिन मदीना के घरों में रहने वाले और सफेद साँपों को चेतावनी और डराने के बिना मारना वर्जित है, सिवाय 'ज़ू अल-तुफ़्यतैन' और 'अब्तर' के। मगर तहावी के नज़दीक बिना चेतावनी के भी कोई हर्ज नहीं है और चेतावनी देना बेहतर है।

[अरबी सामग्री]: अल-अश्बाह वल-नज़ायर में है कि इमाम तहावी ने फरमाया: "सबको मारने में कोई हर्ज नहीं है क्योंकि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने जिन्नों से अहद लिया था कि वे उनकी उम्मत के घरों में प्रवेश नहीं करेंगे और न ही स्वयं को प्रकट करेंगे।"

[उर्दू सामग्री]: अल-अश्बाह वल-नज़ायर में है कि इमाम तहावी ने फरमाया कि हर किस्म के साँपों को बिना डराए मार डालने में कोई हर्ज नहीं है क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जिन्नात से अहद लिया था कि मेरी उम्मत के घरों में न दाखिल होना और न उनके..

(1) सुनन अबी दाऊद, किताबुल आदाब, बाबू फी कत्लिल हय्यात, आफताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, 2/457. (2) अल-अश्बाह वल-नज़ायर, बहवाला तहावी, अल-फन अल-सालिस, अहकामुल जान, इदारतुल कुरान, कराची, 2/183.

पृष्ठ 720 में से 653

تیسرے یہ کہ میں تمہیں قسم دلاتا ہوں اس عہد کی جو تم سے نوح علیہ السلام نے لیا میں تمہیں قسم دلاتا ہوں اس عہد کی جو تم سے سلیمان علیہ السلام نے لیا کہ ایذا مت دو۔

[عربی عبارت]: کما في سنن ابی داؤد ان رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم سئل عن حیات البیوت فقال اذا رأیتم منھن شیئاً فی مساکنکم فقولوا انشدکن العھد الذی اخذ علیکن سلیمان ان لا تؤذونا فان عدن فاقتلوھن ۔ 1

[اردو عبارت]: جیسا کہ سنن ابی داؤد میں ہے کہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام سے گھروں میں رہنے والے سانپوں کے متعلق پوچھا گیا تو فرمایا کہ جب تم لوگ اپنے گھروں میں سانپوں کی طرح کوئی چیز دیکھو تو ان سے یوں کہو کہ میں تمہیں اس عہد کی قسم دلاتا ہوں جو تم سے حضرت نوح نے لیا تھا میں تمہیں اس عہد کی قسم دلاتا ہوں جو تم سے حضرت سلیمان نے لیا تھا (ان دونوں پر سلام) کہ ہمیں ایذا مت دو۔ (ت)

چوتھے یہ کہ لوٹ جا خدا کے حکم سے۔ پانچویں یہ کہ مسلمان کی راہ چھوڑ دے۔

[عربی عبارت]: قال الطحاوی یقال لھا ارجعی باذن اللہ تعالی او خلی طریق المسلمین 2 اہ ملخصاً وغیر ذلك۔

[اردو عبارت]: امام طحاوی نے فرمایا کہ سانپ سے یوں کہا جائے کہ تو اللہ تعالٰی کے حکم سے واپس چلا جا، یا یوں کہا جائے کہ مسلمانوں کا راستہ چھوڑ دے، یا اس کے کچھ اور الفاظ کے ذریعے اس چلے جانے کو کہے اہ ملخصاً (ت)

بالجملہ قتلِ سانپ کا مستحب اور سپید اور ساکنِ بیوتِ مدینہ کا سوا ذوا لطیفتین اور ابتر کے بے انذار و تحذیر کے ممنوع ہے مگر طحاوی کے نزدیک بے انذار میں بھی کچھ حرج نہیں اور انذار اولیٰ ہے۔

[عربی عبارت]: فی الاشباہ والنظائر قال الطحاوی لا بأس ان یقتل الکل لانہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم عاھد الجن ان لا یدخلوا بیوت امتہ ولا یظھروا انفسھم

[اردو عبارت]: الاشباہ والنظائر میں ہے کہ امام طحاوی نے فرمایا کہ ہر قسم کے سانپوں کو بغیر ڈرائے مار ڈالنے میں کوئی حرج نہیں اس لئے کہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے جنّات سے عہد لیا تھا کہ میری امت کے گھروں میں نہ داخل ہونا اور نہ ان کے

1 سنن ابی داؤد کتاب الآداب باب فی قتل الحیات آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۴۵۷ 2 الاشباہ والنظائر بحوالہ الطحاوی الفن ثالث احکام الجان ادارۃ القرآن کراچی ۲ / ۱۸۳

Fatawa Razawiya, Volume 24

[Table Section] Arabic: فاذا خالفوا فقد نقضوا عهدهم فلاحرمة لهم اولولی هو الانذار والاحتذار اهـ واللہ تعالی اعلم۔ Urdu Translation: ...appearing before them; when they oppose this covenant, they are deemed to have committed a breach of contract. Therefore, their sanctity no longer remains. However, it is certainly better to warn and alert them. Allah Almighty knows best. (T)

Issue 253: What do the scholars of religion say regarding the issue of whether it is permissible to castrate bulls and goats or not? Explain and be rewarded. (T)

Answer: It is permissible by consensus because there is benefit in it. The meat of a castrated animal is better, and a castrated bull can endure more labor. The research is that if castrating an animal is intended for a real benefit or to prevent harm, then it is absolutely lawful, even if the animal's meat is not eaten, such as a cat, etc.; otherwise, it is forbidden. Based on this same principle, our scholars also consider castrating a horse permissible when the purpose is to prevent its mischievousness, although some forbid it because:

[Table Section] Arabic: لمافیہ من تقلیل آلة الجهاد اقول الموجود لا یعدم والمرهوم لایعتبر الاتری ان العزل یجوز عن الامة مطلقا وعن الحرة باذنها بخلاف الاکل فان فیہ اعدام موجود۔ Urdu Translation: ...because it involves the reduction of the tools of Jihad. I say that what exists does not become non-existent, and the imaginary is not taken into account. Do you not see that 'Azl' (coitus interruptus) is absolutely permissible with a slave-girl, while with a free woman, it is conditional upon her permission? This is unlike eating, which involves annihilating what exists. (T)

Yes, castrating a human being is absolutely forbidden by consensus. It is stated in Durr-e-Mukhtar: [Table Section] Arabic: وجاز خصاء البهائم حتی الهرة واما خصاء الادمی فحرام قیل والفرس وقیدوہ بالمنفعة والافحرام 2 Urdu Translation: It is permissible to castrate four-legged animals, but it is forbidden to castrate humans. It was also said about horses as well. And the venerable jurists have placed the condition of benefit and profit for castration, and if this is not present, then it is forbidden. (T)

1. Al-Ashbah wal-Naza'ir, referenced to Al-Tahawi, Art 3, Ahkam al-Jan, Idarat al-Qur'an Karachi, 2/582.
2. Durr-e-Mukhtar, Kitab al-Hazr wal-Ibaha, Chapter on Sale, Matba Mujtabai Delhi, 2/246.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

[तालिका अनुभाग] अरबी: فاذا خالفوا فقد نقضوا عهدهم فلاحرمة لهم اولولى هو الانذار والاحتذ ار۔ واللہ تعالی اعلم اھ उर्दू अनुवाद: ...उनके सामने ज़ाहिर होना; जब वे इस वादे का विरोध करते हैं, तो मानो वे वादा तोड़ने के दोषी होते हैं, इसलिए उनकी पवित्रता अब नहीं रही। हालांकि, उन्हें डराना और होशियार करना यकीनन बेहतर है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 253: दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि बैल और बकरे को खस्सी (बधिया) करना जायज़ है या नहीं? बयान कीजिए और सवाब पाइए। (त)

उत्तर: सर्वसम्मति से जायज़ है क्योंकि इसमें लाभ है। खस्सी का मांस बेहतर होता है और खस्सी बैल मेहनत अधिक सहता है। शोध यह है कि यदि किसी जानवर को खस्सी करने का उद्देश्य वास्तव में कोई लाभ या हानि को दूर करना हो, तो यह पूर्णतः वैध है, भले ही जानवर का मांस नहीं खाया जाता हो जैसे कि बिल्ली आदि; अन्यथा यह हराम है। इसी सिद्धांत के आधार पर हमारे विद्वान घोड़े को खस्सी करना भी जायज़ समझते हैं जब इसका उद्देश्य उसकी शरारत को रोकना हो, हालांकि कुछ इसे मना करते हैं क्योंकि:

[तालिका अनुभाग] अरबी: لمافیہ من تقلیل آلة الجهاد اقول الموجود لا یعدم والمرهوم لایعتبر الاتری ان العزل یجوز عن الامة مطلقا وعن الحرة باذنها بخلاف الاکل فان فیہ اعدام موجود۔ उर्दू अनुवाद: ...इसलिए कि इसमें जिहाद के उपकरण की कमी है। मैं कहता हूँ कि मौजूद चीज़ खत्म नहीं होती और जो काल्पनिक है उसका विचार नहीं होता। क्या तुम नहीं देखते कि दासी से 'अज़्ल' (सहवास विच्छेद) पूर्णतः जायज़ है जबकि आज़ाद औरत से यह उसकी अनुमति पर निर्भर है? इसके विपरीत खाने के कि इसमें मौजूद को खत्म करना होता है। (त)

हाँ, मनुष्य को खस्सी करना सर्वसम्मति से पूर्णतः हराम है। दुर्र-ए-मुख्तार में है: [तालिका अनुभाग] अरबी: وجاز خصاء البهائم حتی الهرة واما خصاء الادمی فحرام قیل والفرس وقیدوہ بالمنفعة والافحرام 2- उर्दू अनुवाद: चौपायों को खस्सी करना जायज़ है लेकिन मनुष्य को खस्सी करना

हराम है और कहा गया कि घोड़ों को भी। और फ़ुक़हा-ए-किराम ने खस्सी करने में फायदे और नफे की शर्त लगाई है और अगर यह न हो तो फिर हराम है। (त)

1. अल-अशबाह वन-नज़ाइर, अल-तहावी के संदर्भ में, कला 3, अहकाम अल-जान, इदारात अल-कुरान कराची, 2/582।
2. दुर्र-ए-मुख्तार, किताब अल-हज़र वल-इबाहा, बिक्री पर अध्याय, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 2/246।

पेज 654/720

[ٹیبل سیکشن] عربی: فاذا خالفوا فقد نقضوا عھدھم فلاحرمۃ لھم اولولی ھو الانذار والاحتذار اھ واللہ تعالی اعلم۔ اردو ترجمہ: سامنے ظاہر ہو نا، جب وہ اس عہد کی مخالفت کریں تو گویا وہ عہد شکنی کے مرتکب ہوئے لہذا ان کی حرمت باقی نہ رہی ہاں البتہ انہیں ڈرانا اور ہو شیار کرنا زیادہ بہتر ہے اھ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۲۵۳: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ بیل اور بکرے کو خصی کرنا جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا (بیان فرمایئے اجر پائیے۔ت)

الجواب: بالاتفاق جائز ہے کہ اس میں منفعت ہے۔ خصی کا گوشت بہتر ہوتا ہے اور خصی بیل محنت کی زیادہ برداشت کرتا ہے، اور تحقیق یہ ہے کہ اگر جانور کے خصی کرنے میں واقعی کوئی منفعت یا دفع مضرت مقصود ہو تو مطلقاً حلال ہے اگرچہ جانور غیر ماکول اللحم ہو مثلاً بلی وغیرہ ورنہ حرام ہے، اسی اصل کی بناء پر ہمارے گھوڑے کو خصی کرنا بھی جائز جانتے ہیں جبکہ مقصود دفع شرارت ہوا گرچہ بعض منع فرماتے ہیں:

[ٹیبل سیکشن] عربی: لمافیہ من تقلیل آلۃ الجھاد اقول الموجود لا یعدم والمرھوم لایعتبر الاتری ان العزل یجوز عن الامۃ مطلقا وعن الحرۃ باذنھا بخلاف الاکل فان فیہ اعدام موجود۔ اردو ترجمہ: اس لئے کہ اس میں آلہ جہاد کی تقلیل ہے، میں کہتا ہوں کہ موجود معدوم نہیں ہوتا اور موہوم کا اعتبار نہیں ہوتا کیا تم نہیں دیکھتے کہ لونڈی سے "عزل" علی الاطلاق جائز ہے جبکہ آزاد عورت سے اس کی اجازت پر موقوف ہے بخلاف کھانے کے کہ اس میں موجود کو معدوم کرنا ہے۔ (ت)

ہاں آدمی کا خصی کرنا بالاجماع مطلقاً حرام ہے۔ در مختار میں ہے: [ٹیبل سیکشن] عربی: وجاز خصاء البھائم حتی الھرۃ واما خصاء الادمی فحرام قیل والفرس وقیدوہ بالمنفعۃ والافحرام 2- اردو ترجمہ: چوپایوں کو خصی کرنا جائز ہے لیکن آدمی کو خصی کرنا حرام ہے اور کہا گیا کہ گھوڑے کو بھی۔ اور فقہائے کرام نے خصی کرنے میں فائدہ اور نفع کی قید لگائی ہے اور اگر یہ نہ ہو تو پھر حرام ہے۔ (ت)

۱۔ الاشباہ والنظائر بحوالہ الطحاوی الفن الثالث احکام الجان ادارۃ القرآن کراچی ۲ / ۵۸۲ ۲۔ درمختار کتاب الحظر والاباحۃ فصل فی البیع مطبع مجتبائی دہلی ۲ / ۲۴۶

Volume 24

Fatawa Razawiyya

It is in Radd al-Muhtar:

His statement 'and the horse': Shams al-A'imma al-Halwani mentioned that there is no harm in castrating horses according to our companions, while Shaykh al-Islam mentioned that it is forbidden. - And Allah Almighty knows best.

Author's statement "al-faras": Shams al-A'imma Halwani mentioned that there is no harm in castrating horses according to our companions, while Shaykh al-Islam mentioned that castrating them is forbidden, - And Allah Almighty knows best (T).

Issue 252: 20 Rabi' al-Akhir Sharif. What do the scholars of religion say regarding these matters: is it permissible to keep a dog or not? And is keeping pigeons, quail fighting, cockfighting, and keeping hawks and falcons and catching prey with them and eating it correct or not? Provide a clarification and be rewarded (T).

The Answer: Keeping hawks and falcons is correct, and hunting with them and eating [the prey] is also correct.

As per Allah Almighty's saying: "And those [beasts and birds of prey] which you have trained as hunting animals..." [The Verse]. Due to this command of Allah Almighty: "and those wounding animals whom you have taught the way of hunting." (T)

However, it is necessary that hunting be for the purpose of food, medicine, or some correct benefit, not merely for recreation and sport, otherwise it is forbidden (haram), and he will be a sinner; although the animal killed by them, when they have been trained and released saying Bismillah (in the name of Allah), will become halal (permissible for consumption).

For the prohibition in it being a Sharia-compliant slaughter, but naming Allah Almighty and striking the sheep from its back neck is a forbidden act. The prohibition of releasing a hunting animal merely for amusement of the soul is not contrary or opposite to its being a Sharia-compliant slaughter, but if one releases it taking the name of Allah Almighty, just as someone took the name of Allah Almighty [and slaughtered] a goat from the back of its neck...

[1] Radd al-Muhtar, Kitab al-Hazr wal-Ibaha, Section on Trade, Dar Ihya at-Turath al-Arabi, Beirut, 5/269 [2] Al-Qur'an al-Karim 5/4

खंड 24

फ़तावा रज़विया

रद्द अल-मुह्तार में है:

उनका कथन 'और घोड़ा': शम्स अल-अइम्मा अल-हलवानी ने उल्लेख किया है कि हमारे साथियों के अनुसार घोड़ों को नपुंसक बनाने में कोई बुराई नहीं है, जबकि शेख अल-इस्लाम ने उल्लेख किया है कि यह हराम (वर्जित) है। - और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

लेखक का कथन "अल-फ़रस": शम्स अल-अइम्मा हलवानी ने उल्लेख किया है कि हमारे साथियों के अनुसार घोड़ों को नपुंसक बनाने में कोई हर्ज नहीं है, जबकि शेख अल-इस्लाम ने उल्लेख किया है कि उन्हें नपुंसक बनाना हराम है, - और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (त)।

मसला 252: 20 रबी अल-आख़िर शरीफ़। दीन के विद्वान इन मसलों में क्या कहते हैं कि कुत्ता पालना जायज़ है या नहीं? और कबूतर पालना, बटेर बाज़ी और मुर्ग बाज़ी और शिकरा व बाज़ पालना और उनसे शिकार पकड़वाना और खाना दुरुस्त है या नहीं? बयान फरमाएँ और पुण्य पाएँ। (त)

अल-जवाब: शिकरा और बाज़ पालना दुरुस्त है, और उनसे शिकार करवाना और उसे खाना भी दुरुस्त है।

अल्लाह तआला के इस फरमान की वजह से: "और उन शिकारी जानवरों को जिन्हें तुमने शिकार करने का तरीका सिखाया है..." [आयत]। अल्लाह तआला के इस इरशाद की वजह से: "और जिन घायल करने वाले जानवरों को तुमने शिकार करने का तरीका सिखाया है।" (त)

मगर यह ज़रूरी है कि शिकार भोजन, औषधि या किसी सही लाभ के उद्देश्य से हो, केवल मनोरंजन और खेल-तमाशे के लिए न हो, अन्यथा यह हराम है, वह गुनहगार होगा, हालांकि उनके द्वारा मारा गया जानवर, जबकि वे प्रशिक्षित हों और बिस्मिल्लाह कहकर छोड़ा गया हो, हलाल हो जाएगा।

क्योंकि इसमें शरीयत के अनुसार ज़बह (वध) होने की हुरमत (निषेध), लेकिन अल्लाह तआला का नाम लेना और भेड़ को उसकी गुद्दी (गर्दन के पीछे) से मारना एक निषिद्ध कार्य है। किसी शिकारी जानवर को केवल मन बहलाने के लिए शिकार के लिए छोड़ने की हुरमत उसके शरीयत के अनुसार

ज़बह होने के मनाफ़ी (विपरीत) या खिलाफ नहीं है, लेकिन अल्लाह तआला का नाम लेकर छोड़े जैसे किसी व्यक्ति ने अल्लाह तआला का नाम लेकर बकरी की गुद्दी की तरफ से...

[1] रद्द अल-मुह्तार, किताब अल-हज़्र वल-इबाह, फ़स्ल फ़िल-बैय, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 5/269 [2] अल-कुरआन अल-करीम 5/4

جلد ۲۴

فتاوٰی رضویہ

ردا لمختار میں ہے:

قولہ قیل والفرس ذکر شمس الائمۃ الحلوانی انہ لا بأس بہ عند اصحابنا وذکر شیخ الاسلام انہ حرام - واللہ تعالٰی اعلم۔

مصنف کا قول "والفرس" شمس الائمہ حلوانی نے ذکر فرمایا کہ گھوڑے خصی کرنے میں ہمارے اصحاب کے نزدیک کوئی حرج نہیں جبکہ شیخ الاسلام نے ذکر فرمایا کہ اسے خصی کرنا حرام ہے ،ط واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۲۵۲: ۲۰ ربیع الآخر شریف کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں کہ سگ کا پالنا جائز ہے یا نہیں؟ اور کبوتر پالنا ، بٹیر بازی اور مرغ بازی و شکرہ و باز پالنا اور ان سے شکار پکڑوانا اور کھانا درست ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائیے ۔ ت)

الجواب: شکرہ و باز کا پالنا درست ہے ، اور ان سے شکار کرانا اور اس کا کھانا بھی درست ہے ۔

لقولہ تعالٰی "وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ" الآیۃ۔ اللہ تعالٰی کے اس ارشاد کی وجہ سے " اور جن زخمی کرنے والے جانوروں کو تم نے شکار کرنے کا طریقہ سکھایا ہے ۔ (ت)

مگر یہ ضرور ہے کہ شکار غذا و دوا یا کسی نفع صحیح کی غرض سے ہو ، محض تفریح و لہو و لعب نہ ہو، ورنہ حرام ہے ، یہ گنہگار ہوگا ، اگر چہ ان کا مارا ہوا جانور جبکہ وہ تعلیم پا گئے ہوں اور بسم اللہ کہہ کر چھوڑا ہو حلال ہو جائے گا۔

فان حرمة فی کونه ذکاة شرعیة لکن سمی الله تعالی وضرب الغنم من قفاه حر الفعل کسی شکاری جانور کو محض تفریح طبع کے طور پر شکار کرنے کے لئے چھوڑنے کی حرمت اس کے شرعی طور پر ذبح ہونے کے منافی یا مخالف نہیں لیکن اللہ تعالیٰ کا نام لے کر چھوڑے جیسے کسی شخص نے اللہ تعالیٰ کا نام لے کر بکری کی گدی کی طرف سے

[1] رد المحتار کتاب الحظر والاباحة فصل فی البیع دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۶۹/۵ [2] القرآن الکریم ۵ / ۴

Fatawa Razawiyya Volume 24

And the lawfulness of eating: Beating [the animal] is a forbidden act, yet eating its meat is lawful. (T)

And quail fighting, cockfighting, and similarly making any animal fight, such as rams or partridges, to the extent of making prohibited animals fight like elephants or bears, is all strictly forbidden because it causes needless pain to speechless creatures. It is mentioned in the Hadith:

Arabic	Urdu Translation
The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forbade the instigation of fighting between animals. (Reported by Abu Dawud and Tirmidhi from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them), and Tirmidhi said: It is a Hasan Sahih Hadith. - T)	The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forbade making animals fight. (Imam Abu Dawud and Imam Tirmidhi reported this from Hazrat Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them) and Imam Tirmidhi said: This Hadith is Hasan Sahih. - T)

Keeping pigeons is permissible when it is merely for leisure and does not lead to any unlawful act. However, if they are flown by climbing onto roofs, causing a gaze to fall upon Muslim women, or if stones are thrown to make them fly, which might break someone's glass or hurt someone's eye, or if they are made to fly all day without food for entertainment, preventing them from landing when they want to, then such keeping is forbidden. It is stated in Durr al-Mukhtar:

Arabic	Urdu Translation
Keeping pigeons is disliked, even in their towers, if it harms people through gazing or luring. The precaution is to give them in charity and then buy them back or have them gifted. - Mujtaba. Then, if he flies them over the roof, looking at the private parts (veiled women) of Muslims, and breaks people's windows by throwing stones at those pigeons, he should be restrained and prevented.	Keeping pigeons is disliked if it harms people due to gazing or catching them. Precaution suggests giving them in charity then rebuying or receiving them as a gift. Mujtaba adds: If flying them from roofs leads to staring at veiled women or throwing pebbles to make them fly, causing damage to windows...

1 Jami' al-Tirmidhi, Chapters on the Virtues of Jihad, Chapter on what has been narrated about instigating fights between animals, Amin Company Delhi, 1/204; Sunan Abi Dawud, Book of Jihad, Chapter on what has been narrated about instigating fights between animals, Aftab-e-Alam Press Lahore, 1/346.

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

और खाने की हलालत: [जानवर को] मारना एक हराम काम है, फिर भी उसका मांस खाना हलाल है। (त)

और बटेर बाज़ी, मुर्गा बाज़ी और इसी तरह हर जानवर को लड़ाना जैसे मेंढे लड़ाते हैं या तीतर लड़ाते हैं, यहाँ तक कि हराम जानवरों जैसे हाथियों और भालुओं को लड़ाना भी सब पूर्णतः हराम है क्योंकि यह बेज़ुबान जानवरों को बिना वजह तकलीफ देना है। हदीस में है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जानवरों के बीच लड़ाई उकसाने से मना फ़रमाया। (अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया और तिर्मिज़ी ने कहा: यह हदीस हसन सही है। - त)	अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जानवरों को लड़ाने से मना फ़रमाया। (इमाम अबू दाऊद और इमाम तिर्मिज़ी ने इसे हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के हवाले से रिवायत किया और इमाम तिर्मिज़ी ने कहा: यह हदीस हसन सही है। - त)

कबूतर पालना जब केवल मनोरंजन के लिए हो और किसी नाजायज़ काम की ओर न ले जाए, तो जायज़ है। लेकिन अगर छतों पर चढ़कर उन्हें उड़ाया जाए जिससे मुस्लिम महिलाओं पर नज़र पड़े, या उन्हें उड़ाने के लिए कंकड़ फेंके जाएँ जिससे किसी का कांच टूट जाए या किसी की आँख फूट जाए, या तमाशे के लिए उन्हें दिन भर भूखा उड़ाया जाए और जब वे उतरना चाहें तो उन्हें न उतरने दिया जाए, तो ऐसा पालना हराम है। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
कबूतरों को रखना मकरूह है, भले ही उनके बुर्जों में हो, अगर इससे लोगों को देखने या पकड़ने की वजह से नुकसान पहुँचता हो। एहतियात यह है कि उन्हें खैरात कर दिया जाए फिर उन्हें खरीदा जाए या वे तोहफे में दिए जाएँ। - मुज्तबा। फिर अगर वह उन्हें छत के ऊपर उड़ाता है जिससे मुसलमानों की पर्दानशीन औरतों पर नज़र पड़ती है और उन	कबूतरों को रखना मकरूह है अगर देखने या पकड़ने की वजह से लोगों को नुकसान पहुँचता हो। एहतियात यह है कि उन्हें दान कर दिया जाए फिर वापस खरीद लिया जाए या तोहफे में लिया जाए। मुज्तबा कहते हैं: अगर छतों से उड़ाने से पर्दादार महिलाओं पर नज़र पड़ती हो या उन्हें उड़ाने के लिए

अरबी	उर्दू अनुवाद
कबूतरों पर पत्थर फेंकने से लोगों की खिड़कियों के शीशे टूटते हैं, तो उसे रोका और मना किया जाए।	कंकड़ फेंकने से खिड़कियों के रोशनदानों को नुकसान पहुँचता हो...

1 जामे तिर्मिज़ी, अबवाब फ़ज़ाइलुल जिहाद, बाब मा जा फ़ीत-तहरीश बैनल बहायम, अमीन कंपनी दिल्ली, 1/204; सुनन अबी दाऊद, किताबुल जिहाद, बाब मा जा फ़ीत-तहरीश बैनल बहायम, आफ़ताबे आलम प्रेस लाहौर, 1/346.

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

وحل الاکل۔ ضرب لگائی اگرچہ فعل حرام ہے مگر اس کا کھانا حلال ہے۔ (ت)

اور بٹیر بازی، مرغ بازی اور اسی طرح ہر جانور کا لڑانا جیسے مینڈھے لڑاتے ہیں لعل لڑاتے ہیں یہاں تک کہ حرام جانوروں مثلاً ہاتھیوں ریچھوں کا لڑانا بھی سب مطلقاً حرام ہے کہ بلاوجہ بے زبانوں کو ایذا ہے، حدیث میں ہے :

عربی متن

نهی رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم عن التحریش بین البهائم اخرجه ابوداؤد والترمذی عن ابن عباس رضی الله تعالی عنهما وقال الترمذی حسن صحیح - ۱

اردو ترجمہ

رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے جانوروں کے لڑانے سے منع فرمایا (امام ابو داؤد اور امام ترمذی نے اس کو حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے حوالے سے روایت کیا اور امام ترمذی نے فرمایا : حدیث حسن صحیح ہے۔ت)

کبوتر پالنا جبکہ خالی دل بہلانے کے لئے ہو اور کسی امرِ ناجائز کی طرف مؤدی نہ ہو جائز ہے اور اگر چھتوں پر چڑھ کر اڑائے کہ مسلمانوں کی عورتوں پر نگاہ پڑے یا ان کے اڑانے کو کنکریاں پھینکنے جو کسی کا شیشہ توڑیں یا کسی کی آنکھ پھوڑیں یا کسی کا دم بڑھائے اور تماشا ہونے کے لئے دن بھر انہیں بھوکا اڑائے جب اُترنا چاہیں نہ اترنے دیں ایسا پالنا حرام ہے، درِ مختار میں ہے :

عربی متن	اردو ترجمہ
يكره امساك الحمامات ولو في برجها ان كان يضر بالناس بنظر او جلب والاحتياط ان يتصدق بها ثم يشتريها اوتوهب لہ۔ مجتبی، فان كان يطيرها فوق السطح مطلعاً على عورات المسلمين ويكسر زجاجات الناس برميه تلك الحمامات عز و منع	کبوتروں کو روک رکھنا اگرچہ ان کے برجوں میں ہو مکروہ ہے اگر لوگوں کو نقصان پہنچا ہو دیکھنے یا پکڑنے کی وجہ سے، اور احتیاط یہ ہے کہ انہیں خیرات کر دیا جائے پھر انہیں خریدے یا اسے ہبہ کئے جائیں، مجتبیٰ، پھر اگر چھتوں پر چڑھ کر اڑائے کہ مسلمانوں کی پردہ دار خواتین پر نگاہ پڑے یا انہیں اڑانے کے لئے کنکر پھینکنے جن سے لوگوں کے گھروں کی کھڑکیوں کے روشندانوں [ٹوٹیں]۔

1 جامع الترمذی ابواب فضائل الجهاد باب ماجاء فی التحریش بین البهائم امین کمپنی دہلی ۱ / ۲۰۴، سنن ابی داؤد کتاب الجهاد باب ماجاء فی التحریش بین البهائم آفتاب عالم پریس لاہور ۱ / ۳۴۶

[Table 1] (Arabic): It is strictly forbidden; if they do not refrain, the inspector should slaughter them. It is explicitly stated in al-Wahbaniyya that punishment is mandatory and the pigeons should be slaughtered, without specifying any further conditions. Perhaps he relied on their custom. As for keeping them for companionship, it is permissible. [1] (Urdu): If it reaches the point of breaking glass, it is strictly prohibited. If they do not stop this behavior, the city ruler should have them slaughtered. In al-Wahbaniyya, it is clarified that in this situation, giving punishment and slaughtering the pigeons is mandatory. He did not mention the previous restriction, perhaps relying on the custom of the jurists. If pigeon-keeping is only for entertainment and companionship, then it is permissible. (T)

It is narrated in Sahih Bukhari etc. from Abdullah bin Umar and in Sahih Ibn Hibban from Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Table 2] (Arabic): A woman entered Hellfire because of a cat she tied up; she neither fed it nor let it eat from the vermin of the earth. [2] (Urdu): A woman went to Hell because of a cat she kept tied up; she neither fed it nor let it go so it could eat mice etc. from the ground.

In the Hadith of Ibn Hibban, it is stated:

[Table 3] (Arabic): So when she [the woman] faces it, it bites her front, and when she turns away, it bites her back. [3] (Urdu): That cat has been set upon that woman in Hell, tearing at her front and back with its teeth.

In one Hadith, it is commanded that for an animal you keep, show it grain and water seventy times a day, and do not keep it hungry and thirsty for hours on end; and if it wants to come down, let it. Scholars state that cruelty to an animal is more severe than cruelty to a non-Muslim subject (Dhimmi), and cruelty to a non-Muslim subject is more severe than cruelty to a Muslim, as in 'Durr al-Mukhtar' [4] etc. (As it is in Durr al-Mukhtar etc. - T) And the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)...

Footnotes: 1. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Hazr wal-Ibaha, Section on Sales, Matba' Mujtabai, Delhi, 2/249. 2. Sahih al-Bukhari, Kitab Bad' al-Khalq, Chapter on five pests, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/467. 3. Al-Ihsan bi-Tartib Sahih Ibn Hibban, Section regarding animals, Mu'assasat al-Risala Beirut, 8/455, Mawarid al-Zaman, Chapter on

Salat al-Kusuf, Hadith 595, 596, al-Matba'ah al-Salafiyyah p. 175. 4. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Hazr wal-Ibaha, Section on Sales, Matba' Mujtabai, Delhi, 2/249.

[तालिका १] (अरबी): यह सख़्त मना है; यदि वे नहीं रुकते हैं, तो निरीक्षक को उन्हें ज़िबह कर देना चाहिए। अल-वहबानिया में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि सज़ा अनिवार्य है और कबूतरों को ज़िबह कर देना चाहिए, बिना किसी अतिरिक्त शर्त के। शायद उन्होंने उनकी प्रथा पर भरोसा किया। जहाँ तक उन्हें साथ रखने की बात है, तो यह जायज़ है। [१] (उर्दू): अगर कांच टूटने की नौबत आए तो यह सख्त मना है और अगर इस हरकत से बाज़ न आएँ तो शहर का हाकिम उन्हें ज़िबह करवा दे। और वहबानिया में तसरीह (स्पष्टीकरण) है कि इस सूरत में सज़ा देना और कबूतरों को ज़िबह कर डालना वाजिब है और उसने पिछली क़ैद का ज़िक्र नहीं किया शायद उसने फुकहा-ए-किराम की आदत पर एतमाद किया है और अगर कबूतर पालना सिर्फ दिल बहलाने और मानूस होने के लिए हो तो मुबाह (जायज़) है। (त)

सहीह बुखारी वगैरह में अब्दुल्ला बिन उमर और सहीह इब्ने हिब्बान में अब्दुल्ला बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

[तालिका २] (अरबी): एक औरत एक बिल्ली के कारण नरक में गई जिसे उसने बाँध रखा था; न तो उसने उसे खाना खिलाया और न ही उसे धरती के कीड़े-मकोड़े खाने के लिए छोड़ा। [२] (उर्दू): एक औरत दोज़ख़ में गई एक बिल्ली के सबब कि उसे बाँध रखा था, न उसे खिलाया न छोड़ा कि ज़मीन के चूहे वगैरह खा लेती।

इब्ने हिब्बान की हदीस में है:

[तालिका ३] (अरबी): तो जब वह [औरत] उसका सामना करती है, वह उसके सामने के हिस्से को काटती है, और जब वह पीठ फेरती है, तो वह उसके पिछले हिस्से को काटती है। [३] (उर्दू): वह बिल्ली दोज़ख़ में उस औरत पर मुसल्लत की गई है कि उसका अगला पिछला दांतों से नोच रही है।

एक हदीस में हुक्म है कि जो जानवर पालो दिन में सत्तर बार उसे दाना पानी दिखाओ न कि घंटों पहरों भूखा प्यासा रखो और नीचे आना चाहे तो आने दो। उलमा फरमाते हैं कि जानवर पर ज़ुल्म काफ़िर ज़िम्मी पर ज़ुल्म से सख़्त तर है और काफ़िर ज़िम्मी पर मुसलमान ज़ुल्म से अश्द (अत्यधिक)

है जैसा कि दुर्रे मुख्तार ४ वगैरह में है। (जैसा कि दुर्रे मुख्तार वगैरह में है। त) और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम...

पाद-टिप्पणियाँ: 1. दुर्रे मुख्तार, किताब अल-हज़र वल-इबाहह, फ़स्ल फ़िल-बैअ, मतबा मुज्तबाई दिल्ली २/२४९। 2. सहीह अल-बुखारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब ख़म्सुन मिनल दवाब..., कदीमी कुतुब खाना कराची १/४६७। 3. अल-इहसान बे-तरतीब सहीह इब्ने हिब्बान, हैवानों के सम्बन्ध में अनुभाग, मुअस्ससतुर रिसाला बैरूत ८/४५५, हदीस ५९५, ५९६ अल-मतबअतुस सलफिय्या पृ. १७५। 4. दुर्रे मुख्तार, किताब अल-हज़र वल-इबाहह, फ़स्ल फ़िल-बैअ, मतबा मुज्तबाई दिल्ली २/२४९।

[جدول ۱] (عربی): اشد المنع فان لم یمتنع ذبحها المحتسب وصرح فی الوهبانیة بوجوب التعزیر وذبح الحمامان ولم یقیده بامر ولعله اعتمد عادتهم واما للاستیناس فمباح ۱ اھ (اردو): کے شیشے ٹوٹنے کی نوبت آئے تو یہ سخت منع ہے اور اگر اس حرکت سے باز نہ آئے تو حاکم شہر انہیں ذبح کرا ڈالے۔ اور وہبانیہ میں تصریح ہے کہ اس صورت میں سزا دینا اور کبوتروں کو ذبح کر ڈالنا واجب ہے اور اس نے گزشتہ قید کا ذکر نہیں کیا شاید اس نے فقہائے کرام کی عادت پر اعتماد کیا ہے اور اگر کبوتر پروری صرف دل بہلانے اور انس کے لئے ہو تو مباح ہے اھ (ت)

صحیح بخاری وغیرہ میں عبداللہ بن عمر اور صحیح ابن حبان میں عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

[جدول ۲] (عربی): دخلت امرأة النار فی هرة ربطتها فلم تطعمها ولم تدعها تأکل من خشاش الارض ۲۔ (اردو): ایک عورت دوزخ میں گئی ایک بلی کے سبب کہ اسے باندھا رکھا تھا، نہ اسے کھلایا نہ چھوڑا کہ زمین کے چوہے وغیرہ کھا لیتی۔

ابن حبان کی حدیث میں ہے:

[جدول ۳] (عربی): فهی اذا قبلت تنهشها قبلها واذا ادبرت تنهشها ۳۔ (اردو): وہ بلی دوزخ میں اس عورت پر مسلط کی گئی ہے کہ اس کا آگا پیچھا دانتوں سے نوچ رہی ہے۔

ایک حدیث میں حکم ہے کہ جو جانور پالو دن میں ستر بار سے دانہ پانی دکھاؤ نہ کہ گھنٹوں پہروں بھوکا پیاسا رکھو اور نیچے آنا چاہے تو آنے دو۔ علماء فرماتے ہیں جانور پر ظلم کافر ذمی

پر ظلم سے سخت تر ہے اور کافر ذمی پر مسلمان ظلم سے اشد کما فی الدر المختار ۴ وغیرہ (جیسا کہ درمختار وغیرہ میں ہے۔ ت) اور رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

حواشی: 1 درمختار کتاب الحظر والاباحة فصل فی البیع مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۲۴۹ 2 صحیح البخاری کتاب بدؤ الخلق باب خمس من الدواب فواستق الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۴۶۷ 3 الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان فصل فیما یتعلق بالدواب مؤسسة الرساله بیروت ۸/ ۴۵۵، موارد الظمآن باب صلاة الکسوف حدیث ۵۹۶،۵۹۵ المطبعة السلفیه ص ۱۷۵ 4 درمختار کتاب الحظر والاباحة فصل فی البیع مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۲۴۹

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

He (the Prophet) says: "Oppression will be darknesses on the Day of Judgment." [1] - Oppression will be darkness on the Day of Judgment.

And Allah Almighty says: "Behold! the curse of Allah is on the wrong-doers." [2] - Listen, the curse of Allah is upon those who commit oppression.

Keeping a dog is forbidden; an angel of mercy does not enter a house where there is a dog, and every day the good deeds of that person decrease. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"Angels do not enter a house in which there is a dog or an image." - Narrated by Ahmad [3], the two Sheikhs (Bukhari & Muslim), Tirmidhi, Nasa'i, and Ibn Majah from Abu Talhah (may Allah be pleased with him). | Angels do not enter the house in which there is a dog or a picture. (Imam Bukhari, Muslim, Ahmad, Tirmidhi, Nasa'i and Ibn Majah have narrated this with reference to Hazrat Abu Talhah, may Allah be pleased with him. - T)

And he (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"Whoever keeps a dog, except a dog for herding livestock or a hunting dog, his deeds will decrease by two qirats every day." - Narrated by Ahmad [4], the two Sheikhs (Bukhari & Muslim), Tirmidhi, and Nasa'i from Ibn Umar (may Allah be pleased with him). | Whoever keeps a dog, except for herding livestock or for hunting, two qirats will be subtracted from his good deeds daily [the magnitude of these qirats is known only to Allah and His Messenger, Jalla Jala-lahu, Sall-allahu 'alayhi wa-sallam]. (Imam Ahmad, Bukhari, Muslim, Tirmidhi, and Nasa'i have narrated this with the chain of Hazrat Abdullah ibn Umar, may Allah be pleased with him. - T)

---

1 Sahih al-Bukhari, Chapters on Oppression and Retaliation, Chapter: Oppression is darkness on the Day of Resurrection, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/431. 2 The Holy Quran, 7:44. 3 Sahih al-Bukhari, Book of the Beginning of Creation, 1/458 and Book of Military Expeditions, 2/750; Sahih Muslim, Book of Dress, 2/200; Jami' at-Tirmidhi, Chapters on Etiquette, 2/103; and Sunan an-Nasa'i, Chapters on Hunting, 2/193. 4 Sahih al-Bukhari, Book of Slaughtering, 2/822; Sahih Muslim, Book of Sharecropping, 2/21; Jami' at-Tirmidhi, Chapters on Hunting, 1/180; Sunan an-Nasa'i, Chapters on Hunting, 2/194; Musnad of Imam Ahmad ibn Hanbal from Ibn Umar, 2/7, 44, 70, 76.

फतावा रज़विया, जिल्द २४

फरमाते हैं: "जुल्म क़यामत के दिन अँधेरों का रूप ले लेगा।" [1] - ज़ुल्म क़यामत के दिन अंधकार होगा।

और अल्लाह तआला फरमाता है: "सुन लो! ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है।" [2] - सुन लो, ज़ुल्म करने वालों पर अल्लाह की लानत है।

कुत्ता पालना हराम है; जिस घर में कुत्ता हो उस घर में रहमत का फरिश्ता नहीं आता, और हर रोज़ उस व्यक्ति की नेकियाँ घटती हैं। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फरमाते हैं:

"फरिश्ते उस घर में प्रवेश नहीं करते जिसमें कुत्ता या चित्र हो।" - अहमद [3], दो शेखों (बुखारी और मुस्लिम), तिर्मिज़ी, नसाई और इब्न माजाह ने इसे अबू तल्हा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। | फरिश्ते उस घर में नहीं आते जिसमें कुत्ता या तस्वीर हो। (इमाम बुखारी, मुस्लिम, अहमद, तिर्मिज़ी, नसाई और इब्न माजाह ने इसे हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के हवाले से रिवायत किया है। - त)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फरमाते हैं:

"जिसने कुत्ता पाला, सिवाय मवेशियों की रखवाली वाले या शिकारी कुत्ते के, तो उसके कर्मों में से हर रोज़ दो क़ीरात कम होंगे।" - अहमद [4], दो शेखों (बुखारी और मुस्लिम), तिर्मिज़ी और नसाई ने इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। | जो कुत्ता पाले मगर गल्ले (मवेशियों) का कुत्ता या शिकारी, रोज़ उसकी नेकियों से दो क़ीरात कम हों [इन क़ीरातों की मात्रा अल्लाह और उसका रसूल ही जानें, जल्ल जलालाहु, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम]। (इमाम अहमद, बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी और नसाई ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्न उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की सनद के साथ इसे रिवायत किया है। - त)

---

1 सहीह बुखारी, अबवाबुल मज़ालीम वल क़िसास, बाब: अज़-ज़ुल्मु ज़ुलुमातुन यौमल क़ियामाह, क़दीमी कुतुब खाना कराची, 1/431. 2 अल-क़ुरान अल-करीम, 7:44. 3 सहीह अल-बुखारी, किताब बदउल ख़ल्क़, 1/458 और किताब अल-मग़ाज़ी, 2/750; सहीह मुस्लिम, किताबुल लिबास, 2/200; जामिअ अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुल अदब, 2/103; और सुनन अन-नसाई, अबवाबुस सैद, 2/193. 4 सहीह अल-बुखारी, किताबुज़ ज़बाईह, 2/822; सहीह मुस्लिम, किताबुल मुसाक़ात, 2/21; जामिअ

अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुस सैद, 1/180; सुनन अन-नसाई, अबवाबुस सैद, 2/194; मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल, इब्न उमर से, 2/7, 44, 70, 76.

पृष्ठ 658 का 720

فتاوٰی رضویہ، جلد ۲۴

فرماتے ہیں: الظلم ظلمت یوم القیامۃ ۱ - ظلم ظلمتیں ہوگا قیامت کے دن۔

اور اللہ تعالٰی فرماتا ہے: "اَنْ لَّعْنَۃُ اللہِ عَلَی الظّٰلِمِیْنَ ۲" - سن لو اللہ کی لعنت ہے ظلم کرنے والوں پر۔

کتا پالنا حرام ہے، جس گھر میں کتا ہو اس گھر میں رحمت کا فرشتہ نہیں آتا، روز اس شخص کی نیکیاں گھٹتی ہیں۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

لا تدخل الملئکۃ بیتاً فیہ کلب ولا صورۃ - رواہ احمد ۳ والشیخان والترمذی والنسائی وابن ماجۃ عن ابی طلحۃ رضی اللہ تعالٰی عنہما۔ | فرشتے نہیں آتے اس گھر میں جس میں کتا یا تصویر ہو۔ (امام بخاری، مسلم، احمد، ترمذی، نسائی اور ابن ماجہ نے اس کو حضرت ابو طلحہ رضی اللہ تعالٰی عنہما کے حوالہ سے روایت کیا ہے۔ ت)

اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم:

من اقتنی کلباً الاکلب ماشیۃ او ضاریاً نقص من عملہ کل یوم قیراطان - رواہ احمد ۴ والشیخان والترمذی والنسائی عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما۔ | جو کتا پالے مگر گلے کا کتا یا شکاری، روز اس کی نیکیوں سے دو قیراط کم ہوں (ان قیراطوں کی مقدار اللہ ورسول جانے جل جلالہ، صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم) (امام احمد، بخاری، مسلم، ترمذی اور نسائی نے حضرت عبد اللہ ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما کی سند کے ساتھ اس کو روایت کیا ہے۔ ت)

---

۱ صحیح بخاری ابواب المظالم والقصاص باب الظلم ظلمات یوم القیمۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۳۳۱ ۲ القرآن الکریم ۷/ ۴۴ ۳ صحیح البخاری کتاب بدء الخلق ۱/ ۴۵۸ و کتاب المغازی ۲/ ۷۵۰ و صحیح مسلم کتاب اللباس ۲/ ۲۰۰ جامع الترمذی ابواب الادب ۲/ ۱۰۳ و سنن النسائی ابواب الصید

۲/ ۱۹۳ ۴ صحیح البخاری کتاب الذبائح ۲/ ۸۲۲ و صحیح مسلم کتاب المساقات ۲/ ۲۱ جامع الترمذی ابواب الصید ۱/ ۱۸۰ و سنن النسائی ابواب الصید ۲/ ۱۹۴ مسند امام احمد بن حنبل عن ابن عمر ۲/ ۷، ۴۴، ۷۰، ۷۶

Therefore, only two types of dogs are permitted: one is a hunting dog, where there is a genuine need for hunting for food, medicine, or other valid benefits, and not for recreational hunting which is itself forbidden. The second is a dog kept for guarding herds, crops, or a house, provided there is a genuine need for protection. If there is nothing in the house to steal or if the house is in such a secure location that there is no fear of thieves—essentially, where one knows in their heart that 'protection' is just an excuse and the real reason is a fondness for dogs—then it is not permissible. After all, neighbors also consider their protection necessary; if protection weren't possible without a dog, they would keep them too. In summary, one should not seek loopholes in Allah Almighty's commands, for He knows the secrets of the hearts. And Allah Almighty knows best.

Issue 255: From Bengal, District Jessore, Post Office Mahmudpur, Village Dahnowail, sent by Azizur Rahman, 20 Jumada al-Akhira 1320 AH. What do the scholars of religion and the jurists of the clear Sharia say regarding this matter: is it permissible to castrate animals such as oxen, goats, chickens, etc., or not? If it is permissible, then in what manner? And where does this practice originate from and who initiated it?

Answer: If castrating animals is intended for a permissible benefit, such as improving the quality of meat as is the aim with oxen, goats, etc., or to curb aggression as is intended with horses, etc., then it is permissible; otherwise, it is forbidden. Regarding horses specifically, some scholars leaned towards prohibition, but the research indicates that if it is for a benefit, then it is also permissible. However, castrating a human being is absolutely forbidden. This practice of castration is well-known and was prevalent even before the advent of Islam.

In al-Durr al-Mukhtar: It is permissible to castrate beasts, even cats. As for castrating humans, it is forbidden. It is said [it is also forbidden for] the horse, and they conditioned it [permissibility] on benefit, otherwise it is forbidden. In Radd al-Muhtar: The statement "it is said the horse" was mentioned by Shams al-A'immah al-Halwani.

It is mentioned in Durr-e-Mukhtar that it is permissible to castrate animals, to the extent that even castrating a cat is permissible and allowed. As far as humans are concerned, there is absolutely no permission to castrate them; castrating a man is forbidden. It has also been said that castrating a horse is forbidden, and regarding the permissibility of its being castrated...

1 Durr al-Mukhtar, Kitab al-Hazr wal-Ibaha, Section on Sale, Matba' Mujtabai, Delhi, 2/246. Page 659 of 720

अतः केवल दो प्रकार के कुत्तों की अनुमति है: एक शिकारी कुत्ता, जहाँ भोजन, दवा या अन्य वैध लाभों के लिए शिकार की वास्तविक आवश्यकता हो, न कि मनोरंजन के लिए शिकार करना, क्योंकि वह स्वयं हराम (वर्जित) है। दूसरा वह कुत्ता जो झुंड, फसलों या घर की सुरक्षा के लिए पाला जाए और सुरक्षा की सच्ची आवश्यकता हो। अन्यथा, यदि घर में चुराने के लिए कुछ नहीं है या घर ऐसी सुरक्षित जगह पर है जहाँ चोरों का कोई डर नहीं है—संक्षेप में, जहाँ व्यक्ति अपने दिल में अच्छी तरह जानता है कि सुरक्षा का केवल बहाना है और वास्तव में कुत्ते पालने का शौक है—तो वहां यह जायज़ नहीं है। आखिर पास-पड़ोस वाले भी अपनी सुरक्षा ज़रूरी समझते हैं; यदि बिना कुत्ते के सुरक्षा नहीं होती तो वे भी पालते। सारांश यह है कि अल्लाह तआला के हुक्म में हीला (बहाना) न निकालें, क्योंकि वह दिलों की बात जानने वाला है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला २५५: बंगाल, ज़िला जशोर, डाकखाना महमूदपुर, गाँव दहनोवाइल से प्रेषक अज़ीज़ुर रहमान, २० जुमाद अल-आख़िरा १३२० हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले के बारे में क्या कहते हैं: क्या जानवरों जैसे बैल, बकरा, मुर्गा आदि को खस्सी (बधिया) करना जायज़ है या नहीं? यदि जायज़ है, तो किस तरह? और यह तरीका कहाँ से आया और किसने शुरू किया?

जवाब: जानवरों को खस्सी करने से यदि कोई जायज़ लाभ वांछित हो, जैसे मांस की गुणवत्ता अच्छी करना जैसा कि बैल, बकरी आदि में उद्देश्य होता है, या शरारत (आक्रामकता) दूर करना जैसा कि घोड़ों आदि में इरादा किया जाता है, तो यह जायज़ है वरना हराम। केवल घोड़ों के मामले में विद्वान मनाही की ओर गए हैं, लेकिन शोध यह है कि यदि लाभ के लिए हो तो वह भी जायज़ है। अलबत्ता मनुष्य को खस्सी करना पूरी तरह से हराम है। और यह खस्सी करने का तरीका प्रसिद्ध है और इस्लाम के आने से पहले से प्रचलित है।

'अल-दुर्र अल-मुख्तार' में है: चौपायों को खस्सी करना जायज़ है यहाँ तक कि बिल्ली को भी। लेकिन मनुष्य को खस्सी करना हराम है। कहा गया है [घोड़े के लिए भी], और उन्होंने इसे लाभ के साथ शर्तबद्ध किया है वरना हराम है। 'रद अल-मुहतार' में: कथन "कहा गया है घोड़ा" का उल्लेख शम्स अल-आइम्मा अल-हलवानी ने किया है।

'दुर्र-ए-मुख्तार' में है कि जानवरों को खस्सी करना जायज़ है यहाँ तक कि बिल्ली को खस्सी करना भी मुबाह (अनुमेय) और जायज़ है। जहाँ तक इंसान का संबंध है, उसे खस्सी करने की अनुमति हरगिज़

नहीं है, पुरुष को खस्सी करना हराम है। यह भी कहा गया है कि घोड़े को खस्सी करना हराम है, और इसके खस्सी किए जाने के औचित्य...

१ 'दुर्र अल-मुख्तार', किताब अल-हज़्र वल-इबाहह, फ़स्ल फ़िल-बय, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, २/२४६। पृष्ठ ६५९ (७२० में से)

تو صرف دو قسم کے کتے اجازت میں رہے ایک شکاری جسے کھانے یا دوا وغیرہ منافع صحیحہ کے لئے شکار کی حاجت ہو، نہ شکار تفریح کہ وہ خود حرام ہے، دوسرا وہ کتا جو گلے یا کھیتی یا گھر کی حفاظت کے لئے پالا جائے اور حفاظت کی سچی حاجت ہو، ورنہ اگر مکان میں کچھ نہیں کہ چور لیں یا مکان محفوظ جگہ ہے کہ چور کا اندیشہ نہیں، غرض جہاں یہ اپنے دل سے خوب جانتا ہو کہ حفاظت کا بہانہ ہے اصل میں کتے کا شوق ہے وہاں جائز نہیں، آخر آس پاس کے گھر والے بھی اپنی حفاظت ضروری سمجھتے ہیں اگر بے کتے کے حفاظت نہ ہوتی تو وہ بھی پالتے، خلاصہ یہ کہ اللہ تعالیٰ کے حکم میں حیلہ نہ نکالے کہ وہ دلوں کی بات جاننے والا ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۲۵۵: از بنگالہ ضلع جسر ڈاکخانہ محمود پور موضع دہنوائل مرسلہ عزیز الرحمن ۲۰ جمادی الآخرہ ۱۳۲۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں، جانوروں کا خصی کرانا جیسے بیل، بکرا، مرغ وغیرہ جائز ہے یا نہیں؟ اگر جائز ہے تو کس طرح پر؟ اور یہ طریقہ کہاں سے ہے اور کس نے جاری کیا؟

الجواب: جانوروں کے خصی کرنے سے اگر کوئی منفعت جائزہ مقصود ہو یا گوشت اچھا ہونا جیسا بیل، بکری وغیرہ میں مقصود ہوتا ہے یا شرارت دفع کرنا جیسا کہ گھوڑے وغیرہ میں قصد کیا جاتا ہے جب تو جائز ہے ورنہ حرام، صرف گھوڑے کے باب میں علماء ممانعت کی طرف گئے، مگر تحقیق یہ ہے کہ منفعت کے لئے ہو تو وہ بھی جائز ہے البتہ آدمی کو خصی کرنا مطلقاً حرام ہے۔ اور یہ طریقہ خصی کرنے کا مشہور و معروف اور زمانہ اسلام آنے سے پیشتر جاری ہے۔

فی الدر المختار جاز خصاء البهائم حتی الهرة واما خصاء الأدمی فحرام قیل والفرس وقیدوه بالمنفعة والافحرام، فی ردالمحتار قوله قیل الفرس ذکر شمس الائمة الحلوانی

در مختار میں ہے کہ جانوروں کو خصی کرنا جائز ہے یہاں تک کہ بلی کو خصی کرنا بھی مباح اور جائز ہے، جہاں تک انسان کا تعلق ہے اسے خصی کرنے کی اجازت ہرگز نہیں، مرد کو خصی کرنا حرام ہے، یہ بھی کہا گیا ہے کہ گھوڑے کو خصی کرنا حرام ہے، اور اس کے خصی کئے جانے کے جواز

1 در مختار کتاب الحظر والاباحة فصل فی البیع مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۲۴۶ Page 659 of 720

Fatawa Rizvia Volume 24

"There is no harm in it according to our companions, and Shaykh-ul-Islam mentioned that it is forbidden. His words 'and they restricted it' mean the permissibility of castrating animals for a benefit, such as intending them to become fat or preventing them from biting, unlike human beings, for castrating them leads to sins and is therefore forbidden. This was stated by Al-Atqani on the authority of Al-Tahawi. And Allah Almighty knows best." Religious scholars have made this conditional and restricted to its benefit; otherwise, they have called castrating them forbidden. In Fatawa Shami, under the author's statement "it was said regarding the horse," it is mentioned that our companions consider castrating a horse permissible. However, Shaykh-ul-Islam stated that it is forbidden. The author's statement "restricted it" means that the permissibility of castrating animals is tied to some benefit, for example, to make the animal fat and strong or so that it refrains from playfulness and mischief. This is unlike humans, where being castrated or performing it would give rise to many types of sins. Allama Al-Atqani presented this wisdom on the authority of Imam Tahawi. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 256: 9th Rabi al-Awwal Sharif: What do the scholars of religion say regarding this matter: Is flying pigeons, cockfighting, quail fighting, kite flying, and selling kites, strings, and manjhas permissible or forbidden? And is it mandatory to greet these people and respond to their greetings? Please state and be rewarded. (T)

The Answer: Keeping pigeons is permissible as long as one does not catch others' pigeons. Flying pigeons such that they are not allowed to land for hours is forbidden. Cockfighting or quail fighting is forbidden. One should not initiate greetings with these people; a response can be given, but it is not mandatory. Kite flying involves wasting time and money. This is also a sin, and selling the instruments of sin like kite strings is also prohibited. If one abstains from them, one should not initiate greetings with them either. And Allah Almighty knows best.

Problem 257: If a cat or dog etc. damages people's things or bites them, is it permissible to kill them or not? Please state and be rewarded. The Answer: If they bite, then killing them is correct. And Allah Almighty knows best.

1. Rad al-Muhtar, Kitab al-Hazr wal-Ibaha, Section on Sale, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/249 Page 660 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

"हमारे साथियों के अनुसार इसमें कोई बुराई नहीं है, और शेख-उल-इस्लाम ने उल्लेख किया है कि यह हराम है। उनका कथन 'और उन्होंने इसे प्रतिबंधित किया' का अर्थ है किसी लाभ के लिए जानवरों को खस्सी (बधिया) करने की अनुमति, जैसे उन्हें मोटा करने का इरादा या उन्हें काटने से रोकना, मनुष्यों के विपरीत, क्योंकि उन्हें खस्सी करना पापों की ओर ले जाता है और इसलिए हराम है। यह अल-अत्कानी ने अल-तहावी के अधिकार पर कहा था। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।" विद्वानों ने इसे इसके लाभ के साथ सशर्त और प्रतिबंधित किया है; अन्यथा, उन्होंने इसे खस्सी करना हराम कहा है। फ़तावा शामी में, लेखक के कथन 'घोड़े के बारे में कहा गया' के तहत, यह उल्लेख किया गया है कि हमारे साथी घोड़े को खस्सी करना जायज़ मानते हैं। हालाँकि, शेख-उल-इस्लाम ने कहा कि यह हराम है। लेखक का कथन 'प्रतिबंधित किया' का अर्थ है कि जानवरों को खस्सी करने की अनुमति किसी लाभ से जुड़ी है, उदाहरण के लिए, जानवर को मोटा और मजबूत बनाने के लिए या ताकि वह शरारत और उत्पात से बाज आ जाए। यह मनुष्यों के विपरीत है, जहाँ खस्सी होने या करने से कई प्रकार के पाप जन्म लेंगे। अल्लामा अत्कानी ने इमाम तहावी के हवाले से यह हिकमत पेश की है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 256: 9 रबी-उल-अव्वल शरीफ: दीन के उलेमा इस मसले में क्या कहते हैं कि कबूतर उड़ाना और मुर्गा बाजी, बटेर बाजी, पतंगबाजी (कंकिया बाजी) और पतंग, डोर और मांझा बेचना जायज़ है या नाजायज़? और क्या इन लोगों को सलाम करना और सलाम का जवाब देना वाजिब है या नहीं? बयान फरमाएं और सवाब पायें। (त)

अल-जवाब: कबूतर पालना जायज़ है जब तक कि दूसरों के कबूतर न पकड़े जाएं, और कबूतर उड़ाना कि उन्हें घंटों उतरने न दिया जाए हराम है। मुर्गा या बटेर लड़ाना हराम है। इन लोगों को पहले सलाम नहीं करना चाहिए; जवाब दिया जा सकता है, वाजिब नहीं। पतंगबाजी में समय और धन की बर्बादी होती है। यह भी गुनाह है और गुनाह के औज़ार जैसे पतंग की डोर बेचना भी मना है। यदि इनसे परहेज किया जाए तो इन्हें पहले सलाम भी न किया जाए। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 257: अगर बिल्ली या कुत्ता वगैरह लोगों की चीजों का नुकसान करते हों या काट खाते हों तो उनका मार डालना जायज़ है या नहीं? बयान फरमाएं। अल-जवाब: काटते हों तो उनका कत्ल (मारना) दुरुस्त है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

1. रद-उल-मुहतार, किताब अल-हज़र वल-इबाहा, बिक्री पर अनुभाग, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 5/249 पेज 660 का 720

انہ لاباس بہ عند اصحابنا و ذکر شیخ الاسلام انہ حرام ، قولہ وقیدوہ ای جواز خصاء البھائم بالمنفعۃ و ھی ارادۃ سمنھا او منعھا عن العض بخلاف بنی آدم فانہ یراد بہ المعاصی فیحرم ، افادہ الاتقانی عن الطحاوی ا ھ واللہ تعالٰی اعلم کو علماء کرام نے اس کے فائدے کے ساتھ مشروط اور مقید کیا ہے ورنہ اس کو خصی کرنا حرام کہا ہے۔ فتاوٰی شامی میں مصنف کے قول قیل الفرس کے ذیل کیا ہے کہ ہمارے اصحاب گھوڑے کو خصی کرنا جائز قرار دیتے ہیں البتہ شیخ الاسلام نے بیان فرمایا کہ یہ حرام ہے۔ مصنف کا قول قیدوہ یعنی جانوروں کو خصی کرنے کا جواز کسی منفعت سے مقید ہے مثلاً جانور کو موٹا اور طاقتور بنانا یا یہ کہ وہ شوخی اور شرارت سے باز آ جائے گا بخلاف بنی آدم کے کہ اس کے خصی ہونے یا کئے جانے سے کئی قسم کے گناہ جنم لیں گے۔ علامہ اتقانی نے امام طحاوی کے حوالے سے یہ حکمت پیش کی ہے اھ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۲۵۶: ۹ ربیع الاول شریف: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ کبوتر اڑانا اور مرغ بازی، بٹیر بازی، کنکیا بازی اور فروخت کرنا کنکیا اؤ ڈور اور مانجھا جائز ہے یا ناجائز؟ اور ان لوگوں سے سلام علیک کرنا اور سلام کا جواب دینا واجب ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائیے۔ت)

الجواب: کبوتر پالنا جائز ہے جبکہ دوسروں کے کبوتر نہ پکڑے ، اور کبوتر اڑانا کہ گھنٹوں ان کو اترنے نہیں دیتے حرام ہے اور مرغ یا بٹیر کا لڑانا حرام ہے۔ ان لوگوں سے ابتداءً بسلام نہ کی جائے جواب دے سکتے ہیں، واجب نہیں۔ کنکیا اڑانے میں وقت، مال کا ضائع کرنا ہوتا ہے۔ یہ بھی گناہ ہے اور گناہ کے آلات کنکیا ڈور بیچنا بھی منع ہے احتراز کریں تو ان سے بھی ابتداءً بسلام نہ کی جائے۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۵۷: اگر بلی یا کتا وغیرہ آدمیوں کی چیز کا نقصان کرتے ہوں یا کاٹ کھاتے ہوں تو ان کا مار ڈالنا جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔ الجواب: کاٹتے ہوں تو درست ہے قتل ان کا۔ واللہ تعالیٰ اعلم

1 رد المحتار کتاب الحظر والاباحة فصل فی البیع داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۴۹/۵ صفحہ ۶۶۰ از ۷۲۰

Volume 24 Fatawa Razawiyya

Problem 258 to 260: From Old City, 12 Rajab 1335 AH, Baradari, asked by Mustafa Ali Khan. Respected Maulvi Sahib, after greetings, it is requested that I am sending a person to you, please be kind enough to grant answers to the questions: (1) If a kite falls at home and it is not known who it belongs to, is it a sin to take it? (2) Is flying kites a sin or not? (3) If a cat causes trouble, is it a sin to leave it in the settlement?

The Answer: (1) Looting a kite is forbidden. If it falls by itself, tear it up. If it is not known whose it is, give the string to a poor person so they can use it for any permissible work. If you are poor yourself, then use it for yourself. Later, if it becomes known that it belongs to a certain Muslim and they are not satisfied with that charity or the poor person's use, then it must be returned, but there is no compensation for the kite in any case. (2) Flying kites is prohibited and making them fight is a sin. (3) If a cat causes harm, there is no harm in leaving it outside, and it can also be slaughtered with a sharp knife. However, leaving it in a place from where it cannot reach any sustenance is not permissible. That is all.

Problem 261: From Gondal area, Kathiawar, sent by Qazi Qasim Mian, 11 Safar 1338 AH. What do the scholars of religion say in this matter that in "Tawarikh Habib Allah" page 92, with reference to Mishkat Sharif, narrated by Hazrat Abu Sa'id al-Khudri (may Allah be pleased with him), it is cited that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said regarding a story of a young Ansari (may Allah be pleased with him) to the Companions (may Allah be pleased with them all) that there are a type of snakes in houses called 'Awamir'. When a snake appears in a house, do not kill it immediately upon seeing it. Tell it for three days not to come out again. Then if it appears, kill it. The question to be asked is, should the snake be left after saying this or should it be killed? Do Jinns also appear in the form of snakes and is there any sign of them or not?

The Answer: This command in the Hadith was for Medina Tayyiba; there is no need for it elsewhere, as established by Imam al-Tahawi in Sharh Ma'ani al-Athar. And Allah Almighty knows best.

खंड 24 फतावा रज़विया

मसला 258 से 260: पुराना शहर, 12 रजब 1335 हिजरी, बारादरी, मुस्तफा अली खान द्वारा प्रेषित। जनाब मौलवी साहब, आदाब के बाद गुजारिश यह है कि मैं आपकी सेवा में एक आदमी भेज रहा हूँ, कृपा करके सवालों के जवाब इनायत फरमाएं (1) अगर पतंग घर पर आकर गिर जाए और मालूम न हो कि किसकी है, तो उसे ले लेने में कोई गुनाह तो नहीं? (2) पतंग उड़ाना गुनाह है या नहीं? (3) अगर बिल्ली तकलीफ देती हो तो उसे बस्ती में छोड़ देना गुनाह तो नहीं है?

जवाब: (1) पतंग लूटना हराम है, और अगर खुद आकर गिर जाए तो उसे फाड़ डालें। अगर मालूम न हो कि किसकी है, तो डोर किसी गरीब (मिस्कीन) को दे दें ताकि वह उसे किसी जायज़ काम में इस्तेमाल कर सके। अगर खुद गरीब हों तो अपने इस्तेमाल में लाएं। फिर जब मालूम हो जाए कि फलां मुसलमान की है और वह उस दान या गरीब के इस्तेमाल पर राजी न हो, तो वापस करनी होगी, लेकिन पतंग का कोई मुआवज़ा (हर्जाना) नहीं है। (2) पतंग उड़ाना मना है और लड़ाना गुनाह है। (3) अगर बिल्ली नुकसान पहुंचाती हो तो उसे बाहर छोड़ देने में कोई हर्ज नहीं, और तेज़ चाकू से उसे ज़िबह भी कर सकते हैं। लेकिन उसे ऐसी जगह छोड़ना जायज़ नहीं है जहाँ से वह अपने किसी रिज़क (भोजन) तक न पहुँच सके। बस।

मसला 261: मुकाम गोंडल, काठियावाड़, प्रेषक काज़ी कासिम मियां, 11 सफर 1338 हिजरी। विद्वान इस मसले में क्या फरमाते हैं कि 'तवारीख हबीब अल्लाह' पृष्ठ 92 में 'मिशकात शरीफ' के हवाले से हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) की रिवायत है कि हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एक नौजवान अनसारी के किस्से में सहाबा किराम से फरमाया कि घरों में एक किस्म के सांप होते हैं जिन्हें 'अवामिर' कहा जाता है। जब सांप घर में दिखाई दे तो उसे देखते ही न मार डालो, बल्कि तीन दिन तक उससे कहो कि फिर न निकलना। फिर अगर वह दिखाई दे तो उसे मार डालो। पूछना यह है कि क्या इस तरह कह कर सांप को छोड़ दिया जाए या मार देना चाहिए? क्या जिन भी सांप के रूप में प्रकट होते हैं और क्या उनकी कोई निशानी है या नहीं?

जवाब: हदीस में यह हुक्म मदीना तैयबा के लिए था, और अन्य स्थानों पर इसकी आवश्यकता नहीं है जैसा कि इमाम तहावी ने 'शरह मानी अल-आसार' में शोध किया है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

पृष्ठ 661 में से 720

مسئلہ ۲۵۸ تا ۲۶۰: از شہر کہنہ ۱۲ رجب ۱۳۳۵ھ بارہ دری مسئولہ مصطفی علی خاں جناب مولوی صاحب بعد ادائے آداب کے گزارش یہ ہے کہ آپ کی خدمت میں آدمی بھیجتا ہوں مہر بانی فرما کر سوالوں کا جواب عنایت فرمادیجئے: (۱) کنکیا اگر آکر گھر پر گر جائے اور معلوم نہ ہو کہ کس کی ہے لے لینے سے گناہ تو نہیں؟ (۲) کنکیا اڑانا گناہ ہے یا نہیں؟ (۳) بلی تکلیف دیتی ہو تو اس کو بستی میں چھوڑوانا گناہ تو نہیں ہے؟ الجواب: (۱) کنکیا لُوٹنا حرام، اور خود آکر گر جائے تو اسے پھاڑ ڈالے، اور اگر معلوم نہ ہو کہ کس کی ہے تو ڈور کسی مسکین کو دے دے کہ وہ کسی جائز کام میں صرف کرلے، اور خود مسکین ہو تو اپنے صرف میں لائے، پھر جب معلوم ہو کہ فلاں مسلم کی ہے اور وہ اس تصدق یا اس مسکین کے اپنے پر راضی نہ ہو تو دینی آئے گی اور کنکیا کا معاوضہ بہر حال کچھ نہیں۔ (۲) کنکیا اڑانا منع ہے اور لڑانا گناہ۔ (۳) بلی اگر ایذا دیتی ہو تو اسے باہر چھوڑ دینے میں حرج نہیں اور تیز چھری سے ذبح بھی کرسکتے ہیں مگر چھوڑوانا ایسی جگہ جائز نہیں جہاں سے وہ اپنے کسی رزق تک نہ پہنچ سکے۔ فقط مسئلہ ۲۶۱: از مقام گونڈل علاقہ کاٹھیاوار مرسلہ قاضی قاسم میاں ۱۱ صفر ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ تواریخ حبیب الہ ص ۹۲ میں بحوالہ مشکوۃ شریف بروایت حضرت ابو سعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ نقل ہے کہ حضور اقدس سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ایک قصہ نوجوان انصاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ میں صحابہ کرام رضوان اللہ تعالیٰ علیہم اجمعین کو ارشاد فرمایا کہ مکانوں میں ایک قسم کے سانپ ہوتے ہیں کہ عوامر کہلاتے ہیں جب سانپ مکان میں نمودار ہو تو تو دیکھتے ہی نہ مار ڈالو کہ تین دن اسے کہہ دو کہ پھر نہ نکلیو، پھر اگر وہ دکھائی دے تو اسے مار ڈالو۔ دریافت طلب یہ ہے کہ اس طرح کہہ کر کیا سانپ کو چھوڑ دیا جائے

یا مار ڈالنا چاہئے؟ کیا جن بھی سانپ کی شکل نمودار ہوتے ہیں اور ان کی کچھ نشانی ہے یا نہیں؟

الجواب: یہ حکم حدیث میں مدینہ طیبہ کے لئے تھا اور جگہ اس کی حاجت نہیں کما حققہ الامام الطحاوی فی شرح معانی الآثار (جیسا کہ امام طحاوی نے شرح معانی الآثار میں اس کی تحقیق کی ہے ت) واللہ تعالیٰ اعلم

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

Problem 262: From Bareilly, Madrasa Manzar-e-Islam, questioned by Maulvi Muhammad Afzal Sahib, 16 Safar 1338 AH. What do the scholars of religion say on this issue: Is it disliked (makruh) to raise a monkey in one's house or not? (Translated version: What do the scholars of religion say in this matter, whether raising a monkey in one's house is a disliked and undesirable act or not? (T))

The Answer: Yes, because it is among the troublemakers [among animals] and nothing comes from it but harm. And if it is for the purpose of subduing it as the Qalandars do, then this is itself forbidden (haram), as in Al-Durr al-Mukhtar, and Allah knows best. (Translated version: Yes, certainly (it is disliked to raise it) because it is counted among the harmful animals. Thus, nothing comes from it except causing trouble. If it is ever tamed as the carefree people (Qalandars) do, then this too is forbidden as mentioned in Al-Durr al-Mukhtar. And Allah Almighty knows best. (T))

Problem 263: From Faridpur, sent by Janab Jaddul Hussain Sahib, dated 22 Jumada al-Akhirah 1338 AH. What do the scholars of religion say on this issue: If a calf of a cow or buffalo dies, and the skin of that calf is dried and stuffed into the shape of a calf and placed before the cow, is it permissible to milk the cow or not? Explain and be rewarded.

The Answer: It is permissible. And Allah Almighty knows best.

Problem 264: From Metar Ta Road, Marwar, Jodhpur State, questioned by Abdul Qadir Sahib, 26 Jumada al-Ula. What do the scholars of religion and the firm Sharia say: Is feeding grains to ants permissible or impermissible? Please write. A person went to a cleric and said, 'I am in financial distress.' The Maulana said, 'Keep feeding grains to ants.' He did this act; is there a reward for this or not?

The Answer: It is permissible and an act of reward. The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) says: "In every living creature, there is a reward [for kindness towards it]." Narrated by the Two Sheikhs. There is a reward in serving every living being. (Bukhari and Muslim)

1 Sahih al-Bukhari, Book of Oppressions, Chapter: Houses on the Road, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/333; Sahih Muslim, Book of Peace, Chapter: The Virtue of Watering Animals, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/23.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 24

मसला 262: बरेली, मदरसा मंज़र-ए-इस्लाम से, मौलवी मोहम्मद अफ़ज़ल साहब द्वारा प्रश्न, 16 सफ़र 1338 हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि क्या अपने घर में बंदर पालना मकरूह (नापसंद) है या नहीं? (अनुवादित संस्करण: धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि बंदर को अपने घर में पालना मकरूह और नापसंद काम है या नहीं। (त))

अल-जवाब: हाँ, क्योंकि वह हानिकारक जानवरों में से है और उससे कष्ट पहुँचाने के अलावा कुछ नहीं होता। और अगर उसे वश में करने के लिए हो जैसा कि कलंदर करते हैं, तो यह स्वयं हराम (वर्जित) है जैसा कि 'दुर्र अल-मुख़्तार' में है, और अल्लाह बेहतर जानता है। (अनुवादित संस्करण: हाँ बेशक (इसे पालना मकरूह है) इसलिए कि वह फ़ासिक़ (हानिकारक) जानवरों में गिना जाता है। अतः इससे कष्ट पहुँचाने के अलावा और कुछ नहीं होता, यदि कभी उसे वश में किया जाए जैसा कि कलंदर लोग (आज़ाद स्वभाव के) करते हैं तो यह भी हराम है जैसा कि 'दुर्र अल-मुख़्तार' में उल्लेखित है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त))

मसला 263: फ़रीदपुर से, जनाब जद्दुल हुसैन साहब द्वारा प्रेषित, दिनांक 22 जमादी अल-आख़िरा 1338 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि यदि गाय या भैंस का बच्चा मर जाए और उस बच्चे की खाल को सुखाकर बच्चे की शक्ल बना दी जाए और गाय के सामने रखा जाए, तो दूध दुहना जायज़ है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य पाएँ।

अल-जवाब: जायज़ है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 264: मेटर टा रोड, मारवाड़, जोधपुर रियासत से, अब्दुल क़ादिर साहब द्वारा प्रश्न, 26 जमादी अल-उला। धर्म और सुदृढ़ शरीयत के विद्वान क्या कहते हैं कि चींटियों को दाना डालना जायज़ है या नाजायज़? कृपया लिखें। एक व्यक्ति एक मौलवी के पास गया और कहा कि मैं आर्थिक तंगी में हूँ, मौलाना कहने लगे कि चींटियों को दाना डाला करो। उसने यह कार्य किया, क्या इसमें सवाब (पुण्य) है या नहीं?

अल-जवाब: जायज़ और सवाब का काम है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "प्रत्येक जीवित प्राणी की सेवा में पुण्य है।" इसे दोनों शेखों ने रिवायत किया है। हर जानदार की सेवा करने में पुण्य है। (बुखारी और मुस्लिम)

1 सहीह अल-बुखारी, किताब अल-मज़ालिम, अध्याय: मार्ग पर बने घर, क़दीमी कुतुब खाना कराची, 1/333; सहीह मुस्लिम, किताब अस-सलाम, अध्याय: पशुओं को पानी पिलाने का पुण्य, क़दीमी कुतुब खाना कराची, 2/23।

पृष्ठ 662/720

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۴

مسئلہ ۲۶۲: از بریلی مدرسہ منظرالاسلام مسئولہ مولوی محمد افضل صاحب ۱۶ صفر ۱۳۳۸ھ چہ می فرمایند علمائے دین دریں مسئلہ کہ بوزینہ را در خانہ خود پرورش کردن مکروہ ہست یا نہ؟ علمائے دین اس مسئلہ میں کیا ارشاد فرماتے ہیں کہ بندر کو اپنے گھر میں پالنا مکروہ اور ناپسندیدہ کام ہے یا نہیں۔ (ت) الجواب: بلے زیرا کہ او از فسقہ است واز وے جز ایذا نیاید واگر برائے مسخر خواھد چنانکہ قلندراں می کنند ایں خود حرامست کما فی الدرالمختار، وھو تعالیٰ اعلم۔ ہاں بیشک (اس کا پالنا مکروہ ہے) اس لئے کہ وہ فاسق جانوروں میں شمار ہے۔ پس اس سے سوائے ایذارسانی اور کچھ نہیں ہوتا، اگر کبھی تابع کیا جائے جیسا کہ قلندر لوگ (آزاد منش) کیا کرتے ہیں تو یہ بھی حرام ہے جیسا کہ در مختار میں مذکور ہے۔ وھو تعالیٰ اعلم (ت) مسئلہ ۲۶۳: از فرید پور مرسلہ جناب جدالحسین صاحب مورخہ ۲۲ جمادی الآخرہ ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اگر گائے یا بھینس کا بچہ مر جائے اور اس بچہ کے چمڑے کو سکھا کر بصورت بچہ بنا کر اور گائے کے سامنے رکھا، دودھ دوہنا جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔ الجواب: جائز ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم مسئلہ ۲۶۴: از میٹر ٹاروڈ مارواڑ ریاست جودھپور مسئولہ عبدالقادر صاحب ۲۶ جمادی الاولٰی کیا فرماتے ہیں علمائے دین و شرع متین کہ چیونٹیوں کو دانہ ڈالنا جائز ہے یا نا جائز؟ تحریر فرمائیں، ایک شخص ایک مولوی کے پاس گیا اور کہا کہ میں تنگ دست ہوں، مولانا فرمانے لگے چیونٹیوں کو دانہ ڈالا کرو۔ اس نے یہ فعل کیا، یہ ثواب ہے یا نہیں؟ الجواب: جائز و کار ثواب ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: فی کل ذات کبد رطبۃ اجر رواہ الشیخان[1] ہر جاندار کی خدمت کرنے میں اجر ہے، بخاری و مسلم

[1] صحیح البخاری کتاب المظالم باب الدیار علی الطریق قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۳۳۳ ، صحیح مسلم کتاب السلام باب فضل سقی البہائم قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۲۳

From Abu Hurairah, and Ahmad from Abdullah bin | In [it], narrated from Hazrat Abu Hurairah, and Imam Ahmad Amr, and Ibn Majah from Suraqa bin Malik, may | from Abdullah bin Amr, and Ibn Majah narrated it from Allah Almighty be pleased with them. And Allah | Suraqa bin Malik, may Allah Almighty be pleased with Almighty knows best. | them. And Allah Almighty knows best. (T)

अबू हुरैरा से, और अहमद ने अब्दुल्लाह बिन अम्र से | इसमें हज़रत अबू हुरैरा से इसे रिवायत किया, और इमाम अहमद ने और इब्न माजा ने सुराक़ा बिन मालिक रज़ियल्लाहु | अब्दुल्लाह बिन अम्र से और इब्न माजा ने सुराक़ा बिन मालिक तआला अन्हुम से। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। | रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से इसे रिवायत किया। और अल्लाह | तआला बेहतर जानता है। (त)

عن ابی ھریرۃ واحمد عن عبداللہ بن عمرو وابن | میں حضرت ابوہریرہ سے اس کو روایت کیا، اور امام احمد نے ماجۃ عن سراقۃ بن مالك رضی اللہ تعالی عنھم۔ | عبداللہ بن عمرو سے اور ابن ماجہ نے سراقہ بن مالک رضی واللہ تعالٰی اعلم۔ | اللہ تعالٰی عنہم سے اس کو روایت کیا۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

Fatawa Razawiyya Volume 24

Statement Regarding Naming Children

Problem 265: From Kolkata, Dharmatala 12, sent by Mr. Muhammad Yunus Sahib, 8 Rajab 1327 AH. A question to the scholars of religion: what is the state of this person? Bakr has named his children in three languages: Arabic, English, and Hindi. One boy's name is Muti-ul-Islam, the other's is Paul, and the girl's name is Kanwal Devi. When he is questioned about this, he says it is just a difference of language, but the names are not bad. Please provide a ruling and be rewarded. (T)

The Answer: This action of his is a satanic move. Allah Almighty says:

"O you who have believed, enter into Islam completely [and perfectly] and do not follow the footsteps of Satan. Indeed, he is to you a clear enemy." (1)

"O believers! Enter into Islam completely and do not follow the footsteps of Satan, for he is your open enemy." (T)

It is stated in Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar and Abu al-Sa'ud al-Azhari 'ala al-Kanz:

"A category [of names] is specific to the disbelievers, such as Girgis (George)."

There is a type of names which is specific to non-believers, like Girgis.

1. The Holy Quran 2/208 Page 664 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

नाम रखने का बयान

मसला 265: कोलकाता, धर्मतला 12 से, मोहम्मद यूनुस साहब द्वारा प्रेषित, 8 रजब 1327 हिजरी। धर्म के विद्वानों से प्रश्न है कि उस व्यक्ति का क्या हाल है? बक्र ने अपनी संतानों के नाम तीन भाषाओं में रखे हैं: अरबी, अंग्रेजी और हिंदी। एक लड़के का नाम मुती-उल-इस्लाम है, दूसरे का पॉल, और लड़की का नाम कंवल देवी है। जब उससे इस बारे में कहा जाता है, तो वह कहता है कि यह केवल भाषा का अंतर है, लेकिन ये नाम बुरे नहीं हैं। कृपया उत्तर दें और पुण्य प्राप्त करें। (T)

जवाब: उसका यह कृत्य एक शैतानी हरकत है। अल्लाह तआला का फ़रमान है:

"ऐ ईमान वालों! इस्लाम में मुकम्मल तौर पर दाखिल हो जाओ और शैतान के पदचिन्हों पर मत चलो, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।" (1)

"ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरी तरह से दाखिल हो जाओ और शैतान की पैरवी न करो क्योंकि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।" (T)

तहतावी अला अल-दुर्र अल-मुख्तार और अबू अल-सऊद अल-अज़हरी अला अल-कंज में है:

"नामों की एक श्रेणी काफ़िरों (अविश्वासियों) के साथ विशिष्ट है जैसे जिरजिस (जॉर्ज)।"

नामों की एक क़िस्म काफ़िरों से मख़्सूस (विशिष्ट) है जैसे जिरजिस।

1. अल-कुरान अल-करीम 2/208 Page 664 of 720

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

نام رکھنے کا بیان

مسئلہ ۲۶۵: از کلکتہ دھرم تلا ۱۲ مرسلہ جناب محمد یونس صاحب ۸ رجب ۱۳۲۷ھ علمائے دین سے سوال ہے کہ اس شخص کا کیا حال ہے، بکر نے اپنی اولاد کے نام تین زبانوں میں رکھ چھوڑے ہیں عربی انگریزی ہندی، ایک لڑکے کا مطیع الاسلام ہے، دوسرے کا پالس، لڑکی کا نام کنول دیوی، جو اس سے کہا جاتا ہے تو کہتا ہے کہ زبان کا فرق ہے مگر برے نہیں۔ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائیے۔ ت)

الجواب: یہ اس کا فعل شیطانی حرکت ہے۔ قال اللہ تعالٰی:

"یٰٓاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِی السِّلْمِ كَآفَّةً وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّیْطٰنِؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِیْنٌ" 1

"اے ایمان والو! اسلام میں مکمل طور پر داخل ہو جاؤ اور شیطان کی پیروی نہ کرو کیونکہ وہ تمہارا کھلا دشمن ہے۔" (ت)

طحطاوی علی الدر المختار وابوالسعود الازہری علی الکنز میں ہے:

"قسم یختص بالکفار کجرجس"

ناموں کی ایک قسم کفار سے مختص ہے جیسے جرجس،

۱ القرآن الکریم ۲/۲۰۸

Fatawa Razawiyya Volume 24

...and Peter and John. Therefore, it is not permissible for Muslims to name themselves with such names because it involves imitation of disbelievers [1]. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 266: From Nainital, Kashipur, Dr. Ishtiaq Ali, Sunday, 18 Safar al-Muzaffar 1334 AH. Some people write 'Siddiqui' and 'Radhawi' after their names, such as Saeedullah Siddiqui and Ishtiaq Ali Radhawi. Is it permissible to write this or not? If it is written, is it a sin? Only.

Answer: If the lineage/attribution is correct, it is permissible; otherwise, it is forbidden (Haram). And Allah Almighty knows best.

Problem 277: Sent by Muhammad Fayyazur Rahman Sahib, Roorkee Camp, 22 Rabi-ul-Akhar 1335 AH. What do the scholars of religion say in this matter that Zaid writes 'Israeli' with his name, just as other people write Quraishi, Siddiqui, Chishti, etc. Is the word 'Israeli' permissible for a person of the Hanafi school of thought just to show lineage? It is appropriate that some detail about Bani Israel be provided because many people object to Zaid that this attribution is impermissible for a Hanafi, whereas Zaid explains in brief detail that Prophet Yaqub's other honorable name was Israel, whose family we belong to. It is hoped that Your Excellency will explain in detail as soon as possible so that if it is a sin, this attribution should be abandoned immediately.

Answer: Israel is the blessed name of our leader Yaqub (peace be upon him). Allah Almighty says: "All food was lawful to the Children of Israel except what Israel had made unlawful to himself before the Torah was revealed" [2]. All food was lawful for the Children of Israel except that which Israel (Prophet Yaqub, peace be upon him) made forbidden for himself before the revelation of the Torah (camel meat and milk, etc.). (T) If Zaid is lineage-wise from the Children of Israel (Bani Israel), then it is appropriate for him to call himself 'Israeli' and it is permissible for him...

1. Hashiyat al-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Jihad, Chapter on Jizya, Al-Maktaba al-Arabiyya Quetta, 2/272.
2. The Holy Quran, 3/93.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

...और पतरस (Peter) और यूहन्ना (John) वगैरह। लिहाज़ा मुसलमानों के लिए इस तरह के नाम रखना जायज़ नहीं है क्योंकि इसमें काफ़िरों से मुशाबहत (समानता) पाई जाती है [1]। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसअला 266: नैनीताल, काशीपुर से डॉ. इश्तियाक अली, इतवार, 18 सफ़र अल-मुज़फ़्फ़र 1334 हिजरी। कुछ लोग अपने नाम के आगे 'सिद्दीकी' और 'रज़वी' लिखा करते हैं जैसे सईदउल्लाह सिद्दीकी और इश्तियाक अली रज़वी। क्या यह लिखना जायज़ है या नहीं? अगर लिखा जाए तो क्या कुछ गुनाह है? फ़क़त।

अल-जवाब: अगर निस्बत (सम्बन्ध/वंश) सही है तो जायज़ है, वरना हराम। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसअला 277: मुरसला (प्रेषित) मोहम्मद फ़ैयाज़ुर रहमान साहब, रुड़की कैंप, 22 रबी-उल-आख़िर 1335 हिजरी। दीन के उलमा इस मसअले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद अपने नाम के साथ 'इसराईली' लिखता है जिस तरह दूसरे लोग क़ुरैशी, सिद्दीकी, चिश्ती वगैरह लिखते हैं। क्या 'इसराईली' लफ़्ज़ एक हनफ़ी मज़हब के व्यक्ति के लिए सिर्फ़ निस्बत ज़ाहिर करने के लिए जायज़ है? मुनासिब है कि बनी इसराईल के बारे में कुछ तफ़सील (विवरण) कर दी जाए क्योंकि अक्सर लोग ज़ैद पर ऐतराज़ करते हैं कि यह निस्बत एक हनफ़ी के लिए नाजायज़ है, जबकि ज़ैद यह मुख़्तसर तफ़सील बयान करता है कि हज़रत याक़ूब का दूसरा मुबारक नाम 'इसराईल' था जिनके खानदान से हम हैं। उम्मीद है कि हुज़ूर आली तशरीह और तफ़सील के साथ जल्द से जल्द बयान फ़रमाएंगे ताकि अगर कोई गुनाह हो तो फ़ौरन इस निस्बत को तर्क कर दिया (छोड़ दिया) जाए।

अल-जवाब: इसराईल हमारे सरदार हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का मुबारक नाम है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "कुल अत-ताआमु काना हिल्लल-लि-बनी इसराईला इल्ला मा हर्रमा इसराईलु अला नफ़्सिही मिन क़ब्लि अन तुनज़्ज़लत-तौराह" [2]। तमाम खाना बनी इसराईल के लिए हलाल था सिवाए उस चीज़ के जिसे इसराईल (हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम) ने तौरात के उतरने से पहले अपने

ऊपर हराम कर लिया था (ऊँट का गोश्त और दूध वगैरह)। (त) अगर ज़ैद नसबन (वंश के हिसाब से) बनी इसराईल से है तो उसका अपने आप को इसराईली कहना बजा है और उसके लिए जायज़...

1. हाशिया अत-तहतावी अल-दुर्र अल-मुख़्तार, किताब अल-जिहाद, फ़स्ल अल-जिज़्या, अल-मकतबा अल-अरबिया क्वेटा, 2/272।
2. अल-कुरान अल-करीम, 3/93।

पृष्ठ 720 का 665

وبطرس و یوحنا، فھذا لا یجوز للمسلمین التسمی بہ لما فیہ من المشابھۃ ۱۔ واللہ تعالی اعلم۔ پطرس اور یوحنا وغیرہ لہذا اس نوع کے نام مسلمانوں کے لئے رکھنے جائز نہیں کیونکہ اس میں کفار سے مشابہت پائی جاتی ہے۔ واللہ تعالی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۲۶۶: از نینی تال کاشی پور ڈاکٹر اشتیاق علی بروز یک شنبہ ۱۸ صفر المظفر ۱۳۳۴ھ بعض لوگ اپنے نام کے آگے صدیقی اور رضوی لکھا کرتے ہیں جیسے سعید اللہ صدیقی واشتیاق علی رضوی، تو یہ لکھنا جائز ہے یا نہیں؟ اگر لکھا جائے تو کچھ گناہ ہے؟ فقط

الجواب: اگر نسبت صحیح ہے جائز ورنہ حرام۔ واللہ تعالی اعلم۔

مسئلہ ۲۷۷: مرسلہ محمد فیاض الرحمن صاحب روڈ کی کیمپ ۲۲ ربیع الآخر ۱۳۳۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید اپنے نام کے ساتھ اسرائیلی لکھتا ہے جس طرح اور لوگ قریشی صدیقی چشتی وغیرہ لکھتے ہیں کیا لفظ اسرائیلی ایک حنفی المذہب شخص کے لئے صرف نسبت ظاہر کرنے کو جائز ہوتا ہے؟ مناسب ہے کہ بنی اسرائیل کی کچھ تفصیل کردی جائے کیونکہ اکثر لوگ زید پر اعتراض کرتے ہیں کہ یہ نسبت ایک حنفی المذہب کے لئے ناجائز ہے، جبکہ زید کچھ تھوڑی تفصیل یہ بیان کرتا ہے کہ حضرت یعقوب کا دوسرا اسم گرامی اسرائیل تھا جن کے خاندان میں ہم لوگ ہیں امید کہ حضور عالی تشریح اور تفصیل کے ساتھ جلد سے جلد بیان فرمائیں تاکہ اگر کوئی گناہ ہو تو فوراً اس نسبت کو ترک کردیا جائے۔

الجواب: اسرائیل سیدنا یعقوب علیہ الصلوۃ والسلام کا نام مبارک ہے۔ قال اللہ تعالی: "كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ إِلَّا مَا حَرَّمَ إِسْرَائِيلُ عَلَىٰ نَفْسِهِ مِن قَبْلِ أَن تُنَزَّلَ التَّوْرَاةُ" 2۔ سب کھانے بنی اسرائیل

کے لئے حلال تھے مگر وہ چیز جو اسرائیل (حضرت یعقوب علیہ الصلوۃ والسلام) نے نزول تورات سے پہلے اپنی ذات پر حرام ٹھہرالی (اونٹ کا گوشت اور دودھ وغیرہ)۔ (ت) زید اگر نسباً بنی اسرائیل سے ہے تو اس کا اپنے آپ کو اسرائیلی کہنا بجا ہے اور اس کے لئے جائز

۱ حاشیۃ الطحطاوی علی الدر المختار کتاب الجہاد فصل فی الجزیہ المکتبۃ العربیہ کوئٹہ ۲/۲۷۲ ۲ القرآن الکریم ۳/۹۳

...there is no reason for it not to be. However, this word has now become somewhat foreign among Muslims. People consider 'Israeli' as an opposite to 'Muhammadi', and this comparison has appeared in the pure speech of great elders. His Eminence Sayyiduna Ghaus-e-Azam (may Allah be pleased with him) said:

O Israeli, stop and listen to the speech of the Muhammadi.[1]	Stop, O Israeli! Listen for a while to the speech of one who has a Muhammadi connection (i.e., a Muhammadi Muslim). (T)

Relationship (nisbat) exists both in terms of lineage and religion. Here, in terms of lineage, this relationship is very rarely heard. Therefore, the common Muslims are startled to hear it, and the pure Shari'ah does not like to take such a step without necessity. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Give glad tidings and do not create aversion.[2]	(O people!) Give glad tidings, therefore do not make each other feel hatred (towards things). (T)

It is in another Hadith:

Avoid that which sounds bad to the ear.[3]	Avoid what sounds unpleasant to the ears (i.e., avoid backbiting). (T)

Therefore, writing this relationship with one's name is inappropriate and should be abandoned, but it is still not a sin or forbidden. And Allah Almighty knows best.

Problem 268: From Amritsar, Katra Garba Singh, near Kanjriwali Mosque, Bhagtanwala Gate, sent by Munshi Nabi Bakhsh, 23 Shaban 1335 AH.

Supporter of the Sunnah, eradicator of innovation, the Renewer of the age, Hazrat Maulana (may his blessings and grace endure), Peace be upon you, and the mercy of Allah and His blessings and forgiveness. After the traditional Islamic greeting, millions of thanks to the Generous Lord that Your Excellence's blessed existence was created for the guidance of sinners and to obliterate the deception and fraud of the wicked enemies of the religion of Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him). The prayer is always that the Generous Lord keeps Your Excellence safe and honored until the end of time. Thereafter, I request in the blessed presence that my name is Nabi Bakhsh. Since there is a disease among the wicked sects of the era, especially the Wahhabi group, that they oppose Muslims in every matter even if it is to their own total loss. My name was already intended to provoke the Wahhabis, but I

wanted to provoke them even more, meaning I changed my name from Nabi Bakhsh to Abdul Nabi. Before changing the name, I...

---

[1] Bahjat al-Asrar, from the saying of a man, O my Sheikh, do it, Mustafa al-Babi, Egypt, p. 76. [2] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Ilm, Chapter on how the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) used to treat them, etc., Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/16. [3] Musnad Ahmad bin Hanbal, Remainder of the Hadith of Abi al-Ghawiya, Al-Maktab al-Islami Beirut, 4/47.

फ़तावा रज़विय्या - जिल्द २४

...होने की कोई वजह नहीं। हालाँकि अब यह शब्द मुसलमानों में कुछ अजनबी सा हो गया है। लोग 'इसराइली' को 'मुहम्मदी' के मुक़ाबले में समझते हैं और बड़े बुज़ुर्गों के पाक कलाम (वाणी) में यह तुलना आई है। हुज़ूर सैयदुना गौस-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया:

या इसराईलु क़िफ़ वस्माअ कलामल मुहम्मदी[1]	रुक जाइये ऐ इसराइली! ज़रा मुहम्मदी निस्बत (सम्बन्ध) रखने वाले (यानी एक मुसलमान मुहम्मदी) की बात सुन लीजिये। (त)

निस्बत (सम्बन्ध) नसब (वंश) और मज़हब (धर्म) दोनों एतबार से होती है और यहाँ नसब के लिहाज़ से यह निस्बत बहुत कम सुनी जाती है, लिहाज़ा आम मुसलमान इसे सुनकर चौंकते हैं और बिना ज़रूरत ऐसी बात पर कदम उठाना शरीअत-ए-मुतहहरा (पवित्र शरीयत) को पसंद नहीं। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

बश-शिरू वला तुनफ़्-फ़िरू[2]	(लोगो!) खुशख़बरी सुनाया करो लिहाज़ा एक दूसरे को नफरत न दिलाओ। (त)

दूसरी हदीस में है:

इय्याका व मा यसू-उल उज़ुना[3] उससे बचो जो कानों को बुरा लगे (यानी ग़ीबत से बचो)। (त)

लिहाज़ा अपने नाम के साथ यह निस्बत लिखनी नामुनासिब और छोड़ने के काबिल है मगर गुनाह और हराम अब भी नहीं। वल्लाहु तआला आलम।

मसला २६८: अमृतसर, कटरा गरबा सिंह, नज़दीक कंजरी वाली मस्जिद, भगतानवाला दरवाज़ा, भेजने वाले मुंशी नबी बख़्श, २३ शाबान १३३० हिजरी।

सुन्नत के हिमायती, बिदअत को मिटाने वाले, ज़माने के मुजद्दिद, जनाब मौलाना साहब (अल्लाह उनकी बरकतों को बरक़रार रखे), अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातुहू व मगफ़िरतुहू। मसनून सलाम के बाद खुदावंद-ए-करीम का लाख-लाख शुक्र है कि आपकी मुक़द्दस ज़ात को गुनहगारों की हिदायत के लिए और दीन-ए-मुहम्मदी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के शरीर दुश्मनों के मक्र-ओ-फरेब को ख़त्म करने के लिए पैदा किया। हमेशा दुआ है कि खुदावंद-ए-करीम कयामत तक आपकी ज़ात को सलामत और बा-करामत रखे। उसके बाद बा-बरकत खिदमत में अर्ज़ है कि बंदे का नाम नबी बख़्श है। चूंकि ज़माने के शरारती फिरकों, खासकर वहाबी गिरोह में यह बीमारी है

कि वे मुसलमानों से बात-बात पर मुख़ालफ़त (विरोध) करते हैं चाहे इसमें उनका अपना ही नुकसान क्यों न हो। बंदे का नाम तो पहले ही वहाबियों को जलाने के लिए था लेकिन बंदे ने उन्हें और भड़काना चाहा यानी अपना नाम नबी बख़्श के बजाय अब्दुल नबी कर दिया। नाम तब्दीJ करने से पहले बंदे ने बेहद...

---

[1] बहजतुल असरार, मिस्र, पृष्ठ ७६। [2] सहीह अल-बुखारी, किताबुल इल्म, कदीमी कुतुब खाना कराची, १/१६। [3] मुसनद अहमद बिन हंबल, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरुत, ४/४७।

ہونے کی کوئی وجہ نہیں البتہ اب یہ لفظ مسلمانوں میں اجنبی سا ہو گیا ہے لوگ اسرائیلی کو محمدی کے مقابل سمجھتے ہیں اور اجلہ اکابر کے کلام پاک میں یہ مقابلہ آیا ہے، حضور سیدنا غوثِ اعظم رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا:

یَا إِسْرَائِیلُ قِفْ وَاسْمَعْ کَلَامَ الْمُحَمَّدِیِّ [1] ٹھہر جائیے اے اسرائیلی ! ذرا محمدی نسبت رکھنے والے (یعنی ایک مسلمان محمدی) کا کلام سن لیجئے(ت)

نسبت نسب ومذہب دونوں اعتبار سے ہوتی ہے اور یہاں بحسبِ نسب یہ نسبت بہت کم مسموع، لہٰذا عوامِ مسلمین اسے سن کر چونکتے ہیں اور بلاضرورت ایسی بات پر اقدام شرع مطہر کو پسند نہیں۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

بَشِّرُوا وَلا تُنَفِّرُوا [2] (لوگو!) خوشخبری سنایا کرو لہٰذا ایک دوسرے کو نفرت نہ دلایا کرو(ت)

دوسری حدیث میں ہے:

اِیَّاكَ وَ مَا یَسُوءُ الْاُذُنَ [3] اس سے بچو جو کانوں کو بری لگے (یعنی غیبت سے بچو)(ت)

لہٰذا اپنے نام کے ساتھ یہ نسبت لکھنی نامناسب و قابلِ ترک ہے مگر گناہ وحرام اب بھی نہیں واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۶۸: از امرتسر کٹڑہ گرباسنگھ متصل مسجد کنجری والی دروازہ بھگتانوالہ مرسلہ منشی نبی بخش ۲۳ شعبان ۱۳۳۵ھ

حامی سنت، ماحی بدعت، مجددِ زماں جناب مولانا صاحب بفضلہ اولینا دامت فیوضہم السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ ومغفرتہ بعد سلام مسنون الاسلام کے خداوندِ کریم کا لاکھ لاکھ شکر ہے کہ آنجناب کا وجودِ مبارک واسطے گنہگاروں کی ہدایت کے، اور اشرار و دشمنانِ دین محمد صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کے مکر و فریب کو ملیامیٹ کرنے کے لئے پیدا کیا۔ دعا ہر دم ہے کہ خداوندِ کریم تا زمانہ ابد الدہر آنجناب کو سلامت باکرامت رکھے۔ بعد ازاں خدمت بابرکت میں ملتمس ہوں کہ بندے کا نام نبی بخش ہے۔ چونکہ فرقہ ہائے اشرارِ زمانہ خصوصاً گروہ وہابیہ میں یہ مرض ہے کہ مسلمانوں سے بات بات کی مخالفت کرتے ہیں اگرچہ ان کا سراسر نقصان ہی ہوتا ہے۔ بندے کا نام تو پہلے ہی وہابیوں کے جلانے کے لئے تھا لیکن بندے نے ان کو اور بھڑکانا چاہا یعنی اپنا نام بجائے نبی بخش کے عبدالنبی کردیا۔ نام تبدیل کرنے سے پہلے بندے نے ازحد

---

[1] بهجة الاسرار عن قول الرجل ای شیخی اعمله مصطفی البابی مصر ص ۷۶ [2] صحیح البخاری کتاب العلم باب ماکان النبی صلی اللہ علیہ وسلم علیہ یتحولہم الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۶/۱ [3] مسند احمد بن حنبل بقیہ حدیث ابی الغاویة المکتب الاسلامی بیروت ۴۷/۴

Fatawa Razawiyya Volume 24

I pondered as much as possible to ensure that there was no loss in opposing them, meaning I saw the names of many Muslims written as Abdul Muhammad, Abdul Nabi, Abdul Rasool. However, they were all scholars (Mawlawis), and this servant is purely ignorant. Above all, after reading the statement of Allah Almighty 'Say: O My servants' [1], I changed the name I had been writing for a long time without worry. However, Mr. Shah Sahib, who is my teacher of theology, was told by someone that Munshi Nabi Bakhsh writes 'Abdul Nabi' in the letters he sends to Wahhabis just to annoy them. That person then came to me and said that Shah Sahib said, 'Nabi Bakhsh is making a grave mistake because becoming a servant of God Almighty is easy, but becoming a servant of the Holy Messenger (peace and blessings of Allah be upon him) is extremely difficult; rather, writing such a name is disrespectful to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him).' He also mentioned that Hazrat Maulana Ahmad Raza Khan Sahib, despite being the Mujaddid (Renewer) of the era, used to write his blessed name as 'His sinful servant Abdul Mustafa.' Since I heard this from that person, I stopped writing 'Abdul Nabi' because Mr. Syed Shah Sahib is an extremely profound jurist, scholar, accomplished in Sufism, and steadfast in Sharia. I have no excuse not to obey his command. However, the one who told me this is another person; perhaps he misunderstood. And I do not have enough courage, out of awe for the Shah, to ask him directly. Therefore, I respectfully request your presence to kindly state whether I can write my name as 'Abdul Nabi' or not. And those who previously wrote their names as Abdul Rasool or Abdul Muhammad, why did they do so? Please write the answer in such a way that I can understand and receive guidance. If I can write my name as the servant 'Abdul Nabi,' how can I do it? Do I need to make any changes or add any words? I hope you will send a reply soon. Wassalam.

The Answer: It is obligatory for every Muslim to consider themselves the property (slave/servant) of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). The entire world is his property by the grant of his Lord (Mighty and Majestic). Shah Abdul Aziz Sahib, in 'Tuhfa Ithna Ashariyyah,' quotes from the Holy Torah that the Lord (Mighty and Majestic) says regarding the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): 'Master of the earth and the necks (lives) of the nations.' Ahmad is the master of all the earth and the master of the necks (lives) of all the nations. [2]

1 The Holy Quran 39/53 2 Tuhfa Ithna Ashariyyah, Chapter 6, Discussion on Prophethood, etc., Suhail Academy Lahore, p. 169 Page 667 of 720

फतावा रज़विया जिल्द 24

मैंने जितना हो सके गौर किया कि कहीं उनकी मुखालफत में अपना नुकसान न हो, यानी कई मुसलमानों का नाम अब्दुल मोहम्मद, अब्दुल नबी, अब्दुल रसूल लिखा हुआ देखा। लेकिन वो सब मौलवी आलिम हैं और बंदा महज बे-इल्म है। और सबसे बढ़कर अल्लाह तआला का कौल 'कुल या इबादी' [1] पढ़कर बेफिक्र होकर नाम तब्दील कर दिया, जो कि एक अरसे तक लिखता रहा। लेकिन जनाब शाह साहब, जो कि बंदे के दीनियात के उस्ताद हैं, किसी शख्स ने उनकी खिदमत में ज़िक्र किया कि मुंशी नबी बख्श जो खत वहाबियों को लिखता है, उसमें उनको जलाने के लिए अपना नाम 'अब्दुल नबी' लिख देता है। फिर उस शख्स ने बंदे को आकर कहा कि जनाब शाह साहब फरमाते थे कि 'नबी बख्श बहुत बड़ी गलती करता है क्योंकि खुदावंद करीम का बंदा बनना तो आसान है लेकिन जनाब रसूल अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का बंदा हो जाना निहायत मुश्किल है, बल्कि ऐसा नाम लिखना हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बेअदबी करना है।' और उन्होंने यह भी फरमाया कि जनाब हजरत मौलाना अहमद रज़ा खान साहब, मुजद्दिद-ए-ज़मां होने के बावजूद अपना मुबारक नाम 'अब्दुहु अल-मुजनिब अब्दुल मुस्तफा' लिखा करते हैं। जब से बंदे ने उस शख्स से यह बात सुनी, उसी वक्त से अब्दुल नबी नहीं लिखा क्योंकि जनाब हजरत सैयद शाह साहब निहायत फकीह, आलिम, फ़ाज़िल, तसव्वुफ में कामिल और शरीयत में पक्के हैं। बंदे को उनका फरमान मानने में ज़रा भी उज़्र (बहाना) नहीं है, लेकिन कहने वाला दूसरा शख्स है, शायद उसने समझने में गलती की हो। और बंदे में शाह की हैबत के कारण इतनी जुर्रत नहीं कि जनाब शाह साहब से दरियाफ्त कर सके। लिहाज़ा खिदमत-ए-बा-बरकत में अदब के साथ दरख्वास्त है कि जनाब बंदा-नवाज़ी फरमाते हुए इरशाद फरमाएं कि बंदा अपना नाम 'अब्दुल नबी' लिख सकता है या नहीं? और जो शख्स पहले अपना नाम अब्दुल रसूल, अब्दुल मोहम्मद लिखते हैं, वो क्यों लिखते हैं? ऐसे तौर पर जवाब तहरीर फरमा दें कि बंदा समझ सके और हिदायत पाए। और अगर मैं अपना नाम 'बंदा अब्दुल नबी' लिख सकूं तो किस तरह लिख सकता हूं? क्या कोई लफ्ज़ तब्दील करना पड़ेगा या कुछ बढ़ाना पड़ेगा? उम्मीद है कि आप जल्द जवाब भेजेंगे। वसल्लम।

अल-जवाब: हर मुसलमान पर लाज़िम है कि अपने आप को हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का मम्लूक (गुलाम/माल) समझे। तमाम आलम ही उनके रब (अज़्ज़ व जल्ल) की अता से उनकी मिल्क (संपत्ति) है। शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब 'तौहफा इस्ना अशरिया' में तौरेत मुकद्दस से नकल फरमाते हैं कि रब (अज़्ज़ व जल्ल) हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की निस्बत

फरमाता है: 'मलिकुल अर्द व रिकाबुल उमम' - अहमद तमाम ज़मीन के मालिक हैं और सब उम्मतों की गर्दनों के मालिक हैं। [2]

1 अल-कुरान अल-करीम 39/53 2 तौहफा इस्ना अशरिया, बाब शशम (अध्याय 6), नबुव्वत की बहस में, सुहैल अकादमी लाहौर, पृ. 169 पेज 667/720

غور کر لیا جتنا کہ ہو سکا کہ کہیں ان کی مخالفت میں اپنا نقصان نہ ہو یعنی کئی مسلمانوں کا نام عبدالمحمد، عبدالنبی، عبدالرسول لکھا ہوا دیکھا لیکن وہ سب مولوی عالم ہیں اور بندہ محض بے علم ہے، اور سب سے بڑھ کر قولہ تعالٰی "قُلْ یٰعِبَادِیَ" 1 الخ پڑھ کر بے فکر ہو کر نام تبدیل کر دیا جو کہ ایک عرصہ تک لکھتا رہا لیکن جناب شاہ صاحب جو کہ بندے کے دینیات کے استاد ہیں کسی شخص نے ان کی خدمت میں ذکر کیا کہ منشی نبی بخش جو خط وہابیوں کو لکھتا ہے اس میں ان کو جلانے کے لئے اپنا عبد النبی لکھ دیتا ہے۔ پھر اس شخص نے بندے کو آ کر کہا کہ جناب شاہ صاحب فرماتے تھے کہ نبی بخش از حد غلطی کرتا ہے کیونکہ خدا وند کریم کا بندہ بننا تو آسان ہے لیکن جناب رسول اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ و سلم کا بندہ ہو جانا از حد مشکل ہے بلکہ ایسا نام لکھنا آنحضرت صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی بے ادبی کرنا ہے۔ اور انہوں نے یہ بھی فرمایا کہ جناب حضرت مولانا احمد رضا خان صاحب باوجود مجددِ زماں ہونے کے اپنا اسمِ مبارک عبدہ المذنب عبدالمصطفٰی لکھا کرتے ہیں جب سے بندہ نے اس شخص سے یہ بات سنی اسی وقت سے عبد النبی نہیں لکھا کیونکہ جناب حضرت سید شاہ صاحب از حد فقیہ عالم فاضل تصوف میں کامل شریعت میں پکے ہیں بندے کو ان کا فرمان ماننے میں ذرا بھی عذر نہیں لیکن کہنے والا دوسرا شخص ہے شاید اس نے سمجھنے میں غلطی کھائی ہو اور بندے میں باعثِ رعب شاہی کے اتنی جرات نہیں کہ جناب شاہ صاحب سے دریافت کر سکے لہٰذا خدمتِ بابرکت میں مودبانہ ملتمس ہوں کہ جناب براہِ بندہ نوازی ارشاد فرمادیں کہ بندہ اپنا نام عبدالنبی لکھ سکتا ہے یا نہیں؟ اور جو شخص پہلے اپنا نام عبد الرسول، عبدالمحمد لکھتے ہیں وہ کیوں لکھتے ہیں؟ ایسے طور پر جواب تحریر فرما دیں کہ بندہ سمجھ سکے اور ہدایت پائے اور جو اپنا نام بندہ عبد النبی لکھ سکوں تو کس

طرح لکھ سکتا ہوں، کوئی بغیر تبدل یا کوئی لفظ زیادہ کرنا پڑے گا یا نہیں؟ امید ہے آنجناب جلدی جواب ارسال فرمائیں گے، والسلام

الجواب: ہر مسلمان پر لازم ہے کہ اپنے آپ کو حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا مملوک جانے، تمام عالم ہی ان کے رب عز و جل کی عطا سے ان کی ملک ہے، شاہ عبدالعزیز صاحب تحفہ اثنا عشریہ میں توریت مقدس سے نقل فرماتے ہیں کہ رب عز وجل حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی نسبت فرماتا ہے: ملك الارض ورقاب الامم 2- احمد مالک ہیں تمام زمین اور مالک ہیں سب امتوں کی گردنوں کے۔

1 القرآن الکریم ۳۹ / ۵۳ 2 تحفه اثناعشریه باب ششم دربحث نبوت الخ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۶۹

Fatawa Rizvia Volume 24

Shah Waliullah Sahib narrates a Hadith in 'Izalat al-Khafa' that the Commander of the Faithful, Umar Farooq al-A'zam (may Allah be pleased with him), gathered the companions and, in a sermon before the assembly, mentioned the noble Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) and said:

Arabic	Translation
I was his servant and his attendant, like a drawn sword before him.[1]	I was the servant of the Prophet, his slave, his attendant, and before him I was like a naked sword.

Imam Tahawi narrates in 'Sharh Ma'ani al-Athar' that Hazrat A'sha Mazani (may Allah be pleased with him) came to the presence of the Prophet and said:

Arabic	Translation
O Master of the people and Judge of the Arabs.[2]	O Master of all people and the one who rewards and punishes the Arabs.

In 'Ash-Shifa' by Imam Qadi Iyad and 'Al-Mawahib al-Ladunniyya' by Imam Ahmad Qastallani, it is recorded that Hazrat Sayyiduna Sahl bin Abdullah Tustari (may Allah be pleased with him) says:

Arabic	Translation
Whoever does not see himself as the property of the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) has not tasted the sweetness of his Sunnah.[3]	He who does not consider himself the possession (owned) of the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) has not tasted the sweetness of his tradition.

In short, in this sense, the whole world is his property, his slave, his servant. Thus, naming oneself Abd-al-Nabi (Servant of the Prophet), Abd-al-Rasul (Servant of the Messenger), or Abd-al-Mustafa (Servant of the Chosen One) is a source of true happiness. From this, the difference between Islam and disbelief is clear: even an infidel would not refuse to be a servant (abd) of Allah Almighty; even the Wahhabis will call themselves 'Abdullah' (Servant of Allah) with great joy, although in reality they are servants of the Shaykh of Najd and servants of Satan. However, they will never call themselves the servant (abd) of Mustafa (may Allah's peace and blessings be upon him). Both Abd-al-Nabi and Abd-ash-Shaytan are 'Abdullah' (slaves of Allah). Those are Abd-al-Nabi to whom He said:

Arabic	Translation
"So enter among My [righteous] servants, And enter My Paradise."[4]	(O soul at peace) Join my servants and enter into my paradise. (T)

Footnotes: 1. Al-Mustadrak al-Hakim, Book of Knowledge, Sermon of Umar after he took charge of people, Dar al-Fikr Beirut, 1/126 2. Sharh Ma'ani al-Athar, Book of Disliked Matters, Chapter on Poetry, H.M. Saeed Company Karachi, 2/410 3. Al-Mawahib al-Ladunniyya, Seventh Objective, Satisfaction with what he legislated, Al-Maktab al-Islami Beirut, 3/299 & 300 4. The Noble Qur'an, 89/29

फ़तावा रज़वियह जिल्द 24

शाह वलीउल्लाह साहिब 'इज़ालत अल-ख़फ़ा' में हदीस नक़्ल करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक़ आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने सहाबा किराम को जमा फ़रमा कर उस मजमे के सामने ख़ुत्बे में हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का ज़िक्र शरीफ़ करके फ़रमाया:

अरबी	अनुवाद
कुन्तु अबदहू व ख़ादिमहू क-अस-सैफ़िल मसलूलि बैना यदैहि।[1]	मैं हुज़ूर का अब्द था, बंदा था, ख़ादिम था और हुज़ूर के सामने नंगी तलवार की तरह था।

इमाम तहावी 'शरह मानी अल-आसार' में रिवायत फ़रमाते हैं हज़रत अशा माज़नी (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने ख़िदमत-ए-अक़दस में हाज़िर होकर अर्ज़ की:

अरबी	अनुवाद
या मालिकन नासि व दय्यानल अरब।[2]	ऐ तमाम आदमियों के मालिक और अरब के जज़ा-ओ-सज़ा देने वाले।

शिफ़ा इमाम क़ाज़ी अयाज़ और मवाहिब-ए-लदुनियह इमाम अहमद क़स्तलानी में है हज़रत सैयदुना सहल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं:

अरबी	अनुवाद
मन लम यरा नफ़सहू फ़ी मुल्किन नबिययि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लम यज़ुक़ हलावत सुन्नतही।[3]	जो अपने आप को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ममलुक (गुलाम) न जाने उसने उनकी सुन्नत का मज़ा न चखा।

अल-ग़रज़ इस मानी पर तमाम जहान उनकी मिल्क (मिल्कियत) उनका बंदा उनका अब्द है, यूँ अपना लक़ब अब्दुन नबी, अब्दुर रसूल, अब्दुल मुस्तफ़ा रखना ऐन सआदत है, और इससे इस्लाम और कुफ़्र का फ़र्क़ रौशन है कि अल्लाह अज़्ज़वजल की अब्दियत से किसी काफ़िर को भी इस्तिनकाफ़ (इन्कार) न होगा यहाँ तक कि वहाबिया भी बड़ी ख़ुशी से अपने आप को अब्दुल्लाह कहेंगे अगरचे वाक़े में शेख नजदी के बंदे और अब्दुश शैतान हैं, मगर मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बंदा हरगिज़ अपने आप को न बताएंगे, अब्दुन नबी और अब्दुश शैतान दोनों अब्दुल्लाह हैं, वो अब्दुन नबी हैं जिनको फ़रमाया:

अरबी	अनुवाद
"फ़ादख़ुली फ़ी इबादी वदख़ुली जन्नती"[4]	(ऐ नफ़्स-ए-मुतमइन्ना) मेरे बंदों में शामिल हो जा और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा। (त)

हाशिया (फुटनोट्स): 1. अल-मुस्तदरक अल-हाकिल किताबुल इल्म, खुतबा-ए-उमर बाद मा वली अलल नास, दारुल फ़िक्र बेरूत 1/126 2. शरह मानी अल-आसार किताबुल कराहियह बाबुल शे'र, एच.एम. सईद कंपनी कराची 2/410 3. अल-मवाहिब अल-लदुनियह अल-मकसद अल-साबै अल-रज़ा बिमा शरअहु, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत 3/299 व 300 4. अल-क़ुरआन अल-करीम 89/29

شاہ ولی اللہ صاحب ازالۃ الخفا میں حدیث نقل کرتے ہیں امیر المومنین عمر فاروق اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ نے صحابہ کرام کو جمع فرما کر اس مجمع کے سامنے خطبہ میں حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا ذکر شریف کر کے فرمایا:

عربی	ترجمہ
کنت عبدہ و خادمہ کالسیف المسلول بین یدیہ۔[1]	میں حضور کا عبد تھا بندہ تھا خادم تھا اور حضور کے سامنے تیغ برہنہ کی طرح تھا۔

امام طحاوی شرح معانی الآثار میں روایت فرماتے ہیں حضرت اعشی مازنی رضی اللہ تعالٰی عنہ نے خدمت اقدس میں حاضر ہو کر عرض کی:

عربی	ترجمہ
یامالك الناس و دیان العرب۔[2]	اے تمام آدمیوں کے مالک اور عرب کے جزا وسزا دینے والے۔

شفاء امام قاضی عیاض و مواہب لدنیہ امام احمد قسطلانی میں ہے حضرت سیدنا سہل بن عبداللہ تستری رضی اللہ تعالٰی عنہ فرماتے ہیں:

عربی	ترجمہ
من لم یر نفسہ في ملك النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم لم یذق حلاوۃ سنّتہ۔[3]	جو اپنے آپ کو نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا مملوک نہ جانے اس نے ان کی سنت کا مزہ نہ چکھا۔

بالجملہ اس معنی پر تمام جہان ان کی ملک ان کا بندہ ان کا عبد ہے یوں اپنا لقب عبدالنبی، عبدالرسول، عبدالمصطفٰی رکھنا عین سعادت ہے، اور اس سے اسلام و کفر کا فرق روشن ہے کہ

اللہ عزوجل کی عبدیت سے کسی کافر کو بھی استنکاف نہ ہو گا حتی کہ وہابیہ بھی بڑی خوشی سے اپنے آپ کو عبداللہ کہیں گے اگرچہ واقع میں شیخ نجدی کے بندے اور عبد الشیطان ہیں، مگر مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا بندہ ہرگز اپنے آپ کو نہ بتائیں گے، عبدالنبی اور عبد الشیطان دونوں عبداللہ ہیں، وہ عبدالنبی ہیں جن کو فرمایا:

عربی	ترجمہ
"فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ۙ وَادْخُلِي جَنَّتِي ۝"[4]	(اے نفس مطمئنہ) میرے بندوں میں شامل ہو جا اور میری جنت میں داخل ہو جا۔ (ت)

حواشی: 1. المستدرك للحاكم كتاب العلم خطبه عمر بعد ما ولی علی الناس دار الفكر بيروت ۱/۱۲۶ 2. شرح معانی الآثار كتاب الكراهية باب الشعر ايچ ايم سعيد كمپنی كراچی ۲/۴۱۰ 3. المواهب اللدنية المقصد السابع الرضی بما شرعه المكتب الاسلامی بيروت ۳/۲۹۹ و ۳۰۰ 4. القرآن الكريم ۸۹/ ۲۹

Volume 24 Fatawa Razawiyya

And they are the servants of Satan, regarding whom He said: "Alas for the servants! No messenger comes to them but they mock him." (1) (T)

But the servant of Satan can never be 'Abd-un-Nabi' or 'Abd-ul-Mustafa', and God forbid, what relation does it have with the insult of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). The narrator must have narrated incorrectly or misunderstood. Yes, 'Abd' in the sense of a special servant, i.e., obedient and submissive, is certainly difficult. And in this sense, 'Abd-Allah' and 'Abd-un-Nabi' are the same because: "He who obeys the Messenger has indeed obeyed Allah." (2) (T)

To address oneself with this great attribute in this sense is certainly self-purification and self-praise, which is forbidden by the explicit text of the Holy Quran. Allah the Exalted said: "So do not claim purity for yourselves" (3). Allah the Exalted said: "Do not consider yourselves pure." (T) Those people who take titles like 'Muti'-un-Nabi' (Obedient to the Prophet) or 'Muti'-ur-Rasul' (Obedient to the Messenger) are ignorant and senseless or intentional opponents of the Great Quran. Their own word is enough to refute them, as one who is obedient to the Prophet and obedient to the Messenger will never purify his own soul. And Allah the Exalted knows best.

Question 729: From Qadir Ganj, District Birbhum, Bengal province, sent by Syed Zahoor-ul-Hussain Hussaini Qadri Razzaqi, 22 Jumadi-ul-Ula 1336 AH. Is it permissible or not to keep names like 'Abd-ul-Mustafa', 'Abd-ur-Rasul', 'Abd-un-Nabi', 'Ghulam Mustafa', 'Ghulam Rasul', 'Ghulam Nabi', 'Ghulam Muhammad', 'Ghulam Ahmad', 'Ghulam Panjtan', 'Abd-ul-Ali', 'Abd-ul-Hussain', 'Ghulam Ali', 'Ghulam Hussain', 'Ghulam Dastagir', 'Ghulam Ghaus', 'Ghulam Mohiuddin', 'Ghulam Pir', 'Ghulam Murshid', 'Ghulam Maula Bakhsh', 'Ghulam Bakhsh', 'Pir Bakhsh', 'Nazr Mustafa', 'Nazr Panjtan', 'Nazr Hussain', 'Nazr Ali', 'Nazr Mohiuddin', 'Nazr Pir Khadim Ali', 'Khadim Ghaus', 'Kaneez Mustafa', 'Kaneez Panjtan', 'Kaneez Murtaza', 'Kaneez Hussain', 'Kaneez Ghaus', 'Kaneez Murshid', 'Kaneez Fatima', etc.? And if it is permissible, then which among the former and later scholars have such names? And is its permissibility proven from jurisprudence (Fiqh)? And is there any treatise of yours regarding its permissibility? If so, what is its name and at what price is it available?

---

1. Al-Quran al-Kareem 36/30
2. Al-Quran al-Kareem 4/80

3. Al-Quran al-Kareem 53/32

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

और वे शैतान के बंदे (अब्दुश शैतान) हैं जिनके बारे में फ़रमाया: "हाय अफ़सोस (नाफ़रमान) बंदों पर कि उनके पास (ख़ुदा का) कोई रसूल नहीं आता मगर ये उसके साथ हँसी और मज़ाक करते हैं।" (1) (त)

मगर शैतान का बंदा (अब्दुश शैतान) कभी भी अल्लाह के नबी का बंदा (अब्दुन नबी) या मुस्तफ़ा का बंदा (अब्दुल मुस्तफ़ा) नहीं हो सकता और इसे, अल्लाह की पनाह (मआज़अल्लाह), हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तौहीन से क्या वास्ता। नक़ल करने वाले ने ज़रूर ग़लत नक़ल किया या ग़लत समझा। हाँ, 'अब्द' से मुराद अगर ख़ास बंदा यानी आज्ञाकारी और फ़रमांबरदार होना हो तो ये ज़रूर मुश्किल है और इस मायने में 'अब्दुल्लाह' और 'अब्दुन नबी' एक ही हैं क्योंकि: "जो शख़्स रसूलुल्लाह की इताअत (आज्ञा पालन) करता है, उसने असल में अल्लाह तआला की इताअत की।" (2) (त)

इस मायने पर ख़ुद को इस अज़ीम सिफ़त से याद करना यक़ीनन नफ़्स की पाकी बयान करना (तज़किया-ए-नफ़्स) और ख़ुद-सतायी है, जो कि क़ुरआन मजीद की स्पष्ट आयत के अनुसार हराम है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "फ़ला तुज़क्कू अन्फ़ुसकुम" (3)। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "अपने नफ़्स को पाक न ठहराओ।" (त) जो लोग अपना लक़ब 'मुती-उन-नबी' या 'मुती-उर-रसूल' रखते हैं, वे जाहिल और बेअक़्ल हैं या जानबूझकर क़ुरआन मजीद के विरोधी। उनकी अपनी ही बात उनको झुठलाने के लिए काफ़ी है, क्योंकि जो मुती-उन-नबी और मुती-उर-रसूल होगा, वह कभी अपने नफ़्स की पाकी बयान नहीं करेगा। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 729: क़ादिर गंज, ज़िला बीरभूम, बंगाल से सैय्यद ज़हूरुल हुसैन हुसैनी क़ादरी रज़्ज़ाक़ी द्वारा भेजा गया, 22 जमादी-उल-उला 1336 हिजरी। अब्दुल मुस्तफ़ा, अब्दुल रसूल, अब्दुन नबी, ग़ुलाम मुस्तफ़ा, ग़ुलाम रसूल, ग़ुलाम नबी, ग़ुलाम मुहम्मद, ग़ुलाम अहमद, ग़ुलाम पंजतन, अब्दुल अली, अब्दुल हुसैन, ग़ुलाम अली, ग़ुलाम हुसैन, ग़ुलाम दस्तगीर, ग़ुलाम ग़ौस, ग़ुलाम मुहीउद्दीन, ग़ुलाम पीर, ग़ुलाम मुर्शिद, ग़ुलाम मौला बख़्श, ग़ुलाम बख़्श, पीर बख़्श, नज़्र मुस्तफ़ा, नज़्र पंजतन, नज़्र हुसैन, नज़्र अली, नज़्र मुहीउद्दीन, नज़्र पीर ख़ादिम अली, ख़ादिम ग़ौस, कनीज़ मुस्तफ़ा, कनीज़ पंजतन, कनीज़ मुर्तज़ा, कनीज़ हुसैन, कनीज़ ग़ौस, कनीज़ मुर्शिद, कनीज़ फ़ातिमा वग़ैरह इस तरह के नाम रखना जायज़ है या नहीं? और अगर जायज़ है, तो पिछले और बाद के उलेमा में से किन-किन के ऐसे

नाम रहे हैं और क्या इसका जायज़ होना फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) से साबित है या नहीं? और इसके जवाज़ (वैधता) में आपका कोई रिसाला (पुस्तिका) है या नहीं? अगर है, तो उसका नाम क्या है और वह किस क़ीमत पर उपलब्ध है?

---

1. अल-क़ुरआन अल-करीम 30/36
2. अल-क़ुरआन अल-करीम 80/4
3. अल-क़ुरआन अल-करीम 32/53

اور وہ عبد الشیطان ہیں جن کو فرمایا: "یٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا یَاْتِیْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِئُوْنَ" (1) ہائے افسوس (نافرمان) بندوں پر کہ ان کے پاس (خدا کا) کوئی رسول نہیں آتا مگر یہ اس کے ساتھ ہنسی ومذاق کرتے ہیں (ت)

مگر عبد الشیطان ہر گز عبدالنبی عبدالمصطفٰی نہیں ہو سکتا اور اسے معاذ اللہ حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی توہین سے کیا علاقہ، نقل کرنے والے نے ضرور غلط نقل کیا یا غلط سمجھا، ہاں عبد بمعنی بندہ خاص یعنی مطیع وفرمانبردار ہونا ضرور دشوار ہے اور بائیں معنی عبد اللہ وعبدالنبی ایک ہے کہ: "مَنْ یُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ" (2) جو شخص رسول اللہ کی اطاعت کرتا ہے اس نے در حقیقت اللہ تعالٰی کی اطاعت کی۔ (ت)

اس معنی پر اپنے آپ کو اس وصف عظیم سے یاد کرنا ضرور تزکیہ نفس وخود سرائی ہے کہ بنص قرآن مجید حرام ہے، قال اللہ تعالٰی "فَلَا تُزَكُّوْا اَنْفُسَكُمْ" (3) اللہ تعالٰی نے فرمایا: "اپنے نفوس کو پاکیزہ بناؤ۔ ت) جو لوگ اپنا لقب مطیع النبی ، مطیع الرسول رکھیں جاہل بیخرد ہیں یا قرآن عظیم کے دانستہ مخالف۔ خود انہیں کا قول ان کی تکذیب کو بس ہے جو مطیع النبی و مطیع الرسول ہو گا ہرگز اپنے نفس کا تزکیہ نہ کرے گا۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۷۲۹: از قادر گنج ضلع بیر بھوم ملک بنگالہ مرسلہ سید ظہور الحسین حسینی قادری رزاقی ۲۲ جمادی الاولی ۱۳۳۶ھ عبد المصطفٰی، عبد الرسول، عبد النبی، غلام مصطفٰی، غلام رسول، غلام نبی، غلام محمد، غلام احمد، غلام پنجتن، عبد العلی، عبد الحسین، غلام علی، غلام حسین، غلام دستگیر، غلام غوث، غلام محی الدین، غلام پیر، غلام مرشد، غلام مولی بخش، غلام بخش، پیر

بخش، نذر مصطفٰی، نذر پنجتن، نذر حسین، نذر علی، نذر محی الدین، نذر پیر خادم علی، خادم غوث، کنیز مصطفٰی، کنیز پنجتن، کنیز مرتضیٰ، کنیز حسین، کنیز غوث، کنیز مرشد، کنیز فاطمہ وغیرہ اس طرح کا نام رکھنا جائز ہے یا نہیں؟ اور جائز ہے تو علمائے متقدمین و متاخرین میں اس طرح کا نام کس کس کا ہے اور اس کا جواز فقہ سے ثابت ہے یا نہیں؟ اور اس کے جواز میں آپ کا کوئی رسالہ ہے یا نہیں؟ اگر ہے تو اس کا کیا نام اور کس قیمت پر ملتا ہے؟

---

1 القرآن الکریم ۳۰/۳۶ 2 القرآن الکریم ۸۰/۴ 3 القرآن الکریم ۳۲/۵۳

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

The Answer: The humble servant [the author] has three treatises on this subject which are included in my collection of fatwas. One is regarding 'Ghulam Mustafa' and its permissibility has been proven with evidence. The second is regarding 'Abd al-Mustafa', in which it has been researched that as a descriptive term, it is undoubtedly permissible and proven from the eminent companions; the dislike mentioned by some later scholars refers to its use as a name. The third discusses numerous names and proves the permissibility of 'Muhammad Bakhsh' and similar ones. These three treatises have not been printed yet. Allama Abid Sindhi Madani (may Allah have mercy on him) in 'Tawali' al-Anwar' and in the commentary of 'Durr al-Mukhtar' has proven the permissibility of 'Abd an-Nabi' and 'Abd ar-Rasul' through many hadiths. Allama Jamal bin Abdullah bin Umar (may Allah have mercy on him), the Hanafi Mufti at Makkah al-Mukarramah, has also explicitly stated its permissibility in his fatwas. There is also no harm in naming with 'Kaniz', 'Nazr', and 'Khadim'. The lack of custom in the era of predecessors does not necessitate prohibition. Keeping names consisting of two or three names, like 'Muhammad Ali Hussain', also didn't have a custom among the predecessors; they used simple single-word names. And Allah knows best.

Problem 770 to 772: From Muradabad, sent by Maulvi Muhammad Abdul Bari Sahib, 7 Safar 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding these issues: (1) If a person calls a Sunni Hanafi Razvi Qadri 'Lasbara' (which is a diminutive of 'Lubbi' meaning Wahhabi), what is the ruling for such a person according to the noble Sharia? If the mentioned Hanafi Razvi is not actually the target for these words, will these words return to the speaker or not? If not, where will they go? (2) How far can the words and actions of such a person, who levels such baseless allegations against a Sunni Razvi and whose food is also not halal but rather clearly dubious and forbidden, be considered valid in the rulings of Sharia? (3) This same person does not converse with any Muslim without harsh language and abuse, and says that the water remaining in the lotas (vessels) of the mosque is definitely impure, so much so that if you pour this water into another vessel, that vessel will also become impure. He never prays on the floor or mats in the mosque, but prays on his own specific cloth which has markings and other cloths. To what extent are these habits impermissible in prayer?

The Answer: (1) Calling a Sunni Muslim 'Lasbara' is an act of transgression (fisq). The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Abusing a Muslim is transgression (fisq)." [1] To insult a Muslim without a Shar'i reason is transgression.

[1] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Iman, Chapter on the believer's fear that his deeds might be nullified etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 12/1. Page 670 of 720

फतावा रज़विया, जिल्द 24

उत्तर: फकीर (लेखक) के इस बारे में तीन रिसाले (लेख) हैं जो मेरे फतावा के संग्रह में हैं। एक 'गुलाम मुस्तफ़ा' के बारे में है और इसके जायज़ होने को दलीलों से साबित किया है। दूसरा 'अब्दुल मुस्तफ़ा' के बारे में है और इसमें यह शोध किया है कि प्रशंसा के रूप में यह निसंदेह जायज़ है और महान सहाबा से साबित है; कुछ बाद के विद्वानों ने जो नापसंदगी लिखी है, वह नाम रखने के संबंध में है। तीसरे में बहुत से नामों पर चर्चा है और इसमें 'मोहम्मद बख्श' और इसके समान नामों के जायज़ होने को साबित किया है। ये तीनों रिसाले अभी छपे नहीं हैं। अल्लामा आबिद सिंधी मदनी (रहमतुल्लाह अलैह) ने 'तवालि-अल-अनवार' में और 'दुर्रे मुख्तार' की व्याख्या में 'अब्दुन नबी' और 'अब्दुर रसूल' के जायज़ होने को बहुत सी हदीसों से साबित किया है। मक्का मुकर्रमा के हनफ़ी मुफ्ती अल्लामा जमाल बिन अब्दुल्ला बिन उमर (रहमतुल्लाह अलैह) ने भी अपने फतावा में इसके जायज़ होने को स्पष्ट किया है। 'कनीज़', 'नज़र' और 'खादिम' के साथ नाम रखने में भी कोई हर्ज नहीं है। पूर्वजों (सल्फ) के समय में चलन न होना मनाही को अनिवार्य नहीं करता। दो-दो, तीन-तीन नामों पर आधारित नाम रखना, जैसे 'मोहम्मद अली हुसैन', इसका भी पूर्वजों में चलन कभी नहीं था, उनके नाम एक शब्द के सादे होते थे। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 770 से 772: मुरादाबाद से, प्रेषक मौलवी मोहम्मद अब्दुल बारी साहब, 7 सफ़र 1338 हिजरी। दीन के विद्वान इन मसलों में क्या फरमाते हैं कि: (1) अगर कोई व्यक्ति किसी सुन्नी हनफ़ी रज़वी क़ादरी को 'लसबड़ा' कहे (जो 'लुब्बी' का लघु रूप है और वहाबी के लिए प्रयुक्त होता है), तो ऐसे व्यक्ति का शरीयत के अनुसार क्या हुक्म है? यदि उक्त हनफ़ी रज़वी वास्तव में इन शब्दों के पात्र नहीं हैं, तो क्या ये शब्द कहने वाले पर वापस लौटेंगे या नहीं? अगर नहीं लौटेंगे, तो कहाँ जाएंगे? (2) ऐसा व्यक्ति जो सुन्नी रज़वी पर ऐसे निराधार आरोप लगाए और जिसका खाना भी हलाल नहीं बल्कि खुला हुआ संदिग्ध और हराम है, तो उसके कथन और कर्म शरीयत के आदेशों में कहाँ तक विश्वसनीय हो सकते हैं? (3) यही व्यक्ति किसी मुसलमान से बिना कठोर भाषा और गाली-गलौज के बात नहीं करता और कहता है कि मस्जिद के लोटों में जो पानी बचता है वह पूरी तरह नापाक है, यहाँ तक कि यदि आप इस पानी को दूसरे बर्तन आदि में डालेंगे तो वह बर्तन भी अपवित्र हो जाएगा। वह मस्जिद में उसके फर्श या चटाई पर कभी नमाज़ नहीं पढ़ता, बल्कि अपने विशेष कपड़े पर नमाज़ पढ़ता है जिस पर निशान और अन्य कपड़े हैं। नमाज़ में इस प्रकार की आदतें कहाँ तक नाजायज़ हैं?

उत्तर: (1) सुन्नी मुसलमान को 'लसबड़ा' कहना फिस्क़ (पाप/उल्लंघन) है। नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते हैं: "मुसलमान को गाली देना फिस्क़ (पाप) है।" [1] - बिना किसी शरई कारण के मुसलमान को बुरा कहना फिस्क़ है।

[1] सहीह अल-बुखारी, किताबुल ईमान, बाब खौफ़ुल मोमिन अन यहबता अमलहु... कदीमी कुतुब खाना, कराची, 12/1. पेज 670 of 720

الجواب: فقیر کے اس بارے میں تین رسالے ہیں جو میرے مجموعہ فتاویٰ میں ہیں۔ ایک درباره غلام مصطفیٰ اور اس کا جواز دلائل سے ثابت کیا ہے۔ دوسرا درباره عبدالمصطفیٰ اور اس میں یہ تحقیق کیا ہے کہ توصیفاً بلاشبہ جائز اور اجلہ صحابہ سے ثابت کراہت کہ بعض متاخرین نے لکھی جانب تسمیہ راجع ہے۔ تیسرے میں اسمائے کثیرہ سے بحث ہے اور اس میں محمد بخش اور اس کے امثال کا جواز ثابت کیا ہے۔ یہ تینوں رسالے ابھی طبع نہ ہوئے۔ علامہ عابد سندی مدنی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے طوالع الانوار میں اور حاشیہ درمختار میں عبد النبی و عبد الرسول کا جواز بہت احادیث سے ثابت کیا ہے۔ علامہ جمال بن عبد اللہ بن عمر رحمۃ اللہ علیہ مفتی حنفیہ بمکہ مکرمہ کے فتاویٰ میں بھی اس کا جواز مصرح ہے۔ کنیز و نذر و خادم کے ساتھ نام رکھنے میں بھی حرج نہیں، زمانہ سلف میں رواج نہ ہونا مستلزم ممانعت نہیں دو دو تین تین ناموں پر مشتمل نام رکھنا جیسے محمد علی حسین اس کا بھی رواج سلف کبھی نہ تھا سادے ایک لفظ کے نام ہوتے تھے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۷۷۰ تا ۷۷۲: از مراد آباد مرسلہ مولوی محمد عبدالبار صاحب ۷ صفر ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں کہ : (۱) اگر کوئی شخص کسی سنی حنفی رضائی قادری کو لسبڑا کہے جو تصغیر لبی کی ہے وہابی کا ہے تو ایسے شخص کا شرع شریف کے موافق کیا حکم ہے حنفی رضائی مذکور در حقیقت ان الفاظ کا محل نہیں تو یہ لفظ اسے کہنے والے پر عائد ہوں گے یا نہیں؟ اگر نہ ہوں تو کہاں جائیں گے ؟ (۲) ایسا شخص جو ایسے بے جا الزام سنی رضائی پر لگائے اور اس کا اکل بھی حلال نہیں بلکہ کھلا ہوا مشتبہ اور حرام ہے تو اس قول و فعل شرع کے احکام میں کہاں تک معتبر ہو سکتا ہے؟ (۳) یہی شخص کسی مسلمان سے بلا سخت کلامی و دشنام

کے گفتگو نہیں کرتا اور کہتا ہے مسجد کے لوٹوں میں جو پانی بچتا ہے وہ قطعی ناپاک ہے یہاں تک کہ اس پانی کو دوسرے برتن وغیرہ میں ڈالو گے تو وہ برتن بھی نجس ہو جائے گا اور مسجد میں اس کے فرش یا بوریئے پر کبھی نماز نہیں پڑھتا اپنے خاص کپڑے پر جس پر چندہ اور کپڑے ہیں نماز پڑھتا ہے اس قسم کے عادات نماز میں کہاں تک ناجائز ہیں؟

الجواب : (۱) سنی مسلمان کو لسبڑا کہنا فسق ہے۔ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں : سباب المسلم فسوق 1- مسلمان کو بلاوجہ شرعی برا کہنا فسق ہے۔

1 صحیح البخاری کتاب الایمان باب خوف المؤمن ان یحبط عملہ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۱۲

Fatawa Razawiyyah Volume 24

Allah Almighty says:

"O believers! Do not insult one another by using offensive nicknames. How evil it is to be called a 'transgressor' after having attained faith! And whoever does not repent, it is they who are the wrongdoers."

| "O believers! Do not call each other by bad nicknames. How evil a name is transgression after faith! And whoever does not repent, those are the wrongdoers." |

This noble verse indicates that if you, for example, label a Sunni Muslim with a derogatory name, he will not become that because of your saying so, but your own name has been tarnished; you have turned from a believer to a transgressor. What a terrible change! And whoever does not repent is a wrongdoer. And Allah Almighty knows best.

(2) Even if such a person consumes lawful (halal) food, his word and action are not considered reliable in Shariah, let alone when even lawful consumption is questionable. And Allah Almighty knows best.

(3) The ruling regarding harsh speech and abuse towards a Muslim was mentioned in the first answer. Declaring the water from mosque vessels (lotas) as impure is false. There is no harm in keeping one's own special prayer mat for caution; in fact, Durr-e-Mukhtar states it as preferable. This is as long as one does not consider the mosque's mats as impure due to their own superstition, nor regards ordinary Muslims who pray on them as being in error or less cautious and inferior to themselves; otherwise, such a person is indeed inferior and a captive in the claws of Satan. And we seek refuge with Allah the Almighty. And Allah Almighty knows best.

Issue 273: From Bhagalpur

What do the scholars of religion say regarding this matter: A person is a disciple (mureed) of Molvi Ashraf Ali. His name is Moiz-ud-Din. He wrote 'Mu'eed-ud-Din' in a letter. Someone explained to him that writing it this way changes the meaning, and God forbid, Muslims should not have such a name because then it would mean 'one who seeks refuge from religion'. But that unfortunate person did not agree and said, 'I always write letters to my Hazrat (spiritual guide) with this spelling, but Hazrat never forbade it nor pointed out any evil in it.' Therefore, it is requested: what is the Shariah ruling for a person who spells his name as Mu'eed-ud-Din (with 'ya' after 'ain'

and before 'dhal') and considers it correct? And what are its meanings according to linguistics and common usage? Thus, I submit this in the form of a question to your noble service.

The Answer:

The scholars of the two Holy Harams (Makkah and Madinah) have unanimously declared the Deobandis, including Thanvi by name, as disbelievers (kafir) and apostates (murtad), and have explicitly stated so, referencing Shifa of Imam Qadi Iyad, Bazzaziyah, and Majma al-Anhur, etc.:

1. The Holy Quran 49 / 11

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

अल्लाह तआला फरमाता है:

"व ला तनाबज़ू बिल अल्क़ाब, बिसल इस्मुल फ़ुसूक़ु बा'दल ईमान, व मनलम यतुब फ़ उलाइका हुमुज़ ज़ालिमून।"

| "मुसलमानों! आपस में एक दूसरे को बुरे लक़ब (उपनाम) से याद न करो। ईमान के बाद फ़िस्क़ (गुनाह) कितना बुरा नाम है और जो तौबा न करें वही लोग ज़ालिम हैं।" |

आयत-ए-करीमा बता रही है कि अगर तुमने मिसाल के तौर पर किसी सुन्नी मुसलमान का लक़ब बुरा रखा तो वह तुम्हारे कहने से वैसा नहीं हो जाएगा, मगर तुम्हारा अपना नाम बुरा हो गया, तुम मोमिन से फ़ासिक़ हो गए। यह कितनी बुरी तब्दीली है! और जो तौबा न करे वही ज़ालिम है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

(2) ऐसा शख़्स अगर हलाल खाना भी खाता हो, तब भी शरीयत में उसकी बात और काम का कोई एतबार नहीं, और तब तो बिलकुल नहीं जब उसका हलाल खाना भी संदिग्ध हो। वल्लाहु तआला आलम।

(3) मुसलमान से सख़्त कलामी और गाली-गलौज का हुक्म पहले जवाब में गुज़र चुका। मस्जिद के लोटों के पानी को नापाक बताना बातिल (झूठ) है। एहतियात के तौर पर अपनी जाए-नमाज़ (मुसल्ला) अलग रखने में कोई हर्ज नहीं, बल्कि 'दुर्रे मुख़्तार' में इसे अफ़ज़ल (बेहतर) बताया गया है। यह तब है जब कोई अपनी वहम-परस्ती से मस्जिद की चटाईयों को नापाक न समझे और आम मुसलमानों को, जो उन पर नमाज़ पढ़ते हैं, गुमराह या अपने से कम एहतियात करने वाला और हक़ीर (छोटा) न समझे; वरना वही शख़्स हक़ीर और शैतान के पंजे का.क़ैदी है। वल-इयाज़ु बिल्लाहि तआला आलम (और हम अल्लाह तआला की पनाह मांगते हैं)।

मसला 273: भागलपुर से

उलमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक शख़्स मौलवी अशरफ़ अली का मुरीद है, उसका नाम मुइज़ुद्दीन है, उसने किसी ख़त में 'मुईद-उद-दीन' लिखा। उस पर एक शख़्स ने समझाया कि इस तरह लिखने से मानी (अर्थ) बदल जाता है और नऊज़ुबिल्लाह (अल्लाह की पनाह) मुसलमानों को ऐसा नाम नहीं रखना चाहिए क्योंकि उस वक़्त इसका मानी होता है 'दीन से पनाह माँगने वाला'।

लेकिन उस कमबख़्त ने न माना और कहा कि मैं अपने हज़रत के पास हमेशा इसी इमला (वर्तनी) से ख़त लिखता हूँ लेकिन हज़रत ने कभी मना नहीं फ़रमाया और न ही इसमें कोई बुराई बताई। लिहाज़ा गुज़ारिश है कि जो शख़्स अपना नाम मुईद-उद-दीन (ऐन के बाद 'या' और ज़ाल से पहले) रखे और उसे सही बताए, उसके लिए शरीयत का क्या हुक्म है? और लुग़त व मुहावरे के हिसाब से इसके क्या मानी हैं? पस, इसे मसले की सूरत में आपकी ख़िदमत में पेश करता हूँ।

जवाब:

हरमैन शरीफ़ैन के उलमा ने बिल-इत्तेफ़ाक़ देवबंदियों का नाम-ब-नाम, जिनमें थानवी का नाम शामिल है, काफ़िर और मुर्तद बताया है और शिफ़ा-ए-इमाम क़ाज़ी अयाज़, बज़ाज़िया और मजमा अल-अन्हुर वगैरह के हवाले से साफ़ तौर पर फ़रमाया है:

1. अल-क़ुरआन अल-करीम 49/11

فتاویٰ رضویہ جلد ۲۴

اللہ تعالیٰ فرماتا ہے:

"وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْأَلْقَابِ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْإِيْمَانِ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ"

| مسلمانو! آپس میں ایک دوسرے کو برے لقب سے یاد نہ کرو ایمان کے بعد فسق کیا ہی برا نام ہے اور جو توبہ نہ کرے وہی لوگ ظالم ہیں۔ |

آیہ کریمہ بتارہی ہے کہ تم نے مثلاً سنی مسلمان کا لقب لبڑا رکھا تو وہ تمہارے کہنے سے لبڑا نہ ہو جائے گا مگر تمہارا نام بد گیا مومن سے فاسق ہو گیا کتنی بری تبدیلی ہے اور جو توبہ نہ کرے وہی ظالم واللہ تعالیٰ اعلم۔

(۲) ایسا شخص اگر اکل حلال بھی کھاتا ہو جب بھی اس کا قول فعل شرع میں معتبر نہیں نہ کہ جبکہ اکل حلال کبھی طرہ ہو۔ واللہ تعالیٰ اعلم

(۳) مسلمان سے سخت کلامی و دشنام کا حکم جواب اول میں گزرا مسجد کے لوٹوں کا پانی ناپاک بتانا باطل ہے اپنا مصلیٰ خاص بنظر احتیاط رکھنے میں حرج نہیں بلکہ درمختار میں اسے افضل بتایا، یہ جبکہ مسجد کی چٹائیوں کو اپنی وہم پرستی سے ناپاک نہ جانے اور عام مسلمانوں کو کہ ان پر نماز پڑھتے ہیں خطا پر اپنے سے کم احتیاط و حقیر نہ سمجھے ورنہ وہی حقیر اور پنجہ شیطان کا اسیر ہے۔ و العیاذ باللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۲۷۳: از بھاگلپور

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص مولوی اشرف علی کا مرید ہے، نام اس کا معز الدین، اس نے معید الدین کسی خط میں لکھا، اس پر ایک شخص نے سمجھایا کہ اس طرح پر لکھنے سے معنی بدل جاتا ہے اور نعوذ باللہ مسلمانوں کو ایسا نام نہیں رکھنا چاہئے کیونکہ اس وقت یہ معنی ہوتا ہے کہ دین سے پناہ مانگنے والا، لیکن اس کمبخت نے نہ مانا اور یہ کہا کہ میں اپنے حضرت کے پاس برابر اسی املاء سے خط لکھتا ہوں لیکن حضرت نے کبھی نہ منع فرمایا اور نہ کوئی برائی اس میں بتائی۔ لہذا گزارش ہے کہ جو شخص اپنا نام معید الدین بالیا بعد العین وقبل الذال رکھے اور صحیح بتائے تو اس کے واسطے شرعاً کیا حکم ہے؟ اور لغت و محاورہ سے اس کے کیا معنی ہیں؟ پس اس کو بصورت مسئلہ کے خدمت والا میں روانہ کرتا ہوں۔

الجواب:

علمائے حرمین شریفین نے بالاتفاق دیوبندیوں کا نام بنام جن میں تھانوی کا نام ہے کافر و مرتد بتایا اور شفائے امام قاضی عیاض و بزازیہ و مجمع الانہر وغیرہ کے حوالے سے صراحۃً فرمایا:

1 القرآن الکریم ۴۹ / ۱۱

Fatawa Razawiyya Volume 24

'Whoever doubts their disbelief and punishment, indeed commits disbelief.'[1] Whoever doubts their disbelief is also an infidel, let alone those who consider them Muslims, or those who consider them spiritual guides. What question is there about the words and actions of such people? "Mu'in ud-Din" means "the one who gives refuge to the faith," and giving oneself such a strong name is extreme self-purification and self-praise, which is forbidden.

Allah Almighty said: 'Do not acclaim yourselves as pure; He knows best who is pious.'[2] (T)

In Radd al-Muhtar it is stated: Shaykh Sinan, the knower of Allah, in his book 'Tabyin al-Maharim', established a powerful argument against those who name themselves with such titles, stating it is the forbidden self-purification mentioned in the Quran and is a form of falsehood. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 274: From the Gwalior army, Haider Ganj neighborhood, asked by Hafiz Nabi Muhammad, 13 Muharram 1339 AH. A fatwa was requested from your presence at some point; the answer arrived, but with it, an objection was raised against my name stating that keeping this name is forbidden, yet no reason was provided. The Mufti of our city, Maqbool Hussain Sahib, says it is not impermissible. Therefore, I request that you write this sentence in detail, and also provide a name for this humble servant in the same context so it can be publicized in the gazette to inform the general public. However, my name must include 'Muhammad' or 'Ahmad' because my elders named me 'Nabi Muhammad' and I am called by that name, but your presence has stated that my name is impermissible. Why does the Sharia make this name impermissible?

[1] Durr al-Mukhtar, Kitab al-Jihad, Chapter of Apostates, Mujtabai Press Delhi 1/356 [2] The Holy Quran 53:32 [3] Radd al-Muhtar, Kitab al-Hazr wal-Ibaha, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 5/269

फ़तावा रज़विया खंड २४

'जो उनके कुफ़्र और अज़ाब में शक करे, तो वह काफ़िर है।'[1] जो उनके कुफ़्र में शक करे वह भी काफ़िर है, तो उनका क्या कहना जो उन्हें मुसलमान समझें, या जो उन्हें पीर-ओ-मुर्शिद समझें। ऐसे लोगों के कथनों और कार्यों के बारे में क्या सवाल। "मुईनुद्दीन" का अर्थ है "दीन को पनाह देने वाला", और अपना ऐसा नाम रखना स्वयं की अत्यधिक पवित्रता बताना और आत्म-प्रशंसा है और वह हराम है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: '(लोगो!) अपनी जानों की पाकीज़गी न बताया करो, क्योंकि अल्लाह तआला अच्छी तरह जानता है कि कौन परहेज़गार है।'[2] (त)

रद्दुल मुहतार में है: आरिफ़ बिल्लाह हज़रत शैख़ सिनान ने अपनी किताब 'तबयीनुल महारिम' में इस तरह के नाम रखने वालों के खिलाफ़ मज़बूत दलील पेश की (और फ़रमाया) कि यह ऐसा तज़किया (आत्म-पवित्रता) और झूठ है जिससे क़ुरान मजीद में मना किया गया है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला २७४: ग्वालियर की सेना से, हैदर गंज मोहल्ला, सायल हाफ़िज़ नबी मोहम्मद, १३ मुहर्रम १३३९ हिजरी। हुज़ूर से किसी वक़्त में एक फ़तवा माँगा गया था, जवाब आ गया मगर उसके साथ ही मेरे नाम पर ऐतराज़ फ़रमाया था कि यह नाम रखना हराम है, और वजह कोई तहरीर नहीं फ़रमाई थी। हमारे शहर के मुफ्ती मक़बूल हुसैन साहब फ़रमाते हैं कि नाजायज़ नहीं है, इसलिए गुज़ारिश है कि आप इस जुमले को तफ़सील से तहरीर फ़रमा दीजियेगा और उसी के साथ इस खाकसार का (सही) नाम भी तहरीर फ़रमा दें ताकि इसे गज़ट कराकर आम लोगों को सूचित किया जा सके। मगर मेरे नाम में 'मोहम्मद' या 'अहमद' ज़रूर होना चाहिए क्योंकि मेरे बुज़ुर्गों ने मेरा नाम 'नबी मोहम्मद' रखा है और इसी नाम से पुकारा जाता हूँ, मगर हुज़ूर ने फ़रमाया है कि तुम्हारा नाम नाजायज़ है। शरीयत इस नाम को नाजायज़ क्यों कह रही है?

[1] दुर्रे मुख़्तार, किताबुल जिहाद, बाबुल मुर्तद, मतबा मुजतबाई दिल्ली १/३५६ [2] अल-क़ुरान ५३/३२ [3] रद्दुल मुहतार, किताबुल हज़्र वल इबाहह, दारुल इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरुत ५/२६९

पृष्ठ ७२० का ६७२

من شك في كفره وعذابه فقد كفر[1]۔ جو کوئی ان کے کفر و عذاب میں شک کرے تو وہ کافر ہے۔ (ت)

جو ان کے کفر میں شک کرے وہ بھی کافر ہے نہ کہ وہ جو انہیں مسلمان جانیں، نہ کہ وہ جو انہیں پیر و مرشد جانیں، ایسوں کے اقوال وافعال سے کیا سوال۔ معین الدین کے یہ معنی ہیں "دین کو پناہ دینے والا" اور اپنا نام ایسا سخت رکھنا سخت عظیم تزکیہ نفس و خود ستائی ہے اور وہ حرام ہے۔

قال تعالٰی "فَلَا تُزَكُّوا اَنْفُسَكُمْ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰی"[2]۔ اللہ تعالٰی نے فرمایا: (لوگو!) اپنی جانوں کی پاکیزگی نہ بتایا کرو اس لئے کہ اللہ تعالٰی اچھی طرح جانتا ہے کہ کون پرہیزگار ہے۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے: العارف باللہ تعالٰی الشیخ سنان في كتابه تبيين المحارم، اقام الطامة الكبرى على المستسمين بمثل ذلك وانه من التزكية المنهي عنها في القرآن و من الكذب[3] اھ واللہ تعالٰی اعلم۔ عارف باللہ حضرت شیخ سنان نے اپنی کتاب تبیین المحارم میں اس طرح کے نام رکھنے والوں کے خلاف حجت قاہرہ قائم کی (اور فرمایا) یہ ایسا تزکیہ اور جھوٹ ہے کہ قرآن مجید میں اس سے منع فرمایا گیا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۲۷۴: از لشکر گوالیار محلہ حیدر گنج مسئولہ حافظ نبی محمد ۱۳ محرم ۱۳۳۹ھ حضور سے کسی وقت میں ایک فتوی طلب کیا تھا جواب آگیا مگر اس کے ساتھ ہی میرے نام پر اعتراض فرمایا تھا کہ یہ نام رکھنا حرام ہے، اور وجہ کوئی تحریر نہیں فرمائی تھی، ہمارے شہر کے مفتی مقبول حسین صاحب فرماتے ہیں کہ ناجائز نہیں، اس واسطے گزارش ہے کہ آپ اس جملہ کو بالتفصیل تحریر فرما دیجئے گا اور اس کے ساتھ ہی اسی ذیل میں نام بھی خاکسار کا تحریر فرمادیجئے تاکہ اس کو گزٹ کرا کر عام لوگوں کو مطلع کیا جائے مگر میرے نام میں محمد یا

احمد ضرور ہونا چاہئے چونکہ میرا نام بزرگوں نے نبی محمد رکھا ہے اور اسی نام سے پکارا جاتا ہوں مگر حضور نے فرمایا ہے کہ تمہارا نام ناجائز ہے شریعت کیوں اس نام کو ناجائز کر رہی ہے

[1] درمختار کتاب الجہاد باب المرتد مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۳۵۶ [2] القرآن الکریم ۳۲/ ۵۳ [3] ردالمحتار کتاب الحظر والاباحۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۵ / ۲۹۹

Fatawa Razawiyya Volume 24

May His Eminence state the reason for this in summary and also propose another name. The name proposed by His Eminence will be publicized. It will be stated as such: the name Miranabi Muhammad was against the Shariah, so now such-and-such name has been proposed. The Answer: It is attributed to the named person, this is Zaid, and what is understood from the descriptive title also implies attribution. Therefore, calling oneself a prophet or being called one is absolutely forbidden. And the excuse of a 'new designation' in personal names is weak; the original designation must be kept in mind. For this reason, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) changed names that were bad or implied self-sanctification. Would anyone tolerate naming themselves or their child Satan or Son of Satan? Even though in a 'new designation' specifically this person is intended. When one does not tolerate calling oneself Satan, how can one allow calling or being called a prophet? And the thought that there was no intention of claiming prophethood is true; that's why it's forbidden, otherwise, it would have been disbelief (kufr). You should keep your name as Nabeel Ahmad. And Allah Almighty knows best. Problem 765: From the city, 28 Jamadi al-Ula 1339 AH. What do the scholars of religion say in this matter, is it permissible to name someone Abdul Nabi or not? The Answer: It is permissible to call oneself Abdul Nabi, but the name should be Abdullah. And Allah Almighty knows best. Problem 766 to 772: Sent by Maulvi Abid Ali Sahib Sitari, Saifullah Ganj Post Office, Sultanpur District, 7 Rabi al-Awwal 1335 AH. (1) Is it permissible according to the commands of Shariah to name someone Ahmad Bakhsh, Muhammad Bakhsh, Nabi Bakhsh, Rasul Bakhsh, Husain Bakhsh, Pir Bakhsh, Madar Bakhsh, etc.? If not, is there shirk (polytheism) in it or what? And if a person forbids keeping such names, and the one who names them calls the forbidder a polytheist, brands him a Wahhabi, and declares him unfit for leadership (Imamate), and wants to prove in clear words that Allah the Pure will not forgive unless the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forgives, and cites unrelated Quranic verses to prove this, then has such a person committed any form of address/title, and which one? And let it not remain hidden that the one naming himself calls himself a scholar and delivers such speeches in public gatherings. (2) The person whose title, physical appearance, clothing, and other necessary belongings are like those of Hindus, and who is not punctual with prayers, will such a person be called a scholar or the manifestation of "Whoever imitates a people is one of them" (1)?

1 Sunan Abi Dawud, Book of Clothing, Chapter on wearing clothes of fame, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/203. Page 673 of 720

फतावा रज़विया जिल्द 24

हुज़ूर इसका कारण संक्षेप में लिखें और कोई दूसरा नाम भी प्रस्तावित करें। हुज़ूर जो नाम प्रस्तावित करेंगे, वही प्रसिद्ध होगा। वह इस प्रकार किया जाएगा कि मीरानबी मुहम्मद नाम शरीयत के खिलाफ था, इसलिए अब फलां नाम प्रस्तावित किया गया है। उत्तर: यह नामित व्यक्ति पर लागू होता है, यह ज़ैद है, और वर्णनात्मक शीर्षक से जो समझा जाता है वह भी इसमें शामिल है। इसलिए खुद को नबी (पैगंबर) कहना और कहलवाना पूरी तरह से हराम है। और नामों में 'नई परिभाषा' का बहाना कमजोर है; मूल परिभाषा का ध्यान रखा जाना चाहिए। इसी कारण अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने बुरे और आत्म-प्रशंसा वाले नाम बदल दिए थे। क्या कोई यह बर्दाश्त करेगा कि अपना नाम या अपने बच्चे का नाम शैतान या वल्द-ए-शैतान (शैतान का बेटा) रखे? हालांकि 'नई परिभाषा' में विशेष रूप से यही व्यक्ति अभिप्रेत है। जब कोई खुद को शैतान कहलाना बर्दाश्त नहीं करता, तो नबी कहलाना या कहलवाना कैसे जायज़ मान सकता है? और यह विचार कि नबी होने का दावा करने का इरादा नहीं था, सच है; इसीलिए तो यह हराम हुआ, वरना यह कुफ्र (अधर्म) होता। आप अपना नाम नबील अहमद रखें। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। मसला 765: शहर से, 28 जमादी अल-उला 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि क्या अब्दुल नबी नाम रखना जायज़ है या नहीं? उत्तर: स्वयं को अब्दुल नबी कहना जायज़ है लेकिन नाम अब्दुल्लाह रखा जाना चाहिए। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। मसला 766 से 772: प्रेषक मौलवी आबिद अली साहब सीतरी, डाकखाना सैफुल्लाह गंज, जिला सुल्तानपुर, 7 रबी-उल-अव्वल 1335 हिजरी। (1) अहमद बख्श, मुहम्मद बख्श, नबी बख्श, रसूल बख्श, हुसैन बख्श, पीर बख्श, मदार बख्श, आदि नाम रखना शरीयत के आदेशों के अनुसार जायज़ है या नहीं? यदि नहीं, तो क्या इसमें शिर्क है या क्या है? और यदि कोई व्यक्ति ऐसे नाम रखने से मना करे, और नाम रखने वाला मना करने वाले को मुशरिक (बहुदेववादी) बताए, वहाबी ठहराए और इमामत के लिए अयोग्य घोषित करे, और स्पष्ट शब्दों में यह सिद्ध करना चाहे कि अल्लाह पाक तब तक नहीं बख्शेगा (क्षमा करेगा) जब तक अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) न बख्शें, और इसे सिद्ध करने के लिए अप्रासंगिक कुरान की आयतों का हवाला दे, तो क्या ऐसा व्यक्ति किसी खिताब (उपाधि) का दोषी हुआ या नहीं, और किस खिताब का? और यह भी गुप्त न रहे कि नाम रखने वाला खुद को आलिम (विद्वान) कहता है और सार्वजनिक सभाओं में ऐसा भाषण देता है। (2) जो व्यक्ति अपना खिताब, अपना शारीरिक हाव-भाव, अपना पहनावा और अन्य आवश्यक चीजें हिंदुओं की तरह रखे और

नमाज़ का भी पाबंद न हो, क्या ऐसा व्यक्ति आलिम कहलाएगा या उस हदीस का उदाहरण होगा कि "जो किसी कौम की समानता अपनाए वह उन्हीं में से है" (1)?

---

1 सुनन अबी दाऊद, किताबुल लिबास, बाब फी लिबसिश शुहरा, आफताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, 2/203। पेज 673 ऑफ 720

اس کا سبب حضور خلاصہ تحریر فرمائیں اور نام بھی دوسرا تجویز فرمائیں حضور ہی جو نام تجویز فرمائیں گے وہی مشتہر ہوگا وہ یوں کیا جائے گا کہ نام میرانبی محمد شریعت کے خلاف تھا سو اب فلاں نام تجویز ہوا ہے۔ الجواب: اس مسمّیٰ پر محمول ہوتا ہے یہ زید ہے او وصف عنوان سے جو سمجھا جاتا ہے وہ بھی متضمن حمل ہے تو اس میں اپنے آپ کو نبی کہنا اور کہلوانا ہے اور یہ قطعاً حرام ہے ، اور علم میں وضعِ جدید کا عذر بارد ہے وضعِ اول ضرور ملحوظ رہتی ہے ولنذار رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے برے نام اور تنزکیہ کے نام تبدیل فرمادیئے کیا کوئی گوارا کرے گا کہ اپنا نام یا اپنے بچے کا نام شیطان یا ولد الشیطان رکھے حالانکہ وضع جدید میں تو خاص یہ ذات مقصود ہے جب اپنے آپ کو شیطان کہنا گوارا نہیں کرتا نبی کہنا اور کہلوانا روا رکھتا ہے اور یہ خیال کہ نیت دعوی نبوت کی نہ تھی سچ ہے جبھی تو حرام ہوا ، ورنہ کفر ہوتا ، آپ اپنا نام نبیل احمد رکھئے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۷۶۵: از شہر ۲۸ جمادی الاولٰی ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ آیا عبدالنبی نام رکھنا جائز ہے کہ نہیں؟ الجواب: اپنے آپ کو عبدالنبی کہنا جائز ہے مگر نام عبد اللہ رکھا جائے ۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۷۶۶ تا ۷۷۲ : مرسلہ مولوی عابد علی صاحب سیتری ڈاک خانہ سیف اللہ گنج ضلع سلطان پور ۷ ربیع الاول ۱۳۳۵ھ (۱) احمد بخش ، محمد بخش، نبی بخش، رسول بخش، حسین بخش، پیر بخش، مدار بخش، وغیرہ نام رکھنا از روئے احکام شریعت جائز ہے یا نہیں؟ اگر نہیں تو اس میں شرک ہے یا کیا؟ اور اگر کوئی شخص ایسے ناموں کے رکھنے سے منع کرے اور نام رکھنے والا منع کرنے والے کو مشرک بتائے اور وہابی ٹھہرائے اور ناقابلِ امامت قرار دے اور بالفاظ واضح یہ ثابت کرنا چاہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم جب تک نہ بخشیں گے خدائے پاک نہ بخشے گا اور

اس کے ثابت کرنے کے لئے آیات قرآنی غیر متعلق کا حوالہ دے تو ایسا شخص کسی خطاب کا مرتکب ہوا یا نہیں اور کس خطاب کا؟ اور یہ بھی مخفی نہ رہے کہ نام رکھنے والا اپنے کو عالم کہتا ہے اور مجمعِ عام میں ایسی تقریر کرتا ہے۔ (۲) جو شخص اپنا خطاب اپنی جسمانی وضع اپنا لباس اپنا ضروری دیگر اسباب مثل ہندوؤں کے رکھے اور نماز کا بھی پابند نہ ہو ایسا شخص عالم کہلائے گا یا مصداق من تشبّہ بقوم فھو منھم ۱ ۔

---

1 سنن ابی داؤد کتاب اللباس باب فی لبس الشہرۃ آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۲۰۳ Page 673 of 720

Fatawa Razawiyya, Volume 24

(Whoever resembles a nation is counted among them - Trans.) will be. State the ruling and be rewarded (Trans.).

The Answer: (1) These names are legally (Shari'ah) correct; in them, God forbid, there is no form of polytheism (shirk), nor is there any prohibition in Shari'ah. Rather, their permissibility is proven from the Great Quran. Gabriel the Trustworthy (peace be upon him) said to Mary: "I am only a messenger from your Lord, so that I may give you a pure son." (1) | I am only the messenger of your Lord sent to give you a pure son.

The Great Quran is describing Gabriel as the bestower of the master Jesus (peace be upon him). Furthermore, the word 'Bakhsh' (bestowal) is not exclusively defined for 'granting'; it is also frequently used in the sense of 'portion' and 'share'. Reliable religious scholars state that if an atheist says, "Spring made the vegetation grow" (Trans.), it is attributed to his atheism. But if a Muslim says it, it is certainly metaphorical, and his being a Muslim is a sufficient indicator, as stated in Fatawa and other books (As clarified in Fatawa and other books - Trans.). If someone prohibits this based on Wahhabi principles, then the burden of Wahhabism is upon them to know. "Who can forgive sins except Allah?" (2) (Who is the forgiver of sins except Allah Almighty? - Trans.) is our faith, and "And whoever is patient and forgives - indeed, that is of the matters [requiring] determination." (3) (Indeed, whoever adopts patience and forgives, these are surely works of great courage - Trans.) is also faith. "And if you pardon and overlook and forgive - then indeed, Allah is Forgiving and Merciful." (4) (And if you forgive and overlook and pardon, then Allah Almighty is the Most Forgiving, Merciful - Trans.) is also faith. "And when they are angry, they forgive." (5) (And when they are in anger, they forgive - Trans.) is also faith. Arguments of this kind are inventions of the Kharijites, who passed a decree of disbelief (kufr) against the Commander of the Faithful, Mawla Ali (may Allah honor his face), because he appointed someone other than God as a judge (hakam), even though Allah Almighty says, "The judgment is only for Allah." (6) (There is no judgment except for Allah Almighty - Trans.).

1. Al-Quran al-Karim 19/19
2. Al-Quran al-Karim 3/135
3. Al-Quran al-Karim 42/43
4. Al-Quran al-Karim 64/14

5. Al-Quran al-Karim 42/37
6. Al-Quran al-Karim 6/57

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

(जो कोई किसी कौम से मुशाबहत (समानता) इख्तियार करे तो वह उसी में शुमार है।) होगा। बयान फरमाइए अज्र पाइए।

जवाब: (1) ये नाम शरीअत के अनुसार दुरुस्त हैं, इनमें माज़ अल्लाह किसी तरह का कोई शिर्क नहीं है, न ही शरीअत में कहीं से कोई मनाही है, बल्कि क़ुरआन अज़ीम से इसका जवाज़ (वैधता) साबित है, हज़रत जिब्रील अमीन अलैहिस्सलाम ने हज़रत मरयम से कहा: "मैं तो तुम्हारे रब का भेजा हुआ हूं इसलिए कि मैं तुम्हें एक पाकीज़ा बेटा दूं।" (1) | मैं तो तुम्हारे रब का भेजा हुआ हूं इस लिए कि मैं तुमको एक सुथरा बेटा दूं।

क़ुरआन अज़ीम सैय्यदुना ईसा अलैहिस्सलाम को जिब्रील द्वारा बख्शना बता रहा है। फिर 'बख्श' का अर्थ केवल 'अता' (देना) के लिए निश्चित नहीं है, बल्कि 'हिस्सा' और 'साझा' के अर्थ में भी इसका बहुत प्रयोग होता है। भरोसेमंद उलेमा-ए-दीन स्पष्ट करते हैं कि अगर कोई नास्तिक कहे कि 'बसंत ने वनस्पति उगाई', तो इसे उसकी नास्तिकता माना जाएगा। लेकिन अगर कोई मुसलमान ऐसा कहे, तो यह निश्चित रूप से रूपक (मजाज़) है और उसका मुसलमान होना ही इसके लिए पर्याप्त संकेत है, जैसा कि फतावा और अन्य किताबों में स्पष्ट किया गया है। यदि कोई वहाबी सिद्धांतों के आधार पर इसे रोकता है, तो वहाबियत की पाबंदी उन पर है। "अल्लाह के सिवा कौन गुनाह माफ़ करने वाला है?" (2) (अल्लाह तआला के सिवा कौन गुनाह माफ करने वाला है।) हमारा ईमान है। और "बेशक जिस ने सब्र इख्तियार किया और माफ़ किया तो बेशक ये बड़ी हिम्मत के काम हैं।" (3) (बेशक जिसने धैर्य रखा और माफ़ किया, तो निश्चित रूप से यह साहसी कार्यों में से है।) भी ईमान है। "और अगर तुम माफ़ करो और दरगुज़र करो और बख्श दो, तो अल्लाह तआला बख्शने वाला मेहरबान है।" (4) (और यदि तुम क्षमा करो और अनदेखा करो और माफ़ कर दो, तो अल्लाह बहुत क्षमाशील, दयालु है।) भी ईमान है। "और जब वे गुस्से में हों तो माफ़ कर देते हैं।" (5) (और जब वे क्रोधित होते हैं, तो वे क्षमा कर देते हैं।) भी ईमान है। इस प्रकार के तर्क खारजियों की ईजाद (आविष्कार) हैं जिन्होंने अमीर-उल-मोमिनीन मौला अली करम अल्लाह तआला वजहहुल करीम पर कुफ्र का फतवा लगाया कि उन्होंने अल्लाह के सिवा किसी और को 'हकम' (निर्णायक) बनाया, जबकि अल्लाह अज़्वजल फरमाता है "अल्लाह तआला के सिवा किसी का [हुक्म नहीं]।" (6)

1. अल-क़ुरआन अल-करीम 19/19

2. अल-क़ुरआन अल-करीम 3/135
3. अल-क़ुरआन अल-करीम 42/43
4. अल-क़ुरआन अल-करीम 64/14
5. अल-क़ुरआन अल-करीम 42/37
6. अल-क़ुरआन अल-करीम 6/57

पृष्ठ 720 में से 674

فتاوٰی رضویہ، جلد ۲۴

(جو کوئی کسی قوم سے مشابہت اختیار کرے تو وہ اسی میں شمار ہے۔ت) کا ہو گا۔ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائے۔ت)

الجواب: (۱) یہ نام شرعاً درست ہیں، ان میں معاذ اللہ کسی طرح کوئی شرک نہیں، نہ شرع سے کہیں ممانعت ہے، بلکہ قرآن عظیم سے اس کا جواز ثابت ہے، حضرت جبریل امین علیہ الصلوۃ والسلام نے حضرت مریم سے کہا: "اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا" 1 | میں تو تمہارے رب کا بھیجا ہوا ہوں اس لئے کہ میں تم کو ایک ستھرا بیٹا دوں۔

قرآن عظیم سیدنا عیسٰی علیہ الصلوۃ والسلام کو جبریل بخش بتا رہا ہے۔ پھر بخش معنی عطا کے لئے متعین نہیں بمعنی حصہ و بہرہ بھی کثیر الاستعمال ہے۔ معتمد علمائے دین تصریح فرماتے ہیں کہ اگر ملحد کہے انبت الربیع البقل (بہار نے سبزہ اگایا۔ت) تو اس کے الحاد پر محمول ہے، اور اگر مسلم کہے تو یقیناً تجوز ہے اور اس کا اسلام ہی قرینہ بس ہے کما نص علیہ فی الفتاوی وغیرھا (جیسا کہ فتاوٰی اور اس کے علاوہ دوسری کتابوں میں اس کی صراحت کر دی گئی ہے۔ت) منع کرنے والا اگر بر بنائے اصول وہابیت منع کرتا ہے تو اس پر لزوم وہابیت ہے جانیں، "مَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ" 2 (سوائے اللہ تعالی کے کون گناہ معاف کرنے والا ہے۔ت) اپنا ایمان ہے، اور "وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ" 3 (بے شک جس نے صبر اختیار کیا اور معاف کیا تو بیشک یہ بڑی ہمت کے کام ہیں۔ت) بھی ایمان ہے، "وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ" 4 (اور اگر تم معاف کرو اور در گزر کرو اور بخش دو، تو اللہ تعالی بخشنے والا مہربان ہے۔ت) بھی ایمان ہے، "وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ" 5 (اور جب وہ غصہ میں ہو جائیں تو معاف کر دیتے ہیں۔ت) بھی ایمان ہے، اس قسم کے استدلال خارجیوں کی ایجاد ہیں کہ امیر المومنین مولٰی

علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم پر حکم کفر لگایا کہ انہوں نے غیر خدا کو حکم بنایا حالانکہ اللہ عزوجل فرماتا ہے "اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ" 6 (اللہ تعالیٰ کے سوا کسی کا [حکم نہیں]۔ت)

1 القرآن الکریم ۱۹/۱۹ 2 القرآن الکریم ۳/۱۳۵ 3 القرآن الکریم ۴۲/۴۳ 4 القرآن الکریم ۶۴/۱۴ 5 القرآن الکریم ۴۲/۳۷ 6 القرآن الکریم ۶/۵۷

Volume 24 Fatawa Ridawiyyah

...no order. (T) And did you not see that the same Lord, the Almighty, says:

“So appoint an arbiter from his family and an arbiter from her family.”[1]

This subject matter, that until the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forgives, Allah, the Almighty, will not forgive. Before this speaker, Hazrat Sheikh Saadi (may his secret be sanctified) said:

"The Most Merciful of the merciful will not forgive, Without your pleasure, O Beloved Messenger of Allah."[2]

(The Most Gracious and Merciful (Allah Almighty) will not forgive, O Messenger of Allah! (peace and blessings of Allah be upon him) until it is your will. T)

In matters of the rights of people (Huquq al-Ibad), it is said that until the owner of the right forgives, Allah, the Almighty, will not forgive. This does not mean that, God forbid, the Lord of Honor is not capable of granting forgiveness, or that anyone is a partner with Him in the forgiveness of sins. He is the owner of the servants and He is also the owner of the rights of the servants, but for the sake of comforting the owner of the right, He has made His forgiveness dependent on their forgiveness. Furthermore, who has the capacity to know the extent of that comfort which He intends for His beloved (peace and blessings of Allah be upon him)? It is in Sahih Bukhari that the Mother of the Believers, Siddiqah (may Allah be pleased with her), says to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): 'I see your Lord hastening to fulfill your desire.'[3] The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) was sent as a mercy to the worlds and is especially kind to the believers, compassionate and merciful. Their falling into hardship is grievous to him, and he is greedy for their welfare, as the great Quran speaks:

“There has certainly come to you a Messenger from among yourselves. Grievous to him is what you suffer; [he is] concerned over you and to the believers is kind and merciful.”

Indeed, an (exalted) Messenger has come to you from among your own souls; that your falling into hardship is unpleasant to him, he is [concerned] for your...

---

[1] Al-Quran Al-Karim 4/35 [2] [3] Sahih al-Bukhari, Book of Tafsir, Surah Al-Ahzab, chapter 'Qawluhu man turji min tasha' etc., Qadimi Kutub Khana Karachi 2/706; Sahih al-

Bukhari, Book of Nikah, chapter 'Hal lil-mar'ati an tahaba nafsaha li-ahad', Qadimi Kutub Khana Karachi 2/666.

जिल्द २४ फ़तावा रज़विया

...हुक्म नहीं। (त) और क्या नहीं देखा कि वही रब अज़्ज़वजल फ़रमाता है:

“तो फिर एक पंच मर्द के ख़ानदान में से, और एक पंच औरत के ख़ानदान में से मुक़र्रर करो।”[1]

यह मज़मून कि जब तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम नहीं बख्शेंगे अल्लाह अज़्ज़वजल न बख्शेगा। इस क़ायल से पहले हज़रत शेख सादी क़ुद्दिसा सिर्रहु ने फ़रमाया:

"अरहमुर्राहमीन न बख़्शायद, बे-रज़ाए तू यार रसूलुल्लाह"[2]

(सबसे ज़्यादा रहम व करम फ़रमाने वाला (अल्लाह तआला) न बख्शेगा, या रसूलुल्लाह! (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) जब तक आपकी मर्जी न होगी। त)

हुक़ूक़ुल इबाद में कहा जाता है कि जब तक साहब-ए-हक़ न बख्शे अल्लाह अज़्ज़वजल न बख्शेगा, इसके यह मानी किसी के वहम में नहीं आ सकते कि मआज़ अल्लाह उसकी मग़फ़िरत पर रबुल इज़्ज़त क़ादिर नहीं या मग़फ़िरत-ए-ज़ुनूब में कोई उसका शरीक है, बंदों का मालिक भी वही है और बंदों के हुक़ूक़ का मालिक भी वही है मगर साहब-ए-हक़ की दिलदारी के लिए उसकी मग़फ़िरत उसके बख्शने पर मौक़ूफ़ रखी फिर वह दिलदारी कि उसे अपने हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मंज़ूर है उसकी मिक़दार का जानना किसका मक़दूर है, सही बुखारी में है उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से अर्ज़ करती हैं "अरा रब्बका युसारीउ फ़ी हवाक"[3] मैं हुज़ूर के रब को देखती हूँ कि हुज़ूर की ख़्वाहिश में शिताबी फ़रमाता है। हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम रहमतुल लिल आलमीन बनाकर भेजे गए और मोमिनीन पर बिल-ख़ुसूस कमाल मेहरबान हैं रऊफ़ रहीम हैं उनका मशक़्क़त में पड़ना उन पर गिरां है उनकी भलाइयों पर हरीस हैं जैसे कि क़ुरान-ए-अज़ीम नातिक़:

“बेशक तुम्हारे पास तुम्हारी ही जानों में से (एक अज़ीमुश्शान) रसूल तशरीफ़ लाए कि तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना उन्हें नागवार गुज़रता है, वह तुम्हारी...”

बेशक तुम्हारे पास तुम्हारी ही जानों में से (एक अज़ीमुश्शान) रसूल तशरीफ़ लाए कि तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना उन्हें नागवार गुज़रता है, वह तुम्हारी...

[1] अल-क़ुरान अल-करीम 4/35 [2] [3] सही अल-बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर सूरह अल-अहज़ाब, बाब 'क़ौलुहू मन तुरजी मिन तशा' आदि, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 2/706, सही अल-बुख़ारी, किताबुन्निकाह, बाब 'हल लिल-मरअती अन तहबा नफ़्सहा लि-अहद', क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 2/666.

حکم نہیں۔ ت) اور نہ دیکھا کہ وہی رب عزوجل فرماتا ہے:

"فَابْعَثُوا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَاۚ"1 تو پھر ایک پنچ مرد کے خاندان میں سے، اور ایک پنچ عورت کے خاندان میں سے مقرر کرو۔ (ت)

یہ مضمون کہ جب تک رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے بخشیں گے اللہ عزوجل نہ بخشے گا۔ اس قائل سے پہلے حضرت شیخ سعدی قدس سرہ نے فرمایا:

ارحم الراحمین نہ بخشاید بے رضائے تو یار رسول اللہ2

(سب سے زیادہ رحم و کرم فرمانے والا (اللہ تعالیٰ) نہ بخشے گا، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم) جب تک آپ کی مرضی نہ ہوگی۔ ت)

حقوق العباد میں کہا جاتا ہے کہ جب تک صاحب حق نہ بخشے اللہ عزوجل نہ بخشے گا، اس کے یہ معنی کسی کے وہم میں نہیں آ سکتے کہ معاذ اللہ اس کی مغفرت پر رب العزت قادر نہیں یا مغفرتِ ذنوب میں کوئی اس کا شریک ہے، بندوں کا مالک بھی وہی ہے اور بندوں کے حقوق کا مالک بھی وہی ہے مگر صاحب حق کی دلداری کے لئے اس کی مغفرت اس کے بخشنے پر موقوف رکھی پھر وہ دلداری کہ اسے اپنے حبیب صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی منظور ہے اس کی مقدار کا جاننا کس کا مقدور ہے، صحیح بخاری میں ہے ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے عرض کرتی ہیں "اری ربک یسارع فی ھواک"3 میں حضور کے رب کو دیکھتی ہوں کہ حضور کی خواہش میں شتابی فرماتا ہے۔ حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ

وسلم رحمۃ للعالمین بنا کر بھیجے گئے اور مومنین پر بالخصوص کمال مہربان ہیں رؤف رحیم ہیں ان کا مشقت میں پڑنا ان پر گراں ہے ان کی بھلائیوں پر حریص ہیں جیسے کہ قرآن عظیم ناطق:

"لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَؤُوفٌ رَّحِيمٌ"

بیشک تمہارے پاس تمہاری ہی جانوں میں سے (ایک عظیم الشان) رسول تشریف لائے کہ تمہارا مشقت میں پڑنا انہیں ناگوار گزرتا ہے، وہ تمہاری

---

1 القرآن الکریم ۴/ ۳۵ 2 3 صحیح البخاری کتاب التفسیر سورۃ الاحزاب باب قولہ من ترجی من تشاء الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۷۰۶، صحیح البخاری کتاب النکاح باب ھل للمرأۃ ان تھب نفسھا لاحد قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۶۶۶

Fatawa Razawiyya Volume 24

[Boxed text left:] Raheem (128) [1] [Boxed text right:] (They) have a great desire and greed (for reform). And they are very kind and merciful to the Muslims. (T)

He was appointed for the intercession of all sinners: "And ask forgiveness for your sin and for the believing men and believing women" [2] (And ask for forgiveness (i.e., seek pardon) for matters contrary to your status, and for Muslim men and women as well. T). Would he not want forgiveness for any of them? Would it not be hard on him for a Muslim to fall into hardship? This is against the clear text of the verse. Surely, the one whose forgiveness the Prophet (peace be upon him) would not desire is the one who is not a Muslim, and Allah will not forgive those who are not Muslims. And Allah Almighty knows best.

(2) It is forbidden to resemble non-believers in speech, clothing, and mannerisms, and if a scholar does so, it is even more reprehensible. "Whoever imitates a people is one of them" [3] (So he is among them. T) This applies to those who intentionally adopt the religious symbols of non-believers as a matter of preference, Allah forbid. And Allah Almighty knows best.

---

[1] Al-Quran al-Karim 9/128 [2] Al-Quran al-Karim 47/19 [3] Sunan Abi Dawud, Kitab al-Libas, Bab Libs al-Shuhrah, Aftab-e-Alam Press Lahore 2/203

फ़तावा रज़विया ज़िल्द 24

[बाएँ बॉक्स में:] रहीम (128) [1] [दाएँ बॉक्स में:] (सुधार की) बहुत चाहत और लालसा रखते हैं। और मुसलमानों पर बड़ी शफ़क़त और रहम फ़रमाने वाले हैं (त)

तमाम गुनाहगारों की शफ़ाअत (सिफारिश) के लिए तो वो मुक़र्रर फ़रमाए गए: "और अपने गुनाह की माफ़ी मांगें और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिए भी" [2] (और अपनी शान के ख़िलाफ़ कार्यों के लिए इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) कीजिए (यानी बख्शिश तलब कीजिए) और मुसलमान मर्दों और औरतों के लिए भी। त) क्या वो उनमें से किसी की बख्शिश न चाहेंगे? क्या मुसलमान का मशक्कत में पड़ना उन पर भारी न होगा? यह तो आयत की साफ़ दलील (नस) के खिलाफ है। ज़रूर वो जिसका बख्शा जाना हुज़ूर न चाहेंगे वो वो होगा जो मुसलमान नहीं, और जो मुसलमान नहीं अल्लाह उसे न बख्शेगा, वल्लाहु तआला आलम।

(2) संबोधन, लिबास (कपड़े) और रहन-सहन के सामान में कुफ़्फ़ार (अविश्वासियों) से समानता वर्जित है और आलिम होकर ऐसा करे तो और सख़्त बुरा है। "जिसने किसी क़ौम की मुशाबहत की वो उन्हीं में से है" [3] (तो वो उन्हीं में से है। त) यह उसके लिए है जो कुफ्फार के दीनी प्रतीकों में जान-बूझकर, माज़ अल्लाह, उसकी पसंद के तौर पर ऐसा करे। वल्लाहु तआला आलम।

---

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 9/128 [2] अल-क़ुरआन अल-करीम 47/19 [3] सुनन अबी दाऊद, किताबुल लिबास, बाब लुब्सुश शुहरा, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 2/203

पृष्ठ 676 का 720

[بائیں باکس میں:] رَّحِیْمٌ (۱۲۸) 1 [دائیں باکس میں:] (اصلاح کی) بہت چاہت اور حرص رکھتے ہیں۔ اور مسلمانوں پر بڑی شفقت اور رحم فرمانے والے ہیں (ت)

تمام عاصیوں کی شفاعت کے لئے تو وہ مقرر فرمائے گئے "وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ط" 2 (اور اپنی شان کے خلاف امور کے لئے استغفار کیجئے (یعنی طلبِ بخشش کیجئے) اور مسلمان مردوں اور عورتوں کے لئے بھی۔ت) کیا وہ ان میں کسی کی بخشش نہ چاہیں گے، کیا مسلمان کا مشقت میں پڑنا ان پر گراں نہ ہوگا، یہ تو نصِ آیت کے خلاف ہے، ضرور وہ کہ جس کا بخشا حضور نہ چاہیں گے وہ ہو گا جو مسلمان نہیں، اور جو مسلمان نہیں اللہ اسے نہ بخشے گا، واللہ تعالٰی اعلم

(۲) خطاب ولباس ووضع اسباب میں کفار سے مشابہت ممنوع ہے اور عالم ہو کر ایسا کرے تو اور سخت معیوب ہے مَنْ تَشَبَّہَ بِقَوْمٍ فَھُوَ مِنْھُمْ 3 (تو وہ انہی میں سے ہے۔ ت) اس کے لئے ہے جو کفار کے دینی شعار میں بالقصد معاذ اللہ اس کی پسند کے طور پر کی جائے۔ واللہ تعالٰی اعلم

---

1 القرآن الکریم ۹ / ۱۲۸ 2 القرآن الکریم ۴۷ / ۱۹ 3 سنن ابی داؤد کتاب اللباس باب لبس الشھرہ آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۲۰۳

جلد ۲۴ (Volume 24) فتاویٰ رضویہ (Fatawa Razawiya)

النور والضياء في احكام بعض الاسماء ۱۳۲۰ھ (Al-Noor wal-Ziya fi Ahkam Ba'dh al-Asma - 1320 AH) (Light and illumination regarding the rulings of some names)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

Issue 278: Requested by Sheikh Shaukat Ali Sahib Farooqui, 6th Jumada al-Ula 1320 AH. What do the scholars of religion and the muftis of the firm Sharia say on this issue: some people keep names such as Ali Jan, Nabi Jan, Muhammad Jan, Muhammad Nabi, Ahmad Nabi, Nabi Ahmad, Muhammad Yasin, Muhammad Taha, Ghafooruddin, Ghulam Ali, Ghulam Hussain, Ghulam Ghauth, Ghulam Jilani, Hidayat Ali. So, is it permissible to keep such names or not? Mawlawi Abdul Hayy Sahib Lakhnavi, in his Fatawa, has declared the name Hidayat Ali as impermissible; what is the truth in this? Please clarify and be rewarded. Shaukat Ali Farooqui, may he be forgiven.

The Answer: Muhammad Nabi, Ahmad Nabi, Nabi Ahmad - countless blessings upon him [the Prophet] and his progeny - these noble words are only true of the Prophet and only suit the Prophet, peace and the most exalted salutations of Allah be upon him and his progeny. It is forbidden (Haram) to give these names to others, because even if there is no actual claim of prophethood, in which case one would be a non-Muslim or else it would be pure disbelief, but there is certainly the appearance of a claim, and that also...

جلد ۲۴ (जिल्द 24) فتاوىٰ رضويہ (फ़तावा रज़विया)

النور والضياء في احكام بعض الاسماء ۱۳۲۰ھ (अन-नूर वज़-ज़िया फ़ी अहकाम बाज़ अल-असमा - १३२० हिजरी) (कुछ नामों के नियमों के बारे में स्पष्टता और प्रकाश)

बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम (अल्लाह के नाम से शुरू, जो अत्यंत दयालु और बहुत ही कृपालु है)

मसला २७८: प्रेषक शेख शौकत अली साहब फारूकी, ६ जमादी-उल-अव्वल १३२० हिजरी। दीन के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के मुफ्ती इस मसले पर क्या फरमाते हैं कि कुछ लोग इस तरह के नाम रखते हैं: अली जान, नबी जान, मोहम्मद जान, मोहम्मद नबी, अहमद नबी, नबी अहमद, मोहम्मद यासीन, मोहम्मद ताहा, गफूरुद्दीन, गुलाम अली, गुलाम हुसैन, गुलाम गौस, गुलाम जिलानी, हिदायत अली। तो क्या इस तरह के नाम रखना जायज़ है या नहीं? मौलवी अब्दुल हई साहब लखनवी ने अपने फतावा में 'हिदायत अली' नाम रखने को नाजायज़ बताया है, इसमें सच्चाई क्या है? बयान फरमाएं आपको सवाब मिलेगा। शौकत अली फारूकी, अल्लाह उन्हें क्षमा करे।

उत्तर: मोहम्मद नबी, अहमद नबी, नबी अहमद - उन पर (नबी स.अ.व.) और उनकी आल पर अनगिनत दुरूद हों - ये शब्द केवल हुज़ूर (स.अ.व.) के लिए ही सच्चे हैं और केवल उन्हीं को शोभा देते हैं, अल्लाह का सबसे श्रेष्ठ दुरूद और सबसे महान सलाम उन पर और उनकी आल पर हो। दूसरों के लिए ये नाम रखना हराम है, क्योंकि अगर उनमें वास्तव में नबूवत का दावा न भी हो, (अन्यथा वह मुसलमान न होता या फिर शुद्ध कुफ्र होता), मगर दावे की सूरत (आभास) तो ज़रूर है और वह भी...

पृष्ठ ७२० का ६७८

جلد ۲۴ فتاویٰ رضویہ

النور والضیاء في احکام بعض الاسماء ۱۳۲۰ھ (بعض ناموں کے احکام کے بارے میں اجالا اور روشنی)

بسم اللہ الرحمن الرحیم ط

مسئلہ ۲۷۸: مسئولہ شیخ شوکت علی صاحب فاروقی ۶ جمادی الاولیٰ ۱۳۲۰ھ علماء دین ومفتیان شرع متین دریں مسئلہ چہ می فرمایند کہ بعض شخص اس طرح نام رکھتے ہیں، علی جان، نبی جان، محمد جان، محمد نبی، احمد نبی، نبی احمد، محمد یٰسین، محمد طہ، غفور الدین، غلام علی، غلام حسین، غلام غوث، غلام جیلانی، ہدایت علی۔ پس اس طرح کے نام رکھنا جائز ہیں یا نہیں؟ مولوی عبدالحی صاحب لکھنوی نے اپنے فتاویٰ میں ہدایت علی نام رکھنا ناجائز بتایا ہے اس میں حق کیا ہے؟ بینوا توجروا۔ شوکت علی فاروقی عفی عنہ

الجواب: محمد نبی، احمد نبی، نبی احمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم پر بے شمار درودیں، یہ الفاظ کریمہ حضور ہی پر صادق اور حضور ہی کو زیبا ہیں، افضل صلوات اللہ واجل تسلیمات اللہ علیہ وعلیٰ آلہ۔ دوسرے کے یہ نام رکھنا حرام ہیں کہ ان میں حقیقت ادعائے نبوت نہ ہو نامسلم ورنہ خالص کفر ہوتا۔ مگر صورت ادعاء ضرور ہے اووہ بھی

Fatawa Rizvia Volume 24

It is certainly forbidden and prohibited. And the claim that in names, the primary meaning is not considered, is neither accepted by Sharia nor by custom. There is no doubt that the primary meaning is not intended, but to say it is completely disregarded is also wrong. It is proven from many authentic Hadiths that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) changed many names that had some evil in their original meaning. In Jami' at-Tirmidhi, it is narrated from Umm al-Mu'minin al-Siddiqah (may Allah be pleased with her):

ان النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کان یغیر الاسم القبیح ۱۔	The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) had the noble habit of changing bad names.

In Sunan Abi Dawud, it is mentioned that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) changed the names 'Asi, Aziz, 'Atlah, Shaytan, Hakam, Ghurab, Hubab, and Shihab. (Imam Abu Dawud said: I left out their chains of narration for the sake of brevity. - T) He changed the name Asram to Zur'ah (Narrated from Usama bin Akhdari (may Allah be pleased with him)). He changed the name 'Asiyah to Jamilah (Narrated by Muslim from Ibn Umar (may Allah be pleased with them both)). He changed the name Barrah to Zaynab and said:

لا تزکوا انفسکم اللہ اعلم باھل البرمنکم۔ رواہ مسلم ۵ عن زینب بنت ابی سلمۃ رضی اللہ تعالی عنھما۔	Do not consider yourselves pure; Allah knows best who amongst you is pious. (Narrated by Muslim from Zaynab bint Abi Salama (may Allah be pleased with them both)).

Barrah meant a 'virtuous woman'; he changed it, calling it self-praise.

---

1. Jami' at-Tirmidhi, Chapters on Etiquette, Chapter on Changing Names, Amin Company Delhi, 2/107
2. Sunan Abi Dawud, Book of Etiquette, Chapter on Changing Ugly Names, Aftab Alam Press Lahore, 2/321
3. Sunan Abi Dawud, Book of Etiquette, Chapter on Changing Ugly Names, Aftab Alam Press Lahore, 2/321
4. Sahih Muslim, Book of Etiquette, Chapter on Changing Ugly Names, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/208

5. Sahih Muslim, Book of Etiquette, Chapter on Changing Ugly Names, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/208; Sunan Abi Dawud, Book of Etiquette, Chapter on Changing Ugly Names, Aftab Alam Press Lahore, 2/321

फतावी रज़विया जिल्द 24

निश्चित रूप से यह हराम और वर्जित है। और यह दावा कि नामों में प्राथमिक अर्थ का ध्यान नहीं रखा जाता, न तो शरीयत में स्वीकार्य है और न ही प्रथा में। इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्राथमिक अर्थ अभिप्रेत नहीं होता, लेकिन इसे पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर देना भी गलत है। कई प्रामाणिक हदीसों से यह साबित होता है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम) ने ऐसे कई नामों को बदल दिया जिनके मूल अर्थ में कोई बुराई थी। जामिउत तिर्मिज़ी में उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से वर्णित है:

ان النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کان یغیر الاسم القبیح ۱۔ — नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की यह पवित्र आदत थी कि वह बुरे नामों को बदल देते थे।

सुनन अबू दाऊद में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने आसी, अज़ीज़, अतलाह, शैतान, हकम, ग़ुराब, हुबाब और शिहाब जैसे नामों को बदल दिया। (इमाम अबू दाऊद ने फरमाया: मैंने संक्षिप्तता के लिए उनके वर्णन की श्रृंखलाओं को छोड़ दिया है। - त) उन्होंने असरम का नाम बदलकर ज़रआ कर दिया (इसे ओसामा बिन अख़्दरी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित किया गया है। त)। आसिया का नाम बदलकर जमीला कर दिया (इसे मुस्लिम ने इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित किया है। त)। बर्रा का नाम बदलकर ज़ैनब कर दिया और फरमाया:

لا تزکوا انفسکم اللہ اعلم باھل البرمنکم۔ رواہ مسلم ۵ عن زینب بنت ابی سلمۃ رضی اللہ تعالی عنھما۔ — अपने आप को पवित्र मत बताओ; अल्लाह बेहतर जानता है कि तुम में से कौन नेक है। (इसे मुस्लिम ने ज़ैनब बिन्त अबी सलमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित किया है। त)

बर्रा का अर्थ 'नेक महिला' था, उन्होंने इसे आत्म-प्रशंसा बताकर बदल दिया।

---

1. जामिउत तिर्मिज़ी, अबवाबुल अदब, बाब मा जा फ़ी तग़य्यिरिल अस्मा, अमीन कंपनी दिल्ली, 2/107
2. सुनन अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी तग़य्यिरिल अस्मिल क़बीह, आफ़ताब आलम प्रेस लाहौर, 2/321
3. सुनन अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी तग़य्यिरिल अस्मिल क़बीह, आफ़ताब आलम प्रेस लाहौर, 2/321

4. सहीह मुस्लिम, किताबुल अदब, बाब तग़य्यिरिल अस्मिल क़बीह, क़दीमी कुतुब खाना कराची, 2/208
5. सहीह मुस्लिम, किताबुल अदब, बाब तग़य्यिरिल अस्मिल क़बीह, क़दीमी कुतुब खाना कराची, 2/208; सुनन अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी तग़य्यिरिल अस्मिल क़बीह, आफ़ताब आलम प्रेस लाहौर, 2/321

یقیناً حرام و محظور ہے۔ اور یہ زعم کہ اعلام میں معنی اول ملحوظ نہیں ہوتے، نہ شرعاً مسلم نہ عرفاً مقبول۔ معنی اول مراد نہ ہونے میں شک نہیں مگر نظر سے محض ساقط ہونا بھی غلط ہے، احادیث صحیحہ کثیرہ سے ثابت کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وآلہ وسلم نے بکثرت اسماء جن کے معنی اصلی کے لحاظ سے کوئی برائی تھی تبدیل فرمادیئے۔ جامع ترمذی میں ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالی عنہا سے ہے:

ان النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کان یغیر الاسم القبیح ۱۔ نبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کی عادتِ کریمہ تھی کہ برے نام کو بدل دیتے۔

سنن ابی داؤد میں ہے نبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے عاصی و عزیز و عتلہ و شیطان و حکم و غراب و حباب و شہاب نام تبدیل فرمادیئے، قال ترکت اسانیدھا للاختصار ۲ (امام ابوداؤد نے فرمایا میں نے اختصار کے لئے ان کی سندیں چھوڑیں۔ ت) اصرم کا نام بدل کر زرعہ رکھا رواہ عن اسامۃ ۳ بن اخدری رضی اللہ تعالی عنہ اسے اسامہ بن اخدری رضی اللہ تعالی عنہ نے اسے روایت کیا۔ ت) عاصیہ کا نام جمیلہ رکھا رواہ مسلم ۴ عن ابن عمر رضی اللہ تعالی عنہما (اسے مسلم نے ابن عمر رضی اللہ تعالی عنہما سے روایت کیا۔ ت) برہ کا نام زینب رکھا اور فرمایا:

لا تزکوا انفسکم اللہ اعلم باھل البرمنکم۔ رواہ مسلم ۵ عن زینب بنت ابی سلمۃ رضی اللہ تعالی عنھما۔ اپنی جانوں کو آپ اچھا نہ بتاؤ خدا خوب جانتا ہے کہ تم میں نیکو کار کون ہے۔ (اسے مسلم نے زینب بنت ابی سلمہ رضی اللہ تعالی عنہما سے روایت کیا۔ ت)

برہ کے معنی تھے زن نیکوکار، اسے خود ستائی بتا کر تبدیل فرمایا۔

۱ جامع الترمذی ابواب الادب باب ما جاء فی تغییر الاسماء امین کمپنی دہلی ۲ / ۱۰۷ ۲ سنن ابی داؤد کتاب الادب باب فی تغییر الاسم القبیح آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۳۲۱ ۳ سنن ابی داؤد کتاب الادب باب فی تغییر الاسم القبیح آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۳۲۱ ۴ صحیح مسلم کتاب الادب باب تغییر الاسم القبیح قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۲۰۸ ۵ صحیح مسلم کتاب الادب باب تغییر الاسم القبیح قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۲۰۸، سنن ابی داؤد کتاب الادب باب فی تغییر الاسم القبیح آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۳۲۱

Fatawa Rizvia, Volume 24

And he (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny) said:

“Indeed, on the Day of Resurrection, you will be called by your names and the names of your fathers, so keep good names.” (Narrated by Ahmad and Abu Dawood from Abu al-Darda [may Allah be pleased with him] with a strong chain of transmission. -T)

If the original meanings are completely disregarded, then what is the meaning of one name being good and another being bad, what is the reason for changing names, and where does self-praise come into it? In terms of signifying the person named, all would be equal. Allah forbid! Ask those very people if they would tolerate naming their children "Accursed Satan," "Filthy Rafidi," "Khok" (Pig), etc. Absolutely not! This means the original meaning is certainly taken into consideration. Then with what face do they call themselves and their children "Nabi" (Prophet)? Would any Muslim tolerate naming themselves or their son "Rasul Allah" (Messenger of Allah) or "Khatam al-Nabiyyin" (Seal of the Prophets) or "Sayyid al-Mursalin" (Master of the Messengers)? Never, by no means! Then how did "Muhammad Nabi," "Ahmad Nabi," or "Nabi Ahmad" become permissible? We have even heard the name "Nabi Allah" (Prophet of Allah) from some people who do not fear God. "There is no power nor might except with Allah, the Exalted, the Magnificent." Is claiming messengership and finality of prophethood forbidden, while claiming bare prophethood is permissible? It is mandatory for Muslims to change such names.

[Persian Couplet]: No soul-enlightening intellect would ever approve, Of placing a royal crown on the head of a shoemaker.

(How can an intellect that illuminates the soul tolerate that a royal crown be placed on the head of a common shoemaker? -T) It is not surprising that those with such weak interpretations and low imaginations might eventually start naming people "Allah Almighty" or "Ilah al-Alamin" (Lord of the Worlds), arguing that the original meaning is not intended. We seek refuge with Allah, the Lord of the worlds. Even if they do not use these names, they would have to accept the validity of such naming, willy-nilly. The same logic they concoct for the permissibility of "Muhammad Nabi" would apply identically to the permissibility of naming someone "Allah Almighty." If the original meaning is not intended there, it is not intended here either; why would it not be permissible for the sake of blessing, regardless of the meaning? After all, there is more blessing in the name of God than in the name of a Prophet. "There is

no power nor might except with Allah, the Exalted, the Magnificent" (The power to avoid sins and to do good is only from Allah Almighty, the High).

---

1 Sunan Abi Dawud, Kitab al-Adab, Chapter on Changing Names, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/320; Musnad Ahmad bin Hanbal from Abu al-Darda, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 5/192.

फतावा रज़विया, जिल्द 24

और वह (अल्लाह की उन पर और उनकी आल पर कृपा और शांति हो) फरमाते हैं:

“बेशक कयामत के दिन तुम अपने और अपने पिताओं के नाम से पुकारे जाओगे, इसलिए अपने अच्छे नाम रखो।” (इसे अहमद और अबू दाऊद ने अबू अल-दरदा [अल्लाह उनसे प्रसन्न हो] से एक अच्छी सनद के साथ रिवायत किया है। -टी)

यदि मूल अर्थ पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर दिए जाएं तो किसी नाम के अच्छा और किसी के बुरा होने का क्या अर्थ है, उन्हें बदलने का क्या कारण है, और आत्म-प्रशंसा कहाँ है? नाम पुकारे जाने वाले व्यक्ति को सूचित करने में सभी समान होंगे। अल्लाह की पनाह! उन्हीं लोगों से पूछें क्या वे अपनी संतानों का नाम "शैतान मलयून", "राफ़िज़ी खबीस", "खोक" (सूअर) आदि रखना पसंद करेंगे? बिल्कुल नहीं! इसका अर्थ है कि मूल अर्थ का लिहाज़ निश्चित रूप से शेष है। फिर किस मुँह से वे अपने आप और अपनी संतान को 'नबी' कहते और कहलाते हैं? क्या कोई मुसलमान अपना या अपने बेटे का नाम "रसूल अल्लाह" या "खातम अल-नबीय्यीन" या "सैय्यद अल-मुर्सलीन" रखना उचित समझेगा? हरगिज़ नहीं, कभी नहीं! फिर "मुहम्मद नबी", "अहमद नबी" या "नबी अहमद" कैसे जायज़ हो गया? यहाँ तक कि कुछ खुदा से न डरने वालों से "नबी अल्लाह" नाम भी सुना गया है। "न कोई शक्ति है और न ही सामर्थ्य, सिवाय अल्लाह के जो बुलंद और महान है।” क्या रिसालत और खतमे नबुव्वत का दावा हराम है और कोरी नबुव्वत का हलाल? मुसलमानों के लिए ज़रूरी है कि ऐसे नामों को बदल दें।

[फ़ारसी शेर]: हीच पसंदद खुरद-ए-जाँ अफ़रोज़ ताज-ए-शहही बर सर-ए-कफ़्श दोज़।

(बुद्धि, जो आत्मा को रोशन करती है, इस बात को कब गंवारा करती है कि शाही ताज एक साधारण मोची के सिर पर सजाया जाए? -टी) कोई आश्चर्य नहीं कि ऐसी कमज़ोर व्याख्या और नीच कल्पना वाले लोग धीरे-धीरे "अल्लाह अज़-व-जल" या "इलाह अल-आलामीन" नाम रखने लगें, यह तर्क देते हुए कि नाम में मूल अर्थ तो ध्यान में नहीं रखा जाता। और हम अल्लाह, जो तमाम जहानों का रब है, की पनाह मांगते हैं। और अगर वे न भी रखें, तो उन्हें इस नाम रखने की जायज़ता (Permissibility) को तो हर हाल में मानना होगा। जो दलील वे "मुहम्मद नबी" के जायज़ होने के लिए गढ़ेंगे, वही दलील हु-ब-हु "अल्लाह अज़-व-जल" नाम रखने की जायज़ता में भी लागू होगी। अगर मूल अर्थ वहाँ मुराद (उद्देश्य) नहीं है, तो यहाँ भी नहीं है; वह बिना अर्थ के लिहाज़ के बरकत के लिए क्यों जायज़

नहीं होगा? आखिरकार अल्लाह के नाम में नबी के नाम से ज्यादा ही बरकत है। "न कोई शक्ति है और न ही सामर्थ्य, सिवाय अल्लाह के जो बुलंद और महान है" (गुनाहों से बचने और नेकी करने की ताकत केवल अल्लाह की ओर से है)।

---

1 सुनन अबी दाऊद, किताब अल-अदब, नाम बदलने का अध्याय, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, 2/320; मुसनद अहमद बिन हंबल, अबू अल-दरदा से, अल-मक्तब अल-इस्लामी, बेरूत, 5/192।

فتاوٰی رضویہ، جلد ۲۴

اور ارشاد فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم:

انکم تدعون یوم القیمۃ باسماءکم واسماء آباءکم فاحسنوا اسماءکم بے شک تم روز قیامت اپنے اور اپنے والدین کے نام سے پکارے جاؤ گے تو اپنے اچھے نام رکھو۔ (رواہ احمد ۱ وابوداؤد عن ابی الدرداء رضی اللہ تعالٰی عنہ بسند جیدت)

اگر اصلی معنی بالکل ساقط النظر ہیں تو فلاں نام اچھا فلاں برا ہونے کے کیا معنی، اور تبدیل کی کیا وجہ، اور خود ستائی کہاں، مسمی پر دلالت کرنے میں سب یکساں۔ معاذ اللہ! انہیں لوگوں سے پوچھ دیکھئے کیا اپنی اولاد کا نام شیطان ملعون، رافضی خبیث، خوک (سور) وغیرہ رکھنا گوارا کریں گے؟ ہرگز نہیں تو قطعاً معنی اصلی کی طرف لحاظ باقی ہے پھر کس منہ سے اپنے آپ اور اپنی اولاد کو نبی کہتے اور کہلواتے ہیں، کیا کوئی مسلمان اپنا یا اپنے بیٹے کا رسول اللہ یا خاتم النبیین یا سید المرسلین نام رکھنا روا رکھے گا؟ حاشا وکلا، پھر محمد نبی، احمد نبی، نبی احمد کیو نکر روا ہو گیا، یہاں تک کہ بعض خدا ناترسوں کا نام نبی اللہ سنا ہے، ولاحول ولاقوۃ الا باللہ العلی العظیم، کیا رسالت و ختم نبوت کا ادعا حرام ہے اور نری نبوت کا حلال، مسلمانوں کو لازم ہے کہ ایسے ناموں کو تبدیل کردیں۔

ہیچ پسندد خردِ جان افروز تاجِ شہہی بر سرِ کفش دوز

(عقل، جان کو روشن و منور کرنے والی اس بات کو کب گوارا کرتی ہے کہ شاہی تاج ایک معمولی کفش دوز(موچی) کے سر پر سجایا جائےت) عجب نہیں کہ ایسی علیل تاویل ذلیل تخیل والے شدہ شدہ اللہ عزوجل یا الہ العالمین نام رکھنے لگیں کہ آخر علم میں اصلی معنی تو ملحوظ نہیں والعیاذ

باللہ رب العالمین(اللہ تعالیٰ کی پناہ جو تمام جہانوں کا پروردگار ہے۔ت) اور نہ بھی رکھیں تو اس نام رکھنے کا جواز تو انہیں خواہی نخواہی ماننا ہو گا، جو تقریر محمد نبی کے جواز میں گھڑیں گے بعینہ وہی اللہ عزوجل نام رکھنے کے جواز میں جاری ہوگی، اصلی معنی وہاں مراد نہیں تو یہاں بھی نہیں وہ بے لحاظ معنی تبرکا کیوں نہ جائز ہو گا آخر نام الہی میں نام نبی سے زیادہ ہی برکت ہے ولاحول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم (گناہوں سے بچنے اور نیکی کرنے کی طاقت بجز اللہ تعالیٰ بلند۔

---

1 سنن ابی داؤد کتاب الادب باب فی تغییر الاسماء آفتاب عالم پریس لاہور ۲/۳۲۰، مسند احمد بن حنبل عن ابی الدرداء المکتب الاسلامی بیروت ۵ / ۱۹۲

Fatawa Razawiya Volume 24

...merit of great dignity is not within anyone's power. (T) Similarly, naming someone 'Nabi Jan' is inappropriate. If 'Jan' is added as a separate word out of love, as is likely, then it appears to be a claim of prophethood. And if understood as an inverted compound, i.e., 'Jan-e-Nabi' (Soul of the Prophet), then this exceeds 'Barrah' (a name meaning righteous, which the Prophet changed) in self-praise by a thousand degrees. The Prophet (peace and blessings be upon him and his progeny) did not like it, so how can this be liked? There is no great harm in changing it here; by adding one 'h', one will be saved from sin and find a perfectly good, permissible name. Use and write 'Muhammad Nabih', 'Ahmad Nabih', 'Nabih Ahmad', 'Nabih Jan'. 'Nabih' means awake, alert. Similarly, naming 'Yaseen' and 'Taha' is prohibited because these are among those Divine names and names of Mustafa (peace and blessings be upon him) whose meanings are unknown. What if they have meanings that cannot apply to anyone other than God and His Messenger? Therefore, avoiding them is necessary, just as charms/incantations of unknown meaning are not permissible, lest they contain any polytheism or misguidance. Imam Abu Bakr ibn al-Arabi says in the book 'Ahkam al-Quran':

| Ruwiya Ashhab 'an Malik la yusamma ahadun bi Yasin li-annahu ismullahi wa huwa kalamun badi' wa dhalika annal 'abda yajuzu lahu an yusamma bi-ismi Rabb idha kana fihi ma'nan minhu ka 'Alim wa Qadir wa innama mana'a Malikun minat tasmiyati bi-hadhal ismi li-annahu al-asma'u allati la yudra ma ma'naha fa-rubbama kana dhalika ma'nan yatafarradu bihil Rabbu Ta'ala fala yanbaghi an yuqdima 'alayhi man la ya'rifu lima fihi minal khatari faq-tadan nazru al-man'u minhu. | Ashhab narrated from Imam Malik: No one should name themselves 'Yaseen' because it is a name of Allah, and it is a unique speech. This is because it is permissible for a servant to be named with a name of the Lord if it contains a shared meaning like 'Alim' (Knowledgeable), 'Qadir' (Powerful), etc. However, Imam Malik prohibited naming with this name because it belongs to names whose meanings are unknown. It might be a meaning unique only to the Lord Almighty, so it is not appropriate for one who does not know to proceed with it due to the danger involved. Thus, careful consideration necessitates prohibition from it. (T) |

Allama Shihabuddin Ahmad Khafaji Hanafi Misri, in 'Nasim al-Riyad Sharh Shifa of Imam Qadi Iyad', quotes this and says: "Wa huwa kalamun nafees"[2] (This is a refined and magnificent discourse. T)

[1] Nasim al-Riyad Sharh al-Shifa lil-Qadi Iyad, citing Abu Bakr ibn al-Arabi, chapter on His names, Dar al-Fikr Beirut, 2/390. [2] Nasim al-Riyad Sharh al-Shifa lil-Qadi Iyad, citing Abu Bakr ibn al-Arabi, chapter on His names, Dar al-Fikr Beirut, 2/390.

फतावा रज़विया जिल्द 24

...महान गरिमा की योग्यता किसी में नहीं है। (त) इसी तरह 'नबी जान' नाम रखना अनुचित है। यदि 'जान' को प्रेम के भाव से एक अलग शब्द के रूप में जोड़ा गया हो, जैसा कि अक्सर होता है, तो यह स्पष्ट रूप से नबूवत का दावा प्रतीत होता है। और यदि इसे उल्टा यौगिक शब्द माना जाए, यानी 'जाने नबी' (नबी की जान), तो यह आत्म-प्रशंसा में 'बर्रह' (एक नाम जिसका अर्थ नेक है और जिसे पैगंबर ने बदल दिया था) से हज़ारों गुना अधिक है। पैगंबर (उन पर और उनकी संतान पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) ने इसे पसंद नहीं किया, तो इसे कैसे पसंद किया जा सकता है? यहाँ इसे बदलने में कोई बड़ी हानि नहीं है; एक "ह" (h) जोड़ देने से व्यक्ति पाप से बच जाएगा और एक अच्छा, जायज़ नाम मिल जाएगा। 'मोहम्मद नबीह', 'अहमद नबीह', 'नबीह अहमद', 'नबीह जान' कहा और लिखा करें। 'नबीह' का अर्थ है जागृत, सतर्क। इसी तरह 'यासीन' और 'ताहा' नाम रखना मना है क्योंकि ये उन ईश्वरीय नामों और मुस्तफा (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) के नामों में से हैं जिनके अर्थ अज्ञात हैं। क्या पता उनके वे अर्थ हों जो अल्लाह और उसके रसूल के अलावा किसी और पर लागू न हो सकें? इसलिए उनसे बचना आवश्यक है, जिस तरह अज्ञात अर्थ वाले मंत्र (रुकिया) जायज़ नहीं होते कि कहीं उनमें कोई शिर्क(बुतपरस्ती) या गुमराह करने वाली बात न हो। इमाम अबू बक्र इब्न अल-अरबी अपनी पुस्तक 'अहकाम अल-कुरान' में फरमाते हैं:

| अरबी पाठ: अशहब ने इमाम मालिक से रिवायत की है कि कोई भी व्यक्ति अपना नाम 'यस' न रखे क्योंकि यह अल्लाह ताला का नाम है और यह एक अनूठा कलाम है। यह इसलिए कि एक बंदे के लिए अपने रब के नाम पर अपना नाम रखना जायज़ है बशर्ते उसमें वह अर्थ पाया जाए जैसे 'आलिम' (ज्ञानी), 'क़ादिर' (शक्तिशाली) आदि। और इमाम मालिक ने यह नाम रखने से इसलिए मना फ़रमाया क्योंकि यह उन नामों में से है जिनके अर्थ ज्ञात नहीं हैं। हो सकता है इसका वह अर्थ हो जो केवल रब ताला के लिए ही विशिष्ट और अनन्य हो, इसलिए जो व्यक्ति इसके अर्थ नहीं जानता उसके लिए इस पर आगे बढ़ना उचित नहीं है क्योंकि इसमें खतरा है। अतः विवेक और सावधानी का तकाज़ा यही है कि नाम रखने से मना किया जाए। (त) | अशहब ने इमाम मालिक से रिवायत की है कि कोई भी व्यक्ति अपना नाम 'यस' न रखे क्योंकि यह अल्लाह ताला का नाम है और यह एक अनूठा कलाम है। यह इसलिए कि एक बंदे के लिए अपने रब के नाम पर अपना नाम रखना जायज़ है बशर्ते उसमें वह अर्थ पाया जाए जैसे 'आलिम', 'क़ादिर' वगैरह, और इमाम मालिक ने यह नाम रखने से इसलिए मना फ़रमाया कि ये उन नामों में से है जिनके अर्थ मालूम नहीं, हो सकता है इसका

वो अर्थ हो जो रब तआला के लिए खास और मुनफरिद हो, लिहाज़ा मुनासिब नहीं कि ये नाम रखा जाए जबकि इसके ममनूअ मायने मालूम ही न हों पस नज़र और एहतियात का तक़ाज़ा यही कि नाम रखने से मना किया जाए। (त) |

अल्लामा शिहाबुद्दीन अहमद खफ़ाजी हनफ़ी मिस्री ने 'नसीम अल-रियाज़' (इमाम काज़ी अयाज़ की 'शिफा' की व्याख्या) में इसे उद्धृत करते हुए कहा है: "वहुवा कलामुन नफीस"[2] (यह एक उत्कृष्ट और शानदार कथन है। त)

[1] नसीम अल-रियाज़ शरह अल-शिफा लिल-काज़ी अयाज़, अबू बक्र इब्न अल-अरबी के हवाले से, अध्याय: उनके नाम, दार अल-फ़िक्र बेरूत, 2/390। [2] नसीम अल-रियाज़ शरह अल-शिफा लिल-काज़ी अयाज़, अबू बक्र इब्न अल-अरबी के हवाले से, अध्याय: उनके नाम, दार अल-फ़िक्र बेरूत, 2/390।

पृष्ठ 681/720

مرتبہ بزرگ شان کی توفیق کے کسی میں نہیں۔ ت) یو نہی نبی جان نام رکھنا نامناسب ہے اگر جان ایک کلمہ جدا گانہ بنظر محبت زیادہ کیا ہو ا جانیں جیسا کہ غالب یہی ہے جب تو ظاہر ادعائے نبوت ہو اور اگر ترکیب مقلوب سمجھیں یعنی جان نبی ، تو یہ تزکیہ خود ستائی میں برہ سے ہزار درجے زائد ہو ، نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم نے اسے پسند نہ فرمایا یہ کیو نکر پسند ہو سکتا ہے یہاں تبدیل میں کچھ بہت حرج بھی نہیں ایک "ہ" بڑھانے میں گناہ سے بچ جائے گا اور اچھا خاصہ جائز نام پائیے گا۔ محمد نبہہ ، احمد نبہہ ، نبیہ احمد ، نبیہ جان کہا اور لکھا کیجئے ۔ نبیہ بمعنی بیدار ہوشیار ہے۔ یو نہی یسین وطہ نام رکھنا منع ہے کہ اس مائے الہیہ و اسمائے مصطفٰی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے ایسے نام ہیں جن کے معنی معلوم نہیں، کیا عجب کہ ان کے وہ معنی ہوں جو غیر خدا اور رسول میں صادق نہ آسکیں تو ان سے احتراز لازم ، جس طرح نامعلوم المعنی رقیہ منتر جائز نہیں ہوتا کہ مبادا کسی شرک وضلال پر مشتمل ہو۔ امام ابوبکر ابن العربی کتاب احکام القرآن میں فرماتے ہیں:

| روی اشهب عن مالك لا یتسمی احد بیسن لانه اسم الله وهو كلام بدیع وذلك ان العبد یجوز له ان یسمی باسم الرب اذا كان فیه معنی منه كعالم وقادر وانما منع مالك من التسمیة بهذا الاسم لانه الاسماء التي لایدری ما معناها فربما كان ذلك معنی یتفرد به الرب تعالی فلا ینبغی ان یقدم علیه من لا یعرف لما فیه من الخطر فاقتضی النظر المنع منه۔ | اشہب نے امام مالک سے روایت کی ہے کہ کوئی شخص بھی یس نام نہ رکھے کہ یہ اللہ تعالٰی کا نام ہے اور یہ نادر کلام ہے، یہ اس لئے کہ بندے کے لئے جائز ہے کہ رب کے نام پر اپنا نام رکھے جبکہ اس میں وہ معنی پایا جائے جیسے عالم، قادر وغیرہ، اور امام مالک نے یہ نام رکھنے سے اس لئے منع فرمایا کہ یہ ان اسماء سے ہے جن

کے معنی معلوم نہیں، ہو سکتا ہے اس کا وہ معنی ہو جو رب تعالیٰ کے لئے خاص اور منفرد ہو، لہٰذا مناسب نہیں کہ یہ نام رکھا جائے جبکہ اس کے ممنوع معنی معلوم ہی نہ ہوں پس نظر اور احتیاط کا تقاضا یہی کہ نام رکھنے سے منع کیا جائے۔ (ت) |

علامہ شہاب الدین احمد خفاجی حنفی مصری نسیم الریاض شرح شفائے امام قاضی عیاض میں اسے نقل کر کے فرماتے ہیں: وھو کلام نفیس ۲ (یہ ایک نفیس اور شاندار کلام ہے۔ ت)

[1]نسیم الریاض شرح الشفاء للقاضی عیاض ، بحوالہ ابو بکر ابن العربی ، فصل فی اسمائہ دار الفکر بیروت ۲ / ۳۹۰ [2]نسیم الریاض شرح الشفاء للقاضی عیاض ، بحوالہ ابو بکر ابن العربی ، فصل فی اسمائہ دار الفکر بیروت ۲ / ۳۹۰

Fatawa Razawiya, Volume 24

The poor one (the author) wrote on its margin:

[Boxed Text] (Left Column - Arabic): It had become clear to me that it is forbidden for this very meaning, but considering that it is a name of the Prophet (may Allah's blessings and peace be upon him), and we do not know its meaning, perhaps it has a meaning that is not valid for anyone other than him (may Allah's blessings and peace be upon him) etc. And perhaps this is more appropriate than what was mentioned before because its being a name of the Prophet (may Allah's blessings and peace be upon him) is more evident and famous. Therefore, it does not have a meaning unique to the Lord Almighty, and Allah Almighty knows best.

(Right Column - Urdu): Indeed, the prohibition for this very meaning became clear to me, but keeping this fact in mind, I am in favor of not giving this name because it is the blessed name of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and we are not aware of its meaning. It is possible it has such a meaning which is exclusive to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and its use for anyone other than him is not correct. Perhaps this reason is more suitable than the first one because the use of this word as a sacred name for the Holy Prophet is more evident and famous. Therefore, it does not have any such meaning in which Allah Almighty the Majestic is unique, but (the secret of this) Allah Almighty knows best. (T)

The same is the case with the name 'Taha'. The explanation is the same explanation and the evidence is the same evidence (the explanation is the previous one and the evidence is also written the same. T). Adding the pure word 'Muhammad' to them will not compensate for the prohibition, because 'Kais' and 'Lut' will still remain of unknown meaning. If those meanings were specific to his holy self, then joining 'Muhammad' would be like someone not naming a child 'Rasool Allah' but 'Muhammad Rasool Allah'. How can this be permissible? And all of this is very clear (and all of this is well-manifest. T). Similarly, 'Ghafoor-ud-Din' is also extremely ugly and atrocious. The meaning of 'Ghafoor' is one who wipes away; Allah Almighty is the Forgiver of sins, meaning He wipes away the sins of His servants and hides their faults with His mercy. So the meaning of 'Ghafoor-ud-Din' would be 'one who wipes away the religion'. This is like naming someone 'Shaitan' (Satan), which the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) changed. Yes, 'one who hides religion' or 'one who practices Taqiyya', this is like a Rafidi name. In any case, it

contains severe vileness. Compared to this, the name 'Aasiyah' (Sinner) was much lighter, which the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) changed, because 'Ma'asi' (sins) conventionally applies to actions, whereas 'hiding religion' brings blame upon beliefs. We seek refuge in Allah, the Lord of the worlds (Allah's refuge, Who is the Master and Sustainer of all the worlds. T).

1. Margin of Imam Ahmad Raza Khan on 'An-Nasim-ur-Riyadh'.

फतावा रजविया, जिल्द 24

फ़कीर (लेखक) ने इसके हाशिये पर लिखा:

[बॉक्स किया हुआ पाठ] (बायां कॉलम - अरबी): मुझ पर इस अर्थ के लिए इसका निषेध स्पष्ट हो गया था, लेकिन इस बात को ध्यान में रखते हुए कि यह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का नाम है, और हम इसका अर्थ नहीं जानते, तो शायद इसका कोई ऐसा अर्थ हो जो उनके(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अलावा किसी और के लिए मान्य न हो, आदि। और शायद यह पहले बताए गए कारणों से अधिक उचित है क्योंकि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का नाम होना अधिक स्पष्ट और प्रसिद्ध है। इसलिए इसका ऐसा कोई अर्थ नहीं है जो केवल अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के लिए विशिष्ट हो, और अल्लाह बेहतर जानता है।

(दायां कॉलम - उर्दू): वास्तव में, इस अर्थ के लिए निषेध मुझ पर स्पष्ट हो गया है, लेकिन इस वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए, मैं इस नाम को न रखे जाने के पक्ष में हूँ कि यह हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का मुबारक नाम है और हम इसके अर्थ से वाकिफ़ नहीं हैं। हो सकता है कि इसका कोई ऐसा अर्थ हो जो हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) के लिए विशिष्ट हो और आपके अलावा किसी और के लिए इसका उपयोग सही न हो। शायद यह कारण पहले कारण से अधिक उपयुक्त है क्योंकि इस शब्द का हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) के लिए एक पवित्र नाम के रूप में होना अधिक स्पष्ट और प्रसिद्ध है। इसलिए इसका कोई ऐसा अर्थ नहीं है जिससे अल्लाह तआला की महिमा विशिष्ट हो, लेकिन (इस रहस्य को) अल्लाह तआला ही सबसे बेहतर जानता है। (त)

यही हाल 'ताहा' नाम का है। स्पष्टीकरण वही है और प्रमाण भी वही है (स्पष्टीकरण पिछला ही है और प्रमाण भी वही लिखा है। त)। इनमें 'मोहम्मद' शब्द जोड़ देना निषेध की क्षतिपूर्ति नहीं करेगा, क्योंकि 'कैस' और 'लुत्त' अब भी अज्ञात अर्थ वाले ही रहेंगे। यदि वे अर्थ हुज़ूर की पवित्र हस्ती के लिए विशिष्ट हैं, तो 'मोहम्मद' मिलाना ऐसा होगा जैसे किसी ने 'रसूल अल्लाह' नाम न रखकर 'मोहम्मद रसूल अल्लाह' नाम रखा हो। यह कब जायज़ हो सकता है? और यह सब बहुत स्पष्ट है (और यह सब अच्छी तरह ज़ाहिर है। त)। इसी तरह 'ग़फ़ूर-उद-दीन' भी अत्यंत घिनौना और बुरा है। 'ग़फ़ूर' का अर्थ है मिटाने वाला; अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल गुनाहों को माफ़ करने वाला (ग़फ़ूर-उज़-ज़ुनूब) है, यानी अपनी रहमत से अपने बंदों के गुनाह मिटाता है और ऐब छुपाता है। तो 'ग़फ़ूर-उद-दीन' का अर्थ हुआ 'दीन को मिटाने वाला'। यह ऐसा ही है जैसे किसी का नाम शैतान रखना जिसे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम) ने बदल दिया था। हाँ, 'दीन को छुपाने वाला' या 'तक़िया करने वाला', यह राफ़िज़ी नाम रखने जैसा हुआ। बहरहाल, यह अत्यंत घृणित है। इसकी तुलना में 'आसिया' (गुनहगार) नाम बहुत हल्का था जिसे नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने बदल दिया था, क्योंकि 'मासी' (पाप) का प्रयोग आमतौर पर कार्यों तक सीमित है, जबकि दीन को छुपाना अक़ीदे (विश्वास) पर मलामत लाता है। अल्लाह रब्बुल आलमीन की पनाह (अल्लाह तआला की पनाह जो तमाम जहानों का मालिक और पालनहार है। त)।

1. अन-नसीम-उर-रियाज़ पर इमाम अहमद रज़ा ख़ान का हाशिया।

पेज 682/720

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

فقیر نے اس کے حامش (حاشیہ) پر لکھا:

(Left Column - Arabic) [Box]: قد کان ظھر لی المنع عنه لعین ھذا المعنی لکن نظرا الی انه اسم النبي صلی اللہ تعالی علیه وسلم، ولا ندری معناہ فلعل له معنی لا یصح فی غیرہ صلی اللہ تعالی علیه وسلم الخ ولعل ھذا اولی مما تقدم لان کونه اسم النبی صلی اللہ تعالی علیه وسلم اظھر واشھر فلا یکون له معنی یتفرد به الرب عز وجل، واللہ تعالی اعلم۔

(Right Column - Urdu): بے شک مجھ پر اس معنی کی بعینہ ممانعت ظاہر ہوگئی ہے لیکن اس حقیقت کو پیش نظر رکھتے ہوئے یہ نام نہ رکھے جانے کے حق میں ہوں کہ یہ حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا نام مبارک ہے اور ہم اس کے معنی سے واقف نہیں، ہو سکتا ہے اس کا کوئی ایسا معنی ہو جو حضور علیہ الصلوۃ والسلام کے لئے خاص ہو اور آپ کے سوا کسی دوسرے کے لئے اس کا استعمال درست نہ ہو شاید یہ وجہ پہلی وجہ سے زیادہ مناسب ہے اس لئے اس لفظ کا حضور علیہ السلام کے لئے بطورِ مقدس نام کے ہونا زیادہ ظاہر اور مشہور ہے۔ لہذا اس کے لئے کوئی ایسا معنی نہیں کہ جس سے اللہ تعالٰی جلیل القدر منفرد ہو لیکن (اس راز کو) اللہ تعالٰی ہی سب سے بہتر جانتا ہے۔ (ت)

بعینہ یہی حال اسم طٰہٰ کا ہے والبیان البیان والدلیل الدلیل (بیان وہی سابقہ ہے اور دلیل بھی وہی مرقوم ہے۔ ت) لفظ پاک محمدؐ ان میں شامل کر دینا ممانعت کی تلافی نہ کرے گا کیس ولط اب بھی نامعلوم المعنی ہی رہے اگر وہ معنی مخصوص بذات اقدس ہوئے تو محمد ملانا ایسا ہوگا کہ کسی کا نام رسول اللہ نہ رکھا محمد رسول اللہ رکھا، یہ کب حلال ہوسکتا ہے وھذا کلہ ظاہر جدا (اور یہ تمام

خوب ظاہر ہے۔ ت)، یوں ہی غفور الدین بھی سخت قبیح و شنیع ہے، غفور کے معنی مٹانے والا، اللہ عزوجل غفور ذنوب ہے یعنی اپنی رحمت سے اپنے بندوں کے ذنوب مٹاتا عیوب چھپاتا ہے، تو غفور الدین کے معنی ہوئے دین کا مٹانے والا، یہ ایسا ہوا جیسے شیطان کا نام رکھنا جسے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے تبدیل فرما دیا، ہاں دین پوش تقیہ کوش یہ ایسا ہوا جیسے رافضی نام رکھنا۔ بہر حال شدید شناعت پر مشتمل ہے اس سے تو عاصیہ نام بہت ہلکا تھا جسے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے تغییر فرما دیا کہ معاصی کا عرفاً اطلاق اعمال تک ہے اور دین پوشی کی ملامت و عقائد پر، والعیاذ باللہ رب العالمین (اللہ تعالیٰ کی پناہ جو تمام جہانوں کا مالک اور پروردگار ہے۔ ت)

1 حاشیہ امام احمد رضا خاں علی النسیم الریاض

Volume 24 Fatawa-e-Razawiyya

It is mentioned in the Hadith: "The omen is entrusted to speech."[1] (An omen is dependent on what is spoken. - Translator's note) This was the motive behind changing some bad names, as guided by many Hadiths. (As many Hadiths have provided guidance in this regard. - T) Mawlana Qari states in Mirqat: "Names descend from the heavens."[2] Names descend from the sky, meaning there is likely a correspondence between the name and the named one observed from the unseen. Experienced people have said (poetic verse):

Do not take an evil omen, for it brings an evil state. (Do not take a bad omen because it will bring about a bad condition. - T)

O Allah! Protect us and have mercy on us. (O Allah! Grant us protection and have mercy on us. - T) The humble author (Faqir) has seen with his own eyes the severe ill effects of such foul names; well-to-do Sunni-looking people were found, in their later lives, concealing religion and striving for falsehood.

Arabic Prayer	**Urdu Translation**
We ask Allah for forgiveness and wellbeing. O All-Powerful, O All-Capable, O Most Gracious, O Most Merciful, O Almighty, O All-Forgiving! May You send blessings, peace, and benedictions upon our master and leader Muhammad, and his family and companions. And keep us firm upon Your true religion which You have approved for Your Prophets, Messengers, and Angels, until we meet You with it. And grant us safety from trials, tribulations, and temptations, both manifest and hidden. And send blessings, peace, and benedictions upon our master Muhammad and his family altogether.	We ask Allah Almighty for forgiveness and wellbeing. O Possessor of power and strength, O Infinite Merciful, O Ever-Merciful, O All-Dominating Being (Dominant over all), O Coverer (of sins) and Pardoner (Master). Send blessings, peace, and benedictions upon our master and leader, the Holy Prophet Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him, his family, and companions), and upon his progeny and companions as well. And keep us steadfast upon Your true religion, the religion You preferred for Your noble Prophets, great Messengers, and noble Angels, until we remain on this religion [at the end].

[1] Al-Asrar al-Marfu'a, Hadith 238, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, p. 165. [2] Mirqat al-Mafatih Sharh Mishkat al-Masabih, Book of Manners, Chapter on Names, under Hadith 4781, Al-Maktabah al-Habibiyyah, Quetta, 8/535.

जिल्द 24 फतावा-ए-रजविया

हदीस में है: "शकुन (फाल) वाणी पर निर्भर है।"[1] (फाल बोलने के हवाले की गई है। - टी) कुछ बुरे नामों को बदलने का यही उद्देश्य था, जैसा कि कई हदीसों ने इसके बारे में मार्गदर्शन किया है। (जैसा कि बहुत सी हदीसों ने इसकी रहनुमाई फरमाई। - टी) मौलाना कारी 'मिर्कात' में उद्धृत करते हैं: "नाम आसमानों से उतरते हैं।"[2] नाम आसमान से उतरते हैं, यानी संभवतः नाम और नामित के बीच परोक्ष (ग़ैब) से कोई उपयुक्तता होती है। अनुभवी लोगों ने कहा है: (शेर)

बुरा शकुन मत लो क्योंकि वह बुरा हाल लाएगा। (बुरी फाल मत निकालो इसलिए कि वह बुरा हाल लाएगी। - टी)

ऐ अल्लाह! हमारी रक्षा कर और हम पर दया कर। (ऐ अल्लाह! हमारी हिफाज़त फरमा और हम पर रहम कर। - टी) फकीर (लेखक) ने अपनी आंखों से ऐसे घिनौने नामों का बहुत बुरा प्रभाव पड़ते देखा है; भले-चंगे सुन्नी दिखने वाले लोग उम्र के आखिरी हिस्से में धर्म को छिपाने वाले और नाहक कोशिशें करने वाले पाए गए हैं।

अरबी दुआ

हम अल्लाह से माफी और सलामती का सवाल करते हैं। ऐ शक्ति और सामर्थ्य वाले, ऐ असीम दयावान, ऐ सदैव दया करने वाले, ऐ सर्वशक्तिमान, ऐ क्षमाशील! हमारे आका और मौला हजरत मुहम्मद और उनके परिवार और साथियों पर दरूद, सलाम और बरकतें नाज़िल हों। और हमें अपने उस सच्चे दीन पर अडिग रख जिसे तूने अपने नबियों, रसूलों और फरिश्तों के लिए पसंद किया है, यहां तक कि हम इसी दीन के साथ तुझसे मिलें। और हमें ज़ाहिरी और बातिनी आजमाइशों, बलाओं और फितनों से महफूज़ रख। और हमारे आका मुहम्मद और उनकी पूरी आल पर दरूद, सलाम और बरकतें नाज़िल हों।

उर्दू अनुवाद

हम अल्लाह तआला से अफ़्व व आफ़ियत का सवाल करते हैं, ऐ ताक़त व ज़ोर वाले, ऐ बेहद रहम फरमाने वाले, ऐ हमेशा रहम करने वाले, ऐ ज़बरदस्त ज़ात (सब पर ग़ालिब), ऐ (गुनाहों की) पर्दा पोशी करने वाले, और उन्हें मुआफ़ फरमाने वाले (मालिक), हमारे आक़ा व मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम पर दरूद व सलाम और बरकात नाज़िल फरमा और उनकी आल औलाद और साथियों पर भी, और हमें अपने दीने हक़ पर उस्तवार रख जो दीन तूने अपने अम्बियाए किराम और रसूलान-ए-इज़ाम और

अरबी दुआ	उर्दू अनुवाद
	मलाइका-ए-किराम के लिए पसंद फरमाया ताकि हम इसी दीन पर [मरें]।

[1] अल-असरार अल-मर्फूआ, हदीस 238, दार अल-कुतुब अल-इलमियाह, बेरूत, पृ. 165 [2] मिर्कात अल-मफातीह शरह मिश्कात अल-मसाबीह, किताबुल अदब, नामों का अध्याय, हदीस 4781 के तहत, अल-मकतबा अल-हबीबिया, क्वेटा, 8/535

حدیث میں ہے: الفأل موکل بالمنطق ۱ (فال بولنے کے حوالے کی گئی ۔ ت) بعض برے ناموں کی تبدیلی کا یہی منشا تھا کما ارشد الیہ غیر ما حدیث (جیسا کہ بہت سی احادیث نے اس کی رہنمائی فرمائی ۔ ت) مولانا قاری مرقاۃ میں نقل فرماتے ہیں: الاسماء تنزل من السماء ۲ ، نام آسمان سے اترتے ہیں ، یعنی غالباً اسم و مسمّٰی میں کوئی مناسبت غیب سے ملحوظ ہوتی ہے، اہل تجربہ نے کہا ہے: ع

مزن فال بد کاورد حال بد (بری فال مت نکالو اس لئے کہ وہ برا حال لائے گی۔ ت)

اللّٰھُمَّ احفظنا وارحمنا (یا اللہ ! ہماری حفاظت فرما اور ہم پر رحم کر۔ ت) فقیر نے بچشم خود ایسے قبیح ناموں کا سخت برا اثر پڑتے دیکھا ہے بھلے چنگے سنی صورت کو آخر عمر میں دین پوش ناحق کوش ہوتے پایا ہے۔

عربی دعا	اردو ترجمہ
نسأل اللہ العفو والعافیۃ اللھم یاقوی	ہم اللہ تعالیٰ سے عفو و عافیت کا سوال کرتے ہیں اے طاقت و
یاقدیر یا رحمن یارحیم یاعزیز	زور والے، اے بے حد رحم فرمانے والے والے، اے ہمیشہ
یاغفور صلی وسلم وبارك علی سیدنا	رحم کرنے والے، اے زبردست ذات (سب پر غالب)، اے
ومولانا محمد وآلہ وصحبہ وثبتنا	(گناہوں کی) پردہ پوشی کرنے والے، اور انہیں معاف فرمانے
علی دینك الحق الذی ارتضیتہ	والے (مالک) ، ہمارے آقا و مولیٰ حضرت محمد مصطفیٰ
لانبیائك و رسلك و ملائکتك حتی	صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم پر درود و سلام اور برکات
نلقاك بہ وعافنا من البلاء والبلوی و	نازل فرما اور ان کی آل اولاد اور ساتھیوں پر بھی، اور ہمیں

عربی دعا	اردو ترجمہ
الفتن ما ظهر منها وما بطن، وصل وسلم وبارك على سيدنا محمد وآله اجمعين	اپنے دین حق پر استوار رکھ جو دین تو نے اپنے انبیائے کرام اور رسولانِ عظام اور ملائکہ کرام کے لئے پسند فرمایا تا آنکہ ہم اسی دین پر [قائم رہیں]۔

١ الاسرار المرفوعة حديث ٢٣٨ دار الكتب العلمية بيروت ص ١٦٥ ٢ مرقاة المفاتيح شرح مشكوة المصابيح كتاب الادب باب الاسماء تحت حديث ٤٧٨١ المكتبة الحبيبيه كوئٹه ٨ / ٥٣٥

Fatawa Razawiyya, Volume 24

[Arabic Text:] And have mercy on our helplessness and help us through them, O Most Merciful of those who show mercy, Amen. And blessings and peace be upon the Noble Intercessor, his family, and companions. And all praise is due to Allah, the Lord of the worlds.

[Urdu Translation of the Arabic:] Grant us well-being from manifest and hidden (open and secret) trials, calamities, and tribulations while remaining with You. And descend mercy, blessings, and peace upon our master Muhammad ﷺ, and for his sake, support and help us in our helplessness and poverty, O Most Merciful of all! Amen. Blessings and peace be upon the noble essence of the Noble Intercessor and upon all his family, descendants, and companions. All praise is for Allah Almighty, who is the Sustainer of all the worlds, Amen. (T)

And a severe calamity is that people with such ugly names combine the sacred name 'Muhammad' with their names as per custom in writing and speaking, and expect the same from others. If someone writes their sacred name alone, they consider it a slight to their dignity and think it is taking half the name, whereas joining a name with such bad meanings to this sacred name in speech is itself a disrespect to that noble name. Let this point always be remembered that attention and warning regarding these matters are granted only to those who are blessed with a generous portion of faith and manners (adab). All praise is due to Allah. Based on this, this humble person (the author) never considers it permissible to combine the sacred name with names like Kalb-e-Ali, Kalb-e-Husain, Kalb-e-Hasan, Ghulam-e-Ali, Ghulam-e-Husain, Ghulam-e-Hasan, Nisar Husain, Fida Husain, Qurban Husain, Ghulam Jilani, and similar names. O Allah, grant us good manners and save us from the causes of Your wrath. Amen (O Allah! Bestow upon us the excellence of etiquette and save us from the causes of Your anger. Amen - T).

Nizam-ud-Din, Muhi-ud-Din, Taj-ud-Din, and similarly all those names which imply that the person named is 'great in religion' or rather 'great over religion,' such as Shams-ud-Din, Badr-ud-Din, Nur-ud-Din, Fakhr-ud-Din, Shams-ul-Islam, Badr-ul-Islam, etc. - the scholars of Islam have strongly disliked and deemed them undesirable (makruh) and prohibited. The great figures of religion (may their secrets be sanctified) who are famous by such Islamic examples - these are not their original names but their titles (alqab). After reaching high spiritual stations, the Muslims addressed them with these titles out of appreciation, like Shams-ul-Aimmah Halwai,

Fakhr-ul-Islam Bazdawi, Taj-ush-Shariah, Sadr-ush-Shariah; likewise, Muhi-ul-Haq-wad-Din His Eminence Syeduna Ghous-e-Azam, Mu'in-ul-Haq-wad-Din Hazrat Khwaja Gharib Nawaz, the Heir of the Prophet, the Sultan of India Hasan Sanjari, Shahab-ul-Haq-wad-Din Umar Suhrawardi, Baha-ul-Haq-wad-Din Naqshband, Qutb-ul-Haq-wad-Din Bakhtiyar Kaki, Sheikh-ul-Islam Farid-ul-Haq-wad-Din Mas'ud, Nizam-ul-Haq-wad-Din Sultan-ul-Awliya Mahbub-e-Ilahi, Muhammad Nasir-ul-Haq-wad-Din Chiragh-e-Dehlvi Mahmud and others, may Allah be pleased with them all and benefit us with their blessings in this world and the religion.

The sacred title of His Eminence Noor-un-Noor Syeduna Ghous-e-Azam (may Allah be pleased with him) was itself given by the spirituality of Islam, of which...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

[अरबी पाठ:] और हमारी बेबसी पर रहम फरमा और उनके वसीले से हमारी मदद फरमा, ऐ सबसे बड़े रहम करने वाले, आमीन। और दुरूद व सलाम हो शरीफ शफीअ (सिफारिश करने वाले), उनकी आल और उनके साथियों पर। और तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है।

[अरबी पाठ का उर्दू अनुवाद:] तेरे साथ रहते हुए हमें ज़ाहिरी और बातिनी (खुले और छिपे) फित्नों, मुसीबतों और आज़माइशों से आफ़ियत (सलामती) अता फरमा और हमारे आका हज़रत मुहम्मद करीम ﷺ पर रहमत, बरकत और सलाम नाज़िल फरमा, उनके तुफैल (वसीले) से हमारी बेबसी और फाका (गरीबी) में हमारी हिमायत और मदद फरमा ऐ सबसे बड़े रहम करने वाले, आमीन। दुरूद व सलाम हो शफीअ-ए-करीम की ज़ात-ए-अकदस पर और उनकी तमाम आल-औलाद और साथियों पर। तमाम तारीफें अल्लाह तआला के लिए हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है, आमीन। (त)

और एक सख्त आफत यह होती है कि ऐसे कबीह (बुरे) नाम वाले अपने नाम के साथ रिवाज के मुताबिक़ नाम-ए-पाक 'मुहम्मद' मिला कर लिखते और कहते हैं, और दूसरों से भी यही उम्मीद रखते हैं। अगर कोई खाली उनका पाक नाम लिखे तो वह इसे अपनी बेइज्जती समझते हैं और आधा नाम लेना समझते हैं, जबकि ऐसे बुरे अर्थों वाले नाम के साथ इस पाक नाम को जोड़ना खुद उस नाम-ए-करीम के साथ गुस्ताखी (अदब की कमी) है। यह नुक्ता हमेशा याद रहे कि इन बातों की तरफ तवज्जो और चेतावनी सिर्फ उसी को मिलती है जिसे ईमान और अदब का बड़ा हिस्सा मिला हो। अल्लाह का शुक्र है। इसी आधार पर यह फ़क़ीर (लेखक) कभी जायज़ नहीं समझता कि कल्ब-ए-अली, कल्ब-ए-हुसैन, कल्ब-ए-हसन, गुलाम-ए-अली, गुलाम-ए-हुसैन, गुलाम-ए-हसन, निसार हुसैन, फिदा हुसैन, कुर्बान हुसैन, गुलाम जिलानी और इसी तरह के नामों के साथ नाम-ए-पाक मिला कर कहा जाए। ऐ अल्लाह, हमें बेहतरीन अदब अता फरमा और हमें अपने गुस्से के कारणों से बचा। आमीन।

निज़ामुद्दीन, मुहीउद्दीन, ताजुद्दीन और इसी तरह वे तमाम नाम जिनसे नाम वाले का दीन में महान या दीन पर महान होना निकले, जैसे शम्सुद्दीन, बदरुद्दीन, नूरुद्दीन, फखरुद्दीन, शम्सुल इस्लाम, बदरुल इस्लाम वगैरह, इन सबको इस्लाम के उलेमा ने सख्त नापसंद किया और मकरूह व मना रखा। दीन के बड़े बुजुर्ग (अल्लाह उनके राज़ों को पवित्र रखे) जो ऐसे इस्लामी उदाहरणों से मशहूर हैं, ये उनके

नाम नहीं बल्कि अलक़ाब (खिताब) हैं। इन ऊंचे मुकामों तक पहुँचने के बाद मुसलमानों ने तारीफ के तौर पर उन्हें इन अलक़ाब से याद किया, जैसे शम्सुल अइम्मा हलवाई, फख़्रुल इस्लाम बज़दवी, ताजुश्शरिया, सदरुश्शरिया; इसी तरह मुहीउल हक़ वद्दीन हुज़ूर पुरनूर सैयदुना गौस-ए-आजम, मुईनुल हक़ वद्दीन हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज, वारिस-ए-नबी सुल्तान-ए-हिंद हसन संजरी, शहाबुल हक़ वद्दीन उमर सुहरवर्दी, बहाउल हक़ वद्दीन नक्शबंद, कुत्बुल हक़ वद्दीन बख्तियार काकी, शेखुल इस्लाम फरीदुल हक़ वद्दीन मसूद, निज़ामुल हक़ वद्दीन सुल्तानुल औलिया महबूब-ए-इलाही, मुहम्मद नसीरुल हक़ वद्दीन चिराग-ए-देहलवी महमूद और अन्य, अल्लाह उन सब से राज़ी हो और हमें दुनिया और दीन में उनकी बरकतों से फायदा पहुँचाए।

हुज़ूर नूरुन्नूर सैयदुना गौस-ए-आजम (अल्लाह उनसे राज़ी हो) का पाक लक़ब खुद इस्लाम की रूहानियत ने रखा जिसकी...

وارحم عجزنا فأغثنا بھم یاارحم الراحمین اٰمین والصلوۃ والسلام علی الشفیع الکریم و اٰلہ وصحبہ والحمد للہ رب العلمین۔

قائم رہتے ہوئے تیرے ساتھ جاہلیں اور ہمیں ظاہر باطن (کھلے چھپے) فتنوں، مصیبتوں اور ابتلاؤں سے عافیت عطا فرما اور ہمارے آقا حضرت محمد کریم ﷺ پر رحمت و برکت اور سلام نازل فرما، ان کی طفیل ہمارے عجز اور فاقہ میں ہماری حمایت اور مدد فرما اے سب سے بڑے رحم کرنے والے، آمین، درود و سلام ہو شفیع کریم کی ذات اقدس پر اور ان کی تمام آل اولاد اور ساتھیوں پر۔ تمام تعریفیں اللہ تعالٰی کے لئے ہیں جو تمام جہانوں کا پروردگار ہے، آمین۔ (ت)

اور ایک سخت آفت یہ ہوتی ہے کہ ایسے قبیح نام والے اپنے نام کے ساتھ حسب رواج نام پاک محمد ملا کر لکھتے، کہتے اور اسی کی اوروں سے طمع رکھتے ہیں، اگر کوئی خالی ان کا نام اقدس لکھے تو گویا اپنی حقارت جانتے اور آدھا نام لینا سمجھتے ہیں، حالانکہ ایسے برے معنے کے ساتھ اس نام پاک کلاماً خود اس نام کریم کے ساتھ گستاخی ہے۔ یہ نکتہ ہمیشہ یاد رہے کہ ان امور کی طرف اسی کو التفات و تنبہ عطا فرماتے ہیں جسے ایمان و ادب سے حصہ وافیہ بخشتے ہیں، وللہ الحمد، اسی بناء پر فقیر کبھی جائز نہیں رکھتا کہ کلب علی، کلب حسین، کلب حسن، غلام علی، غلام حسین،، غلام حسن، نثار حسین، فدا حسین، قربان حسین، غلام جیلانی و امثال ذلک کے اسماء کے ساتھ نام پاک ملا کر کہا جائے، اللھم ارزقنا حسن الادب و نجنا من مورثات الغضب، آمین (اے اللہ ! ہمیں حسن ادب سے نواز اور اسباب غضب سے بچا۔ آمین۔ت)

نظام الدین، محی الدین، تاج الدین اور اسی طرح وہ تمام نام جن میں مسمیٰ کا معظم فی الدین بلکہ معظم علی الدین ہونا نکلے جیسے شمس الدین، بدرالدین، نورالدین، فخر الدین، شمس الاسلام، بدر الاسلام وغیرہ ذلک، سب کو علماء اسلام نے سخت ناپسند رکھا اور مکروہ و ممنوع رکھا، اکابر دین قدست اسرار ھم کہ امثال اسلامی سے مشہور ہیں، یہ ان کے نام نہیں القاب ہیں کہ ان مقامات رفیعہ تک وصول کے بعد مسلمین نے توصیاً انہیں ان لقبوں سے یاد کیا، جیسے شمس الائمہ حلوائی، فخر الاسلام بزدوی، تاج الشریعۃ، صدر الشریعۃ، یونہی محی الحق والدین حضور پر نور سیدنا غوث اعظم، معین الحق والدین حضرت خواجہ غریب نواز، وارث النبی سلطان الہند حسن سنجری، شہاب الحق والدین عمر سہر وردی، بہاؤ الحق والدین نقشبند، قطب الحق والدین بختیار کاکی، شیخ الاسلام فرید الحق والدین مسعود، نظام الحق والدین سلطان الاولیاء محبوب الہی، محمد نصیر الحق والدین چراغ دہلوی محمود و غیر ہم رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین و نفعنا ببر کاتھم فی الدنیا والدین۔ حضور نور النور سیدنا غوث اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا لقب پاک خود روحانیت اسلام نے رکھا جس کی

Fatawa Razawiyya Volume 24

A well-known and famous narration, mentioned in 'Bahjat-ul-Asrar Sharif' and other books of Imams and scholars, as the Almighty Allah says: "So do not claim purity for yourselves." (1) (i.e., do not describe yourselves as pure. - T). It is stated in 'Fasul-e-Imadi':

| (Arabic) One should not name with that which implies self-praise (2) | (Urdu) No one should keep a name in which an expression of self-praise (tazkiyah) is present. (T) |

It is stated in 'Radd-ul-Muhtar':

| (Arabic) From his words "nor with that which contains self-praise," it is inferred that names like Muhyuddin and Shamsuddin are forbidden, in addition to the lies they contain. Some Maliki scholars have authored works regarding their prohibition, and Al-Qurtubi explicitly mentioned this in his commentary on the Beautiful Names (Al-Asma-ul-Husna). Some recited poetry saying: | (Urdu) From the author's statement "nor with that which contains self-praise," it is understood that naming someone with titles like Muhyuddin and Shamsuddin is forbidden. Moreover, such titles contain falsehood. Some Maliki scholars have written a book on the prohibition of such names, and Al-Qurtubi has clearly stated this in his commentary on the Beautiful Names. Some have written verses regarding this, saying: | | I see religion feeling shy before Allah that it should be seen | I see religion feeling ashamed before Allah Almighty from what is being shown, | | While this is a source of pride for it and that is its helper. | although this is a matter of pride for it and that is its helper (i.e., supporter). | | Titles have become many in religion for a group | Indeed, titles of religion's 'supporters' have become numerous. | | They are like donkeys in the pastures of forbidden things. | They are those who behave like donkeys in observing evil deeds. | | I consider religion too sublime to be honored by them, | And indeed, the death of religion is caused by such people along with its honor (being compromised). | | And know that the sin in this is great. | And know that there is a great sin for them in this. | | It was narrated from Imam Nawawi that he disliked being titled Muhyuddin and would say, "I do not absolve anyone who calls me by it." Sheikh Sinan, the Knower of Allah, inclined towards this in his book. | And it is narrated from Imam Nawawi that he used to dislike being titled with 'Muhyuddin' and would say, "Whoever calls me by this title, I will not forgive him." And Sheikh Sinan, the Knower of Allah, leaned towards this view in his book. |

(1) The Holy Quran 53/32 (2) Radd-ul-Muhtar with reference to Fasul-e-Imadi, Kitab-ul-Hazr wal-Ibaha, Chapter on Sale, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/268

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

एक प्रसिद्ध और मशहूर रिवायत, 'बहजत-उल-असरार शरीफ़' और इमामों व विद्वानों की अन्य किताबों में वर्णित है, जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: "तो तुम अपनी पवित्रता का दावा न करो।" (१) (अर्थात अपने आप को बहुत पाक और साफ़ न बताओ। - त)। 'फ़सूल-ए-इमादी' में है:

| (अरबी) वह नाम न रखा जाए जिसमें आत्म-प्रशंसा हो (२) | (उर्दू) कोई उस नाम के साथ नाम न रखे जिसमें तज़किया (आत्म-प्रशंसा) का इज़हार हो। (त) |

'रद्द-उल-मुह्तार' में है:

| (अरबी) लेखक के कथन "न ही उस चीज़ से जिसमें आत्म-प्रशंसा हो" से यह लिया गया है कि मुहीउद्दीन और शम्सुद्दीन जैसे नामों की मनाही है, इसके अलावा कि उनमें झूठ भी शामिल है। कुछ मालिकी विद्वानों ने इसकी मनाही पर किताब लिखी है, और अल-कुर्तुबी ने 'अस्मा-उल-हुस्ना' की व्याख्या में इसे स्पष्ट किया है। कुछ ने शेर पढ़े हैं और कहा है: | (उर्दू) लेखक के कथन "न ही उस चीज़ से जिसमें तज़किया हो" से मालूम होता है कि मुहीउद्दीन और शम्सुद्दीन जैसे नाम रखने की मनाही है, इसके अलावा इसमें झूठ भी है, और कुछ मालिकी उलेमा ने ऐसे नामों की मनाही में एक किताब लिखी है, और कुर्तुबी ने इसकी स्पष्टता 'शराह अस्मा-ए-हुस्ना' में की है, और कुछ ने इस बारे में कुछ शेर लिखे हैं, बस कहा है: | | मैं दीन (धर्म) को अल्लाह से शर्म करते हुए देखता हूँ कि वह देखा जाए | मैं देखता हूँ कि दीन अल्लाह तआला से हया करता है उस चीज़ से जो दिखाई जाए, | | जबकि यह इसके लिए गौरव है और वह इसका सहायक है। | हालाँकि यह इसके लिए गौरव है और वह इसके लिए नसीर यानी मददगार है। | | दीन में एक गिरोह के लिए बहुत से लक़ब (उपाधियाँ) बढ़ गए हैं | तहक़ीक़ दीन में इसके मददगारों के बहुत से लक़ब हो गए हैं। | | वे बुराइयों के चरागाहों में गधों के समान हैं। | ये वे लोग हैं जो बुराइयों की पैरवी में गधों के समान हैं। | | मैं दीन को उनके ज़रिए सम्मानित होने से बहुत ऊँचा समझता हूँ, | और तहक़ीक़ दीन की मौत इन्हीं जैसे लोगों के साथ उसकी इज़्ज़त में हुई है, | | और जान लो कि इसमें गुनाह बहुत बड़ा है। | और जान ले कि इसमें उनका बड़ा गुनाह है। | | और इमाम नववी से रिवायत है कि वे मुहीउद्दीन लक़ब पसंद नहीं करते थे और फ़रमाते थे, "जो मुझे इस लक़ब से पुकारेगा मैं उसे माफ़ नहीं करूँगा।" आरिफ़ बिल्लाह शेख सिनान अपनी किताब में इसी ओर झुके हैं। | और इमाम नववी से नक़्ल किया गया है कि वे मुहीउद्दीन के साथ अपना लक़ब दिए जाने को नापसंद फ़रमाते थे और फ़रमाते थे कि जो

शख़्स मुझे इस लक़ब से पुकारेगा मैं उसे माफ़ नहीं करूँगा, और इसी तरफ़ शेख सिनान आरिफ़ बिल्लाह अपनी किताब में झुके हैं। |

(१) अल-क़ुरान अल-करीम ५३/३२ (२) रद्द-उल-मुह्तार बहवाला फ़सूल-ए-इमादी, किताब-उल-हज़र वल-इबाह, फ़स्ल फ़िल-बैअ, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी, बेरुत, ५/२६८

पृष्ठ ७२० का ६८५

روایت معروف و مشہور اور بہجۃ الاسرار شریف وغیرہ کتب ائمہ و علماء میں مذکور، حق سبحانہ، و تعالٰی فرماتا ہے: "فَلَا تُزَكُّوا أَنْفُسَكُمْ" 1 (پس آپ اپنی جانوں کو ستھرا نہ بناؤ۔ ت)۔ فصول عمادی میں ہے:

| لایسمیہ بما فیہ تزکیۃ 2 | کوئی اس نام کے ساتھ نام نہ رکھے جس میں تزکیہ کا اظہار ہو۔ (ت) |

ردالمحتار میں ہے:

| یؤخذ من قولہ ولا بما فیہ تزکیۃ المنع عن نحو محی الدین وشمس الدین مع مافیہ من الکذب والف بعض المالکیۃ فی المنع منہ مؤلفا وصرح بہ القرطبي فی شرح الاسماء الحسنی وانشد بعضھم فقال۔ | مصنف کے قول "لا بما فیہ تزکیہ" سے معلوم ہوتا ہے ممانعت مثل محی الدین و شمس الدین نام رکھنے میں ہے، علاوہ اس کے اس میں جھوٹ بھی ہے، اور بعض مالکی علماء نے ایسے ناموں کے ممنوع ہونے میں ایک کتاب لکھی ہے، اور قرطبی نے اس کی تصریح شرح اسماء حسنٰی میں کی ہے، اور بعض نے اس بارہ میں کچھ اشعار لکھے ہیں، پس کہا ہے: | | ارہی الدین لیستحیی من اللہ ان یری | میں دیکھتا ہوں دین کو حیا کرتا ہے اللہ تعالی سے جو دکھایا جائے | | وھذا لہ فخر وذاك نصیر | حالانکہ یہ اس کے لئے فخر ہے اور یہ اس کے لئے نصیر یعنی مددگار ہے، | | فقد کثرت في الدین القاب عصبۃ | تحقیق بہت ہوئے دین میں القاب اس کے مددگاروں کے۔ | | ھم مافی مراعی المنکرات حمیر | یہ وہ لوگ ہیں جو برائیوں کی رعایت میں گدھے ہیں | | وانی اجل الدین عن عزہ بھم | اور تحقیق دین کی موت ان جیسے لوگوں نے ساتھ اس کی عزت میں کی ہے | | واعلم ان الذنب فیہ کبیر | اور جان لے کہ اس میں ان کا بڑا گناہ ہے۔ | | ونقل عن

الامام النووی انه کان یکرہ من یلقبه بمحی الدین ویقول لا اجعل من دعانی به في حل ومال الی ذلك العارف باللہ تعالی الشیخ سنان في کتابه | اور امام نووی سے نقل کیا ہے کہ وہ محی الدین کے ساتھ اپنے ملقب ہونے کو ناپسند فرماتے تھے اور فرماتے تھے جو شخص مجھے اس لقب سے پکارے گا میں اسے معاف نہیں کروں گا، اور اس کی طرف مائل ہوئے شیخ سنان عارف باللہ اپنی کتاب |

1 القرآن الکریم ۳۲/۵۳ 2 رد المحتار بحوالہ فصول العمادی کتاب الحظر والاباحة فصل في البیع داراحیاء التراث العربي بیروت ۵/۲۶۸

Fatawa Rizvia, Volume 24

Tabyin al-Maharim and establishment of the great calamity against those named with such, and indeed it is from the self-praise forbidden in the Qur'an and from falsehood. He said: A similar example is what is said to teachers in Turkish like "Efendi" and "Sultanum" and the like. Then he said: If it is said these are metaphors that have become like proper names, thus exiting from being forbidden self-praise, the answer is that this is refuted by observation; if they were called by their actual proper names, anger would be found against whoever called them by it. Thus it is known that the self-praise remains, etc.

In "Tabyin al-Maharim", a powerful argument was established against those who keep such names, and it was said: indeed, this is the self-praise (tazkiyah) which is prohibited in the Holy Quran, and it is from falsehood. And he said its example is what is said for teachers in Turkish as 'Efendi' and 'Sultanum', and similar to it. Then he said: if it is said these are metaphorical which have become like proper names, so they have come out of self-praise, then the answer is that our observation rejects this point because if these persons are called by their proper names, people will get angry at the caller. So it is known that the element of self-praise remains, etc. (T)

Among the seventeen names that the questioner asked about, these ten are impermissible and forbidden, while there is no harm in the remaining seven. The permissibility of Ali Jan and Muhammad Jan is obvious as the original names are Ali and Muhammad, and "Jan" is added out of love. It is proven from Hadith that naming after the pure names of the beloved of God, the Prophets and Saints (peace and blessings be upon them), is recommended, provided they are not from their exclusive titles. It is stated in a Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Name yourselves after the names of the Prophets - narrated by al-Bukhari in al-Adab al-Mufrad[2] and Abu Dawud and al-Nasa'i from...

Name yourselves after the names of the Prophets (Imam Bukhari in al-Adab al-Mufrad, Imam Abu Dawud and al-Nasa'i from...

---

[1] Radd al-Muhtar, Kitab al-Hazr wa al-Ibahah, Section on Sales, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/297-298. [2] Al-Adab al-Mufrad, Chapter: The Most Beloved Names to Allah Almighty, Hadith 813, al-Maktabah al-Athariyah, Sangla, p. 211; Abu Dawud, Kitab al-Adab, Chapter on Changing Names, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/320;

Sunan al-Nasa'i, Kitab al-Khail, Chapter: What is Recommended from the Description of Horses, Noor Muhammad Kutub Khana, Karachi, 2/122.

'तबीनुल महारिम' में और इस तरह के नाम रखने वालों के ख़िलाफ़ 'हुज्जते क़ाहिरा' (ठोस दलील) क़ायम करते हुए फ़रमाया कि हक़ीक़त में यह वो तज़किया (आत्म-प्रशंसा) है जिससे क़ुरान मजीद में मना किया गया है और यह झूट में से है। उन्होंने कहा कि इसकी मिसाल वो है जो तुर्की में मुदर्रिसीन (शिक्षकों) के लिए 'आफ़ंदी' और 'सुल्तानम' वग़ैरह कहा जाता है। फिर कहा: अगर यह कहा जाए कि ये मजाज़ात (अलंकारिक नाम) हैं जो अलम (नामों) की तरह हो गए हैं, इसलिए तज़किया की श्रेणी से निकल गए, तो जवाब यह है कि हमारा मुशाहदा (अवलोकन) इस बात को रद्द करता है क्योंकि अगर इन व्यक्तियों को उनके अस्ली नामों से पुकारा जाए, तो पुकारने वाले पर लोग ग़ुस्सा करेंगे। अतः मालूम हुआ कि तज़किया का तत्व अब भी बाक़ी है।

'तबीनुल महारिम' में, और इस तरह के नाम रखने वालों के ख़िलाफ़ हुज्जते क़ाहिरा क़ायम की और फ़रमाया कि तहक़ीक़ यह वो तज़किया है जिससे क़ुरान मजीद में मना किया गया है और झूट से है, और कहा इसकी मिसाल वो है जो कहा जाता है वास्ते मुदर्रिसीन के तुर्की में 'आफ़ंदी' और 'सुल्तानम', और इसकी मिसाल फिर कहा है: पस अगर कहा जाए ये मजाज़ात हैं जो नामों की तरह हो गए हैं पस तज़किया से निकल गए तो जवाब यह है कि हमारा मुशाहदा इस बात को रद्द करता है क्योंकि अगर इन अफ़राद को उनके अस्मा-ए-अलाम से पुकारा जाए तो पुकारने वाले पर लोग ग़ुस्सा करेंगे, पस मालूम हुआ कि तज़किया के लिए बाक़ी है। (त)

सत्रह नाम जो साइल (प्रश्नकर्ता) ने पूछे, उनमें से ये दस नाजायज़ और ममनू (वर्जित) हैं, बाक़ी सात में कोई हर्ज़ नहीं। 'अली जान', 'मोहम्मद जान' का जवाज़ तो ज़ाहिर है कि अस्ली नाम अली और मोहम्मद हैं और 'जान' मोहब्बत के तौर पर ज़्यादा है। हदीस से साबित है कि अल्लाह के महबूबों यानी अंबिया और औलिया (उन पर सलाम और प्रशंसा हो) के मुक़द्दस नामों पर नाम रखना मुस्तहब (पसंदीदा) है, बशर्ते कि वे उनके ख़ास सिफ़ाती नामों में से न हों। हदीस में है, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

अंबिया के नामों पर नाम रखो - इसे बुख़ारी ने 'अदबुल मुफ़रद'[2] में और अबू दाऊद और नसाई ने... से रिवायत किया है।

अंबिया के नामों पर नाम रखो (इमाम बुख़ारी ने 'अदबुल मुफ़रद' में, इमाम अबू दाऊद और नसाई ने...

[1] रदुल मुहतार, किताबुल हज़्र वल इबाहह, फ़स्ल फ़िल बैअ, दारुल इहया-उत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 5/297-298। [2] अदबुल मुफ़रद, बाब: अल्लाह अज्ज़वजल के नज़दीक पसंदीदा नाम, हदीस 813, अल-मकतबतुल असरीया, सांगला, पृ. 211; अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब: नामों को बदलने के बारे में, आफ़ताबे आलम प्रेस, लाहौर, 2/320; सुनन अल-नसाई, किताबुल ख़ैल, बाब: घोड़ों की खूबियों में से क्या मुस्तहब है, नूर मोहम्मद कुतुब ख़ाना, कराची, 2/122।

تبیین المحارم واقام الطامة الکبری علی المتسمین بمثل ذلك وانه من التزکیة المنهي عنها في القرآن ومن الکذب قال ونظیره ما یقال للمدرسین بالترکي افندي وسلطانم ونحوه ثم قال فان قیل هذه مجازات صارت کالاعلام فخرجت عن التزکیة فالجواب ان هذا یرده ما یشاهد من انه اذا نودی باسمه العلم وجد علی من ناداه به فعلم ان التزکیة باقیة الخ۔

تبیین المحارم میں، اور اس طرح کے نام رکھنے والوں کے خلاف حجت قاہرہ قائم کی اور فرمایا کہ تحقیق یہ وہ تزکیہ ہے جس سے قرآن مجید میں منع کیا گیا ہے اور جھوٹ سے ہے، اور کہا مثل اس کے وہ جو کہا جاتا ہے واسطے مدرسین کے ترکی میں آفندی و سلطانم، اور اس کی مثل پھر کہا ہے پس اگر کہا جائے یہ مجازات ہیں جو ناموں کی طرح ہو گئے ہیں پس تزکیہ سے نکل گئے تو جواب یہ ہے کہ ہمارا مشاہدہ اس بات کو رد کرتا ہے کیونکہ اگر ان اشخاص کو ان کے اسماء اعلام سے پکارا جائے تو پکارنے والے پر لوگ غصہ کریں گے، پس معلوم ہوا کہ تزکیہ کے لئے باقی ہے الخ (ت)

سترہ نام کہ سائل پوچھے ان میں سے یہ دس ناجائز و ممنوع ہیں باقی سات میں حرج نہیں، علی جان، محمد جان کا جواز تو ظاہر کہ اصلی نام علی و محمد ہے اور جان بنظر محبت زیادہ، اور حدیث سے ثابت کہ محبوبان خدا انبیاء و اولیاء علیہم الصلوۃ والثناء کے اسمائے طیبہ پر نام رکھنا مستحب ہے جبکہ ان کے مخصوصات سے نہ ہو۔ حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

تسموا باسماء الانبياء-رواه البخاری فی الادب انبیاء کے ناموں پر نام رکھو (امام بخاری نے ادب المفرد[2] وابو داؤد والنسائی عن المفرد میں، امام ابوداؤد اور نسائی نے

---

1 ردالمحتار کتاب الحظر والاباحة فصل فی البیع دار احیاء التراث العربي بیروت ۵/ ۲۹۸-۲۹۷ 2 ادب المفرد باب احب الاسماء الی اللہ عزوجل حدیث ۸۱۳ المکتبة الاثریة سانگلہ ص ۲۱۱، ابوداؤد کتاب الادب باب فی تغییر الاسماء آفتاب عالم پریس لاہور ۲ /۳۲۰، سنن النسائی کتاب الخیل باب ما یستحب من شیة الخیل نور محمد کتب خانہ کراچی ۲ /۱۲۲

Fatawa Razawiyya Volume 24

“Abi Wahb al-Jushami, and it has a supplement, and al-Bukhari in 'At-Tarikh'[1] with the wording 'Sammu' (name [your children]) on the authority of Abdullah bin Jarrad (may Allah be pleased with him), and it has another supplement.” Abu Wahb Jushami narrated it with reference to him, and there is a supplement for it; also, Imam Bukhari in his 'At-Tarikh' narrated it with the word 'Sammu' as a Sunnah of Hazrat Abdullah bin Jarrad (may Allah be pleased with him), and there is another supplement for it. (T)

And regarding the virtues of the names Muhammad and Ahmad, numerous great and magnificent Hadiths have been narrated: Hadith (1) is in Sahihain, Musnad Ahmad, Jami' at-Tirmidhi, and Sunan Ibn Majah on the authority of Hazrat Anas, (2) in Sahihain and Ibn Majah on the authority of Hazrat Jabir, (3) in al-Mu'jam al-Kabir of at-Tabarani on the authority of Hazrat Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them), the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Summū bi-ismī wa-lā takannū bi-kunyatī[2] — **“Keep names after my name and do not keep my Kunya (patronymic).”**

Hadith (4) Ibn Asakir and Hafiz Husain bin Ahmad Abdullah bin Kathir narrated from Hazrat Abu Umamah (may Allah be pleased with him), the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Man wulida lahū mawlūdun fa-sammāhu Muhammadan hubban lī wa-tabarrukan bi-ismī kāna huwa wa-mawlūduhū fī al-jannah[3] — **“To whomever a boy is born, and out of my love and for blessings from my pure name, he names him Muhammad, both he and his boy shall enter Heaven.”**

---

[1] *At-Tarikh al-Kabir* of al-Bukhari, Chapter 'Ain', Abdullah bin Jarrad, Hadith 63, Dar al-Baz Makkah al-Mukarramah 5 / 35 [2] *Sahih al-Bukhari*, Kitab al-Adab, Chapter 'Man Samma bi-Asma al-Anbiya', Qadeemi Kutub Khana Karachi 2 / 915; *Sahih Muslim*, Kitab al-Adab, Chapter 'An-Nahy 'an at-Takanni bi-Abi al-Qasim', Qadeemi Kutub Khana Karachi 2 / 206; *Jami' at-Tirmidhi*, Abwab al-Adab, Chapter 'Ma Jaa fi Karahiya al-Jam' etc.', Amin Company Delhi 2 / 107; *Sunan Ibn Majah*, Abwab al-Adab, Chapter 'Al-Jam' baina Ism an-Nabi wa Kunyatihi', H.M. Saeed Company Karachi p. 372; *Musnad Ahmad bin Hanbal* from Anas, Al-Maktab al-Islami Beirut 3 / 170; *Al-Mu'jam al-Kabir* Hadith 12513, Al-Maktaba al-Faysaliyyah Beirut 12 / 37; *Kanz al-Ummal* with reference to Tab (Tabarani) from Ibn Abbas, Hadith 45212, Muassasatu ar-Risalah Beirut 16 /

421. [3] *Kanz al-Ummal* with reference to ar-Rafi'i from Abu Umamah, Hadith 45223, Muassasatu ar-Risalah Beirut 16 / 422.

फतावा रज़विय्या जिल्द २४

"अबी वहब अल-जुशमी और उनके लिए एक पूरक (ततम्मा) है, और अल-बुखारी ने 'अत-तारीख़'[1] में 'सम्मू' (नाम रखो) के शब्दों के साथ हज़रत अब्दुल्ला बिन जर्राद (रज़ियल्लाहु अन्हु) के हवाले से रिवायत किया है, और इसके लिए एक दूसरा पूरक भी है।" अबू वहब जुशमी के हवाले से इसे रिवायत किया गया और इसके लिए पूरक है, साथ ही इमाम बुखारी ने तारीख़ में 'सम्मू' के शब्द से हज़रत अब्दुल्ला बिन जर्राद (रज़ियल्लाहु अन्हु) की सुन्नत के साथ इसे रिवायत किया और इसके लिए दूसरा पूरक है। (त)

और मुहम्मद और अहमद नामों की फज़ीलत के बारे में तो बहुत सी अज़ीम हदीसें वारिद हुई हैं: हदीस (१) सहीहैन, मुस्नद अहमद, जामिअ तिर्मिज़ी और सुनन इब्न माजा में हज़रत अनस से है, (२) सहीहैन और इब्न माजा में हज़रत जाबिर से है, (३) मुअजम कबीर तबरानी में हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से है, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

सम्मू बि-इस्मी वला तकन्नू बि-कुन्नियती[2] — **मेरे नाम पर नाम रखो और मेरी कुन्नियत न रखो।**

हदीस (४) इब्न असाकिर और हाफ़िज़ हुसैन बिन अहमद अब्दुल्ला बिन कसीर, हज़रत अबू उमामा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रावी हैं, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

मं वुलिदा लहू मौलूदुन फ-सम्माहु मुहम्मदन हुब्बन ली व-तबर्रुकन बि-इस्मी काना हुवा व मौलूदुहू फ़िल जन्नह[3] — **जिसके यहाँ लड़का पैदा हुआ और उसने मेरी मुहब्बत में और मेरे पाक नाम से बरकत हासिल करने के लिए उसका नाम मुहम्मद रखा, वह और उसका लड़का दोनों जन्नत में जाएँगे।**

---

[1] अत-तारीख़ अल-कबीर लिल-बुखारी, बाबुल ऐन, अब्दुल्ला बिन जर्राद, हदीस ६३, दार अल-बाज़ मक्का अल-मुकर्रमा ५ / ३५ [2] सहीह अल-बुखारी, किताबुल अदब, बाब मन सम्मा बि-अस्मा अल-अंबिया, कदीमी कुतुब खाना कराची २ / ९१५; सहीह मुस्लिम, किताबुल अदब, बाब अन-नही अनित-तकन्नी बि-अबी अल-कासिम, कदीमी कुतुब खाना कराची २ / २०६; जामिअ अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुल अदब, बाब मा जाआ फी कराहियह अल-जमअ अलख, अमीन कंपनी दिल्ली २ / १०७; सुनन इब्न माजा, अबवाबुल अदब, बाब अल-जमअ बैना इस्मन-नबी व कुन्नियतिही, एच.एम. सईद कंपनी कराची पृ. ३७२; मुस्नद अहमद बिन हंबल अन अनस, अल-मक्तब अल-इस्लामी बैरुत ३ / १७०;

अल-मुअजम अल-कबीर हदीस १२५१३, अल-मक्तबह अल-फैसलिय्या बैरुत १२ / ३७; कंज़ुल उम्माल बहवाला तबरानी अन इब्न अब्बास, हदीस ४५२१२, मुअस्ससतुर रिसाला बैरुत १६ / ४२१. [3] कंज़ुल उम्माल बहवाला अर-राफेई अन अबी उमामा, हदीस ४५२२३, मुअस्ससतुर रिसाला बैरुत १६ / ४२२.

पृष्ठ ६८७/७२०

ابي وهب الجشمي وله تتمة والبخاري في التاريخ[1] بلفظ سموا عن عبدالله بن جراد رضي الله تعالی عنه وله تتمة اخری۔ ابو وھب جشمی کے حوالے سے اسے روایت کیا اور اس کے لئے تتمہ ہے، نیز امام بخاری نے تاریخ میں سَمُّوْا کے لفظ سے حضرت عبداللہ بن جراد رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی سنت کے ساتھ اسے روایت کیا اور اس کے لئے دوسرا تتمہ ہے۔ (ت)

اور محمد و احمد ناموں کے فضائل میں تو احادیث کثیرہ عظیمہ جلیلہ وارد ہیں: حدیث (۱) صحیحین و مسند احمد و جامع ترمذی و سنن ابن ماجہ میں حضرت انس (۲) صحیحین و ابن ماجہ میں حضرت جابر (۳) معجم کبیر طبرانی میں حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے ہے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

سموا باسمی ولا تکنوا بکنیتی[2] — **میرے نام پر نام رکھو اور میری کنیت نہ رکھو۔**

حدیث (۴) ابن عساکر و حافظ حسین بن احمد عبداللہ بن کثیر حضرت ابو امامہ رضی اللہ عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں :

من ولد له مولود فسماه محمدا حبا لی وتبرکا باسمی کان هو و مولوده فی الجنة[3] — **جس کے لڑکا پیدا ہوا اور وہ میری محبت اور میرے نام پاک سے تبرک کے لئے اس کا نام محمد رکھے وہ اور اس کا لڑکا دونوں بہشت میں جائیں۔**

---

[1] التاریخ الکبیر للبخاري باب العین عبداللہ بن جراد حدیث ۶۳ دار الباز مکة المکرمة ۵ / ۳۵ [2] صحیح البخاري کتاب الادب باب من سمی باسماء الانبیاء قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۹۱۵، صحیح مسلم کتاب الادب باب النهي عن التکنی بابی القاسم قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۲۰۶، جامع الترمذی ابواب

الادب باب ماجاء فی کراهیة الجمع الخ امین کمپنی دہلی ۲ / ۱۰۷، سنن ابن ماجه ابواب الادب باب الجمع بین اسم النبی وکنیته ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۳۷۲، مسند احمد بن حنبل عن انس المکتب الاسلامی بیروت ۳ / ۱۷۰، المعجم الکبیر حدیث ۱۲۵۱۳ المکتبة الفیصلیة بیروت ۱۲ / ۳۷، کنز العمال بحواله طبع عن ابن عباس حدیث ۴۵۲۱۲ موسسة الرساله بیروت ۱۶ / ۴۲۱ [3] کنز العمال بحواله الرافعی عن ابی امامه حدیث ۴۵۲۲۳ موسسة الرساله بیروت ۱۶ / ۴۲۲

Fatawa Rizvia, Volume 24

Imam Khatam al-Huffaz Jalal al-Millah wa al-Din al-Suyuti says: “This is the best hadith reported on this subject, and its chain of narration (isnad) is good (hasan).” Out of all the hadiths that have come regarding this matter, this one is the best, and its chain is 'hasan'.

And his Shami student disputed with him on what Allama Zarqani had refuted, so refer to it. (T)

Hadith (5): Hafiz Abu Tahir Silafi and Hafiz ibn Bukayr narrate from Hazrat Anas (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) said: "On the Day of Judgment, two persons will be brought before the presence of the Almighty. It will be ordered: 'Take them to Paradise.' They will submit: 'O Lord! By what action did we become worthy of Paradise? We have done no deed [deserving] of Paradise.' The Lord Almighty will say: 'Enter Paradise, for I have sworn to Myself that no one whose name is Ahmad or Muhammad shall enter the Fire.' Go into Paradise; I have taken an oath that he whose name is Ahmad or Muhammad shall not go to Hell."

This means as long as he is a believer (mumin), and in the terminology of the Quran, Hadith, and Companions, a believer is only he who is a Sunni with correct beliefs (Sahi-ul-Aqida), as the Imams have clarified in 'At-Tawdih' etc. (As the esteemed Imams have stated in At-Tawdih etc. - T). Otherwise, for those with corrupted beliefs (bad-mazhab), the hadiths state that they are the dogs of Hell, no deed of theirs is accepted. Even if a person with corrupted beliefs is murdered oppressedly between the Hajar al-Aswad (Black Stone) and Maqam Ibrahim, and remains patient and seeks reward for being killed, even then Allah Almighty will not look upon any of his affairs and will cast him into Hell. These hadiths have been narrated by Daraqutni, Ibn Majah, Bayhaqi, Ibn al-Jawzi, and others from Hazrat Abu Umama, Hudhayfah, and Anas (may Allah be pleased with them), and this humble servant (faqir) has written them in several places in his fatwas, especially regarding Muhammad ibn Abd al-Wahhab.

---

1. Radd al-Muhtar with reference to al-Suyuti, Book of Prohibition and Permission, Section on Sale, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/268.
2. Al-Firdaws bi Ma'thur al-Khitab, Hadith 8837, Dar al-Kutub al-Ilmiyya, Beirut, 5/485.

3. Kanz al-Ummal with reference to Qat fi al-Afrad, Hadith 1145, Mu'assasat al-Risala, Beirut, 1/223; Al-Ilal al-Mutanahiyah, Chapter on Condemnation of the Khawarij, Hadiths 261 & 262, Dar Nashr al-Kutub al-Islamiyah, Lahore, 1/163.

फ़तावा रज़विया, जिल्द २४

इमाम ख़ातम उल हुफ़्फ़ाज़ जलाल उल मिल्लत वद-दीन सुयूती फरमाते हैं: "यह इस विषय में वर्णित सबसे अच्छी हदीस है और इसकी सनद (इसनाद) हसन है।" इस विषय में जितनी भी हदीसें आई हैं, यह उन सब में बेहतर है और इसकी सनद हसन है।

और उनके शामी शागिर्द ने इसमें उनसे विवाद किया जिसे अल्लामा ज़रक़ानी ने रद्द किया था, अतः उसकी ओर रुजू (संदर्भ) करें। (त)

हदीस (५): हाफ़िज़ अबू ताहिर सिलफ़ी और हाफ़िज़ इब्न बुकैर हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "क़यामत के दिन दो व्यक्ति अल्लाह की बारगाह में खड़े किए जाएंगे। हुक्म होगा कि इन्हें जन्नत में ले जाओ। वे अर्ज़ करेंगे: ऐ अल्लाह! हम किस अमल पर जन्नत के काबिल हुए? हमने तो जन्नत का कोई काम नहीं किया। रब तआला फ़रमाएगा: 'जन्नत में दाख़िल हो जाओ, क्योंकि मैंने अपने आप पर ये लाज़िम कर लिया है कि जिसका नाम अहमद या मुहम्मद हो, वो आग में दाख़िल न हो।' जन्नत में जाओ, मैंने क़सम खाई है कि जिसका नाम अहमद या मुहम्मद होगा, वो दोज़ख में नहीं जाएगा।"

यानी जब कि मोमिन हो और मोमिन क़ुरआन, हदीस और सहाबा की परिभाषा में उसी को कहते हैं जो सुन्नी सहीह उल अक़ीदा हो, जैसा कि अइम्मा-ए-किराम ने 'अत-तौदीह' आदि में इसकी वज़ाहत फ़रमाई है। (जैसा कि तौदीह आदि में अइम्मा-ए-किराम ने इसकी तसरीह (स्पष्टीकरण) फ़रमाई है। त) वरना बद-मज़हबों के लिए तो हदीसें ये इरशाद फ़रमाती हैं कि वे जहन्नुम के कुत्ते हैं, उनका कोई अमल क़बूल नहीं। बद-मज़हब अगरचे हजर-ए-अस्वद और मक़ाम-ए-इब्राहीम के दरमियान मज़लूम क़त्ल किया जाए और अपने इस मारे जाने पर साबिर और तालिब-ए-सवाब रहे, तब भी अल्लाह अज़्ज़वजल उसकी किसी बात पर नज़र न फ़रमाएगा और उसे जहन्नुम में डाल देगा। ये हदीसें दार-क़ुत्नी, इब्न माजा, बैहक़ी, इब्न अल-जौज़ी आदि ने हज़रत अबू उमामा, हुज़ैफ़ा और अनस (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से रिवायत की हैं, और फ़क़ीर ने अपने फ़तावा में अनेक जगह लिखी हैं, ख़ुसूसन मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब के बारे में।

---

1. रद्द उल मुख्तार बहवाला सुयूती, किताब उल हज्र वल इबाहत, फ़स्ल फ़िल बैअ, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, ५/२६८।

2. अल-फिरदौस बि मअथूर अल-खिताब, हदीस ८८३७, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, ५/४८५।
3. कंज़ उल उम्माल बहवाला क़त फ़िल अफ़राद, हदीस ११४५, मुअस्सत अर-रिसाला, बेरुत, १/२२३; अल-इल्ल अल-मुतनाहिया, बाब ज़म अल-ख़वारिज, हदीस २६१ और २६२, दार नश्र अल-कुतुब अल-इस्लामिया, लाहौर, १/१६३।

पृष्ठ ६८८ / ७२०

امام خاتم الحفاظ جلال الملۃ والدین سیوطی فرماتے ہیں: ھذا امثل حدیث ورد في ھذا الباب واسنادہ حسن ۱ جس قدر حدیثیں اس باب میں آئیں یہ سب میں بہتر ہے اور اس کی سند حسن ہے۔

و نازعہ تلمیذہ الشامی بمارده العلاقة الزرقانی فراجعہ۔ ان کے شامی شاگرد نے اس میں نزاع کیا کہ جس کو علامہ زرقانی نے رّد کیا تھا لہٰذا اس کی طرف رجوع کریں۔ (ت)

حدیث (۵) حافظ ابوطاہر سلفی و حافظ ابن بکیر حضرت انس رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں: روزِ قیامت دو شخص حضرت عزت کے حضور کھڑے کئے جائیں گے حکم ہوگا انہیں جنت میں لے جاؤ، عرض کریں گے: الٰہی! ہم کس عمل پر جنت کے قابل ہوئے ہم نے تو کوئی کام جنت کا نہ کیا۔ رب عزوجل فرمائے گا: ادخلا الجنة فانی الیت علی نفسی ان لایدخل النار من اسمہ احمد ومحمد ۲ جنت میں جاؤ میں نے حلف فرمایا ہے کہ جس کا نام احمد یا محمد ہو دوزخ میں نہ جائے گا۔

یعنی جبکہ مومن ہو ار مومن عرف قرآن و حدیث و صحابہ میں اسی کو کہتے ہیں جو سنی صحیح العقیدہ ہو، کما نص علیہ الائمة فی التوضیح وغیرہ (جیسا کہ توضیح وغیرہ میں ائمہ کرام نے اس کی تصریح فرمائی ہے۔ ت) ورنہ بد مذہبوں کے لئے تو حدیثیں یہ ارشاد فرماتی ہیں کہ وہ جہنم کے کتے ہیں ان کا کوئی عمل قبول نہیں، بد مذہب اگرچہ حجر اسود و مقام ابراہیم کے درمیان مظلوم قتل کیا جائے اور اپنے اس مارے جانے پر صابر و طالب ثواب رہے جب بھی اللہ عزوجل اس کی کسی بات پر نظر نہ فرمائے اور اسے جہنم میں ڈالے۔ یہ حدیثیں دار قطنی و ابن ماجہ و بیہقی ۳ و

ابن الجوزی و غیر ہم نے حضرت ابوامامہ و حذیفہ و انس رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے روایت کیں، اور فقیر نے اپنے فتاویٰ میں متعدد جگہ لکھیں تو محمد عبدالوہاب۔

---

۱ ردالمحتار بحوالہ السیوطی کتاب الحظر والاباحة فصل فی البیع دار احیاء التراث العربی بیروت ۵ / ۲۶۸ ۲ الفردوس بمأثور الخطاب حدیث ۸۸۳۷ دار الکتب العلمیة بیروت ۵ / ۴۸۵ ۳ کنز العمال بحوالہ قط فی الافراد حدیث ۱۱۴۵ مؤسسة الرسالہ بیروت ۱ / ۲۲۳، العلل المتناهیة باب ذم الخوارج حدیث ۲۶۱ و ۲۶۲ دار نشر الکتب الاسلامیہ لاہو را / ۱۶۳

Fatawa Razawiyya, Vol. 24

For the Najdi and other misguided people, there is absolutely no glad tidings in these Hadiths, nor for disbelievers like Sayyid Ahmed Khan whose creed is absolute disbelief, for whom even the fragrance of Paradise is certainly forbidden.

Hadith (6): Abu Nuaim narrates in 'Hilyat al-Awliya' from Hazrat Nabit bin Sharait (may Allah be pleased with them both) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) said:

[Arabic Box 1]: Allah Almighty said: "By My Might and My Majesty, I shall not punish with fire anyone named after your name, O Muhammad."[1] [Urdu Translation in Box 1]: The Lord, Mighty and Majestic, said to me: "By the oath of My Might and Majesty, I will not give the punishment of Hell to one whose name is based on your name."

Hadith (7): Hafiz Ibn Bukayr narrates from the Commander of the Faithful, Mawla Ali (may Allah honor his face), that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said; Hadith (8): Daylami in 'Musnad al-Firdous' narrates as a Mawquf report that Mawla Ali (may Allah honor his face) said; Hadith (9): Ibn Adi in 'Al-Kamil' and Abu Sa'ad al-Naqqash with a sound chain in his 'Mu'jam al-Shuyukh' narrate that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) said:

[Arabic Box 2]: "No food is eaten at a table, and no one sits at it, while my name is present among them, except that they are sanctified twice every day."[2] [Urdu Translation in Box 2]: "The dining mat at which people sit to eat, and among them is someone named Muhammad or Ahmad, those people will be sanctified twice every day."

The result is that in whatever house there is a person with these pure names, Allah's mercy descends upon the residence twice a day. Therefore, the words of the Hadith from the Commander of the Faithful are these:

[Arabic Box 3]: "There is no table spread upon which someone named Ahmad or Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him and his family) attends, except that Allah sanctifies that house twice every day."[3] [Urdu Translation in Box 3]: "No dining mat is spread such that a person whose name is Ahmad or Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him and his family) comes to it, but that Allah Almighty sanctifies that house twice every day; meaning He makes it holy (and every day His mercies descend there twice. - Translator). (T)"

Footnotes: [1] Tazkirat al-Mawdu'at by Muhammad Tahir al-Fatani, Chapter: Virtue of his name and the name of the Prophets, Kutub Khana Majidiya Multan, p. 89. [2] Al-Kamil by Ibn Adi, biography of Ahmad ibn Kinanah al-Shami, Dar al-Fikr Beirut, 1/172. [3] Al-Firdous bi Ma'thur al-Khitab from Ali ibn Abi Talib, Hadith 7213, Dar al-Kutub al-Ilmiyya Beirut, 4/43-44.

फ़तावा रज़विया, खंड २४

नजदियों और अन्य गुमराह लोगों के लिए इन हदीसों में कतई कोई शुभ समाचार नहीं है, न ही सैयद अहमद खान जैसे काफिरों के लिए, जिनका अकीदा (पंथ) पूर्ण कुफ्र (अधर्म) है, जिनके लिए जन्नत की खुशबू तक निश्चित रूप से हराम (वर्जित) है।

हदीस (६): अबू नुइम ने 'हिल्यतुल औलिया' में हज़रत नबीत बिन शरीत रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं:

[अरबी बॉक्स १]: अल्लाह तआला ने फरमाया: "मेरी इज़्ज़त और मेरे जलाल की कसम, ऐ मुहम्मद! मैं आग से उसे अज़ाब नहीं दूँगा जिसका नाम आपके नाम पर होगा।"[1] [उर्दू अनुवाद बॉक्स १]: रब अज़्ज़ व जल्ल ने मुझसे फरमाया: "अपनी इज़्ज़त व जलाल की कसम, जिस का नाम तुम्हारे नाम पर होगा उसे दोज़ख (नरक) का अज़ाब नहीं दूँगा।"

हदीस (७): हाफिज़ इब्न बुकीर ने अमीरुल मोमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु वज्हुल करीम से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं; हदीस (८): दैलमी ने 'मुसनदुल फिरदौस' में मौक़ूफ़न (मौला अली के कौल के तौर पर) रिवायत की है कि मौला अली कर्रमल्लाहु वज्हहु फरमाते हैं; हदीस (९): इब्न अदी ने 'कामिल' में और अबू साद नक्कास ने सही सनद के साथ अपने 'मोजमुश शयूख' में रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं:

[अरबी बॉक्स २]: "जिस दस्तरख्वान (भोजन के मैट) पर खाना खाया जाए और उस पर बैठने वालों में मेरा नाम (यानी मुहम्मद या अहमद नाम का कोई व्यक्ति) हो, तो उन पर हर दिन दो बार पवित्रता (बरकत) उतारी जाती है।"[2] [उर्दू अनुवाद बॉक्स २]: "जिस दस्तरख्वान पर लोग बैठकर खाना खाएं और उनमें कोई मुहम्मद या अहमद नाम का हो, वे लोग हर दिन दो बार पवित्र किए जाएं।"

निष्कर्ष यह है कि जिस घर में इन पवित्र नामों का कोई व्यक्ति हो, वहां दिन में दो बार अल्लाह की रहमत का नुज़ूल (अवतरण) होता है। अतः अमीरुल मोमिनीन की हदीस के शब्द ये हैं:

[अरबी बॉक्स ३]: "ऐसा कोई दस्तरख्वान नहीं बिछाया गया जिस पर अहमद और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के नाम वाला कोई व्यक्ति उपस्थित हो, मगर यह कि अल्लाह तआला उस घर को हर दिन दो बार पवित्र करता है।"[3] [उर्दू अनुवाद बॉक्स ३]: "कोई दस्तरख्वान नहीं बिछाया गया कि उस पर ऐसा व्यक्ति तशरीफ़ लाए जिसका नाम अहमद और मुहम्मद हो

(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), तो अल्लाह तआला हर रोज़ दो बार उस घर को तक़द्दुस (पवित्रता) बख्शता है, यानी पवित्र करता है (और हर रोज़ दो बार वहाँ उसकी रहमतों का नुज़ूल होता है। - अनुवादक)। (त)"

पादलेख (फुटनोट्स): १. तज़किरतुल मौज़ूआत, मुहम्मद ताहिर अल-फत्नी, अध्याय: उनके नाम और नबियों के नाम की फज़ीलत, कुतुब खाना मजीदिया मुल्तान, पृष्ठ ८९। २. अल-कामिल, इब्न अदी, अहमद बिन किनाना शामी की जीवनी, दारुल फिक्र बेरुत, १/१७२। ३. अल-फिरदौस बि मासुर अल-खिताब, अली इब्न अबी तालिब से, हदीस ७२१३, दारुल कुतुब अल-इलमिया बेरुत, ४/४३-४४।

पृष्ठ ७२० में से ६८९

نجدی وغیرہ گمراہوں کے لئے ان حدیثوں میں اصلاً بشارت نہیں، نہ کہ سید احمد خان کی طرح کفار جن کا مسلک کفرِ قطعی کہ کافر پر تو جنت کی ہوا تک یقیناً حرام ہے۔

حدیث (۶) ابونعیم حلیۃ الاولیاء میں حضرت نبیط بن شریط رضی اللہ تعالٰی عنہما سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں:

[عربی باکس ۱]: قال اللہ تعالٰی عز وجل و عزتی و جلالی لا اعذب احدا تسمی باسمک بالنار یا محمد

1 [اردو ترجمہ باکس ۱]: رب عز و جل نے مجھ سے فرمایا اپنی عزت و جلال کی قسم جس کا نام تمہارے نام پر ہوگا اسے دوزخ کا عذاب نہ دوں گا۔

حدیث (۷) حافظ ابن بکیر امیر المومنین مولٰی علی کرم اللہ وجہہ سے راوی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں، حدیث (۸) دیلمی مسند الفردوس میں موقوفاً راوی کہ مولی علی کرم اللہ وجہہ فرماتے ہیں، حدیث (۹) ابن عدی کامل اور ابو سعد نقاش بسند صحیح اپنے معجم شیوخ میں راوی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں:

[عربی باکس ۲]: ما اطعم طعام علی مائدۃ ولا جلس علیھا وفیھا اسمی الا قدّسوا کل یوم مرتین 2

[اردو ترجمہ باکس ۲]: جس دستر خوان پر لوگ بیٹھ کر کھانا کھائیں اور ان میں کوئی محمد یا احمد نام کا ہو وہ لوگ ہر روز دو بار مقدس کئے جائیں۔

حاصل یہ جس گھر میں ان پاک ناموں کا کوئی شخص ہو دن میں دو بار امکان میں رحمت الہی کا نزول ہو۔ لہذا حدیث امیر المؤمنین کے لفظ یہ ہیں:

[عربی باکس ۳]: مامن مائدة وضعت فحضر علیها من اسمه احمد و محمد الا قدس الله ذلك المنزل کل یوم مرتین 3 [اردو ترجمہ باکس ۳]: کوئی دسترخوان بچھایا نہیں گیا کہ اس پر ایسا شخص تشریف لائے جس کا نام احمد اور محمد ہو (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) تو اللہ تعالیٰ ہر روز دو بار اس گھر کو تقدس بخشتا ہے یعنی مقدس کرتا ہے (اور ہر روز دو بار وہاں اس کی رحمتوں کا نزول ہوتا ہے ۔ مترجم) ۔ (ت)

حواشی: 1 تذکرۃ الموضوعات لمحمد طاہر الفتنی باب فضل اسمه و اسم الانبیاء کتب خانہ مجیدیہ ملتان ص ۸۹ 2 الکامل لابن عدی ترجمہ احمد بن کنانہ شامی دار الفکر بیروت ۱ / ۱۷۲ 3 الفردوس بماثور الخطاب عن علی ابن ابی طالب حدیث ۷۲۱۳ دار الکتب العلمیہ بیروت ۴ / ۴۴، ۴۳

Fatawa Razawiyya, Volume 24

Hadith (10): Ibn Sa'd in Al-Tabaqat narrates from 'Uthman al-'Umari as Mursal, that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: - Arabic text: مَا ضَرَّ أَحَدَكُمْ لَوْ كَانَ فِي بَيْتِهِ مُحَمَّدٌ وَ مُحَمَّدَانِ وَ ثَلَاثَةٌ - Urdu translation: What harm would it do to any of you if there were one Muhammad, two Muhammads, or three Muhammads in his house?

Therefore, this humble servant (may Allah forgive him) named all his sons and nephews 'Muhammad' at their aqiqah (naming ceremony), then for the sake of preserving the respect of the holy name and for mutual distinction, assigned separate nicknames. By the grace of Allah, five 'Muhammads' of this humble servant are present now. May Allah Almighty keep them safe, grant them well-being, and elevate them to the stages of perfection (May Allah keep them all safe and healthy and make them reach the levels of perfection. - T). And more than five have passed away. May Allah make them a reward, treasure, and forerunner for us by His mercy and by the honor of the name Muhammad in His presence, Ameen (May Allah Almighty, for the sake of His mercy and the honor and respect of the name Muhammad that is in His presence, make His mercy and their personalities a means of reward, treasure, and forerunner for us, Ameen. - T).

Hadith (11): Tara'ifi and Ibn al-Jawzi narrate from the Commander of the Faithful, [Ali] al-Murtada (may Allah Almighty ennoble his face), that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: - Arabic text: مَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ قَطُّ فِي مَشُورَةٍ وَفِيهِمْ رَجُلٌ اسْمُهُ مُحَمَّدٌ لَمْ يُدْخِلُوهُ فِي مَشُورَتِهِمْ إِلَّا لَمْ يُبَارَكْ لَهُمْ فِيهِ - Urdu translation: Whenever a group gathers for any consultation and there is a person named Muhammad among them, and they do not include him in their consultation, blessing will not be placed for them in their consultation.

Hadith (12): Tabarani in Al-Mu'jam al-Kabir narrates from Hazrat Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them both), that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: - Arabic text: مَنْ وُلِدَ لَهُ ثَلَاثَةٌ فَلَمْ يُسَمِّ أَحَدَهُمْ مُحَمَّدًا فَقَدْ جَهِلَ - Urdu translation: One who has three sons born to him and does not name any of them Muhammad is surely ignorant.

1. Kanz al-Ummal, with reference to Ibn Sa'd from Uthman al-Umari, Mursal, Hadith 45205, Mu'assasat ar-Risalah Beirut 16/419.

2. Al-Ilal al-Mutanahiya, Chapter on the Virtue of His Name (peace be upon him), Hadith 726, Dar Nashr al-Kutub al-Islamiyyah Lahore 1/128.
3. Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 11007, Al-Maktabah al-Faysaliyyah Beirut 11/71.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

हदीस (10): इब्न साद ने 'तबाक़ात' में उस्मान उमरी से मुरसलन रिवायत किया, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाता हैं: - अरबी पाठ: مَا ضَرَّ أَحَدَكُمْ لَوْ كَانَ فِي بَيْتِهِ مُحَمَّدٌ وَ مُحَمَّدَانِ وَ ثَلَاثَةٌ - उर्दू अनुवाद: तुममें से किसी का क्या नुकसान है अगर उसके घर में एक मुहम्मद या दो मुहम्मद या तीन मुहम्मद हों।

और इसलिए इस फ़क़ीर (अल्लाह तआला उसकी मग़फ़िरत फ़रमाए) ने अपने सब बेटों और भतीजों का अक़ीक़े में सिर्फ़ मुहम्मद नाम रखा, फिर नाम-ए-अक़दस के अदब की हिफ़ाज़त और आपस में पहचान के लिए अलग-अलग उर्फ़(उपनाम) मुक़र्रर किए। अल्हम्दुलिल्लाह फ़क़ीर के पाँच 'मुहम्मद' अब मौजूद हैं, सल्लमहमुल्लाहु तआला व आफ़ाहुम इला मदारिजिल कमाल रक़ाहुम (अल्लाह तआला उन सबको सलामत रखे और आफ़ियत बख्शे और उन्हें कमाल के दर्जों तक पहुँचाए। -त) और पाँच से ज़्यादा चले गए, जा'अलहुमुल्लाहु लना जज़ाअंव व ज़ुखरंव व फ़ुरतन बिरहमतिही व बिजाहि इस्मि मुहम्मदिन इन्दहू आमीन (अल्लाह तआला अपनी रहमत के सदक़े और इस्म-ए-मुहम्मद की उस इज़्ज़त व तौक़ीर के सदक़े जो उसकी बारगाह में है, हमारे लिए अपनी रहमत और उनकी ज़ात को ज़रिया-ए-अज्र, ज़ख़ीरा और पेशरौ बना दे, आमीन। -त)।

हदीस (11): तराइफ़ी और इब्न-उल-जौज़ी अमीरुल मोमिनीन मुर्तज़ा (करमल्लाहु तआला वज्हहुल अस्ना) से रिवायत करते हैं, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: - अरबी पाठ: مَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ قَطُّ فِي مَشُورَةٍ وَفِيهِمْ رَجُلٌ اسْمُهُ مُحَمَّدٌ لَمْ يُدْخِلُوهُ فِي مَشُورَتِهِمْ إِلَّا لَمْ يُبَارَكْ لَهُمْ فِيهِ - उर्दू अनुवाद: जब कोई क़ौम किसी मशवरे के लिए जमा हो और उनमें कोई शख़्स मुहम्मद नाम का हो और उसे अपने मशवरे में शरीक न करें, उनके लिए मशवरे में बरकत न रखी जाए।

हदीस (12): तबरानी कबीर में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) से रिवायत है, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: - अरबी पाठ: مَنْ وُلِدَ لَهُ ثَلَاثَةٌ فَلَمْ يُسَمِّ أَحَدَهُمْ مُحَمَّدًا فَقَدْ جَهِلَ - उर्दू अनुवाद: जिसके तीन बेटे पैदा हों और वह उनमें किसी का नाम मुहम्मद न रखे, वह यक़ीनन जाहिल है।

1. कन्ज़ुल उम्माल, बहवाला इब्न साद, उस्मान अल-उमरी से मुरसलन, हदीस 45205, मुअस्ससतुर रिसाला बेरूत 16/419

2. अल-इलालुल मुतनाहिया, बाब फ़ज़्ल इस्मिही (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम), हदीस 726, दार नश्रुल कुतुबुल इस्लामिया लाहौर 1/128
3. अल-मुअजमुल कबीर, हदीस 11007, अल-मकतबतुल फ़ैसलिया बेरूत 11/71

पृष्ठ 690 / 720

حدیث (۱۰) ابن سعد طبقات میں عثمان عمری مرسلاً راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں : - عربی عبارت: مَا ضَرَّ أَحَدَكُمْ لَوْ كَانَ فِي بَيْتِهِ مُحَمَّدٌ وَ مُحَمَّدَانِ وَ ثَلَاثَةٌ ^{1} - اردو ترجمہ: تم میں کسی کا کیا نقصان ہے اگر اس کے گھر میں ایک محمد یا دو محمد یا تین محمد ہوں۔

ولہٰذا فقیر غفراللہ تعالٰی نے اپنے سب بیٹوں بھتیجوں کا عقیقے میں صرف محمد نام رکھا پھر نام اقدس کے حفظ آداب اور باہم تمیز کے لئے عرف جدا مقرر کئے بحمد اللہ تعالٰی فقیر کے پانچ محمد اب موجود ہیں سلمہم اللہ تعالٰی و عافاہم والی مدارج الکمال رقاہم (اللہ تعالٰی ان سب کو سلامت رکھے اور عافیت بخشے اور انہیں مدارج کمال تک پہنچائے۔ ت) اور پانچ سے زائد اپنی رہ گئے جعلھم اللہ لنا جزاء و ذخرا و فرطا برحمتہ وبجزۃ اسم محمد عندہ امین (اللہ تعالٰی اپنی رحمت کے صدقے اور اسم محمد کی اس عزت و توقیر کے صدقے جو اس کی بارگاہ میں ہے ہمارے لئے اپنی رحمت اور ان کی ذات کو ذریعہ اجر، ذخیرہ اور پیشرو بنادے، آمین۔ ت)

حدیث (۱۱) طرائفی و ابن الجوزی امیر المؤمنین مرتضٰی کرم اللہ تعالٰی وجہہ الاسنٰی سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں : - عربی عبارت: مَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ قَطُّ فِي مَشُورَةٍ وَفِيهِمْ رَجُلٌ اسْمُهُ مُحَمَّدٌ لَمْ يُدْخِلُوهُ فِي مَشُورَتِهِمْ إِلَّا لَمْ يُبَارَكْ لَهُمْ فِيهِ ^{2} - اردو ترجمہ: جب کوئی قوم کسی مشورے کے لئے جمع ہو اور ان میں کوئی شخص محمد نام کا ہو اور اسے اپنے مشورے میں شریک نہ کریں ان کے لئے مشورے میں برکت نہ رکھی جائے۔

حدیث (۱۲) طبرانی کبیر میں حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما سے راوی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں : - عربی عبارت: مَنْ وُلِدَ لَهُ ثَلَاثَةٌ فَلَمْ يُسَمِّ أَحَدَهُمْ مُحَمَّدًا فَقَدْ

جَهِلَ ^{3} - اردو ترجمہ: جس کے تین بیٹے پیدا ہوں اور وہ ان میں کسی کا نام محمد نہ رکھے ضرور جاہل ہے۔

1. کنز العمال بحوالہ ابن سعد عن عثمان العمری مرسلاً حدیث ۴۵۲۰۵ مؤسسة الرساله بیروت ۱۶/۴۱۹
2. العلل المتناهية باب فضل اسمه صلى الله تعالى عليه وسلم حدیث ۷۲۶ دار نشر الكتب الاسلاميه لاہور ۱/۱۲۸
3. المعجم الكبير حدیث ۱۱۰۰۷ المكتبة الفيصلية بيروت ۱۱/۷۱

صفحہ ۶۹۰ از ۷۲۰

Fatawa-e-Razawiya, Volume 24

Hadith (13): Hakim and Khatib in 'Tarikh' and Daylami in 'Musnad' narrate from Amir al-Mu'minin, Mawla Ali (may Allah be pleased with him), that the Messenger of Allah (may Allah bless him and grant him peace) says:

[Arabic]: If you name a child Muhammad, then honor him and make room for him in gatherings, and do not make his face look ugly. (1) [Urdu Translation]: When you name a boy Muhammad, honor him and make room for him in the gathering, and do not attribute evil to him, nor pray for evil against him.

Hadith (14): Bazzar narrates in 'Musnad' from Hazrat Abu Rafi' (may Allah be pleased with him), that the Messenger of Allah (may Allah bless him and grant him peace) says:

[Arabic]: If you name (a child) Muhammad, then do not beat him and do not deprive him. (2) [Urdu Translation]: When you name a boy Muhammad, do not hit him and do not keep him deprived.

Hadith (15): In the 'Fatawa' of Imam Shams-ud-Din Sakhawi, it is mentioned that Abu Shu'ayb Harrani narrated from Imam Ata (the great Tabi'i, teacher of the leader of Imams, our master Imam al-A'zam Abu Hanifa, may Allah be pleased with them both):

[Arabic]: Whoever wishes for his wife's pregnancy to be a boy, let him place his hand on her belly and say: 'If it is a boy, I have named him Muhammad,' for then he will be a boy. (3) [Urdu Translation]: One who desires that his wife's pregnancy should result in a boy should place his hand on the woman's belly and say: "If it is a boy, I have named him Muhammad." God willing, it will be a boy.

Our master Imam Malik (may Allah have mercy on him) says:

[Arabic]: There is no household in which the name Muhammad is present but its blessing increases. (4) [Urdu Translation]: A household that has someone named Muhammad has more blessings (Allama Munawi mentioned this in the commentary of 'al-Taysir' under the tenth Hadith, and similarly Allama Zarqani mentioned it in his commentary).

Footnotes: 1. Tarikh Baghdad, biography of Muhammad bin Isma'il al-Alawi 1082, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 3/91. 2. Kashf al-Astar 'an Zawa'id al-Bazzar, chapter on the dignity of the Prophet's name (peace be upon him), Hadith 1988, Beirut, 2/413. 3.

Fatawa Imam Shams-ud-Din Sakhawi. 4. Al-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir, under the Hadith 'Ma darra ahadukum etc.', Maktabat al-Imam al-Shafi'i, Riyadh, 2/352.

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 24

हदीस (13): हाकिम और ख़तीब 'तारीख़' में और दैलमी 'मुसनद' में अमीरुल मोमिनीन मौला अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[अरबी]: जब तुम बच्चे का नाम मुहम्मद रखो, तो उसका सम्मान करो और मजलिस में उसके लिए जगह खुली करो और उसके चेहरे को बुरा न बनाओ। (1) [उर्दू अनुवाद]: जब लड़के का नाम मुहम्मद रखो तो उसकी इज़्ज़त करो और मजलिस में उसके लिए जगह कुशादा करो, और उसे बुराई की तरफ़ निस्बत न करो न ही उस पर बुराई की दुआ करो।

हदीस (14): बज़्ज़ार मुसनद में हज़रत अबू राफ़े (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[अरबी]: जब तुम मुहम्मद नाम रखो तो उसे मारो मत और न ही उसे वंचित रखो। (2) [उर्दू अनुवाद]: जब लड़के का नाम मुहम्मद रखो तो उसे न मारो न महरूम (वंचित) रखो।

हदीस (15): फ़तावा इमाम शम्सुद्दीन सख़ावी में है कि अबू शुऐब हरानी ने इमाम अता (महान ताबई, अइम्मा के पेशवा सय्यदना इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के उस्ताद) से रिवायत की:

[अरबी]: जो चाहे कि उसकी बीवी का हमल (गर्भ) लड़का हो, तो वह अपना हाथ उसके पेट पर रखे और कहे: 'अगर यह लड़का है तो मैंने इसका नाम मुहम्मद रखा', तो वह लड़का ही होगा। (3) [उर्दू अनुवाद]: जो चाहे कि उसकी औरत के हमल में लड़का हो उसे चाहिये अपना हाथ औरत के पेट पर रख कर कहे: अगर लड़का है तो मैंने इसका नाम मुहम्मद रखा। इन्शा अल्लाह अज़्ज़वजल लड़का ही होगा।

सय्यदना इमाम मालिक (रहमतुल्लाहि अलैहि) फ़रमाते हैं:

[अरबी]: जिस घर वालों में मुहम्मद नाम का कोई होता है, उस घर की बरकत बढ़ जाती है। (4) [उर्दू अनुवाद]: जिस घर वालों में कोई मुहम्मद नाम का होता है उस घर की बरकत ज़्यादा होती है (दसवीं हदीस के तहत अल्लामा मुनावी ने इसका ज़िक्र शरह तईसीर में फ़रमाया और इसी तरह अल्लामा ज़रक़ानी ने शरह में)।

फुटनोट्स: 1. तारीख़ बग़दाद, तर्जुमा मुहम्मद बिन इस्माइल अल-अलवी 1082, दारुल किताब अल-अरबी, बेरुत, 3/91। 2. कश्फ़ुल अस्तार अन ज़वाइदिल बज़्ज़ार, बाब करामते इस्मे नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम), हदीस 1988, बेरुत, 2/413। 3. फ़तावा इमाम शम्सुद्दीन सख़ावी। 4. अत-तईसीर शरह अल-जामेउल सग़ीर, हदीस 'मा दर्रा अहदुकुम' आदि के तहत, मकतबा अल-इमाम अल-शाफ़ई, रियाज़, 2/352।

पृष्ठ 691/720

فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۴

حدیث (۱۳) حاکم وخطیب تاریخ اور دیلمی مسند میں امیر المومنین مولیٰ علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

اذا سمیتم الولد محمدا فاکرمواہ واوسعوا لہ في المجلس ولاتقبحوالہ وجھاً - 1 | جب لڑکے کا نام محمد رکھو تو اس کی عزت کرو اور مجلس میں اس کے لئے جگہ کشادہ، اور اسے برائی کی طرف نسبت نہ کرو اس پر برائی کی دعا نہ کرو۔

حدیث (۱۴) بزار مسند میں حضرت ابو رافع رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

اذا سمیتم محمدا فلاتضربوہ ولاتحرموہ - 2 | جب لڑکے کا نام محمد رکھو تو اسے نہ مارو نہ محروم رکھو۔

حدیث (۱۵) فتاویٰ امام شمس الدین سخاوی میں ہے ابوشعیب حرانی نے امام عطا (تابعی جلیل الشان استاذ امام الائمہ سید نا امام اعظم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما) سے روایت کی:

من اراد ان یکون حمل زوجتہ ذکراً فلیضع یدہ علی بطنھا ولیقل ان کان ذکراً فقد سمیتہ محمداً فانہ یکون ذکراً - 3 | جو چاہے کہ اس کی عورت کے حمل میں لڑکا ہو اسے چاہئے اپنا ہاتھ عورت کے پیٹ پر رکھ کر کہے : اگر لڑکا ہے تو میں نے اس کا نام محمد رکھا۔ ان شاء اللہ العزیز لڑکا ہی ہو گا۔

سید نا امام مالک رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

ماكان في اهل بيت اسم محمدا الا كثرت بركته - 4 | جس گھر والوں میں کوئی محمد نام کا ہوتا ہے اس گھر کی برکت زیادہ ہوتی ہے (دسویں حدیث کے ذیل میں علامہ منادی نے اس کو شرح تیسیر میں ذکر فرمایا اور اسی طرح علامہ زرقانی نے ذکرہ المناوی فی شرح التیسیر تحت الحدیث العاشر والزرقانی فی شرح)

1 تاریخ بغداد ترجمہ محمد بن اسمعیل العلوی ۱۰۸۲ دار لکتاب العربی بیروت ۳ / ۹۱ 2 کشف الاستار عن زوائد البزار باب کرامة اسم النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم حدیث ۱۹۸۸ بیروت ۲ / ۴۱۳ 3 فتاویٰ امام شمس الدین سخاوی 4 التیسیر شرح الجامع الصغیر تحت حدیث ما ضر احد کم الخ مکتبہ الامام الشافعی ریاض ۲ / ۳۵۲

Fatawa Razawiya, Volume 24

(Right Column) Mentioned in Sharh Mawahib al-Ladunniyah. (T)

(Left Column) Al-Mawahib

It is better to keep names like Muhammad or Ahmad alone, without adding words like 'Jan' etc., because the virtues related to these blessed names are for them in isolation. Names like Ghulam Ali, Ghulam Hussain, Ghulam Ghous, Ghulam Jilani, and all such examples where the word 'Ghulam' is attributed to the beloved of Allah, their permissibility is absolutely evident. This humble servant (may Allah forgive him) has written a somewhat detailed fatwa on these names in his 'Fatawa' and proved their permissibility through the Quran, Hadith, and the statements of the leaders of the Wahhabis themselves. Allah Almighty says:

(Right Column) Their servants will circulate as if they were pearls well-protected.

(Left Column) "And there will circulate among them [servant] boys of theirs as if they were pearls well-protected."[1]

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

(Right Column) None of you should ever call your slave 'my servant' (banda), for you are all servants of God. Instead, say 'my boy/servant' (ghulam). (Narrated by Muslim from Abu Huraira, may Allah be pleased with him. (T))

(Left Column) "None of you should say 'my slave' (abdi) or 'my handmaid' (amati), but should say 'servant of Allah' (male) and 'servant of Allah' (female)." - Narrated by Muslim from Abu Hurairah, may Allah be pleased with him -[2]

The charges of 'shirk' (polytheism) from the Wahhabis are always like this, even though they are present within the Quran and Hadith themselves. Even God and His Messenger are not safe from the 'shirk' decrees of these 'friends of shirk'. We seek refuge in Allah, Lord of the worlds. (Seek God's protection who is the Lord of all worlds. (T))

The irony is that attributing the word 'Ghulam' to the names of Allah the Almighty is itself prohibited; one should not say 'Allah's Ghulam'. The literal meaning of 'Ghulam' is 'son', and therefore 'abid' (slaves) are called 'Ghulam' in Arabic out of affection, and 'chhokra' (boy) in Urdu. My master, Allama Arif Billah Abdul Ghani Nabulsi (may Allah sanctify his secret) says in 'Hadiqa-e-Nadiyah' under the Hadith:

(Right Column) Instead, let him say: my boy, my maidservant, my youth.	**(Left Column) "But let him say: my ghulami (boy), my jariyati (maid), and my fataya (youth)."**

[1] Holy Quran 52/24 [2] Sahih Muslim, Book of Etiquette, Chapter on the ruling of using the word 'abd' etc., Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/248.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

(दायाँ कॉलम) शरह मवाहिब अल-लदुन्निया में इसका उल्लेख है। (त)

(बायाँ कॉलम) अल-मवाहिब

बेहतर यह है कि केवल मुहम्मद या अहमद नाम रखा जाए, इसके साथ 'जान' आदि कोई शब्द न जोड़ा जाए, क्योंकि इन मुबारक़ नामों के फ़ज़ाइल (पुण्य) अकेले ही वर्णित हैं। गुलाम अली, गुलाम हुसैन, गुलाम गौस, गुलाम जिलानी और इनके समान वे सभी नाम जिनमें 'गुलाम' शब्द अल्लाह के प्यारों के नामों के साथ जोड़ा गया है, उनकी अनुमति भी पूरी तरह स्पष्ट है। इस तुच्छ सेवक (अल्लाह उसे क्षमा करे) ने अपने 'फ़तावा' में इन नामों पर एक विस्तृत फतवा लिखा है और कुरान, हदीस और खुद वहाबियों के पेशवाओं के कथनों से उनकी अनुमति सिद्ध की है। अल्लाह सर्वशक्तिमान फ़रमाता है:

(दायाँ कॉलम) उनके गुलाम (सेवक लड़के) चक्कर लगा रहे होंगे मानो वे सुरक्षित रखे हुए मोती हों।

(बायाँ कॉलम) "और उनके पास उनके(ख़िदमत के लिए) ऐसे लड़के चक्कर लगा रहे होंगे जैसे वे छिपा कर रखे हुए मोती हों।"[1]

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

(दायाँ कॉलम) अब तुममें से कोई अपने गुलाम को 'मेरा बंदा' न कहे, क्योंकि तुम सब खुदा के बंदे हो। हाँ, यूँ कहे 'मेरा गुलाम'। (इसे मुस्लिम ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया। त)

(बायाँ कॉलम) "तुममें से कोई यह न कहे 'मेरा बंदा' (अब्दी) या 'मेरी बंदी' (अमती), बल्कि यह कहे 'अल्लाह का बंदा' और 'अल्लाह की बंदी'।" - मुस्लिम ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया -[2]

वहाबियों के शिर्क के आरोप हमेशा ऐसे ही होते हैं कि वे खुद कुरान और हदीस से भरे होते हैं। खुदा और रसूल तक इन 'शिर्कप्रेमी' लोगों के शिर्क के हुक्मों से सुरक्षित नहीं हैं। वअयाज़ु बिल्लाह रब्बिल आलमीन (अल्लाह की पनाह, जो समस्त लोकों का पालनहार है। त)

मज़े की बात यह है कि 'गुलाम' शब्द को अल्लाह के नामों के साथ जोड़ना स्वयं मना है; 'अल्लाह का गुलाम' नहीं कहा जाएगा। गुलाम का असली अर्थ 'पुत्र' है, और इसीलिए स्नेहवश अरबी में 'अबिद' (सेवक) को 'गुलाम' और उर्दू में 'छोकरा' (लड़का) कहते हैं। मेरे आका, अल्लामा आरिफ बिल्लाह

अब्दुल गनी नाबलुसी (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र रखे), 'हदीका नदिया' में हदीस के तहत फ़रमाते हैं:

(दायाँ कॉलम) मगर वह यूँ कहे मेरा गुलाम, मेरी बांदी, मेरा जवान।	**(बायाँ कॉलम) "बल्कि वह कहे मेरा गुलाम, मेरी जारिया (दासी), और मेरा फ़ता (युवक)।"**

[1] अल-कुरानुल करीम 52/24 [2] सहीह मुस्लिम, किताबुल अलफ़ाज़ मिनल अदब, बाब हुक्म इतलाक़ लफ़्ज़तुल अब्द आदि, क़दीमी कुतुब खाना कराची 2/248.

(دایاں کالم) شرح مواہب اللدنیہ میں ذکر کیا ہے۔ت) (بایاں کالم) المواھب۔

بہتر یہ ہے کہ صرف محمد یا احمد نام رکھے اس کے ساتھ جان وغیرہ اور کوئی لفظ نہ ملائے کہ فضائل تنہا انہیں اسمائے مبارکہ کے وارد ہوئے ہیں۔ غلام علی، غلام حسین، غلام غوث، غلام جیلانی اور ان کے امثال تمام نام جن میں اسمائے محبانِ خدا کی طرف اضافت لفظ غلام ہوں سب کا جواز بھی قطعاً بدیہی ہے۔ فقیر غفراللہ تعالٰی لہ، نے اپنے فتاوٰی میں ان ناموں پر ایک فتوٰی قدرے مفصل لکھا اور قرآن وحدیث اور خود پیشوایانِ وہابیہ کے اقوال سے ان کا جواز ثابت کیا، اللہ عزوجل فرماتا ہے:

(دایاں کالم) ان کے غلام گشت کرتے ہوں گے گویا وہ موتی ہیں محفوظ رکھے ہوئے۔ (بایاں کالم) "وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُونٌ ۝"[1]

رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

(دایاں کالم) ہرگز تم میں اب کوئی اپنے مملوک کو یوں نہ کہے کہ میرا بندہ تم سب خدا کے بندہ ہو ہاں یوں کہے کہ میرا غلام۔ (اسے مسلم نے ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا۔ت) (بایاں کالم) لا یقولن احدکم عبدی و امتی ولکن لیقل عبید اللہ و اماء اللہ - رواہ مسلم عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ -[2]

وہابیہ کے شرک ہمیشہ ایسے ہی ہوتے ہیں کہ خود قرآن وحدیث میں بھرے ہوتے ہیں خدا اور رسول تک ان شرک دوستوں کے حکم شرک سے محفوظ نہیں والعیاذ باللہ رب العالمین (خدا کی پناہ جو تمام جہانوں کا پروردگار ہے۔ ت)

مزہ یہ ہے کہ لفظ غلام کی اسمائے الہیہ جل وعلا کی طرف اضافت خود ممنوع ہے اللہ کا غلام نہ کہا جائے گا، غلام کے معنی حقیقی پسر ہیں، ولذا عبید کو شفقۃً عربی میں غلام اردو میں چھو کرا کہتے ہیں، سیدی علامہ عارف باللہ عبدالغنی نابلسی قدس سرہ القدسی حدیقہ ندیہ میں زیرِ حدیث فرماتے ہیں:

(دایاں کالم) مگر وہ یوں کہے میرا غلام، میری باندی، (بایاں کالم) ولکن لیقل غلامی وجاریتي

میرا جوان، وفتای

[1] القرآن الکریم ۵۲/ ۲۴ [2] صحیح مسلم کتاب الالفاظ من الادب باب حکم اطلاق لفظۃ العبد الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۲۴۸

Fatawa Razvia Volume 24

[Boxed Text] And it was decided to observe etiquette regarding Allah Almighty, because one says 'Abdullah' (servant of Allah) and 'Amatullah' (female servant of Allah), but one does not say 'Ghulam-Allah' (slave of Allah), 'Jariya-Allah' (maid of Allah), 'Fata-Allah' (youth of Allah), or 'Fatat-Allah' (young woman of Allah). Even the terms Fata and Fatat (young man, young woman) are not attributed to the name of Allah Almighty. (Summary) (T)

Glory be to Allah! This is a strange form of 'Shirk' (associating partners with God) which is not permissible even for the Almighty Himself, but is reserved for others besides Him. However, the issue is that in the corrupt religion of the Wahhabis, as soon as the names of the beloved of God are mentioned with a bit of honor and respect, 'Shirk' spreads its mouth. Then, whether that thing is specific to God, or rare, or not even conceivable as permissible for anyone other than God, doesn't matter. Did they not see that their leader in 'Taqwiyat al-Iman' declared erecting a canopy over a grave or waving a fly-whisk (mor-chhal) as 'Shirk'? He explicitly listed these among things that God has reserved for His own veneration. That is, his deity said that erecting a canopy over my grave or waving a fly-whisk at my tomb [is shirk]. 'La hawla wala quwwata illa billahil aliyyil azim' (There is no power nor strength except with Allah, the Most High, the Most Great. T). Haven't you heard that the new leader of their group of non-conformists (Ghayr-Muqallids), the late Siddiq Hasan Khan Qanuji Bhopali, wrote in his treatise 'Kalimat al-Haq':

"Since I am the slave of the sun, I speak of the sun." (When I am the slave of the sun, then I will speak everything with reference to the sun only. T)

By the glory of God! Names like Ghulam Muhammad, Ghulam Ali, Ghulam Hussain, Ghulam Ghaus are, God forbid, 'Shirk' and forbidden, but being a 'Ghulam-e-Aftab' (slave of the sun) is thus permissible and beyond reproach! Although if you translate it, just as in Persian it is 'Ghulam-e-Aftab', in Arabic the name of the polytheists of Arabia was 'Abd Shams', and in Hindi the name of the infidels is 'Suraj Das'. The languages are different, but the outcome is the same. 'La hawla wala quwwata illa billahil aliyyil azim' (There is no power to avoid sins and no strength to do good except through the guidance of Allah Almighty, the Great and Exalted. T). The permissibility of 'Hidayat Ali' is also equally evident.

1. Al-Hadiqa al-Nadiyya Sharh al-Tariqa al-Muhammadiyya, Type 23, Error vs. Correctness, Maktaba Nooriya Razvia, Faisalabad, 2/279.
2. Treatise Kalimat al-Haq by Siddiq Hasan Khan.

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

[बॉक्स वाला पाठ] और अल्लाह तआला के हक़ में शिष्टाचार (अदब) का ध्यान रखने का निर्णय लिया गया क्योंकि उनके संबंध में 'अब्दुल्लाह' (अल्लाह का बंदा) और 'अमतुल्लाह' (अल्लाह की बंदी) कहा जाता है, और 'ग़ुलाम-अल्लाह', 'जारिया-अल्लाह', 'फ़ता-अल्लाह' या 'फ़तात-अल्लाह' नहीं कहा जाता है। यहाँ तक कि 'फ़ता' और 'फ़तात' (युवा पुरुष, युवा महिला) शब्दों को भी अल्लाह तआला के नाम के साथ नहीं जोड़ा जाता। (संक्षेप में) (त)

सुब्हान अल्लाह! यह कैसा अजीब 'शिर्क (साझेदारी) है जो स्वयं ईश्वर के लिए जायज़ नहीं है बल्कि उसके अलावा दूसरों के लिए विशिष्ट है। मगर बात यह है कि वहाबियों के भ्रष्ट धर्म में जब कभी अल्लाह के प्यारों का नाम ज़रा सम्मान और आदर की नज़र से आया, शिर्क ने अपना मुँह फैला लिया। फिर चाहे वह बात खुदा के लिए विशिष्ट हो, दुर्लभ हो, या किसी और के लिए जायज़ होना तो दूर, सोचा भी न जा सके। क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनके पेशवा (नेता) ने 'तक़वियतुल ईमान' में कब्र पर शामियाना (छत) लगाना या मोरछल झलना 'शिर्क बता दिया? और उसे साफ़-साफ़ उन बातों में गिना दिया जो खुदा ने अपनी महिमा के लिए विशिष्ट की हैं। यानी उनके पूज्य ने कह दिया है कि मेरी ही कब्र पर शामियाना खड़ा करना और मेरी ही मज़ार पर मोरछल झलना [शिर्क है]। 'ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम' (अल्लाह तआला जो महान और सर्वोच्च है, उसकी तौफीक के बिना पापों से बचने और नेकी करने की शक्ति किसी में नहीं है। त)। आख़िर क्या आपने नहीं सुना कि उनके ग़ैर-मुक़ल्लिद (गैर-अनुयायी) समूह के नए पेशवा मरहूम सिद्दीक़ हसन ख़ान क़न्नूजी भोपाली अपने रिसाले (लेख) 'कलमतुल हक़' में लिख गए हैं:

"चूँ ग़ुलाम-ए-आफ़ताबम अज़ आफ़ताब गोयम" (जब मैं सूरज का ग़ुलाम हूँ तो फिर सब कुछ सूरज के ही हवाले से कहूँगा। त)

खुदा की शान! ग़ुलाम मोहम्मद, ग़ुलाम अली, ग़ुलाम हुसैन, ग़ुलाम ग़ौस जैसे नाम तो माज़ अल्लाह 'शिर्क और हराम हैं, और सूरज का ग़ुलाम ('ग़ुलाम-ए-आफ़ताब') होना इस तरह जायज़ और बे-दोष! हालाँकि अनुवाद करें तो जैसा फारसी में 'ग़ुलाम-ए-आफ़ताब' है, वैसा ही अरबी में अरब के मुशरिकों (बहुदेववादियों) का नाम 'अब्द शम्स' था, और हिंदी में काफिरों का नाम 'सूरज दास' है। भाषाएँ अलग हैं लेकिन परिणाम एक ही है। 'ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम'

(गुनाहों से बचने और नेकी करने की शक्ति अल्लाह तआला महान और सर्वोच्च की तौफीक के सिवा किसी में नहीं। त)। 'हिदायत अली' का जायज़ होना भी उसी तरह स्पष्ट और ज़ाहिर है।

---

1. अल-हदीक़ा अन-नदिय्या शरह अत-तरीक़ा अल-मुहम्मदिया, प्रकार 23, त्रुटि बनाम शुद्धता, मकतबा नूरया रज़विया, फैसलाबाद, 2/279।
2. रिसाला कलमतुल हक़, सिद्दीक़ हसन ख़ान।

पृष्ठ 693 का 720

[باکس کا متن] وفتاق مراعاۃ لجانب الادب فی حق اللہ تعالٰی لانہ یقال عبداللہ و امۃ اللہ ولا یقال غلام اللہ وجاریۃ اللہ ولا فتی اللہ ولا فتاۃ اللہ اھ باختصار۔ میری لونڈی۔ اللہ تعالٰی کے معاملہ میں تقاضائے ادب کو ملحوظ رکھا جائے کیونکہ اس کی نسبت سے یوں کہا جاتا ہے۔ اللہ تعالٰی کا بندہ، اللہ کی بندی، اور یہ نہیں کہا جاتا کہ اللہ تعالٰی کا غلام یا اللہ تعالٰی کی لونڈی اور فتی اور فتاۃ (جوان مرد، جوان عورت) کو بھی اللہ تعالٰی کے نام کے ساتھ منسوب نہیں کیا جاتا اھ باختصار (ت)

سبحان اللہ! یہ عجیب شرک ہے جو خود حضرت عزت کے لئے روا نہیں بلکہ اس کے غیر ہی کے لئے خاص ہے مگر ہے یہ کہ وہابیہ کے دین فاسد میں محبوبان خدا کا نام ذرا اعزاز و تکریم کی نگاہ سے آیا اور شرک نے منہ پھیلایا، پھر چاہے وہ بات خدا کے لئے خاص ہو نادر کنا خدا کے لئے جائز بلکہ متصور ہی نہ ہو، آخر نہ دیکھا کہ ان کے پیشوا نے تقویۃ الایمان میں قبر پر شامیانہ کھڑا کرنا مور چھل جھلنا شرک بتا دیا، اور اسے صاف صاف ان باتوں میں جو خدا نے اپنی تعظیم کے لئے خاص کی ہیں گنا دیا یعنی اس کے معبود نے کہہ دیا ہے کہ میری ہی قبر پر شامیانہ کھڑا کرنا میری ہی تربت کو مور چھل جھلنا ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم (اللہ تعالٰی بزرگ و برتر شان والے کی توفیق کے بغیر گناہوں سے بچنے اور نیکی کرنے کی طاقت کسی میں نہیں۔ ت) آخر نہ سنا کہ ان کے طائفہ غیر مقلدان کے اب نئے پیشوا صدیق حسن خاں قنوجی بھوپالی آنجہانی اپنے رسالہ کلمتہ الحق میں لکھ گئے ع

چو غلام آفتابم از آفتاب گویم ۲ (جب میں سورج کا غلام ہوں تو پھر سب کچھ سورج ہی کے حوالہ سے کہوں گا۔ ت)

خدا کی شان غلام محمد، غلام علی، غلام حسین، غلام غوث تو معاذ اللہ شرک و حرام اور غلام آفتاب ہونا یوں جائز و بے ملام، حالانکہ ترجمہ کیجئے تو جیسا فارسی میں غلام آفتاب ویسا ہی عربی میں مشرکین عرب کا نام عبد شمس، ہندی میں کفار کا نام سورج داس، زبانیں مختلف ہیں اور حاصل ایک، ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم (گناہوں سے بچنے اور نیکی کرنے کی طاقت سوائے اللہ تعالیٰ بزرگ و برتر بڑی شان والے کی توفیق کے کسی میں نہیں۔ ت) ہدایت علی کا جواز بھی ویسا ہی ظاہر و باہر

---

۱ الحدیقۃ الندیۃ شرح الطریقۃ المحمدیۃ النوع الثالث و العشرون الخطاء ضد الصواب المکتبۃ النوریۃ الرضویۃ فیصل آباد ۲/ ۲۷۹ ۲ رسالہ کلمۃ الحق لصدیق حسن خاں

Volume 24 Fatawa Razawiyya

In which there is not even a hint of impermissibility. The Wahhabis (may Allah Almighty abandon them) burn with envy at the names of the beloveds of God; until today, even their elders have not spoken against it. However, in the collection of fatwas of Maulana Abdul Hai Lakhnawi, Volume 1, First Edition, Page 264, an objection is shown to this name. In the initial part of the discussion, it was deemed only contrary to what is best (khilaf-e-awla), but in the end, it was declared impermissible and a sin, even though this is purely incorrect. The summary of that text is as follows:

Istifta (Request for a Fatwa)

[Left Column - Original Persian Text]: Someone's name was Hidayat Ali. Through the ambiguity of polytheistic names, he changed it to Hidayat al-Ali. A person objected to this, saying that the word 'Hidayat' is shared between 'showing the path' (iraat-ul-tariq) and 'reaching the goal' (eesal-ilal-matloob). Similarly, the word 'Ali' without the 'Alif-Laam' is shared between the names of God and Hazrat Ali (Karam Allahu Ta'ala Wajhah). The respondent said: In this situation, it supports my claim because whenever the words 'Hidayat' and 'Ali' are shared between two meanings, four possibilities arise. One: from 'Hidayat', the first meaning, and from 'Ali', Allah Almighty. Two: from 'Hidayat', the second meaning, and from 'Ali', Allah the Majestic. Three: from 'Hidayat', the first meaning, and from 'Ali', Hazrat Ali (Karam Allahu Wajhah). Four: from 'Hidayat', the second meaning, and from 'Ali', Hazrat Ali. Thus, the first three possibilities are free from Shariah prohibition. However, the fourth is not free from prohibition because it falls under polytheistic names. Therefore, every name that revolves between polytheistic names and their absence must be avoided, rather it is mandatory. And if someone, comparing it to the disputed name, proves shirk based on 'Abdullah' or prohibits saying 'Ya Ali', is his analogy correct?

[Right Column - Urdu Translation]: A person's name was Hidayat Ali. Thinking it was a polytheistic name, he changed it to Hidayat al-Ali. Then, this objection was raised that the word 'Hidayat' is shared between 'showing the path' (iraat-ut-tariq) and 'conveying to the desired goal' (eesal-ilal-matloob) in these two meanings. Similarly, the word 'Ali' without 'Alif-Laam' is among the Divine names and is also the name of Hazrat Syedna Ali (Radi Allahu Ta'ala Anhu). That is, it is common to both the Creator and the creation. The respondent said: In this situation, my thought is supported. It is such that when the words 'Hidayat' and 'Ali' were shared in two meanings, four

possibilities were created: (1) From 'Hidayat', the first meaning and from 'Ali', the essence of Allah Almighty is intended. (2) From 'Hidayat', the second meaning and from 'Ali', Allah Almighty is intended. (3) From 'Hidayat', the first meaning and from 'Ali', Hazrat Ali (Karam Allahu Wajhah) is intended. (4) From 'Hidayat', the second meaning and from 'Ali', Hazrat Ali (Karam Allahu Wajhah) is intended. Thus, the first three mentioned possibilities are legally (sharia) permissible.

जिल्द 24 फ़तावा रज़विया

जिसमें मूल रूप से नाजायज़ होने की कोई गंध नहीं है। वहाबी (अल्लाह उन्हें त्याग दे) अल्लाह के प्रियजनों के नाम से जलते हैं; आज तक उनके बड़ों ने भी इसमें आपत्ति नहीं की। हालाँकि, मौलाना अब्दुल हई लखनवी के फ़तावा संग्रह, खंड 1, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 264 में, इस नाम पर आपत्ति दिखाई गई है। चर्चा के शुरुआती हिस्से में, इसे केवल 'ख़िलाफ़-ए-अव्ला' (उत्तम के विरुद्ध) माना गया था, लेकिन अंत में इसे नाजायज़ और पाप घोषित कर दिया गया, जबकि यह पूरी तरह से गलत है। उस इबारत का सारांश इस प्रकार है:

इस्तफ़्ता (फ़तवा के लिए प्रश्न)

[बायां कॉलम - मूल फ़ारसी पाठ]: किसी का नाम हिदायत अली था। उसने इसे शिर्किया नामों के भ्रम के कारण बदलकर हिदायत अल-अली रख लिया। एक व्यक्ति ने इस पर आपत्ति की कि शब्द 'हिदायत' 'मार्ग दर्शन' (अराअत-उत-तरीक़) और 'मंजिल तक पहुँचाना' (ईसाल-इलाल-मतलूब) के बीच साझा है। इसी तरह 'अली' शब्द बिना अलिफ़-लाम के अल्लाह के नामों और हज़रत अली (करम अल्लाह तआला वज्हहु) के बीच साझा है। उत्तर देने वाले ने कहा: इस स्थिति में मेरे दावे की पुष्टि होती है क्योंकि जब भी शब्द 'हिदायत' और 'अली' दो अर्थों के बीच साझा होते हैं, तो चार संभावनाएं पैदा होती हैं। एक: 'हिदायत' से पहला अर्थ और 'अली' से अल्लाह अज़-व-जल। दूसरा: 'हिदायत' से दूसरा अर्थ और 'अली' से अल्लाह जल्ल जलालाहू। तीसरा: 'हिदायत' से पहला अर्थ और 'अली' से हज़रत अली (करम अल्लाह वज्हहु)। चौथा: 'हिदायत' से दूसरा अर्थ और 'अली' से हज़रत अली। अतः पहली तीन संभावनाएं शरई निषेध से मुक्त हैं। हालाँकि, चौथी निषेध से मुक्त नहीं है क्योंकि यह शिर्किया नामों के अर्थ में आती है। इसलिए, हर वह नाम जो शिर्किया नामों और उनके अभाव के बीच घूमता है, उससे बचना ज़रूरी है, बल्कि अनिवार्य है। और यदि कोई विवादित नाम पर तुलना करते हुए 'अब्दुल्लाह' के आधार पर शिर्क साबित करता है या 'या अली' कहने से रोकता है, तो क्या उसका कयास सही है?

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद]: एक व्यक्ति का नाम हिदायत अली था। उसने इसे शिर्किया नाम समझते हुए इसे हिदायत अल-अली से बदल दिया। फिर इस पर यह आपत्ति की गई कि शब्द 'हिदायत' अराअत-उत-तरीक़ (रास्ता दिखाना) और ईसाल-इलाल-मतलूब (मंजिल तक पहुँचा देना) इन दो अर्थों में साझा है। इसी तरह शब्द 'अली' बिना अलिफ़-लाम के ईश्वरीय नामों में से भी है और

हज़रत सय्यदना अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) का नाम भी है। यानी यह सृष्टा और सृष्टि दोनों में साझा है। उत्तर देने वाले ने कहा कि इस स्थिति में मेरी सोच की पुष्टि होती है। वह इस तरह कि जब हिदायत और अली शब्द दो अर्थों में साझा हुए, तो चार संभावनाएं पैदा हुईं: (1) हिदायत से पहला अर्थ और अली से अल्लाह तआला की ज़ात मुराद हो। (2) हिदायत से दूसरा अर्थ और अली से अल्लाह तआला मुराद हो। (3) हिदायत से पहला अर्थ और अली से हज़रत अली (करम अल्लाह वज्हहु) मुराद हों। (4) हिदायत से दूसरा अर्थ और अली से हज़रत अली (करम अल्लाह वज्हहु) मुराद हों। तो पहले तीन ज़िक्र किए गए संभावनाओं में शरई एहतमाल (संभावना) है।

पृष्ठ 694/720

جس میں اصلاً عدم جواز کی بو نہیں، وہابیہ خذ لہم اللہ تعالی کے محبوبان خدا کے نام سے جلتے ہیں آج تک ان کے کبراء نے بھی اس میں کلام نہ کیا البتہ مولوی عبدالحی صاحب لکھنوی کے مجموعہ فتاوی جلد اول طبع اول صفحہ ۲۶۴ میں اس نام پر اعتراض دکھایا اول کلام میں تو صرف خلاف اولی ٹھہرایا تھا آخر میں ناجائز و گناہ قرار دے دیا حالانکہ یہ محض غلط ہے۔ اس کا خلاصہ عبارت یہ ہے:

استفتاء

[بایاں کالم - فارسی متن]: کسے نام خود ہدایت علی می داشت بایہام اسمائے شرکیہ تبدیل نمودہ ہدایت العلی نہاد شخص برآں معترض شد کہ لفظ ہدایت مشترک ست بین مبین اراءۃ الطریق وایصال الی المطلوب و ہکذا لفظ علی بغیر الف ولام مشترک است بین اسمائے الہیہ و حضرت علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ۔ مجیب گفت دریں صورت تائید اثبات مدعائے من ست چہ ہرگاہ لفظ ہدایت وعلی مشترک شد بین معنین پس چہار احتمال می شوند یکی ازاں از ہدایت معنی اول واز علی اللہ عزوجل شانہ،، دوم از ہدایت معنی ثانی وعلی جل جلالہ ، سوم از ہدایت معنی اول واز علی حضرت علی کرم اللہ وجہہ، چہارم از ہدایت معنی ثانی واز علی حضرت علی پس سہ احتمال اول خالی از ممانعت شرعیہ ہستند البتہ رابع خالی از ممنوعیت نیست چہ در جملہ اسمائے شرکیہ مفہوم می شود پس ہر اسم کہ دائر شود بین اسمائے شرکیہ و عدمہ احتراز ازاں لابد ی ست بلکہ واجب واگر کسی براسم متنازع فیہ قیاس نمودہ بر عبد اللہ شرک ثابت کند یا یا علی گفتن ممانعت نماید آیا قیاس او صحیح

[دایاں کالم - اردو ترجمہ]: ایک شخص کا نام ہدایت علی تھا اس نے اسے شرکیہ نام خیال کرتے ہوئے اسے ہدایت العلی سے بدل دیا پھر اس پر یہ اعتراض کیا گیا کہ لفظ "ہدایت" اراءۃ الطریق (راستہ دکھانا) اور ایصال الی المطلوب (مطلوب و مقصود تک پہنچا دینا ہے) ان دو معنوں میں مشترک ہے اسی طرح لفظ "علی" بغیر الف لام اسمائے الہیہ سے بھی ہے اور حضرت سیدنا علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا نام بھی ہے یعنی خالق و مخلوق دونوں میں مشترک ہے۔ جواب دینے والے نے کہا کہ اس صورت میں میری سوچ کی تائید پائی جاتی ہے وہ اس طرح کہ جب لفظ ہدایت اور علی دو معنوں میں مشترک ہوا تو چہار احتمال پیدا ہو گئے، (۱) ہدایت سے پہلا معنی اور علی سے اللہ تعالیٰ کی ذات مراد ہو۔ (۲) ہدایت سے دوسرا معنی اور علی سے اللہ تعالیٰ مراد ہو (۳) ہدایت سے پہلا معنی اور علی سے حضرت علی کرم اللہ وجہہ مراد ہوں (۴) ہدایت سے دوسرا معنی اور علی سے حضرت علی کرم اللہ وجہہ مراد ہوں۔ پس تین اول الذکر احتمال شرعی

Volume 24 Fatawa Razawiyya

[Question:] ...there is no prohibition, however, in the fourth possibility, there is an aspect of prohibition. Thus, all polytheistic names reflect this meaning. Therefore, names that fluctuate between polytheistic and non-polytheistic, common and non-common names, must be avoided. If someone, based on an analogy with a disputed name, prohibits saying "Ya Ali," would their analogy be considered correct or not? Please explain so that you may receive reward.

The Answer: He is the One Who grants correctness. The word 'Ali,' which is among the names of Allah Almighty, would have the definite article 'Al' (Alif Lam) added to it for veneration, just like in 'Al-Fazl,' 'Al-Nu'man,' etc. And the word 'Ali,' which is used as a name for Sayyiduna Hazrat Ali (may Allah be pleased with him), does not have the 'Al' added. Therefore, based on this, the name 'Hidayat al-Ali' is better than 'Hidayat Ali,' because in the former, there is no ambiguity regarding the attribution of guidance to Hazrat Ali al-Murtaza. In the second case, due to the shared usage of the word 'Hidayat' and the ambiguity in the word 'Ali,' a suspicion of a prohibited matter exists. Hence, avoiding it is necessary. This is the reason why the noble scholars prohibit naming someone 'Abd al-Nabi' (servant of the Prophet), but in 'Abd Allah,' etc., there is no un-Islamic ambiguity. Similarly, in 'Ya Ali,' if the intention is to call upon Allah Almighty, then there is no dispute or disagreement. Written by Abu al-Hasnat Abdul Hayy. (T)

1. Majmu'a Fatawa, Kitab al-Hazr wa al-Ibaha, Matba' Yusufi Lucknow, 2/41 & 42.

जिल्द २४ फ़तावा रज़विया

[सवाल:] ...मनाही नहीं रखते, अलबत्ता चौथी सूरत (संभावना) में मनाही का पहलू मौजूद है। पस तमाम शिर्किया नामों से यही मफहूम (अर्थ) ज़ाहिर होता है, लिहाज़ा जो नाम शिर्किया और ग़ैर-शिर्किया, मुश्तरका (साझा) और ग़ैर-मुश्तरका के दरमियान हों, उनसे परहेज़ लाज़मी और वाजिब है। अगर कोई शख्स किसी इख्तिलाफी (विवादित) नाम पर क़यास (तुलना) करते हुए 'या अली' कहने से मना करे, तो क्या उसका क़यास दुरुस्त माना जाएगा या नहीं? बयान फरमाएं ताकि अज्र व सवाब (पुण्य) पाएं।

अल-जवाब (उत्तर): वही ठीक बताने वाला है। लफ्ज़ 'अली' जो कि अल्लाह तआला के नामों में से है, उसके साथ ताज़ीम (आदर) के लिए 'अलिफ लाम' ज़ायद होगा, जैसे अल-फ़ज़ल, अल-नुमान वग़ैरह। और लफ्ज़ 'अली' जो बतौर नाम सैयदुना हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) के लिए इस्तेमाल होता है, उसके साथ 'अलिफ लाम' ज़ायद नहीं होता। लिहाज़ा इस बिना पर 'हिदायतुल अली' नाम 'हिदायत अली' की निस्बत ज़्यादा बेहतर है, क्योंकि पहली सूरत में हिदायत की निस्बत का हज़रत अली मुर्तज़ा के साथ इश्तबाह (भ्रम) नहीं पाया जाता। और दूसरी सूरत में लफ्ज़ 'हिदायत' के मुश्तरक इस्तेमाल के सबब ईहाम (ग़लतफहमी) पैदा होता है और लफ्ज़ 'अली' में इश्तिराक की वजह से अमर-ए-ममनू (वर्जित बात) का इश्तबाह मौजूद है, पस इससे परहेज़ ज़रूरी है। यही वजह है कि उलमा-ए-किराम 'अब्दुन नबी' नाम रखने से मना करते हैं, लेकिन 'अब्दुल्लाह' वग़ैरह में ईहाम-ए-ग़ैर-मशरूह (ग़ैर-इस्लामी भ्रम) नहीं है। इसी तरह 'या अली' में अगर अल्लाह तआला को पुकारना मक़सूद हो, तो कोई निज़ा (झगड़ा) नहीं, कोई इख्तिलाफ नहीं। अबुल हसनात अब्दुल हई ने इसे तहरीर किया। (त)

१ मज्मूआ फतावा, किताबुल हज़्र वल इबाह, मतबा यूसुफी लखनऊ २/४१ और ४२

पृष्ठ ६९५/७२०

ست یانہ؟ بینواتوجروا۔ ممانعت نہیں رکھتے ، البتہ چوتھے احتمال میں ممانعت کا پہلو موجود ہے، پس تمام اسماء شرکیہ س یہی مفہوم ظاہر ہوتا ہے لہذا جو نام اسماء شرکیہ و غیر شرکیہ مشتر کہ و غیر مشترکہ میں دائر ہوتا ہو اس سے پر ہیز لازمی اور واجب ہے ، اگر کوئی شخص اسم مختلف فیہ پر قیاس کرتے ہوئے یا علی کہنے کی ممانعت کرے تو اس کا قیاس درست متصور ہوگا یا نہ ؟ بیان فرماؤ تا کہ اجر و ثواب پاؤ۔

الجواب: ھو المصوب لفظ علی کہ از اسمائے الہیہ ست الف لام بر آں زائد میشود برائے تعظیم چنانچہ در الفضل و النعمان وغیرہ بر لفظ علی کہ از اسمائے مرتضی ست لام داخل نمی شود بناءً علیہ ہدایت العلی اولی ست از ہدایت علی، چہ در اولی اشتباہ اضافت ہدایت بسوئے علی مرتضی نیست، ودر صورت ثانیہ بسبب اشتراک لفظ ہدایت بحسب استعمال واشتراک لفظ ہدایت بحسب استعمال واشتراک لفظ علی اشتباہ امر ممنوع موجود ودرا سامی از پہنچو اسم کہ ایہام مضموم غیر مشروع سازد احتراز لازم بہ ہمیں سبب علماء از تسمیہ بعبدالنبی و غیرہ منع ساختہ اند و اتا در عبداللہ وغیرہ پس ایہام امر غیر مشروع نیست و ہمیں دریا علی ہر گاہ مقصود ندائے پروردگار باشد نزاعی نیست۔ حررہ ابو الحسنات عبد الحی ۱

وہی ٹھیک بتانے والا ہے، لفظ علی جو کہ اللہ تعالیٰ کے ناموں میں سے ہے اس کے ساتھ برائے تعظیم الف لام زائد ہوگا جیسے الفضل ، النعمان وغیرہ اور لفظ علی جو بطور نام سید نا حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے لئے استعمال ہوتا ہے اس کے ساتھ الف لام زائد نہیں ہوتا لہٰذا اس بناء پر نام ہدایت العلی بنسبت ہدایت علی کے زیادہ بہتر ہے اس لئے کہ اول الذکر میں ہدایت کی نسبت

کا حضرت علی مرتضیٰ کے ساتھ اشتباہ نہیں پایا جاتا اور دوسری صورت میں بوجہ استعمال لفظ ہدایت کے اشتراک کے سبب ایہام (مغالطہ) پیدا ہوتا ہے اور لفظ علی میں اشتراک کی وجہ سے امر ممنوع کا اشتباہ موجود ہے، پس اس سے پرہیز ضروری ہے، یہ وجہ ہے کہ علمائے کرام عبد النبی نام رکھنے سے منع کرتے ہیں لیکن عبداللہ وغیرہ میں ایہام غیر مشروع نہیں، اسی طرح یا علی میں اگر اللہ تعالیٰ کو ندا کرنا مقصود ہو تو کوئی نزاع نہیں کوئی اختلاف نہیں۔ ابوالحسنات عبد الحی نے اسے تحریر کیا۔ (ت)

۱ مجموعہ فتاویٰ کتاب الحظر والاباحہ مطبع یوسفی لکھنو ۲/۴۱ و ۴۲

Fatawa Rizvia, Volume 24

I say: (t) But this answer is extremely strange and wondrous. It equals jest, or rather it equals mockery. (The mentioned answer is equivalent to humor, rather it is equal to joking. t) Firstly: the basis of this entire disorganized discourse is completely groundless; what is prohibited is 'Iham' (double entendre), not merely a potentiality, even if it is weak and remote. (t) There is a vast difference between 'Iham' and 'Probability'. In 'Iham', 'tabadur' (immediate mental comprehension) is required; the mind should rush towards the prohibited meaning, not just that some aspect among intellectual possibilities could lead to a prohibited meaning. It is stated in *Talkhis*:

Iham is to use a word that has two meanings, near and remote, and the remote one is intended.[1]	**Iham is when a word is used that has two meanings, one near and the other remote, and by using that word, the remote meaning is intended. (t)**

Allama Sayyid Sharif (may his secret be sanctified) states in the book *Al-Ta'rifat*:

Iham, also called Takhyil, is to mention a word with two meanings, near and strange (remote). When a person hears it, their understanding first goes to the near meaning, but the speaker intends the strange one. Most of the *mutashabihat* (ambiguous verses) are of this kind, such as Allah's saying: 'And the heavens will be rolled up in His right hand'.[2]	**Iham is also called Takhyil. It means mentioning a word that has two meanings, one near and the other 'ghareeb' (remote/ unusual). When a person hears it, their understanding rushes towards the near meaning (i.e., that is what immediately comes to mind), but the speaker's intent is the 'ghareeb' meaning. Most *mutashabihat* are of this type, and Allah Almighty's command that 'on that day all the heavens will be wrapped in His right hand like a scroll' is from this type. (t)**

If mere potentiality becomes a reason for prohibition, then hardly any speech in the world would be free from prohibition and taunt. 'Zaid came/went', 'stood up/sat down', 'Amr ate/drank', 'said/heard', the responder saw the question, wrote the answer, etc. All attribution of voluntary actions is potential for two meanings. One is that Zaid, Amr, or the responder performed these actions by their own independent and complete power; second is by given, deficient, and limited power. The first is definitely Shirk, therefore these usages...

[1] *Talkhis al-Miftah*, Third Art, Maktaba Ziyaiya Rawalpindi, pp. 105-106. [2] *Al-Ta'rifat* by Sayyid Sharif al-Jurjani, Chapter 'Alif', Nasharat Nasir Khusraw Tehran, Iran, p. 18.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

मैं कहता हूँ: (त) लेकिन यह जवाब बहुत अजीब और आश्चर्यजनक है। यह हंसी-मज़ाक के बराबर है, बल्कि मज़ाक के समान है। (उक्त जवाब सुखद व्यवहार के बराबर है, बल्कि हंसी-मज़ाक के समान है। त) पहली बात: इस पूरे अव्यवस्थित भाषण का आधार ही पूरी तरह से निराधार है; प्रतिबंधित 'इहाम' (द्वयर्थकता) है, न कि केवल एक संभावना भले ही वह कमज़ोर और दूर की हो। (त) 'इहाम' और 'संभावना' में ज़मीन-आसमान का फ़र्क है। इहाम में 'तबादुर' (तुरंत समझ में आना) आवश्यक है; दिमाग उस वर्जित अर्थ की ओर लपके। ऐसा नहीं है कि बौद्धिक संभावनाओं में से कोई एक पक्ष वर्जित अर्थ का भी निकल सके। तलखीस में है:

इहाम यह है कि ऐसा शब्द बोला जाए जिसके दो अर्थ हों, निकट और दूर, और उससे दूर वाला अर्थ अभिप्रेत हो।[1]

इहाम यह है कि ऐसा शब्द बोला जाए जिसके दो अर्थ हों, एक अर्थ निकट और दूसरा अर्थ दूर, और उस शब्द को बोलकर दूर वाला अर्थ मुराद (अभिप्रेत) लिया जाए। (त)

अल्लामा सैय्यद शरीफ़ क़ुदसी सिर्रहु अल-शरीफ़ किताब अल-तारीफ़ात में फ़रमाते हैं:

इहाम जिसे तख़य्युल भी कहा जाता है, वह यह है कि एक ऐसा शब्द ज़िक्र किया जाए जिसके दो अर्थ हों, निकट और ग़रीब (विचित्र/दूर)। जब कोई व्यक्ति इसे सुनता है, तो उसकी समझ सबसे पहले निकट अर्थ की ओर जाती है, लेकिन बोलने वाले का उद्देश्य ग़रीब अर्थ होता है। अधिकांश 'मुतशाबिहात' (अस्पष्ट आयतें) इसी प्रकार की होती हैं, जैसे अल्लाह का कथन: 'और आसमान उसके दाहिने हाथ में लिपटे होंगे'।[2]

इहाम तख़य्युल भी कहलाता है, मुराद यह है कि ऐसा शब्द ज़िक्र किया जाए कि उसके दो अर्थ हों, एक निकट और दूसरा ग़रीब (अजीब/दूर)। जब कोई बंदा इसे सुने तो उसका फ़हम (समझ) निकट अर्थ की ओर लपके(यानी वही दिमाग में पहले आए) लेकिन मुतकल्लिम (बोलने वाले) की मुराद ग़रीब अर्थ हो। ज़्यादातर मुतशाबिहात इसी क़िस्म से होते हैं, और अल्लाह तआला का इरशाद कि 'उस दिन सब आसमान उसके दाहिने हाथ में तोमार (लपेटे हुए कागज़) की तरह लिपटे होंगे' इसी क़िस्म से है। (त)

अगर केवल संभावना ही रोक का कारण बन जाए, तो दुनिया में शायद ही कोई बात रोक-टोक और ताने से मुक्त रहे। ज़ैद आया-गया, उठा-बैठा, अम्र ने खाया-पिया, कहा-सुना, मुजीब (उत्तर देने वाले)

साहब ने सवाल देखा, जवाब लिखा वगैरह-वगैरह, स्वैच्छिक कार्यों का यह सब संदर्भ दो अर्थों की संभावना रखता है। एक यह कि ज़ैद, अम्र और मुजीब ने अपनी स्वतंत्र और पूर्ण शक्ति से ये कार्य किए; दूसरा यह कि प्रदान की गई, अधूरी और सीमित शक्ति से। पहला निश्चित रूप से शिर्क है, इसलिए इन उल्लेखों...

---

[1] तलखीस अल-मिफ़्ताह, तीसरा फ़न, मकतबा ज़ियाइया रावलपिंडी, पृष्ठ 105-106। [2] अल-तारीफ़ात सैय्यद शरीफ़ अल-जुरजानी द्वारा, बाब 'अलिफ़', नशारात नासिर खुसरौ तेहरान, ईरान, पृष्ठ 18।

اقول: (میں کہتا ہوں۔ت) مگر یہ جواب سخت عجب عجاب ہے یتساوی ھزلا بل یساوی ھزلا (جواب مذکور خوش طبعی کے برابر ہے بلکہ ہنسی مذاق کے مساوی ہے۔ ت) اولا: اس تمام کلام مختل النظام کا مبنی ہی سرے سے پادر ہوا ہے ممنوع ایہام ہے نہ کہ مجرد احتمالی ولو ضعیفا بعیدا (اگرچہ ضعیف اور بعید ہو۔ت) ایہام واحتمال میں زمین و آسمان کا فرق ہے، ایہام میں تبا در درکار ہے ذہن اس معنی ممنوع کی طرف سبقت کرے، نہ یہ کہ شلوک محتملہ عقلیہ میں کوئی شق معنی ممنوع کی بھی نکل سکے۔ تلخیص میں ہے:

الایھام ان یطلق لفظ لہ معنیان قریب وبعید ویراد بہ البعید[1]۔ **ایہام یہ ہے کہ ایسا لفظ بولا جائے جو دو معانی رکھتا ہو ایک معنی قریب اور دوسرا معنی بعید ہو اور اس لفظ کو بول کر معنی بعید مراد لیا جائے ۔ (ت)**

علامہ سید شریف قدسی سرہ الشریف کتاب التعریفات میں فرماتے ہیں:

الایھام ویقال لہ التخییل ایضا وھو ان یذکر لفظ لہ معنیان قریب وغریب فاذا سمعہ الانسان سبق الی فھمہ القریب ومراد المتکلم الغریب واکثر المتشابھات من ھذا الجنس ومنہ قولہ تعالی: والسموت مطویت بیمینہ[2].

ایہام تخییل بھی کہلاتا ہے مراد یہ ہے کہ ایسا لفظ ذکر کیا جائے کہ اس کے دو معنی ہوں ایک قریب اور دوسرا غریب، جب کوئی بندہ اسے سنے تو اس کا فہم معنی قریب کی طرف لپکے (یعنی وہی متبادر الی الفہم ہو) لیکن متکلم کی مراد معنی غریب ہو۔ زیادہ تر متشابہات اسی قسم سے ہوتے ہیں، اور اللہ تعالٰی کا ارشاد کہ 'اس دن سب آسمان اس کے دائیں ہاتھ میں طومار کی طرح لپٹے ہوں گے' اسی قسم سے ہے۔ (ت)

مجرد احتمال اگر موجب منع ہو تو عالم میں کم کوئی کلام منع و طعن سے خالی رہے گا، زید آیا گیا اٹھا بیٹھا، عمرو نے کھایا پیا کہا سنا، مجیب صاحب نے سوال دیکھا جواب لکھا وغیرہ وغیرہ سب افعال اختیاریہ کی اسناد دو معنی کو محتمل۔ ایک یہ کہ زید و عمرو مجیب نے اپنی قدرت ذاتیہ مستقلہ تامہ سے یہ افعال کئے، دوسرے قدرت عطائیہ ناقصہ قاصرہ سے اول قطعاً شرک ہے لہٰذا ان اطلاقات

---

[1] تلخیص المفتاح الفن الثالث مکتبہ ضیائیہ راولپنڈی ص ۱۰۵ و ۱۰۶ [2] التعریفات لسید شریف علی الجرجانی باب الالف انتشارات ناصر خسرو طھران ایران ص ۱۸

Fatawa Rizwia Volume 24

...avoidance would become necessary, and this is clearly, definitely, and summarily false. Even the learned respondent must have used such polytheistic ambiguities throughout his life in his daily conversations, and his writings must be filled with thousands upon thousands of such ambiguous shirk. Let it go; you probably also read 'Wa Ta'ala Jadduka' (And Exalted is Your Majesty) in prayer. How explicitly and severely blasphemous the other common and well-known, even more famous meanings of 'Jad' (grandfather) would be here! It is strange that despite knowing the ambiguity of such a great blasphemy, it was not considered prohibited. The fact is that in ambiguity, immediacy, precedence, and proximity are required, and that is what is prohibited, not mere possibility. This point is worth memorizing: nowadays many ignorant people fall into the abyss of error by not distinguishing between ambiguity and possibility.

Secondly: If such nitpickings are to be made, why blame only 'Hidayat Ali'? Call the holy name 'Ali' of Maula Ali (Karam Allahu Ta'ala Wajhahu) even more severely heinous. There, you saw shirk in one of four possibilities; here it is an equal matter, a half-and-half share. 'Ali' has two meanings: essential highness (Ulu-e-Zaati), which is essential to the Essence for the Essence that is transcendent above all relations (Essential highness, i.e., personal highness without any cause or medium, is only for that holy Being who is free from and above all relations and attributions. - Trans.). The second is relative, which is for creation. Proving the first is definitely shirk, so the ambiguity of shirk in 'Ali' would be double that of 'Hidayat Ali'. No ignorant person would say this, let alone a learned one (No ignorant person can say this, let alone a learned one. - Trans.).

Thirdly: Why only 'Ali'? To whatever extent there are names shared in wording between the Creator and the created, such as Rashid, Hamid, Jameel, Jaleel, Kareem, Aleem, Haleem, Raheem, etc., applying all of them to servants would have the same ambiguity of shirk, which would be twice as much as the ambiguity in 'Hidayat Ali'. Yet the Almighty Himself bestowed one or two of His Beautiful Names upon the noble Prophets (peace be upon them), and in the blessed names of the Radiant Presence, the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him and his family), more than sixty appear, as the scholars have detailed in 'Al-Mawahib'[1] and other works (As the noble scholars have detailed in Mawahib-ul-Ladunniyyah etc. - Trans.). The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) himself stated his holy name as 'Hashir'. How many elders among the Sahaba,

Tabi'un, and Imams of religion were named 'Malik'? Speak of their ambiguity! It is clarified in reliable works like 'Durr-e-Mukhtar' etc. that such names are permissible, and for servants, other meanings will be intended, not those which are for the Truth (Allah).

[1] Al-Mawahib al-Ladunniyya, Al-Maqsad ath-Thani, Section One, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 2/215 to 21

फतावा रज़विया जिल्द 24

...परहेज करना लाजिम हो जाएगा और यह स्पष्ट रूप से, निश्चित रूप से और संक्षेप में गलत है। विद्वान प्रत्युत्तरदाता ने भी जीवन भर अपने दैनिक बोलचाल में ऐसी शिर्क की अस्पष्टताओं का प्रयोग किया होगा और उनके लेखन में हज़ारों-हज़ार ऐसी संदिग्ध शिर्क भरी होंगी। जाने दीजिये, नमाज़ में 'व तआला जद्दुका' (और तेरी शान बुलंद है) तो शायद आप भी पढ़ते होंगे। 'जद' के दूसरे प्रसिद्ध और विख्यात, बल्कि अधिक प्रसिद्ध अर्थ (दादा/पूर्वज) यहाँ कितने स्पष्ट और गंभीर कुफ्र (ईश-निंदा) हैं! आश्चर्य है कि इतने बड़े कुफ्र की अस्पष्टता जानकर भी इसे हराम नहीं माना गया। बात वही है कि अस्पष्टता में तत्परता, प्रबलता और निकटता आवश्यक है, और वही वर्जित है न कि मात्र संभावना। यह बात याद रखने योग्य है कि आज कल बहुत से अज्ञानी लोग अस्पष्टता और संभावना में अंतर न करके त्रुटि के गर्त में गिर जाते हैं।

दूसरा: यदि ऐसी ही बाल की खाल निकालनी है, तो केवल 'हिदायत अली' पर ही क्यों आरोप लगाते हैं? मौला अली (करम अल्लाहु तआला वज्हहु) के पवित्र नाम 'अली' को इससे कहीं अधिक जघन्य कहें। वहाँ तो चार संभावनाओं में से एक में आपको शिर्क दिखाई दिया था, यहाँ तो मामला बराबर का, आधा-आधा हिस्सा है। अली के दो अर्थ हैं: मौलिक उच्चता (उलू-ए-ज़ाती) जो स्वतः सत्ता के लिए उस सत्ता के लिए है जो संबंधों से परे है (मौलिक उच्चता अर्थात व्यक्तिगत उच्चता बिना किसी कारण या माध्यम के केवल उसी पवित्र सत्ता के लिए है जो सभी संबंधों और नातों से मुक्त और उच्च है। - अनुवाद)। दूसरा सापेक्ष है जो सृष्टि के लिए है। पहले को सिद्ध करना निश्चित रूप से शिर्क है, तो 'अली' में शिर्क का संदेह 'हिदायत अली' से दोगुना होगा। कोई अज्ञानी भी ऐसा नहीं कह सकता, विद्वान की तो बात ही क्या (कोई अज्ञानी भी यह नहीं कह सकता, तो कोई विद्वान कैसे कहेगा? - अनुवाद)।

तीसरा: केवल 'अली' ही क्यों? सृष्टा और सृष्टि के बीच शब्दों में साझा किए गए नामों की जितनी भी सीमा है, जैसे रशीद, हमीद, जमील, जलील, करीम, अलीम, हलीम, रहीम आदि, उन सभी को बंदों (दासों) पर लागू करने में शिर्क का वैसा ही संदेह होगा जो 'हिदायत अली' के संदेह से दोगुना होगा। हालांकि स्वयं अल्लाह ने नबियों (अलैहिमुस्सलाम) को अपने सुंदर नामों में से किसी को एक, किसी को दो नाम प्रदान किए, और नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के पवित्र नामों में तो साठ से अधिक आते हैं, जैसा कि विद्वानों ने 'अल-मवाहिब'[1] आदि में विस्तार से बताया है (जैसा कि विद्वानों ने मवाहिब-ए-लदुनिया आदि में विस्तार से बताया है। - अनुवाद)। स्वयं नबी-ए-पाक

(सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने अपना पवित्र नाम 'हाशिर' बताया। सहाबा, ताबईन और धर्म के इमामों में कितने बड़ों का नाम 'मालिक' था? उनके संदेह के बारे में कहें! 'दुर्रे मुख्तार' आदि विश्वसनीय ग्रंथों में स्पष्ट किया गया है कि ऐसे नाम जायज़ हैं और बंदों के लिए दूसरे अर्थ लिए जाएंगे, वे नहीं जो हक (अल्लाह) के लिए हैं।

[1] अल-मवाहिब अल-लदुनिया, अल-मक़्सद अस-सानी, अध्याय एक, अल-मकतब अल-इस्लामी, बेरूत 2/215 से 21

سے احتراز لازم ہو جائے گا اور یہ بداہتہً قطعاً اجمالاً باطل ہے۔ فاضل مجیب نے بھی عمر بھر اپنے محاورات روزانہ میں ایسے ایہامات شرک برتے اور ان کی تصانیف میں ہزار در ہزار ایسے شرک بالا یہام بھرے ہوں گے ، جانے دیجئے نماز میں وتعالٰی جدک تو شاید آپ بھی پڑھتے ہوں "جد" کے دوسرے مشہور و معروف بلکہ مشہور تر معنی یہاں کیسے صریح شدید کفر ہیں ، عجیب کہ اتنے بڑے کفر کا ایہام جان کر اسے حرام نہ مانا تو بات وہی ہے کہ ایہام میں تبادر وسبقت واقربیت درکار ہے اور وہی ممنوع ہے نہ کہ مجرد احتمال ، یہ فائدہ واجب الحفظ ہے کہ آج کل بہت جہلا ایہام احتمال میں فرق نہ کر کے ورطہ غلط میں پڑتے ہیں۔

ثانیاً: ایسی ہی نکتہ تراشیاں ہیں تو صرف ہدایت علی پر کیوں الزام رکھئے مولٰی علی کرم اللہ تعالٰی وجہہ کے نام پاک علی کو اس سے سخت تر شنیع کہئے وہاں تو چار احتمالوں سے ایک میں آپ کو شرک نظر آیا تھا، یہاں برابر کا معاملہ نصفا نصف کا حصہ ہے۔ علی کے دو معنی ہیں علو ذاتی کہ بالذات للذات لذات متعالی عن الاضافات ہو (بلندی بالذات یعنی ذاتی بلندی بغیر کسی سبب اور واسطہ کے صرف اس ہستی پاک ہی کے لئے ہے جو تمام اضافتوں اور نسبتوں سے مبرا اور بلند ہے۔ ت) دوسرا اضافی کہ خلق کے لئے ہے اول کا اثبات قطعاً شرک تو علی میں ایہام شرک ہدایت علی سے دونا ٹھہرے گا والا یقول بہ جاھل فضلا عن فاضل (کوئی جاہل بھی یہ نہیں کہہ سکتا چہ جائیکہ کوئی فاضل یہ کہے۔ ت)

ثالثاً : ایک علی ہی کیا جس قدر اسمائے مشترکہ فی اللفظ میں الخالق والمخلوق ہیں ، جیسے رشید وحمید و جمیل و جلیل و کریم وعلیم و حلیم ورحیم وغیر ہا سب کا اطلاق عباد پر ویسا ہی ایہام شرک ہوگا جو ہدایت علی کے ایہام سے دو چند رہے گا ، حالانکہ خود حضرت عزت نے انبیائے

کرام علیہم الصلوۃ والسلام میں کسی کو ایک کسی کو دو نام اپنے اسمائے حسنیٰ سے عطا فرمایا اور حضور پر نور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے اسمائے طیبہ میں تو ساٹھ سے زیادہ آئے کما فصلہ العلماء فی المواہب ۱ وغیرہا (جیسا کہ علماء کرام نے مواہب لدنیہ وغیرہ میں مفصل بیان دیا ہے۔ت) خود حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے اپنا نام پاک حاشر بتایا ، صحابہ کرام وتابعین وائمہ دین میں کتنے اکابر کا نام مالک تھا ان کے ایہام کو کہئے ، در مختار وغیرہ معتمدات میں تصریح کی کہ ایسے نام جائز ہیں اور عباد کے حق میں دوسرے معنی مراد لئے جائیں گے نہ وہ جو حضرت حق کے لئے ہیں۔

۱ المواہب اللدنیۃ المقصد الثانی الفصل اول المکتب الاسلامی بیروت ۲ / ۲۱۵ تا ۲۱

Fatawa Ridawiyya, Volume 24

[Box Top Left: Arabic] It is permissible to name someone Ali, Rashid, or other shared names. Therefore, in our context, those meanings will be intended which are not intended for Allah Almighty. 1—

[Box Top Right: Urdu] Naming someone with Ali, Rashid, and other shared names is permissible; therefore, for us, that meaning will be intended which is not intended for Allah Almighty. (T)

Why do they not say that such names are impermissible due to being shared, as the possibility of a second meaning of polytheism remains? "There is no power nor strength except with Allah, the Most High, the Great" (Meaning, no one has the power to stay safe from sins and do good except with the guidance of Allah Almighty, the Great and Exalted. - T).

Fourthly: Out of ignorance, the questioner only asked about polytheism in the name 'Abdullah'. The respondent, through their own excellence, added 'etc.' as well, so that they could save their own noble name from the delusion of polytheism. However, if your argument is sound, then it is safe from this delusion as well. 'Abdul Hayy' has two parts, and both have two meanings each: one 'abd' as opposed to 'Ilah' (God), the second as opposed to 'Aqa' (master).

[Box Middle Left: Arabic] Allah Almighty said: "And marry the unmarried among you and the righteous among your male slaves and female slaves." 2—

[Box Middle Right: Urdu] Allah Almighty commanded: O people! Marry off those among you who are without marriage (i.e., unmarried) and your righteous male and female slaves. (T)

Look, Allah Subhanuhu referred to our slaves as our 'abd'. Similarly, one 'Hayy' is an attribute of Allah signifying inherent, eternal, everlasting, and necessary life, and the other is applicable to me and you, Zaid and Amr, as manifested by the noble verse "You bring forth the living from the dead" 3 (O Allah! You bring the living out of the dead. - T) and others. Now, if 'abd' is taken in the first sense and 'Hayy' in the second sense, it is definitely polytheism. Those same four scenarios exist, and polytheism is present in that one scenario. Then how is 'Abdul Hayy' safe from the delusion of polytheism? Avoiding it was also necessary. Exactly the same discourse was given by

the blessed, virtuous, perfect in faith, straight-path Sunni, His Excellency Maulana Maulvi Abdul Haleem.

1. Al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Hazr wal-Ibahah, Chapter on Sale, Matba' Mujtabai, Delhi, 2/252.
2. Al-Qur'an al-Karim, 24/32.
3. Al-Qur'an al-Karim, 3/27.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

[ऊपरी बॉक्स बाएँ अरबी] अली, रशीद और इनके अलावा अन्य साझा नामों (अस्मा-ए-मुश्तरका) के साथ किसी का नाम रखना जायज़ है। इसलिए हमारे हक में वह अर्थ लिया जाएगा जो अल्लाह तआला के हक में मुराद नहीं लिया जाता। 1—

[ऊपरी बॉक्स दाएँ उर्दू] अली, रशीद और इनके अलावा अन्य साझा नामों के साथ किसी का नाम रखना जायज़ है; इसलिए हमारे हक में वह अर्थ लिया जाएगा जो अल्लाह तआला के हक में मुराद नहीं लिया जाता। (त)

वे ऐसा क्यों नहीं कहते कि ऐसे नाम साझा होने के कारण नाजायज़ हैं क्योंकि उनमें शिर्क (बहुदेववाद) के दूसरे अर्थ की संभावना बनी रहती है? "ला हौल वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम" (गुनाहों से सुरक्षित रहने और नेकी करने की ताकत अल्लाह तआला के सिवा किसी में नहीं है, जो बुज़ुर्ग और अज़ीम ज़ात है। - त)।

चौथा: पूछने वाले ने अपनी अज्ञानता से केवल 'अब्दुल्लाह' में शिर्क के बारे में पूछा था। जवाब देने वाले ने अपनी श्रेष्ठता से इसमें 'वगैरह' भी जोड़ दिया ताकि अपने नाम को शिर्क के भ्रम से बचा सकें। लेकिन अगर आपकी दलील सही है, तो यह इस भ्रम से सुरक्षित है। 'अब्दुल हई' में दो भाग हैं और दोनों के दो-दो अर्थ हैं; पहला 'अब्द' खुदा के मुक़ाबले में, दूसरा आका के मुक़ाबले में।

[मध्य बॉक्स बाएँ अरबी] अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और तुम में से जो निकाह के बिना (अर्थात अविवाहित) हैं और तुम्हारे नेक गुलाम और लौंडियों के साथ निकाह कर दो।" 2—

[मध्य बॉक्स दाएँ उर्दू] अल्लाह तआला ने फ़रमाया: लोगो! तुम में से जो निकाह के बिना (यानी गैर शादीशुदा) हैं और जो तुम्हारे नेक गुलाम और लौंडियां हैं उनके साथ निकाह कर दो। (त)

देखो, हक़ सुब्हानहू ने हमारे गुलामों को हमारा 'अब्द' फ़रमाया। इसी तरह एक 'हई' अल्लाह का नाम है जो ज़ाती, अज़ली, अबदी और वाजिबा ज़िंदगी का सूचक है, और दूसरा मुझ पर, आप पर, ज़ैद और अम्र सब पर लागू होता है, जैसा कि आयत-ए-करीमा "तुख्रिजुल हय्या मिनल मय्यित" 3 (ऐ अल्लाह! तू मुर्दे से ज़िंदा निकालता है। - त) वगैरह से ज़ाहिर है। अब अगर 'अब्द' को पहले अर्थ में और 'हई' को दूसरे अर्थ में लिया जाए, तो निश्चित रूप से शिर्क है। वही चार सूरतें हैं और उसी एक सूरत में शिर्क मौजूद है। फिर 'अब्दुल हई' शिर्क के भ्रम से कैसे बच गया? इससे भी बचना ज़रूरी

था। ठीक यही तक़रीर बरकत वाले, फ़ाज़िल कामिल, सहीह अक़ीदा सुन्नी मुस्तक़ीम जनाब मौलाना मौलवी अब्दुल हलीम की थी।

1. अल-दुर्रुल मुख्तार, किताबुल हज़र वल इबाहा, फ़स्ल फ़िल बैअ, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 2/252.
2. अल-क़ुरान अल-करीम, 24/32.
3. अल-क़ुरान अल-करीम, 3/27.

فتاوی رضویہ جلد ۲۴

[اوپری باکس بائیں: عربی] جاز التسمیة بعلی ورشید وغیرھما من الاسماء المشترکة ویراد فی حقنا غیر ما یراد فی حق اللہ تعالی 1-

[اوپری باکس دائیں: اردو] علی، رشید اور ان کے علاوہ دیگر اسماء مشتر کہ کے ساتھ کسی کا نام رکھنا جائز ہے لہٰذا ہمارے حق میں وہ معنی مراد لیا جائے گا جو اللہ تعالیٰ کے حق میں مراد نہیں لیا جاتا۔ (ت)

کیوں نہیں کہتے کہ ایسے نام بوجہ اشتراک ناجائز ہیں کہ دوسرے معنی شرک کا احتمال باقی ہے، ولاحول ولاقوۃ الاباللہ العلی العظیم (گناہوں سے محفوظ رہنے اور نیکی کرنے کی طاقت کسی میں نہیں سوائے اللہ تعالیٰ بزرگ و عظیم ذات کی توفیق کے۔ ت)

رابعاً: سائل نے اپنی جہالت سے صرف عبد اللہ میں شرک سے سوال کیا تھا حضرت مجیب نے اپنی نبالت سے وغیرہ بھی بڑھا دیا کہ اپنے نام نامی کو ایہام شرک سے بچالیں مگر جناب کی دلیل سلامت ہے تو اس ایہام سے سلامت بخیر ہے۔ عبد الحی میں دو جزو ہیں اور دونوں کے دودو معنی، ایک عبد مقابل الہ، دوم مقابل آقا۔

[درمیانی باکس بائیں: عربی] قال اللہ تعالیٰ "وَ أَنْكِحُوا الْأَيَامَى مِنْكُمْ وَالصَّلِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ " -2

[درمیانی باکس دائیں: اردو] اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا: لوگو! تم میں سے جو نکاح کے بغیر (یعنی غیر شادی شدہ) ہیں اور جو تمہارے صالح غلام اور لونڈیاں ہیں ان کے ساتھ نکاح کر دو (ت)

دیکھو حق سبحانہ نے ہمارے غلاموں کو ہمارا عبد فرمایا، یوں ہی ایک حی اسم الہی کہ حیات ذاتیہ، ازلیہ، ابدیہ، واجبہ سے مشعر، اور دوسرا من وتو، زید وعمر و سب پر صادق، جس سے آیت کریمہ "تُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ" 3 (اے اللہ تعالیٰ! تو مردے سے زندہ نکالتا ہے ت) وغیر ہا مظہر، اب اگر عبد بمعنی اول اور حی بمعنی دوم لیجئے قطعاً شرک ہے وہی چار صورتیں ہیں اور وہی ایک صورت پر شرک موجود، پھر عبدالحی ایہام شرک سے کیونکر محفوظ، اس سے بھی احتراز لازم تھا، بعینہ یہی تقریر حضرت بابرکت فاضل کامل صحیح العقیدہ سنی مستقیم جناب مستطاب مولانا مولوی عبدالحلیم

1 الدرالمختار کتاب الحظر والاباحة فصل فی البیع مطبع مجتبائی دہلی ۲ / ۲۵۲ 2 القرآن الکریم ۲۴/ ۳۲ 3 القرآن الکریم ۳/ ۲۷

Fatawa Razviya - Volume 24

...will apply to the name of [someone] rahmatullahi alayh. Observe to what extent this hair-splitting and scrutiny has reached. Nasa'lullāha salāmah (We ask Allah Almighty for safety. - Trans). According to this humble servant, it appears that this vibrating argument reached the honorable respondent through the bounty of the questioner; the questioner mentioned it, and the respondent accepted it without consideration, otherwise their mind would perhaps never have turned towards such a base, weak, diseased, and weary argument, by which their own illustrious name would also be declared impermissible and necessary to avoid.

Fifthly: It is said to "Ya Ali" that when the intention is calling upon the Deity, the dispute vanishes. Well, what is the reason here? A clear second possibility exists. One's own lack of intention cannot negate the ambiguity and possibility. Ambiguity is said to exist precisely where the ambiguous meaning is not the speaker's intent; you have just heard the texts of Talkhis and Ta'rifat. And if the basis and reliance are on intention, then what objection is there to "Hidayat Ali"? When was the polytheistic meaning intended or meant there?

Sixthly: When will adding 'Al' (the definite article) to 'Ali' grant salvation from such universal polytheism? Even if it is not necessary for [the name] Ali, it can certainly be applied to a quality/attribute, and it is certainly among the shared attributes. So the possibility still remains and avoidance is necessary. Rather, from Sirajiyyah, Tatarkhaniyyah, Minah al-Ghaffar, etc., it is evident that keeping the name 'Al-Ali' with 'Al' is also permissible. It is in Radd al-Muhtar:

In at-Tatarkhaniyyah, it is narrated from al-Fatawa as-Sirajiyyah that giving names which are found in the Book of Allah Almighty as attributes of Allah Almighty, like Ali, al-Kabir, ar-Rashid, and al-Badi', etc., is permissible... and the like is in al-Minah from it, and its apparent meaning is permissibility even if it is definite with 'Al'.

It is narrated in Tatarkhaniyyah from Fatawa Sirajiyyah that keeping names found in the Book of Allah as attributes of Allah Almighty, such as Ali, Kabir, Rashid, and Badi' etc., is permissible, and similarly it is narrated in Minah al-Ghaffar from Sirajiyyah. So, apparently, this is permissible even if it is made definite with 'Al'. (Trans)

Seventhly: When the discussion is based on possibility, the distinction between the two meanings of 'conveying to the goal' (isal ila al-matlub) and 'showing the path'

(iradat al-tariq) is invalid. Both 'conveying' and 'showing' consist of two meanings: 'creation' (khalq) and 'causation' (tasabbub). In the sense of 'creation', both are exclusive to the Oneness of the Divine Presence. Is 'showing' in the sense of 'creating vision' possible for anyone other than Him? And in the sense of 'causation', both are possible for others. Is 'conveying' in the sense of 'causality in reaching' not attributed to the Prophets? Thus, the distinction has fallen and the hollow talk has vanished (So...

1 Radd al-Muhtar, Kitab al-Hazr wa'l-Ibaha, Fadl fi al-Bay', Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/268.

फ़तावा रज़विया - भाग २४

...[किसी के रहमतुल्लाही अलैह के नाम में जारी होगी, देखें कि यह बाल की खाल निकालना और सूक्ष्मता कहाँ तक पहुँच गई है। नसअल्लुल्लाहा सलामह (हम अल्लाह तआला से सलामती का सवाल करते हैं। -अनु.) फ़क़ीर के नज़दीक ज़ाहिर है कि यह फड़कती हुई दलील हज़रत मुजीब (उत्तरदाता) को जनाब साइल (प्रश्नकर्ता) के फ़ैज़ से पहुँची; साइल ने ज़िक्र किया, मुजीब ने बिना सोचे-समझे क़बूल कर ली, वर्ना उनका ज़हन शायद ऐसी दलील-ए-ज़लील, अलील, कलील (तुच्छ, कमज़ोर और थकी हुई दलील) की तरफ़ हरगिज़ न जाता जिससे खुद उनका नाम-ए-नामी (शुभ नाम) भी अदम-ए-जवाज़ (अवैधता) और लाज़िम-उल-अहतिराज़ (बचना ज़रूरी) करार पाता।

पाँचवाँ: "या अली" को कहा जाता है कि जब माबूद (ईश्वर) को पुकारना मक़सूद हो तो विवाद समाप्त हो जाता है। जी, क्या वजह है? यहाँ भी साफ़ दूसरा एहतमाल (संभावना) मौजूद है। अपना इरादा न होना ईहाम (भ्रम) और एहतमाल का निवारक कब हो सकता है? ईहाम तो कहते ही वहां हैं जहाँ वह भ्रमित करने वाला अर्थ वक्ता का मक़सूद न हो; 'तल्ख़ीस' और 'तारीफ़ात' की इबारतें अभी सुन चुके। और अगर दारोमदार और भरोसा इरादे पर है, तो "हिदायत अली" पर क्या आपत्ति है? वहाँ कब शिर्क वाला अर्थ मक़सूद और मुराद है?

छठा: अली पर 'अलिफ़-लाम' (अल) लगाना कब ऐसे सार्वभौमिक शिर्क से निजात दिलाएगा? 'अली' पर लाज़िम न सही, 'सिफ़त' (गुण) पर तो निश्चित रूप से आ सकता है, और वह यकीनन मुश्तरक (साझा) सिफ़ात में से है, तो एहतमाल अब भी क़ायम और बचना लाज़िम है। बल्कि सिराजिया, तातारखनिया और मिनह-उल-ग़फ़्फ़ार आदि से तो ज़ाहिर है कि 'अल-अली' (अल के साथ) नाम रखना भी जायज़ है। 'रद्द-उल-मुह्तार' में है:

तातारखनिया में फ़तावा सिराजिया से नक़ल किया गया है कि ऐसे नाम रखना जो अल्लाह तआला की किताब में अल्लाह तआला की सिफ़ात के तौर पर पाए जाते हैं, जैसे अली, कबीर, रशीद और बदीअ आदि जायज़ है... और इसी तरह 'अल-मिनह' में भी है, और इसका ज़ाहिर जायज़ होना है, चाहे वह 'अल' के साथ मारिफ़ा (निश्चित संज्ञा) हो।

तातारखनिया में फ़तावा सिराजिया से नक़ल किया गया है कि अल्लाह की किताब में अल्लाह तआला की सिफ़ात के तौर पर पाए जाने वाले नाम जैसे अली, कबीर, रशीद और बदीअ आदि रखना जायज़ है, और इसी तरह 'मिनह-उल-ग़फ़्फ़ार' में 'सिराजिया' से नक़ल किया गया है। अतः ज़ाहिर तौर पर यह जायज़ है चाहे वह 'अल' से मारिफ़ा हो। (अनु.)

सातवाँ: जब बातचीत एहतमाल (संभावना) पर चल रही है, तो 'ईसाल इला अल-मतलूब' (मंज़िल तक पहुँचाना) और 'इरादत-ए-तरीक़' (रास्ता दिखाना) के दो अर्थों में भेद करना बातिल (अमान्य) है। 'ईसाल' और 'इरादत' दोनों दो अर्थों 'ख़ल्क़' (सृजन) और 'तसब्बुल' (कारण बनना) पर आधारित हैं। 'ख़ल्क़' के अर्थ में दोनों हज़रत-ए-अहदियत (ईश्वर) के साथ विशेष हैं। क्या 'अराअत' (दिखाना) 'ख़ल्क़-ए-रुय्यत' (दृष्टि पैदा करने) के अर्थ में ग़ैर-अल्लाह के लिए मुमकिन है? और 'तसब्बुल' के अर्थ में दोनों दूसरों के लिए प्राप्त हैं। क्या अंबिया से 'ईसाल' 'सबबियत-फ़िल-वूसूल' (पहुँचने में कारण बनना) के अर्थ में नहीं होता? अतः यह भेद मिट गया और व्यर्थ की बातचीत समाप्त हो गई (अतः...

1 रद्द-उल-मुह्तार, किताब-उल-हज़र वल-इबाह, फ़स्ल फ़िल-बैअ, दार इहया-उत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, ५/२६८।

رحمۃ اللہ علیہ کے اسم میں جاری ہوگی ملاحظہ ہو کہ یہ تشقیق وتدقیق کہاں تک پہنچی نسال اللہ سلامۃ (ہم اللہ تعالیٰ سے سلامتی کا سوال کرتے ہیں۔ت) فقیر کے نزدیک ظاہر آ یہ پھڑکتی ہوئی برہان حضرت مجیب کو جناب سائل کے فیض سے پہنچی، سائل نے ذکر کی، مجیب نے بے غور کئے قبول کر لی ورنہ ان کا ذہن شاید ایسی دلیل ذلیل علیل کلیل کی طرف ہرگز نہ جاتا جس سے خود ان کا نام نامی بھی عدم الجواز ولازم الاحتراز قرار پاتا۔

خامسا: یا علی کو فرما یا جاتا ہے کہ جب مقصود ندائے معبود تو نزاع مفقود، جی کیا وجہ یہاں بھی صاف دوسرا احتمال موجود، اپنا قصد نہ ہو نا ایہام و احتمال کا نافی کب ہو سکتا ہے، ایہام تو کہتے ہی وہاں ہیں جہاں وہ معنی موہم مراد متکلم نہ ہوں، تلخیص و تعریفات کی عبارتیں ابھی سن چکے اور اگر قصد پر مدار و اعتماد ہے تو ہدایت علی پر کیا ایراد ہے، وہاں کب معنی شرک مقصود و مراد ہے۔

سادسا: علی پر الف لام لا نا کب ایسے عالمگیر شرک سے نجات دے گا، علی پر لازم نہ آتا سہی صفتہ پر تو قطعاً آ سکتا ہے اور وہ یقینا صفات مشتر کہ سے ہے تو احتمال اب بھی قائم اور احتراز لازم، بلکہ سراجیہ و تاتارخانیہ و منح الغفار وغیرہا سے تو ظاہر کہ العلی باللام نام رکھنا بھی روا ہے، ردالمختار میں ہے :

فی التاتارخانیة عن السراجیة التسمیة باسم یوجد فی کتاب اللہ تعالیٰ کالعلی والکبیر والرشید والبدیع جائزۃ الخ ومثلہ فی المنح وظاھرۃ الجواز ولومعرفا بال عنھا 1.

تاتارخانیہ میں فتاوی سراجیہ سے نقل کیا گیا ہے کہ ایسے نام رکھنا جو اللہ تعالیٰ کی کتاب میں اللہ تعالیٰ کی صفات کے طور پر پائے جاتے ہیں جیسے علی، کبیر، رشید اور بدیع وغیرہ جائز ہے الخ، اور اسی طرح منح الغفار میں سراجیہ سے نقل کیا گیا ہے پس بظاہر یہ جائز ہے اگر چہ وہ ال سے معرفہ ہو۔(ت)

سابعاً: جب گفتگو احتمال پر چل رہی ہے تو معنیین ایصال الی المطلوب وارادۃ طریق میں تفرقہ باطل، ایصال ورا دۃ دونوں دو معنی خلق و تسبب پر مشتمل بمعنی خلق دونوں مختص بحضرت احدیت ہیں، کیا ارائت بمعنی خلق رویت غیر سے ممکن ہے اور بمعنی تسبب دونوں غیر کے لئے حاصل ہیں، کیا انبیاء سے ایصال بمعنی سببیت فی الوصول نہیں ہوتا فطاح التفرقۃ وزاح الشقشقۃ (پس

1 ردالمختار کتاب الحظر والاباحۃ فصل فی البیع داراحیاء التراث العربی بیروت ۵/ ۲۶۸

The distinction between the two was eliminated and the hesitation was removed. (Transl.) Yes, say it like this: on one side 'Ali' is common, and on the other side 'guidance of creation' and 'causation' are both used. Thus, four possibilities arose. However, a problem will now arise: just as 'guidance' in the sense of 'creation' cannot be attributed to anyone other than God, similarly, in the sense of 'mere causation,' it cannot be attributed to the Almighty, otherwise, God forbid, the actual Creator and Giver would be someone else, and Allah Almighty would merely be the cause, mediator, and means. Its level of polytheism (shirk) would be even higher, for while there it was equality, here it would mean granting preference over Allah the Exalted. You treated the first by putting 'Lam' on 'Ali,' but where will the treatment for this second one, which is even harsher, come from? Now manufacture a new 'Lam' and place it on 'Hidayat' (guidance) so that it becomes fixed in the meaning of 'creation,' the possibility of 'causation' is removed, and the illusion of shirk or something worse than shirk finds no way.

Eighthly: Why just 'guidance'? All actions that are common in their application will face this same calamity, such as benevolence and favor, humiliation and honor, teaching and explaining, punishing and causing pain, giving and withholding, harming and benefiting, conquering and killing, appointing and dismissing, etc. If you attribute them to creation, the meaning of 'creation' suggests polytheism, and to the Creator, the meaning of 'causation' suggests disbelief (kufr).

In any case, where is the escape? If you say that the attribution to the Creator Almighty is sufficient proof that the meaning of 'creation' is intended, we will say that attribution to creation is sufficient proof that the meaning of 'causation' is intended. Therefore, the scholars have clearly stated that in examples like 'the spring grew the vegetation' and 'time ruled over me,' the speaker being a monotheist (muwahhid) is sufficient evidence that the attribution is a rational metaphor. Now, by the grace of Allah, the basis of this illusion no longer remains.

Ninthly: You have (even though the divine names are fixed by revelation, and you especially consider the lack of occurrence in text as an argument for prohibition in many places) invented a new name for the Almighty: 'Al-Musawwib'. Every answer begins with 'Huwal Musawwib' (He is the one who points out the right path. Transl.). How is this free from an ugly interpretation? Just as 'tasweeb' means pointing out correctly, it also means bowing the head. For example, one who sits with a bowed

head is called 'Musawwib'. Since both are literal meanings, then according to your way, there is an illusion of anthropomorphism (tajseem) in this very word, and anthropomorphism is disbelief and great misguidance.

Tenthly: When the attribution of guidance to Mawla Ali (may Allah Almighty honor his face) is a matter of forbidden doubt and necessitates avoidance, then to intentionally attribute guidance to that doorstep of guidance [the Prophet or Ali], to what extent...

दोनों में भेद समाप्त हो गया और दुविधा दूर हो गई। (अनु.) हाँ, इस तरह कहिए कि एक ओर 'अली' साझा है और दूसरी ओर 'सृष्टि का मार्गदर्शन' और 'कारण' दोनों में प्रयुक्त होता है। इस प्रकार चार संभावनाएं बनीं। परंतु अब यह समस्या उत्पन्न होगी कि जिस प्रकार 'मार्गदर्शन' का अर्थ 'सृष्टि की रचना' ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य की ओर समर्पित नहीं किया जा सकता, वैसे ही 'मात्र कारण' के अर्थ में यह ईश्वर की ओर समर्पित नहीं किया जा सकता, अन्यथा ईश्वर न करे, वास्तविक सृष्टिकर्ता और दाता कोई और ठहरेगा और अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल केवल कारण, माध्यम और वसीला बनकर रह जाएगा। यह शिर्क(बहुदेववाद) का और भी ऊँचा स्तर होगा क्योंकि वहां तो समानता थी, यहाँ अल्लाह सुब्हानहू पर श्रेष्ठता देना निर्धारित होगा। आपने 'अली' पर 'लाम' लाकर पहले का समाधान कर लिया, लेकिन इस दूसरे का समाधान कहाँ से आएगा जो उससे भी अधिक कठोर है? अब एक नया 'लाम' गढ़कर 'हिदायत' (मार्गदर्शन) पर लगाइए ताकि वह रचना के अर्थ में निर्धारित हो जाए और कारण होने की संभावना समाप्त होकर शिर्क या शिर्क से भी बदतर होने का भ्रम न रहे।

आठवीं बात: केवल 'हिदायत' ही क्यों? जितने भी कार्य साझा रूप से लागू होते हैं, उन सभी में इसी आफत का सामना करना पड़ेगा जैसे कि परोपकार और इनाम, अपमान और सम्मान, शिक्षण और बोध, दंड और पीड़ा देना, देना और रोकना, हानि और लाभ, क्रोध और वध, नियुक्ति और पदच्युति आदि। यदि सृष्टि की ओर संकेत किया जाए तो रचना का अर्थ शिर्क का भ्रम देता है और सृष्टिकर्ता की ओर हो तो कारण का अर्थ कुफ्र (अविश्वास) का सूचक है।

बहरहाल, बचाव कहाँ है? यदि आप कहें कि सृष्टिकर्ता अज़्ज़-व-जल्ल की ओर संबंध ही पर्याप्त प्रमाण है कि रचना का अर्थ अभिप्रेत है, तो हम कहेंगे कि सृष्टि की ओर संबंध ही पर्याप्त प्रमाण है कि कारण का अर्थ अभिप्रेत है। इसीलिए विद्वानों ने स्पष्ट किया है कि उदाहरणों जैसे 'वसंत ने वनस्पति उगाई' और 'काल ने मुझ पर शासन किया' में वक्ता का एकेश्वरवादी (मुवह्हिद) होना ही पर्याप्त साक्ष्य है कि यह रूपक (मजाज़-ए-अकली) है। अब अल्लाह के शुक्र से इस भ्रम का आधार ही नहीं रहा।

नौवीं बात: आपने (हालांकि अल्लाह के नाम शास्त्रों पर आधारित हैं और आप विशेष रूप से कई स्थानों पर उनके उपयोग न होने को निषेध का प्रमाण मानते हैं) अल्लाह के लिए एक नया नाम 'मुसव्विब' (Al-Musawwib) गढ़ा है। हर उत्तर का आरंभ 'हुवल मुसव्विब' (वही सही रास्ता बताने वाला है। अनु.) से होता है। यह कब घृणित व्याख्या की संभावना से मुक्त है? 'तस्वीब' जैसे सही बताने

को कहते हैं, वैसे ही सिर झुकाने को भी कहते हैं। उदाहरण के लिए जो सिर झुकाए बैठा हो उसे 'मुसव्विब' कहते हैं। चूँकि दोनों अर्थ वास्तविक हैं, तो आपके तरीके से इसी शब्द में 'तजसीम' (ईश्वर को देहधारी मानना) का भ्रम है, और तजसीम कुफ़्र और महान पथभ्रष्टता है।

दसवीं बात: जब मौला अली (कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम) की ओर मार्गदर्शन के संबंध का संदेह एक वर्जित विषय का संदेह है और उससे बचना अनिवार्य है, तो जानबूझकर उस मार्गदर्शन के स्रोत की ओर मार्गदर्शन का संबंध किस हद तक...

دونوں میں تفرقہ نابود ہوگیا اور تذبذب زائل ہوگیا۔ ت) ہاں یوں کہئے کہ ادھر علی مشترک ادھر ہدایت خلق و تسبب دونوں میں مستعمل، یوں چار احتمال ہوئے، مگر اب یہ مصیبت پیش آئے گی کہ جس طرح ہدایت بمعنی خلق غیر خدا کی طرف منسوب نہیں ہو سکتی بمعنی محض تسبب حضرت عزت جل جلالہ کی طرف نسبت نہیں پاسکتی ورنہ معاذ اللہ اصل خالق و معطی دوسرا ٹھہرے گا اور اللہ عزوجل صرف سبب و واسطہ و وسیلہ، اس کا پایہ شرک بھی اونچا جائے گا کہ وہاں تو تسویہ تھا یہاں اللہ سبحانہ پر تفضیل دینا قرار پائے گا، علی پر لام لاکر اول کا علاج کرلیا اور اس دوم کا کہ اس سے بھی سخت تر ہے علاج کدھر سے آئے گا اب ایک لام نیا گھڑ کر ہدایت پر داخل کیجئے کہ وہ معنی خلق میں متعین ہو جائے اور احتمال تسبب اُٹھ کر ایہام شرک وبدتر از شرک راہ نہ پائے۔

ثامناً: ایک ہدایت کیا جتنے افعال مشترکہ الاطلاق ہیں سب میں اسی آفت کا سامنا ہو گا جیسے احسان و انعام، اذلال و اکرام، تعلیم و افہام، تعذیب وایلام، عطا و منع، اضرار و نفع، قہر و قتل، نصب و عزل وغیرہا کہ مخلوق کی طرف نسبت کیجئے تو معنی خلق موہم شرک اور خالق کی طرف تو معنی تسبب مشعر کفر۔

بہر حال مفر کدھر، اگر کہئے خالق عزوجل کی طرف نسبت ہی دلیل کافی ہے کہ معنی خلق مراد ہیں، ہم کہیں گے مخلوق کی جانب اضافت ہی برہان وافی ہے کہ معنی تسبب مقصود ہیں، ولذا علمائے کرام نے تصریح فرمائی کہ امثال انبت الربیع البقل و حکم علی الدہر (بہار نے سبزہ اگایا اور دہر نے مجھ پر حکم کیا۔ت) میں قائل کا موحد ہونا ہی قرینہ شافی ہے کہ اسناد مجاز عقلی ہے اب بحمد اللہ اس ایہام کی بنیاد ہی نہ رہی۔

تاسعاً: آپ نے (با آنکہ اسمائے الہیہ توقیفیہ ہیں اور خصوصاً آپ بہت جگہ صرف نہ وارد ہونے کو حجت ممانعت جانتے ہیں) حق سبحانہ کا نیا نام مَصوِّب ایجاد فرمایا ہر جواب کی ابتداء ھو المصوِّب (وہی درست راستہ بتانے والا ہے۔ت) سے ہوتی ہے یہ کب احتمال شنیع سے خالی ہے، تصویب جس طرح ٹھیک بتانے کو کہتے ہیں یونہی سرجھکانے کو، اور مثلاً جو سر جھکائے بیٹھا ہو اسے مصوّب، اور دونوں معنی حقیقی ہیں تو آپ کے طور پر اسی کلمے میں ایہام تجسیم ہے اور تجسیم کفر و ضلال عظیم ہے۔

عاشراً: جب مولیٰ علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ کی طرف اضافت ہدایت کا اشتباہ امر ممنوع کا اشتباہ اور موجب لزوم احتراز ہے تو بالقصد اس جناب ہدایت مآب کی طرف ضافت ہدایت کس درجہ

Fatawa Razawiyya - Volume 24

...it would be strictly prohibited and a matter to be avoided. Here, calling Maula Ali a 'guide' (Hadi) became forbidden, although this is contrary to explicit Hadiths and the consensus of all the Imams of the Ahl-ul-Sunnah wal-Jama'ah. Perhaps the excuse would be that the ambiguity of 'guidance' in the sense of 'creation' necessitated the prohibition; in this sense, intentional attribution is indeed forbidden, rather it is complete misguidance, but not in the sense of being a cause/means, which is permissible and common among the people of Islam. However, this is the same common excuse whose refutation has already passed. Is it that when there is no intention of attribution towards Maula Ali at all, at that time, due to the shared meaning, an ambiguity arises regarding 'guidance' in the sense of creation towards Maula Ali, but when the intention is specifically towards His Eminence Maula Ali himself, then that shared meaning ceases to exist and ambiguity finds no way? If the hindrance is that the creation is not suitable for that meaning, then why is it not a hindrance in the case of lack of intention? And if, despite the lack of suitability, ambiguity remains, then why does it not occur in the case of intention?

Eleventhly: Not only for the Commander of the Faithful Ali, but for the noble Prophets, great Messengers, and His Eminence the Master of Mankind (Prophet Muhammad) himself, upon him and them be the best of blessings and peace—no attribution of 'guidance' would ever be permissible, as due to the possibility of the second meaning, it implies polytheism (shirk). Now, calling Mustafa (SAW) a 'guide' also became forbidden, and this is against the Great Quran, authentic Hadiths, the consensus of the Ummah, and rather the essentials of religion.

Twelfthly: The Respondent (Mujib) himself, in his Fatawa Volume 3, page 86, has explicitly refuted this necessity of avoidance and pronounced the verdict on the claim of ambiguity. He states:

[Table] Question: Is naming someone Abdul Nabi or similar correct or not? Answer: If the belief is such that this person who has the name Abdul Nabi is the slave (in the sense of a deity) of the Prophet, then it is pure shirk. And if 'abd' means a possessed slave/servant, that is also against the fact. And if figuratively 'abd' is taken to mean obedient and submissive, there is no harm, but it is better to avoid (Khilaf-e-Aula). Muslim reported from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) said: Let none of you say 'my slave' (abdi) and 'my bondwoman' (amati).

फ़तावा रज़विया - जिल्द 24

...सख़्त ममनूअ (प्रतिबंधित) और एहतराज़ के योग्य होगा। यहाँ मौला अली को 'हादी' (मार्गदर्शक) कहना हराम हो गया, हालाँकि यह स्पष्ट हदीसों और अहले सुन्नत व जमाअत के तमाम इमामों के इज्मा (सहमति) के खिलाफ है। शायद यह उज़्र (बहाना) पेश किया जाए कि 'हिदायत' के'ख़ल्क़' (सृजन) के अर्थ में होने का संदेह मनाही का कारण था; इस अर्थ में इरादतन निस्बत करना निश्चित रूप से हराम है, बल्कि पूर्ण गुमराह (ज़लाल-ए-ताम) है, न कि 'तसब्बुब' (कारण/साधन) के अर्थ में, जो जायज़ है और अहले इस्लाम में प्रचलित है। मगर यह वही मामूली उज़्र है जिसका खंडन पहले हो चुका है। क्या जब मौला अली की तरफ निस्बत का कोई इरादा ही न हो, उस वक्त तो अर्थ की समानता के कारण मौला अली की ओर सृजन के अर्थ में हिदायत की निस्बत का संदेह होता है, और जब इरादतन खुद हज़रत मौला अली की ही तरफ निस्बत करना मक़सूद हो, तो अब वह अर्थ की समानता खत्म हो जाती है और संदेह का कोई मार्ग नहीं रहता? यदि मख़्लूक़ (सृष्टि) का उस अर्थ के लिए योग्य न होना संदेह का कारण है, तो इरादा न होने की सूरत में वह कारण क्यों नहीं है? और अगर अयोग्यता के बावजूद संदेह बना रहता है, तो इरादा होने की सूरत में वह क्यों घटित नहीं होता?

ग्यारहवाँ: न केवल अमीर-उल-मोमिनीन अली, बल्कि नबियों, रसूलों और स्वयं हुज़ूर सैयदुल अनाम (नबी मुहम्मद), उन पर और उन सब पर श्रेष्ठ दरूद व सलाम हो—किसी की तरफ भी हिदायत की निस्बत जायज़ नहीं रहेगी, क्योंकि दूसरे अर्थ की संभावना के कारण इसमें शिर्क का भ्रम है। अब मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को हादी कहना भी हराम हो गया, और यह क़ुरआन-ए-अज़ीम, सही हदीसों और उम्मत के इज्मा, बल्कि दीन की अनिवार्यताओं के खिलाफ है।

बारहवाँ: स्वयं मुजीब (उत्तरदाता) साहब ने अपने फ़तावा जिल्द 3, सफ़ा 86 में इस एहतराज़ की अनिवार्यता का स्पष्ट खंडन किया है और भ्रम के दावे पर अपना फैसला सुनाया है। वे फ़रमाते हैं:

[तालिका] सवाल: अब्दुल नबी या इसके जैसा नाम रखना दुरुस्त है या नहीं? जवाब: अगर यह अक़ीदा (विश्वास) हो कि अब्दुल नबी नाम वाला व्यक्ति नबी का बंदा (उपास्य अर्थ में) है, तो यह ऐन शिर्क है। और अगर 'अब्द' का अर्थ गुलाम या दास लिया जाए, तो यह वास्तविकता के खिलाफ है। और अगर मजाज़न (अलंकारिक रूप से) 'अब्द' का अर्थ आज्ञाकारी लिया जाए, तो इसमें कोई हर्ज़ नहीं है, लेकिन यह बेहतर नहीं है (खिलाफ़-ए-औला है)। इमाम मुस्लिम ने हज़रत अबू हुरैरा

(रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: कोई व्यक्ति हरगिज़ 'अब्दी' (मेरा बंदा) और 'अमती' (मेरी दासी) न कहे।

पृष्ठ 701 का 720

سخت ممنوع و معترض الاحتراز ہوگی، یہاں مولیٰ علی کو ہادی کہنا حرام ہو گیا حالانکہ یہ احادیثِ صریحہ واجماع جمیع ائمہ اہلسنت و جماعت کے خلاف ہے، شاید یہ عذر کیجیے کہ ہدایت بمعنیٰ خلق کا اشتباہ موجب منع تھا اس معنی پر اضافت قصدیہ ضرور حرام بلکہ ضلالِ تام ہے، نہ بمعنیٰ تسبب کہ جائز و معمولِ اہلِ اسلام ہے، مگر یہ وہی عذرِ معمول ہے جس کا رد گزر چکا، کیا جب مولیٰ علی کی طرف اضافت کا اصلاً قصد ہی نہ ہو اس وقت تو بوجہ اشتراکِ معنیٰ مولیٰ علی کی جانب ہدایت بمعنیٰ خلق کی اضافت کا اشتباہ ہوتا ہے اور جب بالقصد خود حضرت مولیٰ علی ہی کی طرف اضافت مراد ہو تو اب وہ اشتراکِ معنیٰ جاتا رہتا اور اشتباہِ راہ نہیں پاتا، اگر مانعِ اشتباہِ مخلوق کا اس معنیٰ کے لئے صالح نہ ہونا ہے تو صورتِ عدمِ قصد میں کیوں مانع نہیں، اور اگر باوصفِ عدمِ صلوح اشتباہ قائم رہتا ہے تو صورتِ قصد میں کیوں واقع نہیں۔

حادی عشر: نہ صرف امیر المومنین علی بلکہ انبیائے کرام ورسلِ عظام و خود حضور پر نور سید الانام علیہ وعلیہم افضل الصلوۃ والتسلیم کسی کی طرف اضافتِ ہدایت اصلاً روانہ رہے گی کہ بوجہ احتمالِ معنی دوم ایہامِ شرک ہے، اب مصطفی صلی تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو ہادی کہنا بھی حرام ہو گیا، اور یہ قرآنِ عظیم و صحاحِ احادیث و اجماعِ امت بلکہ ضروریاتِ دین کے خلاف ہے۔

ثانی عشر: خود جناب مجیب نے اپنے فتاویٰ جلد سوم ۸۶ میں اس لزومِ احتراز کا ردّ صریح فرما دیا اور ادعائے ایہام کا فیصلہ بول دیا۔ فرماتے ہیں:

[جدول] سوال: عبدالنبی یا اس جیسا نام رکھنا درست ہے یا نہیں؟ جواب: اگر یہ اعتقاد ہو کہ عبدالنبی نام والا شخص نبی کا بندہ ہے تو عین شرک ہے اور عبد بمعنی غلام مملوک مراد ہو تو یہ

خلافِ واقع ہے اور اگر مجازاً عبد بمعنی مطیع لیا ہو تو مضائقہ نہیں ہے لیکن خلافِ اولیٰ ہے، امام مسلم نے حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے ارشاد فرمایا: کوئی شخص ہرگز عبدی (میرا عبد) اور امتی (میری باندی) نہ کہے۔

[Arabic Box Text]: All of you (men) are servants (ebad) of Allah and all of your women are maidservants (ama) of Allah, but let one say: my boy (ghulami), my maidservant (jariyati), my young man (fataya), and my young woman (fatati). [End][1]

[Urdu Translation in Box]: All of you men are servants of Allah Almighty and all of your women are maidservants of Allah Almighty, but if one has to speak, they should say 'my ghulam' (my servant), 'jariyati' (my maidservant), 'fataya' (my servant), or 'fatati' (my bondwoman). End. (T)

I say: Setting aside the fact that this answer is also questionable for several reasons: Firstly, there is no difference between 'abd' (servant/slave) and 'banda' (servant/devotee) except for the difference in language; one is a complete translation of the other. Both 'abd' and 'banda' are used in both Arabic and non-Arabic languages in opposition to both 'Ilah/Khuda' (God) and 'Maula/Aqa' (Master). Therefore, to absolutely label the use of 'abd' meaning 'banda' as pure polytheism (shirk) is as incorrect as someone saying that if the word 'ayn' refers to an eye (ayn), it is wrong, but if it refers to a spring (chashma), it is correct. His Excellency Mawlwi [Rumi] (may his secret be sanctified) states in the Mathnawi Sharif regarding the narration of the purchase of Bilal (may Allah be pleased with him): when Siddiq (may Allah be pleased with him) bought him and presented himself in the court of Prophethood, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) said, "You did not make us a partner [in this noble act]." To this, Siddiq (may Allah be pleased with him) submitted:

"Guf't ma do bandagan-e-koye tu, kardamash azad ham bar ruye tu."[2] (He submitted: We both are the slaves of your lane; I have set him free for the sake of your radiant face. - T)

Inevitably, the same detail that applies to 'abd' applies to 'banda'.

Secondly: The distinction that 'abd' meaning 'banda' is polytheism and 'abd' meaning 'mamluk' (owned) is contrary to fact, is completely baseless and futile. 'Mamluk' also encompasses both real inherent ownership and metaphorical bestowed ownership; in the former case, polytheism is definitely present. Similarly, 'banda' is used in relation to both God and a master, and in the latter usage, polytheism is certainly eliminated.

Thirdly: You have deemed 'abd' in the sense of 'mamluk' (owned) as being contrary to fact, i.e., a lie, and by this intent, you have downgraded it from polytheism to a sin. However, the leaders of religion, trusted saints, and established scholars (may Allah Almighty sanctify all their secrets) consider this belief as complete faith and believe that one who lacks it is deprived of the sweetness of faith. The great Imam, Knower of Allah, Sayyid Sahl bin Abdullah Tustari (may Allah be pleased with him), then the great Imam Qadi Iyad in Shifa Sharif, then Imam Ahmad Qastalani in Mawahib al-Ladunniyyah Sharif by way of citation and mention, then Allama Shihabuddin Khafaji in Nasim al-Riyad, then Allama Muhammad bin Abdul Baqi...

---

1. Majmu'a Fatawa, Kitab al-Aqiqa wa ma yata'allaqu biha, regarding naming someone Abdul Nabi etc., Matba Yusufi Lucknow, 3/84.
2. Mathnawi al-Ma'nawi, 'The Prophet's (PBUH) Admonition of Siddiq al-Akbar', Hamid and Company Lahore, Book Six, p. 11.

पृष्ठ 702 | खंड 24 | फ़तावा रज़विया

[अरबी बॉक्स पाठ]: तुम सब (पुरुष) अल्लाह के बंदे (इबाद) हो और तुम्हारी सभी महिलाएँ अल्लाह की बाँदियां (अमा) हैं, लेकिन कोई कहे: मेरा लड़का (गुलामी), मेरी दासी (जारियती), मेरा सेवक (फतया), और मेरी सेविका (फतती)। [समाप्त][1]

[बॉक्स में उर्दू अनुवाद]: तुम सब पुरुष अल्लाह तआला के बंदे हो और तुम्हारी सभी महिलाएँ अल्लाह तआला की बाँदियां हैं, लेकिन अगर कहना हो तो गुलाम (मेरा गुलाम), जारियती (मेरी खादिमा), फतया (मेरा गुलाम), फतती (मेरी लौंडी) कहे। इति। (त)

मैं कहता हूँ: इस बात को छोड़ दें कि यह उत्तर भी कई कारणों से संदिग्ध है: प्रथम: 'अब्द' और 'बंदा' में भाषा के अंतर के अलावा कोई अंतर नहीं है; एक-दूसरे का पूर्ण अनुवाद है। 'अब्द' और 'बंदा' दोनों का प्रयोग अरबी और गैर-अरबी दोनों भाषाओं में 'इलाह/खुदा' (ईश्वर) और 'मौला/आका' (स्वामी) दोनों के विपरीत किया जाता है। इसलिए 'अब्द' का अर्थ 'बंदा' के रूप में प्रयोग करने को पूर्णतः शिर्क(ईश्वर के साथ साझा करना) कह देना वैसा ही है जैसे कोई कहे कि यदि 'ऐन' का अर्थ 'आंख' (ऐन) है तो वह गलत है, और यदि इसका अर्थ 'सोता/चश्मा' है तो सही है। हज़रत मौलवी [रूमी] (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र करे) मसनवी शरीफ में बिलाल (रज़ियल्लाहु अन्हु) की खरीद की हदीस के संबंध में फरमाते हैं: जब सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उन्हें खरीदा और रसालत के दरबार में उपस्थित हुए, तो हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, "आपने हमें [इस पुण्य कार्य में] भागीदार नहीं बनाया।" इस पर सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने निवेदन किया:

"गुफ्त मा दो बंदगाने कोये तू, करदमश आज़ाद हम बर रूये तू"[2] (अर्ज़ किया कि हम दोनों आपकी गली के गुलाम हैं; मैंने उन्हें आपके नूरानी चेहरे की खातिर आज़ाद कर दिया है। - त)

निश्चित रूप से, जो विवरण 'अब्द' पर लागू होता है, वही 'बंदा' पर भी लागू होता है।

द्वितीय: यह अंतर करना कि 'अब्द' का अर्थ 'बंदा' शिर्क है और 'अब्द' का अर्थ 'ममलूक' (मलिकियत वाला) तथ्य के विरुद्ध है, पूरी तरह निराधार और व्यर्थ है। 'ममलूक' में भी वास्तविक अंतर्निहित स्वामित्व और आलंकारिक रूप से प्रदान किया गया स्वामित्व दोनों शामिल हैं; पहले मामले में शिर्क निश्चित रूप से मौजूद है। इसी तरह 'बंदा' का प्रयोग ईश्वर और स्वामी दोनों के संबंध में किया जाता है, और दूसरे उपयोग में शिर्क निश्चित रूप से समाप्त हो जाता है।

तृतीय: आपने 'अब्द' का अर्थ 'ममलूक' (मलिकियत वाला) को तथ्य के विपरीत यानी झूठ मानकर, इसे शिर्क के बजाय गुनाह माना है। जबकि धर्म के इमामों, विश्वसनीय वलियों और महान विद्वानों (अल्लाह तआला उन सभी के रहस्यों को पवित्र करे) का मानना है कि यह विश्वास पूर्ण ईमान है और इसके बिना व्यक्ति ईमान की मिठास से वंचित रहता है। हज़रत इमाम अज़ल, आरिफ़ बिल्लाह सैयद सहल बिन अब्दुल्ला तुस्तरी (रज़ियल्लाहु अन्हु), फिर इमाम अज़ल काज़ी अयाज़ 'शिफ़ा शरीफ' में, फिर इमाम अहमद कस्तलानी 'मवाहिब अल-लदुन्निया शरीफ' में उद्धरण और उल्लेख करते हुए, फिर अल्लामा शिहाबुद्दीन खफ़ाजी 'नसीम अल-रियाज़' में, फिर अल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी...

---

1. मजमूआ फ़तावा, किताबुल अकीका और उससे संबंधित मामले, अब्दुल नबी आदि नाम रखने के संबंध में, मतबा यूसुफी लखनऊ, 3/84।
2. मसनवी अल-मानवी, 'हुज़ूर (सल्ल.) का सिद्दीक़ अकबर को नसीहत करना', हामिद एंड कंपनी लाहौर, छठा दफ्तर, पृ. 11।

جلد ۲۴ | فتاوٰی رضویہ | صفحہ ۷۰۲

[عربی عبارت]: امتی کلکم عباد اللہ وکل نسائکم اماء اللہ ولکن لیقل غلامی وجاریتی وفتا ئی وفتا تی انتھی[1]۔

[اردو ترجمہ]: تم سب مرد اللہ تعالٰی کے بندے اور تمہاری تمام عورتیں اللہ تعالٰی کی باندیاں ہیں، لیکن اگر کہنا ہو تو غلامی (میرا غلام)، جاریتی (میری خادمہ) فتا ئی (میرا غلام)، فتا تی (میری لونڈی) کہے۔ انتھی۔ (ت)

اقول: قطع نظر اس سے کہ یہ جواب بھی بوجوہ مخدوش ہے اولاً: عبد و بندہ میں سوائے اختلاف زبان کے کوئی فرق نہیں ایک دوسرے کا پورا ترجمہ ہے، عبد و بندہ دونوں عربی و عجمی دونوں زبانوں میں الٰہ و خدا و مولٰی و آقا دونوں کے مقابل بولے جاتے ہیں تو عبد بمعنی بندہ کو مطلقاً عین شرک کہہ دینا ایسا ہی ہے کہ کوئی کہے کہ عین سے مراد عین ہے تو تغلط ہے اور چشمہ مقصود ہو تو صحیح، حضرت مولوی قدس سرہ المعنوی مثنوی شریف میں حدیث شرائے بلال رضی اللہ تعالٰی عنہ میں فرماتے ہیں جب صدیق رضی اللہ تعالٰی عنہ نے انہیں خرید لیا اور بارگاہ رسالت میں حاضر ہوئے حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا تم نے ہمیں شریک نہ کیا، اس پر صدیق رضی اللہ تعالٰی عنہ نے عرض کیا:

گفت ما دو بندگان کوئے تو کردمش آزاد ہم بر روئے تو[2] (عرض کیا کہ ہم دونوں آپ کے کوچہ کے غلام ہیں، میں نے اس کو آپ کے رخ انور پر آزاد کر دیا۔ ت)

لاجرم جو تفصیل عبد میں ہے وہی بندہ میں۔ ثانیاً: عبد بمعنی بندہ و بمعنی مملوک میں یہ تفرقہ کہ اول شرک اور ثانی خلاف واقع ہے محض بے اصل و ضائع ہے، مملوک بھی ملک ذاتی حقیقی و

ملک عطائی مجازی دونوں کو مشتمل اور اول میں قطعاً شرک حاصل اور بندہ بھی مقابل خدا اور خواجہ دونوں مستعمل، اور ثانی سے یقیناً شرک زائل- ثالثاً: آپ نے تو عبد بمعنی ملوک کو خلاف واقع یعنی کذب ٹھہرا کر اس ارادے کو شرک سے اتار کر گناہ مانا مگر ائمہ دین و اولیائے معتمدین و علمائے مسندین قدس اللہ تعالیٰ اسرارہم اجمعین اس اعتقاد کو مکمل ایمان مانتے اور اس سے خالی کو حلاوت ایمان سے بے بہرہ جانتے ہیں، حضرت امام اجل عارف باللہ سید سہل بن عبد اللہ تستری رضی اللہ تعالیٰ عنہ پھر امام اجل قاضی عیاض شفاشریف پھر امام احمد قسطلانی مواہب لدنیہ شریف میں نقلاً و تذکیراً پھر علامہ شہاب الدین خفاجی نسیم الریاض پھر علامہ محمد بن عبدالباقی

1۔ مجموعہ فتاویٰ کتاب العقیقہ و مایتعلق بھا وجہ نام عبدالنبی وغیرہ مطبع یوسفی لکھنؤ ۳/ ۸۴ 2۔ مثنوی المعنوی معاتبہ کردن رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم باصدیق اکبر حامد اینڈ کمپنی لاہور دفتر ششم ص ۱۱

Fatawa Ridawiyyah Volume 24

Zurqani states in the commentary of Mawahib by way of explanation and interpretation: Whoever does not see the authority of the Prophet (peace be upon him) in all his states and does not consider himself to be owned by him, will not taste the sweetness of his Sunnah.1 - He who does not know the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) as his guardian in every state and does not consider himself as the servant of the Prophet will not be aware of the sweetness of the Sunnah of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family) at all.

Fourthly: Maulana Shah Abdul Aziz, in 'Tuhfa Ithna Ashariyyah', narrates that Allah the Almighty says in the Holy Psalms (Zabur): O Ahmad! Mercy has overflowed upon your lips, for that reason I bless you; so gird on the sword, for your brilliance and your praise is dominant (up to the point where it says) nations shall fall under you, a book of truth brought by God from the south, and sanctification from Mount Paran, and the earth was filled with the praise and sanctification of Ahmad, and he became the owner of the whole earth and the necks of all nations.2 - O Ahmad! Mercy has surged upon your lips; for this reason, I give you blessings, so gird your sword, for your brilliance and your praise alone is dominant; all nations will fall at your feet; God brought the true book with blessings and purity from the mountain of Makkah; the earth was filled with the praise and reciting of the purity of Ahmad; Ahmad became the owner of the entire earth and the necks of all nations, peace and blessings of Allah be upon him and his family.

Will the word of the Holy Psalms also, God forbid, be called contrary to reality?

Fifthly: Imam Ahmad in his Musnad through the chain of Abu Ma'shar al-Bara from Sadaqah bin Taylasah from Ma'n bin Thalabah al-Mazini and Al-Hayy after from Al-A'sha al-Mazini (may Allah be pleased with him); and Abdullah bin Ahmad in 'Zawa'id al-Musnad' through the chain of Awf bin Kahmas bin al-Hasan from Sadaqah and Taylasah etc.; and Imam Abu Ja'far Tah-tawi in 'Sharh Ma'ani al-Athar' through the chain of the aforementioned Abu Ma'shar similar to Imam Ahmad's narration in chain and text; and Ibn Khaythama and Ibn Shahin through this path and others; and Baghawi, Ibn al-Sakan, and Ibn Abi Asim through the chain of Junayd bin Amin bin Dharwah bin Nadlah bin Bahsal al-Harmazi from his father from his grandfather Nadlah.

1 Al-Mawahib al-Ladunniyyah, Al-Maqsad al-Sabi', Al-Maktab al-Islami, Beirut, 3/299 and 300; Sharh al-Zurqani 'ala al-Mawahib al-Ladunniyyah, Al-Maqsad al-Sabi', Chapter 1, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, 9/128. 2 Tuhfa Ithna Ashariyyah, Chapter Six on the Discussion of Prophethood etc., Suhail Academy Lahore, p. 169.

फ़तावा रज़विया खंड २४

ज़रकानी 'मवाहिब' की व्याख्या और विवेचन में कहते हैं: जो व्यक्ति अपनी सभी स्थितियों में पैगंबर (उन पर शांति हो) के अधिकार को नहीं देखता है और खुद को उनका गुलाम नहीं मानता है, वह उनकी सुन्नत की मिठास का स्वाद नहीं चख पाएगा।1 - जो हर हाल में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना वली (अभिभावक) और अपने आप को हुज़ूर का गुलाम न जाने, वह सुन्नत-ए-नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मिठास से पूरी तरह बेखबर रहेगा।

चौथा: मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब 'तौहफ़ा इस्ना अशरिया' में उद्धृत करते हैं कि अल्लाह सुब्हानहू व तआला पाक ज़बूर में फरमाता है: ऐ अहमद! आपके होठों पर दया उमड़ पड़ी है, इसलिए मैं आपको आशीर्वाद देता हूँ; अतः तलवार धारण करें क्योंकि आपकी चमक और आपकी प्रशंसा ही प्रबल है (वहाँ तक जहाँ यह कहता है) राष्ट्र आपके अधीन हो जाएंगे, सत्य की एक किताब जिसे ईश्वर यमन (दक्षिण) से लाया और माउंट पारान (मक्का के पहाड़) से पवित्रीकरण, और पृथ्वी अहमद की स्तुति और पवित्रीकरण से भर गई, और वह पूरी पृथ्वी और सभी राष्ट्रों की गर्दन के मालिक बन गए।2 - ऐ अहमद! तुम्हारे लबों पर रहमत ने जोश मारा, मैं इसी लिए तुझे बरकत देता हूँ, तू अपनी तलवार हमैल कर कि तेरी चमक और तेरी तारीफ़ ही ग़ालिब है, सब उम्मतें तेरे क़दमों में गिरेंगी, सच्ची किताब लाया अल्लाह बरकत व पाकी के साथ मक्का के पहाड़ से, भर गई ज़मीन अहमद की हम्द और उसकी पाकी बोलने से, अहमद मालिक हुआ सारी ज़मीन और तमाम उम्मतों की गर्दनों का, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

क्या पाक ज़बूर के कथन को भी, अल्लाह न करे, वास्तविकता के विरुद्ध कहा जाएगा?

पांचवां: इमाम अहमद अपनी मुसनद में अबू माशर अल-बरा के माध्यम से सदका बिन तायलसा से, मान बिन सालाबा अल-माज़िनी और अल-हय्य के माध्यम से अल-आशा अल-माज़िनी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से; और अब्दुल्ला बिन अहमद 'ज़वाइद अल-मुसनद' में औफ़ बिन कहमस बिन अल-हसन के माध्यम से सदका और तायलसा आदि से; और इमाम अबू जाफ़र तहतावी 'शर्ह मानी अल-असार' में उपर्युक्त अबू माशर के माध्यम से इमाम अहमद के समान सनद और पाठ के साथ; और इब्न खैसमा और इब्न शाहीन इसी मार्ग से और अन्य; और बग़वी, इब्न अल-सकन, और इब्न अबी असीम जुनयद बिन अमीन बिन ज़रवा बिन नदला बिन बहसल अल-हरमाज़ी के माध्यम से उनके पिता से और उनके दादा नदला से।

1 अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, अल-मक़सद अस-साबे', अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत, 3/299 और 300; शर्ह अल-ज़रकानी 'अला अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, अल-मक़सद अस-साबे', अध्याय 1, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, 9/128। 2 तौहफ़ा इस्ना अशरिया, अध्याय छह, नबूवत आदि की चर्चा में, सुहैल अकादमी लाहौर, पृष्ठ 169।

पृष्ठ 703 का 720

زرقانی شرح مواہب میں شر حاً و تفسیراً فرماتے ہیں: من لم یر ولایة الرسول علیه في جمیع احواله ولم یر نفسه في ملکه لا یذوق حلاوة سنته1 - جو ہر حال میں نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو اپنا والی اور اپنے آپ کو حضور کا مملوک نہ جانے وہ سنتِ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی حلاوت سے اصلاً خبردار نہ ہوگا۔

رابعاً: مولانا شاہ عبدالعزیز صاحب تحفہ اثناء عشریہ میں نقل فرماتے ہیں کہ حق سبحانہ و تعالیٰ زبور شریف میں فرماتا ہے: یا احمد فاضت الرحمة علی شفتیك من اجل ذلك بارك علیك فتقلد السیف فان بهائك وحمدك الغالب(الی قولہ) الامم یخرون تحتك کتاب حق جاء اللہ به من الیمن والتقدیس من جبل فاران وامتلأت الارض من تحمید احمد وتقدیسه و ملك الارض ورقاب الامم2 - اے احمد! تیرے لبوں پر رحمت نے جوش مارا میں اسی لئے تجھے برکت دیتا ہوں تو اپنی تلوار حمائل کر کہ تیری چمک اور تیری تعریف ہی غالب ہے سب امتیں تیرے قدموں میں گریں گی، سچی کتاب لایا اللہ برکت و پاکی کے ساتھ مکہ کے پہاڑ سے، بھر گئی زمین احمد کی حمد اور اس کی پاکی بولنے سے، احمد مالک ہوا ساری زمین اور تمام امتوں کی گردنوں کا، صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم۔

کیا زبور پاک کے ارشاد کو بھی معاذ اللہ خلاف واقع کہا جائے گا۔ خامساً امام احمد مسند میں بطریق ابی معشر البراء ثنی صدقة بن طیلسة ثنی معن بن ثعلبة المازنی والحي بعد ثنی الاعشی المازني رضی اللہ تعالی عنه، اور عبداللہ بن احمد زوائد المسند میں بطریق عوف بن کهمس بن الحسن عن صدقة و طیلسة الخ، اور امام ابو جعفر طحطاوی شرح معانی الآثار میں بطریق ابی معشر المذکور نحو روایة احمد سنداً ومتناً اور ابن خیثمة و ابن شاهین بهذا الطریق وغیره اور بغوي وابن السکن وابن ابي عاصم بطریق الجنید بن امین بن ذروة بن نضلة بن بهصل الحرمازي عن ابیه عن جده نضلة۔

1 المواهب اللدنیہ المقصد السابع الرضی بما شرعه المکتب الاسلامی بیروت ۳/ ۲۹۹ و ۳۰۰، شرح الزرقاني على المواهب اللدنیہ المقصد السابع الرضی بما شرعه الفصل الاول دار الکتب العلمیة ۹/ ۱۲۸ 2 تحفہ اثناء عشریہ باب ششم در بحث نبوت الخ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۶۹

Fatawa Razawiyya Volume 24

It is narrated from Hazrat A'sha (may Allah be pleased with him) that he came to the presence of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) with a plea from some of his relatives and presented his poetic petition to the sacred ears, which began with this line:

يَا مَالِكُ النَّاسِ وَدَيَّانَ الْعَرَبِ (O Master of all human beings and O Giver of reward and punishment to the Arabs)

The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), after hearing his plea, removed the grievance. If calling the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) the master of one person was, in your imagination—God forbid—a lie, then calling him the master of all people or addressing the Prophet as 'Ya Malikun Naas' (O Master of People) would have been—God forbid—a collection of billions of lies. However, this glorious Hadith bears witness that a Companion called the Prophet the master of all humans, and the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) accepted and approved it.

Sixth: The matter is that in your noble thought, the meanings of 'master' and 'owned' were only that Zaid bought Amr for a few copper coins or a few silver pieces; that's why you considered the mastery of Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), as contrary to fact. Whereas this (worldly) ownership is extremely hollow, absurd, mere worthless, and insignificant, as it is not even complete over the flesh and skin, let alone the soul. True, perfect ownership is that which encompasses both soul and body and includes all Jinn and humans, meaning being 'most entitled' (Awla bil-haqq), such that in his presence no one has any authority even over their own life. This true, sincere, all-encompassing, and complete ownership belongs to the luminous master of people (peace and blessings of Allah be upon him) through the Supreme Caliphate (Khilafat-e-Kubra) and the Great Majesty (Hazrat-e-Kibriya, Exalted and Mighty) over the entire universe. Allah Almighty said: "The Prophet is more worthy of the believers than their own selves." The Prophet is more of a guardian, master, and authority over all the faithful than their own lives.

And Allah the Blessed and Exalted said: "It is not for a believing man or a believing woman, when Allah and His Messenger have decided a matter, that they should [thereafter] have any choice about their affair. And whoever disobeys Allah and..."

Allah (Allah the Blessed and Exalted has said) It is not proper for any Muslim man or any Muslim woman, when Allah and His Messenger have decreed a matter, to have any choice regarding their own selves, and whoever...

1. Musnad Ahmad bin Hanbal, Musnad Abdullah bin Amr bin al-Aas, Al-Maktab al-Islami Beirut 2/201, Sharh Ma'ani al-Athar, Kitab al-Karahiya, Bab ash-Shi'r, HM Saeed Company Karachi 2/410.
2. The Holy Quran 33/6.

फ़तावा रज़विया खंड 24

हज़रत अशा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि वे हुज़ूर नूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बारगाह में अपने कुछ रिश्तेदारों की एक फ़रियाद लेकर हाज़िर हुए और अपनी पद्यबद्ध अर्ज़ी पवित्र कानों में पेश की, जिसकी शुरुआत इस मिसरे से थी:

یَا مَالِكُ النَّاسِ وَدَيَّانَ الْعَرَبِ (ऐ तमाम आदमियों के मालिक और ऐ अरब के सज़ा और जज़ा देने वाले)

हज़रत अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उनकी फ़रियाद सुनकर शिकायत दूर फ़रमा दी। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को एक व्यक्ति का मालिक कहना अगर आपके गुमान में — माज़ल्लाह (ईश्वर न करे) — झूठ था, तो तमाम आदमियों का मालिक बताना या 'या मालिकुन नास' कहकर हुज़ूर को पुकारना — माज़ल्लाह — अरबों-खरबों झूठों का समूह होता, जबकि यह महान हदीस गवाही दे रही है कि एक सहाबी ने हुज़ूर को तमाम इंसानों का मालिक कहा और हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इसे स्वीकार और स्थिर रखा।

छठा: बात यह है कि आपके नेक ख्याल में 'मालिक' और 'ममलुक' (गुलाम) के यही अर्थ थे कि ज़ैद ने अम्र को तांबे के कुछ टुकड़ों या चांदी के कुछ सिक्कों पर खरीदा, तभी तो आपने मुहम्मद रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मालिकियत को वास्तविकता के विरुद्ध करार दिया। जबकि यह (सांसारिक) मालिकियत अत्यंत खोखली, बेतुकी, निराधार और महत्वहीन है कि जान तो दूर, खाल और मांस पर भी पूरी नहीं है। सच्ची और पूर्ण मालिकियत वह है जो जान और जिस्म दोनों को घेरे हुए हो और जिन्न व इंसान सभी को शामिल हो, यानी 'अवला बिल-हक़' होना कि उनके सामने किसी को अपनी जान पर भी असल में कोई अधिकार न हो। यह सच्ची, सच्ची, व्यापक और पूर्ण मालिकियत हुज़ूर नूर 'मालिकुन नास' (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को महान खिलाफत और महानता वाले ईश्वर की ओर से पूरे ब्रह्मांड पर प्राप्त है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "नबी मोमिनों के लिए उनकी अपनी जानों से भी ज़्यादा अज़ीज़ (करीब/मालिक) हैं।" नबी तमाम ईमान वालों के लिए उनकी अपनी जानों से भी ज़्यादा वली, मालिक और मुख्तियार हैं।

और अल्लाह तआला बरकत वाले ने फ़रमाया: "और किसी मोमिन मर्द और किसी मोमिन औरत को यह हक़ नहीं पहुँचता कि जब अल्लाह और उसका रसूल किसी बात का फैसला कर दें, तो उन्हें अपने मामले में कोई अख्तियार बाकी रहे। और जो अल्लाह की नाफरमानी करे और..."

अल्लाह और (अल्लाह तबा-र-क व तआला ने फ़रमाया) नहीं पहुँचता किसी मुसलमान मर्द न किसी मुसलमान औरत को जब हुक्म कर दें अल्लाह और उसके रसूल किसी बात का कि उन्हें कुछ अख्तियार रहे अपनी जानों का, और जो हुक्म...

1. मसनद अहमद बिन हंबल, मसनद अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल-आस, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरुत 2/201, शरह मआनी अल-आसार, किताबुल कराहिया, बाबूश शेर, एच.एम. सईद कंपनी कराची 2/410।
2. अल-कुरान अल-करीम 33/6।

حضرت اعشی رضی اللہ تعالٰی عنہ سے مروی کہ یہ خدمت اقدس حضور نور صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم میں اپنے بعض اقارب کی ایک فریاد لے کر حاضر ہوئے اور اپنی منظوم عرضی مسامع قدسیہ پر عرض کی جس کی ابتداء اس مصرع سے تھی ع

یَا مَالِكُ النَّاسِ وَدَیَّانَ الْعَرَبِ (اے تمام آدمیوں کے مالک اور اے عرب کے جزاء و سزا دینے والے)

حضرت اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ان کی فریاد سن کر شکایت رفع فرمادی ، نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو ایک شخص کا مالک کہنا آپ کے گمان میں معاذ اللہ کذب تھا تو تمام آدمیوں کا مالک بتانا یا مالک الناس کہہ کر حضور کو ندا کرنا معاذ اللہ سنکھووں مہا سنکھووں کذب کا مجموعہ ہوگا، حالانکہ یہ حدیث جلیل شہادت دے رہی ہے کہ صحابی حضور کو مالک تمام بشر کہا اور حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم نے مقبول و مقرر رکھا۔

سادساً: بات یہ ہے کہ آپ کے خیال شریف میں مالک و مملوک کے یہی معنی تھے کہ زید عمرو کو تانبے کے کچھ ٹکوں یا چاندی کے چند ٹکڑوں پر خریدے جبھی تو محمد رسول صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی مالکیت کو خلاف واقع فرمادیا حالانکہ یہ مالکیت سخت پوچ لچر، محض بے وقعت ، بے قدر ہے کہ جان در کنار گوشت پوست پر بھی پوری نہیں ، سچی کامل مالکیت وہ ہے کہ جان و جسم سب کو محیط اور جن و بشر سب کو شامل ہے یعنی اولی بالحق سے کہ اس کے حضور کسی کو اپنی جان کا بھی اصلاً اختیار نہ ہو ، یہ مالکیت حقہ صادقہ محیط شاملہ تامہ کلمہ حضور پر نور مالک الناس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو بخلافت کبرٰی اور حضرت کبریا عز وجل تمام جہاں پر

حاصل ہے۔ قال اللہ تعالیٰ "النَّبِيُّ أَوْلَى بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ" نبی زیادہ والی و مالک و مختار ہے ، تمام اہل ایمان کا خود ان کی جانوں سے۔

وقال اللہ تعالیٰ تبارک "وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اللہ و (اللہ تبارک و تعالیٰ نے فرمایا) نہیں پہنچتا کسی وَّلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا مسلمان مرد نہ کسی مسلمان عورت کو جب حکم کردیں اللہ أَن يَّكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ وَمَنْ اور اس کے رسول کسی بات کا کہ انہیں کچھ اختیار رہے يَّعْصِ اللَّهَ وَ" اپنی جانوں کا، اور جو حکم

1 مسند احمد بن حنبل مسند عبد اللہ بن عمر و بن العاص المکتب الاسلامی بیروت ۲/ ۲۰۱، شرح معانی الآثار کتاب الکرراہۃ باب الشعر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۴۱۰ 2 القرآن الکریم ۶/ ۳۳

Fatawa Ridawiyya, Volume 22

(And whoever disobeys Allah) and His Messenger has indeed strayed with a clear error.[1]	**Whoever does not obey Allah and His Messenger is clearly misguided.**

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"I have more right (and authority) over the believers than they have over their own selves." (Narrated by Ahmad, Bukhari, Muslim, Nasai, and Ibn Majah from Abu Huraira, may Allah be pleased with him).[2]	**I am a greater guardian, master, and authority over all people of faith than their own lives (Bukhari, Muslim, Nasai, and Ibn Majah narrated this from Hazrat Abu Huraira, may Allah be pleased with him. - Translator)**

If these meanings of ownership were in the mind of the respondent, they would not consider the ownership of Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), as contrary to reality. They would recognize their own lives and the whole world as the property of Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). Beyond this, there is a rank of truths for which a listening ear and an insightful heart are required.

"And you have not been given of knowledge except a little."[3] "And above every possessor of knowledge is one more knowing."[4] "And none is granted it except those who are patient, and none is granted it except one having a great portion."[5]	**You have been given only a little knowledge, above every knowledgeable one is a greater one, none attains this except those who are patient, except those with a great portion. (T)**

Seventh: The Hadith from Sahih Muslim has been mentioned completely out of place. The Hadith teaches humility and negates arrogance, and commands masters not to call their slaves 'abd' (servant/slave). It doesn't mean that slaves shouldn't call themselves 'abd' of their masters, or others shouldn't call them their 'abeed' (slaves). This is the Quran saying about our slaves that they are 'Our abd'. The verse has just passed. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

---

[1] Al-Quran Al-Karim 33/36 [2] Sahih Al-Bukhari, Book of Al-Kafalah 1/308 and Book of Al-Fara'id 2/797, Qadeemi Kutub Khana Karachi; Sahih Muslim, Book of Friday (Al-Jumu'ah), chapter on the Friday Sermon, Qadeemi Kutub Khana Karachi 1/285; Sahih

Muslim, Book of Al-Fara'id, Qadeemi Kutub Khana Karachi 2/36; Sunan Ibn Majah, chapters on Al-Sadaqat, chapter on one who leaves a debt etc., H.M. Saeed Company Karachi p. 176; Musnad Imam Ahmad bin Hanbal from Abu Huraira, Al-Maktab Al-Islami Beirut 2/335. [3] Al-Quran Al-Karim 17/85 [4] Al-Quran Al-Karim 12/76 [5] Al-Quran Al-Karim 41/35

फ़तावा रज़विया, खंड 22

(और जो अवज्ञा करता है अल्लाह) और उसके रसूल की, तो वह स्पष्ट रूप से गुमराह हो गया।[1]

जो अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा नहीं मानता, वह स्पष्ट रूप से पथभ्रष्ट है।

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

"मैं मोमिनों के लिए उनके अपने प्राणों से भी अधिक अधिकार और स्वामित्व रखता हूँ।" (इसे अहमद, बुखारी, मुस्लिम, नसाई और इब्न माजाह ने हजरत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है)।[2]

मैं सभी ईमान वालों के लिए उनके अपने प्राणों से भी अधिक बड़ा संरक्षक, स्वामी और मुख्तार हूँ (इसे बुखारी, मुस्लिम, नसाई और इब्न माजाह ने हजरत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। - त)

यदि स्वामित्व के ये अर्थ उत्तरदाता के विचार में होते, तो वे मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के स्वामित्व को वास्तविकता के विपरीत नहीं मानते। वे अपने स्वयं के जीवन और पूरी दुनिया को मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की संपत्ति मानते। इससे परे सत्यों का एक ऐसा पद है जिसके लिए सुनने वाले कान और समझने वाले विवेकपूर्ण हृदय की आवश्यकता है।

"और तुम्हें ज्ञान में से बहुत थोड़ा ही दिया गया है।"[3]
"और हर ज्ञान वाले के ऊपर एक बड़ा ज्ञान वाला है।"[4]
"और यह (गुण) उन्हीं को प्राप्त होता है जो धैर्यवान होते हैं, और यह उन्हीं को प्राप्त होता है जो बड़े भाग्यशाली होते हैं।"[5]

तुम्हें केवल थोड़ा सा ज्ञान दिया गया है, हर ज्ञानी के ऊपर एक अधिक ज्ञानी है, इसे वही पाते हैं जो धैर्यवान हों, सिवाय बड़े हिस्से वाले के। (त)

सातवाँ: सहीह मुस्लिम की हदीस पूरी तरह से बेमौका बताई गई है। हदीस विनम्रता सिखाती है और अहंकार का खंडन करती है, और स्वामियों को आदेश देती है कि वे अपने गुलामों को 'अब्द' (सेवक/दास) न कहें। इसका मतलब यह नहीं है कि गुलाम खुद को अपने मालिक का 'अब्द' न कहें, या दूसरे उन्हें उनके'अबीद' (दास) न कहें। यह कुरान है जो हमारे गुलामों के बारे में कह रहा है कि वे 'हमारे अब्द' हैं। आयत अभी गुजरी है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

---

[1] अल-कुरान अल-करीम 33/36 [2] सहीह अल-बुखारी, किताब अल-कफाला 1/308 और किताब अल-फराइज़ 2/797, कदीमी कुतुब खाना कराची; सहीह मुस्लिम, किताब अल-जुमा, जुमा के खुतबे

पर अध्याय, कदीमी कुतुब खाना कराची 1/285; सहीह मुस्लिम, किताब अल-फराइज़, कदीमी कुतुब खाना कराची 2/36; सुनन इब्न माजाह, सदक़ात के अध्याय, उस व्यक्ति के बारे में अध्याय जिसने ऋण छोड़ा आदि, एच.एम. सईद कंपनी कराची पृ. 176; मसनद इमाम अहमद बिन हनबल, अबू हुरैरा से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत 2/335। [3] अल-कुरान अल-करीम 17/85 [4] अल-कुरान अल-करीम 12/76 [5] अल-कुरान अल-करीम 41/35

पृष्ठ 705/720

فتاوی رضویہ، جلد ۲۲

رَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُّبِينًا ۝ [1] نہ مانے اللہ ورسول کا تو ہو صریح گمراہ ہوا۔

رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

انا اولیٰ بالمومنین من انفسھم، رواہ احمد والبخاری و مسلم والنسائی و ابن ماجہ عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ [2]

میں زیادہ والی و مالک و مختار ہوں تمام اہل ایمان کا خود ان کی جانوں سے (اسے بخاری، مسلم، نسائی اور ابن ماجہ نے حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ۔ ت)

اگر یہ معنی مالکیت جناب مجیب کے خیال میں ہوتے تو محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کی مالکیت کو خلاف واقع نہ جانتے اور خود اپنی جان اور سارے جہان کو محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کی ملک مانتے اور اس سے زائد مرتبہ حق حقائق ہے جس کے سننے کو گوش شنوا سمجھنے کو دل بینادور کار ہے۔

"وَمَا أُوتِيتُم مِّنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا ۝" [3] "وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ۝" [4] "وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ۝" [5]

تمہیں صرف تھوڑا سا علم دیا گیا ہے، ہر علم والے پر بڑے علم والا ہے، نہیں پاتے اس کو مگر جو لوگ صبر والے ہوں مگر عظیم حصہ ۔ (ت)

سابعاً: حدیث صحیح مسلم محض بے محل مذکور ہوئی حدیث میں تعلیم تواضع و نفی تکبر اور آقاؤں کو ارشاد ہے کہ اپنے غلاموں کو عبد نہ کہو، نہ کہ کہ غلام بھی اپنے کو اپنے مولیٰ کا عبد یادوسرے ان کو ان کے عبید نہ کہیں، یہ ہے قرآن کہ ہمارے غلاموں کو ہمارا عبد فرما رہا ہے، آیت عنقریب گزری رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں:

1 القرآن الکریم ۳۶/۳۳ 2 صحیح البخاری کتاب الکفالۃ ۳۰۸/۱ و کتاب الفرائض ۲/ ۷۹۷ قدیمی کتب خانہ کراچی، صحیح مسلم کتاب الجمعۃ فصل فی خطبۃ الجمعۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۸۵، صحیح مسلم کتاب الفرائض قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۳۶، سنن ابن ماجہ ابواب الصدقات باب من ترک دینا الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۷۶، مسند امام احمد بن حنبل عن ابی ہریرۃ المکتب الاسلامی بیروت ۲/ ۳۳۵ 3 القرآن الکریم ۱۷ / ۸۵ 4 القرآن الکریم ۱۲/ ۷۶ 5 القرآن الکریم ۴۱/ ۳۵

Fatawa-e-Razawiyya Volume 24

[Arabic Quote]: "There is no Zakat upon a Muslim for his slave or his horse." Narrated by Ahmad and the six (canonical compilers) from Abu Hurayrah. (A Muslim does not owe Zakat on his slave and his horse. Recorded by Ahmad and the authors of the six books from Abu Hurayrah, may Allah be pleased with him. - Translator)

The general idiom of jurisprudence and the leading imams has been continuous from the first century until today: "He freed his slave (abd) and made his slave a mudabbar." (He set his slave free, or declared him to be free after his death. - Translator). Maulana Mujeeb Sahib himself states in his treatise 'Naf'ul Mufti' regarding issues of Friday prayer: "If the master gives permission to his slave, he has the choice." (If the master allows his slave, then he has the option. - Translator). In the same book, it is written: "The master has the right to prevent his slave." (The master has the authority to stop his slave. - Translator). It is strange that there is no objection to calling the slave of Zaid, Amr, or even a non-believer his 'slave' (abd) according to the Hadith, but when it comes to the servants of Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny), people object to calling them his 'slaves' (abd). Listen further: Imam Abu Hudhaifa Ishaq bin Bishar in 'Futuh al-Sham' and Hasan bin Bisharan in his 'Fawa'id' narrate from Ibn Shihab al-Zuhri and other successors (Tabi'in) that the Leader of the Faithful, Umar Farooq al-A'zam (may Allah be pleased with him), stated in one of his sermons from the pulpit:

[Arabic Quote]: "I was with the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), and I was his slave (abd) and his servant." (I was in the presence of the luminous Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him); I was the slave of the Prophet, his servant, and his helper.)

Furthermore, Ibn Bisharan in 'Amali', Abu Ahmad Dehqan in 'Juz Hadithi', Ibn Asakir in 'Tarikh Dimashq', and Lalaka'i in 'Kitab al-Sunnah' narrate from the best of the successors, our master Sa'id bin al-Musayyib bin Hazn (may Allah be pleased with him): When the Leader of the Faithful, Hazrat Umar (may Allah be pleased with him), became the Caliph, he stood on the pure pulpit of the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) and delivered a sermon. After praising Allah and sending blessings upon the Prophet, he said:

Footnotes: 1. Sahih Muslim, Kitab al-Zakat, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/416; Sunan Abi Dawud, Kitab al-Zakat, Bab Sadaqat al-Raqiq, Aftab Alam Press Lahore,

1/225; Sunan Ibn Majah, Kitab al-Zakat, H.M. Saeed Company Karachi, p. 131; Musnad Ahmad bin Hanbal from Abu Hurayrah, Al-Maktabah al-Islamiyyah Beirut, 2/232. 2. Naf'ul Mufti wal Masa'il Muta'alliqah bil Jumu'ah, Matba' Mujtabai Delhi, p. 105. 3. Naf'ul Mufti wal Masa'il Muta'alliqah bil Jumu'ah, Matba' Mujtabai Delhi, p. 105. 4. Futuh al-Sham by Ishaq bin Bishar.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 24

[अरबी उद्धरण]: "मुसलमान पर उसके गुलाम (अब्द) और उसके घोड़े पर कोई ज़कात नहीं है।" इसे अहमद और सहाब-ए-सित्ता ने अबू हुरैरा से रिवायत किया है। (मुसलमान पर अपने गुलाम और अपने घोड़े में ज़कात नहीं है। इसे अहमद और सिहाह सित्ता के संकलनकर्ताओं ने हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। - अनुवाद)

फिक्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) का सामान्य मुहावरा और प्रमुख इमामों का तरीका पहली सदी से आज तक जारी है: "उसने अपने गुलाम (अब्द) को आज़ाद किया और अपने गुलाम को मुदब्बर बनाया।" (उसने अपने गुलाम को आज़ाद कर दिया या अपनी मृत्यु के बाद आज़ाद होने वाला घोषित कर दिया। - अनुवाद)। खुद मौलवी मुजीब साहब अपने रिसाले 'नफ़उल मुफ्ती' में जुमा से संबंधित मसलों में फरमाते हैं: "अगर मालिक अपने गुलाम को इजाज़त दे दे तो उसे अख्तियार है।" (यदि मालिक अपने गुलाम को अनुमति दे, तो उसके पास विकल्प है। - अनुवाद)। उसी किताब में है: "मालिक को अख्तियार है कि अपने गुलाम को रोक दे।" (मालिक को अपने गुलाम को रोकने का अधिकार है। - अनुवाद)। यह अजीब बात है कि ज़ैद और उम्र, यहाँ तक कि किसी काफ़िर या मुशरिक के गुलाम को उसका 'अब्द' (गुलाम) कहने पर कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन जब मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सेवकों को उनका 'अब्द' कहने की बात आती है, तो ऐतराज़ किया जाता है। आगे सुनिए, इमाम अबू हुज़ैफ़ा इसहाक बिन बिशर 'फ़ुतूह अल-शाम' में और हसन बिन बिशरान अपनी 'फ़वाइद' में इब्न शिहाब ज़ुहरी आदि ताबेईन से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अपने एक खुत्बे में मिंबर पर फ़रमाया:

[अरबी उद्धरण]: "मैं अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथ था, और मैं उनका गुलाम (अब्द) और उनका खादिम था।" (मैं रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में था, तो मैं हुज़ूर का गुलाम, हुज़ूर का बंदा और हुज़ूर का सेवक था।)

इसके अलावा इब्न बिशरान 'अमाली' में, अबू अहमद देहकान 'जुज़ हदीसी' में, इब्न असाकिर 'तारीखे दमिश्क़' में और लालकाई 'किताबुस सुन्नाह' में अफ़ज़लुत ताबेईन सैय्यदुना सईद बिन मुसय्यब बिन हज़न (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत करते हैं: जब अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) खलीफा बने, तो हुज़ूर सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पाक मिंबर पर खड़े होकर खुत्बा दिया। हम्द और दुरूद के बाद फ़रमाया:

पाद-टिप्पणियाँ: 1. सहीह मुस्लिम, किताबुज़ ज़कात, क़दीमी कुतुब खाना कराची, 1/416; सुनन अबू दाऊद, किताबुज़ ज़कात, बाब सदक़तुर रक़ीक़, आफ़ताबे आलम प्रेस लाहौर, 1/225; सुनन इब्न माजा, किताबुज़ ज़कात, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृ. 131; मुसनद अहमद बिन हंबल, हज़रत अबू हुरैरा से, अल-मकतबतुल इस्लामिया बेरुत, 2/232। 2. नफ़उल मुफ्ती वल मसाइल मुताल्लिका बिल जुमुआ, मतबअ मुज्तबाई दिल्ली, पृ. 105। 3. नफ़उल मुफ्ती वल मसाइल मुताल्लिका बिल जुमुआ, मतबअ मुज्तबाई दिल्ली, पृ. 105। 4. फ़ुतूह अल-शाम, लेखक इसहाक़ बिन बिशर।

لیس علی المسلم فی عبدہ ولا فی فرسہ صدقۃ رواہ احمد' والستۃ عن ابی ہریرۃ۔ مسلمان پر اپنے عبد اور اپنے گھوڑے میں زکوۃ نہیں (اسے احمد اور اصحاب ستہ نے ابی ہریرۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا۔ت)

فقہ کا محاورہ عامہ وائمہ صدراول سے آج تک مستمرہ ہے : اعتق عبدہ و دبر عبدہ (اس نے اپنے عبد کو آزاد، مدبر بنایا۔ت) خود مولوی مجیب صاحب اپنے رسالہ نفع المفتی مسائل متعلقہ جمعہ میں فرماتے ہیں : ان اذن المولی عبدہ لھا یتخیر 2 (اگر مولیٰ اپنے عبد کو اجازت دے تو اسے اختیار ہوا۔ت) وہیں ہے : وللمولی منع عبدہ 3 (مولیٰ کو اختیار ہے کہ عبد کو روک دے۔ت) عجب ہے کہ زید و عمرو بلکہ کسی کافر مشرک کے غلام کو اس کا عبد کہنے پر حدیث وارد نہ ہو اور محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے غلاموں کو ان کا عبد کہنے پر معترض ہو، اور سنئے تو سہی امام ابو حذیفہ اسحق بن بشر فتوح الشام اور حسن بن بشر ان اپنی فوائد میں ابن شہاب زہری وغیرہ تابعین سے راوی کہ امیر المومنین عمر فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اپنے ایک خطبہ میں بر سر منبر فرمایا:

قد کنت مع رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فکنت عبدہ وخادمہ 4۔ میں حضور پُر نور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی بارگاہ میں تھا تو میں حضور کا عبد تھا حضور کا بندہ اور حضور کا خدمتی تھا۔

نیز ابن بشر ان امالی اور ابواحمد دہقان جزء حدیثی اور ابن عساکر تاریخ دمشق اور لالکائی کتاب السنہ میں افضل التابعین سیدنا سعید بن المسیب بن حزن رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی، جب امیر

المومنین حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ خلیفہ ہوئے منبر اطہر حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پر کھڑے ہو کر خطبہ فرمایا حمد و درود کے بعد فرمایا:

1 صحیح مسلم کتاب الزکوۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۴۱۶، سنن ابی داؤد کتاب الزکوۃ باب صدقۃ الرقیق آفتاب عالم پریس لاہور ۱ / ۲۲۵، سنن ابن ماجہ کتاب الزکوۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۳۱، مسند احمد بن حنبل عن ابی ہریرۃ المکتبۃ الاسلامی بیروت ۲ / ۲۳۲ 2 نفع المفتی والمسائل متعلقہ بالجمعۃ مطبع مجتبائی دہلی ص ۱۰۵ 3 نفع المفتی والمسائل متعلقہ بالجمعۃ مطبع مجتبائی دہلی ص ۱۰۵ 4 فتوح الشام لاسحق بن بشر

Volume 22 Fatawa Rizvia

"O people! I know that you used to experience severity and harshness from me, and the reason for that was that I was with the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, and I was his slave and his servant." [1] O people! I know that you found harshness and sternness in me, and its reason is that I was with the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), and I was the Presence's slave and the Presence's servant.

Now it is clear that the Hadith of Muslim has no connection to this matter at all. Let the Wahabi sahib also hear that this refined Hadith, in which the Commander of the Faithful, Farooq al-Azam (may Allah be pleased with him), is calling himself 'Abd al-Nabi' (Slave of the Prophet), 'Abd al-Rasul' (Slave of the Messenger), 'Abd al-Mustafa' (Slave of the Chosen One), and a public gathering of the Companions (may Allah be pleased with them) is present beneath the pulpit, all hearing and accepting it. Janab Shah Waliullah Sahib Dehlavi has also mentioned it authoritatively in 'Izalat al-Khafa' under Abu Hanifa and in the virtuous book 'Ar-Riyad an-Nadrah fi Manaqib al-'Ashara' and upheld it. You (the opponents) called the Commander of the Faithful a misguided innovator for the crime of promoting Taraweeh (refuge in Allah). Here, refuge in Allah, call him a polytheist (mushrik). And according to your non-religious principles, you will surely have to say so. But gentlemen! think and understand a little that Shah Waliullah Sahib's hem is also trapped under the same stone. (Verse): Don't let your gaze run like this with a spear aimed, Identify your own and the stranger a bit.

And there is no power nor might except with Allah, the Most High, the Most Great. Anyway, the matter went far. The complete investigation and detailed rulings of the words 'Abd' and 'Banda' can be seen in the humble author's book 'Mujeer al-Mu'azzam Sharh Ikseer al-A'zam'. Here it is to be submitted that this decree of Molvi Mujeeb Sahib has put an end to the claim of ambiguity. According to you, there were three possibilities in 'Abd al-Nabi': one polytheism (shirk), one falsehood (kizb), and one correct. So, the forbidden possibilities were double the permissible one. Despite this, its ruling was only called 'Khilaf al-Awla' (contrary to the better way), which, let alone prohibition and 'Karahat-e-Tahrimi' (severe dislike), does not even necessitate 'Karahat-e-Tanzihi' (mild dislike). Not every omission of a recommended (Mustahabb) act is 'Khilaf al-Awla' (contrary to the better), but it is not absolutely 'Tanzihi' (disliked). It is stated in 'Radd al-Muhtar' from 'Bahr al-Ra'iq': "From the abandonment of a recommended act, dislike (karahah) does not necessarily follow, for there must be a

specific evidence for it." [2] Giving up a recommended act does not necessarily result in dislike because an evidence is required for dislike. (T)

[1] Mukhtasar Tarikh Dimashq by Ibn 'Asakir, Biography of Umar bin al-Khattab, 185, Dar al-Fikr Beirut, 18/312. [2] Radd al-Muhtar, Kitab al-Taharah, Dar Ihya al-Turath al-'Arabi Beirut, 1/82.

जिल्द 22 फ़तावा रज़विया

"ऐ लोगो! मुझे मालूम है कि तुम मुझसे सख़्ती और तुर्शी महसूस करते थे और इसकी वजह यह थी कि मैं अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ था और मैं उनका बंदा और उनका ख़ादिम था।" [1] लोगो! मैं जानता हूँ कि तुम मुझमें सख़्ती और दरुश्ती पाते थे और इसका सबब यह है कि मैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ था और मैं हुज़ूर का बंदा और हुज़ूर का ख़िदमत गुज़ार था।

अब तो ज़ाहिर हुआ कि हदीस-ए-मुस्लिम का इस मकाम से अस्लन कोई ताल्लुक़ नहीं। ज़रा वहाबी साहब भी इतना सुन रखें कि यह हदीस-ए-नफ़ासत जिसमें अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) अपने आप को अब्दुन नबी, अब्दुर रसूल, अब्दुल मुस्तफ़ा कह रहे हैं, और सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) का मज्म-ए-आम ज़ेर-ए-मिम्बर हाज़िर है, सब सुनते और क़बूल करते हैं। जनाब शाह वलीउल्लाह साहब देहलवी ने भी 'इज़ालतुल ख़फ़ा' अबू हनीफ़ा और किताब-ए-मुस्ताब 'अर-रियाज़ुन नज़रा फ़ी मनाक़िबुल अशरा' में इस्तिनादन ज़िक्र की और मुक़र्रर रखी। अमीरुल मोमिनीन को तरावीह की तरवीज के जुर्म में (मआज़ल्लाह) गुमराह बिदअती लिख दिया, यहाँ (इयाज़म बिल्लाह) मुशरिक कह दीजिये, और आपके उसूल-ए-मज़हब (नामज़हब) पर ज़रूर कहना पड़ेगा। मगर साहिबो! ज़रा सोच समझ कर कि शाह वलीउल्लाह साहब का दामन भी इसी पत्थर के तले दबा हुआ है। (शेर): यूँ नज़र दौड़े न बरछी तान कर अपना बेगाना ज़रा पहचान कर

और अल्लाह बुलन्द और अज़ीम के अलावा कोई ताक़त और कुव्वत नहीं। ख़ैर, बात दूर पहुँची, लफ्ज़ 'अब्द' और 'बंदा' की तहक़ीक़-ए-ताम और तफ़सील-ए-अहकाम फ़क़ीर की किताब 'मुजीरे मुअज्ज़म शरह इक्सीरे आज़म' में मुलाहिज़ा हो। यहाँ यह गुज़ारिश करनी है कि मौलवी मुजीब साहब के इस फ़तवे ने इबहाम के दावे का काम तमाम कर दिया। 'अब्दुन नबी' में जनाब के नज़दीक तीन एहतिमाल (संभावनाएं) थे: एक शिर्क, एक किज़्ब (झूठ), एक सही। तो नाजायज़ एहतिमाल जायज़ से दुगने थे, इसके बावजूद इसका हुक्म सिर्फ़'ख़िलाफ़-ए-औला' (बेहतर के ख़िलाफ़) फ़रमाया, जो मुमानिअत और 'कराहते तहरीमी' तो दूर की बात है 'कराहते तन्ज़ीही' को भी मुस्तलज़िम नहीं। हर मुस्तहब का छोड़ना 'ख़िलाफ़-ए-औला' है मगर मुतलक़न 'तन्ज़ीही' नहीं। 'रद्दुल मुहतार' में 'बहरुर रैक़' से है: "मुस्तहब को तर्क करने से कराहत साबित नहीं होती क्योंकि इसके लिये दलील-ए-ख़ास ज़रूरी है।" [2] मुस्तहब को तर्क करने पर कराहत लाज़िम नहीं क्योंकि कराहत के लिये दलील चाहिये। (त)

1 मुख़्तसर तारीख़ दमिश्क लिब्न असाकिर तर्जमा उमर बिन अल-ख़त्ताब 185 दारुल फ़िक्र बैरूत 18/312 2 रद्दुल मुहतार किताबुत तहारत दारुल इह़याउत तुरासुल अरबी बैरूत 1/82

पेज 707/720

ایھا الناس انی قد علمت انکم کنتم تونسون منی شدۃ وغلظۃ وذلك انی کنت مع رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم وکنت عبدہ وخادمہ 1- لوگو! میں جانتا ہوں کہ تم مجھ میں سختی اور درشتی پاتے تھے اور اس کا سبب یہ ہے کہ میں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ساتھ تھا اور میں حضور کا بندہ اور حضور کا خدمت گزار تھا۔

اب تو ظاہر ہوا کہ حدیث مسلم کو اس محل سے اصلاً تعلق نہیں، ذرا وہابی صاحب بھی اتنا سن رکھیں کہ یہ حدیث نفیس جس میں امیر المومنین فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ اپنے آپ کو عبد النبی، عبد الرسول، عبد المصطفی کہہ رہے ہیں، اور صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم کا مجمع عام زیرِ منبر حاضر ہے، سب سنتے اور قبول کرتے ہیں۔ جناب شاہ ولی اللہ صاحب دہلوی نے بھی ازالۃ الخفاء ابو حنیفہ و کتاب مستطاب الریاض النفرۃ فی مناقب العشرۃ میں استناداً ذکر کی اور مقرر رکھی، امیر المومنین کو بجرم ترویج تراویح معاذ اللہ گمراہ بدعتی لکھ دیا، یہاں عیاذاً باللہ مشرک کہہ دیجئے، اور آپ کے اصول مذہب نامذہب پر ضرور کہنا پڑے گا مگر صاحبو! ذرا سوچ سمجھ کر کہ شاہ ولی اللہ صاحب کا دامن بھی اسی پتھر کے تلے دبا ہوا ہے ع یوں نظر دوڑے نہ برچھی تان کر اپنا بیگانہ ذرا پہچان کر

ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم، خیر، بات دور پہنچی، لفظ عبد وبندہ کی تحقیق تام و تفصیل احکام فقیر کی کتاب مجیر معظم شرح اکسیر اعظم میں ملاحظہ ہو۔ یہاں یہ گزارش کرنی ہے کہ مولوی مجیب صاحب کے اس فتوے نے ادعائے ایہام کا کام تمام کر دیا، عبدالنبی میں جناب کے نزدیک تین احتمال تھے : ایک شرک، ایک کذب، ایک صحیح، تو نا جائز احتمال جائز سے دونے

تھے، با ایں ہمہ اس کا حکم صرف خلاف اولیٰ فرمایا جو ممانعت و کراہت تحریمی در کنار کراہت تنزیہی کو بھی مستلزم نہیں، ہر مستحب کا خلاف ترکِ خلاف اولیٰ ہے مگر مطلقاً تنزیہی نہیں۔

ردالمحتار میں بحر الرائق سے ہے: لایلم من ترك المستحب ثبوت الكراهة اذ لا بد لها من دلیل خاص 2- مستحب کو ترک کرنے پر کراہت لازم نہیں کیونکہ کراہت کے لئے دلیل چاہئے۔ (ت)

1 مختصر تاریخ دمشق لابن عساکر ترجمہ عمر بن الخطاب ۱۸۵ دار الفکر بیروت ۳۱۲/۱۸ 2 ردالمحتار کتاب الطھارۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۸۲/۱

Fatawa Rizvia, Volume 24

In the same book 'Tahrir al-Usul' it is written:

[Boxed text] Arabic: Khilaf al-Awla is that which does not contain the form of prohibition, like omitting the Duha prayer. Urdu: Khilaf-e-Awla is that for which the form of prohibition has not been used, such as omitting the Chasht (Duha) prayer. This is contrary to Makruh Tanzihi (mildly disliked). (T) Arabic: Contrary to Makruh Tanzihi.

So Hidayat Ali, in which out of four possibilities only one is void, meaning the permissible possibilities are triple the impermissible ones—how has this gone beyond being Khilaf-e-Awla and even Makruh Tanzihi to become necessary to avoid? According to the calculation of four, it shouldn't even be half of Khilaf-e-Awla. Instead, it's 3/4. That is, if moving a 'seer' (weight unit) away from equal neutral sides is called Khilaf-e-Awla, then in Hidayat Ali it is only one-and-a-half 'pao' (a quarter seer). Therefore 3/4, 1/4 unknown, then 1/2, 4/8, 1/2—well, this calculation was just to please the hearts of the observers. The truth is that in Hidayat Ali, there isn't even a basic reason for Makruh Tanzihi, let alone it being necessary to avoid. In fact, any person with the slightest sense can understand what relation 'Hidayat' (guidance) has to 'Abdun Nabi' (slave of the Prophet). When the latter is merely Khilaf-e-Awla, then calling the former (Hidayat Ali) Khilaf-e-Awla is also purely out of place. There is much more to be said, but what has been mentioned is sufficient for a seeker of truth. And Allah says the truth and He guides to the (right) path, and Allah, Glorified and Exalted, knows best.

Written by: His sinful servant Ahmad Raza al-Barelwi, may he be forgiven, by the sake of Muhammad al-Mustafa, peace and blessings of Allah be upon him. Muhammadi, Sunni, Hanafi, Qadri, 1301 AH. Abdul Mustafa Ahmad Raza Khan.

Treatise: An-Noor wad-Diya fi Ahkam Ba'd al-Asma (The Light and Radiance Regarding the Rulings of Some Names) Ended

1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Taharah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/82 Page 708 of 720

फ़तावा रज़विया, जिल्द 24

इसी में 'तहरीर अल-उसूल' से लिखा है:

[बॉक्स में लिखा पाठ] अरबी: ख़िलाफ़ अल-औला वह है जिसमें निषेध का रूप न हो, जैसे दुहा (चाश्त) की नमाज़ छोड़ना। उर्दू: ख़िलाफ़-ए-औला वह है जिसके लिए निषेध (नही) का शब्द प्रयोग न हुआ हो, जैसे चाश्त की नमाज़ छोड़ना। यह मकरूह तंज़ीही के विपरीत है। (त) अरबी: मकरूह तंज़ीही के विपरीत।

तो हिदायत अली, जिसमें चार संभावनाओं में से केवल एक अमान्य है, यानी जायज़ संभावनाएँ ना-जायज़ से तीन गुना हैं—यह कैसे ख़िलाफ़-ए-औला तो दूर, मकरूह तंज़ीही से भी आगे बढ़कर अनिवार्य बचाव (लाज़िम अल-इहतिराज़) बन गया? चार के हिसाब से तो इसे ख़िलाफ़-ए-औला का आधा भी नहीं होना चाहिए था। बल्कि 3/4, यानी अगर दोनों तटस्थ पक्षों से एक 'सेर' दूर होने को ख़िलाफ़-ए-औला कहा जाए, तो हिदायत अली में यह केवल डेढ़ पाव ही हुआ। इसलिए 3/4, 1/4 अज्ञात, फिर 1/2, 4/8, 1/2—खैर यह गणना तो केवल देखने वालों के दिल बहलाने के लिए थी। सच तो यह है कि हिदायत अली में मकरूह तंज़ीही का भी कोई मूल कारण नहीं है, बचाव की आवश्यकता तो बहुत बड़ी बात है। वास्तव में, कोई भी साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति समझ सकता है कि 'अब्दुन नबी' (नबी का सेवक) से 'हिदायत' का क्या संबंध है। जब वह केवल ख़िलाफ़-ए-औला है, तो इसे (हिदायत अली को) ख़िलाफ़-ए-औला कहना भी पूरी तरह अनुचित है। यहाँ कहने को तो बहुत कुछ है, लेकिन जो उल्लेख किया गया है वह सत्य के खोजी के लिए पर्याप्त है। और अल्लाह सत्य कहता है और वही (सही) मार्ग दिखाता है, और अल्लाह, महिमामय और उच्च, सबसे अच्छा जानता है।

लिखा है: उनके पापी दास अहमद रज़ा बरेलवी ने, अल्लाह उन्हें क्षमा करे, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वसीले से। मुहम्मदी सुन्नी हनफ़ी क़ादरी, 1301 हिजरी। अब्दुल मुस्तफ़ा अहमद रज़ा ख़ान।

रिसाला (लघुग्रंथ): अन-नूर वद-ज़िया फ़ी अहकाम बा'ज़ अल-अस्मा (कुछ नामों के आदेशों में प्रकाश और चमक) समाप्त हुआ

1. रद अल-मुह्तार, किताब अत-तहारह, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 1/82 पेज 708/720

جلد ۲۴ فتاویٰ رضویہ

اسی میں تحریر الاصول سے ہے:

[جدول] خلاف اولی مالیس فیہ صیغۃ نھی کترک صلوۃ الضحٰی | خلاف اولٰی وہ ہے جس کے لئے نہی کا صیغہ استعمال نہ ہوا ہو جیسے چاشت کی نماز کا ترک ہے۔ بخلاف مکروہ تنزیہہ کے۔ (ت) بخلاف مکروہ تنزیھاً۔ |

تو ہدایت علی جس میں چار احتمالوں سے صرف ایک باطل ہے، یعنی جائز احتمالات نا جائز سے تگنے ہیں یہ کس طرح خلاف اولی در کنار مکروہ تنزیہی سے بھی گزر کر لازم الاحتراز ہو گیا، اربعہ کے حساب سے تو اسے خلاف اولی کا نصف بھی نہ ہونا چاہئے تھا بلکہ ۳/۴ ، یعنی مباح مساوی طرفین سے اگر سیر بھر دوری پر خلاف اولی کہا جائے تو ہدایت علی میں صرف ڈیڑھ پاؤ ہو گئی اس لئے ۴/۳، ۴/۱ مجھول پس ۲/۱، ۸/۴، ۲/۱ خیر یہ حساب تو ایک تطلب قلوب ناظرین تھا حق یہ کہ ہدایت علی میں اصلاً کوئی وجہ کراہت تنزیہی کی بھی نہیں، لزوم احتراز تو بڑی چیز ہے، اور فی الواقع ہر ادنیٰ عقل والا بھی سمجھ سکتا ہے کہ عبد النبی سے ہدایت کو نسبت ہی کیا ہے، جب وہ صرف خلاف اولیٰ ہے تو اسے خلاف اولیٰ کہنا بھی محض بے جا ہے، کلام یہاں کثیر ہے اور جس قدر مذکور ہوا طالب حق کے لئے کافی۔ واللہ یقول الحق و یھدی السبیل، واللہ سبحانہ و تعالیٰ اعلم۔

کتبہ عبدہ المذنب احمد رضا البریلوی عفی عنہ بمحمدن المصطفیٰ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم محمدی سنی حنفی قادری ۱۳۰۱ھ عبدالمصطفیٰ احمد رضا خاں

رسالہ النور والضیاء فی احکام بعض الاسماء ختم ہوا

Volume 24 Fatawa Razawiyya

Correspondence Holding, opening, and reading someone's letter without permission, etc.

Question 279: Hafiz Mahmood Hussain, pupil of Rasheed Ahmed Gangohi, 11 Rabi' al-Akhir 1312 AH.

A sealed envelope reached the addressees, mentioned as "Wife of Maulvi Muhammad Fakhruddin and Ghulam Muhiuddin". The postman delivered it to Haji Ramadan, a servant of Maulvi Muhammad Fakhruddin. The said Haji is an illiterate person. He brought this envelope to the house of Maulvi Muhammad Fakhruddin's nephew and asked whose name was on the letter. The nephew read what was written on it, told him, and returned it. Later, Haji Sahib brought the letter back to the nephew's house where several people were sitting outside, and had the envelope read out. Since Maulvi Muhammad Fakhruddin's wife, who was one of the addressees, had passed away, and the name of the second addressee, Ghulam Muhiuddin, written alongside was not recognizable as to who he was. Briefly, both nephews of Maulvi Sahib were present. One opined that the letter should be returned. The other, considering that the name of the writer written on it suggested a relation with the wife of Maulvi Muhammad Fakhruddin (i.e., his aunt) who had since passed away, thought that returning this stamped envelope might lead to it being wasted, and there might be some important intent of the writer or for the addressee. With this thought, he opened it and glanced at the beginning, from which it became known that indeed Maulvi Sahib...

खण्ड 24 फ़तावा रज़विया

पत्र-व्यवहार बिना अनुमति किसी का पत्र रोकना, खोलना और पढ़ना आदि

प्रश्न 279: हाफिज़ महमूद हुसैन, रशीद अहमद गंगोही के शिष्य, 11 रबी-उल-आखिर 1312 हिजरी।

एक बंद लिफाफा जिस पर पाने वाले का नाम इस प्रकार दर्ज था "पत्नी मौलवी मोहम्मद फखरुद्दीन व गुलाम मुहीउद्दीन" के पास पहुँचा। डाकिये ने लाकर मौलवी मोहम्मद फखरुद्दीन के सेवक हाजी रमजान को दिया। उक्त हाजी अनपढ़ व्यक्ति है। वह इस लिफाफे को मौलवी मोहम्मद फखरुद्दीन साहब के भांजे के घर ले गया और पूछा कि यह पत्र किसके नाम का है। मौलवी साहब के भांजे ने उस पर जो लिखा था उसे पढ़कर उन्हें बता दिया और उन्हें वापस कर दिया। दूसरी बार हाजी साहब फिर से उस पत्र को मौलवी साहब के भांजे के घर ले आए जहाँ बाहर कई लोग बैठे थे और लिफाफा पढ़वाया। चूंकि मौलवी मोहम्मद फखरुद्दीन साहब की पत्नी, जो प्राप्तकर्ताओं में से एक थीं, उनका देहांत हो चुका था और दूसरे प्राप्तकर्ता यानी गुलाम मुहीउद्दीन का नाम जो साथ में लिखा था, वह समझ में नहीं आ रहा था कि वह कौन व्यक्ति है। संक्षेप में, मौलवी साहब के दोनों भांजे वहाँ मौजूद थे। एक की राय हुई कि पत्र वापस कर दिया जाए, दूसरे ने यह सोचकर कि लेखक का जो नाम उस पर लिखा था वह ऐसा था जिससे प्रतीत होता था कि उसका संबंध मौलवी मोहम्मद फखरुद्दीन साहब की पत्नी यानी उनकी मामी से था, और अब उनका देहांत हो चुका है। इस विचार से कि यह टिकट लगा हुआ लिफाफा वापस करने में शायद नष्ट हो जाए और लेखक या प्राप्तकर्ता का कोई आवश्यक उद्देश्य हो, उसने उसे खोलकर सरसरी निगाह से उसकी शुरुआत देखी जिससे यह ज्ञात हुआ कि वास्तव में मौलवी साहब...

पृष्ठ 710 का 720

خط و کتاب بلا اجازت کسی کا خط روکنا، کھولنا، اور پڑھنا وغیرہ

مسئلہ ۲۷۹: حافظ محمود حسین تلمیذ رشید احمد گنگوہی ۱۱ ربیع الآخر شریف ۱۳۱۲ ھ

ایک لفافہ بند جس پر مکتوب الیہ کا نام اس طرح درج تھا زوجہ مولوی محمد فخر الدین وغلام محی الدین کے پاس پہنچے، ڈاکیے نے لاکر حاجی رمضان ملازم مولوی محمد فخر الدین کو دیا، حاجی موصوف مرد ناخواندہ ہے اس لفافہ کو ہمشیرہ زاد مولوی محمد فخر الدین صاحب کے مکان پر لائے اور کہا کہ کس کے نام کا یہ خط ہے مولوی صاحب موصوف کے ہمشیرہ زاد نے جو اس پر لکھا تھا ان سے کہہ دیا اور ان کو واپس دے دیا، دوسرے وقت حاجی موصوف دوبارہ اس خط کو مولوی صاحب موصوف کے ہمشیرہ زاد کے مکان پر لائے اور چند صاحب باہر مکان میں بیٹھے تھے اس کا لفافہ پڑھوایا، چونکہ مولوی محمد فخر الدین صاحب کی زوجہ جو احد المکتوب الیہا تھیں وہ انتقال کر چکی تھیں اور دوسرا مکتوب الیہ یعنی غلام محی الدین کا نام جو ساتھ میں لکھا ہوا تھا وہ سمجھ میں نہیں آتا تھا کہ کون شخص ہے فی الجملہ مولوی صاحب کے دونوں ہمشیرہ زادے موجود تھے، ایک کی رائے ہوئی کہ خط کو واپس کر دیا جائے دوسرے نے خیال کرکے کہ کاتب کا جو نام اس پر لکھا ہوا تھا وہ ایسا تھا کہ اس کو تعلق زوجہ مولوی محمد فخر الدین صاحب یعنی اپنے ماموں صاحب کی زوجہ سے تھا اور اب ان کا انتقال ہوا اس خیال سے کہ یہ ٹکٹ چسپاں لفافہ واپس کرنے میں شاید ضائع ہوجائے اور کوئی قصد کاتب یا مکتوب الیہا ضروری ہوا ہو اس کو چاک کرکے سرسری نگاہ سے اس کی ابتداء کو دیکھا جس سے یہ معلوم ہوگیا کہ بیشک مولوی صاحب...

Volume 24 Fatawa Razviya

That is, this letter belongs to the wife of his maternal uncle. Since the matter known from the beginning about reading this letter was revealed by a third party related to the recipient—that it contained information regarding the proposals of those girls—therefore, without reading the entire letter, it was placed back in the envelope, which was torn but not sealed, and given back to Haji Ramazan Khan, who had brought the letter, with instructions to give it to Hafiz Ghafoor-ud-Din, the brother of the deceased recipient. The situation is such that the question regarding this is: whether the nephew of the Maulvi Sahib, by tearing the envelope and glancing over it then sending it back to the person the content concerned, is a sinner according to Sharia, or is he rewarded in the sight of Allah and Sharia according to his intention? Also, the husband of the recipient is in the land of Arabia and is not present here. Please clarify and be rewarded. (State [the ruling] so that you may be rewarded. T)

The Answer: In the situation described, the mentioned person is a sinner and deserves a warning. It is stated in the Hadith that the luminous master of the messengers, peace and blessings of Allah be upon him, said:

"Whoever looks into his brother's letter without his permission is as if he is looking into the Fire." (Reported by Abu Dawud[1] in his Sunan, Al-Hakim, who graded it as authentic, Ibn Mani' in his Musnad, Al-Quda'i, and others, from the Hadith of Ibn Abbas, may Allah be pleased with them both. T)

Scholars state that a letter is the property of the writer, to the extent that if they write on it "write the answer on this", then even the recipient is not permitted to dispose of it as they please; it is mandatory to return it to the owner. If the writer does not specify, then by custom, the recipient becomes the owner. It is mentioned in "Al-Jawhara al-Nayyirah", "Minh al-Ghaffar Sharh Tanwir al-Absar", and "Hashiya al-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar", etc.:

"A man wrote a letter to another and mentioned in it 'write the answer on its back'; it becomes incumbent upon him [the recipient] to return it and he has no right of disposal over it."

[1] Sunan Abi Dawud, Kitab al-Salat, Bab al-Du'a, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 1/209.

अर्थात्, यह पत्र उनके मामा साहब की पत्नी का ही है। चूँकि इस पत्र को पढ़ने के बारे में जो बात शुरू से पता चली, वह प्राप्तकर्ता (मक्तूब इलैया) के तिहाई भाग से मालूम हुई कि उसमें उन लड़कियों के रिश्तों (पैयाम) के बारे में लिखा था, इसलिए पूरे पत्र को पढ़े बिना ही उसे फटे हुए लिफाफे में रखकर, बिना बंद किए हाजी रमज़ान खां को दे दिया गया, जो वह पत्र लाए थे, और कह दिया गया कि हाफ़िज़ ग़फ़ूरुद्दीन साहब, यानी मरहूम प्राप्तकर्ता के भाई को दे दें। स्थिति यह है कि इसके बारे में प्रश्न यह है कि क्या मौलवी साहब के भतीजे (भांजे) ने लिफाफा फाड़कर उसे सरसरी तौर पर देखकर फिर उसे उस व्यक्ति को वापस भेज दिया जिससे उसका विषय संबंधित था, ऐसा करने में वह शरीयत के अनुसार गुनहगार है या अपनी नीयत के अनुसार अल्लाह और शरीयत के पास अज्र (पुण्य) का पात्र है? और प्राप्तकर्ता के पति अरब देश में हैं, वे यहाँ मौजूद नहीं हैं। कृपया उत्तर दें और पुण्य प्राप्त करें। (बयान फरमाएं ताकि अज्र पाएं। त)

उत्तर: पूछी गई स्थिति में, उक्त व्यक्ति गुनहगार है और सजा का पात्र है। हदीस में है कि सैयदुल मुर्सलीन, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

"जो व्यक्ति अपने भाई का पत्र उसकी अनुमति के बिना देखता है, वह निस्संदेह आग देख रहा है।" (इसे अबू दाऊद[1] ने अपनी सुनन में वर्णित किया है और मुहद्दिस हाकिम ने इसकी प्रामाणिकता स्वीकार की है और इब्न मनी' ने अपने मुसनद में और कज़ाई आदि ने हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के हवाले से इसे रिवायत किया है। त)

विद्वान फरमाते हैं कि पत्र लेखक की संपत्ति है, यहाँ तक कि अगर वह लिखे कि 'इस पर उत्तर लिख दो', तो स्वयं प्राप्तकर्ता को भी उसमें अपनी मर्जी से कुछ करने का अधिकार नहीं है, मालिक को वापस देना अनिवार्य है। यदि लेखक ऐसा न चाहे, तो प्रथा (उर्फ़) के अनुसार प्राप्तकर्ता मालिक हो जाएगा। जौहरा नायरा, मिन्ह उल-गफ़्फ़ार शरह तनवीर उल-अब्सार और हाशिया तहतावी अलल दुररुल मुख़्तार आदि में है:

"एक व्यक्ति ने किसी दूसरे व्यक्ति को पत्र लिखा और उसमें यह ज़िक्र किया कि इसी कागज के पीछे जवाब लिख दें, तो उस पत्र का वापस करना अनिवार्य हो जाता है।"

[1] सुनन अबी दाऊद, किताबुल सलात, बाबुद दुआ, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, १/२०९।

یعنی اپنے ماموں صاحب کی زوجہ کا ہی یہ خط ہے اور چونکہ وہ امر جو ابتداء سے معلوم ہو گیا اس خط کے پڑھنے سے متعلق مکتوب الیہا کے تہائی سے معلوم ہوا کہ ان لڑکیوں کے پیام کی نسبت اس میں لکھا ہوا تھا اس لئے بدون پورا پڑھے ہوئے خط کے اس کو لفافہ میں رکھ کے چاک شدہ بدون بند کئے ہوئے حاجی رمضان خاں جو اس خط کو لائے تھے ان کو دے دیا اور کہہ دیا کہ حافظ غفور الدین صاحب یعنی برادر مکتوب الیہا مرحومہ کو دے دیں پس صورت حال یہ ہے اس کی نسبت یہ سوال ہے کہ خواہر زادہ مولوی صاحب نے لفافہ چاک کر کے اس کو سرسری گناہ سے دیکھ کے پھر اس کو جس شخص سے متعلق مضمون اس کا نظر آیا واپس بھیج دیا، ایسا کرنے میں وہ عندالشرع گنہگار ہے یا موافق نیت اپنی کے عند اللہ و عند الشرع ماجور ہے اور زوج مکتوب الیہا کے ملک عرب میں ہیں وہ یہاں موجود نہیں ہیں۔ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائیے۔ ت)

الجواب: صورت مستفسرہ میں شخص مذکور گنہگار و مستحق وعید ہے، حدیث میں ہے حضور پر نور سید المرسلین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

من نظر فی کتاب اخیہ بغیر اذنہ فانما ینظر فی النار۔ رواہ ابوداؤد ۱ فی سننہ والحاکم وصححہ وابن منیع فی مسندہ والقضاعی وغیرہم فی حدیث عنا بن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما۔ (جو اپنے بھائی کا خط بے اس کی اجازت کے دیکھے وہ بلاشبہ آگ دیکھ رہا ہے (امام ابو داؤد نے اس کو اپنی سنن میں روایت کیا اور محدث حاکم نے اس کی صحت تسلیم فرمائی اور ابن منیع نے اپنے مسند میں اور قضائی وغیرہ نے حدیث ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما کے حوالہ سے روایت کی۔ ت)

علماء فرماتے ہیں خط کاتب کی ملک ہے یہاں تک کہ اگر وہ لکھے کہ اس پر جواب لکھ دے تو خود مکتوب الیہ کو اس میں تصرف جائز نہیں مالک کو واپس دینا لازم، واپس نہ چاہے تو بحکم عرف مکتوب الیہ مالک ہو جائے گا۔ جوہرہ نیرہ و منح الغفار شرح تنویر الابصار و حاشیہ طحطاوی علی الدر المختار وغیر ہما میں ہے:

رجل کتب الی آخر کتاباً و ذکر فیہ اکتب الجواب علی ظہرہ لزمہ ردہ و لیس لہ التصرف فیہ (ایک آدمی نے کسی دوسرے آدمی کو خط لکھا اور اس میں یہ ذکر کیا کہ اسی قرطاس سوال کی پشت پر جواب لکھ دیں تو اس خط کا واپس کرنا لازم ہو جاتا ہے۔)

۱ سنن ابی داؤد کتاب الصلوٰۃ باب الدعاء آفتاب عالم پریس لاہور ۱ / ۲۰۹

“And the addressee owns it according to custom.”[1] - And it is not permissible to dispose of it in any way. If this is not the case, then according to custom and tradition, the addressee, i.e., the person to whom the letter was written, becomes its owner. (T)

Here, until the letter reaches the hands of the addressee, it undoubtedly remains the property of the writer.

[Arabic Box]: For indeed, ownership is not completed before possession, so much so that if one of them dies before delivery, it becomes void, as stated in Al-Durr and other famous books.[2] [Urdu Explanation Box]: Because making someone an owner (transfer of ownership) is not complete before possession. Therefore, if either party dies before delivery, the transaction becomes void, as clarified in major Arabic books like Al-Durr al-Mukhtar etc. (T)

Opening the envelope without their permission constitutes unauthorized disposal of someone else's property, which is forbidden (Haram) according to Sharia. This is the ruling of Hadith and Fiqh. As for their nonsensical excuses, on the basis of which they are not only seeking their exoneration but are actually expecting a reward, these are worse than the sin itself. If there was a fear of it being lost in return, then who was the writer? Who was the addressee? What did keeping or returning it have to do with them? The envelope came to them to be read; they should have read it and given it back to the person who brought it. Whatever the demand was, it was the responsibility of that person. Who ordered them into this undue interference? If such well-wishing was intended, they should have informed the writer to keep the letter safe, and then acted upon whatever the writer said. This act of usurpation and betrayal, of tearing open someone else's property and looking into someone else's letter with a bold gaze—like Zaid sending a goat as a gift to Amr, and Amr had died, and the carrier brought it to Bakr, and night fell in the forest, and for fear of it being lost, Bakr, out of "well-wishing," slaughtered it right there and ate it. The thought that there might be some important matter, a useful book or letter—they did not consider that there might be some secret matter, the disclosure of which would cause harm to them. Entering a house without permission has been forbidden by Sharia due to the possibility of harm, and permission was not given based on the possibility of its absence. All these thoughts are contrary to Sharia, mere satanic whispers that led to disobedience. Even a cursory glance is still looking. Finally, after gaining information

about the content through this, what kind of excuse can this be? It's like someone peeping through someone's door and saying, "I didn't look carefully." On this basis, the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) said that if someone's eyes are poked out in such a state, there is nothing...

---

[1] Takmilah Radd al-Muhtar, Chapter on Miscellaneous Issues of Gifts, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/351; Hashiyat al-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Book of Gifts, Chapter on Miscellaneous Issues, Al-Maktabah al-Arabiyyah, Quetta, 3/209. [2] Ad-Durr al-Mukhtar, Book of Gifts, Chapter on Withdrawal of Gifts, Matba' Mujtabai, Delhi, 2/161.

“और प्रथा के अनुसार पत्र पाने वाला उसका स्वामी होता है।”[1] - और इसमें किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप करना जायज़ नहीं है। यदि ऐसा न हो, तो प्रथा और रिवाज के अनुसार पत्र पाने वाला यानी जिसके नाम पत्र लिखा गया है, वह उसका स्वामी हो गया। (त)

यहाँ, जब तक पत्र पाने वाले के हाथ में नहीं पहुँचता, निस्संदेह वह लेखक की संपत्ति ही रहती है।

[अरबी बॉक्स]: क्योंकि मिल्कियत (स्वामित्व) कब्ज़ा करने से पहले पूर्ण नहीं होती है, यहाँ तक कि यदि सुपुर्दगी से पहले उनमें से किसी एक की मृत्यु हो जाए तो मामला निरस्त हो जाता है, जैसा कि अल-दुर्र और अन्य प्रसिद्ध पुस्तकों में वर्णित है।[2] [उर्दू स्पष्टीकरण बॉक्स]: क्योंकि किसी को स्वामी बनाना (मिल्कियत का हस्तांतरण) कब्ज़ा करने से पहले पूर्ण नहीं होता है। इसलिए, यदि सुपुर्दगी से पहले दोनों में से किसी एक का निधन हो जाए, तो सौदा निरस्त हो जाता है, जैसा कि अल-दुर्र अल-मुख्तार आदि जैसी बड़ी अरबी पुस्तकों में स्पष्ट किया गया है। (त)

उसकी अनुमति के बिना लिफाफा फाड़ना दूसरे की मिल्कियत में अनाधिकृत हस्तक्षेप है जो शरीयत के अनुसार हराम है। हदीस और फ़िक़्ह का हुक्म तो यही है। जहाँ तक उनके बेतुके बहानों की बात है, जिनके आधार पर वे न केवल अपनी बेगुनाही बल्कि वास्तव में पुरस्कार की अपेक्षा कर रहे हैं, ये गुनाह से भी बदतर हैं। यदि वापसी में इसके खो जाने का डर था, तो लेखक कौन था? पाने वाला कौन था? इसे रखने या वापस करने से उनका क्या वास्ता था? लिफाफा उनके पास पढ़ने के लिए आया था; उन्हें इसे पढ़कर लाने वाले को वापस दे देना चाहिए था। जो भी माँग होती, वह उस व्यक्ति की जिम्मेदारी होती। उन्हें इस अनुचित हस्तक्षेप का आदेश किसने दिया था? यदि ऐसी ही खैरख्वाही (भलाई) मददेनज़र थी, तो पत्र सुरक्षित रखने की हिदायत देकर लेखक को सूचित किया होता, फिर लेखक जो कहता उस पर अमल किया जाता। यह गबन और विश्वासघात का कार्य, दूसरे की संपत्ति को फाड़ना और दूसरे के पत्र में निर्भीक दृष्टि से देखना—जैसे ज़ैद ने अम्र को उपहार के रूप में एक बकरी भेजी, और अम्र की मृत्यु हो चुकी थी, और वाहक उसे बक्र के पास लाया, और जंगल में रात हो गई, और इसके खो जाने के डर से बक्र ने "खैरख्वाही" के नाते उसे वहीं ज़ब्ह कर दिया और खा लिया। यह विचार कि शायद कोई महत्वपूर्ण मामला, कोई उपयोगी पुस्तक या पत्र हो—उन्होंने यह नहीं सोचा कि शायद कोई गुप्त मामला हो, जिसका खुलासा होने से उन्हें नुकसान हो। बिना अनुमति के घर में प्रवेश करना शरीयत द्वारा नुकसान की संभावना के कारण वर्जित किया गया है, और इसकी

अनुपस्थिति की संभावना के आधार पर अनुमति नहीं दी गई। ये सभी विचार शरीयत के विपरीत हैं, केवल शैतानी वसवसे हैं जो अवज्ञा का कारण बने। सरसरी निगाह से देखना भी देखना ही है। अंत में, इसके माध्यम से विषय की जानकारी प्राप्त करने के बाद, यह किस प्रकार का बहाना हो सकता है? यह वैसा ही है जैसे कोई किसी के दरवाजे से झाँके और कहे, "मैंने ध्यान से नहीं देखा।" इसी आधार पर, पवित्र पैगंबर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने फरमाया कि यदि ऐसी स्थिति में किसी की आँखें फोड़ दी जाएँ तो कुछ नहीं...

---

[1] तकमिला रद्द अल-मुह्तार, उपहार के विविध मुद्दों पर अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/351; हाशियात अल-तहतवी अला अल-दुर्र अल-मुख्तार, उपहार की पुस्तक, विविध मुद्दों पर अध्याय, अल-मकतबा अल-अरबिय्या, क्वेटा, 3/209। [2] अद-दुर्र अल-मुख्तार, उपहार की पुस्तक, उपहार वापस लेने पर अध्याय, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 2/161।

पृष्ठ 712 का 720

والملکہ المکتوب الیہ عرفاً ۱۔ اور اس میں کسی قسم کا تصرف کرنا جائز نہیں ہوتا، اور اگر یہ صورت نہ ہو تو عرف اور رواج کے مطابق مکتوب الیہ یعنی جس کی طرف خط لکھا گیا وہ اس کا مالک ہو گیا۔ (ت)

یہاں کہ خط مکتوب الیہ کے ہاتھ میں پہنچنے ہی نہ پایا بلاشبہ ملک کاتب پر باقی رہا،

فان التملیك لایتم قبل القبض حتی لو مات احدھما قبل التسلیم بطل کما نص علی فی الدر وغیرہ من الاسفار الغر ۲۔ کیونکہ تملیک (کسی کو مالک بنانا) قبضہ کرنے سے پہلے تام (مکمل) نہیں ہوتی اس لئے کہ سپردگی سے پہلے دونوں میں سے کوئی ایک اگر انتقال کر جائے تو معاملہ باطل ہو جاتا ہے جیسا کہ در مختار وغیرہ بڑی کتب عربی میں اس کی تصریح فرمائی گئی ہے۔ (ت)

بے اس کے اذن کے لفافہ چاک کرنا ملک غیر میں تصرف ناجائز ہوا کہ شرعاً حرام ہے، حدیث وفقہ کا حکم تو یہ ہے، باقی رہے اس کے بیہودہ عذرات جن کی بنا پر وہ نہ صرف اپنی برات بلکہ الٹا مجوری کا متمنی ہے بدتر از گناہ ہیں واپسی میں ضائع ہونے کا اندیشہ تھا تو یہ کاتب تھا مکتوب الیہ تھا کون تھا رکھنا واپس کرنا اس سے کیا متعلق تھا اس کے پاس لفافہ پڑھنے کو آیا تھا پڑھ کر لانے والے کو دے دیتا جو مطالبہ ہوتا اس کے ذمہ ہوتا اسے مداخلت بیجا کس نے حکم دیا تھا ایسی ہی خیر اندیشی مد نظر تھی تو خط محفوظ رہنے کی ہدایت کر کے کاتب کو اطلاع دی ہوتی وہ جو کہتا اس پر عمل کیا جاتا یہ غصب و خیانت کہ ملک غیر چاک نامہ غیر میں نظر بے باک یعنی زید نے ایک بکری عمرو کو بہ ہدیہ بھیجی، عمرو مر چکا تھا لانے والا بکر کے پاس لایا یہاں جنگل میں شام ہوگئی واپس کرنے میں اندیشہ تلف تھا بکر نے بکری براہِ خیر اندیشی وہیں

ذبح کر کے چھ لی، یہ خیال کہ شاید کوئی امر ضروری مفید کتاب یا مکتوب الیہا ہو یہ خیال نہ کیا کہ شاید کوئی امر راز کا ہو جس پر اطلاع میں ان کی مضرت ہو برائے مکان میں بے استیذان جانا شرع نے احتمالِ ضرر کے سبب حرام فرمایا اور احتمال نفی کی بنا پر اجازت نہ دی یہ خیالات سب مناقضِ شرح محض وسوسہ شیطانی تھے کہ معصیت پر باعث ہوئے سرسری نگاہ سے دیکھنا بھی دیکھنا ہے آخر اس سے مضمون پر اطلاع پائی تو یہ کیا عذر ہو سکتا ہے، جیسے کسی کے دروازہ میں سے جھانکنے اور کہے ہم نے بغور تو نہیں دیکھا۔ اسی بنا پر حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اس حالت میں اس کی آنکھیں پھوڑ دیں تو کچھ

---

۱ تکملہ رد المحتار فصل فی مسائل متفرقہ من الھبۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۳۵۱، حاشیۃ الطحطاوی علی الدر المختار کتاب الھبۃ فصل فی مسائل متفرقہ المکتبۃ العربیۃ کوئٹہ ۳/ ۲۰۹

۲ در مختار کتاب الھبہ باب الرجوع فی الھبہ مطبع مجتبائی دہلی ۲ / ۱۶۱

Vol. 24 Fatawa-e-Razawiyya

It is not an accusation.

In the Sahihayn (Bukhari and Muslim), it is narrated from Hazrat Abu Huraira (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whoever peeps into the house of a people without their permission, it is lawful for them to gouge out his eye."[1] In Bukhari and Muslim, there is a narration from Hazrat Abu Huraira (may Allah be pleased with him) that he said: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: Whoever peeks into people's houses without their permission, then surely it is lawful for the residents of that house to take out his eye. (T)

Rather, in another Hadith, the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Whosoever lifts a curtain and casts his glance before being given permission, he has committed an act that was not lawful for him, and if someone were to put out his eye, there would be no retribution." - Narrated by Imam Ahmad in his Musnad[2] from Abu Dharr (may Allah be pleased with him). Whoever opens a curtain and looks before being given permission is guilty of a forbidden act that was not permissible for him, and if someone puts out his eye, there is no retribution (Qisas). (Imam Ahmad has narrated this in his Musnad from Hazrat Abu Dharr, may Allah be pleased with him. T)

Looking at it fairly, opening an envelope and reading a letter is also a type of lifting a curtain and peeping. Seeing only the initial content and not reading the whole thing is like peeking from the doorway; when was the entire house seen? And the irony is that it was returned torn and unsealed, perhaps this too would be deemed as 'mean good intention', claiming that if it were deceit, it would have been sealed. Was it a sin to seal it, such that refraining from it became a reason for exoneration? It is like breaking into another person's house without permission and offering the proof of good intention as 'we left the door open'. Further irony is that a letter addressed to Zaid, Amr, or Bakr was seen and then sent to Khalid, as if he were the owner of the letter to do as he pleased. Since the entire letter wasn't seen, who knows if there was some content in it against Khalid himself? His being informed of it would have caused harm to those Muslims. In short...

[1] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Diyat, Bab: On someone peeping into a house of a people, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/1020; Sahih Muslim, Kitab al-Adab, Bab: Prohibition of looking into someone else's house, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/212. [2] Musnad

Imam Ahmad bin Hanbal, narrated from Abu Dharr (may Allah be pleased with him), Al-Maktab al-Islami Beirut, 5/181.

जिल्द २४ फ़तावा रज़विया

इल्ज़ाम नहीं।

सहिहैन में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "जिस किसी ने लोगों के घरों में उनकी इजाज़त के बिना झाँककर देखा, तो उन घर वालों के लिए यह हलाल है कि वे उसकी आँख निकाल दें।" -1 बुखारी और मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "जिस किसी ने लोगों के घरों में उनकी इजाज़त के बिना झाँककर देखा तो बेशक उन घर वालों के लिए हलाल है कि उसकी आँख निकाल दें।" (त)

बल्कि दूसरी हदीस में हुज़ूर सय्यद-ए-आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "जो कोई पर्दा हटाकर इजाज़त मिलने से पहले निगाह डाले, उसने ऐसी वर्जित बात की है जो उसके लिए जायज़ नहीं थी, और अगर कोई उसकी आँख फोड़ दे तो कोई बदला (क़िसास) नहीं होगा।" - इमाम अहमद ने इसे अपनी मसनद [2] में हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है। जो शख़्स कोई पर्दा खोलकर इजाज़त से पहले निगाह करे, वह ऐसी ममनू (मना की गई) बात का मुर्तकिब (करने वाला) है जो उसके लिए जायज़ न थी और अगर कोई उसकी आँख फोड़ दे तो क़िसास (बदला) नहीं। (इमाम अहमद ने इसे अपनी मसनद में हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है। त)

इंसाफ़ से देखें तो लिफ़ाफ़ा चाक करके(फाड़कर) खत पढ़ना भी एक किस्म का पर्दा खोलकर निगाह करना है और महज़ शुरुआती मज़मून देखना, पूरा न पढ़ना यानी दरवाज़े ही में से झाँकना, सारा मकान कब नज़र पड़ा? और विडंबना यह कि फटा हुआ बिना बंद किए वापस किया, शायद इसे भी ज़लील नेक-नियती ठहरा दिया जाता कि फ़रेब होता तो बंद कर दिया जाता। क्या बंद करने में गुनाह था जो उससे बाज़ रहना बरी होने की वजह हुआ? यानी किसी गैर के मकान में बिना इजाज़त ताला तोड़कर घुसे और नेक-नियती का सबूत यह कि हमने दरवाज़ा खुला ही छोड़ दिया। हद तो यह है कि ज़ैद के नाम अम्र और बक्र का खत देखा और खालिद को भेज दिया, गोया खुद खत के मालिक हों कि जो चाहा किया। जब पूरा खत नहीं देखा था तो क्या मालूम शायद उसमें कोई

मज़मून खालिद के ख़िलाफ़ ही होता, उसका पता चलना उन मुसलमानों के नुक़सान का सबब होता। ग़रज़ ये कि...

1 सहीह बुखारी, किताबुद दियात, बाब: जो किसी क़ौम के घर में झाँके क़दीमी कुतुब खाना कराची २/ १०२०, सहीह मुस्लिम, किताबुल आदाब, बाब: दूसरे के घर में झाँकने की हुरमत, क़दीमी कुतुब खाना कराची २/ २१२ 2 मसनद इमाम अहमद बिन हनबल, हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत, अल-मकतबतुल इस्लामी बेरूत ५/ १८१

الزام نہیں۔

فی الصحیحین عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالی عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم : من اطلع فی بیت قوم بغیر اذنھم فقد حل لھم ان یفقأوا عینہ -1 بخاری اور مسلم میں حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ انہوں نے فرمایا کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا جس کسی نے لوگوں کے گھروں میں بغیر ان کی اجازت کے جھانک کر دیکھا تو بے شک ان گھر والوں کیلئے حلال ہے کہ اس کی آنکھ نکال دیں۔ (ت)

بلکہ دوسری حدیث میں حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں : ایما رجل کشف سترا فادخل بصرہ من قبل ان یؤذن فقد اتی حدا لا یحل لہ ان یأتیہ ولو ان رجلا فقأ عینہ لھدرت-رواہ الامام احمد في مسندہ 2عن ابی ذر رضی اللہ تعالی عنہ۔ جو شخص کوئی پردہ کھول کر قبل اجازت نگاہ کرے وہ ایسی ممنوع بات کا مرتکب ہے جو اسے جائز نہ تھی اور اگر کوئی اس کی آنکھ پھوڑ دے تو قصاص نہیں۔ (امام احمد نے اس کو اپنی مسند میں حضرت ابوذر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ہے۔ت)

انصاف سے دیکھئے تو لفافہ چاک کرکے خط پڑھنا بھی ایک قسم کا پردہ کھول کر نگاہ کرنا ہے اور فقط ابتدائی مضمون دیکھنا پورا نہ پڑھنا یعنی دروازہ ہی میں سے جھانکنا سارا مکان کب نظر پڑا اور طرفہ یہ کہ چاک شدہ بے بند کئے واپس کیا، شاید اسے بھی ذلیل نیک نیتی ٹھہرا دیا جاتا کہ فریب ہوتا تو بند کر دیا جاتا کیا بند کرنے میں گناہ تھا جو اس سے باز رہنا وجہ براءت ہوا یعنی مکان غیر میں بے اجازت قُفل توڑ کر جائے اور نیک نیتی کا ثبوت یہ کہ ہم نے دروازہ کھلا ہی

چھوڑ دیا، طرہ یہ کہ خط زید بنام عمرو بکر نے دیکھا اور خالد کو بھیج دیا گویا خود مالک خط تھا کہ جو چاہا کیا جب سارا خط نہ دیکھا تھا تو کیا معلوم شاید اس میں کوئی مضمون خالد کے خلاف ہی ہوتا اس کا مطلع ہونا ان مسلمانوں کے ضرر کا سبب ہوتا، غرض یہ

1 صحیح البخاري کتاب الدیات باب من اطلع في بیت قوم قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۱۰۲۰ ،
صحیح مسلم کتاب الآداب باب تحریم النظر فی بیت غیرہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۲۱۲ 2 مسند امام احمد بن حنبل ترجمہ عن ابی ذر رضی اللہ تعالی عنہ المکتب الاسلامي بیروت ۵/ ۱۸۱

Volume 24

Fatawa Razawiya

All [those] actions were against both reason and Sharia. And there is no power nor strength except with Allah, the Most High, the Most Great. And Allah, Glory be to Him and Exalted be He, knows best. No one has the power to avoid sins and perform good deeds except by the grace of Allah, the Possessor of Greatness and Glory. Allah is Pure, Exalted, and the All-Knowing. (T)

Issue 280: 10 Safar 1321 AH

Khalid was instructed by his uncle that it is advisable for correspondence regarding their mutual dispute to remain closed. Now, if based on predominant suspicion, Bakr receives his nephew Khalid's letters himself and does not give them to him, even though Khalid professes that he has never gone against this instruction in any of his letters, but Bakr does not believe Khalid due to his [Bakr's] seniority/elder status; will Bakr be considered guilty of sin due to these reasons? Also, if there is a mention of the mutual dispute in them, does Bakr have the authority for the aforementioned matters or not?

The Answer:

Bakr has absolutely no authority, neither to withhold Khalid's letters nor to read them, and he will certainly be a sinner. It is stated in a Hadith that whoever looks at another's letter without necessity, he is looking at the fire of Hell [1]. Misjudgement (bad suspicion) is a second sin, and spying (curiosity) is a third sin. And the question that if they contain something against the instruction, whether he has authority over the aforementioned matters or not, is purely meaningless; for how can it be known without looking that it is against the instruction? In short, this entire proceeding is itself against the instruction. And Allah Almighty knows best.

Issue 281: From the land of Gujarat, Ahmedabad district, Piran Patan city, Mohalla Muhammadi Darah, via Syed Abdul Qadir Sahib Rashid Asghar Ahmad Sahib Bengali, Thursday 16 Shawwal 1336 AH.

To the Sun of the Scholars of Religion, the Paragon of Wise Researchers, meaning our served and honored master, Maulana Ahmad Raza Khan Sahib, may the Bestower protect them from calamities. After a thousand salutations, it is submitted that after your excellence's guidance, when I referred back to the books, in reality, answering

verbally and immediately is obligatory. And Allama Manawi has written that there is a choice between word and correspondence (giving a verbal answer and answering via letter, both for the addressee). (T) However, Allama Shami has written immediately after that that it is obligatory to reply to a letter, and it is in Jami al-Saghir of al-Suyuti "Replying to a letter is a right, just like returning a greeting." [2] (But Imam Suyuti stated in Jami al-Saghir that replying to a letter is obligatory just like returning a greeting verbally. (T)) If in this...

---

[1] Sunan Abi Dawood, Kitab al-Salat, Bab al-Dua, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 1/209.
[2] Jami al-Saghir, Hadith 4448, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 2/272.

खंड 24

फ़तावा रज़विया

वे सभी कार्य बुद्धि और शरीयत दोनों के विरुद्ध थे। और अल्लाह के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है जो सर्वोच्च और महान है। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है। पापों से दूर रहने और भलाई करने की शक्ति अल्लाह के सिवा किसी में नहीं है, जो महानता और शान वाला है। अल्लाह पाक, उच्च और महान ज्ञाता है। (त)

मसला २८०: १० सफ़र १३२१ हिजरी

ख़ालिद को उसके चाचा ने निर्देश दिया कि आपसी विवाद के बारे में पत्राचार बंद रहना ही उचित है। अब यदि प्रबल संदेह (ज़न्न-ए-ग़ालिब) के आधार पर बक्र अपने भतीजे ख़ालिद के पत्रों को स्वयं प्राप्त कर लेता है और उसे नहीं देता, जबकि ख़ालिद यह दावा करता है कि उसने अपने किसी भी पत्र में इस निर्देश का उल्लंघन नहीं किया है, लेकिन बक्र अपनी वरिष्ठता के कारण ख़ालिद पर विश्वास नहीं करता; तो क्या इन कारणों से बक्र पाप का दोषी माना जाएगा? साथ ही, यदि उनमें आपसी विवाद का उल्लेख हो, तो क्या बक्र को उपरोक्त मामलों का अधिकार प्राप्त है या नहीं?

उत्तर:

बक्र को बिल्कुल कोई अधिकार नहीं है, न ख़ालिद के पत्रों को रोकने का और न ही उन्हें देखने का, और वह निश्चित रूप से गुनहगार होगा। हदीस में कहा गया है कि जो बिना आवश्यकता के दूसरे का पत्र देखता है, वह नरक की आग देखता है [1]। दुर्भावना (बदगुमानी) दूसरा पाप है और जासूसी (तजस्सुस) तीसरा पाप। और यह प्रश्न कि यदि उनमें निर्देश के विरुद्ध कुछ हो, तो उपरोक्त मामलों का अधिकार है या नहीं, पूर्णतः निरर्थक है; क्योंकि बिना देखे यह कैसे पता चलेगा कि यह निर्देश के विरुद्ध है? संक्षेप में, यह पूरी कार्रवाई स्वयं निर्देश के विरुद्ध है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २८१: मुल्क गुजरात, ज़िला अहमदाबाद, शहर पिरान पाटन, मोहल्ला मोहम्मदी दारा से, मार्फत सैयद अब्दुल क़ादिर साहब रशीद असग़र अहमद साहब बंगाली, गुरुवार १६ शव्वाल १३३६ हिजरी।

दीन के विद्वानों के सूर्य, बुद्धिमान शोधकर्ताओं के आदर्श, यानी हमारे मखदूम और मुकर्रम जनाब मौलाना अहमद रज़ा खां साहब, ईश्वर उनकी विपत्तियों से रक्षा करे। हज़ारों सलाम के बाद निवेदन है कि आपके मार्गदर्शन के बाद जब किताबों की ओर दोबारा रुख किया गया, तो वास्तव में मौखिक और तुरंत उत्तर देना अनिवार्य (वाजिब) है। और अल्लामा मनावी ने शब्द और पत्राचार के बीच विकल्प (अर्थात प्राप्तकर्ता को मौखिक उत्तर देने या पत्र के माध्यम से उत्तर देने दोनों का अधिकार है) के बारे में लिखा है। (त) लेकिन अल्लामा शामी ने उसके तुरंत बाद लिखा है कि पत्र का उत्तर देना अनिवार्य है, और यह सुयूती की जामे अस-सग़ीर में है "पत्र का उत्तर देना एक अधिकार है, जैसे सलाम का उत्तर देना।" [2] (लेकिन इमाम सुयूती ने जामे अस-सग़ीर में फ़रमाया कि पत्र का उत्तर देना बिल्कुल वैसा ही अनिवार्य है जैसे सलाम का मौखिक उत्तर देना। (त)) यदि इसमें...

---

[1] सुनन अबी दाऊद, किताब अस-सलात, बाब अद-दुआ, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, १/२०९। [2] जामे अस-सग़ीर, हदीस ४४४८, दार अल-कुतुब अल-इलमिया, बेरूत, २/२७२।

पृष्ठ ७१४/७२०

جلد ۲۴

فتاوی رضویہ

سب حرکات عقل و شرع دونوں کے خلاف تھیں ولاحول ولاقوۃ الا باللہ العلی العظیم، واللہ سبحنہ و تعالٰی اعلم، گناہوں سے کنارہ کش ہونے اور بھلائی کرنے کی قوت کسی میں موجود نہیں بجز اللہ تعالٰی عظمت و شان والے کی توفیق کے۔ اللہ تعالیٰ پاک و برتر اور بڑا عالم ہے۔ ت)

مسئلہ ۲۸۰: ۱۰ صفر ۱۳۲۱ھ

خالد کو اس کے چچا نے ہدایت کی کہ باہمی نزاع کی بابت خط و کتابت مسدود رہنا قرین مصلحت ہے اب اگر ظنِ غالب کی بنا پر بکر اپنے بھتیجے خالد کے خطوط خود وصول کر کے اس کو نہ دے حالانکہ خالد تبری کرتا ہے کہ ہر گز میرے کسی خط میں اس ہدایت کا خلاف نہ کیا گیا مگر بکر کو بوجہ مرتبہِ بادر ہونے کے سبب خالد کی یقین نہیں آیا ان وجوہ سے بکر معصیت کا مرتکب قرار پائے گا یا نہیں؟ نیز اگر ان میں بابت نزاع باہمی تذکرہ ہو تو کیا بکر کو امور متذکرہ بالا کا اختیار حاصل ہے یا نہیں؟

الجواب:

بکر کو اصلاً اختیار نہیں، نہ خالد کے خطوط روکنے کا، نہ دیکھنے کا، اور وہ ضرور گنہگار ہوگا، حدیث میں ارشاد ہوا کہ جو بلا ضرورت دوسرے کا خط دیکھے وہ جہنم کی آگ دیکھتا ہے [1]۔ اور بد گمانی دوسرا گناہ ہے اور تجسس تیسرا گناہ۔ اور یہ سوال کہ اگر ان میں خلافِ ہدایت ہو تو امورِ مذکورہ کا اختیار ہے یا نہیں محض بے معنی ہے بے دیکھے کیونکر معلوم ہوگا کہ خلافِ ہدایت ہے، غرض یہ سب کارروائی خود خلافِ ہدایت ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۸۱: از ملک گجرات ضلع احمد آباد شہر پیران پاٹن محلہ محمدی دارہ معرفت سید عبدالقادر صاحب رسیدہ اصغر احمد صاحب بنگالی پنجشنبہ ۱۶ شوال ۱۳۳۶ھ

حضرت شمس علماء الدین، اسوۃ الحکماء المحققین، اعنی مخدومنا و مکرمنا جناب مولانا احمد رضا خان صاحب حفظہم الواہب من النوائب۔ بعد الف الف سلام معروض اینکہ حضور والا کے ارشاد کے بعد جب مراجعت الی الکتب کیا فی الواقع جواب لسان و علی الفور واجب ہے، اور علامہ مناوی نے تخیر بین اللفظ والمراسلۃ (زبانی جواب دینا اور بذریعہ خط جواب دونوں میں مکتوب الیہ کو) اختیار ہے۔ ت) لکھا ہے مگر علامہ شامی نے اسی کا بعد ہی خط کا جواب دینے کو واجب لکھا ہے وہو لکن فی الجامع الصغیر للسیوطی "رد جواب الکتاب حق کرد السلام" [2] (لیکن امام سیوطی نے جامع صغیر میں فرمایا خط کا جواب دینا بالکل سلام کے زبانی جواب دینے کی طرح واجب ہے۔ ت) اگر اس میں

---

[1] سنن ابی داؤد کتاب الصلوۃ باب الدعاء آفتاب عالم پریس لاہور ۱/ ۲۰۹ [2] جامع الصغیر حدیث ۴۴۴۸ دار الکتب العلمیہ بیروت ۲/ ۲۷۲

Fatawa Razawiya, Volume 24

If there is anything contrary, please correct it and oblige. That's all.

The Answer: The respected Maulana, possessor of kindness and generosity, may the Almighty honor you. Peace be upon you and the mercy of Allah and His blessings. In our view, the reply to a greeting (Salam) must be immediate; delay would be sinful. It is even stated that if someone delays replying to a Salam until the end of a letter, it is disliked (Makruh). (Transl.) Allamah Munawi is a Shafi'i, and so is Imam Suyuti. Therefore, after the aforementioned text, it is stated in Al-Munawi:

"And a group of Shafi'is said this, including Al-Mutawalli and Al-Nawawi in Al-Adhkar. He added in Al-Majmu' that replying immediately is obligatory."

A group of Shafi'is has said the same; among them are Al-Mutawalli and Imam Nawawi. Accordingly, Imam Nawawi mentioned this in 'Al-Adhkar' and added in 'Al-Majmu' that replying to the Salam is obligatory. (Transl.)

And the chain of narration (isnad) for the Hadith is extremely weak, and its attribution to the Prophet (marfu') is not established. However, a reply to a letter must be given to the best of one's ability, even if it is after some time. And Allah Almighty knows best.

---

1. Al-Taysir Sharh Al-Jami' al-Saghir, under the Hadith regarding replying to a letter, etc., Maktabah al-Imam al-Shafi'i, Riyadh, 2/22.

फतावा रज़विया, जिल्द 24

यदि कुछ इसके विपरीत हो, तो कृपया सुधार कर उपकृत करें। बस।

उत्तर: आदरणीय मौलाना, जो कृपा और उदारता के स्वामी हैं, अल्लाह आपको सम्मानित करे, आप पर शांति और अल्लाह की दया और उसकी कृपा हो। हमारे निकट, सलाम का उत्तर तुरंत देना चाहिए; देरी करना पाप होगा। यहाँ तक कि कहा गया है कि यदि उसने पत्र के अंत तक सलाम का उत्तर देने में देरी की, तो यह मकरूह (नापसंद) है। (अनु.) अल्लामा मुनावी शाफ़ई हैं, और इमाम सुयूती भी। इसलिए, उपर्युक्त इबारत के बाद मुनावी में है:

"और शाफ़ईयों के एक समूह ने यही कहा, जिनमें अल-मुतवल्ली और अल-नवावी अल-अज़कार में शामिल हैं। उन्होंने अल-मजमूअ में यह भी जोड़ा कि तुरंत उत्तर देना वाजिब है।"

शाफ़ईयों के एक समूह ने यही कहा है, उनमें मुतवल्ली और इमाम नवावी हैं। चुनाँचे इमाम नवावी ने 'अल-अज़कार' में इसका उल्लेख किया और 'अल-मजमूअ' में यह जोड़ा कि सलाम का उत्तर देना वाजिब है। (अनु.)

और हदीस की सनद बहुत कमज़ोर है, और इसका मरफ़ू' होना साबित नहीं है। हाँ, पत्र का उत्तर यथासंभव अवश्य देना चाहिए, चाहे वह कुछ समय बाद ही क्यों न हो। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

---

1. अल-तयसीर शरह अल-जामिअ अल-सगीर, पत्र का उत्तर देने की हदीस के तहत, मकतबा अल-इमाम अल-शाफ़ई, रियाद, 2/22।

पेज 715/720

کوئی خلاف ہو تو اصلاح فرما کر مرہونِ منت فرمائیں۔ فقط۔

الجواب: مولانا المکرم ذی اللطف والکرم اکرمکم المولٰی تعالٰی السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

ہمارے نزدیک جوابِ سلام علی الفور ہے تاخیر میں اثم ہوگا حتی قالوا لو اخر الی آخر الکتاب کرہ (یہاں تک فرمایا کہ اگر اس نے جواب لکھنے تک سلام کے جواب میں تاخیر کی تو مکروہ ہے۔ت)

علامہ مناوی شافعی ہیں یوں ہی امام سیوطی ولذا عبارت مذکورہ کے بعد مناوی میں ہے:

وبہ قال جمع شافعیۃ منہم المتولی والنووی فی الاذکار زادفی المجموع انہ یجب الرد فورا۱۔

شافعیوں کے ایک گروہ نے یہی فرمایا، ان میں سے متولی اور امام نووی ہیں، چنانچہ امام نووی نے الاذکار میں ذکر کیا اور المجموع میں یہ اضافہ کیا کہ سلام کا جواب دینا واجب ہے۔ (ت)

اور حدیث کی سند بشدت ضعیف ہے، اور اس کا رفع ثابت نہیں، ہاں جواب کتاب حتی الوسع ضرور دینا چاہئے ولو بعد حین (اگرچہ کچھ عرصہ کے بعد ہو۔ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

---

۱ التیسیر شرح الجامع الصغیر تحت حدیث رد جواب الکتاب الخ مکتبہ الامام شافعی ریاض ۲۲/۲

Fatawa Razawiya, Volume 24

Politics Membership, Vote, Election, and Organization Building etc.

Problem 282: Asked by Muhammad Baqar Khan Sahib, Retired Deputy Collector, Raebareli. What do the scholars of religion and muftis of the firm Shariah say about this matter: In a town within the municipal limits, a person named Ahmad is well-versed in court language and English, belongs to a noble family, is an expert in administrative capability, and has held distinguished honorable positions. Among other Muslim members, he is a municipal member and has been serving the community with extreme honesty and trustworthiness in his capacity as a member. Now Ahmad's term of membership is nearing its end, so the aforementioned Ahmad is again a candidate for membership. However, against him, a person of ordinary status named Umar, who only knows Urdu, has stood as a candidate for membership. This person has no inkling of administrative ability, nor has he ever had such experience. Therefore, Umar has devised this strategy for his success under a pretext that if he is elected as a member, he will give 150 rupees for a charitable cause, i.e., he will give it to the "Ek Aana Fund" (One Anna Fund) which is in this town, so that the secretary and other members of the "Ek Aana Fund" may strive diligently for success. In such a situation, should Muslims support Ahmad, who is performing his membership duties with great alertness and honesty, or Umar, who is not capable of handling administrative affairs? Explain and be rewarded. (T)

फतावा रज़विया, खंड 24

सियासियात (राजनीति) सदस्यता, वोट, चुनाव और संगठन निर्माण आदि।

मसला 282: प्रेषक: मुहम्मद बाक़र ख़ाँ साहब, रिटायर्ड डिप्टी कलेक्टर, रायबरेली। धर्म के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के मुफ़्ती इस मामले में क्या फरमाते हैं कि: एक कस्बे में जो नगर पालिका की सीमा के भीतर है, अहमद नाम का एक व्यक्ति है जो अदालती भाषा और अंग्रेजी भाषा से अच्छी तरह वाकिफ है, शरीफ खानदान से है, प्रशासनिक योग्यता में कुशल है और प्रतिष्ठित पदों पर आसीन रहा है। अन्य मुस्लिम सदस्यों में वह एक नगरपालिका सदस्य है और सदस्य की हैसियत से कौम के काम अत्यंत ईमानदारी और अमानतदारी के साथ कर रहा है। अब अहमद की सदस्यता का समय समाप्त होने वाला है, इसलिए उक्त अहमद फिर से सदस्यता के लिए उम्मीदवार है। लेकिन उसके मुकाबले में एक साधारण हैसियत का व्यक्ति उमर नाम का उम्मीदवार खड़ा हुआ है जो केवल उर्दू जानता है। इस व्यक्ति को प्रशासनिक योग्यता में कोई जानकारी नहीं है और न ही उसे कभी ऐसा अनुभव हुआ है। इसलिए उमर ने अपनी सफलता के लिए यह युक्ति सोची है कि यदि वह सदस्य चुना गया, तो वह नेक काम के लिए 150 रुपये देगा, यानी वह कस्बे के'एक आना फंड' में देगा, ताकि सचिव और 'एक आना फंड' के अन्य सदस्य उसकी सफलता के लिए कठिन प्रयास करें। ऐसी स्थिति में मुसलमानों को अहमद की सहायता करनी चाहिए जो अत्यंत सूझबूझ और ईमानदारी से सदस्यता के कार्यों को बखूबी अंजाम दे रहा है, या उमर की जो प्रशासनिक कार्यों को करने के योग्य नहीं है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें। (त)

فتاوٰی رضویہ جلد ۲۴

سیاسیات ممبری، ووٹ، الیکشن اور تنظیم سازی وغیرہ

مسئلہ ۲۸۲: مسئولہ محمد باقر خاں صاحب ڈپٹی کلکٹر پنشنر رائے بریلی کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک قصبہ میں جو اندر حد میونسپلٹی ہے ایک شخص احمد نامی زبان کچہری و زبان انگریزی سے بخوبی واقف ہے اور شریف خاندان اور قابلیت انتظامی میں ماہر اور معزز عہدوں پر ممتاز رہا منجملہ دیگر مسلمان ممبروں کے ایک ممبر میونسپل ہے اور بحیثیت ممبری قوم کے کام بھی نہایت دیانت وامانت سے کر رہا ہے اب زمانہ ممبری احمد کا قریب الاختتام ہے لہذا احمد مذکور پھر امیدوار ممبری کا ہے لیکن اس کے مقابلے میں ایک شخص معمولی حیثیت کا جو محض اردو جانتا ہے عمر نامی امیدوار ممبری کھڑا ہوا ہے اس شخص کو انتظامی قابلیت میں کچھ مس نہیں ہے اور نہ کبھی اس کو ایسا تجربہ ہوا ہے پس عمر نے اپنی کامیابی کی یہ تدبیر اس حیلہ سے سوچی ہے کہ اگر وہ ممبر منتخب ہوگیا تو مبلغ ڈیڑھ سو روپیہ واسطے کار خیر کے دے گا یعنی ایک آنہ فنڈ میں جو اس قصبہ میں ہے دے گا تا کہ سیکرٹری و دیگر حصہ ممبران ایک آنہ فنڈ کی کامیابی میں کوشش بلیغ کریں بس ایسی صورت میں مسلمانوں کو احمد کی معاونت کرنی چاہئے جو نہایت بیدار مغزی اور دیانت سے ممبری کے کام بخوبی انجام دے رہا ہے یا عمر کی جو امور انتظامیہ کو انجام دینے کے قابل نہیں ہے۔ بینوا توجروا (بیان فرمائیے اجر پائیے ۔ ت)

Fatawa Rizvia Volume 24

The Answer: Membership is not a matter of Sharia law, but it is certainly true that if the situation is as described in the question, then choosing Umar over Ahmed is far from logic and tradition. When Ahmed, according to the questioner, is knowledgeable, religious, and beneficial to Muslims, then preferring someone devoid of these qualities over him, just for the greed of one hundred and fifty rupees, is manifest ignorance. It is narrated in a Hadith that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"Whoever appoints a man over ten people while there is someone among them who is more pleasing to Allah than him, has betrayed Allah, His Messenger, and the community of Muslims." [1] And Allah Almighty knows best.

Whoever makes someone an officer over ten people, and among them is one who is more beloved to Allah than him, then he has betrayed Allah, the Messenger, and all Muslims.

Problem 283: From Dhoraji near Narial Masjid, sent by Ahmed Ali Chamdiya, 3 Rabi-ul-Awwal 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Here in the state of Kathiawar, because the state of education is very poor, Muslims from various cities came together and decided to select one or two people from each city to form a committee of 95 members in Rajkot, named the Muslim Educational Association. In this, 94 members are from the Sunnat-ul-Jama'at and one is a Khoja. Every year, this Educational Association organizes a public meeting for Muslims in a large city, which anyone can attend. Resolutions for the progress of Muslims are passed, and rights are demanded from the State and the Government. Efforts are made to unify the curriculum of the madrasas run by Muslims in every city and to progress religious and worldly education. Currently, an inspector is appointed by the association who visits every madrasa to check the education. The association has also set up a boarding house for Muslims this year. This association is not affiliated with any other city in India. Can we, the people of Ahl-e-Sunnat wal Jama'at, participate in their annual meetings or not? And can we be members of the association committee or not? May our leaders of religion explain this in detail and honor this humble person.

Note: Here, Khoja refers to followers of Aga Khan, Kharijis, or Sayyidna. Give a ruling and you shall be rewarded.

[1] Al-Mustadrak al-Hakim, Book of Rulings, Dar al-Fikr Beirut 4/92; Kitab al-Du'afa al-Kabir by al-Uqayli, translation 295, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut 1/248.

फतावा रिज़विया जिल्द 24

उत्तर: मेम्बरशिप कोई शरीअती बात नहीं है, लेकिन यह निश्चित है कि यदि स्थिति वही है जो सवाल में वर्णित है, तो अहमद के मुकाबले उमर के लिए कोशिश करना बुद्धि और परंपरा से दूर है। जब अहमद, पूछने वाले के अनुसार, विद्वान, धार्मिक और मुसलमानों के लिए लाभकारी है, तो मात्र डेढ़ सौ रुपये के लालच में ऐसे गुणहीन व्यक्ति को उस पर प्राथमिकता देना स्पष्ट अज्ञानता है। हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं:

"जिसने दस आदमियों पर किसी को अफ़सर (अधिकारी) नियुक्त किया जबकि उनमें कोई ऐसा था जो अल्लाह को उससे अधिक प्रिय था, तो उसने अल्लाह, उसके रसूल और मुसलमानों के समूह के साथ विश्वासघात किया।" [1] और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

जिसने दस आदमियों पर किसी को अफ़सर बनाया और उनमें वह है जो अल्लाह को उससे ज़्यादा पसंद है, तो उसने अल्लाह और रसूल और मुसलमानों की सब खयानत की।

मसला 283: धोराजी, नारियल मस्जिद के पास से, प्रेषक अहमद अली चामड़िया, 3 रबी-उल-अव्वल 1338 हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं: यहाँ काठियावाड़ देश में शिक्षा की स्थिति बहुत खराब होने के कारण विभिन्न शहरों के मुसलमानों ने मिलकर एक राय होकर हर शहर से एक-एक दो-दो व्यक्ति चुनकर राजकोट में 95 सदस्यों की एक समिति बनाई है जिसका नाम मुस्लिम एजुकेशनल एसोसिएशन रखा गया है। इसमें सुन्नत जमात के94 सदस्य और एक खोजा है। इस एजुकेशनल एसोसिएशन की ओर से हर साल किसी बड़े शहर में मुसलमानों की एक आम सभा आयोजित की जाती है जिसमें हर खास और आम आ सकता है और जिसमें मुसलमानों की उन्नति के संकल्प (रेज़ोल्यूशन) पारित किए जाते हैं और स्टेट और सरकार से अधिकार मांगे जाते हैं। हर शहर में मुसलमानों की ओर से जो मदरसे चल रहे हैं उनके पाठ्यक्रम को एक करने और दीनी व दुनियावी शिक्षा की उन्नति करने की कोशिश की जाती है। वर्तमान में एसोसिएशन की ओर से एक इंस्पेक्टर नियुक्त है जो हर मदरसे में जाकर शिक्षा की जाँच करता है। इस साल एसोसिएशन ने मुसलमानों के लिए एक बोर्डिंग भी तैयार की है। इस एसोसिएशन का संबंध भारत के किसी (अन्य) शहर से नहीं है। क्या हम अहल-ए-सुन्नत व जमात वाले उनके वार्षिक सम्मेलनों में शामिल हो सकते हैं या नहीं? और क्या एसोसिएशन कमेटी के सदस्य भी बन सकते हैं या नहीं? हमारे दीन के इमाम विस्तार से व्याख्या करके मुझ अधम को गौरवान्वित करें।

नोट: हमारे यहाँ खोजा आगाखान या खारजी या सैय्यदना को कहते हैं। उत्तर देकर पुण्य प्राप्त करें।

[1] अल-मुस्तदरक अल-हाकिम, किताब अल-अहकाम, दार अल-फ़िक्र बेरूत 4/92; किताब अल-दुआफ़ा अल-कबीर अल-उक़ैली, अनुवाद 295, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत 1/248।

الجواب: ممبری کوئی شرعی بات نہیں مگر یہ ضرور ہے کہ اگر حالت وہ ہے جو سوال میں مذکور ہے تو احمد کے مقابل عمر کے لئے کوشش عقل و نقل سے دور ہے جب وہ حسب بیان سائل ذی علم متدین نفع رساں مسلمین ہے تو اس پر ایسے عاری کی ترجیح صرف ڈیڑھ سو روپیہ کے لالچ سے جہل مبین ہے، حدیث میں ہے نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

من استعمل رجلا علی عشرۃ وفیہم من ہو ارضی للہ منہ فقد خان اللہ ورسولہ وجماعۃ المسلمین ۱۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

جس نے دس آدمیوں پر کسی کو افسر کیا اور ان میں وہ ہے جو اللہ کو اس سے زیادہ پسند ہے تو اس نے اللہ و رسول اور مسلمانوں کی سب خیانت کی۔

مسئلہ ۲۸۳: از دھوراجی متصل ناریل مسجد مرسلہ احمد علی چامڈیا ۳ ربیع الاول ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ یہاں ملک کاٹھیا وار میں تعلیم کی حالت بہت خراب ہونے کی وجہ سے مختلف شہروں کے مسلمانوں نے مل کر ایک رائے ہو کر ہر شہر کا ایک ایک دو دو شخص منتخب کر کے ۹۵ ممبروں کی کمیٹی مقام راجکوٹ قائم کی ہے جس کا نام مسلم ایجوکیشنل ایسوسی ایشن رکھا ہے، جس میں سنت جماعت ممبر ۹۴ اور ایک خوجہ، اس ایجوکیشنل ایسوسی ایشن کی طرف سے ہر سال کسی ایک بڑے شہر میں جلسہ عام مسلمانوں کا منعقد ہوتا ہے جس میں ہر خاص و عام آسکتا ہے اور جس میں مسلمانوں کی ترقی کے ریزولیشن پاس ہوتے ہیں اور اسٹیٹ اور گورنمنٹ کے پاس سے حق مانگے جاتے ہیں اور ہر شہر میں مسلمانوں کی طرف سے جو مدرسے جاری ہیں ان کے کورس ایک کرنے میں اور دینی اور دنیاوی تعلیم کی ترقی کرنے میں کوشش کی جاتی ہے فی الحال ایک انسپکٹر ایسوسی کی طرف سے مقرر ہے جو کہ ہر مدرسہ میں جا کر تعلیم کی جانچ کرتا ہے اور ایک بورڈنگ بھی اس سال مسلمانوں کے واسطے

ایسوسی ایشن نے تیار کی ہے اور ایسوسی ایشن کا تعلق ہندوستان میں کسی شہر سے نہیں ہے ان کے سالانہ جلسے میں ہم اہلسنت و جماعت شریک ہو سکتے ہیں یا نہیں؟ اور ایسوسی ایشن کمیٹی کے ممبر بھی ہو سکتے ہیں یا نہیں؟ ہمارے ائمہ دین شرح تفصیل کے ساتھ بیان فرما کر احقر کو مشرف فرما دیں۔

نوٹ: ہمارے یہاں خوجہ آغاخان یا خارجی یا سیدنا کو کہتے ہیں۔ بینوا توجروا۔

۱ المستدرک للحاکم کتاب الاحکام دار الفکر بیروت ۴ / ۹۲، کتاب الضعفاء الکبیر للعقیلی ترجمہ ۲۹۵ دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱ / ۲۴۸

Fatawa Razawiyya Volume 24

The Answer: Making a Khoja a member of an Islamic meeting is forbidden (Haraam) and opposition to the Lawgiver (peace and blessings be upon him). Allah, the Mighty and Sublime, says: "O you who have believed, do not take as intimates those other than yourselves, for they will not spare you [any] ruin. They wish you would have hardship. Hatred has already appeared from their mouths, and what their breasts conceal is greater. We have certainly made clear to you the signs, if you will use reason. Here you are loving them but they are not loving you, while you believe in the Scripture - all of it. And when they meet you, they say, 'We believe.' But when they are alone, they bite their fingertips at you in rage. Say, 'Die in your rage. Indeed, Allah is Knowing of that within the breasts.'" [1]

In a Hadith, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "He who honors an innovator (person of bad religion) has indeed aided in the destruction of the religion of Islam." [2]

In another Hadith: "He who meets him [a person of bad religion] with a cheerful face has indeed belittled that which was revealed to Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him)." [3]

---

[1] Al-Quran al-Karim 3 / 118-119 [2] Shu'ab al-Iman Hadith 9464, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 7 / 61 [3] Musnad al-Shihab, Chapter on one who insulted an innovator, etc., Printed in Beirut, 1 / 319; Fatawa Hadithiyah... Al-Tab'ah al-Jamaliyah, Egypt, p. 204

फ़तावा रज़विया जिल्द २४

उत्तर: खोजा को इस्लामी सभा का सदस्य बनाना हराम है और शरीयत देने वाले (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) का विरोध है। अल्लाह अज़्ज़वजल फ़रमाता है: "ऐ ईमान वालो! ग़ैरों को अपना राज़दार न बनाओ, वे तुम्हारी नुक़सान पहुंचाने में कोई कमी नहीं छोड़ेंगे, वे दिल से चाहते हैं कि तुम मुसीबत में पड़ो। उनके मुँह से तो दुश्मनी ज़ाहिर हो चुकी है और जो उनके सीनों में छिपा है वह इससे भी कहीं ज़्यादा बड़ा है। हमने तुम्हारे लिए निशानियाँ खोलकर बयान कर दी हैं अगर तुम अक्ल रखते हो। देखो! तुम तो उनसे मुहब्बत करते हो और वे तुमसे मुहब्बत नहीं करते, हालाँकि तुम पूरी किताब (क़ुरआन) पर ईमान रखते हो। और जब वे तुमसे मिलते हैं तो कहते हैं 'हम ईमान लाए', और जब वे अकेले होते हैं तो तुम पर गुस्से से अपनी उँगलियों के पोर काटते हैं। कह दो कि 'तुम अपने गुस्से में मर जाओ'। बेशक अल्लाह दिलों की बात ख़ूब जानता है।" [1]

हदीस में है, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं: "जिसने किसी बिदअती (बद-मज़हब) का सम्मान किया, उसने यक़ीनन इस्लाम को ढाने (नष्ट करने) में मदद की।" [2]

दूसरी हदीस में है: "जो किसी बद-मज़हब से हंसते हुए चेहरे (खुशदिली) के साथ मिला, उसने यक़ीनन उस चीज़ को तुच्छ समझा जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतारी गई।" [3]

---

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम ३ / ११८-११९ [2] शुअब अल-ईमान हदीस ९४६४, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत ७ / ६१ [3] मसनद अल-शिहाब, बाब मन अहान साहिब बिदआ अलख, मुद्रित बेरूत १ / ३१९, फ़तावा हदीसिया... अल-तबा अल-जमालिया, मिस्र, पृ. २०४

पेज ७१८ का ७२०

الجواب: خوجہ کو اسلامی جلسہ کا رکن بنانا حرام اور مخالفت شارع علیہ الصلوۃ والسلام ہے۔ اللہ عزوجل فرماتا ہے: "یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا یَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًاؕ وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْۚ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْۖ وَ مَا تُخْفِیْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُؕ قَدْ بَیَّنَّا لَكُمُ الْاٰیٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ(۱۱۸) هٰۤاَنْتُمْ اُولَآءِ تُحِبُّوْنَهُمْ وَ لَا یُحِبُّوْنَكُمْ وَ تُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖۚ وَ اِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّاۖ وَ اِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَیْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَیْظِؕ قُلْ مُوْتُوْا بِغَیْظِكُمْؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ(۱۱۹) " 1

اے ایمان والو! غیروں کو اپنا رازدار نہ بناؤ وہ تمہاری نقصان رسانی میں کمی نہ کریں گے وہ جی سے چاہتے ہیں کہ تم مشقت میں پڑو۔ بیر ان کے مونہوں سے ظاہر ہوچکا اور وہ جوان کے سینوں میں دباہے اور بھی بڑا ہے ہم نے تمہارے سامنے نشانیاں کھول دیں اگر تم میں عقل ہے ارے یہ جو تم ہو تم تو ان سے محبت کرتے ہو اور وہ تم سے محبت نہیں کرتے حالانکہ پورے قرآن پر ایمان لائے اور جب تم سے ملتے ہیں تو کہتے ہیں ہم مسلمان ہیں اور جب اکیلے ہوتے ہیں تو تم پر انگلیاں چباتے ہیں جلن سے، اے محبوب! تم ان سے فرمادو کہ مر جاؤ اپنی جلن میں، بیشک اللہ دلوں کی جانتا ہے۔

حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: من وقر صاحب بدعة فقد اعان علی ھدم الاسلام 2 - جس نے بد مذہب کی توقیر کی بیشک اس نے دین اسلام ڈھادینے میں مدد دی۔

دوسری حدیث میں ہے: من لقیه بالبشر فقد استخف بما انزل علی محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم 3 - جو کسی بدمذہب سے بکشادہ پیشانی ملا بیشک اس نے حقیر سمجھا اس چیز کو جو محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پر اتاری گئی۔

1 القرآن الكريم ۱۱۸/۳-۱۱۹ 2 شعب الايمان حديث ۹۴۶۴ دار الكتب العلميہ بيروت ۷ / ۶۱ 3 مسند الشہاب باب من اهان صاحب بدعة الخ مطبوعہ بيروت ۱ / ۳۱۹ ، فتاوى حديثيہ كانت سبابة صلى عليه اطول من الوسطى الخ الطبعة الجماليہ مصر ص ۲۰۴

Fatawa Rizvia Volume 24

This subject is detailed in Fatawa al-Haramayn, on which the scholars of the Holy Sanctuaries (Haramayn Sharifayn) have unanimously put their seals. Sunni brothers should value their faith and immediately separate bad-sect followers from membership. Allah has already stated that they will never desire your well-being; they will cause harm as much as they can. Do not hold this ignorant thought against the Quran and Hadith that what effect will one bad-sect person have among 94 Sunnis. Look, if there are 94 drops of rose water and you add one drop of urine, it all becomes urine. The attendees of the assembly should follow these Shariah rulings and make the assembly purely of Ahl al-Sunnah. If they persist in their misplaced stubbornness, they have heard the Shariah rulings that they assist in tearing down the religion of Islam and belittling what was revealed to Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him). It is obligatory upon Muslims to leave them and their assembly completely. "Let them earn what they are earning." (They should be left to do what they do). Never participate in it.

Allah the Almighty says: "And if Satan causes you to forget, then after the remembrance, do not sit with the wrongdoing people." | Allah the Almighty has stated: If Satan puts you into forgetfulness, then after remembering, do not sit with the oppressors. (T)

And do not help them at all,

Allah the Almighty says: "And do not cooperate in sin and transgression" - And Allah Almighty knows best. | Allah the Almighty has stated: (O people!) Do not help each other in matters of sin and excess. And Allah Almighty knows best. (T)

Issue 284: Hafiz Shamsuddin, Belpur Mohalla, Dargah Parshad, District Pilibhit, 25 Safar 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: is the Great Sultan of the Ottoman Empire the Caliph of Muslims or not? Should Muslims have sympathy for them in the current situation or not? If we do not show any sympathy at this time, will we be sinners? Explain and be rewarded. The Answer: The Sultans of Islam are not just Sultans of Islam, but every group of Islam is not just a group, but every individual of Islam...

1. Holy Quran 6/113
2. Holy Quran 6/68
3. Holy Quran 5/2 Page 719 of 720

फ़तावा रज़विया जिल्द 24

फ़तावा अल-हरमैन में यह विषय विस्तार से है, जिस पर हरमैन शरीफ़ैन के उलमा ने सर्वसम्मति से मुहरें लगाई हैं। सुन्नी भाइयों को चाहिए कि वे अपने दीन की क़द्र करें और बद-मज़हबों को सदस्यता से तुरंत अलग कर दें। अल्लाह फ़रमा चुका है कि वे तुम्हारी भलाई कभी नहीं चाहेंगे; जहाँ तक हो सकेगा नुक़सान ही पहुँचाएंगे। क़ुरान और हदीस के मुक़ाबले में यह जाहिलाना ख़्याल न करें कि 94 सुन्नियों में एक बद-मज़हब क्या असर करेगा। देखो, अगर 94 बूंदें गुलाब की हों और उसमें एक बूंद पेशाब डाल दो, तो सब पेशाब हो जाएगा। सभा के लोगों को इन शरीअत के आदेशों का पालन करना चाहिए और सभा को शुद्ध रूप से अहले सुन्नत की बनाना चाहिए। और अगर वे अपनी बेजा ज़िद पर क़ायम रहें तो शरीअत के आदेश सुन चुके कि वे दीन-ए-इस्लाम को ढहाने में मदद देते हैं और जो कुछ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतरा उसकी तौहीन करते हैं, तो मुसलमानों पर लाज़िम है कि उन्हें और उनकी सभा को पूरी तरह छोड़ दें। "ताकि वे वही कमाएँ जो वे कमा रहे हैं।" (उन्हें वह करने दें जो वे कर रहे हैं)। इसमें कभी शरीक न हों।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और अगर शैतान तुम्हें भुलावे में डाल दे, तो फिर याद आने पर ज़ालिमों के साथ मत बैठो।" | अल्लाह तआला ने फ़रमाया: अगर शैतान तुम्हें भूल-चूक में डाल दे, तो याद आने के बाद ज़ालिम लोगों के साथ न बैठो। (त)

और मूल रूप से उसकी मदद न करें,

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और गुनाह और ज़्यादती (के कामों) में एक-दूसरे की मदद न करो।" - और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। | अल्लाह तआला ने फ़रमाया: (ऐ लोगो!) आपस में गुनाह और ज़्यादتی के मामलों में एक-दूसरे की मदद न किया करो। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 284: हाफ़िज़ शम्सुद्दीन, बेलपुर मोहल्ला, दरगाह परशाद, ज़िला पीलीभीत, 25 सफ़र 1339 हिजरी। उलमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि सुल्तान-ए-मुअज़्ज़म सल्तनत-ए-रूम (उस्मानिया साम्राज्य) मुसलमानों के ख़लीफ़ा हैं या नहीं? वर्तमान स्थिति में मुसलमानों में उनके प्रति हमदर्दी रखनी चाहिए या नहीं? अगर इस समय हम कोई हमदर्दी न करें तो क्या गुनाहगार होंगे?

बयान फ़रमाएं सवाब पाएँ। जवाब: सलातीन-ए-इस्लाम (इस्लाम के सुल्तान) न केवल इस्लाम के सुल्तान हैं, बल्कि इस्लाम का हर समूह न केवल एक समूह है, बल्कि इस्लाम का हर व्यक्ति...

1. अल-क़ुरान अल-करीम 6/113
2. अल-क़ुरान अल-करीम 6/68
3. अल-क़ुरآन अल-करीम 5/2 पेज 719 of 720

فتاوی الحرمین میں یہ مضمون مفصل ہے جس پر علمائے حرمین شریفین نے بالاتفاق مہریں کیں سنی بھائیوں کو چاہئے کہ اپنے دین کی قدر کریں اور بد مذہب کو رکنیت سے فوراً جدا کردیں اللہ فرما چکا کہ وہ تمہاری بھلائی کبھی نہ چاہیں گے جہاں تک بن پڑے نقصان ہی پہنچائیں گے قرآن وحدیث کے مقابل یہ جاہلانہ خیال نہ کریں کہ ۹۴ سنیوں میں ایک بدمذہب ہی کیا اثر کرے گی، دیکھو چورانوے ۹۴ قطرے گلاب ہو اور ایک بوند پیشاب ڈال دو سب پیشاب ہو جائے گا، اہل مجلس ان احکام شرعیہ کا اتباع کریں اور مجلس کو خالص اہلسنت کی کرلیں اور اگر اپنی بیجاہٹ پر قائم رہیں تو شرعی احکام سن چکے کہ وہ دین اسلام کے ڈھادینے پر مدد دیتے ہیں اور جو کچھ محمد صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم پر اترا اس کی تحقیر کرتے ہیں تو مسلمانوں پر لازم کہ انہیں اور ان کی مجلس کو یک لخت چھوڑ دیں "لِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ" (چاہئے کہ وہی کمائیں جو کچھ وہ کما رہے ہیں۔ت) کبھی اس میں شریک نہ ہوں۔

قال اللہ تعالی "وَ اِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ"۔ | اللہ تعالٰی نے ارشاد فرمایا: اگر تمہیں شیطان بھلاوے میں ڈال دے تو پھر یاد آنے پر ظالموں کے ساتھ مت بیٹھو۔ (ت)

اور اصلاً اس کی مدد نہ کریں،

قال اللہ تعالٰی "وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ص" - واللہ تعالٰی اعلم۔ | اللہ تعالٰی نے فرمایا: (لوگو!) آپس میں گناہ اور زیادتی کے معاملات میں ایک دوسرے کی مدد نہ کیا کرو۔واللہ تعالٰی اعلم(ت)

مسئلہ ۲۸۴: حافظ شمس الدین بیلپور محلہ درگاہ پر شاد ضلع پیلی بھیت ۲۵ صفر ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ سلطان المعظم سلطنتِ روم خلیفۃ المسلمین ہیں یا نہیں؟

موجودہ حالت میں مسلمانوں میں ان کی ہمدردی کرنا چاہئے یا نہیں؟ اگر اس وقت میں ہم کوئی ہمدردی نہ کریں تو گنہگار تو نہ ہوں گے۔ بینوا توجروا۔ الجواب: سلاطینِ اسلام نہ صرف سلاطین اسلام کہ ہر جماعتِ اسلام نہ صرف جماعت کہ ہر فردِ اسلام کی

Fatawa Rizvia, Volume 24

Well-wishing is obligatory for every Muslim according to the Hadith: "The religion is sincerity/well-wishing to every Muslim." 1 (Trans. Note: According to the Hadith "Religion is the name of well-wishing for every Muslim"). However, every obligation is according to one's capability and every hardship is subject to one's capacity, as stated in the Noble Discourse (Quran). (Trans. Note: As the Noble Discourse has explained this matter). Encouraging someone towards an impossible task that causes harm to Muslims is not well-wishing but ill-wishing. For example, there is a storm in the river, some people are drowning; forcing those who are on the shore and do not know how to swim to jump into the storm to save them is not saving them but drowning them. This is an open trick of the polytheists through which they want to destroy the Muslims, and those lacking intellect and blind of insight consider them their well-wishers, even though the Holy Quran has clearly stated that they will spare no effort to corrupt you; they desire what causes you distress. Hatred has already appeared from their mouths, and what their hearts conceal is far worse. We have made the signs clear for you, if you use your intellect 2. Even after such clear guidance from the Almighty Lord, eyes do not open and ill-wishers are considered well-wishers. May the Almighty Lord guide them. Ameen! And Allah Almighty knows best.

Note: Volume 24 ends on the topic of Politics. God willing, Volume 25 will begin with the Book of Civics (Kitab al-Madaniyat).

1 Sahih al-Bukhari, Book of Faith, Chapter on the Prophet's (PBUH) saying "Religion is sincerity/well-wishing", Qadeemi Kutub Khana Karachi, 1/13; Sahih Muslim, Book of Faith, Chapter on explaining "Religion is sincerity/well-wishing", Qadeemi Kutub Khana Karachi, 1/55. 2 The Holy Quran, 3/118.

Page 720 of 720

फ़तावा रज़विया, खंड २४

हर मुसलमान के लिए खैरख्वाही (शुभकामना) अनिवार्य है, हदीस "अद्दीनुन् नुस्हु लिकुल्ली मुस्लिम" 1 के अनुसार। (अनुवाद: जैसा कि हदीस "दीन हर मुसलमान की खैरख्वाही का नाम है" में है)। लेकिन हर कर्तव्य सामर्थ्य के अनुसार है और हर कठिनाई क्षमता के अधीन है, जैसा कि कलाम-ए-अज़ीज़ (कुरान) में कहा गया है। (अनुवाद: जैसा कि कलाम-ए-अज़ीज़ ने इस मसले को बयान किया है)। किसी ऐसे असंभव कार्य के लिए उकसाना जो मुसलमानों के लिए हानिकारक हो, खैरख्वाही नहीं बल्कि बदख्वाही (बुरा चाहना) है। उदाहरण के तौर पर, नदी में तूफान है, कुछ लोग डूब रहे हैं; जो लोग किनारे पर हैं और तैरना नहीं जानते, उन्हें उन्हें बचाने के लिए तूफान में कूदने के लिए मजबूर करना उन्हें बचाना नहीं बल्कि उन्हें डुबोना है। यह मुशरिकों (बहुदेववादियों) की एक खुली चाल है जिसके माध्यम से वे मुसलमानों को तबाह करना चाहते हैं, और बुद्धि से हीन और अंतर्दृष्टि के अंधे उन्हें अपना खैरख्वाह समझ रहे हैं, हालांकि कुरान करीम ने साफ फरमाया है कि वे तुम्हारी बुराई करने में कोई कमी नहीं छोड़ेंगे, उनकी दिली तमन्ना है कि तुम मुसीबत में पड़ो, दुश्मनी उनके मुंह से जाहिर हो चुकी है और जो उनके दिलों में दबा है वह और भी बड़ा है, हमने अकलमंदों के लिए निशानियां साफ बयान कर दी हैं 2। मौला तआला के इतने साफ इरशाद पर भी आंखें नहीं खुलतीं और बदख्वाहों को खैरख्वाह माने हुए हैं, मौला अज़्ज़-व-जल्ल हिदायत दे। आमीन! वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

नोट: खंड २४ राजनीति के विषय पर समाप्त हुआ। इंशाअल्लाह, खंड २५ किताब-उल-मदानियात (नागरिक शास्त्र की पुस्तक) से शुरू होगा।

1 सहीह अल-बुखारी, किताबुल ईमान, बाब: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान "अद्दीनुन् नसीहा", कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/13; सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब: "अद्दीनुन् नसीहा" का बयान, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/55। 2 अल-कुरान अल-करीम, 3/118।

पृष्ठ ७२० / ७२०

خیرخواہی ہر مسلمان پر لازم ہے لحدیث الدین النصح لکل مسلم 1 (حدیث "دین ہر مسلمان کی خیرخواہی کا نام ہے" کے مطابق۔ ت) مگر ہر فرض بقدر قدرت ہے اور ہر تکلیف بشرط استطاعت کما نطق بہ الکلام العزیز (جیسا کہ اس مسئلہ کو کلام عزیز نے بیان فرمایا۔ ت) نامقدور بات پر ابھارنا جو موجب ضرر مسلمین ہو خیرخواہی مسلمین نہیں بدخواہی ہے مثلاً دریا میں طوفان ہے کچھ لوگ ڈوب رہے ہیں جو کنارے پر ہیں اور تیرنا نہیں جانتے انہیں مجبور کرنا کہ ان کے بچانے کے لئے طوفان میں کود پڑو ان کا بچانا نہیں بلکہ ان کا ڈبونا ہے۔ مشرکوں کی یہ کھلی چال ہے جس سے وہ مسلمانوں کو تباہ کرنا چاہتے ہیں اور عقل کے اوندھے بصیرت کے اندھے انہیں اپنا خیر خواہ سمجھ رہے ہیں حالانکہ قرآن کریم صاف فرما چکا ہے کہ وہ تمہاری بدخواہی میں کمی نہ کریں گے ان کی دلی تمنا ہے کہ تم مصیبت میں پڑو، دشمنی ان کے مونہوں سے ظاہر ہو چکی ہے اور وہ جو ان کے دلوں میں دبی ہے اور بڑی ہے، ہم نے عاقلوں کے لئے نشانیاں صاف بیان فرمادیں 2۔ مولٰی تعالٰی کے اتنے صاف ارشاد پر بھی آنکھیں نہیں کھلتیں اور بدخواہوں کو خیر خواہ مانے ہوئے ہیں، مولٰی عزوجل ہدایت دے۔ آمین ! واللہ تعالٰی اعلم۔

نوٹ جلد ۲۴ سیاسیات کے عنوان پر ختم ہوئی جلد ۲۵ ان شاء اللہ کتاب المدانیات سے شروع ہوگی۔

1 صحیح البخاری کتاب الایمان باب قول النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم الدین النصیحۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۱۳، صحیح مسلم کتاب الایمان باب بیان الدین النصیحۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۵۵ 2 القرآن الکریم ۳ / ۱۱۸